प्रकाशक
चौपासनी-शिक्षासमिति द्वारा गठित
उपसमिति, राजस्थानी सवद कोस
जोधपुर

भारत सरकार के शिक्षामन्त्रालय
द्वारा सचालित प्रादेशिक भाषाओ के
विकास सम्बन्धी योजना से सहायता प्राप्त

प्रथम संस्करण

मूल्य ७५ रु०

मुद्रक :
हरिदत्त थानवी
श्री सुमेर प्रिंटिंग प्रेस,
जोधपुर

भलो भलाइ हि लहइ, लहइ निचाइहि नीचु ।
सुधा सरा हिअ अमरता, गरल सराहिअ मीचु ॥

तुलसी जसि भवतवयता, तैसी मिलइ सहाइ ।
आपु न आवै ताहि पै, ताहि तहां ले जाइ ॥

—तुलसीदास

अपनी बात

प्रस्तुत शब्द कोश के तृतीय खड की यह तीसरी जिल्द हमारे सामने है। मैं पूर्ण आश्वस्त हूँ कि कोश का कार्य पूर्ण सन्तोष-प्रद ढग से चल रहा है। कार्य-प्रगति को देखते हुए मैं विश्वास के साथ कह सकता हू कि यदि कोई विशेष रुकावट सन्मुख न आई तो आगामी चतुर्थ खड की जिल्दो के प्रकाशन मे भी अनावश्यक समय नही लगेगा।

प्रताप जयन्ती
ज्येष्ठ शुक्ला चतुर्दशी
सम्वत् २०२९ वि
विजय विहार
जोधपुर

रणधीरसिंह
अध्यक्ष - उपसमिति
राजस्थानी सबद कोस
जोधपुर

प्रकाशकीय

पाठको के सन्मुख यह निवेदन करते हुए हमे प्रसन्नता होती है कि हमने 'राजस्थानी सबद कोस' की प्रगति के अनुक्रम मे एक मजिल और तय करली है। इस जिल्द के साथ 'म' अक्षर के समस्त उपलव्ध शव्दो को लेकर तृतीय खड को पूर्ण कर दिया है।

इससे पूर्व की इस खड की द्वितीय जिल्द जनवरी सन् १९७१ में प्रकाशित हुई थी। प्रस्तुत जिल्द जून सन् १९७१ से प्रारभ होकर १ वर्ष व ५ मास मे पूर्ण हुई है। इस जिल्द मे शव्द सख्या १५३३५ है जो द्वितीय जिल्द से वहुत अधिक नही है परन्तु शव्दो का अर्थ विस्तार इतना हो गया कि पृष्ठ सख्या उस से काफी अधिक अर्थात करीव ७०० हो गई है। यही कारण है कि पूर्व जिल्द के मुकाविले मे समय अधिक लगा है। वैसे कार्य की प्रगति मे कोई रुकावट नही आई और न किसी प्रकार का विलम्व हुआ।

अनुस्वार तथा 'क' से लेकर 'म' तक पाचो व्यजन वर्गो की समाप्ति तक कोश की पूर्ण पृष्ठ सख्या ३९५० तक और कुल शव्द सख्या १०२४२८ तक पहुच चुकी है। अव अन्तस्थ व उष्म वर्णों की चौथे खड की चार जिल्दें और शेष रही हैं जो, यदि परिस्थिति हमारे अनुकूल रही और कोई विशेष रुकावट सन्मुख न आई तो, भविष्य के अल्प काल मे ही प्रकाशित कर देंगे, ऐसा हमारा विश्वास है।

कागज की महार्घता और पृष्ठ सख्या की अधिकता के कारण इस जिल्द का मूल्य हमे द्वितीय व तृतीय खड की पूर्व जिल्दो की अपेक्षा विवश हो कर अधिक अर्थात् ७५) रु० रखना पड रहा है।

हम केन्द्रीय सरकार व राजस्थान राज्य की कृतज्ञता प्रकट करते हुए, कि जिनकी नियमित आर्थिक सहायता ने हमारे कार्य को गतिमान रखा, राजस्थान राज्य के शिक्षा राज्य - मत्री श्री झुझारसिहजी, भूतपूर्व शिक्षा - सचिव श्री जगन्नाथसिहजी मेहता व श्री रामसिहजी चौहान को हम हार्दिक धन्यवाद देना नहीं भूलेगे कि जिन्होंने कोश को आर्थिक सहायता प्रदान कराने तथा प्रकाशन की दिशा मे सक्रिय सहयोग प्रदान किया।

श्री सुमेर प्रिंटिग प्रेस के सचालक व व्यवस्थापक महानुभावो को धन्यवाद देते हैं, जिन्होंने कोश की छपाई की दिशा मे हमारी सहृदयता - पूर्वक सहायता की है।

अन्त मे सरकार, पाठक, सहृदय विद्वज्जन एव साहित्य - सेवियो के अभिन्न सहयोग एव सहानुभूति से हम पूर्ण आश्वस्त हैं कि जिसके वल पर हम शीघ्र ही इस पुनीत कार्य को पूर्ण करने मे सफल होगे।

रोडला भवन
रिसाला रोड, जोधपुर

२५ जून, १९७२

चंदनसिंह राठौड़
सचिव
उप-समिति राजस्थानी सबद कोश
जोधपुर

॥ श्री ॥

* निवेदन *

— दूहा सोरठा —

नारायण भूले नही, अपणी माया ईश । रोग पैल ओखद रचै, जगवाळा जगदीश ।।१।।
साच न बूढो होय, साच अमर ससार मे । कैतो धोवो कोय, ओ सेवट प्रकटै 'उदय' ।२।।
सेवा देश समाज, धरती मे साचो धरम । इण सू पूरै आस सकल मनोरथ सांवरो ।३।
साहित री सेवाह, सेवा देश समाज रो । आवे इण एवाह ईशर कीरपा सू उदय ।।४।
सत ऊजळा सदेश, उदयराज ऊजल अखै । दीपै वारा देश, ज्यारा साहित जगमगै ।५।।

भारत ससद मे सन् १६५० रे करीब देशरी दूसरी सगला प्रान्ता री भामावा मानी गई उणा रे सामल राजस्थानी भाषा ने नही मानी तो कुदरती तौर सू राजस्थान मे अपणी भाषा राजस्थानी ने मान्यता दिरावण सारु आन्दोलन पञो मे शुरू हुवो

राजस्थानी रै विरोध मे अकसर आ बात कही जाती के इण रो कोई आधुनिक कोश नही हो। ओ घाटो मिटावण सारु म्हैं श्री सीतारामजी लालस ने कयो क्योंकि हूँ जाणतो हो के डिंगल रा सग्रह रो उणा ने काफी अनुभव है। श्री सीतारामजी इणा काम सारु तैयार हो गया ने म्हे दोनु सामिल होय ने पूरा सहयोग सू मैनत सू कोश रो काम शुरु कियो ने इण मे खर्च री मदन री जरूरत हुई तो उसा बावत म्हैं स्वर्गीय ठाकुर श्री भवानीसिहजी साहब वार एटला पौकरण ने अरज करी। इणा कृपा करने मजूर करी ने तारीख १-५-५१ सू रुपीआ री मदद देणी चालू कर दीवी। सीतारामजी मथाणिया मे लेखक राख ने काम शब्द सग्रह री स्लिप कोपिया लिखावण रो चालू कर दीवो और म्हैं दोनू तारीख १-५-५१ सू सन् १६५२ रा आखिर तक सामिल कोम कियो जिण सू कुल शब्द ११३००० स्लिप कोपिया मे लिखीजीया फेर समय रा हेरफेर सू श्री पोकरण ठाकुर साहब री सहायता बंद हो गई। इण सू सन् १६५३ लगायत सन् १६५६ तक ४ साल तक कोश रो काम बद रेयो।

इण कोश ने पूरो करण री म्हा दोनू री लगन ही। म्हैं करनल श्री स्यामसिहजी रोडला ने जून सन् १६५६ में कोश मे सहायता देण सारु कागद लिखियो उणा रो जवाब उणा तारीख २६-६-५६ रा कागद मे म्हने लिखियो के कोष सारु मावार रु० ५०) ३ या ४ साल तक या कोश पूरो होवे जठा तक दे सकूला। परन्तु उणारा पिता करनल श्री अनोपसिहजी बीमार हो गया इण वास्ते सहायता चालू होणे मे देरी हुई। उणा रे स्वर्गवास होणे रे वाद मे मास नवम्वर रा अन्त मे ने दिसम्बर रा शुरू मे जोधपुर मे ही जद कर्नल श्री सामसिहजी कोश री मदत बावत बातचीत करणने दोयवार म्हारे मकान पर आया और फिर सहायता देणी चालू कर दीवी।

कोश रो काम उणा री सहायता सू सन् १६५७ री जनवरी रै सीतारामजी जोधपुर मे चालू कर दियो क्योकि जद उणां रो तबादलो जोधपुर मे हो गयो हो। जो एक लाख तेरह हजार शब्दो री स्लिप कोपिया पेली वणी हुई ही। इणतरे सब शब्द अक्षरवार किया जाय न उणा अक्षरवार रजिस्टर मे लिख लिया गया इणतरे कोश सन् १६५८ री माह मई तक पूरो हो गयो। म्हे पैनी री तरे सीतारामजी रे साथ हर तरह रो सहयोग ने मदत राखी ने काम कियो ओ कोष करनल श्री सामसिहजी री रुपीया री सहायता सू पूरो हुवो।

इणरे बाद प्रेस कापी बणावण रो काम चालू हुवो। उणारे खरचे रो प्रबन्ध ठाकुर श्री गोरधनसिहजी मेडतिया खानपुर वाला श्री झालावाड दरवार सू श्री नीवांज ठाकुर साहब सू रुपिया री सहायता लेने करायो ने करे छपण रो प्रबन्ध राजस्थानी सोध सस्थान चोपासणी जोधपुर सू हुवो ने तारीख ११-३-१६५६ ने सीतारामजी ने इण सोध सस्थान शिक्षा विभाग सू लोन पर ले लिया जद सू वे इण सस्थान मे काम करण लागा।

इण कोश ने तैयार करावण मे व्युत्पति विभाग पूरो करावण मे स्वर्गीय प० नित्यानन्दजी शास्त्री जोधपुर की घणी मदत ही इण वास्ते वैकूठवासी विदवान ने घणा धन्यवाद देवा हा। तारीख २२-५-५७ ने लिख दय्या नीचे मुजब हो —

चांद बावड़ी
ता० २२-५-५७

सीतारामजी लालस ने राजस्थानी कोश की रचना की है। यह भारी कठिन कार्य का यत्र श्री उदयराजजी उज्जवल यँत्री (मेकेनिकल) के वल सचालित हुवा है। मैंने इसे देखा, इन्होने प्रत्येक शब्द और धातु को जाचकर उनके प्रयोज्य सब प्रकार के प्रयोगो को प्रदर्शित किया है क्योकि इन्होने सस्कृत, प्राकृत, अपभ्र श विविध भापाओ के वल पर यह कार्य भार उठाया है। बीच बीच मे हर समय मेरे साथ विचार विमर्श करते हुए आपने पूर्ण परिश्रम करके इसे रचा है। ऐसे कठिन कार्य को पार करने मे श्री सीतारामजी की ही पूर्ण कृपा ने सहायता की है। आशा है राजस्थान की जनता इससे लाभ उठाकर इस कोश की त्रुटी की पूर्ती से पूर्ण सतुष्ठ होगी और श्रम को समझने वाले विद्वान कार्य की प्रशसा करेंगे।

फकत-नित्यानन्द शास्त्री।

इण तरे ननण विश्वविद्यालय सू डा० डब्लू० एस० एलन जो ससार री करीब चालिस भापाओ रो जानकार है ने अन्तर्राष्ट्रीय ख्याती रा भाषा शास्त्री है वे राजस्थानी भापा रे ध्वनी विज्ञान सबधी जाच वो शोध रो काम सारु सन् १९५२ मे राजस्थान आया हा ने जोधपुर मे दोय मास ठहरिया हा ने भापा रे सिलसिले मे म्हारे कने घणा आता उणाने म्हे ने सीतारामजी दोनू कोश वाली स्लिप कोपिया राय रे वास्ते म्हारे मकान पर दिखाई ही उणा म्हारो उत्साह वधायो उणा री सम्मति नीचे मुजब है —

Thinity College Cambridge **26 Feb., 1960**

It is excellent news for Indo/Aryan Linguistics that the Rajasthan Dictionary of Shri Udayraj Ujjawal and Shri Sitaram Lalas is now to be published Rajasthani has long pressented a serious gap in the comparative Study of the voca-bulary of the Indo-Aryan Languages and now at last it is filled by the evoted work of two Rajasthani Scholars and the support of their distinguished Sponsors I know well and difficulties that have beset the under taking of this task and its Completion is therefore all the more a menument to the courage of these who conceived the project and brought it to fruition With this work added to the grammer by Shri Sitaramji, the status of the Rajasthani language can no Longer be denied

Sd W S Allen M A P H D
Professor of Comprative Philology
in the University of Cambridge

कोश दोय दातार राजपूत सरदारो री रुपया री मदत सू शुरु होय ने पूरो वणियो इण वास्ते पुरानी प्रथा रे माफक महे ता० २६-६-५७ ने इण वाबत काव्य गीत, कविता, रचियो ने सीतारामजी कने भेजीया वो अठे दिया जावे है इणा मे दोनू सरदारा रो धन्यवाद रे तौर पर वर्णन है। इण गीत री सीतारामजी पत्रो मे तारीफ की है।

"गीत" राजस्थानी मे

कोम मरू वाणरो सुणे वण्यो नह किण सू, लाख शब्दो तणे वडो लेखो गया भूपात कवराज गुण गावता, दियो नह ध्यान इण हेत देखो ॥१॥
खूटगा खजाना नरेसो देखता, गया तजमाल ठकरेत गाढा। सेव साहित्य री वणी न किणी सू, लागता पथ घन छोड लाढा ॥२॥
सेव साहित्य ही रहे ससार में, सुजसफल लगावे घणी सरसे। मिले सुखलाध हितकर चित समाजां, दिनो दिन किर्ता सनमान दरसे ॥३॥
पांण मरू वान है प्रांत रो परंपर, वेण परताप राजस्थान ऊंचो। रखी नह पढण मे भावखा प्रात री, निरखता जाय है प्रांत नीचो ॥४॥
वणई चारणो व्याकरण विधोविध्र, वणेगो कोश ही लाख सबदो। सीत रो परिश्रम प्रथग फलियो सिरे, रेटियो 'उदय' मिल सकल सबदो ॥५॥
पोकरण भवानीसीह चापे प्रथम कोश रे हेत धन खर्च कीयो। पडता लांच इण समेरा फेर सू, स्यामसी रोडले काम सीधो ॥६॥
रोडले स्यामसो सपूतो सिरोमण, कमधज आज अखियाज कीधो। वार विपरीति मे हजारो खरचवे, दाद उजल 'उदे' देस दीधो ॥७॥
चारणा दोय मिल व्याकरणकोश रचि,वण्या नह वडो कवराज मिलियो। कमधा दोय मिल कियो सुभ काम जो,महीयो कियो नह बीस मिलियो ॥८॥

कवित

सूर्यमल्ल मिशण से बनाया वस भास्कर, वूदी नृपराम ने खजाना खोल करके।
सावल कविराज ने लिखाया इतिहास त्योही उदियापुर रान के कोष वल धरके।
सीताराम लालस ने की राजस्थानी कोश उदयराज उज्जवल के योग शक्ति भरके।
पोकरण भवानीसिह स्यामसिह रोढला के कोप हित कोष बने दानी धन घर के।
प्रांत की प्रवल भापा प्रतिष्ठित परपरा विवुधन दीनमाल वीरपद धाला है।
शिक्षा को माध्यम निज प्रान्त हूँ मे रखी नही होय कोटि जनता को दास गति डाला है।
डूवत है मात्र भापा वीर राजस्थान केरी, प्रान्त का भविष्य याते दर्शित विदाजा है।
जीवित उट्ठेगी प्रीय राजस्थानी आशामाश्र, व्याकरण कोश याके बनेगे जिशाला है।

Sd ह० उदयराज उज्वल
Sd. Nami chand Jain
Civil Judge Jodhpur

Compared by
Sd Bhawar Singh
Sd लक्ष्मीप्रकाश गुप्ता

संकेत और चिन्ह

सांकेतिक रूप	पूर्ण नाम	सांकेतिक रूप	पूर्ण नाम
अं०	अंग्रेजी भाषा	भू०	भूतकाल
अ०	अरबी भाषा	भू० का० क्रि०	भूतकालिक क्रिया
अक०	अकर्मक	भू० का० कृ०	भूतकालिक कृदन्त
अक० रू०	अकर्मक रूप	भू० का० प्र०	भूतकालिक प्रयोग
अनु०	अनुकरण	म०	मराठी भाषा
अप०	अपभ्रंश	महृ० महत्व	महत्ववाची शब्द
अल्प०, अल्पा०	अल्पार्थ रूप	मा०	मागधी भाषा
अव्य०	अव्यय	यू०	यूनानी भाषा
इब्रा०	इब्रानी भाषा	यौ०	यौगिक शब्द
उप०	उपसर्ग	रा०, राज०	राजस्थानी भाषा
उभ० लि०	उभय लिंग	रा० प्र०	राजस्थानी प्रत्यय
कर्म वा०, कर्म वा० रू०	कर्मवाच्य रूप	लै०	लैटिन भाषा
क्रि०	क्रिया	व०	वर्तमान काल
क्रि० अ०	क्रिया अकर्मक	व० का० कृ०	वर्तमान कालिक कृदन्त
क्रि० प्र०	क्रिया प्रयोग	वि०	विशेषण
क्रि० प्रे०	क्रिया प्रेरणार्थक	विलो०	विलोम
क्रि० वि०	क्रिया विशेषण	व्या०	व्याकरण
क्रि० स०	क्रिया सकर्मक	शक०	शकन्ध्वादि
गु०	गुजराती भाषा	सं०	संस्कृत
गो० र०	गोरादि	सं० उ०	संज्ञा उभय लिंग
ची०	चीनी भाषा	सं० पु०	संज्ञा पुल्लिंग
जा०	जापानी भाषा	सं० स्त्री०	संज्ञा स्त्रीलिंग
डिं०	डिंगळ	स०	सकर्मक
तु०	तुर्की भाषा	स० रू०	सकर्मक रूप
पं०	पंजाबी भाषा	सर्व०	सर्वनाम
पा०	पाली भाषा	स्त्री०	स्त्री लिंग
पु०	पुल्लिंग	स्पे०	स्पेनिश भाषा
पुर्त०	पुर्तगाली भाषा	उ०	उदाहरण
पृष०	पृषोदरादि	कहा०	कहावत
प्र०	प्रत्यय	क्व० प्र०	क्वचित प्रयोग
प्रा०	प्राकृत	ज० खि०	जगती खिड़ियौ
प्रे०	प्रेरणार्थक	ज्यो०	ज्योतिष सम्बंधी
प्रे० रू०	प्रेरणार्थक रूप	दे०	देखो
फा०	फारसी भाषा	प्रा० प्र०	प्राचीन प्रयोग
फ्रां०	फ्रांसीसी भाषा	प्रा० रू०	प्राचीन रूप
ब० व०	बहुवचन	मि०	मिलाओ
भाव वा०	भाव वाच्य	मु० मुहा०	मुहावरा
भाव वा० रू०	भाव वाच्य रूप	वि० वि०	विशेष विवरण

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

संक्षिप्त नाम	पूर्ण नाम	रचयिता का नाम
अनेक० अनेका०	अनेकार्थी कोश	उदयराम बारहठ
अमरत	अमरत सागर	महा० प्रतापसिंह जयपुर
अ० मा०	अवधान माळा	उदयराम बारहठ
अ० वचनिका	अचलदास खीची री वचनिका	शिवदास गाडण
ऊ० का०	ऊमर काव्य	ऊमरदान लाळस
उ० र०	उक्ति रत्नाकर	साधु सुन्दरगणि
एका०	एकाक्षरी नाम माळा	वीरभांण रतनू, उदयराम बारहठ
ऐ० जै० का० स०	ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह	संपा० अगरचन्द नाहटा
क० कु० बो०	कविकुळ बोध	उदयराम बारहठ
कां० दे० प्र०	कान्हड़दे प्रबंध	पद्मनाभ
गी० रा०	गीत रामायण	अमृतलाल माथुर
गु० रू० बं०	गुण रूपक बंध	केसोदास गाडण
गो० रू०	गोगादे रूपक	पहाड़खा आढौ
डिं० को०	डिंगळ कोश	कविराजा मुरारीदान, बूंदी
डिं० ना० मा०	डिंगळ नाम माळा	हरराज कवि
ढो० मा०	ढोला मारू	सम्पादकत्रय रामसिंह तंवर, सूर्यकरण पारीक व नरोत्तमदास स्वामी
द० दा०	दयाळदास री ख्यात	दयाळदास सिंढायच
द० वि०	दळपत विलास	सम्पादक रावत सारस्वत
देवि०	देवियाण	ईसरदास बारहठ
ध० व० ग्र०	धर्म वर्द्धन ग्रन्थावलि	संपा० अगरचन्द नाहटा
ना० मा०	नाम माळा	अज्ञात
ना० डिं० को०	नागराज डिंगळ कोश	नागराज पिंगळ
ना० द०	नागदमण	सांइया झूला
नी० प्र०	नीती प्रकास	सगरामसिंह मुहणोत
नैणसी	नैणसी री ख्यात	मुहता नैणसी
पं० पं० च०	पंच पंडव चरित्र	सालिभद्र सूरि
प० च० चौ०	पद्मिनी चरित्र चौपाई	कवि लब्धोदय
पा० प्र०	पाबू प्रकास	मोडजी आसियौ
पिं० प्र०	पिंगळ प्रकास	हमीरदान रतनू
पी० ग्र०	पीरदान ग्रन्थावळि	पीरदान लाळस
पे० रू०	पेमसिंह रूपक	प्रतापदान गाडण
बां० दा०	बांकीदास ग्रन्थावळी	बांकीदास
बां० दा० ख्या०	बांकीदास री ख्यात	बांकीदास
बी० दे०	बीसलदे रासौ	कवि नाल्ह
भ० मा०	भक्तमाळ	ब्रह्मदास
भिक्खु०	भिक्खु दृष्टान्त	भीखणजी
भि० द्र०	"	"
मा० कां० प्र०	माधवानल काम कंदला प्रबंध	कवि गणपति

मा० म०-	मारवाड मर्दुमशुमारी रिपोर्ट	मुन्शी देवीप्रसाद
मा० वचनिका-	माताजी री वचनिका	जती जयचन्द
मीरा	मीरा बाई	
मेघ०	मेघदूत	नारायणसिंह भाटी
मे० म०	मेहाईमहिमा	हिंगलाजदान कवियो
र० ज० प्र०	रघुवरजस प्रकास	किसनो आढो
र० रू०	रघुनाथ रूपक	मछाराम
र० वचनिका	रतनसिंह महेसदासोत री वचनिका	जग्गो खिड़ियो
र० हमीर	रतना हमीर री वारता	महा० मानसिंह जोधपुर
रा० जै० रासो	राउ जैतसी रौ रासौ	अज्ञात
रा० जै छंद	राउ जैतसी रौ छंद	वीठू सूजो नगराजोत
रा० रा०	रामरासौ	माधोदास दधवाड़ियो
रा० रु०	राज रूपक	वीरभाण रतनू
रा० व० वि०	राठौड वंस री विगत	अज्ञात
रा० सा० सं०	राजस्थानी साहित्य सग्रह	सग्रह, सम्पादन स्वामि नरोत्तमदास
ल० पिं०	लखपत पिंगळ	हमीरदान रतनू
ला० रा०	लावा रासौ	गोपाळदान कवियो
लो० गी०	राजस्थानी लोकगीत	सग्रह सम्पादन
व० भा०	वंश भास्कर	सूर्यमल मीसण
व० स०	वर्णक समुच्चय	सम्पादक भोगीलाल साडेसरा
वि० कु०	विनयकुमार कृति कुसुमांजलि	कविवर विनयचंद्र
वि० सिं०	विड़दसिंणगार	कविराज करणीदान कवियो
वी० मा०	वीरमायण	बहादर ढाढी
वी० स०	वीर सतसई	सूर्यमल मीसण
वी० स० टी	वीर सतसई री टीका	किसारदान बारहठ
वेलि०	वेलि क्रिसन रुकमणीरी	अज्ञात
वेलि टी०	वेलिक्रिसन रुकमणी री टीका	अज्ञात
शा० हो०	शालि होत्र	अज्ञात
शि० वं०	शिखर वंशोत्पत्ति	गोपाळदान कवियो
शि० सु० रू०	शिवदान सुजस रूपक	लालदान बारहठ
स० कु०	समय सुन्दर कृति कुसुमांजलि	महाकवि समयसुन्दर
सू० प्र०	सूरज प्रकाश	कविराजा करणीदान
ह० ना० मा०	हमीर नाम माळा	हमीरदान रतनू
ह० पु० वा०	श्रीहरीपुरुषजी की वाणी	श्री हरीपुरुषजी
ह० र०	हरिरस	ईसरदास बारहठ
हा० झा०	हालां झाला रा कुंडळिया	" "

चिन्ह

चिन्ह का स्वरूप	स्थान	प्रयोजन
*	शब्द के आगे	यह शब्द कविता मे ही प्रयोग होता है।
'	बीच के अक्षरो के बीच सिर पर	यह ध्वनि-लोपिक चिन्ह है, जहा 'ह' की ध्वनी लोप होती है वहा आता है।
—	शब्द के नीचे	उच्चारण की ध्वनी भिन्नता बतलाता है।
' '	शब्द के दोनो ओर सिरो पर	व्यक्ति वाचक सज्ञा का सूचक

राजस्थांनी सबद कोस

[राजस्थानी हिन्दी वृहत् कोश]

[तृतीय खण्ड]

(तृतीय जिल्द)

भ—देवनागरी लिपि का चौबीसवा व प वर्ग का चौथा वर्ण जो भाषा-विज्ञान व व्याकरण की दृष्टि से द्वयोष्ठ्य अघोष, महाप्राण तथा स्पर्श व्यजन है। पर अत्य भ अशत अघोष रहता है। इसका अल्प प्राण व है।

भइस—देखो 'भैंस' (रू भे)

भइसौ—देखो 'भैंसौ' (रू भे)
(स्त्री० भइस)

भकारी-स० स्त्री० [स० भकार+ङीप्] १ भुनगा।
२ एक प्रकार का छोटा मच्छर जो चौपायो को काटता है।

भख-वि०—१ निर्धन, कगाल, भूखा।
उ०—मन धक पक कुमारग माथै, एवड खक पवित्र इसौ। दिलवड भख 'गभीर' न दूजौ, जाता सख 'गभीर' जिसौ।
—ठाकर गभीरसिंघ री गीत

भग-स० पु० [स० भङ्ग] १ टूटने की क्रिया या भाव, टूट।
२ दरार।
३ घाव, क्षत।
उ०—गुण वाण सीधरिण गाढ, वाहति ताणक वाढ। वदूक वाण मार, भालोड भग समार।—गु रू व
४ पृथकता, अलहदगी।
५ अश, हिस्सा, टुकडा, टूक।
६ निश्चय प्रतीति, नियम आदि मे पडने वाला अन्तर।
७ किसी कार्य को स्थगित करने की क्रिया।
८ वाधा, विघ्न, रुकावट, गडवडी।
उ०—ताहरा राजा लीलानु वोलाई। वोलाइ नै वात पूछी। थारी तपस्या मे भग क्यु हुवौ। मोनु साच कहि।
—देवजी वगडावता री वात
९ प्रतिवध, मुअत्तली।
१० भाग जाने की क्रिया।
११ पराजय।
१२ असफलता।
१३ नाश, वरवादी।
उ०—समळ हुवा कपडा सकळ, भमळ हुवौ घट भग। कमळ वदन कुम्हलायगौ, अमल खायगौ अग।—ऊ का.
१४ कर्त्तव्य व्यवस्था आदि का वीच मे कुछ समय के लिए रुकना और ठीक तरह से न चल सकना।
१५ घवराहट, भय आदि के कारण जन-समूह मे होने वाली हलचल, खलवली, भगदड।
उ०—१ जडामूल उघाडि, भाजि खिडकीगढ दक्खण। हवसीदळ हेहवै मारि लग अग्गी पट्टण। खान देम मरहट्ट वराड मुलक वम कीधा वका, सेतवध रामेस भग पडियौ गढ लका।
—गु रू व
उ०—२ नमै जैसाण', 'खूमाण' धीरै नही, भग उतराघ, गुजरात भीता। हठि चढे पूठि अमि पूठि ' जोवाहरै, जुते गढ सनढ अणजीत जीता।—महाराजा रायसिंघ री गीत
१६ ध्वस।
उ०—लाखूटानी पोळ घोडा १८०,००० अनै हाथी १४,००० एतलो दळ लाखोटानी पोळै थौ। चीत्रोड भग हुवौ। तठै राणी राणी करमेती नू जुहर कियौ।—नैणमी
१७ फेर, मोड।
१८ तह, लहरिया।
१९ सिकुडन।
२० जल-मार्ग, नहर।
२१ मार्ग, रास्ता।
उ०—चौसरै थरा नर कागुरै चाढिया, ऊमरा भुजा-डडा-अडीया, प्रथी रा नाथ वाकौ दुरग पलटता, प्रथी रा गिरवरा भग पडीया।
—गु रू व
२२ छल, धोखा।
२३ अर्दितवात रोग।
२४ एक देश का नाम।
उ०—मगधमडल अग वग कलिंग कासी [कोसल-कुरू] कुसट्ट पचाल जांगल [सुराष्ट्र] विदेह सडिल्ल मलय वत्स मत्स [वरणा] दसारण्ण चेदी सिंधु सूरसेन भग [वट्टा] कुणाल लाट केकय-मडलारद्ध इत्यरद्धपर्चविसति जनपदा आरया।—व स
२५ हानि, क्षति।
उ०—पछै पोहकर री पूजा करण लागा तरै श्री रीसाई नीसरियौ। कह्यौ माहरौ मांन भग कीयौ।—नैणसी
२६ देखो 'वग' (रू भे)
उ०—चडस माय वैठ्यौ मिनख ऊचौ मूडौ करनै कह्यौ—म्हैं नी भूत हू अर नी कोई पलीत। थारै सरीसौ ई मिनख हू। रात रा पाज माथा सू सूतौ सूतौ नीद रे माय थरकीजगौ। इण चडस री भग देखनै माय वैठग्यौ।—फुलवाडी
२७ देखो 'भाग' (रू भे)
उ०—चालाक तौ चहू पिए, भोळा पीए भग। अलीण मू आगा रहै, रजपूता नै रग।—ऊ का

भगअहारी-वि० यौ० [स० भगा+आहार+रा० प्र० ई] भग पीने वाला।
स० पु०—१ शिव, महादेव। (डि को)
२ भाग पीने वाला व्यक्ति।

भगड—देखो 'भगेडी' (मह, रू भे)

भगण-वि०—१ तोडने फोडने वाला।
२ देखो 'भगी' (स्त्री०)

भगणौ, भगवौ—क्रि० अ०/स०[स० भञ्ज्+घञ्] १ टूटना, भग्न होना, खण्डित होना।
२ किसी से हार जाना, दबना।
३ मिटना, नष्ट होना।
उ०—पकवाने पाने फळे सुपुहपं, सुरगं वसत्रं दरव स्रव । पूजियै कमटि भगि वनसपति, प्रसूतिका होळिका प्रव—वेलि
४ भग्न करना, तोडना।
५ किसी को हराना, दबाना।
६ मिटाना, नष्ट करना।
भगणहार, हारौ (हारी), भगणियौ—वि०।
भगाडणौ, भगाडवौ, भगाणौ, भगावौ, भगावणौ, भगाववौ
प्रे० रू०।
भगिओडौ, भगियोडौ, भग्योडौ—भू० का० कृ०।
भगीजणौ, भगीजवौ—भाव वा०/कर्म वा०।

भगविहारी—स० पु० यौ० [स० भगा+विहारिन्] शिव, महादेव।

भगराज—स० पु० [स० भृ गराज] १ कोयल के आकार की काले रग की एक चिडिया।
२ देखो 'भागरौ' (रू भे)

भगरौ—देखो 'भागरौ' (रू भे)

भगवट, भगवट्ट, भगवाट—१ देखो 'भगवट' (रू भे)
उ०—१ पडियौ नेजाळ विढे पाटरियै, भगवट वाट न क्रम भरिया। 'अजमल' तणै खडग रै ओळै, अधिपति मोटा ऊबरिया।
—अजा राजघरीत री गीत
उ०—२ मिटियै निज दळै मिटत जौ 'मधकर', सूर खत्री भगवाट सहि। मेर डिगत सायर क्रम लोपत, अरक मिटत इळ तजत अहि।—महेसदास कल्याणमलोत साग्वला री गीत
उ०—३ घण अस्सि दुरिज्जण घडिय घाइ, रइणाइर वाघउ जोधि राइ। जोधि मेवाड काढिय जडाह, भगवट्ट दीध मोटा भडाह।—रा ज सी

भगाण—स० स्त्री०—१ भागने की क्रिया या भाव, भगदड।
उ०—देवरावर अत घड दीठी, भाटियै भगांण । उळट ढाहण वडा अनडां, मिळौ छडै माण।—हरखौ वारठ
उ०—२ पलाण्यउ अलावदीन, जळ थळ अकुळांणा। राय रांणा खलभळ्या, पड्या दह दिसि भगांणा।—प च चौ
२ धाक, भय, रौब।
उ०—१ माल त्यावै खावै अर वासै आवै तैनू मा'र नाखै। तै मु इयै रो वडो नांम अर देपाळ रा वडा भगाणा पडै।
—देपाल धध री वात
रू० भे०—भगाणा।

भगार—देखो 'वघार' (रू भे)

भगारणौ, भगारबौ—देखो 'वघारणौ, वघारवौ' (रू भे)

भगारियोडौ—देखो 'वघारियोडौ' (रू भे)
(स्त्री० भगारियोडी)

भगि—स० स्त्री० [स०] १ तरीका, ढग।
उ०—१ आकुली कुनवट लोपिय गोपिय रमइ रगि, कास केमि चाणूर ए चूरए जे वहु भगि।—जयशेखर सूरि
उ०—२ गुरि वीनविउ अवसरि राउ 'मविहु वेठा करउ पसाउ। तुम्हि मडावउ नवउ अखाडउ नव नव भगि पूत्र रमाडउ'।
—प प च
२ शरीर के अगो की ऐसी विशिष्ट मुद्रा या सचालन जो किसी प्रकार के मनोभाव का सूचक होती है।
३ टूटन, फूटन।
४ टेढा, सकुडन, घुमाव।
५ फरेव, जाल।
६ विन्यास, विच्छेद।
७ व्यग्योक्ति।
८ रगिकतापूर्ण उत्तर।

भगी—स० पु० [स्त्री० भगण] १ एक अस्पृश्य जाति या इस जाति का व्यक्ति, हरिजन।
उ०—जापा मे खावण वाळी, मै'ला मे पोढ़ण वाली। भगण कोनी जको थारी फूस वुवार दू।—फुलवाडी
अल्पा०—भगीडौ।
स० पु० [स० भग+डीप] १ रेखाओ के झुकाव मे खींचा गया कोई चित्र या वेल-वूट।
[स० भगिन्] २ शिव, महादेव।
३ देखो 'भगि' (रू भे)

भगीडौ—देखो 'भगी' (अल्पा, रू भे)

भगीवाडौ—स० पु० यौ० [राज० भगी+स० पाटक+रा० प्र० डौ]
१ भगियो का मोहल्ला।
२ गदा स्थान।
३ गदगी।

भगुर—वि० [स० भज्+घुरच्] १ टूट-फूट कर विघटित होने वाला।
२ नदी का मोड।
३ नाश होने वाला।
यौ०—क्षण-भगुर।

भगेडी—वि० [स० भगा] वहुत अधिक भांग पीने वाला।
रू० भे०—'भागेडी'।
अल्पा०—भगेडौ, भगेरौ।

भगेडौ, भगेरौ—देखो 'भगेडी' (अल्पा, रू भे)

भगेळ, भगेळियौ—वि० [स० भग+रा० प्र० एल, एलियौ] भागने वाला।

उ०—१ लूटवा वधै फौजा लगम, घमस तुरा भाजै धरा । मिळ चली प्रजा भगेळ मग, लग दिल्ली लग आगरा ।—रा रू

उ०—२ जोडै दूद अनेक या, दोडै तहवरखान । मुरधर प्रजा भगेळिया, किया गिरदे थान ।—रा रू

भज-स० स्त्री०—१ लव, दूरी ।

उ०—आई घटा उतराद री, भज सौ कोसा बीच । मेहा माडिया माचणा, किल भरमाया कीच ।—अज्ञात

२ तोडने या भजन करने की क्रिया या भाव ।

३ वह फसल जो किसी कारणवश खराब हो गई हो एव उस पर दुवारा फसल बोई जाय ।

४ विघ्न, बाधा, अडचन, रुकावट ।

उ०—अै अेकला ई इण घर रा ठेकेदार कीकर वणौ । म्हारै मरिया तौ ईण गवाडी री सुख-सायत मे किणी वात रौ भज नी पडैला ।—फुलवाडी

भजक-वि० [स० भज्+ण्वुल्—अक] १ तोडने-फोडने वाला, भजन करने वाला ।

२ विघ्न या बाधा डालने वाला ।

भजगी-स० स्त्री० [स० भञ्ज्] विघ्न, बाधा ।

भजण-स० पु० [स० भज+ल्युट्—अन्] १ तोडने या भग करने की क्रिया ।

२ ध्वस, नाश ।

३ खडन, भग ।

४ सहार ।

५ पराजय, हार ।

क्रि० प्र०—करणौ, होणौ ।

वि० (समस्त पदो के अन्त मे) १ मिटाने वाला, नाश करने वाला, ध्वस करने वाला ।

उ०—१ आखी मुख राजा 'अजन', साखी तिण ससार । अवतरियौ म्हारै 'अभौ', भौ भजण अवतार ।—रा रू

उ०—२ दीनदयाळ पाळ कर गौ दुज, निज प्रिया सिया मनरजण । जाप 'किसन' मां वाप राम जस, भव त्रय ताप पाप दळ भजण ।—र ज प्र

२ मारने वाला, सहार करने वाला ।

उ०—१ कीया कटकां 'केहरी', भागळ आपाणा । दो मझ 'रासा' दूसरा, भजण सुरताणा ।—द दा

उ०—२ उठियौ तिणवार वडो उतळीवळ, सूरजसिंघ सह (स) वळ । कोपनळ काळ भुजाळ कमधज दोमजि भजण सत्रु दळ ।—गु रू व

३ पराजित करने वाला, हराने वाला ।

उ०—पाट पवै उद्धरण दुजड, भजण दळ लाखा । जुरासिंघ सारिखा, दळण दाणवा असखा ।—गु रू व

भजणौ-वि० [स० भज] १ मिटाने वाला, नाश करने वाला ।

उ०—'भाराणी' दुख भजणौ, गुण रजणौ गहीर । जाम खजानै जात रौ, साहिब कीधौ सीर ।—बा दा

२ पराजित करने वाला ।

उ०—१ वार निरधार आधार, आधार आलम वणौ, सरण साधार जिण विरद सोहै, भिडै दळ भजणा ।—र ज प्र

उ०—२ गढा अगजा गजणा, भिड भजणा अभग । हैमर उरि घर हक्किया, वेऊ थाट वरग ।—महाराजा करणसिंह रौ गीत

३ संहार करने वाला ।

उ०—१ सिर-जोर खग दत सजणा, पह रोर आमय पजणा । भड जुव असता भजणा, रघुराज सता रजणा ।—र ज प्र

४ तोडने वाला, टुकडे करने वाला ।

५ भागने वाला, डरपोक ।

उ०—१ राठोडा री कुळत्रिया, सीळा अभ न धरत । ज्या भरतार न भजणा, से भजणा न जणत ।

—कहवाट सरवहिया री वात

उ०—२ जे जाया रण भजणा इण सू भली अहूत । जिणज्यौ रजपूताणियां, 'पातल' जिसा सपूत ।—जैतदान वारहठ

भजणौ, भजबौ-क्रि० अ० [स० भज्] १ मिटना, नाश होना ।

२ पराजित होना ।

३ सहार होना ।

४ टूटना ।

उ०—अवज्झड अिज्झड भड्ड असव, कटै कर कोपर काळिज कध । भडा वड भजि हुअै वि वि भग, खडक्खड ढल्ल झडज्झड खग ।

—र वचनिका

५ डरकर भागना ।

६ रुपये का छोटे सिक्को मे परिवर्त्तन होना ।

७ देखो 'भाजणौ, भाजवौ' (रू भे)

उ०—१ देवी रूप अधेर रै सूर गजै, देवी सूरज रूप अधेर भजै ।

—देवि

उ०—२ सेन अकव्वर तापडे, आप गयौ खहमग्ग । ज्यो क्रस भजै तन गळै, घण गोळक तन लग्ग ।—रा रू

उ०—३ गहीय पभावइ रिउ हणिउ भजिउ मारग कूडु । धरि पहुत्तउ वेउ मित्त लेउ हेमगडु मणिचूडु ।—प प च

उ०—४ भिडतै दोइ पतिसाह तणा दळ भजिया । तै छळि साहजहान अगजी गजिया ।—महाराज करणसिंह वीकानर रौ गीत

उ०—महाराजा वीर विक्रमादित्य, पर-दुख भजणहार उज्जेण माही राज करै ।—सिंघासण वत्तीसी

भजणहार, हारौ (हारी), भजणियौ—वि० ।

भजिग्रोडो, भजियोडो, भज्योडो—भू० का० कृ० ।
भजीजणो, भंजीजवो—भाव वा०/कर्म वा० ।
भजणो, भजबो—रू० भे० ।

भजाडणो, भजाडबो—देखो 'भजाणो, भजावो' (रू भे.)
उ०—१ जननी धिन जे जन्मिया, 'भीमाजण' कुल भाण। 'माल' भजाडै मेडतै, ग्रणभग फेरी ग्रांण।—द दा
उ०—२ नूरग्रली जखमी हुय नाठो, दूजा तणा किया सिर दूर । देह भजाड विरोळ दिली दळ, हू ग्रायो रावळी हजूर।
—सबलसिह भाटी री गीत

भजाडणहार, हारो (हारी), भजाडणियो—वि० ।
भजाडिग्रोडो, भजाडियोडो, भजाडचोडो—भू० का० कृ० ।
भजाडीजणो, भजाडीजवो—कर्म वा० ।

भजाडियोडो—१ देखो 'भजायोडो' (रू भे)
(स्त्री० भजाडियोडी)

भजाणो, भजावो—क्रि० स० [राज० भजणो क्रि० का प्रे०रू०] १ मिटवाना, नाश करवाना ।
२ पराजित करवाना ।
३ सहार करवाना ।
४ तुडवाना, टुकडे करवाना ।
उ०—तरै कान्ह माहावत नू कह्यो—'हू वीच ग्राऊ छू मानू वीच देनै हाथी कना किवाड भजाय नाख ।—नैणसी
५ भगवाना ।
६ रुपयो को छोटे सिक्को मे परिवर्त्तन करवाना ।
७ मुडवाना ।
८ तह करवाना ।
९ खर्च करवाना ।
१० नियम से विचलित करवाना, प्रण तुडवाना ।
उ०—सूयावडि दूखण घणा, वलि गरभ गलाया । जीवाणी ढोल्या घडा, मील वरत भजाया ।—स कु

भजायोडो—भू० का० कृ०—१ मिटवाया हुग्रा, नाश कराया हुग्रा २ पराजित कराया हुग्रा ३ सहार कराया हुग्रा ४ तुडवाया हुग्रा ५ डरवाकर भगवाया हुग्रा ६ रुपये का छोटे सिक्को मे परिवर्त्तन करवाया हुग्रा ७ मुडवाया हुग्रा ८ तह करवाया हुग्रा. ९ खर्च करवाया हुग्रा १० नियम से विचलित करवाया हुग्रा, प्रण तुडवाया हुग्रा
भजाणहार, हारो (हारी), भजाणियो—वि० ।
भजायोडो—भू० का० कृ० ।
भजाईजणो, भजाईजवो—कर्म वा० ।
भजाडणो, भजाडवो, भजावणो, भजाववो, मजाडणो, मजाडवो, मजाणो, मजावो—रू० भे० ।

भजावणो, भजाववो—देखो 'भजाणो, भजावो' (रू भे)
भजावणहार, हारो (हारी), भजावणियो—वि० ।
भजाविग्रोडो, भजावियोडो, भजाव्योडो—भू० का० कृ० ।
भजावीजणो, भजावीजवो—कर्म वा० ।

भजावियोडो—देखो 'भजायोडो' (रू. भे)
(स्त्री० भजावियोडी)

भड—स० पु० [स० भण्ड] १ एक देश का नाम ।
२ देखो 'भाडो' (मह, रू भे)
उ०—१ सात घात री रोगोकुलोजी, काचो माटी तणो भड । एहवी देह मांनव तणी जी, ते पिण जावणी घड ।—जयवाणी
३ देखो 'भाड' (रू भे)
उ०—२ वेस्यानइ वाली कहिउ, राजि न ग्राविमि रड । विरति परिही विहिची दीउ, भला भवाईया भड ।—मा कां प्र

भडग—स० पु० [स० भाण्डक] १ मिट्टी का वर्त्तन ।
२ सन्यासियो का एक उपकरण ।

भडण—स० पु० [स० भड] १ क्षति, हानि ।
२ कवच ।
३ निन्दा ।

भडणो, भडवो—देखो 'भाडणो, भाडवो' (रू भे)
भडणहार, हारो (हारी), भडणियो—वि० ।
भडिग्रोडो, भडियोडो, भडचोडो—भू० का० कृ० ।
भडीजणो, भडीजवो—कर्म वा० ।

भडफोड—देखो 'भडाफोड' (रू भे)

भडवाडो—स० पु०—भाडने की क्रिया, निंदा, ग्रपकीर्ति ।

भडाइ, भडाई—देखो 'भाडाई' (रू भे)
उ०—साजन को यो गुडालाल, ग्रडियो झटपट नेग चुकाय । भाड भडाई माग रह्या, इन भाडा को नेग चुकाय ।—लो गी

भडाणो, भडावो [भाडणो क्रि० का० प्रे० रू०] १ निन्दा कराना, ग्रपकीर्ति कराना ।
२ विगाडना, दूषित करना ।
उ०—माधव साधन ग्ररठ भडायो, सारो मुख ले घणो खिडायो । छाक पियो जिण पेट छुडायो, सारी पांणी जन्म भडायो ।
—ऊ का

भडाणहार, हारो (हारी), भडाणियो—वि० ।
भडायोडो—भू० का० कृ० ।
भडाईजणो, भडाईजवो—कर्म वा० ।
भडावणो, भडाववो—रू० भे० ।

भडाफोड—स० पु० [स— भाण्ड+स्फोट] किसी गुप्त वात का रहस्योद्घाटन ।
क्रि० प्र०—करणो, कराणो, होणो ।
रू० भे०—भडफोड ।

भडार, भडारउ, भडारउ–स० पु० [स० भाण्डागारम्] १ खजाना, धनागार, कोष।

उ०—१ परिवार पूत पोत्रे पडपोत्रे, अरु साहण भडार इम। जण रूखमिणि हरि वेलि जपती, जग पुडि वाधै वेलि जिम।—वेलि

उ०—२ दादू करता करै निमख मे, ठाली भरै भडार। भरिया गह ठाली करै, ऐसा सिरजनहार।—दादूवाणी

२ भोजन, रसोई।

उ०—१ नारद हेरउ करइ, नवखडि फिरइ, धनद यज्ञ भडारउ करइ इसिउ रावण नरेस्वर।—व स

उ०—२ हा! सुन्दर सुख सागरू, हा! मोटिम भडारउ रे हा! रीहड कुल सेहरउ, हा! गिरूवा गणधारउ रे।

—कवि समय प्रमोद

३ किसी वस्तु या बात का बहुत बडा आधान या आश्रय स्थान।

उ०—जडाव मासी गीत, ओखाणा अर वाता रो अखूट भडार।

—फुलवाडी

३ वह कमरा या कोठरी जिसमे भोजन सामग्री, वर्त्तन आदि रखे जाते है।

४ मालगोदाम।

५ देखो 'भडारौ' (मह, रू भे)

रू० भे०—भडाहर, भोडार।

अल्पा०—भडारियौ।

भडारणौ, भडारबौ–क्रि० स० [स० भाण्डारणम्] गर्भ की जरा को भूमि मे गाडना।

भडारियोडी–भू० का० कृ०—भूमि मे गाडी हुई गर्भ की जरा।

भडारियौ–स० पु० [स० भाण्डागार] १ दीवार मे बना हुआ खानेदार छोटा ताखा या अलमारी।

२ बैलगाडी या तागे आदि वाहनो मे औजार आदि रखने का छोटा सदूकनुमा स्थान।

३ एक प्रकार का सर्प विशेष।

उ०—काम कटारउ वाघइ, धनुसि बाण माधइ, अनत वासिगु अम्रत झरइ, तक्षक करकोट भडारिया, कुलिक उपकुलिक पाय चापइ।—व स

४ देखो 'भडार' (अल्पा, रू भे)

५ देखो 'भडारी' (अल्पा, रू भे)

भडारी–स० पु० [स० भाण्डागारिक] १ भडार का अध्यक्ष।

२ रसोईया।

३ चौहान वश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

स० स्त्री०—४ पृथ्वी, धरती। (डिं को)

५ छोटी कोठरी, खजाना।

अल्पा०—भडारियौ।

भडारौ–स० पु० [स० भाण्डाहार] १ सन्यासियो या साधुओ को खिलाया जाने वाला भोज।

२ दशनामी एव राधास्वामी साधुओ मे मृत्यु के पश्चात् किया जाने वाला बडा भोज।

उ०—कोटै उत्तमगिरजी रा विसनगिरजी, बखतगिर, दोया चेला भडारौ आछौ कियौ आ लारै।—वां दा ख्यात

३ देखो 'भडार' (मह, रू भे)

उ०—मरण तणौ डर कोई नहि, मरणा है इक वारा रे। बहुत निवाज बडा करू, द्यु बहु देस भडारौ रे।—प. च चौ

भडावणौ, भडावबौ—देखो 'भडाणौ, भडावौ' (रू भे)

भडाहर—देखो 'भडार' (रू भे)

भडियोडो—देखो भाडियोडो' (रू भे)

(स्त्री० भडियोडी)

भडीस–वि०—विध्वस करने वाला।

स० पु०—दक्ष प्रजापति।

उ०—जोमगी भडीस ज्याग आयौ ज्यु चडीस जायौ, राजपुत्री आयौ ज्यु थडीस वाळै रेम। ओ डडीस कसीसतौ लागडौ कपीस आयौ, कोडडीस कसीसतौ आयौ गुडाकेस।—हुकमीचद खिडियौ

भडेळ–स० पु० [स० भाण्ड+रा० प्र० एल] वर्त्तनो की ऊपर नीचे के क्रम से जमी हुई कतार।

भडेलौ–स० पु०—मुसलमान जाति का भांड। (मा म)

भडोपकरण–स० पु० [स० भण्डा+उपकरण] गृहस्थ सबधी सामान।

उ०—अतेउर परिवार ले, भडोपकरण सभाय। 'वीतभय' सेती निकली, 'चपा' नगरी जाय।—जयवाणी

भडौ—देखो 'भाडौ' (रू भे)

भणकणौ, भणकबौ—देखो 'भणकणौ भणकबौ' (रू भे)

उ०—१ रत्ता पी गणक्के, कै भणक्के ये बीमाण रभा, लोयणा भणक्क डड मणक्का लेवाण। हुवै पखा भडक्का ग्रीधाण बीर है हणक्के, कैमरा सणक्के वाजै खडक्का केवांण।

—बहादरसिह मेडतिया रो गीत

भणकणहार, हारौ (हारी), भणकणियौ–वि०।

भणकिओडो, भणकियोडो, भणक्योडो—भू० का० कृ०।

भणकीजणौ, भणकीजबौ—कर्म वा०।

भणकियोडो—देखो 'भणकियोडो' (रू भे)

(स्त्री० भणकियोडी)

भणक्कणौ, भणक्कबौ—देखो 'भणकणौ, भणकबौ' (रू भे)

भणक्कणहार, हारौ (हारी), भणक्कणियौ—वि०।

भणक्किओडो, भणक्कियोडो, भणक्क्योडो—भू० का० कृ०।

भणक्कीजणौ, भणक्कीजबौ—भाव वा०।

भणक्कियोडो—देखो 'भणकियोडो' (रू भे)

(स्त्री० भणक्कियोडी)

भणणी, भणवौ—देखो 'भणणी, भणवौ' (रू भे)
भणणहार, हारौ (हारी), भणणियौ—वि०।
भणिश्रोडौ, भणियोडौ, भण्योडौ—भू० का० कृ०।
भणीजणौ, भणीजवौ—कर्म वा०।

भणियोडौ—देखो 'भणियोडौ' (रू भे)
(स्त्री० भणियोडी)

भत, भति, भती—१ देखो 'भात' (रू भे)
२ देखो 'भाति' (रू भे)
उ०—१ ज्यू कामण पोसाग कर, पाछा न् पेखत। भागळ पाछे भाळ ही, भाजती इण भत।—वा दा
उ०—२ सउदागर राजा कन्है, अरज करइ एकति। साल्हकुवर सू वीनती, कहि कुण दाखू भति।—ढो मा
उ०—३ राजा झूलरि राणिया, सोहै ईही भति। किरि वेधाणी किरतियां, चदौ पूनम रति।—गु रू व
उ०—४ दास पच अग्र रहै दुरती, भारत पाच पांडवा भती। भटकै क्रोध झाळ धुवि भूमी (भो), अरक उठै थामै रथ ऊभी।
—सू प्र

भवोळी—देखो 'वदोळी' (रू भे)
भदोळौ—देखो 'वदोळौ' (रू भे)

भदौ—देखो 'वाघ' (रू भे)
उ०—जद चवळ का भदा पर ही पीळी माटी पोती जावै, कोई पूछै 'या काई छै ?' तो वेलदार तक झल्लावै। 'नेरू', 'नदा', 'देसाई' नैं ही जद ई की चिंता कोनै, चावै जद ही भदौ टूट'र भारत की जनता वै जावै।—तिरमा

भफोड—देखो 'भूफोड' (रू भे)
उ०—भफोड-लगी तूवा तुवी, ऊची केल त्रिसूळ है। सैल-घोरिया, वेल-मुरडा, मुरघर सकर मूळ है।—दसदेव

भम-स० पु०—१ घूआ।
२ अधिक बालो का समूह।

भमर-वि० [स० विह्वल] १ घवराया हुआ, व्याकुल।
उ०—भड खळिया भमर, वेहक वज्जर, वदिया पक्खर, विहड वपै। पळ खडिया पजर पडै पचाहर, जे जै सकर सकति जपै।
—गु रू व
२ भयभीत, भयातुर।

भमरभोळी, भमलभोलौ-वि० [स० विह्वल+अमुग्धक प्रा० भिम्भल-भिभल+भोल्लअ—भोलअ] (स्त्री० भमरभोळी) १ भोला, सरल, सीधा।
उ०—१ भमरभोळी पहिर चोळी, अवर दक्षण चीर। चालता गजहस गयणी, वोलतीय गभीर।—रुक्मणि मगळ
उ०—२ भमरभोली नेमि जिण वीवाह सुणेई, नेह गहिल्ली गोरडी हियडइ विहसेई।—नेमिनाथ फागु
उ०—३ भमलभोलिय वाल रगि नव फागु रमते, दुक्खिय विरहिणी नयण नीरू नीझरण झरते।—नेमिनाथ फागु
रू० भे०—भमरभौळिउ, भमरभोल्यि, भांमरभोळव, भामरभोळवौ, भामरभोळी, भाभळभोळी।

भमा-स० पु०—एक प्रकार का वाद्य।
उ०—भमा मडग मद्दल कटव भरलरि हुडुक्क कमाला। काहुल तिलिमा वमो सखो पणवो य वाग्ममो।—व. स.

भमार-वि०—१ वहुत वडा।
उ० छुरू खजरू के विहार सूर सवरू असे दरसाए सुपेत ताल भमार घाट मानू नारनोळ की लूट खूटै।—सू प्र
२ देखो ववार' (रू भे.)
उ०—१ घण घाइ मुगुल्लां घडिय घट्ट, रहचिवा थट्ट हुई आहरट्ट। सेलार महइ सारीर सार, माले भमार पट्टे पहार।—रा ज. सी
उ०—२ वार विकरार सिरदार विघ वाहियो, समर भर भार घर भार सूरै। सार सेलार ऊआर भमार सर, पार चोधार कर पार पूरै।—महाराजा जमवतसिंह रो गीत
उ०—३ कोमड गरज हुए हलकार, भडा भालोड करत भमार।
—गु रू व.

भमारी-स० पु०—१ जैसलमेर का एक प्रदेश जहा पहले अडकमल भाटियो का राज्य था।
उ०—माड मे वारह गाव जडा भाटिया रा जडे कहावे। माड मे अडकमला भाटिया रा गांव वारह भमारौ कहावै।
—वा दा ख्यात
२ देखो 'ववार' (अल्पा, रू भे)
उ०—भमारा भभक्कै, चोरगा उचक्कै, करै वीर हक्क, छके जाणि छक्क।—सू प्र
३ देखो 'ववारौ' (रू भे)

भमीर-वि०—भयानक, भयजनक।
उ०—खोटवै साकळा सिंघ वाज रै किलफफा खुलै, भीम तैण गजा भूलै गाज रै भमीर।—गभीरसिंघ सोलकी रो गीत

भभूळियौ—देखो 'वघूळो' (अल्पा, रू. भे) (शेखावाटी)
भभूळौ—देखो 'वघूळौ' (रू भे)

भमेडी-स० पु०—एक वृक्ष विशेष।
उ०—भीलामां नइ भालकी, भरडु वरिंगि भागि भमेडी अह्लांड घण, भोजपत्र भड चगि।—मा. का प्र

भमेरणौ, भमेरवौ-क्रि० स०—कुपित करना, क्रोधित करना।
उ०—नान्हा ते मत जाणि नान्हा, छिद्र पराया राखे छाना। अधिकारी म करे अदिखाइ, भमेरे मत भूप भखाइ।—घ घ ग्र
भमेरणहार, हारौ (हारी), भमेरणियौ—वि०।

भभेरिश्रोड़ो, भभेरियोड़ो, भभेरचोड़ो—भू० का० कृ० ।
भभेरीजणो, भभेरीजवो—कर्म वा० ।

भभेरियोड़ो–भू० का० कृ०—कुपित किया हुआ, क्रोधित किया हुआ. (स्त्री० भभेरियोडी)

भभेरी–स० स्त्री०—एक देश का नाम ।
उ०—उडीसा रौ नइ नाइलो, चीरण भोट चदेरी । गवड देस वइ-रागर सागर, जाळधर भभेरी ।—रुकमरिण मगळ

भभो–स० पु०—१ एक वाद्य विशेष ।
उ०—रास मधु माववइ देति रभा, सुगुरू गायति वायति भभा । तेजपुज जिमसे भेइरषी, जुग प्रधान गुरु पेखउ भवि ।
—ऐ जै का स

भभो–स० पु० [स० वैभव] १ धन्धा, कार्य ।
उ०—करमाणद' आरणद कहै, भभो करत म लज्ज । ईंधरण माथै आंणियै चूल्हे वाळरण कज्ज ।—करमाणद
२ देखो 'वैभव' (रू भे)

भमर—१ देखो भवर' (रू भे)
उ०—१ जिरण वहु वार मुगळ दळ जीता, प्रजळे तेरिण दिलेस्वर पजर । असपति सोच पडे पीळा अगि, मिळ वहु सोच पडै मुख भमर ।—सू प्र
उ०—२ को लाहै लोभिया, मोत चाहै अरणखूटी । कमरण पांरण पाकडै, वीज असमारण विछूटी । मग सागर तजि सुद्ध, भमर कुरण वेडो घल्लै । अहि कमरण श्रोटवै, कमरण रसरणा कर झल्लै ।
—रा रू
२ देखो 'भ्रमर' (रू भे)
उ०—सार री भमर 'रतनेस' 'भाना' सुतन, भूपति 'मान' रै मनै भायो । घवस ढूढ़ाड जळ चाढ़ मारूघरा, इसै छक आपरै दुरग आयो ।—ठाकर रतनसिंघ चापावत रौ गीत

भमरकडी—देखो 'भवरकडी' (रू भे)
उ०—उदावत केहरसिंघ जी रै गळा मे भमरकडी रहती, नित्य सेर पक्की खीचडी खातो ।—वां दा. ख्यात

भमरगुजार—देखो 'भवरगुजार' (रू भे)

भमरगुफा—देखो 'भवरगुफा' (रू भे)

भमरछैल—देखो 'छैलभवर' (रू भे)

भंमरजाळ—देखो 'भवरजाळ' (रू. भे)

भमरभीख—देखो 'भवरभीख' (रू. भे)

भमराई—देखो 'भवराई' (रू भे)

भमरामाटी—देखो 'भवरामाटी' (रू भे)

भमराळ—१ देखो 'भवराळो' (मह, रू भे)
२ देखो 'भ्रमर' (मह, रू भे)

भमराळो—देखो 'भवराळो' (रू भे)
(स्त्री० भमराळी)

भमरो—१ देखो 'भ्रमर' (अल्पा, रू भे)
२ देखो 'भवर' (अल्पा, रू भे)
(स्त्री० भमरी)

भमळ—देखो 'भवळ' (रू भे)

भयाण—देखो 'भयानक' (रू भे)

भवण—१ देखो 'भवळ' (रू भे)
२ देखो 'भूरण' (रू भे)

भवणो, भववो–क्रि० अ० [स० भ्रमणम्] १ घूमना, फिरना ।
उ०—वोदा रै आडा वहे, सोदा मिळनै सेंग । भूकोडा भवता फिरै, लाडू खावै लेंग ।—ऊ का
२ चक्कर खाना, भटकना ।
उ०—परदार प्यार हुयगो प्रमत, विन सीगा रो वेलिया । भोग रे माय भवतो भवर, गयो जनम सव गेलिया ।—ऊ का
मुहा०—अकल भवरणी—वुद्धि भ्रष्ट होना ।
३ उडना ।
उ०—तितरै एक सावळी भवती भंवती पातसाह वैठो थो तठै ऊपर आई ।—नैरणसी
४ मुडना, वक्राकार हो जाना ।
५ भ्रम मे पडना, भ्रमित होना ।
भवणहार, हारो (हारी), भवणियो—वि० ।
भवाडणो, भवाडवो, भवाणो, भवावो, भवावणो, भवाववो
—प्रे० रू० ।
भविश्रोड़ो, भवियोड़ो, भव्योड़ो—भू० का० कृ० ।
भवीजणो, भवीजवो—भाव वा० ।
भमणो, भमवो, भम्मणो, भम्मवो, भवणो, भववो—रू० भे० ।

भवर–स० पु० [स० भ्रमर=चक्कर, गोल] १ नाक का आभूषरण विशेष ।
उ०—१ वना रे, सोनो लका देम रो स रे घर आरणा, थारी रै वनडी रे भवर घडाय, वनी तो लागै प्यारी रे, पुसवन की सुगव सवाग्री रे ।—लो गी
उ०—२ सोनो थे भल ल्यावो, जी वना म्हारा, रूपो थे भल ल्याय । मोती समदा पार का,जी वना म्हारा, चून्यां भवर जडाय ।
—लो गी
२ पानी के वहाव मे रुकावट आने अथवा अन्य किसी कारण-वश लहरो द्वारा वना हुआ आवर्त्त या चक्कर ।
उ०—१ चित विपदा वारिधि पार करन के चाही । अद विच मे आती नाव भवर मे आई ।—ऊ का
उ०—२ इउ वहत भंवर मज पडीयै आय । ताहा नाव थरर डिगमिगत ताय ।—रामदान लाळस
[स० भ्रमर =भौरा=श्याम] ३ श्याम रग ।
उ०—मेटिया केइक पीळा पमग, सोनरे कइक धूसर सुरग । अरण थाग वेग केई भवर अग, रेसमी पोत किरमची रग ।—पे रू

४ मकान का गदा पानी जाने के लिए जमीन में बना हुआ गड्ढा ।
५ गेहूं की फसल का एक रोग ।
६ एक केन्द्र पर घूमे हुए बालो या रोओ का स्थान, जो स्थान-विशेष पर होने के कारण शुभ या अशुभ माना जाता है ।
अल्पा०—भवरी ।
७ घास का गोलाकार ढेर ।
[स० भ्रमर =मस्त] (स्त्री० भवरी) ८ वह लडका जिसका पितामह जीवित हो । (पौता)
[स० भ्रमर =रसिक] ९ पति, स्वामिंद ।
उ०—किम कटै पाप दुख सुख किया, साधे ज्यु द्विज सघाय लू ।
इरण भवर हूत अब दे अलख, विधवा-पगू बधाय लू ।—ऊ का
१० श्याम रग का घोडा ।
उ०—नेह निज रीझ री बात चित ना धरी, प्रेम गवरी तणौ नाहिं पायौ । राजकवरी जिका चढी चवरी रही, आप भवरी तणी पीठ आयौ ।—गिरवरदान सादू
वि०—१ श्याम रग का, काले रग का ।
२ रसिक शौकीन, छैल-छबीला ।
उ०—दारू मास दपट्ट अमल अणमाप अरोगै । चमडपोस रै चौठ भवर मादक सुख भोगै ।—ऊ का
३ मस्त उन्मत्त ।
उ०—१ सो कुवरसी वडौ दातार जुझार भवर छै ।
—कु सांखला री वारता
उ०—२ चवरी ऊपर बीद जाय जिण भात विहसतौ बिळकुळतौ अलवलियौ भवर हुवौ थको ताखडौ कवरा रा साथ नू लेनै तुरी तोरिया ।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात
४ देखो 'भ्रमर' (रू भे)
उ०—१ जलज प्रभूपद जाण, दै सुगध निरवाण पद । सो मन भवर प्रमाण, रात दिवस विलम्यौ रहै ।—र रु
उ०—२ सखी भरोसौ नाह रौ, सूतो सदन म जाण । फूल सुगधी फौज मे, आसी भवर उडाण ।—वी स
(स्त्री० भवरी)
रू० भे०—भमर, भउर, भमर, भवर, भवर ।
अल्पा०—भमरौ, भवरियौ, भवरौ, भवरचौ, भउरो, भमरडौ, भमरडौ, भमरलउ, भमरलु भमरलौ, भमरियौ, भमरौ, भमरचौ, भवरियौ ।
मह०—भमराण ।

भवरकडी—स० स्त्री० यौ० [स० भ्रमर+कटक] १ पशुओ के गले की सिकडी या पट्टे मे लगी हुई लोहे या पीतल की कडी, जो कील मे इस प्रकार से जडी रहती है कि पशु चाहे जिधर चक्कर लगाए उसकी सिकडी मे बल नही पडता । घूमने वाली कुण्डी या कडी ।
उ०—१ जिका री सूहहथ सोहनाळ, हाथ भर नस, वडरै पान जिसा कान, ताजणांरीद पूंछ, नाहर सा पजा, बाघरी आख, पातळी लीकजाट आंठू । इरण भातरा कुत्ता । बनाती पटा, रूपैरी भवरकडी, रेसमी डोर, काना मे रूपै सोनैरा बेवळा, गळै मे निजर रा तादत । इरण भात सू आगे हाजर हुया छै ।—रा सा स
उ०—२ ऊदावत केसरीसिंघजी रा गळा मे भमरकडी रहती । पालगीखाना मे कैद रहता । सेर पक्का री नित खीचडी खाता । सवत् १८१८ रै रामसरण हुआ ।—बा दा ख्यात
रू० भे०—भमरकडी, भमरकडी, भम्मरकडी ।

भवरगुजार—स० पु० यौ० [स०] १ राजस्थानी (डिंगल) का एक अष्ट-पदी छद विशेष ।
वि० वि०—प्रथम प्रकार के भवर गुजार मे पूर्वार्द्ध के प्रथम पद मे १६ मात्राए, द्वितीय व तृतीय पद मे दो लघु सहित १४-१४ मात्राए, चौथे पद के अत मे दो गुरु सहित ६ मात्राए रहती हैं । इसी प्रकार उत्तरार्द्ध की रचना भी की जाती है । द्वितीय प्रकार के भवरगुजार के पूर्वार्द्ध मे प्रथम व द्वितीय पद मे क्रमश १८-१४ मात्राए, तृतीय पद मे १६ और चतुर्थ पद मे अत गुरु वर्ण सहित ६ मात्राए होती हैं । इसी प्रकार से उत्तरार्द्ध भी बनाया जाता है ।
२ भौंरे का गुजन या आवाज ।
रू० भे०—भमरगुजार भमरगुजार, भम्मरगुजार, भवरगुजार ।

भवरगुफा—स० स्त्री० यौ० [स० भ्रमर+गुहा] १ योग के अनुसार ब्रह्म रध्र के नीचे स्थित ६ चक्रो मे से एक चक्र, जिसका स्थान भौंहो के बीच माना जाता है ।
२ अधेरी कोठरी ।
उ०—रमणी वरहीनां निरख नवीनां, राम रांम रणकन्दा है । कन्द्रप रा कीटा फबतन फीटा, भवरगुफा भणकन्दा है ।—ऊ का
रू० भे०—भमरगुफा, भमरगुफा, भम्मरगुफा ।

भवरछैल—देखो 'छैलभवर' (रू भे)
उ०—चाह करीर कली अप चटके, भवरछैल वेस्या घर भटकै । पत महुआ मम दानी पटकै, क्षत्रिय वस वाद मिळ खटकै ।
—ऊ का.

भवरजाळ—स० पु० यौ० [स० भ्रम+जाल] १ सासारिक झगडा, बखेडा या सामाजिक बंधन ।
२ उलझन ।
उ०—तपसी तो भूडा भवरजाळ मे फसियो । आपरा मन री वात वो खुद हाल तक सावळ नी समझियो तो आनै कीकर सुभट सम-झावै । वो तो फगत आ वात जाणै के आज उणरा मन री गत भूडी वदळी ।—फुलवाडी
३ छल, कपट ।
उ०—मिनखां रै भवरजाळ मे लुगाया इण भात अळूझियोडी रै'वै के वै हजार वरस साथै रै'वै तौ ई आपरा धणी नै सावळ पिछाण नीं सकै । धणी रा साचैला रूप री ठोड लुगाई सगळी कमर

घणी रा भरम नै पूजै ।—फुलवाडी

४ अशुभ रग का घोडा ।

रू० भे०—भमरजाळ, भमरजाळ, भम्मरजाळ, भवरजाळ ।

भवरतिलक–स० पु० सीस पर बाधने का एक आभूषण ।

रू० भे०—भवरतिलक ।

भवरभीख–स० स्त्री० [स० भ्रमर+भिक्षा] भौंरे के समान घूम-घूम कर मागी जाने वाली भिक्षा ।

रू० भे०—भमरभीख, भमरभीख, भम्मरभीख, भवरभीख ।

भवराई–स० स्त्री० [राज० भवर+आई] शौकीनपन, छैलछवीलापन ।

रू० भे०—भमराई, भवँराई, भमराई, भवराई ।

भवरामाटी–स० स्त्री० यौ० [स० भ्रमर+मृत्तिका] १ भौरी द्वारा अपने प्रसवकाल मे अण्डो की सुरक्षा हेतु दीवारो व अघेरी जगहो पर बनाया जाने वाला मिट्टी का घर ।

२ उक्त घर की मिट्टी, जो औषधियो के काम भी आती है ।

वि० वि०—प्राचीन धारणा के अनुसार भौंरी द्वारा इस मिट्टी के घर मे रखे गये कीट को अपना अडा मानकर प्रेम से सेने के कारण वह कीट भौंरे मे परिवर्तित हो जाता है। किन्तु नवीन खोज से यह स्पष्ट हो गया है कि यह कीट भौंरी अण्डो के साथ अपने बच्चो के भोजन निमित्त रखती है । जिससे खुराक पाकर बडे होने पर बच्चे उस मिट्टी के घर को फोडकर बाहर निकल जाते हैं ।

रू० भे०—भमरामाटी, भौंरामाटी, भमरामाटी, भम्मरामाटी, भवरामाटी ।

भवराळ—देखो 'भवराळौ' (मह , रू भे)

उ०—तू गहलो तू सानियौ, तू भोळौ भवराळ । मूळ मघा मे तू हुओ, तातै सरस लवाळ ।—गजउद्धार

भवराळौ–वि० [स० भ्रम +आलुच्] (स्त्री० भवराळी) १ गोलाकार, या चक्करदार ।

उ०—चूडौ चमकीलौ कचवीडी चमकै, दामण दमकीलौ दामणी सी दमकै । भवरचौ फुरणी मे भवराळौ भळकै, पाधर वहती रा पसवाडा पळकै ।—ऊ का

[स० भ्रमर+आलुच] २ श्याम वर्ण वाला, काला ।

रू० भे०—भमराळौ, भमराळौ, भवराळौ ।

मह०—भमराळ, भवराळ, भमराळ ।

भवरियौ, भवरचौ—१ ढूढाड प्रान्त मे लडकी को विदा करते समय गाया जाने वाला लोक गीत ।

२ देखो 'भवर' (अल्पा , रू भे)

उ०—१ चूडौ चमकीलो कच वीडी चमकै, दामण दमकीली दामणी सी दमकै । भवरचौ फुरणी मे भवरालो भळकै, पाधर वहती रा पसवाडा पळकै ।—ऊ का

उ०—२ हू थाने पूछा वात, हस हस पूछां वात हगामी ढोला रे । भवरियौ छैलो मारे झमीखेह घणी हो राज ।—लो. गी

उ०—३ भवरिया रै जलमियां अवै गाव मे ई कमाई करणा सू पूग नी आवै । दिसावर जाणौ पडैला ।—फुलवाडी

३ देखो 'भ्रमर' (अल्पा., रू. भे)

भवरी–स० स्त्री०—१ टिटहरी पक्षी, टीटोडी ।

उ०—भारत मे भवरी का इडा ता पर गज का घट धरै रे ।

—अज्ञात

२ देखो 'भवर' (स्त्री०) (रू भे)

३ देखो 'भवर' (अल्पा., रू भे)

४ देखो 'भ्रमर' (स्त्री०)

रू० भे०—भमरी ।

भवरौ—१ देखो 'भ्रमर' (अल्पा , रू भे)

उ०—१ फूलै व्रछ हमेस मणकता भवरा छाजै । पोयण वारौ' मास सारसा पगत राजै । नम नाखै असमान मोरिया इमरत घोळै । मन री मूगी रैण चानणी धौळ उभोळै ।—मेघ

उ०—२ मछली रस जिव्हा के लालच, कटक पास मरीजिये । भवरा घ्राणवसी दुख पावै, फूला माये कमलीजिये ।

—श्री सुखरामजी महाराज

भवळ–स० स्त्री० [स० भ्रम] १ चक्कर लगाने की क्रिया या ढग ।

२ चक्कर ।

उ०—लिलाड सू धग-धग लोई री राती धार छूटी । भवळ खाय नै उण री धणी तडाच देती री जमी आय पडचौ ।—फुलवाडी

रू० भे०—भंमळ, भवण, भमळ, भवण ।

भवहारौ—१ देखो 'भ्रू' (रू भे)

उ०—उपर जिया धनूख उणिहारै, भमर वाक पकति भवहारै । मौसर ममर अहर पर वाळक, विहुवै जुलफ जाण अहि वाळक ।

—सू प्र

२ देखो 'भवारौ' (रू. भे)

भवाडणौ, भवाडवौ—देखो 'भवाणौ, भवावौ' (रू भे)

भवाडणहार, हारौ (हारी), भवाडणियौ—वि० ।

भवाडिओडौ, भवाडियोडौ, भवाडचोडौ—भू० का० कृ० ।

भवाडीजणौ, भवाडीजवौ—कर्म वा० ।

भवाडियोडौ—देखो 'भवायोडौ' (रू भे)

(स्त्री० भवाडियोडी)

भवाणौ, भवावौ–क्रि० स० [भवणौ क्रि० का प्रे० रू०] १ घुमाना, फिराना ।

उ०—कागला रै भवाय नै कांमडी री मैली जको कागलौ तौ उठै ई ठाय रैंगौ ।—फुलवाडी

२ चक्कर खिलाना ।

भवाणहार, हारौ (हारी), भवाणियौ—वि० ।

भवायोडौ—भू० का० कृ० ।

भवाईजणौ, भवाईजवौ—कर्म वा० ।

भवाड़णी, भवाड़बो, भवावणी, भवावबो, भमाडणी, भमाडबो, भमाणी, भमाबो, भमावणी, भमावबो, भवाणी, भवाबो, भयावणी, भयावबो—रू० भे०।

भवायोड़ो-भू० का० कृ०—१ घुमाया हुआ, फिराया हुआ। २ चक्कर खिलाया हुआ।

(स्त्री० भवायोड़ी)

भवारो-सं० पु०—१ भूमि में नीचे बनाया हुआ कमरा या कोठरी, तहखाना।

उ०—राजमैं'ला में जायनै वो तो रिसाणो करनै ऊंडा भवारा में जायनै सूतग्यो।—फुलवाड़ी

रू० भे०—भवहारो, भुंहरो, भुवारो, भुहरो, भुहारो, भुग्ररो, भुग्रारो, भूंहरो, भूं'रो, भूवारो, भूहरो, भूहारो, भौंहरो, भौग्रारो, भौंहारो।

उ०—१ दीन माथै कठैई रुगता री लवलेस नीं। भोंयरा अर भवारा में ई चाळां री रोताई—फुलवाड़ी

भयावणी, भयावबो—देखो 'भवाणी, भवाबो' (रू भे)

भवावणहार, हारो (हारी), भयावणियो—वि०।

भवाविग्रोड़ो, भवावियोड़ो, भवाव्योड़ो—भू० का० कृ०।

भवावीजणो, भवावीजबो—कर्म वा०।

भवावियोड़ो—देखो 'भवायोड़ो' (रू भे)

(स्त्री० भवावियोड़ी)

भवियोड़ो-भू० का० कृ० [सं० भ्रमित] १ घूमा हुआ, फिरा हुआ, भटका हुआ. २ चक्कर खाया हुआ ३ मुड़ा हुआ, वक्रित हुआ हुआ (स्त्री० भवियोड़ी)

भवंराई—देखो 'भंवराई' (रू भे)

उ०—भंवंराई का पेच मरोज भगाडिया। विष ऊतरियो श्राय सहेली चाडिया।—बगसीरामजी प्रोहित री वात

भस—देखो 'विध्वंस' (रू भे) (जैन)

भसम—देखो 'भस्म' (रू भे)

भगा-सं० पु०—चौरासी प्रकार के चौहट में से एक प्रकार का चौहटा।

भ-सं० पु० [सं० भग] १ अग्नि। २ गृह। ३ जल। ४ दीप्ति। ५ नक्षत्र। ६ नग। ७ पर्वत, पहाड़। ८ भय। ९ भानू। १० भूप, राजा। ११ भ्रमर। १२ राशि। १३ शनि। १४ सेवा। १५ सताइस की संख्या। ० (एका०)

[सं० भ] १ भार्गव। २ भ्रम। ३ माया। ४ शुक्रग्रह। ५ शुक्राचार्य। ६ छंद शास्त्रानुसार 'भगण' नामक गण का संक्षिप्त रूप। (एका०)

भइंस, भइंसि—देखो 'भैंस' (रू भे)

उ०—भइंसि [illegible] राती, [illegible] भनिहि श्रणी-याली। आज राउ रमणी मुझ होसिइ, आज वस कौरव मुझ खोसिइ।—सालिसूरि

भइसौ—देखो 'भैंसौ' (रू भे)

उ०—जमराउ भइसा रूपि पाणी वहइ, सातइ समुद्र स्नान करावइ—व स

(स्त्री० भइस, भइसि)

भइ—१ देखो 'भय' (रू भे)

उ०—भइ वहतरि ऊमरां खान सतरि थरहरिया।—गु रू व

२ देखो 'भाई' (रू भे)

भइण, भइणि, भइणी—देखो 'बहन' (रू भे)

उ०—भाइ मुकी भइण, भइणि पिण मूक्या भाइ, अधिको व्हालो अन्न, गइ सहु कुटुंब सगाइ।—स. कु

भइयौ—देखो 'भाई' (अल्पा, रू भे)

भइरव—१ देखो 'भैरव' (रू भे.)

उ०—१ कतास अतलस खासु कमसू भइरव, मिस्रु भइरव, रेसमी भइरव लाहि महीमुदीसाही मलमलसाही प्रमुख नाना विध भातिना नाना विध देसनां वस्त्र आणी समस्त परिवार नगर लोक पहरावी नामस्थापना कीधी।—व स

उ०—२ तोही आगू भइरव चापा का फूल, चोवा चदन अग कपूर। पाका पान घउट दुली, जाई सेवती, नीर वाली का फूल।
—बी. दे.

२ देखो 'भैरवी' (रू भे)

उ०—जिमणी भइरव कलकलइ, डावी दुरगा होइ। गौ वत्स साहमी मिलइ, सुहवि जाती सोइ।—मा का प्र

भइरवी—देखो 'भैरवी' (रू भे)

भइसाइत-स०पु० [स० महिष+रा० प्र० आइत, प्रा० महिस] भैंसा रखने वाला।

उ०—माली कदोई कुमार, गाछा मरदनाश्रा सूत्रधार। भइसाइत तवोलि जाणि, तुमु सोनार तू हईइ आणि।—नळदवदती रास

रू० भे०—भाइमाइत।

भइसि—देखो 'भैंस' (रू भे)

भई—देखो 'भाई' (रू भे)

उ०—करि कल्पना अनेके परि पूरण सर ते जोई। सू भई, भ्रमरि भरु छि अम्रत पूरण समी निचोई।—नळाख्यान

भईया-स० स्त्री०—गाने वजाने वाली जाति विशेष।

भउर—देखो 'भवर' (रू भे.)

भउरी-स० स्त्री०—घोडे का नथुना।

उ०—कागरि कम्न कुम्गुह कध, वइगणा वेस लुहमणी वध। वीरमदे चडियउ भउरि वगि, नह्वावि आम्मि असमाणि लग।
—र ण सी

भउरौ—१ देखो 'भवर' (रू भे)
२ देखो 'भ्रमर' (रू भे)
३ देखो 'भ्रू' (रू भे)

भउ—१ देखो 'भय' (रू भे)
उ०—जिहा गरूग्रा तिहा गाजणउ, कुलीन तिहा लांछण, भाणइ भउ, भूंफि क्षयु, चोरी तु दोरी, चडण तु पडण।—व स
२ देखो 'वहू' (रू भे)

भउजाई—देखो 'भौजाई' (रू भे)
उ०—एक दिवस सुन्दर रूप देखी, राजा चित्त विचारयउ। भोगवु जिम तिम करी भउजाई, राज करई तिहा राजियउ।
—स. कु

भऊ—देखो 'वहू' (रू भे)
उ०—मत वोलो ए भऊ वडा सा वोल म्हारै जायोडो थांनै ल्याया छै, मोल म्हारा नवल वना सरदार वना मुखड़ा री माडण नथ ल्याज्यो।—लो गी

भक–स० स्त्री० [अनु०] १ सहसा या रह-रह कर तग मुह के वरतन से द्रव पदार्थ निकलने या भरा जाने पर अथवा जलने या वेग से धूआ निकलने से उत्पन्न ध्वनि।
२ वकवाद।
क्रि० वि०—३ शीघ्र, तत्काल।
रू० भे०—भक्ख, भख।
४ देखो 'भक्ष' (रू भे)

भकक्षा–स० स्त्री०—नक्षत्र कक्षा।
मि० भग (१)

भकज–वि० [स० भक्षक] भक्षण करने वाला।

भकणौ, भकबौ—१ देखो 'भक्षणौ, भक्षवौ' (रू भे)
२ देखो 'भाखणौ, भाखवौ' (रू भे)
भकणहार, हारौ (हारी), भकणियौ—वि०।
भकिग्रोडौ, भकियोडौ, भक्योडौ—भू० का० कृ०।
भकीजणौ, भकीजबौ—कर्म वा०।

भकियोडौ–भू० का० कृ०—१ देखो 'भक्षियोडौ' (रू भे) २ देखो 'भाखियोडौ' (रू भे)
(स्त्री० भकियोडी)

भकत—देखो 'भक्त' (रू भे)

भकतदास—देखो 'भक्तदास' (रू भे)

भकतवछळ—देखो 'भक्तवत्सळ' (रू भे)

भकती—देखो 'भक्ति' (रू भे)
उ०—तिका यण वार अवतार सकती तणा, भाव भकती तणा घणा-भूका। फजर ग्रहरांण तप तेज मुख फाविया, ढाविया सूळ 'वीकाण' ढूका।—मे म

भकतीकर—देखो 'भक्तिकर' (रू. भे)

भकतीसूतर—देखो 'भक्तिसूत्र' (रू भे)

भकभकणौ, भकभकबौ–क्रि० अ० [अनु०] किसी तग मुह के वरतन से पानी निकालते या डालते समय अथवा अग्नि वेग से जलते अथवा बुझाते समय धूए से भक-भक की ध्वनि होना।
उ०—धूपिया धकै चिटका घिरत धकधकै, वारुणी डकडकै तरफ वामी। वकवकै वीर जोगण छकै दो वखत, भकभकै हुतासण हेत भाभी। —मे म
भकभकणहार, हारौ (हारी), भकभकणियौ—वि०।
भकभकिग्रोडौ, भकभकियोडौ, भकभक्योडौ—भू० का० कृ०।
भकभकीजणौ, भकभकीजबौ—भाव वा०।
भकभक्कणौ, भकभक्कबौ—रू० भे०।

भकभक्क—देखो 'भक (१)' (रू भे.)
उ०—हव पड लडक्क थडक्क हलै, खग भल्ल कडक तडक्क खुलै। भकभक्क रुधक्क खलक्क भल, दक दक्क वकै जव थक्क दल।—पा प्र

भकभक्कणौ, भकभक्कबौ—देखो 'भकभकणौ, भकभकबौ' (रू भे)
भकभक्कण हार हारौ (हारी), भकभक्कणियौ—वि०।
भकभक्किग्रोडौ, भकभक्कियोडौ, भकभक्कयोडौ—भू० का० कृ०।
भकभक्कीजणौ, भकभक्कीजबौ—भाव वा०।

भकभूक–स० पु० [अनु०] महीन चूर्ण, चूरा।

भकभूर–स० पु०—१ नाश।
उ०—१ भव के भवि वे वन धूर धरे, कव के भव के भ्रम दूर करे। भव-वधन का भकभूर करै, चय ससय का चकचूर करै।—ऊ का
उ०—२ हु गजु हय गय सुभट, भाजि करू भकभूर। सतावीस लख दल सहित, साहि करू चकचूर।—प च चौ.
२ ऐसा चूर्ण जिसमे कोई-कोई मोटे कण भी हो।
वि०—१ कायर, डरपोक।
उ०—भयचक हुग्रो अनेक महाभड, दिख री भाज गई भकभूर। ग्रयो (ग्रायो) दिख रइ घट ऊपर, केवा मागण वडउ करूर।
—महादेव पारवती री वेलि
२ धूल पडने के कारण जिसका रग धूसरित या मटमैला हो गया हो, धूसरित।
रू० भे०—भखभूर।
अल्पा०—भकभूरौ भखभूरौ।

भकभूरी—देखो 'भखभूरी' (रू भे)

भकभूरौ–स० पु०—१ धूल से मिलता-जुलता रग।
२ देखो 'भकभूर' (अल्पा, रू भे)
उ०—१ ऊचा नीचा मे आगळ नह ईखै, भागळ भकभूरा भेळा भड भीखै। मगण मगण सू पद पद रद पीसै, हूमा दैसोता दळ ओसळ दीसै।—ऊ का

(स्त्री० भकभूरी)

उ०—२ टोळे रे सिर पर पगडी का वध, लकडी की खूटी पर मकडी का फद। भकभूरा भूरा सा जूडा सा केस, न फीका मुछा कै भादु का भेस।—दुरगादत्त बारहठ

रू० भे०—भगभूरी।

भकल, भकळ–क्रि० वि० [अनु०] १ अपशब्द।

क्रि० प्र०—कहणौ, बोलणौ।

२ देखो 'भक'।

भकाऊ–स० पु०—एक प्रकार का कल्पित और भीषण या विकराल जन्तु या प्राणी, जिसके नाम का उपयोग किसी को बहुत अधिक भयभीत करने के लिये किया जाता है। हौवा।

भकाणौ, भकावौ—१ देखो 'भखाणौ, भखावौ' (रू भे)

२ देखो 'बहकाणौ, बहकावौ' (रू. भे)

भकाणहार, हारौ (हारी), भकाणियौ—वि०।

भकायोडौ—भू० का० कृ०।

भकाईजणौ, भकाईजबौ—कर्म वा०।

भकायोडौ—१ देखो 'भखायोडौ' (रू भे)

२ देखो 'बहकायोडौ' (रू. भे)

(स्त्री० भकायोडी)

भकार–स० पु०—१ 'भ' नामक अक्षर।

२ छन्द शास्त्र मे 'भगण' के लिये प्रयुक्त होने वाला शब्द।

भकारणौ, भकारबौ—देखो 'बाकारणौ, बाकारबौ' (रू भे)

भकारणहार, हारौ (हारी), भकारणियौ—वि०।

भकारिओडौ, भकारियोडौ, भकारयोडौ—भू० का० कृ०।

भकारीजणौ, भकारीजबौ—कर्म वा०।

भकारियोडौ—देखो 'बाकारियोडौ' (रू भे)

(स्त्री० भकारियोडी)

भकारी—देखो 'भम्मारी' (रू भे)

भकावटौ—देखो 'भमावटौ' (रू भे)

भकुड—देखो 'भगूट' (रू भे)

उ०—कोई ऐसा कूजरा, अति प्रचड अद्भूत। रहै भकुडे पैहनै, जाग वर्ण अवधूत।—गज उद्धार

भकूट–स० पु० [स०] विवाह की गणना मे शुभ माने जाने वाली राशियो का समूह।

(फलित ज्योतिष)

भकूडौ–स० पु०—तोप आदि मे बत्ती ठूसने का एक मोटा गज।

भक्खणौ, भक्खबौ—देखो 'भक्षणौ, भक्षबौ' (रू भे)

२ देखो 'भाखणौ, भाखबौ' (रू भे)

भक्खणहार, हारौ (हारी), भक्खणियौ—वि०।

भक्खिओडौ, भक्खियोडौ, भक्ख्योडौ—भू० का० कृ०।

भक्खीजणौ, भक्खीजबौ—कर्म वा०।

भक्खियोडौ—१ देखो 'भक्षियोडौ' (रू भे)

२ देखो 'भाखियोडौ' (रू भे)

(स्त्री० भक्खियोडी)

भक्ख—देखो 'भक्ष' (रू भे)

उ०—१ जग जाळ असराळ छळै इन भक्ख सदा भव सिंधु मही। नभ नाळ तताळ घराळ मिळे, अयलोक सुरप्पति विद्धि सही।

—करुणा सागर

उ०—२ मथे तै बार किता महराण, सुरा ले दीध अम्रत सुजाण। हणै नख वार किता हरणक्ख, भवानी भैरव दीधा भक्ख।—ह र

उ०—३ वैताळ वीर मिळिया विहद्द, सीकोतरि साकणि महा सद्द। मिळ समळ ग्रीध आमख भक्ख, जवक्क रीछ वहाक जक्ख।

—गु रू वं

भक्खणौ, भक्खबौ–क्रि० स०—१ देखो 'भक्षणौ, भक्षबौ' (रू भे)

उ०—१ कमध 'राम' 'केहरी', 'रूप' बोले रज रक्खण। भाव सिंघ 'दळसाह', 'अजन' 'सुन्दर' अरि भक्खण।—रा रू

उ०—२ भोळै परत्र जम भूप रै, पिंड जाणै अहि पाखिया। विण सुरसवध भक्खी विखम, अघ कध उपडाखिया।—सू प्र.

२ देखो 'भाखणौ, भाखबौ' (रू भे)

उ०—पुणै कमण तर पत्र भ्रहम माया कुण भक्खै। मह उत्तर पथ माप आप लहरा कुण अक्खै।—र ज प्र

भक्खणहार, हारौ (हारी), भक्खणियौ—वि०।

भक्खिओडौ, भक्खियोडौ, भक्ख्योडौ—भू० का० कृ०।

भक्खीजणौ, भक्खीजबौ—कर्म वा०।

भक्खर, भक्खरच—१ देखो 'भाखर' (रू भे.)

उ०—१ सपेत दत अग्ग ऐ, घटाक पथ वग्ग ऐ। धजा धैवगरा सिरै, भमै क पख भक्खरे।—गु रू व

उ०—२ फाबत गज, फररत धज। गुडि गैमरय, किरि भक्खरय।

—गु रू व.

२ देखो 'भाखरोत' (रू भे)

उ०—रिणमल इक जोधा अवै अखैरज एक एक लख पक्खर ए। चापा चत्रबाहु अनड चलता, 'परवत' 'डूगर' 'गर' 'भक्खर ए'

—गु रू व

३ देखो 'भास्कर' (रू. भे)

भक्खरी–स० स्त्री०—१ एक प्रकार की रोटी विशेष।

रू० भे०—भखरी।

२ देखो 'भाखर' (अल्पा, रू भे)

भक्खियोडौ—१ देखो 'भाखियोडौ' (रू भे)

२ देखो 'भक्षियोडौ' (रू भे)

(स्त्री० भक्खियोडी)

भक्खी—देखो 'भक्षी' (रू भे)

भक्त–वि० [सं० भक्त] १ किसी पर भक्ति एवं श्रद्धा रखने वाला।
२ किसी का अनुसरण करने वाला, अनुयायी।
३ किसी का पक्ष लेने वाला, पक्षपाती।
सं० पु०—१ भोजन।
२ वह जो श्रद्धा से किसी की उपासना करता हो या पूरी निष्ठा रखता हो।
उ०—ग्राए ग्राए जी महाराज ग्राए, निज भक्तन के काज बनाए। तज वैंकूठ तज्यौ गरुडासन, पवन वेग उठ धाए।—मीरा
३ वह जो धार्मिक वृति रखता हो तथा मास-मदिरा का उपयोग हेय समझता हो।
रू० भे०—भकत, भगत, भत्त।

भक्तता–सं० स्त्री० [सं० भक्ति] भक्ति करने की क्रिया या भाव।

भक्ततारणतरण–वि० यौ० [सं०] भक्तो का उद्धार करने वाला।
सं० पु०—१ ईश्वर।
२ गरुड। (डिं को ३०)
रू० भे०—भक्तातारणतरण।

भक्तदास–सं० पु० [सं०] वह भक्त जिसे अपने सेव्य या स्वामी से भोजन-कपडा मिलता हो।
रू० भे०—भकतदास, भगतदास।

भक्तपरायण–सं० पु०—भक्तो का पालन करने वाला, ईश्वर।
रू० भे०—भगतपरायण।

भक्तवच्छल, भक्तवछळ—देखो 'भक्तवत्सल' (रू भे)
उ०—क्षुद्र घटिका कटि तट सोभित, नूपुर सब्द रसाळ। मीरा के प्रभू सतन सुखदाई, भक्तवछळ गोपाळ।—मीरा

भक्तराक्षस–सं०पु० [सं०] रावण का भाई विभीषण जो श्री रामचन्द्रजी का भक्त था।
रू० भे०—भगतराकस।

भक्तवछल, भक्तवत्सल–वि० [सं० भक्तवत्सल] भक्तो पर दया करने वाला, भक्तो पर स्नेह रखने वाला।
रू० भे०—भकतवछळ, भक्कवच्छळ, भक्तवछळ, भक्तवछळ, भगतवच्छळ, भगतवछळ, भगतवच्छळ, भगतवछळ, भगतविछळ, भगतावछळ, भगतावछळ, भगतिवछळ।

भक्तातारणतरण—देखो 'भक्ततारणतरण' (रू भे)

भक्ति–सं० स्त्री० [सं० भक्त] १ वटवारा, बाट। २ भिन्नता, पृथकता। ३ हिस्सा, विभाग, अश। ४ अनुराग, श्रद्धा। ५ सम्मान, सत्कार, सेवा। ६ मान-प्रदर्शन। ७ सजावट। ८ भोजन।
उ०—१ फूलजी भक्ति जीमिनै चढि पधारिया छै।
—लाखै फूलाणी री बात।
उ०—२ साहरा उठा रा चढिया पूरणमल नू लेहीज ग्राया। ढूढाड माहे ग्राय नै उठै पूरणमल नू भक्ति कर घोडो दे ग्रर विदा कियो।—नैणसी
९ भात।
१० उबाला हुग्रा कोई भी भोज्य पदार्थ।
सं० स्त्री० [सं० भक्ति] ११ किसी के प्रति होने वाली श्रद्धा, विश्वास या निष्ठा।
१२ उक्त के फल स्वरूप होने वाला स्नेह, ग्रनुराग या की जाने वाली सेवा-सुश्रुषा।
१३ धार्मिक क्षेत्र मे भगवान के गुण महिमा ग्रादि श्रवण करके सत्त्व गुण के उद्रेकवश मन द्रवीभूत होकर भगवान के प्रति ग्रविछिन्न तैलधारा के समान चिन्तन धारा मे लीन होने की ग्रवस्था।
उ०—भक्ति तो प्रहलाद की सी, साच उर मे धरै। भक्ति के वस स्याम सुदर, सिंह को वपु धरै।—मीरा
वि० वि०—देवर्षि नारद ने भगवान के प्रति एकनिष्ठ प्रेम को भक्ति की सज्ञा दी है। शाण्डिल्य के ग्रनुसार ईश्वर के प्रति ऐकान्तिक ग्रनुराग ही भक्ति है। उन्होने अपने भक्ति-सूत्र मे तीन प्रकार की भक्ति कही है-सात्विकी, राजसी, एव तामसी। श्री रूप गोस्वामी ने भक्ति के स्वरूप या लक्षण का निर्णय करते हुए भक्ति को चार भागो मे विभक्त किया है—सामान्य-भक्ति, साधन-भक्ति, भाव-भक्ति एव प्रेम-भक्ति। यह भक्ति का सूक्ष्म विभाग है। स्थूलत भक्ति दो प्रकार की होती है—साधन या वैधी भक्ति, ग्रौर परा या प्रेम भक्ति। शास्त्र विधि के ग्रनुसार श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पाद-सेवन, ग्रर्चन, वन्दन, दास्य, सख्य ग्रौर ग्रात्म निवेदन, ये नौ प्रकार की भक्ति कही गई है जिसे नवधा भक्ति भी कहते हैं।
१४ साहित्य मे ध्वनि, जिसे कुछ लोग गौण ग्रौर लक्षणा-गम्य मानते है।
१५ छन्द-शास्त्र मे एक प्रकार का वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे तगण, भगण ग्रौर ग्रन्त मे गुरु होता है।
१६ जैन मतानुसार वह वमन जिसमे निरतिशय ग्रानन्द हो ग्रौर जो सर्वप्रिय, प्रयोजन विशिष्ट तथा वितृष्णा का उदय कारक हो।
१७ नौ की सख्या। ✲ (डिं को)
रू० भे०—भकती, भगत, भगति, भगती, भत्ति।

भक्तिकर–वि० [सं०] भक्ति के योग्य, जिससे भक्ति उत्पन्न हो।
रू० भे०—भकतीकर, भगतीकर।

भक्तिमारग–सं० पु० [सं० भक्ति+मार्ग] भक्ति का पथ, भक्ति का ग्रनुकरण।
उ०—सदा साधु सेवा करती हू, सुमरण ध्यान चित करती हू। भक्तिमारग दासी को दिखाउ, मीरा को प्रभु साची दासी बनाग्रो।
—मीरा
रू० भे०—भगतिमारग।

भक्तिसूतर, भक्तिसूत्र-सं० पु० [सं० भक्तिसूत्र] शाण्डिल्य मुनि कृत भक्ति विषयक का एक सूत्र ग्रन्थ।

रू० भे०—भगतीसूतर, भगतीसूतर।

भक्ष-सं० पु० [सं०] १ भोजन, आहार।

२ भोज्य पदार्थ।

वि०—आहार करने वाला, खाने वाला।

रू० भे०—भख, भाख, भग, भक्ख, भच्छ।

भक्षक-वि० [सं०] खाने वाला, आहारी।

भक्षण-सं० पु० [सं०] १ आहार, भोजन।

उ०—तु गांगी जी महाराती दीठ वरस तणै आपरी देही गाळी। गात भक्षण न कियो।—र वि

२ आहार या भोजन करने वाला।

रू० भे०—भखण, भक्खन।

भक्षणी-सं० स्त्री० [सं० भक्षिणी] भक्षण करने वाली।

रू० भे०—भखणी, भक्खणी, भच्छणी, भच्छनी।

भखणौ, भक्षबौ-क्रि० स० [सं० भक्षण] १ भोजन करना, आहार करना।

२ खाना, काटना। (सर्प आदि)

उ०—प्रीछउ, आवु ने, मुहि भक्षि करि छि व्याल नल मूकावु र, द्रुपद सुता तणा गोत्रया कीधी ते फल मुभनि लागू।

—नळाख्यान

भक्षणहार, हारौ (हारी), भक्षणियौ—वि०।

भक्षियोड़ौ, भक्षियोड़ौ, भक्ष्योड़ौ—भू० का० कृ०।

भक्षीजणौ, भक्षीजबौ—कर्म वा०।

भखणौ, भखबौ, भक्खणौ, भक्खबौ, भखणौ, भखबौ, भगणौ, भगबौ, भच्छणौ, भच्छबौ, भच्छणौ, भच्छबौ—रू० भे०।

भक्षाणौ, भक्षाबौ-क्रि० स० [भक्षणौ क्रि० का प्रे० रू०] १ भक्षण करवाना, भोजन कराना।

२ सर्प द्वारा कटवाना, डसवाना।

भक्षाड़णौ, भक्षाड़बौ, भखाणौ, भखाबौ, भक्षावणौ, भक्षावबौ—रू० भे०।

भक्षायोड़ौ-भू० का० कृ०—१ भोजन कराया हुआ, आहार कराया हुआ, २ सर्प द्वारा कटवाया हुआ, डसवाया हुआ।

(स्त्री० भक्षायोड़ी)

भक्षियोड़ौ-भू० का० कृ०—१ भोजन किया हुआ, आहार किया हुआ।

२ सर्प द्वारा डसा, काटा हुआ।

(स्त्री० भक्षियोड़ी)

भक्षी-वि० [सं० भक्ष+णिनि] (स्त्री० भक्षिणी) समस्त पद के अन्त में।

भक्षण करने वाला, खानेवाला।

रू० भे०—मखी, भक्खू।

भक्षु—देखो 'भिक्षु' (रू भे)

उ०—स्वरग रहित ए रावणु, लकाररहित रावण, सस्त्र रहित पायक, न्याय रहित नायक, फल रहित अक्ष, तपोरहित भक्षु, वेग रहित तुरगम, प्रेमरहित सगम।—व० स०

भखड-स० पु०—देखो 'भूखड (रू भे)

भख-स० पु०—१ पानी। (डि को)

[स० भक्ष्] २ किसी देवता, प्रेतादि को प्रसन्न करने के लिए दी जाने वाली बलि।

उ०—पछै राजकवर रा पगा मे जोर जोर सू लिलाड रगड नै कँवण लागी—जे भख री वारिया साजण रो श्रो पाप म्हे नी करतो तो श्राप रो सजोग कीकर सजतो।—फुलवाडी

३ किसी प्रेतादि द्वारा जबरदस्ती नियमित रूप से ली जाने वाली बलि।

वि० वि०—किसी तालाव कूए आदि मे जब कोई व्यक्ति, बालक या पशु डूबकर मर जाता है श्रोर आगे चलकर इसी प्रकार डूबने की घटना की कई बार आवृति होने पर जन साधारण मे यह प्रचलित हो जाता है कि अमुक तालाव या कूआ 'भख' (बलि) लेने वाला है।

४ देखो 'भक्ष' (रू भे)

उ०—१ भख पुहचावै भूधरो, अजगर रै अनय्याम। किम भूलै सतो 'किसन', रामरता सुख रास।—र ज प्र

उ०—२ जे टूच तीखी कर लू तो म्हारो काई विगडै। बापडा गीडका री बात रह जासी अर म्हारो ही भख हो जासी।

—फुलवाडी

भखग्रास-स० पु० [स० आशु+भक्षी] मकडी। (अ. मा.)

भखण—देखो 'भक्षण' (रू भे)

उ०—ऊभी कुत उलाळ, भूखी तू भैसा भखण। पग सातवैं पताळ। अमहड माथो वीमहथ।—चाळकराय रो गीत

भखणी—देखो 'भक्षणी' (रू भे)

उ०—गाळिणी, मोहीणी माहेसरी, चकरी कुडळा वाळिका। भखणी जमदूता भजा, नाग सता प्रति पाळिका।—मा वचनिका

भखणौ, भखबौ-क्रि० स० [स० भक्षणम्] १ आहार करना, खाना।

उ०—१ वोर जगत अखिया रघुवीरा, गाचै दिल मखिया मवरी रा। दुरलभ देव रिया विरदाळो, वरलभ जना दासरथ वाळो।

—र ज प्र

उ०—२ लोभ मोह-वयणो, गयो गळ वधण वध्यो। जिह भखतो आमख, तेह दंतै त्रिण गध्यो।—गु रू वं

२ डसा करना, काटना।

उ०—१ सदा नो नाव लिये स्रीरग, भखै नह ताह समार भुयग। सुगार जिणांह वगै तु सुवग, सगार समद तिरै तै सुयग।—ह र

३ देखो 'भाखणौ, भाखवौ' (रू भे)
उ०—सौ चार ही वेद मखै। जद सौ मोहरा देनै सिवलाल रामवगस नै लीधौ।—नैणसी
मखणहार, हारौ (हारी), मखणियौ—वि०।
मखिओड़ौ, मखियोड़ौ, मख्योड़ौ—भू० का० कृ०।
मखीजणौ, मखीजबौ—कर्म वा०।

मखपनग—स० पु० [स० पन्नग+भक्षक] मयूर, मोर। (अ मा)

मखभूर—देखो 'भकभूर' (रू भे)
उ०—बाप-बेटौ दोनू रजी सू मखभूर व्हियोडा हा।—फुलवाडी

मखभूरी—स० स्त्री० यौ० [दे०] भोजन की चिन्ता।
उ०—भक्ति हेतु कोई भक्त पठाया, ग्राप ग्रगाध यहा नहि ग्राया। पहरघा भेख मिटी मखभूरी, नंडा राम बतावै दूरी।—ह पु वा
रू० भे०—भकभूरी।

मखभूरौ—१ देखो 'भकभूरौ' (रू भे)
२ देखो 'भकभूर' (ग्रल्पा, रू भे)
(स्त्री० मखभूरी)

मखमजार—स० पु० [म० मार्जार+भक्ष्य] चूहा। (ग्र मा)

मखरी—१ देखो 'भाखर' (ग्रल्पा, रू भे)
उ०—ताहरा सारा चढ तयार हुवा ग्रोर हालिया। घडी दोय दिन थका उण मखरी तळे जा ऊभा रहिया।
—गोपालदास गौड री वारता
२ देखो 'भक्खरी' (रू भे)

मखाडणौ, मखाड़बौ—१ देखो 'भक्षाणौ, भक्षावौ' (रू भे)
२ देखो 'वहकाणौ, वहकावौ' (रू भे)
मखाडणहार, हारौ (हारी), मखाडणियौ—वि०।
मखाडिओड़ौ, मखाडियोडौ, मखाड्योडौ—भू० का० कृ०।
मखाडीजणौ, मखाडीजबौ—कर्म वा०।

मखाडियोडौ—१ देखो 'भक्षायोडौ' (रू भे)
२ देखो 'वहकायोडौ' (रू भे)
(स्त्री० मखाडियोडी)

मखाणौ, मखावौ—१ देखो 'भक्षाणौ, भक्षावौ' (रू भे)
२ देखो 'वहकाणौ, वहकावौ' (रू भे)
उ०—१ ताहरा त्रिभुवण सी री भाई पदमसी हुतौ, तियै नू मखायौ—'तू त्रिभुवण सी नू मारै तौ तोनू टीकौ देवा।'—नैणसी
उ०—तठा पछै वरस २ नवाब महाबतखान दिखण परवेज रै मुहडा ग्रागै थौ सु पातसाह जांहागीर नु खुरासाणीये मखाई नै उठा सु उरौ तेडायौ।—नैणसी
मखाणहार, हारौ (हारी), मखाणियौ—वि०।
मखायोडौ—भू० का कृ०।
मखाईजणौ, मखाईजबौ—कर्म वा०।
भकाणौ, भकावौ, भखाडणौ, भखाडबौ, भखावणौ, भखावबौ
—रू० भे०।

मखायोडौ—भू० का० कृ०—१ कहा हुआ, बुलाया हुआ।
२ देखो 'भक्षायोडौ' (रू भे)
३ देखो 'वहकायोडौ' (रू भे)
(स्त्री० मखायोडी)

मखार—स० पु०—देखो 'मखारी' (मह, रू भे)
उ०—१ किंदरा री भभक सू उण रौ माथौ फाटण लागग्यौ। ग्राख्या ग्राडी ग्रधारी ग्रायगी। वौ भवळ खाय नै मखार रै माय गुडग्यौ।—फुलवाडी
उ०—२ ग्रन-धन भरघा ग्रे मखार सदा ग्रे सुरगो घर बाप रो जी म्हारा राज।—लो गी

मखारणौ, मखारबौ—देखो 'वाकारणौ, वाकारवौ' (रू भे)
मखारणहार, हारौ (हारी), मखारणियौ—वि०।
मखारिग्रोडौ, मखारियोडौ, मखारचोडौ—भू० का० कृ०।
मखारीजणौ, मखारीजबौ—कर्म वा०।

मखारियोडौ—देखो 'वाकारियोडौ' (रू भे)
(स्त्री० मखारियोडी)

मखारी—स० स्त्री० [स० भक्षागार] ग्रनाज ईंधन ग्रादि रखने का ग्रंधेरा कोठा या एक प्रकार का छोटा कमरा।
उ०—१ रोडा पत्थर ईंट, चिणावै माटी गारै, कोकर खोरा खडी, वाटडी सचै सारै। मुलक कमावण हार, चिणावै चेजा भारी, ढूढ़ा पडवा साळ, मखारी भीत तिवारी।—दमदेव
उ०—२ लागतै चैत मखारिया भरणी सरू व्ही जकी वैसाख उतरता ताई भरीजती गी।
रू० भे०—वखारी, भकारी, भाखारी।
मह०—वखर, वखार, वखारौ, वाखार, वाखारौ, भखार, मखारौ, वखर।

मखारौ—देखो 'मखारी' (मह, रू भे)

मखावटौ—स० पु०—ब्रह्ममुहूर्त, उषाकाल।
उ०—हाथ मूडा धोया पछै ग्राज राजी राजी कलेवौ करियौ। पछ हळ जोत नै मखावटै-मखावटै ई वहीर व्हैगो।—फुलवाडी
रू० भे०—भकावटौ, भगावटौ, भखावटौ, भाखोटौ, भागोटौ।

मखावणौ, मखाववौ—१ देखो 'भक्षाणौ, भक्षावौ' (रू भे)
२ देखो 'वहकाणौ, वहकावौ' (रू भे)
उ०—कोई राज री खवर ल्यौ नही। परधांन वीकमसी तिको सूक भाडा लै ग्राप रौ काम करै। उपजै सु सोह खाय जाय, थानू क्यू दै नही।' इण भात कवरा नू मखावै छै।—नैणसी
मखावणहार, हारौ (हारी), मखावणियौ—वि०।
मखाविग्रोडौ, मखावियोडौ, मखाव्योडौ—भू० का० कृ०।

भगावीजणौ, भगावीजबौ—कर्म वा०।

भगाविणोड़ो—१ देखो 'भगायोड़ो' (रू भे)
२ देखो 'बगायोड़ो' (रू भे)
(स्त्री० भगाविणोड़ी)

भगी—सं० स्त्री०—१ रेत-रेत स्थानो मे पैदा होने वाली घास विशेष। (जयसलमेर)

२ देखो 'भगी' (रू भे)

भगुट—देखो 'भगूट' (रू भे)

भगूट—वि० [सं० भू+गड=रण] राख या धूल मे सना हुआ, धूस-रित।
रू० भे०—भखूट, भगूट।

भगो—सं० पु०—पसलियां व चूतड़ की हड्डियों के बीच का पेट की बाजू म आया हुआ मांसल भाग।

भग्गणी—देखो 'भक्षणी' (रू भे)
उ०—देवी जक्खणी भक्खणी देव जोगी, देवी अम्मळा भोज भोगी वियोगी। देवी मात जालंधुरी ब्रह्म मेहा, देवी देव चांमुड मरयाति नेहा।—देवि

भग्गणौ, भग्गबौ—१ देखो 'भक्षणौ, भक्षबौ' (रू भे)
२ देखो 'भागणौ, भागबौ' (रू भे)
भग्गणहार, हारौ (हारी), भग्गणियौ—वि०।
भग्गिप्रोड़ो, भग्गियोड़ो, भग्ग्योड़ो—भू० का० कृ०।
भग्गीजणौ, भग्गीजबौ—कर्म वा०।

भग्गियोड़ो—१ देखो 'भगियोड़ो' (रू भे)
२ देखो 'भागियोड़ो' (रू भे)
(स्त्री० भग्गियोड़ी)

भग्गु—देखो 'भगी' (रू भे)

भगंदर—सं० पु० [सं०] गुदावर्त के किनारे होने वाला एक प्रकार का फोड़ा जो फूटने पर नासूर बन जाता है और अधिक बढ़ने पर उसमे से मल-मूत्र निकलने लगता है।
उ०—पांडु रमन ताप स्वास दाघ ज्वर भगंदर जलोदर गुदकीलक कुष्ट सूल अष्टि सूल सिर सूल करण सूल दंत वेदना अजीरण प्रमेह कुष्ट रोग प्रमुख रोगा।—व भा

भगवी—देखो 'भागवी' (रू भे)

भग—सं० पु०—१ बारह आदित्यो म से एक। (ना मा)
२ सूर्य। (ध मा)
३ पुरुष का एक अंग विशेष, शिश्न।
४ योनि।
उ०—१ दादू विषय विकार नरक है, कीट पड़ै मुख माहि। राम बिमुख जाते नरै, भग मुख मायै जाहि।—दादू बांणी
उ०—२ भगवान भग नाथै उर उमगावै, हरखावै हुलसा है। विन तप व्रत वसिया कद्रप कमिया, भग रमिया भूकदा है।—ऊ का.
५ एक देवता का नाम।
६ शोभा, कांति।

भगड़—सं० स्त्री० [अनु०] भागने की क्रिया या भाव, भगदड़।

भगण—सं० पु०—१ छन्द शास्त्र मे एक तीन वर्णों का गण विशेष जिसमे आदि का वर्ण गुरु तथा शेष दो वर्ण लघु होते हैं।
२ खगोल मे ग्रहो का चक्कर।

भगणौ, भगबौ—देखो 'भागणौ, भगबौ' (रू भे)
उ०—आदि तणौ जोता अरथ, भगौ न मूझ भरम्म। पहली जीव परट्टिया, किया क पहली क्रम्म।—ह र

भगत—सं० पु० [सं०] (स्त्री० भगतण, भगतणी) १ भक्त एक जाति विशेष या इस जाति का व्यक्ति।
उ०—पातर भगतण पेख, परम मन मे सुख पाई। मिळिया मच्छी-मार, करै ज्यू मोद कसाई।—ऊ का

वि० वि०—यह रामावत साधुओं मे से निकली हुई एक जाति है जो प्राय जोधपुर मे ही पाई जाती है। रामावत साधु इनको निम्न श्रेणी मे गिनते हैं। महाराजा विजयसिंह जी के राज्य काल मे कई रामावत साधुओं की लड़कियों ने गाना-बजाना सीखकर रण्डी का पेशा अपना लिया और वे भगतनें कहलाने लगी। इनमे शादी भी होती है परन्तु यह पहले ही दोनो के बीच तय हो जाता है कि पति को पत्नी पर कोई अधिकार नही होगा। इस प्रकार यह नाम मात्र की शादी होती है जिसे कवारपना (कौमार्य) उतारना कहते हैं। कभी कभी कोई वर न मिलने पर गणेश जी की प्रतिमा से ही शादी करवा कर कवारपना (कौमार्य) उतार देते हैं क्योकि कवारी कन्या से ऐसा पेशा करवाना पाप समझा जाता है। विवाहित होकर आने वाली बेटे की बहुए ऐसा पेशा नही करती।
२ देखो 'भक्त' (रू भे,) (म सु)

उ०—१ भेख लिया सू भगत नह, ह्वै नह गहणां हूर। पोथी सू पंडित नही, समतर सू नह सूर।—वा. दा

उ०—२ कविजन व्रद कवळ कुमळाया, गीत कुकवि जगू स्याळा-गाया। मूरख भगतां सोर मचाया, काळी रात जरख कुरळाया।
—ऊ का

३ देखो 'भक्ति' (रू. भे)

उ०—१ राजा ग्रहदमांण पण सुभ लगन जोवाय, बडै हरख सू आपरी कुंवरी परणाई। भगतां पांच तथा सात भली तरह सू करी।—पनक दरियाव री वात

उ०—२ थे राम-राम करि आवौ। अर जै पधारौ तौ भगत रौ पाला, अर म्हांनू खबर मेलिया।—नैणसी

उ०—३ ताहरा भगत तयार हुई। ताहारा कह्यौ—कूंवर जी। थे पधारौ, भगत आरोगौ।—नैणसी

उ०—४ नेंहो ग्रायो थो सू जाणियो-'लाखे सू मिळता जावा।' सू उठै ग्रायो। लाखे घणो ग्रागता सागता कीवी। भगत कीवी। —नैणसी

उ०—५ मोटो पह ग्राराध करे महि, मोटो गढ लीजता मुग्रो। जोय हरि भगत तुग्राळी 'जैमल,' हरि सारीख प्रताप हुग्रो। —जयमल मेडतिया रो गीत

उ०—६ भगत-वछळ मोदै भगत, भाज परा सह भ्रम्म। मूझ तणा क्रम मेटवा, कथू तुहाळा क्रम्म।—ह र

भगतणो, भगतवो—देखो 'भुगतणो, भुगतवो' (रू भे)

भगतणहार, हारो (हारी), भगतणियो – वि०।

भगतिग्रोडो, भगतियोडो, भगत्योडो—भू० का० कृ०।

भगतीजणो, भगतीजवो—भाव वा०।

भगतदास—देखो 'भक्तदास' (रू भे)

भगतपरायण—देखो 'भक्तपरायण' (रू भे)

भगतवच्छळ, भगतवछळ—देखो 'भक्तवत्सल' (रू भे)

उ०—भगतवछळ मो दै भगत, भाज परा सह भ्रम्म। मूझ तणा क्रम मेटवा, कथू तुहाळा क्रम्म।—ह र

भगतमाळ—स० स्त्री० [स० भक्तमाला] वह पुस्तक जिसमे वैष्णव भक्तो का चरित्र वर्णित हो।

भगतराकस—देखो 'भक्तराक्षक' (रू भे)

उ०—भगतराकस भेद भाले, चक्रधरवा वयण चाले। दनुज सुत देवी दवाले, जग सभाळे जोध।—र रू

भगतवच्छळ, भगतवछळ, भगतविछळ—देखो 'भक्तवत्सळ' (रू भे)

उ०—१ भव पाप भव दुख भरम भजण भगतवच्छळ भूवरं। देवकीनदन मुगतिदायक, देवरूप दमोदर।—पि प्र

उ०—२ जगत कहै सहि दसरथ जायो, ग्रविगत धारो नाम ग्रजायो। जगपति तू सिगळा रो जामी, भगतवछळ सहजा ना भामी।—पी ग्र

उ०—३ भगतविछळ नयण कमळ, जगत जनक धरण धनक। सिर नमि नमि चरण पदम, 'किसन' रसण रघुवर भण। —र ज प्र

भगतापत, भगतांपति—स० पु० [स० भक्त+पति] १ भक्तो का स्वामी, ईश्वर।

उ०—रामचद्र करसी रूडा, सगळी विध स्रीरग। भगतापत भूधर-धणी, चाढण रूप सुचग।—ह र

२ श्रीराम।

३ श्री विष्णु।

४ श्री कृष्ण।

भगतांबछल, भगतावछल—देखो 'भक्तवत्सल' (रू भे)

उ०—निस दीह सीम ऊपर रहो, महाराजा 'ग्रजमाल' रै। भांमणै तूझ भगतांवछल, कर प्रणाम डडवत करै।—गजउद्धार

भगताणो, भगतावो—क्रि० स०—१ कहना।

२ भोजन कराना, खिलाना।

३ उपभोग कराना।

४ देखो 'भुगताणो, भुगतावो' (रू भे)

भगताणहार, हारो (हारी), भगताणियो—वि०।

भगतायोडो—भू० का० कृ०।

भगताईजणो, भगताईजवो—कर्म वा०।

भगतायोडो—भू० का० कृ०—१ कहा हुग्रा २ भोजन कराया हुग्रा, खिलाया हुग्रा ३ उपभोग कराया हुग्रा ४ देखो 'भुगतायोडो' (रू भे)

(स्त्री० भगतायोडी)

भगतावणो, भगताववो—१ देखो 'भगताणो, भगतावो' (रू भे)

उ०—ग्राव्या बीडा पानह तणा, ग्राव्या लूगड् थोडा घणा। इणि परि राजा भगताविउ, हरख धरतु घरिग्राविउ।—हीराणद सूरि

२ देखो 'भुगताणो, भुगतावो' (रू भे)

उ०—मारुवणी भगताविया, मारू राग निपाइ। दूहा सदेसा-तणां, दीया तिया सिखाइ।—ढो मा

भगतावणहार, हारो (हारी), भगतावणियो—वि०।

भगताविग्रोडो, भगतावियोडो, भगताव्योडो—भू० का० कृ०।

भगतावीजणो, भगतावीजवो—कर्म वा०।

भगतावियोडो—देखो 'भगतायोडो' (रू भे)

२ देखो 'भुगतायोडो' (रू भे)

(स्त्री० भगतावियोडी)

भगति—देखो 'भक्ति' (रू भे)

उ०—घरे ले जाइनै वडी भगति कीवी। हाथी तो रांणै उदैसिंघ नू मेल्हि दिया वारै' ही।—नान्हे वाघेलै री वात

उ०—२ ग्रोथि पणि भगति जीमि ग्रर देवराजसर नू खडिया कैंवासर थी ग्राघा ग्रर देवराजसर विचालै तेथ एक घाराळो मेह रो ग्रायो।—द वि

उ०—३ स्रीपति भगति सकाज, सिध रिध सुवर नमो सकर सुत सुर ग्रगिवाण समाज, स्रेस्ठ बुधि दीजिये गणेस्वर।—सू प्र

उ०—४ पत्र ग्रक्खर दळ द्वाळा जस परिमळ, नव रस ततु विधि ग्रहोनिसि। मधुकर रसिक सु भगति मजरी, मुगति फूल फळ भुगति मिसि।—वेलि

भगतिबछल—देखो 'भक्तवत्सल' (रू भे)

भगतिमारग—देखो 'भक्तिमारग' (रू भे)

भगतियोडो—देखो 'भुगतियोडो' (रू भे)

भगतियो—देखो 'भगत' (ग्रल्पा, रू भे)

भगती—देखो 'भक्ति' (रू भे)

उ०—१ जितरै भगती जीमण म्हे पण आवा छा । आ वात कहि सीख दीवी ।—पलक दरियाव री बात

उ०—२ तपै भूम अम्मर हुय ताता, मुरझाई भगती पितु माता । बागी झाट पिछम दिस वाता, वंक हुवो सब देस विधाता ।
—ऊ का

उ०—३ कामी अरु क्रोधी वेद विरोधी, परगट नरक पडदा है । भगती नहि भोगा जुगत न जोगा, अद बिच सत अडदा है ।
—ऊ का

उ०—४ इत्ता दिन औ काई खिलको व्हियो । घरवाळा री सगळी भगती निरफळ गी ।—फुलवाडी

भगतीकर—देखो 'भक्तिकर' (रू भे)

भगतीसूतर—देखो 'भक्तिसूत्र' (रू भे)

भगदड–स० स्त्री०—किसी सभाव्य सकट के कारण अचानक वहुत से लोगो के अस्त-व्यस्त होने की क्रिया, खलबली, हलचल ।

उ०—१ ज्यू-ज्यू चानणो नेडो आतो गयो, फौज मे भगदड मचण लागी ।—वरसगाठ

उ०—२ झूलरा मे भगदड माची पण माची । चार पाचेंक साथ-णिया घोडा री फेट मे आयगी ।—फुलवाडी

क्रि० प्र०—मचणी, माचणी ।

रू० भे०—भगड ।

भगदत्त, भगदत्तु–स० पु० [स० भगदत्त] प्राचीन काल का एक राजा जिसका राज्य प्राग्ज्योतिषपुर मे था ।

उ०—कवरव नइ दळि गुरू गगेउ कृपु दुरयोधन सल्यु मिलेउ । सकुनि दुसासण जयद्रथु पुत्रु गरूड भूरिस्रवा भगदत्तु ।
—सालिभद्र सूरि

रू० भे०—भगदत ।

भगदस्–स० पु० [स० दिवस+भग] सूर्य । (ना मा)

भगनपाद—देखो 'भग्नपाद' (रू भे)

भगनाळ–स० स्त्री० यौ० [स० भग+नालिका] चौडी या वडी नाली ।

उ०—हाथ छडी पग दोरडी, वावइ कोटि विसाल । पयोधर पेट्ठ जइ अडइ, भग थाइ भगनाळ ।—मा का प्र

भगनी—देखो 'भगिनि' (रू भे)

उ०—भूवा भगनी रा थळवट भिखियारी, धन्यां कन्या रा गळकट हठधारी । राफा झरणावै गिरणावै रोता, गता निरणावै करमा रा गोता ।—ऊ का

भगमौ—देखो 'भगवौ' (रू भे)

भगयुग–स० पु० यौ०—वृहस्पति के वारह युगो मे से अन्तिम युग ।

भगळ–स० पु० [देशज] १ आडवर, ढोग ।

उ०—भगळ भागवत पेट भरण री कुटिल कहाणी रे । सत्यारथ सुणिया विन साप्रत होसी हाणी रे ।—ऊ का

२ ऐंद्रजालिक खेल ।

उ०—मसतक्क हाथ पग जड मुगळ, तेग अरण झक बोळ तिम । 'विलद रा जोध दमगळ बिचे, जुडे करू नट भगळ जिम ।
—सू प्र

३ कुप्रबन्ध, अव्यवस्था ।

उ०—रावळै गरक प्रेतण रमै, होळी जिसा हगाम रे । 'मोकमा' कमध मोटा मिनख, गरक भगळ मे गाम रे ।—अरजुणजी वारहठ

४ फूहड ।

५ पानी मे एक दम झपटकर मछली पकडने वाला एक जानवर विशेष ।

६ छल, कपट, धोखा ।

भगळखानौ–स० पु० यौ०—१ अव्यवस्था, कुप्रवन्ध ।

२ ऐंद्रजालिक खेल ।

भगळखेल–स० पु० यौ०—ऐंद्रजालिक खेल ।

उ०—कर कर पर-उपकार पुन, तन प्राचत कपणा । संसारी दा भगळखेल, जाणै जिम सपणा ।—र ज प्र

रू० भे०—भागळखेल ।

भगळविद्या–स० स्त्री० यौ०—इन्द्रजाल, मायाजाल ।

उ०—ससार सकळ भगळविद्या सकळ, खोट साच दीसै खरी । जाए न किणी लखियो 'जगा', ऐसो लेख अलक्खरी ।—ज खि

भगवत—देखो 'भगवत' (रू भे) (डि को)

उ०—अलख अजोनी आतमा, अचळ अनूप अनत । तू मारै तारै तुही, भिले-भिले भगवत ।—ऊ का

भगवती—देखो 'भगवती' (रू भे)

उ०—सुरसती तु ही भगवती सार ।—रामदान लाळस

भगवतीभरता–स० पु० [स० भगवत्+ईप+भर्तृ] शिव, शकर ।
(डि को)

भगवई—देखो 'भगवती' (रू भे)

उ०—चारण स्रमण नमइ सदा, जिन प्रतिमा सस्नेह अग्यानी । ते छइ भगवई अग मा, किम मन आणइ रेह अग्यानी ।—वि. कु

भगवउ—देखो 'भगवौ' (रू. भे)

उ०—सिर डाढी मूडी करी, भगवउ लीधउ वेस । पग अणूहाण पकज जिसे' पथि पलिउ परदेसि ।—मा. का प्र

भगवट, भगवट्ट–स० स्त्री०—१ भागने की क्रिया या भाव ।

उ०—वहा राव रावळ वाद विवरजत, जोधकळह कृत जिका जुई । वैरायता तुहारा भगवट, हव जाणै कुळवाट हुई ।
—महमदजी वारहठ

२ युद्ध मे पीठ दिखाने का भाव, पराजय, हार ।

३ भागने का रास्ता, या मार्ग ।

रू० भे०—भगवट, भगवट्ट, भगवाट, भगवाट ।

भगवत—सं० पु० [स० भगवत्+मतुप्] १ विष्णु।
२ ईश्वर, परमेश्वर।
उ०—जोगी जग मे जोवत जती, साध सेवडे सोधत सती। ग्यानी गिणत ईसी कू गती, भगवत यही यही भगवती।—ऊ. का
३ शिव, शकर।
४ सूर्य।
५ जैनियो के देवता, जिन देव।
रू० भे०—भगवत।

भगवतगीता—देखो 'भगवद्गीता' (रू भे)
उ०—स्रीभगवतगीता हित सधार, स्रीक्रस्ण 'ग्रजन' हू कहै सार। नह देह तणौ मझ हू नरिंद, श्री 'ग्रभो' जिको जोधाण इद।—सू प्र

भगवति, भगवती, भगवत्ती—स० स्त्री० [स० भगवत्+ङीप्] १ देवी।
उ०—१ जळ थळ खेचर जीव जगि, सारो मझ सगत्ति। तो विण ध्रम क्रम न किये भगवति देह भगत्ति।—मा वचनिका
उ०—२ जोगी जग मे जोवत जती, साध सेवडे सोधत सती। ग्यांनी गिणत ईसी कू गती, भगवत यही यही भगवती।—ऊ का
२ गौरी, पार्वती।
३ सरस्वती।
४ दुर्गा।
उ०—बळ दे दे बाकरा, भणै जय जय भगवत्ती। धारि रुधिर मद धार, छाक दीधी छत्रपत्ती।—मे म
५ गगा।
रू० भे०—भगवती, भगवई, भगवत्ति, भगवत्ती।

भगवतीसूत्र—एक सूत्र का नाम जिसे विवाह पन्नत्ती भी कहते है। (जैन)
उ०—पचम भगवतीसूत्र सुधन्न, पनर सहस सतसै बावन्न। ग्याता धरम कथा ग्रग छट्ठ, हिंवणा पच हजारे दिट्ठ।—ध व ग्र

भगवत्ति, भगवत्ती—देखो 'भगवती' (रू भे)
उ०—भगवत्ति ग्रावो भाई, मूझ मदत स्री महामाई।
—मा वचनिका

भगवतपदी—स० स्त्री० [सं० भगवत्+पदी] गगा।

भगवदगीता—स० स्त्री० [स० भगवद्+गीता] महाभारत के भीष्मपर्व के ग्रठारह ग्रध्यायो का एक प्रकरण जिसमे ग्रर्जुन का मोह दूर करने के लिये युद्ध-स्थल मे किए गए प्रश्नोत्तरो का वर्णन है।
रू० भे०—भगवतगीता, भागवतगीता।

भगवन, भगवन्न—स० पु० [स० भगवत्] १ लाक्षणिक ग्रर्थ मे पूजनीय व्यक्ति के लिए प्रयुक्त ग्रादर सूचक शब्द।
२ देखो 'भगवांन' (रू भे)
उ०—१ भल भगवन रा भोग, भीलणी रै घर पाया। सरस सलूणा स्वाद, जका री किसी वडायां।—दसदेव
उ०—२ जेणि मारग वखाणीइ, छडवि गइ ते तम्र। तुझ मिलइ मुख जेहवू, ते जाणइ भगवन्न।—मा का प्र

भगवाण—१ देखो 'भगांण' (रू भे)
२ देखो 'भगवान' (रू. भे) (डिं को.)

भगवांन—वि० [स० भगवान] (वत्) ऐश्वर्ययुक्त।
स० पु०—१ ईश्वर, परमात्मा। (ना मा.)
उ०—जीहा जप जगदीसवर, धर धीरज मन ध्यान। करमबध-निकरम-करण, भव-भजण भगवांन।—ह र
२ शिव, शकर।
३ विष्णु।
४ जिन।
५ कार्तिकेय।
६ सूर्य। (ग्र मा)
७ कोई पूज्य ग्रौर ग्रादरणीय व्यक्ति।
रू० भे०—भगवाण, भगव्वान, भगवान।
ग्रल्पा०—भगवानडो।

भगवांनडो—देखो 'भगवान' (ग्रल्पा, रू. भे)
उ०—मोज चैत वैसाख व्याधा, भरग्यो घर भगवांनडो। ग्राठ पौ'र चौसट घडी मे, धोरो पूरै धानडो।—दसदेव

भगवाट—देखो 'भगवट' (रू भे)
उ०—१ वाघ सुणावै वाहरा, घण ज्यू ही धरराट। धावै भागा लार नह, नह जावै भगवाट।—वां दा
उ०—२ पिड, छड, धड तूटै पांचावत, थह लूबिया विया गज-थाट। चाळि 'कसन' कहै ग्रणिया चढ, वेस कहै निकळि भगवाट।
—करमसेन कल्यांणोत कछवाहा री गीत
उ०—३ हैमरा गैमरां हुवै हीसा-रवण, चासट्ठ ऊपरा 'माल'-चडियो। गौड बगाळ खुरसाणदळ गजणो, पालटै कोट भगवाट पडियो।—राव मालदेव री गीत
उ०—४ एक गया भगवाट, सामि छळ मेल्हे कुळ छळ। हेक मुगति साजोत, गया भेदे रवि मडळ।—गु रू व

भगवौं—वि०—गेरूए रग का।
उ०—दुख सुख के कागज लिखू, माहे बोत सनेस। थे तो मन मानी नही, करसू भगवौं भेस।—श्री हरिरामजी महाराज
स० पु०—गेरूग्रा रग।
मुहा०—भगवौं पै'रणो=सन्यास लेना।
रू० भे०—भगमौं, भगवउ, भगुवौं।

भगवौं-भेस—स० पु० यौ०—सन्यासी का वेश।
उ०—पकी सेर वै गेरू गाळी, करियो भगवौंभेस। कर गुजरो वौ चल्यो ग्रागरै, राम राखमी टेक।—डूगजी जवारजी री छावली

भगव्वान—देखो 'भगवान' (रू भे)

भगसास्त्र-स० पु० [स० भग+शास्त्र] कामशास्त्र, कोकशास्त्र ।

भगांकुर-स० पु० [स० भग+अकुर] बवासीर नामक रोग ।

भगांण—देखो 'भगाण' (रू भे)

उ०—१ सहर उग्राहे सार वळ, मार सहे असुराण । डरे दिली डर खाग रै, पुर आगरे भगाण ।—रा रू.

उ०—२ जळनिध सहळ जुआण, सांमा तू वेडा सजै । भैचकि पडै भगाण, मिसर अरव ऐराक मभ ।—बां दा

उ०—३ आया राठौड़ है खडे, प्रजा चढत अभडै । भगाण भोमिया डरै, गया अलग ऊतरै ।—गु रू व

भगा-क्रि० वि०—लिए, वास्ते, निमित्त ।

भगाणौ, भगावौ—देखो 'भजाणौ, भजावौ' (रू भे)

उ०—पछै मोकळ रै माथै विस्वासघात, विचारियो जाणि चूडै चीतोड माथै चढि राव रणमाल नू मारि कुमार जोधा नू भगायौ ।—व भा

भगाणहार, हारौ (हारी), भगाणियौ—वि० ।

भगायोडौ—भू० का० कृ० ।

भगाईजणौ, भगाईजवौ—कर्म वा० ।

भगायोडौ—देखो 'भजायोडौ' (रू भे.)

(स्त्री० भगायोडी)

भगारणौ, भगारवौ—देखो 'बघारणौ, बघारवौ' (रू भे)

भगाळ-स० स्त्री० [स० भगाल] आदमी की खोपडी ।

भगाळी-स० पु० [स० भगालिन्] खोपडी धारण करने वाला, शिव, महादेव ।

भगावटौ—देखो 'भखावटौ' (रू भे)

भगावणौ, भगाववौ—देखो 'भजाणौ, भजावौ' (रू भे)

उ०—१ लूआ रोग भगाविया, मुरधर मिनखां जेह । ऊपर दीसै स्याम रग, भीतर कचन देह ।—लू

उ०—२ अर बूदी रै एवज कुमार भोज बीजी ठाम दिवाइ दो ही भाइया रै वधियो विरोध भगावा ।—व भा

भगावणहार, हारौ (हारी), भगावणियौ—वि० ।

भगाविओडौ, भगावियोडौ, भगाव्योडौ—भू० का० कृ० ।

भगावीजणौ, भगावीजवौ—कर्म वा० ।

भगावियोडौ—देखो 'भजायोडौ' (रू भे)

(स्त्री० भगावियोडी)

भगिनी-स० स्त्री० [स०] बहन ।

रू० भे०—भगनी, भग्नी ।

भगिर, भगिरथ, भगिरथ्थ—देखो 'भगीरथ' (रू भे)

उ०—१ हेक हिमेग-गिर हुवै, सो भगिर वस भिगाळौ । विध जिण मह रघुवस, एक रघुनाथ उजाळौ ।—र ज. प्र

उ०—२ देवी भगळा वीजळा रूप भव्वे, देवी अव्वळा सव्वळा वोम अव्वे । देवी स्वग्ग सू उतरी सिव माथे, देवी सगर सुत हेम भगिरथ्थ साथे ।—देवि.

भगी-स० स्त्री०—भागने की क्रिया या भाव, भगदड, खलवली ।

उ०—१ तिण सू उदैकरण रायमल सू जाय मिळियो । अख धरम करम देय कयो—म्हें रावजी री फौज मे सामल छा, पण झगडे री वखत भगी घालसा ।'—द दा

उ०—२ चखा भ्रूह लगी जगी है गजा चाचरा चढी, चलै सगी दळा भगी पडता अचूक । वगी घडा सतारा रै जगी हौदां वीच 'चापै,' रगी' सिवै' सुरगी वरगी वार रूक ।—प्रभूदान मोतीसर

रू० भे०—भग्गी ।

२ फूट ।

उ०—सु ईंया आपस मांहि वात कर फौज मे भग्गी घाती ।
—नैणसी

भगीरथ-स० पु० [स०] सूर्यवंशी अयोध्या नरेश दिलीप के पुत्र जिन्होंने घोर तपस्या करके स्वर्ग से गगा नदी की अवतारना की थी ।

उ०—कहि जिण सुतण वीर नृप केहो, जग जस प्रगट भगीरथ जेहो । जे सुत ब्रहदस्व भूप करण जय, ते सुत भानुमानु तेजो-मय ।
—सू प्र

रू० भे०—भगिर, भगिरथ, भगिरथ्थ, भागीरथ ।

भगुवौ—देखो 'भगवौ' (रू. भे)

उ०—उघडे जिरह कथा सिधा आवधा, भेख भगुवौ हुवै रुहिर भाति । जिसौ जोधा-हरौ सोहियौ महाजुध, जिसा जोधार वणिया जमाती ।—राव महेसदास राठौड री गीत

भगू-वि०—१ भागने वाला ।

२ भागा हुआ, डरपोक ।

रू० भे०—भग्गू ।

अल्पा०—भगेडी, भगोडौ ।

भगेडी, भगोडौ—देखो 'भगू' (अल्पा , रू भे.)

भगोळ—देखो 'भूगोळ' (रू भे)

भगोलौ-स० पु०--ऊची दीवारो का गहरा व गोलाकार किनारदार एक वर्त्तन विशेष ।

भग्गणौ, भग्गवौ—देखो 'भागणौ, भागवौ' (रू भे)

उ०—१ एक महरत सार झड, मातौ तातौ वाण । लग्गा हत्थौ भग्गणौ, या वग्गा आराण ।—रा रू

उ०—२ 'चापै' जेसौ चरड, अनड माझी अडसाळौ । भांगेसर' दाणवा, जेण भग्गौ भालाळौ ।—गु रू व

उ०—३ गज तजता पुळिया गिणे, स्वामी कामिम सग । दळ भग्गौ दिल्लीस रौ, जाणै परवळ जग ।—व भा

भग्गणहार, हारौ (हारी), भग्गणियौ—वि० ।

भग्गिओड़ो, भग्गियोड़ो, भग्योड़ो—भू० का० कृ० ।
भग्गीजणो, भग्गीजबो— भाव वा० ।

भग्गावत—देखो 'भगदत्त' (रू भे)
उ०—वालहउ ससोफउ रग्ग वग्ग, पइनउ पवग दइ त्रिणे पग्ग । काळासि चढिय ढूगरउ कुत, भ्रिगवा हुअउ किरि भग्गवंत ।
—रा ज सी

भग्गर–स० पु०—१ कहूर ।
२ मोठ, ग्वार आदि के फूल । (शेखावाटी)

भग्गवांन—देखो 'भगवान' (रू भे)
उ०—भग्गवान गोविंद गोपाळ भेळा, वडा वित्त फ़ले दुजा तेण वेळा । वागे भालियो अज्जसेरी विचाळे, वळे फेरिओ आगणे नदवाळे ।—ना द

भग्गी—देखो 'भगी' (रू भे)
भग्गू—देखो 'भगू' (रू भे)
भग्न–वि० [स०] १ टूटा हुआ, खडित ।
२ पराजित, हारा हुआ ।
भग्नदूत—प्राचीन काल मे हारी हुई सेना की वह टुकडी जो राजा का पराजित होने का समाचार देती थी ।

भग्नपाद–स० पु०—निम्नलिखित छ नक्षत्र । १ पुनर्वसु । २ उत्तरापाढ । ३ कृत्तिका । ४ उत्तरा फाल्गुनी । ५ पूर्वभाद्रपद, एव ६ विशाखा ।
रू० भे०—भगनपाद ।

भग्नावसेस–स० पु० [स० भग्न + अवशेष] टूटे फूटे मकान का बचा हुआ अश, खडहर ।
भग्नी—देखो 'भगिनी' (रू भे)
उ०—वाचा साची आपस्यु रै, आयु अति सनेह । अरघ राज भडार नो रै, भग्नी पती हुइ जेह रै ।—प च चौ.

भडगाण–स० पु० [देशज] घोडा ।
रू० भे०—भडगाम ।
भडद—१ देखो 'भडिद' (रू भे.)
२ देखो 'भड' (रू भे)
उ०—रैत थळो री रात दिन, मन वें घडकदे । कोटडियां भ्रमका करै, चोवीस भडदे ।—पा प्र

भड–स० पु०—१ वट वृक्ष की शाखा ।
उ०—भड कटियां सुखत भव, पिण भड कट सग पाय । जिण सू खग भड भपवा, जग उधारा जाय ।—रेवतसिंह भाटी
२ देखो 'भट' (रू भे)
उ०—भड भिडज्ज गज भार, धार विहरे पाडे घड । ढहियां सिर पोढियो, बौळ भक बौळ वहादर ।—सू प्र
भडकवाड—देखो 'भडकिंवाड' (रू भे)

भडक–स० स्त्री० [अनु०] १ भडकने की अवस्था या भाव ।
२ जोश, उत्तेजना ।
३ चमक-दमक ।
४ आवाज या ध्वनि विशेप ।
क्रि० वि०—एकदम, शीघ्र ।
उ०—कुहक वाण छूटण रै कडकै, अरीयां साम्हा अडकै । भड कायर भाजै तिहा भडकै, ग्रेह त्रसै जिम तडकै हो ।—वि कु
रू० भे०—भडक्क, भडिक । अल्पा०—भडको ।

भडकणो, भडकबो–क्रि० अ० [अनु०] १ किसी विस्फोटक पदार्थ का आग से सयोग होने पर तीव्र आवाज के साथ जल उठना ।
२ किसी प्रकार के मनोवेग का तीव्र या प्रवल हो जाना ।
उ०—कहियै एम कपूत, भूत जिम बोले भडकी । सखरी देता सीख, तुरत कहै पाछो तडकी ।—ध व ग्र
३ किसी व्यक्ति का दूसरो की वातो मे आकर विपरीत कार्य करने लगना ।
४ चमकना ।
उ०—अरड वाग गोळा उरड थळेचा ऊपरा, भडामड वळोवळ खाग भडकी । अरि घड ऊपरां 'दलै' ग्रस ओरियो, कडडियो आभ काय बीज कडकी ।—वीरमियो मूळो
५ पहले की अपेक्षा अधिक तीव्र हो जाना, वढ जाना ।
६ देखो 'भिडकणो, भिडकवो' (रू भे)
उ०—जोमगी मलार गैल जोडरा प्राजळै जोस । प्रळै जादवेस समुडे मालवेस पाण । गाढ चकै खीची जोड भडकै भदोड गौड । ओभके ऊजीण सोवा सकै चाहुवाण ।—हुक्मीचद खिडियो
भडकणहार, हारौ (हारी), भडकणियो—वि० ।
भडकाडणो, भडकाडवो, भडकाणो, भडकावो, भडकावणो, भडकाववो—प्रे० रू० ।
भडकिओड़ो, भडकियोड़ो, भडक्योड़ो—भू० का० कृ० ।
भडकीजणो, भडकीजवो—भाव वा० ।
भडक्कणो, भडक्कवो, भडखणो, भडखवो, भडफणो, भडफवो, भिडक्णो, भिडकवो—रू० भे० ।

भडकमाड—देखो 'भडकिंवाड' (रू भे)
भडकाड़णो, भडकाडवो—१ देखो 'भडकाणो, भडकावो' (रू भे)
२ देखो 'भिडकाणो, भिडकावो' (रू भे)
भडकाडणहार, हारौ (हारी), भडकाडणियो—वि० ।
भडकाडिओड़ो, भडकाडियोड़ो, भडकाड्योड़ो—भू० का० कृ० ।
भडकाडीजणो, भडकाडीजवो—कर्म वा० ।

भडकाडियोड़ो—१ देखो 'भडकायोड़ो' (रू भे.)
२ देखो 'भिडकायोड़ो' (रू भे)
(स्त्री० भडकाडियोडी)

भडकाणो, भडकावो–क्रि० स० [अनु०] १ किसी विस्फोटकीय पदार्थ

को आग के संयोग से तेज ध्वनी के साथ जलाना, प्रज्वलित करना।
२ किसी प्रकार के मनोवेग को तेज या प्रबल करना।
३ किसी व्यक्ति को वातो के भुलावे मे डालकर विपरीत कार्य करने मे प्रवृत्त करना।
४ पहले की अपेक्षा अधिक तीव्र करना, बढ़ा देना।
५ देखो 'भिडकाणौ, भिडकावौ' (रू भे)

भड़काणहार, हारौ (हारी), भडकाणियौ—वि०।
भड़कायोड़ो—भू० का० कृ०।
भडकाईजणौ, भडकाईजबौ—कर्म वा०।
भड़काडणौ, भड़काडबौ, भडकावणौ, भड़कावबौ, भडक्काणौ, भडक्कावौ, भडखाडणौ, भडखाडबौ, भडखाणौ, भडखावौ, भड़खावणौ, भड़खावबौ, भिडकाणौ, भिडकावौ—रू० भे०।

भड़कायोड़ो—भू० का० कृ०—१ कोई विस्फोटकीय पदार्थ आग के संयोग से तेज ध्वनि के साथ जलाया हुआ २ किसी प्रकार का मनोवेग तेज या प्रबल किया हुआ. ३ पहले की अपेक्षा अधिक तीव्र किया हुआ, वढाया हुआ ४ देखो 'भिडकायोडो' (रू भे)
(स्त्री० भडकायोडी)

भडकावणौ, भडकावबौ—१ देखो 'भडकाणौ, भडकावौ' (रू भे)
२ देखो 'भिडकाणौ, भिडकावौ' (रू भे.)

भड़कावणहार, हारौ (हारी), भडकावणियौ—वि०।
भडकाविओडो, भड़कावियोडो, भडकाव्योड़ो—भू० का० कृ०।
भडकावीजणौ, भडकावीजबौ—कर्म वा०।

भडकावियोडो—१ देखो 'भडकायोडो' (रू भे)
२ देखो 'भिडकायोडो' (रू. भे)
(स्त्री० भडकावियोडी)

भड़किमाड, भडकिवाड—स० पु० यौ० [स० भट+कपाट] १ योद्धा।
उ०—१ मनमोट गाहडि कोट माझी, चाल पह कलि चाल। सपरवाळ विरद विसाळ मालिम, भड़किमाड भुजाळ।—ल. पिं.
२ रक्षक, पहरेदार।

उ०—१ वागड रै कांठे चहुवाण भडकिवाड रजपूत वेघीला छै। सु घणिवां रै नै चहुवाणा रै रस थोडा दिन हुवै छै।—नैणसी
उ०—२ आपे वासहवाळा रा धणी कदे नही। आंपे वांसहवाळा रा भडकिवाड छा।—नैणसी

रू० भे०—भडकवाड, भडकमाड, भडकिमाड, भडांकिमाड, भडांकिवाड, भडकवाड, भर्डकिमाड, भर्डकिवाड, भडकिवाड, भडांकिमाड, भिडकमाड, भिडकवाड, भिर्डकिमाड, भिर्डकिवाड, भिडकमाड, भिडकवाड, भिर्डकिमाड, भिर्डकिवाड।

भडकियोडो—भू० का० कृ०—१ कोई विस्फोटकीय पदार्थ आग के सयोग से तेज ध्वनि के साथ जला हुआ २ किसी प्रकार का मनोवेग तेज या प्रबल हुवा हुआ. ३ कोई व्यक्ति वातो के भुलावे मे पडकर विपरीत कार्य करने मे प्रवृत्त हुवा हुआ ४ पहले की अपेक्षा अधिक तीव्र हुवा हुआ, बढ़ा हुआ.
५ देखो 'भिडकियोडो' (रू भे)
(स्त्री० भडकियोडी)

भडकीलो—वि० [अनु] (स्त्री० भडकीली) १ चमक-दमक वाला।
२ वहुत जल्दी आवेश मे आने वाला, उत्तेजित होने वाला।
३ विस्फोट होने योग्य।
४ चौंकने वाला।

भडको—स० पु० [अनु०] १ चमक-दमक, तडक-भडक।
२ ध्वनि विशेष।

भडक्क—देखो 'भडक' (रू भे)
उ०—१ रत्ता पी गणक्के कै भणक्के ये बीमाण रंभा, लोयणा भणक्क डड मणक्का लेवाण। हुवै पखा भडक्का ग्रीधाण वीर है हणक्के, कैमरां सणक्के वाजै खडक्का केवाण।
—वहादरसिंह मेडतिया रो गीत
उ०—२ फैलै घोमरगा घडा घू घडा घडक्का फूटै, वीर अगां तूटै कडा जरद्दा वडक्क। जोम रूपी गोम हूता वीजरी कड़क्क जेम, भूरा वाघ भूप कटी खीजरी भडक्क।—हुक्मीचद खिडियो

भडक्कणौ, भडक्कबौ—१ देखो 'भडकणौ' भडकवौ' (रू. भे)
२ देखो 'भिडकणौ, भिडकवौ' (रू. भे)

उ०—देखता एहवौ जग घडक्के आगरौ दिल्ली ववी जैत भागरा रड क्कै वारवार। झडक्कै खाग रा वाढ भडक्कै कायरां झुड। हमल्लां नाग रा माथा रडक्कै हजार।—सूरजमल मिसण

भडक्काणौ, भडक्कावौ—देखो 'भडकाणौ, भडकावौ' (रू भे)
भडक्कायोडो—१ देखो 'भडकायोडो' (रू. भे.)
२ देखो 'भिडकायोडो' (रू भे)

भडक्कियोडो—१ देखो 'भडकियोडो' (रू भे.)
२ देखो 'भिडकियोडो' (रू भे.)

भडखणौ, भडखबौ—१ देखो 'भडकणौ, भडकवौ' (रू भे)
२ देखो 'भिडकणौ, भिडकवौ' (रू भे)
भडखणहार, हारौ (हारी), भडखणियौ—वि०।
भडखाडणौ, भडखाडबौ, भडखाणौ, भडखावौ, भडखावणौ, भड़खावबौ—प्रे० रू०।
भडखिओडो, भडखियोडो, भडख्योडो—भू० का० कृ०।
भडखीजणौ, भडखीजबौ—भाव वा०।

भडखाड़णौ, भडखाडबौ—देखो 'भडकाणौ, भडकावौ' (रू भे)
भडखाडणहार, हारौ (हारी), भड़खाडणियौ—वि०।
भडखाड़िओड़ो, भडखाड़ियोडो, भडखाड़्योड़ो—भू० का० कृ०।
भडखाडीजणौ, भडखाड़ीजबौ—कर्म वा०।
भड़खाड़ियोड़ो—देखो 'भडकायोड़ो' (रू. भे)

(स्त्री० भडखाडियोडी)

भडखाणौ-वि० (स्त्री० भडखाणी) योद्धाओ का भक्षण करने वाला।

उ०—सत्तसई दोहामयी, मीसण सूरजमाल। जपै भडखाणी जठै, सुणै कायरा साल।—वी स

भडखाणौ, भडखावौ—देखो 'भडकाणौ, भडकावौ' (रू भे)

भडखाणहार, हारौ (हारी), भडखाणियौ—वि०।

भडखायोडौ—भू० का० कृ०।

भडखाईजणौ, भडखाईजवौ—कर्म वा०।

भडखायोडौ—देखो 'भडकायोडौ' (रू भे)

(स्त्री० भडखायोडी)

भडखावणौ, भडखाववौ—देखो 'भडकाणौ' भडकावौ' (रू भे)

भडखावणहार, हारौ (हारी), भडखावणियौ—वि०।

भडखाविओडौ, भडखावियोडौ, भडखाव्योडौ—भू० का० कृ०।

भडखावीजणौ, भडखावीजवौ—कर्म वा०।

भडखावियोडौ—देखो 'भडकायोडौ' (रू भे)

(स्त्री० भडखावियोडी)

भडड़ाट-स० स्त्री० [अनु०] ध्वनि विशेष।

भडच्छणौ, भड़च्छवौ-क्रि० स०—१ दांतो से काटना।

२ जल्दी-जल्दी खाना।

भडच्छणहार, हारौ (हारी), भडच्छणियौ—वि०।

भडच्छिओडौ, भडच्छियोडौ, भडच्छ्योडौ—भू० का० कृ०।

भडच्छीजणौ, भडच्छीजवौ—कर्म वा०।

भडच्छियोडौ-भू० का० कृ०—१ दांतो से काटा हुआ। २ जल्दी-जल्दी खाया हुआ।

(स्त्री० भडच्छियोडी)

भडज-स० पु०—१ घोडा, अश्व।

उ०—रहै लोक अणपार, हुवै घूमरा मुहल्ला। आवै रहै अनेक, भडज भड भल्ला भल्ला।—सू प्र

रू० भे०—भडज, भिडज्ज, भिडग, भिडज, भिडजाळ, भिडज्ज, भिडज, भिडज्ज।

भडणौ, भडवौ—देखो 'भिडणौ, भिडवौ' (रू भे)

उ०—१ विहुवा नह सूवौ वाहुडवौ, भारथ हुवौ ग्राह गज भडवौ। कर अब सहस वरस भारथ को, जोर टूट वीछडवौ जुथ को।

—र ज प्र

भडणहार, हारौ (हारी), भडणियौ—वि०।

भडिओडौ, भडियोडौ, भडयोडौ—भू० का० कृ०।

भडीजणौ, भडीजवौ—कर्म वा०।

भडताळ-स० स्त्री० [दे०] १ आग, अग्नि।

उ०—वेहु कावडा सार तडियाल वाळा वणै, प्रळै जळ पाण भडताळ पीधी। जमी रछपाळ भुपाळ वाधै जका, काळ ऊसताज करमाळ कीधी।—जवानजी आढौ

२ अति उष्ण, बहुत गर्म।

रू० भे०—भडताळ।

भडतौ—देखो 'भडीतौ' (रू भे)

भडत्थणौ, भडत्थवौ-क्रि० स० [स० भृष्ट] भुनना।

भडत्थणहार, हारौ (हारी), भडत्थणियौ—वि०।

भडत्थिओडौ, भडत्थियोडौ, भडत्थ्योडौ—भू० का० कृ०।

भडत्थीजणौ, भडत्थीजवौ—कर्म वा०।

रू० भे०—भडथणौ, भडथवौ, भडत्थणौ, भडत्थबौ, भडथणौ, भडथवौ।

भडत्थियोडौ-भू० का० कृ० [स० भृष्ट] भुना हुआ।

(स्त्री० भडत्थियोडी)

भडथणौ, भडथवौ—देखो 'भडत्थणौ, भडत्थवौ' (रू भे)

भडथणहार, हारौ (हारी), भडथणियौ—वि०।

भडथिओडौ, भडथियोडौ, भडथ्योडौ—भू० का० कृ०।

भडथीजणौ, भडथीजवौ—कर्म वा०।

भडथियोडौ—देखो 'भडत्थियोडौ' (रू भे)

(स्त्री० भडथियोडी)

भडपाळक-स० पु० [स० भट+पालक] सेनापति।

रू० भे०—भडपाळक।

भडबोलियौ—देखो 'भडमोलियौ' (रू भे)

भडभडणौ, भडभडवौ-क्रि० अ० [अनु०] भड-भड की ध्वनि होना।

भडभडणहार, हारौ (हारी), भडभडणियौ—वि०।

भडभडिओडौ, भडभडियोडौ भडभड्योडौ—भू० का कृ०।

भडभडीजणौ, भडभडीजवौ—भाव वा०।

भडभडाणौ—रू० भे०।

भडभडाट-स० स्त्री० [अनु०] भड-भड की ध्वनि।

भडभडाणौ, भडभडावौ—क्रि० स० १ भड-भड की ध्वनि करना।

२ देखो 'भडभडणौ, भडभडवौ' (रू भे)

भडभडाणहार, हारौ (हारी), भडभडाणियौ—वि०।

भडभडायोडौ—भू० का कृ०।

भडभडाईजणौ, भडभडाईजवौ—भाव वा०/कर्म वा०।

भडभडायोडौ-भू० का० कृ० [अनु०] १ भड-भड की ध्वनि किया हुआ

२ देखो 'भडभडियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री० भडभडायोडी)

भडभडियोडौ-भू० का० कृ०—भड-भड की ध्वनि हुवा हुआ।

(स्त्री० भडभडियोडी)

भडभडियौ-वि० [अनु०] १ व्यर्थ की बातें करने वाला, गप्पी।

स० पु० [अनु०] मोटर-साइकिल।

भडभडी-स० स्त्री०—१ ध्वनि विशेष।

२ महामारी रोग, प्लेग।

रू० भे०—भडाभडी।

भडभूजो–स० पु० [स० भ्राष्ट्र+भर्जनम्] भाड झोकने व अन्न भुनने का कार्य करने वाला। (मा म)

भडभोलियो, भडभोलो, भडभोल्यो–स० पु० [देशज] होलिकोत्सव पर गोबर की बनाई जाने वाली वह छोटी टिकियाए जिन्हें एक माला के रूप मे पिरोकर होलिका-दहन मे जला देते हैं।

वि० वि०—प्राय छोटे बच्चे होली के चार पाच दिन पहले गोबर की छेददार टिकियाए बना लेते है और वैसे ही पान और नारियल भी बनाते हैं। इनके सूखने पर इनकी एक माला बनाकर होलिका-दहन के समय उसमे डाल देते हैं।

उ०—काना मे दोय भडभोल्या घाल्या। गळा मे मीगणा री माळा पै'री। जोगी रो रूप धारण कर नै वो उण धूमाळा माथै पालथी मार ने वैठग्यो।—फुलवाडी

रू० भे०—भडबोलियो, भरभोलियो।

भडयंत–वि० [स० भट+रा०प्र०यंत] युद्ध करने वाला, भिडने वाला।

उ०—एको भड जोड फवै भडयंत, जुडै 'महक्रन' समोभ्रम 'जैत'। वरच्छिय वेघत घाट वराळ, मदा छकि जाणि पडै मतवाळ।

—सू प्र

भडवाई–स० स्त्री० [स० भट्+रा० प्र० वाई] १ भड्आो का कार्य। २ वेश्याओ की दलाली।

रू० भे०—भडवापण, भडवापणो।

भडवाणो, भडवाबो–क्रि० स०—भगा दिए, पराजित कर दिए।

उ०—केता रुड मुड काटिया, रिण जग रचाया। उसर गया रिण ओछर्ड, 'माले' भडवाया।—वी मा

भडवाणहार, हारो (हारी), भडवाणियो—वि०।

भडवायोडो—भू० का० कृ०।

भडवाईजणो, भडवाईजबो—कर्म वा०।

भडवापणो—देखो 'भडवाई'।

उ०—भडवा भडवापणू चुगलिया चुगली चासी। ठग-ठग लेसी ठोठ, कुलतिया करम करासी।—ऊ का

भडवो–स० पु० [स० भाटिक] (स्त्री० भडवी) १ वेश्याओ की दलाली करने वाला।

२ वेश्याओ के साथ तबला-सारगी बजाने वाला।

भडहक्क–स० पु० [स० भट+राज०हक्क] योद्धाओ का प्रबल शब्द।

उ०—झड मातो सर गोळिया, हुय वडवड भडहक्क। रीस जिवारी आसुरा, झडिया तीस तुरक्क।—रा रू

रू० भे०—भडहुक्क।

भडांकिमाड, भडांकिवाड—देखो 'भडकिमाड' (रू भे)

उ०—भडांकिमाड ओनाड अभग, अवे अपार दातार विडग। पखा उजाळ भूपाळ प्रवीत, रखै विचा आचार सुरीत।—ल पि

भडांठेक–वि०—पूर्ण स्वस्थ।

रू० भे०—भडाठेक।

भडावली—हिचकिचाहट।

रू० भे०—भडावली।

भडामड—महायोद्धा।

उ०—पचाळी तुझ सरीसो प्राण, आवै रा आंधा पूत अजाण। आवै तू आप लियो अवतार, भडामड भोमि उतारण भार।

—पी ग्र

भडाक–क्रि० वि० [अनु०] तुरन्त, शीघ्र।

उ०—१ मीहूंर्ं चढिया मयद रैं, भंचक जाय भडाक। गैवर भूलै गाळवो, चौसै चढ चित चाक।—वा दा

उ०—२ इतनी सुण गोपाळदास भडाक मे ऊठ जमी सू हाथ लगाय जाय सलाम कीवी।—गोपाळदास गौड री वारता

२ देखो 'भडाको' (मह, रू भे)

भडाको–स० पु० [अनु०] बन्दूक या किसी प्रकार के विस्फोट से उत्पन्न होने वाली ध्वनि।

उ०—बदूका रा भडाका अर धाडैतिया री खबर सुणनै गाव मे खळबळाट माचगी।—रातवासो

मह०—भडाक।

भडाभड–स० स्त्री० [अनु०] १ ध्वनि विशेष।

उ०—अठै सफीला उपरा निपट अमामी तरवारिया री भडाभड वागी।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

भडामड–स० स्त्री० [अनु०] १ ध्वनि विशेष।

उ०—पडे वेध कूरमदे राण छळ 'पीथलो'। खला सर बीज जिम वहै रवतो। जागरण भडामड छूट गोळा जठै। रुक भड डडेहड रमै रवतो।—वसराम रावळ

उ०—२ गडा पड बीगडै नही हरगिज गढ़, चडापड न आवै रोग चाळो। न फलै घडाघट लाय महमदनगर, भडामड भवानी बोल भाळो।—खेतसी वारहठ

क्रि० वि०—शीघ्रता से, तेजी से।

उ०—अडड वाज गोळा उरड थळेचा ऊपरां, भडामड वळोवळ खाग भडकी। अरि घड ऊपरा 'दलै' अस ओरियो, कडडियो आभ काय बीज कडकी।—वीरमियो मूळो

रू० भे०—भडाभड।

भडामडी–स० स्त्री० [अनु०] १ ध्वनि विशेष।

उ०—भडामडि भडाभडि नाळ छूटै भली, कडाकडि कूट वाजै कुठारा। तडातडि तडातडि सवद गढ ठावता, वडावडि वांण लागै ऊठारा।—प प चौ

२ देखो भडभडी' (रू भे)

भडाल—देखो 'भट' (मह, रू भे)

उ०—भडे सनाहा भडाळा भाण, उगा ह्वै भळा का भाला, तसा वीजू जळाका साळाका वीज तेम। मूछा दे बळाका मदा श्राया नाग सोवा माथै, जाया गोकळा का तू खिजाया वाघ जेम।
—हिम्मतसिंह सक्तावत रो गीत

भडालो—देखो 'भट' (श्रल्पा, रू भे)
उ०—थाभिया छडाला खळा खेर रा भडालां थोका घाटियां पैनाळां सीस सेलरा घुजाव। हैजमा त्रमाळा गाज गणेस रा रूप हाती, सुरेस रा ढाळा 'प्रवतेस' रा सुजाव।—रोडजी भादो

भडाव—१ समूह, झुण्ड।
उ०—कोलू वाळा कागरा, तिण दिन पडसी ताव। उण दिन श्राडा श्रावसी, भीला तणा भडाव।—पा प्र
रू० भे०—भडाव।

भंडिद—स० पु०—भारी पदार्थ के ऊपर से वेग पूर्वक गिरने से होने वाली ध्वनि।
उ०—मौत रा श्राटा मे भिलियोडी सिवाय टसकणा रै वा समूळी वांणी भूलगी ही। वोलणो पातरगी ही। उण नै लखायो के पेट रै माय भडिद भंडिद करता कोई भाखर भिडै।—फुलवाडी
रू० भे०—भडद, भडीद।

भडिक—देखो 'भडक' (रू भे)
उ०—सज्जण दुज्जण के कहे, भडिक न दीजइ गाळि। हळिवइ हळित्रइ छडियइ, जिम जळ छडइ पाळि।—ढो मा

भडियाल—वि०—टक्कर लेने वाला।
उ०—वजर पडियाळ वागां वजर वेढ़ री, भवानी चकर भडियाळ भालो। फोड कडियाळ पैली तरफ फरहरै, श्रसो छडियाळ 'भीमेण' श्राळो।—महाराणा भीमसिंह रा भाला रो गीत

भडिल—देखो 'भडिल' (रू भे)

भडियोडो—देखो 'भिडियोडो' (रू भे)
(स्त्री० भडियोडी)

भडींद—देखो 'भडिंद' (रू भे)

भडीड—स० पु० [श्रनु०] १ प्रहार, चोट।
२ प्रहार या चोट से उत्पन्न ध्वनि विशेष।

भडीतो—म० पु० [स० भटित्र] १ सीखचों पर भुना हुश्रां।
२ श्रालू, वैंगन इत्यादि सब्जी को श्राग मे भुनने के वाद छौक कर वनाया जाने वाला एग चटपटा सालन।
३ वह पदार्थ जो दव जाने श्रथवा कुचला जाने से विकृत एव कुरूपावस्था को प्राप्त हो गया हो।
मुहा०—भडतो करणो, भडीतो वणाणो=कुचल कर कुरूप या विकृत कर देना।
रू० भे०—भडतो, भडत्थ, भडिय, भडीतो, भुडतो, भुडतो।

भडीहार—स० पु०—भटिहारा। (नैणसी)

भड्डूस—स० पु०—विना पानी के सफेद वादल।
रू० भे०—भड्डस।

भडेच—क्रि० वि०—शीघ्र।

भडोची—वि०—भडौंच से सवघित, भडौंचका।
स० पु०—भडोच देश का घोडा।

भडोलियो—स० पु० [देशज] वट वृक्ष का फल।
उ०—राई जिसा ईण छोटा सा वीज मे वडला रो श्रो जगी रूप कठै लुक्योडो हो। श्रै जडिया, श्रो गोड, श्रै डाळा, श्रै श्रणगिण भडोलिया श्रर श्रै झूलती साखा।—फुलवाडी
रू० भे०—भरुश्रच्छ, भरुश्रच्छपुर, भरूयच्छि, भरुश्रच।

भच—स० पु० [श्रनु०] १ सिर मे होने वाली पीडा विशेष जिससे स्नायु-जाल मे स्फुरण होता है।
२ किसी कोमल वस्तु या प्राणी के एक झटके से कटने से उत्पन्न ध्वनि विशेष।
ज्यू—वकरिया रो माथो भच देणी कटग्यो। म्हैं उठै वैठो भच-भच मूळा खावतो हो।
क्रि० वि०—१ एकदम, श्रचानक।
उ०—जे श्रो नीद रो मिस करतो भच दैणी ऊठ नै म्हनै वेरा मे थरकाय देवै तो पछै म्हा मे कैडी भूडी वीतै।—फुलवाडी
२ शीघ्र, तुरन्त।
उ०—श्रर श्रा वात विचारता ईं वो श्रणजेज कमर सू वधियोडी कटार काढी। भच दैणी श्रापरी पीडी रो मास तोड नै काळिंदर रै सामी वगाय दियो।—फुलवाडी
रू० भे०—भच्च, भच्छ।

भचक—स० स्त्री० [श्रनु०] १ भय, श्रातक।
उ०—चमै दळ घटा सम वीज सावळ चमक, भचक द्रगपाळ रज श्रवर ढक भाण नु। जटाधर उमग गण हलै जग जाण नु, इसो कुण श्रभग लग उदै श्राथाण नु।—रामलाल वारहठ
२ प्रहार से उत्पन्न ध्वनि।
उ०—रौद्राण भचक भाला गरीठ, धारक्क वहै गजवाज धीठ। घड हुई घोमा-रव चरख घोम,वणि घोम श्रघारव गोम वोम।—सू प्र
३ टक्कर, भिडन्त।
उ०—१ कमरा कस श्रायो रण काळो, वाघण माथै मोड विलालो। भुजडड पकड ऊठियो भालो, लेवा भचक रूठियो 'लालो'।—वरजूवाई
उ०—२ ताकडा 'श्रजण' 'भीमेण' ताय, खागडा उरम थी भचक खाय। 'श्रभपती' जती गोरक्ख एम, तेरै सख वारह पथ तेम।
—वि, स
रू० भे०—भचक्क।
श्रल्पा०—भचको, भचक्को।

भचकणो, भचकबो—क्रि० श्र०—१ श्राश्चर्य निमग्न होना, भौचक्का होना।
क्रि० स०—२ प्रहार करना।
उ०—भचकै 'वखतेस' गुसै भरियो, व्रजराज उपासक वीफरियो

जुध जाणिक क्रोघ मतै अजरै, करि दामणि घार सग्राम घरै।
—सू प्र

३ काटना।

४ देखो 'भिचकणौ, भिचकवौ' (रू भे)

भचकणहार, हारौ (हारी), भचकणियौ—वि०।

भचकिअोडौ, भचकियोडौ, भचक्योडौ—भू० का० कृ०।

भचकीजणौ, भचकीजवौ—भाव वा०।

भचक्कणौ, भचक्कवौ—रू० भे०।

भचकियोडौ–भू० का० कृ०—१ आश्चर्य निमग्न हुवा हुआ, भौंचक्का हुवा हुआ २ प्रहार किया हुआ. ३ काटा हुआ ४ चौंका हुआ

५ देखो 'भिचकियोडौ' (रू भे)

(स्त्री० भचकियोडी)

भचकै–क्रि० वि० [अनु०] १ शीघ्रता से, जल्दी।

उ०—१ खुद की पचायती नी करै, पण म्हारै हेला रै समचै ई भचकै तूट तूट नै पडै।—फुलवाडी

उ०—२ नित विगाड सू खेत रो घणी काठौ कायौ ह्वियोडौ हौ। गधा री हूकणी सुणनै वो भचकै ऊभौ ह्वियौ।—फुलवाडी

२ एक दम, अचानक।

उ०—महाराणी भचकै मूडो फेर नै बोली—जे आ भिसखरी री वात है तौ म्हनै की जवाव नी देवणौ।—फुलवाडी

भचकौ—देखो 'भचक' (अल्पा, रू भे)

भचक्क—देखो 'भचक' (रू भे)

उ०—खेंगक्क उचक्क खाटक्क खगक्क, फाटक्क भाटक्क भटक्क विजक्क वळक्क जुरक्क जरक्क, सेलक्क धमक्क भचक्क सहक्क।—सू प्र

भचक्कणौ, भचक्कवौ—देखो 'भचकणौ, भचकवौ' (रू भे)

उ०—१ हिंदवाण तुरकाण हिवै, रिण ढाण वीराण नूताण रचै। करडक्क हुवै सिलहक्क कडा, धमचक्क भचक्कत सेल धडा।
—सू प्र

उ०—२ मेक मास वारूद, हिंदु तुरकान हुचक्किय। हल्लौ करि फिरि हल्लि, देख भुवलोक भचक्किय।—ला रा

भचक्कणहार, हारौ (हारी), भचक्कणियो—वि०।

भचक्किअोडौ, भचक्कियोडौ, भचक्क्योडौ—भू० का० कृ०।

भचक्कीजणौ, भचक्कीजवौ—भाव वा०।

भचक्कियोडौ—देखो 'भचकियोडौ' (रू भे)

(स्त्री० भचक्कियोडी)

भचक्कौ–सं० पु०—देखो 'भचक' (अल्पा, रू भे)

भचक्र–स० पु० [स०] १ नक्षत्रो का समूह।

२ ग्रहो के चलने का कक्ष या मार्ग।

भचड–स० स्त्री० [अनु०] १ घास या अन्य वनस्पति को उखाडने या काटने से उत्पन्न ध्वनि।

उ०—जू जू सिघ जावै अे! डीरा तूटण नै। कीकर खूटै अे! भचड-भचड।—फुलवाडी

२ किसी वस्तु को चबाकर खाने मे उत्पन्न ध्वनि।

उ०—१ माठ मार्थं वा दौनू कुत्ता ने वारी नीचै जावता सू ढक दिया। अर खुदो-खुद निसक होय नै भचड भचड मोठ चरण लागी।—फुलवाडी

उ०—२ कुमार रोटी देख नै घणौ राजी हुवौ। भचड भचड़ मगळी रोटी खायग्यो।—फुलवाडी

३ देखो 'भचीड' (रू भे)

भचडणौ, भचडवौ–क्रि० अ० [अनु०] १ टक्कर खाना।

उ०—वढ पड़ विहर थाटा 'विलद', भुजलग भट सेला भचडि। स्रग वसू कहै 'हटमल' सुतन, 'अमृनि' जिम खाटे अचडि।
—सू प्र.

२ शीघ्रता से मोटे ग्रास भरते हुए कोई वस्तु खाना।

ज्यू—रोट्या भचडणी, मूळा भचडणा।

भचडणहार, हारौ (हारी), भचडणियौ—वि०।

भचडिअोडौ, भचडियोडौ, भचड्योडौ—भू० का० कृ०।

भचडीजणौ, भचडीजवौ—कर्म वा०।

भचडियोडौ–भू० का० कृ०—१ टक्कर खाया हुआ २ शीघ्रता से मोटे ग्रास भरते हुए कोई वस्तु खाया हुआ।

(स्त्री० भचडियोडी)

भचभचाणौ, भचभचावौ–क्रि० स० [अनु०] १ शीघ्रता करना।

उ०—ताहरा राजा रो लोक ऊभो थौ तिकै भच-भचाय अर कुवर नू अर रजपूता नू मार लिया।—नैणसी

२ खटखटाना।

३ देखो 'भचडणौ, भचडवौ' (रू भे)

ज्यू—गाजरा भचभचाणी, मूळा भचभचाणा।

भचभचाणहार, हारौ (हारी), भचभचाणियौ—वि०।

भचभचायोडौ—भू० का० कृ०।

भचभचाईजणौ, भचभचाईजवौ—कर्म वा०।

भचभचायोडौ–भू० का० कृ०—१ शीघ्रता किया हुआ २ खटखटाया हुआ।

(स्त्री० भचभचायोडी)

भचभेडौ—देखो 'भचीडौ'।

उ०—लाम्बा जन होलै भचभेडा लेता, दारू खोरा री घोरां दव देता। भाजो भाजो कर भोजन कज भीखै, दुख मे दरवाजो दाता रौ दीखै।—ऊ का

भचाक–स० स्त्री० [देशज] १ प्रहार, आघात।

उ०—भाला री भचाका चखाइ केही पटेतानू पाडि कुमार आपरै देस री दिसा आडै पग आवण नू मरतै मारतै प्रयाण कीधौ।
—व भा

उ०—सालो सीमाडा खोयणा भालो मारण री करणेठी सोहे, दकालो काळ री भेरवाण री डचाक । विलाला पाण री दूत नाथ री हाक वाळो, भालो स्री राण री भूतनाथ री भचाक ।

—कविराजा सूरजमल्ल मीसण

भचाभच–स० स्त्री० [अनु०] १ दो वस्तुओं के आपस मे टकराने से उत्पन्न ध्वनि ।

उ०—साळ रै माय सबदा बाजता हा अर वारै मासी भचाभच आडो भचेडती ही ।—फुलवाडी

२ शीघ्रता, सत्वरता ।

भचीड़–स० पु० [अनु०] १ आघात, प्रहार ।

उ०—१ आ कंय वा वीजळी री गळाई सळावा भरती भच उठा सू ताचकी सो मोगरी हाथ मे आवता ई आवेस पूरा जोर सू आगळ रै दोनू कानी भचीड मेल दिया ।—फुलवाडी

उ०—२ सरमा सरम दुख सांसै, पिंड सुजाग सहावै पीड । खागां जग भचीड़ न खावै, भोग तणी वस खाय भचीड ।

—कविराजा बांकीदास

क्रि० प्र०—उडणी, मेलणी ।

२ आघात, प्रहार या टक्कर की ध्वनि ।

३ टक्कर, धक्का ।

४ दुख, कष्ट ।

उ०—सरमा सरम मरै दुख सासै, पिंड सुजाग सहावै पीड । खागां जग भचीड न खावै, भोग तणी वस खाय भचीड ।—बां दा

५ दर्द, चीस, टीस ।

६ भटकने की क्रिया या भाव ।

७ हानि, नुकसान ।

क्रि० प्र०—खाणी ।

अल्पा०—भचीडो ।

रू० भे०—भचड, भचेड, भचेडण ।

भचीडणो, भचीड़बो–क्रि० स०—१ खटखटाना ।

उ०—चार दाड्या रा आडा भचीड, वानै जगाई, रोय रोय पग झाल्या, घणा ई नेवरा करघा, पण अेक ई हुकारो नी भरयो ।

—फुलवाडी

२ किसी एक चीज को किसी दूसरी चीज से जोर से टकराना ।

भचीडणहार, हारो (हारी), भचीडणियो—वि० ।

भचीडिओडो, भचीडियोडो, भचीडयोडो—भू० का० कृ० ।

भचीडीजणो, भचीडीजबो—कर्म वा० ।

भचीडियोडो—१ खटखटाया हुआ ।

२ किसी एक चीज को दूसरी चीज से जोर से टकराया हुआ । (स्त्री० भचीडियोडी)

भचीडो—देखो 'भचीड' (अल्पा, रू भे)

उ०—१ चभीका मेलता माथा माय सूं ठणकिया अर आख्यां मे जावता भचीडा ऊठ्या ।—फुलवाडी

उ०—२ लूट, डकैती, खून, चोरियां, लाय लगी तो झाळी झाळ । भूख भचीडा फिरै खावती, नाचै झूमै सौ-सौ ताळ ।—चेतमांनखा

भचेडणो, भचेडबो—देखो 'भचीडणो, भचीडबो' (रू भे)

उ०—१ कोतवाळ मजा मे कोड सू पगथळी चाटतो हो के आडो भचेडण री आवाज सुणीजी ।—फुलवाडी

उ०—२ मासी घणो ई आडो भचेडियो, हाका करघा, पण भटियांणी की गिनत करी नी ।—फुलवाडी

भचेडणहार हारो (हारी), भचेडणियो—वि० ।

भचेडिओडो, भचेडियोडो, भचेडयोडो—भू० का० कृ० ।

भचेडीजणो, भचेडीजबो—कर्म वा० ।

भचाडणो, भचाडबो, भचीडणो, भचीडबो—रू० भे० ।

भच्च—देखो 'भच' (रू भे)

उ०—माथो भच्च-भच्च करण लागो । आखिया वळण लागी । सरीर भारी हुयग्यो ।—वरसगाठ

भच्छ—१ देखो 'भक्ष' (रू भे)

उ०—अकवर मैगळ अच्छ, माझळ दळ धूमे मसत । पचानन पळ भच्छ, पटकै छडा प्रतापसी ।—दुरसो आढो

२ देखो 'भच' (रू. भे)

भच्छणी—देखो 'भक्षणी' (रू भे)

भच्छणो, भच्छबो—देखो 'भक्षणो, भक्षबो' (रू भे)

भच्छणहार, हारो (हारी) भच्छणियो—वि० ।

भच्छिओडो, भच्छियोडो, भच्छयोड़ो—भू० का० कृ० ।

भच्छीजणो, भच्छीजबो—कर्म वा० ।

भच्छनी—देखो 'भक्षणी' (रू भे)

उ०—रही प्रतच्छ रच्छमी, दुगच्छ गच्छ दच्छ वनी । लगैं विपच्छ लच्छ पें, भुजाग वच्छ भच्छनी ।—ऊ का

भच्छियोडो—देखो 'भक्षियोडो' (रू भे)

भजणो, भजबो–क्रि अ [स० भज्] १ अनुरक्त होना, लीन होना ।

उ०—तसहु नासुरुद्दीन तिम, यह दूजो अभिधान । सोहु सम्हारिन घर सक्यो, भजि प्रमाद मितभान ।—व भा

२ आश्रित होना ।

क्रि० स०—३ सहारा पकडना, आश्रय लेना ।

४ ईश्वर देवता आदि का स्मरण करना, भजन करना ।

उ०—नारायण भजियों नही, भजिया अवर भजन्न । ज्यां तजियां मानव जनम, सक्रिया तन्न असन्न ।—ह र

५ वार २ किसी का नाम लेते हुए जप करना ।

६ अभ्यास करना ।

७ अधिकार मे करना, कब्जे मे करना ।

८ कहलवाना ।

उ०—पावन धांम सिरोही पत्तन, धारै छत्र अजै कीरति धन । तपै फटक अब्बू गिरि रै तिम, अब्बू पति उपटंक भजै इम ।—व भा.

९ बटवारा करना।
१० उपभोग करना।
११ सम्मान करना।
१२ परिचर्या, सेवा सुश्रुषा करना।
१३ पसद करना, चाहना।
उ०—विजमल, तुझ दीठै वीसरिया, सयल तणा भूपति सिगळेय। दूजा तीह भजै किम डूगर, निरख्यौ ज्या सुरगिरि नयरोय।
—याढेल सिवा री गीत
१४ स्वीकार करना, अगीकार करना।
उ०—गणिका घर सौ सठ गयौ, कीधौ उण सतकार। भजि मोनू इसडी भणी, तिण सकार तिण वार।—व भा
१५ सभोग करना, मैथुन करना, भोगना।
उ०—नित नेम हियै भूलै नही, चाले सदा सचेत नै। भोगना फूट परत्रिय भजे, हाय तजे इण हेत नैं।—ऊ का
१६ धारण करना, वहन करना।
उ०—म करि रे म करि निंदा निगुण पार की। नारकी तणी गति कांइ वधइ। मारकी प्रकृति तजि सहज सतोस भजि। लागी सुति साभळी धरम धधइ।—वि कु
१७ देखो 'भजणी, भजबौ' (रू भे)
उ०—सुरलोक मे सुरियद के दिये सांसण सुणवे में न आए। इससें 'अभमाळ' का प्रताप देखि इद्र का गरव भजै।—सू प्र
१८ देखो 'भाजणी, भाजबौ' (रू भे)
भजणहार, हारौ (हारी), भजणियौ—वि०।
भजवाडणौ, भजवाडबौ, भजवाणौ, भजवाबौ, भजवावणौ, भजवावबौ, भजाडणौ, भजाडबौ, भजाणौ, भजावौ, भजावणौ, भजाववौ—प्रे० रू०।
भजिओडौ, भजियोडौ, भज्योडौ—भू० का० कृ०।
भजीजणौ, भजीजबौ—भाव वा०/कर्म वा०।
भज्जणौ, भज्जबौ—रू० भे०।

भजन—स० पु० [स० भज्] (सेवा करना) १ पूजा, उपासना, सेवा।
२ ईश्वर व देवता आदि के गुणो का कीर्तन करने का कोई गीत।
क्रि० प्र०—गाणौ।
३ किसी का नाम वार-वार जपते हुए स्मरण करने की क्रिया।
उ०—भजन किया सू तेज वधैलो, जैसे (ऊग्यौ) सूरज मांण। मीरां के प्रभु गिरधर नागर, अव तू थारी जाण।—मीरां
क्रि० प्र०—करणौ।
यौ०—भजन-भाव।
रू० भे०—भजन्न, भुजन।

भजनानद—स० पु० [भजन+आनद] परमेश्वर के नाम स्मरण से प्राप्त होने वाला आनद।

भजनानदी—वि० [सं० भजन+आनन्द+ई] सदैव ईश भजन गान कर प्रसन्न रहने वाला।

भजनी, भजनीक—वि० [स० भजन+रा० प्र० ईक] स्वय एव लोगो के लिए भजन गाने वाला।
उ०—प्रम चा भजनीक वडा पह देवे, सूर धीर खग मग्र सनो। समद सिवा तणा दळ सारे, अगसत जिम जीरवै 'अनौं'।
—गोयददास सादू

भजनेर—स० पु०—भटनेर ?
उ०—देवी उत्तरा जोगणी पर उजेणी, देवी भाल भरुअच भजनेर भेणी। देवी देव जालधरी सत दीपें, देवी कदरे सख्खरे वाच चूपे।
—देवि

भजनोपदेसक—स० पु० [स० भजन-उपदेशक] वह व्यक्ति जो भजन के माध्यम से उपदेश देता हो।

भजन्न—देखो 'भजन' (रू भे)
उ०—नारायण भजियौ नहीं, भजिया अवर भजन्न। ज्या तजिया मांनव जनम, सझिया तन्न असन्न।—ह र

भजाडणौ, भजाडबौ—१ देखो 'भजाणौ, भजावौ' (रू भे)
उ०—सो हे घणा-वेटा री वहु-ईठ देख वो कीकर नहीं मरै। म्हनै म्हारा दूध री भरोसो है, जहर जहरनैं ही भजाडै भगायै।
—वी स टी.
२ देखो 'भजाणौ, भजावौ' (रू. भे)
उ०—ले मुनसव पहली पडण, आयौ सिंह अवीह। भाजि कुठार भजाडियौ, सो 'लक्कड' रणसीह।—व. भा.
भजाडणहार, हारौ (हारी), भजाडणियौ—वि०।
भजाडिओडौ, भजाडियोडौ, भजाड्योडौ—भू० का० कृ०।
भजाडीजणौ, भजाडीजबौ—कर्म वा०।

भजाडियोडौ—१ देखो 'भजायोडौ' (रू भे)
२ देखो 'भजायोडौ' (रू भे)
(स्त्री० भजाडियोडी)

भजाणौ, भजावौ—क्रि० स०—१ भजन करने में प्रवृत्त करना।
२ अनुरक्त करना, लीन करना।
३ आश्रित करना।
४ ईश्वर देवता आदि का स्मरण कराना, भजन कराना।
५ वार २ किसी का नाम जप कराना।
६ अभ्यास कराना।
७ अधिकार में कराना।
८ कहलवाना।
९ उपभोग करवाना।
१० परिचर्या करवाना, सेवा करवाना।
११ पसद करवाना।
१२ स्वीकार करवाना, अगीकार करवाना।
१३ धारण करवाना, वहन करवाना।

१४ भगवा देना, पलायन कराना।

उ०—१ सूतापर जुद्ध मे म्हारा कत सू दम दस वीसा ग्रादमी ग्राय नैं लडरा वासतै लूविया तिका नैं ऊठ तैं ही कत भजाय दीधा।—वी स टी

उ०—२ इरा रीति ग्राम बोरखडी रा घमसारा मैं दिल्ली रा दळ नू भजाइ दूजैं दिन दूदो हाथ वाधि जैतगढ रा डेरा जाइ पिता रा पगा पडियो।—व भा

भजाणहार, हारौ (हारी), भजाणियौ—वि०।

भजायोडौ—भू० का० कृ०।

भजाईजणौ, भजाईजवौ—कर्म वा०।

भजाडणौ, भजाडबौ, भजावणौ, भजाववौ—रू० भे०।

भजायोडौ—१ भजन करने मे प्रवृत्त किया हुग्रा २ ग्रनुरक्त किया हुग्रा, लीन किया हुग्रा ३ ग्राश्रित किया हुग्रा ४ ईश्वर, देवता ग्रादि का स्मरण कराया हुग्रा भजन करवाया हुग्रा ५ वार २ किसी का नाम जप कराया हुग्रा ६ ग्रभ्यास कराया हुग्रा ७ ग्रधिकार मे कराया हुग्रा ८ कहलवाया हुग्रा ९ उपभोग करवाया हुग्रा १० परिचर्या करवाया हुग्रा, सेवा करवाया हुग्रा ११ पसद करवाया हुग्रा १२ स्वीकार करवाया हुग्रा, ग्रगीकार करवाया हुग्रा १३ धारण करवाया हुग्रा, वहन करवाया हुग्रा १४ भगवाया हुग्रा, पलायन करवाया हुग्रा। देखो 'भजायोडो' (रू भे)

(स्त्री० भजायोडी)

भजावणौ, भजाववौ—१ देखो 'भजाणौ, भजावौ' (रू भे)

२ देखो 'भजाणौ, भजावो' (रू भे)

भजावणहार, हारौ (हारी), भजावणियौ—वि०।

भजाविग्रोडौ, भजावियोडौ, भजाव्योडौ—भू० का० कृ०।

भजावीजणौ, भजावीजवौ—कर्म वा०।

भजावियोडौ—१ देखो 'भजायोडो' (रू भे)

२ देखो 'भजायोडो' (रू भे)

(स्त्री० भजावियोडी)

भजियोडौ—भू० का० कृ०—१ भजन करने मे प्रवृत्त हुवा हुग्रा २ ग्रनुरक्त हुवा हुग्रा, लीन हुवा हुग्रा ३ ग्राश्रित हुवा हुग्रा ४ सहारा पकडा हुग्रा, ग्राश्रय लिया हुग्रा ५ ईश्वर, देवता ग्रादि का स्मरण किया हुग्रा, भजन किया हुग्रा ६ वार २ किसी का नाम लेते हुए जप किया हुग्रा ७ ग्रभ्यास किया हुग्रा ८ ग्रधिकार मे किया हुग्रा, कब्जे मे किया हुग्रा ९ कहलवाया हुग्रा १० वटवारा किया हुग्रा ११ उपभोग किया हुग्रा १२ सम्मान किया हुग्रा १३ परिचर्या, सेवा सुश्रुषा किया हुग्रा १४ पसद किया हुग्रा, चाहा हुग्रा. १५ स्वीकार किया हुग्रा, ग्रगीकार किया हुग्रा. १६ सभोग किया हुग्रा, मैथुन किया हुग्रा, भोगा हुग्रा १७ धारण किया हुग्रा, वहन किया हुग्रा

१८ देखो 'भजियोडो' (रू भे)

१९ देखो 'भाजियोडो' (रू भे)

(स्त्री० भजियोडी)

भज्जणौ—देखो 'भजणौ' (रू भे)

उ०—कमव स्याम कामय, जुटे ग्ररद्ध जामय। मुडै घडा मळेच्छणी विचार धार भज्जणी।—रा रू

(स्त्री० भज्जणी)

भज्जणौ, भज्जवौ—देखो 'भजणौ, भजवौ' (रू भे)

उ०—१ नारद जुघ निरसता, तिको पिण हासो तज्जै। भयण ग्रभ भोजन, भूख जीमिया न भज्जै।—चौथ वीठू

उ०—२ ग्राप तणा खग तेज ग्रप्रवळ, दहळ वगा वाजीद तणा दळ। राव ताव खग देखि घोम रवि, भज्ज गयो इद्रसिघ मनव भवि।—सू प्र

उ०—३ कमण स हीदू कुण तुरक, कमण कहैवा पीड। तो पावै राउ राठवड, वियै न भज्जै भीड।—गु रू व

भज्जणहार, हारौ (हारी), भज्जणियौ—वि०।

भज्जिग्रोडौ, भज्जियोडौ, भज्ज्योडौ—भू० का० कृ०।

भज्जीजणौ, भज्जीजवौ—कर्म वा०।

भज्जा—स० स्त्री०—भार्या।

उ०—भडारिउ तहि वमए 'नेमिचदु' गुण रयण सायरु। तम भज्जा 'लखमिणि', पवर सील (वत) लावन्न मणहर।

—कवि सोममूर्त्ति

भज्य—वि० [स० भज्] १ सेवा करने योग्य।

२ विभाग करने योग्य।

भट—स० पु० [स० भट] १ योद्धा, वीर।

उ०—१ निज दल छोड उजीर नीसरयो, कायर पर दल कानी। ग्ररी भट हाथ ग्रपार ग्रचानक, घर की फौज घिरानी।—ऊ का

२ सिपाही, सैनिक।

३ पहलवान, मल्ल।

४ नौकर। (हा नां मा)

५ देखो 'भाट' (रू भे)

६ देखो 'भट्टी' (मह, रू भे)

७ देखो 'भट्टी' (मह, रू भे)

उ०—भट नाखू राज भिभो भार, भूडी भण ऊठे ग्रत भार। ग्रक पापण तोनैं तोनैं, पापण पापण तोनैं धिक्कार।—र रू

मुहा०—भट भोखणौ=वेकार फिरना।

रू० भे०—भड, भडज, भट्ट, भठ, भड, भड्डि, भडी, भड्डु, भिड, भिडज।

ग्रल्पा०—भडालो।

मह०—भडाल, भडाल, भिडाल, भिडियाल, भिडीयाल, भिडियाल भिडीयाल।

भटकटैया—सं० पु०—भूमि पर छितराने वाला कांटेदार एक छोटा क्षुप जो बहुधा औषध के काम आता है।

भटकणिया—सं० पु०—'कुम्भट' के बीज जिनका शाक बनाया जाता है।

भटकणो, भटकबौ—क्रि० अ०—१ निरुद्देश्य इधर-उधर घूमना, आवारा फिरना।

उ०—१ थोडी ताळ मे एक राईको सांमी धकियौ। वो उण छुट्टा ओठारू नै इण विध भटकतौ देख उण रै मोहरी घाल दी।
—फुलवाडी

२ किसी वस्तु की प्राप्ति के लिये इधर-उधर घूमना।

उ०—१ भाराणी भटकेह, आवै कवि पाळा अठै। ऊतरिया अट-केह, भ्रम पावै अराक रा।—बा दा

उ०—२ अेकर अेडौ जोग वणियौ के अेक सिकारी रै सगळै दिन भटकता की सिकार हाथ नी आयौ तो वो नीवडा माथै वैठो कवूडा सांमी तीर साध्यौ।—फुलवाडी

उ०—३ 'बाका' धीरज धरण सू, ह्वै नहिं कुजर हाण। की घर घर भटका करै, कूकर अधिक कमाण।—बा दा

उ०—४ धन री खातर तो दिसावरा मे भटकता फिरौ अर औ अमोलक हार यू खीपडा माथै पातरग्या।—फुलवाडी

३ विचरण करना।

उ०—साधा रै सग वन-वन भटकी, लाज गुमाई सारी। वडा घरा थं जनम लियौ छै, नाचौ दे दे तारी।—मीरां

४ भ्रम या धोखे में पडने के कारण किसी निर्णय पर न पहुचना।

उ०—पाणी मे मीन प्यासी, मोहे सुण सुण आवै हासी। आतम-ग्यान विन नर भटकत है, कहा मथुरा कहा कासी।—मीरां

५ चित या मन स्थिर न रहना।

उ०—१ पण म्हारै सिवाय सगळी दुनिया दिन रा अधारा मे सगळा काम करै। अर रात रा चानणा में सगळी दुनिया सोवै। उण वगत म्हैं अेकलो जागतो भटकू।—फुलवाडी

उ०—२ नव तत्व सुपन मनोरथ भटके, सकल्प करत वेहाल। कवहू राव कवू होय मगता, दुख सुख मान्या साल।
—श्री सुखरामजी महाराज

६ पथ विचलित होना, मर्यादा छोडना।

उ०—रमित भई हौं सावरै के सग, लोग कहै भटकी। छुटी लाज कुळकानि लोग डर, रह्यौ न घर हटकी।—मीरा

७ भडकना, प्रज्वलित होना।

उ०—१ दास पच अग्र रहै दुरती, भारथ पाड पांडवा भती। भटके क्रोध झाळ धुवि भूमो (भौ), अरक उठै थामै रथ ऊभो।
—सू प्र

उ०—२ आहवि 'मघौ' अगाहि, पडिआलग वागै प्रवग। जाणि खदीवन जाळिवा, भटकी कटका भाहि।—वचनिका

८ क्रोधित होना, कुपित होना।

उ०—१ सो भरत ढह अरू करत सेव, भटकियौ वबर इम सुणे भेव। मुणियौ खिज दै फुरमाण मूझ, तू नौकर न दियू हाथ तूझ।
—सू प्र.

उ०—२ आगे वळती आग, भालाळो सुण भटकियौ, खीचो ऊपर खाग, तद तोली 'धाधल' तणौ।—पा प्र

९ लालायित होना, इच्छुक होना।

उ०—अै मोडा तो कपटी कोनी,नाय कपट की घात। आ साधा को जिवडो भटकै, मेळो द्यो करवाय।—डूगजी जवारजी री छावळी

१० गमन करना, जाना।

उ०—१ चाहू करीर कळी नृप चटकै, भवर छैल वेश्या घर भटकै। पत महुआ सम दानी पटकै, क्षत्रिय वस वांस मिल खटकै।
—ऊ का

११ वज्रपात होना, विजली गिरना।

उ०—अठठ पड डडाळा चठठिया वाण अत, खाग झट विकट थट खला सिर खीज। 'तेजलै' वियै कर रठठ भेळे तुरी, वोम पुड कठठ, काय भटकती वीज।—भाटी दौलतसिंघ सुरताणोत रौ गीत

भटकणहार, हारौ (हारी), भटकणियौ—वि०।

भटकवाडणौ, भटकवाडवौ, भटकवाणौ, भटकवावौ, भटकवावणौ, भटकवाववौ, भटकाडणौ, भटकाडवौ, भटकाणौ, भटकावौ, भटकावणौ, भटकाववौ—प्रे० रू०।

भटकिओडौ, भटकियोडौ, भटक्योडौ—भू० का० कृ०।

भटकीजणौ, भटकीजवौ—भाव वा०।

वटकणौ, वटकवौ, भटक्कणौ, भटक्कवौ, भुटकणौ, भुटकवौ, भुट-क्कणौ, भुटक्कवौ—रू० भे०।

भटक—सं० पु०—कोप ?

उ०—कोटां कटका भटक करोडा, ओडां आवै नही अति। वियौ हमीर अोझकै वर तनि, परति न जकै हमीरपति।
—महाराजा राजसिंघ जगतसिंघोत रौ गीत

भटकळ—सं० पु० यौ [सं० भट] १ युद्ध, लडाई।

उ०—करतौ ऊगै दीह भटकळ,भूचर मोद हुतौ मन भामण। धीरज-सीग अगजी धूहड, ऊसर थान हुऔ रढ राऊण।—सुखजी खडियौ

२ सहार, ध्वस।

उ०—राठोड जतै कीयौ रिणह, गहण भुजाई भटकळह। पळ धाप कियौ पळहारिया, कळळ, विद कोळाहळह।—गु रू व

३ भीड।

भटका—सं० पु० [देशज] (व व) १ किसी वस्तु के अभ्यास या व्यसन के वाद उस वस्तु के अभाव मे होने वाली चाहना या इच्छा।

उ०—१ भूरी कीटी रा आसी भव भटका, गुडळी छाछा रा सुपनै मे गटका। प्यारा टोघडिया पाडा कद पेखा, दूधा दहिया रा चाडा कद देखा।—ऊ का

उ०—२ अेक ही मिश्री, वा ऊदरा खावती खावती वूढी हेण व्हैगी

अवै ऊदरा मारण री सरघा नी री । घणा ई भटका आवता, पण जोर काई करै ।—फुलवाडी

[स० भ्रम] (व व) घूमने या भटकने की क्रिया या भाव ।

उ०—दावा-पूली करता तथा कचेडिया मे भटका मारता-मारता सेठा रा वाळ सफेद व्हैग्या हा, इण वास्ते आस-पास गावा रा महाजन ई काम पड्या सेठा सू ईज सलाह लेवता ।—रातवासौ

उ०—२ अटका तू ठाकुर अवै, वटका भरणा वोल । भला मिनख भटका लिये, गटका खावै गोल ।—ऊ का.

भटकाडणौ, भटकाड्वौ—देखो 'भटकाणौ, भटकावौ' (रू. भे)

भटकाडणहार, हारौ (हारी), भटकाडणियौ—वि० ।

भटकाडिग्रोडौ, भटकाडियोडौ, भटकाड्योडौ—भू० का० कृ० ।

भटकाडीजणौ, भटकाडीजवौ—कर्म वा० ।

भटकाडियोडौ—देखो 'भटकायोडौ' (रू भे)

भटकाणौ, भटकावौ—१ निरुद्देश्य इधर-उधर घूमाना, आवारा फिराना ।

२ किसी वस्तु की प्राप्ति के लिये इधर-उधर घुमाना ।

३ विचरण कराना ।

४ भ्रम या धोखे मे डालकर किसी निर्णय पर न पहुचाना ।

५ चित्त या मन स्थिर न रहने की अवस्था मे करना ।

६ पथ से विचलित करना, मर्यादा छुडाना ।

७ भडकाना, प्रज्वलित करना ।

८ क्रोधित करना, कुपित करना ।

९ लालायित करना, इच्छुक वनाना ।

भटकाणहार, हारौ (हारी), भटकाणियौ—वि० ।

भटकायोडौ—भू० का० कृ० ।

भटकाईजणौ, भटकाईजवौ—कर्म वा० ।

भटकाडणौ, भटकाड्वौ, भटकावणौ, भटकावबौ, भटक्काणौ, भटक्कावौ—रू० भे० ।

भटकायोडौ—भू० का० कृ० [स० भ्रम] १ निरूद्देश्य इधर उधर फिराया हुआ २ किसी वस्तु की प्राप्ति के लिये इधर उधर घुमाया हुआ ३ विचरण कराया हुआ ४ भ्रम या धोखे मे डालकर किसी निर्णय पर न पहुचने दिया हुआ ५ चित्त या मन स्थिर न रहने की अवस्था मे किया हुआ ६ पथ से विचलित किया हुआ, मर्यादा छुडाया हुआ ७ भडकाया हुआ, प्रज्वलित किया हुआ ८ क्रोधित किया हुआ, कुपित किया हुआ ९ लालायित किया हुआ, इच्छुक वनाया हुआ १० गमन करवाया हुआ (स्त्री० भटकायोडी)

भटकावणौ, भटकाववौ—देखो 'भटकाणौ, भटकावौ' (रू भे)

उ०—चौर गुरू विच्छू चटकावै, ग्यान राव विरळा गटकावै । भेक छाछ कारण भटकावै, लुच्चा वागळ ज्यू लटकावै ।—ऊ का

भटकावणहार, हारौ (हारी), भटकावणियौ—वि० ।

भटकाविग्रोडौ, भटकावियोडौ, भटकाव्योडौ—भू० का० कृ० ।

भटकावीजणौ, भटकावीजवौ—कर्म वा० ।

भटकावियोडौ—देखो 'भटकायोडौ' (रू भे)
(स्त्री० भटकावियोडी)

भटकियोडौ—भू० का० कृ० [स० भ्रम] १ निरुद्देश्य इधर-उधर घूमा हुआ, आवारा फिरा हुआ २ किसी वस्तु की प्राप्ति के लिये इधर-उधर घूमा हुआ. ३ विचरण किया हुआ ४ भ्रम या धोखे मे पडकर किसी निर्णय पर पहुचने मे असमर्थ रहा हुआ ५ चित्त या मन अस्थिर हुवा हुआ ६ पथ से विचलित हुवा हुआ, मर्यादा छोडा हुआ ७ भडका हुआ, प्रज्वलित हुवा हुआ. ८ क्रोधित या कुपित हुवा हुआ ९ लालायित हुवा हुआ, इच्छुक हुवा हुआ १० गमन किया हुआ, गया हुआ
(स्त्री० भटकियोडी)

भटकी—स० स्त्री०—भ्रम, अज्ञान ।

उ०—आछ रामदे पीवण अटकी, भादू 'नाभे' घाली भटकी । मीरा फोड गई जळ मटकी, पापी अेड वोवदे पटकी ।—ऊ का

भटकूडौ—वि० (स्त्री० भटकूडी) वच्चो के लिये प्रयोग किया जाने वाला प्यार सूचक शब्द ।

उ०—भूरी भटकूडी उरजणिया भावै, गोरी गटकूडी कुरजणिया गावै । छपनू गावै गळ नैणा जळ छावै, अपणी उणमुखता सनमुख दरसावै ।—ऊ का

भटक्कणौ, भटक्कवौ—देखो 'भटकणौ, भटकवौ' (रू भे)

उ०—१ ससक्कै नगार वध लटक्कै नागरा सीस, आग रा अगार तोपा भटक्कै अवाज । राखियो सगार दूजा खाग रा पाण सू रिधू, राण वाळौ वाधरा सगार जेम राज ।—भीमसिंघ चूडावत रौ गीत

उ०—२ नवहत्थौ मत्थौ वडो, रोस भटक्कै रार । श्री कूभाथळ ऊपरा, हाथळ वाहणहार ।—वा दा

उ०—३ भटक्कै धोम भटक्कै भाळ, छडा विहु घूम मचै धमचाळ । निदस्सै जोध जुआण निश्रीठ, रूका महिमास्तौ आकारीठ ।
—गु रू व

भटक्कणहार, हारौ (हारी), भटक्कणियौ—वि० ।

भटक्किग्रोडौ, भटक्कियोडौ, भटक्क्योडौ—भू० का० कृ० ।

भटक्कीजणौ, भटक्कीजवौ—भाव वा० ।

भटक्कियोडौ—देखो 'भटकियोडौ' (रू भे)
(स्त्री० भटक्कियोडी)

भटतीतर—स० पु०—प्राय उत्तर पश्चिमी भारत मे पाया जाने वाला एक फुट लम्वा तीतर की शक्ल का एक प्रकार का पक्षी जिसका मास के लिए शिकार किया जाता है ।

भटनागर—स० पु०—१ कायस्थो की १२ शाखाओ मे से एक शाखा ।
(मा मा)

२ इस जाति का व्यक्ति ।

भटनेर—देखो 'भाडगनेर' (रू भे)

उ०—इण ही वस मे भटनेरपुर रै अधीस जसराज सोनगिरै के ही जवना रो जोरदार कटक भाजियो ।—व भा

वि० वि०—देखो 'भाडगनेर ।

भटनेरो—स० पु०—भटनेर नगर का निवासी ।

भटयारो—देखो 'भटियारो' (रू भे)

भटाण वि०—पूर्ण परिपक्व । (वर्षा ऋतु के फल)

भटाळि, भटाळी—स० स्त्री० यौ० [स० भट+अवलि] १ वीरो की पक्ति, सेना ।

उ०—१ नटाळि दे भटाळि की जटाळि ऐंचते अभें, अरीन मुच्छ मुच्छ दें स्वमुच्छ खेंचते अभें । चलाक रुठ पूठ के अगूठ चांपते चलें, हरामखोर सुंडमुड झुंड कापते चलें ।—ऊ का.

उ०—२ चिरे वहित्थ हत्थि के चिकार चूर चूर ह्वै, भिरे भटाळि भाल मे भिखार भूर भूर ह्वै ।—ऊ का

भटियळ—देखो 'भटियाणी' (रू भे)

उ०— भटियळ ऊभी छाजड्ये री छाह,हो जी म्हारा 'रतन' राणा, भटियळ ऊभी छाजड्ये री छाह हो जी हो, आसूडा ढळकावै कायर मोर ज्यू रे ।—लो गी

भटियांण—देखो 'भटियाणी' (मह , रू भे)

भटियाणी—स० स्त्री०—भाटी वश की कन्या ।

उ०—१ कूरमि पमारि कमधज्ज सू, भटियांणी कुळ छळ भळै । जोत्रपुर हुई जादवि सती, पावक च्यारै प्रज्जळै ।—गु रू व

उ०—२ डसण-बीज-दाडम, वेणि-वासग-भुयगम । भटियाणी वर कमध, समद गगा नदि सगम ।—गु रू व

रू० भे०—भटियळ, भाटियांणी ।

मह०—भटियाण ।

भटियारो—स० पु० [स० भ्राष्ट्रमिन्ध] (स्त्री० भटियारण, भटियारणी, भठियारण, भटियारी) १ भडभूजा ।

उ०—राघण भटियारा कठियारा रे, भरावा कसारा ठठारा । मढिया ने विणजारा रे, वले नायक भार लदारा ।—जयवांणी

२ सराय मे ठहरने एव भोजन की व्यवस्था करने वाला व्यक्ति ।

रू० भे०—भटयारो, भठयारो, भठियारो, भठीयारो ।

भटी—१ देखो 'भट्टी' (रू भे)

उ०—एक भटी रै ऊपरै, लागै रुपीया लाख । जकण भटी रो म्यारजी ! छैल दुवारो चाख ।—मयाराम दरजी री वात

२ देखो 'भाटी' (रू भे)

भटु—स० स्त्री०—१ वहिन । (ह ना मा)

२ सखी, सहेली ।

रू० भे०—भट्टु ।

भटेयरा—स० स्त्री०—सिसोदिया वश की एक शाखा ।

भटेस—स० पु० [स० भट + ईश] योद्धा, शूरवीर ।

भटो—स० पु०—१ बैंगन ।

२ देखो 'भट्टो' (रू भे)

भट्ट—स० पु० [सं० भट्ट] १ प्रभु, स्वामि ।

२ उपाधि विशेष जो ब्राह्मणो के नामो के साथ लगाई जाती है ।

उ०—वियास भट्ट के महत जात की ब्रहामण । कथा पुरांण भागवत भारथ रामाइण ।—गु रू व

३ दक्षिण भारत व मालवे के ब्राह्मणो की एक उपाधि ।

४ एक वर्ण-शकर जाति विशेष ।

उ०—कर्पूर पट्टिक कोष्टाकारिक पारिग्रहिक प्रतिहार, चतुद्धरिक काष्टिक राज द्वारिक सधि विग्रहिक भाडपति श्रेष्टि महाजनिक दूत दालिदृ कटुक भट्टपुत्र नट विट भट्ट ।—व स

५ देखो 'भाट' (रू भे)

उ०—नारद तुवर गीत गावई, विप्र दान अघट्ट । मगळीक अनेक वरत्या, विडद वोलई भट्ट ।—रुकमणी मगळ

६ देखो 'भट' (रू भे)

७ देखो 'भट्टी' (मह , रू भे)

उ०—आज पै'ली वार सहर नही जाऊ हू । वारै महीना भट्ट झोख्योडी है ।—रातवासो

८ 'भट्टो' (मह , रू भे)

रू० भे०—भट्ठ, भठ ।

भट्टाउरि—स० पु०—भटनेर (आधुनिक हनुमानगढ) नगर का नाम ।

उ०—फूलभरि अवर शेष, शेप अहिदर नीसाउरि । पुप्फदीन मूलताणि, शेप जवखा भट्टाउरि ।—व स

भट्टार, भट्टारक—वि० [सं०] (स्त्री० भट्टारिका) मान्य, पूज्य ।

भट्टारिका-भुवन—स० पु०—राजमहिषी भवन ।

उ०—सत्रागार, मार्गिजल, भट्टारिका-भुवन गुरुजनोपदेशरसायन आदित्यकरनिकर, चद्रचद्रिका प्रसर मेघजल वनस्पतिफल दीपालिकाउत्सव सत्पुरुपविभव, सर्वसाधारण ।—व. स

भट्टी—स० स्त्री० [स० भ्राष्ट्र] १ विवाह आदि के वडे भोज के लिए जमीन मे खोद कर या जमीन पर ईंट या पत्थर से चुनकर वनाया जाने वाला एक प्रकार का चुल्हा ।

क्रि० प्र०—धुकाणी, लगाणी, सुलगाणी ।

२ रसायन, शराव आदि के लिए जमीन पर चुनकर या जमीन मे खोदकर वनाया जाने वाला एक विशिष्ट प्रकार का चूल्हा ।

क्रि० प्र०—काढणी, निकाळणी, वणाणी ।

३ उस स्थान का नाम जहा शराव वनाई जाती है ।

४ देखो 'भाटी' (रू भे)

उ०—फेर वसाई भट्टिया अत करे पियारी । मारै ईसर माणजी गिरझा गहकारी ।—द दा

रू० भे०—भटी, भठी, भट्ठी, भठ्ठी, भाड, भाटी, भाठी ।

मह०—भट, भट्ट, भट्ठ, भठ ।

भट्टु–स० पु०—१ भानजा। (जोधपुर)
२ देखो 'भट्टु' (रू भे)
३ देखो 'भट्ट' (रू भे)
उ०—कक भट्टु वल्लवु सूआरु, अरजुनु हुउ कीवाचारु। चउथउ नकुलु असघउ थाइ, सहदे वारइ नरवइ गाइ।—सालिभद्र सूरि

भट्टी–स० पु० [स० भ्राष्ट्र] १ चूना पकाने का वृहद् आकार का अग्नि कुण्ड।
क्रि० प्र०—निकाळणौ, पकाणौ।
२ वह स्थान जहा कूडा, कोयला आदि डालकर ईंटे पकाई जाती है।
रू० भे०—भटो, भट्ठो।
मह०—भट, भट्ट, भट्ठ, भठ।

भट्ठ—देखो 'भट्टी' (मह, रू भे)
उ०—वारै दिन बाद रांमलो स्वय सेवकां सू घिरियोडो घरै आयो। देखै क्या है, भट्ठ खुदिया खुदाया त्यार है।—वरसगाठ
२ देखो 'भट्ट' (रू भे)
३ देखो 'भट्टी' (मह, रू भे)

भट्ठी—देखो 'भट्टी' (रू. भे)
भट्ठौ—देखो 'भट्टो' (रू भे)
भठ—१ देखो 'भट' (रू भे)
२ देखो 'भट्ट' (रू भे)
३ देखो 'भट्टी' (मह, रू भे)
४ देखो 'भट्टो' (मह, रू भे)

भठयारौ—देखो 'भटियारौ' (रू भे)
भठियारपण, भठियारपणौ–स० पु० [स० भ्राष्ट्र+त्व, त्वन] भटियारे का काम।
रू० भे०—भटियारपण, भटियारपणौ।

भठियारौ—देखो 'भटियारौ' (रू भे)
(स्त्री० भठियारी)

भठी—देखो 'भट्टी' (रू भे)
उ०—रीझाय हूर सुण राग रग, जम हूत करै खीजाय जंग। पीजाय भठी एक सुरापान, भख जाय अरघ भैंसा भयांन।—वि स

भठीयारौ—देखो 'भटियारौ' (रू भे)
उ०—बगनीघडा कावडि चालइ, भाठी वहइ खमार। पांच सहस चालइ भठीयारा, घाटघडा लोहार।—का दे प्र
(स्त्री० भठीयारण)

भट्ठी—देखो 'भट्टी' (रू भे)
भडग–स० पु० [अनु०] १ मूर्ख व्यक्ति।
उ०—थोडु जमइ तो भुडउ ऊणाटउ, भलां वस्त्र पहरइ तोई लखारू, सामान्य वस्त्र पहरइ तो दरिद्री, गोरो आमवातीउ, कालो तो कवाडि, का वेचि तो खाग्रपाडउ, न वेचइ तो भडग, विसइ तो सद्धरमवहिस्कृत, विसइहीन तो नपुसक।—व स

भडगरा–स० स्त्री० सोलकी वश की एक शाखा।
भडगरौ–स० पु०—सोलकी वश की भडगरा शाखा का व्यक्ति।
भडगी–वि०—आडबर रचने वाला, दिखावा करने वाला।

भडजर–स० पु० [स० भट्+पजर] योद्धा का अस्थि-पजर।
उ०—आगइ पत्र जोगणिया तणा पूरिया, ग्रीभ्रण गूद गिलई अडगात। वीजा गिरवर किया बहादर, चुणिया सुरज भडजर चाढ।
—महादेव पारवती री वेलि
रू० भे०—भडजर।

भड–स० पु०—एक प्रकार का वृक्ष विशेष।
उ०—भीलामा नइ मालकी, भरड्ड भारिंगि भागि। भभेडी अह्याड घणा, भोजपत्र भड चगि।—मा का प्र
२ देखो 'भट' (रू भे)
उ०—दरि है गै घरि राइधी, भड वका दीवाण। की इंद्रापुर अग्गळो, घटि की सू जोधाण।—गु रू व
उ०—२ सन्नाहे भड सुहड, जिके असवार अचग्गळ। परि अघ्घर पाइक्क, सेत वावळ पाए दळ।—गु रू वं

भडकवाड—देखो 'भडकिवाड' (रू भे.)
भडकणौ, भडकवौ—१ देखो 'भिडकणौ, भिडकवौ' (रू भे)
उ०—रूख कडकड, वटाऊ भडकइ। ताड खडखडई, पंखी भड हडइ।—सभा
२ देखो 'भटकणौ, भडकघौ' (रू भे)
भडकणहार, हारौ (हारी), भडकणियौ—वि०।
भडकावणौ, भडकाडवौ, भडकाणौ, भडकावौ, भडकावणौ, भडकावदौ—प्रे० रू०।
भडकिओडो, भडकियोडो, भडक्योडौ—भू० का० कृ०।
भडकीजणौ, भडकीजवौ—भाव वा०।

भडकाडणौ, भडकाडवौ—१ देखो 'भडकाणौ, भडकावौ' (रू भे)
२ देखो 'भिडकाणौ, भिडकावौ' (रू भे)
भडकाणहार, हारौ (हारी), भडकाणियौ—वि०।
भडकाडिओडो, भडकाडियोडो, भडकाड्योडो—भू० का० कृ०।
भडकाडीजणौ, भडकाडीजवौ—कर्म वा०।

भडकाडियोडौ—१ देखो 'भडकायोडौ' (रू भे)
२ देखो 'भिडकायोडौ' (रू भे)
(स्त्री० भडकाडियोडी)

भडकाणौ, भडकावौ—१ देखो 'भडकाणौ, भडकावौ' (रू. भे)
२ देखो 'भिडकाणौ, भिडकावौ' (रू भे)
भडकाणहार, हारौ (हारी), भडकाणियौ—वि०।
भडकायोडौ—भू० का० कृ०।

भडकाईजणी, भडकाईजबो—कर्म वा० ।

भडकायोडो—१ देखो 'भडकायोडो' (रू भे)

२ देखो 'भिडकायोडो' (रू भे)

(स्त्री० भडकायोडी)

भडकिमाड, भडकिवाड, भडकिमाड—देखो 'भडकिवाड' (रू भे)

उ०—अचलेमर तउ किसउ ? उत्तर दक्खिन पूरब पच्छिम कउ भडकिवाड आदत्या अजइपाळ ।—अचळदास खीची री वात

उ०—२ विज्जयानगर छिडे विद्दूर दुरति खप्फर दूठ ए । मरहट वराड भडकिमाड गिड पहाड ग्रीठ ए ।—गु रू व

भडकियोडो—१ देखो 'भडकियोडो' (रू भे)

२ देखो 'भिडकियोडो' (रू भे)

(स्त्री० भडकियोडी)

भडग-स० पु० [स० भद्राग] १ शिव, महादेव ।

२ वलराम ।

भडणो, भडवो—देखो 'भिडणो, भिडवो' (रू भे.)

उ०—चहवाण 'नरो' 'दूल' 'पातल' चौरंगी भूप कलावत रूप भडै । वालाउत 'तोगो' 'केसव' वैवै लोह 'गोइद' रांणोत लडै ।

—गु रू व

भडताळ—देखो 'भडताळ' (रू भे)

भडत्य—देखो 'भटीतो' (रू भे)

उ०—ऊधमुखि ऊकलवई पाणि करइ भडत्य ते वालइ आगि । कह रे परधन खातेउ कीम माडसे ओडी पचारइ ईम ।—वस्तिग

भडळीपुरांण—देखो 'भड्डळीपुराण' (रू भे)

भडयाउ, भडवाय-स० पु० [स० भटवाद] १ पराक्रम की कीर्त्ति ।

उ०—१ अह सामल कोमल केशपाश किरि मोरकलाउ, अद्धचद समु भालु मयणु पोसइ भडवाउ ।—राजसेखर सूरि

उ०—२ जीतउ रतिपति राय, भागु तसु भडवाय । पेखी पराभवए, दास थ्यु आ भव ए ।—आगम मांणिक्य

२ सामर्थ्य और वल ।

उ०—सव नगर सश्रीक करी, सरवाग भूसण धरी, हस्ति राजाधिरूढ, प्रतापि पीढ, पालि लाख खाडा तणउ भडवाउ, मडलीक तणउ समवाउ ।—व स

३ योद्धत्व, योद्धापन ।

रू० भे०—भडिवाओ ।

भडहक्क—देखो 'भडहक्क' (रू भे)

भडांकिमाड—देखो 'भडकिवाड' (रू भे)

भडांटेक—देखो 'भटांटेक' (रू भे)

भडांप-स० स्त्री०—एक प्रकार की वन्दूक ।

भडांवली-स० स्त्री०—द्विविधा, सन्देह ।

उ०—आकुनी सुरहि नाद सांभली, जीह नइ मनि हूई भडावली ।

—सालिसूरि

भडाभड—देखो 'भडाभड' (रू भे)

उ०—पड़ै उर वल्ल गडोयळ पिंड । भडाभड खग्ग जुवा मुजदड ।

—गु रू व

भडाळ—देखो 'भट' (मह , रू भे)

उ०—वडाळा भाजता गाजता अमाळा । भडाळा जगत कहियो घनो भाग ।—गोरधनसिंघ हाडा री गीत

भडि—देखो 'भट' (रू. भे)

उ०—थरहरिया भुवण त्रिण्हे विथका भडि, घरजइ अस सोई नहीं घर । ईसर तो सरणइ ऊवरिजइ हरिसकर समरीयो हर ।

—महादेव पारवति री वेलि

भडिय—देखो 'भडीतो' (रू भे)

भडियोडो—देखो 'भिडियोडो' (रू भे)

(स्त्री० भडियोडी)

भडिवाओ—देखो 'भडवाउ' (रू भे)

उ०—तिणि कुलि सुणीइ सतणु राओ, भूयवलि भजइ रिउ भडिवाओ ।—सालिभद्र सूरि

भडी—देखो 'भट' (रू भे)

भडीतो—देखो 'भडीतो' (रू भे) (अमरत)

भडीयड—देखो 'भट' (रू भे)

उ०—भडीयड भाजि मरगड मूड । रडव्वड रैण करडक रुड ।

—गु रू व

भडूस—देखो 'भडूस' (रू भे)

भडोळ-वि०—फूहड ।

भडोळखानो-स० पु० यौ०—अव्यवस्था ।

भड्ड—देखो 'भट' (रू भे)

उ०—जूडिए जूगरा घरै ग्रोह घरा । जाणिजै जम्मरा भड्ड रोग भरा ।—सू प्र

भड्डळीपुराण, भड्डळीपुराण-स० पु० यौ०—अपनी स्त्री भड्डली को सम्बोधित करके डक नामक ज्योतिषी के रचे हुए वर्षा विज्ञान सम्वधी पद्यो का एक सग्रह ।

रू० भे०—भडळीपुराण ।

भणक—देखो 'भणक' (रू भे)

भणकणो, भणकवो—देखो 'भणकणो, भणकवो' (रू भे)

उ०—१ गाजै त्रवाळा निहाव घाव पिनाकां भणकै गाण । धारिया उनाग खाग खत्री ध्रम धोड । दूठ 'जसो' हुओ हेक आविया दवसणी दळा । राणा दळां आडो कोट सारमैं राठौड ।

—दानोजी बोगसी

उ०—२ भणकै चलो, कोमडा तूर भेरी । फवै सख सहनाय, अनेक फेरी । विखम्मी सुरा, सिद्धवा डाक वागी । व्रहमड इक्कीममै हाक वागी ।—सू प्र

भणकणहार, हारौ (हारी), भणकणियौ—वि० ।

भणकिप्रोडौ, भणकियोडौ, भणक्योडौ—भू० का० कृ० ।

भणकीजणौ, भणकीजबौ—भाव वा० ।

भणकार—देखो 'भणक' (रू भे)

भणकियोडौ—देखो 'भणकियोडौ' (रू भे)

(स्त्री० भणकियोडी)

भणकौ—देखो 'भणक' (अल्पा, रू भे)

उ०—आखती सावळी रूप देवळा ऊताळ आई, चाही काळी हीस ईसी सुणाई अचीत । पाठ-वेद साखी पाल फेरा मे भणकौ पायौ, नाखै गाठ-जोड आयौ पीठ पै नचीत ।—बादरदान दधवाडियौ

भणक्क—देखो 'भणक' (रू भे)

उ०—रत्ता पी गणक्कै कै भणक्के ये बीमाण रभा, लोयणा भणक्क डड मणक्का लेवाण । हुवै पखा भडप्फा ग्रीवाण वीर है हणक्कै, कैमरा खणक्कै बाजै खडक्का केवाण ।

—प्रभूदान मोतीसर

भणक्कणौ, भणक्कबौ—देखो 'भणकणौ, भणकबौ' (रू भे)

उ०—रत्ता पी गणक्कै कै भणक्कै ये बीमाण रभा, लोयणा भणडड मणक्का लेवाण ।—प्रभूदान मोतीसर

भणक्कणहार, हारौ (हारी), भणक्कणियौ—वि० ।

भणक्किप्रोडौ, भणक्कियोडौ, भणक्क्योडौ—भू० का० कृ० ।

भणक्कीजणौ, भणक्कीजबौ—भाव वा० ।

भणक्कियोडौ—देखो 'भणकियोडौ' (रू भे)

(स्त्री० भणक्कियोडी)

भण—स० पु०—ताड का वृक्ष । (डि)

भणक—स० स्त्री० (स० भण, भणन) १ ध्वनि, आवाज ।

उ०—तनक भणक हरि रस तणी, कढत प्राण सुण कान । महापाप सह मोचवै, आवै जनम न आन ।—ह र

२ उडती हुई खबर, अफवाह ।

उ०—लोगा नै थोडी घणी ई भणक पडगी तो पछै वै किणी गरीब दुख्यारा माथै कदैई भरोसो नी करैला ।—फुलवाडी

रू० भे०—भणक, भणकार, भणकार, भणणाक, भनक, भनक ।

अल्पा०—भणकौ, भणकारौ, भणकौ ।

भणकणौ, भणकबौ—क्रि० अ०—१ भन-भन शब्द होना ।

२ मडराना ।

उ०—ढोलउ मन आणदियउ, चतुर तणे वचनेह । मारू-मुख सौरभियउ, आवि भमर भणकेह ।—ढो मा

३ आना ।

४ जाना ।

उ०—रमणी वरहीना निरख नवीनां, राम राम रणकदा है । कन्द्रप रा कीटा फवत न फीटा, भवरगुफा भणकदा है ।—ऊ का

क्रि० स०—५ भन-भन शब्द करना ।

भणकणहार, हारौ (हारी), भणकणियौ—वि० ।

भणकिप्रोडौ, भणकियोडौ, भणक्योडौ—भू० का० कृ० ।

भणकीजणौ, भणकीजबौ—भाव वा० ।

भणकणौ, भणकबौ, भणक्कणौ, भणक्कबौ, भणकणौ, भणकबौ, भणक्कणौ, भणक्कबौ, भणक्कणो भणक्कबौ, भणणकणौ, भणणकबौ, भणणणौ, भणणबौ, भणणौ, भणबौ, भणभणाणौ, भणभणाबौ, भणहणणौ, भणहणबौ, भिणहणणौ भिणहणबौ, भिणकणौ भिणकबौ, भिणभिणाणौ, भिणभिणाबौ—रू० भे० ।

भणकार—देखो 'भणक' (रू भे)

उ०—'थू पी थू पी' हो रही, कोइ करै घणी मनवार, राणी वायर नीसरी, जद कान पडी भणकार ।—डूगजी जवारजी रौ छावली

भणकारौ—देखो 'भणक' (अल्पा, रू भे)

उ०—१ आजे मीत अमल्ल, खग्ग-वग्गा खणकारा । पिड मीधू सुर पडै, भडा काना भणकारा ।—ऊ का

उ०—अत अछडा करण माभिया मारण, कटकां अटक केविया काळ । भागा तूभ तणौ भणकारौ, 'गोपाळा' न करै गोपाळ ।

—वा दा

भणकियोडौ—भू० का० कृ०—१ भन-भन शब्द हुवा हुआ २ मडराया हुआ ३ आया हुआ ४ गया हुआ ५ भन-भन शब्द किया हुआ

(स्त्री० भणकियोडी)

भणकौ—देखो 'भणक' (अल्पा, रू भे)

भणणाक—देखो 'भणक' (रू भे)

भणणाकणौ, भणणाकबौ—देखो 'भणकणौ, भणकबौ' (रू भे)

उ०—सणणाकै खुरसाण खागधारा खणणाकै, रणणाकै रणराग भलम पाखर भणणाकै । चणणाकै भड चिहुर छीजि कातर छणणाकै । टणणाकै टामक, भ्रमर फीला भणणाकै । ठणणाक घंट गदळा ठहे, गणणाकै पळचर गयण । ठणणाक हीस हैगाम हय, जय कणणाकै वदिजण ।—व मा

भणणाकणहार, हारौ (हारी), भणणाकणियौ—वि०

भणणाकिप्रोडौ, भणणाकियोडौ, भणणाक्योडौ—भू० का० कृ० ।

भणणाकीजणौ, भणणाकीजबौ—भाव वा० ।

भणणाकियोडौ—देखो 'भणकियोडौ' (रू भे)

(स्त्री० भणणाकियोडी)

भणण—स० स्त्री० [अनु०] १ भौरे आदि के उडने से उत्पन्न ध्वनि, भनभनाहट ।

उ०—ठमकती पाय गूघर ठणण, भणण सग करता भमर । चमकती बीज आवै चली, समर हूत कग्वा समर ।—र हमीर

२ चक्कर ।

उ०—१ अेक वेजा गाळ काढनै राजाजी राती चोळ आंख्यां नै

भणण-भणण घुमावता कह्यौ—बोल नाईडा राजा थू है के म्हैं ।
—फुलवाडी

उ०—२ भाईडा, इण टाट आगै तो म्है ई काठा काया व्हैगा । घणा ई ओखद कराया, की कारी नी लागी । ग्रस्टपौ'र पौ'या रावा । माथा माथ काचा पडग्या, भणण-भणण करै ।—फुलवाडी

रू० भे०—भणणाट, भणणाट, भणणाहट, भणभणाट, भणभणाहट, भणाहण, भिणभिण, भिणभिणाट, भिणभिणाहट ।

अल्पा०—भणणाटी, भणभणाटी, भिणभिणाटी ।

भणणणो, भणणवौ—देखो 'भणकणो, भणकवौ' (रू भे)

उ०—भणणं भमर वास रस भूला, सवरत फळ दळ फूल समाज । वलमो रम वस जाय वगीछा, राधा जनक तणा व्रजराज ।
—वा दा

भणणणहार, हारौ (हारी), भणणणियौ—वि० ।

भणणणिओडौ, भणणणियोडौ, भणणण्योडौ—भू० का० कृ० ।

भणणीजणो, भणणीजवौ—भाव वा० ।

भणणणियोडौ—देखो 'भणकियोडौ' (रू भे)

(स्त्री० भणणणियोडी)

भणणाट, भणणाट—देखो 'भणण' (रू भे)

उ०—१ भमरा री भणणाट, डीला री दौळी, दीपमाळा रा दौर, भाखर होळी ।—मयाराम दरजी री वात

उ०—२ ए जु भमर बोलिवा नै भणणाट करै छै । सु मानु गरभवती व्याकुळता जणावै छै ।—वेलि टी

भणणाटौ—देखो भणण' (अल्पा, रू भे)

भणणाणो, भणणावौ—क्रि० अ०—चकराना, चक्कर मे पडना ।

उ०— हा उण इच्छा पर भिच्छा गत हाणी, जग मे दैविच्छा किण ही नह जाणी । बादळ बीजळिया नभ मे नहिं नैडी । भेजो भणणायो भळकी पुळ भैडी ।—ऊ का

'भणणावणो, भणणावबौ' (रू भे)

भणणाणहार, हारौ (हारी), भणणाणियौ—वि० ।

भणणायोडौ—भू० का० कृ० ।

भणणाईजणो, भणणाईजवौ—भाव वा० ।

भणणायोडौ—भू० का० कृ०—चकराया हुआ, चक्कर मे पडा हुआ

(स्त्री० भणणायोडी)

भणणावणो, भणणावबौ—देखो 'भणणाणो, भणणावौ' (रू भे)

उ०—पडियो भेडो पेखि, भवन भेडो भणणावै । भीतांहि सेडै भरी, गरट मांस्यां गणणावै ।—ऊ का

भणणावणहार, हारौ (हारी), भणणावणियौ—वि० ।

भणणाविओडौ, भणणावियोडौ, भणणाव्योडौ—भू० का० कृ० ।

भणणावीजणो, भणणावीजवौ—भाव वा० ।

भणणावियोडौ—देखो 'भणणायोडौ' (रू भे)

(स्त्री० भणणावियोडी)

भणणाहट—देखो 'भणण' (रू भे)

उ०—केहर तणी कळाहयां, भणणाहट भभराह । भीजी गज सिर भाजता, मद सोरभ डमराह ।—बा दा

भणणो, भणवौ—१ पढ़ना, अध्ययन करना ।

उ०—भणत एक व्याकरण, वीर इस्ट के करै । तरक्क नीति सास्त्राणि, एक मुख उच्चरै ।—गु रू. ब

२ पाठ करना, मंत्रोच्चार करना ।

उ०—राजा पूजै सिवसकति, चाढै धूप नैवेद, कुकम-तिलक निलाट दे, विप्र भणवा वेद ।—गु रू ब

३ रटना ।

उ०—रण साले रूक केवियां राणा, साभ्रुग लडत न सुणिया । जइयौ रांम रुद्रायण जीहा, मण तण पागल भणिया ।
—स्री महारांणा कुंभा रो गीत

४ जपना ।

उ०—भगत-विछळ, नयण कमळ । जगत जनक, धरण-धनक । सिर नमि नमि, चरण पदम । 'किसन' रसण रघुवर भण ।
—र ज प्र

६ कहना, कथना ।

उ०—१ जठै गजारूढ चालुक्य राज सामुहो धकाय, अळाव धकतो लोयण मिळाय आप रा पखरैता नू प्रेरणा रै काज अनेक प्रससा रा प्रपच भणिया ।—व भा

उ०—२ अवती रा अधीस प्रामारराज भरत्रिहरि रै रांणी पिंगळा जिकण रो दूजो नाम अनगसेना कहीजै सो अद्वितीय प्रीति रो आस्पद वणी अर जिण आगै तो बिना प्रांण न रहसी असी दुरलभ वाता अनेक वार माळव रै महीप भणी ।—व भा

उ०—३ सूरत घन जंमिघ सारधू, भली भली त्रिहु भुवण भणी । मा कैरवा तणी न कियो अत, तो जेही पाडवां तणी ।
—बोगसी गोरधन कही

क्रि० अ०—५ होना ।

उ०—रण साले रूक केविया राणा, साभ्रुग लडत न सुणिया । जइयौ रांम रुद्रायण जीहा, भण तण पागल भणिया ।
—स्री महाराणा कुंभा रो गीत

भणणहार, हारौ (हारी), भणणियौ—वि० ।

भणाडणो, भणाडवौ, भणाणो, भणावौ, भणावणो, भणावबौ
—प्रे० रू० ।

भणिओडौ, भणियोडौ, भण्योडौ—भू० का० कृ० ।

भणीजणो, भणीजवौ—कर्म वा० ।

भणणो, भणवौ, भिणणो, भिणवौ—रू० भे० ।

भणत—१ कृषि कार्य करते समय सामूहिक रूप से किसानो द्वारा गाया जाने वाला लोक-गीत ।

वि० वि०—यह रामध्वनि या 'राम भणणा' लोक-गीत अधिक श्रम के कार्य, जैसे—कडवी काटना, मोठ उखाडना आदि के समय गाई जाती है। इससे कार्य मे गति आती है व थकान का आभास कम होता है।

भणभणाट, भणभणाहट—देखो 'भणण' (रू. भे)
उ०—छिडियोडा छत्ता रा टाटिया भणण भणण करता भवै ज्यू लोगा रै मूडा री वातां भणभणाट करती अेक कांन सू दूजा कान ताई भरणाटा मारण लागी।—फुलवाडी

भणभणाटौ—देखो 'भणण' (अल्पा., रू भे)

भणभणाणौ, भणभणाबौ—देखो 'भणकणौ, भणकवौ' (रू भे)
भणभणाणहार, हारौ (हारी), भणभणाणियौ—वि०।
भणभणायोडौ—भू० का० कृ०।
भणभणाईजणौ, भणभणाईजबौ—भाव वा०।

भणसाल, भणसालइ—स० स्त्री०—कोषागार, खजाना।
उ०—नेव अअडडइ, खोलड खडहडइ, वीज फलहलइं, परनाल खलहलइ, पाणी तणी भूणि भूणइ, भणसाल भीजइ।—व स
उ०—२ कुपाह तणउ धन उपारजिउं जलि उपतिष्टइ, कुपात तणउ धन उपारजिउ भणसालइ त्रूटइ, कुपाह तणउ धन उपारजिउ ऊम भट्ठ जाइ।—व स

भणहण—देखो 'भणण' (रू भे)
उ०—फव हार धार घण फरहरत, वागीचा चादर जळ वहत। भर फूल फळित भढारभार, जुथ करत भ्रमर भणहण गुजार।
—सू प्र

भणहणणौ, भणहणवौ—१ हवा का चलना।
२ देखो 'भणकणौ, भणकवौ' (रू भे)
उ०—१ एक साथ अन्नेक, फवै घरहरै फुहारा। विमळ पुहप विसतरे, भमर भणहणे गुजारा।—सू, प्र
उ०—२ भूखर वाइ भणहणिउ, तनि तांन छूटइ धूजि। मज्जन करती मांननी, गौरीसकर पूजि।—मा का प्र
भणहणणहार, हारौ (हारी), भणहणियौ—वि०।
भणहणिओडो, भणहणियोडौ, भणहण्योडौ—भू० का०।
भणहणीजणौ, भणहणीजवौ—भाव वा०।

भणहणियोडौ—देखो 'भणकियोडौ' (रू भे)
(स्त्री० भणहणियोडी)

भणाडणौ, भणाडवौ—देखो 'भणाणौ, भणावौ' (रू भे)
उ०—देवा दरसि फरसि जाइ द्वारे, पूजा करि डेरै पाधारै। होम कराडि भणाडि विप्रा हद, जपि आवाहन सूर इमट पद।
—वचनिका
भणाडणहार, हारौ (हारी), भणाडणियौ—वि०।
भणाडिओडौ, भणाडियोडो, भणाड्योडौ—भू० का० कृ०।
भणाडीजणौ, भणाडीजवौ—कर्म वा०।

भणाडियोडौ—देखो 'भणायोडौ' (रू भे)
(स्त्री० भणाडियोडी)

भणाणौ, भणाबौ ['भणणौ' क्रि० का प्रे० रू०] १ कहलाना, बुलवाना।
२ पढाना, अध्ययन कराना।
उ०—गिणती नी आती व्है तौ म्हारा कना सू सीख लीजै, म्हैं थनै भणाय देवूला।—फुलवाडी
३ पाठ कराना, मन्त्रोच्चार कराना।
४ रटाना।
भणाणहार, हारौ (हारी), भणाणियौ—वि०।
भणायोडौ—भू० का० कृ०।
भणाईजणौ, भणाईजवौ—कर्म वा०।

भणायोडौ—भू० का० कृ०—१ कहलाया हुआ, बुलाया हुआ २ पढाया हुआ, अध्ययन कराया हुआ, ३ पाठ कराया हुआ, मन्त्रोच्चार कराया हुआ ४ रटाया हुआ
(स्त्री० भणायोडी)

भणावणौ, भणाववौ—देखो 'भणाणौ, भणावौ' (रू भे)
उ०—१ दाई, धाय भणावण वाळा गुरू बीजा सारा ई अठैहीज छै। पूछ देखो, कदेई कोस बाहर पग निकाळियो कोयनी।
—पलक दरियाव री बात
उ०—२ विनयवत ते देखी पडित, अहनिसि तेह भणावइ। मत्रीसर नदन मन ऊलटि, भोजन वस्त्र अपावइ।—हीराणद सूरि
भणावणहार, हारौ (हारी), भणावणियौ—वि०।
भणाविओडौ, भणावियोडौ, भणाव्योडौ—भू० का० कृ०।
भणावीजणौ, भणावीजवौ—कर्म वा०।

भणित—कही हुई बात या कथा।

भणियण—वि०—पठित, पढा हुआ, विद्वान।
स० पु०—चारण कवि।
उ०—भोपत चाढ चाढ व्रन भणियण, जुग भण लाहर तूझ जिम। उवह न को जळ पैसै आवै, उवह न को नीसरै इम।'
—लाहर गोयल री गीत

भणियोडौ—भू० का० कृ०—१ कहा हुआ २ पढा हुआ, अध्ययन किया हुआ ३ पाठ किया हुआ, मन्त्रोच्चार किया हुआ ४ रटा हुआ ५ जाप किया हुआ
(स्त्री० भणियोडी)

भणी [अव्यय] एक प्रकार का प्रत्यय जो कई कारक प्रत्ययो का काम देता है।
ज्यू—जिम पहुचा अलवरगढ भणी। (को-कर्म कारक)
उ०—१ इणि परि ऊमा देवडी, जांणी मारूवत्त। सु प्रभाति कहिवा भणी, पिंगळ पासि पहुत्त।—ढो मा

उ०—२ अस्व रथ गज चढी भूपति नगरथी सहू नीकल्या । कुडिन-पुर भणी साचरि, पदाति वहु आवी म्यल्या ।—नळाख्यान

भणंज—देखो 'भाणंज' (रू भे)

उ०—हुमी कलपत म राखव हेज, भणीं गल मांमोय दक्ख भणंज ।
—पा प्र

भण्यागरी–वि०—साथ रहने वाला, सहचर ।

उ०—काल ना किंकर, यम ना सहोदर, प्रेतना पेटा, कालरात्रिना कुअर, भूत ना भण्यागरा, स्मसानि ना सहवासि ।—व स

भत—१ देखो 'भात' (रू भे)

उ०—१—भूपाळ विया सेवाळ तणी भत, कळिया मह ससार कहै । माया जाळ कळ् चे माहे, राजा कमळ मरूप रहै ।
—जगन्नाथ माहू

उ०—२ गहमत गत असत अवर तत परगत, अखत दुचित रत भरथ अत । जगपत हित मुखदुति इण भत जिम, प्रभुत हुवत दिन रयणपत ।—र रू

२ देखो 'भात' (रू भे)

भतई—१ देखो 'भातवी' (रू. भे)

उ०—१ मीप भर रोळी, थाळी भर मोती मेरा भतई नूतण मैं गई जी वेगो सो आई मेरी मा का रे जाया, हम घर विडद उतावली ।—लो गी

उ०—२ गगा के घोरै रै बीरा जमना के घोरै, बांही के पार वसे मेरा भतई । वेगो मो आइ मेरी माका रै जाया, जामण का रै जाया हम घर विडद उतावळी ।—लो गी

२ देखो 'भात' (रू. भे)

भतलाणो, भतलावो—देखो 'वतलाणो, वतलावो' (रू भे)

भतलाणहार, हारो (हारी), भतलाणियो—वि० ।

भतलायोडो—भू० का० कृ० ।

भतलाईजणो, भतळाईजवो—कर्म वा० ।

भतलायोडो—देखो 'वतलायोडो' (रू, भे)
(स्त्री० भतलायोडी)

भतवार, भतवारण, भतवारी–स० स्त्री० [स० भक्तहारिणि] खेत पर भोजन ले जाने वाली स्त्री ।

उ०—१ काळ वरस रै पडी बीजळी, गैं'रो इदर गाजै । भातो ले भतवार खेत मे, मझ दोफारा आजै ।—चेतमानखा

उ०—२ वगत वटाऊ राह, वाह दे टुकडा टाळै । भतवारण छिण पळक, ओकळी छाय उनाळै ।—दसदेव

भतवारो–स० पु० [भक्तम् वेला] खेत मे भोजन ले जाने का समय 'भाता वक्त' ।

उ०—विकसी भाता ले भतवारां वाळी, चगी चौधरण्या सतवाग चाली ।—ऊ का

भतार, भतारो—देखो 'भरतार' (रू भे)

उ०—१ नीलजु निघिणु मइ अजाणु काइ मारइ मारो, ईणि जनमि मुझ पदुकुमर विणु नही य भतारो ।—मालिभद्र सूरि

उ०—२ कोइ न त्रिहु जगि हुईय नारि, हिव पछि कोइ न होइमि ए । एक महेलीय पच भतार, मतीय सिरोमणि गाई ए ।
—मालिभद्र सूरि

भति—देखो 'भात' (रू भे)

उ०—सामि सनाह विया दिम सुपहा, भड भाखतो अेम भति । कमियू नीर न पमियू काही, गिरा नरा अेका ज गति ।
—मीहा निरवाण री गीत

भती–स० स्त्री०—१ पृथ्वी भूमि ।

२ देखो 'भात' (रू भे)

उ०—'वखतेस', 'सुजान' गोविंद' रु 'पातिल' 'गोवरधन' रु लदानपती । करनेम' के पुत्र 'उदैक्रन देव' दहू उमगे अगराज भती ।—ल। रा

भतीज, भतीजो–स० पु० [स० भ्रातृज] (स्त्री० भतीजी) भाई का लडका, भतीजा ।

उ०—१ माथै भाटी सूरमा, 'मवळै' जिमा सहाम । 'मवळै' जोड भतीज सक, 'तेजो' नारणदाम ।—रा रू

उ०—२ समर पतीजा वीज वरमाळ रा मार सो, झाळ रा वतीजा असो झाळो । तेज पुज भाळ रा नयण तीजा तसो, भतीजा काळ रा जमो भालो ।—महाराणा भीमसिंघ रो गीत

रू० भे०—भत्तीजो, भत्रीज, भत्रीजउ, भातीजो, भात्रीज, भात्रीजो ।

भतूळियो—देखो 'वधूळो' (अल्पा , रू भे)

भतूळो—देखो 'वधूळो' (रू भे)

उ०—अरु अेक दिन जेठ रै महीन मैं बायर ठाकुरसी जी चोवारै मैं विराजिया है । नैं राजपूत खनै बैठा है । अरु जेसळमेरी जी भीतर सपाडै विराजिया जिसैं भतूळो आयो सू कपड़ा रेत सू सारा भरीजिया ।—द दा

भतूल्यो—देखो 'वधूळो' (रू भे)

भत्त—१ देखो 'भात' (रू भे)

उ०—भूप जडावैं मुगट मझ, रोहण गिर उतपत्त । निस दीपग प्रतिनिध रतन, प्रभा अपूरव भत्त ।—वा दा

२ देखो 'भक्त' (रू भे)

भत्ति—१ देखो 'भक्ति' (रू भे)

उ०—जिनवर भत्ति समुल्लसिय, रोमाचिय निय अग । नांना विधि करि वरणवु, आणी मन उछरग ।—स कु

२ देखो 'भात' (रू भे)

उ०—असुरांग अणड्डर वाह बळत्तर गात गिव्वर गत्ति । गति राख समव्वर उडै अवर भुजा डारण भत्ति ।—मा वचनिका

भत्ती—१ देखो 'भात' (रू भे)

उ०—वीराघिवीर मिळै मीर, सूर घीर सत्थ ए। आरेण मत्ती भीम भत्ती, वाण पत्ती पत्थ ए।—गु रू ब

२ देखो 'भतई' (रू भे)

भत्तीजो—देखो 'भतीजो' (रू भे)

उ०—मांमो भाणेजो हिळमिळ मुख मोडो, फोडो किंचित नह, फलका रो फोडो। काको भत्तीजो सारै दिन काटो, घर मे घाटो नह, आटै रो घाटो।—ऊ का

भत्तो-स० पु० [स० भक्तम्] १ वेतन के अतिरिक्त किसी कारण विशेष से मिलने वाला घन या दैनिक व्यय।

२ देखो 'भात' (रू भे)

उ०—पोतरा 'सेवा' रा जागी घुरावै सतारा वार, घावै खळा खता रा भूडडा घाड-घाड। अवीह भत्ता रा डका आवै सदा अठवारा, कपनी जडावै किलकत्ता रा किंवाड।—सकरदान सामोर

भत्रीज, भत्रीजउ—देखो 'भतीजो' (रू भे)

उ०—१ बीजा ही सार्थ दळ सब्बळ, भाई वघ भत्रीज भुजागळ। महि लहडो खुरसाण महोवर, अडिओ वडा सरस अहि असिमर।
—र वचनिका

उ०—२ रीसाविउ राउल भत्रीजउ, तही लगइ छत थाणइ। सातल मीह तणी परि गाजइ, सबळ वीर समीयाणइ।
—का दे प्र

भथरट्ट—जाति विशेष।

उ०—ब्राह्मण सेवइ वेसनइ, अेता नही कुलवट्ट। भ्रमि भूलि सिउ भामिनी, को भरडउ भथरट्ट।—मा का प्र

भथाइत, भथाइति, भथाइतु, भथाउ भथाउत, भथाउतिइ—स० पु० [स० भस्त्रा+रा० प्र० आइत, आइति, आउतु] १ तरकसधारी।

उ०—१ कठाल कसी, भडार भर भरा भरिया, रथ जूता, राउत पायक भथाइति गगादकि स्नान कीघा गोत्र देव पूज्या।—व स

उ०—२ एव विघ आयुघ विसेसि ढाचा भरिया, पत्तियुद्ध प्रवर्त्तिउ, हाथिउ हाथिइ, असवार असवारि, पायक पायकि, भथाइतु, भथाइति, सरासरि।—व स

उ०—३ हाथिउ हाथिइ, घोडो घोडइ, रथ रथइ पायक पायकइ, भथाउत, भताउतिइ, खड्गायुघ खड्गायुधि।—व म

२ तरकश बनाने वाली एक जाति या उस जाति का व्यक्ति।

रू० भे०—भाथाइत।

भथारो—१ देखो 'भाथो' (रू भे)

उ०—सिर वामी वधियो, वर्णं सिरपाव वखाणा। जड जमदढ जीमणं, कमर जडकं केवाणा। कियो पूर कैमरां, भीड ऊपरा भथारो घनक वाह घारिया,कूत तोलियो करारो।—वखतो खिडियो

२ देखो 'भाथो' (रू भे)

भथूळियो—देखो 'वथूळी' (अल्पा, रू भे)

भथूळो—देखो 'बथूळो' (रू भे)

भथूल्यो—देखो 'वथूळो' (अल्पा, रू भे)

भदणो, भदबो—१ देखो 'भिदणो, भिदवो' (रू भे)

उ०—रवदा खग वाहतो 'रामावुत', रेणा पुड भदियो रतग। भुजग सुपेद लाल रग भदियौ, भूली तिण आटै भुयग।
—रामावत राठौड रो गीत

२ देखो 'वघणो, वधवो' (रू भे)

भदणहार, हारौ (हारी), भदणियो—वि०।

भदिओडो, भदियोडो, भदयोडो—भू० का० कृ०।

भदीजणो, भदीजबो—भाव वा०।

भदर—१ देखो 'भद्र' (रू भे)

उ०—नाई बारी बारी सू च्यारू जणा रै माथै हाथ फेरया। दुख अर इचरज सू पूछ्यो—अदाता भदर क्यू व्हिया, काई बात व्ही।
—फुलवाडी

२ देखो 'भद्र' (रू भे)

३ देखो 'भादवो' (मह, रू भे)

भदरक-स० पु० [स० भद्रक] १ सार, तत्व।

उ०—रांमचदजी आया घणा-ई घरम री घजा। हजारां रुपिया पाठसाला रै नाव सू चदो कर'र गिटग्या अर डकार-श्री को लीनी। 'हू तो कैवू हू आपा-नै हालणो जोयीजै अर जोर लगावणो जोयीजै।' अवै हालो भला-ई कुई भदरक को रै'यो नी।
—वरसगाठ

२ मनोहर सुदर।

भदरकाळी—देखो 'भद्रकाळी' (रू भे)

भदरजात, भदरजाति, भदरजाती—देखो 'भद्रजात' (रू भे)

भदरा—देखो 'भद्रा' (रू भे)

भदाउ—देखो 'वघाऊ' (रू भे)

भदाउडो—देखो 'वघाऊ' (अल्पा, रू भे)

भदाऊ—देखो 'वघाऊ' (रू भे)

भदावुडो—देखो 'वघाउडो' (रू भे)

उ०—पहलो पख सावण हो लाग्यो, तो लाग्यां भदावुडो उडवा नै। मेरो मन मारूजी मिळवा नै।—लो गी

भदावत-स० स्त्री०—राठोड वश की एक उप-शाखा।

उ०—सुजडा हथो भदावत सामळ, 'भीम' हरो, छळ घणी भुजागळ। सामळ जोड जोव सादावत, रिण पडिहार सजूभै रावत।
—रा रू

भदाह—स० स्त्री०—अग्नि। (अ मा.)

भदियोडो—देखो 'भिदियोडो' (रू भे)

भदोडिया-स० स्त्री०—चोहान वश की एक उप-शाखा।

रू० भे०—भदोरिया ।

भदोडियौ–स० पु०—उक्त शाखा का व्यक्ति ।

रू० भे०—भदोरियौ ।

भदोराराय–स० स्त्री०—ग्रावड देवी का एक नाम ।

भदोरिया—देखो 'भदाडिया' (रू भे) (बा दा ख्यात)

भदोरियौ—देखो 'भदोडियौ' (रू भे)

भद्द—१ देखो 'भादवौ' (रू भे)

उ०—रजा ब्रह्म री रूप अनेक रम्मं, घणा वाजणा घूघरा घम्म घम्मं । घटा भद्द ज्यो नद्द ग्रानद्द घोरं, घुवं तास कसाळ सागीत घोरं ।—मे म

२ देखो 'भद्र' (रू भे)

भद्दता—देखो 'भद्रता' (रू भे)

भद्दर–स० पु० [स० भद्राकरण] १ कुटुम्ब मे माता पिता या निकटतम वृद्ध पुरुष की मृत्यु के समय सिर, दाढी, मूछ के बाल मुडवाने की क्रिया ।

उ०—चाकर-चरवादार नं, स कोई भद्दर दिया कराय । गाजा-बाजा वद करचा, कोई लियौ सोग को नाव ।

—डूगजी जवारजी री छावली

क्रि० प्र०—करणौ, होणौ ।

वि० वि०—प्राचीन काल मे राजाम्रो की मृत्यु के समय भी प्रजा वर्ग मे मुडित (भद्दर) होने की प्रथा थी ।

२ देखो 'भद्र' (रू भे)

३ देखो 'भादवौ' (रू भे)

रू० भे०—भदर, भद्र ।

भद्दव—देखो 'भादवौ' (रू भे)

उ०—हय मज्जहि घरखूर, सेन चतुरगनि सज्जहि । बज्जहि नद्द निहाव, मनहु भद्दव घन गज्जहि ।—ला रा

भद्दा—देखो 'भद्रा' (रू भे)

भद्दापणौ–स० पु० [फा० वद] भद्दा होने का भाव ।

भद्दौ–वि० [फा० बद] (स्त्री० भद्दी) १ जिसकी बनावट मे असामान्यता, वक्रतना ग्रथवा अपूर्णता हो, बेढगा, बेडोल, कुरूप ।

२ शिष्टता, व सभ्यता के प्रतिकूल, अश्लील, फूहड ।

३ कलात्मक दृष्टि से शून्य एव अरुचिकर ।

भद्र, भद्र्–स० पु० [स० भद्र] १ सफेद रग का हाथी ।

उ०—ठणं भद्र मद अगा वस ठावा, छटा फैल हालै किना सैल छावा ।—व भा

२ उतर दिशा का एक दिग्गज ।

३ स्वर-साधन की एक प्रणाली ।

४ वृषभ, बैल । (ह नां मा)

५ शिव, महादेव ।

६ सफेद रग । (ह. ना मा)

७ खजन, पक्षी ।

८ शिवजी के एक प्रसिद्ध गण का नाम जिसकी उत्पत्ति शिवजी की जटा से हुई थी, वीर-भद्र ।

उ०—भद्र तेडिया अपूठउ भारथ, घरिया वळं ईसवर घ्यान । वाज्यउ पडहउ ससार वदीतउ, गति अवगति मह्न जाणइ ग्यांन ।

—महादेव पारवती री वेलि

९ जैनियो का एक व्रत ।

उ०—निक्रमणतप, वर्द्धमानतप, इद्रियजय, कमायजय, जोगसिद्ध, भद्र, महाभद्र, भद्रोत्तर, सर्वतोभद्र, रत्नावलि ।—व म

१० श्री भद्रकर—भविष्यत् काल के चौवीसवें तीर्थंकर ।

उ०—तेवीममौ अमरजीव अतवीरज नमौ । स्वातिवुध जीवते भद्र चौवीममौ ।—वृहत् स्तो०

वि०—१ श्रेष्ठ, उत्तम ।

उ०—भीमि भीडिउ भद्र् पाडीयउ, वाघीउ घालिउ नीरि । जागिउ ओडइ वव वलि, नवि दूमिइ सरीरि ।—सालिभद्र सूरि

२ कल्याणकारी, मगलकारी ।

उ०—परम्म निवास निवारण पाप, जोगेसर भद्र अजप्पा जाप । दातार-मुकत्ति दिनकर देव, सारूप सालोक सामीप सामेव ।

—ह र

३ सम्य, शिष्ट, शिक्षित ।

४ कृपालु । ५ भला, साधु ।

देखो 'भद्दर' (रू भे)

उ०—अकवर हुक्म कियौ उमरावां, चक्रवत किणी न दाख्यौ चोज । वळा घणी न मान्यौ विसटाळौ, भद्र न हुवौ सवाई भोज ।

—राव भोज हाडा रौ गीत

रू० भे०—भदर, भद्द, भद्दर ।

भद्रक–स० पु०—१ एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक चरण मे SII SIS III SIS III SS III S (भ र न र न र न ग) और ४, ६, ६, पर यति होती है ।

भद्रकाळी–सं० स्त्री० [सं० भद्रकाली] १ दुर्गा देवी की १६ भुजाओं वाली मूर्ति ।

उ०—देवी काळिका मा नमौ भद्रकाळी, देवी दुरगा लाघव चारि-ताळी, देवी दानवा काळ सुरपाळ देवी, देवी साधक चारण सिध सेवी ।—देवि

२ कात्यायनी ।

२ कार्त्तिकेय की एक मातृका ।

रू० भे०—भदरकाळी ।

भद्रखेमा–स• स्त्री० (स० भद्रक्षेमा) दुर्गादेवी, भगवती ।

उ०—देवी खेचरी भूचरी भद्रखेमा, देवी पद्मणि सोमणी कळह प्रेमा, देवी जम्मणी मख्ख ग्राहूति ज्वाळा, देवी वाहनी मत्र लीला विसाळा ।—देवि

भद्रग—देखो 'भडग' (रू भे)

भद्रजात, भद्रजाति, भद्रजाती, भद्रजातीउ, भद्रजातीनाग—१ हाथी, गज । (अ मा, ह ना मा)

उ०—१ काळी घड पावस कवळय, वग पर्कति दीप दतूसळय । हिलिया भद्रजातिय हीडुळता, परवत्त क पखिय सजुगता ।
—गु रू व

उ०—२ फवि तेल सिंदूर तिलक्क फटा । भद्रजात भयकर स्याम भटा । निलवट्ट किरीट भिलत निलै । चपळा घण मभ्म चमक चलै ।—मा वचनिका

२ सफेद रग का हाथी ।

उ०—१ रचे रिण वार खग मार देतौ रिमा, ज्यार भद्रजात कि कसै पोहप जेम । कपोळ भ्रमर सू भ्रमै कोडीक करण, तिमर गिर हूत उडियण लसै तेम ।—कविराज करणीदान

उ०—२ सादूळा तैं 'जमहड सभ्रम, भिड भद्रजाती असुर भगा । दीसै रायहरै 'दुजणमल', मोती महिळा मवड लगा ।—नैणसी

उ०—३ दस हस्त परिधि परिकरित, सप्तागिहिं, भूमि स्परसतउ, चत्वारिसदधिक गजलक्षण चतु सती दग्सतउ, किल ऐरावणा-द्वितीय, इसउ हस्ति भद्रजातिउ ।—व स

रू० भे०—भदरजात, भदरजाति, भदरजाती ।

भद्रणौ, भद्रबौ—क्रि० स० [स० भद्र] अच्छा करना ।

उ०—पाचे पाटे भद्रिउ भीमि भिडी ऊपाडी रीस । नवि मारिउ छइ माडी वयरिण, जिम नवि दीसइ राडी भयरिण ।
—सालिभद्र सूरि

भद्रणहार, हारौ (हारी), भद्रणियौ—वि० ।

भद्रिओडौ, भद्रियोडौ, भद्रयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

भद्रीजणौ, भद्रीजबौ—कर्म वा० ।

भद्रतरुणी—स० पु० [स०] एक प्रकार का गुलाव का फूल ।

भद्रता—स० स्त्री० [स० भद्र] १ श्रेष्ठता, अच्छाई ।

२ शिष्टता, सभ्यता ।

३ भलमानसता, साधुता ।

रू० भे०—भद्दरता ।

भद्रपीठ—स० स्त्री० यौ० [स० भद्र + पीठ] राजा या देवता आदि के अभिषेक होने का सिंहासन ।

भद्रवल्लभ—स० पु०—वलराम का एक नाम ।

भद्रबाहुस्वामि—स० पु० [स० भद्र + वाहुस्वामी] यशोभद्र के शिष्य, कल्पसूत्र के रचनाकार, भद्रबाहुस्वामि ।

उ०—प्रतिवोध जवूस्वामि तणउ, तप तउ हृद प्रहार तणउ, महा-प्राणध्यान भद्रबाहुस्वामि तणउ, अल्पदेसना चिलातीपुत्र तणौ ।
—व स

भद्रसेन—सं० पु०—१ कस द्वारा मारा डाला जाने वाला देवकी का एक पुत्र ।

२ कुंती का एक पुत्र । (भागवत)

भद्रखेव—स० पु० [स० भद्र + क्षेम] कुशलता क्षेम । (अ मा)

भद्रा—स० स्त्री० [स०] १ द्वितिया, सप्तमी और द्वादशी तिथि की सज्ञा ।

उ०—चद्रई ग्यारमौ देव है, तीसरौ चद्र छइ खोडीला-जोगि । काळ जोगण भद्रा नही, पुख नछत्र नई कातिक मास ।—वी दे

२ दुर्गा देवी ।

३ पृथ्वी, अवनि ।

४ सुमेरु पर्वत से विभाजित होने वाली गगा की चार धाराओ मे से उत्तर की ओर जाने वाली एक धारा ।

उ०—भद्रा उत्तर कू चली, अपनै सहज सुभाय । दक्खन कू तव ऊतरी, अलकसनदा आय ।—गजउद्धार

५ अर्जुन की स्त्री सुभद्रा का एक नाम ।

६ कैकय राज्य की कन्या जो श्रीकृष्ण को व्याही गई थी ।

उ०—कालिंद्री विदा भद्रा कुअरि, कहि लखमणा क्रिपाळ रै । रीछडी नाग जीती निमौ, पटराणी प्रतिपाळ रै ।—पी ग्र

७ कल्याणकारिणि शक्ति ।

८ आकाश-गगा ।

९ गौ, गाय ।

१० हल्दी ।

११ दूव, दूर्वा ।

१२ छाया के गर्भ से उत्पन्न सूर्य की एक कन्या ।

१३ गौतम बुद्ध की एक शक्ति ।

१४ फलित ज्योतिष के अनुसार एक अशुभ योग जो कृष्ण पक्ष की तृतिया और दशमी के शेषार्द्ध मे तथा अष्टमी और पूर्णिमा के पूर्वार्द्ध मे रहता है ।

उ०—साचरे मेल सिसपालना मामटा, अपसकुन अनें अवजोग थया एकटा । दसासूल भद्रा वितीपात महूरत दीयौ, क्रमीयौ काळ चद्र काळ सनमुख कीयौ ।—रुकमणी हरण

१५ आर्या गीति या 'खधाण' का एक भेद विशेष । (पि प्र)

१६ फूहड स्त्री । (व्यग)

उ०—१ ईंये भात छोकरी महूर रोज ले आवै नै वाणीये नु ले जाइ देवै । चवळा सेर ४, तेल सेर १, रोज ले जाइ नै भद्रा नु राधि नै देवै । भद्रा खाइ नै त्रिपति हुवै ।—स्याम सुंदर री वात

उ०—२ सु मोनुं ऊठ भेकि नै उतारै । ज्यु हु कपडौ लूगडौ सबाहु, काजळ टीकौ करू । जे यु हु जासु तौ लोगाया कहिसी, भद्रा छै ।—कावळौ जोईयो नै तीडी खरळ री वात

रू० भे०—भदरा, भद्दा, भद्रा, भद्रिका ।

भद्राकरण—स० स्त्री० [स०] सिर, दाढी एव मूछ मुडवाने की क्रिया, हजामत । (डि को)

भद्रातिथ, भद्रातिथि—देखो 'भद्रा' (१) ।

भद्रानद—स० पु०—सगीत मे स्वर-साधन की एक प्रणाली ।

भद्रासण—स० पु० [स०] राज सिंहासन जिसपर राजाओ का अभिषेक किया जाता है ।

उ०—ग्रर ग्रागे देवराज रो रचियो ग्राठ हाथ उच्छ्रित, ग्राठ हाथ लवायत, वत्तीस पूतळी सहित चद्रकातमणि मय एक सिंघासण कोई प्रसाद री पीठ-भू खोदता कढियो तिको ही ग्राप रै भद्रासण बणायो।—व भा

भद्रिका-स० स्त्री० [स० भद्रा] १ फलित ज्योतिष के ग्रनुसार योगिनि दशा के ग्रन्तर्गत पाचवी कक्षा।

२ देखो 'भद्रा' (रू भे)

भद्रियोडो-भू० का० कृ०—ग्रच्छा किया हुग्रा

(स्त्री० भद्रियोडी)

भद्रोत्तर-स० पु०—जैनियो के एक व्रत का नाम।

उ०—कनकावलि, रत्नावलि, मुक्तावलि सिंहविक्रीडित महासिंह-विक्रीडित गुणरत्नसवत्सर भद्र महाभद्र भद्रोत्तर सरवतोभद्र यव-मध्यचद्रायण।—व स

भनक, भनक—देखो 'भणक' (रू भे)

उ०—१ प्रयाति चोल-गोल की भनक पोल मे परें धपे प्रसूर पूर लें, वियान थान मे धरें।—ऊ. का

उ०—२ माया माया फेर दी, तनक भनक गइ कांन। लगी झट-पट तुरत ही, जाग उठे भगवान।—गजउद्धार

भननेटिय-स० पु०—चक्कर।

उ०—कथ कौन करे कटकी कटके, पग ग्रक धरे पटकी पटके। बननेटिय ले पितु बैटन मे, भननेटिय ले धन भेटन में।—ऊ का

भपको—देखो 'भभको' (रू भे)

भपत-स० पु०—चन्द्रमा, शशि। (डिं को)

भपोभप [देशज] ग्रनुरूप, तुल्य, समान।

उ०—सेवळा री सूळा रै उनमान माथा रा केस, जटा विखरियोडी भैसा जैडो माथो, ग्रागळ डोढेक री लिलाडी, सामा ग्रावळिया खाता भवरा, रीछ रै भपोभप रूवाळी, गो रै जिसी खाल, घोर खोदणिया जिनावर री गळाई तीखा नख, सीपनिया, जिसा लाठा।—फुलवाडी

भवकणो, भवकवो—देखो 'भभकणो, भभकवो' (रू भे)

भवकणहार, हारो, (हारी), भवकणियो—वि०।

भवकाडणो, भवकाडवो, भवकाणो, भवकावो, भवकावणो, भवकाववो—प्रे० रू०।

भवकिग्रोडो, भवकियोडो, भवक्योडो—भू० का० कृ०।

भवकीजणो, भवकीजवो—भाव० वा०।

भवकाडणो, भवकाडवो—देखो 'भभकाणो, भभकावो' (रू भे)

भवकाडणहार, हारो (हारी), भवकाडणियो—वि०।

भवकाडिग्रोडो, भवकाडियोडो, भवकाड्योडो—भू० का० कृ०।

भवकाडीजणो, भवकाडीजवो—कर्म वा०।

भवकाडियोडो—देखो 'भभकायोडो' (रू भे)

(स्त्री० भवकाडियोडी)

भवकाणो, भवकावो—देखो 'भभकाणो, भभकावो' (रू भे)

भवकाणहार, हारो (हारी), भवकाणियो—वि०।

भवकायोडो—भू० का० कृ०।

भवकाईजणो, भवकाईजवो—कर्म० वा०।

भवकायोडो—देखो 'भवकायोडो' (रू भे)

(स्त्री० भवकायोडी)

भवकावणो, भवकाववो—देखो 'भभकाणो, भभकावो' (रू भे)

भवकावणहार, हारो(हारी), भवकावणियो—वि०।

भवकाविओडो, भवावियोडो, भवकाव्योडो—भू० का० कृ०।

भवकावीजणो, भवकावीजवो—कर्म० वा०।

भवकावियोडो—देखो 'भभकायोडो' (रू भे)

(स्त्री० भवकावियोडी)

भवकियोडो—देखो 'भभकियोडो' (रू भे)

(स्त्री० भवकियोडी)

भवकी—देखो 'भभकी' (रू भे)

भवको—देखो 'भभको' (रू भे)

भवक्कणो भवक्कवो—देखो 'भभकणो, भभकवो' (रू भे)

उ०—वराळा धोम चख रोस चाळा विहण तखत ढीली तणो सामळे तेम। 'जसावत' तणा खग तेज माहे जळे, जवन खळ कीट ग्रातस भवक्के जेम।—महाराजा ग्रजीतसिंह जी राठोड रो गीत।

भवक्कणहार, हारो (हारी), भवक्कणियो—वि०।

भवक्काडणो, भवक्काडवो, भवक्काणो, भवक्कावो, भवक्कावणो, भवक्काववो—प्रे० रू०।

भवक्किग्रोडो, भवक्कियोडो, भवक्क्योडो—भू० का० कृ०।

भवक्कीजणो, भवक्कीजवो—भाव० वा०।

भवक्काडणो, भवक्काडवो—देखो 'भभकाणो, भभकावो' (रू भे)

भवक्काडणहार, हारो (हारी), भवक्काडणियो—वि०।

भवक्काडिग्रोडो, भवक्काडियोडो, भवक्काड्योडो—भू० का० कृ०।

भवक्काडीजणो, भवक्काडीजवो—कर्म वा०।

भवक्काडियोडो—देखो 'भभकायोडो (रू भे)

(स्त्री० भवक्काडियोडी)

भवक्काणो, भवक्कावो—देखो 'भभकाणो, भभकावो' (रू भे)

भवक्काणहार, हारो (हरी), भवक्काणियो—वि०।

भवक्कायोडो—भू० का० कृ०।

भवक्काईजणो, भवक्काईजवो—कर्म वा०।

भवक्कायोडो—देखो 'भभकायोडो'(रू भे)

(स्त्री० भवक्कायोडी)

भवक्कावणो, भवक्काववो—देखो 'भभकाणो, भभकावो' (रू भे)

भवक्कावणहार, हारो (हारी), भवक्कावणियो—वि०।

भवक्काविश्रोडौ, भवक्काबियोडौ, भवक्काय्योडौ—भू० का० कृ०।
भवक्कावीजणौ, भवक्कावीजवौ—कर्म वा०।

भवक्काबियोडौ—देखो 'भभकायोडौ' (रू भे)
(स्त्री० भवक्काबियोडी)

भवक्कियोडौ—देखो 'भभकियोडौ' (रू भे)
(स्त्री० भवक्कियोडी)

भवण—देखो 'भवन' (रू भे)
उ०—उठा हू नागणेच्या भवण श्राविया, लाविया सरब रणवास लारै। गती गजराज हंसा गवण गांमणी, 'इंद्र' पर कामणी लवण वारै।—मे म

भवुतासिद्ध, भवुतासिघ—देखो 'विभूतासिघ'।
उ०—कोठे तो वाजा वाजिया भभूत्तासिघ कोठे घुरा छै निसाण भवुतासिघ वागा मे।—लो गी

भवूत, भवूती—देखो 'विभूति' (मह, रू भे)

भव्भकणौ, भव्भकवौ—देखो भभकणौ, भभकवौ' (रू भे)
उ०—पिंड नाळप्परा, भव्भकै भभरा। रत्र पत्रव्भरा चौमटी चढ रा।—सू प्र
भव्भकणहार, हारौ (हारी), भव्भकणियौ—वि०।
भव्भकिश्रोडौ, भव्भकियोडौ, भव्भक्योडौ—भू० का० कृ०।
भव्भकीजणौ, भव्भकीजवौ—भाव वा०।

भव्भकियोडौ—देखो 'भभकियोडौ' (रू भे)
(स्त्री० भव्भकियोडी)

भभक—स० स्त्री० [श्रनु०] १ भभकने की अवस्था, क्रिया या भाव।
२ जल्दी, शीघ्र।
उ०—तज गया गहवळ खाय तापा, भभक ग्रोसुर भागिया। उण ठोड जिण रा रिखा ग्रास्रम, जाग घूमर जागिया।—र रू
३ गंध, वदवू।
४ ग्रग्नि, ग्राग।
उ०—स्रगा पाहड री घाता कवला भाड री सका, भ्रुसडा फाड री कना भाड री भभक। हदपा पाड री वाड घाड री 'वलृत' हाता, ताड ग्रानाड री वर्जे राड री तुपक।
—महाराजा वळवतसिघ रौ गीत
रू० भे०—वभक।

भभकणौ, भभकवौ—क्रि० ग्र० [ग्रनु०] १ वेग से जल उठना, भडकना।
उ०—१ थोडा मे ई घणौ समभण री चेस्टा करज्यो के ग्रो ग्रधारौ खुद ई इत्तौ गोटी जग्यौ है के वौ मतै ई सिळग नै भभकेला।—फुलवाडी
उ०—२ फौजा भडा फरहरे, भभकी तोफा भाळ। चित ग्रोछकियौ 'चिमन'रौ भेंचकियौ भुरजाळ।—लिछमीदान वारहठ
२ क्रुद्ध होना, उत्तेजित होना।
उ०—सो हरीसीघ रौ नाव सुणता ही भाई म्हौकमसिघ वैठौ थौ सो ईसौ भभकियौ जाणै दारू रा गज माहे ग्राग री चिणगी पड़ी।
—प्रतापसिघ म्हौकमसिघ री वात
३ तेज दुर्गन्ध ग्राना, वदवू फूटना।
उ०—ग्रति खूणा ऊडा थूहम थूडा, कूडापथ करदा है। मूछा विन मूडा भासत भूडा, भस्सूडा भभकदा है।—ऊ का
४ मन ही मन मे कुढना, सतप्त होना, सुलगना। (लाक्षणिक)
उ०—मासी ग्रेक सूटी तणौ ऊडौ निस्कारौ न्हाक नै वोली—वेटी! जुगा जुगा सू हर लुगाई रै मूडै ग्रौ सवाल भभकै है, पण ग्राज दिन ताई कुण इण री जवाव दे सक्यौ?—फुलवाडी
५ द्रव पदार्थ का उमडना, तेज प्रवाह मे निकलना।
उ०—१ खळ दस सहस ग्रडै दळ खूटा, तीन सहस कमवज भड तूटा। भभकै घाव तडफडै भूमै, घायल हुवा किता भड घूमै।
—सू प्र
उ०—२ तुछ जळ ज्याही माछळा तडफड तिण विध भाराथ। भभकइ रुधिर भडजर भागा, एकण कहर लाविया हाथ।
—महादेव पारवती री वेलि
६ वाद्यो की ध्वनि होना।
उ०—नोवत रा टकोरा लागै छै। नौवति भीगडि पडी नै रही छै। भेर, नफेर, करनाळ भभक नै रह्यौ छै।—रा सा स
७ गरमी पाकर उवाल ग्राना, उवलना।
८ ग्रावेश मे होना या ग्राना।
भभकणहार, हारौ (हारी), भभकणियौ—वि०।
भभकाडणौ, भभकाडवौ, भभकाणौ, भभकावौ, भभकावणौ, भभकाववौ—प्रे० रू०।
भभकिग्रोडौ, भभकियोडौ, भभक्योडौ—भू० का० कृ०।
भभकीजणौ, भभकीजवौ—भाव वा०।
ववकणौ, ववकवौ, ववक्कणौ, ववक्कवौ, वभकणौ, वभकवौ, वभक्कणौ, वभक्कवौ, भवकणौ, भवकवौ, भवक्कणौ, भवक्कवौ, भव्भकणौ, भव्भकवौ, वभकणौ, वभकवौ, वभक्कणौ, वभक्कवौ, ववकणौ, ववकवौ—रू० भे०।

भभकभक—स० पु० [ग्रनु०] ध्वनि विशेष।
उ०—सिर तडक तूटत भड कसक, धड गरक सम हर धधक धक। जस किलक वक वक मुख जपिक, भुव खलक रुधरक भभकभक।
—र रू

भभकाडणौ, भभकाडवौ—देखो 'भभकाणौ, भभकावौ' (रू भे)
भभकाडणहार, हारौ (हारी), भभकाडणियौ—वि०।
भभकाडिग्रोडौ, भभकाडियोडौ, भभकाड्योडौ—भू० का० कृ०।
भभकाडीजणौ, भभकाडीजवौ—कम वा०।

भभकाडियोडौ—देखो 'भभकायोडौ' (रू भे)
(स्त्री० भभकाडियोडी)

भभकाणो, भभकावो ['भभकणो' क्रि० का० प्रे० रू०] १ वेग से जलाना, भडकाना ।
२ क्रोधित करना, उत्तेजित करना ।
३ तेज दुर्गन्ध फैलाना, बदवू फैलाना ।
४ रक्त प्रवाहित करना, खून बहाना ।
५ वाद्यो का बजाया जाना ।
६ गरमी देकर उबालना ।
भभकाणहार, हारो (हारी), भभकाणियो—वि० ।
भभकायोडो—भू० का० कृ० ।
भभकाईजणो, भभकाईजबो—कर्म वा० ।
बबकाणो, बबकावो, बबक्काणो, बबक्कावो,बभकाणो, बभकावो, बभकावणो, बभकाववो, बभक्काणो, बभक्कावो, भबकाडणो, भबकाडबो भबकाणो, भबकावो, भबकावणो, भबकाववो, भभकाडणो, भभकाडबो, भभकावणो, भभकाववो, वभकाणो, वभकावो, वभक्काणो बभक्कावो—रू० भे० ।

भभकायोडो–भू० का० कृ०—१ वेग से जलाया हुआ, भडकाया हुआ २ क्रोधित किया हुआ, उत्तेजित किया हुआ ३ तेज दुर्गंध फैलाया हुआ, बदवू फैलाया हुआ ४ द्रव पदार्थ प्रवाहित किया हुआ, खून बहाया हुआ ५ गरमी देकर उबाला हुआ
(स्त्री० भभकायोडी)

भभकार–स० स्त्री० [अनु०] १ भभक कर बाहर निकलने या फूटने की क्रिया या भाव ।
उ०—घट सेल पार बवार घाव, भभकार रुधिर पिचकार भाव। जलधार पेसकवजा जडत, पोटला मार गुरजा पडंत ।—वि. स
२ घोर गर्जना ।
वि०—गहरा ।
उ०—गुपती कटार भभकार घाव, नन परत भूमि पर ठाह पाव। गिर जात भूमि सन भाक धारि फिर उठत मार मारहु बकारि —ला रा
रू० भे०—बभकार ।
२ देखो 'भमक' (रू भे)

भभकारणो, भभकारबो–क्रि० स० [अनु०] १ सिंह, बाघ आदि का दहाडना, गर्जन करना ।
उ०—१ तहां सोनहरी-पटैत विकराळ रूप वाघ भभकार ऊठे। —सू प्र
उ०—२ डाचकियो सवळ लियां दळ डारें, भभकारे नोहथ कर भूक। धीठ कुरीठ सकै नह धारै, चारै खेत खडो अणचूक।
—नवलसिंघ सेखावत री गीत
उ०—३ एकण दिसि रावल अनम्म, आलिमपति दिसि एक, भभकारे वेहु सुभट, राखण रजवट टेक —प प चो
भभकारणहार, हारो (हारी), भभकारणियो—वि०
भभकारिप्रोडो, भभकारियोडो, भभकारयोडो—भू० का० कृ० ।
भभकारीजणो, भभकारीजबो—कर्म वा० ।

भभकारियोडो –भू० का० कृ०—सिंह, बाघ आदि दहाडा हुआ, गर्जन किया हुआ ।
(स्त्री० भभकारियोडी)

भभकावणो, भभकावबो—देखो 'भभकाणो, भभकावो' (रू भे)
भभकावणहार, हारो (हारी) भभकावणियो—वि० ।
भभकाविप्रोडो, भभकावियोडो, भभकाव्योडो—भू० का० कृ० ।
भभकावीजणो, भभकावीजबो—कर्म वा० ।

भभकावियोडो—देखो 'भभकायोडो' (रू भे)
(स्त्री० भभकावियोडी)

भभकियोडो–भू० का० कृ०—१ वेग से जला हुआ, भडका हुआ २ क्रोधित हुवा हुआ, उत्तेजित हुवा हुआ ३ तेज दुर्गंध युक्त हुवा हुआ, बदवू से सना हुआ ४ तेज गति से द्रव पदार्थ उमडा हुआ, तेज प्रवाह से निकला हुआ ५ ध्वनिमान हुवा हुआ (वाद्य) ६ गरमी पाकर उबला हुआ
(स्त्री० भभकियोडी)

भभकी–स० स्त्री०—१ झूठी धमकी, घुडकी ।
२ गहरी प्यास ।
३ जलन, दाह ।
रू० भे०—भबकी, बभकी ।

भभको–स० पु०—१ आसवन यन्त्र । नलिका यन्त्र ।
वि० वि०—किसी वस्तु का अर्क या शराब निकालने का वह यंत्र जिसमे एक मिट्टी की डेगची या हाडी पर एक तांबे की बालटी जैसा बरतन जिसकी किनारी ४ अगुल डेगची के भीतर रहे, ऊपर लगा कर सधि लगा दी जाती है । एक कटोरा, कढाई के आकार का, बालटी के पैंदे मे लगा दिया जाता है । बालटी मे कटोरे के नीचे के भाग मे एक नली लगा दी जाती है । डेगची के नीचे आग लगाने पर उस पदार्थ की भाप बनकर अर्क उस नलकी द्वारा बाहर निकलता रहता है। इसके अतिरिक्त एक दूसरी नली होती है जिसमे से जल उष्ण होने पर बार २ निकलता रहता है और उसमे ठडा जल डालते रहते हैं ।
२ शीघ्र उत्पन्न होकर समाप्त होने वाली चमक । (ज्वाला, लपट)
उ०—पवन का परवाह, गुलाब की मूठ, सघराज को गोटको, तारे की तूट । आतस को भभको, चक्री की चाल, चपला को चमको छाती की ढाल ।—मयाराम दरजी री वात
३ रोष, क्रोध ।
४ उत्तेजना, उग्रता ।
उ०—हाकालिया केहरी'गुमांन' वाळा वगा हाका, रारियां भभका क्रोध ढका ववी रोड । गजां काळा मोड वाळा रखे तू दूसरा 'गजा', जोड़याळा पोहा री मरोड जाडी जोड ।—गोपाळदास दधवाडियो

५ आवेश, जोश।
६ चमक, दमक दीप्ति, कांति, आभा।
रू० भे० भपको, भबको, भभक्को।

भभक्कणो, भभक्कबो—देखो 'भभकणो, भभकबो' (रू भे)
उ०—हर हिंदुनि हक्किय वीर किलक्किय, सोर भभक्किय मोर दहू। सिर सेस लचक्किय भूमि भचक्किय, कील मचक्किय दंत कहू।
—ला रा.

उ०—२ 'अभैमल' आगळ जोध अपार, वधै वध खाग वहै जिण-वार। कटै सिलहक्क कडा कसणक्क, भभक्क डवक्क स्रोणक्क भभक्क।
—सू प्र

उ०—३ पडियो घरत्ति माझी सुपेख, भयंकर भभक्कै रुद्र भेख।
—मा वचनिका

भभक्कणहार, हारो (हारी), भभक्कणियो—वि०।
भभक्किओडो, भभक्कियोडो, भभक्क्योडो—भू० का० कृ०।
भभक्कीजणो, भभक्कीजबो—भाव वा०।

भभक्कियोडो—देखो 'भभकियोडो' (रू भे)
(स्त्री० भभक्कियोडी)

भभक्को—देखो 'भभको' (रू भे)
उ०—थया हाथ मे अमागो कूंत ताखा क्रोध थडी को सो, हेम अद्रा चौमासै उमडी को सो हूळ। खीजियै पाराथ रो भभक्कौ वांण खडी को सो, मेल वैरीसाल वाळो चडी को सो फूल।—महादान महडू।

भभरणो, भभरबो–क्रि० अ०—१ घबराना।
२ भ्रम मे पडना।
भभरणहार, हारो (हारी), भभरणियो—वि०।
भभरिओडो, भभरियोडो, भभरयोडो—भू० का० कृ०।
भभरीजणो, भभरीजबो—भाव वा०।

भभरियोडो–भू० का० कृ०—१ घबराया हुआ २ भ्रम मे पडा हुआ।
(स्त्री० भभरियोडी)

भभरूक–स० पु० [दे०] राजस्थानी लोक कथाओ मे प्रसिद्ध एक भूत भामरो।
उ०—घड धार अपार लुहा घर रै, भभरूक भयंकर पत्र भरै। परिवार सहेत हुवै अपती, जुगणी चवसठ संगति जिती।—सू प्र

भभरूत—१ विकराल रूप।
उ०—१ भभरूत रजी धोसर भसम काळदूत चख झाळ किध। वनि वसै भूतकाळा वयड, वनखडी अवधूत विध।—सू प्र
उ०—२ वहि वाण वजर हूका वहै, मतवाळा ओघा मर्जा। ज्वाळ मे हुवै भभरूत जग धूत पठाण कमधजा।—सू प्र
उ०—३ बकै छकै वीफरै, हुवा भभरूत गहकै। चोख तीख नह चकै, थहै रिणहूत न थकै।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

भभूत—देखो 'विभूति' (रू भे)
उ०—१ म्हारै घर रमतो ही आई रे, तू जोगिया। कांनां बिच कुडल गळे बिच सेली, अंग भभूत रमाई रे।—मीरा
उ०—२ जे सिंदूरें ओ भैरव सिंदूरें ओ अग भभूत। खादे ओ भैरव खादे ओ कावड मद भरी।—लो गी

भभूतासिद्ध, भभूतासिध—देखो 'विभूतासिध' (रू भे)
उ०—वागा मे रे बगीचा मे थारै धूप रही गरणाय भभूतासिध वागा मे।—लो गी

भभूतो—देखो 'विभूतो' (रू भे)
२ देखो विभूतासिद्ध।

भभूति, भभूती—देखो 'विभूति' (रू भे)

भभो—देखो 'भ'वर्ण।

भम्भीखण, भम्भीसण—देखो 'विभीसण' (रू भे)
उ०—परालबध का पावणा, देख दई का खेल। भम्भीखण ने लक भर, हडूमान ने तेल।—अज्ञात

भमग–वि० [स० भ्रमर+अंग] काला, कृष्ण।
उ०—रामदास हरराम गुरारी, गुरू महिमा मच गाई। प्रकट भमग भुजग डस्यो पर, प्रबळ चली परवाई।—ऊ का
२ भौंरा।
३ देखो 'भुजग' (रू भे)
उ०—१ वह वायक सिंधजिम बोलता, तायक भुजा गयण तोलता। भेख तखिक खीजिया भमगा, दुरत रोस चख झडै दमगा।—सू प्र
उ०—२ लीलाट तो पूनम रो चद जाण, अलका जी के सोभाती सोथी। वेंणी जाणे कचन री रेख मे भमगण सूती।—पर्नां०
उ०—३ जग तोप झाल असमान जाय। उडता भमग घर पडै आय।—वि स
उ०—४ रिण जग वागा रोस, अण भग रो दीठो इसो। जिण रग इसडो जोस, जाणे, भमग जगावियो।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात
उ०—५ भार गज टला फौजा भमग भोयणा, जुध अडग ओपणां रुपै जाझा। क्रोध भर अतर भरणै अगन कोयणा, कवर अर दोयणा लियण काजा।—रामलाल आढो।
उ०—६ भोम उरडा भडां भार पडसी भमग, दवा सु लोयणा लाय झडसी दमग।—महाराजा मानसिंह जोधपुर रो गीत
(स्त्री० भमगण)

भमगर–स० पु०—काला सर्प, कृष्ण नाग।

भमणो, भमबो—देखो 'भवणो, भवबो' (रू भे)
उ०—१ पही, भमता जइ मिळइ, तउ प्री आखे भाय। जोयन ववन तोडसइ, ववण घातउ आय—ढो मा।
उ०—२ हसती खेलती खूब झेलती अकासै हाथै, रमती भमती

माय करै सुरा राज —मा वचनिका

भमणहार, हारो (हारी), भमणियो—वि० ।

भमिग्रोडो, भमियोडो, भम्योडो—भू० का० कृ० ।

भमीजणो, भमीजबो—भाव वा० ।

भमियोडो—देखो 'भवियोडो' (रू भे)
(स्त्री० भमियोडी)

भमडी–स० स्त्री० [स० भ्रमर] घूम, घुमाव, चक्कर ।
उ०—दुराविध घमडी दै सणकारी साजी, भारी भमडी लै घर मे भूवाजी । चिलमी ग्रमली के जुलमी चितचावा, दासी वैस्या रा मदवा रै दावा ।—ऊ का

भमण—१ देखो 'भूण' (रू भे)
२ देखो 'भवन' (रू भे)
३ देखो 'भ्रमण' (रू भे)
४ देखो 'भ्रमर' (रू भे)
उ०—ऊहू साहू बिहु दिखण वरा ऊफणे, भमण दळ ग्रालमा जळा भव का । 'पाळ' रा बिहु बळ डूबता पैरिया, 'नाथ' रा तणी वाणास नवका ।—राव सत्रसाल हाडा री गीत

भमणि—देखो 'भवन' (रू भे)
उ०—इणि छलि रति पमणइ, वर गरभु म ग्राणमि चीति । पारस भमणि जोय लोपइ, कोपइ तू सवि रीति ।—मेरुनन्दन

भमणो, भमबो—देखो 'भवणो, भवबो' (रू भे)
उ०—१ सपत दत ग्रग ऐ, घटाक पथ वग ऐ । घजा वैघगरा सिरै, भमै क पख भक्खरै ।—गु रू व
उ०—२ भमिया ग्रत्युलोक भुमण पिण भमियउ, साठ हजार लिजइ भड साथि । राजा सगर तणउ ताइ रैवत, बहु सवदई कुण वाघइ घाति ।—महादेव पारवती री वेलि
उ०—३ सुण समभे कोइ सुघड सयाणा, भोदू सुण भम जावै । ग्राया माघ न देवे उत्तर, वाछित वस्तु बतावै ।—ऊ का
उ०—४ म्हू थनै ग्रर बापू नै ग्रठै छोडनै जोधपुर मजूरी करण नै गयो जरूर पण मन तौ म्हारो ग्रठै ईज भमतो ।—रातवासो

भमणहार, हारो (हारी), भमणियो—वि० ।

भमाडणो, भमाडबो, भमाणो, भमाबो, भमावणो, भमावबो —प्रे० रू० ।

भमिग्रोडो, भमियोडो, भम्योडो—भू० का० कृ० ।

भमीजणो, भमीजबो—भाव वा० ।

भमर—१ देखो 'भवर' (रू भे)
उ०—१ ग्रालीजा ग्रलबेलिया, हो हजा हुमनाक । भीनोडा रमिया भमर, छैल पियो मद छाक ।—बा दा
उ०—२ ग्रच्छरा बीद वणिया ग्रछा, भडा तिलक ग्रणिया-भमर । जमहूत समर मांडै जिका, 'कमर' पर बाघी कमर ।—मे म
उ०—३ उपर जियां वनूप उणिहारै, भमर वक पगति भव-हारै । मीसर भमर ग्रहर परवाळक, बिहुवै जुलफ जाण ग्रहि-वालक ।—सू प्र
उ०—४ मफर चक्र भमर सावळ घजर वेल सज, पमग जुघ मेळ घर उमग पमरा । ग्रमनमो 'गजण' गळ सूहण वण ऊमळे, 'ग्रजण' तण महण रण वहण ग्रमुरा ।
—महाराजा ग्रगैसिंघ राठौड री गीत
उ०—५ ग्रणताघ कूत ग्रसमर भमर कच्छ मच्छ कूरम मवळ । 'गजवघ' मंडाणी मेर गिर, मपतमिघ दखणाघ दळ ।
—गु रू व
उ०—६ मरसत मात पसाव कर, दे मो ग्रविरल मत्ति । भोगी भमर भुवाळ जे, गुण गाऊ तसु भत्ति ।—ढो मा.
उ०—७ कग्डा के कबूतर, भूरटा स्याह भमर । चपला नोनडा जग, पयला तेजी पवग ।—गु रू व
२ एक प्रकार का छद ।
उ०—त्रिणि लघु वि गुर एह प्रसतार, वरण चरणि ग्रावै चत्र बार । होइ विलाख छत्रीस हजार, पणि मो सात छहोतरि पार । खरा रूप कहिया खाति, भमर छद सुणिजो इणि भाति ।
—ल पि
३ देखो 'भ्रमर' (रू भे)
उ०—एक साथ ग्रनेक, फर्ने घरहरै फुहारा । विमळ पुहप विमतरै, भमर भणहणै गुजारा ।—सू प्र.
४ देखो 'भ्रू' (रू भे)
उ०—पहिली ही सीह वळे पाखरियउ, वणता वर ग्राभरण वखाण । भमरा विचइ वाधियउ भामण, भवर तिलक ताइ ऊगउ भाण ।—महादेव पारवती री वेलि

भमरकडी—देखो 'भवरकडी' (रू भे)

भमरगुजार—देखो 'भवरगुजार' (रू भे)

भमरगुफा—देखो 'भवरगुफा' (रू भे)
उ०—भमरगुफा मभि रमै तजै भ्रम, जीतै निद्रा त्रिकुटी सजम । मन मोहणो नागणी मारै, स्रवै ताम ग्रम्रत तत सारै ।—सू प्र

भमरडो—१ देखो 'भवर' (ग्रल्पा , रू भे)
२ देखो 'भ्रमर' (ग्रल्पा., रू भे)

भमरछैल—देखो 'छैलभवर' (रू भे)

भमरजाळ—देखो 'भवरजाळ' (रू भे)

भमरडउ—१ देखो 'भ्रमर' (ग्रल्पा , रू भे)
उ०—भमरडउ मरिवा ग्रणबीहतउ, पमरि पइसइ केतकिई हतउ । कठिन कटक कोडि कुटीरडउ, पडिउ वेधि पछइ पुणि ग्रारडइ ।
—सालिसूरि

भमरडो—२ देखो 'भवर' (ग्रल्पा , रू भे)

भमणियो—१ चरखे का गोल चक्र ।

२ देखो 'भूण' (ग्रल्पा , रू भे)

भमरभार—स० स्त्री०—एक प्रकार की भाग ।

भमरभीख—देखो 'भवरभीख' (रू भे)

भमरलउ, भमरलु, भमरलौ—१ देखो 'भ्रमर' (ग्रल्पा , रू भे)

उ०—१ मेरु महीधर परि ग्रविचल रहउ, मुझ मन ए हिज रे देव सलूणा । ग्यानतिलक गुरु पद कज भमरलउ, 'विनयचद्र' करइ सेव सलूणा ।—वि कु

उ०—२ हू पद्मिनी तू भमरलु, तू तरुग्रर हू वेलि । माधव महा-यौवन माहि, हू सेलू तू खेलि ।—मा का. प्र

२ देखो 'भवर' (ग्रल्पा , रू भे)

उ०—१ प्रीतम मारा भमरला जी, काइक कीजै सक । फुल्या दीसै फुटरा जी, ग्राफु ग्राडै ग्रक ।—वि कु

भमरांण—१ देखो 'भ्रमर' (मह , रू भे)

उ०—भ्रू ग्रावल वेहु भडी, भमराण गुजारा । भोयण (लोयण ?) कीजै भामणैं, कोयण कुरगा रा ।—मयाराम दरजी री वात

२ देखो 'भवर' (मह , रू भे)

भमराई—देखो 'भवराई' (रू भे)

भमरामाखी—देखो 'भौंरामाखी' (रू भे)

भमरामाटी—देखो 'भवरामाटी' (रू भे)

भमराळ—देखो 'भवराळी' (मह , रू भे)

भमराळौ—देखो 'भवराळौ' (रू भे)

उ०—रग केइक रातडा, भसम धूहर भमराळा । जटा जूट ऊजळा, केइक भूरा केइ काळा ।—सू प्र.

भमरावळि, भमरावळी—देखो 'भ्रमरावळि' (रू भे)

उ०—सोहै नीलावर सहत, प्रमुदा प्रीत प्रमाण । चपकमाळा हूरत चित, जुत भमरावळि जाण ।—बा दा

भमरियौ—१ देखो 'भवरियौ' (रू भे)

२ देखो 'भवर' (ग्रल्पा , रू भे)

३ देखो 'भ्रमर' (ग्रल्पा , रू भे)

भमरी—देखो 'भवरी' (रू भे.)

भमरेचा—स० स्त्री०—चौहान वश की एक शाखा ।

भमरौ, भमरचौ—देखो 'भ्रमर' (ग्रल्पा , रू भे)

उ०—१ हर समरौ होमी हरी, जीते जम रौ जग । कर उदिम रोलव करै, भमरौ कीटी भ्रग ।—र ज प्र

उ०—२ पडै मचकूर लघन खबर पाडिया, 'जोघ' खग झाडियां घकौ जमरौ । राव विन फिरग मेले कवण राडियां, भमै नव नाडियां बीच भमरौ ।—कमजी दघवाडियौ

२ देखो 'भवर' (ग्रल्पा , रू भे)

उ०—वैठा ते दरीया विचै, जेहवै ग्राघो जाय । ग्राय पडघा भम-रचा विचइ, वाजै सवलो वाय ।—प च चौ

भमळ—स० पु० [स० भ्रमर] १ काला, श्याम ।

उ०—समळ हुवा कपडा सकल, भमळ हुवौ घट भग । कमळ बदन कुम्हलायगौ, ग्रमल खायगो ग्रग ।—ऊ का

२ देखो 'भवळ' (रू भे)

भमलि—देखो 'भवळ' (ग्रल्पा , रू भे)

भमहडी, भमहि—स० स्त्री० (स० भ्रू) भौंह ।

उ०—१ नासा सा शुक चचडी, भमहडी दीसइ वेऊ वाकुडी । बोलु किं वहुना, कुमार जमलु काई श्र ग्रोपइ नही ।—प्रा फा स

उ०—२ चचल चपल तोरी ग्राखडी, जैसी कमला दलची पाखडी । तोरी भमहि ग्रछइ ग्रणीग्रालडी, एहवइ नल जीइ हू छडी ।

—नळदवदती रास

भमाडणौ, भमाडवौ—देखो 'भवाणौ, भवावौ' (रू भे)

उ०—१ वधि खळ थटा करू झळ वेगा, तखा भुजग ज्यु ही झल तेगा । झळहळ गदा जेम खग झाडू, भीम पडव जिम गजा भमाडू ।

—सू प्र

उ०—२ भीम विना कुण गजा भमाडै, जारै हर विन कमण जहर । वीजा 'वाघ' विना वीलाडे, ग्रवडा कुण मारै ग्रसुर ।

—तेजसी खिडियौ

भमाडणहार, हारौ (हारी), भमाडणियौ—वि० ।

भवाडिग्रोडौ, भमाडियोडौ, भमाड्योडौ—भू० का० कृ० ।

भमाडीजणौ, भमाडीजवौ—कर्म वा० ।

भमाडियोडौ—देखो 'भवायोडौ' (रू भे)

(स्त्री० भमाडियोडी)

भमाडणौ, भमाडवौ—देखो 'भवाणौ, भवावौ' (रू भे)

उ०—१ भुजाडड ऊलाळि भालौ भमाडै, ग्राजकौ इसौ मेर बाथा उपाडै । गरज्जै भलौ वोलियौ भीम ग्राही, पतीसाह भलौ वोलियौ पातसाही ।—गु रू व

उ०—२ छोडि महावत खभूठाणा, मद तळ जोड वहता दांणा । घूघर घट कसे ग्रवाडी, गय चीघा गयणाग भमाडी ।—गु. रू व

भमाणौ, भमावौ—देखो 'भवाणौ, भवावौ' (रू भे)

उ०—पेखे खलु ग्रावतौ सभाय चाप चडपाणा, माथौ भुजा भमाये मयक वाणा मोक । जूझ जाडो करै रामचद रै सायका झडे, लक ग्राडौ पडै ज्यू गिरद लोकालोक ।—र रू

भमाणहार, हारौ (हारी), भमाणियौ—वि० ।

भमायोडौ—भू० का० कृ० ।

भमाईजणौ, भमाईजवौ—कर्म वा० ।

भमायोडौ—देखो 'भवायोडौ' (रू भे)

(स्त्री० भमायोडी)

भमावणकुजर—स० पु० यौ० [स० कुजर + भ्रामक] भीम । (ह ना)

भमावणौ, भमाववौ—देखो 'भवाणौ, भवावौ' (रू भे)

उ०—सत्रा गहि कध उडावत सीम, भमावत जाणि गजा घड

भीम। हिचै भड 'माल' वहै खग हाथ, निजोडत रोद समोभ्रम 'नाथ'।—सू प्र

भमावणहार, हारौ (हारी), भमावणियौ—वि०।

भमाविओड़ो, भमावियोड़ौ, भमाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

भमावीजणौ, भमावीजवौ—कर्म वा०।

भमावियोड़ो—देखो 'भवायोड़ो' (रू भे)

(स्त्री० भमावियोड़ी)

भमियाळ-वि०—जानकार, ज्ञाता।

उ०—दियण विढण भमियाळ 'दूदउत', साच सील भमियाळ सही। भाजेवा भमियाळ न भारथि, नाकारै भमियाळ नही।

—ईसरदास बारहठ

भमियोड़ौ—देखो 'भवियोड़ो' (रू भे)

(स्त्री० भमियोड़ी)

भमुह—देखो 'भ्रू' (रू भे)

उ०—भमुहा ऊपरि सोहलो, परिठिउ जाणि क चग। ढोला, एही मारुवी, नव नेही, नव रग।—ढो मा

भम्मणौ, भम्मवौ—देखो 'भवणौ, भववौ' (रू भे)

उ०—तम्मे रम्मे मत्थे तेग तावा पव्वै वज्ज तुट्टै, फोण घावां वम्मे वोम भम्मे काळ क्रोध। 'चद' वाळो डांगै लागो नेजा घम्मे मेछां चमू, ज्वाळ खंडी रम्मे जाणे इद्र वाळो जोध।

—हुकमीचद खिडियो

भम्मणहार, हारौ (हारी) भम्मणियौ—वि०।

भम्मिओड़ौ, भम्मियोड़ौ, भम्म्योड़ौ—भू० का० कृ०।

भम्मीजणौ, भम्मीजवौ—भाव वा०।

भम्मरकड़ी—देखो 'भवरकडी' (रू भे)

भम्मरगुजार—देखो 'भवरगुजार' (रू भे)

भम्मरगुफा—देखो 'भवरगुफा' (रू भे)

भम्मरजाळ—देखो 'भवरजाळ' (रू भे)

भम्मरभीख—देखो 'भवरभीख' (रू भे)

भम्मरामाटी—देखो भवरामाटी' (रू भे)

भम्मियोड़ौ—देखो 'भवियोड़ो' (रू भे)

(स्त्री० भम्मियोड़ी)

भयंकर-वि० [स०] १ डरावना, विकराल, भयावह।

उ०—१ सूनी धाहर सिंघ री, जाय सके नहिं कोय। सिंघ खर्डा यह सिंघ री, क्यो न भयकर होय।—वा दा

उ०—२ भरिया चा सूर भयकर भारथ, करता पुरस प्रणांम कहइ। उर ईसवर तणइ ताइ ऊपर, रडमाळ झिलती रहइ।

—महादेव पारवती री वेलि

२ अत्यधिक।

उ०—धरमराज री वेटी कह्यौ —राजकवर ! दुनियां मै घणाकरी वाता तो श्रैडी व्है के वानै जाणणा सू सुख उपजै अर घणाकरी वातां श्रैडी व्है के वानै जाणणा सू भयकर दुख उपजै।

—फुलवाड़ी

३ प्रबल, जबरदस्त।

उ०—भाटी 'रघपत' साथ भयकर, सग कायथ 'मेहर' मतसद्धर। पातसाह अजमेर परम्मे, कूच कियौ तडभट भड करसै।—रा रू

रू० भे०—भयकार, भयकारी, भयगर, भयद, भयकर, भयकार, भयागर।

भयकरता-स० स्त्री० [स० भयकर+तल्+टाप्] १ डरावनापन, विकरालता।

२ अधिकता।

३ प्रबलता।

भयकरपीठ-स० पु० [स० भयकर=विशाल+पृष्ठ] हाथी, कुजर।

भयकरी-स० स्त्री०—देवी के रूप विशेष का नाम।

उ०—विगरूपा भयकरी मुड धारण वाराही। वजरणी भैरवी, दीरघ तवी प्रेतवाही।—मा वचनिका

भयकार, भयकारी—देखो 'भयकर' (रू भे)

उ०—१ भयकार 'पात्रू' खला एम भायो, अगै लाय लागी परै वाय आयो। करे राग झालै समो वाद केहो, जिणी वार श्रो वज्ज री आग जेहो।—पा प्र

उ०—२ मिळे गनीमा अकारी फौज भयकारी माथै, ढल्लकै सवारी भारी सूडा डड ढाल। धीवतौ दुधारी खळा अहकारी दीह घोळै, खारी वार 'रासा' वेल आवियो 'कुमाळ'।—पहाड़खा आढ़ो

भयग-स० स्त्री० [स० भू०] १ पृथ्वी, भूमि।

उ०—माहिया सरोज भयग चइ मायइ, हरखाणी चित लावन हरि। अतिरगता विराजइ ऊपर, पगथळियां मीमलइ परि।

—महादेव पारवती री वेलि

२ देखो 'भुजग' (रू भे)

उ०—रोस भयग पलग ससोभित, वारह मेघ सु धार वराबरि। मेल्हि अचेत सचेत करै मन, वेद समत 'हमीर' मजै हरि।

—पिं. प्र

भयगचर-सं० पु० [स० भुजगचर] गरुड़। (नां मा)

भयगर—देखो 'भयकर' (रू भे)

भयद—देखो 'भयकर' (रू भे)

उ०—भव दरियाव भयद, लहरा ऊठै लोभो री। माहे ज्यां मद मद मनख घणा डूबै मरै।—वा दा

भय-स० पु० [स०] किसी सभाव्य विपत्ति या अनिष्ट की आशका से उत्पन्न वह मानसिक स्थिति जिससे प्राणी के मन मे क्षोभ एव चिन्ता व्याप्त हो जाती है। डर, खौफ।

उ०—१ दिन ऊगै नित देखणौ, दाता री दीदार। भागै भूख कळेस भय, 'वक' न लागै वार।—बां दा

उ०—२ राणा रूस्या भय मोरे नाही, चित साहब से लागा। मीराबाई तो सरणे आया, लोक लाज भय त्यागा।—मीरा
क्रि० प्र०—आणौ, खाणौ, होणौ।
२ अधर्म के द्वारा उत्पन्न तीन राक्षसो मे से एक।
३ अभिमति नामक स्त्री के गर्भ मे उत्पन्न द्रोण का एक पुत्र।
रू० भे०—भइ, भव, भवि, भै, भौ।

भयकर, भयकार—देखो 'भयकर' (रू भे)
उ०—हुय हक्क किलक्क समुक्क हला, भयकार घडी वण वार भला। सिर ढाल कडक्कड रूक सदै, जिम वाग डडैहड फाग जदै।
—ग रू

भयकारमुखी—स० स्त्री० [स० भय+मुख] १ तोप।
२ डराने मुह वाली।

भयचक—देखो 'भैचक' (रू भे)
उ०—भयचक हुआे अनेक महाभड, दिग री भाज गई भकभूर। अयो (आयो) दिख रई घट ऊपर, केवा मागण वडउ करूर।
—महादेव पारवती री वेलि

भयट्ठाण—स० पु० [स० भय+स्थान] भय का स्थान। (जैन)

भयडि—स० स्त्री० [स० भ्रकुटि] भौह।
उ०—भयडिहि भुयगु भमाडइ, भाभरभोली तोइ। नयणि अमीसरू वीधइ, छूटइ तरूणु न कोइ।—प्रा फा सं

भयणि, भयणी—देखो 'वहन' (रू भे)
उ०—अट्ठावयपमुह सवि नमीय तित्थ जा घरि पहुच्चई। मणीचूडह मित्तह भयणि राउ, एकु परिहरीउ वच्चई।—सालिभद्र सूरि

भयद—स० पु० [स०] १ सूअर। (अ मा)
२ देखो 'भयदाई' (रू भे)

भयदाई—वि० यौ० [स० भय+दायक] (स्त्री० भयदा, भयदाणी) भय देने वाला, भयावना, डरावना।
उ०—लगर लज्जा रा तरभगर लाडा, गोरख गाया रा गाहिड रा गाडा। भाई भयदाई लागत है भारी, मीणा लज्जा है मीणाळा सारी।—ऊ का
रू० भे०—भयद।

भयनासण—वि० यौ० [स० भय+नाशन] (स्त्री० भयनासणी) १ भय का नाश करने वाला।
स० पु०—२ ईश्वर।

भयपद, भयप्रद—वि० यौ० [स० भय+प्रद] भय उत्पन्न करने वाला, भयानक।

भयभजण—वि० यौ० [स० भय+भजन] १ भय को मिटाने वाला।
स० पु०—२ ईश्वर, भगवान्।

भयभीत, भयभूत—भू० का० कृ० [स० भय+भीत] डरा हुआ
उ०—१ दादू झूठ दिखावै साच को, भयानक भयभीत। साचा राता साच सौ, झूठ न आनै चीत।—दादूवाणी
उ०—२ मुहडै भरि बोलियउ महीपति, तेडइ कुण इसडउ अवधूत। गढपत तितरइ दाखतउ गाहड, भड अणजाण हुयउ भयभूत।—महादेव पारवती री वेलि

भयमोचण—वि० यौ० [स० भय+मोचन] १ भय को मिटाने वाला, डर दूर करने वाला।
स० पु०—२ ईश्वर।

भयरव—देखो 'भैरव' (रू भे)
उ०—भालड भयरव आवती, ऊतारइ वड-छालि। वालइ राख लगाडवा, चाचरि चाचरि चालि।—मा का प्र

भयरवी—१ देखो 'भैरवी' (रू भे)
उ०—जिण वार पाल जम रूप जाण, भळकत जेठ मध्यान भाण। जूझार वीर तोले जवान, भयरवी सबद वोले भयान।—पा प्र

भयहर, भयहरण, भयहरता, भयहारी—वि० [स० भय+हरण] (स्त्री० भयहरणी) १ भय को हरण करने वाला, भय दूर करने वाला।
स० पु० २ ईश्वर, प्रभू। (ना मा)

भयहुअ—भू० का० कृ० [स० भयभीत] अति भयभीत। (जैन)

भयाणक, भयाणख—देखो 'भयानक' (रू भे)
उ०—१ जगरूप भयांणक जमाति जांणै डाकदारू नै डाक के हुन्नर से आणे। अगू के अवनाड, चालते पहाड।—सू प्र
उ०—२ सूरत के भयाणक, जमराणू के जोस। जगू के जालम, तीरमदाजू के मिरपोस।—सू प्र
उ०—३ भयाणख गाडा किता जूग भारू, दळा गोळिया पूर सामान दारू। जळावोळ हीलोळ हालत जाडा, अणी आग्वा पूरवां थाट आडा।—सू प्र

भयागर—देखो 'भयकर' (रू भे)

भयाण—स० पु०—१ एक विशिष्ट जाति का घोटा।
उ०—तेजी उरडा गह्वरा तोरणा खुरमाणा भयांणा हयाणा रोहवाला रुडयाला तोरका मदकोरा पीलूआ।—व म
२ देखो 'भयानक' (रू भे)

भयाणउ—स० पु०—१ एक प्रदेश का नाम।
उ०—अवध्या वणारसी चदेरी मल्लीवाल मह्वर महोव हरियाणउ भयाणउ रत्नपुर कामरू ओडियाण जालधर सिंधु आरब वगाळ थिहुण भोट।—व म
२ देखो 'भयानक' (रू भे)

भयांणक, भयांणख, भयाणग—देखो 'भयानक' (रू भे)
उ०—जुध-दुद राघव अनै इद्रजित भयाणक पडि भार। उण वार रत नद ऊभळै, हुय हाक घर गिर हलहलै।—सू प्र
उ०—२ अणी मर मावळ फूटत ऊक, रुद्रायण वाह करै घण

रूक। भयाणख भेख सरा छड भार, दुहवळ धार रगत्त दुगार।
—सू प्र

भयांणो—देखो 'भयावणो' (रू. भे)

भयान—देखो 'भयानक' (रू भे)

उ०—१ करि गमन ग्रस्त रवि सवि काळ, कुळ काक स्वान भूके कराळ। ममसान ममुख कीनो पयान, वेताळ भूत भूंगे भयान।
—ला रा

उ०—२ रीझाय हूर सुण राग रग,, जम हूत करै खीजाय जग। पी जाय भठी इक सुरापान, भख जाय ग्ररध भैसा भयान।
—वि रा

भयानक–वि० [स० भय+ग्रानक] १ वह जिसकी ग्रसाधारण ग्राकृति या उग्रतापूर्ण ग्राचरण से डर लगता हो। डरावना, भीषण।

२ प्रबल, जबरदस्त।

स० पु०—१ साहित्य के नौ रसो मे से एक रस जिसका स्थाई भाव भय है। शत्रु, हिंसक जीव, निर्जन प्रदेश ग्रादि उसके ग्रवलबन है। शत्रु की चेष्टाए, ग्रसहायता उद्दीपन हैं। विवर्णता, गद्गद् भाषण, प्रलय स्वेद, रोमाच, कप ग्रादि ग्रनुभाव हैं। त्रास, मोह, जुगुप्सा दैन्य, सकट, ग्रपस्मार, सम्भ्रम, चिन्ता, ग्रावेग ग्रादि व्यभिचारी भाव हैं।

२ बाघ। (डि को)

३ राहु। (डि को)

रू० भे०—भयांण, भयागर, भयाणक, भयाणख, भयाण, भयाणक, भयाणख, भयाणग, भयान।

भयागर—देखो 'भयकर' (रू भे)

भयातिसार–स० पु० [स० भय+ग्रतिसार] भय के कारण दस्तें लगने का एक प्रकार का रोग।

भयातुर–वि० [स० भय+ग्रातुर] भय से व्याकुल।

भयावणो, भयावनो–वि० [स० भय+रा० प्र० ग्रावणो, ग्रावनो] डरावना, खौफनाक।

रू० भे०—भयाणो, भयावणो।

भयावह–वि० [स०] भयजनक, डरावना।

भयी—देखो 'भाई' (रू भे)

भरग–वि०—ग्रत्यन्त काला।

उ०—ठिकाणा रो मकान बडो नवो-चोडो ग्रर बाबा ग्रादम रै जमाना रो बण्योडो हो। बरसात मे साळोसाळ नील जम जमनै धवळा माळिया काळा भरग पडग्या हा।—रातवासो

भर–स० पु०—१ उत्तरदायित्व, जिम्मेदारी।

उ०—१ रचे एम मचकूर, फुजा ग्रापणा दिली भर। जिसौईज करि जवत, करा मोवा सर पद्धर।—सू प्र

उ०—२ देवराज रोगा दया, पाता रपा पाण। जूझ तणा भर झलिया, उर सूरा भ्रम ग्राण।—रा रू

२ किसी वस्तु के सग्रह हेतु बर्तनों को भर लेने का कार्य।

३ भरने की ग्रवस्था या भाव, भराव।

उ०—घमस परराण नीसाण वज घूमरा, परी थाक थवत होय पडै भ्रग पाग। तरा जड ऊपडै भर्रा मूकै तरग, उरग रस रग चडै कुरग ग्रकळास।—गु रू ब

४ भार, बोझ, वजन।

उ०—१ बरण एक लिया किया एक करण कण, भर सचे भजियो भिड। बळभद्र खळै खळा गिर बैठी, चारो पळ ग्रीधणी निड।
—बेलि

उ०—२ भरिया तरु पुहप वहे तूटा भर, काम बाण ग्रहिया करगि। वळि रितुराइ पराइ वेसग्नर, जण भुरछीतो रहै जणि।
—बेलि

५ भरे हुए होने की ग्रवस्था या भाव, पूर्णता, यथेष्टता।

उ०—दिन दस बीता देसनू, कूच कियो कमधज्ज। महपति ग्रायो मेडतै, भर वरसा घर भुज्ज।—रा रू.

६ तोल।

स० स्त्री०—७ तिल की फसल को खेत मे एक विशिष्ट तरीके मे एकत्र करने की क्रिया।

८ मिट्टी या बालू रेत का बहुत ऊचा ग्रौर लंबायमान टीला।

वि०—१ कुल, सब, समस्त।

२ पूर्णता प्राप्त, पूर्ण। ज्यू—भरजोवन, भर जवानी।

उ०—भरजोवण ज्यु ही नेत्र छब भरिया, जोत कळा जोवता जुई। वारै दीहे वरस बारा री, हेमाचळ री कुवरि हुई।
—महादेव पारवती री वेलि

वि०—३ भरण-पोषण करने वाला।

ग्रव्य०—१ तक, पर्यन्त।

ज्यू—कोस भर चाल्या हा।

उ०—काळ लकाळ करटाळ जडियो कमव वहै विकराळ रगताळ बाई। भेद छकटाळ चगताळ चूनाळ भिद, ताळ रो झाळ भर धरण ताई।—गु रू ब

२ वय, ग्रवकाश, परिमाण ग्रादि की सपूर्णता या पूर्णता किसी इकाई के रूप मे सूचित करते हुए।

ज्यू—गजभर, दिनभर, जीवनभर।

उ०—रुद्र-घरणी जपै, गाभळि रुद्र, ग्राज लगै तै लिया ग्रनेक। जैसिंघ धूय तणो धू जौता, उमर भर मो जुडियो ग्रेक।

३ ग्रच्छी तरह से, भली प्रकार से।

उ०—छोरा नै एक बार ग्राख भर देख लेती तो ठीक रै'तो।

४ के, द्वारा या सहायता से।

भरकुट, भरकूट—देखो 'भ्रकुट' (रू भे) (डि को)

भरखमो, भरखमू, भरखबू, भरखिवो, भरखीमो–वि० (स्त्री० भरखमी)

सहनशील, सहिष्णु।

उ०—१ धरती जेहा भरखमा, नमणा जेही केळि। मज्जीठा जिम रच्चणा, दई सु सज्जण मेळि।—ढो मा

उ०—२ ऊंट भरखिवौ हो। स्याळ रै कुवदी मुमाव री घणी परवा को करता नी।—फुलवाडी

उ०—३ आ वात कंय'नै वामणी आपरो अेक हाथ गोद मे मूता वाळक रै मार्थं अर दूजौ हाथ आपरा घणी रै माथा मार्थं फेरण लागी अर उठै ई माथौ निवाया गुमघाम व्हियोडी वैठी री' इण लाठी दुनिया मे भरखिवा फगत दो जणा इज है—अेक तौ धरती अर दूजी नार।—फुलवाडी

उ०—४ आया गया क्या होय रे, कर लीजो कोई। धरती जैसा भरखीमा रे, पाणी जैसा न पाक। अन जैमा ओखद नही, जरणा जिसा न जाप।—स्त्री हरिरामजी महाराज

रू० भे०—भारखमो, भारीखमू, भारीखमो, भारीखम्मो।

भरग भरगु—देखो 'भ्रगु' (रू भे)

उ०—१ राखण मिथळेमराज लाखवात अघट लाज, करि अमाप सवल करग भरग चाप भजण।—र ज प्र

भरगुलता—देखो 'भ्रिगुलता' (रू भे)

भरड–स० स्त्री०—१ ध्वनि विशेप।

भरडकोट–स० पु०—एक किले का नाम जो राठौड राव मल्लिनाथजी के अधिकार मे था।

उ०—भरडकोट आया भळै, कूकाऊ कर कूक। 'माला' रावळ माहरा, ऊपर करो अचूक।—वी मा

भरडणौ, भरडबौ–क्रि० स० [अनु०] १ मारना, सहार करना।

उ०—'कीट' कटारी चालवी, खटकी 'खूमाण'ह। 'मोटै' ईमर मारियो, डाकी भरडाणाह।—वा दा ख्या

२ कुचलना, रौंदना।

३ दातो से चबाना।

भरडणहार, हारौ (हारी), भरडणियौ—वि०।

भरडिओडौ, भरडियोडौ, भरडयोडौ—भू० का० कृ०।

भरडीजणौ, भरडीजबौ—कर्म वा०।

भरडणौ, भरडबौ—रू० भे०।

भरडियोडौ–भू० का० कृ०—१ मारा हुआ, सहार किया हुआ २ कुचला हुआ, रौंदा हुआ ३ दातो से चबाया हुआ (स्त्री० भरडियोडी)

भरडा–स० स्त्री०—एक जाति का नाम।

भरडौ–स० पु०—१ वह घोडा जिसका रग न तो पूरा सफेद हो न पूरा काला हो।

२ भरडा जाति का व्यक्ति। (सभा)

रू० भे०—भरडउ, भरड्डु, भरडौ।

भरडउ—देखो 'भरडौ' (रू भे)

उ०—ब्राह्मण मेवइ वेसनड, अेता नही कुळवट्ट। भमि भूलि मिउ भामिनी! को भरडउ भथरट्ट।—मा का प्र

भरडणौ, भरडबौ—देखो 'भरडणौ, भरडबौ' (रू भे)

उ०—कालि भरडचा कोदिग, आज विणाविमि वोर। हाकी काढ़िसि इम यथा, सीमि सुनु ढोर।—मा का प्र

भरडणहार, हारौ (हारी), भरडणियौ—वि०।

भरडिओडौ, भरडियोडौ, भरड्योडौ—भू० का० कृ०।

भरडीजणौ, भरडीजबौ—कर्म वा०।

भरडियोडौ—देखो 'भरडियोडौ' (रू भे)

(स्त्री० भरडियोडी)

भरड्डु—देखो 'भरडौ' (रू भे)

भरण–वि० [स० 'भृ'] (स्त्री० भरणी) भरण-पोपण करने वाला, पालण-पोपण करने वाला।

स० पु० [स० 'भृ'] १ किसी वस्तु को भरने की क्रिया या भाव।

२ पालन पोपण।

३ खिला पिलाकर जीवित रखने की क्रिया या भाव।

४ किमी पदार्थ के न होने या नष्ट होने मे की जाने वाली पूर्ति।

५ वास की खपच्चियो मे वना खाल से मढा हुआ अनाज आदि नापने का एक टोकरा।

६ मेघ, वादल। (ना डि को)

७ 'रघुवर जस प्रकाश' के अनुसार प्रथम गुरु के 'गगण' का नाम।

८ कूडा, तगारी।

अल्पा०—भरणको, भरणियो।

९ देखो 'भरणी' (रू भे)

भरणको—देखो 'भरण' (अल्पा, रू भे)

उ०—जठै चूतौ उण ठाया पर कठैई भरणको कठैई थाळी नै कठैई कूडियो माड दियो घर ही मार्थं गूदडा नाख दिया अर सब रा मांचा ओरी मे ले लिया।—रातवासौ

भरणनद–स० पु०—वादल। (अ मा)

भरणनिवाण–स० पु०—मेघ, वादल। (ह ना मा)

भरणाटी स० स्त्री०—देखो 'भरणाटौ' (अल्पा, रू भे)

भरणाटै–क्रि० वि०—वेग से तेजी मे।

उ०—माप नै वा आपरी गाडी मार्थं मावळ वैठाण लियौ नै टिचकारी दी, नै टिचकारी रै समचै ई ऊदरा तौ भरणाटै उडिया।

—फुलवाडी

भरणाटौ–स० पु०—चक्कर।

अल्पा०—भरणाटी।

भरणाणौ, भरणावौ–क्रि० स०—भ्रमित करना, घुमाना।

उ०—भीठकिया भरणाय, घरोरी उवार घालै । तीजै दिन भड़काय, लादडी भर ले हालै ।—द दे

भरणाणहार, हारौ (हारी), भरणाणियौ—वि० ।

भरणायोडौ—भू० का० कृ० ।

भरणाईजणौ, भरणाईजबौ—कर्म वा० ।

भरणायोडौ—भ्रमित किया हुआ, घुमाया हुआ ।
(स्त्री० भरणायोडी)

भरणियौ—१ भरने वाला ।
२ देखो 'भरण' (अल्पा, रू भे)

भरणी—स०स्त्री० [स०] १ सत्ताईस नक्षत्रो मे से एक नक्षत्र । (ना मा)
२ भूमि खोदने के लिए अच्छा माना जाने वाला एक लग्न ।
३ साप को फाड डालने वाला एक कीडा विशेष ।
४ काच, चीनी या धातु का बना एक बर्तन विशेष जो गोलाकार एव गहरा होता है ।
५ करघे मे की ढरकी ।
६ बुनाई मे बाने का सूत ।
रू० भे०—बरणी, भरनी ।

भरणीजळ—स० स्त्री०—उत्तर और ईशान के मध्य की दिशा जिस ओर सप्तऋषि उदय होते हैं ।

भरणो—स० पु० [स० भरण] १ किसी को सन्तुष्ट करने के लिए उसकी सेवाओ के बदले मे दिया जाने वाला द्रव्य या पदार्थ, एवज, मुआवजा ।

उ०—आखर वगत उचारै, जीहवा धन राम नाम रट भट जो । पोसणतो भर पायो, भोजन अढार भात चो भरणो ।—र ज प्र

२ कमी-पूर्ति के रूप मे दिया जाने वाला पदार्थ या वस्तु ।

उ०—२ मूळी रै घणी मोहै रतन ऊगा-आंथविया ताईं गीसण परवत नू कोटपसाव दियो । पचास लाख नगद, पचास लाख रो भरणो नै लाख रुपिया रो माल नवैनगर बाई मोही नू मेलियौ ।
—बा दा ख्यात

३ किसी हानि या ऋण की समान मूल्य वाली अन्य वस्तु द्वारा की जाने वाली क्षति-पूर्ति ।

उ०—१ पाग्वती आवता दीस्या तो डोकरी वळै हेलो मारचो । राजा जी वळै दौडता आया । उठीनै हाथ री सानी करी उठीनै वळै घोडो रटगडायो । सारै दौड-दौड थाकेलो चटग्यो पण कुचमादी तो निगै ईं नी आयो । घडी घडी लारो करण सू राजाजी री हीमत वधी पण वधी । घूम घुमाय पाधरा डोकरी रै पाग्वती आया । अबकी डोकरी हाको नी करयो । रोवती रोवती बोली—बापजी, म्हारी सगळी दाळ नैयग्यो, सित्यानास जावे इण रो । इनूणा कोटवाळजी नै काई जवाब देवूला । म्हू गरीबणी इत्तो भरणो कीकर भरूला । म्हारै तो पट भरण रा ई जादा पडै ।
—फुलवाडी

उ०—२ सेठ रे मूडे भाग आयग्या, थूक उछाळता अपळ-गपळ बोलण लागा—आ लाली न्या'ल करिया । भळै सराघ करौला । पाच हजार रो भरणो, भरणो पडियो ।—फुलवाडी

भरणो, भरबौ—क्रि० अ० [स० 'भृ'] १ किसी रिक्त स्थान, पात्र, आधार या अवकाश का किसी पदार्थ के योग से पूर्ण या युक्त होना ।

उ०—१ नाडा भरियोडा नैडा निजराता, गाडा गुडकाता पैडा रडपाता । लाखै फूलाणी भीणा सुर लेता, डीघा गाडीणा डव-डव धुनि देता ।—ऊ का

उ०—२ भादवै नीर निवाण भरियै गिर पहाड पखाळियै । मिळि छपन कोडी मेघमाळा नदी पूरि हिमाळियै ।—ईसरदास बारहठ

२ यौवन या स्वस्थता के कारण शरीर हृष्ट-पुष्ट होना ।

उ०—बारह बरस री ऊमर मे ईं जद उण रो डील पूरो भरीजग्यो हो तो आज सोळै बरसा री क्यू बात पूछणी ।—फुलवाडी

मुहा०—भरियोडील, हृष्ट-पुष्ट ।

३ किसी रिक्त पद या आसन की नियुक्ति द्वारा पूर्ति होना ।

ज्यू—स्कूल मे एक मास्टर री जगा खाली ही सो भरीजगी है ।

४ मन का क्रोध, सन्ताप, असन्तोष आदि से युक्त होना ।

ज्यू०—म्हैं मा कनै गयो तो भरियोडी बैठी ही, देखता ही बरस पडी ।

५ आवेश, करुणा, स्नेह आदि से अभिभूत होने के कारण कुछ कहने मे असमर्थ होना ।

ज्यू०—उणा री आ हालत देखनै म्हारी आख्या भरीजगी ।

उ०—नोजवान रै माय बडता ईं बामणी एक पीलजोत रै सामी मूडो करनै ऊभगी । दिवळा री भळ रै उनमान ईं वा थर-थर कांपती ही । अणछक वा डुसकिया भरनै रोवण लागी । नोजवान रो काळजो ई भरीजग्यो अर उण री आख्या जळजळी व्हैगी ।
—फुलवाडी

६ ऊबना ।

ज्यू०—ऐडी बाता सुण-सुण नै म्हारो तो मन भरीजगो ।

७ पशुओ, यानो आदि पर बोझ लदा जाना ।

८ किसी दरार, छिद्र या विवर का स्वत बन्द होना ।

९ किसी वस्तु के सयोग से ओत-प्रोत या युक्त होना ।

ज्यू०—स्याही सू हाथ भरीजणो, कादा मे पग भरीजणो ।

उ०—मूर्छा सेडे माय भरी चिपके भीनोटी । अगली कोई उघडी कठण कमज्या कीनोडी ।—ऊ का

१० जोशपूर्ण होना, जोश मे होना ।

उ०—दखिण धरा रस दिह्री, असह नह करै इरादो । दिली लियण जिण दीह, जोम भरियौ साहिजादो ।—सू प्र

११ घाटी का गम्भती होना ।

क्रि० स०—१२ किसी रिक्त स्थान या बर्तन मे कोई वस्तु डालना, उडेलना या गिराना कि जिससे वह पूरा भर जाय ।

उ०—१ च्यार सप्रदा जिण हित चाली, प्रगट हुई ज्यू माभी पाली । महिला नीर भरण नें माल्ही । खरौ जळ ऊंडौ तळ वाली ।—ऊ का

उ०—२ फळ अब, नारग दाख पाचै मालणी छावा भरै, राजिंद पाता जांम रावळ सामि तिण रुत सभरै ।—ईसरदास बारहठ

१३ किसी पात्र, वस्तु या रेखाकन मे अपेक्षित, आवश्यक या उपयुक्त वस्तु को रखना या लगाना ।

ज्यू—तसवीर मे रग भरणौ ।

१४ टेक्स देना या दण्ड मे धन रुपयादि देना ।

उ०—१ अनमी कध नमाविया, नाणा भरै नरेस । जीतौ तू 'जैसिघदे', दिखण तणा सौ देस ।—बा दा

उ०—२ पहु सांभर लगि सामद पाजा, रहसी दास होय अनि राजा । कुळ पैंतीस सेव सब करसी, भूपति रैंत जैम दड भरसी ।
—सू प्र

उ०—३ पीछै अै पूली वगैरै साराई नरसिंघ सू मिळिया, अरु कयौ, 'म्हारौ वदळौ घेरावौ थांनू वारै महीना मे इतरौ मासूल भरसां ।'—द दा

१५ किसी रिक्त पद या आसन की नियुक्ति द्वारा पूर्ति करना ।

ज्यू—चपडासी री जगां भरणी ।

१६ निर्वाह करना, निबाहना ।

१७ कहना ।

उ०—भरइ, पळट्टइ, भी भरइ भी भरि, भी पळटेहि । ढाढी-हाथ सदेसडा, धण विलळती देहि ।—ढो मा

१८ किसी के मन मे तुष्टि, सन्तोष या पूर्णता की भावना पैदा करना ।

ज्यू—म्हैं उणांनै आ बात कही जद उणारौ मन भरीजियौ ।

१९ किसी के मन मे किसी के प्रति विरोधी भावनाओ को अकुरित करना ।

ज्यू०—उणं राम नै मोहन रै विरुद्ध भर दियौ है ।

२० किसी यन्त्र या मशीन की चाबी या कुजी को घुमाकर या ऐसी क्रिया करना कि वह यन्त्र सचालित हो जाय ।

ज्यू—घडी मे चावी भरणी ।

२१ पशुओ, यानो आदि पर बोझ लादना ।

उ०—अब ए दूदा ग साथी भी पचास माथ है जिण थी समस्त राही सीस वढि सलीतौ भरी दिल्ली पुगावो ।—व भा

२२ किसी वस्तु का सग्रह करना ।

ज्यू—व्योपारिया अनाज खरीदर कोठा भर लिया ।

२३ किसी छिद्र, सन्धि, मुह आदि को बन्द करने के लिए किसी वस्तु को ठूसना, जडना, वैठाना या लगाना ।

ज्यू—मोरी वद करण सारू वी मे कपडा आदि भरणा ।

२४ लेखन द्वारा आवश्यक पूर्तिया अकित करना ।

ज्यू०—फारम भरणौ ।

२५ अपेक्षित समर्थन, सहमति, स्वीकृति आदि की सूचक पूर्ति करना ।

ज्यू—बात री हा भरणी, साख भरणी ।

उ०—कमेडी बापडी काई करती, उणनै हुकारौ भरणौ पडियौ ।
—फुलवाडी

उ०—२ विणजारी सोळै आना हामळ भरी तौ उठै ई सायजादी सू इस्टूखा री सगाई पक्की व्हैगी ।—फुलवाडी

२६ किसी मान या पैमाने मे भरकर द्रव चूरण या अन्नादि पदार्थों का मापना ।

भरणहार, हारौ (हारी), **भरणियौ**—वि० ।

भराडणौ, भराडबौ, भराणौ, भराबौ, भरावणौ, भरावबौ
—प्रे० रू० ।

भरिओडौ, भरियोडौ, भरयोडौ—भू० का० कृ० ।

भरीजणौ, भरीजबौ—भाव वा०/कर्म वा० ।

भरत—स० पु०—१ कैकयी के गर्भ से उत्पन्न अयोध्या के राजा दशरथ का पुत्र ।

२ एक सुविख्यात पुरुवशीय सम्राट जो शकुन्तला के गर्भ मे उत्पन्न राजा दुष्यन्त का पुत्र था ।

३ एक महायोगी राजर्षि जो ऋषभ राजा के पुत्र थे जिनका दूसरा नाम जडभरत भी है ।

४ नाट्यशास्त्र का प्रणयन करने वाला सुविख्यात आचार्य भरतमुनि ।

५ लवा पक्षी का एक भेद जो लम्बा होता है तथा झुण्डो मे रहता है ।

६ जैनों के अनुसार प्रथम तीर्थंकर ऋषभ के ज्येष्ठ पुत्र का नाम ।

७ ताबा और रागा मिश्रित धातु विशेष ।

उ०—१ कुरळा कीजै छै मिभ्या वांदण रो वखत हुवौ छै, वनाती आसण विछै छै । पीतल रा भरत रा धूपिया आगै आण मेलजै छै ।—रा सा स.

उ०—२ आवू रै धणी पाल्हण परमार सरभ धातु माहे भरत रो भरियौ पीतकर रौ वीम्ब हुतौ सु मलाय अचळेसर है ।
—वा दा ख्या

८ वह खेत जिसमे वर्षा का पानी एकत्र हो जाता है । ऐसे स्थान पर मूग बढिया होते है ।

उ०—सू मूग किण भात रा छै ? मगरै रा नीपना, भरत रै खेत रा, हरियै रग रा, चुवळां जेवडा, इण भात रा मूग हाथा सू रळकायजै छै ।—रा सा स

९ देखो 'भरतक्षेत्र' (रू, भे)

१० देखो 'भरती' (रू भे)

११ देखो 'वरत' (रू भे)

उ०—फगत डीन रा आपा माथै काई काई करतब दिखावै। कीकर तो ढोल नै नुळावै, कीकर इत्ता ऊचा कूदै, पोत्या माथै अवर दोडै, कैंडा कैंडा तरवारा रा हाथ बतावै। भरत माथै कैंडा निरात सू चालै —फुलवाडी

रू० भे०—भरय, भरह।

भरतक्षेत्र—स० पु० [स०] भारतवर्ष।

रू० भे०—भरतखेतर, भरतखेत्र।

भरतखंड—स० पु० [स०] पुराणो के अनुसार जम्बू द्वीप के नौ खण्डो मे एक, भारतवर्ष।

रू० भे०—भरहखड, भारतखड।

भरतखेतर, भरतखेत्र—देखो 'भरतक्षेत्र' (रू भे)

भरतपुरिया—स० स्त्री०—रामावत साधुओ की एक शाखा।

भरतपूरीलोटो—स० पु०—१ भरत धातु निर्मित पानी पीने का गोलाकार पात्र।

२ अनिश्चित विचारो वाला व्यक्ति।

भरतर, भरतरि—स० पु० [स० भर्तृ] १ उज्जैन के राजा इन्द्रसेन के पोते जो अपनी स्त्री अनगसेना (जिसका दूसरा नाम पिंगला भी था) की दुश्चरित्रता से दुखी होकर विरक्त हो गए थे। इन्होने शृगार, नीति एव वैराग्य नामक 'शतकत्रयी' ग्रन्थ की रचना की थी।

उ०—राज पाट तज भरतरी, किया आपणा काज। जोग ध्यांन राजा लहे, तो वै क्यू छाडै राज।—ह पु वा

स० स्त्री०—२ पृथ्वी। (डि को)

रू० भे०—भरथरी।

भरतवरस—देखो 'भारतवरस' (रू भे)

भरतवीणा—स० स्त्री०—कच्छपि वीणा से मिलती-जुलती एक प्रकार की वीणा।

भरतांन—स० पु०—युधिष्ठिर। (अ मा)

भरता—स० पु०—१ युधिष्ठिर। (ह ना मा)

२ राजा। (ह ना मा)

वि०—१ भरण-पोषण करने वाला, पालक।

उ०—विद्या वेदा मे वैदिक विधि वरणी, अपणी करणी सू जग पार उतरणी। निरभय नियता यता नर नारी। करता विस्वभर भरता गुणकारी।—ऊ का

२ देखो 'भरतार' (रू भे) (ह ना मा)

उ०—ईस रूप मनि इम ठहराई, भरता एह अवर पित भाई। उणसो तारण मोन चलाए, ओ पडियो अप आगळ आए।—सू प्र

भरताचारज, भरताचारय—स० पु० (स० भरताचार्य) एक ऋषि का नाम।

उ०—विवुधजन अवस्टभमेरु, पिशी मात्री गुरु आग्या प्रतिपालक सट्दरसन आसाविस्राम अभिनवउ उदारपुरुसोत्तम, भरताचारय कविसभास्र गार इतिविरुदानि स्रीवरतुप्रालस्य।—व स

भरतार—स० पु० [स० भर्तृ] १ पति।

उ०—१ वनचर गण लीवा वहे, भागीरथ रै राह। स्रीसीता भरतार सम, भागीरिथी प्रवाह।—वा दा

२ मालिक, स्वामी।

३ ईश्वर, भगवान।

रू० भे०—भतार, भरता, भरतार, भरथार।

अल्पा०—भतारी।

भरतियौ—स० पु० [स० भृत्य] १ नौकर, सेवक, अनुचर।

उ०—दास अहा झूठी नह दाखै, माधव कछू बुरौ मत मान। 'तीलोके' घर रयौ भरतियौ, छीपा तणी छवाई छान।

—भगतमाळ

२ कमी पूर्ति करने का भाव या क्रिया।

३ भरत नामक धातु का बना हुआ गोलाकार पात्र जो शाक-भात बनाने के काम आता है।

वि०—४ जादू-टोना करने वाला, यति।

रू० भे०—वरतियौ, वरतियो।

भरती—स० स्त्री०—१ किसी चीज मे कोई दूसरी वस्तु भरने की क्रिया या भाव।

२ चित्रकारी या नक्काशी मे सुन्दरता के लिए खाली स्थानो को भरने का कार्य।

३ दाखिल या प्रविष्ट होने का भाव, प्रवेश।

४ क्षति-पूर्ति के सम्बन्ध मे दिया गया धन या पदार्थ।

रू० भे०—भरत, भरोती।

भरतेसर, भरतेसरु, भरतेस्वर—स० पु० [स० भरत+ईश्वर] एक राजा का नाम।

उ०—१ असख्यात मुनि सेत्रुज सीधा, भरतेसर नइ पाट रे। राम अनै भरतादिक सीधा, मुगति तणी ए वाट रे।—स कु

उ०—२ सघपति भरतेसरू, जात्रा करू रे। थाप्या प्रथम प्रासाद, जय जय गिरनार गिरे।—स कु

उ०—३ भरतेस्वर वाहुवलि आपमाहि सग्राम करइ, वासुदेव बलदेव द्वारिकानउ दाध ऊवेसइ।—व स

भरथ—देखो 'भरत' (रू भे)

उ०—तप ज्या कीध भरथ समतूले, देखे तेज इद्रासण डूले। दुति ज्या विधन करण तप दांमा, विदा कीध सुरपति सुरवांमा।

—सू प्र

भरथनेर—देखो 'भाडगनेर' (रू भे)

भरथरी—देखो 'भरतरी' (रू भे) (डि को)

उ०—१ जगतणी मोह माया तजू, जिम गोपीचद **भरथरी**। चढि रथां अमरपुर मझि चढू, अमर कीत करि आपरी।—सू प्र

उ०—२ दादू कह था गोरख **भरथरी**, अनत सिधो का मत। परकट गोपीचद है, दत्त कहै सब सत।—दादूवाणी

भरथाग्रज–स० पु० यौ० [स० भरत + अग्रज] दशरथ के पुत्र श्री रामचन्द्र। (अ मा)

भरथार—देखो 'भरतार' (रू भे)

उ०—थे तो म्हांरा वहूजी भोळा घणा, भोळा वहूजी ए लो। वै तो है थारा ही **भरथार**, म्हारा वालाजी ओ।—लो गी

भरदाज, भरद्वाज–स० पु० [स० भरद्वाज] १ अगिरसवशीय एक सुविख्यात ऋषि जिनका जन्म वृहस्पति के भाई उचथ्य ऋषि की पत्नी ममता के गर्भ से एव वृहस्पति के वीर्य से हुआ था।

२ एक सुविख्यात ऋषि जो पुरुसम्राट भरत को पुत्र के रूप मे प्रदान किया गया था।

३ अगिरा कुलोत्पन्न एक ऋषि जो विश्वामित्र के पुत्र रैम्य ऋषि का मित्र था। इसके पुत्र का नाम यवक्रीत था।

४ पूर्व मन्वतर का एक ब्रह्मर्षि।

५ अगिराकुलोत्पन्न एक ऋषि जिसका आश्रम गगा द्वारा मे था।

६ वाल्मीकि ऋषि का शिष्य जो प्रयाग मे रहता था।

७ एक अग्नि जो शयु नामक अग्नि का ज्येष्ठ पुत्र था।

८ एक ऋषि जो शरशय्या पर पडे भीष्म से मिलने गया था।

९ एक धर्मशास्त्रकार जिसके द्वारा श्रौतसूत्र और धर्मसूत्र की रचना की गई है।

१० एक राजा जो वायु के अनुसार अमित्रजित् राजा का पुत्र था।

११ भरत नामक पक्षी।

भरनी—देखो 'भरणी' (रू भे)

भरपाई–स० स्त्री०—१ वह अवस्था जिसमे कोई वस्तु पूर्ण रूप से प्राप्त हो जाय, भरपाने का भाव।

२ वह आलेख जिससे किसी वस्तु की पूर्ण वसूली सूचित होती हो।

क्रि० वि०—१ पूर्ण रूप मे, पूरी तरह से।

भरपूर–वि०—१ पूरा भरा हुआ, परिपूर्ण।

उ०—कठठ जूट रहकळा, जूट नाळिया जबूरा। रथ वहला रैवत्त, भार पडतल **भरपूरा**।—सू प्र

२ सव प्रकार से परि-पूरित जिसमे किसी प्रकार की त्रुटि न हो।

३ यथेष्ट, पर्याप्त।

४ प्रसन्न।

उ०—'सेन' लागो सत सेवा, भाव धर उर भूर। रूप धर कर 'सैन' को हरि, करी दुविधा दूर। तौ भरपूर जी भरपूर, भगवत भाव सू **भरपूर**।—भगतमाळ

क्रि० वि०—१ पूर्ण रूप से, अच्छी तरह मे।

उ०—दादू पूरण ब्रह्म विचार ले, द्वैत भाव कर दूर। सब घट साहिब देखिये, राम रह्या **भरपूर**।—दादूवाणी

रू० भे०—वरपूर।

भरभड–वि०—धूलि धूसरित।

भरभार–स० पु०—उत्तरदायित्व।

उ०—१ आदीत अमूझी छीक ज्यू, जाणीजै जोधहपुरा। **भरभार** आज थारै भुजै, सहू काज सुरताण रा।—गु रू व

उ०—२ साह दरगाह वूझिये, भळे सकळ **भरभार**। 'केहर' ज्यू पत छळ करै, समरै तिका ससार।—रा रू

उ०—३ विविध सब्द बाजि त्रीया, विविधपरि परिवार। राव करेवा रणि चडघा, भूप-सदनि **भरभार**।—मा का प्र

भरभोलियौ—देखो 'भडभोलियौ' (रू. भे)

उ०—धूडकी तो चुपकी ऊभी रयी पण वीजा अर तीजा **भरभोलियै** दाई मूडो कर'र कैयौ म्हे-ई भाई रै वरावर पाती लेसा।

—वरसगाठ

भरम–स० पु० [स० भ्रम] १ सशय, सन्देह, शका, अविश्वास।

उ०—१ कितरा दिन लगइ चाकरी कीधी, एकण ध्यान रह्यौ एकात। दीठउ साच तरइ वर दीन्हउ, **भरम** दिखायउ उभ्रत भ्रात।—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ सतगुर भेद बताइया, खोली **भरम** किवारी हो। सब घट दीसै आतमा, सब ही सू न्यारी हो।—मीरा

उ०—३ उर **भरम** छेह लेणौ अगम, असकत उद्यम उक्ती। कर भाव पार गुण सर करण, साची नाम सरस्वती।—रा रू

उ०—४ तिण सू आ रीत छै—माइत मूहडौ देखै नही नै ताहरै मन मे कोई **भरम** हुवै तौ थे देख आवौ।—रिसालू री वात

क्रि० प्र०—उठणौ, मिटणौ।

२ भेद, रहस्य।

उ०—वणियाणी जाया तणौ, **भरम** न गमणौ भूल। नटियौ कोडी ही न दे, मरणौ करै कवूल।—वा दा

क्रि० प्र०—खोलणौ, काढणौ।

मुहा०—भरम काढणौ = रहस्योद्घाटन करना।

३ मिथ्या-ज्ञान।

उ०—भवसागर का **भरम** भगाया, जगत छोड दीया। गुरु चरण मतन की सेवा, यह रस्ता कहीया।—स्री हरिरामजी की वाणी

[स० भर्मन] ४ सोना, स्वर्ण। (डि को, ह ना मा)

५ अवतार।

उ०—साची कथा सुणावता, मति को मानै रीस। अलख निरजन छाडिकै, भजै **भरम** चौईस।—ह पु वा

६ सार, तत्त्व।

७ गुजाइश।

उ०—सेस कूरम जितै समरम, इळा सुर भ्रम निगम आगम। सुखि तपो अरण भरम प्रम मम, मरम निघ जिम माल।—रा रू

८ वेतन, मजदूरी।

९ विश्वास, प्रतीति।

उ०—भावी की मोळी पडनै कह्यो—सेठा की वतावौ तौ जाच पडै। आपरी वात सुणिया पछै म्हनै अैडो लखावै के जाणै म्हारा माथा मे अणगिण टाटिया भणण भणण करै है। आप की बतायनै तूमार तौ जोवौ। जे अैडी-वैडी की बात व्है तौ राड नै टूपो देय मार न्हाकू। आपरै पगा मे पोत्यो मेलू, म्हनै व्है जकी बात बतावौ। सेठा रा तीर दोना रै ई ठाणै लागा। अवै बाकी काम तौ हाकरता पट जावैला। सेठ कडिया माथै हाथ देय ऊभा व्हिया। उवासी खायनै कैं'वण लागा—इत्ता वरस भरम बणियो रह्यो तौ अवै एक दो दिना मे की परळै नी व्है। थनै सावचेत करणो, म्हारो फरज हो। म्हैं तौ आ बात चावू के दूजां री बाता माथै भरोसो नी करनै खुद रै हाथा माच री छाण-बीण करणी वत्ती है। भावी कह्यो—राम, राम! आपनै औ वेम कीकर व्हियो के म्हैं आपरी बात माथै अभरोसो करूला। आपनै लिछमीजी री आंण, व्है जकी बात तुरत वतावौ, आप फरमावोला जकी बात माथै सोळै आना भरोसो करूला। सेठ उठा सू वहीर व्हैती वगत एक डक भळै मारियो—थारी सीता सतवती रै सत री भरम जिता दिन बणियो रैं'वै उत्तो ई सावळ है।—फुलवाडी

मुहा०—भरम काढणो=रहस्योद्‌घाटन करना। भरम गमाणो=विश्वास खो देना। भरम निकळणो=विश्वास हटना। भरम निकाळणो=विश्वास हटाना। भरम मिटणो=सन्देह मिटना। भरम रहणो=विश्वास रहना।

रू० भे०—भरम्म।

भरमकारी—देखो 'भ्रमकारी' (रू भे)

भरमजाळ—देखो 'भवरजाळ' (रू भे)

उ०—सेठ तौ आपरा परमेसर रै मूडा सू बगसीस री जाचना सुणनै चितवणियो व्हैगो। इत्ता दिन औ काई खिलको व्हियो। घरवाळा री सगळी भगती निरफळ गी। चतर भाड कैं'डा भरमजाळ मे फसाया।—फुलवाडी

भरमण—देखो 'भ्रमण' (रू भे)

भरमणा—स० स्त्री० [स० भ्रम] १ भ्रम, सन्देह।

उ०—जळ-थळ माही भरमणा, बिना निरजन राव। जोनी सकट आवणा, फिरणा ठाऊ ठाव।—ह पु वा

२ विश्वास, भरोसा।

३ धोखा।

४ भूल, गलती।

५ मन मे होने वाला अनिश्चय।

भरमणौ, भरमबौ—१ देखो 'भ्रमणौ, भ्रमबौ' (रू भे)

उ०—१ दुस्टी बाता तौ कैंडी मीठी-मीठी करै, पण माय रा माय बाप नै मारण रा करतब रचै। अजै म्हैं इण मीठी बोली सू भरमीजू कोनी।—फुलवाडी

उ०—२ दादू घट कस्तूरी अग के, भरमत फिरै उदास। अतरगत जाणै नही, तातै सूघै घास।—दादूवाणी

उ०—३ चेतन छोड करै जड पूजा, च्यारू धाम फिरैलो। अगा आपा खोजत नाही, घास देख भरमैलो।

—स्री सुखरांमजी महाराज री वाणी

उ०—४ सहज ललाई सापरत, प्रीतम प्यारी पाय। निरखै भरमै नायणी, जावक दे मिळि जाय।—वा दा

भरमणहार, हारौ (हारी), भरमणियौ—वि०।

भरमाडणौ, भरमाडबौ, भरमाणौ, भरमाबौ, भरमावणौ, भरमावबौ
—प्रे० रू०।

भरमिओडौ भरमियोडौ, भरम्योडौ—भू० का० कृ०।

भरमीजणौ, भरमीजबौ—भाव वा०।

भरमपुरी—देखो 'ब्रह्मपुरी' (रू भे)

भरमर—देखो 'भ्रमर' (रू भे)

भरमरी—देखो 'भ्रमरी' (रू भे)

भरमवरधन स० पु० [स० अश्मन्+वर्धन] ताम्र, तावा।
(ह. ना मा)

भरमाणौ, भरमावौ—देखो 'भ्रमाणौ, भ्रमावौ' (रू भे)

उ०—१ अवधू अठ मासे नगद निकासे, चौमासे चिपकदा है भामण भरमाया गुरु गरमाया, सरमाया सिरकंदा है।—ऊ का

उ०—२ फक्कर फरक चेतन चीन्या, केवळ माया मूळ मिटाई। है सुखरांम सोई निज ग्यानी, और जगत भरमाई।

—स्री सुखरामजी महाराज री वाणी

उ०—३ ऊमर है जितरै जीतरै सुख सू क्यू जीवोनी नै आपरी स्त्री सू क्यू छेटी पडो घण रै साथ क्यू सूवो नी—अठै तौ रिण खेत मे सूवणो पडसी अरे भोळा घाडवी थनै किण भरमायो है सो इण घर मे लूटण री उमग करनै आया।—वी स. टी

उ०—४ कोई मिनख इण गधा लखण व्है। छोटी मोटी अटकळां सू आपरो मन भरमावै।—फुलवाडी

भरमाणहार, हारौ (हारी), भरमाणियौ—वि०।

भरमायोडौ—भू० का० कृ०।

भरमाईजणौ, भरमाईजबौ—कर्म वा०।

भरमाभरमी—स० स्त्री० [अनु०] १ सन्देहस्पद होने की अवस्था या भाव।

उ०—स्याम धरम कुळ धरम न साजै, काम धरम अभ्यास करै। भरमाभरमी पीड भोगवै, माचै गरमी हूत मरै।

—कविराजा बाकीदास

२ भुलावा।

३ भरोसा।

भरमायोड़ो—देखो 'भ्रमायोड़ो' (रू भे)
(स्त्री० भरमायोडी)

भरमार-स० स्त्री० यौ० [स० भर+मार] अधिकता, बाहुल्य।

भरमावणौ, भरमावबौ—देखो 'भ्रमाणौ, भ्रमावौ' (रू भे)
उ०—१ राजा री रीस मे भळै छमको लागो। कह्यौ—म्हनै अबै मीठी वाता सू भरमावण री चाला मत करौ।—फुलवाडी
भरमावणहार, हारौ (हारी), भरमावणियौ—वि०।
भरमाविओड़ौ, भरमावियोड़ौ, भरमाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
भरमावीजणौ, भरमावीजबौ—कर्म वा०।

भरमावियोड़ौ—देखो 'भ्रमायोड़ौ' (रू भे)
(स्त्री० भरमावियोडी)

भरमासतक-स० पु०—सिकलीगर। (डिं को)

भरम्म—देखो 'भरम' (रू भे)
उ०—आदि तणौ जोता अरथ, मगो न मूझ भरम्म। पहली जीव परट्ठिया, किया क पहली क्रम्म।—ह र

भरयोड़ो—देखो 'भरियोडो' (रू भे)

भरराट-स० पु० [अनु०] ध्वनि विशेष।

भरराणौ, भररावौ-क्रि० अ०—१ भर-भर की ध्वनि होना।
२ चक्कर आना।
३ उडना।
भरराणहार, हारौ (हारी), भरराणियौ—वि०।
भररायोड़ौ—भू० का० कृ०।
भरराईजणौ, भरराईजबौ—भाव वा०।
भरराव‌णौ, भररावबौ, भहराणौ, भहरावौ—रू० भे०।

भररायोड़ो-भू० का० कृ०—१ भर-भर की ध्वनि हुवा हुआ २ चक्कर आया हुआ ३ उडा हुआ
(स्त्री० भररायोडी)

भररावणौ, भररावबौ—देखो 'भरराणौ, भररावौ' (रू भे)
उ०—सासा सणकावै नासा निरतावै, जीता मरिया जुग भिभरो भररावै। पल पल पलका सू पडता परनाळा, मोटा मूगा री होठा मे माळा।—ऊ का
भररावणहार, हारौ (हारी), भररावणियौ—वि०।
भरराविओड़ौ, भररावियोड़ौ, भरराव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
भररावीजणौ, भररावीजबौ—भाव वा०।

भररावियोड़ौ—देखो 'भररायोड़ौ' (रू भे)
(स्त्री० भररावियोडी)

भरळ-स० स्त्री० [अनु०] १ अट-सट बकने की क्रिया या ढग।
वि०—२ अति चमकयुक्त।
उ०—भरळ तेज उडगाण अणी विकटा भळक, पांप घांग वाण अत जहर पायौ। वहै दइवाण री धास जवना विचै, अरधा सिर जाण बीजाण आयौ।—राव अजीतसिंघ कानोड रा भाला री गीत
क्रि० वि०—३ एकाएक, अकस्मात।

भरळकणौ, भरळकबौ-क्रि० अ० [अनु०] १ चमकना, दमकना।
उ०—१ अग काढै आरसी, पोत भरळकै पसम्मा। दरियाई कस दीव, राळ लूवै रेसम्मा।—सू प्र
उ०—२ चसळकै तोप चरखा चलत, भरळकै सेल ओघण भ्रमत। फरहरै भड नीसांण फाव, असुराण फौज डम लगय आव।—पे रू
२ आग प्रज्वलित होना।
उ०—दावानल भरळकै, तोप आठ सै विचाळै तूजी। कसीस चढिया तुरग, पूर चकारो पेरीया। 'आभा'रा भडा दोळा असुर, फजर वजती फेरीया।—बखतो खिडियो
३ कोप करना, क्रोध करना।
४ अण्ट-मण्ट बकना।
भरळकणहार, हारौ (हारी), भरळकणियौ—वि०।
भरळकिओड़ौ, भरळकियोड़ौ, भरळक्योड़ौ—भू० का० कृ०।
भरळकीजणौ, भरळकीजबौ—भाव वा०।
भरळक्कणौ, भरळक्कबौ—रू० भे०।

भरळकियोड़ौ—भू० का० कृ०—१ कोप किया हुआ
(स्त्री० भरळकियोडी)

भरळक्कणौ, भरळक्कबौ—देखो 'भरळकणौ, भरळकबौ' (रू भे)
भरळक्कणहार, हारौ (हारी), भरळक्कणियौ—वि०।
भरळक्किओड़ौ, भरळक्कियोड़ौ, भरळक्क्योड़ौ—भू० का० कृ०।
भरळक्कीजणौ, भरळक्कीजबौ—भाव वा०।

भरळक्कियोड़ौ—देखो 'भरळकियोड़ौ' (रू भे)
(स्त्री० भरळक्कियोडी)

भरळकौ-स० पु० [अनु०] १ अकस्मात आने वाले क्रोध का भाव।
२ चमक, दमक।
३ आग की लपट, ज्वाला।

भरळाट—देखो 'भरळाटो' (मह, रू भे)
उ०—रजपूता री आथ जकांरै, कूता री भरळाट करा। सकळ कहै जावै सूता री, धूता री किम जाय धरा।
—उम्मेदसिंघ भारतसिंघ शाहपुरा रो गीत

भरळाटतन-स० पु० [राज० भरळाट+स० तनु] सूर्य। (डिं को)

भरळाटो-स० पु० [अनु०] १ चमक, दमक।
२ आग की लपट, ज्वाला।
३ क्रोध, गुस्सा।

भरवा—देखो 'भराव' (रू भे)

भरवाई-स० स्त्री० [स० भरण] १ भरवाने की क्रिया या भाव।
[स० भरण्य] २ उक्त के फलस्वरूप दिया जाने वाला पारिश्रमिक।

रू० भे०—भराई ।

भरवाड–स० पु०—पशुपालक एक जाति विशेष । (नैणसी)

उ०—रुखमइयो वळ बोलइ छइ ताडी रे, काई भागा रे भरवाडा गोकळ तणा रे ।—रुकमणी मगळ

रू० भे०—भरुग्राड, भरुग्राडी, भरुवड ।

भरवाणौ, भरवाबौ—देखो 'भराणौ, भराबौ' (रू भे.)

उ०—काछवा सू पखाळां ढोवाय ढोवायनै वो ग्रापरै वास्तै मीठा पाणी री एक लाठी झील भरवाय न्हाकी ।—फुलवाडी

भरवाणहार, हारौ (हारी), भरवाणियौ—वि० ।

भरवायोडौ—भू० का० कृ० ।

भरवाईजणौ, भरवाईजबौ—कर्म वा० ।

भरवायोडौ—देखो 'भरायोडौ' (रू भे)

(स्त्री० भरवायोडी)

भरसक–क्रि० वि० [भर+सकना] पूर्ण शक्ति के साथ ।

भरसूडौ–स० पु०—मुह, मुख ।

उ०—ग्रति खू णा ऊडा थूडम-थूडा, कूडापथ करदा है । मूछा विन मू डा भासत भूडा, भरसूडा भभकदा है ।—ऊ का

भरस्ट—देखो 'भ्रस्ट' (रू भे)

भरस्टा—देखो 'भ्रम्टा' (रू भे)

भरह—१ देखो 'भरत' (रू भे)

उ०—वेणा यन करइ ग्रालि विणि, करइ गानि ते सवि सुररमणी । भ्रदग सरमडल वाजत, भरह भाव करी रमइ वसत ।

—ग्रज्ञात

भरहखड—देखो 'भरतखड' (रू भे)

उ०—पहिलु जुबुदीव वखाणउ जोग्रण लाख प्रमांण । भरहखड तसु भीतरि जांणउ नानाविह गुण ठाण ।—हीराणद सूरि

भरहपुरांण–स० पु० [स० भरतपुराण] भरतमुनि रचित नाटचशास्त्र का नामान्तर ।

उ०—पिंगळ भरहपुराण पराग्रत, विध विध जांणण सयळ विमेक ।

—ईसरदास बारहठ

भरहभम–स० पु०—एक वाद्य विशेष ।

उ०—पटुपटह मृदग करडि मद्दल वेणु तलिमताल कमाल झल्लरि भरि मदनभेरि जयभेरि भरहभम हडुक्क ढक्क बुक्क त्रवक काहल काहली वरगा प्रभृति वादित्र ।—व स

भरहर–स० पु०—१ मादल, भेरी ग्रादि वाद्यों की ध्वनि ।

उ०—१ मिव मग सन्मुख वाज्यो, धप मप दो दो, भरहर भौं भौं मादल भेर वजाज्यो ।—घ व ग्र

उ०—२ भेर भ्रक करनाळ भरहर, मरग धर जैनगर सुदर । भेद इंद नरिंद सरभर, पाट पती परमाण ।

—महाराव हणुतसिंघ सेखावत रो गीत

२ ईशान ग्रौर उत्तर के मध्य सप्तऋषियो के उदय-स्थान वाली दिशा का नाम ।

उ०—मोभत था कोस ४ भरहर कूण मे । वास २ जाट वोहरा रजपूत वाणीया वसै ।—नैणसी

रू० भे०—भरहेर, भरिहडि भरिहढि, भरेहर ।

भरहरउ–वि०—नमकीन ।

उ०—फुटससगि घोडउ, हितूईइ ऊर गढी वेड पग देउनइ उमाविउ, उन्हउ तीन्हउ सरहरउ भरहरउ ग्राहासिउ नीलसिउ ग्रणीग्रालउ सूग्रालु सरसु मकोमल वीखरिउ वीणिउ ऊजलउ जिसउ केवडउ ।—व स

भरहरणौ, भरहरबौ–क्रि० ग्र०—मादल, भेरि ग्रादि वाद्यो की ध्वनि होना ।

उ०—जीतउ कान्ह वात इम सुणी, नगरलोक थइ वद्धामणी । मदनभेरि भूगल भरहरइ, वरण ग्रढारइ जय जय करइ ।

—का दे. प्र

भरहरणहार, हारौ (हारी), भरहरणियौ—वि० ।

भरहरिग्रोडौ, भरहरियोड़ौ, भरहरचोडौ—भू० का० कृ० ।

भरहरीजणौ, भरहरीजबौ—भाव वा० ।

भरहरौ—देखो 'भररौ' (रू. भे)

भरहवास—देखो 'भारतवरम' (रू भे)

भरहसगीत–स० पु० [स० भरत+सगीत] भरत मुनि द्वारा रचित सगीत ।

उ०—मडपि मुहल दीइ भूपाल, नाचइ पात्र ऊगटइ ताल । जाणइ जेह भरहसगीत, पाडप्रबध ते गाइ गीत ।—का दे प्र

भरहेर—देखो 'भरहर' (रू भे)

उ०—कोस ५ उतराध भरहेर रै साधै । जाट वसै, निखालस सारी सीव हुवै ।—नैणसी

भरहैरवय–स० पु० [स० भरत+ऐरावत] भरत ग्रौर ऐरावत क्षेत्र का नाम ।

उ०—चार ग्रनइ ग्रठ बार जिन, दस गुण दुगुणा सार । विमय चालीस नमू सयन, भरहैरवय मझार ।—स कु

भरात—१ देखो 'भ्रांत' (रू भे)

२ देखो 'भराव' (रू भे)

भराति—देखो 'भ्राति (रू भे)

उ०—चोर ग्रन्याई ममखरा, सव मिळ वैसै पाति । दादू सेवक राम का, तिनसौं करै भराति ।—दादूवांणी

भराई—देखो 'भरवाई' (रू भे)

उ०—हाथ ग्रर माथा रै पाण वो ज्यू-त्यु करनै ग्रापरी पेट भराई कर लेतो ।—फुलवाडी

भराडणौ, भराडबौ—देखो 'भराणौ, भराबौ' (रू भे)

भराडणहार, हारौ (हारी), भराडणियौ—वि० ।

भराडिग्रोडौ, भराडियोडौ, भराड्योडौ—भू० का० कृ० ।

भराडीजणौ, भराडीजवौ—कर्म वा० ।

भराडियोडौ—देखो 'भरायोडौ' (रू भे)
(स्त्री० भराडियोडी)

भराजक—देखो 'भ्राजक' (रू भे)

भराणौ, भरावौ–क्रि० स० [स० भरण] १ किसी रिक्त स्थान, पात्र, ग्राधार या ग्रवकाश का किसी पदार्थ के योग से पूर्ण कराना ।
२ भुगतान कराना, चुकवाना, ग्रदायगी कराना ।
३ किसी रिक्त पद या ग्रासन की नियुक्ति द्वारा पूर्ति कराना ।
४ ऊवाना ।
ज्यू—ऐडी वाता सुण सुण'नै म्हारौ मन भराय दियौ ।
५ पशुग्रो, यानो ग्रादि पर बोझ लदाना ।
६ किसी दरार, छिद्र या विवर को वन्द कराना ।
७ किसी वस्तु के सयोग से ग्रोत-प्रोत या युक्त कराना ।
ज्यू—म्हारौ कादा मे पग भराय दियौ ।
[भरणौ क्रि० का० प्रे० रू०] ८ किसी रिक्त स्थान या वर्तन मे कोई वस्तु ढलवाना, उडेलवाना या गिरवाना ।
उ०—थें कैवौ तौ थारै वास्तै ग्रठै ई सोना रा ग्राठ मैं'ल चुणाय दू, हीरा-मोत्या सू भंवरा भराय दू, फगत म्हारै ध्यान करनै चीतण री जेज है ।—फुलवाडी
९ किसी पात्र, वस्तु या रेखाकन मे ग्रपेक्षित, ग्रावश्यक या उपयुक्त वस्तु को रखाना या लगवाना ।
ज्यू०—तसवीर मे रग भराणौ ।
१० निर्वाह करवाना ।
११ घोडी को गर्भवती कराना ।
१२ कहलवाना ।
१३ किसी के मन मे तुष्टि, सतोप या पूर्णता की भावना पैदा कराना ।
१४ किसी यत्र या मशीन की चावी या कुजी को घुमवाना या ऐसी क्रिया करवाना कि वह यन्त्र सचालित हो जाय ।
ज्यू—घडी मे चावी भराणी ।
१५ किसी वस्तु का सग्रह कराना ।
१६ लेखन द्वारा ग्रावश्यक पूर्तिया ग्रकित करवाना ।
१७ ग्रपेक्षित समर्थन, सहमति, स्वीकृति ग्रादि की सूचक पूर्ति कराना ।
ज्यू—वकील चोर नै ऐडा सवाल पूछिया के उण रै मूडा सू चोरी री हा भराय लीवी ।

भराणहार, हारौ (हारी), भराणियौ—वि० ।

भरायोडौ—भू० का० कृ० ।

भराईजणौ, भराईजवौ—कर्म वा० ।

भराडणौ, भराडवौ, भरावणौ, भराववौ—रू० भे० ।

भरात, भराथ—देखो 'भारत' (रू भे) (डि को)
उ०—भज के खळा भराथ, गुणा वेद ग्रह्म गाथ । मुणै तौ नमाय माथ, नाथ नाथ नाथ ।—र ज प्र
२ देखो 'वरात' (रू भे)

भरातियौ, भराथियौ—देखो 'वराती' (ग्रल्पा , रू भे)

भराती, भराथी—देखो 'वराती' (रू भे)

भरायोडी-भू० का० कृ०—गर्भवती कराई हुई घोडी ।

भरायोडौ–भू० का० कृ० [स० भरण] १ किसी रिक्त स्थान, पात्र, ग्राधार या ग्रवकाश को किसी पदार्थ के योग से पूर्ण कराया हुग्रा २ भुगतान कराया हुग्रा, चुकवाया हुग्रा, ग्रदायगी कराया हुग्रा ३ किसी रिक्त पद या ग्रासन की नियुक्ति द्वारा पूर्ति कराया हुग्रा ४ ऊबाया हुग्रा ५ पशुग्रो, यानो ग्रादि पर बोझ लदाया हुग्रा ६ किसी दरार, छिद्र या विवर को बन्द कराया हुग्रा ७ किसी वस्तु के सयोग से ग्रोत-प्रोत या युक्त कराया हुग्रा ८ किसी रिक्त स्थान या वर्तन मे किसी वस्तु को ढलवा या गिरवाकर पूर्ण कर-करवाया हुग्रा ९ किसी पात्र, वस्तु या रेखाकन मे ग्रपेक्षित, ग्रावश्यक या उपयुक्त वस्तु को रखवाया हुग्रा या लगवाया हुग्रा १० निर्वाह करवाया हुग्रा ११ किसी घोडी पर घोडा भराया हुग्रा ग्रर्थात् घोडी को गर्भवती कराया हुग्रा १२ कहलवाया हुग्रा १३ किसी के मन मे तुष्टि, सतोप या पूर्णता की भावना पैदा कराया हुग्रा १४ किसी यन्त्र या मशीन की चावी या कुजी को घुमवाया हुग्रा या ऐसी क्रिया करवाया हुग्रा कि वह यन्त्र सचालित हो जाय । १५ किसी वस्तु का सग्रह कराया हुग्रा १६ लेखन द्वारा ग्रावश्यक पूर्तिया ग्रकित करवाया हुग्रा १७ ग्रपेक्षित समर्थन, सहमति,स्वीकृति ग्रादि की सूचक पूर्ति करवाया हुग्रा
(स्त्री० भरायोडी)

भरारियौ–स० पु० [दे०] गेहू ग्रथवा जौ के भूसे को एकत्रित कर सुरक्षित रखने के लिए घास के घेरे मे वधा हुग्रा ढेर ।

भरारौ—देखो 'भररौ' (रू भे)
उ०—नवहत्थी भोकरा, मसत फीफरा भरारा । वगला उरळी विहू, वगलि नीकळै छिकारा ।—सू प्र

भराव–स० पु० [स० भरण+राज० ग्राव] भरने की क्रिया या भाव ।
२ भरे हुए होने की ग्रवस्था या भाव ।
३ वह वस्तु या रेखाकन जिसमे किसी रिक्त स्थान या ग्रवकाश की पूर्ति की गई हो या की जाती है ।
४ सिंचाई के खेत मे वह स्थान या गड्ढा जहा पानी इकट्ठा हो जाता है ।
५ फोडे फुन्सी मे मवाद या पीप भर जाने की ग्रवस्था ।
६ स्वीकारात्मक शब्द ।

७ इकट्ठा किया हुआ मलवा।

८ देखो 'भरेत' (रू भे)

रू० भे०—भरवा।

मरावणो, मरावबो—देखो 'भराणो, भराबो' (रू भे)

उ०—१ देखे (ताड) चच विहगम दहलइ, रेखा सकति अनोपम रग। भरी किणही (कइ) विजित्र भरावी, सचउ करि नासिका सुचग।—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ कहो तो मोतियन माग भरावा, कहो छिटकावा केस। मीरा के प्रभू गिरधरनागर, सुणियो विरद के नरेस।—मीरा

उ०—३ नवसू बोली—म्हनै ग्रेडो डड मरावणो ई कोनी। परणीज्या तो आप म्हारा धणी व्हीला।—फुलवाडी

उ०—४ ते गुरुना उपदेसथी, भराव्यो सहसकूट। 'तेजसी' 'दोसीने' घरे, रिद्धि समृद्धि अखूट।—कवियण

उ०—५ गाइहिं ए सति जिणद नवउ प्रासादु करावीउ ए। कचन ग मणिमय थभ रयणमउ विंब भरावीया ए।—मालिभद्रसूरि

उ०—६ दूजड हयो वडे दस देमा, नर नायक जळ चाढै नेसा। प्रमण दूत भरावं पेमा, श्रेम करे 'जालण' घर ग्रेसा।

—राव जालणसी रो गीत

भरावणहार, हारो (हारी), भरावणियो—वि०।

मराविग्रोडो, भरावियोडो, भराव्योडो—भू० का० कृ०।

भरावीजणो, भरावीजवो—कर्म वा०।

मरावा—स० स्त्री०—ठठेरा जाति के अन्तगत पीतल को ढालने का व्यवसाय करने वाली एक शाखा। (मा म)

मरित—भू० का० कृ० [स० भर] परिपूर्ण, भरा हुआ

उ०—महाराजकुमार स्री दळपतिजी दिन दिन स्वेत पक्ष चद्रमा री ज्यू परिवधवत होता पूरणिमा रै चद्रमा री परिसकळ कळा भरित विभूषित गात्र नीपना छै।—द वि

मरिया—स० पु०—छोटे बच्चे का मल या विष्टा।

मरियावळि—स०—गर्व-पूर्ण।

उ०—वांका भीचि घणं भरियावळि, इम बोलिया भुजाडड ग्रामळि। भिडता भाजै सवळ भुजा वळि, श्रै मुह रावत तो मुह आगळि।—गु रू व

मरियेडील—देखो 'भरियोडील' (रू भे)

मरियोगवाड—स० पु० [भरियो+गवाड] १ गायो की भीड भरा स्थान। २ वैभव-सम्पन्न घर।

मरियोडील—स० पु०—गठा हुआ वदन, हृष्ट-पुष्ट।

रू० भे०—भरियेडील।

मरियोडी—भू० का० कृ०—गर्भवती हुवी हुई घोडी।

मरियोडो—भू० का० कृ०—१ कोई रिक्त स्थान, पात्र, आधार या अवकाश किसी पदार्थ के योग से पूर्ण युक्त या भरा हुआ २ यौवन या स्वास्थता के कारण हृष्ट-पुष्ट हुवा हुआ शरीर ३ भुगतान हुवा हुआ, चुका हुआ, अदायगी हुवा हुआ ४ कोई रिक्त पद या आसन नियुक्ति द्वारा पूरित हुवा हुआ ५ मन क्रोध, सन्ताप, असन्तोष आदि से युक्त हुवा हुआ ६ आवेश, करुणा, स्नेह आदि से अभिभूत होने के कारण कुछ कहने मे असमर्थ हुवा हुआ ७ ऊवा हुआ ८ पशुओ, यानो आदि पर बोझ लदा हुआ ९ कोई दरार, छिद्र या विवर स्वत बन्द हुवा हुआ १० किसी वस्तु के सयोग से ओत-प्रोत या युक्त हुवा हुआ ११ कोई रिक्त स्थान या वर्तन किसी वस्तु के डालने, उडेलने या गिराने से परिपूरित हुवा हुआ १२ किसी पात्र, वस्तु या रेखाकन मे अपेक्षित, आवश्यक या उपयुक्त पदार्थ रखा हुआ या लगा हुआ १३ भुगतान किया हुआ, चुकाया हुआ, अदायगी किया हुआ १४ कोई रिक्त पद या आसन नियुक्ति द्वारा पूरित किया हुआ १५ निर्वाह किया हुआ, निभाया हुआ १६ कहा हुआ. १७ किसी के मन मे तुष्टि, सन्तोष या पूर्णता की भावना पैदा किया हुआ १८ किसी के मन मे किसी के प्रति विरोधी भावनाओ को अकुरित किया हुआ १९ किसी यन्त्र या मशीन को सचालित करने हेतु चाबी या कुजी को घुमाकर वाछित क्रिया किया हुआ २० पशुओ, यानो आदि पर बोझ लादा हुआ २१ किसी वस्तु का सग्रह किया हुआ २२ किसी छिद्र, सधि, मुह आदि को भरने हेतु किसी वस्तु को ठुसा हुआ, जडा हुआ, बैठाया हुआ या लगाया हुआ २३ लेखन द्वारा आवश्यक पूर्तियां किया हुआ २४ अपेक्षित समर्थन, सहमति स्वीकृति आदि की सूचक पूर्ति किया हुआ

(स्त्री० भरियोडी)

भरियोतरियो—वि० यौ० [स० भरण+रा० प्र० तरियो] (स्त्री० भरीतरी) १ वैभवपूर्ण, सम्पन्न।

उ०—ओ तीजो म्हारो घर-धणी है। भाटा नै ई पूछलो के म्हारै थका इण री वारी कद आवै! तो ई लैणायत कै'वै के वारी मैं साजूला। म्हैं वारी साजू तो सगळो घर भरियो-तरियो रै'वै।

—फुलवाडी

२ पूरा भरा हुआ, परिपूर्ण।

उ०—हिंदुग्रा ग्रेक मुसळमान रईस री कोठी नै वाळ दी। कोठी रो मालक भरी-तरी कोठी नै छोड'र थूक मुठिया मे नाठो।

—वरसगाठ

भरियोभरम—स० पु० यौ० [स० भर+भ्रम] १ विश्वास। २ सम्पन्नता।

भरिहडि, भरिहढि—देखो 'भरहर' (रू भे)

भरी—१ देखो 'भर (५) (रू भे)

२ देखो 'वरी' (रू भे)

मरीगवाडी–स० स्त्री०—देखो 'भरियोगवाड' (रू भे.)

मरुआड—देखो 'भरवाड' (रू भे)

उ०—भरडा भाड भवाइया, भोई नइ मरुआड। भील भरठीया तेतला, भूय-तलि पाडइ खाड।—मा का प्र

मरुज–स० पु० [स०] गीदड, शृगाल। (डि को)

मरूट—देखो 'भुरट' (रू भे)

मरूटियौ—१ देखो 'भुरट' (अल्पा, रू भे)

२ देखो 'भरूटौ' (अल्पा, रू भे)

मरूटौ–स० पु०—१ भारा, गट्ठर।

उ०—साझ पडी दिन आथम्यौ जद मण भर खोद्यो घास। वाघ मरूटौ सिर पर धरियौ साम पडधा घर आय, मारुणी घणी कमावणी। लाय मरूटौ आगण पटक्यौ दूखै म्हारी नाड। ठाण माय म्हारी भैंम्या रिडकै गोरधा माय म्हारी गाय। मारुणी घणा कमामवणी।—लो गी

२ देखो 'भुरट' (रू भे)

मरूसउ—देखो 'भरोसौ' (रू भे)

उ०—१ एक भणइ त हुतउ मरूसउ, जे छोडवसइ कान्ह। कीधउ मेल मिल्या दलि आवी, तेह तणा परवान।—का दे प्र

मरुआडी—देखो 'भरवाड' (रू भे)

उ०—मरुआडी अह्यौ भूर, चतुर नगर नी नारि। नाथ न जाणु रे वसि करी, परिहरि गिउ रे मुरारि।—प्रा फा स

मरूवड—देखो 'भरवाड' (रू भे)

उ०—तरी आलि मरूवड तणउ, जासि ऊगतइ दीसि। खति खरानी काकमी, सिंधु फाडसि सीमि।—मा का प्र

मरेत–स० पु०—१ वह नीची भूमि जहा वर्षा काल मे पानी इकट्ठा हो जाता है।

उ०—पान कूपळा काढिया रै, रग सुरगी रेत। ऊगी अळियौ घास अगूती, आधूणी मरेत।—चेतमानखा

२ वर्षाकालीन पानी को प्रचूपित करने वाली विशेष प्रकार की मिट्टी वाला खेत जिसमे बुवाई करने के उपरान्त सिचाई की आवश्यकता नही रहती।

मरेहर—देखो 'भरहर' (रू भे)

उ०—सोझत था कोस ५ मरेहर कूण माहे, लोक कोई नही। —नैणसी

मरै–वि० [दे०] १ कारगर, सफल।

उ०—१ नानी-मा री अटकळा कूण की मरै पडी नी। —फुलवाडी

उ०—२ वाता सुणता ई वा तौ प्रण कर लियौ के व्याव करूला तौ राजकवरजी रै ई साथै, नीतर ताजिंदगी कवारी ई रैवूला। सेवट राजकवरी रौ प्रण मरै पडियौ—फुलवाडी

उ०—उण री मीट उण अपछरा रै माथै पडी। मन मे कह्यौ—आज रो औ सिकार तौ नामी मरै पडियौ।—फुलवाडी

उ०—३ फगत आ छोटी सी वात मिनख हमेसा ध्यान मे राखै तौ वौ कैंडौ ई लाठौ काम मरै पटक सकै।—फुलवाडी

उ०—४ राजकवर कह्यौ—म्हैं इण लोभ री खातर औ काम थोडो ई करियो हौ। पण पिडतजी वास्तै वात नामी मरै पडी। आज तौ थै म्हारी लाज राख दी।—फुलवाडी

मरोडौ—देखो 'वणोडौ' (रू भे) (शेखावाटी)

मरोटी—१ देखो 'भरूटौ' (अल्पा, रू भे)

२ देखो 'भुरट' (रू भे)

मरोटौ–वि०—१ भारी वजन वाला।

२ देखो 'भरूटौ' (रू भे)

३ देखो 'भुरट' (अल्पा, रू भे)

मरोडा–स० पु० [दे०] आख की पुतलियो पर होने वाला छोटी छोटी फुसियो का रोग। (शेखावाटी)

मरोती–स० स्त्री०—१ एक प्रकार का कर। (नैणसी)

२ प्रमाण, सबूत।

उ०—कटारी जगत मे प्रगट 'चापै' करी, नरीद वा कटारी नाय नानी। 'सवाई' वात री मरोती दीद सह, मह्पती 'विजै' जद साच मानी।—महाराजा विजैसिंघ री गीत

३ पुष्टि, समर्थन।

४ प्राप्ति-रसीद।

५ देखो 'भरती' (रू भे)

मरोस—देखो 'भरोसौ' (रू भे)

उ०—भारी तुज्ज मरोस, रिण मे थित बावे रह्या। खीची लीनी खोस, सारी मोखाली सुरे।—पा प्र

मरोसादार–वि०—भरोसे वाला, विश्वासपात्र।

उ०—मरोसादार भला मनख जीव-जोग साथे लीजौ। इद्र राजा की तरै' का वीद राजा (हो) वीजौ।—मयाराम दरजी री वात

मरोसावद, मरोसावध–वि०—जिसपर भरोसा किया जा सके, विश्वसनीय।

उ०—डाढाळौ सूअर राव सू विकराळ होय लडियौ, भला मरोसावध राजपूता रा घोडा रुळ रहिया छै।—डाढाळा सूर री वात

मरोसौ–स० पु०—१ दृढ विश्वास।

उ०—१ सूर मरोसै आप रै, आप भरोसै सीह। भिड दहू ऐ भाजै नही, नही मरण रौ बीह।—वा दा

उ०—२ अबै उणने सोळै आना मरोसौ व्हैगौ के की करिया ई वा बचै नी।—फुलवाडी

२ विश्वास।

उ०—अठी कुमार 'दूदे' विजय रा वव धुगाड बूदी आइ आपस मे मरोसौ भागो जणाइ कुमार 'रत्न' सहित अनुज भोज री बडी

कुमराणी वालणोति रायकुमरी बूदी हू दिल्ली नरेस रै कनै भेजि दीधी ।—व भा

३ आश्रय, सहारा, अवलंब ।

उ०—१ चिडी कह्यौ—जद आप ई मैं'ल छोड नै जावौ तौ पछै म्है किण रै भरोसै रैं'वा ।—फुलवाडी

४ आशा, उम्मेद ।

उ०—मा, थारै कैणा नै लोप, म्हे कोई मोटी भरोसौ लेय थारी पागती आई ।—फुलवाडी

भळ—१ देखो 'भळावण' (रू भे)

२ देखो 'वळै' (रू भे)

उ०—जलाजी मारू, रात्यू घण री पेटडली भळ दूख्यौ हो, मिरगानैणी रा जलाल, यैं तौ धण री खबर न लीवी हो जलाल ।
—लो गी

भळ, भल—वि०—१ बहुत, अधिक ।

२ देखो 'भला' (रू भे)

उ०—१ ऊडै लोहा बूर भळ, सूर न जाय सरक्क । चढै गजा दातू सळां, रण रीझवै अरक्क ।—वा दा

उ०—२ जीवण-दाता वादळ्या, था सू जीवण पाय । भल लूआ वाजो किती, मुरधर सहसी लाय ।—लू

उ०—३ पण रावण आया प्रभू, भल अवळा री भीर । दस हजार गजवळ घट्यो, घट्यो न दस गज चीर ।
—रामनाथजी कवियौ

३ देखो 'वळै' (रू भे)

उ०—१ भळ छोडै निज भ्रात, छैल कुळ घर छिटकावै । प्रभु नै छोडै परौ, जिकण दिस फेर न जावै ।—ऊ का

उ०—२ भल नूती रै म्हारौ जळवळ जामी बाप, रातादेश्री म्हारी माय नै जे । भल नूती रे म्हारा कन्हकवर सा वीर, सैणा भतीजा भावजा जे ।—लो गी

४ देखो 'भलौ' (मह, रू भे)

उ०—१ माता पितु वेटी वटा भल मरिया, प्यारां प्यारां नै मुसकल परहरिया । जतर जर हरणू अभ्यतर जडियौ, पीतम प्यारी नै परहरणू पडियौ ।—ऊ का

उ०—२ भल भगवांन रा भोग, भीलणी रै घर पाया । मरस मलूणा स्वाद, जकारी किनी वडाया । खाडा खाया खाय, कियौ यों गाली तवरो । माथ चढावण मोल, परम प्रसाद है जवरो ।
—दमदेव

उ०—३ सभी अच्छे साई, हमहि भल नाही हरि सुणी । गुनैंगारी भारी वकस, हितकारी मम गुनो ।—ऊ का

उ०—४ कनक कटोरा गखजै, भल नूरत भरियोह । निवळौ गयू हूं गेहरी, उण पय ऊउरियोह ।—वा दा

उ०—५ वणतइ वर जइ पहिरीयउ वागउ, भल चोली सूघइ सू भेव । अमडी कळा देखजै ईमर, देवा ? विराजइ देव ।
—महादेव पारवती री वेलि

उ०—६ अै भल भड है आज रा, थाहर जासी थेट । चगो साव चखावसी, इभ रमणौ आखेट ।—वा दा

५ देखो 'भालौ' (मह, रू भे)

भलइ—देखो 'भलौ' (रू भे)

उ०—पियु आये सखि आपुने सुनि हरसित भई नारि । तबहि उतारी अग हो, दीनउ मोतिणहार । स्थूलिभद्र आये भलइ ए माइ जोवत जोवत माग के ।—स कु

भलउ—देखो 'भलौ' (रू भे)

उ०—गज रथ रमणि तुरगम रग महा भळउ ताम । जन परिजन परिपालन काल न पूजइ जाम ।—जयसेखर सूरि

भळक—स० स्त्री० [अनु०] चमक, कान्ति ।

उ०—१ कैंजमा भळक सिलहा खळक, भळळ तेज अणिया भमर । देवडा चूर करिवा दुझल, 'सूर' चढे आरभ समर ।—सू प्र

उ०—२ भरळ तेज उडगाण अणी विकटा भळक, पाण घाण बाण अत जहर पार्यो । वहै दइवाण रौ घास'जवना विचै, अर्या सिर जाण बीजाण आयो ।—मालौ सादू

भळकणौ—वि० [अनु०] (स्त्री० भळकणी) चमकने वाला, कान्तियुक्त ।

उ०—कोई, दयाणै तौ हाथ मे भालौ भळकणौ ।
—पाबूजी रौ परवाडो

भळकणौ, भळकवौ—क्रि० अ० [अनु०] कान्ति प्रकट होना, चमकना ।

उ०—१ अछै घमगज्ज अचाणक वार, पवै पर जाणक वज्र प्रहार । भळम्भळ सूळ भुजां भळकत, खळखळ खून नदी खळकत ।
—मे म

उ०—२ 'सेर' रा करार वचन 'कुसळेस' सुणे, अभनमो 'पाल' विरदा उजाळो । वादळा दळा नागोर विचाळै, अरक जिम भळकियो 'हरा' 'आळो ।—पहाडखा आढौ

भळकणहार, हारौ (हारी), भळकणियौ—वि० ।

भळकिओडौ, भळकियोडौ, भळक्योडौ—भू० का० कृ० ।

भळकीजणौ, भळकीजवौ—भाव वा० ।

भळक्कणौ, भळक्कवौ, भल्लकणौ, भल्लकवौ—रू० भे० ।

भळकाडणौ, भळकाडवौ—देखो 'भळकाणौ, भळकावौ' (रू भे)

भळकाडणहार, हारौ (हारी), भळकाडणियौ—वि० ।

भळकाडिओडौ, भळकाडियोडौ, भळकाडचोडौ—भू० का० कृ० ।

भळकाडीजणौ, भळकाडीजवौ—कर्म वा० ।

भळकाडियोडौ—देखो 'भळकायोडौ' (रू भे)

(स्त्री० भळकाडियोडी)

भळकाणौ, भळकावौ [भळकणौ क्रि० का प्रे० रू०] चमकाना, कांतियुक्त करना ।

उ०—सक्रम सुभ स्रष्टि द्रष्टि लुभ देती, लपुट मपुट लख घूघट पट लेती । लुलकार लकुटी ले त्रकुटी सळ लाती, भूवी वाघण सी भ्रकुटी मळकाती ।—ऊ का

मळकाणहार, हारो (हारी), मळकाणियो—वि० ।

मळकायोडो—भू० का० कृ० ।

मळकाईजणो, मळकाईजबो—कर्म वा० ।

मळकायोडो-भू० का० कृ०—चमकाया हुआ, कांतियुक्त किया हुआ (स्त्री० मळकायोडी)

मलकार-स० पु०—तीर ।

उ०—कलकार वीर वाणी कजाक, हलकार दुह वळ वाज हाक । धानक टकार मलकार ओह, ललकार मार अणपार लोह ।

—वि स

मळकारी-वि० [अनु०] (स्त्री०मळकारी) चमकने वाला, कान्तियुक्त ।

उ०—हो लाडीजी मुख सोहै नथ मळकारी । बिंदली सोहै रतन जरी री, फूला माग सवारी ।—रमीलेराज

मळकावणो, मळकाववो—देखो 'मळकाणो, मळकावो' (रू भे)

मळकावणहार, हारो (हारी), मळकावणियो—वि० ।

मळकाविओडो, मळकावियोडो, मळकाव्योडो—भू० का० कृ० ।

मळकावीजणो, मळकावीजवो—कर्म वा० ।

मळकावियोडो—देखो 'मळकायोडो' (रू भे)

(स्त्री० मळकावियोडी)

मळकौ-स० पु०—१ चमक, कान्ति ।

उ०—अणियाळा नयण आजिया अजण, काजळ रेख सुरेख कर । इद्र तणइ दिन मूठ अपूठी, मळका नाखइ वाम वर ।

—महादेव पारवती री वेलि

२ देखो 'टीडीमळकौ' ।

मलकौ—१ तीर, बाण ।

उ०—१ दादू मलका मारै भेद सौं साले मझि पराण । मारणहारा जाणि है, कै जहिं लागे बाण ।—दादूवाणी

उ०—२ सिणगारी भूखण सिलह, अति छविधारी आज । प्यारी किण ऊपर प्रगट, सजै सिकारी साज । सजे सिकारी साज आज किण ऊपरै । मारण कारण अगा क रसिया रूप रै । चपळ चलाक चूटैत दियै दिलदार का, नैण मलका नेह, भलक्का सारका ।

—सिववगस पालावत

२ देखो 'भालो' (अल्पा, रू भे)

उ०—१ तरै रीस आई लाखा नू, सुकनै मळको पडियो थो तिको भाल नै लाखै सोळकी राज नू चूकलियो ।—नैणसी

उ०—२ मलको लीधो भूखियो, चाव करै चहुवाण । 'सूजै' धनम सभाळियो, अत समै अवसाण ।—वा दा ख्या

मळक्कणो, मळक्कबो—देखो 'मळकणो, मळकबो' (रू भे)

उ०—१ भिडै जाळिया रूप सोभा मळक्की, वर्णं वीजळी जाण आभै वळक्की । मदोमत्त गोखा चढी हम मोहै, सची इदरा मिदरा जाण सोहै ।—सू प्र

मळक्कणहार, हारो (हारी), मळक्कणियो—वि० ।

मळक्किओडो, मळक्कियोडो, मळक्क्योडो—भू० का० कृ० ।

मळक्कीजणो, मळक्कीजबो—भाव वा० ।

मळक्कियोडो—देखो 'मळकियोडो' (रू भे)

(स्त्री० मळक्कियोडी)

मलक्को—देखो भालो' (रू भे)

उ०—नैण मलक्का लागणा, वोहा वाण वणाय । मदन लगावै मारका जिके पार हो जाय ।—पना

भळण—देखो 'भोळावण' (रू भे)

भळणो, भळबो-क्रि० स०—१ उत्तरदायित्व लेना, सुपुर्दगी लेना ।

उ०—१ मारू 'जोधा' रिणमला, भळे सम्रीवा भार । जाण हणू धावण मतै, द्रोण उठावण वार ।—रा रू

उ०—२ जवनाण दळे वीजूभळे, देख भळे कुळ देस रो । इद्रभाण खग वढ ऊजळे, मिळे जोत 'मुकनेस' रो ।—रा रू

उ०—३ जोध वर्ले 'राजान' रो, भळे खवा कुळ वार । आभ समाहै ऊडळे, दीठे दळें करार ।—रा रू

३ भिळणो, भिळबो' (रू भे)

उ०—१ मन द्रढ रह धडके मती, अह नहिमा अवाळ । सिर धड ऊपर मावतो, भळण न दू भुरजाळ ।—लिखमीदान बारहठ

उ०—२ मई सुरघर तणा थभ सौदा सुहै, चार जुग नाम राखण सचैला । मेट आवागमण चाढ जळ मेडवै, भळैगा वेह प्रभ जोत भेळा ।—पहाडखा आढो

उ०—३ निद्रवसि ते रायि दीठु, ग्रिहिवान मन चलिऊ अपूर व माटि भूपतिनू मन पखीमाहा भलिऊ ।—नळाख्यान

भळणहार, हारो (हारी), भळणियो—वि० ।

भळवाडणो भळवाडबो, भळवाणो, भळवावो, भळवावणो, भळवावबो—प्रे० रू० ।

भळाडणो, भळाडबो, भळाणो, भळावो, भळावणो, भळावबो

सक० रू० ।

भळिओडो, भळियोडो, भल्योडो—भू० का० कृ० ।

भळीजणो, भळीजबो—भाव वा० ।

भलपण, भलपणो-स० पु० [भल+रा० प्र० पण] १ भलाई, अच्छापन ।

उ०—१ जोय 'वक' जळजात ज्यो, सजुत सत असत । वडवानळ कडवा वचन, जळ भलपण जाणत ।—वा दा

उ०—२ मरणै परणै मे गोडा खर गाळै, वनिता सुत जावो वै'ती रै वाळै । भलपण खाचें पण राचै भूडै मे, माचै सूता रै हूकी मूढै मे ।

—ऊ का

२ यश, कीर्ति ।

उ०—भलपण भावै रे, नर मूरख समझै नही । अलवत आवै रे, किरतव री आणद 'करन' ।—लिखमीदान बारहठ

भळभ—कुपित, क्रोधित ।

उ०—यू बघेरा नै कांई गाळ काढी जको वो अबारू थारी सोय मे भळभ व्हियोडो आयो ।—फुलवाडी

भळभट, भळभट्ट—वि०—आग बबूला ।

उ०—१ राजा रीस मे भळभट व्हियोडो बीच मे ई बोल्यो—अबै नी तो वांरा माथा ई रं'वैला अर नी वा सगळा नै ऊधो ई सूझैला ।—फुलवाडी ।

उ०—मुखियो रीस मे भळभट्ट होयनै कै'वण लागो—थारी म्हारी काई न्यारी बात है ।—फुलवाडी

भळभळ, भळभळाट—स० स्त्री० [अनु०] देखो 'भळळ' (रू भे)

उ०—तिका री भालोट आगले पासे सू बाहर दीसै छै, भळभळाट करती ।—सूरे खीवे काधळोत री बात

भळभळाणो, भळभळावो—क्रि० अ० [अनु०] चमकना ।

उ०—१ थोडी देर मे म्हारी सूटी सू एक भळभळाती जोत निकळी । जोत बा'रै आता ई म्हारी चीसा ढबगी ।—फुलवाडी

उ०—२ वोखी मुळक री इमरत बरसावती बोली—इण निरभागण रै बारणै भळभळातो ओ सूरज कठै सू ऊगियो ।—फुलवाडी

भळभळो—वि०—कम कडुवे स्वाद वाला ।

उ०—अरट ३० पाच ५० पाणी खारो भळभळो छै ।—नैणसी

रू० भे०—वळवळो ।

भम्भळ—स० स्त्री० [अनु०] चमक ।

उ०—अछै धमगज्ज अचाणक वार । पबै पर जाणक वज्र प्रहार । भळम्भळ सूळ भुजा भळकत । खळग्खळ खून नदी खळकत ।
—मे म

भलम—स० पु०—१ अच्छापन, भलाई ।

उ०—१ प्रसध नाम इधकार जग जारै माटीपणो, अतुळ दातार कीरत उजाळा । भलम वाता चिह्न बेम अणियां भमर, वाह रे कवर अवधेस वाळा ।—र रू

२ यश, कीर्ति ।

उ०—'जेहल' वित दीधा विना, नर ऊजळो न होय । 'भाराणी' लीधा भलम, जमहर साम्हो जोय ।—बा दा

३ सुन्दर, खूबसूरत ।

उ०—वीजइ वाजवट आइ नइ वइठी, देवाग वसत्र पहिरावा देय । आगळि सखी आभरण आणइ, भलम मगार लहइ जउ भेय ।—महादेव पारवती री वेलि

रू० भे०—भलिम, मलिमि, भालिम, भालिमि ।

भलमनसत, भलमनसात, भलमनसाहत, भलमनसाही, भलमनसी, भलमाणसी—स० स्त्री०—भला मनुष्य होने की अवस्था या भाव, भलमनसत, सज्जनता, मराफत ।

भळळ, भळळाट—स० स्त्री० [अनु०] चमक, कान्ति ।

उ०—१ कळळ माच दळ अकळ काठळ सबळ कुजरां, चचळ ऊछळ सरळ धसळ चाळो । जवन दळ ऊपरां खिवै वीजळ जहीं, 'अभा' सावळ भळळ तूझ आळो ।—बगतो खिडियो

उ०—२ सूरतन तेज भळळाट पोरस सरस, खित मुछळ जेज न धरी अडीगभ । तेजवंध बेहू आराड कोटांनवा, थया मुहमेज धरती तणा थभ ।—पहाडखां आढो

उ०—३ आरम्भ अगग जी दुती, भळळाट रवि दरसेण । रूप अनग रा जी जोया हुवै रद छबि जेण ।—र ज प्र

२ तेज ।

उ०—भड बधे छक भळळ, उद्धव चित वधे उमगा । वधे डाण मदझरा, पाण बह वधे पमगा ।—सू प्र

रू० भे०—भळभळ, भळभळाट, भळहळ, भळहळाट, भाळहळ ।

अल्पा०—भळळाटो ।

भळळळक—स० स्त्री०—चमक ।

उ०—भळळळक नसूळ वजै अग भूखण कोर रवी पळळळक करै । नचता खळळळक वजै पग नेवर, तेज रवी भळळळक तरै ।
—मा वचनिका

भळळाटो—देखो 'भळळ' (अल्पा, रू भे)

उ०—ग्रहणा को भळळाटो तेज को अबार, जमीया को जोवणो वा ससार को सार ।—मयाराम दरजी री वात

भळहळ—देखो 'भळळ' (रू भे)

उ०—१ ताना लूहरि छकि तरग, सुदर कोकिल साद । भळहळ नैणी बाग मे, आइ कर उदमाद ।—पना

उ०—२ सेखावत जळहर समर, फिर चळवळ फिरगांण । अधी सैंग कळहळ पडै, भळहळ ऊगा भाण ।—गिरवरदान

उ०—३ भळहळ साजा गज भिडज, मफा इका सुखपाळ । घोडावहल खासा घणा, दरगह मुहर दुझाळ ।—सू प्र

भळहळणो, भळहळबो—क्रि० अ० [अनु०] १ चमकना, दमकना ।

उ०—१ भूरा भुरजाळा अबुद भळहळिया, खाळळा नद नाळा वाल्हा खळहळिया । अवनी आंदोलन ओळा ओगरिया, पिडि भिडि 'स्वामी' पै, गोळा जिम गिरिया ।—ऊ का

उ०—२ हय पाखर खळहळै, भुजा भळहळै अभागा । खाथा घोडा खडग, लहण माथा नभ लागा ।—मे म

२ प्रज्वलित होना ।

उ०—सूर विरत सल्लळे, ज्वाळ भळहळे फुणवर । कना अछै झति करण, किरण परजळे दिणकर ।—रा रू

भळहळणहार, हारो (हारी), भळहळणियो—वि० ।

भळहळिओडो, भळहळियोडो, भळहल्योडो—भू० का० कृ० ।

मळहळीजणौ, मळहळीजवौ—भाव वा० ।

मळहळाट—देखो 'भळळ' (रू भे)

भळहळियोडो–भू० का० कृ०—चमका हुआ
(स्त्री० भळहळियोडी)

मलहोडौ—देखो 'भलौ' (अल्पा, रू भे)

उ०—साकुर खडे पाखर सेर, फौजा वहै जोजण फेर। भल असवार मलहोडेह, घमघम कँजमा घोडेह।—गु रू व

मला–वि०—१ ठीक, उचित।

उ०—१ पता वैर 'कलिग्राण' पख, घारा चड घारैत। भाई ग्रह आया मला, ग्राभ लगा ग्रखडैत।

—कल्याणसिंघ नगराजोत वाढेल री वात

उ०—२ वास पुर भाजता सोच पड चहूवळ, मकळ खळ माण तज सेव साधै। दुरै डूगरपरौ थरकियौ देवगरै, वाह वर भला तू खड्ग वाधै।—मार्नामंघ ग्रासियौ

उ०—३ ताहरा सेतरामजी कही—जु जो म्हारी पूठ राखौ तो दरवाजै रा किंवाड छै सु हू तोडू। ग्रर पछ भीतर थे वडज्यौ। ताहरा राजा कही—'बहोत मला।'—नैणसी

उ०—४ थे कहो छो तो हाथी ग्रठा ताई ले ग्रावो, परमेस्वर मला करसी।—रावमालदे री वात

क्रि० वि०—शोक से, खुशी से, प्रसन्नता से।

उ०—मला पधारो भीचडा, गरक सिले मै गात। केहर वाळा कळह री, वळता कीजो वात।—वा दा

ग्रव्य०—१ जोर देने के लिए प्रयुक्त होने वाला शब्द।

उ०—१ कें ग्रणछक पुटियो हेटै उतरतो उतरतो वोल्यौ—ग्रा ई कदै व्हे के म्हे ग्रावू कोनी। राजाजी नै खोटी वरिया सरै मला।

— फुनवाडी

उ०—२ यू ग्रापो काई खोवै। म्हें तो हाथी सू ई सवायो थारो गाढ जांणती। ग्रैडी ठा'व्हैती तो जावण देती मला।—फुलवाडी

उ०—३ भीटियौ वोल्यौ—मामाजी ग्रास्या व्हैती तो ग्रो दूजी वार थांरै कनै मला ग्रावतो।—फुलवाडी

२ चाहे।

उ०—वन वैठो मला चढो गिर वदरी, घरा भेम के घारो। चित नह लग्यो राम रै चरणा, नह जब लग निसतारो।—र रू

रू० भे०—भल, भला।

मलाई, भलाहीं–ग्रव्य०—चाहे।

उ०—१ जै ग्रो सजोग सजणो है तो थें मलाई कित्ती ई ग्राटिया पजावो, ग्रा बात भवै ई टळै नी।—फुलवाडी

वि०—ठीक, उचित।

उ०—१ थारो ग्रो ग्रोमाण कदेई नी पातरु के थें म्हारो मिनखजमारो सुफळ ग्रर सारथक करियो। भलाई ग्रा वरसात व्ही ग्रर मलाई म्है इण ग्रामली रै हेटै ग्रायो।—फुलवाडी

उ०—२ चाम घव वरस चौईस मे, राजा नाम विराजियो। जग जेठ गर्जसी' जनमियौ, थाळ मलाई वाजियौ।—गु रू व

रू० भे०—भलेई, भलेही।

मळाण, मळामण, मळावण, मळावणी—देखो 'भोळावण' (रू भे)

उ०—१ नीर निवायो वारो ग्रायो, घोरा पाळी वावजै। घणी मलावण काई देऊ, हेलो म्हारो सामजै।—चेतमानखा

उ०—२ सूवर किसी मळावणी नइ, विरणु वाचा किम चलइ। गज गुडीय तुरीय पलाणि चाल्या, कुग्ररि चालइ नइ माता मिळिई ए।—रुकमणी मगळ

मला—देखो 'भला' (रू भे)

मलाई–स० स्त्री०—१ भला होने का भाव या ग्रवस्था, भलापन, ग्रच्छापन।

उ०—उण पछै भतीजा री मलाई रो काई पार है जको फगत चौथी पाती रो ई सानो काढियो।—फुलवाडी

२ उपकार।

उ०—ग्राप तो म्हानै फगत ग्रो ग्रासीरवाद दो के म्है सुपथ चालता नी डिगा, नी डरा, साच ग्रर घरम माथै हमेसा डिढ रै'वां, कूड, ग्रघरम सू मरिया ई पल्लो नी भेटा, लोभ ग्रर मद रै गळाकर नी नीमरां, कर सका तो किणी री मलाई इज करा।—फुलवाडी

३ हित, लाभ।

उ०—पण दरग्रमल ग्राप रै सोचणा मे जकी मलाई ग्रर मगळ री वात है, वा म्हारै सोचणा मे दुख ग्रर कळेस री वात है।

—फुलवाडी

रू० भे०—भलाही।

मळाकौ–स० पु० [ग्रनु०] १ चमक-दमक।

उ०—लोयणा पळाका नगगा सावळा मळाका लेती, सुढगा ग्रोयणां वाजा पाखरा सानैत। चीर ग्रगा पीन ग्रगा नीसाण मेछ घडा चगी, विघूसै पिलगा चा ग्रगा 'चद' रो वानैत।

—राव देवीसिंघ सेखावत रो गीत

२ देखो 'वळाको' (रू भे)

उ०—राजाजी इत्ती भुळावण देय घकै वधग्या। गळी गळी मे मळाका देवता रह्या।—फुलवाडी

मळाणौ, मळावौ—देखो 'भोळाणौ, भोळावौ' (रू भे)

उ०—१ ताहरा वळै केसव जवाव कियो रामसिंघजी नू, म्हें तो ढाढा नही जु ग्रागै वै मळाईजै।—द वि

उ०—२ ग्रावै ग्रनदातार नू, भारथ गळा भळाय। पितरेगुर जिण रा पडै नरक विचाळै न्याय।—वा दा

उ०—३ 'गोयद' यू कहैं तरवार भुजा ग्रहि, ग्ररि दळ मोडा माया। कोट तणी भुज लाज 'कला'रै, भाखर मूझ मळाया।

—गोयददाम भायल रो गीत

मळाणहार, हारौ (हारी), मळाणियौ—वि०।

भळायोडो—भू० का० कृ० ।

भळाईजणो, भळाईजवो—कर्म वा० ।

भलापण, भलापणो—स० पु०—भलेमानस होने का भाव, सज्जनता, शराफत ।

भळाभळ—स० पु० [अनु०] जगमगाहट, चमचमाहट ।

उ०—नग जडियोडा आभूपण भळाभळ करण लागा ।—फुलवाडी

रू० भे०—भळाहळ, भाळाभळ, भाळाहळ ।

भळामण—देखो 'भोळावण' (रू भे)

उ०—१ सुसरो सासु सवि मिळी, ढोला नै बहु प्रेम। निज पुत्री नी अति घणी, दै भळामण श्रेम ।—ढो मा

भळायोडो—देखो 'भोळायोडो' (रू भे)

(स्त्री० भळायोडी)

भळाव, भळावण—देखो 'भोळावण' (रू भे)

उ०—१ सचिव भणी निज राज्य भळाव, चाल्यो चतुरग सेन मिलाय । वाणारसी नगरी भणी नाम, चार प्रिया सयुक्त प्रकाम । —वि कु

उ०—२ एक कोई जोवार घावा पडियो फौज नै भळावण देवै है ।—वी म टी

भळावणो, भळाववो—देखो 'भोळाणो, भोळावो' (रू भे)

उ०—१ हाजरियो रभा नै विना वारी ई टोळ'र लेजावतो अर अवखा सू अवखो काम भळावतो ।—रातवासो

उ०—२ दोनू बोले 'देद' रा, 'सुदर' वेस सकज्ज । सारां आया दीससी, काज भळावण लज्ज ।—रा रू

उ०—३ भारथ ही कुरुखेत करन, गो कत्थ रहावै । मेछा वाण भळावि, क्रीत कमधजा भळावै ।—गु रू व.

भळावणहार, हारो (हारी), भळावणियो—वि० ।

भळावियोडो—भू० का० कृ० ।

भळावीजणो, भळावीजवो—कर्म वा० ।

भळावियोडो—देखो 'भोळायोडो' (रू भे)

(स्त्री० भळावियोडी)

भळाहळ—देखो 'भळाभळ' (रू भे)

उ०—माम्है सिर माग वही घममाण, जिको अधचद्र भळक्कन जाण । भवानिय दीध सिदूरज भाळ, भळाहळ जाणि त्रिती चख भाळ ।—सू प्र

भलाही—देखो 'भलाई' (रू भे)

भळियार—स० पु०—हल के साथ बधा हुआ खोखले वास का उपकरण जो बीज बोने के काम आता है ।

भलिम, भलिमि—स० स्त्री०—देखो 'भलम' ।

उ०—१ करण सुभ काज सुयण सिरताज, प्रवित चित लाज पहनि सिर पाण । भलिम भुजि भार अकलि अणपार, गगह सिरदार जुगिति गुण जाण ।—ल पि

उ०—२ चिति प्रवीत लहण क्रीति चौज, भलिमि वार समिरि 'क्रन' 'भोज' । हद विहद्द अभिनमो हमीर, धर पछिम कूअर लखधीर ।—ल पि

भलीभात, भलीभाति—क्रि० वि०—पूर्ण रूप से, अच्छी तरह से ।

उ०—बोली—थू भलीभात जाणै के आ सावचेती तो म्हैं नीद रै माय ई नी पातरू ।—फुलवाडी

भलु भलू—देखो 'भलो' (रू भे)

उ०—१ भूप-तणा अवसर भणी, अति आनदिउ चिति । 'भलु-भलु' भाखी कहइ, निपुण न चूकु नीति ।—मा का प्र

उ०—२ 'माधव ! तुम्हे म चालसिउ,' गोरी जपइ गुज्झ । भलू कराविसि भुइरु, मांहि राखिसि तुज्झ ।—मा का प्र

भळे—देखो 'वळै' (रू भे)

उ०—१ भिळ जाय जुवा लाखा भळे, लेऊ काई दण लाड मे । परवात पिहर जास्यू परी, खावद पडज्यो खाड मे ।—ऊ का

उ०—२ रग देण दिन रात, चारणाचार कुचाळै । भाटो मोटो भळे, डूबता ऊपर डाळै ।—ऊ का

भले—अव्यय—प्रशसा-सूचक शब्द ।

उ०—१ गदा ले खडो लागडो अग्र गामी,भले मात हिंगोळ हिंगोळ भामी । मुणी मैं जिका आदि अनादि माई, अवतार ले मामडा धाम आई ।—मे म

उ०—२ दया विचार आख दे दीधी, भले भले भाई माई । वकरा कटत देख वणियाणी, उर मे भिन्न उपाई ।—मे म

भलेई—देखो 'भलाई' (रू भे)

उ०—नैणा न आवै नीद, भावै नहि अन्न रै । भलेई निंदो कोय, लाग गया मेरा मन रे ।—श्री हरिरामजी महाराज

भलेभले—देखो 'भिलेभिले' (रू भे)

भलेरउ, भलेरडो, भलेरडो, भलेरो—देखो 'भलो' (अल्पा , रू भे)

उ०—१ पोलि फूटरी पाटण तणी, चीत्रडी नइ ढीली तणी । वारी पोलि भलेरउ भाव, कूअर तणउ तलहटी तलाव ।

—कां दे प्र

उ०—वात इसी इम्म जि हुमि, मुनिवर ! मनि म हारि । भोगवि भोग भलेरडा, जे सरज्या ससारि ।—मा का. प्र

उ०—३ कोडे वारह काइमा, सात वरोडै साध । निपट भलेरा पाच नव, यो घटियो अपराध ।—पी ग्र

(स्त्री० भलेरी)

भळेवडो—स० पु०—बैल के सिर पर सीगो के इर्द-गिर्द बाधी जाने वाली रस्सी जिसमे नाथ की रस्सी जुडी रहती है ।

उ०—बळदा री सिणगार ई उण री अगू तो हो । पिचरगा सूत री नाथा अर पिचरगा भळेवडा, रेसमी फूदिया, सूत री राहडियां,

मूडा रै मोहरा अर माथै चादी रा घूगरा वाळा छडा, गळा मे रेसमी गळकोड, नागोरी घूघरमाळ, सीगडा चौपडियोडा, अणिया माथै चांदी रा कळसिया, कटाव री भूला, पगा रै गुळी रा डोरा, ढेरवाळ सुथराई सू फूदीपाड कतरियोडा ।—फुलवाडी

भलेही—देखो 'भलाई' (रू भे.)

भळै—१ व्याकरण मे वह वर्णात्मिक शब्द जिसका उच्चारण आप से आप स्वतन्त्रतापूर्वक होता है और जो किसी व्यजन केउच्चारण मे सहायक होता है।

२ देखो 'वळै' (रू भे)

उ०—१ खारौ मीठे सू सरस है, भळै वतेरा पानडा। देस विदेस दुवाया वर्णां, खुसी डाकघर खानडा ।—दसदेव

उ०—२ पछै हाथ जोडतौ बोल्यौ—अबकी भळै माफ कर। कोई नवौ उपाव वता ।—फुलवाडी

भळैटिया–स० पु० [व व] अक्षरो का प्रारभिक ज्ञान करते समय बच्चो द्वारा आडे-टेढे लिखे जाने वाले अक्षर।

भलोडौ—देखो 'भलौ' (अल्पा, रू भे.)

उ०—जादम आयौ जैत कर, जस खाट भलोडौ ।—वी मा

भलौ–स० पु० [स० भद्र, प्रा० भल्ल] (स्त्री० भली) १ भलाई, हित।

उ०—थे जिनावर वगत माथै जको भलौ कर सको, वो मिनखा सू कदेई वण नी आवै ।—फुलवाडी

२ मगल, कल्याण।

उ०—१ लक्खू एक ऊडौ सास खाचती वोली—चाटता ई खाज हालणी वद व्हैगी। भगवान थांरो भलौ करै ।—फुलवाडी

उ०—२ परवार गयौ पिस्तावणौ, करू न मूवा कथ रौ। म्हारौ महादुख मेट दै, भलौ हुवै भगवत रौ ।—ऊ का

३ नफा, लाभ ।

उ०—हूकै सू निज हेत, भलौ मूडो नह भाळै। माहि वळै मा वाप, बारणै छाणा वाळै ।—ऊ का

वि०—१ अच्छा, वढिया, श्रेष्ठ, उत्तम।

उ०—१ वजियौ भलौ भरतपुर वालौ,गाजे गजर घजर नभ गोम। पहिला सिर साहव रौ पडियौ, भड ऊभै नह दीधी भोम।

—वा दा

उ०—२ भलौ अदेवौ गाळ रा, सकळ अदेवा माहि । दाम तणौ देवौ भलौ, देवा मै दरसाहि।—वा दा

उ०—३'जगड' सुत'अमर' सुत नाम राखण जरु,सरू जस वोलिया सूर साखी। ढूक जाडा थडा भूक खळ ढाहि। रूक रजपूत वट भली राखी ।—जगौ साढू

उ०—४ आपै ही जाणावसी, भलौ ज होसी वगिग। कै मागिण दरसावियां, कै ऊछजिया खग्गि। खागि ऊछाजियै खडै, रिण अरि दळा। सूर प्रगटाहियै, सो सरा सावळा। अभग 'जसवत' जुध काम कजि आवियौ। जुडता घवळ रौ भलौ जांणावियौ।

—हा झा

२ ठीक, उचित।

उ०—मन मे फेर घणी री माळा, पकडै नह जमदूत पलो। मिळै नही वकणा मू माया, भाया कम वोलणौ भलौ।—वा दा.

३ खूब, अधिक।

उ०—तेजमी रो भलौ बोलवाला रह्यौ तिण री साख।

—रावमालदे री बात

४ लाभदायक, श्रेयस्कर।

ज्यू—कोई भली नौकरी मिळ जाय तौ आ छोड देवा।

५ परिस्थितियो आदि के विचार से उपयुक्त पडने वाला।

६ रोग-रहित, निरोग।

ज्यू—पैं'ला मैं बीमार थौ अबै हू भलौ-चगौ हू।

७ शुद्ध हृदय और सात्विक प्रवृति वाला, सदाचारी, सज्जन।

८ महान्।

उ०—वडा तत तूझ लहै न विचार, पुरदर दूझ न जाणै पार। भला मुनि आदि न जाणै भेद, विरचिय तूझ न जाणै वेद।

—ह र

क्रि० प्र०—कै'वाणौ, वणणौ, वाजणौ, होणौ।

९ आकार, रचना, प्रकार, रूप, गुण, स्वाद आदि के विचार से जो मन को भाता हो, रुचिकर।

ज्यू—इणै मकान भलौ वणायौ।

उ०—अन घन जिण घर आसरौ, भला अरोगे भोग। पइसौ हुवै न पास मे, लूलू करदे लोग।—ऊ का.

१० कल्याणकारी, मगलकारी।

ज्यू—भलौ लग्न, भलौ दिन।

उ०—राजि उठा हुती भलै मुहरत खडिया छै, पातिसाहजी सू घणौ सुख हुयौ छै, भला सुकन हुया छै, राजि न पधारै।—द वि

११ प्रशसनीय।

उ०—१ गुण जस गाजै मरग मे, ऊनड लाखा भूप। माराणी दाता भलौ, राणी जाया रूप।—वां दा

उ०—२ घणा मुगल मारिया। मवळी वेढ हुई। वेढ जेसैंजी जीती। साथ रावजी रौ घणौ काम आयौ। रावळ हापौ निपट भलौ हुवौ।—राव मालदे री वात

१२ प्रसन्न एव सतुष्ट करने वाला, प्रिय या सन्तोषजनक।

ज्यू—भलौ खेल, भली खवर।

उ०—प्रीतम रौ मुख पेखता, हिवडौ होवै हेम। लूआ पण रोकै मिळण, भलौ निभावै नेम।—लू

अव्यय—१ समर्थन या स्वीकृति प्राप्त करने हेतु जोर दिया जाने वाला शब्द। (वीकानेर)

ज्यू—तू उठै जाया भलौ।

रू० भे०—भल, भलउ, भलउ, भलु, भलू, भले, भलेरौ, भलौस, भल्ल, भल्लौ।

अल्पा०—भलेरउ, भलेरडौ, भलोडौ, भल्लियौ, भलहेडौ।

भलौस—देखो 'भलौ' (रू भे)

भल्ल—१ देखो 'भलौ' (मह, रू भे)

उ०—१ सेखो राव तिलोकसी, जोगाडत जगमल्ल । वैरागर रा दीकरा, एक-एक हू भल्ल ।—नैणसी

उ०—२ ईंदा ग्राहव ग्रागळा, पडिहारा पण-भल्ल । हरवल्ला ग्रागे हुवा, चढे ग्रलल्ला भल्ल ।—रा रू

उ०—३ गगाजळ निरमळ जेम गग, ग्राइत धीर ग्रोपित्त ग्रग । भारथि चडिय 'तेजसी' भल्ल, परवाडमल्ल परचक्कपल्ल ।
—र ज. मी

उ०—४ सेल घमेडासल्ल पडे भल्लां प्रतिमल्ला । भल्ला भल्ला भणी ऊगता भडा ग्रमल्ला ।—ऊ का

उ०—६ रहै लोक ग्रणपार, हुवै घूमरा मुहल्ला । ग्रावै रहै ग्रनेक, भडज भड भल्ला भल्ला ।—सू. प्र

२ देखो 'भालौ' (रू भे)

उ०—विन्ने वळ दक्खन को घन्ने घल वाय घेर, वन्ने गजसीह दळथमन भुजान सा । भल्ले'जसवत' हिंद टल्ल चल कावल पै, सल्ल कढि माह भिर भल्लन पठान सा ।—जैतदान वारहठ

भल्लक-स० पु० [स० भल्लक] रीछ, भालू । (डि को)

भल्लकणौ, भल्लकवौ—देखो 'भळकणौ, भळववौ' (रू भे)

भल्लकणहार, हारौ (हारी), भल्लकणियौ—वि० ।

भल्लकिग्रोडौ, भल्लकियोड़ौ, भल्लक्योडौ—भू० का० कृ० ।

भल्लकीजणौ, भल्लकीजवौ—भाव वा० ।

भल्लकियोडौ—देखो 'भळकियोडौ' (रू भे)
(स्त्री० भल्लकियोडी)

भल्लियौ—देखो 'भलौ' (रू भे)

उ०—घोडा हींस न भल्लिया, पिय नींदडी निवारि । वैरी कै पावणा, दळ-यम तूझ दुवारि ।—हा झा

भल्लौ—१ देखो 'भलौ' (रू भे)

उ०—१ श्री 'पाता' ताता ग्रवसाणां, काज वणी वाजे कैवाणे । ग्राझो 'भूपत' तणौ 'पियल्लौ', भूप 'ग्रजीत' तणौ व्रत भल्लौ ।
—रा रू

उ०—२ दुरजणसाल नाम ही ज्या, दुरजण कू भल्लै । माटी वीर ग्रावाडे में, मुराडे ने भल्लै ।—रा रू
(स्त्री० भल्ली)

२ देखो 'भालौ' (रू भे)

उ०—निरुपम कुलवाली रूप नी चित्रसाली, ग्रविकुल गुणवल्ली नाम भूपाल भल्ली । कइ हुइ सुरगाणी मानवी मइ न जाणी, ग्रह व हुइ जि नारी तौ इ तु हुइ गधारी ।—सालिसूरि

भयग—देखो 'भुजग' (रू भे)

उ०—१ पीव पीव म रटू रात दिन, दूजी सुधि बुधि भागी री । विरह भवग वेरौ डसी है कळेजो, लहरि हळाहळ जागी री ।
—मीरा

उ०—२ जिनके मस्तक मणि वसै, सो सकळ सिरोमणि ग्रग । जिनके मस्तक मणि नहीं, ते विस भरे भवग ।—दादूवाणी

२ देखो 'भमग' (रू भे)

भवर—१ देखो 'भवर' (रू. भे)

२ देखो 'भ्रमर' (रू भे)

भव-स० पु० [स०] १ ससार, जगत ।

उ०—१ द्रुम सात विभेदण क्रमगत छेदण, ते जम कह भव सिंधु तर । सुत स्रीकोसल्य तार ग्रहिल्या, करुणानिध सो याद कर ।
—र. ज प्र

उ०—२ भव दरियाव भयद, लहरा उठै लोभ री । माहे ज्रा मतमद, मनम्व घणा हुवै मरै ।—वां दा

यौ०—भवचक्र, भवजळ, भवजळनिधि, भवभजण, भवभव,भव भयहरण, भवमोचन ।

२ महादेव, शिव । (डि को ह ना मा)

उ०—१ राघव रट-रट हरख कर, मट मट ग्रघ दळ महत । जनम मरण भय हरख जन, कज भव हर रिख कहत ।—र ज प्र

उ०—विहगं भरवो न चीनो विसनर । भव ही तणो न ग्रामो भागि । घड 'घमळोत' तणो खग धारा, लिगि लिगि गयौ ग्रगा रा लागि ।—ईसरदास वारहठ

यौ०—भवभामिनी ।

३ जन्म । (ग्र मा, ह ना मा)

उ०—१ जोवन राखो चोर ज्यु, पगी पगी स्वामी लागु हु पाय । ईणी भवि उलिगाणो हुवो, ग्रावतइ-भव होई काळो हो नाप ।
—वी दे.

उ०—२ मावळ नहिं मावे कावळ कावे, चावळ जेर चुगंदा है । जी फरक न जाणे ग्ररक न ग्राणें, भव भव नरक भुगदा है ।
—ऊ का

४ यमराज । (ग्र म)

५ स्वर्ग ।

६ ग्यारह, एकादश ※ ।

उ०—भव तेरह मत ग्रोण, कोय उप दोहा भाखै । ग्रख रोळा वसु ऊमे, त्रिविध ग्रानद वयु ग्राखै । दस तेरह मत्त रुद्र, रुद्र रुद्रह भव ग्रावै । राय विधु तिण नाम रुद्र दस ग्रन मत गावै ।—र ज प्र

७ जीवन ।

उ०—१ कहिता काम-कचोलडी, दुख-दावा विरुथाय । भव माहरु ग्रालिगयु, स्वामी ! सिरजी काई ।—मा का. प्र

उ०—२ ताहरा लोका जाइनै तीडी री मा नु समझाई, 'हमकै दावडी मेल्हीयां ही ज वणे । वेटी रा भव वोड ना ।—झूमखो

६ कारण, हेतु ।

१० कामदेव ।

११ श्रीरामचन्द्र ।

१२ वादल, मेघ ।

१३ मास ।

१४ कल्याण ।

१५ कुशल, क्षेम ।

क्रि० वि०—८ कभी ।

उ०—वह दर्गं सू खान वहादर, आयो गढ जोधाणे ऊपर । खोले पजो कोल दिखायो, भव न मिटै तुमारो भायो ।—रा रू

१६ देखो 'भय' (रू भे)

उ०—साह आपणे घर रो वाणियो छै । ईयँ नू ले आवता रो भव कोई नही ।—झूमखो

रू० भे०—भवि, भवी, भव्व, भह, भुव ।

अल्पा०—भवो ।

भवक—देखो 'भविक' (रू भे)

भवकेतु–स० पु० [यौ०] वृत्सहिता के अनुसार कभी २ पूर्व मे दिखाई देने वाला एक पुच्छल तारा ।

वि० वि०—ऐमी मान्यता है कि यह तारा जितने मुहूर्त तक दिखाई देता है उतने समय तक काल या महामारी का प्रकोप रहता है ।

भवको–स० पु० [अनु०] १ धडकन ।

उ०—जवाई—सासुडी मे रुण झुण वैल जुताद्यू येक तेरी लाडो ले चाल्यो । सासू—जवाईडा मेरी छाती भवका मारे रे क मेरी लाडो ना चले ।—लो गी

२ देखो 'भभको' (रू भे)

भवड–स० स्त्री०—देखो 'बहू' (मह , रू भे)

उ०—अडथड मिरड भिरड झड अवझड, नवड भवड वड निवड नड । आवट कूटि तूटि कमणावटि, छूटि जडावटि फूटि छड ।

—कल्याणदास राव

भवण—१ देखो 'भवळ' (रू भे)

२ देखो 'भवन' (रू भे)

उ०—१ उण भवण वसण राजा 'अजन' आप सुखासण ऊतरी । लखि वरत सुरी अचरज लगी, नार पन्नगी किन्नरी ।—रा रू

उ०—दसरथ नृप भवण हुआ रघुनदण, कवसल्या उर दुस्ट निकदण । रूप चतुरभुज प्रकटत रीधो, दरसण निज माता नैं दीधो ।

—र रू

उ०—३ निज गउखे चढि चढि वाट निहाळइ, महूरत पिण आयो तिल मात । तीजइ भवण वाधियउ तोरण, गिर मडप छायउ वडगात ।—महादेव पारवती री वेलि

उ०—४ उडपती भवण इग्यारमै, आगम कथ अनम्मियो । 'गजवध' इता वळिवत ग्रह, ले जस राति जनम्मियो ।—गु रू व

उ०—५ विभ्रम विमोह चित, सपत तुरग ताणिय सविता । वासर विसाळ लहिय, चक-वाणे मगळ भवण ।—गु रू व

४ देखो 'भूण' (रू भे)

५ देखो 'भ्रमण' (रू भे)

उ०—कसम से घाट अहि कोम कथ, भोम पाट लग्गो भवण । चढि रीस जाणि रावण चढे, राम हूत धमचक करण ।—सू प्र

भवणपति, भवणवई, भवणवइदेव—देखो 'भवनपति' (रू भे.)

उ०—१ भिण राव त्रिणेही भवणपति सिद्ध 'लल्ल' इम उच्चरै । इन्थ चवत्थो राव हुवै तो दिव जळतो कर धरै ।—नैणसी

उ०—२ भवणवई 'व्यन्तर' 'जोतिखि' ले लाल, पहिलो दूजो देवलोक हो भविक जन । आगत कही दोना तणी रे लाल, गत पाचा नो थोक हो भविक जन ।—जयवाणी

उ०—३ भवणवइदेव असख्यात देवी सख्या वहु, प्रथम नारकि असखेय गुणीया सवहु । वोल वतीस मे खेचर पचेद्रिया, तिरिय असख्यात गुणा सख्य एह नी त्रिया ।—ध व ग्र

भवणो, भववो–क्रि० अ० [स० भू] १ होना ।

उ०—वधे भक्ति स्रद्धा, भवत नर स्परधा प्रति वधै । वसे वो जिग्यासा, अगम गम आसा व्रत्ति वधै ।—ऊ का

२ देखो 'भवणो, भववो' (रू भे)

भवणहार, हारो (हारी) भवणियो—वि० ।

भवाडणो, भवाडवो, भवाणो, भवावो, भवावणो, भवावबो —प्रे० रू० ।

भविओडो, भवियोडो, भव्योडो—भू० का० कृ० ।

भवीजणो, भवीजवो—भाव वा० ।

भवतवता—देखो 'भवितव्यता' (रू भे)

भवतव्य—देखो 'भवितव्य' (रू भे)

उ०—पाचूपूत पड के, पटकि वैठे हिम्मत को, चूकि गो छभा को, भवतव्य वस चेतोई । द्रोपदी की लाज, व्रजराज जो न राखै तो, गुलाम दुसासन तो, कलाम छील लेतोई ।—र ज प्र

उ०—२ थये सचेतन महूरत, वकै झकै विरहाकुळ । हा भवतव्य अतीठ, असुर सिर मोड झडे तुळ ।—मा वचनिका

भवतव्यता–स० स्त्री०—देखो 'भवितव्यता' (रू भे)

उ०—१ वानुल जिम भवतव्यता जी, जिण जिण दिसे नु जाय । परवस मन माणस तणोजी, अण जिम पूठे धाय रे ।—वृ हस्त

उ०—२ जे भावित भवतव्यता रे हाँ, न चलै तास उपाय । जेहवो वावे रूखडो रे हा, तेहवा हीज फल थाय ।—वि कु

भवतात–स० पु० [स० भवतात] सूर्य, आदित्य । (ना मा)

भवतारक, भवतारण, भवतारन–स० पु० [स० भवतारक, भवतारण]

१ ईश्वर, परमात्मा । (ना मा , ह नां मा)

२ श्रीकृष्ण । (अ मा)

भवती–स० पु०—एक प्रकार का जहरीला बाण। (अ मा)

भवधरण–वि० यौ० [भव+धरण] ससार को धारण करने वाला, स० पु०—ईश्वर।

भवनतर–स० पु० [भव+अनन्तर] जन्मान्तर।
रू० भे०—भवातर।

भवन–स० पु० [स०] १ गृह, मकान। (ह ना मा)
उ०—लालच री दौडै लहर, भवन बियां धन भाळ। वैठो थावर वारमो, काधे आण कराळ।—वा दा
२ महल, प्रासाद।
उ०—किण सग खेलू होली, पिया तज गये हैं अकेली। माणिक मोती सब हम छोडे, गळ मे पहनी सेली। भोजन भवन भलो नहि लागै, पिया कारण भई गेली, मोहे दूरी क्यू मेली।—मीरा
३ देवालय, मदिर।
४ ससार, जगत।
५ खड, टुकडा।
६ छप्पय छद का एक भेद।
७ ज्योतिष के अनुसार जन्म कुण्डली के १२ लग्नो मे से एक।
उ०—दसरथ 'अजन' घरे सुखदाई, रूप 'अभो' प्रगटयो रघुराई। दाखे विप्र नवे ग्रह देखो, परम गुणे प्रत भवन सपेखो।—रा रू
रू० भे०—भवण, भमण, भमणि, भवण, भुवण, भोयण।
८ देखो 'भुवन' (रू भे)
उ०—१ तीन भवन मा ताहरो रे, झलकइ निरमल तेज। सूरति देखी ताहरी वाल्हा, हसता आवे हेज।—वि कु
उ०—२ पराब्रह्म गतगुरु प्रणम्य, पुन्य सब सत नमो। हरिराम सुर भवन मे या पद समो न को।—स्वी हरिरामदासजी महाराज

भवनपति–स० पु० [स० भवन+पति] १ घर का मालिक, गृहपति।
२ राशि चक्र मे किसी ग्रह का स्वामी।
३ जैनियों के दस देवताओ का एक वर्ग या समूह जिनके नाम क्रमश इस प्रकार है —१ असुरकुमार। २ नागकुमार। ३ सुवर्ण (सुपर्ण) कुमार। ४ विद्युतकुमार। ५ अग्निकुमार। ६ द्वीपकुमार। ७ उदधिकुमार। ८ दिशाकुमार। ९ वायुकुमार। १० स्तनितकुमार।
उ०—'भवनपति' 'व्यतर' ने 'जोतसी' भेद विमाणिक पावे। सुर वर ते मिलने सगला, नाम 'निवाणू' आवे।—जयवाणी
४ ईश्वर।
रू० भे०—भवणपति, भवणवइ।

भवनार–स० स्त्री० [स० भव+नारि] १ पार्वति।
२ वेश्या।

भवनेस–स० पु० [स० भवन+ईश] भवन का स्वामी, मालिक।

भवपित–स० पु० [स० भवपिता] ब्रह्मा। (ना मा)

भवपाळी–स० स्त्री० [स० भव+पाली] ससार का पालन करने वाली, भुवनेश्वरी देवी। (तान्त्रिक)

भवप्राण–स० पु० [स० भवप्राण] पार्वती। (अ मा)

भवबधन–स० पु० [स० भव+बन्धन] १ सासारिक कष्ट एव दुख।
२ जन्म-मरण का चक्र।

भवबुद्ध–वि० [स० भव+बुद्ध] ससार को जागृत या प्रबोध करने वाला।
उ०—नमो प्रम सत गऊ-प्रतिपाळ, नमो दुसटा-दळ दीनदयाळ। नमो भव-बुद्ध भए भगवान, नमो ग्रह जीव दया उर ग्यान।
—ह र

भवभजण, भवभजन–वि० [स० भव+भजन] १ ईश्वर।
२ ससार का नाश करने वाला, काल, यमराज।

भव-भय–स० पु० [स० भव+भय] ससार मे बार बार जन्म लेने व मरने का भय।

भव-भय-हरण–स० पु० [स० भव+भय+हरण] १ श्रीकृष्ण। (अ मा)
२ सासारिक भय अर्थात जन्म-मरण का भय मिटाने वाला, परमात्मा, ईश्वर।

भव-भामिनी–स० स्त्री० [स० भव+भामिनी] १ पार्वती।
२ वेश्या।

भवमोचक, भवमोचन–वि० [स० भव+मोचक] सासारिक दुखो से छुटकारा दिलाने वाला।
स० पु०—परमात्मा, ईश्वर।

भवर—१ देखो 'भवर' (रू भे)
उ०—२ म्हारे मन वसियो भवर, उर रसियो रजवार। मो सूगणी रो साहिबो, नीला को असवार।—पना
२ देखो 'भ्रमर' (रू भे)
उ०—१ देखण नु चढण ईस ताइ दीसइ, जाळानळ मथ काढी ज्याग। मुख ताइ कवळ गउख सर माहे, लोचन भवर रह्या तनु लाग।—महादेव पारवती री वेलि
उ०—२ मेटिया कइक पीळा पमग, सोनेर कइक धूसर सुरग। अणथाग वेग केई भवर अग, रेसमी पोत किरमची रग।—पे रू

भवरगुजार—देखो 'भवरगुजार' (रू भे)

भवरजाळ—देखो 'भवरजाळ' (रू भे) (शा हो)

भवरतिलक—देखो 'भवरतिलक' (रू भे)
उ०—पहिली ही सीह वळे पाखरियउ, वणता वर आभरण वखाण। भमरा बिचइ बाधियउ भामण, भवरतिलक ताइ ऊगउ भाण।—महादेव पारवती री वेलि

भवरभीख—देखो 'भवरभीख' (रू भे)

भवराई—देखो 'भवराई' (रू भे)

भवरामाटी—देखो 'भवरामाटी' (रू भे)

भवराळौ—देखो 'भवराळौ' (रू भे)

भवरियौ—१ देखो 'भवर' (अल्पा, रू भे)

२ देखो 'भ्रमर' (अल्पा, रू भे)

भवळ—देखो 'भवळ' (रू भे)

उ०—ग्रीध हळवळ समळ गळळ पळडळ गरा, त्रिमळ सळ वळौ-वळ कळळ हूकळ तुरा। कळ सवळ हुवै भवळ सावळ करा, डळपति क्रोध झळ किसै दळ ऊपरा।—महादान मेहडू

भवलील–स० पु०—शिव, महादेव।

भव-वामा–स० स्त्री० [भव + वामा] १ पार्वती।

२ वेश्या।

भवविलास–स० पु० [भव+विलास] १ सासारिक सुख।

२ मायाजाल।

भवस–स० पु०—यवन, मुसलमान।

उ०—१ 'मुहकम' चाळा मडिया, उर ज्वाळा अप्रमाण। वस 'अरजण' हूये भवस, अरि कर लग्गौ आण।—रा रू

उ०—२ अर उग्गा आराण कठीरव कुजरा, पूजै कुण पीठाण प्रपोता पुज रा। दरियावां दा दौर झिलै नह दूवळा, भग्गा भवस सभीत भिडता भूवळां।—किसोरदांन बारहठ

[स० भविष्यत्] २ भावी, होनहार।

उ०—१ अस अप्रवल भवस कळप तरु आयस, जीवन गयौ समेत जड। उडिया अनडपख जिम ईहग, वित कज मेवण विया वड।

—रिवदांन मेहडू

उ०—२ वडाई करै नर बोल मे बोलियौ, भवस विण किणी सू देह भागै। लेख री कटारी प्राण झडपै लियौ, लोह री कटारी पछै लागै।—ग्रोपौ आढौ

३ देखो 'भविस्य' (रू भे)

रू० भे०—भवसि, भवस्स, भवेस।

भवसागर, भवसायर–स० पु० [स० भव+सागर] ससार रूपी समुद्र।

उ०—१ जळाबोळ कळजुग्ग, महा दूतर भवसागर। मोह लोभ जळ माझि, हुवा गरकाव किता नर।—जगौ खिडियौ

उ०—२ यह भवसागर अगम भरौ है, काढ लेहु गहि बैंया। मीरा के प्रभू गिरवरनागर, तुम ही मोरे सैंया।—मीरा

भवसिंधु–स० पु० [स० भव + सिंधु] ससार रूपी समुद्र।

उ०—पूरण-पुनीत स्रीराम पद, विघन हरण त्रैलोक्य वर। पर-णाम सुकवि ईसर पुणै, तत नाम भव-सिंधु तर।—ह र

भवसि—१ देखो 'भवस' (रू भे)

उ०—भवसि घडा वळि भाळ, वामण ज्यू 'वीठल' वधै। उतवग जाइ ब्रह्म डि अडै, पग सातमै पयाळि।—र वचनिका

२ देखो 'भविस्य' (रू भे)

भवसुखा–स० स्त्री०—नदी। (अ मा)

भवस्त—देखो 'भविस्य' (रू भे)

उ०—त्रकालग्यानदरसी निज ब्रम कू पहिचानै। भूत भवस्त वरत-मान जुगति सौं जाणै।—सू प्र

भवस्स—१ देखो 'भवस' (रू भे)

उ०—खीची डहिया खाग 'गुमन' अरि गजणौ। राव बहादुर रूप भवस्सा भजणौ।—किसोरदान बारहठ

२ देखो 'भविस्य' (रू भे)

भवाणी—देखो 'भवानी' (रू भे)

भवातर—देखो 'भवनतर' (रू भे)

भवान–सर्व [स० भवत्] आप।

उ०—आभा जगत उदार, भारत वरख भवान भुज। आतम सम आधार, प्रथवी राण प्रतापसी।—दुरसौ आढौ

भवानी–स० स्त्री० [स० भवानी] १ शिवजी की स्त्री पार्वती।

(ह ना मा)

२ दुर्गा, शक्ति।

उ०—लखीजै असी भाति आकास लागौ, भवानी खडा पाण लीधा अभागो। हमेसा रहे सत्रु रौ सीस हाथै, मुखे रत्त तासळे छत्र माथै।—मे म

३ एक प्रकार की सफेद किन्तु पखो मे कुछ २ श्यामता वाली चिडिया जिसके शकुन लिये जाते हैं।

४ उल्लू जैसा किन्तु आकार मे छोटा एक पक्षी जिसके रात्रि मे शकुन लिये जाते हैं।

५ सगीत मे विलावल ठाठ की एक रागिनी।

वि०—महान्।

उ०—कवर रा मूठा सू तौ की बोल नी निकळिया, जाणै वौ बोलणौ भूल ई गयौ व्है। आज तौ आ भवांनी सान गमी परण गमी।

—फुलवाडी

रू० भे०—भवाणी।

भवानीरथ–स० पु० [स० भवानी+रथ] दुर्गा देवी का वाहन, सिंह।

भवा–स० स्त्री०—पार्वती। (अ मा, डिं को)

भवाइया–स० स्त्री०—एक जाति विशेष।

भवाईयौ–स० पु०—भवाइया जाति का व्यक्ति।

उ०—इतर-सिउ आवी रहिउ,, भाड भवाईया मगि। धूरि वतूरु सेवतु, खातु भूकी अ गि।—मा कां प्र

भवाडणौ, भवाडबौ—देखो 'भवाणौ, भवावौ' (रू भे)

उ०—फरहरता कपि फाल, श्रम दै तै श्रमवारिया। माराणी भुर-जाळ, भुज रौ भलौ भवाडियौ।—वां दा

भवाडणहार, हारौ (हारी), भवाडणियौ—वि०।

भवाडिग्रोडौ, भवाडियोडौ, भवाड्योडौ—भू० का० कृ०।

भवाडीजणौ, भवाडीजबौ—कर्म वा०।

भवाडियोडो—देखो 'भवायोडो' (रू भे)
(स्त्री० भवाडियोडी)

भवाणो, भवावो–क्रि० स० [स० भव] १ करना।
२ देखो 'भवाणो, भवावो' (रू भे)
भवाणहार, हारो (हारी), भवाणियो—वि०।
भवायोडो—भू० का० कृ०।
भवाईजणो, भवाईजवो—कर्म वा०।
भवाडणो, भवाडवो, भवावणो, भवाववो—रू० भे०।

भावपत–स० पु० [स० भवा+पति] शिव, महादेव।

भवाब्धि–स० पु० [स० भव+अब्धि] ससार रूपी सागर, जगत।
उ०—भवाब्धि नाथ भावना, विभू नही विकारसी। मदीय मे न मूढता, त्वदीय है न तारसी।—ऊ का

भवायोडो–भू० का० कृ० [स० भव] १ किया हुआ
२ देखो 'भवायोडो' (रू भे)
(स्त्री० भवायोडी)

भवाळ–स० पु० [स० भूपाल] राजा।

भवावणो—देखो 'भयावणो' (रू. भे)
(स्त्री० भवावणी)

भवावणो, भवाववो—१ देखो 'भवाणो, भवावो' (रू भे)
३ देखो 'भवाणो, भवावो' (रू भे)
भवावणहार, हारो (हारी), भवाणणियो—वि०।
भवाविश्रोडो, भवावियोडो, भवाव्योडो—भू० का० कृ०।
भवावीजणो, भवावीजवो—कर्म वा०।

भवावियोडो—१ देखो 'भवायोडो' (रू भे)
२ देखो 'भवायोड़ो' (रू भे)
(स्त्री० भवावियोडी)

भवि—१ भव्यजीव, मुक्तिगामी-प्राणी। (जैन)
क्रि० वि०—१ फिर, पुन।
उ०—पूरण प्रसिध प्रघट प्रज-पाळण, दळपति दियण दोखिया दाव। भवि कोई पडिस त भलो भाखिस्या, रावळ 'जाम' सरीखो राव।—ईसरदास बारहठ
२ देखो 'भय' (रू भे)
उ०—त्रिय थकित महल चढता तिके, तिके चढ़े गिर तरवरा। भवि 'सूरतणे' मछरीक भड, एम हुवा थरहर उरा।—सू. प्र
३ देखो 'भव' (रू भे)
उ०—१ इणि भवि मारू कामिणी, अन-पांणी इणि सथ्थ। पूगळ नू महू को वळउ, न करउ म्हांकी कथ्थ।—ढो. मा
उ०—२ जो महि असह मेच्छ कुळ जागै, भवि भवि जिण कुळ सू भय भागै। ततपर धरम सरम प्रज तारण, सुरां सिहायक असुर सघारण।—रा रू

३ देखो 'भावी' (रू. भे.)
रू० भे०—भवी।

भविअ—देखो 'भविक' (रू भे)

भविक–वि० [स०] १ ससार सबधी, ससार का।
२ सिद्धि प्राप्त होने के योग्य।
उ०—जलिद जामलि जादवु सामनउ। भविक केकिय आस भलउ वलउ।—जयसेखर सूरि
रू० भे०—भवक, भविअ, भविय, भवीक।

भविक-जन–स० पु० [स०] १ मोक्ष प्राप्त करने योग्य जीव।
उ०—साधु साध्वी स्रावक स्राविका, आगलि बइठा विनयी थिका। स्रीगुरु दीइ उपदेस ज सार, सभलु तमो भविक ! विचार।
—नळदवदती रास
२ सासारिक प्राणी।
उ०—पहिलु मगत मनि धरु ए, विहरता अरिहत के। भविक जीव प्रतिबोधता ए, केवल ग्यान अनत के।—स कु
रू० भे०—भवियजण, भवियण।

भवितव्य–वि० [स०] १ होने वाला, भावी, होनहार।
स० पु० (न) [स० भवितव्य] २ जो अवश्यम्भावी है।
रू० भे०—भवतव्य, हुतव, होतव, होतव्य।

भवितव्यता–स० स्त्री० [स०] १ होनी, भावी, होनहार।
२ प्रारब्ध, भाग्य, किस्मत।
रू० भे०—भवतवता, भवतव्यता, भावत, हुतवता, होतवता, होतव्यता।

भविय [स०] १ देखो 'भव्य' (रू भे)
[स०] २ देखो 'भविक' (रू भे)
उ०—१ विरलउ पुण्यवत कोइ साहु, वेटारिद्धि तणउ समदाय। धरमवत विनयवत होइ, भविय कुडु वउ भणीइ सोइ।—वस्तिग
उ०—२ पचेंद्रिय भव मनुस्यह तणु, आरय देस उत्तम कुल गणु। साधु तणउ योग दोहिलु होइ, ग्यान द्रस्टि जोड भविया लोइ।
—नळदवदती रास

भवियजण, भवियण—देखो 'भविकजन' (रू भे)
उ०—१ सिरिवत साहि सुतन्न, माता सिरिया देवी नदणो। वइ-रागि लहु वय लिद्ध सजम, भवियजण आणदणो।—स कु.
उ०—२ हारे मोरा लाल आगल चढ़ता, अतिभाली, नीली थवली पव। कु डे कु डे पादुका, वदे भवियण सरव मोरा लाल।
—वि. कु
२—देखो 'भव्य' (५) (रू भे.)

भविस्य–वि० [स० भविष्य] १ वर्तमान काल के उपरान्त आने वाला।
२ प्रत्यासन्न, निकट।
स० पु० [स० भविष्य] आने वाला काल या समय।

भविस्यत—स० पु०[स० भविष्यत्] होने वाला या आने वाला समय।
उ०—नहिं बहुत बोलवौ सुभट नीत, प्रयूह भविस्यत ह्वै प्रतीत।
यह दुरगदास अक्खत अडोळ, वळि विपद डिगहिं नहिं डगहिं बोल।
—ऊ का
रू० भे०—भवस, भवसि, भवस्त, भवस्स, भविस्स।

भविस्यवांणी—स० स्त्री० [स० भविष्यत्+वाणी] आगे के लिए की जाने वाली बात या घोषणा।

भवियोडौ—भू० का० कृ० हुवा हुआ
२ देखो 'भवियोडौ' (रू भे)
(स्त्री० भवियोडी)

भविस्स—देखो 'भविस्य' (रू भे)

भवी—१ देखो 'भव' (रू भे.) (अ मा)
२ देखो 'भवि' (रू भे)

भवीक—१ देखो 'भविक' (रू भे)
२ देखो 'भव्य' (५) (रू भे)

भवेस—स० पु० [स० भव+ईश] १ ससार का स्वामी, विष्णु।
२ शिव, महादेव। (अ मा)
३ देखो 'भवस' (रू भे)
उ०—दुय चत्रमास वादियो दिखणी, भोम गई सो लिखत भवेस।
पूगौ, नही चाकरी पकडी, दीधौ नही भडैठा देस।—वा दा.

भवै—क्रि० वि० [स० भव] कभी भी, हरगिज।
उ०—१ मुख सू दाखै म्यारजी, हसनै असन हवेह। मे ती तोनै मालकी, भूला नही भवेह।—मयाराम दरजी री वात
उ०—२ गूजरी-मा विचाळै ई आखती पडनै जवाव दियौ—थनै किणी वात री भवै ई ओळबौ नी आवैला।—फुलवाडी

भवोदधि—स० पु० [स० भव+उदधि] ससार-सागर।
उ०—जनम मरण रा जोड सू, विहनो किरपानाथ। भवोदधि मो ने तारनै, दीजै सिवपुर आथ।—जयवाणी

भवोभव—स० पु० [स० भव] जन्म-जन्मान्तर।

भवौ—देखो 'भव' (अल्पा रू भे)

भव्य—स० पु० [स] १ कुशल, क्षेम। (अ मा, ह. ना मा)
२ शिव, महादेव।
३ रैवतमन्वतर का एक देवगण, जिसमे निम्न लिखित आठ देव शामिल थे—परिमति, प्रयनिश्चय, मति, मन, विचेतस्, विजय सुजय एव स्योद।
४ चाक्षुप् मन्वतर का एक देव।
५ उत्तानपादवशीय एक राजा, जो ध्रुव राजा का पुत्र था। इसकी माता का नाम भूमि था।
६ दक्षसावर्णि मन्वतर के सप्तऋषियो मे से एक।
वि०—१ सुन्दर, मनोहर।
उ०—धूवा धोरा नाव, कठै लाका लामोडा। गाळा आडावळा, गगण चु बी डीगोडा। टोकी भव्य सोपान, सातसम सीतळ टोळी। ढिस्सा दहा पडाळ, लुभाणी खितिज खोळी।—दसदेव
२ शुभ, मगलकारी।
३ योग्य लायक।
४ भविष्य मे होने वाला, या आने वाला।
५ मोक्ष योग्य जीव।
उ०—नीली भुइ भली सपजइ, भव्य जीवना अभिग्रह पलइ।
सरोवर तु राजहस ऊमटइ पगि, पगि जल निरमल उमटइ।
—नळदमयती रास
उ०—२ केवली धरम इस्यौ कह्यौ, आवे भव्य नै दाय।
त्रिविध त्रिविध धरम करणौ, माहणौ जीव छ-काय।—जयवांणी

भव्यक—देखो 'भव्य' (१) (रू भे) (ह ना मा)

भव्या—स० स्त्री० [स०] उमा, पार्वति।

भव्व—देखो 'भव' (रू. भे)
उ०—अममेघ कोट कीधा इसा, भव्व जनम साफळ भया। जग कही कथा वेदे 'जगा', गया गया प्र (प्रे) ता गया।
—जग्गौ खिडियौ

भसधि—स० स्त्री० [स० भ+सधि] ज्योतिष मे अश्लेषा, ज्येष्ठा और रेवती नक्षत्रो के चौथे चरण के वाद के नक्षत्रो की सधि।

भस—स० स्त्री०—१ किसी पदार्थ की असह्य गध।
२ देखो 'भस्म' (रू भे)

भसट—देखो 'भ्रस्ट' (रू भे)

भसण—देखो 'भुसण' (रू भे)

भसणउ—देखो 'भुसणौ' (रू भे)
उ०—समुद्र खारउ, वाउल कटालउ, सरप कालउ, वाउ वायणउ, जन वोलणउ, सुणह भसणउ, ससउ नासणउ, राणउ लेणउ, स्त्री स्वभाव लाडणउ।—व म

भसम—देखो 'भस्म' (रू भे)
उ०—रग केइक रातडा, भसम धूहर भमराळा। जटाजूट उजळा, केइक भूरा केइ काळा।—सू प्र
उ०—२ जवन पेख सिर जोर, दियौ छत्रपती छिपाए। भसम जाण आरियौ, अगन कण जतन उपाए।—रा रू

भसम्म—देखो 'भस्म' (रू भे)
उ०—१ ढाढी, एक सदैसडउ, प्रीतम कहिया जाइ। सा धण वळि कुइला भई, भसम ढढोळिसि आइ।—ढो मा
उ०—सुत विनता तन सोय, जाम तजै जणणी जतन। तू राखै मझ तोय, भसम हाड मागीरथी।—वा दा

भसमागि—स० स्त्री० [स० भस्म+अगि] भस्म करने वाली अग्नि, तीव्र ज्वाला।

उ०—तडित वड़ागि अवनागि भसमागि तिम, जागि प्रैलाग री आगि जहियौ। खघ री बहै पण कळस धी आगि खति, कमघ री लागि, वरजागि कहियौ।—पदमसिंघ राठोड री गीत

भसमासुर—देखो 'भस्मासुर' (रू भे)

उ०—भसमासुर रा विरोघ माहे इद्रादिक देवता वाढा। इतरा माहे तोरण रा आखा। गुमान री गाडो। चवदै भवण मालिम। अगजिया गजण।—मा वचनिका

भसमी—देखो 'भस्म' (अल्पा, रू भे)

उ०—१ उणी री माउ तौ जोगण हुई, अै समीचार वीरम सुण नै वैराग आयो। जद घर-वार छोड भसमी पैं'री।

—कल्याणसिंघ नगराजोत वाढेल री वात

उ०—२ जतु भखै अथवा जळै, कै पडियौ रह जाय। किल भिमटा भसमी क्रमी, इण नर तन सू थाय।—वां दा

भसमीय-वि० [स० भस्म] १ भस्म या राख के रग का।

स० पु०—भस्म के रग का घोडा जो अशुभ माना जाता है।

उ०—सदली भरडाज भसमीय चित्रस, नील पीला गुरडा नुकरी। मकडाज कील्याणीयेंपच, समदीयै चीन वडा कगडा चहीयै।

—किसनौ घघवाडियौ

भसम्मी—देखो 'भस्म' (रू भे)

उ०—पिनाकी रीझियौ 'कूपौ' सतावी विरोघ पूजा,वगस्सै निरम्मै घाम काटै पाप वघ। के'वाण भसम्मी कडा हूत कीधा अळैकारा, कैळास ले गयौ सारा पूजारा कमघ। ऊमेद मादू

भसर-स० पु०—भौंरा।

उ०—घरहरत मदझर घार, वप सघण जिम विसतार। वह लगर घर चख वोळ, क्रीडत भसर कपोळ।—सू प्र

भसीड-स० स्त्री० [दे०] कमल की नाल जिसकी तरकारी वनती है।

भसुड, भभूड-स० पु० [स० भृश्+शुण्ड] हाथी, गज।

वि० [दे०] राख या धूल से भरा हुआ।

भसूडरा-स० [दे०] सोलकी वश की एक शाखा।

भस्त—देखो 'वहिस्त' (रू भे)

उ०—दिइ दान निमराइ करइ, साहिब्ब सेव सच्ची करइ। कुराण न्याइ पेखि चल्लइ, सो मुसलमान भस्त जि वरइ।—व स

भस्म-स०स्त्री०—१ लकडी, कोयला आदि के जलसे पर वची हुई राख।

क्रि० प्र०—होणी, करणी।

२ चिता की राख जो पुराणानुसार शिवजी अपने शरीर पर लगाते हैं तथा जो गगा मे वहाने हेतु ले जाई जाती है।

क्रि० प्र०—रमाणी, लगाणी।

३ धूपदान, यज्ञ, हवनादि की राख जिसे पवित्र मानकर भक्त लोग मस्तक तथा अन्य अगो पर भी लगाते हैं, विभूति।

४ साधु-सन्यासियो के अग्नि-कुड (धूणी) की राख जिसे वे अपने शरीर पर मलते है।

५ वैद्यक मे, किसी धातु को फूक कर तैयार की गई राख, जो चिकित्सा मे काम आती है।

ज्यू-लोह-भस्म, स्वर्ण भस्म।

वि०—१ जो जल कर पूरी तरह से राख हो गया हो, जला हुआ।

रू० भे०—भस, भसम, भसम्म।

अल्पा०—भसमी, भसम्मी।

भस्म-अगी-स० पु० [स भस्म+अगी] भस्म या राख के रग का घोडा जो अशुभ माना जाता है।

वि०—१ वह जिसका शरीर भस्म के रग का हो।

२ धूलि-धूसरित।

भस्मक-स० पु० [स०] १ भाव प्रकाश के अनुसार एक प्रकार का रोग जिसमे भोजन तुरन्त पच जाता है तथा शौच बिल्कुल भी नही होता है।

२ भस्मासुर का एक नाम।

वि०—भस्म करने वाला।

भस्मकारी-वि० [स० भस्मकारिन्] भस्म करने वाला, जलाने वाला।

भस्माकर, भस्माकर—देखो 'भस्मासुर'।

उ०—भसमाकर कीनौ भसम, हर रक्खणहारे, वालखिली जळ डूवता, प्रभु तोहि पुकारे।—भगतमाळ

भस्मागनी-स० स्त्री० [स० भस्म+अग्नि] शरीरस्थ पाच प्रकार की अग्नियो मे से एक, जो खाए हुए पदार्थ के रसादि व समस्त धातुओं को भस्म कर देती है।

भस्मासुर-स० पु० [स०] शिवोपासक एक प्रसिद्ध राक्षस जिसने शिवजी से यह वरदान प्राप्त किया था कि जिस किसी के मस्तक पर वह अपना हाथ रखेगा, वह भस्म हो जावेगा।

वि० वि०—पुराणो मे इस नाम का कोई उल्लेख नही मिलता है परन्तु उनमे प्राप्त कालपृष्ट एव वृक नामक राक्षसों से इसकी कथा काफी मिलती है। इसे शिवजी से इस प्रकार का वरदान प्राप्त था कि जिस किसी के मस्तक पर वह हाथ रखेगा वह वही भस्म हो जायेगा। एक बार वह भगवान शिव पर ही हाथ रखने को उतारू हो गया तो श्री विष्णु ने मोहिनी रूप धारण करके इसे स्वय के मस्तक पर हाथ रखने से प्रवृत्त कर दिया जिससे उसका वही पर वध हो गया।

रू० भे०—भसमासुर।

भस्मीभूत-वि० [स० भस्म+भूत] विरकुल जलकर राख वना हुआ।

भउ, भऊ—देखो 'वहू' (रू भे)

भह—देखो 'भ्रू' (रू भे)

उ०—वर्ण नैण भूहार भाल विचित्र, पडै दीपको काजल हेमपत्र। विचित्र वर्णी भह की रेख वक, धरयौ कामदेव कर (रा) मे धनक।—वगसीराम प्रोहित री वात

महराणो, महरावो—देखो 'भरराणो, भररावो' (रू भे)

महराणहार, हारो (हारी), महराणियो—वि०।

महरायोडो—भू० का० कृ०।

महराइजणो, महराइजबो—भाव वा०।

महरायोडो—देखो 'भररायोडो' (रू भे)

(स्त्री० महरायोडी)

महरो—१ देखो 'भवारो' (रू भे)

उ०—भीतर जाय महरं रो मुह खोल कुवरसी नू दाखिल कियो।

—कुवरसी साखला री वारत

२ देखो 'भारो' (रू भे)

महु—देखो 'वहू' (रू भे)

मां—देखो 'भाय' (रू भे)

भांकडी—देखो 'भाखडी' (रू भे)

भांकार, भांकारि—स० स्त्री०—भेरी नामक वाद्य की ध्वनि।

उ०—१ न तालाचर वाइ ताल, 'हारू हारू' भणी न हीचकइ बाली तिहा नही भेरी तणा भाकार, न वस वाइ भला वसकार।

—नळदवदती रास

उ०—२ रथ तणी रामति, मेघाडवर छत्र तणउ आडंबर, सीकरी तणउ झमाल, अलवा तणी उमाल, भेरि तणे भाकारि, झल्लरी तणे झात्कारि, सख तणे ओकारइ।—व स

भाख—स० स्त्री०—तलहटी।

उ०—ढीवडा ११ चाच २५ सेवज चिणा छं। द्रहा १ हिंडोळ भाखर री भाख पीवं।—नैणसी

भाखडी—स० स्त्री० [दे०] भूमि पर छितरने वाली वनस्पति विशेष जो प्राय वर्षा ऋतु मे होती है।

रू० भे०—भाकडी।

भांखणो, भांखवो—क्रि० स० [स० भा+अकन] घी, तेल आदि से हलका चुपडना।

भाखणहार, हारो (हारी), भाखणियो—वि०।

भाखिओडो, भाखियोडो, भांख्योडो—भू० का० कृ०।

भाखीजणो, भाखीजबो—कर्म वा०।

भाखियोडो—भू० का० कृ०—हलका चुपडा हुआ

भाखो—स० पु०—घी, तेल आदि का हलका सा लेपन।

उ०—लावी नोकदार जूती, तीला रै तेल रो भाखो दियोडी।

—दमदोख

भाग—सं० स्त्री०—१ गाजे की जाति का मादक पत्तियो वाला पौधा जिसे नशे के लिए पीसकर पिया जाता है।

२ उक्त पौधे की पत्तियो को पीसकर बनाया हुआ तरल पेय।

उ०—सावरियो म्हांनं भाग पिलाई, मेरी अखिया मे लाली काहे री कूडी (राघे) काहे रा घोटा, काहे री सुवाफी वणाई।—मीरा

क्रि० प्र०—खाणी, पीणी

मुहा०—भाग खाणी, भाग पीणी=नासमझी या पागलपन की सी वातें करना। भाग ऊगणी, भाग चढणी=पूर्ण नशे मे होना।

रू० भे०—भग, भागी।

अल्पा०—भागडली, भागडी।

मह०—भागड, भागडो।

भागड—वि० [दे०] १ भाग का नशा करने वाला, भगेडी।

उ०—भागड खारा खून कर, तू आएा न डर तार। ओ ऊमो अढसी हरो, हामू बगसणहार।—वा दा

२ देखो 'भाग' (मह, रू भे)

भागडभुतड, भागडभूतड—वि० [राज० भाग+भूत+ड] १ भाग पीकर मस्ती मे रहने वाला।

२ मदमस्त, उन्मत।

उ०—जोगी गरीबनाथ सिववाडी आयो। भागडभूतड थका रहै। कहै हमीर पतर पूरो जिणकू सिव वाडी का राज है।

—वां दा ख्या

३ वेफिक्र, वेपरवाह।

भागडली, भागडी—देखो 'भाग' (अल्पा, रू भे)

उ०—बीजा तौ पुर का मायवा बीज मगावौ जी मिरगानेण्या री भागडली, भुवाजी म्हारा राजन भाग पावौजी।—लो गी

भागडो—देखो 'भाग' (मह, रू भे)

उ०—नचै मिव भांगडो पीया थाकै नही, कोपिया सागडो गढा देमी कही। जूजवा लागडो लक जावै जुही, खागडो न मावै आज खापा मही।—सगतीदान

भांगण—स० स्त्री० [स० भग्] १ टुकडे करने या तोडने का कार्य।

२ वध् हत्या।

भांगणो—वि० [स० भग्] १ निवारण करने वाला, मिटाने वाला।

२ विध्वस करने वाला, नाश करने वाला।

३ मारने वाला, पीटने वाला।

४ सहार करने वाला।

५ टुकडे-टुकडे करने वाला, तोडने वाला।

भागणो, भागवो—क्रि० स० [स० भग्] टुकडे २ करना, तोडना।

उ०—१ छोरा मोटा होय माथै गेडिया भागै तो आरी अक्ल ठाणै आवै।—फुलवाडी

२ खर्च करना।

उ०—१ वतावो, तिजोरिया रा इत्ता रिपिया क्यू भागिया। इण सू वतो काई जाव्तो व्है सकै।—फुलवाडी

उ०—२ पती जुद्ध मे दुममणा री फौजा रा हाथी मारनै तो मोतिया रा ढिगला दिया है जिणरा ओत वा पोत चीडा नै हाथियारं दाता रा चूडा मोल भागण रो कांम नही सो इमा वीर पती रा घर रा तोटा पर ही वारणै जाऊ हू।—वी म टी

३ मारना, पीटना।

उ०—कोई आघ घडी रै उपरात नाड देखतो देखतो वेदराज टोकरिया रा माथा मे आवेस लिखरा री जतराई। पछै हाथ मायला चिटिया सू सागेडो भांग्यो।—फुलवाडी

४ निवारन करना, दूर करना, मिटाना।

उ०—सुदर, गोरी, ओलू थारी परी रै निवार, चपक वरणी, वाबीमा री ओलू सुमरोजी भागसी।—लो गी

५ विनाश करना, विध्वस करना।

६ पराजित करना, हराना।

७ लूटना।

उ०—धाडैती गाव भाग रह्या है—कोई गुडकती-गुडकती बोल्यो। धाडैती गाव भाग रह्या है नै थै बाजरी मे लुक रह्या हो! फिट रे नादारा थानै।—रातवासो

८ मिटाना, नष्ट करना।

उ०—हिंदूवाण रो प्राण देसाण हुगी, उणा रो अलकार प्रकार ऊगी। ग्रुरज्जा चहू जाण लोकेस वाका, प्रथी आभ रो वीच भागै पताका।—मे म

९ सहार करना, मारना।

१० नियम तोडना।

ज्यू—एकासणो भागणो।

११ रुपये को छोटे सिक्को मे परिवर्तित करना।

१२ प्रकट करना।

उ०—सु देवीदास आप तो उठा थी पाळो ही ज नीसरियो, चाकर एक साथै हुतो तिण नु कह्यो—तू डेरै जाय राव रा आदमी आपणै डेरै तेड़ण नु आवसी तिण आगै कोई भेद मत भागै नै कहीजो-देवीदास मीकर गयो छै यु करनै आघो काढजो।—नैणसी

भागणहार, हारो (हारी), भांगणियो—वि०।

भागिओडो, भागियोडो, भाग्योडो—भू० का० कृ०।

भागीजणो, भागीजवो—कर्म वा०।

भजणो, भजवो, भाजणो, भाजवो, भानणो, भानवो, भाजणो, भाजवो, भाज्जणो, भाज्जवो—रू० भे०।

भागरी—स० स्त्री०—एक प्रकार का घास।

भागरो—स० पु० [स० भृगराज] एक प्रकार का क्षुप जो प्राय गीली भूमि मे होता है तथा सफेद, पीले और काले इन तीन प्रकार के फूलो के भेद से यह तीन प्रकार का होता है।

रू० भे० भगरो, भगराज।

भागा—स० पु० [स० भग] विगाड, खरावी।

उ०—हू तो कैवू हू भांगा करण वाळा रो काळो मूडो अर लीला पग हुवै।'—वरसगाठ

भागि—देखो 'भाग' (रू भे)

उ०—तठा उपराति करिनै राजान सिलामति तजारै री वाडी री नीपनी, नीली घणी पाकी, पुराणी, आगै वखाणी तिण भाति री भागि घणी एलची, मिरचा पान, जावत्रीनै मेळ सू पाखाण री कूडीआ—सरवगरा घोटा सू ऊजळा प्राचारी घमोडी घणै ऊजळै मिसरी रै भेळ ऊजळा गरणा सू झारीजै छै।—रा सा स

भागियोडो—भू० का० कृ०—१ टुकडे किया हुआ २ खर्च किया हुआ ३ मारा हुआ, पीटा हुआ ४ निवारण किया हुआ, दूर किया हुआ, मिटाया हुआ ५ विनाश किया हुआ, विध्वस किया हुआ ६ पराजित किया हुआ, हराया हुआ ७ लूटा हुआ ८ मिटाया हुआ, नष्ट किया हुआ ९ सहार किया हुआ, मारा हुआ १० नियम तोडा हुआ ११ रुपयो को छोटे सिक्को मे बदला हुआ, परिवर्तित किया हुआ १२ प्रकट किया हुआ १३ भग किया हुआ

(स्त्री० भागियोडी)

भागी—देखो 'भाग' (रू भे) (अमरत)

भागेसुर—स० पु० [भाग+ईश्वर] भाग।

उ०—१ इसै मे भागेसुर मगायजै छै, सू किण भात छै? केसर री क्यारी दोळली, वासग-माथारी।—रा सा स

उ०—२ आप कहियो रे! भागेसुर रो काई खवर? तरै कहियो भागसुर तइयार, साहिव! कहडो काढियो?

—प्रतापमल देवडा री वात

भागेडी—देखो 'भगेडी' (रू भे)

भागो—स० पु०—छोटा खड, टुकडा (तुकरा)।

उ०—अमला-रे वाटणहारै-नू कह्यो—सारीखो भागो करे, अर अमल नू माथो मत को बूणो महादेवजी बुरो मानमी।

—प्रतापमल देवडा री वात

भाज—स० स्त्री०—१ किसी पदार्थ का घुमाने, मोडने या तह करने की क्रिया या भाव।

२ विघ्न, वाधा।

३ पचायती।

भाजक—स० स्त्री० [स० भग] विघ्न, बाधा।

उ०—अबकै जठै जावा वठै-ई भाजक लागै है। हू तो कैवू हू भागा करणवाळा रो काळो मूडो अर लीला पग हुवै।—वरसगाठ

भाजघड—स० स्त्री० [स० भग+घट्] १ वह सभा या समिति जो किसी विवाद या झगडे सुलझाने के लिए बुलाई जाय।

२ चिन्तन, विचार।

उ०—रात तो फिकर करता, भाज-घड करता करता व्यतीत कीवी।—डाढाळा सूर री वात

३ खटपट, तोट-जोड।

उ०—भाजघडा भाजी भिडा, औघा अमल अमाप। थापे उथप सटपट थकी, तिका पतै परताप।

४ सकल्प।

५ सलाह।

भांजणौ—देखो 'भागणौ' (रू भे)

उ०—१ सत जण तरण चख क्रपा रुख साहरै, साहरै विरद भुजडंड सिधाळा। वीस भुज भाजणा समर हथवाह रे, वाह रे राम अवधेस वाळा।—र ज प्र

उ०—२ भाजणौ त्रिवेधी घडा भेळणौ भिडज भाळे, ढाहणौ गयदा खेति ढढोळणौं ढाल। आगळी दळा अभग जैतखभ हुवौ जुधे, 'जोधा' हरौ जगजेठ जोध जगमाल।—जगमाल रौ गीत

भाजणौ, भाजबौ—१ देखो 'भागणौ, भागबौ' (रू भे)

उ०—१ वै वारा भाला तो ऊ गिड-सूर वडोडौ आपरी डाढा प्रळा रूपी दिखाय भाज न्हांकसी।—वी स टी

उ०—२ पाडै किता, खडौ जुधि न पडै, दुरित खवा असमाण दुहि। भरि-भरि वाम खाग अरि भाजै, केहरि का माथै कळहि।
—तीकमदास खिडियौ

उ०—३ रौदा भाजि ऊजळा रूका, वैर वाळि, उजवाळि वट। पग निरलग, निरलग अग पडे, भुज निरलग निरलग भ्रकुट।
—राठौड पदमसिंघ रौ गीत

उ०—४ वैरड खड घड वेहडाह काली किरि भाजै कूलडाह। सेलां उझेळ फाटै सनाह, घरहरै स्रोण धारा प्रवाह।—गु रू व

उ०—५ दखै भाग ज्यारा जती वस दीता, सको कत त्रीलोक रौ नाथ सीता। व्रहमड कोडेक भाजै वणावै, इसो राम माता कठै कामि आवै।—सू प्र

उ०—६ जुग भल स्रीराम सुणायै जाये, माहरौ अेक सदेसौ मेह, दुख तू तणौ भाजिसै तिण दिन, दिन जिण राग्व थाइसै देह।
—ईसरदास वारहट

उ०—७ सो सुणि दुरजणसाल, कोपि रणमस्त वकारे। कहियो था जिम कवण, मान भाजै छळ मारे।—व भा

उ०—८ पाटण 'सीह' अचळ परणिया, 'मूळा' तणै माढहै 'माल'। भाटी तणौ कमध घट भाजै, सत्र तणौ अरधगौ साल।
—गु रू व

उ०—९ सवळा गढ गजण मदा, भाजण सवळा भूप। नरपत्ती वीकाण रा, राज नवैखड रूप।—चतुरौ वारहट

उ०—१० पांचसै खेत दखणा पडे, रिण वकै दिन पध्धरै। गज थटा भाजि जीते 'गजण', महाजुध्ध मडोवरै।—गु रू व

उ०—११ हद्दाधिराज हू छोटी राणी दाहडी मे जोडै ही जन्म लीधौ तिकाही पछै बुदी पाइ चीतोड रा अधीस कूभा रा भाजिया हुवा।—व भा

उ०—१२ इण ही वस मे भठनेरपुररै अधीस जसराज सोन-गिरै केही वार जवना रौ जोरदार कटक भाजियौ।—व भा

उ०—१३ वध छोह जितू रिण वाही 'वीकै', सेन नमता साख सुर। मिलक हिंदाळ भाज रूका मुह, इणी विहर रिडमाल उर।
—राव वीका रौ गीत

उ०—१४ जठै कुमार लक्कडखान चौडे खेत जाइ कुठारखान भाजियौ।—व भा

उ०—१५ केहर तणी कळाइया, भणणाहट भमराह। भीजी गज सिर भांजता, मद सौरभ डमराह।—वा दा

उ०—१६ सावळा तणी दे झीक आखाढ-सिंध। दुरित तै मेछ दळ भाजि दियौ।—कछवाहा वैरसल खगारोत रौ गीत

उ०—१७ खाडुक-मल 'मानौ' 'खेम' नद, चहवाण जेण भाजियौ 'चद'। विरदैत जोध घाटै-वराड, 'गोइद करणैठ काळौ-पहाड।
—गु रू व

उ०—१८ इहा नू माही वडरो नही दिया। राजूखा री वीवी वाहर आय कही—वावा थारौ वैर था लेय ही लियौ। सावास छै, वडी रजपूती राखी। जसा पुरसा रा यें लडका था विसी ही कीवी। जनानी मरजाद मता भाजौ—सूरे खींवे कावळोत री वात

उ०—१९ रात रा आपरी नाणौ भाज, आटौ, घी, सकर आण चूरमौ कर खावै अर वाकी रौ परभात रै पगा ऊचो मेल्ह कर राखै।—सूरे खीवे कावळोत री वात

भाजणहार, हारौ (हारी), भाजणिवौ—वि०।

भाजिओडौ, भाजियोडौ, भाज्योडौ—भू० का० कृ०।

भाजीजणौ, भाजीजबौ—कर्म वा०।

भजणौ, भजबौ—रू० भे०।

भाजियोडौ—देखो 'भागियोडौ' (रू भे)
(स्त्री० भाजियोडी)

भाड—स० पु० [स० भड] १ एक जाति विशेष जिसका पेशा स्वाग बनाकर, नाच गाकर हास्यपूर्ण तरीके मे नकलें या परिहास करके लोगो को हसाना होता है।

२ उक्त जाति का व्यक्ति।

वि०—निर्लज्ज, वेशर्म।

देखो 'भाडौ' (मह रू भे)

रू० भे०—भड, भाडेरू।

भाडणौ, भाडबौ—क्रि० स०—१ वदनाम करना।

उ०—१ क्यो काई? फजीतवाडो हुवै है। वाई री नणद जागां-जागा भांडती फिरै है।—वरसगाठ

उ०—२ ताहरां 'ऊदै' अर 'काळै' कह्यो-'म्हे सिंघ रै साथै नही जावा, भांडसी।—नैणसी

उ०—३ दाम री भाम झेली दुकर, भव सारै नैं भाडियौ, छिता पर इता गुण छोड दै, राड न छोडै राडियौ।—ऊ का

२ निन्दा करना।

उ०—विचाळै ई दात पीसता वोल्या—ठाकुरजी रै सामी ऊभौ थू ठाकुरजी नै ई भाडै, थनै सराप लागेला।—फुलवाडी

भांडणहार हारो (हारी), भाडणियौ—वि० ।
भांडिग्रोडो, भांडियोडौ, भाड्योडौ—भू० का० कृ० ।
भाडीजणो, भाडीजवौ—कर्म वा० ।
भडणौ, भडवौ—रू० भे० ।

भांडनी–स० पु० मनुष्य की ऊंचाई के बराबर का एक पौधा जो ग्रोषधि मे काम ग्राता है ।

भाडपति–स० पु० [स० भड=खजाना+पति] कोषाध्यक्ष ।
उ०—तत्रभाडागारिक, करपूरपट्टिक कोस्टाकारिक पारिग्राहिक प्रतिहार चतुद्वारिक कास्टिक राजद्वारिक संधिविग्रहिक भाडपति महाजनिक दूत दालिउट्ट ।—व स

भाडाई–क्रि० वि० [स० भड+रा० प्र० ग्राई] १ सर्वत्र निंदा करने की क्रिया ।
२ भाड द्वारा किया जाने वाला कार्य ।
उ०—सेवट चौमासा रै उपरात ग्रेक दिन साधू ग्राप रै स्वाग रौ भेद परगट करनै भाड रौ गळाई बजायनै जाचना करी । सेठ रै सामी हाथ जोडनै कह्यौ–गरीब री भाडाई माथै रीझ करनै बगसीस करो ग्रनदाता । म्हैं रावळौ भाड हू ।—फुलवाडी
उ०—उक्त प्रकार का कार्य करने पर मिलने वाला पुरस्कार ।
रू० भे०—भडाइ, भडाई ।

भाडाकार, भाडागार–स० पु० [स० भण्ड+ग्रागर] कोष, खजाना ।
उ०—१ ग्रास्थान सभा, स्त्रीगरणसभा, व्ययकरणसभा, घरम्माधिकरणसभा, देवकरणसभा, पडितसभा, लेहासभा भाडाकार कोस्टाकार, सत्रागार, मठविहार प्रजा मडप ।—व स
उ०—२ करि तुरग रथ पायकसेन भाडागार ५, कोस्टागार ६, गढ ७, सप्ताग राज्यलक्ष्मी ।—व स

भाडागारिक–स० पु०—कोषाध्यक्ष ।
व्यायामसाल, टकसाल, ग्रास्थानसाला, स्त्रीकरणसभा, व्ययकरणसभा, घरम्माधिकरणसभा, देवकरणसभा, पडित सभा, लेखकसभा, भांडागारिक कोस्टाकार, सत्राकार ।—व स

भाडियोडौ–भू० का० कृ०—१ बदनाम किया हुग्रा २ निन्दा किया हुग्रा ३ दूषित किया हुग्रा
(स्त्री० भाडियोडी)

भांडार—देखो 'भडार' (रू भे)

भाडेरू–वि० [देश०] १ निन्दा करने वाला, ग्रपकीर्ति करने वाला ।
२ देखो 'भाड' (रू भे)
रू० भे०—वाडेरू ।

भाडो–स० पु० [स० भड] १ बरतन ।
उ०—१ भरथ ग्राया तन जाणियै, जब ग्रनरथ छूटै । दादू भाडा भरम का, गिर चौडे फूटै ।—दादूवाणी
उ०—यो ससार कुबधि को भाडो, साध सगत नही भावै । राम नाम की निंदा ठाणै, साध-सगति नही भावै ।—मीरा
२ शरीर ।
(स्त्री० भाडी)
रू० भे०—भडौ ।
मह०—भड ।

भाणग–स० पु० एक प्रकार का वाद्य । (व स)

भाण—१ देखो 'वाण' (रू भे.)
२ देखो 'भानु' (रू भे.)
उ०—१ ग्रवधेस राजा प्रभू ध्रम ग्रसी, वडी रीत चालै सदा भाण-वसी । लडै काळ चाळा गहे वाद लागै, उभै हाथ जोडै गळ विप्र ग्रागै ।—सू प्र
उ०—२ जाळधर तणइ गरभ ताइ जेहनी, वचन सकोमळ ग्रधिक वखाण । वदन तणी छिब्र कळा जोवता, भयचक हुवइ दुवादस भाण ।—महादेव पारवती री वेलि
३ देखो 'वहन' (रू भे)
उ०—ग्राज म्हारा वीरोजी चोक्या बस रह्या, हरखी छै मा की जायी भाण, ग्रोढायी घणदेवा चूनडी ।—लो गी

भाणउगवण, भाणउगाण–स० पु० [स० भानु+उदय] सूर्योदय ।
भाणउगाळी–स० स्त्री० [स० भानु+उदय+काल] सूर्योदय का समय ।
भाणकुळ–स० पु० [स०+भानु+कुल] सूर्यवश ।
भाणकुळजा–स० पु० [स० भानु+कुल+जा] सूर्यवशी व्यक्ति ।

भाणक्यौ—देखो भांणेज' (ग्रल्पा, रू भे)
(स्त्री० भाणकी)

भाणगोती–स० स्त्री० [राज० भाण+गोती] १ सोलकी राजपूत वश की एक शाखा ।—वा दा ख्या
२ इस शाखा का व्यक्ति ।

भाणजडौ—देखो 'भाणेज' (ग्रल्पा०, रू. भे)
उ०—जाळी बी निरखी ग्रो बीजा झरोखा बी निरख्या जी राज, फुलडांरी सेजा भाणजडा रौ मन रल्यौ जी ।—लो गी
(स्त्री० भाणजड़ी)

भाणजौ—देखो 'भाणेज' (ग्रल्पा, रू भे.)
उ०—ग्रा कैय मासी जोर सू हंसी । सागै भाणजी ई हसणा मे उण री पूरी साथ दियौ ।—फुलवाडी
(स्त्री० भाणजी)

भाणनद–स० पु० [भानु+नद] १ सूर्य का पुत्र दानवीर कर्ण ।
उ०—पाणा पाण मारुथ ज्यू घांनकी ग्रावाण पती, सुरताण राहामाण द्रजोण सराह । छाजा मेर ऊछाण ज्यू दावा भांणनद छोळा, सोहै राण दळा येम दूजो 'धारासाह' ।—हुकमीचद खिडियौ
२ यमराज ।
३ राहु ।
४ सुग्रीव ।

५ शनि ।

भांणनदा—स० स्त्री० [भानु+नदा] सूर्य की पुत्री यमुना ।

उ०—फूलां मखतूळ जमा जळ फाग, पगप्पग होत उद्योत प्रयाग । मदाकण भांण-नदा वह मद, वहै मरमुत्ति प्रवाह वळद ।—मे म

भांणवस—स० पु० [भानु+वश] सूर्य का वश ।

भांणभांणकुळ—स० पु० [भानु+भानुकुल] १ सूर्यवश का सूर्य श्री रामचन्द्र जी । (ना मा)

२ ईश्वर । (ना मा)

भांणमती—देखो 'भानुमती' (रू भे)

भांणरांणी—स० स्त्री० [भानु+राज्ञी] देवी, दुर्गा ।

भांणव—स० पु० [स० भणति इति भाणव] १ काव्यकार, कवि । (डिं को)

२ उत्तम वक्ता ।

३ चारणो के लिये प्रयुक्त एक पर्यायवाची शब्द ।

भांणसुत, भांणसुतन—स० पु० [स० भानु+सुत] १ यमराज । (ना मा)

२ शनि ।

३ कर्ण ।

४ सुग्रीव ।

भांणसुता—स० स्त्री० [स० भानु+सुता] सूर्य की पुत्री यमुना ।

भांणिजौ—देखो भाणेज' (रू भे)

भांणुप्रताप—देखो 'भानुप्रताप' (रू भे)

भांणू—१ देखो 'भाणेज' (रू भे)

उ० अेक मामी कह्यौ—म्हारा लाडेसर भांणू थू म्हारै अठै ठैर, दूजी मामी कह्यौ—म्हारा लाडेसर भाणू थू म्हारै अठै ठैर ।—फुलवाडी

(स्त्री० भांणी)

२ देखो 'भानु' (रू भे)

भांणेज, भांणेजौ—स० पु० (स्त्री० भाणजी, भांणेजी) बहिन का पुत्र भानजा ।

उ०—१ तद कह्यौ—'भाणेज ! थोर ठोडा रहो । थे म्हारा देस छाडो ।' सु श्रै छाडै नही ।—नैणसी

उ०—२ थारी वहनड कागद मेहलियौ । थारी भांणेजी परणाजै, माहेरौ भरण घरे आवौ श्रो जूझार जी ।—जुझार जी रो गीत

रू० भे०—भाणजौ, भाणिजौ, भाणू ।

भांणोत—स० पु०—राठोड वश की एक उप शाखा ।

भांणौ—स० पु०—१ भोजन करने का पात्र ।

उ०—साकर सिरसाळी थिर भर थाळी, अगलाकर ऊगदा है । जग अण सम जाणै मोजा माणै, माणै भोज भरदा है ।—ऊ का

२ भोजन, आहार ।

उ०—यु करता जीमण तयार हुश्रो, ताहरा नाथ नू भांणौ मेलियौ ।—नैणसी

३ देखो भानु (अल्पा रू भे)

उ०—रयणी भूखण चदो, आकास भूखणौ भांणौ । भूखण भूतळ इदो, भूखण साह फौज 'गजसिंघो' ।—गु रू व

भांत—स० स्त्री०—१ किसी पदार्थ की बनावट या रचना का विशिष्ट ढग या प्रकार, परिरूप ।

२ देखो 'भांति' (रू भे)

उ०—१ कूभायळ मोताहळा, भरिया वा गिर भांत । चद्र वरण गज रतन मैं, वगड वणिया दात ।—वा दा

उ०—२ पीवण नै इमरत ज्है जेडो ठाडो निरमळ पाणी, खावण नै मीठा जामुन अर खिजूर री भांत रातांचुट्ट पेमली बोर, पछै काई चीज री दरकार । वादरा सारू तो जाणै सातू सुरग श्रेकठ व्हिया ।—फुलवाडी

उ०—३ अनेक जाति जाति भांत भात मेछ आरुहे । धुवै कि मेघमाळ गोप सीस कोप धारुहे ।—रा रू

उ० -४ ताहरा रावजी हुकम कियौ—'चित्त भूजाई मे ईयै पळी मो पुरसो । आधो पुरसै तो सुवार नू सफा दीजै । भरियौ पुरसणौ रजपूत नू । इयै भांत चूडोजी राज करै ।—नैणसी

उ०—सु राजा तो काहिण नू मन हकरै, पण लोक देखै अर राजा री राणी पण कही भांत देखै, सु श्रै हैरान रहै अर विचारै—जु आज ईयै वरावर सामत कोई नही ।—नैणसी

रू० भे०—भत, भति, भती, भन, भति, भती, भत्त, भत्ति, भत्ती, भातर, भाति ।

अल्पा०—भातडली ।

भांतडली—१ देखो 'भात' (अल्पा , रू भे)

२ देखो 'भाति' (अल्पा , रू भे)

भांतभतीलौ—वि० (स्त्री० भातभतीली) वनावट, रचना, गुण-धर्म, आकार-प्रकार के विचार से भिन्न-भिन्न वस्तु या प्राणी ।

ज्यू०—भात-भतीला मिनख ।

उ०—वखमा छाली भांतभतीलौ, फूल महक अणमीत री । ऊभ एक पग साजन सजै, जो'डा स्वागत मीत री ।—दसदेव

२ भिन्न-भिन्न प्रकार का कसीदा या बुनाई का काम किया हुआ । (डिजाइन वाला)

भांतर—१ देखो 'भात' (रू भे)

२ देखो 'भाति' (रू भे)

उ०—आइ नै राणांजी रो मुजरो कियो । सु इयै भांतर आया सू राणै रो साथ छिप गयो ।—देवजी वगडारत री वात

भांति—१ प्रकार, तरह ।

उ०—१ आगळै प्रिया प्री चौथे आरभि, फेरा त्रिण्हि इण भांति फिरि । कर सागुस्ट ग्रहण कर सू करि, करी कमळ चपियो किरी ।—वेलि

उ०—२ इसी तरह लिछमीजी भांति-भांति करि अरज स्त्री भगवान नै कीवी। अठै राजा व्रहदभाण हजार वीस ब्राह्मण नै भोजन, गाया हजार दोय, हाथी, घोडा रो सकळप भरियौ।
—पलक दरियाव री वात

२ चाल-ढाल, रग-ढग।
३ आचार, व्यवहार की मर्यादा।
४ प्रथा, रीति।
रू० भे०—भत, भति, भती, भत, भति, भत्ती, भत्त, भत्ति, भत्ती, भांत, भातर।

भादू—देखो 'भोदू' (रू भे)
भादोळी—देखो 'वदाळी' (रू भे)
भादोळौ—देखो 'वदोळौ' (रू भे)
भान—स० पु० [स० भान] १ प्रकाश, रोशनी।
२ ज्ञान, प्रतीति।
३ आभास, महसूस।
४ नाश, ध्वस।
५ प्रकटन, प्रादुर्भाव, एव दृष्टिगोचर होना।
६ देखो 'भानु' (रू भे)
उ०—सुरतान ग्रहन मोखन सुजांन हिंदवान भान की करन हान। गळ फेरि छुरी जैंचद गोत, अप्पनू पोत करियें उदोत।—ऊ का

भानणौ, भानबौ—देखो 'भागणौ, भागबौ' (रू भे)
उ०—१ दादू गुप्त गुण परकट करे, परकट गुप्त समाइ। पलक माहि भानै घडै, ताकी लखी न जाइ।—दादूवाणी
उ०—२ तन मन सौज सवार सब, राखै विसवावीस। सो साहिब सुमिरे नही, दादू भान हदीस।—दादूवाणी
उ०—३ त्रप खग दान लिया मुख नूर ज प्रमण भान खिग्रीवट पूरज। वळवळ प्रथी सुजस सद वोलत सूरत तड दासरथी सूरज।
—र ज प्र
उ०—४ हुरम कवीले के जतन साहिजादे जानी, खेमसाह' देखत ही सब चिंता भानी।—रा रू
भानणहार, हारौ (हारी)भानणियौ—वि०।
भानिओडौ, भानियोडौ भान्योडौ—भू० का० कृ०।
भानीजणौ, भानीजबौ—कर्म वा०।

भानमती—देखो 'भानुमती' (रू भे)
भानवी—स० स्त्री० [स० भानवी] यमुना नदी। (डि को)
भानियोडौ—१ देखो भांगियोडौ' (रू भे)
(स्त्री० भानियोडी)
भांनु—स० पु० [स० भानु] १ सूर्य, भास्कर।
२ विष्णु।
३ किरण।
४ आक, मदार।
५ वर्तमान अवसर्पिणी के पन्द्रहवें अर्हत् के पिता का नाम। (जैन)
६ एक देव गन्धर्व जो कश्यप एव प्रावा का पुत्र था।
७ सत्यभामा से उत्पन्न श्रीकृष्ण का महारथी पुत्र।
स० स्त्री०—दक्ष की एक कन्या का नाम।
रू० भे०—भाण, भाणू, भान, भानू।

भांनुकप—स० पु० [स० भानु+कप] ज्योतिष के अनुसार सूर्य ग्रहण के समय कभी २ सूर्य मे दिखाई देने वाला कपन जो अशुभ माना जाता है।
भानुकाअमावस—स० स्त्री० [स० भानुकामावस्या] ज्येष्ठ कृष्णा अमावस्या।
भानुज—वि०—सूर्य से उत्पन्न।
स० पु० [स० भानु+जन] १ शनिश्चर। (२) यम। (३)कर्ण।
भानुजा, भानुतनया, भानुतनूजा—स० स्त्री० [स० भानु+जा, तनया, तनूजा] १ यमुना नदी।
२ राधिका।
भानुपाक—स० पु० [स० भानु+पाक] सूर्य की धूप से औषध आदि को पकाने की क्रिया।
भानुप्रताप—स० पु० [स० भानुप्रताप] तुलसीकृत रामायण के अनुसार कैकय देश के राजा सत्यकेतु के पुत्र का नाम।
भानुमती—स० स्त्री० [स० भानुमती] १ अगरिस् ऋषि की बडी पुत्री का नाम।
२ सगर राजा की पत्नी शैब्यकन्या केशिनी का नामान्तर।
३ धृतराष्ट्र-पुत्र दुर्योधन राजा की एक पत्नी।
४ विक्रमादित्य की रानी जो राजा भोज की कन्या थी।
५ नटो से मिलती-जुलती एक मुसलमान जाति या इस जाति की स्त्री जो गाना-बजाना करके अपना निर्वाह करती है।
रू० भे०—भाणमती, भानमती।
भानुमांनु—स० पु० [स० भानुमान] पुराणो के अनुसार वृहदश्व के पुत्र का नाम। इसका दूसरा नाम भानुरथ भी था।
उ०—कहि जिण सुतण वीर अप केहो, जग जस प्रगट भगीरथ जेहो। जे सुत व्रहदस्व भूप करण जय, ते सुत भांनुमानु तेजोमय।
—सू प्र
भानुवार—स० पु० [स० भानु+वार] रविवार, इतवार।
भानुसप्तमी—स० स्त्री० [स० भानु+सप्तमी] माघ शुक्ला सप्तमी, जिस दिन शाकद्वीपीय ब्राह्मण सूर्य की पूजा करते हैं।
२ रविवार के दिन होने वाली सप्तमी तिथि।
भांनुसुत—स० पु० [स० भानु+सुत] १ यमराज।
२ कर्ण।
३ शनिश्चर।
४ राहु।

५ सुग्रीव ।

भांनू–स० पु० [स० भानु] १ अग्नि, आग ।

२ देखो 'भानु' (रू भे) (ना मा)

भांपटी–स० स्त्री० [दे०] बांस की पतली लकडी ।

भांपणियो–वि०—१ भांपने वाला ।

देखो 'भांपणो' (अल्पा, रू भे)

भांपणी—देखो 'भांपणो' (अल्पा, रू भे)

भांपणो–स० पु०—पलको का बाल ।

अल्पा० भांपणियो, भांपणी ।

भांपणो, भांपबो–क्रि० स०—परिस्थितियो, क्रियाओ, चेष्टाओ, लक्षणो आदि से वस्तु-स्थिति का सही अनुमान लगाना । ताडना ।

उ०—रभा नै बडो अचूभो व्हियो कै जिको आदमी हमेसा उणनै भावणकी अर नकटी राड सिवाय बतळावतो नही हो वो आज इण दूजी राग मे कोकर बोलण लाग्यो । लुगाई री जात खतरा नै भांप लियो ।—रातवासो

भांपणहार, हारो (हारी), भांपणियो—वि० ।

भांपिओडो, भांपियोडो, भांप्योडो—भू० का० कृ० ।

भांपीजणो, भांपीजबो—कर्म वा० ।

भांपियोडो–भू० का० कृ०—परिस्थितियो, क्रियाओ, चेष्टाओ, लक्षणो आदि से वस्तु स्थिति का सही अनुमान लगाया हुआ । ताडा हुआ ।

(स्त्री० भांपियोडी)

भांव–स० स्त्री०—१ शासक वर्ग की ओर से गाव भाभी को दी जाने वाली पदवी ।

२ उक्त पदवी के उपलक्ष मे दिया जाने वाला धन या वस्तुऐं । (पगडी, लाठी)

३ 'भावियो' का काम, वेगार आदि ।

रू० भे०—वाभ भाभ भाम वाभ

भांवटो—देखो 'भांवी' (अल्पा, रू भे)

उ०—ठाकर देखता ईज गरज्या–काई रै भांवटा, थारी आ पटराणी काई कै'वै कै किसा पेटिया पूरवो हो सो मही पीसणो पीसा ।—रातवासो

(स्त्री भांवटी)

भांविडो—देखो 'भांवी' (अल्पा, रू भे)

उ०—**भांवीडा** हाथाजोडी करण लाग्या–आप वडा हो, आप मालक हो, आप धणी हो, आप रोटिया रा देवाळ हो ।

—रातवासो

(स्त्री० भावणकी)

भांवी–स० पु० (स्त्री० भावण) चमडे का काम करने वाली जाति या इस जाति का व्यक्ति ।

उ०—थर-थर धूजतो बोल्यो–बापजी ओ तो म्हैं रावळो भांवी हू ।

—फुलवाडी

रू० भे०—वाभी, भाभी, वाभी ।

अल्पा०—वाभीडो, भांवटो, भांविडो ।

भांम—देखो 'भाव' (रू भे)

भांभर–स० पु०—जोश, आवेश ।

उ०—किरमाळ झडे तनत्राण कपे, भळके किर दामण मेघ वपे । सरके जुड भांभर मेछ सही, जुध मैं धुजरेण पलाल जही ।

—रा रू

भांभरभोळव, भांभरभोळवी, भांभरभोळो—देखो 'भभरभोळो' (रू भे)

उ०—१ कोई रामा निज कतनउ, पालवि झभी सोहाय, भामिनी भांभरभोळवी, प्रीवडउ तव उजाय ।—प्राचीन फागु-सग्रह

(स्त्री० भांभरभोळवी भांभरभोळी)

भांभरहूली–स० स्त्री०—एक प्रकार की सब्जी ।

उ०—भेडागारी भामटी, भांभरहूली भाति । भूसण भूली भारथी, भडहड भोली राति ।—मा का प्र

भांभराभूत—देखो 'भांभरीभूत' (रू भे)

भांभळभळको, भांभळभोळो–स० पु०—सायकाल का समय जब कुछ हल्का सा अधेरा रहता है ।

देखो 'भभरभोळो' (रू भे)

उ०—**भांभळभोळी** भामणी, ए तो गोरागी चढी गोख हो राज । दरसन सतगुरु देखवा, ए तो झाख रहीय झरोख हो राज ।

—महेद्रसूरी

(स्त्री० भांभळभोळी)

भांभराळो, भांभरो–वि०—उन्मत्त मस्त ।

भांभळी–स० स्त्री०—छोटे २ अग्नि-कण मिश्रित वह राख जिसमे किसी वस्तु को गाड़कर पकाया जा सकता है । (अमरत)

भांभाई–स० स्त्री—वेगार का कार्य ।

उ०—तद ओळुगवे कही, 'राज' म्हाहरो सांवळ को भाई छै । सु भी भाडणी रै पेट रो छै । सु म्हे काल्ह क्यो मागण गया हता, सु म्हाने आधा घर माही आवण ही दिया नही । हेणा भांभाई करम छै ।—ठाकुरे माह री वात

भांभी—देखो 'भांवी' (रू भे)

(स्त्री० भांभण)

भांम–स० पु० [स० भाम] बहिन का पति, बहनोई ।

उ०—मालवदेस रा पच्छिम प्रांत रो पुहवीस रतळाम नगर रो वसावणहार राठौड रत्नसिह विस्वासघात करि आपरो भांम अमरेस रा चरणा रो छेदणहार गौड नरेस अरजुनसिह, राणाउत राजा रायसिह, नवाब कासिमखान, करीमखान प्रमुख आपरा मुख्य सामत सहायक करि वहा वरूथ रै साथ जूझण रा साहसी कुमार दारासाह नू 'ओरग' 'मुराद' रै साम्हे विदा कीधो ।—व भा

२ देखो भामिनी' (रू भे)

उ०—१ कर कर वाडा कपट रा, घाडा पाडण धाम । दिल चोरण भाडा दिए, भाडा वाळी भाम ।—बा दा

उ०—२ दाम री भाम भेली दुकर, भव सारै नै भाडियो । छिता पर इता गुण छोड दै, राड न छोडै राडियो—ऊ. का

उ०—३ जिग जनक आरभ राम रै, कर रिखी गवण सकाम रे । भव सिला गोतम भांम रे, रज पाय तारी राम रे ।—र ज प्र

भांमटी—स० स्त्री०—एक प्रकार की सब्जी ।

उ०—भेडागारी भामटी भामरहूली भाति । भूमण भूली भारथी, भडहड भोली राति ।—मा का प्र

भांमण—देखो 'भांमिनी' (रू भे) (ह ना मा)

उ०—१ जब लू नित नाम तिलोचन बोल्यो, भामण भीयड होम भिडै । करवा ग्रह काज इसो न्याय आगळ, माणरा कोय लिलाम मिळै ।—भगतमाळ

उ०—२ अवधू अठ मासै नगद निकासे, चोमासै चिपकदा है । भामण भरमाया गुरु गरमाया, सरमाया सिरकदा है ।—ऊ का

भांमणइ, भांमणउ, भामणा, भामणा—देखो 'भामणौ' (रू भे)

उ०—१ रति अनुकूल विलास घणा रळियामणा । भीसग दीसै इद्र, लिंवू हू भामणा ।—वा दा

उ०—२ भुजा भामणा ककणा सज्ज कीधां । लसै सूळ डेरू खटग्गखप्र लीधां । छऊ भैन छोटी दहू ओड छाजै । विचै पाट-राजीव माजी विराजै ।—मे म.

उ०—३ भड घोडा महगा थिया, एकण भाट उडंत । भड घोडा रा भामणा, जेथ जुडीजै कत ।—वी ल

भांमणि, भांमणी—देखो 'भामिनी' (रू भे)

उ०—१ करे विचार एम सिव कामणि, भेख सरीर धरे हरि भामणि । सुता जनक वप करि ममताई, इम दखि सुता छळण कजि आई ।—सू प्र

उ०—२ भुहारा तणी रेखा ताइ भामणि, घण स कोमळ रूप घणइ । चाढी जाणि कवाण चाढतइ, तजी कुवरि वलोच तणइ । —महादेव पारवती री वेलि

उ०—३ भामणि स्रीव्रजराज घणां हित सू भजै । मिख नख बरणू जास क बुद्धि समापजै ।—बा दा

उ०—४ भारथ मत कर भामणी, मो भारथ नह मेळ । वापी कूप वताव विम, कै कर म्हा सू केळ ।—बा दा

उ०—५ विडरी हिरणी सी फिरणी विजझाती, मुखडै मुसकाती जोरो जतळाती । ओलै भक आटा कोलै जिम कुयिगी, हावर भामणिया मामगिया हुयगी ।—ऊ का

भांमणौ—स० स्त्री०—१ न्योछावर, उत्सर्ग ।

उ०—हू तो हत्या भामणां, वडा समत्था वेह । ज्या 'जेहा' जादव जिसो, नर निरमियो नरेह ।—बा दा

क्रि० प्र०—जाणो, होणो ।

२ बलैया ।

उ०—१ निस दीह सीस ऊपर रहो, महाराजा 'अजमाल' रै । भामणै तूझ भगतावछळ, कर प्रणाम डडवत करै ।—गजउद्धार

उ०—२ तेही लक सागा सो जोजना गिणै तूछरेल । मूछरेल अढांगा अयारा मेल मीच । डरावणो रूप रा दयता भागा दूछरेल । भामणै राम रा लागा पूछरेल मीच ।—र ज प्र

उ०—३ भडा जिका हू भामणां, केहा करू वखाण । पडियै सिर घड नह पडै, कर वाहे कैवाण ।—बा दा

रू० भे०—भांमणइ, भामणउ, भामणां, भामणा, भामी ।

भामनि, भामिनी, भामनू—देखो 'भांमिनी' (रू भे)

उ०—भामनि निज छोड भोग, परदारा मन का प्रयोग । जाणता नहि जुगति जोग, जन्म हार जाता ।—ऊ का

भामरि—देखो 'भावरि' (रू भे)

उ०—फिर भामरि दे सात, करै डडोत किताई । एक रूप अनमेख, पेख धारै प्रसनाई ।—रा रू

भामरो—देखो 'भ्रामर' (अल्पा, रू भे) (पि प्र.)

भामा, भामिण, भामिणि, भामिणी, भामिनी, भामीणि—सं० स्त्री० [स० भामिनी] १ स्त्री, औरत ।

उ०—१ आयो इळि वसत वधावण आई, पोइणि पत्र जळ एणि परि । आणद वणै काच मै आगणि, भांमिणि मोतिए थाळ भरि । —वेलि

उ०—२ नीकी कसवधी कसी कचुली, चचल लोचन झबकइ बीजली । कचन तनु गोरी हु नही सामली, भांमिनी मुझ थी नहि काइ भलि ।—स कु

उ०—३ जो तुझ सारीखो जुडै, भांमिण तिणि भरतार । तो राही नै कान्ह ज्यु, कर मेळै करतार ।—ढो मा

उ०—४ भामिणि भरतारह सरिसु, अहमति किम पडिहाइ । रयण जडी जइवांणही, तउ पहिरीजइ पाय ।—हीराणद सूरि

२ पत्नी, अर्द्धांगिनी ।

३ कुलटा स्त्री, व्यभिचारिणी ।

रू० भे०—भाम, भामण, भामणि, भांमणी, भांमनि, भांमनी ।

भांमी—देखो 'भामणौ' (रू भे)

उ०—१ घणनांमी जी, घणनांमी, निज जोर परां घणनामी । भुज लोक त्रिहूपत भामी, विरदैत वहै धुर बामी । जी घणनामी । —र ज प्र

उ०—२ गदा ले खडो लागडो अग्रगांमी, भले मात हिंगोळ हिंगोळ भांमी । मुणी मै जिका आदि अन्नादि माई, अवत्तार लै मांमडा धाम आई ।—मे म

उ०—३ विध रा रछक दीन रा वधव, सिव रा ध्यान निगम रा सार। जम रा जळध अतर रा जामी, मामी तो सिय रा भरतार।
—र रू

उ०—४ अण सख्या मेटे असुराणी, रावण कुभ आद खळ रेस। निडर किया सुर नर नागा नै, आचा तो मामी अवधेस।—र रू

मांय—स० स्त्री० [स० भूमि] दूरी, फासला।

उ०—१ ताहरा वळै जैतसीजी बोलिया, कहियो—'खीमाजी! इतरी भाय नही लाभो, जोधपुर नै समेळ विचै पावडी घणी छै।
—नैणसी

उ०—२ म्हे घणी अळगी भाय सूं वारा दरसणां वास्तै आई हा।
—फुलवाडी

रू० भे०—भा, मु, मुइ, भुंई, भुय, मुइ, भुइं, भुय, भूय, भूय।

मायको, मायखो—स० पु० [स० भूमि] १ दूरी, फासला। २ भूमि।

मायदाग—देखो 'भूमिदाग' (रू भे)

मारड—स० पु०—पक्षी विशेष।

माव—क्रि० वि०—लिए निमित्त।

मावइ—देखो 'भावै' (रू भे)

मांवण—देखो 'भावण' (रू भे)

मांवणो, माववो—देखो 'भावणो, भाववो' (रू भे)

मावणहार, हारो (हारी), मावणियो—वि०।

मावियोडो, मावियोडो, माव्योडो—भू० का० कृ०।

मावीजणो, मावीजवो—भाव वा०।

मांवर, मावरि, मावरी—स० स्त्री [स० भ्रमण] १ परिक्रमा, फेरी।
२ विवाह के समय वर-वधु द्वारा अग्नि के चारो ओर दिया जाने वाला चक्कर। फेरा।

उ०—१ मावरि मावरि भूप री, नरपति वदन निहार। रजत महामाणक रतन, आपै सीस उवारि।—रा रू

उ०—२ काई करा ओर सग मावर, म्हानै जग जजाळ। मीरा प्रभू गिरधरलाल सू, करी मगाई हाल।—मीरा

रू० भे०—भामरि

मावियोडो—देखो 'भावियोडो' (रू भे)
(स्त्री० मावियोडी)

मावै—देखो 'भावै' (रू भे)

उ०—माधो विना वसती उजार, सेरे भावै। एक समय मोतियन के धोके, हसा चुगत जुवार। सरवर छाड तलैया वैठे, पग लपट रही गार।—मीरा

माहरो—देखो 'भ्रूह' (रू भे)

उ०—गजा प्राहार हाथळा सिह छूटो 'कुमळेस' गाज, कायरां पराजे वोल माहरै करूप। असामो जोवार खेत उछाह रै साजि आयो, सूर रामसिंघ मामो राह रै सरूप।
—कुशलसिंह चापावत रो गीत

मा—स० पु०—१ आकाश।
२ प्रकाश।
३ मद। (एका ना मा)
४ उज्जवल। (एका. ना मा)
स० स्त्री०—५ लक्ष्मी, श्री। (एका ह ना मा, नां मा)
६ यश, कीर्ति। (एका)
७ रात, रात्रि। (एका)
८ चमक, कान्ति, प्रभा। (ना मा)

उ०—सचोडा उरा साकडा आमणोटा, मडै पीठ मचा जिसा गात मोटा। जिका गोळ पीडा उभै चाक जोडै, तिका चामरी लूम भा लूम तोडै।—व भा

९ मर्यादा। (एका)
१० किरण। (अ मा, डि को ना मा)
११ शोभा। (अ मा, ना मा ह ना मा,)
१२ विजली।
स० पु०—१३ कुटुम्ब मे अपने से बडे के लिए प्रयुक्त किया जाने वाला शब्द।

माअलोड—१ देखो 'भालोड' (रू भे)

उ०—छणकार खतग निछट छणै, रुग वज्जिय पख पनक रणै। फर फाटस नाह सवाह फडै, माअलोड वभार करत भडै।—पा प्र

२ देखो 'भालो' (अल्पा, रू भे)

माइ—स० स्त्री० [स० भाष्ट्र] १ भट्टी, भाड।

उ०—हू कुमलाणी कत विण, जळह विहूणी वेल। विणजारा री माइ जिउ, गया धुकती मेल्ह।—ढो मा

२ देखो 'भाई' (रू भे)

उ०—कटक सजे कीधो क्रमग, मो इम अप ममुभाइ। वाकड लग क्रमियो कवर, भूप पुगावण माइ।—व भा

माइगु—देखो 'भाग्य' (रू भे)

उ०—वडउ वडेरउ माइगु जागि, स्रावक नइ घरि चडइ प्रमाणि। करम ना जोइ एवटा फेर, धरम आडा छइ काटिआ तेर।
—चिहुगत चउपई

मइडो—देखो 'भाई' (अल्पा, रू भे)

उ०—सावण गेती ढोला थे कगीजी भवरजी माइडे करघोजी निनाण सिट्टा की रुत ढाया भवरजी परदेस मे जी, ओ जी म्हारा घणा कमाऊ उमराव थारी प्यारी नै पलक न आवडै जी।
—लो गी

माइप, माइपो—देखो 'भाईपो' (रू भे)

उ०—पछै नौ महिना मे माइपो लेय विट्ठळदास गयो।
—गोपाळदास गौड री वारता

माइसाइत—स० पु०—१ एक चौहटे का नाम। (सभा)
२ देखो 'मइसाइत' (रू भे)

भाई–स० पु० [सं० भ्रातृ] १ किसी जीवधारी के संबंध के विचार से वह नर प्राणी जो उसी के माता-पिता या पिता से उत्पन्न हुआ हो। (अ मा, ह ना मा)

उ०—अर मोकळ वंस रा अवतंस भाई माधोदास नूं बडे वेग खास रुक्को दे'र हजूर बुलायौ।—वं भा

२ एक ही परिवार या वंश की पीढ़ी में उत्पन्न दूसरा पुरुष।

उ०—१ अर चाचाउत्त धीरदेव नूं मारिया केडे तिकण रा भाई वेटा नूं मडणगढ रा सात ग्राम देर वेधम ववावदा सूधी चीतोड री थाणो जमाइ दीवौ।—वं भा

३ अपनी जाति या समाज का कोई व्यक्ति, बिरादरी।

उ०—१ लोक चुगल काने लगे, घू घू वोलयौ गेह। भाया सूं भेळप नहीं, विपत लिखी त्या वेह।—बां दा

उ०—२ सोनग के भाई-बंध, भतीजे दळ आगळ। सूरा तें सूरा, महापुरा से अदलू।—रा रू

४ मित्र, दोस्त।

उ०—डाफाचूक ब्हियोडा दें'त री उण वगत रगत देखनें राज-कंवर नें हसी आयगी। हंसतौ ई वौ वोल्यौ—म्हारा भाई इण वास्तै इत्तो दुख अर अचूंभौ करण री किसी बात, वरी रा वेम मे लडाभूम ब्हियोडी वा मूंडकी तौ आ म्हारैं पाखती ऊभी।

—फुलवाडी

५ पवार वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

६ नागाशाही साधुओं की एक शाखा जो प्राय गुरुद्वारों में ग्रंथ साहिब के पुजारी होते हैं।

७ बोल-चाल की भाषा मे छोटे या समवयस्क व्यक्ति के लिए प्रयुक्त सम्बोधनवाचक शब्द।

ज्यूं—अरे भाई! थोडौ अठी आइजे।

उ०—भवण कवण रौ हे रे भाई, जीव तिसा मरता रौ जाई। पाणी तौ हूं देत पिलाई, ठाव ढेढ री हे ठकुराई।—ऊ का

८ घरेलू पशुओं के लिए प्रयुक्त किया जाने वाला प्यार-सूचक शब्द।

उ०—खास ठगां रैं वारणैं आयनें वळदां री रासां ढीली करी। पुचकारतौ वोल्यौ—हौ, भाई हौ।—फुलवाडी

अव्य०—१ प्रशंसा सूचक शब्द, धन्य, वाह।

उ०—अकस्मात मिळियौ इदोखैं, नैण हीण इक नाई। दोनां हाथ जोड दुरगा नैं, दुरवळ दसा दिखाई। दया विचार आख दे दीनी, भले भले भाई भाई।—मे म

२ आश्चर्य सूचक शब्द।

३ घृणा द्योतक शब्द।

रू० भे०—भइ, भई, भयी, भाइ, भाउ, भाऊ, भाय, भायर।

अल्पा०—भइयौ, भाइडउ, भाईडौ, भाईयौ, भैयौ, भायौ।

भाईडउ, भाईडौ—देखो 'भाई' (अल्पा, रू भे)

उ०—१ तु ही रावत्त गोरल्ल, तु हीज दळ माहीं वडउ। तु ही रावत्त गोरल्ल, तु हीज मोरउ भाईडउ।—प च चौ

उ०—२ कडिया तूटोडा उण कुत्ता नैं देख्या दूजोडा रैं आसूं छळक आया। पूछ्यौ—भाईडा, थारी आ कांईं दुरगति व्ही।

—फुलवाडी

भाईचारौ–स० पु० [सं० भ्रातृ-चार] १ भाईपना, भ्रातृत्व, बन्धुत्व।

उ०—१ पीछे मुहतैंजी नूं कयौ आप म्हासूं पाघ करौ तद मुहतै जी भाईचारौ कियौ।—द. दा

उ०—२ मिनख रा सुख-दुख, हरख-विसाद, उणरी वेदना, उणरी चिंता अर उणरा सपना नैं आपरी वाणी मे वाचणा सूं ई मिनखी-चारौ वधै, भाईचारौ वधै। सगळी वसुधा अेक कुटुंब लगै।

—फुलवाडी

२ मित्रता, दोस्ताना।

भाईजी–स० पु०—१ पिता, वाप।

२ भाई, भ्राता।

रू० भे०—भा'जी, भायजी, भायोजी।

भाईडौ—देखो 'भाई' (अल्पा, रू भे)

भाईदूज–स० स्त्री० यौ० [सं० भ्रातृ+ द्वितिया] कार्तिक शुक्ला द्वितीया को मनाया जाने वाला त्यौंहार जिस दिन बहिनें अपने भाई को भोजन कराती हैं।

रू० भे०—भाईवीज, भायूवीज

भाईपाचम–स० स्त्री० यौ० [सं० भ्रातृ + पंचमी] भाद्रपद शुक्ला पंचमी जिस दिन बहिनें भाई के राखी बांधती है।

भाईपौ–स०पु० [सं० भ्रातृ+रा० प्र० पौ] १ एक ही पुरुष के वंशजों का समूह।

उ०—१ एक बाळक री वीर माता बाळक पुत्र रौ औ पराक्रम देख मन में हरख लाय कह रही छै—देखो सखी म्हारौ पती इण कंवर री वाप तौ माहेरौ लेनैं गयौ छै, अनैं इण री काकौ भाईपा मे मिळण मारू गयौ छै।—वी स. टी

उ०—२ भेळका करता आ वात दोहूं कानी देख भारी, सजं ना करारी सोभा भाइपं सुधार। गया वेहू फौजा राजी-वाजी व्हे विचार गाढा, दिया डेरा सोढा बागा अगजी दातार।

—वादरदांन धधवाडियौ

२ मित्रता, दोस्ती।

रू० भे०—भाईयप, भायप, भायपौ।

भाईवीज—देखो 'भाईदूज' (रू भे.)

भाईयप—देखो 'भाईपौ' (रू भे)

उ०—अर रजपूत सूं भाईयप करै। जिकै रजपूत राजा रा भाई-बंध हुवै, तीया सूं प्रीति करै।—नैणसी

भाईलौ—देखो 'भायलौ' (रू भे.)

उ०—भाइलि मेद देखाडीउ, सरोवरि करिउ विणास । एह पाणी नवि पीजीइ, असुरां हवि पूगी आस ।—का दे. प्र
(स्त्री० भाईली)

भाईयौ—देखो 'भाई' (अल्पा, रू भे)

भाईयौ—देखो 'भासियौ' (रू भे)

भाईवट, भाईवटौ—स० पु० [स० भ्रातृ+वण्ट] १ पैतृक सम्पत्ति का भाईयो द्वारा किया जाने वाला हिस्सा ।
२ उक्त हिस्से का वह भाग जो उत्तराधिकार मे प्राप्त हुआ हो ।
रू० भे०—भाईवट ।
अल्पा०—भाईवटो, भाईवटौ ।

भाईवद, भाईवध—स० पु० [हिं० भाई+वधु] १ भाई और मित्र-वधु आदि ।
२ अपनी जाति बिरादरी या नाते के ऐसे लोग जिनके साथ भाईयो का सा व्यवहार होता हो ।

भाईवट, भाईवटौ—देखो 'भाईवट' (रू भे)

भाउ, भाऊ—१ देखो 'भाई' (रू भे)
उ०—पचाली नउ भाउ पाच पच पचाल लेउ गिउ । एतइ केसवु राउ कुति मिलिवा आवीयउ ।—सालिभद्र सूरि
२ देखो 'बहूजी' (रू भे)
उ०—म्हारा काकोजी चरावै टोरडिया, म्हारा भाऊजी लावे छकियार । आज म्हारी वादळी वरसेगी ।—लो गी
३ देखो 'भाव' (रू भे)
उ०—१ वीत रौ दातार लखपति चीतजै सप्रवीत । राखणौ सग-जीत कीरति दाखणौ हद रीत । राज रौ सिरताज काइम लाज रौ रढराण । भाउ रौ दरिआउ देमल राउ रौ कुळभाण ।
—ल पि
उ०—२ जिहा सुद्ध आसय भूमि पटली, मोहियइ थिरवाय । तिहा ग्यान दरसन थभ अनुभव, दिव्य भाउ लसाय ।—वि कु

भाऊगरदी, भाऊगरदी—स० स्त्री०—लडाई झगडा ।
उ०—भाऊगरदी हुई जद पटेल माघजी रो पग कटांणौ । पठाण राणैखा आपरै घोडै चढाय लै निसरियो । पूनै गयां पछै पटेल वडो भाग पायो ।—बा दा ख्या

भाएलौ—देखो 'भायलौ' (रू भे)
उ०—कमालदी नै मूळराज इण विखा माहे भाएला हुवा था, पाघडी पलटी हुती ।—नैणसी

भाक—देखो 'भाख' (रू भे)
उ०—१ है बुकठीआ काकण हथौ, केवा काढण काज कडछै । भाक समू भळकता भाला, धण लै अरियां खाग घडछै ।
—मोहकमसिंघ राठौड रौ गीत
उ०—२ तरै तेजसी चाकरा नै हुकम कीयौ, जावो जोगेसर नै मेहेवै पोहचाय आवो । कोस पचास रौ आतरौ छै । चाकर मिनखा सूता ही जोगेसर नै महेवा री हाटा माहे मेल्हि आया । भाक फाटी । जोगेसर जागियौ ।—जगमाल मालावत री वात

भाकणौ भाकवौ—१ देखो 'भासणौ, भासवौ' (रू भे)
उ०—नखी जाणि भूला जरीतास नाही, मिळी तामसी राजसी व्रत्ति माही । प्रकासै किता लब दडा पताका, भलै डूगरा सीस ज्यू ताळ भाका ।—व भा
२ देखो 'भाखणौ, भाखवौ' (रू भे)
भाकणहार, हारौ (हारी), भाकणियौ—वि० ।
भाकिओडौ, भाकियोडौ, भाक्योडौ—भू० का० कृ० ।
भाकीजणौ, भाकीजवौ—भाव वा० ।

भाकर—देखो 'भाखर' (रू भे)

भाकरडौ, भाकरडौ भाकरियौ—देखो 'भाखर' (अल्पा, रू भे)

भाखरखड—स० पु०—मूज की तरह का एक प्रकार का घास, जिसकी रस्सी बनाकर चारपाई बुनने के काम मे लिया जाता है ।

भाकरी—स० स्त्री०—देखो 'भ खरी' (रू भे)
२ देखो 'भाखर' (अल्पा, रू भे)
उ०—लोवा-पोळ रै आगै पठौ जै-पोळ रै ऊपर हा । ६५ भरो भरा गजगीरी ताळा-कूची ऐ काम ऐ करायौ, पथर मीघोगीये री भाकरी सू मगाय नै ।—नैणसी

भाकल—देखो 'भाकलौ' (मह, रू. भे)

भाकलियौ—देखो 'भाकलौ' (अल्पा, रू भे)

भाकलौ—स० पु० [दे०] ऊट के बालो से बना बिछाने का वस्त्र विशेष ।
मह०—भाकल, भाखल ।
अल्पा०—भाकलियौ, भाखलियौ ।
रू० भे०—भाखलौ ।

भाकसी—देखो 'भाखसी' (रू भे)

भाकियोडौ—१ देखो 'भासियोडौ' (रू. भे)
२ देखो 'भाखियोडौ' (रू भे)
(स्त्री० भाकियोडी)

भाख [भास्=किरण] १ ऊषा काल ।
उ०—१ फोगल पछे घिटाळ, जगळा झीट झिटाळी । सूरज ऊगण वेळ, फडमला छवि निराळी । काटणनै किरसाण, वखत वळ भाखां लागै । वाथा नाखै वाळ, मिलै मोट्यारा मागै ।—दसदेव
उ०—२ उण तौ घोडी लेनै आघाहीज खडीया । तितरै मै भाख पाटी साह नु नीद आई सु जागै नही ।—चौबोली
क्रि० प्र०—फाटणौ ।
मुहा०—भाख पला नाखणा=सूर्योदय होना, रात्रि मिटना, अधकार दूर होना ।
रू० भे०—भाक, भाखा, भोग ।

२ राजस्थानी (डिंगळ) का एक छंद विशेष जिसके प्रत्येक चरण के अंत में एक गुरु लघु सहित चौदह मात्राएं होती हैं तथा जिसके चारों चरणों का तुकांत मिलाया जाता है।

रू० भे०—भाक।

भ० स्त्री० [सभाप्] ३ देखो 'भासा' (रू भे) (ह ना मा) सरस्वती।

४ देखो 'भाखण' (रू भे)

उ०—चिंता सागर झूलती, नजर धरणी पर राख। मुख विलखे जोवे नहीं, किण ही सूं नहिं भाख।—जयवाणी

भाखड़ी-स० स्त्री०—एक प्रकार का डिंगल गीत।

वि० वि०—यह एक मात्रिक छंद गीत है। इस (गीत) में प्रथम ऊपर चार और पाच मात्राओं की गति पर 'जी' शब्द रख कर आगे १४ मात्रा और अन्त में गुरु लघु रख कर आकणी अर्थात् टेर रखी जाती है, जो गीत के हर द्वाले के उपरान्त बोली जाती है। इसी प्रकार इसके २५-२५ मात्रा के दो द्वाले बनाए जाते हैं। इसके उपरान्त २६-२६ मात्राओं के दो द्वालों वाला वैताल छन्द ऊपर के द्वालों के प्रसग के सिंहावलोकन पर रखा जाता है। वैताल छन्द में अन्त में गुरु लघु रहते हैं।

रू० भे०—भाखरी।

२ देखो भाखर (अल्पा रू भे)

भाखण—देखो 'भासण' (रू भे)

उ०—'क्यों इया थोथै अळूजाडा में पडे है? थारै बाप'र काकै थोडी मैं'नत करी ही। छापा काढिया, भाखण दिया। पण टकार ई को सजी नी।'—वरसगाठ

भाखणौ-वि० [स० भाप्] (स्त्री० भाखणी) बोलने वाला, कहने वाला।

भाखणौ, भाखबौ-क्रि० स० [स० भाप्] १ कहना, बोलना।

उ०—१ भाखियौ तिका ही वाता, निभायी वेहूंवै भडा, फाडेजी अनडा घडा गजा घडा फेर। लोहडा बजाय घडा 'कुसलै' जोधाण लियौ, मारी धरा राज कीधौ पडै पछै 'सेर'।

—सेरसिंह मेडतिया रौ गीत

उ०—२ कोप करण नूं काळका, सरसत करण सलाह। पूरण अन अनपूरणा, भाखे लोक भलाह।—बा दा

२ उच्चारण करना।

उ०—भागल भारथ भीड में, वाणी महं विसरत। मुख वापूडो मावडी, भाईडो भाखत।—बां दा

३ वर्णन करना।

उ०—और अधम तारे बहुतेरे, भाखत सत सुजान। कुबजा नीच भीलडी तारी, जांणै सकळ जहान।—मीरा

४ प्रकट करना, प्रकाशित करना।

उ०—१ दाखियौ प्रभू कुण चित देव, भाखियौ सुरा दुस राण भेव। अइलोक कीध रामण सत्रास, साहाय करौ हरि जग निवास।

—सू प्र

उ०—२ देवी नारद रूप तैं प्रस्न नाख्या, देवी हम रै रूप तत ग्यान भाख्या।—देवि

५ देखो 'भासणौ, भासबौ' (रू भे)

भाखणहार, हारौ (हारी) भाखणियौ—वि०।

भाखिओडौ, भाखियोडौ, भाख्योडौ—भू० का० कृ०।

भाखीजणौ, भाखीजबौ—कर्म वा०।

भकणौ, भकबौ, भक्खणौ, भक्खबौ, भखणौ, भखबौ, भख्खणौ, भख्खबौ, माखवणौ, माखवबौ—रू० भे०।

भाखर-स० पु०—१ पहाड, पर्वत। (ह ना मा अ. मा, ना मा)

उ०—हाक डाक ग्रवक धमहमिया, भाखर विकट असट कुळ भ्रमिया। कमधज दळ हालता कराळा, दहसत पडै दसै द्रग पाळां।

—सू प्र

रू० भे०—भाकर।

अल्पा०—भक्खरी, भखरी, भाकरडी, भाकरियौ, भाकरी, भाखरडी, भाखरि, भाखरियौ।

२ देखो 'भाखरोत' (रू भे)

उ०—१ जोधा 'चापा' अखा', भला भगि' डूगर, भाखर 'माडण' 'मडळा' 'करन' वरण फौजां वीरव्वर।—गु रू व.

उ०—२ आसरि भार भाखरा आवै, घरि मोटौ औ विरद घरि। राजा राव वागा रणतूरा, सूरा' 'मदना' तणै सिरि।

—मदनसिं सूरसिंह गौड रौ गीत

रू० भे०—भक्खर, भाकर।

अल्पा०—भाकरडौ, भाकरियौ।

भाखरकेर-स० पु० [देशज] केर से मिलता जुलता एक वृक्ष जिसके पत्ते नींबू जैसे मुलायम, काटा केर जैसा, फल केर जैसा किन्तु आकार में बडा होता है। (जालोरगढ)

भाखरखड-स० पु० [देशज] अरावली पर्वत के पास पाया जाने वाला एक प्रकार का घास जिसके रेसे की पतली रस्सिया बनती हैं तथा जो खाट बुनने के काम आती है।

भाखरगूंदी-स० स्त्री०—एक प्रकार का वृक्ष विशेष। (जालोरगढ़)

भाखरांनरेस-सं० पु० [दे० भाखर+स० नरेश] सिंह, व्याघ्र।

(डि को)

भाखरि—१ देखो 'भाखर' (अल्पा रू भे) (१)

२ देखो 'भक्खरी' (रू भे)

भाखरियौ—देखो 'भाखर' (अल्पा, रू भे.)

उ०—भाखरिया हरिया हुआ, पोखर भरिया पास, तरवरिया प्रफुलित किया, नीर निझरिया खास।—अज्ञात

भाखरी–स० पु०—१ देखो 'भक्खरी' (रू. भे)
२ देखो 'भाखर' (अल्पा , रू भे)

भाखरोत–स० पु०—१ गहलोत वश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।
२ राठौड वश की एक उपशाखा या इस शाखा का व्यक्ति।
३ गोड वश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

भाखळ—देखो 'वाखळ' (रू भे)

भाखल—देखो 'भाकलो' (मह , रू भे)

भाखलियो—देखो 'भाकलो' (अल्पा , रू भे)
उ०—खत्था खेसलिया भाखलिया खावै, वेभड दामोदर चामोदर वावै। मुखिया मनमोहण दोहण घर मेढी, गोढै ढेरो व्है खूणी मे गेढी।—ऊ का

भाखलो—देखो 'भाकलो' (रू भे)

भाखवणो, भाखवबो—देखो 'भाखणो, भाखवो' (रू भे)
उ०—कायथ त्याग विचारे काया, केसरिसिंघ राम का जाया। इण विध अरज दई लिख आगै, भाखवहू तिण थी भ्रम भागै।
—रा रू

भाखवणहार, हारो (हारी), भाखवणियो—वि०।
भाखविश्रोडो, भाखवियोडो भाखव्योडो—भू० का० कृ०।
भाखवीजणो भाखवीजवो—कर्म वा०।

भाखवियोडो—देखो 'भाखियोडो' (रू भे)
(स्त्री० भाखवियोडी)

भाखसी—१ कैदियो को सजा देने हेतु भूमितल मे वनाई हुई कोठरी। (प्राचीन)
२ कारागार, जेल।
उ०—१ कामण खोडो कील सुत, पौरायत परवार। जन 'तुरछी' ग्रह भाखसी, मोह के जडे किमाड।—तुरछीदास
उ०—२ नाई होय करै अग मरदन, चाकर होय निवारै चीत। विरद निहार भाखसी वैठै, मूरत छिब पलटै मावीत।—भगतमाळ
रू०—भे०—भाकसी।

भाखा—देखो 'भाख' (रू भे) (शेखावाटी)

भाखा—देखो 'भासा' (रू भे) (अ मा)
उ०—वरणास्रम ध्रम मरजाद वेद, भाखा खट नवरस अरथ भेद। आखरा समद थागण अथाग, रूगर्गा चत्र छतीस राग।
—वि स

भाखाखोणो–वि०—अधभूखा।
उ०—लाडी लाखीणी घारा घृघाती, पीवर ऊवारी पारा पय पाती। भाखाखीणा भड एवड ले आता, धाया धीणा रा गोधन रा घाता।—ऊ का

भाखारी—देखो 'भखारी' (रू भे)

भाखावटो—देखो 'भखावटो' (रू भे)

भाखियोडो–भू० का० कृ०—१ कहा हुआ, बोला हुआ. २ उच्चारण किया हुआ ३ वर्णन किया हुआ ४ प्रकट किया हुआ, प्रकाशित किया हुआ
(स्त्री० भाखियोडी)

भाखी–स० स्त्री० [स० भाषणम्] वाणी, वोली।

भाखोटो—देखो 'भखावटो' (रू भे)

भाख्या—देखो 'भासा' (रू भे)
उ०—किम आया किसउ ताइ कारिज, कहउ नही मेल्हिया किण। मनुख्य तणी भाख्या वोलै मुख, जीव जिके वन रहइ जिण।
—महादेव पारवती री वेलि

भाग–स० पु० [स० भाग] १ किसी समूची वस्तु का प्रत्येक हिस्सा, खड, टुकडा।
उ०—रच्यो फेर प्रासाद वाहादरा रो, घनो भाग भू-भाग माठी घरा रो। हुवो न इसो थान न आन हूणों, दिपै इदरा मदिरा हूत दूणों।—मे म
२ किसी समग्र वस्तु का कोई अश। (पोर्शन)
ज्यू—टाग का निचला भाग, मकान का अगला भाग इत्यादि।
३ गणित की एक क्रिया जिससे किसी वस्तु को वरावर कई खण्डो मे वाटा जा सकता है।
४ देखो 'भाग्य' (रू भे)
उ०—१ मिळै कठै मनवार किनारो झेलो काठो। ओ तो महा अभाग, भाग मे लो मत भाठो।—ऊ का
उ०—२ जाळ टळै मन क्रम गळै, निरमळ पावै देह। भाग हुवै तो भागवत, साभळजे स्रवणेह।—ह र
उ०—३ सेठ ऊपरला मन सू जवाव दियो—धणी सखरी वात। घर मे सांतरी लोतरवाळी वीनणियां भाग सू मिळै।—फुलवाडी
मुहा०—भाग फूटणो=असफलता मिलना, हानि होना। २ भाग खुलणो, भाग जागणो=सफलता मिलना, लाभ होना।
५ देखो 'भाख' (१)।
उ०—दिनूगा भाग फाटया पै'ली पै'ली जगळ मे लकडिया वाढण सारू जावतो, मथारै दिन चढया सैर मे मारो वेचने पाछो वा इज पगा वळतो।—फुलवाडी

भागणो–वि० (स्त्री० भागणी) १ भागने वाला, पलायनवादी।
उ०—राज, रखै तो च्यार रख, मत राखी चाळीस। अै चाळीसू भागणा, अै च्यारू चाळीस।—अज्ञात
२ कायर, डरपोक।
रू० भे०—भाजणो।

भागणो, भागवो–क्रि० अ०—१ दौडना, भागना।
उ०—कळेजे म्हारे वासुरी री धुन लागी। हू अपने ग्रह काज करत रही, स्रवण सुणत उठ भागी।—मीरा

२ युद्ध क्षेत्र से कायरता दिखाकर भाग जाना, पीछे हट जाना।

उ०—१ सुणी खबर जवनापत सारी, वळ धेरे जाळोर विहारी। लडवा चाव कमधजा लागो, भूप मवाळग चोडे भागो।—रा रू

उ०—२ घिन वे रावत धीरपे, भागा रावतियाह। धारा अणिया मे घसे, चख मुख चोळ कियाह।—वा दा

उ०—३ मुह न दियें पर मारियें, भागा न करें घाव। सादूळो साचा गुणा, वेह कियो वनराव।—वा दा

४ चुभना, धसना।

उ०—अेकर वो घोडा री असवारी करण सारू उणनें लारें दोडियौ तो उणरें डावा पग में कांटो भागग्यो।—फुलवाडी

५ मिटना, नाश होना।

उ०—१ दिन ऊगें नित देखणो, दाता रो दीदार। भागें भूख चळेस भय, 'वक' न लागें वार।—वा दा

उ०—२ जो महि असह मेछ कुळ जागें, भवि भवि जिण कुळ सू भय भागें। ततपर धम्म मरम प्रज तारण, सुरा मिहायक असुर सघारण।—रा रू

उ०—३ कायथ त्याग विचारे काया, केसरिसिंघ राम का जाया। इण विध अरज दई लिख आगें, भाखव हू तिण थी भ्रम भागें।

—रा रू

मुहा०—भूख भागणी=सम्पन्न होना।

६ चल-विचल होना।

उ०—आडवळे आघोफरइ, एवड माहे असन्न। तिण अजाण ढोलइ तणइ, मूरख भागइ मन्न।—ढो मा

७ विभक्त करना, हिस्से करना।

८ व्यतीत होना, खर्च होना।

उ०—वागो थाळ जनम री वेळा, भागो दिन गमगळ भेळा। वाजण ससुर वधावा वाजे, नरपत मगण जणा निवाजे।—रा रू

९ नष्ट होना, विध्वस होना।

भागणहार, हारो (हारी), भागणियो—वि०।

भागिओडो, भागियोडो, भाग्योडो—भू० का० कृ०।

भागीजणो, भागीजबो—भाव वा०।

भगणो भगबो, भग्गणो, भग्गबो, भजणो, भजबो, भाजणो, भाजबो, भाज्जणो, भाज्जबो, वग्गणो, वग्गबो, वागणो वागवो—रू० भे०।

भागदौड़-स० स्त्री० [भाग+दौड़] १ प्रयत्न, कोशिश।

२ जल्दबाजी।

रू० भे०—भागादौड़, भाजदौड, भाजादौड़।

भागधाम-स० पु०—ललाट, भाल। (अ मा)

भागधारी-वि०—१ हिस्सेदार, भागीदार।

२ देखो 'भाग्यधारी' (रू भे)

भागधेय-सं० पु०—धर्म। (ह ना मा)

भागफळ-स० पु० [स० भाग+फलम्] १ गणित मे भाज्य को भाजक से भाग देने पर प्राप्त होने वाली सख्या।

२ प्रारब्ध का फल।

भागबळी—देखो 'भाग्यबळी' (रू भे)

उ०—१ राणो सागो रायमल रो वडो ठाकुर, भागबळी हुवो।—नैणसी

उ०—२ भागबळी श्रो बाघ है, मगळा गुण को खान। वतन आपरो लेय कर, पायो बहु सन्मान।—ठाकुर जयतसी री वारता

भागभवरी-स० स्त्री०—घोडे के ललाट की भौंरी जो शुभ मानी जाती है।

उ०—लिलाड रै विचाळै भागभवरी अर गोडा रै मायली वाजू खूटारोप।—फुलवाडी

भागरा-स० पु०—श्रीराग का पुत्र माना जाने वाला एक सकर राग।

भागरोकोट-वि० [स० भाग्य+कोट] भाग्यशाली।

उ०—दे अणों मान पाश्रा वडा दान मेर प्रमाण मोटो अनमान। राजवी राज राजेसरा रूप भागरोकोट 'भाराहरो' भूप।—ल पि

भागळ, भागल-वि०—युद्ध क्षेत्र से भागने वाला, डरपोक, कायर।

उ०—१ कोई वीर स्त्री भागल पती नैं कहै छै—हे कथ! आप भला भाग नै जीवता घर आया, अबै म्हारै वेस धारण करावो, अबै म्हनै आ चूडिया सू लाज आवै छै, सो हू तो हमैं चूडिया पेलै जनम मेंट सू।—वी स टी

उ०—२ आसू नाखै आख सू, कर हूता किरमाळ। भागळ नंह नाखै भिडज, असहा सिर आताळ।—वा दा

२ व्रत को तोडने वाला।

उ०—सागी सतहीणा है जतहीणा, मत हीणां भागदा है। पागल सिस पाया दागल दाया, भागल सिर भागदा है।—ऊ का

४ अगला, परिघ।

भागळखेल—देखो 'भगळखेल' (रू. भे)

उ०—सिलवध घाट उभेलत सेल, खेलै नट जाणिक भागळखेल। घमघम चोट करै घमचाळ, वगाळ उलाळ रगत्र ववाळ।—सू प्र.

भागवत-वि० [स० भाग्यवत्] (स्त्री० भागवती) भाग्यशाली, खुश-किस्मत वाला।

उ०—१ मगरथ सगलइ कामइ रे, तास भ्रात डुगरसी नामइ रे। भागवत सगलइ कामइ रे, मन मोटइ लखमी कात।—प च चौ.

उ०—२ अह नाम सोय प्रभा धाम एता, जिकै तात विस्वैकमा कीध जेता। हिमानी सखा माहरैं एक हूती, अठाहूत मो उद्धरी भागवती।—सू प्र

२ देखो 'भागवत' (रू भे) (ह ना मा)

उ०—उठै ईमफा आसफा नाम आखै, दुव कालिका चडिका ग्रेह दाखै। कतेवा कलम्मा उचारै कुरांणा, पढै भारथा भागवता पुराणा।—सू प्र

भागवत-स० पु० [स० भागवत] १ कृष्ण के प्रेम और भक्ति-रस की

कथाओ का एक पुराण जिसकी गणना अष्टादश पुराण मे की जाती है।

उ०—१ तद पूतळी कही-स्रीमद्भागवत पुराण माही पचम स्कध माही स्री महादेव रा पुत्र स्वामी कारतिक भुवनेस्वरी देवी रो आराधन कियो।—सिघासण बत्तीसी

उ०—२ जाळ टळै मन क्रम गळै, निरमळ धारै देह। भाग हुवै तो भागवत सांभळजै सवरोह।—ह र

३ सम्पूर्ण कथा या वृत्तान्त।

उ०—मगळी री सगळी भागवत वाच्या काई मतळब ? वा बीच मे ई ठमगी।—फुलवाडी

स० वि० [स० भगवत] ३ विष्णु भगवान सबधी, विष्णु सबधी। ४ तेरह की सख्या। (डिं को)

रू० भे०—भागवत, भागोत, भागौत।

भागवतगीता—देखो 'भगवदगीता' (रू भे)

भागवती—स० स्त्री० [स० भागवती] गोल दानो की एक प्रकार की कठी जिसे प्राय वैष्णव लोग गले मे पहनते हैं।

भागवान—देखो 'भाग्यवान' (रू भे)

भागवानी—स स्त्री० [स० भाग्यवत+ई] सम्पन्नता, धनाढ्यता।

उ०—कदेही म्हूं भी आ दाई भागवानी मे टोरा थर टिल्ला लगावती।—दसदोख

भागसाळी—देखो 'भाग्यसाळी' (रू भे)

भागहार—देखो 'भाग' (७) (रू भे)

भागहींण—देखो भाग्यहीण।

उ०—जिणथी दो ही वार लडाई मे पराजय पाई भागै प्रसाद रै अधीन भागहींण जवना रै अधिराज नासिरुद्दीन अपरनाम महमूद तीजी वार साम्हैं चलाई रण रो रस चाखण रो मनोरथ भी न जाणियो।—व भा

रू० भे०—भाग्यहीण।

भागाणी—वि०—भागने वाला, कायर।

उ०—ममपी आधी माडिया, 'धाधल' सुतन सधीर। समझ गयो जद मायरो, भागाणी हुय भीर।—पा प्र

भागादौड—देखो 'भागदौड' (रू भे)

उ०—पाचम हुया व्यतीत, टिकै न टीब ठिकाणै। द्रुत-गत भागादौड, हेड रमवा हळमाणै।—दसदेव

भागि—देखो 'भाग्य' (रू भे)

उ०—नीपणा दे लाख 'लाखो', राखि जाणै नामो। सात्रवां री पाठ कढै, गाढधारी सामो। आपरो ओसाप मोटो, भागि मोटो एहो। जादवा रो रूप भूपां, भूप जेहे जेहो।—ल पि

भागियोडो—भू० का० कृ०—१ दौडा हुआ, भागा हुआ।

२ युद्ध क्षेत्र से कायरता दिखाकर भागा हुआ, पीछे हटा हुआ ३ खण्ड-खण्ड हुआ, टूटा हुआ ४ चुभा हुआ, गडा हुआ. ५ क्षुधा शान्त हुवा हुआ ६ चल-विचल हुवा हुआ

७ देखो 'भागियोडो' (रू भे)

(स्त्री० भागियोडी)

भागिलो—वि०—भागने वाला, डरपोक, कायर।

भागी—स० पु० [स० भागिन्] (स्त्री भागण, भागणि, भागणी, भागिण भागिणी) १ भाग्यशाली, खुश-किस्मत।

उ०—१ खस रा टाटा घेरिया, धृडा ओरा जाय। भागी मिनख न भेटिया, लूआ बिरथा लाय।—लू

उ०—२ कर नवल किसोरी सघर सोरी, मरियादा मेटदा है, त्रिमफळ वैरागी त्रिभवन त्यागी, भागी भुज भेटदा है।—ऊ का

उ०—४ मद भागणि मो सारसी, राज वैलै ली राय। कोडकपुर की कामणी, रखैली वी समाय।—पना

उ०—५ अराहे मराहे घणा अव्वलोके, रुधो नाग लोका तणो राजलोके। इसी भागणी कोण जे कूख जायो, हिंडोरो घलायो घरे हुल्लरायो।—नागदमण

२ हिस्सेदार, भागीदार।

३ अधिकारी, हकदार।

उ०—बाप न्याव करै सो कबूल। बाप रो कैणो लोपै वो इण रो भागी।—फुलवाडी

भागीरथ—देखो 'भगीरथ' (रू भे)

उ०—वनचर गण लीधा वहे, भागीरथ रै राह। स्री सीता भरतार सम, भागीरथी प्रवाह।—वा दा

भागीरथी—स० स्त्री० [स०] गगा नदी।

उ०—रटै भागीरथी सुणो लहरीरवण, लाल रग रुचिर चो नीर लागो। कळह तटि गवड है गै भडा कचरिया, भिडै पूरब तणो साह भागो।—राजा अनिरुद्धसिंह गौड रो गीत

मुहा०—भागीरथी गगा होणो=कठिन कार्य, दुष्कर

भागू—वि० भागने वाला, डरपोक, कायर।

भागोडो—देखो 'भागियोडो' (रू भे)

उ०—पग मे काटो भागोडो है, इण सू उठीजै तो कोनी।

—फुलवाडी

भागोटो—देखो 'भखावटो (रू भे)

भागोत—देखो 'भागवत' (रू भे)

भागो—वि० [स० भग्न] १ टूटा हुआ, भग्न।

उ०—ठाकुरसिंह भागै-मन उदास थक्यो निसास गेरतो जावै छै।

—डाढाळा सूर री बात

मुहा०—भागो मन=निराश, व्यथित।

भागौत—देखो 'भागवत' (रू भे)।

उ०—कहा राम कहा लखण नाम रहिया रामायण। कहा क्रस्ण

वळदेव प्रगट भागोत पुरायण ।

—महाराणा राजसिंघ जगतसिंघोत री गीत

भाग्डिदि–क्रि० वि०—तत्काल ।

उ०—भाग्डिदि भुइ लुटै खिण छूटै वलि अम्भटै । प्रगट भट ऊठन्नै जिम पतगा । तिहा करै घाव देइ ओट वड वेग सू, मरद न मुडै ज्जुडै जिम मतगा ।—वि कु

भाग्य–स० पु० [स० भाग्य] १ प्रारब्ध, किस्मत ।

२ सौभाग्य ।

३ हर्ष ।

४ समृद्ध ।

रू० भे०—भाग, भागि ।

भाग्यचक्र–स० पु० [स० भाग्य+चक्र] भाग्य, तकदीर ।

२ अदृष्ट ।

रू० भे०—भागचक्र ।

भाग्यवळ–स० पु० [स० भाग्य+वल] १ भाग्य, तकदीर ।

२ अदृष्ट ।

रू० भे०—भागवळ ।

भाग्यवळी–वि० [स० भाग्यवल+ई] भाग्यशाली ।

रू० भे०—भागवळी ।

भाग्यभाव–स० पु०—फलित ज्योतिष के अनुसार जन्मकुडली मे जन्म-लग्न से नवा स्थान जिससे मनुष्य के भाग्य के शुभाशुभ के बारे मे विचार किया जाता है ।

भाग्यवान–वि० [स० भाग्यवत्] १ भाग्यवान् खुशकिस्मत ।

२ समृद्धवान, हराभरा ।

३ अमीर, धनाढ्य ।

रू० भे०—भागवान ।

भाग्यसाळी–वि० [स० भाग्यशाली] १ (स्त्री० भागसाळण) भाग्यवान ।

२ सपन्न, धनाढ्य ।

३ खुशकिस्मत ।

भाग्यहीण—अभागा, हतभाग्य ।

रू० भे०—भागहीण ।

भाडगनेर–स० पु०—१ भटनेर शहर का नामान्तर जिसे आजकल हनुमानगढ कहते हैं । यह घग्घर (प्राचीन सरस्वती) नदी के किनारे पर स्थित है ।

उ०—दला नाम चडियो दुझल, रज गैण ढकाणी । देखण भाडगनेर दिस, पथ कीध पयाणी ।—वी मा

२ गगानगर जिले के हनुमानगढ शहर मे स्थित एक प्राचीन किला, जिसका पुराना नाम भटनेर है ।

३ चूरू जिले के अन्तर्गत तारानगर तहसील मे एक प्राचीन नगर भादरा जहा सोनगरे चौहानो का राज्य था ।

रू० भे०—भटनेर, भरथनेर ।

भाग्याणी–वि०—भाग्यशाली ।

उ०—अतरै आगी आय उभी रही ताहरा यक्ष नाहरी नू कहै, 'सावास, तै भलो सोस कीयो ।' सु यक्ष हमै नाहरी नू कहै, मागै सु देउ । तू साची हुई ।' ताहरा भाग्याणी कहै, 'यक्ष, तू पाप जाणै अथवा धरम जाणै । मै तो साच कीयो ।

—नाहरी हरणी धरमेकै वाबत सावतसी री वात

भाडग्या–स० स्त्री—सोलकी वश की एक शाखा ।

भाड–स० पु० [स० भ्राष्ट्र] १ अन्न के दाने भूनने की भडभूजो की भट्टी या वडा चूल्हा ।

उ०—झगा पाहड री वाता कवला झाड री सका, अमडा फाड री कना भाड री भभक । हदणा पाड री घाड धाड री 'वळूत' हाता, ताड आनाड री वजै राड री तुपक ।

—महाराज वळूतसिंघ जी रो गीत

२ लाक्षणिक अर्थ मे वह स्थान जहा सब कुछ नष्ट हो जाता है ।

मुहा०—भाडझोकणो=निठल्ला वैठा रहना । भाड फोडणो=महान् कार्य करना । भाड मे जाणो=वर्वाद होना ।

देखो 'भट्टी' ।

भाडेती–स० पु० [स० भाट+ वृत्ति] १ किराया देने वाला व्यक्ति, किरायेदार ।

२ भाडे की वृति करने वाला, किराया लेने वाला ।

भाडो–स० पु० [स० भाटक] किसी दूसरे व्यक्ति की सेवाओ, वस्तु आदि के उपयोग के वदले मे दिया जाने वाला धन ।

उ०—१ जग पड वचन कहै जोधपुरी, पता वचन नह खता पर । दहवारी काकल हुवै तण दिन, भाडो अस चो लीध भर ।—वा दा

उ०—२ म्हारो कैणो मानो, गगाजी पाळा मत जावो, नामी वळदा री कोई गाडी भाडै करलो ।—फुलवाडी

भाच–स० स्त्री०—एक प्रकार की लाग (कर) जो जागीरदार द्वारा गाव वालो से वसूल किया जाता था ।

रू० भे०—वाछ ।

भाचक्र–स० पु०—काति-वृत्त ।

भाचर, भाचरियो, भाचरो–स० पु०—१ सूअर का छोटा वच्चा ।

उ०—वै च्यारू भाचरिया म्हनै कदास इणी सूवर रा दीसै ।

—फुलवाडी

रू० भे०—भूचर ।

२ एरण, जिस पर लोहार लोहा गर्म करके पीटता है ।

उ०—तणै भ्रम 'ऊद' असवार चेटक तणै, घणै भगरूर वहरार घटकी । आचरै जोर मिरजा तणै आछटी, भाचरै पाचरै वीज भटकी ।—गोरधनजी चारण

भाछ—देखो 'भाच' (रू भे)

भाजक–स० पु० [स०] १ गणित मे वह सख्या जिसका किसी सख्या मे भाग दिया जाता है।
वि०—२ विभाजन करने वाला, वाटने वाला।

भाजकास–स० पु० [स० भाजक+अश] गणित में किसी राशि को भाग देने पर शेष बचने वाली सख्या।

भाजड–स० पु०—१ भागने की क्रिया या भाव।
उ०—भाजड मे भीत सकट रै हेठै सपत्नीक सूता जोइया दला नू जाइ हणियो।—व भा

भाजण–स० पु०—वर्तन, पात्र।
उ०—अमरित को भाजण निकट, भरयो वरयो नही पीन। यू देख्या अमर न भया, परस्या विना प्रवीण।—प्रवीण
२ भागने की क्रिया या भाव।
वि०—भागने वाला, कायर, डरपोक।

भाजणो–वि०—देखो 'भागणो' (रू भे)

भाजणौ, भाजबौ—१ देखो 'भागणौ, भागवौ' (रू भे)
उ०—१ वगतर सहित अछळइ वरगा, धीव पडइ नेजाळ धड। भाजइ अगिट अरी चा भिडता, धाय रमाडइ ति विध घड।
—महादेव पारवती री वेलि
उ०—२ सूर भरोसै आपरै, आप भरोसै सीह। भिड दहु ऐ भाजै नही, नही मरण रो बीह।—वां दा
उ०—३ भयचक हुवौ, अनेक महाभड, दिख री भाज गई भकभूर। अयो (आयो) दिख रइ घट ऊपर, केचा मागण वडउ करूर।—महादेव पारवती री वेलि
उ०—४ जवक सवद नचीत कर, डर कर तू मत भाज। सादूळो खीजै सुणै, जळहर हदो गाज।—वा दा
उ०—५ साजी बाजी सुरग सिधायो, मिळे दान खग दुवां मद। भेट हुवो नह जको भाजसी, कूरम घोको मूफ कद।—बा दा
उ०—६ भाज गई चिंता भडा, घडा कठ्ठे जग। नामा रक्खण देख खळ, साम्हा किया तुरग।—रा रू
उ०—७ खुधा न भाजै पाणिया, अखा न भाजै अन्न। मुकत नही हरि नाव विन, मानव साचै मन्न।—ह र
भाजणहार, हारो (हारी), भाजणियो—वि०।
भाजाडणो, भाजाडबो, भाजाणो, भाजाबो, भाजावणो, भाजाववो
—प्रे० रू०।
भाजिओडो, भाजियोडो, भाज्योडो—भू० का० कृ०।
भाजीजणो, भाजीजवो—भाव वा०।

भाजा-दौड़ी—देखो 'भागदोड' (रू भे.)
उ०—खेडै री लूकडी बाघ नै डरावै, पण ठठारा री बिल्ली खडकै सू कद डरै, अरजन रै वेलीडा घणी भाजा दौडी करी, पण मामलै री जीत तो भुगानै री साचोट मे ही रैयी।—दसदोख

भा'जी—देखो 'भाईजी' (रू भे)

भाजी–स० स्त्री०—१ तरकारी, सब्जी।
उ०—आदर करै अपार, तो भोजन भाजी भली। आणै मन अहकार, कडवा घेवर 'किसनिया।—अज्ञात
२ मास।

भाज्जणो—देखो 'भागणो' (रू भे)

भाज्जणो, भाज्जबो—देखो 'भागणो, भागवो' (रू भे)
भाज्जणहार, हारो (हारी), भाज्जणियो—वि०।
भाज्जिओडो, भाज्जियोडो, भाज्ज्योडो—भू० का० कृ०।
भाज्जीजणो, भाज्जीजवो—भाव वा०।

भाज्जियोडो—देखो 'भागियोडो' (रू भे)
(स्त्री० भाज्जियोडी)

भाज्य–स० पु० [स०] वह सख्या जिसमें किसी सख्या का भाग दिया जाय।

भाट–स० पु० [स० भट्ट] १ वश-वृत्त लिखने वाली एक जाति विशेष या इस जाति का व्यक्ति। (मा म)
(स्त्री० भाटण, भाटणी)
रू० भे०—भट।

भाटक–स० पु० [स०] १ किराया, भाडा।
[अनु०] २ शस्त्र विशेष से प्रहार करते समय उत्पन्न ध्वनि।
उ०—खडग तणा खाटक, खेडा तणा भाटक। तरूयारि तणा भाटक। धुनुस तणा धोकार, अणी तणा अगार। वाण तणी व्रस्टि। इसी सूरा राउत तणी सौरयव्रत्ति।—का दे प्र

भाटकणो, भाटकबो–क्रि० स०—क्रोध मे आग-बबूला होना।
भाटकणहार, हारो (हारी), भाटकणियो—वि०।
भाटकिओडो, भाटकियोडो, भाटक्योडो—भू० का० कृ०।
भाटकीजणो, भाटकीजबो—भाव वा०।

भाटकळ—देखो 'भटकळ' (रू भे)
उ०—दीपै भुजाई देव मै कळा, राणी राणि रावताळा। मडां हुवै भाटकळा आठो पुहर।—गु रू व

भाटकियोड़ो–भू० का० कृ०—क्रोध मे आग बबूला हुवा हुआ
(स्त्री० भाटकियोडी)

भाटखळ–स० पु०—भीड, समूह, जमघट।

भाटभाखा, भाटभायखा–स० स्त्री० [स० भट्ट+भाषा] पिंगल भाषा।

भाटमोट–क्रि० वि० [अनु०] बहुत, लगातार, तडाभडी।
उ०—महताबा छीकादार अरु चोरमार। जिका पर आदमी तईनात पयादा अर असवार। गोफणियारी देणी च्यारू तरफा सू भाटमोट जिकारै बीच-बीच पिरणी हुकारी पण चोट।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात
२ चुगलखोर।

माटिय—देखो 'माटी' (रू भे)

उ०—गमोभ्रम 'दूद' 'विहारिय' सूर, 'मधावत' 'बखतसी' मगरूर। घटा सग लोह करे घममाण, पटायत माटिय एह प्रमाण।

—सू प्र

माटिया—स० पु०—गुजरात की एक जाति विशेष जो अपने आपको क्षत्रियों के अन्तर्गत मानती है।

माटियांणी—देखो 'भटियाणी' (रू भे)

उ०—केसोदास भाणावत मोटा राजा री दोहितो। माटियाणी सजना नांनी हुती। श्री केसोदासजी घणा वरस नानी कनै रह्या।

—वा दा ख्या.

माटियौ—देखो 'माटी' (अल्पा, रू भे)

माटी—स० पु०—१ क्षत्रियों के अन्तर्गत की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति। (मा म)

२ देखो 'भट्टी' (रू भे)

उ०—इक माटी आवखी, पियै दुब्बार सरावा। मैंसा आधा भखै, बोट नुकळमें कवावा।—सू प्र

रू० भे०—माटिय माटीय, माठी।

माटीपो—स० पु०—जयसलमेर राज्य नाम।

उ०—आसकरग्र 'पिराग' तण, पडियो खाग वजाड। सुतन मजीवै मोज मम, जळ माटीपै चाड।—रा रू

माटीय—वि०—१ माटी वंश का।

उ०—माटीय 'भाण' हरनाथ भाख, 'अमरेस' खान रिणछोड आख। सूरजमल 'जीवण' मेतसीह, अनसूर लेखो 'अखैई' अवीह।

—रा रू

२ देखो 'माटी' (रू भे)

माटो—स० पु०—१ पत्थर।

उ०—मिळै कठे मनवार किनारो मेलो काठो। ओ तो महा-अमाग, भाग मे लो मत माटो।—ऊ का

मुहा०—माटा तिरणा=प्रभावशाली होना। माटा नीचे हाथ दबणो=संकट मे फसना। माटा पडणा=नष्ट होना, ईश्वर का कोप होना, दुखद समाचार सुनकर सहम जाना, विघ्न पडना। माटा पिघळणा=असभव कार्य सभव होना। माटा भागणा=अन्यान्य काय करना, जगह जगह भटकना। माटा भिडावणा=लडाई करवाना। माटा सू माथो फोडणो=व्यर्थ सिर खपाना (मि०भीत सू भचेडा लेना)। माटो पटकणो=विघ्न डालना।

२ समुद्र के जल की वह अवस्था जब वह ज्वार के पश्चात् वेग से साथ नीचे उतर कर पीछे हटने लगता है।

रू० भे०—माठो।

अल्पा०—माटियो, माठियो।

माटमीठ—क्रि० वि० [अनु०] शस्त्र प्रहार की ध्वनि। (भगवान रतनू)

माठियो—देखो 'माटो' (१) (अल्पा, रू भे)

उ०—गरीवा गोता मेट, चुही वढ चम्मा चाळै। हाथी रो सो दात, माठियो भलो दिखाळै।—दसदेव

माठी—१ देखो 'माटी' (रू भे)

२ देखो 'भट्टी' (रू. भे)

उ०—माठी मद वेचइ खमार, चउद सहस चालइ चमार। द्राम रोकडा आपइ हाथि, उरति पूगडा लीधा साथि।—कां दे प्र

माठीत—स० पु०—यवन, मुसलमान।

उ०—लोडता घूमता असुर लोहाखिया, भिडण माठीत तोपियो भमरै। हुला प्याला मुहे ठेलियो हीदवै, करण रै नामियो, पियो कमरै।—राव जेतसी लूणकरण रो गीत

माठो—देखो 'माटो' (रू भे)

उ०—सूम नाम लेणो सुतो, मृग पकावण वेर। अन दिन उण री आथ जू, डाटो माठो देर।—वा दा

माड—वि०—१ गरीब, वेचारा।

२ मूर्ख, नासमझ।

स० पु०—१ स्वर्णकार द्वारा प्रयोग किया जाने वाला मोटे तारो को खीचने का एक औजार।

२ बडा मेढक।

माडणो, माडवो—क्रि० स०—१ छल करना, ठगना।

उ०—देवी वांमण रूप बळराव माडे, देवी रूप बळराव मेरू उपाडे। देवी मेरगिर रूप सायर वरोळे, देवी सायर रूप गिरमेर वोळे।—देवियाण

२ देखो 'वाढणो, वाढवो' (रू भे)

माडणहार, हारो (हारी), माडणियो—वि०।

माडिओडो, माडियोडो, माडयोडो—भू० का० कृ०।

माडीजणो, माडीजवो—कर्म वा०।

माडळीआठम—स० स्त्री०—आषाढ कृष्ण पक्ष की अष्टमी।

रू० भे०—भडळी अट्ठम।

माडळीनम—स० स्त्री०—आषाढ शुक्लपक्ष की नवमी तिथि।

रू० भे०—भडलीनम।

माडिज—देखो 'माडेज' (रू भे)

उ०—ते किस्या घोडा—तेजी तुरग गह्वरा कारातोरा खुरमांण भयणा हयाणा रोहवाल रूढमाल तोरका मदकोरा पीलूआ माडिजा उराहा सेराहा।—व स

माडियोडो—भू० का० कृ०—१ छल किया हुआ, ठगा हुआ

२ देखो 'वाढियोडो' (रू भे)

(स्त्री० माडियोडी)

माडेज—स० पु०—एक विशेष प्रकार का घोडा।

उ०—वर्णै लूमझूमा हुवा सज्ज वाजी, तुखारी खुरसाण माडेज

ताजी। किता मेत कबोज बाल्हीक कच्छी, उडै फाळ लै लै फिरै ढाळ अच्छी।—व भा

रू० भे०—भाडिज, भादिज, भारिजा।

भाणो—वि० (स्त्री० भाणी) रुचिकर, सुहावना।

उ०—मीठी रे लागइ वाणी जिन तणी, जागइ जेह थी रे ग्यान। ए वाणी मन भाणी माहरइ, मानु सुधा रै समान।—वि कु

भाणो, भावौ—क्रि० स० [स० भा] १ रुचिकर लगना, अच्छा लगना, पसन्द आना।

उ०—कमुद-जन विकस सकुछै कमळ-कंस कुभ, भावका चकोरां नयण भायो। सबळ तम तोम मथुरा गयद तणै सिर, अकळ गोकळ तणो चद आयो।—बा दा

२ शोभित होना, फबना, सुहावना लगना।

३ चाहना, इच्छा करना।

उ०—१ वह दर्गं सू खान वहादर, आयो गढ जोवाणै ऊपर। खोलै पजो कोल दिखायो, भव नह मिटै तुम्हारो भायो।—रा रू

उ०—२ आपनी ई भायो 'ऊमर' काम तें कियो। देव को सुहायो जहां पाव ना दियो।—ऊ का

४ स्वादिष्ट लगना।

माणहार, हारो (हारी) माणियो—वि०।

भायोडो—भू० का० कृ०।

भाईजणो, भाईजबो—कर्म वा०।

भात—स० पु०—१ पकाए हुए चावल।

२ व्यजन, भोजन।

उ०—चडी भोग चत्रग्रसी, भात चत्रग्रसी पुहप भर। पुडी अस्ट परकार, अनै आचार अपपर।—सू प्र

२ विवाह में कन्या पक्ष की ओर से दिया जाने वाला बडा भोज।

उ०—१ वडा भात रो जीमण हो। सेठ खुद घर घर जाय आखा गाव नै निवतियो।—फुलवाडी

उ०—२ सारी जिनस कुमेर समोवड, खोल भडारा खात मू। आछा भोग अनेक अचारा, भात दिया वहू भात सू।—रा रू

३ विवाह के समय वर-वधू के ननिहाल वालो की ओर से दिए जाने वाले वस्त्राभूषण आदि।

उ०—जरिया हदा पेचा मेरे सुसरै ताई ल्याई रे। लपा झपा री साडी मेरी सासू ताई ल्याई रे। वीरा, चूनडी उढाई घण देवा रै। भात लेकर आई जामण जाया रे।—लो गी

४ विवाह मे बडे भोज के समय गाया जाने वाला लोक-गीत।

रू० भे०—भत, भाय।

भातडियो—स० पु०—गावो मे फिर-फिर कर घघा करने वाला सुनार। —मा म

२ देखो 'भात' (अल्पा, रू भे)

३ देखो 'भाथो' (अल्पा, रू भे)

४ देखो 'भातो' (अल्पा, रू भे)

भातडो—स० पु०—१ खाने का सामान आदि भरने का चमडे का थैला।

उ०—वो आपरे आटा रो भातडो ठाकर री वेटी ने सोगरा पोवण सारू साय दियो।—सू प्र

२ देखो 'भाथो' (अल्पा, रू भे)

उ०—भार सोर भातड़ां, सूत सिलहा सामाना। मरव भार मिरताज, भार पुरकार खजानां।—सू प्र

भातवी—स० पु० [रा० भात+रा० प्र० वी] भानजा या भानजी के विवाह मे वहन के लिए वस्त्राभूषणादि लाने वाले भ्रातृगण।

उ०—उड वायसडा म्हारा पीयर जा, नूत पियर रा भातवी जे। भल नूंती रै म्हारी जळवळ जामी वाप, रातादेई म्हारी माय नै जे।—लो गी

रू० भे०—भतई, भत्ती, भाती।

भात्ति—देखो 'भाति' (रू भे)

उ०—हुई ! हुई ! देव किसू करिउं, रत्न उदालिउ हरिथ। कालि किमू कारण हतू, आन अनेरी भात्ति।—मा का प्र

भाती—स० पु०—१ खेत मे किसान या मजदूर के लिए भोजन लेकर जाने वाला व्यक्ति।

उ०—हाल घरै हल डूगरा, वळद गऊ रै पेट। हाळी हीडै पालणै, भाती पूचो खेत।—अज्ञात

२ देखो 'भातवी' (रू भे)

उ०—म्हारै रिमक झिमक भाती आज्यो, वीरा म्हारै कांना नै पत्ता लाज्यो, म्हारै कुडळ वैठ घडाज्यो।—लो गी

भातीजो—देखो 'भतीजो' (रू भे)

उ०—ए ईयै भात रहता, एक दिन सावळसाह अर सांवळसाह रो वेटा-भातीजै वैठा वाता करता हता अर राजा विजैमाल रा घोडा दौडता हता।—वीजड वीजोगण री वात

भातो—स० पु० [स० भक्त] १ घर से वाहर जाते समय साथ मे लिया जाने वाला पकाया हुआ भोजन।

उ०—पखवाडो वीत्या चोधरण माथै तीन दिना रो भातो वाघण लागी तो चौधरी मुळकनै कह्यो—वावळी, आ काई गैलाई करै ! हाल ताई धणी रा लखण सावळ ओळखिया कोनी दीसै। —फुलवाडी

२ किसी खेत मे काम करने वाले व्यक्ति के खाने के लिये खेत मे भेजा जाने वाला भोजन।

उ०—विकमी भाता ले भतवारा वाळी चगी चौधरण्या सतवारा चाली। जोवन रायजादी मादी सिणगारी, नखसिख सचै मे ढळियोडी नारी।—ऊ का

३ पुट।

४ देखो 'भाथो' (रू भे)

भात्रीज, भात्रीजो—देखो 'भतीजो' (रू भे)

उ०—१ केसरिया पहर मोड माथै कम, हसै वहमिया होडा-होड।

कीधा भला देहुग कारण, काकँ अनैं भात्रीजँ कोड ।

—सुजाणसिंघ भवानीसिंघ सेखावत रौ गीत

उ०—२ जाहरा गोगादेजी दलौ मारियौ, ताहरा दला रौ भात्रीजौ हासू पडोहियौ चढि अर पूगळ नू दौडियौ ।—नैणसी

भाय—देखो 'भात' (रू भे) (अ मा.)

उ०—असवारी तु आज करि, सेन सबळ लेई साथि । मग म भरडे आपणा, तेह नू काटे भाय ।—मा का प्र

भायडौ—१ देखो 'भायौ' (अल्पा , रू भे)

२ देखो 'भातौ' (अल्पा , रू भे)

भायळ—देखो 'भायौ' (मह , रू भे)

उ०—हुव वेरन कीजिय वेग हकैं, धुणियाळ मिळी भड 'पाल' धकैं । विजडी जड भायल बाथ विनैं, कड भीड कठठुत 'पाल' कनैं ।

—पा प्र

भायाइत—देखो 'भयाइन' (रू भे)

उ०—लाख विच्यारि वाणिजू चालइ, वार लाख उलगाणा । करकटीया हुवमी भायाइत, फरसीवर सपराणा ।—का दे प्र

भायाळ—स० पु० [स० भस्त्रा+रा० प्र० आळ] तरकसधारी ।

उ०—एहवु आयस लहइ प्रवान, ऊदलपुरि ऊतारउ खान । सरिसा एक महस भायाळ, राजडीउ मेल्हिउ रखवाळ ।—का दे प्र

भायी—स० स्त्री० [स० भस्त्रका] १ लोहार की भट्टी मे आग सुलगाने की चमडे की धौंकनी ।

२ पवार वश की शाखा या इस शाखा का व्यक्ति ।

(वा दा ख्या)

भायौ—स० पु० [स० भस्त्रा] तरकस, तुणीर ।

उ०—१ भाया कटि करगा झलि भालैं, हेक लाख वानखर हालैं । जगी हुवद जडिया जमजाळा, पाच हजार गयद पनराळा ।

—सू प्र

उ०—२ पाळा पार न पामीइ, जिम तारा आकासि । भडि भीडिया भाया कवच, सबळ सजाई पासि ।—मा का प्र

रू० भे०—भयारो, भातौ, भुताण, भुथाण भूयड, भूथाण, भूयारण ।

अल्पा०—भातडियौ, भातडौ, भायडियौ, भायडौ ।

मह०—भायळ ।

भावउ, भादरउ—देखो 'भादवौ' (रू भे)

उ०—भादउ कादउ मचि रह्यउ, कलिण कल्या बहु लोकोजी । देखी करुणा ऊपजै, चद्रकाता जिम कोको जी ।—वि कु

भादरव—देखो 'भादवौ' (मह , रू भे)

उ०—हाथी पूछ्यो होय, (अेने) केम करी उठाडिये । जेठवा विचारी जोय, भादरवो जाय भाग ना ।—जेठवा

भादरवी—वि० [स० भाद्र+रा० प्र० वी] देखो 'भादवी' (रू भे)

भादरवौ—देखो 'भादवौ' (अल्पा., रू भे)

उ०—१ फुरियौ भादरवौ घुरियौ नह फीकौ, नीरदरज आगैं लागैं नह नीकौ । तिसिया सगारा भूपर नर तिरसैं, विसिया अगारा ऊपर सू वरसैं ।—क का

उ०—२ भादरवैं ले घूड, मोछवा गोगा माडा । पेचो पीऊ साज, चढावा खीर'र खाडा ।—दसदेव

भादव—देखो 'भादवौ' (रू भे) (डिं को)

उ०—रीतैं अपथ वीयौ वड राजा, 'दूद' घिनौ तप दस्रकर । भादव जनम दूसरैं भरसी, सूखा ईसर तणौ सर ।

—राव दुरजणसाल हाडा रौ गीत

भादवडौ—देखो 'भादवौ' (अल्पा , रू भे)

उ०—सखी अमीणौ साहिबो, गिणैं पराई देह । सर वरसैं पर चक्र सिर, ज्यू भादवडै मेह ।—वा दा

भादवी—वि० [स० भाद्रपदी] भादो मास की ।

उ०—हुवैं चम्मरां झाटका जोति हुवैं, सदा ऊतरैं आरती सांझ सूवैं । तके भादवी माह ऊपान्त तित्थी, पडैं माय रैं पाय प्रत्थीप प्रत्थी ।—मे म

स० स्त्री०—भादो मास की तिथि ।

रू० भे०—भादरवी, भाद्रवी ।

भादवौ—स० पु० [स० भाद्रपद] भादों नामक वर्षा काल के एक मास का नाम ।

उ०—१ रात पडताई भादवा री काठळ रैं ज्यू चग गूजण लागता अर लूहर रैं धम्मीडा सू जमीन धूजण लागती ।—रातवासौ

उ०—२ लागो सर जही भर भादवौ की रैंन भळको बीज को । परिहा घणैं हर की आगा जदि हाडौ तीज को ।—पना

२ वृहस्पति के उस वर्ष का नाम जब वह पूर्व भाद्र पदा या उत्तरा भाद्रपदा मे उदय होता है ।

रू० भे०—भद्द, भद्दर, भद्द्व, भादउ, भादर, भादरउ, भादरव, भादरवो, भादव, भादवो, भादु, भादुर,भादुवौ, भादू, भादू, भादैंव, भादो, भाद्रव, भाद्रवइ, भाद्रवउ, भाद्रवऊ, भाद्रवड, भाद्रवौ, भाद्रव्व ।

अल्पा०—भादरवो,भादवडौ,भादुडौ,भादूडौ, भाद्रवडउ, भाद्रवडौ ।

भादायत—स० पु०—राठौड वश की एक उपशाखा या इस शाखा का व्यक्ति ।

भादिज—देखो 'भाडेज' (रू भे)

उ०—तेजी उरडा गह्वरा तोरणा खुरसाणा भयाणा ह्यांणा रोहवाला रुडवाला तोरका मदकोरा पीलूआ भादिजा ओराहा केकांणा ।—व स

भादु—देखो 'भादवौ' (रू भे)

उ०—सती री भादु मैं भर वरसाळा, खळकैं परनाळ नैं खाळा ।

बिजुरी चमकत विकराला, जादु विनु मोहि जजाला हो लाल ।
—घ व ग्र

भादुडो—देखो भादवौ' (रू भे)
उ०—सावण खेती भवरजी ! थे करी जे, हा जी ढोला ! भादुडे करघो जी नीनाण ।—लो गी

भादुर—१ देखो 'वहादुर' (रू भे)
उ०—जंपुर मे रिकाटि साहब, भादुर न्याय छाणी । सीकरि सापरा की, जालसाजि नैं पिछाणी ।—शि व
२ देखो 'भादवौ' (रू भे)

भादुवौ, भादू, भादू—देखा 'भादवौ' (रू भे)
उ०—१ समत १६६१ पोस अकबर पातसाह राजा सूरजसिंघ नु सारी जेतारण दीवी । सु राजा सूरजसिंघ समत १६७६ भादुवा सुदी २ काळ कीयौ तठा सुधी रही ।—नैणसी
उ०—२ चम-चम चमकै बीजुरी, टप-टप बरसै मेह । भर भादू विलखत तजी, भलो निभायौ नेह ।—अज्ञात
उ०—३ भादू बरखा झूक रही, घटा चढी नभ जोर । कोयल कूक सुणावती, बोले दादुर मोर ।—अज्ञात
उ०—४ मेह मातौ भादू भलौ, सेहरे चमकै बीज । पिय प्यारी सेजा रमै, आज काजळी तीज ।—कुंवरसी साखला री वारता

भादूडौ—देखो 'भादवौ' (अल्पा , रू भे)
उ०—सीचै सीचै, अे म्हारो सावणिया रो लोर भादूडै रो झड भेलैगौ ।—लो गी

भादूनदी—स० स्त्री०—केवल वर्षा ऋतु मे उमडने वाली नदी, जो बाद मे सूख जाती है ।

भादैव—देखो 'भादवौ' (मह , रू भे)
उ०—उण गिरवर पै आये कै, केहर तडव कीन । घणहर मानु इद्रधन, भादैव जळवर मीन ।—वगसीराम प्रोहित री बात

भादौ—देखो 'भादवौ' (रू भे)
उ०—अत अमाड दयानद आयौ, छोणी ग्यान घुमड घण छायौ । सावण हरिकर सुग्व सरसायो, भादौ अम्रत झड वरसायौ ।
—ऊ का

मुहा०—न सावण सूखो न भादवौ हरो=यथावत् ।

भाद्र, भाद्रपद—स० पु० [स० भाद्र , भाद्रपद] वर्षा ऋतु मे पडने वाला श्रावण और आश्विन के बीच का एक महीना । (डि को)

भाद्रपदा—स० पु० [स०] एक नक्षत्र-पुज का नाम ।

भाद्रव—देखो 'भादवौ' (रू भे)
उ०—उच दिवस असटमी आद पख भाद्रव आया, महाज्याग मधु-पुरी हुवौ उच्छव मनभाया ।—रा रू

भाद्रव, भाद्रवउ, भाद्रवऊ, भाद्रवड, भाद्रवडउ, भाद्रवडौ—देखो 'भादवौ' (रू भे)
उ०—१ सवत सोल नव्यासीयइ रे मीर मोजा नु राज रे । अकवर-पुर माहि रही रे, भाद्रवइ जोडी छइ मास रे ।—स कु
उ०—२ बाजरिया हरियाळिया, विचि विचि बेला फूल । जउ भरि वूठउ भाद्रवउ, मारू देस अमूल ।—ढो मा
उ०—३ छोडि चली सहु राजवी रे, जिम भाद्रवडे छाण रे । थाभा पूतली ने मुखे रे, देवतणी थई वाण रे ।—श्रीपाल
उ०—४ भाद्रवडइ सरोवर भरिया, नीर निरतर होय । रिदया भीतरि हु रडु, नीर निवारि न कोइ ।—मा का प्र
उ०—५ भाद्रवडा ! आविउ भलइ मयण-तणा मुहसाळ । काम जगावइ तेहनइ, जेह-सिरि वूठा वाळ ।—मा का प्र

भाद्रवी—देखो 'भादवी' (रू भे)

भाद्रवौ—देखो 'भादवौ' (मह , रू भे.)
उ०—वहै हैमरा सोख जाणै विवाणै, जुझाऊ घटा भाद्रवा जेम जाणै ।—सू प्र

भाद्रवौकडाव—स० पु०—वडा कडाह ।

भाद्रव्व—देखो 'भादवौ' मह , रू भे)
उ०—१ इण विध नवाब गय चढ प्रयाण, गज घडा अग्र चाले घुमाण । जिण वार चालिया असुर जास, मिळ घटा जाण भाद्रव्व मास ।—शि सु रू
उ०—२ वदन्न वर्ण कध वाके विनाणै, जळै गारड्ड छेडियो नाग जाणै । किता कध धारा झरै मद्द काळा, वर्ण जाणि वारिद्द भाद्रव्व वाळा ।—रा रू

भाद्रायण—स० पु०—पूर्व देश का एक खड, भद्राल, भद्रक ।
(गजमोख)

भाप भाफ—स० स्त्री० [स० वाष्प] १ किसी तरल पदार्थ, विशेषत पानी, का उष्णता पाकर खौलने से प्राप्त वह वाष्पीय रूप, जिसका आजकल शक्ति के साधनो मे उपयोग होता है ।
क्रि० प्र०—उठणी, निकळणी, वणणी ।
मुहा०—भाप लेणी=सेक करना ।
२ किसी द्रव की वह अवस्था जो उसके अधिक ताप से अथवा किसी रासायनिक प्रक्रिया द्वारा वायु मे विलीन होने से प्राप्त होती है । (भौतिकशास्त्र)
३ मुह से निकलने वाली हवा ।

भाबर—देखो 'भाभर' (रू भे)

भाबीजी, भाबीसा—देखो 'भाभीजी, भाभीसा' (रू भे)

भाबोसा—देखो 'भाभोसा' (रू भे)
उ०—रायजादो लुळ लुळ पाछो जोवै, जाणु म्हारी जान मे भाबोसा पधारै नै हस्ती सिणगारै, रायजादो लुळ लुळ पाछो जोवै ।
—लो गी

भाभडाभूत—देखो 'भाभराभूत' (रू भे)

उ०—दादो नै ताव भाभडाभूत । वैद नै लावै तो कुण ? आडोसी-पाडोसी कोई पल्लो ई नही छीपै ।—वरसगाठ

भाभज—देखो 'भावज' (रू भे)

उ०—वधजो कडवा नीव ज्यू वीरा, वधज्यो ग्रो हरियाळी री दोव । भाभज जिणज्यो दीकरा, भतीजा ग्रो परणी घर ग्राव ।
—लो गी

भाभर–स० पु०—वर्षा ऋतु मे होने वाला क्षुप विशेष ।

भाभराभूत–वि०—१ पूर्ण वेग से, वेगपूर्वक, तेज ।

२ अत्यन्त क्रोधित ।

उ०—जग ग्रथगा जूटवै, धजवड वागा धूत । भिडण भाभराभूत व्है, रीझै सो रजपूत ।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

३ लापरवाह, बेसुध ।

स० पु०—एक ऐतिहासिक व्यक्ति का नाम ।

वि० वि०—गुजरात राज्य मे मजेवडी नामक ग्राम के एक कुम्हार की सुन्दर लडकी की सगाई पट्टण के राजा सिद्धराज जयसिंह के साथ निश्चित हुई थी । इसी बीच जूनागढ के राजा खगार के भाणजे वीसल ने खगार से इस लडकी की सुंदरता का वखान किया, तो खगार ने इस लडकी का अपहरण कर लाने को कहा । लडकी को अपहृत करके जबरदस्ती खगार ने उससे शादी करली । तदुपरात सिद्धराज को इसका पता लगने पर राव खगार पर, वावरियावाड मे रहने वाले लोगो के मालिक, जिसे वावराभूत कहते थे, को साथ लेकर, चढाई कर दी और उसकी सहायता से विजय प्राप्त की । इसी वावराभूत को भाभराभूत भी कहते हैं ।

रू० भे०—भाभडाभूत, वाभराभूत, भैभराभूत ।

भाभा–स० स्त्री०—१ पवार वश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति । (बा दा ख्या)

२ राजा के उप-पत्नी के पुत्रो से चलने वाली शाखा । (जोधपुर)

३ माता एव पिता के बडे भाई की स्त्री के लिए प्रयुक्त सम्बोधन-वाचक शब्द । (जोधपुर)

स० पु० (व व) ४ बडे भाई, पिता या अपने से बडे सवधी के लिए प्रयुक्त सम्मानसूचक सबोधनवाचक शब्द ।

५ रईसो, जागीरदारो व राजाग्रो द्वारा चारण कवियो के लिए प्रयुक्त सबोधनवाचक शब्द ।

भाभी, भाभीजी, भाभीसा–स० स्त्री०—१ बडे भाई की पत्नी ।

उ०—१ राणे रोस कियो था ऊपर, साधा मे मत जा री । कुळ कै दाग लागै छै भाभी, निंदा हो रहि भारी ।—मीरा

उ०—२ साधा रो सग निवारो राई, भाभीजी गोरल पूजो जी राज ।—मीरा

उ०—३ ग्रो माय घालो जायफळ नै जावतरी, ग्रो तैल वनडा रै ग्रग चढसी ग्रो । लेखो वा रा भाभीसा कर लेसी, ग्रो दमडा वा रा वीराजी भर देसी ।—लो गी

२ जेठ की पत्नी ।

रू०भे०—वाभीजी, वाभीसा, भावीजी, भावीसा, वाभीजी, वाभीसा ।

भाभो–स० पु० (व व भाभा) १ पिता, बडे भाई के लिए प्रयुक्त सम्मानसूचक शब्द ।

उ०—तरै किलाणदासजी फेर ग्ररज कीवी के म्हारे घर मे तो लगावण रो तेह है नही, नै भाभाजी काकाजी दाम देवै नही ।
—नैणसी

२ राजा की उप-पत्नी का पुत्र । (जोधपुर)

३ पिता के लिए प्रयुक्त सम्मानसूचक शब्द ।

रू० भे०—भाभीजी, वाभो, वाभोजी ।

भाभोजी—देखो 'भाभो' (रू भे)

उ०—१ तद वखतसिंहजी कहाई—जाळोर तो भाभैजी मोनू दीन्ही छै ।—मारवाड रा ग्रमरावा री वारता

उ०—२ ग्राप पाछो ग्रावतो मोहनसिंगजी कही—भाभाजी, हूय मारो जावै, सो पहोच साळै रै दीवी सो दोय वटका हुवा ग्रर तरवार माही नीसर थाभै मे लागी सो पत्थर रो टुकडो दूर जाय पडियो ।—महाराजा स्रीपदमसिंघ री वात

२ देखो 'भाभीसा' (रू भे)

रू० भे०—वाभोजी ।

भाभोसा–स० पु०—पिता एव बडे भाई के लिए प्रयुक्त सम्मानसूचक शब्द । (जोधपुर)

उ०—पोळिया मे वैठोडा भाभोसा वरजिया, मत जावो कवर झगडा री लार (ए), भोमिया जी झगडे जूजिया ।—लो गी.

रू० भे०—वाभोसा, भावोसा, भाभोजी, वाभोसा ।

भामडळ–स० पु० [स० भा+मडल] सूर्य, रवि ।

उ०—पूठ भामडळ तेज प्रकास ए । जोयण सहस धज ऊंच ग्राकास ए ।—वृ स्त

भाय–स० स्त्री०—१ कृपा, दया ।

उ०—गजमुख गणपतराय, भामी तुझ करो मो भाय । गुण राघे बर गाय, पावु बुधि रावळै पसाय ।—गजउद्धार

२ पसद ।

उ०—यह लीला गोपाळ की, किण पै वरणी जाय । जो जो ग्रखर दो कहत, ग्रपनी मत के भाय ।—गजउद्धार

वि०—समान, सदृश्य, तुल्य ।

उ०—१ झळाहळ रूप झळाहळ भाय, जुडै खळ ग्राय तिहा उडि जाय । छछोहक वाहत झाल छडाळ, दुसारक डाळ पडै रवदाळ ।
—सू प्र

उ०—२ भड भिडे कमध 'ग्ररजन्न' भाय । इस दिसी भीम सीसोद ग्राय । प्रति दिवस ग्रकस कदळ ग्रपार, संसार सुणै मेछा सघार ।
—रा रू

उ०—३ ग्रैसी पुरी विरच की, का पै वरणी जाय। मत पर-वाण वखाणियै, ग्रपणै ग्रपणै भाय।—गजउद्धार

३ कृपा, मेहरबानी, दया।

उ०—दरसण दीजै स्यामजी, भगतवछळ कर भाय। ज्यू सकट मेरे सबै, तुरत-फुरत मिट जाय।—गजउद्धार

४ चाहना, इच्छा।

५ प्रकार, भाति, तरह।

उ०—१ हसा बगला हाल सू, जिम ग्रतरो जणाय। कवत सुक-विया कुकवियां, भेद प्रगट इण भाय।—बा दा

उ०—२ नर विवने वा नह रहै, जग मे ग्रा रहे जाय। कुळवती सू कीतरी, उलटी गति इण भाय।—बा दा

वि०—६ मन को भाने वाला, रुचिकर।

उ०—१ प्रस्नोत्तर चरचा मत पीगळ, भूसण सवद ग्ररथ रस भाय। 'वाक'दास जाणिया विघ विघ, राज ग्रनुग्रह जगळराय।

—बा दा

उ०—२ कुण वेटा कुण मायडी, कूण नारी प्रिय भाय। स्वारथ का सब हो सगा, परमारथ मुनिराय।—जयवाणी

७ देखो 'भाई' (रू भे)

उ०—१ पिंड प्राण छूटसी, नाड तूटसी करगा, घरा सेभ धारसी, करे सुख सेभ ग्रळगगा। काहि भाय कूकसी, सयण सायण सुत नारी, काया हूमी ग्रकज, सवै माया दुपियारी।—ज खि

उ०—२ ग्राग न निकली लकडा भाय ए, तिण मो दुख पडियो भाय ए। हू इण कारण दिलगीर ए, भाई! जिहा दुखे तिहा पीर ए।—जयवाणी

उ०—३ ग्रठी साहरै समाधी हुवा केडै दारामाह नै ग्रधिकार रो काम भी छोडि दीधो तो भी तीन ही भायां रो तखत माथै चला-वणो जाणि प्राची मैं पुत्र नू भेजि ग्रवाची कू ग्रावता दो ही पुत्रा नू समुझावण साम्हैं जावता पातसाह नू पेलि।—व भा.

८ देखो 'भाव' (रू भे)

मायकी—स० स्त्री०—हल्दी नीद, तद्रा।

मायखा—देखो 'मासा' (रू भे)

मायग—वि०—प्रिय, प्यारा ?

उ०—ग्राभ जळइ, घरती जळइ, दिनि दिनि जळती घाख। भायग माहरइ भेटयु, वारु भई वैसाख।—मा. का प्र

मायजी—देखो 'भाईजी' (रू भे)

उ०—वेटा रै पारवती ग्राया कैवती—देख वेटा ग्रबै थारा भायजी नै चेतो व्हियो है।—फुलवाडी

मायप—स० स्त्री०—देखो 'भाईपो' (रू भे)

उ०—१ ताहरां दाण माहै विसवो कर दियो वडी भायप कीवी।

—नैणसी

उ०—मोटी भायप होय पिंडा हुवै पूजता। वडाराज रो गाव लोग सोह वूझना। न को लोपै लीह क घरे घचोलणा। एता दे किरतार, फेर नह वोलणा—ग्रज्ञात

उ०—३ तद नावै साखळैरी भायप मे लालो हुतो तिणनू दिखायो।

—द दा

मायपो—देखो 'भाईपो' (रू भे)

उ०—सेखै देखताही राव घोडा भेलि दीना, गोडा का समूचा भायपा नै मारि लीना—शि व

मायल—स० पु० १ पवार वश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

उ०—दस पडिया भड हिंदवा, रिण पैंतीस मुगल्ल। ऊपडियो घायल हुवै, भायल 'देद' दुभल्ल।—रा रू

२ देखो 'भायेलो' (मह, रू. भे)

मायलो—देखो भायेलो (रू भे)

उ०—१ ताखडा, नग्रीठा ग्रोडिया तायला, घणा घायल किया ग्राप घण घायला। भिडे जुध पछे भीडी वटे भायला, रीठ वागो उभय ग्रोड ग्रजरायला।—रा रू

उ०—२ भायला रे ऊखल खडी नार मिरगानयणी, उठ सवारा भगडो वा करै जी म्हारा राज।—लो गी

उ०—३ ग्राज सवारी उठिया जी गई, गई कुजा के पास। तू छै घरम की भायली ये, एक सदेस पहुचाय।—लो गी

(स्त्री० भायली)

मायसो, मायहो—देखो 'भामियो' (रू भे)

उ०—देवराज ग्रठै ग्राइनै भायसो एक भिजोय नांन्हो चीरायनै जठै पाणि हुतो तितरी घरती दोळो फेर ग्रापणी कीनी।

—नैणसी

मायबीज—देखो 'भाईदूज' (रू भे)

उ०—भायूबीज दहै मडा, पूतांग्यो पठाण। जलालियै सू ग्रेकलो, कूण सहै केवाण।—जलाल वूवना री वात

माये—देखो 'भावै' (रू भे)

उ०—भाये भळहळिया भुरटा रा भारा, ग्रघ ग्रग ऊलळिया उरगा रा ग्रारा। विरळा दाता री पाता विरळाती, चौडै चाचर री चौडे चिरळाती।—ऊ का

मायेलो—स० पु० [स्त्री० भायेली] १ मित्र, दोस्त, सखा।

उ०—मायेलो कमालदी थो, तिणनू वीज उबारण नू सूपियो थो, सु कमालदी जीव ज्या राखै छै।—नैणसी

२ प्रेमी, ग्राशिक।

उ०—भायेला दिलगिरी क्यो लाया जो, ना चित ग्रायो म्हारो देसडो, ना चित ग्राया माई वाप।—लो. गी

रू० भे०—भाईलो, भाएलो, भायलो, वायेलो।

मह०—भायल।

भायोडौ-भू० का० कृ०—१ रुचिकर लगा हुआ, अच्छा लगा हुआ, पसन्द आया हुआ २ शोभित हुवा हुआ, फबा हुआ, सुहावना लगा हुआ ३ चाहा हुआ, इच्छित ४ स्वादिष्ट लगा हुआ. (स्त्री० भायोडी)

भायौ'—देखो 'भासियौ' (रू भे)

भायौ-स० पु०—१ सन्तान, पुत्र। (जयपुर)

ज्यू—श्रो कुण कौ भायौ छै।

२ देखो 'भाई' (७) (अल्पा, रू भे)

उ०—१ श्रो ससार मोहनी माया, देख रीझ मति भाया रे। अग जळ नीर निगे करनाई, परतक मिथ्या पाया रे।—सुखरामदासजी

उ०—२ काया कोट काच सो काचौ, जतन करता जावै। भण गुरु ग्यान नफौ इक भाया, अरथ श्रोर के श्रावै।—ऊ. का

उ०—३ तद सेठ केवण लागा—भाया श्रेक वात अळूझगी है, थू चावै तो सुळझा सकै।—फुलवाडी

भायौजी-स० पु०—१ वोलचाल की भाषा मे वडो के लिए प्रयुक्त शब्द। (जयपुर)

ज्यू—भायाजी, इसी वाता मे काई धर्‌यो छै।

२ देखो 'भाईजी' (रू भे)

भारग-स० पु०—चन्द्रमा, चाद।

उ०—जहर विखम जारग, भुजा धारग भुजगम। भाल तेज भारग, जरा हारग लसे जम।—सू प्र

भारगी-स० स्त्री०—एक प्रकार का पौधा जिसकी पत्तिया महुए की पत्तियो से मिलती हुई, गुदादार और नरम होती है और जिनका साग वनाकर खाते हैं। इसकी ऊचाई मनुष्य की ऊचाई के वरावर होती है।

रू० भे०—भाडंगी, भारिंगि।

भारड-स० पु०—एक पक्षी विशेष।

उ०—भारड पक्सी तणा ईडा कवण चित्रइ, सिहनइ कवण चारहडि सीखवइ, कुलीननइ विनय कुण सीखवइ।—व स

भार-स० पु० [स० भार] १ वोझ, वजन।

उ०—१ श्राडो श्रवळो क्यू फिरै, धवळो वापूकार। श्रो हिज पार उतारही, थळ सामै श्रो भार।—वां दा

उ०—२ वणाधिप झप भरी उण वार, भुजग न झालि सक्यौ भुव भार। भेळी हिज श्रावड वाहर भूप, रु नाहर चक्र सूदस्सण रूप।—मे म

क्रि० प्र०—उखणणौ, उठाणौ, उठावणौ, ऊचणौ, ऊचाणौ, उतरणौ, उतारणौ, रखणौ, लेजाणौ।

२ तराजू या तुला द्वारा किसी वस्तु या द्रव का जाना जाने वाला गुरुत्व, वजन (वेट)।

क्रि० प्र०—लागणौ।

३ उत्तरदायित्व, जिम्मेदारी, कार्यभार।

उ०—१ घरियौ भूप सुतन धुवारण, 'कूपावत' 'हरभाण' सकारण। मेडतियौ 'रांमौ' दळ माहै, सुतन 'कल्याण' भार जुध साहै।—रा रू

उ०—२ झालिया सार मोसर झले, झूझ भार भुज झालियौ। भूपाळ 'जैत' ऊणहीज भुज. हय कध थापलि हालियौ।—मे म

उ०—३ लाखा हूत वाजियौ लोहा, झाझा वधै वीजळा झालि। 'जावै' भार मूकियौ ज्यारा, 'चापै' भार श्रावियौ चालि।

—विठळदास चापावत रौ गीत

क्रि० प्र०—उठाणौ, उतराणौ, उतारणौ, श्रोढणौ, झेलणौ, देणौ, पडणौ, लेणौ, सौंपणौ।

४ सभाळ, रक्षा।

उ०—१ इण टावर रौ भार उण वास्तै श्राख मे काजळ जित्तौ ई नी व्हैला।—फुलवाडी

उ०—२ राव मडळीक तौ गैहलो हुवौ। तरै 'जेमौ' मडळीक रौ लोहडो भाई, तिण सारौ धरती रौ भार सभायौ।—नैणसी

उ०—३ नरपाळ काळ मांझी निडार, 'भाणोत' भुज नवकोट भार। जैसिंघ हरौ जीपत्ति जग, इक पखर लक्ख पक्खर श्रभग।

—गु रु व

क्रि० प्र०—लेणौ, सभाळणौ।

५ श्राश्रय, सहारा।

६ समूह, झुण्ड, दल।

उ०—१ श्रणपारा वेढ हिंदवा असुरां, कळ वारा वेखतौ कियौ। खग धारा वाहण खेडेचौ, गज भारा ऊपरा गयौ।

—कुसळसिंघ रौ गीत

उ०—२ सीधुर दळवळ सवळ, पूर पैदल श्रणपारा। नदि सर टूटै निवाणा, भाण ढकै रज भारा।—सू प्र

उ०—३ नेजा खासा तोग नवव्वति, पोह दीधा मो विना दिलीपति। सो ऊजळा करू कसि सारा, भिडज नवे श्रोरू गज भारां।—सू प्र

७ सेना, फौज।

८ सकट, श्रापत्ति।

उ०—१ नाळा पड धमक श्रवळा नीध्रस, राणै 'जगो' कमधज सिर रूठ। भार पडत पदम' नह भागौ, दयाराम खग वागौ दूठ।

—दयाराम श्रासिया (चारण) रौ गीत

उ०—२ श्रक्रूर न जुजठळ भीम न श्ररजुण, खळ दळ लागौ लोह खळै। पडतै भार प्रजा पीडता, स्रीरग कहियौ सिवौ सिवौ।

—सिवा वाढेल रौ गीत

उ०—३ कहियौ नरपाळ श्राविया कटकां, घूणि छडाळ घरा पै धोळि। पोळि वडा गज वाज पामतौ, पडतै भार न छाडू पोळि।

—नरू श्रमरावत वारहठ (सौदा) रौ गीत

६ कष्ट, तकलीफ।

उ०—राजकवर कह्यौ—जगळ मे कदमूळा री किसी कमी है मा कुदरत रै अखूट भडार सू अलेखू जीवा रो पेट भरीजै, पछै म्हारा ब्याळू री उणनै काई भार।—फुलवाडी

क्रि० प्र०—पडणौ, लागणौ ।

१० भूमि, पृथ्वी ।

११ पाप, अत्याचार।

उ०—भार उतारै भोमि, अवधि मैदेह उधारे । वसे राम वैकुठ, विमळ जग जस विसतारै।—सू, प्र

क्रि० प्र०—उतरणौ उतारणौ।

१२ गौरव ।

उ०—भार अरथ कवि 'भारवी,' कायब कियौ 'किरात'। मल्य-नाथ टीका मही, वळै लिखी आ वात।—सू प्र

१३ कठिन, दुष्कर।

उ०—थरके कोट सहत पुर थाणा भार सताडे पडे भगाणा। 'ऊदा हरा सकळ मिळ आया, आद 'जगड' जुव वाद अछाया ।

—रा रू

१४ सामान, सामग्री।

उ०—पराठि जीण पाखरा, तुरंग सझिया अतुळीवळ । भार अरावा भरै, मोहर खडकिया अमगळ।—सू प्र

१५ दहेज। (रेवारी)

१६ एक प्रकार का प्राचीन शस्त्र।

१७ वनस्पति की निश्चित सख्या का नाम।

वि० वि०—देखो 'भारग्रढार।

१८ बल, शक्ति।

उ०—आसथान 'सोनग' 'अज' ऊभा, भाई ग्रहू भुजाळा । गोयल खागा भार गाळिया, कमधज वड करनाळा।

—राव असथान रो गीत

१९ क्रोध, गुस्सा।

उ०—भट नाखू राज भिभो भार, भूडी भण ऊठें अत मार। ग्रक पापण तोनै तोनै, पापण पापण तोनै धिक्कार।—र रू

भारग्रट्ठार, भारग्रठार, भारग्रड्ढार, भारग्रडार, भारग्रढार–स० पु० यौ० [स० अष्टादश+भार] १ अष्टादश वनस्पति का नाम ।

उ०—१ वोम लागा वहै लोडता वारणू, हल्लवै द्रोण ऊपाड जाणै हणू । पाटमे भूल गै घातिया पाखरा । भारग्रट्ठार आवू किरै भाखरा।—गु रू व

उ०—२ सात समद नवसै नदी, अठ कुळ भारग्रढार । चार वेद गुण चवत है, तउ न लाभै पार।—गजउद्धार

उ०—३ सघण नीर सीतळ सु, करत विज्जण समीर-कर। उद-भिज भारग्रढार, पुहुप घर परिमळ ऊपर।—ह र

वि० वि०—राजस्थानी मे अढारभार तथा भारग्रढार शब्द का व्यापक प्रयोग मिलता है जबकि हिन्दी मे इसका रूपान्तरित प्रयोग केवल एक स्थान पर रामचरित मानस मे निम्न प्रकार से मिलता है—'रोम' राजि अष्टादस भारा, अस्थि सैल सरिता नस जारा' अर्थात मदोदरी अपने पति से कहती है कि १८ भार वनस्पति राम की रोमावलि हैं, पर्वत हड्डिया हैं और नदिया नसो का समूह है । वनस्पति शास्त्र मे समस्त वनस्पति को १८ भार मे विभक्त किया गया है। भार शब्द का एक अर्थ समूह या झुण्ड भी है। एक भार मे १२ करोड ३० लाख एक हजार छ सौ आठ वृक्ष माने गए है—वारह कोटि वन वृक्ष, लाख तह तीस सुनिज्जै। सोरह सत और आठ, भार एक ताहि गनिज्जै। इन १८ भारों का वर्गीकरण विभिन्न स्थानो पर विभिन्न रूप मे पाया जाता है, परन्तु मुख्यत इनका तीन प्रकार से वर्गीकरण किया गया है—१ पुष्पित, अपुष्पित आदि के आधार पर—अपुष्पा भार चत्वारि, अष्टौ च फल पुष्पिता। वल्ली च षट्भाराणि, वन भारस्य सख्यक । अर्थात ४ भार पुष्प-रहित, ८ भार पुष्पो के, ६ भार वल्ली के, इस प्रकार १८ भार हैं। २ कटु, तिक्त, कषाय आदि के आधार पर—कटु-कस्या भारचत्वारि, द्वौ भारौ तिक्त कथ्यते । अम्ला भारा त्रय उक्ता, मधुर भारकत्रयम् । क्षार भारमेक तु कषाय भारकद्वयम्। सविष भारमेक द्वौ, भारौ निर्विषकौ तथा। अर्थात ४ भार कटु, २ भार तिक्त, ३ भार अम्ल, ३ भार मधुर, १ भार क्षार, २ भार कषाय, १ भार सविष, २ भार विष-रहित, इस प्रकार १८ भार हुए। ३ कटक, सुगन्ध तथा निर्गन्ध के आधार पर—षट्भारा कटका ज्ञेया, षड् भारश्च सुगधदा। निर्गन्धकाश्च षट्भारा, भारा अष्टादशा स्मृता । अर्थात ६ भार कटक, ६ भार सुगधियुक्त और ६ भार सुगधिरहित, इस प्रकार १८ भार है।

२ आवू पर्वत का एक नाम।

उ०—भरि कोस कसकत भार, वुह जात भार अढार। वढि विखम पाहड वाट, घण हुवै अवघट घाट।—सू प्र

रू० भे०—अठारभार, अडारभार, अढारभार।

भारउतारभू–स० पु० यौ० [स० भार +उतार+भू] श्री कृष्ण।

(अ मा)

भारखमौ—देखो 'भरखमौ' (रू भे)

उ०—पयपूर कटक्क हुव प्रघळा, जिदराव कजा मल हेमजळा। वहतै दळवाट घमी विखमी, खळ चाडत सेस न भारखमी।—पा प्र

(स्त्री० भारखमी)

भारगव–स० पु० [स० भार्गव] १ भृगुकुल मे उत्पन्न व्यक्ति।

२ च्यवन ऋषि।

३ उशीनस्, शुक्र। (अ मा)

४ जमदग्नि।

५ परशुराम, जामदग्न्य।

६ वाल्मीकि ।

७ उत्तर भारत मे पाई जाने वाली एक हिंदू जाति ।

वि०—१ भृगु के वंश मे उत्पन्न ।

२ भृगु सम्बन्धी, भृगु का ।

भारगवी-स० स्त्री० [भार्गवी] १ लक्ष्मी ।

२ पार्वती ।

३ दूब ।

४ उडीसा की एक नदी ।

भारगस्वरि-स० पु०—भागासुरि राजा का नामान्तर ।

उ०—परवत नदी पथ बहु मेहिल्यु, पवन-वेगि ते जाय । भारगस्वरि राजा मोहो पाम्यु, क्षणुइ वार न थाय ।—नळाख्यान

भारज, भारजा, भारज्या—देखो 'भारया' (रू भे) (ह ना मा)

उ०—१ इतरी सुण कळावत कही—महाराज ! थानू धन्य छै । हू थानू सत्यधरमी जाण म्हारी भारजा छोडी । आप इसो अवरम वयू करो ।—सिघासण बत्तीसी

उ०—२ पिता तौ प्रदिमन पोत्रौ अनिरुध । उखा कौ पति जें कै भारज्या उखा हुई ।—वेलि

उ०—३ सुणि परदेसी ताहरी भारजा, सूरिकता नागोजी । भोगवतउ देखइ तु तेह नइ, नर नइ स्यु करउ तामोजी ।—स कु

भारडिया-स० स्त्री०—पडिहार राजपूत वंश की एक शाखा ।

भारण-स० पु० [स० भार +रा० प्र० ण] १ रहट के मध्य स्तम्भ को स्थिर रखने वाले काष्ट डडो के पीछे लटकाया हुआ पत्थर या बोझा ।

वि०—घातक ।

उ०—ताहरा कह्यौ विजाजी भुइ भारण छै । कहीयौ भारण छै ।
—चौवोली

भारणि—१ देखो 'भारण' (रू भे)

उ०—वलता भुइ भारणि हुवै रे हा, अग तपइ अगार । आखडियइ आंसू पडइ रे हा, जिम पावस जल धार ।—वि कु.

२ देखो 'भारणी' (रू भे)

भारणियौ-स० पु० [स० भार] मोट को पानी मे भरे जाने के लिए डुवाने हेतु उसके मुह पर बांधा जाने वाला वजनी पत्थर ।

भारणी-स० स्त्री० [देशज] पीटने का भाव, दड, सजा ।

उ०—१ सेवट आती आयनै उण रो घणी आछी तरै' मारणी उतारनै आपरा घर सू तगड दियो—फुलवाडी

उ०—२ कोई कह्यौ-भाई चिडैला अर कोई कह्यौ-घणी मारणी काढैला ।—फुलवाडी ।

क्रि० प्र०—उतारणी, काढणी ।

भारणौ, भारबौ-क्रि० स०—१ किसी पदार्थ को अगारो-युक्त राख मे दबाना ।

उ०—१ दान घणौ उत्तर दिये, हूने वित सत हार । मुहडो लै उण मिनख री, भोभर भीतर भार ।—बा दा.

उ०—२ जवन मेख सिर जोर, दियौ छत्रपति छिपाए । भसम जाण भारियौ, अगन कण जतन उपाए ।—रा. रू

२ गाडना, दफनाना ।

३ देखो 'भरणौ, भरबौ' (रू भे)

उ०—१ अकबरसाह गाफल गुमान सू भारचौ, तहवरखान हाथ सब राज बोझ धारचौ ।—रा रू

उ०—२ चुण्या सवारचा ढह पडै, ढहिया सब्बारै, भरिया सरवर रीतवै, रीता जळ भारै ।—केसोदास गाडण

उ०—३ रूप मरद्दां मीर सब,लक करद्दा तूण,दाढ गरद्दा भारिया, अग जरद्दा दूण ।—रा रू

४ देखो 'बुहारणौ, बुहारबौ' (रू भे)

भारणहार, हारौ (हारी), भारणियौ—वि० ।

भारयोडौ—भू० का० कृ० ।

भारीजणौ, भारीजबौ ।—कर्म वा० ।

भारत-स० पु० [स०] १ घोर युद्ध, भयकर लडाई ।

२ लवो गाथा या वृत्तान्त ।

३ कसीदेदार कपडा ।

४ बढिया वस्त्र ।

उ० भारत रे वीरा, भावज ने ओढाय, म्हा ने घणमोला री चूनडी जे ।—लो गी.

५ वह जो भरत के गोत्र मे उत्पन्न हुआ हो ।

६ भारतवर्ष का निवासी ।

रू० भे०—भारत्थ, भारथ्थ, भारत्थि, भारात, भाराथ, भाराथि, भारिथ्थ ।

७ देखो 'भारतवरस' (रू भे)

८ देखो 'महाभारत' (रू भे)

उ०—भिडे भीम अरजुण कुरु भारत, गेहर-डांडिया रम कुळ गारत । मरचौ सुयोधन गौ भक भारत, आरयवरत्त को करगौ आरत ।—ऊ का.

भारतखड—देखो 'भरतखड' (रू भे)

भारतनद-स० पु०—सगीत की एक मुख्य ताल ।

भारतवरस-स० पु० यौ० [स० भारत+वर्ष] हमारा देश, जो उत्तर मे हिमालय, दक्षिण मे भारतीय महासागर तक तथा पश्चिम मे पश्चिमी पाकिस्तान तथा पूर्व मे ब्रह्मा देश तक फैला हुआ है । हिन्दुस्तान, हिन्द ।

वि० वि०—पुराणानुसार यह जबूद्वीप के अन्तर्गत ९ खडो मे से एक खड है जो हिमालय के दक्षिण मे गगोतरी से कन्याकुमारी तक और सिंधु नदी से ब्रह्मपुत्र तक फैला हुआ है ।

रू० भे०—भरतवरस, भरहवास, भारत ।

भारति—देखो 'भारती' (रू. भे.)

भारतियो–स० पु०—'भारत' नामक बढ़िया वस्त्र का विक्रेता।
उ०—गया छो, ग्रे बाग्री भारतिये री हाट, था ने भारत बाग्रो मोलवा जे।—लो गी
वि०—विवाह मे 'माहेरा' ले जाने वाला।

भारती–स० पु० [स०] १ दसनामी सन्यासियो की एक शाखा विशेष।
स० स्त्री० [स०] २ साहित्य मे एक वृत्ति का नाम, जिसका प्रयोग मुख्यत रौद्र ग्रौर वीभत्स रस मे होता था परन्तु ग्राजकल इसका सम्बन्ध नाट्य अभिनय ग्रौर रसाभिनय से जोडा गया है।
३ सरस्वती। (ह ना मा)
उ०—नयणला ग्रग नी उपमा किसी, हईइ हारिउ वेहि जई वसी। चरणचारिहिं हम हरावती, वचनि जीणइ जीती भारती।
—मालिभद्र सूरि
४ कविता (वाणी)।
भासा सस्कृत प्राकृत भणता, मूझ भारती ए भरम। रस दायिनी सुदरी रमता, सेज ग्रतरिख भूमि सम।—वेलि
५ ब्राह्मी नाम की बूटी।
६ एक प्राचीन नदी का नाम।
७ एक प्रकार का पक्षी।
रू० भे०—भारति, भारन्थि, भारथि, भारथी।

भारतीय–वि० [स० भारत] भारत सम्बन्धी, भारत का।

भारत्थ—१ देखो 'भारत' (रू भे)
उ०—विजा' मनोहरदास का, महेवँचा समरत्थ। वाहा पाण निभाहणा, माहा मू भारत्थ।—रा रू
२ देखो 'महाभारत' (रू भे)

भारत्थि—१ देखो 'भारत' (रू भे)
उ०—गगाजळ निरमळ जेम गग, ग्राडत्त धीर ग्रोपित्त ग्रग। भारत्थि चडिय तेजसी भल्ल, परवाहमल्ल परचक्कपल्ल।
—रा ज सी
२ देखो 'भारती' (रू भे)

भारथ—१ देखो 'भारत' (रू भे)
उ०—१ 'अखा' हर वाहत खाग उनग, जुडै जिम भारथ दारुण जग। वळोवळ लूवत रौद्र व्रजाग, भिडै सुजि हुवै दुय भाग।
—सू प्र
उ०—१ नमसकार सूरा नरा, पूरा सतपुरसाह। भारथ गज थाटां भिडै, अडै भुजा उरसाह।—वा दा
उ०—३ माण दुयोजण 'मालदे', जिण वाधो जगहत्थ। भारथ भिडिया जाम भड, साह हूत समरत्थ।—वा दा
२ देखो 'महाभारत' (मह, रू. भे)
उ०—१ उठै ईसफा ग्रासफा नाम ग्रावै, दुवै कालिका चडिका ग्रेह दाखै। कतेवा कलम्मा उचारै कुराणा, पढै भारथा भागवतां पुराणा।—सू प्र
उ०—२ राजा मान दियो घणो, भारथ वाचै ग्राय। राजलोक मे रात दिन, महल महलें जाय।—प च चौ

भारथि—१ देखो 'भारत' (रू. भे)
उ०—१ 'भाखर' हरा ऊजळै भारथि, 'मदनो' सूर वकारि मूग्रा। सिवराजा हर हरवळ पतिसाही, हरवळा हरवळ हुग्रा।
—मदनसिंघ नै सूरसिंघ गौड रो गीत
उ०—२ दियण विढण भमियाळ 'दूद' उत, साच सीळ भमिग्राळ सही। भाजिवा भमियाळ न भारथि, नाकारै भमियाळ नही।
—ईसरदास वारहठ
उ०—३ भारथि ग्रागि व्रजागि महाभड, जोध जडाग वडा छळ जागै। मेर ग्रजाद देस दस मालिय, मुगळा कन्है पेसकस मांगै।
—ल. पि
२ देखो 'भारती' (रू भे)

भारथ्थ—१ देखो 'भारत' (रू भे)
उ०—१ ढोलइ करहउ झालियउ, मारू ग्राई सथ्थ। प्रिउ ए ऊमर-सूमरउ, करिस्यइ था भारथ्थ।—ढो मा
उ०—२ सोभीजै 'करणेस' सुन, 'सिवो' ग्रभग सिमरथ्थ। दाह दिलेसा उर दयण, भू-विजई भारथ्थ।—द दा
२ देखो 'महाभारत' (रू भे)
उ०—रामायण भारथ्थ, विगत रण चारण वाचै। साचै दिल सूरमा, खडग गहि मूछा खाचै।—मे म

भारदर—देखो 'भारवरदार' (रू भे)
उ०—साठ रुकमा जडत हीर तुकवा सलह, भूप हुकमा जळह गाज भारा। भारदर वोलियो भाग जुग भाळियो, धुवै उजवाळियो खाग धारा।—पहाडखा ग्राढो

भारदवाज, भारद्वाज–स० पु० [स० भारद्वाज] १ ग्रगिरस गोत्र का एक गोत्रकार एव मत्रकार।
२ वैवस्वत मन्वन्तर के सप्त ऋषियो मे से एक।
३ एक श्रौतसूत्रकार जिसके नाम पर कई ग्रन्थ उपलब्ध हैं।
४ एक ऋषि, जिसने द्युमत्सेन राजा को ग्राश्वासन दिया था कि तुम्हारा पुत्र एव सावित्री का पति सत्यवान् पुन जीवित होगा।
५ एक व्याकरणकार।
६ द्रोणाचार्य।
७ मगलग्रह।
८ वृहस्पति का एक पुत्र।
९ भरद्वाज कुल मे उत्पन्न व्यक्ति।
१० एक चिडिया, जिसका शकुन लिया करते हैं।

भारपलाण, भारपिलाण–स० पु० यौ०—बोझा ढोने का ऊट का चारजामा।

भारवध-स० पु०—रहट की माल के सिरे का वध।
रू० भे०—भारावद, भारावध।

भारवरदार—देखो 'भारवरदार' (रू भे)

भारवरदारी—देखो 'भारवरदारी' (रू भे)
उ०—वहला भारवरदारी री सामान ढोने वाली सगळी रथ रै पूठै लगाय दीवी।—कुंवरसी सांखला री वारता

भारभुज-स० पु०—राजा, नृपति। (डिं को)

भारमोर—देखो 'भार' (१६) (रू. भे)

भारमलरा-स० स्त्री०—कछवाहा वंश की एक उप-शाखा। (वां दा ख्या)

भारमलोत-स० पु०—१ राठौड़ वंश की एक उप शाखा। २ कछवाहा वंश की एक शाखा।

भारमाली-वि० [स० भार+मालिन्] भार धारण करने वाला।
उ०—बृहन्नडा द्रुपदि नृत्यकारी, ए उत्तरा नइ गुरु रूपि नारी। की जइ किमइ सारथि भारमाली, तउ वेगि आवइ सवि गाय वाली।—मालिसूरि

भारया-स० स्त्री० [स० भार्या] १ पत्नी।
उ०—सव अपणा घरम माही चालै। स्त्रिया पति-सेवा करै। पति निज भारया-रत रहै।—सिंमघण वत्तीसी
२ स्त्री, महिला।
रू० भे०—भारज, भारजा, भारज्या, भारिजा, भारिज्या, भारिया।

भारलदण-स० पु० [स० भार+लाद प्रा लाद्ध रा लाद] गधा, खर। (अ मा)
वि०—भार लदने वाला।

भारलदारो-वि० [स० भार+रा० लदारो] भार लदने वाला।
उ०—मसाणिया नै कारटिया रे, वले जट वर्ण ते जटिया। कुंभार गिरावा सोनारो रे, हुवो नायक भारलदारो।—जयवाणी

भारव-स० स्त्री० [स०] धनुष की डोरी।

भारवदार-स० पु० [फा० बारबरदार] बोझा ढोने वाला, भारवाहक।
उ०—कठठ तोप गाडिया, नाद नीधसै नगारा। गजा जूथ खोलजै, भारवरदार कतारा।—वखतो खिड़ियो
रू० भे०—भारदर, भारवरदार।

भारवरदारी-स० स्त्री० [फा० बारबरदारी] १ भार वहन करने वाला। (शकटादि)
उ०—म्यारामजी मारवाड आवण री मतो कीधो, तद् गुददावण री हुकम दीधो। भारवरदारी आगै चलाट छै, घोड़ा पर साकता भराई छै।—मयाराम दरजी री वात
२ भार वाहन करने की क्रिया।
रू० भे०—भारवरदारी।

भारवहगात्र-स० पु०—रथ। (डिं को)

भारवहण-स० पु०—गधा, खर। (ह नां मा)

भारवाहक-स० पु० यौ० [स० भार+वाहक] भार वहन करने वाला, वजन ले जाने वाला।
उ०—इहां वलि बीजउ द्रस्टात दाखव्यउ, भारवाहक नउ विचारो जी। भारवहइ तणउ कावडी भली, साज विना नाकारो जी।—स कु

भारवाहीनाव-स० स्त्री० यौ० [भारवाही+नाव] माल ढोने वाली नौका, डूंडो। (डिं को)

भारवि-स० पु०—'किरातार्जुनीय' नामक महाकाव्य के रचयिता एक प्रसिद्ध संस्कृत कवि।

भारसह-स० पु०—वनिया, वैश्य, व्यापारी। (डिं को)
वि०—सहनसील, सहिष्णु।

भारह—देखो 'भारत' (रू भे)

भारहारी-स० पु० [स० भारहारिन्] पृथ्वी का भार उतारने वाला, विष्णु।
वि०—१ भार हरने वाला, २ भार उतारने वाला।

भारात, भाराथ—१ देखो 'भारत' (रू भे) (डिं को)
उ०—१ 'भारथ' सुत भाराथ, कर जैत 'केहर' हरा। समर पडे इक साथ, भाई भड लीधा अभग।—शि सु रू
उ०—२ कमधजा वेहू भाराथ सवळा किया, सवळ साका किया सूर साखी। अभग 'ऊदा'हरे जिसी खेली अचड, 'राम'हर तिमी अखियात राखी।—किसनौ दुरसावत
उ०—३ तुछ जळ ज्याही माछळा तडफइ, भड तडफइ तिण विध भाराथ। भभकइ रुधिर भडजर भागा, एकण कहर लाविया हाथ।—महादेव पारवती री वेलि
२ देखो 'महाभारत' (रू भे)
उ०—भाराथ रमायण भागवत, कथा पवित्र धरि धरि करां। धरि मरण नेम सिर परि धरा, तुररा तुळसी मजरां।—सू प्र

भाराथि—देखो 'भारत' (रू भे)
उ०—भाराथि खळा दळ भाजणो, गढ गाजणो गहगीर। धरिति मिरिनाम वधारणो, कुळ तारणो लखधीर।—ल पि

भारथियो-स० पु० [स० भारत+रा० प्र० इयो] युद्ध करने वाला, योद्धा।
उ०—भुज लगा जडै त्रण पोहर भाराथिया, त्रासिया सुरग यर कीया गळ वाथिया। सूर 'सुरताण' रग घणा समराथियां, सुज घणा रग सुरताण' रा साथिया।—किसनौ आढौ

भारावद, भारावध—देखो 'भारवध' (रू भे)

भारिंगि—देखो 'भारगी' (रू भे)
उ०—सीलामा नइ भालकी, भरडु भारिंगि भांगि। अभेडी ब्रह्माड घण, भोजपत्र भइ चगि।—मा कां प्र

भारिजा—१ देखो 'वाडेज' (रू भे)

उ०—१ छत्रीस वरण तणा घोडा। किस्या किस्या घोडा। उज्जरा, गह्वरा, कारा, तोरका, भारिजा, सीधूया।—का दे. प्र
२ देखो 'भारया' (रू भे)
उ०—राज करइ तिहा राजियउ, पुडरीक नाम नरिंदो जी। गुण-मुदरी तसु भारिजा, पामइ परमाणदो जी।—स कु

भारिज्या—देखो 'भारया' (रू भे) (ह ना मा)

भारिथ्य—देखो 'भारत' (रू भे)
उ०—खडहिया वाका भडा, प्रघटी हुवै प्रसिथ्य। राठोडा अर मुगळा, नह चूकै भारिथ्य।—रा ज रासो

भारिया—स० स्त्री० (ब व) समूह।
उ०—रोड बजि हैवरा आगि विक रारिया, घजर भाला मेवण अभागो घारिया। भौमि गुगळी गयण चढै रज भारियां, तूटिसी घणा सिर आजि तरवारियां।—जालमसिंह मेडतिया रो गीत
२ देखो 'बोझया'।

भारिया—देखो 'भारया' (रू भे)
उ०—कीधी सगाई तेहसू, 'सोमा' आई दाय। थापी तेह नी भारिया, मेली कुमारी अतेउर माय।—जयवाणी

भारियो—स० पु०—१ वजन उठाने वाला, भार-वाहक।
देखो 'भारी' (अल्पा, रू भे)
उ०—अनेके फळे भारिया वृक्ष ओपै, लिये चाहि सेवा न को जाय लोपै। मुगवाकर सुदर फूल सोहै, महाथभ सौरभ भिभू विमोहै।—रा रू

भारींगण—स० पु०—वह बोझा या भार जो मोट खींचने के लिये लगाई जाने वाली दो लडकियो को स्थिर रखने हेतु उन पर रखा जाता है।
रू० भे०—भारीगण।

भारी—स० स्त्री०—घास लकडियो आदि का छोटा गट्ठर।
उ०—दलिया रांधै दळवळिया हलवाणै, वेचण वीदणियां ईंध-णिया आणै। लादी भारी नै ओळावो लेती, दुरवख बारी नै बोळावो देती।—ऊ का
उ०—२ लकडिका री भारी वांधने दोनू सागै ई आप आपरै घरै आवता।—फुलवाडी
वि० [स० भार] १ जिसमे अधिक बोझ हो तथा जिसे उठाने मे पर्याप्त शक्ति व्यय होती हो, बोझिल, वजनी।
उ०—१ कोई कहै हळको कोई कहै भारी, मै तो लियो री ताख-डियां तोल। कोई कहै छानै कोई कहै चौडै, मैं तो लियो री वाजता ढोल।—मीरा
उ०—२ वो भारी देखन अेक घणा उपाय दियो। मन मे आ कुटळाई विचारनै के भारी घणा सू मकोडा री कमर भाग जासी, जद घणा पाछो ले लेस्यू।—फुलवाडी
२ अत्यन्त, बहुत, खूब।
उ०—१ न्यात मेतरा मिळ निपुण, पामर सामी परखिया। अम-लिया देख भारी अधम, होका धारी हरखिया—ऊ का
उ०—२ लेता भारी लाल चोळरग लागा चोखा। कोडी फेर किया अजब, द्रग धमळ अनोखा।—ऊ का
उ०—३ गावा रूडो रूप, भूप घर रो भल भारी। छायासयित हमेस, देस औखद सुखकारी।—दसदेव
उ०—४ यह आमेर जयसिंहजी रै परणियो थो सो उवा रो भारी मुलाहिजो सो अमरसिंघजी नू बादसाह नीकी तरै राखै।
—राजसिंहजी राठोड री वारता
३ भीषण, भयकर।
उ०—१ सारी स्रस्टी मे कुडळ छळ करियो, भारी हा हा रव भूमडळ भरियो। वसुवा काळी री ताळी तड वागी, भिडिया मोना री चिडिया पड भागी।—ऊ का
उ०—२ साभळियउ तरइ विसभर सउणै, सती दिपउ अत वळियउ साथ। वाणी ताइ अहमड वखाणइ, भारी एक हुयउ भाराथ।—महादेव पारवति री वेलि
४ कठिन, मुश्किल।
ज्यू—आज गुरुजी बहुत भारी हिसाब घालिया।
उ०—म्हे बाबा रै मूडा सामी जोयो। देख्या उण रै डील रो गसको अैडो लखावतो के कदास उण रै सास लेवणो ई भारी व्हैला।—फुलवाडी
५ जोरदार।
उ०—१ दमगळ मगळ उडिया चहुदिस, जुटो जिम ठाकुर जगळ। खारी वार गयद सु खहतो, भारी भुज खेली भगळ।
—लिखमीदास गाडण
उ०—२ भारी अगै अगै रे भारत, हेकण जीभ प्रताच हुवा। मन मिळियोडा जिका माढवा, जीभ करै ग्विण माह जुवा।
—बा दा
५ विशाल, वृहत, बडा।
उ०—१ भडवा लोका रै जागीरी भारी, आवै आटै नै काटै उपकारी। परजापतिया नह परजा नै पाळै, टुकडै टुकडै नै टीवै टक टाळै।—ऊ का
उ०—२ दानयार दहलियो, हुतो सभि हफतहजारो। तजि हरवळ तापहू, भिळे चदवळ दळ भारी।—सू प्र
उ०—३ तरै वीरमदे चढ खडिया रीया थी नैडा आया तरै वीर-मदे टेरू नू कह्यो—गांव तो भारी लागै छै।—द दा
६ हानि-प्रद, नुकसानकारी।
उ०—१ तद पुटियो जवाव देवतो बोल्यो—थानै अबारू तो कोनता सूझै है। वगत आया थारै माथै पडता आभा नै म्है ई थामूला।

टूचा नैं वम मे राख्या करो। कठै ई ग्रै गचळका भारी नी पड जावै।
—फुलवाडी

क्रि० प्र०—पडणौ।

७ ग्रासानी से न पचने वाला, गरिष्ठ।

उ०—'माधव' साधन ग्ररठ मडायो, खारो मुख लै घणो खिडायो। छाक पियो जिण पेट छुडायो, भारी पाणी जनम भडायो।
—ऊ का

८ ग्रहो के ग्रनुसार ग्रनिष्ट परिणाम वाला, बुरे शकुन का।

ज्यू—ग्राज री रात उण नैं बहुत भारी है।

९ विकार या खराबी (शरीर के किसी ग्रग में) जिससे वह निकम्मा या सुस्त हो गया हो।

उ०—बामणी डुस्किया भरती ई भारी गळा सू बोली-ग्रेक वेस्या रा घर मे दूजी फेर कुण व्है सकै।—फुलवाडी

मुहा०—१ ग्राख भारी होणी=ग्राख दुखने ग्राना। २ ग्रावाज भारी होणी=जुखाम या ग्रन्य कारण से ग्रावाज भर्राई हुई सी होना। ३ कान भारी होणौ=किसी विकारवश कान से ग्रस्पष्ट सुनाई देना। ४ गळो भारी होणौ=भावुकता में या रुदन या जुखाम के समय गले की ग्रावाज भर्राई हुई होना। ५ तबीयत भारी होणी=रोग से ग्रस्वस्थ होना। ६ पेट भारी होणौ=ग्रधिक खाने से ग्रपच की ग्रवस्था होना। ७ माथो भारी होणौ=सिरदर्द होना।

१० किसी व्यक्ति के मन मे व्याप्त ग्रभिमान, घमड या रोष जिस कारण वह किसी से सरलता से व्यवहार न करता हो।

ज्यू—ग्राजकल वै घहुत भारी पडै है।

क्रि० प्र०—पडणौ।

११ सशक्त, बलवान।

उ०—गोहिला रो वडो धोम राज, ग्रर डाभी पण डीला घणा सिरीखा परधान, सु रिसाणा थका छाड गया। जाहरा ग्रासथान जी रो राज भारी पडियो। तद डाभिया जाणियो, गोहिल मरावा।
—नैणसी

क्रि० प्र०—पडणौ।

१२ तुलनात्मक दृष्टि से ग्रधिक भिज्ञ, निपुण, चतुर, महान, वडा।

ज्यू—ग्रो बिजळी रो वडो भारी कारीगर है। ग्राप गणित रा भारी विद्वान हो।

१३ उत्तम।

उ०—भरत्थ विदा कीध दे सीख भारी, धरा चित्रकोटा वर्मं चापधारी।—सू प्र

१४ सुन्दर, खूबसूरत।

उ०—१ भुज च्यारे रुप विराजइ भारी, धरहरती घुळणी घण घाव। हेमाचळ गिरवर चा सेहर, वसत तणी रुत हुई वणाव।
—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ भूरं मुखडै पर स्वदेरा करण भारी, पहुची पोळछ मे प्रीतम री प्यारी। नाचै खेलावण मेळावण नांही, जोवण जोगी वा वेळा जग माही।—ऊ का

उ०—३ भारी छजे गीतडा भुरजा, बिहद कवित कागुरा बणं। ताकव कठ गिरा बज तोपा, तैं रिप सूमा सीस तणं।
—कुसाळसिंघ स्यामसिंघोत रो गीत

ग्रव्य—बिल्कुल।

उ०—ग्राळा भोळा लोग। रोग सू ग्रणभिग भारी। सिर सिरवारी वेर, खेर पनडी खैं खारी दूखणिया ज्यू दगड, रगड झट नीम लगावै। पीडा सी पट ज्याय, काय फ़स ग्रावी ग्रावै।—दसदेव

ग्रल्पा०—भारयो, भारियो।

मह०—भारो।

भारीकन्यका–स० स्त्री०—जमीन, पृथ्वी। (ग्र मा)

भारीखमू, भारीखमो, भारीखम्मो, भारीणवू—देखो 'भरखमो' (रू भे) (डि को.)

(स्त्री० भारीखमी)

भारीगण—देखो 'भारीगण' (रू भे)

भारीगरो, भारीघरो–स० पु० यौ० [भारी+समूह, गृह=घर] गृह सदस्य समूह।

उ०—तद बांमण कह्यो—ग्राज राखडी पूनू है। घर मे ग्राखा लेवण जोग ई दाणा कोनी। छोटा मोटा दस मिनखा रो भारीगरो है।—फुलवाडी

भारीपण भारीपणौ–स० पु० यौ० [स० भारी+रा० प्र० पण, पणौ] भारी होने का भाव, भारीपन।

भारीबोल–स० पु० यौ० [स० भारो+बोल] गर्वीले शब्द, गर्वोक्ति।

उ०—गुजारव गैमरा, धुवै हव साभळ ढोळा, जादम सू कर जग फवै थिर भारीबोला।—द दा

भारीलगनी–स० स्त्री० [स० भारी+लग्न] वह कन्या जिसके विवाह का लग्न ठीक न बैठता हो।

भारुडी, भारुडी–स० स्त्री०—रहट की लाट को ग्रागे खिसकने से रोकने के लिए उसके सिर के समीप रखा हुग्रा बोझ।

भारोट, भारोठ–स० पु०—छत के पत्थरो के नीचे लगा हुग्रा वह लम्बा पत्थर जिस पर छत की शिलाए (पट्टियें) टिकी रहती हैं।

वि० वि०—ग्राजकल इन पत्थरो की जगह लोहे की शहतीरें लगाई जाती हैं।

भारो—देखो 'भारी' (मह, रू भे)

उ०—१ तूटै भारा ग्रजड, ग्रग ऊपरा ग्रपारा। रत छूटै ग्रणपार, घडा फूटै चवधारा।—सू प्र

उ०—२ सीधं साहिबां सरारा करै करारा जुवाब स्वाल, उथाळा जोसैल चाळा धरा रा ग्राखाण। भजे सामराथां खळां बांनैत बिरद्दां भारा, बिलायता भणा थारा 'केहरी' बाखांण।—गौरादान ग्रासियो

उ०—३ भडां मन्त्रिया जूथ भारा, सजै निज दरवार सारा । भला पाता जूथ भेळा, वखाणै पह जेण वेळा ।—सू प्र

उ०—४ वत्तीस अतेउर परिहरि, लीघउ सजम मारो, तप जप कठिण क्रिया करइ, साथइ साधु हजारो ।—स कु

उ०—५ भाये भळहळिया भुरटा रा भारा, अघ अग उलळिया उरगां रा आरा । विरळा दाता री पाता विरळाती, चौडै चाचर री चोडै चिरळाती ।—ऊ का

उ०—६ वो ऊदरा री पूछा री भारो बाधनै बाजार मे वेचण जावतो हो ।—फुलवाडी

मुहा०—करमा रो भारो बाघणो=पाप कर्म करना ।

भाळ, भाल—स० स्त्री० [स०] १ ललाट, मस्तक । (अ मा)

उ०—१ भुज आजान विसाळ भाळ, कट सघ प्रकार नयण भ्रूह नासिक कमळ घनु सुक निरघार ।—र ज प्र

उ०—२ मघुकर भ्रमत सुवास मद भाल सुघाकर भास । मोदक कर मन मोदमय, नित जय ग्यान निवास ।—वा दा

रू० भे०—भाळयळ, भाळयळि, भाळहळ, भाळिअल्ल, भाळियळ, भाळीअळेय, भाळीयळ ।

स० स्त्री०—२ खोज तलाश ।

उ०—नाई निरनै होयनै म्यानो बतावण लागो—म्है तो खुद अेक चीता री भाळ मे हो ।—फुलवाडी

३ प्रतीक्षा ।

उ०—वो सुसिया नै पूछ्यो—अे लाडू कीकर वणाया । म्हनै ई उपाव वता, म्है ई वणालू । खिरगोसियो तो इणी भाळ मे ईं हो । कह्यो—इण मे कांई इदकाई ।—फुलवाडी

४ निरीक्षण, जांच ।

५ खबर, सदेश ।

उ०—१ ईतराक समै चोमासा, री हूस आई । रग-रग री पोसाखा नै दारू री भटिया कढाई । एक समै कवर वीरमदे कनै सूरा री भाळ आई । जिका सिकार सारा के मन भाई ।—पना

उ०—२ इम कहै, राजा आपरा रजपूत खाग उतार म्हैल, केता-अेक रजपूतां रा वानैत साथ लिआ, भाळ आई थी, तठै जाअे सुअर मार पाछा पघारिया ।—कल्याणसिघ वाढेल री वात

भाल—स० पु०—१ एहसान, उपकार ।

२ देखो 'वहाल' (रू भे)

उ०—राजकवर नीमराणा की, वाघरवाडे व्याई । परतख होय पागळी पावा थावर सग्या थाई । देख हवाल भाल वर देवी, चाल मराळ चलाई ।—मे म.

३ देखो 'भालू' (रू भे)

उ०—उण दसा राखस आहुडै, भड भाल कपिगण दस भडै । लूय-बथ अह घणासुर लडै, गज धरा नभ गडडै ।—र ज प्र

४ देखो 'भालो' (मह, रू. भे)

भाळक, भालक—वि० [दे०] १ देखभाल करने वाला ।

उ०—पादाकाती पदाकाति विन पावै, आरयावरती जन अन विन अकुळावै । वहतो अखलेस्वर अवगति अनदाता, तत सत जग पाळक जग भाळक आता ।—ऊ का

२ दर्शनीय ।

३ खोज या तलाश करने वाला ।

४ खवर या सदेश ले जाने वाला, सदेशवाहक ।

५ जाच करने वाला, निरीक्षक ।

६ प्रतीक्षा करने वाला ।

७ देखो 'भालू' (रू. भे)

उ०—कळ वीछुडि एक वसै गिरि कदरि, मदिर भाळक एक मरै । अहि त्याग भुरै घन एक गमाय रु, के रिघ आदरि सघि करै ।

—रा रू

भालकी—सं० स्त्री०—वृक्ष विशेष ?

उ०—भीलामा नइ भालकी, भरडु भारिंगी भाँगि । भभेडी अह्याड घण, भोजपत्र भड चगि ।—मा का प्र

भालको—१ देखो 'भालोड' (अल्पा, रू भे)

उ०—ज्यू ही खीवै रा भाळका री चमक दीठी त्यू ही तुरत ऊठ उठै आय अजाणजख री होळै सी अेक तीर पकड खैंच्यो ।

—सूरेखीवै काघळोत री वात

२ देखो 'भालो' (अल्पा, रू भे)

भालडियो—स० पु०—१ वह बैल जिसके सींग भाले के समान तीक्ष्ण हो ।

२ देखो 'भालो' (अल्पा, रू भे)

३ देखो 'भालोड' (अल्पा, रू भे)

रू० भे०—भालडियो ।

भालडी—१ देखो 'भालो' (अल्पा, रू भे)

उ०—राम लखमण मही दुखि पाळ्या, पाच पाडव विदेसि भमाडया । डूब नइ घरि जल वहिउ हरचदिइ, भालडी मरण लाध मुकुदिइ ।—सालिसूरि

२ देखो 'भालोड' (अल्पा, रू भे)

भालडो—१ देखो 'भालो' (अल्पा, रू भे)

उ०—भवरजी कोई भलके तो हाथा में जाणु भालडा हो म्हारा राज । आछा तो चढिया भंवरजी अलवलिया असवार ओ साईना ।

—लो गी

२ देखो 'भालोड' (अल्पा, रू भे)

उ०—पेलै पार वरे बीद झराये वेवाणा परी, सोक सरा वायकुडा पुराये सादीह । फरा फाडै सत्रा तोहै चुराये भालडा फूटै, अेकै-राहै फतै जांगी घुराये अवीह । —गभीरसिंघ सोलकी रो गीत

भालचद्र—स० पु० यौ [स० भाल+चन्द्र] शिव, महादेव । (डि को)

भालडियौ—१ देखो 'भालडियौ' (रू भे)
२ देखो 'भालोड' (अल्पा, रू. भे)

भाळणौ–वि०—देखने वाला।
उ०—वस छतीस वरस, गनीमा गाळणौ। आभाळो अधपती, भली द्रढ भाळणौ। जारजपचम जोध, ढिलीवै ढूकडौ, आठू पहर अबीह मेडेचो रहै खडौ।—प्र प्र
स० पु०—देखने की इच्छा, मिलन।
उ०—म्हारी मा रा रे जाया, छिन-छिन आवै रे मांयरा रा भाळणा।—लो गी.

भाळणौ, भाळबौ–क्रि० स०—१ देखना।
उ०—१ भणै पग सिद्ध सातू मुनि भाळ, मेल्है पग माणक मोतिय-माळ। वदै पग रावत वस विसुद्ध, सेवै पग चारण किन्नर सिद्ध।
—ह र
२ तलाश करना, खोज करना, ढूढना।
उ०—रांणी तौ कळिजुग रौ रूप एहा अभिरूप अवनीस रौ तिरस्कार करि सुद्धात रै आस्रित अनेक जन रहै जिका मैं कोई दो ही लोक रौ खोवणहार टाळियौ, जिणरी सगति रै प्रभाव स्वरग लोक रौ मारग मुद्रित कराय कुंभीपाक रौ निवास भाळियौ।
—व भा
३ समझना, जानना।
उ०—अर एक ही घर रौ जुद्ध जाणि अठी उठी दोही तरफ रा सरवही स्वकीया भाळिया।—व भा
भाळणहार, हारौ (हारी), भाळणियौ—वि०।
भाळग्रोडौ, भाळियोडौ, भाल्योडौ—भू० का० कृ०
भाळीजणौ, भाळीजबौ—कर्म वा०।

भाळदार–वि० (स्त्री० भालदारण) १ ध्यानपूवक देखने वाला।
२ तलाश करने वाला।

भालनैत्र–स० पु० यौ० [स० भाल+नैत्र] जिसके मस्तक पर नैत्र हो, शिव।

भालपत, भालपति, भालपती–स० पु० यौ० [स० भालूक +पति]
१ रीछो का स्वामी या मालिक।
२ जामवत।
उ०—जोमेल गयावक नील जती, फिर तार दुय दिसु भालपती। गंधमादन आद दवादस गाजिय, कीस ससाजिय फौत रा।
—रा रू

भालम—देखो 'भलम' (रू भे)
उ०—बावेची चहुवाण भरी तन गुण भालम री। मधु जगतसिंह री सुतन वधु 'मालम' री।—भगवान जी रतनू

भालमको–स० पु०—कीर्ति का रक्षक।

भाळयळ–स० पु०—देखो 'भाळ' (१) (रू भे)
उ०—जुध कळळ वाजिया वयळ वारह जसौ, भळहळै भाळयळ सुजळ अदभूत। प्रगट रज बीज वीसह वीसा रसा पुड, राज मा नीपजै अजे रजपूत।—महाराज रणसिंघ रौ गीत

भाळवी–वि०—१ तलाश करने वाला, ढूढने वाला।
२ देखने वाला।

भाळहळ—१ देखो 'भळळ' (रू भे)
२ देखो 'भाळ' (१) (रू भे)

भालांक–सं० पु० यौ [स० भाल+अक] शिव, महादेव।

भालागीरी–स० स्त्री० [स० भल्ल+रा० प्र० गीरी] भाला या वरछा चलाने की विद्या।
उ०—भालागीरी भेद मे वळ साह वखाणै, सेलहथा 'तखतेस' सुत हिंदू तुरकाणै। राजा रावळ राव राण जग सारा जाणै, आज 'प्रताप' प्रताप इळ वडवार वखाणै।—मोडजी आसियौ

भालावरदार–स० पु० यौ० [स० भल्ल+फा० बरदार] भाला या बरछा चलाने वाला।

भाळाभळ—देखो 'भळाभळ' (रू भे)

भालाळ, भालाळौ–वि० [स० भल्ल+ प्र० आलुच्] १ भाला या बरछा धारण करने वाला।
२ पावू राठौड के लिए प्रयुक्त शब्द।

भालासींगौ–स० पु० यौ० [स० भल्ल+शृङ्ग] वह पशु जिसके सीग भाले के समान तीक्ष्ण हो।
रू० भे०—भालोडसीगौ।

भाला-हत्थौ—हाथ मे भाला रखने वाला।
उ०—एक एक नर्म खग्र आगळा, भाला-हत्था भड सिहर। नव समद खाण नवसाहसा, राठौडा रिणमल्ल हर।—गु रु ब

भाळाहळ–वि० [अनु०] १ भरा हुआ, पूरा भरा हुआ, पूर्ण।
उ०—खुटहड गज ज्यू विखम, भरे पौरस भाळाहळ। पय रवेव घरि पभग, हरख चढियौ झाळाहळ।—सू प्र
उ०—भड वोलै हरभाण, पौरस भाळाहळ। असुर थाट आछटू, झाट बाणास भळाहळ।—सू प्र
२ देखो 'भळाभळ' (रू भे)

भालि—देखो 'भालोड' (रू भे)
उ०—१ 'विरह भालि सु मरि गई, हिवडै रही खटक। हरीया राम सनेह कु, जीवडौ रह्यौ अटक।'—स्रीहरिरामदासजी महाराज
उ०—२ विरह भालि जाकै लगी, अग अग मे एक। जन हरिया तन बीच मैं, करिगी छेक अनेक।—स्रीहरिरामदासजी महाराज

भाळिअल्ळ—देखो 'भाळ' (रू भे)

भालिम, भालिमि—देखो 'भलम' (रू भे)
उ०—१ विधि एणि वधावे वसत वधाए, भालिम दिन दिन चढि भरण। हूलरावणै फाग हुलरायौ, तरु गहवरिया थिय तरण।
—वेलि

उ०—१ आभी नवखडे प्रसिधि, माभी अमणीमाण । भालिम खाटण निवड भड, जालिम जोध जुआण ।—ल पि

उ०—२ भालिमि कुळ भाण मन महिराण, जस रस जाण जुआण । तढमल तुडिआण विमळ बखाणि, सूरति नाण समाण ।—ल पि

भाळियळ, भालियल, माळियळि, मालियलि—वि०—१ देखने वाला, दर्शक ।

२ देखो 'भाळ' (१) (रू भे)

उ०—१ प्रगट परताप जिनरतन रौ पाटवी, सकल सुख देण कवि कहै धरमसीह । भालियल तेज किरणाल जिम भालता, दलित मेटै करै दौलति दीह ।—ध व ग्र

उ०—२ भळहळ उज्जळ भाळियळ, कर तेज प्रभाकरा भुज परचड खळा भखण है भाट फुणधर । मन महराण नभीर मत, गुरआत सूरागुर, चौरासी रूपक ममज, खट भाख वहोत्तर ।

—मोडजी आसिया

उ०—३ मुख सिख सवि तिलक रतनमै मडित, गयौ जु हूतौ पूठि गळि । आये क्रिसन मांग मग आयौ, भाग कि जाणौ भाळि-यळि ।—वेलि

माळियोडौ—भू० का० कृ०—१ देखा हुआ २ तलाश किया हुआ, खोज किया हुआ ३ समभा हुआ, जाना हुआ

(स्त्री० भाळियोडी)

माळीअळेय, माळीयळ—देखो 'भाळ' (१) (रू भे)

उ०—१ कोमुड खवै कडि कसै तूण, भड पत्थक भीखम करन द्रोण । केसर तिलक्क माळीअळेय, मुक्कता-माळ सोहै गळेय ।

—गु रू व

उ०—२ आदू मजन करिध पाट पेहरे देही दळ, तिलक कुकम माळीयळ । करणै कान आटक वेण नासा मोतीहळ, हार उर चदन विलेप रची कांकण कटि मेखळ ।—गु रू व

माली—१ देखो 'भालौ' (अल्पा , रू भे)

२ देखो 'भालोड' (रू भे)

मालु, मालुर—देखो 'मालू' (रू भे)

मालुनाथ—स० पु० [स० भाल्लुक +नाथ] १ रीछों का स्वामी या मालिक ।

२ जामवत ।

माळू—स० पु०—१ वह व्यक्ति जो शिकारी को शिकार की खबर देता है ।

उ०—इसै समइयै मे भाळुवा आण अरज कीवी छै । भाखरा रा खुडा वेहडां माहा सूअर नीचा उतरिया छै ।—रा मा स

वि०—१ तलाश करने वाला, खोज करने वाला ।

२ देखने वाला ।

मालू, मालूक—स० पु० [स० भाल्लुक] बडे-बडे कान वाला काले रग का एक प्रसिद्ध स्तनपायी चौपाया, रीछ ।

रू० भे०—भाल, भालक, भालु, भालुक ।

मालेराव—सं० पु०—वह व्यक्ति जो भाला चलाने मे कुशल हो ।

उ०—यू करता लूको बारह वरस रो हुवो । मालेराव घोडै असवार हुवो ।—नैणसी

मालोड—स० स्त्री०—१ किसी शस्त्र के आगे का नुकीला भाग ।

उ०—खीवै री कमर माही सखरा चवदै तीर सौ केसरिया कमरबध सू वधा छै । तिका री भालोड़ आगले पासे सू बाहर दीसै छै, भळभळाट करती ।—सूरेखीवै काधळोत री वात

२ तीर, बाण ।

उ०—१ इये समचै माहे च्यार सव जळधर रा धणी अर मुळताणी कमाण घणी वाढ रा तोडिया भालोड जुवाना रै हाथों हता ।—राजा नरसिंघ री वात

उ०—२ काळा भवरा कमद रा, दोळी फिरिया दौड । खारा लाग खीचिया, भीला रा भालोड ।—पा प्र

३ देखो 'भालौ' (अल्पा , रू भे)

अल्पा०—भालडियो, भालडी, भालडो, भालडियो, भालि, भाली, भालोडी ।

मालोडी—१ देखो 'भालौ' (अल्पा , रू भे)

२ देखो 'भालोड' (रू भे)

मालोड—१ देखो 'भालोड' (रू भे)

उ०—१ गुण बाण सीधाणि गाढ, वाहति ताणक वाढ । बदूक बांणे मार, भालोड भग भभार ।—गु रू व

उ०—कोमड गरज्ज हुए हलकार, भडा भालोड करत भभार । एकू की मूठ विछुट्ट अमख, परै सर फूटै कोरी पख ।—गु रू व

२ देखो 'भालौ' (अल्पा , रू भे)

माळौ—वि०—१ देखने वाला, दर्शक ।

२ तलाश करने वाला, खोज करने वाला ।

मालौ—स० पु० [स० मल्ल] लम्बे डडे पर नुकीला फल लगा हुआ एक वस्त्र विशेष, वरछा, नेजा ।

उ०—१ 'पवा' समत्था आगळा, हत्था 'चद' मुजाव । भाला जैत निभाहणा, 'वाला'हदा राव ।—रा रू

उ०—२ भाला री भचाका चम्वाइ केही पटेता नू पाडि कुमार आपरै देस री दिसा आडै पग आवण नू मरतै मारतै प्रयाण कीधो ।

—व भा

रू० भे०—भलक, भल्लौ, भाअलोड, भालोड ।

अल्पा०—भालको, भालडियो, भालडी, भालि, भाली, भालोडी ।

मह०—भल, भल्ल, भाल ।

मालोडसींगौ—देखो 'भालासीगो' (रू भे)

भाव-स० पु० [स०] १ किसी वस्तु की स्थिति या होने की सत्ता, अस्तित्व, सत्ता ।

उ०—१ जो कछु भाव वदे सोई माया, याकू नहिं परमदा । भाव अभाव सू परे परमानद, सोई निजानद कदा । गुरुदा ग्यानी भणीता ।—सुखरामजी महाराज

उ०—२ तिलाकारी के पड़दे जोति के जहूर जरवफी सिर्ग का वणाव । गुलजार के नगारे बसतका भाव । ऐसी हवा के बीच ऐसे डवर दरसाए ।—सू प्र

विलो०—अभाव ।

२ अवस्था, दशा, हालत ।

उ०—१ वो सोळै-सत्तरै सू किणी भाव कम नी लागतो । नित रो घडी दूध तौ हा करता डकार जातौ ।—फुलवाड़ी

उ०—२ पोहरा सू तौ कदास हाथाजोडी करया, पग भाल्या, मूडा में तिणकौ दाब्या बचाव व्है सकै पण मरणा दरबार म बीडो उठायां पछै मूडै मूड ना दे दियो कै किणी दूजा रै साथै ना रा समचार भेज्या तो राजाजी किणी भाव नीं छोडैला ।

—फुलवाड़ी

३ श्रद्धा, हार्दिक भक्ति ।

उ०—१ मांनै तीरथ मात नू, विमळ भाव वणियाह । मात भला सुख मानियो, ज्यां पूता जणियाह ।—वा दा

उ०—२ चितामण लधाया जाण दरसण चवू, खळ रिता दयाया दैत खाया । राव पगमडा कर वधाया सुराणी, अधाया भाव-रा आप आया ।—गेतसी वारहठ

उ०—३ अरु कवरजी स्रीवीकोजी स्रीकरनीजी रो घणो भाव राखै है ।—द दा.

यौ०—भावभगत, भावभगति ।

४ दृढ प्रतीति, विश्वास ।

उ०—भीतर घर दृढ भाव, तो मोझल दूजा तिके । दुस्तर भव हरियाव, नर तरिया निरझर नदी ।—वा दा

५ कल्पना, भावना ।

उ०—गुण सागर दुस्तर अगाध, अति बाध अपारण, वेळ निजर विद्दुर्सां, असह कवि भ्रमर अकारण । कळा तिमगळ रिता उरगा गुण दोस विचारक । पवे सिखर इम गुपत, किता गुण ओगुण कारक । उर भरम छेह लैणो अगम, अमकत उद्यम दक्खती । कर भाव पार गुण सर करण, साचो नाम सरस्वती ।—रा रू

६ मन मे उत्पन्न होने वाली कोई भावना, ख्याल, विचार ।

उ०—१ गोप त्रिया गोपाळ, जाण्वा रग भूमे जदन । कस लख्यो तिण काळ, भाव प्रमाणै 'भेरिया' ।—महाराजा बळवतसिंघ-रतलाम

उ०—२ इण रीति आपरा ओर भी विमेस बीरा नू बघाइ काका रा द्वार रो कवाड होइ सेना समेत सलेम उठैही आडो रहियो । अर काई भी पुछियार होड प्राची रो परिसर इकट्ठो व्है फर भी दिल्ली पर चलावण दृढ भाव गहियो ।—वं भा

उ०—३ साईंतो रा हुरम में दूं म्हारै याम्ने सरब प्राणद वसै । इण हुरम में रांको पटकण वाळा म्हारे सामै कुसराई है । म्हैं तो म्हारा भाव दरसाया । ससनदारां नै ससभावना म्हूं फोजा लागां ।

—फुलवाड़ी

७ प्रकृति, मिजाज, स्वभाव । (ह ना मा)

उ०—१ भ्राता कंठ लगाई भाई, श्रीवर गुर राज वात सुणाई । त्रिलोकीराय नर भाव तन विसतारे ।—र ज प्र

उ०—२ कवर सरणाई साधार सुमानां री महाड रै'र सार हुवो जिकण आपरा अनादर रै माटै प्रत्वर जिसडा पातसाह री तोडी तिणरो प्रतीकार दिखावण रै काज केवळ वीर भाव रो जस चाहियो ।—वं भा

उ०—३ 'दखिणा रै द्वारपाळ महामूढ सत्रुन रा पत्र सुणता ही अस्त्र उठाय साहि लीधा । जठै भीम रा सिपाहां तोरण रै बाहिर आया जिके राजा सहित प्राकार में प्रविस्ट कीधा । या वात स्रवणगोचर पडता ही गढ रा सिपाह प्राकार री भींती रा अग रो स्परस करता मन रा चालवा में विलव न होय तिण रीति सुणता ही समीप आया । अर चक्री रा चक्र रै समान मही रै माथै प्रतिबिंब पाडता चतुरंग सेना मेघमाळा में चपळा रा चपळ भाव में चूक पाडता चंद्रहास चलाया ।'—वं भा

८ ओहदा, पद ।

उ०—पद्रह दिन रहिया बावीसमा पातसाह तैमूर रै गयां केई प्रतिमा मात्र सोळह बरस रहियां इकवीसमा पातसाह महमूद रै मरियां पाछै विक्रम रा व्योम बाजी वेद विधु १४७० सम्मित साह रै समय मुलतान रा सूबादार सय्यदमलिक सुलेमान रै पुत्र खिजरखान नाम तेवीसमैं पातसाह दिल्ली रो अधिराज भाव गहियो ।—वं भा

९ आचरण ।

उ०—विजय रा लोभी रजपूत चाहै जिण समय आड सम विसम जुद्ध करै । अर जनकादिक गुरुजनां नू टाळि तिकां रै साम्है तो अनुगत भाव धरै ।—वं भा

१० चित्त, मन ।

उ०—१ राजकवरी तो इण निसक भाव सू मिळी जाणै वारी जुगा जूनी प्रीत व्है । राजा राणी दोनू उणरा पगा मे पलका विछाय दी । अर राजकवर आपरा हाल में ई मस्त हो ।

—फुलवाड़ी

उ०—२ राजकवर निरमळ भाव सू कह्यो—म्हारी बाई म्हारी मा री सीख थारी समझ मे सावळ बैठी कोनी ।—फुलवाड़ी

११ तरह, प्रकार ।

उ०—१ पण उणरा पग भालणा अर रोवणा सू किणी दाई रो हीयो नी पसीजियो । अकरम अर पाप नै आपरै हाथा जलम देवण सारु वै किणी भाव राजी नी व्ही ।—फुलवाडी

उ०—२ पछै औ भरम काई तो भूठो अर काई भलो । थारै जीवण मे जको सजोग सजियो उणनै गाजा वाजा रै साथै वधाव। अपानै तो फगत अपारा पेंखडा तोडणा है, जे इण मे मिनख आडो फिरै, जोरावरी जतावै तो उणसू किणी भाव पडपणो है ।
—फुलवाडी

१२ अनुराग, प्रेम, प्यार ।

उ०—प्रीति न उपजे विरह विन, प्रेम भक्ति क्यो होइ । सब भूठे दादू भाव विन, कोटि करै जे कोइ ।—दादूवाणी

१३ चोचला, नखरा, नाज ।

उ०—दीठा भाव दिखावणा, हुरकणिया रा हाथ । हात नही मन किमि हिचे, भेळै अस भाराथ ।—बा दा

१४ हाव-भाव ।

१५ सम्मान, आदर, इज्जत ।

उ०—'सूर' रौ कुरव्व साह, भाति भाति कीध भाव । देखता स राह दोइ, रौद खान भूप राव । मेलियो तुजक्क मीर, दीध हाथ पानदान । आखियो दिलेस एम, पाति हूत फेरि पान ।—सू प्र

१६ भुकाव, विचार ।

उ०—इण कारण यो ही अधरम अनुमत मैं जाणि उणांनू मिळाइ छळ कीधा एक भी अधम जीवण न पावै । तिणसू गगदेव रो आगम जांणि पहिली सूचना करि मोनू बुलाइ गमारा नू म्हारी सहायक भाव दिखावणो ।—व भा

१७ मन में उत्पन्न होने वाली भावनाओ या विचारो का द्योतक आभास, छाया या सकेत जो किसी के चेहरे पर स्वयमेव लक्षित होता है ।

१८ किसी के मन मे उठने वाले विचारो का वह मूल एव अपरिपक्व रूप जिसमे उसका उद्देश्य व आशय निहित होता है तथा वाद में वह विकसित होकर विचार मे परिणित हो जाता है ।

१९ कार्य, कृत्य, क्रिया ।

२० ढग, तरीका ।

उ०—जोगी ई जाण्यो अेकर वळे गोता खायलू । म्हारै डील रो कांई घिसै । इण भाव ई मौ रुपिया मू'घा कोनी ।—फुलवाडी

२१ आत्मा ।

उ०—१ वामणी उणी भात काठी छाती करिया अवचळ भाव सू राजमैं'ल रै बारै' निकळी । कुण ई रोक-टोक नी करी ।—फुलवाडी

उ०—२ लक्खी री बाता सुणनै वामणी रा जीव में थोडो-घणो थावस आयो । वा निरांत भाव सू वोली—काया नै राखण सारू म्हनै अधपायली कणू का चाहीजै अर लाज ढकण सारू व्है जैडो ई गाभो ।—फुलवाडी

२२ जन्म, पैदाइश ।

२३ भग, योनि ।

२४ रति-क्रीडा, सभोग ।

२५ किसी पदार्थ, काम या बात का वह गुणात्मक अथवा धर्मात्मक तत्त्व जो उसकी मूल प्रकृति का सूचक होता है और जिसकी सत्ता से पृथक तथा स्वतत्र मानी जाती है ।

ज्यू—सीतळ रो भाव सीतळता ।

२६ किसी कथन, लेख आदि का गूढार्थ, आशय, अभिप्राय, तात्पर्य, मतलब ।

२७ किसी पद्य या गद्य अवतरण का साराश ।

२८ साख्य के अनुसार छ भावो से युक्त पदार्थ जो जन्म लेता हो, रहता हो, वढता हो, क्षीण होता हो, परिणामशील हो और नष्ट होता हो ।

२९ साख्य में बुद्धि तत्व का कार्य, धर्म या विकार जो वेदान्त के अनुसार 'कर्म' है ।

३० वैशेषिक मे द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष और समवाय ये छ पदार्थ जिनका अस्तित्व निश्चित तथा वास्तविक माना गया है ।

३१ किसी वस्तु का मूल्य, कीमत या दर ।

उ०—१ और भाव देता करै, लेता और हि भाव । धाव परायो हरण धन, साहा जात सुभाव ।—वा दा.

क्रि० प्र०—उतरणो, गिरणो, घटणो, चढणो, वढणो ।

३२ साहित्य मे मानसिक अवस्थाओ का व्यजक प्रदर्शन जिससे रस की उत्पत्ति होती है । साहित्यकारो ने इसे स्थायी, व्यभिचारी एव सात्विक तीन वर्गों मे विभक्त किया है ।

३३ साहित्य मे नायका के योवनावस्था मे उद्भूत २८ अलकारो मे से एक ।

३४ सगीत मे पाचवा अग जिसमे गाये जाने वाले गीत मे वर्णित मनोभाव कोई शारिरिक चेष्टा से प्रत्यक्ष करके दिखाया जाता है ।

३५ जन्म कुडली का विचार करते समय रक्खी जाने वाली ग्रहो की १२ स्थितियो मे से एक । (फलित ज्योतिष)

३६ ज्योतिष मे साठ संवत्सरो मे से आठवे सवत्सर की सज्ञा ।

३७ ज्योतिष मे जन्म समय का लग्न ।

३८ उद्देश्य, हेतु ।

३९ कामना, वासना ।

४० कर्मों के उदय, क्षय, क्षयोपशम या उपशम से होने वाले आत्मा के परिणामो के नाम । (जैन)

वि० वि०—ये छ होते हैं—१ औदयिक भाव । २ औपशमिक भाव । ३ क्षायिक भाव । ४ क्षायोपशमिक भाव । ५ पारिणामिक भाव । ६ सान्निपातिक भाव ।

४१ वस्तु का गुण या स्वभाव। (जैन)

४२ किसी देवता के चढाया हुआ प्रसाद।

४३ विद्वान।

४४ आंतरिक ज्वर, मोतीझरा एवं चेचक नामक रोग का प्रकोप।

ज्यू०—इण नै तो माताजी रो भाव है।

४५ आंतरिक ज्वर, मोतीझरा एवं चेचक नामक रोग का नामान्तर।

४६ शरीर मे किसी देवता की उपस्थिति अनुभव होते हुए तद-नुसार अंगो का सचालन होने एवं ध्वनि होने की क्रिया।

क्रि० प्र०—आणौ।

४७ एक गीत (छंद) विशेष जिसके प्रत्येक चरण मे १४ मात्राएँ होती है तथा ४, ५, ५, पर यति होती है एवं अन्त मे लघु गुरु होते हैं।

रू० भे०—भाउ, भाऊ, भाय।

भावइ, भावइ—देखो 'भावै' (रू भे)

उ०—१ तुही ज सज्जण, मित्त तू, प्रीतम तू परिवाण। हिय-डइ भीतरि तू वसइ, भावइ जांण म जाण।—ढो. मा.

उ०—२ सज्जण हू तुझ तू मुझइ, अवर म नेग्री लेगि। मुझ तुझ हियडा अेक छइ, भावइ काढी देख।—अज्ञात

भावक-स० पु० [स०] १ कुशल, मगल। (अ मा, ह ना मा)

वि०—२ किंचित्, जरा।

३ भावना करने वाला, भक्त।

४ देखो 'भावुक' (रू भे)

उ०—कमुद-जन विकस सकुडै कमळ-कम कुम, भावका चकोरा नयण भायो। सबळ तम तोम मथुरा गयद तणे गिर, अबळ गोकळ तणो चद आयो।—वां दा

भावगम्य-वि० यौ० [स० भाव+गम्य] भावो के द्वारा जाना जा सकने वाला।

भावड, भावडदा—देखो 'भावट' (रू भे)

उ०—१ म्हारी तो सगळी वाता ऊंधी। जीवण रा सगळा सरा-जांम सू म्हनै अणूती चिड है। लुगायां रै कूख री थैलिया अर हांचळा रै मास री म्हनै अणुती भावड है।—फुलवाडी

उ०—२ डावडी मोसा रो इक मारती वोली—साटां अरोगण री अेडी ई भावड व्है तो माय पधारो।—फुलवाडी

उ०—३ भूरी सूभरभर भावडवा भांगी, मोटी झोटी री आवडदा मागी। चारो नाणू व्है खारी भर चारै, अपणी प्यारी पर प्राणां-तक वारै।—ऊ का

भावज-स० स्त्री० यौ० [स० भ्रातृ+जाया] १ बडे भाई की स्त्री, भाभी।

उ०—उभी भावज दइ छइ सीख, रतन कचोळो राय सांपजै भीख। ते मांड पग मू ठनीजै, इणी न राया तणो नहीं न अवास।—वी द

रू० भे०—भाभज, भावज्या।

अल्पा०—भाभजडी, भावजडी।

वि० [स० भाव+ज] २ भाव से उत्पन्न।

भावजडी—देखो 'भावज' (अल्पा, रू भे.)

उ०—थारी वीरो मा फिरं छं उदास, जिनगत थारी भावजडी। वन मठ की अे कोयल, या मठ छोड कठै चली।—लो गी

भावज्या—देखो 'भावज' (रू भे)

उ०—भाई माता भावज्या, नाग गये भूपाळ। अब हू राकम बग पडी, फदे न मिटै जंजाळ।—पचदडी री वारता

भावट, भावठ, भावठि, भावठी—स० स्त्री० [स० भावट] १ अभिलाषा, इच्छा।

उ०—१ पातां जीवन पाळगर, अनदाता आधार। 'जेहो' भारह-मल्ल रो, भावठ भजणहार।—वां दा

उ०—२ सोना रतीदं स्यापूई, नक-माहि निउ आवि। भावठि छडी भामिनी। लक्ष्मी जमनि निमावि।—मा का. प्र

२ भूख।

उ०—पै तो भूखां नी भावठ भजउ, राजि निज भेयर तणा मन रजउ राजि।—वि कु

३ दिल का भाव, भावना।

४ शौक, चाव।

५ कष्ट, दुख, तकलीफ।

उ०—१ कवि तो गाता 'घमळ' मळोधर, भावठि भजण लील भुवाळ। लहुवे सरै वसता लाजै, माणसरोवर तणा मुणाळ।

—ईसरदास वारहठ

उ०—२ मस्तक सुदर तिलक विराजइ, दरसण दीठा भावठि भाजइ। पहिरइ नित नित नवा रगाउ, तेगदार माहे अधिकउ तागउ।—कविवर स्रीसार

६ धोखा, जाल, चालाकी।

उ०—अगुलफरम कराविउ ताणि, राइ मूकइ पाहिर पराणि। रोमांचित दवदती थई, भावठि मगती नाहनी गई।

—नळदवदती रास

वि०—मन को भाने वाली, अभिलाषित।

उ०—भरी अघोडी भावठी, वैठा पेट फुलाइ। दादू सूकर स्वांन ज्यो, ज्यो आवै त्यों खाइ।—दादूवाणी

रू० भे०—भावड, भावडदा।

भावण-स० स्त्री०—रुचि, इच्छा, चाह।

वि०—मन को अच्छा लगने वाला, लुभावना।

उ०—गांवा गावा मे गीतेरण गाती, चितरण अह भींतर चीतेरण चाती। गावड डायड का भावण गुण गाता, गाया गरभाती गोरी गरव्वाता।—ऊ. का

रू० भे०—भावण।

भावणा—देखो 'भावना' (रू भे)

भावणो—वि०—१ सुन्दर, मनोहर।
२ अच्छा, रुचिकर।
३ प्रिय लगने वाला।

भावणौ, भावबौ—क्रि० स०—अच्छा लगना, रुचिकर लगना।
उ०—१ कृपणां जम भावं वठै, विधि विमुखां नू वैद। 'बाका' भोजन नह रुचै, ज्यारै वप ज्वर खेद।—बा दा
उ०—२ जीकारौ अम्रत ज्युंही, भावै जग नू भाळ। है रंकारौ आक पय, गरळ बराबर गाळ।—बा दा
२ प्रिय लगना, पसन्द आना।
उ०—दादू जे साहिब कौ भावै नही, सो हम थै जनि होइ। सद्-गुरु लाजै आपना, साध न मानै कोइ।—दादूबाणी
३ सुन्दर लगना।
भावणहार, हारौ (हारी), भावणियौ—वि०।
भाविग्रोडौ, भावियोडौ, भाव्योडौ—भू० का० कृ०।
भावीजणौ, भावीजबौ—कम वा०।
भांवणौ, भावबौ—रू० भे०।

भावत—क्रि० वि०—१ अकस्मात्, अचानक।
उ०—मत 'सेन' निपाप चले अप सेवन, भावत विच मिळाप भयौ। ग्रह लाये छाप जिका सिर गाढी, पेम अमाप घणी पठियौ।
—भगतमाळ
२ देखो 'भवतव्यता' (रू भे)

भावदया—स० स्त्री० [स० भाव+दया] किसी प्राणी की दुर्गति देखकर मन मे दया भाव लाना। (जैन)

भावन—स०स्त्री०—१ एक राजस्थानी लोक गीत।
उ०—गवीजै लुहरा टपा भावन गहर, विरह जन विरह छीजै वराणा। दुबारा छाक पीजै 'अरस' दूसरा, रैणवा दिरीजै दरस राणा।—चमनजी आढौ
२ एक राजस्थानी छंद।
३ रुचि, पसन्द।
उ०—कोई कहियौ रै प्रभु आवन की, आवन की मन भावन की। आप न आवै लिख नहिं भेजै, बाण पडी ललचावण की।—मीरां
४ देखो 'भावना' (रू भे)
उ०—१ वलि त्रिकाल पूजा करी, भावन भावी सुद्ध। उन्नति कीधी अति घणी, धरम कीयौ अविरुद्ध।—वि कु
उ०—२ स्रीजिनेस्वर नै मंदिर आवै भावन भावै, भवसायर लहु तरवा रे लो।—वि कु

भावना—सं० स्त्री० [स०] १ अनुभव और स्मृति से उत्पन्न चित्त का एक संस्कार, विचार, खयाल, कल्पना।
उ०—१ सकळ स्रस्टि का चितही कारण, कारज बहुविध ठाणी। नाना रूप भावना नाना, चवदह तवक च्यारु खाणी।
—श्री सुखरामजी महाराज
उ०—२ जद इज तौ म्हैं घडी घडी कूकू कै था मिनखा विचै तौ जिनावर ई चोखा जकौ मन री भावना नै लुकावै कोनी।
—फुलवाडी
उ०—३ पण बाप तौ दिखावटी अैडौ व्यवहार करचौ जाणै की अजोगती बात नी व्ही। कै तौ डर अर लोभ रै कारण पेटा री बात होठा चढै कोनी अर कै मायली अतम ई अेक-मेक व्हैगौ। मिनखीचारा री सिरै भावनावां रौ विणास व्हैगौ।—फुलवाडी
२ मन मे उत्पन्न होने वाला किसी बात का चिंतन, ध्यान।
उ०—पछै राजकवर रै सामी देखनै जळजळी आख्या कै'वण लागौ—काटा काढ़ती वगत पजा माथै आपरी आगळिया रा परस सू म्हनै म्हारी मा री याद आयगी। आपरा परस मे म्हनै मा वाळी भावना लखाई।—फुलवाडी
३ श्रद्धा, भक्ति, प्रेम।
उ०—१ जगदवा कहियौ चाहै जिमौ कस्ट करौ भावना सुद्ध न होय जरै ऊ कस्ट मातग रा न्हाण जिम व्रथा फळ बतावै।
—व भा
उ०—२ अै तौ फगत भावना रा फूल है, म्हारी हस्ती ई काई कै म्हैं आपरी की वदगी कर सकू।—फुलवाडी
४ कामना, इच्छा।
५ उत्पत्ति, प्रादुर्भाव।
६ ओषध आदि को किसी प्रकार के रस या तरल पदार्थ मे बार-बार मिलाकर घोटना और सुखाना जिसमें उस ओषध में रस या तरल पदार्थ के कुछ गुण आ जाय।
७ शक्ति, बल।
उ०—इण विडरूप जगी खाका नै देख सास तौ पै'लाई ऊचौ चढ जावै। मौत रौ रूप इण सू तौ की ढाळै ई व्हैला। इमी रौ कूपळौ अजमावण री इण डील मे किण ठौड अर कठै भावना व्है सकै।
—फुलवाडी
रू० भे०—भावणा।

भावनामयसरीर—स० पु० यौ० [स० भावनामय+शरीर] साख्य के मतानुसार मृत्यु से पूर्व मनुष्य द्वारा धारण किया जाने वाला शरीर जो उसके जीवन मे किए हुए कर्मों के अनुरूप होता है। ऐसा भी मत है कि आत्मा के उस शरीर मे पहुचने पर ही मृत्यु प्राप्त होती है।

भावनी—स० स्त्री०—पार्वती। (डि को)

भावपरिग्रह—स०पु० [स०] जैन मतानुसार वह स्थिति जिसमे मनुष्य धन सग्रह नही करता या कर नही पाता, परन्तु धन-सग्रह की अभि-लाषा रखता है।

भावप्रधान–वि० यौ० [स० भाव+प्रधान] वह जिसमे भावो की प्रधानता या तीव्रता हो।

भावभगति, भावभक्ति, भावभगत, भावभगति–स० स्त्री० यौ० [स० भाव+भक्ति] १ आदर, सत्कार।
२ ईश-प्रार्थना, ईश्वर-भक्ति।
उ०—भावभगत भूसण सजै, सील सतोस सिंगार। ओढ़ी चूनर प्रेम की, गिरधरजी भरतार।—मीरा

भावमन–स० पु० यौ० [स० भाव+मन] जैन मतानुसार पुद्गलों के सयोग से उत्पन्न ज्ञान।

भावमाण–स० पु०—दान-द्रव्य लुटाना।

भावमैथुन–स० पु० यौ० [स० भाव+मैथुन] मन मे मैथुन का विचार करना। (जैन)

भावर–स० पु०—चौहान क्षत्रियो की एक शाखा।

भावरौ–स० पु०—गेहू के साथ पैदा होने वाली घास विशेष।

भावळी–स० स्त्री०—चाही खेती का एक हिस्सा जो दो बैलो की एक जोडी का माना जाता है।

भावळीबाब–सं० पु०—एक प्रकार का सरकारी लगान।

भाववाचक–स० पु० यौ० [स० भाव+वाचक] व्याकरण मे पदार्थ के धर्म, गुण या भाव को सूचित करने वाली सज्ञा।

भाववाच्य–स० पु० यौ० [स० भाव+वाच्य] व्याकरण मे अकर्मक क्रिया का वह रूप जिसमे वह कर्ता के व्यापार को सूचित न करके क्रिया के व्यापार का ही बोध कराती है। इस अवस्था मे कर्ता प्रथमा विभक्ति मे युक्त न होकर तृतीया विभक्ति मे युक्त होता है। ज्यू—जाईजणौ, हसीजणौ, दोडीजणौ।

भावविकार–स० पु० यौ० [स० भाव+विकार] यास्क के अनुसार जन्म, अस्तित्व, परिणाम, वर्धन, क्षय और नाश नामक छ प्रकार के विकार जिनमे जीव तब तक रहता है जब तक उसे ज्ञान नही होता।

भावव्यजक–वि० यौ० [स० भाव+व्यजक] भाव को व्यक्त या प्रकट करने वाला।

भावसधि–सं० स्त्री० [स० भाव+सधि] वह स्थिति या वर्णन जिसमे दो विरोधी भावो की सधि होती है।

भावसवर–सं० पु०—जैन मतानुसार नवीन कर्मों के ग्रहण को रोकने वाला आत्मा का परिणाम या शक्ति।

भावसवळता–स० पु० [स० भाव+सबलता] कई भावो की सधि का एक प्रकार का अलकार।

भावहिंसा–स० स्त्री० यौ० [स० भाव+हिंसा] केवल मन मे हिंसा का भाव आना जिसमे वह वास्तविक रूप से कोई हिंसा नही करता।

भावातर–स० पु० [स० भाव+अन्तर] हृदयस्थ विचारो मे परिवर्तन हो जाना। (जैन)

उ०—करणौ निरगि प्रकाश, आकाश थयौ निरास हो। कहज्यो मुख नी वात, ए भावातर गुनिवास हो।—वि कु

भावाभाव–स० पु० यौ० [स० भाव+अभाव] १ भाव और अभाव, होना और न होना।
२ उत्पत्ति और लय या नाश।

भावाभास–स० पु०—काव्य मे एक प्रकार का अलकार जिसमें कोई व्यभिचारी भाव किसी रस का पोषक न होकर स्वतन्त्र रूप से भाव अवस्था को प्राप्त होता हुआ दृष्टिगोचर होता है।

भावारथ–स० पु० यौ० [स० भाव+अर्थ] केवल भाव का अर्थ, अभिप्राय, तात्पर्य।

भावारस–सं० पु०—'रघुवरजस प्रकास' के अनुसार तीन लघु मात्रा का नाम।

भावालकार–स० पु० यौ० [स० भाव+अलकार] एक प्रकार का अलकार।

भावाश्रित–सं० पु० [स० भावाश्रित] सगीत मे अग-सचालन द्वारा भाव दर्शाने का एक नृत्य।
वि०—जो भावो पर आधारित हो।

भावि—देखो 'भावी' (रू भे)

भाविक–स० पु०—१ भविष्य मे होने वाला अनुमान।
२ साहित्य मे एक अलकार जिसमे भूत और भविष्यत् भावो का एक साथ वर्तमानवत् वर्णन किया जाता है।
वि०—१ भाव सम्बन्धी, भाव का।
२ भाव या आशय जानने वाला।
३ मर्मज्ञ।
४ असली, वास्तविक।
५ प्राकृतिक, नैसर्गिक।
६ भविष्य मे होने वाला, भावी।
रू० भे०—भावीक।

भाविजोग, भाविजोगि—देखो 'भावीजोग' (रू भे)
उ०—दोनूं ओड भाविजोगि कोई कामि आवै, सेखां का पठांणां वैर कोई भी न पावै।—शि व

भावित–वि०—१ विचारा हुआ, सोचा हुआ।
२ मिलाया हुआ, मिश्रित।
३ शुद्ध किया हुआ।
४ किसी सुगध से सुवासित किया हुआ हो।
५ जिसमे किसी रस की भावना दी गई हो।

भावियोडौ–भू० का० कृ०—१ अच्छा लगा हुआ, रुचिकर लगा हुआ.
२ प्रिय लगा हुआ, पसन्द आया हुआ ३ सुन्दर लगा हुआ
(स्त्री० भावियोडी)

भावियौ–स० पु०—जिसमे किसी रस आदि की भावना दी गई हो, मिला हुआ।

भावी–स० स्त्री० [स० भाविन्] १ होनहार, भवितव्यता ।
उ०—वीर महाबळ धीर उर, सूरम सूरत धार । भ्रावी भ्रादर ऊठियो, भावी सीस विचार ।—रा रू
२ भविष्यकाल ।
उ०—१ पति विग्रह तो ग्रह परठाणा, लेख मिटै नह वैह लिखाणा । इण दोखण भ्रप नह भ्रादरसी, भावी साखि मुनिंद तद भरसी ।—सू प्र
उ०—२ भावी थित पूरण गरभ, दसमै मास उदार । जनमे कोसळ मात जदि, रामचद भ्रवतार ।—सू प्र.
३ भाग्य, प्रारब्ध ।
उ०—१ भगवत करता नै करतव भुगतावै, पिछला पापा रा पांमर फळ पावै । भावी भूलोडा भूको क्यू भाया, पोचा करमा रा पोचा फळ पाया ।—ऊ का
उ०—२ भ्रन्यू सीमासी रावी विसमासी, भीमा भावी मी भीमा निस भासी । तूहिन कठीरव तन कुजर तावै, डग-डगि चढ़ियोडा मरिया डुसकावै ।—ऊ का
४ श्रद्धा, भक्ति ।
रू० भे०—भवि, भावि, भावीस ।

भावीक–वि० [स० भाविन्] १ भक्ति या श्रद्धा भाव रखने वाला । (मा म)
२ देखो 'भावुक' (रू भे)
उ०—वेसवटो हजूर भ्राय ऊभो रह्यो नै भ्रासीस भणी, 'राजन के राजा, साह गहण साह, मोखण भ्राप भावीक, जो भ्रारभ जो करै भ्राली महिराण पूरव के वाजा वार्जे, पूरव के जैतवार, दखण के जैतवार, पछम के जैतवार, उत्तर के जैतवार ।'
—भागावत मूळवे री वात'
३ देखो 'भाविक' (रू भे)

भावीजोग–स० पु०—१ होनहार भवितव्यता ।
२ प्रारब्ध, भाग्य ।

भावीस—देखो 'भावी' (रू भे)

भावुक–वि० [स०] १ भावना करने वाला, सोचने समझने वाला ।
२ वह कोमल हृदय जिसके मन मे भावो का उद्वेग या सचार बहुत शीघ्र होता हो ।
३ वह जो भावो के बहाव मे कर्त्तव्य भ्रकर्त्तव्य को भूल जाय ।
४ भ्रच्छी बातें सोचने वाला ।
५ समृद्धशाली ।
रू० भे०—भावक, भावीक ।

भावै–क्रि० वि०—चाहे, भले ही ।
उ०—१ साईं सू साचा रहो, वदा सू सतभाव । भावै लावा केस रख, भावै घोट मुडाव ।—दादूवांणी
उ०—२ ताहरां इयै राजा कहाई–'थु भावै हजार भ्रसवार लियो भ्रर भावै एकलो सेतराम ल्यो ।'—नैणसी
२ भ्रथवा, या ।
उ०—मुहता हुता पिण बीहा सु म्हे न कहीं नु काढा न किण ही भेळा हुवा । थाहरो छै ज्यू थां दाइ भ्रावै न्यू करो । मारो भावै राखो ।—द वि
३ स्वत, भ्रपने भ्राप ।
उ०—लूकी रै हाथै नी भ्राया जिण सू भावै ही भ्रगूर खाटा व्हैगा ।—फुलवाडी
४ लिए वास्ते ।
५ भ्रकस्मात, भ्रचानक ।
रू० भे०—भांवइ, भावे, भावई, भावइ ।

भावौ—देखो 'भाव' (भ्रल्पा, रू भे.)
उ०—१ तीन से वरस घर मे रह्या हो, रह्या रूडा भावो । सजम पाल्यो मात से हो, सहस्र वरस नी भ्रावो ।—जयवांणी
उ०—२ क्रस्ण नी मनियावट देखि करी, मद्रक नइ थयो भावौ जी । सिंह केसरिया मोदक सूझता, पडि लाभ्या प्रस्तावोजी ।
—स कु

भावोदय–स० पु० [स०] किसी भाव के उदय होने की भ्रवस्था का वर्णन करने का एक प्रकार का भ्रर्थालकार ।

भासकर—देखो 'भास्कर' (रू भे) (डि को, ह ना मा)
उ०—भीम तणा ग्रीखम भासकर, तेज भुजाडड लागि तिस । कूरम तणी मोखियो कस करि, रसक न रहियो तैण रस ।
—राव दुरजणसाल हाडा रो गीत

भास–स० पु० [स० भास्] १ प्रकाश, दीप्ति, प्रभा ।
२ सूर्य, भास्कर ।
३ किरण, मयूख । ४ गीध । ५ शकुन्त पक्षी ।
६ एक राजस्थानी छन्द विशेष ।
७ कडखा छन्द का नामान्तर । ८ पद्य खन्ड ।

भासक–वि० [स० भाषक] १ भाषण करने वाला ।
२ बोलने वाला ।

भासकर—देखो 'भास्कर' (रू. भे)

भासकरण–स० पु० [स० भासकर्ण] १ रावण का एक सेना नायक ।
२ सूर्य, भानु ।

भासग्य–स० पु० [स भाषाज्ञ] भाषा जानने वाला, भाषा का ज्ञाता ।

भासच्छन्ना–वि० यौ० [स० भस्म+भ्राच्छन्न] भस्म मे भ्राच्छादित ।

भासण–स० पु० [स० भाषण] १ वार्तालाप, बातचीत ।
क्रि० प्र०—करणौ ।
२ बोली, भ्रावाज ।
उ०—भासण उपमा भ्रोर मनोरथ भेळिया । मझ भ्राटी मखतूळ, क मोती मेळिया ।—वा दा.

३ किसी सभा, सस्था ग्रादि मे दिया जाने वाला व्याख्यान, उपदेश।
क्रि० प्र०—दैणौ, करणौ।
उ०—करस्या वात कबूल भळी सू भासण सुणस्या। गुण री है नहि गरज, चोज कर ग्रोगुण चुणस्या।—ऊ का
रू० भे०—भाख, भाखण।

भासणौ, भासवौ—क्रि० ग्र० [स० भास्] १ प्रतीत होना, मालूम होना।
उ०—१ ग्रत्यू सीमासी रावी विसमासी, भीमा भावोसी भीमा निम भासी। तू हिन कठीरव तन कुजर तावै, डग डगि चढियोडा मरिया डुसकावै।—ऊ का
उ०—२ सुपने मन मान्या वहु फदा, भात भात रग भासी। मिथ्या मन साची कर मांने, ग्रा चौगस चौरासी।
—स्रीसुखरामदासजी महाराज
२ प्रकाशित होना।
३ देख पडना, दिखना।
उ०—ग्रति खूणा ऊडा थूडम-थूडा, कूडा-पथ करदा है। मूछा विन मूडा भासत भूडा, भरसूडा भभकदा है।—ऊ का
४ शोभायमान होना।
उ०—१ मधुकर भ्रमत सुवाम मद, भाळ सुधाकर भास। मोदक कर मन मोदमय, नित जय ग्यान निवास।—वा दा
उ०—२ करम कठिन दल चूरताजी, पूरता जगत नी ग्रास। जिनवर देव इहा भासता जी, सासता ग्ररथ सुविलास।—वि कु
५ देखो 'भाखणौ, भाखवौ' (रू भे)
उ०—१ 'पाणि' पुस्तक सुवरण्ण जनोई, रूपवत एह वभण कोई। जा विराट ग्रप चित्ति विमासइ, विप्ररूप ग्रप ता इम भासइ।
—सालिसूरि
उ०—२ मद मद हासै छै, प्यारो प्यारो भासै छै, निराळी इण री निरखण ग्रानदकारी, सियावर म्हांनै निरखण दे सखि प्यारी।
—गी रां
भासणहार, हारौ (हारी), भासणियौ—वि०।
भासिग्रोडौ, भासियोडौ, भास्योडौ—भू० का० कृ०।
भासीजणौ, भासीजवौ—भाव वा०।
भाकणौ, भाकवौ, भाखणौ, भाख्नौ—रू० भे०।

भासतीक—स० पु०—सूर्य, रवि।
उ०—वक्रतुड मेघा ग्रोज भेळा भासतीक वोम, भैळा लोहां लका भासतीक कहु समीर। हेळा कांम रूपी 'ग्रजो' ऊजेळा ऊहासतीक, वेळा नामतीक येळा ग्रामतीक वीर।
—रावराजा ग्ररजुनसिंघ रो गीत

भासमत—वि०—ज्योतिपूर्ण, चमकदार।

भासमांण—स० पु० यौ० [स० भास्+मान्] १ सूर्य, रवि।
उ०—ऊभो राहा सीम भासमाण जोतै ग्रत ऊगो, ग्रनोखा ग्रदगं गोखां पूगो ग्रासमान। भूरो जमा काम जोगो हुतो वेढीगारो भूप, जसे काम काम ग्रायो जाणियो जिहान।—चावडदान महडू
२ दिखाई देता हुग्रा, जान पडता हुग्रा।
रू० भे०—भासवान।

भासरु—वि० [स० भास्वर] प्रकाशमान, तेजस्वी।
उ०—जवु कुमरु तसु नदन, नदन तरु समु छायु। कायकति वहु भासरु, वासर नउ जिम राउ।—प्राचीन फागु-सग्रह

भासवांन—देखो 'भासमान' (रू भे) (डिं को)

भासांतर—स० पु० यौ० [स० भाषा+ग्रन्तर] ग्रनुवाद, उल्था।

भासान—स० पु०—सूर्य, रवि। (ग्र मा, ना मा)

भासा—स० स्त्री० [स० भाषा] १ किसी जन-समुदाय द्वारा ग्रपने भाव ऐव विचारो को व्यक्त करने के लिए मुह से उच्चारण किए जाने वाला शब्दो एव वाक्यो का समूह। जवान, वाणी।
उ० ग्राप म्हारै वास्तै काईं काईं फोडा भुगतिया उण नै दरसावण वास्तै म्हारा लोक मे वैडी की भासा ई कोनी।—फुलवाडी
२ पशु-पक्षियो द्वारा भाव या मनोविचार प्रकट करने का ग्रव्यक्त नाद।
ज्यू—तोता री भासा।
३ वर्त्तमान मे किसी देश मे प्रचलित बोली।
४ हिन्दी का एक नाम।
५ सगीत मे एक प्रकार की ताल।
६ सरस्वती।
रू० भे०—भाक, भाख, भाखा, भाख्या, भायखा।

भासाबद्ध—भू० का० कृ० [स० भाषाबद्ध] १ (भाव या विचार) जो शब्दो या वाक्यो मे बोलकर ग्रथवा लिखकर व्यक्त किया गया हो।
२ देश भाषा मे लिखा हुग्रा।

भासासम—स० पु० [सं० भाषासम] एक शब्दालकार।

भासासमिति—स० स्त्री० [स० भाषा+समिति] जैन धर्म मे एक प्रकार का ग्राचार जिसके ग्रन्तर्गत सब लोगो को प्रसन्न व सन्तुष्ट करने की वातचीत होती है।

भासिक—वि०—दिखाई पडने वाला, मालूम पडने वाला।

भासियोडौ—भू० का० कृ०—१ प्रतीत हुवा हुग्रा, मालूम हुवा हुग्रा
२ प्रकाशित हुवा हुग्रा ३ दिखा हुग्रा
४ देखो 'भाखियोडौ' (रू भे)
(स्त्री० भासियोडी)

भासियौ—स० पु०—भैस या भैसे का पूरा चमडा।
रू० भे०—भाईयौ, भायसौ, भायहौ, भायो', भाहियौ।

भासी—वि० [स० भाषिन्] १ बोलने वाला, कहने वाला।
उ०—दया तणो मारग सुद्ध दाखै, तिण सू तू न पतीजै रे। ग्रमत भासी नै हीण ग्राचारी, ते गुरु ग्राया रीझै रे।—जयवांणी
२ भाषण करने वाला।

भासुरह-वि० [स० भासुर] चमकीला।

उ०—तव तलप्फ भीमणह धम्म घीरिमसुरिम सुविसालह। सजम लिर भासुरह दुसहद (व) य दाढ़ करालह।—कवि पल्ह

भासूडा-स० पु०—सोलंकी वंश की एक शाखा।

भासोलो—देखो 'वसूली' (रू भे)

भास्कर-स० पु० [स०] १ सूर्य, आदित्य।

२ आक, मदार।

३ शिव, महादेव।

४ अग्नि, आग।

रू० भे०—भक्खर, भक्खरय, भासंकर, भामकर।

भाह-क्रि० वि०—पसंद।

उ०—राग रंग दोनू तरफ, होवै बहुत उछाह। हाडा केरी सरवरा, राठोडां मन भाह।—राजसिंह री वारता

भाहर—देखो 'भररौ' (मह, रू भे)

उ०—नाहर गोवरधन्न रौ, नाहर भाहर सद्द। घर बाहर भांजण खळा, जाहर दळा विरद्द।—रा रू

भाहि-स० स्त्री०—भट्टी।

उ०—इम कागद आवियौ, पंखि वचै 'गजपत्ती'। अग पोरस ऊफणै, भाहि घ्रित जेम विभत्ती।—सू प्र

भाहरौ—भारी या मोटी आवाज।

उ०—वाकरा पकडीजै छै। सो किण भांति रा वाकरा जिकै कडकती साथ रा, वडकती नळी रा, भाहरै साद रा, मादळिए पेट रा, माहि बोर काचर रा, वरडणहार, घणै कूमट नै वावळी री टीसीआ रा भाडणहार, सिखिरि रा मालणहार, फिरिणोम्रै रा वेसणहार वाळखसी वोकडा, विसै वोकडा, खोरडै खीलहरी रा चारीग्रोडा, सो ऊठा बिसै वोकडा मसका री भाति सो लिहाई नैं धातिग्रा छै।—रा सा स.

भाहियो—देखो 'भासियो' (रू भे)

भिंगराज—देखो 'भ्रंगराज' (रू भे)

भिंगाणौ, भिंगावौ— देखो 'भिंजोणौ, भिंजोवौ' (रू भे)

भिंगाणहार, हारौ (हारी), भिंगाणियौ—वि०।

भिंगायोडौ—भू० का० कृ०।

भिंगाईजणौ, भिंगाईजवौ—कर्म वा०।

भिंगायोड़ौ—देखो 'भिंजोयोडौ' (रू भे)

(स्त्री० भिंगायोडी)

भिंगी—देखो 'भींगी' (रू भे)

भिंगौ—देखो 'भींगौ' (रू भे.)

भिंगोणौ, भिंगोवौ—देखो 'भिंजोणौ, भिंजोवौ' (रू. भे)

भिंगोणहार, हारौ (हारी), भिंगोणियौ—वि०।

भिंगोयोडौ—भू० का० कृ०।

भिंगोईजणौ, भिंगोईजवौ—कर्म वा०।

भिंगोयोड़ौ—देखो 'भिंजोयोडौ' (रू भे)

(स्त्री० भिंगोयोडी)

भिंगोवणौ, भिंगोवबौ—देखो 'भिंजोणौ, भिंजोवौ' (रू भे)

भिंगोवणहार, हारौ (हारी), भिंगोवणियौ—वि०।

भिंगोविग्रोडौ, भिंगोवियोडौ, भिंगोव्योडौ—भू० का० कृ०।

भिंगोवीजणौ, भिंगोवीजवौ—कर्म वा०।

भिंगोवियोडौ—देखो 'भिंजोयोडौ' (रू भे)

(स्त्री० 'भिंगोवियोडी)

भिंजाणौ, भिंजावौ—देखो 'भिंजोणौ, भिंजोवौ' (रू भे)

भिंजाणहार, हारौ (हारी), भिंजाणियौ—वि०।

भिंजायोडौ—भू० का० कृ०।

भिंजाइजणौ, भिंजाईजवौ—कर्म वा०।

भिंजायोडौ—देखो 'भिंजोयोडौ' (रू भे)

(स्त्री० भिंजायोडी)

भिंजोणौ, भिंजोवौ—देखो 'भिंजोणौ, भिंजोवौ' (रू भे)

भिंजोणहार, हारौ (हारी), भिंजोणियौ—वि०।

भिंजोयोडौ—भू० का० कृ०।

भिंजोईजणौ, भिंजोईजवौ—कर्म वा०।

भिंजोयोडौ—देखो 'भिंजोयोडौ' (रू भे)

(स्त्री० भिंजोयोडी)

भिंजोवणौ, भिंजोवबौ—देखो 'भिंजोणौ, भिंजोवौ' (रू भे)

भिंजोवणहार, हारौ (हारी), भिंजोवणियौ—वि०।

भिंजोविग्रोडौ, भिंजोवियोडौ, भिंजोव्योडौ—भू० का० कृ०।

भिंजोवीजणौ भिंजोवीजवौ—कर्म वा०।

भिंजोवियोडौ—देखो 'भिंजोयोडौ' (रू भे)

(स्त्री० भिंजोवियोडी)

भिंटणौ, भिंटवौ-क्रि० अ०—अस्पृश्य वस्तु से स्पर्श होना, छुआ जाना।

भिंटणहार, हारौ (हारी), भिंटणियौ—वि०।

भिंटिग्रोड़ौ, भिंटियोडौ, भिंटयोडौ—भू० का० कृ०।

भिंटीजणौ, भिंटीजवौ—भाव वा०।

भींटणौ, भींटवौ—रू० भे०।

भिंटियोडौ-भू०का० कृ०—अस्पृश्य वस्तु से स्पर्श हुआ हुवा, छूआ हुआ

(स्त्री० भिंटियोडी)

भिडज्ज—देखो 'भडज' (रू भे) (डिं को)

भिडपाळ, भिडरपाळ, भिडवाळ, भिडिपाळ—देखो 'भिंदपाळ' (रू भे) (अ मा)

उ०—सिल विकट फरस 'सुखेण'रे, तिरसूल 'ग्वायख' तेण रे।
भिडपाळ गजगव विटप भड, घिख गदा वभीसण उवर घर।
—र रू

भिड्घोगवार—स० पु०—भिंडी जैसी चिकनी फली वाला गवार।

भिंडी—स० स्त्री० [स० भिंड] १ एक प्रकार का पौधा व उसकी फली जिसकी तरकारी बनती है।
२ छोटे-छोटे सींग वाली गाय।
३ सीधी-साधी गाय।
४ छत के ऊपर चारो ओर बनाई जाने वाली छोटी दीवार।
५ कच्चे मकान के अहाते की दिवार को वरसात के पानी से वचाने के लिए उस पर जमाई हुई मिट्टी घास-फूस आदि का आवरण।
रू० भे०—बरडी, विंडी, विरडी, भीडी, वरडी, विरडी।
अल्पा०—भीडली।

भिणत—देखो 'भणत' (रू भे)

भितर, भितरि—देखो 'भीतर' (रू भे)
उ०—विद्याविलास नरिंद पवाडउ हीयडा भितरि जांणी। अत-राय विणु पुण्य करउ तुम्हि भाव घणेरउ आणी।—हीराणद सूरि

भिदपाळ, भिंदिपाळ, भिंदीपाळ—स० पु० [स० भिंदपाल, भिंदिपाल]
१ छत्तीस प्रकार के शस्त्रो मे से एक प्रकार का शस्त्र विशेष जिसके सहारे से बडे-बडे पत्थर शत्रु दल पर फेंके जाते थे।
२ एक छोटा डडा जो प्राचीन काल मे फेंक कर मारा जाता था।
रू० भे०—भिंडपाळ, भिंडरपाळ, भिंडवाळ, भिंडिपाळ।

भिमरणौ, भिभरवौ—देखो 'भीभरणौ, भीभरवौ' (रू. भे.)
भिभरणहार, हारौ (हारी), भिभरणियौ—वि०।
भिभरिओडौ, भिभरियोडौ, भिभरयोडौ—भू० का० कृ०।
भिभरीजणौ, भिभरीजवौ—भाव वा०।

भिभरियोडौ—देखो 'भीभरियोडौ' (रू भे)
(स्त्री० भिभरियोडी)

भिभळ—१ देखो 'विभळ' (रू भे)
२ देखो 'विह्वल' (रू भे)

भिमरणौ, भिमरवौ—देखो 'भीमरणौ, भीमरवौ' (रू भे)
भिमरणहार, हारौ (हारी), भिमरणियौ—वि०।
भिमरिओडौ, भिमरियोडौ, भिमरयोडौ—भू० का० कृ०।
भिमरीजणौ, भिमरीजवौ—भाव वा०।

भिमरियोडौ—देखो 'भीमरियोडौ' (रू भे)
(स्त्री० भिमरियोडी)

भिसट—देखो 'भ्रस्ट' (रू. भे)
उ०—मई अकल मो भिसट कह्या कूवचन आई नै, सगत खिम्या रा समफ, विरद वकसी वाई नै।—पा प्र

भि—स० पु०—तीर। (ह ना मा)
२ प्रेम।
३ भैरव।
४ सुमेरु पर्वत।
स० स्त्री०—स्त्री, औरत। (एका)

भिउड, भिउडि, भिउडी—देखो 'भ्रकुटी' (रू भे.)
उ०—विउड भिउड ताडिउ तु चपेटा ऊपाडिउ। कूयरि मनि विराडिउ वोल वोलइ सु ताडिउ।—सालिसूरि

भिक्खव्रति—देखो 'भिक्षाव्रति' (रू भे)

भिक्खा—देखो 'भिक्षा' (रू भे)

भिक्खाचरी, भिक्खायरिया, भिक्खायरी—स० स्त्री० यौ० [स० भिक्षा+चर्या] भिक्षाचर्या, भिक्षावृत्ति।
रू० भे०—भिक्षायरी।

भिक्खुधम्म—स० पु० [स० भिक्षु+धर्म] भिक्षु धर्म, यति धर्म।

भिक्खू—देखो 'भिक्षु' (रू भे)

भिक्षणेस—स० पु०—सिंह, शेर। (अ० मा.)

भिक्षा—स० स्त्री० [स०] १ मागने का कार्य, याचना।
उ०—ताहरा एक दिन सागमराव रै गाम रो एक जोगी ईंदा रै गांव गयो। जोगी, रामचद ईंदा रै घरै भिक्षा नू गयो।—नैणसी
२ मागी हुई वस्तु, भीख।
रू० भे०—भिक्खा, भिखिया, भिख्या, भिच्छ, भिच्छा, भिछ, भीक, भीख, भीच्छा।

भिक्षाचर—स० पु० यौ० [स० भिक्षा+चर] १ भिक्षा लाने वाला, भिखारी।
उ०—किण ही पूछ्यो भीखण जी थें यू कहो एक महाव्रत भागां पाचू ई भागै सो यू साथे पाच किम भागै ? जद स्वामीजी वोल्या, पाप रो उदै हुवै जब ससार मे ई जीव दुख भोगवै। जिम एक भिक्षाचर नै सहर मे फिरता पाच रोटी रो आटो मिल्यो।
—भि द्र
२ साधु।
उ०—आदि ही को तीरथकर, आदि ही को भिक्षाचर, आदि राय आदि जिन न्यारौं नाम आदि आदि।—ध व ग्र

भिक्षाचारी—स० स्त्री० यौ० [स० भिक्षा+चारी] शुद्ध आहार आदि लेने की क्रिया। (जैन)

भिक्षाटण, भिक्षाटन—स० पु० यौ० [स० भिक्ष्+अटन] भिक्षा के लिए इधर-उधर घूमने की क्रिया।
रू० भे०—भिक्ष्याटण, भिक्ष्याटन।

भिक्षापात्र—स० पु० यौ० [स० भिक्षा+पात्र] भिक्षा मागने का पात्र।

भिक्षायरी—देखो 'भिक्खाचरी' (रू भे)

भिक्षु, भिक्षुक—स० पु०—१ भीख मागने वाला, भिखारी।

२ सन्यासी, साधु।

उ०—ब्राह्मण क्षत्री वैस्य न सूद्र, ग्रही भिक्षु न योई। वानप्रस्थ ब्रह्मचारी मैं नाई, वरणास्रम न दोई। —स्री सुखरामजी महाराज

३ रंक, निर्धन।

रू० भे०—भक्षु भिक्खू भिखग, भिखक, भिक्खग, भिखुक, भिच्छु भिच्छुक, भीकग, भीखक, भीखग, भेखख।

भिक्षुरूप-सं० पु०—शिव महादेव।

भिक्ष्याटण, भिक्ष्याटन—देखो 'भिक्षाटण' (रू भे)

भिखग, भिखक, भिखग—देखो 'भिक्षुक' (रू भे)

(अ मा, ह ना मा)

उ०—१ नमो वपु दीरघ वामन वेख, भिखग पुरदर भाजण भेख। नमो नरसिंघ लिछम्मी-नाह, विमभर विट्ठल आदि वराह। —ह र

उ०—२ जाणता तूझ न जाण्यो-जाय, काया तो पाखें दाखें काय। मकोडी कीट पतग मुणाळ, भिखग तुहीज तुहीज भुग्राळ।—ह र

भिखमगो-स० पु० [स० भिक्ष्+रा० प्र० मगो] (स्त्री० भिखमगी) भीख मागने वाला, भिखारी।

भिखायत-स० पु०—१ भिखारी, भिक्षुक।

२ देखो 'विखायत' (रू भे)

भिखारी-स० पु० [स० भिक्ष्+चारी] (स्त्री० भिखारण, भिखारिण) भिक्षा मागने वाला, याचक।

उ०—मकरसक्रायत वैठी मारी, क्षत्रिन हित लागी अति खारी। भू पर ब्राह्मण भये भिखारी, हे प्रवेस करगी हतियारी।—ऊ का

रू० भे०—भिखियारी, भिख्यारी, भीखारी।

भिखिया—देखो 'भिक्षा' (रू भे)

भिखियारी—देखो 'भिखारी' (रू भे)

उ०—भूवा भगनी रा थळचट भिखियारी, धन्यां कन्या रा गळकट हठधारी। राफा भरणावें गिरणावें रोता, गता निरणावें करमा रा गोता।—ऊ का

भिखुक—देखो 'भिक्षुक' (रू भे)

भिख्या—देखो 'भिक्षा' रू भे)

उ०—जोगी चालें एसे भाय, मुनि सहर की भिख्या खाय। तन मन चोलि आकासा चढे, सो जोगी मरिवें नहि डरे।—ह पु वा

भिख्यारी—देखो 'भिखारी' (रू भे)

उ०—एक कुत्तो आयो सो कठोती मे एक रोटी रो आटो ले ले गयो। जिण कुत्ता रै लारै भिख्यारी नाठो, हेठै पडियो सो हाथ माहलो लोयो धूल मे मिल गयो।—भि द्र

भिख्यासी—देखो 'भिखारी'।

उ०—जनम मरण सो कासू कहियें, कासू है चौरासी। हरस सोक दुख सुख है कासू, कैसे भया भिख्यासी।—स्री सुखरामजी महाराज

भिगोणो, भिगोवो—देखो 'भिजोणो, भिजोवो' (रू. भे)

भिगोणहार, हारो (हारी), भिगोणियो—वि०।

भिगोयोडो—भू० का कृ०।

भिगोईजणो, भिगोईजवो—कर्म वा०।

भिगोवणो, भिगोववो—देखो 'भिजोणो, भिजोवो' (रू भे)

भिगोवणहार, हारो (हारी), भिगोवणियो—वि०।

भिगोविग्रोडो, भिगोवियोडो, भिगोव्योडो—भू० का० कृ०।

भिगोवीजणो, भिगोवीजवो—कर्म वा०।

भिगोवियोडो—देखो 'भिजोयोडो' (रू. भे)

(स्त्री० भिगोवियोडी)

भिडत—देखो 'भिडत' (रू भे)

उ०—वो उण नै फटकारतो कै'वण लागो—लाणत है थारी जात नै, पाणी रै माय लुक्योडो क्यू बैठो। वा'रै आय नै भिडत कर। —फुलवाडी

भिग्गह-स० पु० [स० अभिग्रह] धार्मिक नियम, प्रतिज्ञा।

भिड-सं० पु०—१ वर्र नामक उडने वाला कीडा।

क्रि० वि०—समीप, नजदीक।

२ देखो 'भट' (रू भे) (डि को)

उ०—१ नभ धरा घूमरा भड निराट, घूमरा उडे भिड भिडज घाट। छूटिया प्रधारक अति छछोह वावना चन्नणा लियण वोह। —वि. स

उ०—२ भिड भिड झगडै कोई वीर पडै भुव, परमेसर सू वाधी पलो। मरणो हाथ आप रा माहै, वस छतीसा कहै 'वळो'। —वलू गोपाळदासोत चापावत री गीत

भिडक-स० स्त्री०—१ चौंकने की क्रिया या भाव।

२ गुफा।

उ०—भिडक मे जायगा प्रो० जमकरण हम्ते हुई।—नैणसी

भिडकण, भिडकणो-वि० (स्त्री० भिडकणी) चौंकने या चमकने वाला।

भिडकणो, भिडकवो-क्रि० अ०—१ किसी आहट या किसी ऐसी वस्तु को देखकर पशुओ का उछल-कूद कर भाग जाना या भागने का प्रयास करना।

उ०—पण जै म्हारो भैंस्यां वारो विराट रूप देखनै भिडकगी तो । अर वारो अनोखो रूप देखनै पाडू मुसता नी ढबिया तो म्हारै सारै री वात नी है, पै'ला कै दू।—फुलवाडी

२ भयभीत होकर भाग जाना।

३ देखो 'भडकणो, भडकवो (रू भे)

भिडकणहार, हारो (हारी), भिडकणियो—वि०।

भिडकाडणो, भिडकाडवो, भिडकाणो, भिडकावो, भिडकावणो, भिडकाववो—प्रे० रू०।

भिडकिग्रोडो, भिडकियोडो, भिडक्योडो—भू० का० कृ०।

भिडकीजणौ, भिडकीजबौ—भाव वा० ।
भडकणौ, भडकवौ, भडकणौ, भडकबौ—रू० भे० ।

भिडकमाड, भिडकवाड—देखो 'भर्डकिमाड' (रू. भे)

भिडकाडणौ, भिडकाडवौ—देखो 'भिडकाणौ, भिडकावौ' (रू भे)
भिडकाडणहार, हारौ (हारी), भिडकाडणियौ—वि० ।
भिडकाडिग्रोडौ, भिडकाडियोडौ, भिडकाड्योडौ—भू० का० कृ० ।
भिडकाडीजणौ, भिडकाडीजवौ—कर्म वा० ।

भिडकाडियोडौ—देखो 'भिडकायोडौ' (रू भे)
(स्त्री० भिडकाडियोडी)

भिडकाणौ, भिडकाबौ—क्रि० स०—१ किसी ऐसी आहट या वस्तु दिखाकर पशु को भागने मे प्रवृत्त करना ।
२ झूठी वातो मे विश्वास दिलाकर भुलावे मे डालना, वहकाना ।
उ०—राणी राजा रै कान मे होळै सू कह्यौ—कवरा रै भिडकायोडी रै'यत कं'तां पाण मानगी ।—फुलवाडी
३ छुडवानां, त्याग करवाना ।
उ०—हिंसा धरम प्रकास नै, साधा सु भिडकासी रै । वलि तीरथकर ना साधु थी, निकली निन्हव थासी रै ।—जयवाणी
४ देखो 'भडकाणौ, भडकावौ' (रू भे)
भिडकाणहार, हारौ (हारी), भिडकाणियौ—वि० ।
भिडकायोडौ—भू० का० कृ० ।
भिडकाईजणौ, भिडकाईजवौ—कर्म वा० ।
भडकाडणौ, भडकाडबौ, भडकाणौ, भडकावौ, भडकावणौ, भडकाववौ, भडकाडणौ, भडकाडवौ, भडकाणौ, भडकावौ, भडकावणौ, भडकावबौ, भिडकाडणौ, भिडकाडवौ, भिडकावणौ, भिडकाववौ
—रू० भे० ।

भिडकायोडौ—१ किसी प्रकार की आहट पैदाकर या वस्तु दिखाकर पशु को भागने मे प्रवृत्त किया हुआ ।
२ झूठी वातो मे विश्वास दिलाकर भुलावे मे डाला हुआ, वहकाया हुआ ।
३ छुडवाया हुआ, त्याग करवाया हुआ ।
४ देखो 'भडकायोडौ' (रू. भे)
(स्त्री० भिडकायोडी)

भिडकाव—भिडकाने की क्रिया या भाव ।

भिडकावणौ, भिडकाववौ—१ देखो 'भड़काणौ, भडकावौ' (रू भे)
२ देखो भिडकाणौ, भिडकावौ' (रू भे.)
उ०—था लोगा रै भिड़कावणा सू ई अै लोग अडवडिया है ।
—फुलवाडी
भिडकावणहार, हारौ (हारी), भिडकावणियौ—वि० ।
भिडकाविग्रोडौ, भिडकावियोडौ, भिडकाव्योडौ—भू० का० कृ० ।
भिडकावीजणौ, भिडकावीजबौ—कर्म वा० ।

भिडकावियोडौ—१ देखो 'भडकायोडौ' (रू भे)
२ देखो 'भिडकायोडौ' (रू भे)
(स्त्री० भिडकावियोडी)

भिर्डकिमाड, भिर्डकिवाड—देखो 'भडकिमाड' (रू भे)

भिडकियोडौ—भू० का० कृ०—१ किसी आहट या ऐसी वस्तु को देखकर पशु उछल-कूद कर भागा हुआ, या भागने का प्रयास किया हुआ.
२ वहकावे मे आया हुआ
३ देखो 'भडकियोडौ' (रू भे)
(स्त्री० भिडकियोडी)

भिडग, भिडज, भिडजाळ, भिड़ज्ज—१ देखो 'भडज' (रू भे)
(अ मा ह ना मा)
उ०—१ आसू नाखै आख सु, कर हूता किरमाळ। भागल नह नाखै भिडज, असहां सिर आताळ ।—बा दा
उ०—२ खल काळ मायाळ खाथाळ खडा, भिडजाळ आताळ ताताळ भडा । चुडखै घड ग्रीध अखै सवळी, हिय माझल पैख उठी हवळी ।—पा प्र
उ०—३ इंदा जैता भोजराज, चोज कमधा काज । हीए करण हेवै दळा, जीए भिड़ज्जां साज ।—रा रू
२ देखो 'भट' (रू भे)
उ०—भिडज जूथ विजई भारार्थ, सहस अठार रहकळा साथै । थिव चख सुतर भार धारुदा, वह सामान सकट बारुदा ।
—सू प्र

भिडणौ, भिडबौ—क्रि० अ०—१ सलग्न होना, सटना ।
उ०—पै'ला गिगन मे तारा सू तारौ भिडियोडौ हो ।—फुलवाडी
२ दरवाजे के कपाटो का परस्पर इस प्रकार सटना कि रास्ता वन्द हो जाय ।
३ स्पर्श करना, छूना ।
उ०—१ सुणि इम वैण वीर रस साजा, रग मजीठ कीध मुख राजा । अगन नयण थिखि नजर अगारा, भिडै मूछ अणिया भौंहारा ।—सू प्र.
उ०—२ आणद मोर सुसरि आवाजै, वीणा वस मधुर सुर वाजै । भुरजे भुग्ज भिडता भाजै, गहड सीख दै अवर गाजै ।
—आसौ बारहट
४ परस्पर एक दूसरे के विरुद्ध दिशा मे चलने वाले का टकराना, भिडना ।
५ एक दूसरे प्राणी का परस्पर लडना, भिडजाना ।
६ युद्ध करना, जूझना ।
उ०—'अखा'हर वाहत खाग उनग, जुडै जिम भारथ दारुण जग । वळोवळ लूबत रोद्र वजाग, भिडै सुजि सूर हुवै दुय भाग ।—सू प्र.

उ०—२ नमसकार सूरा नरा, पूरा मतपुरमाह । भारथ गज थाटां भिड़ै, ग्रडै भुजा उरमाह ।—बा दा

उ०—३ मांग 'दुयोजण' मालदे, जिण बाघो जगहत्य । भारथ भिड़िया जास भड, साह हूत समरत्य ।—बा दा.

७ किसी व्यक्ति का वाग्युद्ध या वाद-विवाद मे दृढतापूर्वक जूझना या सवाल-जवाव करना ।

८ मैथुन करना, सभोग करना ।

६ साक्षात्कार होना, ग्रामना-सामना होना ।

उ०—कवर नै ग्रापरै सुभाव रै ग्राचरण रो भरम व्है सकै पर कवराणी नै धणी रै लखण रो की भरम नी हो । खेत री माठ माथै भिड़तां ई वा उणनै ग्राछी तरै ग्रोळख लियो हो ।

—फुलवाडी

१० सामना करना, मुकाबला करना ।

उ०—१ ग्रकल सू भिड़णा री हिम्मत पडै । वैंडा टणकेल कुचमादी रा ई घै छिलग्या ।—फुलवाडी

उ०—२ पछिम दिस भिड़ाणा बाप बेटा पछिम, भिड़ै पूरब दिसा विन्है भाई । हेकलो 'बळा' रो दिखण चढियो हठी, कठै वाटी नही कुळ कमाई ।—सुभराम गौड वळिरामोत रो गीत

भिड़णहार, हारौ, (हारी), भिड़णियौ—वि० ।

भिड़ावणौ, भिड़ाडबौ, भिड़ाणौ, भिड़ावौ, भिड़ावणौ भिड़ाववौ —प्रे० रू० ।

भिड़िग्रोड़ौ, भिड़ियोड़ौ, भिड़योड़ौ—भू० का० कृ० ।

भिड़ीजणौ, भिड़ीजवौ—भाव वा० ।

भड़णौ, भड़बौ, भड़णौ, भड़बौ, भिड़णौ, भिड़वौ—रू० भे० ।

भिड़त—स० स्त्री०—१ टक्कर, ग्राघात ।

क्रि० प्र०—होणी ।

२ युद्ध, सघर्ष ।

क्रि० प्र०—होणी करणी ।

३ ग्रामना-सामना, साक्षात्कार ।

क्रि० प्र०—होणी ।

४ मुकावला ।

क्रि० प्र०—करणी ।

५ दो वस्तुग्रों को ग्रापस मे टकराने से उत्पन्न ध्वनि ।

६ वाद-विवाद, बहस ।

भिड़वच—स० पु०—एक प्रकार का कपडा ।

उ०—बासता भिडवच वघ, सूपेत माल सुवघ । कसवीम चीरा कोर, ग्रगरेज फिरगी ग्रोर ।—सू प्र

भिड़ाड़णौ, भिड़ाडवौ—देखो 'भिड़ाणौ, भिड़ावौ' (रू भे)

भिड़ाडणहार, हारौ (हारी), भिड़ाडणियौ—वि० ।

भिड़ाड़िग्रोड़ौ, भिड़ाड़ियोड़ौ, भिड़ाड्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

भिड़ाडीजणौ, भिड़ाडीजवौ—कर्म वा० ।

भिड़ाडियोड़ौ—देखो 'भिड़ायोड़ौ' (रू. भे)

(स्त्री० भिडाडियोडी)

भिड़ाणौ, भिड़ावौ—क्रि० स०—१ किन्ही दो वस्तुग्रो को ग्रापस मे टकराना ।

२ किन्ही दो प्राणियो को लडने या युद्ध करने मे प्रवृत्त करना ।

३ स्पर्श करना, छुवाना ।

४ किसी व्यक्ति को वाग्युद्ध या वाद-विवाद मे दृढतापूर्वक जूझने या सवाल-जवाव करने हेतु प्रवृत्त करना ।

५ किन्ही दो वस्तुग्रों को ग्रापस मे सटाना, सलग्न करना ।

६ साक्षात्कार कराना, ग्रामना-सामना कराना ।

७ मुकावला कराना ।

८ लगाना, लेप करना, मलना ।

उ०—भममी ग्रग भिड़ाय, हाण लाभ देखी हमे । नैणा नेह छिपाय, जाय वस्यो जी जेठवो ।—जेठवा

६ किसी को किसी व्यक्ति के प्रति उल्टी-सीधी वातें कहकर गलत धारणा बनवाना ।

ज्यू—वो म्हारै वास्ते उणांनै झूठा साचा भिड़ाया है ।

मुहा०—भाटा भिड़ाणा=झूठी सच्ची वातें कहना ।

भिड़ाणहार, हारौ (हारी), भिड़ाणियौ—वि० ।

भिड़ायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

भिड़ाईजणौ भिड़ाईजवौ—कर्म वा० ।

भिड़ाड़णौ, भिड़ाडवौ, भिड़ावणौ, भिड़ाववौ, भीड़ाणौ, भीड़ावौ, भेड़वणौ, भेड़ववौ—रू० भे० ।

भिड़ायोड़ौ—भू० का० कृ०—१ किन्ही दो प्राणियो को लडने या युद्ध करने मे प्रवृत्त किया हुग्रा २ स्पर्श कराया हुग्रा, छुवाया हुग्रा ३ किसी व्यक्ति को वाग्युद्ध या वाद-विवाद मे दृढतापूर्वक जूझने या जवाव-सवाल करने में प्रवृत्त किया हुग्रा ४ किन्ही दो पदार्थों को ग्रापस मे सटाया हुग्रा, सलग्न किया हुग्रा ५ साक्षात्कार कराया हुग्रा, ग्रामना-सामना कराया हुग्रा ६ मुकावला कराया हुग्रा ७ लगाया हुग्रा, लेप किया हुग्रा, मला हुग्रा ८ किसी को किसी व्यक्ति के प्रति उल्टी-सीधी वातें कहकर गलत धारणा बनवाया हुग्रा

(स्त्री० भिडायोडी)

भिड़ाळ—देखो 'भट' (मह , रू भे)

उ०—भिड़ै ग्रस तोळा लोह भिड़ाळ, गिळै रस ग्रीधण गूद गलाळ ।

—गो रू

भिड़ावणौ, भिड़ाववौ—देखो 'भिड़ाणौ, भिड़ावौ' (रू भे)

उ०—डोकरी री वान सुणनै नाई नीची धूण कर्यां जावण लागो तो डोकरी कह्यो—राम मारया पूरी वात तो सुण, थू ग्रठी री उठी भिडावण रै हेवा है, नी व्है तो राजाजी नै ई ग्रठै भेज देजै । म्हैं वारा सू सगळी पूछ-ताछ कर लेवूला ।—फुलवाडी

भिडावणहार, हारौ (हारी), भिडावणियौ—वि० ।
भिडाविश्रोडौ, भिडावियोडौ भिडाव्योडौ—भू० का० कृ० ।
भिडावीजणौ, भिडावीजवौ—कर्म वा० ।

भिडावियोडौ—देखो 'भिडायोडौ' (रू भे)
(स्त्री० भिडावियोडी)

भिडि-स० पु०—युद्ध, लडाई ।
उ०—पाडव मरे न सकियौ भिडि भुइ, रुके चढे मुवौ राठौड । किसन तणी अतेवरि कारणि, महिर थेन कारणि कुळ मोड ।
—रतनू भग्मो

भिडियाळ, भिडीयाळ—१ भिडने वाला, टक्कर लेने वाला ।
२ देखो 'भट' (मह, रू भे)
उ०—काळ तणौ पर कोपिया, भिडियाळ महाभड ।—वी मा
रू० भे०—भडियाळ, भिडियाळ, भिडीयाळ ।

भिडियोडौ-भू० का० कृ०—१ स्पर्श हुवा हुआ, छूआ हुआ २ किन्ही दो प्राणियो मे लडाई या सघर्ष हुवा हुआ ३ कोई व्यक्ति वाग्युद्ध या वाद-विवाद मे दृढतापूर्वक जूझा हुआ या सवाल जवाव करने मे प्रवृत्त हुवा हुआ ४ कोई पदार्थ किसी दूसरे पदार्थ मे सटा हुआ, सलग्न हुवा हुआ ५ विपय-भोग मे प्रवृत्त हुवा हुआ, मैथुन क्रिया मे लगा हुआ ६ साक्षात्कार हुवा हुआ, आमना-सामना हुवा हुआ, ७ सामना या मुकाबला किया हुआ
(स्त्री० भिडियोडी)

भिचक-स० स्त्री०—१ हिचकिचाहट, सकोच ।
२ वाधा, विघ्न ।
रू० भे०—भिचकी ।

भिचकणौ, भिचकवौ-क्रि० अ०—१ अनिच्छा, भय या सकोचवश किसी कार्य करने मे प्रवृत्त न होना, हिचकिचाना ।
उ०—काळिदर सू डरै अर भिचकै ज्यू गाव रा सगळा लोग मासी-भाणजी सू डरता अर भिचकता ।—फुलवाडी
२ भयभीत होना, डरना ।
३ चौकना ।
उ०—धमक धमक घण वाजै हथोटा, कमतरिया रा वाजा । काची नीद भिचक मत जाजै, ओ सपना रा राजा ।—चेतमानखा
भिचकणहार, हारौ (हारी), भिचकणियौ—वि० ।
भिचकिश्रोडौ, भिचकियोडौ, भिचक्योडौ—भू० का० कृ० ।
भिचकीजणौ, भिचकीजवौ—भाव वा० ।
विचकणौ, विचकवौ, मचकणौ, मचकवौ, भुचकणौ, भुचकवौ
—रू० भे० ।

भिचकियोडौ-भू० का० कृ०—१ अनिच्छा, भय या सकोचवश किसी कार्य मे प्रवृत्त न हुवा हुआ, हिचकिचाया हुआ २ भयभीत हुवा हुआ, डरा हुआ ३ चौकन्ना हुवा हुआ
(स्त्री० भिचकियोडी)

भिचकी—देखो 'भिचक' (रू भे)

भिच्च-स० पु० [सं० भृत्य] १ भृत्य, नौकर ।
२ सेना ।

भिच्छ, भिच्छा—देखो 'भिक्षा' (रू. भे)
उ०—खिज खाज न भोजन खोजन की, भिजमानिय भिच्छ न भोजन की । छिन्न वस्त्र उदत्त दिगत छये, भल सत महत अनत भये ।—ऊ. का

भिच्छुक—देखो 'भिक्षुक' (रू भे)

भिच्छु—१ देखो 'विच्छु' (रू भे)
२ देखो 'भिक्षुक' (रू भे)
उ०—भ्रमैं न भिच्छु भिच्छुकी मया न दान मान की । न ओसधी चिकत्सथान दोसधी निदान की ।—ऊ का

भिछ, भिछा—देखो 'भिक्षा' (रू भे)
उ०—आयस पुणति सूरि भिछ, जिम भाण नाण सतुट्ठ मण । जिणदत्त सूरि पहु सुर गुरवि, थुणवि न सक्कउ तुम्ह गुण ।
—ऐ जै का स

भिजोणौ, भिजोवौ-क्रि० स०—१ पानी या किसी तरल पदार्थ से किसी वस्तु या प्राणी को गीला या आर्द्र करना ।
२ पानी मे किसी वस्तु को इसलिए डालना कि वह भीगकर नरम हो जाय एव फूल जाय ।
ज्यू—दाळ भिजोणी ।
रू० भे०—भिगाणौ, भिगावौ, भिगोणौ, भिगोवौ, भिगोवणौ, भिगोववौ, भिजाणौ, भिजावौ, भिजोणौ, भिंजोवौ, भिजोवणौ, भिजोववौ, भिगोणौ, भिगोवौ, भिगोवणौ, भिगोववौ, भिजोवणौ, भिजोववौ, भीगोणौ, भीगोवौ, भीगोवणौ, भीगोववौ, भीजोणौ, भीजोवौ, भीजावणौ, भीजोववौ, भीगोणौ, भीगोवौ, भीगोवणौ, भीगोववौ, भींजोणौ, भीजोवौ, भीजोवणौ, भीजोववौ ।

भिजोवणौ, भिजोववौ—देखो 'भिजोणौ, भिजोवौ' (रू भे)

भिडकमाड, भिडकवाड—देखो 'भडकिमाड' (रू भे)

भिडज, भिडज्ज—देखो 'भडज' (रू भे)
उ०—१ 'भगवान' लोह भेळै भिडज, 'सुरताण' मुत्त छळ सांम निज्ज । 'नरपाळ' खाग पाडै खळांह, जळ चाढै जोगा रावळांह ।
—गु रू व
उ०—२ पूठि भिडज्जां आरुहिया भड, तिस रूप लेय छतीसे त्रिज्जड । सत्तरि खान वहुत्तरि ऊमर, सीस विराजित मेघाडवर ।
—गु रू व.

भिडणौ, भिडवौ—देखो 'भिडणौ, भिडवौ' (रू भे)
उ०—भिडियौ रुघनाथ 'भूपाळ' समोभ्रम, धार पहार विरुड घडै । पहला वरियाम डता पडिया, ता पाछै गोइददास पडै ।—गु रू व

भिडत—देखो 'भिडत' (रू भे)

भिडियाळ, भिडीयाळ—१ देखो 'भट' (रू भे)
२ देखो 'भिडियाळ' (रू भे)

उ०—खाथा सुर खडियाळ त्रिमक खडीयाळ तवला। चाका अरि चडियाळ हाक भिडीयालह मला।—पना

भिणकणौ-स० पु०—१ भौंरे की गुजार।
२ मक्खियो की भिनभिनाहट।

भिणकणौ, भिणकवौ—देखो 'भणकणौ, भणकवौ' (रू भे)
भिणकणहार, हारौ (हारी), भिणकणियौ—वि०।
भिणकिग्रोडौ, भिणकियोडौ, भिणक्योडौ—भू० का० कृ०।
भिणकीजणौ, भिणकीजवौ—भाव वा०।

भिणणौ, भिणबौ—देखो 'भणणौ, भणवौ' (रू भे)

उ०—पीछे उण री लुगाई भिणियोडी थी सू खत एक मा'राज पदमसिघजी रै नामै रुपिया १४०) री लिख'र इण नू दीनो, जिण मैं मतू मा'राज पदमसिघजी री अरु साख सूरज चद्रमा री लिखी।
—द दा

भिणणहार, हारौ (हारी), भिणणियौ—वि०।
भिणिग्रोडौ, भिणियोडौ, भिण्योडौ—भू० का० कृ०।
भिणीजणौ, भिणीजवौ—कर्म वा०।

भिणभिण, भिणभिणाट—१ देखो 'भणण' (रू भे)
२ देखो 'भिनभिन' (रू भे)

भिणभिणाटौ—देखो 'भणण' (अल्पा, रू भे)

उ०—गांव मे टाटिया वाळा छत्ता रौ भिणभिणाटौ उणी भात चालू हो।—फुलवाडी

भिणभिणाहट—देखो 'भणण' (रू भे)

भिणभिणाणौ, भिणभिणावौ—१ क्रोधित होना गुस्सा होना।
२ देखो 'भिनभिनाणौ, भिनभिनावौ' (रू भे)

उ०—नवी वात री तवोडौ लागता ई मिनखा रूपी टाटिया भणण भणण करता भिणभिणावै अर थोडी ताळ भवभवायनै पाछा चूस्योडा छत्ता माथै आय चिपक जावै।—फुलवाडी

भिणभिणाणहार, हारौ (हारी), भिणभिणाणियौ—वि०।
भिणभिणायोडौ—भू० का० कृ०।
भिणभिणाईजणौ, भिणभिणाईजवौ—कर्म वा०।

भिणभिणायोडौ-भू० का० कृ०—१ गुस्से मे भरा हुआ, क्रोध युक्त।
२ देखो भिनभिनायोडौ' (रू भे)
(स्त्री० भिणभिणायोडी)

भित्त, भित्ति—देखो 'भीत' (रू भे)

उ०—भिरे अभित्ति भित्ति को सबुज्ज के भवावनी, बिना प्रस्वेद वित्त को कुरोर हा कमावनी।—ऊ का

भिदणौ, भिदबौ-क्रि० अ०—१ छेदा जाना, फोडा जाना।

उ०—काळ लकाळ करठाळ जडियौ कमध, वहै विकराळ रगताळ वाई। भेद छकडाळ चगताळ चूनाळ भिद, ताळ गौ भाळ भर धरण तांई।—गु रू ब
२ घायल होना।
३ रिसना।
४ छिद्रित होना।

उ०—जडक्कत सेल भिदै जरदाळ, कडक्कत कघ वहै किरमाळ। दादौ जिण 'गोवरधन्न' दुभ्राल, ढाहै 'गजसाह' अगै गजढाल।
—सू प्र

भिदणहार, हारौ (हारी), भिदणियौ—वि०।
भिदिग्रोडौ, भिदियोडौ, भिद्योडौ—भू० का कृ०।
भिदीजणौ, भिदीजवौ—भाव वा०।

भिदावणौ, भिदावबौ-क्रि० स० [भेदणौ क्रि० का प्रे० रू०] भेदन करवाना, भेदने का कार्य करवाना।

उ०—उडता अगा कघ कोदड आणौ, त्रिवरणी उरै होइकै वैर ताणौ। नचै थुग थेई रचै भेद न्यारा, भिदावै खळा है दळां वेग भारा।—व भा

भिदावणहार, हारौ (हारी), भिदावणियौ—वि०।
भिदाविग्रोडौ, भिदावियोडौ, भिदाव्योडौ—भू० का० कृ०।
भिदावीजणौ, भिदावीजवौ—भाव वा०।

भिदावियोडौ—भेदन करवाया हुआ, भेदने का कार्य करवाया हुवा।
(स्त्री० भिदावियोडी)

भिदि—देखो 'भेद' (रू भे)

उ०—दासी पूछि भिदि करी, तह्यौ अण्य कुण कुहु वाणी खरी। वाहुक कहि नल' नु सारथि,वारस्णेय बीजु ते रथी।—नळाख्यान

भिदियोडौ—१ छेदा हुआ, फूटा हुआ।
२ घायल हुवा हुआ।
३ रिसा हुआ।
४ छिद्रित हुवा हुआ।
(स्त्री० भिदियोडी)

भिदियौ-वि०—छिद्रित, छिद्रपूर्ण।

उ०—आखा ज्यू सर बाण ऊछळै, भिदियौ स्रोण स कूकू भाळ। वीजै 'अखै' छेहडा वाघा, त्रिविध घड हूता रणताळ।
—भोजराज कवि

भिदुर-स० पु० [स० भिदिर, भिदुर] वज्र। (डि को, ना मा)

भिन—१ देखो 'भिन्न' (रू भे)

उ०—किडकी कारायण कनफडियां फूटी, तिडगी तारायण सो पुरसा तूटी। प्रतिदिन मोलापड भिन-भिन पद पूजै, धोळा नीरण बिन जीरण जिम धुजै।—ऊ का
२ देखो 'भणण' (रू भे)

भिनभिन–स० स्त्री०—मक्खियो द्वारा उडते समय किया जाने वाला शब्द या ध्वनि।
रू० भे०—भिण भिण।

भिनभिनाट—देखो 'भिन भिन' (रू. भे)
रू० भे०—भिणभिणाट।

भिनभिनाणौ, भिनभिनावौ–क्रि० अ०—१ मक्खियो द्वारा उडते समय भिन भिन शब्द करना।
२ देखो 'भिणभिणाणौ, भिणभिणावौ' (रू भे)
भिनभिनाणहार, हारौ (हारी), भिनभिनाणियौ—वि०।
भिनभिनायोडौ—भू० का० कृ०।
भिनभिनाईजणौ, भिनभिनाईजवौ—भाव वा०।

भिनभिनायोडौ–भू० का० कृ०—भिन भिन शब्द हुवा हुआ (मक्खी) (स्त्री० भिनभिनायोडी)

भिन्न–स० पु० [स० भिद्] १ किसी चीज का खण्ड या टुकडा।
२ गणित मे, किसी इकाई का छोटा अश या खड जो बटे के रूप मे व्यक्त किया जाता है।
ज्यू—⅓, ½ आदि।
३ नीलम का एक दोष जिसके कारण पहनने वाले को पति, पिता, पुत्रादि का शोक प्राप्त होना माना जाता है।
वि०—१ पृथक, अलग, जुदा। (डि को)
उ०—वळ वळ खळ डरै बाघ वन वन रा, घोर किन्नरा वासी गाढाळ। भारी 'नवल' विडद भिन्न-भिन्न रा, दिन दिन रा क्रूरम दाढाळ।—नवलसिंघ सेखावत रौ गीत
२ दूसरे प्रकार का, अलग तरह का।
३ काट या तोडकर अलग किया हुआ छिन्न भिन्न।
४ विभाजित।
५ अपने वर्ग के कुछ औरो से अलग और विशेष प्रकार का।
६ कोई अन्य, अपर, दूसरा।
रू० भे०—भिन।

भिन्नता–स० स्त्री०—१ भिन्न होने की अवस्था या भाव, अलगाव।
२ भेद, अन्तर।

भिमचारी—देखो 'व्यभिचारी' (रू भे)

भिभरणौ, भिभरवौ—देखो 'भीभरणौ, भीभरवौ (रू भे)
भिभरणहार, हारौ (हारी), भिभरणियौ—वि०।
भिभरिओडौ, भिभरियोडौ, भिभरयोड़ौ—भू० का० कृ०।
भिभरीजणौ, भिभरीजवौ—भाव वा०।

भिभरियोडौ—देखो 'भीभरियोडौ' (रू भे.) (स्त्री० भिभरियोडी)

भिभरौ–स० पु०—कपाल, खोपडी, ललाट।
उ०—सासा मणफावै नासा निरतावै, जीता मरिया जुग भिभरौ भररावै। पल पल पलका सू पडता परनाळा, मोटा मूगा री होठां मे माळा।—ऊ का

भिभळ–स० पु०—देखो 'विभळ' (रू भे.)

भिमरणौ, भिमरवौ—देखो 'भीमरणौ, भीमरवौ' (रू भे)
उ०—१ डूडी री आदेस सुणता ई सगळै लोगा मे खलबळ माचगी। वात नै मावळ नी केवटी तौ जांणै जैडौ उत्पात मच जावैला। अेकर भिमरियां पछै रया माथै आकस राखणौ अणूतौ दूभर है।—फुलवाडी
उ०—२ घणी ई भिमरग्या तौ पछै दूजा सू काईं साधो लागै।—फुलवाडी
भिमरणहार, हारौ (हारी), भिमरणियौ—वि०।
भिमरिओडौ, भिमरियोडौ, भिमरयोडौ—भू० का० कृ०।
भिमरीजणौ, भिमरीजवौ—भाव वा०।

भिमरियोडौ—देखो 'भीभरियोडौ' (रू भे) (स्त्री० भिमरियोडी)

भिमरिया–स० स्त्री०—क्रोधावेश।
उ०—वादरा री वात सुणनै घणी ई जोस चढै घणी ई भिमरिया खावै पण पग कौ हालै नी।—फुलवाडी

भिरग—देखो 'भ्रगु' (रू. भे)

भिरगसुत—देखो 'भ्रगुसुत' (रू भे)
उ०—'समद-सुतन, सुत-पवण, भिरग सुत ओखिद भ्रित आपो ऊदार। ऊभो करौ चियारै आवै, सुत विजमल खट वरन सवार।—ईसरदास बारहठ

भिरगु—देखो 'भ्रगु' (रू भे)

भिरगुलता—देखो 'भ्रिगुलता' (रू भे)

भिरड–स० पु०—ततैया, वर्र। (शेखावाटी)

भिरडणौ, भिरडवौ–क्रि० अ०—१ कुपित होना, नाराज होना।
उ०—आज तौ खुसी मे बावळा होयनै औ निजराणौ कबूल करू, पण जे कदेई नवाव ईस्टूखा किणी कारण सू भिरड गयौ तौ औ निजराणौ घणौ मूघो पडैला।—फुलवाडी
२ मसलना।
उ०—अडथड भिरड भिरड भड अवभड, नवड भवड वड निवड नड। आवट कूटि तूटि कसणावटि, छूटि जडावटि फूटि छड।—कल्याणदास राव
३ मारना।
उ०—भागा केई पकडि किता भिरडिया, धरि सूरापण परा धख। सत्रदळ गजा ऊपरै 'सगतौ', पडियौ जाणै जटा-पख।—सगता गौड री गीत
भिरडणहार, हारौ (हारी), भिरडणियौ—वि०।

भिरडिओडौ, भिरडियोडौ, भिरडयोडौ—भू० का० कृ० ।

भिरडीजणौ, भिरडीजबौ—भाव वा० ।

भिरडियोडौ—भू० का० कृ०—१ कूपित हुवा हुआ, क्रोधित २ मारा हुआ, ३ मसला हुआ

२ देखो 'भिडायोडौ' (रू भे)

(स्त्री० भिरडियोडी)

भिरडौ—स० पु०—एक औजार विशेष जिससे वस्तु दोनो ओर से दवाई जाती है।

भिराडी—वि०—साहसी, बहादुर ।

उ०—कासमीर मुखमडण माडी, तू समी जगि न कोई **भिराडी** । गीतनादि जिम कोइल कूजइ, तू पसाइ सवि कुतिग पूजइ ।

—सालिसूरि

भिरावौ—देखो विरावणौ' (रू भे)

उ०—'वल्लभ' कूप खिणायौ वेडौ, भरियो नीर **भिरावौ** भेडौ । नीवं' तळौ निकाल्यौ नेडौ, जिण रौ आव नाव रै जेडौ ।

—ऊ का

भिलकि भूमि की दराड ।

उ०—वीरअदग वाज्या, जयढक्क वाजी, समहर सामह्या, अह-अहतं अवक तणं अहअहाटि त्रिभुवन टलटलिउ भेरि भुगल तणं भूभूयाटि भूकिइ **भिलकि** फाटी, काहल तणं कोलाहलि कान कमकम्या ।—व स

भिलणी—देखो 'भीलणी' (रू. भे)

उ०—म्हांरी **भिलणी** हे ! भगता रै वस हू रहू, म्हानै भगता रौ भलौ भाव, **भिलणी** हे ।—मी रां

भिळणौ, भिळवौ—क्रि० अ०—१ किसी एक पदार्थ का दूसरे पदार्थ मे इस प्रकार मिश्रित हो जाना कि वे दोनो एकाकार हो जायें तथा एक दूसरे से अलग न किये जा सकें ।

उ०—पहिली मूकी फलहुल गली मूकी साकर दूधइ **भिळी** । मूक्यां सरस गविल पकवान मूक्यां आणी ऊन्हा धान ।—हीराणद सूरि

२ पदार्थों का एक दूसरे के साथ इस प्रकार मिलना कि उनका स्वतन्त्र अस्तित्व बना रहे ।

३ युद्ध के प्रसग मे कोई मोर्चा, किला या गढ या गाव शत्रु के अधिकार में चला जाना ।

उ०—१ घोडा तुरकीया राहदार उपर नाख पाखर दोना ही पाखतिया लगाय तरगस २ कूटा मारया भडीया रौ भोलावट हाथ माहे ले वरछी नै रांणी दहड चढी, सकत रूप धार । मार हाक कहियौ, 'आज रा मोरचै मिळै ।' नै इम कहि नै लोह मेलीयौ । च्यार प्रहर लोह **भिळियौ** ।—राजा नरसिंघ री वात

उ०—२ मोनू काय झूठो कहौ, हू तौ थांहरौ चाकर छू । तर वुरहान ही चढ साथै हुवौ । चाटसू गया । फिळसौ मिळै नही ।

—राव मालदे री वात

उ०—३ पछै राव चद्रसेन आसरळाई ऊपर आया, गाव वाळीयौ । गोपाळदास, कल्याणदास, रामौ तौ जैतारण था । नरहरदास अठै थौ सु गाव झालियौ । गाव **भिळियौ** नही ।

—रावचद्रसेन री वात

उ०—४ झिलम टोप सूवौ सिर झडियौ, पटझर हू चूडामणि पडियौ । करि जय घसे नगर मझि लसकर, अटके नह **भिळियौ** वरियावर ।—सू प्र

उ०—५ चित्तोड **भिळियौ** जद साढै तीन सै लुगाया रौ जवर हुवौ ।—वा दा ख्या

उ०—६ चाचौ मेरौ लडै, इण भात मास १२ वितीत हुवा पिण गढ **भिळण** री वात काई नही ।—राव रिणमल री वात

उ०—७ प्रगटा पडवेस सुपह साचरिया, वाजी हाक न कोई वळै । वाला चद ऊठ अतुळी वळ, भोजराज गढ तूझ **मिळै** ।

—भोजराज रूपावत रौ गीत

४ किसी खेत मे खडी फसल का पशुओ द्वारा चरा जाना ।

५ फसल कटने के वाद अवशिष्ट घास-फूस, चारा आदि पशुओ द्वारा चरा जाना ।

६ शस्त्र प्रहार होना ।

उ०—१ सखी अमीणा कथ रौ, अग ढीलौ आचत । कडी ठहक्कै वगतरा, नडी नडी नाचत । नडी नाचै भिडै, छोह लोहा **भिळै**, ऊससै सुवप मुख मूछ भोहां मिळै । खगा उनगा पिसण पाडि ऊभौ खडौ, कहू इण भांति ढीलौ सखी कथडौ ।—हा झा

उ०—२ च्यार प्रहर लोह **भिळियौ** । वडी लडाई हुई ।

—राजानरसिंघ री वात

७ युद्ध करना, लडना ।

८ सम्मिलित होना, शामिल होना ।

उ०—१ हिळता हिळता हाय **भिळौ** मत दुख सु भाई, मिळ मुरदा मनवार करौ मत वुरी कमाई ।—ऊ का

उ०—२ चमू अकव्वर लोक सचेळौ, **भिळियौ** खान तहव्वर भेळौ । ओपै जांण प्रलै अहनाणै एकठ महण थया दोय आणै ।—रा रू

उ०—३ भाग जिकै कूड मझि **भिळिया**, रहे तिकै जुग चाढै रूप । 'साह' सुतन 'सेवौ' वड सावत, भाजै खग मुह धोया भूप ।

—मोहकमसिंघ मेडतियौ

९ टूटना ।

१० हाना ।

उ०—भूपति टोटा मे दीवाळा **भिळिया**, मोटा मोटा रा कुळ मुगता मिळिया । वाधै गाठडिया वडिया चग वाळै, राली गूदड लै कांधै पर राळै ।—ऊ का

११ पहुचना ।

उ०—म्है अवै काम आस्या । रजपूती रा रीजवारा नै । जीलै चढावस्या । सूरजमढलै **भिळस्यां** ।—पना

१२ अपना दल या पक्ष छोडकर गुप्त अथवा प्रत्यक्ष रूप से किसी अन्य दल या पक्ष की ओर होना।

ज्यूं—वो कांग्रेस मे भिळगौ है।

उ०—नगर-सेठ बोल्या—तो थूं ई आ कुचमादिया रै साथै भिळग्यौ।—फुलवाडी

१३ ससर्ग के कारण जू आदि जन्तुओ का शरीर या कपडो मे प्रवेश करना।

उ०—भिळ जाय जुवा लाखा भळे, लेऊ काई इण लाड मे।
परवात पीहर जास्यू परी, खावद पडज्यौ खाड मे।—ऊ का

१४ नष्ट होना, नाश होना।

१५ ज्योति मे विलीन होना।

भिळणहार, हारौ, (हारी), भिळणियौ—वि०।

भिळाडणौ, भिळाडवौ, भिळाणौ, भिळावौ, भिळावणौ, भिळाववौ —प्रे रू

भिळिग्रोडौ भिळियोडौ, भिल्योडौ—भू० का० कृ०।

भिळीजणौ, भिळीजवौ,—भाव वा०।

मळणौ, मळवौ, भिलणौ, भिलवौ, भीळणौ, भीळवौ—रू० भे०

मेळणौ, मेळवौ—सक० रू०।

भिलणौ, भिलवौ—देखो 'भिळणौ, भिळवौ' (रू भे)

उ०—माहोमाही ले लसकर मिलिया, सनद्ध सकलिया। टकारव लागे नवि टलिया, मद सहु कोई भिलिया।—वि. कु

भिलणहार, हारौ (हारी), भिलणियौ—वि०।

भिलिग्रोडौ, भिलियोडौ, भिल्योडौ—भू० का० कृ०।

भिलीजणौ, भिलीजवौ—भाव वा०।

भिळाडणौ, भिळाडवौ—देखो 'भिळाणौ, भिळावौ' (रू. भे)

भिळाडणहार, हारौ (हारी), भिळाडणियौ—वि०।

भिळाडिग्रोडौ, भिळाडियोडौ, भिळाडयोडौ—भू० का० कृ०।

भिळाडीजणौ, भिळाडीजवौ—कर्म वा०।

भिळाडियोडौ—देखो 'भिळायोडौ' (रू भे)

(स्त्री० भिळाडियोडी)

भिळाणौ, भिळावौ—क्रि० स० [भिळणौ क्रि० का प्रे० रू०] १ किसी एक पदार्थ को दूसरे पदार्थ मे इस प्रकार मिश्रित कराना कि वे दोनो एकाकार हो जायें तथा एक दूसरे से अलग न किये जा सकें।

२ पदार्थों को एक दूसरे के साथ इस प्रकार मिश्रित करवाना कि उनका स्वतन्त्र अस्तित्व बना रहे।

३ युद्ध के प्रसग मे कोई मोर्चा, किला, गढ या गाव शत्रु के अधिकार में करवाना।

४ किसी खेत मे खडी फसल को पशुओ द्वारा चरवाना।

उ०—चेतौ तौ थांनै राखणौ चाहिजै के किणी रा ऊभा खेत नै कीकर भिळावां।—फुलवाडी

५ फसल कटने के बाद अवशिष्ट घास-फूस चारा आदि पशुओं द्वारा चरवाना।

६ शस्त्र प्रहार करवाना।

७ युद्ध कराना, लडाना।

८ सम्मिलित कराना, शामिल कराना।

९ तुडवाना।

१० करवाना।

११ किसी लक्ष्य प्राप्ति या स्वार्थ-सिद्धि के लिए किसी दल या गुट मे शामिल होने को प्रवृत्त करना।

१२ पहुचाना।

१३ किसी दल या पक्ष को छुडाकर गुप्त अथवा प्रत्यक्ष रूप से किसी अन्य दल या पक्ष की ओर होने मे प्रवृत्त करना।

१४ नष्ट कराना, नाश कराना।

उ०—खेत री रुखाळी तो उण रो जलम भिळाय दियौ।
—फुलवाडी

१५ ससर्ग के द्वारा जू आदि जन्तुओ का शरीर या वस्त्रों मे प्रवेश कराना।

१६ ज्योति मे विलीन करना।

भिळाणहार, हारौ (हारी), भिळाणियौ—वि०।

भिळायोडौ—भू० का० कृ०।

भिळाईजणौ, भिळाईजवौ—कर्म वा०।

भिळाडणौ, भिळाडवौ, भिळावणौ, भिळाववौ, भीळाडणौ, भीळाडवौ, भीळाणौ, भीळावौ भीळावणौ, भीळाववौ—रू० भे०।

भिळायोडौ—भू० का० कृ०—१ कोई एक दूसरे पदार्थ मे इस प्रकार मिश्रित कराया हुआ कि वे दोनो एकाकार हो गए हो तथा एक दूसरे से अलग न किये जा सकते हो. २ पदार्थों को एक दूसरे के साथ इस प्रकार मिश्रित कराया हुआ कि उनका स्वतन्त्र अस्तित्व बना हुआ हो ३ युद्ध के प्रसग मे कोई मोर्चा, किला, गढ या गांव शत्रु के अधिकार में करवाया हुआ ४ पशुओ द्वारा खडी फसल चरवाया हुआ (खेत) ५ फसल कटने के बाद अवशिष्ट घास-फूस, चारा आदि चरवाया हुआ ६ शस्त्र प्रहार करवाया हुआ, भिडवाया हुआ ७ युद्ध कराया हुआ, लडाया हुआ ८ सम्मिलित कराया हुआ, शामिल कराया हुआ ९ तुडवाया हुआ १० करवाया हुआ ११ किसी लक्ष्य प्राप्ति या स्वार्थ-सिद्धि हेतु किसी दल या गुट मे शामिल करवाया हुआ १२ किसी दल या पक्ष को छुडाकर गुप्त या प्रत्यक्ष रूप से किसी अन्य दल या पक्ष की ओर किया हुआ १३ पहुचाया हुआ १४ नष्ट कराया हुआ, नाश कराया हुआ १५ ससर्ग के द्वारा जू आदि जन्तुओ का शरीर या वस्त्रो में प्रवेश कराया हुआ १६ ज्योति में विलीन किया हुआ (स्त्री० भिळायोडी)

भिलाळ—स० पु०—भीलो का समूह।

उ०—धुरजाळ कुदाळ अगार घखै, नह ढाळ भिलाळ भालोड नखै।

वळिया दळ दोय वजे वगडौ, जिंदराव सो 'पाल' सजे झगडौ।
—पा प्र

भिलावौ–स० पु० [स० भल्लातक] १ उत्तरी भारत के तराई क्षेत्रो में पाया जाने वाला एक जगली वृक्ष जिसके फल जामुन के आकार के लाल रग के होते हैं तथा जो सूखने पर काले और चिपटे हो जाते हैं। (अमरत)
२ उक्त वृक्ष का फल जो औषध के काम आता है।
रू० भे०—भीलावौ।

भिळावणौ, भिळाववौ—देखो ' भिळाणौ, भिळावौ' (रू भे)
भिळावणहार, हारौ (हारी), भिळावणियौ—वि०।
भिळाविश्रोडौ, भिळावियोड़ौ भिळाव्योडौ—भू० का० कृ०।
भिळावीजणौ, भिळावीजवौ—कर्म वा०।

भिळावियोड़ौ—देखो 'भिळायोडौ' रू भे)
(स्त्री० भिळावियोडी)

भिळियोडौ–भू० का० कृ०—१ कोई एक पदार्थ दूसरे पदार्थ मे इस प्रकार मिश्रित हुवा हुआ कि वे दोनो एकाकार हो गए हो तथा एक-दूसरे से अलग न हो सकते हो। २ कोई पदार्थ एक-दूसरे के साथ इस प्रकार मिश्रित हुवा हुआ हो कि उनका स्वतन्त्र अस्तित्व बना हुआ हो ३ युद्ध के प्रसग मे कोई मोर्चा, किला, गढ या गाव शत्रु के अधिकार मे हुवा हुआ ४ पशुओ द्वारा चरा हुआ (खेत) ५ फसल कटने के बाद अवशिष्ट घास फूस चारा आदि पशुओ द्वारा चरा हुआ (खेत) ६ शस्त्र प्रहार हुवा हुआ ७ युद्ध हुवा हुआ, लडा हुआ। ८ सम्मिलित या शामिल हुवा हुआ, मिला हुआ ९ टूटा हुआ १० हुवा हुआ ११ किसी लक्ष्य-प्राप्ति या स्वार्थ सिद्धि हेतु किसी दल या गुट मे शामिल हुवा हुआ १२ किसी दल या पक्ष को छोडकर गुप्त या प्रत्यक्ष रूप से किसी अन्य दल या पक्ष की ओर हुवा हुआ १३ नष्ट हुवा हुआ नाश हुवा हुआ १४ ससग के द्वारा जू आदि जन्तुओ का शरीर या वस्त्रो मे प्रवेश हुवा हुआ
(स्त्री० भिळियोडी)

भिलियोड़ौ—देखो 'भिळियोडौ' (रू भे)
(स्त्री० भिलियोडी)

भिलियौ—देखो 'बिल्लौ' (अल्पा, रू भे)

भिले—देखो 'भले' (रू भे)
उ०—अलख अजोनी आतमा, अचळ अनूप अनत। तू मारै तारै तू ही, भिले-भिले भगवत।—ऊ का

भिल्ल—देखो 'भील' (रू भे)
उ०—१ राइ गाई चरती सवि वाली, भिल्ल ने दलि धुरा वलि भाली। ऊस ना वदनि सासु न माइ, ग्वाल बाल पुर सांम्हा धाई।
—सालिसूरि

उ०—२ आखि राति, हाथि काती, हाथि सुणही, बीजइ घणुही, इसी भिल्ली।—व स.
(स्त्री० भिल्ली)

भिल्लौ—देखो 'बिल्लौ' (रू भे)

भिस–अव्यय [स० भृश] अत्यधिकता से, प्रचडता से, बहुतायत से।

भिसक, भिसज–स० पु० [स० भिषज] १ वैद्य, हकीम, चिकित्सक।
(हि को)

भिसट—देखो 'भ्रस्ट' (रू भे)
उ०—१ साह इगलस थांन के रजवाट सराई, कवराजा मोजा करै लख पटा लटाई। हुइया भिसट हरामखोर भ्रम साम सवाई, जुजुठळ हरचद जेहवौ 'फ़न' भोज कहाई।—मोडजी आसियौ

भिसटौ—देखो 'विस्ठौ' (रू भे)
३ जतु मखे अयवा जळै, कै पडियौ रह जाय। किन भिसटा भसमी कमी, इण नर तन सू थाय।—वा दा
उ०—२ अण भजिया भजिया तणी, दीखै प्रतख दुसाळ। भिसटा तो वायस भखै, मोती भखै मराळ।—र रू.

भिसत—देखो 'बहिस्त' (रू भे)
उ०—१ अेक सुरपति हसत अणदत भिसत हलका अवत मदमत। बणत घण दुति भस्त वरसत, दांन अप अवदात।
—महाराव हणूतसिंघ सेखावत री गीत
उ०—२ असुर तणौ दळ बळ ऊखेळू भिसत काय जमद्वारा भेळू। औ कहि असुर न दिया अरावा, औ हिज दिये करा तजि आवां।
—सू प्र

भिसति, भिसतौ—१ देखो 'बहिस्त' (रू भे)
उ०—पायी बडे फतै खेत लोहडै भिसति पायी, किलमा घपायी घडा वेहडां केवाण। आजमा उमाही ऊभा आलमा न घरे आयी, पछै आयी पातिसाही कुमायी प्रमांण।—साहिजादां री वेढ रौ गीत
२ देखो भिस्ती' (रू भे)

भिसम—देखो भीस्म' (रू भे)
उ०—वाहन थारै भिसम नादियौ, गौरा के भरतारा। आक धतूरा को भोग लगत है, विस का करौ अहारा।—मीरां

भिसणी, भिसिणी—देखो 'व्यसनी' (रू भे)

भिस्ट—देखो 'भ्रस्ट' (रू भे)
उ०—१ वौ तिणकलौ तौ म्हारी मती ई भिस्ठ कर दी।
—फुलवाडी
उ०—२ छाती माथा कूटती कै'वण लागी—हे भगवान, इत्ता दिन म्हैं किण री पूजा करी! म्हारौ तो धरम ई भिस्ट व्हैगौ।
—फुलवाडी
उ०—३ ऊमर में कदै ई माया री परम नी करयौ जकौ थारै गिया पछै हाथ लगाय भिस्ट व्हैणौ पडयौ।—फुलवाड़ी

भिस्टौ—देखो 'विस्ठौ' (रू भे)

भिस्त—देखो 'वहिस्त' (रू भे)

उ०—१ तिहा आवी वैठा तुरत, मवल साथ सु साहि। चितइ मानव लोक मे, आणी भिस्त अल्लाह।—प च चौ

उ०—२ जळता है आराम वदन का, फिर गिलारी सराह का। इतना जोर रमराज हैं सिर, भिस्त तो क्या था सिपाही।

—रसीलोराज

भिस्तनसीन-स० पु० [फा० वहिश्त+नशीन] स्वर्गवास, देहावसान।

उ०—पीछै स० १७१६ पातसाह साजिहांनजी भिस्तनसीन हुवा।

—द दा

भिस्ती-स० पु० [फा० विहिश्ति] १ मुसलमानो के अन्तर्गत एक जाति विशेप जो मसक के द्वारा पानी ढोने का कार्य करती है।

२ उक्त जाति का व्यक्ति, सक्का।

उ०—अेक दिन मिस्ती रै तौ कोई काम थौ, अर भिस्ती री लुगाई पातसाह वास्तै खाणौ लेय आई।—साई री पलक मे खलक

रू० भे०—भिसती।

भिहांणी-स० स्त्री०—किसान व खेतीहर मजदूरो के खेतो मे रहने का मकान या झोपडा।

उ०—एता कमाम लै अगोणी भूमि आया, जादू की भिहांणी दाव-लेणिया कहाया।—शि व

भींग—१ देखो 'भीगी' (मह, रू भे.)

२ देखो भीगो' (मह, रू भे)

भींगणौ, भींगवौ—देखो 'भीजणौ, भीजवौ' (रू भे)

भींगणहार, हारौ (हारी), भींगणियौ—वि०।

भींगिओडौ, भींगियोडौ, भींग्योडौ—भू० का० कृ०।

भींगीजणौ, भींगीजवौ—भाव वा०।

भींगियोडौ—देखो 'भीजियोडौ' (रू भे)

(स्त्री० भीगियोडी)

भींगी-स० स्त्री०—वर्षा ऋतु के वाद एव शरद ऋतु के प्रारम्भ मे पाया जाने वाला एक कीट विशेप जिसकी गर्दन पर हरे रग का चमकदार ठोस आवरण (पदार्थ) होता है।

उ०—१ भींगी री गळाई उणरी रीटी नाक रातो लाल व्हैगो।

—फुलवाडी

रू० भे०—भिंगी।

मह०—भीग।

भींगोणौ, भींगोवौ—देखो 'भिजोणौ, भिजोवौ' (रू भे)

भींगोणहार, हारौ (हारी), भींगोणियौ—वि०।

भींगोयोडौ—भू० का० कृ०।

भींगोईजणौ, भींगोईजवौ—कर्म वा०।

भींगोयोडौ—देखो 'भिजोयोडौ' (रू भे)

(स्त्री० भीगोयोड़ी)

भींगोवणौ, भींगोववौ—देखो 'भिजोणौ, भिजोवौ' (रू. भे)

भींगोवणहार, हारौ (हारी), भींगोवणियौ—वि०।

भींगोविओडौ, भींगोवियोडौ, भींगोव्योडौ—भू० का० कृ०।

भींगोवीजणौ, भींगोवीजवौ—कर्म वा०।

भींगोवियोडौ—देखो 'भिजोयोडौ' (रू भे)

(स्त्री० भीगोवियोडी)

भींगो-स० पु०—भींगी नामक कीट के गर्दन पर का ठोस हरे रग का चमकीला आवरण जिसे ग्रामीण स्त्रियां अपने आभूपणो एव लड-कियां गुडिया सजाने मे काम मे लेती हैं।

उ०—ईंढी कवडाळी माथै पर ओढी, छैली अलकावळ मुखडै पर छोडी। झणकै झालरियौ झूमरिया झटकै, लूमी भींगां री खूणी तळ लटकै।—ऊ का

रू० भे०—भिगो। मह०—भीग।

भींच-स० पु० [स० अभ्यञ्च] १ योद्धा, सुभट।

उ०—१ कीयो रामायण लक कुरखेत भारथ कीयो, अोथ कोइ पेखियो भींच अेहो। भिनयण तरण नारद पूछै अिण्है, कहो भग-वत 'भगवत' केहो।—दुरसौ आढौ

उ०—२ बड चापावत 'वलू', कमध 'भाऊ' कूपावत। अवर भींच उमराव, रोस भरिया वहु रावत।—सू प्र

रू० भे०—भींछ, भीच।

मह०—भीचरड।

भींचणौ, भींचवौ-क्रि० स०—१ वलपूर्वक किसी प्राणी या वस्तु को दवाना, सकुचित करना।

ज्यू—भीड मे भीचीजणो।

उ०—१ जोर सू चिमटी भींचतां ई जू री पिदडको निकळग्यो।

—फुलवाडी

उ०—२ वो जोर सू नखा नै भींचिया। लोई री तूताडियां छूटण लागी।—फुलवाडी

२ सम्पुटावस्था मे करना, वन्द करना।

उ०—१ मुड मुड पडतोडी आखडियां मीचै, भूखां मरतोडी मूठ-डिया भींचै। सीधी सैणी सी मैणी सुण मालहै, बैसक पुरबमणी हसणी तजि हालै।—ऊ का

उ०—२ रेसम री जात कवळा केस, गुलावी नख। बध्योडी मूठ्या में जाणै आखी दुनिया ई भींच्योडी।—फुलवाडी

उ०—३ डोकरी भींचनै मूडो वद कर लियो। नीचला होठ मे उण री दात गडग्यो।—फुलवाडी

३ आवेश या क्रोध मे दातो को पीसना।

४ मूर्छावस्था मे दांत जुड जाना।

५ कृपणता करना, कजूसी करना।

भींचणहार, हारौ (हारी), भींचणियौ—वि०।

भींचिओडौ, भींचियोडौ, भींच्योडौ—भू० का० कृ०।

भींचीजणौ, भींचीजबौ—कर्म वा० ।
भीजणौ, भीचबौ—रू० भे० ।

भींचरड-वि०—१ काटने वाला, सहार करने वाला ।
उ०—घुघर घणा कीरति घर घण, राम हेक गजवाग रत ।
भुजळक दत सम्र तरा भींचरड, 'मेघ' तणौ हसती मसत ।
—महाराज छत्तरसिंघ री गीत
२ देखो 'भींच' (मह , रू भे)

भींचियोडौ-भू० का० कृ०—१ बलपूर्वक किसी प्राणी या वस्तु को दबाया हुआ. २ सम्पुटावस्था मे किया हुआ, बन्द किया हुआ ३ आवेश या क्रोध मे दातो को पीसने की अवस्था मे हुआ हुवा ४ मूर्छावस्था मे दातो का जवडा जुडा हुआ. ५ कृपणता या कजूसी किया हुआ
(स्त्री० भीचियोडी)

भींछ—देखो 'भीच' (रू. भे)
उ०—असुरा पूठई एक भड धाया, एक पइठा मेल्हांणि । मारी म्लेछ भींछ वलवता, वान छोडाव्या प्रांणि ।—कां दे प्र

भींज—देखो 'भीज' (रू भे)
भींजण—देखो 'भीनरा' (रू भे)
भींजणौ, भींजबौ—देखो 'भीजणौ, भीजबौ' (रू भे)
भींजणहार, हारौ (हारी), भींजणियौ—वि० ।
भींजिओडौ, भींजियोडौ, भींज्योडौ—भू० का० कृ० ।
भींजीजणौ, भींजीजबौ—भाव वा० ।

भींजिया-स० पु०—छोटे बच्चो का मूत्र ।
भींजियोडौ—देखो 'भीजियोडौ' (रू भे)
(स्त्री० भीजियोडी)

भींजोणौ, भींजोबौ—देखो 'भिजोणौ, भिजोबौ' (रू भे)
भींजोणहार, हारौ (हारी), भींजोणियौ—वि० ।
भींजोयोडौ—भू० का० कृ० ।
भींजोईजणौ, भींजोईजबौ—कर्म वा० ।

भींजोयोडौ—देखो 'भिजोयोडौ' (रू भे)
(स्त्री० भीजोयोडी)

भींजावणौ, भींजोवबौ—देखो 'भिजोणौ, भिजोबौ' (रू भे)
भींजोवणहार, हारौ (हारी), भींजोवणियौ—वि० ।
भींजोविओड़ौ, भींजोवियोडौ, भींजोव्योडौ—भू० का० कृ० ।
भींजोवीजणौ, भींजोवीजबौ—कर्म वा० ।

भींजोवियोडौ—देखो 'भिजोयोडौ' (रू भे)
(स्त्री० भीजोवियोडी)

भींट-स० स्त्री०—१ छूआछूत का दोष ।
उ०—१ भळे न उतरे भींट, धीठ जद सीस धुणावै । प्रात भाट पादरी, साट पावडा सुणावै ।—ऊ का
उ०—२ खेतर खुलौ रवै, मिनख पछी पसु पीवै । आखी जीया जूण, जगत री जळ सू जीवै । भींट भावना अठै, पळीडौ काची कालर । वळायी अर वामण भरै, सघट तट पालर ।—दसदेव
२ देखो 'भोट' (रू भे)

भींटकौ—देखो 'भींट' (अल्पा , रू भे.)
भींटणौ, भींटबौ-क्रि० स०—१ अस्पर्श्य वस्तु को स्पर्श करना, छूना ।
२ पास नही फटकना, नितान्त अभाव होना ।
उ०—पालौ पहतोडौ वरुणालय वींटै, भाळौ कडतोडौ करुणा नहि भींटै । राता मोटी व्है दिन छोटा रोवै, हाथा पावा रा खोटा दिन होवै ।—ऊ का
३ देखो भिटणौ, भिटबौ' (रू भे)
भींटणहार, हारौ (हारी), भींटणियौ—वि० ।
भींटिओडौ, भींटियोडौ, भींट्योडौ—भू० का० कृ० ।
भींटीजणौ, भींटीजबौ—भाव वा०/कर्म वा० ।
भीटणौ, भीटबौ, भेंटणौ, भेंटबौ—रू० भे० ।

भींटारौ—देखो 'भींटोरौ' (रू भे)
भींटियोडौ-भू० का० कृ०—१ अस्पर्श्य वस्तु को स्पर्श किया हुआ, छूआ हुआ २ पास नही फटका हुआ, नितान्त अभाव हुवा हुआ
३ देखो 'भिटियोडौ' ।
(स्त्री० भीटियोडी)

भींटोरौ-स० पु० [दे०] झडवेरी के छोटे ढेरो (भींटो) को एकत्रित कर वनाया हुआ वडा ढेर ।
उ०—अेक दिन वौ जगळियौ हरख सू खाका पिदावतौ राजकवर नै वधाई दी के जैसाणै री सीव सू पद्रह कोस उरली वाजू अेक थेह मे भींटोरा रै उनमान माच्योडौ सूवर आपरी भूडण अर चार रेढा साथै मछरा करै है ।—फुलवाडी
रू० भे०—वींटोरौ, भींटारौ, भींटहरौ, भीठहरौ, वींटोरौ ।

भींडली—देखो 'भिंडी' (अल्पा , रू. भे)
उ०—भार का गधा, कुमार का नाय, विणजारा का वहल, भींडली गाय, चोदुवा का चायक, चुगलू का मीत, कायर का कळम, मागलू की भीत ।—दुरगादत्तजी वारहठ

भींडियौ-वि०—छोटे २ सीगो वाला वैल ।
(स्त्री० भींडी)

भींडी—देखो 'भिंडी' (रू भे)
उ०—१ चौमासा रा दिन हा, तौ ई सेठ-सेठाणी साळ री आगळ जडनै माय सूवता । भींडी डाक नै चोरा रै आवण री सळवळ सुणी तौ दोनू ई जाणै जित्ता डरिया ।—फुलवाडी
उ०—२ पण जुगला विना उण री जीव को लाग्यौ नी । वा उठै ई भींडी माथै वैठी री' ।—फुलवाडी

भींत—देखो 'भीत' (रू भे)

उ०—१ साधा जोडै साधडा, साधा तोडै सग। दरसण दे लेवे दिरव, श्रादा भींत श्रनग।—ऊ का

उ०—२ कनक महल छाजा-कनक, कोट कागरा भींत। सबहि के इकसारसे, श्रहापुरी की रीत।—गजउद्धार

भींतडो-स० पु० (व व भीतडा) १ गृह, मकान, भवन।

उ०—चेजा चाढ वध चौरासी, घरिया श्रहल कहूल गुण घोड। जाश्रै नही दीहडै जातै, गीता तणा भींतडा गोड।

—श्रनिरुद्धसिंघ गोड री गीत

२ देखो 'भीत' (मह, रू भे)

उ०—१ हुवै श्रोह श्राडग नै मोत वादळ जुही, सार जट लगौ रावत समीमौ। उरड पडियौ मुरड 'पातला' ऊपरै, भींतडा पुराण जैम 'भीमौ'।—भीम गेहलोत रौ गीत

उ०—२ कळी सेत व्रन पाळटै पडै कळस, खसै खुभी हुवै मडप खागौ। भींतडा भाजि ढहि जाइ वरती भिळै, गीतडा नह जाय कहै 'गागौ'।—राव गागौ

रू० भे०—भीतडौ।

भींतर—देखो 'भीतर' (रू भे)

उ०—१ ऐसी पीर बिरह तन भींतर, जागत रैन विहानी। ऐसा वैद मिलै कोई भेदी, देस बिदेस पिछानी।—मीरा

उ०—२ इतर मे श्रै सरदार भींतर नू गया। राजूखा ऊठ साम्हो श्राय नै मिल्यो।—सूरेखीवै काधलोत री वात

उ०—३ गावा गावा मे गीतेरण गाती, चित्रण ग्रह भींतर चीतेरण चाती। गावड हावहका भावण गुण गाता, गाया गरभाती गोरी गरवाता।—ऊ का

भींतहर—देखो 'भीतिहर' (रू भे)

वि० [सं० भीत+हर]—भय को हरने वाला, भयहारी।

भींति—१ देखो 'भीत' (रू भे)

उ०—घरि घरि कै विसै भींति हीगुलु री गारि सो लीपै छै। फिटक की ईटा सो भाति चुणी छै।—वेलि

२ देखो 'भीतर' (रू. भे)

भींतियौ-स० पु०—१ मिट्टी को कच्ची दीवार पर बनी घास-फूस की छोटी झोंपडी।

२ खपरैल के मकान मे नेव (छाजन) को सहारा देने वाला लकडी का डडा।

रू० भे०—भीतियौ।

भींदणौ, भींदबौ—देखो 'वींधणौ, वीधवौ' (रू भे)

भींदणहार, हारौ (हारी), भींदणियौ - वि०।

भींदिओडौ, भींदियोडौ, भींदघोडौ—भू० का० कृ०।

भींदीजणौ, भींदीजबौ—कर्म वा०।

भींदियोडौ—देखो वीधियोडौ' (रू भे)

(स्त्री० भींदियोडी)

भींनणौ, भींनबौ—१ देखो 'भीनणौ भीनबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'भीजणौ, भीजबौ' (रू भे)

उ०—मूछा सेडे माय भरी, चिपके भींनोडी। श्रगली कोई उघडी कठण, कमज्या कीनोडी।—ऊ का.

भींनणहार, हारौ (हारी), भींनणियौ—वि०।

भींनिश्रोडौ, भींनियोडौ, भींन्योडौ—भू० का० कृ०।

भींनीजणौ, भींनीजबौ—कर्म वा०।

भींनियोडौ—१ देखो 'भीनियोडौ' (रू भे)

२ देखो 'भीजियोडौ' (रू भे)

(स्त्री० भीनियोडी)

भींनौ—देखो 'भीनौ' (रू भे)

(स्त्री० भीनी)

भींभर-स० पु०—१ सिर, मस्तक।

२ क्रोध, गुस्सा।

३ वर्षाकालीन एक जन्तु, झीगुर।

रू० भे०—वींभर, भीभरी।

भींभरी—देखो 'भीभर' (३) (रू भे)

उ०—भींभरि भमती लीहवइ, स्रावण नी चकचाल। उहा मिर तिठा श्रमी यमइ, विरुद्धणी श्रा मनि काल।—मा का प्र

भींभरणौ, भींभरबौ-क्रि० स०—१ क्रोध करना, गुस्से होना।

२ लाक्षणिक श्रर्थ मे विखरना।

भींभरणहार, हारौ (हारी), भींभरणियौ—वि०।

भींभरिश्रोडौ, भींभरियोडौ, भींभरघोडौ—भू० का० कृ०।

भींभरीजणौ, भींभरीजबौ—भाव वा०।

वींभरणौ, वींभरबौ, भिंभरणौ, भिंभरबौ, भिंमरणौ, भिंमरबौ, भिभरणौ, भिभरबौ, भिमरणौ, भिमरबौ—रू० भे०।

भींभळ, भींभल-स० पु०—महोत्सव।

उ०—पथमादि श्राग वसत पाचिम राग फाग परीखिये। हित धांम धाम धमाळ सुख हुय उरध भींभळ ईखिये।—रा रू

१ देखो 'विभल' (रू भे)

२ वि० स्त्री०—मुग्धा।

उ०—मधर वांणि बोलि भींभली, करइ विलास ते प्रेम श्राकुली। लाया बोल ते वोलइ वयणे, रतिपति रमीइ पूनमरयणि।

—प्राचीन फागु-सग्रह

(स्त्री० भीभली)

भींमक—देखो 'भीमक' (रू भे)

भींमगरु-स० पु०—भीम का पुत्र।

भींयाडौ-स० पु०—भैंस का चमडा।

भींयौ-स० पु०—१ वह वास जिस पर जुलाहे लोग करघी की लम्बाई से बढा हुश्रा ताने का सूत लपेट कर रखते हैं।

२ देखो 'भीम' (अल्पा , रू भे)

भींव—देखो 'भीम' (रू भे)

उ०—१ जरासिंघ सिसुपाळ कहा, दूसासण कहा भींव । कैरूदळ पाडौ कहा, खगा जु पडती सीव ।—ह पु. वा

उ०—२ घटि घटि नारद घटि २ राम, आनदरूप सकळ घटि आन । घटि घटि घु देखो धरि ध्यान, घटि घटि भींव भरथ उनमान ।—ह. पु वा

उ०—३ यौं वीरारस आगळा, भड नवकोट दुवाह । भेख 'अरज्जण' भींव भड, देख अकव्वर साह ।—रा. रू

भींवराज—देखो 'भीमराज' (रू भे)

भी—अव्यय [स० अपि] १ निश्चय रूप से, अवश्य, जरूर ।

ज्यू—मैं भी गाव जाऊला ।

२ अधिक, ज्यादा ।

ज्यू—आ दवाई ओर भी अच्छी है ।

३ औरो के अतिरिक्त, साथ या सिवाय ।

उ०—वेद सास्त्र ओर पुराण रौ विचार ओहीज है, सिद्ध ओर मुनि भी यू कैवे है, ओर इण में सका भी नी है कै जिण रै ऊपर रांम क्रपा करनै देवै उणनै विसुद्ध सत परा मिळै है ।

—कर्नल ठा श्री श्यामसिंघ राठोड

४ फिर, पुन ।

उ०— भरइ, पलट्टइ, भी भरइ, भी भरि, भी पलटेहि । ढाढी हाथ सदेसडा, धण विललती देहि ।—ढो मा

५ धिक्कारात्मक अर्थ मे बुरा, निर्लज्ज या अनुपयुक्त ।

उ०—ताहरा प्रथीराजजी कह्यो—फिट रै भादैवाळा ! भी हाडी चाटी ।—नैणसी

६ तक या पर्यन्त ।

७ कई स्थान पर केवल जोर देने के लिए विशेषत किसी मे अनुपयुक्तता दिखाई देने पर प्रयुक्त शब्द ।

ज्यू—आप भी कैडी वाता करो ।

रू० भे०—'वी' ।

भीअ—देखो 'वी' (रू भे)

भीउ—देखो 'भीम' (रू भे)

भीक—देखो 'भिक्षा' (रू भे)

उ०—१ घर धारी धवरायनै , भणिया मागे भीक । नाणौ ले प्रभु नाव रौ, ठरे काळजौ ठीक । ओ३म् हृदयम् ।—ऊ का

उ०—२ गावै मुख हरजस गोपाळ, मुद्रा छाप तिलक गळ माळ । मांगै भीक फिरै दळ माह, राति पडै नै लागै राह ।—रा रू

भीकग—देखो 'भिक्षुक' (रू भे)

उ०—डीडवाण सांभ र सहेतां अजमेरा डड, नाळनोळ डडै खडै उछडै नीहार । दिली रा नायवा डडै अडडा लगावै डड, भीकग न डडै भीक न मेली भडार ।—महाराजा अजीतसिंघ रौ गीत

भीकम—स० पु०—१ वह पुरुष जिसका लिंग कटा हुआ हो । (मा म)

२ देखो 'भीस्म' (रू भे)

रू० भे०—भीखम, भीसम ।

भीकमचादी—स० स्त्री०—पुरुष के लिंग को काटने की क्रिया । (म मा)

रू० भे०—भीखमचादी, भीसमचादी ।

भीकमपचक—देखो 'भीखमपचक' (रू भे)

भीख—देखो 'भिक्षा' (रू भे)

उ०—१ सुसीख हेति सीखकै, तमाम तीख आत मै, भले सरीक ईख के, न भीख मागते भमै ।—ऊ का

उ०—२ नाहर जो गाजिस नही, ओ गज वहता ईख । गर सर कमळ सुगध री, भमर न मागिस भीख ।—बा दा

उ०—३ मारग री मगती हू, म्हनै राजा रा मै'ला सू काईं लैणौ-दैणौ नी । भीख दैणी है तो अठै ई दे दो ।—फुलवाडी

२ देखो 'वीख' (रू भे)

उ०—इतरी सुण कुवरसी खुम हाळ सू लावी लावी भीख भरी ।

—कुवरसी साखला री वारता

उ०—२ तद नीठ घोडो पाछो वाळ भीखा लगाईयो ।

—मारवाड रा अमरावां री वारता

भीखक, भीखग—देखो 'भिक्षुक' (रू भे)

उ०—१ रति अनुकूळ विलास घणा रळियामणा । भीखग दीसै इंद्र लिवू हू भामणा ।—बां दा

उ०—२ 'चदण' चदण वीटियो, अन भीखग उरगाह । इण कारण आया नही, चारण पखी तांह ।—बा दा

भीखण—देखो 'भीसण' (रू भे)

उ०—अनमी आटीला थळिया थळवाळा, विपदा वाटीला वळिया वळ वाळा । दुरजय दीखण मे निरभय दिन दूल्हा, भीखण दुरभिख मे भुजवळ नह भूला ।—ऊ का

भीखणौ, भीखबौ—क्रि० स० [स० भिक्ष्+रा० प्र० णौ] भीख मागना, याचना करना ।

उ०—१ पूज चढावि म पत्थरि, मूकी संभू महेस । भीखारी भीखण गयु , को जाणइ कुण देसि ।—मा का प्र

उ०—२ ऊचा नीचां मे आगळ नह ईखै, भागल भकभूरा भेळा भड भीखै । मगण मगण सू पद पद रद पीसै, हूमा दैमोतां दळ ओमळ दीसै ।—ऊ का

भीखणहार, हारौ (हारी), भीखणियौ—वि० ।

भीखिओडौ, भीखियोडौ, भीख्योडौ—भू० का० कृ० ।

भीखीजणौ, भीखीजबौ—कर्म वा० ।

भीखम—१ देखो 'भीस्म' (रू भे) (डिं को)

उ०—१ अरजरा वारा जिसी आखाडै, गज खग भाडै गीत गवाडै। 'अखौ' 'रिदावत' रावत एहौ, जोखम विरिया भीखम जेहौ। —रा रू

उ०—२ रुखमणीजी कउ भाई रुकमइयौ। सो राजा भीखम सो अरु माता सु कहै छे। जु मुनै तो इह अकल उपजै छै।—वेलि

२ देखो 'भीकम' (रू भे)

भीखमआठम–स० स्त्री०यौ० [स० भीष्म+अष्टमी] माघ शुक्ला अष्टमी।

भीखमक—देखो 'भीस्मक' (रू भे)

उ०—दक्खिरा दिसि देस विदरभति दीपति, पुर दीपति अति कुदरणपुर। राजति एक भीखमक राजा, सिरहर अहि नर अमुर सूर।—वेलि

भीखमचादी—देखो 'भीकमचादी' (रू भे)

भीखमपचक–स० स्त्री० [स० भीष्म+पचक] कार्तिक शुक्ला एकादशी से पूर्णिमा पर्यन्त पाच दिवस।

वि० वि०—वैष्णव सम्प्रदाय वाले इन पाच दिनो को वहुत पवित्र मानते हैं तथा इन दिनो मे तीर्थाटन एव व्रतादि करते हैं।

रू० भे०—पचभीख, पचभीखरा, पचभीखम, भीकमपचक, भीसमपचक।

भीखारी— देखो 'भिखारी' (रू भे)

उ०—भीखारी भमता फिरइ, ऊन्हा-जिमा कहावि। थान-विहूरणउ तु थयु, अलवेसर आहा आवि।—मा का प्र

भीखियोडौ–भू० का० कृ०—भीख मागा हुआ (स्त्री० भीखियोडी)

भीगणौ भीगवौ—देखो 'भीजरणौ, भीजवौ' (रू भे)

भीगणहार, हारौ (हारी), भीगणियौ—वि०।

भीगिओडौ, भीगियोडौ, भीग्योडौ—भू० का० कृ०।

भीगीजणौ, भीगीजवौ—भाव वा०।

भीगियोडौ—देखो 'भीजियोडौ' (रू भे) (स्त्री० भीगियोडी)

भीगोणौ, भीगोवौ—देखो 'भिजोरणौ, भिजोवौ' (रू भे)

भीगोणहार, हारौ (हारी), भीगोणियौ—वि०।

भीगोयोडौ—भू० का० कृ०।

भीगोईजणौ, भीगोईजवौ—कर्म वा०।

भीगोयोडौ—देखो 'भिजोयोडौ' (रू भे) (स्त्री० भीगोयोडी)

भीगोरारि–स० पु०—हाथी, गज। (ना मा)

भीगोवणौ, भीगोवबौ—देखो 'भिजोरणौ, भिजोवौ' (रू भे)

भीगोवणहार, हारौ (हारी), भीगोवणियौ—वि०।

भीगोविओडौ, भीगोवियोडौ, भीगोव्योडौ—भू० का० कृ०।

भीगोवीजणौ, भीगोवीजवौ—कर्म वा०।

भीड–स० स्त्री०—समूह जमघट।

उ०—१ ताहरा साह नू लेनै ठाकुरो स्रीठाकुर द्वारै आयो। उठै लोका री भीड, सो ठाकुर द्वारै जाय सधीया नही भीतर। —ठकुरै साह री वात

उ०—२ पाडै धजा चम्मरा सु पक्खरा थडमा पाडै, नरां गिरां पाडै करा ऊघडा निराट। पाडै थूळ वगाळां अडाळा दळा भूळ पाडै, साहा वेहू सीस पाडै भीड फाडै वाट। —राव सत्रसाळ री गीत

क्रि० प्र०—करणी, लागणी, होणी।

मुहा०—भीड छटणी, भीड हटणी=समूह का तितर-वितर होना। भीड हटाणी=समूह को तितर-वितर करना।

२ सकट, आपत्ति, मुसीवत।

उ०—१ यु करता कितरै एकै दिनै एक साहूकार रै तोटो आयो, सवळी भीड पडी।—वाघी लिखमी री वात

उ०—२ जव जव भीड़ पडी भक्तन पर, आपहि फ़रसग पधारै। मीरा के प्रभु गिरधरनागर, हरि भक्ता नै त्यारै।—मीरा

क्रि० प्र०—पडणी।

३ मदद, सहायता।

उ०—१ अनिये अर अंग्रेजन्ट आहुव, धुरवाया रव तोप घमीड। पती नीमाज आहुवै पूगो, भारत री खीचावरा भीड। —मोहवत वारहठ

उ०—२ तरे जसोधर वामरा वोलियो—महाराजा मांरा सांसरा राजा महेसदास गोहल खोम लिया छै तिरा सू मे वोहत परेसान छा नै राज मोटा खत्री छो, गऊ व्रामरा रा प्रतपाळक छो, सो राज कनै पुकारु आया छा। तरै सीहोजी दिलासा कीवी नै कयो, थांहरी भीड करमा।—रा व वि

उ०—३ चाप करा ग्रप राम चढे, माझ रजी तद भारा मढै। खोहरण के असुरारा खपै, पख मिवा पळ खाय अपै। रे नित सो जन भीड रहै, कूरा जना दुख देरा कहै।—र ज प्र

क्रि० प्र०—करणी, खींचणी, वोलणी, आणी।

४ किसी वस्तु का वाहुल्य या अधिकता।

ज्यू—आज्कल कांम री वौत भीड पडै है।

६ भिडने की क्रिया या भाव।

७ लोहार एव वढ़ई का एक औजार विशेष जिससे वे किसी पदार्थ को मजवूती से पकडते हैं।

८ वैलगाडी मे आगे की ओर छोटे व वडे तखते के वीच का रिक्त स्थान।

रू० भे०—वीढ़, भीयड, भीर, भीरि, भीरी, भीडौ, भीरौ।

भीडणी–स० स्त्री०—घोडो के चार-जामा कसने की क्रिया या भाव।

उ०—पड़ै भगाण देस देस, अग्रवाण पीडणी। सलाह पाछलै पुरै, मिटी तुरेम भीडणी।—रा रू

भीडणौ भीडबौ–क्रि० स०—१ कवच पहनना।

उ०—१ हुई मुरद्धर ऊपर हल्ला, महा अप्रबळ जोर मुगल्लां। पेख खडा सभ लक्खा खूरा, भीड बगत्तर अगा भूरा।—रा रू

उ०—२ सजै श्रोपरा टोप सोभा सिघाळी जिकै भीडियां दस नागोद जाळी। सवाहुत्र ऊरुत्र जघात्र सगी, चहै वसचील्हा रहै एक रगी।—व भा

२ चिपकाना।

उ०—हिया सू भीड होको हमे, राज भलेंई राख लो। श्राप सू अरज इतरी अवस, चुपके पाणी चाख लो।—ऊ का

३ कजूसी करना।

४ शरीर के किन्ही अगो को परस्पर मिलाना।

५ बन्द करना।

उ०—१ अग थित भूठी जाणणी, मूठी भीड म रख्ख। माया मेवो माडुवा, चगा चाखव चख्ख।—वा दा

६ वाहु-पाश मे लेना, आलिगन करना।

७ शस्त्र धारण करना, या सुसज्जित होना।

उ०—विसर रा नगारा नाद वाजिया। आ वात सुणताई माद्ळा सीह ज्यू गाजिया सिलैह भीडिया।—पना

भीडणहार, हारौ (हारी), भीडणियौ—वि०।

भीडिग्रोडौ, भीडियोडौ, भीड्योडौ—भू० का० कृ०।

भीडीजणौ भीडीजबौ—कर्म वा०।

भीडवणौ, भीडववौ, भीडणौ, भीडबौ—रू० भे०।

भीडवणौ, भीडववौ—देखो 'भीडणौ, भीडवौ' (रू भे)

उ०—पिछाण लियौ निज वघव पूत, हळी झर प्रेम झरोखय हूत। पड़ै चख नीर रिलै प्रथमीज, भूवा उर भीडव लीन भतीज।—पा प्र

भीडाणौ, भीडावौ—देखो 'भिडाणौ, भिडावौ' (रू भे)

भीडाणहार, हारौ (हारी), भीडाणियौ—वि०।

भीडायोडौ—भू० का० कृ०

भीडाईजणौ, भीडाईजबौ—कर्म वा०।

भीडायोडौ—देखो 'भिडायोडौ' (रू भे)

(स्त्री० भीडायोडी)

भीडियोडौ–भू० का० कृ०—१ कवच पहना हुआ २ चिपकाया हुआ ३ कजूसी किया हुआ ४ शरीर के अगों को परस्पर मिलाया हुआ ५ वन्द किया हुआ ६ वाहुपाश में लिया हुआ ७ शस्त्र धारण किया हुआ, सुसज्जित हुवा हुआ ८ देखो 'भिडियोडौ' (रू भे)

(स्त्री० भीडियोडी)

भीडि, भीडी, भीडू–स० पु०—सहायक, मददगार।

उ०—पीहर पतळा रा सैणा रा प्यारा, तारक तूटा रा नैणा रा तारा। सीरी सिटियारा सूल्हा रा सारा, भीडी भूखा रा फूला रा भारा।—ऊ का

२ मित्र, दोस्त।

उ०—१ जै औ कूख रौ सूरज उण रै अतस रा भीडू रौ अस व्हैतो तो काळजा मे श्रा सूळ क्यू खटकती ?—फुलवाडी

३ खेल मे अपने पक्ष का खिलाडी।

उ०—थोडी ताळ ढवनै मामी कै'वण लागी—वेटी, श्रै तो सजोग रा खेल है पाती आया भीडवा नै लेय कवड्डी रौ पाळौ जीतणौ है। भीडी वदळणा अपा रै सारै कठै ! थनै जको भीडी मिळियौ है वो अवै छुटेला कोनी।—फुलवाडी

४ रक्षक।

उ०—लसै श्रोज पूरै तिकै फौज लाडां, गऊ विप्र भीडू दया लाज गाडां।—व भा

५ सग-साथी, (पति)

उ०—जंडौ-तंडौ ई भीडू थारै पाती आयौ, उण नै ई साचा मन सू अगेज। इण साची प्रीत रै आसरै ई थारै म्हारै भाग रौ वदळौ लिरीजैला।—फुलवाडी

[स० भीरु] कायर, डरपोक।

रू० भे०—भीडी, भीडू, भीयड, भीर, भीरि, भीरी, भीरु, भीरू।

भीडौ–स० पु०—१ वैगन।

२ देखो 'भीड' (मह, रू भे)

भीच—देखो 'भीच' (रू भे)

उ०—१ घण अम्हसम्हा सिलहवध घाटां, वजि सावळां धमक अवि-याटा। अग भिदि पडै एण अहिनाणै, जुडि जामवत भीच लक जाणै।—सू प्र

उ०—२ जीता भीच अजीत रा, 'ईंदै' पाई हार। आस परक्खै देस री, आस तजी तिण वार।—रा रू

भीचडौ—देखो 'भीच' (अल्पा, रू भे)

उ०—१ भला पधारौ भीचडा, गरक सिलह मैं गात। केहर चाळा कळह री, वळता कीजो वात।—वा दा

उ०—२ सांई एहा भीचडा, मोलि महूगै वासि, ज्या आछन्ना दूरि भौ, दूरि थका भौ पासि।—हा झा

भीचणौ, भीचवौ—देखो 'भीचणौ, भीचवौ' (रू भे)

भीचणहार, हारौ (हारी), भीचणियौ—वि०।

भीचिओडौ, भीचियोडौ, भीच्योडौ—भू० का० कृ०।

भीचीजणौ, भीचीजवौ—कर्म वा० ।

भीचियोडौ—देखो 'भीचियोडो' (रू भे)
(स्त्री० भीचियोडी)

भीचरड–वि०—१ सहारक, विध्वस करने वाला ।
उ०—घुघर घरारा कीरति घर घरा, राम हेक गजराग रत । भुजळक दत सग तरा भीचरड, मेघ तरो हमती मसत ।
—महाराजा छत्रसिंघ री गीत
२ देखो 'भीच' (मह., रू. भे)

भीच्छा—देखो 'भिक्षा' (रू भे)
उ०—स्वइच्छा दिच्छा तें इतर, नहिं इच्छा सद सुखी । अभै दिच्छा दीजै समुखमुख भीच्छा उन मुखी ।—ऊ का.

भीछ—देखो 'भीच' (रू भे)
उ०—आवळा भीछ कडछं प्रगट ऊससै, चाक चकरी फिरै नाक ठहहड चिसै । आग धकि लोयरा रूप वरिएयौ असै, 'केहरी' तरौ किरा सीस आवध कसै ।—जालमसिंघ मेडतिया री गीत

भीज–स० स्त्री०—भीजने की क्रिया या भाव ।
उ०—भीज रीझ झेली भली, पावस पाणी पै'ला । मतवाळा मनवार री, छाक म ठेलौ छैल ।—वां दा
रू० भे०—भीज ।

भीजण—देखो 'भीनरा' (रू. भे)

भीजणौ, भीजवौ–क्रि० अ० [स० अभ्यज] १ गीला या आर्द्र होना ।
उ०—१ केहर तणी कळाइया, भणणाहट भमराह । भीजै गज सिर भाजता, मद सौरभ डमराह ।—वां दा
उ०—२ जद हाडो बोल्यौ—बा'रै पाणी मे भीजू म्हारी बाई, आधो उघाड, नातर थारो वीरो मर जासी ।—फुलवाडी
उ०—३ लागी मोहि राम खुमारी हो । रिमझिम वरसै मेहडा, भीजै तन सारी हो । चहु दिस चमकै दामणी, गरजै घन भारी हो ।
—मीरां
उ०—४ पेच सुरगी पाघ रा, ढाकै मत घर ढाल । काछी चढ आछी कहू, हजा भीजण हाल—वां दा.
२ दयार्द्र होना, द्रवीभूत होना ।
३ लाक्षणिक अर्थ मे किसी तत्व का किसी के अन्दर पहुच कर व्याप्त होना, एक रस होना ।
उ०—१ रीझै साभळ राग, भीजै रस नह भेचकै । नैडो आवै नाग, पकडीजै छावड पडै ।—वां दा
४ किसी वस्तु का पानी या किसी तरल पदार्थ मे भीग कर फूल जाना ।
ज्यू—चिरणा भीजरणा, मोठ भीजरणा ।
[स० भिद्] ५ भेदन करना, छेदना ।
उ०—वेउ वेलइ सरसी तनि, सीतलि लाखारांमि । नीरगु नेमि न भीजइ, खीजइ नारी नांमि ।—जयसेखर सूरि
भीजणहार, हारौ (हारी), भीजणियौ—वि० ।
भीजिओडौ, भीजियोडौ, भीज्योडौ—भू० का० कृ० ।
भीजीजणौ, भीजीजवौ—भाव वा० ।
भींगणौ, भींगबौ, भींजणौ भींजवौ, भींनणौ, भींनबौ, भीगणौ, भीगबौ, भीवणौ भीववौ—रू० भे० ।

भीजियोडौ–भू० का० कृ०—१ गीला या आर्द्र हुवा हुआ २ दयार्द्र हुवा हुआ, द्रवीभूत हुवा हुआ ३ लाक्षणिक अर्थ में किसी तत्व का किसी के अन्दर पहुच कर व्याप्त हुवा हुआ, एक रस हुवा हुआ ४ कोई पदार्थ पानी या किसी तरल पदार्थ मे भीगकर फूला हुआ ५ भेदा हुआ, छिद्रित ।
६ देखो 'भीनियोडौ (रू भे)
(स्त्री० भीजियोडी)

भीजोडौ—देखो 'भीजियोडौ' (रू भे)
(स्त्री० भीजोडी)

भीजोणौ, भीजोवौ—देखो 'भिजोणौ भिजोवौ' (रू भे)
भीजोणहार, हारौ (हारी), भीजोणियौ—वि० ।
भीजोयोडौ—भू० का० कृ० ।
भीजोईजणौ, भीजोईजवौ—कर्म वा० ।

भीजोवणौ, भीजोववौ—देखो 'भिजोणौ, भिजोवौ' (रू भे)
भीजोवणहार, हारौ (हारी), भीजोवणियौ—वि० ।
भीजोविओड़ौ, भीजोवियोडौ भीजोव्योडौ—भू० का० कृ० ।
भीजोवीजणौ, भीजोवीजवौ—कर्म वा० ।

भीजोवियोडौ—देखो 'भिजोयोडौ' (रू भे)
(स्त्री० भीजोवियोडी)

भीट–स० स्त्री०—१ झड-वेरी के पत्तो सहित कटे हुए सूखे डठलो व काटो का समूह ।
२ छोटे २ केर वृक्ष ।
उ०—कैरा री भीटां गाव दोळी घणी थी तिकारो मोरचौ लियो ।
—सूरेखींवे कापळोत री वात
३ देखो 'भींट' (रू भे)
रू० भे०—भीट, भीठ ।
अल्पा०—भीटकियौ, भीटकौ, भीटकियौ, भीठकियौ, भीठकौ ।
मह० भीटड ।

भीटकियौ—देखो 'भीट' (अल्पा., रू. भे)

भीटड—देखो 'भीट' (मह, रू भे)

भीटणौ, भीटवौ—देखो 'भींटणौ, भींटवौ' (रू भे)
उ०—दादू यहु मन तीना लोक मे, अरस परस सव होइ । देही की रक्षा करै, हम जनि भीटै कोइ ।—दादूबाणी
भीटणहार, हारौ (हारी), भीटणियौ—वि० ।

भीटिग्रोडौ, भीटियोडौ, भीटयोडौ—भू० का० कृ० ।
भीटीजणौ, भीटीजबौ—भाव वा० ।

भीटहरौ—देखो 'भीटोरौ' (रू भे)
उ०—तरै कटक री पाखती भीटहरा चार ग्राण राखिया था, भाटिया री साथ नेडौ ग्रायौ तरै भीटहरा लगाय दिया। रात रौ चानणौ हुवौ।—नैणसी

भीटियोडौ—देखो 'भीटियोडौ' (रू. भे)
(स्त्री० भीटियोडी)

भीठ-स० पु०—१ युद्ध, सग्राम, लडाई।
उ०—कुरवसी कर चाळा, रच रोसाळां, भीठ वडाळा भोपाळा। रिळिया रिणताळा, कट किरमाळा सीस भुजाळा सूडाळा।
—भगतमाळ

२ ग्रनेक तलवारो का एक साथ प्रहार होने की क्रिया, प्रहार।
उ०—इम कहि नै ग्ररजन फौज माहि लोह भेळियौ। ग्ररजन माथै तरवारिया भीठ पडै छै।—ग्ररजन हमीर भीमोतरी वात
३ भीड।

उ०—नळ-काय सिर भूण खूडिया भुज दौ भारी। पूठी-पेट सपीठ, नीमचक नाडा सारी। सूरत मूरत चोक, सदाव्रत सरस पावणौ। भीडां वाजै भीठ, नीर परसाद लावणौ।—दसदेव
४ प्रहार, वार।
उ०—मत घडकौ भाखै 'मदू' से सायब सारै। राठोडा रिण रीठ-स्या, देय भीठ ग्रफारै—वी मा.
५ प्रहारो मे उत्पन्न ध्वनि।
६ देखो 'भीट' (रू भे)

भीठकियौ, भीठकौ—देखो 'भीट' (ग्रल्पा, रू भे)
उ०—सिर सेला ज्यूं सूळ, ग्रमीरा दोरी डाढी। गरीवा रै ना गडै, पांव जूत्या विन वाढी। भीठकिया भरणाय, घणेरी उवार घालै। तीजै दिन झडकाय, लादडी भर ले हालै।—दसदेव

भीठहरौ—देखो 'भीटोरौ' (रू भे)
उ०—इतरै वडा भीठहरा ग्रागै बळ रहीया छै, तिकारी झळ ग्राकास लागी छै।—माडणसी कूपावत री वात

भीठौ-स० पु०—कपटी मित्र।

भीड—देखो 'भीड' (रू भे)
उ०—१ सुरजन ग्रप रण-मस्त सह, भोज कुमारक भीड। भामी ग्रकवर भेजिया, नांमी प्रतिभट नीड।—व भा
उ०—२ सवळ भीड सभळी, झूझ ग्रहियौ झूझारै। साम काम हणमत, कमध कुळ मग सभारै।—गु रू व

भीडणौ, भीडबौ—१ देखो 'भीडणौ, भीडबौ' (रू भे)
उ०—१ ग्रवला ग्रवलइ ग्रक्षरइ, पामीजइ परतक्ष। वि कर भीडी वाथ दिइ, पणि ते वचन लक्ष।—मा का प्र

उ०—२ 'कामकदला'! कही कही, ऊठि ग्रालिंगन देय। सवल भुजा भीडी करी, पुढइ पच्छर लेय।—मा का. प्र
उ०—३ वाहुलता विवडी वली, भीडणि भागु विप्र। कुवुवि ग्रे कायर थई, छाडी चालिउ क्षिप्र।—मा का प्र.
उ०—४ 'माधव'! मुझ माहि करी, खरी विधाता खोडि। ग्रालिंगन ग्रति भीडती जउ कर सरजत कोडि।—मा का प्र
उ०—५ प्रीतम रइ कारण पारवती, राखीयउ जाणे ग्राम रस। भीडीयउ उर ऊपर काचू भर, कसणा रेसम तणा कस।
—महादेव पारवती री वेलि

उ०—६ रुदया भीडी रीझवी, ग्रचलि ग्रासू लूहि। वाह करी गाल गहि वरिउ, माधव सिजतु मोहि।—मा का प्र.

भीडी, भीडू—देखो 'भीडी' (रू भे)
उ०—ग्रो तौ ग्रलौकिक ग्रोर ही रूप हो मुनिवरजी। काई भगता रौ भीडू ग्राप ही ग्रागयौ हो राज।—गी रा

भीत-वि० [स० भीत] भयभीत, डरा हुग्रा।
उ०—ग्रठी वीरमदेव नू जवना रा मारिया जाणि ग्राम सेत्रावा हू चलाइ राठोड गोगै वीरमदेवोत ग्रापरा वाप रा वाढणहार नू विसारि विना ही ग्रपराध भाजड मे भीत सकट रै हेठै सपत्नीक सुता.जोइया दला नू जाइ हणियौ।—व भा
स० स्त्री० [स० भीति] भय, डर, ग्रातक।

उ०—प्रगल्भ कठ पेल देत, कठ कठिराव कौ, दुहत्थ, हत्थ ठेल देत, हत्थलै प्रदाव कौ। उन्है न भीत ग्रोर ग्रभीत व्है न त्या ग्रगै, भगै न वाह जान दै, न वाह नाव रै भगै।—ऊ का
स० स्त्री० [स० भित्ति] दीवार।

उ०—१ ग्रासिफखा ग्रकवर कहै, भीता भुरजा जोय। वाकौ गढ भड वाकडा हलौ किया की होय।—वा दा
उ०—२ चौरग दत गयदा चडत, पाखाण भीत ग्राठू पडत। घूनो विसाळ चौडौ वडेय, ग्राणा गुण घातै ग्रापडेय।—गु रू व
रू० भे०—भीत, भीति, भीति।
ग्रल्पा०—भीतडौ, भीतडौ।

भीतडौ—१ देखो 'भीतडौ' (रू भे)
उ०—कोटडियौ 'वाघौ' कठै, 'ग्रासौ' डाभी ग्राज। गवरीजै जम गीतडा, गया भीतडा भाज।—वा दा

भीतर-ग्रव्य० [स० ग्रभ्यतर] १ ग्रन्दर, में।
उ०—१ डोढी पडदौ देखियै, सूमा घरै सिवाय। भीतर जम किंकर विना, जीव मात्र नह जाय।—वा दा

उ० —२ यळ ऊपर लोभी ग्रपत नह राखै निज नाम। यळ भीतर खाटै ग्रधम, दाटै राखै दाम।—वा दा
उ०—३ दान घणौ उत्तर दियै, हू तै वित सत हार। मूहडौ लै उण मिनख रौ, मोमर भीतर डार।—वा दा

उ०—४ अई चीतगढ श्रोर सू, तू गाजियो न जाय। भीतर ज्या मन भावणी, बाहर जिका वलाय।—वां. दा

२ गुप्त रूप से, चुपके।

उ०—जग मे कहै जोगी भीतर भोगी, सोगी सम सीवदा है। महिलानै मोगी गूगी गोगी, रोगी जिम रोवदा है।—ऊ का

स० पु०—१ अन्त पुर, रनिवास।

उ०—तद सेतराम दरबार मांय आय बैठो। ताहरां दरबारी ईया री पोसाख अर वळ देख अर भीतर जाय राजा सू अरज गुदराई।—नैणसी

२ अन्दर वाला भाग।

रू० भे०—भितर, भितरि, भींतर, भींति, भीतरि।

भीतरलौ–वि० [स० अभ्यतर+रा० प्र० लो] (स्त्री० भीरतली) १ भीतर का, अन्दर का।

उ०—१ पछै राणो कुभो, रिणमलजी माडवगढ ऊपर आया। ताहरा भीतरला पण साको राखियो।—नैणसी

उ०—२ सो उवै भाग केई भीतरली खिडकी मे वड गया।—पदमसिंह री वात

२ आपस का, पारस्परिक।

उ०—भीतरला फूटा भडा, कै खूटा सामान। इण गढ़ मे होसी अमल, खम तू आमिफखान।—वा दा

भीतरवाडियौ–स० पु०—१ राजमहल के भीतर का नौकर।

उ०—राजारधा दास्यां सु प्रीति न करै। राजा रा भीतरवाडिया सु भाईयप मतां करै। टटपूजीयै वाणीये सु प्रीत न करे।—बाप री सीख री वात

२ देखो 'भीतरियौ' (रू भे)

भीतरि—१ देखो 'भीतर' (रू भे)

उ०—तुही ज सज्जण मित्त तू, प्रीतम तू परिवाण। हियडइ भीतरि तू वसइ, भावइ जाण म जाण।—ढो मा

२ देखो 'भीतरी' (रू भे)

उ०—पहिलु जबुदीव वखाणउ, जोअण लाख प्रमाण। भरहखड तसु भीतरि जाणउ, नानाविह गुण ठाण।—हीराणदसूरि

भीतरियौ–स० पु० [स० अभ्यन्तर+रा० प्र० यौ०] १ मदिर के भीतर मूर्ति के पास रहने वाला वल्लभीय ठाकुर का प्रधान पुजारी।

२ देखो 'भीतरवाडियौ' (रू भे)

भीतरी–वि०—१ भीतर का, अन्दर का।

२ गुप्त, गोपनीय।

३ अभिन्न, घनिष्ठ।

४ सच्चा।

ज्यू—मै उणनै भीतरी मन सू चावू हू।

२ देखो 'भीतरि' (रू. भे)

भीतरीटाग–स० स्त्री० यौ०—कुश्ती का एक पेंच जिसमें खिलाडी विपक्षी को, जब वह पीठ पर होता है, भीतर ही से टाग मारकर गिरा देता है।

भीति–स० स्त्री० [स०] १ भय, डर, आतक।

उ०—चैण दैण जसु चरण, ईति अति भीति निवारण। लील लाछि लख गान, विमलकीरति वधारण।—ध व ग्र

२ देखो 'भीत' (रू भे)

उ०—१ गहर भै भीति त्रसणा नदी तखि वहै, अनंत आगै वहा मित नांही। साध आकास मे अटकि उलटा चढचा, प्रांण मन सुरति आकास माही।—ह पु वा

उ०—२ जिसिया कुळ तीणइ मानि वचन, जिमी भीति तिसा चित्राम, जिसी आकृति तिसा गुण।—व स

३ देखो 'भाति' (रू भे)

रू० भे०—भीत, भैंत।

भीतिकर, भीतिकारी–वि० यौ० [स० भीति+कर] भयानक, डरावना।

भीतियौ—देखो 'भीतियौ' (रू भे.)

भीतिहर–स० पु० यौ० [स० भित्ति+घर] दुर्ग, किला।

उ०—अवेडउ साड सीधण-कउ घर, जिकइ गागुरणि सारीखउ भीतिहर। त्या अेक पुरुख का पछोपा बाहिरउ जाण्यइ वीण्यइ हुवइ छइ ताटीहर।—अ० वचनिका

रू० भे०—भींतहर।

भीनउ—देखो 'भीनौ' (रू भे)

उ०—१ तू उपजइ न खपइं नहु आइस, कुळ न कहइ कहियइ उकळीण। भीनउ नादि विनोद महा भडि, व्रसभ चढइ तइ वावइ वीण।—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ वीनवी अपति न वीनउ भीनउ नेमि न जामु, सत्यभामा रीसाणुण दारुण वोलइ तामु।—जयसेखर सूरि

भीनण–स० पु०—१ सूखी रोटियो को छाछ (मट्ठा) मे भिगोने की क्रिया।

२ उक्त प्रकार से भीगा हुआ खाद्य पदार्थ।

रू० भे०—भीजण, भीजण।

भीनणौ भीनबौ–क्रि० अ०—१ लाक्षणिक अर्थ में किसी तत्व का किसी के भीतरी भागो मे पहुच कर अच्छी तरह व्याप्त होना, सम्मिलित होना।

२ परिपूर्ण होना, पूर्ण होना।

उ०—अपनी कवान आलमसा हाथ दीनी, डाढी नोस हाथ दीनी रार रोस भीनी।—रा रू

उ०—२ प्रथम नेह भीनो महाक्रोध भीनो पछै, लाभ चमरी समर झोक लागै। रायकवरी वरी जेण वागै रसिक, बरी घड कवारी तेण बागै।—वा दा

३ अनुरक्त होना।

४ युक्त होना ।

५ देखो 'भीजरणौ, भीजवौ' (रू भे.)

उ०—आलीजा अलवेलिया, हो हजा हुसनाक । भीनोडा रसिया भमर, छैल पियो मद छाक ।—वा दा

भीनणहार, हारौ (हारी), भीनणियौ—वि० ।

भीनिश्रोडो, भीनियोडो, भीन्योडो—भू० का० कृ० ।

भीनीजणो, भीनीजवौ—भाव वा०, कर्म वा० ।

भीनरवाई–स० स्त्री०—आर्द्र भूमि, भीगी पृथ्वी ।

भीनरवाडौ–स० पु०—भीगा भू-भाग ।

भीनियोडो, भीनोडो–भू० का० कृ०—१ किसी तत्त्व का किसी के अंदर पहुच कर अच्छी तरह व्याप्त हुआ, सम्मिलित हुवा हुआ (लाक्षणिक अर्थ मे) २ अनुरक्त हुवा हुआ. ३ युक्त हुवा हुआ, सहित.

४ देखो 'भीजियोडो' (रू भे)

(स्त्री० भीनियोडी, भीनोडी)

भीनोटौ–स० पु०—भीगा या आर्द्र स्थान ।

भीनौ–वि० [स० भीनी] १ अनुरक्त ।

उ०—१ वर कन्यां बिन्हे घातिया वानइ, वेइ बारा वरसा रा बाळ । भमर ज्युही केतकी भीना, भोळी चक्रवरती भूवाळ ।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ ऊमा 'अचळो' मोहियो, ज्यू चदण भूयग । रात-दिवस भीनो रहै भमरो सुमना रग ।—अज्ञात

उ०—३ भेख लिया जद दुख सुख त्यागा, राम नाम रग भीना । घट घट मे साहब सत् जांण्या, दुरमत दूरी कीना ।

—स्री सुखरामजी महाराज

२ युक्त, सहित ।

उ०—१ जोधपुर द्रुग्ग जोधपुरौ, कळा तप तेज कळकळै । भाद्रवै माम भीनै मिहरि, किरि भासकर झळहळै ।—गु रू व

उ०—२ सु जैत ताहरा ही ज सिकार रम नै लू रो झकोळियो थको घणो तावडै सो वैमार थको आय नै खसखानै माहे आय पोढियो । सु खसखानै वाहरा घणी रो छडकाव कीयो । चदन रो लेपन कर केसरिया भीनो दुपटो ओढ नै पोढियो छै ।

—जेतमाल पुमार री वात

उ०—३ सज देखी सिरदार की, धज सूरत चित धार । मुळकी उण मोसर मही, रग भीनी रिझवार ।—पना

३ परिपूर्ण, पूर्ण, भरा हुआ ।

उ०—वाला रस भीना वचन, सज भीना तन साज । चदा वदनी चतुर रा लोयण भीना लाज ।—अज्ञात

४ भीगा हुआ, गीला, आर्द्र ।

उ०—१ खेडा गांमां री गळती जे खावै, आधा दामा मे वळती दे आवै । बिलखी अजल विन धावै वेराजी, भीनी वाफणिया आवै घर माजी ।—ऊ का

उ०—२ खोळा टकियोडा गळ मे खूगाळी, जळ जुत ठोडी पर टिमकी जघाळी । भीनै काचळियै धम धम डग भरती, धसळा देतोडी धमधम पग धरती ।—ऊ का.

५ मद, धीमा ।

ज्यू—भीनी-भीनी सुगध ।

६ लाक्षणिक अर्थ में, मस्त, मतवाला ।

ज्यू—नसा में भीनो है ।

७ हल्के काले रग का मनुष्य ।

८ ओत-प्रोत, सना हुआ ।

यौ०—मावो-भीनो ।

रू० भे०—भीनौ, भीनउ ।

भीफरणौ, भीफरबौ—देखो 'विफरणौ, विफरबौ' (रू भे)

उ०—खदा उरड तोडतो रूका, चळ चळ घतिया लोवळ चाव । भीफर सरळ भाजिया खग वळ, सीधुर फवियो 'करण' सुजाव ।

—द दा

भीभळ—देखो 'विभळ' (रू भे)

उ०—१ नवमात् ससि वदन, अरक फाइतक ऊजळ । डसण हीर किर ललित, मुकळ लोयण भीभळ ।—गु रू व

उ०—२ साहिव कछुछ न जाइयड, तिहा परेरड द्रग । भीभळ नयण सुवक घण, भूलउ जाइसि सग ।—ढो मा

२ देखो विह्वल' (रू भे)

भीभलणौ, भीभलबौ–क्रि० अ०—गर्म होना, उष्ण होना ।

उ०—अथ वरसा, आविउ आसाढ, अतरग सबाढ, काठईइ लोह, धाम तणउ निरोह, छामि खाटी, वीयाइ माटी, पांणी भीभलइ, गुडउ गूजरीवरणए साभलीइ ।—व स

भीभलणहार, हारौ (हारी), भीभलणियौ—वि० ।

भीभल्लिओडो, भीभलियोडा, भीभल्योडो—भू० का० कृ० ।

भीभलीजणौ, भीभलीजवौ—भाव वा० ।

भीभलियोडो–भू० का० कृ०—गर्म हुवा हुआ, उष्णता प्राप्त ।

(स्त्री० भीभलियोडी)

भीभू–स० पु० [स० भीम=भयकर] सिह, शेर ।

उ०—भीभू लक मुराळ गति, पिक सुर जेही वांण । ढोला मदिर माळवी, जेहा हम निवाण ।—अज्ञात

भीम–स० पु० [स०] १ शिव, महादेव ।

उ०—गन भूत-प्रेत पिसाच कौतुक अत ततु जटा जुटी । जय व्योम केस महेस अवक भीम भूतप धूर्जटी ।—ला रा

२ विष्णु

३ वायु के सयोग से कुन्ती के गर्भ से उत्पन्न कुरुवशीय पाडु राजा का एक पुत्र । (अ. मा , ह ना मा)

४ एक पुरुवशीय राजा जो वायु पुराण के अनुसार महावीर्य राजा का पुत्र था।
५ एक राक्षस, जो लका नरेश रावण का मित्र था।
६ एक कुरुवशीय राजा, जो मत्स्य पुराण के अनुसार रुचिर राजा का पुत्र था।
७ एक देवगधर्व जो कश्यप एव मुनि का पुत्र था।
८ अग्नि जो पाचजन्य अथवा तप नामक अग्नि का पुत्र था।
९ तीसरे मरुद्गणो मे से एक।
१० विकुठ देवो मे से एक।
११ एकादश रुद्रों मे से एक।
१२ एक पुरुवशीय राजा, जो इलिन एव रथन्तरी का पुत्र था।
१३ एक राक्षस, जो देवताओ एव हिरण्याक्ष के बीच हुए युद्ध मे मारा गया था।
१४ आनर्त (गुजरात देश) का एक राजा, जो सत्वत राजा का पुत्र था।
१५ एक राक्षस, जो कश्यप एव खशा के पुत्रो मे से एक था।
१६ एक यादव राजा जो दाशार्ह (विदुरथ) राजा का पुत्र था।
१७ एक राजा जो भागवत के अनुसार विजय राजा का पुत्र था।
१८ हरिवश एव ब्रह्म पुराण के अनुसार एक यादव राजा ज्यामघ का पुत्र।
१९ विदर्भ देश की कौडिन्य नगरी का राजा, जो चित्रसेन राजा का पुत्र था।
२० विदर्भ देश का एक राजा जो दमयती का पिता था।
२१ कुभकरण का एक पुत्र।
२२ साहित्य मे भयानक रस।
२३ एक नदी का नाम। (अ मा)
वि०—१ बहुत बडा, विशाल।
२ भीषण, भयानक, घोर।
उ०—१ प्रळै व्रज करेवा नीम दांमण पतन, गयण फूटै घटा भीम गरजै। उठावै अछलतौ जेम हळधर अनुज, वळ तके यद्रछी भला वरजै।—वा दा
उ०—२ सेसि वलइ जल उछलइ, सायर छटइ सीम। वाया विण वाजइ सबद, महा भयकर भीम।—मा कां प्र.
रू० भे०—भीव, भीउ, भीमि, भीमू, भीमेण, भीव।
अल्पा०—भीमो, भीमडो, भीमलो भीमियो, भीमो।

भीमएकादसी–स०स्त्री० [स० भीमएकाशी] १ ज्येष्ठ शुक्ला एकादशी।
२ कार्तिक शुक्ला एकादशी।
३ माघ शुक्ला एकादशी।

भीमक—देखो 'भीम्मक' (रू भे)
उ०—चूडा महण चूडामणी जी, भीमक घरि अवतार। बधव रुगमईयो भलो जी, मत्रीसर मति सार।—रुकमणी मगळ
रू० भे०—भीमक, भीमक।

भीमकुंड–स० पु०—एक जलाशय जो तीर्थ माना जाता है।
उ०—हारे मोरा लाल सूरयकुड भीमकुड नै, पासै पगला जान। ओलखाभूल आवियो, फरसीजे जिन न्हाण मोरा लाल।—वि कु

भीमकुमार–स० पु०—भीमसेन का पुत्र घटोत्कच।

भीमगज–स० पु०—पाडुपुत्र भीम द्वारा आकाश मे फेंके गए हाथी।
उ०—१ गोरा नह भेटै भीमगजां, वर लडै न कमधज खोल धजा। धर लडसी कमधज खोल धजा, गोरा जद मिळसी भीमगजा।
—महाराजा मानसिंघ जी रो गीत
उ०—२ मोमू ऊवेळोह, तुरत हुवो जिण रो तवां। भीमगजां भेळोह, करतो जे पावू कमध।—पा. प्र

भीमडात, भीमडाथ–स० पु०—रग विशेष का घोडा।
उ०—सोवन रा ताजी च्यार साल, पच दोक दिना पोरस अपाल। धुर केक माळवी सरस धज्ज, भीमडाथ थळी वाळा भिडज्ज।
—सू प्र.

भीमडो—देखो 'भीम' (अल्पा, रू भे)
उ०—तिण वार 'भगवत' 'केहरी' तण वर्ण त्रिजडां वाहतो। 'भीमडा' पाडव जेम भारथ, गज घडा भड गाहतो।—सू प्र

भीमचडी–स० स्त्री०—एक देवी का नाम।

भीमजी–स० पु०—दामाद को गाये जाने वाला एक लोक गीत।

भीमतळाव–स० पु०—बडा सरोवर।
उ०—माय, भर रे नाडा भर नाडियो, माय, भरियो, रे भीमतळाव पपस्रियो बोल्यो खावड रै खेत मे।—लो गी

भीमता–स० स्त्री०—भयानक होने की अवस्था या भाव, भयानकता।

भीमतिथ, भीमतिथि–स० स्त्री० यौ० [स० भीम+तिथि] १ ज्येष्ठ शुक्ला एकादशी।
२ कार्तिक शुक्ला एकादशी।
३ माघ शुक्ला एकादशी।

भीमथळी–स० स्त्री०—जैसलमेर जिले का एक भू-भाग।

भीमनाद–स० पु० यौ० [भीम+नाद] भीषण ध्वनि, भयकर आवाज।
उ०—डाक काळ रूपी डाच उवेडै कटार डढ्ढा, भीमनाद भेडै रेडै गयदा गभीर। आहेडै तेडै पेडै वीर देवीसिंघ आळा, केडै लाग तूंही छेडै डाखियो कठीर।—दौलतसिंघ हाडा रो गीत

भीमपळासी–स० स्त्री०—सगीत मे सपूर्ण जाति की एक सकर रागिनी।

भीमफळोदया–स० स्त्री० यौ० [भीम+फलोदया] भयकर फलो को देने वाली।

भीमवळ–स० पु०—१ एक प्रकार की अग्नि।
२ धृतराष्ट्र का एक पुत्र।

भीममुख–स० पु०—एक प्रकार का बाण।

भीमरथ–स० पु०—१ धृतराष्ट्र का एक पुत्र।

२ युधिष्ठिर की सभा का एक नृपति ।

३ कौरव पक्ष का एक योद्धा, जो द्रोण निर्मित्त गरुडव्यूह मे खडा हुआ था ।

४ भागवत, विष्णु एव वायु पुराण के अनुसार विकृति राजा का पुत्र ।

५ एक राजा जो भागवत एव वायु पुराण के अनुसार केतुमत् राजा का पुत्र था ।

भीमरथी—स० स्त्री०—१ एक पौराणिक नदी ।

२ वैद्यक के अनुसार मनुष्य की ७७ वर्ष के ७ वें महीने की सातवी रात के बाद होने वाली कठिन अवस्था ।

भीमल—स० पु०—१ सिसोदिया वश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति ।

२ पवार वश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति ।

भीमसकरी—स० स्त्री०—दक्षिण की एक बडी नदी ।

उ०—दिखण मे भीम नदी **भीमसकरी** कहावै ।—वा दा ख्या

भीमसेण, भीमसेन [स० भीमसेन] १ पाडु पुत्र भीम का नामान्तर ।

रू० भे०—भीमसेण, भीमसेनु, भीवसेन ।

भीमसेनी—वि०—भीमसेन सम्बन्धी ।

भीमसेनीएकादसी—देखो 'भीमएकादसी' ।

भीमसेनीकपूर—स० पु०—एक विशेष प्रकार का कर्पूर जो सुमात्रा आदि द्वीपो मे होने वाले वृक्षो के रस से तैयार किया जाता है ।

उ०—केसर-कस्तूरी, भीमसेनीकपूर री मरदन हुवै, तिण री कीच मचियो रहै । सो इण भांत जलाल गहरो मोज आणद सू रहै ।

—जलालबूबना री वात

भीमसेनु—देखो 'भीमसेन' (रू भे)

उ०—सवा कमल नी इच्छा करइ, **भीमसेनु** तउ वनि वनि फिरइ । असउण देखी बोलइ राउ, भीम पासि वछेदिइ जाउ ।

—सालिभद्र सूरि

भीमा—स० स्त्री०—१ दक्षिण भारत की एक नदी जो पश्चिमी घाट से निकल कर कृष्णा नदी मे मिलती है ।

उ०—**भीमा** धुनि पयवस्वनी, गोदावरी गहीर । ऊनतभद्रा पूरणा, किसना निरमळ नीर ।—वा दा

२ दुर्गा, देवी ।

वि० स्त्री०—भयकर, भीषण ।

उ०—प्रत्यू सीमासी रावी बिसमासी, भीमा भावीसी **भीमा** निस भासी । तूहिन कठीरव तन कुजर तावै, डगडगि चढियोडा मरिया डुसकावै ।—ऊ का

भीमि—देखो 'भीम' (रू भे)

उ०—साधीउ पच्छेवाणु **भीमि** पुरोहतु लाखहरै । मेल्हीउ दीघु पीयांणु, केडइ आवी पुणु मिलए ।—सालिभद्रसूरि

भीमी—स० स्त्री०—१ भीम राजा की कन्या दमयती ।

२ भीष्मक राजा की पुत्री रुक्मिनी ।

उ०—ताहाश्री आवी नैसध आगलि **भीमी** ना गुण भाखि । प्रेम ऊपायु नल राजा नि सुणता दीठा पाखि ।—नळाख्यान

रू० भे०—भैमी ।

भीमू, भीमेण—देखो 'भीम' (३) (रू भे) (डि को)

उ०—१ ताकडा 'अजन' '**भीमेण**' ताय, खागडा उरस थी भचक खाय । 'अभपती' जती गोरक्ख एम, तैरे' सख बारह पथ तेम ।

—वि स

उ०—२ अरजन हूतो अनै, कियो कोमड करगै । महाजोध **भीमेण**, गदा आपडै उमगै ।—वखतो खिडियो

भीमोत—स० पु०—राठोड वश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति ।

भीमोत्तर—स० पु०—बडे रोएदार तथा गोल पत्तो वाली एक प्रसिद्ध वेल जिसके फल बडे और गोल होते हैं, कुम्हड़ा ।

भीमोदरी—स० स्त्री०—दुर्गा ।

भीमो—देखो 'भीम' (अल्पा, रू भे)

भीय—देखो 'बी' (रू भे) (अ मा, ह ना मा)

भीयड़—१ देखो 'भीड' (रू भे)

२ देखो 'भीडी' (रू भे)

उ०—जव लू नित नाम तिलोचन वोल्यो, भामण **भीयड** होय भिडै । करवा ग्रह काज इसो मोय आगळ, माणस कोय लिलाम मिळै ।—भगतमाळ

भीयो—वि०—डरा हुआ, भयभीत ।

भीर—देखो 'भीड' (रू भे)

उ०—१ पण राखण आया प्रभू, भल अवळा री **भीर** । दस हजार गज वळ घट्यो, घट्यो न दम गज चीर ।—रामनाथ कवियो

उ०—२ **भीर** म्हे जकां भीरी विसभर, गाज कुण सकै 'जसराज' रा गाव । राव एक थाप ऊथापिया रिडमला, रिडमला पुडदडी राखिया राव ।—वा दा

उ०—३ वेली बापूकारिया, पूरे वेल सवाय । धीर वधारी भीरिया, **भीर** सकज्जा पाय ।—रा रू

उ०—४ दादू महाजोध मोटा वळी, सो सदा हमारी **भीर** । सब जग रूठा क्या करै, जहा तहा रणवीर ।—दादूवाणी

उ०—५ पछै वेगो ही राणा जी ऊपर हाजीखा आयो । राठोड देईदास जैतावत रावमालदे री फौज वडो साथ लै'नै हाजीखा री **भीर** आया था ।—रावमालदे री वात

२ देखो 'भीडी' (रू भे)

उ०—दुरजोधन वीर करै ग्रह द्रोपा, खांच सभा विच चीर खडी । पचियो पण **भीर** हुवो परमेसर, चीर न खूटोय सोभ चढी ।

—भगतमाल

भीरव—देखो 'भीडी' (रू भे)

उ०—ग्रसी सहस सेना ग्रठी, सहस उठी वासट्ठि। भडा ग्रोपिया भीरवां, नीर गया मुख नट्ठि।—व भा

भीरि, भीरी—देखो 'भीडी' (रू भे)

उ०—१ भरथ न सत्रघण वळभद्र भीरी, वधव लखण न पुगो वेल। ग्रोखामडळ विटियो ग्रसुरा, वीठल सादवियो 'वाढेल'। —सिवा वाढेल रो गीत

उ०—२ वेली वापूकारिया, पूरे वेल सवाय। वीर वधारी भीरिया, भीर सकज्जां पाय।—रा रू

उ०—३ भीर म्हे जका भीरी विसभर, गांज कुण सकै जसराज रा गाव। राव एक थाप उथापिया रिडमला, रिडमला पुडदडी राखिया राव।—बा दा

२ देखो 'भीड' (रू भे)

उ०—एहिज परि थई भीरि कजि ग्राया, घनजय ग्रनै सुयोधन। मासे मगसिर भलउ जु मिळियो, जागिया मीट जनारजन।—वेलि

भीरु-वि० [स० भीरु] १ कायर, डरपोक।

२ चादी, रोप्य। (डि को)

३ देखो 'भीडी' (रू भे)

रू० भे०—भीरू।

भीरुता-स० स्त्री०—१ कायर या डरपोक होने की ग्रवस्था या भाव।

२ डर, भय।

भीरू-स० स्त्री० [स० भीरु] १ स्त्री, ग्रौरत। (ह ना मा)

२ देखो 'भीरु' (रू भे)

उ०—हलकार भीरू वडा हिंदू ताहरा तुडताण। सममेर झाले करी सेहरा, साभळै सुरताण।—जसो बारहठ

३ देखो 'भीडू' (रू भे)

उ०—भूधर तूही हारिया भीरू, ग्रापण तू ही ग्रनाथा नाथ। —ग्रोपो ग्राढो

भीरुक-स० पु० [स० भीरु+कन्] १ चादी। (डि को)

२ वन, जगल।

३ उल्लू।

भीरो—देखो 'भीड' (मह, रू भे)

उ०—चपा वार उघाडीया वलि चालणि काढयु नीरो रे। सती सुभद्रा जस थयउ, त मइ तस कीधो भीरो रे।—स. कु

भील-स० पु० [स० भिल्ल] (स्त्री० भीलण, भीलणी) १ प्राचीन काल मे राजपूताना, सिंघ ग्रौर मध्य भारत के जगलो व पहाडो मे पाई जाने वाली एक ग्रनुसूचित जाति।

२ इस जाति का व्यक्ति।

उ०—१ मैणो पैगू मेर बावरो विळळा वैं'ता, माळी थोरी भील रात रा मार्ग रैं'ता।—ऊ का

उ०—२ दोय ग्रादमी साथ लेनै जिण मेवासा मे भील रहतो तठै ही ग्राप जाय पहोंतो।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

रू० भे०—भिल्ल। ग्रल्पा०—भीलडो।

पर्याय—ताडी, कमठाळ ग्राहेडी, काडी, सावळो, नायक।

भीलडो—देखो 'भील' (ग्रल्पा, रू भे)

उ०—१ कही छो रावत हरीसिंघ रा घर माहे ईसडो रजपूत नहीं सो उण भीलडै नू मारै।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

उ०—२ भीला री वस्ती मे कोई रै व्याव हो, भीलडचां री राग ई छानीं नही रैं'वै।—रातवासो

(स्त्री० भीलडी)

भीलडी, भीलण, भीलणी-स० स्त्री०—१ भील जाति की स्त्री।

२ शिवरी, जिसने श्रीराम को वनवास मे झूठे बेर खिलाए थे।

उ०—१ भीलडी चुण किया भेळा, वो'त हित सू बोर। प्रीत कर रघुनाथ पाया, कोय'क खाडो कोर।—भगतमाळ

उ०—२ वन मे हुती स्योरी भीलणी ज्यांका ग्ररोग्या ठाकुर बोर। ऊच नीच हरि ना गिणै, ऐसी म्हारा हरिभगता री कोर। —मीरां

रू० भे०—भीलि, भीलि, भीली।

भीळणो, भीळबो—देखो 'भिळणो, भिळबो' (रू भे)

उ०—ग्राज मोनु मुवो चाहोजै। तरै ग्रखैराज ग्रादमीया १५ तथा २० कूदीया। सु ग्रखैराज हेलै वरछी नव ग्रागळ मडी, सु के लागी के टळी। ग्रै लोह भीळीया। दौलतियो भागो।—नैणसी

भीळणहार हारो (हारी), भीळणियो—वि०।

भीळाडणो, भीळाडबो, भीळाणो, भीळाबो, भीळावणो, भीळावबो —प्रे० रू०।

भीळिग्रोडो, भीळियोडो, भीळ्योडो—भू० का० कृ०।

भीळीजणो, भीळीजबो—भाव वा०।

भीलप-स० पु०—१ विलाप।

उ०—कासू मा भीलप करै, हू वाजू सुरतांण। सूरजमल री सारधू, सो पूठै ग्रमरांण।—पा प्र

२ घबराहट।

३ कायरता।

भीलभूसण-स० पु० [स० भिल्लभूषण] गुजा या घुघची जिसकी मालाए भील लोग पहनते हैं।

भीलवाडा-स० पु०—भीलवाडा जिले की मिट्टी का बना एक प्राचीन सिक्का।

भीळाडणो, भीळाडबो—देखो 'भिळाणो, भिळाबो' (रू भे)

भीळाडणहार, हारो (हारी), भीळाडणियो—वि०।

भीळाडिग्रोडो' भीळाडियोडो, भीळाडचोडो—भू० का० कृ०।

भीळाडीजणो, भीळाडीजबो—कर्म वा०।

भीळाडियोडो—देखो 'भिळायोडो' (रू भे)

(स्त्री० भीळायडिोडी)

भीळाणो, भीळाबो—देखो 'भिळाणो, भिळाबो' (रू. भे)

उ०—तरै रजपूत कैयो भीजल जाय नै वाला भोपत सु मिळ नै कही—हू किलौ भीळाय देसू ।—नैणसी

भीळाणहार, हारौ (हारी), भीळाणियौ—वि० ।

भीळायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

भीळाईजणौ, भीळाईजबौ—कर्म वा० ।

भीळायोड़ौ—देखो 'भिळायोड़ौ' (रू भे)
(स्त्री० भीळायोड़ी)

भीलामौ—देखो 'भिलावौ' (रू भे)

उ०—भीलामां नइ भालकी, भरडु भांरिंगि भांगि । भभेडी ब्रह्मांड घणा, भोजपत्र भड चगि ।—मा का प्र

भीळावणौ, भीळाववौ—देखो 'भिळावणौ, भिळाववौ' (रू भे)

भीळावणहार, हारौ (हारी), भीळावणियौ—वि० ।

भीळाविग्रोड़ौ, भीळावियोड़ौ, भीळ व्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

भीळावीजणौ, भीळावीजबौ—कर्म वा० ।

भीळावियोड़ौ—देखो 'भिळायोड़ौ' (रू भे)
(स्त्री० भीळावियोड़ी)

भीलावौ—देखो 'भिलावौ' (रू भे) (ग्रमरत)

भीलि, भीलि, भीली—देखो 'भीलणी' (रू भे)

उ०—रघुवर भीली कर रे, विलकुल सीता वर रे । रुचि कर-कघु फळ रे, जमि हसि पीधौ जळ रे ।—र ज प्र

भीव—देखो 'भीम' (रू भे)

उ०—ग्रकवर न जुजठळ, भीव न ग्ररिजण, खळ-दळ लागा, लोह खिवौ । पडतै भार प्रजा पीडती, स्रीरग कहियौ—सिवौ 'सिवौ' ।
—सिवा वाढेल रौ गीत

भीवणौ, भीववौ—देखो 'भीजणौ, भीजवौ' (रू भे) (ग्रमरत)

भीवणहार हारौ (हारी), भीवणियौ—वि० ।

भीविग्रोड़ौ, भीवियोड़ौ, भीव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

भीवीजणौ, भीवीजबौ—भाव वा० ।

भीवसेन—देखो 'भीमसेन' (रू भे)

भीवियोड़ौ—देखो 'भीजियोड़ौ' (रू भे)
(स्त्री० भीवियोड़ी)

भीसट—देखो 'भ्रस्ट' (रू भे)

भीसण—वि० [स० भीषण] १ भयानक, डरावना ।
२ दुष्ट, उग्र ।
३ दुष्कर, विकट ।
४ दुष्परिणाम के रूप मे होने वाला, वहुत ही वुरा ।
स० पु०—१ साहित्य में एक रस ।
२ ब्रह्मा ।
३ शिव, शकर ।
४ एक राजा, जो मत्स्य के ग्रनुसार हृदिक राजा का पुत्र था ।
५ वय नामक ग्रसुर का पुत्र ।
६ एक ग्रसुर, जिसे हनुमान ने परास्त किया था ।

भीसणता—स० स्त्री० [स० भीषणता] १ भयकरता, डरावनापन ।
२ उष्णता, उग्रता
३ दुष्करता, विकटता ।

भीसणी—स० स्त्री० [स० भीषणी] सीता की एक सखी ।

भीसम—१ देखो 'भीस्म' (रू भे) (डि को)
२ देखो 'भीकम' (रू भे)

भीसमग्रायी—स० स्त्री० [स० भीष्म+ग्रार्या=भीष्ममाता] गगा, भागी-रथी । (डि को

भीसमचांदी—देखो 'भीकमचादी' (रू भे)

भीसमपचक—देखो 'भीखमपचक' ।

भीसमसू—देखो 'भीस्मसू' (रू भे)

भीसमास्टमी—देखो 'भीस्मास्टमी' (रू भे)

भीसुर—वि०—दीप्तिमान ।

उ०—चदवदण ग्रगलोयणी, भीसुर ससदळ भाळ । नासिक दीप-सिखा जिसी, केळ-गरभसुकमाळ ।—ढो मा

भीस्ट—देखो 'भ्रस्ट' (रू भे)

भीस्म—स० पु० [स० भीष्म] १ गगा से उत्पन्न कुरु राजा शान्तनु का पुत्र, गागेय (डि को)

पर्याय०—गगकाज, गागेय, सतनुसुतन कुरूईस, कुरुदेव, द्रढव्रती ।
२ शिव, महादेव ।
३ राक्षस, ग्रसुर ।
३ साहित्य मे एक रस ।
वि०—१ भयकर डरावना ।
रू० भे०—भीकम, भीखम, भीसम ।

भीस्मक—स पु० [स० भीष्मक] विदर्भ देश का भोजवशीय नरेश, जो रुकमणी का पिता था ।
रू० भे०—भीखमक, भीमक, भीमक ।

भीस्मकसुता—स० स्त्री० यौ० [स० भीष्मकसुता] श्रीकृष्ण की पत्नी, रुकमणी ।

भीस्मपितामाह—देखो 'भीस्म' (१)

भीस्ममणि—स० स्त्री० [स० भीष्ममणि] हिमालय के उत्तर मे मिलने वाला एक सफेद रग का पत्थर या मणि । (शुभ)

भीस्मसू—स० स्त्री० [स० भीष्मसू] गगा, भागीरथी । (डि को)
रू० भे०—भीसमसू ।

भीस्मास्टमी—स० स्त्री० [स० भीष्माष्टमी] माघ शुक्ला ग्रष्टमी, जिस दिन भीष्म ने प्राण त्यागे थे ।
रू० भे०—भीसमास्टमी ।

भुं—१ देखो 'भाय' (रू. भे)

उ०—आगै वेहसूर बैठा छै। तठै पीठवै पागडो छाडीयो। पीठवै नू पूछीयो,–'कठा सू वळीयो ?' इयै वात कही, 'बाबाजी आघी भु सू वळीयो। सिकार कियो हुतो सो म्हैं समघडै नू दीयो।'

—पीठवै चारण री वात

२ देखो 'भूमि' (रू भे)

भुग्र—देखो 'भ्रू' (रू भे)

उ०—भुग्र सजोडै दीपै, वांकडी कवाण नै जीपै हो। माहो माहि न छीपै तै भाल विसाल समीपै हो।—वि कु

भुग्रारौ—देखो 'भवारौ' (रू भे)

भुइरु—देखो 'भवारौ' (रू भे)

उ०—माघव ! तुम्हे म चालसिउ, गोरी जपइ गुज्झ। भलू करा-विसी भुइरु, माहि राखिसि तुज्झ।—मा का प्र

भुइ—१ देखो 'भूमि' (रू भे)

उ०—१ रीति रहावणी जी ऊची आदरी कीरति कवि करैजी। पर भुइ पस्सरी प्रघट प्राकमीजी खग्रवट वपि खरी वासो खग वसै जी।—ल पि

उ०—२ मेघ घणो वूटो। घरती अजै नीली नही हुइ छै। त्रिण अकुर नही हुआ छै। जहा कही ऊठै ची भुइ छै।—वेलि टी.

२ देखो 'भाय' (रू भे)

उ०—अठा सू आगै खारो सरू व्है जावै। खारो लालाणा सू लगाय नै राखी तक पाच कोस री भुइ में फेलयोडो है।—रातवासो

भुइण—१ देखो 'भूमि' (रू भे)

२ देखो 'भुवन' (रू भे)

भुइदाग–स० पु० [स० भूमि+दग्ध] १ शव को भूमि मे दफनाने की क्रिया।

२ वह दिन, जिस रोज किसी शव का दाह-सस्कार हुआ हो।

वि० वि०—इस दिन यात्रा करना अशुभ माना जाता है।

रू० भे०—भूमिदाग।

भुइरौ—देखो 'भवारौ' (रू भे)

भुई—१ देखो 'भाय' (रू भे)

उ०—१ ताहरा दूदो बोलियो–रे ! औ कुण बोलै ? कह्यो जी 'मेघो' बोले छै। कह्यो–रे। इतरी भुई सुणीजै छै।

—दूदै जोधावत री वात

२ देखो 'भूमि' (रू भे)

उ०—१ तिसडै वासलो चोरि कपडा नाखि भन-भन आइनै सूतो। ताहरा कह्यो विजाजी भुई भारण छै।—चोवोली

उ०—२ सूरातन सुजळ सार करि सावू, घोवण लागो सिवो सघीर। पिंड भुई सिला ऊपरै पटकै, मरै डरै घट काटै मीर।

—मोहकमसिंघ मेडतियो

भुईयावळी–स० स्त्री०—बबूल की जाति का एक वृक्ष जिसके मूल स्थान से ही बहुत सी छोटी छोटी एव पतली टहनिया निकली होती है। जल बर्बुक।

रू० भे०—भुइबावळी, भूईबावळी, भूबावळी, भूवावळी।

भुइरौ—देखो 'भवारौ' (रू भे)

भुकार–स० पु०—वाद्य ध्वनि।

उ०—अथ राजप्रस्थानं, पवनोद्धतिधूलिपट सहस्रसछन्न तरणि किरणि सुभट विपुक्त हक्का बुक्कार विसितकातरजन, भभाभ्रदग भेरी भुकार वघरिक्त दिगतर।—व स

भुगर–स० पु०—एक प्रकार का विलाशय जतु विशेष।

उ० प्रगत तणो प्रताप नही पास्यो नर देही, जग मे बीजै जनम हुस्यो भुगर कन सेही।—अरजुनजी बारहठ

भुगरौ–स० पु०—रग विशेष का घोडा।

उ०—अनइ कालुआ किहाडा किसोयरा गगाजला हसला नीलडा हरीअडा कछेला भुगरा इस्या तुरगम।—व स

भुगळ—देखो 'भूगळ' (रू भे)

उ०—वीरअदग वाज्या, जयढक्क वाजी, समहर सामह्या, अहअहते अवक तणे अहअहाटि त्रिभुवन टलटलिउ, भेरि भुगळ तणे भूभू-याटि भूकिइ मिलकि फाटि।—व स

भुगारणो, भुगारबौ—देखो 'घुगारणो, घुगारबो' (रू भे)

भुगारणहार, हारो (हारी), भुगारणियो—वि०।

भुगारिओडो, भुगारियोडो, भुगांरयोडो—भू० का० कृ०।

भुगारीजणो, भुगारीजबौ—कर्म वा०।

भुगारियोडो—देखो 'भुगारियोडो' (रू भे)

(स्त्री० भुगारियोडी)

भुच—देखो भूच' (रू. भे)

भुजाइयो–स० पु०—अतिथियो को भोजन कराने वाला।

उ०—रामसिंघ करमसेणोत वडो दातार, वडो भुजाइयो हुतो।

—वा दा ख्या

भुजाई, भुजायी–स० स्त्री०—भोज विशेष।

उ०—पछै गुजरात नु असवार हुवा, डेरो सालावास हुवो। दिन रहा पछै कूच हुवो सथलाणा चैत सुद ७ पधारिया, उठै दसराहा री भुजाई चैत सुद ६ हुई।—नैणसी

२ देवताओ को चढाये जाने वाला भोजन।

उ०—करि भुजाइ चाढि कडाळा, विधि विधि सह भोजन्न वडाळा। पाति रचि चोसर प्रौंचाळै, कवि रजपूत पोखिया काळै।

—र वचनिका

३ भूजने की क्रिया।

४ रसोई।

रू० भे०—भुजाई, भूजाई, भूजाई।

भुजाडणो, भुजाड़बो—देखो 'भुजाणो, भुजावो' (रू. भे)

भुजाडणहार, हारो (हारी), भुजाडणियो—वि० ।
भुजाडिग्रोडो, भुजाडियोडो, भुजाड्योडो—भू० का० कृ० ।
भुजाडीजणो, भुजाडीजवो—कर्म वा० ।

भुजाडियोडो—देखो 'भुजायोडो' (रू भे)
(स्त्री० भुजाडियोडी)

भुजाणो, भुजावो [भूजणो क्रि० का प्रे० रू०] १ भूजने का काम किसी व्यक्ति से कराना ।
२ किसी को भूजने मे प्रवृत्त करना ।
भुजाणहार, हारो (हारी), भुजाणियो—वि० ।
भुजायोडो—भू० का० कृ० ।
भुजाईजणो, भुजाईजवो—कर्म वा० ।
भुजाडणो, भुजाडवो, भूजावणो, भुजाववो, भुदाणो, भुदावो, भुनाडणो, भुनाडणो, भुनाणो, भुनावो, भुनावणो, भुनाववो —रू० भे० ।

भुजायोडो—भू० का० कृ०—१ भूजने का काम किसी व्यक्ति से कराया हुआ २ किसी को भूजने मे प्रवृत किया हुआ
(स्त्री० भुजायोडी)

भुजावणो, भुजाववो—देखो 'भुजाणो, भुजाववो' (रू भे)
भुजावणहार हारो (हारी), भुजावणियो—वि० ।
भुजाविओडो, भुजावियोड़ो, भुजाव्योडो—भू० का० कृ० ।
भुजावीजणो, भुजावीजवो—कर्म वा० ।

भुजावियोडो—देखो 'भुजायोडो' (रू भे)
(स्त्री० भुजावियोडी)

भुडु, भुडो—देखो भूडो' (रू भे)
उ०—१ इण भात हालतो देखनै गोढवाड पाखती सोनगरां री ठुकराईसु सोनगरा नू अमावा हुआ जु ए पाखती भुडो, इण नैडा थका म्हानु विगाड, तरै राव रिणमलनु परणाय नै वेसासिया। आवो जाव हुई ।—राव रिणमल री वात
उ०—२ दैव ! अह्म-प्रति लोभीउ, वीजा लील भूयाळ। सुख संपत्ति सुहणइ नही, भवसिद्धि भुडइ भाळि ।—मा का प्र
उ०—३ त्यामे आगे थो तिणनू भडारी रतनचद कयो स्रीजीरो भुडो करो छो नै इद्रसिघजी रा वाछिया करो छो नै भाटी नै राठौड आमासामा मर जासी ने थाहरे मतीज री वैर लेणो हुवै तो मोनू मारो ।—रा व वि
उ०—३ हे अद्धा तु माहरै, पासै वहिली आवि । स्यु भुडी आलस करै, खिण एक वार म लाइ ।—वि कु
उ०—४ कुमरी विचारै रहिनै जीवती रे, स्यु करिस्यु निस दीस । मरण नथी का दे तो पापिया रे, फिट भुडा जगदीस ।—वि कु
(स्त्री० भुडी)

भुणगौता—स० पु०—सोलकी वश की एक शाखा ।

भुदाणो, भुदावो—देखो 'भुजाणो, भुजावो' (रू भे)
भुदाणहार, हारो (हारी), भुदाणियो—वि० ।
भुदायोडो—भू० का० कृ० ।
भुदाईजणो, भुदाईजवो—कर्म वा० ।

भुदायोडो—देखो 'भुजायोडो' (रू भे)
(स्त्री० भुदायोडी)

भुय—१ देखो 'भूमि' (रू भे)
उ०—१ परवान फिरिया पण ओ तो न मानै। कह्यो-'जी, भाग्रीजो भुय भोगवै काकै वैठे ? यो तो मोनू नीद नही आवै।'
—नैणसी
उ०—३ आहियो आमाडाह, गाजै नै गुडको कियो। वूठो भेदाळाह, निवळी भुय पर नागजी ।—अज्ञात
उ०—४ तरै राव रै आदमिये पाणी रै मिस कर हाथी छोडिया तरै ऊपरठाई कह्यो—हाथी कठी ले जावो छो ? तरै उणा कह्यो—नाठा तो भुय अगली पाणी पाय ल्यावां छा ।—रावमालदे री वात
उ०—५ भुय परक्खी, हूँ नरां, कहा परक्खी वीद। भुय विन भला न नीपजै, कण, अण, तुरी, नरीद ।—अज्ञात
२ देखो 'भाय' (रू भे)
उ०—१ ताहरा अरडकमल वोलियो—'वडा भाटी ! जाहै ना, हू घणी भुय थी आयो हू ।—नैणसी
उ०—२ ताहरा मेघो माळियै चढियो। कह्यो—'रे घोडया ईयै तरफ मता उछेरो ! दूदो जोधावत आयो छै, घोडधा ले जासी, ताहरा दूदो वोलियो। कह्यो—'ओ कुण वोलै ? कह्यो, जी' मेघो वोले छै। ताहरां कह्यो— रे ! इतरी भुय सुणीजै छै ?—नैणसी

भुरट—देखो 'भुरट' (रू भे)

भुरटियो—देखो 'भुरट' (अल्पा, रू भे)

भुवाणो, भुवावो—देखो 'भवाणो, भवावो' (रू भे)
उ०—पछै विसमिल्ला कै परा'र करणै रै गलै पाक रुह वण'र चादर हटाई। कनै पडयो तेज कानाळो तासळो (तगारी) सभायो अर करणै रै गलै माथै आपरै दोना हाथा रै जोर सू भुवा'र दे मार्यो ।—दसदोख

भुवणि—देखो 'भुवन' (रू भे)
उ०—अखिल रजरीत रा सिघ लागा अगसि, भुवणि मेछाण रा माण भागा। निमै नरनाथ अहि हाथ निरवाहियो, अहि 'सिवो' दोइण दिलेस आगा ।—नरहरिदास वारहठ

भुवरियो—देखो 'भवर' (अल्पा, रू भे)

भुवाळी—देखो 'भवळ' (रू भे)
उ०—१ डागै आपरी वेटी वेई वर देखणनै काठी कमर वांध ली। आडसर, मूमासर, रिणीसर राजगढ च्यारा कानी भुवाळी खावण नीसर्यो ।—दसदोख

उ०—२ घर हाळा घणी ही समझावै, पण सिर मे गूग चढायेडो, भुवाळो सांतो फिरै। मानै कद! माथै मे राख घाल राखी है।
—दमदोख

भुवारो—१ देखो 'भवारो'।
२ देखो 'भ्रू' (रू भे)
उ०—राघा तेरी वोली माही, मुडक घणी। तीखा तीखा नैण भुवारा वाका, मानो कवाण तणी।—मीरा

भुवास-स० पु०—१ यह खूटा जिसमे घोडे के पिछले पैरो की रस्सी बाघी जाती है।
२ देखो 'भूयास' (रू भे)

भुहरौ, भुहारौ—देखो 'भ्रू' (रू भे)
उ०—१ सूरज करै सलाम, भिडै मोसरा भुहारै। काय लियू ईनाम, काय जमघाम विचारै।—सू प्र
उ०—२ भुहारा तणी रेखा ताइ भांमणि, घणू स कोमळ रूप घणइ। चाढी जांणि कवाण चाढतइ, तजी कुवरि वलोच तणइ।
—महादेव पारवती री वेलि
२ देखो 'भवारो' (रू भे)
उ०—माल सगळो गढ नीचै भुहारा छै तिणा माहै घातियो।
—नैणसी

भुही—देखो 'भाय' (रू भे)
२ देखो 'भूमि' (रू भे)

भु-स० पु०—१ कौआ।
२ सर्प।
३ हड्डी।
४ वेसक। (एका०)

भुअग—देखो 'भुजग' (रू भे)
उ०—गोधूळ गौम गहत्त ए, वरहास वेग वहत्त ए। पडताळ पोइ पवग ए, भुअ भार कपि भुअग ए।—गु रू व.

भुअगम, भुअगमि—१ देखो 'भुजगम' (रू भे)
उ०—विरह- भुअगमि हू डसी, खिण खिण दाझइ देह। माहरइ माधव-केरडी, आस अमी-रस ओह।—मा का प्र

भुअ—देखो 'भू' (रू भे)
उ०—गोधूळ गौम गहत्त ए, वरहास वेग वहत्त ए। पडताळ पाइ पवग ए, भुअ भार कंपि भुअग ए।—गु रू व

भुअण—देखो 'भुवन' (रू भे)

भुअणपति—देखो 'भुवनपति' (रू भे)
उ०—गैमर अरि गजणो, भगत दुख भजणो। भुअणपति खाटणो, विरदभारी कान्ह कीरति करै।—पि प्र

भुअन—देखो 'भुवन' (रू भे)

भुअपत्तिअ—देखो 'भूपति' (रू भे)
उ०—गुरुदेव सुमत्ति समापि गुण, भुअपत्तिअ जेम रतन्न भण। पित जासु 'महेस' नरेस पर, गढ वेदि लिग्रो जिणि देवगिर।
—र वचनिका

भुअव्वळ-स० पु० [स० भू+वल] १ राजा, नृप।
२ वीर, योद्धा।
उ०—रिणमाल जोध उण वार रा, बळ अणमाप भुअव्वळा। वाघियो प्राण ब्रह्मंड नू, जाण क बावन जूमळां।—रा रू

भुआ—देखो 'भूआ' (रू भे)
उ०—जा अवा लीधौ जनम, सोयाप मुरद्धर। परवाडो कीधो पहल, 'करनल' भुआ कर।—जूझारसिघ मेडतियो

भुआजी—देखो 'भूआजी' (रू भे)

भुआरौ—१ देखो 'भ्रू' (रू भे)
२ देखो 'भवारो' (रू भे)

भुआळ-स० पु०—१ केश, वाल।
उ०—जईनखान, अर सेखफरीद पातिसाहजी रा हाथा कटारो। झालियो। ताहरा साह फतलह कहियो जे पातिसाहजी भुआळ उतरावणा हीज तो भुआळ उतराडीजै।—द वि
२ आर्य गीति या खधाण (स्कध) छद का भेद विशेष। (पि प्र)
२ देखो 'भूपाल' (रू भे)
उ०—'अजो' रघनाथ उभै दइवाण, 'जसावत' खाग हणै जवनाण। 'चुडावत' जूटत यो कळिचाळ, 'भदावत' जूटत अग्रज भुआळ।
—सू प्र
उ०—२ जाणता तूझ न जाण्यो जाय, काया तो पाखै दाखै काय। मकोडी कीट पतग मुणाळ, भिखग तु ही ज तु ही ज भुआळ।
—ह र
उ०—३ कुअर कुळोधर वीनमइजी, साभळि भीम भुआळ। पंच्याणु क्षोहणि मीलैजी, जेह नइ श्रीजी ताळ।—रुकमणी मगळ

भुआसासू-स० स्त्री०—देखो 'भूआसासू' (रू भे.)

भुइ—देखो 'भूमि' (रू. भे)
उ०—१ घरापति आज लखधीर रज घणी, घणी भुइ जास जस वास रिघि घणी। कवी निति देखि मन माहि विळकुळै, भली विधि तेज रवि जेम भळहळै।—ल पि
उ०—२ उत्तरदी भुइ जु उपडइ, पाळउ, पवन घणाह। हर-णाखी, हम नइ कहइ, साम्हो सालै जाह।—ढो मा
२ देखो 'भाय' (रू. भे)
उ०—आडा डूगर, भुइ घणी, तियां मिळीजइ एम। मनिहू खिणहि न मेल्हियइ, चकवी दिणीयर जेम।—ढो. मा

भुइआंवळो-स० स्त्री० [स० भूम्यामलक] बरसात मे ठडे स्थानो मे प्राय घरो के आस-पास होने वाला क्षुप विशेष।
रू० भे०—भुई आवळो।

भुइ—१ देखो 'भूमि' (रू भे)

उ०—१ खडा-खड झाट झडा झड खग्ग, पडै निरलग नरा सिर पग्ग। झडा करि-माळ रिखग्ग झडत, पडै भुइ घाउ निहाउ पडत।—गु रू व

उ०—२ दुस्सासरा जिकै जिसा दुरजोधन, रिख असथामा द्रोण रिख। भारथ भुइ जिकै कदै नह भाजै, परदळ भजण पाच-मुख।—गु रू व.

२ देखो 'भाय' (रू भे)

उ०—आडा डूगर, भुइ घणी, सज्जण म्ही विदेस। मागी तागी इ पखुडी, केती वार लहेस।—ढो मा

भुइण—१ देखो 'भूमि' (रू भे)

उ०—विसन घण वरण क्रिसन जग करण भुइण उत्तारण भार। सुजि सार सुर साधार गमण असुर गह पर, अगम यह विघन मिटे वह वार करतार मजि स्रीकार।—पि प्र

२ देखो 'भुवन' (रू भे)

भुई—१ देखो 'भूमि' (रू भे)

२ देखो 'भाय' (रू भे.)

भुईंआंवळौ—देखो 'भुइआवळौ' (रू भे)

भुईंरींगणी—स० स्त्री०—कटकारी नामक एक प्रकार का छोटा क्षुप।

भुईं—देखो 'भूमि' (रू भे)

उ०—तणा देस रजपूत, देस गढ चाढि न सूझा। हुआ सरव भुई भूत, देव मिद्धाण न हूआ।—गु रू व

भुकणौ, भुकबौ—देखो 'भखणौ, भखबौ' (रू भे,)

२ देखो 'भूकणौ, भूकबौ' (रू भे)

भुकणहार, हारौ (हारी), भुकणियौ—वि०।

भुकिग्रोडौ, भुकियोडौ, भुक्योडौ—भू० का० कृ०।

भुकीजणौ, भुकीजबौ—कर्म वा०/भाव वा०।

भुकियोडौ—१ देखो 'भखियोडौ' (रू भे)

२ देखो 'भूकियोडौ' (रू भे)

(स्त्री० भुकियोडी)

भुक्कियौ—देखो 'भूखौ' (अल्पा, रू भे)

भुक्ख—देखो 'भूख' (रू भे)

उ०—चिंत निद्रा परिहरइ रे, चिंता ले जाई दुक्ख। चिंता अह-निसि तन दहइ, चिंता फेडइ भुक्ख।—प च चौ

भुक्खड—देखो 'भूखौ' (मह, रू भे)

भुक्त—भू० का० कृ० [स०] १ जो खाया गया हो। (भक्षित)

२ जिसका भोग किया गया हो।

३ जिसे भुना लिया गया हो।

भुक्तकार—स० पु० [स०] रसोईदार, रसोईया। (हि. को)

भुक्तभोग—वि० [स०] जिसने भोग किया हो।

रू० भे०—भुत्तभोग।

भुक्तयोगी—वि० [स०] जिसे किसी कार्य का फल भोगना पडा हो।

रू० भे०—भुत्तभोगी।

भुक्ति—स० स्त्री० [स०] १ चार प्रकार के प्रमाणो मे से एक। (धर्मशास्त्र)

२ ग्रहो का किसी राशि मे एक एक अश करके गमन।

३ वह अवस्था, जब कोई किसी पर अपना अधिकार करके उसका उपयोग करता है, दखल।

४ आहार, भोजन।

५ किसी पदार्थ का किया जाने वाला भोग।

भुखडी—स० स्त्री०—एक प्रकार की बन्दूक।

भुखमरी—स० स्त्री०—निर्धनता, कगाली।

भुखमरौ—वि० (स्त्री० भुखमरी) १ जो भूखों मरता हो, भूखा।

२ जो खाने पीने को बहुत लालायित रहता हो।

३ कगाल, दरिद्री।

भुखारौ—स० पु० [फा बुखारा] रूसी तुर्किस्तान का एक प्रसिद्ध नगर, जो वहा की राजधानी भी है। यहा का सौन्दर्य प्रसिद्ध है, बुखारा।

उ०—साचो रग नामदेव के लाग्यो, छिन मे छान छवागोजी। मुलक भुखारा का बादसाह के लाग्यो, राज मुलक को त्याग्योजी। —मीरा

भुखाळु—देखो 'भूखौ' (मह, रू भे)

भुख्याळवौ—स० पु०—देखो 'भूखौ' (रू भे)

उ०—तेरा, रे वीरा, भुख्याळुवा, घणदेवा ने भात पसाव। तेरा, रे वीरा, तिमाळुवा, घणदेवा ने सरवत घोळ पिलाव।—लो गी

भुगटी—देखो 'भ्रकुटि' (रू भे)

उ०—पाच लाख पैंजार, भुगटी जिका रै 'भेरिया'। —महाराजा बळवतसिंह

भुगत—स० पु० [स० भक्त] १ भोजन, आहार।

उ०—अख रतौ मदा करैवा अचडा, वैर वाराह कमध वरियाम। आग्रै दळे सामहौ आयो, रूक भुगत करवा बळरांम। —बळरांम राठौड री गीत

३ धन, द्रव्य।

४ भुगतने की क्रिया या भाव।

भुगतणौ, भुगतबौ—क्रि० स०/अ० [स० भुक्त] १ उपभोग करना, भोगना।

उ०—कर हुकम मूझ कबूल, इळ भुगत निज अणभूल। सुण वयण पति 'इद्रसाह', लिख दीध हुकम सलाह।—रा रू

२ किसी बात या चीज का अच्छा या बुरा फल सहन करना।

उ०—१ जग माझल चुगली जिसौ, हीण तिसन अन है न। विण चुगली भुगतै विथा, चुगली कीवा चैन।—वा दा.

उ०—२ कांणियो कायर पाछो वळती वगत वानै फेर सीख दीनी-नेकी री कमाई करौ, सुख पावौला, म्हारा चोखळा मे हाथ घालियो तो थे थारी जाणो, पछै म्हारै जैडो भूडो नी है। अबै करिया जैडा भुगतौ।—फुलवाडी

उ०—३ तद वो मुळकनै जवाब दियो—म्है वैठो हू जित्तै ई अै केसरिया कसूवल ओढै, नीतर रडापो भुगतणो पडतो।—फुलवाडी

उ०—४ म्हारै घर री हाण भुगतिया ईं जै वडेरा री सीख साची व्है जावै तो म्है लाख भरपाया।—फुलवाडी

३ भार उठाना, (कष्ट) झेलना।

उ०—१ गूजर वावो उणनै समझावतो कै'वण लागो—वेटी, यू क्यू फालतू रा फोडा भुगतै, क्यू इता चइया करै।—फुलवाडी

उ०—४ वेटी खिचाळै ई जोर सू खिलखिल हसी, जाणै कोयल हसी व्है। वोली—वा! म्है तो जैडी कवरांणी, वैडी ई महाराणी। आप वधाई सारू फालतू ई फोडा भुगतिया।—फुलवाडी

४ अनुभव करना, देखना।

उ०—उजास री पोल आयगी ही। भतीजी फेर आगै कै'वण लागी—पण म्है तो अेकर भुगतियोडी हू।—फुलवाडी

५ ऋण, देन-दारी आदि का चुकना या पटना।

६ गुजरना, व्यतीत होना।

७ पूरा होना, निवटना।

८ खवर होना, सदेश प्राप्त होना।

भुगतणहार, हारौ (हारी), भुगतणियौ—वि०।

भुगताडणौ, भुगताडवौ, भुगताणौ, भुगतावौ, भुगतावणौ, भुगताववौ—प्रे० रू०।

भुगतिओडौ, भुगतिओडौ, भुगतियोडौ, भुगत्योडौ—भू० का० कृ०।

भुगतीजणौ, भुगतीजवौ—कर्म वा०।

भगतणौ, भगतवौ—रू० भे०।

भुगताण—स० स्त्री०—१ किसी के ऋण, देनदारी मूल्य आदि चुकाने की क्रिया या भाव, परिशोध।

उ०—टोकरी मुळकनै मोमो मारती जवाब दियो—जै राजा रै आगै खजानै सू ई प्रीत रो भुगतांण व्है तो खजानो तो थारै पाखती है ई, पछै प्रीत माम्ह भवता क्यू फिरो।—फुलवाडी

२ निपटारा, फैसला।

३ किसी के वदले मे कुछ देने की क्रिया या भाव।

उ०—म्हारी मदद रो वो पाछो इण रूप मे भुगतांण करै'ला व्है आ वात सपना मे ई नी जांणी ही।—फुलवाडी

४ सदेश भेजने की क्रिया भाव।

५ प्राप्ति-रसीद।

ज्यू—रुपया दे दिया नै भुगताण ले आया।

भुगताडणौ, भुगताडवौ—देखो 'भुगताणौ, भुगतावौ' (रू भे)

भुगताडणहार, हारौ (हारी), भुगताडणियौ—वि०।

भुगताडिओडौ, भुगताडियोडौ, भुगताड्योडौ—भू० का० कृ०।

भुगताडीजणौ, भुगताडीजवौ—कर्म वा०।

भुगताडियोडौ—देखो 'भुगतायोडौ' (रू भे)

(स्त्री० भुगताडियोडी)

भुगताणौ, भुगतावौ—क्रि० स०—१ उपभोग कराना, भोगवाना।

२ किसी वात या चीज का अच्छा या वुरा फल सहन कराना।

३ भार उठाना, कष्ट झेलाना।

४ अनुभव कराना, देखाना।

५ ऋण, देनदारी, मूल्य आदि चुकाना।

६ गुजराना, व्यतीत कराना।

७ पूरा करना, निवटाना।

८ खवर देना, सदेश देना।

भुगताणहार, हारौ (हारी), भुगताणियौ—वि०।

भुगतायोडौ—भू० का० कृ०।

भुगताईजणौ, भुगताईजवौ—कर्म वा०।

भगताडणौ भगताडवौ, भगताणौ, भगतावौ, भगतावणौ, भगताववौ, भुगताडणौ, भुगताडवौ, भुगतावणौ, भुगताववौ—रू० भे०।

भुगतायोडौ—भू० का० कृ०—१ उपभोग कराया हुआ, भोगाया हुआ। २ किसी वात या चीज का अच्छा या वुरा फल सहन कराया हुआ ३ भार उठाया हुआ, (कष्ट) झेलाया हुआ ४ अनुभव कराया हुआ, देखाया हुआ ५ ऋण, देनदारी, मूल्य आदि चुकाया हुआ ६ गुजराया हुआ, व्यतीत किया हुआ ७ पूरा किया हुआ, निवटा हुआ ८ खवर या सदेश दिया हुआ

(स्त्री० भुगतायोडी)

भुगतावणौ, भुगताववौ—देखो 'भुगताणौ, भुगतावौ' (रू भे)

उ०—१ किणी रा जीव नै नी सतावणो, मिनख रो काळजो नी वाळणो, मिनख रो आदर करणो, खुद भुगत लेणो पण आपरै स्वारथ री खातर दूजा नै नी भुगतावणो मिनख रो धरम फगत ओ इज है।—फुलवाडी

उ०—२ फौज री कठी अणिया फिरै, निजर देख नै धावजो। सामळो जिता काना सवद, जळद आय भुगतावजो।—पे रू

भुगतावणहार, हारौ (हारी), भुगतावणियौ—वि०।

भुगताविओडौ, भुगतावियोडौ, भुगताव्योडौ—भू० का० कृ०।

भुगतावीजणौ, भुगतावीजवौ—कर्म वा०।

भुगतावियोडौ—देखो 'भुगतायोडौ' (रू भे)

(स्त्री० भुगतावियोडी)

भुगति—स० पु० [स०] १ विपयोपभोग, सासारिक सुख।

उ०—पत्र अक्खर दळ द्वाळा जस परिमळ, नव रस ततु विधि अहोनिसि। मधुकर रसिक सु भगति मंजरी, मुगति फूल फळ भुगति मिसि।—वेलि

२ भोजन, आहार।

उ०—सिंध नाथ वळ उपजियो सहस वळ, सरै राम वासै सकति।
उत्तमगाम पांवणो आयो, भूरै दी खागा भुगति।
—महाराज अमरसिंघ हाडा री गीत

रू० भे०—भुगती।

भुगोळ, भुगोल—देखो 'भूगोळ' (रू भे)

उ०—खित जासिय ऊमर पाय सही, नभ सूरज चद भुगोळ नही।
जिंदराव ले जासिय वित्त जठै, कह 'पाल' वतासिय मूह कठै।
—पा प्र

भुडको—देखो 'वुगती'।

भुडको—स० पु०—गोल नलीदार मुह वाला पानी रखने का मिट्टी का जलपात्र, सुराही।

भुडतो—देखो 'मडीतो' (रू भे)

भुडद—देखो 'वुरद' (रू भे)

उ०—गै-जूहां गनीमा थाट मेहतै गजबां घेर, भूटकै नागौर फेर फौजा की भुडद। लाखा वीच 'आपा'नु भोपाळ 'वीजै' मार लीधो गोपाळ ज्यू कीधो काळमेचनै गुडद।—हुकमीचद खिडियो

भुचकणो, भुचकवो—क्रि० अ०—कम्पायमान होना।

उ०—महा क्रोधगी गनीमा हूत हुचकै नरीद माधो', भुचकै भूलोक वादो चकै कोम भार। बोमगी अरावा झाळ वैताळ ववक वकै बाजद्रा 'वहादेरस' हकै जेण वार।—हुकमीचद खिडियो

भुचकणहार, हारो (हारी), भुचकणियो—वि०।
भुचकिओडो, भुचकियोडो, भुचक्योडो—भू० का० कृ०।
भुचकीजणो, भुचकीजवो—भाव वा०।

भुचकियोडो—भू० का० कृ०—कम्पायमान हुवा हुआ।

भुचरको—स० पु०—१ टक्कर, भिडन्त।
२ प्रहार, चोट।
३ चूर्ण चूरा।

भुजग—स० पु० [स० भुजग] (स्त्री० भुजगण, भुजगणी, भुजगिनी)
१ सर्प, साप। (अ मा, ह ना मा)

उ०—अध कूप ससार औ, भीतर काळ भुजग। वाछे सुख नर ऐथ वस, सवळ अविद्या सग।—वां दा

२ शेपनाग।

उ०—वणाधिप भ्रूप भरी उण वार, भुजग न झालि सक्यो भुव भार। भेळी हिज 'आवड' वाहर भूप, र नाहर चक्र सुदसण रूप।—मे म

३ पति।
४ उपपति, यार।
५ स्वामी, मालिक।
६ राजा, नृप।

उ०—इण कुळ ही देवट अभिधांनी, मही भुजग हुवो रणमानी। कुळ जिण रा देवडा कहावै, दान समर अनुपम दरसावै।—व भा.

७ हट योग मे, कुडलिनी रूपी नागिन का पति या स्वामी।
८ प्राचीन भारत मे राजा का एक प्रकार का नोकर।
९ सीसा नामक धातु।
१० चौवीस विहरमानो मे से पन्द्रहवें विहरमान, श्रीभुजगस्वामी।

उ०—भुजग देव भावइ नमु भगति युगति मन आणि। भुजंगनाथ वदित सदा, सुरनर नायक जाणि।—वि कु

रू० भे०—भमग, भयग, भवग भुअग, भुजग भुयग, भुयग, भुयग्गि, भुवग, भूमग, भूयग, भूवग।

भुजगचर—स० पु० [स० भुजग + चर्] १ गरुड। (डि को)
२ मयूर, मोर।
रू० भे०—भुयगचर।

भुजगपत, भुजगपति, भुजगपती—सं०पु० [स० भुजगपति] १ शेपनाग।
२ वासुकी।
रू० भे०—भुजगपति।

भुजगपास—स० पु० यौ० [स० भुजग + पाश] नागपाश नामक एक प्राचीन अस्त्र।

भुजगप्रयात—स० पु० वारह वर्णों के एक चरण का एक वर्णिक छन्द जिसमे पहला, चौथा, सातवा व दसवा लघु होते हैं। प्रत्येक चरण मे चार यगण होते हैं।
रू० भे०—भुजगीप्रयात।

भुजगभुज, भुजगभोजिन—स० पु० [सं० भुजगभोजिन्] १ गरुड।
२ मोर मयूर।

भुजगम—स० पु० [स० भुजगम] १ सर्प, साप, नाग।
(अ मा, ह ना मा)

उ०—जहर विखम जारग, भुजा धारग भुजंगम। भाळ तेज भारग, जरा हारग लमै जम।—सू प्र

२ शेपनाग।

रू० भे०—भुअगम, भुअगमि, भुजगम, भुयगम, भूवगम, भूयगम, भूयंगमि।

भुजगमचर—देखो 'भुजगचर' (रू भे) (ह ना मा)

भुजगरसना—स० स्त्री—दो की सख्या * (डि को)

भुजगविज्र भित—स० पु० [स० भुजगविजृ भित] २६ वर्णो का वर्णिक छन्द जिसमें दो मगण, एक तगण, तीन नगण एक रगण, एक सगण एव अन्त मे लघु गुरु होते हैं।

भुजगासन—स० पु० [स०] योग के चौरासी आमनों के अन्तर्गत एक आसन जिसमे सर्व प्रथम उल्टा सोकर, जिससे पाव के अगूठे से नाभि पर्यंत का भाग पृथ्वी का स्पर्श करता रहे। दोनो करतलो को नाभि की दोनो बाजू मे पृथ्वी पर रखकर शिर की तरफ का

भाग ऊचा रखना होता है इससे कुडलिनी जागृत होती है व जठराग्नि की वृद्धि होती है।

भुजगी–स० पु० [स० भुजग +ङीप्] १ प्रत्येक चरण मे ग्यारह वर्णो वाला एक वर्णिक छद जिसमे पहले तीन यगण व अन्त मे एक लघु व एक गुरु होता है।

२ बारह वर्ण वाला एक गीत जिसमे चार यगण व अन्त मे गुरु होता है।—र. ज प्र

३ देखो 'भुजग' (रू भे)

उ०—भुजगी लचकं देत कोम धकं भोम भार, वकं वळोवळी खेळा मिलक्कं वीराण। छिलं धात्र चळ्ळा सूरमा घावा लोह छकं, उभैमेन हकं उचक्कं आराण।—हुकमीचद खिडियो

भुजगीप्रयात—देखो 'भुजगप्रयात' (रू भे)

भुजगेन्द्र–स० पु० यौ० [स० भुजग +इन्द्र] शेष नाग।

रू० भे० भुजगेंद्र।

भुजगेस, भुजगेसर–स० पु० यौ० [स० भुजग +ईश, भुजग +ईश्वर] १ शेषनाग।

उ०—मुनिंद्रेस जोगेस कव्वेस मेळा, भुजगेस देवेस सव्वेस भेळा। विदेह प्रत ग्या कहे एम वाक, पुत्री जो वरै सो ज तारौ पिनाक। —सू प्र

२ पतजलि ऋषि का एक नाम।

रू० भे०—भुजगीस, भुजगेस, भुजगेस्वर, भुयगेस, भुयगेसुर।

भुज–स० पु० [स०] १ हाथ।

२ मकान के एक ओर की दीवार।

३ हाथी की सूड।

४ वृक्ष की डाली, शाखा।

५ रेखागणित मे कोई किनारा या सिरा या उस पर खीची हुई रेखा।

ज्यू—त्रिभुज, चतुर्भुज।

६ रेखागणित मे समकोणों का पूरक कोण।

७ ज्योतिष मे तीन राशियो के अन्तर्गत ग्रहो की स्थिति।

८ दो की सख्या। ✿ (डि को)

९ चार की संख्या। ✿ (डि को)

१० देखो 'भुजा' (रू भे) (अ मा)

उ०—१ नमसकार सूरा नरां, पूरा सतपुरसाह। भाग्ध गज थाटा भिडै, अडै भुजां उरसाह।—बा दा

उ०—२ धन्य कह्यौ सब ऊमरा, साहस देख प्रचड। हुवा सुरगा वांग गुण, भुज लागा ब्रहमड।—रा रू

यौ०—भुजअतर, भुजआजांन, भुजतळ, भुजत्राण, भुजदड, भुजपास, भुजवध, भुजबधन, भुजबळ, भुजबाथ, भुजभूसण, भुजमूळ, भुजमीस।

मुहा०—भुज भर भेटणौ=गले लग कर मिलना। भुज में भरणौ=आलिगन करना, गले लगाना। भुजभार=उत्तरदायित्व।

रू० भे०—भुज्ज, भुय।

भुजअतर–स० स्त्री० यौ० [स० भुज+अन्तर] छाती, वक्षस्थल। (डि को)

भुजआजांन–वि० [स० भुज+आजानु] जिसके हाथ घुटने तक लबे हो, आजानुबाहु।

उ०—'सकत' सेर मन मेर, वेर दुम्भर भर झल्लण। भुजआजान प्रमाण, पाण असहा खग पल्लण।—रा रू

रू० भे०—भुजाआजान।

भुजकट–स० पु० यौ० [स० भुज+कटक] नाखून। (अ मा)

रू० भे०—भुजकाटौ, भुजाकट।

भुजक–स० पु० [स० भुजिष्य] नौकर, अनुचर। (ह ना. मा)

रू० भे०—भुजख।

भुजकांटौ—देखो 'भुजकट' (रू भे) (डि को)

भुजकोटर–स० स्त्री० यौ० [स० भुज+कोटर] बाहुमूल के नीचे का गड्ढा, काख। (डि को)

भुजख—देखो 'भुजक' (रू भे) (अ मा)

भुजग—देखो 'भुजग' (रू भे.) (अ मा, ह नां मा)

उ०—अर अल्प घन भुजग नायक रै समान लज्जा पाय प्रांमार रौ समूह नाक रूप विदेस मे थियौ जुवौ।—व भा

भुजगपति—देखो 'भुजगपति' (रू भे)

भुजगळ—देखो 'भुजळग' (रू भे)

उ०—दह गजर भुजगळे काळां दळां, समर दै दवा चौसठि सगाथं। डमर भर 'भगत' उत जिका नाराज डहे, मगळा सिघ वहै जिम खला माथं।—सुनमानसिध हाडा रौ गीत

भुजगीस—देखो 'भुजगेस' (रू भे)

उ०—रारिया सुभट तूटं दमग रीस रा, त्रिलोचण जिसा खूटं नयण तीसरा। मिर कमं ऊकसं लसं भुजगीस रा, जोय दससीस थट कीम जगदीस रा।—र ज प्र

भुजगेंद्र—देखो भुजगेंद्र' (रू भे)

भुजगेस, भुजगेस्वर—देखो 'भुजगेस' (रू भे)

उ०—भुजगेस महेस दुजेस रिखी, नित पै रज चाहत माधव रे। तजि आंन उपाय सबै 'किसना' भज राघव राघव राघव रे। —र ज प्र

भुजड–स० पु०—वीर, योद्धा।

भुजठाळक—१ देखो 'भुजळग'।

उ०—ताजीम पाय कहियौ तिका, वाह घिनोघिन बाहुजां। लाख हू हेक हेको लडण, भुजठाळक झाली भुजां।—मे म

भुजडड–वि० [स० भुजदण्ड] १ बलवान, योद्धा।

२ प्रचड, जबरदस्त।

३ समर्थ, शक्तिशाली ।
उ०—सारगपाण जयराम तिलोक स्वामी । भूपाळ-भूप भुजडड प्रचड भांमी ।—र ज प्र
४ आभूषण विशेष ।
५ देखो 'भुजा' ।
उ०—१ सखी अमीणो साहिबो, वोह जूझो बळबड । सो थाभै भुजडड सू, खडहडतो ब्रहमड ।—वा दा
उ०—२ किसे काम आवणरण कालो, बाधै माथै मोड विलालो । भुजडड पकड रुठियो भालो, लेवा भचक ऊठियो 'लालो' ।
—व्रजुवाई
रू० भे०—भुजदड, भुजयडड, भुजाडड, भुजादड, भुज्जडड, भुडड, भुयडड, भुवडड, भूग्रडड, भूडड ।

भुजडांण—वि०—लम्बी भुजाओ वाला वक्षस्थल ।
२ भुजाओ को तोडने वाला, पराक्रमी ।
उ० – पडसी जद काम दोडसी पाळी, दाढयाळी असुरा भुजडांण । वा आवै ऊपर इकताळी, देसणोक वाली दीवाण ।—अज्ञात

भुजतळ—स० पु०—भुजाओ के मध्य का भाग ।
उ०—काचळ कातरिया बाजू मे काठा, भुजतळ भेटै जा मेटै अघ माठा । कर मैं काकणिया जसदा गळ काठी, अदभुत मोरा पर लुळतोडी आंटी ।—ऊ का

भुजत्राण—स०पु० [स०भुजत्राण] युद्ध के समय पहनने के हाथ के दस्ताने ।

भुजदड—१ देखो 'भुजडड' (रू भे)
उ०—दुजणसिंघ दईवाण, सूर वोलै 'सबळावत' । भूप भडा भुजदड, पटा इण कजि पूजावत ।—सू प्र

भुजन—देखो 'भजन' (रू भे) (अ मा)

भुजपरिनाग—स० पु० [स०] दक्ष प्रजापति राजा की पुत्री कद्रुनामा के गर्भ से उत्पन्न नवकुली नागो में से एक ।

भुजपाळ—स० पु०—योद्धा, वीर । (ना मा)

भुजपास—स० पु० यौ० [स० भुज+पाश] १ किसी के गले मे हाथ डालने की क्रिया, गलबाही ।

भुजबद भुजबध—स० पु० [स० भुज+बध] १ भुजा पर धारण करने का एक आभूषण विशेष ।
उ०—भूली लाज काज सुनि सजनी, परघो अधिक रस फदन । मीरा के प्रभू गिरधरनागर, करि राखो भुजबधन ।—मीरा
रू० भे०—भुजवद ।

भुजबधन—स० पु० [स०] आलिंगन ।

भुजबळ—स० पु०[स० भुज+बल] १ भुजाओ की शक्ति, सामर्थ्य ।
उ०—अनमी आटीला थळिया थळ वाळा, बिपदा वाटीला बळिया बळवाळा । दुरजय दीखण मे निरभय दिन दूल्हा, भीखण दुरभिख मे भुजबळ नह भूला ।—ऊ का
२ शालिहोत्र के अनुसार घोडे के अगले पैर मे ऊपर की ओर को होने वाली भौंरी ।
३ मुखिया, प्रधान ।
रू० भे०—भुजाबळ, भुजावळि, भूयबळि ।

भुजबली—वि०—बलिष्ट भुजाओ वाला, पराक्रमी ।
उ०—भुजबळी कान भाराथ मह, 'खीम'उत करै खळ विहड खड । 'राजधर' रूकि राखति राज, 'सांमळ' सुतन्न 'सदी' सकाज ।
—गु रू. व
रू० भे०—भुजाबळि ।

भुजबाथ—स० पु०—दोनो भुजाओ को गले मे डालकर किया जाने वाला आलिंगन, गलबाही ।

भुजभूसण—स० पु० यौ० [स० भुज+आभूषण] भुजा पर बाधने का एक आभूषण । (हि को)

भुजमूळ—स० पु० यौ० [स० भुजमूल] १ कांख ।
रू० भे०—भुजामूळ ।

भुजमोचक—स० पु० [स०] सर्प का विष उतारने की एक नीले रग की रत्नमणि ।
रू० भे०—भुअमोअग, भुयमोअग, भुयमोयग ।

भुजयडड—देखो 'भुजडड' (रू भे)
उ०—ऊछळैय फंण मुख भाट लाग, झळकत जेम दरियाव झाग । पग सघर पूठ पीडा प्रचड, देवळ तन थामा भुजयडड ।—पे. रू

भुजळक, भुजळग—स० स्त्री०—तलवार । (डि को, ह नां मा)
उ०—१ घुघर घणाण कीरति घर घण, राम हेक गजबाग रत । भुजळक दत सत्र भीचरड, 'मेघ' तणो हसती मसत ।
—महाराज छत्रसिंघ हाडा रो गीत
उ०—२ वढ पड विहर थाटा,'विलद',भुजळग झट सेला झचडि । स्रग वसू कहे 'हटमल' सुतन, अमूनि जिम खाटै अचडि ।—सू प्र
उ०—३ लगस ऊपटा फौज गज थटा भुजळग लहर, सूरतन ठहर जळ गहर साजा । प्रथीपत 'अभो' आयो उलट छत्रपती, रोद सर विलद पर समद राजा ।—अभैसिंघ राठौड रो गीत
रू० भे०—भुजगळ, भुजठाळक ।

भुजलठी—वि०—१ हाथ मे लाठी रखने वाला ।
२ डडे के बल काम करने वाला ।

भुजवद—देखो 'भुजबद' (रू भे)

भुजसभू—स० पु०—युद्ध का भार उठाने वाला, योद्धा ।

भुजसीस—स० पु० यौ० [स० भुज+सीस] भुजा का ऊपरी हिस्सा, कधा । (हिं को)

भुजांण, भुजान—देखो 'भुजा' (रू भे)
उ०—देवीदास 'विसन्न' तण, जाणे विसन भुजांन । भाजेवा तेढा भडा, वेढा तणो 'विसन्न' ।—रा रू

भुजा—सं० स्त्री० [स०] १ हाथ, हस्त । (हि को)

उ०—जगनाथ अंतरतणौ जामी, गाहणौ खळ गुरड गामी। साच वायक सिया सामी, भुजा भांमी भुजां भामी।—र ज प्र

२ बाहु, बाहु।

रू० भे०—भुज, भुजाण,भुजान, भुजाट, भुजि, भुज्ज, भुया, भूजा।

भुजाआजान—देखो 'भुजआजान' (रू भे)

उ०—तनु रा तात सिंधु भरणकता नरा, आय अपछर भुका मगा असमान रा। ओय लागं गजब भुजाआजांन रा, रैवतां चढाई कठी राजान रा।—जवांनजी आढ़ौ

भुजाई—देखो 'भुजाई' (रू भे)

उ०—१ राठौड ज तैं कियौ रिणह, गहण भुजाई भटकळह। पळ धाप कियौ पळहारिया, कळळ, बिंद कोळाहळह।—गु रू व

उ०—सो सात सौ खासा यारा सूं भुजाई आरोगं ओर मगतजन भाट सारा मुंहडा आगं बैठ जीमैं ओर रांधियौ कौरो लगर वटै।
—जलाल बूबना री बात

भुजाकट—देखो 'भुजकट' (रू भे) (ह ना मा)

भुजाग–स० स्त्री०—नागिन, सर्पिनी।

उ०—गनीम गड्ढ गव्वतीय गव्भ को गमावनी, जहांन आन मान जोर सोर तैं जमावनी। रही प्रतच्छ रच्छसी दुगच्छ गच्छ दच्छ-वनी, लगैं विपच्छ लच्छ पैं भुजाग वच्छ भच्छनी।—ऊ. का

रू० भे०—भुजाग्र।

भुजागळ–स० पु०—१ रक्षक, पहरेदार।

उ०—'जैत' सुजाव पखा चाडण जळ, भाटी उदियाभाण भुजागळ। भुजळग हथ विजपाल भडारी, मुहणोते 'सागो' मिणधारी।
—रा रू.

२ शक्तिशाली, बलवान।

उ०—बीजा ही साथै दळ सव्बळ, भाईबंध भत्रीज भुजागळ। महि लहडो खुरसाण मडोवर, अडिग्रौ वडा सरस ग्रहि असिमर।
—वचनिका

३ विशाल, बडा।

स० स्त्री०—४ अर्गला, बेंडा। (डिं को)

उ०—सुजडा हथौ 'भदावत', 'सामळ','भीम' हरौ छळ घणी भुजा-गळ। 'साभळ' जोड जोध 'सादावत' रिण पडिहार सजूभो रावत।
—रा रू

वि०—५ लम्बी भुजा वाला।

भुजाग्र—देखो 'भुजाग' (रू भे)

भुजाट—१ भयकर, जबरदस्त।

२ देखो 'भुजा' (रू भे.)

उ०—१ उभैं भुजाटां वरद रजवाट रा ओपिया, जवन द्रहवाट रा होय जावैं। जुध समैं अमीरळ रूप जजराट रा, खाट रा वाघ कुण फेट खावैं।—गुलजी आढौ

उ०—२ अडो थडी आग वूठां धकावैं वीरांण भाघा, महावीर क्रोध चाळै लागा तो महीप। किरीठी कराळी रीस जैद्रथी मिटावा कोप्यौ, सम्रवा भुजाटां करी भीम ज्यूं सहीप।
—बादरखान घधवाडियौ

भुजाडड, भुजाडडि—देखो 'भुजडड' (रू भे)

उ०—गात मेर कज भीम, महाजोधा ऊतळी वळ। भुजांडड पर-चड, जैम गगाजळ ऊजळ।—गु रू. व

उ०—२ सामत सुहड दीपै सरव्व, जीपत जिकै जुध महा प्रव्व। प्रोचाळ महा जोधा प्रचड, डोलता डहै नभ भुजाडड।—गु रू व.

उ०—३ भीम तणा ग्रीखम भासकर, तेज भुजाडड लागि तिस। कूरम तणौ मोखियौ कस करि, रसक न रहियौ तेण रस।
—दुरजणसाल हाडा री गीत

उ०—४ भुजाडड उलाळि भालौ भमाडै। भाजोकी इसौ मेर वाघा उपाडै। गरज्जै भलौ बोलियौ भोम ग्राही, पतीसाह सूं माहरी पातसाही।—गु रू व

उ०—५ आ बात सुणता ईं सादूळा सीह ज्यूं गाजिया सिलैह भीडीया। ढालडा खडवडिया। भुजाडड जिके ब्रहमड अडिया सिंधुवा पाना वागा।—पना

उ०—६ 'कुसळावत 'बीठल' रण कोडे, ऊभौ गयण भुजाडड ओडै। 'वैणावत' 'द्यालौ' वरदाई, स्यांम घरम व्रत प्रीत सवाई।
—रा रू

भुजाडौ–स० पु०—१ सहार करने वाला। २ पराक्रमी।

भुजावड—देखो 'भुजडड' (रू भे)

उ०—अर कवर भी आरूठ होतां ही त्रिभागौ तोमर भुजाडड थी भमाइ सत्रुवा रैं साम्है आपरो वाह भोकियौ।—व भा

भुजापत, भुजापति–स० पु० [स० भुज+पति] वीर, योद्धा।

भुजावळ—देखो 'भुजवळ' (रू भे)

भुजावळि—देखो 'भुजवळ' (रू भे)

उ०—दूत लक्षण कला सवि जाणू, मूं हरइ हुसि राज पराणउ। ए युधिस्ठिर नरेंद्र सूयार, नामि वल्लभ भुजावलि सार।
—सालिसूरि

२ देखो 'भुजवळी' (रू भे)

भुजाविच–स० स्त्री०—कोहनी। (डिं को)

भुजामूळ—देखो 'भुजमूळ' (रू भे)

भुजायत–स० स्त्री०—लक्ष्मी, रमा। (अ मा)

भुजाळ–वि० [स० भुज+रा० प्र० आळ] १ लम्बी भुजाओ वाला।

उ०—दुनी चा काळ भुजाळ दईत, जिकै दळ साभ उभै द्रह जीत। असख्या तूझ तणा अवतार, ब्रह्म्मा रुद्र लहै न विचार।—ह. र.

२ भयकर।

उ०—उठियौ तिणवार वडौ उतळीवळ, सूरजसिंघ सहस वल। कोपनळ काळ भुजाळ कमधज, दोमजि भजण सत्रु दळ।—गु रू. व

३ बहादुर, वीर।

उ०—१ भरै हिक स्रोणी पिड भुजाळ, विढै हिक वीर हुआ विकराळ। करै हिक हाकां जोध कठीर, धारा हिक झीक हुवै धर धीर।—गु रू व

उ०—२ झोकै झाझी झाळ, काळ चाळ झटकै 'कमो'। भटकै क्रोध भुजाळ, खटकै उर खूदाळमो।

—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

उ०—३ भाजिया जिकै भुजाळ, अभमाल' विरद उजाळ। मढियौ न धकै मुगल्ल, इम जीपियौ 'अभमल्ल'।—सू प्र

उ०—४ रुघनाथ 'भीम' भाटी भुजाळ, काळी-पहाड चालतौ काळ। 'जोग-रज' पिता चप छळि निभ्रत, जमदाढ हणै गरज प्रांण अत।—गु रू व.

उ०—५ मघ नायक 'माडण' हरौ, 'राजौ' भीम भुजाळ। सयळ छभा पगति सुहड, जाणक मुगतामाळ।—गु रू व

४ समर्थ, शक्तिशाली।

उ०—१ भूपति लखप्पति भुजाळ, आदि रीति जादवा उजाळ। सूर धीर माण्वा संधार, खागि त्यागि दूसरौ खगार।—ल पिं

उ०—२ क्रपाळ विसाळ सिंघाळ किसन्न, वडाळ भुजाळ उजाळ विसन्न। मुणाळ भुग्राळ छग्राळ महेस, आदेस आदेस आदेस आदेस।

—ह र

५ देखो 'बुरजाळ' (रू भे)

रू० भे०—भुज्जाळ।

अल्पा०—भुजाळौ, भूझाळौ, भूजाळौ।

भुजाळि—१ समर्थ, शक्तिशाली।

२ देखो 'बुरज' (रू भे)

उ०—तनू प्रबन्ध तोपकै तुरग कधर्ते तनै, भुजाळि भ्राळि भोलितै वहै विभा विमाव नें। वरिट्ठ म वरिट्ठ जै वहेक तिन्न सालितै, गरिट्ठ में गरिट्ठ तै गुरै कती गजाळि तै।—ऊ का

भुजाळौ—देखो 'भुजाळ' (अल्पा, रू भे)

उ०—१ भायल 'आसो' 'रतन' भुजाळा, 'अजमल' जतन वस उजवाळा। राजा निकट 'मुकन' तन रावत, क्रत गुण खीची 'सिवो' 'कलावत'।—रा रू

उ०—२ वळहथ 'रासौ' 'सांमळ' वाळौ, 'भैरव' 'नाहर' तणौ भुजाळौ—रा रू

उ०—३ वरव्वीर 'खूमाण' वीराधवीर, कळी-मूळ साद्रूळ वैवै कठीर। भलौ मीच 'कल्यांण-मल्लौ' भुजाळौ, 'मांनावत' वेढीमणौ मच्छराळौ।—गु रू व

उ०—४ रुड मुड रोळिया, 'भीम' पाडियौ भुजाळौ। भारथ कुरखेत रै, हुऔ जुध लका वाळौ।—गु रू व

उ०—५ तेडै 'केहरि' वार तिण, भड थाट भुजाळा। आया दरगह ऊबरा, वहसै बिरदाळा।—सू प्र

उ०—६ भाटी सुरताणोत, 'रुघौ' वोलै विरदाळौ। आगै पडि ऊपडै, भिडै उज्जैण भुजाळौ।—सू प्र.

उ०—७ अडाभीड आछटै, वाह सारसी भुजाळै। जुध 'पीळौ' मेलियौ, खळा मोकळा विचाळै।—वखतौ खिडियौ

भुजावेद—स० पु० [स० भुजा+वेद=चार] १ गरुड। (डिं को)

२ विष्णु।

भुजि—देखो 'भुजा' (रू भे)

भुजिया—स० पु० [ब. व भुजिया] (व व) १ वेसन के पकोडे।

२ बारीक सेव। (बीकानेर)

उ०—बैवतोडा मांय सू आखर अेक जणौ दया कर'र टाबरां नै दो पईसां रा भुजिया दिराया।—वरसगांठ

३ भूना हुआ खाद्य पदार्थ।

भुजीस—स० पु० [स० भुजग] नाग, सर्प।

भुज्ज—१ देखो 'भुज' (रू भे)

उ०—परचड पराक्रम दाखवै, पित्त वीवनै पच दिन। 'गजसाह' वसुह राखी पगै, इहै भुज्ज डिगियौ गिगन।—गु रू व

उ०—१ पछिम पुरव उतराध, इळा दखणाधह आगळ। हिंदूवाण खुरसाण, दुहु भुज्जै दुन्है छळ।—गु रू व

२ देखो 'भुजा' (रू भे)

भुज्जडड—देखो 'भुजडड' (रू भे)

ई०—रुघव्व जुज्ज सामवेद, आमना अथव्वण। अईस रांण वेदमन्न, वोलियत व भण। जुडित्त एक जोरदार, थोर भुज्जडड ए। जेठी प्रचड ग्रीठ पिंड, मल्ल जुध्ध मड ए।—गु रू व

भुज्जन—१ देखो 'भोजन' (रू भे)

२ देखो 'भजन' (रू भे)

भुज्जाळ—१ देखो 'बुरजाळ' (रू भे)

उ०—१ तिसोता जिसौ नीर गभीर टाकौ, घिलूमै विचै जाळ भुज्जाळ वाकौ। जिका कोट नू देवता हाथ जोड़ै, चहू कूट रै बीच वैकूट चोडै।—मे म

२ देखो 'भुजाळ' (रू भे.)

उ०—धरियै आभ लगै धाराळै, भीगै भीम लियै भुज्जाळै। दिल्ली फौजा मग्ग निहाळै, खुरम खडौ मैदांन विचाळै।—गु रू व

भुटत—देखो 'भूटान' (रू भे)

उ०—जेथ वरफ वरसै जमै, परवत सिखरा पत। 'वक' सियाळै लोभवस, माळै चीण भुटत।—वा दा

भुटकणौ, भुटकबौ—क्रि० स०—१ भिडना, टक्कर खाना।

२ युद्ध करना।

३ देखो 'भटकणौ, भटकबौ' (रू भे)

भुटकणहार, हारौ (हारी), भुटकणियौ—वि०।

भुटकिओड़ौ, भुटकियोडौ, भुटक्योडौ—भू० का० कृ०।

भूटकीजणो, भूटकीजबौ—भाव वा०/कर्म वा०।
भूटक्कणो, भूटक्कबौ—रू० भे०।

भूटकियोड़ो–भू० का० कृ०—१ भिड़ा हुआ, टक्कर खाया हुआ २ युद्ध किया हुआ. ३ देखो 'भटकियोड़ो' (रू. भे)
(स्त्री० भूटकियोड़ी)

भूटक्कणो, भूटक्कबौ—१ देखो 'भूटकणो, भूटकबौ' (रू भे)
२ देखो 'भटकणो, भटकबौ' (रू भे)
भूटक्कणहार, हारौ (हारी), भूटक्कणियौ—वि०।
भूटक्किग्रोड़ो, भूटक्कियोड़ो, भूटक्क्योड़ो—भू० का० कृ०।
भूटक्कीजणो, भूटक्कीजबौ—भाव वा०/कर्म वा०।

भूटक्कियोड़ो—१ देखो 'भूटकियोड़ो' (रू भे)
२ देखो 'भटकियोड़ो' (रू भे)
(स्त्री० भुटक्कियोड़ी)

भूटणो भूटबौ–क्रि० अ०—मन ही मन क्रोधित होना।
उ०—इत्ता बरस वै लोग कळजुग री नाव सुणता हा जको पर-तख आपरी आख्यां देख्यो। महाराणी रै मार्थ ठौर तौ किणी री नी चालतो, पण माय रा माय भूटता।—फुलवाड़ी
भूटणहार, हारौ (हारी), भूटणियौ—वि०।
भूटाडणो, भूटाडबौ, भूटाणो, भूटाबौ, भूटावणो, भूटावबौ —प्रे० रू०।
भूटिग्रोड़ो, भूटियोड़ो, भूट्योड़ो—भू० का० कृ०।
भूटीजणो, भूटीजबौ—भाव वा०।
भूट्टणो, भूट्टबौ—रू० भे०।

भूटाडणो, भूटाडबौ—देखो 'भूटाणो, भूटाबौ' (रू भे)
भूटाडणहार, हारौ (हारी), भूटाड़णियौ—वि।
भूटाडिग्रोड़ो, भूटाडियोड़ो, भूटाड्योड़ो—भू० का० कृ०।
भूटाडीजणो, भूटाडीजबौ—कर्म वा०।

भूटाडियोड़ो—देखो भूटायोड़ो' (रू भे)
(स्त्री० भूटाडियोड़ी)

भूटाणो, भूटाबौ–क्रि० स०—मन ही मन क्रोध दिलाना।
भूटाणहार, हारौ (हारी), भूटाणियौ—वि०।
भूटायोड़ो—भू० का० कृ०।
भूटाईजणो, भूटाईजबौ—कर्म वा०।
भूटाडणो, भूटाडबौ, भूटावणो, भूटावबौ—रू० भे०।

भूटायोड़ो–भू० का० कृ०—मन ही मन क्रोधित किया हुआ।
(स्त्री भूटायोड़ी)

भूटावणो, भूटावबौ—देखो 'भूटाणो, भूटाबौ' (रू भे)
भूटावणहार, हारौ (हारी), भूटावणियौ—वि०।
भूटाविग्रोड़ो, भूटावियोड़ो, भूटाव्योड़ो—भू० का० कृ०।
भूटावीजणो, भूटावीजबौ—कर्म वा०।

भूटावियोड़ो—देखो 'भूटायोड़ो' (रू भे)
(स्त्री० भूटावियोड़ी)

भूटियोड़ो–भू० का० कृ०—मन ही मन क्रोधित हुवा हुआ।
(स्त्री० भूटियोड़ी)

भूट्टणो, भूट्टबौ—देखो 'भूटणो, भूटबौ' (रू भे)
भूट्टणहार, हारौ (हारी), भूट्टणियौ—वि०।
भूट्टिग्रोड़ो, भूट्टियोड़ो, भूट्योड़ो—भू० का० कृ०।
भूट्टीजणो, भूट्टीजबौ—भाव वा०।

भूठार, भूठोर–स० पु०—गुजरात एव मरुस्थल प्रदेशो में पाई जाने वाली घोडे की जाति विशेष।

भूडड—१ देखो 'भुजडड' (रू भे)
उ०—ग्रोडै वीरघटा घोक मातगां ताजान वाळी, रोडै वीजे विखमी वाजान 'वाळो' रीठ। ग्रोक ग्रगा ग्रेराक'लै भुडडां ग्राजान वाळी, नहगा 'राजान' वाळी हाकलै नत्रीठ।
—हुकमीचद खिडियो

भूणकमळी—देखो 'भूणकमळी' (रू. भे) (डि को.)
भूताण—देखो 'भाथो' (रू भे,)
भूतेस—देखो 'भूतेम' (रू भे)
भूत्तभोग—देखो 'भुक्तभोग' (रू भे) (जैन)
भूत्तभोगी—देखो 'भुक्तभोगी' (रू. भे) (जैन)
भूत्तियो—देखो 'भूतियो' (रू. भे)
उ०—घणी तनपट करी तो इण रजवाडै रा ई भुत्तिया बिखेर देवूला।—फुलवाडी

भूथांण—देखो 'भाथो' (रू भे)
उ०—भुथांण कवाण जुग्राण समल्ल, मिळै मीरजादा इसा भुज्भ मल्ल। विन्है फौज फौजा धणी चत्रवाहू, सर्भ सार ग्रावद्ध लीधा सनाहू।—वचनिका

भूदार—देखो 'भूदार' (रू. भे)
भूधर—देखो 'भूधर' (रू भे)
भूधरो—देखो 'भूधर' (ग्रल्पा, रू भे)
उ०—फुलट उलटह उलट पालट, ग्ररट घट घट प्रगट ग्रणवट, छूट छट छम नीर छट छट, तीम खट रट जमण तट तट, भूधरो वड भाग।—मुरारदास वारहठ

भुनगो–स० पु० [ग्रनु०] १ प्राय शिशिर ऋतु में फूलो ग्रादि पर उडने वाला एक छोटा कीडा या पतगा।
२ लाक्षणिक ग्रर्थ मे वहुत ही छोटा या तुच्छ व्यक्ति ग्रथवा पदार्थ।

भुनणो, भुनबौ–क्रि० ग्र०—ग्राग के ताप से भुना जाना।
२ वन्दूक, तोप ग्रादि से शरीर छिद्रित हो जाना।
३ रुपया, नोट ग्रादि का छोटे-छोटे सिक्को मे परिवर्त्तित होना।
भुनणहार, हारौ (हारी), भुनणियौ—वि०।

भुनिओडौ, भुनियोडौ, भुन्योडौ—भू० का० कृ० ।
भुनीजणौ, भुनीजबौ—भाव वा० ।

भुनाडणौ, भुनाडबौ—देखो 'भुनाणौ, भुनावौ' (रू भे)
भुनाडणहार, हारौ, (हारी), भुनाडणियौ—वि० ।
भुनाडिओडौ, भुनाडियोडौ, भुनाड्योडौ—भू० का० कृ० ।
भुनाडीजणौ, भुनाडीजबौ—कर्म वा० ।

भुनाडियोडौ—देखो 'भुनायोडौ' (रू भे)
(स्त्री० भुनाडियोडी)

भुनाणौ, भुनावौ—क्रि० स० [भुनणौ क्रि० का० प्रे० रू०] १ भुनने का काम किसी दूसरे से करवाना ।
२ किसी को कुछ भुनने में प्रवृत्त करना ।
३ नोट, रुपये आदि को सिक्को मे परिवर्तित करना/कराना ।
भुनाणहार, हारौ (हारी), भुनाणियौ—वि० ।
भुनायोडौ—भू० का० कृ० ।
भुनाईजणौ, भुनाईजबौ—कर्म वा० ।
भुनाडणौ, भुनाडबौ, भुनावणौ, भुनावबौ—रू० भे० ।

भुनायोडौ—भू० का० कृ०—१ दूसरे से भुनने का काम कराया हुआ २ किसी को कुछ भुनने मे प्रवृत्त किया हुआ ३ नोट, रुपये आदि को छोटे सिक्को मे परिवर्तित किया हुआ
(स्त्री० भुनायोडी)

भुनावणौ, भुनावबौ—देखो 'भुनाणौ, भुनावौ' (रू भे)
भुनावणहार, हारौ (हारी), भुनावणियौ—वि० ।
भुनाविओडौ भुनावियोडौ, भुनाव्योडौ—भू० का० कृ० ।
भुनावीजणौ, भुनावीजबौ—कर्म वा० ।

भुनावियोडौ—देखो 'भुनायोडौ' (रू भे)
(स्त्री० भुनावियोडी)

भुपति—देखो 'भूपति' (रू भे)

भुपाळ—देखो 'भूपाळ' (रू भे)

भुबि—देखो 'भूमि' (रू भे.)

भुभारव—स० पु०—शेर, सिंह । (डि को.)

भुभ्रत—देखो 'भूभ्रत' (रू भे)

भुमड, भुमडळ—देखो 'भूमडळ' (रू भे)
उ०—प्रचड बाहु दड के भये प्रचड पिंड मैं, घमड को घटाय दै मिळे न सो भुमड मैं । डरै न सिव-डौल तौ स्व डोसतै डरावनै, करोळ टोळ टोळ कोल तै करावनै ।—ऊ का

भुमण—देखो 'भुवन' (रू भे)
उ०—भमिया ग्रत्य लोक भुमण विण भमियउ, साठ हजार लिजइ भड़ साथि । राजा सगर तणउ ताइ रैंवत, बहु सवदइ कुण वाघइ घाति ।—महादेव पारवती री वेलि

भुम्मि, भुम्मी—देखो 'भूमि' (रू भे)
उ०—१ तिका हिज हेत दगी नह तोप, रही बजि रीठ विहू वळ रोप । जिका सणणकि भणयकिय जेह, सुवा भड भुम्मि हुवा घडसेह ।—मे म
उ०—२ तुरां खुरा पुरांह भुम्मि सुर सोम तजय । न होय ग्यांन सेन तैं अनेक रग भेजिय ।—रा रू

भुयग—देखो 'भुजग' (रू भे)
उ०—१ सदा तौ नाव लियैं स्रीरग, भखै नह ताह ससार भुयग मुरार जिका-ह वसैं तू मुक्ख, ससार समद तिरैं तैं सुक्ख ।—ह र.
उ०—२ खेध पर धाख कर वैरिया गम खरै, जहर करतौ जिको जगत जाणैं । नरदा 'नीबा' तणैं छाबडै झाल नस, ग्रेता में भुयग विख कीध आणैं ।—दुरगादास राठौड रौ गीत
उ०—३ जिके धरती रा धणी पताळ वासी भुयग नै धण रा धणी दौलतवत ग्रौ बिन्है एकै वग हूता सु धरती रौ पुड भेदनै विमरैं पैठा, उठै रहण लागा ।—रा सा स

भुयगचर—देखो 'भुजगचर' (रू भे) (ना मा)

भुयगम—देखो 'भुजगम' (रू भे)
उ०—१ आज ज सूती निसह भरि, प्रीय जगाई आइ । विरह भुयगम की डसी, लवथवती गळ लाइ ।—ढो मा
उ०—२ चपळ नेत्र सारग, रेख भ्रूहा मकरद । दीपक-नासा दिपत, सरद-रैणी मुख-इद्रह । डमण-बीज-दाडम, वेणि वासग भुयगम, भटियाणी वर कमध, समद गगा नदि सगम ।—गु रू व
उ०—३ उदर दर खण मरैं, पैस भोगवै भुयगह । हळ वरि मरै वहिल्ल, हरी जव चरैं तुरगह ।—नैणसी

भुयगेस, भुयगेसुर—देखो 'भुजगेस' (रू भे) (अ मा)

भुयद—स० पु० [स० भू+इन्द्र] राजा, नृप ।
उ०—अग्राजे अनड घटा आरोहे, भुप 'मान' मगवान भुयद । आवै हाथ नही तिण आटै, मसळै हातळ 'जगो' मइद ।
—महादान महडू

भुय—१ देखो 'भूमि' (रू भे)
उ०—मीत अन उदत खग पत भमैं कात मग, मुडै नद पछी खावत डर समोह । कमळ ग्रह टळै भुय टळै पारथ कळह, रण अनड हलै तौ पलै राठौड ।—नाथौ बारहठ
२ देखो 'भाय' (रू भे)
उ०—१ नरसघ ७वरस री उमर, तिकै नू छाती कन्है लीया थकां राणी लडै छै । अर पठांण थोडा अर घणी भुय रा खडीया आया । लोहे तौ सगळा नू पछाणा हेठै दीना ।—राजा नरसिंघ री बात
उ०—२ सुदारै गोठ मे नवी सुनाई आय बपरावा सतावी करो भुय अळगी छै ।—कूवरसी साखला री वारता
३ देखो 'भुज' (रू भे)

भुयग, भुयगि—देखो 'भुजग' (रू भे)
उ०—निसी भरी सूती सुदरी, वालभ कठ विलग्गि । मोहण-वेली

मारुई, पीधी नाग भुयग्गि ।—ढो मा

भुयण, भुयणि, भुयणी—देखो 'भुवन' (रू भे)

उ०—१ गम-निसा तिस भुयण ताप दाळिद गमण, धूप जळ सरण समपण सुवा धन । दन-प्रिया मछ सुरां रज-प्रिया दुथिया, किरणघण महण गिर सोम सुत 'क्रन' ।

—महाराणा जगतसिंघ सीसोदिया रो गीत

उ०—२ सभ सभ उमग वारह सघण,विसुध चित्त कायक वयण । तेरहा भांण पय राम तो, भल सेवै चवदह भुयण ।—र ज. प्र

उ०—३ धर गगाजळ धार, आणी तपकर ऊजळो । औ मोटो उपगार, भागीरथ कीधो भुयण ।—बा दा

उ०—४ 'वाघ' उत उचरै, सुणो खट तीस वस, जुरा आगळि रहै वद जाही । भोज वीकम तणो सुजस सारै भुयण, नरा तिण वार रा मडप नाही ।—राव गागो

उ०—५ दलो कहै दईवाण, साच वचन भायां सुणो । भुयण न उगै भाण, 'वीरम' सू चूका वचन ।—गो. रू

उ०—६ अदयत नै दिया रो अजस, लोभी अजस लिया रो । भुयण साच जणायो 'भीमा', हाथा हेत हिया रो ।—किसनजी आढो

उ०—७ अविकि वेटउ धायराठु सो नयर्णे आधउ, अवाला नउ पुत्तु पडु त्रिहु भुयणि प्रसिद्धउ ।—प प च

उ०—८ भगिनि त्रिहु भुयणह तणी, सूणी न वीजी सान । तु ऊगी प्रह पाडवा, अधकार अग्यान ।—मा का प्र

उ०—९ हले चले दुनी मालवि मनव हालिया, भुयण मुर डिगे आभ भिळगा । प्रिथी चो नाथ कवि पात वेळा पडी, वडै तरवर कुवर पलै विलगा ।

—अनूपसिंघ करणसिंघोत रो गीत

२ देखो 'भवन' (रू भे)

भुयणपत, भुयणपति, भुयणपत्ती—स० पु० [स० भुवनपति] इन्द्र ।

उ०—रांण महरांण एहो कियो'राजसी',तेण जळ न्हांण दुनियाण तरियो । नरा रै पती मोटो इसो निवघियो, भुयणपत सुग रै नीठ भरियो ।—महाराणा राजसिंह रो गीत

२ देखो 'भवनपति' (रू. भे)

भुयदड—देखो 'भुजदड' (रू भे)

उ०—विहु खवै दो भाथा फरयलि कोदडो, वालीवेसह वालो भुयदड पयडो ।—पं प च

भुयमोग्रग, भुयमोयग—देखो' भुजमोचक' (रू. भे) (जैन)

भुया—देखो 'भुजा' (रू भे) (जैन)

भुयाळ—देखो 'भूपाळ' (रू. भे)

भुरगो–वि०—बुझा हुआ । (कोयला)

उ०—काळा, निरजीव अर भुरगा कोयला मे वासदी रो परस पाता ई जिण भात जीवण साचरै, नै जगमग करण लागै उणी भात काली मासी इण वाळ-कन्हैया रै जलम पछै जगमग जगमग करण लागी ।—फुलवाडी

भुरट—देखो 'भुरट' (रू भे.)

उ०—मासी नै तो अैडो लखायो जाणै कोई उण रा माथा मे सूळां भुरट अर काटा चिगदै । नस नस वीधीजगी व्हे ज्यू ।—फुलवाडी

भुरटियो—देखो 'भुरट' (अल्पा , रू भे)

भुरड–स० पु०—कवच वनाने वाला, लुहार । (बांकीदास)

भुरकणो, भुरकबो—देखो 'वुरकणो, वुरकबो' (रू भे)

भुरकणहार, हारो (हारी), भुरकणियो—वि० ।

भुरकिओडो, भुरकियोडो, भुरक्योडो—भू० का० कृ० ।

भुरकीजणो, भुरकीजबो—कर्म वा० ।

भुरकाणो, भुरकाबो—देखो 'वुरकाणो, वुरकाबो' (रू भे)

उ०—१ लुटता ई सगळा फाला फूटग्या । चिणां रो खार वांमे अैडो चढियो, जांणै घाव माथै मिरचा अर लूण भुरकाया ।

—फुलवाडी

उ०—खुदोखुद ई मन करै जणा भाडो देती, हळको हाथ करती । दूध पाय मूडा मे वानी री चिमटी भुरकाती ।—फुलवाडी

भुरकाणहार, हारो (हारी), भुरकाणियो—वि० ।

भुरकायोडो—भू० का० कृ० ।

भुरकाईजणो, भुरकाईजबो—कर्म वा० ।

भुरकायोडो—देखो 'वुरकायोडो' (रू भे)

(स्त्री० भुरकायोडी)

भुरकियोडो—देखो 'वुरकियोडो' (रू भे)

(स्त्री० भुरकियोडी)

भुरकि, भुरकी, भुरक्की–स० स्त्री०—१ महीन चूर्ण ।

उ०—म्हैं हील रै दरद री नामी ओखद जाणू । अेक चिमटी भुरकी लेवता ई दोडण लाग जावैला ।—फुलवाडी

२ वशीकरण मत्र से मन्त्रित भस्म या धूलि ।

उ०—१ वाजी मोहे जीव सब, हमको भुरकि बाहि । दादू कैसी कर गया, आपण रह्या छिपाइ ।—दादूवाणी

उ०—२ सुण्यो रूप वेदै सुपेख्यो सवेही, वडा भाग री नागरी नारि वेहि । महा मोद आणद देखें मुरक्की, भुलाडी वळी नाथ नाखी भुरक्की ।—ना दा

उ०—२ दादू भुरकी राम है, सब्द कहै गुरु ग्यांन । तिन सब्दो मन मोहिया, उनमन लागा ध्यान ।—दादूवाणी

उ०—३ चारि वरण का मूल कहां, हरि परम सनेही पीव । हारि जीति भुरकी पडी, तहा अलूधा जीव ।—ह. पु वा

उ०—४ कोइक भुरखी नाखी इम कहे रे, बोलै ज्यू मन री आवै दाय रे । ग्यानी तो जाणै गैला सारखा रे, ए खूत माखी ज्यू खेल मांय रे ।—जयवांणी

भुरडणो, भुरडबो—क्रि० स० [अनु०] १ महीन चूर्ण करना।
२ सहार करना, मारना।
क्रि० अ०—३ ताप से झुलसना।
उ०—१ भूरा रू भुरडीजियां, लूआ वैरण लाय। चटका लागै चोगिरद, पड़ै डिडाय डिडाय।—लू
उ०—२ भरिया तरु पुहप वहै छूटा भर, काम वांण ग्रहिया करगि। वळि रितुराइ पसाइ वेसन्नर, जण भुरडीतौ रहै जगि।
—वेलि
भुरडणहार, हारौ (हारी), भुरडणियौ—वि०।
भुरड़िओडौ, भुरडियोडौ, भुरड्योडौ—भू० का० कृ०।
भुरडीजणौ, भुरडीजबौ—कर्म वा०/भाव वा०।

भुरडियोडौ—१ महीन चूर्ण किया हुआ।
२ सहार किया हुआ, मारा हुआ।
३ ताप से झुलसा हुआ।
(स्त्री० भुरडियोडी)

भुरज—१ शिखर।
२ शिखरदार बादल, बादल।
उ०—आणद मोर सुमरि आवाजै, वीणा वस मधुर सुर वाजै। भूरजे भुरज मिडता भाजै, 'गहड' सीख दे अवर गाजै।
—आसौ वारहठ
३ देखो 'बुरज' (रू भे)
उ०—१ 'गजन' सुतण साह छळ गाढौ, भाजै भुरज उरह भैभीत। पाण सुजड ऊपाडै पोगर, जोरवर एहौ रिणजीत।
—महाराजा जसवतसिंह रौ गीत
उ०—२ आसिफखा अकवर कहै, भीता भुरजां जोय। वांको गढ़ मढ बाकडा, हलौ किया की होय।—वा दा
उ०—३ कमधज भुज निमज सकज सुसुपह कज, रावै रज रिणतूर रुडै। दम्मामा गरज वहै व्रज दोमज, गज पाताडक भुरज गुडै।
—गु रू व

भुरजाळ—स० पु०—१ योद्धा, वीर।
उ०—गुजवै पर ठाल नखै गिरज्जां, भुरजाळांय आण ग्रही भुरजां। ग्रह मोद करी वरणाव घणौ, तिण रो सुत वालक नाथ तणौ।
—पा प्र
२ गढपति, राजा।
रू० भे०—भुरज्जाळ। अल्पा०—भुरजाळो।
३ देखो 'बुरजाळ' (रू भे)
उ०—१ ज्वाळा तै जम्मीकै थरहरतै थाळ, कमठ का कध सेस का कपाळ। प्रळैकाळ का पावस आतसू का उक भुरजाळ। सिखराळ दुरुगू के भड भिडज भूक काळ।—सू प्र.
उ०—२ सव दिन गौ मुख कुडसिर, पाणी सू भरपूर। अन भुरजाळां भुरजसा, गढ़ चीतोड कगूर।—वा दा.

भुरजाळौ—वि० (स्त्री० भुरजाळी) १ शिखर वाला।
उ०—१ ऊचा गिगन मे भुरजाळा वादळ झवाझव वीजळिया पळकावता हा, हरियळ कूख नै वधावण सारू ढोल नगारा घुरावता हा।—फुलवाडी
उ०—२ भूरा भुरजाळा अवुद भळहळिया, खाळा नदनाळा वाल्हा खळहळिया। अवनी आदोळन ओळा ओसरिया, पिडि भिडि प्लासी पै गोळा जिम गिरिया।—ऊ का
२ देखो 'भुरजाळ' (अल्पा., रू भे)
उ०—१ भुरजाळौ छै फौजा रो सिरदार।—पावूजी रा पवाडा
उ०—२ सदा रुखाळी भुरजाळौ पावू कमधा वस रो सूर, चारणां आसरो थारो सदा रहै नचीत। प्रवाडा अनेका इळा नको कोई पार पावै, आवै यू ऊताळो साय वस रो अदीत।—वादरदान घधवडियो
३ देखो 'बुरजाळ' (अल्पा, रू भे)

भुरजाळी—स० स्त्री०—गोल सीग वाली भैंस।

भुरजास—देखो 'बुरजाळ' (रू भे)
उ०—सुग्रीव सकाजा रच कपिराजा, भूपत निवाजा भ्रात भणै। भुरजास भभीखण क्रत दत कचण साख पुराणण वेद सुणै।
—र रू

भुरजी—देखो 'भुरजाळी'।
उ०—साख री पछै काई पूछणौ—वाजरी रा सिरटा हाथ हाथ लावा, दाणौ देखौ तौ परडां रा डोळा न्है जिसो। मूगा, चवळां री फळिया भुरजी भैंस रा सीग न्है जिसी। एक एक फळी मे मुट्ठी-मुट्ठी दाणा।—रातवासौ

भुरज्जा—देखो 'बुरज' (रू भे)
उ०—'अवरग' 'तहवर' ऊपरै, किर कोपै जगदीस। पवै भुरज्जां वज्र पर, पडो गुरज्जां सीस।—रा रू

भुरज्जाळ—१ देखो 'भुरजाळ' (रू भे)
उ०—भुरज्जाळ आया स्रीगोपाळ कामपाळ भीर, निराताळ चाळ बाधै जित्तो 'सुजा'नद। लेर बीडो कपनी सू जमीदारा थांन लेवा, फौजा करै फिरगी न नाखै फेर फद।—कविराजा बांकीदास
२ देखो 'बुरजाळ' (रू भे)

भुरट—स० पु०—१ एक प्रकार का घास जिसका पौधा गेहू के पौधे के समान होता है। गेहू की तरह इस पर भी वालें आती हैं इसके बीज अत्यन्त छोटे होते हैं जो वालों पर लगने वाले कांटे के झूमखे के अन्दर रहते हैं। इसके बीजो की रोटी भी बनाते हैं।
उ०—१ ताहरा राव गागै रा परधान सेखै कनै आया नै सेखै नू कह्यौ—'सेखा! जितरी धरती माहै करड, इतरी धरती थांरी मै जितरी धरती माहै भुरट, उतरी म्हारी।'
—नैणसी
उ०—२ भाये भळहळिया भुरटां रा भारा, अव अग ऊलळिया उरगां रा आरा विरळा दाता री पांता विरळाती, चोडै चाचर री चोवे चिरळाती।—ऊ का

२ उक्त घास का बीज जो काटे के झूमने मे रहता है।

३ मोलकी वश की एक शाखा।

रू० भे०—भरूट, भरोटी, भुरट, भुरट, भुरत।

अल्पा०—भरूटियो, भुरटियो, भुरटियो, भुरटियो।

भुरटियो—देखो 'भुरट' (अल्पा, रू भे)

भुरट-स० पु०—ज्वार का भुट्टा। (परवतसर, नावा)

भुरणाट—देखो 'भणणाट, (रू भे)

उ०—भवरा रा भुरणाट, गुजवै माल्या गावै। चौट्या डोलै चाव, महक मधुराम्रत चावै। हरिया स्वेत गुलाब, तीन रग फोग फवीला, सेरू खग रस खाय, कुलखणा पसु कवीला।—दमदेव

भुरणो, भुरबो–क्रि० अ०—किसी वस्तु या पदार्थ का, विकृतावस्था प्राप्त होने पर, धीरे २ नष्ट-प्राय या समाप्त होना।

उ०—झट झट आंख्या देखता, झड-झड पडिया फूल। झुर झुर वेला सूकिया, भुर भुर गई ममूळ।—लू

भुरणहार, हारो (हारी), भुरणियो—वि०।

भुरिओडो, भुरियोडो, भुर्योडो—भू० का० कृ०।

भुरीजणो भुरीजबो—भाव वा०।

भुरियोडो–भू० का० कृ०—कोई वस्तु या पदार्थ विकृतावस्था प्राप्त होकर नष्ट प्राय या समाप्त हुवा हुआ

(स्त्री० भुरयोडी)

भुरत—देखो 'भुरट' (रू भे)

भुरभुर–स० स्त्री०—ऊसर या रेतीली भूमि मे उगने वाली एक प्रकार की घास।

भुरभुरो–वि० (स्त्री० भुरभुरी) वह पदार्थ जिसके कण हल्के से दवाव से अलग-अलग हो जाय।

रू० भे०—भुरभुरो।

भुररी–स० स्त्री०—वाजरी की वालो पर दाना पडने के पूर्व उत्पन्न होने वाला एक झागनुमा पदार्थ।

भुरस, भुरसो—१ देखो 'भूरसी' (रू भे)

उ०—१ अण तरै' का बीद राजा मयाराम आला-नीला वास रोप नै परणीया नै पाच सै पाच सै मोहरा ब्राह्मण नै भुरसी दीधी।
—मयाराम दरजी री वात

२ देखो 'बुरज' (रू भे)

उ०—२ केहरसिघ ऊदावत रै गळा री तोख री कही भुरस मे दिवी हुती।—वां दा ख्या

भुरीगार—देखो बुरीगार' (रू भे)

भुरियो—देखो 'भुरो' (अल्पा, रू भे)

उ०—तद उवा जानिया री पण जिहाज उठै आय लागी अै कपडा पहिर सिणगार करै छै, पण जानी दिलगीर। जो बीद तिको भुरियो कोझो।—ठकुरै साह री वात

उ०—२ वदे पग लच्छि सहेत विसन्न, समीप मुकत्ति ज 'देव' सुतन्न। अखै प्रथमी जस एम अथाग, 'भुरा' घनि तूझ तणो अत भाग।
—सू प्र

२ देखो 'बुरो' (रू भे)

उ०—राखै वेख न राग, भाखै नह जीहा भुरो। दरसण करता द्राग, मिटै जनम रा 'मोतिया'।—रायसिंह सादू

भुळभुळ–स० स्त्री०—धूप मे तपी हुई गर्म मिट्टी।

उ०—घोराघोरा घर घूघल घुरधाई, थळ थळ ऊथळती बळती बुरकाई। पडती पुळ पुळ पर भुळभुळ भरभूजे, सरकर सर सोखत गिरवर दर गूजे।—ऊ का

भुळसणो, भुळसबो–क्रि० अ० [अनु०] झुलसना, जलना।

उ०—हयकप नरा तुरा गज हळवळ, तूटि अगारा सार-तड। आप 'धराज' वचाणो ओलै, भुळसाणो मेवाड भड।

भुळसणहार, हारो (हारी) भुळसणियो—वि०।

भुळसाडणो, भुळसाडबो, भुळसाणो, भुळसावो, भुळसावणो, भुळसावबो—प्रे० रू०।

भुळसिओडो, भुळसियोडो, भुळस्योडो—भू० का० कृ०।

भुळसीणणो, भुळसीजबो—भाव वा०।

भुळसाडणो, भुळसाडबो—देखो 'भुळसाणो, भुळसावो' (रू. भे)

भुळसाडणहार, हारो (हारी), भुळसाडणियो—वि०।

भुळसाडिओडो, भुळसाडियोडो, भुळसाड्योडो—भू० का० कृ०।

भुळसाडीजणो, भुळसाडीजबो—कर्म वा०।

भुळसाडियोडो—देखो 'भुळसायोडो' (रू भे)

(स्त्री० भुळसाडियोडी)

भुळसाणो, भुळसावो–प्रे० रू०—झुलसाना, जलाना।
—वखतसिघ रो गीत

भुळसाणहार, हारो (हारी), भुळसाणियो—वि०।

भुळसायोडो—भू० का० कृ०।

भुळसाईजणो, भुळसाईजबो—कर्म वा०।

भुळसाडणो, भुळसाडबो, भुळसावणो, भुळसावबो—रू० भे०।

भुळसायोडो–भू० का० कृ०—झुलसाया हुआ, जलाया हुआ.

(स्त्री० भुळसायोडी)

भुळसावणो, भुळसावबो—देखो 'भुळसाणो, भुळसावो' (रू भे.)

भुळसावणहार, हारो (हारी), भुळसावणियो—वि०।

भुळसाविओडो, भुळसावियोडो, भुळसाव्योडो—भू० का० कृ०।

भुळसावीजणो, भुळसावीजबो—कर्म वा०।

भुळसावियोडो—देखो 'भुळसायोडो' (रू भे)

(स्त्री० भुळसावियोडी)

भुळसियोडो–भू० का० कृ०—झुलसा हुआ, जला हुआ.

(स्त्री० भुळसियोडी)

भुलाडणो, भुलाडबो—देखो 'भुलाणो' भुलावो' (रू भे)

उ०—सुण्यो रूप वेदे सुपेख्यो सवेही, वडा भाग री नाग री नारि वेही। महा मोद श्राणद देखे मुरक्की, भुलाडी वळी नाथ नाखी भुरक्की।—वा दा.

भुलाडणहार, हारो (हारी), भुलाडणियो—वि०।

भुलाडिश्रोडो, भुलाडियोडो, भुलाड्योडो—भू० का० कृ०।

भुलाड़ीजणो, भुलाडीजबो—कर्म वा०।

भुलाडियोडो—देखो 'भुलायोडो' (रू. भे)

(स्त्री० भुलाडियोडी)

भुलाचार—स० पु०—भ्रम, भ्राति। (गजमोख)

भुळाणो, भुळावो—देखो 'भोळाणो, भोळावो' (रू भे)

उ०—१ म्याळमिन्नी तौ पूरी बात भाखी ई कोनी अर उठा सू फदाका भरतो न्हाट गियो। कठै ई श्रा नी व्है के स्याळ उणनै मरियोडो हिरण भुळाय दै अर खुद उण सू पैला गगाजी दौड जावै।—फुलवाडी

उ०—२ पाछो कोई नवो काम नी भुळावू जित्तै उठै ई बैठो रै'जै।
—फुलवाडी

उ०—३ तद राणी जी कह्यो—म्हारी सरण आयोडा नै किण रै भरोसै भुळाय नै जावू।—फुलवाडी

भुळाणहार, हारो (हारी), भुळाणियो—वि।

भुळायोडो—भू० का० कृ०।

भुळाईजणो, भुळाईजबो—कर्म वा०।

भुलाणो, भुलावो—क्रि० स०—१ किसी बात या प्रसग का मस्तिष्क से भुला दिया जाना, विस्मृत कर देना।

उ०—ऊठी जागळू मे कोई नाम तक नही काढै कुवर नू पण भुलाय दीन्हो।—कुवरसी साखला री वारता

२ किसी कण्ठस्थ किए हुए पाठ श्रादि को वाणी-विहीन कर देना।

३ गलती या त्रुटि करना या कराना।

४ भ्रम मे डाल देना, घोखे मे डालना/डलवाना।

५ अनुरक्त या श्रासक्त करना/कराना।

६ घमड में इतराना।

७ अभ्यास छुडाना।

भुलाणहार, हारो (हारी), भुलाणियो—वि०।

भुलायोडो—भू० का० कृ०।

भुलाईजणो, भुलाईजबो—कर्म वा।

भुलाडणो, भुलाड़वो, भुलावणो, भुलाववो—रू० भे०।

भुलापो—स० पु०—१ भूलने का भाव। २ विस्मृति। ३ भ्रम, धोखा।

भुळायोडो—देखो 'भोळायोडो' (रू भे)

(स्त्री० भुळायोडी)

भुलायोडो—भू० का० कृ०—१ किसी बात या प्रसग को मस्तिष्क से उतारा हुआ, भुलाया हुआ, विस्मृत किया हुआ २ किसी कण्ठस्थ किए हुए पाठादि को भुलाया हुआ ३ भ्रम मे डाला हुआ, धोखे मे डाला हुआ. ४ गलती या त्रुटि कराया हुआ. ५ अनुरक्त या आसक्त कराया हुआ. ६ घमड मे इतराया हुआ ७ अभ्यास छुडाया हुआ

(स्त्री० भुलायोडी)

भुळावण, भुळावणी—देखो 'भोळावण' (रू भे)

उ०—१ नाडी मे वहती वेळा नाई नै भुळावण दी के वो जावै नी घणा लाबा वाळ कोजा लागै। पटिया छांटनै पछै जावै।
—फुलवाडी

उ०—२ घडी अघ-घडी रात ढळिया सेठ वहीर होवण लागा जणां सेठाणी भुळावण देवती बोली—ज्यू त्यू करनै पोहरा री गळी काढ़णी है। कोई मिळ जावै तो ई कजिया किण वास्तै करो।—फुलवाडी

भुलावण, भुलावणी—देखो 'भूल'।

भुळावणो, भुळाववो—देखो 'भोळाणो, भोळाबो' (रू भे)

भुळावणहार, हारो (हारी), भुळावणियो—वि०।

भुळाविश्रोडो, भुळावियोडो, भुळाव्योडो—भू० का० कृ०।

भुळावीजणो, भुळावीजवो—कर्म वा०।

भुलावणी—देखो 'भुलावनो' (रू भे)

भुलावणो भुलाववो—देखो 'भुलाणो, भुलावो' (रू भे)

उ०—धुरा तू सुराराय नो नामधेई, कहीजै पुनः रावळा रूप केई। तु ही भोळणी भेम सभू भुलावै, रजोमूरती लेख तूही रुळावै।
—मे म

उ०—२ डोकरी बात नै भुलावण सारू इण बावत आगै पूछियो ई कोनी कै उणरी रीस री काई कारण है।—फुलवाडी

भुलावणहार, हारो (हारी), भुलावणियो—वि०।

भुलाविश्रोडो, भुलावियोड़ो, भुलाव्योडो—भू० का० कृ०।

भुलावीजणो, भुलावीजबो—कर्म वा०।

भूलाणो, भूलावो, भूलावणो, भूलाववो—रू० भे०।

भुळाविणी, भुळाविनी—देखो 'भोळावण (रू भे)

भुलावनो—वि०—भुलाने वाला।

(स्त्री० भुलावनी)

उ०—नाना विध के रूप धर, सब बाधे भामिनी। जग विटब परलै किया, हरिनाम भुलाविनी।—दादूवांणी।

भुलाविणी—देखो 'भूल'।

भुळावियोडो—देखो 'भोळायोडो' (रू भे)

(स्त्री० भुळावियोडी)

भुलावियोडो—देखो 'भुलायोडो' (रू. भे)

(स्त्री० भुलावियोडी)

भुलावौ-स० पु०—१ धोखा, भ्रम ।
उ०—सूता नैं तज स्याम सिधाया, हां हे ! वां तो दियो भुलावो भाम है ।—मी रां
क्रि० प्र०—दैणौ ।
२ विस्मृति ।
३ छल, कपट ।

भुल्लित-वि०—भूला हुआ ।
उ०—व्यथा विरहाग वियोग विहाय, सवागण भाग सयोग सुहाय । अनाग्रह भुल्लित आन उपाय, प्रफुल्लित ज्यू पतनी पति पाय ।
—ऊ का

भुवग—देखो 'भुजग' (रू भे)
उ०—मन भुवग यहु विस भरा, निरविस क्यो ही न होइ । दादू मिल्या गुरु गारुडी, निरविस कीया सोइ ।—दादूवाणी

भुवगम—देखो 'भुजगम' (रू भे)
उ०— विना भुवगम हम डसै, विन जळ डूबै जाइ । विन ही पावक ज्यो जळै दादू कुछ न वसाइ ।—दादूवाणी

भुव—देखो 'भुमि' (रू भे) (ह ना मा)
उ०—१ वणाधिप झप भरी उण वार, भुजग न झालि सक्यो भुव भार । भेळी हिज आवड बाहर भूप, रु नाहर चक्र सुदस्सण रूप ।—मे म
उ०—२ विया भुव भार फणाफण व्याळ, कणक्कण फौज जणज्जण काळ । प्रथीपति वाहर एण प्रकार, डकावत नाहर लेत डकार ।—मे. म

भुवडड—देखो 'भुजडड' (रू. भे)
उ०—दखिण खेत कुरुखेत, महा जुध भारथ मत्तै, भारि ओढि भुवडड, वाथ भरतै निहसत्तै ।—गु रू व

भुवण, भुवणी—देखो 'भुवन' (रू. भे)
उ०—१ भयभीत हुआ चौदह भुवण, स्रवै गरभ तिय दिस दसिय । रघुनाथ कहो सझ डवर रिण, कमर आज किण पर कसिय ।
—र रू
उ०—२ थरहरिया भुवण त्रिण्हे विथका मडि, धरजइ भ्रम सोई नही घर । ईसर तो सरणइ ऊवरिजइ, हरिसकर समरीयो हर ।
—महादेव पारवती री वेलि
उ०—३ कवाडउ रतन गारि कुदण री, युगति सिलावट चुणी सुजाण । तेज खमइ कुण देख तिया रउ, भुवण जिह्वा ऊगइ भाण ।
—महादेव पारवती री वेलि
उ०—४ अरक 'जसो' जगि आथमैं, गौ चकवां गुणियाह । भुवण अधारो भांजिसी, त्रिभुवण पति कुणि त्याह ।—हा झा
उ०—५ सूरत घन जैसिघ सारधू, भली-भली त्रिहु भुवण मणी । मा कैरवां तणी न कियो म्रत, तो जेही पाडवा तणी ।
—गोरधन बोगसो

२ देखो 'भवन' (रू भे.)
उ०—महाराजा 'अजमाल' सु, अरज करै उमराव । भुवण तजै रहियो विसै, अभवण हदो राव ।—रा रू.

भुवणपत, भुवणपति—देखो 'भुवनपति' (रू भे.)
भुवणेसवर—देखो 'भुवनेस्वर' (रू भे.)
भुवणेसरी—देखो 'भुवनेस्वरी' (रू. भे)
भुवणेस्वर—देखो भुवनेस्वर' (रू भे)
भुवणेस्वरी—देखो 'भुवनेस्वरी' (रू. भे)

भुवन-स० पु० [स० भुवन] १ ससार, जगत ।
२ जल, पानी (ह. ना मा)
३ पृथ्वी ।
४ स्वर्ग ।
५ मानव, मनुष्य जाति ।
६ तीन की सख्या *
७ चौदह की सख्या *
८ देखो 'लोक' (४), (५) ।
रू० भे०—भुइण, भुवणि, भुअण, भुअन भुइण भुमन, भुयण, भुयणि, भुयणी, भुवण, भुवणि, भुवन्न, भूयण, भूवण, भूवणि भोण, भोन, भोयण, भोयणउ ।
९ देखो 'भवन' ।
उ०—चित सुद्धि रासि ग्रह इम चवेस, कहि ग्रह प्रताप वरणन कवेस । रवि छठै भुवन खळ हणै रूक, आराण फतै पावै अचूक ।
—सू. प्र

भुवनक्षोभिनी-स० स्त्री० [स०] महाविद्या ।
उ०—आकासगामिनी सौदामिनी कामगामिनी कामतामिनी भुवन-क्षोभिनी कामरूपिणी मन-रतभिनी जलस्तभिनी आग्नेयी वायवी वरसणी कौमारी खग रूपिणी ।—व स

भुवनगुरु-स० पु० यौ० [स० भुवन+गुरु] जगद्गुरु ।
उ०—प्रथम नरेसर प्रथम भिक्षाचर, प्रथम केवल धर प्रथम रिसी री । प्रथम तीरथकर प्रथम भुवनगुरु, नाभिराय कुल कमल ससी री ।—स. कु

भुवनपत, भुवनपति-स० पु० [स० भुवन+पति] १ ईश्वर ।
२ इद्र ।
३ राजा, बादशाह ।
४ समुद्र ।
रू० भे०—भुअणपति, भुयणपत, भुयणपति, भुयणपत्ती, भुवण-पत्त, भुवणपति, भुवनपत्त, भुवनपत्ति ।

भुवनेस-स० पु० [स० भुवनेश] १ शिव की एक मूर्ति ।
२ ईश्वर, परमात्मा ।

भुवनेसर—देखो 'भुवनेस्वर' (रू भे)
भुवनेसरी, भुवनेसी—देखो 'भुवनेस्वरी' (रू भे.)

उ०—हीगोळ राय अठ दम हथी, भरूखैं मयख भुवनेसरी। कवि जोड पाण ईसर कहै, उदौ उदौ आसापुरी।—देवि

भुवनेस्वर-स० पु० [स० भुवनेश्वर] १ शिव की मूर्ति या रूप। २ उडीसा मे पुरी के पास स्थित तीर्थस्थान जहा उक्त शिव की मूर्ति है।

रू० भे०—भुवणेसर, भुवणेस्वर।

भुवनेस्वरी-स० स्त्री० [स० भुवनेश्वरी] १ देवी।

उ०—१ देवाण विद्या दत्तावरी, देवी धनदातावरी। चहुवाण वस रूपक चवा, सारसत्त भुवनेस्वरी।—नैणसी

उ०—२ राजा भोज पूछी—सिंहासण की उत्पत्ति कहो। तद पूतळी कही—स्रीमद् भागवत पुराण माही पचम स्कध माही स्री महादेव रा पुत्र स्वामी कारतिक भुवनेस्वरी देवी रौ आराधन कियौ—सिघासण बत्तीसी

२ दस महा-विद्याओ मे से एक। (तान्त्रिक)

रू० भे०—भुणेसरी, भुवणेस्वरी, भुवनेसरी, भुवनेमी।

भुवन्न—देखो 'भेखो 'भुवन' (रू भे)

उ०—१ भुवन्न तणं नरदेव भुयग, प्रमेसर तोरा कीट पतग। प्रामं कुण तोरा पार प्रचड, वसं रोम रोम बिखै ब्रहमड।—ह र

उ०—२ जगत्ते जाते आते जाण, प्रसन्न थयौ हरि दीठे प्राण। दीठौ हिव माति न आपो दाख, भुवन्न नही सो ठाम स भाख।

—ह र

भुवपत, भुवपति, भुवपती, भुवपत्त, भुवपत्ती—देखो 'भूपति' (रू भे)

उ०—१ अन अनेक भुवपत्त, वाग स्रवणा सुण रत्ते, नमि प्रणाम आधीन करै, सेवा बहु भत्ते।—महाराणा प्रताप रौ छप्पय

उ०—२ छक वढियौ अणछेह, पमग चढियौ भुवपत्ती। जाण चढ्यौ जेठ रौ, सुरज सपतास सपत्ती —मे म

भुवपाळ—देखो 'भूपाळ' (रू भे)

उ०—१ घडी नव चद चढ्या घटियाळ, प्रणामत पाव लख्यौ भुवपाळ। मळे कर खाति लखी रण भूमि, घावा भरपूर रह्या भड घूमि।—मे म

उ०—२ सुणे जद वच्चन 'भैरव' सूर, नरापत धोय चखा चढ नूर। भ्रगूटीय रेख चढं मुर भाळ, भिडै भ्रहु मूछ अडै भुवपाळ।

—पे रू

भुवमड—देखो 'भूमड' (रू भे.)

भुवरलोक-स० पु० [स० भुवर्लोक] अतरिक्ष।

भुवरियौ-वि०—वह जिसमे कई घुमाव या घूघर पडे हुए हो, घुघराला।

उ०—परघळा आसणां रा, कागरै थूवरा, मोटै पूठै रा, छोटै पीडा रा, झामरं पूछ रा, भुवरियं रू'रा, चोळमं रग रा, लांघियं सीह ज्यू लका चढिया थका, भागा गाडा ज्यू बठठाठ करता थका, वेस्या ज्यू झाला करता थका मातै हाथी ज्यु हुकारा करता थका, इसा ऊठ मेलजै छै।—रा. सा स

भुवलोक—देखो 'भूलोक' (रू. भे)

भुवा—देखो 'भूआ' (रू भे)

भुवाजी—देखो 'भूआजी' (रू भे)

भुवाणौ, भुवावौ—देखो 'बोवाणौ, बोवावौ' (रू भे)

उ०—कोठै भुवाऊ डोडा इलायची रे म्हारा लोटण करवा, कोठै भुवाऊ नागर वेल, ऐ जी ओ मिरगा नैंणी रा ढोला, मारूणी उडीकै घर आव।—लो. गी

भुवाणहार, हारौ (हारी), भुवाणियौ—वि०।

भुवायोडौ—भू० का० कृ०।

भुवाईजणौ, भुवाईजवौ—कर्म वा०।

भुवायोड़ौ—देखो 'बोवायोडौ' (रू भे) (स्त्री० भुवायोडी)

भुवाळ-स० पु०—१ वाल, केश।

उ०—ताहरा हेकै रजपूत नू भुवाळां हू झालि झोकि करि नीचौ नाखियौ। उण नू घाव किया। – द वि

२ देखो 'भूपाळ' (रू भे)

उ०—१ गाव दस सिर वाण गजै, प्रगट खळ जन भूप भजै। जनक पण रख चाप भजै, मलै अवव भुवाळ।—र ज प्र

उ०—२ सरसत मात पसाव कर, दे मो अविरळ मत्ति। भोगी भमर भुवाळ जै, गुण गाऊ तसु भत्ति।—ढो मा.

भुवाळी—देखो भवळ' (रू भे)

उ०—बूढी-भोळी डोकरघा नै आपरा वेटा वेगा सा छुडा ल्यावण रा वसतौ घमड दिखाळै है। भुवाळी खांवतौ फिरै। घर घर गेड़ा काटै।—दसदोख

भुवासासू—देखो 'भूआसासू' (रू भे)

भुवासुसरौ—देखो 'भूआसुसरौ' (रू भे)

भुवि, भुवी—देखो 'भूमि' (रू भे)

भुस—देखो 'भूसौ' (मह, रू भे)

उ०—कह्यौ—'वीरम' वाव्रडौ, नही तर उदै री खाल कढाऊ छू, अर भुस भराउ छू।—नैणसी

भुसण-स० पु०—कुत्ता, स्वान। (अ मा, ह ना मा)

रू० भे०—भसण।

भुसणौ-वि०—१ भुसने वाला (कुत्ता)।

२ व्यर्थ वकवास करने वाला।

रू० भे०—भसणउ।

भुसणौ, भुसवौ-क्रि० अ० [अनु०] १ कुत्ते का भौं-भौं शब्द करना, भूंकनां।

उ०—१ गहवरियौ गजराज, मद छकियौ चालै मतै। कूकरिया वेकाज, रोय भुसै क्यू राजिया।—किरपाराम

उ०—२ कुत्ता रै भुसणा री डर तौ पूरी पूरी मिटग्यो हो, पण राजाजी री खीझ री डर तौ उणी भात कायम हो।—फुलवाडी

२ व्यर्थ मे किसी के लिए भला-बुरा कहना या बकना।

भुसणहार, हारौ (हारी), भुसणियौ—वि०।

भुसाडणो, भुसाडवौ, भुसाणो, भुसावौ, भुसावणो, भुसाववौ —प्रे० रू०।

भुसिप्रोडो, भुसियोडो, भुस्योडो—भू० का० कृ०।

भुसीजणो, भुसीजवौ—भाव वा०।

भूसणो, भूसवौ—रू० भे०।

भुसाडणो, भुसाडवौ—देखो 'भुसाणो, भुसावौ' (रू भे.)

भुसाडणहार, हारौ (हारी), भुसाडणियौ—वि०।

भुसाडिप्रोडो, भुसाडियोड़ो, भुसाड्योडो—भू० का० कृ०।

भुसाडीजणो, भुसाडीजवौ—कर्म वा०।

भुसाडियोडो—देखो 'भुसायोडो' (रू भे)

(स्त्री० भुसाडियोडी)

भुसाणो भुसावौ–प्रे० रू०—१ कुत्ते को भों-भों शब्द करने या भौंकने मे प्रवृत्त करना।

२ व्यर्थ मे किसी के लिए भला-बुरा कहने को प्रवृत्त करना।

भुसाणहार, हारौ (हारी), भुसाणियौ—वि०।

भुसायोडो—भू० का० कृ०।

भुसाईजणो, भुसाईजवौ—कर्म वा०।

भुसाडणो, भुसाडवो, भुसावणो, भुसाववौ—रू० भे०।

भुसायोडो–भू० का० कृ०—१ कुत्ते को भों-भों शब्द करने या भौंकने मे प्रवृत्त किया हुआ २ व्यर्थ मे किसी के लिए भला बुरा कहने मे प्रवृत्त किया हुआ

(स्त्री० भुसायोडी)

भुसावणो, भुसाववौ—देखो 'भुसाणो भुसावौ' (रू भे)

भुसावणहार, हारौ (हारी), भुसावणियौ—वि०।

भुसाविओडो, भुसावियोडो, भुसाव्योडो—भू० का० कृ०।

भुसावीजणो, भुसावीजवौ—कर्म वा०।

भुसावियोडो—देखो 'भुसायोडो' (रू भे)

(स्त्री० भुसावियोडी)

भुसियोडो–भू० का० कृ०—१ भों-भों शब्द किया हुआ (कुत्ता) २ व्यर्थ मे किसी के लिए भला-बुरा कहने मे प्रवृत्त हुवा हुआ. ३ नाराज

(स्त्री० भुसियोडी)

भुसी—१ देखो 'भूसी' (रू भे)

२ देखो 'भुसौ' (अल्पा, रू भे)

भुसुडी—देखो 'काकभुसुडी'।

भुहू—देखो 'भ्रू' (रू भे)

उ०—जुधि झाल् कराळ उठत जठै, असि हाकलिया 'बखतेस' अठै। चख चोळा झळाहळ रीस चढी, भुह ऊपर मोसर जाय भिडी।—सू प्र

उ०—२ चख चचळ मन अचळ, कमळ चख भुहा अलीअळ। तन ऊजळ पति रत्त, रूप भरता रुचि मझळ।—गु रू. व

भुहर—देखो 'भ्रू' (रू भे)

उ०—भिल चहुर मूछा भुहर भर, वज पखर गूघर झिडज वर। गज चीर फरहर खुल अगर, झुक अतुर लोयण अगन झर। अर आवियो आरांण।—र रू

भुहार, भुहारव—देखो 'भ्रू' (रू भे)

उ०—१ मुछार भुहार मिळै मगरूर, सोभा मुख जाणक ग्रीखम सूर। भयकर रूप वर्णे जिम भेस, महाभड 'केसर' री 'मुकदेस'। —सू प्र

उ०—२ अग रोम ऊल्हसै तेज, चख मुख रातवर। मूछ भुहारां मिळै पाव नह लगै धरा पर।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

उ०—३ डरै जुध वीच तुरी 'अजवेस' भुहारव ऊपर मूछ भिडेस। मुखै चख चोळ सरूप मजीठ, धवीहत सावळ मूगळ वीठ —सू प्र.

भुहि—देखो 'भूमि' (रू. भे)

उ०—मूझइ रडइ भुहि पडइ मनि कंप थाइ, देखी जतू कटक उत्तर सून्य थाइ। 'पाछउ हव वलि व्रहन्नड मइ म मारि, खूटा पखइ कहिन भूलउ का विचार।'—सालिसूरि

भू–स० पु० [अनु०] १ रुदन की आवाज, या ध्वनि।

उ०—आ कैयनै वो फेर भू भू करनै रोवण ढूको।—फुलवाडी

२ देखो 'भ्रू' (रू भे)

उ०—१ थिरू मूरती सूर रै नूर थाई, तिका स्वप्न रै माहि पिंडा बताई। सिरोरुह कोसेय काळा सरीखा तियो आक भू वांकडा नेत तीखा।—मे म

उ०—२ दाता री पाणी' कडीया री केहरी, हाल री हस, भूआं री भमर, कुरज री नस।—मयाराम दरजी री वात

भूइ—देखो 'भूमि' (रू भे)

उ०—साह वळ वडो विह्वळ, हुवै त्रिखावत जळ मोकळै। कळि मूळ आइ पैठो, कमो, भूइ कठै भाखर वळै।—गु रू व

भूइरो—देखो 'भवारो' (१) (रू भे)

भूई—देखो 'भूमि' (रू भे)

भूईवावळी—देखो 'भुईवावळी' (रू भे)

भूक–स० स्त्री०—गधे के रेंकने से उत्पन्न ध्वनि।

भूकण–स० पु० [अनु०] १ गधा, खर। (ह ना मा.)

उ०—सठ मडळ स्रोता हुवै, वक्ता कुकवि बणंत। भूकण लागो भूकवा, जाण जमा दीपत।—वा दा

२ कुत्ता, स्वान।

रू० भे०—भूकरण।

भूकणो, भूकबो—क्रि० अ०—१ गधे का रेंकना।

उ०—१ पण गधा नै तो कुमत सूझियोडी ही। वो तो फेर चीभौं चीभौं करण लागो। वो जाण्यो भूकणा मे ईं मीघाई है।
—फुलवाडी

२ कुत्ते का भौं-भौं शब्द करना, भुमना।

३ व्यर्थ बकवास करना।

उ०—भगवत करतानै करतव भुगतावै, पिछला पापा रा पामर फळ पावै। भावी भूलोडा भूकौ क्यू भाया, पोचा करमा रा पोचा फळ पाया।—ऊ का

भूकणहार, हारौ (हारी), भूकणियो—वि०।

भूकिग्रोडो, भूकियोडो, भूक्योडो—भू० का० कृ०।

भूकीजणो, भूकीजबो—भाव वा०।

भुकणो, भुकबो, भूकणो, भूकबो, भुखणो, भूखबो—रू० भे०।

भूकियोडो—भू० का० कृ०—१ व्यर्थ बकवाम किया हुआ २ रेंका हुआ (गधा)

(स्त्री० भूकियोडी)

भूखर—वि०—ग्रति शीतल।

उ०—भूखर वाइ भणहणिउ, तनि तनि छूटइ धूजि। मज्जन करती माननी, गौरीसकर पूजि।—मा का प्र

भूगडो—भाड मे सेका हुआ चना।

उ०—जवाईडा, मेरी नो मण कोरो काचो चावै रे क, मेरी लाडो ना चलै। सासूडी, मैं दस मण का भूगडा भुना दयू ग्रे क, तेरी लाडो ले चलू।—लो. गी

ब० व०—भुगडा।

भूगरी—स० स्त्री०—लाल मुह वाली भेड।

भूगळ—स० स्त्री०—१ नरसिघा नामक बाजा।

उ०—जीतउ कान्ह वात इम सुणी, नगरलोक थइ वद्धामणी। मदनभेरि भूगळ भरहरइ, वरण अढारइ जय जय करइ।
—का दे प्र

२ सार्वजनिक स्थानो, कारखानो या मीलो मे भारी स्वर मे होने वाली समय सूचक ध्वनि या ग्रावाज जो यन्त्र विशेष के द्वारा उत्पन्न की जाती है ग्रौर निर्धारित समयो मे होती रहती है, मीटी, विसल।

वि०—१ मूर्ख, नासमझ।

२ देखो 'भूगळी' (मह , रू भे)

उ०—बाजरी देखो तो पत्ता भूगळ रा भूगळ, सावळा भवर।
—रातवासो

रू० भे०—भुगळ।

भूगळी—स० स्त्री०—वास या धातु निर्मित खोखली नली जिसके द्वारा फूक मारकर ग्रग्नि को प्रज्वलित किया जाता है।

भूगळो—स० पु०—धातु या लकडी का बना बडा नल।

मह०—भूगळ।

भूगो—स० पु० [दे०] १ वर्षा ऋतु मे होने वाला सफेद रग का उद्भिज पदार्थ विशेष जिसे 'फूबी' भी कहते है एव जिसका शाक भी बनता है। (शेखावाटी)

उ०—भादू महीने भूगा होमी, तीवणिया री ताह। बाजरिया री रोटी खावा, वाह रे माम्री वाह।—लो गी

२ वास का ग्रकुर।

उ०—पीव पीठ काढघो पिसण, गाजो उर विच गाढ। जाण वास भूगो जवर, फूटघो घरती फाड।—रेवतसिंघ भाटी

३ एक कीट विशेष।

उ०—फूकारा वादिया घड फाडै, जन्न न लागै भर्डा जग। भूगा काळ तणी कळ भारथ, खत्री तू झ हाडा खडग।
—कवर ग्रमानसिंघ हाडा री गीत

४ पशुग्रो की चराई का एक 'कर' जो भूतपूर्व देशी राज्यो व जागीरो मे लिया जाता था। (बीकानेर)

भूच—स० पु०—१ रेगिस्तान, ऊसर भूमि।

उ०—जै मोटा भाई छो थे थाहरै ठिकाणै जावो। इण भूच घरती मे कासू करिस्यो—ठाकुर जैतसी री वारता

२ ग्रपठित, मूर्ख।

रू० भे०—भुच, भूछ।

भूचक—स० पु०—सूग्रर का बच्चा।

भूचणो, भूचबो—क्रि० स०—१ उपभोग करना, भोगना।

उ०—१ सगुरा सत सयम रहै, सन्मुख सिरजनहार। निगुरा लोभी लालची, भूचे विसय विकार।—दादूवाणी

उ०—२ दादू यो फूटे थे सारा भया, सवे सधि मिळाइ। वाहुड विसय न भूचिये, तौ कवहू फूट न जाइ।—दादूवाणी

२ मागना, याचना करना।

उ०—सहू कामी सेवा करैं, मागैं मुग्ध गवार। दादू ऐसे वहुत हैं, फळ के भूचणहार।—दादूवाणी

भूचणहार, हारौ (हारी), भूचणियो—वि०।

भूचिग्रोडो, भूचियोडो, भूच्योडो—भू० का० कृ०।

भूचीजणो, भूचीजबो—कर्म वा०।

भूचाळ—देखो भूचाळ' (रू भे)

भूचियोडो—भू० का० कृ०—१ भोगा हुग्रा २ मांगा हुग्रा.

(स्त्री० भूचियोडी)

भछ—वि०—१ कटा हुग्रा २ मीचा हुग्रा

३ देखो 'भूच' (रू भे)

उ०—जगळ रा वसणहार भूछ लोक छा।—नैणसी

भूजणो, भूजबो—क्रि० स०—१ किसी खाद्य पदार्थ को तेल या घी मे पकाना।

२ ग्रग्नि या ताप से किसी वस्तु को वहुत गर्म या लाल कर देना।

उ०—चांद किरण रातयू रमी, कोरा टीवडियां । भातं पैंली भू जिया, लूग्रा कडकडियां ।—लू

३ किसी वस्तु को अगारों पर सेंक कर पकाना ।

४ ताप द्वारा किसी वस्तु को इस प्रकार जला डालना कि उसका जलांश शुष्क हो जाय ।

उ०—चूण लेण रै चाव मे, चिडियां खोलै चांच । भीतर सारी भूजवै, लूग्रां अकरी आच ।—लू

५ मास, मछली, आदि पकाना ।

उ०—राजा नळ री वात तो थै सगळा जाणो ई हो के ठाव मे भूजियोडी मछळी पाछी पाणी मे वहगी ।—फुलवाडी

६ गरम बालू मिट्टी मे दाने आदि पकाना या भूनना ।

७ लाक्षणिक अर्थ मे सताना, दुख देना ।

८ लाक्षणिक अर्थ मे, क्रोध मे झल्लाकर बोलना ।

उ०—तरै दासी ऊची जाय किवाडां री छेकड माहि मूठी घालि नै कह्यो—चावडीजी कुंवरजी नै जगाय उरा मेलो । तरै चावडी भूजती बोली, मालजादी रांडां, थारै बाप नै जरै ही मारि गाठडी बाधि झरोखै रै मारग नाख दीधो ।—जगदेव पवार री वात

९ लाक्षणिक अर्थ मे, भ्रम की आग मे झुलसना ।

उ०—अज भेक उजागर नर खर नागर, गुण सागर गूजदा है । नाभा फत नामी कथा निकामी, भ्रम गामी भूजवा है ।—ऊ का

१० बदूक तोपादि की गोलियो से शरीर छिद्रित करना, मारना ।

भूजणहार, हारो (हारी), भूजणियो—वि० ।

भुजाडणो, भुजाडबो, भुजाणो, भुजाबो, भुजावणो, भुजाववो —प्रे० रू० ।

भूजिग्रोडो, भूजियोडो, भूज्योड़ो—भू० का० कृ० ।

भूजीजणो, भूजीजबो—कर्म वा० ।

भूनणो, भूनबो—रू० भे० ।

भूजवो–स० पु०—एक प्रकार का भुना हुआ मास ।

भूजाई—देखो 'भुजाई' (रू भे)

उ०—१ भोजन विविध चाव भूजाई, सदा नवनवी गोठ सवाई । चावा सबद कहै नित चावा, अकसो सिरै तणो उमरावा ।

—रा रू

उ०—२ ताहरा रावजी हुकम कियो—'घिरत भूजाई मे ईयै पळी सौं पुरसो । आधो पुरसै तो सवार नू सभा दीजै ।—नैणसी

उ०—३ गोरस की उभेल जीमे परज्याद । सकरसे बोहै तरत-करका सवाद । ऐसी विध रस आई । राजेस्वरू की भूजाई ।—सू. प्र

उ०—४ मदनो कुवरजी रा हुकम पखो ही ज भूजाई रा चरू, थाळी, भूजाई री भिणकार, घोडो चहुवांण रामदास री पेम रो, परणिया तदि पेसकस कियो हुतो, बीजो ही भूजाई रो समदाव सहु मदनो ले गयो ।—द वि

भूजियोडो–भू० का० कृ०—१ कोई खाद्य पदार्थ तेल या घी में पकाया हुआ २ अग्नि या ताप मे किसी वस्तु को गर्म या लाल किया हुआ ३ किसी वस्तु को अगारा पर सेंक कर, पकाया हुआ ४ ताप द्वारा किसी वस्तु को इस प्रकार जलाया हुआ कि उसका जलांश शुष्क हो गया हो. ५ मास या मछली आदि को पकाया हुआ ६ गर्म बालू मिट्टी मे दाना पकाया या भुना हुआ ७ लाक्षणिक अर्थ मे, क्रोध मे झल्लाया हुआ ८ लाक्षणिक अर्थ म, सताया हुआ, दुखित किया हुआ ९ लाक्षणिक अर्थ मे, भ्रम की आग मे झुलसा हुआ

(स्त्री० भूजियोडी)

भूड–सं० स्त्री०—बदनामी, अपयश ।

उ०—पण आप तो दया रा ई रूप हो, गरीब अभ्यागत जांण उण रो लिहाज राखियो, पण अन्नदाता आ नीच गरीबा रा तो लखण ई बोदा है । भलाई करता भूड हाथ लागै ।—फुलवाडी

२ कलक ।

उ०—भूड रो ओ ठीकरो म्हारै गळै बाधियो जको तो ठीक है, पण थनै आ चाकरी म्हारा सू बण नी आवै ।—फुलवाडी

३ दोष, त्रुटि ।

उ०—घणी ई चानणी रात है, ठाडा लैरका चालै, पण गाणो सुणनै सेत री घणी सोटा जरकाया तो आंख्यां आडी अधारी आय जावैला, पछै म्हनै भूड मत देजै ।—फुलवाडी

पु० [स्त्री० भूडण] ४ सूअर ।

उ०—१ भूडण तो भडा जिणं, हिरणी जिणं सुगट्ठ । पांन खडक्कै उठ चलै, बागड घालै थट्ठ ।—अज्ञात

उ०—२ सूवर सूतो नीद मे, भूडण पहरा देत । उठो सूवर नीदाळका, फौज हिलोळा लेत ।—लो गी

भूडण–स० स्त्री०—१ कलह-प्रिय स्त्री ।

२ देखो भूड (४) (स्त्री)

भूडसूरो–स० पु०—ग्राम्य-शूकर ।

उ०—जद स्वामीजी बाल्या—कोई भूडसूरो निस्टो ग्रातो हो । साहुकार दिसा जातो सेहजे द्रिष्टि पडी देखनै भूडसूरो बोल्यो साहजी रो पिण मन हुग्रो दीसै है ।—भि द्र

भूडाई–स० स्त्री०—१ शिकायत ।

उ०—मासी फिळा साथ इज ऊभी मिळगी । जांणै जितो ग्रोळबो दियो । ग्रामनो जतायो । बाथळ री भूडायां करी ।—फुलवाडी

२ निंदा, अपकीर्ति ।

उ०—सुरग मे ई रात-दिन अत लोक री भूडायां सुण सुणनै म्हारा तो कांन पाकग्या, पण इत्ता दिन जकी बातां सुणी वै साव भूठी अर बेपीदा ही ।—फुलवाडी

क्रि०—करणी, होणी ।

३ दोष, अवगुण ।

उ०—थारी खुद री ई बात लै । थू जलम सू भूडो घोडो ई हो । ठगा रै सिखावण सू थामै भूडायां सांचरी ।—फुलवाडी

४ खराबी।

उ०—सास्तर रा सास्तर लुगाया री ताडना सू भरचा पडचा है, ग्रैडी तो श्रा मे की खामी ग्रर भूडायां निजर नी ग्रावै।
—फुलवाडी

५ कुरूपता।
६ अभद्रता।
७ बुरा होने का भाव या बुरापन।
८ आलोचना।

भूडापण, भूडापणो—देखो 'भूडाई'।

भूडोडो—देखो 'भूडो' (अल्पा, रू भे)

उ०—हाथा हूकलिया लटकता लोटा, रिण रिण रीकता सुपनै मे रोटा। कोडी कोडी लै कळियोडा कूगा, ढाळा भूडोडा ढळियोडा ढूगा।—ऊ का

(स्त्री० भूडोडी)

भूडोळ-स० पु यौ०—भूकम्प भूचाल।

भूडो-वि० [स्त्री० भूडी] १ अनुचित, खराब।

उ०—१ भूडा-भूडी वातडी, ग्रैमी करियै काय। हू प्यारी इण जोध की, तो घर माहे नाय।—गज उद्धार

उ०—२ अपा दो जीवा सारू तो मोकळो पण हाथा कमायोडो धन सुक्यारथ लागै तो काई भूडी वात।—फुलवाडी

२ दुरवस्था या खराब अवस्था वाला, वेकार।

उ०—पल पल माही पियै, चूपकर चिलम्या चाडै, धन रो कर कर धूवो, कई इण माही काडै। प्राणै रोज उधार, करज कर टाट कुटावै, निज तन रो कर नाम, श्रोगणी सास उठावै। वुढापै सग्या होवै वुरी, जग में भूडो जीवणो, हजारा माय श्रोगण हुवै, पण वी होको पीवणो।—ऊ का

३ अशोभनीय, असुन्दर, कुरूप, भद्दा।

उ०—१ क्रोधी कपटी पूर, भूडो दीसै नूर। धरम रो द्वेसियो ए, मच्छर विसेसियो ए।—जयवाणी

उ०—२ कैता ई मोरिया रै सुरगी पाखा रो रुपाळो छत्तर तण-ग्यो। मोर खुसी मे नाचण लागो। पै'ला मोर वांदा व्हैता। घणा भूडा लागता।—फुलवाडी

उ०—३ मूछा विन मूडा भासत भूडा, भरसूडा भभकदा है। लडथड गळ लजा हतरस हजा, मनमथ काम मददा है।—ऊ का.

उ०—४ मोताहळ मुकताह, पहरचा मेळ ज नह पडे। गज री भूल गवाह, भूडी लागै भेरिया।—महाराजा वलवतसिंह रतलाम

४ अनिष्टकर, असुभ, अमागलिक।

उ०—म्हारी जीमणी श्राख फरूकी तद सू ई सोच्यो के की भूडा समाचार ग्रावैला।—फुलवाडी

मुहा०—भूडो भलो होणो=मौत हो जाना, मर जाना।

५ जिसमे शालीनता व शिष्टता आदि का नितान्त अभाव हो। अश्लील, असभ्यतापूर्ण, भद्र।

ज्यू—वो वीत भूडी वोलै है।

मुहा०—भूडी बोलणो, भूडी वकणो=गालिया देना।

६ दयनीय।

उ०—सूवर ग्रर भाचरिया सू ई भूडी हालत है इण री।
—फुलवाडी

७ अलाभकारी, हानिकारक।

उ०—१ अपणो जाण अभाग, गजव नहि खाय गधेडो। सूकर भूडी समझ, निपट निकळै नहि नेडो।—ऊ का

उ०—२ हूकै सू निज हेत भलो भूडो नह भाळै। मांहि वळै मा-वाप वारणै छाणा वाळै।—ऊ का

उ०—३ मरणै परणै मे गोडा खर गाळै वनिता सुत जावो वैती रै वाळै। भलपण खाचै पण राचै भूडै मे, माचै सूता रै हूको मूडै में।—ऊ का

मुहा०—भूंडी करणी=अहित करना, बुरा करना, कष्ट देना। २ भूडी वीतणी=अहित होना, गडवड होना, अव्यवस्था होना।

८ जो सहन करने योग्य न हो, असह्य, कष्ट-प्रद।

उ०—जाहर जस खुस वोहजुत, सुदता कुसम सुसोह। काटां सू भूडो झपण, वप अपजस वदवोह।—वा दा

९ खतरनाक, क्रूर।

उ०—श्राइदा ध्यान राखजै। जै ग्रवै कदैइ केस गमाय दियो तो थू थारी जांणै। पछै म्हारै जेड़ी भूडी नी है।—फुलवाडी

१० क्रुद्ध, नाराज।

उ०—ताहरा कुवर रिसायनै कहियो—जु हाथी तो न द्यो छो, पण म्हारो नाम मालदे छै। मेहतै री ठोड मूळा वुहाऊ तो मालदे। ताहरा राव गागैजी कहाडियो वीरमदेजी नू—जु थे ओ कांसू कियो, जितरै हू जीवू तितरै तो थे म्हारै परमेश्वर छो, पण हू पुहतो न! ताहारा मालदे थां सू भूडो छै, थानु दुख देसी।
—नैणसी

११ अकीर्तिकर, निंदनीय।

उ०—जद स्वामीजी वोल्या रजपूत रो वेटो सग्राम करता न्हास जावै ते सूर किम कहीये। तिण ने राजा पटो किम खावा दै। लोकीक मे श्रावरू किम रहै। भूडो दीसै। ज्यू भगवत रा साधु वाजै नै कारण पडिया असूभतो दिया अल्प पाप बहुत निरजरा कहै असूझता री थाप करै ते इहलोक मे भूडा दीसै।—भि द्र

१२ निम्न स्तर वाला।

उ०—जै रुपिया द्यां तो जाट गूजर कहावा। हाडोती मे भूडा दीसां। न द्या तो मारीजा।—नैणसी

क्रि० प्र०—दीखणो, लागणो।

मुहा०—भूंडो दिखाणो=नीचा दिखाना। भूंडो लगाणो=बदनाम करना। भूंडो बाजणो, भूंडो लागणो=बदनाम होना।

१३ जो घृणा करने योग्य हो, घृणित, गंदा, हेय।

स० पु०—१ निंदायुक्त कविता।

उ०—भला हता जद भूंडां कहता, भूंडा रा काई भूंडा। भला भूंडा री वरत राखता, सरग गया वै मूंडा।

—सादूळ जी वोगसो (सरवडी)

२ अहित कामना सूचक कविता।

रू० भे०—भाडो भुडु।

अल्पा०—भूंडोडो।

मह०—भुंडो।

भूंण-स० पु० [स० भ्रमण] काष्ठ या धातु निर्मित एक गोलाकार बडा चक्र जो कुए से पानी निकालते समय चडस की रस्सी के चलने मे सहायक होता है।

रू० भे०—भवण, भमण, भवण, भूण।

अल्पा०—भमणियो मूणियो, भूंणियो।

भूंणकमळो, भूंणमयो-स० पु०—ऊट। (डि को)

रू० भे०—भुणकमळो, भूणकमळो।

भूंणियो—देखो 'भूंण' (अल्पा, रू भे)

भूंथरा-स० पु०—उलझे या बिखरे हुए सिर के बाल।

भूंवाड़ो—देखो 'भूंभाडो' (रू भे)

भूंवावळी—देखो 'भुईंवावळी' (रू भे)

भूंभ-स० स्त्री०—मस्ती।

उ०—भड खळा भडा ऊतरै भूंभ, कुजर कढ्ढत गूढत कूंभ। तेगा तमच्छ तूटंति तोव, भणरणक हुलां सावळा भोव।

—गु रू ब

भूंभलिया-स० पु०—पड़िहार वश की एक शाखा।

भूंभाडो-स० पु० [अनु०] १ भू-भू रोने की तेज ध्वनि।

२ तेज आंधी।

उ०—करकर हू भाडा सासण किचलावै, वाजै भूंभाडा वासण विचलावै। चमकैला डागळ गोडा चिक चिकता, जंतू जळ रिकता सिकता मे सिकता।—ऊ का

रू० भे०—भूंयाड़ो।

भूं-भूंकार-स० स्त्री० [अनु०] भूंकार यानि गधे के रेंकने की आवाज।

भूंय—देखो 'भाय' (रू भे)

उ०—तरै देवराज कामदार नू कह्यो—'ओ वडो मुहतो वडै दरबार रो परधान इतरा राईतन छोडनै मांनू जाण नै इतरी भूंय आयो, तो इण री जरूर भरय सारणो।—नैणसी

उ०—२ छळ करि दोन्यू असवार कि, चाकर नें घणी रे। जाता नवि जाणें कोइ कि, गया तें भूंय घणी रे।—प च चौ

भूंयास-स० पु० [स० भून्यास] १ किसी पदार्थ के एक छोर को भूमि मे इस प्रकार दबाकर जमाना कि उसका कुछ अश भूमि के अन्दर गड जाय।

२ किसी चीज का वह अश जो इस प्रकार जमीन मे गड़ा या धसा हुआ हो।

३ देखो 'भुवास (रू भे)

भूंरो—१ देखो 'भवारो' (रू भे) (वरदा)

२ देखो 'भ्रमर' (अल्पा, रू भे)

उ०—हग्गा वीर मेरा रै, मारुगी वादस्याने गळ घोट। जामण का रै जाया, भूंरा कटवावू रै जां री धामटी—लो गी

भूंवणो, भूंवबो—देखो 'भवणो, भवबो' (रू भे)

उ०—सुणता ही लोगां रा होठ सूक जावै अर सुणता ही माथो भूंवण लाग जावै —दमदोस

भूंवणहार, हारो (हारी), भूंवणियो—वि०।

भूंविओडो, भूंवियोडो भूंव्योडो—भू० का० कृ०।

भूंवीजणो, भूंवीजबो—भाव वा०।

भूंवारो—१ देखो 'भवारो' (रू भे)

२ देखो 'भ्रू' (रू भे)

भूंवाळी—देखो 'भवळ' (रू भे)

उ०—१ भूख-तिस तथा नीद भोगता थका चकडूंडियै दांई भूंवाळी खावता रै'ता।—दमदोस

उ०—२ कठ माथां पड रै'या, माथो भूंवाळी खा रै'यो हो। ठाकरांनै देख'र जमी माथै हाथ दे'र बैठगी।—दमदोस

भूंविदेवता-स० पु०—स्वर्ग।

भूंवियोड़ो-भू० का० कृ०—देखो 'भवियोडो' (रू भे)

(स्त्री० भूंवियोडी)

भूंसणो, भूंसबो—देखो 'भुसणो, भुसबो' (रू भे)

उ०—कुत्ती घणी भूंसे। घणो इ कह्यो हे कुत्ती। साधां ने मत भूंस।—भि द्र

भूंसणहार, हारो (हारी), भूंसणियो—वि०।

भूंसिओडो, भूंसियोडो, भूंस्योडो—भू० का० कृ०।

भूंसीजणो, भूंसीजबो—भाव वा०।

भूंह—देखो 'भ्रू' (रू भे)

उ०—१ चख चोळ मूछ भूंह चढी, तामस उठी तमोगुणी। मेह री गाज जाणे मरद, सारदूळ कानां सुणी।—मे म

उ०—२ रोस नयन मुख रक्त, मूछ भूंह नि मग चढ्ढिय। कर कढ्ढिय किरवान, कुवत मुखतै खळ कढ्ढिय।—ला रा

भूंहर-स० स्त्री०—आकाश मे छाया हुआ धूम, कुहरा या रजकण जिससे आकाश स्पष्ट नही दिखाई देता।

भूंहरियो—देखो 'भूंहरो' (अल्पा, रू भे)

उ०—धूड धमाखा से भरी, ज्यू भूंहरियो भांण। ओपै अग आदीत सो, उदयागिर परवाण।—जसमा ओडणी री वात

भूहरौ-वि० (स्त्री० भूहरी) १ धूलि से आच्छादित, धुमिल।

उ०—महराण कमध दूजौ 'गजण' कोपियौ, पिसण घड वरण पड घसण पासै। भेद रज गयण तन वरण थय भूहरौ। भेद रत घरण अहि अरण भासै।—कविराजा करणीदान

२ देखो 'भवारौ' (रू भे)

उ०—प्रगटघउ खरउ भूहरौ, तिण माहि प्रतिमा अति भली। जेठ सुद इग्यारस सोल वासठ, विंव प्रगटघउ मन रा वली।—स कु

३ देखो 'भ्रू' (रू भे)

भूहार, भूहारौ—१ देखो 'भ्रू' (रू भे)

उ०—१ मुख मूछ अणी भूहार मिळ, अरण वदन छक ऊफणै। ध्रजराज उपासक जिण वखत, दीठा (हिज) आवै देखणै।—सू प्र

उ०—२ साम धरम कुळ धरम सभारै, आच 'गजैसी' खडग उभारै। ऊफणियौ असमान अवारै, मिळिया मूछ अणी भूहारै।

—गु रू व

२ देखो भवारौ' (रू भे)

भू-स० स्त्री० [स० भू] १ भूमि, पृथ्वी। (अ मा, डिं को)

उ०—प्रव प्रव 'जोध' प्रसण पडियाळग, निहसता रण भड निवड। लगै जिका वापीकी लाधी, भू भाजेवा प्रसण भड।

—महम्मदजी वारहठ

२ ससार, जगत।

उ०—वाना अग धारणा भू जाहरा करेगो वाता, उघरेगो हाथा दत वारणा उवाड। उच्छाहा भरेगो त्याग धारगा खरेगो अग, वारगा वरेगो 'चैन' लोहड़ा वजाड।—सूरजमल मिसण

स० पु० [स० भू] ३ विष्णु। ४ राजा, नृप। ५ भूपण।

६ साधु, महात्मा। (एका)

७ पानी, जल। (ना डि को)

उ०—वाळक वरळावै आग्वा अभिलाखै, भू-भू वू-वू विन भाखा नहि भाखै। सूपं सीरावण व्याळू ले वासै, वेळा व्याळू री सीरावण सासै।—ऊ का

८ एक की सख्या। (डि को)

९ देखो 'भ्रू' (रू भे)

रू० भे०—भुअ, भुव, भूअ।

भूअ—देखो 'भू' (१), (५) (रू भे)

उ०—जुग जुग मे जगदीस, धरे अवतार नरायण। भूअ चो भार उतार, फेर तप साध परायण।—गजउद्धार

भूअडड—देखो 'भुजडड' (रू भे)

उ०—१ खाडै-राव सिरै नव-खडा, मारू तौ सिर भारथ मडा। भारथ भळायो तौ भूअडडां, मांडे तू थामा व्रहमडा।—गु रू व

उ०—२ भागेसुर वासु रहि जडण रिणवड ही जोडै। फतैखान सारिखा म्लेछ भूअडड मरोडै।—राव मालदे री वात

भूअणतरि-स० पु० [स० भवन+अन्तर] आकाश।

उ०—मत्रीसर वली मोकलिउ, 'मिलज्यौ देई मान'। परवानइ परखिउ असिउ, भूअणतरि जिम भानु।—मा का प्र.

भूअपति, भूअपती, भूअपत्ती—देखो 'भूपति' (रू भे)

भूअवळां—देखो 'भुजव्वळ' (रू भे)

उ०—रिमराह तियार वधै रणवट्टा, 'खेम' समोभ्रमि रोकि खळा। रुकै रिमराह वहादर राजै, भार ग्रहै निय भूअवळां।—गु रू व

भूआ-स० स्त्री० [स० पुप्पा, पुप्फा, पुवपा, भुआ, वुआ] पिता की वहिन।

उ०—ऊठ भूआ कर आरती आरतडी ए वाई थारोडी नेग। कही देसौ आरती वीरा कही म्हौ आरतडी रौ नेग।—लो गी

मुहा०—भूआजी फिरणी, भूआजी वोलणी=निर्धनता या टोटा होना।

रू० भे०—भुआ, भुवा, वुवा।

भूआऊ-स० स्त्री०—पृथ्वीकाय।

उ०—वावीस सात तीन दस वरस सहस्सें आय। भूआऊ वाऊ वणती दिन तेऊ काय।—वृ हस्त

भूआडो-स० पु०—पिता की वहिन का पति।

रू० भे०—भूंडो।

भूआळ—देखो 'भूपाल' (रू भे)

भूआसासू-स० स्त्री०—ससुर की वहिन, पति या पत्नी के पिता की वहिन।

रू० भे०—भुआसासू, भूआरसासू, भुवासासू, भूवासासू।

भूआसुसरौ—पति या पत्नी के भूआ का पति।

रू० भे०—भूवासुसरौ।

भूइ—देखो 'भूमि' (रू भे)

उ०—जूनउ गढ गिरनार वुलीउ, काछ तणी भूइ चापी। काथगेहडी अनइ पारकर, ठट्ठ थरहर कापी।—का दे प्र

भूइवावळी—देखो 'भूईवावळी' (रू भे)

भूकत, भूकथ-स० पु० यौ० [स० भू+कत] नृप, राजा। (डि को)

भूकप-स० पु० [स०]किन्ही प्राकृतिक कारणो से पृथ्वी मे होने वाला क्षणिक कपन जिसके कारण कभी-कभी जमीन फट जाती है एवं जल की जगह स्थल तथा स्थल की जगह जल हो जाता है, भूचाल।

भूक-स० पु०—१ नाश, सहार।

उ०—१ लसियो सुत 'गजण 'पाल' सुत लहियो, भारथि भडा घडां करि भूक। रूक सरिस वहता गौ राजा, रावत रह्यौ वाहतौ रूक।—विठळदास चापावत रौ गीत

उ०—२ भिडै वक्र उजळ मूछ मुहार, उभै ससि वीज तणौ उणहार। भिडै खग 'रैण' करै खळ भूक, 'रैणायर' ऊपर वाजत रूक।—सू प्र

उ०—३ ग्रीव पडै सिर गुडै, भडा घड पडै भिडज्जा। कोट पडै कगुरां, भूक हुय पडै भिडज्जा।—सू प्र

२ देखो 'भूको' (रू भे)
३ देखो 'भूख' (रू भे)

भूफण—१ देखो 'भूकण' (रू भे) (अ मा)
२ देखो 'भूसण' (रू भे)

उ०—थावरा जगमा माहा तीरत थयो, अह नरा सुरा सुजस गम आरो। अथी मेवडो भूफण वर्ण केलपुर, थुरह धन दुख महण थारो।—महाराणा राजसिंघ री गीत

भूफणो, भूफवो—देखो 'भूकणो, भूकवो' (रू भे)

उ०—१ गरधव-वत गावै डर डमगावै, हरखावै हूकदा है। बिन तप व्रत वसिया कद्रप कसिया, भग रमिया भूफवा है।—ऊ का

उ०—२ दिली लखै दिगदाह, विगत हित माह विचारी। खर भूकै रव खंग, स्वान कूकै सुखहारी।—रा रू

भूफणहार, हारौ (हारी), भूफणियौ—वि०।
भूफिओडो, भूफियोडो, भूफ्योड़ो—भू० का० कृ०।
भूफीजणो, भुफीजवो—भाव वा०।

भूकाक-स० पु०—एक प्रकार छोटा बाज पक्षी।

भूफियोडो—देखो 'भूकियोडो' (रू भे)
(स्त्री० भूकियोडी)

भूफि देखो 'भूको' (अल्पा, रू भे)

उ०—पुळियो निज पाए लुळुघि लगाए, जाय जु हारि घणी जगत्त। अधिको धन आवै असुभ उथापै, भूकि किओ दाळिद भगत्त।
—पि प्र

भूफियौ—देखो 'भूखो' (अल्पा, रू भे)

उ०—भाग रो धणी सोभाग रो भूफियो, खाग रो खाटियो बाट खावै। वेहू राहां विचै तीन वादै 'बलू', वीभरै खेत नीसाण वावै।—बलू चापावत री गीत

भूफी—देखो 'भूको' (अल्पा, रू भे)

भूफोहली—एक कन्द विशेष।

उ०—भसम भराडी भमरिया, चोलहिरा चांडाळ। भूफोहली भूवतरी, कद मकद विसाळ।—मा का प्र

भूफोडो—१ देखो 'भूखो' (अल्पा, रू भे)

उ०—वादां रै आडा वहै, सौदा मिळनै संग। भूफोडा ममता फिरै, लाडू खावै लैंग।—ऊ का

भूफो-स० पु०—१ महीनतम-चूर्ण, चूर्ण।
२ सुक्ष्म टुकडों का ढेर।
३ नाश, सहार।
४ महीन पीसी हुई बुकनी।
५ देखो 'भूखो' (रू भे)
अल्पा०—भुकि, भूकी।

उ०—भूकां पोसणहार यू, ज्यू जग कमळाकत। नागां ढांकणहार हग, जिम तरवरा वसत।—बां दा

भूखड-स० पु० [स०] १ पृथ्वी का एक भाग।
२ नौ की सख्या। ☆

भूखडियौ-स० पु०—छत्तीस प्रकार के शस्त्रों मे से एक। (अ मा)

भूख-स० स्त्री० [स० बुभुक्षा] १ शरीर के स्वाभाविक वेगों में से एक वेग जिसमे खाने की प्रबल इच्छा होती है।

उ०—१ दिन ऊगै नित देखणो, दाता रो दीदार। भागै भूख कळेस भय, 'बक' न लागै वार।—बां दा

उ०—२ राजा मन खटकै घणू, ऊमा अहनिसि जेह। भूख गई तिम वीसरी, नवि दीठा रो नेह।—ढो मा

मुहा०—१ भूख मरणी=वह अवस्था जब भूख लगकर बाद में कुछ भी खाने की इच्छा न हो। २ भूख लागणी=कुछ खाने की इच्छा होना। ३ भूखां मरणो=भोजन के अभाव में व्याकुल होना।
२ कमी, टोटा।

उ०—तद इस्टूखा कै'वण लागो इण धरती माथै म्हनै सबसे घणी भूख दिल्ली रा पातसाह रै दीखै।—फुलवाडी

मुहा०—भूखा मरणो—अभाव ग्रस्त स्थिति होना।
३ अभिलाषा, कामना।

उ०—१ लाखू मण धान निपजाय नै ई उण री भूख नीं मिटी तो म्हा भोळा जीवा नै मारया उण रो काई साधो लागैला।
—फुलवाडी

उ०—२ तद इस्टूखा कह्यो—जैसलमेर दरबार रै खजानै लूटा-खोसी री सपत अणूती है तो ई वांरो मन नी भरयो। औ मातू सिंघासण वानै म्हारा नांम सू निजर कर दीजो। भूख री अण-गिण माया रै भेळी आ माया ई पडी रै'वैला।—फुलवाडी
३ आवश्यकता, जरूरत।
४ दरिद्रता, कगाली।

ज्यू—उण रै लाइ रै भूख वापरगी।

रू० भे०—भुख्ख, भूक, भूखि।

भूखण—देखो 'भूसण' (रू भे) (अ मा)

उ०—१ सो थिर राखण काज, क भूखण साजिया। जडिया रच्छया जत्र, मनोज मुनी दिया।—बां दा

उ०—२ भडां-सोह-भूखण गोपि भ्रतार, विसभ्र व्रदावन-लील-विहार। नमो ब्रह्म-केवळ राखण अज्ज, नमो अच्युतानद गोविंद अज्ज।—ह र

उ०—३ राग खट तीस धुनि व्यग, भूखण सुरस पात पद। जिकै विण समझ चहूळ पखी जिही, जे न रघुनाथ चो नांम जाणै।
—र ज प्र.

उ०—४ राजसभा के भूखण दिल के उदार। विरदू के भारे समसेर वहादुरू के समसेरू के चितारे।—सू प्र.

उ०—५ रयणी भूखण चदो, आकास भूखणी भाणी । भूखण भूतळ इदी, भूखण साह फौज 'गजसिघो' ।—गु रू व

भूखणौ, भूखवौ—देखो 'भूकणौ, भूकवौ' (रू भे)

भूखणहार, हारौ (हारी), भूखणियौ— वि० ।

भूखिओड़ौ, भूखियोड़ौ, भूख्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

भूखीजणौ, भूखीजवौ—भाव वा० ।

भूखळमेर-स० पु०—जैसलमेर का व्यग्यात्मक नाम ।

भूखांण—देखो 'भूसण' (रू भे)

उ०—राण दळ पलटतां सुथर 'झालो' रहे, भाण अम रोक आरांण भाळै । राज रै कठ भूखांण उण चौसरा, रभ चोसरन को सीस राळै ।—कल्याणसिंह झालै री गीत

भूखाळ—देखो 'भूखौ' (मह , रू भे)

उ०—इक पड़ै रीठ गोळा अतर, देखि रूठा कमधज राडिया । भूखाळ वधै जिम देखि भख, आया वागा उपाडिया ।—सू प्र

भूखाळुओ, भूखाळुवौ, भूखाळू, भूखाळौ—देखो 'भूखौ' (अल्पा , रू भे)

उ०—माभी मेर अभग भड, मारू अमन्नी-माण । गिळण गढा भूखाळुओ, ओवासै जमराण ।—गु रू व

भूखि—देखो 'भूख' (रू भे)

उ०—हसवाणी रिदि आणी प्राणी परवसि थ्यु घणू । भूखि भागि प्रीति लागी, जागी तु मन सणमणू ।—नळाख्यान

भूखियोड़ौ—देखो 'भूकियोड़ौ' (रू भे)

(स्त्री० भूखियोड़ी)

भूखियौ—देखो 'भूखौ' (अल्पा , रू भे)

उ०—१ परमेसर तू असत पाणी, सत भूखियां साक रसाळ । गूगा वाच तू हीज गिरधारी, वेडौ तू हीज अलख विसाळ ।

—ओपो आढौ

उ०—२ तेथ फिरे रडवडे थकित, हुओ पथ हूलो । लाघणियौ भूखियौ, सीह किरि डाणा हूलो ।—गु रू व

उ०—३ तरै चारण कह्यौ—'म्है भूखिया नै माहरै बेटी जरूर परणावणी, वे ठाकुर आज म्हानु निवळा देखे छै तौ म्है ओल पिण देस्यां ।—नैणसी

भूखौ-वि० [स० बुभुक्षित] (स्त्री० भूखी) भूख से पीड़ित भूखा

उ०—१ मुह न दियै पर मागियै, केहर कठण प्रवध । भूखौ थाहर मै सुऐ, कै गाहै गज गध ।—बा दा

उ०—२ सक्रम सुभ सस्टी द्रस्टी लुभ देती, लपुट सपुट लख घूघट पट लेती । लुळकर लकुटीले भ्रकुटी सळ लाती, भूखी बाघण सी भ्रकुटी भळकाती ।—ऊ का

२ दीन, गरीब ।

उ०—पीहर पतळा रा सैंणा रा प्यारा, तारक तूटा रा नैणा रा तारा । सीरी सिटिया रा सुल्हा रा सारा, मीडी भूखा रा फूला रा भारा ।—ऊ का

३ अभिलाषी, इच्छुक ।

उ०—१ व्याव री भूखौ गयौ तो ज्यू भीटियौ कह्यौ—त्यू ईं करियौ । आत्या आडी पाटी वाव नै उण रै लारै टुरग्यौ ।

—फुलवाड़ी

उ०—२ जवानी री भूखौ वकरौ सेवट आपरौ जीव गमायौ ।

—फुलवाड़ी

४ कृपण, कजूस ।

५ निधन, कगाल ।

उ०—वै आज धनवान है, पीसै रा धणी है अर वारै च्यारा पासै अडधू चालै है । म्हैं ले'णै सू कळीज्योडो एक टोटैरो टूर, घाटायत अर भूखौ फकीर हू ।—दसदोख

रू० भे०—भुकौ, भुखौ, भूकौ ।

अल्पा०—भुकियौ, भुखाळु भुख्याळवौ, भूकियौ, भूखाळवौ, भूखाळुओ, भूखाळौ, भूखियौ, भूख्याळवौ, भूख्याळौ ।

मह०—भुक्खड, भूखाळ ।

भूख्याळवौ, भूख्याळौ—देखो 'भूखौ' (अल्पा , रू भे)

भूगणौ, भूगवौ-क्रि० अ०—१ भग्न होना, खडित होना, टूटना ।

उ०—आलम दक्खण गयो उताळौ, वढो सोच उर वधव वाळौ । भोम गई सांभर सुण भूगौ, परहस लीधा दक्खण पूगौ ।—रा रू

२ दुखित होना ।

भूगणहार, हारौ (हारी), भूगणियौ—वि० ।

भूगिओड़ौ' भूगियोड़ौ, भूग्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

भूगीजणौ, भूगीजवौ—भाव वा० ।

भूगरभ-स० पु० यौ० [स० भू+गर्भ] १ धरती का भीतरी भाग ।

२ विष्णु ।

३ सस्कृत के महान् कवि भवभूति का नामान्तर ।

भूगरभसास्तर-स० पु० [स० भूगर्भशास्त्र] पृथ्वी के सघटन एव उसके ऊपरी व भीतरी तत्त्वो के विवेचन का शास्त्र ।

भूगळ—देखो 'भूगळ' (रू भे)

उ०—चौरी चढीयौ भोज की, वाजइ वरगू भूगळ भेर । हुवउ खघारउ रावळइ, धार कउ द्विज चाल्यौ अजमेर ।—वी दे

भूगियोड़ौ-भू० का कृ०—भग्न, खडित, टूटा हुआ

(स्त्री० भूगियोड़ी)

भूगोळ, भूगोल-स० पु०—१ पृथ्वी, धरती । (हि को)

उ०—भजण जाय भूगोळ मन उठा लग भर्म नह, नर्म नह जटा लग सास नाकी, छपी वडवा अगन लाय सौ छोकरो, डोकरो वडो आकाय डाकी ।—फतैसिंघ बारहठ

२ वह शास्त्र या विद्या जिससे पृथ्वी के बाह्य एव प्राकृतिक विभागो, जैसे पहाड, नदिया, उद्योग, खनिज आदि बातो की जानकारी होती है ।

रू० भे०—भुगोळ।

भूगोळक-स० पु० [स० भूगोल+क] भूमण्डल।

उ०—भमिया भूगोळक नभ गोळक भाई, कविजण करुणा रस अलमिति अधिकाई। सूका सरवरिया तरवरिया मूका, च्यार वरणाश्रम भय भ्रम क्रम चूका।—ऊ का

भूंडो—देखो भूआडो' (रू भे)

भूचकणो, भूचकबो-क्रि० अ०—१ डगमगाना, डावाडोल होना।

उ०—महाक्रोधगी गनीमा हुता हुचके नरिंद्र 'माधो', भूलोक भूचकै वाघो लचके कोम भार। वोमगी अरावा भाळ वेताळ वभकै वकै, वाजद्रा 'बहादरेस' हुके तेण वार।—हुकमीचद खिडियो

२ कपित होना धडकना।

उ०—सगा सेला खगा ऊफेला सावळा, अरस गज भूचका धका आया। खागहारी किन्है रजवाट रा खटाऊ, थाट रा धणी मुह मेज थाया।—रामसिघ हाडा रो गीत

भूचकणहार, हारो (हारी), भूचकणियो—वि०।

भूचकिओडो, भूचकियोडो, भूचक्योडो—भू० का० कृ०।

भूचकीजणो, भूचकीजबो—भाव वा०।

भूचकियोडो-भू० का० कृ०—१ डगमगाया हुआ, टोला हुआ २ कपित हुवा हुआ

(स्त्री० भूचकियोडी)

भूचक्र-स पु० [स०] १ पृथ्वी की परिधि।

२ विपुवत् रेखा।

भूचर-स० पु० [स०] १ भूमि पर विचरण करने वाला।

उ०—१ पूर पियै भर जोगणी, भर पत्र उलट्टे। भिळिया खेचर भूचरा, मोटे मासट्टे।—द दा

उ०—२ हर अपच्छर रिख हूर, चड खेचर ग्रह भूचर। सिरवर कौतिग सुवर, रुधिर पळ घ्रत मिळ डवर।—सू प्र

[स० भूचर] २ शिव, महादेव।

३ भूत, पिशाच।

४ एक सिद्धि (तत्र)।

रू० भे०—भूचराद, भूचरू, भूचार, भूचारी।

५ देखो 'भाचर' (रू भे)

उ०—अेस ई काळ पडग्यो तो अै भाचरिया भूचरिया पाळणा दूभर व्हे जावैला।—फुलवाडी

भूचराद—देखो 'भूचर' (रू भे)

उ०—पसु मजाद भूचराद होव घात प्राणय। असख जात पखि वाण वेघजे उडाणय।—रा रू

भूचरी-स० स्त्री० [स०] योग शास्त्र के अनुसार समाधि अग की एक मुद्रा जिसके द्वारा प्राण और अपान वायु दोनो एकत्र हो जाते हैं।

भूचरू—देखो 'भूचर' (रू भे)

उ०—जो अम्हारु वयणु सुपोसिइ, निस्चि सो वरु मइ परणेसिइ। खेचर भूचरु भूमिधरो।—प प च

भूचरोत-स० पु०—गेहलोत वश के क्षत्रियो की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

उ०—२ चाचाग दिवरण नू भुयमाजळ माहजी मिवो। २ मेरो मातण रै पेट रा २, २ महिपो, २ भवरणगी, २ भूचर रा भूचरोत।—नैणसी

भूचार, भूचारी—देखो 'भूचर' (रू भे)

उ०—१ ग्रह गह ग्रीव गरूर, मग चाल मिळ दळ मूर। मिळ खेचर ये भूचार, रिण जाण चाले लार।—सि. सू रू

उ०—२ मछ कछ सुसुमार मगर गाहा जळ अच। चौपय उरपरि भुजपरि साप भूचारी तेय।—ध्र रतो.

भूचाळ-स० पु० [स० भूचाल] किन्ही प्राकृतिक कारणो से पृथ्वी मे होने वाला क्षणिक कपन जिसके कारण कभी-कभी जमीन फट जाती है एव जल की जगह थल तथा थल की जगह जल हो जाता है।

उ०—थडी करै जद आणो चहीजै, वस्ती मे भूचाळ। पालणै मे सोज्या पिरथीपाळ।—चेतमानखा

रू० भे०—भूचाळ।

भूछाय-स० पु०—अधेरा। (ह ना मा)

भूजणो-स० पु०—राग-द्वेप, मन मुटाव।

उ०—जेइ ले जगळ मू लावै, फोगा सू सुभ मूजणो। चिरच माथ सकर घी पावै, भूलै व्यावां भूजणो।—दमदेव

भूजणो, भूजबो—क्रोध करना, गुस्सा करना।

उ०—पेट नै भाठा मारतो थको लोगां रा घर भरावै है। घर हाळी पर भूजै दात भीचै। बापडी दाता मे लावण लिया रात दिन पाणी पीसणो करै।—दमदोख

भूजणहार, हारो (हारी), भूजणियो—वि०।

भूजिओडो, भूजियोडो, भूज्योडो—भू० का० कृ०।

भूजीजणो, भूजीजबो—भाव वा०।

भूजा-स० स्त्री० [स०] १ सीता, जानकी। (अ मा)

२ देखो 'भुजा' (रू भे.)

भूजाई—१ देखो 'भुजाई' (रू भे)

उ०—तठा उपरायत भोइया नै हुकम हुवो छै। भूजाई रा वासण तयार कर राती नाडी चालज्यो।—रा सा स.

२ देखो 'भोजाई' (रू भे)

भूज्ज-प्रव्य०—फिर, पुन।

भूझाळो—देखो 'मुजाळ' (अल्पा, रू भे)

भूटको-स० पु० [अनु०] वदूक छूटने से उत्पन्न होने वाली ध्वनि।

उ०—पछै राजाजी जोस मे हुकम दियो के इण बधियोड नार नै अठै ई भून न्हाको। हुकम मिळण रै समचै अेकण सागै चाळीस बदूका रा भूटका व्हिया।—फुलवाडी

भूटान—स० पु०—नेपाल के पास का एक प्रदेश।

रू० भे०—भुटत।

भूडड, भूडडह—देखो भुजडड' (रू भे)

उ०—१ धमळो वापूकारियो, वाळो है बलिवड। धुरि माथो धूणै नही, भरि ओडै भूडड।—गु रू व

उ०—२ दावै लागा जमी घणा हिये दूखिया दायणा दूठ, प्रवाडा अचूकिया ले भूडडां पाडीस। 'जुवारी' भोपाळ 'डूगो' दुहत्था भूखिया जगा, सेखा चाळै ढूकिया विरुत्था गौरां सीस।

—सकरदान सामोर

उ०—३ छडाळा ऊपाडि चाडि जैसिघ रा भडा छाती भूडडा वजाडि यू घपाडि चडा भाव। पाडि भडां छाकिया घूमाडि जाडा थडा पूर, राडि जीतो भाडि खडा धाडि मारू-राव।

—राजा वखतमिघ रो गीत

उ०—४ खिमै कूत अदभूत, भडा वाका भूडडै। वादळ वादळ वळकि, वीज लत्ता व्रहमडै—गु रू व

उ०—५ ताम भीम' ऊठियो, खाग धूणै भूडडह। जडै पाउ पायाळ, अडै मत्थो व्रहमडह।—गु रू व

उ०—६ पडियाळग पडे प्रिसेण पीध, 'सुरजन्न' समोभ्रम मानसिघ। ओडै भूडड व्रहमड ओट, 'चापावत' गुडै गयद चोट।—गु रू व

भूडोल—देखो 'भूकप।

भूडो—स० पु०—वालू रेत का टीला।

भूण—स० पु०—१ जल भ्रमण, जल विहार।

[स० भ्रूण] २ गर्भस्थ शिशु।

३ देखो 'भूण' (रू भे)

उ०—१ खूटा खडा, वळा डूचिया, हाला सू हळ ठाटिया। सिर-घर अर सैंतीर साळा, खूड भूण थग पाटिया।—दसदेव

उ०—वाचै विहद अरट री पनडी, भूण गिडगिडी गाजै। गोफण रा सरणाटा आगै, तोप वदूका लाजै।—चेतमानखा

भूणकमळो—देखो 'भूणकमळो' (रू भे)

भूणहत्या—स० स्त्री० [स० भ्रूण+हत्या] गर्भस्थ शिशु को गर्भ-पात द्वारा गिरवा देना।

भूणियो—देखो 'भूण' (अल्पा, रू भे)

भूत—स० पु० [स०] १ दार्शनिक दृष्टि से वे मुख्य तत्व या उपकरण जिनसे सृष्टि की रचना हुई है। द्रव्य, महाभूत।

वि० वि०—दार्शनिको ने पांच मूल भूत माने हैं जो इस प्रकार हैं—आकाश, पृथ्वी, जल, वायु और अग्नि। परतु आधुनिक वैज्ञानिको के अनुसार ये मूल भूत नही हैं क्योकि ये भी कई मूल भूत द्रव्यो के सयोग से वने हैं।

२ जीव, प्राणी।

उ०—आपी पै हूता सो तू आप, विसभर भूत-सरव्व वियाप। सबै कुछ जागा बैठो साह, मिनक्खा देवा नागा मांह।—ह र

३ सृष्टि का कोई जड या चेतन पदार्थ।

४ वीर भद्र।

उ०—जाजुळी धाराळ नारसिघ री सटा रो जायो, प्रळैकाळ घटा री छटा रो जायो पूत। रिमा घू उथाळो चडी रीस री रटा रो जायो, भाळो किना ईस री जटा रो जायो भूत।

—कविराजा सूरजमल्ल मीसण

५ भृगु ऋषि का पुत्र, एक महर्षि का नाम।

६ एक हैहयवशीय राजा।

७ भागवत के अनुसार वसुदेव एव पौरवी का पुत्र एक यादव राजा।

८ मृत शरीर, शव।

९ रुद्र द्वारा सती के उदर से उत्पन्न पिंगल, सनिषग, कपर्दी तथा नील लोहित वर्ण वाले प्राणी, एक प्राचीन भारतीय मानव जाति का समूह।

वि० वि०—शिव को भूतनाथ इसी लिए कहा है।

उ०—कजाकणि डाकणि काढि कळेज, जिमावत साकणि जूह अजेज। चुडावळी नूतत भूत पिसाच, अछै रण ताळ पखाळत आच।—मे म

(स्त्री० भूतण, भूतणी) १० लोक व्यवहार मे किसी मृत शरीर की आत्मा जिसे मोक्ष प्राप्त नही हुई हो, प्रेत, शैतान, जिन।

उ०—१ नैणा रा सोगन करै,भै मानै सुण भूत। रामत ढूला री रमै राडोली रा पूत।—बा दा

उ०—२ हाजी रा इण मकांन मे उणरो मोट्यार बेटो अर बहू जिणारै हाथा री मेदी ही को उतरी ही नी मर गया और दोनू अगति जाय नै भूत व्हैग्या।—रातवासो

उ०—३ पांणि मितरै, पावै, आकडे में लोटो ढुळावै, भूतणी काढै जमी मे वूरै जिद जरू करै, खेजडे मे कीलै।—दसदोख

क्रि० प्र०—आणो,उतरणो,काढणो, चढणो, निकालणो, लागणो।

वि० वि०—लोक मान्यता के अनुसार जिस मृत व्यक्ति की मोक्ष नही होती वह भूत बन जाता है और उसका यह रूप कभी २ लोगो को दिखाई भी देता है और अनेक प्रकार के उपद्रव भी करता है। यह भी माना जाता है कि कभी २ यह किसी व्यक्ति विशेष के शरीर मे अप्रत्यक्ष रूप से प्रवेश करके उसके मस्तिष्क पर पूर्ण अधिकार कर लेता है और उसके होशहवास विगाड देता है जिससे वह वकने लगता है और पागलो की सी हरकतें करने लग जाता है।

मुहा०—१ भूत उतरणो=आवेश समाप्त होना। २ भूत चढणो, भूतसवार होणो=आवेश मे आना, किसी धुन का सवार होना। ३ भूत मरै नै पलीत जागै=नया विघ्न उत्पन्न होना। ४ भूत

यणणी=भस्मीभूत होना, शरीर मैल युक्त होना, किसी कार्य करने के लिए पागलो की तरह पीछे पडना, दत्तचित्त से किसी कार्य मे लगना। ५ भूत जगाणों=तांत्रिक साधना द्वारा श्मशानो मे भूतो को बुलाना। ६ भूत लागणो=किसी को भूतादि बाहरी माया का असर हो जाना।

१० बीता हुआ समय या जमाना।

उ०—अकाल ग्यानदरसी निज भ्रम कू पहिचानै। भूत, भवरत, वरतमान जुगति सों जांणै।—सू प्र

११ व्याकरणो के अनुसार तीन कालो में से एक जो व्यतीत घटना का सूचक होता है।

ज्यू—मैं उठै काले गयो हो।

१२ राक्षस, असुर।

१३ पाच की सख्या।

वि०—१ जो घटित हो चुका हो, बीता हुआ।

२ जो किसी विशिष्ट अवस्था या रूप को प्राप्त हो चुका हो।

ज्यू—भस्मीभूत।

३ जो अस्तित्व मे आ चुका हो, बना हुआ।

४ समय के अनुसार व्यतीत हुवा हुआ, पुराना।

ज्यू—भूतपूर्व मत्री, भूतकाळ।

रू० भे०—भूतक।

अल्पा०—भूतडियो, भूतडो।

भूतअतक—स० पु० [स०] यमराज, धर्मराज।

भूतआत्मक—वि० [स०[पच तत्वो का बना हुआ शरीर।

भूतआवास—स० पु० [स० भूतआवास] शिव।

भूतक—स० पु० [स०] १ पुराणानुसार सुमेरु पर के २१ लोको में से एक।

२ देखो 'भूत' (रू भे)

भूतकळा—स० स्त्री० [स० भूतकला] पचभूतो को उत्पन्न करने वाली एक प्रकार की शक्ति।

भूतकाळ—स० पु०—बिता हुआ समय।

भूतकाळिक—वि० [सं० भूतकालिक] जो बीते हुए समय मे हुआ हो या उससे सबध रखता हो, भूतकाल सबधी।

भूतकाळिकक्रदत स० पु० [स० भूतकालिक कृदत] क्रिया से बना हुआ भूतकाल सूचक विशेषण रूप।

भूतक्रदत—स० पु० [स० भूतकृदत] क्रिया का वह रूप जिस से यह सूचित होता हो कि क्रिया भूतकाल मे समाप्त या पूरी हो चुकी है (व्याकरण)

ज्यू—आणो क्रिया का भूत कृदत 'आयो' है। पढणों क्रिया का भूतकृदंत पढियो है।

भूतखांनो—स० पु० [स० भूत+फा० खाना=घर] बहुत मैला कुचैला या अधेरे वाला स्थान जिसे देखने से भूतो के आवास का सा आभास होता है।

भूतगण—स० पु० [सं०] शिव के अनुचरो का समूह।

भूतघ्न—सं० पु० [स०] १ ऊट।

२ भोजपत्र।

३ लहसुन।

रू० भे०—भूतहन।

भूतडियो—स० पु०—१ एक प्रकार का रग विशेष का घोडा।

उ०—हरणा मेघ बागळ बोदळिया, भूतडिया मलीया भलीया। अट आरीयै सम बादलिया द्रम, मारवीया पटीया मलीय।
—किसनजी पधवाडियो

२ देखो 'भूत' (अल्पा, रू भे)

भूतडो—देखो 'भूत' (अल्पा, रू भे)

उ०—१ डाकण साकण भूतडा ए, यक्ष राक्षस महाघोर के। दयावत ऊपरे ए, केहनो न चाले जोर ए।—जयवाणी

उ०—२ कूमर चल्यो सामो जवे, काढी खडग मुख बोल वै। वल समाय रे भूतडा, मांरु वाजत ढोल वै।—रिसालू री वारता

भूतचतुरदसी—स० स्त्री० [स० भूतचतुर्दशी] कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी।

भूतचारी—स० पु० [स०] शिव, महादेव।

भूतजग—सं० पु० यौ० [स० भूतयज्ञ] १ वह यज्ञ जिसमे भूत व पिशाचो को बलि दी जाय।

२ गृहस्थ के लिए पच यज्ञो मे से एक यज्ञ जिसमे वह समस्त जीवो को आहुति देता है।

भूतजूण, भूतजोणी—स० स्त्री० [स० भूतयोनि[१ प्रेतयोनि।

२ परमेश्वर।

भूतदमन—स० पु०—पुरुषो की ७२ कलाओ मे से एक। (व व.)

भूतधांम—सं० पु० यौ० [स० भूत+धामन] १ श्मशान भूमि, मरघट।

२ पुराणानुसार इन्द्र का एक पुत्र।

भूतनाथ—स० पु० [स०] शिव, महादेव। (डिं को)

उ०—सालो सोमाडा खोयणा आलो भाण रो करोठी सोहै, दकानो काळ रो भैरवाण रो डचाक। विलाला पाण रो दूत नाथ री हाक वाळो, भालो खीरांण रो भूतनाथ रो भचाक।
—सुरजमल्ल मीसण

भूतनायक—सं० पु० [स०] महादेव, शिव।

भूतनायका, भूतनायिका—स० स्त्री० [स० भूततायिक] दुर्गा, देवी।

भूतप—देखो 'भूतपति' (रू भे)

उ०—पती-सीत भूतप परकासो, वासी सिव उर वास विसेस। आपी तसां लक आसत अत, नरा सत्र हण नमो नरेस।—र. ज. प्र.

भूतपक्ष, भूतपख—स० पु० [स० भूतपक्ष] कृष्ण-पक्ष।

भूतपत, भूतपति–स० पु० यौ० [स० भूत+पति] १ शिव, महादेव। (डिं को)

२ ईश्वर।

रू० भे०—भूतप, भूतापति।

भूतपाळ–स० पु० यौ० [स० भूत+पालनम्] १ प्राणियो का पालन करने वाला, विष्णु।

२ शिव, महादेव।

भूतपूनम, भूतपून्यू–स० स्त्री० [भूतपूर्णिमा] आश्विन मास की पूर्णिमा।

भूतपूरव–वि० [स० भूत पूर्वं] वर्तमान से पहले का।

भूतभायखा—देखो 'भूतभासा' (रू भे)

भूतभावन–स० पु० [स० भूतभावन] १ परब्रह्म।

२ विष्णु।

भूतभासा–स०स्त्री० यौ० [स० भूतभाषा] एक प्रकार की प्राकृत भाषा, पैशाची भाषा।

रू० भे०—भूतभायखा।

भूतमिळग–वि०—मस्त, उन्मत्त।

भूतभैरव–स० पु० [स०] भैरव की एक मूर्ति का नाम।

भूतम–स० पु० [स० भूतमम्] स्वर्ण, सुवर्ण, सोना। (डिं को)

भूतमात्रा–स० स्त्री० [स०] साख्य के अनुसार पचभूत का आदि, अमिश्र एव सूक्ष्म रूप। ये पाच हैं—शब्द, स्पर्श,रूप, रस और गध।

भूतराज, भूतराट–सं० पु० यौ० [स० भूत+राट्] शिव, महादेव।

उ०—चडी छाक ले आंमखा गूद कोण चीलां रजां चले। घू काज दाकले गणा भूतराट धीग। पैराक चमूरां केक ऐराक छाक ले पूरी। साकुरां हाकले उमी वेळा उदैसीग।

—उदैसिघ चहुवाण रो गीत

भूतळ, भूतळि, भूतलि–स० पु० [स० भूतल] १ पृथ्वी, धरातल।

उ०—१ मदायण तो माग, पग देतां पुरखा तणा भूतळ। जागै भाग, अघ भागै खिण एक में।—बा दा

उ०—२ हेरै हरियाळो भूतळ हरखाती, गहरो ऊचे गळ हरियाळो गाती। धिन घण छकि जाती छाती लख छाती, जाफर झण-काती जाती मदमाती।—ऊ का

उ०—३ ऊपरिथा पूतार विछूटइ, भूतळि भाजइ पाउ। वाढी सूढि ढोलीइ ढाचा, धरिण वलइ नीहाउ —कां दे प्र

२ ससार, दुनिया।

३ भूमि तल, पाताल।

भूतळेस–स० पु० [स० भूतल+ईश] शिव, महादेव।

उ०—मैमता विभाड रथ्थी प्राहां रगा भाराथ में, महा बकी वार पांव अचल्लां मांडीस। वारुवार भूतळेस लै रुड्हार भार बणै, प्रथीनाथ जही वार झाटकै पाडीस।—भगतरांम हाडा रो गीत

भूतवास–स० पु० [स० भूतवास] १ शिव, महादेव।

२ विष्णु।

३ भूतो का निवास स्थान, श्मशान भूमि।

भूतवाहन–स० पु० [स०] शिव, महादेव।

वि०—भूतो पर सवारी करने वाला।

भूतविद्या–स० स्त्री० [स०] भूत-प्रेतो को बुलाने, बात करने एवं दूर करने की विद्या।

भूतहन—देखो 'भूतघ्न' (१) (रू. भे) (डि को.)

भूताण–स० पु०—१ देखो 'भाथो' (रू भे)

उ०—जीण परवर असि जडै, जडै असुरा जरदाळा। कसि जमदढ खग कसै, कसै भूतांण कराळा।—सू प्र

२ देखो 'भूत' (मह, रू भे)

भूतांपति—देखो 'भूतपति' (रू भे) (डि. को)

भूतात्मा–स० पु० यौ० [स० भूत+आत्मा] १ शरीर।

२ जीवात्मा।

२ शिव, महादेव।

४ परमेश्वर।

भूताधिपति–स० पु० यौ० [स० भूत+अधिपति] महादेव, शिव।

भूतापि–स० पु०—परमेश्वर।

भूतायत–स० पु०—शिव महादेव।

उ०—पाळवा ज्वाळा तु प्रकास, भूतायत भैरव तुही भ्यास। सीको तरसो मया तु सघीर,वैतां मास पावी कटवीर।—रांमदान लाळस

भूतार–स० पु० [स०] भूमि का उद्धार करने वाला, ईश्वर, परमेश्वर।

उ०—सुरां रूप अमूप ससार साधार, भुजां भामणां तास दातार भूतार। गहगीर गोविंद गोपाळ गमीर, हरी नाम विच्चारि उच्चारि 'हमीर'।—पिं प्र

भूतारण—देखो 'भाथो' (मह, रू भे)

उ०—भूतारण भिडिया पूरजै ग्रीधण पक्खा। नडा भीड नायका दीध टकार धनखां।—पा प्र.

२ भूत-प्रेत।

[स० भू+तारण] भूमि का उद्धार करने वाल, परमेश्वर।

भूतावळ, भूतावळि,भूतावळी–स० पु० यौ० [स० भूत+अवलि] १ भूत-प्रेतो का समूह, प्रेत-मडली।

उ०—जिण री वहै जोस मे, भूतावळ भेटो। कुण जांणै वावै कवण, पावै कुण पेटो।—वी मा

२ कपोल कल्पित कथाएं, कुढापथियों की गोष्ठी।

उ०—भागवत कथा भूतावळी, हिरण दरस हींडोरचा। परवीण होय जाणै पुरस, मालजादा रा मोरचा।—ऊ का

भूतावास–स० पु०—१ ससार, जगत।

२ शरीर, देह।

३ विष्णु।

४ बहेड़ा। (डि को)

भूति-स० पु० [स०] १ शिव। २ विष्णु।
३ पितृगण।
४ बृहस्पति।
५ विश्वमित्र का एक पुत्र।
६ अगिरस् ऋषि का एक पुत्र, जो अत्यन्त क्रूर एव क्रोधी था।
७ एक यादव राजा जो वायु पुराण के अनुमार सात्यकि के पुत्रो मे से एक था।
८ राजा का एक मत्री।
९ ऐश्वर्य, वैभव।
१० धन सम्पत्ति।
११ सौभाग्य।
१२ जन्म, उत्पत्ति।
१३ घटित होने की दशा या भाव, अस्तित्व।
१४ गौरव, महिमा।
१५ वृद्धि।
१६ अधिकता, बाहुल्यता।
१७ वृद्धि नाम की औषधि।
१८ अणिमा, महिमा आदि आठ प्रकार की सिद्धिया।
१९ भूतृण।
२० सत्ता।
२१ लक्ष्मी।
२२ मुक्ति, मोक्ष।
२३ रगो आदि से हाथी के मस्तक पर बनाए जाने वाले वेल-बूटे।
२४ पकाया हुआ मास।
२५ रुसा नामक घास।
[सं० भू०] २६ सत्य। (ह ना. मा)

भूतियौ-स० पु०—मदार (आक) के फल के अन्दर का रूई जैसा पदार्थ।
मुहा०—भूतिया विखेरणा=नाश करना, मिटा देना, नष्ट करना।
रू० भे०—भुत्तियौ।

भूती—देखो 'भूति' (रू. भे)
उ०—चाल मजबूत ढग ढाल मजबूत कीनें, भाल मजबूत मजबूत भयो भूती मे।—ऊ का

भूतेळियौ—देखो 'वधूळौ' (रू भे)

भूतेस, भूतेसर-स० पु० [सं० भूत+ईश, ईश्वर] १ शिव, महादेव। (ना डि को, ह नां. मा)
उ०—१ करे तै (अण) ट्रक भूतेस को डड, वेटौ दसरत्थ तणौ वळवड। आयो रिख कोप सवंत अगार, तजै वळ चाप कियौ दुज तार।—ह र
उ०—२ रिखय मख कर रखवाळ, तारी रिख घरण चरण रज हूता। राख जनक पण रघुवर, भागौ कोदड भूतेस।—र. ज प्र
उ०—३ दधि भजाद वळि सेख, नाग भूतेस मलप्पण। रूप काम आरभ रांम, सर विद्या अरजण।—गु रू व.
उ०—४ भारत अरिहीण करा भूतेसर, हारा नही कर लै हर हौइ। आच कियौ उमापति आगै, कर मे कर दीवौ कर कोड।
—मोहबत बारहठ
उ०—५ हाय चलाय दिखणाद दळ हणिया, ऊफणिया खत्रवट अण पार। भणिया दे माथौ भूतेसर, 'दुरजणिया' मोटा दातार!
—दुरजणसिह भाटी रो गीत
२ परमेश्वर, ब्रह्मा।
३ स्वामी कार्तिकेय।
रू० भे०—भुतेस।

भूतेसरी-स० स्त्री० [स० भतेश्वरी] पार्वती।
२ दुर्गा देवी।

भूतेसुरय, भूतेस्वर-स० पु० [स० भूतेश्वर] शिव, महादेव।
उ०—भूतेस्वर भुयतलि खरु, हरिस्चद्र हरिकेत। वइतरणी-विचि थई जतां, सरगि सघावइ प्रेत।—मा का प्र
उ०—२ वडलू पहाडो री गुफा में भूतेस्वर विराजै है, नंदवाणा ब्रामण सेवा करै है।—वा दा ख्या

भूतौ-वि० [स० भूत] हुवा हुआ।
उ०—एक यात्री दूसरे नू कही—भाई! घणी-घणी जायगा देखी पण एक क्षणयाकर नाम परवत पर एक तपस्वी दीठौ। उसडौ कही न भूतौ न भविस्यति।—सिघासण बत्तीसी

भूतोन्माद-स० पु० यौ० [स०] भूत पिशाचो के आक्रमण के कारण होने वाला उन्माद रोग। (वैद्यक)

भूथड, भूथांण, भूथारण—देखो 'माथौ' (मह, रू भे)
उ०—१ तरै तरगस तीन भूथड लीना, कवाण तीन अढारटकी लीवी, तरवार दोय, कटारी एक, सिलहै सावत होय घोडै पाखर लगाय सिकारपुर साम्हा माड्या।—वी दे.
उ०—२ चित्रहकूट सू भुज चड, कस भूथाण गह कोमड। पिरभू किता बासर पाय, अत्रय तणै आश्रम आय।—र रू
उ०—३ बुगलार भीड वाढौ वहसि, जमदढ खग साजा जकडि। भूथांण कसै भुह मूछ भिडि, पांण पाण साकळ पकडि।—सू प्र.
उ०—४ बीज वचा बाणिकां, भरै तीरा भूथारण। खर जमदढ़ खग खरा, दुगम बाधै भड़ दारण।—सू प्र
उ०—५ दुजल छतीसुहि डाविया, भूथारण भेडीह। धनुस भुजा डड धारिया, आया आहेडीह।—पा प्र
उ०—६ सादी वाधी सम्मसेर, मच्छरियौ माझी मेर। तांण सीग निभै तण, भेडावियौ भूथारण।—गु. रू व

भूदड—देखो 'भुजडड' (रू. भे)

स० पु०—वीर, योद्धा।

भूदाग—देखो 'भुईदाग' (रू भे)

भूदार, भूदारक–स० पु० [स० भूदार] सूअर, वाराह।
(अ मा, डिं को, ह ना मा)

रू० भे०—भुदार।

भूदेव, भूदेवत–स० पु० [स० भूदेव] १ ब्राह्मण।

उ०—१ वेस्या किणि वाहालि करी, भूमडली भूदेव। कोडि कोटिध्वज क्षय गया, करता वेस्या-सेव।—मा का प्र

उ०—२ वली प्रभाति पधारिया, महादेव नी सेव। ततखिणि तै तेडाविउ, भेटि-मणी भूदेव।—मा कां प्र

२ राजा।

भूधर–स० पु० [स० भूधर] १ पहाड, पर्वत।
(अ मा, ना मा, ह ना मा)

उ०—मुरधर रा भूधर कहीजे, ललवळिया लुळ लैरडा। जाणै किसडी वाय लागी, घोर घसे से सैरडां।—दसदेव

२ परमेश्वर। (ना मा, ह ना मा)

उ०—भूधर तूही हारिया भीरू, आपण तूही अनाथा नाथ। केसव तूही साथ कुसाथा, सायव तूही न साथा साथ।—ओपो आढो

३ विष्णु।

उ०—राज तणी इच्छा रघुराया, अखिल चराचर जीव उपाया। राज अग्या म्हारे सिर राखिस, भूधर तूझ तणा गुण भाखिस।
—ह र

४ श्रीकृष्ण।

उ०—भूधर किसी भळावणी नइ, विष्णु वाचा किम चलइ। गज गुडीय तुरीय पलाणि चाल्या, कुमरि चालइ नइ माता मिळिइ ए।
—रुक्मणी मगळ

५ वाराह अवतार।

६ शेष नाग।

७ राजा, नृप।

८ शिव।

९ बैल, वृषभ। (डिं को)

१० किसी पात्र मे पारा रखकर उसका मुह मिट्टी से बन्द करके औषध तैयार करने का एक ढग।

११ सात की सख्या। ✿

रू० भे०—भूध्र।

अल्पा०—भूधरो।

भूधरधणी–स० पु० यौ० [स० भू+धर+राज० धणी] विष्णु।

उ०—रामचद्र करसी रुडा, सगळी विध स्रीरग। भगता-पत भूधर-धणी, चाढण रूप सुचग।—ह र

भूधरेस्वर–स० पु० यौ० [स० भू+धर+ईश्वर] १ पर्वतो का राजा, हिमालय।

२ शिव।

३ राजा।

४ इद्र।

भूधरो—देखो 'भूधर' (अल्पा, रू भे)

उ०—भख पुहचावै भूधरो, अजगर रै अनभ्यास। किम भूलै सता 'किसन', सभरता सुख रास।—र. ज. प्र

भूधाता–स० पु० [स० भूधातृ] ब्रह्मा। (नां. मा)

भूध्र—देखो 'भूधर' (रू भे)

भूनणो, भूनबो—देखो 'भूजणो, भूजबो' (रू भे)

भूनणहार, हारो (हारी), भूनणियो—वि०।

भूनिश्रोड़ो, भूनियोड़ो, भून्योड़ो—भू० का० कृ०।

भूनीजणो, भूनीजबो—कर्म वा०।

भूनेता–स० पु० [स० भूनेतृ] राजा, नृप।

भूप–स० पु० [स० भूप +ज] राजा, नृप।
(अ मा, डिं को., ह ना मा)

उ०—वणाधिप भूप भरी उण वार, भुजग न झालि सक्यो भुव भार। भेळी हिज आवड बाहर भूप, रु नाहर चक्र सुदस्सण रूप।
—मे. म.

२ राजकुमार।

रू० भे०—भुप, भूपम।

भूपग—देखो 'भूप' (रू भे) (डिं को)

भूपज–स० पु० [स०] राजा, नृप।

उ०—अवर अमीर भूपजां आगळि, करै सिलाम दहू जोडे कर। सयदा विदा किया गज सिक्का, घर अन लीध न लीध मुरद्धर।
—सू. प्र

भूपत, भूपति, भूपती–स० पु० यौ० [स० भू+पति] राजा, नृप।
(डिं को, ह ना मा)

उ०—१ बाघ हूत भाखै ईम बाघणी,अजका हुआ तजो गिर अ्रेण। माला अवस चकासै भूपत, रात दीह न गिणै 'रामेण'।
—महाराव राजा रामसिंघ रो गीत

उ०—२ वडे वडे भूपत सहत, आन जुरत दरबार। बाहर ठाढै बाज गज, सोभत अधिक अपार।—गजउद्धार

उ०—३ खमा भणि जोगणि खाचत खून, सुरा कर माचत मेह प्रसून। झखध्वज भूपति दोयण भूळ, अलोयण लोयण रूप असूळ।
—मे म

उ०—४ भूपति टोटा मे दीवाळा भिळिया, मोटा मोटा रा कुळ भुगता मिळिया। वावै गाठडिया वडिया चग वाळै, राली गूदड लै कांधै पर राळै।—ऊ का

२ मेघ राग का पुत्र एक राग। (सगीत)

३ ईश्वर।

४ शिव, महादेव।

५ इन्द्र।

६ एक सनातन विश्व देव।

७ मध्य गुरु की चार मात्रा का नाम।

रू० भे०—भुम्रपत्तिम्र, भुपति, भुवपत, भुवपति, भुवपती, भुवपत्त, भुवपत्ती, भूम्रपति, भूम्रपती, भूम्रपत्ती, भोपति।

भूपवन—स० पु० यौ० [स० भूप+वन] सिंह, शेर। (डिं को)

भूपाण, भूपाळ, भूपालि—स०पु० [स०भू+पाल] राजा, नृप। (डिं को)

उ०—१ खीच रा डला खावै खिसक, नीच तळा कुळ नाळ रा। नित मीच म्राख वैठे निलज, भिछ म्रमल भूपाळ रा।—ऊ का

उ०—२ तइ दिख राजा तरणइ साठ ताय पुत्री, साठ हजार कुवर सिरदार। नव खड रा भूपाळ नमइ जिए, परग्रह लहइ तियरण कुरण पार।—महादेव पारवती री वेलि

उ०—३ म्रसटम पुत्र पुज म्रप वाळौ, वासदेव भूपाळ वडाळौ। पाट भगत म्रप म्रतर पाखै, राजा घरमवभ हित राखै।—सू प्र

उ०—५ निसुरणी एह वात भूपालि, कालमुहुत हुउ ततकाल। नयर माहि हूउ हाहाकार, कोई कांई न लहइ पार।

—हीराणद सूरि

रू० भे०—भुम्राळ, भुपाळ, भुयाळ, भुवपाळ, भुवाळ, भूम्राळ, भूवाळ, भोपाळ, भोवाळ, भौपाळ, भौवाळ।

भूपाळी—स० स्त्री० [स० भूपाली] सगीत मे एक रागिनि विशेष।

भूपुत्र—स० पु० [स० भूपुत्र] १ नरकासुर नामक राक्षस।

२ मगल-ग्रह।

भूपुत्री—स० स्त्री० [स०] सीता, जानकी।

भूफोड़—स० पु०—वर्षा ऋतु में उगने वाली एक प्रकार की वनस्पति।

रू० भे०—भफोड, भैंफोड।

भूबळ, भूबळि—स० पु० [स० भू+वल] वीर, योद्धा।

उ०—१ म्रर डग्गा म्रारांण कठीरव कुजग, पूजै कुरण पीठाण प्रपोता पुजरा। दरियावा दा दौर भिलै नह दूबळा, भग्गा भवस सभीत भिडता भूबळां।—किसोरदान बारहठ

उ०—२ सम्रा गाहतौ गैंजूहां ढाहतौ वाहतौ सार, मह चडी भूबळा साहतौ म्रासमाण। चत्रबाहा म्रारोहतौ चाहतौ म्रचूडा चोज, ऊ म्रायो 'जवानीसिंघ' याहतौ म्रारांण।

—जवानीसिंघ रो गीत

उ०—३ वहै राह माळै सूघा निसारा म्राज री वेला, घूकळां म्राज री छटा भूबळा घारीक। वाना बघ जोरावर साज री वदेता वोलै, तरणा 'पदमेस भूरा राज री तारीफ।—गोरादान म्रासियौ

उ०—४ म्रारुहता भगदत, म्रस्सि रागा चाडतौ। गै जूहा गोडतौ, खग भूबळि भाडतौ।—गु. रू व

२ राजा, नरेश।

भूबांवळी, भूबावळी—देखो 'भुईबावळी' (रू भे)

भूभट—स० पु० [स०] १ वीर, योद्धा।

२ राजा नृप।

भूभरता—स० पु० [स० भू+भर्तृ] राजा, नृप। (म्र मा)

भूभळ—स० स्त्री०—गर्म राख या धूल।

भूभळिया—स० पु०—पडिहार वश की एक शाखा।

भूभळियौ—१ देखो 'भूभळी'।

उ०—भसै खसै निहसै रिसै, पौरस दाखै पाण। म्राभ लगै जळ ऊछळै, तै भूभळियौ भाण।—गजउद्धार

२ देखो 'विभळ' (म्रल्पा, रू भे)

उ०—भूभळिया नैणा की, म्रमरत सा वैणा की। मेह को ममोलो, वादळा की बीज, होळी की भाळ, सामण की तीज।

—मयाराम दरजी री वात

भूभळो—वि० [स्त्री० भूभळी] १ धुवला।

२ धूलिधूसर।

भूभारधर—स० पु० [स०] शेष नाग। (म्र मा)

भूभूम्राटि, भूभूयाटि—स० स्त्री० [म्रनु०] ध्वनि विशेष।

उ०—१ भेरी भाकारि, भूगल तणै भूभूम्राटि भूमि फाडी, नीमड्या नीसाण नै नादि नदी निरभर प्रतिनाद नीपना।—व स

उ०—२ वीर म्रदग वाज्या, जयढक्क वाजी, समहर सामह्या, म्रहत्रहतै म्रवक तणै त्रहत्रहाटि त्रिभुवन टलटलिउ, भेरी भुगल तणै भूभूयाटि भूकिइ भिलकि फाटी, काहल तणै कोलाहलि कान कमकम्या।—व स

भूभौ—वि०—भयकर, भयावह।

उ०—भटकै क्रोघ भाळ घुवि भूभौ। म्ररक उठै थाभै रथ ऊभौ।

—सू प्र

भूभ्रत—स० पु० [स० भूभृत] १ राजा, नृप। (म्र. मा)

२ इन्द्र का हाथी। (ना मा)

३ पहाड, पर्वत।

रू० भे०—भुभ्रत।

भूमग—देखो 'भुजग' (१) (रू भे)

भूमड, भूमडळ—स० पु०—१ पृथ्वी, धरती। (डिं को)

उ०—१ सारी स्रस्टि मे कुडल छळ करियौ, भारी हाहा रव भूमडळ भरियौ। बसुघा काळी री ताळी तड वागी, भिडिया सोना री चिडिया पड भागी।—ऊ का

उ०—२ भूमडळ म्रसुर खळ कई कीधा भसम, विसम गति म्राणि केवाणि वागै। एकजि त्रिपुर जैसिंघ उवारिणै ऊवरै, म्रकळ माहेस 'वखतेस' म्रागै।—कीरतदान बारहठ

रू० भे०—भुमड, भुमडळ, भुवमड।

भूम—१ ज्ञान।

२ भूमि, दिशा, जगल।

३ देखो 'भूमि' (रू भे) (डिं को)
उ०—१ जितरै दलै चाकर नू कह्यो— म्हारो पेट कसमसै'। तरै कहियो—'वाहिर भूम चालो'।—नैणसी
उ०—२ विखमी भूम रात रो वासो, पथी राह न पायो। अबखी ठोड ग्राम पण अळगो, अब किरणा दिन आयो।—भीखजी रतनू
उ०—३ तपै भूम अम्मर हुय ताता, मुरभाई भगती पितु माता। वागी भाट पिछम दिस वाता, वक हुवो सब देस विवाता।—ऊ का
उ०—४ साजे सार छत्रीस सिपाई, त्यार हुवा रण मडण ताई। पाखर तुरा गयदा पाखर, भूम परा सम जाणं भाखर।—रा रू
उ०—५ लछी रूप हरि भगति, धरम हिंदू थानतर। वेद चद्र मिण किया, भूम रभा वळ कुजर। धेन पूज सुर धेन, विमधु चरणाम्रत वदा। धनुख माण न्रप कलप, सत्व जस मह विरदा।—रा रू
उ०—६ भव ब्रहमा जिण भजे, भजे तिण नाम पाप भर। भर टाळण सह भूम, भूम-पतन को जेण सर।—र ज प्र
४ होश।
५ अक्ल, वुद्धि।
६ दक्षता, चतुराई।
७ मौन।

भूमणो, भूमबो—क्रि० अ०—भ्रमण करना, घूमना।
भूमणहार, हारो (हारी), भूमणियो—वि०।
भूमिओडो, भूमियोडो, भूम्योडो—भू० का० कृ०।
भूमीजणो, भूमीजबो—कर्म वा०।

भूमधा—स० पु० [स० भू+मध्य] अधेरा। (अ मा)

भूमबाव—स० पु०—छोटे राजपूत जागीरदारो व भू स्वामियो मे वसूल किया जाने वाला एक सरकारी कर।

भूमय—सं० स्त्री० [स० भूमयट्] सूर्य की पत्नी, छाया।
वि०—मिट्टी से बना हुआ।

भूमविहार—स० स्त्री०—नदी, सरिता। (अ मा)

भूमि—स० स्त्री० [स०] १ पृथ्वी, अवनि। (ह ना मा)
उ०—वाघ सीह गज द्रेठि पडइ सतीय सयरि ते नवि आभिडइ। राति पडती पडव रडइ वलि वलि मूछी भूमि पडइ।—प प च
२ स्थान, जगह।
३ पृथ्वी का वह तल या पृष्ठ भाग जिस पर प्रकृति के जीव चराचर विचरते हैं।
४ वह भू-भाग जिस पर किसी का सत्व हो।
५ ऐसी जमीन जिस पर खेती-बाडी होती हो।
६ प्रदेश या प्रान्त।
७ आधार या जड़।
८ धन-सम्पत्ति या वैभव।
९ जन्म स्थान।
१० योग शास्त्र के अनुसार योगी को क्रमानुसार प्राप्त होने वाली अवस्थाए।
११ फासला, दूरी।
रू० भे०—भुइ, भुइण, भुई, भुय, भुही, भुह, भुइ, भुइण, भुईं, भुई, भुवि, भुम्मि, भुम्मी, भुय, भुवि, भुवी, भुहि, भूइ, भूइ भूम, भूमी, भूम्मी, भूही, भोम, भोमि, भोमी, भोय, भौम, भौमि, भौमी।

भूमिकत—स० पु० यौ० [स० भूमि+कत] राजा, नृप।
उ०—अति वर्वं क्रीत दीरग्घ आव, सुजि हुवै जोग दारण सभाव। उच्छाह सदा राखै अनंत, कामणि जिम भुगतै भूमिकत।—सू प्र

भूमिका—स० स्त्री० [स०] १ वह वक्तव्य या आलेख जो किसी ग्रन्थ या रचना के पूर्व दिया जाता है।
२ मकान की मजिल।
३ किसी महत्त्वपूर्ण बात का अभीष्ट परिणाम प्राप्त करने हेतु कही जाने वाली बात।
मुहा०—भूमिका वाधणी=कुछ कहने से पहले प्रभावशाली बनाने के लिए कुछ और बातें कहना।
४ वेदान्त के अनुसार चित्त की पाच अवस्थाए—क्षिप्त, मूढ, विक्षिप्त, एकाग्र और विरुद्ध।
५ नाटक आदि मे किया जाने वाला अभिनय।
६ श्मशान भूमि।
७ देखो 'भूमि'।
रू० भे०—भोमका।

भूमिगम—स० पु०—ऊट।

भूमिचपो—स० पु०—सफेद फूलो का एक पौधा विशेष जिसकी छाल, पत्ते, जड आदि औषध के काम आते हैं।

भूमिचर—वि० [स०] भूमि पर विचरण करने वाला।
उ०—जळचर खेचर भूमिचर, भोग करइ लयलीन। दैव दभाडइ देहडी, दुम्नि जणा अम्ह दीन।—मा का प्र

भूमिज—स० पु० [स०] १ सोना, स्वर्ण।
२ मगल ग्रह।
३ नरकासुर राक्षस।
वि०—भूमि से उत्पन्न।

भूमिजा—स० स्त्री० [स०] सीता, जानकी।

भूमिजीवी—वि० [स०] भूमि जोत कर अपना निर्वाह करने वाला, कृषक, खेतीहर।

भूमियभ—स० पु० यौ० [स० भूमि+स्तम्भ] १ राजा, नृप।
२ खंभा।

भूमिवाग—देखो 'भुइदाग' (रू भे)

भूमिदेव—देखो 'भूदेव' (रू भे.)

भूमिपाळ—स० पु० [स० भूमिपाल] राजा, नृप।

भूमिपुत्र-स० पु० [स०] १ नरकासुर राक्षस।
२ मगल ग्रह।

भूमिपुत्री-स० स्त्री० [स०] सीता, जानकी।

भूमियावट—देखो 'भोमियावट' (रू भे)

भूमियोड़ौ-भू० का० कृ०—घूमा हुआ, भ्रमण किया हुआ (स्त्री० भूमियोड़ी)

भूमियौ—देखो 'भोमियौ' (रू भे)

उ०—१ इयं प्रस्तावि पातिसाह स्रीअकबर दिली राज करता वरस १६ सोळह हुआ छै। भूमिया सकळ दस दिसि रा आइ मिळिया छै।—द वि.

उ०—२ तठा पछै कितरै हेक दिनै श्रै सोरठ नू गया। सेत्रूजासू कोस ४ सीहोर गाव छै, तठै जाय रह्या छै। रावळ कहाडै छै। भला रजपूत भूमिया छै।—नैणसी

भूमिसुत-स० पु० [स०] १ नरकासुर राक्षस।
२ मगल ग्रह।

भूमिसुता-स० स्त्री० [स०] सीता, जानकी।

भूमिसुर-स० पु० [स०] ब्राह्मण।

भूमींद्र-स० पु० [स०] राजा, नृप।

भूमी—देखो 'भूमि' (रू भे) (अ मा., नां मा)

भूमीयाचारौ—देखो 'भोमियाचारौ' (रू भे)

उ०—सोजत रै दैम मैं रिणमलां री आगै तो जोर दखल भूमियाचारौ थौ, हिमैं ही छै।—सोजत रै मडळ री बात

भूमीरुह-स० पु० [स०] वृक्ष, पेड।

भूमीलेप-स० पु० [स०] गोवर।

भूम्मि—देखो 'भूमि' (रू भे)

भूयग—देखो 'भुजग' (रू भे)

उ०—१ कीयौ मरदन घन सघळइ अग, पचजटा छइ सीरह भूयग—वी दे

उ०—२ विरह भूयगमि हु डसि, चदन-सगि भूयगि। श्रै मन लहइ असिद्धि तणी, तै तिम लाईइ अगि।—मा. का प्र

भूयगम, भूयगमि—देखो 'भुजगम' (रू भे)

उ०—माता तु प्रेमावती, पिता तु विदुरी विजोग। विरह भूयगम ऊपनु, गरुड न मानइ गोग।—मा. का प्र

भूय-स० पु०—१ सिंह, शेर। (अ मा)
[स० भूयस्] २ बहुत, अधिक।
[अव्य०] ३ फिर, पुन।

उ०—धरा सुधेनु छूय छूय, दूय दूय धू धरै। क्रतू समान राजसूय, भूय-भूय भू करै —ऊ का

४ देखो 'भाय' (रू भे)

उ०—जै आज तो किही वडै सगै मेहरवांनगी करी सो अळगी भूय री नारेळ म्हानु अठै साम्हौ आयो।
—कुवरसी साखला री वारता

भूयगाम-स० पु० यौ० [स० भूत+ग्राम] १ भूतों का समुदाय।
२ शरीर, देह।

भूयचढण-स०—पवन, हवा।

भूयण-स० स्त्री०—१ पृथ्वी, भूमि। (डिं को)
२ देखो 'भुवन' (रू भे)

उ०—सजे सिणगार सवि कांमिनी, भूयण सिरि छज्जइ ठढी, के स्यामा के गौर, केह गुण गाहा पढी।—प च चौ

भूयणतरि-क्रि० वि०—ससार मे।

उ०—कौढि अनतइ ति रहिउ, भूयणतरि भरपूर। रनि वनि रक्षा करइ, भ्राति म आंणिसि भूर।—मा का प्र

भूयणपति—देखो भवनपति' (रू भे)

उ०—अवधि वली! अम्रतलता, फोक थयां फल-फूल। सेढउ आविउ स्रम्टिनु कइ भूयणपति भूल।—मा का प्र

भूयत्थ—भूतार्थ। (जैन)

भूयवलि—देखो 'भुजवळ' (रू भे)

उ०—तिणि कुलि मुणीइ सलगु राओ, भूयवलि भजइ रिउ भडिवाओ। दाणि जगु ऊरिणु करए।—प प व

भूयाल—देखो 'भूपाळ' (रू भे)

उ०—दैव! अह्म-प्रति लोभीउ, बीजा लील भूयाल। सुख सपत्ति सुहणइ नही, मवसिद्धि भुडइ भालि।—मा का प्र

भूर-स० पु० [स० भूरि] १ एक प्रकार का रोग विशेष जिसमे शरीर पर भूरी २ महीन चित्तिया पड जाती हैं।
२ भ्रम, सदेह।
३ देखो 'भूरि' (रू भे) (अ मा, ह ना. मा)

उ०—१ सेन लागौ सत सेवा, भाव धर उर भूर। रूप धर कर सैन कौ हरि, करी दुविधा दूर।—मगलमाळ

उ०—२ साझ पडी आथमियौ सूर, करइ साथ रा विछावणा भूर। ढोला पाखिली चढकी फिरइ, मारू स्त्री सु निद्रा करइ।
—ढो मा

४ देखो 'भूरौ' (मह, रू भे)

भूरइ—धूलि, धूल।

उ०—इंद चद पमुख देव बीहना, हथिया जिम निनादि सीहना। पुछदइ गउरी सवि वाली, भूरइ नगर ऊपरि चाली।—सालिसूरि

भूरची, भूरछी—देखो 'भूरसी' (रू भे)

भूरज-स० स्त्री० यौ० [स० भू+रज] १ पृथ्वी की धूलि गर्द, मिट्टी।
२ देखो 'बुरज' (रू भे)

भूरजपत्र—देखो 'भोजपत्र' (रू भे) (डिं को)

भूरजाळ—देखो 'बुरजाळ' (रू भे)

उ०—दगै तोफा वहै गोळा रोहळा मोरछा दोळा, जो लार सकै सूता सेर नै जगाय। भूरजाळ वाकडो वीटियो दूजा गढा भोळै, लोहा जाळ घसै केही नसैणी लगाय।—वा दा

भूरटौ—देखो 'भूरो' (ग्रल्पा, रू भे)

उ०—भैस्यां चरावै, वो तो भूरटी, वो तो ल्यावै-ल्यावै घरा ग्रे चराय, भैसा ग्रारणा।—लो गी.

(स्त्री० भूरटी)

भूरदक्षिणा—देखो 'भूरसी'।

भूरदाढौ—स० पु०—यवन, मुसलमान।

उ०—ज्यान मढी वज्जर, भूरदाढ़ा चव फेरा। भौंह चढ़ी मोसरा हाथ कढ्ढी समसेरा।—सू प्र

भूरभूर—देखो 'भुरभुर' (रू भे)

उ०—चिरे वहित्थ हत्थि कै चिकार चूर चूर ह्वै, भिगै भटाळि भाल मे, भिखार भूरभूर ह्वै।—ऊ का

भूरसी—स० स्त्री० [स० भू+श्रि] १ किसी बडे यज्ञ, दान, विवाहादि की समाप्ति पर उपस्थित ब्राह्मणो को दी जाने वाली दक्षिणा।

२ किसी बडे खर्च के बाद किया जाने वाला छोटा खर्च।

रू० भे०—भुरस, भुरसी, भूर, भूरची, भूरछी।

भूरुह—स० पु० [स० भूमि+रुह] वृक्ष, पेड़।

भूरि—स० पु० [स०] १ ब्रह्मा।

२ विष्णु।

३ शिव।

४ भेंट, उपहार।

५ दान।

६ इन्द्र।

७ स्वर्ण, सोना।

८ बालू रेत।

वि०—बहुत, ग्रधिक प्रचुर।

उ०—जळ जाळ माळ विसाळ नभ जुत, उरङ भड ग्रणपार ए। मिटि जळण घरणि विनोद मांनव, भूरि सर जळ भार ए।

—रा रू

रू० भे०—भूर, भूरी।

भूरिक, भूरिज—स० स्त्री० [स०] पृथ्वी, ग्रवनि।

भूरिमायु—स० पु०—गीदड, सियार। (डि को)

भूरियौ—देखो 'भूरो' (ग्रल्पा, रू भे)

उ०—१ ईया भवर री जांन मे म्हारो भूरियो न चरतो चारो रे। म्हारो गोरवद वळतो कर।—लो गी

उ०—२ कठीर काटकै छूटै सांकळा राटकै किनां, मेळे चमू थाट कै ग्ररेहा सत्रा मीच। केवाण झाटकै बाढ झाड़िया भूरिया कैंधा, बिभाड़िया लाठ कै बूरिया घोरा बीच।—सकरदांन सांमोर

उ०—३ चाळै लागा यळा घकी, वीचळा भटक्कै चखा, झूल पेखै ग्रावळा चोवळा दखै झोक। काळ रूपी सेखा हकै वाजिद्रा वरा रा कोट, मैचकै भूरिया सिंहा परा रा भूलोक।

—डूगजी जवारजी री छावळी

(स्त्री० भूरी)

भूरिसरव—स० पु० [स० भूरिश्रवस्] १ कुरुवशीय एक राजा, जिसका वध महाभारत युद्ध में सात्यकि द्वारा हुग्रा था।

२ ग्रगिरिस् ऋषि का एक शिष्य, जो ग्रत्यन्त क्रोधी एव क्रूर था।

३ एक यादव राजा, जो वायु पुराण के ग्रनुसार सात्यकि के पुत्रो मे से एक था।

४ मार्कंडेय पुराण मे निर्दिष्ट पितरो का एक गण।

भूरी—स० स्त्री०—भूरे रग की भैंस।

वि०—१ भूरे रग की।

उ०—एकली भूरी झोट दो गोविणया भरै।—फुलवाडी

२ देखो 'भूरि' (रू भे.)

भूरीगार—देखो 'बुरीगार' (रू भे)

भूरेचा—स० पु०—चौहान वश के क्षत्रियो की एक शाखा।

भूरेस—स० पु०—सिंह, शेर।

उ०—रिमाखेसे लागो दीखे इद्र ज्यू जभ पै रूठो, ग्राहुसी भाराथा ऊठो हणू ज्यू ग्रोपाळ। छूटा डाण लाठा मर्दा पाण हू भूरेस छूटो, गोरा गजा माथै रूठो सीघळी 'गोपाळ'।—गुलाबसिंघ महड़

भूरो—स० पु० [स० बभ्रु] १ मिट्टी के समान रग।

२ सिंह, शेर।

३ ऊट।

उ०—छेवट ठाकर मून तोडयो ग्रर बोल्यो—मन चगा तो कठोती मे गगा। खडो सेठां भूरा नै। ग्रर भूरा नै खडता ईज वो ग्रागला पग सू ग्र.खड्यो।—रातवासो

४ यूरोप का निवासी, यूरोपियन।

५ एक कबूतर विशेष, जिसकी पीठ काली एव पेट पर सफेद छींटे होते हैं।

६ महीन चूर्ण, बुकनी।

७ एक विशेष प्रकार का ग्रमल।

उ०—कोटडी मे भात-भात रै ग्रमला री गळणिया झरती ही—काळो, मेवती, भूरो, मरोडी, ग्रागराई नै किसनागर ग्रर मेडी ऊभा बाईसा रै हियै भात भात रै विचारा रा गोट ऊठता हा।

—फुलवाडी

८ भूरे रग का भैंसा।

वि०—१ मिट्टी के समान रग वाला, बभ्रु।

उ०—१ थळ भूरा वन झखरा, नही सु चपउ जाइ। गुणे सुगधी म रवी, महकी सहु वणराइ।—ढो. मा

उ०—२ भूरा भुरजाळा अवुद भळहळिया, खाळा नद नाळा वाल्हा खळहळिया। अवनी आदोलन ओळा ओसरिया, पिडि भिडि प्लामी पै गोळा जिम गिरिया।—ऊ का

उ०—३ पदमणि पुरखा रै पगरण नह पूरा, भूखा सूतोडा सगरणवै भूरा। रोजा निसवासर सठा मे साजै, वैक्रति कठा मे अलगोजा वाजै।—ऊ का

२ गोर वर्ण वाला।

उ०—भूरै मुखडै पर स्वेदण कण भारी, पहुची पोळछ मे प्रीतम री प्यारी। नाचै खेलावण मेलावण नाही, जोवण जागी वा वेळा जग माही।—ऊ का

३ वीर, योद्धा।

उ०—१ हुई मुरद्धर ऊपर हल्ला, महा अप्रबळ जोर मुगरला। पेख खडा सभ लक्खा खूरा, भीड वगत्तर अगा भूरा।
—रा रू

उ०—२ विजडा झाट झमाट वाजता, स्यामध्रम सूरातन साहि, सत छाडे टेभा अवछडिया, गिड भूरा मडिया गज-गाहि।
—वैरीसाल हाडा री गीत

उ०—४ सिघ नाथ वळ उपजियो सहस वळ, सरै राम वासै मकति। उत्तमराम पावणो आयो, भूरै दी खागां भुगति।
—अमरसिघ हाडा रो गीत

४ उदार-हृदय, दानवीर।

५ यशस्वी।

उ०—१ मारू राव सोहता आगरै किया दाभै मूह, हाथळां ढोहता खळा खाग रै ही कोट। भरोसै भाग रै थोहता झालियै तू भूरै, नोहत्था बाघ रै गळै हार ज्यू नोकोट।
—महाराजा मानसिघजी री गीत

उ०—२ रागरग जडै ततकार सहला रमण, जसकरा भडा सामल जहुरा। ऊदैपुर महल गोखा पीयण आसवा, भूप जोखा करण आव भूरा।—चमनजी आढो

६ देखो 'भवारो' (रू भे)

रू० भे०—भुरो।

अल्पा०—भूरटो, भूरियो।

मह०—भूर।

भूरोवाघ-स० पु०—वीर, वहादुर।

उ०—कीधो हद विखो वरा रै कारण, महावेघ महाणो। देसा चावो कियो देवडा, भूरावाघ भटाणो—नाथूसिघ देवडा रो गीत

२ केसरी सिंह।

भूल-स० स्त्री०—१ भूलने की क्रिया या भाव।

२ अज्ञानता या भ्रमवश किसी को कुछ का कुछ समझने का भाव, गलती।

उ०—वा भूल सू थारै लाडुवा री सभाळ गटकायगी। इण नै तो अठै ई पूरो इनाम इकरार मिळग्यो।—फुलवाडी

३ अशुद्धि, त्रुटि।

ज्यू—हिसाव मे भूल होणी।

४ अपराध, दोष, कसूर।

उ०—कमेडी छवरा छवरा आसू ढुळकायनै उण रा पग पकडती अर उण सू वीणती करती जद साप कैं'वतो—अबकी तो भूल व्हैगी, अब कदै ई थारा विचिया नै नी खावू।—फुलवाडी

५ पाखड, आडम्बर।

उ०—मिदर, तीरथ, मग्र व्रत माळा, मोटी भूल मिटाई। पिड नख दरसण घत निलजापण, फिर क्यो सिरड फसाई।—ऊ का

६ चूक।

उ०—आप खुसी खुसी पधारो, अबै म्हैं वरजण री भूल नी करु।
—फुलवाडी

७ कमी, अभाव।

ज्यू—इण मे कई भूना रैयगी है।

८ विस्मृति।

भूलणो, भूलवो-क्रि० अ०—१ याद या स्मृति मे न रहना, विस्मृत हो जाना।

उ०—१ बुरी चुगल मुख मे वसै, आछी रो नह अंग। माखी वैसै स्वानमुख,, भूल न वैसै भ्रग।—वा दा

उ०—२ भूली लाज काज मुनि सजनी, परची अधिक रस फदन। मीरा के प्रभु गिरधरनागर, करि राखो भुजवधन।—मीरा

२ अनुरक्त या आसक्त होना, खोना।

३ घमड मे इतराना या फूलना।

४ गलती या त्रुटि करना।

ज्यू—मैं काल्है हिसाव मे पाच रुपिया जोडणो भूल गयो।

५ भ्रम या धोखे मे पडना।

उ०—खट् दसमन भूला फिरै, लारै वरणज चार। ओ अवसर आवै नही, गोता खाय गवार।—श्री हरिरामजी महाराज

क्रि० स०—६ विस्मृत करना, भुला देना।

उ०—१ ऊनड रो आचार, भाराणी भूलो नही। जेहा जग दातार, जीवै घर अवर जितै।—वा दा

उ०—२ अडज्ज, स्वेदज जरा उद्भिज्ज, माया सव तूझ म भूल व मुज्झ। म राख पटहो आडो मूह, जहा कुछ देखू त्यां सब तूह।
—ह र

७ गलती करना।

उ०—महुतउ वेग सभा आविउ राजा रगिइ बोलावीउ। हाहा भूलइ केती वार तुम्ह सरिखा नु किसिउ विचार।—हीराणद सूरि

८ अभ्यास छूटना।

उ०—कवर रा मूढा सू तो कीं बोल नी निकळिया, जांणै वो बोलणो भूल ई गियो व्है।—फुलवाडी

भूलणहार, हारो (हारी), भूलणियो—वि०।

भुलाडणौ, भुलाड़बौ, भुलाणौ, भुलावौ, भुलावणौ, भुलाववौ —प्रे० रू०।

भूलिश्रोड़ौ, भूलियोडौ, भूल्योड़ौ—भू० का० कृ०।

भूलीजणौ, भूलीजबौ—कर्म वा०।

भूलभुलैया–स० स्त्री०—१ बहुत सी गलिया एव दरवाजो वाली इमारत जिसमे प्रवेश करने पर पुन निकलना दुर्लभ होता है।
२ बहुत चक्करदार एव पेचीली बात।

भूलिंग–स० पु०—एक प्रकार का छोटा पक्षी जो सिंह की दाढो मे से मास निकाल कर खाता है।

भूलियोडौ–भू० का० कृ०—१ विस्मृत हुवा हुआ २ अनुरक्त या आसक्त हुवा हुआ, खोया हुआ ३ घमड मे इतरा हुआ फूला हुआ ४ गलती या त्रुटि किया हुआ ५ भ्रम या धोखे में पडा हुआ ६ विस्मृत किया हुआ ७ गलती किया हुआ ८ अभ्यास छूटा हुआ
(स्त्री० भूलियोडी)

भूलोक–स० पु० [स० भूर्लोक] १ ससार, जगत (मृत्य लोक)
उ०—महाक्रोधगी गनीमां हुता हूचकै नरिंद 'मावौ', भूलोक भूचकै बाधो चकै कोम भार। बोमगी अरावां भाळ वेताळ वमकै बकै वाजद्रा 'बहादरेस' हकै तेगवार।—हुकमीचद खिडियौ
रू० भे०—भुवलोक।

भूलोडौ—देखो 'भूलियोडौ' (रू भे)
उ०—भगवत करतानै करतव भुगतावै, पिछला पापा रा पामर फळ पावै। भावी भूलोडा भूको क्यू भाया, पोचा करमा रा पोचा फळ पाया।—ऊ का
(स्त्री० भूलोडी)

भूलौ–वि० [स्त्री० भूली] १ विस्मृत हुवा हुआ।
२ भ्रम मे पडा हुआ, भ्रमित।
३ अनुरक्त या आसक्त हुवा हुआ, खोया हुआ।
४ गलती या त्रुटि किया हुआ।
५ घमड से इतरा हुआ, फूला हुआ।
स० पु०—६ विस्मृति।
क्रि० प्र०—पडणौ, होणौ।

भूवग—देखो भुजग' (रू भे)
उ०—छाकिया गज घिकिया भूवगं छेड, तैं लिखिया कर कर लीध तेड। छेडिया चाक जुध पहल चाय, सूरांण हूत केवांण साय। —वि स

भूवतरी—एक कन्द विशेष।
उ०—भसम मराडी भमरीया, चोलहिरा चाडाल। भू-कोहली भूवतरी, कद विकद विसाल।—मा का प्र

भूवण, भूवणि—१ देखो 'भुवन' (रू भे)
२ देखो 'भवन' (रू भे)

भूवर–स० पु०—एक प्रकार का घोडा विशेष।

भूवरियौ–वि०—१ गोलाकार, गोल आकृति का।
उ०—इण भात रौ तिजारौ सू गोरी भूवरिया पूहचा सू दुजण साह्या कटोरा मे भला जुवांन मचकावै छै।—रा मा स
२ देखो 'भुवरियौ' (रू भे)

भूवळ, भूवल–स० पु० [स० भू+वलय] भूगोल।
उ०—१ नाग कुमार नरनाह सुरनाहा जेण तिहुयणि जिन्ना, तिहुयण सल्लविरुद्धो विव खाउ एस भूवलए अभययतिक
उ०—२ अहह रुप असमम भूवलइ कवण कामिणि एह मम तुलइ। हिव हठिउ मझ मन्मथ मारिवा, एह जि ऊडण अग ऊगारिवा।—सालिभूरि

भूवल्लभ–स० पु० यौ० [स० भू+वल्लभ] राजा, नृप।

भूवा—देखो 'भूआ' (रू भे)
उ०—१ भूवा मगनी रा थळचट भिखियारी, धन्यां कन्या रा गळकट हठधारी। राफा झरणावै गिरणावै रोता, गता निरणावै करमा रा गोता।—ऊ का
उ०—२ मावळियौ बहनोई मागा, सोदरा बहन मागा, हाडा घोबण फूफी मागा, झाडू देवण भूवा।—लो गी

भूवाजी–स० स्त्री०—१ कगाली, दरिद्रता।
उ०—दुरविध घमडी दै सणकारी साजी, भारी भभडीलै घर मैं भूवाजी। चिलमी अमली के जुलमी चितचावा, दासी वेश्या रा मदवा रै दावा।—ऊ का
२ देखो 'भूआ' (रू भे)

भूवारि–स० स्त्री०—हाथी पकड कर रखे जाने या बाधे जाने का स्थान।

भूवाळ—देखो 'भूपाळ' (रू भे)
उ०—वर कन्या बिन्हे घातिया वानड, वेई बारां वरसा रा बाळ। भमर ज्युंही केतकी भीना, भोली चक्रवर्त्ति भूवाळ।
—महादेव पारवती री वेलि

भूवासासू—देखो 'भूआसासू' (रू भे)

भूवासुसरौ—देखो 'भूआसुसरौ।

भूविदार–स० पु० [स०] सूअर। (अ मा)

भूविद्या–स० स्त्री० यौ० [स० भू+विद्या] भू-विज्ञान।

भूसक्र–स० पु० [स० भूशक्र] राजा, नृप।

भूसण–स० पु० [सं० भूषण] १ अलकार, गहना।
२ शोभावृद्धि करने वाली वस्तु या गुण।
३ साहित्य मे अलकार।
उ०—प्रस्नोत्तर चरचा मत पीगळ, भूसण सबद अरथ रस भाय। बांकीदास जाणिया विध विध, राज अनूग्रह जगळराय।—बा दा

४ वनस्पति विशेष, जिसका शाक बनता है।

उ०—भेडा गारी भामटी, भांभरहूली भाति। भूसण भूली भारथी, भडहड भोली राति।—मा का प्र

५ भूषण कवि।

६ बारह की सख्या।

वि०—बाहरवा।

रू० भे०—भुखरा, भूकरा, भूकरा, भूराण, भूखाण।

भूसणोपमा-स० पु० [स० भूषणोपमा] उपमा अलकार का एक भेद।

भूसणभोजन-स० पु०—६४ कलाओ मे से एक।

भूसरग-स० पु० [स० भू+स्वर्ग] सुमेरु पवत का नाम।

भूसी-स० स्त्री०—१ किसी वस्तु के छोटे २ छिलको या टुकडो का चूर्ण।

ज्यू—ईसबगोळ की भूसी।

रू० भे०—भुमी।

२ देखो 'भूमो' (अल्पा, रू भे)

भूसुर-स० पु० यो० [स० भू+सुर] धरती का देवता, ब्राह्मण।

भूसौ-स० पु०—१ गेहू, जौ आदि के सूखे डठलो के महीन छोटे-छोटे टुकडे जो गाय-भैंस आदि को खिलाये जाते हैं।

२ चोकर, चापड।

रू० भे०—भुस।

अल्पा०—भुमी, भूसी।

भूह—देखो 'भ्रू' (रू. भे)

उ०—१ मूछ जाय भूहा मिळी, मिळिया भुज अममान। साचो सामत 'चादियो', पाबू' रो परधान।—पा प्र

भूहड़-स० पु०—१ सोलकी वश के क्षत्रियो की एक शाखा जो पहले सिंध (वर्त्तमान पाकिस्तान) मे थी और मुसलमान हो गई।

२ इस शाखा का व्यक्ति।

भूहर-स० स्त्री०—आकाश मे छाए हुए धूलिकण।

भूहरणौ, भूहरबौ-क्रि० अ०—धूलि कणो का आच्छादित होना, गर्द छा जाना।

भूहरणहार, हारौ (हारी), भूहरणियौ—वि०।

भूहरिओडौ, भूहरियोडौ, भूहरयोडौ—भू० का० कृ०।

भूहरीजणौ, भूहरीजबौ— भाव वा०।

भूहरियोडौ-भू० का० कृ०—धूलि-कणो से आच्छादित हुवा हुआ (स्त्री० भूहरियोडी)

भूहरौ—१ देखो 'भवारौ' (रू भे)

२ देखो 'भ्रू' (रू भे)

भूहार, भूहारौ—१ देखो 'भ्रू' (रू भे)

उ०—वणी नैणा भूहार भाल विचत्र, पडै दीपको काजळ हेमपत्र। विचित्र वणी भहकी रेख वक, धरचौ कामदेव कर (रा) मे धनक।

—बगसीराम प्रोहित री वात

२ देखो 'भवारौ' (रू भे)

भूहि— देखो 'भूमि' (रू भे)

भेंइसि—देखो 'भैंस' (रू भे)

उ०—गद्दह गाइ नइ भेंइसि, ऊंट छाली नइ एवड। अम्हनइ ए आधार, तिया धणीया नै अेवड।—स कु

भेंच—देखो 'भीच' (रू. भे)

उ०—वडा भेंच भूपाळ कै काळवाळा, खिडै नाग सु केण केवांन खाळा। अहीराव नै दावडा एह आडा, गुणा वेद जोता कही क्रोड गाडा।—ना द

भेंट—देखो 'भेट' (रू भे)

भेंटणौ, भेंटबौ—१ देखो 'भीटणौ, भीटबौ' (रू भे)

उ०—१ सेठ कह्यो—म्है कमाई माए दिमावर जावू हू। सगळा घर वाळा म्हनै कजूस मानै तौ ई कमाई रै विना म्है अणचींत्या धन नै नी भेंटू।—फुलवाडी

उ०—२ मिनख रो उणियारो होयन म्है मिनख रो लोई मास सपना मे ई नी भेंटू।—फुलवाडी

२ देखो 'भेटणौ, भेटबौ' (रू भे)

भेंटणहार, हारौ (हारी), भेंटणियौ—वि०।

भेंटिओडौ, भेंटियोडौ, भेंटयोडौ—भू० का० कृ०।

भेंटीजणौ, भेंटीजबौ—कर्म वा०।

भेंटियोडौ—१ देखो 'भीटियोडौ' (रू भे)

२ देखो 'भेटियोडौ' (रू भे)

(स्त्री० भेंटियोडी)

भेंटी—देखो 'भेटी' (रू भे)

उ०—के इत्ता मे वो वळद जोर सू उण वाळदिया रा मोरा में भेंटी दी।—फुलवाडी

भेंसाखदियौ-स० पु०—सोने या चांदी पर खुदाई करने का एक कीला। (स्वर्णकार)

भेंसाव—देखो 'भैंसाद' (रू भे)

भे-सर्व० [स० भवन्त] आप।

भेइरवी—देखो 'भैरवी' (रू भे)

भेउ-वि०—१ भेद जानने वाला।

२ देखो 'भेद' (रू भे)

उ०—१ मेकवीस मूरछा, त्रिण (ह) ग्राम निसपति सुर। लहण भेउ खटराग कठे, अवखै माखतर।—गु रू व

उ०—२ चउवीसमउ जिणेसर देव, तिहि जाएवा आपिउ भेउ। मोक्समारगि इण परि जाइ, यति बीजा जे स्रावक थाइ।

—चिहुगति चउपइ

उ०—३ विनयकीरति अभिरामिहि नांमिहि जाणउ एउ, ग्रथ अनेक वखाणए, जांणए अगम भेउ।—प्राचीन फागु सग्रह

भेक–सं० पु० [सं० भेक] १ मेढ़क ।

उ०—१ सुक पिक लगै सवाद, भल थोडौ ही भाखणौ । व्रथा करै बकवाद, भेक लवै ज्यू मरिया ।
—महाराजा बळवतसिंह (रतलाम)

२ देखो 'भेख' (रू भे)

उ०—१ करनला कयौ सुणियौ न कान । वैक्रत भेक मुख चोळवान ।—रामदान लाळस

उ०—२ फदा मे मोडा रै फसगौ, रुळगौ रेहडली । भेक धारतां कीधी भूडी, कुबधा केहडली ।—ऊ का

उ०—४ चौर गुरु बिच्छू चटकावै, ग्यान राब विरळा गटकावै । भेक छाछ कारण भटकावै, लुच्चा वागळ ज्यू लटकावै ।—ऊ का

भेख–सं० पु० [सं० वेश] १ किसी मनुष्य का वस्त्रादि के पहनावे से प्रकट बाह्य रूप-रग, वेश ।

उ०—१ तन उजळा मन सांवळा, बुगला कपटी भेख । इणसें तो कागा भला, बाहर भीतर अेक ।—अज्ञात

उ०—२ अजमेर रौ सूबेदार सताजी बावळियौ दिखणी भाऊ रा जग सू कगाल रै भेख किसनगढ छतरी मे आय बैठो हो । माळी कना सू मूळा माग खाधा ।—बां दा ख्या

क्रि० प्र०—बणाणौ, बदळणौ ।

२ वह कृत्रिम पहनावा जो वास्तविकता छिपाने के लिए धारण किया जाय ।

उ०—भेख लिया सू भगत नह, ह्वै नह गहणा हूर । पोथी सू पडित नही, ससतर सू नह सूर ।—वा दा

क्रि० प्र०—धारणौ ।

३ साधु सन्यासी का पहनावा या वेश-भूषा जो विशिष्ट सम्प्रदाय का सूचक होता है ।

उ०—१ जे सांई का ह्वै रहै, साई तिसका होइ । दादू दूजी बात सब, भेख न पावै कोइ ।—दादूवाणी

उ०—२ नमौ बपु दीरघ वामन वेख, भिखग पुरदर भाजण भेख । नमौ नरसिंघ लिछम्मी-नाह, विसभर बिट्ठळ आदि वराह ।—ह र

उ०—३ सोफी सबद सुणाय, चोर रग देत चिगाडै । बैरागी नै जगत, जगत नै भेख विगाडै ।—ऊ का

४ सन्यास ।

उ०—१ सुखमा बरणू सुख सागर की, अपनी रुख भेख उजागर की । चित चाह उछाह पथा चुणिले, सब सत समाज कथा सुणिये ।
—ऊ का

उ०—२ पितह पुत्र विरोधे, भ्रितह सोम विग्रहे भ्राता । सजण जणा नि क्रोधे, खिम्या समौ भेख जो नथि ।—गु रू व

५ मत, सम्प्रदाय ।

उ०—१ तडण कर कविता तणो, धालू चडण धूब । भडण जोगे भेख रो, खडण करणो खूब ।—ऊ का

उ०—२ अपणे अपणे भेख की, सब कोई राखे टेक । निगम निमाणा एक है, गोळदाज अनेक ।—अज्ञात

६ देखो 'भेक' (रू भे)

उ०—गढ़ि गोळ गोफळ अलति पीनहि, जिहा रतन पायल रेख । नेपुरा नादह रणझुणइ, बहु विवधि प्रतिरव भेख—रुकमणी मगळ

रू० भे०—भेक, भेग, भेस ।

भेखख—देखो 'भिक्षुक' (रू भे)

भेखज—देखो भेसज' (रू भे)

उ०—१ निरतर अतर मे निज नाथ, स्वय घर ध्यान घनतर साथ । जरा रिपु भेखज के ढिग जाय, महाजन जामण मरण मिटाय ।—ऊ का

भेखणौ, भेखबौ–क्रि० स०—१ सन्यास लेना ।

२ भेष बदलना ।

भेखणहार, हारौ (हारी), भेखणियौ—वि० ।

भेखिओडौ, भेखियोडौ, भेख्योडौ—भू० का० कृ० ।

भेखीजणौ, भेखीजबौ—कम वा० ।

भेखधारी–क्रि० यो० [सं० वेश+धारी] भेष धारण किया हुआ, सन्यासी, साधु ।

उ०—जेहवी प्रीति कुटिल नारी नी, जेहवी हो बादल केरी छाहडी जी । जेहवी मित्राई भेखधारी नी, तेहवी हो कापुरुसा री बाहडी जी ।—वि कु

भेखियोडौ–भू० का० कृ०—१ सन्यास लिया हुआ २ भेष बदला हुआ (स्त्री० भेखियोडी)

भेग—देखो 'भेख' (रू भे)

उ०—भूधर कही—खरची दिरावौ । ताहरां साठ रिपिया दिराया सो पल्ले बाध, अतीत रौ भेग धर बाहिर हुवौ सो ढीगसर जाय पहुचियौ ।—सूरेखीवें कांधळोत री बात

भेड–सं० स्त्री० [सं० भेड] १ बकरी के आकार प्रकार का एक पालतू चौपाया जानवर जिसकी ऊन व खाल कई कामो मे आती है तथा मास खाने के काम आता है ।

मुहा०—भेड चाल=अनुकरणीय प्रवृत्ति ।

२ बैल । (अ. मा)

३ राज मड्डक, बडा मेंढक ।

४ बहुत ही सीधा-सादा या मूर्ख व्यक्ति ।

रू० भे०—भेडी ।

भेडणौ, भेडबौ–क्रि० स०—१ टक्कर लगाना, भिडाना ।

उ०—डाक काळ रूपी डाच उवेडे कटार उद्घा, भीमनाद भेडे रेडै गयदा गभीर । आहेडै तेडै पेडै वीर देवीसिंघ आळा, केडै लाग तूही छेडै डाखियो कठीर ।—कवर दौलतसिंघ रो गीत

२ धारण करना, कसना ।

उ०—१ दुजल छतीसुहि डावियां, भूधारण भेडीह । धनुस भुजा डड धारिया, आया आहेडीह ।—पा प्र

३ प्रहार करना ।

४ भिडाना, सटाना ।

५ सुसज्जित होना ।

भेडणहार, हारो (हारी), भेडणियो —वि० ।

भेडिओडो, भेडियोडो, भेड्योडो—भू० का० कृ० ।

भेडीजणो, भेडीजबो—कर्म वा० ।

भेडणो, भेडबो—रू० भे० ।

भेडव–वि०—योद्धा, सुभट ।

भेडाव–स० पु०—भेडिया । (शेखावाटी)

भेडियो–स० पु०—जगली कुत्तो से मिलता जुलता एक मासाहारी जानवर जो भेड बकरी आदि को उठाकर ले जाता है ।

भेडै–क्रि० वि०—१ बराबर, समानान्तर ।

२ समीप, निकट ।

उ०—१ इण रीति प्रमारा रा सहाय काज सोभति रा सेत मे जय रा दुदुभी घुराय प्रथ्वीराज रा वीरां भूहारै भेडै मासुरी लोभ आणियो ।—व भा

उ०—२ भजै बास चोथी नरी 'मेभ' भेडै, नरानाह यू नानणो द्रग नेडै ।—व भा

भेडो–स० पु०—१ नर भेड ।

२ देखो 'भेडो' (रू भे)

उ०—१ पच्छ ग्रहै प्रालब्ध, नही पुरुसारथ नेडो । चोखै मत नही चाय, भाय आवै मत भेडो ।—ऊ का

उ०—२ पडियो सेडो पेखि, भवन भेडो भगणावै । भीताहि भेडै भरी, गरट माख्या गणणावै ।—ऊ का

भेजणो, भेजबो–क्रि० स०—१ किसी व्यक्ति को आदेश देकर या आग्रह से कहीं जाने के लिए प्रवृत्त करना, रवाना करना ।

उ०—१ पाय हुकम पागडै, पाव दीधो छत्रपत्ती । भैरव दोनां भेजि, सकनि तेडी त्रिसकत्ती ।—मे म

उ०—२ ठाकरसा सो बात सुणनै घणा ई हमिया । मणवारिया नै भेज सेठा नै कोट मे बुलाया ।—फुलवाडी

२ किसी वस्तु या पदार्थ को एक स्थान से दूसरे स्थान पर किसी साधन द्वारा पहुचाना ।

उ०—विणजारो थोडो फेर जोर सू कह्यौ—हुकम, म्हारी अरज तो सुणावो, नगर कठियारा वाळी ईं दूग्या म्हारै माथै ओ निजराणो भेजियो है, कबूल फरमावो ।—फुलवाडी

भेजणहार, हारो (हारी), भेजणियो—वि० ।

भेजवाडणो, भेजवाडबो, भेजवाणो, भेजवाबो, भेजवावणो, भेजवावबो, भेजाडणो, भेजाडबो, भेजाणो, भेजाबो, भेजावणो, भेजावबो—प्रे० रू० ।

भेजिओडो, भेजियोडो, भेज्योडो—भू० का० कृ० ।

भेजीजणो, भेजीजबो—कर्म वा० ।

भेजाडणो, भेजाडबो—देखो 'भेजाणो, भेजावो' (रू भे)

भेजाडणहार, हारो (हारी), भेजाडणियो—वि० ।

भेजाडिओडो, भेजाडियोडो, भेजाड्योडो—भू० का० कृ० ।

भेजाडीजणो, भेजाडीजबो—कर्म वा० ।

भेजाडियोडो—देखो 'भेजायोडो' (रू भे)

(स्त्री० भेजाडियोडी)

भेजाणो, भेजाबो–प्रे० रू०—१ किसी व्यक्ति को आदेश देकर या आग्रह से कही पर जाने को प्रवृत्त कराना, रवाना करवाना, भिजवाना ।

२ किसी वस्तु को एक स्थान से दूसरे स्थान पर किसी साधन द्वारा पहुचाना, भिजवाना ।

भेजाणहार, हारो (हारी), भेजाणियो—वि० ।

भेजायोडो—भू० का० कृ० ।

भेजाईजणो, भेजाईजबो—कर्म वा० ।

भेजाडणो, भेजाडबो, भेजावणो, भेजावबो—रू० भे० ।

भेजायोडो–भू० का० कृ०—१ किसी बडे व्यक्ति को आदेश देकर साग्रह कही पहुचने मे प्रवृत्त कराया हुआ, रवाना कराया हुआ २ किसी पदार्थ को एक स्थान से दूसरे स्थान पर किसी साधन द्वारा पहुचाया हुआ, भिजवाया हुआ

(स्त्री० भेजायोडी)

भेजावणो, भेजावबो—देखो 'भेजाणो, भेजावो' (रू भे)

भेजावणहार, हारो (हारी), भेजावणियो—वि० ।

भेजाविओडो, भेजावियोडो, भेजाव्योडो—भू० का० कृ० ।

भेजावीजणो, भेजावीजबो—कर्म वा० ।

भेजावियोडो—देखो 'भेजायोडो' (रू भे)

(स्त्री० भेजावियोडी)

भेजियोडो–भू० का० कृ०—१ किसी व्यक्ति को कही पर जाने मे प्रवृत्त किया हुआ, रवाना किया हुआ, भेजा हुआ २ किसी पदार्थ को एक स्थान से दूसरे स्थान पर किसी साधन द्वारा पहुँचने मे प्रवृत्त किया हुआ

(स्त्री० भेजियोडी)

भेजी—देखो 'भेजो' (अल्पा, रू भे) (अमरत)

उ०—१ जैमलजी सरफुद्दीन माल कोटरी पोळ आगै ऊभा देख रावजी देवदासजी नू दिवी हुती वारा खिजमतदार रै कनै हुती अेक मुगळ वन्दूक लेण भूकियो जद कडियाळी गेडी मुगळ रै माथै जडी । गेडी रा लगणा सू नाक मे भेजी निसरी—वा दा ख्या

उ०—२ आंत भोज भेजो असत, नैरा नळी भख नेह। आमिख नर नाखै उदर, आंणै हरख अछेह।—बा दा

भेजो—स० पु०—१ मस्तिष्क, दिमाग।

उ०—१ हा उण इच्छा पर भिच्छा गत हाणी, जग मे दैविच्छा किण ही नह जांणी। बादळ बीजळिया नभ मे नहि नेडी, भेजो भणणायो भळकी पुळ भेंडी।—ऊ का

उ०—२ पण या पूगी-पूगी जितरै तो एक तरवार ठाकर रो भेजो फोड'र कनपडा रो लपतरो उखेलती खाधा तक जाय पूगी।
—रातवासो

मुहा०—भेजो खाणो, भेजो चाटणो=मस्तिष्क को पूरा थका देना।
२ खोपडी के अन्दर का गुदा, मगज।

उ०—उण समय चहुवाण कन्है घणा मेरा रा माथा सू माथा भिडाय भेजा काढिया।—व भा

भेट—स० स्त्री०—१ मिलन, मुलाकात।

उ०—१ माजी वाजी सुरग सिवायो, मिळे दान खग दुवा मद। भेट हुवो नह जको भाजसी, क्रूरम घोको मूझ कद।—वां दा

उ०—२ मिनखा मे थळियो, जिनावरा मे नळियो अर भोजन मे दळियाळी कैवत कूडी कोनी, सोळै आना साची है। आ भाग्या सू भेटा हुवै न, घोरियाळा गांव देखा।—दसदोख

२ सप्रयोजन किसी से मिलना, साक्षात्कार करना।

उ०—सती जती कव सूर, मेहप मित पिंडत मुगध। जांणै भेद जरूर, भेट हुआ सू भेरिया।—महाराजा बळवतसिंह (रतलाम)

३ किसी को सम्मानपूर्वक दिया जाने वाला उपहार, सौगात, नजराना।

उ०—'अजण' भेट आणियो, कमध पह लिया उछव करि। विंद इद वणि वरै, सकति रूपा बहु सुदरि।—सू प्र

४ भिडन्त, टक्कर, युद्ध।

उ०—भुजगां तणी भेट थारा भुजा री, दिमी अतरा गत छोटी दुजा री। सदा आणियो नागणी बोल सारो, थयो वेद पासै नको वेण थारो।—ना दा

५ दर्शन।

उ०—वे कर जोडी वीनवु रै, सुणिजो थभण पास। प्रभु परदेसड चालता रै, एक करू अरदास। जीवनजी वेगी देज्यो भेट।—स कु

६ देवता या पूज्य व्यक्ति की सेवा मे भक्ति एवं श्रद्धा से अर्पित की जाने वाली वस्तु।

उ०—कियो हुरख कमधज्ज, निरख नायक व्रहमडा। भेट ग्रांम गज भिडज, पूज प्रम धाम घमडा।—रा. रू

क्रि० प्र०—आणी, चढाणी।

७ कर, टैक्स।

उ०—दांण, पूछी, हल मोभ भाग, भेट, तलारक्षक, वद्धापन, मलवरक वल, चचा, चारिका, गढ, वाटी, छत्र, आलहण, थोटक, कुमारादि सुखडी इति क्रमेण रा दम करा जाता।—व स

रू० भे०—भेंट, भेटि।

अल्पा०—भेटडी।

भेटको—देखो 'भेट' (अल्पा रू भे)

उ०—१ इण गवाडी पूग्या पै'ली पै'ली तो वै घणी बाता विचारतै आवै पण डोकरी सू भेटका व्हैतां ई की बात कैंवणी वारै हाथ री बात नी रै वै।—फुलवाडी

उ०—२ म्हारै साथै ई वो कम कोगत नी करी बेटी! भेटका व्है जावै तो पै'ल फटकारै फारगती कर दू।—फुलवाडी

उ०—३ चमचमाट करतो परभातियो तारो ऊगो जित्तै ई सेठा नै किणी सू भेटका नी व्हिया —फुलवाडी

भेटण—स० स्त्री०—१ मिलने की क्रिया या भाव।
२ स्पर्श करने की क्रिया या भाव।

भेटणो—स० पु०—१ विनती, प्रार्थना।

उ०—वित्त इम लेई राजाजी रो भेटणो, आयो गुरा के पास हो महामुनी। स्वेताबिका' नगरी हो जाता भाव सू, वदणा करे उल्लास हो महामुनि।—जयवाणी

२ मिलाप।
३ टक्कर, भिडत।
४ देखो 'भेट' (रू भे)

उ०—इक आवी पाअे पडइ, अलगा करइ जुहार। इक अनोपम भेटणा, सुपइ सपति सार।—मा का प्र

भेटणो, भेटबो—क्रि० स०—१ मिलना।

उ०—१ चीरी रही धन हीयडउ लगाई, जाणिक वाछरू है मेल्ही गाई। नयन ते आसू खेरिया, कव म्हैं भेंटस्या साभरघा-राव।
—वी दे

उ०—२ मह लागो पाप अभनमा 'मोकळ', पड सुदतार भेटतां पाप। आज हुवा निकळक अहाडा, पेखे मुख ताहरो 'परताप'।
—महाराणा प्रतापसिंह रो गीत

२ साक्षात्कार होना, भेट करना।
३ आलिंगन करना।

उ०—१ कर नवल किसोरी सघर सोरी, मरियादा मेटता है, विसफळ वैरागी त्रिभवन त्यागी, भागी भुज भेटदा है।—ऊ का

उ०—२ हरिखीय उग्रसेन वेटीय भेटीयउ वर अवरोध, जगगुरु अमीय समांणिय वाणीय जन प्रतिवोध। उपसम तरुवर रोपइ लोपइ मन सदेह, मुक्ति तणउ पथ दाखिय राखिय त्रिभुवन रेह।
—नेमिनाथ फागु

उ०—३ काचल कातरिया बाजू मे काठा, भुजतळ भेटै जा भेटै अध माठा। कर मे काकणिया जसदा गळ काठी, अदभुत मोरा पर लुठतोडी आटी।—ऊ का

४ टकराना, भिडना।

उ०—१ भयकर रूप भुजा जुध भार, हणै खळ भूत भणै वळिहार। खणख्खण खेटक भेटत खाग, रिखेस्वर बीण भणझ्भण राग।—मे म

उ०—२ अधिप 'भीम'रै अग, विजय कीधा कई वारा। मड साम्रव घण भेटि, किया घड पार कटारां।—व भा.

५ युद्ध करना, लडना।

६ दर्शन करना।

उ०—१ मोरो मन तीरथ मोहियउ, मइ भेटयउ हो पदम प्रभु पास। मूलनायक प्रतिमा भली, प्रणमता हो पूरै मननी आस।

—स कु.

७ तीर्थयात्रा करना।

उ०—पाचै पाडव सघ करि, सेत्रुज भेटयउ अपारोजी। कास्ट चैत्य विव लेपनउ, ए वारमौ उद्धारो जी।—स कु

८ स्पर्श करना, छूना।

उ०—१ गोह सरीखा पामर गाऊ, व्याध कवधा श्रीध बताऊ। नै सट पापी गौतम नारी, तै रज पावा भेटत तारी।—र ज प्र

उ०—२ जिन चरण ध्रुव अटळ कीनै, राखि अपनी सरण। जिन चरण प्रह्लाद भेटयौ, नख मिखी स्री भरण।—मीरा

उ०—३ वरियाम सिलह पोसा विचै, भुजा 'अभै' नभ भेटियौ। तदि जाणि भांण ग्रीखम तणौ, काळी घटा लपेटियौ।—सू. प्र

९ अस्पृश्य का स्पर्श करना, अशौच लगना।

ज्यू—मरियोडा जिनावर भेटणा।

उ०—सिवियाण 'कल्याण' तणै व्रत सीधो, अगै भेटिया असत अग्यान। आजस् आभडछीत उतरियौ, स्रोण गगोदक हुवौ सिनान।।—दूदौ आसियौ

१० ससर्ग मे लाना।

उ०—सदाई लगै खाग नै त्याग सूरा, परतै जै प्रिथीनाथ भूपाळ पूरा। पर स्त्री न भेटै गऊ विप्र पाळै, चलै राह वेदी खित्रि ध्रम्म चालै।—वचनिका

११ अर्पण करना, चढाना।

१२ प्राप्त करना।

उ०—१ सव सुख मेरे साइयां, मगळ अति आनद। दादू सज्जन सव मिळै, जव भेटै परमानद।—दादूवाणी

उ०—२ मौत नै इण विव हरख सू भेटणी तो आज पै'ली कदेई नी सुणी।—फुलवाडी

१३ उदय होना।

उ०—ग्रैसै दिनकर भेटीयां, निसकर जाहि नसाय। यु 'हरीया' गुर भेटीयां, मग्य अधारा जाय।—स्री हरिरामदासजी महाराज

भेटणहार, हारौ (हारी), भेटणियौ—वि०।

भेटिग्रोडौ, भेटियोडौ' भेटयोड़ौ—भू० का० कृ०।

भेटीजणौ, भेटीजबौ—कर्म वा०।

भेंटणौ, भेंटबौ, भेडणौ, भेडबौ—रू० भे०।

भेटरडौ—स० पु०—जौ व गेहू का मिश्रण।

भेटा—स० पु० (व व.) १ मिलाप, मिलन।

उ०—१ तद इहा रै आ रीत जो जै दिन परणीजै ते दिन हीज सिर गूथणी कर रात बीदणी भेटा करै बीद सौं।

—ठकुरै साह री वात

उ०—२ किसनजी वोल्यौ—भाग चोखो ही है। जद ही था जिसा भला माणसां सू भेटा हुआ है।—दसदोख

२ टक्कर, भिडत।

उ०—खेटा करहु खळन सो, भेटा लेहु भीर। मन हेटा कर हु न मरद, वेटा तू है वीर।—केसरीसिंघ वारहठ

भेटि—देखो 'भेट' (रू भे)

भेटी—स० स्त्री०—१ पशुओ या मनुष्यो द्वारा सिर से किया जाने वाला आघात, प्रहार या चोट।

उ०—जोधपुर गढ मार्थ मुकनदासजी नै छिपीयै ठाकर उदावत परतापसिंघजी मारिया तद भीम धनौ सिनांन करण गा हा पण पाछा आया गढ माथै लोहा पोळ रा किमाड तोड भेटी सू 'घनौ' काम आयौ नै छिपीये।—वी स टी

२ टक्कर, भिडत।

उ०—घेठी लाज आगेठी पळैटी ज्यू ऊजळी धारा, जेटी भार पडेतै कणैठी कायै जोम। हेठी चखा न धारै प्रथमी जीत गोरा हूता, भीम ज्यू करेवां भेटी खाघी बीर भीम।—जसौ आढौ

३ तुकवन्दी।

उ०—भेटी री तुक भागवा, ऊभै लघु आणोर। रखै नेम इण रीत रौ, सो हिं खुदद सांणोर।—पिं प्र

४ नम्बर खुलने वाले जुए में जुआरी द्वारा सुवह और शाम के लिए लगाया जाने वाला एक अक्षर।

वि० वि०—उस दिन दोनों समय वही नम्बर खुल जाने पर ६४ गुना वैसा मिलता है।

५ सहारा।

रू० भे० - भेंटी।

भेटौ—देखो 'भेटा'।

उ०—पिण मन माहि हिवै जाणू अछू रै, कोइक पुण्य प्रमाण। वघवजी तुम सु भेटौ हुओ रै, तो भय भागौ सुलतान।—प च चौ.

भेडणौ, भेडबौ—देखो 'भेटणौ, भेटबौ' (१) (रू भे)

उ०—१ कूयर तुरीय खेडउ राउ हूइ लेउ भेडउ। कुरुपति दल रोली तउ वलउ सैन्य भेली।—सालिसूरि

उ०—२ रोसि पाडव चडघा रथ खेडघा, तउ सुसरम दल नाभउ

भेड्या। भीम भीसण गदा लेउ धायउ, तउ सुसरम ग्रप चित्ति विछाहिउ।—सालिसूरि

२ देखो 'भेडणौ, भेडवौ' (रू भे.)

भेडणहार, हारौ (हारी), भेडणियौ—वि०।

भेडिओडौ, भेडियोडौ, भेड्योडौ—भू० का० कृ०।

भेडीजणौ, भेडीजवौ—कर्म वा०।

भेडव–स० पु०—योद्धा, वीर।

भेडवणौ, भेडववौ—देखो 'भिडाणौ, भिडावौ' (रू भे)

उ०—भीम भीडतउ जमरण तडँ, कूटइ कुरव वीर। पाडइ दउडइ भेडवइ, वाधी वीलइ नीर।—सालिभद्र सूरि

भेडवणहार, हारौ (हारी), भेडवणियौ—वि०।

भेडविग्रोडौ, भेडवियोडौ, भेडव्योडौ—भू० का० कृ०।

भेडवीजणौ, भेडवीजवौ—कर्म वा०।

भेडवियोडौ—देखो 'भिडायोडौ' (रू भे)

(स्त्री० भेडवियोडी)

भेडा–स० स्त्री०—एक प्रकार की रग बिरगी वतख।

भेडागारी–स० स्त्री०—शाक बनाने वाली वनस्पति का नाम।

उ०—भेडागारी भांमटी, भाभरहूली भाति। भूमरा भूली भारथी, भडहड भोली राति।—मा का प्र

भेडागारौ—देखो 'वेढागारौ' (रू भे)

(स्त्री० भेडागारी)

भेडियोडौ—१ देखो 'भेटियोडौ' (रू भे)

२ देखो 'भेडियोडौ' (रू भे)

(स्त्री० भेडियोडी)

भेडौ–स० पु०—भेड का मूत्र।

भेणी–स० पु०—पजाव का एक तीर्थ स्थान भेणी साहव जहा सिक्खो का गुरुद्वारा भी है।

भेणौ, भेवौ—देखो 'भेयणौ, भेयवौ' (रू भे)

भेणहार, हारौ (हारी), भेणियौ—वि०।

भेयोडौ—भू० का० कृ०।

भेईजणौ, भेईजवौ—कर्म वा०।

भेदग–वि०—भेद जानने वाला।

उ०—राजान कुग्रर किसा एक रजपूत छै। दूत हकीकत कहै छै, जु राजान कुग्रर उठती वहीरौ जुवान ग्राजान वाहू राजहस लीलग छै। भेदग छै। तिमा ही पोरस रा गाढ, तिमा ही कामवट रा ग्रग, तिसा ही रजपूतवट रा ग्राचार देख नै महाराजा राजेसर ग्रजमेर रै थारणै राखैग्रा छै।—रा सा स

भेदगर–वि०—भेदन करने वाला।

उ०—समर वाग वज्र कुसम, भमर जिम करि भेदगर। दू दूहा मझि एक, सुवप ग्रम्मर काइ सकर।—सू प्र

भेदगी–वि०—भेद जानने वाला, रहस्य जानने वाला।

भेद–स० पु० [स० भेद] १ भेदने या छेदने की क्रिया या भाव, छेदन, वेधन।

२ दरार, फटन।

३ ग्रलहदगी, ग्रलगाव।

४ झगडा, ग्रनैक्य।

५ गुप्त वात।

उ०—१ दे दे दरसण दौड, भेद घर रौ लै भारी, दे दे दरसण दौड, निलन भार्ग लै नारी।—ऊ का

उ०—२ 'केहर' साम धरम पण कीधो, दियौ जीव पण भेद न दीधो। बोले बोल वधती वाजी, राव हुवौ उर 'इदर' राजी।

—रा. रू.

उ०—३ सेवट खपता खपता मत्री रौ वेटौ राजकवर सू भेद री साची वात जाणी।—फुलवाडी

उ०—३ खवासजी पूरी वात वताई जित्तै जित्तै वादळ ग्रापरा मन मे सैं जुगत विचारली। पै'ली वताया वात री सगळौ मठ मर जावै, इण वास्तै किणी नै कीं भेद नी दियौ।—फुलवाडी

मुहा०—१ भेद खोलणौ=गुप्त वात प्रकट कर देना। २ भेद देणौ=गुप्त वात प्रकट कर देना। ३ भेद पाणौ=गुप्त वात जान लेना। ४ भेद वताणौ=गुप्त वात वता देना, गुप्त वात प्रकट कर देना। ५ भेद मिळणौ=गुप्त वात का पता लगना। ६ भेद लैणौ=गुप्त वात का पता लगाना।

३ छिपा हुग्रा वह रहस्य या तत्त्व जिसे साधारण वुद्धि से न जाना जा सके, मर्म।

उ०—१ ग्रग्र देखइ इक चिटी उघाडी, विघ ग्राखइ सउ कहतउ वेद। माता नमौ तुम्हारी महिमा, भूलउ तउ व्रह्मादि (क) भेद।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ तासो पीर कहू तन केरी, फिर नहिं भरमो खानी। खोजत फिरू भेद वा घर कौ, कोई न करत वखानी।—मीरा

उ०—३ वडा तत तूझ लहै न विचार पुरदर तूझ न जाणै पार। भला मुनि ग्रादि न जाणै भेद, विरचिय तूझ न जाणै वेद।

—ह र

४ तात्पर्य, गूढार्थ।

उ०—१ लागू हू पहली लुळे, पीतांवर गुर पाय। भेद महारस भागवत, प्रामू जास पसाय।—ह र

५ ग्रन्तर, फर्क।

उ०—१ हसा वगला हाल सू, जिम ग्रंतरौ जणाय। कवत सुकविया कुकविया, भेद प्रगट इण भाय —वा. दा

उ०—२ उण दिन रा तमासा ग्रर ग्राज रा तमासा मे थानै की भेद निगै ग्रावै।—फुलवाडी

६ मतमतान्तर।

उ०—हुए हिंदु वळ हीरा घरा पण खीण सुरा भ्रम। मिटै वेद मरजाद, भेद गुण ग्राद पड़ै भ्रम।—रा रू

७ किस्म, तरह, प्रकार।

८ विश्वास घात।

९ घोखा।

१० द्वैतता।

११ प्राचीन राजनीति मे शत्रु को वश मे करने हेतु चार उपायो मे से एक जिसके द्वारा शत्रु के मित्रो मे परस्पर झगडा उत्पन्न कर दिया जाता है।

उ०—इणनै तो भेद सू कावू करणो पडसी। सूर वीर नै भेद पाडनै पराजित करणो—ग्रा वडेरा री सीख है।—फुलवाडी

रू० भे०—भिदि, भेउ, भेदि, भेव।

भेदक—स० पु० [स०] १ सगीत के भेद जानने वाला, सगीतज्ञ।

उ०—पाछइ प्रोहित राखियउ, तेडचा मागणहार। जे भेदक गीतां-तणा, वात करइ सुविचार।—ढो मा

२ भेदने या छेदने वाला, वेधक।

भेदकसूळ—स० पु० [स० भेदकशूल] एक प्रकार का शस्त्र।

भेदकातिसयोक्ति—स० पु० [स० भेदकातिशयोक्ति] एक अर्थालकार जिसमे वास्तविक अभिन्न उपमेय को भिन्न (अभेद होने पर भी भेद) कहा जाय। इसके वाचक शब्द प्राय 'ग्रौरै' वा इसके पर्याय 'नवीन', न्यार' ग्रादि होते हैं।

भेदकारी—वि०—१ भेदन या छेदन करने वाला।

२ मिलावट।

भेदग, भेदगर—वि०—१ भेद या रहस्य जानने वाला।

उ०—१ 'हणु' अगद खळ 'प्रहारण', 'भालपत' नळ नील भारण। ग्राद भेदग दस अघारण, वडा डारण वीर।—र रू

उ०—२ नारी नदी निघात, चाहीजै भेदग चतुर। वाता ही मे वात, रीझ खीझ मे 'राजिया'।—किरपाराम

उ०—३ जागी भडा कवी गुण जोडा, साकुर तूज समेळा। ऊदा-वत सुवराम अभनमो, भेदग राखै भेळा।

—केसरीसिंघ उदावत रो गीत

उ०—४ वहै करारा लोह ग्रौरै जठै वहादर, भेदगर खरारा ग्रेम भाखै, जतन न करै 'रतन' जिद रा जुडतो, 'रतन' ईजति तणा जतन राखै।—पूरणदास महियारियो

उ०—५ स्रुत सभ्रत छद खट पच नव सपूरण, भेदगर च्यार दस वोघ भाळी। अरथ जुत वोलवो हैल वीजा 'ग्रजा', वेळ अम्रत-तणा उदघ वाळी।—र ज प्र

२ भेद वताने वाला।

३ गुप्तचर।

भेदडी—स० स्त्री०—ग्राटे व चावल का वना पतला खाद्य पदार्थ, राव।

भेदजमा—स० पु०—वलभद्र। (ग्र मा)

भेदणो, भेदवो—क्रि०स० [स० भेदन] १ भेदन करना, छेदना, वींधना।

उ०—१ भेदे तैं वार किता भूगोळ, करती ग्राणी गग किलोळ। दळे तैं केता वार दईत, इद्रासण दीधी सक्र ग्रजीत।—ह र

उ०—२ काळी-कठळि वीजुळी, नीची खीवइ निहल्ल। उर भेदती सज्जणा, ऊचेडती सल्ल।—ढो मा

२ विदीर्ण करना।

उ०—मम ढील करो हल वार म लावो, वेग चढो वहिळा वहिळा। भिडता भड सूरज मडल भेदै, झूळ भरै रभ झूझ झळा।

—गु रू. व.

क्रि० ग्र०—३ व्याकुल होना।

उ०—तिण वेला पथी एक कि, भूख त्रिस भेदीयउ रे। विण ग्रमलें गहिलें देहकि, पथ ग्रति देखियउ रे।—प च चौ.

भेदणहार, हारो (हारी), भेदणियो—वि०।

भेदिग्रोडो, भेदियोडो, भेदयोडो—भू० का० कृ०।

भेदीजणो, भेदीजवो—कर्म वा०।

भिदणो, भिदवो—रू० भे०।

भेदन—स० पु०—भेदने या छेदने की क्रिया।

वि०—भेदने या छेदने वाला, दस्तावर।

रू० भे०—भेयण।

भेदनकाळद्री—स० पु०—श्री कृष्ण के वडे भाई वलराम। (ह ना मा)

भेदवुद्धि—स० स्त्री०—फूट, ग्रलगाव।

भेदभाव—स० पु० यौ० [स० भेद+भाव] १ मन में होने वाला वह भाव कि अमुक ग्रौर अमुक मे अन्तर है।

२ पक्षपात-पूर्ण नीति।

३ अन्तर, फरक।

४ मतैक्य का अभाव।

५ एकता या एकात्मता का अभाव या विचार।

६ पारस्परि विरोध या वैमनस्य, ग्रापसी अनवन या विगाड, फूट।

उ०—पीछै वीकानैर रै भेदभाव री वाता करमचद पातसाहजी सू वौहत जाहर कीवी। ग्रर काम दीवाणगी रो मुहता वैद ठाकु-रसी नू हुवो।—द दा

रू० भे०—भेवभाव।

भेदागळ—वि०—भेद या रहस्य जानने वाला।

उ०—भेदागळ री भूख, भू पडियो माजै नहीं। दाखा होवै दूख, जीव तळमलै 'जेठवा'।—जेठवो

भेदि—देखो भेद' (रू भे)

उ०—१ अणत काल जीव रहइ निगोदि, सूक्ष्म वादर छइ विहु भेदि। सतर वार एक ऊसासह माहि, वली वली ऊपजइ तीह वलइ जाइ।—चिहुगति चउपई

उ०—२ सतीय वेउ छइ कासगि रही, इद्रह ग्रायसु तु तुम्ह कही। मेल्हउ पडव वडइ वछेदि, विणु हथियार वाघा भेदि।—प प च.

भेदिनी-स० स्त्री०—योगियों की पटचक्र को भेदन करने की शक्ति या सिद्धि।
रू० भे०—भेयणी।

भेदियोडो-भू० का० कृ०—१ भेदन किया हुआ, छेदा हुआ, वेधन किया हुआ २ विदीर्ण किया हुआ ३ व्याकुल हुवा हुआ (स्त्री० भेदियोडी)

भेदियो—देखो 'भेदी' (अल्पा, रू भे)

भेदी-वि० [स० भेदिन्] १ भेदन करने वाला।
उ०—डगा घीसता साकळा सूत डोरा, घरा यू खणै ज्यू बणै खेत घोरा। भळा जूह वै वेरिया व्यूह भेदी, विजै मित्र जे चित्र सग्राम वेदी।—व. भा
२ रहस्य जानने वाला।
३ गुप्तचर, जासूस।
रू० भे०—भेदू।
अल्पा०—भेदियो।

भेदीसवद-स० पु०—१ शब्द सुनकर निशाने पर वाण चलाने वाला।
२ अर्जुन।
३ दशरथ।

भेदुर—देखो 'भिदुर' (रू भे)
भेदू—देखो 'भेदी' (रू भे)
भेद्य-वि०—भेदन करने योग्य, जो भेदा जा सके।
भेभराभूत—देखो 'भाभराभूत' (रू भे)
भेमसेनीकपूर—देखो 'भीमसेनीकपूर' (रू भे)

भेय—देखो 'भेद' (रू भे)
उ०—जिण सासन जे अवर, बहुय सिद्धत प्रसिद्धि। तै जाणइ सवि भेय वेय, वपु दै पिग वुद्धि।—ऐ जै का स

भेयण—१ देखो 'भेदन' (रू भे)
२ देखो 'भुवन' (रू भे)
३ देखो 'भवन' (रू भे)

भेयणी—देखो 'भेदिनी' (रू भे)
भेयणो, भेयवो-क्रि० स०—गीला करना, भिगोना।
२ औषधि को भावना देना। (अमरत)
भेयणहार, हारो (हारी), भेयणियो—वि०।
भेयोडो—भू० का० कृ०।
भेईजणो, भेईजबो—कर्म वा०।
भेणो, भेवो, भेवणो, भेववो—रू० भे०।

भेयोडो-भू० का० कृ०—भिगोया हुआ (स्त्री० भेयोडी)
भेयो-वि०—भीगा हुआ, गीला। (अमरत)
भेर-स० पु०—१ तरबूज, मतीरा।
[स० भेर] २ एक प्रकार का वाद्य, जो भेरी नामक वाद्य से आकार-प्रकार मे भिन्न होता है।
उ०—रोडि द्रुमति ढोल रवद, सहनाई भेर सद्द, निफेरी भेरी निनद, नीसाण घुवे। पचसद दमाम पूर, रुडै डूड रिणतूर, प्रमाणै मेघ पहूर (पडर), हैरान हुवै।—गु रू व
३ वडा ढोल।
४ वडा नगारा।
अव्य०—१ फिर, पुन।
२ और।
उ०—कदच जो कहा समद री सीप तिका पण न फवै इण रै समीप। भेर जो मीठा छोटी सी मीन, तिका तो लाजा मरती हुई जळ मे लीन।—र हमीर
३ देखो 'भेरी' (मह, रू भे)
उ०—हुई पहिरावणी हरखीउ राई, अचल वधी राजकुमार। चौरी चढियो भोज की, वाजइ वरगू भूगळ भेर।—वी दे

भेरव—देखो 'भैरव'।
भेरवो—देखो 'भैरव' (अल्पा, रू भे)
भेरि—देखो 'भेरी' (रू भे)
उ०—हस्ती, हयवर, घन, देखकर, फूल्यो अग न माइ। भेरि दमामा एक दिन, सब ही छाडे जाइ।—दादूवाणी

भेरी-स० स्त्री० [स० भेरि, भेरी] १ युद्ध मे प्रयुक्त वाद्य विशेष।
उ०—१ खेलै कळावर धीग डडाळा पखाळा खमें, रणकै भेरी वीरूप सूरा भरै रीस। खेळा मिळै वीर चडा मारतडा पग खडै, अडै ऊभो सुरताण चहूवाणा ईस।—राव मत्रसाळ री गीत
२ तुरही के आकार का वाद्य विशेष।
उ०—१ वीर अदग वाज्या, जयढक्क वाजी, समहर सामह्या, अहत्रहतै अवक तणै अहत्रहाटि त्रिभुवन टलटलिउ, भेरि भुगळ तणै भूभूयाटि भूकिइ भिलकि फाटी।—व सा
उ०—२ तूटा गज सिर करै अवका, दातूसळा वजावै डका। गत अत करि सिंधू सुर गावै, वयड सूडची भेर वजावै।—सू. प्र.
उ०—३ इण भात री अनेक आसीस दियै छै। असो गहरै साद कविराज बोलै छै, जाणै नगारै डको हुवो कना भेर घाव हुवो। इण भात कविराज आसीस देवै छै।—रा मा स
३ ढोलक।
उ०—भभा अदग भेरी भुकार वधिरीकृत दिगतर, रथचक्र घन-घनारवि पूरित गिरिघरणि विवर उत्फालितरज पुजमलिनीकृत गगनमडल।—व स
४ ढोल।
उ०—विसम ढाक स ढूकस ढमढमी, भरहरी भर भेरि विहामणी। उच्चरी तुररी कुरुरी जसी, सुभट ना सवि रोम ज उद्धसी।
—सालिसूरि

भेरीपरीक्षा–स० स्त्री०—७२ कलाओ मे से एक।

भेरू, भेरू, भेरूजी—देखो 'भैरव' (रू भे)

उ०—१ पाचू पाडव फेरि, घेरि अपणैं घरि आया। चावड के सिर चोट, भैद भेरू का पाया।—ह पु वां

उ०—२ मुलताणी ताखो मछीपटण तासतो टुकडी दुर्मेणा बासतो मीसजर भेरू तनसुख चोरसो अटायण दुमामी सालु जरकसी कचीयो चूनडी जामसाइ मुगीपटण जामावाढि सुप।—व स

भेरो—देखो 'भेळो' (रू भे)

उ०—जन हरिदास भै सिध तजि, भेरै वैठा जाय। सो गुर सिख कू लै चल्या, अपणैं मतं मिळाय।--ह पु वा

(स्त्री० भेरी)

भेळ–स० पु०—१ मिलावट, मिश्रण।

उ०—१ ओसर मोसर माय, व्यावडा आडी आवै। चारै पारै मिळा, करहला मौज मणावै। कूतरडी रै भेळ, गिणीजै नीरो माडो। पण ! धिटाळै टळै, नरा अपजस अवाडो।—दसदेव

उ०—२ थोडी घणी काळाई रो भेळ तो म्हामे है, आ बात म्हैं आछी तरै जाणू।—फुलवाडी

२ वर्ण सकरता।

उ०—वोलै मीठी वांण, काना लपराइयां करै। पारख विना पिछाण, भेळ जगत मे 'भैरिया'।—महाराजा वळवतसिह रतलाम

भेळको–स० पु०—मेल-मिलाप, प्रेम।

उ०—आ भाली रीत कीसु अमरावा, लोग तरफ की छाडै लज। भगतणिया सू करै भेळका, भेळी नही रिण मे भिडज।

—कविराजा वाकीदास

२ भिडत, टक्कर।

उ०—भेळका करता आ वात दोहू कानी देख भारी, सजै ना करारी सोभा भाईवैं सुधार। गया वेहू फौजां राजी-वाजी व्है विचार गाढा, दिया डेग सोढा वागा अगजी दातार।

—वादरदान घघवाडियो

३ आमना-सामना, मुलाकात।

४ स्पर्श करने या छूने का भाव।

भेलडी—देखो 'भेली' (अल्पा, रू भे)

भेळण—देखो भेळ' (रू भे)

भेळणो, भेळबो–क्रि० स०—१ मिश्रित करना, मिलाना।

उ०—१ भासण उपमां और मनोरथ भेळिया, मभ आटी मखतूळ क मोती मेळिया।—वा. दा

उ०—२ ताहरा त्रिभुवणसी रो भाई पदमसी हुतो, तियै नू भवायो—'तू त्रिभुवणसी नू मारै तो तोनू टीको देवा। ताहरा पदमसी लोभायै थकै जाइ नै त्रिभुवणसी नू पाटा माहै, सोमल नींव मांहै, भेळियो—नैणसी

२ शामिल करना, सग मे करना।

उ०—१ ताहरा चारण री मा वोली—'वेटा चूडा! केरडा आघेरां जगळ माहै टोघडा चरै छै, तिहा माहै भेळ आव। ताहरा चूडो केरडा ले अर भेळण गयो।—नैणसी

उ०—२ जीत दळ सझि हलै राजा, वाजता रिणजीत वाजा। राव 'ईंदो' माण रोळै, भीम गयदा हूत भेळै।—सू प्र.

३ भोकना।

उ०—१ कहै पिरोहित राज अणकळ, 'माहव' रो 'विजपाळ' महा-वळ। भेळू तुरग भमर गज भारा, घडछू दुसह ऊजळी धारा।

—सू प्र

उ०—२ दीठा भाव दिखावणा, हुरकणियां रा हाथ। हात नहीं मन किमि हिचै, भेळै अस भाराथ।—वा दा

उ०—३ अै राठौड महावळी, करो दिलासा तेह। भेळण जगां वारग्रह, वधे तुरगा खेड।—रा रू

४ युद्ध के प्रसग मे कोई मोर्चा, किला, गढ या गाव जीतकर अधिकार मे ले लेना।

उ०—१ गाव भेळियो, सारो लूटियो।—सुदरदास भाटी री वात

उ०—२ पछै भाटिए कोस-कोस डेरो करनै उठै देवीसिघ नू तेडियो। तेडनै ऊमरकोट भेळियो।—नैणसी

उ०—३ सो उठा माहै वाहर निसरण वाळो कोई नही अोर अै चलाय भेळै मो एक तो अरावै आगै जोर न लागै।

—मारवाड रा अमरावा री वारता

उ०—४ पतळी भीत फळेह, माय ज सावत सूरमा। भेळी नाहिं मिळेह, रावत ऊभा राजिया।—किरपाराम

उ०—५ तिको ओ तो सदा ई कवारी घडा रो भेळणहार रिण रो रिझवार। चवरी ऊपर वींद जाय जिण भात विहसतो विळ-कुळतो अलवलियो भवर हुवो थको ताखडो कवरा रा साथ नू लेय नै तुरी तोरिया।—प्रतापसिघ म्होकमसिघ री वात

५ किसी खेत मे खडी फसल को पशुओ द्वारा चराना।

६ फसल कटने के वाद अवशिष्ट घास-फूस, चारा आदि पशुओ को चराना।

७ नष्ट करना, वर्वाद करना।

८ तोडना।

९ किसी लक्ष्य प्राप्ति या स्वार्थ सिद्धि हेतु किसी को अपने दल या गुट मे शामिल करना।

१० पहुचाना, पहुचा देना।

भेळणहार, हारो (हारी), भेळणियो—वि०।

भेळिओडो, भेळियोडो, भेल्योडो—भू० का० कृ०।

भेळीजणो, भेळीजवो—कर्म वा०।

भेळप–स० पु०—१ साथ या शामिल रहने का भाव।

उ०—इकलापी मिनख री आ इज गत व्हिया करै। मिनख तो सगत अर भेळप सू सुधरै।—फुलवाडी

२ प्रेम, अनुराग।

उ०—लोग चुगल काना लग्या, घूघू बोल्यो गेह। भाया सू भेळप नही, विपत लिखी विधि तेह।—वा दा

३ मित्रता, मेल।

उ०—१ सावळ अणिया साकही, चोरग वणिया चेत। भणिया सू भेळप नही, हुरकणिया सू हेत।—वा दा

उ०—२ वटपाडा रा वस नू, माजी लीधो मार। भेळप राखै मान भय, मूसा सू मजार।—वा दा

उ०—३ वो स्याळ दोना री भेळप मे भज घालण रा घणा ई कळाप करिया।—फुलवाडी

उ०—४ हूळकर मलारराव दिखण मे वेटी रो व्याव कियो जद भेळप रै तावै बुलायोडा व्याव ऊपर वूदी सू उमेदसिघजी राव राजा दिखण मे गया हुता।—वा दा ख्या

४ एकता, सगठन।

उ०—१ जोध सवळ वळ अगगळो, महवेचो 'विजपाळ'। भेळप राखण आपणी, दाखी प्रीत विसाळ।—रा रू

उ०—२ आप पधारो तो आप री इछा पण इण घर में सदा मपत वणी रै वै, म्हनै औ वरदान दिरावो। किणी भात घर वाळां री भेळप नी तूटै।—फुलवाडी

५ माझा सीरवाळी।

उ०—चिडी वोली—भेळप रो धधो तो वत्तो इज है, पण हाडा भाई थनै भेळो थुडणो पडेला, म्हारै जोडै विरोवर काम करणो पडैला।—फुलवाडी

६ सयोग।

उ०—लिछमी अर सुरसत री भेळप विरळी ठोड ई लाधै, पण उण वामण रै पाखती ग्यान ई अणू तो ही अर माया ई अणू ती ही।—फुलवाडी

भेळपदार–वि०—१ साथ रहकर या मिलकर काम करने वाला, साझीदार।

२ मित्र, दोस्त।

उ०—भेळपदार गिनायत भाई, समय देख पलटै मगळाई। कीजै जेज मती तू काई, आवै देमणोक सू आई।

—श्री करणीदेवी री गीत

भेळमभेळ–क्रि० वि०—१ किसी कार्य या घटना की सलग्नता मे, साथ ही साथ।

उ०—मन में सोच्यो के अपारै घरै ले जायनै रोटघा तो मवाडणी ई पडैला। विरया औ क्यू पडपच करू। भेळमभेळ अठै ई जीमाडणो सावळ है।—फुलवाडी

२ शामिल।

उ०—वो खुद अणमाप धन कमायनैं लावैला। अपारो धन उण रै भेळमभेळ जुड जावैला।—फुलवाडी

भेळवाड–स० पु०—१ सम्मिश्रण।

२ माथ या शामिल रहने की क्रिया या भाव।

३ हिस्सेदारी, साझेदारी।

४ फसल कटने के वाद मवेशियो को खेत मे मिलने वाला घास सहित फसल का अवशिष्ट भाग।

भेळाडणो, भेळाडवो—देखो 'भेळाणो, भेळावो' (रू भे)

भेळाडणहार, हारो (हारी), भेळाडणियो—वि०।

भेळाडिग्रोडो, भेळाडियोडो, भेळाडचोडो—भू० का० कृ०।

भेळाडीजणो, भेळाडीजवो—कर्म वा०।

भेळाडियोडो—देखो भेळायोडो' (रू भे)

(स्त्री० भेळाडियोडी)

भेळाणो, भेळावो–क्रि० स० [भिळणो क्रि० का० प्रे० रू०] १ मिश्रित कराना, मिलवाना।

२ शामिल कराना, सग में कराना।

३ झोकाना।

४ आक्रमण कराना।

५ युद्ध के प्रसग मे कोई मोर्चा, किला, गढ या गांव जीतकर शत्रु के द्वारा अधिकार करवाना।

उ०—भेळावा भुरजाळ ज्यां, पाणेची गम पैठ। जिके कहाण खोय जस, वसुधामडळ वैठ —वा दा

६ किमी खेत में खडी फसल को पशुओ द्वारा चराना/चरवाना।

७ फसल कटने के वाद अवशिष्ट घास-फूस, चारा आदि को पशुओ को चरवाना।

८ नष्ट कराना, वर्वाद कराना।

१० किसी लक्ष्य प्राप्ति या स्वार्थ-सिद्धि हेतु किसी को अपने दल या गुट मे शामिल कराना।

भेळाणहार, हारो (हारी) भेळाणियो—वि०।

भेळायोडो—भू० का० कृ०।

भेळाईजणो, भेळाईजवो—कर्म वा०।

भेळाडणो, भेळाडवो, भेळावणो, भेळाववो—रू० भे०।

भेळापो–स० पु०—१ एक साथ रहने की क्रिया या भाव।

२ मैत्री दोस्ती।

३ हिस्सेदारी, साझेदारी।

भेळायोडो–भू० का० कृ०—मिश्रित कराया हुआ, मिलवाया हुआ २ शामिल कराया हुआ, सग मे कराया हुआ ३ झोकाया हुआ ४ लूटाया हुआ, लुटवाया हुआ ५ युद्ध के प्रसग मे कोई मोर्चा, किला, गढ या गाव जीतकर शत्रु के अधिकार मे करवाया हुआ ६ किसी खेत में खडी फसल को पशुओ द्वारा चराया हुआ ७ फसल कटने वाद अवशिष्ट घास-फूस, चारा आदि का पशुओ को चरवाया हुआ ८ नष्ट कराया हुआ, वर्वाद कराया हुआ ९ लुटाया हुआ १० किसी लक्ष्य प्राप्ति या स्वार्थ-सिद्धि हेतु किसी को अपने दल या गुट मे शामिल कराया हुआ

(स्त्री० भेळायोडी)

भेळावणौ, भेळावबौ—देखो 'भेळाणौ, भेळावौ' (रू भे)

भेळावणहार, हारौ (हारी), भेळावणियौ—वि०।

भेळाविश्रोडौ, भेळावियोडौ, भेळाव्योडौ—भू० का० कृ०।

भेळावीजणौ, भेळावीजबौ—कर्म वा०।

भेळावियोड़ौ—देखो 'भेळायोडो' (रू भे)

(स्त्री० भेळावियोडी)

भेळियोडौ–भू० का० कृ०—१ मिश्रित किया हुआ, मिलाया हुआ २ शामिल किया हुआ, सग मे किया हुआ ३ भोका हुआ. ४ लूटा हुआ ५ युद्ध के प्रसग मे कोई मोर्चा, किला, गढ या गाव जीतकर अधिकार मे लिया हुआ ६ किसी खेत मे खडा अनाज पशुओ द्वारा चरा हुआ ७ फसल कटने के बाद अवशिष्ट घास-फूस, चारा आदि पशुओ को चराया हुआ ८ नष्ट या बर्बाद किया हुआ ९ तोडा हुआ १० किसी लक्ष्य प्राप्ति या स्वार्थ-सिद्धि हेतु किसी को अपने दल या गुट में शामिल किया हुआ (स्त्री० भेळियोडी)

भेळियौ–स० पु०—विभिन्न प्रकार के पदार्थों का सम्मिश्रण।

भेली–स० स्त्री०—गुड या किसी अन्य वस्तु की गोल पिंडी या बट्टी।

उ०—श्रेकर गुळ नै कुरटता ऊदरी गुळ री भेली रै हेटै आयगी। —फुलवाडी

रू० भे०—भैली।

अल्पा०—भेलडी।

भेळो, भेलौ–वि० (स्त्री० भेळी, भेली) १ एकत्रित, इकट्टा।

उ०—१ तद पाथा दोनू सरदारा री लीन्ही। सो बटका-बटका न्यारा सा चुग, भेळा कर, श्रोठिया लिया, बीजा सारा नै दाग कर पाछा आया।—सूरेखीवै काधलोत री बात

उ०—२ भीलडी चुग किया भेला, बौ'त हित सू बोर। प्रीत कर रघुनाथ पाया, कोय'क खाटी कोर। तौ किसोर जी किसोर, किरपा करणहार किसोर।—भगतमाळ

उ०—३ भेळौ तै कीधी भलो, जळहर श्रौ जळजाळ। घुन मुघरी पुहमी ध्रवै, दुसह निवार दुकाळ।—बा. दा

उ०—४ ठाकरा रै मोकळा वरसा सू कोई बाळगोपाळ नी हुवौ। रावळै मे ठकुराण्या री धाड भेळी कर घाप्या पण नुवौ कानलो नी वापरयो।—दसदोख

उ०—५ जब राजा दोया नै भेळा कर पूछयो।—भि द्र

२ शामिल, साथ।

उ०—१ अर जाहरा कुवरजी! जीमण नू बुलावै ताहरा काळै नू भेळौ वेसाणज्यो।—नैणसी

उ०—२ राव दूदै री काको गिरधर चादावत पण, दौलताबाद दूदा भेळौ काम आयो।—नैणसी

उ०—३ नरसिंघ ऊदावत। खेतसीरै गूढै काम आयो मानसिंघ भेळौ।—नैणसी

उ०—४ ताहरा जमलै कह्यो, ठाकुरै जै कही रै वडकु हुवै तो भेळी सुवाणौ।—लाखै फूलाणी री गीत

३ सम्मिलित।

उ०—तरै राव नामनै समरा, सूरा रा गाडा था तठै आयं भेळा हुय टीको राव सुरताण रै काढियो।—नैणसी

४ सकुचित।

उ०—मगरमच्छ बादरा री बात सुण नै घणौ ई भेळं व्हियो, पण श्रबै काई कारी लागै।—फुलवाडी

५ सचित या सग्रहित।

ज्यू—रुपया भेळा करणा।

उ०—१ आपरी माया री विड्द बखाणती वगत वौ सखिया जैडा दांता नै काढतो फेर कै'वण लागौ—कोई ऊमर मे इत्ता कांकरा ई भेळा नीं कर सकै जित्ता म्हैं मोः करिया हू।—फुलवाडी

उ०—२ नगर सेठां रै ई पाछी विणज में वरगत। दिना मे गई उण सू दूणी माया भेळी करनै बतावेला। —प

६ समेटने की क्रिया या भाव।

ज्यू—बिछावणा भेळा करना।

७ मिश्रित हुआ, मिश्रित।

८ छोटी नाव, डोंगी।

९ साझा, सीर।

उ०—चौमासा रा दिन नेडा आया तो एक दिन हाळो कह्यौ—चिडी बैन, श्रंस श्रपा भेळी खेती करा श्रे।—फुलव

१० व्यवस्थित रूप से जमाने की क्रिया।

ज्यू—गाबा भेळा करणा, बिखरयोडो समान भेळौ करणौ

रू० भे०—भेरौ, भैरौ, भैळौ।

भेव—देखो 'भेद' (रू भे)

उ०—१ बीजइ बाजवट आइ नइ वइठी, देवांग वस्त्र प देव। आगळि सखी आभरण आणइ, भलम सणार ल भेव।—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ भूलै कार सताव भेव, भख चाहै मारै। श्रौ अगद आदि, सुणता प्रसतारै।—सू प्र

उ०—३ सो भरत इड श्रग करत सेव, भटकियो बबर इ भेव। मुणियौ खिज दै फुरमाण मूफ, तू नोकर न दियू हा —

उ०—४ भव तूं जाणै भेव, वेध्यो मच्छ जिणवार रौ। सहदेव, वेल करै तौ आ वगत।—रामनाथ कवियौ

उ० —५ दरसण हुवा न देव, भेव विहूणा भटकिया। सूना सेव, जूण गमाई 'जेठवा'।—जैतदान बारहठ

उ०—६ सता सायक तू सदा, दुसटा खायक देव । केसव तो वरणन करू, भल गुरु दीनो भेव ।—भगतमाळ

उ०—७ दीनबधु देवदेव, भाखत स्रुति भ्रहम भेव। जेता जग सो श्रजेव, गहर गरुड गाम रे —र ज प्र

उ०—८ कळजुग मे कळदार विन, भाया पडियो भेव। जिण घर माया जोर मे, दरसण श्रावै देव ।—ऊ का

उ०—९ रज-रज हुश्रो 'जगो' भरियो रज, भिळवा मुगत जाणियो भेव। समहर भ्रुगट न्नियण दससहस्रं, दस सो करग ववाया देव। —जगरामसिंघ री गीत

भेवणो, भेववो—क्रि० स० [स० भेदनम्] १ भिगोना, श्रार्द्र करना ।

उ०—१ वणतइ वर जइ पहिरीयउ वागउ, भल चोली सूघइ सू भेव। श्रमडी कळा देखजे ईसर, देवा ? विराजइ देव।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ ठाकुर कह्यो—रीडो श्रावै है। मो नू उठाणो, वैठो करो, छोतरा भेवो ।—प्रतापमल देवडा री वात

२ तरबतर करना ।

भेवणहार, हारो (हारी), भेवणियो—वि० ।

भेवाडणो, भेवाडवो, भेवाणो, भेवावो, भेवावणो, भेवाववो —प्रे० रू० ।

भेविश्रोडो, भेवियोडो, भेव्योडो—भू० का० कृ० ।

भेवीजणो, भेवीजवो—कर्म वा० ।

भेवभाव—देखो 'भेदभाव' (रू भे)

भेवाडणो, भेवाडवो—देखो 'भेवाणो, भेवावो' (रू भे)

उ०—कहियो—गाढा स-दौरा हां। खावै को फेर करावियो है, श्रमल भेवाडिया है।—प्रतापमल देवडा री वात

भेवाडणहार, हारो (हारी), भेवाडणियो—वि० ।

भेवाडिश्रोडो, भेवाडियोडो, भेवाड्योडो—भू० का० कृ० ।

भेवाड़ीजणो, भेवाडीजवो—कर्म वा० ।

भेवाडियोडो—देखो 'भेवायोडो' (रू. भे)

(स्त्री० भेवाडियोडी)

भेवाणो भेवावो—क्रि० स०—१ भिगोवाना, श्रार्द्र करवाना ।

२ तरवतर करवाना ।

भेवाणहार, हारो (हारी), भेवाणियो—वि० ।

भेवायोड़ो—भू० का० कृ० ।

भेवावीजणो, भेवावीजवो—कर्म वा० ।

भेवायोडो—भू० का० कृ०—१ भिगोवाया हुश्रा, श्रार्द्र करवाया हुश्रा २ तरवतर करवाया हुश्रा

(स्त्री० भेवायोडी)

भेवावणो, भेवाववो—देखो 'भेवाणो, भेवावो' (रू भे)

भेवावणहार, हारो (हारी), भेवावणियो— वि० ।

भेवाविश्रोड़ो, भेवावियोडो, भेवाव्योडो—भू० का० कृ० ।

भेवावीजणो, भेवावीजवो—कर्म वा० ।

भेवावियोडो—देखो 'भेवायोडो' (रू भे)

(स्त्री० भेवावियोडी)

भेवो—देखो 'भेद' (श्रल्पा, रू भे)

उ०—सियाळू ऊनाळू विमळ वरसाळू सब सुखी। दयाळू हो देवा भजन विन भेवा द्रप दुखी ।—ऊ का

भेस—देखो 'भेख' (रू भे)

भेवियोडो—भू० का० कृ०—१ भिगोया हुश्रा, श्रार्द्र किया हुश्रा २ तरवतर किया हुश्रा.

(स्त्री० भेवियोडी)

३ देखो 'भेख' (रू भे)

उ०—जोगिया नै कहियो रै श्रादेस। श्राऊ ी मैं, नांहि रहूगी, कर जोगन को भेस ।—मीरा

भेसज—स० पु० [स० भेषज] १ श्रोषधि, दवा। (डि को)

२ चिकित्सक, वैद्य ।

रू० भे०—भेखज, भैखज ।

भेसधारी—भेस को धारण करने वाला ।

उ०—स्रावक ही प्रससवा जोग श्राराधक। साध ही प्रससवा जोग श्राराधक। पिण खोटा नाणा रा साथी भेसधारी श्राराधक नही।

—भि द्र

भेसाद—देखो 'भैंसाद' (रू भे)

उ०—नीवाज मदन परमार विसनू-श्ररथ मदिर करायो जद खेजडला सू भेसाद री मूरत श्राय विराजी ।—वा दा ख्या

भेहरण—स० पु० [स० भयहरण] ईश्वर, भगवान ।

वि०—भय को दूर करने वाला ।

भें—स० स्त्री०—भेड के बोलने की ध्वनि ।

उ०—गोवै चरतोडी पेडा थिग गेडी, भें-भें करतोडी भेडा ढिग भेडी। ऊणा ऊरणिया खरसणिया श्रोलै, डरडा नरडा विण श्ररडादै टोलै ।—ऊ का

रू० भे०—भैं ।

भें'—देखो 'भैंस' (रू भे)

भेंचक—देखो 'भैंचक' (रू भे)

भेंचकणो, भेंचकवो—देखो 'भैंचकणो, भैंचकवो' (रू भे)

उ०—श्रजक पर धर थरक उद्रक चमक उजवक तुरक भेंचक, श्रटक कटका सत्रा श्रतक श्ररक तक श्रोजास। पति मुलक जदवस दीपक कनक बगसण लियण रूपक, लखपती सक सुयण लायक जगि सरस जस वास ।—ल पि

भेंचकणहार, हारो (हारी), भेंचकणियो—वि० ।

भेंचकिश्रोडो, भेंचकियोडो, भेंचक्योडो—भू० का० कृ० ।

भेंचकीजणो, भेंचकीजवो—कर्म वा० ।

भेंण—देखो 'बहन' (रू भे)

भैणचोद—देखो 'भैनचोद' (रू भे)

भैणड—देखो 'बहन' (मह, रू भे)

उ०—जरिया हदो पेचौ मेरै सायब तांई ल्याई रे। लपाभपा रौ चूनड तेरी भैणड तांई ल्याई रे।—लो गी

भैन—देखो 'बहन' (रू भे)

उ०—छऊ भैन छोटी दहू ओड छाजै, विचै पाट राजीव माजी विराजै। खडो लागडो बीरवीराधि खेतू, करै रागडा छागडा राह केतू।—मे म

भैफोड—देखो 'भूफोड' (रू भे.)

भैरू—देखो 'भैरव' (रू भे)

उ०—चढी हाक वागता घूमडी भैरू डाक चोडै, नार-तडी तमासै लागतां गैरा भाग। मडी तोपा नागणी जागता आयो रोस माथै, नबीपरा पीथळै' उडडी काळी नाग।—जसो आढो

भैंस-स० स्त्री० [स० महिष] १ गाय जैसा ही दूध देने वाला एक भारी डील डौल वाला पशु।

उ०—कीच निहारघा कनै, भैंस रौ चळणू भारी। पैल वळद पग प्रगट, खिसै नह दीठा खारी।—ऊ का

२ आक या मदार का फल जिसमे रूई के आकार के रेशे निकलते हैं और जिन पर आक के बीज चिपके रहते हैं।

३ लाक्षणिक अर्थ मे काली व मोटी औरत।

४ क्रूर।

रू० भे०—भइस, भइस, भैंइसि, भैं', भैंसि, भैसी, भैं', भैंस, भैंसी।

अल्पा०—भैंसडली, भैंसडी।

भैंसड़ली, भैंसडी—देखो 'भैंस' (अल्पा, रू भे)

उ०—भैंसडिया दस बीस सुवाडी वाखडी, चर चर लीला घास, वाडा मे रहे खडी। चोखा चावळ आंरा सकर मे ओलगा। एता दे करतार तो फेर नई बोलणा।—अज्ञात

भैंसड़ो—देखो 'भैंसो' (अल्पा., रू भे.)

भैंसपूछौ-स० पु०—एक प्रकार का घोडा विशेष जिसकी पूछ पृथ्वी को छूती हो। (शा हो)

रू० भे०—भैंसापूछौ।

भैंसागूगल-स० पु०—एक प्रकार का गूगल विशेष। (अमरत)

रू० भे०—भैंसागूगल।

भैंसात-स० पु०—विसायती।

उ०—तबोली सुघार ठीक भैंसात ठठारू। नव नार इण नाम कहे हिव पाचै कारू।—घ व ग्र

रू० भे०—भैंसात।

भैंसाद-स० स्त्री०—माहीपासुर मर्दनी, एक देवी का नाम।

रू० भे०—भैंसाद।

भैंसापाज-स० स्त्री०—महिषासुर नामक राक्षस को मारने वाली देवी, दुर्गा।

भैंसापूछौ—देखो 'भैंसपूछौ' (रू भे)

भैंसामाता-स० स्त्री०—बडे-बडे दानो का शीतला रोग।

भैंसालसण-स० पु०—एक प्रकार का गहरा लाल दाग या निशान जो प्राय गाल, गर्दन या पेट पर होता है।

भैंसासुर-स० पु०—महिषासुर नामक एक राक्षस।

भैंसि, भैंसी—देखो 'भैंस' (रू भे)

भैंसो-स० पु० [स० महिष] १ भैंस नामक पशु का नर, महिष।

उ०—१ कजळी वन कुजर घणा, म्रग भैंसा म्रगराज। पसु पखी सब मात कै, अेक अेक सिरताज।—गजउद्धार

उ०—२ भरै पत्र भैंसा अजा रम्र भोगै, अछक्का छका छाक दारू अरोगै।—मे म.

२ मदार वृक्ष का फल।

३ लाक्षणिक अर्थ मे काळा व मोटा मनुष्य।

रू० भे०—भइसो।

अल्पा०—भैंसडो, भैंसड़ो।

भैं-स० पु० [स०] १ नक्षत्र, तारा।

२ देखो भै' (रू. भे)

३ देखो 'भय' (रू भे)

उ०—हुवै मुवा विन मुकत नह, भैं विन हुवै न प्रीति। सुधा पिया बिन अमरपद, ह्वै न दिया विन कीत।—वा दा

उ०—२ उपन्ना दाणव दोय अजीत, भयैं तिण देव थया भैं-भीत। पइट्ठा आण तुहाळी पूठ, उवार बिसन्न कहै सुर ऊठ।—ह र

भैंखज—देखो 'भेसज' (रू भे)

उ०—जग कायरि काळख झडै, घण खाधा रण घाव। भखिया कडवी भैंखजां, तूटै तण रौ ताव।—रेवतसिंह भाटी

भैंडौ-वि० (स्त्री० भैंडी) १ भयकर, डरावना, खतरनाक, बुरा।

उ०—१ हा उण इच्छा पर भिच्छा गत हांणी, जग मे दैविच्छा किणही नह जाणी। वादळ बीजळिया नभ मे नहि नैडी, भैजो भणणायो भळकी पुल भैंडी।—ऊ का.

उ०—२ निरगुण अणविद्या छाई जग जिस्णु। विद्या बीसरगो सद्गुण वस विस्णु। हा हा जगदीस्वर भैंडी पळ हेरी, गाफल दुनियो पर अैडी पुळ गेरी।—ऊ का

रू० भे०—भैडो।

भैंचक-वि०—१ भौंचक्का, चकित, विस्मित।

२ घबराया हुआ।

३ भयभीत, डरा हुआ।

उ०—१ रघुवर तित रहयाजी, मोटी कर मया। भैंचक खळ भयाजी, गहबळ तज गया।—र रू

उ०—२ छुडावण घणा खपियो दिली छातपत, रुक भैंचक हुवा देख दोय राह। पुरांणा नवा 'बीका' तणा परवाड़ा, सीस बांधे गयो जगळ-पातसाह।—द दा

४ महान् वडा, प्रचण्डकाय ।
५ भयकर, डरावना ।
स० पु०--यह एक भयकर जलजन्तु होता है, जो मौका पाकर भैंस या घोडे जैसे पशु को अपने तन्तु के वल दवा लेता है। यह आकार मे गोल होता है। जव यह जल मे चक्कर काटता है तो पानी भावरे काटने लग जाता है। इसके चारो ओर कई तन्तु होते है, जिनसे यह अपने शिकार को फमा लेता है। यह जानवर प्राय चम्बल नदी मे भेंसरोड के पास पाया जाता है।
रू० भे०—भयचक, भंचवक, भंचवक, भंचक्क ।

भंचकणो, भंचकवो–क्रि० अ०—१ भयभीत होना, डरना।
उ०—१ मोहरं चडिया मयद रं, भंचक जाय भडाक। गैवर भूलै गाळवो, चीसं चढ चित चाक।—वा दा
उ०—२ जळनिध सहल जुआण, 'मामा' तू वेडा सजै । भंचकि पडै मगाण, मिमर अग्ग ऐराक मभ ।—वा दा
उ०—३ छलग वाछरू घरू न उच्छरैं चरैं चिरैं। फलग भंचकी थकी त नैचकी चकी फिरैं।—ऊ का
२ सभ्रमित होना ।
उ०—रीझै साभळ राग, भीजै रस नह भंचकै। नैडो आवै नाग, पकडीजै छावड पडै।—वां दा
३ भौंचक्का होना, स्तभित होना।
४ चौंकना।
५ घबराना।
भंचकणहार, हारो (हारी), भंचकणियो—वि०।
भंचकिओडो, भंचकियोडो भंचक्योडो—भू० का० कृ० ।
भंचकीजणो, भंचकीजवो—भाव वा०।
भंचक्कणो, भंचक्कवो—रू० भे०।

भंचकियोडो–भू० का० कृ०—१ भयभीत हुवा हुआ, डरा हुआ २ सभ्रमित हुवा हुआ ३ भौंचक्का हुवा हुआ, स्तभित हुवा हुआ ४ चौंका हुआ ५ घवराया हुआ
(स्त्री० भंचकियोडी)

भंचक्कणो, भंचक्कवो—देखो 'भंचकणो, भंचकवो' (रू भे)
उ०—१ हुवो सोच आसुरां हुवो मद सोच दिलेसर। हुवा देस भंचक्क हुवा अवनेस भयकर ।—रा रू
उ०—२ दडीदडी टूट माथा कमधा पावडा देवै, रिमा सीस खाथा सार वजावै आराण। हैकपै कायरा प्राण छूटगा वीरांण हासै, भंचक्कै भूलोक रत्या थभायो सु भाण ।—वादरदान दधवाडियो
भंचक्कणहार, हारो (हारी), भंचक्कणियो—वि०।
भंचक्किओडो, भंचक्कियोडो—भू० का० कृ०।
भंचक्कीजणो, भंचक्कीजवो—भाव वा०।

भंचक्कियोडो—देखो 'भंचकियोडो' (रू भे)
(स्त्री० भंचक्कियोडी)

भंण—देखो 'वहन' (रू भे)
उ०—माळीडा री डीकरी यै तू छै धरम की भैण, तेरैं कनौकर ढोलो नीसरचो यै किम यै उमावै जाय वाई म्हानै भेद वता दे यै।
—लो गी

भंणडी—देखो 'वहन' (अल्पा, रू भे)
उ०—आई थाकी माकी जाई भैणडी जी राज जी। पीया धोय धोय जी क पगल्या पीव ।—लो गी

भंणचोद—देखो 'भैनचोद' (रू भे)

भं'णो—देखो 'वैं'णो' (रू भे)

भंत—१ देखो 'भीति' (रू भे)
उ०—नही तू काळ नही तू क्रम्म, नहीं तू व्याळ नही तू ब्रह्म। नही तू देव नही तू दैत, नही तू भंव नही तू भंत ।—ह र
२ देखो 'वैं'त' (रू भे)

भंन—देखो वहन' (रू भे)
उ०—वाई जैसिघजी की 'अभा' नै विवाही, अभसिघजी भैन व्याही जैसा ही।—शि व

भंनडी—दखो वहन' (अल्पा, रू भे)
उ०—आई तेरी मा की जाई भैनडी जी राज, ओ वीरा रोय रोय नूक समद भी, कोल वीर ऊपर चढ हेलो दियो जी राज, यै वाई रूसडी नणद जानै द्याय ।—लो गी

भंनचोद–स० पु०—अपनी वहन से कुकर्म करने वाला (गाली वाजारू)।
रू० भे०—भैणचोद, भैणचोद ।

भंभग–वि० [स० भय+अग] १ भयभीत ।
उ०—है हीस हुअ, भैभग भुअ, । भुज फौज भडा, घण रूप घडा।
—गु रू व
२ देखो 'भूजग' (रू भे)

भंभीत—१ निर्भय, निडर।
उ०—१ गोळा गावै गीत, राग सुणावै 'राण' नै। 'भारत' रो भंभीत, आछो लडै 'उम्मेदियो' ।—अज्ञात
उ०—२ चूडा नावै चीत, काचर काळाऊ तणा, भूप भयो भंभीत, मडोवर रै मा ळियै ।—आल्हो वारहठ
२ जवरदस्त, वडा।
उ०—१ 'गजन' सुतण साह छळ गाढो, भाजै भुग्ज उरड भंभीत। पाण सुजड ऊपाडै पोगर, जोरावर ग्रेहो रिण जीत ।
—महाराजा जमवतसिघ रो गीत
उ०—२ रजी धोम सू वीटिया गज्ज राजै, वडै अम्वडै जाणि रीछ विराजै। भयाणक भंभीत सोभत भार, क्रमै जाणि आधी निसा अवकार ।—वचनिका
३ देखो 'भयभीत' (रू भे)

भंभंकार–स० पु०—हाहाकार।

उ०—'जगट्ट' जग जीवाडियो, भांजे भैंभेंकार। कीधो जै जैकार श्रन, वागो राय सधार।—वा दा

भेंमी—देखो 'भीमी' (रू भे)

भें'मी—देखो 'वहमी' (रू भे)

भैया–स० पु०—भाटी वश की एक शाखा जो मुसलमान हो गए हैं।

भैयो—देखो 'भाई' (अल्पा, रू भे)

उ०—वीराजी मनावै मीरा थे मांनों, भैया री पत राख, भक्ति छोडो हरिनाम की।—मीरा

भैरवांण—देखो 'भैरव' (मह., रू भे)

भैरव–स० पु० [स०] १ तेल और सिंदूर से पूजे जाने वाले एक देवता, जिनकी उत्पत्ति शिव से मानी जाती है।

वि० वि०—भैरव की उत्पत्ति के विषय में ऐसी पौराणिक कथा है कि एक बार ब्रह्मा और विष्णु गर्वोद्धित हुए और उन्होंने वाद-विवाद में शिव की निंदा करके उनका अपमान किया। तब भगवान रुद्र की कृपा से एक महान् ज्योति प्रकट हुई, जिसमें से महाकाल भैरव की उत्पत्ति हुई। इस भैरव ने अपनी अंगुली के नाखून से ब्रह्मा के पाचवे मुख को, जिसने शिव की निन्दा की थी काट डाला। परिणामतः वह सिर भैरव के हाथ के चिपक गया। ब्रह्मा का सिर कटने के साथ एक ब्रह्म-हत्या नामक कन्या का जन्म हुआ, जिसने भैरव का पीछा किया। चूकि शिव ने भैरव को काशी का अधिपति बनाया, अतः वह उस कन्या से पीछा छुडाने के लिए नाना तीर्थों में घूमता हुआ काशी पहुचा। वहा वह कन्या पाताल में प्रवेश कर गई एव भैरव के हाथ से भी सिर छूट गया, अतः यह स्थान कपालमोचनतीर्थ नाम से प्रसिद्ध हुआ। ब्रह्मवैवर्त्त पुराण के अनुसार भगवान श्री कृष्ण के दक्षिण नेत्र से भयकर, सहार, काल, असित, क्रोध, भीषण, महाभैरव एव खट्वाग नाम के अष्टभैरव उत्पन्न हुए। कई लोगों का मत है कि वीरभद्र और भैरव एक ही हैं परन्तु वास्तव में दोनों अलग-अलग हैं। वीरभद्र के अनुयायी वीरों की सख्या ५२ है एव भैरव ६४ माने गए हैं। वैसे मुख्यतः काला और गोरा दो प्रकार के भैरव माने गए हैं जिनकी पूजा शनिवार या रविवार को की जाती है तथा इनका स्वरूप उग्र माना जाता है एव साथ में दो कुत्ते इनके आगे सेवक के रूप में माने जाते हैं।

६४ भैरवो की नामावली निम्न प्रकार है—१ उरध केस (उध्व-केश)। २ विरूपाक्ष। ३ घोर रुद्रिण। ४ रक्त नेत्र। ५ पिंगाक्ष। ६ । ७ अस्वर। ८ स्वीय कुभ या स्वयभुव। ९ इडाचार। १० इंद्र मूरति (इन्द्र-मूर्ति)। ११ कोलाक्ष। १२ उपपाद। १३ रितुसव (ऋतूत्सव)। १४ सिद्धेय। १५ वलिक (वलिक)। १६ नीलपाद। १७ एक दरट्ट (एक दष्ट्रक)। १८ इरापति। १९ अघहारी। २० विघ्नहारी। २१ अतक। २२ उरधपाद (उर्ध्वपाद)। २३ कवल (कम्बल)। २४ गजन (गजान)। २५ गर (सर)। २६ गोमुख। २७ जपाल (जपाल)। २८ गणनाथ (गणनाथ)। २९ वारण। ३० जटाल। ३१ प्रजटाल। ३२ । ३३ त्रिकार (अकार)। ३४ त्रिटधारी ३५ टकपाणि। ३६ गणि (गणि)। ३७ टटाण (ठटारण)। ३८ जवर (ज्वर)। ३९ दर्पुलिंग। ४० तडिट्रुचि (तडिट्रुचि)। ४१ । ४२ दसुर (दसुर)। ४३ पनसार। ४४ नदक (नन्दक)। ४५ फेत्का-रधारी। ४६ वपालय। ४७ बरबरी (बर्बरी)। ४८ भीम-रूपक (भीमरूपक)। ४९ भगपक्ष (भगपक्ष)। ५० कालमेघ (कालमेघ)। ५१ भुवार। ५२ नम्बोष्ट (नम्बोष्ठ)। ५३ रोर। ५४ वणिज। ५५ सुरजातिहार। ५६ हुहुक। ५७ पाताल-रक्षक। ५८ महाबक्ष। ५९ ज्वालाक्ष। ६० यसरोलिया। ६१ भटारव। ६२ दुराराेह। ६३ मणिभद्र। ६४ रसाध्यक्ष।

मतान्तर के अनुसार ये ६४ न म निम्नांकित ८ भागों में विभक्त हैं।

(१) १ असितांग। २ विशालाक्ष। ३ मार्तण्ड। ४ मोदक-प्रिय। ५ स्वच्छद। ६ विघ्नसतुष्ट। ७ खेचर। ८ सच-राचर।

(२) १ रुरु। २ क्रोध। ३ जटाधर। ४ विश्वरूप। ५ विरू-पाक्ष। ६ रूपधर। ७ वज्रहस्त। ८ महाकाय।

(३) १ चड। २ प्रलयांतक। ३ भूमिकप। ४ नीलकठ। ५ विष्णु। ६ कुलपालक। ७ मुण्डपाल। ८ कामपाल।

(४) १ क्रोध। २ पिंगलक्षण। ३ अभ्ररूप। ४ धरा-पात। ५ कुटिल। ६ मन्त्रनायक। ७ रुद्र। ८ पितामह।

(५) १ अनंतभैरव। २ वटुकनायक। ३ शकर। ४ भूत-वैताल। ५ त्रिनेत्र। ६ त्रिपुरान्तक। ७ वरद। ८ पर्वतवासी।

(६) १ भीषण। २ भयहर। ३ सर्वज्ञ। ४ कालाग्नि। ५ महारुद्र। ६ दक्षिण। ७ मुखहर। ८ अस्थिहर।

(७) १ कपाल। २ शशिभूषण। ३ हस्तिचर्माम्बरधर। ४ योगीश। ५ ब्रह्मराक्षस। ६ सर्वज्ञ। ७ सर्वदेवेश। ८ सर्वभूतहृदिस्थित।

(८) १ सहारभैरव। २ अतिरिक्तांग/कालाग्नि। ३ प्रियवर। ४ घोरनाद। ५ विशालाक्ष। ६ योगीश। ७ । ८ ।

२ शिव महादेव। (डि को)

३ शिव के गण जो उन्ही के अवतार माने जाते हैं।

४ साहित्य में भयानक रस।

५ ताल के सात मुख्य भेदों में से एक।

६ सगीत में एक राग का नाम।

उ०—छतीस राग छाजती, निहाव धाव नोबती। भजै विभास भैरव, रुळी कळी कळी रव।—रा रू

७ एक प्रकार का बढिया वस्त्र। (सभा)

उ०—चीणी विलीदी जरवाफ, सुखम वस्त्र बुलबुल, चसमा, अवल कथीपा, अटाण वस्त्र, टसरीया भैंरव, नारी कुजर, सखरा सेला, सीलूथान, घणा मुगटा ।—व स

८ एक प्रकार की चिड़िया विशेष, जिसके रात्रि मे शकुन लिए जाते हैं।

वि० [स० भैं+रव] १ भीषण शब्द वाला ।

२ जो देखने मे भयकर हो, भयानक ।

३ घोर विनाश करने वाला ।

४ बहुत उग्र, तीव्र या विकट ।

रू० भे०—भइरव, भयरव, भेरव, भेरू, भेरु, भैंरवौ, भैंरू, भैंरू, भैंरूजी ।

अल्पा०—भैंरवौ, भैंरूडौ ।

मह०—भैंरवाण ।

भैंरवभांप, भैंरवभांफ–स० स्त्री०—पहाड आदि बहुत ऊंचे स्थान से मनोकामना की सिद्धि के लिए महादेव या भैंरव का नाम लेकर छलांग लगाने की क्रिया ।

रू० भे०—भांपभैंरव, भांफभैंरव ।

भैंरवभोळी–स० स्त्री० १ दशनामी सन्यासियो द्वारा भिक्षा मागने का एक प्रकार का विशेष ढग जिसमे भीख मागते समय यदि कोई घर छूट जाता है और वह भीख देना चाहता है तो भिक्षुक उल्टे पैरो उस घर पर जाता है न कि घूमकर ।

२ इस प्रकार की भिक्षा की झोली ।

रू० भे०—भैंरूभोळी ।

भैंरवमस्तक–स० पु०—संगीत मे ताल के ६० मुख्य भेदो मे से एक ।

भैंरवा–स० पु०—पक्षी विशेष । (सभा)

भैंरवी–स० स्त्री०—१ तान्त्रिको के अनुसार एक प्रकार की देवी विशेष जो महाविद्या की मूर्ति मानी जाती है ।

२ चामुण्डा, दुर्गा, देवी ।

उ०—१ भवानी नमो दच्छ लोकेम छोनी, भवानी नमो जोग निद्रा अजोनी । भवानी नमो जोगनी जुथ्थ मथ्थी, भवानी नमो भैंरवी बीस हथ्थी ।—मे म

उ०—२ देवी कोमारी चामुडा विजैकारी, देवी कुबेरी भैंरवी क्षेमकारी । देवी अगस अरूण हस्ती मयखे, देवी पंख केकी गरुड धिरट पखे ।—देवि

३ उल्लू से मिलती जुलती एक प्रकार की चिड़िया का नाम । (कोचरी)

उ०—उणी वखत डावी तरफ नदी री ढा' पर आयोडा गोगा खेजडा पर बैठ्योडी भैंरवी बोली—कै ऽऽ क–कै ऽऽ क–चरर चरर चरर ! रात रा पैं'ला पो'र मे वैरण इसी नी बोली के जांणे भाठा में करवत चाली व्है ।—रातवासौ

४ पार्वती ।

५ सगीत मे भैंरव राग की पत्नी, जो प्रात काल गाई जाती है ।

६ एक प्रकार का बढिया वस्त्र ।

रू० भे०—भइरवी, भयरवी, भईरवी ।

भैंरवीचक्र–स० पु०—तांत्रिको का वह अनुष्ठान जो कुछ विशिष्ट तिथियो, नक्षत्रो व समय में किया जाता है, जिसमे चक्र मे बैठकर देवी पूजन व मद्यमान करते हैं।

भैंरवेस–स० पु० यौ० [स० भैंरव+ईश] शिव, महादेव ।

भैंरवौ—देखो 'भैंरव' (अल्पा रू भे)

उ०—खांडा हत्थउ भैंरवौ रैं कर डमरू नैं डाक । तिण अवसर प्रगट्यौ तिहां, आव्यौ मारतौ हाक ।—स्रीपाल

भैंरस–स०पु० [स०भय+रस] भय उत्पन्न करने वाला साहित्यिक रस ।

उ०—अपछरा सिंगार रस किआ । नारद हास रस किआ । काइ-रे भैंरस बीभच्छरस किआ । सुरे सातरस अदभुतरस किआ ।

—र वचनिका

भैंराहर–स० पु०—ऊठ ।

उ०—१ बुगर बलोच बबाळ, जूग जाळोरी जव्वर । अजगर कध अभीभ, अगुट मुदगर भैंराहर ।—सू प्र

उ०—२ 'नाहर' सुत नरनाह, कहै हाजर छक कारण । घैसाहर सिणगार, दुती भैंराहर दारण ।—सू प्र

उ०—३ सीसा भार सतोल, भार बाणा गाडाभर । गज भार गोळिया, भार गोळा भैंराहर ।—सू प्र

भैंरिपु–स० पु० [सं० भयरिपु] ईश्वर, परमात्मा ।

उ०—पार ब्रह्म दुख हरण, प्राण तहां मन लाय । भेद सहत भैंरिपु भजो, हरि गाईजै त्यु गाय ।—ह पु वा

भैंरू—देखो 'भैंरव' (रू भे)

उ० तणं तार संतार वीणादि तन्त्री, वणं बीस बत्तीस भैंरू बजत्री । डफा मादळा नाद डैरू डमकै, धरा व्योम पाताळ धूजै धमकै ।—मे म

भैंरूजी–स० पु०—१ एक राजस्थानी लोक गीत ।

२ देखो 'भैंरव' (रू भे)

उ०—भैंरूजी ऊचै सै धोरै थारौ देवरौ, भैंरूजी, धजा अै फरूकै असमान, सेवगा की, ओ बाबा, भली करो ।—लो गी

भैंरूभोळी—देखो 'भैंरवभोळी' (रू भे)

भैंरूडौ—देखो 'भैंरव' (अल्पा., रू भे)

भैं'रौ—१ देखो 'भवारौ' (रू भे)

२ देखो भेळो' (रू भे)

उ०—मोहरै महरांण रैं दळा रा महाबळ, भुजा बळ वनपती कीध भैंरी । राजि रा पमाड़ा हवै सह रीधिया, बीधिया कवाडां जही वैंरी ।—नगराज खीची रौ गीत

(स्त्री० भैंरी)

भैंली—१ देखो 'वहल' (रू भे.)

२ देखो 'भेली' (रू. भे)

भंळो—देखो भेळो' (रू भे)

उ०—हमैं सेतराम अठै रहै चाकर-वासै अर साथ भंळो करै, घोडा भंळा करै, वडै सैमान सू रहै।—नैणसी

भंस—देखो 'भैंस' (रू भे)

उ०—वूदी मे सवाईराम ओसवाल चरचा करतां भिक्खु कह्यौ—गाय भैंस रा मूहडा आगै घणौ चारो नाख्या ओगाळी करै।

—भि द्र.

भंसडो—देखो भंसो' (अल्पा, रू भे)

उ०—१ वलि चाढ़ै वोकडा, रुघर भंसडा जरूर। वदन चोळ करि विखम, लोह कांबिया सिंदूर।—सू प्र

(स्त्री० भंसडी)

भंसागूगळ—देखो 'भैंसागूगळ' (रू भे)

भंसागोह—देखो 'पाटडागोह'।

भंसात—देखो भैंसात' (रू भे)

भंसाद—देखो 'भैंसाद' (रू भे)

भंसी—देखो 'भैंस' (रू भे) (अमरत)

भंहरण—स० पु० यौ० [स० भय+हरण] १ ईश्वर, परमात्मा।

(ह ना. मा)

उ०—परम रीति पर प्रीति, परमनिधि आंपण स्वामी। जुराकाळ भंहरण, करण निरभय निज नामी।—ह पु वा

भों—१ देखो 'भव' (रू भे)

उ०—आयो धीग ढूढाहड आळो, भोरा सीस लो त्यो भांनि। भों की आस छोड द्यो भोम्या, छावो कहू डूगरा छानि।

—राजसिंघ भाखरोत रो गीत

२ देखो 'भय' (रू भे)

भोंगरी—स० पु०—ऊट के चरने का एक प्रकार का घास, जो जैसलमेर मे होता है।

भोंदू—वि०—१ बेवकूफ, मूर्ख।

उ०—१ भूला भोंदू फेर मन, मूरख मुग्ध गवार। सुमिर सनेही आपना, आतमा का आधार।—दादूबाणी

उ०—२ सुण समझै कोई सुघड सयाणौ, भोंदू सुण भमजावै। आया साघ न देवै उत्तर, वाछित वस्तु वतावै।—ऊ का

२ सीधा-सादा, भोला।

रू० भे०—भादू, भोदू।

भोंपणियो—देखो 'भापणो' (अल्पा., रू भे)

भोंपणी—देखो 'भांपणो' (अल्पा, रू भे)

भोंपणो—देखो 'भांपणो' (रू भे)

भोंपू—स० पु०—१ फूंक से बजने वाला तुरही के आकार का वाजा।

२ कारखाना या फैक्ट्री मे समय सूचित करने हेतु बजाई जाने वाली सीटी।

३ मोटर आदि वाहनो में यात्री को सचेत करने हेतु बजाया जाने वाला वाजा, हॉर्न।

भोंय—देखो 'भाय' (रू भे)

उ०—मुहडा थी यो वाक्य वोल्यो। अवला असत्री नै लिया घणी भोंय अहीर तू आयो छै।—वेलि

भोरामाटी—देखो 'भवरामाटी' (रू. भे)

भोंवळ—देखो 'भवळ' (रू भे) (अमरत)

भोंसले—स० पु०—मराठो के राजकुल की एक उपाधि।

भोह—देखो 'भ्रू' (रू. भे) (डि को)

भो—अव्य०—१ हे! अरे!

उ०—मित्र पिता को किसकी माता, भो सुत वनिता किसके भ्राता। जग सब दीखत आता जाता, सवका मन इण माहि समाता।—ऊ का.

२ देखो 'भय (रू भे)

उ०—१ दिवस केता दिल दगजै गुमर घरिया, आय गाजै रोस ताजै रोपिया। भो तेण भाजै सयल साजै तखत राजै तेह, वर कठ वामा घरी घामा किता कांमा वद किया। भय मेट भारी घनुमधारी अरज सारी येह।—र रू

उ०—२ तारै ढोलोजी वोलिया, म्हाने तो भो कोई नहीं।

—ढो मा

३ देखो 'भव' (रू भे)

उ०—लगर मे वैठ'र जीमै, कतार मे कासण माजै, नूवा डरता रे'वै, वोदा रो भो भाजै। अफसर रै हुकमा हालै जको मोज सू मालै।—दसदोख

भोई—स० पु० (स्त्री० भोयण) १ पालकी या डोली उठाने का पेशा करने वाली एक जाति या इस जाति का व्यक्ति, कहार।

(मा म)

उ०—१ भोई मेहर अजइ ठाठिया, चालइ कहार कमाणी। च्यारि सहस साथइ साचरीया, वहइ पखाली पाणी।—का दे प्र

उ०—२ चढता भोई नूं कह्यो—'रे, पनोतै रै वाहळै मूजाई करिज्यो।'—नैणसी

उ०—३ भोई खोई भरडीया, सोनी नइ सूतार। व्यवसाईया साहू जातिना, जे जोईइ तिणी वारि।—मा का प्र

२ हाथी पर अम्बारी आदि कसकर तैयार करके महावत के सामने लाने वाला व्यक्ति।

उ०—१ हाथिया रै वाट खरच रा दाम लेखो कर दिया। महावत भोई साथै दिया —नैणसी

३ खरादने वाला, खरादी।

४ भोजन करने वाला, भोजी।

५ तीर के फल और लकडी को जोडने वाला लोहे का छल्ला।

उ०—नाहर डैर रा भील सिंदूर री आड किया, कमरै घूघरमाळा वाघियां वैस नै पगा घुणा मे पाल तीर चलावै, झगडै गाढा

अलवाणा पगा अेक वेंत च्यार आगळ भाल तीर री, अढाइ आंगळ भोई ।—वा दा ख्या

भोक्ता-वि० [स० भोक्तृ] १ खाने वाला, भोजन करने वाला ।
२ उपभोग करने वाला ।
३ भोग करने वाला ।
स० पु०—स्त्री का पति, स्वामी ।

भोग-स० पु० [स० भोग] १ भोगने की क्रिया या भाव ।
२ इच्छा-पूर्ति या प्रसन्नता की दृष्टि से अभीष्ट या सुखद वस्तु को अपने मनमाने ढग से उपयोग मे लाने की क्रिया या भाव ।
उ०—करि सनान ध्रम करै, धरै ध्रम ध्यान स्यांमध्रम । काया जोग अनेक, भोग माया तजि विभ्रम ।—सू प्र.
३ उपयोग ।
उ०—जै था लोगां नै सुखी होवण री थोडो घणी चावना है तौ आज सू इण वात रो प्रण करलौ कै हाथा कमाया बिना थें किणी चीज रौ भोग नी करौला ।—फुलवाडी
४ देवी देवताओ के उपभोगार्थ मूर्ति के सामने रखा जाने वाला भोज्य पदार्थ, नैवेद्य ।
उ०—१ धूप दीप नैवेद्य आरती, सब ही सौंज लै आ री । बहु विध सू पकवान वणाकर, करौ भोग की त्यारी ।—मीरा
उ०—२ हे ! उठो सासूजी रावौ लापसी, है देवता रै भोग लगाड । उठो वाइमा वांधौ राखडी, थारां वीरोसा जतन कराव ।
—लो गी
क्रि० प्र०—लगाणौ, मेलणौ ।
५ भोजन करने या खाने की क्रिया या भाव ।
क्रि० प्र०—लागणौ ।
६ भोज्य पदार्थ, खाना, भोजन ।
उ०—१ अन धन जिण घर आसरो, भला भरोगे भोग । पइसो हुवै न पास मे, लूलू करदे लोग ।—ऊ का
उ०—२ क्यू काम कमावै, तन मन तावै, खावै भोग खटदा है । विदवाहा वासै सोगन सासै, कासै रोग कटदा है ।—ऊ का
७ वह अवस्था जिसमे किसी भूमि या सपत्ति को अपने अधिकार में रखकर उससे पूर्ण लाभ उठाया जाता है ।
८ कब्जा भुक्ति ।
९ आराम, चैन, ऐश ।
१०—सभोग, मैथुन ।
उ०—सझ्या समै रावजी महिलां पधारीया तरै अपछरा मुजरो करै नै सीख मांगी । अबै तौ साहिबजी मोनै लोका दीठी । राज पीण हकीगत कीही सो म्हैं तौ जावसू । रग भोग विलास करनै अलोप हुई ।—वीरमदे सोनगरा री वात
११ सभोग शक्ति ।
उ०—भोग वधावण भखो, भोग फिर दूर भमैला, रोग मिटावण रखो, जनम रो रोग जमैला । सोग हटावण सवो, सोग में पडिया सिडस्यो, लोक रीत सू लघो, लोक सू चिडस्यो लडस्यो । ओखदि पिछाण खावो अमल, ओखदि है नह अकल रो, असल रो मजो क्यू ओर है, निकमू आनद नकल रो ।—ऊ का.
१२ घर, मकान ।
१३ निवास-स्थान ।
उ०—गढ चितौड ना रहा, नही रहण का जोग । वसस्या रूडी द्वारिका, जहा हरि भगता का भोग ।—मीरां
१४ सुख ।
उ०—सता समाध अगम घर सोऊ, दस दिस राम रमैंयो दोऊ । जगत भोग सपना सम जोऊ, हमहीं गाय सिंघ मैं होऊ ।—ऊ का
१५ दुख, कष्ट ।
१६ पाप या पुण्य का वह फल जो सहन किया जाता है ।
१७ किसी काम से, वाल से प्राप्त होने वाला फल ।
१८ किराया, भाडा ।
१९ राज्य कर ।
उ०—१ पत्र जेण लिखो इण विध प्रियोग, भेजो सताव खुरमाण भोग । मो पाटि वइट्ठा पछो माल, उपजेस सकळ भेजो अपाल ।
—सू प्र
उ०—२ आवै दाव कळहण दुनियान सोह ऊचरै, वडी घर राव रूका विभाडी । उधारी राडि रजपूत आंवेरि घरि, 'पहाडी' 'कामा' ले भोग पाडी ।—फतैसिंघ नरूका रौ गीत
२० जागीरदार द्वारा कर-स्वरूप लिया जाने वाला कृषि की उपज का कुछ निश्चित अश या हिस्सा, हासिल ।
उ०—१ उदैपुर री हवेली रा गाव नजीक तिण रो हैंसो भोग रो वरसाळी हैंसो लाग सूधो आध उनाळी हैंमो आध पडै ।—नैणसी
उ०—२ सवळो भरीजै तद हासल इजाफा हुवै । काठा गोहू मण १५००० वीज वावै तिकै साठा नीपजै । वीज वावै तितरो भोग आवै । बीजी लागत घणी छै ।—नैणसी
२१ ज्योतिष मे, सूर्य आदि ग्रहो का मीन, मेष आदि राशियों मे अवस्थित रहने का काल या समय ।
२२ साप का फन ।
उ०—१ नबी अदर पोढियो, काळो दवकै काय । पूगी ऊपर पाधरो, आवै भोग उठाय ।—वी स
उ०—२ दूजा गज रो पोगर अरिसिंघ री पाघ ऊपर आयो जाणै पूग्या रा पूज पर नागराज भोग उठायो ।—व भा
२३ साप ।
२४ आय आमदनी ।
उ०—धरती माहै थाणा ठोड-ठोड राखिया छै, पण धरती भोग पड सकै नही ।—नैणसी
२५ वलि ।

२६ दावत, प्रीतिभोज।
२७ लाभ, फायदा।
२८ धन, सम्पत्ति।
२९ वेश्या के साथ सभोग करने पर उसको दिया जाने वाला धन।
३० शरीर, देह।
३१ परिमाण, मान।
३२ प्रारब्ध, भाग्य।
३३ छप्पन की सख्या।
३४ शासन, हुकूमत।
३५ मालगुजारी।
३६ देखो 'सभोग' (रू भे)
रू० भे०—भोय, भोग।

भोगण–वि०—भोगने वाला।

भोगणजमी–स० पु०—राजा, नृप। (डि को)

भोगणौ–वि० (स्त्री० भोगणी) १ भक्षण करने वाला, खाने वाला।

उ०—भाण उदोत रै समै पळ भोगणी, थोगणी मीत रै समद थागै। असुर उर खोतरै मेछ आरोगणी, जोगणी जोत रै रूप जागै।—खेतसी बारहठ।

२ उपभोग करने वाला।
३ उपयोग करने वाला।
४ सभोग करने वाला।
५ सहन करने वाला।

भोगणौ, भोगबौ–क्रि० स०—१ दुख-सुख या पाप पुण्य के फल को सहन करना।

उ०—१ दूखिया देखी देवनि अति दूखड़ू लागि। पणि भोगव्या विण क्रम छूटीयि ये कीधां आगि।—नळाख्यान

उ०—२ आछा करम करिया है तो सुरग री आणद सुरग ई मे लेजे। नीतर नरक रो, सताप तो भोगणो है इज।—फुलवाड़ी

उ०—३ हाथा काम विगाडियो, फळ तो म्हनै ई भोगणो पडसी। —फुलवाड़ी

२ स्त्री प्रसग या सभोग करना।

उ०—१ चोरा जुगती कुगती कीनी, भोग भोगणें घण सुख भीनी। कपटी दरसण मूरत कोनी, दिव्य धरम बोळावणि दीनी —ऊ का

उ०—२ मोडा दुरगह माळिया, गावर फोगै गाल। भोगै सुदर भामणी, मुफत अरोगै माल।—ऊ का

३ उपभोग करना।

उ०—१ हसतो हसतो ई कैवण लागो—ओ विणजारो इण माया नै भोगै के आ माया इण विणजारा नै भोगै।—फुलवाडी

उ०—२ इण रा करम मे धन री आमद रो तो जोग है, पण उणनै भोगण रो जोग कोनी।—फुलवाडी

उ०—३ भूख तिस तथा नीद भोगता थका चकडूढियै दाई भूवाळी खावता रै'ता।—दसदोख

४ भुगतना।

उ०—१ स्त्रीमुख सिडै सेदखाना जिसो, नाक झरै ज्यू नारदो। भव जाण नरक भोगै जका नै, लानत दै ललकार दो।—ऊ का

५ किसी कार्य, पदार्थ, बात आदि के शुभ या अशुभ फलों का वहन करना या सहना।

६ आनन्द लेना, ऐश करना।

उ०—१ वरखां री ऊमर हीय सुरग रा सुख भोगवै (पडियां पण पहली पडै) सो आ पारख काही पडी मरनै तो पाछो कोई आय सकै नही नै आ कहै थरण पडिया पहला पडै सो कोई वार मरनै पाछो आयोक काई।—वी स टी

उ०—२ रतन जटित पहिरो आभूसण, भोगो भोग अपारी। मीराजी थें चलो महल मे, थानै सोगन म्हारी।—मीरा

७ उपयोग मे लाना, बरतना।

उ०—नार नपुसक रा घरा, अदतारै घर अत्थ। भागहीण भोगै नही, देखै परसै हत्थ।—या दा.

८ शासन करना, राज्य करना।

भोगणहार, हारौ (हारी), भोगणियौ—वि०।

भोगाडणौ, भोगाडबौ, भोगाणौ, भोगाबौ, भोगावणौ भोगावबौ —प्रे० रू०।

भोगिओडौ, भोगियोडौ, भोग्योडौ—भू० का० कृ०।

भोगीजणौ भोगीजबौ—कर्म वा०।

भोगवणौ, भोगवबौ—रू० भे०।

भोगता–स०पु० [स० भोक्ता] १ पति, भरतार। (अ मा, ह ना मा)
२ उपभोक्ता।
३ जागीरदार की एक किस्म। (बीकानेर)

भोगदेह–सं० पु० [स०] मनुष्य का मरने के उपरात स्वर्ग या नरक मे जाकर पाप या पुण्य फलो को भुगतने के लिए धारण किया जाने वाला सूक्ष्म शरीर। (पौराणिक)

भोगनौ–स० पु०—१ कान के पास का हिस्सा, कनपटी।
२ लघु मस्तिष्क।

उ०—१ नित नेम हियै भूलै नही, चालै सदा सचेत नें, भोगना फूट परत्रिय भजै, हाय तजै इण हेत नें।—ऊ का

उ०—२ खुद रो भोगनो तो फूट्यो जको फूट्यो ई, म्हारा पेट नै विरथा ई दुखायो।—फुलवाडी

मुहा०—भोगनो भगाणौ=ठगाना। २ भोगनो फूटणौ=मस्तिष्क का ठीक काम न करना। ३ भोगनो गाव जाणौ=मस्तिष्क का ठीक काम न करना। ४ भोगनो भवणौ=मस्तिष्क का ठीक काम न करना।

३ सिर, मस्तक।

उ०—१ खेत रै माह् पग ई दे दियौ नी भोगना बिखेर दूला ।
—फुलवाड़ी

उ०—२ वै वळै कोपरिया रा बणावट बजाया । कोपरिया चूकनै कित्ताक चूकता । च्यारा रा भोगना विखरग्या ।—फुलवाड़ी

४ प्रारब्ध, भाग्य ।

भोगपत, भोगपति—स० पु० [स० भोगपति] किसी नगर आदि का प्रधान अधिकारी सूबेदार ।

भोगपतर, भोगपत्र—स० पु० यौ० [स० भोगपत्र] १ वह पत्र जिसके अनुसार व्यक्ति विशेष को किसी पदार्थ के उप-भोग का अधिकार दिया गया हो ।

भोगपाळ—स० पु० [सं० भोगपाल] १ भोगपति ।
२ साईस ।

भोगभाड़ौ—स० पु० यौ० [स० भोग+भाटक] कृषक द्वारा जागीरदार को चुकाई जाने वाली एक लाग या कर विशेष जो वह खलिहान में निकाले हुए अनाज मे से उसका हिस्सा उसके (जागीरदार के) घर पहुचाने पर देता है ।

भोगभूमि—स० स्त्री० यौ० [स० भोग्य+भूमि] १ क्रीडा स्थल ।
२ विलास का स्थान ।
३ जैन मतानुसार वह लोक जिसमे किसी प्रकार का कर्म नही करना पडता है और सब प्रकार की सुख भोग की आवश्यकता एक कल्पवृक्ष द्वारा पूर्ण होती है ।

भोगळ, भोगल—स० स्त्री० [स० भुजार्गल] अर्गला । (उ र)

भोगळाऊ, भोगळावू—वि० [स० भोग+लाभ+रा० प्र० ऊ] किसी को ऋण देने के बदले मे प्राप्त वह घर, भूमि या खेत जिसका उपभोग करने का ऋणदाता को पूर्ण अधिकार होता है एवं उस पर कोई ब्याज नही लिया जाता ।

भोगळावौ—स० पु० [स० भोग+लाभ] एक प्रकार का ऋण या कर्ज लेने का ढग विशेष ।
वि० वि० 'भोगळावा' मे रुपया कर्ज देने वाला बिना किसी ऐव-जाना के गिरवी रखे हुए मकान या जमीन की आमदनी का उपभोग करता है और कर्जदार रुपयो का ब्याज नहीं देता । रहन रखी हुई भूमि की उपज का लाभ या मकान का किराया ही सूद समझा जाता है ।

भोगलिप्सा—स० स्त्री० यौ० [स० भोग+लिप्सा] सभोग की इच्छा, व्यसन ।

भोगळियाळ, भोगळियाळी—स० स्त्री०—कटार । (डि को)
उ०—आडै मांन आगळै असपत, चित्त उतकाय धारियौ चोज । इण मे छै ज चिपण कोई आवौ, भोगळियाळ दिखाळै 'भोज' ।
—राव राजा भोजराज रौ गीत

भोगळियौ—स० पु०—वह व्यक्ति जो ऋणदाता के यहा ब्याज (सूद) के उपलक्ष मे नौकरी करता है ।

भोगळी, भोगली—सं० स्त्री०—१ स्त्रियो के सिर के आभूषण 'बोर' के पीछे का भाग ।
२ देखो 'भूगली' (रू भे)

भोगळौ—स० पु०—बैलगाडी के चक्के के बीच में लगाया जाने वाला लोहे का उपकरण ।

भोगवण—स० पु० [स० भोग+रा० प्र० वण] भोग करने योग्य वस्तु ।
उ०—हमैं वरदळ हुई काढ गूघट हियै, सजै नख सिख बिचै सोळ सिणगार । राज राजेसवर जोड कायम रहौ, भोगवण धरा 'अग जीत' भरतार ।—द्वारकादास दधवाडियौ

भोगवणौ, भोगवबौ—देखो 'भोगणौ, भोगवौ' (रू भे)
उ०—१ ५ रावळ लखणसेन करन रौ । करन पछै पाट बैठौ । भोळौ सो ठाकुर हुवौ । वरस १८ जैसलमेर भोगवियौ ।—नैणसी
उ०—२ प्रथीराज कह्यौ, 'दीवाण ! आप तो घणा ई दिन धरती भोगवी, हमे म्हे मोटा हुवा, दीवाण विराज्या रहौ, म्हे धरती री खबर लेस्या ।'—नैणसी
उ०—३ तरै प्रथीराज परधानांनू कह्यौ, 'हुई सु नीवडी म्हे थांनू विगर पूछियै विचार कियौ तिण रौ फळ म्हे रूडो भोगवां छा, हमैं थे भली जाणौ त्यू करौ ।—नैणसी
उ०—४ राव राजा पदवी अजीतसिंघजी तीन वरस भोगवी पछै रामसरण हुआ ।—वा. दा ख्या
उ०—५ जद काणौ पाडोसी रै घर जाय कह्यौ—रे ! गंवार ने इतरा वरस रजपूताणी थे भोगवी । अजू ही नीं धाप्यौ ।
—काणा रजपूत री वात
उ०—६ तद कुंवर फूलमती नू हाथ पकड अर फेरा लेनै परणीज अर उठै भोगवी ।—चोबोली
उ०—७ स्याम धरम कुळ धरम न साजै, काम धरम अभियास करै । भरमा-भरमी पीड भोगवै, मांचै गरमी हूत मरै ।
—कविराजा बांकीदास
उ०—८ बलिहारी तूझ तणइ बहुनांमी, महि पाळिग ताइ अचळ महि । वाक सबळ टाळियउ विसभरि, सुर नर सुख भोगवइ सहि ।
—महादेव पारवती री वेलि
उ०—९ अनेक सुगध वस्तु सु अरगजा सो खवलित कीजै छै । महला कै विखै अनेक सुख भोगविजै छै ।—वेलि. टी
उ०—१० जक्खेस वारिईस की सुरेस नेस प्री जिसा, 'अभौ' त्रिलोक मे अचभ भोग भोगवै इसा ।—रा रू
उ०—११ जउ उदयागत आवइ आपणइ, पूरब कृत पुण्य पाप । विण भोगविया तै नवि छूटियइ, करता कोडि कळाप ।—प च चौ

भोगवणहार, हारौ (हारी), भोगवणियौ—वि० ।
भोगविओडौ, भोगवियोडौ, भोगव्योडौ—भू० का० कृ० ।
भोगवीजणौ, भोगवीजबौ—कर्म वा० ।

भोगवती—स० स्त्री० [स०] १ गगा ।

२ पाताल गगा।
३ नागिन ।
४ नागो की पुरी जो पाताल मे है।
५ द्वितीया तिथि की रात्रि।
रू० भे०—भोगावती।

भोगवान–स० पु० [स० भोगवन्] १ साप।
२ गाना, गीत।

भोगविलास–स० पु० यौ० [स०] सुख-चैन की वह स्थिति जिसमे मनुष्य इन्द्रियो या वासनाओ की तृप्ति मे लिप्त रहता है।
उ०—राजा स्यामसुदर नु कह्यो, 'थे एक बार दरबार आई मुजरो करिनै डेरै तुरत गया करो। हिवै स्यांमसुदर सुख सु आस्या सु भोगविलास करै छै।—स्यामसुदर री बात

भोगसरीर—देखो 'भोगदेह'।

भोगसील—देखो 'भोगीसैल' (रू भे)
उ०—आदि सहर मडोवर थो। सामत्र मांहै नै पदमपुराण माहै वात छै। भोगसील परवत मेर रो वेटो कहै छै।—नैणसी

भोगांतराय–स० पु०—जैन मतानुसार वह अतराय जिसका उदय होने से भोगो की प्राप्ति मे विघ्न पडता है। मतातर से—वह कर्म जिसके उदय होने से जीव स्वतन्त्रता पूर्वक उपलब्ध होने वाली भोग सामग्री का मन की कृपणतावश एव सकीर्णतावश, ईच्छा रहते हुए भी उपभोग नही कर सकता है।

भोगाडणौ, भोगाडबौ—देखो 'भोगाणौ, भोगावौ' (रू भे)
भोगाडणहार, हारौ (हारी), भोगाडणियौ—वि०।
भोगाडिओडौ, भोगाडियोड़ौ, भोगाड्योडौ—भू० का० कृ०।
भोगाडीजणौ, भोगाडीजवौ—कर्म वा०।

भोगाणौ, भोगावौ–क्रि० स० ['भोगणौ' क्रि० का प्रे० रू०] १ दुख-सुख या पाप-पुण्य के फल को सहन कराना।
२ स्त्री प्रसग या सभोग कराना।
३ उपभोग कराना।
४ भुगताना।
५ आनन्द लेने मे प्रवृत्त करना, ऐश कराना।
६ उपयोग मे लेने को प्रवृत्त करना, वरताना।
भोगाणहार, हारौ (हारी), भोगाणियौ—वि०।
भोगायोडौ—भू० का० कृ०।
भोगाडणौ, भोगाडवौ—कर्म वा०।
भोगाडणौ, भोगाडवौ—रू० भे०।

भोगायोडौ–भू० का० कृ०—१ दुख सुख या पाप-पुण्य के फल को सहन कराया हुआ २ स्त्री प्रसग या सभोग कराया हुआ ३ उपभोग कराया हुआ ४ भुगताया हुआ. ५ आनन्द लेने मे प्रवृत्त किया हुआ, ऐश कराया हुआ ६ उपयोग मे लेने को प्रवृत्त किया हुआ, वरताया हुआ
(स्त्री० भोगायोडी)

भोगावणौ, भोगाववौ—देखो 'भोगाणौ, भोगावौ' (रू भे)
भोगावणहार, हारौ (हारी), भोगावणियौ—वि०।
भोगाविओडौ, भोगावियोडौ, भोगाव्योडौ—भू० का० कृ०।
भोगावीजणौ, भोगावीजवौ—कम वा०।

भोगावियोडौ—देखो 'भोगायोडो' (रू भे)
(स्त्री० भोगावियोडी)

भोगावती—देखो 'भोगवती' (रू भे)

भोगि—देखो 'भोगी' (रू भे)

भोगियोडौ–भू० का० कृ०—१ दुख-सुख या पाप-पुण्य के फल को सहन किया हुआ २ स्त्री-प्रसग या सभोग किया हुआ। ३ उपभोग किया हुआ ४ भुगता हुआ ५ आनन्द लिया हुआ, ऐश किया हुआ. ६ उपयोग में लिया हुआ, वरता हुआ
(स्त्री० भोगियोडी)

भोगियौ—देखो 'भोगी' (अल्पा, रू भे)
उ०—कहू सूकर कहु स्वान मति, मोरमूघ उर काग। कहू जोगी कहु भोगिया, कहु रोवै कहु राग।—ह पु. वा

भोगिओभमर—देखो 'भोगियौभवर' (रू भे)
उ०—तठा उपराति करिनै भोगिआभमर लजा छयल हुसनाक जवान निजरवाज बाजार माहै ऊभा जोहा खाए छै।—रा सा स

भोगियौभवर–स० पु०—विलास-प्रिय, विलासी।

भोगिसैल—देखो 'भोगीसैल' (रू भे)

भोगी–स० पु०—१ सर्प, सांप। (अ मा, ह ना मा)
२ छद शास्त्रकार एक विद्वान का नाम।
उ०—किवळो पिच्छू कहैं लहू लघु अक लहावैं गिणं छद वस गुरु कवी लघु चार कहावैं। बीजा दीरघ वरण जपै गुरु आदि सजोगी, विसरग अग सिर विंदू भणै तारख सो भोगी।—र रू
३ शेप नाग।
उ०—खूव वजाई खग तैं धारा धमचक्कै, कुवक्कै क्रोड कराहि कै कमठेस मचक्कै। नीसासा नासानुगी, आसागज तक्कै, भोगी भोगन झिलि सकै, भुम्मि अकवक्कै।—व भा
४ नृप, राजा।
उ०—राज करता नरक पडता, भोगी जोरै लीया। जोग करता मुकति पहुता, जोगी जुग जुग जीया।—मीरां
५ जमीदार।
६ धनी, सम्पत्तिशाली।
७ सगीत मे एक राग का नाम।
वि०—१ उपभोग करने वाला, उपभोक्ता।

उ०—सुरसर सुजल अमळ सजोगी, दळ मळ अघ अोघी दुख दद।
साझ कमळ पद राम असोगी, मन अलियळ **भोगी** मकरद।
—र ज प्र

२ खाने वाला।
उ०—१ देवी जखणी भखणी देव जोगी, देवी अम्मळा भोज **भोगी** निरोगी, देवी मात जानेसुरी अन्न मेहा, देवी देव चामुड सख्याति देहा।—देवि.
उ०—२ फट उडियाण लिया डमरू कर, भाग धतूरा **भोगी**।
—क कु बो

३ इन्द्रिय सुख का अभिलाषी, विषयासक्त।
४ विषय-भोग मे रत, विषयी।
उ०—१ जग मे कहे जोगी भीतर **भोगी**, भोगी सम भोवदा है, महिला नै भोगी गूगी गोगी, रोगी जिम रोवदा है।—ऊ का
उ०—२ **भोगिय** मोख कुरोगिय भोजन जोगिय जोग्वत जोवत जैसे। पातर को उपदेस पतीव्रत, कातर को सुर सिंधु न तैसे।
—ऊ का

उ०—३ अति कोक कळा **भोगी** अपार, दातार सूर अति चित उदार। वळिवत हुवै आजानवाह, अभि गयद हुवै दळ वळ अथाह।
—सू. प्र

५ आनन्द लूटने वाला।
उ०—सियाजी रा नैणा निरख हरि नैणा जळ भरै, प्रियाजी रा प्यारा सहज गुण मारा हिय धरै। हरि चिंता सारी तदपि दुख भारी चित करै, विजोगी है जोगी भगति रस **भोगी** सब परै।—गी रा
६ ऐश आराम करने वाला ऐय्याश।
उ०—जिहा **भोगी** करइ रेवाडी, इसी विसाल वाडी। जिहा पढइ छात्र चउसाल, तिहा इसी अनेक लेसाळ।—सभा
अल्पा०—भोगियौ।

भोगीकुसम—स० पु०—भ्रमर, भौंरा। (अ मा)

भोगीसैल—स० पु० [स० भोगीशैल] जोधपुर मे मंडोर के पास के पर्वत का नाम, जिसकी पुरुषोत्तम (मल) मास मे परिक्रमा लगाई जाती है।
वि० वि०—ऐसा कहा जाता है कि मरुभूम्यान्तर्गत 'भोगीसैल' पर्वत के स्थान पर सर्पों का एक बडा भारी बिल (विवर) था। ये सर्प ब्राह्मणों को बहुत सताते थे। ब्राह्मणो ने इनके दुख से दुखित होकर इन्द्र का आह्वान किया तब इन्द्र ने हिमालय के पुत्र को आज्ञा दी कि तुम उनके बिल पर जाकर स्थित हो जाओ। इन्द्र की आज्ञा से वह पहाड यहा आकर स्थित हो गया। तदन्तर राजा जनमेजय ने अपने पिता परीक्षित का बदला लेने के लिए एक यज्ञ किया जिसमे वह इन सर्पों की आहुति देने लगा। तब सर्पों ने ब्रह्मा जी से प्रार्थना की कि 'अब हम किसी को भी न सतायेंगे अत आप हमारी रक्षा करो।' तब ब्रह्माजी ने उनको मरु-देश का यह पहाड बतलाया कि 'तुम यहां निर्भय रहो।' साथ ही यह वरदान भी दिया कि 'जो मनुष्य श्रावण की पचमी को तुम्हारी पूजा करेगा उसे अभीष्ट फल मिलेगा। ब्रह्मा की आज्ञा से उन सभी सर्पों ने इस पहाड मे आकर निवास किया इसीलिए इसका नाम भोगीशैल या नागाद्रि पडा, जिसका अर्थ सर्पों का पहाड होता है।
रू० भे०—भोगसील, भोमसैल।

भोगेसर भोगेस्वर—स० पु०—एक तीर्थ का नाम। (पौराणिक)

भोग्य—वि०—१ उपभोग करने योग्य, भोगने लायक।
उ०—**भोग्य** चित भजै, ग्रीधणी गरज्जै। नीर धार निजै, सोहडै सलज्जै।—रा रू

भोग्यमान—स० पु०—जो भोगा जाने को हो।

भोड—देखो 'भोड' (रू भे)

भोडकियौ—देखो 'भोड' (अल्पा, रू भे)
उ०—चौधरी मतीरा नाख दिया। जिका नै देख'र गगू बोलियौ—ना रे भाई! मतीरडा, **भोडकिया** ज्यू हैं, अर है-ई थोडा सा।'
—घरसगाठ

भोडणौ भोडबौ—क्रि० स०—नाश करना, मिटाना।
उ०—जडभरत अतीत सम रस रा छाकिआ राम रस प्याले रा पीअणहार दया धरम रा पाळणहार करम-जाळ रा **भोडणहार** तापस अस्टाग जोग रा साझणहार सात रस मांहे गलतांण होइ नै रहिआ छै।—रा सा स
भोडणहार, हारौ (हारी), भोडणियौ—वि०।
भोडिओडौ, भोडियोडौ, भोडयोडौ—भू० का० कृ०।
भोडीजणौ, भोडीजबौ—कर्म वा०।
भोडणौ भोडबौ—रू० भे०।

भोडियोडौ—भू० का० कृ०—नाश किया हुआ, मिटाया हुआ
(स्त्री० भोडियोडी)

भोडीरौ—देखो 'भोसडी रौ' (रू भे)

भोडौ—देखो 'भोसडी रौ' (रू भे)

भोचकियौ—देखो 'भोसकियौ' (रू भे)

भोज—स० पु० [स०] १ किसी विशिष्ट अवसर या उपलक्ष मे निमत्रित व्यक्तियो को खिलाया जाने वाला भोजन, दावत।
२ खाद्य-सामग्री, खाने-पीने की वस्तुए।
उ०—साकर सिरसाळी थिर भर थाळी, अगलाकर ऊगदा है। जग त्रण सम जाणै मोजा माणै, भांणै **भोज** भरदा है।—ऊ का.
३ यादव कुल के अन्तर्गत एक राजवश।
४ एक लोक समूह, जो सुदास राजा का अनुचर था।
५ यादववशीय सात्वत राजा का पुत्र।
६ मार्तिकावत् (मृतिकावती) नगरी का एक राजा, जो द्रोपदी के स्वयवर मे उपस्थित था।
७ पुराणो के अनुसार महाभोज राजा के वशजो के लिए प्रयुक्त सामूहिक नाम।
८ एक राजवश, जो हैहयवशीय तालजघ राजवश मे समाविष्ट था।

९ मत्स्य पुराण के अनुसार एक राजा,जो प्रतिक्षत्र राजा का पुत्र था।

१० कश्यप कुलोत्पन्न गोत्रकार ऋषिगण।

११ कान्यकुब्ज देश का एक राजा।

१२ परमारवंशी मालवे का एक प्रसिद्ध राजा, जो बहुत विद्वान एवं विद्या प्रेमी था।

उ०—'जवदळ' 'पदम' 'रायसी' जुजरटळ, 'हरचद' 'वीकम' 'भोज' हुवा। माणी मता छता महमडळ, गता न माणी जीता मुवा।
—गोरधन खीची

भोजक, भोजग–स० पु०—१ एक सूर्योपासक राजा।

२ शाकद्वीपी ब्राह्मणो का एक नाम।

वि०—१ भोजन करने वाला।

२ भोग करने वाला, विलासी।

भोजडली–स० स्त्री० (स० भुर्जपत्र) चिट्ठी, पत्र।

उ०—पीवडले लिख भोजडल्या पठावा, कहो मैं भेजा सदेस। भोजडल्या, सायब, हम ना पतीजा सदेसै न आवै म्हारो वीर।
—लो गी.

२ देखो भोजाई' (अल्पा, रू भे)

भोजण—देखो 'भोजन' (रू भे)

उ०—अख अढार भोजण भाणि, तवोळ मुख तरणि। वाजेंद्र राह वाहणि आरूढ वळै। रिति वरखा सरद्द, हैमत सैसर हद। वसत गीखम सद्द, सुख सगळै।—गु रू व

भोजन–स० पु० [स०] १ खाद्य पदार्थों को भक्षण करने की क्रिया।

२ पेट भरने हेतु खाया जाने वाला खाद्य-पदार्थ, खाने की वस्तु।
(अ मा, ह मा मा)

उ०—१ भोज न गिणै चढावै मूढो, जोजन दूरो जाय। खोज न करै निकाळै, खोडा मादो भोजन माय।—ऊ का

उ०—२ घर घर तुलसी ठाकुर पूजा, दरसन गोविंदजी को। निरमळ नीर वहत यमुना को, भोजन दूध दही को।—मीरा

३ विशेष अवस्था मे खाई जाने वाली कुछ विशिष्ट प्रकार की वस्तुए।

रू० भे०—भुञ्जन, भोजण, भोजनु, भोयण।

अल्पा०—भोजनियो।

भोजनखानौ–स०पु० [स० भोजन+फा० खान] रसोईघर, पाकशाला।

भोजनभट, भोजनभट्ट–स० पु० [स० भोजन+भट्ट] बहुत अधिक खाने वाला, पेटू।

भोजनसाळ, भोजनसाळा–स० स्त्री० [स० भोजनशाला] १ रसोईघर, पाकशाला।

उ०—१ माय वाग है जठै मैं'ल तीन नवा कराया। वाग रै ऊपर भोजनसाळ कराई।—मारवाड री ख्यात

उ०—२ देवीसिंघजी वगरै पकडिया ज्यांनू रस्सा सू बांध भोजनसाळा हेटली ओरियां ज्या मे घालिया।—बा दा ख्या

भोजनालय–स० पु० [स०] १ रसोईघर, पाकशाला।

२ वह स्थान जहां मूल्य लेकर पका हुआ भोजन खिलाया जाता है।

भोजनियौ—देखो 'भोजन (अल्पा, रू भे)

उ०—१ राम नाम विन घडी न सुहावै, राम मिळै म्हारा हियरा ठगाय। भोजनिया नहिं भावै म्हानै, नींदडली नहिं आय।
—मीरां

उ०—२ अगली तो पेडी जी अमादे राणी पग धरयो, भोजनियां री थाळ ज हाथ, चौथी तो पेड़ी जी अमादे राणी पग धरयो, पांनां री हवी ग्रे ज हाथ।—लो गी

भोजनु—देखो 'भोजन' (रू. भे)

उ०—भोजनु आणइ मारग वहइ करइ भगति सरसी दुक्ख सहइ। नवउ अवासु करी नइ रमइ पचह पडव मरसी भमइ।—प प.च.

भोजपत्र–स० पु० [स० भूर्जपत्र] १ ऊंचे पर्वतो पर पाया जाने वाला मझोले आकार का वृक्ष, जिसकी छाल प्राचीन काल में कागज की जगह लिखावट मे काम आती थी।

उ०—भीलामां नइ भालकी, भरडु भारिंगि भागि। भमेडी ब्रह्माड घणा, भोजपत्र भड चगि।—मा का प्र

२ उक्त वृक्ष की छाल।

रू० भे०—भूरजपत्र।

भोजपरीक्षक–स० पु० यौ० [स० भोजन+परीक्षक] रसोई या भोजन की परीक्षा करने वाला।

भोजपुरियौ–स० पु०—भोजपुर का रहने वाला, भोजपुर का निवासी।

भोजपुरी–स० स्त्री०—भोजपुर की वोली या भाषा।

वि०—भोजपुर से सम्बन्धित, भोजपुर का।

भोजराजोत–स० पु०—राठोडो की एक उप-शाखा।

भोजरू–स० पु०—शरपखा।

भोजवसी, भोजांणी–स० पु०—१ शेखावत कछवाह क्षत्रियों की एक उप-शाखा 'भोजराजजीका' या उस शाखा का व्यक्ति।

उ०—१ किसनै खडपुर कै वात ढावी परम असी, सारा ही विमाह नोलगढ़ का भोजवसी।—शि व

उ०—२ वीसी च्यारि भोजाणी हरा कै वस जाया, दोनू खाप ही का वाजि तेगा कांमि आया।—शि व.

२ राठोड वश की एक उप-शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

भोजाई–स० स्त्री• [स० भ्रातृ+जाया] (व व. भोजाया) १ वडे भाई की स्त्री, भाभी।

उ०—१ जळहरजामी वावो मांगा, रातादेश्री माय, कान्हकवर सो वीरो मागा, राम्री-सी भोजाई।—लो गी.

उ०—२ ताहरा आफळियो, कह्यो—भोजाई कासू कियो? हू आपच कर मरीस।—नैणसी

रू० भे०—भउजाई, भुजाई, भौजाई।

अल्पा०—भोजडली, भो'जी।

भोजावत–स०पु०—१ रांठोडों की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

भोजी–वि०—भोजन करने वाला, खाने वाला।

भों'जी—देखो 'भोजाई' (अल्पा, रू भे)

भोजीसुधा—स० पु० [स० सुधाभोजिन्] इन्द्र। (अ. मा)

भोज्यविधि—स० स्त्री०—६४ कलाओं मे से एक कला। (व स.)

भोट—स० पु०—१ भूटान देश का नाम, जहा के घोडे मजबूत होते हैं। (सभा)

२ तीव्र ताप, प्रचड गर्मी।

उ०—पड रही तावडै री भोट, तिरसा सू सूखा होट, सुणो रिस-भजी।—जयवाणी

३ बोछार, झडी।

उ०—दुयणा कोट सभावियो, गोळां चोट निहाव। भोट पडतै गोळिया, ओट न रक्खै राव।—रा रू

४ अग्नि।

रू० भे०—भोट्ट, भोठ।

भोटणो, भोटबो—क्रि० स०—१ दातो से तोडना या काटना।

२ भोजन करना, खाना।

उ०—जिण वगत इक्कीस माणिगर हाथियां रै निजराणा री वात सुणनै रांणीजी खुसी मे बावळा सा व्हैण लागा इण वगत इस्टूखा आपरी तूटी टपरी मे बैठी लूखी मकूनी रोटी मिरचा री चटणी सू भोटती ही अर मिरचां री बळत रै कारण सूसाडा करती ही।—फुलवाडी

३ शस्त्र प्रहार करना, प्रहार करना।

भोटणहार, हारौ (हारी), भोटणियौ—वि०।

भोटिओड़ो भोटियोडो, भोटयोड़ो—भू० का० कृ०।

भोटीजणो, भोटीजबो—कर्म वा०।

भोठणो, भोठबो—रू० भे०।

भोटो—वि० (स्त्री० भोटी) १ जिसकी धार, किनार या नोक तीक्ष्ण न हो।

उ०—साम्ही नाई नै कै'वता—यू डरतो डरतो कांई टपोरिया देवै। थारो पाचणो भोटो व्है तो म्हारी कटार झिलावां।—फुलवाडी

२ लाक्षणिक अर्थ में मन्द बुद्धि वाला।

३ मद।

उ०—मींडको मद पाणी रै मांय सू ई टर-टर करतो बोल्यो—टूच विचै थारी अकल घणी भोटी है, पै'ला उणनै तीखी करनै लाव।—फुलवाडी

भोट्ट—देखो 'भोट' (रू भे) (सभा)

भोठ—देखो 'भोट' (रू भे)

उ०—१ रूका वागी रीठ, भोठ पडै माथा भडां। जोडन मामा-रीठ, आयो दीसै ऊगलो।—राठोड ऊगो

उ०—२ ताहरा हरदास बोलियो—'केरी वेटिया ? तरवारां रा माथै भोठ पडसी।—नैणसी

रू० भे०—भोड।

भोठणो, भोठबो—देखो 'भोटणो, भोटबो' (रू भे)

उ०—ताहरां माडण कहै 'निसग पीई।' इतरै पांणी नू हाथ घालण लागो इतरै डाग री सिर माहे भोठी सु गत नही।—माडणसी कूपावत री वात

भोठणहार, हारौ (हारी), भोठणियो—वि०।

भोठिओडो, भोठियोडो, भोठयोडो—भू० का० कृ०।

भोठीजणो, भोठीजबो—कर्म वा०।

भोठियोडो—देखो 'भोटियोडोडो' (रू भे)

(स्त्री० भोठियोड़ी)

भोड—स० पु०—१ कठोर व वेकार हिंदवाना (मतीरा)।

२ मस्तक, सिर।

उ०—ओखा लादा ऊटा लदै, कई भोडां भारिया। वन रा वाळा सै'रा वजे, वा'र गाव रा म्यारिया।—दसदेव

३ देखो 'भोडल' (मह, रू भे)

अल्पा०—भोडकियो, भोडकियो, भोडको, भोडलो, भोडी।

मह०—भोडक, भोडल।

भोडक—देखो 'भोड' (रू भे)

उ०—१ मुडदा कडहट मे पड़िया नह मावै, सडिया वासै सब विकरद वभकावै। माडा खाडां मे भोडक अडवडता, सता आस्रम जिम तूबा तडभडता।—ऊ का

उ०—२ झटका सू नवो भोडक काटनै होद रै माथै कडा मे टेर देवै। भोडक सू टपक टपक छांटा पडता रै'वै।—फुलवाडी

भोडको—देखो 'भोड' (अल्पा, रू भे)

भोडणो, भोडबो—देखो 'भोडणो, भोडवो' (रू भे)

भोडणहार, हारौ (हारी), भोडणियो—वि०।

भोडिओड़ो, भोडियोड़ो, भोड़योडो—भू० का० कृ०।

भोडीजणो, भोडीजबो—कर्म वा०।

भोडळ—स० पु०—१ अभ्रक नामक खनिज धातु।

उ०—१ छरहै मास सेत गज छाया, कारण एण कळप हूं काया। पट देवळ भिदि जात प्रकासै, जिम भोडळ मझि दीप उजासै।—सू प्र

उ०—२ जग ओ झूठो जाण, सुख इण री झूठो समझ। है दोऊ वाता हाण, भोडळ पळको 'भेरिया'।—महाराजा बळवतसिह (रतलाम)

२ श्वेत, सफेद।

३ देखो भोड' (मह, रू भे)

भोडळो, भोडलो—वि०—१ बुद्धू, मूर्ख।

२ भोळा, नासमझ।

उ०—इम सुणी सेठ मनि हरखियो जी, परखीयो स्त्री तणो भाव। भोडलो एम जाणे नही जी, इहा न कोलावन साव।—वि कु

२ देखो 'भोड' (अल्पा, रू भे)

भोडागार—स० पु०—भडार।

भोडियोडो—देखो 'भोडियोडो' (रू भे)
(स्त्री० भोडियोडी)

भोडी—१ देखो 'भोड' (अल्पा, रू भे)
२ छोटा मतीरा।

भोण—१ देखो 'भवन' (रू भे)
उ०—नवें नाट रायसिंह पेड वेदन नह परणा भणें भाटिया भोण नारवारी बुधकरणा।—पा प्र
२ देखो 'भुवन' (रू भे)

भोणमती—वि० यौ० [स० भ्रमण+मती] अपनी बात पर स्थिर न रहने वाला।

भोत—देखो 'बहुत' (रू भे)
उ०—१ भयकर सोर सिवा अग्र भाग, चोळै मुख होत उदोत चराग। जिका जगि जोति छिपा छिप जात, द्रगा मग भोत सपट्ट दिखात।—मे म
उ०—२ वाणी घुलि-गाठ परी, रसना गुण रटकी। अब छुटायै छूटै नही, भोत वार भटकी।—मीरा

भो'तर—देखो 'बओतर' (रू भे)

भोतेरौ—देखो 'बहुतेरौ' (रू. भे)
उ०—रपैया तो भोतेरा लेलो म्होरा री निरधन अत न पार। तिना तो भोतेरी लेलो, अगिया रो निरधण अत न पार।—लो. गी.
(स्त्री० भोतेरी)

भोयार—स० पु०—एक प्रकार का घोडा विशेप।

भोदू—देखो 'भोंदू' (रू भे)

भोन—१ देखो 'भवन' (रू भे)
२ देखो 'भुवन' (रू भे)

भोपणियो—देखो 'भापणो' (अल्पा, रू भे)
उ०—घुळे जद आखडिया मे नीद, पलक मे भोळैपण रो मोल। नेंन्हा भोपणिया री पाळ, भरीजै सुख समदर बेछोळ।—साफ

भोपणो—देखो 'भापणो' (रू. भे)
उ०—चळापळ ओगनिया री कोर, भोपणां किण भूला रो भार? विहारै गळे अडोळी नार, सोधवा इण धरती वो हार।—साफ

भोपाई—स० स्त्री०—१ भोपा के क्रिया कलाप।
२ भोपे' की सिद्धि या चमत्कार।
उ०—सिद्धा सिद्धाई घरणी मे घसगी, भोपा भोपाई फाफा मे फसिगी। भूठा जोतसिया जोतिस की भूठी, करमा कळपाया बरसा नह वूठी।—ऊ का

भोपाडप, भोपाडफ, भोपाडफर, भोपाडफरी—स० स्त्री०—१ भोपा द्वारा किया जाने वाला ढोंग।
२ ढोग, आडम्बर।
उ०—दरबारी कह्यो—अदाता, अै तो रिजक री अटकळबाजिया हैं। भाड इण भात री थोथी भोपाडफरिया नीं करै तो वो भाड ई काई।—फुलवाडी
३ ढोगपूर्ण धमकी या आतक।
ज्यू—म्है जाऊ थोडी भोपाडफर करनै आऊ।

भोपाळ—देखो 'भूपाळ' (रू भे) (डि को)
उ०—१ सोज्या घर रा चानणा रे भूखा रा भोपाळ। पाळणै मैं सोज्या प्रिथीपाळ।—चैतमानखो
उ०—२ कुरवसी कर चाळो, रच रोसाळां, मीठ बडाळा, भोपाळां। रिळिया रिणताळा, कट किरमाळा, सीस भुजाळा सूडाळा।—भगतमाळ

भोपाळी, भोपाली—स० स्त्री०—सगीत मे एक रागिनी।

भोपौ—स० पु० (स्त्री० भोपण, भोपी) १ किसी देव विशेप का शरीर मे प्रवेश अनुभव करते हुए उसी प्रकार क्रिया-कलाप करने वाला मनुष्य। (नैणसी)
उ०—सिद्धा सिद्धाई घरणी मे घसगी, भोपा भोपाई फाफा मे फसिगी। भूठा जोतसिया जोतिस की भूठी, करसा कळपाया बरसा नह वूठी।—ऊ का
२ देव विशेप की पूजा करने वाला, पुजारी।
उ०—रा० भारमल जोधावत रौ दत्त, भोपा देवसी राठौड़ नाग णेचा जी रौ भोपौ चापी गेला बसै।—नैणसी
३ भील जाति के व्यक्ति के लिए प्रयोग किया जाने वाला सम्मान सूचक शब्द।

भोबर—१ देखो 'भोभर' (१) (रू भे)
२ देखो 'भोभरौ' (मह, रू भे)

भोबरौ—देखो 'भोभर' (२) (अल्पा, रू भे) (डि को)

भोभर—स० स्त्री०—१ छोटे २ अगारेयुक्त गर्म आग।
उ०—१ दान घणो उत्तर दिए, हू ते वित सत हार। मुहडो लै उण मिनख रो, भोभर भीतर भार।—बां दा
उ०—२ म्हारै इण भूपै मे भोभर सू ओटचा बासदी रै कारण कीकर ई लाय लाग जावै तो कांई सगळी ऊमर बासदी सू वैर करिया सर जावैला। लाय रै दूजै दिन ई म्हनै चूल्है बासदी तो चेतन करणो ई पड़ैला।—फुलवाडी
रू० भे०—भोबर।
अल्पा०—भोबरौ, भोभरौ।
२ देखो 'भोभरौ' (रू. भे)

भोभरि—देखो 'भोभर' (१) (अल्पा, रू भे)
उ०—उलफै नीं तु आप सु ज्यु जोगी जट्टा, पाविस पाप सताप मैं ज्यू भोभरि भट्टा।—ध व ग्र

भोमरो—देखो 'भोमर' (२) (अल्पा , रू भे)

भोभीत—देखो 'भयभीत' (रू भे)

भोम–स० स्त्री० [स० भौम] १ मगल ग्रह।

उ०—सुकीर नालिका सरुप, वेस रीत राजियं । सुरू गुरू र भोम सुक्र, राज द्वारा राजियं ।—सू प्र.

[स० भूमि] २ बाहुबल द्वारा अधिकार मे की हुई भूमि ।

उ०—एक ढोळी या भोम री पैदास १२५०००) सवाई हमार छै।
—नैणसी

वि० वि०—प्राचीन काल मे राजपूतों के द्वारा कब्जे की हुई खेती योग्य भूमि को उनके वशज अग्रेजी सत्ता तक उपयोग करते रहे। जिसका वे किसी को कर नही देते थे और जिसे वे स्वय की भूमि कहते थे। ऐसी स्वउपार्जित भूमि भोम कहलाती थी, क्योंकि यह किसी से इनायत के तौर पर प्राप्त नही हुई थी।

२ श्मशान भूमि।

३ अग्नि, आग। (ना डि को)

४ राज्य।

उ०—१ इम कहै वयण सँदेस आय, परदेस दवावौ खळ पजाय। पर भोम दवावौ खगा पाण, पर भोम जिकै वाजै पचाण ।
—सू प्र

उ०—२ खूदाळम जपै तू खुरम, सुकरि खग सभाहियो। भर भार भळावै भोम छळि, पिता पूत पडिगाहियो।—गु रू व

५ स्थान।

उ०—अगम भोम सू म्हे चल आया, पूरा कारण ब्रह्म पठाया। पोची जात हीण घर पाया, लिछमी वर सू प्राण लगाया।—
ऊ का.

६ ज्ञान, बुद्धि।

७ परिचय, जानकारी।

८ ध्यान, सतर्कता।

९ कार्य करने की दक्षता।

१० देखो 'भूमि' (रू भे) (अ मा , डि को)

उ०—१ जिती भोम लीधा जळ जावै, आनन राम रटती आवै। सो रुद्रवति जळ गग समाणी, एकण कनक कळस मझि आंणी।
—सू प्र

उ०—२ कसमसे घाट अहि कोम कध, भोम पाट लग्गो भवण, चढि गैस जाणि रावण चढै, रामहूत घमचक करण।—सू प्र

उ०—३ निजर परवखै राठवड़, अकबर तेज दिणद। जाणै व्योम विमान सम, भोम प्रगट्यो इद।—रा रू

भोमअस–स० पु० [स० भौम +अस] रक्तवर्ण का मूगा या लाल।

उ०—सरा मैं ज्यू मानसरोवर, तरां मैं ज्यों कलपतरोवर। खगा मैं ज्यों राजहस, नगा मे भोमअस। नसां मे ज्यों नेहरो नसो, रसा मे ज्यों सिणगार रो रसो। तुरगां मे ज्यों सूरज रो तुरग, दुरगां मैं ज्यों इण भांति चद्रदुरग।—र हमीर

भोमका—देखो 'भूमिका' (रू भे)

उ०—१ कुत्ता कागला जूटै, मजूरा रा माथा फूटै है। घर मुसाण भोमका सा हो रै'या है।—दसदोख

उ०—२ बैठा सू वेगार भली, जायनै मसाणां री भोमका मे ई हळ जोतो पण जोतो।—फुलवाडी

भोमदती–स० स्त्री०—उत्तर दिशा का दिग्पाल।

२ सार्वभौम दिग्गज।

भोमबाव–स० पु० [स० भौम+अ० बाव] 'भोमियो' से वसूल किया जाने वाला एक सरकारी कर विशेष।

वि० वि०—देखो 'भोमियो'।

भोमवार—देखो 'भौमवार' (रू भे)

भोमविज्जा–स० स्त्री० [स० भूमि+विद्या] भूकम्प के द्वारा शुभाशुभ फल को जानने की विद्या। (जैन)

भोमसैल—देखो 'भोगीसैल'।

भोमि—देखो 'भूमि' (रू भे)

उ०—१ वापीकी भोमि वरावरि बोलै, घड त्रि सरूप रचे घण घाइ। सूरा वट उजवाळी सेखै, रावा वट उजवाळी राइ।
—सेखा सूजावत नै गांगा वाघावत रो गीत

उ०—२ कनिया भोमि विवर लघु काया, आयस जेम दास घरि आया। वदियो वळि घर मगन बाळ वय, जय मम वर, मम पिता पराजय।—सू प्र

उ०—३ भार उतारै भोमि, अवधि सँदेह उधारै। वसै राम वैकुठ, विमळ जग जस विसतारै।—सू प्र

भोमियाचारो—देखो 'भोमीचारो' (रू भे)

उ०—भला रजपूत भूमिया छै। गाव ४०० माहे उणां रो भोमियाचारा रो ग्रास लागै छै।—नैणसी

भोमियाजी–स० पु०—गाय, ब्राह्मण, धर्म, गाम और भूमि की रक्षार्थ एव परोपकार के लिए युद्ध करता हुआ वीर-गति को प्राप्त वीर, जिसकी बाद मे पूजा भी की जाती है।

भोमियावट–स० पु०—पिता की सम्पति प्राय जमीन व अचल सम्पत्ति का उसकी सन्तान मे बराबर विभाजित होने की प्रथा या ढग।

रू० भे०—भूमियावट।

भोमियोजी—देखो 'भोमियाजी' (रू भे)

भोमियो–वि०—१ जानकार, विज्ञ।

२ चतुर, दक्ष।

स० पु०—१ स्वबाहुबल द्वारा उपार्जित भूमि का स्वामी।

उ०—१ अग बारह दिन सहर में रहा था सो सगळै सहर मे लोगा रै वेला वखत हाडी चढी नही सो उठै आपरो आधार थो। आप पधारो तो सूरज ऊगै। भोमिया आप दवा लिया था सो आप जाणो हीज छो।—पलक दरियाव री वात

उ०—२ आया राठोड है खडे प्रजा चढन अप्रडे । भगाण भोमिया हरे, गया अलग ऊतरै ।—गु रू व

वि० वि०—प्राचीन काल मे खेती योग्य भूमि पर कब्जा कर लिया । तदन्तर अग्रेजी राज्य-काल तक उनके वशज उसका उपभोग करते रहे और कोई भी उस भूमि का कर या लगान राज्य में नही देता था, क्योकि उनका कहना था कि वह भूमि उनकी स्वय की बापोती है तथा किसी के द्वारा इनायत की हुई नही है, ऐसे भूमिदार भोमिया कहलाते थे ।

२ लुटेरा डाकू ।

३ क्षेत्र विशेष का पूर्ण जानकार या विज्ञ व्यक्ति ।

उ०—तिर्क जैसलमेर था कोस २५ आथवण नू मगळीकाथळ छै, तठै रहे छै । वा ठौड मगळीकाथळ कहावै छै । तठै द्रम छै । सु भोमियो होय सु डांडी आवै । असैंधो डाडी टळै सु घोडो असवार गरक हु जाय ।—नैणसी

४ खेतिहर राजपूत, जो किसी प्रकार का कर न देता हो ।

५ चूहा ।

६ देखो 'भोमियाजी' ।

रू० भे०—भोमीयो, भोम्यो ।

भोमी—देखो 'भूमि' (रू भे)

उ०—पांणी नरिंद पुत्रा, भोमी गढ़ व्रद भारिया । खट-मेक जतन कीजै, कथित आदि जुगादि ।—गु रू. व

भोमीचार—स० पु०—भूमि का आधिपत्य ।

उ०—जिण दिना में इतरा भोमीचार जाटा रा है जिणा री याद । लाधडियै वा सेखसर लारै गाव ३६० है सू औ गाव गोदारा रा है । —द दा.

भोमीचारो—स०पु०—१ 'भोमियो' की आबादी का घनत्व वाला स्थान ।

उ०—१ गाय सिंघ अेक घाट जळ पीवै, साढिया रा वरग सूना ही नरै, बाजारा री हाट मे कोई बोपारी ताळो न मारै । बडी बांकी भोमीचारै री जायगां छै तिण रै चिकोड री उगूणी दिसा छै ।—ढाढाळा सूर री वात

उ०—२ कूच थयो सुण अस्टक न्यारा, चळ चळिया थळ भोमीचारा । दळ जतने थप जोम अछायो, असंख दळै जैतारण आयो । —रा रू

२ 'भोमियो' का अधिकार ।

उ० —धीर गिरराजजी वडावड आव काटनै आंबेर सू लायो नै महारोठ मे लगाया । पछै कितराक पीढियां पछै मारोठ में गौडा री भोमीचारो रै यो ।—मारवाड री रुयात

३ लूट-खसोट, डकैती ।

उ०—पातसाह री बेटी परणीयो देपाळ धध रजपूत । अठै देपाळपुर राज करै । अठै ओ भोमीयोचारो करै । सो ईयै पासै असवार ५५ रहै । मा वडा तरवारीया अर देपाळ पिण वडो तरवारीयो । जैसोई दातार वडो रजपूत । सो ओ भोमीचारो करै । परखडां रा माल ले आवै । तठै गाम माहे लेनै खावै खरचै । गाम माहे वडी गढी वळवत । सु देपाळ अठै ईयै भात सु रहै ।

—देपाळ धध री वात

४ कृषि योग्य भूमि का 'भोमिया' द्वारा निशुल्क उपभोग करने की क्रिया ।

५ जमीदारी ।

रू० भे०—भोमियाचारो, भौमीचारो, भौमियाचारो ।

भोमीबळ—स० पु०—१ जल, पानी । (डि को)

भोमीयाचारो—देखो 'भोमीचारो' (रू भे)

उ०—पोकरणा राठोडा रा गांव ३० । पोकरण राठौड जगमाल मालावत रा पोतरा पोकरण रै परगनै भोमीयाचारै गांव खाये । पेस कसी, नाळ बधी धणी का दै नही, ना कदै चाकरी करै ।

—मारवाड री ख्यात

भोमीयो—देखो 'भोमियो' (रू भे)

उ०—१ अठे जमीयत कर रहीया भली भात सो । उपरा वरखा लागी । भोमीयो सारो ही गळै । भोमीया खड गया ।

—राजा नरसिंघ री वात

उ०—२ तिको गया जी रै कोठै पिंड भरावण नै गया थ्या, पाछा वळता थकां मारग मैं भोमीया उठ्या, भोमीया सु लडाई कीनी । भोमिया नै मारि धरती सरद करि, आपरै नांमै कनवज सहर वसायो नै राजस्थान बाध्यो ।—राजा रास्टेस्वर री वारता

भोयकर—देखो 'भयकर' (रू भे)

उ०—अखाडा महोदद डोहतो अेकटा, पेख तन सुपह विमुहा पधारै । 'भीम' सरखो कहर 'माल' हर भोयकर, जहरगाजी सकर तुईज जारै ।—चुतरो मोतीसर

भोयग - देखो 'भुजग' (रू भे)

उ०—२ पदमण नाग नारावां पैणां, अघतो भोयग नसो पै आण । वडा छत्री छटको बीछू रो, चारण सु टाळै चहुआण ।

—आसाजी गाडण

भोयगमडळ—स० पु० [स० भुजग+मडल] नागलोक, पाताल ।

उ०—आनन रामराम सुण आणै, अतर आणै रांम उर । भोयगमडळ लोह जणावण, गोरिवै कुजा प्रांणगुर ।

—महाराणा स्री कुभा रो गीत

भोय—१ देखो 'भूमि' (रू भे)

उ०—कोई दिन गादी कोई दिन तकिया, कोई दिन भोय मे पडणा रे । कोई दिन खाना तो कोई दिन पीना, कोई दिन भूखे ही मरणा रे ।—मीरां

२ देखो 'भोग' (रू. भे) (जैन)

भोयडलो—स० पु० (स्त्री० भोयडली) एक अछूत व नीच जाति ।

उ०—मख ममदा नीपजै, ज्याहू की न्यारी न्यारी जात। एक सख सेवा चढै दूजो भोयडल्या के हाथ।—मीरा

भोयण—१ देखो 'भुवन' (रू भे)

उ०—भार गज टला फौजा भमग भोयणा, जुघ अडग ओयणां रूपै जाभा। क्रोघ भर अतर मखै अगन कोयणा, कवर घर दोयणां लियण काजा।—रामलाल आढो

२ देखो 'भोजन' (रू भे)

उ०—खारा नइ खोटा, मीठा मधुरा भक्ष, काचा नइ कोरा, कदा मूल अभक्ष। रयणि भोयण घणा, परदारा गम (न) किद्ध, तोहि ग्रपति नही मुझ, जिम खारइ जलि पिद्ध।—ऐ जै का स

३ देखो 'भवन' (रू भे)

भोयणउ—देखो भुवन' (रू भे)

उ०—जाउ जागइ तांउ मागइ, जांउ जोयणउं ताउ भोयणउ, जेतिय राति तेतउ जागर, जेवडउ खाडउ तेवडउ घाउ।—व स

भोर–स० पु०—१ सवेरा, प्रात काल।

उ०—१ पसु लासुवा पिळ पडै सै, रवै न टोडा टारडा। छडी वूघरा मिस लुळ करा, नित घर भोर जुहारडा।—दसदेव

उ०—२ तुमसो तो मन लाग रह्यो, तुम जागो मोहन प्यारै। भोर भई चिडियां चहचहैं, कागा बोले कारे।—मीरा

२ धोखा, भ्रम।

वि०—३ चकित, स्तभित।

रू० भे०—भोर।

भोरड—वृद्ध।

उ०—हु यौवन तनि जालवु, चढी सुमालइ मीत। भव जातइ भोरड थसिइ, चतुर ! म चूकिसी चीत।—मा का प्र

भोरणौ, भोरवौ–क्रि० स०—भ्रम मे डालना।

उ०—वडी ठगारी जानीयै, हरीया माया जोरि। और किनी मु ना टरी, लीया त सव जुग भोरि।—स्री हरिरामदासजी महाराज

भोरणहार हारौ (हारी), भोरणियौ—वि०।

भोरिओडो, भोरियोडो, भोरयोडो—भू० का० कृ०।

भोरीजणौ, भोरीजबौ—कर्म वा०।

भोरियोडो—भ्रम मे डाला हुआ।

(स्त्री० भोरियोडी)

भोरी–स० स्त्री०—शीतला रोग का भेद विशेष। (अमरत)

भोरी–स० पु०—१ कण दाना, महीन टुकडा।

उ०—१ वा आपरै कटोरा मू चूरमा री अेक भोरौ नीचे न्हाक दियो।—फुलवाडी

उ०—२ कुट-कुट करती अेकली सगळी रोटी खायगी। चिडी नै अेक भोरौ ई को दियो नी।—फुलवाडी

उ०—३ स्याळ खिरगोसिया नै केर रा पांन माथै अेक टोपो खीर अर मालपूआ रो एक भोरौ पुरस दियो।—फुलवाडी

२ देखो 'भोळी' (रू भे)

भोळ—देखो 'भोळ' (रू भे)

२ देखो 'भोळानाथ' (मह, रू भे)

उ०—सिल किस्तूरी गध समाणी घण मिरगाळै, गग वहावणहार हेमाळ-सीम हिमाळै। लेत विमाणी मेघ सावळी इसो लुभावै, भोळ नादियै कीच गुदळता, सीग सुहावै।—मेघ

भोल–स० पु०—स्त्री की योनि, भग।

भोळउ—देखो 'भोळो' (रू भे)

उ०—जो उणु वोलि तो भोळउ, न बोलि तो मितभामी, भोग-चपल तो कदर्पावतार, अविसइ तो परनारिसहोदर, जो टालि माथि तो पुण्यवत जि होइ।—व स

भोळणौ, भोळवौ—देखो 'भळणौ, भळवौ' (रू भे)

भोळणहार हारौ (हारी), भोळणियौ—वि०।

भोळिओडो, भोळियोडो, भोल्योडो—भू० का० कृ०।

भोळीजणौ भोळीजवौ—भाव वा०।

भोळप–स० स्त्री०—१ गलती, त्रुटि, भूल।

उ०—१ तरै माळी पण वात सुणी थी सो माळी जाणी—आज साह जलाल वूवना रै महल जायसी, सो भोळप करै छै।
—जलाल वूवना री वात

उ०—२ मगळी वात सुणनै सेठ वोल्यो— गैणो तो उणनै सूपणो ई पडैला। सात पीढिया री साख जावै। जायनै सावळ ममझा। यू भोळप री वाता करिया घर री साख कीकर रै'वैला।
—फुलवाडी

उ०—३ सु घरती ग्रासिया दाव लीवी। आ वात सागैजी वीका-नेर सुणी। जो सिरदारा री भोळप सू जमी जाय छै। तद सागैजी राव जैतमीजी सू मदत री वीनती करी।—द दा

२ अविवेक।

उ०—१ भतीजै उणनै ममझाई—इण मे आपरी की चूक कोनी। भोळप सू भूल व्है ई जावै तो मगवान इण माथै की विचार नी करै।—फुलवाडी

उ०—२ मा नै सोनळ माथै अणूती रीस आई। उणनै भोळप अर टावर पणा वास्तै खासी भली आडै हाथा ली।—फुलवाडी

३ भुलावा, भ्रम।

उ०—१ म्है घणा दिन भोळप मे रह्यो। थै सगळा ई जाळमाजी मे कवरां रै भेळा हो।—फुलवाडी

उ०—२ सरकार रो लोग खास सेली सो तमासगीर गयो हुतो सो खात राख कजियो न कियो और फोजदार पण भोळप सू चढियो।
—डाढाला सूर री वात

रू० भे०—भोळप।

भोळवणौ, भोळववौ–क्रि० स०—१ भुलावे में डालना।

उ०—१ जे के, म्हारी वेटी, देख्यो सपना माय, के थारी साथण भोळवै। ना ना, म्हारी माता, देख्यो सपना माय, ना म्हारी साथण भोळवै।—लो गी

उ०—२ किया काचा ग्रमा सूरहर कळोघर, डरत गत न पीघो फूल-दारू। वडा री भोळवी हूर ग्रावी वरण, मेलती गइ नीसास। मारू।—नरहरदास बारहठ

उ०—३ गमइ सहूनइ वरसा रडु एहवइ घन महिसी चारए परणामिइ ते मुगध भोलुव्या, व्रत्ति करइ सुविचार ए।

—नलदवदती रास

२ घोखा देना।

उ०—करि करी करवउ प्रिय जोवती, भमइ भीरु रणागिरण रोयती। मरण नइ भइ गिउ मभ भोलवी किस्यू किह्या उरतु हिव ग्रोलवी।—सालिसूरि

३ पुचकारते हुए समझाना।

४ देखो 'भळणो, भळवो' (रू भे)

भोळवणहार, हारो (हारी), भोळवणियो—वि०।

भोळविग्रोडो, भोळवियोडो, भोळव्योडो—भू० का० कृ०।

भोळवीजणो, भोळवीजवो—कर्म वा०।

भोळवणो, भोळववो—रू० भे०।

भोलांण, भोलांवण—देखो 'भोळावण' (रू भे)

भोळाई—स० स्त्री०—भोलापन, सरलता, सीवापन।

भोळाणो, भोळावो—क्रि० स०—कुछ समय के लिए किसी की देख-रेख या निगरानी मे रखना।

उ०—१ पीछै स० १६३८ तोसरणीवाळ कलोजी तिरणा री भतीजो तिलोकसी नागौर सू बीकानेर ग्रायो। महाराज रायसिघजी कारखानै री चाकरी भोळाई।—द दा

उ०—२ ग्रागै दसमी दोढी वाळिया नै भोळाइ दियो।

—सयणी चारणी री बात

२ सौंपना, सुपुर्द करना।

३ हुक्म देना, वतलाना।

ज्यू—ग्रो काम म्हैं उण नै भोळाय दियो हु।

४ भुलाना।

५ घोखा करना, छल-कपट करना, भ्रम मे डालना।

उ०—१ हिवै जगदेवजी हवेली भाडै लेनै पाछा घोडा री ठौड ग्रावै तो चावडी, घोडा दीसै नही नै रथ रा खोज दीसै। तरै जाणियो चावडी नै कोई भोळाय नै ले गयो।

—जगदेव पवार री बात

उ०—२ तरै चावडी जाण्यो म्हारी साळी मालजादी मोसू घणो दगो कीन्हो नै मोनै जोर भोळाई।—जगदेव पवार री वात

६ हिदायत देना।

भोळाणहार, हारो (हारी), भोळाणियो—वि०।

भोळायोडो—भू० का० कृ०।

भोळाईजणो, भोळाईजवो—कर्म वा०।

भळाणो, भळावो, भळावणो, भळाववो, भुळाणो, भुळावो, भुळावणो, भुळाववो, भोळावणो, भोळाववो—रू० भे०।

भोळानाथ—स० पु०—शिव, महादेव। (हि को)

उ०—भोळानाथ दिगवर यै दुख मेरा हरो रे। सीतळ चदन वेल पतरवा, मस्तक गग धरो रे।—मीरा

मह०—भोळ।

भोळापण, भोळापणो—सं० पु०—१ नादानी, नासमझी।

उ०—नगर ग्राइ जोगी रम गया रे, मो मन प्रीत न पाइ। मैं भोळी भोळापण कीन्हो, राख्यो नही विलमाइ।—मीरां

२ भ्रम ग्रादि के कारण कुछ का कुछ समझने का भाव, ग्रज्ञानता, ग्रसावधानी।

उ०—कोई एक वीर पुरस मारीज गयो नै लार नाबाळक जाण सत्रुग्रा हलो करणो विचारियो तठै उण वीर पुरख री स्त्री ग्रापरा वाळक रो परिचै सत्रुग्रा नै करावै छै—हे सत्रुग्रा थै हू जाणू भोळापणै भूला छो क्यू कि म्हारो पुत्र ग्राठ वरस रो वाळक जाण युद्ध री मतो करो छो।—वी स टी

३ सीघापन सरलता, सादगी।

उ०—ठगा रो सिरदार ग्रापरी बेटी नै ममखरी रा भाव सू कह्यो—वेटी, ग्रारो भोळापणो तो देख के ग्रै खुद चलायनै ग्रठै ठगीजण सारू ग्राया है।—फुलवाडी

४ मूर्खता।

भोळावट—जिम्मेवारी, उत्तरदायित्व।

उ०—घोडा तुरकीया राहदार ऊपर नाख पाखर दोना ही पाखतीया लगाय तरगस कूटा मारघा भडीया रो भोळावट हाथ माहे लै वरछी नै रांणी दहड चढी, सकत रूप धार।

—राजा नरसिंघ री वात

भोळावण, भोळावणि—स० स्त्री०—१ निगरानी मे देने की क्रिया या भाव, सभाळ।

उ०—१ पन्नामारू ग्राप तो सिवावो परदेस, म्हारी नै भोळावण किण नै दे चाल्या हो।—लो. गी

उ०—२ घाय घावड सहेली खवास सू मिळी। तरै सासू तिलक काढि नै नाळेर दनै चावडी री भोळावण जगदेवजी ने दीघी।

—जगदेव पवार री वात

२ सावधानी रखने के लिए कथन, देख-रेख।

उ०—१ ग्ररु पडगना री समाळ थाणेदार पडियार वेळोजी, प्रोहित विक्रमसी, वैद लालोजी, लाखणसी मय जमायत कै देस मैं वा पडगना मैं गया, ग्ररु जावतो कियो। नै किले री भोळावण वास्तै किता ग्रेक सिरदार वा किलैदार नार्वैजो सांखलैनू राखियो।—द दा

उ०—२ सु राजा घडी घडी री खवर मगावै। जैत सांमघरमी छै, इम वार वार कहै, उसताद नू भोळावण देवो।

—जैतमाल पुमार री बात

३ सिफारिश।

उ०—ग्राणद मे इतरी ग्रळूझी, विसेस विगति न वूझी। चतरनै

इणहीज सरभरा मै राखी, इण बात री घणी भोळावणी दाखी ।
—र. हमीर

४ हिदायत, शिक्षा ।

रू० भे०—भळ, भळण भळाण, भळामण, भळावण, भळावणी, भळाव, भळावण, भुळावण, भुळावणी, भुळाविणी, भुळाविनी, भोळाण, मोळावण, मौळावण ।

भोळावणो, भोळावबो—देखो 'भोळाणो, भोळाबो' (रू भे.)

भोळावणहार, हारो (हारी), भोळावणियो—वि० ।

भोळाविग्रोडो, भोळावियोडो, भोळाय्योडो—भू० का० कृ० ।

भोळावीजणो, भोळावीजबो—कर्म वा० ।

भोळावियोडो—देखो 'भोळायोडो' (रू भे)
(स्त्री० भोळावियोडी)

भोळि—स० पु० [सं० वहुलिट] ऊट । (डि को)

भोळीचक्रवत, भोळीचक्रवति भोळीचक्रवरति—स० पु०—शिव, महादेव ।

उ०—१ अगतवचा पहिरि रुडमाळा, भोळीचक्रवति वणियो भेख । चढियो व्रख भव वभूति चढावै, वर तोरण वांदिवा विसेख ।
—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ वाणी इम आकास चवाणी, ओ भोलीचक्रवरति भूवाळ । आ ओ तपइ रइ जो ईस्वर, तप करिस्यु मिळसी ततकाळ ।
—महादेव पारवती री वेलि

भोळेपण—सीधापन, सरलता ।

उ०—सास मे सपना री ससार, अलेखा सरगा रै उणिहार । तिरै है भोळेपण रै तीर, विहि री मन चीती मनुहार ।—सांझ

भोळेराव—स० पु०—पृथ्वीराज के समकालीन गुजरात के राजा भोळेभीम के लिए प्रयुक्त ।

उ०—लीधो दळ परमार दळ आवू भोळेराव । गाजे जादव देवगिर, लीधो करन सुजाव ।—वां दा

भोळै—क्रि० वि०—भ्रम से, भ्राति से ।

उ०—१ गजसिघज गैमर गोडिया, तीह कलेवर पजरा । सावज्ज सीह व्याया सघण, रहि भोळै गिर कदग ।—गु रू व

उ०—२ पाजो सूवो मरियो । थवोहला खाय वै । चानणी रात रा बीलाय आवै तो, दूध रै भोळै पी जाय ।—पना

रू० भे०—भौंळावै, भोळै ।

भोळैनाथ—देखो 'भोळोनाथ' (रू. भे)

भोळो—वि० (स्त्री० भोळी) १ सरल स्वभाव, सीधा ।

उ०—१ कामी क्रोधी क्रपण कलकी कुटिल कजाक कसाई, चोर चुगल चालाक चतुर सू भोळो आछो भाई ।—ऊ का

उ०—२ सु कुवर 'जोगो' भोळो सो ठाकुर हुतो । सु 'जोगा' सू धरती रस नह आई, नै धरती माहै मोहिलां री दखल हुवण लागो ।
—नैणसी

उ०—३ नगर आइ जोगी रम गयारै, मो मन प्रीत न पाइ । मैं भोळी भोळापण कीन्हो, राख्यो नही विलमाइ ।—मीरा

२ मासूम, निरीह ।

उ०—१ भोळी-भोळी बाळिकावा रा सोवणा गिरस्थ बाग-बगेचा वळण सू उबारो, नी तो भारत सूनो हो जावैलो ।—दसदोख

उ०—२ माईता रै मरिया भोळा रेढा रा काई दीन व्हैला ।
—फुलवाडी

३ मूर्ख, बेवकूफ ।

उ०—१ तरसै देख अवर वनतावा, भूलै रघुवर भोळा । जद करसी पिसतावो जम रा, दूत फिरैला दोळा ।—र रू

उ०—२ वेहद रा वासी हद मे हासी, आसी विख उफणदा है, खूटोडा खोळा गाफल गोळा, भोळा इस्क भणदा है ।—ऊ का

उ०—३ नाई कह्यो—वापजी, काई अरज करू म्हारो वाप साव इज भोळो अर अबूझ ।—फुलवाडी

उ०—४ म्हैं राजाजी जित्ती भोळी कोनी जको कविता सुणनै राजी व्हे जावू—फुलवाडी

४ सयाना, समझदार ।

५ निश्चल ।

६ अभाव ।

उ०—सुदर गोरी ओलू थारी परी रै निवार, चपक वरणी, वाभोसा रा भोळा सुसरोजी भागसी ।—लो गी

७ नासमझ ।

उ०—नगर कोतवाळ कह्यो—आप ई कैडी भोळी बातां करो । घरवाळी नै तो सूती छोड छानै आयो ।—फुलवाडी

८ भ्रम ।

उ०—१ कदेही सैहला निकळी नही सो दीवाण पधारो काळीयै द्रह विराजज्यो । म्हे पिण आवां छा । रांणोजी भोळा हुआ, या री तरदोज चूक जाण्यो नही—राव रिणमल री बात

उ०—२ कांई वा इत्ती रूपाळी है ? वा आपरा रूप मे डूबगी । इदगपुरी री अपछरावा रा ई भोळा भाजै जैडी, अबोट अखूट रूप ।—फुलवाडी

रू० भे०—भोळउ, भोरो, भोळवी, भोळवो, भोळो ।

भोळोनाथ—स० पु०—शिव, महादेव ।

रू० भे०—भोळैनाथ ।

भोवाळ—देखो 'भूपाल' (रू भे)

उ०—दादै जैतल करण दादै देदल वानगदेव, वैरसीह लखमण विरद-विसाळ । 'माला' हरो मनमोट मोटै पाट मेरगिर, भाटिया भवाडै भला भीवजी भोवाळ ।—नैणसी

भोसकियो—स० पु०—स्त्री की योनि ।

रू० भे०—भोचकियो, भोसक्यो ।

अल्पा०—भोसकी, भोसडी ।

मह०—भोसड, भोसडो ।

भोसकी—देखो 'भोसकियो' (अल्पा., रू भे)
भोसक्यो, भोसको—देखो 'भोसकियो' (रू. भे)
भोसड, भोसडी, भोसडो—देखो 'भोसकियो' (मह, रू भे)
भोसडी रौ–वि०—एक अश्लील गाली।
रू० भे०—भोडी री, भोडो।
भोसागर—देखो 'भवसागर' (रू. भे)
उ०—१ तुम सुनो दयाल म्हारी अरजी। भोसागर मे बही जात हू, काढो तो थारी मरजी।—मीरां
भोहणौ, भोहबौ–क्रि० स०—उपभोग करना, भोगना।
उ०—शर घणां देमा रा लूटणहार घारा रा अधीम पराइ भूमि रा भोहणहार मेडतिया बलभद्र नू रामपुरे लेजाइ विवाहियो।—व भा.
भोहणहार, हारौ (हारी), भोहणियौ—वि०।
भोहिग्रोडो, भोहियोडो, भोह्योडो—भू० का० कृ०।
भोहीजणौ, भोहीजबौ—कर्म वा०।
भोहियोडो–भू० का० कृ०—उपभोग किया हुआ, भोगा हुआ.
(स्त्री० भोहियोडी)
भौं–स० स्त्री० [अनु०] ध्वनि विशेष।
उ०—सिव मग सन्मुख धाज्यो, घप मप दो दो, भर हर भौं-भौं मादल भेर वजाज्यो।—घ. व ग्र
भौंकणौ, भौंकबौ—देखो 'भूकणौ, भूकबौ' (रू भे)
उ०—कायर कूकर कोटि मिळ, भौंकै अरु भागै। दादू गरवा गुरुमुखी, हस्ती नहि लागै।—दादूवांणी
भौंकणहार, हारौ (हारी), भौंकणियौ—वि०।
भौंकिग्रोडो, भौंकियोडो, भौंक्योडो—भू० का० कृ०।
भौंकीजणौ, भौंकीजबौ—भाव वा०।
भौंकियोडो—देखो 'भूकियोडो' (रू भे)
(स्त्री० भौंकियोडी)
भौंचक–वि०—हक्का-बक्का, घबराया हुआ।
रू० भे०—भौचक।
भौंजाई—देखो 'भुजाई' (रू भे)
उ०—तिस परि भोजन पूर कनक-थाळ विराजमान करि ग्विजमत-गारू नै अरज कीवी भौंजाई की तयारी।—सू प्र
भौंडिरू–स० पु०—विवाह आदि अवसरो पर अपनी हमेशा की सेवाओ के बदले कुछ विशेष नेग लेने वाली जातियो का समूह।
भौंपणी—देखो 'भापणी' (अल्पा., रू. भे)
भौंपणौ—देखो 'भापणौ' (रू भे)
भौंर, भौंरौ—देखो 'भ्रमर' (रू भे)
उ०—१ हमाऊ रस सारस राजहस, अखै भौंर झकार वेपार वसं।—रा. रू.
उ०—फल-फूलू के भार भरी अठार भार। ठांम ठाम के ऊपर मोरू का तटय भौंरू का गुजार।—सू प्र.
भौंरामाखी–स० स्त्री०—वही जाति की एक विशेष मक्खी।
रू० भे०—भमरामाखी।
भौंरामाटी—देखो 'भवरामाटी' (रू भे)
भौंळ, भौंळि—देखो 'भवळ' (रू भे.) (अमगत)
भौंह—देखो 'भ्रू' (रू भे)
उ०—काढियां खगा मुजरा करै, भौंह मूछ अणिया भिडी। सूरज पमाव आगै गर्भ, इम मिटु वागां ऊपडी।—सू प्र
भौंहारौ—१ देखो 'भ्रू' (रू भे)
उ०—सुणि इम वैण वीरंरस साजा, रग मजीठ कीध मुख राजा। अगन नयण घिग्घि नजर अगारां, भिडै मूछ अणिया भौंहारां।—सू. प्र
२ देखो 'भंवारौ' (रू. भे)
भौ—१ देखो 'भय' (रू भे)
उ०—१ ताहरा रायसल रो रावत्र अणो अत भो सदा धमक राखै। को वहै रायसल कांम आयो, को कहै कांम नहीं आयो।—नैणसी
उ०—२ लोगा वात वणाई कै—सिध में आळस, नांघ में भो, वामण मे फूट अर सोघा गोघां रै पल्लै हार ना आती तो मुलक वसतो नही, उजड जातो।—दसदोख
उ०—३ भौ मेटि उभै ससार भव, इम कुण कुळ उद्धारसी। परसियो राय जोधहपुरै, विस्वनाथ वाणारसी।—गु रू व
२ देखो 'भव' (रू भे.)
उ०—१ ग्रो सिंघ ग्रेठवाडी सिकार नै मूडो नीं घालै, पण अैठो करण वाळा नै तीन भौ मे ई नी छोडै।—फुलवाडी
भौआरौ—देखो 'भ्रू' (रू भे)
भौग—देखो 'भोग' (रू. भे.)
उ०—परदार प्यार हुयगो प्रमत, विन सीगां रो वैलियो, भौग रै माय भवता भवर, गयो जनम सब गेलियो।—ऊ का
भौड़–स० स्त्री०—१ सूर्य की कडी धूप व गर्मी।
२ अत्यधिक खुजली का रोग, जिसमे छोटी २ फुंसिया हो जाती हैं।
भौचक—देखो 'भौंचक' (रू भे)
भौजाई—देखो 'भोजाई' (रू भे)
भौटौ–वि० (स्त्री०भौटी) जो तीक्ष्ण या पैना नही हो, बिना धार वाला।
उ०—जिण वगत वो जैवर राजा रै सामा इक्कीस नवलखा हारां रो निजराणो धकै करियो उण वगत ईस्टूखा ग्रेक काळा भाटा रै माथै रगड रगडनै भौटी कवाडी रो पानो करतो हो।—फुलवाड़ी
भौड, भौडक—देखो 'भोडक' (रू भे.)
उ०—कटकै काछी तणै, 'गाजीसाह' नरिंद। बाधै नेत विराजियो, भौडक बाधै विंद।—गु रू व

भौडिंडुभ-स० पु० [स० भय+दुंदभि] भय के समय का युद्ध के सकेत स्वरूप बजाया जाने वाला युद्ध वाद्य विशेष।

भौण—१ देखो 'भवन' (रू. भे)
२ देखो 'भुवन' (रू भे)

भौत—देखो 'बहुत' (रू भे)
उ०—तठै भीवराजजी अरज करी कै हजरत हम दोय जणा दीन मैं आयै सै तुमारा दीन वडा होय तो भौत आछी बात है।
—द दा

भौतिक-स० पु० [स० भौतिक] १ शिव, महादेव।
[स० भौतिक] २ आख, कान आदि इन्द्रिया।
३ आधि व्याधि, कष्ट, उपद्रव।
वि०—१ पार्थिव, शरीर सबन्धी।
२ पचभूत से बना।
३ पचभूत से सम्बन्धित।
४ लौकिक, सासारिक।
५ भूत-योनि से सम्बन्धित।
६ प्राकृतिक नियमो, सिद्धान्तो, रूपो आदि से सम्बन्ध रखने वाला।

भौतिकस्रस्टि-स० स्त्री० [स० भौतिकसृष्टि] पुराणानुसार देव, मनुष्य और तिर्यक योनि की समष्टि।

भौदोख-स० पु० [स० भयदोष] वह दोष जब मनुष्य स्वेच्छा से नही अपितु लोकोपवाद के भय से सामयिक कर्म करता है। (जैन)

भौपणियौ—देखो 'भापणौ' (अल्पा, रू भे)

भौपणौ—देखो 'भापणौ' (रू भे)

भौपति—देखो 'भूपति' (रू भे)
उ०—भौपति वहीत कळै माया मे, मीर मलिक सुलिताना रे। जन हरिदास विरळा जन कोई, उलटी पाख उडांणा रे।
—ह पु वा

भौपाळ—देखो 'भूपाल' (रू भे)

भौप्रद—देखो 'भयप्रद' (रू भे)

भौम—१ देखो 'भोम' (रू भे) (अ मा)
२ देखो 'भूमि' (रू भे)
उ०—१ चित्त माह चितवै, भौम इक राह निभ्रम्मा, खुरसाण घमसाण, रांण घेरियौ मुहम्मा।—रा रू
उ०—२ वाधै फौज अकव्वर वाळी, नीरध जाण पलट्टै नाळी। प्रबळ रजी ऊठी चहु पासा, ऊडी भौम कि मिळण अकासा।
—रा रू

भौमप्रदोस-स० पु० [स० भौमनप्रदोष] मगलवार को पडने वाला प्रदोष का व्रत, जो विशेष महत्व का माना जाता है।

भौमवार-स० पु० [स०] मंगलवार।
रू० भे०—भोमवार।

भौमासुर-स० पु०—नरकासुर नामक एक राक्षस।

भौमि, भौमी-स० स्त्री०—१ पृथ्वी की कन्या, सीता।
उ०—खुध्यावत हू मातहू वैण अक्खै, भणै मात भौमी फळा वीण भक्खै। स्त्रिया छाह राखिया अच्छ सूधा, अनै रास कोरा लिया अच्छ ऊधा।—सू प्र
२ देखो 'भूमि' (रू भे)
उ०—१ व्रज मे आवोला जी व्रजवासी, रामा था विन भौमि उदासी। व्रन्दावन थारी सूखण लागी, कुज कुज कुमळासी।—मीरा
उ०—२ रोड बजि हैवरा आगि धकि रारिया, धजर भाला खेवण अभागो धारिया। भौमि गुगळी गयण चढै रज भारिया, तुट्टिसी घणा सिर आजि तरवारिया।
—जालमसिंघ मेडतिया री गीत
उ०—३ सोभि जान मिरदार रूप अणपार विराजै, रतन निकरि किरि रुचिर भौमि वैरागर भ्राजै।—रा रू

भौमीचारौ, भौमीयाचारौ—देखो 'भोमीचारौ' (रू भे)
उ०—भौमीचारौ माडियौ, बारौ वदै जिहान। जस हूता न करै जुदा, दई सदा परधान।—रा रू

भौम्यौ—देखो 'भोमियौ' (रू. भे)
उ०—जणी रजपूताणी ओठी लै जणी माहे हाडा, चादु और वमत मेल माथै लै चाल्या जो एक भौम्या रै गाम आया।
—पचमार री वात

भौयग—देखो 'भुजग' (रू भे)
उ०—भड बका वहै छकड्‌द सज कज भौयग, पतग चखचुद गत मुद हेकण पयग। सुद कळ खळा बुद करसी सयग, खुद छळ वळा दळ बुद करसी खयग।—बदरीदास खिडियौ

भौयण—१ देखो 'भवन' (रू भे)
२ देखो 'भुवन' (रू भे)
उ०—हलै चलै दुनीयाळ विमन वहाळिया, भौयण मुरडिगै घर आभ भिळगा। प्रिथी चो नाथ कथिपात वेळा पडी, वडै तरवर कुवर पळै विळगा।—महाराजकुमार अनोपसिंह री गीत

भौर—देखो 'भोर' (१) (रू भे)
उ०—चोर अचूकी सू चवै, भौर हुआ घर भेख, थई नफा नै दौडता, थारा अवळा लेख।—अज्ञात

भौरिक-स० पु० [स०] १ किसी राजा या रईस के सोने के जेवर आदि रखने के विभाग का अध्यक्ष।
२ अध्यक्ष।

भौळप—देखो 'भोळप' (रू भे)
उ०—१ जे भौळप राखो छो सो वाजिब नहीं।
—जयसिंघजी री वारता
उ०—२ कियो आप सू हेत, म्हैं वडी भौळप करी, आपरा लखण अब निजर आया। अरज सुण म्हारी बडा ठाकुर अमल, कळक मत लगाजै मूझ काया।—ओपो आढो

भोळवणो, भोळवबो—देखो 'भोळवणो, भोळवबो' (रू भे.)

उ०—इण तरै घणा आपरै पिता री स्त्री नै आपरै माता तिण री मा नानी अनै मामा रै पिता नानै (नानी नानै) वीर वाळक नै वैर लैण रो हठ करता भोळवीयो (पोटायो)।—वी स टी

भोळवणहार हारो (हारी), भोळवणियो—वि०।

भोळविग्रोडो, भोळवियोडो, भोळव्योडो—भू० का० कृ०।

भोळवीजणो, भोळवीजबो—कर्म वा०।

भोळवियोडो—देखो 'भोळवियोडो' (रू भे)

(स्त्री० भोळवियाडी)

भोळावण—देखो 'भोळावण' (रू भे)

उ०—चाकरी रो वेहराव, ढेरा कनात सामान खरची लीधी। असवार सो तीन (३००) सू चढियो। लारली भोळावण भाई देवानै दीधी।—जखडा मुखडा भाटी री वात

भोळावै—देखो 'भोळै' (१) (रू भे)

उ०—कडिया सु'वै पाणी मै पैठा पगां रा नख भावै छै। दूध रै भोळावै विलाव वासीजै छै।—रा सा स

भोळि—देखो 'भवळ' (रू भे) (अमरत)

भोळै—देखो 'भोळै' (रू भे)

उ०—१ स्रीखडूका डवर समीर सै भोला खावै। मळियागिर के भोळै भूलि पत्रेसर मिणघर भुजग आवै।—सू प्र

उ०—२ दगै तोफां वहै गोळा रोहळा मारछा दोळा, जो लार सकै सूता सेर नै जगाय। भूरजाळ वाकडो वीटियो दूजा गढा भोळै लोहां जाळ घसै केहो नसेणी लगाय।—बा दा

भोळो—स० पु०—१ भुलावा।

उ०—वैर लेवण हारू सारू सोहै वीजा कुळ रो एक ही वाळक है नै एक ही जुद्ध सारू क्रमसै है सो इण नै यू कोई तरै भोळो दे'र थथोपो वा पोटाय नै अवार जुद्ध न करै इण तरह सू भुलावसो।—वी स टी

२ देखो 'भोळो' (रू भे)

उ० —१ लाइया लगरा पेखि पट्टाभरां, डीन भोळो पडै कुजरा डूगरा। गज्ज ऊवोळियो रज्ज सू गूडळा, धोम मै पव दीपै किरै घूघळा।—गु रू व

उ०—२ भोळा प्राणी राम भज, तू तज भोड तमाम। दीहा छेल्है देख रे, कैसै हूता काम।—र ज प्र

उ०—३ वाई तो जबरो काम कग्यो। भोळो सैण दुस्मण री गरज सार्ज।—फुलवाडी

भौवाळ—देखो 'भूपाल' (रू भे)

उ०—घन जननी जिण जायो वीसलराव, वीसल समो नवि कोई भौवाळ। रूप अपूरव पेखीयो, लावण लाडु अरी पकवान।

—वी. दे

भौंसिध, भौंसिधु—देखो 'भवसिधु' (रू भे)

उ०—अपरपार अपार, पार भौंसिध उतारण। तुम नरहरी निरवस, वस (तोहि) माघा मुग्व कारण।—ह. पु वा

भौह—देखो 'भ्रू' (रू भे)

भौहण—देखो 'भवन' (रू भे)

भौहरो, भौहारो—देखो 'भ्रू' (रू भे)

उ०—भौहरा जाणं भमर भमाय, मूगफळी सी आगुळी। कूमम-कळी, कर नख जीसा, कनक कुडळ धज मोहइ कांन।—वी दे

म्याड—स० पु०—वडा मेढक।

उ०—म्याड, जोग, भव भेक, वारिज कै भेळा वसै। इमकी भवरो अेक, रसकी जाणै, 'राजिया'।—किरपाराम

म्यारियो—तुच्छ, भोंदू, मूर्ख। (वीकानेर)

म्यास—देखो 'भाम' (रू भे)

उ०—नही तो स्रम्म नही तो माम, नही तो भ्रम्म नही तो म्यास। नही तो नाम नहीं तू नेम, नहीं तू प्रीत नही तू प्रेम।—ह र.

भ्रग—स० पु० [स० भृग] १ भ्रमर, भवरा।

(अ मा, ना मा, ह ना मा)

उ०—१ देखी तेह तडाग अनोपम, पकज नांना-रग। चक्रवाक सारस सुभ वोलि, अति गुंजारव भ्रग।—नळाख्यान

उ०—२ वुरी चुगल मुह मे वसै, आछी रो नह अग। माखी वैसै स्वान मुख, भूल न वैसे भ्रग।—वा दा

२ हाथी, गज। (डि को)

३ लता, वेल।

४ अभ्रक।

५ दालचीनी।

६ देखो 'भ्रगु' (रू भे)

उ०—सनिस्चर पुठि पाग देइ खाट वइसइ, कोडि देव उलग करइ, आस्थानइ इद्र मालि, ब्रह्मा पुरोहित पुणउ करइ, भ्रग रीसि आचमन दिइ।—व स

भ्रगराज—स० पु०—१ भगरा नामक वनस्पति।

२ काले रग का एक प्रसिद्ध पक्षी, भीमराज।

३ वडा भौंरा।

रू० भे०—भिगराज।

भ्रंगरीट—स० पु०—१ शिव का द्वारपाल।

२ लोहा।

भ्रगली—स० पु०—एक वाद्य विशेष।

उ०—वाजिया ताल कसाल तिवली, भेरि वीणा भ्रंगली। अति हरस माचइ पात्र नाचइ, भगति भामिनी सवि मिली।

—ऐ. जै. का. स

भ्रगार—स० पु०—१ पक्षी विशेष। (सभा)

२ राज्याभिषेक के समय काम मे आने वाला घट।

उ०—चोसठि व्यजन रूप ग्राहार दइ, एक स्थाल विसाल, वाटुली सीप कच्चोलां, भ्र गारादिक भाजन सरवे समोपइं।—व स.

३ स्वर्ण, सोना।

४ लौंग।

भ्र गारी–स० पु०—झींगुर।

भ्र गि—देखो 'भ्र गी' (रू भे)

उ०—इतर-सिउ ग्रावी रहिउ, भाड भवाईया सगि। घूरि घतूरु सेवतु, खातु भूकी भ्र गि।—मा कां प्र

भ्र गिरीटि—देखो 'भ्रगु' (रू भे)

उ०—रभा नाचइ, व्रहस्पति पुस्तक वाचइ, इद्र माळी, ब्रह्मा परोहित, भ्र गिरीटि रीसि ग्राचमन करावइ।—व स

भ्र गी–स० पु०—१ शिव, महादेव।

२ शिवजी का एक गण।

३ गुजार करने वाला एक प्रकार का पतिगा।

४ भौंरा।

उ०—मिण (णी) माणक हेम ताटक मढे, चलै भांण दोय जगा जोत चढे। लसै चवुका बिंद जाडी लपेटचो, चितै दूज के चद भ्र गी वसटचो।—वगमीराम प्रोहित री वात

५ भाग, विजया।

रू० भे०—भ्र गि, भ्रिंगि।

भ्र गीस–स पु० [स० भृ गीश] शिव, महादेव।

भ्र ता–वि०—भ्रान्ति वाला, सदेही।

उ०—सुरताण साल भ्र ता सवद, उर तै चिता ग्राकरी। तप लेख करै पतिसाह तो, च्यारू सोवा चाकरी।—रा रू

भ्र ति—देखो 'भ्रांति' (रू भे)

उ०—विरहणि वस विहसक किसुक नहि ए भ्रति। विलवइं विरह करालिय वालिय इम एकति।—जयसेखर सूरि

भ्र मणौ, भ्रमवौ—देखो 'भवणौ, भववौ' (रू भे)

उ०—भ्रे सामहा उठ ग्राया। तरै ग्राप पागडौ छाडिग्रो। ई ग्रांनू घोहत लछीवान देखनै भ्र मिग्रो। तरै सारा ही ग्राय मळिग्रा।

—कल्याणसिंह वाढेल री वात

भ्र सणौ–वि०—नाश करने वाला।

उ०—भूतळ भूरां भ्र सणो वेटी हुव वड भाग। दागळ कर दुवणा दल्या, दस पीढी रा दाग।—रैवतसिंह भाटी

भ्र सणौ, भ्रसवौ–क्रि० स०—नाश करना।

भ्र सणहार, हारौ (हारी), भ्र सणियौ—वि०।

भ्रसिग्रोडौ, भ्रसियोडौ, भ्र स्योडौ—भू० का० कृ०।

भ्र सीजणौ, भ्र सीजवौ—कर्म वा०।

भ्र सियोडौ–भू० का० कृ०—नाश किया हुग्रा.

(स्त्री० भ्रसियोडी)

भ्रकुड–वि०—जिसकी भ्रकुटि चढी हुई हो।

स० पु०—सिर, मस्तक।

उ०—मड घमंड जुध थड विहड रुडमुड, भ्रुड भ्रकुड चड त्रिपत ग्रघ भुड।—सू प्र

भ्रकट, भ्रकट्ट, भ्रकुट, भ्रकुटक, भ्रकुटि, भ्रकुटी, भ्रकुट्टी–स० स्त्री० [स० भृकुटि, भृकुटी] १ भौंह, भ्रू।

उ०—१ भ्रकुटी कमांन वांन वाके लोचन, मारत है तक कस कै री। मीरां के प्रभु गिरधरनागर, कैसे रहू घर बस कै री।—मीरा

उ०—२ गति गयद, जघ केळि ग्रभ, केहरि जिम कटि लक। हीर डसण, विद्रम ग्रधर, मारू भ्रकुटि मयक।—ढो मा

उ०—३ सक्रम सुम स्रटि द्रस्टी लुभ देती, लपुट सपुट लख घूघट पट लेती। लुळकर लकुटी लै भ्रकुटी सळलाती, भूखी वाघण सी भ्रकुटी भळकाती।—ऊ का

२ ललाट।

स० पु०—३ शिर, मस्तक।

उ०—१ भिडे हिक नीजुडियं भ्रकुटेह, चडे हिक रोस पडत चटेह। जुटै हिक वथा जोध जुग्राण, पोरस्स हुवै हिक नाहे पाण।

—गु रू व

उ०—२ कर सूळ विकटह सुभट कोचट, राम थट भट भपट रोभट। पछट वज्रघट कुघट ऊपट, रगट भट फुट भ्रकुट मरकट।

—सू प्र

उ०—३ हरी हरा रहा चहू तरफा ग्रसेस होत, नमेस इसट्टा धार खत्री वट्टा नेम। पडै पावा सार भट्ठा हजारा भ्रकट्टा पेस, ग्ररच्चै भूतेस-नामी मारहट्टा ग्रेम।—महेमदान कूपावत रो गीत

उ०—४ भुव पट याही मभ प्रगटत ग्रैसे वीर, द्वद मैं ग्रदट वट दो दन विदार कै। परै कट भ्रकुट पै रटै मुख मार मार, धावा दे कमध घट फट खग धारकै।—जैतदान वारहठ

रू० भे०—भरकुट, भरकूट, भिउड, भिउडि, भिउडी, भुगटी, भ्रकट, भ्रकट्ट, भ्रकुट, भ्रगट, भ्रगिट, भ्रगुट, भ्रगुटि, भ्रगुटी, भ्रगुट्ट, भ्रगुट्टी, भ्रगूट, भ्रगूटी, भ्रगूटीय, भ्रिकुटि, भ्रिकुट्ट, भ्रिकुट्टह, भ्रिगुट, भ्रूकुटि।

भ्रख—देखो 'भक्ष' (रू भे)

उ०—१ भ्रख ग्रढार भोजण भाणि तंबोळ मुख तरणि। वाजेंद्र राह वाहणि, ग्रारुढ वळै। रिति वरखा सरद हैमत सैमर हद, वसत गीखम सह सुख सगळै।—गु रू व

उ०—२ तठा उपरांति करिनै राजान सिलामति पनरह दिन ताई जान राखि घणी मनहारि करि भातिगारी भगति जुगति महिमानी करि सतरह भ्रख भोजन रा वणाव कीजै छै।—रा सा स

उ०—३ पग पगा सपडै, ग्राख सपडै क ग्रघै, भूखे भ्रख सपडै, जेम लोभी द्रब लद्धै।—ज खि

२ देखो 'भख' (रू भे)

उ०—हव रभ भलभ प्रवल हुई, थित खेंग लए नट रभ थई। सिध ताजण 'धांधल'री समरी, भ्रख लेवण काज उनै भवरी।—पा प्र

भ्रखण—देखो 'भक्षण' (रू. भे.)

भ्रखनिस-स० पु० [स० निशा+भ+रक्ष] चन्द्रमा, शशि। (ना मा)

भ्रग—देखो 'भ्रगु' (रू भे)

भ्रगट, भ्रगिट—देखो 'भ्रकुटि' (रू भे)

उ०—१ सुभट समट घट गरट हट चाहमा, विकट रजवट उछट अघट वै वाहसा। निपट असळो भ्रगट कठी नव माहसा, अरक अधरक हरक धरक झुक अफछरा।—महादान महडू

उ०—२ वगतर सहित शूछळड वरगा, धीव पडइ नेजाळ घड। भाजइ भ्रगिट अरी चा भिडता, घाय रमाडइ ति विघ घड।

—महादेव पारवती री वेलि

भ्रगु-स० पु० [स० भृगु] १ एक गोत्र प्रवर्तक मुनि, जो ब्रह्मा के पुत्र माने जाते है।

२ सप्त ऋषियो मे से एक प्रसिद्ध मुनि, जो शिव के पुत्र माने जाते हैं।

३ परशुराम।

४ जमदग्नि।

५ शुक्राचार्य।

६ शिव, महादेव।

७ शुक्रवार।

८ श्री कृष्ण।

९ पहाड के शिखर की समतल भूमि।

रू० भे०—भरग, भरगु, भिरग, भिरगु भ्रग, भ्रगिरीटि, भ्रगू, भ्रिगु।

भ्रगुकच्छ-स० पु०—प्राचीन काल का एक प्रसिद्ध नगर जो आजकल भडौच कहलाता है।

भ्रगुट, भ्रगुटि, भ्रगुटी, भ्रगुट्ट, भ्रगुट्टी—देखो 'भ्रकुट' (रू भे)

(ह नां मा)

उ०—१ बुगर वलोच वबाळ, जूग जांळोरी जब्बर। अजगर काघ अभ्रीभ, भ्रगुट मुदगर भैराहर।—सू प्र

उ०—२ पाट अग वरग जग झाट खागां पडै, वहै घड खाग पडिया भ्रगुट वडवडै। हर खडा वीर चोसट सहत हटहडै, लूथवथ हुवा अमराव खावद लडै।—ठा सुरताणसिह रो गीत

उ०—३ हीमाचळ नारद नू हसिया, कवरि आविया गोद कियइ। वर कोइ एक साखडत वतावड, दही जियइ रइ भ्रगुटि दियइ।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—४ दीपत भ्रगुटि वीदि सिंदूर, सीसी भाळ जनु प्रतवव सूर। नवनवो रूप सोबा नवीन, प्रतपाळ वचन करियै प्रवीन।

—रामदान लाळस

उ०—५ आप सिलह कसि आवधा, भरि असुळ भ्रगुट्टी। चढै 'किसन' असि भड चढै, अग नयण उछट्टी।—सू प्र

भ्रगुतुग-स० स्त्री० [स० भृगुतुग] हिमालय की एक चोटी (तीर्थ)।

भ्रगुनद, भ्रगुनदण-स० पु० [स० भृगुनद] परशुराम।

भ्रगुनाथ-स० पु० [स० भृगुनाथ] परशुराम।

भ्रगुपत, भ्रगुपति, भ्रगुपती, भ्रगुराम-स०पु० [स० भृगुपति, भृगुराम] परशुराम।

उ०—जायो भ्रगुपत सब जगत, भोम उतारै भार। सहस्राजुन कू साभीयो, परसराम अवतार।—गजउद्धार

भ्रगुलता, भ्रगुलात—देखो 'भ्रिगुलता' (रू भे)

उ०—१ वैजतीमाळा, अविक रिमाळा, कोस्तभ मणि सोहदा है। भ्रगुलत्ता छाजै, विविध विराजै, अति ही रूप अनदा है।

—गजउद्धार

उ०—२ वण भ्रगुलात उवर विमतीरण तण दासरथ घनो जन तारण।—र. ज प्र

भ्रगुसुत-स० पु०—१ शुक्राचार्य।

२ शुक्र-ग्रह। (ना मा)

रू० भे०—भिरगुसुत।

भ्रगू—देखो 'भ्रगु' (रू भे)

भ्रगूट, भ्रगूटी, भ्रगूटीय—देखो 'भ्रकुट' (रू भे)

उ०—१ अडै भुज्ज अममान, भिडै मूछाळ भ्रगूटै। चढै रीस चख चोळ, खाग स तोलउ खूटै।—पे रू

उ०—२ सुणै जद वचन 'भैरव' सूर, नरापत घोय चम्रा चढ नूर। भ्रगूटीय रेख चढै सुरभाल, भिडै भ्रहू मूछ अडै भुपाल।

—पे रू

भ्रगेस-स० पु० [स० भृगु+ईश] परशुराम।

भ्रत-स० पु०—१ एक देव जाति। (अ मा ना मा)

वि०—२ अति, बहुत।

३ देखो 'भ्राता' (रू भे)

४ देखो 'भ्रत्य' (रू भे)

उ०—१ कितक भरय हण लियत यळहकर, उचर धनुख गह उठिय अभग। तिकण वखत भ्रत सह लसकर तज, चपळ सिखर गय नजिक सुचग।—र रू

उ०—२ आगळ नृपति वात उचारी, समै पाय निज भ्रत सु विचारी। मुकनदास कर अरज मिळाया, लेख हितू अप पाय लगाया।—रा रू

भ्रतखड--देखो 'भारतखड' (रू भे)

उ०—भारी तोल समझ गुण भारी, मेहै भारी रांय तन मड। भारी उदक रीज कर भारी, भारी जै राजा भ्रतखड।

—रांमदान गाडण

भ्रतार—देखो 'भरतार' (रू भे)

उ०—रत्ता तो नाम जिकै रहमाण, जिका नह धायै आवा जाण। भणै गुण तोरा लच्छि-भ्रतार, लगै नह त्या तन पाप लगार।

—ह र.

भ्रत्य-स० पु० [स० भृत्य] नौकर, चाकर। (श्र मा, ह नां मा)
उ०—खास पासवान कृपापात्र भ्रत्य रास्ट्र भर, सुघर सुचाल सभ्य सबको सुहायो तू। काहूको न बुरो कीनौं दान सनमान दीनो, लोभ को न पथ लीनो धरम रुख धायो तू।—ऊ का.
रू० भे०—भ्रत, भ्रतयळ, भ्रित।

भ्रद्रजाती—देखो 'भद्रजात' (रू भे)
उ०—मदुकर वरण तरण छक माती, घुमड मचाती दूद घणौं। झोटी समप हूमैं भ्रद्रजाती, गुणीयण हाती जेम गिणौं।—अज्ञात

भ्रद्रजोध-स० पु०—वीरभद्र नामक महादेव का एक वीरगण।

भ्रम-स० पु०—१ भ्रमण करने या घूमने की अवस्था या भाव।
२ वह अवस्था जिसमें मनुष्य किसी को कुछ का कुछ समझ लेता है, झूठा विश्वास।
२ भूल, गलती।
उ०—भमिया भूगोळक नभ गोळक भाई, कविजण करुणारस अलमिति अधिकाई। सूका सरवरिया तरवरिया सूका, च्यारू वरणास्रम भय भ्रम क्रम चूका।—ऊ का
३ एक रोग विशेष जिसमे मनुष्य चक्कर खाकर जमीन पर बेहोश पड जाता है।
४ बेहोशी, मूर्छा।
५ पुत्र।
उ०—१ खत्रवट वह खाग तियाग अखूटित, समहर जीपणहार सत्र। तारण कवि, 'केहरी' तणौ भ्रम, 'जगौ' जगौ भाखै जगत्र।
—जगरामसिंह रो गीत
उ०—२ तणौं भ्रम 'ऊद' असवार चेटक तणौं, घणौं मगरूर वहरार घटकी। आचरै जोर मिरजा तणौं आछटी, भाचरै चाचरै बीज भटकी।—गोरधन बोगसो
६ देखो 'भरम' (रू भे)
उ०—१ अज भेक उजागर नर खर नागर, गुण सागर गूजदा है। नाभा कृत नांमी कथा निकामी, भ्रम गामी भूजदा है।—ऊ का
उ०—२ भूपति आयौ पुर विभ्रमियै, सारग विजै मिळै तिण समियै। आसीवाद करै इम अक्खै, राजा किण कारण भ्रम्म रक्खै।—सू प्र
उ०—३ हुए हिंदु बळहीण, धरा पण खीण सुरा ध्रम। मिटै वेद मरजाद, भेद गुण आद पडै भ्रम।—रा रू
उ०—४ तिण वेळा तारण तरण, गिरधारी गोपाळ। मिळियो उर भ्रम मेटवा, हिंदू ध्रम रुखवाळ।—रा रू
रू० भे०—भ्रम्म, भ्रम्ह, भ्रह्म।

भ्रमक-स० पु० [स० भ्रम] भय, डर, आतक। (श्र मा)

भ्रमकारी-वि० [स०] १ भ्रम मे डालने वाला।
२ सन्देह उत्पन्न करने वाला।
३ विश्वास या प्रतीति वाला।
४ गुंजाइश वाला।
५ सार या तत्त्व वाला।
६ भेद या रहस्य वाला।
रू० भे०—भरमकारी।

भ्रमगामी-वि० [स० भ्रम+गामिन्] १ चलचित्त, डावाडोल।
२ भ्रमित।

भ्रमजाळ—देखो 'भवरजाळ' (रू. भे)

भ्रमण-स० पु० [स० भ्रमण] १ घूमना-फिरना, विचरण।
उ०—थोडा दिन बीतिया सेखर आइयो, मो किण ही वी री वात नही बूझी। जद फेर यो भ्रमण नू वन माही नीसरि गयो।
—सिंघासण बत्तीसी
२ यात्रा, सफर।
३ चक्कर, फेरी।
उ०—सिसमार चक्र ध्रुव विण सु तो, भजै न कुण रिसि गण भ्रमण। अगमै साह 'अवरग' सू, कमधा विण चाळो कवण।
—रा रू
४ आना-जाना, आवागमन।
५ धोखा, भूल।
६ भ्रम, भ्राति।
रू० भे०—भमण, भरमण भवण।

भ्रमणी-वि०—१ भ्रमण करने वाला, फिरने वाला।
२ यात्री।
३ चक्कर या फेरी लगाने वाला।

भ्रमणौ, भ्रमबौ-क्रि० अ० [स० भ्रमणम्] १ धोखा खाना।
उ०—वात वळै असुरा विसतारी, घर विस असट दिलासा धारी। कितराई सुण भ्रमिया काचा, सबळ विखायत रहिया साचा।
—रा रू
२ सफर करना, यात्रा करना।
३ बहकना।
४ चकित होना।
५ देखो 'भवणौ, भवबौ' (रू भे)
उ०—१ हाक डाक अबक धमहमिया, साम्बर विकट असटकुळ भ्रमिया। कमधज दळ हालता कराळा, दहसत पडै दसै द्रगपाळा।
—सू प्र
उ०—२ अवर ग्यांन नह ध्यांन उचारै, आप जेम प्रिया प्रिया उचारै। सिव त्रिय इम प्रभु लखि तिण समियै, भूली चित माया व्रित भ्रमियै।—सू प्र
उ०—३ मन भ्रमिया सुण कोप महानै, थयो सोच सब हिंदुसथानै।
—रा रू
उ०—४ उड रहियो मन लाग अलगै, गुड्डी जाण भ्रमै गयणगै। ऊभा दास खिजमती अगी, ताव वितावं लखै टगटगी।—रा रू

उ०—५ मधुकर भ्रमत सुबास मद, भाल सुधाकर भास। मोदक कर मन मोदमय, नितजय ग्यान निवास।—वा दा

भ्रमणहार, हारौ (हारी), भ्रमणियौ—वि०।

भ्रमिश्रोडौ, भ्रमियोडौ, भ्रम्योडौ—भू० का० कृ०।

भ्रमीजणौ, भ्रमीजबौ—भाव वा०।

भ्रममूळक–वि० [स० भ्रम+मूलक] भ्रम के कारण उत्पन्न।

भ्रमर–स० पु० [स० भ्रमर] १ काले रग का पतगा, जो भू भू की ध्वनि करता हुआ उडता है, भौंरा। (ह ना मा)

उ०—अहि-वेल पत्र कप्पूर सुक्ख, तबोल लाल सोहत मुक्ख। आघ्राण छभा परिमळ असख, गुंजारव इवर भ्रमर पख।—गु रू ब

उ०—२ चरणाकै भड चिहुर, छीजि कातर छगणाकै। टणणाकै टामक, भ्रमर फीला भणणाकै।—व भा

२ श्याम रग।

३ लहर, तरग। (ह ना मा)

४ प्राण, जीव, आत्मा।

५ दोहे का एक भेद, जिसमे २२ गुरु तथा ४ लघु वर्ण होते हैं।

६ छप्पय छद का ६५ वा भेद, जिसमे ६ गुरु और १४० लघु से १४६ वर्ण या कुल १५२ मात्राए होती हैं।

७ देखो 'भवर' (२) (रू भे)

उ०—गुण सागर दुस्तर अगाध, अति बाघ अपारण। वेळ निजर विद्दुमा, असह कवि भ्रमर अकारण।—रा रू

रू० भे०—भग, भमर, भवर, भमग भमण, भमर, भरमर, भवर भवर।

अल्पा०—भमरौ, भवरौ, भवरियौ, भवरघौ, भउरौ, भमरडौ, भमरडउ, भमरघौ, भवरियौ, भवरचौ, भमरलउ, भमरलौ, भमरियौ भमरौ, भौंरौ।

मह०—भमराळ, भमराण।

भ्रमरकेतु–स० पु० [स०] एक राक्षस।

उ०—प्रबल भुज जुद्ध विण मा उपमम थयौ, निठुर कायर भ्रमरकेतु नाठौ। धन्य हौ धन्य जोगणि कहै चित्त धरि कीयौ राक्षस थकी हीयौ काठौ।—वि कु

भ्रमरगुंजार—देखो 'भवरगुंजार' (रू भे)

भ्रमरावध–स० पु०—हाथी।

भ्रमरावळ—देखो 'भ्रमरावळी' (रू भे)

उ०—महला पूनम चद मुख, आठम चद ललाट। केहर कड ज्यू खीण कड, भ्रू भ्रमरावळ घाट।—वा दा

भ्रमरावळी–स० स्त्री० [स० भ्रमर+अवलि] १ भ्रमरो की श्रेणी या पक्ति।

२ प्रत्येक चरण म ५ सगण युक्त १५ वण का मात्रिक छद।

रू० भे०—भमरावळि, भमरावळी, भ्रमरावळ।

भ्रमरी–स० स्त्री०—१ मिर्गी नामक रोग।

२ जतुका नाम की लता, पटपदी।

भ्रमवाहण–स० पु०—इन्द्र। (अ मा, ना मा)

भ्रमाडणौ, भ्रमाडबौ—१ देखो 'भ्रमाणौ, भ्रमाबौ' (रू भे)

२ देखो 'भवाणौ, भवाबौ' (रू भे)

भ्रमाडणहार, हारौ (हारी), भ्रमाडणियौ—वि०।

भ्रमाडिश्रोडौ, भ्रमाडियोडौ भ्रमाड्योडौ—भू० का० कृ०।

भ्रमाडीजणौ, भ्रमाडीजबौ—कर्म वा०।

भ्रमाडियोडौ—१ देखो 'भ्रमायोडौ' (रू भे)

२ देखो 'भवायोडौ' (रू भे)

(स्त्री० भ्रमाडियोडी)

भ्रमाणौ, भ्रमाबौ–क्रि० स०—१ धोखा देना।

२ बहकाना।

३ सफर कराना, यात्रा कराना।

४ चकित करना।

५ देखो 'भवाणौ, भवाबौ' (रू भे)

भ्रमाणहार, हारौ (हारी), भ्रमाणियौ—वि०।

भ्रमायोडौ—भू० का० कृ०।

भ्रमाईजणौ, भ्रमाईजबौ—कर्म वा०।

भ्रमाडणौ, भ्रमाडबौ, भरमाणौ, भरमाबौ, भ्रमावणौ, भ्रमावबौ —रू० भे०।

भ्रमायोडौ–भू० का० कृ०—१ धोखा दिया हुआ २ सफर या यात्रा कराया हुआ ३ देखो 'भवायोडौ' (रू भे)

(स्त्री० भ्रमायोडी)

भ्रमावणौ, भ्रमावबौ—१ देखो 'भ्रमाणौ, भ्रमाबौ' (रू भे)

२ देखो 'भवाणौ, भवाबौ' (रू भे)

भ्रमावणहार, हारौ (हारी), भ्रमावणियौ—वि०।

भ्रमावियोडौ—भू० का० कृ०।

भ्रमावीजणौ, भ्रमावीजबौ—कर्म वा०।

भ्रमावियोडौ—१ देखो 'भ्रमायोडौ' (रू भे)

२ देखो 'भवायोडौ' (रू भे)

(स्त्री० भ्रमावियोडी)

भ्रमियोडौ–भू० का० कृ०—१ धोखा खाया हुआ २ यात्रा या सफर किया हुआ ३ देखो 'भवियोडौ' (रू भे.)

(स्त्री० भ्रमियोडी)

भ्रमना—देखो 'भरमणा' (रू भे)

उ०—मन मेरा समझ समझ पग धरना, मिटै भव जळ भ्रमना। कनक कामनी ज्वाळ बुरी है, उण सू निशि दिन डरना।—स्री सुखरामजी महाराज

भ्रमावणकुजर–स० पु०—पाडु पुत्र भीमसेन। (ह नां मा)

भ्रमि–स० स्त्री० [स०] उत्तानपाद पुत्र ध्रुव राजा की पत्नी, जो शिशुमार प्रजापति की कन्या थी।

भ्रमी-वि० [स० भ्रमिन्] १ जिसे भ्रम हो, भ्रम वाला।
२ चकित, भौंचक्का।
३ वह बन्दूक जो छूटने पर मुड़ जाती है जिससे निशाना ठीक नही बैठता।

भ्रमुवल्लभ-स० पु० [स० भ्रभ्रमुवल्लभ] ऐरावत हाथी। (नां मा)

भ्रम्म—देखो 'भ्रम' (रू भे)
उ०—१ भजै हरि नाम टळै मन भ्रम्म, कथै हरि नांम जळै तन क्रम्म। जपै हरि नाम ग्रहोनिस जीह, ससार तिका न सतावै सीह।
—ह र
उ०—२ ग्रा घात वात रमतौ इसी, पडिस भ्रम्म भूलिस पगा। हरिनांम वरत ऊपर हळव, जीव नट्ट जेही 'जगा'।—ज. खि

भ्रम्ह—१ देखो 'ब्रह्मा' (रू भे)
२ देखो 'ब्राह्मण' (रू भे)
उ०—निमो राम जेण तरी भ्रम्ह नारी, यू ही ताडका मार बाणा उधारी। सुबाहू कियौ खड खड सरखै, निमो च्यार सै कोस मारीच नखै।—र ज प्र
३ देखो 'भ्रम' (रू भे)

भ्रसड—देखो 'भ्रसुड' (रू भे.)

भ्रसडी-वि०—भयकर, जबरदस्त।

भ्रसस-स० स्त्री० [स० भृश्] निंदा, अपकीर्ति।

भ्रससनीय-वि०—निंदनीय।
उ०—घायकै भ्रससनीय घाम तैं घरघौं, काम तैं प्रससनीय काम नां करघो।—ऊ का

भ्रसुड-स० पु०—हाथी का मस्तक।
उ०—१ हे देवी काळी—तथा काल्ही वावळी ग्राज म्हारौ पती जुद्ध करसी सो लोही पीण ग्रौ छोटौ खपर काही लीधौ हाथी रा भ्रसुड रो कडाव होवै जेडो खप्पर (माथा रो ग्राधो भाग) लै—तथा रिण समे हाथी रा चाचरा माथै ढाल वधै छै सो कडाव होवै जेडी होवै छै।—वी स टी
उ०—२ जमी पुड घर हरै उडै रुका जरक, देख झपणा थरक पीठ दीधी। हुचण रण सुकर जमदाढ ग्रहिया हरक, करी वाळै भ्रसुड गरक कीधी।—गुनावसिंह चूडावत रौ गीत
२ हाथी की सूड।
रू० भे०—भ्रूसड।
ग्रल्पा०—भ्रसूडो।

भ्रसूडो—देखो 'भ्रसुड' (ग्रल्पा, रू भे)
उ०—पचू पटा वहतां मद पूरण, सारी दरगह सोधै। सिंधुर तणै भ्रसूडै सुजडी, जडी ग्रभनमैं 'जोधै'।—रतनसिंह रौ गीत

भ्रस्ट-वि० [स० भृश्+क्त] नीचे गिरा हुग्रा, पतित।
२ खराब, दूषित।
३ बदचलन, दुराचारी।
४ बरबाद, नाश।
५ भूला-भटका।
रू० भे०—भरस्ट, भसट, भिसट, भिसट, भिस्ट, भीसट, भीस्ट।

भ्रस्टा-वि० [स० भृश्] कुलटा, पुंश्चली।
रू० भे०—भरस्टा।

भ्रस्टाचार-स० पु० [स० भ्रष्ट+ग्राचार] १ दूषित ग्रौर निंदनीय ग्राचार। २ घूस, रिश्वत।

भ्रहम—१ देखो 'ब्रह्म' (रू. भे)
उ०—पुणौ क्रमण तर पत्र, भ्रहम माया कुण भक्खै।—र ज प्र
२ देखो 'ब्रह्मा' (रू भे)
उ०—रघुवर महाराज गाव नहचै यक पळ न लाव, रक करै सोई राव, सुद्ध भाव साम रे। दीनबधु दवदेव, भाखत स्रुति भ्रहम भेव, जेता जग सो ग्रजेव, गहर गरुड गाम रे।—र ज प्र
३ देखो 'भ्रम' (रू भे)

भ्रमहचार—देखो 'ब्रह्मचरय' (रू भे)

भ्रहमचारी—देखो 'ब्रह्मचारी' (रू भे)

भ्रहमांण—१ देखो 'ब्रह्मा' (मह, रू भे)
उ०—भारा ग्राक्रात हुवदी भूम्मी, वरतदी सुरवार विक्खम्मी। ग्रमरू कथ भ्रहमाण ग्रखम्मी, थदै उथ्थल थांनूदा।—र ज प्र

भ्रहमा—देखो 'ब्रह्मा' (रू भे)

भ्रहमेण—१ देखो 'ब्रह्मा' (रू भे)
उ०—ते रज पाय तरी रिख तरणी मझ वेदां वरणी भ्रहमेण। डहिया विरद वडा भुजडडे, तीख करे मिथळापुर तडे। जटधर चाप विहडे जेण।—र ज प्र
२ देखो 'ब्रह्म' (रू भे)

भ्रहांमण—देखो 'ब्राह्मण' (रू भे)
उ०—ग्रप सुवारथी मरौ ग्रादमी, सत छोडै सो मरौ सती। भणियौ नह सो मरौ भ्रहांमण, जत्र मत्र विण मरौ जती —ग्रज्ञात

भ्रहास—देखो 'वरहास' (रू भे)
उ०—चढै जद बाघहसीह सुजाण, चढै ग्ररिकाळ सुपुत्रह-भाण। चढै सुज यू 'चतुरेस' भ्रहास, नमे सिर सूर किया ग्ररिनास।
—शि सु रू

भ्रहु देखो 'भ्रू' (रू भे)
उ०—सुणौ जद बच्चन 'भैरव' सूर, नरांपत धोय चखा चढ नूर। भ्रगूटीय रेख चढै मुर भाळ, भिडै भ्रहु मूछ ग्रडै भुवपाळ।—पे रू

भ्रांत-स० पु० [स०] १ विरोध, वैमनस्य, शत्रुता।
उ०—१ माया घालै भ्रांत, ग्रजर दांणौ जारण करै।—ग्रज्ञात
उ०—२ तपस्या मे क्या दोखी दुसमणा रै कह्या सू स्त्री दीवांण री निजर माफक छै। क्या दोखिया म्हानै हरामखोर कहि मन माहै भ्रांत नांखो।—राव रिणमल री वात
२ घूमना-फिरना, भ्रमण।

३ विचार ।

उ०—अतरी ताइ भ्रांत न आंणी अतरि, हित हिज करे जाणियउ हेक । माता पिता मिळए ऊमाहइ, ऊथपिया सिव वचन अनेक ।

—महादेव पारवती री वेलि

वि० [स०] १ भ्राति या भ्रम मे पडा हुआ, धोखे मे डाला या पडा हुआ ।

उ०—कितरा दिन लगइ चाकरी कीधी, एकण ध्यान रह्यौ एकात । दीठउ साच तरइ वर दीन्हउ, भरम दिखायउ उभ्रत भ्रात ।—महादेव पारवती री वेलि

२ सदेह, भ्रम, शक ।

उ०—उत्तमकुमार किहा अछै आगलि कहि व्रतात, जीवै छै किंवा मूओ, भांजि भाजि मन भ्रात ।—वि कु

३ भूला हुआ, भटका हुआ ।

४ चक्कर खाया हुआ ।

५ इधर-उधर घूमा हुआ ।

रू० भे०—भरात ।

भ्रांतापहनुति-स० पु० [स० भ्रान्तापह्नुति] किसी भ्राति को दूर करने के लिए सत्यवस्तु के वर्णन का एक काव्यालकार ।

भ्रांति, भ्रांती-स० स्त्री० [स० भ्रान्ति] १ भ्रम, धोखा ।

उ०—दिस वतावौ व्रहन कू, तो सुख पाऊ वेम । भिळिया भ्रांति भागसी, जासी सरव अन देस ।—स्री हरीरामजी महाराज

२ सदेह, शक ।

उ०—अतरि धुरा पचमी एह, छठी लिखो कोठा रो छेह । पगति छठी पाचमी पाति, भेळी करे न कीजै भ्रांति ।—ल पि.

३ भूल-चूक ।

४ घबडाहट, परेशानी ।

५ मोह ।

६ प्रमाद ।

७ चक्कर, फेर ।

८ एक काव्यालकार जिसमें उपमान के समान उपमेय को देखने से उपमान का भ्रम हो जाता है, उपमेय को उपमान समझा जाता है ।

रू० भे०—भराति, भ्र नि ।

भ्रांतिजया-स० स्त्री०—डिंगल साहित्य मे प्रयुक्त होने वाला एक अलकार विशेष ।

वि० वि०—यह वस्तुत भ्रान्ति अलकार ही है, परन्तु डिंगल गीतो मे इसके दो भेद बताए हैं—१ एकरगी भ्रान्ति, जो सदेह अलकार के नजदीक रहती है तथा २ निश्चय भ्रान्ति, यह पूर्णतया भ्राति अलकार है । (क कु वो)

भ्रांमक-वि० [स० भ्रामक] १ भ्रम मे डालने वाला ।

२ धोखे मे डालने वाला ।

३ सशय या सन्देह में डालने वाला ।

४ घुमाने या चक्कर देने वाला ।

५ धूर्त, चालाक ।

भ्रांमणौ, भ्रांमबौ-क्रि० अ०—१ भ्रमण करना ।

२ घूमना-फिरना ।

३ चक्कर खाना ।

४ भटकना ।

उ०—करो क्रपा तो सेवा कीजै, लिवरावो तो नाम ज लीजै । पखै रजा कोई चलण न प्रांमै, भगत वछळ पडियो जुग भ्रांमै ।

—ह र.

५ यात्रा करना, सफर करना ।

क्रि० स०—६ घुमाना, फिराना ।

उ०—वपु स्यामसुदर मेघ रुचि फवि तडित पीत पटवर । भुज वाम चाप निखग कटि तट, दच्छ कर भ्रांमत्त सर ।—र ज प्र

भ्रांमणहार, हारौ (हारी), भ्रामणियौ—वि० ।

भ्रामिओडौ, भ्रांमियोडौ, भ्रांम्योडौ—भू० का० कृ० ।

भ्रामीजणौ, भ्रामीजबौ—भाव वा० ।

भ्रामर-स० पु०—१ दोहा छद का एक भेद विशेष, जिसमे २१ गुरु एव ६ लघु होते हैं ।

२ गोलाकार ।

उ०—चमर धार परवार करी भ्रांमर परिक्रमा । भुज लवत डडोत, वयण व्रत पेख व्रहम्मा ।—रा रू

स० स्त्री०—३ परिक्रमा, भांवरी ।

४ वहुत से लोगो का मडल बनाकर किया जाने वाला नृत्य ।

वि०—५ भ्रमर सम्बन्धी ।

भ्रांमरौ—देखो 'भ्रमर' (अल्पा., रू भे)

भ्रांमियोडौ-भू० का० कृ०—१ भ्रमण किया हुआ २ घूमा-फिरा हुआ ३ चक्कर खाया हुआ ४ भटका हुआ ५ यात्रा या सफर किया हुआ ६ घुमाया या फिराया हुआ

(स्त्री० भ्रामियोडी)

भ्रांमी—१ ब्राह्मण की स्त्री ब्राह्मणी ।

२ एक प्रकार का गाथा छद ।

उ०—भीना अगी तीन ककै भण, तव वोह कका नाम काळी तण । भ्रांमी वसण सेत तन भासत, वसन लाल खित्रणी सुवासत ।

—र ज प्र

२ देखो 'ब्राह्मी' (रू भे)

भ्राजक-स० पु० [स० भ्राजक] त्वचा मे स्थित पित्त (वैद्यक) ।

भ्राजणौ, भ्राजबौ-क्रि० अ०—शोभायमान होना ।

उ०—१ कज सख गदाजं चक्र वछाज, आयुध साज भुज भ्राज । मह गो दुजमान रिखि नर राज सुचित जराज दत साज ।

—र ज प्र

उ०—२ सोभि जान सिरदार रूप अणपार विराजै, रतन निकरि किरि रुचिर भौमि वैरागर भ्राजै ।—रा रू

भ्राजणहार, हारौ (हारी), भ्राजणियौ—वि० ।

भ्राजिम्रोडौ, भ्राजियोडौ, भ्राज्योडौ—भू० का० कृ० ।

भ्राजीजणौ, भ्राजीजवौ—भाव वा० ।

भ्राजियोडौ—भू० का० कृ०—शोभायमान हुवा हुआ.
(स्त्री० भ्राजियोडी)

भ्रात—स० पु० [स० भ्रातृ] सहोदर, भाई । (अ मा)

उ०—१ भ्रात मित्र जुग जुग भला, नीत प्रसिद्ध निराट । जुगळ भुजा कर जाणिया, क्रपणां जुगळ कपाट ।—बा दा

उ०—२ मात न तात न भ्रात सुत, सगा न सूदरि साथ । 'हरीया' जासैं हेकलौ, करि वोळाऊ हाथि ।—श्री हरिरांमदासजी महाराज

रू० भे०—भ्रत, भ्राता, भ्रित ।

भ्रातविजेसर—स० पु०—श्री कृष्ण का भाई बलभद्र । (ना मा)

भ्राता—देखो 'भ्रात' (रू भे)

उ०—तुही माता ताता बहिन निज भ्राता भल तुही । तुही दाता खाता अवळ अनदाता वळ तुही ।—ऊ का

भ्रातालछी—स० पु० [स० लक्ष्मी+भ्राता] चन्द्रमा, शशि । (डिं को)

भ्रातीज, भ्रातीजौ, भ्रात्रीज, भ्रात्रीजौ—देखो 'भतीजौ' (रू भे)

उ०—१ जाम निसा जावता भूम्रा सू मिळ भ्रातीजौ । कथं ऊवर कटार जडी जद पौहरौ वीजौ ।—पा प्र

उ०—२ विजडी सू वीजाह, पिंड मे खीची पाडियौ । माळै भ्रात्रीजाह, रिम तो सारू राखियौ ।—पा प्र

भ्रासड—स० स्त्री०—भडभूजे की भट्टी ।

उ०—उस्णकाल पहुतइ, जिसी दावानल तणी ज्वाला तिसी लू वाइ, जिसउ बावन्न पल तणउ गो धमिउ हुइ तिसिउ आदित्य तपइ, जिसी भ्रासड तणी वेळ तिसी भूमिका धगधगइ ।—व स

भ्रिंगी—देखो 'भ्रंगी' (रू भे)

उ०—फवै मोगरौ सेवती जाय फूली, भ्रंगी पति सेवति भूली अमूली । लता माधुरी मालती फूल लेखैं, दसा आप भूलै तपी रूप देखैं ।—रा रू

भ्रिकुट्ट, भ्रिगुट—देखो भ्रकुटि' (रू भे)

उ०—१ गुडैं जूह मद-गध, सेन अनमध सुभट्टह । घड वेहड ऊकरड, कटै कोपट्ट भ्रिकुट्टह ।—गु रू व

उ०—२ चद सूर लग नाम चढावै, करि जस समदां तणौ कहै । सूरा मरण सामि-ध्रम साटौ, वसुधा दीन्ही भ्रिगुट वहै ।
—महेस कल्याणमलोत साखला रो गीत

भ्रिगुरिसि—स० पु० [स० भृगु+ऋषि] परशुराम ।

उ०—कमलापति कैवल्य अति विस्वविवाता जेह । भलपण श्री भ्रिगुरिसि तणउ, पाद्र मारिउ तेह ।—मा का प्र

भ्रिगुलता, भ्रिगुलात—स० स्त्री० यौ० [स० भृगु+राज० लात] विष्णु भगवान के वृक्षस्थल पर भृगु ऋषि द्वारा मारी गई लात का चिन्ह ।

उ०—सुदर तन घनस्याम, भुजा आजान चतुरभुज । कुडळ तिलक मणिमुकुट, धरण भ्रिगुलता गरुडध्वज ।—सू प्र

रू० भे०—भरगुलता, भिरगुलता, भ्रगुलता, भ्रगुलात ।

भ्रित—१ कोयल ।

उ०—कक ककी भ्रि (भ्रि)त चील कुलग, अखरचर सर छंदै अग ।—रा रू

२ देखो 'भ्रात' (रू भे)

उ०—सिंघासणौ वा इद्रासणौ वा, भ्रिथीपती वा सुरगपती वा । भ्रित सुरौ वा भ्रित नरौ वा, दिलीसरौ वा जगदीस रौ वा ।
—गु रू व

३ देखो 'भ्रत्य' (रू भे)

भ्रिहम—देखो 'ब्रह्मा' (रू भे)

उ०—भूमडळ पाज नभ सिखर पुर उवर भव, गुरत दुत गहर मुद कोप छिब गाथ । रिख रिखी रिख उदध भ्रिहम कज दामरथ, नाग खग दध हरी हर विरचनाथ ।—र ज प्र

२ देखो 'ब्रह्म' (रू. भे)

भ्रुकुटि—देखो 'भ्रकुटि' (रू भे)

भ्रुह, भ्रुह्ह—देखो 'भ्रू' (रू भे)

भ्रुसड—देखो 'भ्रसुड' (रू भे)

उ०—गजा ऊघडे भ्रुसड तुड घडडै पाताळ गोम, वडडै जरदा कडी ऊडै खगा वूर । भ्रुहा रवां भडै मुछ गैणा रवा भडै भुजा, साल मीत कुसुचौडै लडै माहासूर ।—पहाडखा आढौ

भ्रुह—देखो 'भ्रू' (रू भे)

उ०—१ भ्रमैं प्रत्यूह व्यूह पै समस्तु भ्रुह लौं भिरी । क्रमैं प्रत्यूह ओपमा दुरूह दत ली किरी ।—ऊ का

उ०—२ ये जु पासि सखी त्यां जव स्रीक्रस्णजी अर रुखमणीजी कौ आखिया थैं अर मुख का विलास थैं अतहकरण जाण्यौ । तव ये भ्रुहां ही मे थोडो थोडो हसि ।—वेलि

भ्रू—देखो 'भ्रू' (रू भे)

भ्रूण—देखो 'भ्रूण' (रू भे)

भ्रूह—देखो 'भ्रू' (रू. भे)

उ०—१ दखै नांम अल्लाह दे हाथ दाढी, चवै राम मूछा वळै भ्रूह चाढी ।—सू प्र

उ०—२ चपळ नेत्र सारग, रेख भ्रूहां मकरद । दीपक-नासा दिपंत सरद-रैणी मुख-इंद्रह ।—गु रू व

भ्रू—स० पु० [स] आख के ऊपर के धनुषाकार वाल, भौंह ।

रू० भे०—भवहारौ, भवारौ, भहरौ, भमुह, भह, भुम्र, भुवारौ, भुहरौ, भुहारौ, भुम्रारौ, भुह, भुहरौ, भुहार, भुहारव, भू भूह,

भूहार, भूहारी, भू, भूहार, भूहारी, भोह, भौंह, भौंहारी, भोग्रारी, भोह, भोहारी, भ्रहु, भ्रूह, भ्रूग्ह, भ्रू, भ्रूह, भ्रूग्र, भ्रूग्रावळ, भ्रूह, भ्रोह, भ्रौह ।

भ्रूग्र—देखो 'भ्रू' (रू भे)

उ०—जन्मथी वि भ्रूग्र मध्यि तिल छि सुविमाल। मि तौ रमतां दीठु हूतु याहि नाह्रा नी वाल ।—नळाख्यान

भ्रूग्रावळ—देखो 'भ्रू' (रू भे)

उ०—भ्रूग्रावळ वेहु भडी, भमरांण गुजारा। भोयण (लोयण) कीजे भांमणी, कोयण कुरगारा ।—मयाराम दरजी री वात

भ्रूण—स० पु० [स० भ्रूण] १ स्त्री का गर्भ।

२ बालक की वह अवस्था जब कि वह गर्भ मे रहता है।

उ०—थाळ वजता हे सखी, दीठो नैण फुलाय। वाजा रै सिर चेतनौ, भ्रूणां कवण सिखाय।—वी स

रू० भे०—भ्रूण।

भ्रूणहत्या—स० स्त्री० यौ० [स० भ्रूण+हत्या] १ गर्भस्थ शिशु की हत्या ।

२ गर्भपात करना ।

भ्रूभग—स० पु० यौ० [स० भ्रू+भग] भौंह टेढी करने की क्रिया, तेवरी चढाने की क्रिया।

भ्रूविक्षेप—स० पु० [स० भ्रू+विक्षेप] तेवरी बदलने की क्रिया, नारा जगी दिखाने का भाव।

भ्रूह, भ्रोंह, भ्रौह—देखो 'भ्रू' (रू भे)

उ०—कैलास तणइ सिहर तू कहिजइ, जोग ध्यान रह्यौ जोगिंद। भ्रूह कवांण जेहवी भणियइ, चाचर तिलक विराजइ चद ।

—महादेव पारवती री वेलि

—×—

म

म–स० पु०—देव नागरी वर्णमाला के प वर्ग का अन्तिम वर्ण। यह सघोष, अल्पप्राण द्वयोष्ठ्य अनुनासिक व्यजन के लिए प्रयुक्त होता है और अनुनासिक स्पर्श व्यजनो के समान इसके उच्चारण में भी नासिका मार्ग पूर्णत उन्मुक्त रहता है।

म–स० पु०—१ मगलग्रह। २ दुष्ट। ३ गुड। ४ मिलन। ५ सुन्दर। ६ रूप। ७ मगलगीत। ८ उत्सव। (एका) ९ देखो 'म' (रू भे)

मइ—१ देखो 'म्हैं' (रू भे)

उ०—१ स्रीवासु पूज्य जिनेसर ताहरी ओलग हो मइ कीधी सहीजी।—वि कु

उ०—२ पिण तुम्हे सगुण सा पुरीम सवाई, पाई हो हो बाहुली मइ तुम तणीजी।—वि कु

२ देखो 'मे'।

उ०—प्रमोद्र चित्त मइ उपभोग भाण्युरं।—स कु

३ देखो 'मय' (रू भे)

मकड—१ देखो 'मकडौ' (रू भे)

उ०—१ करह द्राक्षावनि किसिउ करइ, ऊदिर रत्न करडि किसिउ करइ, मकड नाग वल्ली दलि किसिऊ करई।—व स

उ०—२ असि झफ मकड पाळ ए, पडकति सात पयाळ ए। खेहत खैंग जुवाण ए, सुरजाणि वोम विवाण ए।—गु रू व

२ देखो 'माकण' (रू भे)

मकलक–स० पु० [स०] एक ऋषि का नाम। (महाभारत)

मकवांणा—देखो 'मकवाण, मकवाणा' (रू भे)

मकवांणौ—देखो 'मकवाणौ'।

मकुवाणा—देखो 'मकवाणा' (रू भे)

मकू–स० पु० [स० मङ्क्षु] गति या चाल मे होने वाली तेजी, शीघ्रता, वेग। (अ मा)

रू० भे०—मखू।

मक्रडौ—देखो 'मकडौ' (रू भे) (शा हो)

मख—१ चित्रपट दिखाकर निर्वाह करने वाली भिक्षु जाति।

२ देखो 'मख' (रू भे)

उ०—लाख हमालै मख लगि, न न आणियो पिनाक।—रामरासौ

मखू—देखो 'मकू' (रू भे.) (ह ना मा)

मग–स० पु०—१ मिह, वनराज। (अ मा., ना डि को, ह ना मा)

२ देखो 'माग' (रू भे)

उ०—वर्ण 'भुजग रूप वेणि मग सीस मोतिय। प्रजा लजै न छत्र पाति, जोय तास जोतिय।—सू प्र

३ देखो 'मारग' (रू भे)

मगजण—देखो 'मागण' (रू भे)

उ०—दातारा री बत्तडी, दातारा भावत। वैरी मगजण पामणा, अणचिंत्या आवत।—वा दा

मगजाई—देखो 'मगजाई' (रू भे)

मगण—देखो 'मागण' (रू भे)

उ०—१ धन देणी जिण प्रगडै, हैकौ पुरुख न होय। सुपनै ही नहि सचरै, लोभी मगण लोय।—वा दा

उ०—२ मिळनी मगण नू कहै, मुदो करू मालूम। मारग लागो मत टिको, हाजर नाजर सूम।—वा दा

मगणि, मगणी—देखो 'मगनी' (रू भे)

मगणौ, मगवौ—देखो 'मागणौ, मागवौ' (रू भे)

उ०—१ मोटौ दाता मगियौ, तोटौ भाजै तेण। कोजै मायर वेप किल जुडै जवाहर जेण।—वा दा

उ०—२ तन अमित मोल्य मडित रतन, आभूखण गुण ऊधरै। स्रगार साजि मगै मसस्त्र, महाराजा मडोवरै।—रा. रू

मगणहार, हारौ (हारी), मगणियौ—वि०।

मगिओडौ, मगियोडौ, मग्योडौ—भू० का० कृ०।

मगीजणौ, मगीजवौ—कर्म वा०।

मगत—१ देखो 'मांगत' (रू. भे)

२ देखो 'मगतौ' (मह, रू भे)

उ०—भगता पाच तथा सात भली तरह मू करी। घणा भाट मगतजणा नै राजी किया।—पलक दरियाव री वात

मगतड—देखो 'मगतौ' (मह, रू भे)

मगतजण—देखो 'मगतजण' (रू भे)

मगतराय–स० पु०—याचको मे अग्रगण्य, अत्यधिक दीनता दिखाने वाला याचक।

मगतवाड, मगतवेड–स० पु०—याचक दल, याचको का समूह।

मगताई–स० स्त्री०—१ मागने का कार्य।

उ—कुटुब तज्या चेला बहु कीन्हा, कर वाता दळ चतुराई। औ यू करमी, औ यू देसी मगता का मगताई।

—स्री सुखरांमजी महाराज

२ दीनता और हीनता का भाव।

३ नीचता।

मगतौ–स० पु० (स्त्री० मगतण, मगती) याचक, भिक्षुक, भिखारी।

उ०—१ तद औ डरियो और कही—भाई हू गरीब मगतौ छू मोसू महाराज रो किसो काम छै।—माह रामदत्त री वारता

उ०—२ खुद तो लोगा री कमाई माथै मछरा करो अर म्हनै इंछा परवाण मागण रो आदेस करो। म्हनै ये काई मगती जाणी।

—फुलवाडी

रू० भे०—मगतौ।

मह०—मगन, मगनइ, मगनि, मगन।

मगदणो, मगधणो—देखो 'मुगदणो' (रू भे)

मगन—१ देखो 'मांगण' (रू भे)

२ देखो 'मग्न' (रू भे)

मगनी-सं० स्त्री०—१ मांगने की क्रिया या भाव।

२ कुछ समय के लिए मांगकर ली जाने वाली वस्तु।

३ एक प्रकार की प्रथा विशेष जिसमें वर और कन्या दोनों पक्ष के व्यक्ति वर और कन्या के विवाह सम्बन्ध को निश्चित करते हैं, सगाई।

रू० भे०—मांगणि, मगणी।

मगर—१ देखो 'मगर' (रू भे)

२ देखो 'मगरो' (मह, रू भे)

उ०—जोतवाग मळके मिळ नदि जळ। चमकै मगर उछळै चचळ।

—सू प्र.

मंगळ-वि० [सं० मंगल] १ शुभ, मांगलिक, सुख, सौभाग्य देने वाला।

मुहा०—पट मंगळ करणा=देव मंदिर, घर या मकान के द्वार बन्द करना। (शुभ)

२ समृद्धिवान।

३ वीर, बहादुर।

सं० पु० [सं० मंगलम्] १ कल्याण, कुशल क्षेम, हित।

उ०—गणपति गिरा निवासी गुणगण। मंगळ करण अमंगळ मेटण।—रा रू

२ हर्ष, प्रसन्नता, आनन्द।

उ०—१ सूर न पूछे टीपणो, सुकन न देखै सूर। मरणा नूं मंगळ गिणै, समर चढै मुख नूर।—बां दा

उ०—२ निगमिय नीति उदगळ नाय। सुनी किय मंगळ जगळ माय।—ऊ का

३ सप्ताह के सात दिनों में से एक दिन, जो सोम के पश्चात् और बुध से पूर्व पड़ता है, भौमवार। (अ मा)

४ सौर जगत् में पृथ्वी के बाद पड़ने वाला नव ग्रहों में से एक ग्रह। (अ मा)

उ०—जारै नहीं जावत पग मन महता मरथ। मंगळ री जणणी मही, सरतारां री सत्थ।—बां दा

वि० वि०—पृथ्वी के पश्चात् यह ग्रह पड़ने पहुत पड़ता है। इसका व्यास ४२०० मील है और सूर्य से दूरी १४१०,०००० मील है। यह ग्रह सूर्य की परिक्रमा ६८७ दिन में करता है। ऐसा अनुमान किया जाता है कि इस ग्रह का जलवायु पृथ्वी के जलवायु से बहुत कुछ मिलता जुलता है और यहां स्थल और जल विद्यमान हैं।

५ विष्णु।

६ डिंगल का एक गीत विशेष।

७ डिंगल के 'जंगिड़ो' सांणोर (छोटो सांणोर) छंद का भेद विशेष जिसके प्रथम द्राले में १२ लघु, २६ गुरु कुल ६४ मात्रायें तथा इसी क्रम से शेष द्राले में १२ लघु, २५ गुरु, कुल ६२ मात्रायें होती हैं। (पि प्र)

८ एक छंद विशेष जिसमें प्रथम दो नगण फिर पांच भगण और अन्त में दो दीर्घ वर्ण होते हैं। (ल पि)

९ शुभ अवसर या आयोजन के समय गाया जाने वाला गीत, मांगलिक गीत।

उ०—घर घर वधाई हुवै छै घर घर उछाह हुवै छै। घर घर मंगळ गावै छै।—पचदडी री वारता

मुहा०—मंगळ गावणो=शुभ अवसर पर आनन्द के गीत गाना, प्रसन्न रहना।

१०—देवी देवता के कपाट बन्द करते समय गाया जाने वाला लोक-गीत विशेष।

११ वह घोडा जिसके कंठ, ललाट व शिर पर भौंरी हो। (शुभ) (शा. हो)

१२ लाल या रक्त वर्ण।

१३ विवाह मंडप में वर-वधू द्वारा वेदी के चारों ओर दी जाने वाली भांवरी।

उ०—चौथे मंगळ रामचंद सुर तरणि स्रीराम आगै क्रमि आणि अनति सीता वाम सु अंग।—रामरासो

१४ वीर पुरुष, योद्धा।

उ०—लरयोवथ लागा रे, आहुडिया मंगळा आगा रे। घरा दस लाग पिया घेरे रे, सेसविया 'अचळे' स्वागे रे।

—रावत अचलदास सगतावत रो गीत

१५ विवाह।

१६ एक देव जो स्वायंभुव मन्वंतर के जित देवों में से एक था।

१७ देखो 'मदकळ' (रू भे)

१८ देखो 'मंगळा' (रू भे)

उ०—१ मघण ताम वूठो ममराथ। मंगळ प्रजळ अमंगळ माथ।

—गु रू ब

उ०—२ हुतासण मंगळ जळण हुवह, दावक-नळ पावक वन दह, धनक्ण ऊधण दहण धोमह, वासदेव वचाग। जुडै अरियण लाग जाळै, प्रसण सग धाय प्रजाळै, वडै राजा अक—वाळै अरी बाळ आग।—महाराजा गजसिंह रो गीत

मुहा०—मंगळ मेलणो=अनिष्ट करना, किसी के अहित की चाहना करना।

यौ०—मंगळग्रस्ट, मंगळकरण, मंगळकळस, मंगळकारी, मंगळगांन, मंगळगीत, मंगळगोरोचन, मंगळघट, मंगळचंडिका, मंगळचार, मंगळफळ, मंगळदायक, मंगळधमळ, मंगळपाठ, मंगळपाठी, मंगळप्रद, मंगळरूप, मंगळवाद, मंगळवार, मंगळवारी, मंगळवेळा, मंगळसूत्र, मंगळस्नांन।

मंगळग्रस्ट—देखो 'अस्टमंगळ' (रू भे)

मगळकरण-वि० [स० मगलकरण] (स्त्री० मगलकरणी) कल्याण करने वाला, हित करने वाला।

स० पु०—१ गजानन, गणेश।

२ देखो 'मगळकरणी' (रू भे)

मगळकरणी-वि०—कल्याण करने वाली।

स० स्त्री०—१ केसर।

२ देखो 'मगळकरण'।

मगळकळस-स० पु० यौ० [स० मङ्गलकलश] विवाह आदि शुभ अवसरो पर पूजा के लिए रखा जाने वाला जल से भरा हुआ घडा या कलश।

मगळकारी-वि०—आनन्द करने वाला, मागलिक।

रू० भे०—मगळाकारी।

अल्पा०—मगळाकारौ।

मगळकारौ, मगलकारौ—देखो मगळकारी' (अल्पा., रू भे)

उ०—ससार माहे जीवसु ता सीम सरणा चारीजी। गणि समय-सुदर इम कहइ, कल्याण मगळकारौ जी।—स कु

मगळगान-स० पु० यौ० [स० मगलगायन] शुभ अवसर पर गाए जाने वाले गीत, मागलिक-गीत।

उ०—सहचरीय रभ समान। गावत मगळगान।—सू प्र

मगळगोरीवरत-स० पु० यौ० [स० मगलगौरीव्रत] स्त्रियो द्वारा किया जाने वाला व्रत विशेष।

रू० भे०—मगळागोरी।

वि० वि०—यह व्रत श्रावण माह के कृष्ण पक्ष के प्रथम मगलवार से प्रारम्भ किया जाकर भाद्रपद कृष्ण पक्ष के अन्तिम मगलवार तक किया जाता है। इस प्रकार यह व्रत चार मगलवारो मे पूर्ण होता है।

मगळग्रह-स० पु० [स० मगलग्रह] शुभग्रह।

मंगळघट—देखो 'मगळकळस'।

मगळचडिका-स० स्त्री० [स० मगलचण्डिका] दुर्गा का एक नाम।

मगळचार, मगळच्यारि—देखो 'मगळाचार' (रू भे)

उ०—१ तीन अखत ढाल गज तोरण, चहु दिसि कळल मगळचार चवरी वहौ पेखियौ चगर्त, 'करण' कळोधर राजकवार।
—किसनौ आढौ

उ०—२ तब पिंगळ तेडौ सुभवार, परिणाव्यउ करि मगळच्यारि।
—ढो मा

मगळछाया-स० स्त्री० [स० मगलछाय] प्लक्ष वृक्ष।

मगळणौ, मगळबौ-क्रि० अ०—१ प्रज्वलित होना, जलना (होली)।

मगळणहार, हारौ (हारी), मगळणियौ—वि०।

मगळांडणौ, मगळाडबौ, मगळाणौ, मगळाबौ, मगळावणौ, मगळावबौ—सक० रू०।

मगळिओडौ, मगळियोडौ, मगळ्योडौ—भू० का० कृ०।

मगळीजणौ, मगळीजबौ—भाव वा०।

मगळदायक-वि० [स० मङ्गलदायक] कल्याण व आनन्द देने वाला।

उ०—पोस महा सुख पेखता, स्त्री नर पति 'अभसाह'। आयौ रस लाइक अवनि, मगळदायक माह।—रा रू

मगळधमळ, मगळधवळ—देखो 'धवळमगळ' (रू. भे)

उ०—१ मगळधमळ उदमाद, वजै वाजत्र जिण वेळा। ग्रहि ग्रहि ऊढि गुडिया, मिळै सज्जण घण मेळा।—सू प्र

उ०—२ हुवै मगळधमळ दमगळ वीर हक, रग तूठौ कमध जग रूठौ। सघण वूठौ कुसुम बोह जिण मौड सिर, विखम उण मौड सिर लोह वूठौ।—वा दा

उ०—३ धांम धाम मगळधवळ, हुए हगाम हलोर। छइक पगारा नीर छित, घुरै नगारा घोर।—र रू

उ०—४ राणा ऊमरकोट रा, गया जमारौ जीत। ज्यारा मगळ-धवळ मे, गवरीजै जस गीत।—वां दा

मगळपाठ-स० पु० यौ० [स० मङ्गलपाठ] १ किसी उत्सव आदि के पूर्व देव तुष्टि के लिए किया जाने वाला पाठ।

२ कल्याण या क्षेम के लिए किया जाने वाला पाठ, स्वस्ति पाठ।

मगळपाठक-स० पु० [स० मगलपाठक] भाट, बदीजन।

मगळपाठी-वि० यौ० [स० मङ्गलपाठी] मागलिक या कल्याणकारी पाठ करने वाला।

मगळरूप-स० पु० यौ० [मगलरूप] १ शुभ व आनन्ददायक रूप।

२ ईश्वर। (ना मा)

मगळवाद-स० पु० [स० मङ्गलवाद] आशीर्वाद, आशीष।

मगळवार-स० पु० [स० मङ्गलवार] सप्ताह के सात दिनो मे से एक जो सोमवार के पश्चात् और बुधवार के पूर्व पडता है, भौमवार।

मगळवारी-वि०—मगलवार से सम्बन्धित, मगलवार का (की)।

उ०—होळी सुक्र सनीचरी, मगळवारी होय। चाक चहोडै मेदनी, विरला जीवै कोय। (शकुन)

मगळवेळा-स० स्त्री० [स० मङ्गलवेला] शुभ काल, शुभ अवसर, माग-लिक समय, मुहूर्त।

मगळसूत्र-स० पु० यौ० [स० मङ्गलसूत्र] १ किसी भी शुभ अवसर पर कलाई मे बाधा जाने वाला धागा।

२ वह डोरा जो सौभाग्यवती स्त्री अपने गले मे तब तक बाधती है जब तक उसका पति जीवित रहता है।

३ ताबीज या बाजूबद की डोरी।

४ स्त्रियो के गले मे धारण किया जाने वाला आभूषण विशेष जो सुहाग चिन्ह माना जाता है।

वि० वि०—यह प्राय स्वर्ण निर्मित होता है और धागे में पीले

या काले मोतियो के साथ पिरोकर अथवा सोने की जजीर मे पिरोकर गले में धारण किया जाता है।

मगळस्नान–स० पु० [स० मङ्गलस्नान] मगल कामना से किसी शुभ अवसर पर किया जाने वाला स्नान।

मगळा–स० स्त्री० [स० मगला] १ पार्वती गिरिजा।

(अ मा., ह ना. मा)

२ दुर्गा।

उ०—तुही काळिका ज्वाळिका वज्रकाया। तु ही मगळा तोतळा जोग माया।—मे म.

३ पतिव्रता स्त्री।

४ दूर्वादल, दूव।

५ भोर के समय विष्णु, शिव या कृष्ण की पूजा के लिए गाई जाने वाली आरती।

६ तुलसी।

७ हल्दी। (अ मा)

८ एक देवी जिसने त्रिपुर वध के समय भगवान् शकर को वर-प्रदान किया था।

९ ज्वाला।

१० अग्नि, आग।

उ०—काढी दळा सू मगळा प्रळै समदा ऊभळी किना, खळा धू अहठी जञ्ज गे थहा खाणास। सरगा विछूठी तूटी माघ पव्वै काळा सीस। वीर 'चूडा' वाळी ज्वाळा वीजळा वाणास।

—तेजराम आसियो

रू० भे०—मगळ, मगळि, मागळी।

मगळाकार–वि० यौ० [स० मगलाकार] मगल करने वाला।

उ०—कोरो कळस कुभार, वणावै आखा लावै। ल्यावा वेहां रोप, नेग विन नोरै पावै। खोपर ढकणी खिडा, वीर वनडो वण ज्यावै। माटी मगळाकार, निरन्तर काज सरावै।—दसदेव

मगळाकारी—देखो 'मगळकारी' (रू भे)

मगळागोरी—देखो 'मगळगोरीवरत'।

मगळाचरण–स० पु० [स० मङ्गल+आचरण] १ किसी कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व पढा जाने वाला या उच्चरित किया जाने वाला मांगलिक मत्र या पद्य।

२ सफल सम्पूर्णता या मगल अथवा शुभ की कामना से किसी ग्रन्थ के प्रारम्भ मे लिखा जाने वाला पद्य या श्लोक।

उ०—नियम मगळाचरण नह, काव्य समापत काज। काव्य उचारण कु कवि ए, करै महाकवराज।—बा दा

मगळाचार, मगलाचार–स० पु० यौ० [स० मङ्गल+आचार] १ आनन्दोत्सव, हर्षोल्लास।

उ०—१ वर लाडो मोतिया वधाया, अति आणद विनोद अति। मगळाचार सिवपुरी माहैं, गूडी ऊछली देव गति।

—महादेव पारवती री वेलि

२ मागलिक कृत्य।

उ०—१ पीछै सब वात की तयारी कर अकबर जलालदीन का औजूदसाह की साहजादी सै व्याह हुवा अरु वहुत उछव मगळाचार हुवै।—द दा

उ०—२ आला नीला वास कटाइनै कळस कर घणां मगळाचार कर लगन जोय दैत्य दमनी नु परणियो।—पचदडी री वारता

३ किसी शुभ कार्य के प्रारम्भ मे मगल कामना हेतु उच्चरित किया जाने वाला मत्र, श्लोक या पद्य।

४ मागलिक गीत।

उ०—मगळाचार कृष्ण रुकमणी को नर नारी सुर गावै। पदई लहै यद्रराजा की, मन वछित फळ पावै।—रुकमणी मगळ

रू० भे०—मगळचार, मगळच्यारि।

अल्पा०—मगळाचारो।

मगळाचारो, मगलाचार—देखो 'मगळाचार' (अल्पा, रू भे)

उ०—वाट जोवता आविया रे, हरख्या सहु नर नारी। सघ सहु उच्छव करइ रे, घरि घरि मगलाचारो—स कु

मगळाचोथ–स० स्त्री० [स० मगलाचतुर्थी] शुक्ल पक्ष की वह चतुर्थी जिस दिन मगलवार हो।

मगळाडणो, मगळाडबो—देखो 'मगळाणो, मगळावो' (रू भे)

मगळाडणहार, हारो (हारी), मगळाडणियो—वि०।

मगळाडिओडो, मगळाडियोडो, मगळाड्योडो—भू० का० कृ०।

मगळाडीजणो, मगळाडीजबो—कर्म वा०।

मगळाडियोडो—देखो 'मगळायोडो' (रू भे)

मगळाडियोडो—देखो मगळायोडो' (रू भे)

मगळाणो, मगळाबो–क्रि०स० [मगळणो क्रि० का सक० रू०] १ प्रज्वलित करना, जलाना (होली)।

उ०—पीछै हेरायत धोळहरै गया नै जाय आस-पास हेरो लगायो। अरु या सिरदारा होळी रात पोर एक गया मगळाई।—द दा

२ देव मदिर आदि के कपाट वद करवाना।

मगळाणहार, हारो (हारी), मगळाणियो—वि०।

मगळायोडो, मगळायोडो—भू० का० कृ०।

मगळाईजणो, मगळाईजबो—कर्म वा०।

मगळाडणो, मगळाडबो, मगळावणो, मगळावबो—रू० भे०।

मगळामुखी–स० स्त्री० [स० मगलमुख+रा० प्र० ई] वेश्या, रडी।

मगळायोडो–भू० का० कृ०—प्रज्वलित की हुई, जलाई हुई (होली)।

मगळायोडो–भू० का० कृ०—देव मदिर आदि के कपाट वंद करवाया हुआ

मगळारभ–स० पु० [स० मङ्गल+आरम्भ] १ कार्य का शुभारम्भ, श्री गणेश।

२ गजानन का नामान्तर।

मगळालय–स० पु० [स० मङ्गल+आलय] परमेश्वर। (डि को)

मगळावणो, मगळावबो—देखो 'मगळाणो, मगळावो' (रू. भे)

उ०—ताहरा होळी नै मगळावै नै पहोर १ रात गई, ताहरा गागो साहणी कनै गयो —नैणसी

मगळावणहार, हारौ (हारी), मगळावणियौ—वि० ।

मगळाविश्रोडो, मगळावियोडो, मगळाव्योडो—भू० का० कृ० ।

मगळावीजणौ, मगळावीजबौ—कर्म वा० ।

मगळावियोडो—देखो 'मगळायोडो, (रू भे)

मगळाव्रत—स० पु० यौ० [स० मगलाव्रत] शिव-पार्वती के निमित्त स्त्रियो द्वारा किया जाने वाला एक व्रत ।

मगळि—१ देखो 'मगळा' (रू भे)

उ०—ग्रजु ग्रालण पख ग्रापरा, नारि तजै ग्रिह नेह । चढि चचळ मरवर चली, मगळि जाळण देह ।—वचनिका

मगळिक—स० पु०—१ एक प्रकार का वस्त्र विशेष । (व म)

२ देखो 'मागळिक' (रू. भे)

मगळिकाथळ—देखो 'मगळीकाथळ' (रू भे)

मगळियोडो—भू० का० कृ०—प्रज्वलित हुई, जली हुई (होली) ।

मगळियो, मगलियो—स० पु०—मिट्टी का वह जल-पात्र जो व्यक्ति की मृत्यु के पश्चात् द्वादसे के क्रिया कर्म में प्रयोग मे लाया जाता है ।

उ०—म्रत्यु चेत धरम नर करै, ग्राता खडी उठावता । मगलिया मोसर भरावै, मीणं घडो भरावता ।—दसदेव

रू० भे०—मागळियो ।

मगळी—वि०—१ वह जिसकी जन्म कुण्डली मे जन्म के चौथे, ग्राठवें, बाहरवें घर मे मगलग्रह पडा हो । यह ग्रशुभ माना जाता है ।

वि० वि०—देखो 'मोळियामगळ' ।

२ देखो 'मागळिक' (रू भे)

उ०—१ ग्राज मिरति मगळी ग्राज पति वरत सभाळै । ऊपन्नो जग ग्रस, ग्राज सुज वस उजाळै ।—रा रू.

उ०—२ ढोल सुणता मगळी मूछा भूह चढत । चवरी ही पहचाणियो, कवरी मरणो कत ।—वी स

स० पु०—३ एक प्रकार का प्राचीन वाद्य विशेष जो मागलिक ग्रवसरो पर बजाया जाता था ।

उ०—म्रदग, ढोल, मगळी, रबाव तार सार ली । वजति वेरि वेरिय, भण कि भकि भेरिय ।—रा रू.

४ प्रवचन न होने के कारण उसी ग्रवमर पर किया जाने वाला स्वस्ति पाठ । (जैन मत)

५ देखो 'मगळा' (रू भे)

मगळीक—१ देखो 'मागळिक' (रू. भे)

उ०—१ मूडा मे मगळीक गुळ देय नै व ग्रापरा बेटा नै घर वाळा री वदळी लेवण सारू विदा करियो ।—फुलवाडी

उ०—२ सहनाय सुरमला रग मवाद । नवबती घोर मगळीक नाद ।—सू प्र

उ०—३ समार तिका हिज वात सरहदी, राय हर जिका दिखाळी रीत । गीत तिकै मगळीक गाइजै, गाया तियइ दिहाडइ गीत ।

—महादेव पारवती री वेलि

मगळीकमाळा, मगलीकमाला—स० स्त्री०—मागलिक पदार्थों की पक्ति या श्रेणी ।

उ०—पूरवारजित पाप खीजइ, मनुस्यभव क्रतारथ नीपजावीयइ, स्रावकाचार साचवीइ, सरव दुख प्रमारजीइ, ईण परि स्री धरम समाराधता जिम उत्तम मगळीकमाळा प्रामउ तिम स्री धरम नइ विसइ सदैव सावधान हुयो । इत्युपदेस ।—व स

मगळीकाथळ—स० पु०—रेगिस्तान मे पाया जाने वाला वह स्थळ जहा बालू रेत इस प्रकार की होती है कि उसकी सतह पर पैर रखते ही मनुष्य या प्राणी उसमे धस जाता है ।

उ०—तिकै जैसळमेर था कोस २५ ग्राथवण नू मगळीका-थळ छै, तठै रहै छै । वा ठोड मगळीका-थळ कहावै छै । तठै द्रुम छै । सु भोमियो होय सु डाडी ग्रावै । ग्रसैंधो डाडी टळै ।—नैणसी

रू० भे०—मगळिकाथळ ।

मगळ्य—वि० [स० मगल्य] १ मगलकारक । २ मगलदायक । ३ सुन्दर । ४ साधु । ५ शुभ । ६ पवित्र ।

स० पु० [स० मगल्यम्] १ तीर्थस्थलो से लाया हुग्रा जल जो राज्याभिषेक के ग्रवसर पर उपयोग मे लाया जाता है । २ वेल । ३ दही । ४ चन्दन काष्ठ । ५ सिन्दूर । ६ स्वर्ण, सोना । ७ वटवृक्ष । ८ नारियल का वृक्ष या फल ।

मगळ्या—स० स्त्री० [स० मगल्या] १ दुर्गा का एक नाम ।

२ एक प्रकार का ग्रगरू जिममे चमेली के फूल जैसी महक ग्राती है ।

मगवाणौ, मगवाबौ—देखो 'मगाणौ, मगावौ' (रू भे)

उ०—राज री कोजी सू कोजी लुगाया हेर हेर मगावै ग्रोर वारै साथै प्रीत करै ।—फुलवाडी

मगवाणहार, हारौ (हारी), मगवाणियौ—वि० ।

मगवायोड़ो—भू० का० कृ० ।

मगवाईजणौ, मगवाईजबौ—कर्म वा० ।

मगवायोडो—देखो 'मगायोडो' (रू भे)

(स्त्री० मगवायोडी)

मगसखानो—स० पु०—बडे तम्बू के ग्रन्दर राज्यामन लगाए जाने के लिए छोटा तम्बू ।

उ०—उस वखत चौसरियै पति करि जरकसी समियाना । स्रीमाप का मगसखाना खडा करि सुनहरी की चौकी धरी ।—सू प्र

मगसर, मगसिर—देखो 'मिगसर' (रू भे)

उ०—१ समत १६७६ रा मगसर माहे कुवर ग्रमरसिंघ उदैपुर परणीया ।—नैणसी

उ०—२ सवत् १६२७ मगसिर सुदि ६ पातिमाहजी रो मेल्हियो धेसूखान तेडण ग्रायो ।—द वि

मगाडणौ, मगाडबौ—देखो 'मगाणौ, मगावौ' (रू भे)

उ०—खबरदार नर जबर नू, बमत मगाडै मोल। बिगडै उण दिन वाणियो, तोलण हूता तोल।—व दा

मगाडणहार, हारो (हारी), मगाडणियो—वि०।

मगाडिओडो, मगाडियोडो, मगाड्योडो—भू० का० कृ०।

मगाडीजणो, मगाडीजबो—कर्म वा०।

मगाडियोड़ो—देखो 'मगायोडो' (रू भे)

(स्त्री० मगाड़ियोडी)

मगाणो, मगाबो–क्रि० स० [मागणो क्रि० का प्रे० रू०] १ अपनी इच्छा पूर्ति के लिए किसी को अभीष्ट पदार्थ लाने के लिए आदेश करना, मगवाना।

उ०—परिणाम समय रै हजारा वीविया रा हाथ वगडी विहूण करि काचा कुभ जिम उजळा लोहा खड खड होय परलोक पायो। जिण रा कटिया सीस नू थाळ मैं मगाय जवनराज री सुता वरमाळा पटकण रो विचार कियो।—व भा

२ मांगने का काम दूसरे से करवाना, किसी को मागने मे प्रवृत्त करना।

३ किसी से यह कहना कि अमुक स्थान या अमुक व्यक्ति से अमुक पदार्थ ले आना।

उ०—हरख मिळै आदर करै, पीसे थाळ मगाय। मीठो उत्तर मोकळै, मीठो सूब कहाय।—वा दा

मगाणहार, हारो (हारी), मगाणियो—वि०।

मगायोडो—भू० का० कृ०।

मगाईजणो, मगाईजबो—कर्म वा०।

मगवाणो, मगवावो, मगाडणो, मगाडबो, मगावणो, मगाववो, मगवाणो, मगवावो, मगाडणो, मगाड़बो, मगाणो, मगावो, मगावणो, मगाववो—रू० भे०।

मगायोड़ो–भू० का० कृ०—१ अपनी इच्छा पूर्ति के लिए अभीष्ट पदार्थ लाने के लिए आदेश दिया हुआ, कहा हुआ। २ मांगने का काम दूसरे से करवाया हुआ ३ किसी से पदार्थ आदि मगवाया हुआ

मगावणो, मगाववो—देखो 'मगाणो, मगाबो' (रू भे)

उ०—धण सुण थारा धरम सूं, सावत लायो सीस। मोल अवार मगावसु, पाधा वीम पचीस।—या दा

मगावणहार, हारो (हारी), मगावणियो—वि०।

मगाविओडो, मगावियोडो, मगाव्योडो—भू० का० कृ०।

मगावीजणो, मगावीजबो—कर्म वा०।

मगावियोडो—देखो 'मगायोडो' (रू भे)

(स्त्री० मगावियोडी)

मगिण—देखो 'मागण' (रू भे)

उ०—जिसो तूर नरपती, इसो मामत सूर नर। जब जैमोड़ जगमा, सोभि तैमैड़ मद सिघुर। समण वरद सपजै, सवद तैसा वाजता। मुख विरद्द मगिणां, इमा जै सद्द कवित्तां।—रा रू.

मगित—देखो 'मगतो' (मह, रू. भे)

उ०—राणै उदयसिंघ री पुत्री परणि, घणो उच्छव करि, मगित जणा री घणी आसीस ले करि, करह केकाण, सोना, सावट्ट, रुपइया, महुरा घणी दे, ' 'वीकानेर पधारिया छै।—द वि

मगियोडो—देखो 'मागियोड़ो' (रू भे)

(स्त्री० मगियोडी)

मगेज–म० पु०—गर्व, अभिमान।

रू० भे०—मगेज।

मगेजण–वि० स्त्री०—गर्विता, मानिनी।

उ०—इदरियो घररायो, ए घोडी मवरी-मवरी चाल चौमासो लग गयो ए! मगेजण हळवा-हळवा हाल।—लो गी

रू० भे०—मगेजण।

मगेडो–स० पु० [स० मार्ग+रा० प्र० एडो] द्वार, दरवाजा।

रू० भे०—मगरणो, मागेडो, मागेरणो।

मगेतर–स० स्त्री०—१ वह लडकी जिसमे विवाह होना निश्चित हो चुका हो, होने वाली वधु।

पु०—२ वह लडका जिसका विवाह किसी लडकी से होना निश्चित हो चुका हो। (मा म)

मगेरणो—देखो 'मगेडो' (रू भे)

मगोळ–स० पु०—१ (मगोलिया देश से) मध्य एशिया और उसके पूर्व की ओर तातार, चीन, जापान आदि प्रदेशो मे बसने वाली जाति, मगोलिया निवासी।

२ इस जाति का व्यक्ति।

मच, मचक–स० पु० [स० मञ्च] १ वह ऊचा बना स्थान या तख्त जिस पर बैठकर जन-समुदाय के सामने कोई कार्य किया जाय अथवा उपदेश या व्याख्यान दिया जाय, स्टेज, चौकी।

२ खेत की रखवाली या शिकार करने के लिए बनाया गया ऊचा मचान।

३ पलग, खाट।

उ०—१ वप पूरै वरंजी आतुर वाण दमसिर आय। आपो आपरै जी वैठा कनक मच बिछाय।—र रू

उ०—२ अर महीप भी आपरी माळा नू मच पर ही मेलि ए दिसा रो मारग लियो।—व भा

रू० भे०—मांचइ, मांचउ।

अल्पा०—माची।

मचिका–स० स्त्री० [स०] कुर्सी।

रू० भे०—मांची।

मचोनमच–स० पु०—मडप।

उ०—पुत्र जन्मोत्सव करावइ, दंपाक निसेप हुइ, सरवत्र मौर चोखाळिया गोमाय पांणी सिचाइ, मचोनमच बाधा, वानरवाळ बाधी, हट्ट सोमा सरवत्र रची।—व. स.

मच्छावाचा-स० पु० [म० मनस्+वाञ्छा] शिव की तुष्टि के लिए किया जाने वाला व्रत जो इच्छा पूर्ति के उद्देश्य से किया जाता है। वि० वि०—यह व्रत पुरुष तथा महिला दोनो ही के द्वारा किया जाता है। इसे श्रावण मास के प्रथम सोमवार से प्रारम्भ कर कार्तिक मास के अन्तिम सोमवार तक आने वाले सभी सोमवार के दिन किया जाता है। सोमवार के दिन व्रत करने वाले एकत्रित होकर कथावाचक से कथा सुनते हैं। यह व्रत निरन्तर चार वर्ष तक किया जाता है। तद्पश्चात् व्रतोद्यापन होता है।

मछर—देखो 'मछर' (रू भे)
उ०—तूं गुरुवा गिरनार, काई मन मछर धरचौ। मरता रा' खेंगार, एकौ सिखर न ढाळियौ।—अज्ञात

मछा—देखो 'मसा' (रू भे)

मछी—देखो 'मच्छी' (रू भे)
उ०—जु मछी जळ विन मरै, जळ मन जाणैं नाह। तु पिउ को जिय अति कठिण, हु चाहु पीय छाह।—ढो मा

मज-स० पु०—१ रग।
उ०—आद गुर भगण, फळ सुजस स्वामी मयक, जनक भ्रम मगळा मात सित मज। अगरारिस सुमा वाह रस हास यण, कळदी राव कुळ वैस्य अय कज।—र रू
२ देखो 'मजु' (रू भे)
उ०—मुख निकट प्रकासित नाम मज। क्रित उलट प्रगट किरि सुघट कज।—रा रू
३ देखो 'मजरी' (रू भे)
उ०—मछर घर मज सुरसत सुजल माटका।—किसनजी आढौ

मजण-स० पु० [स० मार्जनम् या माज] १ स्नान।
उ०—१ कुम कुमैं मजण करि धौत वसत धरि, चिहुरैं जळ लागौ चुवण। छीणैं जाणि छछोहा छूटा, गुण मोती मखतूल गुण।—वेलि
उ०—२ जळवा काज नक्की जादम। धुर ऊठी पतिवरत तणैं भ्रम। रट हरि मुख पति ध्यान रहायो।.मजण कर सिणगार मगायो।—रा रू
२ दात साफ करने का चूर्ण, मजन।
वि०—नष्ट करने वाला, मिटाने वाला।
उ०—माण मजण थूरि भजण थाट। पर दुख पल्लण भूल भल्लण वस चल्लण वाट।—ल पि
रू० भे०—मजणि, मजन, मजण, मजन, मज्जण, मज्जन।

मजणि—देखो 'मजण' (रू भे)
उ०—कवळा कूपळ अवर कुम्हलिया घणी निसासा। कोरैं मजणि लूखी लट मुख हिलैं उसासां।—मेघ

मजणौ, मजबौ-क्रि० अ० [स० मार्जन] १ स्वच्छ होना, मंजा जाना, चमक पाना (वस्तु)।
२ दक्ष होना, कार्यकुशल होना।
३ अनुभवी होना (व्यक्ति)।
४ पारगत होना।
५ स्नान करना, नहाना।
६ देखो 'माजणौ, माजबौ' (रू भे)
उ०—जिका पार जोवता वार लगैं वरणता, तडित सार अवतार अणी गुण धार अनता। वेदाणी तन मजि रजि आ भीच लगन्नै, घडै सघर पुळ सज्जि धूप डबर वासन्नै।—रा. रू
मजणहार, हारौ (हारी), मजणियौ—वि०।
मजाडणौ, मजाडबौ, मजाणौ, मजाबौ, मजावणौ, मजावबौ —प्रे० रू०।
मजिओडौ, मजियोडौ, मज्योडौ—भू० का० कृ०।
मजीजणौ, मजीजबौ—भाव वा०।
मजणौ, मजबौ, मज्जणौ, मज्जबौ—रू० भे०।

मजन—देखो 'मजण' (रू भे)
उ०—१ मजन करै सधीर मन, सूरा मारा धार। कायरडा मजन करै, आसु धार मझार।—वा दा
उ०—२ ऊठे वे दळ जोध अकारा, साझ सरीर तणा भ्रम सारा। कहि गगा तन मजन कीधा, दांन वितान मान करि दीधा। —रा रू

मजमून—देखो 'मजमून' (रू भे)

मजर-स० पु० [स० मञ्जर] १ मोती।
२ मोर पख की चन्द्रिका के ऊपर के महीनतम बाल।
उ०—मजर मोर चन्द्र सिर माथव। सोभा महत प्रपित सिणगार। —ह ना मा.
वि०—१ सुन्दर, मनोहर।
२ देखो 'मजरी' (रू भे)
उ०—भाराथ रामायण भागवत, कथा पवित्र धरि धरि करा। धरि मरण नेम सिर परि धरां, तुररा तुलसी मजरां।—सू प्र

मजरणौ, मजरबौ-क्रि० अ०—वृक्षो या पौधो पर मजरी आना, बौर युक्त होना।
उ०—१ अवर मोरीजैं छै। कूंपळा फूटीजैं छै। वणराइ मजरी छै। वासावळी फूट रही छै।—रा सा स
उ०—२ मजरै अदभुत चैत्र मासैं, पागरै पत्र कोमळा। सी जाय घर दिसि घाम प्रगटै, हुवैं अवर त्रिम्मळा।—ईसरदास वारहठ
मजरणहार, हारौ (हारी), मजरणियौ—वि०।
मजरिओडौ, मजरियोडौ, मजरचोडौ—भू० का० कृ०।
मजरीजणौ, मजरीजबौ—भाव वा०।
मजुरणौ, मजुरबौ—रू० भे०।

मजरि—देखो 'मजरी' (रू भे)

उ०—मग्री तहा मयरण वसत महीपति, मिला सिंघासण घर मघर।
माथै ग्रब छत्र मडाणा, चलि वाइ मजरि ढळि चमर।—वेलि

मजरिनेत्र—स० पु०—एक रग विशेष का घोडा जो अशुभ माना जाता है। (शा हो)

मजरियोडो—भू० का० कृ०—मजरी आया हुआ, बौराया हुआ (वृक्ष या पौधा), फूला हुआ (वृक्ष)
(स्त्री० मजरियोडी)

मजरी—सं० स्त्री० [स० मजर+डीप] १ कुछ विशिष्ट पौधो के फल आने से पहले सीको मे लगे हुए दानो का समूह अर्थात फूलो के प्रारम्भिक रूपो का समूह।
ज्यू—तुळसी मजरी, आम मजरी।
उ०—१ आसमांन ऊतरी इद्र री अपछरा, सरोवर रो हस, मरद को कमळ, बसत की मजरी, भाद्रवा की वादळी।
—लाली मेवाडी री वात
उ०—२ महाराज नू राज रीझै समाप्यो, थिरु राज रो राज देसाण थाप्यो, जठै झाडिया रुड, स्रीखड जैडी, नगा पुज री मजरी रूप नैडी।—मे म
२ एक राग विशेष।
उ०—सरी सरी सपोसय सुनाळ माळकोमय। मिठास भाग मजरी गरी गरी सगुज्जरी।—रा रू
रू० भे०—मज, मजर, मजरि, मजुर, माजरि, माजरी।

मजरीक—स० पु०—१ मोती।
स्त्री०—२ तुलसी।

मजळी—देखो 'मजुळ' (रू भे)
उ०—प्रतख्ख चख्ख पोडसी, महा मदन मोहिणी, मयक मुख्ख मजळी, करार नेत कजळी।—मा वचनिका

मजवती—स० पु०—एक वणिक छन्द।

मजा—स० स्त्री० [स०] बकरी।
उ०—१ कहियो—सोलखिया रो ओज तो इण समय हिंदुस्थान रा अधकार नू मद्दद आगळी मजा करि बांधव जना रा दुख रूप सुसीम नै उडावै छे।—व भा
उ०—२ जिण वाळक नै आपरी भुवा मजा रो दूध दे'र नीठि-नीठि पाळि दस बरस रा वय मे आणियो —व भा
२ मजरी।
३ लता, वेल।

मजाणो, मजाबो—क्रि० स० [मजणो क्रि० का प्रे० रू०] राख, मिट्टी आदि से रगडकर स्वच्छ कराना, चमकाना। (वर्तन आदि)
मजाणहार, हारो (हारी), मजाणियो—वि०।
मजायोडो—भू० का० कृ०।
मजाईजणो, मजाईजबो—कर्म वा०।
मजावणो, मजावबो, मांजाणो, मांजाबो—रू० भे०।

मजायोडो—भू० का० कृ०—राख, मिट्टी आदि से साफ कराया हुआ, चमकाया हुआ (वर्तन आदि), मजाया हुआ
(स्त्री० मजायोडी)

मजार—१ देखो 'मारजार' (रू भे)
उ०—१ उदैराज उद्यम किया, सब कुछ होवै त्यार। गाय भैस कुळ मे नही, दूध पिवै मजार।—उदैराज
उ०—२ सोभा अति सागर तणी जो नहि वरणी जाय। देखि भरयो मजार दधि पय भोळै पी जाय। पय भोळै पी जाय, भलो उण भात सू। हसा सभ्रम होय, क्षीर सिंधु ख्यात सू। वणियो ताळ विदद् 'बखत' भुप वार रो। उण पर अधिक आराम धाम छत्रधार रो।—सिवबगस पाल्हावत
२ देखो मद्य' (रू भे)
उ०—कीरति कही कुराण मा, मिणिजै वरग मजार। राजा किया रासि रै, देव तिको दातार।—पी ग्र

मजारखळ—स० पु० [स० मार्जार+खल] श्वान, कुत्ता।
(ग्र मा, ह ना मा)

मजारडो—१ देखो 'मारजार' (अल्पा, रू भे)
उ०—वाट काटे मजारडो, सामही छींक हुणइ कपाळ। भाडो लुकडी आवज्यो, गोरही कउ प्रीय पाछो हो वाळ।—वी. दे
२ देखो 'मजा' (अल्पा, रू भे)

मजारछठ—स० पु० [स० मार्जारछत्र] शेर सिंह। (ग्र मा)

मजारी—देखो 'मारजार' (रू भे)
उ०—नाचै मोर निहारै अहिफण ऊपरै, मूसक सीम न धारै घात मजारियां। माहोमाह न मारै वैर बुन्यादरा, ऐसे तेज अकारै राजै रघुपति।—र रू

मजावट—स० स्त्री०—मांजने या स्वच्छ करने (वर्तन) की क्रिया या भाव।

मजावणो, मजावबो—देखो मजाणो, मजाबो' (रू भे)
उ०—ते दूमातउ देखी पडित एक दिवस बोलावइ। सविहु छात्र तणा सवि पाटा पाटी सदा मजावइ।—हीराणद सूरी
मजावणहार, हारो (हारी), मजावणियो—वि०।
मजाविम्रोडो, मजावियोडो, मजाव्योडो—भू० का० कृ०।
मजावीजणो, मजावीजबो—कर्म वा०।

मजावियोडो—देखो मजायोडो' (रू भे)
(स्त्री० मजावियोडी)

मजासणो—देखो 'मजासणो' (रू भे)

मजियोडो—भू० का० कृ०—१ दक्षता प्राप्त किया हुआ, कुशल, अनुभवी
२ मजा हुआ, राख आदि से साफ हुवा हुआ. (वर्तन)
(स्त्री० मजियोडी)

मजिल–स० स्त्री० [अ०] १ वह स्थान जहा यात्रा करते समय मार्ग में ठहरते हैं, पड़ाव विश्राम स्थल ।
२ वह स्थान जहा तक पहुचना हो, गन्तव्य स्थल ।
३ ऊपर-नीचे बने हुए होने के विचार से मकान का खण्ड, माला ।
४ एक दिन की यात्रा ।
५ नक्षत्र ।
६ चाद का घर ।
७ लम्बी यात्रा ।
रू० भे०—मजल ।

मजीठ—देखो 'मजीठ' (रू भे)
उ०—एक वइठा कहइ कथा कल्लोल । एक वइठा वीकई **मजीठ** चोल ।—नळ दवदती रास ।

मजीठी—देखो 'मजीठी' (रू भे)
उ०—काळी **मजीठी** किर्या, नइणे नीदालुद्ध । अवर लागो ऊठियो, विढवा वस विसुद्ध ।—हा झा

मजीयासणो—देखो 'मजासणो' (रू भे)

मजीर–स० पु० [स० मजीर] १ पैरो में पहिनने का एक आभूषण विशेष, नूपुर, झाझर । (अ मा)
२ एक प्रकार का वस्त्र विशेष ।
३ वह डण्डा या खम्भा जिसमें मथानी का डण्डा वधा रहता है ।
४ प्रथम गुरु के नगण के प्रथम भेद का नाम । (डि को)
५ देखो 'मजीरो' (मह, रू भे)
उ०—वडे प्रात स्रीमात **मजीर** वागै । जरां गात जंमात जम्मात जागै ।—मे म

मजीरा–स० पु० (व व) [स० मञ्जीर] १ कासी या पीतल के प्यालानुमा युग्म वाद्य जो प्राय ढोलक के साथ वजाये जाते हैं ।
२ पिंगल प्रकाश' के अनुसार १८ वर्णों का वर्णिक छन्द विशेष ।
रू० भे०—मजीरा ।
मह०—मजीर, मजीर ।

मजु–वि० [स० मञ्जु] सुन्दर, मनोरम । (अ. मा, ह ना मा)
उ०—रिख सिख गगाराम सेवै, पद कज **मजु** सीतावर । सो 'राघो'पै किसना चीतव, निस दिवस उर चगा ।—र ज प्र
रू० भे०—मज, मजू ।

मजुकेसी–स० पु० [स० मञ्जुकेशिन्] श्री कृष्ण ।

मजुघोस–स० पु० [स० मञ्जुघोष] तान्त्रिको का देवता ।

मजुघोसा–स० स्त्री० [स० मजुघोषा] १ एक अप्सरा का नाम ।
उ०—इद्र लोक री अपछरा, **मजुघोसा** नाम । देव भाव सव निस्ट कर, कह्यो द्रस्ट घर काम ।—पा प्र
वि० वि०—इसको मेघाविन ऋषि ने पिशाच वनने का शाप दिया था ।
२ अप्सरा । (अ मा, ना मा.)
रू० भे०—मजूघोसा, मजघोसा ।

मजुनासी–स० स्त्री० [स० मञ्जुनाशी] १ दुर्गा का एक नाम ।
२ इन्द्राणी का एक नाम ।

मजुर—१ देखो 'मजरी' (रू भे)
उ०—मिळि अब साख प्रसाख रसमय अमिति **मजुर** अजुरे । रसहीन अनि तर सरव रैणा सीत छळ झति सचरै ।—रा रू
२ देखो 'मजूर' (रू भे)

मजुरणो, मजुरवो—देखो 'मजरणो, मजरवो' (रू भे)
उ०—मिळि अब साख प्रसाख रसमय, अमिति मजुर **मजुरै** । —रा रू

मजुरियोडो—देखो मजरियोडो' (रू भे)
(स्त्री० मजुरियोडी)

मजुळ–वि० [स० मञ्जुल] १ सुन्दर, मनोहर । (अ मा, ह नां मा)
उ०—ताकव त्रप तणी जी कर कर मुखं **मजुळ** कीत । घट उमदा घणी जी, पूछै गहर गुण घर प्रीत ।—र रू
२ सुरीला ।
रू० भे०—मजळी, मजूळ ।

मजुसी–स० पु० [स० मजुश्री] १ एक प्रसिद्ध बौद्ध आचार्य ।
२ देखो 'मजूसो' (अल्पा, रू भे)

मजू—१ देखो 'मजु' (रू भे)
२ देखो 'मजूसो' (अल्पा, रू भे)

मजूघोसा—देखो मजुघोसा' (रू भे)

मजूडी—देखो मजूम' (अल्पा, रू भे)

मजूर–वि० [अ०] जो स्वीकार कर लिया गया हो, स्वीकृत ।
उ०—महतजी ने पूछ्यो तो वै खुद आपरै मूडा सू **मजूर** करियो के सेठा रै कैणा मूजव ई म्हे वा'री मुगति रो उपाय करियो है । —फुलवाडी

मजूरडी—देखो 'मजूसो' (अल्पा, रू भे)

मजूरी–स० स्त्री०—१ मजूर होने का भाव, स्वीकृति ।

मजूळ—देखो 'मजुळ' (रू भे)

मजूस—देखो 'मजूसो' (मह, रू भे)
उ०—तुम उपगार गिणीस छिपाय, तु मुझ नै तिण **मजूस** । तिण मजूम मे एक, भरवारै घाल्यो ठूस ।—घ व ग्र
रू० भे०—मजू' ।

मजूसडी—देखो 'मजूसो' (अल्पा, रू भे)

मजूसी—देखो 'मजूसो' (अल्पा., रू भे)

मजूसो–स० पु० [स० मजूषा] १ छोटा पिटारा या पिटारी, डिब्बा ।
२ पक्षियो का पिंजरा ।

३ हाथी का होदा ।

रू० भे०—मजूमौ ।

अल्पा०—मजूडी, मजूरडी, मजूसडी मजूमी ।

मह०—मजू', मजूम, मजूम ।

मजेस—स० पु०—देशी चरखे के नीचे का सीधा लम्बा डंडा या पटडी जिसपर चरखा जमा रहता है ।

मझ—देखो 'मध्य' (रू भे)

उ०—१ केसर मिलक सराज दी वे मूळहत्याह । जाग कदोई ऊथलै, खाजी मझ कडाह ।—नैंणसी

उ०—२ बावाळि काइन सिरिजिया, मारु मझ थळांह । प्रीतम वाहत कावडी, फळ सेवत कराह ।—ढो मा

मझम—१ देखो 'मध्य' (रू भे)

उ०—बाबा कुरझडी मरावहो के सरवरियौ फोडाव । जब म्है सूता नींद भर, तब बोली मझम रात ।—ढो मा

२ देखो 'मध्यम' (रू. भे)

मझमांन—देखो 'मिजमांन' (रू. भे)

मझमानी—देखो 'मिजमानी' (रू भे)

मझळी—देखो 'मध्य' (रू भे)

उ०—जीव चा सवद सुण जीवडा, महियळ जळ थळ मझळी । आलेख पुरस अपरम परम, जळहर सद्द सु सभळी ।—ह र

मझळौ—देखो मझलौ' (रू भे)

(स्त्री० मझली)

मझा—स० स्त्री० [सं० मध्या] १ कमर, कटि । (जैसलमेर)

२ देखो 'मध्य' (रू. भे)

उ०—थग मझा जिम खीर सीर, जिम कुदरत कमावै ।

—केसोदास गाडण

मझार—देखो 'मध्य' (रू भे)

उ०—१ ऊठै सोर झाला अनल, आभ धुआ अधियार । ओळा जिम गोळा पडै, मेछा कटक मझार ।—बा दा

उ०—२ और आसरो नाहिन तुझ बिन, तीनू लोक मझार । आप बिना मोहि कछु न सुहावै, निरख्यो सब समार ।—मीरा

मझारडौ—१ देखो 'मारजार' (रू भे)

अल्पा०—मजा ।

मझारि, मझारै, मझारी, मझाळ, मझि—देखो 'मध्य' (रू भे)

उ०—१ एक अहेडो वईह मझारी ले वांणा उरहु हणी, जनम दीज्यौ जगनाथ दुवार ।—वी दे.

उ०—२ मोगर उण चद्र कूप मझारै । आकसमात् वांणी उच्चारै ।

—सू प्र

उ०—३ मतरै सै गुणश्रीम मे, मिगसर मास मझारी रे । यात्रा करी जिनवर तनी, धरम सील चित धारो रे ।—ध व ग्र

उ०—४ आरावा ऊछळ आतस झाळ । मडै किर भाद्रव मेह मझाळ ।—मा वचनिका

उ०—५ दादू मझि सरोवर विमल जळ, हसा केलि कराहि । मुक्ताहळ मुकता चुगै, तिहि हसा डर नांहि ।—दादूवाणी

उ० - ६ बावा म दइस मारुवां, सूधा एवाळाह । कधि कुहाडउ सिरि घडउ, वासउ मझि थळाह ।—ढो मा

मझिम—१ देखो 'मध्य' (रू भे)

उ०—मझि समदां बीट घर, जळ सू जामोपत्त । किण ही अवगुण कूझडी, कुरळी मझिम रत्त ।—ढो मा

२ देखो मध्यम' (रू भे)

मझियार—वि० [स० मध्य+रा०प्र० यार] मध्य का, मझला, बीच का ।

मठ—देखो 'मठ' (रू भे)

मठणौ, मठबौ—क्रि० स०—रचना, बनाना, निर्माण करना, सृजन करना ।

उ०—मारु आयो मधुपुरी, स्री दूलह 'अभमाह' । परमोछव परणावा, सुख मठै 'जैमाह' ।—रा रू

मठणहार, हारौ (हारी), मठणियौ—वि० ।

मठाडणौ, मठाडबौ, मठाणौ, मठावौ, मठावणौ, मठावबौ

—प्रे० रू० ।

मठिओडौ मठियोडौ, मठ्योडौ—भू० का० कृ० ।

मठीजणौ, मठीजबौ—कर्म वा० ।

मठाणौ, मठावौ—क्रि० स०—बनवाना, सृजन कराना, निर्माण कराना, रचवाना ।

मठाणहार हारौ (हारी), मठाणियौ—वि० ।

मठायोडौ—भू० का० कृ० ।

मठाईजणौ, मठाईजबौ—कर्म वा० ।

मठावणौ, मठावबौ—रू० भे० ।

मठायोडौ—भू० का० कृ०—बनवाया हुआ, रचित, निर्मित ।

(स्त्री० मठायोडी)

मठावणौ, मठावबौ—देखो 'मठाणौ, मठावौ' (रू भे)

मठावणहार, हारौ (हारी), मठावणियौ—वि० ।

मठाविओडौ मठावियोडौ, मठाव्योडौ—भू० का० कृ० ।

मठावीजणौ, मठावीजबौ—कर्म वा० ।

मठावियोडौ—देखो 'मठायोडौ' (रू भे)

(स्त्री० मठावियोडी)

मड—स० पु० [स०] १ आभूषण, गहना ।

उ०—चांपावत चड वळवड रखपाळ । मुरधर के मड, सिभू कोप रिणताळ ।—रा रू

२ रचना, सृष्टि ।

उ०—१ आदूं खट रस ऊपरा, माडी नवरस मड । कुकवि कहै विध मू कियौ, आचारजा अफड ।—बा दा

उ०—२ अधिकारी गीता अवस, चारण सुकवि प्रचड । कोड प्रकारा गीत की, मुरधर भाखा मड ।—र ज प्र

३ ब्रह्माण्ड ।

उ०—चमू काळ वळ चड, ज्वाळ किर मड जळायण । सरस कोप किर सिभु महा, दिख दभ मिटावण ।—रा रू

४ शरीर, देह । (अ मा)

५ निर्भरता ।

उ०—जोधपुर रिणमला माथै मड त्यू जेसलमेर कालण रा परवार ऊपर सारी साहिबी री मदार ।—नैणसी

६ देखो 'मडप' (रू भे)

उ०—माडो जिग मड प्रधान सुमित्र ।—रामरासो

७ देखो 'मडाण' (रू भे)

८ देखो 'माडो' (रू भे)

९ देखो 'माडाणी' (रू भे)

उ०—वनि वनि त्रिकमइ वेउळ, खेउ लगाडइ चीति । दीठा द्राखह मडव मड वधारई प्रीति ।—जयसेखर सूरि

१० देखो 'मढ' (रू भे)

उ०—मड मे काळी माता जागिया, पुरी मे जगन्नाथ बावो जागिया, वगळै मे हणमान बाबो जागिया, परीडै पितर देवता जागिया, मदिर मे सती माता जागिया,मड मे भैरू बावो जागिया ।—लो गी

११ देखो 'मुड' (रू भे) (अ मा)

उ०—घण मेळै घमसाण, राखम आहेडो रमण । चड मड वे आता चढै, प्राजळिता निज प्राण ।—मा वचनिका

उ०—२ तो चड मड राजि भारत ने चाढीजै । कलहागारी रा हाथ देखीजै दिखाइजै ।—मा वचनिका

१२ देखो 'माड' (रू भे)

स० स्त्री०—पानी पीने या भरने के लिये किसी कुए या तालाव पर जाने या जाकर एकत्र होने की क्रिया या भाव ।

उ०—कुवा रुखी वाय एक चहुवांण तेजसी री कराई छै, तिण रो खारो पाणी । घणी सहर री मड उण ऊपर छै ।—नैणसी

मडग्रो—देखो 'मडवो' (रू भे)

मडक—देखो 'मडको (मह , रू भे)

मडकियो—देखो 'मडको' (अल्पा , रू भे)

मडको—स० पु० [स० मण्डक] १ मैदे को घी तथा शक्कर के समिश्रण से बनी रोटी विशेष ।

उ०—१ एक घ्रत पूरण अनइ सरकरा चूरण, सातूग्र कचालित अनइ गोघ्रत मिलित, एक मडक अखड अनइ सिहरुली खड ।

—व स

उ०—२ ओ ए दासी ओ ए वादी वूझा थाने वात, काई म्हारी जच्चा राणी पथ लियो, राज । मीठै को मडको, अळसी को तेल वो थारी जच्चा राणी पथ लियो राज ।—लो गी

२ मोटी चपाती जिसे आग के अगीरो पर ही सेका जाता है ।

रू० भे०—माडो ।

अल्पा०—मडकियो ।

मह०—मडक ।

मडण—स० पु० [स० मण्डनम्] १ सजावट, शृगार ।

२ आभूषण, गहना ।

३ शोभा ।

उ०—१ स्त्री रघुनाथ अनाथ नाथ सुज, वेढ सत्र दसमाथ विहडण । जाहर मही जहूर सुजस जिण, महपत नूर सूर कुळ मडण ।

—र ज प्र

उ०—२ 'भाराणी' जस भार, भुज मडण थारा भुजा । ऊगै दीह उदार, पाता घर पूगै पवग ।—वां दा

४ किसी कथन या सिद्धात का युक्ति आदि देकर पुष्टीकरण । प्रमाण द्वारा कोई बात सिद्ध करना ।

विलो०—खडन ।

रू० भे०—मडन ।

मडणकोट—स० पु० यौ० [स० मडन+कोट] हाथी, गज ।

(ना डिं को)

मडणछत्र—स० पु० यौ० [स० मडन+छत्र] आकाश, नभ । (ना मा)

मडणो, मडबो—क्रि० अ० [स० मडनम्] १ होने की स्थिति मे आना, कुछ होना ।

उ०—१ छेह घणै ऊछज छरा, केहर फाडै डाच । ऐरावत कुळ ऊपरा, मीच मडीजै नाच ।—वां दा

उ०—२ मावडियो जुध मडिया, विलखी करै विलाप । आडा म्हारै आवजो, जणणी रा व्रत जाप ।—वा दा

उ०—३ मडियो वाद दिली मेवाडा, समहर तिको दिहाडै सीव । भवस न पैठा किसा भाखरा, भाखर किसै न विढियो 'भीव' ।

—भीम सीसोदिया रो गीत

२ ठनना, पक्का होना, निश्चित होना ।

उ०—अडियो दळ रांवण राम तणो, मडियो अत ही जुध जोर घणो । हथियार लै राखस आण अडै, गिरि रूख ले वानर रीछ लडै ।—गी रा

३ कटिबद्ध होना, तत्पर होना, उद्यत होना, उतारू होना ।

उ०—१ ताहरा सादूळ अपूठो घिरियो । रजपूत साम्हा मडियो । लडाई हुई, रजपूत काम आयो ।—नैणसी

उ०—२ अर सामोर बारहठ लोहठ री पाघ रै आटै मटोवर रा नरेस पडिहार हम्मीर नू गजि राणै लाखा री पण विगडाई जठै तठै जिम तिम मरण मडियो, परतु आपरै आगार ही अवसाण आयो ।—व भा

उ०—३ राव चद्रसेन नीसरियो । देवडो बीजो हरराजोत पिण नीसरीयो । उहड जैमल मुदायत हुय मडियो ।

—राव चद्रसेन री वात

४ उत्पन्न होना, अकुरित होना ।

उ०—सुण वाको पातसाह आस मडी उर अतर । मूनदीन फिर मीर, पीर परसिया अजैपुर ।—रा रू.

५ स्थिर होना, रुपना, जमना, रुकना।
उ०—१ वागी खग्गा वे घड़ी, ज्या वज्जै घड़ियाळ। पाव न मडै राव पिड, गौ छडै रिणताळ।—रा रू
उ०—२ वरगळ भडै ऊघडै वगतर, चौधारा धारा खग चोट। ओट होय मंडियौ 'अमरावत', काळौ पडै न मैमत कोट।
—खेमराज सौदो
उ०—३ अिजडा भाट अवाट बाजता, स्याम ध्रम सूरातन साहि। सत छांडै टेभा अवछडिया, गिड भूरा मडिया गज गाहि।
—वैरीसाल हाडा री गीत
६ अटल होना, अडिग होना, दृढ होना, डटना।
उ०—वदन तेज कळगत री वयळ वाडव वर्णी, ऊफर्णी क्रोध पोरस अमामी। मडांणौ हेक राजा घर्णी मछर सू, साहजादा दुहू तर्णी सांमहौ।—रुघौ मूहतौ
७ जुडना, लगना।
ज्यू—दरवार मडणौ, मेळौ मडणौ।
उ०—आगळि रितु राय मडियौ अवसर, मडप वन नीभरण अदग। पचवाण नायक गायक पिक, वसुह रग मेळगर विहग।
—वेलि
८ प्रारम्भ होना, शुरू होना।
ज्यू—घट्टी मडणी, रामत मडणी।
उ०—१ छवि नवी नवी नव नवा महोछव, मडियै जिणि आणद मई। कातिग घरि घरि द्वारि कुमारी, थिर चीत्रति चित्राम थई।
—वेलि
उ०—२ एकर उदयापुर में उण नटणी री रामत मडी। राणीजी कई वरसा सू उण रामत रा कोडाया हा।—फुलवाडी
९ स्थापित होना, कायम होना।
ज्यू—प्याऊ मडणी, पौसाळ मडणी।
उ०—महमूद मीर निरखे निवळ, कचर घाण घमसाण करि। मडियौ तखत दिल्ली मुगळ, कातर वस पठाण करि।—व भा
१० किसी दुकान सस्था या कार्य का नियत समय पर सार्वजनिक दृष्टि से चालु होना, निश्चित समय पर खुलना।
ज्यू—दुकांन मडणी।
११ उमडना, उमरना, मडराना।
उ०—१ हुई फौज हाजरी, वोभ नाग न वरदासै। जाण गजव गाजती, मडी काठळ चवमासै।—मे म
उ०—२ दादुरा डहिडहै सावण आवण वैरी सिध कहै। इसो समइयौ वण रह्यौ छै। वरखा मडनै रही छै। विजळी भिळौ मिळ करनै रही छै।—रा. सा स
१२ चित्रांकित होना, चित्रित होना।
उ०—१ ओ कवळै मडियोडा ठाकरसा री ई पुत्र परताप है के आपरी हवेली मे किणी भात री चोरी-चकारी नी व्ही।
—फुलवाड़ी

उ०—२ जोई जळद पटळ दळ सावळ ऊजळ, घुरै नीसाण सोइ घणघोर।—प्रोळि प्रोळि तोरण परठीजै, मडै किरि तडव गिरि मोर।—वेलि
उ०—३ भावज म्हारी ए, देखो भावज काई ए जिनावर जाय। मोरा पर मडिया है जिण रै माडणा, माडणा जी, म्हारा राज।
—लो गी
१३ लिखा जाना, दर्ज होना।
उ०—१ सातळमेर पोकरण जागीर मे मडी, अमल न हुवौ।
—नैणसी
उ०—२ डोढौ दूणौ मडियोडौ लैणौ उतारै तो कीकर।
—फुलवाड़ी
१४ किसी यन्त्र का पुर्जे आदि व्यवस्थित लगकर कार्य करने की स्थिति मे आना।
ज्यू—अरट मडणौ डोलर हीडो मडणौ।
१५ अकित होना, चिन्हित होना।
उ०—१ जमी माथै लगूरा रा एकठ घणा सारा खोज मडियोडा देखनै उण रा मन मे खुडको व्हियौ के कठैई माटा लगूरिया तो कुबद नी करग्या।—फुलवाडी
उ०—२ आथण रा खड खायनै हिरणी आई तौ काई देखै के आडौ तो खुलियोडो। छांन वा'रै खोडिया ना'र रा खोज मडियोडा।
—फुलवाडी
१६ वनना, निर्मित होना।
उ०—हरीया जळ की ओवरी, वीच मिनख रा वास। पल मडै पल ढहि परै, हरिजन रहै उदास।—हरिरामदासजी महाराज
उ०—२ उलटा मन असमाण कु, मिळै त्रिवेणी तट। जन 'हरीयै' जाह मडीया, सुरति सवद का मट।—हरिरामदासजी महाराज
१७ उपयोग की दृष्टि मे किसी वस्तु का किसी के सहारे लगना, सटना, सलग्न होना, सहारा वनना आधार वनना।
उ०—प्रिथु वेलि कि पच विध प्रसिध प्रणाळी, आगम निगम कजि अखिळ। मुगति तणी नीसरणी मडी, सरग लोग सोपान इळ।
—वेलि
१८ ग्रहण करने या लेने के लिये या गिरते हुए को झेलने के लिये पात्र, वस्तु या हाथ रक्खा जाना, पसरना, फैलना।
ज्यू—पल्लौ मडणौ, पाळौ मडणौ, घडौ मडणौ, हाथ मडणौ।
उ०—दाता आगै मडियौ दाता हदौ हत्थ। दातारां सिर ऊपरै, सौ नित रह्यौ समत्थ।—वा दा
१९ तनना।
उ०—१ मत्री तहा मयण वसत महीपति, सिळा सिघासण धर सघर। माथै अव छत्र मडांणां चलि वाइ मजरि ढलि चमर।
—वेलि

उ०—२ सुरताण राण सकोडिया, सझि लीवा दे सहि सहि।
मालदे सीस छत्र **मडियौ**, 'माल' हुवौ मडलीक महि।
—राव मालदेव री वात

२० घोडा, ऊट आदि सवारियो पर चारजामा या जीन वाधा जाना, कसा जाना।

उ०—१ मारग मे वौ इज ऊट पाछौ सामौ धकियौ। पिलाण **मडियोडौ** देखनै सूठ वाई मन करियौ के माथै वैठा चाला तो ठीक रैं'वै।—फुलवाडी

उ०—२ व्रहमाणी हस चढै, मोर कौमारी **मडै**। नारसघी सिंघ सिरै, नर वाहनी नर चढै।—मा वचनिका

२१ सृजन होना, सृष्टि होना।

उ०—तू अनाद जुगाद आद तूझ हूत **मडाणी** – केसौदास गाडण

२२ रचा जाना, रचित होना।

ज्यू—चवरी मडणी, व्याव मडणौ।

उ०—महा **मडियौ** ज्याग उज्जेण खाग मर्धे, रुदन विलखावती रही रोती। हेळवी 'अमरा' रैं हियै करती हरख, 'जसा' अपछर रही वाट जोती।—महाराजा जसवतसिंह री गीत

२३ मनाया जाना।

उ०—आगमि सिसुपाळ **मडिजै** ऊछव, नीसाणे पडती निहस। पट मडप छाइजै कुदणपुर, कुदणमै वार्भ कळस।—वेलि

२४ सजना, सवरना, सुसज्जित होना, तैयारी होना।

उ०—इभ कुभ अधारी कुच सु कचुकी, कवच सभु काम क कळह। मनु हरि आगमि **मडै** मडप, वधण दीध कि वारगह।—वेलि

२५ आच्छादित होना, ढका जाना।

२६ तैयार होना, उद्यत होना, प्रस्तुत होना।

२७ छितरना, विखरना।

२८ प्रवन्ध होना, व्यवस्था होना।

२९ व्यक्त होना। ३० सम्बन्ध जुडना, मेल होना।

३१ सधान होना। ३२ शोभित होना।

उ०—१ दत स्रोणि दीठा पछी, मणि **मडिउ** मडाण। भमहि धनुख थी सीखव्या, नर नासेवा वाण।—मा० का प्र

उ०—२ माग फूल सिर फूल, जडाऊ **मडिया**। खिण खिण निरखै नाह, हिए दुख खडिया।—वा दा

क्रि० स०—३३ रत्न आदि कोई वस्तु किसी दूसरी वस्तु मे वैठाना, जमाना, जडना।

३४ ढोल आदि अवनद्ध वाद्यो के मुख पर चमडा चढाना।

३५ अभिमन्त्रित गडा या तावीज पर धातु-पत्तर चढाना, आवेष्ठित करना।

३६ तस्वीर, चित्र आदि को सुरक्षार्थ, शीशा लगी किसी चौखट मे वैठाना, स्थिर करना।

३७ सुसज्जित करना, सजाना, सवारना।

३८ शृगार करना।

३९ कुछ करना।

उ०—१ मीरेखान चडी रण **मडौ**। खळ पकडौ मारौ खळ खडौ।
—रा रू

उ०—२ घण वोलै जोधार, हिचण तोलै नभ हाथै। विण प्रारभ रूप रा, **मडै** आरभ किण माथै।—मे म.

उ०—३ वय वीरा सह वोळिया, केसर कुड दुकूळ। वळै तरुण भड वरजिया, **मडै** साहस मूळ।—व भा

४० देखो 'माडणी, माडवौ' (रू भे)

उ०—१ जीवत म्रित हुई साहिजहा, दिल्ली वै सुरताण। राति दीह अदर रहै न **मडै** दीवाण।—वचनिका

उ०—२ रुखाळा मोरचै **मडै** लुळै लाडवा री झाव अर भूजिया री ओडी सू सिरावण करै अर रात नै सौ-सौ कोसा री सरडातो भर जावै।—दसदोख

मडणहार, हारौ (हारी), मडणियौ—वि०।

मडाडणौ, मडाडवौ, मडाणौ, मडावौ, मडावणौ, मडाववौ
—प्रे० रू०।

मडिओडौ, मडियोडौ, मडचोडौ—भू० का० कृ०।

मडीजणौ, मडीजवौ—भाव वा०/कर्म वा०।

मढ़णौ, मढवौ—रू० भे०।

मडन—देखो 'मडण' (रू भे)

मडप—स० पु० [स० मडप] १ देव मन्दिर, देवालय। (ह ना मा.)

उ०—अवचळ **मडप** तर आगाहट, सुर जिम थापै कवेसुर। मुह मागियो सो दीधौ मोनै 'पता' समोभ्रम रायपुर।—दुरसौ आढौ

२ भवन।

उ०—१ कळी सेत अन पालटै, पडै जोखिम कळस, खसै खुभी हुवै **मडप** खागौ। भीतडा भागि ढहि जाइ धरती मिळै, गीतडा नह जाय कहै 'गागौ'।—राव गागौ

उ०—२ 'वाघ'उत ऊवरै, सुणौ खट तीस वस, जुरा आगळि रहै वदू जाही। भोज वीकम तणौ सुजस सारै भुयण, नरा, तिण वार रा **मडप** नाही।—राव गागौ

३ विवाह सस्कार या किसी उत्सव या समारोह के लिए छाया हुआ स्थान, वितान।

उ०—१ तेडावि मोटाराय राणा, रचौ **मडप** माळ। ए जक्ष कर्यंवर सिधि साधिक, आविया सुर चाल।—रुकमणी मगळ

उ०—२ आगमि सिसुपाल मडीजै ऊछव, नीसाणे पडती निहस। पट **मडप** छाइजै कुदणपुरि, कुदणमै वार्भ कळस।—वेलि

४ छाया हुआ वह स्थान जहा पर बहुत से व्यक्ति धूप वर्षा आदि के वचाव के लिए वैठ सकें।

५ चारो ओर से खुला तथा ऊपर से छाया हुआ स्थान।

६ देव मन्दिर मे मूर्ति-स्थल के ठीक सामने दर्शकों के बैठने तथा भजन कीर्तन करने के लिए मडलाकार व गुम्बजाकार बना हुआ भाग।

उ०—चावड बुरज ऊपर माता जी चावडाजी री मडप करायो नै थापना करी तिण मडप आगै राव मालदेवजी नवो मडप फेर करायो। ओ मिंदर नै मडप स० १६१४ रा भादवा वद ५ सोर उडियो तरां मडप सिखर गयो।—मारवाड री ख्यात

७ राजाप्रासाद, देवालय आदि के ऊपर बना गोलाकार या गुम्बजाकार ऊचा सिखरनुमा भाग।

उ०—१ छाजा पडै अछेह मडप उडि पडै महल्लां। मुगळाणिया अमाप, पडै आधात दहल्ला।—सु प्र

उ०—२ मरद कसणा जरद तणा तूटै मछर, जवन चा दळां जूटै हुआ जग। खडेले देवळा मडप न हुवै विखड, अखड 'सूजा' तणी जतै उतमग।—सुजांणसिंघ सेखावत रो गीत

८ देव मन्दिर मे मूर्ति पर तना हुआ वस्त्र, चदोवा, वितान।

उ०—फटहडा मडप कराळ फळि काठ भक्त फाळ। हिम हीर जळि हिंडलाट, अगीर दमग उपाट।—सू प्र

९ तबू, शामियाना।

उ०—इभ कुभ अधारी कुच सुकचुकी, कवच सभु कामरु कळह। मनु हरि आगमि मडै मडप, वधण दीघ कि वारगह।—वेलि

रू० भे०—मड, मडपि, मडव, माडव।

अल्पा०—मडवो।

मडपपुर—स० पु० [स०] मडोर नामक नगर का नामांतर।

उ०—रात मडपपुर ईस, 'चड' सुत कहिय चडहूह। सत्रुमाळ तिम सबळ, महत वणीय विरोध मह।—व भा

मडप-राइ—स० पु० [स० मडपराज] राजा।

उ०—हइ कप हिंदूकार घर-घर प्रति हूवउ घणउ। मिळियइ मडप-राइ कइ कुण ऊपरइ कधार।—अ वचनिका

मडपाळ—स० पु० [स० मडपाल] राजा, नरेश।

उ०—मयाळ मडपाळ मेघमाळ मोहनी नही। हिलव से प्रलब थभ, बिंब सोहनी नही।—ऊ का

मडपि—देखो 'मडप' (अल्पा, रू. भे)

उ०—आणइ अनुचर आकुला चाकुला चाउरि पाट। माडइ मडपि माडणी आडणी ऊपरि थाट।—जयसेखर सूरि

मडरणो, मडरबो—क्रि० अ० [स० मडल] चारो ओर से घिरना, चारो ओर छा जाना।

मडरणहार, हारो (हारी), मडरणियो—वि०।

मडरिओडो, मडरियोडो, मडरयोड़ो—भू० का० कृ०।

मडरीजणो, मडरीजबो—भाव वा०।

मडराणो, मडराबो—क्रि० अ० [स० मडल] १ मगलाकार रूप में छा जाना, चारो ओर से घिर जाना।

२ पक्षियो, पतगो आदि का मडल बनाकर चक्कर लगाते हुए उडना।

३ किसी स्थान या व्यक्ति के आस-पास चक्कर लगाते रहना।

मडराणहार, हारो (हारी), मडराणियो—वि०।

मडरायोडो—भू० का० कृ०।

मडराईजणो, मडराईजबो—भाव वा०।

मडरायोडो—भू० का० कृ०—१ मडलाकार रूप मे घिरा हुआ, घेरा या मडल बनाकर छाया हुआ. २ गोल घेरे मे चक्कर लगाते हुए उडा हुआ ३ किसी स्थान या व्यक्ति के आस पास घूमा या घिरा हुआ

(स्त्री० मडरायोडी)

मडरियोडो—चारो ओर से छाया हुआ।

(स्त्री० मंडरियोडी)

मडळ—स० पु० [स० मडलम्] १ किसी एक बिन्दु के चारो ओर समान अन्तर पर घिरी हुई परिधि, चक्र के आकार का घेरा, वृत्त।

उ०—१ अर सिंधु रै सीस पताका खुलाय अनीका रा ओघ मिळाय प्रथ्वी रा पुड चलावतो जिकण भद्र काळी रै घरै निमत्रण लगावतो अरबुद रै ऊपर प्रस्थान कीधो। दरकूचा जाय दुरग रै प्रतना रो पलेटो दीवो किना सुमेरु परबत रै चौतरफ जबू दीप रो मडळ थियो।—व भा

२ चद्रमा या सूर्य के चारो ओर पडने वाला घेरा जो बादलो की बहुत हलकी तह या कुहरा रहने पर दिखाई पडता है।

उ०—कायर थाको दौडकर, ससि सू करै पुकार। अग ज्यू मूफ बसावजै, मडळ तणै मझार।—बां दा

३ दृष्टि के सम्मुख पडने वाले पदार्थ विशेष का गोलाकार भाग।

ज्यू—मुख मडळ, चन्द्र मडळ।

४ किसी प्रकार की गोलाकार आकृति या रचना।

ज्यू—नभ मडळ, भूमडळ।

उ०—अस्विनि चैत्र माम पख ऊजळ। थित सब सकति होत मडळ थळ।—मे म

[स० मडल] ५ श्वान, कुत्ता। (अ मा, डिं को ह ना मा)

उ०—बदै 'जसो' जिणवार कवर अग्गळ जोडै कर। मीणां अधम गमार घणां छक अनड रहै घर। बीरा सम्मुह वेग पूछ पटकै मडळ मित। एक खीची आइ सबळ कीधा खळ सकित। अभिधान 'गग' सगो सगर, निम्मदेव अगज निडर। असवार एक जडिया उठै ओखळिया भाला अरर।—व भा

६ चारो दिशाओ का घेरा जो गोल दिखाई देता है, क्षितिज।

ज्यू—दिगमडळ।

७ कुछ विशिष्ट प्रकार के लोगों का वर्ग या समाज।

ज्यूं—मित्र मडळ, मूढ मडळ।

उ०—सठ मडळ स्रोता हुवै, वक्ता कुकवि वरणत। भूकरण लागौ भूकवा, जाण जमा दीपत।—वां दा

८ ढेर।

उ०—अर सैकडा अत म्लेच्छा रा मडळ रै बीच करणाट राजा रो कुमार नरसिंह देव घरणा घावा करि घायल पडियौ थकौ भी चेतन समेत भाळियौ।—वं भा

९ दल, समूह।

उ०—१ तेज पुंज त्रप सुतरण, हुवौ जस वेस झळाहळ। साईना साथिया, मिळै खेलै मभि मडळ।—सू प्र

उ०—२ तितरै स्रीक्रस्णजी घोडा तेज खडि कै सत्रु की सेन्या कौ मडळ थौ ते मारि ग्राया।—वेलि टी

१० देश। (ग्र मा, डिं को)

उ०—१ पर मडळ पर दीप मे, हद घर घर कथ होत। कीरत वर, जेहो कुवर, जाडेचां घर जोत।—वा दा

उ०—२ पद्रह दिन रहिया पछै, मुगळ मीर तैमूरा। क्रम इण मडळ जीतकरि, गो ग्रह पाणियपूरा।—व भा

उ०—३ कुसळ विहावउ सज्जरणा, पर मडळै थयाह। जउ विह हिया न हारिस्यइ, वळै मिळेवउ त्याह।—ढो मा

११ बारह राज्यो का क्षेत्र, वर्ग या गुट। (प्राचीन)

१२ समीपवर्ती प्रदेश या भू-भाग।

१३ व्यवस्था या प्रशासन की दृष्टि से प्रान्त का एक विभाजित भाग, डिवीजन।

१४ चालीस योजन लम्बा व बीस योजन चौडा भू भाग।

१५ ग्रह के घूमने का कक्ष।

१६ ग्राकाश, नभ।

उ०—धरती धांन न नीपजै, तारा न मडळ होय, म्हे मन धरला ग्रवरसां, पिरथी परळै होय।—ग्रज्ञात

१७ कोई गोलाकार दाग या चिन्ह।

१८ वृताकार या ग्रण्डाकार विस्तार या फैलाव।

१९ एक प्रकार का कुष्ठ रोग।

[स० मडल] २० युद्ध स्थल मे की जाने वाली एक प्रकार की व्यूह रचना विशेष।

[स० मडलम्] २१ ऋग वेद का एक खण्ड, भाग।

२२ पांच शामियानो को मिलाकर चार खम्भो पर खडा किया जाने वाला खेमा।

२३ एक जाति विशेष का सर्प। (ग्रमरत)

२४ ससार। (जैन)

२५ तीर्थ स्थान।

उ०—ग्रवधपुरी मधुपुरी द्वारिका, चित्रकूट यमुना सी। गोवरधन गोकुळ वृन्दावन, बीच मडळ चौरासी।—मीरा

[स० मडल] मुडी हुई तलवार विशेष, खांडा।

मडळग्रोखौ—स० पु०—द्वारिका प्रदेश का समीपवर्ती क्षेत्र, ग्रोखामडल।

उ०—इम लीध मडळ ग्रोखौ उदार। घर समद बीटि गढ संखो-धार।—सू प्र

मडळदिल्ली—देखो 'दिलीमडळ'।

मडळक—स० पु० [स० मडलकम्] मडलीक राजा, एक क्षेत्र या सूबे का ग्रधिपति।

उ०—राजा जुवराज कुमार राजेस्वर महामडलेस्वर सामंत, लघु-सामत तलवर तत्रपाल चतुरसीतिक ताडकपति मत्रि महामत्रि ग्रहवाहक स्रीकरणिक व्ययकरणि राजकार घरमाधिक सौवरणक देवक मडळक गद्दुरक उस्टक ह्स्तिकाक ।—व स

मडळकरिणिक—राज्य के एक क्षेत्र ग्रर्थात् मडल (सूबा) का कार्यकारी ग्रधिकारी।

उ०—जुवराज कुमार राजेस्वर महामडलेस्वर सांमत लघुसामत तलवर तत्रपाल चतुरसीतिक ताडकपति मत्रि महामत्रि ग्रहकाहक स्रीकरिणिक व्ययकरिणिक राजकरणिक, घरमाधिकरणिक सौ वरणकरिणिकदेव करिणिक मडळकरिणिक उस्टकरिणिक ।—व स

मडळा—स० स्त्री०—राठौड वश की एक उप-शाखा।

मडळाग, मडळाग्र—स० स्त्री० [स० मण्डल+ग्रग्र] तलवार। (ह ना मा)

उ०—तिण समय चहुवाण कुमार मडळाग्र रौ ग्राघात दे'र नाहर राज रा तुरग रौ खध पाखर समेत झाडियौ।—व भा

मडळाधीस—देखो 'मडलेस्वर'। (डि को)

मडळावत—१ देखो मडळा' (रू भे)

उ०—मडळावत, रूपावत, भाटी कछावाहा, तवर, चद्रावत पवार, सोनगरा इतरा साथ लिया।—मारवाड रा ग्रमरावा री वात

२ इस शाखा का व्यक्ति।

मडळि—देखो 'मडळी' (रू भे)

मडळिक—देखो 'मडळीक' (रू भे)

उ०—१ राय राणा मडळिक ग्राखडळीक सामत महासामत लघु-सामत स्रीगरण वयगरण घरमाधिगरण ।—व स

उ०—२ जयकुजर हाथीया तणइ कुमस्थलि चडिउ, पाखती ग्रग-रक्षक तणी ग्रोलि, मडळिक तणइ परिवारि, पताका फुरकती मेघाडवर तणइ ग्राडवरि ।—व स

मडळी—स० स्त्री० [स० मण्डली] १ मानव दल, मानव समूह।

२ गोलाकार, वर्तुल।

उ०—भुरजमाळ फण मडळी, मोर झाळ विख झाळ। जाण सख बैठौ जमी, मिस चीतोड कराळ।—बा दा

३ समान उद्देश्य या विचार रखने वालो ग्रथवा एक ही प्रकार का कार्य करने वालो का समूह या दल।

उ०—ग्रमित गुलाला ग्ररगजा, केसर ग्रतर फुलेल। हुवै सबोली मडळी, होळी हंदा खेल।—रा रू

स० पु०—४ एक प्रकार का सांपो का वर्ग विशेष।
५ वट वृक्ष ।
६ काटे हुए चनों व गेहू का खेत मे ढेर। (बीकानेर)
७ नाच या खेल करने वालों का एक झुंड । (बीकानेर)
रू० भे०—मडळि।

मडळीक, मडलीक–स० पु० [स० माडलिक] १ प्रान्त या क्षेत्र अथवा मडल विशेष की रक्षा या शासन करने वाला व्यक्ति, प्रशासक ।
२ राजा, नृप ।
उ०—१ माढेची धरा 'अना' कुळ मडण, वड दातार अभनमा 'वीक'। मोड वध्या आयो तू मारग, मोड वधा सके मडळीक।
—द दा
उ०—२ उअकार अग्राहत अक्खर, सिद्धि वुद्धि दे सारद गुणेसर। मडळीकां मोटो कुळ मउडा, रसणि सुवाणि कीति राठउडां।
—रा ज सी.
३ वारह राज्यो का अधिपति।
रू० भे०—मडळिक, मांडलिक।

मडलेसर, मडलेस्वर–स० पु० [स० मडल+ईश्वर] १ एक मडल का शासक या अधिपति। (डिं को)
२ वारह राज्यो का स्वामी, अधिपति ।
३ त्यागी साधुओं मे कई साधु मडलियो का सर्वोपरि साधु, वडा महत, मठाधीश ।
४ महादेव का एक नामातर।
रू० भे०—मडळाधीस ।

मडव—देखो 'मडप' (रू भे)
उ०—वनि वनि विकसइ वेउल खेउ लगाडइ चींति। दीठा द्राखह मडव मह वधारइ प्रीति।—जयसेखर सूरि

मडवी—देखो 'माडवी' (रू भे)
उ०—वणी चत्र धाए रूंचे पतिव्रत्ता। मिया मडवी उरमिळा सत्यव्रत्ता।—सू प्र

मडवो–स० पु०—१ एक प्रकार का कदन्न।
रू० भे०—मडओ, मडुओ।
२ देखो 'मडप' (अल्पा, रू भे)
उ०—ऊचो मो मडवो रोपायो मेरे वावल, रेसम तणी ए वधाय, मो ल्यो भावज घर आपणू, मैं तो जावूंगी पियाजी रै देस।
—लो गी
३ देखो 'माडो' (रू भे)

मडांण–स० पु० [स० मडनम्] १ मडित करने की क्रिया या भाव।
२ किसी आयोजन विशेष के प्रारम्भ में की जाने वाली व्यवस्था, प्रबंध।
ज्यू—विवाह रा मडाण, राज तिलक रा मडाण।
३ रचना, बनावट।
उ०—१ जैमल जैसावत नू परगनो थो। पछै जैमल रै चाकरै वेढ कीवी। कटक काछी भागो। पछै मु जैमल कोट फेर सवरायो। सहर रो मडाण निपट मखरो छै, वडो वाजार गुजरात री तरै' कंहलवा रो छायो छै।—नैणसी
उ०—२ मूठी जेतलो जमारो नरा ग्रहै काय काठी मूठी, पुण्य किया गाढो मूठी सावतो प्रमाण। मोटो धणी याद करो मूठी वाता लागो मती मूठी धूळ तणो थारी देह रो मडाण।
—ओपो आढ़ो
४ आडवर।
उ०—ऊपर सू इसो मडाण माड राखियो हो कै कई वात री ओछ की दीखती ही नी।—इक्केवाळो
५ मजधज, सजावट।
उ०—जी हो वदीखाना मोकलया लाला, कीधा वहु मडांण। जी हो नगरी नी सोभा करी लाला, वाजे विविध निसाण।—जयवाणी
६ तैयारी।
उ०—हैजमाण आरो सूराण ठोड ठोड हाथा, नीसांण वजाण सिंधु कायरा नरम। धुवाण आतसां पूर ठाणाण लपटै धुआं, फटकां मडाण केण ऊपरै कुरम।—पहाड़खा आढो
७ चिह्न, निशान।
८ किसी घटना या वात की भावी गति विधि के लक्षण, आसार।
ज्यू—महामारी रा मडाण, मेह रा मडाण।
उ०—जिण समै महामारी रे मडांण नरां रो नास देखि कोईक कच्चा मत्र रा देणहार आहव रा अमेघ सामतर सूचिया घोडै चढण री हूस धारि दारासाह हाथी रूप तखत हू हेठो उतरियो।
—व भा
रू० भे०—मड।

मडाई–स० स्त्री० [राज० मडण] १ मडने की क्रिया या भाव।
२ मडने का व्यवसाय।
३ मडने का पारिश्रमिक।
रू० भे०—मढाई।

मडाडणो, मडाडवो—देखो 'मडाणो मडावो' (रू भे)
उ०—मासण हगत समापै सोव्रन, सारी रोर मिटै हिक साथ। मेवाडो जा हाथ मडाडै, हेटै किणी न मांडै हाथ।—सुरजी आढो
मडाडणहार, हारो (हारी), मडाडणियो—वि०।
मडाडिओडो, मडाडियोडो, मडाडघोडो—भू० का० कृ०।
मडाडीजणो, मडाडीजवो—कर्म वा०।

मडाडियोडो—देखो 'मडायोडो' (रू भे)
(स्त्री० मडाडियोडी)

मडाणो, मडावो–क्रि० स० ['मडणो' क्रिया का प्रे० रू०] १ होने की स्थिति में लाना।

२ ठनवाना, पक्का करवाना, निश्चित करवाना।

३ कटिबद्ध करवाना, तत्पर, उद्यत या उतारू होने के लिये प्रेरित करना।

४ स्थिर कराना, रुपवाना, जमवाना।

५ अटल या अडिग करवाना, दृढ होने या डटने के लिये प्रेरित करना।

६ जुड़वाना, लगवाना।

७ स्थापित करवाना, कायम करवाना।

उ०—१ तरै गढ री ठौड देखतो फिरै छै। पछै जैसलमेर था कोस आथवण नू मीहाण रा भाखर छै, तठै गढ मडायो, सु वाभण ईसो वरस १४० रो हुवो थो।—नैणसी

उ०—२ मडारी ताराचद नारणोत मे देहरा मडाया. देहरो पारसनाथजी रो नै देहरो स्री ठाकुरजी रो नै देहरो स्री मा'देवजी रो।
—मारवाड री ख्यात

८ आरम्भ करवाना, शुरू करवाना।

९ किसी दुकान, सस्था या कार्य को नियत समय पर सार्वजनिक दृष्टि से चालू करवाना, खुलवाना।

१० चित्राकित करवाना, चित्रित करवाना।

११ लिखवाना, दर्ज करवाना।

उ०—१ भाटिया री पीढी चारण रतनू गोकळै इण भांत मडाई।
—नैणसी

उ०—२ खाता मडाय अगूठा रा निसाण दिरावण री वात तो अळगी वो किणी आसामी नै मूडा सू हकरावतो ई नी हो।
—फुलवाडी

१२ अकित करवाना, चिन्हित करवाना।

१३ निर्माण करवाना, वनवाना।

१४ किसी यन्त्र के पुर्जों को यथा स्थान लगवाकर कार्य करने योग्य वनवाना।

उ०—और गढ मे चोकेळाव मे वेरो भाखर मे सुरगा सु खोदाय करायो नै ऊपर अरठ मडायो नै दाय कोठार वाग मे सेमान रा कराया।—मारवाड री ख्यात

१५ उपयोग की दृष्टि से किसी वस्तु का किसी के सहारे लगवाना, सटवाना, सलग्न करवाना, सहारा वनवाना, आधार वनवाना।

१६ ग्रहण करने या लेने के लिये या गिरते हुए को झेलने के के लिए पात्र, वस्तु या हाथ रखवाना, पसराना, फैलवाना।

१७ तनवाना।

१८ घोड़ा, ऊट आदि सवारियो पर चारजामा कसवाना, वधवाना।

उ०—तद एक दिन रिणमलजी घोडै ऊपर जीण साज-वाज मडायो अर घोडै ऊपर असवार हुवा।
—रिणमल राठौड री वारता

१९ सृजन करवाना, सृष्टि करवाना।

२० रचना करवाना, रचवाना।

२१ मनाने के लिये प्रेरित करना।

२२ सुसज्जित करवाना, सजवाना, सवराना।

२३ आच्छादित करवाना, ढकवाना।

२४ तैयार करवाना, प्रस्तुत करवाना।

२५ छितरवाना, विखराना।

२६ प्रवन्ध या व्यवस्था करवाना।

२७ व्यक्त करवाना।

२८ सम्वन्ध जुड़वाना, मेल करवाना।

२९ सधान करवाना।

३० रत्न आदि कोई वस्तु किसी दूसरी वस्तु मे विठवाना, जमवाना, जडवाना।

३१ ढोल आदि वाद्यो के मुख पर चमडा चढवाना।

३२ अभिमन्त्रित, गडा या तावीज पर धातु-पत्तर चढवाना, आवेष्ठित करवाना, मढित करवाना।

उ०—तथा मरनै भूत होवै तरै प्रेत रो जग्र मादळिया मे तथा चौकी मे मडाइजजो।—वी स टी

३३ तस्वीर, चित्र आदि को सुरक्षार्थ, शीशा लगी किसी चोखट मे विठवाना, स्थिर करवाना।

३४ शृगार करवाना, सुसज्जित करवाना।

३५ कुछ करवाना।

मडाणहार, हारो (हारी), मडाणियो—वि०।

मडायोडो—भू० का० कृ०।

मडाईजणो, मडाईजवो—कर्म वा०।

मडाडणो, मडाडवो, मडावणो, मडाववो, मढ़ाडणो, मढाडवो, मढाणो, मढावो, मढावणो, मढाववो, मढाणो, मढावो—रू० भे०।

मडायोडो—भू० का० कृ०—१ होने की स्थिति मे लाया हुआ २ ठनवाया हुआ, पक्का व निश्चित करवाया हुआ ३ कटिवद्ध करवाया हुआ, तत्पर, ऊद्यत या उतारू होने के लिये प्रेरित किया हुआ ४ स्थिर कराया हुआ, रुपवाया हुवा, जमवाया हुआ ५ अटल या अडिग करवाया हुआ, दृढ होने या डटने के लिए प्रेरित किया हुआ ६ जुड़वाया हुआ, लगवाया हुआ. ७ स्थापित व कायम करवाया हुआ ८ आरम्भ या शुरू करवाया हुआ ९ नियत समय पर सार्वजनिक दृष्टि से चालू करवाया हुवा, खुलवाया हुआ (दुकान, सस्था, आदि) १० चित्राकित या चित्रित करवाया हुआ ११ लिखवाया या दर्ज करवाया हुआ १२ अकित करवाया हुआ, चिन्हित करवाया हुआ १३ वनवाया हुआ, निर्माण करवाया हुआ १४ उपकरणो या पुर्जों को सुव्यवस्थित लगवाकर कार्य करने योग्य वनवाया हुआ (यन्त्र) १५ उपयोग की दृष्टि से किसी के सहारे लगवाया हुआ, सलग्न करवाया हुआ, सहारा या आधार वनवाया हुआ १६ ग्रहण करवाया हुआ,

ऊपर से गिरते हुए को सभालने के लिये रखवाया हुआ, पसराया हुआ, फैलाया हुआ (हाथ, पल्ला, पात्र) १७ तनवाया हुआ १८ चारजामा कसवाया हुआ (घोडा, ऊट, सवारी) १९ सृजन या सृष्टि करवाया हुआ २० रचना करवाया हुआ, रचवाया हुआ २१ मनाने के लिये प्रेरित किया हुआ २२ सुसज्जित करवाया हुआ, सजवाया हुआ, सवराया हुआ. २३ आच्छादित करवाया हुआ, ढकवाया हुआ २४ तैयार करवाया हुआ, प्रस्तुत करवाया हुआ २५ छितरवाया हुआ, विखरवाया हुआ २६ प्रबन्ध या व्यवस्था करवाया हुआ २७ व्यक्त करवाया हुआ २८ सम्बन्ध जुडवाया हुआ, मेल करवोया हुआ २९ सधान करवाया हुआ ३० किसी दूसरी वस्तु मे बिठवाया हुआ, जमवाया हुआ, जडवाया हुआ (रत्नादि) ३१ मुख पर चमडा चढवाया हुआ (वाद्य) ३२ धातु-पत्र चढवाया हुआ, आवेष्ठित करवाया हुआ, मडित करवाया हुआ ३३ किसी चौखट मे बिठवाया हुआ, स्थिर करवाया हुआ ३४ शृगार करवाया हुआ, सुसज्जित करवाया हुआ ३५ कुछ करवाया हुआ
(स्त्री० मडायोडी)

मडावणौ, मडाववौ—देखो 'मडाणौ, मडावौ' (रू भे)
उ०—१ गुरि वीनविउ अवसरि राउ, सविहु वैठा करउ पसाउ। तुम्हि मडावउ नवउ अखाडउ, नव नव भगि पूत्र रमाडउ।
—सालिभद्र सूरि

उ०—२ पातसाह् मदमद वडौ धरमात्मा हुवौ। श्रौ श्रोखदा री हाट मडावी वैद्य राखिया।—नैणसी
उ०—३ ढोलाजी रै ऊटिया मोलावौ। ढोलाजी रै काठिया मडावौ—लो गी

मडावणहार, हारौ (हारी), मडावणियौ—वि०।
मडाविग्रोडौ, मडावियोडौ, मडाव्योडौ—भू० का० कृ०।
मडावीजणौ, मडावीजवौ—कर्म वा०।

मडावियोडौ—देखो 'मडायोडौ' (रू भे)
(स्त्री० मडावियोडी)

मडावी—देखो 'माडवी' (रू भे)

मडित—वि० [स०] शोभित, विभूपित, सजाया हुआ।
उ०—महिनयर घर प्रति दीप मडित माळ जोत मनोहर। फिर व्योम नाखत्र परखि कमळा सोभ धारत सुदर।—रा रू
२ छाया हुआ, छाजनयुक्त, आच्छादित।
३ जटित, जडा हुआ।

उ०—तन अमित मौल्य मडित रतन, आभूखरण गुण ऊधरै। स्रगार साजि मगै ससत्र, महाराज मडोवरै।—रा रू

मडियोडौ—भू० का० कृ०—१ होने की स्थिति मे आया हुआ, कुछ हुवा हुआ, २ ठना हुआ, पक्का या निश्चित हुवा हुआ ३ कटिबद्ध या तत्पर हुवा हुआ, उद्यत या उतारू हुवा हुआ. ४ उत्पन्न हुवा हुआ अकुरित हुवा हुआ ५ स्थिर हुवा हुआ, रुपा हुआ, जमा हुआ ६ अटल या अडिग हुवा हुआ, दृढ हुवा हुआ, डटा हुआ. ७ जुडा हुआ, लगा हुआ ८ आरम्भ या शुरू हुवा हुआ. ९ स्थापित व कायम हुवा हुआ १० नियत समय पर सार्वजनिक दृष्टि से चालु हुवा हुआ, नियत समय पर खुला हुआ (सस्था या कार्य) ११ उमडा हुआ, उभरा हुआ, मडराया हुआ. १२ चित्राकित व चित्रित हुवा हुआ १३ लिखित, दर्ज हुवा हुआ १४ उपकरणो सहित सुव्यवस्थित होकर कार्य करने की स्थिति में आया हुआ (यत्र) १५ अकित हुवा हुआ, चिन्हित हुवा हुआ १६ बना हुआ, निर्मित हुवा हुआ १७ उपयोग की दृष्टि से किसी के सहारे लगा हुआ, सटा हुआ सलग्न हुवा हुआ, सहारा या आधार बना हुआ १८ ग्रहण करने या ऊपर से गिरते हुए को झेलने के लिये रक्खा हुआ, पसरा हुआ, फैला हुआ (हाथ, पल्ला, पात्र) १९ तना हुआ २० चारजामा कसा हुआ, वधा हुआ (घोडा, ऊट आदि) २१ सृजनित, सृष्टि हुवा हुआ २२ रचित २३ मनाया गया हुआ २४ सजा, सवरा, व सुसज्जित हुवा हुआ २५ आच्छादित हुवा हुआ २६ तैयार, उद्यत व प्रस्तुत हुवा हुआ २७ छितरा हुआ, विखरा हुआ २८ प्रवन्धित, व्यवस्थित हुवा हुआ २९ व्यक्त हुवा हुआ ३० सम्बन्ध जुडा हुआ, मेल हुवा हुआ ३१ सधान हुवा हुआ ३२ जडा हुआ, जमाया हुआ किसी के अन्दर बैठाया हुआ (रत्नादि) ३३ मुख पर चमडा चढा हुआ (वाद्य) ३४ धातु-पत्र चढा हुआ, आवेष्टित, मडित (गडा, तावीज) ३५ चौखट मे स्थिर किया हुआ, वैठाया हुआ ३६ सुसज्जित किया हुआ, सजाया हुआ ३७ शृगार किया हुआ ३८ कुछ किया हुआ ३९ देखो 'माडियोडौ' (रू भे)
(स्त्री० मडियोड़ी)

मडी—स० स्त्री०—१ दशनामी साधु सन्यासियो के रहने का स्थान, मठ।
उ०—१ तीरथ जात समस्त सकळ माघा मिळ सगा, रास तमासा रमै हुळम नाचै हुडदगा। साजी मेळा साग देव राखी चडोळी। मिदर मडी मसाण होळिका फाग हरोळी। भागवत कथा भूतावळी हिरण दरस हीडोरचा। परवीण होय जाणै पुरुस, मालजदा रा मोरचा।—ऊ का
उ०—२ सीत निवारण जीरण कथा, ताकै थेगळ लागी। गिर तरु मडी मसाण चौडै ऐसै रह अनुरागी।
—सुखरामदासजी महाराज

२ वह स्थान जहा थोक माल वेचने की बहुत सी दुकानें हों, व्यापार केन्द्र।
ज्यू—धान री मडी, साग री मडी।
रू० भे०—मढी, मडी, मढी।
अल्पा०—मढुली।

मडुग्रो—देखो 'मडवो' (रू भे)

मडुक, मडूक—स० पु० [स० मड्डुक] (स्त्री० मडुकी) १ एक प्रसिद्ध छोटा जलचर जीव मेंढक, दादुर।

उ०—चतुर पुरुस वातक सखी सखि मिट गई तरस तुरत। हरि हूर रूप नक्षत्र नउ सखि नाठउ तेज नितंतरे। थयउ दुरित जवासक ग्रतरे मुनिवर मडुक हरखत रे। जिहा विजयमान भगवत रे विकसित त्रय भुवन वनत रे।—वि कु

२ एक प्राचीन ऋषि।

३ दोहा नामक छन्द का पाचवा भेद जिसमे १८ गुरु ग्रौर १२ लघु वर्ण सहित ४८ मात्रायें होनी हैं।

४ रुद्रताल के वारह भेदो मे मे एक। (सगीत)

५ एक प्रकार का वाद्य विशेष। (प्राचीन)

६ एक प्रकार का नृत्य।

७ घोडे की एक जाति विशेष या इस जाति का घोडा। (शा हो)

मडूकपरणी—स० स्त्री० [मडूकपर्णी] १ ब्राह्मी वूटी।

२ मजिष्ठा, मजीठ।

मडूकासण मडूकासन—स० पु० यौ० [स० मण्डूकासन] योग के चौरासी ग्रासनो के ग्रर्न्तगत एक ग्रासन जिसमें दोनो पावों को घुटने के स्थान पर मोडकर दोनो पजो का ऊपरी भाग पृथ्वी को स्पर्श कराकर ग्रौर दोनो पावो के ग्रगूठे गुदा के पास ग्रामने सामने लाकर वैठना होता है।

वि० वि०—इस ग्रासन से वैठकर शिर पर प्रथम वाये हाथ की ठेउनी रखने ग्रौर उस पर दाहिने हाथ की ठेउनी रखने से उतान मडूकासन कहलाता है।

मडूकी—स० स्त्री० [स० मण्डूकी] १ मादा मेंढक, मेंडुकी।

२ स्वेच्छाचारिणी स्त्री, छिनाल स्त्री।

मडूर—स० स्त्री० [स० मडूर] लोह कीट जो भस्म वनाकर ग्रोपधियो में उपयोग में लिया जाता है।

मडेरी—स० स्त्री० [स० मडप] १ विशाल भवनों या हवेलियो के तोरण द्वार पर वना वडा छज्जा जिसका उपयोग उत्सव ग्रादि के ग्रवसर पर स्त्रिया वैठकर गीत ग्रादि गाने के लिए करती हैं।

२ मकान की छत पर चारो ग्रोर वनी हुई छोटी दीवार।

रू० भे०—मुडेर।

मडेलो—स० पु० [स० मडप+रा० प्र० लो] वडे से छोटे ग्राकार के क्रम से एक के ऊपर एक रखे हुए वर्तनो का समूह। (ढूढाड)

मडोर, मडोउर, मडोवर[स० मडपपुर] राजस्थान के प्रसिद्ध नगर जोधपुर से उत्तर मे छ मील की दूरी पर वसा हुग्रा एक प्रसिद्ध ग्रति प्राचीन ऐतिहासिक नगर जो मरु-प्रदेश की प्राचीन राजधानी था।

उ०—ग्रठी चीतोड रा ग्रधीस राणा लाखा रा पट्टपकुमार चूडा थी पुत्री रो सवध करण रै काज मडोउर रै नरेस राठोड रणमाल ग्रापरा पोळिपात्र भेजिया।—व भा

मडोवरो—वि० [स० मण्डपपुर+रा० प्र० ग्रो] मडोर नगर का, मडोर नगर सवन्धी।

स० पु०—१ मडोर नगर का निवासी।

२ राठोड वशीय राव चूडा के वशजो के लिए प्रयोग मे लाया जाने वाला शब्द।

उ०—मुहरि माडिजै काजि दिग-विजय मडोवरो, धर धमळ सिरै परिगह धरीसै।—गु रू व

मढ—स० पु० [स० मडप] १ दशनामी साधु सन्यासियो के रहने का स्थान, मठ।

२ चौकी या चवूतरे पर वना हुग्रा छोटे ग्राकार का मदिर जिसमे किसी देव या देवी विशेष की मूर्ति स्थापित की जाती है।

३ देवी का मदिर।

उ०—१ इम्रत खाळ वहे मढ ग्रागळ खाण पळाकण खडी। ए नर ग्रमर जातरी ग्राए, चवर ढुळाडै चडी।—ग्रज्ञात

उ०—२ ग्राई कीजै ऊदरा, मेहाजी मढ माय। किणक चुगां कोठार री, पड्या रहा पडछाय।—हिंगळाजदान कवियो

वि० वि०—इस शब्द का ग्रधिकतर प्रयोग देवी या महादेव के मदिर के लिये ही किया जाता है।

रू० भे०—मड, मढ।

मढ़णो, मढ़वो—देखो 'मडणो, मंडवो' (रू भे)

उ०—१ पण हाडा नै वेम पडग्यो—हो न हो माय भींटियो इज है। वो मढ़ियोडा खालडा माथै जोर सू टूच मारी। ढेमकी फूटगी। —फुलवाडी

उ०—२ म्हारै वीरेजी मढायो चग वाजणो, म्हारो रेगर मढ़ कर लायो'रे रगीलो चग वाजणो।—लो गी

मढ़णहार, हारो (हारी), मढ़णियो—वि०।

मढवाडणो, मढवाडवो, मढ़वाणो, मढ़वावो, मढ़वावणो, मढ़वाववो, मढ़ाडणो, मढ़ाडवो, मढाणो, मढ़ावो, मढावणो, मढाववो —प्रे० रू०।

मढ़िग्रोडो, मढियोडो, मढचोडो—भू० का० कृ०।

मढ़ीजणो, मढीजवो—भाव वा०/कर्म वा०।

मढ़ाडणो, मढ़ाडवो—देखो 'मडाणो, मडावो' (रू भे)

मढ़ाडणहार, हारो (हारी), मढ़ाडणियो—वि०।

मढ़ाडिग्रोडो, मढाडियोडो, मढ़ाडचोडो—भू० का० कृ०।

मढ़ाडीजणो, मढ़ाडीजवो—कर्म वा०।

मढ़ाणो, मढ़ावो—देखो 'मडाणो, मडावो' (रू भे)

उ०—१ म्हारै वीरेजी मढायो चग वाजणो, म्हारो रेगर मढ कर लायो'रे रगीलो चग वाजणो।—लो गी

उ०—२ खीर-खाड रो थनै थाळ परोसू, थारी सोने मे चाच मढाऊ कागा, कद म्हांरो मारूजी घर आवै ।—लो गी

उ०—३ ऊडि उडि म्हारा ऊ सरवरिया रा हंस, सुरंग थारी पाखड़ी । सोने मढाऊ थारी चूच, रूपा की दोइ आखड़ी ।

—मीरा

मढ़ाणहार, हारो (हारी), मढ़ाणियो—वि० ।

मढ़ायोडो—भू० का० कृ० ।

मढ़ाईजणो, मढ़ाईजबो—कर्म वा० ।

मढायोडो—देखो 'मडायोडो' (रू भे)

(स्त्री० मढायोडी)

मढावणो, मढावबो—देखो 'मडाणो, मडावो' (रू भे)

मढावणहार, हारो (हारी), मढावणियो—वि० ।

मढाविश्रोडो, मडावियोडो, मढाव्योडो—भू० का० कृ० ।

मढावीजणो, मढावीजबो—कर्म वा० ।

मढावियोडो—देखो 'मडायोडो' (रू भे)

मढियोडो—देखो 'मडियोडो' (रू भे)

(स्त्री० मढियोडी)

मढी—देखो 'मडी' (रू भे)

उ०—१ जमकि जमकि तत मति पतित काळ ढगत ढग तोही । मोह मढी मे सो रह्या यह अचभा मोही ।—ह पु वा

उ०—२ फलोघी था खबर आई—भाटियां रो साथ पोकरण आयो । गाव नु ढोवो कीयो स्री जी रै साथ बाहर नीसर वेढ की । ऊवै हाटां ताऊ आया, मढी कनै वेढ की । तरै राजाजी रो साथ जीतो, वेढ भाटिया हारी ।—नैणसी

मढूकळो—देखो 'मडको' (अल्पा , रू भे)

मणणो—देखो 'मुणणो, मुणवो' (रू भे)

उ०—मणं कुआरी मेघडी, भलो भलो भरतार । माहरो दुख-सुख माहवा, हीअडो जांणणहार ।—पी ग्रं.

मत, मतर—देखो 'मत्र' (रू भे)

उ०—१ चरचा करता चुगल सू, प्रकृत हुवै परतत । चुगली काना सुणण सू, मैलो हुवै गुर-मत ।—बा दा

उ०—२ पागळा खडै जमदूत फीटा पडै जोखमी ऊवडै नयण जूटी । दिया बरदांन मतर महादेव रा, बभूती धनतर तणी बूटी ।

—मे म

उ०—३ उणनै इण भात हसता देख दोनां रो ई जीव ठाणै आयो । जे वा थोडी ताळ फेर नी हसती तो वानै मवळ खाय हेटै गुडणो ई पडतो । निस्चै आ डोकरी तो की न की मतर सारियोडी है ।—फुलवाडी

उ०—४ आज ई म्हारै समझाया पछै औ ऊमर मे कदै ई अमलांणी रो नाव लेलै तो म्हनै कै'जो । सेठां पूछ्यो—आप कनै अंडो काई मतर है ।—फुलवाडी

उ०—५ जतर मतर लिख के लावै, औसद लावै घसकै री । जो कोई लावै स्याम वैद को तो उठ बोलू हंस के री ।—मीरा

उ०—६ परी उण भांत मूंडो उघाड्या सूती ही । पलकां मूदोडी । रेसमी होठ, तीखो नाक । किणी साधु रा मतर सू गुलाब रो फूल तो इण उणियारा रो रूप धारण नी कर लियो ।—फुलवाडी

उ०—७ डोकरी समझावण लागी—आप चावो तो राजाजी री भावना पलट सको । अठै बैठाई कोई मतर फूको तो वै काले री काले महाराणी नै तेडवा सारू बीस घोडा रो रथ जुतायनै भेज दै ।

—फुलवाडी

उ०—८ पछै वारा स्वारथ माथै थूकती कह्यो—बापडा हीण पुन्या जादू मतरा सू ई वातो सारणी चावै ।—फुलवाडी

मतरकार—देखो 'मत्रकार' (रू भे)

मतरजतर—देखो 'जतर-मतर' (रू भे)

मतरणा—देखो 'मत्रणा' (रू भे)

मतरततर—देखो 'मत्रतत्र' (रू भे)

मतरणो, मतरबो—क्रि० स० [स० मत्रम्] १ मत्र द्वारा सस्कृत करना, पवित्र करना, अभिमत्रित करना ।

२ जादू टोना करना ।

३ वशीभूत करना ।

उ०—पाछा राजी व्हिया राजाजी नै मतरणा तो साव सैल ।

—फुलवाडी

४ झाड-फूंक करना ।

५ फुसलाना, भुलावे मे डालना ।

उ०—म्हनै तो अबार वाळी बात मिसरवरी री लखावै । ए कैण घूड रा राजाजी है । ए तो मिनखा दाई मिनख है । बेटा, थू म्हनै काई मतरै, म्हैं घणी दुनियां देखी ह ।—फुलवाडी

६ किसी के मन मे अभिमान या गर्व उत्पन्न करना, फुलाना ।

उ०—म्हारै जैडी हजार मासिया ई थारी अकल नै नी पूग सकै । थनै जो काम करणो है, वो सब पै'ला सू ई तेवडियोडो है, पछै म्हनै फालतू क्यू मतरै ।—फुलवाडी

मतरणहार, हारो (हारी), मतरणियो—वि० ।

मतरिश्रोडो मतरियोडो, मतरयोडो—भू० का० कृ० ।

मतरीजणो, मतरीजबो—कर्म वा० ।

मत्रणो, मत्रबो—रू० भे० ।

मतरवाद—देखो मत्रवाद' (रू भे)

मतरवादी—देखो 'मत्रवादी' (रू भे)

मतरविद्या—देखो 'मत्रविद्या' (रू भे)

मतरसाधक—देखो 'मत्रसाधक' (रू भे)

मतरसाधन—देखो 'मत्रसाधन' (रू भे)

मतरसिधी—देखो 'मत्रसिद्धि' (रू भे)

मतराई—स० स्त्री० [स० मत्रता] १ अभिमत्रित करने का कार्य ।

२ झाड-फूक करने का कार्य ।
३ जादू टोना करने का कार्य ।
रू० भे०—मत्राई ।
४ देखो 'मित्राई' (रू भे)

मतरियोडो–भू० का० कृ०—मत्र द्वारा सस्कृत किया हुआ, पवित्र किया हुआ अभिमन्त्रित किया हुआ २ जादू-टोना किया हुआ ३ वशीभूत किया हुआ ४ झाड-फूक किया हुआ ५ फुसलाया हुआ, भुलावे मे डाला हुआ ६ किसी के मन मे अभिमान या गर्व उत्पन्न किया हुआ, फुलाया हुआ
(स्त्री० मतरियोडी)

मतरियोडोडोरो–स० पु० यौ० [स० मत्र-सूत्र] सूत या रेशम का वह धागा जो मन्त्रित कर शरीर के किसी अग पर बाधा जाता है, मत्र-सूत्र, गडा । (मि ताती २)

मतरी—देखो 'मत्री' (रू भे)

मतरोळियो–स० पु०—१ बनावटी मित्रता ।
रू० भे०—मितरोळियो ।
२ देखो 'मित्र' (अल्पा, रू भे)

मतव्य–स० पु० [स०] किसी कार्य अथवा बात के सम्बध मे वह विचार जो मन म स्थिर किया गया हो ।
उ०—मतव्य मान गतव्य ग्यान वेदिक विधान घर ध्येय ध्यान ।
—ऊ का

मतु–स० पु०—अपराध, गुनाह ।
उ०—तो भी मतु विहूण जनक रो मित्र मारण मे म्हारो तो मन आघात रो उतकरस न मानै ।—व भा

मत्र–स० पु० [स०] १ देवाभिसाधन गायत्री आदि वदिक वाक्य जिसके द्वारा देवस्तुति तथा यज्ञ आदि क्रिया करने का विधान हो ।
वि० वि०—वैदिक मत्र तीन प्रकार के माने गये थे । छदोबद्ध या पद्य रूप मे रचित मत्र जो उच्च स्वर मे उच्चरित किये जाते थे उन्हें ऋचा' कहते थे । ऐसे ही गद्य रूप के मत्रो को जिनका उच्चारण मद स्वर मे किया जाता था यजु' कहते थे और पद्य रूप में गाए जाने वाले मत्रो को 'साम' कहते थे । निरुक्त मे भी मत्रो के परोक्षकृत', 'प्रत्यक्षकृत' और आध्यात्मिक' तीन भेद बताये गए है ।
२ वेदो का वह भाग जिसमे उक्त प्रकार के मत्रो का सग्रह हो ।
३ कोई ऐसा शब्द या शब्द-समूह जो दैवी शक्ति से युक्त माना जाता हो और जिसका उच्चारण किसी देवता को प्रसन्न करके अपनी कामना पूरी करने के लिए किया जाता हो ।
उ०—तठै नदी ग जळ सू पुद्गळ पवित्र करि कोई सिद्ध रा दीधा मत्र रा जाप पूरवक तप्त तैल रा कटाह मे बडा २ राजा झप लीधी ।—व भा
वि० वि०—ऐसे यत्र एकाक्षरी और विना स्पष्ट अर्थ वाले होते हैं । तत्र शास्त्र मे ऐसे अक्षरो को बीजाक्षर कहते हैं ।
४ गोप्य या रहस्यपूर्ण बात । (मत्रणा, सलाह, परामर्श)
उ०—१ अर अनामय पूछण रो व्याज करि पिता नू वडा भाई रै समेत मारि साह होण रो सकल्प करि दिल्ली माथै आपरी चतुरग चमू चलाई । तिको मत्र उपव्हर भी चार लोका रा चतुर पणा थी चौडे आयो थको पहली ही इमो घाट घडता तीजा साहजादा औरगजेब रै सहायक बणियो ।—व भा
उ०—२ जयमल पत्तं जवाब जद, हजरत तणी हजूर । मत्र करे लिख मेलिया, साभळ हरखं सूर ।—वा दा.
उ०—३ विपत मत्र विपरीत, अधरम आळम ऊघणो । अपजस मोर अनीत, पै'ला घर बाळै पिसण ।—वा दा
उ०—४ ताहरा ईदै चवडै नू कह्यो—आपे मडोवर लेस्या । ताहरा कह्यो—भला ताहरा रजपूत सरव एकठा हुआ । मत्र कियो । ताहरा च्यार-च्यार ठाकुर गाडी माहै वैठा ।—नैणसी
५ चौसठ कलाओ मे से एक । (काम शास्त्र)
६ कोई ऐसी बात या शिक्षा जो किसी प्रकार का उद्देश्य सिद्ध करने के लिए किसी को गुप्त रूप मे बतलाई, समझाई या सिखाई जाय, कार्य सिद्धि या गुर ढग या नीति ।
यौ०—गुरु मत्र ।
मुहा०—गुरू मत्र देणो=गुप्त रीति से अपनी बात किसी को कान मे कहना, सिखावट मे लाना, बहकाना ।
७ विचार ।
उ०—असुचि मत्र दिल्लीस उपायो । वारि पटकि गोपळ विगडायो ।
—व भा
८ जादू ।
९ तान्त्रिक साधना या विद्या ।
रू० भे०—मत, मतर ।
१० देखो 'मत्री' (रू भे)
उ०—महि कनवज महि जग मुकट, आयो मत्र उदार । छक चढियो चढियो छभा, जैचद करण जुहार ।—सू प्र

मत्रकार–स० पु० [स०] मत्र दृष्टा ऋषि ।
रू० भे०—मतरकार ।

मत्रकुसळ–वि० [स० मत्रकुशल] १ परामर्श देने मे कुशल ।

मत्रकृत–स० पु० [स० मत्रकृत] १ वेद रचयिता ।
२ वेदपाठी, मत्रोच्चार करने वाला ।
३ परामर्शदाता, सलाहकार ।
४ दूत ।

मत्रग्य–स० पु० [स० मत्रज्ञ] १ मत्री ।
२ पडित, ब्राह्मण ।
३ गुप्तचर ।
४ वेदज्ञ ।

मत्रजळ-स० पु० [स० मत्रजल] अभिमन्त्रित जल ।

मत्रजाण-स० पु० [स० मत्रज्ञ] दूत । (डि को)

मत्रणा-स० स्त्री० [स०] १ परामर्श । २ सलाह ।

रू० भे०—मतरणा ।

मत्रणी-वि० स्त्री०—१ मत्र सम्बन्धी क्रिया करने वाली, जादू-टोना करने वाली ।

उ०—१ तुही जत्रणी मत्रणी अत्रजांमा, तुही वत्रणी तत्रणी बुद्धि धांमा ।—मे म

उ०—२ नमो मत्रणी तत्रणी मेघमाळा, नमो सकरी सुदरी प्रेम साळा ।—मा वचनिका

मत्रणौ-स० पु० [स० मत्रणा] परामर्श, सलाह, मत्रणा ।

उ०—१ ताहरा महेवै ही किरोडी आयो । ताहरा कांनडदे सरव राजपूत तेडिया । कामेतिया मालेजी नू तेडिया । तेडनै मत्रणो कियो—जु कासु करस्या ।—नैणसी

उ०—२ आलोच्यो आलीच अम्हारो ए अछै । कीज्यै तोह विचार कहो जे तुम अछै । बादल बोले वारू कीयो ए मत्रणौ, पण इक माहरी बात सुणि आलोचणो ।—प च चौ

मत्रणौ, मत्रवौ—देखो 'मतरणौ, मतरवौ' (रू भे)

उ०—तरै महाराज उभरांणे पगे गोतमजी रा पगा गया । प्रणाम करि अरज कीधी—महाराज अग्यान पणै मत्रियो पाणी खवास मोनै पायो —रा व

मत्रणहार, हारो (हारी), मत्रणियो—वि० ।

मत्रिओडो, मत्रियोडो, मत्र्योडो—भू० का० कृ० ।

मत्रीजणो, मत्रीजबो—कर्म वा० ।

मत्र तत्र-स० पु० यो० [स०] १ जादू टोनेका कार्य विशेष ।

२ कुछ विशिष्ट क्रियाओं के साथ जादू टोने के रूप मे किये जाने वाले मत्र विशेष ।

रू० भे०—मतर-ततर ।

मत्रदेव, मत्रदेवता-स० पु० [स०] वह देवता जिसका मत्र मे आह्वाव किया गया हो ।

मत्रपाळ, मत्रपाल-स० पु० [स० मत्रपाल] राजा को मत्रणा देने वाला, सलाहकार ।

उ०—राय रांणा मडलिक आखडलीक सामत महासामत लघु सांमतस्त्रीगरणा वयगरणा वरम्माधिगरणा अमात्य महामात्य सुहासोला उचित बोला दासदीकोला गादीया मसूरीया पुडपुडीया कावडीया दोवारिक तलार मुडउघा मेलहय मत्रपाल तत्रपाल स्रेष्ठि सारथपति जीणइ सभा ।—व स

मत्रपूत-वि० [स०] १ मत्र द्वारा पवित्र किया हुआ ।

स० पु०—२ गरुड । (अ मा, ह ना मा)

मत्रप्रयोग-स० पु० यो० [स०] १ मत्र द्वारा काम लेने का भाव या क्रिया ।

२ मत्र का प्रयोग ।

मत्रबीज-स० पु० [स०] मत्र विशेष का प्रथमाक्षर, मूलमत्र ।

मत्रमुग्ध-वि० [स०] मत्र द्वारा मोहित किया हुआ, वशीभूत किया हुआ ।

मत्रमूरत, मत्रमूरति-स० पु० [स० मत्रमूर्ति] शिव, महादेव । (ना मा)

मत्रमूळ-स० पु० [स० मत्रमूल] इन्द्रजाल, जादू ।

मत्रयोग-स० पु० [स०] १ मत्र का प्रयोग ।

२ मत्र पढने का कार्य ।

३ इन्द्रजाल, जादू ।

मत्रवाद-स० पु० [स०] पुरुष की ७२ कलाओं मे से एक कला विशेष ।

रू० भे०—मतरवाद ।

मत्रवादी-वि० [स०मत्रवादिन्] मत्र का उच्चारण करने वाला, मत्रज्ञ ।

उ०—१ आया मत्रवादी क्रिया गति सू बोलायो अग । सरवथा न छोडू पायो राजा रो सरीर । लाडलो कवार तथा महारांणी प्राण लेहू, धारी मना रवा हुओ प्रधान मत्री वीर ।

—राजसिंह कूपावत रो गीत

उ०—२ वागधर सुजाण चित्रजाण धातुनिस्पत्तिजाण ज्योतिसजाण मत्रवादी यत्रवादी तत्रवादी धातुवादी ।—व स

रू० भे०—मतरवादी

मत्रविद्या-स० स्त्री०—१ मत्र तत्र की विद्या ।

२ मत्र-तत्र शास्त्र ।

रू० भे०—मतरविदिया, मतरविद्या ।

मत्रवी—देखो 'म ी' (रू भे) (डि ना मा)

उ०—१ मत सीखै मत्रवी, राग सीखै रसचारी । सीखै भ्रम कुळ सकळ रीत सीखै छत्रधारी ।—सू प्र

उ०—२ घोडा लाख दोढ री जमीत लीधा रहै । दरियाव माहै जेहाज गारै । तिण रो माल चीजा घणी ही भेळी हुवै । तिण रै सुजाण साह मत्रवी छै ।—कहवाट सरवहिया री वात

उ०—३ मिळि मिळि मोटा मत्रवी, सूर सुभट रजपूत । इण विध आलोचै तिसै, आयो आलम पूत ।—प च चौ

मत्रससकार, मत्रसस्कार-स० पु० [स० मत्रसस्कार] १ मत्र पढकर किया जाने वाला संस्कार ।

२ मत्रग्रहण के पूर्व किया जाने वाला तत्रोक्त सस्कार ।

३ विवाह ।

रू० भे०—मत्रसंसकार ।

मत्रसहिता-स० स्त्री० [स०] वेदो का वह भाग जिसमे मत्रो का सग्रह है ।

मत्रसाधक-स० पु० [स०] तात्रिक साधना करने वाला व्यक्ति ।

रू० भे०—मतरसाधक ।

मत्रसाधन–स० पु० [स०] किसी मत्र को साधने या सिद्ध करने की क्रिया या भाव ।
रू० भे०—मतरसाधन ।
मत्रसिद्ध, मत्रसिध–वि० [स० मत्रसिद्ध] १ जो मत्र द्वारा सिद्ध किया गया हो ।
२ मत्र की साधना कर सिद्ध करने वाला ।
मत्रसिद्धि–स० स्त्री० [स०] मत्रो द्वारा प्राप्त शक्ति, मत्र की सफलता ।
रू० भे०—मतरसिधी ।
मत्रसंसकार—देखो 'मत्रसस्कार' (रू भे)
मत्राई—१ देखो 'मित्राई' (रू भे)
२ देखो मतराई' (रू भे)
मत्रि—देखो मत्री' (रू भे)
उ०—१ राजा जुवराजकुमार राजेस्वर महामंडलेस्वर सामत लघु सामत तलवर तत्रपाल चतुरसीतिक ताडकपति मत्रि महामत्रि । —व स
मत्रित–वि० [स०] मत्रो द्वारा सुसस्कृत अभिमत्रित ।
मत्री–स० पु० [स० मत्रिन्] १ सलाहकार या परामर्श देने वाला व्यक्ति, परामर्श दाता ।
उ०—जिण राजा रै अनेक मत्री वाणी रा जुद्ध मे महाप्रति-भट ।—व भा
२ राजा का वह प्रधान व्यक्ति जिसके परामर्श से राज्य का सचालन होता है, अमात्य ।
उ०—१ कवि पडित गायक कथक मत्री गज भडमल्ल । तौ दरबार जिता तिता जग चावा जेहल्ल ।—बा दा
उ०—२ भडारी अखड नेम आसकरन आगे, राजा दळ राज काज साजा छळ जागे । वरधमान नद इद्र 'अगजीत' का मत्री, सरव सावधान जैसे थांन थान जत्री ।—रा रू
३ राज्य के विभाग विशेष के कार्य का सचालन करने वाला व्यक्ति, (मिनिस्टर) ।
४ सस्था अथवा सगठन विशेष का एक पदाधिकारी जो सम्बधित सस्था अथवा सगठन का प्रमुख कार्य भार वहन करता है, सचिव ।
५ शतरज के खेल में वजीर नाम की गोटी ।
रू० भे०—मतरी, मत्र, मत्रवी, मत्रि, मितरी, मित्री ।
मत्रीपाराथ–स० पु० यौ० [स० पार्थमत्री] श्री कृष्ण । (डिं को)
मत्रीसर, मत्रीस्वर, मत्रेस्वर–स० पु० [स० मत्रीश्वर] राज्य कार्य सचालकों मे प्रधान, महामत्री, महामात्य ।
उ०—१ तठै एकदा समाजोग रै विखै राजा भोज रा घर रा नै राजा मान रा घर रा नाळेर आया । तिण साथै मत्रीसर आया छै ।—रीसाळ री बात
उ०—२ हस्ति सहसदळ कमळ, पुरुस प्रमाण सिंहासण, कटी प्रमाण पादपीठ पाछइ थई आइतु, डावइ मत्रीस्वर जिमणइ पुरोहित ।—व स
उ०—३ सामत सूरा सुहड घण, हय गय सख्य न पार । सेनांनी साहसिक भट मत्रेस्वर सुविचार ।—मा का प्र
मत्रोळियौ—देखो 'मित्र' (अल्पा रू भे)
उ०—केई मित केई मत्रोळिया, ताहो मित अनेक । विपत पड्यां बाटले, सो सोग्रा मे एक ।—
२ देखो 'मतरोळियौ' (रू भे)
मथ–स० पु० [स० मथ] १ मथन, विलोडन ।
उ०—जथा के कडक्कै छटा मेघ जोडा । मचै सिंघु के मथ पब्बै घमोडा ।—व भा
२ मलना अथवा रगडना क्रिया का भाव ।
३ दही बिलोने का दड, मथानी ।
४ एक प्रकार का मृग ।
५ एक प्रकार का शरबत विशेष जो कई पदार्थो के समिश्रण से बनाया जाता है ।
६ बाल रोगो के अन्तर्गत माना जाने वाला एक प्रकार का ज्वर ।
७ देखो 'महत' (रू भे)
उ०—चेला लावै मागकर, बैठा खावै मथ । रांम भजन का नांव है, पेट भरण का पंथ ।—अज्ञात
मथअचळ–स० पु० यौ० [स० मथ अचल] मदराचल पर्वत का नामान्तर ।
मथगिरि–स० पु० यौ० [स० मथ गिरि] मदराचल पर्वत का नाम ।
मथज–स० पु० [स० मथजम्] मक्खन, नवनीत । (डिं को)
मथण—देखो 'मथन' (रू भे)
मथणी–देखो 'मथणी' (रू भे)
मथणौ, मथवौ—देखो 'मथणौ, मथवौ' (रू भे)
उ०—ध्यान के मथांन सु, मिथ्यात मोह मथ मथ ।—ध व ग्र
मथणहार, हारौ (हारी), मथणियौ—वि० ।
मथिओडो, मथियोडो, मथ्योडो—भू० का० कृ० ।
मथीजणौ, मथीजवौ—कर्म वा० ।
मथन–स० पु० [स० मथन] १ मथने की क्रिया या भाव, विलोडन ।
२ मथन करने का दण्ड, रई ।
३ देखो 'मथन' (रू भे)
रू० भे०—मथण ।
मथनी—देखो 'मथणी' (रू भे)
मथपरवत, मथपरवत—देखो 'मथपरवत' (रू भे)
मथरा–क्रि० वि० [स० मथर] धीमा, मद । (अ मा)
मथरा–स० स्त्री० [स०] १ कैकई की प्रमुख दासी जिसने उसे बहका कर राम को १४ वर्ष का बनवास दिलवा दिया था ।
रू० भे०—मथरा ।
अल्पा०—मथरी ।
२ देखो 'मथुरा (रू भे)

मथांण–वि०—१ मथने का, मथन सम्बन्धी ।
उ०—घणा रोद्र घेरै, फिरै चक्र फेरो । मथांणो मटल्लै, मही जाण हल्लै ।—रा रू
२ देखो 'मथाणी' (रू भे)
उ०—समद प्रळय विहार स्नीरग, वेद मुख वाणी । वळ चवद रतन उधार हित वप, कठण पिठ धारी मद्र कछप । उदध कर मथांण अणघट, प्रगट कज-पाणी ।—र. ज. प्र
३ देखो 'मथणी' (मह , रू भे)
उ०—देव दाणव भेळा करि स्नप को नेम्रो करि । मंदराचळ परवत को मथांण करि समुद्र माह थी काढि लीधी ।—वेलि टी
४ देखो 'मथण' (रू भे)
५ देखो 'मथाण' (रू भे.)
रू० भे०—मथान ।

मथांणी–स० स्त्री०—१ 'रघुवर जस प्रकास' के अनुसार दो तगण का वर्ण छद विशेष ।
२ देखो 'मथाणी' (रू. भे)
३ देखो 'मथणी' (रू भे)

मथान—देखो 'मथणी' (मह , रू भे)
उ०—१ ग्यांन के मथांन सू मिथ्यान मोह मथ मथ ।—ध. व ग्र
उ०—२ दसमी भावना एम भावउ लोक स्वरूप मथान रे । जिम विलवणउ विलवता थकां सरीर नउ सस्थान रे ।—स कु.
२ देखो 'मथाणी' (मह , रू भे)

मद–वि० [स०] १ वेवकूफ, मूर्ख, मूढ । (ग्र. मा)
२ कृपण, कजूस ।
उ०—खत्रियां गुर ग्राखै राव खीची, मूठी भीची वहै मदा । नह रहै नांम सभाया नीची, सीची कीरत रहै सदा ।
—गोरधनसिंह खीची
३ तनिक, थोडा । (ग्र मा)
४ कान्तिहीन, फीका, निष्प्रभ ।
उ०—सरद घटा जिम ऊजळी, दिस दिस ग्रटा विलद । नगर थटा रुख निरखिया, स्वरग छटा है मद ।—बा दा
५ कमजोर, क्षीण ।
उ०—रचियो जिण जग राजसू, मेछा कर वळ मद । पत कनोज दळ पागळो, जग जाहर जैचद ।—वा दा
६ जिसकी चाल, गति, प्रवाह, वेग कम हो, धीमा, मथर ।
उ०—तिण उपवनि झोलै नदि तीरा । सीतळ मद सुगध समीरा ।
—सू प्र.
७ हल्का, धीमा ।
उ०—१ बांकी चितवन'रु मद मुसकान ।—मीरा
उ०—२ ग्रा छोटी मूफाड़ किसडीक सोहे, ग्रो मद हास किण नू न मोहै ।—र हमीर
८ खल, दुष्ट ।
९ प्रभावहीन ।
ज्यूं—मदविख ।
स० पु० [देशज] १ घोडी की गर्दन का एक रोग विशेष ।
(शा हो)
[स० मद] २ चार प्रकार के हाथियो मे वह हाथी जिसके वक्ष ग्रोर मध्य भाग की वली ढीली, पेट लम्बा, चमडा मोटा, गर्दन ग्रोर काख मोटी ग्रोर पूछ की चवरी मोटी हो ।
(हिं को)
उ०—ठण भद्र मदां ग्रगां वम ठाथा । छटा फैन हालै किना सेल छावा ।—व भा
३ शनिश्चर । (ग्र मा)
४ यमराज, यम ।
५ देखो 'मद' (रू भे)
उ०—१ नमो जग जीवण नंद, महाविख नाग उतारण मद ।
—ह र
उ०—२ उत्तर ग्राजस उत्तरउ, पाळउ पडइ रवद । का वामदर सेयियइ, कइ तरुणो कइ मद ।—ढो मा
प्रत्यय [फा०] किसी गुण या पदार्थ युक्त या सम्पन्न ।
ज्यू—ग्रकलमद, दौलतमद ।
६ देखो 'मदौ' (मह , रू भे)
रू० भे०—मदउ ।

मदउ—१ देखो 'मद' (रू भे)
२ देखो 'मदौ' (रू भे)

मदक–वि० [स०] मूख, मूढ ।
२ देखो 'मदौ' (रू भे)

मदकमाऊ–वि० यौ०—कम उपार्जन करने वाला ।

मदकोरा–स० पु०—१ घोडे की जाति विशेष ।

मदग–वि० [स०] १ मदगति से चलने वाला, धीमी चाल चलने वाला ।
स० पु०—२ भोजक जाति के व्यक्तियो के अनुसार शाक द्वीप के चार वर्णों मे से एक वर्ण ।

मदगति–स० स्त्री० [स०] १ ग्रहो की गति की वह ग्रवस्था जब वे ग्रपनी कक्षा मे घूमते हुए सूर्य से दूर चले जाते है । (ज्योतिष)
३ धीमी चाल ।

मदजुर, मदज्वर–स० पु० [स० मदज्वर] प्राय निरन्तर बना रहने वाला या चढ़ने वाला वह ज्वर जिसमे शरीर का तापमान सामान्य से बहुत ग्रधिक न हो ।

मदता—देखो मदौ' ।

मदफळ–स० पु० [सं० मदफल] ग्रहो की गति का एक भेद ।
(फलित ज्योतिष)

मदभाग, मदभागी–वि० पु० [स० मदभाग्य] (स्त्री० मंदभागण) हतभाग्य, मदभाग्य ।
उ०—१ ग्रोर घणाई ग्रावसी, चिड़ी कमेड़ी काग । हसा फेर न ग्रावसी, सुण सरवर मदभाग ।—ग्रज्ञात

उ०—२ क्रिपा करो म्हारै भवन पधारो नहिं यो जिवड़ो जासी। मैं मदभागण काहे को मरजी, पिया मोसू रहत उदासी।—मीरा

मदमति, मदमती—देखो 'मतिमद' (रू भे)

उ०—१ छद ह्वै सुछद भो भणद को कह्यो। मदमती 'ऊमरो' विफद में फयो।—ऊ का

उ०—२ मन वछे कित **मदमति**, केथ काळिका क्रीति।
—मा वचनिका

मदर—सं० पु० [स०] १ मदराचल पर्वत।

उ०—देख सखी होळी रमै, फोजा मे धव एक। सागर **मदर** सारखो डोहै भनड अनेक।—वी स

२ इद्र। (डिं को)

३ वरुण। (ह ना मा)

४ पुराणानुसार कुश द्वीप का एक पर्वत।

५ स्वर्ग।

६ देखो 'मदिर' (रू भे)

उ०—१ उतग चग भीत चीत मड घड **मदर**। कठी सपेत जांणि सेत, धार धम्मळा गिर।—गु रू. व

उ०—२ घणा उछाह र्यौं सराह नाह कूरमा घरै। मने कमध चीत जास प्रीत वास **मदरै**—रा रू

७ देखो 'मदरा' (रू भे)

८ देखो 'मदार'।

रू० भे०—मद्र।

मदरगर, मदरगिर, मदरगिरि, मदरगिरी—स० पु० [स० मदरगिरि] मदराचल पर्वत का नामान्तर।

रू० भे०—मदागिर।

मदरा—स० पु०—प्रत्येक चरण मे एक भगण का छद विशेष।

मदराचळ—स० पु० [स० मदराचल] मदराचल पर्वत जिससे देवताओं ने समुद्र को मथा था।

उ०—नमो कमढाधर रूप सुकाय। नमो **मदराचळ** पीठ भ्रमाय।
—ह र

रू० भे०—मद्राचळ, मद्रावळ।

मदरियो—देखो 'मदिर' (अल्पा, रू भे)

उ०—कर केसरिया खडया कीजै **मदरिए** साजन मेलीजै। 'सूर' हरा अरदास सुणीजै, देस पधारो दरसण दीजै।
—द्वारकादास दधवाड़ियो

मदरो—वि० [स० मद] (स्त्री० मदरी) मद, धीमा।

उ०—कोयळ वैरण **मदरि-मदरि** बोल, ज्यू चित आवै भवरजी नै गोरडी।—लो गी

मदळ—देखो 'मादळ' (रू. भे)

मदवाड, मदवाडि, मदवाडो—देखो 'मांदगी' (रू भे)

उ०—१ नर मांदो निरखिनै, वैद कफ वात बतावै। जो पूछै जोतसी, लार ग्रह केई लगावै। भोपो कहै भूत छै, लोभ बीजासणि लीधो। जत्र मत्र रा जाण, कहै कोई कामण कीधो। **मदवाड़** एक नव नव मता, मूळ न जाणै को मरम। कहै साधु असुभ पूरब करम, धरि सुखकारी इक धरम।—ध व. ग्र

उ०—२ मरगी नइ **मदवाडि**, गया गुजरात थी नीसरि। गयउ सोग सताप घणौ, हरख हुयउ घरि घरि।—स कु

मदहास—स० पु० [स० मदहास] मुस्कान।

उ०—**मदहास** मुळकै त्रिधा, द्र गी विछोया पै वज्ज ऐ।
—मा वचनिका

मदा—स० स्त्री० [स०] १ उत्तर फाल्गुनी, उत्तराषाढा, उत्तर भाद्रपद और रोहिणी नक्षत्र मे पडने वाली सक्रान्ति।

[स० मदाकिनी] २ गगा नदी।

मदाग्राखर—स० पु० [स० मद+अक्षर] मद भाग्य, मद प्रारब्ध।

उ० कमळादै आणद करो, सुख सिंधु हरसाल। **मदाग्राखर** मेट दे वदै सेवक 'बाळ'।—वालाबख्स बारहठ

मदाइण—देखो 'मदाकिनी' (रू भे)

उ०—काटळ आवध मूझकर, मन **मदाइण** श्रन्न। आवध राखै ऊजळा, मैला ज्या रा मन्न।—बा दा

मदाक—वि० [स० मद] तुच्छ, तनिक। (अ मा)

मदाकण, मदाकणी, मदाकनी, मदाकिण, मदाकिणी—'देखो' मदाकिनी (रू भे) (अ मा, डिं को, ह ना मा)

उ०—१ भूला मखतूल जमाजळ भाग, पग पग होत उद्योत प्रयाग, **मदाकण** माण नदा वह मद, बहै सुरसत्ति प्रवाह बलद।—मे म

उ०—२ उदर भरै पीधो उदक, **मदाकणी** मझार। तिका उदर त्रिभुवण तणो, भरण लिया भुजभार।—बा दा

उ०—३ नारायण पग नीर, मानू किन **मदाकनी**। सापड जेथ सरीर, हर को नारायण हुए।—बा दा

उ०—४ जिण पय **मदाकिण** जनम, अघनासणी अपार, जिण भजता अघजाण री, विसमय किसू विचार—र ज प्र

मदाकिनी—स० स्त्री० [स०] १ पुराणानुसार गगा की वह धारा जो स्वर्ग मे बहती है और जो एक अयुत योजन लम्बी है।

२ गगा का नामान्तर।

३ आकाश गगा।

४ चित्रकूट के पास बहने वाली एक नदी का नाम।

५ सात प्रकार की सक्रान्तियो मे एक

६ प्रत्येक चरण मे क्रमश दो दो नगण ।।। और दो दो रगण ऽ।ऽ का एक वर्णिक छन्द विशेष। (पिं प्र)

७ पुलस्त्यपुत्र विश्रवस् नामक ऋषि की दो पत्नियों में से एक। भगवान शंकर के प्रसाद से इसे कुबेर नामक पुत्र उत्पन्न हुआ।

रू० भे०—मदाइण, मदाकण, मदाकणी, मदाकनी, मदाकिण, मदाकिणी, मदाकिणी, मदागनी, मदागिणी, मदायण, मंदायणी, मदायिणी।

मदाक्रांता—स० स्त्री० [स०] प्रत्येक चरण में क्रमश मगण, भगण, नगण दो तगण और अंत मे दो गुरु वाला सत्रह अक्षरों का वर्ण-वृत्त विशेष।

मदागनी—१ देखो, 'मदाग्नि' (रू भे)

२ देखो 'मदाकिनी' (रू भे)

मदागिणी—देखो 'मदाकिनी' (रू भे)

उ०—सागर वस उद्धरण कारणि, आण मथा सीस मदागिणी, तै भागीरथ तणी सहजै 'गाजीसाह' हुम्रो' कमधज्जै।—गु रु व

मदागिर—देखो 'मदरगिरि' (रू भे)

मदाग्नि—सं० स्त्री [स०] पाचन शक्ति मद हो जाने का एक रोग विशेष।

रू० भे०—मदागनी।

मदायण, मदायणी, मदायिणी—देखो 'मदाकिनी' (रू भे)

उ०—१ मदायण तो माग, पग देता पुरखां तणा। भूतळ जागै भाग, अघ भागै खिण एक मे।—वा दा

उ०—२ कावेरी जळ स्त्रीकळस, घसियो सनमुख धार। ऐरावत किर आवियो, मदायिणी मझार।—वां दा

मदार—स० पु० [स० मदार] १ इद्र के नन्दन कानन के पाच वृक्षो मे से एक। (डि को, ना मा)

उ०—१ पत्रां विहगेस वाळी मदार हैंमक पव्वं, घोम काळकूट मेघधारा गगधार। धूपदान क्रीत रांम माहवाह मोटा धरणी, तीनू खाता तूझ तणी मोखरी दातार।—र रू

उ०—२ कलपव्रक्ष सतांन, परिजाती हरि चदण, तर मदार दुवार, आंण ऊगा सुख अप्पण।—रा. रू

२ आक, मदार।

उ०—चूका वयण मदार चाढ़तां, सुर नर साहो मान असत्त। भोळै भाव आवियो भूरो, भोळा सभू तणी भत्त।—गु रू व

३ धतूरा।

४ मदराचल पर्वत।

रू० भे०—मदर।

५ एक असुर, जो हिरण्य कशिपु का ज्येष्ठ पुत्र था।

६ धौम्य ऋषि का पुत्र।

७ डिंगल का एक छद विशेष जो उमग छद और सिंहचाल के योग से रचा जाता है। पहिले दो चरण उमग के और फिर एक सिंह-चाल का।

वि० वि०—इस छद में उमंग छद के चरणो के साथ उमंग के और सिंहचाल के साथ सिंहचाल के तुक मिलाये जाते हैं।

मंदारक—स० पु० [स०] मदार वृक्ष।

मदाळासा—देखो 'मदाळसा' (रू भे.)

मदासय—स० पु० [स० मद+आशय] अश्लील या अनुचित अर्थ का भाव।

मदिर—स० पु० [स० मदिरम्] १ वह भवन जिसमे पूजा या उपासना की दृष्टि से देव-मूर्ति स्थापित की गई हो।

२ भवन, मकान।

उ०—१ प्रभू भजता प्राणिया, कीजै ढील न काय। भर बरथा अथ काढजै मदिर जळते माय।—ह र

उ०—२ गरक घरां जळ गूदडा, ले तन सू लपटाय। अरथ वरथ भर काढ़जै, मदिर जळतां माय—वां दा

३ महल, प्रासाद।

उ०—मिळिया सेज आपणइ मदिर, वे घण जाण बिहु घण नेह। पहिलउ ई हूतउ पारवती, सहिस गुणउ वाधियउ सनेह।

—महादेव पारवती री वेलि

[स० मद्र] ४ वरुण। (डि को)

रू० भे०—मदर मदिरि, मिंदर, मिंदिर।

अल्पा०—मदरडौ, मदरियौ, मदिरडौ, मंदिरडउ, मदिरयौ, मिंद-रडौ, मिंदरियौ।

मदिरडउ—देखो 'मंदिर' (अल्पा रू भे)

उ०—प्रिय सुखिइ सुर मदिरडउ लही।—सालिसूरि

मदिरि—देखो 'मदिर' (रू. भे)

उ०—द्रूपदी रहइ ते मति आली। ग्या विराट अप मदिरि चाली।

—सालिसूरि

मदी—स० स्त्री० [स० मद+रा प्र ई] १ मद होने की क्रिया, अव-स्था या भाव।

२ व्यापार केन्द्र पर पदार्थों के भाव या दर उतर जाने की स्थिति या अवस्था।

उ०—वांणियौ कह्यौ— मदी तेजी री रूण थारा सू काई छांनी म्हैं तौ आप कैवौला ज्यू करू ला।—फुलवाडी

३ बाजार की वह स्थिति जिसमे वस्तुओ का क्रय विक्रय कम होता हो, क्रय विक्रय की मद स्थिति।

रू० भे०—मदता, मदीवाड।

मह०—मदीवाडौ।

मंदील—स० स्त्री० [अ०] जरदोजी का बना हुआ एक प्रकार का वस्त्र विशेष जिसे सिरबदी बनाने के लिए उपयोग मे लिया जाता है।

—व स

रू० भे०—मदील।

मदीवाड—स० स्त्री०—१ देखो 'मदी'।

२ देखो 'मादगी' (रू भे)

मदीवाडो—१ देखो 'मदी' ।
२ देखो मादगी (मह , रू. भे)

मदुर–स० स्त्री० [स० मदुरा] अश्वशाला, घुडशाला ।
उ०—यों वुदीस अवनीक में गजराज चलाया, मिळि हयपाळक मदुर ना तिम हयन तुकाया—व भा

मदोच्च–स० पु० [स० मद+उच्च] ग्रहों की एक प्रकार की गति जिसमें राशि आदि का सशोधन करते हैं।

मदोदर–वि० [स०मद+उदर] (स्त्री० मदोदरी) १ छोटे या पतले पेट वाला । (२) मयदानव का एक नामान्तर ।
उ०—मडोवर सहर री आदि थापना मदोदर दईतरी कीवी छै ।
—नैणसी
२ देखो 'मदोदरी' (रू भे)

मंदोदरि, मदोवरी, मदोवर, मदोवरी–स० स्त्री० [स मंदोदरी] मय दानव की कन्या जो रावण की पट्टमहिषी थी ।
उ०—१ हाले वाग दिसा कुळ हाणी, जाजुळ वात मदोवरि जाणी ।—र रू
उ०—२ मदोवरी वायक रावण सु ।—र रू
उ०—३ लका सुख छोडि व्रत लीधो, करणी कर करम दूरे कीधो । मदोदरी सील सदा सुगति ।—जयवाणी
उ०—४ राणी कह्यो मदोवरी थे वुरा कमाया ।
—केसोदास गाडण
रू० भे०—मदोदर ।

मदो–वि० [स० मद+रा० प्र० ओ] (स्त्री० मंदी) १ सुस्त, शिथिल, आलस्य युक्त ।
उ०—हुए हिंदु वळहीण, घरा पण खीण सुरां भ्रम । मिटे वेद मरजाद, भेद गुण आद पडे भ्रम । ठांम ठाम पुर ग्राम, कांम, हरिधांम अकाजा । पडित मदा पडे करें जिदा आवाजां । जग लोक वाण सीखे जवन, पढे ब्रहम मुख पारसी । हित देव सेव आधा हुवा, काई लग्गा आरसी ।—रा रू
२ मद गति से कार्य करने वाला ।
३ रहित, हीन ।
उ०—नरपति लीधो नागपुर, अरिगंजे 'अमसाह' । गह मदे 'इंदो' गयो, दिल्ली हुदे राह ।—रा रू.
४ अस्वस्थ, रुग्ण ।
५ जो स्वभाव से उग्र न हो ।
६ बाजार की वह स्थिति जिसमें क्रय विक्रय का कार्य मद हो ।
रू० भे०—'मदउ' ।

मद्र—१ हाथियो की एक जाति विशेष ।
२ देखो 'मदर' (रू भे)
उ०—समद प्रळय विहार स्रीरंग, वेद मुख वाणी । वळ चवद रतन उधार हित वप कठण पिठ धारी मद्र कछप उदध कर मथाण अण घट, प्रगट कज पाणी ।—र ज प्र.

मद्राचळ—देखो 'मदराचळ' (रू भे)

मधरो—देखो 'मदरो' (रू भे)

मन—देखो 'मन' (रू भे)
उ०—देखत ही दिल परचीया, मिथ्या अपरचा मन । जनहरिया बिन देखिया, ताहि न परचै तंन ।—स्री हरिरामदासजी महाराज

मंनव—देखो 'मानव (रू भे)

ममता—देखो 'ममता' (रू भे)

ममद—देखो 'मैंमद' (रू भे)
उ०—मैया के माथा नै ममद सोहै, रखडी री अजब सुहाग ।
—लो गी.

मयलो—'देखो 'मायलो' (रू भे)
उ०—१८३२ री साल मयलो वाग नैभ्फल रो करायो नै वाग री कमठो मैलायत कवळ—चोकी वगलो आददे सारा पासवांनजी हा हुवो, तिणरा रू ५०००००) पाच लाख अदाज लागा ।—नैणसी
(स्त्री० मयली)

मयगळ, मयगल—देखो 'मदकळ' (रू भे)
उ०—बिहु पखा सनह वह नीपना सुभटे जरहि जीणसाळा लीधी । मयगळ गुडिया सुडादडि सुहवडि घातिया ।—रा सा स

मरुधन्वा—देखो 'मरुधन्वा' (रू भे)
उ०—व्रुत 'मरुधन्वा' लीजै दवाय । जब राज वीज निरवीज जाय ।
—क का

मवर—देखो 'मोर'

मस—देखो 'मास' (रू भे)
उ०—१ जह गिरवर तह मोरिया, जह सायर तह हस । जह वाघो तह भारमलि जह दारू तह मस ।—आसो वारहठ
उ०—२ पुनह राम्रे सव पसु अखे, सरेह केम वन मस ।
—वात वाढेल कल्यांणसिंघ नगराजोत री
वि०—मांसल, पुष्ट ।
उ०—मारू-लक दुइ अगुळा, वर नितम्ब उर मस । मल्हपइ मांझ सहेलिया, मांन-सरोवर हस ।—ढो मा

मसचर, मसचार—देखो 'मांसाचर' (रू भे)
उ०—१ झुक परी वरे रेवा काळ कूके झपु, चूके डाक नेरखा गहूके मसचार । कठ रुके कायरा जवांणा लुके सुके कई । धुके प्रांण मुके के भभक्के स्रोणधार ।—दुरगादत्त वारहठ
उ०—२ पाडि खळ सवळ दळ लियां रण पोढियो, मसचरां मनोरथ लिय मेळा । 'भीम' गजसाहि' निवाहि जुग जुग भेळपण 'भीम' 'गजसाहि' गा भुगति भेळा ।
—भीमसिंघ हाडा अर गजसिंह कछवाह रो गीत

मंसब—देखो 'मनसब' (रू भे)

मनसबदार—देखो 'मनसबदार' (रू भे)

उ०—कै गोळा कै गोळिया, कै तरवारा धार। मरै गई कबरा महीं, वीवा मसबदार।—वां दा.

मसा–स० स्त्री० [स० मशा] १ इच्छा, कामना, लालसा।

उ०—१ राजा खुद हळफळियो नीचै उतरै पाखती वैठ गयो। पूछ्यो—रागी काई बात व्ही? थू श्रो भेस कीकर धारण करियो। म्हनै तुरत बता, थारी काई मसा है। म्हैं तुरत पूरण करू।—फुलवाडी

उ०—२ श्रा भोळी डोकरी तो श्रागळिया रा पेरवा माथै नचावै। श्रर जठा लग राजाजी री मसा पूरी नी व्है तठा लग नाचणो ई पडैला।—फुलवाडी

२ मर्जी, स्वेच्छा।

उ०—१ जे किणी घरगोडिया राजपूत रै सागै उण रो ब्याव व्हियो व्हैतो तो नी वा इत्ता दिन मसा परवाण लापतै रै' पाती श्रर नीं इण भांत लापतै रह्यां पछै पाछी गाव में पग धर सकती।

—फुलवाडी

उ०—२ थां राजावा रै काईं, ज्यू मसा व्है त्यू हूडी फिराय दो।

—फुलवाडी

उ०—३ म्हानै धापनै मिठाइया खावण दे श्रर थू थारी मसा मुजब रिपिया ले लेजै।—फुलवाडी

३ श्रभिप्राय, श्राशय, मतलब।

४ इरादा, सकल्प।

५ मनोरथ।

६ मन, चित्त, बुद्धि।

उ०—श्रापरी सांनी मिळ जावै तो म्हे खुद ई उणनै परसादी चखाय दां। म्हांनै तो श्रापरी मसा रो कायदो राखणो पडै। श्रर या गैली रांड समझै के म्हे उण सू डरां।—फुलवाडी

रू० भे०—मछा, मनछा, मनछा, मनसा, मसछा।

श्रल्पा०—मनसूडी।

मसहार, मसाहार, मसाहारी—१ देखो 'मासाहार' (रू भे)

२ देखो 'मासाहारी' (रू भे)

उ०—त्रिपत्तां तियार, हुए मसहार। कमाळी कपाळ, रचै रुड-माळ।—गु रू. ब.

मंसूख, मसूख–वि० [श्र० मसूख] रद्द, खारिज।

(श्राज्ञा या निश्चय)

मसूखा–स– स्त्री० [श्र०] मसूख या रद्द कर दिए जाने की क्रिया या भाव।

मसूबो, मसोबो–सं० पु० [श्र० मसूब] १ विचार, इरादा।

२ सकल्प।

३ श्रभिलाषा, मनोरथ।

४ योजना।

उ०—विणियाणी तो श्रा कैयनै निरात सू श्रापरी हवेली में गी परी श्रर चोर वाडा मे चापळनै वैठग्यो। श्राज उण रा मन में खुसी रो पार नी हो। वो वैठो वैठो मन मे मसूबा बावण लागो कै घरै जाताई श्रेक पक्की हवेली चुणाऊला।—फुलवाडी

५ कल्पना, भावना (विचार)।

उ०—१ दोनू जणा श्राखै दिन कुदडका मारता। नी तावडो गिणता श्रर नी भूख। रेत रा धोरा वानै सोना रा टीवा ज्यू लखावता। सांचैली दुनियां नै छोड वै सपनां श्रर मसोबां री दुनियां मे श्रस्ट-पोर सैर करता।—फुलवाडी

उ०—२ गूजरी रै कसूवल श्रोरणा रा रग मे श्राख्यां रा डोळा घोळतो नाई सोचण लागो जे नाई री जात में जलम नी लेय तो इण राज रो राजा व्हैतो तो' ' । पण कुत्तां रो भुसणो सुणनै उण रै सगळै मसोबा रो पोखाळो व्हैगो।—फुलवाडी

रू० भे०—मनसूबो, मनसोबो मनसोभो।

मह—१ देखो 'माय' (रू भे)

उ०—किया रवाना दोलती, वीसळनद विगोय। क्रपण हिया मंह कागसी, नहि फेरे नर लोय।—वा दा

२ देखो 'मैं' (रू भे)

महगो—देखो 'मूंगो' (रू भे)

उ०—सो जे सारा भेळा होय चालस्यो जणा श्रागै महगा रहिस्या रिजक श्राधो मिळसै।—गोपाळदास गौड री वारता

महण—देखो 'महण' रू भे)

महदड़ली—देखो 'मैंदी' (रू भे)

उ०—बनडा महदडली दिन च्यार हाथ रचाल्यो। बनड़ा काज-ळिया दिन च्यार नैण घुळाल्यो।—लो गी

महदी—देखो 'मैंदी' (रू भे)

उ०—माई म्हानै सुपना मे परणी गुपाळ। राती पीरी चूनर पहरी, महदी पान रसाळ।—मीरा

महमाइ, महमाई—देखो 'महामाया' (रू भे)

उ०—महमाइ चढै प्रगट मयद, गह करै गमै मेछी मयद। नीकडो काट भाटा निराजि, पीजरै दळा मुगळा श्रपाजि।

—मा वचनिका

महल—देखो 'महल' (रू भे)

उ०—वैठी राण्या रै माय, महला रै मांय। भक्ति छोडो जी साळिगराम की।—मीरां

महि, मही—देखो 'मांय' (रू भे.)

उ०—१ राजा दास कुसळ हू रहिया। बैरी सकळ सुखळ महि बहिया।—सू. प्र.

उ०—२ मानवियां मन वन मही, लागी लालच लाय। 'बांका' इण सतोस विण, बीजें केण बुझाय।—बा दा

म–स० पु० [स० म] १ समय, काल। २ विष, जहर। ३ विष्णु। ४ ब्रह्मा, ५ चन्द्रमा, ६ यम, ७ शिव, ८ राम, ९ हाथी, गज। १० मस्तक। ११ शरीर। १२ युद्ध। १३ समूह (एका.) १४ मगण गण SSS (पिंगल)
१५ मध्यम स्वर (सगीत)
[स० म] १६ जल १७ सुख, कुशलता।
सर्व० [स० ग्रह] १ सर्वनाम उत्तम पुरुष मे कर्त्ता का रूप, मैं।
उ०—दैवइ लिखिउं ते नवि टलइ', वाडव रहिउ विचारि। धीर धरी घर उद्दिलु, हईडा हवइ म हारि।—मा का प्र
२ 'मैं' शब्द का वह रूप जो उसे प्रथमा और षष्ठी के अतिरिक्त और विभक्तियों के लगने पर प्राप्त होता है।
उ०—१ रे! तैं म नैं रावजी खनैं ओळभो दरायो, पण हमैं वगडी वैंगी छाडज्यो।'—द दा
उ०—२ सो वसतसेना सुणी कहियो वित्त निकाम। मानो गुण दासी म नैं, धनदामी घण धाम।—व भा
[अव्य०] निषेध सूचक शब्द—मा, मत, नही।
उ०—१ धीरा धीरा ठाकुरां, गुम्मर किया म जाह। महगा देसी झूपडा, जै घरि होसी नाह।—हा झा
उ०—२ जग दातार जनारदन, गिरधारी गुण गेह। अजपत रोटी बांटणां, मोटी-नीद म देह।—वां दा
उ०—३ अडज्ज, स्वेदज्ज जरा उद्भिज्ज। माया सब तूझ म भूलव मुज्झ।—ह र
रू० भे०—म।

मइ–सर्व०—१ मैं।
उ०—१ गौड चोड गाजणउ कनूजउ, मरहठ मइ वसि कीधा। लाड देस नइ सिंधु सवालख, गूजर सोरठ लीधा। मइ लीधा मालव चदेरी, माडव सारगपुर। रिणथभोर चीडोत्र भलागढ, वली लीउ नागुर।—कां दे प्र
उ०—२ मइ जाणिउ तूं माधवु, पुरिस मन नी आस। गाडर आंणीउ ऊन नइ, खाधु तिणि कपास।—मा कां प्र
२ मुझ।
उ०—१ विरह-विटवन विधि घणी, सो मइ सही न जाय। मुझ मरवांनु सोहिलु वाडव म मारे, माय।—मा कां प्र
उ०—२ जिण दीहे पावस झरइ, वावीहउ कुरळाइ। तिणि दिन कउ दुख वल्लहा, मइ क्यउ सहणउ जाइ।—ढो मा
३ मेरा।
उ०—मइ घरि रहिवउं।—उ र
क्रि० वि०—अदर, भीतर, मे।
४ देखो 'मई' (रू. भे)
रू० भे०—मइ।

मइगळ—१ देखो 'मदकळ' (रू भे)
उ०—१ वाग्ह लक्ख त छइ वड पइदळ। मदिमत्ता चवरासी मइगळ।
उ०—२ स्यघासण चढी सामळी जी, वइट्ठो सारग प्रांण। मइगळ नई मद पाई ज्यइ जी, दीजई खमोट्ठाण।—रुकमणी मंगळ

मइद—देखो 'मयद' (रू भे)
उ०—१ सूतो लख ससार सव, 'पातल' सूं पुळ-जाय। मरण दसा मे मइद रै, जीव न नैंडो जाय।—ऊ का
उ०—२ आंखैं रोस कसाइयां, किय मूछा विय-चद। चाढै भूंहा वकिया, कि (र) कणणियो मइद।—गु रू व
उ०— ३ हाडा रा वस नू वीजा मैं वधतो वताइ लाज रूप लगर रा खैंचिया पैला रा प्रतिमल्ल मदालागा मइद माथाणी मुकुंद सिंघ,मोहणसिंघ, कन्हीराम, जूझारसिंघ च्यारि ही भाई पैलानूं जयसतय जणाइ खागां रा खेल्ह मैं खड विहड होइ विमाणा वैठा नारिया रै साथ गळवाह कीधां।—वं भा

मइ—१ देखो मइ' (रू भे)
उ०—१ जीव संताप्या मइ घणा, पर आसायें वीध। वलि रात्रि भोजन करघा काज अकारज कीघ।—वि कु
उ०—२ मइ घणी! थार मिलहीय आस। मइला राजा धारउ कीसउ हो वेसास।—वी दे
२ देखो मय' (रू. भे)
उ०—दुख दावानल उपसम्यो, वूठउ अमिय मइ मेह। मुझ आगणि सुरतरू फल्यउ, भाग भव भ्रमण सदेह।—स कु
३ देखो 'महीन' (रू भे)

मइण—देखो 'मदन' (रू. भे)
उ०—१ बत्तीस लखण सुभ आचरण, वाळपणै हूओ तरुण। कमधज्ज कुअर कमधज्ज हर, राज हस मूरति मइण।—गु रू व
उ०—२ मन मोहन कामनी, वळै सुरगा मेह। रग लुब्ध राचा रह्या, जिम मइण नै मेह।—ढो मा

मइत–स० पु० [स० मृतक] शव। (मुसलमान)
रू० भे०—मयत।

मइथळ—देखो 'मैथिळ' (रू. भे)
मइथळी—देखो 'मैथिळी' (रू भे) (अ मा)
मइदौ—देखो 'मैदो' (रू भे)
उ०—झगरीआ लाडू, माठा लाडू, सिंहकेसरिया लाडू, पाटण तणा कदोई, घ्रतस्य् मइदौ मोई वणी सेव पातली।—व स

मइमत, मइमत—देखो 'मैमत' (रू भे)
उ०—पातिसाह पर भव्विय आव उतारि अभगा। कइ गिडाविगोमट्ट ताडि झाडुमें तुरगा। कइ समीर मइमत मोमि लोटइ धाइ भरिया। कइ हइहइइ सुरग अग असमरि ऊतरिया।
—रा. ज सी

मइयळ—देखो 'महीतळ' (रू भे.)
उ०—जस गल्ह रह्मावण जे महल, मइयळ भजै मेहवर 'गजमल्ल', 'मल्ल' 'गर्ग' कुळी रिण दुझल्ल राठोड़ हर ।—गु रू. ब.

मइयो—देखो 'मईयो' (रू भे)

मइलौ–सर्व०—१ मेरा, मुझको।
उ०—'मइला' राजा थारउ कीसउ हो वेसास ।—वी दे
२ देखो 'मैलो' (रू भे)
उ०—मुख मइलइ चितउ उज्जळइ । दुई पगि उतरी कह्यो हो सदेस ।—वी दे
३ देखो 'मायलो' (रू भे) (स्त्री० मइली)

मई–वि०—विनीत, नम्र स्वभाव वाला ।
स० पु०—अंग्रेजी वर्ष का पाचवा महीना ।
क्रि० वि०—मे ।
उ०—भलो भलो सारो जग भाखै, कहो न लाई वात कई । मागज घरा वधावरण मोटा, मोटी पाघ ससार मई ।—द दा
१ देखो 'मय' (रू भे)
उ०—१ सब ही कथा मालम सखी, लघराज कही बुधराज लखी । लख ओज तरणा गुरण अग लई, मुरिणया सब छद प्रसाद मई।
—पा प्र
उ०—२ सिय सोहै अग वाम हे, हे म्हारी सखी ! हे सहेली ! सिय सोहै अग वाम हे । जगदवा महिमा मई हे ।—गी रां
२ देखो 'महीन' (रू भे)
३ देखो 'मही' (रू भे)
रू० भे०—मइ ।

मईथुन—देखो 'मैथुन' (रू. भे)

मईन—देखो 'महीन' (रू भे.)

मईनौ—देखो 'महीनौ' (रू भे)
उ०—भवारा मे पटकियोड़ी मूडकिया बारै मईना ताई अरडावती रै'वे ।—फुलवाड़ी

मईप—देखो 'महीप' (रू भे)

मईस—देखो 'महीस' (रू भे)

मईमन—देखो 'महिम्न' (रू. भे)

मईयौ–स० पु० [स० मय] मादा ऊठो के झुण्ड मे रखा जाने वाला नर ऊठ ।
रू० भे०—मइयो, मयो, महियो, मायो ।

मउग–स० पु०—१ एक प्रकार का वाद्य विशेष ।
उ०—भभा मउग मद्दल कडव झल्लरि दुडुक्क कसाला । काहुल तिलिमा वसो सखो पणवो य वारसमो ।—व स
२ देखो 'मूग' (रू भे)

मउ—देखो 'महुओ' (रू भे.)

उ०—आव फळै नीचो लुळै, मउ फळै पत खोय । जिण री रम जे नर पियै, पत्त कठा सू होय ।—अज्ञात

मउड—देखो 'मोड' (रू भे)
उ०—छोगो सिरपेच मउड जोडै ढहिए रमै नइ वहमै होडै ।
—घ व ग्र

मउडौ—१ देखो 'मोडो' (रू भे)
उ०—चद सूरज वीर वादण आव्या, निरति नहीं निस दीस । अगावती तिण मउडी आवी, गुरणी कीधी रीस ।—स कु
(स्त्री० मउडी)
२ देखो 'महुओ' (अल्पा , रू भे)

मउज—१ देखो 'मौज' ।
उ०—साहिबा काइ मउज करो नइ, साहिबा काइ मउज करउ । मउज करउ कांइ अग सुहाता सुगि सुणि नै विगताली वाता ।—वि कु
२ देखो 'मूज' (रू भे)
उ०—काममीरी बिन्है विराजइ काने, माधो विचइ रहियइ सिंदूर । चढती मउज रमण पिण चढती, सेहरा बिजइ ऊगतऊ सूर —महादेव पारवती री वेलि

मउठ—देखो 'मौठ' (रू भे)
उ०—सगलइ हुवउ सुगाल, अन्न चिहु दिसि थी आयउ । आप आपणइ व्यापारी सको अधिकाइ लायउ । बाजरी चउळा मउठ के के धान सुहगा कीधा । सुहगा मुहगा मरब, लोक ते आणी लीवा ।—स कु

मउड, मउडि—देखो मोड' (रू भे)
उ०—१ घर उपइ धरणी, गगन उपइ तरणि, वृक्ष उपइ पल्लवि, तावूल उपइ चूरण, वस्त्र उपइ रगि मउड उपइ मस्तक सगि ।
—व स
उ० २ समरद्द मउडि मउडिइ फुटइ, हारि हार तुटइं, हियउ हियउ दलइं ।—व स

मउनावणौ, मउनाववौ—देखो 'मनाणो', 'मनावो' (रू भे)
उ०—मतसील प्रभावइ रे ! दुख नइ मउनावइ रे, बहु आणद वधावइ, दिन रयणी गरवइ रे ।—प च. चो
मउनावणहार, हारो, (हारी), मउनावणियो—वि० ।
मउनाविओडो मउनावियोडो, मउनाव्योडो—भू० का० कृ० ।
मउनावीजणो, मउनावीजवो—कर्म वा०

मउनावियोडौ—देखो 'मनायोडो' (रू भे)
(स्त्री० मउनावियोडी)

मउर—१ देखो, 'मोड' (रू भे)
२ देखो 'मोर' (रू भे.)
उ०—१ अगि अभोखण अच्छियउ, तन सोवत सगळाइ । माह अबा मउर जिम, कर लगइ कुमळाइ ।—ढो० मा

उ०—२ रूपड़ा नउ उठीगणउ, हरिद्रा तणउ रग पाणी तणउ तरग दासी तणउ हेज, आबा तणउ मउर कलाल नउ लेखउ। —व स

मउरणो, मउरबौ—देखो 'मौरणौ' 'मौरबौ' (रू भे)

उ०—१ ढाढी एक मंदेसडउ ढोलइ लगि लइ जाइ। जोवन चापउ मउरियउ कळी न चुट्टइ आइ।—ढो मा

उ०—२ मउरिया अख मसत वसत माणवा, चचळ बाण घनख सिर चाढ।—महादेव पारवती री वेलि

मउरणहार, हारौ (हारी), मउरणियौ—वि०।

मउरिओडौ, मउरियोडौ, मउरयोडौ—भू० का० कृ०।

मउरीजणौ, मउरीजबौ—भाव वा०।

मउरियोडौ—देखो 'मौरियोडौ' (रू भे)

(स्त्री० मउरियोडी)

मउलसिरी—देखो 'वोलसरी' (रू भे)

मउळी—देखो 'मौळी' (रू भे)

मउळू, मउळू, मउलू—देखो 'मौळी' (रू भे)

उ०—रोस चढी कुण ही न मनावीय, रांधती सीधती खारू मउलू करइ।—व स

(स्त्री० मउळी)

मऊ—स० पु०—१ मालव प्रदेशान्तर्गत एक प्रसिद्ध स्थान व शहर का नाम।

स० स्त्री०—२ प्रजा, रय्यत।

उ०—१ गाव घणा लागै, चवदै चेढीरा। पैहली तो घणा गाव वसता। हिमैं गाव १४० वसै छै। १०० पारकर रा घणिया रै। गाव ४० सोढाराम री मऊ वसै।—नैणसी

उ०—२ मऊ रा टोळा रा टोळा सहर कानी भाग्या जा रह्या हा। सबराइ बाळ विखरघोडा अर पेट चेंठोडा। च्यारू मेर एक ईज आवाज ही—भूख! भूख! भूख!—रातवासो

रू० भे०—मऊवाडो।

मऊडो—देखो 'महुओ' (अल्पा, रू भे)

उ०—मऊडो लेहरा खाय, कोयलडी हद बोली।—लो गी

मऊजी—देखो 'माजी' (रू भे)

मऊवाडो—देखो 'मऊ' (मह., रू भे)

मएडो—स० पु०—एक प्रकार का अशुभ रग का घोडा। (शा हो)

मओतो—देखो 'मसोतो' (रू भे)

मकद—सं० पु०—एक प्रकार का कद।

उ०—मसम भराडी भमरीया चोलहिरा चाडाल। भू-कोहली भूवतरी कद मकद विसाल।—मा का प्र

मकड़—१ देखो 'मत्कुण' (रू भे)

२ देखो 'मरकट' (रू भे)

मकडाण—१ देखो 'मकराणो' (मह, रू भे)

२ देखो 'मकराणो' (मह, रू भे)

मकडी—स० स्त्री०—१ एक प्रकार का आठ पैरो वाला प्रसिद्ध कीडा जो अपने मुह से लसीला पदार्थ निकालते हुए जाल बुनता है और उसमे फसे हुए कीट, पतंगो, मक्खियो आदि का रक्त चूसता है। (डि को)

उ०—१ मकडी का सिर माखी तोडघा, जबुक सिंघ जगाया। कुजर मगर दत तळ चूरघा, हिरणी चीता खाया।—ह पु वा

उ०—२ *मत जकडी भव माग, मकडी जाळा जेम मन। हर दृढ़ कर पकडी हिया, लकडी हुरी पळ लाग।*—र ज प्र

पर्याय०—१ जाळकार। २ जालिक। ३ मरकट। ४ लूता। ५ लालास्राव।

२ एक प्रकार का रोग जो नीचे के होठ पर होता है। इससे होठ मे सूजन आ जाती है और उसमे पीप पड जाती है।

उ०—*झाड-बोरां जैडी छोटी आख्या लिलाड माथै सा'तेक आडा सळ, मूडा माथै खत री ठौड कांनी कांनी लुगिया ऊगोडी, निचला होठ माथै मकडी री भगवो चाटो* —फुलवाडी

३ एक प्रकार का घास विशेष। (शेखावाटी)

४ हाथी की पीठ पर 'तँहरू' को बांधने के कारण हाथी की पीठ के निचले भाग पर पूछ से कुछ ऊपर रस्सी की कसावट के कारण पडने वाला जख्म या उससे होने वाला दाग।

५ माया। (सत साहित्य)

रू० भे०—मकरी, मक्री, माकडी।

मकड़ूव—स० स्त्री०—वक्र, टेढ़ापन, ऐंठ।

उ०—ओघ भाला धसण थोग थानक अरी। वनी नव जोवनी रतनगर वावरी। फौज पतिया मोहर दिया ठरडै परी। कैलपुर घुद मकड़ूव सूघी करी।—महादान महडू

मकडो—स० पु० [स० मर्कट] १ मर्कट के रग से मिलते जुलते रग का घोडा।

उ०—कुमेत नीला समदा मकडा सेली समद भूवर बोर सोने री कागडा गगाजळ अनेक रग का घोडा।—रा सा स

२ घोडा।

३ एक प्रकार का घास विशेष जिसके बीज की रोटी बनती है और उपवास के अवसर पर फलाहार के रूप में खाई जाती है।

रू० भे०—मकडो।

मह०—मकड।

मकतब—स० पु० [अ० मक्तब] वह स्थान जहां पढना लिखना सिखाया जाता है, पाठशाला, विद्यागृह।

मकतूल—वि० [अ० मकतूल] १ जो कत्ल कर दिया गया हो।

२ प्रेमी।

३ देखो 'मखतूळ' (रू. भे)

मकदूर–स० पु० [अ० मकदूर] सामर्थ्य, शक्ति ।

उ०—'भारथ' हम से जुध करै, यें ता क्या मकदूर । पाव घरी में हम करैं, उसके गढ़ चकचूर ।—ला रा

रू० भे०—मक्दूर, मगदूर, मग्दूर ।

मकदोख–स० पु०—हीरे का एक दोष । इसके अनुसार हीरे के मध्य मे मल होता है । यह अशुभ माना जाता है ।

मकनउ, मकनौ—देखो 'मुकनौ' (रू भे)

उ०—मकना मेकदत घटा अमळा, किळळत घूमंत रिणा विकळा ।
—मा वचनिका

मकबरौ–स० पु० [अ० मकबर] वह इमारत जिसमे किसी का शव दफनाया गया हो, रोजा, मज़ार ।

मकबल–स० पु०—एक प्रकार का वस्त्र विशेष ।

उ०—जरजरी, मलबारी, लाछरी, अधोतरी, अभरी, गगापारी, मोती चूरि, हमरू, मसरू, रत्नकवल, छाइल, मकबल, अगल साउला । —व. स.

मकबूजा–वि० [अ० मकबूज] जिसपर अधिकार किया गया हो, अधिकृत ।

मकरंद–स०पु० [स०] १ पुष्परस जिसे मधुमक्खियां और भौंरे चूसते हैं ।

उ०—१ स्रीपत चरण सरोज रौ, गगाजळ मकरंद । अलियळ ज्यू कर पान अव, अधिकांवण आणंद ।—बा दा

उ०—२ अढ़ार भार वनस्पती मकरद फूलादि रा रस माणती थकी वहै छै ।—राजान राउत री बात

२ फूल का केसर, पराग कण ।

३ कुंद पुष्प ।

४ कोयल ।

५ मधु मक्षिका ।

६ भ्रमर, भौंरा । (अ मा)

उ०—मुख की उपमा कहा कहू, सरस सुधा को कंद । देखत रत लज्जित भई, मूल रह्यौ मकरद ।—कुवरसी सांखला री वारता

७ प्रत्येक चरण मे २१ मात्रा का मात्रिक छद विशेष । (ल पि)

८ डिंगल गीत 'वेलिया साणोर का भेद विशेष जिसके प्रथम द्वाले मे ५० लघु ७ गुरु कुल ६४ मात्रायें और अन्य द्वालो मे ५० लघु ६ गुरु कुल ६२ मात्रायें होती है । (पिं प्र)

वि०—श्याम, कृष्ण, काला ।

उ०—१ मालव देसावर घणी राजा भीम नरिंद । तास घणी धू माळवी सुदर सिर मकरद—ढो. मा

उ०—२ चपळ नैत्र सारग, रेखा भ्रू हा मकरद । दीपक नासा दर्पत, सरद रैणी मुख इंद्रह ।—गु रू व

रू० भे०—मकंद ।

मकर–सं० पु० [सं० मकर.] १ बारह राशियों मे से दसवीं राशि जिसकी आकृति मकर (जतु) के समान मानी गई है ।

२ घडियाल या मगर नामक प्रसिद्ध जल जतु जो कामदेव की ध्वजा का चिह्न और गगा तथा जलदेव वरुण का वाहन माना गया है ।

उ०—सुर असुर गिर कर स्रवण स्रीवर । तळप परहर असुर चढ तुर । चकरधर मग सघर सचर । सिथळ पर घर जाण ईसर । छाड नगधर घरण दूछर । मकर थर सर चकर मोख'र । फद हर पग मथर कर फिर । वळ सुकर गह सुकर रघुवर, तार सिधुर ताम ।—र ज प्र

३ माघ मास ।

४ एक प्रकार का लग्न विशेष । (ज्योतिष)

५ नौ निधियो मे से एक निधि । (अ मा, ह ना मा)

६ मछली । (अ मा, ह. नां मा)

७ एक प्राचीन पर्वत का नाम ।

८ रण-स्थल पर सैनिक व्यूह रचना का एक प्रकार । (प्राचीन)

९ मस्ती, उन्माद ।

उ०—मदमसत ऊछावै रेत करता मकर । आदेसां तेथ घर दसत आवै ।—तिलोकजी बारहठ

१० मौज ।

११ ऐश्वर्य ।

१२ गर्व, अभिमान ।

उ०—हरर डोफर डमग अतर भरतौ डकर, अत मकर वयण कहतौ अभूखा । पाट रखवाळ 'जैमाळ' हर पचालै, दाख सग वाट रिडमाल दूजा ।—पहाडखा आढौ

१३ छप्पय छद का ४१ वा भेद जिसमे ३० गुरु ९२ लघु से १२२ वर्ण या १५२ मात्राए होती हैं अथवा ३२ गुरु ८४ लघु से ११६ वर्ण या १४८ मात्राए होती हैं ।

१४ दर्पण ।

उ०—१ मुख मकर मे रैण का 'हरिया' दरसै नांहि । उदय भया जब सूर का मुख परकासै मांहि ।—स्री हरिरामदासजी महाराज

उ०—२ अै तौ इण भात खडिया आवै छै । पण पना नै तौ ढील न सुहावै छै । आ तौ उकळाइ थकी खिणेक झरोखे खिणेक ढोलियै आवै छै । इण रा आमा सामा फिरवा सू मकर चानणी कौ सो रूप दरसावै छै ।—पनां

[फा० मक्र०] १५ छल, कपट, फरेब ।

कहा०—रोटी खाणी सक्कर सू दुनिया ठगणी मकर सूं स्वार्थी होना ।

१६ नखरा, अदा ।

१७ देखो 'मक्कर' (रू. भे)

अव्यय रा०—निषेध सूचक शब्द 'मत कर, ठहर ।

रू० भे०—मक्र ।

मकरकुडळ–स० पु० [स० मकर कुण्डल] मकर (जतु) की आकृति का कान का आभूषण विशेष ।

मकरकेत, मकरकेतन—स० पु० [स० मकरकेतनम्] कामदेव ।
रू० भे०—मक्रकेत, मक्रकेत ।

मकर केतु—स० पु० [स० मकरकेतु] १ कामदेव ।
२ श्रीकृष्ण के पुत्र प्रद्युम्न का नामान्तर ।

मकरधज, मकरधुज, मकरध्वज—सं० पु० [स० मकरध्वज] १ कामदेव । (ग्र मा, ह ना मा)
उ०—१ मकरध्वज वाहरिण चढ्यौ अहिमकर, उत्तरवाउ वाए अउर । कमळ वाळि विरहिणी वदन किय, अवपाळि सजोगि उर ।—वेलि
उ०—२ समर मनोज अनग पंचसर मनपथ मदन मकरध्वज मार ।—वेलि
२ रस सिंदूर (ग्रोपधि)
३ मछली के गर्भ से उत्पन्न हनुमानजी का एक पुत्र जो अहि-रावण का द्वारपाल था । (पौराणिक)
४ धृतराष्ट्र का एक पुत्र जो भीम द्वारा मारा गया ।

मकरपत, मकरपति, मकरपती—स० पु० [सं० मकरपति] १ कामदेव ।
२ ग्राह मगरराज ।

मकरमोयो—स० पु०—कम घी के साथ आटे को भूनकर वनाया हुआ चूरमा ।

मकररासि—स० पु० [स० मकरराशि] बारह राशियो मे दसवीं राशि जो मकर के आकार की होती है । (ना मा)
उ०—१ रचि मीन रासि सनि करक राह । अरू मकररासि केतह अथाह ।—सू प्र
उ०—२ रवि मकररासि निवास राजत उत्तर मगहर अनुमरै ।—रा रू

मकरव्यूह—स० पु० [स० मकर+व्यूह] मकर के आकार की की जाने वाली एक प्रकार की सैनिक व्यूह रचना विशेष । (प्राचीन)

मकरसकरांत, मकरसकरांयत, मकरसक्रांत, मकरसक्रांति, मकरसक्रांयत—स० स्त्री० यौ०—मकर राशि में सूर्य का प्रवेश होने का दिन तथा इस दिन पर मनाया जाने वाला पर्व ।
उ०—तठा उपराति राजान सिलामति उण रित मांहै सूरजजी पणि मकरसक्रात भेळा हुआ छै ।—रा सा सं
उ०—२ अहिमकर कहता सूरथ जव मकरसक्रांति आंणि चढ्यो, तव उत्तर को वाउ प्रवळ वाजण लागो ।—वेलि टी
उ०—मकर सक्रायत वैठी भारी, क्षत्रिय हित लागी प्रतिखारी भू पर ब्राह्मण भये भिखारी, हे प्रवेस करगी हथियारी ।—ऊ का

मकरसातम—स० स्त्री० [सं० मकर सप्तमी] माघशुक्ला सप्तमी ।

मकरांण—१ वलुचिस्तान के समीप के प्रदेश का नाम, मकरान ।
उ०—मिळै नहीं मकरांण ताज केच माभल तुरी । जेहलियै घण जांण, मौजा दियण मंगाविया ।—बा दा
२ देखो 'मकराणी' (मह, रू. भे.)
३ देखो मकराणो' (मह, रू भे)

मकरांणी—स० पु०—१ वलुचिस्तान के समीप मकरान प्रदेश का व्यक्ति ।
२ उक्त प्रदेश का एक प्रकार का प्रसिद्ध घोड़ा ।
३ मकरान प्रदेश मे रहने वाले व्यक्तियो की एक जाति ।
रू० भे०—मकडांण' मकरांण' ।
वि०—मकराने का, मकराना सवधी ।

मकरांणो—स० पु०—१ वलुचिस्तान के समीप का मकरान नाम का एक प्रदेश ।
२ राजस्थान प्रान्त के नागौर जिले का एक नगर जो सगमरमर नामक प्रसिद्ध पत्थर की खान के लिए प्रसिद्ध है ।
३ सगमरमर नामक प्रसिद्ध पत्थर जो मकराना नगर के समीप की खानो मे पाया जाता है ।
उ०—तिण समै रतनां रा रैवास में एक मकरांणा रो महल है, जिण मे इण री घणी सारी सहल है । सू इण री पगथलियांरा प्रतव्यव हू फरस तो मूगिया री छिव पावै है ।—र हमीर
वि०—मकराने का ।
रू० भे०—मकडाण, मकरांण ।

मकराई—सं० स्त्री० [ग्र० मक्र+रा० प्र० ई०] १ धूर्तता, ठगाई ।
२ छल, कपट ।
३ गर्व, अभिमान ।

मकराक—देखो 'मकराक्ष' (रू भे)

मकराकर—स० पु० [स० मकर+आकर] १ समुद्र, सागर । (डिं को)
उ०—जिण समय दो ही फौजा रा हिलोळा समुद्र रै समांण प्रमाण में आया अर तोपां री गाज हू सेस रा सीसां समेत मकराकर मेखळा मही रै मचोळा लगाया ।—व भा.

मकराकृत, मकराकृति—वि० [स० मकर+आकृत] मकर (जतु) की आकृति के अनुसार वना हुआ ।
उ०—सुदर स्याम मनोहर मूरत, सोभा अधिक अपार । क्रीट मुकुट मकराकृत कुडळ, गळ पुस्पन को हार ।—मीरां
उ०—२ हां रे सखी देख्यौ री नद किसोर । मोर मुकुट मकरा-कृति कुडळ पीतावर भळक हरोळ ।—मीरां

मकराक्ष, मकराख, मकराख्य—स० पु० [स० मकराक्ष] लंकापति रावण के भतीजे का नाम जो खर नामक राक्षस का पुत्र था ।
उ०—१ मारै तैं वार किता मकराख, सानुज्ज उबारै वेदां साख ।—ह र
उ०—२ नमो मकराख्य इंद्रजीत मार, नमो अय राकस वंस सहार ।—ह र
रू० भे०—मकराक ।

मकराळ, मकरालय—स० पु० [सं० मकरालय] समुद्र, सागर ।

मकराव-स० पु०—सागर ।
उ०—विद्या रतन पसाव वीदगा, दाताराव भाव दरियाव । कीरत नाव घाव चहुकानी, कायव जळमाळ मकराव ।—फ कु घो
मकरासन-स० पु० [स०] हाथ और पैर पीठ की ओर कर लेने का एक आसन । (तान्त्रिक)
मकरासव, मकरास्य-स० पु० [स० मकराश्व] वरुण ।
मकरी-स० स्त्री०—मछली ।
वि०—१ अभिमानी, गर्व करने वाला ।
२ टेढी, तिरछी, व्यंगपूर्ण ।
उ०—वाबहिया वग चचडी, वोल्यो मकरी वांण । काइ बोलतो मुस्ट करे, कै परदेसी पिव आण ।—ढो. मा
देखो 'मकडी' (रू भे)
रू० भे०—मक्री ।
मकरूह-वि०—अपवित्र, घृणित ।
मकरोणो, मकरोबो—थोडे घी मे आटा, मेंदा या वेसन भूनना या भून कर कोई खाद्य पदार्थ बनाना । (अमरत)
मकरोणहार, हारो (हारी), मकरोणियो—वि० ।
मकरोयोडो—भू० का० कृ० ।
मकरोवीजणो, मकरोवीजबो—कर्म वा० ।
मकरोयोडो—थोडे घी मे आटा, वेसन या मैंदा भुना हुआ या भूनकर कोई खाद्य पदार्थ बनाया हुआ ।
(स्त्री० मकरोयोडी)
मकरोवणो, मकरोवबो—देखो 'मकरोणो, मकरोबो' (रू भे)
मकरोवणहार, हारो (हारी), मकरोवणियो—वि० ।
मकरोविप्रोडो, मकरोवियोडो, मकरोव्योड़ो—भू० का० कृ० ।
मकरोवीजणो, मकरोवीजबो—कर्म वा० ।
मकळ—देखो 'मक्कळ' (रू भे)
मकवांण, मकवांणा-स० स्त्री०—१ झालावश की एक शाखा ।
रू० भे०—मकवाणा, मकुवांणा, मकुआण, मकुमाणा ।
मकवांणो-स० पु०—झाला वश की मकवाण शाखा का व्यक्ति ।
रू० भे०—मकवांणो, मकुमाणो ।
मकवो-स० पु०—१ मक्का अनाज का वह पौधा जो भुट्टा लगने के पूर्व की अवस्था में हो ।
२ एक प्रकार का पौधा विशेष ।
मकसद, मकसव-स० पु० [अ० मक्सिद] १ उद्देश्य ।
२ मशा, इच्छा ।
उ०—तरै केहीक गांव राव सातल केलवा सू वरसिंघ नूं जोधपुर रा दिया तिके सुणीया, कही आपरो मकसद कीयो, मांहरी पेसकसी राखो सु कुण वासतै ।—नैणसी
३ आशय, तात्पर्य ।
मकसूद-स० पु० [अ० मक्सूद] १ अभिप्रेत, उद्दिष्ट ।
उ०—१ हक हासिल नूर दीदम, करारे मकसूद । दीदार दरिया ऊरवाहे आमद मौजूदे मौजूद ।—दादूवांणी
उ०—२ दरवार दोजिक गरक गुरमा मनी मारे मीर । महर का मकसूद एही, पइद पोसे पीर ।—ह पु वां
२ कामना, इच्छा, ख्वाहिश ।
उ०—मेरे एक तू रहमान, मकसूद मेरी प्रीति तुझ सू । और सू क्या कांम ।—ह पु वां
रू० भे०—मखसूद ।
मकान-स० पु० [अ० मकान] १ भवन, गृह ।
उ०—पछै व्याव क्यू करो ? मरियां किसा मकांन साथै चालै, पछै मकान क्यू चुणावो ?—फुलवाडी
२ रहने की जगह, निवास स्थान, आवास ।
उ०—रुडे तीरथ राज रै, नित जळ कीजै न्हान । तो पिण न हुए पाकतन, मूळ पुरीख मकान ।—वां दा
रू० भे०—मुकांन, मुकांम ।
मकांम—१ देखो 'मुकाम' (रू भे)
उ०—मौजूद खबर मावूद खवर, अरवाह खबर वजूद । मकांम चे चीज हस्त, दादनी सजूद ।—दादूवांणी
२ देखो 'मकान' (रू भे)
मकाई-वि० [अ० मक्का+रा० प्र० ई] मक्के का, मक्का सम्बन्धी ।
स० पु०—मक्के का निवासी ।
उ०—मीर पाक ऐराक मकाई, तुरक सगुर जस थांनी ताई ।
—रा. रू
देखो 'मक्की' (रू भे)
मकाय—देखो 'मकोय' (रू भे)
मकार-स० पु०—१ देवनागरी लिपि का 'म' अक्षर ।
उ०—मनी मन माह रकार मकार, लगा धक धूनन की ललकार ।
—ऊ का
२ पिंगल में मगण का संक्षिप्त रूप ।
३ देखो 'मक्कार' (रू भे)
मकाळ-स० स्त्री०—१ शीत काल मे ताप सेंकने के लिए आग जलाने का एक पात्र विशेष ।
उ०—उतराध रो पवन ऊनामळो टीया खाइनै रहीयो छै । तिणि रीति मांहे छोह ढाळियां ऊडा मोहरां मांहे ऊंडा तहखांना मांहे खैर कोइला री मकाळा जगाडी छै ।—रा सा सं
मकियारणो—देखो 'मखिआरणो' (रू भे)
मकियो-स० पु०—१ मक्का अनाज के पौधे के लगने वाला भुट्टा जिसे सेक कर खाया जाता है ।
२ स्त्रियो द्वारा धारण किया जाने वाला पैरो का आभूषण विशेष ।
३ पुरुषेन्द्रिया, शिश्न (बाजारू) ।
क्रि० प्र०—घलावणो, घालणो, मेलणो ।

मकी—देखो 'मक्की' (रू भे)
उ०—बावा म देई माळवै, जिण देसे कुरूख। जब मकी रो खावणो, माणस नहीं ते मूक।—ढो मा
मकीचूस—देखो 'मक्खीचूस' (रू भे)
मकुंद—देखो 'मुकुंद' (रू भे)
मकुग्राण, मकुग्रांणा—देखो 'मकवांण' (रू भे)
मकुग्रांणी—देखो 'मकवाणी' (रू भे)
मकुट—देखो 'मुकुट' (रू भे)
मकुनौ—देखो 'मुकुनौ' (रू भे)
मकुर—देखो 'मुकुर' (रू भे)
मकूनीरोटी—स० स्त्री०—गेहू व चने के ग्राटे के मिश्रण से बनी रोटी।
उ०—जिण वगत इक्कीस मांगिणगर हाथिया रै निज़राणा री बात सुणनै राणाजी खुसी मे बावळा सा हैण लागा। उण वगत इस्दूखां ग्रापरी टूटी-टपरी मे बैठो लूखी मकूनी रोटी मिरचा री चटणी सू भोटतौ हो ग्रर मिरचा री बळत रै कारण सूमाडा करतो हो।—फुलवाडी
मकैसरीफ—देखो 'मक्कासरीफ' (रू भे)
मकोडी—स० स्त्री०—चीटी।
उ०—मकोडी कीट पतग मुणाळ, भिखग तु हीज तु हीज भुवाळ।
—ह र
मकोडौ—स० पु०—१ लोह पर खुदाई करने का एक ग्रोजार विशेष।
२ देखो 'मोकौ' (ग्रल्पा, (रू भे)
रू० भे०—मकोडउ।
मकोट—स० पु०—चीटा, मकोडा।
मकोडउ—१ देखो मोकौ' (ग्रल्पा, रू भे)
२ देखो 'मकोडो' (रू. भे)
मकोय—स० पु०—एक प्रकार का क्षुप विशेष जो काकमाची के नाम से भी जाना जाता है ग्रौर ग्रोषधि मे काम ग्राता है।
रू० भे०—मकाय, मको।
मको—सं० पु०—'मैंने कहा' का सक्षिप्त रूप।
देखो मोकौ' (रू भे)
देखो 'मकोय' (रू भे) (ग्रमरत)
देखो 'मक्कासरीफ'
रू० भे०—मक्को।
मक्क—देखो मोकौ' (रू भे)
मक्कड—देखो 'मरकट' (रू भे)
२ देखो 'मत्कुण' (रू भे)
मक्कर—स० पु०—१ गर्व, ग्रभिमान।
उ०—तज मक्कर फक्कर तसू, उर सुध करखे रांत ग्रपदे। वस करदे इद्री ग्रवस, तन मभी तप सीळ तप्पदे।—र. ज. प्र
२ छल, ढोग, पाखड, धूर्तता, फरेब।
उ०—तद कान्हौ बोल्यौ तमक, मत करणा मक्कर। वीरोटण पण वेखता, नह मोभ चढै नर।—ठाकुर जुझारसिंह मेडतियौ
उ०—खडगस खपर हाथ लिया। मुख बीडी मक्कर मुख ऊपर चखिया।—मा वचनिका
४ देखो 'मकर' (रू भे)
मक्कळ—स० पु० [स० मक्कल्ल] प्रसव के पश्चात् जच्चा के नाभि के नीचे पसळी, मूत्राशय तथा उसके ऊपर वायु की ग्रथी बनने से होने वाला दर्द। (ग्रमरत)
रू० भे०—मकळ।
मक्कार—वि० [ग्र०] धोखा देने वाला, कपटी, धूर्त, कृतघ्न।
रू० भे०—मकार।
मक्कारी—स० स्त्री० [ग्र० मक्कार+रा० प्र० ई] धोखा देने की प्रवृति या कार्य। छल, कपट।
मक्कासरीफ—स० पु० [ग्र० मक्क] हजरत मुहम्मद साहब का जन्म स्थान, जहा मुसलमान हज के लिए एकत्रित होते हैं।
उ०—गरीबपरवर मक्का सरीफ री यात्रा में चैन चाहिजै।
—नी प्र
रू० भे०—मकै सरीफ, मको, मक्कैसरीफ।
मक्की—स० स्त्री० [देशज] १ एक प्रसिद्ध ग्रन्न जिसका पौधा ज्वार व बाजरी के पौधे के समान ही ५-६ फीट ऊचा होता है। इसके भुट्टे मे इस ग्रन्न के दाने लगते हैं।
रू० भे०—मकई, मकी।
२ देखो 'माखी' (रू भे)
मक्कीचूस—देखो 'मक्खीचूस' (रू भे)
मक्कुन—स० पु०—जाघ का कवच।
उ०—हडौती हाजिर भई कटिबध कसाया। हूरां सूरा मत्थ ही धर साज बनाया। यो जावक लगै चरन यो लगर लाया। यों नेहर पग ग्रकुरै यों मक्कुन ग्राया।—व भा
मक्कैसरीफ—देखो 'मक्कासरीफ' (रू भे)
मक्को—स० पु० [ग्र० मक्क] १ देखो 'मक्का सरीफ'।
उ०—ग्रल्लाह मुहम्मद सिर उठाय, मगरिबै मक्के मन्नत मनाय।
—ऊ का
२ देखो 'मको' (रू भे)
मक्खण—देखो 'माखण' (रू भे) (डि को)
मक्खी—देखो 'माखी' (रू भे)
मक्खीचूस—वि० [स० मक्षिका+राज० चूसणौ] ग्रति कृपण, महा-कजूस।
रू० भे०—मकीचूस।
मक्खीमार—देखो 'माखीमार' (रू भे)
मक्दूर—देखो 'मकदूर' (रू भे)
मक्रंद—देखो 'मकरद' (रू भे.)

उ०—पाए सुचग स्यांम पाट, पै कनंक नूपर। मक्र द कज रस्मि-मान, पीत भौर ऊपर।—सू प्र

मक्र—देखो 'मकर' (रू भे)

उ०—१ माता कर मक्र लहै चक्र मोख। तितत्तिल अग न जग सतोख।—मे. म

उ०—२ मक्र सीस मेटवा, चक्र ही कोप चलावै। काना मक्र कर क्रोध, वज्र पहाड़ां पठावै।—र. ज प्र

उ०—३ दिसा दिसा न मान तोप मांनती दर्ग नही। अडोळ चक्र नक्र मक्र आननी अर्ग नही।—ऊ का.

मक्रकेत, मक्क्रेत—देखो 'मकरकेत' (रू. भे) (डि को)

उ०—१ सिघाराव रै गणेस अधा राव रै दिनेस सोहै। जोध वळी राव रै लकेस रो है जेम। भिळोक राव रै मक्रकेत तायजादो तेम। उम्मेदराव रै 'अजो' रायजादो येम।

—रावराजा अजीतसिंह रो गीत

उ०—करा मक्रकेत रै लचोला लेती तूजी किना, नक्र रै मचोळा हू हचोळा लेती नाव।—र हमीर

मक्री—देखो 'मकरी' (रू भे)

मक्षिका-स० स्त्री० [स०] १ मक्खी।

२ मधुमक्खी।

मक्सी-स० पु०—१ सब्ज रग का घोडा जिसके शरीर पर काले चक्र या दाग होते हैं।

२ श्याम रग का घोडा।

मख-स० पु० [स०] १ यज्ञ। (अ मा, ह ना. मा)

उ०—१ मुनि कीधौ आरभं मख, वलि रघुवीर दुबाह।

—रामरासौ

उ०—२ वहिया मख रिख ठोड ठोड, फाडे भय कोड।

—र ज प्र

रू० भे०—मख, मक्ख।

२ देखो 'माखौ' (मह, रू भे)

मखडपाव-स० पु०—वह घोडा जिसके पांव चलते या दौडते समय जमीन मे घसते हो। (अशुभ) (शा हो)

मखण—'देखो 'माखण' (रू भे)

मखणी-स० पु० [देशज] एक प्रकार का घास विशेष। (जयसलमेर)

अल्पा०—'माखणियौ'।

मखतूळ-स० पु० [सं० महर्घतूल] काला रेशम।

उ०—१ भूला मखतूळ जमा जळ झाग। पगप्पग होत उद्योत प्रयाग।—मे म

उ०—२ खाती रा गोळ चदण रो रुख काट लाजे रग रो ढ़ोलियो, आया पाया रतन जडाव ईसां ढळावो जाभा हीगळू। पमचीर वेभ मणाव दावण घलावो मखतूळ री। सूआ वरणी सोड भराय गाल मसीरा गादी गीडवा।—लो गी

रू० भे०—मकतूल, मखतूळ।

मखतूळी-वि०—१ काले रेशम का।

स० पु०—२ एक प्रका का घास जिसके पत्तों व बीजों से भीनी भीनी सुगन्ध आती है।

उ०—सुण सुण रे जोधाणा रा तेली, थो घाणी काढो केसर ने किस्तुरी। ओ माय घालो मरवो ने मखतूळी हो।—लो गी

मखत्राता-स० पु० [स०] १ यज्ञ की रक्षा करने वाला, यज्ञ रक्षक।

२ श्री रामचन्द्र भगवान का नामान्तर।

मखदूम-स० पु० [अ० मखदूम] (स्त्री० मखदूमा] १ वह जिसकी सेवा या खिदमत की जाय।

२ मालिक, स्वामी, पूज्य।

३ एक प्रकार के मुसलमान धर्माधिकारी।

उ०—अरथ कर नवा फुरमांग री आयता, लिया कर माह रै कांन लागै। कहै मखदूम जग हेक मजहब करो, 'जसौ' हिंदू धरम मदत जागै।—नरहरदास बारहठ

मखदोखी, मखद्वेसी, मखघेखी, मखघेसी-स० पु० [स० मखद्वेषिन्]

१ राक्षस, असुर। (ना मा)

२ शिव का एक नामान्तर। (अ. मा)

मखन—देखो 'माखण' (रू भे.)

मखनाय-स० पु० [स०] विष्णु का एक नामान्तर।

मखमल-स० पु० [अ० मखमल] [वि० मखमली] बहुत चिकना व रोएदार एक प्रकार का प्रसिद्ध कपडा।

उ०—वा इडा सू मखमल री जात फूटरा रूपाळा विचिया निकळिया।—फुलवाडी।

रू० भे०—मखमली, मुखमल।

मखमली-वि० [अ० मखमल+रा० प्र० ई] १ मखमल का, मखमल सम्बन्धी।

२ मखमल के समान, मुलायम।

३ देखो 'मखमल' (रू. भे)

मखयारणी—देखो 'मखिआरणी' (रू. भे०)

मखरक्षक-स० पु० [स०] १ यज्ञ की रक्षा करने वाला।

२ श्री रामचन्द्र भगवान का एक नामान्तर। (ना मा)

मखवाळ-स० पु० [स० मख+आलुच] यज्ञ करने वाला, ऋषि।

उ०—आयो ग्रह 'अभसाह' अटकि फौजा उजवकी। अवधि जेम आवियो, राम परणे जांनकी। गाजि फरसि असपती, भाजि घालख मुदफ्फर। मखवाळा मडळी, करै सगळा राजिंदर। राजा 'अजीत' दसरत्थ ज्यों, सुत सजीत परखै सही। वारणा लिए 'अभसाह' रा, जणणी कौसल्या जिही।—रा रू

मखसाळा-स० स्त्री० [सं० मखशाला] यज्ञशाला।

मखसूद—देखो 'मकसूद' (रू भे)

उ०—हिवै मालदेव विचारण पडियो जू किराड वात कही। दीठो

कासू कीजै । विना मखसूद उपाव हुवा जे लडीजै छै त, ई बात वे-सूली ।—अमीपाळ साह री वात

मखहूळ—देखो 'मखतूळ' (रू भे)

उ०—केसा रा जूडा बांधीजे छै, ऊपरा मखहूळ रा डोरा बाधीजै छै ।—रा सा स

मखांणो–स० पु०—१ तिल, इलायची, पोस्त के दाने को चीनी मे पाग कर तैयार की जाने वाली मिठाई ।

२ देखो 'तालमखाणो' ।

मखारणो—देखो 'मखिग्रारणो' (रू भे)

मखालय–सं० पु० [स०] यज्ञशाला ।

मखिग्रारणो–स० पु० [स० मक्षिका+ग्रावरण, मुख+ग्राभरण] झल्लरी के ग्राकार का चमडे या सूत का बना एक प्रकार का उपकरण विशेष जो घोडे व बैल के मुख पर शोभा बढाने तथा मक्खियो से रक्षा करने हेतु बांधा जाता है, तिल्हारी ।

रू० भे०—मकियारणो, मखयारणो, मखारणो, मखियारणो ।

मखिका–स० स्त्री०—एक प्रकार का शस्त्र । (व म)

मखियारणो—देखो 'मखिग्रारणो' (रू भे)

मखी—देखो 'माखी' (रू भे)

मखेस–स० पु० [स० मख+ईश] राजसूय यज्ञ ।

मखोळ, मखोल—देखो 'मखौळ' (रू भे)

मखोळियो—देखो 'मखौळियो' (रू भे)

मखौळ, मखौल–स० पु०—मजेदार तथा व्यगपूर्ण बात जो प्राय किसी को हास्यास्पद बनाने के लिए कही जाती है ।

रू० भे०—मखोळ, मखोल ।

मखौळियो–वि०—मजेदार बात या मजाक करने वाला । व्यगपूर्ण चुटकी लेने वाला, मखौल करने वाला, मसखरा ।

रू० भे० 'मखोळियो' ।

मख्ख–स० पु० [स० मधुक] १ मधु, शहद ।

उ०—ग्रहर पयोहर, दुइ नयण मीठा जेहा मख्ख । ढोला, एही मारूई जाणं मीठी दख्ख ।—ढो मा

२ देखो 'मख' (रू भे)

उ०—देवी जम्मणी मख्ख ग्राहूति ज्वाला । देवी वाहिनी मत्र लीला विसाला ।—देवि

मग–सं० पु० [स० मग् (गति)+ग्रच, पृषो० सिद्धि] १ मगध देश ।

२ मगध देश का निवासी ।

३ भोजक जाति के ब्राह्मणो के ग्रनुसार शाकद्वीप के चार वर्णो मे से एक वर्ण । (मा म)

४ देखो 'मृग' (रू भे)

उ०—मग गोधूमादि, दियै, प्रथवी रतन सुरग ।—वि. कु.

५ देखो 'मारग' (रू भे) (म मा)

उ०—१ धुर घण घटा जिही मग छायो । ग्रौरग वळे ग्रजेगढ ग्रायो ।—रा रू

उ०—२ करणो सो ग्रब ही कियो, मरणो वेस महीप । दिल्ली मग मोनू दहे, दीजे पग कुळदीप ।—व भा

रू० भे०—मगस ।

मगज–स० पु० [ग्र० मग्ज] मस्तिष्क, दिमाग ।

उ०—ऊडा वेरा सू चिडी नै काढै तौ फीकर काढै कोई जुगत विठावै । की मगज मे वैठी नी ।—फुलवाडी

मुहा०—१ मगज खपाणो=किसी समस्या के हल के लिए दिमागी जोर लगाना । वहुत ग्रधिक सोचना । २ मगज खाणो=व्यर्थ की बकझक कर किसी को परेशान करना । ३ मगज खाली करणो=व्यर्थ की बकझक कर ग्रपने दिमाग को परेशान करना या मस्तिष्क थकाना । ४ मगज चाटणो=देखो 'मगज खाणो' । ५ मगज पचाणो=व्यर्थ की सिर पच्ची करना । ६ मगज फिरणो=मानसिक सतुलन विगडना, पागलपन का ग्रसर होना । ७ मगज भरणो=किसी को बहकाना, गुमराह करना । ८ मगज मारणो=देखो 'मगजपचाणो' ।

२ फल ग्रादि के ग्रन्दर का गूदा, गिरी ।

३ गर्व, ग्रभिमान ।

उ०—१ साह मिळे निज मगज सवायो । 'ग्रजन' विदा हुय डेरा ग्रायो । दोनू राह गात छत देवै । लखि गति सकळ सिरै दुति लेवै ।—रा रू

उ०—२ मिणधर विख ग्रण माव, मोटा नह धारै मगज । वीछू पूछ वणाव, राखै सिर पर राजिया ।—किरपाराम

४ रोब, दवदबा ।

५ देखो 'मगद' (रू भे)

उ०—जद तेली री वेटी नू भीतर त्रुलाय एक ग्राछो वेस ग्रादा मण मगज खाजा दस रुपिया गहणा रा ग्रौर उण तेली नू सिर पाव दियो ।—ठाकुर जेतसिंह री वारता

रू० भे०—मग्गज ।

मगजचट—वि० [ग्र० मग्ज+राज० चाटणो] बहुत बातूनी, बकवास करने वाला, बकवादी ।

मगजचट्टी–स० स्त्री०—बकवाद, बकझक ।

मगजपच्ची—देखो 'मगजमारी' ।

मगजमारी–स० स्त्री०—मगज पच्ची करने की क्रिया, सिर पच्ची ।

मगजाई–स० स्त्री० [ग्र० मग्ज+रा० प्र० ग्राई] १ गर्व ग्रभिमान ।

उ०—महितल मगजाई मेलं थळ मेली ।—ऊ का

२ गौरव ।

उ०—पेट माय खोटी पुळ पडियो, मेटण कुळ मगजाई नै ।
—ऊ. का.

रू० भे०—'मगजाइ' ।

मगजी-स० स्त्री० [ग्र० मग्ज+रा० प्र० ई] १ गर्व, अभिमान ।

उ०—१ तुटै फळा छूटै ठोड़ ठोड़ री नचाग्गी तोपा नार्गा हाडा गोड री कुरम्भा भ्राडी लीक । जोड़ रा ठिकारगा घगा मगजी मेल दी जठै तठै रही रीठोड़ री हेक चोक-नीक ।—नवळजी लाळस

उ०—२ रायसीग जँमीग सू मिळतौ मगजी राखै । दार्गं दवागीरां हूना नरमी दैमोत ।—रायसीग रो गीत

२ किसी वस्त्र मे सिलाई के साथ निकाली गई किनारी ।

क्रि० प्र०—कढ़ाग्गी, घालग्गी ।

मगजू-स० पु०—ढोल का एक उपकरग्ग ।

मगण-सं० पु० [स०] छद शास्त्र के आठ गग्गो मे से एक जिसमे तीन गुरु वर्ग होते है ।

वि०—देखो मगन' (रू भे)

मगत—देखो 'मगतौ' (मह, रू भे)

मगतजण-स० पु० [स० मार्गग्ग+याचना] याचक ।

रू० भे० मगतजग्ग ।

मगतौ—देखो 'मगतौ' (रू भे)

उ०—रांगा म्हांनै ऐडी कही महाराज मगतग्ग होय मीरां जगत लज्जायो, कीन्हो मारो काज ।—मीरां

(स्त्री मगतग्ग, मगती)

मगथग-वि० [स० मार्ग+राज० थग] लड़खड़ाता हुआ ।

उ०—जडलग्ग प्रलग्ग अलग्ग भळै । मगथग्ग वळै पग डग्ग मिळै ।
—पा प्र

मगद-स० पु० [मगध=परिवेष्ठने] १ मैदे को घी के साथ सेक उसमे उचित मात्रा मे शक्कर मिला कर बनाया हुआ सुस्वादु बुरबुरा व्यंजन विशेष ।

उ०—गढ से तो मीरांबाई उतरया जी, हाथ मे मगद को थाळ ।
—मीरां

उ०—२ तताऊ घेवर, पायल घेवर, तल्या गुद, कुडलाकृत जळेबी, मीठउ मगद, श्राछुमाळ निगद, प्रीस्यु मीर, जीमतां मन हुई थगीर ।
—व स

२ देखो मगध' (रू भे)

रू० भे०—मगज, मगदळ, मगध ।

मगदळ, मगदल-स० पु० [देशज] १ उड़द या मूग के आटे को घी मे भूनकर उसमे शक्कर मिलाकर बनाया जाने वाला एक प्रकार का व्यंजन विशेष ।

२ देखो मगद' (रू भे)

उ०—उत्तरतां घेवर, तळ्या गूद कुडळाकृत जळेबी, सीरा लापसी, मीठउ मगदळ, साकर नू चूरमु ।—व स

मगदूर—देखो 'मकदूर' (रू भे)

उ०—१ नटस्यू तो हू नठस्यू, जावो पधारो, कोनी थालू आटो । मूडो मगदूर बापडी रो कै म्हारै थकां आ नटै ।—फुलवाडी

उ०—२ मूडो मगदूर बापड़ा रो है म्हारै थकां कोई म्हारो मेत भेळाय दे ।—फुलवाडी

मगध-सं० पु० [सं०] १ दक्षिणी बिहार रा प्राचीन नाम । (डिं को)

२ देखो 'मगद' (रू भे)

रू० भे०—मगद्ध मगह, मगहर, मगंहर, मागध ।

मगधपति-सं० पु० यौ० [सं०] १ मगध देश का राजा ।

२ जरासंध का नामान्तर ।

रू० भे०—मगहपति ।

मगधवरणसर—एक प्रकार का आभूषग्ग ।

उ०—जानक मानग गोपुच्छ उरश्रिक मगधवरणसर चन्द्रपुष्प पसल भगक अश्रमेगक गुच्छ ।—व स

मगधांण-सं० स्त्री०—मूर्खता ।

उ०—मुगळाग्ग मुगध बुद्धी कि गुर शब्द साधु उपदेसो । दिन्न मेव उदधि रहग्गो, नह मूकिन मगधांण ।—गु रू ब

मगधेस, मगधेस्वर-स० पु० [स० मगधेश, मगधेश्वर] जरासध का नामान्तर ।

मगन—देखो 'मग्न' (रू भे)

उ०—१ राजकवर आज पैं'लो दग्ग गत रो मिनखी रो देखियो हो इग्ग वातर वो अग्गूता मोद सू मगळो तमासो देखग्ग में मगन हो ।—फुलवाडी

उ०—२ लीला बिना मगन होय रैं'ता, नहीं नगर नहि नांमा । अपना सहज आप निज जाग्गै, नहि कोई काम अकांमा ।
—श्री हरिरांमजी

उ०—३ मद पांन मगन मादा रहै, देय हकीमां दान जू । पग्गी तज पातर रमै, सग्ग गुग्गा री खान जू ।—ऊ का

रू० भे०—मगग्ग ।

मगनता-स० स्त्री० [स० मग्न+रा० प्र० ता] १ प्रसन्नता, हर्ष, खुशी ।

उ०—तद बैरमखां हुमायूजी नै हकीगत सारी कही । तारां हुमाऊजी कयो जो बैरमखा आज हमारे दिली घरे आवै जैसी मगनता भई है ।—द दा

२ तल्लीनता, लवलीनता ।

३ मस्ती ।

मगर-स० पु० [स० मकर] १ घड़ियाल । (डिं को)

उ०—अति सेवि धूप आसावरी, रूप सकति थापग्ग रखी । घमजगर अगर तोपा धरी, मगर, सूर, नाहर मुखी ।—सू. प्र.

२ मछली ।

यौ०—मगरधर ।

[राज०] पीठ ।

उ०—१ जावता ई मा'राज पदमसिंघजी सोवतराय नू मांग री वाह करी । सांग उग्ग री छाती मे लागो सू फोड छाती, फोड

मगर ग्ररु घोडै री पीठ फोड, काछ फोड हाथ एक पार हुई वा सावतराय रा घोडै ऊपर प्राण मुक्त हुवा ।—द दा

उ०—२ तठा उपरायत सूळागरियां होसनाका नै हुकम हुवै छै—जाजमा कनारै सूळा तयार करो, सू हिरणा रा मगर पसवाडा पीडा सू मांम उतारजै छै ।—रा सा सं

४ करील वृक्ष के पुष्प (शेखावाटी) इसका दूसरा नाम 'बाट' भी है ।

वि०—पूर्ण, पूरा ।

यौ०—मगरपचीस, मगरपचीसी ।

ग्रव्य० [फा०] लेकिन, परन्तु ।

मुहा०—ग्रगर मगर करणी=ग्राना कानी करना । प्रत्युत्तर देने मे ग्रसमर्थ होना ।

देखो 'मगरौ' (मह , रू भे,)

रू० भे०—मगर ।

ग्रल्पा०—मगरि, मगरियो ।

मगरघर–सं० पु० [सं० मकरगृह] सागर, समुद्र । (डि को)

मगरपचीस–वि०—भरपूर जवान, पूर्णयुवा ।

उ०—१ सुजि ,जळ पियै जरत विण सूरति । मगरपचीस हुवै दिब मूरति ।—सू प्र

उ०—२ सोळै वरसां कामणी, मगरपचीसां कत । ग्रै दिन फेर न ग्रावसी, जोवन रा महमत ।—ग्रज्ञात

रू० भे०—'मगरपच्चीस' ।

मगरपचीसी–स० स्त्री० [राज० मगर+पचीसी] भरपूर जवानी, पूर्ण युवावस्था ।

उ०—१ सरधा घटगी सैंग, वेग बिरधापण वळियो । निकळण रो रथ नही कळण ऊडी में कळियो । मगर-पचीसी माय, डोकरो वणगो डाकी । डागडियां निठ डिगै, थिगै टांगडिया थाकी । ऊठगी उमेद वैठण उठण, भेद न पै'ला भाळियो । वहु गरथ 'देह बादी विपद, करगो ग्रनरथ काळियो ।—ऊ का

उ०—२ ग्रसपत सू मुरड साहियौ ग्रसमर, जुध रूपी सुज हुवौ जद । दीठो वरस सितर मे 'दुरगो', मगरपचीसी तणो मद ।

—दुरगादास राठौड रो गीत

उ०—३ मरदा मरणो हक्क है, मगरपचीसी माय । महला क्रूरै पदमणी, मित हुयाया माय ।—ग्रज्ञात

रू० भे०—मगरपच्चीसी ।

मगरपच्चीस—देखो 'मगरपचीस' (रू भे)

मगरपच्चीसी—देखो 'मगरपचीसी' (रू भे)

मगरब—देखो 'मगरिब' (रू भे)

मगरबी–वि० [ग्र० मगरिबी] १ पश्चिम का, पश्चिमी ।

स० स्त्री०—२ देखो 'मगरेब' (रू भे)

मगरमच्छ–स० पु० [स० मकर+मत्स्य] मगर या घडियाल नामक प्रसिद्ध जल जन्तु ।

उ०—काम क्रोध लोभ मोह ग्रहता, ये डोले जळ मांई । काळ मगरमच्छ सब कू खावै, वच सकैला नांई ।

—श्री हरिरामजी महाराज

मगरि—१ देखो 'मगर' (ग्रल्पा रू भे)

उ०—वावहिया निळ पखिया मगरि ज काळी रेह । मति पावस सुणि विरहणी, तळफि तळफि जिउ देह ।—ढो मा

२ देखो 'मगरौ' (ग्रल्पा , रू भे)

मगरिब–स० पु० [ग्र० मगरिब] पश्चिम दिशा ।

उ०—ग्रल्लाह मुहम्मद सिर उठाय, मगरिब मक्के मन्नत मनाय ।

—ऊ का

रू० भे०—मगरब ।

मगरियौ–स० पु०—१ कृषक स्त्रियो का एक गीत

२ गांव या कस्बे के समीप जलाशय के निकट का वह मैदान जहा प्राय मेला लगता है ।

३ मेला ।

उ०—तीज तिवार मगरिया मडै, रतनागर रो रूप है । देवकरण राव सो दांनी भोम भडाणे भूप है ।—दसदेव ।

क्रि० प्र०—मडणो ।

४ देखो 'मगरौ' (ग्रल्पा , रू भे)

५ देखो 'मगर' (ग्रल्पा , रू भे)

मगरी—देखो 'मगरौ' (ग्रल्पा , रू. भे)

उ०—मोडकी मगरी रो पाणी ढाळो ढाळ ढळियो रे । ग्रावू थारा पाहाडा में ग्रग्रेज वडियो रे, काळी टोपी रो ।—लो गी

मगरूर–वि० [ग्र० मगरूर] १ जिसमे गुरूर या ग्रहकार या गर्व हो, गर्वीला, ग्रभिमानी ।

उ०—१ ग्रमीरजादो जवन मगरूर थो, तिण सोंस खाधी तू बाग रा मेवा नही खावसी, ग्रा कहि नै चलो गयो ।—नी प्र

उ०—२ बाग री सैल फिरै छै । ग्रैस रस बिना महा मगरूर फैल करे छै ।—पना

उ०—३ इम ग्रिहुवै घड ग्रहर, भीच मगरूर 'ग्रमा' रा । फतै करण ऊफणै, डरै वब रै वरारा ।—सू प्र.

२ वीर, जोशीला ।

उ०—पित कुरब लूण भूपाळ रो, करि ऊजळ जुध जस करगि । मगरूर भेदि सूरज मडळ, सूरजमल पहुतो सरगि ।—सू प्र

मगरूरी–स० स्त्री० [ग्र० मगरूर] गर्व, ग्रभिमान ।

उ०—१ दूत रो वचन स्रवण मे पडता ही नाहरराज कहियो राजा ग्रनगपाळ तो सबब रा सभव री सहज वात कीधी जिको चहुवांणा मगरूरी रै मतै साचो वणाय कीधी ।—व भा

उ०—२ जे उठ खडा हो गवार ऐसी मगरूरी करै सो कुण ।

—दूलची जोइये री वारता

मगरेव—स० स्त्री०—१ एक प्रकार की तलवार विशेष ।

उ०—तठा उपरायत तरवारियां रा कमसारिया खुलै छै । सू तरवारियां किण भांत री छै ? सीरोही री नीपनी, वे आगळा वाढ़ मेरियां थका जनैव मगरेव पुढतकाळ सेफ विलायती म्यांन मांहा काढ घास मे नाखजै तो पांणी रै भोळावै जनावर ढूग वाहे ।—रा सा स

२ तलवार ।

रू० भे०—मुग्राव ।

मगरोया—स० स्त्री०—गहलोत वंश की एक शाखा ।

मगरो—स० पु० [स० मर्कर] १ पर्वत, पहाड़ ।

उ०—१ तळाव उदैसागर दोळा चौगिरद मगरा छै, पांवडा दो सो तथा ढाइसो उदैसागर री पाळ रो वधेज छै—नैणसी

उ०—२ मगरां केरा वाहळा,ओछा नरां सनेह । वहता वहै उतावळा छटक दिखावै छेह—अज्ञात

उ०—३ चित सुध, 'अभो' पयपै 'चिमनो', ऊपर खब आया अरयद । खोसे घन मगरा वळ खाधो, गळै जिको वांधो गिरयद ।

—जादूरांम आढो

२ पत्थरीली या ककरीली ऊची भूमि, कठोर भूमि ।

उ०—खेत मगरा रा, जुवार हुवै, चिणा हुवै । अरट च्यार हळ ६० री धरती छै ।—नैणसी

अल्पा०—मगरि, मगरियो, मगरी ।

३ देखो 'मगर' (अल्पा, रू भे.)

मगवन—स० पु०—एक प्रकार का वस्त्र । (व स)

उ०—कद दोकद चुपदी मासपदा तनुब्रष सरवष कमरवध मगवनां कमलवना दरीयाखाना ।—व स

मगवान—देखो 'मघवा' (रू भे)

उ०—१ हेळा मगवान 'भोज' 'फ्रन' हाथा, दांन करण कव हरण दुख । छत्रधर कवर आंन नह छाजै, राज कवार 'जवान' रुख ।—जवानजी आढो

उ०—२ अग्राजै अनड घटा आरोहे, भूप मान' मगवांन भुयद । च्यावै हाथ नही तिण आंटै, मसळै हातळ 'जगो' मयद ।

—महाराज मानसिंह री गीत

मगवाणो, मगवावो—देखो 'मगाणो, मगावो' (रू भे)

मगवाणहार, हारो (हारी), मगवाणियो—वि० ।

मगवाविओड़ो, मगवावियोड़ो, मगवाव्योड़ो—भू० का० कृ० ।

मगवावीजणो, मगवावीजवो—कर्म वा० ।

मगविवसानु—स० पु० [स० मार्ग विवस्वत्] आकाश । (नां मा.)

मगस—स० पु०—भोजक जाति के ब्राह्मणो के अनुसार शाक द्वीप के च्यार वर्णों मे एक वर्ण । (मा म)

रू भे—मग ।

मगसर—देखो 'मिगसर' (रू भे)

उ०—पिया मोहि दरसण दीजो हो । मगसर ठंड बहोती पड़ै, मोहि वेगि सम्हाळो हो ।—मीरा

मगससि—सं० पु० यौ० [स० मार्गशशि] 'आकाश' (नां मा.)

मगसिर, मगसीर—देखो 'मिगसर' (रू भे)

उ०—१ मगसिर सुदी दसमी दिनइ हो ।—स. कु

उ०—२ आसू कातिग कहा, सांम भादवै ज सामणि । माह पोह मगसीर, चैत वैसाखा फागणि ।—ईसरदास वारहठ

मगसुर—स० पु० यौ० [स० मार्गसुर] आकाश । (अ मा)

मगसो—वि० [स्त्री० मगसी] १ कान्तिहीन, निष्प्रभ, फीका ।

उ०—दावो पड्योड़ी कै झोलो लाग्योड़ी साव लुगयूकी पड़ै ज्यू वादळ रो डील लूखो पड़ग्यो । दीप दीप करतो उणियारो साव मगसो पड़ग्यो ।—फुलवाड़ी

२ जो यथेष्ट चमकीला या तेज न हो, धूमिल, मलिन ।

उ०—देस देस रा इकरग मपेत छै । जाहरी सपेती आगै वगला ही मगसा नजर आवै ।—रा सा स

३ जो उच्च या श्रेष्ठ न हो, बुरा, बद, मद ।

उ०—वां री खरी कमाई र मगसो भाग पतीजै । वा री रळिया पर गुमान । मन खिन्वरा कीजै ।—फुलवाड़ी

४ तेज हीन, मद ।

उ०—थोड़ा घणां उजास रै कारण वीजळिया मगसी चमकती ही।

—फुलवाड़ी

५ जिसका प्रकाश क्षीण हो गया हो, धुंधला, निस्तेज ।

उ०—उण रै ग्यान रो उजास गरीबी री अपार धुंध में मगसो पड़ग्यो हो ।—फुलवाड़ी

६ प्रभावहीन ।

मगह—देखो 'मगध' (रू भे)

मगहपति—देखो 'मगधपति' (रू भे)

मगहर—सं० पु० [स० मृगहर] १ वायु, पवन ।

उ०—रवि मकर रासि निवास राजत, उतर मगहर अनुसरे । दिन वधत अनुक्रम किरण दीपति, रैण लघु पण आदरे ।—रा. रू

रू० भे०—'मगंहर' ।

२ देखो 'मगध' (रू भे)

मगा—देखो 'मघा' ।

मगाड़णो, मगाड़बो—देखो 'मगाणो, मंगाबो (रू भे)

उ०—तठा उपराति करिनै राजान सिलामति केसरिये वागै चदाचदा जुमान माहिल वाडिग्रा रो साथ ऊपडिग्रां घटा रा चुवता पटां रा खासीग्रां वाहा रा बोलता कहारा राजांन राजावत रै वेपारै वास्तै बाकरा मगाड़ीजै छै ।—राजान राउत रो वात वणाव

मगाड़णहार, हारो (हारी), मगाड़णियो—वि० ।

मगाड़ियोड़ो—भू० का० कृ० ।

मगाड़ीजणो, मगाड़ीजबो—कर्म वा० ।

मगाडियोडो–भू० का० कृ०—देखो 'मगायोड़ो' ।
(स्त्री० मगाडियोडी)

मगाणो, मगाबो—देखो 'मगाणो, मगावो' (रू भे)
मगाणहार, हारो (हारी) मगाणियो—वि० ।
मगायोड़ो—भू० का० कृ० ।
मगाईजणो, मगाईजवो—कर्म वा० ।

मगायोडो–भू० का० कृ०—देखो 'मगायोडो' ।
(स्त्री० मगायोडी)

मगावणो, मगाववो—देखो 'मगाणो, मगावो' (रू भे)
मगावणहार, हारो (हारी) मगावणियो—वि० ।
मगाविग्रोडो, मगावियोडो, मगाव्योडो—भू० का० कृ० ।
मगावीजणो, मगावीजवो—कम वा० ।

मगावियोडो–भू० का० कृ०—देखो 'मगायोडो'
(स्त्री० मगावियोडी)

मगीग्रा—एक प्रकार का वस्त्र ।
उ०—कस्तूरीग्रा प्रतापीग्रा कुसमीग्रा मोलीग्रां माडवीग्रां मीणीग्रा वाटलीग्रां जलीदरीग्रा मगीग्रा जोडदरीग्रा प्रागीग्रा चुकहीग्रा ।
—व स

मगेज—देखो 'मगेज' (रू भे)
उ०—१ ज्यू ज्यू सूकं जीव जग, त्यू त्यू लूग्रा तेज । वाळं जाळं सोसवं, दूणो चढं मगेज —लू
उ०—२ भवंराई का पेच मगेज ग्रमाडिया, विघ ऊतरियो ग्राय-सहेली वाहिया ।—वगसीराम प्रोहित की वान

मगेजण—देखो 'मगेजण' (रू भे)

मगेरणो—देखो 'बारणो' ।

मगेहर—१ देखो मगहर' (रू भे)
२ देखो 'मगघ' (रू भे)
३ देखो 'मघा' (रू भे)
उ०—भादवउ वरसइ छइ मगेहर गभीर । जळ, थळ, महीयळ सहु भरया नीर ।—वी दे

मग्ग, मग्गड—देखो मारग' (रू भे)
उ०—१ चदरण तापइ ससि जळइ, पवन करइ प्रकास । मेह तणा मग्ग रूघीया ग्रहो! रे ग्रासो मास ।—मा का प्र
उ०—२ नव जळ भरिया मग्गडा, गयणि घडकइ मेह । इत्यतार जइ ग्राविसिइ, तई जाणि सिइ मेह ।—ग्रज्ञात

मग्गडो—देखो 'मारग' (ग्रल्पा, रू भे)

मग्गज—देखो 'मगज' (रू भे)
उ०—मग्गज भइयो वहै चाहि न रखे मुकट, यन सघण माहि मुरळी वजावं । इसा हर घके घढ कुण ग्रहीरी, ग्रगूठो दिखावे घरां ग्रावे ।—वा दा

मग्गि—देखो 'मारग' (ग्रल्पा, रू भे)
उ०—माणिक रतन अमोल मणि, मीढ न कियो तिण मग्गि । रूप ग्रनूप तुरग रै, लोक तिया मन लग्गि ।—रा रू

मग्दूर—देखो 'मकदूर' (रू भे)
उ०—ग्रबकी डोकरो किडकतो वोल्यो—ग्राया वापड। म्हारै थकां घर री फिकर करण वाळा । किण रो मूडो मग्दूर के म्हारै वैठा घर रो कोई सोच करै ।—फुलवाडी

मग्न–वि० [स०] १ किसी कार्य मे निमग्न या तल्लीन ।
२ प्रसन्न, ग्रानन्द मे लीन ।
३ डूबा हुग्रा, सरावोर ।
उ०—देस माहि ग्रावता ही ग्रोठी नू मीख दे'र विपत्ति रा महा-रणव में मग्न मागळियाणी पुत्र सहित वेस रो विपरयास करि कैराऊ ग्राम रा ठाकुर रोहडिया वारहठ ग्राल्हा रै वास जाइ रही ग्रर थोडा दिना में वडा विस्वास रै साथ महानस री मालिक होइ चारण री चाकरी मे चित्त लगाइ चातुराई री रीझ चही ।
रू० भे०—मगण, मगन ।

मघ—१ देखो 'मघा' (रू भे)
२ देखो 'मघवा' (रू भे)
३ देखो 'मारग' (रू भे)
उ०—कभ कळस भरि नीसरी, ग्रीख भरै मघ जोय । पतिवरता दूजा वका, 'हरिया' सहै न कोय ।—स्री हरिरांमदासजी महाराज

मघई–वि० [स० मगघ] १ मगध देश का ।
स० पु०—एक प्रकार का तांवूल विशेष ।
उ०—भाग ग्रगुण पकज पर मेळं, मघई पान छगुण रस मेळं ।
—सू प्र

मघवळ–स० पु०—तीर, वाण । (ग्र मा)

मघवाण, मघवांन, मघवानू, मघव, मघवाण, मघवांणो, मघवान, मघवा–स० पु० [स० मघवन्] (स्त्री० मघवाणी) सुरपति इन्द्र का एक नाम । (ग्र मा, डि ना मा, ह ना मा)
उ०—१ लहर समद बकमण लखा, महर उभळ मघवान ।
—सिवबगस पाल्हावत
उ०—२ ववी जद घोर जगदा वग्गा, लडण मेघनाद रिण लग्गा । भिड तिण सेस भुजू वळ भग्गा, मिटा सोच मघवानूवा ।
—र ज प्र
उ०—३ कमळ उदध कळवरछ, भाण मघवांण, मेर समि । वदन सहज दत, तेज राज, गरूवत दीठ लसि ।—र ज प्र
उ०—४ रज परसण उदमाद करै रिख, मरै हूम मघवांणो । फत दत कोट किया हू यघको, हरि नग ग्रोट रहांणो ।—र. ज प्र
उ०—५ मेघ जिको तावं मघवा रै, वारै रजा विना नह वीख । सुरग हरी रग पीत दरसिया, रिख वादळ लसिया ग्रतरीख ।
—महाराजा भीमसिंह रो गीत

उ०—६ सीता सी राणी वेद वखाणी, सारग पाणी साम। मीढ़ न मघवाणी वळ ब्रह्माणी, नही रुद्राणी नाम—र ज प्र

यौ०—मघवापुर, मघवारिपु।

रू० भे०—मगवान, मघ, मघवाह, माघव, माघवांण, माधवान।

मघवापुर–स० पु० [स० मघव +पुर] इन्द्रपुरी, सुरलोक।

उ०—बाळी वय सुत बिहडियौ, घड भाजे घण घोर। भीनी भुव सोणित भिनी, मघवापुर मे मोर।—अज्ञात

मघवारिपु–स० पु० [स० मघव +रिपु] इन्द्र का शत्रु, मेघनाथ।

मघवाह–स० पु० [मघ] १ ब्रह्मा के चौदह पुत्रो मे से एक (मनु) जो मानव सृष्टि के मूल पुरुष माने जाते हैं।

२ देखो 'मघवा' (रू भे)

मघा–स० पु० [स० मघा] पाच तारो वाला सत्ताईस नक्षत्रो मे से दसवा नक्षत्र।

उ०—१ अकुस सीस वरण गुण ऐसौ, जग वेधियौ मघा सनि जैसौ। —रा रू

उ०—२ आदित्यवार अनइ वळी, मूळ मघा रेवत्ति। पोढी पुस्य पुनरवसु, सेजि चढइ नही सत्य।—मा का प्र.

रू० भे०—मगा, मर्गहर, मघ।

मघाभव–स० पु० [स० मघा+भव] शुक्र ग्रह का नामान्तर।

मघोनी–स० स्त्री० [स० मघवा] इन्द्र की पत्नी, शचि।

मड—देखो 'मडौ' (मह, रू भे)

मडक–स० स्त्री० १ मुडना क्रिया का भाव, मोड।

२ गर्व, अभिमान।

मडकल–वि० [मृतक+ल=तुल्य] १ क्षीण-काय, कृश, दुवला-पतला।

२ जिसमे कुछ भी दम न हो, शक्तिहीन।

रू० भे०—मडियल, मडियो।

मडतग–स० पु०—१ सारगी मे वह स्थान जहा सभी तारो को एकत्रित कर बाधा जाता है। इसे सिन्धी मे कुरदी भी कहते हैं।

२ देखो 'मरतग' (रू भे)

मडहट—देखो 'मरघट' (रू भे)

मडहटौ—देखो 'मरहठौ' (रू भे)

उ०—नेजाहळां मडहटां निहसै, घण खागां वहिया रत घाव। दुरंग गिरद वाळा वेळा द्रुम, रगिया सुरग खीचिया राव।

—राजा फतेसिंघ खीची रो गीत

मडहठ—देखो 'मरघट' (रू भे)

उ०—देहळी लग महळी पिण दौडी, फळमा लग मा वहण फिरी। मडहठ लागौ कुटुब चौ मेळौ, किणिय न सुख दुख वात करी।

—प्रथवीराज राठौड

मडाघाट–स० पु० [स० मृत +घट्ट] नदी पर वह स्थान जहा पर शव जल प्रवाह मे वहा दिया जाता है, मुरदाघाट।

उ०—वाणियौ गगाजी पूगौ तौ पछा रा डर सू वो सीधौ मडाघाट माथै ई गियौ।—फुलवाडी

मडियल—देखो 'मडकल' (रू. भे)

मडियौ—१ देखो 'मडौ' (अल्पा, रू. भे)

२ देखो 'मडकल' (रू भे)

उ०—मडियौ कुडियौ मेर, सग सडियौ न सुहावै। पडियौ रहै परेत, दैत ज्यू दात दिखावै।—ऊ का

मडेठौ—देखो 'मरहठौ' (रू भे)

उ०—दुय चत्रमास वादियौ दिखणी, भोम गई जो लिखत भवेस। पूगौ नही चाकरी पकडी, दीधौ नही मडेठां देस।—वा दा

मडोड—देखो 'मरोड' (रू भे)

मडोडी—देखो 'मरोडी' (रू भे)

मडौ–वि० [स० मृत] १ मरा हुआ, मृत।

२ दुर्बल, क्षीण, काय।

३ शक्ति हीन, अशक्त।

स० पु०—शव, लाश।

उ०—१ सेठ तौ साचेला मडा री गळाई सास ऊचौ चाढ़ लियौ। —फुलवाडी

उ०—२ अेकण साह रो बेटो मुवो सु मडो इण खेडै वळ पावै नहीं। —नैणसी

रू० भे०—मढ़ौ।

अल्पा०—मडियल, मडियौ।

मह०—मड, मडउ।

मचक—देखो 'मचक' (रू भे)

मचकद, मचकध—देखो 'मुचुकुद' (रू भे)

उ०—वेढ रा विखम तासा तवल वजासी। यर दुरग छोड भागै अगो-भगासी। लाय दसकध वाळै सदन लगासी। जोध मचकध सुतो थको जगासी।—कुवर रतनसिंघ जी रो गीत

मच–स० पु० १ पुष्टता, सुडौलता।

उ०—१ ठाकुरा घोडा हाथिया जवा रो नै वाड रो मच दीसै नहीं, कीं वात सू।—डाढाळा सूर री वात

उ०—२ किणीई वैगण वायडा अर किणीई वैगण पच। किणीई चढै आफरो ने किणीई चढे मच।—अज्ञात

क्रि० वि०—शीघ्रता से, झटके के साथ।

रू० भे०—'मच्च'।

मचक—स० स्त्री०—१ मचकना क्रिया का भाव।

२ लचक, दवाव।

उ०—तिण पर उतरादी तरफ तो स्री तीजांमाजी मिंदर १९०२ रा फागण बद २ तयार करायो। उतराधा घाट पर सू पछै १९०९ रा बरस मिंदर मचक खादी तद दूजो मिंदर घासमडी मे करायो।—मारवाड री ख्यात

३ शरीर के अग पर विशेष दबाव पड़ने से नाड़ी के अस्त व्यस्त होने की दशा।

रू० भे०—मचक, मचक्क, मच्चक।

मचकणौ, मचकबौ—क्रि० अ०—१ आघात और बोझ पाकर दबना, झुकना, लचकना।

उ०—१ वीर जोद्धारा री जुद्ध होवण लागौ तिण सू धरती धूजण लागी तद नागणी नाग नै पूछै छै—हे नाग ! आज धरती मे धरराट काई तरह होवै छै तद नाग कही—हे नागण आ धरती मचकै छै। नागण कह्यौ क्यू—तद फेर नाग कहै—इण धरती रा भोगण वाळा धणी इण जमी सारू आज रण मे अड़िया है।—वी स टी

उ०—२ मचकै फुणाटा चील लचकै कमठी मोर, वोम ढकै उडै खेहा रूकै घीर वाट। अजादा दधेस मुकै भेचकै मवेस मीट, तणै धू नरेस हकै हैजमा तुराट।—अनोपसिह राठौड री गीत

२ धक्का या झटका खाकर हिलना, झूलना।

उ०—लचकै गोडी लागता, मचकै हीड मचोळ। तन दमकै दामिण तरह, झमकै पग रमझोल।—सिवबगस पाल्हावत

३ पैर न जमना, पीछे हटना, अपने स्थान पर ठहर न सकना।

उ०—मेळियौ 'जसै' वळ दिली-दळ मचकता, प्रवळ भुज वळ सरळ तरळ पूगौ।—नाथौ सांदू

मचकणहार, हारौ (हारी), मचकणियौ—वि०।

मचकिओड़ौ, मचकियोड़ौ, मचक्योड़ौ—भू० का० कृ०।

मचकीजणौ, मचकीजबौ—भाव वा०।

मछकणौ, मछकबौ—रू० भे०।

मचकाणौ, मचकाबौ—क्रि० स०—१ प्रहार करना, आघात करना, मारना।

उ०—म्हारी म्हारी छाळिया नै दूधौ दही पाऊ। म्हारियो आवै तो सोटै री मचकाऊ।—लो गी

२ झूले मे पेंग या झटका लगाना झूले मे झोका लेना।

उ०—यौ मळकौ वकौ हुवौ, हळकौ लग हाथांह। साथण सू छाती भिड़ी, हीडौ मचकाताह।—पना

३ खाना खाना, भोजन करना। (व्यग्य)

४ मसलना, मलना।

५ सम्भोग करना, मैथुन करना।

उ०—माणी घर मचकाय, प्यारी कर 'दौलत' 'पदम'। आस्रम चौथे आय चीदो ते दीधी 'चिमन'—लक्ष्मीदान बारहठ

६ पैर न जमने देना, पीछे हटाना, अपने स्थान पर ठहरने मे असमर्थ करना।

मचकाणहार, हारौ (हारी), मचकाणियौ—वि०।

मचकायोड़ौ—भू० का० कृ०।

मचकाईजणौ, मचकाईजबौ—कर्म वा०।

मचकाड़णौ, मचकाड़बौ, मचकावणौ, मचकावबौ, मछकाणौ, मछकाबौ—रू० भे०।

मचकाड़णौ, मचकाड़बौ—देखो 'मचकाणौ, मचकाबौ' (रू भे)

मचकाड़णहार, हारौ (हारी), मचकाड़णियौ—वि०।

मचकाड़िओड़ौ, मचकाड़ियोड़ौ, मचकाड्योड़ौ—भू० का० कृ०।

मचकावीजणौ, मचकावीजबौ—कर्म वा०।

मचकायोड़ौ—भू० का० कृ०—१ प्रहार किया हुआ, वार किया हुआ. २ (झूले मे) झोका या झोटा लगाया हुआ ३ खाना खाया हुआ (व्यग्य) ४ ममला हुआ ५ सम्भोग किया हुआ ६ पैर न जमाया हुआ, पीछे हटाया हुआ, अपने स्थान पर ठहरने मे असमर्थ किया हुआ।

(स्त्री० मचकायोड़ी)

मचकावणौ, मचकावबौ—देखो 'मचकाणौ, मचकाबौ' (रू भे)

उ०—१ इण भात री तिजारौ सू गोरौ भूवरिया पुहचा सू दुजण साह्या कटोरा मे भला जुवांन मचकावै छै। वेवडी गळणी सू खीची चाढ छाणजै छै।—रा सा स

उ०—२ सेखौ सावळदास री वेगी गई विलाय। मालूपा मकचावता, कादा रोटी खाय।—अज्ञात

मचकावणहार, हारौ (हारी), मचकावणियौ—वि०।

मचकाविओड़ौ, मचकावियोड़ौ, मचकाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

मचकावीजणौ, मचकावीजबौ—कर्म वा०।

मचकावियोड़ौ—देखो 'मचकायोड़ौ' (रू भे)

(स्त्री० मचकावियोड़ी)

मचकियोड़ौ—भू० का० कृ०—१ आघात या बोझ के प्रभाव से दबा हुआ, लचका हुआ २ धक्का या झटका खाकर हिला हुआ, झूला हुआ ३ पैर न जमा हुआ, पीछे हटा हुआ, अपने स्थान पर ठहर सकने मे असमर्थ हुवा हुआ

(स्त्री० मचकियोड़ी)

मचकुंद—देखो 'मुचुकुंद' (रू भे)

मचकूर—स० पु०—१ विशेषत लिखित विवरण।

२ वृतान्त, हाल, वार्ता।

उ०—१ तठै राजावा सारा मनसोभो कीयो जो किण ही तरै साची खबर मगावौ, काई मचकूर है।—द दा

उ०—२ राजा कनकरथ सारी हकीकत पूछी। वेणीदास, चदण, हरदान सारौ मचकूर हुवौ सौ मालम कियौ।

—पलक दरियाव री वात

३ सलाह, मत्रणा, मसविदा।

उ०—करता इम मचकूर, अडर 'अवरग' दळ आया। राजलोक भूप रा, सज्जि खग सुरग वसाया।—सू प्र.

४ फौज, लसकर।

उ०—अरु अठै पातसाहजी मचकूर नू कूच तरफ ईरांन री कियो ।
—द दा

५ चर्चा, जिक्र ।

उ०—ताहरा मा पण आहीज कही—हालण रै वास्तै सारो लोक आतुर छै । महाराज निपट काहल करै छै । थारो मुलाहिजो करि दवायनं कहै न छै । तैंसू सवारै तो हालिया सरसी । उठै कुंवर आहीज कही कै हालसा । इतरी कहि ऊठियो, आपरी डोढी गयो । सदामद आवतां साम्हा सहल—सहेली त्यूं हीज मुजरो कियो । भीतर ले गया । उठै पण इण हीज भांति मचकूर हुवो सो साह अजैपाळ आपरै कन्है सुणियो ।—पलक दरियाव री बात

६ वार्तालाप, बात ।

उ०—उठै उहा आडा किवाड था सो खोलाया, 'जो वडा सिरदार ताक खोल । हमें कितरी ताळ वचीस ? म्हे बाहर खडा सो हरगिज छोडा नही । कुहाडा मगाय किवाड तोडस्या । तैंसु सिरदार छै, बाहर नीसर काम आव ।' इण भांत मचकूर करै छै ।
—कवरसी सांखला री वारता

७ मालूम ।

उ०—पडै मचकूर लधन खबर पाडिया । जोध खग झाडियां धको जमरो ।—कमजी दधवाडियो

रू० भे०—मछकूर ।

मचकोडणो, मचकोडबो–क्रि० स०—पराजित करना, हराना ।

उ०—मारी मलिक अवाला कीधा, मचकोडिउ तरकाणउ ।
—का दे प्र

२ भोजन करना ।

मचकोडणहार, हारो (हारी), मचकोडणियो—वि० ।

मचकोडिग्रोडो, मचकोडियोडो, मचकोडयोडो—भू० का० कृ० ।

मचकोडीजणो, मचकोडीजबो—कर्म वा० ।

मचकोडियोडो–भू० का० कृ०—१ पराजित किया हुआ, हराया हुआ
२ भोजन किया हुआ
(स्त्री० मचकोडियोडी)

मचकोळणो, मचकोळबो–क्रि० स०—मुख मुद्रा बनाना, मुख की आकृति को बिगाडना ।

उ०—पण चोपडियं घडै छाट लागं तो बारै वात लागती । सगळा मूंडो मचकोळ'र कै'ता—वैन रो अधकारो ईज घणो माथै चाढलै ।
—वरसगाठ

मचकोळणहार, हारो (हारी), मचकोळणियो—वि० ।

मचकोळिग्रोडो, मचकोळियोडो, मचकोल्योडो—भू० का० कृ० ।

मचकोळीजणो, मचकोळीजबो—कर्म वा० ।

मचको–स० पु०—१ झूले मे लगने वाला झोका, या झोटा ।

क्रि० प्र०—देणो, लगाणो ।

२ धक्का ।

३ चापलूसी का कार्य ।

४ रति क्रिया मे पुरुषेन्द्रियो द्वारा लगने वाला धक्का ।

क्रि० प्र०—देणो, मारणो, लगवाणो, लगावणो, लागणो ।

रू० भे०—मचक्को ।

मचक्क—देखो 'मचक' (रू भे)

मचक्कणो, मचक्कबो—देखो 'मचकणो, मचकबो' (रू भे)

उ०—हय हिन्दुनि हक्किय वीर किलक्किय, सोर भभक्किय घोर दहू । सिर सेस लचक्किय भूमि मचक्किय, कोल मचक्किय दत कहू ।—ला. रा

मचक्कणहार, हारो (हारी), मचक्कणियो—वि० ।

मचक्किग्रोडो, मचक्कियोडो, मचक्कयोडो—भू० का० कृ० ।

मचक्कीजणो, मचक्कीजबो—भाव वा० ।

मचक्कियोडो—देखो 'मचकियोडो' (रू भे)
(स्त्री० मचक्कियोडी)

मचक्को—देखो 'मचको' (रू भे)

उ०—गोळा रीठ वाज रमा, गोरमा नीहाव गाजै । भांजपं मचक्का पीठ, कुरमां भवान ।
—राव राजा उम्मेदसिंह बूंदी रो गीत

मचणो, मचबो–क्रि० अ० [अनु०] १ होना, घटना ।

उ०—अमला खोवा बाजिया, मचै भडा मनुवार । जागडिया दूहा दियै, सिंधू राग मल्हार ।—वा दा

२ छिडना, आरम्भ होना, धूम धाम से शुरू होना ।

उ०—१ मच धांमधूम सर सेल मार, पडग्गास ग्रास आठू प्रकार ।
—रा. रू

उ०—२ मचियै काकळ मदत री, वीर न देखे वाट । एक अनेकां सूं हिचै, छाती वजर कपाट ।—वा दा

३ जोर से होना, तेज होना, तेजी आना, तीव्र रूप से होना ।

उ०—१ प्रथम गजर तोपां पडै, गोळा वजर गुडांण । मचियो जिण दिन माझिया घोर अळै घमसाण ।—व भा

उ०—२ सक चउदह सत्रह समै उज्जैणी रण एह । हुवो हजारां मरण हद, मचि असिधारा मेह ।—व भा

४ चारो ओर फैलना, अधिक प्रभावी होना ।

उ०—जैन वाम मचिया वडजोरां, गहरे सुर आई गिणगोरां ।
—ऊ का

५ पुष्ट होना, मोटा ताजा होना ।

ज्यू—नारा रो मचणो, वछेरा रो मचणो ।

६ प्रबल होना, उग्र होना ।

७ मस्ती में आना ।

८ लाक्षणिक अर्थ मे अनीति करना, नाजायज हरकतें करना ।

मचणहार, हारो (हारी), मचणियो—वि० ।

मचिग्रोडो, मचियोडो, मच्योडो—भू० का० कृ० ।

मचीजणो, मचीजबो—भाव वा० ।

मचमचणी, मचमचबी, मचणी, मचबी, मांचणी, मांचवी, माचणी, माचवी—रू० भे०।

मचमचाणी, मचमचाबी—देखो 'मचणी, मचवी' (रू भे) (स० ३, ४, ५, ६)

उ०—मैंमद मचमचिया जदी, सझियो फिरग समाज। घट उगणीसैं चौपने मतौ कियौ महाराज।—जुगतीदान देथौ

मचमचणहार, हारौ (हारी), मचामचणियौ—वि०।

मचमचिग्रोडो, मचमचियोडो, मचमच्योडो—भू० का० कृ०।

मचमचीजणी, मचमचीजबी—भाव वा०।

मचमचाट, मचमचाहट, मचमची—स० स्त्री०—१ मस्ती।

२ कामातुरता।

३ आतुरता।

मचरकौ—स० पु०—१ किसी भारी अथवा बोझिल वस्तु का दबाव।

उ०—चहल तिहु लोक चळ सिद्ध आसण चले, हरी ताळी खुली सूलहाथा। कमठ पर भार पड छिले रस कचरका, मचरका मेस रा हले माथा —र रू

२ घर्षण।

मुहा०—मचरकौ मारणौ, मचरकौ लगाणौ—बात बढाने के भाव से अपनी ओर से कुछ कहना, चिनगारी डालना।

मचळ, मचाळण—स० स्त्री०—१ 'मचळणौ', क्रिया का भाव। मन की घबराहट।

२ देखो 'मचळाण' (रू भे.)

३ देखो 'मचळी' (रू भे)

मचळणौ, मचाळबौ—क्रि० अ०—१ किसी वस्तु आदि की प्राप्ति के लिए आतुर होना या उद्विग्न होना।

२ किसी वस्तु को प्राप्त करने के लिए जिद्द करना, हठ करना।

३ किसी कार्य के करने या कहीं जाने मे इन्कार हो जाना।

उ०—१ चरखां गडि चक्र मगा मचळै, चरहू थिर थाय पगा न चलै, जड हू करि जगम देत जिका, तन अद्र मतगज रग तिका। —मे म

४ चलना।

उ०—मरि पेंट्य सोर महोर हकी, मध्र सूकर वाघ मुखी मळकी। मग दीरघ तोप किती मचळै, उन्मत्त करीगन लागि टलै।—ला रा

५ विचलित होना।

उ०—दिगंता लौं दोरैं मचळ, मन मोरैं मुदमुदी। विदातौ झझोरैं विसय, विस बोरैं बुदबुदी।—ऊ का.

मचळणहार, हारौ (हारी), मचळणियौ—वि०।

मचाळिग्रोडो, मचाळियोडो, मचाळ्योडो—भू० का० कृ०।

मचाळीजणौ, मचाळीजबौ—भाव वा०।

मछळणौ, मछळबौ—रू० भे०।

मचळांण, मचलांण, मचळाट—स० स्त्री०—१ बू, गध।

रू० भे०—मचळ, मचळण, मछळाण, मछलांद, मछळाट, मिचलाण, मिचलाट।

मचळी—स० स्त्री०—कैंय, वमन।

मचली—देखो 'माचो' (अल्पा, रू भे)

मचळौ—वि० (स्त्री० मचळी) १ अप्रिय, जो मचलाहट उत्पन्न करता हो।

२ अम्ल-युक्त।

रू० भे०—मिचळौ।

मचाण, मचान—स० पु० [स० मच + हिं० आन (प्रत्य०)] वह ऊचा आसन या मच जिस पर बैठकर कृषक अपने खेत की रखवाली करता है या शिकारी शिकार करता है।

मचाणौ, मचावौ—क्रि० स० [अनु०] १ आरम्भ करना, जारी करना।

उ०—सो उठारै अधीस दलै नाम जोइये आपरा वैभव समेत आघी अवनी देर आगै कीधौ आपरा वचावण रो उपकार विचारि बडा आदर रै साथ मेलियो तौ भी महामूढ वारुणी रै वसीभूत अनेक उपद्रव मचाइ ऊवट ही वहियौ।—व भा

२ करना, मचाना।

उ०—सुणै सुरताण दिल्ली उदैपुरा राण सुणै। कछवाहा चव्हाण मचाणा रण कीच।—हाडा कछवाहा रौ गीत

३ चारो ओर फैलाना, अधिक प्रभावशाली बनाना।

उ०—१ खिच्ची कुळ 'दूदौ' अरि खावण, राडी दुलह हुवौ बळ रावण। मारि खळां घर कूक मचाई, चडी जिण वहुवार नचाई। —व. भा

उ०—२ दिल्ली रा दळ मे दरोळ देखता ही साहजादा री सेना बडे जोर बघी थकी आगै आइ उछाह रै उफाण महाप्रळै मचायौ। —व भा

उ०—३ हाथी, चीता, हिरण, लूकडी अर छाळीनारिया इत्याद सरव जिनावरा नै गधो एक मोटा सिंघासण माथै बैठनै समझावण लागो—इण जगळ मे की कायदो कानून कोनी। यैं सगळै रुळपट मचाय राखी है।—फुलवाडी

उ०—४ जोत रा दरसण व्हैता ई सगळा लोग खम्मा खम्मा री एकर फेर हाक मचाय दी।—फुलवाडी

४ जोर पकडाना, तेज करना।

५ पुष्ट एव मोटा ताजा करना।

६ प्रवल एव उग्र बनाना।

७ मस्ती मे लाना।

८ अनीति कराना, नाजायज हरकतें कराना।

मचाणहार, हारौ (हारी), मचाणियौ—वि०।

मचायोडो—भू० का० कृ०।

मचाईजणौ, मचाईजबौ—कर्म वा०।

मचणौ, मचबौ,—अक रू०।

मचावणौ, मचावबौ—रू० भे०।

मचामच—स० स्त्री० [अनु०] 'मचमच' की शब्द ध्वनि जो किसी पदार्थ को दबाये जाने से उत्पन्न होती है।

मचावणौ, मचाववौ—देखो 'मचाणौ, मचावौ' (रू भे.)

उ०—१ गाहै गजराजा गुडां, रुहिर मचावै कीच। ज्यांरै नवग्रह पाधरा, जे वका रण वीच।—बा दा

उ०—२ तीजणियां हीडा मचावै है, लक लचावै है।—र हमीर

मचावणहार, हारौ (हारी), मचावणियौ—वि०।

मचाविग्रोडौ, मचावियोडौ, मचाव्योडौ—भू० का० कृ०।

मचावीजणौ, मचावीजवौ—कर्म वा०।

मचीडौ—जोर, ताकत।

उ०—ईं मुसाफरी में घरा अर गाव रै बीचाळै जगा मोल लेवै है। जगा राज रै गढ री वडा मचोडा सूं मिळै है।—दसदोख

मचोळ—स० स्त्री०—१ तरग, लहर, हिलोर।

२ धक्का, आघात, झटका।

उ०—पीठ बडबड्डात कूरम घटा प्रळै री। मही खडखड्डात हैजम मचोळां—अज्ञात

३ देखो 'मचोळौ' (मह, रू भे)

उ०—लचकै गोडी लागता, मचकै हीड मचोळ। तरण दमकै दामरिण तरह, झमकै पग रमझोळ।—सिवबगस पाल्हावत

मचोळणौ, मचोळबौ—क्रि० स०—१ विलोडित करना, मथना।

२ विध्वस करना, तहस नहस करना।

३ झूले के पेंग या झोंका लगाना।

उ०—मचकै हीड मचोळता, लचकै झीरणीं लक। तन दमकै दामणि तही, मुखडो जाण मयक।—र हमीर

४ भोजन को चवाना।

मचोळणहार, हारौ (हारी), मचोळणियौ—वि०।

मचोळिग्रोडौ, मचोळियोडौ, मचोळ्योडौ—भू० का० कृ०।

मचोळीजणौ, मचोळीजबौ—कर्म वा०।

मचोळियोडौ—भू० का० कृ०—१ विलोडित किया हुआ, मथा हुआ. २ विध्वस किया हुआ. ३ पेंग या झोका लगा हुआ (झूला) ४ चबाया हुआ. (भोजन)

(स्त्री० मचोळियोडी)

मचोळौ—स० पु०—१ हिंडोला या झूला झूलते समय उस पर इस प्रकार जोर या झटका लगाना जिससे झूले का वेग बढ जाए और वह दोनों ओर अधिक दूरी तक झूले।

२ धक्का, टक्कर।

उ०—१ अर तोपां री गाज हू सेस रा सोसा समेत मकराकर मेखळा मही रै मचोळा लगाया।—व भा

उ०—२ या सुणता ही अणिहलपुर रो अधीस सेना रा सभार सू मही रै मचोळा देतो गजनवी रो वेग झेलण रै काज जवनेस रो राह रोकि ''' ।—व. भा.

३ मोठ (चडस) की लाव खींचने के स्थान का वह आखरी हिस्सा जहा पर बैल रुकते हैं और लाव की कीली निकाली जाती है, झोला।

४ मस्ती मे झूमने की क्रिया, झूमना।

उ०—दुरद मचोळा दे रह्या, सुभट सचोळा साज। बचां न इण खोळा विचै, भोळा कथ उठि भाज। भोळा कथ उठि भाज, आज नहि ऊबरा। पा'रो नगर पहाड, बगां ज्यां विम्भरा।

—सिवबगस पाल्हावत

रू० भे०—मच्छोळौ, मछोळौ,।

मह०—मचोळ।

मच्च—देखो 'मच' (रू भे)

मच्चक—देखो 'मचक' (रू भे.)

मच्चकणौ, मच्चकबौ—देखो 'मचकणौ, मचकवौ' (रू. भे)

मच्चकणहार, हारौ (हारी), मच्चकणियौ—वि०।

मच्चकिग्रोडौ, मच्चकियोडौ, मच्चक्योडौ—भू० का० कृ०।

मच्चकीजणौ, मच्चकीजबौ—भाव वा०।

मच्चणौ, मच्चबौ—देखो 'मचणौ, मचवौ' (रू भे)

उ०—बीता अधूरां वार पूरा वेध वच्चए। मेने प्रहार धार सार मार मारं मच्चए।—रा. रू

मच्चु—देखो 'मृत्यु' (रू भे) (जैन)

मच्छ—स० पु० [स० मत्स्य प्रा० मच्छ] १ बडी मछली।

उ०—इक कहत मोद अथाह, गिण मच्छ कच्छप ग्राह। जळ गहर सागर जोर, तिण वीच थाह न तोर।—रा रू

२ ग्राह, मगर।

उ०—मच्छां रै जळजीव जिम, सवजी तरा सदीव। अदतारा धा जीव इम, जस दातारां जीव।—बां दा

रू० भे०—मछ, मछौ, माछ माछु माछौ।

अल्पा०—माछळउ, माछळौ, माछलौ।

मह०—माछळ।

३ सात गुरु और ३४ लघु मात्राओ का दोहे का एक भेद।

४ छप्पय छद का २३ वा भेद जिसमे ४८ गुरु, ५६ लघु से १०४ वर्ण या १५२ मात्राए होती हैं। मतान्तर से ६८ गुरु, १२ लघु से ८० वर्ण तथा १४८ मात्राओं का भी माना जाता है।

५ मत्स्य के आकार का हाथ की हथेली मे होने वाला एक प्रकार का सामुद्रिक चिन्ह जो शुभ माना जाता है।

६ देखो 'मत्स्य' (रू भे)

उ०—मच्छ कच्छ बाराह महमहण। नारसिंह बांमन नारायण।

—ह र.

यौ०—मच्छग्रसवारी, मच्छवेदणी।

वि०—१ प्रबल, शक्तिशाली। २ भीमकाय।

२ देखो 'माछर' (रू भे)

मच्छग्रसवारी–स० पु० यौ० [स० मत्स्य+राज० ग्रसवारी] कामदेव, मदन। (डि को)

मच्छड—देखो 'माछर' (रू भे)

मच्छदेस–स० पु० [स० मत्स्य+राज० देश] प्राचीन विराट देश का नामान्तर।

मच्छर—१ देखो 'मछर' (रू भे)

उ०—१ कर थक्के तरवार, म्लेच्छ कर थक्के मच्छर। बरि थक्के बरि हूर, सूर बरि थक्के ग्रच्छर।—ला रा

उ०—२ मच्छर ग्रोर न सग्रहै, ग्रा मछरीका ग्राद। ग्रडै कमधा ग्रगळी, विचग्रा हूता वाद।—रा. रू.

उ०—३ कमधज 'छाडै' कीध कोपियै, माडधरा ऊपर मच्छर। 'धूहड' हूरो धूरण खग धारां, सत्र लूटै वळीयी समर।

—राव छाडा री गीत

उ०—४ छोडावियो मच्छर 'छाडावत', कळह वार ग्रहे केवाण। भिडतै खेत भील-पुर भागो, चौरग सावत सीह चहुवाण।

राव तीडा री गीत

२ देखो 'माछर' (रू भे.)

मच्छरमांण–स० पु० [स० मत्सर+रा० माण] गर्व को मिटाने वाला।

उ०—ऊगमण लगे सूर उछजियै, मिळे महादळ मच्छरमाण। साणै वतलायो तीडावत', ढाणियां ताय ढीनवियै ढाण।

—राव मलखा री गीत

रू० भे०—मछरमाण।

मच्छराळ—देखो 'मछराळ' (रू भे)

उ०—'जसवत' मडोवर दिग्गपाळ, 'महेस' कळोधर मच्छराळ।

—गु रू व

मच्छराळी—देखो 'मच्छराळ' (ग्रल्पा, रू भे)

उ०—दाढाळी बाढाळी वधै, रढाळी करतो दोड। मांनै नही मच्छराळी, मझाळी मरम्म।—घ व ग्र

(स्त्री० मच्छराळी)

मच्छरि—१ देखो 'माछर' (रू भे)

२ देखो 'मछर' (रू भे)

उ०—पाहाडै 'मादूळ', भाजि चढियो भिडवायो। चीतोडो चतुरग, भीम दळ मेले ग्रायो। बळि बोलै सीसोद, मूछ वळ घाळै मच्छरि। ग्रभै-दान ग्रापियो, ग्राव पंलालि विनो करि।—गु रू ब

मच्छरियो—१ देखो 'मछरीक' (ग्रल्पा, रू भे)

२ देखो 'माछर' (ग्रल्पा, रू भे)

मच्छरी—१ देखो 'मछर' (रू भे)

उ०—भोग दिखाडइ भुवि घणां, विधि विधि तणा विचित्र। मूछ समारइ मच्छरी मन्मथ-केरा मित्र।—मा कां. प्र

२ देखो 'माछर' (रू भे)

मच्छरीक—देखो 'मछरीक' (रू. भे)

मच्छरूप–स० पु० [स० मत्स्य+रूप] मत्स्यावतार, मच्छ ग्रवतार।

उ०—मच्छरूप करि वेद उधारया, ऐसा ग्रचिरज किया। भक्ति हेतु हरि ग्राप पधारघा, ले ब्रह्मा कूं दीया।—ह. पु वा

रू० भे०—मछरूप।

मच्छरंत—देखो 'मछरंत' (रू भे)

मच्छवा—देखो 'मछवा' (रू भे)

मच्छवो—देखो 'मछवो' (रू भे)

मच्छवेदणी–स० स्त्री० [स० मत्स्य+वेधिनी] मछली पकडने का कांटा।

मच्छावतार—देखो 'मछावतार' (रू भे)

मच्छिया–स० स्त्री० [स० मक्षिका] मक्खी।

मच्छियारो—देखो 'मछियारो' (रू भे)

मच्छी–स० स्त्री० [स० मत्स्य] प्रसिद्ध जल जतु, मछली। (डि को)

उ०—ग्रांरिण ग्रछी गति ग्रोभळै, ज्यूं मच्छी जळ मांह। निजरि तिरच्छी न्हाळता, वरछी सी वह जाय।—र हमीर

पर्याय०—ग्रडज, ग्रनमिख, ग्रलूकी ग्रातमासी, इदुजयकर, कुळ-खय, कुसळी, खडपीण ग्रहवार, चंचळ, जलग्राधार, जादस, झख, तिम, थिरजीह, पयनिग्त पाठीन, प्रथुरोमा, वैसारिण, मकर, मीन, वारचर, वारज, विसार, वैसारण, सवर, सफर, सलकी, सिधचारी, सिंधचीरी, सुकसार।

यौ०—मच्छीकेतु, मच्छीमार।

रू० भे०—मछो, मछी, माछि, माछिणी, माछी।

ग्रल्पा०—मछळी, मछली, माछलडी, माछली, माछिळी।

मह०—मच्छ, मछ, माछ, माछळो, माछलो।

२ बाह, जघा ग्रादि की मास पेशी।

३ उक्त मास पेशी का पकाया हुग्रा मास।

४ मच्छी के ग्राकार का सोने चांदी का लटकन जो ग्राभूषणों मे लगाया जाता है।

५ पैर में धारण करने का महिलाग्रों की एक ग्राभूषण विशेष।

मच्छीकेतु–स० पु० [स० मत्स्यकेतु] कामदेव।

रू० भे०—मछीकेत।

मच्छीमार—मच्छी पकडने का व्यवसाय करने वाला, मछुग्रा।

उ०—पातर भगतण पेख, परम मन मे सुख पाई। मिळियां मच्छी-मार, करे ज्यूं मोद कमाई।—ऊ का

रू० भे०—मछळीमार।

मछंदर, मछंदरनाथ, मछंद्र, मछंद्राणी, मछंद्री–स० पु० [स० मत्स्य+इन्द्र] नाथ सम्प्रदाय के प्रसिद्ध नवनाथों मे एक, मत्स्येन्द्रनाथ।

उ०—भाण तेजगीरां तीरां विध्या मैंघा जै भाखा, जाण मछंद्रांणी जोग मत्ती रो वोधांण जो भार। जम्मीरा जोखीरा वीरा वीरभद्र जेम, जोयजो 'हम्मीरां' ग्रेम 'खेम' रो जोधार।—हुकमीचद खिडियो

रू० भे०—मछिंदर, मछेंदर, मछेंद्र, माछदर, माछद्र ।

मछ—१ देखो 'मच्छ' (रू भे)

उ०—१ पडै कोट उर टकर, पडै गज घकै अपारा । जळ धारां मछ जेम, घसै सामो खग धारां ।—सू प्र

उ०—२ मणिबंध तीन मणि जव प्रमाणि । मछ कच्छ कुंभ गज रथ मडाणि ।—सू प्र

२ देखो 'मच्छी' (मह , रू भे)

उ०—खळकै लहर समद जळ खारी । दाभै मछ कछ जीव दुए ।
—सांवळदान कवियो

३ देखो 'मत्स्य' (रू भे.)

मछकणौ, मछकवौ—देखो 'मचकणौ, मचकवौ' (रू भे)

मछकणहार, हारौ (हारी), मछकणियौ—वि० ।

मछकाडणौ, मछकाडवौ, मछकाणौ, मछकावौ, मछकावणौ, मछकावबौ—प्रे० रू० ।

मछकियोडौ, मछकियोड़ो, मछक्योडौ—भू० का० कृ० ।

मछकीजणौ, मछकीजवौ—भाव वा० ।

मछकाणौ, मछकावौ—देखो 'मचकाणौ, मचकावौ' (रू. भे)

मछकायोड़ौ—देखो 'मचकायोडौ' (रू भे)

(स्त्री० मछकायोडी)

मछकावणौ, मछकावबौ—देखो 'मचकाणौ, मचकावौ' (रू भे)

उ०—दूजी मारी देखसी, सारी साथणियांह । म्यारांमजी मछकावतां हीडा री तणियाह ।—मयाराम दरजी री वात

मछकावियोडौ—देखो 'मचकायोड़ौ' (रू. भे)

(स्त्री० मछकावियोडी)

मछकियोडौ—देखो 'मचकियोडौ' (रू भे.)

(स्त्री० मछकियोडी)

मछकूर—देखो 'मचकूर' (रू भे)

उ०—मारू मो मनुहार को, पीवो दारू पूर । माफ करावौ म्यारजी, मरूधर रो मछकूर ।—मयाराम दरजी री वात

मछगंधा—देखो 'मत्स्यगधा' (रू भे)

मछगात—वि० [स० मत्स्य+गात्रम्] महाकाय, वडे शरीर वाला ।

मछटथळ—स० स्त्री०—'निसाणी' छद का एक भेद विशेष, जिसमे प्रतिचरण २९ मात्राए होती हैं । १३ और १६ मात्राओ पर यति एव अत मे दो कुरू होते है ।

मछपति—स० पु० [स० मत्स्यपति] वरुण देव । (नां मा , ह ना मा)

मछपळ—स० पु० [स० मत्स्य+पाल] समुद्र । (अ मा)

मछबारस—स० स्त्री० [स० मत्स्य+द्वादशी] अगहन मास के शुक्ल पक्ष की द्वादशी ।

मछर—स० पु० [स० मत्सर] १ गर्व, अभिमान ।

उ०—१ अजमेरा ऊतरै, कमळ कूं बोल चढावै । मेल्हि पराक्रम मछर, कुळह काळवख लगावै ।—गु रू व.

उ०—२ वाता बिसतारे वणी, सठ आगै मरवग्य । मून ग्रहे छांडे मछर, तीखो मिळियां तग्य ।—बा. दा.

उ०—३ 'सूर' रो दिली दरगाह असहा सिरै, हियै चढ प्रवाडा लियण हिळियौ । मूहा सैदां तणा मार हिंदू मुगळ, मछर सैधां मुहा आण मिळियौ ।—देवराज रतनू

२ ओज, तेज ।

उ०—अै अखीयात कीघ 'आसावत, रोदा सू तेवडै रिण । वघियौ वरघापण वढता, पोरस मछर जवांनपण ।
—दुरगादास आमकरणोत रो गीत

३ जोश, साहस ।

उ०—वदन तेज कळपत रो वयळ वाडव वर्णौ, ऊफणै क्रोध पोरस अमांमो । मंडांणौ हेक राजा घणै मछर सू, साहजादा दुहू तणै मांमहो ।—रुघो मुहतो

४ शौर्य, पराक्रम ।

उ०—इण भांति पकति वैठा देवगण आप आपरा दुग्र रो विवेक कियो । इतरा मांहे छिलतै मछर सूर पूर रो उजाघर केवियां रो काळ सभा रो साल, बोलिया इद महाराज ।—मा वचनिका

५ क्रोघ, कोप, गुस्सा ।

उ०—१ इसै प्रहर जमदूत, मछर छिलतै मेलियो । कूंभै वाळो कूत, हेमै वप सासर हुवो ।—नैणसी

उ०—पूरब पछम घरा दघ-पारू, दिखण तणो खूटो बळ दारू । मक उतराध घरा तो सारू, मछर घरै किण ऊपर मारू ।
—चतुरो मोतीसर

६ शत्रुता ।

उ०—मनै सैज ऊतारिया महल सुख माळिया, मछर मछरीक मेले मछरमाण । 'सूर' भय लाहरै कमय आखाडमिघ, सायरै पावर सुये 'सुरतांण' ।—दुरसो आढो

७ डाह ईर्ष्या ।

८ मलीनता कलुषता ।

९ प्रमाद आलस्य ।

१० देखो 'माछर' (रू भे)

रू० भे०—मछ्र, मच्छर, मच्छरि, मच्छरी, मछरि ।

मछरगुर—वि० [सं० मतसर+गुरु] १ वीर शिरोमणि ।

२ महा अभिमानी, गर्वीला ।

मछरणौ, मछरबौ—क्रि० स०—१ गर्व करना, अभिमान करना ।

घ०—ते चाल्या चिति हरखता, मत्तायत मछरति । बइठा दीघइ बारणि, हाक दीइ हलकति ।—मा का प्र

२ कोप करना, क्रोघ करना ।

उ०—रिम गजण सिंघ मछरियो राजा, जो जिण ठाम स जुवा जुवा । भाला चौंडा समा भळहळे, हालाहर हैकप हुवा ।—द. दा

३ आलस्य करना, प्रमाद दिखाना ।
४ आनन्द करना ।
मछरणहार, हारौ (हारी), मछरणियौ—वि० ।
मछरिश्रोडौ, मछरियोडौ, मछरयोडौ—भू० का० कृ० ।
मछरीजणौ, मछरीजबौ—कर्म वा० ।

मछरमाण—देखो 'मच्छरमाण' (रू भे)
उ०—मनै सँज ऊतारिया महल सुख माळिया, मछर मच्छरीक गेले मछरमाण ।—दुरसौ आढौ

मछरा—स० पु० [व व] आनन्द, मौज ।
उ०—१ खुद तो लोगा री कमाई माथै मछरा करौ अर म्हनै इछा परमाण मागण री आदेस करौ ।—फुलवाडी
उ०—२ वै कैवै के राजा री देह मे कोई पीड अर कळेस ऊपजै अर रया साजी सूरी सुम्ब चैन सू मछरा करै तो उण रा राजा पणा में धूळ ।—फुलवाडी

मछराळ—वि० [स० मत्सर+आलुच्] (स्त्री० मछराळी) १ वीर, बहादुर ।
उ०—१ माभी 'मेघ' हरौ मछराळ, हूतल्लमल्ल हाथाळ । जैत्र-वादी जमजाळ, केविया रो काळ सूर धीर सप्पखाळ ।—ल पि
उ०—२ 'रामो' जुध 'माहव' रो मछराळ । रमै खग झाट खळा विकराळ ।—सू प्र
२ गर्वीला, अभिमानी ।
उ०—१ मुह रावत मछर भयकर माडण, महि 'मडळावत' मछ-राळ । 'पातावत' 'परभुमीह' पचाइण 'रूपा' जीपण रिणताळ ।
—गु रू व
उ०—२ लखपति विरदाळ कळहिल काळ, असुरा काळ खग्री अड-साळ । मिणिधर मछराळ, भीच भुजाळ, इळ रखपाळ पखा अजुआळ ।—ल पि
३ कोप करने वाला, क्रोध करने वाला ।
४ योद्धा ।
५ द्रुतगामी, तेज गति वाला ।
उ०—खड़गरू वहइ गति नंदघोख, मछराळ अचप्पळ पमण मोख । अगराण पूठि आहवि अवीह, सुजडाहथ चडियउ करमसीह ।
—रा ज सी
रू० भे०—मच्छराळ ।
अल्पा०—मच्छराळो, मछराळो ।

मछराळो—देखो 'मछराळ' (अल्पा , रू भे)
उ०—मछराळा मूछाळ, वेहद हद वेढीगारा । सुर भग्गा लख वार, प्रथी इक छाअप सारा ।—मा वचनिका

मछरि—देखो 'मछर' (रू भे)
उ०—१ कमधज्ज गरजि कठोर जिम, महाकोप चडियो मछरि ।
—गु रू व
उ०—२ साभियां वीरमदेव सभ्रम, मछरि चढि रिण मीर । कर जोडि वीवी तोडि कंकण, नयण नाखै नीर ।
—चादा वीरमदेओत मैडतिया रो गीत

मछरियोडौ—भू० का० कृ०—१ गर्व किया हुआ, अभिमान किया हुआ २ कोप किया हुआ, क्रोध किया हुआ ३ प्रमाद किया हुआ ४ आनन्द किया हुआ, मस्त ।
(स्त्री० मछरियोडी)

मछरीक—स० पु०—चौहान राजपूतो के लिये प्रयोग किया जाने वाला सम्मान सूचक शब्द ।
उ०—हुई दळ मूगळ चाढत हीक, महाबळ राड करै मछरीक ।
—सू प्र
रू० भे०—मच्छरीक ।
अल्पा०—मच्छरियौ ।

मछरूप—देखो 'मच्छरूप' (रू भे)
उ०—मीरां तू हीज मछरूप, तू सख मवाला ।—केसोदास गाडण

मछरैत [स० मत्सर+रा० प्र० एत] जबरदस्त, शक्तिशाली ।
उ०—नांमैत धैत मिळिया निजोड, कामैत भीच नखतैत कोड । बांनैत कौडि अग्रैत धीर, परचैत जाण मछरैत पीर ।
—मा वचनिका
रू० भे०—मच्छरैत ।

मछळणौ, मछळवौ—देखो 'मचळणौ, मचळबौ' (रू भे)

मछळाण, मछळांद, मछळाट—देखो 'मचळाण' (रू भे)
उ०—तठा उपरायत खरगोस होसनाक वणावै छै । मछळांद मिटायजै छै ।—रा सा स

मछळी—१ देखो 'मच्छी' (अल्पा , रू भे)
उ०—१ डावर नैंण नाचती भवती पूतळिया जाणै दो मछळिया रमैं नाचै ।—फुलवाडी
उ०—२ जळ से प्रीत करी मछळी नै, बिछुरत प्राण तजै । अगा की प्रीति लगी नादा से, सनमुख सेळ सहै ।—मीरां
२ देखो 'मच्छ' (मह , रू भे)

मछळीमार—देखो 'मच्छीमार' (रू भे)

मछवा—स० स्त्री० [स० मत्स्य] मच्छी पकडने व वेचने का व्यवसाय करने वाली जाति विशेष ।
रू० भे०—मच्छवा ।

मछवौ—स० पु०—मछवा जाति का व्यक्ति, मछी को जाल द्वारा पकडने का कार्य करने वाला व्यक्ति ।
रू० भे०—मच्छवौ ।

मछाचर—स० पु० [स० मत्स्य+चर] १ छोटे २ जल जन्तु ।
उ०—सुजळ कळा पोयिम स्रवण दान धरिया सको, ऊजळ पय सुरा छट भुजां उनमान । मछाचर दमग वड चाअगा मागणा, समद चद गिरद इद कुवर 'सुनमान' ।—सुनमानसिंह हाडा रो गीत

२ बगुला।
वि०—मछली खाने वाला।

मछावतार-स० पु० [स० मत्स्यावतार] चौबीस अवतारो मे से विष्णु का एक अवतार, मत्स्यावतार।
रू० भे०—मच्छावतार, मछ।

मछिंदर—देखो मछदर' (रू भे)

मछियारौ-स० पु० [मत्स्य+रा० प्र० यारौ] मछली पकड़ने का कार्य करने वाला व्यक्ति, मछुआ।
उ०—राजकवर री वात सुणनै मछियारौ डग डग हसियो। हसतौ हसतौ ई बोल्यो—आ बात म्हारै सोचण री नी है, मछळिया रै सोचण री है।—फुलवाडी
रू० भे०—मच्छियारौ।

मछी—देखो 'मच्छी' (रू भे)
उ०—तुम भये तरुवर मैं भई पखिया। तुम भये सरवर मैं तेरी मछिया।—मीरा

मछीकेत—देखो 'मच्छीकेतु' (रू. भे)

मछीपटण—एक प्रकार का वस्त्र विशेष।
उ०—मछीपटण मनभावतौ, काचु दियौ मिवाइ। प्रीतम पोढै पिलग परि, सुदर ढोलै वाइ।—व. स

मछेंदर, मछेंद्र—देखो 'मछदर' (रू. भे)

मछेछी-स० स्त्री० (स० मीनाक्षी] एक लता विशेष जिसके पुष्पो की तरकारी वनाई जाती है। इसके फल मच्छी के आकार के होते हैं।

मछोदरी-स० स्त्री० [स० मत्स्य+उदर+रा० प्र० ई] मत्स्य के उदर से उत्पन्न होने वाली, सत्यवती।
वि० वि०—देखो 'मत्स्यागधा' (रू भे)

मछौळौ—देखो मचोळौ' (रू भे)
उ०—मदवी को मछौळौ हाथी की हाल, तीजणीया को तुररो। रूप की मुसाल।—मयाराम दरजी री वात

मजकूर-वि० [अ०] १ पूर्वोक्त, जिक्र किया हुआ।
स० पु०—१ विवरण।
२ चर्चा, जिक्र।
३ पूर्व लिखित विवरण, उल्लेख।
उ०—तिण वचन रै विरुद्ध चाल न चलै, ज्यू तवारीख मे मजकूर छै।—नी प्र
४ वृत्तान्त, हाल, वार्ता।
उ०—तद वादसाह कही वहा काम काज का मजकूर किसमे पूछें। —गौड गोपाळदास री वारता
५ सलाह, मत्रणा।
६ वर्तमान, हाजिर।
उ०—हुसग साह वेटा स्याम करां मे छै। तिकौ आपरै वेटा नू कही थी सो मजकूर—नी. प्र.

मजघोसा—देखो 'मजुघोसा' (रू. भे)

मजण—देखो 'मजण' (रू भे)

मजणौ, मजवौ—देखो 'मजणौ, मजवौ' (रू भे)
मजणहार, हारौ (हारी), मजणियौ—वि०।
मजिग्रोडो, मजियोडो, मज्योडो—भू० का० कृ०।
मजीजणौ, मजीजवौ—भाव वा०।

मजदूर-सं० पु० [अ० फा० मज्दूर] (स्त्री० मजदूरण, मजदूरणी) बोझा ढोने वाला व्यक्ति, मज्दूरी करने वाला, श्रमिक।
रू० भे०—मजूर।
अल्पा०—मजूरडो, मजूरियौ।

मजदूरी-स० स्त्री० [अ०फा० मज्दूरी] १ मज्दूर या श्रमिक का कार्य।
२ वह धन जो किसी नियत कार्य या श्रम के लिए दिया जाता हो, पारिश्रमिक।
३ जीवन यापन के लिए किया जाने वाला कोई छोटा मोटा कार्य।
रू० भे०—मजूरी।
अल्पा०—मजूरडी।

मजन—देखो 'मजण' (रू भे)

मजनू-स० पु०—अरव का एक प्रसिद्ध 'कैस' नामक किशोर जो लैला नामक किशोरी पर आसक्त होकर उसके प्रेम मे पागल हो गया था।
वि०—प्रेम मे दीवाना, प्रेमोन्मत्त।

मजव—१ देखो 'मजहव' (रू भे)
२ देखो 'मुजव' (रू भे)

मजवी—देखो 'मजहवी' (रू भे)

मजवूत-वि० [अ० मजवूत] १हृष्ट-पुष्ट।
२ दृढ, ठोस।
उ०—दळ वळ सू घेरौ दियौ, प्रवळ हुमाऊ पूत। गैलोता चीतोड गढ, मिळ कीधो मजवूत।—वा दा
३ सबल, वलवान।
उ०—कुल रजपूत मजवूत करतार कीनौं, रग मजवूत मजवूत रजपूती मैं।—क का
४ अटल, स्थिर।
उ०—चित सू आगम चितवै, आ मजवूत उपाध। 'वक' जुडै नह वांछियौ, इण कारण हूं आध।—वा दा
५ स्थायी, पक्का।
उ०—विदीया साळ री कमठो सवत् १६०२ फीरच साव अजट रा कै'ण सू लडका नै पढावण सारू तठै ई साळ री कमठो वडो मजवूत वीयो।—मारवाड री ख्यात

मजवूती-स० स्त्री० [अ० मजवूती] १ पुष्टता।
२ दृढ़ता।
३ स्थिरता।
४ वल, शक्ति।

मजबूर—वि० [अ०] विवश, लाचार।

मजबूरी—सं० स्त्री० [अ०] विवशता, लाचारी।

उ०—घासी म्हारी फेर बिगडगी। मायो दरद सू फाटै। फगत दबाव रै कारण काम री मजबूरी।—फुलवाडी

मजमान—देखो 'मिजमान' (रू भे)

मजमानदारी, मजमानी—देखो 'मिजमानी' (रू भे)

मजमून—स० पु० [अ० मजमून] १ विषय, इबारत।

उ०—फेर इण मजमून रो गीत।—द दा

२ लेख, विवरण, लिखावट।

उ०—मजमून पहला—तूं बंदो निरबळ छै प्रभू जोरावर छै तिण तो नू बडो कियो छै। मजमून बीना विचार कर गरीबां ऊपर प्रभू री सौंप रै उतावळ सू काम मत कर।—नी प्र

रू० भे०—मजमून।

मजमो—स० पु० [अ० मजम] १ बहुत से लोगो का समूह, जन समुदाय की भीड।

उ०—वो जिण वगत उठै पूगो, लाठा सामियाना हेटै पूरो मजमो जमियोड़ो हो।—फुलवाडी

२ वह स्थान जहा लोगो की भीड हो।

मजराफ—स० पु०—एक वाद्य विशेष। (व स)

मजल—देखो 'मंजिल' (रू भे)

उ०—१ जे कोई ही चैन परलोक नै अठारो चाहे तिको विगैर मदद ऊंडा विचारा री मजल नै पहुचै।—नी प्र

उ०—२ मल्हार रो कूच करायो मजल एक डेरा कर मोनू सीख दीवी।—मारवाड री ख्यात

उ०—३ उठा सू हालिया फौज बडी घणी सो मजल छोटी हुवै। महनो एक मारग मे लगायो।—गौड गोपाळदास री वारता

उ०—४ सीहाजी साम्हो चलायो नै कहो—दिन रो दिन डेरो जठै हुवै तठा री खबर म्हांनु मेलजो। नै वह मजल दस पांच सीहाजी भेळा हुवो।—मारवाड री ख्यात

उ०—५ माहाराज रै समईयै री खबर हुई। आ जांणै छै. लोक राजा नू मजल पोहचावण नू गया छै, राणी दहड सती हुसी, अर 'नरसघ' छोटो छै।—राजा नरसिघ री वात

मजलस, मजलिस—स० स्त्री० [अ० मजलिस] १ सभा।

उ०—ऐसी विध भुजाई की तैयारी करि हवालगीरू नै अरज गुजराई। तिस वखत खिलबत के लोगू के बीच मजलस बणवाई।—सू प्र

२ महफिल, नाच रग।

उ०—विचित्रकुमार नै साथी राजा रै दरबार आया। मजलस हुई। साथ मे अमल पाणी री मनवार हुवै छै। विचित्रकुमार री नजर ओळगुवां माही छै। ओळगुवा पण हुलनै गावै छै। रबाव-सारगी, ढोल-मजरी वाजै छै।—पलक दरियाव री बात

३ नाच रग का स्थान।

रू० भे०—मजलेस।

मजलिसी—वि०—१ मजलिस मे बैठने वाला।

२ मजलिस सम्बन्धी।

मजलेस—देखो 'मजलिस' (मह, रू भे)

उ०—सुकवि देख सभरै, कोड उच्चरै विरद्दा। रीत 'अजन' राठौड, जोड लखि हद्द समर्दा। वासिव घर मजलेस, नेस लखि ईम परक्खो। 'अभै' जिसो नर अवर, राज घर कुंवर निरक्खो।—रा रू

मजहब—स० पु० [अ० मजहब] १ धर्म, दीन।

उ०—जनाजा सू उण री करणी रा वारा में पूछताछ करै कै थारो रब कुण है, थारो मजहब कांइ है।—फुलवाडी

उ०—२ अरथ कर नवा फुरमाण री आयता, लिया कर साह रै कान लागै। कहै मखदूम जुग हेक मजहब करो, 'जसो' हिन्दू-धरम मदत जागै।—नरहरदास बारहठ

२ सम्प्रदाय, पथ, मत।

रू० भे०—मजब।

मजहबी—वि० [अ० मजहबी] १ धार्मिक।

२ मजहब से सम्बन्धित।

३ साम्प्रदायिक।

रू० भे०—मजबी।

मजाक—स० स्त्री० [अ० मजाक] १ हसी ठट्ठा, दिल्लगी, हास परिहास, मखौल।

उ०—म्हारै धकै तो फगत काम होवणो चाहीजै। आप मजाक मे ई हुकम फरमाय दियो तो अबै बदो तो दोनू टक लीद ई जोखेला।—फुलवाडी

२ तिरस्कार।

क्रि० प्र०—उडाणी, करणी, सहणी।

रू० भे०—मजाख।

मजाकियो—देखो 'मजाकी' (अल्पा, रू भे)

मजाकी—वि०—मजाक करने वाला, हसी ठट्ठा या दिल्लगी करने वाला।

उ०—काढै दोसण कायबां, बाता दिए विगोय। पूछै अरथ रु पहलिया, खूब मजाकी मोय।—बा दा

रू० भे०—मजाखी।

अल्पा०—मजाकियो।

मजाख—देखो 'मजाक' (रू भे)

मजाखी—देखो 'मजाकी' (रू भे)

मजाज—देखो 'मिजाज' (रू भे) (डि. को)

मजार—स० पु० [अ० मजार] कब्र समाधिस्थल।

उ०—इमान मा उतपत्ति जे, नोज मजार निवेस। कमाल पयपै मूळरज, तास न कोई वेस।—नैणसी

२ देखो 'मध्य' (रू भे)

मजारी—देखो 'मारजार' (रू भे)

मजाल-सं० स्त्री० [अ०] १ शक्ति, सामर्थ्य।

उ०—अर जो अै पगा ऊभा हुवै तो चोरी हुवै इसी कैरी मजाल छै।—राजा भोज अर खापर चोर री वात

उ०—२ तरै रजपूते कह्यो—मजाळ छै। पछै उग्रसेन नु सीत्राणा रो विचार कियो कह्यो तोड दियो, सु उठै जा।

—राव चद्रसेन री वात

२ हौसला, हिम्मत।

उ०—आप उणनै इत्ती माथै नी चाढता तो उण री काई मजाळ के घर घर यू वेळ वाता वकती फिरै।—फुलवाडी

मजासणो-स०पु० [स० मसि+आसनम्] स्याही रखने का पात्र, दवात।

उ०—वो धम धम नीचै उतरियो। पगाथिया पर मेलियोडो मजासणो पग री ठोकर सू ऊधो हुय यो। अर इण अपमान सू वै रो सरीर टुकडा टुकडा हुयग्यो।—वरसगाठ

रू० भे०—मजासणो, मजीयासणो, मज्याणो, मज्यासणो।

मजाह—देखो 'मध्य' (रू भे)

उ०—वार वार वावरै, सार ऊपरै सनाहा। वीज जाण वादळे मिळै ऊछळै मजाहा।—रा रू

मजिसटर, मजिस्टर, मजिस्ट्रेट-स० पु० [अ० मजिस्ट्रेट] फौजदारी अदालत का दण्डनायक, न्यायाधीश।

मजिस्ट्रेटी-स० स्त्री०—मजिस्ट्रेट का पद या अदालत।

मजीठ-स० स्त्री० [स० मजिष्ठा] १ पहाडी क्षेत्र मे पाई जाने वाली एक लता विशेष जिसके सूखे डठलो व जड को उबालकर गहरा लाल रग बनाया जाता है। वैद्यक मे इस लता के डठलो आदि का प्रयोग अनेक रोगो मे होता है।

उ०—घण रत छूटत फूटत घाट। मजीठ कि जाणि ढुळै रग माट।

—सू प्र

२ लाल रग।

३ लाल रग का घोडा जो शुभ माना जाता है। (शा हो)

वि०—मजिष्ठा के रग का, लाल रग का, रक्त वर्ण का।

उ०—वदन मजीठ रूप विकराळा, पमगां चढै पूर पखराळा।

—सू प्र

रू० भे०—मजीठ, मज्जीठ।

अल्पा०—मजीठी।

मजीठउ—देखो 'मजीठो' (अल्पा, रू भे)

उ०—तुम्ह सु लागउ नेहलउ, जाण मजीठउ राग, पट्टकूल फाटै घणूं, रंग न जाय मु लागो रे।—प च चौ

मजीठियो—मजीठ के रग के समान रगदार कपडा विशेष।

वि०—मजीठ के रग का, मजीठ सबधी।

मजीठी-वि०—१ मजीठ का, मजीठ सबधी।

२ लाल, रक्त वर्ण।

३ देखो 'मजीठ' (अल्प., रू भे)

रू० भे०—मजीठी।

मजीठो-वि० (स्त्री० मजीठी) १ मजिष्ठा के रग का, लाल रग का, रक्त वर्ण का।

उ०—कामा काम कमधज दीठो, पलका अनर अमी पइट्ठो। रत्ता लोचन मुख मजीठो, आवि सिंघासण सिंघ वइट्ठो।—गु रू व

स० पु०—मजीठ के रग से मिलते जुलते रग का घोडा विशेष।

(शुभ)

रू० भे०—मजीठ, मज्जीठो, माजिस्टो।

मजीत, मजीद—देखो 'मसजिद' (रू भे)

मजीर—देखो 'मजीर' (रू भे)

२ देखो 'मजीरा' (मह, रू भे)

उ०—एक इकतारो आयो, ढोलक अर मजीरा मगवाया।

—दसदोख

मजू—देखो 'मजूस' (रू भे)

मजूर—देखो 'मजदूर' (रू भे)

उ०—१ तद कुवर कही रै एक माणस म्हारो तै पासै मजूर राखै तो राखा।—चौवोली

उ०—२ सु सुपीयारी आयण मजूरणी रो वेस करनै माथै घडो ले नीसरी।—नैणसी

(स्त्री० मजूरण, मजूरणी)

मजूरडी—देखो 'मजदूरी' (अल्पा, रू. भे)

उ०—कारी कुटका वरसाळै मे, टळै ऊटा मजूरडी। ढोलो भर आगळी देवण, माडण खूब खजूरडी।—दसदेव

मजूरडो, मजूरियो—देखो 'मजदूर' (अल्पा, रू भे.)

(स्त्री० मजूरडी)

मजूरी—देखो 'मजदूरी' (रू भे)

उ०—१ वैल वधावो मावै घोडा वधावो, चाहै करावो मजूरी।

—मीरा

उ०—२ खरी मजूरी कर अर खरा रिपिया ले। यू ओजो ताक्या तो वात नी वणै।—फुलवाडी

उ०—३ सील अर साहस रै सागै मरदांनगी सू मजूरी करै, आपरो टापरो रुखाळै।—दसदोख

मजूस—देखो 'मजूसो' (मह, रू भे)

उ०—गैणा गांठा सूं सैंठो मजूस भरनै वा रांमदुवारा कानी वहीर व्ही।—फुलवाडी

मजूसो—देखो 'मञ्जूसो' (रू भे)

मजेज-क्रि० वि०—१ शीघ्र, तुरत।

२ देखो 'मिजाज' (रू भे.)

उ०—१ तुल वाद बरोबर राज तेज। महाराज आप वधतै मजेज।
—सू प्र.

उ०—२ समाधांन री तिण समै, जिय सह सक्यो न नेज। प्यारी नह जावा परत, मत घर मांन मजेज।—र हमीर

उ०—३ ढळकता ढाल मदधर धजा, घंट घोर अग्राज घण। चढिया मजेज होता चमर, तेज पुंज 'अगजीत' तण।—सू प्र

मजेदार–वि० [फा० मज दार] १ स्वादिष्ट, जायकेदार।
२ आनन्द देने वाला।

मजेदारी–सं० स्त्री० [फा० मज+दारी] १ स्वाद, जायका।
२ आनन्द, मजा।

मजेरौ–वि० (स्त्री० मजेरी) अच्छी तरह, सुविधापूर्वक, संतोषजनक।
उ०—जे कोई टीका-टमका करै, माळा-मिणियौ फेरै, पोथी पानडो उघाडै बो आपरो मजेरौ घाको विका लेवै।—दसदोख

मजौ–स० पु० [फा० मज] १ किसी कार्य करने से आने वाला आनन्द, लुत्फ, मौज, मस्ती।
उ०—१ लाफसी'र घीरो घूवो नूतो कर दियो है। हाती अर हरख रो मजौ ले लियो है।—दसदोख
उ०—२ जद ई सोखी नाई मे ही मजौ नी आवै, गजो ऊपरली गळी जावै है।—दसदोख
उ०—३ रात रा फुळवै-फुळवै काकडिया रा ठोरो दे आवै। गधो तौ थोडा दिना मे मुस्तड व्हैगो। मजौ बणियो पण बणियो।
—फुलवाडी

क्रि० प्र०—आणौ, करणौ, दैणौ, बणणौ, लाधणौ, लूटणौ, लेवणौ, लैणौ, होणौ।

मुहा०—१ मजौ आणौ=आनन्द होना, सुख मिलना, मस्ती आना।
२ मजौ किरकिरौ होणौ=सुख मे व्यवधान पडना, कोई आनन्द का प्रसग चल रहा हो वहा एकाएक दुःख की बात होना। रग मे भग पडना।

२ खाने-पीने की वस्तुओ से मिलने वाला स्वाद, जायका, रस, तृप्ति।

मुहा०—१ मजा उडावणा=खूब माल-मलीदा खाना, इच्छित भोजन करना, मस्ती छानना।

३ सुख, चैन आराम।
उ०—कूजडो दुकांन मांडनै बजार मे वैठतो अर कूजडी ओडी लेयनै फेरी लगावती। मजा मे घर रो गुजराण चालतो हो।
—फुलवाडी

४ किसी बात या प्रसग से होने वाला मनोरजन, हसी।
५ तमाशा, खेल।
६ सैर।
७ दड, सजा, फल।
उ०—१ कात्योडी फाळी ऊन, पैसी पूरी कांमळी अर पीळी कांनी रा केई पट्टूडा पुळस अर अदालत हाळानै खील खील'र उढावै है। खून्या नै मजौ चखा देणो है।—दसदोख
उ०—२ परणिजियां पछै इण रो वट काढूला, आट रो मजौ बतावूला।—फुलवाडी

मुहा०—१ मजौ चखाणौ, मजौ चखावणौ=दण्ड देना, कोई चोट करना, सजा देना, वदला या प्रतिशोध लेना। २ मजौ बतावणौ=देखो 'मजौ चखाणौ'।

८ स्त्री सभोग मे मिलने वाला रति सुख, आनन्द।

मज्ज—देखो 'मध्य' (रू भे)

मज्जण—देखो 'मजण' (रू भे)
उ०—सुच्छ अमळ तासीर फवै अलि फूटरौ। मज्जण पीवण मधुर स्वाद मधु घूट रौ।—अज्ञात

मज्जणौ, मज्जबौ–क्रि० स०—१ जमीन मे गड्ढा करना, खोदना।
उ०—पना को तनू येम 'गोपाळ' सज्जै। धरा नेत वधी हय खूर मज्जै।—ला रा
२ देखो मजणौ, मजबौ' (रू भे)

मज्जन—देखो 'मजण' (रू भे)
उ०—निरमळ जळ जतनइ करी, माहि मिस्र कपूर। एक चितई अतिसिइ घणी, मज्जन दोइ चतूरि।—मा का प्र

मज्जा, मज्जाव–स० स्त्री० [स० मज्जा] १ शरीर की हड्डी के भीतर का गूदा जो चिकना और कोमल होता है। (डि को)
२ फलो आदि के अन्दर का गूदा।
उ०—फुट वानरेण कच नालिकेर फळ, मज्जा तिकरि दधि मगळिक। कुंकुम अखित पराग किंजळक। प्रमुदित अति गायति पिक।
—वेलि

३ पौधो के बीच की नस।

मज्जारस–स० पु० [स० मज्जा+रस] वीर्य, शुक्र।

मज्जीठ—देखो 'मजीठ' (रू भे)
उ०—धरती जेहा भरखमा, नमणा जेही केळि। मज्जीठां जिम रच्चणा, दई सु सज्जण मेळि।—ढो मा

मज्जीठौ—देखो मजीठौ' (रू भे)
उ०—मज्जीठै मुहरग, नयण जोती जाळनळ। थिकब वक फ्रिम लक थोर वाहू इड हत्थळ।—गु रू व
(स्त्री० मज्जीठी)

मज्झ—१ देखो 'मध्य' (रू भे)
उ०—१ माजन वोलावै हू खडी, ऊभी वजारां मज्झ। लाख घरा री वसतही, लागै विरगी अज्ज।—अज्ञात
उ०—२ मज्झ नदी पाणी मे वैठो। खिणेक विसाई ल्यायनै ऊभो व्हियो।—फुलवाडी
उ०—३ मन्न! मरइ तु हू मरूं, मन ऊभर न मराइ। माधव मूकी मज्झ विण, अबरां ऊपरि जाइ।—मा का प्र.

उ०—१ तुल वाद बरोबर राज तेज । महाराज आप बखतं मजेज ।
—सू प्र.

उ०—२ समाधान री तिण समैं, जिय सह सवयौ न जेज । प्यारी नह जावा परत, मत घर मान मजेज ।—र हमीर

उ०—३ ढळकता ढाल मदघर घजा, घट घोर अग्राज घण । चढिया मजेज होता चमर, तेज पुंज 'अगजीत' तण ।—सू प्र

मजेदार–वि० [फा० मज दार] १ स्वादिष्ट, जायकेदार ।
२ आनन्द देने वाला ।

मजेदारी–स० स्त्री० [फा० मज+दारी] १ स्वाद, जायका ।
२ आनन्द, मजा ।

मजेंरो–वि० (स्त्री० मजेंरी) अच्छी तरह, सुविधापूर्वक, सतोषजनक ।
उ०—जे कोई टीका-टमका करै, माळा-मिणियौ फेरै, पोथी पानडो उघाडै वो आपरो मजेंरो घाको धिका लेवै ।—दसदोख

मजो–स० पु० [फा० मज] १ किसी कार्य करने से आने वाला आनन्द, लुत्फ, मौज, मस्ती ।
उ०—१ लाफसी'र घीरो घूवो नूतो कर दियो है । हातो अर हरख रो मजो ले लियो है ।—दसदोख
उ०—२ जद ई सोखी नाई मे ही मजो नी आवै, गजो ऊपरली गळी जावै है ।—दसदोख
उ०—३ रात रा कुळवै-कुळवै काकडिया रा ठोरो दे आवै । गधो तौ थोडा दिनां मे मुस्तड व्हैगो । मजो वणियो पण बणियो ।
—फुलवाडी
क्रि० प्र०—आणो, करणो, देणो, वणणो, लाघणो, लूटणो, लेवणो, लैणो, होणो ।
मुहा०—१ मजो आणो=आनन्द होना, सुख मिलना, मस्ती आना ।
२ मजो किरकिरो होणो=सुख मे व्यवधान पडना, कोई आनन्द का प्रसग चल रहा हो वहा एकाएक दुख की बात होना । रग मे भग पडना ।
२ खाने-पीने की वस्तुओ से मिलने वाला स्वाद, जायका, रस, तृप्ति ।
मुहा०—१ मजा उडावणा=खूब माल-मलीदा खाना, इच्छित भोजन करना, मस्ती छानना ।
३ सुख, चैन आराम ।
उ०—कूजडो दुकान मांडनै बजार मे बैठतो अर कूजडी ओडी लेयनै फेरी लगावती । मजा मे घर रो गुजराण चालतो हो ।
—फुलवाडी
४ किसी बात या प्रसग से होने वाला मनोरजन, हसी ।
५ तमाशा, खेल ।
६ सैर ।
७ दड, सजा, फल ।
उ०—१ कात्योडी काळी ऊन, पैंसी पूरी कांमळी अर पीळी फानी रा केई पट्टूडा पुळम अर अदालत हाळानै खील खील'र उढावै है । खून्या ने मजो चखा देणो है ।—दसदोख
उ०—२ परगिजियां पछै इण रो वट काढूला, आट रो मजो बतावूला ।—फुलवाडी
मुहा०—१ मजो चखाणो, मजो चखावणो=दण्ड देना, कोई चोट करना, सजा देना, बदला या प्रतिशोध लेना । २ मजो बतावणो=देखो 'मजो चखाणो' ।
८ स्त्री सभोग मे मिलने वाला रति सुख, आनन्द ।

मज्ज—देखो 'मद्य' (रू भे)

मज्जण—देखो 'मजण' (रू भे)
उ०—सुच्छ अमळ तासीर फबै अलि फूटरो । मज्जण पीवण मधुर स्वाद मधु घूट रो ।—अज्ञात

मज्जणो, मज्जबो–क्रि० स०—१ जमीन मे गड्ढा करना, खोदना ।
उ०—पना को तनू येम 'गोपाळ' सज्जै । धरा नेत बघी हय खूर मज्जै ।—ला रा
२ देखो मजणो, मजबो' (रू भे)

मज्जन—देखो 'मजण' (रू भे)
उ०—निरमळ जळ जतनइ करी, माहि मिस्र कपूर । एक चितई अतिसिइ घणी, मज्जन दोइ चतूरि ।—मा का प्र

मज्जा, मज्जाव–स० स्त्री० [स० मज्जा] १ शरीर की हड्डी के भीतर का गूदा जो चिकना और कोमल होता है । (डि को)
२ फलो आदि के अन्दर का गूदा ।
उ०—फुट वानरेण कच नालिकेर फळ, मज्जा तिकरि दधि मगळिक । कुकुम अखित पराग किंजळक । प्रमुदित अति गायत्ति पिक ।
—वेलि
३ पौधों के बीच की नस ।

मज्जारस–स० पु० [स० मज्जा+रस] वीर्य, शुक्र ।

मज्जीठ—देखो 'मजीठ' (रू भे)
उ०—घरती जेहा भरखमा, नमणा जेही केळि । मज्जीठां जिम रच्चणा, दई सु सज्जण मेळि ।—ढो मा

मज्जीठो—देखो 'मजीठो' (रू भे)
उ०—मज्जीठं मुहरग, नयण जोती जाळनळ । विक्ख वक्र क्रिम लक थोर वाहू डड हृत्थळ ।—गु रू व
(स्त्री० मज्जीठी)

मज्झ—१ देखो 'मद्य' (रू भे)
उ०—१ साजन वोलावै हू मढी, ऊभी बजारा मज्झ । लाख घरा री बसतडी, लागै विरगी अज्ज ।—अज्ञात
उ०—२ मज्झ नदी पाणी मे बैठो । खिणेक विसाई न्यायनै ऊभो व्हियो ।—फुलवाडी
उ०—३ मन्न ! मरइ तु हू मरू, मन ऊमर न मराइ । माधव मूकी मज्झ विण, भबरा ऊपरि जाइ ।—मा का प्र.

२ देखो 'मुझ' (रू. भे)

मज्झली—१ देखो 'मझली' (रू भे)
(स्त्री० मज्झली)
२ देखो 'मध्य' (रू भे)
उ०—रांमा हवइ रडु हसइ, रूठा देव मनावि। वाटइ लागु वेदीउ, तू घर मज्झलि आवि।—मा का प्र

मज्झि, मज्झे—१ देखो 'मध्य' (रू भे)
उ०—१ महाजुध मज्झि छिबे असमांण, दुवौ हदमाल लड़ै दइवाण।—सू प्र
उ०—२ गिण छप्पय चा वरण लघु। त्यां मज्झे दळ टाळ।
—र ज प्र.
२ देखो 'मध्ये' (रू भे)

मज्याणौ, मज्यासणौ—देखो 'मजासणौ' (रू भे)

मझ—देखो 'मध्य' (रू भे)
उ०—१ भूप कहै धनि धनि धनि भाई। कळजुग मझ सतजुग अधिकाई।—सू प्र
उ०—२ लीधी दिसि लका-तणी, मझ हईडा सिउ चपि। रोई-रोई नइ रहिउ, थाकु थिरथिर कपि।—मा कां प्र
उ०—३ अकुटवध तिण गीतनैं, कहै सरव कवियाण। राघव जस जिण मझ रटै, वळे सतारथ वाण।—र ज प्र
देखो 'मुझ' (रू भे)
उ०—वहु गुणवती गोरडी, कठि विलाइ कत। मझ पाहि तुझ वल्लही, ते कहीइ कुण तत।—मा का प्र

मझताळी-स० पु०—महादेव। (ना. डिं को)

मझधार-स० स्त्री० [स० मध्य+हिं० धार] १ जल प्रवाह की बीच की धारा।
२ असहाय अवस्था।
उ०—छांड गयो मझधार सांवरो, विना अकल को जाट।—मीरां
३ किसी कार्य अथवा वात के मध्य की स्थिति।
मुहा०—मझधार में छोडणौ=किसी को सकट की स्थिति में डालना, इस प्रकार की स्थिति मे किसी का साथ छेडना। कोई काम अधूरा रहने देना, अपूर्णावस्था में छोडना।

मझम—देखो 'मध्यम' (रू भे)

मझमांन—देखो 'मिजमांन' (रू भे)

मझमांनी—देखो 'मिजमानी' (रू भे)
उ०—पै'लां मे पचिपात रै प्रमाण पूगता ही उठी रा भी कायर पळ-पिचळ पिया। अर सूर हूता तिकै कवर दूदै मझमांनी मिळाइ निहाल किया।—प भा

मझलो-वि० [स० मध्य+रा० प्र० लो] (स्त्री० मझली) १ बीच का, मध्य का।
रू० भे०—मझलौ, मज्झलौ, मझालो।
२ देखो 'मध्य' (रू भे)
उ०—विध वलमीक विधांन, रचि सखेप कह गुण राघव। अनड-मेर उनमांन, मेरह जेम प्रिथी दत मझळी।—सू. प्र.

मझलोक-स० पु० [स० मध्यलोक] सुमेरू पर्वत के १,०००४० योजन की ऊचाई पर मध्यवर्ती लोक। (जैन)

मझा—देखो 'मध्य' (रू भे)
उ०—आद पुरख मझा अछत छत रा वड आंणी।
—केसोदास गाडण

मझार, मझारि, मझारैं—देखो 'मध्य'।
उ०—१ बोलै वेद लाभ ग्रह वासत, तीरथ अडसठ सुफळ तयार। निज मन हुलस सापडै जे नर, जस रघुवर सुरसरी मझार।
—र ज प्र
उ०—२ ज्यां जस छत्र तणावियौ, माथै जगत मझार। जिकै छत्रधर जाणणा, सुदतारा सिणगार।—वा दा
उ०—३ समय सुदर कहै ध्यान इक तेरउ, मेरे चित्त मझार।
—स. कु.
उ०—४ रमैं हसैं नरिंदर, मझार राज मिंदर। करै उछाह सुक्रिया, पचास सातसै प्रिया।—सू प्र
उ०—५ कहि तु काळिज माहां धरू, राखु हृदय मझारि। मूझनि मूकी माधवा! पगलू रखे पधारि।—मा का प्र
उ०—६ ऐक वार मेल्हौ अगद, महि लक मझारैं। दई हुकम अगद दियौ, वप ताम वधारै।—सू प्र

मझालो—देखो 'मझलो' (रू भे)
(स्त्री० मझाली)

मझि, मझी—देखो 'मध्य' (रू भे)
उ०—सिव सकती सम मुगती, सिव मझि सकति सकति सिव मझै।—गु रू व
उ०—२ तज मक्कर फक्कर तसू, उर सुध करखे रात अरदै। वस कर दे इद्री अवस, तन मझी तप सील तप्पदै।—र ज प्र
उ०—३ उण अवसर मझि 'अमर', अधक घर दुद उठायो। मिळि असपति खुरभ, अधिक दळ वळ मझि आयौ।—सू प्र.

मझे, मझेण, मझ्झ—१ देखो 'मध्य' (रू भे)
उ०—१ सिव सकत्ती सम मुगती, सिव मझि सकति सिव मझे।
—गु. रू वं
उ०—२ लिजीयो नदरैण हीरा, सायर मझेण रतन नेपती।
—गु. रू. वं
उ०—३ मासी आ भीड देखी तो आपरा छवूं चीतरां नै लेय भीड रै मझ्झ आय ऊभगी।—फुलवाड़ी
२ देखो 'मध्ये' (रू. भे)

मझ्यान–स० पु० [स० मध्याह्न] दोपहर का समय, मध्य दिवस, दिन का मध्य काल।

उ०—सयणी खेलती **मझ्यान** तळाव आई छै।—सयणी री बात

मटब—ऐसी बस्ती जिसके आस पास ढाई कोस (पाच मील) तक कोई बस्ती न हो।

उ०—केवडउ राज्य चक्रवरत्ति तणउ चउद रत्न, नव महानिधान, सोल सहस्र यक्ष, नवाणु सहस्र द्रोणमुख, अठितालीस सहस्र पाटण, चउवीस सहस्र करवट, चउवीस सहस्र **मटब**, सोल सहस्र खेटक, चउद सहस्र सबाहन, छप्पन अतरदीप।—व स

मट—१ देखो 'मटको' (रू भे)

उ०—तन प्रथक नरां गण तुरग तुड। **मट** जेम फुटै गज किता मुह।—रा रू

२ देखो 'मढ' (रू भे)

उ०—उलटा मन असमाण कु, मिळै त्रिवेणी तट। जन हरीयै जाह मढीया, सुरति सबद का **मट**।—अनुभव वांणी

मटक–स० स्त्री०—१ गति चाल।

२ मटकने की क्रिया, नाज, नखरा, अदा।

३ गर्व, अभिमान।

उ०—झड वागा जाय जिकै नर झूठा, मछर तणी भागवै **मटक**। कटकां सरणन छूटै कांधाळ, काधळा छूटै कटक।

—रतनसिंह चुडावत री गीत

मटकणो, मटकबो–क्रि० अ० [स० मट्] १ चलते या बातें करते समय नाज नखरे के साथ शरीर के अगो का हिलते या लचकते रहना, मटकना।

उ०—१ एक दिन छानै माखण रा केई लूदा डकार, होठा, मूडा, अर हाथ रै माखण लाग्या थका ई वो **मटकतो**, नाचतो, हाथ री आगळी नै हिलावतो नानी-मां रै साम्ही अबूझ अजाण बणनै गावण लागो—मैया मोरी मैं नहि माखण खायो।—फुलवाडी

उ०—२ निपट बकट छवि नैना **अटकै**। देखत रूप मदन मोहन को, पियत पियूख न **मटकै**।—मीरां

२ नखरे के साथ नेत्र, भृकुटि, कटि आदि का हिलना या लचकना।

३ गर्व करना, ऐंठना।

मटकणहार, हारौ (हारी), मटकणियौ—वि०।

मटकाड़णो, मटकाडबो, मटकाणो, मटकाबो, मटकावणो, मटकावबो

—प्रे० रू०।

मटकिओडो, मटकियोडो, मटक्योडो—भू० का० कृ०।

मटकीजणो, मटकीजबो—भाव वा०।

मटकाचर—देखो 'मुठकाचर'। (शेखावाटी)

मटकाणो, मटकाबो–क्रि० स०—१ चलते या बात करते समय कुछ नखरे के साथ अगो को हिलाना या लचकाना, मटकाना।

उ०—पिंडतजो, खुसी रैवो रा दोय सबद कैया, हाथ री सीध सू बैठण री सेन करी अर मूढै नै **मटका** र नस री लटको करियो।

—दसदोख

२ नखरे के साथ नेत्र, भृकुटि, कटि, नितम्ब आदि अगो को हिलाना या लचकाना।

३ खाद्य पदार्थों को खाना या निगलना।

मटकाणहार, हारौ (हारी), मटकाणियौ—वि०।

मटकायोडो—भू० का० कृ०।

मटकाईजणो, मटकाईजबो—भाव वा०/कर्म वा०।

मटकारणो, मटकारबो, मटकावणो, मटकावबो—रू० भे०।

मटकायोडो—१ चलते या बात करते समय नखरे के साथ अगो को लचकाया हुआ।

२ गर्व किया हुआ, ऐंठा हुआ।

३ खाद्य पदार्थ खाया हुआ या निगला हुआ।

(स्त्री० मटकायोडी)

मटकार–स० पु० [स० मुष्टिका+आकार] १ मुट्ठी के आकार की छोटी ककडी। (काचरा)

२ नाज, नखरा।

उ०—मोह्या मुख मुलकै सहु, तिम निजर तणै **मटकार** रे।

—वि. कु

मटकारणो, मटकारबो—देखो 'मटकाणो, मटकाबो' (रू भे)

मटकारणहार, हारौ (हारी), मटकारणियौ—वि०।

मटकारिओडो, मटकारियोडो, मटकारयोडो—भू० का० कृ०।

मटकारीजणो, मठकारीजबो—कर्म वा०।

मटकारियोडो—देखो 'मटकायोडो' (रू भे)

(स्त्री० मटकारियोडी)

मटकाळो–वि० (स्त्री० मटकाळी) मटकने वाला, नखरे करने वाला।

उ०—हिरण घसै खुरताळी, मारी आखि लोधी **मटकाळी** हो।

—वि कु.

रू० भे०—मटकीलो।

मटकावणो, मटकावबो—देखो 'मटकाणो, मटकाबो' (रू भे)

उ०—अमली ठाकरडा डेरा मे आवै। मोटी घसका घडू मावा **मटकावै**।—ऊ का

मटकावणहार, हारौ (हारी), मटकावणियौ—वि०।

मटकाविओडो, मटकावियोडो मटकाव्योडो—भू० का० कृ०।

मटकावीजणो, मटकावीजबो—कर्म वा०।

मटकावियोडो—देखो मटकायोडो' (रू भे)

(स्त्री० मटकावियोडी)

मटकियोडो–भू० का० कृ०—१ शरीर के अगों को नखरे के साथ लचक दिया हुआ २ गर्व किया हुआ, ऐंठा हुआ ३ खाद्य पदार्थ खाया हुआ, निगला, हुआ

मटकी–स० स्त्री० [स० मार्तिकी] १ मिट्टी का बना जल भरने का छोटा पात्र, छोटा मटका। (डि को)

उ०—१ रूप देख अटकी, तेरो रूप देख अटकी। देह तै बिदेह भई ढुरि परि सिर **मटकी**।—मीरा

उ०—२ चादणी रै सागे चाद ठारी बरसावणी चालू करदी । मटकिया मे पाणी जम जातौ ।—फुलवाडी

२ एक प्रकार का लोक नृत्य ।

उ०—नाचण लागी नाचवा, रभ नाच नचाया । ताजण मटकी तोयचा, लख तान लगाया ।—वी मा

३ एक प्रकार का वाद्य विशेष ।

रू० भे०—माटकी ।

अल्पा०—मटली, माटली ।

मटकीलो—देखो 'मटकाळो' (रू भे)

(स्त्री० मटकीली)

मटको–स० पु० [स० मार्तिक] १ मिट्टी का बना हुआ जल भरने का पात्र विशेष ।

उ०—पग्व रैत जरद घटका पडै, रटकां गोळा रीठ रा । हाथिया सीम भुटका हुवै, मटकां जाण मजीठ रा ।—सू- प्र

रू० भे०—मट, माटको ।

[स० मट स्फटि] मटकने का भाव, नाज नखरा ।

उ०—ग्रे भारणिया रा लच्छण है। ईसर री गवर व्है ज्यूं बण ठण'र मटका करती फिरै है ।—रातवासो

रू० भे०—मटरको, मट्ट, मट्टो ।

मह०—मटल्लौ ।

मटखोरो–स० पु०—एक प्रकार का हाथी । (दूषित)

मटणो, मटबौ—देखो 'मिटणो, मिटबो' (रू भे)

उ०—रसिक जिकण जग रटत । मुण रघुवर अघ मटत ।

—र ज प्र

मटणहार, हारौ (हारी), मटणियो—वि० ।

मटिग्रोडो, मटियोडो, मटयोडो—भू० का० कृ० ।

मटीजणो, मटीजबौ—भाव वा० ।

मटमैलो–वि०—मिट्टी के समान रग वाला, मटमैला ।

मटयोडो—देखो 'मिटयोडो' (रू भे)

(स्त्री० मटयोड़ी)

मटर–स० पु०—१ शरद् ऋतु मे भारत के प्राय सभी भागो मे होने वाला एक मोटा गोलाकार द्विदल अन्न जो अपने पौधे की फलियो से निकलता है ।

२ इस अन्न का पौधा ।

रू० भे०—मठर ।

मटरको—देखो 'मटको' (२) ।

उ०—जद वा ऊदरी आपरै रूप रो बखाण सुणने मिजाज मे मटरका करती घरै आयगी ।—फुलवाड़ी

उ०—२ सारी ऊमर गढ मे बैठी ई मटरका करिया है बाणियां नै टाबर को दियो नी ।—फुलवाड़ी

मटरगस्त, मटरगस्ती–स० स्त्री०—१ धीरे धीरे घूमना ।

२ व्यर्थ इधर उधर घूमना ।

मटरमाळा–स० स्त्री०—गले का आभूषण विशेष ।

मटली—देखो 'मटकी' (रू भे)

मटल्लौ—देखो 'मटको' (मह, रू. भे)

उ०—घणा रोद्र घेरै, फिरै चक्र फेरै । मथाणै मटल्लै, मही जाण हल्लै ।—रा रू

मटवी—एक प्रकार का वस्त्र विशेष ।

उ०—पट्टकूल, हीरवडि गजवडि नीलवडि सेवत्रीवडि सोवनवडि जादर पोतीपट साउली अगहल नेत्र रावेटउ सांभारावउ मटवी फूलपगर कणवीरउ पोतिउ, सेत चउवडियउ ।—व स

मटाडो—देखो 'मोतीड' । (शेखावाटी)

मटाणो, मटावौ—१ देखो 'मिटाणो, मिटावौ' (रू भे.)

२ देखो 'मठाणो, मठावौ' (रू भे)

मटाणहार, हारौ (हारी), मटाणियो—वि० ।

मटायोडौ—भू० का० कृ० ।

मटाईजणो, मटाईजबौ—कर्म वा० ।

मटायोड़ौ—१ देखो 'मिटायोडो' (रू भे)

२ देखो 'मठायोडो' (रू भे)

(स्त्री० मटायोडी)

मटि—देखो 'माटै' (रू. भे)

उ०—हार ग्रहीनि कहि कामिनि, गुणवत छि तू नवि घटि । परनारिना वि पयोधरनि, स्परस करिछि सा मटि ।—नळाख्यान

मटिया, मटीया–स० पु०—मटमैला रग, खाकी रग ।

वि०— मटमैले रग का, खाकी रग का ।

उ०—लावो गोळ बांया रो ढीलो कुड़तो, मटिया गोळ फेंटो हावै पसवाडै की तीखो अर डीगो —फुलवाडी

देखो 'माटी (अल्पा, रू भे)

उ०—हरिया मन की वासना, जाह ताह होसी साथि । ग्रैसैं मटीया खान की, चाक चढैगी हाथि ।— स्री हरिरामदासजी महाराज

मटियामेट–स० पु०—विनाश या लोप, पूर्णत ध्वस्त, विध्वस, सर्वनाश, विनष्ट, तहस नहस ।

क्रि० प्र०—करणो, होणो ।

मटियाळ—१ देखो 'मटियाळो' (मह, रू भे)

२ देखो 'मटियाळी' (मह., रू भे)

मटियाळी–स० स्त्री०—चिकनी मिट्टी (भूमि) ।

वि०—मटमैली, खाकी रग की ।

देखो 'मटियाळ' (मह, रू भे)

मटियाळो, मटीयाळो–वि० (स्त्री० मटियाळी) १ चिकनी मिट्टी वाला । (भू-भाग)

उ०—१ धरती हळवा ३० खेत माठा मटीयाळा ।—नैणसी

उ०—२ धरती हळवा ६० खेत काठा मटियाळ।—नैणसी
२ खाकी रग का, मटमैला।

मटियोडो—देखो 'मिटयोडो' (रू भे)
(स्त्री० मटियोडी)

मटीयौनीलौ—स० पु०—एक शुभ रग का घोडा। (शा हो.)

मट्ठ, मट्ठी—स० स्त्री०—हाथ की तीसरी अगुली जो मध्यमा और कनिष्ठा के बीच मे है, अनामिका।
वि०—प्रिय।

मट्ठकनाथ—एक तीर्थ स्थान का नाम।
उ०—मट्ठकनाथ अरु मांनसरोवर, मानलता अरु हांसी। मीरा के प्रभु गिरधरनागर, सहज कटै यम फासी।—मीरा

मटोटणौ, मटोटबौ—देखो 'मठोठणौ मठोठबौ' (रू भे)
उ०—थोडी देर मे अटकतो बोल्यो—तकतूळी व्है ज्यू थाकोडो भलाई दीसू, पाणी रै लगावण सू लूखां टुकडा भलाई मटोटू पण थें मोत्या सू भरघा म्हारा भवारा नी देख्या।—फुलवाडी
मटोटणहार, हारो (हारी), मटोटणियौ—वि०।
मटोटिओडो, मटोटियोडो, मटोटचोडो—भू० का० कृ०।
मटोटीजणौ, मटोटीजबौ—कर्म वा०।

मटोटियोडो—देखो 'मठोठियोडो' (रू भे)
(स्त्री० मटोटियोडी)

मट्ट—१ देखो 'माट' (रू भे)
उ०—तई कुभ तूटा, छिलै स्रोण छूटा। मही रग मट्टा, फवै जाणि फुट्टा।—सू प्र
२ देखो 'मटको' (मह, रू भे)
३ देखो 'मठ' (रू भे)

मट्टिया, मट्टी—देखो 'माटी' (रू भे)

मट्टो—१ देखो 'माटो' (रू भे)
उ०—फिर फूटै विच चोहटा, रगरेजा मट्टे।—द दा
२ देखो 'मटको' (रू भे)
३ देखो 'मट्ठो' (रू भे)

मट्ठ—१ देखो 'मठ' (रू भे)
उ०—गिरकदर पाहाड, गाहि पाए केकाण। किया मट्ठ मैवास, प्रज्ज पाळी मेल्हाण।—गु रू व
२ देखो 'मट्ठो' (मह, रू भे)

मट्ठो—दही मथ कर मक्खन निकालने के बाद शेष रहने वाला घोल, तक्र।
उ०—१ वो मट्ठो व्है जेंडो दूध अर गूजरी रै हाथा घाल्योडो।
—फुलवाडी
उ०—२ देखू कैडोक खडपा पडतो दही अर मट्ठो व्है जैंडो जाडो दूध घालो हो।—फुलवाडी
रू० भे०—मट्टो, मठो, मट्ठो।
मह, रू० भे०—मट्ठ।

मठ—स० पु० [सं० मठ, मठ] १ वह स्थान जहा दशनामी साधु अपने गुरु के साथ रहते हो।
२ दशनामी संन्यासियो के किसी बडे साधु का निवास स्थान।
३ वह स्थल जहा विद्यार्थी दीर्घावधि तक रहकर ज्ञानार्जन करते थे। (प्राचीन)
उ०—अथ नगर वर्णन, भाडागारिक, कोस्टाकार सत्राकार मठ विहार प्रपामडप त्रिक चतुएक चत्वर चतुस्पथ राजमारग सरोवर।—व स
४ देवी का मदिर।
उ०—१ जद रावजी गढ छोड स्रीमाताजी करणीजी रै मठ गया।—ठाकुर जैतसी री वारता
उ०—२ मठ अदर सुदर मूरत्ती, स्रीकरणी जय जयति सकत्ती।
—मे. म.
५ गर्व, अभिमान।
उ०—भूपका मोड माठा, मठ भान रै। ईढ मघवान रै, ग्रवण आथा।—लिछमणसिह सीसोदिया री गीत
मुहा०—मठमारणौ=गर्व खडित करना।
६ छवि, शोभा।
उ०—१ म्हैं जाणतो के उण कमसल छोकरी नै परवाण मोरै सास दूजो उणियारो लाधैला कोनी। अर लाध्यो तो अंडो लाध्यो के उणरा रूप री सगळो मठ ई मार दियो।—फुलवाडी
उ०—२ पण औ डकरेल चोर तो वाडी री सोभा रो जाणै मुळगो मठ ई मार दियो।—फुलवाडी
मुहा०—मठ बिगाडणौ, मठ मारणौ—शोभा नष्ट करना।
७ आनन्द, खुशहाली, मजा।
उ०—१ नसो तो सगत मागै। झांझरकै दो घडी रात थकां ऊठतो नै भाग सू माथा-फोडी करतो। नसा रो सैंग मठ मारघो जावतो।
—फुलवाडी
उ०—२ राम मारघा बात रै बिचाळै हुकारो तो दिया कर। बिना हुकारै बात रो सगळो मठ ई मर जावै।—फुलवाडी
८ महत्त्व।
उ०—नसा मे बडबडावण लागो—लुगाई लाज-सरम छोडनै फीटी व्है जावै तो सगळा आणद रो मठ मर जावै।—फुलवाडी
९ ऊचा लम्बा टीला।
उ०—लकडी थारो रीढ लास रो मावळ लै'रा। दिस्सा मठ ढम ढेर, ईळ जल ऊडा वेरा।—दसदेव।
वि०—१० कृपण, कजूस।
उ०—१ महण सुभावा कमद गुर तायजादो मठा, खगा वळ दली दळ खायजादो। पायजादो सुजस सायजादो पनो। रायजादा मुगट रायजादो।—मेगराज आढो

उ०—२ चाचर चरू सुकाळ, जग 'अभमल' 'चूडा' जिही । खलक चरू जळ खाळ, मठा पहा वहिया मगज ।—सू प्र.

रू० भे०—मठ, मट्ट, मट्ठ ।

मठठ—देखो 'मठोठ' (रू भे)

उ०—१ भळै छक सुतन 'जगतेस' वड भाग रै । दत मठा त्याग रै मठठ दै लै ।—माधोसिंह सीसोदिया री गीत

उ०—२ अघप सुता पति हूत कहे कथ ओसान रा । सवागरा दान रा दयरा सागै । आखवा मठठ तज वही जो आन रा । अरणी अप 'मान' रा तरणा आगै ।—रामलाल आसियो

मठणी, मठवौ–क्रि० अ०—१ मथा जाना ।

२ देखो 'मठाणी, मठावौ' (रू भे)

मठणहार, हारौ (हारी), मठणियौ—वि० ।

मठाणौ, मठावौ, मठावणौ, मठाववौ—प्रे० रू० ।

मठिग्रोडौ मठियोडौ, मठयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

मठीजणौ, मठीजबौ—भाव वा० ।

मठधारी, मठपति–स० पु० [स० मठधारिन्, मठपति] १ दशनामी साधुओ के निवास स्थान (मठ) का अधिकारी, साधु या महन्त ।

२ मठाधीश, मठ का स्वामी ।

रू० भे०—मढपति, मढपत्ती ।

मठमठौ–वि० (स्त्री० मठमठी) १ न अधिक सख्त न अधिक मुलायम ।

२ कृपरण, कजूस ।

मठर–स० स्त्री०—जिद्द, हठ ।

उ०—अवीढा खेल खेलै, भुजा आपरां । मीर रद्द हुवै, मेलै मठर मारण ।—म जयसिंह आमेर रा धरणी री वारता

पु०—देखो 'मटर' (रू भे)

उ०—मोठ मठर चूला फली रे लाल, छमकारया देह वधार । मुल फूलै फल पानडा रे लाल, अथारणा सुखकार ।—प च चौ

मठरी (ली)–स० स्त्री०—मैदे का बना हुआ एक मीठा पकवान जो घी मे तल कर बनाया जाता है ।

मठसेडी, मठसेढ़ी–स० स्त्री०—वह गाय या भैंस जिसका दुग्ध दोहन कठिनता से होता हो ।

उ०—काया कठसेडी मठसेडी कापै । ढागी वेला नै तेला नै ढापै ।
—क का

रू० भे०—माठसेडी, माठसेढी ।

मठाठ—देखो 'मठोठ' (रू भे)

मठाणौ, मठावौ–क्रि० स०—किसी पदार्थ को मथ कर गाढ़ा करना, मथना ।

मठाणहार, हारौ (हारी), मठाणियौ—वि० ।

मठायोडौ—भू० का० कृ० ।

मठाईजणौ, मठाईजबौ—कर्म वा० ।

मटाणौ, मटावौ, मटावणौ, मटाववौ, मठावणौ, मठाववौ
—रू० भे० ।

मठाधीस–स० पु० [स० मठाधीश] मठ का अधिकारी, महन्त ।

मठारणौ, मठारवौ–क्रि० स०—१ मठरना नामक औजार से कसेरो, सुनारो आदि द्वारा पत्तरो या चद्दरो को पीटना ।

२ पत्तरो, चद्दरो आदि को पीटकर गोलाई मे लाना ।

३ गूदे हुए आटे को हाथो से इस तरह मसलना व सवारना कि उसमे लोच पैदा हो जाय ।

४ धीरे धीरे तथा बढा-चढा कर कोई वात कहना ।

मठारणहार, हारौ (हारी), मठारणियौ—वि० ।

मठारिग्रोडौ, मठारियोडौ, मठारघोडौ—भू० का० कृ० ।

मठारीजणौ, मठारीजवौ—कर्म वा० ।

मठावणौ, मठाववौ—देखो 'मठाणौ, मठावौ' (रू. भे.)

मठावणहार, हारौ, (हारी), मठावणियौ—वि० ।

मठाविग्रोडौ, मठावियोडौ, मठाव्योडौ – भू० का० कृ० ।

मठावीजणौ, मठावीजवौ—कर्म वा० ।

मठोड़णौ, मठोडबौ—देखो 'मठोठणौ, मठोठवौ' (रू भे)

मठोडणहार, हारौ (हारी), मठोडणियौ—वि० ।

मठोडिग्रोडौ, मठोडियोडौ, मठोडयोडौ—भू० का० कृ० ।

मठोडीजणौ, मठोडीजबौ—भाव वा० ।

मठोटणौ, मठोटवौ—देखो 'मठोठणौ, मठोठवौ' (रू भे)

उ०—चोधरी तौ कळाकद रौ परसाद खावरण ढूको जको दो थाळ बगळ वगळ मठोटग्यौ ।—फुलवाडी

मठोटणहार, हारौ (हारी), मठोटणियौ—वि० ।

मठोटिग्रोडौ, मठोटियोड़ौ, मठोटयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

मठोटीजणौ, मठोटीजबौ—कर्म वा०/भाव वा० ।

मठोटी–स० स्त्री० १—मरोडने की क्रिया या भाव ।

उ०—चोधरी रा हाथ मे कळाई सैंठी भिलियोड़ी ही । मठोटी देवतौ वोल्यौ—वावौ, काले हाथ जोडिया, पगा मे पोतियौ मेलियौ, परण थांरो काळजो नी पसीजियो ।—फुलवाडी

२ मरोडने के कारण पडने वाला बल ।

३ किसी प्रकार का घुमाव-फिराव या चक्कर ।

४ मन मे होने वाला क्षोभ या कपट जिसका कारण दुख, व्यथा, दुर्भाव आदि हो ।

५ रह रह कर पेट मे अपच के कारण होने वाली पीडा भरी ऐंठन, पेचिश ।

मह० रू० भे०—मठोटौ ।

मठोटौ—देखो 'मठोटी' (मह , रू भे)

मठोठ–स० पु०—१ गर्व, अभिमान, अकड ।

उ०—ठठोर सत्रु गोठ की जबांन गोठ लें जवै । वडी **मठोठ** मे बहे दु होठ दत तें दवै ।—ऊ का.

२ स्वाभिमानता ।

३ कृपणता, कजूसी ।

४ मकानो मे स्तम्भ के ऊपर लगाया जाने वाला पत्थर ।

रू० भे०—मठठ, मठाठ ।

मठोठणो, मठोठवो—१ खाना, निगलना ।

उ०—१ घोडी रोजीना री दोय सेर दाणो **मठोठ** जावै । पण असवारी वास्तै अडण ई नी दे ।—फुलवाडी

उ०—२ दिन मे चार वगत रोटघा री ठोरो देतो, आथण सवार वत्तीस सोगरा **मठोठ** जातो ।—फुलवाडी

२ गर्व करना, ऐंठना ।

३ कजूसी करना, कृपणता दिखाना ।

४ ऐंठन देना, घुमाना ।

मठोठणहार, हारो (हारी), मठोठणियो—वि० ।

मठोठिओडो मठोठियोडो, मठोठघोडो—भू० का० कृ० ।

मठोठीजणो, मठोठीजबो—कर्म वा०/भाव वा० ।

मटोटणो, मटोटवो, मठोडणो, मठोडबो, मठोटणो, मठोटवो

—रू० भे० ।

मठोठियोडो—भू० का० कृ०—१ खाया हुआ, निगला हुआ २ गर्व किया हुआ, ऐंठा हुआ ३ कजूसी किया हुआ, कृपणता दिखाया हुआ ४ ऐंठन दिया हुआ, घुमाया हुआ

स्त्री० मठोठियोडी)

मठो—१ देखो 'मट्ठो' (रू भे)

२ देखो 'माठो' (रू भे)

उ०—मुरें अवान वानलें, प्रायांण मे कठा **मठा** । अरेन प्रांन फायदै, विफायदे सठा सठा ।—ऊ का

मट्ठो—१ देखो 'माठो' (रू भे)

२ देखो 'मट्ठो' (रू भे)

मडि, मडी—देखो 'मडी' (रू भे)

मढ—देखो 'मढ' (रू भे)

उ०—१ मझि वन सघन सकति काळी मढ । गगा तीर प्रगट कुर-हैगढ ।—सू प्र

उ०—२ जोया गढ **मढ** पोलि पगार किहइ न लाधी महता सार ।

—हीराणद सूरि

मढगोरख—स० पु०—द्वारिका के निकट का एक तीर्थ स्थान, गोरखमढी ।

मढ़णो, मढ़वो—देखो 'मडणो, मडवो' (रू भे)

उ०—१ चाप करा अप राम चढै, माझ रजी तद माण **मढ़ै** । खोहण के असुराण खपै, पख सिवा पळ खाय अघै ।—र ज प्र

उ०—२ घढनो दियो हो जकारो पाछो घेरघो नहीं, **मढणो** लियो जका री ओठो मोड़घो नही ।—दसदोख

उ०—३ थे पै'ला तो खरचो करता लखो कोयनी, पछै बीजा माथै कसूर **मढ़ो** ।—वरसगांठ

मढ़णहार, हारो (हारी), मढ़णियो—वि० ।

मढिओडो, मढियोडो, मढ़घोड़ो—भू० का० कृ० ।

मढीजणो, मढ़ीजबो—कर्म वा०/भाव वा० ।

मढपति, मढपत्ती—देखो 'मठपति' (रू भे)

उ०—'पाटण' नयर 'दुल्लभ' राय यदा । वाद हुओ **मढपति** स्यूं तदा ।—ऐ जै का स

मढाई—देखो 'मडाई' (रू भे)

मढाणो मढावो—देखो 'मडाणो, मडावो' (रू भे)

उ०—वीर फराम बढाडवा, दृव खाती ढोवै । केक मुला तागा करै हुव हाका होवै । हिंदू मन हरखत होये, धण ढोल घडावै । वाढ फरासह 'वीरमो', मह ढोल **मढावै** ।—वी मा

मढाणहार, हारो (हारी), मढाणियो—वि० ।

मढायोडो—भू० का० कृ० ।

मढाईजणो, मढाईजवो—कर्म वा० ।

मढायोडो—देखो 'मडायोडो' (रू भे)

(स्त्री० मढायोडी)

मढियोडो—देखो 'मडियोडो' (रू भे)

(स्त्री० मढियोडी)

मढी—देखो 'मडी' (रू भे)

मढुली – देखो 'मडी' (अल्पा , रू भे)

उ०—खेलि अम्हारी क्षीपवी, हवी हवइ मसवासि । **मढुली** मांहि महउ रहिउ, मन माधव नइ पासि ।—मा का प्र

मढो – देखो मडो (रू भे)

उ०—दादू **मढा** मसाण का, केता करै उफांन । मतक मुरदा गोरका, वहुत करै अभिमांन ।—दादूवाणी

मणधर—देखो मणिधर' (रू भे)

मण—स० पु०—१ ४० सेर का एक तोल ।

उ०—१ कासू काज करेह, सिंधुर वाघा सांकळा । भगवत पेट भरेह, **मण** नित चाहियै 'मोतिया' ।—रायसिंह साद्

उ०—२ **मण** मण आटो, मण मण चावळ मगाया नै रसोई कराई, सो सरव जीमिया ।—देपाळधध री वारता

मुहा०—मण मण रा घूटिया भरणा—आर्थिक सकट मे जीवन व्यतीत करना, किसी वात को प्रकट न करने के लिए दीर्घावधि तक मौन रहना ।

रू० भे०—मणू, मणू ।

२ सुवृत । (डि को)

३ देखो मणि' (रू भे)

उ०—महाराज रघुवस **मण**, सुज रावण समथग धुन सर पाणा धरै ।—र ज प्र

उ०—२ मण सरद चकित निस, रति पतिह लघणीक मदह चलत। मिथळेस कुवरी, सीता सुतन। कवि एती ओपमा कहत।—र ज प्र

मणकरणका—देखो 'मणिकरणिका' (रू. भे)

मणकौ—१ देखो 'मणियौ' (रू भे)

उ०—दादू काया महल मे नमाज गुजारू, तह और न आवन पावै। मन मणकै कर तसवीह फेरू, तब साहिब के मन भावै। —दादूबाणी

२ देखो 'मणिकौ' (रू भे)

मणगयण—स० पु० [स० गगनमणि] सूर्य। (डिं. को)

उ०—आंठुआं चाढता घकै सावळ अणी, खेलता घसळ खत्रवाट आखेट। विढतां सेस मणगयण लागा वधै, नग भिडज फरग राजा तणा नेट।—नाथो सांदू

मणगुत्ती [स० मनोगुत्ती] चारो ओर घूमते हुए मन को निग्रह करके रखने का भाव। (जैन)

मणचौ—देखो 'मळीचौ' (रू भे)

मणछिउ—वि० [स० मनवाछित] मन मे चाहा हुआ, इच्छित।

उ०—अज्जवि जु देवु लोइ दिट्ठियउ, सघ मणछिउ देइ फलु। —ऐ जै का स

मणछौ—देखो 'मळीचौ' (रू भे)

मणणौ, मणबौ—देखो 'मुणणौ, मुणबौ' (रू भे)

उ०—सगुड हात्थीया लूडइ, रथावली ऊथलावइ, मउडधा माकड जिम खेलावइ, पाखरिया थाट हणइ, महायोध समुख मणइ, दल वइ भाजि, ' तूर्य वाजइ।—व स

मणधर—देखो 'मणिधर' (रू भे)

उ०—१ मानव नको नको ताइ मणधर, भमण तणा अनेरा भेव। इसडउ रूप अनूप आखियइ, देवागना न कोई देव। —महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ घणनामी इम सुणे विगत घण, जण जटायु भर अक जण। वण द्रिग गोद घरै पत त्रिभवण, मणधर छवरी हरख मण। —र रू

मणपुन्न—स० पु० [स० मन'पुण्य] दानरूप, शीलरूप, तपरूप, भावरूप और दयारूप आदि शुभ मन रखने का भाव। (जैन)

मणरथ—देखो 'मनोरथ' (रू भे) (जैन)

मणसिल—देखो 'मैनसिल' (रू भे)

मणहर, मणहारी—देखो 'मनोहर' (रू भे)

उ०—मणहर नवरस मझै सुदरि नारीण सरस सवधा। निरुपम कहै निबधा, सुणत सैणा जाण सुगणा।—ढो मा

मणा, मणाई—स० स्त्री० [स० मनाक्] १ अभाव, कमी।

उ०—१ कुळ उघोर 'प्रताप' कहता, पोढो घणू घणा अद पाय। मणा न तौ कुळ मणा न तोमें, मणा न सुकव वखाणां माय। —महाराणा प्रताप रौ गीत

उ०—२ निवसइ लोक तिहा अतिघणा जिह घरि रिद्धि तणा नही मणा।—हीराणद सूरि

उ०—३ वापी पाव कवीर वणाई, चोखी ईंटा पकी चणाई। मूरख मिळ ना रखी मणाई, घुम खर गिंडक पियो घणाई। —ऊ का

२ पराकाष्ठा, चरमसीमा।

मणावध—क्रि० वि०—मनो की तादाद मे।

उ०—थें कलम रा भार माटै मणावध रिपिया भेळाकर लिया अर म्हे लाखा मण भार उचायनै ई मूठी रै परवाणै रिपिया भेळा नी कर सकिया।—फुलवाडी

मणारभ—स० पु०—सागर।

उ०—मणारभ मथै काढ़ियउ माहव, जहर उतउ किण बीजइ जरइ।—महादेव पारवती री वेलि

वि०—अप्रवल, समथ, शक्तिशाली।

उ०—मोडै घड मोरठ मेछ मणारभ, वाह विलागा वर श्री वेय।—सरवहिया जैमा कवाटोत रो गीत

मणाळ—देखो 'मुणाळ' (रू भे)

उ०—१ अग मणधर की मणाल मोढता, सिहलोक ओपमा किमी। —महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ कर माळ फुणाळ मणाळ कळी। रूहराल हुई कर 'पाल' रळी। वढ हड्डु कडक्क वडक्क वजै। भडु थाट भडक्क घडक्क भजै। —पा प्र

मणि—स० स्त्री० (पु०) [स० मणि] १ बहुमूल्य रत्न, जवाहर।

उ०—१ मणि माणिक हीर पन्नै सोव्रन सयुगत मीनकै काम पाय पर जवहरी किलगी घरी सो साजोतिकी सिखा परि मानू नव ग्रह नैं पकति करी।—सू प्र

उ०—२ जो मन मार मेरे मन उपज्यो, ज्यो कचन मणि साची। —मीरां

२ हाथ की कलाई।

यौ०—मणिबध, मणिसूत्र।

३ आभूषण।

उ०—गज ठणिया घण ग्राह वाह जणियां वादाळक। तणिया करभ तिमीस चरम भणिया चउ चालक। मणिया रयण अमोल रोप अणिया मोती रुख। सोहत घणिया सीप मिळै असिबर फणिया मुख।—व भा

४ घडा।

५ योनि का अग्रभाग।

६ लिंग का अगला भाग।

यौ०—मणिबध।

७ एक प्रकार का विष नाशक पदार्थ विशेष जो किसी २ काले सर्प के सिर मे होना माना जाता है।

वि० वि०—ऐसी मान्यता है कि यह मणि सर्प दश पर लगाने से सर्प का विष उतर जाता है।

यौ०—मणिधर।

८ मणि के ग्राकार का हाथ की कलाई या हथेली मे होने वाला एक सामुद्रिक चिह्न जो शुभ माना जाता है।

उ०—कहि हस्त चिह्न वाणिक प्रकार। सति साम दुरग विध वचन सार। मणिवध तीन मणि जव प्रमाणि। मछ कच्छ कुंभ गज रथ मडाणि।—सू प्र

९ सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति, कुल भूषण।

रू० भे०—मण, मणी, मयण मिण, मिणि।

मणिग्रार—१ देखो 'मणियारा' (रू भे)

२ देखो 'मणियारो' (मह, रू भे.)

(स्त्री० मणिग्रारी)

मणिग्रारो—देखो 'मणियारो' (रू भे)

(स्त्री० मणिग्रारी)

मणिक–म० स्त्री०—घोडे की चोटी पर होने वाली भौंरी (चक्र)। (शुभ) (शा हो)

मणिकरणिका–स० स्त्री० [स० मणिकर्णिका] काशी के पास के पाच मुख्य घाटो मे मे एक।

रू० भे०—मणकरणका।

मणिकार—देखो 'मणियारो' (मह, रू भे)

उ०—सौवरणकार कास्यकार **मणिकार** पूगी फल तावूलिक मालिक सौत्रिक सरोवर।—व स

मणिकूट–स० पु०—कामरूप देश के पास का एक पर्वत। (पौराणिक)

मणिकेतु–स० पु०—एक छोटा पुच्छल तारा जिसकी पूछ श्वेत मानी गई है।

मणिकौ–स० पु०—१ चालीस सेर वजन का तोल या वाट।

रू० भे०—मणको, मणीको।

अल्पा०—मणियो।

मणिजळ–स० स्त्री० [स० जलमणि] विजली, विद्युत। (ह ना मा)

मणिजाळ—एक प्रकार का ग्राभूषण।

मणिजालक—एक प्रकार का ग्राभूषण।

उ०—मुद्रानतक दम मुद्रिका अगुलीयक अगूथला हेम जालक **मणिजालक** रत्नजालक मानक।—व स

मणिधर–स० पु० [स०] १ वह कृष्ण सर्प विशेष जिसके मस्तक में विष नाशक मणि हो।

उ०—ख्यात कर देखियौ वश खटतीसर्नं, भात परदोटिया रग मिळियौ। भाण हिंदवाण दुनियांण इण विचाळै, **मणिधर** सुपातां तू हिज मिळियौ।—नीमाज ठाकुर उम्मेदसिंह रौ गीत

२ सर्प, नाग।

उ०—हितवां स वीटियौ अळग न होवै, छाए साख ऊपरि छर छात। मणिधर तेथि जेथि मळयातर, 'पाचौ' जेथि तेथि कवि पात।—नादण बारहठ

वि०—श्रेष्ठ, शिरोमणि।

रू० भे०—मणधर, मणवर, मणीधर, मिणधर, मिणिधर, मिणीधर।

मणिनील—देखो 'नीलमण' (रू. भे)

मणिपुर, मणिपूरक–स० पु०—योग विद्या के अनुसार योग साधना के ८ चक्रो या कमलो मे से तृतीय चक्र या कमल जिसका स्थान नाभि या नाभि के पास माना जाता है। इसका रग कही हरा ग्रौर कही नीला लिखा मिलता है। यह दस दल वाला तथा इसके देवता कही शिव ग्रौर कही विष्णु माने गये हैं।

मणिवध–स० पु०—हाथ की कलाई।

उ०—मणिवध तीन मणि जव प्रमाणि। मछ कच्छ कुभ गज रथ मडाणि।—सू प्र

२ पुरुषेन्द्रिय के अग्र भाग के नीचे का वह घेरा जो अग्र भाग की सीमा वनता है।

मणिवधन–स० पु० [स०] अगूठी का वह स्थान जहा पर रत्न जडा होता है।

मणिवीज–स० पु० [स०] अनार का पेड। (अ. मा)

मणिभद्र–स० पु० [स०] शिव के एक प्रधान गण का नाम।

मणिभू, मणिभूमि–स० स्त्री० [स०] १ रत्न खान।

२ हिमालय क्षेत्र का एक तीर्थ। (पौराणिक)

३ रत्नजडित फर्श।

मणिमडित–वि० [स०] जिसमे रत्न जडे हो, रत्न जडित।

मणिमइ—देखो 'मणिमय' (रू भे)

उ०—ता वणि पेखइ मणिमइ भूयणु, तीछै निवसइ नारीरयणु। —प प च.

मणिमय–वि० [स० मणि+मस्तक] श्रेष्ठ, शिरोमणि।

उ०—पिलगि महारिण पोढियो काळो भला कहाय। जस जोवण साजै 'जसो' मणिमय फौज मल्हाय।—हा भा

स० पु० [स० मणिमथ] सैंधा नमक।

मणिमय–वि० [स० मणि+मयट्] मणियुक्त, रत्न जटित।

स० पु०—सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

रू० भे०—मणिमई।

मणिमाळ, मणिमाळा–स० स्त्री० [स० मणिमाला] १ मणियो या रत्नो का हार।

उ०—ग्रोम नमस्ते चडका चद्रभाळ री नवीन ग्राभा, छटा मणि-माळ री भुजाटा रही छाय। ग्रारोहा लकाळ रीक सत्रा घू भाळ री ग्राग, रमा रूप जयौ काछ पचाळ री राय।

—नवलजी लाळस

२ चमक, दीप्ति, ग्राभा।

३ गाल पर या अन्यत्र प्रेम क्रीडा मे दातो से काटने पर बना गोल

नक्ता या दाग ।

४ लक्ष्मी का नाम ।

५ एक बारह अक्षरीय वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे तगण, यगण तगण होते हैं।

६ एक प्रकार का आभूषण ।

उ०—अहिव तगउ मगन, चारु घट जुग्रल दीप प्रदीप मणिमाला । प्रवान वदरवान ए द्रव्य मगलीक ।—व म

मणियट, मणियर-स० पु०—जोधपुर डिविजन के बाड़मेर जिले व उसके आस पास के प्रदेश के भू-भाग का नाम, मालानी ।

रू० भे०—मालयट, मिणियड, मिणियर ।

मणियाडर-स० पु० [अ० मनिग्रार्डर] डाकघर द्वारा एक स्थान से दूसरे स्थान को रुपया भेजने का आदेश, धनादेश ।

मणियाधघ्घ नक-स० पु० यौ०—घोड़ो का एक रोग जिसमे घोड़ो के कंठ दुखने लगते हैं और कठ से घटर घटर की ध्वनि निकलती है। घोड़े का खाना पीना छूट जाता है। (शा. हो)

मणियार—१ देखो 'मणियारा' (रू भे)

२ देखो 'मणियारो' (मह, रू भे)

मणियारा-स० स्त्री० [स० मणिकार] १ एक मुसलमान जाति विशेष जो बिसायती का काम करती है।

२ कांच का सामान एव चूड़ी बेचने का व्यवसाय करने वाली जाति ।

रू० भे०—मणिहार, मणिहारा ।

मणियारी-स० स्त्री०—चूड़ी सुई, धागा, शीशा कघा, मोती मनिका आदि फुटकर सामान बेचने का काम ।

ज्यू—मणियारी माल, मणियारी धधा ।

स्त्री०—मनिहारा जाति की स्त्री ।

रू० भे०—मणिहारी ।

मणियारो-स० पु० [स० मणिकार, मणि+हृ=ले जाना] (स्त्री० मणियारी) मणिहारा जाति का व्यक्ति ।

२ कांच का सामान एव चूड़ी आदि के बेचने का व्यवसाय करने वाली जाति का व्यक्ति, मनिहारा, चूड़िहारा ।

उ०—जद बीरभाणजी बोल्या—ग्रोलगणा दोहरा भव जीवा का दाय सिमाई । पर्छे एक नदरा मणीयारा नो बणाए सिखायो । —भि. द्र

रू० भे०—मणियारो, मणिहारो ।

मह०—मणियार, मणिहार, मणियार, मणिहार ।

मणियो-स० पु० [स० मणिक] १ माला मे पिरोया जाने वाला दाना, मनिया ।

उ०—नदरी न स्वामीजी पूछयो—त नदरा मणियारा नो बणाए सीख्यो है सो थो मणीयो नरहा गो है के सोना रो है के रुद्राक्ष माळा रो है।—भि द्र

क्रि० प्र०—पिरोणो, पोणो, बींधणो, वेधणो ।

रू० भे०—मणको, मणिको ।

२ गर्दन की उभरी हड्डी जो ठोढी के नीचे होती है।

३ गर्दन के पीछे की हड्डी जो रीढ की ऊपरी भाग मे होती है।

४ गला, ग्रीवा ।

मुहा०—मणियो मोड़णो=हत्या करना, गला घोटना ।

५ रत्न, मणि ।

वि०—मन के तोल का, ४० सेर के वजन का ।

उ०—सो खोजीजी घणा मोद सू वो सवा मणियो कादो राजाजी रै निजर करियो—फुलवाड़ी

मणिरागग्यांन-स० पु० [स० मणि+राग+ज्ञान] मणियो के रगो का ज्ञान करने की एक योग्यता जो ६४ कलाओ मे से एक है।

मणिवक-स० पु० [स०] पुष्प । (ना मा, ह ना मा)

रू० भे०—मणीवक, मणीवक ।

मणिवास-स० पु० [स० मणिवास'] रत्न जटित वस्त्र ।

उ०—विधु झळमळ मणिवास, त्रिप त्रिपुरारि तुम्योनम ।

—राम रासो

मणिहार—१ देखो 'मणियारा' (रू भे)

२ देखो मणियारो' ((मह, रू भे)

मणिहारा—देखो मणियारा' (रू भे)

मणिहारी—देखो 'मणियारी' (रू भे)

उ०—मणिहारी जा री सखी, अब न हवेली आव। पीव मुवा घर आविया, विधवा किसा बणाव ।—वी स

मणिहारो—देखो 'मणियारो' (रू भे)

(स्त्री० मणिहारी)

मणी—देखो 'मणि' (रू भे)

उ०—१ तम गिर गुफा न पायदे, जेथ मणी जोगेस। कीजे आदर कुकविया, दरसे तम जिण देस ।—बा दा

उ०—२ सिरी सीस कुभा मणी हेम साऊ । जया नारि वक्षोज मोळी जड़ाऊ ।—व भा

मणीको—देखो 'मणिको' (रू भे)

मणीचौ—देखो 'मळीचौ' (रू भे)

मणीधर—देखो 'मणिधर' (रू भे)

मणीवक—देखो 'मणिवक' (रू भे)

मणीमाळ, मणीमाळा—देखो 'मणिमाळा' (रू भे)

मणीवक—देखो 'मणिवक' (रू. भे)

मणु—१ देखो 'मन' (रू भे.)

उ०—विक्कमपुरि जिण वीर भुवणि वादिय मणु मोहइ ।

—ऐ. जै का स.

२ देखो 'मनुस्य'।
३ देखो 'मनु' (रू भे)

मणुग्र—देखो 'मनुज' (रू भे)
मणुन्न—वि० [स० मनोज्ञ] सुन्दर, मनोहर। (जैन)
मणुय—देखो 'मनुज' (रू भे)
उ०—१ नवरस देसण वाणि, सवणजलि जे नर पियहि। मणुय जम्मु ससारि, सहलउ किउ इत्यु कलि तिहि।—सारमूर्तिमुनि
उ०—२ मणुया तिसयतिडुत्तर, नारय चउदसय तिरिय ग्रडयाला। देव ग्रडनवइसय, पणसयतेसट्ठि जिय भेया।—स कु

मणुहार—देखो 'मनवार' (रू भे)
मणू, मणू—सर्व०—१ मुझे, मुझको।
२ देखो 'मण' (रू भे)
३ देखो 'मन' (रू भे)
४ देखो 'मनुज' (रू भे)
उ०—मणु कोडि मिली दिसि करमली, ललीय धूलि खिनि ग्रबर नइ मिली। करइ दाहु विदाहु हियइ धरइ, 'कहु कीचक हुइ मरत मरइ।'—सालिसूरि

मणूग्र—देखो 'मनुज' (रू भे)
उ०—उभी उभी इसु म वोलिइ पडव वीजा मणूग्र म तोलि, जग उद्धसिवा घर ग्रवतरइ रूठा जग नु, जीवीउ हरइ।—सालिसूरि

मणेक—वि०—एक मन के लगभग।
मणेस—देखो 'चिंतामणि'। (ग्र मा)
मणोगय—स० पु०—मनोगत भाव, मन के भाव। (जैन)
मणोरथ—देखो 'मनोरथ' (रू भे)
मणोरम—देखो मनोरम' (रू भे)
मणोरह, मणोरहु—१ देखो मनोरथ' (रू भे)
२ देखो 'मनोहर' (रू भे)
उ०—पुन्न प्रभाविहि पामीयउ पहिलु कुतादेवी, पुन्न मणोरहु पूत्त पुण सुमिणा पच लहेवि।—सालिसूरि

मणोहर, मणोहार—देखो 'मनोहर' (रू भे)
उ०—ग्रनेकि तिहा चद्रोग्रा, चद्रमा ग्रावइ जेहनइ जोग्रा, ग्रतिहि मणोहार, माहि मणि माणिक्य रत्न तणउ सभार, तेजि करी नसाडइ ग्रधकार।—व स

मतग—स० पु० [स० मतग] १ हाथी।
उ०—१ रामसिघ 'जैत' का सो जैत ही निबाहे, कूपावत जग मैं मतग सैल ढाहे।—रा रू
उ०—२ चरखी हजारां डाक भाला डाकदारा चलै, खहत ग्रचलां मारा विछूटा खतग। वापूकारा वोल वोल फौजदारां नीठ वाघा, महा जगा जैत बारां खमारा मतग।—हुक्मीचद खिड़ियो
२ वादल। (ग्र मा, ना मा)
३ एक ऋषि का नाम।
४ एक दानव।
५ एरावत हाथी।
६ एक प्राचीन राजा जो शाप के कारण व्याध वना।
७ फर्श की बिछावन को उडने मे रोकने के लिए उसके कोनो पर रखा जाने वाला भार, मीरफर्श।
उ०—लाहानूर मुसैद ग्रजील की चोपस्मी गिलमू की बिछायत करैं। ज्वाव ज्वाव के ऊपर सबज हमरग वर मतगं धरैं।—सू प्र

ग्रल्पा०—मतगो।
वि०—मस्त, उन्मत्त।
रू० भे०—मयंग मातग।

मतगज—स० पु० [स० मतगज] हाथी। (ग्र. मा, ना मा, ह ना मा)
उ०—चरखां गढि चक्र मगा मचलै, चर हू थिर थाय पगा न चलै। जड हू करि जगम देत जिका, तन ग्रद्र मतगज रग तिका।—मे म

मतगरिप, मतगरिपु—स० पु० [स० मतग+रिपु] शेर, बाघ। (डि को, ह ना मा)
मतगी—स० पु० [स० मतगिन्] १ बहुत से हाथियो का स्वामी, गज यूथ का स्वामी।
२ हाथी का सवार।
३ महावत।

मतगो—देखो 'मतग' (ग्रल्पा, रू भे) (७)
मत—स० पु० [स०] १ राय, विचार, सम्मति।
उ०—सगळा गौड एक मत होय ऊठिया। मुदै तो गोपाळदास वीजा भाई सारा हुकम सिर ऊपर झलियो।—गौड गोपाळदास री वारता
२ उदाहरण दृष्टान्त।
उ०—विस मुख जास वसत मीठा वोला हस मिळै। उरग तणो कर ग्रत, मोर प्रकासै एह मत।—
३ सोच समझ कर निश्चित की हुई वात।
उ०—१ ग्रापा मेटैं हरि भजैं, तन मन तजैं विकार। निर वैरी सब जीव सौं, दादू यहु मत सार।—दादूवाणी
उ०—२ निर वैरी निज ग्रातमा, साधन का मत सार। दादू दूजा राम बिन, वैरि मझ विकार।—दादूवाणी
४ ऋषियो, मुनियो, महात्माग्रो या धमग्रन्थो द्वारा प्रतिपादित कोई सिद्धान्त।
उ०—मत भेदन खेद खुबी मत की, सत चूप चुभी उपनिसत की। फटकार हळाहळ तें फिरगो, घन ग्रानद ग्रम्रत धा घिरगो।—ऊ का
५ किसी विशिष्ट महापुरुष के सिद्धान्त का ग्रनुयायी सम्प्रदाय, पथ।

६ लोकतंत्र के क्षेत्र मे, अपना प्रतिनिधि चुनने के लिए किसी व्यक्ति अथवा समाज को प्राप्त वह अधिकार जिससे वह अपनी इच्छा, रुचि आदि के अनुकूल दो या अधिक व्यक्तियो, पक्षो आदि मे से किसी एक या कुछ का अधिकारिक रूप मे समर्थन कर सकता है, वोट।

७ उक्त के द्वारा किसी का किया जाने वाला समर्थन।

अव्य०—१ निषेधवाचक शब्द, नही, न।

उ०—१ है झूटो सोचो हिए, अखलेस्वर री आंण। मत अपणांओ माहुआ, जग नूं साचो जांण।—बां दा

उ०—२ पून्य प्रताप होय अग पूरन, पाप प्रताप अपगी। प्रथम विचार पाप को पापी, कर मत मीत कुसगी।—ऊ का.

२ स्यात, शायद।

उ०—१ बाबहिया, चढि गउखसिरि, चढि ऊचइरी भीत। मत ही साहिब वाहुडइ, कउ गुण आवइ चीत।—ढो मा

उ०—२ बाबहिया, चढि डूगरै, चढि ऊचइरी पाज। मत ही साहिब वाहुडइ, सुणि मेहां री गाज।—ढो मा

रू० भे०—मती।

३ देखो 'मति' (रू भे)

उ०—१ साह दुकानां चोरटा, साहव काना चाट। लागं जित मत हर लिए, वे सोभा का फाट।—बां दा

उ०—२ मात है! जग जीवण नें, मुख अवसर दूग दीनो है, मत हीणी है माय। रतन फेंकनै जतन ककर रो कीनो है ए माय, माता है! अमरत जाण हळाहळ मो नें पायो है। मत हीणी है माय।
—गी रा

उ०—३ अलख निरजन अज अविकारी, व्याप रया सब जग माही। आप तणी गत मत कुण जाणं हो? नमो नमो ही माई।
—गी रा

४ देखो 'मात्रा' (रू भे)

उ०—पहल त्रतिय पद सोळ मत, दुत चव ग्यारह दाख। चरणा दूहा चुरस कर, भल किव तिण नू भाख।—र ज प्र

५ देखो 'मत्त' (रू भे)

मतकुण—देखो 'मत्कुण' (रू भे) (हि को)

मतकेमास, मतकेवास-वि०—१ असाधारण बुद्धि वाला, तीव्र बुद्धि वाला।

२ बल मे अद्वितीय।

मतक्षेत्र-पु०—निर्वाचन क्षेत्र।

मतगणना-स्त्री०—जनमत सग्रह।

मतदान-पु० [सं० मतदान] किसी प्रकार के निर्वाचन के समय अथवा किसी विषय या प्रस्ताव के सम्बन्ध मे पक्ष अथवा विपक्ष मे मत देने की क्रिया। (वोटिंग)

मतदान-केंद्र-पु० [स० मतदान केन्द्र] निर्वाचन का वह स्थान या केन्द्र जहा निर्वाचन के समय किसी विशेष क्षेत्र मे आकर मत-दाता मतदान करते हैं। (पोलिंग स्टेशन)

मतदान-कोस्ट-पु० [स० मतदानकोष्ठ] पर्दे की ओट, जिसमे रखी पेटी में मत-पत्र छोड़ा जाता है। (पोलिंग बूथ)

मतदान पेटिका-स्त्री०—वह पेटी जिसमे मतदाताओ द्वारा मत छोड़े या डाले जाते हैं। (बैलट बाक्स)

मतदाता-पु० [सं०] प्रजातंत्र मे मत देने का अधिकार प्राप्त व्यक्ति। अपना प्रतिनिधि निर्वाचित करने हेतु मतदान का अधिकार प्राप्त नागरिक।

मतपत्र [स०] विभिन्न उम्मीदवारो के नाम और नामो के आगे अकित चिह्नो वाला पत्र जिसे मतदान पेटिका मे डालते हैं। शलाका पत्र, गूढ मत पत्र।

मतवाळ—देखो 'मतवाळ' (रू भे)

मतवाळ, मतवाळु—देखो 'मतवाळो' (रू भे)

उ०—जिमणवार लिलीट छड़, राजानइ वदमवानइ सुवर्णमउ पाट, वीजानइ वइसवा चुकीवट, विमाल नेजवट। मतवाळु ए आवइ।
—व स

मतभेद-पु० [स०] किसी विषय या सिद्धान्त पर किसी दल, समूह या वर्ग के सदस्यो का एक मत न होना।

मतमद—देखो 'मतिमद' (रू भे)

उ०—भव दरियाव भयद, लहरा ऊठै लोभ री। माहै ज्या मतमद, मनल घणा डूबै मरै।—बा दा

मतळब, मतलब-स० पु० [अ० मतलब] १ तात्पर्य, अभिप्राय, आशय।

उ०—भवारा जित्ता लाठा अर काम वर्णा, उत्ता ई सावळ। बीनती मीता यू ई मोत्यां री ठोड रू चैला। कांई मतळब?—फुलवाडी

२ स्वय का भला या हित सोचने की क्रिया या भाव, स्वार्थ।

उ०—१ प्रीत उतारण पार, जेवरळा साधै जगत। हेतू वर्ग हजार, मतळब अपणै मोतिया।—रायसिह सांदू

उ०—२ नांणो नोरायण प्रद परायण रांमायण रोसदा है। छळ बळ कर छानै, मतळब मानें, मूरख गळ मोसदा है।—ऊ का

मुहा०—मतळब गांठणो=स्वार्थ सिद्धि करना। २ मतळब काडणो, मतळब निकाळणो=स्वार्थ सिद्धि करना। ३ मतळब हो जाणो=स्वार्थ सिद्ध हो जाना।

३ पद, वाक्य, शब्द का अर्थ, माने।

४ उद्देश्य, विचार।

उ०—जिण मतळब सू आई ही वो तो थनै विना बताया ई पार पडग्यो।—फुलवाडी

५ सम्पर्क, सम्बन्ध, वास्ता।

ज्यू—मारो उण सू कोई मतलब नही।

रू० भे०—मुतळब।

मतलवियो—देखो 'मतलबी' (अल्पा, रू भे)

मतलबी—वि० [अ० मतलब+रा० प्र० ई] वह जो केवल हित का ध्यान रखता हो, अपने स्वार्थ में लीन रहने वाला, स्वार्थी।
उ०—ऐड़ी म्हारा सू काई गरज पजगी। थां मतलबी आवा री कीं भरोसौ नी।—फुलवाडी
रू० भे०—मुतलबी।
अल्पा, रू० भे०—मतलबियौ, मुतलबियौ।

मतवत—देखो 'मतिवत' (रू भे)
उ०—प्रांण सटै ही प्रीति जुडती जो दीसै 'जमा'। आदरि रूडी रीति, मति छोडै मतवत तू।—जसराज

मतवाय—देखो 'मथवाय' (रू भे.)
उ०—कडिया चीस, पगा सरणा, मतवाय, ऊबका, उछाटा, रू रू तूटणौ भौर हाडकां री कुळणौ।—फुलवाडी

मतवारौ—देखो 'मतवाळौ' (रू भे)
उ०—घूम रह्यौ दुरयोधन राजा, जैसे गज मतवारौ।—मीरा (स्त्री० मतवारी)

मतवाळ—स० स्त्री०—१ नशा, खुमारी, मस्ती।
उ०—वरच्छिय वेघत घाट वराळ। मर्दा छकि जाणि पडै मतवाळ।—सू प्र
२ मजलिस, महफिल।
उ०—१ रळा राग जड रग, वणावै दारू देसां। मुळकत मन मतवाळ, कोटड्या हुवै हमेसा।—दसदेव
उ०—२ सेज रमां सुख कराजी, करस्या रग मतवाळ।—मीरा
३ मदिरा-पान।
उ०—सै होळी नै ढळी जाजमा, होय रही मतवाळ। बोतल वो जग-जग करै, कोई प्याला करै पुकार।—डूगजी जवारजी री छावली
४ किसी उपकरण मे लगे हुए दस्ते या हत्थे को दृढ करने के लिए उसमे लगाई जाने वाली लकडी की पतली पट्टी।
५ मजाक, दिल्लगी।
६ शराब, मदिरा।
रू० भे०—मतवाळ।
७ देखो 'मतवाळौ' (मह, रू भे)

मतवाळडौ—देखो 'मतवाळौ' (अल्पा, रू भे)
उ०—वाई घर आयो छै मारू मतवाळडौ। ऊनै ज्यू त्यू विलमाजै बाई घर थारै के म्हारै।—लो गी

मतवाळौ—वि० (स्त्री० मतवाळी) १ नशे आदि के प्रभाव से मस्त, नशे मे चूर।
उ०—भीज रीझ मेली भली, पावस पांणी पैल। मतवाळा मनवार री, छाक म ठेलौ छैल।—बा दा
२ उन्मत्त, मस्त, मत्त। (डि. को)
उ०—बाजता घट विहुवै वळा, ऊरध सूड उछाजता। दाभता क्रोध ज्वाळा दग्या, गज मतवाळा गाजता।—मे म.
३ किसी प्रकार के अभिमान या मद के कारण मस्त और लापरवाह, अल्हड, मदोन्मत्त।
उ०—मतवाळौ इम मुणै, कमध दारण 'कुसळावत'। जाऊ खामा गजा, घणा मुगळा दळ धावत।—सू प्र
४ रसिक, रतिप्रिय।
उ०—बादळ काळा बरसिया, अत जलमाळा आण। काम लगौ चाळा करण, मतवाळा रग माण।—बा दा
रू० भे०—मतवाळु, मतवारौ, मतिवाळौ।
अल्पा०—मतवाळडौ।
मह०—मतवाळ मतिवाळ।
पु०—१ दुर्ग या पहाडी पर मे शत्रुओ को मारने के लिए लुढकाया जाने वाला पत्थर।
२ देखो 'मलौ'।

मतसयाखडग—स० स्त्री०—एक प्रकार की तलवार विशेष।

मतस्याधांनी—स० स्त्री० [स० मतस्याधानी] शिकार करते समय मछली फसाने का यत्र। (अ मा)

मतहींण, मतहीण, मतहीणौ—देखो 'मतिहीण' (रू भे)

मता—देखो 'मती' (रू भे)
उ०—रावजी वाता पूछी सो कही फेर जोगी वाळी वात कही भौर समझाया जे आ किही नू जाहर मता करज्यो।
—नापै सांखले री वारता
२ देखो 'मता' (रू भे)
उ०—एक वडो सहर छै पण राखस सूनो कर राखियो छै। वाजार री हाटा मता सु भरी पडी छै।—चौबोली

मतांतर—स० पु०—विचारभेद, मतभेद।

मता—स० स्त्री० [अ० मताअ] १ लक्ष्मी, धन-दौलत।
उ०—१ जबदळ, 'पदम', रायसिघ जुजठळ, हरचद प्रीछत भोज हुआ माणी मता छता मही मडळ, मता न माणी जिता मुआ।
—गोरधन खीची
उ०—२ जगमाल रे सिवदास अरजुनसिह अै दोय हुआ सो बडा ही मरद हुइया हजारा री मता लूटी पछै हिमार री फौजदार चढ आइयो।—ठाकुर जेतसिंह री वारता
२ माल, असबाब।
उ०—तद रजपूत कही, 'जु मोनै महाराज, क्या ईसो दीजै, सु फेर कही रौ आमत न हु। अर बैठो खावां अर खुटै नही, सु दीजै। तद समुद्रजी आपरै कांमेतीयां नू पूछी 'इसडी कोई वस्त छै ? तद परवांनै कही, 'जु एक खीरसख छै सु दीजै।' तिको रजपूत नू सख दे, घोडा दे, मता देनै विदा कियौ—बूढी ठग राजा री वात

मतालव—स० पु० [अ० मतालिब] मतलब का बहु वचन।

उ०—नोख न जोख करै नव रोजै, जोख न भूखण धरै जवाहर।
दमकत करै न मिळै दिवाणा, अरजी फरज मतालव ऊपर।
—सू प्र

मतानवौ—१ राजाओं द्वारा जागीरदारों से लिया जाने वाला एक कर।
२ देखो 'मुतालवौ' (रू भे)

मताह—देखो मता' (रू भे)
उ०—आगै देखै तौ कासू घर पण सूना पडीया छै। मताह घणा ही छै पण मनख री जात नही।—चौबोली

मति—स० स्त्री० [स० मन्+क्तिन्] १ बुद्धि, अक्ल।
उ०—बाह चदन सुगम सेव्यइ, भाव सचारिक वधइ। तेत्रीस ध्रति मति स्मरण, लज्जा सोक निद्रादिक मधइ।—वि कु
२ राय, सम्मति।
३ इच्छा, कामना।
४ साहित्य के अतर्गत एक प्रकार का सचारी भाव।
रू० भे०—मत, मती, मत्त, मत्ति, मत्ती, मत्य।
५ देखो 'मती' (रू भे)
उ०—१ पूत घणौं मैं पालियौ, जूझण तू मति जाइ। हू मोडे म्राऊ हूमैं, सुत दो ही समुझाइ।—व भा
उ०—२ मति करो म्हारी व्याव सगाई, क्यू बाघो जजाळ।
—मीरां
६ देखो 'मिति (रू भे)

मतिगुर—वि० [स० मति+गुरु] तीक्ष्ण बुद्धि वाला, प्रतिभावान।

मतिघण—वि० [स० मति+घन] विद्वान, पडित। (ह ना मा)

मतिजीवी—वि० [स० मति+जीविन्] १ बुद्धि पूर्वक काम करने वाला।
२ विवेकी।
३ जिसकी जीविका दिमागी काम से चलती हो, बुद्धि-जीवी।

मतिधर, मतिधीर—स० पु०—बुद्धिमान, विवेकशील।
उ०—द्वादस रामचद्र सुत दीठा, गुण तोलण जग हूत गरीठा। प्रकट बडो सग्रामसीह पहु, मतिधर सुकवि मिलिद कज महु।
—व भा

मतिभ्र स—पु०—बुद्धि की वह अवस्था जबकि बुद्धि कुछ भी सोचने या समझने मे असमर्थ हो जाती है, बुद्धिभ्र श।

मतिभ्रम—पु०—बुद्धि या समझने की शक्ति विकृत हो जाने के कारण होने वाले भ्रम से मनुष्य कुछ उल्टा-सीधा समझने लगता है।

मतिमत—देखो 'मतिवत' (रू भे)

मतिमद—वि० [स० मदमति] मूर्ख, बुद्धिहीन।
रू० भे०—मदमति, मदमती, मतमद।

मतिमान—वि० [स० मति+मतुप्] विवेकशील, समझदार।

मतिवत—वि० [स० मति+मत्] (स्त्री० मतिवती) चतुर, बुद्धिमान, विचारवान।
रू० भे०—मतवत, मतिमंत।

मतिवान—वि०—बुद्धिमान, विवेकी।
उ०—श्री साढा तीन घर छै राजसिहजी बडो साहसी मतिवान गुण खान हुवौ।—राठोड राजसिह री वारता

मतिवाळ—१ देखो 'मतवाळो' (मह रू भे)
२ देखो 'मतवाळ' (रू भे)

मतिवाळौ—वि०—बुद्धिमान।
२ देखो 'मतवाळौ' (रू भे)
उ०—१ भारा खग तूटत ऊपर भाळ। मुडै नह सूर लडै मतिवाळ।
—सू प्र
उ०—२ भुरज भुरज आरवा, दुगम जुथ गोळदाजा। मतिवाळा मेलियां, कगुर कगुरै सकाजा।—सू प्र

मतिसार—वि०—बुद्धिमान।

मतिहींण, मतिहीण—वि० [स० मतिहीन] निर्बुद्धि, मतिहीन।
रू० भे०—मतहीण, मतहीण।
अल्पा०—मतहीणो, मतीहीणो।

मतिहीणो—देखो 'मतीहीण' (अल्पा, रू भे)

मती—स० स्त्री०—निषेधवाचक शब्द, न नही, मत।
उ०—दामोदर दीजै मती, कायर काठै वाम। सरणै राखै सूर रै, तेथ न व्यापै आम।—बा दा
रू० भे०—मत, मता, मता, मति, मतै, मत्त, मत्ति।
२ देखो 'मति' (रू. भे)
उ०—मिळकै लख गोरन मती एक, इत एक एक की मत अनेक। उत रेल तार उद्दम अपार, गोरव इत विद्या बिन गवार।—ऊ का
३ देखो 'मिति' (रू भे)

मतीर—देखो 'मतीरो' (मह, रू भे)
उ०—मीठा हुवै मतीर, खूब खाटोडा फोगां। काचर काकडिया, टीडसा सागा जोगा।—दसदेव

मतीरडौ—देखो 'मतीरो' (अल्पा, रू भे)

मतीरियौ—देखो 'मतीरो' (अल्पा, रू भे)

मतीरी—देखो 'मतीरो' (अल्पा, रू भे)

मतीरो—स० पु०—तरबूज की जाति का एक लता फल, हिंदवान।
मुहा०—मतीरा रो भारो वाधणो=मूर्ख समूह को सगठित करने का असफल प्रयास करना।
मह०—मतीर।
अल्पा०—मतीरडो, मतीरियो, मतीरी।

मतीहीण, मतीहीणो—देखो मतिहीण' (रू भे)

मतू—देखो 'मत्तू' (रू भे)
उ०—जिणमैं मतू मा'राज पदमसिघजी रो अरू साख सूरज चद्रमा री लिखी।—द दा

मतूडी—देखो 'मति' (अल्पा, रू भे)

मते, मतेई—देखो 'मतै' (रू भे)

उ०—१ कागद समाचार पण कोई जावै नही आपरै मते तो कोई कागद मेल सकै नही सरम करै।—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ उणारी नूराणी देखने स्वामी बोल्या—आज तो थें कजिया रै मते आया दीसो छो।—भि द्र

मतै-स० पु०—१ इच्छा, इरादा।

उ०—उठै थभि दो दीह लाखां उडाऊ, हुठा लै भटा भेजियो द्रग भाऊ। जिकी वात भाऊ घणी नीच जाणी, पिता रै मतै नीठि सोही प्रमाणी।—व भा

२ विचार।

उ०—राव जोधो मारवाड धणी वडो राजा छै। गुजरात रै मुहडै इण री मुलक छै नै हजरत गुजरात ऊपर मुहम करण मतै छै। तो राव जोधा नू आपरो करो।—राव जोधाजी रै वेटा री वात

वि०—कटिवद्ध, सन्नद्ध।

अव्य०—१ अपने आप, स्वत ही।

उ०—हसी हसी मे राजाजाजी रै स्रीमुख सू मतै ई आ बात निकळगी।—फुलवाडी

२ हरगिज।

उ०—चलायनै आई तो अवै विना वताया पाछी मतै ई नी जावण दू।—फुलवाडी

३ लिए।

उ०—सु तिण नै जाम सतै सुख हुतो। सु आजमखान गिरनार लेवण मतै। तरै जाम इणरो ऊपर करै।—नैणसी

देखो 'मती' (रू भे)

उ०—आन धरम एकादमी, जोग जिग आचार। इन आसै भूलो मतै, हरीया विनां विचार।—स्रीहरिरामदासजी महाराज

रू० भे०—मते, मतेई मत्तै।

मतोमति-अव्य०—अपने आप अपनी अपनी इच्छानुसार, आप ही आप।

मतो-स० पु०—१ विचार विमर्श, परामर्श, सलाह।

उ०—१ प्रभु आगळ करि करि सुर प्रणांम। धरि मतो गए इम धांम धाम।—सू प्र

उ०—२ सह वोलिया सकाज, मतो करै विहुवै मिमन्न। मन वछित महाराज, ऐ मोहमदीय असपती।—सू प्र

२ इरादा, विचार।

उ०—ओ हाको सुणनै राजा रो मन की मोळो पडियो। वो उठै जावण सारू मतो करियो।—फुलवाडी

३ निर्णय, निश्चय।

उ०—तद सेठ कह्यो—आप जावण री ई पूरो मतो कर लियो तो पछै म्हैं ढावू ई कीकर।—फुलवाड़ी

क्रि० प्र०—करणो, होणो।

रू० भे०—मत्तो।

मत्कुण-स० पु० [स० मत्कुण] १ रक्त चूसने वाला कीडा, खटमल।

रू० भे०—मकड, मकड, मक्कड, मतकुण, माकड, माकण, माकर, माकुण, माकड, माकण।

अल्पा०—माकडियो।

२ पांच वर्ष का हाथी। (डि को)

३ बिना दांतो का हाथी।

४ छोटा हाथी।

रू० भे०—मतकुण।

मत्त-वि० [स० मत्त] १ मस्त, मतवाला। (डि को)

उ०—सत्य न को बळ हत्थ के, ना जीपै छळ मत्त। जै पामै रिप सग्रहै, तप हूता छत्रपत्त।—रा. रू

२ उन्मत्त, मदोन्मत्त।

उ०—मगरूर घतावत मत्त मदा, उनमत्त मुनेस्वर दत्त अदा।—मे. म

स० पु० [स०] वह हाथी जिसके मस्तक से मद भरता हो।

२ देखो 'मात्रा' (रू भे)

उ०—कर कर आद मे हिक्क नगण मुभकर। घुर उगणीस मत्त नहचै घर।—र ज प्र

३ देखो 'मात्र' (रू भे)

उ०—अकबर साह निरक्खिया, जेता चांपावत्त। मीढ़ सहस्सा मत्थणै, लक्ख गिणै त्रिण मत्त।—रा रू

रू० भे०—मत, मति, मती, मत्ती, मत्तो।

मत्तगयद-स० पु० [स० मत्त+गजेन्द्र] १ सवैया छद का एक भेद जिसके प्रत्येक चरण मे सात भगण और अत मे दो गुरु होते हैं।

२ मस्त हाथी।

मत्तभाव-स० पु०—मस्ती, उन्मत्तता।

मत्तवाळो—देखो 'मतवाळो' (रू भे)

उ०—अखडी ब्रह्म डी चडी आनदी अनूप आई, महामाई सुरां राई नमो तोनै माय। चिरत्ताळी महाकाळी मत्तवाळी चित्तचोखी, अनोखी सुरगी चगी अनगी सदाय।—मा वचनिका

(स्त्री० मत्तवाळी)

मत्तायत-वि०—मदमस्त।

उ०—ते चाल्या चिति हरखता, मत्तायत मछरति। वइठा दीवड वारगि, हाक दीइ हलकति।—मा का प्र

मत्ति—१ देखो 'मति' (रू भे)

उ०—एह वचन राजा सुणी, चितै इम निज चित्त। घन माहैसदत्त ग्रहपति, जेह नी अविरल मत्ति।—वि कु

२ देखो 'मती' (रू भे)

३ देखो 'मिति' (रू भे)

मत्ती—१ देखो 'मति' (रू भे)

उ०—वीराधिवीर मिळै मीर, सूर धीर सत्थ ए। आरेण मत्ती भीम भत्ती, वाण पत्ती पत्थ ए।—गु रू व

२ देखो 'मती' (रू भे)

३ देखो 'मिति' (रू भे)

मत्तू–स० पु०—ऋण प्राप्त करने वाले व्यक्ति द्वारा तवान या ऋण पर किए गए हस्ताक्षर।

उ०—अह प्रभू चौधरियां कुळ कवण उवारै, मत्तू अत्तू मे गत्तू दे मारै। भावी ऊमर आंरो कस आयो, छळ बळ मुतळब कर वस कर छिटकायो।—ऊ का

रू० भे०—मतू।

वि०—साक्षी स्वरूप हस्ताक्षर करने वाला।

मत्तै—देखो 'मतै' (रू भे)

उ०—१ जिण थी स्वतन्त्र संभव मे एक आपरा आलय हू काढि देण रो उपकार करि जिकण रा मीलणा मैं महियो न जाइ इसडा अनेक शतरथ कुमाई मन मत्तै वहै तिकण रो अंत तो इसडो ही नटावै।—व भा

उ०—२ घठी महमूदसाह नू जीति दिल्ली पै पंद्रह दिन पातसाही करि आरयावरत रा कै ही अबीसा नू दढि मीर तैमूरबेग रै पाछो गयां कैही दिल्ली रा सूबादार जठी तठी आप आप रै मत्तै रहण ढूका।—व भा

मत्तौ—१ देखो 'मत्त' (रू भे)

२ देखो 'मतौ' (रू भे)

मत्थ—१ देखो 'माथै' (रू भे)

उ०—तत्रेरम कुंभ दुहायळ तत्थ। आडागिरि मत्थ को हत्थ अगत्थ।—मे म

२ देखो 'माथो' (रू भे)

उ०—वेह समत्थ वखाणियो, वाघ डाच जम वत्थ। जिण माभळ लग जाडिया, माय जाय गज मत्थ।—वा दा

मत्थण–वि०—मथने के लिए, मथने को।

रू० भे०—मथण।

मत्थणौ, मत्थवौ—देखो 'मथणौ, मथवौ' (रू भे)

मत्थणहार, हारो (हारी), मत्थणियो—वि०।

मत्थिग्रोड़ो, मत्थियोड़ो, मत्थ्योड़ो—भू० का० कृ०।

मत्थीजणौ, मत्थीजवौ—कर्म वा०।

मत्थारो—देखो 'मथारो' (रू भे)

मत्थे—१ देखो 'माथै' (रू भे)

उ०—'परेज'शाह सत्थे, दे कमधज लज भूडडै। सुरताण खुरम मत्थे, दे बीडो कीध फुरमाण।—गु रू व

२ देखो 'माथो' (रू भे)

मत्थेण—जैनियो का एक अभिवादन।

उ०—पछै स्वामीजी पधारया जद मिवरामदासजी सतोगचदजी स्वामीजी ने घावता देखनें मत्थेन वदामि कहिनें उभा थया।

—मि. द्र.

मत्थेहण—देखो 'मथन' (रू भे)

उ०—भिड्वायो सारो मुभा-मडळ, वसुधा गोघम गहण चिहू-वळ। किळवा महण मत्थेहण कदळ, दिल्ली मातो दुद दमगल।

—गु रू व

मत्थै—१ देखो 'माथै' (रू भे)

उ०—डोहत सूडाडड ए स्रोखड सरपक हिंड ए। गज-वाग मत्थै मैंगळा, वळकत्त वीजक वह्ळा।—गु रू व

उ०—२ सीगाळो अब खल्लणो जिण कुळ हेक न थाय। जास पुराणी वाड जिम, जिण जिण मत्थै पाय।—हा भा

२ देखो 'माथो' (रू भे)

मत्थौ—देखो 'माथो' (रू भे)

उ०—ताम 'भीम' ऊठियो, खाग धूणै भूडडह। जडै पाड पायाळ अडै, मत्थौ अहमडह।—गु रू व

मत्य—देखो 'मति' (रू भे)

उ०—वचन माहारु चिति आणु, भली छि तुझ मत्य।—नळाख्यान

मत्रि—देखो 'माता' (रू भे)

मत्स—देखो 'मत्स्य' (रू भे)

उ०—मगध मडळ अग वग कलिंग कासो कुमट्ट पचाळ जागळ विदेह सडिल्ल मळय वस्त मत्स दसारण्ण चेदी सिंधु सूरसेन भग।

—व स.

मत्सर–स० पु० [स०] १ क्रोध, कोप।

२ डाह, ईर्ष्या।

३ गर्व, अभिमान।

उ०—मनि मावीग्रह मत्सर रहीउ, पाछइ अरजुनु अति गहगहीउ।

—प प. च

मत्सरता–स० स्त्री० [स०] १ डाह या ईर्ष्या का भाव।

२ गर्व करने का भाव, अहकारिता।

३ कोप या क्रोध करने का भाव।

मत्सरी–वि०—१ डाह या जलन रखने वाला, ईर्ष्यालु।

२ क्रोधी।

३ अभिमानी।

मत्सरीक्रता–स० स्त्री० [स०] सगीत मे एक मूर्च्छना का नाम।

मत्स्य–स० पु० [स०] १ मछली।

२ ज्योतिष मे मीन नामक राशि।

३ विष्णु के दस अवतारो मे से पहला अवतार जो मछली के रूप मे हुआ था।

रू० भे०—मच्छ, मछ, मत्स, मांछ।

अल्पा०—माछळो, माछलो।

४ पुराणानुसार विराट देश।

वि० वि०—इस देश की स्थिति के सम्बन्ध मे ऋग्वेद में उसे इन्द्रप्रस्थ से दक्षिण या दक्षिण-पश्चिम तथा सूरसेन या मथुरा से दक्षिण मे बताया है। उपनिषदो, ब्राह्मणो आदि मे उल्लेख मिलता है कि वत्स, साल्व, कुरु-पांचाल आदि जनपद मत्स्य के

इर्द गिर्द ही थे। महाभारत के विराट पर्व (१=१०-१४) में कुरु देश के चारों ओर जो जनपद गिनाये गए उनमें पांचाल, चेदि, मत्स्य, दशार्ण, नवराष्ट्र, मल्ल, शाल्व, युगन्धर आदि हैं। वर्तमान अलवर, भरतपुर और जयपुर का कुछ भू-भाग मत्स्य प्रदेश का ही क्षेत्र माना जाता है।

मत्स्यगंधा-सं० स्त्री० [सं०] कुरुवंश के शांतनु राजा की पत्नी, जो चित्रांगद एवं विचित्र वीर्य राजाओं की माता थी। इसके 'काली', गंधवती, योजनगंधा, गंधकाली, सत्यवती, आदि नामान्तर भी प्राप्त हैं।

वि० वि०—पौराणिक आख्यान के अनुसार मत्स्यगंधा उपरि-चर वसु राजा की कन्या थी। इसकी माता का नाम अद्रिका था जो ब्रह्मा के शाप के कारण मछली का स्वरूप प्राप्त हुई अप्सरा थी। इस मछली स्वरूप अप्सरा से उत्पन्न होने के कारण इसके शरीर से मछली की गंध आती थी। इसी कारण यह 'मत्स्यगंधा' के नाम से प्रसिद्ध हुई। इसे मल्लाहों ने पाल पोस कर बड़ा किया था। मल्लाहों के परिवार में रहकर वह नाव चलाने का कार्य करने लगी। एक दिन पाराशर ऋषि ने इसे देखा और अत्यधिक रूप-वती होने के कारण इसके साथ समागम की इच्छा प्रकट की। पाराशर ऋषि से ही इसे कौमार्यावस्था में वेदव्यास नामक पुत्र की उत्पत्ति हुई। कौमार्यावस्था में व्यास का जन्म होने के पश्चात् शांतनु राजा से इसका विवाह हुआ जिससे इसे चित्रांगद और विचित्रवीर्य नामक दो पुत्र उत्पन्न हुए।

रू० भे०—मछगंधा।

मत्स्यदेसि, मत्स्यदेसी-वि०—मत्स्य देश का, मत्स्य राज्य का।

मत्स्यपुराण-सं० पु० [सं० मत्स्यपुराण] अठारह पुराणों में से एक। यह महापुराण कहलाता है।

रू० भे०—मच्छपुराण।

मत्स्यमुद्रा-सं० स्त्री० [सं०] दाहिने हाथ के पृष्ठ भाग पर बांये हाथ की हथेली रख कर दोनों अंगूठों को हिलाने की तांत्रिकों की एक मुद्रा।

मत्स्यासन-सं०पु० [सं०] योग के चौरासी आसनों में से एक जिसमें दोनों पैरों की स्थिति पद्मासन की तरह रखकर सीधे लेटकर दोनों हाथों की कुहनी को सिर पर रखते हैं। इससे मल शुद्धि होती है।

मत्स्येंद्रनाथ—देखो 'मछंदर'।

मत्स्येंद्रासन-सं० पु० [सं०] योग के चौरासी आसनों में से एक। इसमें बांये पैर की जांघ के मूल में रखी दाहिने पैर की एड़ी को, बांये हाथ को पीठ के पीछे से घुमाकर पकड़ते हैं तथा दाहिने पांव के घुटने के पास भूमि पर रक्खे हुए बांये पैर के अंगूठे को दाहिने हाथ से, जो घुटने के बाहर निकलता है, पकड़ते हैं। उक्त स्थिति बनाकर मुंह को बांई ओर मोड़कर बैठने से मत्स्येंद्रासन होता है। इस आसन क्रिया से कुंडलिनी जागृत होती है और जठराग्नि प्रदीप्त होती है।

मथ—१ देखो 'माथै' (रू भे)

२ देखो 'माथौ' (मह, रू भे)

मथण-सं० पु०—१ समुद्र। (ह ना मा)

२ मथने की क्रिया।

३ देखो मथन'।

रू० भे०—मथांण, मत्थण।

मथणी-सं० स्त्री०—१ दही मथने का काष्ट का बना मथ-दंड।

उ०—१ जरे मनसा मथणी मथ जांण, करे कथणी कथ कै गुज-रांण। कुजीव कुसंग कहा कुमळात, विजोगण पीव सजोगण बात।

—ऊ का

उ०—२ फजरा हथणी सी दधि मथणी फुरती, माटां घर घर में घणहर सी घुरती। खूली आथणिया साथणिया खाती, फूली-फूली फिर फूंधाळी गाती।—ऊ का

२ देखो 'मथाणी' (रू भे)

रू० भे०—मथणी, मथनी, मथाणी, मथनी।

मह०—मथाण, मथांन।

मथणौ, मथबौ-क्रि० स० [सं० मथनम्] १ मथानी या रई के द्वारा दूध या दही को इस प्रकार हिलाना या मथना कि उस पर मक्खन आ जाय, बिलोना।

उ०—१ आखी कळी री आख सौ, जगत सरब रौ जीव। करता निज हथ काढियो, घण गोरस मथ घीव।—सिवबगस पाल्हावत

उ०—२ जाणपणउ कळा तियइ तन जोवण, विध बिन्हे ही लागा वाद। मथ काढी जाणी महामह प्यारभ, माडी तिण रूप री म्रजाद।—महादेव पारवती री वेलि

२ कई द्रव पदार्थों को हिला डुला कर एक करना, विलोड़ित करना।

उ०—अरि डरिया तस केहो अचंभो, मारुवा राव नमो परवांण। मथि हाथियें कियो जळ मैळो, मिळतो नदी डरै महिरांण।

—गाडण नेतो

३ उथल-पुथल करना, अस्त-व्यस्त करना।

४ नष्ट-भ्रष्ट करना।

५ किसी कार्य का बार बार अभ्यास करना।

मथणहार, हारौ (हारी), मथणियौ—वि०।

मथिओड़ौ, मथियोड़ौ, मथ्योड़ौ—भू० का० कृ०।

मथीजणौ, मथीजबौ—कर्म वा०।

रू० भे०—मथणौ, मथबौ, मथ्थणौ, मथ्थबौ।

मथदंड-सं० पु० [सं० मथदण्ड] दही मथने का काष्ट का बना उपकरण।

मथन-सं० पु० [सं० मथन] १ गनियारी नामक वृक्ष।

[सं० मथित] २ छाछ, तक्र, मठा। (अ. मा)

३ दधि, दही। (अ मा)

४ एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र विशेष ।
५ देखो 'मथन' (रू भे)
रू० भे०—मथण ।

मथनी—देखो 'मथणी' (रू भे)

मथपरवत—स० पु० [स० मथन पर्वत] मदराचल पर्वत का नाम ।
रू० भे०—मथपरवत, मथपरवत ।

मथरा—१ देखो 'मथुरा' (रू भे.)
२ देखो 'मथरा' (रू भे)

मथवाय—स० पु० [स० मस्तवात] शिर मे होने वाली पीडा, शिरशूल ।
रू० भे०—मतवाय, मथवाह ।

मथवाळ—सं० पु० [स० मस्तक+वाल] स्त्रियो के शिर के वे बाल जो शिर की धुलाई करते या कघी करते समय शिर से अलग हो जाते हैं ।

मथवाह—स० पु०—१ हाथी को चलाने वाला, महावत ।
२ देखो 'मथवाय' (रू भे)

मथाण—स० पु०—झुण्ड, समूह, दल ।
उ०—देवळ तू मन कर फिकर, मोटो देख मथाण । कळह विरोळू एकलो, घासाहर घमसाण ।—पा प्र
२ नाश, ध्वस ।
उ०—केलपुरै अठी उठी चक्र वेग फेर कीधो, मार टक्र मार हूटी सेन रो मथाण ।—बद्रीदास खडियो
३ बडा नगर, शहर ।
४ सागर ।
५ देखो 'मथाण' (रू. भे)
उ०—बोहळी गूजरा री थाट भैंसियांरी लाहोर कनै था आणी । सोना रो मथाण ले आयो ।—नैणसी
६ देखो 'मथाणी' (मह, रू भे)
उ०—मिळ मथांण धाराळ तणै मुह, जत्र कत्र सत्र होयै जणो जण । वार वार दध जेम विलोअै, ताईयां दळ नगराज तण ।
—दूदा नगराजोत खीची रो गीत
वि०—वह जो मथा गया ।

मथाण—स० पु०—प्रत्येक चरण मे दो तगण सहित ६ वर्ण का वर्णिक छद विशेष ।

मथांणो, मथांनी—स० पु० [स० मथनम्] १ वह पात्र जिसमे दही मथा जाता है ।
२ देखो 'मथणी' (रू भे)
उ०—वादळ रा मन में मथांणी घूमती वद व्ही तो करोत चालती सी लखाई ।—फुलवाडी
रू० भे०—मथणी, मथनी, मथांणी, मथनी ।
मह०—मथाण, मथान, मथांण, मथांन ।

मथाणो, मथावो—क्रि० स० [मथणो क्रि० का प्रे० रू०] मन्थन कराना, मथने का कार्य दूसरे से कराना ।
मथाणहार, हारो (हारी), मथाणियो—वि० ।
मथायोडो—भू० का० कृ० ।
मथाईजणो, मथाईजबो—कर्म वा० ।

मथारी—स० स्त्री०—१ कटीली झाडियो को काटकर बनाया हुआ वह भार जो सिर पर ढोया जाता है ।
२ 'सीवण' नामक घास का वह छोटा ढेर जो घास को काटते समय बनाया जाता है । (जैसलमेर)

मथारो—स० पु०—१ बीचो-बीच का ऊपर का स्थान, शिखर ।
उ०—वो ढोल लय नै उण रै माथै चढियो, ठेट मथारै चढनै जोर जोर सू ढोल घमकावण लागो ।—फुलवाडी
मुहा०—दिन मथारै आणो=तेज धूप चढ़ना, दोपहर का समय होना, सूर्य का शिखर पर आना ।
२ उद्गम स्थान ।
उ०—मेह मथारै बरसियो, नदी किराडा मार । घोडा हींसन भल्लिया, सीस किराडा भार ।—वा दा
३ किसी मकान, टीबा, पर्वत आदि का सबसे ऊपर का शिरा, चोटी ।
४ अन्तिम मजिल ।
५ किसी वश का आदि पुरुष ।
६ अन्त, छोर, हद, सीमा ।
उ०—१ हजार सू दस हजार घणा वत्ता व्है । इण गिणती रो काई मथारो, लाख, दसलाख, करोड ।—फुलवाडी
उ०—२ चौधरी ई मन मे जाणली के अंदीपणा रो काठो मथारो आयग्यो है, अबै हाथ-पग नी हिलाया तो सूखनै खेलरा व्है जावाला ।—फुलवाडी
७ पूर्वजो की जन्म भूमि, पूर्वजो का उद्गम स्थान ।
रू० भे०—मत्थारो ।
८ देखो 'माथासरो' (रू भे)

मथावटी—स० स्त्री०—१ सिर का ऊपरी भाग ।
२ शिर ।
३ ऊपर का भाग ।
रू० भे०—माथावटी ।

मथासरो—देखो 'माथासरो' (रू भे)

मथित—वि० [स० मथित] मथा हुआ, विलोडित ।
रू० भे०—मतीथ ।

मथिति—स० स्त्री० [स० मथित] छाछ, मठा । (ह नां. मा)

मथियळ—स० पु०—वह जो मथा गया, सागर, समुद्र ।
उ०—१ रे मथियळ रे नथियळ थिर रही, थरक म कनक कोट थिर थाय । 'गागावत' गाजियो न गाजै, गाजै राव अगजिया गाय ।
—राव मालदेव रो गीत

उ०—ग्राह कमध तूझ पग ऊडा, हार्था गयण छिबै हथवाह।
मथियळ ने घुरिणयळ नह मीढा, समवड तूझ तणी 'गजसाह'।
—किसनो ग्राढो

मथियोडो–भू० का० कृ०—१ मथा हुग्रा, विलोडित २ उथल-पुथल किया हुग्रा, ग्रस्त-व्यस्त किया हुग्रा ३ नष्ट-भ्रष्ट किया हुग्रा (स्त्री० मथियोडी)

मथिला—देखो 'मिथिला' (रू भे)

मथी–स० स्त्री० [स०] दही मथने का मथदड, रई।

मथीत–स० पु० [स० मथित] १ दही। (ह ना मा)
२ देखो 'मथित' (रू भे)

मथुरा–स० स्त्री०—१ पश्चिमी उत्तर प्रदेश की एक प्रसिद्ध नगरी जिसकी गिनती पुराणानुसार सात मोक्ष दायिनी पुरियो मे होती है।
२ देखो 'मथरा' (रू भे)
रू० भे०—मथरा।

मथुरी—देखो 'मथरा' (रू भे)

मथेण, मथेरण–स० पु०—वह जैनी यति जो विवाह कर लेता है।
उ०—१ उण री बेटी फळोधी रा मथेण खीचद नू परणाई।
—बा दा ख्यात
उ०—२ ग्राधाकरमी थानक मे रहै ग्रनै घर छोडया कहै तिण ऊपर स्वामीजी द्रस्टात दियो ज्यू जती रै उपासरो, मथेरण रै पोसाळ, फकीर रै तकियो, भक्ता रै ग्रस्तल, फुटकर भक्त रै मढी, कनफडा रै ग्रासण, सन्यासी रै मठ, रामसनेहिया रै रामदुवारो कठेयक कहै राममोहिलो, घर रा धणी रै घर, सेठ रै हवेली, गाम रा धणी रै कोटरी, कठेयक कहै रावळो, राजा रै महल तथा दरबार, ग्रनै साधा रै थानक, नाम मे फेर है बाकी सगळा घर रा घर है।—भि द्र

मथै—१ देखो 'माथै' (रू भे)
२ देखो 'माथो' (रू भे)

मथोग–स० पु०—कलक, धब्बा।

मथ्थ, मथ्थई—१ देखो माथो' (मह, रू भे)
२ देखो 'माथै' (रू भे)
उ०—घर पौरस मेछां धणी, कामणि हदी कथ्थ। साभळि बैठी साप्रत, महागिरिदा मथ्थ।—मा वचनिका

मथ्थणो, मथ्थबो—देखो 'मथणो, मथबो' (रू भे)
उ०—हिरणायख हाणे सख सभ्भाणै, हयग्रीवा खळ हता है। हरणाकुस हत्ते महणसु मथ्थे छितलै बळि छळता है।—र ज प्र
मथ्थणहार, हारो (हारी), मथ्थणियो—वि०।
मथ्थिग्रोडो, मथ्थियोडो, मथ्थ्योडो—भू० का० कृ०।
मथ्थीजणो, मथ्थीजबो—कर्म वा०।

मथ्थियोडो—देखो 'मथियोडो' (रू भे)
(स्त्री० मथ्थियोडी)

मथ्थै—देखो 'माथे, माथै' (रू भे)
उ०—पाल्है डेग परठिया, मारग मथ्थै ग्राय। सिरकण ताणे तातिया, डेरा किया वणाय।—जसमा ग्रोडणी री वात

मदती–स० स्त्री० [स०] विकृत धैवत की चार श्रुतियो मे से दूसरी श्रुति का नाम।

मदद, मदध—देखो 'मदाध' (रू भे)
उ०—१ गुडिया ढाहै मदध गज, ताता चाळ तुरग। साकड भीडो सुरग न्है, जिको कहीजै जग।—बा दा
उ०—२ वरतै ग्राप वसत रित, इम करता ग्राणद। नव पल्लव तरु नीसरै, मधुकर हुवै मदध। मधुकर हुवै मदध सवज वन सोहणा।—सिववगस पाल्हावत
उ०—३ पडै कटि सीरस वीर पठांण, मद्राचळ चक्र चमू महराण। गुडै गिड-कध मदध मुगल्ल, ख्याली रिखराज हसै खल-खल्ल।
—मे म

मदन—देखो 'मदन' (रू भे)
उ०—प्रतख्ख चख्ख पोतणी, महा मदन मोहिणी। मयक मुख्ख मजळी, करार नेत कजळी।—मा वचनिका

मद–स० पु० [स०] १ मादक पदार्थों के सेवन मे होने वाली वह उद्वेगपूर्ण ग्रवस्था जिसमे मस्तिष्क ठीक प्रकार से कार्य नही करता, नशा, खुमारी।
उ०—हड हड हसत, मसत मदिरा मद, धड-हड सेर धवाडै। चडचड चाव जोगण्या चोसट, धडधड भूमि धुजाडै।—मे म
२ ग्रहकार, गर्व। (ग्र मा, ह ना मा)
उ०—लछवर धनख साथ, तेज निज हर लिया, रद कर मद दुज राम, ग्रवधपुर ग्राविया।—र ज प्र
मुहा०—मद उतरणो=गर्व चूर-चूर होना। २ मद उतारणो=गर्व नष्ट करना। मद चढणो=गर्व मे चूर होना।
३ ग्रपनी विशिष्टता या श्रेष्ठता के कारण व्यक्ति की वह मानसिक दशा जिसमे वह किसी दूसरे को तुच्छ समझता है, थोथा ग्रभिमान, झूठा ग्रहकार।
४ वह मानसिक ग्रवस्था जिसमे यौवन ग्रथवा काम वासना के प्रभाव से उचित ग्रनुचित का ध्यान नही रह जाता, कामोत्तेजना, कामुकता।
उ०—१ हमै कवर मदन रै जोरै, सुगध रै घोरै। जोवन मद चुवतो, प्रेमातुर हुवतो। 'सुखिया' नू साथ लेइ चवडारो मारग टाळिया, हालियो विन्हालो छोगा राळिया।—र हमीर
उ०—२ 'रतना' मद मैं मत्त निसक हुई थी तिणरा सकोज हू रुकण लागी, लाज रै भार ग्राखिया झुकण लागी।—र हमीर
५ उन्मत्तता, पागलपन, मतवालापन।
६ हर्ष, ग्रानन्द।

७ जोश, आवेग, उत्तेजना ।

उ०—करां खग मोगर धूण करूर । पटाभ्रर ग्राहुडिया मद पूर ।
—गो रू

मुहा०—मद भरणी=मतवाला होना, मदमस्त होना ।

८ एक प्रकार का स्राव जो कुछ विशिष्ट पशुओं यथा मस्त हाथी, ऊट, सिंह आदि के मस्तक और ग्रोवा के सधि-स्थल से निकलता है ।

उ०—१ केहर तणी कळाइयां, भणणाहट भमरांह । भीजी गज-मिर भाजता, मद सोरम डमरांह ।—बा दा

उ०—२ दिकपाळा रा गाढ समेत दिग्गजा रा मद छूटि । आठूंही अनेकप चकितपणा का चीकार करण लागा ।—व भा.

उ०—३ मद भरै करै आकास मून' रिम भरै चरै ताते सु चून । गूगळा मस्त बोलै दुगाळ, भुकता सखुवी नुखता सभाळ ।—पे रू

वि० वि०—हाथी के मद मे सुगध होती है और सिंह व ऊट के मद में सिंह और ऊट की बू (गध) आती है ।

९ मदिरा, शराब ।

उ०—आलीजा अलवेलिया, हो हजा हुमनाक । भीनोडा रसिया भमर, छैल पियो मद छाक ।—बा दा

१० मधु, शहद ।

उ०—धूप दीप नैवेद पुस्य फळ । कस्मीरज मळयज नागज फळ । मद म्रग-मद तावूळ महावर । वन घनसार घिरत बैसांनर ।
—मे म

११ कस्तूरी ।

१२ एक विशिष्ट स्राव जो विशेष वृक्षो तथा पत्थरो के सन्धि स्थलो से निकलता है ।

१३ वीर्य ।

१४ कामदेव, मदन ।

१५ एक दानव जो कश्यप एव दनु का पुत्र था ।

१६ एक दानव जो च्यवन ऋषि से उत्पन्न हुआ था ।

१७ छप्पय छद का ४२ वां भेद जिसमे २९ गुरू, ९४ लघु मे कुल १२३ वर्ण या १५२ मात्रायें होती है ।

१८ दो भगण का एक छद विशेष ।

१९ मस्त हाथी । (हि को)

२० खाता या खाते का विभाग ।

२१ वह लम्बी लकीर जो बही मे खींचकर उसके नीचे भिन्न-भिन्न रकमे लिखते हैं ।

२२ किसी कार्य या कार्यालय का विभाग, शाखा ।

२३ काला, श्याम । (हि को)

रू० भे०—मद, मदि, मद्द, मय, मय, महि ।

अल्पा०—मदड़ो ।

मदग्रध—देखो 'मदांध' (रू. भे.)

उ०—उतरती बातां करै, औरां री अणवध । निज मुख पांणी ऊतरै, ईखै नह मद-ग्रध ।—बा दा

मदउतकट—स० पु० [स० मदउत्कट] मतवाला हाथी, मदमस्त हाथी । (हि को)

वि० [स० मदउत्कट] १ नशे मे चूर ।

२ कामुक ।

३ अहकारी, अभिमानी ।

मदकध—स० पु० [स० मद+स्कध] १ ऐरावत, हाथी । (हि को)

२ हाथी ।

रू० भे०—मदगध ।

मदक—स० पु०—१ अफीम के सार से बनाया जाने वाला मादक पदार्थ जिसे चिलम पर तम्बाकू के साथ पीते हैं ।

२ साड ।

मदकार—वि०—जिससे मद उत्पन्न हो, मद वर्द्धक ।

मदकरण—स० पु०—हाथी । (ना हि को)

वि०—मतवाला, मस्त ।

मदकळ—वि० [स० मदकल] १ मस्त, उन्मत्त ।

उ०—इण कारण बूंदी समेत छोटा वडा १२ ग्रामा रो ग्रास पाइ मदकळ मातग मारण रो मन करता सियाळ रै समान छत्रधारिया रो अनुकरण करै ।—व. भा

२ अस्पष्टतया बोलने वाला ।

३ धीरे धीरे प्रेमालाप करने वाला ।

४ मदोन्मत्त ।

५ मन्द मधुर ।

६ मदमाता ।

स० पु० [स० मदकल] १ मतवाला हाथी ।

२ बाईस लघु और १३ गुरु कुल ३५ वर्ण या ४८ मात्रा का दोहा नामक छन्द का भेद विशेष ।

३ आर्या गीति या खधाण (स्कधक) का भेद विशेष ।

रू० भे०—मइगळ, मगळ, मद्दगळ, मयगळ, मईगळ, मदगर, मदगळ, मदग्गळ, मद्दगळ मयगळ, मयगळि, मयगळ, महगल, मेगळ, मैंगळ, मैंगळय, मैंगळ ।

मदगध—१ देखो 'मदकध' (रू भे)

उ०—१ कळह रचै दसकध, नवग्रह वध निवारियो । हुवा धनुस गुण सबद, है गतमद जग मदगध ।—बां दा

उ०—२ वाधै सिखर वडै लाधै प्रव, इळ पुड नांम वधै अनमध । दीन्हा नको नहीं कोइ देसी, मारू राव जिसा मदगध ।
—महाराजा रायसिंह रो गीत

मदगधा—सं० स्त्री० [स०] १ मदिरा, शराब । (हि को)

२ भांग ।

मदगर, मदगळ—देखो 'मदकळ' (रू. भे.)

उ०—हे सखी इसा तोटा ऊपरै तो हू अनेक वेळा वारणै जाऊ जिण तोटा मे ही पोत (तेवटा री चीडा) तो गज मोतियां री ने चूडो ही उणहीज मैंगळ (मदगळ) मदोनमत हाथी रा दांत रौ है।
—वी. स. टी

मदगळत-वि०—मदमत्त, मस्त।

उ०—मदगळत जूह मैंगळमसत, सिणगार खडा किय सदोमत्त।
—गु रू व

मदगळित-वि०—मदच्युत।

उ०—समद जाइ खाइउ पखाळियउ। अनेक राइ मदगळित करि मेहल्या।—वचनिका

मदगू-स० पु०—जल काग, जल कौआ। (डि को)

मदग्गळ—देखो 'मदकळ' (रू भे)

उ०—आज राज व्रत वेव करै नट राज तणी कळ। गजां राज घण गरज, गाज सरराज मदग्गळ।—सू प्र.

मदडौ—देखो 'मद' (अल्पा रू भे)

उ०—मदछकिया भवरजी मदडौ तो मोलाय, श्रो कोडीला भवरजी कोई मदडो तो पावौ मूगा मोल रौ हो म्हारा राज।—लो गी

मदछकियौ-वि० (स्त्री० मदछकी) नशे में मदमत्त, मस्त, मद से परिपूर्ण।

उ०—चवसठ मभि बावन चिरताळा। मदछकिया रमै मतवाळा।
—सू प्र

मदछाक-स० पु०—मदिरा से परिपूर्ण (प्याला)।

मदजीवण-स० पु०—शराब का व्यवसाय करने वाला व्यक्ति, कलाल।

मदज्भर, मदभड, मदभर-वि०—वह जिसके मद का स्राव होता हो।

स० पु०—१ हाथी।

उ०—१ कहो तो आणा किलमरा, मदभर मतवाळा। साहिजादा कै अमीर सू चित हूं चकचाळा।—सू प्र

उ०—२ दोय लाख दताल मसत गाजत मदज्भर। सात लाख नीसांण घुरै दुदभि लख घुम्मर।—सू प्र.

२ सिंह।

३ ऊट।

रू० भे०—मदाभर।

मदत—देखो 'मदद' (रू भे)

उ०—दीवाण अरज मान मदत साथ दीवी।—नैणसी

मदतकार, मदतदार—देखो 'मददगार' (रू भे)

मदति, मदती, मदत्तिय—देखो 'मदद' (रू भे)

उ०—१ 'नाग' दुरग पति जवन, साह 'दौलत' दळ सब्बळ। सेखै सुज पतिसाह, मदति आणियौ महाबळ।—सू प्र

उ०—२ वागा ऊपडै विखमीवार घडकै आकास घर। खरौ खेध वाजी खरा वहसै दुवाह। निहसै कैं'वाण नागै ऊससै विचै आरांण, साह री मदति साजै जांगळू रौ साह।—जगौ सादू

मदद-स० स्त्री० [अ०] सहायता, सहारा, सहयोग।

उ०—रिणी मे मुत्सद्दी साथ फेर राख पधारिया जे हिसार नू कांम पडे मदद चाहिजै तो सताव जाय सामल हुयने।—नैणसी

रू० भे०—मदत, मदति, मदती, मदत्तिय, मदा।

मददगार-वि०—मदद करने वाला, सहायक, सहयोगी।

रू० भे०—मदतकार, मदतदार।

मदधर-स० पु०—हाथी।

उ०—ढळकता ढाल मदधर धजा, घट घोर अग्राज घण। चढियां मजेज होतां चमर, तेज पुज 'अभजीत' तण।—सू प्र

२ सिंह। ३ ऊट।

मदन-सं० पु० [स० मदन] १ कामदेव। (अ मा, ह ना मा)

उ०—बागायत प्रथमी बिचै, निज अलवर सर नाम। नीर हवद छळिया नहर, तर सर सवज तमाम। तर सर सवज तमांम, छ रितु छवि छाविया। मानहु मदन महीप वितान वणाविया।
—सिवबगस पाल्हावत

यौ०—मदन-कदन।

२ वसन्त।

३ धतूरा।

४ रति क्रीडा, सभोग।

५ कामवासना, कामेच्छा।

उ०—मगसर महीना मे मेरे मन मे उठे तरग। अरध निसा मे आय के मदन करत मोहे तग।—लो गी

६ भौंरा।

७ मैंना पक्षी।

८ मोलसिरी।

९ उडद।

१० ज्योतिष शास्त्र के अनुसार जन्म से सातवें गृह का नाम।

११ डिंगल के 'वेलिया' सांणोर छद का भेद विशेष जिसके प्रथम द्वाले मे ५४ लघु, ५ गुरु से कुल ६४ मात्रायें हो तथा अन्य द्वालो मे ५४ लघु, ४ गुरु से ६२ मात्रायें हो।

१२ छप्पय छद का २२ वां भेद जिसमे ४९ गुरु ५४ लघु से १०३ वर्ण या १५२ मात्रायें होती हैं।

१३ आर्यागीति या 'खधाण' (स्कधक) का भेद विशेष।

रू० भे०—मइण, मदन, मदन्न, मयण, मयणि, मयन, मैंण।

मदनकटक-स० पु० [स० मदनकण्टक] साहित्य मे सत्विक रोमांच।

मदनक-स० पु०—१ प्रथम आठ लघु और फिर एक सगण का ११ वर्ण का वृत्त विशेष।

२ मदन-वृक्ष, मैंनफल।

३ मोलसिरी।

४ धतूरा।

मदन-कदन-स० पु० [स०] शिव, महादेव। (डि को)

मदनका-स० पु०—छे लघु वर्णं का वृत्त विशेष।

मदनगोपाळ–स० पु० [स० मदनगोपाल] श्रीकृष्ण का एक नाम ।
मदन-ग्रह–स० पु० [स० मदनगृह] १ योनि, भग ।
२ फलित ज्योतिषानुसार जन्म कुडली मे सातवा स्थान ।
३ मदनहर नाम का एक छन्द विशेष ।
मदनचतुरदसी, मदनचौथ–स० स्त्री० [स० मदनचतुर्दशी] चैत्र मास मे शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी ।
मदनताळ–स० पु०—सगीत मे एक प्रकार का ताल विशेष जिसमे पहले दो द्रुत और अत में दीर्घ मात्रा होती है ।
मदनतेरस–स० स्त्री० [स० मदनत्रयोदशी] चैत्र मास मे शुक्ल पक्ष की त्रयोदशी ।
मदनदमन–स० पु० [स० मदनदमन] शिव का एक नाम ।
मदन-दिवस–स० पु० [स० मदनदिवस] मदनोत्सव का दिन, वसत ।
मदनदोळा–स० स्त्री०—सगीत मे, इन्द्र ताल के छ भेदो मे से एक ताल विशेष ।
मदनपति–स० पु०—१ इन्द्र ।
२ विष्णु ।
मदनपाठक–स० पु० [स० मदनपाठक] एक पक्षी विशेष, कोकिल, कोयल ।
मदनफळ–स० पु०—मैनफल ।
मदन-भवन–स० पु० [स०] १ योनि, भग ।
२ जन्म कुण्डली मे जन्म स सातवा स्थान । (फलित ज्योतिष)
रू० भे०—मदनालय ।
मदन भेरी–स० स्त्री०—वाद्य विशेष ।
उ०—मदनभेरी वाज्या नीमाण, तु ढीली पुहुतउ सुरताण ।
—का दे प्र
मदन-मस्त–वि०—१ मतवाला, मस्त ।
२ कामासक्त, विषय मे लीन ।
३ चम्पे की जाति का एक फूल ।
मदन-महोत्सव–स० पु० [स० मदनमहोत्सव] चैत्रमास के शुक्ल पक्ष मे द्वादशी से चतुदशी पर्यंत मनाया जाने वाला प्राचीन भारत का एक उत्सव विशेष ।
मदन मोहन [स०]१ योगिराज कृष्ण का नामान्तर ।
२ ईश्वर का एक नाम ।
मदनरस—एक औषध ।
उ०—घोड़ाचोळी मदनरस, अभ्रक पारु वग । खाइ ते मिउ खप करी, आपण कीजइ सग ।—मा का. प्र
मदन-रेखा–स० स्त्री०—एक महासती ।
रू० भे०—मयणरेहा ।
मदनसदन—देखो 'मदनभवन' (रू. भे)
मदनसाही–स० पु०—राजपूतानान्तगत भूतपूर्व झालावाड राज्य का एक सिक्का विशेष ।
मदनाकुस–स० पु० [स० मदनाकुश] १ लिंग ।
२ नख, क्षत ।
३ योनी, भग ।
उ०—पेट ज्यू लच्छी पाट की नितब नारियल जाण । मदनाकुस की जायगा त्रिवली सीप समान ।—कुवरसी साखळा री वारता
मदनातक–स० पु० [स०] महादेव, शिव ।
मदनाध–वि० [स०] कामाध, कामासक्त ।
मदनातुर–वि० [स०] कामातुर ।
रू० भे०—मयणातुर ।
मदनायुध–स० पु० [स०] १ कामदेव का अस्त्र ।
२ भग, योनी ।
मदनारि–स० पु० [स०] महादेव, शिव ।
मदनालय—देखो 'मदनभवन' ।
मदनी–स० स्त्री०—१ सुरा वारुणी । (अ मा)
२ कस्तूरी ।
मदनोत्सव–स० पु० [स० मदनउत्सव] मदन महोत्सव ।
मदन्न—देखो 'मदन' (रू भे)
मदपग्रसण–स० पु०—शराब की महफिल मे शराब के दौर के साथ खाई जाने वाली खाद्य सामग्री । (डि को)
मदपटाधर–स० पु०—हाथी ।
वि०—मदमत्त, मस्त ।
उ०—धके क्रोध हरसाह जेहवार जुध वटाधर । दुरद मदपटाधर जेम दोवै । धार खग जटा ऊघटा पडै छटाधर, जटाधर मुगटधर खेल जोवै ।—हुकमीचद खिड़ियो
मदपती–वि०—१ उन्मत्त, मस्त, मतवाला ।
२ शराब पीने वाला ।
मदपान–स० पु० [स० मद] सुरापान, मदिरापान ।
मदभाव–स० पु०—हाथी के अधिक मद स्राव होने की बीमारी । इस बीमारी के कारण हाथी छटपटाता है, सबको मारने दौडता है । उसके शरीर मे दर्द होता है । वह जंजीरो के बधन का तोडकर भागने का प्रयत्न करता है ।
मदमणी–स० स्त्री०—युवती, महिला ।
मदमत–वि० [स० मदमत्त] मतवाला, मस्त ।
मदमत्त, मदमसत, मदमस्त, मदमातो–वि० [स० मद+फा० मस्त] (स्त्री० मदमती, मदमत्ती, मदमाती) १ मतवाला, मस्त ।
उ०—१ चढै ताम गजपती, करै लसकर आडवर । गड वका वर तुरी, लिया मदमत्ता कुजर ।—गु रू व
उ०—२ मा दीहड मदमत्ती छत्र चमर ढ़ली ।—मे म,
उ०—३ सझि सज्झि तीन सलाम, अति खमै सिर इतमाम । जुडि खडा विहु कर जोड, मदमसत गज घड़ मोड ।—सू प्र.

उ०—४ सो कैसे पोसाक कू सै जलूस मदमस्त गयद की चाल। आवधू से कडा जूड ढळकती ढाल।—सू प्र.

उ०—५ असी लख तोखार लख मैंगल मदमाता। हाली अली-मसद दयत राकस दीसता।—राव मालदे री वात

उ०—६ मदवा पी पी सब मदमाती, मैं विन पिया मदमाती। प्रेम भटी का मैं रस चाख्या, मैं छकी रहू दिन राती।—मीरा

उ०—७ और सखी मद पीवन आईं, मैं मद की मदमाती। मैं मद पीयो पचवटी को, छकी रहू दिन राती।—मीरा

उ०—८ मदमसत सोभित महामाया, पात्र मदरा पूरऐ। चख चौळ गोसा जोस चचळ घुळै लोचन घूरऐ।—मा वचनिका

२ मदनोन्मत्त, कामातुर।

स० पु०—हाथी।

रू० भे०—मदोमत्त, मदोमद, मदोमसत्त, मद्दोमत्त।

मदमूक—देखो मदमोख'।

उ०—रग भीम उतग सुढाळै रोदा मारुत मूकै माण। मदमूक महाबळ प्रम परघ्घळ बारामास वसाण।—मा वचनिका

मदमोख-स० पु०—हाथी।

उ०—परबत पख प्रचड ए। मल्हपति माणकडड ए। मदमोख जूह महाबळी। सदरूप मेघक सिघळी।—गु रू व

वि०—मदमत्त, मस्त।

उ०—१ छूरा खग ऊपाडि, सीह करि साकळ छूटा। मुरडि खम मदमोख, जाण सूडाहळ जूटा।—गु रू व

उ०—२ आवतां ही महा वेछाड मदमोख अडोलो अठेल पहाड रूप हाथी सामहो आयो।

—कल्याणसिंघ नागराजोत वाढेल री वात

रू० भे०—मदमूक।

मदरदन—देखो 'मरदन' (रू भे)

उ०—पहलां तो बडारण मदरदन कियो पछै सपाडो कराइयो।

—कुंवरसी साखला री वारता

मदरसो-स० पु० [अ० मदरसा] पाठशाला, विद्यालय।

मदरा—देखो 'मदिरा' (रू भे) (अ मा)

मदरागध-स० पु०—कदम का वृक्ष। (अ मा)

मदराळ-वि०—मुद्रा धारण करने वाला।

स० पु०—योगी, मुनि।

मदरास-स० पु०—१ दक्षिणी भारत का एक प्रात जिसका पुनर्नाम-करण तमिलनाडु किया गया है।

२ इस प्रांत का एक प्रसिद्ध बन्दरगाह।

रू० भे०—मद्रास।

मदरो—देखो 'मघरो' (रू भे)

मदळ-स० पु०—घर के मुख्य द्वार पर शिल्पकारी से युक्त लगाये जाने वाले पत्थरो के नीचे सहारे के लिए लगाये जाने वाले वे पत्थर जिन पर शिल्प की खुदाई के साथ मध्य-भाग मे एक रेखा खीची हुई होती है जिसके कारण वह दो भागो मे विभक्त दिखाई देता है।

मदलेखा-स० पु०—एक वर्णिक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे सात-सात वर्ण होते हैं।

मदव-स० पु०—एक वस्त्र विशेष।

उ०—अथ वस्त्र, देवागचीर चीनांसुक पटांसुक पट्टदुकूल पट्टहरी मदव गजवडि सुवर्णांपडि ऋस्णपडि माठउ जादर भाती गतु जादर ' ।—व स

मदवी-वि० स्त्री०—मस्त, उन्मत्त, मदयुक्त।

स० पु०—एक वस्त्र विशेष।

उ०—नागवटा सारनाला खासटां अगिहिल कवीच सजरामा मदवी फूल-पगरीया सारीपी तिलवास गरव्भ सूत्र राजिउ वयराजीउं।

—व स

मदवो-वि० (स्त्री० मदवी) १ मदिरापान करने वाला, शराबी।

उ०—सातु मिळ सहेलिया, माडा कर मनुहार। मद पायो म्यारांम नै, छकायो अणपार। वेलीया कमर बाधी छै भारवरदार लादी छै। घोडा, ऊट भीजै छै, मदवो जी मै'ला मे रीजै छै।

—मयारांम दरजी री बात

२ मदोन्मत्त, मस्त।

उ०—धरियो तप हिक धार, अग न फिरियो एक चित। वाघा ज्यां दरबार, मदवा कुजर मोतिया।—रायसिंह सादू

३ कामातुर, कामविह्वल।

उ०—जिण समैरा रस री किसो छेह, धण जिका तो धरती नै मदवो जिका सांवणरो मेह। इण भात सुरत जग जूटा, घाइल हुइ छूटा।—र हमीर

४ गर्व मे चूर, गर्वित।

उ०—अरु राव रतनसीजी सैल सो सिरदार मदवो हुवो नै मुहै आगै कामेती तेजसी रायमलोत हो।—द दा.

रू० भे०—मधवो।

मदसुदन, मदसूदन—देखो 'मधुसूदन' (रू भे)

मदांझर—देखो 'मदझर' (रू भे)

मदांति—देखो 'वेदाती' (रू भे)

उ०—वेसाखि का मदांति साख्य सोगत नैयायक। मीमासक मुख मुखर वादि गुरु गर्व निवारक।—अभयतिक यती

मदांध-वि० [स० मद+अंध] १ वह जिसे अभिमान या अहकार के नशे मे भले बुरे का ज्ञान न हो, अन्य को तुच्छ समझे, दर्प में चूर।

उ०—कहें क्या ध्यावे धी कहन नही आवे कुल कुले। मदांधो मायावी तुम से हम भावी सम तुलें।—ऊ का.

२ कामातुर, कामसक्त, कामाध।

३ मदोन्मत्त, मतवाला।

रू० भे०—मदध, मदग्रध।

अल्पा०—मदाघो ।

मदांघो—देखो 'मदाघ' (रू भे.)

मदा—देखो 'मदद' (रू भे)

उ०—तोहं पण आदमी मेलीयो—'म्हैं था कन्है आया छा, किम मदा करणी हुवै तो वेगी करजो ।—राजा नरसिंघ री वात

मदाखिलत–सं० स्त्री० [अ० मदाखिलत] १ दाखिल होने की क्रिया या भाव ।

२ दखल, हस्तक्षेप ।

मदाखिलत-वेजा–स० स्त्री० [अ० मदाखिलत+फा० वेजा] अनुचित रूप मे कही प्रवेश करना, अतिक्रम करना, अनधिकार प्रवेश ।

मदार–स० पु० [अ०] १ उत्तरदायित्व, जिम्मेदारी ।

उ०—१ पातसाही सारी री मदार साहजादे दारासकोह माथै छै। —नैणसी

उ०—२ महाबतखान नु सारी मदार दे परवेज रै मुहडै आगै देमा री हीद् तावीन दे खुरम वासै विदा कीयो ।—नैणसी

२ निर्भरता ।

उ०—जोधपुर रिणमलां माथै मड त्यू जेमलमेर केलण रा परवार ऊपर मारी माहिवी री मदार ।—नैणसी

३ आश्रय ।

४ मुसलमानो का एक पीर ।

५ हाथी ।

६ आक नाम का पोधा ।

मदारत–स० स्त्री० [अ० मुदारात] आदर सत्कार, आवभगत ।

उ०—प्रथम श्रोक दोस्त दुस्मन सू मनुहार मदारत करो काम विगर सलाह अकलवता रै आरभ मत करो ।—नी प्र

मदारी–स० पु० [अ० मदार] १ वदर, रीछ आदि जानवरो को सिखा समभाकर उनका खेल दिखाने वाला व्यक्ति ।

२ वाजीगर, तमाशा दिखाने वाला ।

३ सूफी मत के मुसलमानो की एक शाखा ।

४ शाह मदार नामक पीर का अनुयायी ।

५ मिट्टी का हुक्का (मेवात) ।

मदारो–स० पु०—सीमा पर गडा हुआ पत्थर ।

मदाळ–स० पु० [म० मद+आलुच् या मदकल] १ हाथी ।

उ०—भडा फरक्कै मदाळा पीठ आरवा नत्रीठा भडै, घूपहा ऊपडै वे विरडा सूर धीर ।—फतहराम आसियो

२ एक रग विशेष । (अमरत)

वि०—मदोन्मत्त, मतवाला ।

उ०—१ राळा कराळा भाळा अताळा विछूटै वाण, तइ खेत्र पाळा मटे वे ताळा तमाम । मदाळा दताळा काळ नेजाळा सुडाळा माथै । वाघ चाळा 'कीता' चाळो प्राछूटै वाणास ।
—राजा रायसिंह भाला रो गीत

उ०—२ महावीर पाडै पछाडै मइदां । गहै दत गेकै मदाळा गइदा ।—व भा.

अल्पा०—मदाळो ।

मदालसा–स० स्त्री० [स०] पुराणानुसार काशी देश के ऋतुध्वज राजा की पत्नी जिसके प्रथम छे पुत्रो ने अल्पायु मे ही सन्यास ले लिया और अन्तिम पुत्र अलर्क को जब राजा राज्य भार सौंपने लगे तो वह भी अपने पिता के साथ सन्यासी हो गया । एक बार पाताल केतु नामक राक्षस ने इसका हरण किया लेकिन राजा ने पाताल केतु को पराजित कर उसे पुन प्राप्त कर लिया ।

रू० भे०—मदालसा ।

मदाळो—देखो 'मदाळ' (अल्पा, रू भे)

मदावर–स० पु०—हाथी ।

उ०—मदावर लोहनी साकल ओडि, आलान स्तभ मोडि हस्तिसाल भाजि पडतार गाजइ कमाड फाडइ वन माहि साचरइ ।—व. स

वि०—मदमत्त, मतवाला ।

मदि—देखो 'मद' (रू भे)

उ०—बाइ मोकलि न सू मदि मातउ । बूड कीचक परस्त्री रातु ।
—सालिसूरि

मदिमातो—देखो 'मदमत्त' (रू भे)

मदियो–स० पु०—एक जगली पौधा विशेप ।

रू० भे०—मधियो ।

मदिरा–स० स्त्री० [स०] १ कुछ विशेष अन्नो, फलो तथा वृक्षो की छाल को सडाकर उनका भभके से खींचकर निकाला जाने वाला नशीला द्रव, आसव ।

२ शराब ।

३ बाईस वर्णों का एक वर्णिक वृत जिसके प्रत्येक चरण मे सात भगण और अत मे एक गुरु होता है । इसे मालिनी भी कहते हैं ।

वि० वि०—रघुवर जस प्रकास में केवल सात भगण का ही मदिरा छद माना गया है ।

४ रक्त-वर्ण, लाल-वर्ण ।

रू० भे०—मदरा, मदीरा ।

५ एक स्त्री जो देवदैत्यो ने किये समुद्रमथन मे निकले हुए चौदह रत्नो मे से एक थी । इसे 'सुरा' नामान्तर भी प्राप्त था ।

६ श्री कृष्णपिता वसुदेव की अनेक पत्नियो मे से एक । वसुदेव की मृत्यु के पश्चात् देवकी, भद्रा एव रोहिणी नामक अन्य वसुदेव पत्नियो के साथ यह सती हो गयी ।

मदीनो–स० पु० [अ० मदीन] अरब का एक प्रसिद्ध नगर जहा इस्लाम धर्म के प्रवर्तक मुहम्मद साहब ने समाधि ली थी ।

वि० वि०—यह मुसलमानो का पवित्र तीर्थ स्थल माना जाता है।

मदीय–सर्व०—मेरा ।

उ०—भवाब्धिनाथ भावना विभू नही विकारसी। मदीय मे न मूढता त्वदीय है न तारसी।—ऊ. का

मदीयून-वि० [फा०] जिस पर कर्ज का दावा किया गया हो।

मदीरा—देखो 'मदिरा' (रू भे)

मदील—देखो 'मदील' (रू भे)

उ०—विभाति अक कोट लक धोवती वनी। मदील की चमक ज्यो दमक दांमिनी।—मे म

मदुरोग-स० पु०—घोडे का एक प्रकार का रोग विशेष। (शा हो)

मदुरौ, मदूरौ-स० पु० [स० मधुज्वर] प्राय २१ दिन तक का एक मियादी बुखार, मधुर-ज्वर।

मदेरौ—देखो 'मधरौ' (रू भे)

उ०—होले भवरजी मदेरा जी बोल हा वो मद छकियाजी कोई सेज्या मे सूत्यो पूत कलाळ रो।—लो गी.

मदोदध-स० पु० [स० महोदधि] सागर। (डि को)

मदोद्धत-वि० [स०] १ मदोन्मत्त, मदमत्त।

२ गर्व मे चूर, अभिमानी।

मदोनमत्त, मदोन्मत्त, मदोमत्त, मदोमद, मदोमसत्त—देखो 'मदमत्त' (रू भे)

उ०—मदोनमत्त हस्ती मेल्हि चाल्यउ।—अ वचनिका

उ०—२ वर तुरग उत्तग, करां साकति विराजित मदोमत्त मात्तग, जांण जळ वादळ गरजित।—गु रू व

उ०—३ झरत दांण कुजर। गिरं कि नीर नीझर। मदोमसत्त मैंगलं। करै प्रवीत काजल।—गु रू व

मद्द—देखो 'मद' (रू भे)

उ०—१ जोधा राकसे जरद्द मूंगला उतारै मद्द, वाहालो खाटै विरद्द, मरदा मरद्द रिमा खागे करै रद्द, बहू लियै मु सवद्द हींदू ऐहद्द विहद्द जद जद जद्द।—ल पि

उ०—२ रोळ हैं पक्खर। गै गुडै भक्खर। मद्द मैं नीझर। घोर घट्टा सर।—गु रू व

उ०—३ उत्तर आज उत्तरीयउ, पाळो पड़ रवद्द। कै वैसनर सेवीयै, कै तरुणी के मद्द।—ढो मा

मद्दगळ—देखो 'मदकळ' (रू भे)

उ०— उभै तरफि आरवा, मडं दळ उभै मद्दगळ। उभै तरफि वधि अणी, दमग झाळा दावानळ।—सू प्र

मद्दळ, मद्दल—१ एक प्रकार का वाद्य विशेष।

उ०—१ तती ताळ टवक्कडा मद्दल वस विसाल। निरति करइ नव राग मा, मांडी मस्तक थाल।—मा कां प्र

उ०—२ भेरि मद्दळ ढोल नीसाणा, वाज्या चढघो बोल प्रमाण।
—कनक सोम

२ देखो 'मादळियौ, मादलीयौ' (मह, रू. भे)

३ देखो 'मादळ' (रू भे)

मद्दोमत्त—देखो 'मदमत्त' (रू भे)

उ०—मद्दोमत्त खभ मरोड, जूह वहति गैंतूळ जोड। मस्सी वरन मद्दमसत, पाखा उड्डिया परवत्त।—गु रू. व.

मद्धम—देखो 'मध्यम' (रू भे)

मद्धरौ—१ देखो 'मधरौ' (रू भे)

२ देखो 'मधुर' (अल्पा, रू. भे)

३ देखो मधुरौ' (रू भे)

मद्धि—देखो 'मध्य' (रू. भे)

उ०—अधिकु कहु आसाढ सू, माठउ महीअळ मद्धि। पगदडा पथी तणा, तइ भज्या भव सिद्धि।—मा का प्र

मद्धुर, मद्धुरौ—देखो 'मधुर' (रू. भे)

उ०—तीखा तमतमा राईतां, मीठा मद्धुरा गल्या तल्या मचमचां इस्या सालणां तणी मुगति ।—व स

मद्धे—देखो 'मध्य' (रू भे)

मद्य—देखो 'मद' (रू भे)

मद्यप-वि० [स०] मद्य पीने वाला शराबी, नशेबाज।

मद्यपांन-स० पु० [स०] मदपान, सुरापान।

मद्र-स० पु०—१ पचनद मे स्थित एक प्राचीन देश।

२ इस देश का एक राजा।

३ मारवाड प्रदेश।

उ०—प्रथम देस जेसाण वीकाण प्रगटी पछै, त्ररजियौ भांण वेडो उबारियौ। अवै परब्रह्म वाळी प्रकति अद्रजा, धजाळी मद्र अवतार धारियौ।—मे म

वि० [स०] कुशल, प्रसन्न। (ह ना मा)

मद्रक, मद्रकि-वि०—मद्र देश का।

उ०—बीजी मद्रकि मद्रभूय पद्भु तणइ घर नारि। गभु घरीऊ गभु घरीऊ देवि गधारि।—सालिभद्र सूरि

मद्राचळ—देखो 'मदराचळ' (रू भे)

उ०—पडै कटि सीरस धीर पठाण। मद्राचळ चक्र चमू महराण।
—मे म

मध-स० पु० [स० मध्याह्न] १ दोपहर का समय।

२ देखो 'मधु' (रू भे)

३ देखो मध्य' (रू भे)

४ देखो 'मद' (रू भे)

मधक-स० पु०— महुआ नाम का वृक्ष।

मधकर—१ पुत्री को विवाहोपरान्त विदा देते समय गाया जाने वाला लोक गीत।

२ एक प्रकार का वाद्य विशेष।

३ देखो 'मधुकर' (रू भे)

मधकीट, मधकीटग, मधकैटभ—देखो 'मधुकैटभ' (रू भे)

उ०—१ लकापति रांमण सारिखा कूभकरन इद्रजीत मारिखा, हिरणाखस हिरणकसिप सारिखा मुर दांणव महाबळी सारिखा,

मधकीट महिखासुर मारिया तिकै पण खै गया, वामस्ट मारकंड कथा मे कह्यो, तो आजरै काळ सम नै निमभ महाजोवार, असुरा धणी निहार, तिण रो उदिम कीजै दोखी मरै सुजस लीजै।

—मा वचनिका

उ०—२ माधा गिरि राया जै महामाया, सातां दीपा मा छाया। सोहळा गिरि काया घध घमाया मधकीटग तैं माराया।—पी ग्र

मधन-स० स्त्री०—भैरव राग की पुत्र वधू एक रागिनी। (संगीत)

मधम—देखो 'मध्यम' (रू भे)

उ०—१ स्वर वाजत्र का भेद कहि दिखाया सो कैसे खडज रखव गंधार मधम पंचम धईवत निखाद सप्तसुर के अलाप करि कोकिल की वांणी सैं बोलते है।—सू प्र

उ०—२ नहि ज्या उत्तम मधम कनिष्ठा, नहि कोई लाभ न हांणी। अप्रमेय चेतन निज केवळ सो सुखराम निरवांणी।

—श्री सुखरामजी महाराज

मधमति—देखो 'मधुमति' (रू भे)

मधर-क्रि० वि०—१ भीतर, अन्दर।

उ०—गरवा आदर न, करै प्रीत पाळत। सकर विस, सायर यहनि कोर'मधर धारत।—अज्ञात

२ देखो 'मध्य' (रू भे)

मधरो-वि० (स्त्री० मधरी) १ मंद, धीमा, क्षीण।

उ०—१ आधो रह्यो ऊगळी, आधो रह्यो छाज। सागर सट्टै। धणु गई, (अब) मधरो मधरो गाज।—अज्ञात

उ०—२ दिन आगमियां पछै वै अणूता चोकस व्हिया दसम री थानगी री मधरो उजाम हो।—फुलवाडी

उ०—३ हळकी, मीठी, मधरी बोली मे पेमजी गुरळी दालाल नै पंपी अर आप गुद्दै माथै बैठग्यो।—दसदोख

२ छोटे कद का, ठिगना।

स० पु०—ऊट की चाल।

रू० भे०—मदरो, मदरो, मदुरो, मदूरो, मदेरो, मद्धरो।

मधवन—देखो 'मधुवन' (रू भे)

मधवाचारी-स० पु० [स० मध्वाचार्य] दक्षिण भारत के मध्यकालीन एक प्रसिद्ध आचार्य। (बारहवी शताब्दी)

मधवो—देखो 'मदवो' (रू भे)

मधि—देखो 'मध्य' (रू भे)

उ०—१ गर्ठ साम दण विध गहो, गुणी इम कहे सुजाण। मांडै माधव मास मधि, पडित माघ प्रमांण।—सू प्र

मधिपंडव मधिपांडव-स० पु० [स० पाण्डवमध्य] १ अर्जुन। (ह ना मा)

२ पाण्डु पुत्र भीम।

मधिम—देखो 'मध्यम' (रू भे)

मधियो—देखो 'मदियो' (रू भे)

मधिलोकेस-स० पु० [स० मध्यलोकेश] राजा। (ह ना मा)

मधीणी-स० स्त्री०—दूध न देने वाली गाय, भैंस आदि।

मधीणो-स० पु०—जिस घर धीणा अर्थात् दूध देने वाले पशु न हो।

मधु-स० पु० [सं०] १ शहद।

उ०—सेवक सुकवि करत नित सेवा, मधु मिस्ठान चढ़न प्रति मेवा।—मे म

२ मदिरा।

३ चैत्रमास। (डि को)

४ दूध। (अ मा, ह ना मा)

५ घी। ६ मक्खन। ७ मिश्री। ८ शिव।

९ विष्णु द्वारा मारा जाने वाला एक दैत्य।

१० शत्रुघ्न द्वारा मारा जाने वाला असुर लवण के पिता का नाम।

११ महुये का पेड।

१२ फूलो का रस, मकरद।

१३ वसत ऋतु। (अ मा)

१४ मुलेठी।

१५ अमृत। (ह ना मा)

१६ वन, जगल।

१७ अशोक वृक्ष।

१८ भौरा।

१९ जल, पानी।

२० भैरव राग का पुत्र एक राग (सगीत)।

२१ श्रीकृष्ण।

२२ विष्णु भगवान।

२३ प्रत्येक चरण मे दो लघु वर्णो का वर्णिक छद विशेष।

२४ घोडे का एक रोग विशेष। (शा. हो)

वि०—१ मीठा।

यौ०—मधुकठ, मधुत्रय, मधुदीप।

२ पीला। (डि को)

३ मधुर।

रू० भे०—मध, मधू, महू।

मधुकठ-स० पु० [स०] कोयल।

मधुक—देखो 'मधूक' (रू भे.)

मधुकर, मधुकरि-स० पु० [स० मधुकर] (स्त्री० मधुकरी) १ भौंरा, भ्रमर।

उ०—१ चरण आरण चिबुता रुप चोळ। क्रीडा करत मधुकर कपोळ।—सू प्र

उ०—२ कोहांमगि कुहू कुहू करइ, कोकिल आवा डालि। तदमर नवपल्लव धरइ, मधुकरि मणिकिइ मालि।—मा. कां. प्र.

२ चन्द्रमा। (अ मा)

३ डिंगल का एक गीत (छद) जिसके द्वाले के प्रथम चरण मे १६ मात्रायें दूसरे व तीसरे मे १४ तथा चौथे मे ६ मात्रायें होती हैं ।

४ भिक्षा ।

रू० भे०—मधकर, मधुकरी, मधुक्कर, मधूकर, महुकर, महुयरो, महूग्रर ।

मधुकरी–स० स्त्री०—१ पके व्यजन की भिक्षा ।

२ देखो 'मधुकर' (रू भे.)

मधुकीट, मधुकीटक, मधुकीटब, मधुकीटभ, मधुकँटब, मधुकंटभ–स० पु० [स० मधुकैटभ] मधु और कैटभ नाम के दो भाई दैत्य जो विष्णु के द्वारा मारे गए थे । (पौराणिक)

उ०—१ विढता पाच हजार लग, वीता वरसाण । माग माग वर बोलिया, मधुकीटब दाण ।—गजउद्धार

उ०—२ रचियो लेख ग्रलेख, ग्राये ग्रद्भुत जुत जाण । मधु-कँटब कर मेरसा, कट्टे कानाण ।—गजउद्धार

उ०—३ सुर सान्निधं कज्ज, ब्रहमाणी रूप ग्रनेक विध करिय । मधुकीटक रिण मज्ज, ग्रसुर निरदळण जायो जय ग्रबा ।

—मा वचनिका

रू० भे०—मधकीट, मधकीटग ।

मधुक्कर –देखो 'मधुकर' (रू भे)

उ०—फरस पाणी फावेस उभे इसणेस ग्रवक्कर । निलं ग्ररघ नखतेम मसत भणेस मधुक्कर ।—सू प्र

मधुग्राहक–स० पु०—भौंरा । (ग्र मा, ह ना मा)

मधुघोस–स० पु० [स० मधुघोप] कोयल ।

मधुजा–स० स्त्री० [स०] पृथ्वी (मि० मधु=विष्णु) ।

मधुतम, मधुतर–स० पु०—भौंरा, भ्रमर । (ग्र मा)

मधुता–स० स्त्री०—तमाल पत्र । (ग्र मा)

मधुत्रय–स० पु० [स०] शहद, घी ग्रौर चीनी के मिश्रण से बना पदार्थ ।

मधुद–स० पु०—भौंरा । (ग्र मा)

मधुदीप–स० पु०—कामदेव । (ह ना मा)

रू० भे०—मधूदीपक ।

मधुदैत्य–स० पु०—१ वह घोडा जिसके कान व मस्तक सफेद रग के हो ग्रौर शेष शरीर एक रग का हो । (ग्रशुभ) (शा हो)

२ मधु नामक एक राक्षस ।

मधुधूळ–स० स्त्री० [स० मधुधूलि] शक्कर, चीनी ।

रू० भे०—मधूधूळ ।

मधुप–स० पु० [स०] १ भौंरा, भ्रमर । (ग्र मा)

२ शहद की मक्खी, मधुमक्खी ।

३ उद्धव का एक नाम, ४ काला, श्याम । (डि को)

रू० भे०—मधूप ।

मधुपक्क–वि०—शहद या शक्कर की चासनी मे पचाई हुई ।

मधुपति–स० पु० [स०] श्री कृष्ण ।

मधुपरक–स० पु० [स० मधुपर्क] १ दही, घी, शहद, जल ग्रौर चीनी का समाहार जो यज्ञ ग्रादि मे ग्राहुति देने ग्रौर देवताग्रो को भोग लगाने के लिए प्रयोग मे लाया जाता है ।

उ०—१ पच्छिम दिसि पूठ पूरब मुख परठित, परठित ऊपरि ग्रातपत्र । मधुपरकादि सस्कार मडित, श्री वर वे बैसाणि तत्र ।

—वेलि.

उ०—२ ग्रोपै वेद जमणिका ग्रागै, ज्वाळ ग्रमळ वेदी मधि जागै । मधुपरकादि सरस रस माधुर, ससकार परखै देवासुर ।—रा रू

मधुपुर, मधुपुरी–स० पु०—मथुरा नगरी का नाम ।

उ०—मारू ग्रायो मधुपुरी, स्त्री दूलह 'ग्रभसाह' । परमोछव परणायवा सुप मंठे 'जैसाह' ।—रा रू

मधुप्रकासी–स० पु० [स० मधु+प्रकाशिन्] वन, जगल ।

रू० भे०—मधूप्रकासी ।

मधुप्रिय–स० पु० [स०] श्री कृष्ण के वडे भाई, बलराम ।

(ग्र मा, डि को)

मधुबन—देखो 'मधुवन' (रू भे)

मधुभार–स० पु०—प्रत्येक चरण के ग्रत मे जगण सहित ८ मात्रा का मात्रिक छन्द विशेष ।

मधुमई–स० स्त्री०—मालती लता । (ग्र मा)

वि०—मधुयुक्त ।

मधुमक्खी–स० स्त्री० [स० मधुमक्षिका] फूलो का रस चूस कर शहद इकट्ठा करने वाली एक प्रकार की प्रसिद्ध वडी मक्खी ।

रू० भे०—मधुमाखी ।

मधुमती–स० स्त्री०—१ प्रत्येक चरण में दो नगण ग्रौर एक गुरु के ग्रनुसार सात वर्णों का एक वर्ण वृत ।

२ पार्वती का एक नाम ।

३ दुर्गा का नाम ।

रू० भे०—मधमति ।

मधुमथन–स० पु० [स०] विष्णु ।

मधुमाखी—देखो 'मधुमक्खी' (रू भे)

मधुमात-सारग–स० पु०—सारग राग का एक भेद ।

मधुमाधव–स० पु० [स०] मालश्री, कल्याण, ग्रौर मल्लार के मेल से बना एक राग । (सगीत)

मधुमाधवसारग–स० पु० [स०] ओडव जाति का एक सकर राग जो मधुमाधव ग्रौर सकर राग के योग से बनता है । (सगीत)

मधुमाधवी–स० स्त्री० [स०] भैरव राग की सहचरी एक रागिनी ।

(सगीत)

मधुमारण–सं० पु०—मधु नामक दैत्य का सहार करने वाले श्रीकृष्ण ।

मधुमालती–स० स्त्री० [स०] मालती नामक पीले फूलो वाली एक लता ।

मधुमास–स० पु०—१ चैत्रमास ।

२ वसत ऋतु ।

रू० भे०—मधूमास ।

मधुमेह–स० पु० [स०] प्रमेह रोग का बढा हुआ रूप जिसमे पेशाब गाढा एव श्वेत तथा शर्करा युक्त आता है ।

मधुमेही–स० पु० [स०] वह व्यक्ति जिसे मधुमेह रोग हो ।

मधुरगी–स० पु० [स० मधु =शराव+राज० रगी] श्रीकृष्ण के बडे भाई, बलराम । (ना मा)

मधुर–स० पु० [स० मधुरम्] १ मीठा पदार्थ, रस या शरबत ।
२ मिठास ।
[स० मधुर] ३ शक्कर, गुड ।
४ लाल गन्ना ।
५ मक्खन । (अ मा)
६ बादाम । ७ चावल । ८ आम विशेष ।
९ जगली बेर । १० मटर । ११ महुआ ।
१२ धान । १३ लोहा । १४ विष, जहर ।
१५ मक्खी ।
१६ प्रत्येक चरण मे २०-२० मात्राओ वाला एक मात्रिक छद ।
१७ एक असुर जो वृत्रासुर का पुत्र था ।
१८ स्कध का एक सैनिक ।
१९ बिन्दुमत राजा का पुत्र, एक राजा ।
वि० [स्त्री० मधुरी] १ स्वाद की दृष्टि से जो मधु के समान मीठा हो, मीठा, स्वादिष्ट ।
२ जो सुनने मे अच्छा जान पडे, मीठे स्वर वाला, कर्ण प्रिय ।
उ०—१ मधुर वचन मनहर कहो हो, हाजी म्हारा स्रवणां मे अम्रत सिंचाय ।—मी रा.
उ०—२ बावहिया रत पखिया, बोलइ मधुरी वाणि । काइ लव-सउ माठि करि, परदेसी प्रिउ आणि ।—ढो मा
३ मनोहर, सुन्दर, मोहक, प्रिया । (अ मा, ह. ना मा.)
४ जो सब प्रकार की कटुताओ से रहित हो ।
५ गति की दृष्टि से जो धीमा हो, मद ।
उ०—विज्जुळिया नीळज्जियां, जळहर तू ही लज्जि । सूनो सेज, विदेस प्रिय, मधुरइ मधुरइ गज्जि ।—ढो मा
६ धीर, शात ।
७ सुस्त, उदास ।
क्रि० वि०—मधुरता से, मीठे स्वर से प्यार से ।
रू० भे०—मद्धुर, मधूर, महुर, महुरउ, महूर, माधुर ।
अल्पा०—मद्धरो, मधरो, मधुरो ।

मधुरता–स० स्त्री० [स० मधुर+ता प्र०] १ मधुर होने का गुण, भाव या दशा ।
२ मीठास, माधुर्य ।
३ सुन्दरता, कोमलता ।
४ मोहकता ।
रू० भे०—मधुराई, मधूरता, माधुरता ।

मधुरत्रय–स० पु० [स०] शहद, घी और शक्कर इन तीनो का समूह ।

मधुरमा—देखो 'मधुरिमा' (रू भे)

मधुरसा–स० स्त्री० [स०] १ दाख, दाक्ष ।
२ मुनक्का । ३ अगूरो का गुच्छा ।
रू० भे०—मधूरसा ।

मधुराई—देखो 'मधुरता' ।
उ०—नदन वन रा फळ भला हो, आता भूपति भेट । मधुराई वारी रही हो, थारा धोरा हेट ।—गो रा.

मधुराज–स० पु० [स०] भौंरा ।

मधुराम्रत–स० पु० [स० मधुरामृत] १ फूलो का रस, पराग ।
उ०—भवरां रा भरणाट, गूजवें मास्या गावें । चीटया डोलें चाव, महक मधुराम्रत चावें ।—दमदेव
२ शहद का मीठा रस, अमृत ।

मधुरिपु–स० पु० [स०] मधु नामक राक्षस के शत्रु, विष्णु ।

मधुरिमा–स० स्त्री० [स० मधुर+इमनिच्] १ मधुर होने की दशा या अवस्था ।
२ मीठास, माधुर्य ।
उ०—अब माखिनी मधुरिमा, जगी सेलडी जगीस । अे रस अलगा नारिथी, सि सरज्या जगदीस ।—मां का प्र
३ सुकुमारता, सुकोमलता ।
४ मोहकता ।
रू० भे०—मधुरमा ।

मधुरी–स० स्त्री० [स० मधुर+ई प्र०] १ शराब ।
२ फूक कर बजाया जाने वाला बाजा ।
३ देखो 'मधुर' (स्त्री०)

मधुरो—देखो 'मदुरो' (रू भे)
२ देखो 'मधुर' (अल्पा, रू भे)
उ०—१ वजसी थाढो वायरो, गजसी मधुरो गाज । घण जद तजसी ढोलीयो, सजसी जाग समाज ।—मयाराम दरजी री बात
उ०—२ दात दमकै अहर दुत, जांण चमकै बीज । ज्यांरी धुनि मधुरी सुणै, रहै तपोधन रीज ।—बां दा
उ०—३ तीखां तमतमा खाटा खारा कडूआं कसायलां मीठां मधुरां गलिम्रा चोपडा, काचां पाकां छोल्यां छुवरया वघारिया अणवघारिया, इस्यां सालणा ।—व स
(स्त्री० मधुरी)

मधुलोलुप–स० पु० [स०] भौंरा, भ्रमर ।

मधुवन–स० पु० [स० मधुवन] १ मथुरा के पास, यमुना के किनारे का वन, जिसमें मधुदैत्य रहता था । बाद मे शत्रुघ्न ने इसके पुत्र लवण को मार कर वहा मधुपुरी स्थापित की ।
२ व्रज मे यमुना तट का एक वन ।
३ किष्किन्धा के पास सुग्रीव का एक वन ।

४ वह वन जिसमे प्रेमी व प्रेमिका का मिलन होता है।
५ कोयल, कोकिला।
रू० भे०—मघवन, मधुबन।

मधुवनमधुप, मधुवनसिधु—स० पु०—१ ईश्वर, परमेश्वर। (नां मा)
२ श्री कृष्ण। (अ मा)

मधुवनी—स० पु०—श्री कृष्ण। (अ मा)

मधुवरत—स० पु० [स० मधुव्रत] भ्रमर, भौंरा। (ना मा, ह ना मा)

मधुसख, मधुसखा—स० पु० [स० मधुसखा] कामदेव, मदन।

मधुसदन—देखो 'मधुसूदन' (रू भे)

मधुसहाय, मधुसारथि—स० पु० [स०] कामदेव, मदन। (हि को)
रू० भे०—मधुस्वारथी, मधूसारथी।

मधुसुदन, मधुसूदन—स० पु० [स० मधुसूदन] १ मधु नामक दैत्य को मारने वाले, विष्णु, ईश्वर।
उ०—हिये वसाई हरख सू, मधुसूदन महाराज। नर जिण सू ललचै नहीं, सो त्रिभुवण सिरताज।—वां दा
२ श्रीकृष्ण। (अ मा)
उ०—सतबार जरासघ आगळ स्रीरग, विमहा टीकम दाघ वग। मेलि घात मारै मधुसूदन, असुर घात नाखै अलग।
—जमणोजी सोदो
३ भ्रमर, भौंरा।
४ शहद की मक्खी, मधुमक्खी।
रू० भे०—मधुसदन, मधूसूदन।

मधुस्रवा—स० स्त्री०—सजीवनी बूटी। (अ मा)

मधुस्रवा-तीज—स० स्त्री० यौ०—श्रावण शुक्ला तृतीया तिथि।

मधुस्वर—स० स्त्री० [स०] कोयल।

मधुस्वारथी—देखो 'मधुसारथि' (रू भे) (ह. नां मा)

मधुहता—स० पु० [स० मधुहतृ] १ मधु नामक दैत्य को मारने वाला, विष्णु।
२ श्रीकृष्ण।
३ शिकारी पक्षी।
वि०—१ शहद को नष्ट करने वाला।
२ आगम बतलाने वाला।

मधुहेतु, मधुहेतू—स० पु०—कामदेव, मदन। (हि को)

मधू—स० पु०—१ युद्ध, समर। (अ मा)
२ देखो 'मधु' (रू भे) (अ मा)
उ०—१ बोहो लोह भूप सुमड़ां वकसि, स्रीहाथै खग साहियो। करि क्रोध मधू मार्थ किनां, लखमी-वर नदक लियो।—मे म
उ०—२ सनी सी मधू दाख अनार सेवा। दियो मांगि लचै, सुधा जांगि देवा।—रा रू
उ०—३ लालच रस रै लाग, माखी लपटांणी मधू। उडणो वळियो आग, जिणरै मुसकल जीवणो।—वां दा.

मधूक—स० पु० [स०] १ महुए का पेड़।
२ उक्त पेड के फूल व फल।
३ शहद की मक्खी।
४ भ्रमर, भौंरा। ५ मुलेठी।
रू० भे०—मधुक।

मधूकफळ, मधूकफल—स० पु० यौ० [स० मधूक+फल] महुए के फल।
उ०—जिणि द्राक्ष फलै भरिउ हुइ कवल, तसु किसिउ रुचइ मधूक फल।—व स

मधूकर—देखो 'मधुकर' (रू भे)
उ०—गवरं मात सिव तात, सिध पूजित सुरेसुर। मद सुगध ऊपर भमै, मद-मत्त मधूकर।—ठाकुर भूमारसिह मेडतियो

मधूदीपक—देखो 'मधुदीप' (रू भे)

मधूधूळ—देखो 'मधुधूळ' (रू भे)

मधूप—देखो 'मधुप' (रू भे)
उ०—विमल जिनेसर सुणि अलवेसर, माहरा वचन अनूप। मनडो विलूधो रे ताहरै रूप, जेम विलूधो रे कमल मधूप।—वि कु

मधूप्रकासी—देखो 'मधुप्रकासी' (रू भे) (नां. मा)

मधूमास—देखो 'मधुमास' (रू भे)
उ०—मधूमास आमोज मे रास मंडै, तिहू लोक री डोकरी तेथि तडै।—मे म

मधूर—स० पु०—१ कामदेव, मदन। (अ मा)
२ देखो 'मधुर' (रू भे)

मधूरता—देखो 'मधुरता' (रू भे)

मधूरसा—देखो 'मधुरसा' (रू भे) (अ मा)

मधूसारथी—देखो 'मधुसारथि' (रू भे) (हि को)

मधूसूदन—देखो 'मधुसूदन' (रू भे) (हि को)

मधे—देखो 'मध्ये' (रू. भे)
उ०—दव तो लागो छे राजाजी वन मधे, हिरण ससादिक बळै माय —जयवाणी

मध्घ, मध्घि—देखो 'मध्य' (रू भे)
उ०—कथ इम सासत्र कहै, दुलह लहिजै पूरव दत। आज दोय अधिकार, मध्घि सरस्वति द्वारामति।—सू प्र

मध्घे—देखो 'मध्ये' (रू भे)

मध्य—स० पु० [स०] १ किसी पदार्थ या स्थान के बीच का भाग, मध्यभाग।
२ बीच की अवस्था, मध्यावस्था।
३ कमर, कटि।
४ पेट, उदर।
५ घोडे की कोख या वक्खी।
६ सगीत में स्वरो के तीन सप्तको मे से बीच का सप्तक जिसका उच्चारण स्थान वक्षस्थल व कण्ठ होता है।

७ पश्चिम दिशा।

८ विश्राम।

९ सोलह वर्ष से ७० वर्ष तक की अवस्था।

१० दस अरब की सख्या।

वि०—१ बीच का, बीचवाला, मध्यवर्ती।

२ मझोला।

३ जो बुरा भी न हो, बहुत अच्छा भी न हो, ठीक-ठीक, उचित।

४ जो न तीव्र हो, न मदा हो, मध्यम।

५ जो किसी दल या पक्ष से सम्बन्धित न हो, तटस्थ, निरपेक्ष।

क्रि० वि०—६ बीच मे, मध्य मे, दरम्यान।

उ०—तुही गिब्बरा विब्बरा बीच गाजै। तुही रावळां देवळां मध्य राजै।—मे म

रू० भे०—मजार, मझ, मंझम, मझली, मझा, मझार, मझारि, मझारी, मझारै, मझारो, मझाळ, मझि, मझिम, मजार, मज्ज, मज्झ, मज्झि, मझा, मझ, मझा, मझार, मझारि, मझारो, मझि मझी, मझ्झ, मद्धि, मद्धे मध, मधि, मधे मध्ध, मध्धि, माज, मांझ, मांझि, माझू, माझ, माझि, माझी।

मध्यकुरु—स० पु० [स०] एक प्राचीन देश जो उत्तरकुरु और दक्षिणकुरु के मध्य मे स्थित था।

मध्यखड—स० पु० [स०] पृथ्वी का वह भाग जो उत्तर क्रान्तिवृत्त और दक्षिण क्रान्तिवृत्त के मध्य मे पडता है। (ज्योतिष)

मध्यता—सं० स्त्री०—१ मध्य होने की अवस्था या भाव।

२ बीच बचाव।

मध्यत्ररेख—स० पु० [स० मध्यचिरेखा] दाख। (अ मा)

मध्यदेस—स० पु० [स० मध्य+देश] १ भारत के मध्य का प्रदेश, मध्य-प्रदेश।

२ मध्य भाग।

मध्यनायक—एक आभूषण विशेष जो छाती पर रहता है।

उ०—पादसकलिका उत्तरिका पादक ग्रैवेयक सरवहार मध्यनायक कृष्णनायक नीलनायक आभरानि।—व स

मध्यपात—स० पु०—ज्योतिष मे एक पात।

मध्यम—स० पु० [स० मध्यम] १ सगीत में सुरग्राम का चौथा स्वर।

वि० वि०—इसमे प्राण वायु नाभि से उठकर हृदय और ओठ पर आकर रुकती है। इसका स्वर-स्थान हृदय है।

२ एक राग विशेष। (सगीत)

३ साहित्य मे तीन प्रकार के नायको मे से एक।

४ वह उप-पति जो नायिका के कुपित होने पर अपना अनुराग प्रगट न करे और उसकी चेष्टाओ से उसके मन के भाव ताड ले।

५ मध्यदेश।

६ प्रान्तीय शासक, सूबेदार।

७ व्याकरण में तीन पुरुषो मे से मध्यम पुरुष।

[स० मध्यम] ८ कमर, कटि।

वि० [स० मध्यम] १ जो दो विपरीत दिशाओ या सीमाओं के बीच मे हो, बीच का, मध्य का।

२ जो न बहुत बड़ा हो न छोटा हो।

३ मझोला।

उ०—इण रीति सिंघदेव १ मुहब्बतखान सहित मध्यम २ कुमार भोज रै सहाय वडा कुवर दूदा नू मारण रै काज बूदी ऊपर अकबर रो अनीक आयो।—व भा

४ पक्षपात शून्य, निरपेक्ष।

५ हलका। ६ नीच।

रू० भे०—मझम, मझिम, मझम, मद्दम, मधम, मधिम।

मध्यमइभ्य—स० पु०—हाथी के बराबर हीरा माणिक की राशि का स्वामी। (जैन)

मध्यमपदलोपी—स० पु० [स० मध्यमपदलोपिन्] व्याकरण में एक समास जिसमे प्रथम पद से द्वितीय पद का सम्बन्ध बतलाने वाला शब्द लुप्त रहता है, लुप्त पद समास।

मध्यमपुरुस—स० पु० [स० मध्यमपुरुष] १ व्याकरण मे तीन पुरुषों में से वह पुरुष जिससे बात की जाय।

२ बीच-बचाव करने वाला व्यक्ति, मध्यस्थ।

मध्यमरात्रि—स० स्त्री० [स० मध्यरात्रि] अर्द्धरात्रि, आधीरात।

मध्यमलोक—देखो 'मध्यलोक' (रू भे)

मध्यमांन—स० पु० [स० मध्यमान] सगीत मे एक ताल जिसमे आठ लघु और ४ दीर्घ मात्राए होती हैं।

मध्यमा—सं० स्त्री० [स०] १ हाथ की पाच अगुलियो मे से बीच की अगुली।

२ वह लडकी जो विवाह योग्य हो गई हो।

३ वह युवा स्त्री जो यौवन की मध्यावस्था को पा चुकी हो।

४ रजस्वला नारी।

५ अपने प्रियतम के प्रेम या दोष के अनुसार उसका मानापमान या आदर-अनादर करने वाली नायिका।

६ नाद के चार भेदो मे से एक।

उ०—१ परा नाभ मे वसत है, पस्यती हिरदे मझार। मध्यमा कठ मे खुलत है वैखरी सब्द उचार।—स्री हरिरांमजी महाराज

उ०—२ पराचित चितवन करै, पस्यती मनन मनार। मध्यमा लखत व्यवहार कू, वैखरी ऊ अहकार।—स्री हरिरांमजी महाराज

उ०—३ हृदय स्थान मध्यमा, बदन मे वैखरी। चतुर भांति की गिरा, नरायण है खरी।—साधक सुधा

मध्यमेळ—देखो 'तूवेल'। (२)

मध्यरेखा—स० स्त्री० [सं०] ज्योतिष और भूगोल शास्त्र में वह रेखा जिसकी कल्पना देशान्तर निकालने के लिये की जाती है। यह रेखा

उत्तर दक्षिण रहती है, जो उत्तरी व दक्षिणी ध्रुवो को काटती हुई एक वृत्त बनाती है।

मध्यलोक-स० पु० [स०] पृथ्वी ।
रू० भे०—मध्यमलोक ।

मध्यविवरण-स० पु० [स० मध्यविवर्ण] सूर्य या चन्द्र ग्रहण के मोक्ष का एक प्रकार जिसमे उनका मध्य भाग पहले प्रकाशित होता है। (वृहत्सहिता)

मध्यस्थ-वि० [स०] १ दो प्रति पक्षियो के बीच मे पडकर विवाद मिटाने वाला, मध्यता करने वाला।
२ तटस्थ, निरपेक्ष ।
३ अपनी हानि न करते हुए दूसरो का उपकार करने वाला।
४ मध्यवर्ती ।
५ मझोला ।
६ उदासीन ।
स० पु०—शिवजी की एक उपाधि ।

मध्यस्थता-स० स्त्री०—१ मध्यस्थ होने की अवस्था या भाव ।
२ बीच-बचाव ।

मध्यागुलीयक—एक आभूषण विशेष ।
उ०—चतुस्त्रनायक, त्रिसटनायक आधगुलीयक मध्यांगुलीयक सर्वा गुलीयक लघुचूडक मुक्ताचूडक मोतीसरा करगी ।—व स

मध्यान—देखो 'मध्याह्न' (रू भे)
उ०—१ लगी हांम विलास, वित्ती अग्यात प्रात मध्यांन साय-काळ निसीत, रत भूप चूप मदनाय ।—रा रू
उ०—२ मध्यान मे विराजमान ध्यान मे घुनी । रुद्राक्ष माळ पांन मे मुद्रा उनमुनी ।—मे म

मध्या-स० स्त्री० [स०] वह नायिका या स्त्री जिसमे लज्जा एव काम-वासना समान हो। (काम शास्त्र)
उ०—१ के बाळा राद्द-कुअरि, केय मुगघा कुळवती । के मध्या माणणी, जिसी सूरज कायती ।—गु रू व
उ०—२ इसी इसी खोडस वरसा री मुगधा मध्या प्रोढ़ा रूप री निधान ।—रा सा स

मध्याह्न, मध्याह्न-स० पु० [स० मध्याह्न] दिन का मध्य भाग, ठीक दुपहरी का समय ।
उ०—मिळि माह तणी माहुटि सू मसि व्रन, तपि आसाढ तणौ तपन । जन श्रीजन पणि अविक जाणियो, मध्यरात्रि प्रति मध्या-ह्न ।—वेलि
रू० भे०—मध्यान ।

मध्ये-क्रि० वि० [स०] १ बीच मे, मध्य मे, मे ।
२ विपय मे, बाबत, सम्बन्ध मे ।
३ लिए ।
रू० भे०—मज्झे, मझे, मझेण, मढे, मधे, मध्धे ।

मध्वास्रवलब्धि-स० स्त्री०—अट्ठाईस प्रकार की सन्धियो मे से लब्धि तक जिससे सुनने वालो को उसकी वाणी मधुर लगे ।
उ०—अक्षीण महाणसी लब्धि, क्षीरास्रवलब्धि, मध्वास्रवलब्धि, जीववृद्धि, कोस्टवुद्धि पादांनुसारिणीलब्धि ।—व स

मनग—देखो 'मन' (मह, रू भे)

मनछा—देखो 'मसा' (रू भे)
उ०—मनछा परब्रह्म हिंगोळ माता । समें सात पो'रा रमै दीप साता ।—मे म

मनतर—देखो 'मन्वतर' (रू भे) (ग्र मा)

मन-स० पु० [स० मनस्] १ अन्त करण, हृदय । (ह नां मा)
उ०—१ कथूं केम ईसर कहे, खाण सकळ ग्रत खेत । वाणी स्रवणां मन वसी, निगम अगोचर नेत ।—ह र
उ०—२ आह मन महि नरिंदो पारधि सभावइ । सइ दलि रमलि करतउ गगातढि आवइ ।—प पं च
पर्या०—अंतहकरण, अनिद्री ऊचळ, गूढ़-पथ, चचल, चेत, चित्त, दिल, पित-मन-मथ, मांनस, हृदै ।
२ प्राणियो मे अन्त करण की वह वृत्ति या शक्ति जिसके द्वारा उनको वेदना सकल्प, इच्छा द्वेष, प्रयत्न, बोध और विचार आदि का अनुभव होता है । चित्त, बुद्धि, मस्तिष्क, दिमाग ।
उ०—१ देंत मन मे जाण्यो के इत्ती माया रो लेखो बतावणा सू इण आदमी नै उणरो रुतबो मानणो ई पडैला ।—फुलवाडी
उ०—२ इण परि देखी बाप पराभव घन सागर सुपवीत । मान घरी मन माहि नीसरिउ नयर बाहरि चलचीत ।—हीराणद सूरि
मुहा०—१ मन अटकणौ=आसक्ति होना, प्रेम या मुहब्बत होना, बार-बार किसी की याद आना, मन रुकना । २ मन आणौ=इच्छा होना, इरादा होना । ३ मन उकताणौ=कही से या किसी से जीव उचटना, उकता जाना, विरक्ति होना । ४ मन उतरणौ=उदासीन होना । ५ मन उळझणौ—देखो 'मन अटकणौ' । ६ मन ऊठणौ=जी नही लगना, देखो 'जीव ऊठणौ' । ७ मन कच्चो करणौ=हिम्मत हारना, दु ख या आफत से घबराना, भावुक होना । ८ मन करणौ=इच्छा करना, इरादा करना, कल्पना करना । ९ मन काठो करणौ=हिम्मत रखना, धैर्य रखना, कजुसी करना । १० मन कावू मे रैं'णौ = इच्छ ए वश में रहना, सयमशील होना । ११ मन खराब होणौ=अरुचि होना, मन की असामान्य अवस्था होना, नाराज होना, मन मे विकार पैदा होना । १२ मन खाटो पडणौ (होणौ) = घृणा होना, अन्तर पड जाना । १३ मन खिचणौ=आकर्षित होना, वशीभूत होना । १४ मन-खोलणौ=दुराव हटाना, अपने भाव या विचार प्रगट करना । १५ मनचालणौ—देखो 'मन करणौ' । १६ मन चौगुणौ होणौ=हिम्मत और उत्साह बढना । १७ मन टटोळणौ=हृदयगत भाव ज्ञात करने का प्रयत्न करना । १८ मन टूटणौ=हतोत्साह होना,

मन उचट जाना, प्रेम समाप्त हो जाना। १९ मन ठा' माथै नी रै'णो=चित्त का अस्थिर होना, घबराहट के कारण मन स्थिति का खराब होना। २० मन ठै'रणो=चित्त स्थिर होना, मन लगना। २१ मन डिगणो=प्रतिज्ञा, सकल्प या वचन से विमुख होने की अवस्था आना २२ मन ढुलणो=थोडे थोडे स्वार्थ या न्यून रसास्वादन के लिये नियत खराब करना। २३ मन डोलणो= लालच लगना, चित्त चचल होना, मन मे विकार पैदा होना। २४ मन तडफणो=किसी को देखने या पाने के लिये उत्कठा बढ़ना, जी छटपटाना। २५ मन तोडणो=किसी को अप्रिय लगने वाला कार्य करना, हतोत्साह करना। २६ मन दैणो=मन के भाव प्रगट करना, किसी के प्रति आसक्त या मुग्ध होना, देखो 'मन लागणो'। २७ मन फाट जाणो, मन फाटणो=अनुचित या अकृत्य के कारण किसी के प्रति घृणा के भाव बनना, विरक्ति होना, उदासीन होना। २८ मन फिरणो=किसी काम या वात से मन हट जाना। २९ मन फीको पडणो=हतोत्साह होना, उदासीन होना। ३० मन फेरणो=किसी कार्य से मन को हटा लेना, किसी के प्रति वेरुख हो जाना। ३१ मन बधणो=उत्साह बढना, किसी के प्रति प्रेम के भाव बनना। ३२ मन बिगडणो—देखो 'मन खराब होना। ३३ मन बै'लणो = देखो 'मन लागणो'। ३४ मन भरणो = तृप्ति होना, सतोष होना। ३५ मन भागणो = चित्त वृत्ति का इधर उधर फिरना, चित्त अस्थिर रहना, किसी कार्य या वातावरण में मन न लगना, उसे छोडकर जाने का प्रयत्न करना। ३६ मन भाणो = मन को अच्छा या भला लगना, प्रिय लगना, पसद आना, उपयुक्त लगना। ३७ मन भारी करणो = उदास होना, दुखी होना। ३८ मन भरणो—देखो 'मन टूटणो'। ३९ मन मानियो = यथेष्ट, इच्छित। ४० मन मानी = इच्छित कर्म, अपनी मर्जी से सब कुछ करना। ४१ मन मारणो = भावो को जबरदस्ती दवा देना, उत्साह समाप्त करना, हताश होना। ४२ मन मार वैठणो = उत्साह छोडकर किसी कार्य के प्रति नि चेष्ट हो जाना। ४३ मन मार रै'णो—देखो 'मन मारणो'। ४४ मन मिळणो = परस्पर सम्पर्क बनना, दोस्ती होना, प्रेम होना। ४५ मन मीठो करणो = किसी दूसरे की वस्तु को दवा लेना, देने योग्य वस्तु को न देना, सतोष करना। ४६ मन मुटाव होणो = परस्पर मित्रता टूट कर दुराव बढना, एक दूसरे के प्रति ईर्ष्या द्वेष की भावना बनना। ४७ मन मे आणो = मन के अन्दर किसी प्रकार के भाव बनना, कोई बात ध्यान या समझ मे आना, इच्छा होना। ४८ मन मे कै'णो = मन ही मन कुछ कहना। ४९ मन मे चोर वैठणो = सदेहास्पद भावना बनना, अन्त करण का अस्पष्ट होना, धोका या विश्वासघात करने की भावना बनना। ५० मन मे जमणो = किसी भावना या धारणा का दिल मे जमना, कोई बात ठीक समझ मे आना। ५१ मन में धरणो = किसी बात या कार्य का निश्चय करना, किसी बात को मन मे रखना, प्रगट न करना। ५२ मन में धारणो = सकल्प करना, निश्चय करना, हृदयगम करना, धारण करना। ५३ मन में पायो जाणो = किसी अनुचित बात या व्यवहार के प्रति दुखी होना, भावनाओ पर ठेस लगना। ५४ मन मे वसणो = दिल में हरदम रहना, अच्छा लगने के कारण हर वक्त ध्यान मे रहना। ५५ मन मे वैठणो = देखो 'मन मे जमणो'। ५६ मन मे भरणो = मन के विचार व भावो का सग्रह करना, देखो 'मन मे धरणो'। ५७ मन मे मरोड करणी = छल कपट करना। ५८ मन मे राखणो=किसी बात या विचार को मन मे छुपाकर गुप्त रखना, धारण करना। ५९ मन मे लाणो = किसी बात पर गौर करना, विचार करना, सोचना। ६० मन मैलो करणो = किसी के प्रति क्रुद्ध होना, नाराज होना, किसी के प्रति द्वेष या दुर्भाव रखना। ६१ मन मोकळो करणो = उदार बनना, शान्ती धारण करना। ६२ मन मोडणो = देखो 'मन फेरणो'। ६३ मन मोटो करणो (होणो) = उदारता दिखाना, सहनशील होना। ६४ मन मोळो पडणो = देखो 'मन फीको पडणो'। ६५ मन मोवणो = वश में करना, प्रभावित करना। ६६ मन रमाणो = दिल बहलाना, मन को कामो मे लगा देना। ६७ मन राखणो = किसो की बात मान लेना, इच्छा पूरी करना, प्यार करना। ६८ मन रा लाडू खाणा = हवाई किले बनाना, ख्याली पुलाव पकाना, काल्पनिक खुशी मे मग्न होना। ६९ मन री गाठ खुलना=मनो-भाव प्रगट होना, रहस्योद्घाटन होना। ७० मन री मन मे रै'णी = इच्छाए पूरी न होना इरादे पूरे न होना। ७१ मन रो मारियो = दुखी। ७२ मन रो मेलो = छली, कपटी, धूर्त। ७३ मन ललचाणो = किसी के प्रति लालायित होना। ७४ मन लागणो=किसी काम मे चित्त लगना, देखो 'मन अटकणो'। ७५ मन लेणो = देखो 'मन टटोळणो'। ७६ मन सू उतरणो = देखो 'मन उतरणो'। ७७ मन सूवा वाधणा = देखो 'मन रा लाडू खाणा'। ७८ मन हरणो = देखो 'मन मोवणो'। ७९ मन हरो होणो=प्रसन्नता या खुशी होना। ८० मन हाथ में लेणो= वश या काबू मे करना। ८१ मन हारणो = कायल होना, हताश होना। ८२ मन ही मन=मन-मन मे ही कुछ करना, स्वयमेव, भीतर ही भीतर। ८३ मन होणो = देखो 'मन आणो'।

कहा०—मन चगा तो कठोती मे गगा = अपना दिल साफ है तो किसी का डर नही।

३ न्याय के अनुसार आत्मा या जीव से भिन्न एक द्रव्य।

वि० वि०—वैशेषिक दर्शन मे मन को एक अप्रत्यक्ष द्रव्य माना है। सख्या, परिणाम, पृथकत्व, सयोग, विभाग, परत्व, अपरत्व और सस्कार मन के गुण बतलाये गये हैं। मन अणु रूप है। मन चित्त, बुद्धि एव अहकार से भिन्न एक तत्त्व है।

४ इच्छा, इरादा, कामना, अभिलाषा।

उ०—नितु नितु राउ ग्रहेडइ चल्लइ। रोसि चडी राणी इम बुल्लइ, प्रियतम पारधि मन करउ।—प प च

५ विचार, धारणा, कल्पना, ख्याल।

६ प्रकृति, स्वभाव।

७ स्फूर्ति, उत्साह।

८ प्रतीति, ग्राभास।

९ झुकाव। १० प्रतिभा।

११ सम्मान। १२ मान सरोवर झील।

१३ भव्य तुषित एव माध्य देवो मे से एक।

उ० मागि ग्ररजन तणा हथियार। वेगि वेगि मन लायसि धार।

—सालिसूरि

वि०—१ श्वेत।

२ चचल। * (डि को)

रू० भे०—मनु मणु, मणू, मणू, मनग मनव, मनां मना, मनि मनी, मनु मनु, मन्न, मन्नि।

ग्रल्पा०—मनडउ, मनडो, मनड़ु, मनड़ो मनवो, मनियो, मनुग्रो।

मनउपग, मनउपयग—स० पु०—घोडा। (डि ना मा)

क्रि० वि० ग्रपनी मर्जी से,मन माने ढग से।

उ०—कविता की कदर मुज कु वी दीखाइ, कोणासा चाकर सै रासा की पोथी मगाइ। च्यार घडी से एक पाना वाचकर मनउपग ग्ररथ किया, देखकर एक उमराव ने थुथकारा दिया।

—दुरगादत्त बारहठ

मनऊच—दातार, दानी, उदार। (ह ना मा)

रू० भे०—मनऊचो।

मनऊचो—स० पु०—१ ग्रभिमान, घमड।

२ देखो मनऊच' (रू भे)

मनक—देखो मनुष्य' (रू भे)

मनकरी—सं० स्त्री०—एक प्रकार की घास, जिसमे लाल रग का बारीक दाना निकलता है।

मनकामना—देखो 'मनोकामना' (रू भे)

मनकूळ, मनकूळा—वि० स्त्री० [ग्र० मन्कूल] १ एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने योग्य, चल। (सपत्ति)

२ जिसकी नकल तैयार करली गई हो, प्रतिलिपित।

मनखच—स० स्त्री०—मन मुटाव, वैमनस्य।

उ०—एक वरस लग वह रयो ग्रालण ग्रप वुहो मगनीत। मनखच दूजे वरस लग, ग्रत लगो करण ग्रनीत।—पा प्र

मनखचो—वि०—१ उदासीन, विरक्त।

२ ग्रप्रसन्न।

मनख—देखो 'मनुस्य' (रू भे)

उ०—१ भव दरियाव भयद, लहरा ऊठै लोभ री। मांहै ज्यां मतमद, मनख घणां डूबै मरै।—बां दा

उ०—२ हातां ठाली हालणो, जाम्रो सपत जोड। मोत सरीखी मनख रै, खलक मही नह खोड़।—बां दा

उ०—३ मिळै न पळ-पुळ तन मनख, धनख धरण चित धार। पात झडै तरवर पहव, चढै न फेर विचार।—र ज प्र

मनखांमनमोहिणीमहा—सं० स्त्री० [सं० मनुष्य+मन+मोहिनी] पृथ्वी, धरती। (ह ना मा)

मनखा—देखो 'मनीसा' (रू भे) (ना मा)

मनखाचार—देखो 'मिनखाचार' (रू भे)

मनखाजनम—स० पु० [स० मनुष्य+जन्म] मनुष्य जन्म, मनुष्य जीवन, मनुष्य योनि।

उ०—केसव भजतो हरख कर, मत कर ग्राळस मूढ। जिण दीधो मनखाजनम, गरम कोल कर गूढ।—र ज प्र

रू० भे०—मिनखाजनम।

मनखाधरम, मनखाध्रम—देखो 'मनुस्यधरम' (रू भे)

(ग्र मा, नां मा)

रू० भे०—मिनखाधरम।

मनखिचाव—स० पु०—१ मन के ग्रन्दर, दुराव, ग्रप्रसन्नता, मन-मुटाव ग्रादि का भाव।

२ वैर, वैमनस्य।

मनख्यो—देखो 'मनुस्य' (ग्रल्पा, रू भे)

उ०—मनख्या मत विललाय, गाय प्रभूजी पख सू टल। रामण हणियो राम, गुह खाधो तारक खळ।—र ज प्र

मनगढ़त—वि०—कपोल कल्पित, ग्रव्यावहारिक।

मनगमणो, मनगमबो—कि० ग्र० [स० मन+गम्य] मन को भाना, रुचिकर लगना।

मनगमतो—वि० [स० मन+गम्य] मन को भाने वाला, रुचिकर लगने वाला, इच्छित।

उ०—देस विरगउ ढोलणा, दुखी हुया इहा ग्राइ। मनगमता पाम्या नही, ऊटकटाळा खाइ।—ढो मा

मनगराई—स० स्त्री०—जोश, ग्रावेश, उत्साह।

उ०—१ सो इसा पक्का हठ सू ग्रोर पूरी मनगराई सू तथा पूरै ही माटीपणं रै कार सूं मोठा प्रभू फतह दीवी।—नी. प्र

उ०—२ हजरत मुरत लडाई मे जठै भारी ठौर होती तिण नूं मारता घणी मनगराई सू लडाई मे पेसता ग्रापरो जतन नही राखता।—नी प्र

मनगरो—वि०—१ जोशीला, साहसी।

उ०—जिको बादसाहा मे सूरो मनगरो होय घणी भीड पडिया पगा सपगो रहै तिको प्रथ्वी वेगी जीतै।—नी प्र.

२ उत्साहित।

उ०—ग्रर निवळाई, डर, सुस्ती मन भगाई वैरी नू ग्रापरै ऊपर मनगरो करै छै।—नी प्र.

३ युद्ध के लिये उद्यत, तत्पर, कटिबद्ध।

उ०—बादसाह आपं मनगरो होय जरा ही फौज री मन बधै।

—नी प्र

४ खुश, प्रसन्न।

उ०—विसेस बादमाह उमराव जो आपरा चाकरा सू मजाक करै तो मनगरा होवै।—नी प्र

५ आन-बान वाला स्वाभिमानी।

उ०—दलेलखा भलो मनगरो सिपाही थो, महाबळवान थो।

— महाराज पदमसिंह री बात

६ उदार।

उ०—सूरो खीवो वीर अति, सोभाळो दातार। हीमत धारी मनगरा, हुवा न होरोहार।—सूरे खीवै काघळोत री बात

७ मस्त, उन्मत्त।

उ०—सूड सू पांच हाथ लावी तरवार बाध तीनू फौज साम्ही करै सो हाथी इसो जे मनगरो होय फौज माही बड जावै।

—ठाकुर जैतसी री वारता

८ अनुकूल।

उ०—काई हुवो खेटो साम्हा अव्वल आयो, तिण सू लोग सारो मनगरो रहियो अर काठ लिया सारो सका राखण लागियो।

—भाटी सुदरदास बीकूपुरी री वारता

मनगुप्ति—स० स्त्री०—चित्त की एकाग्रता।

रू० भे०—मनोगुप्ति।

मनडउ, मनडो—देखो 'मन' (अल्पा, रू भे)

उ०—१ मनडउ ते मोहघउ मुनिवर माहरू रे, कहइ इम कोस्या ते नारि रे।—स कु-

उ०—२ पीतावर कट काछनी काछै, रतन जटित माथै मुकट कस्यो। मीरा के प्रभु गिरधर नागर, निराव बदन म्हारो मनडो फस्यो।—मीरा

उ०—३ हे गोरी तें ए स्यु कीधो, मनडो लीधो खच। ताहरै सरिखी अतेउर विच, मुझ न लागै अच।—वि कु

उ०—४ राज बहुत विघसू समझायो। यो मनड़ो नहि मानै।

—रमीलेराज रो गीत

मनचलो—वि० (स्त्री० मनचली) १ साहसी, हिम्मतवान्।

२ रसिक।

मनचायो, मनचाह्यो—वि०—इच्छित, अभिलाषित।

उ०—१ जे कोई घ्रजी ने दुपारै रो गावै, दुपारै रो गावै मनचायो फळ पावै।—लो गी

उ०—२ अर लूमडी खुसामद रै पांण आपरो मनचाहो करलो।

—फुलवाडी

मनचींतउ, मनचींतिउ, मनचींतियो, मनचींतो, मनचीतो—वि० [स० मनस्+चिन्तित] इच्छित, मनचाहा, मन पसन्द।

उ०—१ राधावेघु सु अरजुनि साधिउ, मनचींतिउ वरु लाडीय लाधउ।—प प च

उ०—२ पहलो मुकाबलो डाढाळै रो बागवान सू हुओ, सो भगवान री दया सू डाढ़ाळै री जीत हुई। वागवान मरियो। मनचींतिया मनोरथ हुआ। चील्हरा नेन्हा नू लडरा रो दाव दिखाय सिखायो।—डाढाळा सूर री बात

उ०—३ वध वाध्या छुडवाय, कारज मनचींता करै। कहो चीज है काय, रुपिया सरसी राजिया।—किरपाराम

मनछा—देखो 'मसा' (रू भे.)

उ०—चढिया रथे जोवता चिहु दिमि, ग्रह छाडै वन रा वचन। पल माहे जितरी रथ पहुचइ, मनछा तितरी घरइ मन।

—महादेव पारवती री वेलि

मनछाफळ—स० पु०—मन का अभिष्ट फल।

उ०—ओपि वनै फळ पुहप, थिया मनछाफळ प्रापत। सत्रा सापति थियो, नाक विग्रह आइ सपत।—गु रू व

मनजांणियो, मनजाणी—वि०—जो मन को अभिष्ट हो, इच्छित।

उ०—१ आज री इण खुसी वास्तै म्हैं थारी मनजाणी मुराद पूरी कर सकू।—फुलवाडी

उ०—२ राणी री तो मनजाणी व्ही। राजा रै खराया पछै वा क्यू आगै वात नै खांचै।—फुलवाडी

मनजात—स० पु० [स०] कामदेव, मनोज, मदन। (डिं को, ह ना मा)

वि० [स०] मन से उत्पन्न।

मनजीत—वि०—मन को वश मे रखने वाला, सयमी।

उ०—माताणीत मनजीत सेवगी रो पख साचो। सुणै हाक सात्रवा 'पाल' न देवै पग पाछो।—पा प्र

मनड़ु, मनडो—देखो 'मन' (अल्पा, रू भे)

उ०—१ मनडु अस्टापद मोहघु माहरु रे, हू नाम जपू निस दीस रे। चत्तारि अठ दस दोय नमु रे, चिहु दिसि जिन चउवीस रे।

—स कु

उ०—२ चेतरे अजू मनडा चतुर, रट-रट स्रीसीता रमण। करुणा निधान सू गहजकर, गमैं सहज आवागमण।—र रू

उ०—३ वनडा बाबोजी छोडया ए न जाय, दादी मे म्हारो मनडो वसै।—लो गी

मनण—देखो मनन' (रू भे)

उ०—मनण करै जब मनवा कहिये, चितवन कर चितवाजी। बोध करै जब वुद्धि कहिये, आपा कर अहताजी।

—स्री सुखरामजी महाराज

मनणो, मनवो—क्रि० अ० [स० मन्] १ राजी होना, खुश होना, प्रसन्न होना, नाराजगी मिटना।

उ०—मावीता ही ना मनै दुख घै ददोळी। गरळै न सरै क्षा गरज नाणै विण नोळी।—घ व ग्र.

२ सम्मान पाना, मान्यता पाना।

उ०—चितोड माथै रावत भीमसिंघजी जद श्रा श्रागै समीचा खेडा रा सघ्यागिरिजी मनीजता।—वा दा ख्यात

३ सहमत होना, सतुष्ट होना।

उ०—वना विहार तें वहै, मना किये नही मनै। इसा महा श्रभग्ग जग्ग, नित रडनी जनै।—ऊ का

४ देखो 'मानणो, मानबो' (रू भे)

उ०—साच कहा तो ना मनो, सनेसो पावत। मो नायण रो वालहो, घोडै चढ श्रावत।—राव रिणमल राठौड खावडियै री वात

मनणहार, हारो (हारी), मनणियो—वि०।

मनिश्रोडो, मनियोडो, मन्योडो—भू० का० कृ०।

मनीजणो, मनीजबो—भाव वा०।

मन्नणो, मन्नबो—रू० भे०।

मनदेवता–स० पु०—१ विवेक।

२ श्रन्तरात्मा।

मनद्रोह–स० पु०—कपट, छल। (ह ना मा)

मनन–स० पु० [स० मननम्] १ किसी विषय को ठीक तरह समझने के लिये किया जाने वाला प्रयत्न, चिन्तन, विचार।

२ किसी बात का तर्क एव प्रश्नोत्तर द्वारा निकाला जाने वाला परिणाम।

३ श्रध्ययन।

४ कल्पना।

रू० भे०—मनण।

मननसील–वि० यौ० [स० मननशील] १ जो विचार या चिन्तन करने योग्य हो, विचारणीय, चिन्तनीय।

२ जो स्वभावत विचारशील हो, मनन करने वाला।

मननिग्रह—देखो 'मनोनिग्रह' (रू भे)

मननिध–स० पु० यौ० [स० मनोनिधि] कवि, पडित। (श्र मा)

मनपरवग्यांनी–वि० यौ० [स० मन पर्वज्ञानी] श्रढी द्वीप मे रहे हुए सज्ञी के मनोभाव को जानने वाला। (जैन)

मनपुण्ण, मनपुण्य–वि० यौ० [स० मन+पुण्य] शुद्ध विचारो वाला, परहित चिन्तक। (जैन)

मनवछत, मनवांछित—देखो 'मनवाछित' (रू भे)

उ०—१ वरै रभ मनवछत वसै सुर थान वच, एळा सर सुजस दघ कडा श्रडियो—भाटी माहसिंह मोही री गीत

उ०—२ उठै महादेव रो देहरो दीठो मनवाछित दाता च्यार जक्ष द्वारै वैठा।—पचदडी री वारता

मनभग, मनभगो–वि० (स्त्री० मनभगी) १ निराशा, हतोत्साह, उदास।

उ०—१ जिकै सिरदार सारां सू मिळियो मन मन सुद्ध श्रापरा रजपूत तालक दारा सू रहै प्रयोजन। सरदार रो मनभग देख श्रापरा तालकदार तथा श्रसेंधा ही लेण री इच्छा तो स्वारथ वाळा रो काम है।—वी स. टी

उ०—२ इसी कह नका पढी नै जलाल मनभग थकियो पोढणै गयो।—जलाल वूवना री वात

२ कायर, डरपोक।

उ०—१ माटी पणै सू सारो ससार ले सकीजै छै, मनभगा सू काई ही नहीं होय सके छै।—नी प्र

उ०—२ मनभगा मरदा रो भरोसो लड़ाई सू भागणै ऊपर छै।

—नी प्र

मनभरियो–स० पु० यौ०—जिसके देखने से मन प्रफुल्लित हो जाय, प्रियतम, पति।

उ०—जाय मनभरिये ने यू कहै—थारै कवर हुयो वर श्र य सोदागर महदी राचणी।—लो गी

मनभामण, मनभाणो, मनभाइण, मनभायो—देखो 'मनभावण' (रू भे)

उ०—१ ते वलो पीला वरणां, नीला नारिगा, रगि दीसता सुरगा, नीकोली रायण, ते प्रीसी मनभाइण, दाडिमनी कुली।—व म

उ०—२ 'माहेमौत' 'हरी' मनभाणो, खेडपती साथै खूंमाणो। मुखि हरनाथ खीचिया माहै, साथै सामि धरम छळ साहै।—रा रू

उ०—३ मखिया राणी सू कहइ, मारू मनभाणी। माल्हकूमर पासइ विना, पदमिणि कुमलाणी।—ढो मा

उ०—४ महाराजा श्रजमाल रै, नगर वधाई श्राज। नरपति मनभायो थयो, जायो पुत्र सकाज।—रा रू

(स्त्री० मनभाणी)

मनभाव—देखो 'मनोभाव' (रू भे)

मनभावण मनभावणो, मनभावन, मनभावतो–वि० यौ० (स्त्री० मनभावणी) मन को श्रच्छा लगने वाला, प्रिय, प्यारा।

उ०—भगत वछळ गोकळ मनभावन पावन मूरति जगतपति।

—ह ना मा

रू० भे०—मनभामण, मनभाणो, मनभाइण, मनभायो।

मनभू—देखो 'मनोभव' (रू भे)

मनमथ–वि० यौ०—वश मे करने वाला, वशीकरण।

उ०—के नाडे के कचुए, वाध्या वेणी वध। कामण रा राखै कनै, मादळिया मनमथ।—वा दा

मनमट्ठो, मनमठो–वि० यौ० (स्त्री० मनमठी) १ कृपण, कजूस।

उ०—की मनमट्ठा वळ करै, भुयण समट्ठा भूप। 'पतो' गज घटा पाडणो, सझिया भीम सरूप।—किसोरदान वारहठ

२ निश्चेष्ट, उदास।

उ०—सुत 'वीरम' समराथ, मारू दीठो मनमठो। हेरू पटके हाथ, दीण वायक दाखिया।—गो रू

मनमत—देखो 'मंमत' (रू भे)

मनमति–वि० [स० मन+मति] मनमानी करने वाला, स्वेच्छाचारी।

मनमतै, मनमत्तै–क्रि० वि० [सं० मन+मत] १ स्वत ही, स्वेच्छा से, अपने आप।
उ०—१ किणी नै ई ओ वे'म नी हो के मगती आपरै मनमतै राजमैं'ल रो आसरो छोड देवैला।—फुलवाड़ी
२ स्वतन्त्रता से।
उ०—जिण थी स्वतंत्र सभव मे एक आपरा आलय हू काढ़ि देण रो उपकार करि जिकण रा सीलणा मे सहियो न जाय इसड़ा अनेक अनरथ कुमाइ मनमत्तै वहै तिकण रो अत तो इसड़ो ही खटावै।—व. भा

मनमत्य, मनमथ–स० पु० [सं० मनमथन] कामदेव, मदन।
(अ मा, ह ना मा.)
उ०—१ घरि पूठी घर सामहा, सहू जुआणा मत्थ। मन रत्त मनमत्य सू, मन चाहै मनरत्थ।—गु रू व
उ०—२ समर मनोज अनग पचसर, मनमथ मदन मकरध्वज मार।—वेलि
उ०—३ गायणी ग्रत्त सगीत, रग करत उरवस रीत। करि हाव भाव अनेक, कट्टाच्छ मनमथ केक।—सू प्र
उ०—४ इसडी आखडियांह किया अग वारणैं। सर मनमथ गा हारि क अजण सारणैं।—बा. दा
रू० भे०—मन्मथ।

मनमथहरण—स० पु० यौ० [सं० मनमथ+हरण] शिव, महादेव।
(डि. को)

मनमांनियो–वि० यौ०—इच्छित, अभिष्ट, मन वाछित।
उ०—जिण नू कठै ही मिळै नही सो उण वखत भुजाई मे जलाल री रहवास आवै सो मनमानियो भोजन जीमैं।
—जलाल बूबना री वात
रू भे—मनमाथो, मनमानो

मनमानी–सं स्त्री.—१ उचित-अनुचित का ख्याल किये विना, मन-मानी करने की क्रिया, भाव या अवस्था।
२ मन माने ढग से किया जाने वाला कार्य।
वि० स्त्री०—जो मन को अच्छी लगे, इच्छित, अभिष्ट।
उ०—प्रीति करै तीरथ रै ऊपर, मोज दियै मनमांनी। तवयो न मन हर पग जिह ताई, पार न उतरै प्रानी।—र रू

मनमानो—देखो 'मनमानियो' (रू भे)

मनमुखी–वि०—गुरु रहित।
उ०—१ हरिया सामी मनमुखी माया मांही हेत। क्यूंइक गाडै रेत मे, और वीयाजू देत।—स्री हरिरामदासजी महाराज
उ०—२ माळा फेरै मनमुखी, चित्त न एको ठोर। मेटै मारग मुगति का, हरिया दूजी दोर।—स्री हरिरामदासजी महाराज

मनमुटाव–स० पु०—मन के अन्दर द्वेष, वैमनस्य या दुराव आदि का होने वाला भाव।

मनमेळग, मनमेळू–स० पु०—१ पति, खाविंद, प्रियतम।
उ०—१ मिळिया मनमेळू माती मुसकाती, डुसका भरतोडी आती डुसकाती।—ऊ. का
उ०—२ सूता सपनै आइ, मनमेळू नित को मिळै। जागू ता उठि जाइ, जतन कियै न रहै 'जमा'।—जसराज
२ मित्र, दोस्त। (ह ना मा)
३ प्रेमी, स्नेही।
उ०—कवर वीरमदे गैला का साथ्या नै अमल हाथ सु देवै छै। घणा मनमेळू छै ज्या की पण मनवारघां हुवै छै।
—पना

मनमेलो, मनमैलो–वि० (स्त्री० मनमेली) जिसका मन साफ न हो, नीच, कपटी, धूर्त।

मनमोट–वि०—उदारचित्त, दातार, विशाल हृदय, दानवीर।
(ह ना मा)
उ०—१ कटि तूण चाप कराग, खळ भज रावण खाग। पहू सिद्ध वधण पाज, मनमोट स्रीमहाराज।—र ज प्र
उ०—२ एक एक सू आगळा, रांणा ऊमरकोट। प्रगट हुवा परमार वै, माणीगर मनमोट।—बा दा
उ०—३ मही छतीसा दूहडा, है वरणण हमरोट। आ हमरोट छतीसिका, मिनख सुणो मनमोट।—बा दा
उ०—४ मांगळिया मनमोट, 'दळपति' नै 'खानो' दुवै। विहडै खगधारा विचित्र, कळहि दुवाहा कोट।—वचनिका
रू० भे०—मनमोट, मन्नमोट।

मनमोद–स० पु०—१ डिंगल के वेलिया साणोर (छोटो सांणोर) छन्द का, एक भेद विशेष जिसके प्रथम द्वाले मे ६ लघु, २६ गुरु, कुल चौसठ मात्राएं तथा इसी क्रम से शेष द्वालो मे ६ लघु, २८ गुरु कुल ६२ मात्राए होती हैं। (पिंगल प्रकास)
२ 'दोहा' छद के साथ 'कडखा' छन्द मिलाकर वनाया जाने वाला गीत। ३ मन की खुशी।
रू० भे०—मनमोह।

मनमोदक–सं० पु०—मन का लड्डू, खयाली पुलाव।

मनमोह—देखो 'मनमोद' (रू भे)
उ०—कह दूहो पहला सुकव, कडखा ता पर कथ्थ। पथ प्रगट कडखो दुहो, सो मनमोह समथ्थ।—र ज प्र

मनमोहण—देखो 'मनमोहन' (रू. भे)
उ०—सत आचार अथग रा सहजा, खग रा खळा खवांना। मन-मोहण थिर चर खग अग रा, जग रा मुकट 'जवाना'।
—महाराणा जवानसिंह रो गीत
(स्त्री० मनमोहणी)

मनमोहणहारौ–वि० [सं० मन मोहन+रा० हारौ] (स्त्री० मनमोहण-हारणी) मन को लुभायमान करने मे समर्थ, वश मे करने वाला।
उ०—प्रियतम परम प्रेम मय प्यारौ, सकळ स्रस्टि मनमोहणहारौ।
—गी रा

मनमोहन–सं० पु० [सं०] १ श्रीकृष्ण का नामान्तर।
२ एक मात्रिक छन्द, जिसके प्रत्येक चरण मे चौदह मात्राए होती है तथा अन्तिम तीन मात्राओं का लघु होना आवश्यक है।
वि० (स्त्री० मनमोहनी) १ मन को मोहित करने वाला, चित्ताकर्षक। २ प्रेमी, प्रियतम, प्यारा।
उ०—घट मे रही न घाट मे, घर मे रही न व्हार। वन-वन तन भटक्यौ फिरै, मनमोहन की लार।—अज्ञात
रू० भे०—मनमोहण, मह्मोहण।

मनमौजी–वि० [हिं० मन+मौज] अपने मन मे उठी तरग के अनुमार काम करने वाला।
२ अपनी प्रसन्नता के उद्देश्य से कोई विशेष आचरण करने वाला। (स्त्री० मनमौजण)
उ०—वेटौ मनमौजी है, पण करम रौ पोचौ है।—वरसगांठ

मनमोट—देखो 'मनमोट' (रू भे)
उ०—अवतार 'लखप्पती' एव हौ, जम ग्राहग, 'जैहळ' जेव हौ। मनमोट निरेहण मछळी, इळ माहि खत्रीवट ऊजळी।—ल पिं

मनयस्ट–सं० पु० [सं० मन-ईष्ट] पति, खाविंद। (अ मा)
मनयोग–सं० पु०—मन के शुभाशुभ विचारो का मनन।
मनरंगी–वि० [सं० मन+रग] मनमौजी, रसिक, मस्त।
मनरजण, मनरजन–सं० पु० [सं० मन+रजन] १ आख।
(ना डिं को)
२ धन, द्रव्य। (नां मा, ह नां मा)
वि०—१ मन को खुश करने वाला, मनोरजन करने वाला।
२ देखो मनोरजन' (रू भे)

मनरख, मनरखमाणण–सं० पु०—१ याचक, मांगने वाला।
(अ मा, ह नां मा)
२ खुशामदखोर।

मनरखौ–सं० पु० (स्त्री० मनरखी) मन रखने वाला, दास, सेवक।
उ०—सुख लार्घ केलि स्यांम स्यांमा सगि। सखिए मनरखिए सघट। चौकि चौकि ऊपरि चित्रसाळी, हुइ रहियौ कहकहाहट।
—वेलि

मनरत्थ, मनरथ—देखो 'मनोरथ' (रू भे)
उ०—घरि पूठी घर सामहा, सहू जुवांणा सत्थ। मनरत मनमत्थ सू, मन चाहे मनरत्थ।—गु रू व

मनरळि, मनरळी, मनरली–सं० स्त्री०—मन की मुराद, इच्छा, चाहना, कामना।
उ०—१ त्रीजौ सुत जायौ तिण वलि, मात तात पुहती मनरली।
—कवि गुण विजय
उ०—२ कलम। इम वीर जिणवर तणा मुख थी अरथ गणधर साभली। कहै सूत्रवाणी मन सुहाणी सुणौ भवियण मनरली।
—वृ स्तौ
वि० स्त्री०—मुदित-मना, मुदित, हर्षित।
उ०—सोले ही सिणगार कुमरी वणाया हो सुदर मनरली। आवी चवरी माहि, बादल माहें हो जाणें चमकी वीजली।—स्रीपाल रास

मनरसि–सं० पु०—मन के भाव।
उ०—मनरसि दिवसि पचावनि, पावनि वलि आलोकु। जिनपति हुउ स केवली, ते वली आवइ लोक।—जयसेखर सूरि

मनरूगी–वि०—१ अपनी धुन का पक्का।
उ०—सुगी ढीग राग समाज सुरावट, मनरूगी गो काज मरै। मुंगी हैक गीणें नह मारू, पुगीराग अवाज परै।
—चीमनदान घघवाड़ियौ
२ चिड़चिड़े स्वभाव का सिडी स्वभाव का।

मनलाडू—देखो मनमोदक'।

मनलाणौ, मनलावौ–क्रि० स०—१ विचारना, सोचना, मन मे कोई वात लाना।
२ किसी बात या विषय पर ध्यान देना, ध्यान लगाना।
उ०—सीलवती नैं हो एहिज जोगता, धरम पणें व्रत थाय। वलि विसेसे हो जेह वियोगिणी, धरम करइ मनलाय।—वि कु

मनलायोडौ–भू० का० कृ०—१ मन मे कोई वात लाया हुआ, सोचा हुआ, विचारा हुआ २ ध्यान लगाया हुआ, ध्यान दिया हुआ (स्त्री० मनलायोडी)

मनव—देखो 'मन' (रू भे)

मनवछत, मनवछित, मनवछितु—देखो 'मनवांछित, (रू भे)
उ०—१ चीर हीर चांमीर, अग परमळ ओपावें। रस तबोल कपूर, अन्न मनवछत खावें।—जगौ खिड़ियौ
उ०—२ जहां पहूतो आय वास कियौ वैंकूठ मे। रही न ऊणारत काय, मनवछत कारज मिळै।—गज-उद्धार
उ०—३ नाना प्रकार का जु वनसपती फल दिये छै, जैसे कामधेन मनवछित अरथ देइ।—वेलि टी
उ०—४ स्वामि कल्पतरू सारिखो सखी, बीजा बावल बोर। मनवछित दायक मिल्यौ सखी, न करू अवर निहोर रे।—ध व ग्र.
उ०—५ मेल्ही चांवर वड़सगड़, मनवछित भोजन अर चीर।
—वी दे
उ०—६ ऊजेणी नउ जीपी राजा लेई मरवस राज। इण परि बाप तणां हु सारिसु मनवछित सवि काज।—हीराणंद सूरि

मनवछ्या—१ देखो 'मनवाछा' (रू. भे.)
२ देखो 'मनवांछित' (रू भे)
उ०—सो तो मनसब रीझ इनाम मनवछ्या पावै ।—रा रू.

मनव—१ देखो 'मांनव' (रू भे)
उ०—समर मे दसकठ जिण सजै, पह वडा हर चाप दळ पजै ।
मनव ते धन जांण सुध मता, रघुपति जस जेस नित रता ।
—र ज प्र

२ देखो 'मन' (रू भे)

मनवांछतो—देखो 'मनवाछित' (रू भे)

मनवांछा-सं० स्त्री० [स० मन+वांछा] मन की इच्छा, कामना, अभिलाषा ।
रू० भे०—मनवछ्या, मनोवाछा ।

मनवांछित-वि० [स० मन+वांछित] १ मन मे जिसकी चाह की गई हो, इच्छित, अभिष्ट ।
उ०—महाराज ! एक रतन थी इच्छा भोजन, वीजा थी मनवांछित लक्ष्मी, तीजा थी मनवाछित सेना, चोथा रत्न थी सकळ कामना पूरी होय ।—सिंघासण बत्तीसी
२ मन को अच्छा लगने वाला, मन को सतुष्टि प्रदान करने वाला, उपयुक्त ।
रू० भे०—मनवछत, मनबाछित, मनवछत, मनवंछित, मनवछितु, मनवछ्या, मनवांछतो ।

मनवाणौ, मनवावौ–क्रि० स०—१ मानने के लिये प्रेरित करना ।
२ कबूल कराना ।
मनवाणहार, हारौ (हारी), मनवाणियौ—वि० ।
मनवायोड़ौ—भू० का० कृ० ।
मनवाईजणौ, मनवाईजबौ—कर्म वा० ।

मनवायोड़ौ–भू० का० कृ०—१ मानने के लिये प्रेरित किया हुआ
२ कबूल कराया हुआ.
(स्त्री० मनवायोडी)

मनवार, मनवारी–स० स्त्री० [स० मान+हरण] १ भोजन, पान आदि के लिये किया जाने वाला निहोरा, खातरी, आह्वान, निमन्त्रण, (ओफर) ।
उ०—१ चतरु सीरांवण री अरज करी मूढा आगै तासक धरी ।
कवर री मनवारघां हुवै है, हात हौं परसपर अघर खुवै है ।
—र हमीर

उ०—२ कनै न वैठो कोय मनै करदो मनवारा । मनवारा रै माहि, मनैं होमी मनवारा । मिनख न लो मनवार, महा भूडी मनवारा । मार दिया मनवार, मान लिखि लिखि मनवारां । मनवारां करो उण दिन मरद, मिळै धणी मनवार री । मनवार वणासी नांमरद मोज इसी मनवार री ।—ऊ. का

उ०—३ गाळ लुगायां गावही, नर मुख उचत न गाळ । अमल गाळ मनवार कर, का सुभ वचन उगाळ ।—बा दा
२ आदर, सत्कार, खातिर-तवज्जा ।
उ०—१ रावतजी नु आवणो छै सो वेगा कीजै असवारी । भली भांत मनवार करस्या ।—प्रतापसिह म्होकमसिह री बात
उ०—२ सगळी सरवरा रो मठ मार दियो । अवै काई मनवार करै । काठो हार थाक्यो ।—फुलवाडी
३ किसी व्यक्ति को किसी बात या कार्य के लिये सहमत करने के लिये किया जाने वाला प्रयत्न ।
उ०—इसड़खा फेर घर्कै कैवण लागो—अवै तो म्हारै ना दियां पं'ली ई आप ध्यान कर लियो व्हेला के ओ निजरांणो तो म्हैं किणी विध कबूल नी करूला । पछै थोथी मनवारियां मे काई धरियो ।
—फुलवाडी
४ किसी रूठे हुए व्यक्ति या बालक को मनाने के लिये किया जाने वाला प्रयत्न ।
५ खुशामद, चापलूसी ।
६ तृप्ति, तुष्टि ।
रू० भे०—मणुहार, मनहार, मनहारि, मनुवार, मनुहार, मनुहारि, मनुहारी ।

मनवा-स० स्त्री० [सं० मन+वा] १ मन की इच्छा ।
उ०—सळमळिया आयो सहज, तन नींद मीटांण । मन में मनवा ऊपनी, मडण मढांण ।—गजउद्धार
२ मन की तरग, उमग ।

मनवाह—स० पु०—गरुड । (अ मा)

मनवो—देखो 'मन' (अल्पा, रू भे)
उ०—दादू राम कहै सब रहत है, लाहा मूळ सहेत । रांम कहै बिन जात है, मूरख मनवा चेत ।—दादूवांणी

मनसख—एक प्रकार का वस्त्र विशेष ।
उ०—खीरोदक पदासुक चीनासुक खाडकी तनमुख मनसख कमखा चलाखा मलाखा देवदूस्य वधालग कोठालग कलगइ कोकची पचवर्ण यज, ।—व स

मनसज—देखो 'मनसिज' (रू. भे)

मनसता—देखो 'मनुस्यता' (रू भे)

मनसप, मनसप्प, मनसफ—देखो 'मनसब' (रू भे)
उ०—१ मडोवर नर-समद, मीख मनसप वधारै । दे नगारा तोग, तुरी माकति सिंगारै ।—गु रू ब
उ०—२ अवि सिरपाव तुरी गज अविया, खग जमदाढ़ जडित नग खजर । मनसप पचहजारी समपै, परठै कुरब राह दो ऊपर ।
—सू प्र
उ०—३ पहली टीकै वैसता तीन हजारी जात दोय हजार असवार मनसप हुओ, तिण माहे जागीर पाई ।—नैंणसी

उ०—४ दरगाह मनसप माहै लिखाणी नही ।—नैणसी

उ०—५ मोहकमसिंह किल्याण तणा, मेडतियो पगावव । तज मनसफ सुरताण रौ, मिळियौ फौज कमध ।—रा रू

मनसफदार—देखो 'मनसबदार' (रू भे)

उ०—साह कुलीखान, बीजौ अलहदी सु विहांणकुली सारिखा नइ खजरी सारिखा घणा माणस पच-मइया मनसफदार, राजा जगतमणि सारिखा घणा माणस माथि दिया ।—द वि

मनसब–स० पु० [अ० मसब] १ राज्य या शासन (मुगल काल) मे सैना का एक उच्च पद या ओहदा जिसके साथ कुछ विशेषाधिकार होते थे ।

उ०—१ साह अवरग के पास या सम आवै । सो तो मनसब रीझ इताम मनवछया पावै ।—रा रू

उ०—२ स्रीपातसाहजी महाराज नू छाती सू लगाय दिलासा दिवी । सिरपाव मोतिया री माळा दे सदामद रो मनसब दे देस री सीख दिवी ।—वा दा ख्यात

उ०—३ राणा सू बात हुई तद मेवाड ऊपर पाच हजारी जात, पाच हजार असवार रो मनसब दीयो छो, तिण री जागीर मे इतरी ठोड दीवी छी ।—नैणसी

वि० वि०—इस पद के साथ सैना का एक विभाग रहता था । आइने अकबरी के अनुसार बादशाह अकबर ने छोटे बडे ६६ मनसब बनाये थे । सबसे बडा मनसब दश हजारी था, अर्थात् दश हजार सैनिको का सगठन (बाद मे कुछ बढा भी) तथा सबसे छोटे मनसब की सख्या दश थी । बादशाह की मर्जी के अनुसार ये मनसब शाहजादे, अमीर-उमराव, राजे-महाराजे या अच्छे व्यक्तित्व वाले व्यक्तियो को प्रदान किये जाते थे । प्राय पांच हजार से ऊपर के मनसब शाहजादो को दिये जाते थे । मनसबो का जब निर्माण किया गया तब ऊट, हाथी, खच्चर गाडियें आदि की सख्याए निर्धारित करदी गई थी । घोडे व हाथियो और उटो की सख्या उनकी जातियो के अनुसार रहती थी । (देखो आईने अकबरी) उक्त निर्धारित सख्या एव सगठन के अनुसार ही मनसब का वेतन या खर्चा तय किया जाता था । मनसबदार को अपने मनसब मे यथा निर्धारित व्यवस्था रखनी पडती थी । राजाओ या जागीरदारो को मनसब के साथ वेतन या जागीरें दी जाती थी । पाच हजारी मनसब व उनसे नीचे वाले मनसबों की तीन श्रेणिया बनाई गई थी—१ जिन मनसबो मे निर्धारित सख्या के अनुसार व्यवस्था या सैनिक सगठन होता था वे प्रथम श्रेणी के मनसब गिने जाते थे । २ जिन मनसबो मे सवारो की सख्या निर्धारित सख्या से आधी या उससे अधिक होती थी वे द्वितीया श्रेणी के मनसब माने जाते थे । ३ तृतीय श्रेणी मे वे मनसब आते थे जिनके सैनिको की सख्या निर्धारित सख्या से भी कम होती थी । ये मनसब जाती, अर्थात् व्यक्तिगत सवार वाले होते थे । इसके अतिरिक्त अन्य सवार भी होते थे । अतिरिक्त सवारो की सख्या जाति सवारो से कम ही रहती थी । जैसे—हजारी जात=७०० सवार, तीन हजारी जात=२००० इत्यादि ।

२ काम, कर्त्तव्य ।

३ अधिकार, हक ।

४ वृत्ति ।

५ इरादा, इच्छा ।

रू० भे०—मसब, मनसप, मनसप्प, मनसफ ।

मनसबदार–स० पु० [अ० मसब+फा० दार] उच्च पदस्थ अधिकारी ।

उ०—१ एक पहोर झीक वागी । मिया रै साथ मनसबदार हाथिया रा सवार हुता जिकै इता काम आया ।—वा दा ख्यात

उ०—२ वीठळदास नू बावन हजारी मनसबदार किया पातसाहजी साहिजानजी—द दा

रू० भे०—मनसफदार ।

मनसमी, मनसम्मी—देखो 'मनस्विनी' (रू भे) (अ मा)

उ०—१ हयमेळा रै हाथ, धरै नाळेर हमती । मलभ मदा मनसमी, वलभ घर तणी वसती ।—अरजुणजी बारहठ

उ०—२ आपं खग अलल्ल, स्रिया आपं मनसम्मी । आपं द्रव आभरण, जूय आपं वह जम्मी ।—ज खि

मनसा–स० स्त्री० [स०] १ कश्यप ऋषि की कन्या जो सर्पराज अनन्त की बहन व जरत्कारु की पत्नी थी, मनसादेवी ।

वि० वि०—इसके पुत्र का नाम आस्तिक था, शिव कृपा से इसे विष बाधा दूर करने का सामर्थ्य प्राप्त था । सर्पादि विषैली जातिया इसकी उपासना करती थी । इसके उपासको मे इन्द्र का नाम भी आता है । यह सर्पों के विष को सहज मे ही उतार देती थी जिसे स्वय धनवन्तरि भी नही उतार सकते थे ।

२ सिन्धु दैत्य की कन्या ।

३ इरादा, विचार ।

उ०—हरिया भोजन जीमिये, असा आवै स्वाद । इन तन का सारा नही, मनसा इसी मुराद ।—स्रीहरिरामदासजी महाराज

वि०—१ मन से सम्बन्धित, मन से उत्पन्न ।

२ मन को अच्छा लगने वाला, इच्छित ।

उ०—भाखै आय क्षुधत निज भारत । मनसा भोजन दियै महामत ।

—सू. प्र

४ देखो 'मसा' (रू भे)

उ०—मनसा वाचा क्रमणा मांही । नरहर तो विण राखिम नांही—ह र

उ०—२ दादू मनसा वाचा करमणा, साहिब का विस्वास । सेवक सिरजनहार का, करै कौन की आस ।—दादूवाणी

उ०—३ फेर मुलतान रा पीरा री जारत ऊपर मनसा कीधी सो मारग चलियो आवै सो परसनेउ आयो ।

—सूरे खीवै कांधलोत री वात

रू० भे०—मनसादेवी, मनस्या।

अल्पा०—मनसूडी।

मनसादेवी—देखो 'मनसा' (रू० भे०)

उ०—तदा मन माहि इच्छा ऊपनी जु सदिठ उपारजिसु तदा मनसादेवी माया तें ऊपनी।—द वि

मनसापंचमी, मनसापांचम-सं० स्त्री०—आषाढ़ मास के कृष्ण पक्ष की पंचमी। इस दिन मनसादेवी की भी पूजा की जाती है।

मनसाप्र—सं० स्त्री० [सं० मन+दाह] मानसिक कष्ट, मन में होने वाली दाह।

उ०—तठ सैन्य छाडी रण थांम गेडिउ। गोविंद वांमी मनसास फेडिउ। तठ वाउवेगि कुदराउ क्षपउ, धमगित धमोगिति जेम पीधउ।—सालिसूरि

मनसिज—सं० पु० [सं० मनसिज] १ कामदेव, मदन। (ह नां मा)

२ प्रेम।

रू० भे०—मनसज।

मनसूख-वि० [अ० मसूख] १ त्यागा हुआ, छोड़ा हुआ, परित्यक्त।

२ निरस्त या रद्द किया हुआ।

३ टाला हुआ।

मनसूखी-सं० स्त्री० [अ० मसूखी] १ मनसूख होने की अवस्था या भाव।

२ त्यागना, छोड़ना, रद्द करना आदि क्रिया।

मनसूडी—देखो 'मनसा' (अल्पा०, रू भे)

मनसूबो, मनसोबो, मनसूभो, मनसोभो—देखो 'मसूबो' (रू भे)

उ०—१ तद पाछे कईक स्यांणा समझणा आदमी मनसूबो कियो।—ठाकुर जैतसी री वारता

उ०—२ कोई दाव माफ़ कोई भी न आया। रायांमल राजा एक मनसूबा उपाया।—सि य

उ०—३ जोर सू फुफकारतो फुण करने एकण मार्ग ई मनला बिछियाँ नैं स्वावण रो मनसोबो करियो के नेवळो भच देणी उणरी घांटी पकड़ली।—फुलवाडी

उ०—४ पीछै या जैमलजी नू समभार गया तद लड़ाई रो मनसोभो थापियो नै दूजै दिन मालदेजी फोज समझ जैमल ऊपर आया।—द दा

मनस्तमिनी-सं० स्त्री० [सं०] एक महाविद्या।

उ०—आकास गामिनी सौदांमिनी कामगांमिनी कामगांमिनी। भुवनक्षोभिनी कामरूपिणी मनस्तभिनी जलस्तभिनी। आग्नेयी वायवी वरसणी कौमारी ।—व ग

मनस्या—देखो 'मनसा' (रू भे.)

उ०—वेटे रै बाप मोटा मोटा मैं'ल दिवाल्या। इणरो मोटी मनस्या नैं ताकतो थको हो।—दसदोख

मनस्विनी-सं० स्त्री० [सं०] १ पतिव्रता व सती स्त्री। (अ मा.)

२ उदारमन वाली अभिमानिनी स्त्री।

३ दुर्गा का एक नाम।

४ सुवर्ण आदि की कांति।

५ दक्ष प्रजापति की कन्या जो धर्म की पत्नी थी।

६ उत्तानपाद राजा की सुनृता नामक पत्नी से उत्पन्न कन्या।

७ पुरुशील सम्राट चक्षिमान राजा की पत्नी।

रू० भे०—मानसणी, मानसनी।

मनस्वी-वि० [सं० मनस्विन्] १ श्रेष्ठ मन का, उच्च विचार वाला।

२ बुद्धिमान, चतुर, अभिमानी।

३ दृढ़ मन वाला।

मनहरण-सं० पु०—एक वर्णिक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में नगण, सगण, दो जगण, भगण और रगण से ... होता है।

मनहर-सं० पु० [सं० मन+हर] १ [illegible]।

[सं० मन+हर] २ [illegible]।

३ कामदेव। (ह. नां. मा)

४ एक ३१ वर्ण का वर्णिक छन्द।

५ देखो 'मनोहर' (रू भे) (अ मा.)

मनहरण-वि० [सं० मन+हर] (स्त्री० मनहरणी) मन को हरने वाला, चित्ताकर्षक।

उ०—१ सुख सिंगारण मनहरण [illegible] । [illegible] [illegible], [illegible]—बे स

उ०—२ [illegible] मनमोहनी [illegible]। [illegible] मानसी मनहरणी (अनु) कवित।—[illegible]

मनहरणी-सं० स्त्री० [सं० मन+हरणी] पृथ्वी। (अ मा)

मनहर—देखो 'मनोहर' (रू भे)

मनहार, मनहारि—देखो 'मनुहार' (रू भे)

उ०—१ मो मागणा नूं घणी भली तरह सूं राखिया। सुंदरदास जावतो करायो। घणा रू सिरोपाव दिया। छूट तक देव विदा किया। घणी मनहारां हुई।—भाटी सुंदरदास बीकूंपुरी री वारता

उ०—२ तठा उपरांति करि नै राजान मिजमानि पनरह दिन ताईं जान राखि मनहारि करि भांतिभांति अनेक मिजमानी करि भात भोजन रा बणाव कीजै छै।—रा सा स

मनहितू-सं० पु० [सं० मन+हितू] मन का मित्र, दोस्त, प्रेमी। (अ मा)

मनहु, मनहू—देखो 'मानो' (रू भे)

उ०—१ वेष्टित अरुन उरन के अबर। तनु सुभ्र मनहु प्रात रातबर।—बे. स

उ०—२ हैवरा उरड भड़ [illegible] तुरत, पारख कीया दळ मनहु पाय। अथाळ धीहू वाजत तार, फत गेहू उमर मिळे मदकार।

—रामदान लाळस

मनहुस-वि० [अ० मन्हूस] १ अशुभ, बुरा।

२ सुस्त, आलसी, निकम्मा।

३ उदास, मंद, नीरस।

४ बदकिस्मत, अभागा ।

मनां—१ देखो 'मन' (रू भे)

उ०—जेसौ एम बोल्यौ थे मना धीर राखौ । रोटी जीमि पाछै ई मुदा की बात भाखौ ।—शि व

२ देखो 'मानौ' (रू भे)

उ०—मिळै पीठि छत्री मना केक मोहै । सिरै जाणि प्रासाद रै गोख सोहै ।—वं भा•

३ देखो 'मना' (रू भे)

मनाग्यानां-अव्य०—मन और ज्ञान विवेक से ।

उ०—१ बामण मनांग्याना विचार करियौ—इण जीवणा विचै तौ मरणौ सावळ ।— फुलवाडी

उ०—२ चारू वेदा रै जाणकार पिंडतजी री निजर चरू माथै ही वै मनाग्याना हिसाब करण लागा के चरू मे कित्तौ काईं माल व्है सकै ।—फुलवाडी

रू• भे०—मनैंग्यानैं, मनगनैं ।

मना-वि० [अ०] १ जिसके लिये निषेध कर दिया गया हो, निषिद्ध वर्जित ।

उ०—वना विहार तें वहै मना किये नही मनैं । इसा महा अभग्ग नित्त रहनी जनैं ।—ऊ का

२ जिसपर कोई रोक लगा दी गई हो ।

३ जिसको करने मे इनकार हो ।

रू० भे०—मना, मन्नैं, मन्हा, मन्है ।

४ देखो 'मन' (रू भे)

उ०—महाराजधिराज सुग्रीव मनां रा सारा कारज सारै । कीधौ भूप पुरी केकधा, दोयण दूर विदारै ।—र ज प्र

मनाई—देखो 'मनाही' (रू भे)

उ०—वांनै तौ फगत आपरै राज री सीव लाघणी ही । इण सीव मे तौ वानै खावण-पीवण री ई मनाई ही ।—फुलवाडी

मनाणौ, मनाबौ—क्रि० स० [स० मान, मनणौ' क्रि० का प्रे० रू०] (मानयति) १ किसी को मानने के लिये उद्यत करना, तैयार करना, सहमत करना ।

उ०—वारौ मन तौ इक्कीस आंना जागतौ हो के इस्टूखा नैं वै मनाय लेवैला, पण कदास वौ नी मानै तौ पैं'ला चरचा करणी आछी कोनी ।—फुलवाडी

२ किसी रूठे हुए को प्रसन्न करना, राजी करना, सुलह करना, सधि करना ।

उ०—तरै पवार रात पडिया आपरौ साथ खजानौ ले नै रिसाय नै निकळियौ । किण ही मनायौ नही ।—राव रिणमल री बात

३ देवता, पीर आदि की प्रार्थना करना, अभ्यर्थना करना, स्तुति करना ।

उ०—१ देवी मनाई विज्जैदास, चतुरग दळां चढ़ियौ भरणि । कह ताज मेर माझी 'कमौ', गयौ भाजि मेरा सरणि ।—गु रू ब

उ०—२ धुर घण घटा जिही मग छायौ, औरग वळै अजेगढ आयौ । चाढै देग नेग चढ़ाया, मीरां ख्वाजा पूज मनाया ।

—रा. रू

उ०—३ दउरउ सखि पियु पाय परउ तुम, मोहनलाल मनाई । समयसुदर प्रभु प्रेम उदक करि, अतर ताप बुझाई ।—स कु

उ०—४ घणा ई खट-करम करिया, जिग करिया, थांन पूजिया, देवी देवता मनाया, मतर-जाप करिया, पण राणी रै आसा नी मडी ।—फुलवाडी

४ दूसरो के मानने योग्य कार्य करना ।

५ मानने के लिये मजबूर करना ।

उ०—अग कीया प्रगट जिग महा हुती भड, वेढीमणा कुदरथी वीर । आठै गण पाछा अउहटिया, एकण धाय मनाई हीर ।

—महादेव पारवती री वेलि

६ किसी विशेष कार्य का आयोजन करना । किसी विशेष दिन को परम्पराओ और प्रथाओ के अनुसार कार्य क्रम करना ।

उ०—१ उणी दिन सिंझ्या रा चिडी आठ धोळा-धोळा मोत्यां रै उनमान फूठरा ईंडा दिया । रांणी सगळा नगर मे हरख अर उच्छव मनायौ ।—फुलवाडी

उ०—२ लाली रौ दिन है, लाली रौ दिन है, करता म्हारा कान खायग्या । अवै म्हारौ दिन ई भेळौ मनायलौ ।—फुलवाडी

७ स्वागत करना, सत्कार करना ।

उ०—मिळ सुळताण 'अजीत' मनायौ, प्रगट कुरब सब ऊपर पायौ ।

—रा रू

मनाणहार, हारौ (हारी), मनाणियौ—वि० ।

मनायोडौ—भू० का० कृ० ।

मनाईजणौ, मनाईजबौ—कर्म वा० ।

मउनावणौ, मउनावबौ, मनावणौ, मनावबौ—रू० भे० ।

मनायोड़ौ-भू० का० कृ०—१ मानने के लिए उद्यत किया हुआ, तैयार किया हुआ, सहमत किया हुआ २ (रूठे हुए को) प्रसन्न किया हुआ, राजी किया हुआ, सुलह या सधि किया हुआ ३ (देवता आदि को) प्रार्थना किया हुआ, अभ्यर्थना किया हुआ, स्तुति किया हुआ ४ मानने योग्य कार्य किया हुआ ५ मानने के लिये मजबूर किया हुआ ६ किसी विशेष कार्य का आयोजन किया हुआ, किसी विशेष दिन को परम्पराओ और प्रथाओ के अनुसार कायक्रम किया हुआ ७ स्वागत किया हुआ

(स्त्री० मनायोडी)

मनावणौ-स० पु० [स० मानयति] किसी को मनाने की क्रिया या भाव ।

उ०—ऊमादे रावजी रोसणै हुवौ तद बीच राज माहै भला-भला आदमी हुता सू मनावणा नू फिरिया ।—ऊमादे भटियांणी री वात

मनावणौ, मनावबौ—देखो 'मनाणौ, मनाबौ' (रू भे) (उ र)

उ०—१ नमो सिसुपाळ मनावण सा । जरासध जीपण सेन उजक ।
—ह र

उ०—२ नाग देव नर तोहि मनावत, पढि पढि सुयस पार नहिं पावत ।—मे म

उ०—३ विणजारी अर विणजारी अणू तौ हरख मनावता इस्ट्रवां रै गाव पूगा ।—फुलवाडी

उ०—४ पूत्ति भतारिहिं देवी अतिघणु मनावी । पूत्तु समोपीउ सय आपणि नवि आवी ।—सालिभद्र सूरि

रू० भे०—मउनावणौ, मउनाववौ ।

मनावियोडौ—देखो 'मनायोडौ' (रू भे)
(स्त्री० मनावियोडी)

मनावी–स० स्त्री० [स०] मनु की स्त्री का नाम ।

मनाही–स० स्त्री० [अ०] १ रोक, निषेध, वर्जन, मुमानियत ।
२ न करने की आज्ञा ।
रू० भे०—मनाई ।

मनि—१ देखो 'मन' (रू भे)
उ०—१ मन के वसि सब जीव है, मनि वसि करै स कोय । जन हरिदास मन राज है, तहां राज विराजी होय ।—ह पु वा
उ०—२ देवळ कावा मनि डरै, वोडा भड वालोत । सगळा आवै सामहा, मिळिया देखँ मोत ।—गु रू व
२ देखो 'मांनौ' (रू भे)
उ०—अस्व दुरद जेव अनेक, अनि छात ग्रह अनेक । मुभ तांन नोवत सद्द, मनि हरत गध्रव मद्द ।—रा. रू
३ देखो 'मनी' (रू भे)

मनिख—देखो 'मनुस्य' (रू. भे)
उ०—१ नोमी नवै सवारिए अनह न मोहै अग । मन फेरघा तन फिरत है, मनिख जन्म का भग ।—ह पु वा
उ०—२ पचकळा पकडि लीयो । अर ख्याल करता देखै तो रासडी छै । राखडी छोडै तो मनिख हुवो । राति मनिख करै । दिनै सूवटो करै ।—चौबोली

मनियावट—प्रशसा ।
उ०—तू धन्य तू कृत पुण्य मोटो जती, जीवित जन्म प्रमाणोजी । कृश्ण नी मनियावट देखि करी, भद्रक नइ थयो भावो जी ।
—स कु

मनियोडो–भू० का० कृ०—१ राजी हुवा हुआ, खुश हुवा हुआ, प्रसन्न हुवा हुआ २ सम्मान प्राप्त, मान्यता प्राप्त ३ सहमत हुवा हुआ, संतुष्ट हुवा हुआ.
(स्त्री० मनियोडी)

मनियौ—१ देखो 'मिनियौ' (रू भे)
२ देखो 'मन' (अल्पा, रू भे)

मनिसउ [स० मनीषा] विचार ।
उ०—न जाणियइ पाडव कीह नाठा, तेरमउ वरिस गिउ तु घाटा । इगिउ विमासी मनिसउ पयठउ, नरेंद्र दुर्योधन मत्रि बयठउ ।
—सालिसूरि

रू० भे०—मनीसा ।

मनिसि—देखो 'मनीसि' (रू भे)

मनी–स० स्त्री०—१ अहकार, गर्व । (अ मा)
उ०—१ दादू मना मनी सब ले रहे, मनी न मेटी जाउ । मनामनी जब मिट गई, तब ही मिळै खुदाइ ।—दादूवांणी
उ०—२ अपनी मनी के आगै मोरू की मातर न आणै ।—सू प्र
२ वीर्य । ३ मणि ।
रू० भे०—मन, मनि ।

मनीखा—देखो 'मनीसा' (रू भे) (ह ना मा)

मनीखी—देखो 'मनीसि' (रू. भे) (अ मा, ह नां मा)

मनीबैग–स० पु० [अ०] चमडे या प्लास्टिक आदि का बना एक प्रकार का बटुवा अथवा छोटा थैला, जिसमे रुपये पैसे रखे जाते हैं ।

मनीसा–स० स्त्री० [स० मनीषा] १ मानसिक शक्ति, बुद्धि, अक्ल, समझ । २ अभिलाषा, इच्छा, कामना ।
३ प्रतिभा । ४ प्रशंसा, तारीफ ।
५ विचार, खयाल । ६ स्तुति, प्रार्थना ।
रू० भे०—मनखा, मनिसउ, मनीखा ।

मनीसि–वि० [स० मनीषिन्] १ पण्डित, विद्वान्, प्रतिभाशाली ।
उ०—मनीसि गोन मान है न होनहार हांन को । जहा न कोन जांन हैं, कृपा कृपा निधान की ।—ऊ का.
२ बुद्धिमान, चतुर, विवेकी, विचारवान ।
स० पु०—१ ऋषि, मुनि ।
२ बुद्धिमान व्यक्ति ।
रू० भे०—मनिसि ।

मनु—१ देखो 'मांनौ' (रू भे)
उ०—उडी भर सोर वियोरत वाय, लगी मनुं ग्रीखम की रितु लाय । तळत्तळि तोय तत्तै मनु तेल, लगै दुहु ओर निते यह खेल ।
—ला रा.
२ देखो 'मन' (रू. भे)
३ देखो 'मनु' (रू भे)

मनुतर—देखो 'मन्वतर' (रू भे) (ना मा)

मनु–स० पु० [स०] १ ब्रह्मा का पुत्र जो, मानव सृष्टि का प्रवर्तक आदि पुरुष एव समस्त मानव जाति का पिता माना जाता है ।
वि० वि०—यह यज्ञ प्रथा का आरभकर्ता माना जाता है । ऋग्वेद के अनुसार विश्व मे अग्नि प्रज्वलित करने के बाद सात पुरोहितो के साथ इसने ही सर्वप्रथम देवो को हवि समर्पित की थी । मनु ने सभी लोगो के प्रकाश हेतु अग्नि की स्थापना की थी । मनु का यज्ञ वर्तमान यज्ञ का ही प्रारभक है क्यो कि इसके बाद जो भी यज्ञ किये गये उनमे इसके द्वारा दिये गये विधानो को ही आधार मान-

कर देवो को हवि समर्पित की गयी। अन्य विधान भी इसी के अनुसार किये जाते हैं। कई विद्वानो ने इसे तथा 'मनु वैवस्वत' को एक ही माना है, परन्तु इसमे काफी मतभेद है। (च को)

२ चौदह मन्वतरों के अधिपति।

वि० वि०—पुराणानुसार ब्रह्मा के एक दिन और रात को कल्प कहते हैं। इनमे से ब्रह्मा के एक दिन के चौदह भाग माने गये हैं। प्रत्येक भाग को एक मन्वनर कहते हैं। प्रत्येक मन्वन्तर के काल मे सृष्टि का नियमण करने वाला मनु अलग होता है और इसी के नाम से मन्वतर का नाम-करण किया गया है। अत ये चौदह मन्वन्तर एव मनुओ के नाम इस प्रकार हैं—१ स्वायभुव। २ स्वारोचिष। ३ औत्तम। ४ तामस। ५ रैवत। ६ चोक्षुप। ७ वैवस्वत। ८ सावर्णि (अर्कसावर्णि)। ९ दक्षसावर्णि। १० ब्रह्मसावर्णि। ११ धर्मसावर्णि। १२ रूद्रसावर्णि। १३ रौच्य। १४ भौत्य। उपर्युक्त प्रत्येक मन्वन्तर की काल मर्यादा चतुर्युगो के इकहत्तर भ्रमण माने गये हैं। चतुर्युगो की काल मर्यादा ४३,२०,००० मानुषी वर्ष माने गये हैं। इस प्रकार प्रत्येक मन्वतर की काल मर्यादा ४३,२०,०००×७१ मानुषी वर्ष होती है। मनु प्रत्येक का राजा होता है जिसकी सहायतार्थ सप्तर्षि, देवतागण, इन्द्र, अवतार एव मनुपुत्र रहते हैं। (च को)

३ ब्रह्मा।

४ विष्णु। ५ अग्नि। ६ मत्र।

७ एक रुद्र का नाम। ८ यज्ञ। (अ मा)

९ अन्त करण। १० जैनो के जिनदेव।

११ एक राजा, जिसके राज्यकाल मे प्रलय हुआ तथा विष्णु ने मत्स्यावतार लिया था।

१२ 'मनुस्मृति' नामक ग्रन्थ के रचयिता।

१३ एक अर्थशास्त्रकार।

१४ एक अग्नि विशेष जो तप नाम धारण करने वाले पांचजन्य नामक अग्नि का पुत्र था।

१५ एक ऋषि जो कृशाश्व ऋषि का पुत्र था। इसकी माता का नाम धिषणा था।

१६ एक यादव राजा, जो वायु पुराण के अनुसार मधु राजा का पुत्र था।

१७ एक यादव राजा, जो मत्स्य पुराण के अनुसार लोमपाद राजा का पुत्र था। इसके पुत्र का नाम ज्ञाति था।

१८ एक इक्ष्वाकु वशीय राजा, जो शीघ्र राजा का पुत्र था।

१९ धर्मसावर्णि मनु के पुत्रो में से एक।

२० अगिरा कुलोत्पन्न एक गोत्रकार।

२१ चौदह की सख्या। ✲ (डि को)

स० स्त्री० [स० मनु] २२ मनु की स्त्री मनावी।

२३ एक अप्सरा जो कश्यप एव प्राधा की कन्या थी।

२४ वन मेथी।

रू० भे०—मणु, मनू, मनू, मनू।

२५ देखो 'मन' (रू. भे)

उ०—१ गिउ कौरवाधिपति सैन्य समस्त हारी। गिउ पारथ उत्तर सहिउ मनु हरस भारी।—सालिसूरि

उ०—२ पखेरू परदेसिया रे, नवि सरज्यउ नित वास। तनु छइ साथी माहरइ रे, मनु छइ तोरइ पास।—स कु

२६ देखो 'मानो' (रू भे)

मनुओ—देखो 'मन' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—भडारी माडण नइ भगति घणी, साह जावड ने घणा भाव। साह मनुआ ने साह सहजीया, भडारी अमीउ अधिक उछाह रे।

—कवि कुसललाभ

मनुख—देखो 'मनुस्य' (रू भे) (अ मा)

उ०—१ दीवाण तणउ चोज देखता, किसा मनुख वाखाण करइ।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ चालो देखि विचारि सहज घरि साचा सोदा लेहु वे। कर मनुख जन्म हीरा चढघा, कोडी सटै न देहु वें।—ह पु वा

उ०—३ तद कुवर कही म्हे जद हीज लेसा तद परमेस्वर देसी अर जिकै मनुखां धीरजवत है तिकां रा कारज परमेस्वरजी करसी।

—चौवोली

मनुज—स० पु० [स० मनुज] १ मनुष्य, मानव। (अ. मा, ह नां मा)

उ०—परतक्ष ठगोरी पेरियो, मनुज ग्रहै ठग मडळी। पेरिया मत्र सिंधुर सगह, आवै दरगह अगळी।—रा रू

२ मानव जाति।

३ दस विश्व देवो मे से एक।

रू० भे०—मणुअ, मणुय, मणू, मणु, मणूअ, मणूय।

मनुजात—वि० [स०] मनु से उत्पन्न, मनु का।

स० पु०—मनुष्य, मानव।

मनुजाधिप—स० पु० [स० मनुज+अधिपति] राजा, नरेश।

मनुजुग—स० पु० [स० मनु+युग] प्रत्येक मनु का समय, युग, काल, मन्वतर।

मनुवार—देखो 'मनवार' (रू भे)

उ०—अमला खोबां बाजियां, मचै भडा मनुवार। जांगडिया दूहा दियै, सिंधू राग मभार।—बा दा.

मनुस्म्रति—स० स्त्री० [स० मनुस्मृति] मनु द्वारा रचित धर्म शास्त्र का एक प्रसिद्ध ग्रन्थ।

मनुस्य—स० पु० [स० मनुष्य] एक स्थनपायी प्राणी जो अपने मस्तिष्क एव बुद्धि की तीव्रता के कारण जरायुज जाति के समस्त प्राणियो से श्रेष्ठ माना जाता है, नर, आदमी, मानव। (उ र)

उ०—पिण थानैं इसीज दीसै है। आप री आख मे पीळियो हुवै जद मनुस्य पीळा पीळा निजर आवै।—भि द्र

रू० भे०—मणु, मणुअ, मनक, मनख, मनिख, मनुख, मिनक, मिनख, मौनुख ।

अल्पा०—मनख्यो ।

मनुस्यता–स० स्त्री० [स० मनुष्यता] १ मनुष्य होने का भाव या अवस्था, इन्सानियत, मानवता ।

२ मानवी गुण ।

रू० भे०—मनसता ।

मनुस्यधरम–स० पु० [स० मनुष्यधर्मन्] १ मनुष्य का धर्म ।

२ कुबेर ।

रू० भे०– मनखाधरम, मनखाध्रम ।

मनुस्यलोक–स० पु० [स० मनुष्य+लोक] भू-लोक, मृत्यु-लोक ।

मनुस्रेस्ठ–स० पु० [स० मनुश्रेष्ठ] विष्णु ।

मनुहरि—देखो 'मनोहर' (रू भे)

उ०—वाहे सुदरि वहरखा, चासू चूड सवचार । मनुहरि कटि थळ मेखळा, पग झाझर झणकार ।—ढो मा

मनुहार—देखो 'मनवार' (रू भे)

उ०—१ मिळै दहू महिपती, हेत मनुहार हुलासां । चढ़ै मेघ-इवरा, प्रगट उच्छाह प्रकासा ।—सू प्र

उ०—२ हाथी एक वाकेराव, घोडा दोय तुर रा च्यार दिया, घणी घणी मनुहारा करी ।—सू प्र

उ०—३ राजूखा मनुहारा घणी करण लागियो ।

—सूरे खीवे काघळोत री बात

उ०—४ सूरे नू हाथ झाल गादी ऊपर वैठायो । खीवे सू, घणी मनुहार किवी पण उवो गादी ऊपर नही वैठियो ।

—सूरे खीवे काघळोत री बात

उ०—५ मनुहारिया कर कर दूणां दोढा अमल करावै छै ।

—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

उ०—६ अमला री रह-छह मडी छै । भूरो, मेवती, काळो, किसनागर, आगराई, मरोडी, मुहर तोलो, लामै तिण भात रो केसरियो, पोता घोळियो मनुहारा हुवै छै ।—डाढाळा सूर री वात

मनुहारणौ, मनुहारवौ–क्रि० स० [स० मान+हरणम्] १ आतिथ्य सत्कार करना, आदर करना, स्वागत करना ।

उ०—आर पार हुय जाय, सेल तरवार कटारी । गळबांहा, गूथणी जाण मित्रां मनुहारी ।—रा रू

२ किसी का मान छुडाने, क्रोध शान्त करने का प्रयत्न करना ।

३ किसी कार्य या बात के लिये सहमत करना ।

४ किसी वस्तु को लेने, स्वीकार करने के लिये आग्रह करना ।

मनुहारणहार, हारो (हारी), मनुहारणियो—वि० ।

मनुहारिओडो, मनुहारियोडो, मनुहार्योडो—भू० का० कृ० ।

मनुहारीजणौ, मनुहारीजवौ—कर्म वा० ।

मनुहारि—देखो 'मनवार' (रू. भे)

उ०—ऊमर सालह उतारियउ, मन खोटइ मनुहारि । पग मू पग कूटियउ, मुहरी झाली नारि ।—ढो मा

मनुहारियोडो–भू० का० कृ०—१ आतिथ्य सत्कार किया हुआ आदर किया हुआ, स्वागत किया हुआ २ मान छुडाने या क्रोध शान्त करने का प्रयत्न किया हुआ ३ सहमत किया हुआ ४ आग्रह किया हुआ

(स्त्री० मनुहारियोडी)

मनुहारी—देखो 'मनवार' (रू भे)

मनू मनू—१ देखो 'मानो' (रू भे)

उ०—इण विध आभरणाह, मनू मुक्ता मिळी । छक तरुणाई छोळ पयोनिध ज्यू छिळी ।—बां दा

२ देखो मनु' ।

मनेत्र—एक तरह का वस्त्र ।

उ०—जादर पोती पारेवउ पट साउल मेघाडवर मझारायउ रावेटउ कणवीर सोवन्नच्छनेउ मनेत्र नीलउ नेत्र रातकडाहउ वइगणीउ कन्ही गरुडसन्नाह ।—व स

मनै—१ देखो 'मना' (रू भे)

उ०—मै तो हजरत सूं पं'ली अरज की थी तरै वां तीरदाजां नू मनै किया ।—नैणसी

२ देखो 'मांनो' (रू भे)

उ०—गावै करि मगळ चढ़ि चढ़ि गोखै, मनै सूर सिसुपाळ मुख । पदमिणि अनि फूनै परि पदमिणि, रुखमणि कमोदणी रुख ।—वेलि

मनैगनै, मनैग्यानै—देखो 'मनांग्याना' (रू भे)

उ०—१ सु 'तेजमीजी' नै राठौड प्रिथीराज जैतावत रै घणो सुख थो । कितरेक दिने चाट सू पवारा नु भूवणो विचार मनैगनै कीयो ।

—राव मालदे री वात

उ०—२ घगतर, झिलम, जिरह सूयण, जिरै जूता, घोडा री पाखरां काढजै छै, सुवारजै छै । मनैग्यांनै सारी तेवड कर रह्यो छै । सखरा रजपूत तयार कीजै छै ।—कुवरसी सांखला री वारता

मनोकामना–स० स्त्री०—मन की इच्छा, अभिलाषा ।

उ०—ढील न कीजै कवरजी, बोलाया सनमध । मन का चित्या हरि किया, मनोकामना सिध ।—कुंवरसी सांखला री वारता

रू० भे०—मनकामना ।

मनोगत, मनोगति–वि०—मन मे आया हुवा, दिली ।

उ०—म्हारी कही मनोगत वात ए । तदि समझ्यो स्वामी नाथ ए ।

—जयवाणी

स० स्त्री०—मन की गति, इच्छा ।

मनोगिन—देखो 'मनोग्य' (रू भे) (ह नां मा)

मनोगुप्ति—देखो 'मनगुप्ति' (रू भे)

उ०—**मनोगुप्ति** वचनगुप्ति कायगुप्ति प्रधान ।—व स.

मनोग्य-वि० [स० मनोज्ञ] सुन्दर, मनोहर।

उ०—मम इस्ट मिस्ट आदर अभिस्ट। महिमां **मनोग्य** जप जपन जोग्य।—ऊ का

रू० भे०—मनोगिन।

मनोग्यता-स० स्त्री० [स० मनोज्ञता] सुन्दरता, मनोहरता।

मनोज-सं० पु० [स० मनस्+ज या जन्मन्] कामदेव, मदन।
(अ मा, ह नां मा)

उ०—१ लालचिया सतोस ज्यू, मन हीजडा **मनोज**। ऊमर में नह ऊपजे, इम मावडिया मोज।—वा दा.

उ०—२ रूप रो **मनोज** राना महाराजा 'रैण'।
—हुकमीचद खिडियो

वि०—मन से उत्पन्न।

मनोजधेनु-स० स्त्री०—कामधेनु।

उ०—गिरवाणा सहाई **मनोजधेनु** ग्यान गोभा। नाराज वरीस सोभा इसी प्रथीनाथ।—र रू

मनोजव-स० पु० [स०] १ छठे मन्वन्तर (चाक्षुष) के इन्द्र का नाम।

२ रुद्र के एक पुत्र का नाम।

३ अनिल नामक वसु का जेष्ठ पुत्र इसकी माता का नाम शिवा था।

४ धम सावर्णि मन्वन्तर का एक देव।

५ एक सोमवशीय राजा, जिसका उद्धार मगल तीर्थ नामक तीर्थ स्थान में स्नान करने के कारण हुआ था।

६ एक प्राचीन तीर्थ।

वि०—१ मन के समान वेगवान।

२ कोई बात समझने व करने में फुर्तिला।

३ बाप का, पैतृक।

४ पिता तुल्य, बडो के समान।

रू० भे०—मनोजवी।

मनोजवा-स०स्त्री० [स०] १ अग्नि की एक जिव्हा। (मार्कण्डेय पुराण)

२ क्रौंच द्वीप की एक नदी।

३ स्कद की एक अनुचरी मातका।

मनोजवी—देखो 'मनोजव' (रू भे) (वि०)

मनोती—देखो 'मनौती' (रू भे,)

उ०—कुणवी गुजरात मे हाड माडै **मनोती** करै करसण करै सालवी पणो करै, छेसाई पणो करै।—वां दा ख्यात

मनोद्रव-स० पु० [स० मनस्=मन+द्रूह=पुत्र] कामदेव, मदन।
(ह ना मा)

मनोध्यांन-स० पु० [स० मनोध्यान] सम्पूर्ण जाति का एक राग।
(सगीत)

मनोनिग्रह-स० पु० [स० मन+निग्रह] अपने मन को विषय वासना या दुराचारो की ओर प्रवृत्त होने से रोकने की क्रिया या भाव, सयम।

रू० भे०—मननिग्रह।

मनोनीत-वि० [स०] १ मन के अनुकूल।

२ पसद। ३ चुना हुआ।

४ नियुक्त या पदासीन किया हुआ।

मनोभव-स० पु० [स० मनोभव, मनोभू] १ कामदेव, मदन। (अ मा.)

उ०—१ वेल कियो विसतार, **मनोभव** बागवां। इखै नाभि निवाण, उपाई अनुभवा।—वा दा

उ०—२ **मनोभव** लगाडै वाण मोहण मदन। सहस वाता सजन आण सदनी।—वां दा

२ चन्द्रमा। ३ प्रेम, स्नेह।

४ कामवृत्ति।

रू० भे०—मनभू।

मनोभाव-स० पु० [स० मन+भाव] मन की इच्छा, कल्पना।

रू० भे०—मनभाव।

मनोभू—देखो 'मनोभव' (रू भे)

मनोन्य—एक फल विशेष।

उ०—सुवरण्ण स्थालि, मोटइ झमालि, मावी ऊजमालि, परीसइं फलहुलि। किसी किसी ते फलहुलि, अखोड खड **मनोन्य** वाइमी, वारु चारउली' ।—व स

मनोमथन-स० पु० [सं० मनस्+मथन] कामदेव।

मनोमय-वि० [स०] १ मन से युक्त, मानसिक।

२ आध्यात्मिक।

मनोमयकोस-स० पु० [स० मनोमयकोश] वेदान्त के अनुसार पाच कोशो मे तीसरा कोश जिसमे मन, अहकार व कर्मेन्द्रिया रहती हैं।

मनोयोग-स० पु० [स० मनस्+योग] मन की एकाग्रता।

मनोरजक-वि० [स० मनस्+रजक] १ मन का रज मिटाने वाला, मन को प्रसन्न करने वाला, दिल बहलाने वाला।

२ हास्यास्पद।

मनोरजण, मनोरजन-स० पु० [स० मनस्+रञ्जनम्] १ दिल बहलाव, मनो-विनोद।

२ ऐसा कार्य या वात जिससे मन को प्रसन्नता हो, मन का रंज मिटाने वाली वात या कार्य।

रू० भे०—मनरजण, मनरजन।

मनोरथ-स० पु० [स०] १ अभिलाषा, इच्छा, कामना।

उ०—१ जिण थी दो ही वार लडाई मे पराजय पाइ भागै प्रसाद रै अधीन भाग हीण जवना रै अधिराज नासरुद्दीना अपरनाम महमूद तीजी वार साम्है चलाइ रण रो रस चाखण रो **मनोरथ** भी न जाणियो।—व भा

उ०—२ राजा कागळ लिखै कुग्रर तेडै निय कन्हळि। मिळण मनोरथ करै, साह जाहगीर तणी छळि।—गु रू॰ ब

उ०—३ माता हे मनरा मनोरथ पूरण म्हारा कीजो हे। जग जननी हे माय।—मी. रां

२ सकल्प।

उ०—१ सारा गोठ भेळा हूं मनोरथ बाध लीना। थांनकी मारोट रायमल का व्याव दीनां।—शि व

उ०—२ भासण उपमा ग्रोर मनोरथ भेळिया। मझ ग्राटी मखतूल क मोती मेळिया।—बा दा.

रू० भे०—मणरथ, मणोरथ, मणोरह, मणोरहु, मनरत्थ, मनरथ।

मनोरथ-द्वादसी–स० स्त्री० यौ० [स०] १ चैत्र शुक्ला द्वादशी की तिथि।

२ उक्त तिथि को किया जाने वाला व्रत।

मनोरम–वि० [स० मनस्+रम] (स्त्री० मनोरमा) जिसमे मन रम जाये, मनोज्ञ, सुन्दर। (ह नां मा)

मनोरमा–स० स्त्री० [स० मनस्+रमा] १ सुन्दर स्त्री।

२ सात सरस्वतियो मे से चौथी।

३ गौतम बुद्ध की एक शक्ति।

४ एक ग्रप्सरा जो कश्यप एव प्राधा की कन्याग्रो मे से एक थी।

५ ध्रुवसधि राजा की पत्नी, जिसके पुत्र का नाम सुदशन था।

६ विद्याराधिप इंदीवराक्ष नामक गधर्व की कन्या।

७ महाकवि चन्द्रशेखर के ग्रनुसार ग्रार्या के ५७ भेदो मे से एक जिसमे १२ गुरु ग्रोर २२ लघु वर्ण होते हैं।

८ एक छद विशेष जिसके प्रत्येक चरण मे दस दस वर्ण होते हैं तथा प्रत्येक चरण का पहला, दूसरा, तीसरा, सातवा ग्रोर नौवां वर्ण लघु होता है।

९ दस ग्रक्षरो का एक वर्णिक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे नगण, रगण, जगण ग्रोर ग्रत मे गुरु होता है।

१० केशव के मतानुसार चौदह ग्रक्षरों का एक वर्णिक छद जिसके प्रत्येक चरण मे चार सगण ग्रोर ग्रत मे दो लघु होते हैं।

११ केशव के ग्रनुसार दोधक छंद का एक नाम जिसके प्रत्येक चरण मे ४ भगण ग्रोर दो गुरु होते हैं।

१२ सूदन के ग्रनुसार दस ग्रक्षरो का एक वर्णिक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे तीन तगण ग्रोर एक गुरु होता है।

१३ गोरोचन।

मनोराज, मनोराज्य–स० पु० [स० मनोराज्य] मानसिक कल्पना।

मनोरी–स० स्त्री०—मन की भावना।

उ०—बादसाह सलामत इतरी कहिता मनोरी फुरी जो दस हजार सिपाही म्हारी किडी मे घर पण म्हारी सबळो बादसाही लयस्या।
—जैतसी री वारता

रू० भे०—मनोहरी।

मनोवरी—देखो 'मनोहर' (रू. भे)

उ०—कोई किसी एक पाबू री सूरत मनोवरी।
—पाबूजी रो पवाडो

मनोवांछा—देखो 'मनवाछा' (रू भे)

मनोविकार–स० पु० [स० मनस्+विकार] १ योग के ग्रनुसार चित्त की वृत्ति या ग्रवस्था।

२ मन की वह ग्रवस्था जब उसमे किसी प्रकार के सुखद या दुखद भाव उत्पन्न होते हो।

मनोविग्यांन–स० पु० [मनोविज्ञान] वह विज्ञान-शास्त्र, जिसमें मनुष्य के मन के भावो या ग्रवस्याग्रो का विवेचन किया गया है।

मनोवेग–स० पु० [स०] मन का ग्रावेग, जोश।

मनोव्रत्ति–स० स्त्री० [स० मनस्+वृत्ति] वह मानसिक शक्ति जिसका प्रभाव मनुष्य के ग्राचरण पर पडता है।

मनोहर–स० पु० [स०] १ परमेश्वर, ईश्वर। (नां मा, ह नां मा)

२ श्रीकृष्ण। (ग्र मा)

३ एक प्रकार का सकर राग। (सगीत)

४ छप्पय छन्द का ६० वा भेद जिसमे ११ गुरु ग्रोर १३० लघु मे एक सौ इकतालीस वर्ण या १५२ मात्राए होती हैं।

५ छप्पय छन्द का एक भेद जिसमे १३ गुरु, १२६ लघु से १३९ वर्ण ग्रोर १५२ मात्राए होती हैं।

वि० वि०—मतान्तर मे इसमे १३ गुरु, १२२ लघु से १३५ वर्ण ग्रोर १४८ मात्राए भी मानी जाती हैं।

वि०—१ मन को हरण करने वाला, चित्ताकर्षण करने वाला, मनोज्ञ, सुन्दर। (ह ना मा)

उ०—१ दुति वही मरू रूप मे डमर। मदन फौज नीसांण मनोहर।
—सू प्र

उ०—२ सखी ग्रमीणो साहिबो, मदन मनोहर गात। महाकाळ मूरत वणी, करण गयदा घात।—वां दा

उ०—३ महि नयर घर प्रति दीप मडित माळ जोत मनोहर। किर व्योम नाखत्र परखि कमळा, सोभ धारत सुदर।—रा रू

२ देखो 'मनहर' (रू भे)

रू० भे०—मणहर, मणहारी, मणुग्र, मणोरह, मणोरहु, मणोहर, मणोहार, मनहरू, मनुहरि, मनोवरी, मनोहारू।

मनोहरता, मनोहरताई–स० स्त्री०—सुन्दरता।

मनोहरा–स० स्त्री०—वह गाथा छद जिसमे ग्रनुस्वारो की बाहुल्यता हो। (र ज प्र)

मनोहरी—देखो 'मनोरी' (रू भे)

उ०—पीछे फौज एक मजल सू पाछी बुलाइ। पातसाहजी री मनोहरी स्रीकरनीजी फोर दीवी।—द दा

मनोहारू—देखो 'मनोहर' (रू भे)

उ०—इहां एक सुयक्खव वारू, त्रिण्ह वग वली मनोहारू हो। उद्देसा त्रिण्ह सनूरा, सख्यात सहस पद पूरा हो।—वि कु

मनौ—देखो 'मांनौ' (रू भे)
उ०—तळोटा खुरा थभ पावां तराजै, सको पिंड प्रासाद भाधार साजै। जड़ै वज्र नाळा झड़ै फूल ज्वाळा, मनौ मेघ सद्योत खद्योत माळा।—व भा

मनोती—स० स्त्री०—१ किसी देवी-देवता की विशेष रूप से पूजा करने के लिये किया जाने वाला सकल्प, मानता, मन्नत।
२ असतुष्ट को सतुष्ट करना, मनुहार।
रू० भे०—मनोती।

मन्न—देखो 'मन' (रू भे)
उ०—१ अहर रग रत्तउ हुवइ, मुख काजळ मसि अन्न। जांण्यउ गुंजाहळ अछइ, तेरा न ढूकउ मन्न।—अज्ञात
उ०—२ काटळ आवध मूझ कर, मन मदाइरा अन्न। आवध रावै ऊजला, मैला ज्यांरा मन्न।—वा दा
उ०—३ अकबर अगम अगाध गह, ते रहिया अजतन्न। वाचै त्युंही विचारियौ, कमधै साचै मन्न।—रा रू

मन्नछा—देखो 'मसा' (रू भे)
उ० —देवी मन्नछा माइया जग माता, देवी ब्रह्म गोवीद सभु विघाता।—देवि

मन्नणौ, मन्नवौ—देखो 'मनणौ, मनवौ' (रू भे)
उ०—खाळिक खूरम न मनही, नह मन्नै पीरांह। ऊभौ खांडै ऊमियौ, आडौ हम्मीरांह।—गु रू ब
मन्नणहार, हारौ (हारी), मन्नणियौ—वि०।
मन्निओड़ो, मन्नियोडौ, मन्योडौ—भू० का० कृ०।
मन्नीजणौ, मन्नीजवौ—भाव वा०।

मन्नमोट—देखो 'मनमोट' (रू भे)
उ०—नरसिंघदास सूरत समूह, जगमाल सुत्त गोडवै जूह। 'कांनो' भिडत चालतो कोट, 'माधव्व' समोभ्रम मन्नमोट।—गु रू ब

मन्नि—देखो 'मन' (रू भे)
उ०—१ ऐ थोडु कहिता भलू, मारुत जाणै मन्नि। माघवनइ। त्याविसि नही, तुझ नही राखु तन्नि।—मा कां प्र
उ०—२ माटी परणै घरणै मन्नि, विकसीया वीर तन्नि। साम नू निरोहा सार, जु आरण करै जुहार।—गु रू ब

मन्नियोडौ—देखो 'मनियोडौ' (रू भे)
(स्त्री० मन्नियोडी)

मन्मथ—देखो 'मनमथ' (रू भे)
उ०—हेमागिरि थी हाथिणी, आवइ पवन पराणि। ऊभाडी ऊपरि चढ़ी, मारइ मन्मथ वांण।—मा का प्र

मन्मथलेख—सं० पु०—प्रेम पत्र।

मन्मथी—वि० [स० मन्मथिन्] कामुक, कामी।

मन्यु, मन्यू—स० पु०० [स० मन्यु] १ यज्ञ, हवन। (ह ना मा)
२ क्रोध, गुस्सा। (अ मा)
३ अभिमान, गर्व।
४ दुख, शोक।
५ दीनता। ६ कर्म। ७ स्तोत्र।
८ अग्नि। ९ शिव, महादेव।
१० वितथ राजा के पुत्र का नाम।

मन्वतर—स० पु० [स० मनु+अन्तर] १ इकहत्तर, चतुर्युगी काल या समय जो ४३,२०,०००×७१ मानवी वर्ष का होता है। ब्रह्मा के एक दिन का चौदहवां भाग।
वि० वि०—देखो 'मनु' (२)
२ पुराणानुसार प्रत्येक मनु का शासन काल या अवधि।
३ चौबीस अवतारो मे से एक।
४ अकाल, दुर्भिक्ष।
रू० भे०—मनतर।

मन्हा—देखो 'मना' (रू भे)
उ०—१ उहां इण नूं मारणैं नू छळ कियौ छै तिण सू थां वुलाय मन्हा करौ, उठै गयौ तो मारियौ जासी।—कुंवरसी सांखलै री वारता
उ०—२ तद गळ वांखडी घाल दारू री दाव मार्फ से दियौ। दळ-करण नू रजपूता निराठ मन्हा कियौ।
—सुदरदास भाटी बीकूपुरी री वारता

मन्है—सर्व०—१ मुझको।
उ०—१ ताहरा देवीदास अरज कीवी—जो आप पलक दरियाव कहावौ छौ तौ म्हनै पलक दरियाव रौ तमासौ दिखावौ।
—पलक दरियाव री वात
उ०—२ झूठ तो मता जाणौ और छोढ़ी मन्है वुलायो थो सो आ फुरमायो छै—झूठ तो मता जांणौ, पण दूजा रो काम नही, यू अरज करै छै।—पलक दरियाव री वात
२ देखो 'मना' (रू भे)
उ०—१ मेलि परवांन मान महाराज कीधा मन्है लोपीयौ हुकम करतूत लहसी। हुइ सहुको कहै हाकमै हाकमी, रैत वर वैत दुस्ट दूर करसी।—घ व ग्र
उ०—२ तद विट्ठळदास मन्है करणै लाग्यो तौ बादसाह सलामत फरमाई मन्है मता करो सच काहेना है।
—गौड गोपाळदास री वारता

मपणौ, मपवौ—क्रि० अ०—मापा जाना, परिमाण निकाला जाना।
मपणहार, हारौ (हारी), मपणियौ—वि०।
मपिओडौ, मपियोडौ, मप्योडौ—भू० का० कृ०।
मपीजणौ, मपीजवौ—भाव वा०।
मापणौ, मापवौ—सक रू०।

मपधुनि—सं० स्त्री०—ढोल की आवाज।
उ०—मपधुनि मपधुनि झणझणण वीण, निनि खुणि ऋंखणि आउज लीण।—हीराणद सूरि

मपारी-स० स्त्री०—एक जाति विशेष।
उ०—सोनी पारखि जवरीहृ गांधी दोसी नेस्ती कणसरा मपारी मणीयार सोनार कुंभार ठठार लोहार तलाल पटोलीया पटसूत्रीया मोली तबोली ।—व स

मपियोड़ो-भू० का० कृ०—मपा हुआ, परिमाण निकला हुआ।
(स्त्री० मपियोड़ी)

मपुरांण—देखो 'महापुराण' (रू. भे)

मफरा-स० स्त्री०—नशीली वस्तु।
उ०—मगरपचीसी माणतो करै कांम कल्लोली। गाहड मे घुमै घणु, गिलि मफरा गोली।—ध व ग्र

मफो—देखो 'माफो' (रू भे)
उ०—मळ हळ गाजा गज भिडज, मफा इका सुखपाळ। घोड़-बहल खासा घणा, दरगह मुहर दुभाळ।—मू प्र

ममकार—देखो 'मकार' (रू भे)
उ०—आदि एक ररकार कु, सिवरयां सिध न होय। जन हरिया ममकार मिळ, यु पची पर होय।—श्रीहरिरामदासजी महाराज

मम-सर्व० [स०] मेरा, मेरे, मेरी।
उ०—१ दुरवेस विकट करिवा दुरस, पुरस रूप जोधापुरो। मम हुकम लाज राखण मुदै, महाराज मडोवरो।—रा रू
उ०—२ कुळ न्यात हीण फीटा कुटळ, जिकै विगाड़ू जात रा। मम सेण वात सुणज्यो मती, रहण न दीज्यो रात रा।—ऊ का
उ०—३ क्रम चोयो भारत कवर, नटता रुकियो नीठि। मुणियो भारत नांम मम, दीधो किण गुण दीठि।—व भा
अव्य० [स० म+म] निषेध सूचक शब्द, नहीं, मत।
उ०—१ दोम तू मम देयमि वाई। ताहरउ भस्म होसि भाई।
—सालिसूरि
उ०—२ तास घटक मेले दसरथ तणा, लोपि समद लीधो गढ लंक। मम करि ढील म करि मन माया। समरि समरि स्रीरांम निकक।—ह ना मा
रू० भे०—मम्म।

ममकार—देखो 'मकार' (रू भे)
उ०—जन हरिया ममकार की, मुख सिवरन की वांनि। रोम रोम ररकार की, जोग न मायो जानि।—स्री हरिरांमदासजी महाराज

ममत—देखो 'ममत्व' (रू भे)
उ०—अर भीवराजजी रै वजीर सूं वडो ममत वधो ही सू उण नूं कंय वीरमदेजी नू पातसाहजी रै पावा लगाया।—द दा

ममतमस-स० पु०—ममता का मेल। (जैन)

ममता-स० स्त्री० [स०] १ अपना होने का भाव, अपनत्व, स्नेह, प्रेम, वात्सल्य।
उ०—१ नू ममता री मूरती है। तू जिवड़ा री हे जोत।—गी रा
उ०—२ धर्म हरम सू कागली टंडा देवती। घणी ममता सू ईंडा नै सेवती।—फुलवाडी
२ कृपा, दया, सहृदयता।
उ०—१ थोडी घणी ममता विचारो अर आनै मारण रो हुकम मत दिरावो फगत देस निकाळो देयनै ई मोटी विचारो।—फुलवाडी
उ०—२ जे चिड़ा नै आसरो देय देती तो राजा अवस मन मे म्हारी सरा करतो के राणी ममता वाळी है।—फुलवाडी
३ लोभ, लालच।
उ०—१ आतम ध्यान विचारतो जी, मूकी ममता देह। जड चेतन भिन्न भिन्न करेजी, लागो सिव सू नेह।—जयवांणी
उ०—२ क्रसन राखि हिव हू तू करतो, धरणीधर ममता मन धरतो। तूझ विखै मत दै धू-तारण, कूप समार काढ सब-कारण।
—ह र
४ अहकार, गर्व।
उ०—१ सेवतो पाप अठार, ममता मोह विकार। मरयादा लोपतो ए, अधरम मे ओपतो ए।—जयवाणी
५ उचथ्य आगिरस नामक ऋषि की पत्नी एव दीर्घ मामतेय ऋषि की माता।
रू० भे०—ममता।

ममत्व-स० पु० [स०] १ ममता, प्रेम, स्नेह, वात्सल्य।
२ दया, कृपा।
३ लोभ, लालच।
४ अहकार, गर्व।
रू० भे०—ममत।

ममद—देखो 'मैंमद' (रू भे)

ममरणो, ममरबो-क्रि० स०—चबाना।
उ०—ललित गरभेसर, द्रव्य अविनस्वर सालिभद्रावतार मदन मुद्रावतार, अस्नान तबोल ममरइ, पच प्रकारि विसय सुख अ माणइ उगिउ आथमिउ काइ न जाणइ जाइ।—व स

ममरियोड़ो-भू० का० कृ०—चबाया हुआ
(स्त्री० ममरियोड़ी)

ममाई-स० स्त्री०—१ कस्तूरी।
उ०—कहा होत है रूप ते, गुण ते होत निधान। ऊजळ सोमल ते मरत है, रखत ममाई प्राण।—जैतदान बारहठ
रू० भे०—मम्माई।

ममारक, ममारख, ममारखी-स० स्त्री० [फा० मुबारक] १ शुभ-कामना, मगल-कामना, वधाई।
उ०—१ विभाडै जादवा कोट घर कीध वस, सवळ अद खाटिया मर्वा मारू। तप वळी अभनमा, 'माल' 'गगेव' तो, ममारक पोक-रण राव मारू।—महाराजा जसवतसिह रो गीत
उ०—२ मिळण मीर उमराव, सब राजा मध आवै। कोड ममारख कहै उवरि, वड सुख उपजावै।—रा रू

रू० भे०—मामारखी ।

ममीरो–स० पु० [अ० ममीरान] हलदी की जाति के एक पौधे की जड जिसकी कई जातिया होती हैं ।

ममु–स० पु०—'म' वर्ण ।

उ०—ररो ममु जुगम ऐं अक बाकी रह्या, प्रसिध तिण सू करै लिया प्यारा । जेण परभाव निध सिधादिक मो जुमैं, सुर असुर नाग नर नमै सारा ।—र रू

ममे–सं० स्त्री०—अह की भावना, मैं ।

उ०—लीला तउ महेस्वर तणी, स्रस्टि ब्रह्मा तणी, प्रतिग्या स्रीराम तणी, पवनवेग कला हनूमत तणी, ममे दुरयोधन तणी, सूरय तणउ तेज ।—व स

ममो–स० पु०—'म' अक्षर ।

उ०—पोथी पुस्तग टीपणो, विद्या दूरि वहाय । हरिया सब ही छाडि कै, ररै ममै चित लाय ।—स्री हरिरामदासजी महाराज

ममोई–स० स्त्री०—बम्बई नगर ।

उ०—ममोई दरवाजो, वरियारो दरवाजो इत्यादिक चवदै दरवाजा सूरत रा है ।—बां. दा ख्यात

ममोलियो—देखो 'ममोलो' (अल्पा , रू भे.)

उ०—पछिया रो मीठो बोलणो, मीडका रो गावणो, कुदरत रो लीलो वणाव, ममोलिया रो सुरगो रग—कोई इण विरखा ने समझ सू देखलै तो वो सपना मे ई सुरग रै आणद री वात नी करै ।—फुलवाडी

ममोलो–स० पु०—एक बरसाती कीडा जिसको वीरवधूटी कहते हैं ।

उ०—ग्रीघ चात्रिग वीरघटा दादुर बोलै । मुगळ लाल ममोला सा निजर आवै ।—वचनिका

रू० भे०—ममोलो, मामोलो ।

अल्पा०—ममोलियो, ममोल्यो, मामलियो, मामूल्यो, मामोलियो, मामोल्यो ।

ममोल्यो—देखो 'ममोलो' (अल्पा , रू भे)

उ०—नाभि जाणै गुलाब रो फूल । पासा जाणै माखण री लोथ । नितब कटोरा सा । नख लाल ममोल्या हीरा दमकमता । नवी राणी तो जाणै आभै री बीज—फुलवाडी

ममोलो—देखो 'ममोलो' (रू भे)

उ०—मेहको ममोलो, बादळा की बीज, होली की झाळ, सामण की तीज ।—मयाराम दरजी री बात

मम्म—१ देखो मरम' (रू भे)

२ देखो 'मम' (रू भे)

मम्मांणी–वि०—मकराने की, मकराने सम्बन्धी ।

उ०—मम्माणी पाखाण नी, प्रतिमा सुदर रूपो जी । स्रीसेत्रुज नउ सघ करि, थापी सकल सरूपो जी ।—स. कु

मम्माई—देखो 'ममाई' (रू भे)

मयक–स० पु० [स० मृग+अङ्क] १ चन्द्रमा ।

(अ. मा , ना मा , ना डिं को , ह ना मा)

उ०—१ छटा देख अपछरा छिपै, सची छिपै कर सग । छतीया अन्नारा छिपै, मुख सों छिपै मयक ।—पना

उ०—२ पडगरियो सोहड खेड पत्त, निस मयक जाण माळा नखत्त । घाघरढ घ्रूस घण थाट घेर, मिळिया सुभट्ट मेखळा मेर ।

—गु रू व

उ०—३ साखा वियो मयक पह सुभ्रम, मन अण वछत तूझ मण । कलम कुराण पाण तज कुभा, वांचण लागा हर वयण ।

—महाराणा कुभा रो गीत

२ पवन । ३ कपूर ।

रू० भे०—मयकर, मयख ।

मयकर—देखो मयक' (रू भे)

उ०—तिण नाद थकत हुई रथ मयकर, घणू सुसव जोवता घणी । काढा कोर वडइ कारीगर, चाहड चरण जडाव तणी ।

—महादेव पारवती री वेलि

मयख—देखो 'महिस' (रू भे)

उ०—हीगोळ राय अठ दस हथी, अरूखै मयख भुवनेसरी । कवि जोड पांण 'ईसर' कहै, उदो उदो आसापुरी ।—देवि.

२ देखो मयक' (रू भे)

मयग—देखो 'मतग' (रू भे)

मयगळ—देखो 'मदकळ' (रू भे.)

उ०—मद झरता इतरा मयगळ, पाएलै चालस्यइ पलह ।

—महादेव पारवती री वेलि

मयद–स० पु० [स० मृगेन्द्र] (स्त्री० मयदण, मयदणी) १ सिंह ।

(अ मा , नां डिं को)

उ०—१ झालै क्यु साहिब झाला ऐ, मयद ऊठियो त्रिभै मणो । मूह झालियो न जाऐ मिळऐ । त्रिणं घणं ही मगळ तणो ।

—नैणसी

उ०—२ उवक्कत घाव रगत्र उलाळ, काळी भर पत्र पिवत कराळ । हिचै जुध 'लाल' तणो हरियद, मिळै गज घूमर जांणि मयद ।—सू प्र

उ०—३ मडळ मांह वमाय अग, थयो कळकी चद । पायो सीह मयद पद, हण हायळ अग व्र द ।—बां दा

उ०—४ मारू घूघटि दिट्ठ मइ, एता सहित पुणिग । कीर, भमर, कोकिल, कमळ, चद मयद गयद ।—ढो मा.

[मद+इन्द्र] २ हाथी, गज ।

उ०—झुकती कुळ दावानळ झाळै, च्यार हजार पायदळ चालै । फवि अगि सिलह जोम ऊफणिया, वीस मयद आरोहक वणिया ।

—सू प्र

३ ऊट । (डिं को)

उ०—हुम्रो नगारौ दूसरौ, भेर भणकै सद्द । सब आतुर जण दळ सकळ, करण मयदा लद्द ।—रा रू

[स०] ४ राम की सेना का एक वानर ।

उ०—जांमवत क्रुध झळ जळहळी, सुखेण मयदह सतबळी ।
—सू प्र

५ चन्द्रमा ।

६ काव्य छन्द का एक भेद विशेष ।

७ प्रथम लघु फिर एक दीर्घ फिर एक लघु वर्ण का छद विशेष ।

८ डिंगल गीतों (छदों) मे सिंहचले गीत का एक भेद ।

रू० भे०—मइद, मयदी ।

मयदगति—स० स्त्री० [स० मृगेन्द्र+गति] सिंह की चाल ।

उ०—'सूराउत' डावि छतीस सार । मलपियौ मयदगति गयद मार ।
—गु रू व.

मयदी—देखो 'मयद' (रू भे)

उ०—मयदी वर्ण 'कांन्ह' रै थाप मारी, तरी साह तोफांन रै माह तारी ।—मे म.

मयवर—देखो 'मैंवर' (रू भे.)

उ०—मयवर नाम ले कहू नही मुनासब । लियाकत स्याम ध्रम रखे लीधौ ।—जुगतीदान देथा

मयमत—देखो मैंमत' (रू भे.)

मयमिरा—स० स्त्री०—मदिरा, शराव । (ग्र मा)

मय—स० पु० [स०] १ प्रसिद्ध शिल्पी दानव जिमने पाडवो का सभा भवन वनाया था ।

२ ऊट । ३ घोडा । ४ हाथी ।

उ०—सूडा-डड प्रचडो, मूसा आरुढ मेक मय दतो ।—गु. रू व

५ खच्चर । ६ आराम, सुख ।

७ तद्धित का एक प्रत्यय जो प्राचुर्य अर्थ मे शब्दो के आगे लगाया जाता है, युक्त ।

उ०—१ भाळ विसाल सिंदूर सुसोभित, हाल मराळ हसत्ती । रूप अनूप तेज मय राजत, मिळत पलक मदमत्ती ।—मे म.

उ०—२ कोई कुकवी जीभ सु, बाछै रस मय वाण । कचन बांछै काढणी, सो लोहारी खांण ।—बां दा

रू० भे०—मइ मइ, मई, मयँ, मैं ।

८ एक देश का नाम । (प्राचीन)

९ आधार या आश्रय रूप । ज्यू०—अन्नमय प्राणमय ।

१० देखो 'मद' (रू भे)

११ देखो 'मैं' (रू भे)

मयउ—एक प्रकार का कपडा विशेष ।

उ०—वीणउमीउ चीणउसीउ मलउमीउ आउचीयउ मूगनउ मयउ मगलिक मेदियउ सीलउर सिंहलउरउ वइरागरउ हीरागरउ ।
—व स.

मयकामा—स० स्त्री०—मदिरा, शराव । (ग्र मा)

मयगळ, मयगल, मयगळि, मयगलि—देखो 'मदकळ' (रू. भे)

उ०—१ नाभि सकोमळ मुख कमळ, डील सु सीतळ गात । तिण का दव खुध्या रहै, मन मयगळ मयमत ।—ढो मा

उ०—२ हसगति जिम चालती, मयगल जिम माल्हती, कामिनी गरव भाजती, चद्रकला जिम गुणहिं वाधती, कचुक ताडती नयन-बाणि जणमण वीधती ।—व स.

उ०—३ ए मयगल मन माहरू, अकुस माधव-हाथि । कुमस्थल ऊपरि चढी, हु पणि वईठी साथि ।—मा का प्र

उ०—४ पुण्यइ मयगल वाझइ बारि, पुण्यवत भुज नावइ हारि । पुण्यइ हुइ नित नवला रग, पुण्यइ सुणीइ वेणि ऋदग ।
—का दे प्र

उ०—५ मयगल जिम रेवा सु मोह्या, हम मानस सु सदोरा रे । मीन मोह्या जिम जलनिधि माहे, चद सु जेम चकोरा रे ।—स कु

उ०—६ अवाडी ऊपरि धरी, मयगलि मुखि चित्राम । घमकइ सोवनि-घूघरी, मनि गमता मन काम ।—मा का प्र

मयडी—देखो 'मैंडी' (रू भे)

उ०—आज अवेळौ उनम्यौ, मयडी ऊपरि मेह । जाऊ तो भीजै कचुवो, रहू त तूटै नेह ।—जमराज

मयण—स० पु०—१ हाथी ।

उ०—अहपवत्ति करण करि हू चल्यउ, करम ग्रथि थकी पाछउ वल्यउ । मयण निम्मिय दत करी घणा, किम चवायइ लोह तणा चणा ।—स कु

२ देखो 'मदन' (रू भे) (अ मा) (उ र)

उ०—१ कुअर कमला रति-रमण, मयण महाभड नाम । पकजि पूजिय पय-कमल, प्रथम जि करू प्रणाम ।—मा का प्र

उ०—२ खग नीर, धीर अतर खरा, मद कुजर वपु जिम मयण । मन वसै तेम तू माहरै, मो मन वसियौ महमहण ।—ह र

उ०—३ मत्री तहां मयण वसत महीपति, सिळा सिंघासण घर सघर । माथै अव छत्र मडांणा, चलि वाइ मजरि ढलि चमर ।
—वेलि

३ देखो 'मेण' (रू भे)

उ०—हेम की कूपी मयण की मुघ । साधन समरई जीम मात-गयग ।—बी दे

४ देखो 'मणि' (रू भे)

उ०—चूडामणि वोलड सुणि ब्राह्मण, आदि विस्नु अहिनांण । पाई पदम उर स्रीवछ लछन, कोटइ कौस्तुभ मयण ।
—रुकमणी मगळ

मयणरेहा—देखो 'मदनरेखा' (रू भे)

उ०—मयणरेहा गई नासि होजी, जायउ पुत्र उजाडिमइ ।—स कु.

मयणहल–सं० पु• [स० मदन-फलक या मदन-फलम्] ग्राम विशेष । (उ र)

मयणा—१ देखो 'मैंणा' (रू भे)
उ०—भील कोली मयणा मीर तणा । मारग में भय अत्यत घणा । —स कु
२ देखो 'मेना' (रू भे)
उ०—मलपती आवइ रे, जिम वन हाथणी रे। मयणा वयण सुविसाल ।—स कु.
३ देखो 'मैंना' (रू भे)

मयणातुर—देखो 'मदनातुर' (रू भे)
उ०—राखस हिडव तणी हू धूय, तइ दीठइ मयणातुर हूय । बइठउ ताउ अछइ नीय ठांणि, वाइ आवी मांणुसहांणि ।—प प च

मयणि—देखो 'मदन' (रू भे)
उ०—अनु कठि कुसुमह माल किरि सु मयणि आपणि आवीइ । कोइ इदु चदु नरिंदु सइवरि पुहुत इम सभावीयइ ।—प प च

मयत—देखो 'महत' (रू भे)

मयथुनीप्रजा—देखो 'मैथुनीप्रजा' (रू भे)

मयदानव—देखो 'मय' (१) ।

मयन–स० पु०—१ पवारो की एक शाखा ।
२ देखो 'मदन' (रू भे)

मयनक–स० पु०—१ जलधरनाथ के गुरु का नाम ।
उ०—मारग बाग तणो मति मेटे, भगत निरंतर उर धर भाव । तूठे सुतन 'महेस' तूठिया, सिस मयनक 'गुमनेस' सुजाव ।—बां दा
२ देखो मैंनाक' (रू भे)

मयना—१ देखो 'मेना' (रू भे)
२ देखो 'मैंना' (रू भे)

मयनाक—देखो 'मैंनाक' (रू. भे)
उ०—बडे गजराजनि रग चढ़ाय, करैं उन्मत्त घनू मद पाय । चढैं छलतें हुजदार कजाक, मनो हनमत चढ्यो मयनाक ।—ला रा

मयमत—देखो 'मैंमत' (रू भे)
उ०—१ पय ठव सूका पांनडा, मा बजाड मयमत । खबरदार कै वे-खबर, वन इण सीह वसंत ।—बां दा
उ०—२ गुडै मयमत सेना मुहर गैंमरां, प्रकटिया मारका थाट जोधापुरां । घूसियै हैय पुरा पाय अरवद, पसरियै सिंध परवत थया पाधरा ।—द वा
उ०—३ दोउ मयमत सुजांण सेज दिसि बाहुडइ । जांणे धरती-काज, असप्पति आहुडइ ।—ढो मा

मयमतौ—देखो 'मैंमत' (अल्पा , रू भे) (ना डि को)
उ०—मयमतो माटू मलो, सेहरै चमकै बीज । पिय प्यारी सेझा रमै, आज काजळी तीज ।—कुवरसी साखला री वारता

मयमत, मयमत्त—देखो 'मैंमत' (रू भे)
उ०—१ जैरो बारह आगळ खग लोडीकट छै, कांधो-पूठ एक सारखो छै। गुळवाड गोहू, जव चिणा रो, जुवार रो चरणहार छै, मयमत छै । सू घर घर आया छै ।—रा सा स.
उ०—२ मन मयगळ मयमत्त ।—ढो. मा

मयमत्तौ—देखो 'मैंमत' (अल्पा , रू. भे.)
उ०—मयमत्ता मेगळ, मणिधरि केहरि मल्ल । सगला दमता सोहिला, मन दमणो मुसकल्ल ।—ध व. ग्र

मयरहरो–सं० पु०—समुद्र, सागर ।
उ०—ता (उ) तू गो मेरु गिरी, मयरहरो (सायरो) ताव होइ दुत्तारो । ता विसमा कज्जगइ, जाव न धीरा पवज्जति ।
—कविवर सार

मयराळ, मयराल—देखो 'मराळ, मराल' (रू. भे)
उ०—१ मान सरोवर-मन-महि, माधव तू मयराळ । चाहसि चच चवूक्कडा, चिणतु बाल प्रवाल ।—मा कां प्र
उ०—२ मधुकरनी परि मणकतु, मडि रहिउ मयराल । सुदरि ताहरी सीखवा, चाल्यानी चकचाल ।—मा का प्र.

मयलू—देखो 'मैलो' (रू भे)
उ०—ऊचपणउ आपइ गणइ, कठिन तु कहिया न जाय । मिलतां मुख मयलू गणी, मेहेल्या माधव राय ।—मा का प्र

मयसुता–स० स्त्री० [स०] मय दानव की कन्या एव रावण की स्त्री मदोदरी ।

मयांनगर–स० स्त्री०—तलवार का म्यान बनाने वाली एक जाति । (मा. म)

मयांनो—देखो 'म्यानो' (रू भे)
उ०—जिसकी तारीफ सुणि सुरलोक के बीच सुरियद लाजै । जिसका मयांना इस नरयद नै अनेक गज कविराजों को दिया । —सू प्र

मया–स० स्त्री० [स० माया, ममता] १ कृपा, दया, अनुग्रह, अनुकम्पा। (अ. मा , ह ना मा)
उ०—१ आय गोकळ मही लेर सुर अनोखां, मया कर सुणावो फेर मुरळी ।—बां दा.
उ०—२ राजा जसवतसिंघ पण घणी मया कीवी ।—नैणसी
उ०—३ लाख करोड माल खज्जीना, है गै मुलक मया करि दीना। —गु रू व
२ प्रेम, ममता, स्नेह ।
उ०—१ ठाकरसा रा गुण तो आप सू वत्ता कुण जाणे । आपरै माथै तो वांरी विसेस मया ही ।—फुलवाडी
उ०—२ मात हूत अधिकी मया, करै चुगल विध कैण । मल वा करसू भेटही, श्रो रसणा अग्रेण ।—बा दा

उ०—३ डाकं पर घर डारि दर, कुकरम करै कठोर। मन मे नाहि दया मया, चाहैं पर घन चोर।—घ व ग्र

[स० मत] ३ इजाजत, अनुमति, स्वीकृति।

उ०—१ भूत मन में जाण्यौ के पाछी वसूत वमियां तौ ठावकौ काम वणैला। वौ उणनै पीवर जावण री मया दे दी।—फुलवाडी

उ०—२ राजकवर री वात सुणनै मोनल लाज सू माथौ नीचौ कर लियौ। होळै सू वोली—म्हारा इण भतीजा विना म्हैं खुद नी जीव सकू जे आप इणनै हरदम म्हारै साथै रै'वण री मया देवौ तौ म्हैं आप री वात कवूल कर सकू।—फुलवाडी

४ छूट।

उ०—ठाकरसा मन मे सोच्यौ के हजार मोहरां तौ घणी वात फगत कोई दस मोहरा निजर करै तौ म्है गधा नै सोनौ पैरण री मया दे सकू।—फुलवाडी

[स० मा, मातृ] ५ माता।

उ०—तू आद मगत हिंगळाज माय। मया तू आवड महमाय।

—रामदांन लाळस

वि०—कृपालु, दयालु, महरवान, तुष्टमान।

उ०—वेला वुरी रा सीरी छै। जितरै म्हाराज मया छै इतरै थे सरव म्हारा छौ। अर जद म्हाराज उपान हुई तद ए तीन्है म्हारा छै।—चौवोली

रू० भे०—माया।

मयाचळ—देखो 'मलयाचळ' (रू भे)

उ०—काया केसरी किसनागरि, जवाधि मैं जळहरि। म्रिग नाभ मलैतरि, मयाचळ।—गु रू. व

मयाद—स० स्त्री० [अ० मीआद] १ वक्त, समय, काल।

२ एक निश्चित अवधि, मुद्दत।

३ वादा, वचन, करार।

रू० भे०—मिआद, मियाद, मीयाद।

मयादी—वि० [अ० मीआदी] १ जिसके लिए कोई अवधि निर्धारित की गई हो।

२ जिसका प्रभाव एक निश्चित अवधि तक रहता हो।

रू० भे०—मिआदी, मियादी, मीयादी।

मयादी-वुखार—स०पु०यौ०—एक प्रकार का ज्वर विशेष, आन्त्रिक ज्वर।

रू० भे०—मिआदीवुखार, मियादीवुखार।

मयाळ, मयाळू—वि० [राज० मया+प्र० ळ] दयालु, कृपालु।

उ०—मेघ अवेस्त पांण चम्या तू नीर उभाळै। देस पराई-पीड मयाळ दिया पिघाळै।—मेघ

मयावत—वि० [राज० मया+म० वत्] १ दयावान, कृपालु।

२ कृपापात्र।

उ०—मानसिंघ पछै मावसिंघ टीकौ पायौ, वडौ महाराजा हुवौ, रांणी गोड़री वेटौ, जहांगीर पातसाह री वार माहे वडौ मयावत चाकर हुवौ।—नैणसी

मयु—स० पु० [स० मयु] १ किन्नर। (डि. को)

२ मृग, हिरण।

मयुर—देखो 'मयूर' (रू भे)

मयुराज—स० पु० [स० मयु+राज] किन्नरराज कुबेर।

मयूक, मयूख—स० स्त्री० [सं० मयूख] १ किरण, रश्मि।

(अ. मा, ना मा, ह ना मा)

उ०—अर रज धूम रा वितान मे मारतंड रा मयूख अतरधान विद्या रौ अभ्यास घरण लागा।—व भा

२ दीप्ति, आभा।

३ अगरा। ४ सौन्दर्य।

रू० भे०—मियूख।

मयूर—स० पु० [स०] १ मोर। (ना मा, ह नां मा)

२ एक पुष्प विशेष।

३ मयूर-शिखा नामक क्षुप।

४ सूर्य शतक का रचयिता कवि।

५ एक सुविख्यात असुर जो विश्व नामक राजा के रूप में उत्पन्न हुआ था।

६ सुमेरु पर्वत के अन्तर्गत एक पर्वत।

७ काव्य छन्द का एक भेद विशेष। (पि प्र)

८ डिंगल के वेलिया 'साणोर' छद का एक भेद जिसके प्रथम द्वाले मे १८ लघु व २३ गुरु से ६४ मात्राए होती हैं तथा इसी क्रम से शेष द्वालो मे १८ लघु तथा २२ गुरु से ६२ मात्राए होती है। (पि प्र)

९ एक रग विशेष का घोडा।

रू० भे०—मयुर, मयोर, मोर।

मयूरणी—स० पु०—एक छन्द विशेष, जिसमे एक रगण, एक जगण फिर एक रगण और अन्त में गुरु होता है।

मयूरनृत्य—स० पु० [स० मयूरनृत्य] एक प्रकार का नृत्य जिसमे थिरकन अधिक होती है।

मयूरासन—स० पु० [स०] योग के चौरासी आसनो मे से एक।

वि० वि०—इसमे दोनो हाथो की ठेउनी को नाभि से लगाकर शरीर को मयूर की तरह हाथो पर ऊचा उठाकर रखा जाता है। इससे आलस्य का नाश होकर जठराग्नि प्रदीप्त होती है।

मयूरिय—स० स्त्री०—घोडी।

उ०—मन माहम सूर मनूर मढै। छत्रपत मयूरिय सीम चढै।

—पा प्र

मयूरीवीणां—स० पु०—एक प्रकार की वीणा विशेष।

मयूरेस—स० पु० [स० मयूर+ईश] स्वामी कार्त्तिकेय।

मयेळी—स० स्त्री०—१ आकाश मे उडने वाले पक्षियों की पक्ति।

२ उक्त पक्ति मे उडने की क्रिया।

मयेस्वर—स० पु० [स० मयेश्वर] मय नामक दैत्य का नामान्तर।

मयै—देखो 'मय' (७)।
उ०—जद वरसळपुर रा राव करणसिंघजी **मयै** जमीयत के चाकरी में मौजूद थे।—द. दा

मयोमय—स० पु० [स० महा-महिमन्] शिव, महादेव।

मयोर—देखो मयूर' (रू भे)
उ०—१ वरसात भर घर परम सुख, वणि उमडि जळधर आवही। घण घोर सोर **मयोर** रस, घण घटा घण घहरावही।—रा. रू.
उ०—२ घर सोर **मयोर** भिंगोर घरी, कर अग्र कतार बलाह करी।—पा. प्र

मयो—वि०—१ महीन, बारीक।
२ देखो 'मईयौ' (रू. भे)
रू० भे०—महियो।

मय्यसामद—स० पु०—श्रीकृष्ण का एक नामान्तर। (अ म)

मरद, मरदक—स० पु० [स०] फूलो का रस, पराग।

मर—स० पु० [स० मृ] १ मरणा क्रिया, मृत्यु, मौत।
२ नाश, विनाश।
३ मत्युलोक, ससार जगत।
४ पृथ्वी। ५ ईश्वर।
उ०—दादू मरणा खूब है, **मर** माही मिळ जाइ। साहिब का सग छाडि कर, कौन सहे दुख आइ।—दादूवाणी
६ देखो 'मुर' (रू भे)
उ०—प्रथम पुवाडई पूतनां सोखी, **मर** दळीयो मुसाळ। ए हरि (नइ) आगइ दावानळ, दाणव नइ कुळि काळ।—रुकमणी मगळ

मरक—स० पु० [स० मर्क, मक्] १ शरीर देह। २ प्राण।
३ बन्दर।
[स० मृ+अप्+कन्] ४ एक सक्रामक रोग (ऐपिडेमिक)।
५ भेद, रहस्य।
६ आकर्षण खिचाव।
७ मन में दवा रहने वाला द्वेष।
८ मन की उमंग।

मरकट—स० पु० [स० मर्कट] (स्त्री० मर्कटी) १ वानर, बदर।
(अ मा, ह ना मा)
उ०—१ अग **मरकट** मन मीन, नाव नागरी नयण नट। देख हुवै ऐ दीन, अस 'जेहल' वगसै इसा।—बा दा
उ०—२ पछट वज्र घट कुघट ऊपर। रंगट भट फुट भ्रकुट **मरकट**।
—सू प्र
उ०—३ सूत्र सिद्धात वखांणतां जी, सुणता करम विपाक। खिण इक मन मांहि ऊपजइ जी, मुझ **मरकट** वइराग।—स कु
२ तावा। (अ मा, ह ना मा)
३ मकडी। ४ सारस।
५ एक प्रकार का विष विशेष।
रू० भे०—मकड, मकड, मक्कड, माकड, माकर, माकुण, माकड, मारकट। अल्पा०—माकडियो, माकडो।
६ स्त्री सभोग का एक आसन।
७ दोहा छद का एक भेद जिसमें १७ गुरु तथा १४ लघु होते हैं।
(र ज प्र)
८ छप्पय छन्द का आठवा भेद जिसमे ६३ गुरु, २६ लघु के अनुसार ८९ वर्ण व १५२ मात्राएं होती है। इसमे ६३ गुरु, २२ लघु के अनुसार ८५ वर्ण व १४८ मात्राए भी होती हैं।
९ देखो 'मरकटक'।

मरकटक—स० पु० [स० मर्कटक] १ एक मछली विशेष।
२ एक अनाज विशेष।
३ एक दैत्य का नाम।
४ देखो मरकट' (रू भे)

मरकटपाळ—स० पु० [स० मर्कट+पाल] वन्दरो का राजा सुग्रीव।

मरकटी—स० स्त्री० [स० मर्कटी] १ मादा वानर, वानरी, बदरी।
२ मकडी। (अ मा)
३ छन्द शास्त्र के ९ प्रत्ययो मे से अतिम प्रत्यय। इसके द्वारा मात्रा के प्रस्तार मे छन्द के लघु गुरु कला तथा वर्णों की सख्या का परिज्ञान होता है।

मरकत—स० पु० [स०] पन्ना। (डिं को)
उ०—१ **मरकत** माणिक्य मुक्ताफल मेघाडवरि मयूर तणउ मडाण छत्रदड, अलव।—व स
उ०—२ को साधू राखै राम धन, गुरू वाइक वचन विचार। गहिला दादू क्यो रहै, **मरकत** हाथ गवार।—दादूवाणी
रू० भे०—मरगय।

मरकतमणि, मरकतमिणि, मरकति, मरकतिमणि, मरकतिमिण—स० स्त्री०—१ पन्ना नामक रत्न। (व स)
२ नग, नगीना। (अ मा)
३ नीलम नामक रत्न। (डि. को)
उ०—किहां किहा मोती ना चउक पूरिया छइ, **मरकतमणि** मय भाजन, फूलना पगर, दिस दिसइ बहकइं कस्तूरागर इसिउ विमान।
—व स

मरकब—स० पु० [अ० मकव] १ एक प्रकार का वाहन, सवारी।
उ०—**मरकब** यवन देसा वाहण हुवै सो नित सौ कोस जावै। घोडा सू ही मजबूत हुवै।—वां दा ख्यात
२ घोडा, अश्व।

मरकलडइ—मुख मुद्रा बनाना।
उ०—मानिनी **मरकलडइ** हसइ, मुख भरिउ तबोलि। तिणइ त्रितय भुयणपति, जांणइ चिणोठी चोल।—मा कां प्र

मरकी—देखो 'मुरकी' (रू भे)

उ०—तदनतर सुस मुसती मरकी सिसि विसद सुहाली, चद्रकिरणोज्वल गुणा, फगफगा फीणा, दुग्धवरणा दहीथरां, घ्रतवरणा घारी, सुकुमाल साकुली, सेव साकुली, परीसणहारि नही ग्राकुली ।—व स

मरखण-स० पु० [सं० मर्षण] राजा मर्षण जो पुराणो के ग्रनुसार मरु का प्रपौत्र था ।

उ०—जे सुत हुवो सघि हत दूजण। मरखण सघि सुतण कुळ मडण। मरखण सुत सिहसान भूप मणि। भूप विस्वासा द्वै ते सुत भणि।—सू प्र

मरग—देखो 'म्रिग (रू भे)

उ०—वड वाहा देतो 'मुकनावत', ग्रै दोहु मरग न खेलै ग्राळ। चांमरीयाळ घास मुख चीनो, मरगण डाळ न लाभै माळ।

—रुघो मुतो

मरगड-स० पु० (स्त्री० मरगडी) १ बिना सिर का घड, कवघ।

उ०—करमाळा कड कड पहि सिर दड दड, भाजै मरगड कध मडां। खैंगरजै खैंगड लागै लोहड, घाइ उजड पड घूम घडा।

—गु रू व

२ मृग, हरिण।

उ०—चढी मरगडी रींछडी, तास-तणा मुख मेलि। माधव ल्यावै मुहनइ, करिसि कुतूहल-केलि।—मा का प्र

रू० भे०—मरग्गड।

मरगचो-स० पु०—एक प्रकार का मर्दन।

उ०—तठा उपरांति करि नै राजांन सिलांमति जिकै छोगाळा छबीला जुग्रान हूसनांक फूलां रा छोगा नाखीग्रां थका फूलां रा चोसर पेहरीग्रा थका ग्ररगचै मरगचै केसरिऐ कचमैलै वागै कीऐं घणै चोऐ ग्रतर फूलेल गला माहि मीना थका घणै ग्रबीर नै गुलाल माहे गरकाव हुग्रा थका फोळी भरिग्रा थका दिसि दिसि छूटि रही छै।—रा सा सं

मरगछाळा—देखो 'म्रिगछाळा' (रू भे.)

मरगद-स० पु०—हरा रग का वस्त्र विशेष।

उ०—गारुडसन्नाह उभयखरम मरगद गुच्छ पटउलउ सावपट्ट पट्टहीर सूहवी ।—व स

मरगघर—देखो 'म्रिगघर' (रू भे)

मरगय—देखो 'मरकत' (रू भे)

मरगराज—देखो 'म्रिगराज' (रू भे)

मरगलो, मरगलियो—देखो 'म्रिग' (ग्रल्पा., रू भे)

मरगाबू-स० पु०—मुर्गे की जाति का एक पक्षी विशेष, मुर्गाबी।

उ०—नहरू परू चूच जडे चरज बटेर मरगाबू कू घर ग्रावतै हैं।

—सू प्र

मरगी—देखो 'मिरगी' (रू भे.)

उ०—मरगी नइ मदवाडि, गया गुजरात थी नीसरि। गयउ सोग संताप, घणो हरख हुयउ घरिघरि।—स. कु

मरगोजो-स० पु०—वसत ऋतु में होने वाला एक प्रकार का उद्भिज पदार्थ।

मरग्गड—देखो 'मरगड' (रू भे)

उ०—भडीयड भांजि मरग्गड मूड, रडव्वड रैंण करडक रुड।

—गु रू. वं.

मरघट-स० पु० [स० मरघट्ट] मुर्दों को जलाने का स्थान, श्मशान भूमि।

रू० भे०—मड्हट, मडहठ, मरहट, मरहट्ट, मरहट्टय, मरहट्ठ, मरहठ।

मरघलो, मरघलियो—देखो 'म्रिग' (ग्रल्पा., रू. भे)

उ०—निरखी निरमल चदलु, ऊगिऊ ग्रवर-रेसि। मरुउ चारसि मरघला, म म ग्राघू चालेसि।—मा का प्र

मरड—देखो 'मरोड' (रू. भे)

मरडकणो, मरडकबो-क्रि० स०—१ मारना, सहार करना।

उ०—भाइया विहु भुज भार सा हुए भळा। माडा तणै घाय मरडकै मैंगळां।—करमसिंह व खेंगार सगतावत री गीत

क्रि० ग्र०—२ टूटना, फटना।

उ०—विहड खेंग ठरडकै मिळै करडकै कवांणा, कगळ गात भरडकै, पार खरडकै सरांणा। रूक घार बरडकै, घाव फरडकै, ग्रफारा, खजर वाथ खरडकै, हाड मरडकै हजारा।

—बखतो खिड़ियो

मरडको-स० पु०—ऐंठन, मरोड।

२ गुस्सा।

मरडूसी-स० स्त्री०—एक जगली पौधा।

रू० भे०—मरडूसी।

मरच—देखो 'मिरच' (रू. भे)

उ०—त्यानै पकडनै कह्यो—माल बतावो। मरचां री धुई दीघी।

—भि. द्र

मरछा—देखो 'मुरछा' (रू भे)

मरछागत—देखो 'मुरछागत' (रू भे)

उ०—प्रोहित रै हाथ सिरपाव बीडी दैण लागी। इसै समै पवन सू सारी परेच उड गई। ताहरा पुरोहित री खवास री निजर मारवणी ग्राई। मारवणी री सोबी देखनै दोनू मुरछागत ग्राय, हेटा पडिया।—ढो. मा

मरज-स० पु० [ग्र० मर्ज] १ रोग, बीमारी।

उ०—चरम रोग चट हरै, हटावै दाद दुखणिया। खावै खुजली मरज, मिटावै खेद थकणिया।—दसदेव

२ बुरी ग्रादत, कुटेव, ऐब, व्यसन।

मुहा०—मरज पाळणो=कोई व्यसन पकडना, बुरी ग्रादत पड़ना।

मरजदार-वि० [ग्र० मर्ज+दार] १ बीमार, रोगी, रुग्ण।

उ० सूळीदार सुभाव त्रिसूळदार तैयारी। मरजदार होय माग, आणी कहु दार उधारी।—ऊ का

२ बुरी आदत वाला, ऐबी।

मरजाद, मरजादा–स० स्त्री० [स० मर्यादा] १ गौरव, मान, प्रतिष्ठा, इज्जत।

उ०—१ तीडं पाट सलख कुळ तारग। महि मरजाद खत्रि-ध्रम मारग।—रा रू

उ०—२ वेटो मोटयार काटी है, हथणी व्है जेडी वींदणी है अर म्हारा मोटयार सू ग्वाडी री मरजादा वणी रै'वैला।—फुलवाडी

उ०—३ 'सुदर' सुतन्न सात्रवा सल्ल। मरजाद महा नेठाह-मल्ल।
—गु. रू व

२ नियम, विधान, विधि, रीति, रस्म, परम्परा।

उ०—१ वरणास्रम ध्रम मरजाद वेद, भाखा खट नवरस अरथ भेद।—वि स

उ०—२ सावास छै, वडी रजपूती राखी। जमा पुरसां रा थे लडका था विमी ही कीवी। जनानी मरजाद मता भांजो।
—सूरे खीवे काधळोत री वात

उ०—३ वाघ व्रखभ एकठा वहता, करइ नही मन सका काइ। मेट सकइ न को मरजादा, हालइ सको मरजादा माहि।
—महादेव पारवती री वेलि

उ०—४ स्याळियो मरजादा सू कै'वण लागो—अवै थनै दो वार वदगी करणी पडसी अर दो वार आरती करणी पडसी।
—फुलवाडी

३ हस्ती, हैसियत, औकात।

उ०—दुनिया रा सगळा राव-उमराव, राजा-महाराजा अर नवाब-पातसाह इणरै आगै सात वार पाणी भरै। वारी काई मरजादा के वै इस्टूखां री होड कर सकै।—फुलवाडी

४ सीमा, हद।

उ०—१ गरजति सीम नाद पूरण, चदाइ पेखि उफणिए। घन समद धीर नह लघत लाज मरजाद।—गु रू व

उ०—२ सायर मरजादा जो लोपै, क्षमावत मुनिवर जो कोपै।
—स्रीपाळ रास

उ०—३ सागर मरजादा तजै, अर पच्छिम मे जाय ऊगै जे भाण। जो घरणी-घर घरणी तजै, तो ही राम न लोपे वापरी वाण।
—गी रा

उ०—४ जव देहळी भीतर,रुखमणीजी आया। तव देहळी लाघता पग आघो दीयो। तठे जेहडि पग की स्रीक्रस्णजी की नजरि पडी। जे हरि देखतां जु कोई आणद उपज्यो। तिहि की मरजादा नही। इतरो आणद अधिक उपज्यो।—वेलि टी

उ०—५ मरजाद छिली मेटै महण, चवै चोथ मह पुड चलै। सेवगां तणा मेहासदू, साद न करनी सभळै।—चौथ वीठू

५ लाज, शरम।

६ शान-शौकत।

उ०—इस्टूखा कह्यो—भूठी आट अर कूडी मरजादा रा नसा मे मिनख इण सू ई घणी इदकी वातां कर सकै।—फुलवाडी

७ शोभा।

उ०—कनक-कोट कगुरे कनक, कनक तणा परसाद। रतन-दड राजत धजा, निजपुर की मरजाद।—गजउद्धार

८ महत्व।

उ०—जे धन-सपत्त मे ई गुण अर मरजादा व्हैती तो अरवा-खरवां रा हीरा-मोती अर अणगिण माया ढोवण वाळी म्हारी वाळद दुनियां मे सवसू सुखी अर मरजादा वाळी व्हैती।
—फुलवाडी

रू० भे०—मरज्यादा, मरयाद, मरयादा, मरियाद, मरियादा, मुर-जाद, मुरजादा, म्रजा, म्रजाद, म्रजादा, म्रजादा, म्रयाद, म्रयादा।

मह०—मरजादो।

मरजादो—देखो 'मरजादा' (मह , रू भे)

उ०—ऊधो-मुख दस मास गरभ मे, असुचि तणो पिंड वाधो रे। नीसरियो जव दुख विसरियो, मूक दीनी मरजादो रे।
—जयवांणी

मरजियो–वि०—१ मरकर जीने वाला।

२ जो प्राण छोडने की दशा मे हो, मरणासन्न।

३ अधमरा।

स० पु०—समुद्र से मोती निकालने वाला, गोताखोर।

उ०—हरीया सरवर तीर, माणिक मोती अति घणा। क्या जांणै मुधि कीर, मरजीया सो जाणिसी।—स्रीहरिरांमदासजी महाराज

रू० भे०—मरजीयो, मरजीवउ, मरजीवो।

मरजी–स० स्त्री० [अ० मर्जी] १ इच्छा, चाह, कामना, ख्वाहिश।

उ०—१ इण भांत आपरै समझ समझाया पछै इस्टूखा तो आपरी मरजी सू वातां करतो रह्यो अर लोग आपरी मरजी सू उण री सिखरा करता कोगता अर खमडोळा करता।—फुलवाडी

उ०—२ राणी चिडी नै कह्यो—नैनी चिडकल आज सू थू म्हारी धरम वैन है। म्हारा कमरा में थारी मरजी व्है जठै इंडा दे।
—फुलवाडी

२ खुशी।

उ०—१ साचो गिणो चाहै कूडो गिणो, म्हारै तो मन मे एक इज है। अर म्है उण मन मे जाणू जकी वात ई दरसावू। थे कूडो करनै गिणो तो थारी मरजी।—फुलवाडी

उ०—२ जाट वोल्यो—आज राजी नी व्हैला तो फेर कद व्हैला। पूरा सौ रिपिया रो खातो वाळियो हू। अवै थारो मोठो मूडो नी करावै तो सेठा री मरजी—फुलवाडी

३ स्वीकृति, अनुमति।

उ०—हमैं कवर देस में जावण री मरजी लीवी। तद रतनां इमी अरजी कीवी।—र हमीर

४ आज्ञा, आदेश।

५ रजामदी।

मरजीदांन—वि० [अ० मर्जी+स० दान] १ कृपापात्र।

उ०—दरबार में अबै फगत राजा, राणी, मन्त्री, आठ काळा घोडा, नैं काळी भेख धारिया आठ राजकवर अर रांणी री मरजीदान डावडी मरदानो भेख धारिया आपरै घोडा समेत ऊभी ही।

—फुलवाडी

२ मुखिया, प्रधान, प्रमुख, खास।

उ०—इण भात म्होकमसिंघ देग हसनै चल्यो गयो। मूंढा सू तो कोई वात न कही। पण मरजीदान था जिका मन री नही। म्होकमसिंघ गढ देखता ही उड पडसी।

—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

३ विश्वासपात्र।

मरजीपात्र—देखो 'मरजीदान'।

मरजीयौ, मरजीवउ, मरजीवौ—देखो 'मरजियौ' (रू भे)

उ०—१ मरजीवउ पाणी तणउ, माल्ह उघटनइ खाइ। दुख सहणा पुहरा दियण, कत दिसाउरि जाइ।—ढो मा.

उ०—२ सून्य सरोवर महज का, तह मरजीवा मन। दादू चुणि चुणि लेयगा, भीतर राम रतन।—दादूवांणी

मरज्यादा—देखो 'मरजादा' (रू भे)

उ०—लोक लाज कुळ रा मरज्यादा, जगमा एकणा राख्यारी।

—मीरा

मरट, मरट्ट—स० पु०—१ गर्व, घमड, अभिमान।

उ०—१ भ्रिहु पक्ख ऊजळी, कमळि निकळक कळा निधि। मांण महातम मरट, अडग सूरातन अव्वधि।—गु रू व

उ०—२ प्रसन्न मुखकमळ, उन्नत स्कध, मासल विपुल वक्षस्थल, सरल भुजदड, मदन मुद्रावतार, तरुण तरट्ट, फिरि कदरप तणउ मरट्ट नवयौवन विलास, मदन तणउ लघु बांधव, एव विध पुत्र।

—व स

उ०—३ मन मैं धरता मरट घरट जिम भूखै घूमैं, मेले घर गया मऊ भटकि मूआ पर भूमैं।—घ व ग्र

उ०—४ हसगतइ चालती, गजगतइ माहलती, कांमकांमनी पालती, आंखिनइ मटकारती मदन नी वागुरा घालती कस्तूरी मलयत भाल पट्ट, तरुण तणा भाजइ मरट्ट पूरण्ण चद्र समान वदन।

—व स

२ गौरव, मर्यादा।

उ०—१ हलं थाट दखणाद लग टळ तोपा हसत, खसत मद मीढ रा नरा खागां। मरट तिणवार राखी विकट मोसरां, सुपेती पोगरा तणी 'मागा'।—रावत सग्रामसिंह सगतावत री गीत

उ०—२ अमो समा आछटै, छोह छपटै छछोहां। मिटै घटै नह मरट, लहै पहै गळ लोहा।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

उ०—३ मनि मेल्हिय मरट माण, अरिअण गानड आण। करइ तुझ वखाण सुपरिकरो, कवि कहइ।—व स

३ ऐंठन, मरोड, घुमाव।

उ०—तिमा ही वागा रा वणाव, तिमाही मूछा रा मरट, तिमा ही भुजां रा आमला, तिमा ही पोरसग गाढ, तिमा ही रामवट रा अग' '।—रा सा स

४ समूह, फौज।

५ क्रोध में आग बबूला।

उ०—सो आ खबर अमरसिंहजी नू गई, सो सुणत सुवा काळो मुरट हुय गयो। हाथ पटके दांता सू हथेळी नू बटका भरै, कटारी सू तकियो फाड नाखियो।—अमरसिंह गजसिंहोत री वात

रू० भे०—मरठ, मुरट।

मरठ—स० पु०—१ काव्य छन्द का एक भेद विशेष। (पि प्र)

२ देखो 'मरट' (रू. भे)

मरड—देखो 'मरोड' (रू भे)

उ०—१ के जल थल इम करै, उणा री पूरी आसा। मरड करइ केइ गरजि, नेटि उडिजाइ निरासा।—घ व ग्र

उ०—२ वयण कमल जीह लागती, मूछि मरड अपार। निरखी निरमल नासिका, तिल तणी ते धार।—मा का प्र

मरडूमी—देखो 'मरडूमी' (रू भे)

मरड़णी, मरड़बौ—देखो 'मरोडणी, मरोडबौ' (रू भे)

उ०—आलस छडी उठीउ, मुछि मरडी तेह। चउद लोक कीधा जिणइ, चिंता करस्यइ तेह।—मा का प्र.

मरड़ियोडौ—देखो 'मरोडियोडौ' (रू भे)

(स्त्री० मरड़ियोडी)

मरण—सं० पु० [स० मरण] १ मरने की क्रिया, भाव या अवस्था, मौत, मृत्यु।

उ०—१ माया दून गुम्याली आई। साह मरण ची विगत सुणाई।

—रा. रू.

उ०—२ जनम मरण रांमण राम सघीर।—ह ना मा

उ०—३ सहू भीम रा भीच आखाड-सिध्ध। मरण प्रब्ब सपेख मगळीक किद्ध।—गु रू व

उ०—४ छूटा जांमण मरण सू, भव सागर तिरियाह—वा. दा

२ एक विष विशेष।

३ साहित्य मे एक अनुभाव जो विरही की मरणासन्न अवस्था को स्पष्ट करता है।

रू० भे०—मरणु, मरणू मरणौ, मरण्ण।

मरणदिन–सं० पु०—किसी के मरने का दिन, वह दिन जिस दिन किसी की मृत्यु हुई हो।

उ०—चदाणणि चीर चमीर न चचळ, कुवर भडार न चित करिया। माहव सभा 'खगार' मरणदिन, सोयण सुणि जी सभरिया।—सोढा खगार रो गीत

मरणात–सं० पु०—मरण पर्यन्त मृत्यु पर्यन्त।

उ०—याकूब लेस प्रथम हाल मे मरणांत भय खैंचतो, आराम न करतो मसक्कत सू एक दम टळतो नही।—नी प्र

मरणी–सं० स्त्री०—मौत, मृत्यु।

उ०—जै जै मरणी जुग मरै, सो मरणो आसांन। हरीया विन मरणी मरै, सो तो कठण जान।—स्रीहरिरामदासजी महाराज

मरणीक–वि० –जो मरने मारने के लिये उतारू हो, मरने को तैयार।

उ०—१ नै रावळ कनै रजपूत मरणीक हुय रह्या छै।—नैणसी

उ०—२ जिको सुणता ही बळभद्र नू ऊढा उभय रै साथ आगै घलाई कवर दूदा पाछै रहि मरणीक थियो।—व भा

उ०—३ आगै रजपूत कोई फौज माथै मरणीक व्है जाता तद वीद वणता आगै अपछरा परणीजसा तरै मोडनै ऐ कपडा उठै नही मो अठा सू पहरने फौज ऊपरै जावता।—वी स टी

उ०—४ अर जीवण री आस व्है तो मरणीक हुवा सत्य सघ अग्रज रै साथ जाश्रण रो न धारो।—व भा

मरणु, मरणू, मरणौ–वि० [सं० मृ] १ जो मरने-मारने को उद्यत हो, वीर, बहादुर।

उ०—ढोल सुणता मगळी, मूछा भूह चढत। चवरी ही पहचाणियो, कवरी मरणो कत।—वी स

२ देखो 'मरण' (रू भे)

उ०—१ तींछे हूफी ऊठई करणु अरजुनु पामइ मू करि मरणु।
—प प च

उ०—२ आ वात म्हारै सोचण री नी है, मछलिया रै सोचण री है। वानै मरणो आहजी लागै तो वै आपरो जाब्तो करै।
—फुलवाडी

उ०—३ मरणो लाभति भागै, दखै खुमाण राण दस सहमो। असपति उभै जद्ध ए, एह ओसर करै प्रामेस।—गु रू व

मरणो, मरबौ–क्रि० अ० [सं० मरण, म्रियते] १ जीव-जन्तुओ या प्राणियों के शरीर से प्राण शक्ति का निकल जाना आयु की समाप्ति के कारण जीवन का अन्त हो जाना, मृत्यु होना, मरना।
(उ र)

उ०—१ भव दरियाव भयद, लहरा उठै लोभ री। माहे ज्यां मतमद, मनख घणा डूबै मरै।—वा दा

उ०—२ हस मांयला मूढ़ रे, कर हर सर विसराम। मर-मर घर-घर नह फिरै, उर घर गिरधर नाम।—ह र

उ०—३ दादू मरणा खूब है, मर मांही मिळ जाइ। साहिब का सग छाड कर, कौन सहै दुख आइ।—दादूवाणी

उ०—४ गायत्री य अनु नायक रूधइ, जो मरइ सुहड मानसि सूधइ।—सालिसूरि

२ युद्ध में लडकर मरना, वीरगति प्राप्त होना, झूझना। (उ र)

३ भूख या प्यास से व्याकुल होना, त्रस्त होना।

उ०—१ मुड मुड पडतोडी आखडियां मीचै, भूखा मरतोडी मूठ-डिया मीचै।—क का

उ०—२ गोह किरावती वोली—तिरसा मरतोडी रो म्हारो तो जीव जावै, थांनै आरती री पडी।—फुलवाडी

४ किसी द्वारा मारा जाना, हत्या, कत्ल या सहार किया जाना, नष्ट होना, मिटना।

उ०—१ करइ दाहु विदाहु हियइ धरइ, कहु कीचक हुइ मरत मरइ।—सालिसूरि

५ न्योछावर होना, उत्सर्ग होना, वारी जाना।

उ०—केहरि मरू कळाइयां, रुहिरज रत्तडियाह। हेकणि हायळ गै हणै, दत दुहत्था ज्याह।—हा झा

६ किमी के प्रेम या रूप पर आसक्त होना, विकल या विव्हल होना।

उ०—कमल ने दलि माथर पाथरिउ, मरइ कीचक मन्मथ आफरिउ।—सालिसूरि

७ कुम्हला जाना, मुरझा जाना, सूख जाना। (वनस्पति आदि)

८ अत्यधिक कष्ट, दुख या विपत्ति के कारण मृतक समान होना।
(उ र)

९ मरणासन्न होना, मृत प्राय होना, मृतक की सी दशा मे होना।

उ०—म्हे तो सगळा मरिया समांन हा। मरियोडी लास नै किणी वात रो अनुभव व्है तो म्हांनै व्है।—फुलवाडी

१० बोझ या भार सहन किया जाना।

उ०—सोनो-रूपो पहरती, मोत्या मरती भार। सो कासी रै चौवटै हरचद वेची नार।—अज्ञात

११ किसी वात या कार्य के प्रति अत्यन्त चिंतित होना, अत्यधिक चिन्ता करना।

१२ किसी काय को पूरा करने मे अत्यधिक श्रम करना, पचना।

१३ किसी वस्तु के गुण समाप्त होना, अप्रयोज्य होना।

१४ इच्छा, उत्साह, वेग आदि का दवना, मद होना।

ज्यू—भूख मरणी, मन मरणो।

१५ खेल के अन्दर किसी गोटी या खिलाडी का पराजित होकर वाहर होना, पराजित होना, परास्त होना।

१६ डाह या जलन होना।

१७ पेठना, समाना, विलीन होना।

ज्यू—भीत मे पाणी मरै।

मरणहार, हारो (हारी), मरणियो—वि०।

मरवाडणो, मरवाडबो, मरवाणो, मरवाबो, मरवावणो, मरवावबो, मराडणो, मराडबो, मराणो, मराबो, मरावणो, मरावबो —प्रे० रू० ।

मरिग्रोडो, मरियोडो, मरयोडो—भू० का० कृ० ।

मरीजणो, मरीजबो—भाव वा० ।

मारणो, मारबो—सक रू० ।

मरण्ण—देखो 'मरण' (रू भे)

उ०—तिम माधव नइ मानिनी, मन सुधी माराइ मरण्ण । भाई ग्रम्हनइ ग्राविज्यो, चीति तुम्हारा चरण ।—मा का प्र

मरतग-स० पु०—मरण, गमी ।

रू० भे०—मरतक ।

मरत-स० पु० [स० मर्त] १ मानव, मनुष्य, ग्रादमी ।

२ पृथ्वी । ३ मृत्यु-लोक ।

४ देखो 'म्रत्यु' (रू भे)

५ देखो 'मरत्य' (रू भे)

मरतक—देखो 'मरतग' (रू भे)

मरतकाळ, मरतगाळ-स० पु० यौ० [स० मृत्यु+काल] मृत्यु का समय, ग्रन्तिम समय ।

मरतब-स० पु० [ग्र० मर्तब] १ पद, दर्जा, श्रेणी ।

२ प्रतिष्ठा, इज्जत, मान । ३ वर्ग ।

रू० भे०—मुरतब ।

ग्रल्पा०—मरतबो, मुरतबो ।

मरतबान-स० पु०—१ रोगनी बर्तन जिसमें ग्राचार, मुरब्बा ग्रादि रखा जाता है ।

२ ग्रमृतबान ।

मरतबा-स० पु० [ग्र० मर्तब] बार, दफा, पारी ।

मरतबो—देखो 'मरतब' (ग्रल्पा, रू भे)

उ०—१ याकूब दोलत री चाह सू इसी स्रम करी तो किसै मरतबै पहोचियो ।—नी प्र.

उ०—२ म्हारो हठ महनत इण में छै, जे ग्राप नू इसै मरतबै पहुचाऊ जिण कोई म्हारै सरीक न होय ।—नी प्र

उ०—३ मन नू दुख घावां नू खैचणै वास्ते मोटी ठौर मरतबा रै पहोच करावे ।—नी प्र

मरतलोक—देखो 'म्रत्युलोक' (रू भे)

उ०—ग्रग्नादिक सु पितर छै तिणि को मरतलोक प्री लागै ।

—वेलि टी

मरतुजय—देखो 'म्रित्युजय' (रू भे)

मरतु—देखो 'म्रित्यु' (रू भे)

मरतुजाग्रली-स० स्त्री०—हजरत ग्रली की एक उपाधि ।

उ०—तिस वखत परवरदिगार कू सिजदा करि महमद मरतुजाग्रली को याद करि दाहिणै दसत सेती समसेर तोल हुकम फुरमाया ।

—सू. प्र

मरत्य-स० पु० [स० मर्त्य] शरीर, बदन ।

वि० [स० मर्त्य] मरणशील, मरणासन्न ।

मरत्यलोक—देखो 'म्रित्युलोक' (रू भे)

मरदग—देखो 'म्रिदग' (रू भे)

उ०—पाय गयद तूटा घण पावै । जेणि फरै मरदग वजावै ।

—सू प्र.

मरद-स० पु० [फा० मर्द] १ पुरुष, नर ।

उ०—१ माया माणजो रे मत चूकजो मरदां, जो वो हलियो जाय जहां । राखो घर ऊडी मत राजा दान करो ग्राखै सिवदान ।

—महाराज सिवदानसिंह (बागोर)

उ०—२ मरद रा भेख मे ग्रा नवी रांणी री खास डावडी ही ।

—फुलवाडी

२ पति, खाविद ।

३ मत्री । (डिं नां. मा)

४ वीर पुरुष ।

उ०—पांच गोळा'र दोय सेल लागां पछै, 'सदा' रो सेर मरद, 'ग्रचळ' हर पाधरो 'कुसळ' ग्रायो ।—पहाडखा ग्राढो

५ मनुष्य जाति या वर्ग ।

उ०—१ था मरदा री जात ही निकामी है ।—फुलवाडी

उ०—२ समर तजण सू सोगुणो दुरग तजण रो दोख । मरद दुरग जाता मरै, मिळै जिकां नू मोख ।—बा दा

२ साहसी, हिम्मतवर ।

३ पुरुष का, पुरुष सबधी ।

उ०—मरद पवसाख भूखण कडा मूदडी, कठ डोरो मुरति लवंग कांना ।—मे म

वि०—१ बल पौरुष वाला, शूर वीर ।

[स० मर्द] ४ कुचलने वाला नष्ट करने वाला ।

५ पीसने वाला, घोटने वाला ।

रू० भे०—मरद्द, मरुद ।

मरदक-वि० [स० मर्दक] १ मर्दन करने वाला । २ चबाने वाला ।

रू० भे०—मरद्दक ।

मरदगी—देखो 'मरदानगी' (रू. भे)

उ०—ग्ररजन मरतै-मरतै मरदगी करी, ग्राखी वातां कह नाखी खरी खरी । थाणेदार सैना-मैनी सू बियान लिया, चाल्या ।

—दसदोख

मरदण—देखो 'मरदन' (रू भे)

उ०—काम पड्या पावै कसठ, से ग्रबळा रे सग । सुज मरदण खडण सहै, ऐ मुक्त वाळा ग्रंग ।—र हमीर

मरदणो, मरदबो-क्रि० स० [स० मदन] १ किसी वस्तु या शरीर के किसी ग्रग को हाथो या किसी ग्रग द्वारा मसलना, रगड़ना ।

२ मालिश करना, लेपन करना, मलना।

३ दबाव डालना, दबाना।

४ सन्तापित करना, पीड़ित करना।

५ पीसना, घोंटना।

६ नाश करना, उजाडना, कुचलना, रोंदना।

मरदणहार, हारौ (हारी), मरदणियौ—वि०।

मरदिग्रोडौ, मरदियोडौ, मरद्योडौ—भू० का० कृ०।

मरदीजणौ, मरदीजबौ—कर्म वा०।

मरदन—स० पु० [सं० मर्दन] १ मसलने या रगडने की क्रिया या भाव।

२ मालिश, लेपन, उबटन।

उ०—१ बागां माही सैलां करै। गुलावजळ री तूगां सू सापडै। छिडकाव गुलाव रो हुवै। केसर-कस्तुरी, भीमसेनी कपूर रो मरदन हुवै-तिण रो कीच मचियौ रहै।—जलाल बूबना री वात

उ०—२ कीयौ मरदन घण सघळइ अग। पचजटा छइ सीरइ भूयग।—वी दे

उ०—३ वडारण वैठी पगा हाथ दीयौ। घडी दिन च्यार चढता जागीयौ। सपाई रो पांणी, मरदन रो तेल हाजर कीयौ।

—कुंवरसी सांखला री वारता

३ सन्तापन, उत्पीडन।

४ दबाव। ५ विनाश, उजाड।

वि०—कुचलने वाला, पीसने वाला नाश करने वाला।

रू० भे०—मरदण, मरद्दण, मरद्दन।

मरदन काळी—स० पु० यौ० [सं० मर्दन+कलिय] १ ईश्वर।

२ श्रीकृष्ण।

रू० भे०—मरद्दन-काळी।

मरदनमेघ—स० पु० यौ०—श्रीकृष्ण। (अ मा)

मरदनी [फा० मुर्दनी] कमजोर, उदासी, श्रीहीनता।

उ०—समझाया—जे आ किही नू जाहर मता करज्यौ नहीं तो लोग आपणी मरदनी नहीं वखाणसै।—नापै साखलै री वारता

मरदनीयौ—वि०—मर्दन करने वाला, मालिश करने वाला।

स० पु०—१ मालिश करने वाली जाति या वर्ग का व्यक्ति।

उ०—ब्राह्मण क्षत्रिय वैस्य सुद्र चिहु वरण समाली। कदोई कुमार कठी, मरदनीया माली।—घ व ग्र

मरदमसुमारी—देखो 'मरदुमसुमारी' (रू भे)

मरदमी—स० स्त्री० [फा० मर्दुमी] १ बल, पौरुष, वीरता, साहस।

उ०—१ पछै वखत पाय अर खुरम निकळियौ सू गोडां री मरदमी सूं कछवा सूडा खनै आया गोरखर चढ़िया आया।—द दा

उ०—२ अफरासीयान तूरांन रो वडो वादसाह सो आपरा उमरावां नू कही रूप, सरीर, मरदमी, साज, सांमांन इण रे ऊपर भूलौ मतां।—नी प्र

२ पुरुषत्व के गुण, पुसत्व, काम-शक्ति।

उ०—जद वैद्य नाडी देखनै कही, दूजो तो इलाज थाहरै कोई लागै नही। अर मच्छी रो उदक काढ़ै फाडै देसू। जणीं सू थाहरै मरदमी आवसी।—साहूकार री वात

३ मानवता, इन्सानियत।

४ सुशीलता, शालीनता।

वि०—बलशाली, पुरुषार्थी, साहसी।

उ०—जगत इण आणद, आच्छादित, वर्घ फळीजै नीम ज्यू। स्रमजीवी मतवाळा वर्णं, माण मरदमी भीम ज्यू।—दसदेव

रू० भे०—मरदुमी।

मरदल—स० पु०—एक प्रकार का वाद्य विशेष।

उ०—पट्टुपटह म्रदग करडि मरदल वेणु तलिमताल कसाल झल्लरि भेरि मदनभेरि जयभेरि भरहभभ हुडुक्क ढक्क बुक्क अवक काहल काहली बरगा प्रभ्रति वादित्र।—व स

मरदांनगी—स० स्त्री० [फा० मर्दानगी] १ शूरता, वीरता, बहादुरी।

उ०—जो धीरज मे पूरा छै तो उणा नू मरदानगी मे पूरो भरोसौ करो।—नी प्र

रू० भे०—मरदानी।

उ०—ताहरा राजा री कुवरी महळ में गई। जाइ आगला कपडा उतारि मरदानगी कपडा पहिर मुहरा सु तोसदांन भर छोकरी एक लेनै पाइगह गई।—चौबोली

रू० भे०—मरदगी, मरदाई।

मरदानी—देखो 'मरदांनगी' (रू भे)

मरदानी-डोढी मरदानीदोढी—स० स्त्री० यौ०—राज्य प्रासादो मे पुरुषो के लिए प्रवेश द्वार।

उ०—मरदानी दोढी कनै सामी जनांनी दोढी री पोळ थी। हमार चक्रसेवारी डोढी बाजै।—मारवाड री रूयात

रू० भे०—मरदानीडोढी।

मरदानू, मरदानौ—वि० [फा० मर्दान] (स्त्री० मरदानी) १ मर्दों का, मर्दों सम्बन्धी, मर्दों जैसा, मर्दों की तरह।

उ०—१ ताहरां जिको सुपियारदे रो कागळ ल्यायो हुतो, तै साथै मरदानी पोसाख मेल्ही सुपियारदे नूं।—नैणसी

उ०—२ सोई खुहद आज दिन सांप्रत, स्त्रीदुरगा सकळाई। मूरत अदुल भेख मरदांनू, सूरत ह्रदय समाई।—मे म

उ०—३ कवरां रै देखा-देखी चिडो अर चिडी ई चुग्गो पाणी नी करियौ। मरदानौ भेख करिया अकेली डावडी पद्दूदी रा लाडू गटकावती ही अर दीवडी मे भरियोडौ ठाडो पाणी पीवती ही।

—फुलवाडी

२ बल-पौरुष वाला, शूर-वीर, साहसी।

उ०—१ तद सागंजी कयौ जी इण नू खाटरौ मत देखो। म्हा भेळा घणा रोळा किया है, सू आदमी वडो मरदानौ है।—द दा

उ०—२ लालचद कहै साहि अलावदी रे, बोलाया बड वीर । सझ हुई सिंहलद्वीप नै ते, जे मरदाना वीर ।—प च. चौ

स० पु०—वीरता, साहस ।

उ०—साहि कहै सुभटा भणी, होज्यो हिवै हुसीयारो रे । मरदांनी मरदा तणी, देखेंगे इण वारो रे ।—प च चौ

मरदा-मरद–वि०—१ मर्दों मे मर्द, नर मे श्रेष्ठ ।

उ०—ऊभो दिली सीस उसांसै, 'जगा' तणो कसीया जरद । महलां तणा मरद अन महपत, मेवाडो मरदा-मरद ।—जोगीदास कवारियो

२ अद्वितीय योद्धा, वीरो मे वीर, श्रेष्ठ वीर ।

उ०—माण हीण सुपह भरै थत मामलत, पाण कुण करै महाराण पाजा । मोसरां ताण महाराज मरदांमरद, रचै घमसाण जमराज राजा ।—जवानजी आढ़ो

३ वीर, बहादुर, योद्धा ।

उ०—मलफ चढै मरदा-मरद, विकट जगां लग वग । पग पग जय कीधी 'पतै', एलिम जनरळ अग ।—जुगतीदान देथो

स० पु०—अर्जुन का एक नामान्तर । (ह नां. मा)

क्रि० वि०—जबरदस्ती, बलात्, येन-केन प्रकारेण ।

रू० भे०—मरद्दा-मरद्द ।

मरदामरदी, मरदा-मरदी–स० स्त्री०—मरदा-मरद होने की दशा, अवस्था या भाव ।

मरदाई—देखो 'मरदानगी' ।

उ०—सिंघ रै साभी पाणी पीयनै कोरा निकळ जावै तो मरदाई है । —फुलवाडी

मरदियोडो–भू० का० कृ०—१ मसला हुआ, रगडा हुआ (शरीर या अग). २ मालिश किया हुआ, लेपन किया हुआ, मला हुआ ३ दवाव डाला हुआ, दवाया हुआ. ४ सन्तापित या पीडित किया हुआ ५ पीसा हुआ, घोटा हुआ ६ नष्ट किया हुआ, उजाडा हुआ, कुचला हुआ, रौंदा हुआ

(स्त्री० मरदियोडी)

मरदुम–सं० पु० [फा० मर्दुम] मनुष्य, इंसान ।

मरदुम-सुमारी–स० स्त्री० यौ० [फा०] जनगणना ।

रू० भे०—मरदमसुमारी ।

मरदुमी—देखो मरदमी' (रू भे)

मरदूद–वि० [फा० मर्दूद] तिरस्कृ, वहिष्कृत, नीच ।

मरद्द—देखो 'मरद' (रू भे)

उ०—१ दाढ गरद्दा भारिया, अग जरद्दा दूण । रूप मरद्दां मीर सव, लक करद्दां तूंण ।—रा रू

उ०—२ मरोडै गजा कध ओडै मरद्द । रहच्चै जिसा सिंघ मुक्की रवद्द ।—वचनिका

उ०—३ सुरत्त तु हीज तु हीज सवद्द, मरद्दां मादा वीच मरद्द । —ह र

उ०—४ सेलाळ जरद्द मरद्द सकाज । वेधै वज्र भाखर पाखर बाज । —सू. प्र

मरद्दक—देखो 'मरदक' (रू भे)

मरद्दण, मरद्दन—देखो 'मरदन' (रू भे)

उ०—नमो मुर-मेघ मरद्दण मल्ल । कसासुर काळ सगासुर मल्ल । —ह र

मरद्दनकाळी—देखो 'मरदन-काळी' (रू भे) (ना मा)

मरद्दल–स० पु०—एक वाद्य विशेष ।

उ०—पटुपटह अदग करडि मरद्दल वेणु तलिमताल कसाल झल्लरि भेरि मदन भेरि जय भेरि भरहृभभ हहुक्क ढक्क बुक्क त्रवक काहल काहली वरगां प्रभृति वादित्र ।—व स

मरद्दा-मरद्द—देखो 'मरदामरद' (रू भे)

उ०—जोधां राकसे जरद्द मूगळा उतारै मद्द, वाहाळो म्हारै बिरद्द मरद्दा-मरद्द ।—ल पि

मरद्दित–वि०—१ मसला हुआ ।

२ नष्ट किया हुआ । ३ पीसा हुआ ।

मरपूरो–वि० मरकर के भी कार्य को पूरा करना ।

उ०—वीर क्षत्री कहै है कै तो मार दुसमणा नै और गऊंवा ले आवां मो लुगायीया दही रा माट विलोवसी कै मरपूरा देमा मो गऊवां ऊपरा सू देदे पग और घट सरीर खदती जासी ।—वी स टी

मरम–स० पु० [स० मर्म] १ सार तत्त्व, यथार्थ, सत्य ।

उ०—भुज भिडज रूप सपताम भांति, कवि तेण लखण गुण वरण क्रांति । सत उकति जेण पडित प्रमांण, जुधि जैत मरम क्रम प्रथम जांण ।—रा रू

२ आशय, अर्थ, भाव ।

उ०—भासा संस्कृत प्राकृत भणता, मूझ भारती ए मरम । रस दायिनी सुदरी रमता, सेज अतरिख भूमि सम ।—वेलि

३ रहस्य, भेद ।

उ०—१ मत्री सू आलोचै वइठा, मूळ मरम सहु जाणो । रुखमईयो राजा ऊवेखई, तुरी अमोलिक आणो ।—रुकमणी मगळ

उ०—२ म्हैं घणा दिना तक इण मरम नै मन में छिपायां राखियो ।—फुलवाडी

४ कपट, छल । (अ मा)

५ शरीर का स्थान या नाजुक भाग, जहा चोट लगने से अत्यन्त वेदना होती है ।

उ०—आवतो आवतो रांणा री वैहल नजीक आयो, खुरी घोडो करने जैमल रै रतनै सांखलै वरछी दोय २ छाती माहै लगाई, मरम री लागी राणो मुवो ।—नैणसी

६ सधि स्थान । ७ हृदय ।

८ युद्ध का एक वाद्य विशेष ।

उ०—हक्का १, इक्का २, मरम ३, काहल ४, पुप्फभेर भांणग ५, पडहो ६, जुग ७, सख ८, करड ९, पागय १०, मुद्दल ११, कसाल १२, रणनदी १३, इति रणनदी ।—व स

वि०—छुपा हुआ, गुप्त, रहस्यमय ।

उ०—सेस कूरम जितै समरम, इळा सुर भ्रम निगम आगम । सुखि तपो भ्रण भरम भ्रम सम, मरम निघ जिम 'माल' ।—रा रू

रू० भे०—मम्म, मरमु, मरमो, मरम्म ।

मरमक—एक प्रकार का आभूषण । (व स)

मरमग, मरमग्य–वि० [स मर्मज्ञ] १ वह जो किसी बात का गूढ रहस्य जानता हो, तत्वज्ञ ।

२ रहस्य या भेद जानने वाला ।

स० पु०—१ प्रकाण्ड-पण्डित । २ विद्वान ।

मरमचर–स० पु० [स० मर्म+चर] हृदय । (डि को)

मरमट–स० पु०—१ गर्व, अभिमान ।

उ०—लड खडती पडती लालरती, मेल माण सिर सवर मरती । गी 'अभमल' अगै पड गळिया, मरमट मूक मरद्दा मिळियां ।
—द्वारकादास दधवाडियो

२ बल, पौरुष, शक्ति ।

मरमत—देखो 'मरम्मत' (रू भे)

उ०—वगतर, झिलम, जिरह-सूथण, जिरै जूता, घोडा री पाखरा काढजै छै सुवारजै छै । मनैग्यांनै मारी तेदड कर रह्यो छै । सखरा रजपूत तयार कीजै छै । चिलकता रा तह सभाळजै छै मरमत हुवै छै ।—कुवरसी साखला री वारता

मरमपीडा–स० स्त्री०—१ आन्तरिक पीडा ।

२ मानसिक क्लेश ।

मरमप्रहार–स० पु०—शरीर के मर्मस्थल पर किया जाने वाला प्रहार, गहरी चोट ।

मरममोख–स० पु०—चोर । (ह ना मा)

मरमर–स० स्त्री० [स० मर्मर] १ पत्तो की हल्की खडकन ।

२ वस्तुओ की परस्पर होने वाली हल्की रगडन ।

३ उक्त रगडन या खडकन मे होने वाली ध्वनि । (उ र)

[फा० मर्मर] ४ एक प्रकार का सफेद पत्थर ।

मरमराणौ, मरमरावौ–क्रि० अ०—१ परस्पर रगडन का शब्द होना,

२ बोझ या दबाव के कारण वृक्ष की टहनी का मरमर शब्द करते हुए झुकना ।

मरमरी–स० स्त्री०—१ वेसन की पकोडी या सेव । (मेवाड)

२ मरने की इच्छा ।

ज्यू—'तनै काई मरमरी आ री' है ।

३ दूध या छाछ की ऊपरी सतह पर घी का छोटी छोटी गाठो के रूप में तैर आना ।

रू० भे०—मिरमरी ।

मरमस्थळ, मरमस्थान–स० पु० [स० मर्मस्थल, मर्मस्थान] शरीर का वह नाजुक स्थान या सधिस्थल जहा चोट लगने से अत्यन्त दर्द होता है ।

मरमी–वि०—१ मर्म का, मर्म सम्बन्धी ।

२ मर्म जानने वाला ।

मरमीक—देखो 'मरमग्य' ।

उ०—पारबती अवतार प्रगटसी कहियउ तरइ ब्रह्म मरमीक ।
—महादेव पारवती री वेलि

मरमु, मरमो, मरम्म—देखो 'मरम' (रू भे)

उ०—१ केवि दिखाडइ खाडा सरमु, केवि तुरगम जाणइ मरमु । चक्र छुरी किवि सावल भालइ, किवि हथियार पडता झालइ ।
—प प च

उ०—२ दुरगति पडता प्राणिया के, राखइ स्रीजिन धरम । कुटव सहू को कारिमु रे, मति भूलउ भव मरमो रे ।—म कु

मरम्मत–स० स्त्री० [फा०] १ टूटी हुई या क्षत विक्षत वस्तु को सुधारने व अच्छी स्थिति मे लाने का कार्य, जीर्णोद्धार । (रिपेयर्स)

२ मारपीट, दण्ड ।

रू० भे०—मरमत ।

मरयाद, मरयादा—देखो 'मरजाद' (रू. भे)

उ०—१ मेरु-गिरि मरयादा छे छती रे, सक्र दक्षिण दिस अधिपती ।—जयवाणी

उ०—२ न करीजै जो नीक, लीक नहु सायर लघै । मरयादा मेटता सदा टालीजै सघै ।—घ व ग्र

उ०—३ वे मरयादा मित नही ऐसे किये अपार । मैं अपराधी बापजी, मेरे तुमहि एक आधार ।—दादूबाणी

उ०—४ सूरिज ऊगै पच्छिमे, मूकै समुद मरयाद रावत । ध्रुव चलै पिण न चलइ, सापुरिसां रा साद रावत ।—प च चौ

मरवट—देखो 'मरोट, मरोठ' (रू भे)

उ०—खड पूगळ खळ भळै, कोट मरवटा टळक्कै । देरावर डिगमगै, लसेवरि हा ही सकै ।—नैणसी

मरवण–स० स्त्री०—अर्धांगिनी, पत्नी के लिए प्रयोग किया जाने वाला शब्द ।

उ०—१ आप चालिया चाकरी (जी) ढोला, मरवण ने लीजो माथ, जवाइया री एळची ।—लो गी

उ०—२ ऐ तो देराण्या-जेठाण्या जाया हालरा । मरवण थे कांई जायी है धीव ।—लो गी

२ एक राजस्थानी लोक गीत ।

३ देखो 'मारवणी' (रू भे)

मरवौ–स० पु० [स० मरुवक] १ वन तुलसी या ववरी जाति का एक पौधा, जो औषधि के काम आता है । इसे बागो मे भी लगाया जाता है ।

उ०—१ फागण फोगा महक केवड़ां मरवा वाळी । वरसाळै वगाळ सस्य स्यामळ हरियाळी ।—दसदेव

उ०—२ चपा, मरवा, मोगरा, जुही जाये केतकी छै ।
—बगसीराम प्रोहित री बात

२ एक राजस्थानी लोक गीत ।

३ दोहे छन्द का एक भेद जिसमे ७ गुरु व ३४ लघु होते हैं ।
(ल. पिं)

रू० भे०—मरुग्रो, मरुवउ, मरुवौ, मरूग्रउ, मरूवौ ।

मरसियौ—स० पु० [ग्र० मर्सिय] किसी मृत व्यक्ति के शोक मे बनाया हुग्रा पद्य ।

मरहट—देखो 'मरघट' (रू भे)

उ०—तात मात वनिता सुत वधु, जतन जीवतां करही रे । मूवां जाळि वाळि घरि ग्रावें, ता मरहट तें डरही रे ।—ह पु वा

२ देखो 'मरहठ' (रू भे)

मरहटी—देखो 'मरहठी' (रू भे)

मरहटौ—स० पु०—१ उनतीम मात्राग्रो का एक छन्द विशेष जिसमे १०, ग्राठ ग्रोर ११ पर विश्राम होता है तथा ग्रत मे एक गुरु व एक लघु होता है ।

रू० भे०—मरहट्टौ मरहट्ठौ ।

२ देखो 'मरहठौ' (रू भे)

मरहट्ट, मरहट्टय—१ देखो 'मरहठ' (रू भे)

उ०—१ ले लच्छी मरहट्ट री, गूजर खड ग्रधीस । ग्राय महालच्छी चरण, सीग नमायौ सीस ।—वां दा

उ०—२ जोणग चीण हूण मरहट्टय कोकय डुविलय कुलखय खर-मुग्व तुरगमुख सिंहमुख हयकरण्ण गजकरण्ण प्रभ्रति ग्रनारय देस मनुस्य ।—व स

२ देखो 'मरहठौ' (मह , रू भे)

उ०—तद तीठो 'ग्रभपति' विकट तोर, दळ दिखण भाग मरहट्ट दोर । दीन ह्वो ग्रासरीवाद दीध, ककर तब बाजीराव कीध ।
—वि स

३ देखो मरघट' (रू भे)

मरहट्टी—देखो 'मरहठी' (रू भे)

मरहट्टौ—१ देखो 'मरहटौ' (रू भे)

उ०—पद प्रतमत गुणतीस पढि, ग्रत गुरु लघु होय । राघव जस जिण मझ रटां, कहै मरहट्टा सोय —र ज. प्र

२ देखो 'मरहठौ' (रू भे)

मरहट्ठ—१ देखो 'मरहठ' (रू भे)

२ देखो 'मरघट' (रू भे)

मरहट्ठी—देखो 'मरहठी' (रू भे)

उ०—मरहट्ठी गादहि किसिउ कुकुणउ वामइ, मालवी धाइ किसिउ मारुयं मासइ, गोबर कीडउ किसिउ भ्रमर जिम रणझ-णइ ।—व स

मरहट्ठौ—१ देखो 'मरहटौ' (रू भे)

२ देखो 'मरहठौ' (रू भे)

मरहठ—स० पु० [प्रा० मरहट्ठ, स० महाराष्ट्र] १ दक्षिण भारत का एक प्रदेश, महाराष्ट्र । (उ. र)

उ०—कुकण कनवज नइ कलहटौ, मरहठ नइ मुलवारी । स्यघळ सेतवध नो राजा, ते सवि लीया हकारी ।—रुकमणी मगळ

रू० भे०—मरहट, मरहट्ट, मरहट्टय, मरहट्ठ, मारहट, मारहट्ट ।

२ देखो 'मरघट' (रू भे)

मरहठी—वि०—महाराष्ट्र का, महाराष्ट्र सम्बन्धी ।

स० स्त्री०—महाराष्ट्र की भाषा, मराठी ।

रू० भे०—मरहटी, मरहट्टी, मरहट्ठी मराटी, मराठी, मारहटी, मारहट्टी ,मारहठी ।

मरहठौ—स० पु०—महाराष्ट्र प्रदेश का निवासी, मराठा ।

रू० भे०—महहट, मढेठौ, मरहटौ, मरहट्टौ मरहट्ठौ, मराठौ, मरेटौ, मरेठौ, मारहटौ, मारहट्टौ, मारहठौ ।

मह०—मरहट्ट, मरहट्टय, मारहट, मारहट्ट ।

मरहम—देखो 'मलम' (रू भे)

मराडणौ, मराडबौ—देखो 'मराणौ, मराबौ' (रू. भे)

उ०—१ ताहरा राखायत रजपूता नू कहै—हू पूछू ग्रर मामोजी मो ऊपर रीस कर मोनू मराडै तो कुण छोडावै ?—नैणसी

उ०—२ मुसा दादरा हूत नागा मराडै । खुरां कीडिया हूत हाथी खुदाडे ।—सू प्र

उ०—३ लोक ग्राधा पाछा होइ गया । ग्रापरा हीज घोडा रजपूत मराडि गया ।—द वि

मराडणहार, हारौ (हारी), मराडणियौ—वि० ।

मराडिग्रोडौ मराडियोडौ, मराड्योडौ—भू० का० कृ० ।

मराडीजणौ, मराडीजबौ—कर्म वा० ।

मराडियोडौ—देखो 'मरायोडौ (रू भे)

(स्त्री० मराडियोडी)

म'राज—देखो 'महाराज' (रू भे)

मराट—वि०—१ मारने वाला, मर्दन करने वाला, नष्ट व विध्वस करने वाला ।

उ०—१ माझी मोह मराट, 'पातल' गण प्रवाड-मल । दुजडा किय द्रहवाट, दळ मैंगळ दाणव तणा ।—सूरायच टापरियौ

२ जबरदस्त, जोरदार ।

३ शक्तिशाली, बलवान ।

४ सस्त, दृढ, मजबूत ।

५ ग्रधिक, बहुत ।

मराटी, मराठी—देखो मरहठी' (रू भे)

मराठौ—देखो 'मरहठौ' (रू भे)

मराणौ, मराबौ–क्रि० स० ["मरणौ" क्रिया का प्रे० रू०] १ किसी मनुष्य, जीव या प्राणी को मारने के लिए प्रेरित करना, मरवाना, हत्या कराना, बध कराना।
२ युद्ध में झूझने या वीर गति प्राप्त करने के लिये प्रेरित करना, उकसाना।
३ भूख या प्यास से पीडित करवाना, त्रास दिलाना।
४ पिटवाना कष्ट, पीडा या दुख दिलवाना।
५ पराजित या परास्त कराना।
६ गुदा मैथुन या सभोग करवाना। (बाजारू)
मराणहार, हारौ (हारी), मराणियौ—वि०।
मरायोडौ—भू० का० कृ०।
मराईजणौ, मराईजबौ—कर्म वा०।
मराड़णौ, मराडबौ, मरावणौ, मरावबौ—रू० भे०।

मरातब, मरातिब–स० पु० [अ० मर्तब] १ अविकार युक्त पद।
उ०—१ मलिक तरणा जूजूआ मरातब, मांहि भला झूझार। दळ जोयता दीस आथम्यउ, तुहि न आवइ पार।—का दे प्र
उ०—२ पांणी घांन चलावउ साथइ, सोवति वाहु अपार। आप आपणा मरातब लेज्यो, मांहि भला झूझार।—का दे प्र
२ दर्जा, श्रेणी।
३ क्रमश आने वाली अवस्थाए।
४ तह पृष्ठ। ५ मकान। ६ मजिल।
७ ध्वजा, पताका झडा।
८ प्रतिष्ठा, इज्जत।
यौ०—माहि-मुरातब।

मरायोड़ौ–भू० का० कृ०—१ मारने के लिए प्रेरित किया हुआ, हत्या या वध कराया हुआ, मरवाया हुआ। २ युद्ध मे झूझने या वीर गति प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया हुआ, उकसाया हुआ ३ भूख या प्यास से पीडित करवाया हुआ, त्रास दिराया हुआ ४ पिटवाया हुआ, कष्ट, पीडा या दुख दिराया हुआ ५ परास्त या पराजित करवाया हुआ ६ गुदा मैथुन कराया हुआ (बाजारू)
(स्त्री० मरायोडी)

मराळ, मराल–स०पु० [स० मराल] (स्त्री० मरालि, मराली) १ हंस। (अ मा, ना मा, ह ना मा)
उ०—१ कीर कवळ भर कोकिळा, अहि गज सिंह मराळ। उदैराज देख्या इता, लूवत एकहि डाळ।—उदयराज
उ०—२ देख हवाल भाल देवी, चाल मराळ चलाई। मोखमपुरै 'बिसन' हुय मादौ, पूरण अबचल पाई।—मे म
उ०—३ डीभू लक मराळि गय, पिक सर एहि वाणि। ढोला एही मारुई, जेहा हंस निवांणि।—ढो मा
२ बतख की जाति का एक जलचर पक्षी, कारण्डव।
३ घोडा, अश्व।
४ हाथी। ५ बादल, मेघ।
६ अजन, सुरमा।
७ अनार के वृक्षो का कुज या बाग।
८ दोहा छद का ९ वां भेद जिसमे १४ गुरु व २० लघु के अनुसार अडतालीस मात्राए होती हैं।
वि०—१ कोमल, चिकना।
२ छली, कपटी, बदमाश।
रू० भे०—मयराळ, मयराल।

मरावणौ, मरावबौ—देखो मराणौ, मराबौ' (रू भे) (उ र)
मरावणहार, हारौ (हारी), मरावणियौ—वि०।
मराविश्रोडौ, मरावियोडौ, मराव्योडौ—भू० का० कृ०।
मरावीजणौ, मरावीजबौ—कर्म वा०।

मरावियोड़ौ—देखो 'मरायोडौ' (रू भे)
(स्त्री० मरावियोडी)

मरिच—१ देखो 'मरीचि' (रू भे)
२ देखो 'मिरच' (रू भे)
उ०—१ तदनतर वडा आव्या, घणइ तेलइ सीना, घोलि भीना, ऊपरि आगलु वाटु, जांणीइ किरि अम्रतनउ घाटु मरिचना चमत्कार, अत्यन्त सुकमार, हस्तिपद प्रमाण, प्रीणता प्राण।—व स
उ०—२ दुग्ध गोधूम चूरण घ्रत गुड सहित नालिकेरस्य खड। द्राक्षा खरजूर सुठी तज मरिच युत पेसलं देव पुस्पम्।—व स
३ देखो 'मरीच' (रू भे)

मरियम–स० स्त्री० [अ० मर्यम] ईसा मसीह की माता का नाम, जिसके कौमार्यावस्था मे ही ईसा का जन्म हुआ था।

मरियाद, मरियादा—देखो 'मरजाद' (रू भे)
उ०—मरियाद मित्र पावन पवित्र, धन्यास्ति धन्य, गुरु अग्रगन्य।
—ऊ का

मरियोडौ–भू० का० कृ०—१ प्राणहीन, मृतक, मरा हुआ २ वीर गति पाया हुआ, झूझा हुआ ३ भूख प्यास से व्याकुल, त्रस्त। ४ हत्या या कत्ल किया गया हुआ, नष्ट या मिटा हुआ ५ न्यौछावर, उत्सर्ग हुवा हुआ ६ प्रेम मे आसक्त, विव्हल या विकल हुवा हुआ ७ कुम्हलाया हुआ, मुरझाया हुआ, सूखा हुआ ८ मरणासन्न या मृत प्राय हुवा हुआ ९ अत्यन्त चिन्तित हुवा हुआ १० कष्ट या विपत्ति का मारा हुआ ११ बोझ या भार से दवा हुआ १२ गुण समाप्त हुवा हुआ, अप्रयोज्य हुवा हुआ १३ इच्छा, उत्साह, वेग आदि मद हुवा हुआ, दवा हुआ १४ पराजित या परास्त होकर बाहर हुवा हुआ, आउट (प्लेयर) १५ पेठा हुआ, समाया हुआ
(स्त्री० मरियोडी)

मरी-स० स्त्री०—१ जनपद व्यापी एक भयकर संक्रामक रोग जिससे तुरन्त मृत्यु होती है, महामारी।
उ०—१ वरम तीसरै मेह न वूठै, ईत मरी दुरभख भय ऊठै।
—सू प्र
२ मृत्यु, मौत।
रू० भे०—मारी।

मरीच-स० पु० [स०] १ एक रघुवंशीय राजा। (रामरासो)
२ काली मिरच।
३ काली मिरच का पौधा।
रू० भे०—मरिच।
४ देखो 'मारीच' (रू भे)
उ०—रावण जहां नानी रहै, मात सुबाहु मरीच।—रांमरासो
५ देखो 'मरीचि' (रू भे) (ह. ना मा.)

मरीचि-स० पु० [स०] १ इक्कीस प्रजापतियो मे से एक जो ब्रह्मा के नेत्र से उत्पन्न हुआ था। यह ब्रह्मा का प्रथम पुत्र था।
२ एक ऋषि जो भृगु के पुत्र एव कश्यप के पिता थे।
३ एक स्मृतिकार ऋषि।
४ एक ज्योतिष शास्त्रज्ञ।
५ एक मरुत का नाम।
६ एक दानव जो कश्यप एव दनु के पुत्रो मे से एक था।
७ एक राजा जो वृषभदेव के वंश मे उत्पन्न सम्राज नामक राजा का पुत्र था।
८ श्रीकृष्ण का एक नामान्तर। ९ कजूस।
१० प्रकाश का अणु। ११ सूर्य।
स० स्त्री०—१२ किरण, मयूख, रश्मि। (हि को)
उ०—परै मरीचि मांह पै न छाह आतपत्र की। क्रमैं न वायु अत्र ताल पत्र तैं कलत्र की।—ऊ का
१३ मृग-तृष्णा।
रू० भे०—मरिच, मरीच, मरीची।

मरीचिका-स० स्त्री० [स०] १ किरण, रश्मि। (अ. मा)
२ मृग-तृष्णा।

मरीची—देखो 'मरीचि' (रू भे) (अ मा)

मरीज-वि० [अ०] रोगी, बीमार।

मरीयत-स० स्त्री० [स० म्रिड्] महामारी।
उ०—मो पुर प्रज मो देस मझारैं। मरीयत दुरभख नह मारैं।
—सू प्र

मरु-स० पु० [स० मृ+उ] १ वह भूभाग या प्रदेश जहां पानी न हो, केवल रेत के सूखे मैदान या टीले हो, रेगिस्तान, मरु-भूमि।
२ मारवाड व उसके आस पास का भू-भाग।
३ वह पर्वत जो जल रहित हो।
४ सूर्यवंशी राजा शीघ्र का उत्तराधिकारी एक राजा।
उ०—मरु जिण सुतण तपोबळ मडै। खित गलिका परगट नव खडै।—सू प्र
५ विदेह देश का एक निमिवंशीय राजा, जो हर्यश्व जनक नामक राजा का पुत्र था।
६ एक दैत्य जो नरकासुर का प्रमुख सहायक था।
रू० भे०—मरू।

मरुआडि, मरुआडि—देखो 'मारवाड' (रू भे)
उ०—किलवां सग्रांमि विवनउ करइ। थरहरिय सवे मरुआडि थअ।—रा ज. सी

मरुओ—देखो 'मरवो' (रू भे)

मरुक-स० पु० [स०] १ मोर, मयूर।
२ एक लोक समूह। (महाभारत)

मरुकांतार—रेगिस्तान, मरु-भूमि।

मरुग-स० पु०—मरु प्रदेश, मारवाड।
उ०—सगवण गज्जण सवर बरवरकाय चिलाय तुरड गुड उडकुड पक्कण चुक्कण कुडक्क तोसल सिहल दमिल अज्जल विल्लल पारस खस लउस हारोसमोसहिम रोम मरुग पल्लव मालव बहलिय सउलिय जोणग चीण हूण मरहट्टय कोकय डुविलप कुलखय खरमुख तुरगमुख मिढमुख हयकरण्ण गजकरण्ण प्रभृति अनारयदेस मनुस्य।
—व स

मरुत-स० पु० [स० मरुत्, मरुत] १ वायु, पवन। (अ मा)
२ वायु का अधिष्ठाता देव।
३ इन्द्र। (ह ना मा)
४ देवता। (हि को)
५ एक देवगण, इनकी सख्या उनन्चास मानी गई है। ये कश्यप और दिति के पुत्र थे।
वि० वि०—कश्यप से उत्पन्न दिति के सभी पुत्र विष्णु द्वारा मारे गये तो दिति ने कश्यप से वर मागा कि 'इन्द्र को मारने वाला एक अमर पुत्र मुझे प्राप्त हो। कश्यप ने दिति को यह वर दे दिया। इन्द्र को जब यह पता चला कि दिति अपने गर्भ मे उसका काल पाल रही है तो वह साधु वेष मे दिति के पास रहने लगा। एक बार मौका पाकर योगबल से उसने दिति के गर्भ मे प्रवेश किया और उसके गर्भ को नष्ट करने के लिये उसके सात टुकडे कर डाले। परन्तु जब वे नही मरे तो उन सातों के सात सात टुकडे और कर डाले। (इस प्रकार ये उनन्चास हो गये) इस पर भी जब वे नही मरे तो इन्द्र ने समझ लिया कि वे किसी देवता के अंश हैं। अत उसने इन्हे अपने भाई मान लिये। कालान्तर में दिति के जब उनन्चास पुत्र उत्पन्न हुए तो वह आश्चर्य चकित हो गयी और इन्द्र से इसका कारण पूछा। इस पर इन्द्र ने अपना रहस्य दिति को बताया और

उसके सभी पुत्रों को स्वर्ग में ले गया। वहां उन्हे यज्ञ के हविर्भाग का अधिकारी बना कर भाई की भांति रक्खा।

६ मनुष्य। (ह ना. मा)

७ पहाड, पर्वत। (अ मा, ह, नां. मा)

८ मरुवक नामक एक पौधा।

९ एक महर्षि, जिसने शान्ति दूत बन कर जाने वाले श्रीकृष्ण की परिक्रमा की थी।

रू० भे०—मरुत, मरूत।

मरुतचक्र–स० पु० [सं० मरुत=हवा+चक्र] वातचक्र।

उ०—आगणि जळ तिरप उरप अलि पिम्रति, मरुतचक्र किरि लियत मरू। रामसरी खुमरी लागी रट, घूया माठा 'चद' घरू।
—वेलि

मरुतजण–स० पु०—राक्षस, असुर।

उ०—कत कमळा कळह रटक पांणा करै, घाव वाणा करै कटक वाया। मरुतजण मोह सू—र रू

मरुतवान–स० पु० [स० मरुत्वत्] इन्द्र। (ह नां मा)

मरुतसखा–स० पु० [स० मरुत्+सख] १ इन्द्र। (ह ना मा)

२ पवन।

मरुतसुत, मरुतसुति–स० पु० [स० मरुत्+सुत] १ हनुमान, बजरग।

२ भीम।

रू० भे०—मरुत्सुत।

मरुत्त–स० पु० [स०] १ तुर्वसुवशीय एक राजा, जो महाराज करधम का पौत्र और आवीक्षित का पुत्र था।

वि० वि०—इसके यज्ञ मे देवता आकर काम करते थे। यह वैशाली का सुविख्यात सम्राट हुआ।

२ एक यादव राजा।

३ देखो 'मरुत' (रू भे)

मरुत्पति–स० पु० [स०] देवराज इन्द्र।

मरुत्पथ–स० पु० [स०] आकाश, अन्तरिक्ष। (हि को)

मरुत्सुत—देखो 'मरुतसुत' (रू भे)

मरुथळ—देखो 'मरुस्थळ' (रू. भे)

मरुत्वत–स० पु० [स०] १ बादल, मेघ।

२ इन्द्र। ३ हनुमान।

मरुद—देखो 'मरद' (रू. भे.)

मरुदेव–स० पु० [स०] १ इक्ष्वाकु वशीय एक राजा जो राजा सुप्रतीक का पुत्र था।

उ०—प्रतीकास जिण सुत बौह पौरस, जेण सुतण सुप्रतीक उजळ जस। सुत जे नृप मरुदेव वयण सति, पुत्र जास सुनक्षत्र प्रथमि पति।—सू प्र

२ एक देव विशेष।

उ०—देव अनाथनाथ जगन्नाथ त्रिभुवनस्वामि, विमलवाहन-चक्षुस्मत- यसस्वी अभिचद्र-प्रसेनजित् मरुदेव नइ अन्वयि नाभिरेस्वर-कुलनभस्थल-मयूसमाली, मरुदेवा-कुक्षिकदरा-केसरिकिमोरक, समीहितारथकारी, सरवातिसयरवस्वधारी । —व स.

रू० भे०—मरुदेव।

मरुदेवी–स० स्त्री०—भगवान ऋषभदेव की माता का नाम।

उ०—नाभिराय मरुदेवी नदन, यगलाधरम निवारणहार।—स कु

रू० भे०—मरुदेवा, मरुदेवी।

मरुद्रथ–स० पु०—घोडा।

मरुद्विप–स० पु०—१ हाथी। २ ऊट।

मरुदेस–स० पु०—मारवाड।

उ०—जिसा मरुदेसि कूपजल, जिसी सिला उच्च सरल।—व स

मरुधन्वा–स० पु० [स० मरु+धन्वन्] मरुस्थल, मारवाड।

रू० भे०—मरुधन्वा।

मरुधर–स० पु०—मारवाड का एक नाम।

उ०—१ मरुधर देश वखांणिए।—धरम-पत्र

उ०—२ मरुधर गूजर सोरठ मालव पूरव सिंध सपूरि।
—मुनि जयसोम

रू० भे०—मरुध्धर, मरूधर।

मरुधरा–स० स्त्री०—१ मारवाड का एक नामान्तर।

२ निर्जल भूमि।

रू० भे०—मरुभूमि, मारवधरा।

मरुधरियो–स० पु०—१ मारवाड का निवासी, मारवाडी।

वि०—२ मारवाड सबधी, मारवाड का।

मरुध्धर—देखो 'मरुधर' (रू भे)

मरुभूमि—देखो 'मरुधरा'।

मरुयउ—देखो 'मरवो' (रू. भे)

उ०—सघ मिलयउ करइ काम उलट पट, कनक पीतल रूप तरुयउ रे। समयसुदर कहइ स्रीसघ सोहइ, वाडी माहे जिम मरुयउ रे।
—स. कु

मरुवण—देखो 'मारवण' (रू भे)

मरुवो—देखो 'मरवो' (रू भे)

उ०—जिहा किण कमल अपार रे र०, चांपो मरुवो वे दमणो मालती रे। वउलसिरी सुखकार रे र०, जाई जूई रे दुखडा पालती रे।—वि कु

मरुस्थळ, मरुस्थलि–स०पु० [स० मरु+स्थल] निर्जल प्रदेश, रेगिस्तान।

उ०—१ दिस मरुस्थळ पति देस, व्रत अलख चख पडवेम।
—रा. रू

उ०—२ उसरक्षेत्रि इक्षुलता, मरुस्थलि गगा तरग, गिरिसिखरि पद्मनी, धूलिमाहि रत्न।—व स

रू० भे०—मरुथळ।

मरूडीयो—१ एक जाति विशेप।

उ०—ग्रावइ ऊड तलावीया, विणजारा विलवाल। हुडदलीया हीडइ घणा, मरू डीया गलि माल।—मा का प्र.

२ देखो 'मुड' (ग्रल्पा, रू भे)

मरू–स० पु०—१ मुर्छा, गश।

उ०—ग्रागणि जळ तिरय उरप ग्रलि पिम्रति, मरुतचक्र फिरि लियत मरू। रामसरी खुमरी लागी रट, घूया माठा चद घरू।—वेलि

२ देखो 'मरु' (रू भे)

उ०—सुरायण पूर किया रिणसाज, विढै देविचद ग्रनै वछराज। सदा तड वकिय वाँकिम सूर, मरू मुहणोत मन्त्रि मगरूर।—सू. प्र.

मरूग्रउ—देखो 'मरवौ' (रू. भे) (उ र)

मरूग्राडि—देखो 'मारवाड' (रू भे)

मरूउ–स० पु०—मुकुल।

उ०—दव जिम दीठइ करुणए करणइ ए हियु निकामु। मरूउ वरूउ दमनकि मन किहि नहीं य विस्रामु।—जयशेखर सूरि

मरूक–स० पु० [स०[१ मोर, मयूर।

२ एक प्रकार का मृग।

मरूत—देखो 'मरुत' (रू भे)

मरूतयान–स० पु० [स० मरुत-यान] गरुड। (ना हि. को.)

मरूदेव—देखो 'मरुदेव' (रू भे)

मरूदेवा, मरूदेवी—देखो 'मरुदेवी' (रू भे)

उ०—वीनति सुणो रे म्हांरा वाल्हा, राजि मरूदेवा रांणी ना लाला।—वि कु

मरुधन्वा—मारवाड़ का एक नाम।

रू० भे०—मरुधन्वा।

मरूधर—देखो 'मरुधर' (रू भे)

उ०—इम ग्रचडा ग्रणपाळ, कवरागुर दिन दिन करै। मरूधर 'ग्रभमाल' ग्रति छक धारै 'ग्रजण' उत।—सू प्र

मरूधरो—देखो 'मरुधर' (ग्रल्पा, रू भे)

उ०—मरूधरै देस महाराज मोटो मरुद, कदै नही परज नै चित काइ।—घ व ग्र

मरूमडळ–स० पु०—मारवाड।

मरूवौ—देखो 'मरवौ' (रू भे)

उ०—तिलक केसर कोरट बकुल, पाडल वली रे। दमणो मरूवौ कुसुमकली बहुविध मिली रे।—वि कु.

मरेटौ—देखो 'मरहठौ' (रू भे)

उ०—मरेटा दिने उ भूख करतो जनेवा मूढै, एक घाव रोई टक जनेऊ उतार।—बद्रीदान खिड़ियो

मरेठी—देखो 'मुलेठी' (रू भे)

मरेठौ—देखो 'मरहठौ' (रू भे)

मरोड–स० स्त्री० [स० मुर] १ मोड़ने, घुमाने या ऐंठन डालने की क्रिया या भाव।

२ ऐंठन, बल।

उ०—राजाजी मूछया री मरोड विखेरता कै'वण लागा—म्हैं केवू तो ई थूं म्हनै ग्रेकलो छोडनै मत जाजै।—फुलवाडी

३ वात विकार के कारण पेट मे होने वाली ऐंठन, दर्द, पीडा।

४ विरोध, शत्रुता।

उ०—चेटक पमग न दे चीतोड़ो, कन्या न ग्रापे गरथ करोड। चगता रहे चतरगढ चढता, रह ग्रकवर 'परताप' मरोड़।—राणा प्रताप रो गीत

६ गोरव, मान, प्रतिष्ठा, इज्जत, ग्रान।

उ०—१ नीरा ले ले पीव सू सांभरिया तणी कहे नारी, मैल ग्राया सारी छग्री पणा री मरोड।—दलजी महडू

उ०—२ गरज इणा री छिपावण ग्रौगुण नै कमी ग्रापरी मरोड मे जाणी।—नी प्र

७ वीरता, पराक्रम।

उ०—रहै न तन धन राखियां, कीधा जतन किरोड। मान लहै मरदा भलां, महि सुण वात मरोड।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

८ गर्व, ग्रभिमान, घमड।

उ०—१ रण बको राठोड ग्राह सुणै देवल तणो। मिरजा खांन मरोड गह लायो गढ़ गूजवै।—पा. प्र

उ०—२ वोर कुल्या मांहि ऊपनो, तोने खाय मुडा थी थूक्यो रे। हीये मरोड राखै घणी, तू जाय छै ग्रवर चुक्यो रे।—जयवाणी

उ०—३ वरसो दुलही दिव बधु, मन जिण ग्राणि मरोड। वर ककण वर वधियो, माथै धरियो मोड।—व भा.

९ नायिका द्वारा नायक के सम्मुख किया जाने वाला ग्रभिमान।

उ०—ढोल्यो तो डगमग करै जी वना म्हारा, तकियो करै किलोळ। वनड़ी तो न्होरा करै जी वना म्हारा, वनडी करै मरोड।—लो गी.

रू० भे०—मड़ोड, मरड, मरड मुरड।

मरोडणो, मरोडबौ–क्रि० स० [स० मुरम्] १ किसी वस्तु या शरीर के किसी ग्रग को एक ग्रोर से दूसरी ग्रोर घुमाना, फेरना, ऐंठन या बल डालना, तनाव देना।

उ०—१ सु राव लाडक नू गाबड़ सू झालनै नीचै दियो। नीचै दे हाथ मरोड तरवार ले राव झटकारी दी।—नैणसी

उ०—२ सूतो बनडो सुख भर नीद, बाबोजी हेलो मारियोजी म्हारा राज। ऊठ्यो वनडो ग्रग मरोड जी कोई कुळ मे सूरज ऊगियोजी म्हारा राज।—लो गी

उ०—३ कर गहि मूंछ मरोड़ी मच्छर मनि भावतां। नांना विध रस राग रजा में गावता।—ह पु वां

२ नष्ट करना, समाप्त करना मारना, उन्मूलन करना ।

उ०—१ भांगेसुर वासु रहि जुडण रिणवड हि जोडै । फतैखान सारिखा म्लेछ भूम्र-डड मरोडै ।—रावमालदे री वात

उ०—२ मेल दळा पर दळां मरोडण, छव वरणा आधार छतो । अकल निधान 'भीम' सुत ऊभा, हीदवसथान नचीत हुतो ।

—बुधजी आसियो

३ कष्ट या पीडा देना ।

४ तोडना ।

उ०—तिण जेम लगरां वध तोड । मदझरां कध नाखै मरोड ।

—वि स

५ रूठना ।

उ०—करमचद भांनीदासोत, मदनै कन्हा मरोडाइ अर पाछो घिरियो । मदनै नू कहियो म्हे तो थारा चाकर नही छा ।—द वि

मरोडणहार, हारो (हारी), मरोडणियो—वि० ।

मरोडिओडो, मरोडियोडो, मरोडयोडो—भू० का० कृ० ।

मरोडीजणो, मरोडीजवो—कर्म वा० ।

मरड्णो, मरड्वो—रू० भे० ।

मरोडफळी, मरोडाफळी—स० स्त्री०—औषधी मे काम आने वाली एक फली विशेष, आवर्तनी ।

वि० वि०—यह ऐंठन खाई हुई होती है । पेट मे वात विकार के लिये गुणकारी होती है ।

मरोडियोडो—भू० का० कृ०—१ एक ओर से दूसरी ओर घुमाया हुआ, फिराया हुआ, ऐंठन या बल डाला हुआ, तनाव दिया हुआ २ नष्ट या समाप्त किया हुआ, उन्मूलन किया हुआ, सहार किया हुआ ३ कष्ट या पीड़ा दिया हुआ ४ तोडा हुआ ५ रूठा हुआ (स्त्री० मरोडियोडी)

मरोडी—स० स्त्री०—१ लोह की बनी छोटी पेचदार कटिया ।

२ देखो 'मरोडो' (अल्पा, रू भे)

रू० भे०—महोडी ।

मरोडो—स० पु०—१ वात विकार के कारण पेट मे होने वाला दर्द, पीडा ।

उ०—म्हारै तो पेट मे मरोडो चालण लागगो, नीतर म्है खुद दो हाथ बतावतो ।—फुलवाडी

२ रक्तातिसार का रोग ।

३ गर्व, अभिमान ।

४ ऐंठन, बल । ५ घुमाव ।

६ तेज गर्मी के कारण होने वाली उमस । (शेखावाटी)

७ देखो 'मरोडी' (अल्पा, रू भे)

मरोट, मरोठ—देखो 'मारोट, मारोठ' (रू. भे)

उ०—सोलहसइ सतसठि समइ हो, नगर मरोट मझार ।—स कु

मरोडो—स० पु०—एक जाति विशेष का अफीम ।

उ०—अमला री रह छह मडी छै । भूरो, मेवती, काळो, किसनागर मरोडी, मुहरतोलो लाभै तिण भांत रो केसरियो, पोता घोळियो, मनुहारा हुवै छै ।—डाढाळा सूर री वात

मरो—स० पु०—मृत्यु, मौत ।

उ०—अग लछन सेति ध्यान रह्या, स्री साति जिनेस्वर मुगति गया । पछै मेट दियो सब जन्म मरो स्री साति जिनेस्वर साति करो ।

—जयवांणी

मलग—स० पु० [फा०] १ मदारशाह के अनुयायी मुसलमान साधु ।

२ मुसलमान सूफियो मे मदारी शाखा के वे फकीर जो अविवाहित रहते हैं ।

३ मस्त फकीर ।

४ एक प्रकार का बडा बगुला, जिसकी चोच पीली होती है ।

५ छलाग, झप ।

उ०—१ मझि खगा झाट खेल्है मलग । आफळै अणी पर धार अग ।—सू प्र

उ०—२ सूरा जमदाढ़ लई उण सग, लई रवि रेवत माड मलग ।

—मे म.

उ०—३ तुरग नू लोह छकियो देखि पाळो ही कन्ह चहुवाण रीस रै साथै तरवारि छोडि नट रै माफिक मलग भर पल्हण प्रतिहार रै जमदाढ जाय जड़ी ।—व भा

उ०—४ असमान भ्रमत मानहु अर्चान, लखि भुव वटेर तुट्यो सिवान । अग हेरि मनहु चीता मलग, झप्योक वाज चप्यो कुलग ।

—ला रा.

६ छलाग लगाते हुए चलने की क्रिया ।

उ०—करि साकणि डाकणि सग कई, लगडा मग जग मलग लई ।

—मे. म.

वि०—१ छलांग लगाने वाला ।

२ मस्त, बेफिक्र, निश्चित ।

३ पुष्ट मोटा ।

४ लापरवाह ।

रू० भे०—मग्गो ।

मलगणो, मलगवो—क्रि० अ०—१ छलांग लगाना, कूदना ।

उ०—खगा जीतणां घाव मैं दाव खेल्है, मलगै तडा माकडां पीठ मेल्है ।—वं भा

२ कूद-कूद कर चलना ।

मलगणहार, हारो (हारी), मलगणियो—वि० ।

मलगिओडो, मलगियोडो, मलग्योडो—भू० का० कृ० ।

मलगीजणो, मलगीजवो—भाव वा० ।

मलगियोडो—भू० का० कृ०—१ छलाग लगाया हुआ, कूदा हुआ ।

२ कूद कूद कर चला हुआ ।

(स्त्री० मलगियोडी)

मलगो—देखो 'मलग' (रू भे)

मळ, मल-स० पु० [स० मल] १ शरीर से निकलने वाला मल-मूत्र, विष्ठा, गुह।

उ०—१ पेट घरै जायो पछै, घवरायो मळ धोय। जिण कारण जगदीस सू, जणणी गरवी जोय।—बां दा

उ०—२ चुगली करता चुगलरा, जुग होटड़ा जुड़त। मळ नांखण जाणै मिळै, दोय ठीकरा दत।—बां दा

२ शरीर की चमड़ी या कपड़ो आदि पर लगने वाली गदगी, मैल।

उ०—सहु पातक मल सावू, भल भल देवल जोज्यो। देवल जोज्यो हरखित होज्यो, धुरि पातक मल धोज्यो।—ध व ग्र

३ मनुस्मृति के अनुसार शरीर के बारह मल—बसा, शुक्र, रक्त, मज्जा, मूत्र, विष्ठा, कान का मैल, नख, श्लेष्मा या कफ, आंसू, शरीर के ऊपर जमने वाला मैल, पसीना।

४ पाप,दोष, दुष्कर्म।

उ०—१ अकरण करण समरण अघ अणघट, सक रघुवर असरण सरण। लछवर सघर अमर नर रख लज, महपत समरत हरत मळ।—र ज प्र.

उ०—२ फूटै भाडे नीर गरक गाफिल नर सोवै। भजै नही भगवत बहोिड मळ सू मळ धोवै।—ह पु वां

५ मनो विकार, दूषित भावना।

उ०—आखइ ताइ अरज करै ईसर नू, सांम तू हीज अपराध सहइ। मळ धारी मानवी न मूझइ, कहइ ज ब्रह्मा विसन कहइ।—महादेव पारवती री वेलि

६ कपूर। ७ समुद्र फैन। ८ धातु का मैल।

९ मिलावटी धातु विशेष।

१० मादा पशुओं के गर्भावस्था या प्रसव के कुछ समय बाद तक योनि मार्ग से गिरने वाला गदा पदार्थ।

११ कमाया हुआ चमड़ा व इसका वस्त्र।

१२ देखो 'मळमास'।

१३ देखो 'मल्ल' (रू भे)

उ०—रक रुलदा मार कर, कोइ मल कहावै।—केसो दास गाडण

मलउसीउ-स० पु०—एक वस्त्र विशेप।

उ०—वीणउसीउ चीणउसीउ मलउसीउ आउचीयउ मूगनउ।—व स

मलकछ, मलकछो-स० पु०—एक शुभ घोड़ा, जिसके मस्तक पर चन्द्रमा के आकार का सफेद तिलक होता है तथा शरीर जामुनी रग का व चारो पैर सफेद होते हैं। (शा हो)

मलका—देखो 'मलिका' (रू भे)

उ०—लख जुध ललकाराह, प्यारा तुकमा तो 'पता'। मिळिया मलका राह, हलकारा जस रा हमैं।—जुगतीदांन दधो

२ एक गुरु व एक लघु के क्रम से आठ वर्णों का एक छद विशेष।

रू० भे०—मलक्का।

मलकाहली-स० स्त्री०—एक प्रकार का वाद्य विशेप।

उ०—समुद्र हाथीया लूटइ, रथावली ऊथलावइ, मउडघा मांकड जिम खेलावइ, पाखरिया थाट हणइ, महायोघ समुग्न मणइ, दल वइ भाजि, जलसमुदाय गाजि, एतलइ समइ मलकाहली वाजइ।—व स.

मलक्का—१ मांसाहारी पक्षी विशेप।

उ०—जरख रीछ बडाख, सिया सत लख्म मलक्का। साकणि डायणि सकति, काळ भैरव काळक्का।—गु रू व.

२ देखो 'मलका' (रू भे)

मलखभ, मलखम-स० पु० [स० मल्ल+खम्भ] १ लकड़ी का एक स्यम्भ जो कसरत के काम आता है।

२ इस थम्भे के साथ की जाने वाली कसरत।

रू० भे०—मल्लखम, मालखम।

मलजुध—देखो 'मल्लयुद्ध' (रू भे)

उ०—मलजुध कीया विना रहवा री आखडी।—रा सा स

मळज्वर-स० पु० [स० मल+ज्वर] मल के रुकने के कारण होने वाला एक ज्वर।

मळण-स० पु०—मालिश, उबटन।

उ०—मह मह सुगध चिक्कस मळण, जीतण तप अहमद जुई। जह मह बिवाह लाडां जुडण, हाडां घर गहमह हुई।—व मा

मळणो, मळबो-क्रि०स० [स० मलन] १ मालिश करना, उबटन करना।

उ०—सूती पड़ी रणेहि, जोयइ दिसि जाता-तणी। जोगी हाथ मळेहि, विलखी हुई वल्लहा।—ढो मा

२ लेपन करना, पोतना।

३ दवाना, अधिकार मे करना।

४ किन्ही दो वस्तुओ अथवा अगो को परस्पर रगड़ना, मसलना।

उ०—१ बळोवळ मैंगळ वाह दुबाह, प्रळै लखि हाथ मळै पतिसाह।—मे म.

उ०—२ जोड़ी जिसकी बीछड़ै, हाथ मळेसी जांह। बीच पडेसी अन्तरी, हरिया हरि सु तांह।—स्री हरिरामदासजी महाराज

४ हाथ फेरना।

५ मिटाना, नष्ट करना।

उ०—'अभो' छमा ईखियो, ज्यास लेखियो जणोजण। कांण मळण केविया, जाण भ्रम कांम अरज्जण।—रा. रू

उ०—२ चवकल पिहुल मासल स्तन युगल, गभीर नाभीकूप, अम्रत मय रूप, नारंग छालि जिम युवान लाला मेल्हावती, मुनि तणा मन मूलहइ हलावती, अप्सरायण रूप मरट्ट मलती—व स

उ०—३ महि लियण सतरि भरि मलण मांण। सज्जै पयांण गज्जै निसांण।—रा रू

६ कुचलना। ७ मरोड़ना, ऐठना। ८ पीसना।

६ देखो मिळणौ, मिळबौ' (रू भे)
उ०—पाय सिंघ गळ ग्रडे चक्र भळहळे चउदह। मळे क्रोड तेतीस, उदौ सुरियद ग्रणदह।—देवि
उ०—२ जोइ गत्र टोळी मळी नाग जादी, वढ़े सापने सामळी सूर वादी।—ना द.
उ०—३ डमरां घुळता वास मळेगो ग्रदोत दीहां। चमरा ढुळता गोत भळेगो चहुग्राण।—दुरगादत्त बारहठ
उ०—४ भटकें करकर भेक, घर घर ग्रलख जगावता, दुनिया रा ठग देख, मळसी पनिया मोतिया —रायसिंह सांदू
उ०—५ ग्रपछर देख मळे ग्राखाडें, विघन तणौ रचियौ वीमाह। रिणवट उरा वाधियौ 'रतने' परा फौज ग्रावी पतसाह।—दूदौ
मळणहार, हारौ (हारी), मळणियौ—वि०।
मळिग्रोड़ौ, मळियोडौ, मळ्योडौ—भू० का० कृ०।
मळीजणौ, मळीजबौ—कर्म वा०।
मल्लणौ, मल्लबौ—रू० भे०।

मलतांन—देखो 'मुलतांण' (रू भे)
उ०—सघु सवालक्ष ऊच मलतान हीदूस्थान, देवकू पाटण, चीण माहाचीण भोट माहाभोट सखोद्धार ।—क स

मळद्वार-स० पु० [स० मल + द्वार] १ शरीर की मल निकलने वाली इंद्रिया। २ गुदा।

मळधारी-वि०—मल को धारन करने वाला।

मलप—देखो 'मलफ' (रू भे)
उ०—१ या सुणता ही लोह छक होय पड़ियै थकै ही मलप लेर चालुक्यराज हमीर कैमास री काख मे चपिया ग्रापरा स्वामी नू झाटकियौ।—व भा
उ०—२ ग्रागळा कध पछळी ग्रलप, मलप गुलाली मूठियां।
—मे म

मलपणौ, मलपबौ—देखो 'मलफणौ, मलफबौ' (रू भे)
उ०—१ इण विघ मेळ ग्रमेळ, करै साहा कळिनारौ। सीख करै माहसू, ग्रडर मलपियौ 'ग्रजा' रौ।—सू प्र
उ०—२ मारगि चालइ मलपता, जांणे परवत-माळ। काळा जिम कज्जळ-तणा, काळ-तणा पणि काळ।—मा का प्र
उ०—३ मलपति मदोमत्त मैंगळय। वरखा रित जाणक वद्दळय।
—गु रू व
उ०—४ सेना चालि, सेस हालि, माहाळै मही महीपति मलपता। नारि वरसू प्रीति करसू, मोद धरसूं जलपता।—नळाख्यान
उ०—५ जांणे हस मलपीयौ सर मांन मझारा। हाथी जांण क हालीयो, मद पीध वजारा।—मयाराम दरजी री वात
उ०—६ मिगसर मे वलि मलपिया, गज ज्यू स्त्री गुरुराज। ग्रावै 'ग्राबू' ग्ररचिया, जगनायक जिनराज।
—जिनलाभ सूरि

मलपणहार, हारौ (हारी), मलपणियौ—वि०।
मलपिग्रोडौ, मलपियोडौ, मलप्योडौ—भू० का० कृ०।
मलपीजणौ, मलपीजबौ—कर्म वा०।

मलपियोडौ—देखो 'मलफियोडौ' (रू भे)
(स्त्री० मलपियोडी)

मलप्पणौ, मलप्पबौ—देखो 'मलफणौ, मलफबौ' (रू भे)
उ०—१ परवत-माळ क चल्लै पाए, धजा पताखा ग्रवर छाए। फौजां मुहरि मलप्पै मैंगळ, पेरे जाणि पवन्नै वादळ।—गु रू वं
उ०—२ भूल पाटबर, लोहमै लगर। ग्रक्कुटै चम्मर, मलप्पै कुजर।—गु रू. व
मलप्पणहार, हारौ (हारी), मलप्पणियौ—वि०।
मलप्पिग्रोडौ, मलप्पियोडौ, मलप्प्योडौ—भू० का० कृ०।
मलप्पीजणौ, मलप्पीजबौ—कर्म वा०।

मलप्पियोडौ—देखो 'मलफियोडौ' (रू भे)
(स्त्री० मलप्पियोडी)

मलफ-स० पु०—१ छलाग, कुदान।
उ०—१ रेसमी गलफां लोच टुकेक परीती लीधा, वोल दीधा भरै चीती मलफा वाजद।—महाराणा सरूपसिंघ रो गीत
उ०—२ उद्दम ग्रागम ग्राखडी, ताप निडरता तत। गाज मलफ एता गुणां, सीहा काज सरत।—वा दा
२ उडान। ३ झूमना क्रिया, मस्ती।
४ प्रयाण।
रू० भे०—मलप।

मलफणौ, मलफबौ-क्रि० स०—१ छलाग लगाना, उछलना, कूदना, फांदना।
उ०—१ तै जेहा दीघा तुरी, ग्रग जीपण मलफत। चढै जिका मन पह चढ़ै, तोरण वारण तत।—वा दा
उ०—२ तास वरणागिये दीठि मनहतणौ मलफियौ सामहौ कळह वेढीमणौ।—हा झा.
उ०—३ ग्रग पसम सुलफ ग्राघो कियां ऊठियो, चख कुलफ खूटिया मलफै चीतो।—महादांन महडू
२ तेजी से ग्रागे को बढ़ना।
उ०—साह रौ जोध जोतां समद। कठहड़ै चढ़ण मलफै कमद।
—वि स.
३ झूमते हुए चलना, झूमना।
४ मद गति से मस्त चाल चलना।
५ उडान भरना, उडना।
६ प्रयाण करना, चलना।
७ फदे में फसना।
८ दौडना, भागना।
मलफणहार, हारौ (हारी), मलफणियौ—वि०।

मलफिग्रोडो, मलफियोडो, मलपयोडो—भू० का० कृ० ।
मलफीजणो, मलफीजवो—कर्म वा० ।
मलपणो, मलपवो, मलप्पणो, मलप्पवो, मलपफणो, मलपफवो, मल्हपणो, मल्हपवो, मल्हप्पणो, मल्हप्पवो—रू० भे० ।

मलफियोडो–भू० का० कृ०—१ छलांग लगाया हुआ, उछला हुआ, कूदा हुआ, फादा हुआ २ तेजी से आगे बढा हुआ ३ झूमते हुए चला हुआ, झूमा हुआ ४ मद गति से मस्त चाल चला हुआ ५ उडान भरा हुआ, उडा हुआ ६ प्रयाण किया हुआ, चला हुआ ७ फदे मे डाला हुआ, फसाया हुआ ८ दौडा हुआ, भागा हुआ
(स्त्री० मलफियोडी)

मलपफणो, मलपफवो—देखो 'मलफणो, मलफवो' (रू भे)
उ०—उडै नभ रागनि लग्ग छछोह, मलपफत पच वरच्छनि वोह। सजै तिनपै असवार कजाक, छकै उन्मत दुवारनि छाक।—ला. रा

मलपिफयोड़ो—देखो 'मलफियोडो' (रू भे)
(स्त्री० मलपिफयोडी)

मलबाथ–स० स्त्री० [स० मल्ल+राज० बाथ] १ मल्ल युद्ध मे हाथो को पकडकर छाती से भिडाने की क्रिया ।
२ कुश्ती लडने का एक दाव, पेच ।

मलबारी–स० स्त्री०—१ एक फल विशेष जिसकी चटनी बनती है ।
उ०—तदनतरु प्रधान पीपलि, आखी आबी, नलोडांनी कयरी, आवूआ आवां, मलबारी मिरीमजगि, छूहारा लीवूआं, गिरनारी गिरमर, मारुयाडा मुगीया कयर, परवती राई प्रमुख साक पीरीस्यां ।—व स
२ एक प्रकार का कपडा ।
उ०—हवइ राजा परिवार प्रति वस्त्र आपइ पीतांबर चादर रक्तांबर नेत्रांबर खासरी सालूर चोलहिरा नीलुहुरा जरजरी मलवारी लाछरी अघोतरी ।—व स

मळवो–स० पु०—१ कूडा, कर्कट, फूस आदि का ढेर ।
२ गिरे हुए मकान या इमारत के पत्थर, धूल आदि का ढेर ।
३ निरर्थक वस्तुओ का ढेर, किसी वस्तु के टूटे हुए भागो का ढेर ।
४ दौरे पर आने वाले हाकिमो व अन्य गावाऊ खर्च के लिये गाव के भूमिधारी लोगो से वसूल की जाने वाली रकम ।
उ०—मूड मुडायां तीन गुण गई माथा री खाज । मळवो छोडयो चोधरया, हासल छोड्यो राज ।—अज्ञात

मळमजण–स० पु०—पानी, जल । (ह. नां मा)

मलम–स० पु० [फा० मर्हम] घाव पर लगाने की ओषधि ।
उ०—१ मरणा री मार दुनिया में सब सू तीखी अर खारी लागै, पण दिना रो मलम वगत लाग्यां उण मार रो घाव ई मिळाय दे। —फुलवाडी
उ०—२ गाव अर घरवाळा वास्तै हळदी तो ही दूखणिया रै माथै मलम ज्यू ।—फुलवाडी
रू० भे०—मरहम, मल्लम, मल्हम, मल्हिम ।

मलमपट्टी–स० पु०—घाव या व्रण पर मलम लगाकर पट्टी बाधने की क्रिया, प्राथमिक चिकित्सा ।
क्रि० प्र०—करणी, कराणी, होणी ।

मलमल–स० स्त्री०—सूत के अत्यन्त बारीक डोरो का बना एक प्रकार का महीन कपडा ।
रू० भे०—मुलमुल ।

मलमलसाही–स० पु०—एक वस्त्र विशेष ।
उ०—रेसमी भइख, लाहि मही मुदीमाही मलमलसाही प्रमुख नानाविध भातिनां नानाविध देसना वस्त्र आणी समस्त परिवार, नगर लोक पहिरावी नामस्थापना कीधी ।—व स.

मळमळाणो, मळमळावो—देखो 'मुळमुळाणो, मुळमुळावो' (रू भे)
मळमळायोड़ो—देखो 'मुळमुळायोडो' (रू. भे)
(स्त्री० मळमळायोडी)

मळमास–स० पु० [स० मल+मास] १ मलिनमास ।
[स० मलमास] १ वह चाद्रमास जिसमें दो अमावस्या हो तथा सूर्य सक्रान्ति का अभाव हो ।
वि० वि०—मलमास दो प्रकार के होते हैं, एक अधिमास जो सूर्य सक्रान्ति रहित होता है तथा दूसरा जिसमे दो सूर्य सक्रान्ति होती है, उसे क्षयमास भी कहते हैं । मलमास मे मागलिक कार्य नही किये जाते हैं ।

मलमुलच–स० पु० [स० मलिम्लुच] चोर । (अ मा)
रू० भे०—मलीमलुच, मुळमुच ।

मळय–स० पु० [स० मलय] १ दक्षिण भारत की एक पर्वत माला जहा चदन के वृक्ष अधिक पाये जाते हैं ।
२ उक्त पर्वत के आस-पास का प्रदेश, मालाबार प्रान्त ।
३ उक्त प्रदेश का निवासी ।
४ उक्त प्रदेश में होने वाला सफेद चदन ।
उ०—तोय झरणि छटि ऊघसत मळय तरि, अति पराग रज धूसर अग । मघु मद स्रवति मद गति मल्हपति, मदोनमत्त मारुत मातग ।—वेलि
रू० भे०—मलै, मलैय ।
६ एक उप-द्वीप ।
७ इन्द्र का नन्दन वन । ८ बाग ।
९ गरुड का एक पुत्र ।
१० एक राजा जो प्रियव्रत वशीय ऋषभदेव राजा का पुत्र था ।
११ छप्पय छद का एक भेद जिसमे २५ गुरु, १०२ लघु के अनुसार १२७ वर्ण या १५२ मात्राएं होती हैं या २५ गुरु, ९८ लघु के अनुसार १२३ वर्ण या १४८ मात्राए होती हैं ।

मळयगिरि–स० पु० [स०] १ दक्षिण भारत का मलय नामक पर्वत।
२ उक्त पर्वत मे होने वाला चदन।
३ एक देश का नाम। (प्राचीन)
उ०—तत्र देसे गोमुख नरा, महाभोट ३ कोडि अस्व मुख नरा, कान्हडउ १२ लक्ष, चोड सारद्ध ३ लक्ष, मलयगिरि ७ लक्ष, पाडीउ १७ लक्ष, सिघलद्वीप १ कोडि, चीरण महाचीरण २ कोडि, अवावती एक कोडि, इति देसा।—व स
रू० भे०—मळयागिरि, मळागरी, मळागिरी, मळियागर, मळियागरि, मळियागरी, मळियागिर, मळियागिरि, मळियागिरी, मळीश्रागिरि, मळीयागर, मळैगिर, मळैगिरि, मह्यिागिर।

मळयज–स० पु० [स० मलयज] १ चन्दन।
उ०—धूप दीप नैवेद पुस्य फळ, कस्मीरज मळयज नागज कळ।
—मे म
२ राहु नामक ग्रह।
वि०—१ मलय पर्वत मे उत्पन्न होने वाला।
२ शीतल। (डि को)
रू० भे०—मलयुज।

मळयद्रुम–स० पु० [स०] चदन का वृक्ष।
मळयवासिनी–स० स्त्री० [स०] दुर्गा देवी।
मळयवासी–वि०—मलय देश का रहने वाला या निवासी।
मळयागिरि–स० पु०—१ एक रग विशेष।
२ देखो 'मळयगिरि' (रू भे)
रू० भे०—मलागरी, मलागिर।

मळयाचळ, मलयाचल–स० पु० [स० मलय+अचल] मलय पर्वत।
उ०—१ सबळ जळ सभिन्न सुगध भेट सजि, डिग मिग पाउ वाउ क्रोध डर। हालियौ मळयाचळ हूत हिमाचळ। कांमदूत हर प्रसन कर।—वेलि
उ०—२ समुद्र रहइ लवण मूठि भेट, रोहणा चलनइ रत्न भेट, गगा रहइ कनकफल भेट, मलयाचल नइ चदन भेट, मेरुगिरि नइ सुवरण्ण भेट, कल्पवृक्ष नइ काइ फल भेट।—व स
रू० भे०—मयाचळ, मळियाचळ।

मळयातर—देखो 'मलैतर' (रू भे) (ना मा)
मळयानिळ–स० पु० [सं० मलय+अनिल] मलय पर्वत की ओर से आने वाली मद सुगध व शीतल वायु, मलयवयार।
उ०—ऐसे त्रिगुण कहता, सीत मद सुगध मलयानिळ लागो सोई। त्यांही वसत नै जनमत ही भूख त्रिस लागी छै।—वेलि टी
रू० भे०—मिळीग्रानील, मिळीयानळ।

मळयालम–स० पु०—१ भारत के पश्चिमी घाट के किनारे दक्षिण की ओर का एक पहाडी प्रदेश, वर्तमान केरल प्रान्त।
स० स्त्री०—२ उक्त प्रदेश या प्रान्त की भाषा।

मळयाळी–स० पु०—मलयालम मे बसने वाली एक पहाडी जाति का नाम।
मलयुज – देखो 'मलयज' (रू भे) (ना मा)
मलयुद्ध —देखो 'मल्लयुद्ध' (रू भे)
मलयेचा–स० पु०—चोहान वश की एक शाखा।
मलयेचौ–स० पु०—चौहान वश की 'मलयेचा' शाखा का व्यक्ति।
मळरोधक–वि०—जो मल को रोकता है, कब्ज करने वाला।

मलवरक–स० पु०—एक प्रकार का राजकीय कर या टेक्स विशेष।
उ०—दाण पूछी हल भोभ भाग भेट तलारक्षक वद्धापन मलवरक वल चचा चारिका गढ वाटी छत्र ग्रालहण थोटक कुमारादिसुखडी इति क्रमेणास्टादसा करा जाता।—व स

मलविद्या—देखो 'मल्लविद्या' (रू भे)
उ०—किता ग्रोखधि वैद विद्या प्रकासै। किता मलविद्या ग्रखाडै कलासै।—ग्रज्ञात

मळसाणौ, मळसावौ–क्रि० स०—झल्लाना, चिढना।
उ०—ढाल एक ऊगै उरी लीधी छै। तदि कैवाटजी मळसाय नै कह्यो, भाणेज, एकै हाथ ताळी वजावौ छो।
—कहवाट सरवहिये री वात

मळसायोडौ–भू० का० कृ०—झल्लाया हुग्रा, चिढा हुग्रा
(स्त्री० मलसायोडी)

मळसिया–स० पु०—इदा पडिहार वश की एक शाखा।
मलांण–स० पु०—१ वाहन, सवारी।
उ०—सीतापति स्रबजाण, काई ग्रत वीनां करौ। मह सीतळा मलाण, रासभ दीनो राजिया।—किरपाराम
२ देखो 'म्लान' (रू भे)

मलांणि, मलाणी—देखो मालांणि' (रू भे)
मळाई–सं० स्त्री०—१ दूध को गर्म करने पर उस पर आने वाली घी व गाढे पदार्थ की झिल्ली, परत, दूध की साढ़ी। दुग्ध व दही पर आने वाली घी ग्रोर कैसीन की परत।
उ०—नानांणां जावण दै, दूध मळाइ पीवण दै, घी ग्रर बटिया खावण दै।—फुलवाडी
२ सार तत्व, मुख्य तत्व।
३ मलने की क्रिया या भाव।
४ उक्त कार्य की मजदूरी।
५ देखो 'मिलाई' (रू भे)

मलाकरसी–स० पु० [स० मलाकर्षिन्] १ भगी, महत्तर, हरिजन।
२ कूडा कचरा साफ करने वाला।
मलाका–स० स्त्री० [स०] १ कामातुर स्त्री।
२ दूती। ३ वेश्या, रडी।
४ मादा हस्ती, हथिनी।

मलाखा-स० पु०—एक प्रकार का वस्त्र ।
उ०—मनसख कमखा चलाखा, मलाखा देवदूस्य बघालग कोठालग कलगद्द फोकची पचवरण न यज ।—व स

मलाखी-वि०—अज्ञानी ।
उ०—मलाखी पोपट जेहवा, देखीता रूपवत । सास्त्रस्लोक न आवडइ, तस परि जाणे चीति ।—नळदवदती रास

मलागरी, मलागिरी—१ देखो 'मळयगिरि' (रू भे)
२ देखो 'मळयागिरि' (रू. भे)

मलाजमत—देखो 'मुलाजमत' (रू भे.)
उ०—स्त्री अजीम साहजादा री मारफत सवत् १७६७ वैसाख माहे पातसाह री मलाजमत कीनी ने महाराजा रो मनसब ठहरीयो ।
—रा व वि.

मलाणो, मलावो—देखो 'मल्हाणो, मल्हाबो' (रू भे)
मलापणो, मलापबो—देखो 'मलाफणो, मलाफबो' (रू भे)
उ०—१ दैतराज मलापनै राजकवरी रै पाखती गियो ।
—फुलवाडी

उ०—२ पाज माथै आय नै वो दो दो पगोतिया मलापतो राजकवरी नै झालण रो पूरो मतो करियो ई ही के वा तो पाणी मे पग धरता ई अदीठ व्हैगी ।—फुलवाडी
उ०—३ मारग मे मलापता सिघ खिरगोसिया नै फेर पूछ्यो—कित्तोक अळगो उण रो है किलो परकोटो ।—फुलवाडी
उ०—४ सिंघ जोर सू दहाडनै उण माथै मलापियो ।—फुलवाडी
मलापणहार, हारो (हारी), मलापणियो—वि० ।
मलापिओडो, मलापियोडो, मलाप्योडो—भू० का० कृ० ।
मलापीजणो, मलापीजबो—कर्म वा० ।

मलापियोडो—देखो 'मलाफियोडो' (रू भे)
(स्त्री० मलापियोडी)

मळाफ—देखो 'मलफ' (रू भे)

मलाफणो, मलाफबो-क्रि० स०—१ छलाग लगाना, उछलना, कूदना, फांदना ।
२ झूमते हुए चलना, झूमना ।
३ मद गति से मस्त चाल से चलना ।
४ उडान भरना, उडना ।
५ प्रयाण करना, चलना ।
६ दौडना, भागना ।
मलाफणहार, हारो (हारी), मलाफणियो—वि० ।
मलाफिओडो, मलाफियोडो, मलाफ्योडो—भू० का० कृ० ।
मलाफीजणो, मलाफीजबो—कर्म वा० ।
मलापणो, मलापबो—रू० भे० ।

मलाफियोडो-भू० का० कृ०—१ छलांग लगाया हुआ, उछला हुआ, कूदा हुआ, फादा हुआ २ झूमते हुऐ चला हुआ ३ मद गति से मस्त चाल से चला हुआ. ४ उडा हुआ, उडान भरा हुआ. ५ प्रयाण किया हुआ, चला हुआ ६ दौडा हुआ, भागा हुआ.
(स्त्री० मलाफियोडी)

मलाबार-स० पु०—भारत के पश्चिमि घाट के समुद्र तट पर स्थित प्रदेश, वर्त्तमान केरल प्रान्त का एक प्रदेश ।

मलामली—देखो 'मलोमली' (रू भे.)

मलायोडो—देखो मल्हायोडो' (रू भे)
(स्त्री० मलायोडी)

मलार-स० स्त्री०—वर्षा ऋतु मे गाया जाने वाला एक राग । (सगीत)
उ०—१ रजै मलार सारग, रितग रग मारग । रसाल ताल सोरठी, सगांन तान सामठी ।—रा रू
उ०—२ काछि काछि वन कीधी काया, उलसी अब उम्रह घर आया । रित तिण साहब पावस राया, सुकवि चलावि मलार सुहाया ।—आसो बारहठ
रू० भे०—मल्लार, मल्हार ।

मलारी-स० स्त्री०—वसत ऋतु की एक रागिनी । (सगीत)
वि०—मलार का, मलार सम्बन्धी ।

मलाल-स० पु० [अ०] १ दुख, रज ।
२ पश्चाताप, अफसोस, उदासी ।
३ कष्ट, तकलीफ ।
४ एक खास रग का घोडा ।
उ०—चमराळ लखी फुलमाळ चकवीयै, केहर लाल प्रवाळ कीसै । अकडाळ चगी बोहोराळ अजवीयै, जेजव वाज हीराळ जीसै, वस नाग सीगाळटी ताजीवै वैगड, माणक रूप मलाल कीयै ।
—किसनजी घघवाडियो

मलावण—देखो 'मळेवण' (रू भे)

मालवधसी-वि०—१ मल को दूर करने वाला । (जैन)
२ कर्म रूप मल को दूर करने वाला । (जैन)

मलासय-स० पु०—मल का स्थान, मलाशय ।

मलि—देखो मैल' (रू भे)
उ०—निय नांम सीत जाळै वण नीला, जाळै नळणी थकी जळि । पातिग तिण द्वारिका न पैसै, मांजियै विशु मन तणै मलि ।
—वेलि

मलिक-सं० पु० [अ०] (स्त्री० मलिका) १ बादशाह, सम्राट ।
उ०—कवि कहइ सुजस, सद मलिक स्त्री अहिमद, दलइ दुजण मद सुहडवरो ।—व स
२ शासक, अधीश्वर नवाब ।
उ०—पणि कह्या एक पातसा स्त्री अकबर । जबू द्वीप माहइ

प्रवरत्ततु छइ, अन्य पराय रांणा, मोटा मीर मलिक, माहाभड खान, खोजा सर क्षिल साहणा, ते सधला करइ सेवा ···।
—व स

३ बादशाही दरबार मे होने वाली एक उपाधि।

उ०—किसा एक जे छइ राजाधिराज स्त्रीमहिमूद पातसाह। खांन खोजा मलिक मीरूबरा मलांणा सहणा सलेदार तेहि करी सेवायमांन।—व स

रू० भे०—मिलक।

मलिका–स० स्त्री० [अ० मलिक] १ बादशाह की बेगम, साम्राज्ञी।

२ किसी राजा की रानी, महारानी।

३ देखो 'मल्लिका' (रू भे)

रू० भे०—मलका।

मलिच्छ—देखो 'मलेच्छ, मलेछ' (रू भे)

मलिन–स० पु० [स०] १ अपराध, पाप, दोष।

२ रत्नों का एक दोष जिसके कारण वे धुधले पड जाते हैं।

३ मठ्ठा, तक्र। ४ सोहागा।

५ चन्दन, अगर। ६ गौ का ताजा दूध।

७ हस। ८ दस्ता, मूठ, हत्था।

९ नखरा।

वि०—१ जो मल से युक्त हो। २ अपवित्र, गदा, मैला।

३ जो दिल का काला हो, पापात्मा, पापी।

४ दुष्कर्मी, नीच, बुरा।

५ कान्ति हीन, प्रकाशहीन, मद।

६ मेघाच्छन्न, अन्धकारमय, धुधला।

७ उदास म्लान। ८ दोष युक्त दोषी।

रू० भे०—मळीण, मलीन।

मलिनता मलिनाई–स० स्त्री०—१ मलिन होने की दशा, अवस्था या भाव। २ अपवित्रता, गदगी, मैल।

३ उदासी। ४ फीकापन।

४ कलापन।

५ दोष, खराबी। ६ पाप।

रू० भे०—मलीनता।

मळियागर, मळियागरि, मळियागरी, मळियागिर, मळियागिरि, मळियागिरी—देखो 'मळयगिरि' (रू भे) (अ मा)

उ०—१ साग साळ मलियागरी, वळि नाळेर विदाम। सोपारी खिरणी सरस, हेम हुवा तिहि ठाम।—गजउद्धार

उ०—२ स्रीखंडू का डबग समीर सैं झोला खावै। मळियागिर के भोळै भूलि पखेसर मिणधर भुजग आवै।—सू प्र

उ०—३ मळियागिरी मझार, हर को तर चदण हुवै। सगत लियै सुधार, रूखां ई ने राजिया।—किरपारांम

मळियाचळ—देखो 'मळयाचळ' (रू भे)

उ०—विस्व सुबासित होय जिकै मुख बास हू। मळियाचळ महकत वसत विलास हू।—बां दा

मळियातर—देखो 'मलैतर' (रू. भे.) (ह नां मा)

मलियेच—देखो 'मळेच्छ' (रू. भे.)

उ०—मलियेच सुणी यम सूर मर्टो। तिण धूपर नाळ दियौ अवटौ।—पा प्र

मळियोड़ौ–भू० का० कृ०—१ मालिश किया हुआ, उबटन किया हुआ. २ लेपन किया हुआ, पोता हुआ ३ किन्ही दो वस्तुओ अथवा अगों को परस्पर रगडा हुआ, मसला हुआ ४ हाथ फेरा हुआ. ५ मर्दन किया हुआ, हनन किया हुआ, मिटाया हुआ. ६ कुचला हुआ, नाश किया हुआ, विध्वस किया हुआ ८ मरोडा हुआ, ऐंठा हुआ ८ पीसा हुआ ९ देखो 'मिळियोडौ' (रू भे) (स्त्री० मळियोडी)

मलियो–स० पु०—१ बदर। (उदयपुर)

२ देखो 'मल्लो' (अल्पा, रू भे)

मलींदौ—देखो 'मलीदौ' (रू भे)

मळी–स० स्त्री०—१ जस्ते का फूला जो गुलाब जल मे घोट कर आखो में डालते है आखो की दवा विशेष।

२ आफत, बला। (जेसलमेर)

मली–स० स्त्री०—१ ऊन भरने की बडी बोरी।

२ देखो 'मैल' (रू भे)

मलीआगिरि—देखो 'मळयगिरि' (रू भे)

उ०—ए चदनकाठ किहा नीपनु मलीआगिरि परवति, माहा मसवाडि' ।—व स

मलीच —देखो 'मलेच्छ' (रू भे)

उ०—पण उण मलीच जीव सू वत्ता च्यार रिपिया देवणी नी आवै। वो यू ई उपरवाडी कांम सारणी चांवतो हो।—फुलवाडी

उ०—२ पण वा तो मलीच सुभाव री इण फूटोडा लोटा सू ई धकावणी चावै।—फुलवाडी

उ०—३ कूजडी री पैरवास देखनै सेठाणी मन मे सोच्यौ के वा मूजी घणी है। इत्तो नफो व्है तो ई यू मलीच री गळाई रै'वै।
—फुलवाडी

मळीचौ–स० पु०—एक प्रकार का घास, जिसके बीजो का व्रत, उपवास के दिन शाकाहार के रूप मे हलवा बनाकर खाते हैं।

रू० भे०—मणचौ, मणछौ, मणीचौ।

मळीजी–स० स्त्री०—बलाय, आफत।

मलीण—देखो 'मलिन' (रू भे)

उ०—१ मत्री मूढ़ मलीण, चाकर चोर सभीत चित। हलकारा सुध हीण, पै'लां घर वाळै पिसण।—बां दा

उ०—२ सैदां उच्छव सांपना, मुगला वदन मलीण। दिल्ली प्रति चाळो दरस, पुर सोचियो प्रवीण।—रा रू

उ०—३ नर मुख दे नरकाय कट, झमक चलै सुर झीण । माव-ड़ियो महिमा नगी, मारै रोज मलीण ।—बा. दा

मलीनपृहर—सं० पु०—चन्द्रमा । (ना मा)

मलीदो—सं० पु० [फा० मलीद] १ चूरमा नामक खाद्य पदार्थ ।
२ उत्तम प्रकार के खाद्य पदार्थ एवं मिष्ठान्नादि के लिये प्रयुक्त शब्द ।
उ०—कर्दी हाथी घोडा नी जातो रे, घणा मेवा मलीदा खातो रे।
—जयवांणी

रू० भे०—मलींदो ।

मलीन—देखो 'मलिन' (रू भे)
उ०—१ विगयानंद मलीन विकारा, यह मांन्या सो जुग जुग हारा ।—श्री सुखरामजी महाराज
उ०—२ सूमण पूछै सूम सू, काहे मुक्ख मलीन । का गांठी सें गिर पड्या, का काहू को दीन ।—अज्ञात

मलीनता—देखो 'मलिनता' (रू भे.)

मलीनमुख—वि०—जिसका चेहरा उदास हो, खिन्न चित्त ।

मलीनाथ—देखो 'मल्लिनाथ' (रू. भे)

मलीमलुच—देखो 'मलमुलच' (रू भे) (ह नां मा)

मलीमस—सं० पु०—१ लोहा ।
२ पाप । ३ मलिन, मैला । ४ पापी ।

मलीयागर—देखो 'मळयगिरि' (रू भे)
उ०—बाग री सुगंध इसी लगावै छै जाणै मलीयागर नै भेट हर पवन मावै छै ।—पना

मलीर—सं० पु०—सिंधियों में, वर को ओढाया जाने वाला एक छपा हुआ वस्त्र विशेष, जो सगाई का प्रतीक होता है ।

मलुक, मलूक—सं० पु० [अ० मुलूक] १ युवक ।
उ०—तरै छोकरी कह्यो—अठै तळाव माहे नीचो सोमाळोत कवर तरै सो पाणीत सारीसा मलूक लिया झूलै छै । तिण री सुवास छै ।—नैणसी
२ बादशाह, राजा नरेश ।
३ घोडा, अश्व ।
उ०—राग घरी ऊजल पगा, जिकै सहज सझ जाय । कमि मलूक कहरा किया, इसा हाजर थाय ।—सू प्र.
४ सुंदर । ५ पुत्र, पूत ।
उ०—किसह करम पलटा, विषह घरमा पाप । फजर हुवदी दुनिया, लाल मलूको वाग ।—गु रू ब
६ एक प्रकार का पक्षी विशेष ।
७ एक प्रकार का कीड़ा ।
८ उदर, पेट ।
९ एक बहुत बड़ी संख्या । (बौद्ध शास्त्र)
वि०—१ कोमल, सुकुमार, नाजुक ।
उ०—१ पग हाथ मलूक ज पकजय । गुणि छत्तिय गात विन्है गजय ।—वचनिका
उ०—२ इसी इसी खोडस वरसां री मुगधा मध्या प्रोढा रूप रो निधांन । जाका मलूक हाथ-पांव । जघा कदळी को थ्रभ । बांह चंपा री डाळ । सिंघ सी कमर । कुच नारगी ।—रा. सा. सं
२ सुन्दर, मनोहर, मनोरम ।
३ मुलायम, नरम ।
रू० भे०—मल्लूक ।
अल्पा—मलूको ।

मलूकजादो—सं० पु०—शाहजादा, राजकुमार ।
उ०—उवै कामणी घणी क्रिसनागर कस्तूरी अबर अतर सांधे सू गरकाव हुई थकी उवा राजा रा मलूकजादा रा मन राखती थकी लोट पोट हुइ रही छै ।—रा. सा स.

मलूको—सं० पु०—१ नरसिंह चौदस के रोज हिरणकश्यप का वेष करने वाले का सम्बोधन ।
२ देखो 'मलुक, मलूक' (अल्पा., रू भे)

मलेच्छ, मलेछ—सं० पु० [सं० म्लेच्छ] (स्त्री० मलेच्छणी, मलेछणी)
१ आर्य संस्कृति के अनुसार मनुष्य की वे जातियां या वर्ग जिनमें वर्णाश्रम धर्म न हो, शूद्र ।
उ०—१ जिसो अग्नि माहि उचिस्ट होम करै छै । कि जिसो सालिग्रांम सूद्र का ग्रह कै विखै । कि जिसो मलेछ के मुखि वेदमत्र ।
—वेलि टी.
उ०—२ आगै कोई गुजराती लोक भील मलेछ रैहता सु सारा दूर कीया ।—नैणसी
२ यवन, मुसलमान ।
उ०—१ पढावो कुरांण आछा बणावो मलेछ पाता । समापा जागीरी लाख लाख लख रो सामांन ।
—गोकळदास सक्तावत रो गीत
उ०—२ वो दातार है, सूरवीर है, दोनू पख ऊजळा है, अनें मलेछ मुसळमाना रो चाकर नही । मुसलमांनां सू सगारथ नहीं ।
—वी स टी
३ अनार्य । ४ जाति बहिष्कृत । ५ तावा ।
६ अस्पष्ट या जगलियो की तरह बोलने की क्रिया ।
वि०—१ निकृष्ट, नीच, हीन, हेय ।
उ०—असुद्ध मलेछा बली मत्र खोटा, जियां चवगु चुंचा नुल्या गाम गोटा ।—ध व ग्र
२ गदा, मैला ।
६ अस्पष्ट या जगलियों की तरह बोलने वाला ।
रू० भे०—मलिच्छ, मलियेच, मलीच ।

मलेछणी—वि०—१ मुसलमान की, मुसलमानी, यवनों की ।

उ०—कमध स्याम कामय जुटे अरद्ध जांमय। मुडे घडा मलेछणी, विचार धार भज्जणी।—रा रू

२ म्लेच्छ की, म्लेच्छ सम्बन्धी।

३ देखो 'म्लेच्छ' (स्त्री०)

मलेछमुख–स० पु० [स० म्लेच्छ+मुख] तांबा नामक प्रसिद्ध धातु।
(अ मा, ह ना मा)

मलेरिया–स० पु० [अ०] एक प्रकार का ज्वर जो वर्षा ऋतु के मच्छरो के काटने पर फैलता है।

मळेवण—देखो 'मेळण' (रू भे.)

मळे—देखो 'मलय' (रू भे)

उ०—मळयाचळ सुतनु मळे मन मोरै, कळी कि काम अकूर कुच। तणौ दखिणदिसि दखिण त्रिगुणमै, ऊरध सास समीर उच।
—वेलि

मळेअद्र—देखो 'मलयगिरि'।

उ०—अटा टोप वना री चनणा कीधा मळेअद्र, सभु नळे ऊजळे वचाळे राणा सेण। दीपे मानताळ हसा मडळी नवास दीधा, कवदां मडळी लीदा दुसरा 'कुभेण'।—कविराजा बांकीदास

मळेगिर, मळेगिरि—देखो 'मलयगिरि' (रू भे)

उ०—१ राजा दूजो मूळराज, दिखणाता दळ लोप। मडर मळेगिर कावियो, सुरपत जेम सकोप।—बा दा.

उ०—२ ओपम दुती मळेगिर आणे। जळ भपियो हणु कपि जाणे।—सू प्र.

मळेतर, मळेतरि, मळेतरु–स० पु० [स० मलय-तरु] चदन का वृक्ष व इस वृक्ष की लकडी।

उ०—१ जेथ मळेतर मेखचा, गडे मळेतर मेख। जळे मळेतर ईंधणा, दळचाळक रौ देख।—बा दा

उ०—२ दिसि निहग वूग उड्डु दवग, अगन बाण उड्डु वहत। आवत मळेतर उड्डिया, अहिक पख मिण सजुगत।—गु रू व

उ०—३ ऊकडा भिडि दुहु कडा आणि। जडकिया मळेतर नाग जाणि।—सू प्र

रू० भे०—मलयातर, मलियातर।

मलेयद्र—देखो 'मलय' (रू भे)

उ०—ऊमा तात अदु हेम पर्व मलेयद्र ईस, देवताळ वध दाणु छुटीया दताळ। काम व्रछ जात सो कहांणां वीच च्यार कूटां, प्रतपै छ अना पाळ राणा छटो पाळ।—कविराजा बांकीदास

मलोमली–क्रि० वि०—जबरदस्ती से, बलात्।

उ०—तठै पातसाहजी रौ हुकम हुवौ के अमरसिंघ जाणे नहीं पावै अरु अमरसिंघजी मलोमली नीसर गया।—द दा

रू० भे०—मलामली।

मलो–स० पु०—जगल की कटीली भाड़ी।

मल्कियत—देखो 'मिल्कियत' (रू भे)

उ०—सो ऊ पकडियो आयो थी सो छोड दियो उण री माल मल्कियत बहाल राखी।—नी प्र

मल्ल–स० पु० [स०] १ एक प्राचीन जाति।

वि० वि०—इस जाति के लोग द्वन्द्व युद्ध मे निपुण होते थे।

२ द्वन्द्व युद्ध करने वाला योद्धा।

उ०—सेल घमेडा सल्ल पडै मल्ला प्रति मल्ला। भल्ला भल्लां भणे ऊगता भडा अमल्लां।—ऊ का.

३ योद्धा, वीर, बहादुर।

उ०—१ नमो मुर-मेघ-मरद्दण मल्ल। कसासुर काळ सखासुर सल्ल।
—ह र

उ०—२ कवि पडित गायक कथक, मत्री गज भड मल्ल। तो दरबार जिता तिता, जग चावा जेहल्ल।—बां. दा

उ०—३ माभी मीर बलक्की मल्ल, मीर सैद पट्ठाण मुगल्ल।
—रा रू

४ एक प्रकार का युद्ध, द्वन्द्व।

५ पहलवान।

उ०—१ दोनूं जणा राईकाणी री वात मानग्या। डोकरी माथा माथै ओढी उखणियां हालती री अर मल्ल मलापनै ढकणी रा टुचकणा माथै चढ़ग्या। चढता ईं वूकिया ठोर नैं भिडग्या।
—फुलवाडी

उ०—२ पडित साला लेख साला भडारी कोठारी माडवीया मल्ल हस्ति तुरग रथ पायक टकसाली व्यायामकारक ··।—व स.

६ एक सकर जाति।

७ एक प्राचीन जनपद।

८ मजबूत या ताकतवर व्यक्ति।

९ प्याला, कटोरा।

१० कपोल, कनपटी। ११ नैवेद्य।

१२ अयोध्यापति राम के मत्री सुज्ञ का पुत्र।

१३ धर्म के सात पुत्रो मे से एक।

१४ मल्ल देश के रहने वाले का सम्बोधन।

१५ एक राक्षस।

वि०—१ बलवान, ताकतवर।

२ मजबूत, दृढ। ३ कसरती।

४ रोबीला। ५ अच्छा, उत्तम।

रू० भे०—मल। मह०—माल।

मल्लक—एक व्यवसायिक जाति।

उ०—कणाकार वेस्याकार, चरमकार मल्लक खलक धान्यखलक वाटक वाटिका वापी पुस्करणी क्रीडातडाग सरोवर।—व स

मल्लखभ—देखो 'मलखभ' (रू भे)

मल्लजुध, मल्लजुध्ध—देखो मल्लयुद्ध' (रू भे)

उ०—जुडित्त एक जोरदार, थोर भुज्ज दड ए। जेठी प्रचड ग्रोठ पिंड मल्लजुध्ध मड ए।—गु रू व.

मल्लणो, मल्लवो—१ देखो 'मलणो, मलवो' (रू. भे)
२ देखो 'मिळणो, मिळवो' (रू भे)

मल्लताळ-स० स्त्री०—सगीत मे एक ताल।

मल्लभूमि-स० स्त्री० [स०] १ मल्ल युद्ध का स्थान, युद्ध-भूमि।
२ कुश्ती लडने का स्थान, अखाड़ा।

मल्लम—देखो 'मलम' (रू भे.)

मल्लयुद्ध-स० पु० [स०] १ बिना किसी अस्त्र शस्त्र के दो योद्धाओ के बीच होने वाला युद्ध, द्वन्द्व युद्ध।
२ कुश्ती।
रू० भे०—मलजुध, मलयुद्ध, मल्लजुध, मल्लजुध्ध।

मल्लयोद्ध-स० पु०—मल्ल युद्ध करने वाला योद्धा।
उ०—चित्रक देसालिक मसूरिक अककार फलिहकार मल्लयोद्ध सल्यपाल बालबध अगरक्ष वीरमहर धनुरद्धर खड्गधर ··· । —व स

मल्लविद्या-स० स्त्री० [स०] कुश्ती लड़ने की विद्या।
रू० भे०—मलविद्या।

मल्लसाळा-स० स्त्री० [स० मल्लशाला] १ मल्लयुद्ध करने का स्थान।
२ कुश्ती लडने का स्थान, अखाड़ा।

मल्ला—देखो 'माळा' (रू भे)

मल्लाखाडो-स० पु०—पहलवानो का अखाडा।
उ०—रतनसेन राजा कहै रे, हु जीपू निरधार। मल्लाखाडे रण मुखें रे, रामति कउण प्रकार रे।—प च चौ

मल्लार—देखो 'मलार' (रू भे)

मल्लारि-स० पु० [स० मल्ल+अरि] मल्ल नामक राक्षस के शत्रु कृष्ण, शिव।

मल्लारी-सं० स्त्री०—वसत ऋतु की एक रागनी। (सगीत)

मल्लाह-स० पु० [अ०] नाव चलाकर आजीविका चलाने वाला, धीवर, माझी, केवट, नाविक।

मल्लि-स० पु०—जैनियो के उन्नीसवें तीर्थंकर।
उ०—मल्लि जिनेसर तु माहामल्ल, हणिया मोह मदन हैं ठल्ल। पिता तणी पिण चिता पल्ल, सगला दूर किया अरि सल्ल। —ध व ग्र

मल्लिक-सं० पु० [स०] एक प्रकार का हस जिसके पाव व चोच कुछ मेले या धूमिल होते हैं। (वसतराज)

मल्लिका-स० पु०—१ प्रत्येक चरण मे एक रगण एक जगण अन्त मे गुरु लघु सहित आठ वर्णों का वर्णिक छद।
२ चमेली।
३ एक प्रकार का वेला, जिसे मोतिया भी कहते हैं।
रू० भे०—मलिका, मल्ली।

मल्लिकाक्ष-स० पु० [स० मल्लिका अक्षि] १ एक प्रकार का घोडा जिसके आख पर सफेद धब्बे होते हैं।
२ उक्त प्रकार के सफेद धब्बे।
३ एक प्रकार का हस जिसके चरण व चोंच मैली हो।

मल्लिकामोद-सं० पु०—ताल का एक मुख्य भेद जिसमे चार विराम होते हैं। (सगीत)

मल्लिकारजुन-स० पु० [स० मल्लिकार्जुन] १ एक शिव लिंग जो श्री शैल पर प्रतिष्ठित है।
२ एक राजा का नाम।
उ०—राय पितामह अप्रतिमल्ल मल्लिकारजुन नरेस्वर गिर सरोज पूजा प्रसिद्ध प्रभावु·· ··।—व स

मल्लिजिन, मल्लिनाथ-सं० पु०—जैनियों के उन्नीसवें तीर्थंकर।
उ०—१ मल्लिजिन मिलयउ री सुगति दातार।—स कु.
उ०—२ मल्लिनाथ उगणीसम साहू सहस चालीस।—ध व ग्र

मल्लिनाथ-स० पु० [स०] एक प्रसिद्ध सस्कृत टीकाकार जो १४ वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध मे हुए थे।
रू० भे०—मलीनाथ।

मल्लियाल-स० पु०—एक देश का नाम। (प्राचीन)
उ०—अवध्या वणारसी चदेरी मल्लियाल महवर महोब हरियांणउ भयाणउ रत्नपुर कामरु मोहियांण जाळधर।—व स

मल्ली—देखो 'मल्लिका' (रू भे)

मल्लीत—देखो 'मगलति' (रू भे)
उ०—सर्फ़ एम मल्लीत, प्रकट इम निर्ने पठाणां। अम्हा उतन कर दियो, सोन गिरि वर सुरतांणा।—सू प्र

मल्लूक—देखो मलूक' (रू भे)
उ०—मल्लूक पसम मुसमल कुमाच।—सू प्र

मल्लो-स० पु०—१ व्यायाम हेतु उठाने का एक बड़ा पत्थर जिसमें खुदाई करके पकडने का हत्था बनाया हुआ होता है।
२ उक्त पत्थर को उठाने की क्रिया।
वि०—मस्त, मतवाला।
रू० भे०—मालो।
अल्पा०—मलियो।

मल्हडो-स० पु०—एक जाति विशेष का घोडा। (का दे प्र)

मल्हणो, मल्हवो—देखो 'माल्हणो' माल्हवो (रू भे)
उ०—सावण री तीज पावामर रै हस ज्यू मल्हती थकी सुख भीनै गात रग झप करती आई।—कुवरसी साखला री वारता
मल्हणहार, हारौ (हारी), मल्हणियौ—वि०।
मल्हिओडो, मल्हियोड़ो, मल्हयोडो—भू० का० कृ०।
मल्हीजणो, मल्हीजवो—भाव वा०।

मल्हपणो, मल्हपवो—देखो 'मलफणो, मलफवो' (रू. भे)
उ०—१ मसतकि बाधै मोड, धारै भुज हिंदू धरम। मेछ घडा दिसि मल्हपिओ, 'रतनागिर' राठोड।—वचनिका

उ०—२ तोय झरणि छटि ऊघमत मळयतरि, श्रति पराग रज धूसर श्रग। मधू मद स्रवति मद गति मल्हपति, मदोनमत्त मारुत मातग।—वेलि

उ०— ३ माड्-लक दुइ श्रगुळा, वर नितव उर मस। मल्हपइ माझ सहेलिया, मांन सगेवर हस।—ढो मा

उ०—४ मारवणी सिणगार करि, मदिर कू मल्हपति। सखी सुरगी साथ करि, गयगयणी गय गति।—ढो मा

उ०—५ मल्हपियो रूप श्रघियामणं, बहसतो ववाडतो। उरड़तो सुजड़ जडतो श्रसुर, पांच हजारी पाडतो।—सू प्र

मल्हपणहार, हारो (हारी), मल्हपणियो—वि०।

मल्हपिश्रोडो मल्हपियोडो, मल्हप्योडो—भू० का० कृ०।

मल्हपीजणो, मल्हपीजवो—कर्म वा०।

मल्हपियोडो—देखो 'मलफियोडो' (रू भे)

(स्त्री० मल्हपियोडी)

मल्हप्पणो, मल्हप्पवो—देखो 'मलफणो, मलफवो' (रू. भे)

मल्हप्पियोडो—देखो 'मलफियोडो' (रू भे)

(स्त्री० मल्हप्पियोडी)

मल्हम—देखो 'मलम' (रू भे)

मल्हाण-स० पु०—पडाव।

उ०—१ दोयज छळि वळ दक्खण, खीटावण खुरसाण। दीनो श्रावै दम्रणिऐ, कटकै कोस मल्हांण।—गु रू व

मल्हाणो, मल्हाबो-स० पु०—१ मस्ती मे झूमना, झूमते हुए चलना। २ विध्वस करना, नाश करना, श्रस्त-व्यस्त करना।

उ०—पिलगि महारिण पोढियो, काळो भला कहाय। जस जोवण साजै 'जसो', मणिमथ फौज मल्हाय।—हा झा.

३ मलार राग गाना, श्रलापना।

उ०—कवण देसतइ श्रावियां, किहां तुम्हारउ वास। कुण ढोलउ कूण मारुवी, राति मल्हाया जाम।—ढो मा

मल्हाणहार, हारो (हारी), मल्हाणियो—वि०।

मल्हायोडो—भू० का० कृ०।

मल्हाईजणो, मल्हाईजबो—कम वा०।

मलाणो, मलावो—रू० भे०।

मल्हायोडो-भू० का० कृ०—१ मस्ती मे झूमा हुश्रा, झूमते हुए चला हुश्रा २ विध्वस, नाश या श्रस्त व्यस्त किया हुश्रा ३ मलार राग गाया हुश्रा, श्रलापा हुश्रा

(स्त्री० मल्हायोडी)

मल्हार-वि०—१ प्यारा, प्रिय।

उ०—श्रवभ लाछन सुखकार रे, स्त्रीश्रेयास मल्हार रे। सत्यकी उरि श्रवतार रे, रुकमणि नउ भरतार रे।—स कु

२ देखो 'मलार' (रू भे)

उ०—१ ढाढी गाया निसह भरि, राग मल्हार निवाज। च्यार पहर झड माडियउ, घण गुहिरइ सुरगाज।—ढो मा

उ०—२ कह्यो—मल्हार श्रालापो, ताहरां मल्हार श्रालापतां मेह श्रायो।—सयणी री वात

उ०—३ मोरा विन डूगर किसा, मेह बिन किसा मल्हार। तिरिया तिरिया विन तीजा किसी, पिव विन किसा सिंगार।—श्रज्ञात

मल्हारणो, मल्हारबो-क्रि० स०—१ मल्हार राग गाना, श्रलापना। २ सुमिरन करना, भक्ति करना।

उ०—नाभिराय कुल सिर तिलो, मरुदेवी मात मल्हारो रे। लछन व्रखभ सोहामणो, युगला घरम निवारो रे।—स कु

मल्हारणहार, हारो (हारी), मल्हारणियो—वि०।

मल्हारिश्रोडो, मल्हारियोडो, मल्हारयोडो—भू० का० कृ०।

मल्हारीजणो, मल्हारीजवो—कर्म वा०।

मल्हारियोडो-भू० का० कृ०—१ मल्हार राग गाया हुश्रा श्रलापा हुश्रा २ सुमिरन किया हुश्रा, भक्ति किया हुश्रा

(स्त्री० मल्हारियोड़ी)

मल्हावियो-स० पु०—एक प्रकार का घोडा।

उ०—तुरगी ऊघसीया नीघसीया डाटकीया, डोटकीया, खेलविया, मल्हाविया लडाविया पुलाविया मरला तरला छोटकरणा एकरण्णा।—व स.

मल्हिम—देखो 'मलम' (रू भे)

मल्हियोड़ो—देखो 'माल्हियोडो' (रू भे)

(स्त्री० मल्हियोडी)

मवइ-स० स्त्री०—मनौती। (उ र)

मवक्किल-स० पु० [श्र० मुवक्किल] १ वह व्यक्ति जो श्रपना मुकद्दमा किसी वकील को सौंपता है, वकील का श्रासामी।

२ देवता, फरिश्ता।

३ श्रपना कार्य किसी को सौंपने वाला व्यक्ति।

मवक्ष-स० पु०—पाडळ नामक वृक्ष। (श्र मा.)

वि० वि०—देखो 'पाडळ'।

मवड—देखो 'मोर' (रू भे)

उ०—सावणिये री तुळछां पान-दो-पांन, भादूडे च्यार पांन हो रांम। श्रासोजा में तुळछा मवड ज काढया, काती व्याव रचावो हो राम।—लो गी

२ देखो 'मौड' (रू भे)

उ०—मवड ज बाधी मारवी, श्राइ श्रवतरी पेट। पूरे मामे पदमणी, जनमी रतन ज पेट।—ढो मा

३ देखो 'माता' (मह, रू भे.)

मवडो—देखो 'मोडो' (रू भे)

उ०—रामलै बूंटी-रै नसै मे, एक सोट जमाय दियो श्रर गुदडो पकड'र घीसतै-घीमतै घोरी मवडै सू बारै काढ दी।—वरमगाठ

मवजूद—देखो 'मौजूद' (रू. भे)
उ०—तपावो राछ ज्यू पूठ री कारी करा । जिसड़ै तपाड़ अर मवजूद दियण न हुया तिसडै सीपो मुहतो बोलियो ।—द वि.

मवताहळ—देखो 'मुक्ताफळ' (रू. भे)
उ०—१ सिरी घटियाळ अरोहित सेर, सरयां मवताहळ माळ सुमेर ।—मे म
उ०—२ हाथ्यां मवताहळ गग हिलोळ, छिलं रत्नधार सरस्वति छोळ ।—मे म

मवर—देखो 'मौर' (रू भे)
उ०—दीजै तिहा डक न दड न दीजै, ग्रहणि मवरि तरु गानगर । करग्राही परवरिया मधुकर, कुसुम गध मकरद कर ।—वेलि

मवरणो, मवरबो—देखो 'मौरणो, मौरबो' (रू भे)
उ०—सीत काळ उत्तरै, ग्रव मवरै रित ग्रागम, रस ग्रायो तरवरै, भयो भमरै सुर सगम ।—रा रू
मवरणहार, हारो (हारी), मवरणियो—वि० ।
मवरिग्रोडो, मवरियोडो मवरघोडो—भू० का० कृ० ।
मवरीजणो, मवरीजबो—भाव वा० ।

मवरात–स० स्त्री०—पुण्य ।
उ०—खैरात मवरात सो पुण्य पवित्र पुण्य दान रो राह करणो वादसाहा दोलतमदा रै सिर भार छ ।—नी प्र

मवरित—देखो 'मौरियोडो' (रू भे)
उ०—मवरित रूख छै । एही तो लेखागर हुमा ग्रर भमर छै एही उगाहा हुग्रा ।—वेलि टी.

मवरियोडो—देखो 'मौरियोडो' (रू भे)
(स्त्री० मवरियोडी)

मवसर—देखो 'मौसर' (रू भे)
उ०—द्रुम समूह सम सोभा सुदर, सुरधर-पत दीठो मडोवर । मवसर तिका कुसम फळ मजर, साख प्रसाख सरूप सुरतर ।—रा रू.

मवसी –१ देखो 'मौसी' (रू भे)
२ देखो 'मवेसी' (रू भे)

मवाव–स० पु० [ग्र०] १ घाव से निकलने वाला पीव ।
२ सामग्री, सामान ।
३ मसाला । ४ प्रमाण ।

मवेसी–स० पु० [ग्र० मवेशी] गाय, बैल, भैंस ग्रादि चौपाये जानवर, पशु धन ।
उ०—दरवार री फतै हुई । ग्ररु नदी सतलज ताई मासूल साझी । वा पानचराई मवेसी री वा दाळ वछेरधारी जोड़या खनै सू उदै भांणजी लेता रया ।—द दा
रू० भे०—मवसी ।

मवेसीखांनो–स० पु०—१ मवेशियों को रखने का वाडा, वह स्थान जहां पर मवेशी रखे जाते हैं ।
२ फसल या सामाजिक सम्पत्ति को हानि पहुचाने वाले, ग्राजाद छोड़े हुए मवेशियो को पकड़कर रखने का सरकारी वाड़ा या मकान ।
वि० वि०—देखो 'फाटक' (३-४)

मवोड़—१ देखो 'मौड़' (रू भे)
२ देखो 'मसोट' (रू भे)

मसजर–सं० पु०—एक प्रकार का बहुमूल्य वस्त्र विशेष ।
उ०—१ पाटवर पहरत, सूफजर वाफ मसजर । जम दाढ़ां नमि जडित, कटा जडिया जर कवर ।—गु रू बं
उ०—२ रतनकायल, चीर, सोनइगी पागरी मोगेदक गासा ग्रघोतरी नरमांनी मुसमुल मसजर चीणी विनीदी जरवाफ' ...... ।
—व स

मसत—देखो 'मस्त' (रू भे)
उ०—मदगळत जूह मैंगल मसत, सिणगार सटा किय सदोमत्त । वरियांम विढोवा वट वहत, जमदूत जोध सिरहां जड़त ।
—गु रू. व.

मसद–स० पु०—१ मामत ।
उ०—माथो मूछ मुड़ाय मसदां पोहो पतिमांह मिल्या ले पेम । फळक ग्रकेक सर्व गुळ लागो, निकळक 'ग्ररजन' हुरो नरेम ।
—राव भोज हाडा रो गीत
२ राजा ।
उ०—१ नेत ऊघो नागद्रहो, मेवाड़ो मसद जी । आहाड़ो रूमाणो ग्रोपै, निडुर नरिंदजी ।—गु रू व
उ०—२ मछरियो राउ मारु मसद । रामण सीस जिम रामचद । गरजियो विढण दूजो 'गगेव', मारिवा त्रिपुर किरि महादेव ।
—गु रू. व.
उ०—३ ग्रतुळीवळ थट्ट मेल्हिया ग्राहचद, महूरत गिर साझिवा मसद । प्रभु तिण घमड किया पइसारइ, दळ मेळै ग्राविया नरद ।
—महादेव पारवती री वेलि
३ देखो 'मसनद, ममनद' (रू भे)
उ०—१ चढि मसद बैसि इम कहे चोज, कुण देस नगर पूरब कनोज । निज धणी कमण जयचद नरेस, दे भेजै कुध फुरमाण देस ।—सू प्र
उ०—२ तिसीहीज विछायत ऊपरा गाव-तकिया, वगल-तकिया, गीदवा वादैला पास्वा मसद ऊपरै पड़िया छै ।
—जगदेव पंवार री वात

मसदी–वि०—सामन्तो की ।
उ०—साह वहण सोहिया, सभा मसदी सज्ज । चद दिपदा वेखिया, जाण नखत्रा मज्झ ।—गु रू. व.
२ देखो 'मसनदी' (रू भे)

मसध–स० पु०—सीमा, हद ।
उ०—ऊगमणी मसंघ वारै धरती कोस सो-तीन तांई ग्रांण वरतै ।
—कहवाट सरवहिये री बात

मवजूद—देखो 'मौजूद' (रू. भे)
उ०—तपावो राछ ज्यू पूठ री फारी करा। जिसडै तपाइ अर मवजूद दियण न हुया तिसडै सीपो मुहतो वोलियो।—द वि.

मवताहळ—देखो 'मुक्ताफळ' (रू. भे)
उ०—१ सिरी घटियाळ अरोहित सेर, सख्या मवताहळ माळ सुमेर।—मे म.
उ०—२ हाथ्या मवताहळ गग हिलोळ, छिलै रत्रधार सरस्वति छोळ।—मे म

मवर—देखो 'मौर' (रू भे)
उ०—दीजै तिहा डक न दड न दीजै, ग्रहणि मवरि तरु गानगर। करग्राही परवरिया मधुकर, कुसुम गध मकरद कर।—वेलि

मवरणो, मवरबो—देखो 'मौरणो, मौरबो' (रू भे)
उ०—सीत काळ उत्तरै, अव मवरै रित आगम, रस आयो तरवरै, भयो भमरै सुर सगम।—रा रू
मवरणहार, हारो (हारी), मवरणियो—वि॰।
मवरिओडो, मवरियोडो मवरयोडो—भू० का० कृ॰।
मवरीजणो, मवरीजबो—भाव वा०।

मवरात—स० स्त्री०—पुण्य।
उ०—खैरात मवरात सो पुण्य पवित्र पुण्य दान री राह करणो वादसाहा दौलतमदा रै सिर भार छ।—नी प्र.

मवरित—देखो 'मौरियोडो' (रू भे)
उ०—मवरित रूख छै। एही तो लेखागर हुआ अर भमर छै एही उगाहा हुआ।—वेलि टी

मवरियोड़ो—देखो मौरियोडो' (रू भे)
(स्त्री० मवरियोडी)

मवसर—देखो 'मौसर' (रू भे)
उ०—द्रुम समूह सम सोभा सुदर, मुरधर-पत दीठो मडोवर। मवसर तिकां कुसम फळ मजर, साख प्रसाख सरूप सुरतर।—रा. रू.

मवसी—१ देखो 'मौसी' (रू भे)
२ देखो 'मवेसी' (रू भे)

मवाद–स० पु० [अ०] १ घाव से निकलने वाला पीव।
२ सामग्री, सामान।
३ मसाला। ४ प्रमाण।

मवेसी–स० पु० [अ० मवेशी] गाय, वैल, भैंस आदि चौपाये जानवर, पशु धन।
उ०—दरवार री फतै हुई। अरु नदी सतलज ताई मासूल साफी। वा पानचराई मवेसी री वा दाळ वछेरचारी जोइयां खनै सू उदै भाणजी लेता रया।—द दा.
रू० भे०—मवसी।

मवेसीखांनो–स० पु०—१ मवेशियो को रखने का वाडा, वह स्थान जहा पर मवेशी रखे जाते हैं।
२ फसल या सामाजिक सम्पत्ति को हानि पहुचाने वाले, आजाद छोडे हुए मवेशियो को पकडकर रखने का सरकारी वाडा या मकान।
वि० वि०—देखो 'फाटक' (३-४)

मवोड—१ देखो 'मोड' (रू. भे)
२ देखो 'मसोड' (रू. भे.)

मसजर–सं० पु०—एक प्रकार का बहुमूल्य वस्त्र विशेष।
उ०—१ पाटवर पहरत, सूफजर वाफ मसजर। जम दाढां नमि जडित, कडा जडिया जर कवर।—गु. रू. व
उ०—२ रतनकांवल, चीर, सोनहरी पामरी खोरोदक खासा अघोतरी नरमांनी मुलमुल मसजर चीणी विलीदी जरवाफ ''''''।
—व स

मसत—देखो 'मस्त' (रू भे)
उ०—मदगळत जूह मैंगल मसत, मिणगार खडा किय सदोमत्त। वरियांम विढोवा वड वडत, जमदूत जोध सिलहां जडत।
—गु रू व.

मसद–स० पु०—१ सामत।
उ०—माथो मूछ मुडाय मसदा पोहो पतिसाह मिलया ले पेस। फळक अकेक सवै कुळ लागो, निकळक 'अरजन' हूरो नरेस।
—राव भोज हाडा री गीत
२ राजा।
उ०—१ नेत-वधो नागद्रहो, मेवाडो मसद जो। आहाडो खूमांणो ओपै, निहुर नरिंदजी।—गु रू व.
उ०—२ मछरियो राउ मारु मसद। रामण सीस जिम रामचद। गरजियो विढ़ण दूजो 'गगेव', मारिवा त्रिपुर फिरि महादेव।
—गु रू. व.
उ०—३ अतुळीवळ थट्ट मेल्हिया आहचद, महूरत गिर साझिवा मसद। प्रभु तिण घमड किया पइसारइ, दळ मेळै आविया नरद।
—महादेव पारवती री वेलि
३ देखो 'मसनद, मसनद' (रू भे)
उ०—१ चढि मसद वैसि इम कहै चोज, कुण देस नगर पूरव कनोज। निज धणी कमण जयचद नरेस, दे भेजै कुछ फुरमाण देस।—सू प्र
उ०—२ तिसीहीज बिछायत ऊपरा गाव-तकिया, बगल-तकिया, गीदवा वादेला पासवा मसद ऊपरै पडिया छै।
—जगदेव पवार री वात

मसदी–वि०—सामन्तो की।
उ०—साह वइण सोहिया, सभा मसदी सज्ज। चद दिपंदा वेखिया, जाण नखत्रा मज्झ।—गु. रू. व.
२ देखो 'मसनदी' (रू. भे)

मसध–स० पु०—सीमा, हद।
उ०—ऊगमणी मसंध वारै धरती कोस सो-तीन ताई आंण बरतै।
—कहवाट सरवहिये री बात

मस–स० पु० [स० मश] १ मच्छर, डास ।
२ गुंजार, गुनगुनाहट । ३ क्रोध ।
[स० मस] ४ एक तौल विशेष, मासा ।
[स० मशक] ५ शरीर पर होने वाला छोटा काला चिन्ह ।
वि० वि०—कभी कभी यह ऊभर कर बडा भी हो जाता है ।
६ घोड़ा या बैल आदि का एक रोग ।
उ०—खुरफाडी फाटै, एक खुरी आगै वध आवै, एडी में मस, मुरचा कमजोर' ।—फुलवाडी
७ देखो 'मस्सौ' (रू भे)
[स० श्मश्रु] ८ मूछ निकलने के स्थान की रोमावली ।
९ देखो 'मसि' (रू भे) (अ मा)
उ०—१ रैणू विना खळा अरवदराव, घरा ताव कज अक धरै । व्रन मस मेट करै कुकु व्रन, कुकु व्रन मस वरन करै ।
—भीमजी आसियो
उ०—२ कागळ नही क मस नही, नही क लेखणहार । सदेसा ही नाविया, जीवु किसइ आधार ।—ढो मा
१० देखो 'मिस' (रू भे)
रू० भे०—मस्स ।

मसउ, मसक–स० पु० [स० मशक] १ मच्छर, डाम । (उ र)
उ०—१ मसक समान 'कान्ह' कू मारचो, उदनवान जळजान उबारचो ।—मे म
२ एक विशेष प्रकार का चमडे का थैला जो भिश्तियो द्वारा पानी ढोने के काम आता है ।
उ०—दूध दही ए दोय मसक ढुळाओजी अलवेल्यां री भागडली सिंचावो जी ।—लो गी
रू० भे०—मसग, मिमक ।
स० स्त्री०—३ कलाई ।
उ०—माहै जगदेव आपरा कछरणा सू भैरू नैं अपूठी मसकां वाधियो नै थिरमा माहे गाठडी वांधि काधो करि नै आपरै डेरे ल्याया ।
—जगदेव पवार री वात
४ दोनो हाथो को पीठ पीछे लेकर कलाईयो को मजवूत वाधने की क्रिया ।
५ मसकने की क्रिया या भाव ।
६ किसी को मजवूती से वांधने की क्रिया या भाव ।
उ० घडी चार दिन चढ़तां सूअर सिकार खेल ऊटा ऊपर मसकां वांध पाछा घरा नू हालिया ।—कुवरसी साखला री वारता

मसकणो, मसकवो–क्रि० अ० [स०] सरकना, पसरना, फैलना ।
उ०—कसतूरी कहि केवडो, मसकत जाय महक्क । मारू दाडम फूल जिम, दिन दिन वनी डहक्क ।—ढो मा
मसकणहार, हारो (हारी), मसकणियो—वि० ।
मसकिओडो, मसकियोडो, मसक्योडो—भू० का० कृ० ।
मसकीजणो, मसकीजवो—भाव वा० ।

मसकत–स० स्त्री० [अ० मशक्कत] १ मेहनत, मजदूरी, परिश्रम, परिश्रम से किया जाने वाला कार्य ।
उ०—जु घडसी आप चतुर थो, सु उठै किणाहेका सिरदारां उमरावा रा वागा डेरै वैठो सीवतो । वागै एक मसकत रो लेतो ।
—नैणसी
२ सेवा, चाकरी, नोकरी ।
उ०—हाल दोय सू वाहिर नही छै जे दोरा हुवा अरथ सुधरे तो भली वात छै ने कदाचित ढील होय तो कोई आकल उण नू आलसी नहीं कहै ने उण री आंगमण मसकत सारां ऊपर जाहिर होय ।—नी प्र
३ योग्यता ।
रू० भे०—मसकित, मसक्कत ।

मसकर–स० पु० [स० मस्कर] १ वांस । (ना मा., ह ना. मा)
२ ज्ञान ।
स० स्त्री०—३ वासुरी, वशी । (अ मा)
४ गति चाल ।
५ पोली या थोथी लकडी ।

मसकलो–स० पु०—छुरी, चाकू आदि शस्त्रो पर धार देने का पत्थर ।
उ०—जन हरीया सतगुर इसा, जिसा कमागर होय । सवद मसकला फेर करि, दाग न रखै कोय ।—हरिरांमदासजी महाराज

मसकरि, मसकरी—देखो 'मसखरी' (रू भे)
उ०—१ पूठै कछवाहा मसकरी करणै लागिया—जे इण रै भरोसे इतरा दिन निकम्मा रह्या ।—अमरसिंह गजसिंहोत री वात
उ०—२ रजपूता निराठ मन्हा कियो । जे वडा सरदार असी कोई कहे नहीं छै । कूडी सू तो रामत मसकरी सांची सू गाळ छै ।
—भाटी सुदरदास वीकूपुरी री वारता

मसकरो—देखो 'मसखरो' (रू भे)
उ०—१ सीस अमोलक अजवथा, दीन्हा सोहवी ठोर । जन हरिदास मन मसकरा, मन की उल्टी दोर ।—ह पु वा
उ०—२ टेर-समझ सठ आतम ग्यान अग्यांनी । माया वादी गूढ मसकरा मूढ़ महा अभिमानी ।—ऊ का

मसकित—देखो 'मसकत' (रू भे)
उ०—खिजमत करि कर जोडि खिजमत, आप न रीझै औजाह । मोल दियै पिण मसकित माफक, मोटा री नही मोजाह ।—घ व. ग्र.

मसकियोडो–भू० का० कृ०—सरका हुआ, पसरा हुआ, फैला हुआ ।
(स्त्री मसकियोडी)

मसकी–स० स्त्री० [स०] गूलर ।
वि०—मशक से पानी भरने वाला ।

मसकीन–वि० [अ० मिस्की] १ प्रार्थी, विनीत, विनम्र ।
उ०—केतै खडे नवाज कू मसकीन गदाई ।—केसोदास गाडण

२ दीन, असहाय, दरिद्र, गरीब ।

उ०—मसकीन लोक पामइ नही लेता धान लागइ धक्का । समय-सुदर कहइ सत्यासीया, तइ कुमति दीधी तिका ।—स. कु.

३ सरल, सीधा-सादा ।

४ भिखारी । ५ त्यागी, विरक्त ।

रू० भे०—मिसकीन, मिस्कीन ।

मसक्कत—देखो 'मसकत' (रू भे.)

उ०—मसक्कत सू कदे नही थाके उण नू ही प्रथ्वी री चोकी री हिम्मत छै ।—नी प्र

उ०—२ याकूब लेस प्रथम हाल मे मरणांत भय खैंचतो श्राराम न करतो मसक्कत सू एक दम टलतो नही ।—नी प्र

मसक्की—सं० पु०—रग विशेष का एक प्रकार का घोडा ।

उ०—हूगरी मसक्की वेसि दीय, अद्दराक ततारी आरबीय । मुरमाणी मकुराणी खतंग, पतिमाह तणा छूटइ पवग ।

—रा ज सी.

मसखरी—स० स्त्री० [अ० मस्खर + रा० प्र० ई] १ हमी मजाक दिल्लगी, ठठोली ।

उ०—चोधरी पगा पडतो कह्यो-म्हारा धणी । श्रो मसखरी रो मोको नी है । आपने वार चढणी ई पडसी ।—फुलवाडी

२ किसी की अवहेलना या बेइज्जती के लिये की जाने वाली वात ।

उ०—१ कूजड़ी हसनै बोली-सेठाणीजी थें काईं म्हारी मसखरी करो हो । दो जणा भिचें ई खावण रा पूरा बरतन कोनी ।

—फुलवाडी

उ०—२ काणिया काचर री वाता री की गिनरत करी नी । उणरी मसखरी करतां बोल्या—थारो नांव काणियो काचर है तो श्रो ई ठगा रो गुडो है ।—फुलवाडी

रू० भे०—ममकरि, मसकरी, मिसकरी, मिसखरी ।

मसखरो—वि० [अ० मस्खर] हसी, दिल्लगी या मजाक करने वाला ।

स० पु०—१ उक्त प्रकार के स्वभाव वाला व्यक्ति ।

२ हास्य अभिनेता ।

३ विदूषक ।

रू० भे०—मसकरो, मिमकरो, मिसखरो ।

मसग—देखो 'मसक' (रू भे)

मसगूल—वि० [अ० मश्गूल] १ लीन, व्यस्त ।

२ किसी कार्य मे लगा हुआ, प्रयत्नशील ।

उ०—जाहिरा म्हारै मांहे काई रोब देखै छै सो कहज्यो उण रै मिटावणे मसगूल होऊ ।—नी प्र

मसजिद—स० स्त्री० [अ० मस्जिद] वह स्थान या भवन जहां मुसलमान लोग एकत्र होकर ईश्वर वदना करते हैं, नमाज पढते हैं ।

रू० भे०—मजीत, मजीद, मसीत, मसीति, मसीद, मस्जिद, महजित, महजिद, महजीत, महजीद, महिजीत महिजीद, महीजीत ।

मसज्जर—स० पु०—एक प्रकार का वस्त्र ।

उ०—पछइ भला वस्त्र पहिराया ते कुण कुण, देवदुस्य वस्त्र, रत्नकवल पामडी खीरोदक मसज्जर चीणी बुलवुल चसमा अतलस '' ।—व स.

मसट, मसट्ट—वि० [स० मष्ट] १ चुप, मौन ।

उ०—मिल्या धनतर नह मरै, राम हूत रोगीह । गुरड़ मसट रह तज गरब, भव गळ गो भोगीह ।—रेवतसिंह भाटी

२ सस्कार शून्य ।

३ भूला हुआ ।

४ ध्वस होने की क्रिया या भाव, चूर्ण, नाश ।

उ०—जइ ऊबड ब्रिक्ख पडत जुआ, हैं पाए पहाड मसट्ट हुआ । पतिसाह पयाण पुर' किय असमानक अरसणि ऊलटिय ।—गु. रू व

मसत—देखो 'मस्त' (रू भे)

उ०—१ इण सोभा वपु तेज उफाणं, जोवन मसत कठीरव जाणं ।

—सू प्र.

उ०—२ मसत हसत बहु मोल द्वार घूमै खळदाहण । बाला हीसै बाज वर्णं जाणं रविवाहण ।—बां दा.

उ०—३ मउरीया ब्रख मसत वसत मांणवा, चचळ वांण घनख सिर चाढ । रित रह हाथ झालियइ रमतउ, श्राया खडै वहइ अश-गाढ ।—महादेव पारवती री वेलि

उ०—४ मसत महीनो आवियो रे जला अब तो खबर म्हारी लेय ।—लो गी

उ०—५ हडहड हसत, मसत मदिरा मद, घड हुइ सेर घुवाडै । चड चड चाव जोगण्या चोसट, घडघड भूमि घुजाड़ै ।—मे म

मसतक, मसतक्क, मसतग—देखो 'मस्तक' (रू भे) (अ मा)

उ०—१ तूं गैहली 'ऊदा' तणी, बोल न जाणै बोल । धुर लीना कोळू घणी, म्हारा मसतक मोल ।—पा प्र

उ०—२ अडियो जाय मसतक्क उरसि धूपर दिठ धारै । प्रचड नमाए लक प्रोळ श्राए उपरारै ।—सू प्र

उ०—३ मसतग पविश्र करिस मधुसूदन । वदै तूझ चरण जुग वदन ।—ह र

मसतफी, मसतफा—स० पु० [अ० मुस्तफा] मोहम्मद साहब की एक उपाधि ।

वि०—१ पवित्र आत्मा, सत्पुरुष ।

उ०—महमद जेसा मसतफी, निवाज नमंदे ।—केसोदास गाडण

२ शुद्ध, पवित्र, निर्मल ।

३ दुर्गुण रहित ।

मसताक—वि० [अ० मुश्ताक] उत्कठित, उत्सुक ।

उ०—छक मसताक रूप अति छाजै । लख दुति सची उरबसी लाजै ।

—सू प्र

मसतान—१ देखो 'मसतानो' (मह., रू भे)

उ०—महमाय पूजा मान, महरग गज मसतांन। कटि घट घोर किलाव, वणि चमर वध वणाव।—सू प्र

२ देखो 'मस्त' (मह, रू भे)

उ०—मडै कट तेग हुवै मसतान, खडै अगरेज रु नाहर खान।
—सू प्र

मसताक—देखो 'मुस्ताक' (रू भे)

उ०—धाक पडै जिण अग्नि घरा, डाक वजै जिण दिन। छाक चढै जिण छत्रवट, वै मसताक सु मन।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

मसती—देखो 'मस्ती' (रू भे)

उ०—मुकनौ दुरद मलार, गळ डाग भरतै गयौ। गाडर छोडि गलार, मसती फेरि न मड्डियौ।—शि व

मसनद, मसनद—स० पु० [अ० मस्नद] १ बिछायत, गद्दी, तकिया आदि। २ बिछायत मे लगने वाला बडा तकिया। ३ तकिया लगाने का स्थान।

रू० भे०—मसद, मिसद।

मसनदनसीन—वि० [अ० मस्नद+फा० नशीन] १ मसनद पर बैठने वाला। २ अमीर, बडा आदमी।

मसनदी—वि०—मसनद से युक्त।

रू० भे०—मसदी।

मसपूरज—स० स्त्री०—अस्थि, हड्डी।

उ०—नदी सहस नाडिया प्रगट परवत मसपूरज स्रुत दिस पवन उसास, सकल लोयण ससि सूरज।—र रू

मसर-मसर—क्रि० वि०—मद गति से, धीरे धीरे।

उ०—मसर-मसर ढोला दूखै छे पेट हाथ पगा मे फूटणीजी राज।
— लो. गी

मसरी—देखो 'मिसरी' (रू भे) (डि को)

मसरु, मसरू—स० पु० [अ० मशरूअ] १ एक प्रकार का रेशमी वस्त्र विशेष।

उ०—जरजरी मलबारी लाछरी अघोतरी अमरी गगापारी मोतीचूरि टमरू मसरू रत्नकबल छाइल मकवल अगल सा।उला उरसाला वाला पटुला वाकला ।—व. स

२ रेशम और सूत से बुना एक प्रकार का धारीदार वस्त्र।

मसल—स० स्त्री० [अ०] १ कहावत, लोकोक्ति।
२ समान, तुल्य।
३ विषय, प्रसग।
[अ० सस्लहत] ४ सलाह, परामर्श।

उ०—जटै कर मसल अगरेज आया जबर, दाटवां भहारां देर दुबो।—सूरजमल आसियो

रू० भे०—मसलि, मसल्ल, मस्ल।

५ देखो 'मिसल' (रू भे)

उ०—'अर्ज' विदा कीधौ 'अभौ', परखि कळा अणपार। आठ मसल वळ आगळा, सझि दळ हुवा तयार।—रा. रू

६ देखो 'मिसिल' (रू भे)

मसळणौ, मसळवौ—क्रि० स०—१ दोनो हाथो को परस्पर रगडना मलना।

उ०—१ जाई जोवन धन मसळै हाथ। जोयन जवि गिणइ दीह ने राति।—बी दे

उ०—२ अबै वौ पाणी में लारौ करै तौ कीकर करै। हाथ मसळतौ, मन मे कळपतौ वौ निरीताळ उठै ई ऊभौ रह्यौ।
—फुलवाड़ी

२ हाथ मे दबाते हुए रगडना, दबाकर रगडना।

उ०—१ आख्या मसळतौ मसळतौ देंत ई बोल्यौ—म्हारौ ग्यांन ओछौ है, म्हारा सू घणौ बोलणौ नी आवै।—फुलवाडी

उ०—२ खवासजी घडी घडी आंख्यां मसळनै अर घडी घडी ठाडा पाणी सू आख्यां छाटनै टोळा सांमी देखता—काई औ सपनौ तौ नी है।—फुलवाडी

उ०—३ मालवांनी भूमि, तिहाना नींपना गोधूम, हाथस्यु मसल्या, घोइनइ दल्या।—व स

३ जोर से दबाना, गूदना।

उ०—पड पकवांन प्रवाडा प्रमरथ, साहां सेन करै बोह सग। मैंदा कटक महारस मसळै, जीम्हण रांण कियौ रणजंग।
—राणा खेता रौ गीत

४ रगडकर मारना, सहार करना, नष्ट करना, हनन करना।

उ०—१ मरै नहीं भकमार तिकै जीवण नै ताता। मारै जूवा मसल रहै रगिया नख राता।—ऊ का

उ०—२ जदी पचमार कहै मा'राज ईतरा दिन कों ढील कीधी। पेली ही केता तो गोला है मसल नाखता।—पचमार री वात

उ०—३ पाच गोळा'र दोय सेल लागा पछै, 'सदा' रौ 'सेर' पौरस सवायो। मसळतौ हाथिया धमल भरतौ मरद, 'अचळ' हर हर पावरौ 'कुमळ' आयो।—पहाडखा आढौ

५ मर्दन करना।

उ०—केतकी मीर मसळै तुरी केवड़ा, रग वहै धरा मिरि रुधिर रातौ।—तेजसिंह मेखावत रौ गीत

मसळणहार, हारौ (हारी) मसळणियौ—वि०।
मसळिओडौ, मसळियोडौ, मसळ्योडौ—भू० का० कृ०।
मसळीजणौ, मसळीजवौ—कर्म वा०।
मिसळणौ, मिसळवौ—रू० भे०।

उ०—हरिया वसै मसांन विच, किनी न बूझी वात। रांम लिया वतलाय कै, ज्यू बाळक कू मात।—स्री हरिरांमदासजी महाराज

मसारगल्ल–स० पु०—एक प्रकार का रत्न विशेष।

उ०—मरकत करकेतन पद्मराग पुस्पराग वज्र वैडूर्य सूरजकांत चंद्रकांत नील महानील इंद्रनील सवकर विभकर ज्वरहर रोग हर सूलहर विसहर हरिन्मणि चूनही लोहिताक्ष मसारगल्ल हंसगरभ पुलक अंक अंजन अरिस्ट चिंतामणि ‥ ।—व स

रू० भे०—मसारी।

मसारी—देखो 'मसारगल्ल'।

मसाळ, मसाल–स० स्त्री० [अ० मशाल] १ पुराने समय का एक बडा चिराग, बत्ती।

उ०—१ इतरै रात पडी, मारे वहै ठाकुर कह्यो—डेरो करो, मवारै गाडां रो घस लेस्यां, वांसै जास्या जैमल घणो कस मांहै, कहै मलालां घणी करो, ममालां हाथियां ऊपर भालनै चढो, वांसै गाडा रै खडो।—नैणसी

उ०—२ यू वातां करतां थका पील मोत मगाई मसाल वोहडाई।
—जयसिंह श्रांमेर रे घणी री वारता

उ०—३ अवक धुन अदग विकराळ रज धोम तम, ज्वाळ घस मसालां तोप ज्वाळा।—महाराजा वहादरसिंघ रो गीत

वि० वि०—इसमे लकडी के डंडे के शिरे पर लोहे की एक छड़ लगी रहती है। उस छड के सिरे पर कपडा लपेटकर गेंदनुमा वना दिया जाता है। उस पर तेल डालकर जला दिया जाता है। डंडे का दूसरा शिरा हाथ मे पकड़ने के काम आता है।

रू० भे०—मुसाल।

मसालची–स० पु०—१ मशाल जलाने वाला व हाथ में लेकर प्रकाश दिखाते हुए चलने वाला व्यक्ति।

उ०—गनीम सोचियो—जठै इत्ता मसालची है वठै फौज तो कुण जांणै कित्तीक हुवैला।—वरसगांठ

२ राजघराने या धनी पुरुषो के घर दीपक जलाने का कार्य करने वाला सेवक, नौकर।

उ०—१ तद लोक सरब ऊठि ऊभा हुवा। मसालची पीळ चौसा नै गया।—पलक दरियाव री वात

उ०—२ तठा उपरायत ममालां हुई छै। दुसाखा हुवा छै। मसालचियां श्राए मुजरो कियो छै।—रा. सा स.

३ रसोई घर मे मसाले पीसने का कार्य करने वाला व्यक्ति।

रू० भे०—मुसालची।

मसाली, मसालेदार–वि०—जिसमे ममाले हों, मसालो से युक्त।

स० पु०—अच्छे मसालो से युक्त स्वादिष्ट भोजन, व्यजन।

मसालो–स० पु० [फा॰ मसालह] १ शाक-सब्जी या दाल मे डाली जाने वाली नमक, मिरच, धनिया, हल्दी आदि वस्तुएं।

२ मेवा, मिश्री तथा खट्टी-मीठी व सुगंधित वस्तुओ का सामूहिक रूप, जो पेय या खाद्य पदार्थो में मिलाया जाता है।

उ०—होळै-होळै वो भाग रो पुट वत्तो अर केमर विदामां रो मसालो कम करतो गयो अर वांनै ठडाई पावतो रह्यो।—फुलवाड़ी

३ कई प्रकार की ओपधियो या रसायनिक पदार्थों का मिश्रित रूप।

उ०—चारू जणा एकण मारग वोवाड करनै रोवण लागा—म्हारी आंख्यां फूटगी रे—कीटिया मसालो तेज घणो।—फुलवाडी

४ वे वस्तुएं जिनके मिश्रण से कोई वस्तु तैयार होती है।

५ किसी कार्य के लिये वांछित साधन, सामग्री।

उ०—वि हजार तोप कठठी वही, गोळमदाज फिरगरा। करि भजर क्रोध कीधा किलम, जवर ममाला जगरा।—सू प्र.

६ किमी विषय या लेख से सम्बन्धित आवश्यक बातें, सूचनाएं।

रू० भे०—मुमालो।

मसाहणी–स० पु० [स० महासाधनिक] १ राज्य के घुड़साला का अधिकारी (प्राचीन)। (उ र)

उ०—१ सेना सहू पूठइ-थिकी, सिरि सल्लहत्थ प्रधांन। भडारी यारी वतू, मसाहणी बहू मांन।—मा कां प्र

उ०—२ नायक दडनायक अगलेख्क भाडागारिक सधिविग्रही साहणी मसाहणी पडसाहणी तलदग्गी दडाधिपति प्रतिहार आरक्षक कट्टवहक ।—व स

उ०—३ सूयार सूडकर मसाहणी मीठा वोला सरमतरणा इसी सभा अनइ एतला देस तणउ अधिपति ।—व स

२ घोडों को शिक्षित करने वाला।

रू० भे०—मसाणी, महामसाणी, महासाणी।

वि० [सं० श्मशान+रा० प्र० ई] श्मशान मे जाकर तांत्रिक साधना करने वाला। (उ र)

मसि–स० स्त्री० [स० मसि, मषी] १ काली स्याही।

उ०—१ धूलि नइ तिमरि अंबर रोलिउ, सूरय बिंब मसि माहि कि बोलिउ। अस्वयार फिरतां नहु सूझइ, ए रणागणि किसि परि झूझइ।—सालिसूरि

उ०—२ अहर रग रत्तउ हुवइ, मुख काजल मसि अन्न। जांण्यउ गुजाहळ अछइ, तेण न ढूकउ मन्न।—ढो मा.

२ स्याहि, इक।

उ०—१ जन हरिदास मसकरि लागी, वहोडि मसी सू मसि धोवै। कालरि वाहे खेत, साह की पूजी खोवै।—ह पु वा.

उ०—२ कागळ नही क मसि नही, लिखता आळस थाइ। कइ उण देस सदेसडा, मोलइ वहइ विकाइ।—ढो मा.

३ कालिख, कालिमा।

उ०—वरिसइ मेघ अनइ राति अधारी, कुहीराव अनइ माहि कसारी, जवनी रोटी अनइं कागिद वोटी, कालि नइ मसि लाई ’।
—व स

स० पु०—५ काजल।

६ अधेरा। ७ निर्गुडी का फल।

८ कृष्ण वर्ण, काला, श्याम। (डिं. को.)

रू० भे०—मस, मसी, मस्सी, मिस, मिसि।

९ देखो 'मिस' (रू भे)

१० देखो 'मिस्सी' (रू भे)

मसिबिंदु-स० पु०—काजल का छोटा टीका, जो बच्चो के नजर आदि से बचाव के लिये लगाया जाता है।

मसिलत—देखो 'मसलत' (रू भे)

उ०—करि मसिलत प्रणांम करि, किरवर तोल करग्ग।
—मा वचनिका

मसी-स० स्त्री०—ऊट, हाथी आदि पशुओ के झरने वाला मद।

उ०—बिन्ह बिन्ह लार्जा बध, कमळा दीरघ कघ। मसी झरै मदोमत्त, रुडी कोसा विरत।—गु रू ब

२ देखो 'मसि' (रू भे)

उ०—जन हरिदास मसकरि लगी वहोडि मसी सू मसि धोवै। कालरि बाहै खेत साह की पूजी खोवै।—ह पु वां

३ देखो मिस्सी' (रू भे)

उ०—अजन न घालै आंख। मसी न लगावै दात।—जयवाणी

रू० भे०—मस।

मसीजणो-सं० पु०—मसिपात्र, दवात।

उ०—पांच दोरा रे लेखणि पांच मसीजणा। वास कूपी रे कावी वारू वरतणा।—स कु

मसीत, मसीति मसीद—देखो 'मसजिद' (रू भे)

उ०—१ मिंदर, मसीता रा ऐ पथ तो अफडा है। ऐ धरम रा नी' अकरम अर अधरम रा परकोटा है।—फुलवाडी

उ०—२ दादू यहु मसीत यहु देहुरा, सद्‌गुरु दिया दिखाइ। भीतर सेवा बदगी, बाहर काहै जाई।—दादूवाणी

उ०—३ वडी मसीत ईदगाह वाळी। रत सूवरां तणै रुहराळी।
—रा रू

उ०—४ हिंदू थापै देहुरा, मुसलमान मसीति। पखा पखी जग पचत है, यही दुहु की रीति।—ह पु वां

मसीन-स० स्त्री० [अ०] यत्र, कल।

मसीह, मसीहा-स० पु० [अ०] ईसाइयो के धर्म गुरु महात्मा ईसा का एक नाम।

मसु-स० पु० [स० मशक, प्रा० मसअ] मच्छर।

उ०—अतर दीसइ एवड्ड, किहां गरुड किहां मसु रे। अंतर दीसइ एवड्ड, किहा गजनइ किहा ससउ रे।—नलदवदती रास

मसुरो—देखो 'मसनद'।

उ०—सुवारनी सोड भराय गाल मसुरा गादी गींदवा ढोलणी ने चोवारे चढ़ाय ढोलो मारुणी दोन्यु पोढ़स्यां।—लो गी

मसूड़ो, मसूढ-स० पु० [स० श्मश्रु] दांतो की जडो पर जमा हुआ, मुह के अन्दर का मासल अग, मसुडा। इससे दात मजबूती से जमे रहते हैं।

उ०—१ बिलाई रै कूटिया जिसा दात, मगर मच्छ री गळाई खुरदरा अर काठा मसूडा, जरख जैडी लपरका करती जीभ'''।
—फुलवाडी

उ०—२ की कस करैंडे कूकरी, मुख नो भरते मास मसूढ कि। ममन हुवै ते स्वाद मैं, माहिली हांनि न जाणै मूढ कि।
—ध वं ग्र.

रू० भे०—मसोडो।

मसूदो—देखो 'मसविदो' (रू भे)

मसूर-स० पु० [स० मसुर, मसूर] १ एक प्रकार का द्विदल अन्न, जिसका दाना चिपटा हुआ होता है तथा जिसकी दाल बनती है।

उ०—मूग मोठ तूअर तणी रे लाल, राती दाल मसूर।
—प च. चौ.

२ देखो 'मसहूर' (रू भे)

रू० भे०—मसूरि।

मसूरति-स० स्त्री०—सलाह, विचार, परामर्श।

उ०—करी मसूरति देई सीखांमण, नामजाद ल्यउ साथि। मारूआडि ऊपरि सुरताणइ, बीडउ आप्यउ हाथि।—का दे. प्र.

मसूरयो-स० पु० [स० मसूर+कन्] गोल तकिया।

उ०—लाख दस लहै पलिंग सोडि तीस लख सुणीजै। गाल मसूरया सहस सहस दोय गिंदूआ भणीजै।—प च चौ

मसूरि—देखो मसूर' (रू भे)

उ०—मडोरा मग, करहूआ मग, नीलूआ मग, तेहनी दालि, कान्हमी तूअरि मसूरि तेह तणी दालि —।—व स

मसूरिक—कर्मचारी विशेष।

उ०—उपानहधर भ्रगारधर स्थगिताधर चित्रक देसालिक मसूरिक अककार फलिहार मल्लयोद्ध सस्या पाल —व स

मसूरिका-स० स्त्री० [स०] १ मसूर के दाने के बराबर की चेचक, छोटी माता।

२ दूती।

मसूरिया, मसूरीया—तकिया रख कर चलने वाला।

उ०—१ आरक्षक कहूवहक राज द्वारिक लेखक कथक वातगर कवि काठीया मसूरिया दीवटीया उपाध्याय वइकार—व स

उ०—१ अमात्य महामात्य सुहासोला उचित बोला दास दीकोला गादीया मसूरिया पुड पुडीया कांवडीया दोवारिक तलार''।
—व स.

मसूरियो-स० पु०— १ जोधपुर के दक्षिण-पश्चिम की एक छोटी पहाडी जहां पर बाबा रामदेव का प्रसिद्ध मन्दिर है।

उ०—महि मालम थान मसूरियो मोथ हूत सू। वेगडा पाल गउ वाहरू दम इक जेज म सू।—पा प्र

२ स्त्रियो के पांव का एक ग्राभूषण विशेष ।

मसूस–स० स्त्री०—१ मन को ममोसने की क्रिया या भाव, मन के भावो को बलात् दवाने की क्रिया या भाव ।

२ देखो 'महसूस' (रू भे)

मसोड़, मसोडि–स० स्त्री०—सर्दी के बचाव के लिये, रजाई मे अन्दर चादर डालकर अथवा दो चादरो को एक परत मे करके, ओढने के लिये तैयार किया गया बिस्तर ।

उ०—१ थू मसोड कारी लेवै ऐ ? के कांचळी री । थू घांसै कीकर ऐ ? के खू खू ।—फुलवाडी

उ०—२ तस ऊपरि मसोडि मोल दह लखै लीधी । अगर कुमम पटकूल सेझ कुकम पुट दीधी ।—प च चो

रू० भे०—मवोड ।

मसोड़ो—देखो 'मसूडो' (रू भे)

उ०—दात लांबा, जडियां उघडियोडा । काळा मसोडा । मसोडा रै पाखती दात ई काळा ।—फुलवाडी

मसोतो–स० पु०—१ पाकशाला या रसोईघर का वह छोटा वस्त्र जो झाडने, पोछने या गर्म पात्र उठाते समय हाथ मे रखने के काम आता है ।

उ०—विणियाणी मसोता में पकडनै कांदा रै साग री थेगची लाई ।

—फुलवाडी

२ लकडी का एक डडा जिसके एक शिरे पर छोटा मोगरा बना होता है । यह गन्ने के रस का मैल हटाने के काम आता है ।

रू० भे०—मस्रोतो, मसोदो, मसीदो ।

मसोदो—१ देखो 'मसोतो' (रू भे)

२ देखो 'मसविदो' (रू भे)

मसोसणो, मसोसवौ–क्रि० स०—१ मारना, समाप्त करना, सास रोककर मारना ।

उ०—जद खिडकी खोल भीतर लिवाय गई चट बकरे नू मसोस राणी नू कही जे इण में प्रवेस कर बतावो ।

—नापै मांखले री वारता

२ मन के आवेश, जोश, इच्छा या भाव को दवाना, रोकना ।

उ०—निद्रा मांही थकी मसोसे वादि चढी सिर ऊपर खेलै ।

—ह पु. वा

३ मन ही मन कुढना, रज करना ।

४ ऐंठना, मरोडना ।

५ तग करना, परेशान करना । ६ निचोडना ।

मसोसणहार, हारो (हारी), मसोसणियो—वि० ।

मसोसिग्रोडो, मसोसियोडो, मसोस्योडो—भू० का० कृ० ।

मसोसीजणो, मसोसीजवो—कर्म वा० ।

मसोसियोडो–भू० का० कृ०—१ सास रोककर मारा हुआ, समाप्त किया हुआ २ मन के आवेश, जोश या भाव को दवाया हुआ, रोका हुआ. ३ मन ही मन कुढ़ा हुआ, रज किया हुआ ४ ऐंठा हुआ, मरोडा हुआ ५ तग किया हुआ, परेशान किया हुआ ६ निचोड़ा हुआ

(स्त्री० मसोसियोडी)

मसौ–स० पु० [स० मशक, प्रा० मसग्र] १ मच्छर ।

उ०—१ जाणे फिरिया सीह रहइ सीयाल । मातग नइ जेम मसा कमाल । चिहु पखे अरजन वाण छूटइ, सन्नाह माहिइ सर सीघ्र फूटइ ।—सालिसूरि

२ देखो 'मस्सौ' (रू भे)

मसौदो—१ देखो 'मसविदो' (रू भे)

२ देखो 'मसोतो' (रू. भे)

मसौदेबाज–वि०—१ अच्छी युक्ति सोचने वाला ।

२ मसविदा बनाने वाला ।

३ धूर्त, चालाक ।

मस्कोरणो, मस्कोरवो–क्रि० स०—विगडना विकृत करना (मुख) ।

उ०—१ नाई मूडो मस्कोरतो वोल्यो—इण सू काई मांधा लागै ? थारै कोल मुजब म्हनै पूरो राजी करो ।—फुलवाडी

उ०—२ राणी राजा नै होळै सूं मूडो मस्कोर नै कह्यो—म्हारै पगा सामी देखनै आप आ रै मन री बात नी जाण सको ?

—फुलवाडी

मस्कोरियोड़ो–भू० का० कृ०—विगाडा हुआ, विकृत किया हुआ (मुख)

(स्त्री० मस्कोरियोडी)

मस्जिद—देखो 'मसजिद' (रू भे)

मस्तगी–सं० पु०—१ एक प्रकार का गोद ।

२ मस्ती ।

मस्त–वि० [स० मत्त, फा० मस्त] १ मतवाला, उन्मत्त ।

२ मदोन्मत्त, नशे मे चूर ।

उ०—ठाकर इत्ती ताळ नीठ चुप रह्या । वै दारू लेवण में मस्त हा । आधी वातां सुणी अर आधी सुणी ई कोनी ।—फुलवाडी

३ मौज या मस्ती से परिपूर्ण ।

४ किसी बात की परवाह न करने वाला, वेपरवाह, निश्चित ।

५ सदा प्रसन्न रहने वाला, खुश मिजाज ।

६ किसी प्रकार की अनुभूति से प्रसन्न ।

उ०—मकोडो ढोल गळा मे टेरनै वहीर हुवो खुसी मे मस्त व्हियोडो—फुलवाडी

७ जो अपने आप मे लीन हो, इधर उधर की न सोचने वाला ।

उ०—अर इग्टूवा मन मे बडबडावतो आपरा हाल में मस्त हो ।

—फुलवाडी

८ किसी कार्य या विषय मे लीन, संलग्न, रमा हुआ ।

उ०—गधो तो आपरा गाणां में पूरो मस्त हो के अणचींत्यो करक माथै लीडीड पडियो ।—फुलवाडी

९ किसी पर मोहित, अनुरक्त, रीझा हुआ ।
१० यौवन से परिपूर्ण ।
११ अभिमानी, घमंडी । १२ भयकर ।
१३ खिलाडी, रसिक । १४ पागल ।
रू० भे०—मसत, मसत, मस्तज, मस्थ ।
मह०—मसतान, मस्तान ।

मस्तक–स० पु० [स०] १ सिर, माथा, मुण्ड । (ह ना मा) (उ र)
उ०—१ जननी तूझ हस्त मस्तक जिह । त्रिदक्षालय सुख वसत निलय तिह ।—मे म
उ०—२ भारथ वरग हुवो घरा भिडतां, सत्र साभतां बाहतां सार । हर महरांण तणो मस्तक हद, जडिया गति मेळे जटधार ।
—जोगीराम हाडा री गीत
उ०—३ धरणीधर सकर देव थियावउ, जोति प्रकास अलोप जग । मस्तक मुगट प्रकास माडियउ, अनत कोट ब्रहमड लग ।
—महादेव पारवती री वेलि
२ भाग्य, तकदीर ।
उ०—सो वैरी कटवण मिळै, मस्तक लिख्या सो होय । लेख लिख्या क्रू बाळका, मेट न सक्कै कोय ।—अज्ञात
३ शिखर, चोटी ।
रू० भे०—मसतक, मसतक्क, मसतग, मस्तकु, मस्तक्क, मस्तग, मस्तगि, मस्तगी, मस्तिकि ।

मस्तकु, मस्तक्क—देखो 'मस्तक' (रू भे)
उ०—१ कुडउ वोळइ धरमपूतु, हथीयार छडावइ । छेदिउ मस्तकु द्रम्टद्युमनि क्रमु सिउ न करावइ ।—प प च
उ०—२ सीसोद सीस स्रोणी निवेस, मस्तक्क जांण गगा महेस ।
—गु रू व

मस्तग, मस्तगि—देखो 'मस्तक' (रू भे)
उ०—१ यहु बिसवास आमग्रास निज अतरि, अवला चोवारे खरी । मस्तग, दे दे हाथ, पथ हेरू हरी ।—ह पु वा
उ०—२ सोहड सीधउ चढै छत्र मस्तगि धरै । निज नाव परतीति हरि निकटि नांही ।—ह पु वा

मस्तगी–स० पु०—१ एक प्रकार का बढ़िया गूद ।
वि० वि०—इसका रग पीला होता है तथा यह भूमध्य सागर के आस-पास के प्रदेश मे पाई जाने वाली एक झाडी विशेष से निकाला जाता है ।
२ देखो 'मस्तक' (रू भे)

मस्तांन—१ देखो 'मस्त' (मह, रू भे)
२ देखो 'मस्तानो' (मह, रू भे)

मस्तांनि, मस्तानी—१ देखो 'मस्ती' ।
उ०—दास कबीर जम लोकि जावै नहीं । अलख रम पीवै मस्तांनि मातो ।—ह पु वा
२ देखो 'मस्तानो' (स्त्री०) ।

मस्तांनो–वि० [फा०मस्तान] (स्त्री० मस्तांनी) १ मस्तो की तरह का ।
२ उन्मत्त, मस्त ।
३ मोटा ताजा, तगडा ।
४ पागल ।
मह०—मसतान, मस्तान ।

मस्ताई—देखो 'मस्ती' (रू भे)
उ०—१ हीरा, मोती जडिया सोना रा वधणा सू हीडो वधियोडो हो । माथै अपछरावा री रूपाळी राजकवरी बैठी मस्ताई सू हीडती ही ।—फुलवाडी
उ०—२ इक्कीस माणिगर हाथिया रो टोळो मस्ताई सू इन्द्रखा रै गाव री सोय मे चालण लागो उण वगत वो फाटोडा लिगतरा सू लिप्तर लिप्तर करतो आपरै गांव सामी चालतो हो ।
—फुलवाडी
उ०—३ पछै मस्ताई सू आपरै मारग वहीर व्हियो । बडबडाता करतो बोल्यो—पांणी री तिस तो पांणी सू ई बुझै । इत्तो तेल पीयो तो ई हाल कठ सूखणा बद नी व्हिया ।—फुलवाडी

मस्ताणो, मस्ताबो–क्रि० अ०—१ मस्त होना, उन्मत्त होना ।
२ पागल होना । ३ मुग्ध होना ।
४ मोटा ताजा होना ।
क्रि० स०—५ मस्ती मे झूमना ।
६ मस्त करना, मस्ती मे लाना ।
७ मोहित करना, मुग्ध करना ।

मस्तायोडो–भू० का० कृ०—१ मस्त हुवा हुआ, उन्मत्त हुवा हुआ. २ पागल हुवा हुआ ३ मुग्ध हुवा हुआ ४ मोटा ताजा हुवा हुआ ५ मस्ती मे झूमा हुआ, ६ मस्त किया हुआ, मस्ती मे लाया हुआ ७ मोहित किया हुआ, मुग्ध किया हुआ,
(स्त्री० मस्तायोडी)

मस्तिकि—देखो 'मस्तक' (रू भे)
उ०—हरि एरावण मातलि दामिट्ठी हरिणेगमेखी सरवागि सन्नाह पहिरि, दृढ कसा वधि, धनुखि गुण चडावी रह्या ग्रीवा भरण विभूस्यु, मस्तिकि नेत्रादि वस्त्रम (य) अथवा सुवरणमय टोप धरतां, ।—व. स

मस्ती–स० स्त्री० [फा०] १ मस्त होने की क्रिया, भाव या अवस्था ।
२ उन्मत्तावस्था, मतवालापन, उन्माद ।
३ खुशी, आनन्द ।
उ०—१ सगळी साथणियां सूरज री उगाळी आप आपरा घर सू निकळ जावती । माथा माथै सुरगी पारिया लिया वै मस्ती सू गीत गावती सगळै मारग चालती रैवती ।—फुलवाडी
उ०—२ कोयल कुहू कुहू री मस्ती मे मीठा गीत गावती के एक मोरियो उडतो उण आव रा रू ख माथै आयो ।—फुलवाडी

४ नशा। ५ संभोग की प्रबल इच्छा, काम वेग।

उ०—माल ऊहावै आवै मस्ती, तन पर लावै तयारयां। जद वेरां सू हेत जणावै, सेजा रमै सिकारयां।—ऊ का.

६ शैतानी, बदमाशी।

७ लापरवाही, निश्चितता।

क्रि० प्र०—आणी, उतरणी, ऊठणी, चढ़णी, झड़णी, झरणी, झाडणी, निकाळणी।

मुहा०—१ मस्ती आणी = उन्माद चढ़ना, नशा चढ़ना, आवेग या जोश आना, कामेच्छा होना, अहंकार होना। २ मस्ती उतरणी= उन्माद, नशा, जोश, आवेग आदि का शान्त होना, उदासी छाना, पीटा जाना। ३ मस्ती झडणी=कामेच्छा शान्त होना, मस्ती उतरणा। ४ मस्ती झाडणी, मस्ती निकाळणी=संभोग क्रिया करना, किसी की पिटाई करके बदमाशी या शैतानी मिटाना, गर्व हनन करना, उन्माद या नशा उतारना।

८ पशुओं के होने वाला मद स्राव।

९ वृक्षों या पत्थरों का रस स्राव।

क्रि० प्र०—चूणी, झरणी।

१० ईश्वरोपासना में लीन होने की अवस्था।

११ मुग्धावस्था।

रू० भे०—मसती, मस्ताई।

मस्तु-स० पु० [स० मस्+तुन्] १ दही का पानी।

२ फटे हुए दूध का पानी।

मस्तूल-स० पु० [पुर्त०] बड़ी नाव के बीच का वह बड़ा खम्भा, जिसके पाल बाधा जाता है।

मस्थ—देखो 'मस्त' (रू भे)

उ०—प्रबल प्रभाथी स्रीप्रताप मस्थ हाथी जेम, नाथ राव ही के नाथी साथ भयो मुच्चों को।—ऊ का

मस्ल—देखो 'मसल' (रू भे)

उ०—उमराव मुतळक उण मस्ल में बात न काढ़ी हल चल उण मे जाहिर नही हुई।—नी प्र

मस्स—१ देखो 'मस' (रू भे.)

२ देखो 'मस्ती' (रू भे)

मस्सां—देखो 'मसा' (रू भे)

उ०—कमावै जकै मे सू ऊपर री ऊपर ही जावै। हजार री साल पावै, लारै पावसो मस्सां उबारै।—दसदोख

मस्सी—१ देखो 'मसि' (रू भे)

उ०—महोमत्त गभ मरोड, जूह वहति गैतूळ जोड। मस्सी वरन मद् मसत, पांखा उड्डिया परवत्त।—गु रू व

२ देखो 'मिस्सी' (रू. भे)

मस्सो-स० पु०—१ अर्श रोग।

उ०—रातिंदा वाळा नै, निकाळा वाळा नै, आधा सीसी रो माथो दूखण वाळा नै मस्सा री तकलीफ वाळा नै अर मरगी चालती व्है जका नै इत्याद मांदगियां वास्ते वो नींबू रै रस री दवाई बतावतो।—फुलवाड़ी

२ देखो 'मस' (अल्पा., रू भे.) (बरदा)

उ०—मूंडा माथै पाच सातेक इदकाई रे मस्सा में धोळा रुंगतां री लुगियां ऊगोड़ी।—फुलवाड़ी

रू० भे०—मस, मसो, मस्स, मह्।

मह—देखो 'महा' (रू भे)

महक—देखो 'महक' (रू. भे)

महकणो, महकबो—देखो 'महकणो, महकबो' (रू भे)

महकणहार, हारो (हारी), महकणियो—वि०।

महकिओड़ो, महकियोड़ो, महकयोड़ो—भू० का० कृ०।

महकीजणो, महकीजबो—भाव वा०।

महगाई—देखो 'मूगाई' (रू भे)

महगो—देखो 'मूंगो' (रू भे)

उ०—कोई कहै सोंघो, कोई कहै महगो, (मैं तो) लियो है हीरां सू तोल।—मीरां

महत-स० पु० [स०] १ किसी संप्रदाय या मठ का अधिष्ठाता, आचार्य, प्रधान साधु।

उ०—१ एकी जय जोह लहै कुण अत पारो नह आभै सेस पुराण। मुनेसर ध्यान धरत महत, अगे जुग रैणो ही नाम अनत।—ह र

उ०—२ महत जी थैं ऊंवा सुणता हा। जोर सू बोलनै पूछ्यो कुण चालतो ग्ह्यो?—फुलवाड़ी

२ शिष्य परंपरा के अनुसार किसी गुरु गादी का अधिकारी, गद्दीधारी।

३ ब्राह्मण, पडित।

वि०—प्रधान, मुखिया।

रू० भे०—मथ, महति, महतो।

महतमोह-स० पु०—महामोह।

महतर—देखो 'महत्तर' (रू भे)

महताई-स० स्त्री०—१ महत होने की दशा, अवस्था या भाव।

२ महत का पद या गद्दी।

३ महत कार्य या प्रतिष्ठा।

रू० भे०—महति, महती।

महति, महती - १ देखो 'महत' (रू भे)

उ०—सगि सति सखीजण गुरुजण स्यांमा, मनसि विचारि ए कही महति। कुंमणथळी हूता कुंदणपुरि, किसन पधार्या लोक कहंति।
—वेलि

२ देखो 'महताई' (रू भे)

महदी—देखो 'मैंदी' (रू भे)

उ०—१ रसराज नथनी महदी चमकै। लोक लगै मन लाजै राज।
—रसीलैराज रो गीत

उ०—२ महदी ऊगी ऊगी पान दो पांन । पेम रस महदी राचणी जी राज ।—लो गी

महमाई, महमाय—देखो 'महामाया' (रू भे)

उ०—१ विरच अनूप बणै थल बका, सैजळ कूप सवाई । 'आलण' बस दियै उजियागर, माल्हणदे महमाई ।—जसकरण लाळस

उ०—२ महमाय तू ही तुही जोग माया । प्रकत्ती सकत्ती तुही नांम पाया ।—मे म

मह–स० पु० [स० मह] १ उत्सव, जुलूम

उ०—१ मह मह सुगध चिक्कस मळण, जीतण तप अहमह जुई । जह मह बिबाह लाडा जुडण, हाडां घर गह मह हुई ।—व भा

२ उत्साह, खुशी ।

उ०—बिरचै एम बधावणौ, आणि कवर अति आघ । मीणा कहियो अतुल मह, बचिया तो वळ बाध ।—व भा

३ नैवेद्य, भेंट । ४ यज्ञ, हवन ।

५ बलिदान, उत्सर्ग । ६ भैंसा ।

स० स्त्री०—७ आभा, दीप्ति, चमक ।

वि०—१ मधुर, मीठा ।

उ०—मह-मह सुगध चिक्कस मळण, जीतण तप अहमह जुई । जह मह बिवाह लाडां जुडण, हाडां घर गहमह हुई ।—व. भा

सर्व०—२ मेरा ।

उ०—दुजोहण वयणु सुणि एक वार मह भणिउ किज्जई । निय अवधि आवीया पडवाह बहु मानु दिज्जई ।—प प च

[सं० अहम] मैं ।

उ०—मह मह सुगध चिक्कम मळण, जीतण तप अह मह जुई । जह मह बिबाह लाडा जुडण, हाडा घर गह मह हुई ।—व भा

२ देखो 'मही' (रू भे)

उ०—१ गिर पुर देस गमाड, भमिया पग पग भाखरा । मह अजसै मेवाड सह अजसै सीसोदिया ।—महाराजा मानसिंह

उ०—२ हर रथ माठो होय, सकत रथ होय सयांणा । सित रथ देवै पूठ, घटै उतराध पयांणा । हुस हाल परहरै, वचन पलटै दुरवासा । मह मोरा झड मडै, इद नहिं पूरै आसा । प्रहलाद भगति छोडै परी, कळजुग सतजुग नै कळै । सेवगां तणा मेहा सदू साद न करणी सभळै ।—चौथबीठू

उ०—३ पुणै कमण तर पत्र ब्रहम माया कुण भक्खै । मह उत्तर पथ माय, आप लहरां कुण अक्खै ।—र ज प्र

उ०—४ गह भरियो गजराज, मह पर वहै आपह मतै । कूकरिया वेकाज, रुगड भुसै किम राजिया ।—किरपारांम

देखो 'महा' (रू भे)

उ०—१ बिस गजर दो जणां सीस भेलो विहद, सरब पाखांण पूनै गरक सार । 'मान'हर कियो भुरजाळ सुज बणै मह, अलख रा पीजरा तणा आकार ।—उमेदजी सादू

उ०—२ मह कहर आवह माचियो, खूदाळ खिस रबि खांचियो । छिव अरस विबुध विमाण छायो, इद्र आद असेस ।—र. रू.

देखो 'मे' (रू भे)

उ०—१ मह जाय पेखै छाह निरमळ, अघण हिम पाणी । सित समय परभा त्रिया तिणनू वदे मुख बाणी ।—र रू.

उ०—२ मत्त सतावन सब गाथा मह, कळा तीस पूरवा अरध कह ।
—र ज प्र.

महकध–स० स्त्री०—खुशबू, सुगध, सौरभ ।

वि०—बडे बडे कधो वाला ।

महक–स० स्त्री० [स० महक्क] १ सुगध, सुवास, खुशबू, सौरभ ।

उ०—१ सोन जुह रियावेल चवेल चवेली के फुलवाद मोगरै की महक गुलाब फूलूंकी सुगध जवाद ।—सू प्र

उ०—२ महक सहु वारणै धूप घाणा सही ।—वृ स्त

२ गध, वास ।

रू० भे०—महक, महिक ।

महकणो, महकबो–क्रि० अ०—१ सुगधित होना, सुवासित होन, खुशबू फैलना, महकना ।

उ०—१ लोयण चचळ स्रवण लग, लांबा वेणी डड । महकै सहज सुबास बप किर लायो स्रीखड ।—बां दा

उ०—२ विस्व सुबासित होय जिके मुख वास हू । मळियाचळ महकत वसत बिलास हू ।—बां दा

उ०—३ थळ भूरा वन झखरा, नही सु चपइ जाइ । गुणै सुगधी मारवी महकी सहु वणराइ ।—ढो मा

२ गध देना, वास देना, बू देना ।

३ बोलना, कुहकना ।

उ०—वरमायत आवण की धारी छै, आपकै जावण की त्यारी छै । जमी नीला सिणगार धारसी, जसा सिणगार उतारसी । मोरीया महकसी डेडरा डहकसी, झिलीगण झणकसी भमरा भणकसी ।—मयाराम दरजी री बात

महकणहार, हारो (हारी), महकणियो—वि० ।

महकिप्रोडो, महकियोडो, महक्योडो—भू० का० कृ० ।

महकीजणो, महकीजबो—भाव वा० ।

महकणो, महकबो, महक्कणो, महक्कबो—रू० भे० ।

महकदार–वि०—१ जिसमे महक हो, सुगध हो ।

२ जिसमे गध हो ।

महकम–वि० [अ० महकूम] अधीन ।

उ०—करता अकरता कीयो होय सु मेटै मव ही बातां सामरथ । क्रसणजी जु हाथ साळा नैं महकम करि लगाया था सोई हाथ माथा ऊपरि दीया । थाप्यो निवाजि चाल्यो ।—वेलि टी

महकमो–स० पु०[अ० महकम] १ अदालत, न्यायालय ।

२ विभाग, कार्यालय (सरकारी)।

मह्काणो, महकावो–क्रि० स० [महकणो' क्रि० का प्रे० रू०] १ सुगन्धित करना, सुवासित करना, खुशबू फैलाना, महकाना।

उ०—प्रतिरूपी मदहर सुत पिण अप सगति पाइ। मलयाचल सर्ग तरु बीजा पिण महकाय।—घ व ग्र

२ दुर्गंध लाना, बू फैलाना।

महकाणहार, हारो (हारी), महकाणियो—वि०।

महकायोडो—भू० का० कृ०।

मह्काईजणो, महकाईजवो—कर्म वा०।

महकायोडो–भू० का० कृ०—१ सुगंधित या सुवासित किया हुआ, खुशबू फैलाया हुआ, महकाया हुआ २ दुर्गंध फैलाया हुआ, बू फैलाया हुआ
(स्त्री० महकायोडी)

महकाली—देखो 'महाकाली' (रू भे) (डिं को)

महकासुर—देखो 'महिखासुर' (रू भे)

उ०—लकापति रावण कहां, कुंभ करण कहा वस। हिरणाकुस हिरणाखि कहा, महकासुर कहा कस।—ह पु वां

मह्कियोडो–भू० का० कृ०—१ सुगंधित या सुवासित हुवा हुआ, महका हुआ २ गध, वास या बू दिया हुआ ३ बोला हुआ, कूका हुआ
(स्त्री० महकियोडी)

महकी—देखो 'महिमी' (रू भे)

उ०—त्यौंकी के सुत जागि, सिंघ बन मांही मारया। महकी करै मलार, सर्स फिरि स्वान सगारया। विमा सवारै सेज, बसै चीटी निरदावै। महकी करै सिंगार, खेत खर खांग न पावै।—ह पु वां

महकीलो–वि०—खुशबूदार, सुगंध देने वाला।

मह्कणो, मह्ककवो—देखो 'महकणो महकवो' (रू भे)

उ०—१ रवि भैरव जीवणी घणों आणद चह्की। सग वेळ मुग्गा, वास अगरेन महक्की।—रा रू

उ०—२ सिधु परड गड जोग्रणे, खिंविया वीजुळियांह। मुरहत लोद्र महक्कियां, भीनी ठोवडियाह।—ढो मा

महक्कणहार, हारो (हारी), महक्कणियो—वि०।

मह्क्किग्रोडो, मह्क्कियोडो, महक्कयोडो—भू० का० कृ०।

मह्क्कीजणो, महक्कीजवो—कर्म वा०।

मह्क्कियोडो—देखो 'महकियोडो' (रू भे)
(स्त्री० महक्कियोडी)

मह्क्रत—देखो 'महाक्रत, महाक्रित' (रू. भे)

मह्ख—देखो 'महिस' (रू भे)

उ०—चक चालण सटक भालण ग्रभ गाळण गाजणी। विरदाव पालण महख मारण दुख दाळिद्र भांजणी।—मा वचनिका

मह्खी—देखो 'महिसी' (रू भे)

उ०—पोढै तेण वखत अप पावै। महखी दूध सवांमण मावै।
—सू प्र

महखो—देखो 'महिस' (रू. भे)

महगल—देखो 'मदकळ' (रू भे)

उ०—तुरीय सहइस पचास, दोय सइ महगल मता। राजकुली छत्तीस, सोहइ भड सेव करता।—घ व ग्र

महगाई—देखो मूंगाई' (रू भे)

महग्घ–वि० [स० महार्घ्य] मूल्यवान, कीमती।

उ०—ग्रट्ठा दिकपालन सम ग्रसक, निरखियें ग्रट्ठ मिसलन निसक। ईसागयावरती ग्रचळ ग्रग्घ, मारवाराव सुरधर महग्घ।—क का

महडीसिया–स० पु०—राठौड वश की एक उप-शाखा। (बा दा ख्यात)

महचक्र–स० पु० [स० महस्+चक्र] १ प्रकाश का गोला, सूर्य।
(डिं. को)

२ चद्रमा।

महज–वि० [अ०] १ केवल, सिर्फ, मात्र।

२ निर्मल, खालिश, शुद्ध।

३ निरा, अत्यल्प।

महजरनांमो—देखो 'मेजरनांमो' (रू भे)

महजित, महजिद महजीत, महजीद—देखो 'मसजिद' (रू भे)

उ०—१ सक खग खांन संमाय, मैंके हाल छामै मुलक। महजिदा चै माय, वीरम सूर विघोडिया।—गो रू

उ०—२ महजीदां ढाहजै ग्रावड जोडजै ग्ररोडा थड देख थर हरै। ढड सम है किरोडा।—ग्ररजुनजी बारहठ

उ०—३ सुर झालर घटा सरसाया, महजीता सुरवाग मिटाया। सिव हरि सकत सेव सरसाई, मीर पीर त्या पूज मिटाई।—रा रू

उ०—४ पीछै हिंदवां रै तीरथां मैं देव-मूरतां खडण करायी। तथा कासी मैं विस्वेसरजी री लिंग ग्यान वापी मैं दाखल हुई। ग्ररु मिंदर रै लारै लारै महजीद कराई।—द दा

महज्जुई–स० पु० [स० महाद्युति] अत्यन्त तीव्र प्रकाश, आभा कान्ती।
(जैन)

महडो—१ देखो 'माडो' (रू भे)

२ देखो 'मुडो' (रू भे)

महण–स० पु० [स० महार्णव] १ महासागर, समुद्र।
(ग्र मा, ना डिं को, ह नां मा)

उ०—१ मोज महण सूरत मयण, लोयण लाज अपार। 'जेहल' राजकुंवार जिम, कुण ग्रन राजकुंवार।—वां दा

उ०—२ महांमत महण जसगाथ मुनि वालमिक, कोट सत चिरत रघुनाथ कीधो।—र रू

उ०—३ वहरहि हिलै वहीर, पाइक ओठक पडतळा। मिळवा फिर चाली महण, नवसै नदि ले नीर।—वचनिका

उ०—४ धोदा नाडा बार, पीधा विन ही खूटे परो। सो जळ पीयै ससार, महण घटै नह मोतीया।—रायसिंह सांदू

२ ईश्वर।

उ०—सोय दूजो ससार, माटी सूं घडियो महण। तो घडियो किरतार, काया हूता करमसी।—द दा

४ डिंगळ का वेलिया साणोर नामक छद विशेष, जिसके प्रथम द्वाले मे २ लघु व ३१ गुरु कुल ६४ मात्राए होती हैं तथा शेष द्वालो २ लघु व ३० गुरु कुल ६२ मात्राए होती हैं।

रू० भे०—महण, महणि, महणी।

महणमत्य, महणमथ–स० पु०—१ समुद्र का मंथन करने वाला, विष्णु।

उ०—रात दिवस हरि ह्रदै रहाविस, आठू पहर अनत उल्लाविस। मांडे पूजा तूझ महणमथ, सकळ सरीर करिस इम सुक्रियथ।

—ह र

वि०—महाशक्तिशाली।

उ०—'मघकर' हर 'हिम्मत' महण मत्य मेडतै रूप हिम्मत समत्थ। एताल आद दूहा अथाह। नव कोटा आगळ नरा नांह।—रा रू,

रू० भे०—महणामथ।

महणमह–स० पु०—ईश्वर, परमेश्वर। (ह ना मा)

महणामथ—देखो 'महणमथ' (रू भे)

महणारभ—देखो 'महारणव' (रू भे)

महणारथ–स० पु०—समुद्र।

उ०—पवन चक्र वळ पाइ लाय पावक ऊलट्टै। कना सीम ढव चूक फूक महणारथ फट्टै।—रा रू

महणि महणी—१ देखो महण' (रू भे)

उ०—आवर्ता लखै नर नार इम भार कतार भगेलिया। मिलि जाय महणि पावस समै, जांण नदीरस जेळिया।—रा रू.

२ देखो 'मैणी' (अल्पा, रू भे)

उ०—मानै लागै महणी कुल लाजै पत जाय। कोही वाइ किउ कीजीयै भूपाला सै वात।—पनावीरमदे री वात

महणो—देखो मैणो' (रू भे)

उ०—१ 'गागावत' जिम मांम गमाडै, करन समोभ्रम जाय किम। भाजण तणा ज महणा अणभग, जैत न सहियो माल जिम।

—द दा

उ०—२ काल्ह पग पसार थे—म्हे मरीस तो अगत जायसै, मोनू अगत होयसी, थानू वडो महणो होमी।—डाढाळा सूर री बात

महण्णव—देखो 'महारणव' (रू भे)

महत–वि० [स० महत्] १ महान, श्रेष्ठ।

उ०—लाख वरीस महत तू 'लाखा', तायक समवड कीजै ताय। इळ अणवूठै कसो अवहर, अगड अदठनै उहवै आय।

—महाराणा लाखा री गीत

२ विशाल, भीमकाय, वडा, मोटा।

उ०—पीठ वडवडात कूरम छटा प्रलै री, मही खडखडात हैजम मचोळा। मुनि हडहडात घडडात तोपा महत, गयण गडडात पड़ झाट गोळा।—कविराजा वाकीदास

३ लम्बा-चौडा, विस्तृत, फैला हुआ।

उ०—है नभ जतै अहमकर हमकर, नर पुर अतै रहण री नीम। महत सुजस वसतार न मावै, भरतखड मझ राणा भीम।

—महाराजा मानसिंघ

४ विपुल, पर्याप्त, बहुत, अत्यधिक।

उ०—मिल अछर हरखत चित महत, पख निरख वीरत वरत पत। खग गिलत गूदा तत अखत, वण असत परवत मेर वत। सह त्रिपत विहग विसेस।—र रू

५ मजबूत, दृढ़। ६ ताकतवर, बलवान।

७ उग्र, प्रचड, तेज। ८ गाढा, घना।

९ आवश्यक, महत्वपूर्ण। १० प्रसिद्ध, प्रख्यात।

११ उच्च, ऊचा, कुलीन।

स० पु० [स० महत्व] १ मान, सम्मान, आदर।

उ०—दोय हजार गाव दीधा, घोडा हजार दोय हाथिया रो हलको पालखी ११०० रथ २०० लाख एक रुपिया रोजीना कर दिया। घणो महत वधारियो नै सीख दीधी।— जगदेव पवार री वात

२ बडप्पन, बडाई।

३ अनन्तता, अखण्डता, असख्यता।

४ राज्य, सलतनत। ५ प्रकृति का मूल तत्व।

६ ब्रह्म। ७ शिव। ८ जल, पानी।

९ पवित्र ज्ञान। १० ऊट।

११ देखो 'महत्व' (रू भे)

महतउ—देखो 'महत्त्व' (रू भे)

२ देखो 'महता' (रू भे) (उ र)

उ०—वेस्या जांणी पडिउ कोइ ओलखीउ 'ए महतउ होइ'। घरि आणी जाणी सकेत मणिजल पाई कीउ सचेत।—हीराणंद सूरि

महतकळायण, महक्रिलांण–स० स्त्री०—१ बादल, मेघ।

(नां मा, ह नां मा)

२ घन-घोर घटा।

महतगुणा–स० पु० [स० महा-गुण] हस। (अ मा)

महतर—देखो 'महत्तर' (रू भे)

महतत्व—देखो 'महत्तत्व' (रू भे)

उ०—जाहरां परमातमा माया दिसि देख्या तिया थी महतत्व नीपना। महतत्व थकी अहकार नीपनो।—द वि

महता–स० पु० [स० महत्तर] १ राजा या किसी रईस के राज्य या जागीर का प्रवन्धक।

२ मुख्य व्यक्ति, प्रधान व्यक्ति।

महदी–स० पु० [अ०] १ ठीक रास्ते पर चलने वाला।
२ शीया मुसलमानों का धर्म गुरु।
३ शीया सम्प्रदाय के १२ वें इमाम।
उ०—महदी मारिया गया, लाखा रुपिया री दौलत लुटाणी।
—वां दा ख्यात
वि०—जिसको दीक्षित किया हो, दीक्षा प्राप्त।
२ देखो 'मेंदी' (रू भे)
३ देखो 'मेंदी' (रू भे)
उ०—जो जांणु पीव जावसी, उळग विचारै नाह। हाथै महदी न दीया, न काजळ सारगह —राव रिणमल राठौड खावडियै री वात

महदीप—देखो 'महाद्वीप' (रू भे)
उ०—महदीप छद तेरहे दस मत पय जाणो। इण जोड सुजस रांम अपत उर मझ्झ आणो।—र ज प्र

महदेव—देखो 'महादेव' (रू भे)

महनत—देखो 'मैंनत' (रू भे)
उ०—कूडै ऊतारै मुकवि, गाढी महनत गीत। खाल उतारै खात सू, इसडी कुकव अनीत।—बा दा

महनौ—देखो 'महीनौ (रू भे)
उ०—१ रांणी कही महनै एक इठै विराजो। म्हे बाई नू बुलावा दिन घणा हुवा मिळस्या।—कूवरसी साखला री वारता
उ०—२ नारणोत हठीसिंह केसरीसिहोत सू इतरै घाय भाई पण सामिल हुवो महनौ एक लडियो पछै नीसरियो।
—मारवाड रा अमरावा री वारता

महन्नत—देखो मैंनत' (रू भे)

महपत, महपति, महपती, महपत्ति महपत्ती—देखो 'महीपति' (रू भे)
उ०—१ विस्वामित्र तणा सुण वैणां आनद अग उमगै। महपत वदै पांव मुनी रा, सार दिया सुत सगै।—र रू
उ०—२ मल्हपै देखि गयद हू महपति। गज पर गिरद कठीर तणी गति।—सू प्र.
उ०—३ सजि दमकतां सुरताण, महपती दिस फुरमाण। दाखियो जिम लिख दोघ, कूरमा ऊपर कीध।—सू प्र
उ०—४ अवै इतरो काइ देखीजै, कवरजी राज जमा खातर राखीजै, म्हा ऊभा महपत्ति कीमो सोच दाखीजै।—पना
उ०—५ महाराज अभमाल' पूछ घावड महपत्ती। एक रग अण भग बोल करि अगुट विरत्ती।—सू प्र
उ०—६ महपत्ती कमधज्ज, मसदां मोडणा, त्रिजडा मुहि तुरकाण तणी जड तोडणा।—महाराजा करणसिंह री गीत

महपसमी–स० पु० [स० महत्+फा० पश्मी] बढिया ऊन का बना एक वस्त्र विशेष।
उ०—मुहगा घणा मोल रा, पडै पगमडा अपारां। महपसमी मुखमलां, तास अतलस जरतारा।—सू प्र

महपाळ—देखो 'महीपाल' (रू भे)
उ०—रांणी सुवयण मरीत रे, अप इसी उपजी नीतरे। तन भरथ सू कर प्रीत रे, महपाळ फरमी मीतरे।—र रू

महपिता—देखो 'पितामह' (रू भे)
उ०—घूहड दुहू जोधाण सुमेर सुरेस सो। सुपह महपिता साथ रिमा उर रेसमो।—किसोरदान बारहठ

महपुर–स० पु० [स० महिपुर] भूलोक, पृथ्वी लोक।
उ०—अहपुर महपुर इद्रपुर, स्यों ब्रह्मा लो जोय। जन हरिदास दुभर दुनी, सूभर भरघा न कोय।—ह पु वा

महफिल–स० स्त्री० [अ०] १ मजलिस, सभा, गोष्ठी।

महबदी–स० स्त्री०—प्रेयसी, प्रेमिका, महबूबा।

महबर–स० पु०—एक प्राचीन देश।
उ० —अवध्या वणारसी चदेरी मल्लिवाल महबर महोब हरिआणउ भयाणउ रत्नपुर कामरू ।—व. स

महबळी—देखो 'महाबळी' (रू भे)
उ०—गज दत तोड अरि थाट गाह। महबळी लोह पड खेत माह।
—शि रू

महबुब, महबूब–स० पु० [स० महबूब] (स्त्री महबूबा) १ अत्यधिक प्यारा, प्रिय, आशिक, अजीज, प्रेमी।
उ०—१ कुवर कनै ऊ कागद आयो, जाणै चात्रग स्वाति बूद पायो। महबुब का दमकत छाती लगाय लीना।—पनां
उ०—२ सब लालो सिर लाल है, सब खूबो सिर खूब। सब पाका सिर पाक है, दादू का महबूब।—दादूवांणी
उ०—३ नजर निजारे दी यार, मन बस गईयां वे। रसीलाराज महबूबां दी नजरा, फूट कलेजै पार।—रसीलैराज रा गीत
२ वह जिससे प्रेम किया जाय, इश्क या मुहब्बत करने योग्य।
उ०—हसि कै साहि कहै इसो, क्यु वे खोजा खूब। हम महलें सब सखणी, नहि पदमणि महबूब।—प च चौ
३ रसिक, शौकीन, इश्क मिजाज, खुश मिजाज।
उ०—मेछां हदा मुलक में, जो मावडियो जाय। महबूबां री मिमल में, किल सिरदार कहाय।—वां दा
रू० भे०—महिबूब।

महब्बळ—देखो 'महाबळ' (रू. भे)

महब्भूय—देखो 'महाभूत' (रू भे)

महमडळ—देखो 'महिमडळ' (रू भे)

महमत—देखो 'मैंमत' (रू भे)
उ०—१ मोळै बरसा कामणी, मगरपचीसा कत। ए दिन फेर न आवसी, जोबन रा महमत।—अज्ञात
उ०—२ सांवण आयो साहिबा, मोर हुआ महमत। इण रित पीयर मोकळै, कठण हिया रा कत।—अज्ञात

महमतो—१ देखो 'मैंमतो' (रू भे) (ना डि को)

२ विभाग, कार्यालय (सरकारी)।

महकाणौ, महकाबौ-क्रि० स० [महकणौ' क्रि० का प्रे० रू०] १ सुगन्धित करना, सुवासित करना, सुगन्ध फैलाना, महकाना।

उ०—प्रतिबुधौ मकरंद सुत विण अप सगति पाइ। मलयाचल संगै तरु बीजा विण महकाय।—ध व ग्र

२ दुर्गंध लाना, बू फैलाना।

महकाणहार, हारौ (हारी), महकाणियौ—वि०।

महकायोड़ौ—भू० का० कृ०।

महकाईजणौ, महकाईजबौ—कर्म वा०।

महकायोड़ौ-भू० का० कृ०—१ सुगंधित या सुवासित किया हुआ, खुशबू फैलाया हुआ, महकाया हुआ २ दुर्गंध फैलाया हुआ, बू फैलाया हुआ

(स्त्री० महकायोड़ी)

महकाली—देखो 'महाकाली' (रू भे) (हि को)

महकासुर—देखो 'महिखासुर' (रू भे)

उ०—लकापति रावण कहा, कुंभ करण कहा वस। हिरणाकुस हिरणाखि कहा, महकासुर कहा कस।—ह. पु वा

महकियोड़ौ-भू० का० कृ०—१ सुगंधित या सुवासित हुवा हुआ, महका हुआ २ गंध, बास या बू दिया हुआ ३ बोला हुआ, कूका हुआ

(स्त्री० महकियोड़ी)

महकी—देखो 'महिखी' (रू भे)

उ०—रयोंणी में सुत जागि, गिय बन मांही मारघा। महकी करै मलार, गयं फिरि म्यान सगारघा। पिमा सवारै सेज, वसै चौटी [illegible]रदावै। महकी करै सिणगार, गेल सार माण न पावै।—ह पु वा

महकीलौ-वि०—खुशबूदार, सुगंध देने वाला।

महकणौ, महकबौ—देखो 'महकणौ महकबौ' (रू भे)

उ०—१ रवि [illegible] आवणी घणं [illegible] घराती। सग वेळ सूरमा, वास सगरेल महकी।—रा रू

उ०—२ [illegible] गढ आमले, [illegible] बीजुळियाह। गुरहड [illegible] महकियां, [illegible] टाबळियाह।—ढो मा

महकणहार हारौ (हारी), महकणियौ—वि०।

महकियोड़ौ, महकियाड़ौ, महकयोड़ौ—भू० का० कृ०।

महकीजणौ, महकीजबौ—भाव वा०।

महकियोड़ौ—देखो 'महकियोड़ौ' (रू भे)

(स्त्री० महकियोड़ी)

[illegible]—देखो '[illegible], [illegible]' (रू. भे)

[illegible]—देखो '[illegible]' (रू भे)

उ०—[illegible] माणणू प्रम गाळणू गाजणी। [illegible] महण माणणू [illegible] भावणी।—मा वचनिका

[illegible]—देखो '[illegible]' (रू भे)

उ०—पोटै तेण वखत अप पावै। महखी दूव सवामण मावै।
—सू प्र

महखौ—देखो 'महिख' (रू भे.)

महगल—देखो 'मदकळ' (रू भे)

उ०—तुरीय सहइस पचास, दोय सइ महगल मता। राजकुली छत्तीस, सोहड भड सेव करता।—ध व ग्र

महगाई—देखो मूगाई' (रू भे)

महग्घ-वि० [स० महार्घ्य] मूल्यवान, कीमती।

उ०—भट्टां दिकपालन सम भसक, निरखियें भट्ट मिसलन निसक। ईसाग्यावरती अचळ अघ, मारवाराव गुरधर महग्घ।—ऊ का.

महड़ोसिया-स० पु०—राठौड़ वश की एक उप-शाखा। (बा दा ख्यात)

महचक्र-स० पु० [स० महस्+चक्र] १ प्रकाश का गोला, सूर्य।
(हि. को)

२ चद्रमा।

महज-वि० [अ०] १ केवल, सिर्फ, मात्र।

२ निर्मल, खालिश, शुद्ध।

३ निरा, अत्यल्प।

महजरनांमौ—देखो 'मेजरनांमौ' (रू भे)

महजित, महजिद महजीत, महजीद—देखो 'मसजिद' (रू भे)

उ०—१ सक खग खांन सभाय, मैंके हाल हामैं मुलक। महजिदां चै माय, वीरम सूर विघोडिया।—गो रू

उ०—२ महजीदां ढाहजै आवड जोडजै अरोडा थइ देस थर हरै। टड सस है फिरोडा।—अरजुनजी बारहठ

उ०—३ सुर झालर घटा सरसाया, महजीतां सुरयाग मिटाया। सिव हरि सवत सेव सरसाई, मीर पीर त्या पूज मिटाई।—रा रू

उ०—४ पौछै हिंदवा रै तीरथां म देव-मूरता राडण करायी। तथा काशी मे विस्वेसरजी री लिंग ग्यान वापी मे दाखल हुई। अरु मिदर रै ठारै ठारै महजीद कराई।—द दा

महज्जुई-स० पु० [स० महाद्युति] अत्यन्त तीव्र प्रकाश, आभा कान्ती।
(जैन)

महटो—१ देखो 'माठो' (रू भे)

२ देखो 'मुठी' (रू. भे)

महण-स० पु० [स० महार्णव] १ महासागर, समुद्र।
(अ मा, ना डि को, ह ना मा)

उ०—१ मोज महण मूरत मयण, लोयण लाज अपार। 'जेहल' राजकुवार जिम, कुण अन राजकुवार।—बां दा

उ०—२ महांमत महण जगनाथ मुनि वालमिक, कोट सत चिरत रघुनाथ कीधौ।—र रू

उ०—३ वहरहि हिलै वहीर, पाइक ओठक पदतळां। मिळवा फिर चाली महण, तरसै नदि ते नीर।—वचनिका

उ०—४ वोदा नाडा बार, पीधा विन ही खूटै परो। सो जळ पीयै ससार, महण घटै नह मोतीया।—रायसिंह सांदू

२ ईश्वर।

उ०—सोय दूजौ ससार, माटी सूं घडियौ महण। तौ घडियौ किरतार, काया हूता करमसी।—द दा

४ डिंगळ का वेलिया साणोर नामक छद विशेष, जिसके प्रथम द्वाले मे २ लघु व ३१ गुरु कुल ६४ मात्राए होती हैं तथा शेष द्वालों २ लघु व ३० गुरु कुल ६२ मात्राए होती हैं।

रू० भे०—महण, महणि, महणी।

महणमत्य, महणमथ-स० पु०—१ समुद्र का मथन करने वाला, विष्णु।

उ०—रात दिवस हरि ह्रदै रहाविस, आठू पहर अनत उल्लाविस। मांडै पूजा तूझ महणमथ, सकळ सरीर करिस इम सुक्रियथ।

—ह र

वि०—महाशक्तिशाली।

उ०—'मघकर' हर 'हिम्मत' महण मत्य मेडतै रूप हिम्मत समत्थ। एताल ग्राद दूहा अथाह। नव कोटा आगळ नरा नांह।—रा रू,

रू० भे०—महणमथ।

महणमह-स० पु०—ईश्वर, परमेश्वर। (ह ना मा)

महणामथ—देखो 'महणमथ' (रू भे)

महणारभ—देखो 'महारणव' (रू भे)

महणारथ-स० पु०—समुद्र।

उ०—पवन चक्र वळ पाइ लाय पावक ऊलट्टै। कना सीम ढव चूक फूक महणारथ फट्टै।—रा रू

महणि महणी—१ देखो 'महण' (रू भे)

उ०—आवतां लखै नर नार इम भार कतार भंगेलिया। मिलि जाय महणि पावस समै, जाण नदीरस जेळिया।—रा रू

२ देखो 'मैणी' (अल्पा, रू भे.)

उ०—मानै लागै महणी कुल लाजै पत जाय। कोहौ बाइ किउ कीजीयै, भूपाला सै वात।—पनावीरमदे री वात

महणौ—देखो मैणौ' (रू भे)

उ०—१ 'गागावत' जिम मांम गमाडै, करन-समोभ्रम जाय किम। भाजण तणा ज महणा अणभग, जैत न सहियौ माल जिम।

—द दा

उ०—२ काल्ह पग पसार ये—म्है मरीस तौ अगत जायसै, मौनू अगत होयसी, थानू वडौ महणौ होसी।—डाढाळा सूर री बात

महण्णव—देखो 'महारणव' (रू भे)

महत-वि० [स० महत्] १ महान, श्रेष्ठ।

उ०—लाख वरीस महत तू 'लाखा', तायक समवड कीजै ताय। इळ भणवूठै कसौ अवहर, अगड अदठनै उहवै आय।

—महाराणा लाखा रो गीत

२ विशाल, भीमकाय, वडा, मोटा।

उ०—पीठ वडवडात कूरम छटा प्रलै री,, महौ खडक्खडात हैजम मचोळां। मुनि हडहडात घडडात तोपा महत, गयण गडडात पड झाट गोळा।—कविराजा वाकीदास

३ लम्बा-चौडा, विस्तृत, फैला हुआ।

उ०—है नभ जतै अहमकर हमकर, नर पुर अतै रहण री नीम। महत सुजस वसतार न मावै, भरतखड मझ राणा भीम।

—महाराजा मानसिंघ

४ विपुल, पर्याप्त, वहुत, अत्यधिक।

उ०—मिल अछर हरखत चित महत, पख निरख वीरत वरत पत। खग गिलत गूंदा तत अखत, वण असत परवत मेर वत। सह अिपत विहग विसेस।—र रू

५ मजवूत, दृढ। ६ ताकतवर, वलवान।

७ उग्र, प्रचड, तेज। ८ गाढा, घना।

९ आवश्यक, महत्वपूर्ण। १० प्रसिद्ध, प्रख्यात।

११ उच्च, ऊचा, कुलीन।

स० पु० [स० महत्व] १ मान, सम्मान, आदर।

उ०—दोय हजार गाव दीधा, घोडा हजार दोय हाथिया रौ हलको पालखी ११०० रथ २०० लाख एक रुपिया रोजीना कर दिया। घणौ महत वधारियौ नैं सीख दीधी।—जगदेव पवार री वात

२ वडप्पन, वडाई।

३ अनन्तता, अखण्डता, असख्यता।

४ राज्य, सलतनत। ५ प्रकृति का मूल तत्व।

६ ब्रह्म। ७ शिव। ८ जल, पानी।

९ पवित्र ज्ञान। १० ऊट।

११ देखो 'महत्व' (रू भे)

महतउ—देखो 'महत्त्व' (रू भे)

२ देखो 'महता' (रू भे) (उ र)

उ०—वेस्या जाणी पडिउ कोइ ओलखीउ 'ए महतउ होइ'। घरि आणी जाणी सकेत मणिजल पाई कीउ सचेत।—हीराणद सूरि

महतकळायण, महकिलांण-स० स्त्री०—१ वादल, मेघ।

(ना मा, ह नां मा)

२ घन-घोर घटा।

महतगुण-स० पु० [स० महा-गुण] हस। (अ मा)

महतर—देखो 'महत्तर' (रू भे)

महतत्व—देखो 'महत्तत्व' (रू भे)

उ०—जाहरां परमात्मा माया दिसि देख्या तिया थी महतत्व नीपना। महतत्व थकी अहकार नीपनौ।—द वि

महता-स० पु० [स० महत्तर] १ राजा या किसी रईस के राज्य या जागीर का प्रवन्धक।

२ मुख्य व्यक्ति, प्रधान व्यक्ति।

रू० भे०—महतउ, मू'ता, मू'था, मे'ता, मोहता ।
३ देखो 'महता' (रू भे)

महताप, महताब—स० पु० [फा०] १ चन्द्रमा ।
उ०—मुगद्दा सोह रह्या महताब वे । रसराज ग्राफताफ जरी जेवर चमकै ।—रसीलैराज रो गीत
स० स्त्री०—२ चन्द्रमा की चादनी, चद्रिका, ज्योत्स्ना ।
३ ग्रग्नि ।
उ०—ग्रजा महाराज रा ताप माहे ग्रसुर, पतग महताप रा तेम प्रजळै ।—ग्रजीतसिंह राठोड़ रो गीत
४ रोशनी, चिराग, मोमबत्ती ।
उ०—१ महतावां रो चांदणो हुवै, सू महितावां पचास सव सावठी ही लागी छै । जाणै जेठ रो दो पहुरो खुलियो छै । इण भात रै चादणै म जीमण री होंस माणजै छै ।—रा सा स
उ०—२ साव दान के जलूम ग्रस्टपदीका भाव । ग्रस्मू की ग्राव जे महताबू का ताव ।—सू प्र
५ एक प्रकार की ग्रातिश-बाजी जिसकी रोशनी बहुत तेज होती है ।
६ जहाज पर, रात मे, सकेत के लिये लगाई जाने वाली एक प्रकार की रोशनी ।
रू० भे०—महिताब ।

महताबी—वि० [फा०] १ महताब का, महताब सम्बन्धी ।
२ महताब के समान चमकने वाला ।
स० पु०—१ सोने चांदी के तारो से बना हुग्रा एक वस्त्र विशेष, जरबफ्त ।
उ०—तन पवसाक जरी महताबी, फबि चीरा किलगी सिर फाबी ।
—सू प्र.
२ एक प्रकार की ग्रातिशबाजी जिसे छोड़ने से चादनी सी छिटक जाती है । यह मोमबत्ती के ग्राकार की होती है ।

महतारी—स० स्त्री० [स० माता] माता, जननी, मा ।
उ०—निज पितु छोड़ै नीच तुरत छोटै महतारी । निज ध्रम छोटै निसब छाड़ै निय नारी ।—ऊ का

महतिजसुर—सं० पु० [स० महतीजसुर] स्वामी, कार्तिकेय । (नां मा)

महती—स० स्त्री० [स०] १ किसी मन्त्री या ग्रमात्य या महामात्य की स्त्री ।
उ०—सहीट गयतउ ते ग्रवदात महती हरखी निसुणी वात । सीस घड़ि धीनवीउ नरिंद निसुणी राय हुउ ग्राणद ।
—हीराणद सूरि
२ किसी चौधरी, पटेल, प्रधानामात्य या मुखिया की स्त्री ।
उ०—'ग्रभमाल' कहो 'मलार' ग्रमनयो, विजरा रीट बजाई । महता हुग्र पुकारै महती, धीव विछाड़ा पाई ।—दयसिंघ ग्रगारोत
३ नारद की वीणा का नाम ।
उ०—छाि पवनि हुनर दगमगिय, भगिय भरग नमाहिन नाव । लचि ग्रालुक तालुक भर लगिय, चडी चित्तह जगिय चाव । नच्चहि कलहबिसारद नारद महती तम्बिन कोन मिळाइ । लखहि प्रेत डाकिनी वेताल रु जोगिनी वीर जानु गन जाइ ।—व. भा.
वि० स्त्री०—बड़ी, विशाल, दीर्घाकार ।
उ०—फटकार हलाहल तें फिरगो, घन ग्रानद ग्रम्रत घां घिरगो । मुगला पर ढार सिला महती, गुरु कारज ग्रारज बस गती ।
—ऊ का

महतीद्वादसी—स० स्त्री० यौ० [स०] भाद्रपद शुक्ला द्वादशी जो श्रवण नक्षत्र मे पड़ती है ।

महत्तत्त्व—स० पु० [स०] १ प्रकृति का विकार, मूल तत्व ।
२ पच्चीस तत्वों मे से तीसरा तत्व ।
रू० भे०—महतत्व, महात्तत महातत्व ।

महत्तम—वि० [स०] १ सबसे बड़ा ।
२ सबसे ऊचा, सर्वोच्च श्रेष्ठ ।
३ सबसे ग्रधिक ।

महत्तर—स० पु० [स०] १ सर्वाधिक प्रतिष्ठित व्यक्ति ।
२ मुख्य, प्रधान या सबसे बूढा ग्रादमी ।
३ गांव का मुखिया या बड़ा बूढा ।
४ राजा या किसी रईस के राज्य या घर का प्रबधकर्ता ।
५ भगी, हरिजन ।
रू० भे०—महतर, महत्तर, मिहतर, मे'तर ।

महत्तरिया—देखो 'मावलिया' ।

महत्ता—स० स्त्री०—१ बड़ाई, विशेषता, महत्व ।
उ०—केवळ ही मरण महिया वसुधा र बड़ाई दो ही व्यरथ जावसी । ग्रर धीर लीधा मग्र री महत्ता रै साथ सीमां म सारोही फैल खटावसी ।—व भा.
२ सम्मान, ग्रादर ।
रू० भे०—महता, महया ।

महत्पुरुस—स० पु० [स० महत्पुरुष] १ पुरुषोत्तम ।
२ महापुरुष, बड़ा ग्रादमी ।

महत्व—स० पु०—१ महान होने की ग्रवस्था या भाव ।
२ विशेषता, खासियत ।
३ विशालता, गुरुता ।
रू० भे०—महत, महतउ, महुत, महुत्त ।

महद—वि०—१ उत्साहदायक, उत्साहवर्धक ।
उ०—ग्रास्चरय रघुनाथ भूप महद त्व नाम मुच्चारणम् । जन्मं सचित पार घोर कळुसं, नास तमेक-छिनम् ।—र. ज प्र
२ महान, बड़ा । ३ विशाल ।

महदालय—सं० पु०—ग्राकाश, ग्रासमान, नभ ।
उ०—ग्रोढण महदालय ग्रोढण धण ग्रोढै, प्रमुदा ग्रालयविण ग्रमपालय पोढै । भूर भूर भुरजांमी उरजां मुक झड़कै, हीसा नेतर री हेतर म तड़कै ।—ऊ का

महदी-स० पु० [अ०] १ ठीक रास्ते पर चलने वाला ।
२ शीया मुसलमानों का धर्म गुरु ।
३ शीया सम्प्रदाय के १२ वें इमाम ।
उ०—महदी मारिया गया, लाखा रुपिया री दोलत लुटाणी ।
—बा दा ख्यात
वि०—जिसको दीक्षित किया हो, दीक्षा प्राप्त ।
२ देखो 'मेंदी' (रू भे)
३ देखो 'मैंदी' (रू भे)
उ०—जो जांणु पीव जावसी, उळग विचारै नाह । हाथै महदी न दीया, न काजळ साराह —राव रिणमल राठौड खावडियै री वात

महदीप—देखो 'महाद्वीप' (रू भे)
उ०—महदीप छत्र तेरहे दस मत पय जाणौ । इण जोड सुजस रांम अपत उर मझ्झ आणौ ।—र ज प्र

महदेव—देखो 'महादेव' (रू भे)

महनत—देखो 'मे'नत' (रू भे)
उ०—कूडै ऊतारै सुकवि, गाढी महनत गीत । खाल उतारै खात सू, इसड़ी कुकव अनीत ।—बा दा

महनौ—देखो 'महीनो' (रू भे)
उ०—१ राणी कही महनै एक इठै विराजौ । म्हे वाई नूं बुलावा दिन घणां हुवा मिळस्या ।—कुंवरसी सांखला री वारता
उ०—२ नारणोत हठीसिंह केसरीसिंहोत सू इतरै धाय भाई पण सामिल हुवो महनो एक लडियो पछै नीसरियो ।
—मारवाड रा अमरावा री वारता

महन्नत—देखो मे'नत' (रू भे)

महपत, महपति, महपत्ती, महपत्ति, महपत्ती—देखो 'महीपति' (रू भे)
उ०—१ विस्वामित्र तणां सुण वेणा आनद अग उमगे । महपत वदै पाव मुनी रा, सार दिया सुत सगे ।—र रू
उ०—२ मल्हर्प देखि गयद हू महपति । गज पर गिरद कठीर तणी गति ।—सू प्र.
उ०—३ सजि दसकता सुरताण, महपती दिस फुरमाण । दाखियो जिम लिख दोघ, कूरमा ऊपर कीघ ।—सू प्र
उ०—४ अवै इतरो काद देखीजै, कवरजी राज जमा खात्तर राखीजै, म्हा ऊभा महपत्ति कीसो मोच दाखीजै ।—पना
उ०—५ महाराज अभमाल' पूछ घावड महपत्ती । एक रग अण मग बोल करि अगुट विरत्ती ।—सू प्र
उ०—६ महपत्ती कमधज्ज, मसदा' मोडणा, त्रिजडा मुहि तुरकाण तणी जड तोडणा ।—महाराजा करणसिंह रौ गीत

महपसमी-स० पु० [स० महत्+फा० पश्मी] बढिया उन का बना एक वस्त्र विशेष ।
उ०—मुहगा घणा मोल रा, पडै पगमडा अपारा । महपसमी मुखमला, तास अतलस जरतारा ।—सू प्र

महपाळ—देखो 'महीपाल' (रू भे)
उ०—राणीं सुवयण सरीत रे, अप इमी उपजी नीतरे । तन भरय सू कर प्रीत रे, महपाळ करसी मीतरै ।—र रू

महपिता—देखो 'पितामह' (रू भे.)
उ०—घूहड दुहू जोघाण सुमेर सुरेस सौ । सुपह महपिता साथ रिमा उर रेमसौ ।—किसोरदान बारहठ

महपुर-स० पु० [स० महिपुर] भूलोक, पृथ्वी लोक ।
उ०—अहपुर महपुर इद्रपुर, स्यौं ब्रह्मा लो जोय । जन हरिदास दुभर दुनी, सूभर भरथा न कोय ।—ह पु वा

महफिल-स० स्त्री० [अ०] १ मजलिस, सभा, गोष्ठी ।

महबदी-स० स्त्री०—प्रेयसी, प्रेमिका, महबूबा ।

महबर-स० पु०—एक प्राचीन देश ।
उ० – अवघ्या वणारसी चदेरी मल्लिवाल महबर महोब हरियाणउ भयाणउ रत्नपुर कामरू • ।—व स

महबळी—देखो 'महाबळी' (रू भे)
उ०—गज दत तोड अरि थाट गाह । महबळी लोह पड खेत माह ।
—शि रू

महबुब, महबूब-स० पु० [स० महबूब] (स्त्री महबूबा) १ अत्यधिक प्यारा, प्रिय, आशिक, अजीज, प्रेमी ।
उ०—१ कुवर कनै ऊ कागद आयो, जाणै चात्रग स्वाति बूद पायो । महबुब का दमकत छाती लगाय लीना ।—पना
उ०—२ सब लालो सिर लाल है, सब खूबो सिर खूब । सब पाका सिर पाक है, दादू का महबूब ।—दादूबांणी
उ०—३ नजर निजारे दी यार, मन बस गईयां वे । रसीलाराज महबूबा दी नजरा, फूट कलेजै पार ।—रसीलैराज रा गीत
२ वह जिससे प्रेम किया जाय, इश्क या मुहब्बत करने योग्य ।
उ०—हसि कै साहि कहै इसो, क्यू ये खोजा खूब । हम महलें सब सखणी, नहिं पदमणि महबूब ।—प च चौ
३ रसिक, शौकीन, इश्क मिजाज, खुश मिजाज ।
उ०—मेछा हदा मुलक मे, जो मावडियो जाय । महबूबां री मिमल मे, किल सिरदार कहाय ।—बां दा
रू० भे०—महिबूब ।

महब्बळ—देखो 'महाबळ' (रू. भे)

महब्भूय—देखो 'महाभूत' (रू. भे)

महमडळ—देखो 'महिमडळ' (रू भे)

महमत—देखो 'मैमत' (रू भे)
उ०—१ मोळै बरसा कामणी, मगरपचीमा कत । ए दिन फेर न आवसी, जोवन रा महमत ।—अज्ञात
उ०—२ सांवण आयो साहिबा, मोर हुआ महमत । इण रित पीयर मोकळै, कठण हिया रा कत ।—अज्ञात

महमतो—१ देखो 'मैमतो' (रू भे) (ना डि को)

२ देखो 'मैंमत' (अल्पा., रू भे)

महमद—१ देखो 'मैंमद' (रू भे)

उ०—साभी समय घरा कीयो सीरणगार। सीरह महमद गळि मोतीहार।—वी दे

२ देखो 'मैंमत' (रू. भे)

३ देखो 'महमूद' (रू भे)

४ देखो 'मुहम्मद' (रू. भे)

महम—देखो 'मुहिम' (रू. भे)

उ०—बेगडो महमूद गुजरात पातिसाही करै। सू पताई रावळ ऊपर महम कीवी। पावैगढ नू वरस वारह तांई घेरियो।

—पताई रावळ री वात

महमद—देखो 'मुहम्मद' (रू भे)

२ देखो 'मैंमद' (रू. भे)

उ०—बीरा, म्हारै माथा नै महमद लाज्यो। म्हारी रखडी वैठ घडाज्यो।—लो. गी.

३ देखो 'महमूद' (रू. भे)

महमदी—देखो 'मुहम्मदी' (रू भे)

महमह-क्रि० वि०—खुशबू के साथ।

महमहइ—देखो 'माहोमाहि' (रू भे)

महमहण-स० पु०—१ श्रीकृष्ण का एक नामान्तर। (अ मा)

उ०—मेवा तजिया महमहण, दुरजोधन रा देख। केळा छोत विसेख, जाय विदुर घर जीम्हिया।—र. ज प्र

२ ईश्वर, परमेश्वर।

उ०—१ सत सगत समरण सदा इता थोक वछै अदे। मागियो सूझ द्यौ महमहण, दइव सीळ सतोक दे।—जगौ खिड़ियो

उ०—२ खग नीर धीर अतर खरा, मद कुजर वपु जिम मयण। मन वसै तेम तू मांहरै, मो मन बसियो महमहण।—ह र

३ विष्णु।

उ०—मच्छ कच्छ वाराह महमहण, नारसिंह वामन नारायण। दुज्ज-रांम रघु-राम दमोदर, क्रसन बुद्ध कलकी करुणाकर।—ह र

[स० महार्णव] ४ समुद्र, सागर।

उ०—अहमड लगै भुजडड वध्घि, महमहण मयण किरि महोदध्घि।

—गु रू व.

रू० भे०—महमाहण, महमेहण, महामहण।

महमहणो, महमहबो-क्रि० अ० [प्रा०महमहइ] १ महकना, खुशबू देना। (उ र)

उ०—१ महासर आगै आइयो, चदन रा तरु पाल। पकज परमळ महमहे महा सुगधी साल।—पचदडी री वारता

उ०—२ बउल वेउल चपक मालती। महमहइ फलि फूलि वनस्पति।—जयशेखर सूरि

२ गध देना।

महमहियोडो-भू० का० कृ०—१ महका हुआ, खुशबू दिया हुआ.

२ गध दिया हुआ

(स्त्री० महमहियोडी)

महमां—देखो 'महिमा' (रू भे)

उ०—चारण वरण चितार, कारण लख महमां करी। धारण कीजै धार, परम उदार प्रतापसी।—दुरसो आढ़ो

महमाण, महमान—देखो 'मैं'मान' (रू. भे.)

उ०—१ दुनिया सब कोय पाच दिन आया महमाणां।

—केसोदास गाडण

उ०—२ सगतै केम सत्ता करो रे, काय पचारो पाण। थोडा ही होवै घणा रे, लीज्यें झेलि महमान रे।—प च धौ

महमानी—देखो 'मैं'मानी' (रू भे)

उ०—रतन मजरी राजा विक्रमादित्य नू परणा ई गयी घणी महमानी हुई।—पचदडी री वारता

महमा—देखो 'महिमा' (रू भे)

उ०—१ तद करणसिंघजी वगेरै साराई राजावा इण री महमा करी।—द दा

उ०—२ कारण कवण वयण लघु काया। महमा प्रबळ ईस्वरी माया।—सू प्र

महमाई, महमाय, महमाया—देखो 'महामाया' (रू भे)

(ना. मा, ह नां मा)

उ०—१ सुभ निसुभ चड मुडासुर, दुमह सुरा दुखदाई। दानव महिख रकत बीजादिक, मार लिया महमाई।—मे म

उ०—२ काकळ समै कुवेलिया, म दे सग,महमाय। निजरां आगै निमस मै, हारमोर व्है जाय।—वा दा

उ०—३ किनिया पच वरस घरि काया। मिळै आण सनमुख महमाया—सू प्र

महमाहण—देखो 'महमहण' (रू भे)

उ०—मुख हूता भाख 'किसन' महमाहण, प्रभु नित भीड साच पखा रे।—र ज प्र

महमुद, महमुद—१ देखो 'महमूद' (रू भे)

२ देखो 'मुहम्मद' (रू भे)

महमुदी, महमूदी-स० पु० [अ० मुहम्दी] १ एक प्रकार का बढिया कपडा या वस्त्र।

उ०—१ मन जाणै पहरू महमुदी, फाटा घाबळ लियां फिरै। कासू हुवै मिनखां कीधो, करै जिको करतार करै।—ओपो आढ़ो

उ०—२ पछै अकवर पातसाह जामनू तुरक कियो। हमैं तुरक छै। वडा दातार छै। चारण आयेरी खबर दै तिणनू ५ महमूदी दीजै

—नैणसी

२ देखो 'मुहम्मदी।

रू० भे०—महमूदी, महिमुदी, महिमुदी, माहमुदी ।

महमूद–वि० [अ०] १ श्रेष्ठ, उत्तम।
२ शुभ, अच्छा ।
३ प्रशसनीय, प्रशसित । ४ इष्ट ।

स० पु०—१ एक प्रसिद्ध मुस्लिम बादशाह ।
रू० भे०—महमद, महमद, महमुद, महमुद, महिमुद, महिमूद ।

महमूदी—१ देखो 'मुहम्मदी' (रू भे)
२ देखो महमूंदी' (रू भे)

महमेहण—देखो 'महमहण' (रू भे.)

महमोहण—देखो 'मनमोहन' (रू भे)
उ०—मिणधर मेछ कमळ महमोहण, चाच वसोधर दे चलण । मूंणस वट तो तण माडेचा, मनखत माणी त्रिमें मण ।—नैणसी

महम्मद—देखो 'मुहम्मद' (रू भे)

महम्मह–वि०—सब से बडा, सर्वश्रेष्ठ, महान ।

महम्मा—देखो 'महिमा' (रू भे)
उ०—महम्मा जांणै ब्रह्म महेस । पगा रिख लाग करै नति पेस ।
—ह र

महया—देखो 'महत्ता' (रू भे) (जैन)

महरभ, महरम–स० पु०—१ परमात्मा ईश्वर ब्रह्म ।
उ०—१ नमो महरभ नमो न्यारा, नमो पद परमेस्वरम् ।
—स्री हरिरामदासजी महाराज
उ०—२ निरभै राज भया पतिनीका, अघर अमर वर कीन्हा । जन हरिराम मिले महरम सू, अरस परस लिव लीन्हा ।
—स्री हरिरामदासजी महाराज
२ ज्ञान, बोध ।
उ०—गळै जनेउ घालि करि, अपनो करै गुमांन । तन मन को महरम नही, करि करि मूवो गिलान ।
—स्री हरिरामदासजी महाराज
३ आत्मा ।
उ०—ऐसा रे कोई दरद दिवाना । आपा मन महरम कु जाना ।
—स्री हरिरांमदासजी महाराज
वि०—१ भेदी, जानकार ।
उ०—१ देही भीतरि देव हमारै, चेतन चोथे धामका । वाकै आसि पासि रहु लागा, महरम ताहि मुकाम का ।
—स्री हरिरामदासजी महाराज
२ ज्ञानी, विवेकी, तत्वज्ञ ।
उ०—१ पांच पचीस गलीम कूं सफिलै, मन कूं जीत महरम होई ।
—स्री हरिरामदासजी महाराज
उ०—२ विना वाती जोति झिलमिल, अखड दीया लोय । देह विन वदेह पुरखा, लहै महरम सोय ।—स्री हरिरांमदासजी महाराज
३ पवित्र, शुद्ध ।
उ०—वेद कतेब ले पाठ दोउं पढै, देहाथि छापा करि द्वारिकाजी । तन तीरथ फिर नाहि आया घरे, मन महरम बिनऊ न राजी ।
—स्री हरिरामदासजी महाराज
रू० भे०—महारम ।

महर–स० स्त्री० [फा० मेह्र] १ दया, कृपा, अनुग्रह । (अ मा)
उ०—१ मिळियो माहब महर सू, नर तन तुनै निपाप । पेख हुवो सो पकरै, अगमद हूत मिलाप ।—बां. दा
उ०—२ मास असाढ़ सुकळ पख माही, तिथि नोमी बरताई । स्वांत नखत्र समय सध्या री, महर करी महमाई ।—मे म.
उ०—३ दादू काढै काळ मुख, महर दया कर आइ । दादू ऐसा गुरु मिल्या, महिमा कही न जाइ ।—दादूवांणी
उ०—४ भभीखण सरण आय भूघर, महर कर मन कोट । धुर-घमळ ग्रवियो घनख धारण, कनक वाळो कोट ।—र ज प्र
उ०—५ दादू मुईमार मानुख घणै, ते प्रत्यक्ष जम काळ । महर दया नहि सिघ दिल, कूकर काग सियाळ ।—दादूवाणी
२ सहानुभूति, हमदर्दी ।
उ०—सु करन रै वैर दुहागण हुती, तिण सू गरीबनाथ महर करता ।—नैणसी
३ ममता, प्यार । ४ करुणा ।
रू० भे०—मिहर, मै'र, मैहर ।
५ देखो 'मिहिर' । (अ मा, ना डिं को)
उ०—महर यभै गयण मागा तुरी वागा ताण ।—र रू.
६ सूर्य सूरज । (अ मा, ना डिं को)
७ मुसलमानो मे वर की ओर से कन्या को दिया जाने वाला धन ।
(स्त्री० महियारी) ८ गूजर, ग्वाला, अहीर ।
उ०—लारोवरि अस विस्रांम कि लिखिया, निहखरता नरवरै नर । मांखण चोरी न हुवै माहव, महियारी न हुवै महर ।—वेलि
रू० भे०—महरि, महरु, महिर, महिरि ।
९ देखो 'मुहर' (रू भे)
उ०—पाच महर स्रीफळ त्रप अर्प्पै । जडसी घणो आव महि जप्पै ।
सू प्र

महरघ–वि० [स० महार्घ] १ बहुमूल्य ।
उ०—अह अद्वितीय पद पूजनीय । उत्साह अरघ मिळनो महरघ ।
—ऊ का
२ महंगा, दुर्लभ्य ।

महरघता–स० स्त्री० [स० महार्घ्य] महंगा होने की अवस्था या भाव ।

महरवांन—१ देखो 'मैं'रवान' (रू भे)

उ०—१ वदगी करैंगे महरवान, जिदगी वकस किवले-जिहांन ।
—ऊ का

उ०—२ पछै वीरमदेजी नूं ऊ पातसाह री हजूर ले गयो । पातसाह सूं मिळायो । पछै वीरमदेजी सौं पातसाहजी महरवांन हुवा ।
—नैणसी

महरवांनगी, महरवानी—देखो 'मैं'रवांनी' (रू भे)

उ०—१ आज तो किही वडै सगै महरवांनगी करी सो अळगी भुयरी नारेळ म्हांनू अठै साम्हो आयो ।—कुवरसी सांखला री वारता

उ०—२ खाफरो राजा-रो मुजरो हमेस करै । राजा री वडी महरवांनगी है । हेक दिन राजा फुरमायो—खाफरा ! चोरी करणी सीखाय ।—राजा भोज अर खापरा चोर री वात

उ०—३ विणजारा री वाजिव सीख री औ नतीजो व्हियो के राजकवर उण रै मूढै मूढ ई कह्यो- आपरी धणी महरवानी के म्हनै मरण सूं वचण री सीख दीवी ।—फुलवाडी

महरम-स० पु० [अ०] १ रहस्य या भेद, मर्म ।

उ०—प्यारा महरम दिल की जाणै, और न जाणै कोई वात नैं । मीरां दरमन कारण झूरै, ज्यूं वालक झूरै मात नैं ।—मीरां

२ जो जनान खाने मे जा सकता हो ।

३ दोस्त, अतरग मित्र । ४ भीतरी रहस्य से परिचित ।

५ कन्या की दृष्टि से वह सम्बन्धी या व्यक्ति जिससे उस कन्या का विवाह जायज न हो । (मुसलमान)

६ जानकारी ।

उ०—हरिया निज निरकार की, महरम विन गम नांहि । एक अनडी होत धूनि, सुनि सिखर कै मांहि ।
—स्त्री हरिरांमदासजी महाराज

रू० भे०—माहरम ।

महरलोक-स० पु० [स० महर्लोक] सात ऊर्ध्व लोको मे से चौथा लोक, महर्लोक । (पौराणिक)

रू० भे०—महालोक ।

महरलो-वि० (स्त्री० महरली) भीतर का, अन्दर का ।

उ०—महरला मोरचा वधिया देख आपस मे कहणै लागिया जायगा टूटणी रामजी रे सारे थी ।
—भाटी सुंदरदास वीकूंपुरी री वारता

महरवांन—देखो मैं'रवान' (रू भे)

उ०—१ दादू वदीवांन है तू वदि छोड दीवांन । अव जनि राखो वदि में, मीरां महरवान ।—दादूवांणी

उ०—२ तद इण अरज कीवी, 'जो महरवान, मनै तो इण जीव सु काम छै । वीजा जीव मे किया कारणा छै ! म्हारै तो आसरो इण जीव रो छै ।—कुवरसी सांखळा री वारत.

महरयांनगी, महरयांनी—देखो मैं'रवानी' (रू भे)

उ०—हमैं सिवो पातसाहजी री चाकरी करै । पातसाहजी सिवै ऊपर घणी महरवानगी करै ।—नैणसी

महरसि, महरसी-स० पु० [स० महर्षि] महर्षि, महान ऋषि ।

रू० भे०—महरिख, महरिसि, महारिस, महारिसी, महारीसी, महेसी ।

महराण, महरांणो—देखो 'महारणव' (रू. भे)
(अ मा., ना. डि. को , ह नां. मा)

उ०—१ मथै तैं वार किता महराण ' सुरां ले दीध अम्रत सुजाण ।
—ह र.

उ०—२ वल करै मार घड मेगळा, जळ पीवै महरांण हू । पेहळाद चाड पथर विहर, तिको सिंघ रायसिंघ तू ।—द दा

उ०—३ ओपमा देण कारण उठै, करि विचार चारण कहै । महराणा नीर अदर मनहु, वीर रीछ वदर वहै ।—मे म

२ देखो 'महाराणा' (रू भे)

३ महाराजा, राजा, नृप ।

उ०—मोहरै महराण रै दळा रा महावळ, भुजा वळ वन पती कोध भैरी ।—नगराज खीची रो गीत

महरांमण—देखो 'महारावण' (रू भे.)

महरा-स० स्त्री०—पानी भरने व डोली उठाने का कार्य करने वाली एक जाति विशेष, कहार । (मा म)

रू० भे०—मैं'रा ।

महराई-स० स्त्री०—अहीर होने का भाव ।

उ०—चत्रमुख ईस प्रारथै चत्रभुज, कौतूहल गोकळ सुख काज । देव अर्मा छाडी देवाई, महराई पावा महाराज ।—स्त्रीक्रस्ण रो गीत

महराज, महराजा—देखो 'महाराजा' (रू भे)

महरावदार—देखो 'मेहरावदार' (रू भे)

उ०—वी मिदर मांही सुदर भीत सुवरणमई अर खभा रतनजटित, तोरण, दरीखानो, दरवाजा, महरावदार महल कोटडी ।
—सिघासण वत्तीसी

महराव—देखो 'मेहराव' (रू भे)

महरावण—देखो महारावण' (रू भे)

उ०—हत्यो महरावण तेणि हकारि । वध्यो महिखासुर वीर वकारि ।—मे म

महरि—देखो 'महर' (रू भे)

उ०—१ सावत्री सरसती गवरि गगा गोमती । मिळ सतियां घरि महरि करै इण पर कीरत्ती ।—रा रू

उ०—२ अस्ट भवन की प्रीतडी नव मे ताणा तांणि । जल विन मछली किउ रहइ, कछु महरि हमारी आंणि ।—स कु.

महरिख, महरिसि—देखो 'महरसि' (रू भे)

महरु—देखो 'महर' (रू भे)

महरूम-वि० [अ० महरूम] १ निराशा, नाउम्मेद, वंचित।
२ बदकिस्मत, अभागा।
३ असफल, नाकामयाब।

महळ—देखो 'महिळा' (रू भे)
उ०—१ सु तैंरो बेटो परणीजण नू कठैक गयो हुतो सु हलाणो लियाआवतो। सु बीच आवता महळ री ढील वेंचाक हुम्रो।
—नैणसी
उ०—२ जनानै सारै ही मे धीरज दीवी। कुंवर री मा अर महळ दोनू ही हठ झालियो—कुंवर रो मुहडो देखां।
—पलक दरियाव री बात
उ०—३ महळा पूनम चदमुख, आठम चद ललाट। केहर कड ज्यू खीण कड, भ्रू भ्रमरावळ घाट।—वां दा.
उ०—४ झम झम ढोला पथ कर, ढाण म चूकै ढाळ। आ मारू बीजी महळ, आखई झूठ एवाळ।—ढो मा.
उ०—५ मुदै एह खट महळ, सहल अ्रत गिणै सुपावन। पडदायत हित प्रिया अघट, सती मिळी अठावन।—रा रू

महल-स० पु० [अ० महल (ल्ल)] १ मकान, घर।
उ०—१ तूटै घर साघो लगै, सूनै महल चिराग। रूठा राजद रिळमिळै, आइयो मित ऐराक।—फुलवाडी
उ०—२ हठ नाळ पेठ बाजार हाठ। प्राजळै महल चदण कपाट।
—वि स
२ किसी राजा, रईस या धनी का भवन, हवेली, राजप्रासाद।
उ०—१ दाटक अनड दड नह दीधो, दोयण घड सिर दाव दियो। मेळ न कियो जाय बिच महला, कैलपुरै खग मेळ कियो।
—दुरसो आढो
उ०—२ परभात सखरी महूरत देख महलां मे देवसरमा नू बुलाइयो अर उण सू स्री हरिवस पुराण कथा आरम कराई।
—साई री पलक में खलक री बात
३ देवळ, देवालय।
उ०—महल अतीव उच्च नभ मापत पती प्रसन्न सपती प्रापत। व्यापत नांहि कदापि बिपत्ती, स्री करनो जय जयति सकत्ती।
—मे म
४ रनिवास, जनान-खाना।
उ०—महला सू थिरमो एक एक, रुपया पचास पचास दिया।
—कूंवरसी साखला री वारता
५ स्थान, जगह।
६ अवसर, मौका।
७ देखो 'महिला' (रू भे)
उ०—मुदै एह खट महल, सहल अ्रत गिणै सुपावन। पडदायत हित प्रिया अघट सती मिळी अठावन।—रा रू
रू० भे०—महल, महला, महल्ल, महिल, महिला, महिल्ल, महूळ, महेल, महोल, मांहल, मिहल, मुहल, मोहल, मौहल।

महळकाढ-स० पु० [स० काष्ठ+फा० महल] चिता।
उ०—आतुर चित आगळी, घाम विसराम सुधारे। वन चदन वावना, अगर घणसार अपारे महळकाढ चुणि विमळ, महल रूई घ्रत पूरित। ओप सदल ओछाड, अमल परिमळ आंकूरित। उण भवण वसण राजा 'अजन' आप सुखासण उत्तरी। लखि वरत सुरी अचरज लगी, नार पन्नगी किन्नरी।—रा रू
(मि० कठमदिर)

महलगोता-स० स्त्री०—सोलकी वश की एक शाखा व इस शाखा का राजपूत।

महळा—देखो 'महिळा' (रू भे.)

महला—देखो 'महल' (रू भे)

महलायत-स० पु० (व व) [फा० महल+रा० प्र० यत] राज्य प्रासाद, भवन।
उ०—१ कोट री सफील ऊची गज १९ ओसार गढ़ रो महलायत हेठै गज २० और गज १० कोट अर पडकोटै रै बीच छै।
—द दा
उ०—२ एहडी महलायता माहे काम गे भीनो, रजिओ भमर, जुआन वानैत घणा अतर सूघै माह वैराजमान हुओ छै।
—कल्याणसिंह वाढेल नगराजोत री बात
उ०—३ राजा इण भांत नगरी देखतो फिरै छै राजा रै महलायत आयो छै।—पचदडी री वारता
रू० भे०—महिलाइत, महिलायत।

महलार—देखो 'मलार' (रू भे)

महळि, महळी—१ देखो 'महल' (रू भे)
उ०—स्वामीजी कौंण अटकि अरि उरतैं डारैं मुक्त महळि विराजैं। गोरख भवण गवण करि जीवैं, सुख मे सीगी बाजैं।—ह पु वा
२ देखो 'महिला' (अल्पा, रू भे)
उ०—१ कहियो फरजद न मानै काई छक तरुणाई मच्छर छिळै। महळी नू तो मिळै कमाई, माइतां नू भूड मिळै।
—हिंगळाजदान कवियो
उ०—२ देहळी लग महळी पिण दोडी, फळसा लग मा वहन फिरी। मरहट लगो कुटुंव चो मेळो। किणियन सुख दुख बात करी।—प्रथ्वीराज राठौड
उ०—३ हाड सगो न होय, सगो नेह मोही सगो। जुग च्यार द्रग जोय, जोवत मा महळी जळै।—र हमीर

महलोटी—देखो 'मुलेठी' (रू भे)

महलो—देखो 'महल्लो' (रू भे)
उ०—राजाजी पातिसाही बकसी नू महलो दियण लागा।
—द वि

महल्ल—१ देखो 'महल' (रू भे)

उ०—१ महल गोख मोम मांन कुदनी कळस्स ए। पणत काच नीत ग्रन्न, ग्रारिगं ग्ररम्स ए।—गु रू व.

उ०—२ जादम जादा वज्जिया, रांमो नै ऊदल्ल। विच सुरपुरां समाग्यिा सद्ध्रा तणा महल्ल।—रा. रू

२ देखो 'महिला' (रू. भे.)

महल्लक–सं० पु०—राज्य कर्मचारी।

उ०—चामरधारिणी वार विलासनी महल्लक महल्लिका उपाध्याय गायन वइकार ग्रालवणिकार वीणकार ।—व स

महल्लक्लिका–सं० स्त्री०—राज्य कर्मचारिणी विशेष।

उ०—पविराज मन्य सभापति लाक्षणिक साहित्यक तार्किकच्छादगिग ग्रलकारिक ज्योतिषिक चांमर धारिणी वार विलासिनी महल्लक्लिका उपाध्याय गायन वइकार ~ ।—व स

महल्लिका–सं० पु०—राज्य कर्मचारी विशेष।

उ०—ग्रलकारिक योतिषिक चामर धारिणी वारविलासनी महल्लक महल्लिका उपाध्याय गायन वइकार ।—व स

महल्लो–सं० पु० [ग्र० महल्ल] किसी नगर, शहर या गाव का कोई भाग, मण्ड, मुहल्ला, वास। कई मकानो या घरो का एक सामूहिक रूप।

उ०—घर लोक चल्लै ममीतां महल्लै। भरोखो मभायो, उठी साह धायो।—रा रू.

रू० भे०—महलो, महोलो।

महवर–सं० स्त्री० [स० महोवर] ग्रग्नि। (नां मा)

महवीर—देखो 'महावीर' (रू भे)

उ०—इण पोहर रच जुग्घम ग्ररोड, महवीर दीध रण ग्रमर मोड।—वि सं

महवेच, महवेचा, महवंचा–सं० पु०—राठोडां की एक उप शाखा।

महवेचो–सं० पु०—राठोडो की 'महवेचा' उप शाखा का राजपूत।

महषो—देखो 'महखो' (रू भे)

महव्रत—देखो 'महाव्रत' (रू भे)

महसद–सं० पु०—ब्रह्मा। (ना मा)

महसल–सं० पु०—[illegible]।

उ०—ताहरां कुंवर स्री भोपतजी कहियो माभा में चीहतं राजाजी रै महसलां नूं कहियो नहीं।—द. वि

महसांण—देखो 'मसांण' (रू. भे)

उ०—नीर भवर महसांण मन यांगिनी ग्रारांणी। कहो नद देव दृग नाक, नाक ए विद्या साधी।—प च चौ

महसा, महसासुर—देखो 'महिसासुर' (रू भे)

उ०—जिण निसंक संघारिया, महसासुर मारै। चड मुंड माचरिया, [illegible] —गज उद्धार

महसो—देखो 'महिसो' (रू भे)

महसूल–सं० पु०—१ कर, लगान, चुंगी।

२ किराया, भाडा।

रू० भे०—मासूल।

महसूस–वि० [ग्र०] ग्रनुभव करने योग्य, जिसका ज्ञानेन्द्रियो द्वारा ग्राभास हो।

रू० भे०—मसूस, मैंसूस।

महसेन—एक राजा का नाम।

उ०—उग्रसेन प्रमुख सोल महस मुकुटबद्ध राजा, महसेन प्रमुख छपन्न सहस बलवत ।—व स.

महा—१ हम।

उ०—नद कुवरसी कह्यो, 'ग्रा तो क्रपा परमेस्वरजी महां ऊपर करी। इतरा थोक परमेस्वरजी थांनै वकसीया, तो फेर इतरी ग्रंब क्यु राखो ? क्यु तो थै मांगो।—कूवरसी साखला री वारता

२ देखो मांय' (रू. भे)

उ०—पुरख स्रवण प्यालो भरै, चुगली कांजी चाढ़। मन पय हिय प्याला महां वेगो दिए बिगाड।—वा दा

रू० भे०—महा।

महाण—१ देखो 'महारणव' (रू भे)

उ०—हारां हू फाटै हियो, जुध रूप जणांण। जळह उछाळै जोर सूं, मन डरै महाण।—गज-उद्धार

२ देखो 'महान' (रू भे)

महान–वि०—१ जो गुणो की दृष्टि से उच्च या श्रेष्ठ हो, सवश्रेष्ठ उत्तम।

उ०—लघुतें दीरघ पुन पुलित, या मात्रा इधकाय। ज्या छोटन बह किय पता, वडे महान वढाय।—जैतदांन बारहठ

२ बहुत बडा, विशाल।

३ ग्रत्यन्त, ग्रत्यधिक, बहुत।

उ०—निनाद वध ग्रघ के दुकध ग्रोटते नदें। महांन लठ सठ के मुकुठ घोटते मदें।—ऊ का

रू० भे०—महाण।

महानता–सं० स्त्री०—१ महान होने की दशा, ग्रवस्था या भाव।

२ बडप्पन।

३ गौरव।

महा–वि० [सं०] १ ग्रत्यन्त, ग्रति, बहुत, ग्रधिक।

उ०—१ महा दिय मान करी गुह मीत। तारे सह कीर कुटुंब सहीत।—ह र

उ०—२ कसै व्याळ हू नीच पाताळ कानै, महा उच्चता भाखरां तुच्छ मानै।—मे म.

२ सर्वोच्च, उच्चतम।

३ सर्वोत्तम, उत्तमोत्तम।

उ०—सदा तू रमै राम नो फोड़ माथै, महा मोड तू कोड तेतीस माथै।—मे. म

४ भयकर, घोर।

उ०—नग्री सोनमेनी पछै गांम नाही। महा कासटा घोर ऊजाड माही।—मे म

५ वड़ा, महान।

उ०—महा मही बसत पचमी, फागां सब गावै हो। फागुण फागा खेल हैं, वणराइ जरावै हो।—मीरां

६ योद्धा, वीर, बहादुर। (डिं ना मा)

रू० भे०—मह, मह, महि, मा, माह, माहा।

स० स्त्री० [स० मातृ] १ गाय। (अ मा)

२ देखो 'महा' (रू भे)

उ०—त्रिक्काल-दरस्सी जोइसी, कहै एम आगम कहा। असमान उपद्रह थाइसं, उठी आग पाणी महा।—गु रू व

महाअग-स० पु० [स०] ऊट। (डिं को.)

महाअहि-स० पु०—शेषनाग।

रू० भे०—माहअहि।

महाउखद—देखो 'महाओखद' (रू भे)

महाउत—देखो 'महावत' (रू भे)

महाउर—देखो 'महावर' (रू भे)

उ०—अरुनाई महाउर की दरसै। तरवे मनु पावक से परसै।—ला रा

महाऊखधी, महाओखद-स० स्त्री० [स०महोषध] १ सर्वरोगहरण दवा।

२ सोठ। (अ मा)

३ लहसुन। ४ वत्सनाभ।

[स० महा+ओषधि] १ वडी गुणकारी दवाई।

२ दूब, घास।

रू० भे०—महाउखद।

महाकबु-स० पु० [स० महाकम्बु] शिव, महादेव।

रू० भे०— माहकबु।

महाकच्छ-स० पु० [स० महाकच्छ] १ समुद्र।

२ वरुण। ३ पर्वत।

४ भारत के पश्चिम मे काठियावाड के पास की कच्छ की खाडी।

महाकल्प-स० पु० [स०] ब्रह्म की पूर्ण आयु के बराबर का समय।

रू० भे०—मा'कलप।

महाकवि-स० पु० [स०] शुक्राचार्य का नामान्तर।

वि०—कोई वडा कवि, लब्ध प्रतिष्ठित कवि।

उ०—हुवो महाकवि मगणो, दातारा सिर भाग। दाता मगण भाव व्है, 'जेहा' जस छळ भाग।—वां दा

महाकस्ट-स० पु०—भयकर विपत्ति, अत्यन्त दुख।

उ०—दिये मेय राधेय सरवस्व दांनी। महाकस्ट 'भीमांगवे' भूप मांनी।—व भा

महाकात-सं० पु० [स० महाकान्त] शिव, महादेव।

महाकांता-स० स्त्री० [स० महाकान्ता] पृथ्वी, भूमि।

महाकाय-स० पु० [स०] १ हाथी, गज।

२ विष्णु। ३ शिव।

४ शिव का एक गण, नन्दी।

रू० भे०—माहकाय।

महाकारत्तिकी-स० स्त्री० [स० महाकार्त्तिकी] रोहिणी नक्षत्र में आने वाली कार्त्तिक मास की पूर्णिमा।

रू० भे०—माहकारतिकी।

महाकाळ-स० पु० [स० महाकाल] १ शिव।

२ शिव का एक गण।

३ शिव की एक प्रलय कारिणी प्रतिमा या रूप। इस नाम की प्रतिमा उज्जैन मे है।

उ०—१ सखी अमीणो साहिबो, मदन मनोहर गात। महाकाळ मूरत वर्णे, करण गयदा घात।—बा दा.

उ०—२ इम ऊजेणी आविउ, प्रगट पूरणा-तीरि। महाकाल माहि गयु, मज्जन करी सरीरि।—मा का प्र

४ विष्णु। ५ भयकर दुर्भिक्ष, अकाल।

६ कठिन समय।

७ एक नदी जो नन्ददेवी पहाडियो से निकल कर अवध मे से होती हुई घाघरा नदी मे गिरती है।

रू० भे०—मा'काळ, माहकाळ।

महाकाळी-स० स्त्री० [स० महाकाली] १ महाकाल स्वरूप शिव की पत्नी, जिसके पाच मुख व आठ भुजाए थी।

२ दुर्गा, शक्ति, पार्वती।

उ०—देवी सरसती लख्खमी महाकाळी। देवी कम्न विस्णु ब्रह्म्मा कमाळी।—देवि

३ शक्ति की एक अनुचरी।

४ जैनियो के सोलह देवियो मे से एक जो अवसर्पिणी के पाचवें अर्हत की देवी है।

रू० भे०—महकाळी, माहकाळी।

महाकाव्य-स० पु० [स०] १ वह ग्रथ जिसमे आठ सर्ग से अधिक सर्ग हो।

वि० वि०—वह प्रबन्ध काव्य जिसमें किसी व्यक्ति के जीवन का आद्योपान्त विवरण होता है। इसका कथानक सर्गबद्ध होता है जिसमे आठ या उससे अधिक सर्ग होते हैं। इसका नायक देवता, राजा या धीरोदात्त क्षत्रिय होता है। इसमे शृगार, वीर या शान्त रसो मे से किसी एक की प्रधानता होनी आवश्यक है। वीच वीच मे प्रसगवश अन्य रसो का समावेश भी होना आवश्यक है तथा सूर्य, चन्द्रमा, नदी पर्वत आदि सभी प्राकृतिक तत्वो का यथास्थान वर्णन होना भी आवश्यक है। देश काल के अनुसार सामाजिक जीवन पर भी पूरा प्रकाश डाला जाना आवश्यक है। आजकल उस काव्य को, जो कवित्व की दृष्टि से उच्चकोटि का हो तथा

जिसमे विभिन्न विषयों का सुन्दर रूप से वर्णन हो, महाकाव्य मान लिया जाता है ।

२ बड़ा काव्य ।

रू० भे०—माहकाव्य ।

महाकुमार-स० पु० [सं०] किसी राजा का बड़ा पुत्र, युवराज ।

रू० भे०—माहकुमार ।

महाकुस्ट-स० पु० [सं० महाकुष्ट] कोढ़ रोग के अठारह भेदो मे से वह भेद जिसमे हाथ पैर की अगुलियां गल कर गिर जाती हैं, गलित कुष्ठ ।

रू० भे०—माहकुस्ट ।

महाकोट-स० पु०—एक तीर्थ का नाम ।

उ०—सिद्धकरण गोकरण पण, रुद्रकोट महाकोट । गुरजेस्वर जिहाँ गरज्जना, महिमा केरी मोट ।—मा कां प्र

महाक्षेत्र-स० पु० [सं०] कालिका पुराण के अनुसार एक तीर्थ ।

रू० भे०—महाखेत, महाखेतर ।

महाक्रत, महाक्रित-स० पु० [सं०महाकृत्य] दान, पुण्य आदि अच्छे कार्य ।

उ०—करि अग पान मिनान महाक्रित । वट तीरथ मधि दीध विप्रां वित ।—वचनिका

महाखरव-स० पु० [सं० महाखर्व] सौ खरब के बराबर की एक बड़ी सख्या ।

रू० भे०—माहखरव ।

महाखाड—देखो 'अहाखाड' ।

महाखेत—देखो 'महाक्षेत्र' (रू भे)

महागणपति-स० पु०—गणेश, गजानन ।

रू० भे०—माहगणपति ।

महागरिस्ठ-वि०—अत्यधिक ठोस, दृढ ।

२ अत्यधिक वजनी, भारी ।

३ जो पचने मे भारी हो, आसानी से हजम न होने वाला । (भोजन)

महागवरी—देखो 'महागौरी' (रू भे)

महागिड-स० पु०—वराहावतार का एक नाम ।

उ०—करेवा देव तणा कोइ कांम । रहच्चै मांहि महाजळ रांम । महागिड पैस महाजळ मज्झ, किया तैं जुद्ध प्रथम्मी कज्ज ।—ह र

२ बड़ा वराह, बड़ा सूअर ।

रू० भे०—महागीड ।

महागिरी-स० पु०—१ हिमालय, सुमेरु आदि बड़े पर्वत ।

२ कुबेर के आठ पुत्रों में से एक ।

रू० भे०—माहगिर ।

महागीड—देखो 'महागिड़' (रू भे)

महागौरी-स० स्त्री०—१ दुर्गा ।

२ पार्वती, अम्बा ।

३ विध्य पर्वत से निकलने वाली एक नदी ।

४ आठ विशिष्ट देवियों में से एक ।

रू० भे०—महागवरी, माहगोरी ।

महाग्यानी-स० पु० [सं० महाज्ञानिन्] १ शिव ।

२ बहुत बड़ा विद्वान ।

रू० भे०—माहग्यानी ।

महाग्रह-स० पु० [सं० महाग्रह] १ सूर्य । (नां डि को)

२ राहु ।

उ०—हाकिमाजी आदि लोगां ने घरां रा कारज सूंपिया पर घर नै विखै महाग्रह रो पड्यो छै । कोई आवै छै । ज्यांनै पूछिजै छै । महाचितावंत हुवा छै ।—नैणसी टी

महाग्रीव-स० पु० [सं० महाग्रीव] १ शिव । २ ऊंट ।

रू० भे०—माहग्रीव ।

महाघण-स० पु०—प्रलयकालीन मेघ ।

उ०—ऊनवै सिर ऊपरां, धाहड़ी रस-लुब्ध । विरह महाघण ऊन-टियउ, थाह निहाळइ मुग्ध ।—ढो मा

महाघणरूप-स० पु० [सं० महा+घन्+रूप] विष्णु ईश्वर ।

उ०—निरंजण नाथ परम्म-प्रमाण । घिनस्न महाघणरूप कल्याण ।
—ह र.

महाघोस-स० पु० [सं० महाघोष] भारी शब्द, भयंकर नाद ।

रू० भे०—माहघोख, माहघोस ।

महाघ्रत-स० पु० [सं०महाघृत] घृत जो ग्यारह वर्ष पुराना हो । (वैद्यक)

रू० भे०—माहघरत ।

महाचड-वि० [सं०] भयानक, जबरदस्त ।

रू० भे०—माहचड ।

महाचडी-स० स्त्री० [सं०] दुर्गा ।

रू० भे०—माहचडी ।

महाचकरवरती, महाचक्रवरती-स० पु०—सम्राट ।

महाचक्री-स० पु०—विष्णु ।

रू० भे०—माहचकरी ।

महाचतुर-स० पु० [सं०] १ पडित । (ह ना मा)

२ होशियार, चतुर, सतर्क, दक्ष ।

उ०—घड़ी च्यार-पांच रै आंतरकै आदमी च्यार पांच बारणै आय खड़ा रह्या । तद भरमल तो महाचतुर सो पग रो खड़को सुणीयो । तद जाग होळै सै कुंवरसी नै जगायो—'जो हरामखोर बाहर खड़ा छै । उठो, सावधांन हुवो ।'—कुंवरसी सांखला री वारता

महाचपळा-स० स्त्री० [सं० महाचपला] वह आर्या छद जिसके दोनो दालों मे चपला छद के लक्षण हों ।

रू० भे०—माहचपळा ।

महाचाई-वि०—महात्यागी । (जैन)

महाचीण-स० पु०—एक देश का नाम । (व स)

रू० भे०—माहाचीण ।

महाछत-स० पु० [स० महा+राज० छत] बडा क्षत्रिय, शूरवीर ।
उ०—'भजबसाह' सिवदान, 'अखो' 'भगवान' असकत । 'सामतसी' 'जूझार', 'मुकन' 'तेजसी' महाछत ।—रा रू.

महाजग-स० पु० [स० महा+फा० जग] भयकर युद्ध ।
उ०—काळा सौर उछळे कराळ झाळ दहू कांनी । जोधपुरा आमेरा महाणी महाजग ।—बखतसिंघ री गीत

महाजग्य—देखो महायग्य' (रू भे)

महाजटियळ, महाजटीयाळ-स० पु० [स० महाजट+रा० प्र० इयळ, ईयाळ] महादेव, शिव ।
उ०—महाजटीयाळ भ्रूगट भेक वक्रत मयक । अलक्रत सेस मेचख ऊथाळी । करण तप प्रभा परभात रा समोकर, तेज पुज 'नाथ' रा तणी ताळी ।—कवर भीमसिंग री गीत

महाजत-स० पु०—सयमी या महायती होने की अवस्था या भाव ।
उ०—सुप्रवीत महाजत सूर सरो । कमधेस पडै अप्रवीत करो ।
—पा प्र

महाजन-स० पु० [स०] १ घनी व्यक्ति ।
उ०—अकुलीन पसाउ निसेधवउ, नीच जाइ ससरग वरजेवउ, महाजन समानेवउ, मडलीक प्रति उचित्य वरत्तवउ, सीमाला सवै ऊससता राखेवा ।—व स
२ बनिया, व्यापारी । ३ व्यापारी वर्ग ।
उ०—तरै रो लोग महाजन, छोकरी, हीडागर, घाची मोची सिको महेसजी रो गिलो करै ।—राव चद्रसेन री वात
४ व्यापारी वर्ग का मुखिया । ५ बडा या श्रेष्ठ पुरुष ।
उ०—१ अथ मन्त्रि समस्त महाजन-प्रधान दाक्षिण्य करणैक वत्सल नीति मारग प्रकास नै कदक्ष प्रियवक्ता हृढप्रतिज्ञ करुणा रस समुद्र प्रसिद्ध पदवीं प्रभु ।—व स
६ साधु पुरुष । ७ जन समुदाय ।
उ०—सघ आवी रे विक्रमपुर नो उमही । गुरु वद्या रे महाजन मजलई गहगही ।—जिनचद्र सूरि
रू० भे०—महाजन्न, मा'जन, माहजन ।

महाजनिक-स० पु०—जन समुदाय ।
उ०—प्रतिहार चतुद्धरिक कास्टिक राजद्वारिक सधिविग्रहिक भाडपति स्रेस्टि महाजनिक दूत दालिउद्द कटुक ।—व स

महाजनी-स०स्त्री०—१ व्यापारिक गणित एक प्रकार की अक गणित ।
२ वही खातो मे लिखी जाने वाली लिपि ।
३ रुपयो के लेन देन का व्यवसाय । ४ सज्जनता ।
वि०—महाजन का, महाजन सम्बन्धी ।
रू० भे०—मा'जनी माहजनी ।

महाजन्न—देखो 'महाजन' (रू भे)
उ०—लाडणू वसै महाजन्न लोक, चौपडा पडै बाजार चौक ।
—पे रू

महाजळ-स० पु०—समुद्र सागर ।
उ०—करेवा देव तणां कोइ कांम । रहन्चै माहिजळ राम । महा-गिड पैस महाजळ मज्झ, किया तै जुद्ध प्रथम्मी कज्ज ।—ह र.

महाजुग—देखो 'महायुग' (रू भे)

महाजुध—देखो 'महायुघ' (रू भे)
उ०—धीबिया छडाळां किता लोटै धरा, प्रगट रजपूत वट दाख पूरै । 'माल' दूजै वधै महाजुध मेलियो, खाग अणिरा तणै प्रगट खूरै ।—गु रू व

महाजोगी—देखो महायोगी' (रू भे)
उ०—तिण ठाम सथा दान रै समय गुरु छात्र रै अतर एक गज-राज अचाणक कढियो जिण कारण महाजोगी उपाध्याय माळव रै महीप व्याकरण रा अध्यापन मे एक अब्द री अनध्याय मानि पाणिनीय री प्रतिनिधि भट्टि नामक काव्य वणाय पढायो ।
—व भा

महाजोगेसर, महाजोगेस्वर—देखो 'महायोगेस्वर' (रू भे)

महाजोधा, महाजोधार-स० पु०—वीरो मे अग्रणी ।
उ०—१ गात मेर गज भीम, महाजोधा ऊतळी बळ । भुजा-दड परचड, जेम गगाजळ ऊजळ ।—गु रू ब
उ०—२ धकचाळा करि कांमणी भेटा । कीर्ति उबारा । आगला जाळधर महाजोधार सारिखां रा वैर कळिया काढ़ां । भसमासुर रा विरोध माहे इद्रादिक देवता वाढा ।—मा. वचनिका

महाज्वाळ, महाज्वाळा-स० स्त्री० [स० महा-ज्वाला] १ यज्ञ की अग्नि ।
स० पु०—२ एक नरक का नाम । ३ महादेव ।
रू० भे०—माहज्वाळ, माहज्वाळा ।

महाडोल, महाडौल-स० स्त्री०—राजा-महाराजा या रईसो के बैठने की डोली या पालकी जिसको मनुष्य अपने कधो पर उठाकर चलते हैं ।
उ०—तिका महाडोल माही बैठांण सखी सहेलिया, दासियां रै घणा जलूस सू विदा किया ।—जलाल बूबना री वात
रू० भे०—माहाडोळ, माहाडौळ ।

महातक-स० पु० [स० महा-आतंक] १ भयकर आतक, डर, भय ।
[स० महा+अतक] २ भयकर रोग ।
उ०—जिण समय दिल्लीस साहजिहांन रै मूत्रकृच्छ्र नांमक महातक रो प्रकोप थियो ।—व भा
३ मृत्यु, मौत ।
वि०—अत्यन्त भयकर ।

महातत, महातत्व—देखो 'महत्तत्व' (रू भे)
उ०—महातत तूझ न जाणै माह, कियो तुझ केण आयो तू काह ।
—ह र

महातप, महातपि-स० पु० [स० महातपस्] १ वडा तप, साधना ।
उ०—सोसइ सहइ महातपि आतपि रहइ गभीर । मोह तणा जग-बधव बध वछोडइ धीर ।—जयसेखर सूरि

२ विष्णु । ३ बडा तपस्वी ।

महातम–स० पु० [स० माहात्म्य] १ महिमा, गौरव, बडाई, महत्व ।

उ०—१ सरस्वती नदी प्रभासक्षेत्र छै, तिण रो महातम कह्यो छै। —नैणसी

उ०—२ नाम महातम वरण कर, हम कू किये निहाल । सुणियो गुरु हरनाथ सू, दादू दीनदयाळ ।—भगतमाल

उ०—३ थकं मन वाणिय स्वातम थान । महागुरु मत्र महातम मान ।—ऊ का.

२ आदर, मान, सम्मान ।

रू० भे०—मातम, माहतम, माहातम, माहात्म्य ।

३ देखो 'महात्मा' (मह , रू भे)

महातमा—देखो 'महात्मा' (रू. भे) (प्र मा)

महातळ–स० पु० [स० महातलम्] अध लोको मे से पांचवां लोक । (पौराणिक)

रू० भे०—माहतळ ।

महातळाव–स० पु०—वडा तालाव ।

महातवोधण–स० पु० [स० महातपोधन] १ वडा तपस्वी ।

२ वडा तपोधन ।

महाताव–स० पु० [स० महाताप] सिंह, शेर । (ना. डि को)

महातिक्ख–वि० [स० महातीक्ष्ण] अत्यन्त तीक्ष्ण ।

उ०—डगं फाडि डाचो वड वज्ज मुड, महातिक्ख नक्ख रसं रोस चड ।—ध व ग्र

महातेज, महातेजस, महातेजेसुर–स० पु० [स० महातेजस्] १ स्वामी कार्तिकेय । २ शिव ।

३ अग्नि । ४ पारा, पारद ।

५ शूरवीर, वहादुर ।

रू० भे०—माहतेज, माहातेज ।

महात्मन, महात्मा–स० पु० [स० महात्मन्] १ परमब्रह्म ईश्वर ।

२ शिव । ३ वडा साधु या सन्यासी ।

उ०—महात्मा आत्मा ए परम परमात्मा हिल मिलें । झिलें जीवो-ज्योती झगमगत ज्योती झिल्ल मिलें ।—ऊ का

४ वह पुरुष जिसके विचार व आचार व्यवहार अत्यन्त उच्च हो, महापुरुष ।

५ दानी, दातार । ६ धूर्त, चालाक । (व्यग)

रू० भे०—महातमा, मातमा, माहतमा, माहातमा ।

मह०—महातम ।

महात्रिफळा–स० पु० [स० महात्रिफल] हड, वेहड आंवलो का समूह (ग्रोषधि)

रू० भे०—माहतिरफळा, माहत्रिफळा ।

महाथभ–स० पु० [स० महा-स्तभ] १ वडा या भीमकाय स्थभ ।

२ वडे व मोटे तने वाला वृक्ष ।

उ०—अनेकं फळे भारिया ग्रवस ओपं । लिये चाहि सेवा न को जाय लोपं । सुगधाकर सुदर फून सोहै । महाथभ सोरभ सिभू विमोहै ।—रा. रू

वि०—वडे तने वाला, दीर्घाकार ।

महादट–स० पु० [स०] १ वड़ी भारी सजा ।

२ यम का दड । ३ वड़ा भारी डंडा ।

४ वड़ी वाह, या भुजा ।

रू० भे०—माहदड ।

महादडधारी–सं० पु० [स० महादण्डधारिन्] यमराज ।

रू० भे०—माहादडधारी ।

महादत, महादत्त–स० पु० [स० महा-दत्त] वडा भारी दान ।

उ०—कुळ करसण करै वरीसण कोडी । ढीक कनक मझ ढाल-डिया । 'अडसी' सभ्रम ठोड सिचै इम, हम्म महादत्त हालडिया । —महाराणा हम्मीरसिंह री गीत

वि०—वड़ा दानी, दातार ।

महादळ–स० पु० [स० महादल] महासेना, वडी फौज ।

उ०—ऊगमण लगं सूर उछजियै, मिळै महादळ मच्छर मांण । तांणें वतळायो 'तीडावत, डांखिया ताय ढीलवियै ढाण । —राव सलखा रो गीत

महादव–सं० स्त्री०—१ प्रचड दावानल ।

उ०—पथी एक सदेसडउ, लग ढोलउ पोहचाइ । विरह महादव जागियउ, अगिन वुझावउ आइ ।—ढो मा

२ देखो महादेव' (रू भे)

महादसा–स० स्त्री०—गणित ज्योतिष के अन्तर्गत चालु मुख्य ग्रह की दशा ।

वि० वि०—वृहत्पाराशर होरा शास्त्र मे सर्वसाधारण के लिये विंशोत्तरी दशा को मुख्य महादशा मानी है और विशेष रूप से किसी आचार्य ने अष्टोत्तरी, किसी ने षोडशोत्तरी, द्वादशोत्तरी, पञ्चोत्तरी, शताब्दिका, चतुरशीतिसमा, द्विसप्ततिसमा, षष्टिहायनी एव षट्त्रिंशत्समा दशाए जन्मनक्षत्र के आधार वाली मानी गई हैं । इनके अतिरिक्त कालदशा, चक्रदशा, कालचक्रदशा, चरदशा, स्थिर-दशा, केन्द्रदशा, कारकदशा, ब्रह्मग्रहदशा, मण्डूकदशा, शूलदशा, योगार्धदशा, दृग्दशा, त्रिकोणदशा, राशिदशा, पञ्चस्वरादशा, योगि-नीदशा, पिण्डदशा, नैसर्गिकदशा, अष्टवर्गदशा, सन्ध्यादशा, पाचक-दशा, तारादशा आदि दशा के विविध भेद हैं किन्तु ये दशाए सर्व-सम्मत नही हैं और इस शास्त्र मे विंशोत्तरी महादशा को ही मुख्य माना गया है ।

महादान–स० पु० [स० महादान] १ ग्रहण के समय भंगी, चमार, डूम आदि जातियो को दिया जाने वाला दान ।

२ स्वर्ग प्राप्ति हेतु दिया जाने वाला दान ।

उ०—महादान आछइ घडइ, दूव माहि साकर पडइ सोनउ नइ सु-वास, एक 'अचळ' कथइ सिवदास ।—अ वचनिका

रू० भे०—माहदान ।

महादानी-स० पु० [स० महादान + रा० प्र० ई] बडा दातार, दानवीर ।

उ०—हिरणाकुस हिरणाक्ष मुचकद, करण महादानी भया । कहो छळ बळ कहा माया, अति सब खाली गया ।—ह पु. वा.

महादीन-वि० [स० महा+फा० दीन] अत्यन्त निर्धन, गरीब ।

उ०—कुळको वह स्वधीन और ठग के अधीन । ऊमरदान महादीन लाळस लुट जाता ।—ऊ का

महादीप—देखो 'महाद्वीप' (रू भे) (र ज प्र)

महादीव—देखो 'महाद्वीप' (रू भे)

महादुकाळ, महादुकाल-स० पु०—भयंकर दुष्काल, भारी अकाल ।

उ०—दुरभिक्ष महादुकाळ, वरस सत्यासीयउ बूरो । दीठा घणा दुकाळ, पणि एइवउ को न हूवो ।—स कु

महादुस्ट, महादुस्टी-स० पु०—महादुष्टता करने वाला, महान् अन्याचारी ।

उ०—तव ते वोल्यो—पासी काढै ते महा उत्तम पुरुष, मोक्षनो जाणहार, देवलोक में जाणहार, दयावत । घणा गुण कीधा । नही काढै जिको महापापी, महादुस्टी, नरक रो जावणहार ।—भि द्र.

महादे, महादेव-स० पु० [स० महादेव] शिव, शकर ।

(अ मा, ना मा, ह ना मा)

उ०—पागळा खडै जमदूत फीटा पडै, जोखमी ऊघडै नयण जूटी । दिया वरदांन मंतर महादेव रा, वलूती धनतर तणी बूटी ।

—मे म

रू० भे०—महदेव, महादव, मादेव, माहदिव, माहदेव, माहेव ।

महादेवी-स० स्त्री० [स०] दुर्गा, पार्वती, शक्ति ।

महाद्रह-स० पु० [स० महा+ह्रद] बहुत बडा गर्त ।

उ०—सूडादहि आच्छोडतउ गिरिनदी विलोडतउ, महाद्रह डोहतउ साहस्सिक तणा मन खोहतउ, तुरगम त्रासवतउ, पवन जिम चालतउ — ।—व स

महाद्रुम-स० पु० [सं० महाद्रुम] १ अश्वत्थ, पीपल ।

२ वट वृक्ष । ३ ताड वृक्ष ।

रू० भे०—माद्रुम, माहद्रुम ।

महाद्वीप-स० पु० [स०] १ पृथ्वी का बडा भाग जो चारों ओर से नैसर्गिक सीमाओ (यथा समुद्र, जल आदि) से घिरा हुआ हो तथा जिसमे कई देश हो ।

२ तेरह, बारह पर यति का एक मात्रिक छद ।

रू० भे०—महदीप, महादीप, महादीव, मा'दीप, माहदीप ।

महाधन-वि० [स०] १ बडा धनवान ।

२ बडा खर्चीला ।

स० पु० [सं० महधन] १ सोना, स्वर्ण ।

२ बहुमूल्य पोशाक ।

महाधनुस-स० पु० [स० महाधनुस्] शिवजी का एक नामान्तर ।

महाधातु-स० पु० [स० महाधातु] १ सुवर्ण सोना ।

२ महादेव, शिव । ३ सुमेरुपर्वत ।

महाधिराज, महाधीराज—देखो 'महाराजाधिराज' (रू भे.)

उ०—समाधियोग साधधी परावधी पिछाणलो । महेसराज राजतैं महाधिराज मानलो ।—ऊ का

महाधू-वि० [स० मह+धी] १ बुद्धिमान, ज्ञानी ।

उ०—रहै विलवै रामरस, अनरस गिणै अलप्प । एह महाधू आतमा, ऐ तीरथ ऐ तप्प ।—ह र.

२ सर्वोच्च, शिरोमणि ।

उ०—कळप तरु ऊखळि पडै 'जसो' महाधू जाम । माळा गाळा ठाम महि, तिको न सूझै ताम ।—हा झा

[स० महा + ध्रुव] ३ अटल, निश्चय ।

महानदी-स० स्त्री० [स०] शराब, मदिरा ।

मयानट-स० पु० [स०] १ शिव ।

उ०—१ अर सिंहदेव साथ ही हेठै आय खडग खेल्ह मचाय महा-प्रळय रा समय रा महानट री आभा धरी ।—व भा

उ०—२ महानट हाथ हकाळत मुड । रोळा मझ घुम्मर घालत रुड ।—मे म

२ श्री कृष्ण ।

महानद-स० पु०—१ एक बडी नदी । (पौराणिक)

२ एक प्राचीन तीर्थ ।

रू० भे०—माहनद ।

महानदी-स० स्त्री० [स०] १ गगा, यमुना, कृष्णा, सिंधु, ब्रह्मपुत्रादि बडी नदियों मे से कोई एक नदी ।

२ एक नदी का नाम जो बगाल की खाडी मे गिरती है ।

महानरक-स० पु० [स० महानरक] इक्कीस बडे २ नरको मे से एक नरक ।

महानवमी-स० स्त्री०—आश्विन शुक्ला नवमी ।

महानस-स० पु० [स०] रसोईघर, रसोवडा ।

उ०—देस माहि आवता ही ओठी नू सीख दे'र विपत्ती रा महा-रणव मे मग्न मागळियांणी पुत्र सहित वेस रो विपरयास करि कैराऊ ग्राम रा ठाकुर रोहडिया वारहठ आल्हा रै वास जाइ रही अर थोडा दिना मैं बडा बिस्वास रै साथ महानस री मालिक होइ चारण री चाकरी में चित्त लगाइ चातुराई री रीझ चही ।

—व भा

महानाद-स० पु० [स० महानाद] १ बादल की गरज ।

२ तेज आवाज, कोलाहल ।

३ बडा ढोल, नगाडा ।

४ सिंह, शेर । (अ मा, ह ना. मा)

५ हाथी। ६ ऊट। ७ शिव, महादेव।
८ कान। ६ शख।
[स० महानादम्] एक प्रकार का वाद्ययंत्र।
रू० भे०—माहानाद।

महानारायण–स० पु० [स०] विष्णु।

महानाव–स स्त्री० [स०] बडी नौका, जहाज, बेडा।
रू० भे०—महनाव।

महानास–स० पु० [स०] प्रलयकालीन रुद्र, रुद्र।

महानिद्रा–स० स्त्री० [स० महानिद्रा] मृत्यु, मौत।

महानिधाल–स० पु० [स० महानिधाल] १ धातु भेदी पारा।
२ बुभुक्षित।

महानिसा, महानिसि–स० स्त्री० [स० महानिशा] १ रात का मध्य भाग, अर्ध रात्रि।
२ कल्पात या प्रलय की रात, काल रात्रि।
३ रात का दूसरा या तीसरा भाग।
४ निशाकाल, रात्रि का समय।
उ०—राता तत चितारत चितारत, गिरी कदरि धरि विन्हे गए। निद्रावम जग एहु महानिसि, जामिए कांमिए जागरए।—वेलि
रू० भे०—माहनिसा।

महानींबू–स० पु०—बडा नींबू, बिजोरी नीबू।

महानील–स० पु० [स० महानील] एक प्रकार का नीलम नामक रत्न जो सिंहलद्वीप मे होता है।
उ०—मरकत करकेतन पद्मराग पुस्पराग वज्र वैडूरय सुरयकात चद्रकांत नील महानील इद्रलील —।—व स.
रू० भे०—माहनील।

महानुभाव–स० पु० [स०] १ सज्जन पुरुष, सभ्य व्यक्ति।
२ आदरणीय पुरुष, उच्च विचारो वाला व्यक्ति।
३ सत्यनिष्ठ पुरुष।

महानुभावता–स० स्त्री० [स०] १ महानुभाव होने की अवस्था या भाव।
२ महानता।
रू० भे०—माहनुभावता।

महानेत्र, महानैत्र–स० पु०—शिव, महादेव।

महानृत्य–स० पु० [स० महानृत्य] शिव, महादेव।

महाप्रप–स० पु०—देवराज इन्द्र (अ मा, नां मा)
रू० भे०—माहप्रप।

महापचमूळ–स० पु० [स० महा पचमूल] बेल, अरनी, सोना पाढ, काश्यरी और पाटला इन पांच वृक्षो की जड़ो का समूह। (वैद्यक)
रू० भे०—माहपचमूळ।

महापचविस–स० पु० [स० महा पच विष] शृगी, कालकूट, मुस्तक, वछनाग और शखकर्णी इन पाच विषो का समूह।
रू० भे०—माहपचविस।

महापडित–स० पु० [स०] बहुत बडा पडित, लब्ध प्रतिष्ठित विद्वान।
उ०—ज्योतिसी वैद्य महावैद्य अस्ववैद्य गजवैद्य मांत्रिकादि पडित महापडित इति राज वरणन।—व स

महापइण्ण–वि० [स० महप्रतिज्ञ] दृढ़ प्रतिज्ञ। (जैन)

महापक्ष–सं० पु० [स०] १ गरुड।
२ एक प्रकार की बत्तख।
रू० भे०—मापख, माहपख, माहपक्ष।

महापक्षी–स० पु० [स०] १ उल्लू।
२ पेचक। ३ कोई बडा पक्षी।

महापचखांण–स० पु० [स० महाप्रत्याख्यान] १ जैनियो का पयन्ना नामक ग्रथ जिसमे अनशन करने की विधि का विवेचन है।
उ०—तीजो महापचखाण कहीस, गाथा इकसौ नइ चौत्रीस।
—ध व ग्रं
२ अनशन।

महापथ–स० पु० [स०] १ हिमालय के अन्तर्गत एक तीर्थ।
२ इक्कीस नरको मे से १६ वा नरक। (याज्ञवल्क्य स्मृति)
३ परलोक का मार्ग मृत्यु और मौत।
४ शिव, महादेव।
५ बहुत लम्बा व चौडा रास्ता, राजपथ।
६ कई ऊचे शिखरो के नाम।
वि० वि०—ऐसा माना जाता है कि इन शिखरो पर चढ कर लोग इसलिए कूदते हैं कि वे सीधे स्वर्ग पहुच जाय।
रू० भे०—महापह माहपथ।

महापथिक–स० पु०—मरने के उद्देश्य से हिमालय पर जाने वाला
रू० भे०—माहपथिक।

महापदम, महापद्म–स० पु० [स० महापद्म] १ कुबेर की नौ निधियो में से एक। (ह नां मा)
२ आठ दिग्गजो मे से एक। ३ हाथियो की एक जाति।
४ नागो के नौ वशो मे से एक व इस वश का नाग।
५ सफेद कमल। ६ सौ पद्मो की एक सख्या।
७ एक नगर का नाम। ८ नारद का एक नामान्तर।
६ कुबेर का एक अनुचर।
रू० भे०—मा'पदम, माहपदम।

महापब, महापब्ब—देखो 'महापरब' (रू भे)

महापरळै—देखो 'महाप्रळय' (रू भे)
उ०—मन जबुक मन ग्रद्ध, कौवा का रूप वणावै। मन सूकर मन स्वान, महापरळै वह जावै।—ह पु वा

महापरब–स० पु० [यौ० स० महापर्वन्] १ उत्सव, पुण्यकाल।
२ अवसर, सुअवसर, मौका।

३ यज्ञादि के समय होने वाला महोत्सव ।
४ त्यौंहार ।
रू० भे०—महापव, महापव्व, महाप्रव्व ।

महापरसाद—देखो 'महाप्रसाद' (रू भे)

महापवितर, महापवित्र–स० पु० [स० महा पवित्र] विष्णु ।
रू० भे०—माहपवितर ।

महापसाव–स० पु० [स० महाप्रसाद] एक प्रकार का वडा इनाम या दान ।
उ०—पछै भलो दिन जोय, दीवाण वणाय सारा उमराव तेडनै सावळसुध कवि नू डेराथी तेडायनै आपरै तखत बैसाण नै आऊठ-लाख सांमई रो महापसाव करनै आप गाडो जोत राय समंद रै बैंट कराडै गयो ।—नैणसी

महापह—देखो 'महापथ' (रू भे) (जैन)

महापांण–स० पु० [स० महा-पाणि] अजानवाहु ।
उ०—महाजोध जोधवसी, महापांण पाण । आंगमणी अगद सा हणू सा अवसांण ।—रा रू

महापातक–सं० पु० [स०] १ ब्रह्म हत्या, मद्यपान, चोरी, गुरु पत्नी के साथ समोग आदि पापकर्म । (मनु)
२ अत्यन्त हेय कर्म ।
उ०—जिकण महापातक माथै लेर आधी पातसाही रो लोभ दे प्रतीची रा पति आपरा अनुज मुरादसाह नू मिळाइ पाउसरी काद-विनी रो अनुकार आपरो अनीक तणियो ।—व. भा
३ देखो 'महापातकी' (रू भे)
रू० भे०—मा'पातक, मा'पातकी, माहपातक ।

महापातकी–स० पु० [स० महापातकिन्] १ महापातक पाप करने वाला पापी, महापापी ।
२ बहुत वडा पापी ।
रू० भे०—महापातक मा'पातक, मापातकी, माहपातकी ।

महापातयोग–स० पु० [सं०] फलित ज्योतिष के अनुसार एक योग ।
वि० वि०—यह सूर्य व चद्र की क्रान्ति साम्य से होने वाला गणित गम्य एक योग विशेष है जो पचाग के १७ वें व्यत्तिपात और २७ वें वैधृति योगो से भिन्न है । इसके महाव्यत्तिपात और महावैधृति नामक दो भेद हैं ।

महापाप–स० पु०—१ वडा पाप ।
उ०—इतरी कही मरमल बोली, 'जो रै पापी थे आया, सो बुरी करी । जुवाई कर मारणो न थो । इण में कासु सिध करस्यो । थांनु महापाप सराप लागसी ।—कुवरसी सांखळा री वारता
२ दुष्कर्म, हेय कर्म ।
उ०—जिण समय राठोड़ चद्रहास चलावण मे कुमी न कीधी परतु महापापां रा करणहार तो स्री परमेस्वर रा प्रपच में जीती हू न जावें ।—व भा

महापापी–स० पु०—बहुत वडा पाप करने वाला, महापातकी ।
उ०—तब ते बोल्यो—पासी काढै ते महा उत्तम पुरुष, मोक्षनो जाणहार, देवलोक मे जाणहार, दयावत । घणा गुण कीधा । नही काढै जिको महापापी, महादुस्टी, नरक रो जावणहार ।—भि द्र

महापास–स० पु० [स० महा पाश] १ एक यमदूत । (पौराणिक)
२ यमपाश । ३ बहुत वडा बधन ।
रू० भे०—मा'पास, माहपास ।

महापीठ–स० पु० [स०] १ कोई वडा पुण्य स्थान ।
२ वह स्थान जहा किसी देवी-देवता की प्रतिमा स्थापित हो ।
३ वह स्थान जहां दक्ष पुत्री सती का कोई अग या आभूषण विष्णु-चक्र से कट कर गिरा हो । (पौराणिक)
४ शकर मठ । ५ कोई वडा स्थान या केन्द्र ।

महापुट–स०पु० [स०] वैद्यक मे भस्म, आदि तैयार करने की एक विधि ।
रू० भे०—माहपुट ।

महापुरस—देखो 'महापुरुस' (रू भे)

महापुरांण–स० पु० [स० महा पुराण] अठारह पुराणों मे से एक जिसके रचयिता व्यास थे ।
उ०—जिसकी साखि स्री भागवत महापुराण मे गाए ।—सू प्र
रू० भे०—मपुराण, माहपुरांण ।

महापुरी–सं० स्त्री० [स०] १ राजधानी ।
२ कोई वडा नगर ।

महापुरुस–स० पु० [स० महापुरुष] १ नारायण, परमात्मा, ईश्वर ।
२ विष्णु का एक नामान्तर । ३ उच्च विचारो वाला व्यक्ति ।
४ दस नामी सन्यासियो का एक नाम । (मा म)
५ दुष्ट, पाजी, मूर्ख । (व्यग्य)
रू० भे०—महापुरस, मा'पुरस, मा'पुरुस, माहपुरस ।

महापूजा–सं० स्त्री०—आश्विन के नवरात्रो मे की जाने वाली दुर्गा की पूजा ।
रू० भे०—माहपूजा ।

महापूठ–स० पु० यौ० [स० महापृष्ठ] ऊट ।

महापूर–वि० [महान्+पूर्ण] वडो मे भी वडा, बहुत वडा ।
उ०—सोनग के भाईबध भतीजे दळ आगळ । सूरा तैं सूरा महापूरा से अदळ ।—रा रू

महाप्रतिभट–वि०—१ बलवान, शक्तिशाली, महावीर ।
२ योद्धा ।
उ०—जिण राजा रै अनेक मत्री वाणी रा जुद्ध मैं प्रहाप्रतिभट जिका राजा री कीधी कारिका अनेक अपूरव व्याख्यानकरि वसुधा मैं विदित करी ।—व भा

महाप्रव्व—देखो 'महापरव' (रू. भे)
उ०—सामत सुहड दीपै सरव्व । जीपत जिकै जुध महाप्रव्व ।
—गु. रू वं

२ कोई बडा पर्व ।

महाप्रभु–स० पु० [स०] १ ईश्वर, परमात्मा ।
२ विष्णु । ३ शिव, महादेव ।
४ इन्द्र । ५ राजा । ६ प्रधान या मुखिया ।
७ वल्लभाचार्य की एक पदवी । ८ चैतन्य ।
९ सन्यासी । १० बडा स्वामी या उच्च कोटि का साधु ।
उ०—सुनू हरिराम गुनू किय साफ । महाप्रभु मागत आगन माफ ।
—ऊ का

रू० भे०—मा'प्रभु माहपरभु माहप्रभु ।

महाप्रळय, महाप्रळै–स० पु० [स० महाप्रलय] १ जब समस्त सृष्टि का सर्वनाश होकर सर्वत्र जलाकार ही जलाकार हो जाता है, कल्परूप ।
उ०—अर सिहदेव भी साथ ही हैठै आय खडग खेवह मचाय महाप्रळय रा समय रा महानट री आभा धरी ।—व. भा
वि० वि०—पुराणानुसार ब्रह्मा के अन्तिम दिन ऐसा प्रलय होता है ।
२ महाविनाश का दृश्य या वातावरण अथवा भयकर विनाशकारी स्थिति ।
उ०—दिल्ली रा दळ में दरोळ देखता ही साहजादा री सेना वडे जोर वधी थकी आगै आइ उछाह रै उफांण महाप्रळै मचायौ ।
—व भा

रू० भे०—महापरळै, मा'प्रळै ।

महाप्रसाद–स० पु० [स०] १ श्री जगन्नाथजी को चढ़ाया हुआ प्रसाद, नेवैद्य ।
२ किसी देवता को चढाया हुआ नेवैद्य ।
३ किसी महापुरुष या महात्मा के भोजन का उच्छिष्ट अश ।
४ कोई वडा अनुग्रह ।
५ मांस, आमिष । ६ भोजन ।
रू० भे०—महापरसाद, मा'प्रसाद, माहपरसाद, माहप्रसाद ।

महाप्रस्थांन–स० पु० [सं० महाप्रस्थान] १ मारने के उद्देश्य से की जाने वाली हिमालय की यात्रा ।
२ मृत्यु, देहान्त ।
उ०—आपरा अग्रज री चरचा इण रीति सुणि वगराज गौड हरिस्चद री रांणी पण पति रा महाप्रस्थांन रै अनतर निज पुत्र गोपीचद रै यो ही वीतराग जोग रौ उपदेस लगायौ ।—व भा
रू० भे०—मा'प्रसथांन, मा'प्रस्थान, माहप्रस्थांन ।

महाप्राण–स० पु० [स० महाप्राण] वे वर्ण जिनके उच्चारण मे प्राण वायु का अधिक प्रयोग होता है । यथा—ख, घ, छ, झ, ठ, ढ । थ, ध, फ, भ, स, ह आदि । (व्याकरण)
वि०—अल्पप्राण ।
रू० भे०—मा'प्राण, माहपरांण, माहप्रांण ।

महाप्राणध्यान–सं० पु० यौ० [स० महाप्राणध्यान] प्राण (जीव शक्ति) को बडे स्तर पर सयुक्त करने का ध्यान, धर्म ध्यान जो तीसरा ध्यान है ।
उ०—प्रतिबोध जबूस्वामि तणउ, तप तउ दृढ प्रहार तणउ, महाप्रांणध्यांन भद्रबाहुस्वामि तणउ ।—व. स.

महावराह–स० पु० [स० महा-वराह] १ वाराहावतार का नामान्तर ।
२ बडा सूअर ।
उ०—हिरण्याक्ष रा अग ज्यौं महावराह दत तुडाघात सोभित केही बन, पवत, घिराय केही सूकर सिंहा रा प्राणा रौ सघात भगायौ ।
—व भा.

महाबळ–स० पु० [स० महाबल] १ वायु, पवन । (ह नां मा)
२ शिव का एक पार्षद ।
३ विष्णु का एक पार्षद ।
४ वैवस्वत मन्वन्तर का इद्र ।
५ स्कन्द का एक सैनिक ।
६ एक दानव जो कश्यप एव दनु के पुत्रो मे से था ।
७ एक पुरुवशीय राजा, जो वायु पुराण के अनुसार वृहदिष्णु राजा का पुत्र था ।
८ गुहावासिन् नामक शिवावतार का शिष्य ।
९ पितरो मे से एक ।
१० हनुमान । (ना मा)
[स० महाबल] ११ सीसा, रांगा ।
वि०—अत्यन्त बलवान, सर्वशक्तिमान, वीर शिरोमणि ।
उ०—१ मुनीस महेस कोयग्रळ मज । प्रसिद्ध महाबळ तेजस-पुज ।
—ह र
उ०—२ धर करोत अवधूत, बहुत मजबूत महाबळ । अजब गजब आवाज, गाज मादळ त्रामागळ ।—मे म
उ०—३ अवधि राज करि इधक, महल सुख कीध महाबळ । सर्भ त्याग अस्वमेध दइव जीता बोह त्रपदळ ।—सू प्र
रू० भे०—महब्बळ, माहाबळ ।

महाबळा–स० स्त्री० [म० महाबला] १ स्कन्द की एक अनुचरी ।
२ सहदेवी नाम की जडी, पीली सहदेइया । ३ पीतल ।
४ धौ का पेड । ५ नील का पौधा ।
६ कार्तिकेय की एक मातृका । ७ एक बडी सख्या की सज्ञा ।

महाबळि, महाबळी–वि० [स० महा बलिन्] शूरवीर, पराक्रमी, बडा योद्धा ।
उ०—१ जडि ठांम थांणा जवर, बैठा मुगळ महाबळी ।—सू प्र
उ०—२ औरग साह महाबळी, विसव तणौं वडवाग । रीस तरस्सी पूत सिर, सोर परस्सी आग ।—रा रू
स० पु०—१ आकाश, आसमान ।
२ मन ।
रू० भे०—महबळी, माहबळी, माहबळीय ।

महाबवाळ–स० स्त्री०—१ बडी बलाय, बडा सकट।
२ झगड़ा, दगा, फसाद।
रू० भे०—माहवलाल।

महाबाह, महाबाहु–वि० [स० महा बाहू] १ लम्बी भुजाओं वाला, आजानबाहु।
उ०—जती बोलियौ वालि नू रांम जारै, महाबाह हैको वहै बाण मारै।—सू प्र
२ शूरवीर, बलवान।
उ०—१ सुत 'राम' 'रूप' निज दळ सनाह। 'गोरधन' तणौ 'नाहर' दुगाह। मुख एता ऊदा महाबाह, साधिया वेध सू पातसाह।
—रा रू
उ०—२ आठूई मिसल के कमध महाबाह। जाकी सुण मानी बांनी विखै की सलाह।—रा रू
स० पु०—१ विष्णु का नामान्तर।
२ एक राक्षस जो कश्यप एव दनु के पुत्रो मे से था।
३ धृतराष्ट्र का एक पुत्र।
४ मगध का एक राजा जो श्रुतजय राजा का पुत्र था।
रू० भे०—माहवाह।

महाविख, महाविस—देखो 'महाविस' (रू भे)
उ०—महाविख नाग उतारण मद।—ह र.

महावीर—देखो महावीर' (रू भे)
उ०—ग्रर ग्रोर भी दो ही तरफ रा प्रवीर जुदा जुदा जुद्ध करता या दो ही महावीरां रै पाछै रहिया ग्रावै।—व भा

महाबिल–स० पु० [स० महाविल] १ ग्राकाश २ हृदय ३ सुराख।

महाबेग—देखो 'महावेग' (रू भे)

महाबेध—देखो 'महावेध' (रू भे)

महाब्राह्मण–स० पु० [स० महत्+ब्राह्मण] १ वह ब्राह्मण जो मृतक का दान लेता हो, निकृष्ट ब्राह्मण।

महाभडारी–स० पु० [स०] बडा कोषाध्यक्ष।
उ०—कवि समास्र गारहार, समस्यासग्रागार, प्राकृत परमाम्रत-प्रवाह, सस्कृतसमुद्र विहितावगाह, वसुधावाचस्पति, अप्रतिममति, सरव सास्त्र पारगम, लक्ष्मी सरस्वती वेणी सगम, सरव जनोपकारी, महाभडारी कुठडि ।—व स

महाभगत–स० पु०—भक्त शिरोमणि।

महाभड, महाभडि, महाभड, महाभडि–वि० [स० महा-भट] 'महान योद्धा, जबरदस्त वीर।
उ०—१ 'अमर' 'किसोर' तणौ अतुळीबळ। अगन सोर पर जोर अप्रबळ। 'भाण' तणौ हरनाथ महाभड। माया परव उबारण अच्चड।—रा रू
उ०—२ मतवाळा जेम घुमत महाभड लोह तणी छक लालुरता। जमदढ उठत खै जमदाढा, वाहै आवध वीवरता।—गु रू व
उ०—३ तू उपजइ न खपइ नहु ग्राइस, कुळ न कहइ कहियइ उकळीण। भीनउ नादि विनोद महाभडि, ब्रखभ चढइ तइ वावइ वीण।—महादेव पारवती री वेलि
स० पु०—कामदेव, मदन।
उ०—कुग्रर-कमला रति-रमण, मयण महाभड नाम। पकजि पय कमल, प्रथम जि करू प्रणाम।—मा का प्र

महाभद्र–स० पु० [स०] १ पुराणानुसार एक पर्वत।
२ देखो 'महाभद्रजिन'।
उ०—वइरसेन वदूजिन सतरमो, स्त्री महाभद्र अठारम नित नमो। देवजसा उगणीसमौ देव ए, जसोरिद्धि वीसम जिन सेव ए।
—ध व ग्र.
३ एक व्रत विशेष।
उ०—१ कनकावलि रत्नावलि मुक्तावलि सिंह विक्रीडित महासिंह विक्रीडित गुण रत्न सवत्सर भद्र महाभद्र भद्रोत्तर सर्वतोभद्र ••।
—व स.
उ०—२ ज्ञानपचमी, मुकुटसप्तमी, माणिक्य प्रस्तारिका, निक्रमणतप वरद्धमानतप इद्रियजय कसायजय जोगसिद्ध भद्र महाभद्र, भद्रोत्तर, सरवतोभद्र ।—व स

महाभद्रजाति, महाभद्रजाती–स० पु०—सफेद रग का हाथी।
उ०—जपै नाग पुत्री खत्रि रूप जोती, महाभद्रजाती तणौ कांन मोती।—ना द

महाभद्रजिन–स० पु०—जैनियो के अठारवें विहरमान। (स कु)

महाभद्रा–स० स्त्री०—गगानदी।
रू० भे०—मा'भद्रा।

महाभर—वर्षा की तेज बौछार।
उ०—वह छूटै कंवर सोक नलीसर, सीधणि सघर साजविय। घुवि जांण धराहर सालुळि सेहर, मेघ महाभर माचविय।—गु रू व

महाभांडारिक–स० पु०—भण्डार का मालिक, खजाने का मालिक, खजाची।
उ०—ग्रस्ववाहक प्रतीकारग्रारिक भाडागारिक महांभाडारिक, मांणिक्य भाडारिक करप्य भांडारिक। •• ।—व. स

महाभागवत–स० स्त्री० [स०] १ पुराणानुसार प्रसिद्ध बारह भक्त—मनु, सनकादि, नारद, कपिल, जनक, ब्रह्मा, बलि, भीष्म, प्रहलाद, शुकदेव, धर्मराज ग्रोर शभु।
२ परम वैष्णव। ३ श्रीमद्भागवत पुराण।
४ एक प्रकार का छद।

महाभारत, महाभारथ–स० पु० [स० महाभारत] १ वेद व्यास द्वारा रचित एक प्रसिद्ध पौराणिक महाकाव्य जिसके अठारह पर्व हैं ग्रोर जिसमें कौरवो ग्रोर पाडवो के युद्ध का वर्णन है।
२ वह भयकर युद्ध जो कौरवो ग्रोर पाडवो के बीच हुग्रा था ग्रोर जिसमें विश्व के सभी राजाग्रो ने भाग लिया था।

उ०—जग करण महाभारथ ज्यूही, 'करण' नाम माचो करू ।
—सू प्र

३ भयकर युद्ध, घमासान लड़ाई ।

उ०—साढे सात मण साहजानी पक्के तोल रो लोह डाढाळै रै टीन मांही रहियो । महाभारत जीत सूग्रर खडो रहियो ।
—डाढाळा सूर री वात

रू० भे०—मा'भारत, माहभारत ।

महाभास्य—स० पु० [स० महाभाष्य] १ पाणिनी के व्याकरण पर पतजलि द्वारा लिखा गया प्रसिद्ध भाष्य, टीका ।

२ वडी टीका ।

रू० भे०—मा'भास्य, माहभास्य ।

महाभुजग—स० पु०—शेष नाग । (ह. ना मा)

महाभुज—वि० [स० महत्+भुज] वडी भुजाओं वाला, आजान वाहु ।

उ०—छत्रपत जोधा छात रै, जोध महाभुज जांण । करण सवोर्वा सांम ध्रज, खग जोधा वाखांण ।—रा रू

महाभूत—स० पु० [स०] प्रकृति के पाच मुख्य तत्व—पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश ।

उ०—तामस अहकार तै पांच महाभूत पाच सूक्ष्म भूत नीपना । एव चोवीस तत्व भेळा हुया ।—द वि

रू० भे०—महभूय, माहभूत ।

महाभैरव—स० पु० [स०] शिव ।

रू० भे०—महभैरव ।

महाभैरवी—स० स्त्री० [स०] १ तान्त्रिकों की एक विद्या ।

२ पार्वती, शक्ति, दुर्गा ।

महाभोग—देखो 'महाप्रसाद' ।

रू० भे०—माहभोग ।

महाभोगा—स० स्त्री० [स०] दुर्गा देवी ।

महाभोगी—वि०—महान ऐश्वर्यवान ।

स० पु०—वडे फण वाला सर्प ।

महामगळा—स० स्त्री०—१ पृथ्वी, धरा, भूमि ।

उ०—महामगळा रो हुती जोग माया । छळी सीत राणी अछी रूप छाया ।—सू प्र

२ अग्नि ।

महामडळ—स० पु०—१ कोई बहुत बडा मण्डल या वृत्त ।

२ वह बडा मण्डल जिसके अधीन छोटे छोटे अन्य मण्डल हों ।

महामडळेस्वर—स० पु०—कई मडळेस्वरों का अधिपति या नेता ।

उ०—राजा जुवराजकुमार राजेस्वर महामडळेस्वर सामत लघु-सामत तलवर तत्रपाळ चतुरसीतिक ताडकपति ।—व स

महामग—देखो 'महामत्त' (रू भे)

उ०—निरमळ नीर निहारतो, महामत गजराज । आधो आधो हाथियो, पांणी पीवा काज ।—गजउद्धार

महामत्र—स० पु० [स०] १ कोई वेद मन्त्र ।

२ ऐसा कोई मन्त्र जिसको विधिवत साधने से सिद्धि प्राप्त होती है ।

उ०—कोई कोई ग्रथ में इसो पण लेख जांणियो सो विक्रमादित्य नै कोई सिद्ध री सगति सह महामत्र रो साधन करि अग्नि १ कोकिल २ नाम दोय २ वीर वसीभूत किया ।—व भा

३ ईश्वर या किसी देवता का मत्र जिसको जपने से वाधाए व सकट दूर होते हैं ।

उ०—थियो सदय सुण निज थुई, टीटभ हृत फ़सांन । उणरा वाळ उवारिया, महामत्र जस मांन ।—वा. दा

४ ऐसा मन्त्र जो अपना असर तुरन्त ही वता देता है ।

५ अच्छी सलाह या मन्त्रणा ।

रू० भे०—माहमत्र ।

महामत्रि, महामत्री—स० पु०—किसी राजा या राज्य का प्रधान मन्त्री, महामात्य ।

उ०—राजा जुवराजकुमार राजेस्वर महामडलेस्वर सामत लघु-सामत तलवर तत्रपाल चतुरसीतिक ताडकपति मत्रि महामत्रि ग्रहवाहक ।—व स

रू० भे०—माहमतरी, माहमत्री ।

महामणिमत्य—स० पु०—मद से पूर हाथी, मस्त हाथी ।

उ०—पायै अवर सुरा नै पाड्या, मदन महामणिमत्यजी । तिण नै पिण जिण खिण में जीत्या, सहु मे ए समरत्यजी ।—ध. व ग्र

महामणि—स० स्त्री०—१ स्त्रियो का सौभाग्य सूचक चिन्ह ।

उ०—फूली भूली भांमिनी, कान कहती वात । पीयल-उपरि पांनडी, मढि महामणि सात ।—मा कां प्र

२ हीरा ।

महामत महामति, महामत्त—वि० [स० महामति] १ महान बुद्धिमान, विद्वान, पडित ।

उ०—महामत महण जसगाथ मुनि वालमिक, कोट सत चिरत रघुनाथ कीधी ।—र रू

२ मदोन्मत, मस्त ।

३ बुद्धिमानी, ज्ञानी, पंडित ।

उ०—पिप्पलराज इणकुळ खिच्चीपति, महित हुवो हरिभक्त महामति ।—व भा

स० पु० [स०] १ गणेश ।

२ एक वोधिसत्व ।

रू० भे०—महामत ।

महामद—स० पु० [स० महामद,] १ मस्त हाथी । (ना डि को)

२ अत्यधिक गर्व ।

रू० भे०—माहामद ।

महामन—वि० [स० महा+मनस्] १ जिसका मन उदार हो, उदार हृदय । २ दानी, दातार । (ह. ना मा)

३ अभिमानी ।

महामल्ल-वि० [स०] बड़ा योद्धा, श्रेष्ठ वीर ।

उ०—मल्लि जिनेसर तु महामल्ल, हरिणया मोह मदन हूँ ठल्ल । पिता तणी पिण चिता पल्ल, सगला दूर किया अरि सल्ल ।—ध व ग्र

महामसांणी—देखो 'मसाहणी' (रू भे)

उ०—इग्यार सामत वार महामडलेस्वर, तेर पसाइता, चऊद चडियात, पनर पउतार, सोल महामसाणी सतर आडणीया, अढ़ार भूझार ** ।—व स

महामह-स० पु० [सं०] १ महोत्सव ।

उ०—अर पाछै सू आपरो साथ आइ मिळिया पछै कवर भी आगला साथ मैं आइ मेडतिया नू अभय री महामह मनाइ अरक रै उपमांन ऊगो ।—व भा.

२ समुद्र, सागर ।

उ०—मथ काढी जाणी महामह प्यारभ । माडी तिण रूप री अजाद ।—महादेव पारवती री वेलि

महामहण—देखो 'महमहण' (रू भे)

महामहिमक, महामहीमक-स० पु०—वह घोड़ा जिसका मुह काले रग का तथा शेष शरीर अन्य रग का होता है । (अशुभ) (शा हो)

महामहोच्छव, महामहोत्सव-स० पु० [स० महामहोत्सव] विशाल उत्सव, विशाल समारोह, महामहोत्सव ।

उ०—महामहोच्छव करि नै पैसारो कियो छै। राव कल्याणमल अर सरव राजलोक दूलह-दुलहणि देखि दूणा रलियाइत हुआ ।—द वि

महामहोपाध्याय-स० पु० [स०] १ गुरुओ का गुरु, आचार्य ।

२ पडितो, विद्वानो आदि को मिलने वाली एक प्रकार की बड़ी उपाधि ।

महामाणक-स० पु०—एक रत्न विशेष, महामानिक ।

उ०—भावरि भावरि भूप री, नरपति वदन निहार । रजत महा मांणक रतन, आपै सीस उवारि ।—रा रू

महामाइ, महामाई—देखो 'महामाया' (रू भे) (वरदा)

उ०—१ महामाइ माहालइ घणी, भरिया भूत पिसाच । घण पथी पिउ घावरु, वयण न सूझइ वाच ।—मा का प्र

उ०—२ कना रांम कहतैं, रसा रांमण सिर छाई । सभ सेन सालुळै कना मायैं महामाई ।—रा रू

महामात्य—देखो 'महामत्री' ।

उ०—सांमत महासामत लघु सांमत स्रीगरणा वयगरणा धरम्माधिगरणा अमात्य महामात्य सुहासोला ।—व स

महामाय, महामाया-स० स्त्री० [स० महामाया] १ माता, जननी ।

उ०—उठै वाग आसोक रूखां अथाहै । महामाय सीता वसै जैण माहै ।—सू प्र.

२ प्रकृति ।

३ देवी, दुर्गा ।

उ०—जिस वखत स्रीमहाराज महामाया का आराध करि ऊच पोसाक घरि वीर आवध धरि पोरसरौं पूर अदर सै वाहिर पधारै ।—सू प्र.

४ पार्वती । ५ सीता ।

६ अष्ट सिद्धियो में से एक । ७ गगा ।

८ बुद्ध की माता का नाम ।

९ आर्या छन्द का तेरहवा भेद जिसमे १५ गुरु और २७ लघु वर्ण होते हैं । (पिं सि)

१० देखो 'मावलिया' ।

रू० भे०—महमाय, महमाई, महमाय, महमाई, महमाय, महमाया, महामाइ, महामाई, महिमाय, माहमाई, माहमाया ।

महामारी-स० स्त्री० [स०] हेजा, प्लेग आदि भीषण सक्रामक रोग जिसमें बहुत से लोगों की मृत्यु होती है ।

उ०—जिरण समै महामारी रै मडाण नरा री नास देखि कोईक कच्चामग्र रा देणहार आहव रा अमेध सामतर सूचिया घोडै चढ़ण री हूस धारि दारासाह हाथीरूप तखत हू हेठो उतरियो ।—व भा

रू० भे०—मा'मारी, माहमारी ।

महामुद्रा-स० स्त्री० [स० महामुद्रा] योग साधन की एक मुद्रा विशेष ।

महामुनि, महामुनी-स० पु० [स० महामुनि] १ मुनियो मे श्रेष्ठ, अगस्त्य, व्यास आदि ऋषियो का आदर सूचक सम्बोधन ।

२ कपटी व्यक्ति, ठग । (व्यग)

महामुरातव—देखो 'माहिमरातब' (रू भे)

महामुह—देखो 'माहोमाहि' (रू भे)

महामूढ-वि०—अत्यन्त मूर्ख ।

उ०—तो भी महामूढ वारुणी रै वसीभूत अनेक उपद्रव मचाइ ऊवट ही वहियो ।—व भा

महामेव-स० पु०—अष्टगण वर्ग मे से एक ।

महामृत्युंजय-स० पु० [स० महामृत्युजय] १ शिव का एक मत्र ।

२ एक औषधि विशेष ।

महायग्य-स० पु० [स० महायज्ञ] १ बडा यज्ञ ।

२ आर्य सस्कृति के अनुसार नित्य किये जाने वाले पाच प्रकार के यज्ञ—ब्रह्मयज्ञ (सध्योपासना), देवयज्ञ (हवन), पितृ यज्ञ (तर्पण), भूत यज्ञ (वलि) और नृयज्ञ (अतिथि-सत्कार) ।

रू० भे०—महाजग्य ।

महायान-स० पु० [स० महायान] १ बौद्धो के तीन मुख्य सम्प्रदायो मे से एक ।

२ उत्तम, प्रशस्त और श्रेष्ठ मार्ग ।

महायाम-स० पु० [सं० महा-याम्य] विष्णु ।

महायुग-स० पु० [स०] देवताओ का एक युग जो मनुष्यो के चारो युगो का समूह होता है ।

रू० भे०—महाजुग।

महायुध-स० पु० [स० महा आयुध] १ शिव, महादेव।
२ महान् युद्ध, महाभारत।
रू० भे०—महाजुध।

महायोगनाथ-स० पु० [स०] योगियो के भेद विभेद।
उ०—सास्त्र रत्न सागर कूरचाल सरस्वती, महायोगनाथ सिद्ध, प्रत्यक्ष वाचस्पति, इसड विद्वास।—व स

महायोगी-स० पु० [स० महायोगिन्] १ शिव, महादेव।
२ विष्णु। ३ मुर्गा।
४ महान्‌योगी, वडायोगा।
रू० भे०—महाजोगी, माहजोगी, माहयोगी।

महायोगेस्वर-स० पु० [स०] बहुत बडे योगी या ऋषि यथा-पितामह, पुलस्त्य, वसिष्ठ, अंगिरा, ऋतु, कश्यप आदि।
रू० भे०—महाजोगेसर, महाजोगेस्वर।

महारभ-स० पु० [स० महारम्भ] १ किसी कार्य की शुरुआत जो बडे यत्न पूर्वक की गई हो।
उ०—सीता रमा सोय, कीजै सम कोय। भाखो परीश्रम, राघो महारभ।—र ज. प्र
२ देखो 'महरभ' (रू भे)

महारजत-स० पु० [स० महारजत] १ स्वर्ण, कनक। (ह ना. मा)
२ धतूरा। ३ कुसुम पुष्प।
रू० भे०—माहारजत।

महारठ—देखो 'महारास्ट्र' (रू भे)
महारठी—देखो 'महारास्ट्री' (रू भे)

महारणव-स० पु० [स० महार्णव] समुद्र, सागर।
उ०—देस माहि आवर्ता ही ओठी नू सीख देर विपत्ति रा महारणव मे मग्न मागळियांणी पुत्र सहित वेसरो विपरयासकरि कैराऊ ग्राम रा ठाकर रोहड़िया बारहठ आल्हा रै वास जाइ रही।
—व भा
रू० भे०—महणारभ, महण्णव, महरांण, महांण, महाराण, महाराणव, महिणाराम, महिराण, महिराणवर, महिरांमण, महिराउण, महिराठणि, महिरावण, महिरिवांण, महैराण, माहेण।

महारथ-स० पु० [स०] १ बडा रथ।
२ बड़ा योद्धा या भट।

महारथी-स० पु० [स०] १ वह बडा योद्धा जो अकेला दस हजार योद्धाओ से युद्ध करने में समर्थ हो।
उ०—सताग वांग वाग स्वांग सारथी मजै नही। महारथी न उत्तमांग भारथी भजै नही।—ऊ का.
२ नेता, अग्रणी, अगुवा।
रू० भे०—मा'रथी।

महारस-स० पु० [स० महारस] १ परमानन्द, खुशी।
(अ मा., ह ना)
उ०—१ उदह वेळा वहिम महारस दानेत, जौति जळ अचळ सीतळ प्रवळ जांण। कोक जळचर निजर दमगचर पाळ फव, सीत सागर गिरद चद 'खुमाण'।
—महारांणा जगतसिंह सिसोदिया रो गीत
उ०—२ भूप महारस भोगवै, सुरपति रीत सुप्रीत। जोधपुरै की जोधपुर, वरसा सरद वितीत।—रा रू.
२ लोहू, रक्त।
उ०—पड पकवांन प्रवाहा प्रमरथ, साह्रा सेन करै ओह सग। मेंदा कटक महारस ममळै, जीम्हण रांण कियौ रणजग।
—महारांणा खेता रो गीत
३ रसास्वादन।
उ०—गोपि अधर मदन मुख गोविंद। पीयै महारस परसपर।
—ह ना मा
४ स्वादिष्ट पेय पदार्थ जिसको पीने से तृप्ति हो जाती है।
उ०—महारस मीठा पीजिये, अविगत अलख अनत। दादू निरमळ देखियै, सहजै सदा भरत।—दादूवांणी
५ वीर्य, शुक्र।
उ०—मदन महारस देह का राखत ही छीजै। मन हसती आकुस विना, कैसे वस्य कीजै।—श्री हरिरांमदासजी महाराज
६ ऊख। ७ खजूर। ८ जामुन।
९ पारा। १० अभ्रक।
११ ईंगुर। १२ कातिसार लोहा।
१३ सोना मक्खी। १४ रूपा मक्खी।
१५ कांजी। १६ कसेरु।
१७ नशा, मादकता।
उ०—माह महारस मयण सब, अति ऊलहइ अनग। मो मन लागो मारवण, देखण पूगळ द्रग।—ढो मा
रू० भे०—माहारस।

महारसायण-स० पु० [स० महा-रस-अयन] १ वैद्यक के अनुसार वह औषधि जो जरा और व्याधि का नाश करती है।
उ०—एक दिन राजा रै अरय कोई तपस्वीन महारसायण रो निदान एक अपूर्व स्वादु फळ दीधो।—व भा

महारांण—१ देखो 'महारणव' (रू भे)
उ०—गिरद गजां घमसाण, नहचै घर माई नही। मावै किम महाराण, गज दो सौ रै गिरद मे।—केसरीसिंह बारहठ
२ देखो 'महारांणी' (रू भे.)

महाराणी-स० पु० (स्त्री० महाराणी) १ राजा, नरेश।
उ०—ठीक मडोवर परम ठिकाणै, जळी महारांणी जग जांणै।
—रा. रू.

२ मेवाड या उदयपुर के राजा की उपाधि ।

मह०—महाराण, महिराण ।

महारामण—देखो 'महारावण' (रू भे.)

महारांमणो—देखो 'महारावण' (अल्पा , रू भे)

उ०—महारामणो सुभ निसुभ मारया, वळी चंड मुडादि तू ही विदारया ।—मे म

महारा—१ देखो 'मं'रा' (रू भे)

२ देखो 'मेरा' (रू भे)

महाराई—देखो 'महाराज' (रू भे)

उ०—विंद्रावन माहि हो, महाराई वेनु चारी । रुखमणि रथ बइठ्ठी हो, महाराज एक सरी ।—रुखमणि मगळ

महाराज-स० पु० [स० महा+राज] (स्त्री० महारानी) १ राजाओ में श्रेष्ठ राजा, वडा राजा ।

उ०—तदवार अस पुरसा तणी, आय वणी जग ऊपरां । महाराज तणे छळ मारवा, धारी लाज मुरद्धरा ।—रा रू

२ ब्राह्मण, गुरु, साधु, सन्यासी या प्रतिष्ठित व्यक्ति के लिए आदर सूचक सम्बोधन ।

उ०—१ हियें वसाई हरख सू, मधुसूदन महाराज । नर जिण सू ललचै नहीं, सो त्रिभुवण सिरताज ।—बां दा

उ०—२ नाथजी द्वारा मे नैणसिहजी रो जमाई उदैपुर सू आयो । नैणसिहजी कह्यो—महाराज या नें समझावो । जद स्वामीजी समझावण लागा ।—भि. द्र

३ ब्राह्मण ।

४ जोधपुर, बीकानेर आदि के महाराजाओ के छोटे भाई या उसके वश के लिए प्रयोग किया जाने वाला सम्मान सूचक शब्द ।

रू० भे०—म'राज, महराज, महाराई, महाराय, माराज, मा'राज, माहराज, माहाराज ।

महाराजा-स० पु० [स० महा राज] (स्त्री० महारांनी) १ राजाओ मे श्रेष्ठ राजा, वड़ा राजा ।

उ०—सुर घर छत्र 'जसो' महाराजा । सुर पुर गयो लिवा ब्रद साजा ।—रा रू

२ राजाओ मे श्रेष्ठ राजा या बडे राजा के लिए आदर सूचक शब्द ।

रू० भे०—महराजा, माराजा, मा'राजा, माहाराजा ।

महाराजाधिराज-सं० पु०—१ अनेक राजाओ मे श्रेष्ठ राजा ।

उ०—कुवरपदे थका महाराजाधिराज महाराजा स्री रायसिघजी ने साथे लै पधारिया ।—द वि

२ ब्रिटिश सरकार द्वारा राजाओ को दी जाने वाली उपाधि ।

रू० भे०—महाधिराज, महाधीराज, माहाराजाधिराज ।

महारांणव—देखो 'महारणव' (रू भे)

महारात, महारात्रि-स०स्त्री० [स० महारात्रि] १ महाप्रलय की रात्रि ।

२ कालरात्रि ।

३ आधी रात वीतने पर दो महूर्त्त का समय । (तांत्रिक)

महाराय—देखो 'महाराजा' (रू. भे)

उ०—कहे मोतें तो खवर न काय, फुरमायो महाराय सुकोमल साथ । खाल उतारो देहनी ए ।—जयवाणी

महाराव-स० पु० [सं० महाराट्] वूदी, कोटा, सिरोही के राजाओ की उपाधि विशेष ।

उ०—ईम कहि गढ़ वारणै, सचरीयो महाराव । खुरसाणी खोटे मनै देखें दाव उपाव ।—प च चौ

महारावण-स० पु०—एक हजार मुख व दो हजार हाथो वाला रावण ।

रू० भे०—महरामण, महरावण, महारामण । (परौणिक)

अल्पा०—महारांमणो ।

महारावत-स० पु० [स० महाराज+पुत्र] महा योद्धा ।

उ०—समि होदा जग सजै, महारावतां मदगळ । हुकम हुवा हाजरां मसत आणिया महावळ ।—सू प्र

महारावळ-स० पु०—जैसलमेर, डूगरपुर, वासवाडा आदि राज्यो के राजाओ की उपाधि ।

महाराश्टर, महाराश्ट्र-स० पु० [स० महाराष्ट्र] १ भारत का एक प्रान्त जो दक्षिण की ओर है तथा जिसकी राजधानी वम्बई है । महाराष्ट्र । (मा म)

२ वहुत वडा राष्ट्र या देश ।

रू० भे०—महारठ ।

महाराश्ट्री-वि० [स० महा-राष्ट्री] १ महाराष्ट्र का, महाराष्ट्र सम्बन्धी । २ महाराष्ट्र का निवासी ।

स० स्त्री०—१ महाराष्ट्र की भाषा, मराठी ।

रू० भे०—महारठी ।

महारिख—देखो 'महरसि' (रू भे)

उ०—होदां मझि लोह, करै करि हाक । महारिख देखि, हुवै मुसताक ।—सू प्र

महारिण-स० पु० [सं० महा+रण] वडा भारी युद्ध, सग्राम, समर, महाभारत ।

उ०—१ दुगम जवन घडि कांमणि दोळी, हुय खेलू गेहरियां होली । खग झट वसत महारिण खेलू, झट खग सुजळ अनिरता झेलू ।

—सू प्र.

उ०—२ जागि प्रेत जागिया, महारिण काळ मसांणी ।—सू प्र

महारिस, महारिसि, महारीसी—देखो 'महरसि' (रू भे)

उ०—पच पडवि वनतरि विमासिउ, तेरिमू वरस केमि गमेसिउं । वुद्धि नारद महारिसि आपी, मध्यदेस रहियो तुम्हि व्यापी ।

—सालिसूरि

महारी—देखो 'म्हारी' (रू. भे)

उ०—राय पसेणी हो ग्याता भगवती, जीवाभिगम नइ माझ । ए सूत्र मानइ हो प्रतिमा मानै नही, महारी मां नइ वांझ ।—स कु

महारुद्र, महारुद्र–स० पु० [स०] महादेव ।

उ०—१ कर पाव केक, उडै घू अनेक । करै ले कराळा, महारुद्र माळा ।—सू प्र

उ०—२ गोड राजा अरजुनसिंघ वैरियां रा थाट विगोळि वैडा गजां रै चाचर चद्रहास चलाइ सैंकडा सूरां नू साथी करि महारुद्र री माळा में आपरा मुड रौ मेरु चढाइ रुह थको मी घारा मे तिल-तिल पळचरां री पांती पुद्गळन राखि इस्टलोक पूगियौ ।—व भा

महारूप–स० पु० [स०] शिवजी का एक नामान्तर ।

२ महा सौन्दर्य, महान सुदरता ।

उ०—करै काकणा झळक्कै चूड, कूडळ झळक्कै कानै । महारूप दीपे कठ मोताहळा माळ । हसती खेलती देवी झूलती चिसूळ हाथ हाथै भलो मलो मलो भणी लील मैं भुवाळ ।—मा वचनिका

महारोग–स० पु०—असाध्य रोग, भयकर रोग ।

उ०—दांन सरीखो दूसरी, ओखद नह अदभूत । हेक थकी सारा हरै, महारोग मजूत ।—बां दा

महारोगी–वि०—असाध्य रोग का रोगी, जिसके महारोग हो ।

महारोरव, महारौरव–स० पु० [स० महारौरव] इक्कीस प्रधान नरकों मे से एक का नाम ।

२ भयकर दरिद्रता, आपात्कालीन अवस्था ।

उ०—केहीज लोभ राखिया तणा पातसाह उहकाळै । केहीज रक राखिया, महारोरवे दुकाळै ।—नैणसी

महारौ—देखो 'म्हारौ' (रू भे)

उ०—तद इण कही हमारु महारौ वांम सूरजगढ हू आयौ है ।
—र हमीर

(स्त्री० महारी)

महालक्ष्मी, महालक्षमी–स० स्त्री० [स० महा-लक्ष्मी] १ विष्णु की अर्द्धांगिनी लक्ष्मी, देवी ।

२ लक्ष्मी देवी की एक मूर्ति जिसकी दीपावली को पूजा की जाती है । ३ धन की अधिष्ठात्री देवी ।

४ नारायण की एक शक्ति । (पौराणिक)

५ तीन रगण का एक वर्ण वृत्त ।

रू० भे०—महालखमी, महालच्छी, महालछमी, महालछी, महा-लिछमी ।

मह०—महालख, मा'लखमी, मा'लछमी, मा'लिछमी ।

महालक्ष्मीव्रत–स० पु०—आश्विन कृष्णा अष्टमी को किया जाने वाला एक व्रत । (श्रीमाली ब्राह्मण)

महालखमी, महालच्छी—देखो 'महालक्ष्मी' (रू भे)

उ०—ले नच्छी मरहट्ट री, गूजर खड अधीस । आय महालच्छी चरण, सीस नमायो सीस ।—बां दा

महालख—देखो 'महालक्ष्मी' (मह . रू भे)

उ०—ले वनवास हराय महालख कप हैंजम अण पार कस । काटां हिव झालै किरमाळा, दस सिरवाळां सीसदस ।—र रू

महालछमी, महालछी—देखो 'महालक्ष्मी' (रू भे)

उ०—महालछी रूपक मरम, तवै रगण पय तीन । विघन विदा-रण वर नवै अनत्तम तगत आधीन ।—पि प्र

महालिंग–स० पु० [स० महा-लिंग] १ शिव, महादेव ।

२ शिवलिंग की प्रतिमा ।

महालिछमी—देखो 'महालक्ष्मी' (रू भे)

उ०—महालिछमी पद महीं, तीन रगण दरसत । दुजबर करणह सगण दखि, सारगिका लसत ।—र ज प्र.

महालोक—देखो 'महरलोक' (रू भे)

महावड–स० पु० [स० महावट] विशाल वट वृक्ष, बरगद का बडा पेड ।

महावत–स० पु० [स० महा-मात्र] हाथी को चलाने वाला, फीलवान ।

उ०—१ हस्ती छूटा मन फिरै, क्यो ही बध्या न जाइ । बहुत महावत पच गयै, दादू कछू न बसाइ ।—दादूवाणी

उ०—२ अमर मत्र उर धरै, विरुद ऊचरै महावत । सक साह सपणै, वयण न भणै असुहावत ।—रा. रू

रू० भे०—महाउत, मावत, मावथ, माहवत, माहावत, माहुत माहुति ।

महावन–स० पु० [स०] १ बडा जगल, सघन वन ।

उ०—मीना दध सिखा मेघ भुवगा सोरभमूळ, वारण नू वरतण पित महावन ।—आसो बारहठ

स० स्त्री० [स० महा+अवन] २ गाय ।

महावर–स० पु० [स० महा-वर्ण] सौभाग्यवती स्त्रियो के पैरों मे लगाने का लाख से बनाया जाने वाला एक प्रकार का लाल रग ।

उ०—मद मृगमद तावूल महावर, वन घनसार घिरत वैसानर । दूरत चमर उतरत आरत्ती, स्रीकरनी जय जयति सकत्ती ।—मे म

रू० भे०—महाउर, मावर, मा'वर ।

महावरेदार—देखो 'मुहावरेदार' (रू भे)

महावरौ–स० पु०—१ अभ्यास ।

२ आदत । ३ व्यसन, लत ।

महावाक्य–स० पु० [स०] १ सोऽह शब्द ।

२ कोई बडा या महत्वपूर्ण वाक्य या मत्र ।

३ दान देते समय कहा जाने वाला शब्द ।

महावायुदोस–स० पु० [स० महा-वायुदोष] एक वात-व्याधि विशेष ।

उ०—ज्वर, सनिपात प्रमेह आमवात वायु महावायुदोस खाधा-विकार, फोडि, गुलमक्षयन ।—व स

महावारुणी–स० पु० [स०] ज्योतिष के अनुसार एक योग जो चैत्र कृष्णा त्रयोदशी को शतभिषा नक्षत्र व शनिवार होने पर, पडता है ।

वि० वि०—इस योग मे गगा स्नान का बडा महत्व है ।

रू० भे०—मा'वारुणी, माहवारुणी ।

महाविकळ-वि० [स० महा-विकल] १ अत्यन्त दुखी, त्रस्त ।
२ मूर्ख, मूढ । (ह ना मा)

महाविक्रम-स० पु० [स०] सिंह, शेर ।

महाविख—देखो महाविस' (रू मे)

महाविगन्यानि-वि०—घूंघरुओ से ।
उ०—कठि कनक मय पदकडी, महाविगन्यानि जडी, नाग पोलरी अनि निगोवरी, प्रमुख खीटली सहित घूघरी ।—व स

महाविदे, महाविदेह-स० पु०—भारत वर्ष के समान ही एक खण्ड जो सुमेरुपर्वत के पूर्व और पश्चिम के आस पास स्थित है । (जैन)
उ०—धन कृतारथ ते नरनारि, जे वरतइ जिण धरम मझारि । समोसरणि प्रभ करइ वखाण, तीहणी प्रससा महाविदे जाण ।
—वास्तिग

वि०—१ विरक्त, निर्लिप्त ।
उ०—जासी स्वारथ सिद्ध विमाणौ, चवि महाविदेह वखाणौजी । मनुस हुसी बहु चतुर सुजाणौ, दढ़पइण्णा नो परिमाणौ जी ।
—जयवाणी

रू० भे०—माहविदेह ।

महाविद्या-स० स्त्री० [स०] १ तन्त्र शास्त्रानुसार दस देवियां—काली, तारा, पोडशी, भुवनेश्वरी, भैरवी, छिन्नमस्ता, धूमावती, बगलामुखी, मातगी और कमलात्मिका । ये सब व इनमे से प्रत्येक ।
२ दुर्गा । ३ गगा ।

महाविस-स० पु० [स० महा+विष] १ महाविषैला सर्प जिसके खाते ही प्राणी मर जाता है ।
२ प्राण घातक विष ।
रू० भे०—महाविख, महाविस, महाविख, महाविस ।

महाविसुव-स० पु० [स० महा-विषुव] वह दिन या समय जब सूर्य मीन मे मेष राशि में जाता है, और रात-दिन बराबर होते हैं । मेष सक्रान्ति या चैत्र की सक्रान्ति ।

महावीही महावीथी-स०स्त्री० [स० महा-वीथी] बडा मार्ग, बडी गली ।

महावीर-स० पु० [स०] १ हनुमान, बजरग ।
उ०—हाजी रामजी मग मे मिळ्या महावीर, सजन सुगरीवराजी म्हारा राम ।—गी रा
२ विष्णु । ३ गरुड ।
४ बाज पक्षी । ५ सिंह शेर ।
६ सफेद रग का घोडा ।
७ इन्द्र का वज्र ।
८ योद्धा, वीर, भट्ट ।
उ०—महावीर महासूर, तेज सरसावै । मडण ज्यां जोस, वस मडण कहावै ।—रा रू
९ जैनियों के २४ वें तीर्थंकर ।
उ०—आमलकप्पा नगरिये सम वसरया महावीर । सूरयाम देव तिहा आवियो, नाटक करवा तीर ।—जयवाणी

वि०—१ शक्तिशाली, बलवान ।
उ०—मडोवर के बीच निवास । जहा श्रीमहाराज के खडग जैतकारी काळै गोरे महावीरू भैरू का वास ।—सू प्र
२ साहसी, बडा बहादुर ।
रू० भे०—महवीर, महावीर, माहवीर ।

महावीरजयती-स० स्त्री०—जैनियो द्वारा, चैत्रशुक्ला त्रयोदशी को मनाया जाने वाला उत्सव ।

महावेग-स० पु० [स०] १ गरुड ।
२ वानर । ३ महादेव ।
४ बडी तेज चाल । ५ वज्र ।
रू० भे०—महावेग, महावेग ।

महावेध, महावेधक-स० पु०—बडा जग, युद्ध, सग्राम ।
उ०—१ कीधो हद विखो धरा रै कारण, महावेध मडाणौ । देमा चावौ कियो देवडा, भूरा वाध 'भटाणौ' ।—नाथूसिंह देवडा रो गीत
उ०—२ वाजिया वेढक महावेधक, सार सावळ सोहडा ।—रा रू
रू० भे०—माहवेध ।

महावेल-स० पु० [स० महाविल] बहुत बडा, विशाल, दीर्घाकार ।
उ०—तठै ऐक महावेल खाडी । तकण री पाखती सेखावनर असै नाम नगर रै वखै आय नीसरियो । तठै महावेल खाडी रै कनारै जळ री हौलोलियो, सदरै लेख महावीर मोटो मछ आय पडियो ।
—कल्याणसिंह वाढेल नगराजोत री वात

महावैद्य-स० पु०—बडा वैद्य ।
उ०—पास्चात्य पक्षे तार्किक ज्योतिसी वैद्य महावैद्य अस्ववैद्य गजवैद्य मान्त्रिकादि पडित महापडित — ।—व स.

महावैध्रति-स० पु०—महापात योग का एक भेद विशेष ।

महावैध्रतियोग—विष्कम्भ आदि सत्ताईस योगो मे से एक अन्तिम अर्थात् सत्ताईसवा योग विशेष ।

महाव्यतिपात, महाव्यतीपात-स० पु०—महापात योग का एक भेद विशेष ।
वि० वि०—महोत्पात, अपयान, विष्कम्भ आदि सत्ताईस योगो मे से एक सत्रहवां योग विशेष । श्रवण, अश्विनी, धनिष्ठा, आर्द्रा, नाग दैवत, मस्तक नक्षत्रयुक्त रविवार को यदि अमावस्या तिथि हो तो वह व्यतीपात योग माना गया है ।

महाव्याधि, महाव्याधी-स० स्त्री०—१ दुस्साध्य रोग, भयकर बीमारी ।
२ कठिन सकट ।
रू० भे०—माहव्याधि, माहव्याधी ।

महाव्रत-स० पु० [स०] १ कठिन या दुसाध्यव्रत, भारी सकल्प ।
उ०—सव्रत जळी झळहळ त्रप सगै, अस्ट निकट गायण उछरगै । असह खवर जोधाणै आयी, सती महाव्रत लिया सुणायी ।—रा. रू
२ आश्विन की दुर्गा पूजा या नवरात्र ।

३ वह व्रत जो बारह वर्ष तक जारी रहे।

४ अहिंसा, सत्य, दत्त, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह इन पाच व्रतों का पूर्ण रूप मे पालन करने को महाव्रत कहते हैं। (जैन)

५ मतान्तर से उपर्युक्त पाच व्रत में से कोई एक भी महाव्रत कहलाता है। (जैन)

उ०—१ किण ही पूछ्यो भीखणजी थे यू कहो एक महाव्रत भागा पाचूई भागे सो यू माथै पांचू किम भागे ? जद स्वामीजी बोल्या—पापरो उदै हुवै जब ससार मे इ जीव दुख भोगवै। जिम एक भिक्षाचर नें शहर में फिरता पाच रोटी रौ ग्राटो मिल्यो। रोटी करणै लागें। एक तो रोटी उतारनै चूला लारे मेली। एक रोटी तवै सिकै। एक रोटी खीरा सिकै। एक रोटी रो लोयो हाथ मे अनै एक रोटी रौ ग्राटो कठोती मे। एक कुत्तो ग्रायो सो कठोती मे एक रोटी रौ ग्राटो तो ले गयो। तिण कुत्ता रै लारै भिख्यारी न्हाठो। हैठै पडियो सो हाथ माहलो लोयो धूळ मे मिल गयो। पाछो ग्राय देखें तौ चूला लारै रोटी पडी हुती ते मिनकी ले गइ। तवेरी तवे बल गइ। खीरा री खीरा बल गइ। इण रीते एक महाव्रत भागा पांचु भाग जावै।—भि द्र

उ०—२ ज्यू लेवा री वेळा तो पाच महाव्रत ग्रादरघा ग्रनें पालवा री वेळां पूरा पाळै नहीं तिण रौ पिण इह लोक परलोक विगडै। —भि द्र

उ०—३ पच महाव्रत ल्याई प्रभु पासै, दे त्रिपदी जिनवर मनरग। स्रीगोतम गणधर तिहा गूथ्या, पूर व चउद दुवालस ग्रग।—स कु

६ देश विरति (ग्राशिक रूप से प्राणाति पातादि पांचो पापो से हटना) श्रावक की ग्रपेक्षा महान गुणवान साधु मुनिराज के सर्व विरति (पूर्ण रूप से प्राणाति पातादि पाचो पापो से हटना) रूप-व्रत को महाव्रत कहते हैं। (जैन)

महाव्रतधारी-वि०—कठिन व्रत करने वाला, वडी प्रतिज्ञा करने वाला।

उ०—मागळियो सुदर मिणधारी, धुर भगवान महाव्रतधारी। —रा रू

महाव्रती-स० पु० [स० महा+व्रतिन्] १ शिव, महादेव।

२ सन्यासी। ३ भक्त।

४ वह जिसने महाव्रत लिया हो।

रू० भे०—माहव्रती।

महासकट-स० पु०—घोर विपत्ती, ग्रत्यधिक दुख।

उ०—ग्रब ग्रापरै ऊपर महासकट मांनि एक दीधो तो परमेस्वर दूजो भी देसी ही परतु ग्रापदा में दिल्लीस भी इसो व्याकुळ थियो। —व. भा

महासख-स० पु० [सं० महाशख] १ कुवेर की नौ निधियों मे से एक।

२ बहुत बडा शख। ३ ललाट।

४ कनपटी की हड्डी। ५ मनुष्य की ठठरी।

६ एक प्रकार का सर्प।

७ सौ शख की एक बडी सख्या।

वि०—मूर्ख।

उ०—महासख री मित्र, सेज नही सोवा जाऊ। पोरीसौ मुख पेख, घणी दोरी घवराऊ।—ऊ. का

रू० भे०—माहसख।

महासईय—देखो 'महासती' (रू भे)

उ०—पूछइ राजा कहि ससि वयणि, इणि वणि वसीइ कारणि कमणि। बोलइ गग महासईय।—सालि भद्रसूरि

महासक्ति, महसगत, महासगति, महासगती-स० स्त्री० [स० महा-शक्ति]

१ सृष्टि की रचना करने वाली मूल शक्ति।

२ प्रकृति। ३ दुर्गा।

उ०—वेदै-रै वडो द्रव्य। सयणी वेटी। महासक्ति योग माया। तिका सिकार रमै। म्रग मारै।—सयणी चारणी री वात

४ कोई वडी हस्ती। ५ शृगाली।

६ 'भैरवी' नामक पक्षी जिसके शकुन लिए जाते हैं, 'रूपारेल' नामक पक्षी जिसके भी शकुन लिए जाते हैं।

स० पु०—७ शिव। ८ स्वामी कार्त्तिकेय।

रू० भे०—महासत्ति, मा'सकति, मा'सकृति, मा'सगति, माहसकति, माहसगति।

महासतक-स० पु०—एक नरवर।

उ०—महासतक नी नारि रेवती, नरक गई निरधार।—ध व ग्र

महासति—देखो 'महासती' (रू भे)

महासतियां-स० स्त्री० (व व) राजाग्रो व जागीरदारो की श्मशान भूमि। (मेवाड)

महासती-स० स्त्री० [स०] पतिव्रता स्त्री, साध्वी स्त्री।

उ०—महासती सू एह ग्रकारज, उत्तम नै नही छाजै। जो ग्रति मीठो तो पिण मुनिवर, ग्रभ्रज कहो किम खाजै।—जयवाणी

रू० भे०—महासईय, महासति, महासत्ति, माहासती।

महासत्ति—१ देखो 'महासक्ति' (रू भे)

उ०—डावी महासत्ति फं करइ, डावा सारस स्थघ सियाळ। —वी दे

२ देखो महासती' (रू भे)

महासत्य-स० पु० [स०] यमराज।

महासद, महासद्द-वि०—१ ताजा मास, तुरन्त कटा हुग्रा मास।

उ०—तन ग्रीध महासद मन ग्रपत्त, पूरिया रहे निज सगत पत्र। जवना ससेळ दळ तुरग जुग। तिण वार मिळै नह टळै तुग। —रा रू

२ तुमुल नाद।

उ०—वैताल वीर मिळिया विहद्द, सीकोतरि साकणि महासद्द। मिळ समळ ग्रीध ग्रामख भक्ख, जवक्क रींछ वड्डाक जक्ख। —गु रू व

महासभ्य-स० पु०—राज्य सभा की एक उपाधि विशेष ।
उ०—सांमत लघुसामत ग्रमात्य सभ्य महासभ्य प्रधान प्रमाणीक ।—व स
महासय्या-स० स्त्री० [स० महा शय्या] १ राज सिंहासन ।
२ राजाम्रो की शय्या ।
रू० भे०—माहसया ।
महासर-सं० पु०—१ बडा तालाब ।
२ समुद्र, सागर । (ह ना मा)
महासरग-स पु० [सं० महा सर्ग] महाप्रलय के उपरान्त, सृष्टि की पुन होने वाली रचना ।
रू० भे०—माहसरग ।
महासरवर-स० पु० [स०] बडा तालाब ।
उ०—इणि भाति सू च्यारि राणी त्रिण्हि खवासि द्रव्व नाळेर उछाळि वळण चाली । चचळा चढि महासरवर री पाळि ग्राइ ऊभी रही ।—वचनिका
महासाणी—देखो 'मसाहणी' (रू भे)
महासातपन-स० पु० [स०] एक व्रत विशेष जिसमे पाच दिन तक क्रमश पंचगव्य, छठे दिन कुशक जल पीकर सातवें दिन उपवास किया जाता है ।
रू० भे०—माहसांतपन ।
महासांमत-स० पु० [स० महासामन्त] राज्य सभा की एक उपाधि ।
उ०—राय राणा मडलिक ग्राखडलीक सांमत महासामत लघु सांमत, स्रीगरण ।—व स.
महासागर-स० पु०—१ कोई बहुत बडा समुद्र ।
२ ससार, भव ।
महासास—देखो 'महास्वास' (रू भे)
महासिंग, महासिंघ—देखो 'महासिंह' (रू भे)
महासिंधु-स० पु०—महासागर ।
रू० भे०—माहासघ ।
महासिंह-स० पु० [स०] दुर्गा का वाहन, सिंह ।
रू० भे०—महासिंग, महासिंघ, माहसिंघ ।
महासिंहविक्रीडित-स० पु० यौ०—एक प्रकार का व्रत ।
उ०—कनकावलि रत्नावलि मुक्तावलि सिंहविक्रीडित, महासिंहविक्रीडित गुण रत्न सवत्सर भद्र महाभद्र भद्रोत्तर सरवतोभद्र ।
—व स
महासिणांण—देखो 'महास्नान' (रू भे)
महासिव-स० पु० [स० महा-शिव] शिव, महादेव ।
रू० भे०—माहसिव ।
महासिवरात, महासिवरात्रि-स० स्त्री० [स० महाशिवरात्रि] फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्थी की रात ।
महासुक्क, महासुक-स० पु०—१ दिगवर (जैन) मतानुसार दसवें स्वर्ग का नाम ।
२ श्वेताम्बर जैन मतानुसार सातवें स्वर्ग का नाम ।
महासूर-स० पु० [स० महाशूर] १ हनुमान, महावीर ।
२ ग्रर्जुन । (ग्रा मा)
रू० भे०—माहसूर ।
३ महान् योद्धा, वीर, पराक्रमी, बहादुर ।
उ०—१ सज महासूर, समहर सकाज । लग घणी भिड, भुजा साम लाज ।—शि रू
उ०—२ सुणो ठाकुरा सिरदारा, ग्राय वणी महासूरां की वारां ।
—रा रू.
महासेत-स० स्त्री० [स० महाश्वेता] १ सरस्वती, शारदा ।
२ दुर्गा, भवानी ।
रू० भे०—महसेत ।
महासेन-स० पु० [स० महासेन] १ स्वामी कार्तिकेय ।
(ना मा, डि को)
२ ऐरावत क्षेत्र के एक भावी जिन देव ।
३ राजा श्रेणिक का एक पुत्र जिस ने भगवान महावीर के पास दीक्षा ली थी ।
४ एक यादव ।
रू० भे०—माहसेन ।
महास्नांन-स० पु० [स० महास्नान] दुष्कर्म निवारणार्थ ग्रात्म शुद्धि के लिए किया जाने वाला ग्राध्यात्मिक स्नान । (जैन)
रू० भे०—महासिणाण ।
महास्रमी-वि०—गृहस्थी ।
उ०—विसाळ चट्टसाळ बीच, वेदकी धुनी नही । महास्रमी ग्रिहास्रमी, गिरास्रमी गुनी नही ।—ऊ का
महास्वास-स० पु० [स० महाश्वास] १ दमे का रोग ।
२ मृत्यु के कुछ पहले चलने वाला श्वास ।
रू० भे०—महासास, माहसास ।
महाहवि, महाहव्य-स० पु० [स० महाहव] युद्ध, संग्राम ।
(ग्र मा, ह ना मा)
उ०—रथग जास्ट सहस्र जउ निरजणइ, दस सहस्र महाभट जो हणइ । फुरसराम महाहवि निरजणिउ, इसिउ भीस्म पितामह मइ थुणिउ ।—सालि सूरि
महि—देखो 'मही' (रू भे) (डि ना मा, ह नां मा)
उ०—१ मेघ विना महि तणा ग्रग कुण सरव उजाळै । विण गगा नय वार कमण वाधै ऊनाळै ।—रा रू
उ०—२ महि भरै डड वूदी मळ, दळ तप तेज दुझाळरै । सामण पसाव कीधा सतरि, रावजोध रिणमाल रै ।—रा रू
२ देखो 'मद' (रू भे)
३ देखो 'महा' (रू भे)
महिग्रळ—देखो 'महीतळ' (रू भे)

उ०—सपत दीप नवखड सपत दधि, जळ थळ महिम्रळ। एक भाग
टूजरत्त मारि लीयौ महि मडळ।—गु रू व

महिम्रा—स० स्त्री० [स० महिका] कोहरा, पाला।

महिम्रार—१ देखो 'महियारा' (रू भे)
२ देखो 'महिम्रारा' (मह, रू भे.)

महिम्रारा—स० स्त्री०—दूध दही बेचने का व्यवसाय करने वाली जाति विशेष।
रू० भे०—महियार, महीयार।

महिम्रारो—स०पु० (स्त्री० महिम्रारी) दही या छाछ बेचने वाला, ग्वाला।
उ०—१ मारग माहि मिला महिम्रारा, तिण गोरस विहरायउ रे।
—स कु
उ०—२ रमता करता रास सांझ परभात सदाई। मांहे महिम्रारिया दांण मागता दिनाई।—पि प्र
रू० भे०—महियारौ, महीम्रारौ, महीयारौ।
अल्पा०—महियारडौ।
मह०—महिम्रार।

महिक—देखो 'महक' (रू भे)
उ०—कसतूरी ऊपट्ट महिक मोरभ मळैतर। कमकम्मौ कपूर अनै केसर किमनागर।—गु रू व

महिख—देखो 'महिस' (रू भे)
उ०—१ सुभ निसुभ चड मुडासुर, दुसह सुग दुखदाई। दानव महिख रक्त बीजादिक, मार लिया महमाई।—मे म
उ०—२ ग्रारुण करणि रूप अविकारी, चरै महिख गूद गिरि धारी। मैंदा घ्रत मेवा मिमरीरा, सौ महखियां भखै नित सीरा।
—सू प्र
उ०—३ महाराजा दळ मेळ पौळ जोधाण पधारै, महिख पच मैमत्त सगत पोखी खग धारै।—रा रू

महिखघ्नगयाटौ—स० पु० यौ०—एक प्रकार की तलवार विशेष।

महिखजीह—स० स्त्री० [स० महिष+जिह्वा] कटार।

महिखधुज—देखो 'महिसधुज' (रू भे) (डिं को)

महिखाक—स० पु० [स० महिषाक्ष] गुग्गुल नामक पदार्थ।

महिखासुर—देखो 'महिसासुर' (रू भे)
उ०—हत्यौ महारावण तेण हकारि, वध्यौ महिखासुर वीर वकारि।—मे म
रू० भे०—महिखासुर।

महिखी—देखो 'महिसी' (रू भे)
उ०—डोटा कयलोटा जूटण नै घुमटै। महिखी महिसी ज्यू डावर मे रमटै —ऊ का

महिगु—देखो 'महिग' (रू भे) (उ र)

महिग्ग महिग्य—देखो 'महिग' (रू भे)

उ०—१ वलिस्ट धूम्र भक्ष की तुही विपक्षनी। भई तुही महिख्ख रक्तबीज भक्षनी।—मे. म.
उ०—२ यतै हनुमत कहि यह वत्त, भवै धन मेच्छ भयं उन्मत्त। गह्यौ कर बान उदग्गनि हत्थ, महिख्ख समान उनत्थहि नत्थ।
—ला रा.

महिजा—देखो 'महीजा' (रू भे) (अ. मा)

महिजीत, महिजीद—देखो 'मसजिद' (रू भे)
उ०—लोक सगला कन्है जीजीया लीजियै, देहरा ठाम महिजीद दीसै।—घ व ग्र.

महिड्ढि—स० स्त्री०—महर्द्धि, महाऋद्धि। (जैन)

महिणारभ—देखो 'महारणव' (रू भे)
उ०—इळ कारण ग्रारभ कियौ, पूरौ कियौ पारभ। दक्खणियां दळ से मिळै, मल्यण महिणारभ।—गु. रू व

महिणौ—देखो 'महिनौ' (रू भे)

महित—वि० [स०] प्रतिष्ठावान, कीर्तिवान।
उ०—विप्पराज इण कुळ खिच्ची पति, महित हुवौ हरि भक्त महामति।—व. भा
स० पु० [स०] शिवजी का त्रिशूल।

महितळ—देखो 'महीतळ' (रू भे)
उ०—महितळ सगजाई, मेलै थळ मेली। लेली महिमामत महिला दळ लेली।—ऊ. का.

महिताव—देखो 'महताव' (रू भे)
उ०—फेर हुकम हुवै छै। महिताबा रो चादणौ हुवै। सू महिताबां पचास सब सांवठी ही लागी छै।—रा सा स

महिथळ—देखो 'महीतळ' (रू. भे.)
उ०—पतियारो ग्रावै प्रसघ, राड रहे सो राज। सोढी थांने साधसी, महिथळ ग्रवर समाज।—पा. प्र

महिदउरउ—एक वस्त्र विशेष।
उ०—नागवटा सारनाला खासटां अगिहिल कबीच सजरांमा मदवी फूलपगरीय सारीपी तिलवास गरठभसूत्र राजिउ वयराजिउ महिदउरउ तीतग्रागिउ ••।—व. स

महिदेव—देखो 'महीदेव' (रू भे)

महिधर—देखो 'महीधर' (रू भे)

महिनाथ—देखो 'महीनाथ' (रू भे)
उ०—ग्रनिवघ चमू वणि चतुर ग्रग। महिनाथ हुकम मुल्लिय मतग। गज स्रवत दाण मद जळद गाज, सोभति चमक नग कनक साज।—रा रू

महिनौ—देखो 'महीनौ' (रू भे)
उ०—सखी री अब मिगसर महिनौ ग्रायौ। सब ही कौ नेह सवायौ।—घ व ग्र
रू० भे०—मिंन्नौ।

महिप—देखो महीप' (रू भे) (डिं को.)
महिपड—देखो 'महिपुड' (रू. भे)
महिपत, महिपति, महिपती, महिपत्ति, महिपत्ती—देखो 'महीपति' (रू भे)
उ०—१ जोडे पांण महिपत जपै, को रिख आग्या कीजै। आग्या एक सुणो श्रप आगम, सग उमै सुत दीजै।—र रू
उ०—२ धारै श्रणी सरीर करै छित। महिपति श्रभिमुनि हाथळ हे श्रित।—सू प्र
उ०—३ रहियौ हेकण रूप, भव पैलां नै भाखरा। भडा मडजां भूप, महिपती कहिए 'मोतिया'।—रायसिंह सादू
उ०—४ श्राणदपुर श्ररि करण श्रकाजा, मिळियौ साह सरस महाराजा। नमि फागुण उज्जळ नरपत्ती, मेछ्रा पति दीठो महिपत्ती।—रा. रू.

महिपाळ—देखो 'महीपाळ' (रू भे)
महिपुड, महिपुडि—पृथ्वी, भूमि।
उ०—१ माया रहै न मन्न, कर भेळी बांटी करो। कहियो भोज करन्न, महिपुड सारे मोतिया।—रायसिंह सादू
उ०—२ जग छत्रदळा विघूसै चद जुडि। महिपुडि भार गया श्रहि फुण मुडि।—सू प्र
रू० भे०—महिपड।

महिप्पति—देखो महीपति' (रू भे)
महिबूब—देखो 'महबूब' (रू भे)
उ०—सरसी सेजां श्रर सिरा सुधर सरेहली खूब। आसमान चद्रावली श्रनग धजा महिबूब।—श्रज्ञात

महिमडळ, महिमडळी-सं० पु० यौ० [स० मही+मडल] भूमण्डल, पृथ्वी।
उ०—उण पुळ श्रमरापुर कापुर उर श्रायौ। मुरधर मडळ तळ महिमडळ मायौ।—ऊ का
रू० भे०—महमडल।

महिम—१ देखो महिमा' (रू भे)
उ०—आगरइ सहरि नागोर श्ररु मेड़तइ। महिम लाहोर गुजरात माहइ।—स कु
२ देखो 'मुहिम' (रू भे)

महिमट्ट-सं० पु०—गर्व, श्रभिमान।
उ०—गज गुडीय पाखर वेगि वाहइ, मिळी मोगर थट्ट। ए सीस मणि ऊतरिस्यइ, किम मेलहस्या महिमट्ट।—रुखमणी मगळ

महिमद—देखो 'मैंमद' (रू भे)
उ०—म्हारै माथा नै महिमद ल्याव, म्हारा हजा याह्री रेवोजी।—लो गी

महिमन—देखो 'महिम्न' (रू. भे)
महिमानी—देखो 'मैं'मानी' (रू भे)
उ०—१ तठा उपरांति करि नै राजान सिलामति पनरह दिन ताई जान राखि घणी मनहारि करि भांतिगारी भगति जुगति महिमानी करि सतरह भ्रख भोजन रा वणाव कीजै छै।—रा सा स.
उ०—२ पाहुणउ तू हम श्राज, कहु ते महिमानी करांजी। सगली तुम्ह नइ लाज, वादळ राज हमा तणी जी।—प. च चौ

महिमा-स० स्त्री० [स० महिमन्] १ महत्वपूर्ण या विशेष होने की श्रवस्था या भाव।
२ महत्व, माहात्म्य, बड़ाई, गौरव।
उ०—१ तो चरणा लागै तिको, चाळक करन सुजाव। नर गरिमा महिमा लहै, साचौ तू सिघराव।—वा दा
उ०—२ उत्तम धांम दुवारिका, महिमा सुहित सभारि। लियौ महासुख एक पख, श्रप परसियौ मुरारि।—रा रू
३ प्रभाव, प्रताप, रौब।
उ०—महिमा परमातम श्रातम नहिं मालम। बाल्ही घण नैं तजि विलखाणी बालम।—ऊ का
४ कीर्ति, प्रशसा।
उ०—आप आपरी उगत सू, तीख रचै तवनाह। मात तणी महिमा कही, जैन वेद जवनाह।—वा दा
५ श्रादर, सत्कार, मान।
उ०—श्रभिमान इसो मन श्राणै, प्रभु श्राया पुण्य प्रमाणै। महिमा करू सवल मडांणै, वाह वाह मकोई वखाणै।—ध व ग्र
६ सुन्दरता, शोभा।
उ०—श्रग श्रग महिमा श्रधिकावै। सैज श्रनत तेज वरसावै। नार सभारै जतन निहारै, ऊपर राई लूण उतारै।—रा रू
७ श्रणिमा आदि आठ सिद्धियो मे से पांचवी सिद्धि।
रू० भे०—महमा महमा, महम्मा, महिम।

महिमाय—१ देखो 'महामाया' (रू भे)
उ०—विद्या घर वड वखतावरु महियळ मैं हो महिमा महिमाय। राउ राणा मोटा राजिया, पुहवीपति लागै जसु पाय।—ध व ग्र

महिमावत-वि० [स० महिमन्+वत्] १ जिसकी प्रतिष्ठा, प्रशंसा या कीर्ति हो महिमा वाला।
उ०—भव भय दुख भजन, चद्रबाहु भगवत। रेणुका राणी सुत, महियल महिमावत।—स कु

महिमाह—देखो 'माहोमाहि' (रू. भे)
उ०—जो एक भोम्या रै गाव श्राया। जठै भोम्या रै महिमाहै कजीयो लागो। जै श्रण्या रै राजपूती री घणी चाव।—पचमार री वात

महिमुदी—१ देखो 'महमूदी' (रू भे)
उ०—श्रघोतरी महिमुदी दुदामी मयरव टसरीया मुगटा मिणीया कसबी जरबाफ मुखमल • ।—व स

२ देखो 'मुहम्मदी' (रू भे)

महिमुदी-घटी—सं० स्त्री०—१ दूल्हे-दुल्हन के प्रणय बंधन का वस्त्र विशेष। (व. स)

२ देखो 'महमुदी'।

महिमुद—देखो 'मुहम्मद'।

उ०—इमिउ एक राजाधिराज स्री महिमुद पातसाह वरणवीतउ।

—व स

रू० भे०—महमूद।

महिमुदी—देखो 'महमूदी' (रू भे)

उ०—बटी, घटी कया प्रकार नु वस्त्र छे तेनी माहिती नथी, परतु तेनी एक प्रकार महिमुदी छे। ते लाल रग नु वस्त्र हतु एम 'ढट्टी लाल' जेवा प्रयोगथी लागे छे।—व स.

महिमूद—देखो 'मुहम्मद' (रू भे)

उ०—सांभळि, राजाधिराज स्री महिमूद पातसाह वरणवउ।

—व स.

रू० भे०—महमूद।

महिम्न—सं० पु० [सं०] पुष्पदंताचार्य द्वारा रचित शिव का एक प्रधान स्तोत्र।

वि० वि०—यह शिखरणी वृत्त मे है।

रू० भे०—महींमन, महिमन, महीमन।

महिय—सं० पु० [सं० मथित] दधि, दही।

उ०—१ लिय कुकुम चदन तदुलय महिय। मुख गावत मगळ ध्रमळय महिय।—गु रू व

उ०—२ देवलोकि छड घणी परि देव, एक ठाकुर बीजा करइ सेव। न लहइ ममवाडउ न लहइ ग्रास, महियो मोदिक तीह ना दास।—वस्तिग

महियद—सं० पु० [सं० महि-इन्द्र] राजा, नृप।

महियळ, महियल, महियलि—देखो 'महीतळ' (रू भे)

उ०—१ जीव चा सबद सुण जीवडा, महियळ जळ थळ मभळी। ग्रादेस पुरुस ग्रपरम परम, जळहर सद्द सु सभळी।—ह र.

उ०—२ वट वाटे घाट ग्रोघटे रण वन, जळ थळ महियळ ग्रजर जरे।—दोलो

उ०—३ एह चरित सुणतां सदा रे, वाधे महियळ माम। सुख सपति बहु पामिये रे, ग्रनुक्रमि मन विस्राम।—वि कु.

उ०—४ हो रोई रोई मुंड हू रान मइ, रान रे, हो महियलि पडी हू मूरछि।—स कु

उ०—५ ग्रासू कातिक कहा माम भादवें सामणि। माह पोह मगसीर, चैत वैसाखा फागणि। मासे जेठ ग्रसाढ दांनि लख कोड़ वरीसण। कळिजुगी वलि करण, ल्हास वरदां वगसावण। बारह मास चोईस पख, वडहथ वेवि न विसरू। महियळ माल पातां मिळे, सहु रत रावळ समरू।—ईसरदास बारहठ

उ०—६ 'गाजीसाह' ग्रमनमों 'गागो', महियळ 'सूर' सुत्रमकुळ-मोड। बहता हसता कूदता राजद्र, रहता करे वडा राठोड।

—किसनो ग्राढो

महियव—सं० पु०—राठौडो की एक शाखा, महेचा राठोड।

उ०—ग्राहव सूरां ग्रागळा सुरताणो हटमल्ल। महियव रीत उजाळणा, ग्रमर तणां पीथल्ल।—रा रू

महियागिर—देखो 'मलयगिरि' (रू भे)

महियार—देखो 'महिग्रार' (रू भे)

उ०—भलें महियार जसोदा भाग, नमो नद नदण नाथण नाग।

—गुण नारायण नेह

महियारडौ—देखो 'महिग्रारो' (ग्रल्पा, रू भे)

उ०—वीर कहइ रिखि सांभलउजी, गोरस वहेरघउ रे जेह। मारग मिली महियारडी जी, पूरव जनम नी माय तेह।—स कु

(स्त्री० महियारडी)

महियारो—देखो 'महिग्रारो' (रू भे)

उ०—तद भरमल ऊचे साद सू महियारा नू कही भैंसां दुही सोतो दुही नही सो कटो तो साम्ही छोड देवो।

—कुवरसी सांखला री वारता

(स्त्री० महियारी)

महियासघु—देखो 'मेहासधु' (रू भे)

महियो—१ देखो 'मयो' (रू भे)

२ देखो 'मईयो' (रू भे)

उ०—लाल चोमणें मामा मोचा, लाल कनारी जोडो। लाल पाघडी रातो वागो, राते महियें घोडो।

—डूगजी जवारजी री छावली

महिर—सं० पु० [सं०] १ नृप, राजा।

२ योद्धा।

३ देखो ,मह्र' (रू भे)

उ०—मिठडा राजिद फिल रहो, इक मानो मोरी वात। महिर करो मो ऊपरें, जिम न हुवे उतपात।—वि कु

४ देखो 'मिहिर' (रू भे)

महिरवान, महिरवांन—देखो 'मेंरवान' (रू भे)

उ०—एक दिन रिखीस्वर महिरवांन हुवा छे। राजा नु सतुस्ट हुइ नें पांणी मत्र दीयो छे।—चोबोली

महिरवांनी—देखो 'मेंरवानी' (रू भे)

उ०—तद घोडो एकलें ही उठाय प्रोहित कन्हे ग्राय कहण लागो—जो ग्राज तो कही वहे सगे महिरवांनी करी, सो ग्रळगी भूह रो नाळेर मोनें ग्रठे साम्हो ग्रायो 'वडी कीरपा कीवी।'

—कुवरसी साखला री वारता

महिरांण—१ देखो 'महारणव' (रू भे)

उ०—१ देवगिरि ग्रन्नें जोगणिपुरां, सवळो भारथ सूत्रियो। महिरांण महिक्कर मत्यता, च्यार मास विग्रह कियो—गु रू. ब

उ०—२ जळ चादरू की धरहर मानू छिल्लै महिराण। स्रीखहू का डबर समीर सें झोला खावै।—सू प्र

उ०—३ ग्रोपीयौ प्रथमादि ऊपरि, जव जें वाखाण। फौज रौ सिणगार फावै, मौज रौ महिराण।—ल पिं

२ देखो 'महाराणौ' (रू भे)

उ०—१ जग जोत जाण, ऊगो क भांण। मुख चे प्रमाण, महिराण मांन।—ग्र वचनिका

उ०—२ सीख लाख दे निसक सू, वाता घणी वणाय। मन लागो महिरांण सू, जीवन रह्यौ न जाय।—पनावीरमदे री वात

उ०—३ राय साधार वदिछोडि मोटा विरूद, साह पतिसाह सम फौज महिराण।—वि कु

३ देखो महराण' (रू भे)

उ०—राजि रा पाउ पाताळ तणी रुख, मसतक सरगा जिसौ मडाण। राज ग छूमण दिसै रुघराजा, मन समिहर कूखा महिराण।—पी ग्र.

महिरांणवर—स० पु०—१ राजा, नृप। (डिं ना मा)

२ देखो 'महारणव' (रू भे)

महिरामण—१ देखो 'महिरावण' (रू भे)

उ०—रामण नै महिरामण रेसण दहता तणै मरण सी डोर।
—पीरदान लाळस

२ देखो 'महारणव' (रू भे)

महिराउण, महिराउणि—१ देखो 'महिरावण' (रू भे)

२ देखो 'महारणव' (रू भे)

महिरावण—स० पु०—एक राक्षस जो रावण का पुत्र व पाताल का राजा था।

उ०—जिम राम कज्ज हनुमत करि, महिरावण वध्यउ तिखिण।
—प च चौ

रू० भे०—महिरामण, महिराउण।

२ देखो 'महारणव' (रू भे)

महिरिवाण—१ देखो 'मेहरवान' (रू भे)

उ०—महि ग्रमर रुखेसर नर ग्रसुर, पहचि तुझ दाखै प्रघळ। हु महिरिवांण माया हिमै, वडण मुझ दीजै विमळ।—पी ग्र

२ देखो 'महारणव' (रू भे)

महिरी—देखो 'महर' (रू भे) (ह नां मा)

महिरेळण—स० पु०—पृथ्वी पर पानी फैलाने वाला, इन्द्र।

वि०—विश्व में अपना यश या कीर्ति फैलाने वाला, यशस्वी।

स० पु०—राठौड राव रायपाल का विरुद।

उ०—गांव राडद्रह रो दुगहदो महिरेळण रायपाळ घूहडिया रो दत्त चद पायो।—वा दा ख्यात

महिळ—देखो 'महिळा' (रू भे)

उ०—ह्या रावत रै महिळ सोनगरी। सो रावजी रै नामांणै दिसासौ साख हुती, सु रावजी जुहार कहायो।—नैणसी

महिल—देखो 'महल' (रू भे)

महिलाण—स० पु०—पडाव, डेरा, ठहराव, विश्राम।

उ०—इसी भांति जळूस करि वीजारो तो क्यू कहणी नही, ग्रमवार हजार २ सू चिढ्या, तिका चालता-चालता टोडै टूक महिलांण हुवा।—जगदेव पवार री वात

महिळा—सं० स्त्री० [स०] १ स्त्री, ग्रौरत, रमणी। (ह ना मा)

उ०—१ प्राचीन करम सुभ ए, पुरखा पाइता उत्तमा महिळा। कुळ दीप पुत्र जिणायै, कुळ घू बिनै रूप सजुगता।—गु. रू व

उ०—२ पसू पणो पखी पणू, सुतर मुरग रै सग। मरद पणो महिळापणो, मारवडिया रे ग्रग।—वा दा

२ पत्नी, प्रिया, प्रियतमा।

उ०—माधव महिळा थी ठरइ, महिळा माधव दीठ। ग्रन्योग्रन्यइ स्या थयां, चटकु चोल-मजीठ।—मा का प्र

३ स्त्रियो के लिये ग्रादर सूचक सम्बोधन।

४ नशे मे मस्त महिला, मस्तानी ग्रौरत।

रू० भे०—महळ, महल, महळा, महल्ल, महिळ, महिल्ल, महुळ, महेळ, महोळ, मुहळ, मोहळ, मोहळ।

ग्रल्पा०—महळि, महळी, महिळि, महिळी, महिल्ला, महेळि, महेळी, महेळीय, मिहल, मिहिली, मेहडली, मोहळ।

५ प्रियगु लता।

६ रेणुका नामक पौधा।

महिलाइत, महिलायत—देखो 'महलायत' (रू भे)

उ०—वैकुठनाथ विसक्रमा कू हुकम हुग्रा, वैकुठ री रौस म्रातलोक माहे सोव्रनमै महिलाइत पैदास करो।—वचनिका

महिळाव—वि०—स्त्रियो का, स्त्रियो सम्बन्धी।

उ०—कवि ग्राखर ज्यू करण तण, मरहट्टी महिळाव। कुच ग्राधा ढकिया निरखि, रीधो चाळक राव।—वा दा

महिळि, महिली—१ देखो 'महिळा' (ग्रल्पा, रू. भे)

उ०—इक्क महिली पच जण तीह मिलिउ तु पक्खि। ए उग्रहाणउ सच्चु किउ कूडउ कूडा सक्खि।—प प. च

२ देखो 'महल' (रू. भे)

महिल्ल—१ देखो 'महल' (रू भे)

उ०—जुग सकळ माहि देखे 'जगा', लाभ धरम समरण लिया। जोती सरूप जगारजन, दिल महिल्ल दीयग दिया।—जगो खिडियो

२ देखो 'महिळा' (रू भे)

महिल्ला—देखो 'महिळा' (रू. भे)

उ०—कवर विदा पहला कियो, सरव महिल्ला साथ। ग्रण सका ग्रागै हुवा, भड वका भाराथ।—रा रू

महिस—स० पु० [स० महिष] १ भैंस। २ महिषासुर।

वि०—बहुत मोटा ग्रौर सुस्त।

रू० भे०—मयम, महत्व, महत्वौ, महिम, महिम्नु महिम्न्व, महिम्न, महीम ।

महिमधुज–स० पु० [महिषध्वज] यमराज ।
रू० भे०—महिमधुज, महीखधुज ।

महिमध्नी–स० स्त्री० [स० महिष-घ्नी] दुर्गा देवी ।

महिमरदणी, महिसमरदिणी–स०स्त्री० [स० महिष-मर्दनी] दुर्गा देवी ।

महिमवाहण–स० पु० [स० महिष-वाहन] यमराज ।

महिमासुर–स० पु० [स० महिष-असुर] एक असुर जो मयासुर एव रम्भा का पुत्र था ।
उ०—महिमासुर तू मारइ, मर जइ महिखासुर मरइ । सुर छूटइ सुर रात, वार तुहारी वीस-हथि ।—अ वचनिका
रू० भे०—महखासुर, महिखासुर ।

महिमि, महिमी–स० स्त्री० [स० महिषी] १ पटरानी, रानी, माम्राज्ञी ।
२ भैंस । ३ काला, कृष्ण । ० (डि. को)
रू० भे०—महकी, महखी, महमी, महिखी, महीखी, महेमी ।

महिमुत—देखो 'महीमुत' (रू भे) (अ मा)

महिमुर—देखो 'महीमुर' (रू भे)

महिमूफ–स० पु०—एक प्रकार का खाद्य पदार्थ ।
उ०—दहीवरां, तिलगाकळी, फाफड़ा पूरी गुंभां गुदवड़ा परीमीठा घृघरी गुळपापटी गुदपाक महिमूफ मूर्निर सुगनू उमड ।
—व स

महीं—देखो 'महीन' (रू भे)
उ०—कानणवाळी छैल छबीली, वंटी पीटी ढाळ । महीं महीं वा पूणी कातै, लवो काढै तार । चाल रै चरखला ।—लो गी
२ देखो 'मे' (रू भे)
उ०—वैर महीं तोटो वमै, वमै नफो नह 'वंक' । सिया विरह राघव सह्यो, रावण पलटी लक ।—बा दा
३ देखो 'मही' (रू भे)

मही–स० स्त्री० [स०] १ पृथ्वी, धरती, धरा, भू ।
(अ मा, ना डि को., डि को)
उ०—१ जावै नहि जाचक घरा, सत महता सत्य । मगळ री जगणी मही, अवतारां री अत्य ।—बा दा
उ०—२ जु रवि पस्चिम ऊगमइ, मेरु चलइ मही माहि । विहि तणा पति जे सत्या, चतुर न चूकइ कयाहि ।—मा का. प्र
२ भू-सम्पत्ति, रियासत, जागीर ।
३ राज्य, देश । ४ मिट्टी ।
५ समूह । ६ सेना, फौज ।
७ मानी स्थान, प्रदेश ।
८ गाय, गौ ।
उ०—महियां मगावै वमी दजावै, नई नई रमय मतार ।
—अज्ञात

९ छाछ, मट्ठा । (ह ना मा)
१० दहि, दधि ।
उ०—१ पथिक जाय मथुरा कहै जादवा पतीनू, आपरा मिलण कू वात उरळी । आय गोकळ मही लेर सुर अनोखा, मया कर सुणावो फेर मुरळी ।—बां दा
उ०—२ घणा रोद्र घेरै, फिरै चक्र फेरै । मथाणै मटल्लै, मही जांण हल्लै ।—रा रू
११ एक नदी का नाम ।
१२ एक लघु एक गुरु के क्रम से २०० वर्णों का एक छन्द ।
(र ज प्र)
१३ त्रिकोण । ० (डि को)
१४ एक की मख्या । ० (डि को)
रू० भे०—मइ, मई, मह, महि, मही, मिहि, मिही ।
अल्पा०—महीडो ।

महीअर—देखो 'महीधर' (रू भे)
उ०—मात तात न समरइ, महीअर तू माहाराज । पाली नइ पोढउ करी, काइ ऊवेखइ आज ।—मा का. प्र

महीअरी–स० स्त्री०—मामी ।
उ०—महीअरियां नइ मांनीइ, भलीपरि मांगेज । आसा पूगइ वहिनिनी, हरखि आणइ हेज ।—मा कां प्र.

महीअळ, महीअळि—देखो 'महीतळ' (रू भे)
उ०—१ अधिकु कहु आसाढ सू, माठउ महीअळ मद्धि । पगदड़ा पयी तणा, तइ भज्या भवसिद्धि ।—मा का प्र
उ०—२ अतिहि मोहामणउ ए महीअळि ऊपरि चरीइ ए । जे भणइ जे सुणइ ए तीहं घरि अचल वधामणु ए ।—हीराणद सूरि

महीआरो—देखो 'महिआरो' (रू भे)
उ०—वन मांहि वजाडी वामळी, महीआरै तु मा मिळै । आजरै घणै हुइ ऊलटै, अम मूरति सामै वळै ।—पी. ग्र
(स्त्री० महीआरी)

महीइद–स० पु० [स० महेन्द्र] १ देवराज इन्द्र, महेन्द्र ।
२ नेता, मुखिया, प्रधान ।
३ राजा, नृप ।

महीकाळवासर–स० पु०—प्रलय दिवस ।
उ०—प्रलय सिंधु सम सिजि असुर, यहि विधि चले उमगि । महीकाळवासर समय, यहि विधि चले उमगि ।—ला रा

महीख–स० पु०—१ एक प्रकार का पक्षी विशेष ।
२ देखो 'महिम' (रू भे)
उ०—महीख चक्र चाढि मात, स्रोण चढ सो पियो । 'अजो' नरिंद जेण वार, इद्र जेम ओपियो ।—सू प्र.

महीखधुज—देखो 'महिमधुज' (रू. भे)

महीखासुरमरदणी—देखो 'महिसमरदणी'।
महीखी—देखो 'महिसी' (रू भे)
महीडो—देखो मही' (९-१०) (अल्पा, रू भे)
उ०—कोई तो बोलो महीडौ मेरो लूटै। छोड कनैया ईंडाणी हमारी मही की काना मेरी फूटै।—मीरां
महीज-स० पु० [स० मही+ज] १ मगल ग्रह।
२ वृक्ष, पेड। ३ अदरक।
महीजा-स० स्त्री० [स०] सीता, जानकी।
रू० भे०—महिजा।
महीजीत—देखो 'मसजिद' (रू भे)
महीडा-स० पु०—सोलकी वश की एक शाखा तथा इस शाखा का व्यक्ति।
महीणो—देखो 'महीनो' (रू भे)
उ०—रातरी थूई मे दिनूगै री पून, वासते मे लाल-लाल खीरा जिया उछाळै, विया ही लालजी रै घर रो कूडो सोग महीणां सू पैल्या ही उघड ज्यावै है।—दस दोख
महीतळ, महीतळि, महीयळ-स० पु० [स० मही तल] १ पृथ्वी का धरातल, सतह, भूमि।
उ०—राइ कहावित ते कहिउ, सेवकि सूपी सार। महीतळि पढ़ियु माधवु, तनु धूजी तिणि वारि।—मा का. प्र
२ ससार, भव।
रू० भे०—मइयळ, मईयळ, महिग्राळ, महितळ महियळ, महियळ, महियल, महियलि, महीग्रळ महीग्रळि, महीथळि, महीथळी, महीयळ, महीयळि।
महीयळि, महीयळी—१ देखो 'मैंथिळी' (रू. भे.)
२ देखो 'महीतळ' (रू भे)
महीदेव-स० पु० [स०] ब्राह्मण, विप्र।
रू० भे०—महिदेव।
महीधर-स० पु० [स] १ विष्णु।
२ पर्वत। (डिं नां मा) ३ शेषनाग।
४ एक वर्ण वृत जिसमे क्रमश चौदह वार लघु व गुरु आते है।
रू० भे०—महिधर, महीग्रर।
महीन-वि० [अ०] १ अत्यन्त लघु, जिसका अस्तित्व सहसा दिखाई न पडे। २ स्थूल या मोटे का विपर्याय, सूक्ष्म।
३ तुच्छ। ४ जीर्ण-शीर्ण।
५ कमजोर, क्षीण। ६ अत्यन्त पतला, भीना।
७ कोमल, मद, धीमा। (स्वर)
रू० भे०—मइ, मई, मईन, मही, महीण, मियूं, मियो, मिही, मींयो, मीह, मिहीन।
महीनदार-स० पु० [अ० महीना+दार] मासिक वेतन पर कार्य करने वाले कर्मचारी।
उ०—घोडा रो रातव दाणो, महीनदारा रो महीनो, मोदीखानै री जिनस ग्रोर ही सारा लोगा रो सरजाम सरतत कर घोडा नू खुद रै खेत भीळाय हाथिया नू गुळ वाड री बाड मोळाय जाय गैर महिलां रहियो।—डाढ़ाळा सूर री वात
महीनाथ-स० पु०—राजा, नृप।
रू० भे०—महिनाथ।
महीनो-स० पु० [अ० महीन] १ वर्ष के वारहवें अश के वरावर का समय जो प्राय तीस दिन का माना जाता है, मास, माह।
उ०—१ जेठ नांम जेठ ग्रोर महीनो वाडी जेठ महीनो दीठां सूक जावै है जिणतरै जेठ नें देख दुसमणा री वाडी सूक जावसी।
—वी स. टी
उ०—२ अवै पाछा वारै महीना सू उठै भेळा व्हैला।—फुलवाडी
२ मासिक वेतन।
रू० भे०—मईनौ, महणो, महनो, महिणो, महिनो, महीणो, माहीनों, मीणो, मी'णो।
महीनो'क-वि०—करीब एक मास, एक माम के लग भग।
उ०—ग्ररु रावत कांधळजी रै वडो वेटो तो वाघोजी हा जिकै तो कांधळ जी सू महीनो'क पछै भगडै में कांम ग्राया।—द दा
महीप-स० पु० [स०] १ इन्द्र। (ना डिं को)
उ०—मिळि पघराय सवाय हित, डेरा दिया समीप। छत्रपति छाजै ऊपरै, राजै जोड महीप।—रा रू
२ राजा, नृप।
उ०—१ करणो सो अव ही कियो, मरणो वेस महीप। दिल्ली मग मोनू दहै, दीजै पग कुळदीप।—व भा
उ०—२ सोभा रूप गान ग्रत सोहै, महीप किसू इद्र मन मोहै।
—सू प्र.
रू० भे०—मईप, महिप, माहीप।
महीपत—देखो 'महीपति' (रू. भे)
उ०—वेड़ तो पेख पतसाह वाकारियो, टाळ ग्रन करै मन जही टाळियो। महीपत 'करन' सालीयां दूणं मगज, वाग मह लीध वा खुद वळियो।—द दा
महीपति, महीपती, महीपत्ति-स० पु० [स० महीपति] राजा, नृप।
(ह ना मा)
उ०—१ मत्री तहा मयण वसत महीपति, सिळा सिंघासण घर सघर—वेलि
उ०—२ वळै हुई तिणवार महीपति हू कथ माळिम। जुध करि ग्रहियो जवन खान ग्रवदुळ खुदाळिम।—सू प्र.
रू० भे०—महपत, महपति, महपती, महपत्ति, महपत्ती, महिपत, महिपति, महिपती, महिपत्ति, महिपत्ती, महिप्पति,महीपत, माहिपत, माहिपति।
महीपाळ, महीपाल-स० पु० [स० महीपाल] १ राजा, नृप।
उ०—पुळियो जिम सुत हू पिता, महीपाळ तजि माळ।—वं भा

२ मेघ।

रू० भे०—महपाळ, महिपाळ।

महीपुत्र-स० पु० [स०] मगळ गृह।

महीभरत—देखो 'महीभ्रत' (रू भे)

महीभुजग-स० पु० [स०] १ राजा, नृप।

उ०—इण कुळही देवट अभिघानी, महीभुजग हुवौ रणमानी। फुळ जिणरो देवडा कहावै, दान-समर अनुपम दरसावै।—व. भा

२ गणिका का पति।

महीभ्रत-स० पु० [स० महीभर्तृ] १ राजा, नृप।

२ पर्वत, पहाड।

रू० भे०—महीभरत।

महीमडण-स० पु० [स० मही+मडन] इन्द्र।

उ०—माधव तू महीमडणउ, जिहां जाएमी तिहा जांणि। चिहिरु करी चलावीइ, ए अम्ह अधिकी हाणि।—मा का प्र

महीमडळ-स० पु०—भूमडळ, पृथ्वी।

महीमन—देखो 'महिम्न' (रू. भे)

महीमुदीसाही-स० पु० यौ०—एक प्रकार का बढिया वस्त्र विशेष।

उ०—कतास अतलस खासु कमसू भडरव, मिसु भडरव, रेसमी भडरव, लाहि महीमुदीसाही मलमलसाही प्रमुख नानाविध भातिना, नानाविध देसना वस्त्र आणी समस्त परिवार, नगरलोक पहिरावी।—व स

महीमुरतब, महीमुरतव, महीमुरातव, महीमुरातिब—देखो 'माहीमुरातब' (रू भे.)

उ०—१ गजमिका तराजू अदल गहि, तोग महीमुरतब तुरग। पतिसाह हुवौ अजमाल पह दिली जेम तारा दुरग।—सू प्र.

उ०—२ धज फरर नेजा धार, सभि तोग धर असवार। वणी महीमुरतब वाग, नौवति धारक नाग।—सू प्र

उ०—३ के सकत पूज नोवत कसै, आरोहक के आरवा। धर फरर चढै नीसांण घर, तोगा महीमुरातवां।—सू प्र

महीयळ, महीयळि—देखो 'महीतळ' (रू भे)

उ०—१ भादवउ वरसइ छइ मगेहर गभीर, जळ थळ महीयळ सहू भरया नीर।—वी दे

उ०—२ किहा मुत्ताहळ गुज किहा, किहा सरसव किहा मेर। माधव जोतां मांनिनी, महीयळि एतु केर।—मा का प्र.

महीयां-वि०—मूढ, अज्ञानी।

उ०—हू माधव वछू वली, ते माधव तूं होय। पीडइ कां मुफ पापीया, महीयां मांम न खोय।—मा का प्र.

महीयारौ—देखो 'महिम्रारौ' (रू भे)

(स्त्री० महीयारी)

महीरजण-स० पु०—मेघ, बादल। (ना डि को)

महीर-वि०—१ महान, बडा।

स० पु०—२ पृथ्वी, भूमि।

३ देखो 'मिहिर' (रू भे)

उ०—पधारया वेदाई पथ हेमाळै गळैगा पड, गौरी पातसाह राज गभायौ गहीर। पच लुंड पीठ घू पीरोज विराजै पान, मही दुनी भरै साग चद्रगा महीर—पन्नारांम मोतीसर

महीरानाथ-स० पु०—राजा, नृप। (डि को)

महीरुह-स० पु० [स०] वृक्ष, पेड। (ह ना मा)

महीवर-स० पु० [स० मही+राज० वर=पति] राजा, नृप। (डि को)

महीस-स० पु० [स० महीश] राजा, नृप।

उ०—मद्र देस मे आपरौ अमल जमाय महीस हुवौ जिणरी सतति समस्त माद्रेचा चहुवांण कहीजै।—व भा.

रू० भे०—मईस।

महीसुत-स० पु० [स०] १ मगल गृह।

२ वृक्ष, पेड। (ना मा)

रू० भे०—महिसुत।

महीसुर-स० पु० [स०] ब्राह्मण, विप्र।

रू० भे०—महिसुर।

महीसूर-स पु० [स० मही+शूर] अर्जुन। (ह नां मा)

महु र—देखो 'मोहर' (रू भे)

उ०—पिण दांणव ची प्रौळि. फूक तिम करळी कीधी। मिळिया सुणि तिण महु र सभ निहसम स वीधी।—मा वचनिका

महु—देखो 'मधु' (रू भे)

उ०—१ प्रकट वडो सग्राम सिह पहु, मतिधर सुकवि मिलिद कज महु।—व भा.

उ०—२ लोभे लागो खाय नै खरचै, राक मनै लछि राखी। घाटो मिलीया हाथ घसेलो, महु छुटै जिम माखी।—ध व ग्र

महुअडो, महुअडौ-स० पु०—देखो 'महुग्रो' (अल्पा, रू भे)

महुग्राल-स० पु० [स० मधुजल] मधुजाल। (उ र)

महुऊ-स० पु०—देखो 'महुग्रो' (रू भे)

महुग्रो-स० पु० [स० मधुक, मधूक+प्रा० महुग्र] १ भारत के सभी भागो मे होने वाला एक वृक्ष, महुए का वृक्ष

वि० वि०—यह पहाड़ो पर प्राय तीन हजार फुट की ऊचाई पर पाया जाता है। इसके फल, फूल, लकडी, बीज सभी वस्तुए उपयोगी होती हैं।

२ एक प्रकार का घोडा विशेष।

उ०—पांडवा जही किता पळ खडिया विहरै हाड विजूजळ वाह। सहुग्रां सिर महुग्रो सूरजमल, मेल्यो मेछ तणै दळ मांह।

—महाराजा सूरसिंह रो गीत

३ मधुर। ० (डि को)

रू० भे०—मउ, महवो, महुऊ, महुवो, महू, महूग्रउ, महूो।

अल्पा०—मउडो, मऊडो महुअडो, महुअडो, महुडो, महुडो, महूअड़ो, महूडो, महूडो, महूयडो, महूवो ।

महुकम–वि०—समर्थ ।

उ०—दधि परगनइ पासइ रहइ छइ, अति ते गुणवत । पण डोलिइ स्वामी कूबडउ, महा महुकम बलवत ।—नळदवदतीरास

महुकर—देखो 'मधुकर' (रू. भे)

महुडो—देखो 'महुप्रो' (प्रल्पा , रू भे)

महुच्छव, महुछव—देखो 'महोत्सव' (रू भे)

उ०—१ जसु नयरि जेसलमेरि राउल, मालदे महुच्छव किय ।
—स कु

उ०—२ उदय प्रभ सूरि प्रमुख ना ए, पदठवणां एकवीम । महुछव सेती करावीया, जाचका पूरी जगीस ।—स कु

महुडो—देखो 'महुग्रो' (ग्रल्पा० रू भे)

उ०—द्राक्षा तणि काक्षा किसिउ महुडे फेटइ, सरकरा'नी स्रद्धा कि गुलि पूजई ।—व स

महुत, महुत्त—१ देखो 'महुरत' (रू भे)

उ०—समया वळिय महुत्त दीह पख मास नें साल ।—वृ स्त

२ देखो 'महत्व' (रू भे)

उ०—प्राणइ नगरिइ जोइवू रे पुहुतु सभा मझारि । उलखीउ रूतुपरण राजाइ, दीधउ महुत अतिसार ।—नलदवदतीरास

महुयर, महुयरि–स० स्त्री०—एक प्रकार का वाद्य विशेष जिसे राजस्थानी मे 'पूगी' भी कहते हैं ।

उ०—१ मधुर स्वरि महुयरि वाइ, वानि काळा, मुहि विकराळा ।
—व स

उ०—२ वीणां डफ महुयरि वस वजाए, रोरी करि मुख पचम राग ।—वेलि

रू० भे०—महुवरि, महुवरी ।

महुयरो—देखो मधुकर' (रू भे)

उ०—जिण चद पय अरविंद सुदर, सार सेवा महुयरो । गणि सकलचद सुसीस जपइ समय सुदर सुहकरो ।—स कु

महुर, महुरउ—१ देखो 'मधुर' (रू भे) (उ र)

उ०—वा धां धपमु महुर अदग चचपट चचपट तालु सुरग । कधुगनि धोगनि धुगा नादि, गाइ नागड दो दो सादि ।—हीराणद सूरि

२ देखो 'मोहर' (रू भे)

उ०—ईयै मात छोकरी महुर १ रोज ले आवै नै वाणीयै नु ले जाइ देवै ।—स्यामसुदर री वात

महुरत, महुरति–स० पु० [स० मुहूर्त] १ काल या समय का एक मान जो ४८ मिनट का होता है, रात व दिवस का तीसवा भाग ।

उ०—किण महुरत कहियांह, वरिखा कदि वीजांणदे । वाता विच रहियाह सिरै न चढिया सूरउत ।
—सयणी चारणी री वात

२ फलित ज्योतिष के अनुसार गणनाक्रम से, किसी शुभ कार्य या प्रस्थान के लिए निकाला हुआ कोई समय ।

उ०—सुभ दिवस महुरत सार, 'अजमाल' हुय असवार । रग सुरग वण गजराज, क्रिति अम्रत होत अकाज ।—रा रू

३ निर्दिष्ट क्षण, काल या समय ।

उ०—निज गउखें चढि चढि वाट निहाळइ, महुरत पिण आयो तिल मात ।—महादेव पारवती री वेलि

४ शुभ घडी, शुभ समय, शुभ अवसर ।

उ०—१ तपवत हुवै 'अजमाल' सुतन, घनि वेळा महुरत वार घन्न ।—सू प्र

उ०—२ 'दमयंती' स्वयवर माडधु, महुरत छि ते कालि । जु जवाइ तु तिहा जईइ, अस्व अनोपम चालि ।—नळाख्यान

५ श्री गणेश, प्रारम्भ ।

क्रि० प्र०—आणो, जांणो, टळणो, टाळणो, दिखाणो, देखणो, निकळणो, निकाळणो, सजणो, साजणो ।

रू० भे०—महुत, महुत्त, महूरत, महूरति, महोरत, महोरथ ।

महुरी—देखो 'मोरी' (रू भे)

उ०—जरवाफ तणा ताइ पाटा जोडिया, रेसम री महुरी वहुरग ।
—महादेव पारवती री वेलि

महुळ—देखो 'महिळा' (रू भे)

महुल—देखो 'महल' (रू भे)

उ०—नाळेर लियउ प्रभु बात परीछी, जाणणहार सुजाण जगि । आया महुल करै ताइ आइत, प्रिथी प्रमांणइ धरण पगि ।
—महादेव पारवती री वेलि

महुलेठी–स० पु० [स० मधुयष्टि] गन्ना ईख । (उ र)

महुवरि, महुवरी—देखो महुयरी' (रू भे)

महुवो—देखो 'महुग्रो' (रू भे)

उ०—सुर काज पीरोजियं कैहरडा सज, चप हुगे महुवा चकरी । सदली भरडाज भसमीयें चीत्रस, नील पीळा गुरडा नु करी ।
—किसनजी घघवाडियो

महू—१ देखो 'महुग्रो' (रू भे)

२ देखो 'मधु' (रू भे)

उ०—जइ अम्रपपान पीजइ तु काजोइ किसिउ कीजइ, जउ द्राक्षाफल दीसइ तउ महू कवण नउ वीस (र) इ ।—व स

महूअउ—देखो 'महुग्रो' (रू भे) (उ र)

महूअडो—देखो 'महुग्रो' (अल्पा , रू भे)

उ०—उराहा सेराहा केकाण सूनडा सिरखडा महूअडा दक्षिण पथा पाणीपथा माकडा नीलडा ।—व स

महूअर—देखो 'मधुकर' (रू भे)

उ०—मेवइ जसु पय साध अहै, पकय महूअर रुण उणइ ए । घन घनु जे नरनारि अहै, नितनितु प्रभु गुण गण थुणइ ए ।
—भावप्रभ सूरि री गीत

[illegible], [illegible], [illegible]—देखो 'म[illegible]' ([illegible], रू भे)

उ०—१ [illegible] म [illegible] री [illegible] हो [illegible] हो, [illegible] 'रतन' राणां [illegible] ।—[illegible]

उ०—२ [illegible] [illegible], [illegible] ताजी । [illegible] मोळा [illegible], [illegible] ।—[illegible] रू व

उ०—३ [illegible] । [illegible] देवगिरा देव-[illegible] —[illegible] प्र

[illegible]—[illegible]—१ [illegible], [illegible] ।

२ [illegible] (रू भे)

३ [illegible] (रू भे)

[illegible], [illegible]—देखो '[illegible]' (रू भे)

उ०—१ [illegible] दिन दिन, पतिव्रता यू भावै । [illegible] विप्र विनि [illegible] ।—ह पु वा

उ०—२ [illegible] ज्योतिसी बुलाय पत दह रो [illegible] ।—[illegible] री वारता

उ०—३ [illegible], [illegible] प्रवतेसि । मायव महूरत [illegible] नियमि ।—मा [illegible] प्र

उ०—४ [illegible], बोम [illegible] वद्धि । [illegible] दिन, [illegible] महूरत मदि ।—गु रू व

उ०—५ [illegible] महूरति ऊपरि, पवळ मगळ दळ ढाळ [illegible] । [illegible] परगुण [illegible], नाम 'रयण' वाधियो [illegible] ।

—दूदो

[illegible]—[illegible] पु० [[illegible]] विष्णु ।

[illegible] एक पर्वत का नाम ।

[illegible]—[illegible] स्त्री०—एक [illegible] का नाम जो गुजरात में बहती है ।

[illegible]—[illegible] स्त्री०—राठौड़ [illegible] की एक शाखा ।

[illegible]—[illegible] पु०—राठौड़ [illegible] की [illegible]' शाखा का व्यक्ति ।

[illegible]—स० पु० [सं० [illegible]] [illegible], [illegible] । (ह [illegible] मा)

[illegible]—[illegible] (रू भे)

[illegible]—[illegible] (रू भे)

उ०—[illegible] री [illegible] गुण [illegible], [illegible] सुनतान । [illegible], [illegible] स्याम [illegible] ।—[illegible]

[illegible]—[illegible] (रू भे)

[illegible] । [illegible] । [illegible] — [illegible] प्र

[illegible] (रू भे)

[illegible] ।

—[illegible]

[illegible] 'र[illegible]' [illegible] (प्राचीन) ।

[illegible]

[illegible]—[illegible]

महेवंचा-स० पु०—राठौड़ों की एक उपशाखा ।

महेवंचो-स० पु०—राठौड़ों की 'महेवंचा' शाखा का व्यक्ति ।

उ०—विजा मनोहर दास का महेवंचा समरत्थ । वाहापण निभा-हणा, माहा गू समरत्थ ।—रा रू

महेवो—देखो 'महेव' (रू भे)

उ०—गाज नगारा चहूगमा घर माग रकाणी, चढिया घूस वहा-दरा, वधै किरवांणी । देस महेवा वीटिया त्रिवधी तुरकाणी, रावळ 'माल' महाबळी आगळ हिंदवाणी ।—वी मा.

महेस-स० पु० [सं० महेश] १ शिव, महादेव । (अ मा, ह नां मा)

उ०—१ जादम 'किसोर' महेसदास का जाया, महेस के ककण सा विरद जिण पाया ।—रा. रू.

उ०—२ पगि तलि हूती चोटलइ, चौद लोक नु वास । ब्रह्मा विस्णु महेस पणि, पिंजर अंगि प्रकास ।—मा का प्र

२ ईश्वर ।

उ०—मुणाळ भुआळ दयाळ महेस । आदेस आदेस आदेस आदेस ।

—ह र.

रू० भे०—माहेस ।

महेसककण-स० पु०—वह ककण या वलय जिसको शिव ने भस्मासुर को दिया था ।

महेसचख-स० पु० [सं० महेश-चक्षु] अग्नि, आग ।

रू० भे०—माहेसख, माहेसचाख ।

महेसर—देखो 'महेस्वर' (रू भे)

उ०—सिर रीझ दयू ह महेसर नै, फर साकत आंणीय केसरनै ।

—पा प्र

महेसरी-स० पु०—वैश्यों की एक जाति ।

उ०—सहर री वसती समत १७१६—१००० बांमण, ७०० वांणिया, ४०० महेसरी, ३०० ओसवाळ, ३०० रजपूत, १०० मोची, १० घांची, ५० छींपा, २० सोनार ।—नैणसी

रू० भे०—माहेसरी ।

महेसवर—देखो 'महेस्वर' (रू भे)

महेसांनी-स० स्त्री० [सं० महेशानी] १ दुर्गा, देवी ।

२ पार्वती ।

महेसी-स० स्त्री० [सं० माहेश्वरी] १ दुर्गा, देवी ।

उ०—देवी वैस्णवी महेसी ब्रह्मांणी, देवी इद्रांणी चद्रांणी रुद्रा-णी ।—देवि

२ एक मातृका ।

रू० भे०—माहेसी ।

३ देखो 'महिसी' (रू भे)

४ देखो 'महसि' (रू भे)

महेसुर, महेस्वर-स० पु० [सं० महेश्वर] १ शिव महादेव । (नां मा)

उ०—१ सवळ पद मार सिर लगावै महेसुर, महेसुर वणावै मुड माळा ।—र. रू

उ०—२ राघव रयणायर रसा, सेम महेस्वर वैंण। सुणे बधायो गिरि सुता, सो व्हो मो सुख दैण।—वां दा

२ ईश्वर।

उ०—अनादि ऐस्वरय अतति वर बरय्य अति बुधा। महेस्वरय्या भागी कवन बल त्यागी स्तुति मुधा।—ऊ का.

रू० भे०—महेसर, महेसवर, माहेसुर, माहेस्वर।

महैरांण—देखो 'महारणव' (रू भे)

उ०—लहैरी महैरांण भूपाळ 'लच्छौ', 'अखौ' दूसरौ रीझ खीजाळ अच्छौ।—मे म

महोख—वि० [सं० महोक्ष] बडी आंख वाला।

स० पु०—एक पक्षी विशेष जो बाग बगीचे मे प्राय सवेरा होने के पूर्व बोलता है।

महोच्छव, महोछब, महोछव, महोछिब, महोछिव—देखो 'महोत्सव' (रू भे)

उ०—१ नवी नवी सोभा सहित प्रथी के विखै नवा नवा महोच्छव। आणदमई हुई छै।—वेलि टी

उ०—२ जेठ पढम पखि अस्टमी, जायउ स्री जिनराय। जनम महोच्छव सुर करइ, त्रिभुवन हरख न माय।—स. कु

उ०—३ छबि नवी नवी नव नवा महोछव, मडियै जिणि आणद मई।—वेलि

उ०—४ गुरू जिणचद सूरि, आप हाथ पाट दीनौ। कीनौ है महोछब, पुर सूरत सनूर जू।—घ व. ग्र

उ०—५ माड घर वीच मैं महोछिब मडांणा, दान सू अदेवा हिया दहता। चूडहर अनड जैसांण चवरी चढै, वीदगा चढाया गजा वहतां।—द दा

महोतपळ, महोतपल—स० पु० [स० महेत्पल] पुडरीक, कमल। (अ मा, ह ना मा)

महोत्सव—स० पु० [स०] १ किसी के स्वागत में या किसी प्रकार की खुशी के अवसर पर मनाया जाने वाला बडा उत्सव।

उ०—तहा थी राजा उज्जेण आइयौ, घणां महोत्सव हुवै।
—पचदडी री वारता

२ कामदेव।

रू० भे०—महुच्छव, महुछव, महोच्छव, महोछब, महोछव, महोछिब, महोछिव।

महोदध, महोदध, महोवधि, महोदधी, महोवध्धि—स० पु० [स०-उदधि] १ महासागर, महा समुद्र।

उ०—१ साध उखेळ करण साह वैंठा सबळ, हुवो पातसाह घर लयण होडै। उळटियो महोदध पाज कुण उढजै, आभ डीगियै खवा तूं हीज ओढै।—द दा

उ०—२ पीडिया तणी ओपमा पुणता, अतिनाळी जोवता अनूप। मछि ताइ महे महोदधि माहै, रहिया थरक थायकवा रूप।
—महादेव पारवती री वेलि

उ०—३ दुख महोदधि पाज, भव जळ तारण जहाज। आज हो रगइ रे रळियाळउ साहिब सेवियइ जी।—वि कु

उ०—४ ब्रहमड लगै भुजडड वध्धि, महमहण मथण किरि महोवध्धि।—गु रू व

२ इन्द्र।

उ०—अखाडा महोदव डोहतो एकटा, पेख तन सुपह वमुहा पधारै 'भीम' सरखो कहर 'माल' हर भोयकर, जहर 'गाजी' सकर तुईज जारै।—चतरो मोतीसर

रू० भे०—महोदध, महोदधि।

महोदय—स० पु० [स० महत्-उदधि] (स्त्री० महोदया) १ अधिपति, स्वामी।

२ बडो के लिये सम्मान सूचक सम्बोधन।

३ महानुभाव, महाशय। ४ स्वर्ग।

५ कान्य कुब्ज प्रदेश का नाम।

६ देखो 'महोदव' (रू भे)

रू० भे०—महोदया।

महोवया—स० स्त्री०—१ नाग वला, गुल शकरी, गगेरन।

२ देखो 'महोदय' (स्त्री०)

महोदर—स० पु० [स०] १ एक नाग, जो कश्यप एव कद्रू के पुत्रो मे से एक था।

२ धृतराष्ट्र का एक पुत्र। ३ घटोत्कच का मित्र एक राक्षस।

४ रावण का एक पुत्र। ५ रावण का एक प्रधान राक्षस।

उ०—महोदर वजर मुसटदु दाहैं मसत, दुरीमुख धूमनगर धूम वामी दसत। तुग तन अकपन देख वडतोलरा, दस वदन मुसाहिब किया चदोलरा।—र रू

६ रावण का एक भाई। ७ एक ऋषि।

८ एक प्रात स्मरणीय राजा। ९ एक रोग विशेष।

उ०—फस्सा कुम्दु खसकुस्दु महोदर जलोदर कठोदर वातोदर भगदर अतिसार ' ।—व स

१० समुद्र। (ह ना मा)

वि०—जिसका उदर बडा हो, बडे पेट वाला।

महोदरमझवाळा—स० पु० यौ०—युरोप का निवासी, युरोपियन।

उ०—वीगडै न महोदरमझवाळा, चड करै नवी जम लहर चाळा। चड करसी। 'स्री जम ल'हर, चाळा, वीगडमी महोदरमझवाळा।
—महाराजा मानसिहजी री गीत

महोदव—स० पु० [स० महत्+उदधि] समुद्र, सागर।

उ०—आपसी, एक सांसण अवल, दुनी सरब कहसी दियौ। नर अवर कूप जाचु नही, भूप महोदव भेटीयौ।—साहिबौ सुरतांणियौ

रू० भे०—महोदय।

महोव, महोबौ—स० पु०—बुदेलखण्ड का एक प्राचीन नगर। (ऐतिहासिक)

उ०—अवध्या वणारसी चदेरी मल्लिवाल महवर महोव हरिया-णाउ भयाणउ ।—व स

महोर—देखो 'मोहर' (रू भे)

उ०—विन राम भजन खोवै वखत, उळझ अमल होवा अठे । उफ नाम अतपुळ मे अहह, कोडि महोर मिलगू कठे ।—ऊ का.

महोरत, महोरथ—देखो 'महूरत' (रू भे)

उ०—१ सदगुरु जिन चद सूरिजी, मगळै गुण देखि सुघाट रे लाल । सुभ महोरत सत्यात्तरै, पाटण मे दीधो पाट रे लाल ।
—वि कु

महोरह—क्रि० वि०—आगे की, पूव की ।

उ०—मरि पेटिय मोर महोरह की, मछ सूकर वाघ मुखी मलकी । मग दीरघ तोप किती मचलै, उन्मत्त करीगन लागि टळै ।—ला रा

महोळ, महोल—१ देखो 'महल' (रू भे)

उ०—सोभत था कोस ८ मगरै लगतै भाखरा था कोस ५ आगै हुलीजण री वडी ठुकराई हुई, वडी ठोट सेहर सूनो दुकांनां छै । गारी पातमा रा कराया महोळ छै ।—नैणसी

२ देखो 'महिळा' (रू भे)

महोलौ—स० पु०—१ झुक कर किया जाने वाला सलाम ।

उ०—१ इणि भांति सू राजा रतन नू वकुठनाथ समीप बेसाणि दीवाण किया । अवर ही छत्रीस वस हिंदू मरजीत वरि महोला लिया ।—वचनिका

उ०—२ महोलो म्हारी तीज रो आलीजाजी हो । लीजो म्हांरा पना मारू घणां नै सनेह सू ।—रसीलै राज रो गीत

२ मुजरा, अभिवादन ।

उ०—दळ वादळ लागि नै रहिया छै । रजपूतां रा थाट मोगर मिळै छै । महोला लीजै छै ।—रा मा स

३ राजा महाराजा या किसी वडे आदमी के स्वागत मे गाया जाने वाला गायन ।

उ०—१ इण तरै सु खमायची रा दूहा रा महोला लेता आवळै वीच पाव देता, म्हैला सु नीजीक आया ।—पनां

उ०—२ उसी वखत दरवान नै अरजी गुदराई दीदार की उमेद-वार चार काजरीयां आई । सुनते ही बुलाकर महोला लिया बोहत सी तारीफ कर सात टका इनांम का दिया ।—दुरगादत्त वारहठ

४ उत्सव, समारोह ।

उ०—सावण घणो सिरावियो, रसीयो वगसीराम । निरमै गढ वूदी नगर, तीज महोला ताम ।—वगसीरांम प्रोहित री वात

५ स्वागत । ६ निवास स्थान, डेरा ।

उ०—सब कू बुलाय वैण अकवर साह वोलै । मेरी निसां खातरी है तुमारै महोलै ।—रा रू.

७ सेना का पडाव ।

उ०—सेन के प्रमांण कोन कहा साह वोलै । सेनापत कोन मीर देखन महोलै ।—रा रू

८ काव्य रस, रस स्वाद ।

९ देखो 'महल्लो' (रू भे)

महोखधि—देखो 'महोसधि' (रू भे.)

महोदध, महोदधि—देखो 'महोदधि' (रू. भे)

उ०—नाचै तिम नट्ट थई जिम नांच, महोदधि मज्झ कूदै सुज मांछ ।
—मा. वचनिका

महोवत—देखो 'मुहब्बत' (रू भे)

उ०—विरहा घूम मचाई मोरे रांम, रसराज त्याय महोवत यू हो ।
—रसीलै राज रो गीत

महोर महोरि—देखो मोहर' (रू भे)

उ०—कवि विम सहस गयद घज करहर । घरै महोरि वि सहस वाजित्र घर ।—सू प्र

महोसधि—स० स्त्री० [स० मह+ओपधि] कुछ विशिष्ट ओषधियों का समूह जिनका चूर्ण महास्नान या अभिषेकादि के जल में मिलाया जाता है ।

रू० भे०—महोखधि ।

मह्यू सालू—स० पु०—एक प्रकार का वस्त्र विशेष ।

उ०—उरगाला वाला पटुलां वाकला घनवेलि कमलवेळि कपूरवेलि सेलापटुली खमरतली भमरतली चेउली मह्यू सालू चारसा सरवास खेम ।—व स.

मह्वौ—देखो 'महुओ' (रू भे)

मा—देखो 'मा' (रू भे)

उ०—१ चूडलो चीरासै घण री सायवो रे लजा ओठी है लो । ओटणिया ओढामी मां जायो वीर वाला जी ओ ।—लो गी.

उ०—२ राय पसेणी हो जाता भगवती, जीवाभिगम नइ मांझ । ए सूत्र मांनइ हो प्रतिमा, मानै नही महारी मां नइ वाझ ।—स कु

उ०—३ म्हारी वाई, म्हारी मां री सीख थारी समझ मे सावळ वैठी कोनी ।—फुलवाडी

उ०—४ जे दुमात सावका वेटा नै सगा वेटां री ठौड नी मानै तो सावका वेटा किसा दुमात नै मां री ठोड मानै ।—फुलवाडी

उ०—५ राजकवर मुळकतो थको कैवण लागो-मा, मन मे थोडी घणी तो निरांत राखो । म्हू अवारू थां सगळा री वातडी ठांणै बिठाय देवूला ।—फुलवाडी

सर्व०—हम ।

उ०—इसा में वाता करता सेला सिकारां फिरतां दिन तीसर गया । सावण आयो, तद वहुवां सारचा अरज कीवी, जो कुवरसी मां-सु कृपा कर गोठा माहरी जीमो ।—कुवरसी सांखला री वारता

अव्य०—१ मत, नही, ना ।

उ०—१ उठै जाय हाथ-पग धोय नै आपरी तरवार काढ नै कवल पूजा रै वास्तै गळा ऊपर मेली। तरै देवीजी कह्यौ—मा ! मा !
—नैणसी

उ०—२ पय ठव सूका पांनडा, मा बजाड मयमत। खवरदार के वेखवर, वन इण सीह वसत।—बां दा

उ०—३ राघव जपतो प्राणी, मूढ आळस मां करै।—र ज प्र

२ देखो 'माय' (रू भे)

उ०—१ साहिव जी के नाम मां, विरहा पीड पुकार। ताळा वेळी रोवणा, दादू है दीदार।—दादूवाणी

उ०—२ हा हा करू हिवे कासू रे, माहरौ हिवडो फटै मा सू।
—जयवांणी

उ०—३ दिन जास्यं हिव दोहिला, किम रहिसै मुझ प्रांण। सतावै मुझ नै सदा, घटै मां पावै बांण।—वि कु

उ०—४ माया कारण देस देसांतरै, अटवी वन मा जावै रे। प्रवहण वइसी धीर द्विपातर सायर माझ पावै रे।—स कु

उ०—५ ताही पथ कोई कूरमा के वस जायो, मारुदेस मां' सू जो कबीला लेर आयो।—सि व

मांग्रडो—देखो 'मूडो' (रू भे) (जैसलमेर)
सर्व—मेरा।

मांइ—देखो 'माता' (रू भे)
२ देखो 'माय' (रू भे)

उ०—साहिव, तुझ सनेहडइ, प्रीति तणी पति जाइ। जळ खिण ही जाणइ नही, मच्छ मरइ खिण माइ।—ढो मा

मांई—१ देखो 'मांईमा'।

उ०—१ ईहा आपस मांहे विचारी, 'आपानां मांई घर माहे कढाया तो आपां अठै रहा नही।—हसराज बछराज री बात

उ०—२ तिणसू माजी नै गाव १ आप दीधो छै। तिण रो हासल माफक हीज आवै छै। नै मांई जी रे (सोतेली मा के) हाथ राज रो कांम छै।—जगदेव पवार री वात

२ देखो 'माता' (रू भे)

उ०—मांई ! सुराधाम सरसावो। मेछ धरम दुर करम मिटावो।
—रा रू

३ देखो 'वाई' (रू भे) (वरदा) (शेखावटी)
४ देखो 'माय' (रू भे)

उ०—१ महूडा मिळयागिरी मिरी, मीढल नइ मदार। मांई मजीठ मरि हठी, मरडासींगे मार।—मां का प्र

उ०—२ समझाऊ सौ वार, समझ रो घाटो साई। जगत कमावण जाय, मुरख बैठो घर मांई।—ऊ का

मांईजायो—स० पु० [स० मा+जात] १ विमाता का पुत्र, सोतेला भाई।

मांईमां—स० स्त्री० [स० मूर्त-माता] सोतेली मां, विमाता।

मांऊं—क्रि० वि०—अन्दर से, भीतर से।

माक—सं० पु० [स० मकि=मडने=मक=रा=माक] अर्जुन का एक नामान्तर। (अ मा)

माकड—स० पु० [स० मर्कट] (स्त्री० माकडी) १ एक जाति विशेष का घोडा।

उ०—दक्षिणपथा पाणीपथा मांकडा नीलडा कयाहडा गगाजला सिंघूआ पारकरा कबोजा।—व स

२ देखो 'मरकट' (रू भे)

उ०—१ ओर चढै गढ ऊपरा, नीसरणी वळ नीठ। भजको धव पूगो उठै, माकड मेल्हे पीठ।—वी स

उ०—२ राजा लोह सपूरण्ण सन्नद्ध हूउ युद्ध करइ, सुहृड चूरइ, रथावली ऊधळावइ, मुहुडघा माकड जिम नचावइ ।—व स

उ०—३ एक घणा माकडी अनइ पाए बाधी काकडी ।—व स.

३ देखो 'मत्कुण' (रू भे.)

उ०—माकड हाड मिलइ नहीं, मीनी-ससली-सिंग। परिपरि पूजइ पदमिनी, स्वान-विलग्गां लिंग।—मा का प्र.

माकडा—देखो 'माकडा' (रू भे)

माकडियो—१ देखो 'मत्कुण' (अल्पा रू भे)

उ०—तीडा मांखी डांस मच्छर कसारी धार, कवउ डोला माकडिय पतग इत्यादिक भेद।—व स.

२ देखो 'मरकट' (रू भे)

मांकडी—देखो 'माकडी' (रू भे)

माकण—स० पु०—१ कीट जाति का कोई जीव।
२ देखो 'मत्कुण' (रू भे)

उ०—बाला बढाव्या टाकता, माकण खाटला कूटि। विरेच लेई कृमि पाडिया, गलणी गयउ छूटि।—स कु

३ देखो माखण' (रू भे)

माकणो, मांकवो—क्रि० स०—१ मागना।

उ०—पाडउ मांकइ खीरा प्राणि, वच्छ माकइ दूध प्राणि, धनवत माकइ धनप्राणि, राजा माकइ देस प्राणि, राजपुत्र माकइ सूर प्राणि, चोर माकइ मावा प्राणि, पायक माकइ नायक प्राणि, वधू मांकइ पीहर प्राणि।—व स

२ शोषण करना, खून चूसना।

माकणहार, हारौ (हारी), माकणियो—वि०।
माकिओडो, मांकियोडो, मांक्योडो—भू० का० कृ०।
मांकीजणो, मांकीजवो,—कर्म वा०।

माकर—१ देखो 'मत्कुण' (रू भे.)

उ०—माकर ज्यु जीव हालइ डोलइ, थाम्यउ किही नी जावई।
—स कु

२ देखो 'मरकट' (रू भे.)

माकियोड़ो-भू० का० कृ०—१ मांगा हुवा. २ शोषण किया हुआ, खून चूसा हुवा
(स्त्री० माकियोड़ी)

माकुण—१ देखो 'मत्कुण' (रू भे) (उ र)
उ०—म्हर उखरलु, माकुण माचा भिरिया, जू भरिया गोदडा कान मिलि भरिया, रालडां फुहडा, पग भरित साडळउ।—व स.
२ देखो 'मागण' (रू. भे)
३ देखो 'मरकट' (रू भे)

मांखण—देखो 'माखण' (रू भे) (उ र)
उ०—१ फळ चाळण चद्रसेन कळोघर, कळहिये वहै कस। काळा तें दळ मथे काढियो, जुग माखण ऊजळो जस।
—दूदा नगराजोत री गीत

माखी—देखो 'माखी' (रू भे)
उ०—१ लालच रस रै लाग, माखी लपटांणी मधू। उडणी वळियो आग, जिगरै मुसकळ जीवणो।—वां दा.
उ०—२ तितरै घरसू भातो आयो, तरै भातो पत्तर माहै पुरस नै आप माखी गवरण लागो।—नैणसी

माग-स० स्त्री० [स० मार्गण] १ बाजार मे खरीददारो द्वारा किसी वस्तु की निश्चित मूल्य मे खरीदने के लिये की जानेवाली इच्छा या चाह।
२ किसी वस्तु की एक निश्चित मात्रा में बताई जाने वाली आवश्यकता।
३ किसी प्रकार की इच्छा।
४ अपने अधिकारों या हकों के प्रति सामूहिक रूप से उठाई जाने वाली आवाज।
५ वह कन्या जिसका प्रणय सम्बन्ध किसी के साथ निश्चित हो चुका हो।
उ०—१ अर तिकी ही माग पिता नू परणाइ तटस्थ भाव धारि अपूरव जस लीधो।—व भा
उ०—२ तरै पितसघी कह्यो, तै मोनै छळी, पिण हू तुरकणी छू नै आंटा भीलगी माग छू। इण री जाय कासू छै। तरै भीवै कह्यो, मैं सरव कबूल्यो।—जखटा मुखड़ा भाटी री वात
६ सिर के बालों को दोनों ओर विभक्त करके बनाई जाने वाली रेखा, स्त्रियों का सौभाग्य चिन्ह।
उ०—१ पटिया पारू म्यांन की मन मांग सवारू हो। पिया तोरे कारणे धन जोवन वारू हो।—मीरां
उ०—२ मांग जडया गज मोतियां, कढ़या रूळता केम। ताळी हस रेही जणी, बाळी मांमण वेस।—पनां
७ देखो 'मागण' (रू भे) (अ मा)
रू० भे०—मग, मागु।

मागटीको-स० पु०—स्त्रियो की मांग पर धारण किया जाने वाला गहना, सोभाग्य चिन्ह।

मागण-स० पु० [सं० मार्गण] १ मांगने की क्रिया या भाव, याचना।
उ०—१ बावो बांमणी नैं ई वैडो सवाल करियो—बाला, थू तो भला घर री दीसै, अो मांगण रो निकूच कांम क्यू करै।
—फुलवाडी
२ पथ प्रदर्शक।
३ याचक, भिखारी। (अ. मा, ह ना. मा)
उ०—१ जैतो साळोडी पीपळ वहसायै परणीजण आयो हुतो सु किणही सूळ व्याह तो न हुवो, नै मांगण घणा भेळा हुवा।
—नैणसी
उ०—२ दीनानाथ अभै पद दानख, मानख अतक समर भर। मानख जनम सफळ कर मांगण, धानखधर पद सीसधर।
—र ज. प्र.
उ०—३ कृपण कहै ब्रह्मा किया, मागण वडी बलाय।—बां दा
४ वदीजण, भाट, चारण।
५ विप्र, ब्राह्मण। ६ जोशी, ज्योतिषी।
७ पडित, कवि।
वि०—मागने वाला, याचना करने वाला।
रू० भे०—मगजण, मगण, मगन, मगिण, माग, मागज, मागण, मागिण।

मागणगार, मागणयार, मांगणहार—स० पु० [स० मार्गण] १ याचक।
उ०—१ राणी राजा नू कहइ, मेल्हउ मांगणहार। मांगणगारा रीझवइ, ल्यावइ साल्हकुमार।—ढो मा
उ०—२ पछै ढोलोजी दारू अमल पीवण लागा। तद मोमर देखने मांगणहार कहै।—ढो मा
२ ढाढियो की एक शाखा। (सिंध) (मा म.)
३ भिखारी, भिक्षुक।
रू० भे०—मांगणियार, मागणिहार, मांगिणहार, मागणहार, मागणियार, मागिणहार मागीणहार, मागिणिहार।

मांगणि—देखो 'मागणी' (रू. भे)

मांगण्यार, मांगणिहार—देखो 'मागणगार' (रू. भे)
उ०—१ श्री गढ कहै दुनी आडपियो, अण गढ राण थमो अद तार। खीजे गयो खजानो खोयो महमद सरखो मागणियार।
—महाराणा री गीत
उ०—२ घडच्छत्र फौल खगा सिरधार। रचै मुकतागळ मागणिहार।—सू प्र.
उ०—३ तितरै रायसिंघ री मागणिहार गांव जाहै साहिब रो सासरो थो, तठै भो पण परणियो थो, सु सासरे गयो थो, सु साहिब रायसिंघ ऊपर आयो सुणनै भो ही रायसिंघ तीरै आयो।
—नैणसी

मांगणी-स० स्त्री०—याचना ।

उ०—तिण रौ बेटौ नागारजन तिको श्रहमदावाद पातसाह महमद वेगडा कनै मागणी गयौ हुतौ ।—नैणसी

रू० भे०—मांगणि ।

मांगणौ-स० पु०—भिक्षा ।

उ०—१ साध न मागै मांगणौ, मांगै मांगिणहार । हरीया उर इक तार धरि, हरि है पूरणहार ।—स्री हरिरांमदासजी महाराज

उ०—२ भूख भूंडी हुवै, पेट मैं श्राळा जमाया । छेकड नारळी हाथ मांगणौ पड्यौ ।—दसदोस

मागणौ, मांगवौ-क्रि० स० [सं० मार्गण] १ कुछ पाने के लिए किसी के श्रागे याचना करना, हाथ फैलाना, प्रार्थना करना ।

उ०—१ सग्रूपा नार स्वयभू भूप, रहिस्स विचार न दीठौ रूप । मागै वर पुत्र हुतौ हरि मोज, हुतौ ज हुतौ ज हुतौ ज हुतौ ज ।
—ह र

उ०—२ हैमाचळ केइलास विचइ हिक, घ्यान रह्या तिण सहरि धरि । प्रसन हुमी इण वात सही प्रभु, किरि मांगउ फळ सेव करि ।—महादेव पारवती री वेलि

उ०—३ पायौ किण धनवत पद, दामै डावडियाह । कवियण किन पायौ कुरब, मांगै मावडियाह ।—वा दा

२ इच्छा या श्राकांक्षा-पूर्ति के लिये किसी से निवेदन करना, कहना ।

उ०—सु प्रसन हुया तियइ तप सकर, रे मानवी वछइ सोइ मांग ।
—महादेव पारवती री वेलि

३ भिक्षा वृत्ति करना ।

उ०—म्हैं तौ थें कं'वो के खुदा नै नी मानू जिण कारण फोडा भुगतू पण इण रो म्यानो तौ म्हनैं दो के श्राठ पो'र भगवान री माळा फेरण वाळा भीख मांगता क्यू फिरै ।—फुलवाडी

४ किसी को कोई वस्तु देने के लिये कहना, कोई चीज मागना ।

उ०—१ उणां री राव मडळीक तारीफ सुणी, तरै चारण कनै घोडा मांगिया । चारण न दिया । राव मडळीक घोडा मागण इणा रै घरै श्रायौ । इणां उजर कियौ तरै परो गयौ ।—नैणसी

५ ऋण के रूप में किसी को कुछ देने के लिये कहना, माग करना । प्रस्ताव करना ।

उ०—श्रेक वौ वाणियौ विणज करण सारू बामण कना सू पाच हजार मोहरा मागी ।—फुलवाडी

६ किसी वस्तु को लौटाने के लिये किसी से कहना ।

उ०—म्हैं तौ मागनै पाणी ई नी पीयौ । सेठा कनै ई दीयोडो मागण नै श्राई हू ।—फुलवाडी

७ लौटाने के लिये किसी पर कुछ वाकी रहना ।

ज्यू—वौ म्हारा मे पचा रुपया मागै है ।

८ बिक्री योग्य वस्तु के दाम बताना, मूल्य कहना, कीमत मागना ।

उ०—म्हैं थनै पूछ्यौ के बावा गाडी रो काई मोल करै । तौ थू पाच रिपिया मागिया श्रर म्है थनै पाच सू कम दिया व्हू तौ बता ।
—फुलवाडी

९ प्रस्थान या किसी कार्य को करने लिये सहमति, श्रनुमति या इजाजत लेना, पूछना ।

उ०—१ पहुतउ किलास तणइ जाइ परवत, माता कन्हा श्रागिया माग ।—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ जद साह श्रापरी वहू तीरे सीख मागवा गयौ । ने कही देख तू मला घर री छोरू है । ने हू दखण जाउ छू । जणी थी तू पाग री सरम राखजै ।—बघी बुहारी री वात

१० किसी गल्ती या भूल के लिये श्रफसोस जाहिर करना, खेद प्रगट करना, क्षमा याचना करना ।

उ०—बेटी ! माफी मागण वास्ते थारा इण विध हाथ उकळै तो पछै उण रात थारै हाथा रै काई वळियौ हो ।—फुलवाडी

११ लडके या लडकी के सम्बन्ध के लिये प्रस्ताव करना, सम्बन्ध करने के लिये कहना ।

मागणहार, हारौ (हारी), मागणियौ—वि० ।

मांगिश्रोडो, मागियोडो, माग्योड़ो—भू० का० कृ० ।

मागीजणो, मागीजबौ—कर्म वा० ।

मगणौ, मगवौ, मागणौ, मागवौ—रू० भे० ।

मागत-स० स्त्री० [राज० मागणौ] १ हिस्सा, श्रश, हक ।

उ०—१ पिडतजी पुत्र रो मार्ग सो भला श्राया । पण श्रो जाट काई मागत मागै ? थू भेळौ थुडियौ हो काई ?—फुलवाडी

उ०—२ राजपूत रै पाखती श्रायनै कडकतौ वोल्यौ—किणी रा घणी हौ तो श्रापरै घरै व्होला । श्रठै काई मांगत मागो ? घणी व्है जको तौ सामी जाव्तो करै के चोरघा करै ।—फुलवाडी

२ कर्जा, ऋण ।

उ०—जे वा व्याव पछै मरती तो इण सू दूणा रिपिया खरच व्हैता के नी । लाली श्रापरी मागत मागै जको तौ उठै वैठी ई वसूल करैला ।
—फुलवाडी

क्रि० प्र०—मागणी ।

मुहा०—मागत मागणी=हक मागना, कर्जा वसूल करना ।

रू० भे०—मगत ।

मागफूल-स० पु०—माग पर घारण करने का स्त्रियो का एक श्राभूषण ।

उ०—मागफूल सिरफूल, जडाऊ मडिया । खिण खिण निरखै नाह, हिए दुम्व खडिया ।—वा दा

मागरिया-स० पु० [दे०] भाटी वश की एक शाखा ।

मागळगीत-स० पु० [स० मागल्यगीत] शुभ श्रवसरो या मागलिक श्रवसरो पर गाया जाने वाला लोक गीत, गीत ।

रू० भे०—मगळगीत ।

मागळिश्रा—देखो 'मागळिया' (रू भे)

उ०—कहै चुहुआण रा हीज सगा हुआ छो। एहड़ा तोफादार हुता तका कहीज घाट रजपूत तो मागळिआ पण नही, तको राज म्हानै परणिआ पछै मुहडो ही न देखाळिओ।
—कल्याणसिंघ नगराजोत वाढेल री वात

मागळिक, मागलिक–वि० [स०मगल+इक] १ शुभ माना जाने वाला।
उ०—अहिवु स्त्री पांहइ गूहली देवरावु, ऊपरि मोती तणु चुक पूरावु, अह्य वर राजेंद्र आव थिका हूता इस्या मांगळिक वरतावु।
—व स.

२ शुभ या मगल करने वाला।
३ शुभ अवसरो पर गाया जाने वाला। (गीत)
स० पु०—गुड।
रू० भे०—मगळिक, मगळी, मगळीक, मागळी, मागळीक।

मागळिया–स० पु०—१ भाटी वश की एक शाखा जो वाद मे मुसलमान हो गई।
२ गहलोत वश की एक शाखा।
रू० भे०—मागळिआ, मागल्या।

मागळियावटी–स० स्त्री०—मारवाड राज्यान्तर्गत वह प्रदेश जहा पर 'मागळिया' (गहलोत) वश के राजपूतो का आधिपत्य था।

मागळियो–स० पु०—१ गहलोत वश की 'मांगळिया' शाखा का व्यक्ति। (वां दा ख्यात)
२ भाटी वश की 'मांगळिया' शाखा का व्यक्ति।
३ देखो 'मगळियो' (रू भे.) (वरदा)

मा'गली–सं० स्त्री०—१ जल पात्र।
उ०—सिर पर लेस्या जळ री मा'गली। इस विध निरखण जास्यां जी। सुहागदार विडमो।—लो गी
२ देखो 'मगळा' (रू. भे)
३ देखो 'मागळिक' (रू भे)
रू० भे०—मा'गल्या।

मागळीक—देखो 'मागळिक' (रू भे)
उ०—महाराय स्री कल्याणमलजी जन्म महोच्छव मांगळीक वधावणा कराया।—द वि
उ०—२ गुवाड-गुवाड, घर-घर ऊपर लुगाया वधाई रा वधाव मागळीक गावै छै।—पलक दरियाव री वात

मागलुरी–स० स्त्री०—एक वस्त्र विशेष।
उ०—पच वरण गज, दुरगी गज, मागलुरी गज, गढ गजी, सवागजी चुगजी पटणी पटपाटू, पचवरण छीट।—व. स

मागल्य–वि० [स०] मगलकारक, शुभ।
स० पु०—शुभ, मगल या हर्षप्रद होने की अवस्था या भाव।

मां'गल्या—१ देखो 'मागळिया' (रू भे)
२ देखो 'मा'गली।

मांगसर, मागसुर—देखो 'मिगसर' (रू भे)

उ०—दत्त राजा स्री सूरजसिंघजी री वाहारैट लाखा नांदणोत रोहडीया नु समत १६७२ मागसुर सुद ७ गाव ३ रै भेळो छै।
—नैणसी

मागातागी–स० स्त्री०—१ मांगने की क्रिया।
उ०—कैणा मैं तो ठाकर रो वाटो चोथो हो, पण रोजीना री मांगी तांगी मे के आज फलाणजी रै मिरचा भेजणी, आज ढीकडजी रै अर आज पूछडजी रै, यू करनै सगळो वांटो आधा सू ई करड़ो पडियो।—फुलवाडी
२ ऋण कर्ज।
रू० भे०—मागातांगो।

मांगातागो—देखो 'मांगातागी'।

मागिण—देखो 'मागण' (रू भे)
उ०—आर्प ही जाणावसी, भलो ज होसी वगि। कै मांगिण दरसाविया, कै ऊछजिया सगि।—हा भा

मांगिणहार—देखो 'मागणगार' (रू भे)
उ०—साव न मागै मागणो, मागै मांगिणहार। हरीया उर हक तार घरि, हरि है पूरणहार।—स्री हरिरामदासजी महाराज

मागियोडो–भू० का० कृ०—१ कुछ पाने की आशा से किसी के आगे याचना किया हुआ, हाथ फैलाया हुआ, प्रार्थना किया हुआ. २ इच्छा या आकांक्षा की पूर्ति के लिये निवेदन किया हुआ, कहा हुआ. ३ भिक्षा वृत्ति किया हुआ ४ किसी को कोई चीज देने के लिये कहा हुआ, मांगा हुआ ५ ऋण के रूप मे किसी को कुछ देने के लिये कहा हुआ, मांग या प्रस्ताव किया हुआ ६ कोई वस्तु लौटाने के लिए कहा हुआ ७ भुगतान योग्य कुछ वाकी रहा हुआ. ८ कीमत मागा हुआ, मूल्य कहा हुआ ९ प्रस्थान या किसी कार्य के लिए सहमति, अनुमति या स्वीकृति लिया हुआ, पूछा हुआ १० अफसोस जाहिर किया हुआ ११ सम्बन्ध या रिश्ते के लिए प्रस्ताव किया हुआ
(स्त्री० मांगियोडी)

मागेडो, मागेरणो—देखो 'मगेडो' (रू भे.)

मागो–स० पु०—१ लडके या लडकी के रिश्ते के सम्बन्ध में किया जाने वाला प्रस्ताव।
२ मागने की क्रिया या भाव।
३ जलपात्र के ऊपर रखा जाने वाला अतिरिक्त जल-पात्र। (ढूढाड)

माच–स० स्त्री०—१ आरे के चारो ओर लगने वाला लकडी का चौखटा। २ ईंटे वनाने के लिए गीली मिट्टी ढोने का एक उपकरण।
३ रथ या वैलगाडी की मचान।
४ खाट के वीच वनी हुई झोली।

मांचड़, माचउ—१ देखो 'मच, मचक' (रू भे) (उ र)
२ देखो 'माचो' (रू भे)

मांचकरोत–स० पु०—वह आरा जिसके चारो ओर लकडी के हत्थे लगे हो।

माचणो, माचबो—देखो 'मचणो, मचबो' (रू भे)

उ०—१ तुरगम पाखरया, सूरा सामह्या, लागि वाजइ, हस्ति माचइ, कवध नाचइं । —व स.

उ०—२ खमा भणि-जोगणि, खाचत खून, सुरा कर माचत मेह प्रसून । —मे- म.

मांचणहार, हारो (हारी), माचणियो—वि० ।

माचिप्रोड़ो, माचियोड़ो, माच्योड़ो—भू० का० कृ० ।

माचीजणो, माचीजबो—भाव वा० ।

माचियोड़ो—देखो 'मचियोडो' (रू. भे)

(स्त्री० माचियोडी)

माची—१ देखो 'माचो' (ग्रल्पा, रू भे.) (उ र)

२ देखो मच' (ग्रल्पा, रू भे)

३ देखो 'मचिका' (रू भे)

माचो—स० पु० [स० मच] चारपाई, खाट ।

उ०—१ नहीं गया माचै मुवा, रवि मडळ रै राह । जूझ मुवा रण मे जिकै, गत पचमी गयाह । —वां दा

उ०—२ वा हळफळाई माचा सू ऊभी व्ही । उणरा हाथ सू दीवो छूट नै हेटै पड़ग्यो—फुलवाडी

रू० भे०—माचइ, माचउ, माची ।

माछ—देखो 'मत्स्य' (रू भे)

उ०—पहै घड कळस दीस प्रगट्ट, थहै किर सेत सिरा चा थट्ट । नाचै तिम नट्ट थई जिम नाच, महोदधि मज्झ कूदै सुज माछ ।

—मा वचनिका

मांछळी, माछली—देखो 'मच्छी' (ग्रल्पा, रू भे)

उ०—पपैया नैं मेघ प्यारो, मांछली मध नीर । म्हानैं तो गिरधर हि प्यारो, छांड्यो जगत सू सीर । —मीरा

मांछलो, माछो—१ देखो 'मत्स्य' (ग्रल्पा., रू भे)

उ०—उलटै जिम इद ग्ररीहर ग्रायै, करिवा ग्रत कथा ग्राकाहि । वहतै जळ धारा वीरमदे, माछा जही चढियो जळ माहिं ।

—वीरमदे गोड री गीत

२ देखो 'माछळो' (रू. भे)

माज—श्रद्धा ग्रौर भक्ति के साथ किसी को धन देने की क्रिया या भाव ।

देखो 'मध्य' (रू. भे)

देखो 'मौज' (रू भे)

मांजण—स० स्त्री [सं० मार्जन] १ मांजणो, सफाई करने की क्रिया या भाव ।

२ स्नान, मज्जन, परिमार्जन ।

उ०—करू ऊठी-मांजण-रायकुवरी, सु पहिरण लागी सिणगार ।

—महादेव पारवती री वेलि

रू० भे०—माजणउ, मांजिण, मांजिणउ ।

वि०—सफाई करने वाला, 'माजने' वाला ।

स० पु०—देखो 'मारजन' (रू भे)

माजणउ—देखो 'माजण' (रू भे)

उ०—१ चद्रमा घडी घडी ग्रम्रत झरइ, यम पाणी वहइ, सात समुद्र माजणउ करावइ, मातर ग्रारती ऊतारइ । —व म

उ०—२ पहिरण वसत ग्राभरण पहिरण । राय कुवार माजणउ करइ । —महादेव पारवती री वेलि

उ०—लागउ तेथ करण माजणउ लाडउ, इद्र सुर कहइ धनउ दिन ग्राज । —महादेव पारवती री वेलि

माजणियो, माजणो—वि० [स० मार्जक] १ माजने वाला, साफ करने वाला ।

२ सफाई करने वाला ।

३ स्वागत करने वाला, ग्रादर सत्कार करने वाला ।

रू० भे०—माजिणो ।

माजणो, माजबो—क्रि० स० [स० मार्जन] १ वर्तन या किसी वस्तु पर धूल या कोई पदार्थ विशेष रगड कर उसका मेल छुड़ाना, साफ करना, उजला व स्वच्छ करना ।

उ०—१ ग्रसि वावक ग्राविया, सस्त्र माजिया सतावी । साणा चढ़िया सुफ फूल झड़िया हद फावी । —मे. म.

उ०—२ वो खोळा टाक नै ढूको जको सगळी हवेली गे फूस-वाईदो काढ दियो । बरतन-वासन सगळा मांज न्हाकिया ।

—फुलवाडी

उ०—३ नाक रै हाथ लगाय नै कह्यो-ग्रा तो झारा री नळकी ग्रर ग्रो माजियोडो झारा रो पीदो पळ पळाट करै । —फुलवाडी

२ स्नान करना, नहाना ।

३ सफाई करना, झाड़ना, पोछना, पोछकर साफ करना ।

उ०—१ सावळ जमनै वैठ्यो जित्तै जडाव मासी सगळी खीर सबो-डली । तवरा नै ग्रांगळिया सू पूरो चाटनै माज्यो । —फुलवाडी

उ०—२ कमळ पडिया पछै मारि ग्ररी म्यान कीधी । माहिळै पळै तळवारि माजै । —कुवर नरपाळ देवळ लोहियाणा रो गीत

४ घोड़ा ऊट ग्रादि पशुग्रों के शरीर की धूली ग्रादि साफ करना, दूर करना ।

उ०—कीधा ग्रसि चाकरा, तुरत साकुरां तयारी । खुररा माजी खेह, धजा तुररा सिरधारी । —मे म

५ ग्रभ्यास करना । ६ रगड़ना ।

७ मिटाना, दूर करना । ८ नष्ट करना ।

माजण हार, हारो (हारी), माजणियो—वि० ।

माजिग्रोडो, माजियोडो, माज्योडो—भू० का० कृ० ।

माजीजणो, माजीजबो—कर्म वा० ।

मजणो, माजिणो, माजिबो, मांजणो, माजबो—रू० भे० ।

मांजरि—देखो 'मांजरी' (रू भे)

उ०—गध हस्ति तणइ कुण माथइ मोती उकिरइ, नागराज नइ माथइ चूडामणि कवण करइ, मयूर माथइ माजरि कवण करई' ।
—व स

२ देखो 'मजरी' (रू भे)

उ०—मारग मइ भ्रावउ मित्यउ म्हाकी सहियर मांजरि रही महकाय हे ।—स कु.

माजरियो—देखो 'माजरो' (अल्पा, रू भे)

उ०—मो मे फूल सैंस मे काणो । सब से ऊचो एचाताणो । एचा-ताणो करघो विचार । माजरियो सब को सिरदार ।—अज्ञात

माजरी—स० स्त्री०—१ बिल्ली जैसी या भूरी आंख। २ किलगी।

रू० भे०—माजरि, माजरि

३ देखो 'मजरी' (रू भे)

उ०—कोयल करै टहूकडा म्हाकी सहियर, सुदर फल फूल पान हे । राजा एक माजरी ग्रही म्हाकी सहियर, तिम मत्री परधान हे ।
—स कु

४ देखो 'माजरो' (पु०)

मांजरो—वि० [स० मार्जर] (स्त्री० मांजरी) १ बिल्ली के समान आंखो वाला। (वरदा)

उ०—मन मैला चख माजरा, भाळै जे नग भांज । गोला अवगुण नू ग्रहै, गुण भलपण रा गांज ।—बा दा

२ भूरी आंखो वाला ।

स० पु०—१ भूरी अथवा बिल्ली के समान आखो वाला व्यक्ति।

२ बिलाव ।

३ छोटी वस्ती या गाव ।

उ०—दस जाजीवाळ ते मे २ सूनी मांजरं छै ।—नैणसी

अल्पा०—मांजरियो ।

४ देखो 'माजरो' (रू भे)

मांजा—स० पु० (व० व०) गाडी के अग्र भाग मे लगी हुई (दो) लक-डिया विशेष ।

मांजाणो, माजाबो—देखो 'मजाणो, मजाबो' (रू भे)

माजाणहार, हारो (हारी), मांजाणियो—वि० ।

मांजायोडो—भू० का० कृ० ।

माजाईजणो, माजाईजबो—कर्म वा० ।

मांजायो—देखो 'माजायो' ।

(स्त्री० माजाई, माजायी)

माजायोडो—देखो 'मजायोडो' (रू. भे)

(स्त्री० माजायोडी)

मांजिण, माजिणउ—स० पु० [स० मजन] स्नान।

उ०—साखिए ऊगट माजिणउ खिजमति करइ अनत । मारु-तन मडप रच्यउ, मिनण सुहावा कत ।—ढो मा.

मांजिणो—देखो 'माजणो' (रू भे)

माजिणो, मांजिबो—देखो 'मांजणो, मांजबो' (रू भे)

उ०—सखी भणइ सामिणि हिव सुणउ एह दोस नवि कुणइ दैविहि कीधा छइ जे कांम तेह मांजिवा धरइ कुण हांम ।
—हीराणद सूरि

माजिणहार, हारो (हारी), माजिणियो—वि० ।

माजिओडो, मांजियोडो, मांज्योड़ो—भू० का० कृ० ।

मांजीजणो, माजीजबो—कर्म वा० ।

मांजियोडो—भू० का० कृ०—१ धूल आदि से रगड कर साफ किया हुआ, उजला किया हुआ, स्वच्छ ।

२ स्नान किया हुआ ।

३ झाड़ा हुआ, पोंछा हुआ, पोंछ कर साफ किया हुआ ।

४ अभ्यास किया हुआ । ५ रगडा हुआ ।

६ मिटाया हुआ, दूर किया हुआ । ७ नष्ट किया हुआ ।

(स्त्री० माजियोडी)

माजिस्टो—देखो 'मजीठो' (रू भे)

उ०—इसी दाल परीसी सद्यस्तापितु परमान्नत प्रितु, सद्य ताविउ, घाइ नासिउ, माजिस्टा वरण, अब धारइ करण, सरहुरी, धार, प्रीणइ जिमणहार, सोभाग्य अजेय, नामापट्ट पेउ, साक्षात् अमृत एव विध घ्रत ।—व स.

मांजी—देखो 'मांझी' (रू भे)

उ०—भील गुहो वन मिलै भाव सू, [परम भगत पोरस भरपूर । मोहणनागो आप दिस माजी जिण नू कही हकीगत जाभी ।—र रू

२ देखो 'माजी' (रू भे.)

मांजूफळ—देखो 'माजूफळ' (रू भे)

माजोट—स० पु०—बैल गाड़ी का एक उपकरण ।

मांजो—सं० पु०—१ ताने के मध्य का भाग ।

२ खेत का वह टुकडा जो बचत होने पर बाद मे जोता जाता है ।

३ हल चलाते समय हल की दो रेखाओं के बीच की छूटी हुई भूमि ।

४ विभिन्न प्रकार के पदार्थों के लेपन से मजबूत की हुई पतग की डोर ।

५ देखो 'मांहजो' (रू भे)

(स्त्री० मांजी)

उ०—सायलडी सपीठी पींडी पातली, मांजी माडेची सूमल हाले नी रे आलीजे रे देस ।—लो गी

रू० भे०—माझो ।

मांझ—देखो 'मध्य' (रू भे)

उ०—१ आखै सो जागा देख अऊर, नहीं जिण मांझ तुहाळो नूर ।—ह र

उ०—२ ओयण मत चोवीस होय जिण रोळा आखत । भल कवि जोडण छद मांझ, राघो जस भाखत ।—र ज प्र

उ०—३ राय पसेणी हो ग्याता भगवती, जीवाभि गम नई मांझ ।
—स कु.

माझर, माझळ–क्रि० वि०—१ बीच मे, मध्य मे।
उ०—१ तैं गज गुडियो स्री कळस, विच दळ करू वखाण। गिर कुळ रूप सपख गिर, जळ निधि माझळ जाण।—वा दा
उ०—२ मारग 'वीरम' हर कुळ मडण, मुडिया तो सू अर्भ मण। मुडिवां तणो हमै जळ माझळ, परियां वह जाणै प्रसण।
—गु रू व
२ अन्दर, में, भीतर।
उ०—१ गाजै ग्रह माझळ बैठो गुज्झ, पुजारा पच चढावै पुज्ज।
—ह र
उ०—२ वणि ससिवेस रमै माझल वन। ते वळहती वेल सोव्रन तन।—सू प्र
उ०—३ भिदि वज्र सिखर चकर इम भळकै। झीण वदल माझळ रवि झळकै।—सू प्र
उ०—४ दुजळ माझळ सापडै, अरुण उदै री वार। गावै कै दातार गुण, कै गावै किरतार।—वा दा
३ मध्य बीच, अर्द्ध।
उ०—हलकार पुतार जुवाण वीरा हक, मारि अगार घुर्ख सरिसा। मच घोर अघार गिरा सिर माझळ, आतस काळ अकाळ इसा।
—मा वचनिका
रू० भे०—माझळि, माझळी, माझिम, माझिल, माझळ, माझलि, माझली, माझिम, माझिळ।

माझळनिस, माझळरात–स० स्त्री० [स० मध्य निशा, मध्य रात्रि] मध्य रात्रि, अर्द्ध रात्रि।
उ०—उडी कुरजा ढळती माझळ रात। दिनडो उगायो मारूजी रे देस में जी म्हारा राज।—लो गी
रू० भे०—माझळरात, मझिमरात।

माझळि, माझळी—देखो 'माझळ' (रू भे)
उ०—१ सयदांण कमध सकाज मिळ, थाट सझि महाराज। अब खास मांझळि आय, अमपत्ति लीय उठाय।—सू प्र
उ०—२ मावडिया मन माझळी सो गाडा भर मीत। की ऊचौ माथो, करै, पडिया रहै पलीत।—वा दा

माझवन–स० पु०—रथ, स्यदन। (डि ना मा)

माझि—१ देखो 'माझी' (रू भे)
२ देखो 'मध्य' (रू भे)
उ०—१ जिण माझि लिखो उमराव जेम। तिण सुणै खिजै सुरताण तेम।—सू प्र
उ०—२ पत राखि पांडवा, अब कर माझि उपाये। गजपत पत राहवै, अनत खगपत चढ आए।—जगो खिडियो

माझिम—देखो 'माझळ' (रू भे)
उ०—मझि समदा वीट घर, जळसू जामोपत्त। किणही अवगुण कूझडी, कुरळी माझिम रत्त।—ढो मा.

मांझिमरत्त, माझिमरात—देखो 'माझळरात'।
उ०—मझि समदा वीट घर, जळ सू जामो पत्त। किण ही अवगुण कूझडी, कुरळी माझिमरत्त।—ढो मा

माझियाण—देखो 'मांझो' (मह, रू भे)

माझियामाझी–स० पु०—सरदारो का सरदार, बडा सरदार।

माझिळ—देखो 'माझळ' (रू भे)
उ०—जग मांझिळ थारो जिते, पाणी गग प्रवीत। अमरां मुख पांणी इते गावै सह ऐ गीत।—वा दा

माझी–स० पु० [स० मध्य] १ प्रधान, नेता, मुखिया, अगुवा, नायक।
उ०—१ मांझी मोह मराट, 'पातल' राण प्रवाड मल्ल। दुजडा किय द्रहवाट, दळ मैंगळ दाणव तणा।—सूरायचो टापरिया
उ०—२ मांझी मोगर थटा मोडो, घातै लखा दळा विच घोडो। देसा देसा ऊपरै दौडो, चढियो कळि चाळण चीतोडो।—गु रू व
उ०—३ माझी नोहत्था रूप होफरा किला मे मारै। मावडी पुकारै बीबी अल्ला नू मलाम।—मकरदान मामौर
उ०—४ पडियो मुरझाय मेम इळ ऊपर, सकत राण सुत साझी। थरकै भाल वनचरा थाणा, मुख कुमलाणा माझी।—र रू
२ वलवान वीर, योद्धा।
उ०—घाइ भाजै घडा खाग आछै घणो। मेर माझी 'जसो' हेक रिण माल्हणो।—हा झा
३ मुख्य, खास।
उ०—माझी मेर अभग मड, मारु अमली-माण। गिळण गढा भूखाळुओ, श्रो वासै जमराण।—गु रू व
४ स्वामी, अधिष्ठाता।
उ०—आया साह अलावदी, विढ कटकासू वीर। माझी रिणथभर मुओ, हठ निरवाह हमीर।—वा दा
५ मेणा जाति के व्यक्तियो की एक उपाधि। (सम्मान)
६ नाविक, मल्लाह, खेवट।
रू० भे०—माजी, माजी, माझि, माझि, माझी।
अल्पा०—माजियो, माझियो, माहजी।
मह०—माझियाण।

माझीपणो, माझीपो–स० पु०—१ 'माझी' होने की अवस्था या भाव।
२ 'माझी' होने पर मिलने वाला अश या हिस्सा।
रू० भे०—माझीपो।

माझू—१ देखो 'मझ' (रू भे)
२ देखो 'माझो' (रू भे)

मांझो–स० पु०—१ सुनहरी या रूपहरी जरी का एक वस्त्र जो मेवाड के उन सरदारो की पगडियों पर बाधा जाता था जिनको महाराणा की इजाजत होती थी।
उ०—जाहर छडी जळेब, छाप कागळ वड छापण। माझो पाघ मझार, थरू बीडो जस थापण।—वीर विनोद

रू० भे०—माफ़ ।

२ देखो 'माजो' (रू भे)

उ०—हालीडे री गवरादे जावै रे बलाय । राय हालीडै रा बाया माभे मोती नीपजै ।—लो गी

माट—देखो माट' (रू भे)

उ०—१ ओण नू मे खळाकै धसूवा माट फूटा सा-क, उठै सूगां गंदता विलम्मै केक आए ।—जमो आढो

उ०—२ दूध दही की कमारी फोरी (मथनिया फोरी) माट फोरयो गह छीको ।—मीरां

मांटी—म० पु० (स्त्री० माटण) १ पति, खाविंद, भर्तार, कंत ।

उ०—१ तरै उण कह्यो—आज म्हारै माटी घरे आयो, तिण हू आज मोडेरी आई, तरै जिंदै कह्यो—तानू माटी रो अतरो प्यार छै तो तू घरे जाय, थारा पेम थारा माटी सू कर ।—नैणसी

उ०—२ तठै ठग री बेटी नु पिण दया आई । तद ईयै रजपूत नू मावै सु छोडीयो अर कही—आगली तो कीवी सो मोनू माफ । हिवे थे म्हारा माटी अर हू थारी बाहर । तठै ईयां वळै भोग कर बोल चाल नै सुई रह्या ।—बूढो ठगराजा री वात

उ०—३ माटी मुकी बदर, सुवया बदरै परिण माटी । बेटे मुवया बाप, चतुर देता जे चाटी ।—म कु

२ मालिक, स्वामी ।

३ पुरुष, मर्द, मनुष्य ।

उ०—१ तरै मोभन पाछी आय भागरी हेठै ऊभी रही । आगै देखै तो माटी १ ऊभो छै । तरै इण बुलायो, कह्यो—तू कुण छै ? तरै इण कह्यो—हू वावरो हुल छू ।—नैणसी

उ०—२ ताहरा भो भोकाई बोलियो—थे इण माटी सु ठगियो नही ।—फावळो जोईयो ने तीडी खरळ री वात

उ०—३ तिणि अवसर नाटक तिहा राजा, आगला पडह गति रे । मिली खलक लोगाई, वयरी माटी बहुभांति रे ।—स कु

४ दोस्त, मित्र, साथी ।

उ०—१ लोग हसता ढबिया तो वो लोगा नै कह्यो—माटियां, अबै तो आप सगळा नै म्हारी वात री साच आयग्यो ।—फुलवाडी

उ०—२ बाकी सगळा सिरदार वात सुणता ई हांमळ भरी हां, हां, आ वात तो माटी पूरी ठेल बद करी है ।—फुलवाडी

५ वीर, बलवान, जबरदस्त, जोरदार ।

उ०—मुहीयो तो हिव जासी माम, माटी छै तो करि सग्राम । कहे आलिम क्या करै खुदाय, तें तो हम सु सेरयो हाय ।—प. च. चौ.

रू० भे०—माटी ।

अल्पा०—माटीडो, माटीलो ।

मांटीडो—देखो 'मांटी' (अल्पा, रू भे)

मांटीपण, मांटीपणो—स० पु० [स० मठ+रा० प्र० पणो] १ क्षत्रित्व ।

उ०—१ वीर वडो गोपाळसिह गोट वस रै मांहि मांटीपण रो आक यह, अहटो दीसै नाहि ।—गोट गोपाळदास री वारता

उ०—२ माटीपणै घणो मद्र, विकमीया वीर तम्रि । माम नूं निरोहा सार, जु आगे टरै जुहार ।—गु रू ब.

२ मर्दानगी, पुरुषत्व ।

उ०—आंटीपणों मोबादार मतारानाथ नू आगै । हिंदुवां मे मांटीपणों 'राजा'न रो टेक ।—महाराजा बहादरसिंघ रो गीत

३ बहादुरी, वीरता ।

उ०—१ ताहरां मूळवै नू खबर हुई, जु रजपूत राजा सूं कह्यो—करां कांसू ? मूळवो मांटीपणै न गयो घोडै रै वळ गयो ।

—मूळवै गागावत री वात

उ०—२ जीणू मरणे रो डर नहीं सो मांटीपणे मे बडो होवे छै ।

—नी प्र

४ साहस ।

उ०—१ आद हता भड आठमो, गढ आया गहधत । माप न वो माटीपणों, उर ज्या ताप न अत ।—रा रू

उ०—२ मो मरणे रै समय पछतावै गू आनू नाव्हो थो अर कहै थो कि इतरी लडाइया मे माटीपणो कियो कितरा घाव सहिया पण हमार तो माथरै ऊपर तूटी रांड दाई मरू छू ।—नी प्र

५ स्वामीत्व, स्वामीपन मालिकाना ।

उ०—प्रसध नाम इधकार जगजारे माटीपणो । अतुळ दातार कीरत उजाळा ।—र रू

माटीलो—देखो 'माटी' (अल्पा, रू भे)

उ०—हैजमां हीलोळ हता तैगां उ मांटीलो हलै, साथ वीर चलै चढी चाटीलो समद । वेद वकी जगा मेळै वारगां माटीलो वींद । कंवांणा कोमकी वागो आंटीलो कमद ।—हुकमीचद खिडियो

मांठ—१ देखो 'मोठ' (रू भे)

२ देखो 'माठ' (रू भे)

माठफळी—देखो 'मोठफळी' (रू भे)

मांठोडी—स० स्त्री०—मोठ की बडी ।

माड—स० स्त्री० [म० मण्ड] १ कपडो मे लगाने की कलफ जो प्राय मेदे की बनती है । (उ र)

२ रचना, बनावट, सृष्टि ।

उ०—१ तरै पजु अरज की साहिब री वडी मांड छै, किण ही वात री परमेस्वर रे घरे कमी न छै ।—नैणसी

उ०—२ निरगुण मेती सरगुण वणिया, तीनू देव थपाया । सावित्री गायत्री लछमी पारवती, यू मिळ माड मडाया ।

—हरिरांमजी महाराज

३ वैभव, विस्तार ।

उ०—मामासा री माड, कर दोऊ ताळी करै । महि ऊपर रिण मांड, एक बजावै ऊकडो ।—सरवहिया केहवाट री वात

४ पानी पीने या मरने के लिये किसी कूए या तालाब पर जाने या जाकर एकत्र होने की क्रिया या भाव।

उ०—सहर मांहै अरहट २, एक तो पावटो अतुट पाणी। सारा सहर री मांड पावटा ऊपर।—नैणसी

५ कन्या पक्ष। (विवाह)

उ०—निमत्रीहार अमार निसासहि, द्रिहगसि ढोला रवद दुवाड। विसकन्या देख वजवाया, मुणियउ माड अनड मेवाड।—दूदो

ज्यू—मांड रो आदमी।

६ दवाव।

उ०—मूए न लाभइ किरि खीर खाड। किसिउ मूआ हुइ बलवड माड।—सालिसूरि

७ एक रागिनी विशेष।

८ जैसलमेर राज्य का वह स्थान जहा सबसे पहले 'मांड' राग गाई जाती थी।

रू० भे०—मड, माडह, माडो, माढ, माड, माढ।

९ देखो 'मोड' (रू भे)

उ०—तिण उजर घणो ही कीयो पिण वेगम पातसाह री मां छेहडा मांड बांध जात कीया छै।—नैणसी

१० देखो माडो' (मह, रू भे)

मांडण—स० स्त्री० [स० मण्ड, मण्डनिक] १ रचने या बनाने की क्रिया या भाव।

२ बनाव, श्रृगार, सजावट।

उ०—१ एक वार मोरी वीनतडी सुणि सुदर लाडण रे। लाडण नइ मांडण नारिनइ नाहलु ए।—नळदवदती रास

उ०—२ म्हारा नवळ बना सिरदार मुखडा को माडण नथ ल्याज्यो जी राज।—लो गी

शोभा।

उ०—रांणा साड्या मोकल्या जो, पाछा ल्यावो मोड। कुल की माडण इस्तरी जी, मुरड़ चली राठोड।—मीरां

रू० भे०—माडणी।

माडणट—देखो 'मांडणो' (रू भे) (उ र)

मांडणी—स० स्त्री० [स० मण्डनिक] १ व्यवस्था, प्रबन्ध।

उ०—आगळती हिमाचळ आया, जान आय ऊतरिया तठइ। माडिया जाणं अचळ मांडणी, तीन भुवन तिण वार तठइ।

—महादेव पारवती री वेलि

२ देखो 'मांडण' (रू भे)

उ०—१ आणइ अनुचर आकुळा वाकुळा चाउरि पाट। माडइ मडपि माडणी, आडणी ऊपरि आट।—जयसेखर सूरि

उ०—२ तुरक पायक सायक सु सरिया, सुहड चरम ति फोडइ सुसरां। गज गजिइ रथ स्यू रथ ना घणी, तुरग सिउ तुरगे रथ माडणी।—सालिसूरि

उ०—३ रुखमणि अबिका पूजिवा जाहिरे, साथ लीधी वर कामणी। देवीहइ सोहइ सयळ सिणगार, माय माया तणी माडणी।

—रुकमणि मगळ

माडणो—सं० पु० [स० मण्डन] १ शुभ एव मागलिक अवसरो पर स्त्रियो द्वारा, घर की दीवारो अथवा आगण मे बनाया जाने वाला चित्र।

उ०—१ कणा तो आखी गवाडी नीप-चोपनै धोळी, कणा सगळे चाद, सूरज, पगल्या, सारका अर मांडणा माड्या उणनै खुद ई इण बात री जाच कोनी।—फुलवाडी

उ०—२ जीहो यादव नारी सावटी लाला, आवें गावे गीत। जीहो-चोक पुरावै माडणा लाला, साचवियै सुभ रीत।—जयवाणी

उ०—३ कस्तुरि केसर कुकमा, करि रोल भरीय कचोळ। मन रग माडै माडणा, अधिकै भाव इलोळ।—ध व ग्र.

२ चिन्ह, निशान।

उ०—लाठै हिरण रा लोम मे सिध हाथै आयोडा खिरगोसिया नै ई गमायो। लचकांणो पडनै पूछ हिलावतो वो उठा सू होळै होळै टुरग्यो। लालच रै पगलिया रा सेवट ऐ इज मांडणा व्है।

—फुलवाडी

३ चित्र।

उ०—पण वेटी। ऐ वगत रा मांडणा तो वगत माथै ई उघडै।

—फुलवाडी

४ श्रृगार, सजावट।

उ०—चांद बिना किणरो सगती जको रात रा अधारा ने उजाळै, सिणगारै, अर बादळा बिना किणरो ठरको जको इत्ती लांठी धरती री तिरस बुझावै, उणरो काळजो ठारै। सूखी अर पागळी नदिया नै पगा हलावै। सूखा मे हरियाळी उगावै। फूला रा मांडणा माडै।

—फुलवाडी

५ रगढग।

उ०—नाई मन मे सोचण लागो के इण प्रीत रा सरू पोत ई ऐडा माडणा उघडिया तो पछै अत मे राम जाणं कांई व्हैला।

—फुलवाडी

६ नतीजा, परिणाम।

उ०—वा! आ बात तो आपनै उण दिन सोचणी ही के राजा नै वेटी दिया ऐ मांडणा तो एक दिन उघडैला ई।—फुलवाडी

रू० भे०—माडणउ।

माडणो, मांडवो—क्रि० स० [स० मण्डनम्] १ लिखना, लिखकर देना।

उ०—१ दाव घरोहड माड खत, लटपट करके लाय। बडी वडाई वाणिया, धन लेणो धी जाय।—वा दा.

उ०—२ पण वेमाता री माडियोडी ऐक लाठी खोड—के राणी री पेट नी मडियो।—फुलवाडी

उ०—३ परगनै मेडता री वसती समत १७२० रा काती माहे मु० नैणसी मांडी, तिण री विगत ।—नैणसी

उ०—४ तिकै जैतारण री फिरसत माहै अगै न छै नै हिमार मेग रा गांव मांडीया तरै मेरा रा ऐ गाव जैतारण दाखळ माडीया छै ।—नैणसी

उ०—५ साह ताम दिम 'सूर' मांडि दीधौ फुरमाणौ । इम लिखियौ अप आप, दुद मेटो दखियाणौ ।—सू प्र

२ वर्णन करना, विस्तार से कहना ।

उ०—१ अठै आयां सारी वाता माडनै वीरमदेजी नु कही । वीरमदेजी वात सुण राजी हुवा ।—नैणसी

उ०—२ विरतत सहु कुमरे कह्यौ जिम थयौ धुर थी माडि । सा पुरुस झूठ कहै नही नेह न नाखै छाडि ।—वि कु

उ०—३ पछै राजकवर माडनै सगळी वात वताई । वेदतराज तो काळा भाटा री मूरत रै उनमान उण री वाता सुणतौ रह्यौ ।

—फुलवाडी

उ०—४ फुलाणी राजा री वेटो छु । इयै भात निमरीयौ छु । जेमा तरह तीसरीया सो वात माड हर कही ।—चौवोली

३ प्रारभ करना, शुरू करना ।

उ०—१ जैतमाल जैसलमेर रावळ मालदे री वेटी परणीयौ हुतौ । सपूत सो ठाकुर हुतौ । उण रै को परधान थौ तिण महाजना नु घणो दुख देणो माडीयौ, घर लूटणा माडिया ।—नैणसी

उ०—२ कहवा री लुगाया भेळी वैठ वधावा रा गीत गावण माडिया ।—फुलवाडी

उ०—३ नरसिंघ नान्हो छै नरसिंघ रा जतन करो । फौज लारै मता जावो । इम तयारी माडी छै ।—राजा नरसिंघ री वात

४ रचना करना, निर्माण करना, निर्मित्त करना, बनाना ।

उ०—१ आणइ अनुचर आकुळा चाकुळा चाउरि पाट । माडई मडपि मांडणी माडणी ऊपरि थाट ।—जयसेखर सूरि

उ०—२ दिन ऊगो, ताहरां रिणमलजी सीसोदियां रा माथा वाढि चवरी रचाय तियारी चौकयां कीवी । तिया ऊपर वरछा री वेह मांडी ।—नैणसी

उ०—३ अधकार हवइ नइ सूर आथमइ, कळा इसी वरतै कैलास । मांडियउ मूहल सातमड ब्रहमंड, रतना तणी देखिजै रास ।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—४ अवै सोचू के इण प्रण मे की नी धरियो । खेत में झूपो माड धारै मायं भेळी रै जावू तो पछै तीजो भगवान ई आय जावै तो उण री गरज कोनी ।—फुलवाडी

उ०—५ पिढत चवरी माडी । तेल चढती वगत डीकरी रै ठळाक ठळाक आसू ढळकण लागा ।—फुलवाडी

५ स्थिर करना, स्थापित करना, टिकाना ।

उ०—१ तरै सोभत कह्यौ—राजा रो राज तोनु दीयो । माहरै नावै सहर री नाव सोभत देई । नै म्हारी थापना फलाणी ठौड माडजो ।—नैणसी

उ०—२ एकीकइ रोम ऊपरइ ईसर, माडिया कोट अनत ब्रहमड । सायर सात दिवइ परिदक्षिणा, डवर चा अवर घजडड ।

—महादेव पारवती री वेलि

६ सजाना सुसज्जित करना, शोभित करना ।

उ०—घूघरमाळ चिहू दिसि घमकइ, घणू स घटू जोवता घणउ । मुखमल रउ गउखउ गेर मांडियउ । जडियउ जांण जडाव तणउ ।

—महादेव पारवती री वेलि

७ चित्रित करना, चित्रांकित करना ।

उ०—१ जघस्थळ युगल केळिग्रभ जिसडा, गति जोवता जिसा गज मड । चितमाळी रचतइ चीतारइ, कुनण तणा माडिया कुंभ ।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ मूखा में हरियाळी उगावै । फूना रा मांडणा मांडै ।

—फुलवाडी

उ०—३ कस्तुरि केसर कुकमा, करि रोळ भरीय कचोळ । मन रग माडै माडणा, अधिकै भाव इलोळ ।—ध व ग्र

उ०—४ वा झट नीप्योडा आगणा मायं माडणा मांड दिया ।

—फुलवाडी

८ शृ गार करना ।

उ०—एक मांड्यौ चूड्यो आवौ विनायक मरव सुहागण के सीस ज्यू ।—लो गी

९ चिन्हित करना, निशान वनाना, अकित करना ।

उ०—१ माडिया सरोज भयग चड माथइ हरणाखी चित लावन हरि । अतिरगता विराजइ ऊपर, पगथळियां मोसलइ परि ।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ गैणाग ऊछाह फूल वारगा रा वांध गूथी । महामाण रत्था खाग खुराटां मांडीस ।—करणीदान कवियो

१० रोपना, दृढ करना ।

उ०—१ वारै आवरै रिण रोपण वका, वध सुग्रीव वकारै । उठै सुण अमजघड अधायो, धीग क्रोध उर धारै । हू हिव आवियो पग माड हकारै ।—र रु

उ०—२ चांपा-वणी माडियो चावै, 'वीठळ' खळा सरिस खग वाहि । अडियो 'जसै' मेल्हियो ऊभो, पडियो रणि पायो पतिसाहि ।

—विठळदास चापावत री गीत

११ ठानना, निश्चय करना ।

उ०—१ जठै सलख रा सत्कार रो अरथ पहली अजमेर सू केमास भेजियो जिण नागोर आय आमार सू कहियो केवळ ही मरण मांडिया वसुधा'र वडाई दोही व्यरथ जायसी ।—व भा.

उ०—२ सखी अमीणो साहिबो, जमसू माडै जग। ओळै अग न राखही, रण रसिया दै रग।—बा. दा

उ०—३ हु भव-भव भमतौ हारघो, बहु दिवसे तुझ सम्भारघो रे। तुझ सेवा करिवी माडी ते किम जायइ कहो छाडी रे।—वि कु.

उ०—४ घणा जसवत ग जोध निहसै घणा। माडिसी सही मति-वाळा वेढीमणा।—हा झा

उ०—५ मन उद्यान गुफा तरइ विचइ, घूणी घाती सबळ घडइ। मिलिया प्रभु झगडउ माडण री, घणी स वाता जीव घडइ।

—महादेव पारवती री वेलि

१२ कुछ करना।

उ०—१ रात दिवस हरि ह्रदै रहाविस, आठू पहर अनत उल्लाविस। माडै पूजा तूझ महणमथ, मकळ सरीर करिस इम सुक्रियथ।

—ह र

उ०—२ उपाय माड्यउ राय एहवा, मन धीरिज ना मेटणा। पुडरीक कांमातुर थयउ घणु भल भला करइ भेटणा।—स कु

१३ फैलाना, पसारना (लेने के लिये)।

उ०—१ ताहरा स्री भगवांन फुरमायो—ऐ हाथ अयाची छै। म्है किन्ही कन्है हाथ मांड्यो नही, सारा नै ही देऊ छू, लेण नै हाथ आगो न करू।—पलक दरियाव री वात

उ०—२ एक ई खारक पतासा वास्तै हाथ नी माडियो।

—फुलवाडी

१४ विस्तार करना, फैलाना, छितराना, बिखेरना।

उ०—घरणीघर सकर देव धियावउ, जोतिप्रकास अलोप जग। मस्तक मुगट प्रकास माडियउ, अनत कोट ब्रहमड लग।

—महादेव पारवती री वेलि

१५ सृष्टि करना, सृजन करना, रचना।

उ०—१ दहणइ कर दीध प्रगट राजादिक, ब्रह्मा आगा ते कीध विचार। ईसर तू जगदीस तणउ अस, सहु ब्रह्म माडियउ ससार।

—महादेव पारवती री वेलि

१६ कुछ उठाने, ग्रहण करने या वहन करने के लिये प्रस्तुत करना, तैयार करना।

उ०—१ माडिया उतवग जियइ द्रू माथइ नाम जपतां एक निमख। सकर देव पखउ कुण साहइ, पडती गग तणा भट पख।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ तेतीसै सुरा हिंदवा तुरका, कोय न यू जन माडै कध। आराधिया विना वह आयो, वीजो महादेव गजबध'।

—चतुरो मोतीसर

उ०—३ तयी गज भार भर 'अभा' राजा तणा, मांडिजै तो भुजा सेर मारू।—सेरसिघ मेडतिया रो गीत

१७ जमाना, स्थिर करना।

उ०—आसण माड अडिग होय बैठा, याही भजन की रीत।

—मीरां

१८ व्यापार करने के लिये किसी स्थान पर माल लेकर बैठना, उद्योग करना, व्यापार करना।

उ०—१ कमाई कमाई मे कैडो फरक, एक कसाई री हाट घटै जको माडलो—घणो ई नफो व्हैला।—फुलवाडी

उ०—२ अबै थें अपारा गाव मे ई एक छोटी मोटी हाट मांडलो।

—फुलवाडी

१९ प्रबन्ध करना, व्यवस्था करना, आयोजन करना।

उ०—नयण सलूणउ लडसडतु जउ तीरिहि आविउ। माइ बापि वधवहि मांड वीवाह मनाविउ।—राजसेखर सूरि

२० व्यक्त करना, जतलाना, दिखाना।

उ०—मुख ऊपर अति मीठी बोलै, माडै छे वहुली प्रीत रै।

—जयवाणी

२१ विचारना, सोचना।

उ०—यू करतां माहे वरस १२ री हुई। ताहरा सगाई री अटकळ माडी।—देवजी वगडावता री वात

२२ शुरु करना, आरभ करना।

उ०—१ इद्र बाई रम्मत राम अखाडै, मा आसोज चैत मे माडत, खेल सुकल पखवाडै।—मे म

उ०—२ तठै राजा अगरजोत वोलीयो। पछै दूजी रामत वळै मांडी।—रीमालू री वारता

२३ घोडे या ऊट पर चारजामा कसना, बांधना।

उ०—१ तिमडै आयनै वाहरुवा कह्यो—राज! पनोतैरै वाहलै एक वडो वाराह आयो छै। यू हीज ऊठियो। घोडै पलाण मांडियो। तयार हुय तुरत असवार चढियो।—नैणसी

उ०—२ ताहरां कावळो ऊठ पलाण माडि नै हालीयो।

—कावळो जोईयो नै तीडी खरळ री वात

२४ कायम करना।

उ०—इतरै गोहिला पिण आलोच कियो—जो राठोड जोरावर। सिराणै आय राजस्थान माडियो।—नैणसी

२५ सम्बन्ध जोडना, मिलान करना, सलग्न करना, मेल करना।

उ०—१ उण खवर सिकोतरी नै तद वो मत्री रो डीकरो पूछ्यो—थू मिघणी अर गिडक रो घर माड सकै काई।

—फुलवाडी

२६ उपयोग की दृष्टि से किसी वस्तु को किसी के सहारे खडा करना, टिकाना, सटाना, सलग्न करना।

२७ किसी यन्त्रादि के पुर्जो को व्यवस्थित करके कार्य करने की स्थित मे करना। २८ रखना।

उ०—मुहरि मांडिजै काजि दिग-विजय मडोवरो। धुर धमळ सिरै परिगह घरीसै —गु रू. व

२९ प्रहार के लिये शस्त्र उठाना, सधान करना, उद्यत करना।

उ०—बीजै फेरै वळै तरवार कावै नूं मांडी तरै देवीजी मोहडै बोलिया—तू विजैराव कवळपूजा मत करै, म्हैं तो थारी कवळपूजा मानी। इतरो कही अबोला रह्या। तरै इण वळै कावै नू तरवार माटी।—नैणसी

२६ जबरदस्ती करना।

उ०—१ तुझ सायइ कोई जोर न चालइ, तउ पिण हौ २ आंडी माटिस्यू जी।—वि कु

उ०—२ ब्रह्मादिक तणउ हुओ दइतां वर, अतिगति मांडी तिया अनत।—महादेव पारवती री वेलि

३० देखो 'मडणौ, मडबौ' (रू भे)

उ०—अउछ्याडे लीघ रिदइ रइ आगइ, आणिअउ तांइ आप रे आवास। मिलियइ नाळ उछाह माडिया, पळ एक तिया न छोडइ पास।—महादेव पारवती री वेलि

माडणहार, हारौ (हारी), माडणियौ—वि०।

मांडिओडौ, मांटियोडौ, मांड्योडौ—भू० का० कृ०।

माडीजणौ, मांडीजबौ—कर्म वा०।

माडोणौ, माडोबौ—रू० भे०।

मांडविक, माटवीक—स० पु०—मण्डप के ऊपरी कार्य-कर्त्ता।

उ०—एक सौ चौवीस सहस्र कटक, ६० सूपकार, अन्येपि स्रेष्ठि सारथवाह माडविक कोटविक।—व. स

उ०—२ अनेक गणनायक दड नायक राजेश्वर तलवर माडवीक कोटविक मंत्रि महामंत्रि गणक' ' ।—व स

माटळ—स० पु०—चरस के मुख पर लगाया जाने वाला लोहे का गोलाकार कडा। (वग्दा)

माडलिक—देखो 'मडलीक' (रू भे)

मांटलीओ—स० पु०—एक प्रकार का वस्त्र विशेष।

उ०—टमरीआ पुरीआ अमरीआ सूहवीआ मूगीआ चलवलीआ चाइनीआं पारवानीआ माडलीआ स्वाजलीआ पिपलीआं ···· ।
—व स

मांडळौ—स० पु०—घोडो की जातियो मे से एक जाति विशेष।

उ०—अवलगी ऊजळा, मोनेरी सामळा। राहदारां रळा, मादुर्वा माडळा। पसमी प्रमळा कुमैतां काछळा। हरिया हांमळा, ब्रहाम छोटै वळा।—मा वचनिका

मांडव—स० पु०—१ मालवे का एक नगर। (ऐतिहासिक)

उ०—महमद माडव री पातस्याह। महिपो पमार पहीरा डूगर सू नीसरियो सु मांडव रै पातसाह रै पूठ आयो। ताहरा रांणो कुंभो माडव रै पातसाह ऊपर आयो।—नैणसी

२ देखो 'मडप' (रू भे)

माटवउ—देखो 'मडप' (रू भे)

उ०—माड्यउ उत्तग तोर मांडवउ, तुरत नवउ वडमिवानउ आगणउ, ते तु नील रतन तणउ, ।—व स.

मांडवगढ—स० पु०—एक नगर का नाम।

उ०—१ माहि 'सलेम' उदार, करवा सुगुरु दीदार। मांडवगढ़ गुरु तेड्या कुमति ना मद फेड्या।—कवि गुणविजय

उ०—२ पछै रांणो कुंभो, रिणमलजी मांडवगढ़ ऊपर आया। ताहरा भीतरलां पण सांको राखियो।—नैणसी

उ०—३ भरुअच्च मागल हुर जूनुगढ़ चांपानेर मांडवगढ़ अणहलपर पाटण, राणपर वीसलनगर ।—व स

मांडवडौ—१ देखो 'मांडो' (अल्पा., रू भे)

मांडवी—स० स्त्री० [स०] १ विदेहराज जनक के भाई कुशध्वज की पुत्री जो अयोध्यापति दशरथ के पुत्र भरत की स्त्री थी।

२ वात्सी-माडवीपुत्र नामक आचार्य की माता।

रू० भे०—मडवी, मडावी।

माडवीओ, मांडवीयो—स० पु०—१ मण्डप का अधिपति, मण्डप का व्यवस्थापक।

उ०—भडारी कोठारी मांडवीया मल्ल हस्ति तुरग रथ पायक टकसाली व्यायाम कारक ।—व स

२ एक प्रकार का वस्त्र विशेष।

उ०—हवइ राजा परिवार प्रतिवस्त्र वस्त्र आपइ, गुहीआं सणीआ कस्तूरीआ प्रतापीआ कुसभीआ मोलीआं माडवीआं।—व स

मांडवु, माडवौ—देखो 'मांडो' (रू भे)

उ०—१ चपळ तुग तुरगम पाखरिया, गुड गुड्या असवार ते साचरिया। अप विराट निजागज पांडवे, सहि गयउ समरांगणि मांडवे।
—सालि सूरि

उ०—२ जे तो बीमाह री वाट जोती जगह, रूक वळ आवियो गयो राजा। मराडी जान घर आवियो मांडवै, तेल चढी रही अच्छर ताजा।—नरहरदास बारहठ

उ०—३ घणी करै वार्वाण सत्र करै अमगळ घमळ, सहोदर साथ अण वरस ओधा। माडवै परणजै कमद गोपाळमल, जानीया साथ रडमाळ जोघा।—दुरसौ आढ़ौ

माडव्य—स० पु० [स०] १ एक आचार्य, जो कौत्स ऋषि का शिष्य था।
(पौराणिक)

२ विदेहराज जनक का मित्र एक आचार्य।

३ एक प्रसिद्ध ब्रह्मर्षि जो धैर्यवान, सत्यनिष्ठ और तपस्वी था। इसको अणिमांडव्य या आणि मांडव्य भी कहा है।

माडह—१ देखो 'मांडो' (रू. भे)

उ०—सुभ छवि मांडह नयर सचेळौ। सुर अस्ति मिलण थयौ सांम्हेळौ।—रा रू

२ देखो 'मांड' (रू. भे)

मांडहडौ—देखो 'मांडो' (अल्पा., रू. भे)

उ०—कथ 'ओपा' लाडीने कीरत, भूपत वार भजाडै। अण मांडहडो आला आला, वळिया ढोल वजाडै।—ओपो आढौ

मांडहिय—देखो 'माडा, माडाणी' (रू भे.)

मांडही—देखो 'माडी' (रू भे)

उ०—दळकार हूंठं दखणाध रा, दिल्ली फौजा निरवही। किरि जाए अपूठा वाहुडे, जान बोलाए मांडही।—गु रू व

मांडहो—१ देखो 'माडो' (रू भे)

२ देखो 'मडप' (रू भे)

माडा, मांडाणी—देखो 'माडा, माडाणी' (रू भे)

उ०—१ उण हुकम दियो हीज थो ने जेठवं काठिया भेळा हुयनै कह्यो—ग्रो ग्रापणी धरती माहै माडा ग्राय पैठो।—नैणसी

उ०—२ पिण जाडेची कहै—थे म्हारो कुस्वारथ करो छो। पिण मांडां राखो।—नैणसी

उ०—३ सेवट वानै माडाणी वहीर करिया। सार्थे कोई सभाळ घाली नी कोई बीदडी।—फुलवाडी

माडियो—१ देखो 'माडो' (ग्रल्पा, रू भे)

२ देखो 'मांडी' (ग्रल्पा, रू भे)

माडियोड़ो—भू० का० कृ०—१ लिख कर दिया हुग्रा, लिखा हुग्रा. २ विस्तार से कहा हुग्रा, वर्णन किया हुग्रा ३ प्रारभ किया हुग्रा, शुरू किया हुग्रा ४ रचना किया हुग्रा, निर्मित, वनाया हुग्रा. ५ स्थिर किया हुग्रा, स्थापित किया हुग्रा, टिकाया हुग्रा ६ सजाया हुग्रा, सुसज्जित किया हुग्रा, शोभित किया हुग्रा ७ चित्रित या चित्राकित किया हुग्रा ८ शृगार किया हुग्रा ९ चिन्हित किया हुग्रा, निशान वनाया हुग्रा, ग्रकित किया हुग्रा मडित किया हुग्रा १० दृढ किया हुग्रा, रोपा हुग्रा ११ ठाना हुग्रा, निश्चित किया हुग्रा १२ कुछ किया हुग्रा. १३ फैलाया हुग्रा, पसारा हुग्रा (हाथ) १४ विस्तार किया हुग्रा, फैलाया हुग्रा, छितराया हुग्रा १५ सृष्टि किया हुग्रा, सृजन किया हुग्रा, रचा हुग्रा १६ कुछ उठाने, ग्रहण करने या वहन करने के लिये तैयार या प्रस्तुत किया हुग्रा १७ जमाया हुग्रा, स्थिर किया हुग्रा १८ व्यापार के लिये किसी स्थान पर माल लेकर बैठा हुग्रा १९ प्रवन्ध, व्यवस्था या ग्रायोजन किया हुग्रा २० व्यक्त किया हुग्रा, जतलाया हुग्रा, दिखाया हुग्रा. २१ विचारा हुग्रा, सोचा हुग्रा २२ जोडा हुग्रा, एकत्र किया हुग्रा, सगठित किया हुग्रा २३ कसा हुग्रा, बांधा हुग्रा (चार जामा) २४ कायम किया हुग्रा २५ सम्बन्ध जोडा हुग्रा, मिलान कराया हुग्रा, सलग्न कराया हुग्रा. २६ किसी के सहारे खडा किया हुग्रा, सटाया हुग्रा, टिकाया हुग्रा २७ प्रसिद्ध किया हुग्रा, प्रतिष्ठित किया हुग्रा २८ रखा हुग्रा. २९ कार्य करने की स्थिति मे लाया हुग्रा (यत्र) ३० उठाया हुग्रा, सधान किया हुग्रा, उद्यत किया हुग्रा (शस्त्र) ३१ जबरदस्ती किया हुग्रा ३२ देखो 'मडियोडो' (रू. भे) (स्त्री० माडियोडी)

मांडियो—स० पु०—१ विवाह मे कन्या पक्ष का व्यक्ति।

२ देखो 'मांडो' (ग्रल्पा, रू भे)

रू० भे०—माढियो।

माडी—स० स्त्री० [स० मण्डिका] १ एक प्रकार की रोटी विशेष, वाटी।

उ०—१ परीसण हारि नही ग्राकुली, ग्रखड माडी सउतल्या सेवग्रा प्रभृति पक्वान्न परीस्या।—व स.

उ०—२ मूक्या नव नव परिसालणा, मूक्या सरहा घी ग्रतिघणा। मूकी माडी मुरकी सेव, मूकी खीर खाड घ्रत सेव।

—हीराणद सूरि

२ दूध की मलाई। (उ. र)

स० पु०—३ विवाह मे वधू पक्ष का व्यक्ति।

रू० भे०—माडही, माढी।

४ देखो मांड' (रू भे)

माडूक—स० पु० [स०] भृगु कुलोत्पन्न एक गोत्रकार।

माडूकायनि—स० पु० [स०] एक ग्राचार्य जो माडव्य नामक ऋषि का शिष्य था। इसके शिष्य का नाम साजीवी पुत्र था।

माडूकायनीपुत्र—स० पु० [स०] एक ग्राचार्य जो माडूकी पुत्र नामक ऋषि का पुत्र था।

मांडूकि—स० पु० [स०] एक ऋग्वेदी श्रुतर्षि।

माडूकीपुत्र—स० पु० [स०] एक ग्राचार्य, जो शाडिलीपुत्र नामक ग्राचार्य का पुत्र था।

माडूकेय—स० पु० [स०] १ एक ग्राचार्य समूह, जो ऋग्वेद पाठ की एक विशेष शाखा का प्रणयित्ता माना जाता है।

२ एक ग्राचार्य, जो मडूक नामक महर्षि का पुत्र था।

माडूक्य—स० पु०—एक उपनिषद।

माडे, माडेई—देखो 'माडा, माडाणी' (रू भे.)

उ०—जोगिया २ नू घणो हठ करनै ले गया, ऐ कहै म्हे नहीं हाला पिण माडे लेगया।—नैणसी

मांडेतियो, माडेती—स० पु०—विवाह मे कन्या पक्ष का व्यक्ति। (वरदा)

रू० भे०—मांडैतो।

मांडै—देखो 'माडा, माडाणी' (रू भे)

मांडैती—देखो 'मांडेती' (रू भे)

मांडोणी—देखो 'माडा, माडाणी' (रू भे)

उ०—गळा मे ग्रटक्योडा सोगरा रा टुकडा नै पांणी रा घूट साथै उतार नै माडोणी हसतो-हसतो चोधरी बोल्यो—दुनिया मे सब रोगा री दवा है पण वेम री ग्रोखद कठैई कोयनी।—रातवासो

माडोणो, मांडोवो—देखो 'माडणो, माडवो' (रू भे)

उ०—देहरो देवी स्री खीवजजी रो, सिखरवध। महर सू कोस ०॥ दिखण नु कदीम। सहर मांडोयो तरै छै।—नैणसी

मांडो—स० पु० [स० मण्डप] १ विवाह के लिए वनाया हुग्रा मण्डप।

२ विवाह मे वधू का पक्ष।

३ विवाह के अवसर पर कन्या के नातेदारों आदि के ठहरने का स्थान जहां विवाह का मंडप आदि रचाया जाता है।

४ शिकार का मचान।

५ कच्चे दूध की हांडी।

६ देखो 'मटको' (रू. भे.)

उ०—१ माड मांडा, पूरग मांडा, कुरकुरा मांडा, पत्रवेंटीया मांडा, आवासीग्रा मांडा, आछा मांडा, लाटउ चूरिमउ, गुलिउ चूरिमउ, प्रधान पनोळी ।—व स

उ०—२ जलेबी हेसमी, वाल पडमूघी तणा आछा मांडा नगर नहीं खाडा ।—व स

७ देखो 'मूडो' (रू. भे.)

रू० भे०—मड, मडवो, मढो, माडवु, माडवो, मा'ढह, माडहो, माहडो, मांहडो, मांढ़वो, माढो।

अल्पा०—माडवडो, माढहडो, माढियो, मांढवडो, मांढहडो, माढ-हडो, माढियो।

मह०—माट।

वि०—१ खिन्न, उदास, मलीन।

उ०—सो नीराठ मांढो आम्या माही आम् पडै, तो नापो दिलासा दिन्ही।—नापै सांखले री वारता

मांढ—देखो 'माउ' (रू. भे.)

माटवडो—देखो 'माडो' (अल्पा., रू. भे.)

माढवो—देखो 'माडो' (रू. भे.)

मांढहडो, माढहडो—देखो 'माटो' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ होय रग हवोळीय माढहडो, वळियो जववाग हमें वनडो।
—पा प्र

उ०—२ मिळ देसत जांनिय माढहडो, असवर मु केसर आवनडो।
—पा प्र

मांढहो—१ देखो 'माडो' (रू. भे.)

उ०—पाटण 'मीह' अचळ परणिया, 'मूळा' तणै माढहै माल।
भाटी तणी कमध घट भांजै, मत्र तणो अरधगो मान।
—रावमीहा री गीत

माढा, माढांणी—देखो माढा माढांणी' (रू. भे.)

माढियो—१ देखो 'मांढियो' (रू. भे.)

२ देखो 'मांडो' (अल्पा., रू. भे.)

माढी—देखो 'माडो' (रू. भे.)

माढो—देखो 'मांडो' (रू. भे.)

उ०—१ हुय हयकप कपै मन 'हाजन' उद्रक द्रमक चमक उर।
मीर वडा कूमारी मांढे, अणपरणी लमीयो असुर।—दूधो

उ०—२ वात मांनसी लंपै वांढा, नीत बिगाडी निलजा नादां।
मिलगी जोडो जाना मांढा, देढ कह्यो ज्यू मुणियो ढांढां।—ऊ का.

माण-स० स्त्री०—१ शराब की भट्टी।

उ०—सोरठ मांण प्रमांण, रस पाटीजै रांगा तणा। मैहगा मुदै प्रमाण, रूप दस रचियै घणां।—बीजामारठ री वात

२ देखो 'मांन' (रू. भे.) (अ मा, ह नां मा)

उ०—१ पछी नेह जे राखिया रेह मुदै मनै ढांण मया अगो मांण मूदै।—र भा

उ०—२ जिकै गुर ढोला जरद, न्यवहडो थारांण। मूंछ पणी मूढ़ो मिळ, मुहगो सारै मांण।—पा दा

उ०—३ शिर ते राजस्थांन, महि दस अम भीम गामरथ। एकै थांग थरट, महगा मांण प्राग नर मट।—रा रू

उ०—४ आत्या हु मेटि धरट तोड आई यात इधड रत अडहिम निचार। मांण इधड मन भग (तेर) मरिजड, मती सगाउ साधक गमार।—महादेव पारवती री वात

माणक—देखो 'माणिक्य' (रू. भे.)

उ०—१ सो येरे माहे मन माणिया आधांन छै, होरा पन्ना मांणक जड़िया छै।—पनरडी री वारता

उ०—२ मिण मांणक आभूसणा पहिरै गहणा। स्गळ गाहणा घमळ घणा।—गु रू व

उ०—३ घरै पान हित नत तरै दुग दीन निरनर। सिता चीर मजीर हीर मांणक जव्वाहर।—रा रू

उ०—४ चढिया पाज घवळ, वाळि मूट वैगागळ। हरट सिहासा हीर, मांणके वीर हमीर।—गु. रू व

उ०—५ राधा तेरी महदी रो मांणक रग।—मीरा

२ श्रेष्ठ, शिरोमणि।

मांणकदड—देखो 'माणिक्यदड' (रू. भे.)

उ०—१ कर मुट मैं मद, गुरै गज मांणक दड र। घणा बाग शालिगर, बीज थिरना ग्रह मउह।—गु रू व

उ०—२ परवत्त पर प्रचडए, गलहथति मांणकदड ए। मदमोग क्रह महायळी, गद रूप मेघक निगळी।—गु रू व

रू० भे०—माणिक्यदड़।

माणकथभ—स० पु०—तेल घाणी का एक उपकरण जो करीब ४ इन्च का एक मोटा डंडा होता है और पाट के ऊपर लगा रहता है।

मांणकरूप—स० पु०—एक प्रकार का घोड़ा।

मांणग—वि०—१ भोग विलास करने वाला, आनन्द लूटने वाला रसिक, प्रेमी।

उ०—१ पोढ़ाटै नाद वेद परबोधै, निसि दिनि वाग विहार नितु।
मांणग, मयण एण विधि मांणै, रुकमिणि कत वसत रितु।
—वेलि

२ उपभोग करने वाला।

उ०—१ वडो ठाकुर हुवो। वडो दातार, वडो जूझार, वडो मांणग, जबादिजळहर। पातसाह अकबर कनै घणां दिन चाकरी कीवी।
—नैणसी

उ०—२ घनवतिया सुणी कहै 'गोरघन', माया माणग मोट मन्न। वाटै नहीं आपरै वारै, धारै आटे किसी घन्न।—गोरधन खीची

३ देखो 'माणिक्य' (रू भे)

रू० भे०—माणिग।

माणगर—देखो 'माणीगर' (रू भे)

माणगाळौ—वि०—शत्रुओं का मान मर्दन करने वाला।

माणण—स० स्त्री०—१ उपभोग करने की क्रिया या भाव।

२ स्त्री, औरत।

वि०—१ उपभोग करने वाला।

उ०—कैळासी री अस कमधज, खटव्रन री आधार खरौ। मडळीका सर माया माणण, हैयक खामद 'गजन' हरौ।—ओपो आढो

माणणि, मांणणी—स० स्त्री०—स्त्री रमणी। (अ मा, ह ना मा)

उ०—गाइत्ति एक आप ग्रेह मांणणीस मगळ।—गु रू व

वि०—मान करने वाली, मानवती।

उ०—के बाळा राइ-कुमरि, केय मुगघा कुळवती। के मध्या माणणी, जिसी सूरज झायती।—गु रू व

माणणौ, माणबौ—क्रि० स० [स० मण् या मह] १ भोगना, सभोग करना।

उ०—१ वादल काळा वरसिया, अत जळ माळा आण। काम लगो चाळा करण, मतवाला रग मांण।—वा दा

उ०—२ माणीरे मूमल ने राणाँ म्हदरे, माजी जेसाणै री मूमल। हाले नी रे अमराणें रे देस।—लो गी

उ०—३ मिळी अघेरी रैण सुहेली मोरा गावै मल्हार। राज गहेली रै सग मांणो, मरस तीज री रात।—रसीलैराज रा गीत

२ आनन्द लूटना, मौज करना, सुख प्राप्त करना।

उ०—१ पोढाडै नाद वेद परबोधै, निसि दिन वाग विहार नितु। माणग मयण एण विधि मांणैं। रुखमिणि कत वसत रितु।—वेलि

उ०—२ दखिण दिसा मलयाचळ पहाड री पवन वाजिओ छै सीत मद सुगध गति पवन मतवाळा मैंगळ ज्या परिमल झोला खावतौ वहे छै। अठार भार वनसपती मकरद फूलादि रा रस मांणतौ थको वहे छै।—राजानराउत री वात

३ ऐश्वर्य भोगना सुख भोगना।

उ०—जोधाणौ जिण वार, इळ मांणै राजा 'अजो'। आसीमे अणपार, जस खट अन्न 'जसराज' उत।—सू प्र

४ द्रव्य लुटाना, दान देना।

१ माणी मता छता मही मडळ, मता न माणी जिता मुआ।—गोरधन खीची

उ०—२ दत्त देता घन माणता, जगि सुणता जसवास। वसुघा इण पर वोळिया, नवकोटी खट मास।—गु रू व

५ रखना।

उ०—नारद ही देखे पग नमियौ,' गेम घणा भगतां री गमियौ। प्राणै माणै पाव महेसुर, पगां तणी दे सेव प्रमेसर।—पी ग्र.

६ करना।

उ०—मार्चेला हित्यारा झूठ वोलनै आज्ञ दिन ताई मौजा माणै है। —फुलवाडी

७ देखो 'मानणौ, मानवौ' (रू भे)

उ०—सामता कहियौ—जवनेस सू तोडि चहुवाण सू विगाड करण में आपरौ विचार नीतिरा लस विना जाणियो तथापि साहसरै साथ असूयारै अनुचर आपरौ ही आदेस प्रवळ माणियौ।—व भां

माणणहार, हारौ (हारी), माणणियौ—वि०।

माणिओडौ, माणियोडौ, मांण्योडौ—भू० का० कृ०।

माणीजणौ, माणीजबौ—कर्म वा०।

मांणतुबी—वि०—मानहीन, मान भग।

उ०—भामी हुथा तूझ वाह नु मे दासा हसी भूप, भडा की समतया मिटै काल कूट मांही। न राजी खगेस आमैं धूडवी ईसाण नाग, मांणतुबी होय पैंढौ ववी कोट माह।

—उम्मेदसिंह सिसोदिया रो गीत

मांणदुजोयण—वि०—दुर्योधन के समान मान या गर्व रखने वाला।

माणनिसूरण—वि०—वैरियों का मान मर्दन करने वाला। (जैन)

मांणभग—वि०—अपमानित या तिरस्कृत।

माणयड—देखो 'मणियड' (रू भे)

उ०—कर धूकळ घर कज्ज, सकत दाखवे सवाई। मघ माणयड राडद्रहि, करे छेहली लडाई।—रा रू

माणव—देखो 'मानव' (रू भे)

उ०—कय दाणव माणव नरिद।—स कु

मांणस—स० पु० [स० मनुष्य] १ मनुष्य, आदमी, मानव।

उ०—१ ताहरा विसोढै रै साथै राजा माणस दिया। विसोढौ मूळू रै गाम गयौ। मूळूसू मिळियौ।—नैणसी

उ०—२ माणस हुवा त मुख चवा, म्हे छा कूझडियाह। प्रिउ सदेसउ पाठविसु लिखिदे पखडियांह।—ढो मा

उ०—३ पूठै माणस गया, घणौ ही कहियौ पण रहियौ नही।

—अमरसिंह राठौड री वात

२ परिवार, कुटुम्ब।

उ०—तिण समै किणहीक कह्यौ पातसाह नूं,—चारण वीर धवळ लागडियौ, औ पातसाही मुलक मे रहै छै। इण सू जेसो घणी मया करै छै। औ वडो कवीसर छे। इणसू जेमो निपट कावो छै। सु इण रा माणस वेटा वद करौ।—नैणसी

अल्पा०—माणसियौ।

३ स्त्री, औरत।

उ०—१ मासण भला रहउ वन मांहै, कहउ नही सप करउ किम। पूछइ तरइ वांमण परमारथ, जाणणहार अजाण जिम।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ अरु अमरसिंघजी रै लारै रांणी सती हुई। चाकरी मांणस वा पदमा तथा साथ बीकानेर आया।—द. दा.

४ पत्नी, अर्द्धांगिनी।

५ दासी, परिचायिका।

उ०—१ तद माहै सू मांणस तेड़ण नै आई। हाथ जोड़ केहण लागी—महला पधारीजै।—कल्यांणसिंघ राठौड़ नगराजोत री वात

उ०—२ तद मांणस बोली—थे मोनै सावरतक कह्यो थो सो तू ठाकुरां नै तेड़े ले आव।—राजा रा गुर रा बेटा री वात

६ पुत्र वधू। ७ जीवात्मा जीव, प्राणी।

उ०—प्राम-विमूहा मांणसां, है घर भेजण हार। घरणी घर घर छहिया, अच्छे तू आधार।—ह र

८ देखो 'मांनस' (रू. भे)

माणसखाणी–वि० स्त्री०—नर भक्षी, मनुष्य भक्षणी।

उ०—तरै ककाळी कह्यो, हू कोई मांणस खाणी न छू, भिन्द्या छू दीधो लू छू।—जगदेव पवार री वात

मांणसर, मांणसरोवर—देखो 'मानसरोवर' (रू भे)

उ०—१ तिण स्रोण वदन कीयो तिलक, मुकरा स्रोण बवाळियो। 'खूमाण' तणै रिण मांणसर, अधरि हंस वरमाळियो।—गु रू व.

उ०—२ कहि लछण केहरी, जघ जांणै जाळधर। राइ आगण गति क्रमति, हस फिरि मांण-सरोवर।—गु रू व

माणसाचार—देखो मिनखाचार' (रू भे.)

मांणसियो–स० पु०—१ आंख की पुतली।

उ०—दूजो दीवो जुवायनें सेठा री मूंढो जोयो वारो जाणो फाटोडो हो, आख्या रा मांणसिया फिरियोडा हा।—फुलवाड़ी

२ आंख मे प्रतिबिंब स्वरूप किसी पुरुष की आकृति देखने वाला।

३ देखो 'माणस' (अल्पा, रू भे)

मांणातुसी–वि०—अपमानित मानहीन।

माणिक—देखो 'माणिक्य' (रू भे)

उ०—'हरीया' जो कुछि वखत में, पाट पिछोरी त्यार, वखत विना न पाईये, माणिक भरया भंडार।

—श्री हरिरामदासजी महाराज

माणिकमाळा–स० स्त्री [स०-मांणिक्यमाळा] लाल नामक रत्नो की माला।

मांणिक, माणिक्क, मांणिक्य–स० पु० [स० माणिक्य] १ लाल रंग का एक रत्न, पद्मराग।

उ०—१ पचास लाल माणिक अपार, अवि जाणि जवाहर मघण धार।—सू प्र

उ०—२ सरस्वती आगलि कुल पढीयइ, अम्रत करणि कढीइ, माणिक करणि बीधीइ, मोती करणि छढीइ, निरगुण करणि वदीइ ....।—व स

उ०—३ अति किमति हीर उदार, मांणिक्य लाल मझार। नभि नील प्रोवति निम, चउ चार मुगत अविप।—सू प्र

उ०—४ मुगधपणापूरी इसी कस्तूरी, मनोहर मांणिक्य, महाघ रूप रत्न, अनेकि विदेशी वस्तु, इसिउ व्यवहारिया मणउ मयन।

—व. स

२ माणिक्य रंग से मिलते जुलते रंग का घोड़ा।

३ घोड़े के चोटी के नीचे की भौंरी।

४ इस भौंरि वाला घोड़ा। ५ एक प्रकार का केला।

वि०—लाल।

रू० भे०—मांणक, मांणग, मांणिक, माणिग, मोनक।

मांणिक्यदंड—१ एक प्रकार का हाथी।

उ०—१ अथ हस्ती, शिरउन्नित त्रिवाटवन्नित भद्रजाती दक्षिण-दंड मांणिक्यदंड मूलवक्र वामन, तिमाता पाटिलागड भरद ।

—व स

२ हाथी।

रू० भे०—मांणकदंड।

मांणिक्यप्रस्तारिका–सं० स्त्री०—एक व्रत विशेष।

उ०—१ ध्यानपचमी, मुकुट सप्तमी, मांणिक्यप्रस्तारिका, निष्क्रमणतप, वर्द्धमानतप, ।—व. स

उ०—२ मांणिक्यदंड हस्ती, सुरमागिउ घोडउ, सुरभदी नउ उट दशाहि नउ बलद ।—व स

मांणिग—१ देखो 'मांणग' (रू भे)

उ०—परि जिम धरणि सरै पोरसो पिट तिम रिण पोढै मग पांणि। माटेलो जीवतो मांणिग, मांणिग गयो बिन्है कलि मांण।

—सुरतांण मालावत रो गीत

२ देखो 'मांणिक्य' (रू भे)

मांणिगर—देखो 'मांणीगर' (रू. भे)

उ०—जैपर रजवाड़ा रा मांणिगर हाथी सगळा मुलक में चावा है।

—फुलवाड़ी

मांणियोड़ो–भू० का० कृ०—१ सभोग किया हुआ, भोगा हुआ

२ सुख प्राप्त किया हुआ, आनन्द लूटा हुआ, मोज किया हुआ.

३ द्रव्य लुटाया हुआ, दान दिया हुआ ४ ऐश्वर्य भोगा हुआ, सुख भोगा हुआ ५ रसा हुआ।

६ देखो 'मांनियोड़ो' (रू भे)

(स्त्री० मांणियोड़ी)

मांणिस—देखो 'मांणस' (रू भे)

उ०—ताहरां रजपूत बोलीया—राज सवा लाख रो मांणिस कहीजै। सवा लाख रो मांणिस कराइ नै जीभ फाटाडीजै।

—लाखा फूलांणी री वात

मांणी–वि०—१ मान वाला।

२ वीर।

माणीगर-वि०—१ वैभव को भोगने वाला, उपभोग करने वाला।
उ०—१ एक एक सू आगळा, राणा ऊमरकोट। प्रकट हुवा पर मारवै, माणीगर मन मोट।—बा दा
उ०—काम जती सूर सौम, भूपतीस सुती काहा, विप्र रुद्र तती अन हुयी जीप बार। माणीगर छरती आमती जो सुपगी काहा, सोहियौ कामती रायजादा रौ सीगार।—सनमानसिंह हाडा रौ गीत
२ सभोग करने वाला, भोगने वाला।
उ०—लोरा सावण लूबियौ, घोरा घण घरराय। माणीगर रग माण अव, प्याला भर मद पाय।—अग्यात
३ आनन्द लूटने वाला, मौज करने वाला, रसिक।
उ०—दिन दुलहां माणीगरा इण गढ़ रा धणियाह। आणी सीगल दीप सू, पेर्स पदमणियाह।—बा दा.
४ दानी, उदारचित्त, दातार।
उ०—१ वैठा कीकर सो वुधा कव उदम कराणा, माणीगर स्याराम की घर वात धराणा।—मयरामदरजी री वात
उ०—२ माणीगर धन कुमी, कुमी मन री घर माया।
—अरजुणजी वारहठ
५ स्वाभिमान वाला, मान वाला।
उ०—तिण रै एक रामदत्त नाम बरस बीस रौ वेटौ, मोटियार सयांणौ माणीगर।—साहरामदत्त री वारता
स० पु०—हाथियों की जाति विशेष।
रू० भे०—माणगर, माणिगर, मानगरौ।

मांणेतण—देखो 'मांनेतण' (रू. भे)
उ०—हे उठौ माणेतण खोलौ कोथळौ। हे थारी सासू-नणद ने ओढाव, हे म्हांनै घणी ए सुवावै जच्चा पीपळी।—लो गी

मांणेराव—देखो 'माणीगर'।
उ०—लूटौ मामान भडारा वार पारा डाणेराव लागौ, सोभा आणेराव खूटौ खजाना सचूप। तणी वाघ साम घटा मोजा माणेराव तूटौ, राणं राव रूपा धार वूटौ यद्र रूप।—महादान महडू

माणौ-स० पु० [देशज] १ अनाज आदि का एक तौल या परिमाण विशेष जो मन का आठवा भाग होता है।
२ उक्त तौल के बराबर अनाज मापने का एक पात्र।
३ गर्व, मान।
उ०—धीर जो लज माणौ, अवसाण में सिध अण भगौ। पौरस पराक्रमौ, सूरांणं सपत चिहुनानि।—गु रू व.
सर्व०—मेरा, अपना।

मांत—देखो 'मौत' (रू भे)
उ०—राति विढियौ इसी भाति नरवै रयण, सम-समी मार देतौ सवाही। तेण उदमादियौ चद कमधा तिलक, मांत मादौ थियौ सूर माही।—गु रू व

मात्रिक-वि०—मन्त्र साधना करने वाला, जिसको मन्त्र सिद्धि प्राप्त हो चुकी हो।
उ०—सूयकार चक्षक नरवैद्य गजवैद्य तुरगवैद्य व्रखभवैद्य मात्रिक तत्रिक गाडरिक ।—व स.

माद-स० स्त्री० [स० मान्द्य] १ मन्दा होने की दशा, अवस्था या भाव।
२ अस्वस्थता, वीमारी, रुग्णता।
उ०—१ भूख अर तिरस रै विनाई घणा डर है। जगळी जिनावर, साज माद अर बिच्छू-काटा रा केई धया है।—फुलवाडी
उ०—२ मावडिया तन मेणरा, मिटै कदं नह माद। मावडिया वूळा मरद, चूला हदा चाद।—बा दा
३ पीडा, दर्द। (अ मा, ह ना मा)
[फा०] ४ हिंसक जानवरों के रहने का विवर, खोह, गुफा, शेर की माद।
[स०] ५ रवि या चद्र सम्बन्धी ग्रहो की नीचोच्च या मदोच्च गति।

मांदउ—देखो 'मादौ' (रू भे) (उ र)
उ०—वळतउ पूछइ वात विवेक, लगन विचइं थायइ दिन एक। पथइ वहता मादउ पडयउ, तिणि कारणि मोडउ आपड्यउ।
—ढो मा

मादगी-स० स्त्री० [फा० मादगी=स० मान्द्य] १ वीमारी, रोग, अस्वस्थता।
उ०—१ एक तौ सेठाणी री मादगी मे वौ उणग हीडा घणा करिया, दूजो सेठा ने वौ होणहार अणू तो लखायौ।—फुलवाडी
उ०—२ मिनख जनम ही पायने, आउखौ ओछौ थाय रे। रोग मांदगी लागी रहे, तव धरम कियो काई जाय रे।—जयवाणी
क्रि० प्र०—आंणी, लागणी।
२ उदासी, सुस्ती। ३ थकावट।
४ मदापन, फीकापन।
रू० भे०—मदवाड, मदवाडि, मदवाडी, मदीवाड, मादवाड, मादीवाड। मह०—मदीवाडौ, मादीवाडौ।

मादळ-स० स्त्री०—एक प्रकार अवनध वाद्य विशेष।
उ०—जन-जन के उठ पीछे लागै, घर घर भरमत डोलै। ता थै दादू खाइ तमावै, मादळ दुहु मुख वोलै।—दादूवाणी
२ देखो 'मादौ' (मह, रू भे)

मादळियौ—देखो 'मादळियौ' (रू भे)
उ०—भाठा जितरा देव पूज्या, राखडी मादळिया ई कराया, गाव रा गुरामा खने इलाज ई करायौ अर जोधपुर जाय'र डाक्टरा री छाती मे रुपिया ई वाळिया पण गरज काईं सजी कोयनी।
—रातवासौ

मादलियौ—देखो 'मांदौ' (अल्पा, रू भे)

मादवाड, मादीवाड़–स० स्त्री० [स० मन्द्य-वर्त्ति] १ बीमारी, अस्व-स्थता, रुग्णता। २ थकावट, उदासी।

रू० भे०—मदवाड, मदवाडी, मदीवाड, मांदगी।

मांदीवाडौ—देखो 'मादगी' (रू भे)

मांदौ–वि० [स० मान्द्य] (स्त्री० मादी) १ बीमार, रुग्ण, रोगी, अस्वस्थता।

उ०—तद रायसिघजी दिली सागै पधारिया। तठै मानम हुई कै करमचद मादौ घणौ छै।—द दा

उ०—२ मुवा जीवै मांदा सग्न, लहि आधा चख लहै। तुहै माता तोभी सरट, तव नोमी किम सहै।—मे म

उ०—३ तादी धाया गच्छनति, मांदी काया मेल। चांदी खाया नह चढै, बांदी जाया वेल।—ऊ का

उ०—४ आ हरख अर उच्छव रै दिना मे ईं कुजोग री वात के चिटी मादी पडगी।—फुलवाडी

क्रि० प्र०—पडणौ, होणौ।

२ थका हुआ।

३ उदास, सुस्त।

उ०—राति विढियो इमी भाति नरवै रयण, मम समी मार देतो सवाही। तेण उदमादियो चद कमधा तिलक, मात मादौ थियो सूर' माही।—गु रू व

रू० भे०—मादउ।

अल्पा०—मादळियौ। मह०—मादल।

माधाता—देखो 'मानधाता' (रू भे)

मान–स० पु० [स० मान] १ प्रतिष्ठा, इज्जत, सम्मान, गौरव।

उ०—१ महा दिय मान करी गुह मीत, तारै सह कीर कुटुव सहीत।—ह र

उ०—२ जैसलमेर रा रावळजी अर सगळा सिरदार घणै मान सू कह्यौ के आ गुदांमा रा चावळा नै आप आदर सू कबूल करो। —फुलवाडी

क्रि० प्र०—करणौ, खोणौ, पाणौ, मिळणौ, होणौ।

२ आदर, सत्कार, स्वागत।

उ०—वहरी ही जउ हवड घरे आवइ, आदर तिहा कीजइ अग्यान। बाप हुती बीहती न बोलइ, माता ही दीयइ तुछ मान। —महादेव पारवती री वेलि

क्रि० प्र०—करणौ, देणौ, होणौ।

३ अहभाव, स्वाभिमान।

४ गर्व, अहकार, मद।

५ स्त्रियो के रूठने की क्रिया या भाव, क्रोध।

६ आकार, आयतन, प्रमाण।

उ०—जरै साह भी सैनीम हजार सेना भेजी, जिकण रा समुद्र में मेहवा रो मांन वहिय विधान वूतियो।—व भा

७ सामर्थ्य, शक्ति।

उ०—मिनखा घणौ न मान, मान रहै हेकण मना। जीतौ जुव जापान, रूस तणौ बल राजिया—फतैकरण उज्जवल

८ किसी वस्तु का भार, तौल, मात्रा या परिमाण।

९ किसी चीज को मापने का मानक, पैमाना।

१० प्रमाण। ११ अपने व्यक्ति को भूल करते देख मन मे होने वाला विकार, गिला।

१२ ढोल, तबले आदि साज पर किया जाने वाला वह आघात जो सम, अल्प विराम या पूर्ण विराम का द्योतक होता है। (सगीत)

१३ एक राठौड राजा।

उ०—पुत्र स्रीपुज ३२, पुत्र मांन राजा ३३, पुत्र नमुचि । —रा व वि

१४ एक मत्र। १५ ग्रह।

१६ उत्तर दिशा का एक देश। १७ मनुष्य आदमी।

वि०—समान।

रू० भे०—माण।

अल्पा०—मानौ।

मानक—१ देखो 'माणिक्य' (रू. भे)

२ देखो 'मानुष' (रू भे)

मांनको—१ देखो 'मानखो' (रू भे)

२ देखो 'मानुस' (अल्पा, रू भे.)

मानख—देखो 'मानस' (रू. भे.)

उ०—तो सुरसरी तरग, कूची सरग कपाट री। ऐथ पखाळै अग, जग मे धिन मानख जिकै।—बा दा

अल्पा०—मांनको, मांनखो।

मांनखाचार—देखो ,मिनखाचार' (रू भे)

मानखी—देखो 'मांनवी'।

उ०—कारज सुरा करण किय क्रीला। लीला ससंद मानखी लीला। —सू प्र

मानखो–स० पु० (ब व) [स० मानष] १ जनसमूह, जनसमुदाय।

उ०—१ अठी नै राजा री ओ कै'णौ व्हियो अर उठीनै राज दर-बार रै सांमी अडवडतो वेसुमार मानखो अेकण सागै जोर सू पुकार करी।—फुलवाडी

उ०—२ राजा रै मीट लग मानखो ई मानखो निजर आवतो। —फुलवाडी

रू० भे०—मानको।

२ देखो 'मानुस' (अल्पा, रू भे)

उ०—१ इस्टूवां री ओ हठ दखनै लक्खी विणजारा नै पक्को विस्वास व्हैगो के इण गूदडिया भेख मे ओ कोई विरळो ई मानखो है।—फुलवाडी

उ०—२ रोळ ण्है डफोळ, डावाडोळ मे रह्यौ। मानखौ अमोल, गोळ मोळ में रह्यौ।—ऊ का

अल्पा०—मानख।

मांनगरौ—देखो 'माणीगर' (रू भे)

उ०—सौ केसरीसिंहजी पण इसा दातार मानगरा हुवा। बडा-वडा परवाडा दखिण में किया।—महाराज पदमसिंह री वात

मांनग्रह-स० पु० [स० मान-ग्रह] स्त्रियो का कोप भवन।

मानचित्र-स० पु० [स० मानचित्र] किसी स्थान का नक्शा, चित्र।

मानण-स० स्त्री०—१ मानने या स्वीकार करने की क्रिया या भाव।

उ०—पण वा बात किणी रै मांनण मे आवै जैडी नी ही।
—फुलवाडी

२ स्वीकृति।

उ०—अर आपरी रजपुता उपेत पाहुणा नू तौ मांनण रो दूदुभी दिरायवाइ वडे वेग साम्हो चलायो।—व भा

मानणौ मांनवौ—क्रि० स० [स० मान] १ स्वीकार करना, मजूर करना।

उ०—१ थियो सदय मुण निज थुई, टीटभ हूत कसान। उण रा वाळ उबारिया, महामत्र जस मान।—वा दा

उ०—२ जठै नरेस १ नवाब २ हू कहियौ आपणां आवता अकवर १७। १ रो आदेस इसडो हुवो सो वूदी १ रै एवज ओर स्थान २ लेर चाकरी करणी न मांनै तो दूदा नै पकडि आणो।—व भा

उ०—२ ईसुरी छाक ऐराक आरोगता, चोगता दया द्रग कुसळ चाता। प्रसन चित थाय पहराय माळा पुहप, मांनली भूपरी विनय माता।—मे म

उ०—४ सेठ विणज मे ऐडो मन लगायो के पाचू वेटा वारै सामी हार मांनग्या।—फुलवाडी

२ ध्यान देना, गौर करना।

उ०—१ राणी कँवरा लागी—आप तौ मांनौ नी हो, पण म्हनै काच मे दीसै ज्यूं साफ दीसै के कवरा नै मारण रो हुकम सुणतां ई सगळी नगरी मे लाय लाग जावैला।—फुलवाडी

उ०—२ मत्र बसीकर मांनजै, वाणी रस वरसत। सरसुति बीणां प्रगट सुर, कोयल लाज करत।—वां दा

३ किसी के कहने या समझाने पर ठीक मार्ग पर चलना, अनुकूल आचरण करना।

उ०—१ अरज करी प्रभु सू इम अगद, छळवळ कर समझायो छांनै। कटक न मांनै हेत किया सू, मोटी डड दिया सू मानै।
—र रू

उ०—२ पण ऊदरी किण री सीख मांनै उण नै तौ वोछरडाया रौ साव लाधोडौ हो।—फुलवाडी

४ मन में किसी प्रकार की धारणा बनाना।

उ०—१ करहे असवारी किया, सोना हरणी सग। उण ढोला ज्यू आपरो, ढोलो मानै ढग।—वा दा

उ०—२ पण जे मिनख खुद खोटौ अर कूडौ व्हियौ तौ वौ आ पदारथां नै अमोलक, खरा अर साचा मानेला।—फुलवाडी

५ किसी धर्म या ईश्वर को मानकर चलना, आस्था रखना, मानना, धारण करना।

उ०—१ भगवान ने मांनण वाळा सगळा ई किसा एक सरीखा है। भगवान नै मानण वाळी एक तौ राजा वणियोडो है अर दूजै कानी उणी नै सिंवरण वाळा भूखा मरता मरै।—फुलवाडी

उ०—२ तिको सोम जिसा राजा चद्र उपामीक मुसलमान हुवो। तिण रौ केइ मुसलमान चद्रमा नै मानै छै।—रा व वि

उ०—३ बोलै वधव रूपसी, बोलै मोकमदास। तज अवसाण विलास पद, को मानै भ्रम जास।—रा रू

६ ग्रहण करना, अगीकार करना, स्वीकार करना।

उ०—१ वैरी रा मीठा वचन, फळ मीठा किंपाक। वे खाधा वे मांनिया, हुवा कतात खुराक।—बा दा

उ०—२ बदियौ जदि रणमस्त बहु, मानि कवर सो वैण। बिण रण हालौ दाम वणि अप्पण पावण ऐण।—व भा

उ०—३ चिडो कह्यौ—जद आप मैं'ल छोडनै जावौ तो पछै म्है किण रै भरोसै रै'वा। म्है दोनू इंडा समेत आपरै साथै चालस्या। राजकवर उणरी बीणती मांनली।—फुलवाडी

उ०—४ हवा रा तेज झोला सू नींवडा रा छिवरा हिलिया जाणै वौ वारी कामना मानली है।—फुलवाडी

७ खुश होना, राजी होना।

८ पालन करना, धारण करना, शिरोधार्य मानना।

उ०—१ मात तणी आग्या मही, सोइज पूत सपूत। मात बचन मांनै नही कहिए जको कपूत। मांत वचन ध्रू मानियौ, सारा मिटिया सोक। सारा लोका सू सिरै, लाभौ अवचळ लोक।
—वा दा

उ०—२ बाप रौ हुकम मानणा मे ई वेटा रै सरव सुख अर सरव आणद है।—फुलवाडी

उ०—३ माईतां रौ हुकम मांनणौ ई टावरा रे वास्तै सरव सुख है। माईत सदा टावरां रौ भलौ ई चींत्या करै।—फुलवाडी

९ समझना, समझा जाना, माना जाना, जानना।

उ०—१ अब आपरै ऊपर महा सकट मानि एक दीधो तौ परमेस्वर दूजो भी देसी ही परन्तु आपदा मे दिल्लीस भी इमो व्याकुळ थियो।
—व भा

उ०—२ जाहर जग जीवाहणौ, मांनै दोयण मेह। किण सू राखै केहरी, सैणांचार सनेह।—वा दा

उ०—३ आ काठा चढसी अवस, धरणीवर दे धोक। सठ मन मानै सुधरसी, पातर सू परलोक।—वा दा

उ०—४ दुनिया मे आप जैडी पराय मानणी। आपरै जीव रै समान ई दूजा रौ जीव मानणौ।—फुलवाडी

उ०—४ करत नहीं राणा कुंभक्रन, जो तू बळवत बाथ जम ।
मानव देव दई मन मानव कळह कटारी तणो क्रम ।
—महाराणा कुंभा रो गीत

१० किसी विचार, बात या कार्य के लिये सहमत होना, एकमत होना, प्रस्ताव स्वीकार करना ।

उ०—१ पान नै मन उपरांत ई ढगळा रो कंगणो मानणो पड्यो ।
—फुलवाडी

उ०—२ म्हारो कंगणो मानो तो एक भैंस अपांरै ई मोल ले लो ।
—फुलवाडी

११ हठ छोड़ना, आवेश छोड़ना, अनुचित हरकत करते रुकना ।

उ०—१ राजकवरी दौडने उणरा हाथ खांचिया । खुद मरण री धमकी दी तद वो मानियो ।—फुलवाडी

उ०—२ पिण नरवद जोर चढीयो सु मानै नहीं ।—नैणसी

१२ विश्वास करना, भरोसा करना ।

उ०—१ मानो वचन माह मत मेरो । तुरत करां सब कारज तेरो ।—रा रू

उ०—२ चूका वयण मदार चाहता, मुर नर माहो मान अमत्त । भोळै भाव आवियो भूरो, भोळा सभु तणीं भत्त ।—गु रू व

उ०—३ आपणपउ वन धन मानतो जाण, सिरो मणि प्रिय देखतो ।—हीराणंद सूरि

१३ कदर करना, महत्व देना, मान्यता देना ।

उ०—राम भणता रे ! ह्रदा, कह केता गुण होय । ठाकुर मानै जग नवै, पिसण न गजै कोय ।—ह. र

१४ किसी उक्ति या विचार धारा को मानकर चलना ।

ज्यू—सवर रो फळ मीठो मानीजै ।

१५ कल्पना करना ।

१६ अनुकूल पडना, माफिक पडना ।

उ०—पाळै दळद सेवगा पाणा, दुरग पालटै 'सुरम हुवै'। 'सूजा' हरी असहता मानै, हालै मन मानियो हुवै ।—नाथो माद

१७ सम्मान करना, आदर करना ।

१८ दक्ष, पारगत या निपुण समझना ।

१९ पूजा करना, अर्चना करना ।

२० प्रभावित होना, कायल होना ।

उ०—१ महतजी ई मांनण्या के ऐडो, मगत तो वै आपरी ऊमर में ई देख्यो नी ।—फुलवाडी

उ०—२ इण ममझ रै आगै म्हनै हार मानणी पडै ।—फुलवाडी

२१ प्रतिज्ञा या सकल्प करना ।

२२ धैर्य रखना । २३ स्थिर रहना ।

मांनणहार, हारो (हारी), मांनणियो—वि० ।

मानिश्रोडो, मानियोडो, मांन्योडो—भू० का० कृ० ।

मांनीजणो, मानीजबो—कर्म वा० ।

मनणो, मनबो, माणणो, माणबो, मानिणो, मानिबो—रू० भे० ।

मांनता—स० स्त्री० [स० मान्यता] १ मनौती, मन्नत ।

उ०—राज कवर धणी ई मानताबा बोली पण सुगन-चिडी तो आपरी जगा छोटी ई नीं ।—फुलवाडी

२ प्रतिष्ठा, इज्जत, मान्यता ।

उ०—१ कोटरै मुहडै ठाकुरद्वारो तठै राखिया ऐ किणही रै घर मागण न जाय । किण ही सू घणा बोलै नहीं । इणां री वही मानता हुई ।—नैणसी

उ०—२ अठी नै डोकरा डोकरी अजस नै मोद सूं आपरा बेटा रै बारा मे बाता करता हा, अर अठीनै ठिकाणा मे रैवता तीडा री मांनता दिनो-दिन वधती गी ।—फुलवाडी

३ श्रद्धा, भक्ति ।

उ०—बूदी मीराजी जागतो पीर है । राव धणी मांनता गावै ।
वा दा ख्यात

रू० भे०—मानिता ।

मानताळ—स० पु०—मान सरोवर झील ।

उ०—अटाटोप वना रो चलणा कीधा मळै अद्र, सभु नळै ऊजळै वचाळै गणा मैण । दीर्घ मानताळ हसा मछळी नवास दीधा, कवदा मछळी लीदा दुसरा 'कुभैण' ।—कविराजा बाकीदास

मानतालकार—स० पु०—एक जाति या वर्ग विशेष ।

उ०—उपाध्याय गायन बडकार आलविणकार वीणकार वसकार उतिकार मानतालकार अडाउजिय पखाउजिय पाटलिहिक प्रमुख राजलोक पौरलोक इति ।—व स

मानधाता—स० पु० [स० मान्धातृ] युवनाश्व का पुत्र एक सूर्यवंशी राजा ।

उ०—सुत युवनाम सेसट सवेस । निज हुवो मानधाता नरेस ।
—सू प्र

रू० भे०—माधाता ।

मांनध्वज—स० पु०—एक राठौड राजा (ऐतिहासिक)

उ०—अक्रूर राजा रो पुत्र बुधसेन राजा, तिण वधनावर वसायो, रो जससेन ८०, रो मानध्वज ८१, रो अगनि भूति ८०, ।
—रा व वि

मानमदिर—स० पु० [स०] १ वह एकान्त कक्ष जहा स्त्रियां रूठकर बैठती हैं। कोप भवन ।

२ वेध शाला ।

मानराजा—स० पु०—एक राठौड-वंशीय-राजा । (ऐतिहासिक)

उ०—स्त्री मजुराजा रो नमुची राजा, रो मानराजा ।
—रा व वि

मांनव—स० पु० [स० मानव] १ मनुष्य जाति का एक प्राणी, आदमी, इन्सान । (अ, मा., ह ना मा)

उ०—१ जळ जाळ माळ विसाळ नभ जुत उरढ झड अणपार ए । मिटि जळण घरणि विनोद मांनव भूरि सर-जळ भार ए ।
—रा रू

उ०—२ खुधा न भाजै पाणियां, त्रखा न भाजै अन्न। मुकत नहीं हर नाव बिन, मानव साचै मन्न।—ह र

उ०—३ कारण बिन जगसू करै, आठ पोहर उपगार। जाणीजै सुरतर जिकै, मानव लोक मझार।—वा दा

उ०—४ 'सूर' तणौ सुरसरी तणै सर, मानव विहडिया वजावै मार। रण रेवग भेळा कर रचिया, सिव घर घर सिवपुरी सिण-गार।—गु रू व

पर्यां०—आदम, आदमी, कायाधर, गुणनीत, गोघ, तनसार, देह-तती, धव, नर, ना, भ्री, पचजन, पचीक्रनी, पुमान, पुरख, मनुज, मनुस, मरद, मरुत, मानस, मिनख, म्रतलोकी, सुरयानी।

२ मनुष्य जाति, वर्ग व समाज।

उ०—बळवत सेन अति सबळ, सितर पदम हुइ सचरै। बळिराव पयाणौ सभळी, सुर मानव विसहर डरै।—रा व वि.

३ चौदह मात्राओ का एक छन्द इसके ६१० भेद हैं।

४ नाभानेदिष्ट एव शार्यात नामक आचार्यों का पैतृक नाम।

५ एक पुराण वेत्ता एव धर्म शास्त्रकार।

६ अगिराकुलोत्पन्न एक गोत्रकार।

७ उत्तम मन्वतर का एक देव विशेष।

वि॰ [स॰ मानव] १ मनु सम्बन्धी, मनु का, मनु से उत्पन्न।

२ मनु के वशधर।

३ मनुष्य सम्बन्धी, मनुष्य का।

रू॰ भे॰—मनव मनव, माणव, मानवा, मानवी।

मांनवती–स॰ स्त्री॰ [स॰ मानवती] १ नायक से मान करने वाली नायिका, गर्विता। २ अभिमानिनी स्त्री।

मांनवदेव–स॰ पु॰ यौ॰—राजा।

मानवधरमसास्त्र–स॰ पु॰ यौ॰ [मानव-धर्मशास्त्र] मनुस्मृति।

मानवपति–स॰ पु॰ यौ॰ [स॰ मानव+पति] राजा, नरेश।

मांनवसासतर, मानवसास्त्र–स॰ पु॰ यौ॰ [स॰ मानव-शास्त्र] वह शास्त्र या ग्रन्थ जिसमे मानव जाति की उत्पत्ति तथा विकास का विवेचन है।

मानवा, मांनवी–वि॰ [स॰ मानव] १ मनुष्य की, मनुष्य सम्बन्धी, इन्सानी।

उ०—१ ताहरा हरमाळा कळस ले तळाव गई। जायनै सरव तजवीज दीठी, देखनै पाछी आई, कह्यौ—बाइजी छै तो मांनवी बडौ डेरौ।—पलक दरियाव री वात

उ०—२ कुमेर बोलियो—आगै ही लकापति रांवण सीता री चोरी करी ले गयौ। तरै आप चत्रभुज मांनवी देह धारनै विणा-सियौ।—मा वचनिका

उ०—३ म्हैं तो इण धरती री मांनवा देह हू।—फुलवाडी

२ मनुष्योचित।

स॰ स्त्री॰—१ स्वयभु मनु की कन्या का नाम।

२ परशु एव इडा नामक वैदिक वाड्मय मे निर्दिष्ट स्त्रियो का पैतृक नाम।

३ देखो 'मांनव' (रू भे) (ह नां मा)

उ०—१ मळधारी मानवी न मूझइ, कहइ न ब्रह्मा विसन कहइ। —महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ मानविया मन वन मही, लागी लालच लाय। 'बांका' इण सतोस बिण, बीजै केण बुझाय।—वा दा

उ०—३ वीसळदे बाळीह, मत कोई कीजो मानवी। भेळी कर भाळीह, माणै न जाणी मोतिया।—रायसिंह सादू

मांनवीय–वि॰ [स॰ मानवीय] इन्सानी।

मांनवेंद्र–स॰ पु॰ [स॰ मानव-इन्द्र] राजा, नरेश।

मानस–स॰ पु॰ [स॰ मानस] १ मन की आन्तरिक सत्ता जिसमे विचार, सवेदना या अनुभूति होती है, मन, चित्त, मस्तिष्क। (ह नां मा)

२ हृदय दिल।

३ सकल्प, विकल्प। ४ कामदेव।

५ विष्णु का एक रूप।

६ ज्योतिर्भास नामक लोक मे रहने वाले पितरो का सामूहिक नाम।

७ एक यक्ष जो मणिवर एव देवजनी के पुत्रो मे से एक था।

८ वशवर्त्तिन देवो मे से एक।

९ वासुकी कुलोत्पन्न एक नाग।

१० धृतराष्ट्र कुलोत्पन्न एक नाग, जो जनमेजय के सर्पसत्र मे दग्ध हुआ। ११ चर, दूत।

१२ शाल्मली द्वीप का एक वर्ष, देश।

१३ एक राग विशेष। (सगीत)

१४ मानसरोवर झील।

१५ पुष्कर द्वीप का एक पर्वत।

१६ एक लवण विशेष।

१७ मनुष्य, आदमी।

१८ दो मात्राओ का समूह ऽ'। ० (छन्द शास्त्र)

१९ देखो 'मानसर'।

वि॰—१ मन से उत्पन्न, मनोभव।

२ मन से सम्बन्धित।

३ मन से सोचा हुआ, विचारा हुआ।

४ मानसरोवर पर रहने वाला।

रू॰ भे॰—माणस।

मांनसओक–स॰ पु॰ यौ॰ [स॰ मांनस-ओकस्] १ हस। (डिं को)

२ कामदेव।

रू॰ भे॰—मांनसाक।

मांनसचारी–स॰पु॰ [स॰मानसचारिन्] मानसरोवर मे रहने वाला, हस।

मांनसपुतर मांनसपुत्र–स॰ पु॰ [स॰ मानस पुत्र] इच्छा मात्र से उत्पन्न होने वाली सतान। (पौराणिक)

मानसमुद्र-स० पु०—मानसरोवर झील ।

मानसर, मांनसरवर, मांनसरोवर, मांनसरोवरि-स० पु० [स० मानसर] हिमालय के उत्तर मे स्थित एक बडी झील जो बडा पवित्र तीर्थ माना जाता है । यह कैलाश पर्वत के नीचे है ।

उ०—१ उडियाणी कमी मेखळी ऊपरि, काख अवारी डड कर । भळ दीमइ फाबियउ विसमर, सिहरा छायउ मानसर ।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ जो तू चाहै मुकत फळ, धूना मन धीरच्छ । तोख मांनसरवर तठै, माल हुवै मा मच्छ ।—वां दा

उ०—३ ग्रक्ष माहि जिमि कलप तरोवर, मांनसरोवर सार । जिम गिरि हेम प्रेमति प्रमादां, पर पदमनी विचार ।—रुकमणी मगळ

उ०—४ जिम पारिजाति नदनवन मोभइ, भद्रजाति हस्ती विंध्याचळ, राजहस मानसरोवरि, चिंतामणि रोहणाचळि । —व स

२ जयसिंह की माता मीलनदेवी का बंधाया हुआ एक तालाब जो वीरमगाव के पास है ।

उ०—मोताहळ मयछत्र मिर, मांनसरोवर राय । देवी गूजर लहरी ओयहिचरा महाय ।—वा दा

रू० भे०—माणसर, मांणसरोवर, मानसमर ।

मांनसव्रत-स० पु० [मांनसव्रत] मन मे पालन किये जाने वाले व्रत-अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य आदि ।

मांनससन्यासी-स० पु०—दशनामी सन्यासियो की एक शाखा का सन्यासी ।

मानससर-स० पु०—देखो 'मानसरोवर' (रू भे)

मानसाक—देखो 'मांनसप्रोक' (रू भे)

मानससासतर, मानससास्त्र-स० पु० [स० मानस-शास्त्र] वह शास्त्र जिसमे मन से उत्पन्न होने वाली वृत्तियो एव मन के कार्यों का विवेचन किया गया है ।

मांनसाचार—देखो 'मिनखाचार' (रू भे)

मांनसिक-वि० [स०] १ मन से सम्बन्धित, मन का ।

२ मन की कल्पना से उत्पन्न । ३ मन मे होने वाला ।

ज्यू०—मांनसिक सताप ।

४ मन मे सोचने विचारने लायक, मनन करने लायक ।

स० पु०—विष्णु का एक नामान्तर ।

मांनसी-स० स्त्री० [स० मानसी] १ एक विद्या देवी का नाम ।

२ एक ऐतिहासिक नदी ।

उ०—साहरा मगारो देनें उठा सो गोढ ठाकुर चढीया । तिकै मानसी नदी आय उतरीया ।—राजा नरसिंघ री वात

३ देखो 'मांनसीपूजा' ।

वि०—१ मन का, मन सम्बन्धी ।

२ मन मे किया जाने वाला ।

३ मनुष्यो का, मनुष्यो सम्बन्धी, मानवी, इन्सानी ।

मानसीगगा-स० स्त्री० [स० मानसी गगा] गोवर्धन पर्वत के पास के एक सरोवर का नाम ।

मानसीपूजा-स० स्त्री०—मन ही मन की जाने वाली पूजा ।

उ०—अरु प्रथीराजजी वडा भक्त हा । सू मानसीपूजा करता । सू आगरै वैठा लक्ष्मीनाथजी री मूरत वीकानेर मे बायर पधराई थी तिका वताय दीनी ।—द दा.

मांनसूक-स० पु० [स० मानसौका] हस । (अ मा)

मांनसून-स० पु०—१ भारतीय महासागर एव दक्षिणी ऐशिया मे चलने वाली हवा जो छ मास दक्षिण-पश्चिम की ओर मे तथा छ मास उत्तर-पूर्व की ओर से चलती है ।

२ उक्त हवा से वनने वाला मोसम, वातावरण ।

३ दक्षिण-पश्चिम की हवा के कारण वनने वाला वर्षात का मोसम, पावस ।

४ वादल ।

माना-स० स्त्री०—गाथा छन्द का एक भेद जिसमे १२ गुरु व ३३ लघु होते हैं ।

मांनाथ-स० पु० [स० मानाथ] लक्ष्मी के पति, विष्णु ।

मांनिख—देखो 'मानुस' (रू भे)

उ०—जुडै रांम लाखमण काजि जैता । दुवै रूप मांनिख ज भाख दैता ।—सू प्र

मांनिटर-स० पु० [अ०] १ स्कूल की कक्षा में अनुशासन बनाये रखने वाला छात्र ।

२ उक्त छात्र हेतु प्रयोग किया जाने वाला सबोधन सूचक शब्द ।

मांनिणी, मांनिवौ—देखो 'मांनणी, मांनवौ' (रू भे)

उ०—'करण' जीविस्यै मांनिस्यै गुण कवि, किर्त जगत चा सरिस्यै काज ।—ईसरदास वारहठ

मांनिता—देखो 'मांनता' (रू भे)

उ०—ऊभो करो ओखदी आगे, धीर साच मन जेम धरै । हणवत प्रसिध लखण चो हवदां । कवण मांनिता लोक करै ।

—ईसरदास वारहठ

मांनितौ—देखो 'मांनीतौ' (रू भे)

मांनिनी-स० स्त्री० [स० मानिनी] १ दक्षिण नरेश विदूरथ की कन्या जो वैशाली के राजा राज्यवर्धन की पत्नी थी ।

२ देखो 'मांनी' (स्त्री०)

उ०—मानिनी मरक्लडइ हसइ, मुख भरिउ तबोळि । तिणइ अितय भूयणपति, जाणइ चिणोठी चोळ ।—मा का प्र

मानियोडौ-भू० का० कृ०—१ स्वीकार कराया हुआ, मजूर कराया हुआ २ ध्यान दिया हुआ, गौर किया हुआ, समझा हुआ. ३ अनुकूल आचरण किया हुआ, ठीक मार्ग पर चला हुआ ४ मन मे किसी प्रकार की भावना बनाया हुआ. ५ किसी धर्म या ईश्वर को माना हुआ, आस्था रखा हुआ ६ ग्रहण, अगीकार

या स्वीकार किया हुआ ७ खुश या राजी हुवा हुआ. ८ पालन किया हुआ, धारण किया हुआ, शिरोधार्य माना हुआ ९ माना हुआ, समझा हुआ, जाना हुआ १० प्रस्ताव स्वीकार किया हुआ, विचार या बात पर सहमति दिया हुआ ११ अनुचित हरकत करते रुका हुआ, हठ या आवेश छोड़ा हुआ १२ विश्वास या भरोसा किया हुआ १३ मान्यता या महत्व दिया हुआ, कदर किया हुआ. १४ किसी विचार धारा या उक्ति को मान-कर चला हुआ १५ कल्पना किया हुआ १६ अनुकूल या माफिक पड़ा हुआ, १७ सम्मान या आदर किया हुआ १८ दक्ष, निपुण या पारगत माना हुआ १९ पूजा या अर्चना किया हुआ २० प्रभावित या कायल हुवा हुआ २१ प्रतिज्ञा या सकल्प किया हुआ २२ धैर्य रक्खा हुआ २३ स्थिर रहा हुआ

(स्त्री० मानियोडी)

मांनी-वि० [स० मानिन्] (स्त्री० मानिनी) १ अपने मानापमान, गौरव या प्रतिष्ठा का ध्यान रखने वाला, स्वाभिमानी।

उ०—दिये मेघ राधेय सरवस्व दांनी। महाकस्ट भी मागवै भूप मानी।—व भा

२ माननीय, सम्माननीय, प्रतिष्ठित।

३ अभिमानी घमडी, गर्विला। ४ जिसमें मान हो।

स० पु० [अ० मा'नी] १ अभिप्राय, आशय, अर्थ, मतलब, भाव।

२ रहस्य मूलक तत्व, भेद। ३ प्रयोजन, उद्देश्य।

मानीतौ-वि०—१ माना हुआ, प्रिय।

उ०—झाके झूलर झीलता, पैठो कुवर विचित्र। अजहु न आयो आपणो, मन मांनीतो मित्र।—पलक दरियाव री वात

२ विशेष रूप से विश्वास पात्र।

३ मान, प्रतिष्ठा या गौरव प्राप्त।

४ कृपा पात्र। ५ प्यारा, दुलारा।

रू० भे०—मानितौ, मानेतौ।

मानु—१ देखो 'मान' (रू भे)

उ०—मानु दीन्हउ मानु दिन्हउ गगेय।—प प. च

२ देखो 'मानौ' (रू भे)

मानुक्ष, मांनुख—देखो 'मानुस' (रू भे) (ह ना मा)

उ०—१ मांनव रूप फळ मुख कमळ, इसा आइ अर्खं अई। मानुक्ष अक्ष नवि नीपजै, कहो व्रह्म कीधो कई।—रा द. वि

उ०—२ हर जस गावण हार, घन मांनुख तन घार।—र ज प्र

उ०—३ लीलाघण ग्रहे मानुखी लीला, जग वासग वसिया जगति। पित प्रदुमन जगदीस पितामह, पोतो अनिरुघ ऊखापति।

—वेलि

(स्त्री० मांनुखी)

मांनुस-स० पु० [स० मानुष] (स्त्री० मानुसी) १ मनुष्य, आदमी, इन्सान, नर।

२ मिथुन, कन्या, और तुला राशियो का नामान्तर।

३ प्रमाण के तीन भेदो में से एक।

[स० मानुष] ४ मनुष्यत्व, इसानियत।

५ पुरुषार्थ।

वि० (स्त्री० मानुखी) १ मनुष्य सम्बन्धी, मानवी।

२ अनुग्रहशील, दयालु।

रू० भे०—मानक, मांनिक्ख, मानुक्ष, मानुख।

अल्पा०—मानकौ, मानखौ।

मानुसता-स० स्त्री० [स० मानुष] इन्सानियत, आदमियत।

मानू—देखो 'मानौ' (रू भे)

मानेतण-वि० स्त्री० [स० मानित] १ मानवती, मानिनी।

२ कृपा पात्र, विशेष प्रिय।

स० स्त्री०—वह स्त्री या नायिका जो अपने पति या प्रियतम को विशेष प्रिय हो।

उ०—१ मांनेतण राणी तारा झडी चूदडी ओढ, चादा रै उणि-यारै इमरत बरसावती प्रीतम नै रीझावण सारू नाचण लागी।

—फुलवाडी

उ०—३ पछै वा मांनेतण ऊदरी सवा हाथ री लाबो घूघटो काढनै लाज सरम सू दोवडी व्हैती न्यात में गी।—फुलवाडी

रू० भे०—मांणेतण।

मांनेतौ—देखो 'मानीतौ' (रू भे)

मानौ-अव्यय—१ यथा, जैसे, गोया, मानो।

रू० भे० - मनहु मनहू, मना, मनि, मनु, मनु, मनू, मनू, मनै, मनो, मानु मानू।

२ देखो 'मांन' (अल्पा, रू भे)

उ०—वचन रचन सुणज्यो हिवै, आणी भाव प्रधानो रे। देज्यो दान इसी परै, जेम लहो तुमे मानो रे।—वि कु

मान्य-वि० [स० मान्य] १ जो मानने योग्य हो, जिसे मान्यता दी जा सके, मान्य।

२ उचित, ठीक।

३ मान, सम्मान या आदर योग्य।

स० पु०—१ विष्णु।

२ शिव। ३ मैत्रावरुण।

माम-स० पु० [स० माम=ममत्व] १ इज्जत, मान, प्रतिष्ठा गौरव।

उ०—गांगावत जिम माम गमाडै। 'करन' समोभ्रम जाय किम। भाजण तणां ज महणा भण भग। 'जैत' न सहियो 'माळ' जिम।

—द दा

उ०—२ कूरमां जादमा अहाडा कमधजां, चलावी चहू जुग वीच चावी। माम हिंदू घरम तणी मारी मिळै, 'अना' राणा सनै चाल आवी।—आसियो भोपत

उ०—तिणि हिज मारगि पाधरउ वळइ, नीर्जे चिति हीयड़ा गळ-फळई । वळिनइ आव्यो आपणि गामि, देस विदेस गमाडी मांम ।
—ढो मा

उ०—४ मुज अमुरां संग्राम, किया नह पौंहचां करै । सांई न राखी ठकुरां, मुर भवण पति मांम ।—मा वचनिका

२ सम्मान, आदर । ३ जीत, विजय ।

उ०—जेवटउ अतर मेर सरसिव, जेवटउ अतर मांम अनड परि-भव, जेवडउ अतर लोह अनइ पारस, जेवटउ अतर राम अनइ रावण ।—व स

३ मर्यादा, हद, सीमा ।

उ०—१ हू माधव वड्ढ़ वळी, तै माधव तू होय । पीहड कां मुभ पापीया, महीया मांम म खोय ।—मा कां प्र

उ०—२ महरांण अमळ जिम लोप मांम ।—पा प्र

४ गर्व, अहंकार, घमंड ।

उ०—१ सीवर सारणी जी, मैता निवळ सतां घांम । महूपत मारणी जी, महजुध करम धरमां मांम ।—र ज प्र.

उ०—२ वनाती भूलां घातियां रहतला दर्पी गहमनां जूता छै । सू हालियां थकां घोटा री मांम पाई ।—गगय दीची री दो पहरी

५ दृढ़ता ।

उ०—धुज धरम सर कोदड धारण, मेर श्रीपत मांम रा । आनूर भुज परचड आहव, रूप रिवकुळ रांम रा ।—र ज प्र

६ पहाड़, पर्वत । (अ मा)

७ इच्छा, अभिलाषा, कामना ।

उ०—बीचि राव सग वधियो 'आसावत' 'जैरांम' । करवा नव-कोटी कुसळ, मोटी धारै मांम ।—रा रू

८ युद्ध ।

९ शक्ति, बल ।

उ०—करमसीहो खत्री करम का उजागर । धांम धाम अवसांण मांम का रतनागर ।—रा रू

१० बदला ।

११ धन, दौलत, वैभव । (ह नां मा)

१२ कार्य, काम ।

उ०—सुत रिणछोड माण पण साचै । जप भ्रम मांम नांव जग वाचै ।—रा रू

वि०—१ लायक, योग्य ।

उ०—अजब धणी दळ मारखां, अजबावत द (ब) ळरांम । रूके आटा रवखणां, मोटा कांमा मांम ।—रा रू.

२ युद्ध करने वाला, योद्धा ।

उ०—लखमीदास 'पातल' का उज्जळ अरेह । साम धरम कांम कोट मांम का सा देह ।—रा रू

[सं० माम] १ मेरा, अपना ।

उ०—१ देखि दगद बड़ौ चौपदार, बलि मांम गमारै । नद मंद बुद्धि नीर नाम, प्रगासि घणारै ।—सू प्र

उ०—साग हुग मेना मांम मीर, साथी तिम गर मर तूरा मीर ।
—पा प्र.

४ देखो 'मांमो' (मह, रू भे)

उ०—मई रांम सगमर्ह मांम मारै ।—सू प्र

५ देखो 'मांग' (रू भे)

मांमउ—देखो 'मामो' (रू भे)

उ०—माट मलिउ मिलिउ गुण दिट, नागम मांमउ मलिउ [illegible] ।—व स

मांमगर-सं० पु०—[illegible] ।

उ०—[illegible], [illegible]. मेवगर मांम गर [illegible] ।—द स

मांमट-सं० पु०—१ ग्रावट प्रथी के पिता का नाम ।

उ०—मांमट रै मा[illegible], नाम [illegible] मांई । [illegible] री तरवार, हुवा [illegible] ।—रा म

२ देखो 'मामो' (मह, रू भे)

मांमड़ाई, मांमड़ियाळ-सं० स्त्री०—मामट की बेटी आवड़ देवी ।

उ०—१ जठै मारगा मांमड़ाई पुजावै । घाई पौरव, गोर मनोर पावै ।—मे म

उ०—२ मायड मांमड़ियाळ गोडिया रह मेम.ही । तूट पनै वैध-गार, उभै मांमागी जाई ।—पा प्र

मांमदस्तौ—देखो 'हमामदस्तो' (रू. भे) (शेखावटी)

मांमलत, मामलति, मांमलात-सं० स्त्री० [अ० मुआमलत, मुआमलात]

१ पारस्परिक व्यवहार ।

उ०—मांण होगा मुराह भरै मग मांमलत, पांण कुण करै महा-रांण पाजा ।—जवानजी आढ़ो

२ विवादास्पद बात, मुकद्दमा ।

३ कोई बात या विषय ।

४ घटना ।

मांमलागुजार-वि०—मामला तामल कर देने वाला ।

मांमलियो—१ देखो 'मांमो' (अल्पा, रू भे)

२ देखो 'ममोलो' (रू भे)

मांमलो-सं० पु० [अ० मुआमल] १ युद्ध, झगड़ा, लड़ाई ।

उ०—१ सरणी लाजम मांमलै, धार धणी पड धाप । पदणी सांवळ पीजरै, सिहां वडो सराप ।—बा दा

उ०—२ तरै समसदी कह्यो—नाव तो हू जोगू नहीं नै मोसू मांमलो कियो तठै पातरो वडा उमरावां मुसलमानां माहे घणी साख रो घणी का न हुतो । वे तो अमवार दो हिंदु हुता, तिणां मांनू मालियो ने उणां म्हारा माथा री टोप रुपिया सवा लाख री कीमत री लियो छै ।—नैणसी

उ०—३ पीछै स्रोजी दक्षरा रै सोवै आदृणी पधारिया। उठै वार एक गनीमा सू मांमलो हुवो। जठै माराज वडो झगडो कियो।
—द दा

उ०—४ मीसण पढिया मांमले 'सामो' अनै रतन्न'। दिल्ली खेत न छडियो, धारण चारण छिन्न —रा रू

२ आक्रमण, हमला।

उ०—वरस १२ विग्रह नै हुवा छै। मांमला घणाही हुवा पण गढ हाथ आवै नही।—नैणसी

३ समस्या, उलझन।

उ०—आपस मे मामलो नी निवडतो देखनै वानै नवो पच थापणो ई पड्यो।—फुलवाडी

४ दुसाध्य कार्य, दुष्कर कार्य।

उ०—तद नाथै अरज करी—दीवाण सलामत राठोडा रै वैर रो मांमलो खरो जोरावर छै। अर वळ वैर ही राव रिणमल रो।
—नैणसी

५ कार्य या काम।

उ०—१ कह्यो-जी बांभण आवै छै। मत क्यु ही कहो। वाहर रो मांमलो छै।—नैणसी

उ०—२ जोसी गावड खुजावतो बोल्यो—जोखो तो ऐडो की खास नी। टावरा रै भाग रा साजा-सूरा आय जावैला। पण जोग अवळा है। थे हीमत राखो तो मामलो सुधर जावै।—फुलवाडी

६ कोई विषय, बात।

उ०—१ तरा सावणिया सांवण वेध्या नै कह्यो या सावणा सूराचद री राजा तो हाथ चढै नै आपा माहै कुसळ वरतै नै वेढ रो मामलो छै, खित्री रो धरम छै पिण सूराचद रो राजा तो मारियो।
—जैतसी ऊदावत री वात

उ०—२ जे गूजरी री टोय नी लेग्यो तो राजाजी खीझैला। ऐडा मामला मे वानै रीस अणूती वेगी आवै।—फुलवाडी

उ०—३ बाता हदा मामला दरिया हदा फेर। नदिया वहै उतावळी देदे घूमर घेर।—फुलवाडी

७ विवादास्पद विषय, मुकद्दमा।

उ०—विरमाजी कह्यो—थू तो खुद बळद वाळो ई रोवणो रोयो। पण थारी ऊमर कोई ओढण वास्तै त्यार व्है जावै तो म्है तुरत ओ मामलो सलटाय दू।—फुलवाडी

८ घटना।

उ०—तरै रिणमल दीठो—आही वात तो वणी नहीं। चद्रसेन रो तो इणा दोना ही मामला बिगडियो क्यु नही।
—रावचद्रसेन री वात

९ वैभव, ठाट बाट।

उ०—तद ए केसरीयै साह रै घरे गया। आगै साह रो वडो मांमलो। ईयै रै वडो वणज, केइ केरोडां री मताह, गाहणो कपडा विसायत री वडो जलूस।—ठाकुरै साह री वात

१० व्यापार, व्यवसाय।

११ प्रभाव, रौब।

उ०—पछै पताई रावळ रै माळो सद्यो वाकलियो तिकेरो वडो मांमलो, वडो इतबार गढो री कूची तै वसू।—नैणसी

१२ स्थिति, हालत दशा।

उ०—देत भिझकनै बैठो व्हियो। वगनो व्है ज्यू अठी उठी देखनै बोल्यो—म्हनै ऐडो लखायो के म्हारो माथो पगा मे आयग्यो अर म्हारा पग माथा री ठोड आयग्या। सगळो मामलो ई जाणै उलट गियो।—फुलवाडी

१३ वृत्तान्त हाल।

उ०—१ राणा प्रताप रा कवरा रा मामला विगत—अमरसिंघ पूरबिया परमार मयारखखा असोकमलोत रो दोहितो।
—वा दा ख्यात

उ०—२ स० १६४३ चारण वाभण सु मामलो आउवै।
—राजा उदैसिंह री वात

१४ समझौता, परस्पर तय की जाने वाली बात।

१५ कोई व्यवस्था या परम्परा जो सर्व सम्मति से निश्चित की जाती है।

१६ प्रधान या मुख्य बात।

१७ कौल, वचन।

१८ खिराज नामक एक प्रकार का कर जो सेना खर्च के लिये लिया जाता था। (जयपुर, सीकर)

मामस-स० स्त्री०—सासू के भाई की स्त्री, सासू की भोजाई, मामी सास। (शेखावटी)

मांमसरो-स० पु०—सासू का भाई, मामा श्वसुर। (शेखावाटी)

उ०—म्हारै मामंजी रै माडी गणगोर, मामसरा घर मांड्यो रग झूमकडो।—लो गी

मामांण, मामांणो-स० पु०—मामा का घर, ननिहाल।

मामाई-स० पु०—मामा का वशज।

वि०—मामा का, मामा से सम्बन्धित।

मांमात-स० स्त्री०—मामा की वेटी वहन।

मामामुरकी-स० स्त्री०—कान का आभूषण विशेष। (वरदा)

मांमारखो—देखो 'ममारखो' (रू भे)

उ०—नै ठाकुर वहा राजी हुवा। अरु ठाकुरा वळजी गागैजी री माजी नू कहायो, जो थारा वेटा नू जोवपुर री मामारखो है। तद गागैजी री माजी ठाकुरा नू कहायो, जो जोधपुर म्हा पायो, नै ओ राज तो थारै ई सारै है सू थे देवो जिण नू आवै।—द दा.

मामाळ-स० पु०—१ ननिहाल, मातृ-गृह, मामा का घर।

उ०—१ तात मात मांमाल तक, सूरा साख समार। पलटै घर ऊभी पगा (म्हारो) लाजै पीहर लार।—अगरावाई उदावत

उ०—२ बाधोडी कमरा मो बुजी सा नहीं खोली । लाजै म्हारी लाडकियो मांमान ।—लो गी

मांमालूणी–स० स्त्री०—बरसात की मौसम में होने वाला एक पौधा विशेष जिसका स्वाद खट्टा होता है । यह पौधा पृथ्वी पर छितराया हुआ रहता है ।

उ०—पयाळ-लोक रा नी नी व्है जैडा अमरफळ छोडनै वा बोर, दाखू, कवेटा, केल्दा, खिरणिया, पीपिया, भडोलिया, गुट्टा, पीलू, गूदा, गूंदिया, श्रामलिया, गेंगणिया, डाणिया, घीतोला, मोथिया, केडूला, खोखा, मामालूणी, काचरा, काकडियां, खरबूजा अर मतीरां वास्तै तडफा तोडती ।—फुलवाडी

मांमी–स० स्त्री—मामा की स्त्री ।

उ०—धीणो फगत छोटोडी मामी रै इज हो । भींटियो छोटोडी मांमी रै घरै ठैरियो ।—फुलवाडी

मांमीतासरो–स० पु०—सासू का पीहर, सासू के भाई का घर ।

मामीसासू–स० स्त्री०—सासू की भोजाई ।

मामीसुसरो, मांमीसूसरो–स० पु०—सासू का भाई, पति या पत्नी का मामा ।

मामू—देखो 'मांमो' (रू भे)

उ०—ताहरां उवा कहियो मामू श्रावण दिये नहीं ।—द वि

मांमूर–स० पु० [श्र० मामूर] १ बस्ती, आबादी ।

२ साधन, सामग्री ।

उ०—'धांनो' तिण समै निपट बेखरच छै, सूल सामान मांमूर कूं न छै मु उठै धारू री मा कस्टी रात री, तरै डेरो डाडो साथै मामूर थयू न छै ।—नैणसी

वि०—१ जिसे आदेश दिया गया हो ।

२ तैनात, मुकर्रर, नियुक्त ।

[श्र० मा'मूर] ३ बसा हुश्रा, आबाद ।

४ भरा हुश्रा, परिपूर्ण ।

५ बद ।   ६ लबालब भरा हुश्रा ।

७ समृद्ध ।   ८ बिल्कुल ।

उ०—बूंदी सहर भाखर लागतो वसै छै, रावळा घर भाखर रै श्राघोफरै छै । तिण मांहे पाणी मामूर नहीं । सहर री श्रायी पीजै ।

—नैणसी

मांमूली–वि० [श्र० मा'मूली] १ साधारण, सामान्य ।

उ०—१ पुटियो टिव टिव करतां बोल्यो—पचायती तो साव मांमूली ही । लोग श्रा बात जाणण सारू एकठ व्हिया के इण दुनिया में जीव मरै घणा के जीवै घणां ।—फुलवाडी

उ०—२ अबकी भाणजी नरमाई सू जवाब दियो—म्हारो बूतो ई कोई के थारै साथै व्हियोडी मिमखरी नै म्हैं झेल सकू पण मासी ! म्हारै सारू ई कोई मांमूली मिमखरी तो नी व्ही ।—फुलवाडी

२ अत्यन्त, थोडासा, छोटासा ।

उ०—१ श्रघगावळो कुत्तो कह्यो—म्है इण मामूली बदळा री बात नी करी । मिनखा री कडियां तो भागैला ज्यू ई भागैला । अपारी अर थारी कडिया में घणो फरक व्है ।—फुलवाडी

उ०—२ राणी चिडा रै मन री बात लखगी । वा उणनै लाड सू कह्यो—बावळा, म्है देसू के आज कालै थारा मन में घणा घणा गोटा उठै । थारा मांमूली मा श्राराम वास्तै, थू कठैई श्रा नीं व्है के बापडा बिचिया नै हेमाळै मेल दै ।—फुलवाडी

उ०—३ बडी गताघूम में फसग्यो । कित्ता भवारा री मसा परगट करू । नवा भवारा बणण में देर ई लागैला । अबारू तो साव मामूली मवारा है ।—फुलवाडी

३ महत्वहीन, निरर्थक ।

उ०—१ एक नाकुछ मांमूली सा कांम सारू कित्ता कळाप व्हिया ।

—फुलवाडी

उ०—२ नाई रै मूडै राजाजी रै मन री बात सुणता ई डोकरी पैला तो खूब हसी । पछै कह्यो—इण मामूली सी बात सारू थैं कित्ता श्रोळावा लिया ।—फुलवाडी

४ आसान, सरल, सीधा-सादा ।

उ०—१ भाणजी री श्राटी गूथतां मासी पूछ्यो—म्हैं थनै एक साव मामूली सी बात पूछू, जिणरो जवाब दीजै बेटी के जद अपांरो जलम ई सजोग सू व्है तो पछै उण री नीव माथै चिणियोडो जीवण कीकर सजोग बिना श्रापरो गुजारो कर सकै ।

—फुलवाडी

उ०—२ नवा मानखा श्रर मन रा सपना नै जलम देवणो कोई मामूली बात नी ही ।—फुलवाडी

५ रोजमर्रा का ।

उ०—थू फालतू रा दपूचा मत लै । थू चार-पाच साल री श्रबूझ टाबर कोनी जको ऐ मामूली बाता ई नी जाणै ।—फुलवाडी

६ प्राय होता रहने वाला ।

उ०—इरडूगां मुळकतो-मुळकतो सामो श्रायो । श्रबै ऐ गिजराणां री बाता उणरै वास्तै साव मामूली व्हैगी ही ।—फुलवाडी

७ परम्परागत, रस्मी ।

८ नियत या निश्चित ढग से होने वाला ।

मामूल्यो—देखो 'ममोलो' (श्रल्पा, रू भे)

स० पु०—मामा का पुत्र भाई ।

मामेरो—देखो 'मायरो' (रू भे)

मामोलियो—देखो 'ममोलो' (श्रल्पा, रू भे)

मामोलो—देखो 'ममोलो' (रू भे)

मांमोल्यो—देखो 'ममोलो' (रू भे)

मांमो–स० पु० (स्त्री० मामी) १ माता का भाई, नानै का बेटा ।

उ०—१ मांमो पडियो' मीर' री श्राठां सू श्रबदल्ल । श्रठी 'सिवो' नरसीघ री, 'राजड' रो पातल्ल' ।—रा रू

उ०—२ थट सहित 'कुंभो' थर हरै। साहाय मामो सभरै।
—सू प्र
उ०—३ ताहरा निजामसाह कह्यो—ग्रो म्हारो मांमो छै। ताहरा मलकवर कह्यो—थारो मामो पण म्हारो वेटो छै।—नैणसी
२ भील जाति के व्यक्ति के लिए सम्मान सूचक शब्द (मेवाड)
रू० भे०—मामउ, मामू।
ग्रल्पा०—मामलियो।
मह०—मांम, मोमड।

मांमोजी-स० पु०—परोपकार के लिए लडकर वीर गति प्राप्त करने वाला वीर, योद्धा जो जनता द्वारा पूजा जाता है।

माय-क्रि० वि० [सं० मध्य] १ भीतर, ग्रन्दर, मे।
उ०—१ मुकुंद वसै मन ज्यारै माय, सदा सुख वासर रैण विहाय।
—ह. र
उ०—२ परदार प्यार हुयगो प्रमत, विन सीगा रा वेलिया। भोगरै माय भवता भवर, गयो जनम सव गेलिया।—क का
उ०—३ ग्राठम ग्राज सहेलिया, ग्रो पख ऐळो जाय। हियै खटूकै साहिबो, काटो ऐडी मांय।—ग्रज्ञात
उ०—४ कवर ग्रापरा घोडा नै थोडो लारै लेय दूजोडा साथिया नै कह्यो—यू डरग्या कांईं। इत्ती मांय लारो करनै ग्रालोच मे पडग्या। रजपूतां नै तो जलम सूईं पैला मा रा पेट मे मौत री गुटकी मिळै। माय वडनै वूटो वूटो खूद न्हाको।—फुलवाडी
उ०—५ डावडी मोसा रो डक मारती वोली—साटा ग्ररोगण री ऐडी ही भावड व्है तो माय पधारो।—फुलवाडी
२ ग्रोट मे, ग्राड मे।
उ०—मुकुंद म पैस पडद्दा माय। ठावो मैं कीधो सरवह ठांय।
—ह र
३ दरम्यान, वीच।
४ वहुतो के वीच मे, मध्य मे।
उ०—१ ढोलिया माथै सूती सूती पसवाडा पलटती री पण उण री नींद तो जांणै तारां रै मांय ई चापळगी ही।—फुलवाडी
उ०—२ ग्रां तीना मांय सू थारै जचै जकी सोगन समझ जाजै
—फुलवाडी
रू० भे०—मह, महि, मही, महां, मां, माइ, माई, माह, मांहां, माहा, माहि, मांहि, मांही, मंहि, माहै, माय, मायनै, मायै, माह, माहा, माहि, माहि, माही, माही, माहे, माहे।
५ देखो 'माता' (रू भे)

मांयकर-ग्रव्य०—ग्रन्दर से होकर।
उ०—खेत रै मायकर निकळतां महारांणी सू गाढ नी राखीजियो।
—फुलवाडी
रू० भे०—माहकार, मांहाकर।

मांयडो—देखो 'माता' (ग्रल्पा, रू भे)

मांयनो-स० पु० [ग्र० मुग्रायन] १ किसी पर गौर करने या उसे ठीक से देखने की क्रिया या भाव।
२ निरीक्षण, जांच-पडताल। ३ ग्रर्थ, मतलब।

मांयलडो—देखो 'मायलो' (ग्रल्पा, रू. भे)
उ०—मायला मायलोडी नगरी जोय, विन जोया भटकत फिरै, थारो भलो काय सू होय।—हरिरामजी महाराज
(स्त्री० मायलोडी)

मायली—१ देखो 'माता' (ग्रल्पा, रू भे)
२ देखो 'मांयलो' (स्त्री०)

मांयलोडो—देखो 'मांयलो' (ग्रल्पा, रू. भे)

मायलो-वि० [स० मध्य+रा० प्र० लो] (स्त्री० मायली) वाहरी का विपरीत, भीतरी, ग्रन्दर का।
उ०—१ हस मायला मूढ रे, कर हर सर विसराम। मर मर घर घर नह फिरै, उर घर गिरधर नाम।—ह र
उ०—२ थाळ मायला दीवा जगमगाट करता हा।—फुलवाडी
उ०—३ दीवाणजी नै लखायो के रगा मांयलो लोई ग्रवै ठस्यो ग्रवै ठस्यो।—फुलवाडी
उ०—४ दूजोड़ा वाग मे वगळो १ नवो नै मायली कानी जनाना रैवास री जायगा कराई।—नैणसी
२ किसी स्थान, क्षेत्र या परिधि मे रहने वाला।
उ०—१ हमै गढ मायला नू पूरो जोर पोहतो। तद राव सूजेजी री माजी हाडी जसमादेजी कहायो कै थारा भला ग्रादमी मेलो।
—द दा
उ०—२ पन्ना मारू ग्रापनै सिधावो परदेस। वरजोने वागा री हो मांयली कोयली म्हारा राज।—लो गी
३ जो किसी के ग्रन्दर स्थिर या स्थित हो।
उ०—वा तो पछै भली सोची नी कोई भूडी, खांचनै हाथ मायली सोटी वगाई—फुलवाडी
४ चारो ग्रोर का।
उ०—राजकवर गळा मायलो हार मछियारा नें झिलावतो कह्यो—म्हैं थनै लाखू रिपिया रो ग्रो हार देवू, थू मछलिया मारणी छोड दे तो।—फुलवाडी
५ कईयो के वीच का।
उ०—ग्रांमलिया पाकी ने ग्रव रुत ग्राई रे जला। जला रे राजा मायलो राज भलो राठोडी रै।—लो गी
६ गुप्त, गोपनीय।
सर्व०—मेरा।
रू० भे०—मयलो, मइलो, मांहलु, माहलो, माहिलो, मांहीलो, माहेलो, माहलो, माहिरलो, माहिलइ, माहिलु, माहिलो, माहिल्यु।
ग्रल्पा०—मायलोडो।

माया—१ सोतेली माताए।

उ०—बीजी मायां सू मिलिया सारे निछरावळ कीधी ।
—कुंवरसी साखला री वारता

२ देखो 'माया' (रू भे)
३ देखो 'माया' (रू भे)

मार—१ देखो 'मोर' (रू भे)
२ देखो 'मार' (रू भे.)

माराई—देखो 'मुराई' (रू भे)

मा'रो—देखो 'मेरो' (रू भे)
उ०—मा'रो थांरो कर माया मे, वळज्योडा वळजावै। कुळवै लगै गुरारी कूंची, खट ताळा खुल जावै ।—ऊ का

मांळ—देखो 'मोळ' (रू भे)
ज्यू—हमार चीणा री मांळ है ।

मांलत—देखो मोहलत' (रू भे)

मावडी—देखो माता' (अल्पा, रू भे)

मावणी—स० स्त्री० [स० म्ना-अभ्यासे=ल्युट=म्नानी] पाठशाला मे छात्रों द्वारा सध्या समय बोली जाने वाली पहाडो की गिनती ।

मावसी—देखो 'मासी' (रू भे)
उ०—मरो मा, जीवो मावसी, घी घालसी, न गोडा चालसी ।
—अज्ञात

मावीत—देखो 'माईत' (रू भे)
उ०—थाहरा मावीता री था नू सरम छै, कहड़ा हुवो छो।
—नान्हे वाघेले री वात

मास—स० पु० [स०] १ मनुष्य, पशु व पक्षियो आदि के शरीर का वह अश जो हड्डी के ऊपर तथा चमडी के नीचे रहता है तथा खून, नाडियो आदि से मिश्र होता है। यह चिकना एव मुलायम तथा लाल रग का होता है गोश्त, आमिष ।
उ०—१ जस चाहे वाहे जिको मांसा चूकी हड्ड । अखियाता वाता वचै, जरा काळ डर छड्ड ।—वा दा
उ०—२ लुगाया रै कूख री थैलिया अर हाचळा रै मास री म्हनै अगू ती भावह है। मास रै हिमाव सू ऐ सामी भूडी चीजां है ।—फुलवाडी
पर्या०—आमिष, कासम, कीन क्रव्य, तरस, तेजभव, पळ, पलल, पिशित मेदकर, रक्तभव ।
२ कुछ विशिष्ट प्राणियो (पशु-पक्षियो) का गोश्त जो प्राय खाने मे काम आता है।
३ फल का गूदा ।
४ मछली ।
रू० भे०—मस, मासु मास ।
अल्पा०—मासडो ।

मासअहारी—देखो 'मासाहारी' (रू भे)
उ०—भूखा मासअहारी भावै, वनसै रग ऊधारै वाणी । 'बांको' चालण फौज विहडण, ओख विडग गयो 'अमराणी'।
—सुखजा खिडियो

मांसकर—स० पु०—१ मास वेचने वाला, कमाई ।
२ खटीक ।

मासकरण, मासकारि—स० पु० [स० मास-कारि] रक्त, रुधिर, खून ।

मासकेसी—स० पु० [स० मास-केशिन्] वह घोडा जिसके पैरो में मास के गुठले निकले हुए होते हैं।

मासखोर—वि०—१ मास खाने वाला, मासाहारी ।
२ जिसे मास खाने की आदत हो।

मासचर—देखो 'मासाचर' (रू भे)
उ०—सुरताण जतै घमसाण किया सत्र, चोळ थई रण मासचर, छटका रुधर पहाडा छरगै, पखी पावस तणी पर ।
—दुरसो आढ़ो

मासट्ट—स० पु०—मांस पिंड, मांस खड ।
उ०—पूरपियै भर जोगणी, भर पत्र उलट्ट । मिळिया खेचर भूचरा, मोटै मांसट्ट ।—द दा

मांसती—देखो 'मासती' (रू भे)

मासपिंड—स० पु० [स०] शरीर, देह ।

मासपिंडी—स० पु०—शरीर के अन्दर मास की ग्रन्थी ।

मांसपेसी—स० स्त्री० [स० मासपेशी] शरीर के अन्दर होने वाली झिल्ली या रेशो के आकार का मास पिंड जिसका मुख्य कार्य गति उत्पन्न करना है। ये करीब ५०० या ५१९ होती हैं।

मांसभक्षी, मांसभखी—वि० [स० मांस+भक्षिन्] मास खाने वाला, मासाहारी ।

मांसमौजी—वि०—मास खाकर मस्त या तृप्त रहने वाला ।

मांसर—देखो 'मोसर' (रू. भे)

मासरोहिणी—स० स्त्री०—एक प्रकार का जंगली वृक्ष जिसके फल बहुत छोटे छोटे होते हैं।

मासल—वि० [स०] १ मांस मे भरा हुआ, परिपूर्ण ।
२ हृष्ट-पुष्ट । ३ स्थूल-काय ।

मांसलता—स० स्त्री०—'मांसल' होने की दशा, अवस्था या भाव ।

मासाचर, मांसाचारी—स० पु०—१ मास खाने वाले प्राणी ।
उ०—मासाचरा घपाडै मामा, वासा करै अमावड वाड । मावै नही पहाडा माहे । हाथ्यारा दांतूमळ हाथ ।
—महाराणा अमरसिंह री गीत
२ वह पक्षी, जानवर या प्राणी जिसका आहार मांस हो, शेर, गिद्ध।
रू० भे०—मंसचर, मसचार,मसहार, ममाहार, ममाहारी, मांसचर।

मासाडो—स० पु०—पशुओ के मुह मे होने वाला एक रोग ।

मांसारी—देखो 'मासाहारी' (रू भे)

मांसाल—स० पु०—मामा का घर, ननिहाल ।

मांसाहार—स० पु० [स० मांस-आहार] मांस भक्षण ।
रू० भे०—मसहार, मसाहार ।

मांसाहारी-वि० [स० मास-प्राहारी] मास खाने वाला, मास भक्षी।
उ०—महाराज वीर विक्रमादित्य उज्जैण माही राज करै। तेथी जूवारी, मांसाहारी सुरापांनी, वेस्यारत, चोर, आखेटी, परदाररत रो नाम नही।—सिंघासण बत्तीसी
रू० भे०—मसहार, मसाहार, मसाहारी, मांसप्रहारी, मासारी, मांसेरी, मासैरी।

मासु—देखो 'मास' (रू भे)

मांसुरीलोम-स० पु०—मूछ।
उ०—इण रीति प्रमारा रा सहाय काज सोभति रा खेत मे जय री दुदुभी घुराय प्रथ्वीराज रा वीरा भूहारै भेडै मासुरीलोम प्राणिया।—ब. भा

मांसेरी, मासैरी—देखो 'मासाहारी' (रू भे)

मांह—१ देखो 'माय' (रू भे)
उ०—१ मेटै गुरलोक पेठो जळ मांह। तठै इक ग्रड निपायो ताह।—ह र
उ०—२ आसाढाऊ सूध नभ, मगळ महला माह। 'मुहकम' चौ अत मेडतै, सुणियो दक्खण माह।—रा रू
उ०—३ मडळ माह वसाय अग, थयो वळकी चद। पायो सीह मयद पद, हण हाथळ अग व्र द।
उ०—४ सबै कुछ जागा बंटो साह। मिनक्खा देवा नागा माह।
—ह र
२ देखो 'माह' (रू. भे)
३ देखो 'मुख' (रू भे)
उ०—परै मरीचि मांहर्व न छाह आत पत्र की। क्रमैं न वापु अत्र ताल पत्र तैं कलत्र की।—ऊ का
४ देखो 'म्हां' (रू भे)
उ०—मूरख तो बामण है के वामण री सगत करै सो मूरख है। तद ठाकुर बोल्यो—थे तो माह नै मूरख कीधा।
—गांव रा धणी री वात

माहकार—देखो 'मायकर' (रू भे)
उ०—तद नायण गुफा माहकर भीतर गई।—चोबोली

माहगो—देखो 'मूं'गो'।
(स्त्री० मांहगी)

माहजो-सर्व० (स्त्री० माहजी) हमारा, मेरा।
उ०—तिण ऊपर रावळ जोस कर बोलियो—ग्ररु लाल नू इमी कही कै ताहचा राठोड मांहजी धरती मैं घोडो फेरै जितरी जमी ब्राह्मण नू उदक कर दू।—द दा
रू० भे०—मांजो।

माहडो, माहडो—देखो 'मूडो' (रू भे)
उ०—खेडो माखर री खभ ढोसा मगरां रै माहडै ग्रो गांव।
—नैणसी

२ देखो 'माडै' (रू. भे)
३ देखो 'माडो' (रू भे.)

मांहणी—देखो 'म्हाणी' (रू भे)

मांहणो—देखो 'म्हांणो' (रू भे)

माहणो, माहबो—देखो 'मोहणो, मोहबो' (रू भे)

माहदी—देखो 'मेदी' (रू भे.)

मांहमा—देखो 'माहोमाहि' (रू भे.)
उ०—ग्रठ दीह कसर करै भड ग्राया। माहमा सज मत्रिया फुरमाया।—सू प्र

मांहमुदी—देखो 'महमूदी' (रू भे)
उ०—ग्रर एक केसरीया कराई। थान दोय बाफता रा, दोय माहमुदी, पांच सेल्हा ग्रवल ल्याई। सो दरजी भरमल रै कारखानै बैसाणीया।—कुवरसी साखला री वारता

मांहरइ—देखो 'म्हारै' (रू भे)
उ०—सखि ग्रावउ स्रावण मास, पिउ नहीं माहरइ पासि। कत विना हु करतार, कीधी किसा भणी नार।—स कु

मांहरी—देखो 'म्हारी' (रू भे)
उ०—१ भोगवि किते भू किना भोगवसी, माहरी मांहरी करइ मरै। ऐंठी तजि पातला उपरि कुवर मिळि मिळि कळह करै।
—ध व ग्र.
उ०—२ घोडी लाप चाढनै राखसियै सोमै नू नागोर राव चडा कनै बोलाऊ मेलियो थो जु माहरी मदत करो।—नैणसी

माहरे, मांहरै—देखो 'म्हारै' (रू भे)
उ०—१ खग नीर, धीर ग्रतर खरा, मद कुजर बपु जिम मयण। मन वसै तेम तू मांहरे, मो मन बसियो महमहण।—ह र
उ०—२ ताहरा राणगदै कह्यो—माहरै राठोडा सू वैर, सु परणीजण कोई नी ग्रावै।—नैणसी

माहरो—देखो 'म्हारो' (रू भे)
उ०—१ नायक मानै चुगल नू, परगह करै पुकार। माहरा सिर रा मोड नू, कर बोळो करतार।—वां दा
उ०—२ तीसू म्हैं काची बात की वास्तै तोडा भटनेर तो माहरो छै।—ठाकुर जैतसी री वारता
उ०—ग्राज पछै माहरा राठोड वस मैं माता पखणी पूजसी राज माहरा वस मैं पूजनीक गुरु होयस्यो।—रा व वि

माहल—देखो 'महल' (रू भे)

माहलु—देखो 'मायलो' (रू भे)
उ०—राहु नू सिर हरि छिदू, पुराणिक मिथ्या कहि। विरहणि नू छेदिऊ ते, मरम माहलु नवि लहि।—नळाख्यान

माहलो—देखो 'मायलो' (रू भे)
उ०—१ तरै लूणगनू पातसाह कनै ले गया। उठै पातसाह माहला मांडै तेडनै लूणग ग्रागै कबाण नाखी।—नैणसी

उ०—२ आगै वहै तिण वाहळै करनै गाव मांहली वावडिया पाणी री सेभो छै ।—नैणसी
(स्त्री० माहली)

माहा माहा—१ देखो 'माय' (रू भे)
उ०—१ पातिसाह रै उटदू वाजार मांहा मिरजै रै लसकर सीधो लियो ।—द. वि
उ०—२ तद राजा मठ री पेट चीरियो तै मांहा उवा मोतीया की जोटी लाख रुपीया की नीसरी ।—चौवोली
२ देखो 'म्हां' (रू भे.)
उ०—१ आ दावडी जाय तठै वासै हुयो जाय नै जिका खवर होय, सु मांहां नै देई ।—नैणसी
उ०—२ ताहरां रजपूताणी नू 'नरो' कहै- वोहत वुरी हुई । भीला माहा सो डरीयो नही ।—जेतमाल पवार री वात

माहाकर—देखो 'मायकर' (रू भे)

मांहारी—देखो 'म्हारी' (रू भे)
उ०—पातसाहजी री पाछो हुकम आयो—रा० वीरमदे नु ववळी दी सु भलो काम कीयो, अवै रा० वीरमदे कु खरची देनै मताव मांहारी हजूर भेजजो ।—नैणसी

माहारै, माहारै—देखो 'म्हारै' (रू भे)
उ०—जाट थका पुकारै छै, पुकारू आया छै, मांहारै सदामद लेता सु लै छै ।—नैणसी

माहारो—देखो 'म्हारो' (रू भे)
उ०—परधान आया, आ वात परधान की थी पण मलुखांन वरसिंघ गु लागतो थो हीज कहै—एक तो माहरी सैंमर मारी, तिण रो माहारो म्है वित मागा ।—नैणसी
(स्त्री० माहारी)

मांहि, मांहि—देखो 'माय' (रू. भे.)
उ०—१ त्रिभुवन मांहि न तोसू तोलै, सरण राख मो ईसर बोलै ।—ह र.
उ०—२ चित नालच वेळा चढै, चेला जिनस चढाहि । हेलां पर घर हांण दै, मेळां मेळां मांहि ।—वां दा
उ०—३ वळै तनमो तनमो इद्रवाई, तुही सुन्य रै मांहि चैतन्यताई । महमाय तूही तुही जोग माया, प्रकत्ती मकत्ती तुही नांम पाया ।
—मे म
उ०—४ जु रवि पस्चिम ऊगमई, मेरू चलइ मही मांहि । विहितणा परिण जे लख्या, चतुर न चूकइ क्यांहि ।—मा का प्र
उ०—५ अपकी तन आकाहि, त्रोण घरा पडिया सैंहस । जागै जुध जुडनां जवन, माभी कटका मांहि ।—मा. वचनिका

मांहिजो—सर्व०—मेरा, हमारा ।

मांहिलो—देखो 'मांयलो' (रू भे)
उ०—१ मांहिलो ठाकुर लाधो मांय । पुजावै आपो आप ही पांय ।—ह. र
उ०—२ अविनासी आया सुणू जव नोति घिपाऊ हो । साहिब सू मन मांहिलो दुख टेरि सुणाऊ हो ।—मीरां
उ०—३ आगोत्तर सुख कारणै, छत्ती रिध छोडो आवास । हाथू छोडि कुण करै, पेट मांहिली आस ।—जयवांणी
(स्त्री० माहिली)

माही—देखो 'माय' (रू भे)
उ०—१ पोख हित वेळ गावो चरित पेमरा, मुरळिका सुणावो घोप मांही ।—वां. दा.
उ०—२ आप तक आवणै ही जै नहीं देयस्या, बीच ही मांही जै झाल लेयस्या ।—मारवाड रा अमरावा री वारता
उ०—३ नखी जाणि झूळा जरी तास नांहीं, मिळी तांमसी व्रित्ति राजसी व्रित्ति माही ।—व भा
उ०—४ तरफ हुओ 'दारा' तणी हुओ 'सूजा' तरफ, पिढु लिया खजांना पार पर्खै । खून जिता करै 'जसो' वळ खाग रै, रोद इता राह मांही राखै ।—नरहरदास वारहठ
उ०—५ मुख ऊपर मिठियास, घट माही खोटा घडै । इसडा सू इकलास, राखीजै नहीं राजिया ।—रा. सो

मांहीनो—देखो 'महीनो' (रू भे)
उ०—लूणजी नाळेर इरख करनै झालीयो । साहो माहीना रो थापीयो ।—पीठवै चारण री वात

माहीमाही—देखो 'माहोमाहि' (रू भे)

मांहीलो—देखो 'मायलो' (रू भे)
उ०—इतरी सुणी ओर माहीलो लोग हा-हां करि दोडियो ।
—सूरे खींवै कावळोत री वात
(स्त्री० माहीनी)

माहे—देखो 'माय' (रू भे)
उ०—१ चुगल फिरगी अत चतुर, विद्यातणा वखाण । पाणी माहे पलक में, आग लगावै आण ।—वां दा
उ०—२ घर आगण माहे घणा, आसै पडिया ताव । जुध आगण सोहै जिकै, वालम वाम वमाव ।—वा दा.
उ०—३ एक जगण जिण मांहे आवै, कुळवतीमो गाहा कहावै ।
—र ज प्र
उ०—४ तद राह माहे स्रो कवरजी जाय पातसाहजी रै पावै लागा ।—नैणसी

मांहेमाहे—देखो 'माहोमाहि' (रू भे)
उ०—तीनू मकुआणा माहे सू निसरिया, मांहे-मांहे मवध हुवो छै ।
—वां दा ख्यात

मांहेलो—देखो 'मांयलो' (रू भे)
उ०—१ तो कहो मांहेलो भेद रे ।—धरम-पत्र

उ०—२ जे खाविंद निराठ आबरू सू राखिया, पेट काठा घपाया, मारवाड री रुहाड मिट गई, तिण सू इण माहेलो कोई रहै नहीं।
—अमरसिंह गजसिहोत री वात

(स्त्री० मांहेली)

माहै—देखो 'माय' (रू भे)

उ०—१ सोवा आद जोघपुर सोजत, च्यारू तरफ रहै चक्रांकित। सेख रहै भड मेछ सनाहै, नूर अली जैतारण मांहे।—रा रू

उ०—२ तरै देवी नागही कह्यौ—थे सवारा सूता ऊठौ, तरै थांहरी पाघ मांहे सू चावळ रगिया नीसरै तौ साच कर जाणीजो।
—नैणसी

मांहोमा, माहोमाह, मांहोमांहि, मांहोमाही, माहोमाहे—१ देखो 'माहो-माही' (रू. भे.)

उ०—१ उडै गुलाल अबीर रे र० नीर छाटे रे मांहोमा सहु रे। भीजै नवला चीर रे र०, प्रेम वणावै नर नारी बहु रे।—वि कु

उ०—२ किताईक वरसां माहोमांह मतो कियौ—पचायती कियां नू घणां वरस हुवा सो हमैं निह्चो करौ, पचायती करणी आपै भूला क न भूला।—वा दा ख्यात।

उ०—३ मांहोमांहि ते लसकर वे मिलिया, सनद्व बद्ध सकळीया। टकारव लागै नवि टळीया, भड सहु कोई भिळीया रे।—वि कु

उ०—४ सु डाहळियां नै वागडिया मांहोमांहि खिसण थी।
—नैणसी

उ०—५ सवल निवल ने भखे जीवा, वैर मांहो-मांहि देख।
—जयवाणी

उ०—६ सखी री अति सीत परतु है माहैं, सब सोवत माहोमाहे।
—घ व ग्र

मांहोमाह—देखो 'माहोमाहि' (रू भे)

उ०—पछै ऐ ठाकुर मांहोमाह कहण लागा म्हे मारसां।
—नैणसी

मा-सं० स्त्री० [स० मातृ, मा] १ जन्म देने वाली माता, जननी, अवा। (ह ना मा)

उ०—इण अवसर स्रीक्रसणजी मा ने वदन काज। आवै प्रणामी चरण युगल, वेठा स्री महाराज।—जयवाणी

पर्या०—अवा, अमा, माई, कूखधारण, जणी, जननी, जनयती, माता, मादर, माय, रछकरण, सवती, सवयती।

२ माता की स्थानापन्न या माता के स्थान पर होने वाली स्त्री, विमाता।

३ वृद्ध या आदर करने योग्य स्त्री, पूजनीय स्त्री।

४ उक्त प्रकार की स्त्री के लिए सम्बोधन।

[स०] ५ लक्ष्मी। (अ मा)

६ सीता। (अ मा)

७ दुर्गा, देवि, शक्ति।

उ०—१ देवी काळिका मा नमो भद्रकाळी। देवी दूरगा लाघव चारिताळी।—देवि.

उ०—२ नवो जन्म नै कूड कडीर न्हावै, महा सुद्ध व्है युद्ध मा नूं नमावै।—मे म

८ गौरी, गिरिजा, पार्वती।

९ पृथ्वी। १० गौ, गाय।

रू० भे०—मा।

११ गति।

अव्य०—१ मत, नहीं, न।

उ०—१ जो तू चाहै मुकत-फळ, धूना मन धीरच्छ। तोख मान सरवर तठै, माल हुवै मा मच्छ।—वा दा.

उ०—२ आगा चल पीछा फिरै, ताका मुह मा दीठ। दादू देखै दोइ दळ, भागै देकर पीठ।—दादूबाणी

२ अन्दर, भीतर, मे।

अल्पा०—मांवडली, मावडी, मावडी।

मह०—मावड।

मा'—देखो 'महा' (रू भे.)

उ०—हा हा पापण मा' हत्यारी रे, नही आणी दया लिगारी। देखो राणी री कमाई रे, जोयजो स्वारथ नीं सगाई।—जयवाणी

माइ—देखो 'माता' (रू भे) (उ र.)

उ०—१ माइ जनक भ्राता मिळण अतरा अंतर अंत। अतिजव तीजो आवियौ भूप कवर 'भगवत'।—व भा

उ०—२ करमादांन पनरे कह्याजी, प्रगट अठारेजी पाप। जे मइ सेव्या ते हुवइजी, वगस-वगस माइ बाप।—स कु.

माइडी—देखो 'माता' (अल्पा, रू भे)

उ०—तू मत वरजै माइडी, साधा दरसण जाती। राम नाम हिरदै बसै, माहिलै मन माती।—मीरा

माइत—देखो 'माईत' (रू भे)

उ०—१ थर हर कपै नेडा थका रे, अळगा पावै चैन। औरा री कुणसी चले रे, न माने माइता रा वैन।—जयवाणी

उ०—२ अब माइतां व्याव की होंस कीनी छै। रामेसुर ब्राह्मण नै आग्या दीनी छै।—बगसीराम प्रोहित री वात

माइतपण, माइतपणौ—देखो 'माईतपणौ' (रू भे)

माइल्ल—देखो 'मायौ' (रू भे)

माइवाहक-स०पु० [स०मातृ-वाहक] लकडी मे लगने वाला कीडा, घुण।

माई—देखो 'माता' (रू भे)

उ०—१ भाई वेटउ बाप परिण, सगपण माई न मित्र। राजसभा नवि धीरीइ, लिखी चितारइ चित्र।—मा का प्र

उ०—२ माई एहा पूत जण, जेहा 'ऊनड' जाम। दीधी सातू मिध इम, जिम दीजै इक गाम।—वां दा

उ०—३ मुणी में जिका आदि अनादि माई । अवत्तार ले मामडा धाम आई ।—मे म

माईजायो—देखो 'माजायो' (रू भे)

उ०—रामजी झूठा थे झूठा ना बोल । सावण आसा जी, माईजाये बीर कै ।—लो गी.

माईत—स० पु० [स० मातृ पितृ+प्रा० माइ विइ] १ माता-पिता, मा-बाप ।

उ०—१ तद कवर वीकैजी कयो, ठीक है, आप माईत हो, नै आपरो वचन माथै ऊपर है फुरमाईजै ।—द दा

उ०—२ इण्द्रुवा आपरै डील रै आपै तो माईता रा घणां ई हीडा करतो, पण नाणां री गरज तो नांणा सू ईं मरती ही ।—फुलवाडी

२ पूर्वज, बडे-बूढे, बडेरे ।

३ वह बुजुर्ग या वृद्ध पुरुष जो माता-पिता के समान ही आदर करने योग्य हो ।

४ सरक्षक, अभिभावक ।

रू० भे०—मावीत, माइत मायत, मावत, मावित, माविग्र, मावीत, मावीग्र ।

माईतपण, माईतपणो—स० पु०—१ माता-पिता होने का भाव, वात्सल्य, प्रेम ।

२ अपने से छोटो पर दया करने का भाव, बडप्पन ।

३ अभिभावकत्व ।

रू० भे०—माइतपण, माइतपणो, मायतपणो, मावीतपण, मावीतपणो ।

माईय—देखो 'माता' (रू भे) (उ र.)

माईया—१ देखो 'माया' (रू भे)

उ०—देवी मथुरा माईया मोक्ष दाता, देवी अवती अजोध्या अव्ध हाता ।—देवि

२ देखो 'माता' (रू भे)

माईरीलाल—स० पु०—१ वह व्यक्ति जो किसी कार्य के लिये अपने स्वार्थ को त्याग कर भारी जोखिम उठाने को तैयार हो, कठिन कार्य करने वाला ।

ज्यू—कुण माईरीलाल ऐडो है सो ओ बीडो उठावै ।

२ हितैषी, शुभेच्छु ।

उ०—कोई माईरीलाल हूंकारो भरतो तो या तो पै'ला पाघडी मागतो अथवा लुगाई टावरा वाळा नै तो राखण नै तैयार हो पण म्हारै जिसा वांडा कुनका नै नहीं ।—रातवासो

माउ—देखो 'माता' (रू भे)

उ०—१ उणी री माउ तो जोगण हुई अै समाचार वीरम सुणनै वैराग आयो ।—कल्याणसिंघ नगराजोत वाढेल री वात

उ०—२ सवागढ भचूकी री माउ आय पूछै, तो कहै—वे तो कद-काई गया । तद ऐंण नू वैराग आयो । माउ री जीव रह्यो न गयो ।

—कल्याणसिंह नागराजोत वाढ़ेल री वात

माउडी—देखो 'माता' (अल्पा., रू भे)

उ०—काई रे करै छै वीरा माउडी, काई रे गावा रा लोग ।

—लो. गी

माउजी—देखो 'माजी' (रू भे)

उ०—१ म्हारा माउजी लावै छकियार ।—लो गी

उ०—२ बना किण विध ओढाजी क घर मे थारा माउजी बुरा । बनी महला मे ओढो हूं नीरखाला थारी धनमपुरी ।—लो गी.

माउलउ—देखो 'माउलो' (रू भे) (उ र)

उ०—धनुष कला माउलउ पढावइ, जीव दया नियचित्ति रहावइ ।

—मालिभद्र सूरि

माउलाहो—वि० [स० मातुलीय] मामा का, मामा सम्बन्धी । (उ र)

माउलो—स० पु० [स० मातुल] माता का भाई, मामा ।

उ०—मात न तात न माउला, बहिनर बधु न कोय । जिहां जिहां सज्जन आपणउ, रानि वेलाउल होय ।—मा. कां प्र

रू० भे०—माउलउ, माऊलो ।

माऊ—देखो 'माता' (रू भे)

उ०—एक डोकरी नै गाव री वस्ती रा सै माऊ रा नांव सूं आदरै । पाखती चौताळै रा सैंघा लोग उण नै माऊ कैयनै वतळावै । डोकरी रो मिजाज आकासा चढग्यो ।—फुलवाडी

माऊजी—देखो 'माजी' (रू भे)

उ०—१ डाढाळी सू रूडो लागै थळवट हदो देस । माऊजी सू प्यारो लागै देमाणा रो देस ।—अज्ञात

उ०—२ इतरो माऊजी रो लाड छोड'र बाई सिध चाल्या ?

—लो गी.

माऊलो—देखो 'माउलो' (रू भे)

माकद—स० पु० [स०] आम का वृक्ष ।

२ उक्त वृक्ष का फल ।

३ इन्द्र ।

उ०—बीज तणउ जिम वाधइ चद, तिम वाधइ 'धारलदे' नद । मात पिता उमहइ आणद, देवलोक नउ जिम माकद ।

—कविवर सार

माकदी—स० पु० [स०] महाभारत युद्ध से पूर्व युधिष्ठिर द्वारा दुर्योधन से मांगे गये पांच गांवो मे से एक का नाम ।

माक—स० पु०—अर्जुन का एक नामान्तर । (ह ना मा)

माकड—१ देखो 'मरकट' (रू भे)

उ०—१ खगा जीतणा घाव मैं दाव मेल्है, मलगै तहा माकड़ां पीठ मेल्है ।—व. भा

उ०—२ वैठी वानडियां चाखडिया चाटै, कामळ नै चकिया चकियां सू काटै । माकड माकड सी मोळी मुख मोळै, घरणी हिरणी लख हिरणी चख घोळै ।—ऊ का

उ०—३ जुवारी घर रिद्ध कस, माकड कठै हार। गहला माथै वेवडो कुसल वे केत्ती वार।—पचदडी री वारता

उ०—४ ग्रोर जोधार तो सम्रुग्रा रा गढ ऊपरै नीसरणी देनै नीठ नीठ चढै ग्रने माहरै पती है सो गढ पर घावो कर चढै उठै इतरो कूद ने ऊपर जावै है के माकड (लिगूर) घणा कूदण वाळा होवै है पण वानै ही मेलै पीठ-(लारै मेलै) ग्ररथात लिगूर ही लारै रहै छै। —वी स टी

२ देखो 'मत्कुण' (रू भे)

माकडा–स० पु० (व व) १ गाडी के 'ग्रोदणो' पर थाटे के कुछ ग्रागे लगने वाले लकडी के दो चोकोर टुकडे जिनके दोनो ग्रोर वडे वडे छेद होते हैं।

२ ऊट के पुट्टे।

उ०—माकडा भाड ग्राखाड़मल चाढया गमती चालिया। सिधराज जांण माजम मसत, हिंगळाज मग हालिया।—मे म

रू० भे०—माकडा।

माकडी–स० स्त्री०—१ पीठ।

उ०—छोटी मूतणी, चोडी माकडी, खुल्ला क्यारा रो ' ।
—फुलवाडी

२ कान का एक ग्राभूपण।

३ कूऐ खोदने का उपकरण कुग्रा खोदते समय जब जमीन मे फस जाता है तो, उसे निकालने का एक उपकरण।

४ देखो 'चाखडी' (३ से ५)

५ देखो 'मकडी' (रू भे)

रू० भे०—माकडी।

माकडो–स० पु०—१ पशुग्रो के पुट्टे की हड्डियो का सधीस्थल।

२ देखो 'मरकट' (ग्रल्पा, रू भे)

उ०—घोडा नै ग्रसवार पाच पांच वरछीया रा ठेका देवै छै। काछी माकडा ज्यू लाफा भरै छै।—पना

माकण—१ देखो 'मत्कुण' (रू भे) (उ र)

उ०—माय बाहा क्रम पोरादिक वेदडो होय। गोमी माकण जुग्रा कीडा कीडी दोय।—ह स्त

२ देखो 'मरकट' (रू भे)

माकरी–स० स्त्री०—माघ शुक्ला सप्तमी जो पर्व दिन माना जाता है।

मा'कलप—देखो 'महाकल्प' (रू. भे)

मा'काळ—देखो 'महाकाळ' (रू भे)

माकूल–वि० [ग्र० मा'कूल] १ उचित, मुनासिब, वाजिब।

२ उत्तम, उम्दा, ग्रच्छा, वढ़िया।

उ०—खावण पीवण रो सगळो माकूल इतजाम पै'ला सू व्हियोडो हो।—फुलवाडी

३ जैसा ग्रावश्यक, ग्रपेक्षित ग्रोर वाछनीय हो, यथेष्ट।

उ०—लक्खी ग्रापरा घर में वामणी रै वास्तै सगळो माकूल इतजाम कर दियो।—फुलवाडी

४ योग्य, लायक।

५ सभ्य, शिष्ट। ६ शुद्ध।

माख–स० पु० [स० मक्ष] १ मक्खियो का झुण्ड या समूह।

२ गर्व, ग्रभिमान।

उ०—माख मे वाता वणावै है कैवै है—भाईडा ग्रब कै तो दोलडी लुगाई ल्यावा तो चोखी वात हुवै।—दसदोख

३ नशा, मद।

४ नाराजगी, क्रोध।

५ पश्चाताप, पछतावा।

६ देखो 'माखी' (मह, रू भे)

७ देखो 'माखो' (मह, रू भे)

माखण–स० पु० [स० म्रक्षण] १ दही को मथकर निकाला जाने वाला सार तत्व, जो ग्रत्यन्त स्निग्ध होता है ग्रोर जिसको तपाकर घी निकाला जाता है, नवनीत, मक्खन। (ह ना मा)

उ०—१ एकर एक कागला रै माखण मीसरी लाग्योडी एक रोटी हाथ ग्राई।—फुलवाडी

उ०—२ सुरगा वेस, दूध, दही, छाछ ग्रर माखण सू लथपथ व्हैगा।—फुलवाडी

पर्या०—तक्रसार, दधसार, नवनीत, नवोघ्रति, नैगवीन, परघ्रत, मधुर, मेळसरुज, सरज, सारज।

२ सार तत्व।

रू० भे०—मक्खन, मखण, मखन, माकण, माकुण, माखण, माखन।

ग्रल्पा०—मखनी, माखणियो।

मह०—माखणडो।

माखणडो—देखो 'माखण' (मह, रू भे)

उ०—नागजी माखणड़ो सो तै लियो रै, वैरी, रह गई खाटी छाछ रै ग्रो नागजी।—लो गी

माखणियो–स० पु०—१ एक प्रकार का कपडा।

२ एक प्रकार का घास।

३ एक प्रकार का पत्थर।

४ देखो 'माखण' (ग्रल्पा, रू भे)

उ०—माखणिया की पाळ वधा द्यो मारूजी, नीमडली सीचा द्यो काचा दूध सै जी म्हा रा राज।—लो गी

माखन—देखो 'माखण' (रू भे)

उ०—साधु हमारे हम साधुन के, साधु हमारे जीव। साधुन मीरा जो मिल रही है, जिमि माखन मे घीव।—मीरा

माखी–स० स्त्री० [स० मक्षिका] १ पतगे की जाति का प्राय समस्त ससार मे पाया जाने वाला जीव जो प्राय खाने पीने वाले पदार्थो पर वैठता है। यह गद पदार्थो पर वैठकर सक्रामक रोग फैलाता है, मक्षिका। (उ र)

उ०—१ बुरी चुगल मुख मे बसे, आछी रो नह अग । माखी वैसे स्वान मुख, भूल न वैसे अ ग ।—वा. दा

उ०—२ ढील् गील् करइ, जे खाधु ते खाधु, सेख माखी भिणहणु-तउ · · ।व स

२ मधु-मक्खी ।

उ०—१ तीर खाचने मान गोहैं लियो हो के माखी फूला रो रस चूसती देख लियो ।—फुलवाड़ी

उ०—२ रस सचै माखी जुही, कीडी ज्यू कणराम । घरै भेस जिम जीर वै, वैस दूकांनां वास ।—वा दा

३ बन्दूक की नाल के अग्र भाग पर बना हुआ नुक्का, जो निशाना साधने मे सहायक होता है ।

रू० भे०—मकी, मक्की, मक्खी, मखी, माखी ।

मह०—माख ।

माखीना'र–स० पु०—मक्खी से मिलते जुलते आकार प्रकार वाला एक जीव जो प्राय आश्विन मास मे उत्पन्न होता है और मक्खियो का शिकार करता है ।

माखीमद–स० पु० [स० मधु+मक्षिका] मधु-मक्खी का मधुयुक्त छत्ता ।

उ०—कृपण करै घन कोय, कोडी कोडी का पुरुस । जावै वाघो जोय, माखीमद ज्यू मोतिया '—रायसिंह सांदू

माखीमार–स० पु०—१ वह छोटा जानवर जो मक्खियो को मार-मार कर खाता है ।

२ वह छडी जिसके आगे चमडा या कपडा लगा होता है जिसके द्वारा लोग प्राय: मक्खियां उडाया करते हैं ।

३ समाज का बहुत घृणित व्यक्ति जो कजूस हो, मक्खीचूस ।

वि०—वह वस्तु जिसके द्वारा मक्खिया मारी जाती हो ।

रू० भे०—मक्खीमार ।

माखीमाळ, माखीमाळो–स० पु०—मधु-मक्खियो का छत्ता ।

उ०—दूजोडो कह्यो—चूडदी री ठोड डाळा रै माखीमाळ टिरियोडो हो ।—फुलवाडी

माखो–स० पु०—१ बडी मक्खी ।

२ सोना मक्खी ।

३ बडा अफीमची ।

उ०—ताकत डोलै तीसरा, माथरवाडा सोद । पै'ला घर पटकी पडै, माखां रै मनमोद ।—ऊ का ।

मागण—देखो 'मागणु' (रू. भे)

माग–स० स्त्री०—१ घोडे की एक चाल विशेष ।

रू० भे०—मागइ ।

२ देखो 'मारग' (रू भे)

उ०—१ करै दांन कुरखेत में, मजन करै प्रयाग । मरै चुगल कासी महीं, मिटै न दोजख माग ।—बां. दा

उ०—२ वहै जातरी रात री दीह वारा, घकै चाढवो माग रो खाग घारा ।—मे. म

उ०—३ जलहरि जल सजल करिया, दिसि दिसि रूध्या माग । न लहइ ऊगिउ आथमिउ, मेवता पीऊ-पाग ।—मा. कां. प्र

१ देखो 'माघ' (रू भे)

मागडौ—देखो 'मारग' (अल्पा , रू भे)

उ०—छूटै मूठ हातरी मागडै सूमा पडै छाती, गळा अथागडै धुजागडै गांणां गात्र । दैणां वीरताइ रे मागडै राजसीग दूजा, राइ तनै पागडै लगाया राणां राव ।—राणाभीमसिंह रो गीत

मागज—देखो मागणु' (रू भे)

उ०—मागज वरां वधावणु मोटा, मोटी पाघ ममार मई ।

—द दा

मागडौ—देखो 'मारग' (अल्पा , रू भे)

मागण—देखो 'मांगण' (रू भे.)

उ०—राजए नदिय तूर मागण जण कलिख करए । सीकरि ए तणइ क्रमालि नदि महपु जणु मणु हरए ।—कवि ग्यान कलम

मागणहार, मागिणयार—देखो 'मागणहार (रू भे.)

उ०—भाऊ भाट तणी मनि वात ढोला तणी बसी मनि घात । मागणहार ज दूहउ कहियउ, तिणि ढोलइ दूहइ चिति रह्यउ ।

—ढो. मा

मागणो, मागवो–क्रि० स० [स० मार्गण, मार्गयतिम्, मृगणाम्, मार्गितम्] १ खोजना, तलाश करना, (उ. र.)

२ अनुसधान करना, शोध करना ।

३ देखो 'मागणो, मागवो' (रू भे.) (उ र)

उ०—१ तसु घरि वइसी राउ सा वाली मागइ । वात स वेही वाहा पुण चीति न लागइ ।—सालि भद्र सूरि

उ०—२ त्रिमिउ करालिउ मागइ नीर, तातउ करी ते पाइं कथीर ।

—वस्तिग

उ०—३ त्रसणा माडी रही नइ हसी, हिव ढोकर मागइ लापसी ।

—वस्तिग

मागणहार, हारो (हारी), मागणियो—वि० ।

मागिओडो, मागियोडो, माग्योडो—भू० का० कृ० ।

मागीजणो, मागीजबो—कर्म वा० ।

मागध–स० पु० [स०] १ एक प्राचीन वर्ण सकर जाति जो वैश्य पिता व क्षत्रिय-माता से उत्पन्न हुई । इसका कार्य वशावली पढना है ।

उ०—वळै भाग मेवगा लाग घारी समस्तां । मागध वदीजणां सूत अदभूत निरत्ता ।—रा रू

२ उक्त जाति का सदस्य । ३ वदीजन, भाट ।

४ मगध देश का राजा । ५ जरासंध का एक नामान्तर ।

६ मगध देश का निवासी ।

७ मगध देश की भाषा । (अ मा.)

८ जीरा । ९ पिप्पली मूल ।

वि०—१ मगध का, मगध सम्बन्धी ।
रू० भे०—माहव ।
२ देखो 'मगध' (रू भे)
उ०—नेपाल, अग वग कलिग तलिग मागध लाट करण्णाट डाहल कनउज पचाल गोरजर ···।—व. स

मागधक–स० पु० [स० मगध+अक] १ मगध देश का निवासी ।
३ मागध भाट ।

मागधी–स० स्त्री० [स०] १ मगध देश की प्राचीन भाषा ।
२ मगध की राजकुमारी ।
३ जुही, यूथिका ।
४ छोटी इलायची ।
५ चीनी, शक्कर ।
६ बडी पीपल ।

मागधेय–स० पु०—चुगीकर महसूल ।

मार्गनिसार–स० पु० [स० मार्ग+निष्कासन] निकलने का मार्ग, रास्ता ।

मागरवाळ–स० पु०—याचक, भिक्षुक ।
उ०—स्रवण सदेसा साभळै ढाढी किया प्रयांण । मागरवाळ जु भाविया, देमे साल्ह सुजाण ।— ढो मा

मागसिर, मागसिरि—देखो 'मिगसर' (रू भे)
उ०—१ मागु तुझनइ मागसिर, जउ मुझ आणि प्रेमि । हृदय-कमलि रामा रही, त्याह म पाडिसि हेम ।—मा का प्र
उ०—२ मोटउ कूडउ मागसिरि वली विचारि जोइ । दिन थोडिउ रयणी घणी, वयरणी काइ विगोइ ।—मा का प्र

मागि—देखो 'मारग' (रू भे)
उ०—राति चालइ राउ मागि सुरगह कुणवि मउ । दियइ पुरो-हितु दाउ लाख हरइ विमनउ ठवइ ।—सालिभद्र सूरि

मागिणहार, मागिणिहार—देखो 'मांगणहार' (रू भे)
उ०—१ माऊ भाट नै मागिणहार, सीख मागि चाल्या असवार । आहेडा मिसि साल्हकुमार, पहुचावी आव्यौ तिणि वार ।—ढो मा
उ०—२ साल्ह कुमारनइ करी जुहार, करइ वीनती मागिणिहार । विहु मासनउ अम्हसु बोल, करी आवी तुम्ह पासै ढोल ।—ढो मा

मागियोडो–भू० का० कृ०—१ खोजा हुआ, तलाश किया हुआ २ अनु-सधान किया हुआ, शोध किया हुआ. ३ देखो 'मांगियोडौ' (रू भे)
(स्त्री० मागियोडी)

मागु—१ देखो 'माग' (रू भे)
उ०—अरे कुरल केस अगनयणि ए, मागु भरवि सिंदुरा । अरे नयण कटखें आहणइ, मिलि सवि सामल धीर ।—समुघर
२ देखो 'मारग' (रू भे)
उ०—सीधु सिखडी तणउ तामु छेदीउ छलु साधीउ । पाय पराभव नइ प्रवेसि, गति मागु विरावीउ ।—सालिभद्र सूरि

माघ–स० पु० [स०] १ शिशिर ऋतु का प्रथम मास जो पौष मास के वाद व फाल्गुन मास से पूर्व आता है । यह १०वां सौर मास तथा ११वा चद्र मास माना जाता है ।
उ०—माघइ वरसइ माहवठउ, सीत सलिल एक ठाह । हू धूजी धरणीइ ढळू दिइ हरगाखी वाह ।—मा का प्र
रू० भे०—माह ।
२ सस्कृत भाषा के एक लब्ध प्रतिष्ठित महाकवि ।
उ०—१ माडै कायब माघ मधि, पडित माघ प्रमाण ।—सू प्र
उ०—२ जैन भक्ति कुमारपाल नी, नगरी वरण्णना लका नी, पुरुस वरण्णना विस्णु नी, काव्य वरण्णना माघ नी, कविता कालिदास नी ।—व स
वि० वि०—इनका समय ईसवी की १०वी शती मे माना जाता है ।
३ उक्त महाकवि द्वारा रचित प्रसिद्ध महाकाव्य, शिशुपाल वध ।
उ०—कठै साख इण विध कही, सुणि इम कहै सुजाण । माडै कायब माघ मधि, पडित माघ प्रमाण ।—सू प्र
४ कूद का फल ।
रू० भे०—माग, माघि, माघो ।

माघजी–स० पु० [स० माघ] १ ज्योतिषी ।
२ देखो 'माघ' । (२)
३ देखो 'मघवा' ।

माघव—देखो 'मघवा' (रू भे)
उ०—भुजगेस महेस दुजेस रिसी, नित पै रज चाहत माघव रै ।
—र ज प्र

माघवई, माघवती–स० स्त्री०—१ सात नरको मे से एक । (जैन)
उ०—घम्मा वसा सेला अजण रिट्ठा ग्यात । मघा माघवई नारग ए नांमे सात ।—वृ स्त
[स० माघवती] २ पूर्व दिशा ।

माघवन–वि० [स०] इन्द्र द्वारा शासित, इन्द्र का ।

माघवाण, माघवान—देखो 'मघवा' (रू भे)
उ०—१ सुखवर सुरांणा गौ दुजाणा माघवांणा सुख मिळै । मह जिग मडांणा थाणा थाणां दैत घाणा दूठ ।—र ज. प्र.
उ०—२ वेद मे विधाता हरी सत रौ चदेस वाच, माघवांन छोळ ओप रिखीकेस नाम ।—भगतराम हाडा रौ गीत

माघि, माघी–स० स्त्री० [स० माघ] १ माघ मास की पूर्णिमा ।
वि०—१ माघ की, माघ सम्बन्धी ।
२ माघा नक्षत्र से युक्त ।
रू० भे०—माही ।
३ देखो 'माघ' (रू भे.)
उ०—लागै माघि लोक प्रति लागो, जळ दाहक सीतळ जळण ।
—वेलि

माघीपूनम—स० स्त्री० [स० माघ+पूर्णिमा] माघ मास की पूर्णिमा जो माघ कवि का जन्म दिन माना जाता है। कलियुग का प्रारम्भ भी इसी दिन से माना जाता है।

माडेची—देखो 'माडेची' (रू भे.)

उ०—मायलडी सपीठी पीठी पातळी मां'जी माडेची मूमल। हाले नी रे आलीजे रे देस —लो गी

माडो—वि० [स० मद] (स्त्री० माडी) १ अशुभ, खराब, खोटा।

उ०—१ पडतिये राजा री मूडो देखणा सू उगानें गुगन माडा व्हिया, वो मूडो फेरनें पाछो मुड़ग्यो, मूडा माय सू थूकियो।

—फुलवाडी

उ०—२ कोह-कुसळ रैं कामा में हाथ लगावणो ही माडो मानता।—दसदोख

२ निम्न कोटि का, घृणित, हेय।

उ०—मिनख मारणिया सू लोग वात करणी ही माडो काम समझै।—दसदोख

३ भद्दा, गदा।

उ०—पैंली वै बिहाल की वात नै डाढी चोखी वणवै, जिका ही पछै वी वात री माडी चुगली करण लाग ज्यावै।—दस दोख

४ नीच, बुरा।

उ०—ममार में वाणियां ही पैलांतर विगाडणियां वटा माडा माणस है।—दसदोख

५ अनुचित, खराब।

उ०—१ चोखा काम सिद्ध होणें मे घणी ताळ लागे पण माडा काम तो तुरता-फुरत पूरा हुय ज्यावै।—दसदोख

उ०—२ जुगरी जाण कारी राखतो थको आपरै गांवडे मे माडी रीतरीवाजा मिटावण नें नोजुवाना रो सगठण करै है अर करडा विचार लियां आपरै घर सू ही तोडण रो सरुपोत मतो करै है।

—दसदोख

६ शोचनीय चिन्ताजनक।

उ०—सिपायां मरद री माडी हालत देखी जद आंख्या सू च्यार-च्यार चोसरा वरमाया।—दसदोख

७ दुबला-पतला, कमजोर। ८ बीमार, रोगी।

९ उदास, खिन्न। १० अरुचिकर।

११ हरके दर्जे का, न्यून।

माच—देखो 'मोच' (रू. भे)

माचणो, माचवो—देखो 'मचणो, मचवो' (रू भे) (उ र)

उ०—१ निम्चित केतउ चालइ, सस्त्र समरहित केतउ घाउ वचइ दूरबल केतउ माचइ ।—व म

उ०—२ म्हैं तो मोच मोच मे आघो व्हैगो, भलीं आदमण थोडी घणीमोच तो थू ई राख्या कर, थू तो दिनो दिन राम जाणै कीकर माचै है।—फुलवाटी

उ०—३ सही प्रथिवी रही गहगही, साचइ कादम माचइ, फार-मणी नाचइ, नीपजइ मातइ धान, दमता प्रधान, नाघइ दुकान, भाद्रवइ तूठइ सुगाळ।—व. स.

उ०—४ गेन्य छाहइ अनुसारी मांडई, कठ पूरइ, गढ पूरइ, धाय रचइ, निहाय माचइ करदत तारइ ' ।—व स

उ०—५ माच समधा सुगळा, यां जुढा मग आळ। अजक अणीया अगल ज्यू, विण कीधा रणताळ।—रा रू

उ०—६ स्रोण छोळा रा कीच माचि रह्या छै। नारद रिखहमै छै। धीर नाच रह्या छै —वना

उ०—७ सजण सिधाया हे सखी, ऊभा आगण बीच। नैणां छूटा पोगरा, काजळ माच्यो कीच।—अज्ञात

उ०—८ आप लोगां रै जांणा सू तो सगळा राज मैं कळियारो माच जावेला।—फुलवाडी

उ०—९ भीट मे मकार फेर गळवळ माची।—फुलवाडी

उ०—१० सलरी गोख ते अतिहि नाघइ, सचराचरि जीव लोक माचइ।—नळ दवदती राम

उ०—११ मत विमयारस माचज्यो, वाचेज्यो एहवा गुरवैण कि। दूरही नै हित दाखवै माचा, तेह कहीजै सैण कि।

—व. व प्र.

माचणहार, हारो (हारी), माचणियो—वि०।

माचिओडो, माचियोड़ो, माच्योडो—भू० का० कृ०।

माचीजणो, माचीजवो—भाव० वा०।

माचवणो, माचववो—देखो 'मचणो, मचवो' (रू भे)

उ०—गजसिघोत समध नर गाढिम, ततखिण माचवियो रणताळ दु वयण गाढियो दुआ सु, अिमण परा काढी अतमाळ।

—केसोदास गाडण

माचवियोडो—देखो 'मचियोडो' (रू भे.)

(स्त्री० माचवियोडी)

माचियोडो—देखो 'मचियोडो' (रू भे)

(स्त्री० माचियोडी)

माचोद—वि०—माता के साथ सभोग करने वाला।

स० पु०—एक गाली विशेष।

माछदर—देखो 'मछदर' (रू भे.)

उ०—वांनी अग वलेट मेसळी मुजपर मेली। ले माछदर नाम साद तन कथा सेली।—पा. प्र

माछदरसिख—स० पु० [राज० मछदर+स० शिष्य] मत्स्येन्द्रनाथ का शिष्य, गोरखनाथ।

माछ्रद—देखो 'मछदर' (रू भे)

उ०—१ जग ऊपर ऐ जाव, अण कथ रा रहसी अमर। सतमो बगस सताब, चवू काठ माछ्र्द सिख।—पा प्र.

उ०—२ देवी वेद रै रूप तू ब्रम्म वाणी, देवी जोग रै रूप माछदर जाणी।—देवि

माछ–स० पु० [स० मत्सर] १ गाढ।

उ०—अपसरा आण ऊभी तठे अधमगे, तनर तरवारिया वहै तरसूं। राखजै माछ थोड़ो घणो राठवड, वीर वर अवर हू किसो वरसू।—ठा सुरताणसिंह रो गीत

२ देखो 'माछर' (रू भे)

उ०—गाजीजै नह चीतगढ, बीट दळा वळियाह। गाजीजै नह गध-गज, माछ घणां मिळियाह।—बा दा

३ देखो 'मच्छ' (रू भे)

उ०—१ पाधू माछ पनग गज पखी, किहीं न वीजै सेव करत। राउळ समद मळैतर रेवा, मांन-सरोवर मन मांनत।
—ईसरदास बारहट

उ०—२ सामळ अप 'मान' हिंदवा सूरज, वीदग आखै बीसबिसा। जळ तज माछ किसे थळ जावै, ज्यां जळ जीवन वीया 'जसा'।
—साहबदान सुरताणियो

४ देखो 'मच्छी' (मह, रू भे)

उ०—चीला गणन तजै द्रुम चदण, माछा गण नह तजै महण। मोटा घणी अवै तो 'माना', पर पाळै तो बडापण।
—राजूराम महडू

माछर–स० पु० [स० मत्सर] प्राय कीचड़ में जलपर उत्पन्न होने वाला पतगा जिसकी मादा अपने डक से दूसरे का रक्त चूसती है।

उ०—१ दळ अकबर तोपा दगै सूकै नीर निवाण। गोळा लागै चीतगढ, मेगळ माछर जाण।—बां दा

उ०—२ म्हूं तो एकलो ई हो अर वो ई नी जैंडो। म्हनै तो माछर नै मसळै ज्यू मसळ न्हाकता।—फुलवाडी

रू० भे०—मछर, मच्छ, मच्छड, मच्छर, मच्छरि, मच्छरी, मछर, मछरि, माछ।

अल्पा०—मच्छरियो, माछरियो।

माछळ, माछलउ—देखो 'मच्छ' (रू भे) (उ र)

माछलडी माछळी माछली—देखो 'मच्छी' (अल्पा, रू भे)

उ०—१ माता देववी टलवलइ जी, माछलड़ी विनु नीर। नारी सगली पाय पडी जी मत छडो साहस धीर।—स कु

उ०—२ थारी तो धाली गोरी रा सायबा, जळ में माछलडी हो जास्या म्हारा राज।—लो गी

उ०—३ प्रीऊजी हास्य करु छू तह्मो, हवडा प्राण छाड सू अह्मो। प्रीति काहा गई पाछली। जल विण किम जीवि माछली।
—नळाख्यान

उ०—४ जाळ रै माय एक लांठी माछळी छटपटाट करती बारै आई।—फुलवाडी

पु० [स० मत्स्य] १ उदय होते सूर्य के पास पास, उत्तर की ओर मत्स्य के आकार का प्रकाश मण्डल जो वर्षा का सूचक माना जाता है।

२ देखो 'मच्छ' (अल्पा, रू भे)

उ०—१ खाय पछट्टा मीर खग, कटिया कोपट्टं। जाण उळट्टं माछळा, जळ तोछा तट्टं।—द दा

उ०—२ तिहा मच्छ नै अभिलास सचरै, धीवर सायर कूलै। तसु द्रग वधन थयो माछलो, जल प्रायक विण सूलै।—वि कु

३ देखो 'मच्छो' (मह, रू भे)

उ०—तुछ जल ज्याही माछळा तडफइ, भड तडफइ तिण विध माराथ।—महादेव पारवती री वेलि

रू० भे०—माछळो।

माछि—देखो 'मच्छी' (रू भे)

उ०—माछि तु मत तडफडइ, वनसी लागो दत। वीछडिया मेळो नही, तो सरवर मा कत।—ढो मा

माछिणि, माछिळी, माछिली—देखो 'मच्छी' (अल्पा, रू भे)

उ०—१ नारी तरावली नावडी, माहि मुनिवर कोइ। माछिणि सिउ मनसिद्धि मिलिउ, सदगति पामिउ सोइ।—मा का प्र

उ०—२ मधु कर नइ जिम मालती, इद्राणी जिम इद्र। प्रीति पाणी नइ माछिली, जिम कमलिनी दिणद।—नळदवदती रास

माछी–स० पु०—मछी पकडने वाला व्यक्ति, धीवर, मछुवा।

उ०—नीजामा नइ नायता, माछी मिल्या गुआर। मीणा मोची मोकला, मुकी गया दुआर।—मा का प्र

२ देखो 'मच्छो' (रू भे)

माछु—नही, न।

उ०—रग देऊ वा नरा काछु रा पूरा काठा। रग देऊ वा नरा माछु देवण हिय माठा।—ऊ का

२ देखो 'मच्छ' (रू. भे)

माछो—देखो 'मच्छ' (अल्पा, रू भे)

उ०—नइ माहि माछा हीडइ।—उ र

माज–स० पु०—मान, प्रतिष्ठा, इज्जत।

उ०—इवडी कगइ केम आवाज रे, तु सहू देव्यां सिरताज रे। माहरी राखीजे माज रे, इतलो हिज दीजै राज रे।—वि कु

माजणउ—देखो माजण' (रू भे) (उ र)

माजणो, माजवो—देखो 'मांजणो, माजवो' (रू भे)

माजणहार, हारो (हारी), माजणियो—वि०।

माजिओड़ो, माजियोड़ो, माज्योड़ो—भू० का० कृ०।

माजीजणो, माजीजवो—कर्म वा०।

मा'जन—देखो 'महाजन' (रू भे)

उ०—खिरगोसियो उण कनै जायर कह्यो—मा'जन वीरा, थारो वोपार फळै, थारै घर लिछमी वधै, थारो परदेसा जस फैलै म्हनै थोडी खाड दे।—फुलवाडी

मा'जनी—देखो 'महाजनी' (रू भे)

माजनू—देखो 'माजनो' (रू भे)

उ०—उरड अकुळाय आधा पडे आय अत। पडावै माजनू लाज नू लो अत।—ऊ का

माजनो-स० पु०—१ मान, प्रतिष्ठा, इज्जत।

उ०—१ ए मिळनाई ऐंड झठ परमाद झिलावै। कुळ मे घाले कळह माजनी धूड मिलावै।—ऊ का

उ०—२ माजनो चौडे आयगो, मूळीरो हाथ पडग्यो।—दसदोख

उ०—३ भूता री मान रा तो टका व्हैगा। दो वेळा माजनो गमायो।—फुलवाडी

मुहा०—१ माजनो गमणो=बेईज्जती होना। २ माजनो गमाणो=बईज्जती करना/कराना, फटकारना, भला बुरा कहना। ३ माजनो धूड म मिळणो=बेईज्जती की हद होना। ४ माजणो पाडणो=फटकारना, भला बुरा कहना, धिक्कारना।

२ लक्षण, गुण। (व्यग्य)

उ०—१ राणी राजा नै तो आपरै पेटा री बात नी दरसाई पण आपरै माजना री एक डावडी नै सगळी वात बतायनै कह्यो—जे थू म्हारो ओ काम कर दियो तो म्हैं थनै गळा रो ओ नवलखो हार बगसीस करूला।—फुलवाडी

उ०—२ तरै लखै माद करनै कह्यो—म्हे थाहरो माजनो जांणता हीज था। नै म्हैं थाहरै वोले आवा, नै म्हे थाहरो दीयो गढ ल्या? म्हां नु परमेस्वर देसी।—राव लाखै री वात

३ बुद्धि, अक्ल। (व्यग्य)

उ०—काणियो कायर बोल्यो—म्हैं थांनै आतां ई कह्यो हो के म्हारो नाव कांणियो कायर है, म्हारा गाडी वळद पाछा सूप दी, पण थांनै तो कुमत सूज्योडी ही। थांरै खुद रै माजनां सू इतरो बिगाड करायो।—फुलवाडी

४ अस्तित्व, हस्ती।

उ०—बोल्यो—दिन करै सो वैरी नीं करै। मिनख रो के माजनो है? ऐ बोल राम कुवावै, सगो नाक चणा नही चवावै है।

—दसदोख

५ मान, आदर, सम्मान।

६ बडाई, तारीफ।

७ कृत्य, कर्म।

रू० भे०—माजनू।

माजम-स० स्त्री०—१ भंग मिलाकर तैयार की गई बादाम की चक्की, स्वादिष्ट मादक पदार्थ।

उ०—१ अेघुळो प्रोहित माजम कसुमा लै छै, पग्गहै नै फूलमद रा प्याला दै छै।—बगसीराम प्रोहित री वात

उ०—२ मातडा झाड आमाडमल, चाल्या मस्ती चालिया। सिवराज जाण माजम ममत, हिंगळाज मग हालिया।—मे म

उ०—३ ऐ बाडां काइ'''करो इगी दारू विनां ऐस कीसी। अबै माजम नै तो रैवणद्यो आज तो सवाद दारू कोई ल्यो।—पना

रू० भे०—माजुम, माजून माझम।

माजरि—देखो 'माजरी' (रू भे)

उ०—पीत वरणाक, काकवंत् स्वर, माजरि नेत्र, उस्ट्रवत् लवहोट मूखकवत् लघु करण।—व स

माजरो-स० पु० [अ० माजरा] १ घटना।

२ किसी घटना का हाल, वृत्तान्त, विवरण।

३ मामला।

४ देखो 'माजरो' (रू भे)

माजा-स० स्त्री०—१ आज्ञा।

उ०—हु गाम तणों छु राजा, कोण लोपै माहरी माजा।

—परमपत्र

२ मर्यादा, सीमा।

उ०—सायजादा हुता सरम कर सैफळं, मिटी राखी भुजा जाण माजा। साज मकिया नही खळां दळां साजता, रण अकळ जीवता-सभ राजा।—नाथो सादू

माजाई, माजायो-स० स्त्री० [स० मातृ+जाता] बहिन, सहोदरा।

माजायो-स० पु० [स० मा+जात] (स्त्री० माजाई) सहोदर, भाई।

उ०—मिळि भायां कियो मतो माजाया, दळ बळ छळ आया दुरित।—बदरीसिंघ धनोपसिंघ भाटी रो गीत

रू० भे०—मांजायो, माईजायो, मातजायो।

माजियोडो—देखो 'माजियोडो' (रू भे)

(स्त्री० माजियोडी)

माजियो—१ देखो 'माझी' (अल्पा, रू भे)

२ देखो 'माजी' (अल्पा, रू भे)

माजी-स० स्त्री० [स० मा+जी] १ वृद्धा स्त्री, बुढिया।

२ वृद्ध या विधवा स्त्री के लिये आदर सूचक सम्बोधन।

३ मां, माता।

उ०—१ माजी रोवै माय, बापजी रोवै वारै। भाई रोवै भला, सुणै नही किण रै सारै।—ऊ का

उ०—२ आव अमोलक ऊजळां, सभर गुणां नत सार। न्याय इसा नग नीपजै, माजी कूख मझार।—वा दा

४ किसी ठाकुर या राजा की माता।

उ०—पार पखै राजा प्रजा, पाजी न करै पाप। साजी ताजी साहबी, माजी रै परताप।—बा. दा

५ दुर्गा, देवी।

उ०—छऊ भैन छोटी दहू ओड छाजै, विचै पाट राजीव माजी विराजै।—मे म.

रू० भे०—मऊजी, मांजी, माउजी, माऊजी।

अल्पा०—माजियौ ।

६ देखो 'माझौ' (रू भे)

उ०—कित रां ऐक माजिया नु मार लीदा, इण मात दात तोडि पाछा दीना ।—पना

माजुम—देखो 'माजम' (रू भे)

उ०—काले लोधी रीज करि माजुम गळा ढळा, सोय रही विण सामग्र्या साळु भरथी सळा ।—पना

माजू—स० पु० [फा०] एक प्रकार का वृक्ष, जिसका फल ओपधि मे काम आता है ।

माजून—स० पु० [अ० मग्रजून] १ ओपधि मे काम आने वाला मीठा अवलेह ।

२ देखो 'माजम' (रू भे)

माजूफळ—स० पु० [फा० माजू+स० फलम्, स० मायाफल] 'माजू' वृक्ष का फल जो ओपधि या रगाई मे काम आता है ।

वि० वि०—यह वात नाशक, चरपरा, गरम व शिथिलता को दूर करने वाला है ।

रू० भे०—मांजूफळ ।

माजो—स० पु० [अ० मौजा] १ ग्रांम गाव ।

२ स्थान, जगह ।

माझ—स० पु० [अ० मवाज] १ राज्य, देश ।

उ०—दवदती रायनइ कहइ, धूत न रमीइ देव रे । अतिघणउ सहू काई नही, माझ नइ कीजइ सेव रे ।—नळदवयती रास

२ रिग्रासत ।

उ०—घोडी पिरथी रो रूप छै । इसी घोडी माझ माही नही ।
—सूरे खींवे कांधळोत री बात

३ सीमा, हद ।

४ मर्यादा । ५ छेद ।

६ देखो 'मध्य' (रू भे) (उ र)

उ०—हिया माझ उठै घण हूका, च्यार वरण अपणो मग चूकां ।
—ऊ का

माझम—स० स्त्री०—१ एक नदी जो डूगरपुर के पास पहाडो से निकल-कर ईडर राज्य मे होती हुई आमलियारा ठिकाने के पास वाकत्र नदी मे मिलती है ।

२ देखो माजम' (रू भे)

माझळ—देखो माझळ' (रू भे)

उ०—१ दीह घणा माझळ दुनी, रुळियो देखे रूप । माधव हुमे प्रकास मो, सिव ताहरो सरूप ।—ह र.

उ०—२ गाज इतै ऊखेड गज, माझळ वन तर मूळ । जागै नह यह में जितै, सझ हाथळ सादूळ ।—बा दा

उ०—३ गुण मै जण जण कठ गवीजै, नरमळ जू निरझर मै नीर । जग माझळ वसतार घणं जस, हुयो अमावड दुपा हमीर ।
—महाराजा मानसिघजी

माझळरात—देखो 'माझळरात' (रू भे)

उ०—अव्वल सकडी कोठडी दूजी माझळरात । तीजा सकडो ढोलियो, मतवाळै को साथ ।—लो. गी.

माझळि, माझळी—देखो 'माझळ' (रू भे)

उ०—ज्यू 'दुरगं' 'अगजीत' मुरद्धर माझळी । आहव आहव अग वणायो भुजवळी ।—किसोरदान बारहठ

उ०—२ कळ-हळ करसी केकीया, वळ-वळ खवमी वीज । म्यारा अलवल माझळी, तण पूळ रमसा तीज ।—मयाराम दरजी री बात

माझि—१ देखो 'मध्य' (रू भे)

२ देखो 'माझी' (रू भे)

माझिम—देखो 'माझळ' (रू भे)

माझिमरात—देखो 'माझळरात' (रू भे)

उ०—माझिमराति मोर तू, म करमि मूग्रा पोकार । सूती जांणी सटक दे, 'मारि' करइ मुझ मारि ।—मा का प्र

माझियो—देखो 'माझी' (अल्पा, रू भे)

माझिळ—देखो 'मांझळ' (रू भे)

उ०—वीरति मुख सूरति विळकुळिय, कमधज तेज कमळ कळ-मळय । किसन वरण झाझिल कठळिय, सूरज किरण जांण झळ हळिय ।—गु रू व

माझी—देखो 'मांझी' (रू भे)

उ०—१ कम हीमत कुळवाट, माझी मरण मलीण मत । कुळ ऊछेर कुवाट, पं'ला घर वाळै पिसण ।—वा दा

उ०—२ एक उण कवळा मोटोडा सूर विना डार झाड झाड हो गई—तात्परय सूर वडो माझी जोधार डार उण रो कुळ भालां रो भार दुसमणा रा भाला रो भार झाड २ घर घर रा होय गया ।
—वी स टी

उ०—३ वयणं वाकारियो, ताम माझी गज केसरी । पवन पूर ऊफणं, जळण जाणं वन अतरि ।—गु रू व

उ०—४ अत अछडां करण माझियां मारण, कटका अटक केविया काळ । भागा तूझ तणौ भणकारो, 'गोपाळा' न करै गोपाळ' ।
—वा दा

माझीपौ—देखो माझीपौ' (रू भे)

उ०—घाडै घाडै घन मा माझीपौ माऐ, 'वीरम' ना देवां वळै लखवेरं लाऐ ।—वी मा

माझौ—स० पु०—हिफाजत, जाब्ता ।

उ०—कुवर वाहिर आया घोडा च्यार तुरग च्यार इहा आंण मेलिया सो घणी गाढ सू माझै से रखाया ।
—गौड गोपाळदास री वारता

माट—स० पु० [स० मृद्-भांड] १ दही मथने की रेई ।

उ०—१ फजरा हुयणी सी दधि मयणीं फुरती। माटा घर घर में घण हुरसी घुरती।—ऊ का

उ०—२ घरघर मे घीणा घणा, घर घर घूमें माट। राग रग रळियावणो, वर पुड मामळ घाट।—वां दा

२ मटका, भाण्ड।

उ०—माछा-मास घणउ मिलइ, मरघास-मदिरा माट। आवइ अति ओग्वागता, मढ-तणउ गलि घाट।—मा का प्र

क्रि० प्र०—उतारणो, फूटणो, भरणो।

मुहा०—माट मटकणा उतारणा=छोटा मोटा काम करना।

३ मिट्टी का बना बडा पात्र।

४ मालिक स्वामी।

उ०—गोकळि तणा भरवाड़ा भागा मदा हीका माट। वहिन मोरि गया चोरि यादवा स्या माट।—रुकमणि मगळ

४ मुख पर चमडा चढ़ा हुआ मिट्टी का वरतन। (वाद्य)

स० स्त्री०—५ खेत की मेड।

६ देखो 'माठ' (रू भे)

७ देखो 'माटी' (मह, रू भे)

रू० भे०—मट्ट।

माटइ—देखो माटं' (मह, रू भे)

उ०—ते माटइ करिनइ मया रे, आंणी मन उपगार। आवी नइ मुझ थी मिलउ, दरसण द्यो इणवार।—वि कु

माटकी—देखो 'मटकी' (रू भे)

माटको—देखो 'मटको' (रू भे)

माटली—देखो 'मटकी' (अल्पा, रू भे)

माटवी-स० स्त्री०—चारण कुलोत्पन्न एक देवी।

उ०—माटवी खूवटी खूटमात, सचीयाय तू ही वाकळ वीसेक।
—रांमदान लाळस

माटि—१ देखो 'माटं' (रू भे)

उ०—१ मुकिण माहरी मरवगी, सतापइ सा माटि। जमालिथिकी जाई नही, परठी वईठी पाटि।—मा का प्र

उ०—२ निद्रा वमि ते राय दीठु ग्रिहि पांनि मन चलिऊ। अपूरव माटि भूपति नू मन पखी माहा भलिऊ।—नळाख्यान

उ०—३ मि एक तापम मुनि पीड्यु विना ते अपराध। साप तेणि मूंन्हि जी फु कीधा माटि बाघ।—नळाख्यान

२ देखो 'माटी' (रू भे)

उ०—दीलइ माहरइ दव वलई, पव पही लिइ वाट। मीत मद मोग्म थई फुकि म फोकट माटि।—मा का प्र

माटी-स० स्त्री० [स० मृत्तिका] १ पृथ्वी के ऊपरी सतह पर प्राय सर्वत्र होने वाला, वारीक कणो के रूप मे एक भुर-भुरा एव मुलायम तत्व, जिसमे उर्वरा शक्ति होती है और पृथ्वी पर के समस्त प्राणियो एव पदार्थों मे इसका अश होता है, धूल, मिट्टी, रज, रेणु। (उ र)

उ०—१ कचन कू माटी कर जाणी, तिरिया कू पाखांण वखांणी।
— स्री सुखरांमजी महाराज

उ०—२ अइ मत्तउ रिमी जि रम्यउ, जल माहें हो बाधी माटी नी पाल। तिरती मूकी काछली, तइ तारघा हो तेहनइ तत्काल।
—स कु

उ०—३ धान माटी सरिखो लागें जद सभा री करणी बाकी आऊखो थोडो जाणी।—भि द्र

वि० वि०—अलग अलग स्थानो की मिट्टी मे रग भेद व गुण भेद होता है।

२ किसी स्थान विशेष की मिट्टी, जिसके बर्तन आदि बनते हैं।

उ०—कवरा नें तो माटी री पारी खातर ई वें'म को उपजतो नीं।
—फुलवाडी

३ पाच तत्वो मे से वह तत्व जिससे प्राणियो का शरीर बनता है, पृथ्वीतत्व।

उ०—१ खाटी सो दाटी घर खोदे, साथ न चाली एक सिळी। पवन ज जाय, पवन विच पैठो, माटी माटी माहि मिळी।
—प्रथवीराज राठौड

उ०—२ मांड्या सो ढहि जावसी, माटी तणा महांण। जनहरीया जमराय का, आवैंगा फरवाण।
—स्री हरिरांमदासजी महाराज

४ ताजा 'खोदी' हुई मिट्टी।

५ शरीर, देह।

उ०—कपडो माटी सेती लपेट अर कळाई सूधो हाथ लपेटियो हेकरसो।—द वि

६ मृत शरीर, शव, लाश।

उ०—१ वो साथिया नें यू ई अटपटा सवाल पूछतो—म्हारें गळाई यें लास नें बाळो क्यू नीं? थारें दफणाया पछै जिनावर माटी री सान विगाडें।—फुलवाडी

उ०—२ राजा रा रगमें'ल रें ठोकर मारनें आपरा मादा धणी री सभाळ खातर घरममाळ मे पूगी तो वो साप रें खावणा सूं आगें मरियोडो सूतो। धणी री माटी नें है ज्यू छोड नें उठा सू न्हाटी तो मारग म चोर खोसली।—फुलवाडी

७ मांस, आमिष।

उ०—१ माटी मगावी तुझ नइ देवु, तेहनउ तू कर आहार रुडा पखी।—स कु

रू० भे•—मट्टिया, मट्टी, माठि, मिटी, मिट्टी।

अल्पा०—मटिया, मटीया।

मह०—माट।

८ देखो 'मांटी' (रू भे)

उ०—तद खटोली उडी जठें राज दरबार कियो वैठो छै। अर नायण री माटी मोर छड करें छै।—चौबोली

माटुवो–सं० पु०—एक प्रकार का घोडा विशेष।
उ०—अवलखी ऊजळा, सोनेरी सामळा। राहृदारा रळा, माटुवा माडळा।—मा वचनिका

माटे, माटै–क्रि० वि०—१ लिये, वास्ते, निमित्त।
उ०—ते माटै उतावळा, राज पधारो एथ। निजर-दोलत निज सामनी, पांमीजै कहो केथ।—ढो मा
अव्य० [स० मात्र] केवल सिर्फ भर।
उ०—२ 'करन'हर तमासै हैल माटै कियो, मुरांपत वि मासै वेल सारू।—महाराणा राजसिंह रो गीत
रू० भे०—मटि, माटई, माटि।

माटो–स०पु० [स० मार्तिक] (स्त्री० माटी) १ मिट्टी का बडा मटका।
२ अपने से छोटे ऐसे व्यक्ति के लिए एक सम्बोधन जिसमे कोई विशेषता, चतुराई बडप्पन, साहस या आश्चर्यजनक बात हो।
उ०—हाळी तो माटो जाळकी री ठाडी छीया मे गोडा माथै पग धरनै नेगम सूतो हो।—फुलवाडी
३ विवाह के बाद वधु की विदाई के साथ ही वधु के पिता की ओर से एक नए मटके मे भरकर भेजी जाने वाली, मगद, खाजा, बडी-पापड आदि वस्तुऐं। (परम्परागत)
उ०—मिठाई मगद र माटा काठा दाटा दे दे'र बूसी मोळी सू बाध्या। आप डागै गतै री टोपी लगाई, वडै भाई केसरिया पाग झुकाई।—दसदोख
रू० भे०—मट्टो।

माठ–स० स्त्री० [स० मष्ठ, प्र० मम्ट्ठ] १ किसी चालु कार्य को रोकने, बद करने, समाप्त करने या पूर्ण करने की क्रिया या भाव अत, समाप्ति।
उ०—१ अबै थू वां'णी देवणी माठ करनै थोडी टोळा री साळ-सभाळ कर।—फुलवाडी
उ०—२ भगवान जांणै इण आडत री अबै कद माठ आवैला।
—फुलवाडी
२ सीमा, हद, सरहद।
उ०—१ उण रा जिम्मा री नी कोई माठ है अर नी कोई सीव।
—फुलवाडी
उ०—२ म्हनै ऐ राजा पातसाह घणा गरीब लखावै, क्यू कै आरी लालसावा री कोई माठ नी व्है।—फुलवाडी
३ सतोष, सब्र, धीरज।
उ०—१ म्हैं निरभागी म्हारी जीवती आख्या सू सगळा नै बिछ-डतां देख्या, पण बेटी इण निजोरी बात माथै किण रो जोर चालै। रोय रोय नै माठ झेली।—फुलवाडी
उ०—२ आंगणा माथै साप री मोटी अर तिरछी लीगटी देखनै वा तुरत समझगी के साप डसग्यो। पण अबै समझ मे आया ईं काई व्है। करम ठोकनै माठ झेली।—फुलवाडी
उ०—३ म्हैं अळगो ऊभनै सुणू ला, थू जित्तै माठ कर।—फुलवाडी
४ शान्ति, चुप्पी, मौन।
उ०—भूवाजी झालियोडा हाथ नै जझेडता थका कैवण लागा—म्हारो माथो मत पचा। माठ कर। भगवान थनै लुगाई री ठोड कागला री कुपाळी दी है।—फुलवाडो
५ खेत की मेड।
उ०—१ माठ माठ मेत रा धणी नै आवतो लखियो के कागलो हिरण नै इसारो कर दियो।—फुलवाडी
उ०—२ इत्ता मे डोकरी रो खेत आयग्यो। मा रै माठ माथै आवता ईं बेटी तो हळ फिटो करियो।—फुलवाडी
उ०—३ आ कैयनै वो स्याळियो तो खेत री परली माठ माथै जायनै ऊभो रैगो।—फुलवाडी
६ मान, प्रतिष्ठा, इज्जत।
७ स्वाभिमान।
उ०—पण विधवा मू'ती पागडी बा'रो मरद, माठ हाळी लुगाई दटै नही। मील अर साहस रै सागै मरदांनगी सूं मजूरी करै, आपरो टापरो रुखाळै।—दसदोख
७ देखो 'माठो' (मह, रू भे)
रू० भे०—माठ, माट, माठि माठी।

माठणो माठबो–क्रि० स० [देशज] १ घडाई करके पत्थर को साफ करना।
२ देखो 'मठारणो मठारबो' (रू भे)

माठर–स० पु० [स०] १ वेद व्यास।
२ सूय का एक गण जा इन्द्र द्वारा सूर्य की सेवार्थ नियुक्त किया गया था।
३ अष्टादश विनायको मे से एक।
४ ब्राह्मण।
५ कलाल, कलवार, शौण्डिक।

माठल–स० स्त्री०—एक प्रकार की अगुठी।

माठमो माठवो–स० पु०—घडाई करके साफ किया हुआ पत्थर।

माठसेडी, माठसेढी—देखो मठसेडी' (रू भे)

माठा–स० स्त्री०—एक मधुर रागिनी विशेष।
उ०—रामसरी खुमरी लागी रट, धूया माठा चद धरू।—वेलि

माठाकर–वि०—कजूस सूम।

माठादिन–स० पु० यौ०—दुर्दिन बुरे दिन, दुख का समय।
उ०—माठादिन मिटिया हवै, सेवक थयां सनाथ। सफळी सेवा चाकरी, आज थई अम नाथ।—ढो मा

माठामनो–वि० यौ०—कृपण, कजूस।

माठावरण–स० पु० यौ०—भाग्य के बुरे लेख।
उ०—सरण साधार अवमाप गयद सम, सभ्रां परताप रा करण सूरा। माप रा ब्रहम माठावरण मेटवा, भेटवा आपरा चरण भूरा।
—दुरगादत्त वारहठ

माठि—१ देखो 'माठ' (रू. भे.)
उ०—बाल्हिया रत पखिया, बोलइ मधुरी वाणि । काइ लवतउ माठि करि, परदेसी प्रिउ ग्राणि ।—ढो मा
२ देखो 'माठी' (रू भे.)

माठी-स० स्त्री०—१ पुरुषों के हाथ मे पहनने का सोने या चांदी का कड़ा, पुराने समय का एक आभूषण ।
उ०—खवासजी तो घणा मोद सू आवरै सिरपेच, मुगट, कानां मे गुरकिया, गुड्दा, भवरियो, गळा मे कठी डोरो, जीनेऊ अर हद्मानजी रा फूल, सोना रा वटरण, हाथा मे माठिया अर आग ळिया मे बीटिया घडाई ।—फुलवाडी
२ कवच, सन्नाह । ३ आवरण ।
४ देखो 'माठो' (स्त्री०) ।
रू० भे०—माठि ।

माठ्ठ, माठ्ठू—देखो 'माठो' (रू भे)
माठोडो—देखो 'माठो' (अल्पा., रू भे)
उ०—माठोडौ घर मांय, जे क्रोडां सपति जुडै । मोज देण मन माय, रती न आवै राजिया ।—किरपाराम

माठो-वि० [स० मठ] (स्त्री० माठी) १ मद गति से चलने वाला, धीमा, मद गति वाला, शिथिल ।
उ०—१ हर रथ माठो होय, सकत रथ होय सयाणो । मित रथ देवै पूठ, घटै उतराय पयाणो ।—चौथ वीठू
उ०—२ भूत तो काठो वचना वधग्यो । माठो वळद बुचकारा रै हैवा । ग्राज तो नांमी भरै पड़ी ।—फुलवाटी
२ सुस्त, आलसी ।
उ०—१ एक जाट ऐडी अर माठो अत इज घणो हो ।—फुलवाडी
उ०—२ वो माठो अर जिद्दी घणो हो ।—फुलवाडी
उ०—३ देव-लोक अर पयाळ-लोक मे कीं कमी कोनीं, की दुख-सताप कोनीं अर कीं कळेस कोनीं । इण खातर दोनां रा वासिदा निबळा, मैंदी, माठा अर निकांमा व्हैगा है ।—फुलवाडी
मुहा०—माठो वळद बुचकारा रै हैवा=आलसी आदमी (प्राणी) वहाने और आश्वासनो का सहारा लेता है ।
३ धीट, धृष्ट, बेशर्म ।
उ०—ज्यू माठा रै वागै चांमठी ताता रै लागै घाव । ईण भात उण रजपूत नू पोतारसा नै तीख चोंख री वचन उचारता ईण रै तीख रो वचन जाय लागो ।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात
४ उदास, मद ।
उ०—मोर-मराद माठा थया, अति उच्चरता हुस । ऊचा चढिया अगस्ति-रिखि, वनि वनि फूल्या कास ।—मा कां प्र.
५ बुरा, खोटा, अधम ।
उ०—१ तोय करमनासा तणौ, नर सुभ करम नसाय । तोय तू आळे त्रिपथगा, माठा क्रम मिट जाय ।—बा दा
उ०—२ कुमति घणी कुम मन वसइ, कुमति थको नही नेह । माठी करणी मा पडयउ, हु अवगुण नउ गेह ।—वि कु.
उ०—३ थें आगै माठा करम किया तिण सूं कमाड रै कुळ उपनो ।
—भि द्र.
उ०—४ माठी विचारी मन माय, इण ने ममाण मोम ले जाय, सुकोमल साध । इनचा उतारो देह नी ए ।—जयवाणी
६ न्यून, निम्न, नीचा (अयो) ।
उ०—भारे करी आफेह तने जाय तिम जीव करम रूप भारे करी माठी गति मे जाय ।—भि द्र
७ अनुचित, नाजायज ।
उ०—पाप्यां रो तू पगज धारै । सो माठी करै धमाई रे ।
—जयवाणी
८ मिथ्या, असत्य, झूठा ।
९ गदा, असभ्य ।
उ०—१ जे कोई देवै न्याय री सीख, वलती देवै अपूठी भीख । मुख थी बोलै माठी गाळ ।—जयवाणी
उ०—२ मूटा मांगू माठी बोलै, न गिणै धारो ने म्हारो रे ।
—जयवाणी
१० कजूस, सूम, कृपण ।
उ०—भूप का मौड माठां मठ भांन है । इंद मघवान रै अवण आथां ।—लीछमणसिंह सिसोदिया री गीत
११ मजबूत, दृढ ।
उ०—इतरै वात करता थका पना नै तो हाथ घालीया, हात पकड आपके पाछै बैमांण लीनी । माठी दुपटा रो आटो दीनो ।
—पनो
१२ कठिन, कठोर ।
१३ जबरदस्त, भयकर ।
रू० भे०—मट्ठो, मठा, मठो, मठ्ठो, माठ्ठ माठ्ठू ।
अल्पा०—मठोडो, माठोडो ।
मह०—माठ ।

माडवीक-स० पु०—मडप का उपरि कार्य-कर्त्ता ।
उ०—अनेक गणनायक दडनायक राजेस्वर तलवर माडवीक कोट-विक मत्रि महामत्रि ... ।—व स
वि०—मडप सबधी, मडप का ।

माड-स० पु०—१ गर्व, अभिमान ।
उ०—हठियो सिर हिंदुवा, माड मेले सूमांणा । आदि वैर सभरै, सरस दिल्ली सुरताणा ।—गु रू व
२ ऊमरकोट राज्य का उत्तरी भाग एव जैसलमेर के दक्षिण का एक लम्बा प्रदेश ।
३ जैसलमेर राज्य का एक नाम ।
क्रि० वि०—१ हठात्, बलात्, जबरदस्ती ।

उ०—सूरा जमदाढ लई उण सग, लई रवि रेवत माड मलग ।
—मे म

रू० भे०—माढ ।

२ देखो 'माड' (रू भे) (७-८)

माडघर, माडघरा—स० स्त्री०—जैसलमेर राज्य का नाम ।

उ०—कमधज 'छाडै' कीध कोपियै, माडघरा ऊपर मच्छर ।
'घूहड' हरो घूण खग धारा, सत्र लूटे वळीयो समर ।
—राव छाडा रो गीत

माडपच—स० पु०—१ मुखिया, अगुआ, नेता ।

२ अपने बल या प्रभाव से पचायती करने वाला ।

माडां, माडाणी—क्रि० वि०—१ जबरदस्ती, बलात्, दबाव डालकर ।

उ०—१ तरै साहिब तो रहतो न थो, पण सासरिया माडा राखियो ।—नैणसी

उ०—२ सातु मिळ सहेलीया, माडा कर मनुहार । मद पायो म्या-राम नै, ऊगायो अणपार ।—मयाराम दरजी री वात

उ०—३ तरा राणै मानी नही अरु यानै माडाणी मेलिया नै ऐ ठाकुर अजमेर आया ।—द दा

उ०—इण समे रा कापुरसा (कायरा) ने बिरदाय माडाणी जोतिया पिण गाडो किण सू ही खचियो नही ।—वी स टी

२ मन मार कर, मन के उपरात, न चाहते हुऐ भी ।

उ०—१ मत्री रा बेटा रो काम वा माडांणी ई करणी चावती, पण मन मे कळेस वधतो ई जावै ।—फुलवाडी

उ०—२ सेठांणो काई जोर करती । उणनै माडा चुप व्हैणो पडियो ।—फुलवाडी

३ स्वत ही, अपने आप ।

उ०—पाखती रा खोडा सू रात दिन चिराळिया सुणू तो माडाणी ई म्हारा मूडा सू चिराळिया निकळे ।—फुलवाडी

रू० भे०—मड, माडहिय, माडा, माडाणी, माडी, मांडे, माडेई, मांडे, माडोणी, माढांणी, माडे, माडै, माडैई ।

माडू—स० पु०—१ एक प्रकार की प्राचीन ढाल जिसके दो तरफ मध्य मे हिरन के सीग लगे होते हैं, जिनमे तेज नुकीले भाले लगे होते है । इससे वार भी किया जा सकता है और रक्षा भी ।

२ देखो 'माढू' (रू भे)

उ०—जग थित झूठी जाणणी, मूठी भीड म रक्ख । माया मेवो माडुवां, चगा चाखव चक्ख ।—वा दा.

रू० भे०—माढू ।

माडे—देखो 'माडा, माडांणी' (रू भे)

उ०—१ कोड वचन खातर किया, पातर न करै प्रीत । आथ देख अकुलीण न, माडे कर ले मीत ।—बां दा

उ०—२ लोग अरज करी—मुजरै नू पधारो । दिन घणा हुवा सो माडे सू मुजरै नू लेय गया ।—अमरसिंह गजसीहोत री वात

माडेचा—स० स्त्री०—जैसलमेर प्रदेश के भाटी वश की एक शाखा ।

माडेची—सं० स्त्री०—१ आवड़ देवी का एक नाम ।

२ जैसलमेर के राजवश (भाटी राजपूत) की कन्या ।

वि० स्त्री०—जैसलमेर की, जैसलमेर सम्बन्धी ।

उ०—माडेची घरा 'अना' कुळ मडण, वड दातार अभनमा 'वीक' । मोड वध्या आयो तू मारग, मोड वधा सकै मडळीक ।—द दा

रू० भे०—माडेची, माढेची ।

माडेचो—स० पु० (स्त्री० माडेची) १ भाटी वश की माडेचा शाखा का व्यक्ति ।

उ०—१ परि जिम घरणि घरै पोढतो, पढि तिम रिण पोढै खग पाणि । माडेचो जीवतो मरतो माणिग, माणिग गयो बिन्है कळि-माण ।—सुरताण मांनावत रो गीत

उ०—२ माडेचा माहेव का, देस किंवाड 'किसोर' । जोडै 'राम' मुकद' का, आया दुद सजोर ।—रा रू

२ जैसलमेर का निवासी ।

वि०—जैसलमेर का, जैसलमेर सम्बन्धी ।

माडै, माडैई—देखो 'माडा, माडांणी' (रू भे.)

उ०—१ धकै चाढि कमधजा, मुलक ले लीधो माडै । जिण गाडै सजि जोर और कुण काधो वाडै ।—मे म

उ०—२ विणजारो कह्यो—म्हारै बस पूगता तो म्हैं घणो ई ना देवू, पण कोई मानै जद व्है । माडै ई गळै घाल देवै, जिण रो तो म्हैं काई करू ।—फुलवाडी

उ०—३ पै'ल पोत गरीब हिरण री ई वारी आई । माडैई उणनै रुकणो पडियो ।—फुलवाडी

उ०—४ पातसाह खातर राखै तो पछै सगळा रजवाडा नै माडै खातर राखणी पडै ।—फुलवाडी

उ०—५ पण आज औ जबरो मिनख धकियो, म्हनै देखनै डगडग हसै । इण मे की न की चाळो जरूर है । चीतो माडैई धीमो पड-ग्यो ।—फुलवाडी

माढ—स० पु०—१ हठ, वहस, हा नां ।

उ०—ताहरां हाथी मगाय नजर कियो । ताहरा कवरजी कह्यो—हाथी रो मोल फुरमावो । नायक कह्यो—कोई लेवा नही । यू घणो माढ हुवो ।—पलक दरियाव री वात

२ देखो 'माड' (रू भे)

उ०—उतारत नीर खळा अवगाढ । महाबळ नीर चढावत माढ ।
—सू प्र

३ देखो 'माड' (रू भे) (७ ८)

उ०—स्लोकां बुणी पाठ दुरगा सुणावै, गुणी माढ रै राग सोभाग गावै ।—मे म

माढराछात–स० पु०—जैसलमेर का राजा ।
२ भाटी वंश का क्षत्रिय ।

माढव, माढवौ—देखो 'माढू' (रू भे) ।
उ०—१ भारी अगै उगै रा भारत, हेकण जीम प्रेताप हुवा । मन मिळियोडा तिका माढवा, जीभ करै खिणमाह जुवा ।—वा दा
उ०—२ तू ऊचा खेंचै तिकै, जग ऊचा होय जाय । मन खांचै तू माढवा, निकै रसातळ जाय ।—ऊ का.
उ०—३ जणा ही नू जडियोह, मद गाढौ करि माढवा । पारस खुल पडियोह, रोया मिलै न राजिया ।—किरपाराम

माढाणी—देखो 'माडा माडाणी' (रू, भे)
उ०—मूरख 'कान्है' सकत न मानी, बीरोटणीं वखाणी । न्है मिंह-रूप ग्राछटी हायळ, मार लियौ माढांणी ।—इद्रकुमारी वाई

माढी–म० स्त्री०—पत्तो के अन्दर की नस ।

माढू–स० पु०—१ मानव, मनुष्य, आदमी ।
उ०—हिळ मिळ सब सू हालणौं, गहणौं ग्रातम ग्यान । दुनिया मे दस दीहडा, माढू तू मिजमान ।—वा दा
उ०—२ चगै माढू घर रह्यां, ए तीन अवगुण होय । कपड़ा फाटै रिण ववै, नाम न जाणै कोय ।—जगदेव पवार री वात
२ मित्र, दोस्त, यार, प्रेमी ।
उ०—१ ग्राळस मरडइ ग्रगनइ, ग्रावड वहू वगाई । माढू ऊपरि माहरू, मन मरडी-नइ जाई ।—मा का प्र
रू० भे०—माढ्ठ, माढव, माढवौ, माढु ।

माढेची—देखो 'माडेची' (रू भे)
उ०—माढेची सोवै महिप, पाडेची खळ पथ । काढेची दुग्व कवि-जणा, दाटेचो रिम दत ।—वालावक्ष वारहठ

माणो मावौ–क्रि० म० [स० मा] १ समाना । (उ र)
उ०—कामी कलि मैं ग्राय कै, ग्रापै माहि न माय । ग्रगिळो वीज न ऊतरियो, ग्रौरु गयो उठाय ।—स्री हरिरामदासजी महाराज
२ निभना, निर्वाह होना, नटना ।
३ सहन होना, बर्दाश्त होना ।
उ०—जिकी दात प्राची रा अघीम दूजा कुमार मुजासाह रा उर मे न माई ।—व भा
४ हजम होना, पचना ।
उ०—माहो माहि विद्या ग्रापी उलटि अग न माय । बीजु तेडी मारयि रितुपरण रा घिरि जाय ।—नळास्यान
माणहार, हारौ (हारी), माणियौ—वि० ।
मामोडो—भू० का० कृ० ।
माईजणो, माईजबौ—भाव वा० ।
मावणो, मावबो—रू० भे० ।

मातग–स० पु० [स०] (स्त्री० मातगी) १ हाथी, गज ।
(अ मा, हि नां मा, ना डि को, ह ना मा)
उ०—१ छती तू सती भूपती दच्छ छोरी, गती मत्त मातग तू हस गोरी ।—मे म
उ०—२ ग्रावीया ग्रलजइ घणइ, ग्राळम मांहइ गग । रैलि ग्राविउ रक-घरि, मद-मातउ मातग ।—मा का प्र.
उ०—३ मधु मद स्रावति मद गति मल्हपति । मदोनमत्त मारुत मातग ।—वेलि
२ इन्द्र के हाथी का नाम, ऐरावत । (ना मा)
३ पीपल, अश्वत्थ ।
४ सवर्त्तक, मेघ ।
५ एक नाग का नाम ।
६ चाडाल, श्वपच, हरिजन ।
७ किरात, शूद्र ।
८ एक राक्षस का नाम जो कश्यप एव खशा का पुत्र था ।
९ वार, व नक्षत्रो सम्बन्धी २८ योगो मे से चोवीसवा योग ।
१० देखो 'मतग' (५) (रू भे)
रू० भे०—मात्तग ।

मातगघू–स० पु० [स० मातग+राज० घू = मस्तक] गणेश, गजानन । (डि को)

मातगपुर–स० पु० [स० मातग+पुर] हस्तिनापुर, दिल्ली ।
उ०—विच माचोर भीलपुर वासी, 'सीहा' हुरै मनाडै सक । मातगपुर कटका मरवाडै, धणिया ताय ढीलविया धक ।
—राव तीडा री गीत

मातगर–स० पु०—हाथी, गज ।

मातगी–स० स्त्री० [स०] १ कश्यप एव क्रोधवशा की नौ कन्याओ मे से एक । इसने हाथियो को जन्म दिया ।
२ वसिष्ट की पत्नी ।
३ पार्वती, गिरिजा । (अ मा)
उ०—मात रमा सुण वान, कर जोडै वदन करू । हो मातगी मात, हू छू सेवग रावळो ।—गज-उद्धार
४ दस महाविद्याओ मे से नवी महाविद्या । (तान्त्रिक)
५ चडाल जाति की स्त्री ।
६ विजिया, भग ।
स० पु०—७ हाथी ।
उ०—ओडै वीर घटा घोक मातगी ताजान वाळो, रोहै वीज विखमी वाजान वाळो रीठ ।—हुकमीचद खिडियो

मात–स० स्त्री० [अ०] १ हार, पराजय ।
उ०—पण उठै ई उणनै मात खावणी पडती ।—रातवासो
क्रि० प्र०—करणी, खावणी, होणी ।
२ हस्ती, सामर्थ्य ।
उ०—१ चतुर किहा तू चातर्‌यो, वर्कै जु ग्रईसी वात । हम सू हरै जो सुर ग्रसुर, मानव केही मात ।—प च चौ

उ०—२ दीठी सिव पुरी किसु राजा दिख, मानुसां तणी तखत कइ मात। इद्रा पुरी हूता रथ आवंइ, जीवन तणौ करेवा जात।
—महादेव पारवती री वेलि

३ गेहू के आटे को भून कर उसमे गुड की चासनी मिलाकर बनाया जाने वाला एक खाद्य पदार्थ।

रू० भे०—मातर।

वि०—१ नगण्य।

उ०—अम्रत ईख रस आखां, भरिया कुड तणइ तइ मात। उण माहै इसी मो आचरता, ब्रहमड तणी जांणिजइ वात।
—महादेव पारवती री वेलि

२ देखो 'माता' (रू भे) (अ मा, ह ना, मा)

उ०—१ बदवीर बजरग कीसवर मगळकारी, ममर मात सरसती विमळ कविता विसतारी।—र रू

उ०—२ मोनू सुगंध मोनू मिळ्या, बळिहारी इण बात री। सारवांत सकति 'इदर' सुणें, महिमा करनळ मात री।—मे म

उ०—३ देवी मात जांनेसुरी अन्न मेहा, देवी देव चामुड सख्याति देहा।—देवि

उ०—४ देव अळा वन मात देवकी। कूख नीपना नद कुमार।
—ह ना मा

उ०—५ पद्मरथ भ्रपति हो लाल, नदन गुण निलयौ। मात सरसती हो लाल विजया कत जयौ।—वि कु

उ०—६ विनां नीर जहा कवळ है, विन विरखा वरमाळ। विनों मास जहां रुत है, मात पिता विन बाळ।
—स्रीहरिरामदासजी महाराज

४ देखो 'मात्र' (रू भे)

उ०—१ धणी तणै छळ भ्रोपण धारां। भ्रत तिल मात गिणा अरि मारां।—रा रू.

उ०—२ जुध सहम गुणा खळ मिळे जात। मन गिणै तिका नू भ्रिणह मात।—वि. स

उ०—३ एकण नें हुलरायौ नही कन्हैया। गोद न खिलायौ खण मात रे।—जयवाणी

उ०—४ सत्रु ग्राह ग्रामी, गयौ डूब सारा। रती मात हाथी, रही सूड वारा।—भगतमाळ

६ देखो 'मात्रा' (रू भे)

उ०—१ मुण पाय दह मात दीपक्क सुखदात। जीहा अठूजाम सभार स्रीरांम।—र ज प्र

उ०—२ गुणपचासं कारतिक, उतरते बरसात। आयौ खेजडले असुर, मेछ परक्खण मात।—रा रू.

देखो 'मातौ' (रू. भे.) (उ र)

उ०—१ जिणि कोकिलि क्रीडा कीधी चूतवनि, तेह किम लागइ पलास मनि, जु मधुकर मातउ मालती परिमल पूरि, '।—व स.

उ०—२ ताम हस्ति मदि मातउ गाजइ। जाम केसरि निनाद न वाजइ।—सालिसूरि

मातजायौ—देखो माजायौ'।

उ०—दिल्ली सै नूरदी नबाव चालि आयौ। भाई अवदूखांन को मातजायौ।—शि व

मातबर—वि० [अ० मो'तबर] जिसका विश्वास या ऐतबार किया जाय, विश्वनीय।

उ०—१ हाडा रा मातबर माणस आया।
—गोड गोपाळदास री वारता

उ०—२ इतरै दोय मातबर माणस आइया जे सताब पधारो फेर खास रुक्को लेय आदमी निराठ जेहत लाइयो।
—मारवाड रा अमरावा री वारता

२ सम्पन्न धनाढ्य।

उ०—खीवसर गाव मे तौ काईं पण पडोस रा गावा मे ईं कोई मातबर करसौ इसौ नही हौ के जो सेठां रौ देणदार नही व्है।
—रातवासौ

३ प्रतिष्ठित, प्रभावशाली, सज्जन।

उ०—तद बदुवा रा मांणस मातबर सांम्हा आइया।
—ठाकुर जैतसी री वारता

४ आन-बान वाला, प्रतिभाशाली, पौरुसशाली।

उ०—गोपाळदास कही जे पच्चीस ही लेवो तो माणस दोय मातबर राखो।—गोड गोपाळदास री वारता

रू० भे०—मातवर।

मातबरी—स० स्त्री० [अ० मो'तबरी] १ 'मातबर' होने की दशा या भाव। २ विश्वसनीयता। ३ साहूकारी। ४ गभीरता।

मातवो [स० महात्मा] वह जैन यति जो शादी कर लेता है।

मातभोम—देखो 'मातृभूमि' (रू भे)

मातम—स० पु० [फा०] १ मृतक के पीछे किया जाने वाला शोक।
२ दुख, गम।
३ देखो 'महातम' (रू भे)

मातमपुरसी, मातमपोसी—स० स्त्री० [फा० मातमपुर्सी] मृतक के पीछे शोकाकुल व्यक्तियो को दी जाने वाली सांत्वना। शोकाकुल व्यक्तियो के सामने प्रगट की जाने वाली महानुभूति।

उ०—१ बखतसिहजी समायां री मातमपुरसी कराई, पछै मिळिया बात कीवी।—मारवाड रा अमरावा री वारता

उ०—२ पीछै करमचद तौ समायौ। तद महाराजा फेर मातमपोसी नू उणां री हवेली पधारिया।—द दा

मातमा—देखो 'महात्मा' (रू भे)
उ०—माधू मातमा उगुनै चेलो मूड लियो। मातमा जी रै ग्रड-खजो लाठो हो।—फुलवाडी

मातमी-वि० [फा०] १ शोक सम्बन्धी, शोक सूचक।
उ०—चोपदार के मारफत रुघनाथसिंह से मिलने का इरादा किया। उसने साल भर पहले ग्रोरत के मरने की मातमी का बहाना लिया।—दुग्गादत्त वारहठ
२ देखो 'मातमपोसी'।
उ०—पीछै करमचद वछावत रै घरै मातमी नू गया।—द दा

मातमुस-वि०—१ ग्रालसी, सुस्त।
२ मूर्ख, मूढ जडमति। (डि को)

मातर—१ देखो 'मात्र' (रू भे)
उ०—१ तिल मातर भीत न वीत तणी, थमि हालत ग्रग्रकियां हुयणी।—मे. म
उ०—२ प्रभाकर प्रांणिय मातर प्राण। विभाकर वाणिय ते निरवांण।—ऊ का
२ देखो 'मात्रका' (रू भे)
उ०—ग्रादित्य रसोइ तपइ, चद्रमा घडी घडी ग्रम्रत झरइ, यम पाणी वहइ, सात समुद्र माजणउ करावइ, मातर ग्रारती ऊतारइ, विस्वकरम्मा स्रगार करावइ ।—व स
३ देखो 'माता' (रू भे)
उ०—ग्राज मातर भोम री ग्रोरणी खेंचीज रह्यो है, ग्रर म्हू जाणतो थको मूंडो लुकाय नै वैठू तो म्हारी मौत तो व्है चुकी।
—रातवासो
४ देखो 'मात्रा' (रू भे)
५ देखो 'मात' (स० स्त्री० ३) (रू भे)

मातरा-स० स्त्री०—१ धन, दौलत, सम्पत्ति।
उ०—ग्राविया ग्रसक दळ लिया ग्रघरात रा, जिका 'उदो' कवर दमांमी जात रा। मार उदियानयर लूट ली मातरा, पुळ गया राण जगमिदरा प्रात रा।—स्यामजी वारहठ
२ देखो 'मात्रा' (रू भे)
३ देखो 'माता' (रू भे)

मातरौ-स० पु०—मूत्र, पेशाव। (जैन)
उ०—विस्टा नै वली मातरौ ए नाक तणो मल मेल। वाय पित्त सलेसमाए, सुक्र लोही राध चेल।—जयवाणी

मातळ मातलि-स० पु० [स० मातलि] १ महावत।
उ०—१ हीमता भला ग्रप्पला हूत, फगळा सळा ग्रावळा कूत। परघळां दरां मातळां पील। डर वळा डळा वरघळा डील।
—गु रू व
उ०—२ कटक, नाटउ गवरव हय गज ग्रसम रथ पदाति रूपक तणा स्वांमी तीन जगा रिद्धजस हरि एरावण मातलि दामिट्टी हरिणेगमेखी सरवगि सन्नाह पेहिरि, द्रढ़ कमा वधि, धनुखि गुण चडावी रह्या, ।—व स.
२ इन्द्र का सारथी, रथवान।
रू० भे०—मातुलि।

मातलोक-स० पु० [सं० मृत्यु-लोक] १ मृत्युलोक, मनुष्यलोक।
२ मातृभूमि, जन्मभूमि।

मातवट, मातवटि—देखो 'मथावटि' (रू भे)

मातवर—देखो 'मातबर' (रू भे)
उ०—तद हरदांन राजा सू ग्ररज कीवी ग्रोर वोल्यो—ग्रादमी दोय कोई मातवर दूजा साथै देवो।—पलक दरियाव री वात

माता-स० स्त्री० [स० मातृ] १ जन्म देने वाली मां, जननी, ग्रवा। (ग्र. मा)
उ०—सो सपूत हुवै सो तो पिण माता रा यत्न करै ग्रनै कपूत हुवै ते उधा ग्रवला वोलै। माता ने रहकारा री गाल वोलै।
—भि द्र.
२ माता के स्थान पर मानी जाने वाली स्त्री।
उ०—ज्यू दया रा घणी तो भगवान ते तो मुक्ति गया। लारै साध स्रावक सपूत ते तो दया माता रा यत्न करै। ग्रनै था जिसा कपूत प्रगटिया सो गाढ २ कहि ने वोलावो।—भि द्र.
३ ग्रादरणीय या वृद्धा स्त्री।
४ पार्वति।
५ दुर्गा, देवी, शक्ति।
उ०—१ एकै कानी वडो काच, दूजै कानी राम लिछमण री रूडी तसवीर ग्रर तीजै-चौथै पाखा मे माताजी भेरूजी ग्रापरी सीवी मे खप्पर खोले वैठ्या है।—दसदोख
उ०—२ थिर बीजोचिसथान, थान, धवळा गिर थावै। पोहो माता दीप हू, ऊठै माता नित ग्रावै।—मे म
६ लक्ष्मी। ७ गो।
८ पृथ्वी, भूमि।
९ दौलत, धन।
१० शीतला या चेचक नामक रोग।
उ०—गाला माथै मोकळा सळ, जबाडा वैठ्योडा। सूको ग्रर ठाळी चैं'रा माता रा वण चैठ्योडा।—दसदोख।
११ नव दुर्गाएँ।
१२ इन्द्र वारुणी।
१३ जटामासी।
रू० भे०—मग्रि, मांइ, माई, माय, माइ, माई, माईय, माईया, माउ, माऊ, मात, मातर, मातरा, मातु, मात्रेई, माय, माय, माया, माया।
ग्रल्पा०—मांयडी, मांयली, मांवडी, माइडी, माउडी, मायड, मायडी, मायडी, मावडली, मावडी, मावडी।

महु०—मवड, मातौ, मायौ ।

मातामता-क्रि० वि०—घूमते-फिरते ।

उ०—इयें भात मातामता श्रठै सूथार रैं श्राया ।—चौबोली

मातामह-स० पु० [स०] (स्त्री० मातामही) माता का पिता, नाना ।

उ०—तिण समय मडोवरेस प्रतिहार नाहरराज तोमरावतसरौ प्रसाद लेण दिली श्रायौ श्रर मातामह री सभा रैं श्रंतर दोहित्र कुमार प्रथ्वीराज नूं देखि मोद पायौ ।—व भा

मातीगोठ-स० स्त्री०—वह बड़ी दावत या गोष्ठी जिसमे सभी प्रकार के भोजन बने हो ।

उ०—करै गरक दुजी कोटडिया, पाव घिरत नैं जणा पचास । भूप 'श्रनोप' तणी भुजाया, मातीगोठा बा'रैं ई मास ।

—नीवज साहव श्रनोपसिंह रौ गीत

मातीमुरगी-स० स्त्री०—१ धनवान व्यक्ति, सम्पन्न व्यक्ति । (व्यंग्य)

मातु—देखो 'माता' (रू भे)

उ०—पुनैं चेत श्रासोज रा स्वेत पाखा, खुळै मातु नूं जातरी लोक लाखा ।—मे म

मातुळ, मातुल-स० पु० [स० मातुल] १ माता का भाई, मामा ।

उ०—१ निरख छटै रिपु ग्रह ससिनदण । कुळ मातुळ सुख श्ररी निकदण । राजभवन सुर-गुर सुभ राजै । विसव एक छत्र श्रांण विराजै ।—रा रू

उ०—२ चवै श्रप जायळ व्याकुळ साज । रह्यौ रण मैंदर मातुल राज ।—पा. प्र

२ धतूरे का पौधा ।

३ एक सर्प विशेष ।

रू० भे०—मातुलि ।

मातुंलि—१ देखो 'मातलि' (रू भे) (श्र मा , ना मा)

२ देखो 'मातुल' (रू भे)

माते—देखो 'माथे' (रू भे)

मातेत-स० पु० [श्र० मातहत] १ श्रधीनस्थ कर्मचारी ।

२ हाथ के नीचे कार्य करने वाला व्यक्ति, सहायक ।

वि०—१ श्राज्ञाधीन रहने वाला ।

२ पराधीन ।

मातेती-स० स्त्री० [श्र० मातहती] १ 'मातहत' होने की दशा, श्रवस्था, या भाव ।

२ श्रधीनता ।

मातैं—देखो 'माथे' (रू भे)

मातौ-वि० [स० मत्त] (स्त्री० माती) १ मोटा-ताजा, स्थूल काय ।

उ०—श्रधिक करइ श्रावाज रे, राता माता रे हस्ती घूमता रे ।

—वि कु

२ हृष्ट पुष्ट, तदुरुस्त ।

उ०—धवला मे माता घणा, रले छोटी सिंगडियां जाण रे लाल । दोनूं बराबर दीसता, तू एहवा रिखभ श्राण रे ।—जयवाणी

३ मस्त, उन्मत्त, मतवाला ।

उ०—१ निसि पति नारी मोहन गारी, रोहणि रग रातौ । प्रभु करणी परणी तजि तरुणी, श्रद्भुत गुण करि मातौ ।—वि कु.

उ०—२ तुरा तोखै मेळवा लोह तातौ । मरेवा तणी होडरौ कोड मातौ । वरस्सोह वध्धावळै श्राक श्राडो, लखैं थाट जानी हुश्रौ 'भीम' लाडो ।—गु रू. ब

उ०—३ ताईया सेनि वाडी विचै 'ऊद तणा, मघप रगि रमैं मैंमत मातौ ।—तेजसिंह सेखावत रौ गीत

४ मद-मस्त नशे मे धुत्त, गर्क, लीन ।

उ०—१ हरि रस पीया जाणियै, सो मतवाळा होय । मद रस का माता फिरै, 'हरीया' चित्त न कोय ।—श्री हरिरामदासजी महाराज

उ०—२ पीवै पिलावै राम रस, माता है हुसियार । दादू रस पीवैं घणा, श्रौरौं को उपकार ।—दादूवाणी

५ घायल ।

६ श्रभिमानी, श्रहकारी, गर्वीला ।

उ०—उच्च जाति मद एक महाकुल मद सू मातौ । लाभ तणै मद लोल, तेम तप मद सु तातौ ।—ध व ग्रं

७ प्रसन्न, खुश ।

८ बहुत दिनो तक पडे रहने के कारण सड़ाध देने वाला, बदबूदार । (घृत, तेल श्रादि)

९ बलवान, शक्तिशाली ।

१० भयकर, भयानक ।

उ०—१ घोम पिड वरछियौ वेध मातौ घरा । खार खुद राम रिण हाथ लागा खरा । पाण तज मेलिया मांण हुय पाधरा । मिळै दहवाट ग्या थाट मडोवरा ।—द दा

उ०—२ घिखि सोर धूवर धूवा-धार । श्रावत मिळै तव श्रधकार । रामायण भारथ रूप सुद्ध । जोधपुरै मातौ खुरम जुद्ध ।

—गु. रू बं

११ जबरदस्त, जोरदार ।

उ०—श्रातुर दहु श्रागरैं श्राया, दहु दिस काळ भडां दरसाया । पर 'मुहकम' जिम लख पहातौ, महाप्रळै श्रसुरां घर मातौ ।

—रा रू

उ०—२ वसू मास कादम मचै श्रसत परवत वणै, रुधिर मिळ सरतपत हुश्रौ रातौ । श्रजोध्यानाथ दसमाथ रावण श्रडग, महा वे श्रोर भाराथ मातौ ।—र रू

१२ सघन, घना, गहरा ।

उ०—१ कमळ बीय ससि-कळा, कळा वडती जग वदै, कळाहीण खळ हुवै, जेम निस पूनिम चदै । भुज विसाळ लकाळ, वरण भाळाहळ सुदर । भरि मातैं भाद्रवैं जांणि ऊगौ भासकर ।

—गु रू वं

उ०—२ अप मुख ग्रीखम निरखता वधि वरसात विलास । मातो कादव मेदनी, आयो भाद्रव मास ।—रा रू.

१३ तेज, तीव्र, उग्र ।

उ०—१ एक महुरत सार झड माती ताती वाण । लग्गा हाथी भग्गणाँ, या वग्गा आराण ।—रा रू

उ०—२ दुहु दळ हाळोहळ सबळ, दुहु दळ घुरै दमांम । दमगळ मातो दुहु दळा, दुहुवै कोस मुकाम ।—गु रू व

उ०—३ मातो घूम मुरद्धरा, तातो जोस कटक्क । सोनंग' रातो वेध लग्ग, जातो साह अटक्क ।—रा रू

१४ बहुत, अधिक, भारी ।

उ०—मिळै ताळ तातो, धका-धोम मातो । हिलै रत्त खाळ, नदी जाण नाळ ।—गु रू व

रू० भे०—मातउ, माथो ।

१५ देखो 'माता' (मह, रू भे)

उ०—चद्रा वदनी रे चारित चूकव्यउ सुगन विलमइ दिन राती जी । इक दिन गोखइ रमतउ मोगठइ, तब दीठउ निज मातो जी ।

—स कु

मात्तग—देखो 'मातग' (रू भे)

उ०—वर तुरग उत्तग वर्ण माकति विराजित । मदोमत्त मात्तग जांण जळ वादळ गरजित ।—गु रू व

मात्र-अव्य० [स०] १ केवल, सिर्फ ।

उ०—१ वैरी वैर न वीसरै, विना हियै ही 'वक' । राहु ग्रहै राकेस नू, नभ सिर मात्र निसक ।—वाँ दा.

उ०—२ डोढो पडदो देखियै, मूर्मा घरै सिवाय । भीतर जम किंकर विना, जीव मात्र नह जाय ।—वा दा

उ०—३ ढूढार मैं स्वांमी भीखणजी पासै स्रावगी चरचा करवा आया । वोटया मुनी नें तार मात्र वस्त्र राखणो नही ।—भि द्र

२ समान, सर ।

उ०—तुही हाथ लै मूळ सादूळ हक्कै । त्रणा मात्र तू सुक्र रा छात्र तक्कै ।—मे म

रू० भे०—मत, मत्त, मात, मातर ।

३ देखो 'माता' (रू भे)

उ०—१ वैजळ मे लखण वयू ही नही । मात्र ईथा चूको । तरै वैजळ नू भाटिया मारि परो काढ़ियो ।—नैणसी

उ०—निर ग्रथ तणउ साटउ, दीवालीनउ तेज । मात्रे ई नउ हेज, '

—व स

मात्रक-स० पु० [स०] माता का भाई, मामा ।

मात्रका-स० स्त्री० [स० मातृका] १ अन्धकासुर का लहू चूमने के लिए शिव द्वारा उत्पन्न सप्त मातृकाएं—ब्राह्मी, माहेश्वरी, कौमारी, वाराही, नारसिंही, वैष्णवी, ऐन्द्री ।

वि० वि०—ये मातृकाएं अंधकासुर का लहू चूमने के बाद पृथ्वी पर के प्राणियो का लहू चूमने लगी तब इन पर नियन्त्रण करने के लिये शिव ने नृसिंह का निर्माण किया उसने अपने जिव्हादि अवयवो से बत्तीस अन्य मातृकाओ का निर्माण किया जिससे सारी व्यवस्था ठीक हो गई । तदनन्तर शिव ने इन मातृकाओं को लोक सरक्षण का कार्य सौंप दिया । महाभारत एव पुराणो मे उक्त सप्त मातृकाओ के अतिरिक्त निम्नलिखित अन्य मातृकाओ का भी उल्लेख मिलता है —१ अष्ट मातृका—ब्राह्मी, माहेश्वरी, चडी, वाराही, वैष्णवी, कौमारी, चामुण्डा एव चर्चिका । २ सप्त शिशु मातृका—काकी, हलिमा, रुद्रा, वृहली, आर्या पलाला एव मित्रा । ३ अष्टादश मातृका—विनता, पूतना, कष्टा, पिशाची, अदिति (रेवती), मुखमण्डिका, दिति, सुरभि, शकुनि, सरमा, कद्रू, बिलीनगर्भा, करजनीलया, धात्री, लोहितायनि, आर्या आदि । ४ चौदह मातृका—गौरी, पद्मा, शची, मेधा सावित्री, विजया, जया, देवसेना, स्वधा, स्वाहा, धृति, पुष्टि, तुष्टि एव कुलदेवी जो हरेक व्यक्ति की अलग अलग होती है ।

तांत्रिक साधना की भी ये ही मातृकाए हैं तथा विवाह मे भी इन्हीं मातृकाओ की पूजा की जाती है ।

२ देवी, देवमाता ।

३ अर्यमा नामक आदित्य की पत्नी ।

स० पु०—४ तान्त्रिक यत्र विशेष ।

५ यत्र मे लिखे जाने वाले अक्षर या वर्ण ।

रू० भे०—मातर, मात्रिक, मात्रिका, माया ।

मात्रभोम—देखो 'मात्रिभूमि' (रू भे)

मात्रा-स० स्त्री० [स०] १ नाप या तौल के हिसाब से कोई एक निश्चित परिमाण, मिकदार ।

२ नाप या तौल करने का उपकरण ।

३ किसी अक्षर या व्यजन के आगे-पीछे व नीचे-ऊपर लगने वाला स्वर चिन्ह ।

४ छन्द शास्त्र के अनुसार कल या कला जिसके समूह या निश्चित सख्या से किसी छन्द का निर्माण या गठन होता है ।

व्यु—चौदह मात्राओ रो छद ।

५ परिमाण, सख्या ।

६ औपधि का एक बार मे लिया जाने वाला अश, खुराक ।

७ अश, भाग ।

८ कण, अणु ।

९ पल, लहमा ।

१० धन, सम्पत्ति ।

११ तत्व । १२ शक्ति, बल ।

१३ सगीत मे ताल का निश्चित भाग ।

१४ स्वर के उच्चारण मे लगने वाला समय ।

१५ सगीत मे गीत और वाद्य मे समय का निरूपण ।

१६ कान की बाली ।
१७ एक आभूषण, रत्न ।
रू० भे०—मत, मत्त, मात, मातर, मातरा ।

मात्रि-वि० स्त्री० [स० मातृ] माता की, माता सम्बन्धी ।

मात्रिक-वि० [स०] १ मात्रा सम्बन्धी, मात्रा का ।
सं० पु०—२ मात्राओ से बनने वाला छन्द ।
३ देखो 'मात्रक' (रू भे.)

मात्रिका—देखो 'मात्रका' (रू भे)

मात्रिभाखा, मात्रिभासा-स० स्त्री० [स० मातृभाषा] १ माता द्वारा बोली जाने वाली भाषा, जिसे बालक माता की गोद मे सीखता है । २ वह भाषा जो अपने देश या मातृभूमि मे बोली जाती है, राष्ट्रीय भाषा ।

मात्रिभूमि-स० स्त्री० [स० मातृ-भूमि] वह स्थान जहा जन्म हुआ हो, स्वदेश ।
रू० भे०—मातभोम, मात्रभोम ।

मात्रिरिस्ट-स० पु० [स० मातृ-रिष्ट] अशुभ लग्न मे सतान जन्म ने के कारण माता-पिता पर आने वाला सकट का एक दोष । (फलित ज्योतिष)

मात्रीमुख-स० पु० [स० मातृ-मुख] मूढ या मूर्खजन । (अ मा)

माथ—१ देखो 'माथौ' (मह, रू भे)
उ०—कुळ अनेक करै निज सुधारै काथ नै । नांमतो माथ दसमाथ रघुनाथ नै ।—र ज प्र.
२ देखो 'माथै' (रू भे)

माथइ—देखो 'माथै' (रू. भे)
उ०—१ माडिया उतवग जियइ द्रू माथइ, नाम जपता एक निमख । —महादेव पारवती री वेलि
उ०—२ आया परधान आगळै ईस्वर । गिर माथइ वइठउ गिर-मेर ।—महादेव पारवती री वेलि

माथइयौ—देखो 'माथौ' (अल्पा., रू भे)
उ०—नायो मूमल माथईयो रे मेट सु हांजी रे कढीये रे । रालया मूमलडी केसडा, म्हांरी जग मीठी मूमल ।—लो गी

माथउ—देखो 'माथौ' । (उ र)
उ०—एकतर ताप सीयउ दाहू, उखध विण जायइ थइ माहू । दूखइ नही माथउ पग गोडउ, नित नांम जपउ स्रीनाकउडउ । —स. कु.

माथडौ—देखो 'माथौ' (अल्पा, रू भे)

माथणी—देखो 'मथणी' (रू भे)

माथलियौ—देखो 'माथौ' (अल्पा, रू भे)
उ०—न्हायो मूमल माथलियौ रे मेट सू हाजी रे, कड़ियां तो रालया मूमल केसडा म्हारी जगमीठी मूमल, हालै नी ऐ मालीजै रै देस ।—

माथसरौ, माथाअरौ—देखो 'माथासरौ' (रू भे)

माथाकर-क्रि० वि०—ऊपर होकर, ऊपर से ।
उ०—लुगायां, टाबर अर बूढा-ठाडा सुणियौ जका रो ई माथौ अर डील सुन्न व्हैगो, जाणै वारै माथाकर बा'ण वैगो व्है ज्यू । —फुलवाडी

माथाधोवण, मायानावण-स० पु० [स० मस्तक+धावन, मस्तक+स्नान] १ प्रसव के कुछ दिन बाद किसी शुभ दिन को किया जाने वाला प्रसूता का स्नान ।
२ घी और छाछ मिला हुआ सिर धोने का पानी ।

माथापच, माथापची, माथाफोड, माथाफोडी-स० स्त्री०—१ किसी कार्य के लिये किया जाने वाला दिमागी श्रम, मगज-पच्ची, सिरपच्ची ।
उ०—दरवाजा सूमा तणा, मूढ़ा तणा हियाह । खुलिया माथापच किया, सो नह साभळियाह ।—बां दा
२ प्रपच, झझट ।
उ०—पण तडकै ऊठतां पाण थानै सगळी जोखम सूप देवूला । म्हारा सू आ माथाफोड़ी नी व्है ।—फुलवाड़ी
३ परिश्रम, मेहनत ।
उ०—१ चिडीमार कह्यो—म्हैं नी मारू तो काई, आनैं कोई न कोई तो मारैला ई । पछै म्हैं ई क्यू चूकू । आज तो घणोई माथा-फोडी करी, तो ई ओ एक तीतर हाथ आयो ।—फुलवाड़ी
उ०—२ भाणू रै जावण री बात सुणतां ई भूत री तो काळजो बैठग्यो । उणरै जाता ई फेर वा माथाफोडी करणी पडैला । —फुलवाडी
४ बहस, हुज्जत ।
उ०—१ मोद मचै कर चढिया माया, माथापच नह मोद मचै । रच थारा घरका रा रूपग, रूपग म्हारा काय रचै ।—बा. दा ख्या
उ०—२ वीसू झगडा झटां सू पूरी माथापच अर छाती-पची करता-करता मोसर रै दूहै नै मसा पार घाल्यो ।—दसदोख

माथायलौ-वि० (स्त्री० माथायली) ऊपर वाला, ऊपर का ।
उ०—१ चोर चोर रा हाका रै सागै मूडा माथायलौ घडचौ आगो फेंक ताचकी तो साम्ही दीवाणजी ऊभा । नगर सेठ, राज व्यास अर कविराजा ऊभा ।—फुलवाडी
उ०—२ खांधा माथायली धोतडी बिछायनै वै चरू खाली करियो । —फुलवाडी

माथारखी-स० स्त्री० [स० मस्तक+रक्षिका] छिपने का स्थान, सुरक्षा की जगह ।

उ०—काळीभ्रर री पहाड़ वडो गांव सू कोस पछम दिसा लागो कोस ५। माहै पाणी घणो, भाड़ घणा नास भाज नू वडो माथारखी।—नैणसी

मायावटी—देखो 'मथावटी' (रू भे)

मायासरो, मायासिरो–स० पु०—१ बीचोबीच का ऊपर का स्थान, शिखर।

२ उद्गम स्थान।

उ०—१ पवार री पैंतीस साख, त्यां माहे एक साख भायला री, भायला रो मायासरो गाव रोहिसी मगरा नीचै वळी छै तठै नै सिवाणची नू।—नैणसी

उ०—२ एक छत्तीस वस री थापना हुई नै मायासिरो कहिनै बतायो। वळै रिखभदेवजी सु दोय राह चाल्या।—रा व वि

३ किसी मकान, टीबा, पर्वत आदि का सबसे ऊपर का सिरा, चोटी।

४ अन्तिम मंजिल।

५ किसी वंश का आदि पुरुष।

६ अंत, छोर, हद, सीमा।

उ०—सोजत थी कोस ७ व्यापारी सिरीयारी मलसियावावडी। इण रै मायासरो सेग रा गाव।—सोजत र महळ री वात

७ पूर्वजो की जन्मभूमि, पूर्वजो का उद्गम स्थान।

रू० भे०—मथासरो, माथसरो, माथाम्रो, माथाहरो।

८ देखो 'मथारो' (रू भे)

मायासून–स० पु० [स० मस्तक+शून्य] एक प्रकार का घोडा जिसके मस्तक मे भवरी (चक्र) न हो। (अशुभ)

मायासूल–स० पु० [स० मस्तक+शूल] सिर दर्द, सिर मे होने वाली पीडा।

उ०—हर लोग वन टांडिया, सूत ही सादूळ। जे सूता ही जागता, सबळा माथासूळ।—वा दा

मायाहरो—देखो 'मायासरो' (रू भे)

मायोवो–स० पु०—गाडी के जूए के नीचे बाधा जाने वाला भैंस के बच्चे का चमडा।

मायुर–स० पु०—१ कायस्थो की बारह शाखाओ मे से एक।

२ मथुरा मे रहने वाले चतुर्वेदी ब्राह्मणो की एक जाति।

माथे, माथै–क्रि० वि०—१ ऊपर, पर।

उ०—१ अग नाग्वे गाहण अमह, रिण माथे रजपूत। आवध नाखै आचमू, दासी केरा पूत।—वां दा

उ०—२ अग प्रमाण रा नेर माथै अब चाहुवाणा रो चक्र अरबुदाचळ री मरणी रे समुख पाधरो ही घकाव छै।—व भा

उ०—३ फागण रो महीनो अर चांदणी घट्ट रात। नीलकठ गाव माथै डोढ वोतल रो नसो चढयोडो।—रातवासो

उ०—४ औरगसाह छत्रीसै आयो, उर राव राण लागो असहायो। सख्या विण लीधा दळ साथै, मारग पडै पहाडा माथै।—रा. रू

उ०—५ ताहरा सरप बिल माहै सू नीसर नै 'चूडै' माथै छत्र कर वैठो।—नैणसी

क्रि० प्र०—आणो, करणो, टूटणो, देणो, घरणो, बाधणो, माडणो, लेणो, होणो।

मुहा०—१ माथै आणो=किसी की जिम्मेदारी पर पडना, हमले के लिये चढकर आना। २ माथै करणो=सामान लेकर पैसा बाकी रखना, ऋण लेना। ३ माथै जीव देवणो=विशेष प्रेम करना, निछावर होना। ४ माथै टूटणो=विशेष कृपा करना, तुष्टमान होना। ५ माथै तूटणो=देखो 'माथै टूटणो'। ६ माथै तूट पडणो=हमला करना, वार करना। ७ माथै बाधै जैडो=चतुर, होशियार, किसी के चक्र मे न आने वाला। ८ माथै मडाणो=कर्ज अपने नाम लिखवाना। ९ माथै राखणो=अपनी ओर कुछ बाकी रखना, किसी का प्रभाव मानना। १० माथै लेणो=किसी कार्य का उत्तरदायित्व अपने ऊपर लेना। ११ माथै हाथ फेरणो=आशीर्वाद देना। १२ माथै हाथ होणो=सरक्षण मिलना। १३ राम नै माथै राखणो=ईमानदारी से कार्य करना। १४ सिर आखिया माथै=विशेष मान्य। १५ हाक माथै हाक मचणो=चारो ओर से हल्ला होना। १६ हाथ माथै हाथ घर बैठणो=निकम्मा या बेरोजगार होने की स्थिति, प्रयत्नशील न होने की अवस्था।

२ मस्तक पर, सिर पर।

उ०—१ ज्या जस छत्र तणाविया, माथै जगत मझार। जिकै छत्र घर जांणणा, सुदतारां सिणगार।—वा दा

उ०—२ डोकरी कह्यो—म्हारै माथै भार छै, थे उतरनै ल्यो।—नैणसी

उ०—३ एकर वो बळदा री जोडी खरीदण सारू मेळै जावतो हो। माथै बाजरी री पोट उखणियोडी ही।—फुलवाडी

उ०—४ धूप सीत वरखा माथै सहै।—देवजी बगडावता री वात

३ आसरे, सहारे, निर्भर।

उ०—आवियै जेण ससार रो व्है उदो, मूदो सब बात रो सेह माथै।—घ व ग्र

क्रि० प्र०—बैठणो, रैणो, होणो।

४ भरोसे, विश्वास पर।

उ०—पूछ्यो—के आ किसा अन्याव री बात के प्राण बचाया जिणरा ई वो प्राण लेवण री बात करै। यू ई बता, औ न्याव थारै माथै ई छूटयो।—फुलवाडी

५ निकट, पास, नजदीक।

उ०—वा तौ सोनल रै हूंकारी भरिया पछै अणजेज नाडी माथै पूगी।—फुलवाडी

६ अवसर पर, मौके पर।

उ०—मोटै पागडाळी लोभी पिंडत ई परवार में वेटी रै जलम माथै सदाही सीतुडी, गोरली, पारती, रुकडी, रामली, हाळा नावटा राखतौ।—दसदोख

रू० भे०—मत्थ, मत्थे, मत्थै, मथ मथै मथ्थ, मथ्थई, मथ्थै, माते, मातै, माथ, माथइ, माथउ।

माथौ–स० पु० [स० मस्तक] १ मस्तक, शिर। (अ मा)

उ०—१ भुज दुहुवा अळ वीस भुज, कळ दस माथा काट। तैं दीधौ दसरथ तणा, दससिरवर दहवाट।—वा. दा

उ०—२ किया जाग जोडा खडै पंज कावै। अडा-मीढ आकाम माथौ अडावै।—गु रू व

मुहा०—१ माथौ उतरणौ=शिर की पीडा कम होनी। २ माथौ ऊंचौ करणौ=विद्रोह करना, गर्व करना, आवाज उठाना। ३ माथौ ऊंचौ नी करण देणौ=दबाकर रखना, काम से लाद रखना। ४ माथौ कलम करणौ=शिरच्छेद करना, गर्दन काटना। ५ माथौ गिरणाटी खावणौ=चक्कर आना। ६ माथौ चढ़णौ=शिर दर्द होना, गर्व या अहंकार बढ़ना। ७ माथौ नवावणौ, माथौ निवावणौ=प्रणाम करना, नमस्कार करना, हार मानना। ८ माथौ भवणौ=चक्कर आना। ९ माथौ मुडाणौ=साधु होना, अधिक या फालतू खर्चा करना, केश कटवाना। १० माथा मे कबोडौ हालणौ=जोर का शिर दर्द होना, अनुचित कार्य करने की प्रेरणा होना। ११ माथा मे खावणौ=नुकसान उठाना। १२ (पगा मे) माथौ रगडणौ=क्षमा याचना करना। १३ माथौ लुकावणौ=छुप कर बैठना, शर्म करना, घर मे रहना। १४ माथौ हळकौ पडणौ=शिर दर्द कम होना, चिंताओ से मुक्ति पाना। १५ माथौ हिलावणौ=इन्कार करना।

पर्या०—उतमग, उरधमूळ, क, कमळ, घू, भ्रकुटक, ममतक, मुड, मूड, मूरधा, मौळी, रुड, वरग, सिर, सीस।

२ मस्तिष्क की विचार शक्ति, बुद्धि, चित्त।

उ०—१ अकल रा बैरी इत्तौ तौ माथौ लडावणौ हौ के ढिगली विखरतां ई थारो ढोल उघड जावैला।—फुलवाडी

उ०—२ दरजी जाण्यौ परभात री वगत राजा करण री वेळा कुण माथौ लगावै।—फुलवाडी

मुहा०—१ माथौ ठणकणौ=संदेह पैदा होना। २ माथौ धूणणौ=सोच या चिंता करना, पछताना। ३ माथौ पचावणौ=व्यर्थ प्रलाप करना, शांति भग करना। ४ माथौ भवणौ=चित्त का संतुलन बिगडना, चक्कर आना। ५ माथौ फिरणौ=विवेक खोना, अनुचित कार्य, हरकत या बात करना। ६ माथौ भिड़ावणौ=बहस करना, हुज्जत करना। ७ माथौ लडावणौ=बहस करना, झगडा करना। ८ माथौ हळकौ होणौ=निश्चित होना।

३ मन स्थिति, विचार।

४ मस्तक का ऊपरी भाग, खोपड़ी।

उ०—कै इत्ता में वौ अणछक उछळियौ। छात सू माथौ टकरायौ।—फुलवाडी

मुहा०—माथा री मालपूवौ होणौ=अत्यधिक मार पडनी, वजन या चोट के कारण मस्तक की हालत बिगडनी।

५ मस्तक के ऊपर की केश-राशि।

उ०—१ सुथराई सू लीका काढ नै हळदी मिट्टी रौ माथौ गूथियौ। —फुलवाडी

उ०—२ पछै हमेसां वा उण सू माथौ सुलझावती।—फुलवाडी

मुहा०—१ माथौ गूथणौ=केशों को सुव्यवस्थित कर बांधना। २ माथौ गूथांणौ=केशों को व्यवस्थित बंधवाना। ३ माथौ मुडाणौ=मस्तक के सभी केश कटवा कर रुंड-मुंड होना। ४ माथौ सुळझावणौ=कंघे के द्वारा केशों को सुलझाना।

६ मुख या शिर की आकृति या चित्र।

७ किसी वस्तु का ऊपरी या अग्र भाग।

८ एक प्रकार की सवारी।

रू० भे०—मत्थ, मत्थै, मत्थौ, मथ, मथौ, मथ्थ, मथ्यइ, माथइ, माथउ। अल्पा०—माथड़ियौ, माथडौ, माथलियौ।

मह०—माथ।

८ देखो 'मातौ' (रू भे)

माद–स० पु० [स० माद] १ नशा, मद।

२ हर्ष, आनन्द।

३ अभिमान, अहंकार।

स० स्त्री०—४ खलिहान में भूसे सहित अनाज का लबा ढेर जो अनाज की बालों को कुचल कर एकत्र किया गया हो।

उ०—मिट्टिया रौ गाईटो गाहियौ तौ ई टोळा रौ तौ खुड व्हियौ नीं कोई खुड़कौ। नायण आपरै हाथा सू सगळी माद उफणी पण ओठारुवा रौ तौ खुड व्हियौ नीं कोई खुड़कौ।—फुलवाडी

५ देखो 'मादा' (रू भे)

मादक–वि० [स०] १ नशा देने वाला, नशीला।

२ मस्ती व आनन्द देने वाला।

स० पु०—१ मादक पदार्थ, शराब आदि।

उ०—परजा पालण पुत्रां सम, केहण प्राण कपूत रा। मादक अलीण मेले न मुख, प्रिय लक्षण रजपूत रा।—ऊ. का.

मादकता–स० स्त्री० [स०] १ मादक होने की दशा या भाव।

२ नशा। ३ मस्ती।

४ आनन्द। ५ नशीलापन।

मादडेचा-स० पु०—चहुवाण वंश की एक शाखा ।

रू० भे०—मादरेचा ।

मादर-स० स्त्री० [म० मातृ, फा० मादर] माता, मां, जननी ।
(डिं को.)

उ०—विदर पिदर जाणै नही, मादर विदरा मूळ । राखै भ्रगणत रग रा, दिल री कुसी दुकूळ ।—वां दा

मादरचोद-वि०—१ माता के साथ कुकर्म करने वाला, मां के साथ व्यभिचार करने वाला ।

२ नीच, निकृष्ट ।

स० स्त्री०—एक प्रकार की गाली ।

मादरजात, मादरजाद-वि० [फा० मादरजाद] १ जैसा माता के उदर से बाहर भाया वैसा ।

२ जन्म का, पैदाइशी ।

३ वस्त्रहीन, नगा ।

४ सगा, सहोदर ।

५ मूर्ख ।

मादरेचा—देखो 'मादडेचा' (रू. भे)

मादळ, मादल-स० पु० [म० मर्दल] १ पखावज या मृदग से मिलता-जुलता एक वाद्य । (उ र)

उ०—१ अद मादळ वाजै अदग अउव भति उपग । निरूपै गीत नादग, जस न जिमै ।—गु रू व

उ०—२ माती ऊहार्डा दरसै मादळ सी । देई वीलोई वरसै बादळ सी ।—ऊ का

उ०—३ मेघाडवर छत्र तणउ आडबर, सीकरी तणउ झमाल, भ्रलघा तणी उमाल, भेरि तणे भाकारि, भल्लरी तणे झात्कारि, सख तणे भोंकारइ, तिविल तणे दोंकारि, मादल तणे धोकारि, ढोल तणे ढमढिमाट, — ।—व. स

उ०—४ सिव मग सन्मुख थाज्यो, धप मप दो दों । भर हर भों भों मादल वजाज्यो ।—घ व ग्र

२ ढोल ।

उ०—१ भारवी वव मादळ उभै, धुवै नाद बादळ धजर । मो नू बताय वेढीमणा, नाह फठी टेढ़ी नजर ।—मे म

उ०—२ तलिआ तोरण ऊभीआं घरि घरि वांधीआं ए वनर वालि । मुहरइ मादळ रणकीआ तिहिं नाचइ ए नवरगि बाल ।
—हीराणद सूरि

३ मृदग ।

उ०—नाचती गोपी भ्रहा क्रिसण गाता, मादळ वश महुयरि वाता । हरिनी रमति ते हीइ भावि, भ्रह्मानड वनवयरी रो भावि ।
—चतुरभुज

४ न उष्ण न शीतल, शीतोष्ण । (खाद्य पदार्थ व औषध)

रू० भे०—मंदळ, मद्ळ ।

मादळियो, मादलीयो-स० पु०—१ चांदी या सोने का एक आभूषण जिसमें कोई मन्त्रित वस्तु रखी जाती है । यह गले मे लटकाया जाता है या भुजा पर बाधा जाता है ।

उ०—१ गळा मे तीमणियो, झाड, पटियो, हांस, हायली, कठी, टुस्सी, काठलो, मादळिया अर कठपूतळिया रो हार' ' ।
—फुलवाडी

उ०—२ कानिइ उगनिउ झलहलइ, कोटिइ नवसर हार । माद-लीआ डोढी भजइ, गरसली कालीउ सार ।—नळदवदती रास

उ०—३ पितरां रा फूल घडीजै सो पितरां रा फूला मैं मढाई हो जो तथा मरने भूत होवे तरै प्रेत रौ जत्र मादळिया मैं तथा चौकी में मढाईज जो ।—वी स टी.

२ तावीज, गडा ।

उ०—भूतणी काढै, जमी मे वूरै, जिंद जरू करै, खेजडै में कीलै है । भ्रोपरी छाया भ्रोळावै, चिमठियां वाधै, थुथकी नाखै, माद-लिया मढावै ।—दसदोख

३ ऊट के भ्रगले पावो मे बांधी जाने वाली 'नाल' का एक भ्रवयव ।

४ रहट पर कूए की भ्रोर लगाया जाने वाला एक लकडी का डडा ।

५ मुखिया ।

६ मित्र या दोस्त ।

रू० भे०—मादळियो ।

मह०—मद्ळ ।

७ देखो 'मादळ' (भ्रल्पा , रू भे)

उ०—म्हे तो भ्रांगण गार गिलोवस्या, म्हारी विरधी रा कोठां, चोखो रे मादळ घुळ रह्या । रग रातो रे मादळियो थारो रे सबद सुहावणो ।—लो गी.

मादलीभ्रो—देखो 'मादळियो' (रू भे) (व. स.)

मादिक-स० पु०—मादक पदार्थ, मद्य ।

उ०—भ्र द फूल सुगध, वर्ध सारत्रि पान मादिक । रत्त चक्ख सहास, भ्रांमास पासि रमणीय ।—रा रू

मादा, मादिन-स० स्त्री० [फा० माद] १ नर का विपर्याय, स्त्री जाति का प्राणी, जीव ।

२ स्त्री, भ्रौरत, नारी ।

उ०—१ सुरत्त तु हीज तु हीज सबद्द । मरद्दां मादां वीच मरद्द ।
—ह र.

उ०—२ धुवी चराका हा दिन धौलै, मादिन सोर मचायो । नाद सुवाद्यन पत्ति निमादिन, सादिन नही सुहायो ।—ऊ का.

वि० [स० मद] १ सुस्त, भ्रालसी ।

२ रोगी । ३ कम, थोडा ।

उ०—चचल चपला सी चितवन चिरताली, निरणै निगमागम नागम निरताली । मादा मरजादा जादा मदमस्ती, वेली भ्रलवेली छेली छदमस्ती ।—ऊ का

रू० भे०—मादी । मह०—माद ।

मादियो-स० पु० [स० मध्यस्थ] गहरा एव लबा छेद करने का एक कीला विशेष ।

वि०—१ मस्त।
२ लुच्चा, लफगा, उद्दड।
रू० भे०—माधियौ।

मादिलर–स० स्त्री०—एक प्रकार का वाद्य विशेष।

मादी—देखो 'मादा' (रू भे)
उ०—मेले पग मडा ग्रग्र ग्रखडा, रहा प्रिय राचदा है। पढ दुरस प्रमादी मुरसद मादी, महन्त पुरुस माचदा है।—ऊ का

मादीकड़कम–स० स्त्री०—पुरुषों के कानो मे पहनने का एक गोल ग्राभूषण।

मा'दीप—देखो महाद्वीप' (रू भे)

मादू—१ देखो माद्दू' (रू भे)
२ देखो 'माद्दू' (रू भे)
उ०—दुरधर डका दे वका ग्रढ धाया, उठिया उद्योगी उद्दिम उमगाया। कित है ववोई उडिया कलकत्तो, मादू मुरधरिया करियो मिल मतो।—ऊ का

मा'देव—देखो 'महादेव' (रू भे)
उ०—ठाकुरजी स्रीगगाग्यामजी रो मिदर पाछो उखेलाय नवो करायो, सिखर वदी पोळ नै सूरजजी रो मिदर नै मा'देव रो मिदर करायो नै दोळो पेडकोटो पको करायो।—मारवाड री ख्यात

मादो, माद्दो–स० पु० [ग्र० माद्द] १ वह गुण या तत्व जिससे मनुष्य कुछ करने या समझने मे समर्थ होता है योग्यता, सूझ-बूझ लायकी, तमीज, विवेक।
२ मृष्टि की उत्पत्ति का मूल तत्व, प्रकृति।
३ वह मूल पदार्थ जिससे कोई दूसरा पदार्थ वना हो।
४ व्याकरण मे शब्द की व्युत्पत्ति।

माद्री–स० स्त्री० [स०] मद्र राजा की पुत्री, कुरुराज पाण्डु की द्वितीय पत्नी तथा नकुल व महदेव की माता।
रू० भे०—मुद्री।

मा'द्रुम—देखो 'महाद्रुम' (रू भे)

माद्रेचा–स० स्त्री०—चोहान वश की एक शाखा।

माद्रेय–स० पु०—माद्री के पुत्र नकुल व महदेव का नामातर।

माधव–स० पु० [स०] १ ईश्वर, परमेश्वर, नारायण, विष्णु।
(नां मा, ह ना मा)
उ०—१ माधव दम दम हेक म्रिढ, ऐ वारह ग्रादीत। एक एक तो जिम ग्रवर, 'जेहा' कुण जग जीत।—वा दा
उ०—२ निरमोही निरलज्ज मुग, काहे हुग्रो निकाज। माधव विरियां माहरी, कहां गमाई लाज।—गजउद्धार
[स० मा+धव] २ श्री कृष्ण। (ग्र मा)
उ०—निसदिन जनमाठम ग्राठम गमनाही, माधव जनम्यो कै मरियो जगमांही। कूडा पूजारी कूडी कथ कीनी, देवण कांना मे पंजीरी दीनीं —ऊ का
३ इन्द्र।
४ कामदेव का सखा, वसत ऋतु।
५ वैशाख मास।
६ परशुराम।
७ मालिक, स्वामी।
८ एक राग विशेष।
९ ऋग्वेद के भाष्य कर्ता, सस्कृत के प्रमिद्ध विद्वान जो मायण के पुत्र मा सायण के भाई थे।
१० उत्तम मन्वन्तर के मनु का पुत्र।
११ भृगु कुल का एक गोत्रकार।
१२ भौत्य मनु का एक पुत्र।
१३ तालध्वज नगर के राजा विक्रम का पुत्र एक राजा।
१४ यदु राजा का पुत्र एक यादव राजा।
१५ एक धार्मिक ब्राह्मण।
१६ मधु राक्षस के वशज।
१७ देखो 'माधवाचारी' (रू भे)
उ०—माधव सावन ग्ररठ मडायो, च्यारो मुख नै घणो चिडायो। छाक पियो जिण पेट छुडायो, भारी पाणी जन्म भडायो।—ऊ का
रू० भे०—माधो, माध्व, माहव।
ग्रल्पा०—माधवो, माहवो।

माधवमास–स० पु०—वैशाख मास।
उ०—वरस ग्रढारह सत्तावीस मे रे, माधवमास मझार। ऊझल-द्वादसी दिवसे थापीया रे, विंव ग्रनेक उदार।—वृ स्त

माधवरित, माधवरितु–स० स्त्री० [स० माधव + ऋतु] वसत ऋतु।
उ०—माधवरित वैसाख मैं स्री 'ग्रजमाल' ग्रमग। राणी झाली परणियो, घणी खुमाली ग्रग।—रा रू

माधवाचारी, माधवाचारय–स० पु० [स० माधव+ग्राचार्य] १ ऋग्वेद के भाष्यकर्ता एक प्रमिद्ध विद्वान।
२ एक वैष्णव धर्माचार्य।
रू० भे०—माधव।

माधवी–स० स्त्री० [स०] १ चमेली की जाति की एक प्रसिद्ध लता जिसमे सुगधित फूल लगते हैं।
उ०—फूलत वेल विरछ मालती माधवी। लहलहे कुज कुज विकसै।—रसीलेराज रो गीत
२ तुलमी
३ मिश्री।
४ मधु से वनाई जाने वाली एक शराब विशेष।
५ दुर्गा।
६ दूती, कुटनी।
७ ग्रोड जाति की एक रागिनी। (सगीत)
८ सवैया छद का एक भेद।

६ नहुष कुलोत्पन्न राजा ययाति की कन्या।
१० रथध्वज राजा के पुत्र धर्मध्वज की पत्नी।
११ पुरुपुत्र जनमेजय प्रथम' की पत्नी।
१२ स्कन्द की अनुचरी एक मातृका।
रू० भे०—माध्री, माव्वी।

माधवीलता–स० स्त्री०—चमेली जाति की एक लता जिसमें सुगन्धित फूल लगते हैं।

माधवी—देखो 'माधव' (अल्पा रू भे)

माधियौ—देखो 'मादियो' (रू भे)

माधुर–स० पु० [स०] १ चमेली मल्लिका।
२ देखो 'मधुर' (रू भे)
उ०—मधुरकादि सरस रस माधुर। समकार परखै देवासुर।
—रा रू

माधुरई—देखो 'माधुर्य' (रू, भे)

माधुरता—देखो 'मधुरता' (रू भे)

माधुरी–स० स्त्री० [स०] १ मधुर होने की दशा अवस्था या भाव।
२ मिठास, मीठापन।
३ शराब।
४ एक लता।
उ०—लता माधुरी मालती फूल लेवै। दसा आप भूलै तपी रूप देवै।—रा रू
वि० स्त्री०—१ मोहित करने वाली, मनोहर।
उ०—माधुरी मूरति वह प्यारी, बसी रहै निसिदिन हिरदै बिच, टरै नहीं टारी।—मीरां
२ सुन्दर।
उ०—मन भावनी माधुरी मोहनि, चद वदन चित चगी। अतकाल में अरथ न आवत, कामनि नेन कुरगी।—ऊ का
३ मीठी।

माधुरय, माधुरयय–स० पु० [स० माधुर्य] १ मधुर होने की दशा, अवस्था या भाव।
२ मिठास, मीठापन, मधुरता।
उ०—माधुरय्य मेह आसार एह, सद्गुरु समान जीवन जहान।
—ऊ का
३ सौंदर्य, लावण्य।
४ मोहकता।
५ काव्य का एक गुण जिसमें सरसता, शिष्टता, एव सुसस्कृतता होती है।
६ कर्नाटकी पद्धति का एक राग।
७ सात्विक नायक का एक गुण।
रू० भे०—माधुरई।

माधुरयप्रधान–वि०—माधुर्य की अधिकता वाला।
स० पु०—माधुर्य का अधिक ध्यान रखकर गाया जाने वाला गीत, गाना।

माधोसिहोत–स० पु०—मेड़तिया राठौड़ो की एक शाखा व इस शाखा का व्यक्ति।

माधौ—देखो 'माधव' (अल्पा, रू भे)
उ०—मैं माहरा इद्रिया दुख माधा। वळि-उद्धरण बिखै ता बाधा।
—ह र

माध्यदिन–स० पु० [स०] मध्यान्ह, दुपहर।

माध्यदिनी, माध्यदिन–स० स्त्री० [स० माध्यदिन] शुक्ल यजुर्वेद की एक शाखा।

माध्यम–स० पु० [स०] १ कार्य सिद्ध करने का साधन, उपाय।
२ वह भाषा जिसके द्वारा शिक्षा दी जाय।
३ प्रस्तुतिकरण का साधन।
वि०—मध्यस्थ, बीच का।

माध्याकरसण–स० पु० [स० माध्याकर्षण] पृथ्वी के मध्य भाग का आकर्षण जो सब वस्तुओ को अपनी ओर खीचता रहता है।

माध्री—देखो 'माधवी' (रू भे) (१) (अ मा)

माध्व–स० पु० [स०] १ माध्वाचार्य द्वारा चलाया हुआ वैष्णव संप्रदाय।
२ उक्त सम्प्रदाय के अनुयायी।
वि०—१ मधुर, मीठा।
२ देखो 'माधव' (रू भे)

माध्वी–स० स्त्री० [स०] १ मदिरा, शराब।
२ देखो 'माधवी' (रू, भे)

माप–स० पु० [स० मापन] १ मापने या तौलने की क्रिया या भाव।
उ०—ओछौ न कू नकू तिल अधको, सुराता सुकव करा ने माप।
तू ताहरा राण टोडरमल, परियां सारिखो 'परताप'।
—महाराणा प्रताप रौ गीत
२ मापने या तौलने पर ज्ञात होने वाला परिमाण, मान, मात्रा।
उ०—माप का विहाई सा प्रताप का निदान। मारतड आगे जिमी जोतसी जिहान।—रा रू
३ किसी वस्तु या पदार्थ को मापने का साधन, मान, तौल।
४ वह पात्र जिसमे भरकर कोई चीज मापी जाय।
५ सीमा, हद।
उ०—आद हता मड आठ सौ, गह आपा गहवत। माप न को माटीपणौ, उर ज्या ताप न अत।—रा रू
६ देखो 'मापा' (रू भे)

मापक–स० पु०—१ वह वस्तु जिससे कोई चीज मापी जा सके, किसी चीज का परिमाण, मान ज्ञात करने का साधन।
२ लम्बाई-चौड़ाई ज्ञात करने का उपकरण।
३ मापने का काय करने वाला व्यक्ति।
४ तराजू।

वि०—१ मापने या तोलने वाला।
रू० भे०— मापक मापीक।
२ देखो 'माफक' (रू भे)

मा'पख—देखो 'महापक्ष' (रू भे)

मापख—१ देखो 'माफक' (रू भे)
२ देखो 'मापक' (रू भे.)

मापणि—स० स्त्री०—१ मापने का कार्य।
२ रस्सी डोरी।
उ०—घोडा समउ ग्रांस ते लहइ, मापणि वाधी माथइ रहइ। पीयइ दूध मनगमता ग्रास, वेगइ ते हारवइ ग्रहास।—ढो मा
३ ग्रनाज ग्रादि मापने का एक पात्र।

मापणौ, मापवौ—क्रि० स० [स० मापन] १ किसी पदार्थ या वस्तु का किसी निर्धारित मान के ग्राधार पर वजन, तौल या भार निकालना, तोलना।
२ किसी क्षेत्र या वस्तु का विस्तार, चौडाई-लम्बाई या वर्गत्व ज्ञात करना।
उ०—१ पादू मे एक भाये कह्यौ—हेमजी स्वामी री पछेवडी मोटी दीसै। जद स्वामीजी लवपणौ चौडपणौ माप दिखाई —भि द्र.
उ०—२ जद स्वामीजी कह्यौ—थें दोनू जणा डोरी ले जायने जायगा माप ग्रावौ।—भि द्र
३ छूना, स्पर्श करना।
उ०—महल ग्रतीव ऊच्च नभ मापत। पती प्रसन्न सपती प्रापत।
—मे म
४ किसी पैमाने मे भर कर द्रव पदार्थ या ग्रन्नादि को नापना।
उ०—तोल दिए परखाय दे, गणी दिए दे माप। वाण न छोडै वाणियौ, बधव गणै न बाप।—वां दा
५ तुलना करना।
उ०—सस्त्र बांध हरि सुमर, देह घर प्रीत ग्रदावै। समै तैण साहस, जेण मापियौ न जावै।—रा रू
६ थाह लेना।
उ०—ग्रखैराज प्रोहित को हित मापै कूण। दळपत' का द्रोण गुर जैसैं जोर दूण।—रा रू
मापणहार हारौ (हारी) मापणियौ—वि०।
मापिग्रोडौ, मापियोडौ, माप्योडौ—भू० का० कृ०।
मापीजणौ, मापीजबौ—कर्म वा०।

मा'पदम—देखो 'महापदम, महापद्म' (रू भे)

मापलौ—स० पु०—माप करने का पात्र।
उ०—कूडा तोला मापला ए ताकडी ग्रतर काण के। इण धन रे कारणे ए, भांजे राजा री डाण के।—जयवाणी

मा'पातक, मा'पातकी—१ देखो 'महापातकी' (रू भे)
२ देखो 'महापातक' (रू भे)

मा'पास—देखो 'महापास' (रू भे)

मापियोडौ—भू० का० कृ०—१ निर्धारित मान के ग्राधार पर वजन, तौल या भार निकाला हुग्रा, तोला हुग्रा २ विस्तार, चौडाई-लम्बाई या वर्गत्व ज्ञात किया हुग्रा ३ छूग्रा हुग्रा, स्पर्श किया हुग्रा ४ पैमाने मे भर कर द्रव पदार्थ या ग्रन्नादि को नापा हुग्रा ५ तुलना किया हुग्रा ६ थाह लिया हुग्रा.
(स्त्री० मापियोडी)

मापीक—देखो 'मापक' (रू भे)

मा'पुरस, मा'पुरुस—देखो 'महापुरुस' (रू भे)

मापेट—स० पु०—सहोदर।

मापौ—स० पु०—१ ग्रायात या निर्यात की जाने वाली वस्तुग्रो पर लिया जाने वाला एक प्रकार का कर, चुगी, टैक्स। (मा प वि)
२ पर्दा नशीन ग्रौरतो के बठने की गाडी पर लगाया जाने वाला पर्दा। ३ उक्त प्रकार का पर्दा लगी गाडी, सवारी।
४ मापने की क्रिया या भाव।
५ मापने का उपकरण, तोला या बर्तन।
उ०—जी हो तोला मापा वधारिया लाला, दस दिन महोच्छव थाय।—जयवाणी
६ सीमा, हद।
उ०—ठाकर फेर ढोढ़ मे बोल्या—इण ग्रकल रौ तौ काई मापौ मा तौ मौका मौका माथै ग्रावती ई रै'वै।—फुलवाडी
रू० भे०—मफौ, माफौ।

मा'प्रभु—देखो 'महाप्रभु' (रू. भे)

मा'प्रळै—देखो महाप्रळय' (रू भे)

मा'प्रसथांन—देखो महाप्रस्थान' (रू भे)

मा'प्रसाद—देखो 'महाप्रसाद' (रू भे)

मा'प्रस्थांन—देखो 'महाप्रस्थान' (रू भे)

मा'प्रांण—देखो 'महाप्रांण' (रू भे)

माफ—स० पु० [ग्र० मुग्राफ] क्षमा, माफी।
उ०—१ सैंधा मुहता भाईयें री राड छै सो तोप खानौ माफ कीजै।
—मारवाड रा ग्रमरावा री वारता
उ०—२ वो बोलो बोलो चुपचाप सगळी वातां सुणतो रह्यो। पछै हाथ जोडतो बोल्यो—ग्रबकी मळै माफ कर। कोई नवो उपाव बता।—फुलवाडी
वि०—जिसे क्षमा किया गया हो या माफी दी गई हो, क्षमा प्राप्त, क्षमित।
उ०—वो निरविकार भाव सू पूछ्यो—बाई, थ कुण है? म्हनै साच बता थनै सौ ई गुना माफ है, म्हारा सू डरण री थनै कोई जरूरत नी।—फुलवाडी
रू० भे०—माप, माफी मुग्राफ।

माफक–वि० [अ० मुआफिक] १ अनुसार, मुताबिक ।

उ०—१ करि सलाम मजोहि कर इम, बोलिया स वजीर । हुकम माफक होवसी, वरियाम हित चित वीर ।—सू प्र

उ०—२ अरु ठाकरां खड़गसेणजी नूं सरसे मूं बुलाया वा सला हुई तथा हुकम माफक समचार कया अरु रुका दीना ।—द दा

उ०—३ ए मात्रा उपछंद, कहिया मत माफक 'किसन' । नहचै सुण रघुनंद, निज सेवगां निवाजसी ।—र ज प्र

२ अनुकूल ।

३ ठीक, उचित ।

उ०—तिवारै खेतसी जी स्वामी कह्यो—हेमजी, आज बिना चाल्यां धोवण भेळो कीयो है । माफक निकळियो तो स्वामीजी इसा निर्मळता दिसै है बाकी काण राखै ज्यू कोइ नही ।—भि द्र

४ थोडा, मामूली, साधारण, ठीक ठीक ।

उ०—तदै कवर कह्यो—म्हांरी तपस्या मांहे खोट छै महाराज रै घरै जनम पायो, पिण महाराज रै माल देस मांहे सीर थोडो घलायो, तिण सूं माजी नै गांव १ आप दीधो छै तिण रो हासल माफक हीज आवै छै ।—जगदेव पवार री वात

उ०—२—लोग उहां रे कन्हा सावठो छै । आपा कन्हे लोग माफक छै ।—भाटी सुंदरदास वींकूपुरी री वारता

उ०—सूरेजी नूं कहियो—थे काढो, साथ माफक छै हूं इहां न विलमायस्यूं ।—सूरे खीवै कांधळोत री वात

५ समान ।

उ०—गोली कह वतळावियां, खिड ऊठै चडाळ । जग में सोधी नह जुडी, गोला माफक गाळ ।—बां दा

रू० भे०—मापक, मापख, माफग, माफिक माफिग ।

माफकत–स० स्त्री० [अ० मुआफकत] १ समानता ।

२ अनुकूलता ।

३ मैत्री, दोस्ती ।

४ इत्तिफाक, सयोग ।

रू० भे०—माफगत, माफिकत, माफिगत ।

माफग—देखो 'माफक' (रू भे)

माफगत—देखो 'माफकत' (रू भे)

उ०—आईज वात कुदरत मोळै आना माफगत है ।

माफइवै—मुफ्त मे ।

उ०—लोग ठाटा ढोवै, माठा चालै, मोकळी मजूरी माफइवै घालै है ।—दमदोव

माफिक—देखो 'माफक' (रू भे)

उ०—१ थे मताव आवज्यो, थांहरी सलाह माफिक काम होसी ।
—गौड गोपाळदास री वारता

उ०—२ सो ई माफिक वारी-वारी माणस आवै, जिका राक्षसराज भक्षण करै ।—सिंहासण बत्तीसी

माफिकत, माफिगत—देखो 'माफकत' (रू भे)

माफिजखानो, माफिजदपतर–सं० पु० [फा०] कचहरी का वह स्थान जिसमे सब प्रकार की मिसलें रहती है ।

माफी–स० स्त्री० [अ० मुआफी] १ क्षमा या माफ करने की क्रिया या भाव ।

उ०—मत्री आखता पडनै कै'वण लागा—म्हारी गुस्ताखी नै ई राज माफी बगसावै ।—फुलवाडी

२ क्षमा ।

उ०—१ ठग सगळा कांणिया कायर रै पगा पडिया । माफी मागी ।—फुलवाडी

उ०—२ मागडी घणी ई रोयो रीवयो के म्हारी घूड खांणी व्हैगी, माफी चावूं । पण थळियो तो एक ई सुणी नी ।—फुलवाडी

३ बखशिश ।

४ वह भूमि या खेत जिस पर सरकारी कर माफ हो, कर मुक्त भूमि । ५ देखो 'माफ' (रू भे)

उ०—सुक्र कूवत ने डील रे जोर रो निरवळ कमजोर सरणागता नूं अपराध बकसणो माफी करणो ।—नी प्र

माफीखानो—देखो 'माफिजखानो' ।

माफीदार–स० पु० [अ०] वह व्यक्ति जिसकी भूमि की मालगुजारी माफ हो, कर मुक्त भूमि का उप-भोक्ता ।

माफो–स० पु०—१ हरिण की नाभि मे होने वाली कस्तूरी की पोटली या थैली ।

उ०—हरख रो हीडो, उदेगर री मेट, जीव रो जतन, इंद्र री भेट । किस्तूरी रो माफो, केसर री क्यारी, रूप रो रूखडो ।
—मयाराम दरजी री बात

२ देखो 'मापो' (रू भे)

उ०—घोड वहल रथ घणा, घमळ धुर के असि धारी । सुजि खासा सुखपाळ, इका माफा असवारी ।—सू प्र

मा-बाप–स० पु० यौ०—माता-पिता ।

उ०—दोस रोग मेटण देहा री, जेहारी जपणो जस जाप । 'केहा' री रक्षा तैं कीनी, 'मेहा' री मोटी मा-बाप —अज्ञात

मावूद–वि० [अ० मा'बूद] १ जिसको पूजा जाय, पूजनीय ।

२ परमात्मा, ईश्वर, ब्रह्म ।

उ०—१ मौजूद खबर मावूद खबर, अरवाह खबर वजूद । मकाम ये चीज हस्त, दादनी मजूद ।—दादूबाणी

उ०—२ चहार मजिल वयान कुफतम, दस्त करद बूद । पीरां मुरीदा खबर करदः जा राहे मावूद ।—दादूबाणी

उ०—३ दादू नूरी दिल अरवाह का, तहा वसै मावूद । तह बंदे की बदगी, जहा रहे मौजूद ।—दादूबाणी

मा'ब्रामण—देखो 'महाब्राह्मण' (रू भे)
मा'भद्रा—देखो 'महाभद्रा' (रू. भे)
मा'भारत—देखो 'महाभारत' (रू भे)
मा'भास्य—देखो 'महाभास्य' (रू भे)
मा'मारी—देखो 'महामारी' (रू भे)

माय, माय—देखो माता' (रू भे.)

उ०—१ मैं उणहिज माय री रूप हिरदा मझ राख्यो। 'जैत' भूप जैंत नू दिई जिण री दस दाख्यो।—मे म

उ०—२ रेसम हुंदा पोतडा पालणिये पोढाय। तो 'जेहा' बेटा तिके, भलै झुलाया माय।—वा दा

उ०—३ ज्या थारे तट जाय, उदर भरे पीधो उदक। मिनख जिके फिर माय आया नह जननी उदर।—वा दा

उ०—४ अह देवह वमि तेवि पच ए पडव वणि चलिय। हथिणउरि जाएवि मुक्लावइ, निय माय पिय।—सालिभद्र सूरि

उ०—५ महल पधार्‌या पदमिणी, तेहवै बादळ माय रावत। मगळी बात मुणी करी, पासै ऊभी आय रावत।—प च चौ

उ०—६ नहीं तो माय नही तो बाप, आपेज आपे ज उपन्नो आप। मनच्छा बीज चलावै मूळ। थयो चर वेचर सुक्खम थूळ।—ह र

उ०—७ साची बात है—मत मरज्यो टाबर गी माय, ना मरज्यो बूढेरी नार।—दसदोख

उ०—८ रुखमणि अविका पूजिवा जाहिरे, साथ लीधी धर कांमणि। देवी हुइ सोहइ सयळ सिणगार, माय मायां तणी मांडणी। माय मायां तणी माडणी सज्या मयल सिणगार, अहि भोपमां मिरि वेणी ढळकइ, चिहुर चपक भार।—रुकमणी मगळ

२ देखो 'माश्र' (रू भे)

उ०—अइ मायं पाण भोयण।—जै त प्र

३ देखो 'माय' (रू भे)

उ०—मिलै सिह बन माय किण मिरगा अगपत कियो। जोरावर प्रति जाय, रहै उरधगत राजिया।—किरपाराम

मायई—देखो 'माता' (अल्पा, रू भे) (उ र)

मायड, मायड़ी—देखो 'माता' (मह, रू भे)

उ०—१ डाकी ठाकर सहण कर, डाकण दीठ चलाय। मायड खाय दिखाय थण, घण पण वलय बताय —वी स

उ०—२ पीढे तो बैठी मायड मन करघो, मन कर मेल्यो लोढो वीर।—लो गी

उ०—३ जनम दियो म्हारी मायडी। होजी वै ने रूप दियो करतार।—लो गी

उ०—४ रे जाया मायड़ी सामो रे नाळ।—जयवाणी

मायत—देखो 'माईत' (रू भे)

उ०—१ तद वेरसी सलाम कर कही—जे इसी ही होणहार थी सो हुई। थे म्हारै मायत छो।—सूरे खींवे काधळोत री बात

उ०—२ गौतम जीत करै मायतां तणी, तीन्न प्रणामे जोय हो।
—जयवांणी

मायतपणो—देखो 'माईतपणो' (रू भे)

मायताय–स० पु० [स० मातृ+तात] माता-पिता।

उ०—मायताय मनि पूगी हांम, साल्हकुमर तसु दीघउ नाम। अतमच्छा माता मय होइ, ढोलउ नांम कहइ सहु कोइ।—ढो मा

मायदे–स० स्त्री०—परमार चाहड देव की पुत्री जो शक्ति अवतार मानी गई है।

मायनै—देखो 'मांय' (रू भे)

मायरावार–स० पु०—माहेरा लेकर आने वाला, मामा या उसका सम्बन्धी। रू० भे०—माहेरेदार।

मायरौ–स० पु० [म० मातृ+भरह] विवाह के समय वर या वधू के मामा द्वारा दिया जाने वाला धन या वस्त्रादि।

उ०—थोडी देर अठीनै-वठीनै री वाता हुवां रै बाद गोपाळ मीठास सू पूछियो—थांरै माथै कित्तोक करजो है? "अदाजन कोई तीन मी-साढी तीन सो रो।" काई मायरो मोसेरो अथवा नुकतो काढियो हो?—वरसगाठ

रू० भे०—मामेरो, मायेरो, माहिरो, माहेरो।

माया–स० स्त्री० (व व) [स० मातृ] १ वैवाहिक अवसरो पर किसी दीवार या पाटे पर घी की सात धाराए लगाकर उस पर कुकुम की बावन बिंदियां देकर पूजनार्थ की जाने वाली मातृकाओ की स्थापना। वर-वधू को सर्वप्रथम इन्ही को प्रणाम करवाया जाता है।

उ०—१ रुखमणि अविका पूजिवा जाहिरे, साथ लीधी धर कांमणि। देवी हुइ सोहइ सयल सिणगार, माय मायां तणी माडणी।—रुकमणी मगळ

उ०—२ वइठा मायां आगळी वेऊ, छेहडा बाधा घणी छत।
—महादेव पारवती री वेलि

२ देखो 'माअका' (रू भे)

३ देखो 'माता' (रू भे)

उ०—छ तो इम छांना वच्या कन्हैया, एक रह्यो तू पास रे। तोख मायां रा राखतो कन्हैया, तू आवे छट्ठे मास रे।—जयवाणी

४ देखो 'माया' (रू भे)

५ देखो 'मावलियां'।

६ देखो 'मांया' (रू भे)

माया–स० स्त्री० [स०] १ धन की अधिष्ठात्री, लक्ष्मी-देवी।

उ०—ईहरिया आचार री, वीर चढै तो वेळ। हसत चढै चारण हुवै, माया सरसत मेळ।—वां दा

२ द्रव्य, धन, सम्पत्ति, वैभव। (अ मा, ना मा, ह ना मा)

उ०—१ देखी जे सूमां द्रूमां, एकी प्रकत अभग। जड माया घर मे जिते, इते प्रफुलत अग।—वां दा

उ०—२ मती वळै जूंभै सुभट करै ग्रंथ कविराज । दाता माया ऊधमैं, नाम उबारण काज ।—बां दा

उ०—३ इसी माया के काम री जो खरचै न खावै, ना बात मायै लगावै। अर इसी माया ही के कारणे जके प्रीत गिणै न नीत, आपो गिणै न मुलायदो कोरी पग्सगी गै जी दुखावै। का बात नैं अर का मुवाद नै। माया री रग ताना तैया मे नहीं, नाम अर काम में होणी चाहीजै।—दमदोस

उ०—४ एक बेटा रै जीवता उण री मां नैं ओ विस्वो काढणो पड्यो, धिरकार है उण रा जीवणा नै। लाणत है उण री माया मपत नैं।—फुलवाडी

उ०—५ माया का सुख पंच दिन, गर्ग्यो कहा गवार। स्वप्ने पायो राजधन, जात न लागै वार।—दादूवाणी

उ०—६ दादू माया का बळ देखकर, आया अति अहंकार। अध भया सूझै नही, का करि है सिरजन हार।—दादूवांणी

उ०—७ 'हरीया' माया जोडि करि, गाडी गोडै हेठ। माया इत की इत रही, आप गये करि वेठ।—स्री हरिरामदास जी महाराज

३ ईश्वर की एक काल्पनिक अलौकिक शक्ति, जिसके द्वारा बाह्य जगत की रचना एव भौतिक पदार्थों का निर्माण हुआ है। अपने प्रभाव के कारण यह जीव को ब्रह्म से दूर रखती है। (वेदान्त)

उ०—१ दादू माया सब गहले किये, चौरासी लख जीव। ताका चेरी क्या करै, जे रग राते पीव।—दादूवांणी

उ०—२ बाजीगर की पूतळी, ज्यों मरकट मोह्या। दादू माया रांम की सब जगत विगोया।—दादूवाणी

उ०—३ माया मैली गुण मई, घर घर उज्वल नाम। दादू मोहे सबन को, सुर नर सब ही ठाम।—दादूवाणी

उ०—४ 'हरीया' माया राम की, महा अपर बळ होय। मेरी मेरी करि गया, साथि न चाली मोय।

—स्री हरिरामदास जी महाराज

उ०—५ 'हरीया' माया मोहनी, मोह्या सुर नर नाग। एक न मोह्या राम जन, उर उपज्या वैराग।

—स्री हरिरामदास जी महाराज

वि० वि०—वेदान्त दर्शन के अनुसार ब्रह्म की अलौकिक शक्ति से ही हम यह दृश्य जगत दिखाई देता है। पुराणों मे इसी शक्ति (माया) मे चेतन धर्म का आरोप करके इसे स्त्री रूप में ब्रह्म की सहधर्मिणी माना है। इसी कारण प्राणियों को अवस्तु मे वस्तु, अस्वाभाविक मे स्वाभाविक व मिथ्या मे सत्य का आभास होता है। एक अन्य मत के अनुसार इसे अधर्म की पुत्री माना है और इसकी माता का नाम मृषा कहा है। ब्रह्म को इसका भाई बताया है जिसके संसर्ग से इसे लोभ एव विकृति नामक दो पुत्रो की उत्पत्ति हुई। सृष्टि निर्माण के समय ब्रह्मा ने इसकी सहायता ली जिससे निम्नलिखित सात वस्तुओं या शक्तियों का निर्माण किया गया —(१) गायत्री—जिससे समस्त वेदो का निर्माण हुआ, तद-नन्तर वेदों के द्वारा ससार का निर्माण हुआ। (२) सत्यवती—जिससे जीव पोषक वनस्पत्तियो एव समस्त ओषधियो का निर्माण हुआ। (३) ज्ञानविद्या—इससे सारे शास्त्रो का निर्माण हुआ। (४) लक्ष्मी—इससे वस्त्र एव आभूषण उत्पन्न हुऐ। (५) उमा—इसने शिव की सहायता से समस्त शास्त्रो का भूलोक मे प्रसार किया। (६) वर्णिका—इसने समस्त सृष्टि का भार अपने ऊपर लिया। (७) धर्म द्रवा—यह एक नदी थी जो आगे चलकर गंगा के नाम से प्रसिद्ध हुई। वस्तुत माया एक मूर्तिमान भ्रम है जो प्राणियो को भुलावा देकर ईश्वर से विमुख रखती है। जितने कार्य, बातें या पदार्थ वास्तव मे कुछ और होते हैं और दिखने मे कुछ और होते हैं इसका अंतर ही माया है।

४ सृष्टि की उत्पत्ति का मूल कारण।

उ०—१ प्रथम जळ जळाकार हुतो। तिहा निरजन निराकार वडपात माहि पोढिया हुता। तदा मन माहि इच्छा ऊपनी जु सृष्टि उपाजिसु। तदा मनसा देवी माया तै ऊपनी। माया थकी थोक दुइ ऊपना, आत्मा एक। द्वितीयो परमात्मा। ताहरा माया सेती जु मिल्यो ते जीवात्मा (अर) माया थकी जु भिन्न रह्यो ते पर-मात्मा।—द वि

उ०—२ मन मनसा माया रती, पच तत्व परकाम। चौदह तीनो लोक सब, दादू होइ उदास।—दादूवाणी

५ शैव मतानुसार मन को बाध रखने वाले चार पासो मे से एक।

उ०—माया फांसी हाथ लै, बैठी गोप छिपाइ। जे कोई धीजै प्राणियां, ताहि के गळ बांहि।—दादूवाणी

६ मन के २४ दुष्ट विकारों मे से एक विकार। (बौद्ध)

उ०—१ दादू माया सौं मन बीगड्या, ज्यों कांजी कर दुद्ध। है कोई ससार मे, मन कर दवै सुद्ध।—दादूवांणी

उ०—२ माया पापनि पैस करि, कीया क्लेजै घाव। 'हरीया' बोह वळिवतु कु रक न पहुचै राव।—स्री हरिरांमदास जी महाराज

७ छल, कपट, धोखा, प्रवचना।

८ जादू का खेल बाजीगरी, ऐन्द्रजाल।

९ अविद्या, अज्ञान, भ्रम, मोह।

उ०—माया विसरी वेलडी, 'हरीया' पसरी दूरि। केताई फळ कारणै, रह्या विसूरि विसूरि।—स्री हरिरांमदास जी महाराज

१० भ्रम या मोह वश होने वाला अनुराग, आसक्ति, ममत्व।

उ०—१ मावीतां तणी इसी ताइ माया, ध्यांन रहइ घर प्राण आधार। वाघइ सायर वळे ज्यू ही विप्र, बासुर बरस तणइ विस्तार।—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ जीवों मांही जिव रहै, ऐसा माया मोह। सांई सूधा सब गया, दादू नहिं अदोह।—दादूवांणी

उ०—३ ऊतरता एता मला, माया मोह विकार। राम न मना उतारियो, जन हरीया छिन वार।—स्री हरिरामदास जी महाराज
११ राजनैतिक धोखा-धडी।
१२ मिथ्या या अवास्तविक धारणा।
उ०—'हरीया' माया कीच मैं, केताई कळीयाह। जे कोई निकसै बापडो, सतगुर सैं मिळियाह—स्री हरिरामदास जी महाराज
१३ कोई गूढ या विलक्षण बात जो आसानी से नही जानी जा सके।
उ०—झीणी माया लीण हुय, रही प्राण सु रचि। सिघ सिन्यासी जोगना, गए मुनि जन पचि।—स्री हरिरामदास जी महाराज
१४ लालच लोभ।
उ०—१ माया करि करि मांनवी, मन में मोटी आस। 'हरीया' पांणी ओस का, पीया मिटै न प्यास।
—स्री हरिरामदास जी महाराज
१५ मन की वृति, वासना।
उ०—१ मन हस्ती माया हस्तिनी, सघन वन ससार। ता में निरभय हो रह्या, दादू मुग्ध गवार।—दादूवाणी
उ०—२ दादू माया मगन जु हो रहे, हम से जीव अपार। माया माही ले रही, डूबै काळी धार।—दादूवाणी
१६ भोग विलास की सामग्री।
उ०—१ माया सौं मन रत भया, विसय रस माता। दादू साचा छाड कर, झूठे रग राता।—दादूवाणी
उ०—२ यो माया का सुख मन करै, सय्या सुदरि पास। अत काळ आया गया, दादू होउ उदास।—दादूवांणी
१७ झझट, झमेला, प्रपच।
उ०—१ बात सुणता ई माळण री तो डचरज सू आख्यां फाटी री फाटी रैंगी। हे राम! ओ काई खिलको व्हियो अबै कीकर इण माया सू फद कटैला।—फुलवाडी
उ०—२ माया विसरी वेलडो, अघा रह्या अळूझि। जन 'हरिया' से जांनि कै, चाल्या देख सळूझि।—स्री हरिरामदास जी महाराज
१८ तान्त्रिक चमत्कार।
उ०—१ आ तो उण सपना वाळा बाग मे हीडती अपछरा है। राम जाणै आ काई माया है। काई चाळो है।—फुलवाडी
उ०—२ उण रै वास मे निसक आय नै मूडकी नै घढ सू चेपणी अर यू म्हारै मामी मुळकती जोवणी, अवस आ कोई देता उपरली माया है।—फुलवाडी
१९ रचना, लीला, खेल।
उ०—१ माया सोह सामट बाळ-मुकुद। सूतो वड पान समाधि समद।—ह र
उ०—२ तू हीज भाजै तू घडै, पोसै त्रिपुराया। दुनिया मे दीसै विका, सह थारी माया।—गजउद्धार
उ०—३ आ सगळी माया अर ओ सगळो परताप इण जीव रो ई है।—फुलवाडी
२० दैविक चमत्कार।
उ०—१ अमरु एकु पयडउ हूउ बोलइ साभलिणाह। ए माया सवि मइ करी फल्या राखे वाह।—मालिभद्र सूरि
उ०—२ कवण अखैवड विगर, प्रळै सागर सिर सोभै। कवण विना सुखदेव, देव माया नह लोभै।—रा रू.
२१ सृष्टि, ससार, जगत।
उ०—१ अनळ पखि आकास को, माया मेर उलघ। दादू उलटै पथ चढ, जाइ विलबै अग।—दादूवाणी
उ०—२ यहु सब माया मिरग जळ, झूठा झिळमिळ होइ। दादू चिळका देखकर, सत कर जाणा सोइ।—दादूवाणी
उ०—३ दादू नैनहु भर नही देखिये, सब माया का रूप। तह ले नैना राखियैं, जह है तत्व अनूप।—दादूवांणी
२२ ठाट बाट।
उ०—माया देखे मन खुसी, हिरदै होइ विकास। दादू यह गति जोव की, अत न पूगै आस।—दादूवाणी
२३ सांसारिक बन्धन।
उ०—१ दादू झूठी काया झूठ घर, झूठा यहु परिवार। झूठी माया देखकर, फूल्यो कहा गवार।—दादूवांणी
उ०—२ माया बधक बाण ज्यु, मारै अग लगाय। जन 'हरीया' तिह लोक मैं, भाजि किती लग जाय।
—स्री हरिरामदास जी महाराज
उ०—३ बेटी रै जोग वर सारू म्हैं इण माया मे झिलियो रह्यो। अबै म्हैं अत लोक रो काम करणो चावू।—फुलवाडी
२४ प्रघान या प्रकृति।
२५ दुष्टता, मन की कुटिलता। (जैन)
२६ प्रज्ञा, बुद्धि, ज्ञान।
२७ शक्ति, दुर्गा, देवी।
उ०—सच्चिदानंद व्यापक सरव, इच्छा तिण मे ऊपजै। जगदव सकति त्रिसकति जिका, ब्रह्म प्रकृति माया वजै।—मे म
२८ वैष्णवो के अनुसार विष्णु की नौ शक्तियो में से एक।
२९ नारी का एक रूप।
३० गौतम बुद्ध की माता।
३१ सप्त पुरियो मे से एक पुरी का नाम। (अ मा)
उ०—प्रथम अजोध्यापुरी, बहुरि मथुरा अरु माया। कासी कांती प्रसिद्ध, मुकत पाई जे आया।—गजउद्धार
३२ एक वर्णिक छन्द जिसमे, प्रथम पाच गुरु, फिर एक सगण, भगण अत मे दो गुरु होते हैं।
रू० भे०—माईया।
मह०—मायो।

३२ देखो 'माया' (रू भे)

उ०—१ आय वइठा माया तणइ आगळि, भरिया थाळ रतन बहु भाति।—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ दिख राजा आगळि दाखियउ, राज परीछउ काइ रुख। अचरिज सहु रहियउ अतेउरि, माया जरइ बोलिया मुख।

—महादेव पारवती री वेलि

३३ देखो 'मया' (रू भे)

उ०—जिण मुणि रुदन दया मनि जाणी। आस्रम रिख माया जित आणी।—सू प्र

३४ देखो माता' (रू भे)

३५ देखो 'मावलिया'।

३६ देखो 'मांया' (रू भे)

३७ देखो 'माया'।

मायाग्राळ—देखो 'मायाजाळ' (रू भे) (जैन)

मायाकार—स० पु० [स०] जादूगर, बाजीगर, ऐन्द्रजालिक।

मायागोलक—स० पु०—साबुन के पानी का बुलबुला, जो कि बच्चे कागज की नलिका मे फूक मार कर बनाते हैं।

उ०—जिमिउ स्वप्नराज्य, जिसिउ गधरव नगर, जिमिउ नदी पुलिनातरालि लिखित प्रासाद, जिमिउ अलातचक्र, जिसी मृग-त्रिस्णिका, जिसा मायागोलक, जिसिउ इद्र जालवन तिसिउ माया मय ससार।—व स

मायाजाळ—स० पु० [स० माया+जाल] १ सासारिक बधन, झझट, प्रपच।

उ०—घर के मारे वन के मारे, मारे स्वरग पयाळ। सूक्ष्म मोटा गूथ कर, मांड्या मायाजाळ।—दादूवाणी

२ मोहजाल, ममत्व का बधन।

उ०—सूरदास कीं अटकतो अटकतो जबाब देवतो—वा दिना म्हैं ई थोडो-घणो मायाजाळ मे फसियोडो हो।—फुलवाडी

३ चमत्कार।

उ०—भूख अर तिरस मिटिया पछै राजकवर अर मगळा जानिया इण मायाजाळ माथै विचार करियो तो वांनै अणूतो इचरज व्हियो।—फुलवाडी

४ ऐन्द्रजाल, जादू।

५ धोखा, ठगी, प्रवचना।

रू० भे०—मायाग्राळ।

मायातत्र—स० पु० [स०] एक प्रकार का तत्र।

मायाति—स० स्त्री० [स०] दुर्गा को प्रसन्न करने के लिये अष्टमी या नवमी को दी जाने वाली नर बलि। (तांत्रिक)

मायादोख, मायादोस—स० पु० [स० मायादोष] दगाबाजी करके आहार लेने पर लगने वाला दोष। (जैन)

मायापत, मायापति—स० पु० [स० मायापति] १ परमात्मा, ईश्वर

२ धनवान।

उ०—१ मायापत विडतजी री बामणी नै यें आज मगती बतावो। कोई खायो है तो आज दिन ताई म्हारो ई खायो है। म्हैं तो मागने पाणी ई नीं पीयो।—फुलवाडी

उ०—२ अबै किण री भरोसो! निराम मायापतिया री मन भगवान माथै हुलसियो। ठोड ठोड मिंदरा री नींवा दिरीजण लागी। जूना मिंदरा मे अस्टपोर पूजा होवण लागी।—फुलवाडी

मायापास, मायापासु—स० पु० [स० माया+पाश] माया का बधन, मोहजाल।

उ०—पसुबधन जिम छोडिय मोडिय मायापासु। असिव निवारण वारण वलिउ तहिय उदासु।—जयसेखर सूरि

वि० वि०—देखो माया' (५)।

मायावी—देखो 'मायावी' (रू भे)

मायामोसो—स० पु०—कपट पूर्वक बोला जाने वाला झूठ। (जैन)

मायामोह—स० पु० [स०] १ विष्णु के शरीर से निकला हुआ एक कल्पित पुरुष जिसने असुरो का दमन किया था। (पौराणिक)

२ विष्णु का एक अवतार।

३ माया के प्रति होने वाला मोह।

मायावत, मायावत—स० पु० [स० मायावत्] १ धनवान, धनाढ्य।

उ०—स्याम सुभायक मेघ, मेघ नह मायावतह। मायावतह साह, साह नही खर अतह।—र. ज प्र.

२ कस का एक नाम।

३ राक्षस।

वि०—१ छली, कपटी, धोखे-बाज।

२ मायावी, बाजीगर, जादूगर।

उ०—पावा लाग्यो पदमयो जिका वैंटे रुकमणी जादुराय। माया-वत हो स्री क्रसणजी पीतावर पहराय।—रुकमणि मगळ

३ भ्रमात्मक असत्य।

मायावती—स० स्त्री० [स०] १ कामदेव की स्त्री रति का एक नामान्तर जो उसने शबरासुर के यहा रहते समय धारण किया था।

२ प्रद्युम्न की स्त्री का नाम।

मायावाद—स० पु० [स०] ब्रह्म सत्य और जगत मिथ्या का सिद्धान्त। इसमे समस्त सृष्टि को मिथ्या व असत्य माना जाता है।

मायावादी—वि० [स० मायावादिन्] 'मायावाद' के सिद्धान्त को मानने वाला।

मायावियो—देखो 'मायावी' (अल्पा, रू भे)

उ०—केई वेरागी आलोवसी, आलोवे नही लपटी रे। आठ बोल ठाणायग कह्या, मायाविया होय कपटी रे।—जयवाणी

मायावी—स० पु० [स० मायाविन्] १ ईश्वर का एक नाम।

२ ऐन्द्रजालिक, बाजीगर, जादूगर।

३ कपटी, धोखेबाज, छलिया।

४ मय दानव के पुत्र का नाम जिसकी मा का नाम हेमा था। यह वालि द्वारा मारा गया।
५ माजूफल।
६ बिडाल, बिल्ला।
७ धनवान।
वि०—१ विचित्र एव रहस्यमय कार्य करने वाला, तरह तरह की मायाए रचकर प्रभावित करने वाला, बाजीगरी मे निपुण।
उ०—१ कहैं क्या व्यावेधो, कहन नहि आवै कुळ कुळै। मदांधो मायावी तुम रु हम भावी सम तुलैं।—ऊ का.
उ०—२ अर जे इण मायावी ऊट नै छेड़ू तो परतख इण जम रै हाथा मौत है।—फुलवाडी
२ माया सम्बन्धी।
३ माया के रूप मे होने वाला।
४ जादू आदि से सम्बन्ध रखने वाला।
रू० भे०—मायावी।
अल्पा०—मायावियौ।

मायाबीज-स० पु०—ह्रीं नामक तांत्रिक मत्र।

मायासपत-स० स्त्री० यौ० [स० माया+सपति] धन-दौलत।
उ०—माईतां रौ हुकम अर वारी पग धूळ माथा माथै, टावरा री मायासपत आ इज है।—फुलवाडी

मायासीता-स० स्त्री० यौ० [स०] सीता हरण से पूर्व अग्नि द्वारा वास्तविक सीता को हटाकर रखी गई एक कल्पित सीता। (पौराणिक)

मायास्त्र-स० पु० [स० माया-अस्त्र] एक प्रकार का कल्पित अस्त्र।

मायी-स० पु० [स० मायिन्] १ माया का अधिष्ठाता, ईश्वर।
२ कपटी, गुडा, छलिया।
३ बाजीगर, जादूगर।
४ मायावी।
स० स्त्री० [स० मातृ] ५ मौसी।
६ माता, मां।
रू० भे०—माइल्ल।

मायूस-वि० [अ०] १ निराशा, हताश।
२ उदास।

मायूसी-स० स्त्री० [अ०] १ मायूस होने की अवस्था या भाव।
२ निराशा, उदासी।

मायेरौ—देखो 'मायरौ' (रू भे)

मायै—देखो 'माय' (रू भे)

मायोड़ो-भू० का० कृ०—१ समाया हुआ २ निमा हुआ, खटा हुआ ३ सहन या बर्दाश्त हुवा हुआ ४ हजम हुवा हुआ, पचा हुआ (स्त्री० मायोडी)

मायौ—१ देखो 'माता' (मह, रू. भे)
उ०—१ देस यसा जगि विरजयौ, रागा देवी मायौ जी। सरव भूति नामे पिता, ससिहर चिन्ह सुहायौ जी।—म कु
उ०—२ मोने तो रोवांणी तमे, अब तो किया करायौ रे। लीजो पदवी सिवपुर तणी, कांई दूजी म रोवाये मायौ रे।—जयवाणी
२ देखो 'माया' (मह, रू भे)
३ देखो 'मईयौ' (रू भे)

मार-स० पु० [स०] १ कामदेव, मदन। (अनेका, अ मा, ह ना. मा)
उ०—नायक तीजी नार रौ, मो दुख दायक मार। घरणी घर खावद धके, परणी करै पुकार।—वा. दा
२ श्री कृष्ण के पुत्र प्रद्युम्न का एक नामान्तर।
उ०—ए प्रदिमन का नाम जु कांमदेव कौ अवतार। दरपक। कांम कुसमायुध। सवरारि। रतिपति। तनसार। समर। मनोज। अनग। पचसर। मनमथ। मदन। मकरधज। मार। ए प्रदिमन का नाम। —वेलि टी
३ आघात, प्रहार, चोट।
उ०—१ मच धांम धूम सर सेल मार। पड आस आस आठू पुकार।—रा रू
उ०—२ राजा 'गाजी' सारिखा, से वड्डा सिरदार। दखणी मार मनाविया, मार कहीजै सार। मार सार मारकां इळा हूवै आपांणी, मुहि खग्गां है-खुरा, जेह रक्खी ते माणी।—गु रू व
उ०—३ चंत्रइ चपक कुमलआ, होडीले सहिकार। तरु अर बहु पल्लव धरइ, 'मारि' करइ बहु मार।—मा का प्र
४ युद्ध, झगडा, लडाई।
उ०—महाबळ वीर बहादुर मार, करै दहुवै बळ पार कटार। घलै दहुवै वळ खजर घात, दहू बळ पजर पार दिखात।—मे. म
५ घायल, घावों से पूर्ण।
उ०—अठै कवर वडो पराक्रम कियो, आदमी च्यार मार कवर खेत पडियौ, वा सत्रसालजी आदमी सात मार खेत पडिया। घावा सू मार हुवा घूमै है।—द दा.
६ विष, जहर। (अनेका, ह नां मा)
[फा०] ७ नाग, सर्प।
[स०] ८ अमृत। (अनेका ह नां मा)
९ निशाना, लक्ष्य जिस पर वार किया जाय।
१० गोली आदि के वार की सहारक शक्ति की सीमा।
११ सहारक, नाशक।
उ०—नमौ मकराख्य इद्रजीत मार। नमौ खव राकंस-वस-सहार। —ह र.
१२ मारक या नाशक तत्व।
१३ धतूरा।
१४ कार्य या उत्तरदायित्वो का पडने वाला अत्यधिक दबाव, बोझ।
१५ विघ्न, अडचन, बाधा।

१६ प्रेम, अनुराग, ।
१७ हनन, नाश ।
१८ चमड़ा भिगो कर रंगने का पानी । (चमार)
१९ श्वेत, सफेद । (डि. को)
सं० स्त्री०—२० मारने की क्रिया या भाव ।
२१ मार-पीट, पिटाई ।

उ०—नही ग्रावे जाव, पड़े जम ग्राव । दीवी मार दूता, गुरज घोट धूया ।—स्री मूळदासजी

२२ जिस वस्तु पर मार पड़े ।
२३ भूमि, पृथ्वी । (ग्र मा)
२४ पराजय, हार ।
२५ मृत्यु ग्रौर मौत ।
२६ हानि, नुकसान ।
[ग्रव्य०] १ बुरी तरह से ।

उ०—१ रांणी ग्रापरी ग्रास्या देख्यो के एक चिड़कली रोमनदान रा काच सार्थ मार टूचा मारै है ।—फुलवाड़ी

उ०—२ म्हारा मोती म्हारा मोती बेलती वी मोत्या रा ढिगला मे मार ग्रठी उठी लुटण लागी ।—फुलवाडी

रू० भे०—मार ।
ग्रल्पा०—मारो ।

मारकड, मारकडे, मारकडेय, मारकडेव–स० पु० [स० मार्कंड, मार्कंडेय] १ भृगु कुलोत्पन्न एक ऋषि जो चिरजीवियो मे माना जाता है । इनके पिता का नाम मृकड था ।

उ०—देवी मारकडे महा पाठ वाच्यो । देवी लगो तव पाय नो पार लाधो ।—देवि.

२ ग्रगिरा कुलोत्पन्न एक गोत्रकार ।
३ एक ऋषि जो ग्रयोध्या के राजा दशरथ के उप-ऋत्विजा मे से एक था ।
४ एक ग्राचार्य, जो वायु पुराण के ग्रनुसार व्यास की ऋक् शिष्य परपरा में से इद्रप्रमति ऋषि का शिष्य था ।

मारक–वि० [स०] १ मारने वाला, घात करने वाला ।
२ प्रहार या ग्रघात करने वाला ।
३ प्रतिघात करने वाला ।
४ किसी के प्रभाव को नष्ट करने वाला ।
स० पु० [स०] १ प्लेग ग्रादि सक्रामक रोग ।
२ कामदेव ।
३ हत्यारा, घातक ।
४ बाज पक्षी ।
५ वार, मार ।
६ निशान, लक्ष्य ।

उ०—तीरां गोळीग्रा रै मारक पड़तै जिनावर पाख ममारण न पावै छै ।—रा सा स.

रू० भे०—मारक्क, मारिक ।

मारकट–स० पु०—१ शृ गार मे एक ग्रासन ।
२ देखो 'मरकट' (रू भे)

मारकण, मारकणौ–वि० (स्त्री० मारकणी) १ मारने वाला, प्रहार करने वाला, सहार करने वाला । २ देखो 'मारणौ' ।

मारकाट–स० स्त्री० यो० १ लडाई, झगड़ा ।
२ किसी को मारने या काटने की क्रिया या भाव ।

मारकीन–स० पु०—एक प्रकार का मोटा कोरा कपडा ।

मारकुग्रो–स० पु०—वार झेलने वाला, प्रहार का जवाब देने वाला ।

उ०—ग्रळगी ही नैडी की उखवते, देठाळो हुग्रो दळां दुहू । वाग ढेरविया वाहरुए, मारकुए फेरिया मुह ।—वेलि

मारकेट–स० पु० [ग्र० मार्केट] बाजार ।

मारकेस–स० पु० [स० मारकेश] जन्म कुडली मे पड़ने वाले कुछ विशिष्ट ग्रहो का योग जो ग्रमगळकारी होता है । यह ग्रष्टम, द्वितीय ग्रौर सप्तम स्थान की दशा बतलाता है ।

मारको–स० पु० [ग्र० मारिक] १ युद्ध, लड़ाई, सग्राम ।
२ उपद्रव, हगामा ।
३ महत्वपूर्ण घटना ।
४ महत्वपूर्ण कार्य ।
५ प्रहार ।

उ०—१ फौज रो मारको रेढा ऊपर पडै छै। रेढो उण रै तूट री देवै छै सो घोडो नै सवार गुड भेळा हुवै छै ।—डाढाळा सूर री बात

उ०—२ भाजतां रै पूठै लोग लागियो पाखती रा ग्रसवारा भेळियो सो मारको पडियो तीसू लोग सारो बाढ उतारियो ।
—कुवरसी साखलै री वारता

उ०—३ ग्रातम ग्रागवा हुवायां रो मारको पडि नै रहियो छै ।
—रा सा स

६ योद्धा, महाभट्ट, वीर, बहादुर ।

उ०—१ विढण किलियाण रा मारको वड वडी । सेत कनवज सिरो, राम ग्रायो खडी ।—द दा.

उ०—२ 'मान' सुत ग्रनै 'किसनेस' सुत मारका, सार का कोट ग्ररगेज सारा । थापिया एक छत्र एक ऊथापिया, धापिया सनमधी फूल-धारां ।—रामसिंह हाडा नै राजसिंह राठोड रो गीत

उ०—३ उपाडे किता मारका खैग ग्रागा । लडेवा जिकां सीस गैणाग लागा ।—सू प्र

उ०—४ एका एक ग्रभग भड, थिया थिडवै थट्ट । मारू मांझी मारका, कुण कुण वडा सुभट्ट ।—गु रू व

उ०—५ ग्राज दिन परस्यो छै मारको, लडाई रो मूस मरदां री छै जिण चोखा सोना विगैर नही रहै । मैळ वाळो घट जाय ।
—नी प्र

७ किसी का प्रतीक ।
८ चिन्ह, निशान ।
९ व्यापारिक चिन्ह, छाप । (ट्रेड मार्क)
१०—शिर से प्रहार कर मारने वाला या आक्रमण करने वाला पशु ।
वि०—१ मारने वाला, मार करने वाला ।
उ०—१ सुणी भडा 'अजमाल' रा, आयौ राव चलाय । भडा सकाजा मारकां, वणी गरज्जा आय ।—रा रू
उ०—२ सोक पडै सायकां, सेल धमरोळ सताबा । मिळै लोह मारकां, नरिंद हरवळा नबाबां ।—सू प्र.
२ प्रबल, शक्तिशाली, बलवान ।
उ०—१ मडळीक कळोघर मारकौ, ऊससि लग्गौ अबहर । आइयौ तांम प्रमि ऊलके राम भीची जिम राजघर ।—गु. रू व
उ०—२ खुरम कटक्कं अग्गळो, साह दळै असमान । मूळ न मावै मारका दोय खडा इक म्यांन ।—गु रू व
३ भयकर, भयावह ।
४ जबरदस्त ।
उ०—मारू परघर मारका ठहरे समहर ठोड । ऊखाणौ उजवा-ळियो, चढ़ जयमल चीतोड ।—बा दा
५ आन-बान वाला ।
उ०—निरभयगढ निवाई गाम छै, देगतेग बर दायेक बगसीराम नाव छै । देस परदेस में मारकौ कहावे छै ।
—बगसीराम प्रोहित री बात
रू० भे०—मारक्को ।
मारक्क—देखो 'मारक' (रू भे)
मारक्को—देखो 'मारको' (रू भे)
उ०—असख फौण आोपति बहुत चीघा वैरक्का । मारवाड मर-जाद भडा अनडा मारक्का ।—गु रू व
मारखाई, मारखाही–स० स्त्री०—चोरी के माल का पता लगाने वाले को दिया जाने वाला धन ।
वि०—उक्त कार्य करने वाला ।
मारग–स० पु० [स० मार्ग] १ रास्ता, पथ, सडक । (डिं को)
उ०—१ जिण री सगति रे प्रभाव स्वग्गलोक रो मारग मुद्रित कराय कुंभीपाक रो निवास भाळियो ।—व भा
उ०—२ कवण वध मारग करै, दिम च्यारू निस दीह । सीहा सू साकै सको, सांकै किण सू सीह ।—बा दा
उ०—३ सल्या विण लीधा दळ साथै । मारग पडै पहाडां माथै ।
—रा रू
उ०—४ राजा सोच्यौ इण मिचळाद रा डर सू रैयत चुपचाप आपरो मारग लेय लेवैला ।—फुलवाडी
पर्या०—अयनक, इकपदी, गैलो, पथ, पथ, पदवी, पद्धति, पविभाग, बाट, मग, सरणी ।
मुहा०—१ मारग चालणौ=रास्ते पर चलना, मृत्यु हो जाना । २ मारग पकडणौ=धधे लगना, सही आचरण करना । ३ मारग मारणौ=लूट-पाट करना । ४ मारग लागणौ=राह लेना, रवाना होना । ५ मारग लेणौ=देखो 'मारग लागणौ' ।
२ पगडडी, वीथि ।
३ जगह स्थान ।
४ चिन्ह, निशान ।
५ सम्प्रदाय, पथ ।
उ०—सुणि बात है साच सिद्धत सु ग्यान की बोहत गुणी करणी बलिहारी । प्रथ्वी के तारक पच मे आरमे भीखण स्वामी का मारग भारी ।—भि द्र
६ अनुसधान, खोज ।
७ कार्य सिद्धि का माध्यम, साधन, उपाय ।
८ ढग, तौर, तरीका ।
९ अभिनय, नृत्य और सगीत की एक उच्च श्रेणी की शैली ।
१० अगहन या मार्गशीर्ष मास ।
११ मृगशिरा नक्षत्र ।
१२ ग्रह का रास्ता ।
१३ विष्णु । १४ नहर ।
१५ नाली । १६ कस्तूरी ।
१७ मलद्वार, गुदा । १८ धर्म, कर्त्तव्य ।
उ०—१ गुरा नें कहै मोनै त्रिसा घणी लागी गुरा कह्यो—साधु रो मारग है सैंठाइ राखौ ।—भि द्र
उ०—२ तीडै पाट सलख कुळ तारग । महि मरजाद खत्रि ध्रम मारग ।—रा रू
उ०—३ राणी कही, 'बाई रै तो घर रो खावद थो, मुळावै चुकावै । तै गो मारग हीज छै ।—कुवरसी साखले री वारता
१९ मृत्यु, मौत ।
उ०—राजकवर अर राजा नै छोड नै सेवट रांणी तो आपरै मारग चाली ।—फुलवाडी
मुहा०—१ मारग चालणौ=मर जाना, ससार को छोडकर चले जाना । २ मारग लागणौ=देखो मारग चालणौ' ।
२० तरीका ढग ।
उ०—स्रम ना आवै जीव को, अणकीया सब होइ । दादू मारग महर का, विरला बूझै कोइ ।—दादूवांणी
रू० भे०—मग, मग्ग मग्गि, मघ माग, मागि मागु, मारगि, मारग्ग, मारिग ।
अल्पा०—मग्गड, मग्गडो, मागडो, मागडो, मारगियो ।
मारगण, मारगन–स० पु० [स० मार्गण]—१ भिक्षुक, याचक, मांगने वाला, (अ मा, ह ना, मा)
२ तीर, बाण, सायक, सर । (अ मा, डिं ना मा, ह. ना. मा)
स० स्त्री०—३ मांगने की क्रिया या भाव, याचना ।

४ खोज, अनुसधान तलाश।
५ पांच की सख्या ❀ (डिं को)

मारगमास–स० पु०[स मृग-मास] मार्गशीर्ष का महिना।
उ०—माठी थाइ मालती, कमल तणा कुल-नास। विरहणीयां दुख दाखविट, मरि नू मारगमास।—मा का प्र

मारगसिर, मारगसिरि–स० पु०[स० मार्गशीर्ष] १ मार्गशीर्ष मास।
उ०—मारगसिरि ऊभी रही, मारगसिर सुणि मास। चखि चुहुटी चिश्राम जिम, मुभनइ माधव-आस।
पर्या०—अगहण, मगसर, सवत आद, सह।—मा का. प्र
[स० मार्गशिरी मार्गशीर्षी] २—पूस मास की पूर्णिमा।
[स० मृगसिरस] ३—मृगशिरस नक्षत्र।
उ०—मारगसिरि ऊभी रही मारगसिर सुणि मास। चखि चुहुटी चिश्राम जिम, मुभनई माधव-आस।—मा का. प्र

मारगि—देखो 'मारग' (रू भे)
उ०—जुदा हुए जिद जीव, भ्रिग मग आंमूझे मरे। मारगि वहतै मांडिओ, दाणव प्रळै दईव।—वचनिका

मारगियौ—देखो 'मारग' (अल्पा, रू भे)
उ०—थारो मारगियो लीलांणी, घरे पधारो ओ राज! म्हारा सायीहा रे।—लो गी

मारगी, मारगु, मारगू–वि०[स० मार्गिन्, मार्गी] १ मारग का, मार्ग सम्बन्धी।
२ किसी पथ या सम्प्रदाय का मानने वाला, अनुयायी।
उ०—ओधार महता कथा गाखवा समदां कडे, स्त्री हुथा रामचयु लई मारीच सुवाह। मारगी कदीम रूक चलाक भारथा मुडे, 'दयाल' मारगी तथा आहुडं दुवाह।—दादूपथी साधां री गीत
स० पु०—१ राहगीर, पथिक।
उ०—लांबा पैंडा सू थाकयोडो कोई मारगू भोजन रै उपरांत पांवणा रूपी अवतरै तो उण री सरवरा अर आव-आदर करणा सू सुरग रो लाभ व्है।—फुलवाडी
२ सगीत में एक मूर्च्छना।

मारग्ग—देखो 'मारग' (रू भे)
उ०—भरै मांग सिंदूर मारग्ग माळै, वहै सांमलो अज्ज सेरी विचाळै।—ना द

मारच–स० पु० [अ०माच] १ गमन प्रस्थान, कूच।
२ ईस्वी सन् का तीसरा मास।

मारजण–स० पु० [स० मार्जन] १ नहाने या सफाई करने की क्रिया या भाव।
२ सफाई, स्वच्छता।
उ०—आगै जाइ आलि केलि गृह अन्तरि, करि अगण मारजण करेण। सेज विचाज खीर सागर मजि, फूल विचाज सजै तसु फेण।
—वेलि

३ नहाने की क्रिया, स्नान।
४ उबटन, मालिश।
५ माजन क्रिया।
६ प्रतिलेपन।
उ०—इतै फग्ग पख तेरस आई, सरस वणी गढ तणी सभाई। अजिर मारजण गुण ओपाया, महले नवरग चित्र मडाया।
—रा रू

७ सुधार, परिमाजन।
८ अभ्यास, रियाज।
रू० भे०—माजण,

मारजणी–स० स्त्री०[स० मार्जनी] १ झाडू, बुहारी
२ सगीत के मध्यम स्वर की चार श्रुतियो मे से अतिम श्रुति।

मारजर,मारजार मारजारी–स० स्त्री०[स० मार्जर, मार्जारी] १ बिल्ली, बिलार।
२ ऊद बिलाव।
३ मुश्क, कस्तूरी।
रू० भे०—मजार,
अल्पा०—मजारडी, मजारी, मझारडी, मजारडी मजारी,

मारजारी टोडी–स० स्त्री० [स० मार्जारी-टोडी] सम्पूर्ण जाति की एक रागनी।

मारण–स० पु० [स०]१ मारने या हत्या करने की क्रिया या भाव।
उ०—दुस्टी वाता तो कैडी मीठी-मीठी करै, पण मांय रा मांय घाप नै मारण रा करतब रचै।—फुलवाडी
२ विष, जहर। (अ. मा, ह ना मा.)
३ एक मत्र विशेष।
उ०—कामण, मोहन, मारण, थमन, जगम, थावर, जडी, बूटी, जत्र, मत्र।—पचदडी री वारता
४ मनुष्य को मारने के लिए किया जाने वाला एक तात्रिक प्रयोग। तात्रिक षट्कर्मों मे से एक। (कल्पित)
वि०—१ मारने वाला, हनन करने वाला, नष्ट करने वाला।
उ०—नमो प्रहलाद उबारण ब्रम्म ,नमो अग-कामव मारण ब्रम्म
—ह र

२ मिटाने व दूर करने वाला।
उ०—राघव तण जोडि गुण रूपक। मारण दळिद्र वधारण माम।
—ह नां मा

मारण, मरण–वि० यौ०—मार कर मरने वाला।
उ०—पडती वाथ साथ पलटतै, हाथ वखाणि वखाणि हियो। मारण मरण मारकै मैंणे,कूड ऊपनै साच कियो।
—कल्याणदास जाडावत

मारणी–स० स्त्री०[स० म्ना-अभ्यासे=ल्युट्=म्नानी] १ पाठशाला में सध्या समय छात्रों द्वारा बोली जाने वाली गिनती।

२ देखो 'मारणी' (स्त्री)
रू० भे०—मुआरणी,

मारणो–वि० [स० मारण] (स्त्री० मारणी) १ मारणे वाला, सहार करने वाला।
उ०—मार दइता घणा राकसा मारणो। भखं पळ धारणी रगत भेळो।—खेतसी वारहठ।
स० पु०—किसी के पास जाने पर शिर हिलाकर वार करने या आघात करने वाला पशु। इस प्रकार के स्वभाव वाला।
उ०—बोल्यौ–हिरणी हिरणी आगी होय, म्हारा बळद मारणा।
—फुलवाडी

मारणौ, मारबौ–क्रि० स०[स० मारण] १ किसी के जीवन का अन्त करना, प्राण लेना, वध करना, हत्या करना।
उ०—१ म्हारा सू आ वात देखणी नीं आवं इण विचं तो आप म्हनै आप रे हाथा मार न्हाको तो म्हनै सायत मिळे।—फुलवाडी
उ०—२ मारे खान चडो रण मडो। खळ पकडो मारो बळ खडो।
—रा रू
उ०—३ काधळजी वरस तो ७३ मे हा पिण पिंडे आप वडो झगडो कियो। आदमी इकीस मारनै सारगखान नू तरवार वाही।
—द दा

२ आघात या प्रहार करना, पीटना, चोट लगाना।
उ०—१ छाती माथै गोडा देयनै जूता मार मारनै उण रे माथा रो माल पुवो कर दियो।—फुलवाडी
उ०—२ मयदी वणो कान्हूरै थाप मारी। तरी साह तोफांन रै माह तारी।— मे म
३ मिटाना, नष्ट करना। (उ र)
४ सजा देना, दण्ड देना।
५ लूट-मार करना, लूटना, छीनना।
उ०—१ पोछै राजासर सू साथ करनै काधळजी चढ़िया, सू हमार रो काठो सरब मारियो।—द दा
उ०—२ आदमी सवार पाळा आपरा साथ लिया सो जाय सरसे दोड़िया वित मारियो गांव मारिया।—ठाकुर जैतसी री वारता
उ०—३ खाडाळ रा गाव १० मारनै वित लीनो।—नैणसी
६ कब्जे में करना।
७ दुखी करना, परेशान करना, सताना, मानसिक कष्ट देना।
८ इच्छा या किसी मनोविकार को बल पूर्वक दवाना।
उ०—आसा तो एको भली, दूजी भली न काय। दूजी आसा मारिसी 'हरिया' जुग मे आय।—स्री हरिरांमदासजी महाराज
९ पछाड़ना, पटकना।
१० अपने विपक्षी या प्रतिद्वन्दी को हराना, परास्त करना।
११ प्रतियोगिता मे किसी को पीछे रखना।
१२ खेल में गोटी या पत्ते का हराना।
१३ किसी वस्तु को किसी अन्य वस्तु से जोर से फेंक कर या पटक कर टकराना।
१४ किसी योग्य न रहने देना, अयोग्य या निकम्मा बना देना, बल या प्रभाव समाप्त कर देना।
१५ मरणासन्न स्थिति मे करना।
१६ गुण समाप्त कर देना।
१७ स्त्री प्रसग करना, मैथुन करना।
उ०—पण दळकरण मांनै नही इतरै फेर ही आय गळ बाखडी मारी और नसे मे कही थारी मा कू मारू।
—भाटी सुदरदास वीकूपुरी री वारता
१८ अनुचित ढग से हथियाना, हडपना।
१९ धातु आदि की भस्म बनाना। (वैद्यक)
उ०—भणत एक व्याकरण, वीर इस्ट के करै। तरक नीति सासत्राणि एक मुक्ख उच्चरै। मारत एक सब्ब धात केळवै रसायण, अगाध वैदराज राज ओखदी विचारण।—गु रू वं
२० शिकार करना।
२१ उद्विग्नता से प्रयास करना।
उ०—दोनू हाथां सूं झापळिया मारतो होद मे फुरती सू कीं हेरण लागो।—फुलवाडी
२२ लगाना, देना, भिडाना।
उ०—१ तळाव रो मुहरत पूछिनै ले जाइनै नीव मारी भलै गुहरत।—जसमा ओडणी री वात
उ०—२ घोड़ां तुरकीया राहदार उपर नांख पाखर दोना ही पाखतीयां लगाय तरगस कूटा मारघा भडीया रो भोलावट हाथ माहे ले वरछी नै राणी दहड चढी, सकत रूप धार।
—राजा नरसिंह री वात
२३ समिश्रण करना, मिलाना।
उ०—ओझरा घोय-घोय माहे मसाला मारियो मास धात दवगर कीजै छै।—रा सा स.
मारणहार, हारो (हारी), मारणियो—वि०
मारिओडो, मारियोडो, मारयोडो—भू० का० कृ०
मारीजणो, मारीजबो—कर्म वा०
मारिणो, मारिबो—रू० भे०

मारतड–स० पु०[स० मार्तंड] १ सूर्य, रवि, भानु। (अ मा, ना मा)
उ०—१ अर रज धूम रा बितान मैं मारतड रा मयूख अतरधांन विद्या रो अभ्यास घरण लागा।—व भा
उ०—२ माप का बिहाई सा प्रताप का निदांन। मारतड आगे जिसी जोतसी जिहान।—रा रू
२ आक वृक्ष, मदार।
३ शूकर, सूअर।
४ वारह की सख्या। ✿ (डि को.)
रू० भे०—मारतुड,

मारतटमडळ–स० पु० यो०[स०मार्तंड-मण्डल] सौर मण्डल, सूर्य का मण्डल ।

मारतडसुत–स० पु० यो०[स० मार्तंड सुत] १ सूर्य पुत्र कर्ण ।
२ यमराज ।
३ सुग्रीव ।
४ शनिग्रह ।

मारत—१ देखो 'मारुत' (रू भे) (ह ना मा)
—२ देखो 'मारुति' (रू भे.)

मारतुड—देखो मारतड' (रू भे०)
उ०—झड़ फरक्कै मदाळा पीठ ग्रारवा नग्रीठा भड़ै, धूपडा ऊघड़ै वे विरदां सूर वीर । रमै दे घुमडा वीर मारतुडां रूके राह हूकै बीच यडा जठै उठ्ठा 'हमीर' ।—फतहराम ग्रासियौ

मारतोल–स० पु० [पुर्त० मार्टेलो] एक प्रकार का बडा हथौडा ।

मा'रथी—देखो 'महारथी' (रू भे)

मारपीट–स० स्त्री०—१ मारने-पीटने की क्रिया या भाव ।
२ वह झगडा या लडाई जिसमे परस्पर पिटाई होती है ।
३ हाथा पाई ।

मारफत–ग्रव्य० [ग्र० मारिफ्त] १ द्वारा, जरिये, माध्यम से (ग्रू) ।
उ०—१ इण दीवाणगिरी रै मारफत म्हनै ग्रापरी सेवा करण री मोको हाथ ग्रायो है ।—फुलवाड़ी
उ०—२ इणरै मारफत हाथी री करडी खाल चीरावण री जुगती बिठाव ।—फुलवाडी
२ किसी को बीच मे रख कर ।
उ०—उठै वखतै साहणी री मारफत वखतसिंहजी सू वात ठहराई ।—मारवाड रा ग्रमरावा री वात

मारमिक–वि० [स० मार्मिक] १ मर्म का, मर्म, सम्बन्धी ।
२ मर्म स्थान (हृदय) पर प्रभाव डालने वाला ।
३ किसी विषय, वात या वस्तु के मर्म को जानने वाला ।
४ किसी विषय के ग्रन्तर्निहित तत्व के ग्राधार पर होने वाला ।

मारव–स० पु० —१ राठौड
उ०—१ तद वार ग्रम पुरसां तणी, ग्राय वणी जग ऊपरां । महाराज तणै छळ मारवां, धारी लाज सुरद्धरां ।—रा रू
उ०—२ होरवा राग सिंधु हुवा, दगे तोप भळ दारुवां । ग्रम्ह सम्हा गैठ गोळा उडै मारू घर कजि मारवां ।—सू प्र
२ मरु देश ।
३ मारवाड का निवासी, मारवाडी ।
४ देखो 'मारू' (रू भे)

मारवण, मारवणि, मारवणी–स० स्त्री०—१ प्रेयसी, प्रियतमा ।
उ०—१ ग्राव म्हारा मारुडा मारवण तो बुलावै छै । खान-पान जर जेवर न भावै, ठवै नै एक तुही सुहावै ।
—रसीलै राज री गीत
उ०—२ मन ढीग जाय महेस रो, वेस वणाय विसेस । महलां तोने मारवण, पोचास्या कर पेच ।—पना
उ०—३ चालो चालो चवा बाग वाडी में ग्राज । मारू छी कत मारवणी नारी, थां दोनां री छै चगी जोडी जी ।
—रसीलै राज री गीत
२ पूगळ की राजकुमारी, जो नरवर के राजकुमार ढोला की पत्नी थी ।
उ०—पिंगळ-पुत्री पदमिणी,मारवणी तिणि नांम । जोडी ग्राइ विचारियउ, धन्न विधाता कांम ।—ढो. मा
३ मरु देश की स्त्री ।
४ एक मारवाडी लोक गीत ।
५ देखो 'मरवण' (रू भे)
उ०—१ ग्रायी ग्रायी मारवाणी मिळण मारूडो, घर ग्रायो छै म्हा वालो पीव ।—रसीलै राज रो गीत
उ०—२ पधारो गोरी रा साहिवा मानो मारवण री मनवार ।
—लो गी
रू० भे०—मारुणि, मारुणी मारुवणि मारुणी, ।

मारवधरा–स०स्त्री०—देखो मरुधरा' (रू भे)
उ०—जिण रीति भाई नै पाळी हुवो देखि मारवधरा रो कवाड कनक प्रतिहार ग्रसि री ग्राघात देर प्रथ्वीराज रा ग्रस्व री ग्रस उडाय पाडियौ ।—वं भा

मारवराव—देखो 'मारूराज' (रू भे)

मारवा–स० स्त्री—एक सकर राग (सगीत)

मारवाड–स० पु० [स० मरुपाट, प्रा मरुग्राड] राजपुताने का वह प्रदेश जहा राठौडो का राज्य था ।
उ०—१ उज्जैण नरपति महाराज वीर विक्रमादित्य रा प्रताप थी । माळवौ, निम्यार, खानदेस, वराड, मेवाड, गुजरात, मारवाड, ढूढार, ग्रन्तूवध, गुडवानो ।—सिंघासण बत्तीसी
उ०—२ जनपद मारवाड धनि जिणमे, जनमी जोति जागती
—मे म
रू० भे०—मरुग्राडि, मारुग्रडि, मारुग्राड, मारुग्राडि, मारुग्राड मारुयाड मारुयाडि, मारूग्राड, मारूग्राडि, मारूयाड, मारूयाडि, मारूयाड, मारूयाडि,

मारवाडी–स० स्त्री०—१ मारवाड प्रदेश की भाषा ।
स० पु०—२ मारवाड प्रदेश का निवासी ।
वि० स्त्री०—मारवाड की, मारवाड सम्बन्धी ।
उ०—डेरा वादिसाहा मारवाडी भूमि कीना, जैपुर जोधपुर का भायपा नै साथि लीना ।—शि व
रू० भे०—मारुयाड, मारुयाडि मारूयाड, मारूयाडि मारुयाड, मारूयाडि ।

मारवाडो–स० पु०—१ मारवाड का ग्रधिपति ।
२ राठौडो के लिये प्रयुक्त होने वाला शब्द, राठौड ।
उ०—१ हथियां धूधली नाथ कळाई ऊजळो रूका । मारवाड़ा

दिल्ली ने मिळाई वूड माय ।—नवळजी लाळस

उ०—२ ऊपटी ग्रापगा के ववके स्रोण धारवाडा, मारवाडा हकी हकी, वके मार मार । चोडडी हवदा खासा वाग रा टलां सु चलें, हलें हमला मू माथा नाग रा हजार ।—हुकमीचद खिडियो

वि०—१ मारवाड का मारवाड सम्बन्धी ।

मारवी-स० स्त्री०—१ मरु प्रदेश की स्त्री ।

२ एक रागिनी विशेष ।

रू० भे०—मारुवी,

मारवीराव, मारवैराव, मारवौराव—देखो 'मारूराज' (रू भे)

उ०—पमग ग्रफाळि सुरज्ज पसाव । रोळा मझि मेलियो मारवैराव ।—सू प्र

मारसलला-स० पु० [ग्र० मर्शल-लॉ] १ किसी देश के शासन का सेना को सौंपे जाने का ग्रादेश ।

२ प्रजातात्रिक शासन व्यवस्था में गड़बडी हो जाने पर उसमे सुधार लाने व व्यवस्थित करने के लिये, कुछ समय के लिये लागू किया जाने वाला सैनिक शासन, फौजी हूकूमत ।

मारहट—१ देखो 'मरहठो' (मह , रू भे.)

२—देखो 'मरहठ' (रू भे)

मारहटी—देखो मरहठी' (रू. भे)

उ०—जूझवां फुहार टक्र उडे घके ग्राय जेता, ग्रग चक्र वार हुग्रा वक्र के ग्रथाण । केळपुरै ग्रठी-उठी चक्र वेग फेर कीधो, मार टक्र मारहटी सेन रो मथाण ।—वद्रीदास खिडियो

मारहटो—देखो 'मरहठो' (रू भे)

उ०—ग्रासमान लागो धुग्र भागो कीधु सेल ग्रायो, जाडो भार फैल ग्रायो लोहा जगा जीप । ग्राडो मारहटा चा साकडो थाट ठेल ग्रायो, 'माधवेस' वैल ग्रायो वाकडो महीप ।

—हुकमीचद खिडियो

मारहट्ट—देखो 'मरहठ' (रू. भे)

२—देखो 'मरहठो' (मह रू भे)

मारहट्टी—देखो 'मरहठी' (रू भे)

मारहट्टो—देखो 'मरहठो' (रू भे)

उ०—तेगां पाण ग्रग्रनद सतारा नाय स तोडे । मोडे मारहट्टा घडा मरोडे मतग ।—हुकमीचद खिडियो

मारहठी—देखो 'मरहठी' (रू भे)

मारहठो—देखो 'मरहठो' (रू भे)

उ०—मारहठो कहै मैं गाजिया लोक पाजा माहे, राजा माहे ग्रगजी रजियो मारुराव ।—महाराजा बहादरसिंघ रो गीत

मारहतो, मारहथो-वि०—मारने वाला, वार करने वाला ।

उ०—पळ खूटा पतिसाह कर ग्रावध वाहे किलव । मारहथे मरि मारिग्रो रिण गोदो' रिमराह ।—वचनिका

मारांकुस-स० पु० [स०] नाखून, नख ।

माराज, मा'राज—देखो 'महाराज' (रू भे)

उ०—१ सुज ग्रहू वीर जुव हरख साज, सिर हुकम चाढ़ बोलै सकाज । मा'राज तरा तप कर परमाण, ग्रण नीत गुडाग्रा ग्रासुराण ।—शि रू

उ०—२ उण नै सामी एक गरीब वामण धकियो । राजकवर हाथ जोड नै कह्यो—पगा लागू मा'राज —फुलवाडी

उ०—३ वोल्यो—जोगेसर मा'राज थोडा ढवो, थांरी एकर ग्रारती करू ।—फुलवाडी

उ०—४ दलाल ऊभै हो परै' र हाथ जोडचा । होड-होड किसनजी ही कैंणं सू मोढा मोडया । पगा लागू गुरु मा'राज । ऊंचा विराजो ।—दमदोख

उ०—५ राजाधिराज मा'राज रांम । ते ताज सीस ग्रालम तमाम ।

—र ज प्र

माराजा, मा'राजा – देखो महाराजा' (रू भे)

उ०—१ लक्खी विणजारा रो कुरव-कायदो किणी राजा मा'राजा सू कम नी हो ।—फुलवाडी

उ०—२ केई राजा, माराजा, सेठ-साहूकार नी नी व्है जैंडा वणाव मे ग्रडीजत ठमियोडा राजकवरी नै वरण सारू ऊभा हा ।

—फुलवाडी

उ०—३ तेल-फुलेल,ग्रतर-सेंटरा कटर ग्रर मावण-सोढै रा गोडै-गोडै सूणा मिंदूक राजा मा'राजा रा मा पडघा दीखै ।—दमदोख

मारा मार-स० स्त्री० [ग्रनु०] मार-धाड, युद्ध ।

उ०—मारामार हुई महिमडळ मेछा भग पडै महि मडळ । माहै धीर नको महिमडळ, मच्छ गळा-गळा दिल्ली मडळ ।—गु रू व.

मारि-स० स्त्री०[स मारि] १ नाश, विध्वस हनन ।

उ०—राजरमि, परमारहन धरमातमा मारि निवारक सप्त व्यसन-निवारक प्रतिग्यानिरवाह दशारणभद्र न्यायव्रति विस्तारित जगद्भद्र प्रजापाल रिपुकुलप्रलयकाल । व म

२ मरी, प्लेग ।

मारिक – देखो मारक' (रू भे)

उ०—छूटि फोवड गुण वांण गाजै । फारका मारिकां हाक वाजै ।

—गु रू व

मारिख—देखो 'मारिस' (रू भे)

मा'रिख—देखो महारिसी' (रू भे)

मारिग—देखो 'मारग' (रू भे)

उ०—राजा मानधाता दीठो जाईजे देख ताहरा एक मारिग दीठो। तीयै मारिग चालीयो ग्रागै जावै देखै तो तपसी च्यार वैठा छै ।

—चौबोली

मारिच—देखो 'मारिच' (रू भे)

उ०—ग्राया रत स्रवनेइ तई, सत्र मारिच सुवह ।—रामरासो

मारिणो, मारिवो—देखो 'मारणो,मारवो' (रू भे) (उ र)

उ०—१ काळो पहाड़ केल्हणहरो, देख साह दीयो हुकम । राठोड हुग्रा हठि मारिवा ग्राम वेव 'गोइद' जम ।—गु रू व

मारिणहार, हारौ (हारी,) मारिणियौ—वि०
मारियोडौ—भू० का० कृ०
मारिईजणौ, मारिईजवौ—कर्म वा० ।

मारित—वि०—१ जो भस्म कर दिया गया हो। (वैद्यक)
२ मृत, वधित ।
३ पीटा हुआ, आहत ।

मारियोडौ—भू० का० कृ०—१ जीवनान्त किया हुआ, प्राण लिया हुआ, वध या संहार किया हुआ, मारा हुआ, हत्या किया हुआ ।
२ आघात या प्रहार किया हुआ, पीटा हुआ ।
३ मिटाया हुआ, नष्ट किया हुआ ।
४ सजा या दण्ड दिया हुआ ।
५ लूट-मार किया हुआ, लूटा हुआ, छीना हुआ ।
६ कब्जे में किया हुआ ।
७ दुखी या परेशान किया हुआ, सताया हुआ, मानसिक कष्ट दिया हुआ ।
८ इच्छा या विकार को बल पूर्वक दबाया हुआ ।
९ पछाड़ा या पटका हुआ ।
१० हराया हुआ, परास्त किया हुआ ।
११ प्रतियोगिता मे पीछे रखा हुआ ।
१२ खेल में गोटी या पत्ते को हराया हुआ ।
१३ दो वस्तुओं को परस्पर टकराया हुआ ।
१४ अयोग्य या निकम्मा बनाया हुआ, बल या प्रभाव समाप्त किया हुआ ।
१५ मरणासन्न स्थिति में किया हुआ ।
१६ गुण समाप्त किया हुआ ।
१७ स्त्री प्रसंग या मैथुन किया हुआ ।
१८ अनुचित ढंग से हथियाया हुआ, हड़पा हुआ ।
१९ भस्म बनाया हुआ (धातु)
२० शिकार किया हुआ ।
२१ उद्विग्नता से प्रयास किया हुआ ।
२२ लगाया, दिया या भिडाया हुआ ।
२३ सम्मिश्रण किया हुआ, मिलाया हुआ ।
—(स्त्री० मारियोडी)

मारिस—स० पु० [स० मारिष] १ नाटकों का सूत्रधार ।
२ प्रतिष्ठित या माननीय ।
रू० भे०—मारिख,

मारी—स० स्त्री०—देखो 'मरी' (रू भे)

मा'री—देखो 'म्हारी' (रू भे)
उ०—आम्बडीयां अणीयाली, विचि सोह टीकी काली हो । हिरण घसै मुरताली, मा'री आख लीधी मटकाली ।—वि कु

मारीच, मारीछ—स० पु० [स० मारीच] १ रावण का आश्रित एक राक्षस जिसने सीता हरण के समय माया-मृग (स्वर्णमृग) बनकर राम को धोखा दिया था ।
उ०—१ देवी बाण रे रूप मारीच, मारी, देवी मार मारीच, लखण पुकारी ।—देवि
उ०—२ म्रग रूपी मारीच मारियो । भुजा भामणो राम अभंग ।
—ह ना मा.
२ कश्यपकुलोत्पन्न एक ऋषि ।
३ बादशाह या राजा की सवारी का बड़ा हाथी ।
उ०—समस्त ही मडप रा प्राघुण का प्रामारराज की तरफ सू बरात रै सिविर जाय दुल्लाह नू मारीच चढाय अरबुद रा दुरग रै तोरण पधरावियो ।—व भा
४ देखो 'मरीचि' (रू भे)
उ०—जिण ब्रहम तणै मारीच जाणि, मारीच तणै कासिप प्रमाणि ।—सू प्र
रू० भे०—मरीच, मारिच,

मारु—१ देखो 'मारू' (रू भे)
उ०—१ मामी मेर अभंग भड, मारु अमळी-माण । गिळण गढा भूखाळुओ, औबासै जमरांण ।—गु रू व
उ०—२ हसती तो कजळी देसां रा ल्याज्याजी घुडला तो मारु देस रा ल्याज्योजी ।—लो गी.
२—देखो 'मारुनिसाणी'
उ०—इकळ सोडम द्वादस करै, म्हारे दुगुरु मिलाय । मारु निसाणी तिहूंमुणौ, सुकव 'मछ' सरसाय ।—र रू

मारुअइ, मारुअउ—देखो 'मारू' (रू भे)
उ०—१ कळि काळि परीक्रम ए करन्न, देखियइ दुवापुर दिख्या दन्न । कणइट्ठ कन्हा घर लूणकन्नि, मारुअइ गाइळी मोट मन्नि ।
—रा ज सी
उ०—२ हिंदुआ देखि हथियारि हार, असपत्ति तणा लूंबइ अपार । फरि चडिए कीधउ भडे फेर, मारुअउ राउ डोलइ न मेर ।
—रा ज सी

मारुअड़ि, मारुआड, मारुआड़, मारुआड़ि—देखो 'मारवाड' (रू भे)
उ०—१ राठउड राउ जोवण रुहाडि । मन्नि किय मूगुळे मारुआड़ि ।—रा ज सी
उ०—२ ब्राह्मण नि तां वरण करता सिधु न थ्यु मारुआडि । तु सूं दान करचू मि मनसू, चिंता पामि हाडि ।—नळाख्यांन

मारुओ—देखो 'मारुवो' (रू भे)
उ०—फरि कोप दळा प्रारम कहर, वेधिगर आगै धरै । मांझिओ मुगलां मारुऐ रिण 'ओरग' 'जसराज' रै ।—वचनिका

मारुडौ—देखो 'मारूडौ' (रू भे)
उ०—मन्त्री जन्त्री सुकन जोतसी, यां रै हाथ न उपाय । ऊवो कोई सैण मिळावै मइयां, जो मारुडो दे मिळाय ।—लो गी.
(स्त्री० मारुडी)

मारुजी—देखो 'मारूजी' (रू भे)

उ०—सूवटा, पीव मिळादै रे, सूवटा, मारुजी मिळादै रे। तेरो जलम-जलम गुण गास्यू, सूवा, म्हारो भवर दिखादै रे।
—लो गी

मारुणि, मारुणी—देखो 'मारूणी' (रू भे)

उ०—१ मारुणि नारी मिली सब गावत सुदर रूप सोभागी रे आज सखि पुन्य दिसा मेरी जागी।—समयसुदर गणि

उ०—२ सात सैयाक झूमक कर लाल ढोलो निरखण जाय, थांनै चातर जद बदाजी थारी मारुणी ने ल्योरे पीछाण।—लो गी

मारुत-स० पु० [स० मारुत] १ हवा, पवन। (अ मा, ह ना मा)

उ०—१ सोळेई थान अचळ इद्रीसुर, अति सुख उदै कियौ अतरिउर। विसन ब्रह्म सिव अरक वखाणौ, जळपति ससि दिस मारुत जाणौ।—रा रू

उ०—२ ओप सिंदूर तेल अपल्ल, गडडे बाज ढळके ढल्ल। वहता विडग दाखै वेग, मारुत पेरियो किरि मेग।—गु रू व

२ वायु का अधिष्ठाता, पवन देव।

३ स्वामा।

४ शरीर के त्रिदोषो मे से एक।

५ हाथी की सूड।

६ भृगुकुलोत्पन्न एक गोत्रकार ऋषि।

७ अगिरा कुलोत्पन्न एक गोत्रकार।

८ नितान एव द्युतान नामक वैदिक सूक्त द्रष्टाओ का एक सामूहिक नाम।

[सं० मारुत] ९ स्वाति नक्षत्र।

रू० भे०—मारत मारुत,

१० देखो 'मारुति' (रू भे) (अ मा)

उ०—सीता सुदरी अरधग ससोभत, सेवग 'मारुत' सारखा। वाळ जिसा बळवड बिहडण पाण भुजाडड पारखा।—र ज प्र

मारुतचक्र-स० पु० [स०] वातचक्र, वातूंल, वायु का गुल्म।

उ०—मिळिया फिर मारुतचक्र मही।—रा रू

मारुतसखा-स० पु० यौ० [स० मारुत+सखा] अग्नि। (ना मा)

मारुतसुत-स० पु० यौ० [स० मारुत+सुत] १ हनुमान।

२ भीम।

मारुति-स० पु० [स] १ हनुमान, बजरग। (ह ना मा)

उ०—मारुति जेण कियो अजरामर, केकध भूप सुकठ दियो कर।
—र. ज प्र

२ भीम।

रू० भे०—मारत, मारुन, मारुत,

मारुधर—देखो 'मारुधर' (रू भे)

मारुनिसाणी-स० स्त्री०—डिंगल का एक निसाणी छद जिसमे प्रथम १६ मात्रा, फिर १२ तथा तुकान्त मे दो गुरु होते हैं।

मारुबेगण-स०पु०—वृंताख की एक जाति।

मारुवाड, मारुवाडि—१ देखो 'मारवाड' (रू भे)

उ०—घणी गालइ घाली वदि छोडावी, रेख रहावी, खाडइ जइअ अगावी नव कोटी मारुयाडि भली माल्हावी।—रा सा स

२ देखो 'मारवाडी' (रू भे)

मारुराय, मारुराव—देखो 'मारूराज' (रू भे)

मारुवौ—देखो 'मारूवौ' (रू भे)

उ०—राजि नाळेर ल्याया तिको म्हानै सगा जांण्या पिण एक मारुवा ठाकुरा सू म्हाकी अरज छै, ज्यो हुकम हुवै तो अरज करा।
—राव रिणमल री वात

मारुवणी—देखो 'मारवणी' (रू भे)

उ०—कुवरी पिंगळरायनी, मारुवणी तसु नाम। नरवरगढ ढोलइ भणी, परणी पुहकर ठाम।—ढो मा

मारुवी—देखो 'मारवी' (रू. भे)

उ०—इसइ आरखइ मारुवी, सूती सेज विछाइ। साल्हकुवर सुपनइ मिल्यउ जागि निसासउ खाइ।—ढो मा

मारुवौ—१ देखो 'मारूवौ' (रू भे)

उ०—मारुवै रावता गाजतां मंगळा, वाधियो वाद सू इद्र रो वादळा।—गु रू व

२ देखो 'मारू' (अल्पा, रू भे)

उ०—बाबा म दइस मारुवां, सूवा एवाळाह। कधि कुहाडउ सिरि घडउ, वासउ मझि थळाह।—ढो मा

मारू-सं० पु०—१ मारवाड का राजा, अधिपति।

उ०—ईहगा घणो विरदावियो, मारू अमली माण नू। आपरो करै दीधो उतन, तेरै राव सुरताण नू।—सू प्र

२ राठौड।

उ०—१ मारू पर घर मारका, ठहरै समहर ठौड। ऊखाणौ उजवाळियो, चढ जयमल चीतोड।—बा. दा

उ०—२ वात अकब्बर आगळी, अक्खी हाथ मिळाय। दून विदा करकै लियो, मारू 'दुरग' बुलाय।—रा रू

उ०—३ भड बहतरि ऊमगा, खान सत्तरि थहरिया, तिण वेळा तुडि-ताण विढण मारू बळ भरिया।—गु रू व

३ मरुप्रदेश का निवासी।

४ मरुप्रदेश, मारवाड।

उ०—१ दिम मारू खुरसाण तणा दळ, वाधै जाग प्रळै चा वद्दळ। अण तर थळां सिखर खुर तूटै, फौजा घर्णा परव्वत फूटै।
—रा रू

उ०—२ वुद्धी एक दत वत वत सत गुरू मत्र जैमे। मारू कन वाम 'जसवत' बाग राईके।—ऊ का

५ मारवाड की भाषा, डिंगल, मारवाडी।

उ०—भाखा व्रज मारू सुर भाखा भाखा प्राकृत जान भर। पायो रचण रूपगा पैंडो, मेहाही थारो महर।—बा दा

६ पति, प्रियतम।

उ०—१ सुद अबै आप लीजो सजन, जे चावो छो जीवती। जिण भाति वतिक दारू विना, मारू इम भूलो मती—पना

उ०—२ या प्रेम पत्रिका दीजयो हो, म्हारा मारू ने जाय कीज्यो। ग्रांसू टप टप ग्रगिग्रा टपके, वदन गुनावी भीजयो।—लो गी

७ रसिक।

उ०—१ छलवलिया घोडा भला, प्रलवलिया ग्रसवार। मद छकिया मारू भला, मरवण नखरादार। दारुडी दाखां री।
—लो गी

उ०—२ भणहण भवर मस्त फूलां सु, ग्रोर उड रह्यो छै पराग। मारू ग्रामी रसराज वसत मे किणियक सुगणी रे भाग।
—रसीलै राज री गीत

८ एक राग विशेष। (मीरां)

९ एक लोकगीत का नाम।

१० युद्ध मे गाया जाने वाला एक राग।

११ युद्ध का बाजा।

१२ कुम्हारो की एक शाखा।

वि०—१ मारने वाला, समाप्त करने वाला।

उ०—तोम पोम ग्रोम मारू, काय ग्रपसोस कोम। हाय दारू तेरे दोग, कहालों पुकारू मैं।—ऊ का

२—देखो 'मारुनिसाणी'

उ०—मत मोळह फिर वार मुण, दस मोहरे गुरू दोय। मारू दोम नीसाणी मुणी, सुकव महा मत सोय।—र. ज प्र

रू० भे०—मारव, मारु, मारुग्रई, मारुग्रउ

ग्रल्पा—मारुवो मारूडो,

मारुग्राड, मारुग्राडि—देखो 'मारवाड' (रू. भे)

उ०—नवकोटी नामि भणू मारुग्राडि घण देस। घण कण घरि सविकहि तणइ रुपण कणय सुवेस।—का दे प्र

मारुग्रोराव—देखो 'मारुराज' (रू भे)

उ०—हिन्दी पह ग्रायां रांण ग्रत ढिल्लीयो। तिणमू कहैं चित्रगढ़ तूझ। 'जैमल' जोव काम तो जोठी, मारुग्रोराव म ढील म मूझ।
—जयमल मेडतिया रो गीत

मारुडी—देखो 'मारूडो' (ग्रल्पा, रू भे)

उ०—बकरिया रोसावे कुकडा कटावे ग्रर दारूडी मारुडी ता उडती ही रेवे है।—दमदोम

मारुडो—स० पु० [स्त्री० मारूडी] १ एक मारवाडी लोक गीत।

रू० भे०—'मारुडो'

२ देखो 'मारू' (ग्रल्पा, रू भे)

उ०—साफ पडै दिन ग्रायवे, रे जला, खातण लावै खाट। फाई ए कर थारी खाटने, म्हारे मारूडै विना किसी ठाट।—लो गी

ग्रल्पा—मारूडी

मारुजी—स० पु०—पति, प्रियतम।

उ०—एक वर, ग्रो मारुजी, करला जी पाछा मोड। राजीदा ढोला, मोळू घणी ग्रावै म्हारी माय री।—लो गी

रू० भे०—मारुजी,

मारुणी—स० स्त्री०—१ मरुप्रदेश की स्त्री या ग्रोरत।

२—देखो 'मारवण' (रू. भे)

उ०—मातवो वधावो भवरजी री सेज मे, म्हारे वैठया राज-दिवाण। ढोलो तो मारुणी हस वतळावसी।—लो गी.

रू० भे०—मारुणि, मारुणी

मारुत—१ देखो 'मारुत' (रू भे)

२—देखो 'मारुति' (रू भे.)

उ०—गिरा मे सुमेरु ग्रोपे सुरतांण राहा गणा। जत्यां मे मारुत प्रजापति रिखा जाण।—भगतराम हाडा रो गीत

मारुदेस,मारुघर,मारुघरा—स० पु० [स० मरु+देश, मरु+घर या घरा] मरु प्रदेस, मारवाड।

उ०—१ ततखण माळवणी कहइ, साभळि कत सुरग। भगळा देस सुहामणा, मारुदेस विरग।—ढो मा.

उ०—२ ग्रोरग ऐसै ग्रखियो, दूजै दिन राठोड। गया दरगह माह रै, मारुघर कुळ मोड।—रा रू

उ०—३ नमो देस मारुघरा कोट नोवा। नमो द्रग गेढा कलां खुरद दोवां।—मे. म

रू० भे०—मारुघर

मारुभाखा, मारुभासा—१ देखो 'मारू' (५)

उ०—करमाणद ग्राणद कवेस वहण मारुभाखा वट। वगस जिको विरदंत 'इकडाणी' ग्रागा हट।—पा प्र

मारुयाड, मारुयाडि, मारुयाड मारुयाडि—१ देखो 'मारवाड' (रू भे)

उ०—१ जिम ए तीरथ जागता,तिम ए तीरथ सारो जी। मारुयाडि माहे वडउ सेत्रुज नउ ग्रवतारो जी।—स कु

२—देखो 'मारवाडी' (रू. भे)

मारुरांण—स० पु० [स० मरु+राट] १ मारवाड़ का राजा।

२ राठोड।

मारुराई, मारुराज, मारुराजा, मारुराव, मारुवाराव—स० पु० [स० मरु+राजा] १ मारवाड का राजा, ग्रधिपति।

उ०—१ बावै सिखर वडै लावै प्रब। इळपुट नाम वधै ग्रनमध। दीन न को नहि कोई देसी, मारुराव जिसा मदमव।—द दा

उ०—२ ग्रख जड तोड मोड वैरिया, घरघारुजळ दात घरै। मारुराव ग्रसो मद मेंगळ, कोट गडा सैलोट करै।
—महाराजा जसवतसिंहजी रो गीत

उ०—३ राग हरख मगळ रळी, चक्रवति ग्राया चाव। पति नव कोट पधारिया, महिले मारुराव।—रा रू

२ राठोड।

रू० भे०—मारवराव, मारवीराव, मारवैराव, मारवोराव, मारुराय, मारुराव, मारुग्रोराव।

मारुवो—स० पु०—१ राठोड।

२ मरु प्रदेश का निवासी।

रू० भे०—मारुग्रो, मारुवो।

मा'रे-सर्व०—मेरे ।

मारेल-वि०—१ दबा हुआ,

२ थका हुआ ।

३ घायल ।

उ०—जनहरिया मारेल मन, सारेला निज तत । न्यारेला दुनीयान सु, यारेला अवगत ।—श्री हरिरांमदासजी महाराज

मारोट, मारोठ-स० स्त्री०—१ विवाह के समय दूल्हे या दुल्हिन के मुख पर सुनहरी दाणो से की जाने वाली चित्रकारी ।

२ एक प्रान्त का नाम ।

रू० भे०—मरवट, मरोट, मरोठ,

मारोमार-क्रि० वि० [अनु०] १ निरन्तर, लगातार ।

उ०—समो सास मम्हांता समरण तन मन खूब तपावें । लोह लुहार तणो गति लागें मारोमार मचावें ।—ऊ का

२ अत्यन्त शीघ्रता से, द्रुत गति से ।

३ क्रमश एक के बाद एक ।

स० पु०—हुल्लड, भगदड ।

मारो—देखो 'मार' (अल्पा . रू भे)

उ०—नीलजु निघिणु मई अजांण काइ मारइ मारो । ईणि जनमि मुझ पडुकुमर विणु नही य भतारो ।—सालिभद्र सूरि

मा'रो देखो म्हारो' (रू भे)

उ०—प्रीतम मा'रा भमरला जी काइक कीजे सक । फुल्या दीसै फुठराजी, आफु आडै अक ।—वि कु

माळ माल-स० स्त्री० [स० माल., माल] १ किसी कस्बे या गाव की समस्त कृषि भूमि ।

यो०—आडै माळ=पूर्ण भूमि ।

२ खेत, भूमि ।

उ०—सोरठ गूजर खड सरीखा मुलका तणी न पाकी माळ । मुहगो अन पहडै माळागिर, मुहगो अन अवहड मुदराळ ।

—दैवनाथ रो गीत

३ वन, जगल ।

उ०—१ पथी मारग पांतरै,हिया फूट हिय हार । जबक हू हू रव करै सूनी माळ मझार ।—कविराजा वांकीदास

उ०—२ आसा खेती अमर धन, निरधन यू जीवत । गौरी पीडा वेचती, मिरगा माळ चरत ।—अज्ञात

४ ऊ ची भूमि ।

उ०—मदाहूर पाहै धोळा माळ, दुरब्बळ भाटी देस दुकाळ ।

—रगरेलो वीठू

५ ककरीली भूमि ।

६ स्थान, जगह ।

[स० माला] ७ कूए पर चलने वाले रहट पर घूमने वाली मिट्टी या धातु के बने जल-पात्रो की माला (टिंड) ।

उ०—सहजिइ जीव निरमल झलकति, आठ पहर छई करम वाघति । अरहटि घटिका जिम कूइ माल, तिम जीव फिरइ अणतउ काल ।—वस्तिग

८ चरखे की डोरी जो वेलन व तकुवे को घुमाती है ।

उ०—ताकू तेरो सोवणो लाल गुलाबी माल । चरकू मरकू फिरे घेरणी, मघरो मघरो चाल ।—लो गी

९ किसी चक्र को घुमाने वाली माला के आकार की रस्सी ।

१० नदी ।

उ०—नदी जळ नील सुफील निसाण, उमेलत छीलर ढीलन आण । बगत्तर झीवर जाळ वहत, आवै नह माळ रगत्तर अत ।

—मे म

[स० माल] ११ फसल की उपज । (मा प्र वि)

उ०—गुलजी कह्यो, स्वामीनाथ ! रुपिया दमेक रो माल पाछो आयो । इतरीक बाजरी, सरव रुपया दसेक रो माल पाछो आयो ।

—भि द्र

१२ मेघमाला, घनघटा ।

उ०—जळ जाळ माळ विसाळ नभ जुत, उरड़ झड अण पार ए । मिटि जळण धरणि विनोद मानव, भूरि सर जळ भार ए ।

—रा रू

१३ अच्छी फसल पर लिया जाने वाला कर (टेक्स), राजस्व ।

यो०—माळ सेरणो ।

१४ बाल, केश ।

उ०—मसतग माळ मूडायकै, दाडी मूंछ मुडाय । हरीया मन मूड्या विना, निज पद कैसे पाय ।—श्री हरिरामदासजी महाराज

१५ पक्ति, कतार, श्रेणी ।

उ०—तुरा खुरताळ वज तूर तासा त्रबट । माळ फरहर गजा घजा माळा ।—कविराजा बाकीदास

१६ झुण्ड, समूह ।

१७ देखो 'माळा' (रू भे)

उ०—१ राम नाम चगो , रतन सो मुनिराजा माळ । पिल वाघो वांधै गळै, गळै म बाघो गाळ ।—बा दा

उ०—२ पत्र सुधारै जोगणी, माळ सुधारै रभ । घम चलेवो सोम रवि, देखै व्योम अचभ ।—रा रू

उ०—३ दीन अळाव फिरे गढ दोळा, हर सिर माळ बणाव हुवा । सात लाख झड खत्री सूरारा, मेछ अठारा लाख मुवा ।

—महाराणा गढ लक्ष्मणसिंह रो गीत

उ०—४ विण तरूवर जिम वेलडी, कठ विना जिम माल । पुरुष विहूणी पद्मनी, किणि परि ठेलिसि काल ।—मा का प्र.

माल-स० पु० [स०] १ द्रव्य, धन । (ना मा , ह नां मा)

उ०—१ तीहा करसण सूपियो, बानरडा नू बाग । माल किराडा सूंपियो, ज्या रा फूटा भाग ।—बा दा

उ०—२ जदी चोर कहै । श्री परमेसरजी खावा दीघो अर माल पण आछो आयो ।—पचमार री बात

उ०—३ पछै सरब काम श्राय चूका श्रर सरब श्राग माहै पडिया। तद पातिसाह मइयै वाकलियै नू सावामी दीवी । श्रर गढ माहै श्रायो तद कह्यौ—श्रवै माल मतां बतायी, पछै बतायी।

—पताई रावळ री वात

उ०—४ चारू वेदा रै जाणकार पिंडतजी री निजर चरू मायै ही। वै मनाग्याना हिसाव करण लागा के चरू मे कित्तो काई माल व्है सकै।—फुलवाडी

उ०—५ जद स्वामीजी वोल्या—कुबदी चोर हुवै ते चोरी करनै लाय लगाय जावै। लोक तो लाय रे बुझे लागे जावै नै श्राप माल लेय नै चालतो रहै।—भि द्र

मुहा०—१ माल उडाणौ (उडावणौ)=चोरी करना।

२ माल हाथ लागणौ=धन की प्राप्ति होना।

२ सम्पत्ति, जायदाद।

उ०—१ वुद्धि सू च्यारा ने पकड्या माल राख्यो। श्रनै एक साथै च्यारा सू भगडतो तो कद पूगतो।—भि द्र

उ०—२ प्रभुना देखी पुत्र नी, राजा हुवै खुस्याल। पुण्य विना किम पांमीयै, एल मुलक ए माल।—वि कु

३ सामान, सामग्री।

४ क्रय-विक्रय का सामान।

उ०—रोळ विगाडै राज नू, मोल विगाडै माल। सने-सने सिरदार री, चुगल विगाडै चाल।—वा दा

५ स्वादिष्ट या उत्तम भोजन, पकवान।

उ०—१ खुसी खुसी मे ही लुटा दी लाल, मजा-मजा मे ही घुटा दिया माल।—दस दाव

मुहा०—माल उडावणौ, माल घुटावणौ=इच्छित भोजन करना, मस्ती छानना।

६ किसी वस्तु का सार-तत्त्व।

७ सुन्दर स्त्री।

८ युवती। (वाजारू)

९ हरताल।

१० विष्णु का एक नामान्तर।

११ छल, कपट, दगा।

१२ दक्षिण—पश्चिमि वगाल के एक जिले का नाम।

१३ मालवा देश।

१४ एक प्राचीन श्रनार्य जाति।

१५ सामर्थ्य, हस्ती।

उ०—वावर नू जीत्यो नहीं, 'सांगो' साहा साल । उणरे घर रा कमरा, सो श्रागे की माल।—वां दा.

१६ शकुन चिडी जो दाहिनी श्रोर वैठ कर शुभ शकुन देती है।

उ०—लघिया चांविल पाछिला खाल। डावी देवी श्रनइ दाहिणी माल।—वीसलदेवरास

१७ गणित मे वर्ग का घात, वर्ग श्रक।

१८ देखो मल्ल' (मह, रू भे)

उ०—१ गोविंदइ सवि माल मरीखउ चाणूर ते चूरीउ। बीजइ बवधि माल मोस्टिक, हणिउ तउ कस कोपिइ चडिउ।

—धनदेव गणि

उ०—२ न मानाखाटइ भूभइ माल लोक तणइ मनि श्रतिहि माल। रवाडी न श्रीवन करइ, मेल वाडी न गुडी भा धरइ।

=नळदवदती रास

मालक—देखो 'मालिक' (रू भे)

उ०—१ कोणे मालकाणी जचावै, की श्रावै न जावै।

—दमदोस

उ०—२ श्रालमगीर नू गिरफदार करण श्रर साह सूजै नू मालक करण सू म्हे हरोळी मे हा भगडी वखत भगी घातमा।—द दा.

मालकत—देखो 'मालकियत' (रू भे)

उ०—तुरक हिंदू रहै फिरग मालकत। कै कहै वीकाण रा कूक-करणा। भूप नव कोट रा श्रगर हासल भरो। चाकरी करो सिर धरो चरणा।—वा दा

मालकपणौ—स० पु० यौ०—१ स्वामी या मालिक होने का भाव, स्वामित्व।

२ बडप्पन, दयालुता।

मालकाकणी, मालकांगणी—स० स्त्री०—१ हिमालय पर ४०० फुट तक पाई जाने वाली एक लता विशेष।

२ उक्त लता के बीज जो श्रोषध मे काम आते हैं। इनमे स तेल भी निकलता है।

३ एक प्रकार का कदन्न।

मालकियत—स० स्त्री० [श्र०] मालिक होने का भाव, स्वामित्व।

रू० भे०—मालकत।

मालकी—देखो 'मालकपणौ'

उ०—तिण वगत मालकी फेर रायणतणी, लाग रख राखडी वांद लीदी।—ऊमरदान लाळस

मालकेत, मालकेतु—स० पु०—१ एक लोक देवता, जो लोहार्गल पहाड पर स्थापित है।

उ०—मह मे भैरू वावो जागिया पहाडा मे बदरीनाथजी जागिया परवत में मालकेत जागिया श्रा के पीठ बसै सकराय भालर वाजे राजा राम की।—लो गी

२ लोहार्गल पहाड का एक नामान्तर।

मालकोस—स० स्त्री० [स० मालकोश] सम्पूर्ण जाति का एक राग जिसे कौशिक राग भी कहते हैं श्रोर यह प्राय रात के दूसरे प्रहर में गाया जाता है। (सगीत)

उ०—सरी सरी सपोसय, सुताळ मालकोसय । मिठास श्रास मजरी, गरी गरी सगुज्जरी।—रा. रू

रू० भे०— मालव कौसिक ।

मा लक्मी—देखो 'महालक्मी' (रू भे)

मालखम—देखो 'मलखम' (रू भे)

मालखांनी–स० पु०—सामान रखने का कक्ष, कोठार, भंडार ।

मालगाडी–स० स्त्री०—माल, असबाब या व्यापारिक माल की पासलें आदि ढोने की रेलगाडी ।

मालगुजारी–स० पु०—१ लगान ।

२ जमींदार से सरकार द्वारा लिया जाने वाला एक कर ।

मालगुरजरी–स० स्त्री०—सम्पूर्ण जाति की एक रागिनी जिसके सभी स्वर शुद्ध होते हैं । (संगीत)

मालगोडी–स० स्त्री०—एक रागिनी विशेष । (संगीत)

उ०—दिये तरुणी मुख चुंवन दान, सुख छवि अंग किये मधु पान । चलो सकेत समझि जिय साझ । मालगोडी अपति उद्यान ।—रा रू

मालगोदाम–स० पु०—१ व्यापारिक माल जमा रखने का स्थान ।

२ माल-गाडी से भेजे जाने वाले सामान को संग्रहीत करने का स्थान ।

मालड़ौ–स० पु०—ऊंट या घोडे के चारजामें पर रक्खा जाने वाला चमडे का एक उपकरण ।

मा'लछमी—देखो 'महालक्मी' (रू भे)

मालजादी–सं० स्त्री०—१ दुश्चरित्र व कुलटा स्त्री, व्यभिचारिणी स्त्री, पतिता ।

उ०—तरै चावडी भूजती बोली, मालजादी रांडां थारे वापने जरै ही मारि गाठडो वाधि झरोखे रै मारग नाख दीधौ ।

—जगदेव पवार री बात

२ वेश्या पुत्री, वेश्या ।

उ०—१ राजा कह्यौ—तोने सहर इसा कुकरम करण नें मोळायो छो ? इतरो कहि कोटवाळी सू दूर कीधो नै मालजादी तितरी थांरो पकड मगाई, कान नाक काटि माथो मुडाय पाटडा पाडि गधै चाढि सहर बदर कीनी ।—जगदेव पवार री बात

उ०—२ लालकवर कह्यो—म्हांरी जावोती बडी चाकरी कीधी । चावडीजी, ऐ मालजादी छै । मैं यानै कह्यो थो, कुळवती रूपवत चतुर वाळक कांई मिळावै तो खवास थापू । तिसा हीज थे छो ।

—जगदेव पवार री बात

मालजादौ–स० पु०—१ दुश्चरित्र व व्यभिचारी व्यक्ति ।

(स्त्री० मालजादी)

उ०—१ मालजादां मन माहि राह सूझै दिनराती । मालजादि मन माहि यार सूझां अकुळाती ।—ऊ का

उ०—२ चाकर पच हथियार साथे लीधा । एक मालजादो खोसरो थो, तिको खोजो वणाइ घोडे चढि लीधो ।

—जगदेव पवार री बात

२ वेश्या पुत्र ।

मालटौ–स० पु० [अ० माल्टा] लाल रंग की एक नारंगी विशेष ।

मालण–स० पु० [देशज] १ चौहान वंश की एक शाखा ।

सं० स्त्री०—दुल्हा बारहठ की पुत्री, एक देवी ।

उ०—सोरमदे मालण तु सभंव, दैवळ तु खोडी आद दैव ।

—रामदान लाळस

२ देखो 'माळी' (स्त्री०)

उ०—मकोडो सूई लेय नै जावतो के उण नै एक मालण बगीचा मे वैठी मिळी ।—फुलवाडी

मालणी–स० स्त्री०—१ दुर्गा सप्तशती के अनुसार ललाट प्रदेश की रक्षिका देवी, मालाधरी ।

उ०—देवी मालणी जोगणी मत्त मेधा, देवी वेधणी सूर असुरां उवेधा ।—देवि

२ योग के अनुसार आत्मा ।

उ०—मतवाळी मालणी नहि दूरी । हरि परम सनेही है हजूरी ।

—ह पु वा

३ देखो 'माळी' (स्त्री०)

४ देखो 'मालिनी' (रू. भे.)

मालणौ, मालबौ—देखो 'माल्हणौ, माल्हबौ' (रू भे)

उ०—१ जो तू चाहै मुकन, फळ, धूना मन धीरच्छ । तीख मान सरवर तठै, माल हुवै मा मच्छ ।—बां दा.

उ०—२ जलो म्हारी जोड रौ उदियापुर मालै रे । मस्त महीनो आवियो रे जला ! अब तो खबर म्हारी लेह ।—लो गी

उ०—३ सो किण भाति रा वाकरा जिके कडकती सांध रा, वडकती नळी रा, भाह रै माद रा, मादलिए पेट रा, माडि वोर काचर रा बरडणहार, घणै कूभट नै वावळी री टीसीआ रा आडणहार, सिखिरि रा मालणहार, फिरणीऐ रा वैसणहार

—रा सा स

मालणहार, हारौ (हारी), मालणियौ—वि० ।

मालिओडौ, मालियोडो, माल्योडौ—भू० का० कृ० ।

मालीजणौ मालीजबौ—कर्म वा० ।

मालति, मालती–स० स्त्री० [स० मालती] १ एक लता विशेष जिसके फूल स्वेत व बहुत ही सुगंधित होते हैं । (अ मा,)

उ०—१ लता माधुरी मालती फूल लेखै । दसा आप भूलै तपी रूप देखै ।—रा रू

उ०—२ मालती सेवती केतकी प्रफुलमान ! फूलू की सोभा असमान के तारू का विधान ।—सू प्र

उ०—३ भमरि मालति जेम विरोलियइ, तिम न केतकि केलि घघोलियइ । भिणइ काजि न डूगर ढोलियइ, जइह कालु करी कुल बोलियइ ।—मालिसूरि

पर्या०—अवण्टा, उत्तमगधा, प्रियवादनी, मधुमई, सुगधमलयका, सुमना ।

२ उक्त लता के फूल। (अ मा) (उ र)

उ०—चुरणी चपेली चाय, मोगरो मालती, हरीलता में जाण, हेम लत हालती। वणी पना इम वागिक साथि सहेलियां, परिहा रग (मीनी) ग्रानूप रूप रगरेळिया।—पनां

३ कली।

४ वर्वांगी युवती।

५ जायफल का वृक्ष।

६ रात्रि, रात।

७ ज्योत्स्ना, चादनी।

८ प्रत्येक चरण मे दो जगण का एक छद। (र. ज प्र.)

६ द्वादश वर्ण का एक वर्ण वृत्त जिमके प्रत्येक चरण मे क्रमश एक नगण, दो जगण और एक रगण होता है।—पिं प्र

१० सवैया छद के मत्तगयद नामक छद का दूमरा नाम।

११ १४ मात्रा का एक मात्रिक छद।

१२ प्रत्येक चरण में ग्यारह दीर्घ वर्णों का एक छद विशेष।

१३ मद्र देश के अश्व पति राजा की पत्नि।

१४ इक्ष्वाकु वशीय शत्रुघातिन राजा की पत्नी।

मालतीटोडी—स० स्त्री०—एक रागिनी विशेष जिमके सभी स्वर शुद्ध होते हैं।

मालतोड—स० पु०—बडा हथोडा।

मालदार—वि० [फा०] धनवान, अमीर,

मालदेग्रोत—स० पु०—१ राठोड़ वश की एक उप शाखा व इस शाखा व्यक्ति।

२ भाटी वश की एक शाखा व इम शाखा का व्यक्ति।

—वा दा (ख्यात)

मालदो—स० पु०—एक प्रकार का ग्राम।

मालनेरी—स० पु०—एक प्रकार का मूल्यवान कपडा।

उ०—चरणा पहरजे छै सू किण भांतरा चरणा छै? इलायचेरा मिसरूरा गुलबदन रा मालनेरी रा वाफतां रा, चाळीस चाळीस हार्थां रा छै।—रा. सा स

मालपुग्रो,मालपुवो,मालपूग्रो, मालपूवो—स० पु०[स० पूप] गेहू या सूजी के ग्राटेको मोठे पानी में घोल कर, घी मे पूरी की तरह तल कर वनाया जाने वाला पकवान। (ग्रमरत)

उ०—१ नागजी मालपुवें को टूक रे, वैरी, जीम्या ग्रहियो नें ताळवें।—लो गी

उ०—२ एकर चौमामा रा दिना मे वै गोठ करी। खीर ग्रर मालपूवा वणाया। गावा घी मे भरभरता मालपूवा री सौरम सू स्याळ रा मन में फुटलाई चेती।—फुलवाडी

रू० भे०—मालपुडो, मालूपो,

मालपोमसामिरो—स० स्त्री०—१ एक रागिनी विशेष।

मालबध—स० पु०—बैलगाड़ी के ग्रग्रभाग मे घरसूढे या ऊटडे को बाधने की रस्सी।

मालग्रघण—स० स्त्री०—तलवार।—ना डिं को)

मालम—वि० [ग्र मालूम] १ जिमकी जानकारी हो चुकी हो, जाना हुग्रा ज्ञात, विदित।

उ०—१ ग्ररजन री कतल करवाती विरिया भुगाने री भू नें इयै ग्राग्वी दोरपा री जावक मालम नी हो, जकी ग्राई।—दमदोम

उ०—२ ग्रागे री वात दाई पूजी री कीनें ही कूत नहीं ग्रावें, मतां रो मालम नीं पडै।—दमदोम

२ प्रगट जाहिर।

उ०—१ ग्रालम सू मालम थई, विदिसां दिसा विगत्त। ग्रसवारी कज ग्राणियो, ग्राणो नाग उचित्त।—रा रू

उ०—२ कवर चूडा सू मालम कीयो। मडोवर सू राठौडां नाळेर मेलीया छै।—राव रिणमल री वात

उ०—१ ग्रनत मदेमा जीव का, लिख राख्या मन माय। मिळिया मालम कीजसी, कागद लिख्या न जाय।—ग्रज्ञात

३ स्पष्ट, साफ।

४ सूचित।

उ०—वासा थी साहजादाजी सू किणहीक मालम कीयो, 'काबो ग्रवु' मेडते बरस २ रहो छै उण री वाकप छै।—नैणसी

स० पु०—१ नाव चलाने वाला नाविक, केवट। (ग्र मा)

रू० भे०—मालिम, मालुम, मालूम,

मालमता, मालमतो, मालमत्ता—स० स्त्री० यो०—१ धन, दौलत, द्रव्य, सम्पत्ति।

उ०—१ माल-मता ग्रर जगां सेठाई रै पगा, सदा सुरगी रैती ग्राई ही।—दमदोम

उ०—२ पछै मरव कांम ग्राय चुका। मरव रजपूतांण्या ग्राग मांहे पडी, तर पातस्याह सइये वाकलिये नू सावास दीवी। ग्रर गढ माहे ग्राप ग्रायो तद कह्यो—'ग्रबै माल-मता बताय? पछै बताई।—नैणसी

उ०—३ पग ठग किणरा मानै। सगळा दोळा व्हिया जको रोवता-रोवता उण रो सगळो माल मतो खोस लियो।—फुलवाडी

२ व्यापारिक सामान, सामग्री।

उ०—गयो दिन रा माल मत्तो उखणतो। इण गाव सू उण गांव मे मिणियारी-माल पुगावतो।—फुलवाडी

माल-मलीदो—स० पु० [ग्र० माल+मलीद] बढ़िया भोजन, पकवान।

मालमोटियार, मालमोट्यार—स० पु०—पूर्ण-युवा, जवान।

माळयो—देखो 'माळियो' (रू भे) (ग्र. मा)

माळव, मालव—स० पु० [स० मालव] १ मध्य भारत के एक प्रदेश का नाम। (व. स)

उ०—माळव नेंड काविल मुकरांण, कासमीर हुरमुज खुरसाण।

—हो. मा

२ पजाब प्रान्त स्थित एक प्राचीन भू भाग या प्रदेश ।

३ उक्त देश का निवासी ।

उ०—अजड मेवाड राय जीप मालव तणा । तुरक दळ रहचिया रायमल तीर ।—महाराणा रायमल रो गीत

४ भैरव राग का एक भेद विशेष । (सगीत)

मालवउ—देखो 'माळवो' (रू भे) (उ र)

मालवकौसिक—देखो 'मालकोस' (रू भे)

उ०—मालवकौसिक राग मधुर धुनि, सुर नर को मन रजणं ।

माळवगिरी—स० पु० [स] १ मालवा स्थित एक पर्वत । (२) मालवा प्रदेश । (स कु)

रू० भे०—मालागर, मालागिर, मालियार

मालवगौड—स० पु०—वाडव जाति का एक सकर राग (सगीत)

माळवण—स० स्त्री०—१ मालवे की उत्पन्न तबाकू ।

उ०—सिंध री तमाखू नव सेर विकै १) री, जठै माळवण सेर विकै ।—वा दा ख्यात

२ मालवा देश की स्त्री ।

३ देवस्थान के चारो ओर का छोटा वन जिसकी लकडी नहीं काटी जाती है ।

४ चौहान वश की एक शाखा ।

माळवणी, मालवणी—स० स्त्री०—१ मालव देश की स्त्री ।

उ०—सउदागर राजा सु कह, सुणउ हमारी कथ्थ । मारवणी छानी रही, से माळवणी तथ्थ ।—ढो मा

२ एक प्रकार की लिपि । (प्राचीन)

रू० भे०—मालविणि,

मालवराउ, मालवराव—स० पु०—मालव देश का राजा ।

उ०—तपह प्रभाविइ मेठिग्रर नदन हूउ मालवराउ । इम विमासी पुण्यह ऊपरि घणउ करी मनि भाउ ।—हीराणद सूरि

माळवळो—स० पु०—कच्चे मकान के छाजन के बीच मे लगने वाली लबीमोटी लकडी ।

मालवसिरी, मालवस्री—स० स्त्री० [स० मालवश्री] एक रागिनी विशेष जो प्राय सायकाल को गाई जाती है, श्रीराग । (सगीत)

रू० भे०—मालसी, माल स्री,

मालवाखर—स० पु०—घोडे पर डाला जाने वाला पाखर, कवच ।

उ०—तेहे घोडे पच,विध पाखर सांचरी, मीणवाखर, मालवाखर, कातलीग्राली पाखर, राजपुत्र तेहे घोडे किस्या चढ्या ?—व स

मालविउ—देखो 'मालवियो' (रू भे)

उ०—गाजणि गोजी, वांणरसी काची, खेडावा हाचउल, मालविउ माडउ, पाडवसिउ खाडउ, गूजरउ लोटउ ।—व स

मालविणी—देखो 'मालवणी' (रू भे)

उ०—मालविणी नडि नागरि लाडलिवी पारसी य वोधव्वा । तह य निमित्ती अ लिवी चाणक्की मूलदेवी अ ।—व स

माळविया—स० पु०—लुहारो की एक शाखा । (मा. म)

मालवियो—स० पु०—१ मालव देश का निवासी ।

२ लुहारो की 'मालविया' शाखा का व्यक्ति ।

वि० १ मालव का, मालव सम्बन्धी ।

रू० भे०—मालविउ,

माळवी, मालवी—स० पु०—१ मालवा प्रान्त (प्रदेश) का घोडा । (शा हो)

उ०—मोवनरा ताजी च्यार माल, पच दोक दिना पौरस अपाल । धुर केक माळवी सरस धज्ज, भीमडाथ थळी वाळा भिडज्ज ।—सू प्र

२ मालवे का निवासी ।

३ श्रीराग के अन्तर्गत एक रागिनी । (सगीत)

४ एक प्रकार का गुड ।

वि०—मालव का, मालव सम्बन्धी ।

माळवीक, माळवीख—स० स्त्री—१ घोडे की एक चाल विशेष ।

उ०—वीखा भर लवी माळवीख । तै धाम एविया चूच तीख ।—सू प्र

२ ऊट की एक चाल विशेष ।

माळवीविद्या—स० स्त्री०—मालव प्रदेश की विद्या ।

माळवौ, मालवौ—देखो 'मालवउ'

उ०—१ म्हारी हळदी रो रग सुरग निपजै माळवै । हळदी मोल पसारी री हाट वनडा रै सिर चढै ।—लो गी

उ०—२ कांनड मेवाड मालवौ ।—धरमपत्र

मालस—देखो 'मालिस' (रू भे)

मालसाहिब—स० पु० यौ०—पूजी पति, धनवान । उ०-माल-साहिब तिकै मौज माणै मही ।—ध व ग्र

मालसी—देखो मालवस्री' (रू भे)

मालसेरणी—स० पु०—जडवेरी और समीवृक्ष (खेजडी) के पत्तों (पाला व लूग) के ऊपर किसानो से लिया जाने वाला एक प्रकार का कर विशेष ।

मालस्री—देखो 'मालवस्री' (रू भे)

मालांणी—स० स्त्री०—मारवाड में वाडमेर के ग्राम पास के प्रदेश का नाम ।

उ०—कावल राजधाणी करी, सत्र घर हाणी सीह । मालांणी घर मुरधरा, आणी 'पत्तै' अबीह ।—किसोरदांन वारहठ

रू० भे०—मलाणी,

माळा, माला—स० स्त्री०[स० माला] १ फूलों का हार, पुष्प हार, गजरा ।

उ०—सूड मे माळा लियां हाथी आवो भीड मे घूमैला । वो जिण किणी रा गळा मे माळा पैरावै, उण रै सागै ई राजकवरी रो व्याव व्हैला ।—फुलवाडी

२ कण्ठहार, हार, जजीर, लड ।
उ०—१ पेखि रोम पतिसाह माळ मोतिया समर्प्पे । घगमी भेजि मताव, आणि माळा मुज अर्प्पे ।—सू प्र.
उ०—२ आ वात करती वगत उणरी निजर राजकवर रै गळा रा नवलखा हार माथै पडी । वो काळा उणियारा रै बीच धोळा दात काढतो कह्यो—इण माळा रा बीस भिणिया देवो तो ओ तीतर आपरै मामी अठै इण वगत ई छोड दू ।—फुलवाडी
३ आभूषण (अ मा)
४ पक्ति, कतार, शृ खला, श्रेणी ।
उ०—१ माळा उड जोत लसी सुर माग । चमी रण आगण जोत चराग ।—मे म
उ०—२ ढाल ढळकइ नेजा फरकई, चाली परवत माळा ।
—रुखमणी मगळ
५ ईश्वर भजन या जप करने के लिये हाथ मे फेरी जाने वाली माला ।
उ०—१ वाकी सगळै दिन जप तप करती । माळा फेरती । घणाई व्रत-उपवास राखती ।—फुलवाडी
उ०—२ 'हरीया' माळा काठ की, पोयर फेरै हाथि । अदर काती कुबुधि की, मो तो मन कै साथि ।—स्री हरिरामदासजी महाराज
उ०—३ नगजी ने स्वामी जी पूछ्यो त नदरणमणीयारा नो बखाण मीस्यो है सो ओ मणियो लकडा रो है कै सोना रो है कै रुद्राक्ष माला रो है ।—भि द्र
६ मन में किसी का नाम जपने या ध्यान करने की क्रिया, रट ।
उ०—१ क्या फेरै कर काठ की, मन की माळा फेर । जनहरीया माळा फिरै, विना विचेरण मेर ।—स्री हरिरामदासजी महाराज
उ०—२ पछै कागली निरभै आपरा माळा मे ईडा दिया । मन मे ख्याळ रै नांव री माळा फेरती ईडा नै सेविया ।—फुलवाडी
उ०—३ किण रो गुरुजी मे तिलक बणाऊ, किणरी माळा फेर रे लोय । पच मुदरा रो चेला तिलक बणावो, निरगुण माळा फेरो रे लोय ।—स्री हरिरामजी महाराज
मुहा०—माळा जपणी, माळा फेरणी = ध्यान करना, जप करना, रट लगाना, किसी को निरन्तर याद करना, ईश्वर का नाम निरतर लेना ।
७ मुण्ड माला ।
उ०—१ वागा नेजाळा कजाक वीर वेताळा चाहाक वागा, माळा चाड वागा डाक डमरू महेस ।—राजा वखतसिहजी रो गीत
उ०—२ जगच्चरत माळत कोतुक जुद्ध, माळा कज सकर ढाळत मुद्ध ।—मे म
उ०—३ मिलम्मिळ मुड पुवै सिव माळ । तिलत्तिल रुड हुवै रिणताळ ।—मे म
८ किसी कार्य या बात का निरन्तर चलता रहने वाला क्रम, शृ खला । (सिरीज)
ज्यू—पुस्तक माळा ।
९ रेखा ।
१० झुण्ड, समूह ।
११ एक मात्रिक छद विशेष ।
उ०—१ दुजवर नव ता पछ रगण, करण ता पछै होय । अरध फेर गाथा अधर, माळा कहजै सोय ।—र ज प्र
उ०—२ पुर दळ धार नव वे भगण, रगण करण धर अत । अरध गाह अर वीअ दळ, माळा छद जपत—हरिपिंगल प्रकास
उ०—३ करि नव दुज रगण करण, इम पय गण इग्यार । अवर अरध गाहा अरध, गुण माळा सिणगार ।
—पिं प्र
१२ निसाणी छद का एक भेद ।
उ०—कीला, लीला, थिरा, कुवारी, वीणा, रगी, चगी, वारि । विद्या, माला, वाणा वास, नीसाणी रा वारा नाम ।—पिं प्र
१३ उपजाति छद का एक भेद ।
१४ दूब ।
१५ आंवला ।
१६ एक प्राचीन नदी का नाम ।
१७ तलवार के नीचे का एक भाग जो कुछ मोटा होता है ।
१८ राठौडो की एक शाखा ।
उ०—१ जैतमाल माला जठै, वाला साहस वध । पण जेता जुध प्राथिया भार धरा धर कध ।—रा रू
उ०—२ मिळे जैत माला, मुदी वेल माला । वरापूर सूरा धजा सगि वाला ।—रा रू
रू० भे०—मालि, माळी, माली, माल्य ।
१९ देखो माळ' (रू भे)
उ०—१ भव २ भमते पार न पायो, मोह रहट की माळा । पावु ग्यानी तो अव पूछु, कव यह मिटय कसाला ।—ध व ग्र

माळाकार—स० पु० [स० माला+कर माला+कार] १ माली ।
२ मालियो की एक जाति ।
३ पुराणानुसार एक जाति जो विश्वकर्मा और शुद्रा के सयोग से उत्पन्न हुई, वर्ण सकर जाति ।
मतान्तर से—पराशर पद्धति के अनुसार यह तेलिन और कर्मकार से उत्पन्न है ।
रू० भे०—मालीकार ।

मालाखाड—स० पु० [सं० मल्ल+अक्षवाट] व्यायामशाला, अखाडा ।
उ०—मारिउ कुवलय चापी रे, काढिय यादव सल साल । सवि कहइ जाता सहारया रे, मालाखाड इ माल ।—चतुरभुज

माळागर—देखो माळवगिरी' (रू भे)
उ०—थेट्ट घर सवर ऊडा सर धारै, आरै माळागर मूढा रै

आगे ।—ऊ. का

माळागळ-स० स्त्री०—मालवा की भूमि, मालव प्रदेश ।

माळागिर—देखो 'माळवगिरी' (रू भे)

उ०—चाल्यौ प्रोहित माळागिर देस, वस्त्र कखवर अरि भला वेस । हाथ कमडळ झळझळई, ब्राह्मण वेद भणइ झूणकार ।
—वी दे

माळाजप-स० पु०—माला जपने की क्रिया या भाव ।

माळादीपक-स० पु०—दीपक अलकार का एक भेद जिसमें पूर्वोक्त वस्तुओ से उत्तरोत्तर वर्णित वस्तुओ का सम्वध एक ही धर्म से स्थापित किया जाता है ।

वि० वि०—यह 'दीपक' एव 'एकावली' अलकार के मेल से बनता है ।

माळादेवि, माळादेवी-स० स्त्री०—विंध्याचल पर्वत पर रहने वाली एक देवि ।

उ०—१ डवा पच वरस कन्यका आई, मालादेवि तिका महमाई ।
—सू प्र

उ०—२ चव इम सुणी दियै वर चाहै । मालादेवि विंझ गिर माहै ।—सू प्र

माळाधर-स० पु०—१ एक छद विशेष जिसके प्रत्येक चरण मे प्रथम चार लघु मात्रा, फिर जगण, फिर भगण फिर तगण व अत मे गुरु होता है ।

उ०—दुज ज भ त गुर पाय प्रत, सो माळाधर क्रत्य ।
—र ज प्र

२ सतरह अक्षरो का एक वर्णिक छद जिसके प्रत्येक चरण मे नगण, सगण, जगण, फिर सगण, यगण और अत मे लघु गुरु होता है ।

माळाधरा-स० पु०—१७ वर्णो का एक वर्णिक छद जिसके प्रत्येक चरण मे जगण, भगण, जगण भगण व रगण अत मे गुरु वर्ण होता है ।

माळाधार, माळाधारी-वि०—माला धारन करने वाला, पहनने वाला ।

स० पु०—१ सन्यासी ।

२ वैष्णव ।

३ साधु ।

माळामणियौ, माळा मिणियौ-स० पु० यौ०—ईश्वर आराधना मे फेरी जाने वाली माला का मनिका ।

उ०—१ घर हाला भाई-वेटा मन्नै सदा कैंवता रैंता—वदरीजी जावो, अडसठ तीरथ न्हावो । धरम-पुन्न करो, माळा मणियो फेरो ।—दम दोख

उ०—२ जे कोई टीका-टमका करै, माळा-मिणियौ फेरै, पोथी पानडो उघाडै वो आपरो मजैरो वाको धिक्का लेवै ।
—दम दोख

मालाळी-स० स्त्री०—प्रस्थान के समय वाई तरफ बोल कर शकुन देने वाली चिडिया ।

उ०—१ वाहर नीसरती काल घणी सखरी मालाळी हुई ।
—कुवरसी साखला री वात

उ०—२ तिण ऊपरा रूपा मालाळी हुई ।
—जेतसी ऊदावत री वात

रू० भे०—माल्हाळी ।

मालाळौ-स० पु०—१ प्रस्थान करते समय बाई तरफ बोलने वाला तीतर ।

२ वायी ओर से दाई ओर आकर शकुन देने वाला हरिन (शुभ)

उ०—१ तिकै आछा सावण मांग्या । तरै पहिली हिरण मालाळा हुवा ।—जैतसी ऊदावत री वात

उ०—२ तरा पछै गोरहर मालाळौ हुवौ ।
—जैतसी ऊदावत री वात

वि० वि०—उपर्युक्त शकुन (मालाळा) घर से प्रस्थान करते समय शुभ माने जाते हैं और लौटते समय अशुभ माने जाते हैं ।

रू० भे०—माल्हाळौ ।

मालावती-स० स्त्री०—एक प्रकार की सकर रागिनी । (सगीत)

मालि-स० स्त्री—[स०] १ सुकेश राक्षस का पुत्र जो माल्यवान और सुमाली का भाई था ।

२ देखो 'माळा' (रू भे)

उ०—तदनन्तरु ऊपेलइ मालि, प्रसन्नइ कालि, सुवर्णमय स्यालि, मोटइ झमालि • ••—व स

२ देखो 'माळी' (रू भे)

उ०—ते तु नील रतन तणउ, ऊपरलइ मालि, मध्यान्ह कालि, केलिपत्रइ छाया, इस्या मडप नीपाया, तलइ माड्या पाट ऊपर पाथरघा रेसमी घाट ।—व स

३ देखो 'माळी' (रू भे)

मालिओ—देखो 'मालियौ' (रू भे)

उ०—मणि माणक मोटा, मालिआ, सोना रूपां नो थालिया ।
—कविगुणविजय

मालिक-स० पु० [अ] १ ईश्वर, परमात्मा ।

उ०—कहियो सुणि दूदै 'कवर', इळा न लैणी और, ल हालो वूंदी लगा, जाणू मालिक जोर ।—व भा

२ अधिपति, स्वामी ।

उ०—१ मालिक कावुल मुलकरो, कमरो माजि कटक्क । जग करण अप जैत हू, आयो लाधि अटक्क ।—मे म.

उ०—२ भर योडा दिना मे वडा विस्वास रै साथ महानम री मालिक होइ चारण री चाकरी मे चित लगाइ चातुराई री रीझ चही ।—व भा

३ सम्पति या जायदाद का हकदार, वारिस ।

४ पति, स्वामिद।

उ०—जठै वढण वाढ़ण नू बुलावण री वव वाजियौ सुण मागळियाणी मालिक रा उमीसो हुवौ आपरौ वामेतर वाहू अवेरियो।—व. भा

५ पदाधिकारी, अधिकारी।

६ अध्यक्ष, सरदार।

७ नरक का अध्यक्ष एक देवता।

स०—८ माली।

उ०—चतुस्पथ राज मारग गधिका पण दौस्यिका पण सोवरणकार कास्यकार मणिकार पूगीफल ता बूलिक मालिक सोत्रिक —व म

९ रगरेज।

१० चित्रकार, चितेरा।

रू० भे०—मालक।

मालिकपणौ—स० पु०—१ मालिक होने की अवस्था या भाव।

२ स्वामित्व। ३ हकदारी।

मालिका—स० स्त्री०—१ हार, माला।

२ गजरा।

३ चमेली।

उ०—ताल साल मालिका, वकुल कुवजक खरजूरी वोलसरी माधुरी, निगर मरहरी सनूरी।—रा रू

४ शराव, मदिरा।

५ पुत्री, बेटी।

६ अलसी।

७ लता-गुज।

८ मुरा नामक गंध द्रव्य।

मा'लिछमी—देखो 'महालक्ष्मी' (रू भे)

माळिण, माळिणी, माळिन—स० स्त्री० [स० मालिनी] माली जाति की स्त्री।

उ०—१ (इमी) जु मालिण छै सु वनि वनि रै विखै केसरि चुणै छै।—वेलि टी

उ०—२ वणि वणि माळिणि केसरि वीणति, भूली नख प्रतिविंव भ्रम।—वेलि

मालिणी, मालिनी—स० स्त्री० [स० मालिनी] १ दुर्गा देवी एक नामान्तर।

२ सात वर्ष की कन्या जो दुर्गा पूजा मे दुर्गा की प्रतिनिधि मान कर पूजी जाती है।

३ गौरी।

४ स्कन्ध की सप्त मातृकाओं मे से एक।

५ आकाश गगा।

६ रौच्य मनु की माता का नाम।

७ एक प्राचीन नदी जिसके तट पर शकुतला का जन्म होना माना जाता है।

८ विभीषण की माता का नाम।

९ अज्ञातवास के समय द्रौपदी का एक नाम।

१० पद्रह वर्ण का एक छद जिसके प्रथम चरण में दो नगण, फिर एक भगण अत मे दो यगण होते हैं।

रू० भे०—मालणी।

मालिम—देखो 'मालम' (रू भे)

उ०—जळमूक सजळ बीजळ जिसी, धकै खाग खेटक धरी। कर जोड जुलम जालिम कथा, कमध मोड मालिम करी।—मे म.

उ०—२ वळै हुई तिणवार, महीपति हू कथ मालिम। जुध करि अढियो जवन, खान अबदुल खुदालिम।—सू प्र

उ०—३ पवननउ पूर, कूआथभउ डोलइ, तिवारइं मालिम छांडइ, अकस्मात् धूअरि पडिवा लागी —व स

मालियत—स० स्त्री० [अ०] १ धन, द्रव्य।

२ सम्पति, जायदाद।

३ मूल्य, कीमत।

मालियार—देखो 'मालव गिरी'

मालियोडी—देखो 'माल्हियोडी' (रू भे)

(स्त्री० मालियोडी)

माळियौ, मालियौ—स० पु०—१ मकान के ऊपरी मजिल पर बना हवादार कमरा।

उ०—१ सोने तो रूपै सायवा, ग्रीट पडवायजी। जिण रा चिणाय दो महल'र माळिया जी।—लो गी

उ०—२ रे मदर रे माळिया, हिव तुझ हग न भरेस। जिण कारण हम आवता सो चाल्या परदेस।—अग्यात

उ०—३ राते माळीयै सूता। सोनगरां जाणीयो—परभाते माळीया सु उतरता मारसा।—राव रिणमल री वात

२ ऊपरी मजिल पर बने महल। (अ मा)

उ०—१ अति विसाल दीरघ अधिक, मोमत अधिक अनूप। मदर सुदर माळिया, नानाविध के रूप।—गजउद्धार

उ०—२ सुदर मदिर मालिया, मुलकती नेह विलुद्ध। पूरे हाये पूजियो, परमेस्वर मन-सुद्ध।—जयवाणी

३ महल, अटारी।

उ०—१ तठै राजा इयै री रूप देख बहुत राजी हुवौ। नायण ना पण इनाम दे नै फूलमती नु भीतर ले गयो तठै रान पडी जद राजा फूलमती कै माळीयै गयो।—सूरां सतवादियां री वात

उ०—२ गुरड जेम पाखिया नाग अगमाग मे, गौड गजवध घज वध गोडे। अवर पखिया जही ताळीयै न उडे, माळियै सोहियो भ्रिसण मोडै।—अनिरुद्धसिंह गौड़ री गीत

४ घर, मकान।

५ दालान।

रू० भे०—माळयौ, मालियौ मालीड

मालिस—स० स्त्री० [फा० मालश] १ मलने की क्रिया या भाव।

२ शरीर पर तेल आदि स्निग्ध पदार्थ मलने की क्रिया, उबटन, मर्दन ।

३ चमकीला बनाने के लिये की जाने वाली रगडन।

रू० भे०—मालस,

माळी, माली—स० पु० [स० मालिन्] (स्त्री० मालण) १ प्राय बागवानी या साग सब्जी का उत्पादन व कृषि कार्य करने वाली एक जाति ।

उ०—१ माळी ग्रीखम माय, पोखि घणौ द्रुम पाळियो । जिणरो जस किम जाय, अत घण वूठां ही अजा ।—अग्यात

उ०—२ माळी रौ बेटो हू, धूळ अर बूटी देखनै धरती री ठा पटकू ।—फुलवाडी

उ०—३ वूज्यो चारण मालीडा रो पूत, बाग बताग्रो राजाजी रो कुण सो जी म्हाराराज ।—लो गी

उ०—४ माली तबोली छीपा परीयट बधारा तूनारा सोनारा ठांठारा लोहार चमार ।—व स.

२ उक्त जातिका व्यक्ति ।

उ०—माळी पूछ्यो—थनै की जाच है के अपां कठै आयग्या ? मालण कह्यो—कोई दस वीस खेतडा अळगा, कोई हेमाळो तो लाधणा सू रह्या ।—फुलवाडी

३ बागबानी का कार्य करने वाला कोई व्यक्ति ।

४ मिट्टी के बने कोठे मे छोटी २ वस्तुओ के रखने हेतु बनाया गया कगूरा, प्राचीर ।

उ०—गुला ! दस रुपिया कोठा री माळी मे पड़िया रहता तो इतरो पाप तो न लागतो ! इसो आरभ क्यू कीधो ।—भि द्र

५ राजीव गण नामक छद विशेष ।

वि०—१ जो माला धारण किये हुए हो, माला-धारी ।

[अ] २ माल से सम्बधित, आर्थिक ।

३ देखो माळा' (रू भे)

उ०—देखउ तुम्हे असोक माली नव पुस्पनी पूजा लगई ।—व स

रू० भे०—मालि,

अल्पा०—माळीडो, मालीयडो,

मालीइ—देखो 'माळियो' (रू भे)

उ०—कोए पण तो जाणि नही रे तेहना करमनी काहांणी जी । मालीइ त्याहारि बिठी हूती राजमाता ते रांणी जी ।—नलाख्यान

मालीकार—देखो 'माळाकार' (रू भे)

माळीडो—देखो 'माळी' (अल्पा , रू भे)

उ०—वूजो भवरजी माळीडा रो पूत ऐजी ओ मायला, म्हांनै बाग बताग्रो अमल कलाळ रो जी म्हारा राज ।—लो. गी

मालीत—स० स्त्री०[अ० मालियत] द्रव्य, सम्पत्ति, धन ।

उ०—१ सिवलाल कै दली की उकीलायत, त (अ) ने बावन कला रो काम, कोड रुपिया की ध (घ) रे नगद मालीत ।
—मयाराम दरजी री वात

उ०—२ म्हे घण मालीत ले आप कनै हीज आयो छु । तरै हरकरै पूछियो—ठाकुरा मो बताइजै जो माहरो पण मन राजी होऐ । तरै आप जाघ चीर रतन बताडिया ।—कल्याणसिंह वाढेल री वात

माळीपनो, माळोपन्नो—स० पु०—किसी धातु विशेष (समवतः लोहा) से निर्मित अत्यन्त बारीक पत्र जो तेल सिन्दूर के साथ हनुमानजी, माताजी, भैरूजी आदि देवि देवताओ की मूर्तियो पर चिपकाये जाते हैं ।

उ०—पण तीडो मन मे आछी तरै जाणतो हो के जे देगची मे आज ओ जीव नी व्हैतो तो उणरी मौत ही । सगळा माळीपन्ना उतरता जका तो उतरता ई पण आज मरणा मे घाटो नी हो ।
—फुलवाडी

मुहा०—१ माळीपना उतरणा=बेइज्जती होनी ।

२ माळीपना चाढणा=देवि देवताओ की पूजा करना, आडम्बर करना ।

३ माळीपना लागणा=पूजा होनी, आदर सत्कार होना ।

मालीबापची—सं० स्त्री०—एक प्रकार क्षुप जिसके बीज विशेष कर रक्त शोधक माने जाते हैं ।

रू० भे०—माळीबापचो

माळीबापचो—देखो 'माळीबापची' (मह., रू भे)

मालीयडो—देखो 'माळी' (अल्पा , रू भे)

उ०—माळीयडा तू मोकलि; अह्मनइ कुसुम अनीठ । फेरी फेरी फूलडे, पगर भरेस्यू पीठ ।—मा कां प्र

मालु—स० स्त्री० [सं०] १ स्त्री, औरत ।

२ एक लता विशेष ।

मालुधांन—स० पु० [स० मालु+धान] १ आठ प्रमुख नागो में से एक । (पुराण)

२ एक सर्प विशेष ।

३ महापथ ।

मालुपडो—देखो 'मालपूओ' (रू भे)

उ०—पाचवो मास उलरियो ए जच्चा मालुपडै मन जाय । छटो मास उलरियो ए जच्चा घेवरिये मन जाय ए ।—लो गी

मालुम—देखो 'मालम' (रू भे)

उ०—तथा स्री चद फरजद परतू तणो, पाय सकट घणो खुडद पूगो । कमट सहियो जिको हाल मालुम कियो, हाल कहियो अतै व्हाल हूगो ।—मे म

मालूपो—देखो 'मालपूओ' (रू भे)

मालूम—देखो—'मालम' (रू भे)

उ०—१ मिळतो मगण नू कहै, मुदो करू मालूम । मारग लागो मत टिको, हाजर नाजर सूम ।—वां दा

उ०—२ दायजै री डरावणी वातां अर कालेज री ख्यातां मे रात-दिन रो अतर है,मनै-पोत ही मालूम हुयो है के—आजकालै रा व्याह-सावा, एक अयोग आफत रो मोरचो है ।—दसदोख

मालूर-स० पु० [स] १ बिले का वृक्ष । (अ. मा)
२ कैथे का पेड ।

मालेकम सलाम-स० पु० यौ०—ईश्वर सम्बन्धी अभिवादन,दुआ-सलाम, राम राम ।
उ० —सबकी है मालेकम-सलाम, अब जल्दी कीजै कतल आंम ।
—ऊ का

मालेरियो-स० पु०—रहट के अन्दर लगने वाला लकड़ी का एक डंडा, जो माल को सुचारू रूप से चलाने का कार्य करता है ।

मालोच-स० पु०—१ आव भगत, आदर-सत्कार ।
२ उपचार ।

मालोपमा-स० स्त्री०—उपमा अलंकार का सातवा भेद जिसमे एक ही उपमेय के लिये अनेक उपमानो का गुम्फन होता है । एक ही उपमेय को उपमानो की माला पहनाई जाती है ।
रू० भे०—मालोवम

मालोमाल-स० पु० [फा० मालामाल] धन से परिपूर्ण, सम्पन्न ।

मालोवम—देखो 'मालोपमा' (रू भे.)
उ०—तासु पट्टि जिणचंद सूरि, गुणमणि रोहण सम । विहिय जेण संवेग-रंग-साला मालोवम ।—धरमकलस मुनि

मालोहड-स० पु०—जैन धर्मानुसार एक दोष जो, ऊपर,नीचे या तिरछी रखी हुई वस्तु को पीढा या सीढ़ी लगा कर उतार कर साधु को देने से लगता है ।

माळो, मालो-स० पु० [अ० महल] १ पक्षियों का घोंसला नीड ।
उ०—१ पचे देखि नैं कह्यौ कुरदांतळी रा ईंडा ल्यावैं तैरी वडाई । ताहरा एकै पीपळ रौ माळो हेरि नैं आया ।—चौबोली
उ०—२ कमरा कचरा सू भरघा पडघा हा अर ठोड-ठोड काळतरा रा जाळ अर पखेरुवां रा माळा हा ।—रातवासो
उ०—३ बरस बीस कांउमग रह्यउ, वेलडिए वींटाणउ रे । पखी माळा मांडिया, सीत तावड सोखाणउ रे ।—स कु
२ खेत की रखवाली करने या शिकार करने के लिये किसी पेड पर बनाया जाने वाला मचान, मच ।
उ०—सो ऊची जायगा देखि ब्राह्मण माळो घाल्यो । सो उवो ब्राह्मण जद माळा ऊपर चढै तद उदार मन होय अर उत्तरै तौ कृपण रो कृपण ।—सिंहासन बत्तीसी
३ तलवार मे संधि या जोड जो मूठ के पास होता है ।
४ देखो 'मल्लो' (रू भे)
रू० भे०—माळि, माहालइ, माहालो,

मालय—देखो माळा' (रू भे)

माल्यवत, माल्यवांन-स० पु० [सं० माल्यवत] १ सुकेश नामक राक्षस का जेष्ठ पुत्र एक राक्षस, जो रावण का मातामह एव सभासद था ।
२ पुष्पदत नामक गधर्व का पुत्र ।
३ इलावृत वर्ष एव केतुमाल के बीच का एक पर्वत । (पौराणिक)
वि०—जो माला पहने हुए हो ।

माल्हण-स० स्त्री०—एक देवि का नाम जो दूल्हेराज बारहट की पुत्री थी ।
उ०—वजै माल्हणा मात तू ही बिराई, वळू तू प्रथीराज रै राजबाई ।

माल्हणो, माल्हबो-स० स्त्री०—१ मस्ती मे झूमना, झूमते हुए चलना ।
उ०—माल्हतो घरि आगणै सखी सहेलो ग्रांमि । जो जाणु पिय माल्हणो जै मल्है सग्रामि । ग्रांमि सग्रामि झूझार माल्है गहड, अरि घडा सेमवै आप न खिसै अनड । घाइ भाजै घडा साग पाछै घणो । मेर माझी जसो हेक रिण माल्हणो ।—हा झा.
उ०—२ घूमणीयो चौधार धारी, बीजळता वारी । खंड दळ खंड पती, माल्हीयो मयद गती ।—गु रू व
उ०—३ मुहड रजपूत तो इण सरदार रा मतवाळा हुवोडा घूमै वा माल्है आगा पाछा फिरै छै ।—वी स टी.
उ०—४ हस गति जिम चालती, मयगल जिम माल्हती, कामिनी गरव भाजती······ ।—व स
२ आनन्द करना, मौज करना ।
उ०—१ तुम्हथी कुण मुझनइ वाल्हू , हु तउ तुमहिज ऊपरि माल्हु हो ।—वि० कु०
उ०—२ मद्यप जिम पदि पदि स्कलतउ लीलां चालतउ, रमसि माल्हतउ क्रीडा खेलतु, सूत्कार मेल्हतउ ।—व. स.
३ उप भोग करना, भोग करना ।
उ०—लीलइ केलि घणी,घणी प्रिय तणी मेहइ लगी लाजती । दीसइ ते रति माल्हती, मयण नी पूठिइ जिसी आवती ।
—प्राचीन फागु सग्रह
४ मदगति से निर्भय चलना ।
उ०—१ कवि सुमहा करि कुरब, सझै आणंद समाजा । मगज धार माल्हियो, राजमिदर महाराजा ।—सू प्र.
उ०—२ मझी समर बीर नारद अखर माल्हिया । माल्हिया वयडचा समर माहे ।—राव बुधसिंह हाडा रो गीत
५ जन्म लेना, अवतार लेना ।
उ०—मामड रै माल्हिया, नाव आवड नैं आई । आई रो अवतार, हुआ करनळ मेहाई । मे म
६ मस्ती मे बोलना, झूमना, मस्त होना ।
उ०—पण पारवती री अवतार आ सुगन चिडी तो परदेसा जावता डावै माल्है है । पछै कीकर आगै बवणी आवै ।—फुलवाडी
७ मडराना ।
उ०—परिमल बहकती मालती, माल्हती भमरनी स्रेणि । प्रीयडा सरण निहालजो, बालजो रूपडु जेणि ।—प्राचीन फागु सग्रह
८ व्याप्त होना, जागृत होना, उद्दीप्त होना ।
उ०—जिम जिम पमरइ साल ए माल्हइ तिम तिम काम । निय परिमळ गुण पाडल, लाड लहइ अभिरांम ।—प्राचीन फागु सग्रह
९ विध्वस करना, नाश करना ।

१० ग्रस्त व्यस्त करना।

११ मलार राग गाना।

माल्हाळी—देखो 'मालाळी (रू भे)

उ०—बाहर पधारता नेकाळ घणी सखरी मनमानी माल्हाळी हुई। ऊरा तुरत लाभ री सांपूणी हुई।—कवरसी सांखला री वारता

माल्हणहार, हारो (हारी), माल्हणियो—वि०

माल्हिग्रोडो, माल्हियोडो, माल्ह्योडो—भू० का० कृ०

माल्हीजणो माल्हीजवो—कम वा०

मालणो, मालबो,माहालणो माहालबो—रू० भे०

माल्हाळो—देखो 'मालाळो' (रू भे)

उ०—खुदाई-खुदाई तोब तोब करतउ नाठउ, जातउ गणउ, घाठउ माल्हाळा हिरण तणी परित्राठउ।—रा सा स

माल्हियोडो–भू का कृ—१ मस्ती मे झूमा हुआ, झूमते हुए चला हुआ।

२ आनन्द किया हुआ, मौज किया हुआ।

३ भोग किया हुआ, उपभोग किया हुआ।

४ मद गति से निर्भय चला हुआ, घूमा हुआ।

५ जन्म या अवतार लिया हुआ।

६ मस्ती मे बोला हुआ, झूमा हुआ, मस्त हुवा हुआ।

७ महराया हुआ।

८ व्याप्त, जागृत व उद्दीप्त हुवा हुआ।

९ विध्वस व नाश किया हुआ।

१० ग्रस्त व्यस्त किया हुआ।

११ मलार राग गाया हुआ।

(स्त्री० माल्हियोडी)

रू० भे०—मालियोडो

मावड—देखो 'माता' (मह ,रू भे)

उ०—मावड़ बैठी थेपडै ने हियो हुलराय। दूध पिया ने दो दिन हुयग्या नीद कठा सू आय।—चेत मांनखा

मावडली—देखो 'माता' (अल्पा', रू भे)

उ०—मावडली विना धीवडली निरधार। मावडली विना हो बापजी सूनो ससार।—लो गी

मावडियाँ—देखो 'मावलिया' (रू भे)

मावडियो–वि० [स० मातरि पुरुप] १ जो केवल घर मे ही (अपनी माता आदि के सामने)वीरता की वातें करता हो, कायर, डरपोक।

उ०—१ पायो किण धनवत पद, दांमें डावडियाह। कवियण किन पायो कुरव, मार्गं मावडियाह।—वा दा

उ०—२ होस उडै फाटै हियो, पडै तमाळा आय। देखे जुध तसवीर द्रग मावडिया मुरझाय।—वा दा

उ०—३ गरवे फोडै कुभगज, घणावळ घावडियाह। पापड फोड पोमावही, मन मे मावडियाह।—वा दा

२ जिसका स्वभाव तथा हाव-भाव स्त्रियों जैसा हो।

उ०—१ मावडियाँ अग मोलिया, नाजुक अग निराट। गुपत रहे ऊमर गमै, खाय न निजवळ खाट।—वा दा

उ०—२ कर मुख दे लचकाय कट झनक चलै सुर झीण। मावडियो महिला तणी, मारै रोज मलीण।—वा दा

३ सदा माता के पास रहने वाला।

उ०—जाय नवोढा सासरै, आसू नाख उसास। मावडिया जावै मुहम, इण विध हुवै उदास।—वा दा

मावडी—देखो 'माता' (अल्पा , रू भे)

उ०—१ भागळ भारथ भीड में, वाणी सह विसरत। मुख बापुडो मावडी, भाईडो भाखत।—वा दा

उ०—२ मैं तो मरू के जीवू म्हारी मावडी। ऐ तो कमवजिये बोल्या हे रे बोल'—लो गी

उ०—३ साम्हउ जो इकवार मन वालइ थारी मावडी जी हो। नांण्यउ नेह लगार सालि भद्र साम्हउ जोयउ नही जी हो।—स कु

उ०—४ म्हारो बूढो बाप, म्हारी बूढी मावडी अर म्हारा सान्यू भाई म्हारा- नाव नै रोय रोय मरग्या व्हैला।—फुलवाडी

मावड्या—देखो 'मावलिया' (रू भे)

मावजाणो, मावजो—देखो 'मुआवजो' (रू. भे)

मावट,—देखो 'मावठ' (रू भे)

मावटी–स० स्त्री०—स्त्रियो का एक आभूषण।

उ०—मागि भरइ सरि मावटी मस्त कि भरीया खुप। भमहडीए भमरा भमई चाद्र यसउ मुखरूप।—मा का प्र

मावटो, मावठ, मावठो–स० पु० [स० माघ–प्रावृट्] हेमत ऋतु या माघ मास मे होने वाली साधारण वर्षा।

उ०—मावट पोवट मध्य, गुलम गण कूपळ काढै। नेसावरिया डगा, घणेरा घुरडै वाढै।—दसदेव

रू० भे०—मावट, माहट, माहवठउ, माहुटि

अल्पा—माहावठी,

मावडी—देखो 'माता' (रू भे)

उ०—रातिल मोरी मावडी, हु छउ तोरू बाल। परिपरि पीडाती गणी, स्वामिनि करि सभालि।—मा का प्र

मावणो, माववो–क्रि० अ० [अ० समाना] १ किसी घेरे या क्षेत्र मे आजाना, समाजाना।

उ०—१ जिकण नू मीणा रा मारण रो निश्चय जणाइ उण रो वडो पुत्र कुमराज १ तिण हू छोटो कन्हड २ या दो ही ववना नू वडी वरात रै साथ बरण नू बुलाई मीणा रै मावण जिसडो एक १ बाडो जुदो वणायो।—व भा

उ०—२ सटा न मावै वाथ मे, फनग अटा गरकाव। पेख छटा मूर्कपटा, सिघुर घटा सताव।—वा दा

२ सीमा मे रहना।

उ०—१ इद्र धनुख तणियो अजब चातुक धुन मन चाव । वीज न मावै बादळा, रसिया तीज रमाव ।—बा दा

उ०—२ पण झीणा अर ऊजळा गाभां रै ओलै बूढापो कद मावै ।
—दसदोख

३ खटना, रहना ।

उ०—बेटी किमी घर मे थोडी मावै दोरी-सोरी फेरो तो देणो ही पडगी ।—दसदोख

४ निभना ।

५ सहन होना ।

६ हजम होना ।

मावणहार, हारो (हारी), मावणियो—वि० ।

माविप्रोडो, मावियोडो, माव्योडो—भू० का० कृ० ।

मावीजणो, मावीजबो—भाव वा० ।

माणो, मावो—रू० भे० ।

मा'वत—१ देखो 'महावत' (रू भे)

उ०—१ मुजरो कर मा'वता आवन सवीया अवारै । यार वीन वी खुदाय, माहयली अला उचारै ।—बखतो खिडियो

उ०—२ नेम कहे मावत भणी रे ए जीव किण काजो । बलतो वोले सारथी रे साभल जो महाराजो ।—जयवाणी ।

२—देखो 'माईत' (रू भे)

उ०—वण सगे वण मागवे, वण नातरिए नेह । वण मावत रे जीवीये, तु वण मरी ए मेह ।—जेठवो

मा'वतसत्तर—स० पु० [राज० महावत+स०शस्त्र] हाथी को हाकने का शस्त्र, अकुश । (हि को)

मा'वथ—देखो 'महावत' (रू भे)

उ०—विगर मा'वथ हाथी लडै ।—जयवाणी

मावर, मा'वर—देखो 'महावर' (रू भे)

मावलिया—स० स्त्री० व व [स० मातृका] एक प्रकार की सप्त देवियो का समूह जो लोक देविया मानी जाती हैं । बालको के रोगो मे इनके प्रकोप का कारण माना जाता है ।

वि० वि०—महाभारत (वन पर्व अध्याय १२८) मे स्कद मातृकाओ के रूप मे इनका विस्तृत विवरण देते हुए सप्त शिशु मातृकाओ के नाम इस प्रकार स दिये हैं—काकी,हरिमा,मालिनी, वृहता, आर्या, पलाला और वैमित्रा ।

अध्याय २३० मे अन्य प्रकार से वर्णन करते हुए लिखा है कि सप्त ऋषियो ने जिन पत्नियो का त्याग कर दिया था, वे सब स्कद के पास पहुची । उनकी प्रार्थना पर उन्हे मातृकाओ के रूप मे स्वीकार किया । इन्होने स्कद से कहा कि "ब्राह्मी, माहेश्वरी आदि लोक माताएं जो पहले से ही मानी जाती हैं वे अपना स्थान छोड दे और इनके स्थान पर हमारी पूजा हो । उन्होने हम पर मिथ्या अपवाद लगाकर हमे सतानवाली नहीं होने दिया इसलिये इन माताओ की सतान हमे खाने के लिये सौंप दी जाय ।" स्कद ने इनकी प्रार्थना स्वीकार की परन्तु साथ ही उनसे उक्त सतानो की रक्षार्थ भी प्रार्थना की इन मातृकाओ ने स्कद को सतानो की रक्षा का वचन दे दिया । तदनन्तर स्कद ने इनके आवास के लिये स्कदापस्मार नामक गृह समूह बनाया एव यह तय किया कि वे बालको पर सोलवें वर्ष तक ही बाधा दे सकेंगी ।

ये शिव और अशिव दो प्रकार की मानी जाती हैं । अत इनके पूतना, शीत पूतना, शकुनि,रेवती, मुख मण्डिका सरमा आदि नाम भी प्राप्त हैं ।

कुमार गुप्त प्रथम के एक शिला लेख मे मातृकाओ एवं डाकिनी आदि का वर्णन मिलता है ।

वृहत्सहिता के टीकाकार उत्पल ने मातृकाओ मे ब्राह्मी, वैष्णवी, माहेश्वरी, कौमारी, ऐन्द्री, यामिनी, वारुणा आदि नाम गिनाए हैं । रूप मडन के अनुसार पहले वीर भद्र की मूर्ति होनी चाहिये उसके बाद मातृकाओ तथा अत मे विनायक की ।

इसी प्रकार अन्य पुराणो मे भी मतृकाओ का उल्लेख है । ऐसा प्रतीत होता है कि मातृकाओ के दो स्वरूप थे । एक पौराणिक और दूसरा लौकिक । पौराणिक रूप मे ब्राह्मी, माहेश्वरी आदि की गणना की जा सकती है और लौकिक मे अन्य देवियो की । ये दोनो रूप आरम्भ मे एक दूसरे से भिन्न रहे होगे, परन्तु कालान्तर मे एक हो गये ।

पर्या०—ऊपर लिया, बायासा, बीजासणिया, मेलडियां, रेवतियां,

रू० भे०—मावडिया, मावडया

मावळियाई माई—स० पु० यौ०—सहोदर भ्राता ।

मावली—स० स्त्री—१ दक्षिण भारत की एक पहाडी वीर जाति ।

२—देखो मावलिया (व व) उ०—चावळा भरियो बाटको मे वह, ये कित चाल्या जी राज । आज म्हारा मावली मढ में विराजे-म्हे धोकण पूजण जाय विजासण हरख होलरियो जी राज । आज म्हारी मावली मढ मे विराजे ।—लो गी

१—देखो माता (अल्पा , रू भे.)

मावस—देखो 'अमावस' (रू भे)

उ०—ज्ञान सवद सति अरथ बिचारे, मावस मन का मेल उतारे ।
—ह पु वा

मावसी—देखो 'मासी' (रू भे)

उ०—नही म्हारी माय न मावसी हो राजा । कुण म्हारी आणी लई जाय ।—लो. गी

मावस्या—देखो 'अमावस' (रू भे)

मा'वारुणी—देखो 'महावारुणी' (रू भे.)

मावाळी—स० स्त्री—मिट्टी के बर्तन की वृद्धि के निमित्त उसके ऊपर लगाई जाने वाली मिट्टी ।

मावित, मावित्र, मावीत—देखो 'माईत' (रू भे)

उ०—१ छोरू हुवे केई खोटा रे, पिण मावित सदा होवे मोटा रे ।
—जयवाणी

उ०—२ वरजड ताइ सती ध्यान बइठी वळि, परम दयाळ किसी परवाह। मिस ईरण मिळवा मावीता, चींत सती चइ लागउ चाह।
—महादेव पारवती री वेलि

उ०—३ ता उपरि राजा भोज एक डको दीयो। ताहरां चौबोली रा मावीत सहर लोक सरव खुसी हुवा।—चौबोली

उ०—४ मावीत्र ग्रजाद मेटि बोलै मुखि, सुवर न को सिसुपाळ सरि। ग्रति ग्रवु कोपि कुंवर ऊफणियो, वरसाळू वाहाळा वरि।
—वेलि

मावीतपण, मावीतपणो—देखो 'माईतपणो' (रू भे)

मावीती—स० स्त्री०—१ वात्सल्य, प्रेम।

२ ग्रपने से छोटे के प्रति दया या रक्षा का भाव, सरक्षण ग्रभिभावकत्व।

उ०—पाचो ग्राठो दम पनरो खूपडिया, मतरै वीसै हय खतरै मे पडिया। कालप चावीकर भावी भुज भेटी, मोटा मोटा री मावीती मेटी।—ऊ का

मावीत्र—देखो 'माईत' (रू भे)

उ०—१ प्रायं छोरु न लहै मार, मावीत्रा नी किणही वार। पिण मावीत्र तपै दिन राति, पाणी वल विरहो न खमात।—वि कु

उ०—२ उछाह करइ मावीत्र ग्रनोपम, चढइ नही के बीजा चीत। ग्रादिग्रा सकत तणी गति ग्रमडी, ऊगो ग्रहा विचइ ग्रादीत।
—महादेव पारवती री वेलि

उ०— ३ मावीत्रै पहिलउ वीवाह, बाळपणइ कीधउ उच्छाह। हू परण्यउ जाणु ही नही, तेह वात सहु वीसरि गई।—ढो मा.

मावो—स० पु० [स०मड] १ दूध को ग्रोटा कर बनाया जाने वाला खोग्रा।

उ०—१ पीढै तेरण वखत ग्रप पावै। महखी दूध सवामण मावै।
—सू प्र

उ०—२ पेम पीयाला पीजीयै, मावा करि भरिपूर। जन हरीया पीयां पछै, विखै भ्रिलामा दूर।—स्री हरिरांमदासजी महाराज

२ किसी वस्तु का सार-भाग, तत्त्व।

३ किसी प्रकार का मसाला, सामग्री।

४ ग्रोषधि विशेष।

उ०—दीपक लोय ग्राच सम दीजै। दिन तेरमैं खोल देखीजै। ग्रोपम काच भळक ग्रधिकावो, मिळ जल जडो वधै तिग मावो।
—सू प्र

५ ग्रफीम का नशा।

उ०—मूछा गालडिया सेहै मे भरिया, उवासा लेवैं मावा ऊतरिया।
—ऊ का

६ एक वार मैं ली जाने वाली ग्रफीम की मात्रा, खुराक।

उ०—ग्रमली ठाकरडा डेरा मे ग्रावै, मोटी घमका घड मावा मटकावै।—ऊ का

७ कद्र, इज्जत।

उ०—जवान रो मावो क्यू घटावे।

८ प्रकृति।

९ रस, प्रेम।

मास—स० पु० [स०] १ वर्ष का बारहवा भाग या ग्रश, महीना।

उ०—१ बारै मास लगै सदा, नील हरी जिहां दीसै रे। फल फूलै छाइ घणु हीयडो देखी हीसै रे।—वि कु

उ०—२ दिन गुडता काई वगत लागै। ग्रा तो ठैरण वाळी चीज कोनी। पल, घडी, दिन, मास ग्रर वरस बीतता बीतता, सोळै वरस हा करता लोप व्हैगा।—फुलवाडी

उ०—३ विना नीर जाह कवल है, विन विरखा वरसाळ। विना मास जाह रुत है, मात पिता विन बाळ।
—स्री हरिरामदासजी महाराज

उ०—४ ग्राव्यो मास वसत रे रसीया रो राजा, सुख द्यो साजा, तरु होइ ताजा।— वि कु

२ ग्रवधि, समय।

उ०—दिन दिन डोहला पूरतां, बोल्या पूरा मास। सुत जायो रलियामणो, सहुनी पूगी ग्रास।—वि कु

३ ऋतु।

४ बारह की सख्या। ❋ (डिं को)

५ देखो 'मास' (रू भे)

उ०—जा घट वेदन विरह की, लोहू चढै न मास। हरिया मिळवो पीव सु, वसिवो धीगा पास।—स्री हरिरांमदासजी महाराज

रू० भे०—मासउ, मासि, मासे

ग्रल्पा०—मसवाडो, मसवाडउ, मासडो,

मासउ—१ देखो 'मासो' (रू भे) (उ र)

२—देखो मास' (रू भे)

मासक—स० पु० [स० मासक] १ महीना, मास।

२—देखो 'मासूक' (रू भे)

३—देखो 'मासिक' (रू भे)

४—देखो 'मासो'

मा'सकति, मा'सक्ति—देखो 'महासक्ति' (रू भे)

मासकल्प—स० पु०—चातुर्मास के ग्रलावा उन्नीस दिन की ग्रवधि जिसमे साधु को एक ही स्थान पर रहना पडता है। (जैन)

उ०—पातसाह ग्रकवर के मानै, जिहा स्री जिन सिंह सूरि। मासकल्प राखै ग्राग्रह करि, थानसिंह साहि सनूरि —स कु

मासक्षमण, मासखमण—स० पु० यौ०—एक महीने तक किये जाने वाले व्रत। (जैन)

उ०—१ मूलदेव मुनिवर पडिलाभ्यउ, मासक्षमण ग्रणगार जी।
—स कु

उ०—२ जद स्वामीजी साधा नैं कह्यो—मासखमण इहा रहिवा रा भाव है।—भि द्र

मा'सगती—देखो 'महासक्ति' (रू भे)

मासड़ो—१ देखो 'मास' (अल्पा, रू भे)
२—देखो 'मांस' (अल्पा, रू भे)

मासती—स० पु०—अपने पुत्र को गोद मे लेकर सती होने वाली माता, महासती। वीर पुत्र के साथ सती होने वाली माता।
उ०—निज पती मरगा तो मृत्यु रै मर्म सत करने माथ स्वामद री करू नहीं सूनूं टाळ बेटा रौ भरोसौ है। म्हारो दूध पीयौ है जुद्ध मे मरसी तद इण लारै सत्य कर मासती कहाव सू ,, वी स टी
रू० भे०—मासती

मासदिवस—स० पु०—१ एक मास की अवधि।
२—तीस की सख्या। ॐ (डिं को)

मासद्ध—स० पु० [स० अर्द्धमास] एक पक्ष, आधा मास।

मासपदो—स० पु०—एक वस्त्र विशेष।
उ०—चूड़ाभाति सकलात पोतु तास्तु नील नवा बामरया, मिसरु बासत्या, कद दोक्द चुवदा मासपदा तनुवध, सरवध, कमरवध मगवना कमलवना ' व स

मासपरणी—स० स्त्री० [स० माष+पर्णी] जगली उड़द जो वैद्यक के अनुसार बलवर्धक व शीतल औषधि मानी जाती है।

मासफळ—स० पु० [स० मास-फल] १ वह पत्र जिसमें मास भर का शुभाशुभ फल लिखा हो।
२ मास का शुभाशुभ फल।

मासवारो—स० पु०—प्रसूता द्वारा एक मास के उपरात किसी शुभ दिन को किया जाने वाला स्नान।

मासांत—स० पु० [स० मास+अंत] १ महिने का अन्तिम दिन।
२ महिने का अंत।
३ सक्राति।
४ अमावस्या।

मासाअल्लाह—स० पु० (पद) [अ० माशाअल्लाह] व्यंगात्मक रूप मे की जाने वाली तारीफ वाह-वाह।

मासाधिप—स० पु० [स० मास+अधिपति] वह ग्रह जो मास का स्वामी हो, मासेश।

मासाव—स स्त्री०—माता साहिबा, माता तुल्य स्त्री के लिये आदर सूचक सम्बोधन।
उ०—घर माहस कुलवधिया पुणै गासूसू पिआरी। मत मळपी मासाव एम रचना विधना री।—पा प्र

मासस—स०पु० [सं० मास+आश] घोटा अश्व।

मासि—१ देखो 'मास' (रू भे)
उ०—फागुण मासि वसंत रुत, आयउ जइ न सुणेसि। चाचरिकइ मिस गेलती, होळी झपा देसि।—ढो मा.
२—देखो 'मासी' (रू भे)

मासिक—वि०—१ मास का, मास सम्बन्धी
२ मास में एक बार होने वाला।
स० पु०—किसी कार्य का प्रति मास नियमित रूप से चलने वाला क्रम।
रू० भे०—मासक,

मासिकधरम, मासिकधरम्म—स० पु०—प्रायः एक मास की अवधि पर्यन्त स्त्रियो के होने वाला रजो स्राव।

मासियाइ, मासियात, मासियाळ, मासिहाई—स० पु० [स० मातृष्वस्रीय] मौसी की सतान। (भाई/बहन) (उ र)
उ०—ठाकुरसी ईसरदास उदैराज राणौ सूरजमल मासियाळ भाई हुतो।—वा. दा ख्यात
वि०—मौसीका, मौसी सम्बन्धी।
रू० भे०—मासीयाई, मासीयात, मास्याई, मास्याही

मासी—स०स्त्री० [स० मातृष्वसा, पा० मातुच्छा, प्रा० मउच्छा माउसिआ] १ मा की बहन, मौसी। (ड. र)
उ०—मासी आगलि माडीनि सघली कही ते वात। सुबाहु मोक करि घणु, घणू इ कहयू देई मान।—नलाख्यान
२ मौसी के रूप मे मानी जाने वाली।
उ०—१ मकोडो कह्यौ—मालण मासी, थू बासडा सू काई हार पोवै, म्हारी सूई ले लै।—फुलवाडी
उ०—२ ऊदरा मिनकी रो औ खिलको देखियो तौ उण नै पूछ्यो मिन्नी मासी औ काई नवो तोतक रचायो।—फुलवाडी
३ वनास नदी की एक सहायक नदी जो जयपुर रियासत मे पचेवर के पश्चिम १० मील बह कर ५० मील की दूरी पर बांडी नदी मे जाकर मिलती है। (वीर विनोद)
रू० भे०—मावसी, मावसी, मासि,

मासीयाई मासीयात—देखो 'मासियाई (रू भे)

मासीसासू—स० स्त्री—सासू की बहिन।

मासीसूसरो—स० पु०—सासु का बहनोई।

मासीसो—स० पु०—मृतक के पीछे प्रति मास मृत्यु तिथि को दिया जाने वाला ब्राह्मण-भोज। (कायस्थ)

मासुधाकर—स०पु० [स० महा सुधाकर] चद्रमा।

मासुरी—स० स्त्री० [स०] १ दाढ़ी
२ मूछ
उ०—इण रीति प्रामारा रा सहाय वाज सोभति रा खेत मे जय रा दुदुभी घुराय प्रथ्वीराज रा वीरां मुहारै भेहै मासुरी लोम आविया।—व भा
रू० भे०—मासूरी

मासूक—स० पु० [अ० माशूक] (स्त्री० मासूका) १ प्रियतम, प्रेमी।
उ०—मळका नगा नैणू दा यार, मासूक दा आसका दे दिल नू।
—रसीलैराज रो गीत
२ प्रेम पात्र
१ जिसके साथ प्रेम किया जाय।
रू० भे०—मासक, मास्यूक

मासूकी–सं०स्त्री०[अ० मा'शूकियत]१ 'मासूक'होनेकी अवस्था या भाव।
 २ प्रेम पात्रता। नाजोअदाज, हाव भाव।

मासूम–वि० [अ० मा'सूम] १ जो निर्दोष हो, दोषरहित।
 २ जिसने कोई पाप नहीं किया हो, निष्पाप।

मासूरी—देखो 'मासुरी' (रू भे)

मासूल—देखो 'महसूल' (रू भे)
 उ०—१ पीछै ऐ 'पूलो'वगैरै साराई नरसिंघ'सू मिळिया, अरु कयो, 'म्हारो वदळो घेरावो थानू वा'रै महीना मे इतरो मासूल भरस्या'। —द. दा.
 उ०—२ तठै वेढ हुई। तिण मैं जोइया भागा वा वहलोल पकड्यो गयो। दरवार री फतै हुई। अरु नदी सतळज ताई मासूल साभी। —द द

मासोतम,मासोत्तम–स०पु०[स०मास+उत्तम]१ उत्तम मास,श्रेष्ठ मास।
 उ०—१ वारो सवत पेख, निसचै वरख निर्नाणर्मो। पावू जनम सपेख, मासोतम फागुण मुकर।—पा. प्र.
 उ०—२ मासोत्तम वैसाख मे, गढ जाळधर हूत। राणी पधरावी सहर, साथै कुवर सपूत।—रा रू.
 २ अधिक मास।
 ३ मल मास।

मासो–स० पु० [स० माष] १ तोले का वारहवा अश, एक मान, जो आठ या छ रत्ती के बरावर होता है। इससे सोना, चादी आदि बहुमूल्य वस्तुए तोली जाती हैं।
 उ०—सज्जन, सपत विपत में, जे झूरै ते कूर। मासो घटै न तिल वधै, जे विध लिख्या अकूर।—अज्ञात
 २ मौसी का पति, माता का वहनोई।
 रू० भे०—मासउ,

मास्याई, मास्याही—देखो 'मासियाई' (रू भे) (उ र)
 उ०—'श्रेणिक' राय नो दीकरो, हुतो मास्याई भाय। 'कोणिक' चपा नो धणी, रह्यो समीपे जाय।—जयवाणी

मास्यूक—देखो 'मासूक' (रू भे)
 उ०—निजरादे मारे मर गये मास्यूका। हो मास्यूका तुझ कू एता दरद न्हीं आया।—रसीलै राज रो गीत

माह–स० पु० [स० मास, प्रा माह] १ महीनां, मास।
 उ०—तकै भादवी माह ऊगात–तिरयी। पडै माय रै पाय प्रत्थीप प्रत्थी।—मे म
 २—देखो 'माघ' (रू. भे) (उ र)
 उ०—१ पडिया आसुर पाच सो,,घायल हुवा हजार। माह उजाळी सपतमी, वेढ सनीसर वार।—रा रू
 उ०—२ दुपहरा की वरीया यैसो नीजण होय गयो छै जु कोई मनुस्य फिरै डोलै न छै, कैसी भांति जैसी माह की राति होय। मेघ वरसतो होय।—वेलि टी
 उ०—३ तीरथ सघलां सोवता, उत्तम एक ज ठाह। प्रमदा ताहरि प्रेम-जलि, हु हवि नाहसि माह।—मा का प्र.
 उ०—४ महमूद माह सूरज प्रमांण।जेठ री अरक'अभमाल' जाण। —वि. सं.
 ३—देखो 'माय' (रू भे)
 उ०—१ गत पथ तारक गाह रे, सूज सपत दिन जिग साह रे। हरण खड कीध सुवाह रे, मारीच नख दव माह रे।—र. ज प्र
 उ०—२ मयदी वणै कान्ह रै थाप मारी। तरी साह तोफांन रै माह तारी।—मे म.
 उ०—३ देव दाणव भेळा करि स्रप को नेत्रो करि। मदराचळ परवत को मथाण करि समुद्र माह थी काढ़ि लीधी।—वेलि टो
 ४—देखो 'मह।' (रू. भे)

माहअहि—देखो 'महाअहि' (रू. भे)

माहकत—देखो 'महाकत' (रू भे.)

माहकवु—देखो महाकवु' (रू भे)

माहकाय—देखो 'महाकाय' (रू भे.)

माहकारतिकी—देखो 'महाकारतिकी' (रू भे)

माहकाळ—देखो 'महाकाळ' (रू भे)

माहकाळी—देखो 'महाकाळी' (रू भे)

माहकाव्य—देखो 'महाकाव्य' (रू भे.)

माहकुमार—देखो 'महाकुमार' (रू भे)

माहकुस्ट—देखो 'महाकुस्ट' (रू भे)

माहखरव—देखो 'महाखरव' (रू भे)

माहखेतर—देखो 'महाक्षेत्र' (रू भे)

माहगणपति—देखो 'महागणपति' (रू भे)

माहगिर—देखो 'महागिर' (रू भे)

माहगोरी—देखो महागौरी' (रू. भे)

माहग्यानी—देखो महाग्यानी' (रू भे)

माहग्रीव—देखो 'महाग्रीव' (रू भे.)

माहघरत—दखो 'महाव्रत' (रू भे)

माहघोख, माहघोस—दखो 'महाघोस' (रू भे)

माहचड—देखो 'महाचड' (रू भे)

माहचडी—देखो 'महाचडी' (रू भे.)

माहचकरवरती—देखो 'महाचक्रवरती' (रू भे)

माहचकरी—देखो महाचक्री' (रू. भे)

माहचपळा—देखो 'महाचपळा' (रू भे)

माहाचीण—देखो 'महाचीण' (रू भे)
 उ०—ऊच मलतांन, हीदूस्थान, देवकू पाटण, चीण महाचीण, मोट माहामोट, सखोद्धार एतला मजिगत अह्मारा 'देस देसाउर' वरणवीता सोभइ।—व स

माहजन—देखो 'महाजन' (रू भे)

माहजनी—देखो महाजनी' रू भे)

माहजी—देखो 'मांभी'। उ०—सुग देपाळ कहै सग साहै। माहजी 'दनो' जोदया माहै।—गो. रू.
माहजोगी—देखो 'महायोगी' (रू भे)
माहज्वाळ, माहज्वाळा—देखो 'महाज्वाळा' (रू भे)
माहट—देखो मावठ' (रू भे)
उ०—माह में माहट मांडयो मेह ते माहट रूम। तो विण माहरै नाह न पूगै माहरी हूम।—घ व ग्र.
माहण—स० पु० [स० मा+हन्] (स्त्री० माहणी) १ वह साधु या व्यक्ति जो मन, कम, वचन मे प्राणीमात्र की हत्या का विरोधी हो।
उ०—माहण समण सावयादि के, माडी मोटी माल। असनादिक निपजायनै दान देऊ दग चाल।—जयवाणी
२ ब्राह्मण, विप्र।
३ उत्तम सत्य।
उ०—निरमए भरह मेत्तमि तीयकरो, भवतरयउ भज्ज माहण कुळै जिणवरो।—स. कु
माहणरूप—स० पु०—ब्राह्मणरूप, ब्राह्मणवेश।
माहणसपाय—स० स्त्री०—१ ब्राह्मण सप्रदाय। (२)ब्राह्मणो की सपदा।
माहणी—स० स्त्री०—१ साध्वी स्त्री।
उ०—हूती सोमा माहणी, काम भोग तणी केला रे।—जयवाणी
माहणी—देखो 'मैं'णी' (रू भे)
माहतम—देखो 'महातम' (रू भे)
माहतमा—देखो 'महात्मा'(रू भे)
माहतळ—देखो 'महातळ' (रू भे)
माहतिरफळा—देखो 'महात्रिफळा' (रू भे)
माहतेज—देखो 'महातेज' (रू भे)
माहत्रिफळा—देखो 'महात्रिफळा' (रू भे)
माहदड—देखो 'महादड' (रू भे)
माहदडधारी—देखो 'महादडधारी' (रू भे)
माहदान—देखो 'महादान' (रू भे)
माहदिव—देखो 'महादेव' (रू भे)
माहद्वीप—देखो 'महाद्वीप' (रू भे)
माहदेव—देखो 'महादेव' (रू भे)
उ०—घरि घरि सघलइ गोरडी, रडइ सहूदयमंझारि। माधव-विण जीवाडि मां, माहदेव हवइ मारि।—मा. कां. प्र.
माहद्रुम—देखो 'महाद्रुम' (रू भे)
माहनद—देखो 'महानद' (रू भे)
माहनिसा—देखो 'महानिसा' (रू भे)
माहनील—देखो 'महानील' (रू भे)
माहनुभावता—देखो 'महानुभावता' (रू. भे)
माहप्रप—देखो 'महाप्रप' (रू भे)
माहपत्त—देखो 'महापक्ष' (रू भे)
माहपचमूळ—देखो 'महापचमूळ' (रू भे)
माहपचविस—देखो 'महापंचविस' (रू. भे)
माहप—स० पु०—पडिहार वश की एक शाखा।
माहपक्ष—देखो 'महापक्ष' (रू भे)
माहपथ—देखो 'महापथ' (रू भे)
माहपथिक—देखो 'महापथिक' (रू भे)
माहपदम—देखो 'महापद्म' (रू भे)
माहपरभु—देखो 'महाप्रभु' (रू भे)
माहपरसाद—देखो 'महाप्रसाद' (रू भे.)
माहपरांण—देखो 'महाप्राण' (रू भे)
माहपवितर—देखो 'महापवित्र' (रू भे)
माहपातक—देखो 'महापातक' (रू भे)
माहपातकी—देखो 'महापातकी' (रू. भे)
माहपास—देखो 'महापास' (रू भे.)
माहपूजा—देखो 'महापूजा' (रू भे)
माहपुर—देखो 'महापुर' (रू भे)
माहपुरस—देखो 'महापुरुष' (रू भे)
माहपुरांण—देखो 'महापुरांण' (रू भे)
माहप्रभु—देखो 'महाप्रभु' (रू भे.)
माहप्रसाद—देखो 'महाप्रसाद' (रू भे)
माहप्रस्थांन—देखो 'महाप्रस्थान' (रू. भे)
माहप्रांण—देखो 'महाप्रांण' (रू भे)
माहबळी, माहबळीय—देखो 'महाबळी' (रू भे)
उ०—चढ़ै जुध माहबळीय सुजास, चढै ब्रहहास भुवेस सुजास।
—शि रू.
माहबाहु—देखो 'महाबाहु' (रू भे)
उ०—पत्रा विहगेस बाळी मंदार हेमक पव्वै। घोम काळकूट मेघ घारां गगा घार। धूप दान क्रीत राम माहबाहु मोटा घणी, तीनू बाता तूभ तणी मोख री दतार।—र रू.
माहभारत—देखो 'महाभारत' (रू, भे)
माहभास्य—देखो 'महाभाष्य' (रू भे)
माहभूत—देखो 'महाभूत' (रू भे)
माहभैरव—देखो 'महाभैरव' (रू भे)
माहभोग—देखो 'महाभोग' (रू भे)
माहमतरी—देखो महामत्री' (रू. भे)
माहमत्र—देखो 'महामत्र' (रू भे)
माहमत्री—देखो 'महामत्री' (रू भे.)
माहमद—देखो 'महामद' रू भे)
माहमाई—देखो महामाया' (रू भे.)
माहमात्य—देखो महामत्री'
माहमाया—देखो 'महामाया' (रू भे)
माहमारी—देखो 'महामारी' (रू भे)
माहमाह—देखो 'माहोमाहि' (रू भे)

उ०—पछै विदर पूजिया पडव कैरवा सदाई । माहमाह फट मुवा दिली जीवता न पाई । —ग्ररजुणजी बारहठ

माहय—देखो 'मागध'

माहयोगी—देखो 'महायोगी' (रू भे)

माहरइ—देखो 'म्हारै' (रू भे)

उ०—१ भागीरथ कहइ ग्रजोनी सभवि, वडावडा जग विरद वहउ । कुळ माहरइ सधारण कवळा, गगाजी ग्रावती ग्रहउ ।
—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ तु रंगि रमवा गयु,जिहा ग्रवरनी ग्राण । होली हीयडइ माहरइ, कीधी कत सुजांण ।—मा कां प्र

माहरउ, माहरउ—देखो 'म्हारौ' (रू भे.)

उ०—१ स्री वयराट सुणि कीचक चीनउ, माहरउ मन पराभवि भीनउ । काल नइ मुहि एणइ कर घालिउ । सचकार यम नइ घरि घालिउ ।—सालिसूरि

उ०—२ हाडा खीची हेक, सोळकी सूरिज-वमी, सुणिस्यइ स्रित माहरउ, सदा, ग्रवरे राइ ग्रनेक ।—ग्र वचनिका

माहरम—१ मालूम ।

उ०—इयु करता थका ग्राथूण री ग्राइ समभि करि करि जाय समाचार पूछै । पूछता दिन ५ ऽ ६ हूवा । तठै सारी माहरम पाई ।
—चौवोली

२ देखो 'महरम' (रू भे)

३ देखो 'मलम'

४ देखो 'मुहरम' (रू भे)

माहराज—देखो 'महाराज' (रू भे)

उ०—धारत कर सायक धनुख, त्रेभोयण सिरताज । भजिया जन कारक ग्रभै, जै राघव माहराज ।—र. ज प्र

माहरि माहरी—देखो 'म्हारी' (रू भे)

उ०—१ देवर माहरि घरि नही, ऊठी गिउ ग्राखेटि । प्रीऊडा—पजरि पामीइ, जलण वधाग्यि जेठि —मा का. प्र

उ०—२ थांनै माहरी दुग्राइती है सो थारा ससतर भलाई वाहय लो ग्रनै ग्रो हू एकलो थारै सामनै ग्रायनै खडो हू ।—वी स टी

उ०—३ नेमजी हो ग्ररज सुणो रे वाल्हा माहरी हो राज । राजुल कहइ घरि नेह, घरि रहउ नै राज ।—वि कु

माहरु, माहरु, माहरू—देखो 'म्हारो' (रू भे)

उ०—१ मुख माहरु ग्राछउ थयु, निरमल पणु निलाडि । वात त्यजीनइ वैद्य, नइ ग्राई ग्राज देखाडि ।—मा का प्र

उ०—२ जाहरू वात मन री सरव जांणगर, देख ग्रद माहरू मदत देगी । सीह ग्रारोहणी काज तव साहरू,वाहरू बरन री ग्राव वेगी ।
—वालाबक्स वारहठ

माहरे, माहरै—देखो 'म्हारै' (रू भे)

उ०—१ तरै राजा कयो माहरे तो ग्राहीज दरकार छै । पछै रखेसर राजा कने हरद्वारजी मांहे जितरा रिखेसर सरव बताया ।
—रा. व. वि.

उ०—२ मन दुसह दुह विध माहरै, ग्रसह वार लगै इसी । मुख लियां कठण नागेंद्र मनु, जग सदोख मूखक जिसी ।—रा रू

माहरौ—देखो 'म्हारौ' (रू भे)

उ०—१ माहरा ग्रक्रम मेटवा माहव, क्रम हू कथिस तुहारा केसव, नाम तुम्हीणो ही घणनामी, सास उसास सभारिम स्वामी ।
—ह र.

उ०—२ पिता ताहरो माहरो साच पायो । इसो पावसी त ज ग्रो जोग ग्रायो ।—सू प्र

माहली-वि०—ग्रन्त पुर मे जाने ग्राने वाला ।

स० पु०—१ खोजा दास-दासी, सेवक ग्रादि ।

२ राज महल या ग्रन्त पुर का नौकर ।

माहलो—देखो 'मायलो' (रू भे)

उ०—प्रोळ कोट री ग्राडा भाठा जडीया था सु खोलाया । माहलो साथ मारो रा जगमाळ रा चद्रसेन पोकरण ग्रायो मीळीयो ।
—नैणसी

(स्त्री० माहली)

माहव—देखो 'माधव' (रू भे)

उ०—१ महदातार पयपै माहव, बोल किसो ऊचरां बियो । ग्रहियां पछै उग्रहणो गोविंद कीजो जिम सगराम कियो ।
—महाराणा सांगा रो गीत

उ०—२ मणारभ मथै काढियउ माहव, जहर इतउ किण बीजइ जरइ । ईसर त्यै सरणइ ऊवरजइ, तिण वेळा समरीयउ तरइ ।
—महादेव पारवती री वेलि

उ०—३ खिलवत हास खुसामदी, सुरका दुरकी साग । किसव लिया ए कुकवियां, माहव हूता मांग ।—वा दा

माहवठउ—देखो 'मावठो' (रू भे)

उ०—माघइ वरसइ माहवठउ, सीत सलिल एक ठाह । हू घूजी धरणोइ ढळू, दिइ हरणाखी बाह ।—मा का प्र.

माहवत—देखो 'महावत' (रू भे)

माहवार-पु०—प्रत्येक मास मे मिलने वाला वेतन, मासिक वेतन

वि०—प्रत्येक मास होने वाला, मासिक

ग्रव्य प्रतिमाम, हरमास

माहवारी-पु०—१ प्रति-मास या मासिक रूप से चलने वाला क्रम ।

२ प्रति-मास मिलने वाला वेतन ।

३ स्त्रियो का मासिक धर्म

वि०—प्रतिमास होने वाला, मासिक ।

क्रि० वि० [फा०] महिने के महिने, प्रतिमास ।

माहवारुणी—देखो 'महावारुणी' (रू. भे)

माहविवेह—देखो 'महाविदेह' (रू भे)

उ०—सील पाली सजम लियउ रे, पाचमइ गई देवलोकिरे । माहविदेह मई सीभस्यइ रे, सील थकी सहु थोक रे ।—स कु

माहविस—देखो 'महाविस' (रू भे)
माहवीर—देखो 'महावीर' (रू भे)
उ०—'विजपाळ'आवै हम माहवीर थे स्याम काज मारण मबीर।
—शि रू
माहवेग—देखो 'महावेग' (रू भे)
माहवौ—देखो 'माधव' (अल्पा, रू भे)
उ०—ओळवियो परो तनां म्है अविगत, गोकळ ग्राम तणौ तू ग्वाळ। माहवा नांम तुहारो मीठो, दीठो दीनदयाळ।
—पीरदांन लाळस
माहव्याध, माहव्याधी—देखो 'महाव्याधि' (रू भे)
माहव्रती—देखो 'महाव्रती' (रू भे)
माहसत्त—देखो 'महासत्त' (रू भे)
माहसकती, माहसगती—देखो 'महासक्ति' (रू, भे)
माहसया—देखो 'महासय्या' (रू भे)
माहसरग—देखो 'महासरग' (रू भे)
माहसांतपन—देखो 'महासांतपन' (रू भे)
माहसास—देखो 'महास्वास' (रू भे)
माहसिव—देखो 'महासिव' (रू भे)
माहसिंघ, माहसींघ—देखो 'महासिंह' (रू भे)
माहसूर—देखो 'महासूर' (रू भे)
उ०—सज भ्रात पुत्र पीरम कम्मर, गज समत्र मिळिया माहसूर।
—शि रू
माहसेत—देखो 'महासेत' (रू भे)
माहसेन—देखो 'महासेन' (रू भे)
माहा माहां—देखो 'माहोमाहि' (रू भे)
उ०—एक दिसइ आवित तिहा, ऊजेणी नु वभ। मिलया माहा-माहा विन्है, समया काज सुलभ।—मा का प्र
माहा—स० स्त्री० [स० माहेयी] १ गौ, गाय। (ह ना मा)
२ देखो 'महा' (रू भे)
उ०—पुण्य स्लोक क्यारस पीता अम्रत स्वादू लागे। माहा कवि स्रिंगार वरणवो, पूरवे जे माहा मागे।—नळाख्यान
३ देखो 'माघ' (रू भे)
उ०—मुन माहा सुन के ऊपरे तेज पुंज एक थान। केवळ चेतन देवमी, केवळ मंदिर अस्थान।—स्रीहररांमजी महाराज
माहाकाळियो—स०पु०—१ एक असुर जो काली देवी के हाथों मारा गया।
उ०—जित माहाकाळियो देत जोर। घण जोम डोल वळ स्रस्ट जोर।—रामदांन लाळस
२ कालिया नाग।
माहाग्यांनी—देखो 'महाग्यांनी'
माहाचीण—स० पु०—एक देश विशेष। (प्राचीन)
उ०—हींदूस्थान देवकूपाटण, चीण चीण भोट।—व स
माहाढोळ, माहाडोळ—देखो 'महाढोळ' (रू भे)
उ०—पीछै राव सूजैजी री माजी हाडी जसमादेजी माहाढोळ मैं बिराज स्रीबीकैजी खनै पधारिया।—द दा
माहातम—देखो 'महातम' (रू भे)
उ०—जठै एक दिन बामण कथा वाचतो थो। जठै ईसो वखांणी सो एकादसी रो ईसो माहातम है।—गाम रा धणी री वात
माहातमा—देखो 'महातमा' (रू भे)
माहातेज—देखो 'महातेज' (रू भे)
माहात्म्य—देखो 'महातम' (रू भे)
उ०—जहां रेणी वौस उतपति नहीं चद नहि तहां भान। जहां पावक पवन पाणी नहीं, तहा माहात्म्य(जन)हरिदास का स्थान।
—ह पु वा
माहानाद—देखो 'महानाद' (रू भे)
माहावळ—देखो 'महाबळ' (रू भे)
उ०—रस चादिनी रसवती ज्विती जिनांना, माहावल ते सरदक राजमांना।—व स
माहाभोट—स० पु०—एक देश विशेष (प्राचीन)
उ०—ऊच मलतान हींदूस्थान, देवकू पाटण, चीण माहाचीण भोट माहाभोट सब्बोद्वार एतला साजिगत।—व स
माहामरातव, माहामुरातव—देखो 'माहीमरातिब' (रू भे)
उ०—सोवरणमि छत्र, रगत रातां छत्र, पीत पीला छत्र, अनव नेजा, माहामरातव ढोल, दमांमा नीसाण।—व स
माहार—स० पु०—कुम्हारों की एक शाखा। (मा म)
माहारजत—देखो 'महारजत' (रू भे)
माहारस—देखो 'महारस' (रू भे)
माहाराज—देखो 'महाराज' (रू भे)
उ०—जद हेमजी स्वांमी वोल्या—माहाराज औगुण तो म्हार इ सूर्फे।—भि द्र
माहाराजा—देखो 'महाराजा' (रू भे)
माहारी—देखो 'म्हारी' (रू भे)
उ०—हमे मेडतो थे किणी ही ओर नु देवो छो तो माहारी जमीयत मारी परी जावै छै।—नैणसी
माहारो—देखो 'म्हारो' (रू भे)
माहालइ—देखो 'माळी' (रू भे)
माहालणो, माहालबौ—देखो 'माल्हणो, माल्हबो' (रू भे)
उ०—हसगतइ चालती, गजगतइ माहालती, काम कांमणी पालती, आखिनइ मटकारइ मदन नी वागुरा घालती—व स
उ०—२ सेना चालि सेस हालि, माहालै महीपति मलपता।
—ला स्यान
माहालणहार, हारो (हारी), माहालणियो—वि०
माहालिओडो, माहालियोडो, माहाल्योडो—भू० का० कृ०
माहालीजणो, माहालीजबो—भाव वा०
माहालियोडो—देखो 'माल्हियोडो' (रू भे)

उ०—पछै विदर पूजिया पडव कैरवा सदाई । माहमाह कट मुवा दिली जीवतां न पाई । —अरजुणजी बारहठ

माहय—देखो 'मागध'

माहयोगी—देखो 'महायोगी' (रू भे)

माहरइ—देखो 'म्हारै' (रू भे)

उ०—१ भागीरथ कहइ अजोनी सभवि, वडावडा जग विरद वहउ । कुळ माहरइ सधारण कवळा, गगाजी आवती ग्रहउ ।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ तु रंगि रमवा गयु,जिहा अवरनी आण । होली हीयडइ माहरइ, कीवी कत सुजाण ।—मा कां प्र

माहरउ, माहरउ—देखो 'म्हारो' (रू भे)

उ०—१ स्रो वयराट सुणि कीचक चीनउ, माहरउ मन पराभवि भीनउ । काल नइ मुहि एणइ कर घालिउ । सचकार यम नइ घरि घालिउ ।—सालिसूरि

उ०—२ हाडा खीची हेक, मोळकी सूरिज वसी, सुणिस्यइ म्रित माहरउ, सदा, अवरे राइ अनेक ।—अ वचनिका

माहरम—१ मालूम ।

उ०—इयु करता थका आथूण री आइ समभि करि करि जाय समाचार पूछे । पूछता दिन ५ ऽ ६ हूवा । तठै सारी माहरम पाई ।

—चौबोली

२ देखो 'महरम' (रू भे)

३ देखो 'मलम'

४ देखो 'मुहरम' (रू भे)

माहराज—देखो 'महाराज' (रू भे)

उ०—धारत कर सायक धनुख, त्रेभोयण सिरताज । भजिया जन कारक अभै, जै राघव माहराज ।—र. ज प्र

माहरि माहरी—देखो 'म्हारी' (रू भे)

उ०—१ देवर माहरि घरि नही, ऊठी गिउ आखेटि । प्रीऊडा-पजरि पामीइ, जलण वधारिउ जेठि —मा का प्र

उ०—२ थानै माहरी दुआइती है सो थारा ससतर भलाई वाहय लो अनै औ हू एकलो थारै सांमनै आयनै खडो हू ।—वी स टी

उ०—३ नेमजी हो अरज सुणो रे वाल्हा माहरी हो राज । राजुल कहइ घरि नेह, घरि रहउ नै राज ।—वि कु

माहरु, माहरु, माहरू—देखो 'म्हारो' (रू भे)

उ०—१ मुख माहरु आछउ थयु, निरमल पणु निलाडि । वात दयजीनइ वैद्य नइ आई आज देखाडि ।—मा का प्र

उ०—२ जाहरू बात मन री सरब जांणगर, देख अद माहरू मदत देगो । सीह आरोहणी काज तव साहरू,बाहरू वरन री आव वेगी ।

—वालावक्स बारहठ

माहरे, माहरै—देखो 'म्हारै' (रू भे)

उ०—१ तरै राजा कयो माहरे तो आहीज दरकार छे । पछे रखेसर राजा कने हरद्वारजी माहे जितरा रिखेसर सरब वताया ।

—रा व. वि.

उ०—२ मन दुसह दुह विव माहरै, अमह वार लगै इमी । मुख लियां कठण नागेंद्र मनु, जग सदोम मूळक जिमी ।—रा रू

माहरो—देखो 'म्हारो' (रू भे)

उ०—१ माहरा अक्रम मेटवा माहव, क्रम हू कथिम तुहारा केसव, नाम तुम्हीणो हो घणनामी, सास उसास सभारिम स्वामी ।

—ह र.

उ०—२ पिता ताहरो माहरो साच पायो । इसो पावसी त ज भी जोग आयो ।—सू प्र

माहली—वि०—अन्त पुर मे जाने आने वाला ।

स० पु०—१ खोजा दास-दासी, सेवक आदि ।

२ राज महल या अन्त पुर का नौकर ।

माहलो—देखो 'मायलो' (रू भे)

उ०—प्रोळ कोट री आडा भाठा जडीया था सु खोलाया । माहलो साथ सारो रा जगमाळ रा चद्रसेन पोकरण आयो मोळीयो ।

—नैणसी

(स्त्री० माहली)

माहव—देखो 'माधव' (रू भे)

उ०—१ महदातार पयपै माहव, बोल किसो ऊचरा वियो । अहिया पछै उग्रहणो गोविंद कीजो जिम सगरांम कियो ।

—महाराणा सांगा रो गीत

उ०—२ मणारभ मयै काढियउ माहव, जहर इतउ किण बीजइ जरइ । ईसर त्यै सरणइ ऊवरजइ, तिण वेळा समरीयउ तरइ ।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—३ खिलवत हास खुसामदी, सुरका दुरकी साग । किसव लिया ए कुकविया माहव हूता मांग ।—बा दा

माहवठउ—देखो 'मावठो' (रू भे)

उ०—माघइ वरसइ माहवठउ, सीत सलिल एक ठाह । हू घूजी घरणोइ ढळू , दिइ हरणाखी वाह ।—मा का प्र.

माहवत—देखो 'महावत' (रू भे)

माहवार-पु०—प्रत्येक मास मे मिलने वाला वेतन, मासिक वेतन

वि०—प्रत्येक मास होने वाला, मासिक

अव्य प्रतिमास, हरमास

माहवारी-पु०—१ प्रति-मास या मासिक रूप से चलने वाला क्रम ।

२ प्रति-मास मिलने वाला वेतन ।

३ स्त्रियो का मासिक धर्म

वि०—प्रतिमास होने वाला, मासिक ।

क्रि० वि० [फा०] महिने के महिने, प्रतिमास ।

माहवारुणी—देखो 'महावारुणी' (रू भे)

माहविदेह—देखो 'महाविदेह' (रू भे)

उ०—सील पाली सजम लियउ रे, पाचमइ गई देवलोकि रे । माहविदेह मई सीभस्यइ रे, सील थकी सहु थोक रे ।—स कु

माहविस—देखो 'महाविस' (रू भे)
माहवीर—देखो 'महावीर' (रू भे)
उ०—'विजपाळ'आगै हम माहवीर थे स्याम काज मारण मचीर।
—शि रू
माहवेग—देखो 'महावेग' (रू भे)
माहवौ—देखो 'माधव' (अल्प, रू भे)
उ०—ओळखियौ परो तनां म्है अविगत, गोकळ ग्राम तणौ तूं ग्वाळ। माहवा नाम तुहारो मीठो, दीठो दीनदयाळ।
—पीरदान लाळस
माहव्याध, माहव्याधी—देखो 'महाव्याधि' (रू भे)
माहव्रती—देखो 'महाव्रती' (रू भे)
माहसत्व—देखो 'महासत्व' (रू भे)
माहसकती, माहसगती—देखो 'महासक्ति' (रू, भे)
माहसया—देखो 'महासय्या' (रू भे)
माहसरग—देखो 'महासरग' (रू भे)
माहसांतपन—देखो 'महासांतपन' (रू भे)
माहसास—देखो 'महास्वास' (रू भे)
माहसिव—देखो 'महासिव' (रू भे)
माहसिंघ, माहसींघ—देखो महासिंह' (रू भे)
माहसूर—देखो महासूर' (रू भे)
उ०—सज भ्रात पुत्र पौरस कसूर, सज ससत्र मिळिया माहसूर।
—शि रू
माहसेत—देखो महासेत' (रू भे)
माहसेन—देखो 'महासेन' (रू भे)
माहा माहां—देखो माहोमाहि' (रू भे)
उ०—एक द्रमिड द्राविड तिहां, ऊजेणी नु वस। मिलया माहा-माहा बिन्है, समया काज सुलभ।—मा का प्र
माहा—स० स्त्री० [सं० माहेयी] १ गौ, गाय। (ह ना मा)
२ देखो 'महा' (रू भे)
उ०—पुण्य स्लोक कथारस पीता अम्रत खाटू लागे। माहा कवि स्रगार वरणवो पूरव जे माहा भागे।—नळाख्यान
३ देखो 'माघ' (रू भे)
उ०—सुन माहा सुन के ऊपरे तेज पुंज एक स्थान। केवळ चेतन देवमी, केवळ मंदिर अस्थांन।—स्त्रीहरिरामजी महाराज
माहाकाळियौ—स०पु०—१ एक असुर जो करनी देवी के हाथो मारा गया।
उ०—जित माहाकाळियौ देत जोर। घण जोस ढील बळ मस्ट जोर।—रामदांन लाळस
२ कालिया नाग।
माहाग्यांनी—देखो 'महाग्यांनी'
माहाचीण—स० पु०—एक देश विशेष। (प्राचीन)
उ०—हींदूस्थान देवकपाटण, चीण चीण भोट ।—व स

माहाडोळ, माहाडौळ—देखो 'महाडोळ' (रू भे)
उ०—पीछै राव सूजैजी री माजी हाडी जसमादेजी माहाडोळ मैं विराज स्त्रीबीकैजी खनै पधारिया।—द दा
माहातम—देखो महातम' (रू भे)
उ०—जठै एक दिन बामण कथा वाचतो थो। जठै ईसो वखांणी सो एकादसी री ईसो माहातम है।—गाम रा धणी री बात
माहातमा—देखो महात्मा (रू भे)
माहातेज—देखो 'महातेज' (रू भे)
माहात्म्य—देखो 'महातम' (रू भे)
उ०—जहा रेणी चौंस उतपति नही चंद नहि तहां भान। जहां पावक पवन पांणी नही, तहा माहात्म्य(जन)हरिदास का स्थान।
—ह पु वा
माहानाद—देखो 'महानाद' (रू भे)
माहाबळ—देखो 'महाबळ' (रू भे)
उ०—रस चांदिनी रमवती जिवती जिनांना, माहाबल ते मरदक राजमाना।—व स
माहाभोट—स० पु०—एक देश विशेष (प्राचीन)
उ०—ऊत्र मलतान हीदूस्थान, देवकू पाटण, चीण माहाचीण भोट माहाभोट समोद्धार एतला साजिगत ।—व स
माहामरातव, माहामुरातब—देखो माहीमरातिब' (रू भे)
उ०—सोवरणमि छत्र रगत राता छत्र, पीत पीला छत्र, धवल नेजा, माहामरातव ढोल, दमांमा नीसाण।—व स
माहार—स० पु०—कुम्हारो की एक शाखा। (मा म)
माहारजत—देखो महारजत' (रू भे)
माहारस—देखो 'महारस' (रू भे)
माहाराज—देखो 'महाराज' (रू भे)
उ०—जद हेमजी स्वांमी बोल्या—माहाराज ओगुण तो म्हारा द सूझ।—भि द्र
माहाराजा—देखो 'महाराजा' (रू भे)
माहारी—देखो 'म्हारी' (रू भे)
उ०—हमे मेड़तो थे किणी ही ओर नु देवो छो तो माहारी जमीयत मारी परी जावै छै।—नैणसी
माहारो—देखो 'म्हारो' (रू भे)
माहालइ—देखो 'माळो' (रू भे)
माहालणो, माहालबो—देखो 'माल्हणो, माल्हबो' (रू भे)
उ०—हंसगतइ चालती, गजगतइ माहालती, काम कांमणी पालती, आविनइ मटकारइ मदन नी वागुरा घालती—व स
उ०—२ सेना चालि सेम हालि, माहालै महीपति मलपता।
—नला ख्यांन
माहालणहार, हारो (हारी, माहालणियो—वि०
माहालिओडो, माहालियाडो, माहाल्योडो—भू० का० कृ०
माहालीजणो माहालीजबो—भाव वा०
माहालियोडो—देखो 'माल्हियोडो' (रू भे)

माहेस्वरी—स० स्त्री०—१ पार्वती, गिरिजा। (ह ना मा
२ दुर्गा।
३ एक मातृका।
स० पु०—४ वैश्यों की एक जाति व इस जाति का व्यक्ति।
रू भे—माहेसरी, माहेसुरी,

माहै—देखो 'माय' (रू, भे)
उ०—१ आदू ऊतन धाम अजोध्यगा, जगचख वश अम हरि जोवा। पेखो त्या माहै घरपत्ती, पूरण अम हुवो छत्रपत्ति।
—रा रू
उ०—तरै अबलहुमेन अरज की—रुपीया २,०००००) माहै मेडतो इण नु दीयो छै —नैणसी

माहोंमांहि, माहोमाह, माहोंमांहै माहोमा, माहोमाह, माहोमांहि, माहेमाहे—क्रि०वि०—आपस मे परस्पर, एक दूसरे के प्रति।
उ०—१ अनें हाथी निकलया सगळा भेळा होयनें भूसवा लाग जावै। त्या स्वात रै माहोंमांहि कद एको थो।—भि द्र
उ०—२ घनो जैमाल माहोमांह री वेढ मे माराणा।
—बा दा ख्या
उ०—३ तिण थी इणा ठाकरां रै माहोमांहै असुख घणो वधियो।
—नैणसी
उ०—४ माहोमा मनुआर हुई, हथवाह तणी हव। 'पाल' कह्यो तू वाह तुज्ज गुनाहि घाडो तव।—पा प्र
उ०—५ नर थोडा पिगळ नरनाथ, सबळ एह रिण घवळह साथ। माहोमाह भूझ माडिस्यइ, कुळि काळफ माहरइ लागिस्यइ।
—ढो मा
उ०—६ माळा गळि मालती तणी करि-वरि कणयर काब। माधव-विह माहोमहि, वाली खेलइ बाव।—मा का प्र
उ०—७ आया सिवपुरी हुआ कारिज सिध, परमगुरु चा ग्रहिया पगि। माहोमाहि वरइ वाता मिळि, जनम सुकियारथ हुआ जगि।
—महादेव पारवती रीवेलि
उ०—८ तेथी पद्मालय नाम नगर। जेथो एक देहरो उहा राजा गयो। दरसण किया। दोय यात्री माहोमाहे वात करी सो सुणी।
—सिंघासण बत्तीसी
रू० भे०—महमहइ, महामुह, महिमाह, माहमा, माहीमाही, माहेमाहे, माहोमा, माहोमाह, माहोमाहि, माहीमाही, माहोमाहे माहमाह माहामाहा।

मिगणो—देखो 'मीगणो' (रू भे)
मिगणो—देखो 'मीगणो' (रू भे)
मिगसर—देखो 'मिगसर' (रू भे)
मिगी—देखो 'मींगी' (रू भे)
मिजासणो—देखो 'मजासणो' (रू भे)
मिट—देखो 'मिनट' (रू भे)
उ०—उगणीसै बावन उरज, आठम कवि बद ईम। चार बज्या जसवत चल्यो, पूरा मिट पैंतीस।—ऊ का

मिठु—देखो 'मीठो' (रू भे.)
उ०—भूठु मिठु लागो जनने कडुयां फळ छै तेह।—कवियण

मिढ—देखो मीढो' (मह, रू भे)
२—देखो 'मीढ' (रू भे)

मिढ़णो, मिढ़वो—क्रि० अ०—१ बरावर होना समान होना
२—देखो 'मीडणो, मीडवो' (रू भे)
उ०—सरोतर अव नयर मिढतो सदाही, घाय, घड मोडवा आद घाणो।—जयसिंह राठोड री गीत

मिढमुख—स० पु०—एक देश का नाम। (प्राचीन)
उ०—खरमुख, तुरग मुख, मिढ़मुख हय करणा, गजकरणा, प्रभृति अनारघ देस।—व स

मिढ़योडो—भू० का० कृ०—१ समान हुवा हुआ, बरावर हुवा हुआ।
२—देखो मीडियोडो' (रू भे)

मित—देखो 'मित्र' (रू भे)
उ०—१ वेच घवळ आ वत्तडी, काना लाग कहत। जिको मित मत जाणजै, केवी जाणं कन।—बां दा
उ०—२ आपरै वासै आयोडा पान री वो घणी आव-आदार करी। दोनू गाढा मित व्हैगा।—फुलवाडी

मितर—१ देखो 'मित्र' (रू भे)
उ०—२ वोल्यो-मितर मोहल्लै परखियै, घीणो मदै घास।
—दसदोख
२ देखो 'मत्र' (रू भे)
उ०—पाच-सात विरिया, छुट्टी विसराम रै वखत, करणं नै जमी पर सुवो सुवाण्यो, ऊपर चादर उढाई तथा मितर पढ़ायो।
—दसदोख

मितरणो मितरवो—देखो 'मतरणो,मतरबो' (रू भे) उ०—पाणी मितरै पावं आकडे मे लोटो ढुळावै।—दसदोख
मितरणहार हारो (हारी) मितरणियों—वि०।
मितरियोडो, मितरियोडो, मितरयोडो—भू० का० कृ०।
मितरीजणो, मितरीजवो— कम वा०।

मितरता—देखो 'मित्रता' (रू भे)
उ०—एक ही कीडी नै एक हो सांयड। दोनों मे ही अटूट मितरता। आठ पोर साथै। रै' वै' साथै खावै अर साथै पीवै।
—फुलवाडी

मितराई—देखो 'मित्राई' (रू भे)
मितरियोडो—देखो 'मतरियोडो (रू भे)
(स्त्री० मितरियोडी)
मितरी—१ देखो 'मत्री' (रू भे)
२—देखो 'मित्र' (रू भे)
मितरोळ—देखो 'मित्र' (रू भे)

उ०—सेठ स्यामजी जावक गुण-गाळ, मा'रजा रै लोही रा पीळ! मितर नहीं मुतळबिया मितरोळ।—दसदोख

मितरोळियो—देखो मित्र' (अल्पा, रू भे)
मित्ती—देखो मिति' (रू भे)
 उ०—मिमु वै मिती विर्त्ती, उदमो पोगड मड मिगारो । ज्यो ग्र दारक तय्य, प्रामै डाळ सगि पत्तेणम्।—रा रू

मित्र—देखो 'मित्र' (रू भे) (ह ना मा)
 उ०—करै कपि मित्र सुग्रीव सुराज। रहच्चे वाळि दियों कपि राज।—ह र

मित्राई—स० स्त्री०—मित्र होने की दशा या भाव, मित्रता, दोस्ती
 रू० भे०—मतराई मत्राई, मितराई, मितराई, मिताई, मित्राई।

मित्री—देखो 'मत्री' (रू. भे)
 उ०—मा'रजा, सेवा लाईब्रेरी रा मित्रो सनातन धरम रा सभापति ग्राम सेवासघ रा उपाध्यक्ष अर आरयसमाज रा सदा सू सदस्य है।—दसदोख
 २—देखो 'मित्र' (रू भे)

मिंदर—१ देखो 'मदिर' (रू भे) (अ मा, ह ना मा)
 उ०—१ उर अतर मे करुणा आई, सारे देस करण सुख दाई। मिंदर तीरथ पोवा सदाई स्वर पावै ग्यारो जळ खाई।—ऊ का
 उ०—२ हरीया कर दीपग दीयां, मिंदर भया उजास। यु गुर दीपग नदीया, उर अघारा जास।—श्रीहरिरांमदासजी महाराज
 २—देखो 'कटमदिर'
 उ०—एम वयण उच्चरि, नयण नप वदन निहारै। तजि सुंदर घर ताम, चाह मिंदर चीतारै। असवारी दिस अगम, प्रगट नक्कीव पुकारै। पटै सक पर लोक, हुए टांमक नगारे। हरिनाम प्रेम धारै हियै, सांमी लियै सगि सचरै। छत्रपती साय रांणी छहू, आज त्रिहू कुळ उद्धरै।—रा रू

मियाळ-स० पु०—कच्चे मकान की छाजन मे लगी वल्ली के सहारे के लिये उसके नीचे लगने वाली प्राय धनुषाकार लकडी जिसके दोनो सिरे दोनो ओर की दीवारो पर टिके रहते हैं।

मि-सव०—१ मैं।
 उ०—विहिनी मेरु माहागिरि नाप्यु पाय्र तणि ता पाणि। तु सू दान करध्यू मि मही मांहा मनि मोटो ए काणि।—नळाख्यांन
 २ मेरे।

मिम्रांन—देखो 'म्यान' (रू भे)
 उ०—मु किण मातरी तरवार सेट सिरोही री, सातरी, दांणादार मिम्रांन मातिया त्रिमागुळे वाढे मेरिमां–मिम्रांन सू काढिनै घास मे नाखी हुऐ तो पांणी रे मोळे जिनावर ढूक मारै।
 —रा सा स

मिम्राद—देखो 'मयाद' (रू भे)
मिम्रादी – देखो 'मयादी' (रू भे)

मिम्रादीबुखार—देखो 'मयादीबुखार' (रू. भे.)
मिउ— देखो 'म्रदु' (रू भे)
मिकदार–स० पु०—[अ मिकदार] १ मात्रा, परिमाण।
 २ तोल, वजन।
 ३ अदाज अनुमान।

मिक्सचर–स० पु०— [अ०] १ कई प्रकार की तरल ओषधियो का मिश्रण। २ कई प्रकार के पदार्थों का सम्मिश्रण।

मिग—देखो 'म्रिग' (रू भे)
 उ०—हम-वाहणि मिग-लोचनि नारि। सीस समारइ दिन गिणाइ। —बी. दे

मिगसर–स०पु० [स० मार्गशिर मार्गशीर्ष] १ कार्तिक मास के बाद आने वाला मास अगहन मास।
 उ०—सवत सतरै वरस वीसै मास मिगसर जांण ए।
 —ध व ग्र
 (स० मृगशिर) ३ मृगसरा नक्षत्र।
 रू भे—मगसर, मगसिर, मगसर, मगमिर, मगसीर, मागसर मागसुर, मागसिर मागसिरि, मिंगसर, मिगसरी, मिगस्सर, अल्पा—मिगसरियो,

मिगसरियो—देखो 'मिगसर' (अल्पा, रू भे.)
 उ०—मिगसरियो घर मू ढोले, तुलछां रा फूल किसनजी तोले।
 —लो गी

मिगसरी–स० स्त्री०—१ मार्ग शीर्ष मास की तिथि।
 २—देखो 'मिगसर' (रू भे)

मिगस्सर—देखो 'मिगसर' (रू भे)
 उ०—मास मिगस्सर वार गुरु बीज उजाळी पाय। चढ धोडे भड चल्लिया, 'चापा' कोप चढाय।—रा रू

मिडफल—देखो 'मडफल' (रू भे)
 उ०—मिरदार नै अमल ऊगोडो हो। वानै पाणी री ढील खटी कोनीं। एक मिडफल मिरदार माली हाथ मे लेयनै ऊभी व्हियो।
 —फुलवाडी

मिचकोडणो, मिचकोडबो—देखो मचकोडणो, मचकोडबो' (रू भे)
 उ०—फौजी बूटा म पामोजा पैरयो ही सीधो माळ मे आ धमक्यो और मे सुनी राजी री धणी नराजी सु नाड देख रे मूढो मिचकोडयो।—दसदोख

मिचकोडियोडो—देखो मचकोयोड़ो (रू भे)
 (स्त्री० मिचकोडियोडी)

मिचणो, मिचबो–क्रि० अ०–बद होना। (मांस)
मिचळणो, मिचळबो—देखो 'मचळणो, मचळबो' (रू भे)
मिचळांण, मिचळाव, मिचळाट—देखो 'मचळांण' (रू भे)
 उ०—म्हैं तो राजा हू। देस रो धणी हू। राज चलावणो थांरो काम है के म्हारो। इण भीड नै फुरती सू आप आपरै टिकांणै रवाना करो। आ मलेगू जिनांवरा री फौजी मिचळाव सू म्हारो

तो माथो चढग्यो ।—फुलवाड़ी

मिचळाणो, मिचळावौ—क्रि० अ०—१ उबकाई आना, जी मतलाना ।
२—देखो मचळणो, मचळवो (रू भे)

मिचळायोडो—भू० का० कृ०—१ उबकाई आया हुआ, जी मतलाया हुआ ।
२—देखो 'मचळियोडो' (रू भे)

मिचळियोडो—देखो 'मचलियोडो' (रू भे)
(स्त्री० मिचळीयोडी)

मिचलो—देखो 'मचलो' (रू भे)

मिच्च—स० पु० [स० म्लेच्छ] मुसलमान ।

मिच्छ—स० स्त्री० [स०] बाधा, अड़चन ।

मिच्छत, मिच्छत्त—म०पु०—असत्य को सत्य और सत्य कोअसत्य समझने की अवस्था । मिथ्यात्व । (जैन)

मिच्छदिट्टि मिच्छदिट्ठी—स० स्त्री०—मिथ्या दृष्टि । (जैन)

मिच्छांमिदुक्कड—स० पु०—मिथ्यादुष्कृत
उ०—जद स्वामीजी कह्यो थे मन्नी के असन्नी ? ते बोल्यो हू सन्नी । स्वामी पूछ्यो किण न्याय ? जद ते बोल्यो ना, मिच्छांमिदुक्कड हू असन्नी —भि द्र

मिच्छा—स० स्त्री०—मिथ्या ।
उ०—पणि विधिनी खय कोजता हो, अविधि हुवइ जिकाय । मिच्छा दुक्कड दीजता हो, छुटक बारउ थाय ।—स कु

मिच्छादसण—स० पु०—मिथ्या दर्शन ।

मिच्छादिट्ठी—स० स्त्री०—मिथ्या दृष्टि ।

मिच्छादुक्कड—देखो 'मिच्छामिदुक्कड'
उ०—सामि धरम ने सील तणा गुण सांमठा रे,पूर्गं मन नी आस । ओछो अधिको जे कह्यो कवि चातुरी रे मिच्छादुक्कड तास ।
—ध व ग्र

मिछ—वि०—मृत ।

मिछत—स० स्त्री०—मिथ्यात्व, मिथ्यापन ।
उ०—तासु पाटि उदयगिरि उदय ले, जिण प्रम सूरि भाणु । भविय कमल पडिबोहणु, मिछत तिमिर हरणु ।—जिन प्रम सूरि रो गीत

मिछलांण—देखो मचलाण' (रू भे)

मिजनू—देखो मजनू' (रू भे)
उ०—मात सलामत पित मुआ, आवै नह आपांण । धामधूम मिजनू घटा, जे मावडिया जाण ।—वां दा.

मिजवानी—देखो मिजमानी' (रू भे)

मिजमांण, मिजमान—स० पु० [फा० मेहमांन] अतिथि, मेहमान ।
उ०—१ इण कह्यो है कै आपारा मिजमांन उलटो अरथ आंपांरा सत्रु जीमावो, मारो, आगत—स्वागत करो ।—वी स टी
उ०—२ खाईतया खोलिया,खिडक खामा रथ खांनां । सिणगारधा सिदणा मिळण सामा मिजमाना ।—मे म
रू० भे०—मजमांन, मभमांन, मिभमान, मीजमान, मीभमांन,

मिजमांनिय, मिजमांनी—स० स्त्री०[फा० मेजवानी] १ आथित्य-सत्कार, स्वागत ।
उ०—१ ओ ठहराव हुवो के अबुलजाफर दिलमीं नू कोट मे मिजमानी करै ।
उ०—२ खिज खाज न भोजन खोजन की, मिजमांनिय मिच्छ न भोजन की । छिबवत उदत दिगत छये । भल सत महुत अनत भये ।—ऊ का
२ आथित्य-सत्कार में दिया जाने वाला भोज ।
उ०—१ पछै फेर फरमाई तद दूसरे दिन फेर मिजमांनी हुई ।
—मारवाड रा अमरावा री वारता
उ०—२ मिळला ही मरद घोडा सू उतरिया अने घोडा आपो आप रा सेल, भाला रै बाधिया, मिजमानी गोठ मे मिळतां हरख होवै ज्यू जुधरी समै खोवा वाजिया रो खेल मचियो ।—वी स टी
उ०—३ नायक नै बेटो दोनू साम्हा आया, पावा लागा । डेरै भीतर विराजिया । मिजमांनी रो नायक जावतो करायो ।
—पलकदरियाव री बात
३ आथित्य सत्कार मे दी जानी वाली भेंट ।
उ०—पछै रुपया इक्कीस वडारण रै हाथ मिजमांनी रा प्रोहितजी नू मेलिया ।—कुवरसी साखला री वारता
रू० भे०—मजमानी, मभमानी, मिजवानी, मिभमानी,मीजमांनी, मुभमानी,

मिजराब—स० पु०[अ०] सितार आदि तार के वाद्य बजाने का एक छल्ला जो तारो का ही बना होता है ।

मिजलस—देखो 'मजलिस' (रू भे)
उ०—वा'र वणायर बैठतो, मिजलस मिजलस मोह । पहदै मे नही पैठतो, दूजा ज्यू घुस दोड —ऊ का

मिजळी—स० स्त्री—न्यून, निरर्थक ।

मिजळो—वि० [स्त्री० मिजळी] निम्न एव ओछि प्रकृति का, जिसकी बात का विश्वास नही किया जा सकता हो, दिल का काला, मन का मेला, कृतघ्न— ।
उ०—सब भात कही हम सोगन की मिजळे मिटळे महि मोगन की । अन भाय न जोयन आड करै, पुन आय न कोय न खाड परै ।
—ऊ का

मिजांन—सं० पु० [अ० मीजान] १ तराजू तुला ।
उ०—खाक मे वहिया हाथ मे मिजांन अर कान मे कलम खोस्या वो इण गाव सू उण गांव लैण दैण करतो ई रैवतो ।—फुलवाड़ी
२ तुला राशि ।
३ गणित मे कई अको का योग, जोड ।
रू० भे०—मीजान, ।

मिजाज—स० पु० [अ०] १ किसी प्राणी की मुख्य प्रवृत्ति, स्वभाव आदत ।

उ०—१ माभी गिग्गक मिजाज, वेग्रदवी मातू विमन । लोभ घणो कम लाज, पैळा घर वाछे पिसण ।—वां दा

उ०—२ नै सूठ ग्राक्रा मिजाज री तेज तरराट, बोली री वाढी, ग्रक्डैल ग्रर कामचोर ही ।—फुलवाडी

२ किमी पदार्थ का मूल-भूत गुण ।

३ स्वास्थ्य, तबीयत ।

उ०—तद नवाब जांणियो मौत ग्रायी । तारां हाथ जोडनै कयो "राजा सा'व, ग्रापकी मिजाज ग्रच्छी है?" यूं कहनै तुरत ग्रसवारी नूं टोराय गयो ।—द दा

४ गर्व, ग्रभिमान, घमड ।

उ०—१ वो ग्रापरामन मे कैंवतो—भावणवी री जात ग्रर हाजग्या ग्रागे मिजाज ! समदर मे रैंवणो ग्रर मगरमच्छ सूं वैर देखूं कितराक दिन ग्रक्डती फिरै ।—रातवासो

उ०—२ इतनूं काई छै मिजाज म्हारे मिंदर ग्रा [व] ता । थानै इतनूं काई छै मिजाज ।—मीरा

५ नाज, नखरा ।

उ०—ग्रालीजै री मेजा मे रीझ रहूली, वहि रे मिजाज करू रसिया ।—लो भी

६ खुशी, माद ।

उ०—जद वा ऊदगी ग्रापरे रूप री बखाण सुणनै मिजाज मे मटरका करती घरै ग्रायगी ।—फुलवाडी

७ दिल, मन ।

रू० भे०—मजाज, मजेज,

मिजाजग्राली—स० पु०[ग्र] कुशल मगळा पूछने के लिये प्रयुक्त होने वाला शब्द ।

मिजाजण—वि० —गर्व, ग्रभिमान करने वाली ।

उ०—हे हा ए म्हारी सदा हे मनितण सूंदर नार, मिजाजण गोरी सुखपाल मेला हे ।—लो गी

रू० भे०—मीजाजन,

मिजाजदार—वि० [ग्र० मिजाज—दार] गर्व व ग्रभीमान करने वाला ।

मिजाजपुर्सी—स० स्त्री० [ग्र० मिजाज+फा पुर्सी] कुशल मगल पूछने की क्रिया या भाव ।

२ सहानुभूति जतलाना ।

मिजाज शरीफ—स० पु०—[ग्र० मिजाजे शरीफ] कुशल-मगल या स्वास्थ्य-लाभ पूछने के लिये प्रयुक्त शब्द ।

मिजाजी—वि०—[ग्र० मिजाज+रा० प्र० ई०] (स्त्री० मीजाजण)

१ गर्विला, ग्रभिमानी ।

उ०—ज्यानी वीच पडे ग्रो वाजार मिजाजी ढोला, वीच बजार, बजारा एकलडी डरपूं जी बजारा एकलडी डरपूं जी ।

—लो गी

२ नाज-नखरे वाला ।

रू०भे०—मीजाजी,

ग्रल्पा—मिजाजीडौ'

मिजाजीड़ो—देखो 'मिजाजी' (ग्रल्पा, रू भे)

उ०—ऊमा राज मिजाजीडा ग्रमलां मे ग्रमला रा छावया सेजलडी रे मारगा । छक मतवाळी रा बुलाया थे ।—रसीले राज रो गीत

मिजाजो—देखो 'मिजाजी' (रू भे)

मिझमान—देखो 'मिजमान' (रू भे)

उ० हिल मिळ सब सूं हालणो, ग्रहणो ग्रातमग्यान । दुनिया म दस दीहडा, मानूं तूं मिझमान ।—वां दा

मिझमानदारी, मिझमांनी—देखो 'मिजमानी' (रू भे)

उ०—१ हे प्यारा कोई पाहुणा मिळिया है-(दुसमण ग्राया हैं) ज्यां ने ग्रबे मिझमानी (जीमावण री) वार जेझ दीसे है-जीमावणी सस्त्रा सूं प्रहार करणो-ग्रठे लक्षण लक्षणा ।

—वी स टी

उ०—२ कीधी निछरावळ निजर, मिझमानी मनुहार । दरसण कीवो सामरो, 'दुरगो' मोती वार —रा रू

मिझलस—देखो 'मजलिस' (रू भे)

उ०—राणेराव विलास रत, जगनिवास नित जाय । मिझलस जांणे माणवा, ग्रद्र ग्रखाडे ग्राय ।

—महादान महडू

मिटणो, मिटवो—क्रि०ग्र०—१ समाप्त होना, खतम होना ।

उ०—१ मान मिट जातो मोटा हट हट जातो हेर, दान दट जातो दुख देस को विदेस को ।—ऊ का

उ०—२ रसना सुख सगकार मिट, रटि सहजा ररकार । हरीया इ भ्रत छाडि करि, विसे न पीवण हार ।

—स्रीहरिरामदासजी महाराज

उ०—३ तोय करमानमा तणे, नर सुभ करम नसाय । तोय तुखाळे ग्रिपयगा, माठा क्रम मिट जाय ।—वां दा

उ०—४ मामी कहयो—थने ग्राछी नी लागे तो म्हने किसी लागे वेटी, पण ग्रापारे दाय नी ग्रावणा सूं जकी साची वात है वा मिटै तो कोनी ।—फुलवाडी

२ वद होना, रुकना ।

उ०—१ जूझणो मिटग्यो उण दिन समझनो के जीवणो ही ई मिटग्यो । थे ग्राज सूं ई न्यारा-न्यारा फट जावो । न्यारा-न्यारा जूझो ग्रर न्यारा न्यारा ई कळाप करो ।—फुलवाडी

उ०—२ राम नाम जपता रहैं, तजैं न ग्राला ग्रान । जन हरीया उन जीव की, मिटै ना खांचानान ।—स्रीहरिरामदासजी महाराज

३ दूर होना, ग्रलग होना, हटना ।

उ०—१ मावडिया तन मैण रा, मिटै कदे नह माद । मावडिया ढूळा मरद, चूना हदा चाद ।—वां दा

मिणिओडौ, मिणियोडौ, मिण्योडौ—भू० का० कृ० ।

मिणीजणौ, मिणीजबौ—कर्म वा० ।

मिण–स० स्त्री०—१ कुए के घेरे की दीवार, घेराव

उ०—महावीर गोतम मुख मोडी चौतीणी खिणियों मिण चौडी जैनी खाड चिडी पट जोडी, मौत हुवे की जाय मकोडी ।—ऊ का

रू० भे०—मीण,

२ देखो 'मणि' (रू भे)   (अ मा)

उ०—१ सखी अमीणी साहिबौ, निरभै काळौ नाग । सिर राखे मिण स्यामध्रम, रीझै सिंधु राग ।—बा दा

उ०—२ खुडिया ऊपरि जाणि खांभिया, मिणधर राजा तणी मिण ।—महादेव पारवती री वेलि

उ०—३ कापडमाल असख हेम मिण रयण विभूखण –गु रू व

मिणजल–स० पु० [स० मणिजल] विद्युत, बिजली (ह ना मा)

मिणधर, मिणधरण मिणधारी—देखो 'मणिधर' (रू भे)

उ०—१ मिणधर विख अणमाव, मोटा नह धारै मगज । वीछू पूछ वणाव राखै सिर पर राजिया ।—किरपाराम

उ०—२ चदण लपटै मिणधरण, रीझै साभळ राग । विण मुख माफल जहरतै, निंदवियौ जग नाग ।—बा दा

उ०—३ मांगळियो 'सुंदर' मिणधारी, धुर भगवान महाव्रत धारी ।
—रा रू

मिणसणौ मिणसबौ–क्रि० स० [स० मनस्यन्] १ मन मे इच्छा विचार या सकल्प करना

२ मन मे दृढ निश्चय या सकल्प करना

३ कोई पदार्थ दान करने के उद्देश्य से, सम्मुख रखकर या हाथ मे लकर विधिपूर्वक मंत्र पढकर सकल्प करना

मिणसियोडौ–भू० का० कृ०—१ मन में इच्छा, विचार या सकल्प किया हुआ २ मन में दृढ निश्चय या सकल्प किया हुआ ३ कोई पदार्थ दान करने के उद्देश्य से सम्मुख रख-कर या हाथ में लेकर विधि पूर्वक मत्र पढकर सकल्प किया हुआ

(स्त्री० मिणसियोडी)

मिणसीकर–स० पु० [स० शीकरमणि]चद्रमा, चांद, (ना मा)

मिणि—देखो 'मणि' (रू भे)

मिणिअड—देखो 'मणियड' (रू भे)

उ०—मिणिअड नेपति भडा खगवाहां खत्र घोडा ।—गु रू व

मिणिधर—देखो 'मणिधर' (रू भे)

मिणियड, मिणियर—देखो 'मणियड' (रू भे)

उ०—सफ दळ वाला हरा सवाया, अलबेई पर्व प्राग सम आया । मिणियड दल मेळे घर मगल,आयौ जैतमाळ अतुलीबळ ।—रा रू

मिणियार—देखो 'मणियारा' (रू भे)

मिणियारौ—देखो 'मणियारौ' (रू भे)

मिणियोडौ–भू० का० कृ०—१ नापा हुआ

२ देखो 'मुणियोडौ' (रू भे)

(स्त्री० मिणियोडी)

मिणियौ—देखो 'मणियौ' (रू. भे)

मिणिहार—देखो 'मणियार' (रू भे)

मिणिहारौ—देखो 'मणियारौ' (रू. भे.)

उ०—कोयल ऐ आज म्हारै जामण जायी वहनड जोइजे । वहनड म्हारी मिणिहारा री हाट, मूगा मोला रौ मोनी बहनड मोलवै ।
—लो गी

मिणी—देखो 'मणि' (रू भे)

मिणीधर—देखो 'मणिधर' (रू भे)

मिणीयड, मिणीयर—देखो 'मणियड' (रू भे)

उ०—१ नगधर मिणीयड नीपजै कोडीधज केकाण ।—वी मा

उ०—२ कूक गई महमद कने जग सारै जाणी । इळ मिणीयर कर ऊजळी तीजणिया आणी ।—वी मा

मितग, मितगम–स पु० [स०] हाथी, गज

मितपच–वि० [स०] १ निर्धन, दरिद्र ।

उ०—कै जुब्बन व्यय ब्याह पै नायक हरखाया । जाणी मितपच रक को नव ही निधि पाया ।—व भा

२ कृपण, कजूस (नित्य)

३ थोडा पकाने वाला ।

मित–वि० [स०] १ परिमित, थोडा ।

उ०—वय एकादस मित बरस समर जीति हय सूर । प्रतिहारी आणी प्रथम पित्य' कवर गुण पूर ।—व भा

२ तुल्य, समान, तरह ।

उ०—१ मथे जवन दळ उदबिखौर मित, 'अचळ' हुवौ तिलतिल सुर अचित ।—व भा

उ०—२ वदै जसो' जिणवार, कवर अगळ जोडै कर । मीणा अधम गमार, घणी छक अनड रहै घर । बीरा सम्मुह वेग, पूछ पटकै मडळ मित । एक खीचि आइ सबळ, कीधा खळ सकित । अभिधान 'गग' सगो सगर निम्मदेव अगज निडर । असवार एक जडिया उठै ओखळिया भाला अरर ।—व भा

स० स्त्री०—१ सख्या गिनती ।

उ०—१ गहर मे भीति अरणा नदी तरिब बहै, अनत आगे वह्या मित नाही । साध आकाम मे अटकि ठलटा चढ्या,प्राण मन सुरति आकास मांहि ।—ह पु वा

उ०—२ नीडै दिल्ली नेर रै,लाख उमै मित लोक । कत्ती हैठै करि कतल, अमल कियौ सब ओक ।—व भा

२ पार, सीमा ।

उ०—दादू जैसा राम अपार है, तैसी भक्ति अगाध । इन दानो की मित नही, सकळ पुकारै साध ।—दादूवाणी

३ माप

उ०—दादू एक जीभ केता कहू, पूरण ब्रह्म अगाव । वेद कतेवा मित नही, थकित भये सब साध ।—दादूवाणी

४ मृत्यु, मरण।

उ०—जोगाम्यामी कीजे वीजे मग्राम मांम छळ मरणो। पामीजे मित मोखो, निम्चय तत निरवाण।—गु रू व

५ देखो 'मित्र' (रू भे) (ना डिं को)

मितड़ो—देखो 'मित्र' (ग्रल्पा, रू भे)

मितभासी—वि० [सं० मितभाषिन्](स्त्री० मितभासणी) समझ बूझ कर थोड़ा बोलने वाला, मितभाषी।

मितर—देखो 'मित्र' (रू भे)

उ०—सेठ स्यामजी जामक गुण गाल, मारजा रै लोही रा पीळ! मित्तर नहीं मुनळविया मितरोळ—दमदोस

मितरता—देखो 'मित्रता' (रू भे)

मितराई—देखो 'मित्राई' (रू भे)

उ०—दोसती-मितराई मोटी चाल, कितो ही तुलावो चावै मन्ही रा माल।—दमदोस

मितरो—देखो 'मित्र' (रू भे)

२ देखो 'मन्री' (रू भे)

मितळणो, मितळबो—क्रि०अ०—कै ग्राने को होना, मिचलाना।

उ०—बावलिया री छाल रै उनमान मगमो अर खुरदरो डील। टीगी तो फूलकवर रै लगे टगे। पण थिडरूप उणियारै। देख्या जी मितळै। दांत एक दूजा माथै चढघोड़ा।—फुलवाड़ी

मितळणहार, हारौ (हारी), मितळणियो—वि०

मितळिओड़ो, मितळियोड़ो, मितळ्योड़ो—भू०का०कृ०

मितळीजणो, मितळीजबो—भाव वा०

मितळावणो, मितळावबो—देखो 'मितळणो मितळबो' (रू भे)

उ०—खायो पीयो ग्रंग लागै नी। अम्टपोर जी मितळायतो। नींद रा गोळीज्योड़ो व्है ज्यूं रेवतो।—फुलवाड़ी

मितळावणहार, हारौ (हारी), मितलावणियो—वि०

मितळाविओड़ो, मितळावियोड़ो, मितळाव्योड़ो—भू०का०कृ०

मितळावीजणो, मितळावीजबो—भाव वा०

मितवो—देखो 'मित्र' (रू भे)

उ०—१ बरात चलूगी प्यारे, नई दुलही कैसी लावोगे। वेमक व्याहो मितवा मैं राजी, मोहि मन मिलके सिधावोगे।

—रमीलै राज रा गीत

उ०—२ ग्रब ग्रांन मिलादे कासिदवा रे। मोरे मितवा मोहि सेजरिया।—रमीलै राज रा गीत

मितव्यय—स० पु० [सं०] थोड़े खर्च में काम चलाना, ग्रावश्यकता से अधिक खर्च न करना, किफायत।

वि०—कम खर्च करने वाला।

मितव्ययता—स० स्त्री—मितव्यय होने की ग्रवस्था या भाव। किफायत सारी।

मिताई—देखो 'मित्राई' (रू भे)

उ०—वजीर ग्ररज कीवी, मिठाई, मिताई, समाई नरमाई ग्रौर मुलायमी किण वास्ते। जे इण गुणां सूं रैयत दुग्रा ग्रापरै बादसाह नूं देवै—नी प्र

मिति, मिती—स० स्त्री [सं० मिति] १ मान, परिमाण।

२ सीमा, हद।

३ समय की ग्रवधि, दिया हुग्रा वक्त।

४ देशी महीनों की तिथि या तारीख।

रू० भे०—मिती, मत्ति, मती, मत्ति, मत्ती।

मितीकाटो—स० पु० यौ०—१ किसी हुंडी या बिल की निश्चित तिथि से पूर्व भुगतान करने पर मिलने वाली एक प्रकार की छूट, मुद्दत, रियायत।

वि० वि०—यह एक प्रकार का ब्याज है जो ग्रवधि से पूर्व रुपया ग्रदा करने के कारण भुगतान करने वाले को मिलता है।

२ पारस्परिक लेन-देन में, भारतीय महाजनी प्रणाली के ग्रनुसार ग्रलग-ग्रलग रकमों पर ग्रलग-ग्रलग तिथियों से जोड़ा जाने वाला ब्याज।

मितु—देखो 'मित्र' (रू भे)

मित्त, मित्तर—देखो 'मित्र' (रू भे)

उ०—१ तुम प्रीतम जे माहरौ मित्त, तु हिवैं कोइ न मेलै चित्त।

—ध व ग्र

उ०—२ महपाळ सिधा कुळ मित्ता रो, पहपाळक सता पीसा रो। जग जाय जमारो जीतारो, मुज सभर सायब मीता रो।

—र ज प्र

उ०—३ दादू विरहो पीड मैं, पड़ा पुकारै मित्त। राम बिना जीवै नहीं, पीव मिळन की चित्त।—दादू बाणी

मित्र—स० पु० [सं० मित्र] १ सूर्य, भानु (ग्र मा, डिं को, ना डिं को, ना मा)

२ बारह ग्रादित्यों में से एक।

वि० वि०—भविष्य के ग्रनुसार, मार्गशीर्ष माह में प्रकाशित होने वाले सूर्य को मित्र कहा जाता है। किन्तु भागवत के ग्रनुसार ज्येष्ठ माह में उदय होने वाले सूर्य को मित्र कहा जाता है।

३ एक वैदिक देवता।

४ वार ग्रौर नक्षत्र सम्बन्धी बनने वाले २८ योगों में १२ वा योग।

५ पुराणों के ग्रनुसार मरुदगण में से पहले मरुत का नाम।

६ ऊर्ज्जा के गर्भ से उत्पन्न वशिष्ठ के एक पुत्र का नाम।

[सं० मित्रम्] ७ सदैव हित चाहने वाला, सुख दुख में काम ग्राने वाला व्यक्ति। सुहृद, हितैषी, शुभेच्छु।

८ प्रेमी प्रियतम

९ सखा, दोस्त, यार।

उ०—१ भ्रात मित्र जुग जुग भला, नीत प्रसिद्ध निराट। जुगळ भुजा कर जाणिया, ग्रपणा जुगळ कपाट।—बां दा

पर्या०—नेहवाळ नेही, प्रांण, प्राणइस्ट, प्रीतम, प्रेमीगुण, मन-मेळग,

मिणिश्रोडौ, मिणियोडौ, मिण्योडौ—भू० का० कृ० ।

मिणीजणौ, मिणीजबौ—कर्म वा० ।

मिण—स० स्त्री०—१ कुए के घेरे की दीवार, घेराव

उ०—महावीर गोतम मुख मोडी चोतीणो खिणियो मिण चोडी जैनी खा'ड चिढी पट जोडी, मौत हुवै को जाय मकोडी ।—ऊ का

रू० भे०—मीण,

२ देखो 'मणि' (रू भे) (अ मा)

उ०—१ सखी अमीणो साहिबो, निरभै काळो नाग । सिर राखे मिण स्यामध्रम, रीझै सिंधु राग ।—बा दा

उ०—२ खुडिया ऊपरि जाणि खांभिया, मिणधर राजा तणी मिण ।—महादेव पारवती री वेलि

उ०—३ कापडमाल असख हेम मिण रयण विभूखण —गु रू व

मिणजल—म० पु० [स० मणिजल] विद्युत, बिजली (ह ना मा)

मिणघर, मिणधरण मिणधारी—देखो 'मणिधर' (रू भे)

उ०—१ मिणधर विख अणमाव, मोटा नह धारै मगज । बीछू पूछ वणाव, राखै सिर पर राजिया ।—किरपारांम

उ०—२ चदण लपटै मिणधरण, रीझै सामळ राग । विण मुख मांझल जहरते, निदवियौ जग नाग ।—बा दा

उ०—३ मागळियो 'सूदर' मिणधारी, धुर भगवान महाव्रत धारी ।
—रा रू

मिणसणौ मिणसबौ—क्रि० स० [सं० मनस्यन्] १ मन मे इच्छा विचार या सकल्प करना

२ मन मे दृढ निश्चय या सकल्प करना

३ कोई पदार्थ दान करने के उद्देश्य से, सम्मुख रखकर या हाथ मे लेकर विधिपूर्वक मत्र पढकर सकल्प करना

मिणसियोडौ—भू० का० कृ०—१ मन मे इच्छा, विचार या सकल्प किया हुआ २ मन मे दृढ निश्चय या सकल्प किया हुआ ३ कोई पदार्थ दान करने के उद्देश्य से सम्मुख रख-कर या हाथ में लेकर विधि पूर्वक मत्र पढकर सकल्प किया हुआ

(स्त्री० मिणसियोडी)

मिणसीकर—स० पु० [स० शीकरमणि]चद्रमा, चांद, (ना मा)

मिणि—देखो 'मणि' (रू भे)

मिणिअड—देखो 'मणियड' (रू भे)

उ०—मिणिअड नेपति भडा, खग्गवाहा खत्र धोरा ।—गु रू ब

मिणिधर—देखो 'मणिधर' (रू भे)

मिणियड, मिणियर—देखो 'मणियड' (रू भे)

उ०—सझ दळ वाला हरा सवाया, अखई पवै प्राग सम आया । मिणियड दल मेळे घर मगल,आयो जैतमाळ अतुलीबळ ।—रा रू

मिणियार—देखो 'मणियारा' (रू भे)

मिणियारो—देखो 'मणियारो' (रू भे)

मिणियोडौ—भू० का० कृ०—१ नापा हुआ

२ देखो 'मुणियोडौ' (रू भे)

(स्त्री० मिणियोडी)

मिणियौ—देखो 'मणियौ' (रू. भे)

मिणिहार—देखो 'मणियार' (रू भे)

मिणिहारो—देखो 'मणियारो' (रू. भे.)

उ०—कोयल ऐ आज म्हारै जामण जायो बहनड जोइजे । बहनड म्हारी मिणिहारा री हाट, मूगा मोलां री मोनी बहनड मोलवै ।
—लो गी

मिणी—देखो 'मणि' (रू भे)

मिणीधर—देखो 'मणिधर' (रू भे)

मिणीयड, मिणीयर—देखो 'मणियड' (रू भे)

उ०—१ नगधर मिणीयड नीपजै कोडीधज केकाण ।—वी मा

उ०—२ कूक गई महमद कने जग सारै जाणी । इळ मिणीयर कर ऊजळी तीजणियां आणी ।—वी मा

मितग, मितगम—स पु० [स०] हाथी, गज

मितपच—वि० [स०] १ निर्धन, दरिद्र ।

उ०—कै जुव्वन वय व्याह पै नायक हरखाया । जांणी मितपच रक की नव ही निधि पाया ।—व भा

२ कृपण, कजूस (नित्य)

३ थोडा पकाने वाला ।

मित—वि० [स०] १ परिमित, थोडा ।

उ०—वय एकादस मित बरस समर जीति हय सूर । प्रतिहारी आणी प्रथम पित्य' कवर गुण पूर ।—व भा

२ तुल्य, समान, तरह ।

उ०—१ मथै जवन दळ उदधिखीर मित, 'अचळ' हुवौ तिलतिल सुर अचित ।—व भा

उ०—२ वदै जसौ' जिणवार, कवर अग्गळ जोड कर । मीणा अघम गमार, घणां छक अनड रहै घर । बीरा सम्मुह वेग, पूछ पटकै मडळ मित । एक खीचि झाड सबळ, कीधा खळ सकित । अभिधान गग' सगो सगर निम्मदेव अगज निडर । असवार एक जडिया उठै ओखळिया भाला अरर ।—व भा

स० स्त्री०—१ सख्या गिनती ।

उ०—१ गहर मैं भीति अम्णा नदी तरिव बहै, अनत आगे बह्या मित नांही । साध आकाम मे अटकि उलटा चढ्या प्रांण मन सुरति आकास माहि ।—ह पु वा

उ०—२ नोडै दिल्ली नेर रै,लाख उभै मित लोक । कत्ती हैठै करि कतल, अमल कियो सब ओक ।—व भा

२ पार, सीमा ।

उ०—दादू जैसा राम अपार है, तैसी भक्ति अगाध । इन दोनो की मित नही, मकळ पुकारै साध ।—दादूवाणी

३ माप

उ०—दादू एक जीभ केता कहू पूरण ब्रह्म अगाध । वेद कतेबा मित नही, थकित भये सब साध ।—दादूवाणी

४ मृत्यु, मरण।

उ०—जोगास्यामी कीजै कीजै संग्राम सांम छळ मरणो। पामीजै मित मोखो, निश्चय तत निरवाण।—गु रू व

५ देखो 'मित्र' (रू भे) (ना डिं को)

मितड़ो—देखो 'मित्र' (अल्पा, रू भे)

मितभासी—वि० [सं० मितभाषिन्] (स्त्री० मितभासणी) समझ बूझ कर थोड़ा बोलने वाला, मितभाषी।

मितर—देखो 'मित्र' (रू भे)

उ०—सेठ स्यामजी जावक गुण-गाल, मारजा रै लोही रा पीऊ ! मितर नहीं मुनळविया मितरोळ —दसदोख

मितरता—देखो 'मित्रता' (रू भे)

मितराई—देखो 'मित्राई' (रू भे)

उ०—दोसती-मितराई मोटी चाल, कितो ही तुलावो चावै मन्दी मूं माल।—दसदोख

मितरो—देखो 'मित्र' (रू भे)

२ देखो 'मत्री' (रू भे)

मितळणो, मितळबो—क्रि०अ०—कै आने को होना, मिचलाना।

उ०—बावलिया री छाल रै उनमान मगसो अर खुरदरो डील। होगी तो फूलकवर रै लगे टगे। पण विडरूप उणियारै। देख्यां जी मितळै। दात एक दूजा माथै चढ्योड़ा।—फुलवाड़ी

मितळणहार, हारो (हारी), मितळणियो—वि०

मितळिओड़ो, मितळियोड़ो, मितळ्योड़ो—भू०का०कृ०

मितळीजणो, मितळीजबो—भाव वा०

मितळावणो, मितळावबो—देखो 'मितळणो, मितळबो' (रू भे)

उ०—खायो पीयो अग लागै नीं। अस्टपोर जी मितळावतो। नीद में गेळीज्योड़ो व्है ज्यू रैवतो।—फुलवाड़ी

मितळावणहार, हारो (हारी), मितलावणियो—वि०

मितळाविओड़ो, मितळावियोड़ो, मितळाव्योड़ो—भू०का०कृ०

मितळावीजणो, मितळावीजबो—भाव वा०

मितवो—देखो 'मित्र' (रू भे)

उ०—१ वरात चलूंगी प्यारे, नई दुलही कैसी लावोगे। वेमक व्याहो मितवा मैं राजी, मोहि मन मिलकै सिधावोगे।

—रमीलै राज रा गीत

उ०—२ अब आंन मिलादै कासिदवा रै। मोरै मितवा मोहि नेजरियां।—रमीलै राज रा गीत

मितव्यय—सं० पु० [सं०] थोड़े खर्च में काम चलाना, आवश्यकता से अधिक खर्च न करना, किफायत।

वि०—कम खर्च करने वाला।

मितव्ययता—सं० स्त्री—मितव्यय होने की अवस्था या भाव। किफायत सारी।

मिताई—देखो 'मित्राई' (रू भे)

उ०—वजीर अरज कीवी, मिठाई, मिताई, खमाई नरमाई और मुलायमी किण वास्ते। जे इण गुणां सू रैयत दुआ आपरै बादसाह नू देवै —नी. प्र

मिति, मिती—सं० स्त्री [सं० मिति] १ मान, परिमाण।

२ सीमा, हद।

३ समय की अवधि, दिया हुआ वक्त।

४ देशी महीनों की तिथि या तारीख।

रू० भे०—मिती, मत्ति, मती, मत्ति, मत्ती।

मितीकाटो—सं० पु० यौ०—१ किसी हुडी या बिल की निश्चित तिथि से पूर्व भुगतान करने पर मिलने वाली एक प्रकार की छूट, मुद्दत, रियायत।

वि० वि०—यह एक प्रकार का ब्याज है जो अवधि से पूर्व रुपया अदा करने के कारण भुगतान करने वाले को मिलता है।

२ पारस्परिक लेन-देन में, भारतीय-महाजनी प्रणाली के अनुसार अलग-अलग रकमों पर अलग अलग तिथियों से जोड़ा जाने वाला ब्याज।

मितु—देखो 'मित्र' (रू भे)

मित्त, मित्तर—देखो 'मित्र' (रू भे)

उ०—१ तुम प्रीतम जे माहरो मित्त, तु हिवै कोइ न मेलै चित्त।

—घ व ग्र

उ०—२ महपाळ सिधा कुळ मित्ता रो, पहपाळक सता पीसा रो। जग जाय जमारो जीतारो, सुज सभर सायब मीता रो।

—र ज प्र

उ०— ३ दादू विरहो पीड़ सौं, पड़ा पुकारै मित्त। राम बिना जीवै नहीं, पीव मिलन की चित्त।—दादू वाणी

मित्र—सं० पु० [सं० मित्र] १ सूर्य, भानु (अ मा, डिं को, ना डिं को, ना मा)

२ बारह आदित्यों में से एक।

वि० वि०—भविष्य के अनुसार, मार्गशीर्ष माह में प्रकाशित होने वाले सूर्य को मित्र कहा जाता है। किन्तु भागवत के अनुसार ज्येष्ठ माह में उदय होने वाले सूर्य को मित्र कहा जाता है।

३ एक वैदिक देवता।

४ वार और नक्षत्र सम्बन्धी बनने वाले २८ योगों में १२ वा योग।

५ पुराणों के अनुसार मरुद्गण में से पहले मरुत का नाम।

६ ऊर्जा के गर्भ से उत्पन्न वशिष्ठ के एक पुत्र का नाम।

[सं० मित्रम्] ७ सदैव हित चाहने वाला, सुख दुख में काम आने वाला व्यक्ति। सुहृद, हितैषी, शुभेच्छु।

८ प्रेमी प्रियतम

९ सखा, दोस्त, यार।

उ०—१ भ्रात मित्र जुग जुग भला नीत प्रसिद्ध निराट। जुगळ भुजा पर जांणिया, अपणा जुगळ कपाट।—वा दा

पर्या०—नेहगाळ नेही, प्रांण, प्राणइस्ट, प्रीतम, प्रेमीगुण, मन-मेळण,

मनहितू, यस्ट, वलभ, वलभतन, सगतवळ सध्रीच, सखा, सज्जन, सनिगध, सवय, सहकारी, सहकृतवास, सहचर, सहायक, सुखदा, सुवँण, सुहृद, सैण, सोहारद, हारद, हेतू ।

१० श्वेत, सफेद, ❋ (डि को)

रू० भे०—मित, मितर, मित्र, मित्री, मित, मित्त, मित्री, मित्रु, मित्रू, मीत, मीत्र, ।

अल्पा०—मतरोळियौ, मत्रोळियौ, मितरोळियौ, मितड, मितरोळियौ । मीतौ,

मह० मितरोळ ।

मित्रकपि–स० पु० यौ० [स०] श्रीरामचद्र भगवान (नां मा)

मित्रघात–स० स्त्री० यौ० [स०] १ मित्रहत्यारा २ मित्र के साथ किया जाने वाला धोखा।

मित्रघातक–वि० [स०] १ मित्रकी हत्या करने वाला। २ मित्रके साथ धोखा करने वाला।

मित्रता, मित्रताई–स० स्त्री० [स० मित्रता] मित्र होने की अवस्था, धर्म या भाव।

उ०—१ अयांन तैं अमित्रता विचित्रता विचित्र की। महान मित्र मित्रता पवित्र तैं पवित्र की।—ऊ. का

उ०—२ ग्रहाराज साखी नदी ज्वाला गाई। तरैं रांम सुग्रीव री मित्रताई।—सू प्र

रू० भे०—मितरता, मितरता

मित्रवान–स० पु० [सं०] १ कृष्ण के एक पुत्र का नाम

२ मनु के एक पुत्र का नाम

मित्रविंदा–स० स्त्री०—श्री कृष्ण की एक पत्नी का नाम।

मित्रसजोग–स० पु० [स० मित्रसयोग] सुख (डि को) ❋

मित्रसप्तमी मित्रसातम–स०पु०[मित्रसप्तमी]मार्गशीर्ष व माघ शुक्ला सप्तमी

मित्रसेन–स० पु० [स०] १ बारहवें मनु के एक पुत्र का नाम।

२ श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम।

मित्रा–स० स्त्री० [स०] शत्रुघ्न की माता सुमित्रा का नाम

मित्राई—देखो 'मित्राई' (रू भे)

उ०—जेहवी हो वादल केरी छाहड़ी जी, जेहवी मित्राई भेख धारी नी।—वि कु

मित्री—१ देखो 'मित्र'

२ देखो 'मत्री' (रू भे)

मित्रु, मित्रू—देखो 'मित्र' (रू भे) (अ मा)

मिथ–स० पु०[स० मिथ] १ सगम करना, सम्मिलित करना।

२ घायल करना प्रहार करना।

३ पहचानना, समझना।

४ झगड़ा करना, लड़ाई करना।

५ देखो 'मिथ्या' (रू भे) (ह ना. मा)

मिथन—देखो 'मिथुन' (रू भे) (अ मा, नां मा)

मिथया—देखो 'मिथ्या' (रू भे)

मिथला—देखो 'मिथिला' (रू. भे)

उ०—मिथला महिपतीजी अवनी, कीध जिग आरभ। तेडै समगतीजी लिख, फुरमाण वाहु-प्रनभ।—र रू

मिथळापतजा–स० स्त्री० [स० मिथिलापतिजा] मिथिला देश के राजा की राजकुमारी, सीता, जानकी।—(डि को)

मिथळापुरी—देखो 'मिथिळापुरी' (रू भे)

मिथळेस, मिथल्लेस–स० पु० [मिथिला+ईश] मिथिला का स्वामी, राजा जनक।

उ०—१ मिथळेस कुवरी सीता सुतन, कवि एती ओपमा कहत।

उ०२—मिथल्लेस रै ज्याग आए समीप। दुवा भूप आए मिळे सात दीप।—सू प्र

मिथळेसर—देखो 'मिथिळेसर' (रू भे)

मिथा—देखो 'मिथ्या' (रू भे) (ह नां. मां)

मिथि–स० पु० [स०] विदेह देश के एक राजा का नाम।

वि० वि०—निमि राजा के मृत्य देह का मथन करने पर इनका उत्पन्न होना माना जाता है।

मिथिया—देखो 'मिथ्या' (रू भे)

मिथियाचार—देखो 'मिथ्याचार' (रू भे)

मिथिळा–स० स्त्री [स० मिथिला] १ वर्तमान तिरहुत का प्राचीन नाम।

२ उक्त प्रदेश की प्राचीन राजधानी का नाम, जनकपुरी।

मिथिळापुरी–स० स्त्री०—मिथिला।

रू भे—मिथळापुरी।

मिथिळेस, मिथिळेसर–स० पु० [मिथिलेश, मिथिलेश्वर] निमि के पुत्र राजा जनक।

उ०—सहेल्यां हे आबो मोरियो, मोरयो मोरयो हे मिथिळेसर द्वार।—गी रा

रू० भे०—मिथळेस, मिथळेसर

मिथुन–स० पु० [स०] १ बारह राशियों में तीसरी राशि का नाम।

२ ज्योतिष मे तीसरा लग्न।

उ०—कहि प्रश्चक भांण बुध बुध प्रकास। तन लगन मिथुन सुभ धनतवास।—सू प्र

३ एक साथ उत्पन्न दो बच्चे।

४ जोड़ा, जुट युग्म।

उ०—देखी नई पखी मिथुन, हियडई हारी जाय। धली विलोकइ धांनरां, हरण हसतां धाय।—मा का प्र

५ सभोग, मैथुन।

उ०—मारगि खर मिथुन करइ, जिमणां जाइ हरण। सांहमी सधव मिलइ बहू, वाहु पहिरि आभरण।—मा कां प्र

६ सगम, समागम।

मिथुनचर–स पु० [स०] चक्रवाक, पक्षी, चकवा

मिथ्या–वि० [स०] १ जो अस्तित्व मे न हो परन्तु फिर भी जिसका अज्ञान वश बोध होता है।

उ०—मिथ्या कह तो कही न जावै, सत्य नही ठहरांणी । ग्यांन विचार जग्या उर अदर, जिण कुछ है जाणी ।
—श्री सुखरामजी महाराज

२ असत्य, झठ ।

उ०—मिथ्या कू मिथ्या बताया, मिट्या साच मे साच मिळाया ।
—श्री सुखरामजी महाराज

३ कृत्रिम, बनावटी ।

४ निराधार ।

५ कपटपूर्ण ।

६ नीति या नियम के विरुद्ध ।

रू० भे०—मिथ, मिथया, मिथा, मिथिया ।

मिथ्याचार–स०पु० [स०] १ ऐसा व्यवहार या आचरण जिसमें सत्यता न हो, कपटपूर्ण आचरण ।

२ उक्त प्रकार का आचरण या व्यवहार करने वाला ।

रू० भे०— मिथियाचार'

मिथ्याजोग–स० पु० [स० मिथ्यायोग] वह कार्य जो रूप, रस, प्रकृति आदि के विरुद्ध हो ।

मिथ्यात—देखो मिथ्यात्व (रू भे)

उ०—१ मिथ्यात तउ मानइ नहीं मूल, वलि विकथा न करइ वातूल ।—स कु

उ०—२ मिथ्यात नी मति दूर निवारी, साची सद्दहू मन धारी ।—स कु

उ०–३ दीठौ सुपनौ आठमों, आगियानौ चमत्कारो रे । अल्प उद्योत जिन धरम, बहुत मिथ्यात अधारो रे ।—जयवांणी

मिथ्याति, मिथ्याती–वि०—देखो 'मिथ्यात्वी' (रू भे)

उ०—१ एक गाम में स्वामीजी उतरघा । अमरसिंहजी रा दो साध ईसरदासजी, कोजीरांमजी आया । ऊभै उतरघा । तिहा स्वामीजी जाय ऊभा प्रश्न पूछ्यो । अणुकम्पा आणनैं किणही भूखा मरता ने सूना दिया तिण में काइ हुवो ? जद उवै बोल्या इसो प्रश्न मिथ्याती हुवै सो पूछै । जद स्वामीजी बोल्या पूछणवाला तो पूछ लीवी । पिण कहिण वाला कह्या मिथ्याती हुवै तो मत कहो ।
—भि द्र

उ०—२ एम अनादि तणो, मिथ्याती जीव एकत । वनस्पति माहि तिहां, रहियो काल अनत ।—ध व ग्र

मिथ्यातो—देखो 'मिथ्याती' (रू.भे)

उ०—पुरी थी मूघू समकित जे धरइ,मानइ नहि य मिथ्यातो जी । साहमी सु धरणइ वइसइ नहीं नहि राग द्वेस नी वातो जी ।
—स०कु०

मिथ्यात्व–स० पु० [स० मिथ्यात्व प्रा० मिच्छत्त] जो बात जैसी हो उसे वैसा न मानना या विपरीत मानना मिथ्यात्व कहलाता है । मतान्तर मे कुदेव, कुधर्म और कुशास्त्र पर श्रद्धा (विश्वास) करना भी मिथ्यात्व कहलाता है ।—जैन

उ०—१ हिव मिथ्यात्व वमीयउ, मन उपसमियो अति घणु । दुरदम दिल दमियउ, समकित रमीयउ गुण थुणु ।—वि कु

उ०—२ आगला नै समझावा द्रस्टात करडादै, जब किणही स्वामीजी नैं कह्यो आप द्रस्टात करड़ा देवो । जद स्वामीजी कह्यो रोग तो गम्भीर रो उठयो अनै कहे म्हारै खूजालो । पिण खुजारया साता न हुवै । हलवाणी रा डाम दियां साता हुवै । ज्यू रोग तो मिथ्यात्व रूप करडो । ते द्रस्टात स हटै ।—भि द्र

वि०वि०—ये दस प्रकार के होते हैं । उनके नाम निम्नलिखित हैं ।

१ अधर्म को धर्म समझना ।

२ वास्तविक धर्म को अधर्म समझना ।

३. ससार के मार्ग को मोक्ष का मार्ग समझना ।

४ मोक्ष के मार्ग को ससार का मार्ग समझना ।

५ अजीव को जीव समझना ।

६ जीव को अजीव समझना ।

७ कुसाधु को सुसाधु समझना ।

८ सुसाधु को कुसाधु समझना ।

९ जो व्यक्ति राग द्वेष रूप ससार से मुक्त नही हुआ है उसे मुक्त समझना ।

१० जो महापुरुष संसार मे मुक्त हो चुका है, उसे ससार से लिप्त समझना ।

रू भे —मिथ्यात

मिथ्यात्वी–वि० [स० मिथ्यात्विन्, प्रा० मिच्छत्ति] सत्य व धर्म पर विश्वास नही करने वाला, परमार्थ पर अश्रद्धालु ।

उ०—रुघनाथजी स्वामी नें पूछ्यो विजयसिंहजी पडहो फेरायो, तालाब कूवा पर गलना नखाया । दीवां पर ढाकणा दिराया, बूढा मा बाप री चाकरी करणी, इत्यादिक कार्यों मे राजाजी नैं कांई हुवो । जद स्वामी बोल्या राजाजी समदृष्टी है के मिथ्यात्वी ? इम पूछ्या जाब देवा असमर्थ थया ।—भि द्र

मिथ्यापुरस–स०पु० [स० मिथ्यापुरुष] छाया पुरुष

मिथ्यामत–स० पु०—झूठा मत, पाखण्ड, नास्तिकमत ।

मिथ्यामति, मिथ्यामती–वि० [सं० मिथ्यामति] १ दुष्ट बुद्धि, दुर्मति

उ०—१ मिथ्यामति टलिउ दिन मुझ वालियउ हे जइ वखाई ।
—वि कु

उ०—२ परदेसी प्रतिबोधीसउ, मिथ्यामति अग्यानो जी ।—स कु

२ नास्तिक

स० पु०—धोखा, छल, कपट ।

मिथ्यावाद–स० पु० [सं०] असत्य बोलना, झूठ बोलना ।

मिथ्यावादी–वि० [स०] असत्यवादी, झूठा

मिथिलोकेस–स० पु० यौ०[स० मर्त्यलोकेश]राजा, नृप (ह नां मा)

मिनक—१ देखो 'मनुष्य' (रू भे)

उ०—जटा कनफटा जोगटा खाकी पर घन खावणा,मरुघर में कोढा

मिनक, करसा एक कमावणा।—ऊ का
२ देखो 'मिनख' (रू भे)
मिनकचारो—देखो 'मिनखचारो' (रू भे)
मिनकपण मिनकपणु, मिनकपणो—देखो 'मिनखपण' (रू भे)
मिनकावाख—देखो मुनक्का' (रू भे)
मिनकियो-स० पु०—देखो 'मिनियो' (अल्पा, रू भे)
२ देखो 'मनुष्य (अल्पा, रू भे)
मिनकी—देखो 'मिन्नी' (अल्पा, रू भे.)
उ०—झपटी नहीं आख झबकाई, लेगी नह लपकाईनै। लख लाणत मिनकी नै लागी, उण वेळा नह आई नैं।—ऊ का
मिनको—देखो 'मिन्नो' (अल्पा, रू भे)
उ०—जाब्तो राखतां थका ई म्हांटो मिनको तो नित जावणिया चाट जावै।—फुलवाडी (स्त्री० मिनकी)
मिनख—१ देखो 'मनुस्य' (रू भे)
उ०—आपो पै हूता सो तू आप, विसभर भूत सरब्ब बियाप। सर्व कुछ जागां बैठो साह, मिनक्खां देवां नागा मांह।—ह र.
२ देखो 'मिनख'
मिनख-स० स्त्री० [स० मनुष्य] १ स्त्री, औरत
२ पत्नी
३ जनता, प्रजा
स० पु०—४ पति, खाविंद।
५ देखो 'मनुष्य' (रू भे)
उ०—१ नाव तिरै नह नीर मे, निबळा नावड़ियाह। राजस नह साबत रहै, मिनखां मावडियांह।—बा दा
उ०—२ मिनख री आ गुलामी तो हवा और उजास मे ही विस घोळ दे।—फुलवाडी
रू० भे०—'मिनक्ख'
मिनखजूण सं० पु० [स० मनुष्य+योनि] मनुष्य योनि, मनुष्य जन्म।
उ०—सब सू हस हस बोल, पर दुख मे साथवणो। मिनख जूण अनमोल, प्यार दिनां री चादणी—अज्ञात
रू० भे०—मिनखाजूण।
मिनखपण, मिनखपणु मिनखपणो—स० पु० [स० मनुष्यत्व] मनुष्यता इन्सानियत।
उ०—मानखो पैसा सू घणो मूंघो गिणीजतो। उण वखत तक मिनखपणा रो साफ काळ नी पडियो हो। इण वास्ते काम पड्यां मिनख मिनख रै काम आवतो।—रातवासो
रू० भे०—मिनकपण, मिनकपणु, मिनकपणो, मिनखापण, मिनखापणु, मिनखापणो,
मिनखमार-वि० [स० मनुष्य+मृ]मनुष्य-हत्या करने वाला, मनुष्य को मारने वाला।
उ०—वो खाड खोखतो हो। उणनै जायर कह्यो-मिनखमार किराड़, थारो देवाळो निकळै, थारो घर भागै।—फुलवाडी
मिनखांमनमोहणी-सं० स्त्री० [सं० मनुष्य+मन+मोहिनी] पृथ्वी, जमीन। (ह नां मा)
मिनखा-स० स्त्री०[स० मनिषा] बुद्धि, अक्ल। (अ मा.)
मिनखाचार-स० पु० [स० मनुष्य+आचार] मनुष्य के साथ व्यवहार करने के गुण, मनुष्यत्व, मनुष्यपन, इन्सानियत।
रू० भे०—मिनकचार, मिनकचारो, मिनखीचार, मिनखीचारो।
मिनखाजूण—देखो 'मिनखजूण' (रू भे)
मिनखादाख—देखो 'मुनक्का' (रू. भे)
मिनखापण, मिनखापणु, मिनखापणो—देखो 'मिनखपण' (रू भे)
उ०—१ बोलो, काई इसी जूण पूरी करण-री नांव ई 'जीवण' है? इयै-नै मिनखापणो कैवू कन ढाळापणो?—वरसगांठ
मिनखी—देखो 'मिन्नी' (अल्पा रू. भे)
उ०—मावडियो वन माझळी, सो नह जाय सिकार। डोळा मिनखी सू डरै, मूसा ज्यूं मुरदार।—बा दा
मिनखीचार, मिनखीचारो—देखो 'मिनखाचार' (रू भे.)
उ०—१ म्हैं फगत मिनख हू अर मिनखीचारो ई म्हारो धरम अर भगवान है।—फुलवाड़ी
उ०—२ तपसो कह्यो पूरो पतियारो अर विस्वास व्हेतां थका ई म्हैं थांरी सावळ परख करणी चावतो हो। सोना में खोट व्है सकै पण थांरा मिनखीचारा में कीं कसर कोनी।—फुलवाडी
मिनखेडो-वि० [स्त्री० मिनखेडी] मनुष्यो के पास रहने का आदि। (पशु, पक्षी)
मिनड़ी—देखो 'मिन्नी' (अल्पा., रू भे)
उ०—१ सेठ ई मनाग्यांना सोच लियो के लारो छूटणो दोरो है। आ मिनड़ी तो जबरो आटो साजियो।—फुलवाडी
उ०—२ सिरिया दे धाया, करो सहाया। मिनड़ी जाया, मंझ आया।—भगतमाळ
मिनड़ो—१ देखो 'मिन्नो' (अल्पा रू भे.)
२ देखो 'मन' (अल्पा, रू भे)
मिनट-पु० [अ०] समय गणना में एक घंटे का साठवां भाग, साठ सेकड का समय।
उ०—मूळी रो हियो फूटण लागग्यो, उफळग्यो, होळ उपडग्यो अर चित्त भरम हुयग्यो। मन मिनट भर ही मरै नहीं। जी घड़ी पळ हीज जमै नही।—वसदोख
रू०भे०—मिंट, मिलट, मिल्ट।
मिनमिन-स०पु० [अनु०]बकरी के बोलने जैसी आवाज, अस्पष्ट व दबी हुई आवाज।
उ०—डोकरो झिडकने कह्यो—उभो वळ, पूछू, जित्ती बात ई बता, घणा मिनमिन नी करणा।—फुलवाडी
मिनमिनाणो, मिनमिनाबो-क्रि० स०[अनु०] १ धीमे-धीमे दबे हुए स्वर में कुछ कहना।
२ बहुत धीरे-धीरे काम करना।

मिनमिनो-वि० [अनु०] १ मिनमिन करने वाला, धीमे दबे हुए अस्फुट स्वर में कुछ कहने वाला।
२ छोटी-छोटी बात पर चिढ़ने वाला।
३ धीरे-धीरे काम करने वाला, सुस्त।

मिनि—१ देखो 'मन' (अल्पा, रू भे.)
उ०—१ तो रवराया राणी सकति सप्रांणी भगतां भांणी मिनि माणी।—पी ग्र
उ०—२ मिनि ब्रहमा मोरी फतै फरसरी रैण मुखी तु रतरी।
—पी ग्र.
२ देखो 'मिन्नी' (रू भे)

मिनियो—बिल्ली का बच्चा।
उ०—मिनिया मजारीह, अगन प्रजाळी ऊबरधा। बरती मो वारीह, सुणे क बहरो सावरा।—रामनाथ कवियो

मिनिस्टर-स० पु० [अ०] मत्री, वजीर।

मिनी—देखो 'मिन्नी' (रू भे)

मिनीआडर—देखो 'मणियाडर' (रू भे)
उ०—सो-सो रा मिनीआडर गगाबदरीजी रै पडा नै लगा दिया।
—दमदोख

मिनो—१ देखो 'महीनो' (रू भे)
उ०—जद गोह कह्यो-चूनो म्हारो रायरगीलो, छठै मिनै सिळगै।
—फुलवाड़ी
२ देखो 'मिन्नो' (रू भे)

मिन्नत-स० स्त्री० [अ०] विनती, प्रार्थना, दुआ।
रू भे—मीनति,

मिन्नी-स० स्त्री०—१ बिल्ली, मार्जार।
उ०—बेटी रा बापां थोड़ो घणो तो विचार करो के बापडा ऊदरा तो धान अर कपडा रो थोडो घणो बिगाड करै, पण यें तो वानै मिन्नी रै हाथां जिया मोत मराय न्हांको हो।—फुलवाड़ी
२ घीया आदि के छोटे टुकडे करने का उपकरण विशेष।
रू० भे०—मिनि, मिनी, मीनी,
अल्पा०—मिनकी, मिनखी, मिनडी

मिन्नो-स० पु०—बड़ा बिल्ला, विलाव।
महा०—मीनडो,

मिमत-वि०—देखो मैमंत
उ०—मामे सुपना पाइया, घण जोवण मिमंत। जांणू ढोलै जागवी, कैमर भीनै कत।—ढो मा

मिमजर, मिमझर-सं० स्त्री०—बबूल, नीम आदि वृक्षों पर फल लगने पूर्व आने वाला बौर, मजरी।
उ०—मेघ मरोडै डाळ, पवन आंधी झकझोळै। दावो देवै दाग, वैर गिरमी मिस घोळै। अड उपकारी मरद,दटे ना दुमम्या रै डर। सिर धर पीळो मुकुट, खाइ कण मुरता मिमझर।—दस-देव
रू० भे०—मीजर, मीमजर।

मिमता—देखो 'ममता' (रू भे)
उ०—मिमता माया मोह मन,ससा सोग सरीर। हरिया बब संगी हुता, हरि सुख लहै न सीर।—स्रीहरिरामदासजी महाराज
उ०—२ हरिया सुन वित मोह भया, मिमता अजूं न प्रभाव। कीड़ा होसी करम का, चुडिख चुडिख तन खाय।
—स्रीहरिरामदासजी महाराज

मिय-वि०—१ मित, परिमित (जैन)
२ स्वल्प (जैन)
३ देखो 'म्रिग' (रू भे)

मियां-स० पु० [फा०] १ पति, खांविद।
२ स्वामी, मालिक
३ प्रतिष्ठित और मान्य व्यक्ति (मुसलमान)
४ मुसलमान, यवन।
उ०—जगचख भाळत कोतुक जुद्ध, माळा कज संकर ढाळत मुद्ध। विचै बहु हूर किया गळ बांह, मिया रजपूत हिचै रण मांह।
—मे. म.
५ उत्तर भारत के पहाडी राजपूतो की उपाधि
रू० भे०—मींयो, मीयां, मीयो

मियाघोडी-स० स्त्री० यौ०—छोटे बच्चो का एक खेल विशेष
वि० वि०—खेल मे हारने वाले घोडी बनते हैं और जीतने वाले उनकी पीठ पर बैठते हैं।

मियान—देखो 'म्यान' (रू. भे)

मियांनी—देखो 'म्यानी' (रू भे)

मियांनो—देखो 'म्यानो' (रू भे)

मियामिट्ठू-वि०—१ अपने मुह अपनी प्रशसा करने वाला
२ मधुर भाषी, मीठा बोलने वाला।

मियू—देखो 'महीन' (रू. भे)

मियूख—देखो 'मयूख' (रू भे)

मियै—देखो 'मांय' (रू भे)

मियो—देखो 'महीन' (रू भे)

मिरक' मिरख-सं० स्त्री०—काटे का सूक्ष्मतम भाग, या खड।

मिरखावाद—१ देखो 'मिरसावाद' (रू भे)
उ०—हिंसा कीधी रे जीवनी, बोल्या मिरखावाद। चोरी कीधी रे पर तणी, मैथुन मे परमाद।—जयवाणी

मिरग—देखो 'म्रिग' (रू भे.)
उ०—१ राम बिना व्रज ऐडो सूनी लागै, डार सूनी ज्यां एक मिरग बिन।—लो गी
उ०—२ मिरग न वाज्यो वायरो अदरा न वूठो मेह। जीवन न जायो बैटडो, तीनू ही हारी देह।—अज्ञात
उ०—२ नणद पूछयो के आंख रो टोळो बारै कीकर आयो। पै'ला तो मिरग नै ई लाजा मारै जैड़ी आरुया ही।—फुलवाड़ी

मिरगचड़ो-स० पु०—वर्षा ऋतु मे पाया जाने वाला एक कीट विशेष ।
मिरगछाळा—देखो 'म्रिगछाळा' (रू भे)
मिरगजळ—देखो 'म्रिगजळ' (रू भे)
उ०—यह सब माया मिरगजळ, झूठा झिलमिल होइ । दादू चिलका देखकर, सत कर जाणा सोइ ।—दादूवाणी
मिरगत्रसणा—देखो 'म्रिगत्रसणा' (रू भे)
मिरगघर—देखो 'म्रिगघर' (रू भे.)
मिरगनाथ—देखो 'म्रिगनाथ' (रू भे.)
मिरगनैणी—देखो 'म्रिगनैणी' (रू.भे)
मिरगपति—देखो 'म्रिगपति' (रू भे)
मिरगनाभ—देखो 'म्रिगनाभ' (रू भे)
मिरगमदा—देखो 'म्रिगमदा' (रू भे)
मिरगमद—देखो 'म्रिगमद' (रू भे)
मिरगमित्र—देखो म्रिगमित्र' (रू.भे)
मिरगया—देखो 'म्रिगया' (रू भे)
मिरगराज—देखो 'म्रिगराज' (रू भे)
मिरगलडो, मिरगलो—देखो 'म्रिग' (अल्पा., रू भे)
उ०—१ काया कठिन कमान है, खांचै विरळा कोइ । मारै पचा मिरगला, दादू सूरा सोइ ।—दादूवाणी
उ०—२ बाबो घर्क कैवण लागो—जद भगवान राम ई सोना रा मिरगला रै छळावा में आय उणरो लारो करण री लालसा नी ठाम सक्या, पछै उण मीटीघड कुमार रो काई ठरको जको माया रा छळवा मे नी फदै ।—फुलवाडी
उ०—३ सैल करण सायवो गयो हुय लीली असवार, कै जगळ की मिरगल्या म्हारो लियो छै स्याम बिलमाय, दासी, कण विलमायो ए, रावत नही आयो अब तक वाग्णे ।—लो गी
(स्त्री० मिरगलडी, मिरगली)
मिरगवीथी—देखो 'म्रिगवीथी' (रू भे)
मिरगसिरा—देखो 'म्रिगसिरा' (रू भे)
मिरगांक—देखो 'म्रिगांक' (रू भे)
मिरगा—देखो 'म्रिग' (रू भे)
उ०—मिरगा वाव न वाजिया, रोहण तपी न जेठ । कथा म बाधै झूपडो, रहसा वडला हेठ ।—अज्ञात
मिरगानयन, मिरगानैणी, मिरगानैनी—देखो म्रिगनैणी' (रू भे)
उ०—१ नारी मिरगानयन, रग रेखा रस राती । वदै सुकोमळ वयण, महा भर योवन माती ।—वि कु
उ०—२ थांनै तो प्यारी पिया चाकरी जी ढोला म्हानै तो लागो प्यारा आप,म्हानै तो लागो प्यारा आप । अब घर आयजा मिरगानैणीरा वालमा हो कै रै ।—लो गी
उ०—३ ढोलाजी रै' सासरै । कै रै' म्हारी मिरगानैणी के पी'र जी ढोला ।—रा लो गी

मिरगाळो—देखो 'म्रिग (अल्पा., रू भे)
(स्त्री मिरगाळी)
मिरगी—देखो 'म्रिगी' (रू भे)
उ०—भीगी री गळाई उणरो रातो नाक रातो लाल व्हैगो मिरगी रो रोगी थर थर धूजै अर तडाचा वावै ज्यू वो धूजण लागो ।
—फुलवाडी
मिरगेंद्र—देखो 'म्रिगेंद्र' (रू भे)
मिरगेस—देखो 'म्रिगेस' (रू भे)
मिरगो—देखो 'म्रिग' (अल्पा , रू भे)
उ०—१ कठैयन लाध्यो जुलमी मिरगलो । ढूंढ्या ढूढ्या रांण खमाण मिरगो विना मिरगी एकलडी । मिरगो छोड गयो वन खड माय मिरगी नै एकलडी ।—लो.गी
उ०—२ थे तो घनु सर धारो मिरगो मारो रघुवर रसिया हिरण हेरो जो
—गी.रां
(स्त्री० मिरगी)
मिरघ—देखो 'म्रिग' (रू.भे)
उ०—१ जन हरिया मन मिरघ ज्यू, वरज्यो केतो वार । काया वाडी वीच में, करि करि जाय विगार ।
—स्रीहरिरामदासजी महाराज
उ०—२ मिरघै मरम न जाणियो, मुश्कि कस्तुरी नाम । हरिया सब घट रांम है, गुरु विन गयं अलाभ ।
—स्री हरीरामदासजी महाराज
उ०—३ वद वाहा देतो 'मुकनावत' अै वे वस्त्रा न खेलै आळ । चाभरियाळ डाव मुख चीना, मिरघण डाव न लाधै माळ ।
—रामसिंह भाटी रो गीत
(स्त्री० मिरघण, मिरघी)
मिरघमाळ-स० स्त्री०—१ एक प्रकार की भाग ।
उ०—इसैं मे भागेसुर मगाय जै छै । सू किण भात छै ? केसररी क्यारी दोलळी वासग-माथारी । थोहररा विडारी, भाखररा, खुडारी, भूरैं मोररी, काळै पांनरी, आवूरा दिहडांरी, भमरमार मिरघमाळ लरियाळ चिडियाळ चोटडियाळ । एक पान अडगरिया पान एक पान अहमदावाद पान-पानरो रस लीजै छै तिण भाग सारू मसाळा मगायजे छै ।—रा सा स
२ मृगो की पक्ति ।
मिरघलो—देखो 'म्रिग' (अल्पा., रू भे)
उ०—खडो पुकारै मिरघलो, या वन मांहि अनेक । और पारधी चुणि लिया । आय रह्या हम एक ।
—स्रीहरिरामदासजी महाराज
(स्त्री० मिरघली)
मिरघांणू—देखो 'म्रिग' (मह , रू भे)
उ०—वीटै मिरघांणू अति विघनाणू, वळ तूटाणू वीहाणू । मिमरै तिह टांणू भील डसाणू ग्वान हटांणू छुटवाणू ।—भगतमाळ

मिरघानैंणी—१ देखो 'म्रिगानैंणी' (रू भे)
उ०—जावा दो छिणगारी नार जावा दो ना जी थानैं म्हाय पूजावां गणगोर। म्हारी मिरघानैंणी जावा दो ना ए। हू जा माय थांही रैवो जी।—लो गी

मिरघी—देखो 'म्रिगी' (रू भे)
उ०—सूनी देवै महल, देय दे फामी देखो। मिरघी लकवै माहि, उभय ग्रतर ग्रवरेखो। जान्ह हैम जोय, विगत दुख भेद दतावो। ग्राधामीसी ग्राखि, जुवर कुण मूळ जतावो। ग्राह्मण रु गाय हित्या विखे नीच ऊच निरखो नमण। तिम ग्रमल तमाखू तोलि लो कुण घटतो वढतो कमण।—ऊ का
२ देखो 'म्रिग' (स्त्री)

मिरट—देखो 'मिरडो' (मह, रू भे)

मिरडियो—देखो मिरडो' (ग्रल्पा, रू भे)
उ०—मूल मोलता मिनख, मिरडिया घणा घुरावै। हल वावतडी वेर, फोगडा वीज तुपावै। मीठा हुवै मतीर, खूब खाटोडा फोगां। काचर काकडिया, टीडसा मागां जोगां।—दसदेव

मिरडो—स० पु०—फाटे हुए झाडो ग्रौर वृक्षो का ढर।
उ०—निकळै मिरडां लार, गठेळी सूकी साकळ। घर कोटां रै व्येय, पडी लद लक्कडयां वाखळ। टेका कढिया वाघ, ढोवसा घर पर ग्रावी। फोगां हूदी फसल, गरीबा गायक लाखी।—दसदेव

मिरच—स० स्त्री० [स० मरीच, मरिच मरीच] १ एक प्रसिद्ध पौध जिसके लवी फली लगती है जो प्रारभ मे हरी ग्रौर पकने पर लाल हो जाती है।
उ०—वणक पुत्र कागद लिखै, कानामात न देत। हींग मिरच जीगो लिखै, हुग मर जर कर देत।—ग्रज्ञात
२ उक्त पौध की फली।
वि० वि०—लालमिर्च का क्षुप मकोय के क्षुप के समान होता है। फूल इसके सफेद रग के ग्राते हैं। फल फलीनुमा ग्रपक्वावस्था मे हरा ग्रौर पकने पर लाल हो जाता है। यह ममालों के साथ शाक मे विशेष रूप से डाली जाती है।
मुहा०—१ मिरचां लागणी—किसी को ग्रप्रिय ग्रौर तीक्ष्ण वातें सुनने मे वहुत वुरा लगना। २ मिरचां लगाणी—किसी को ग्रप्रिय ग्रौर तीखी वातें सुनाना। ३ एक प्रसिद्ध लता का गोल ग्राकार का दाना विशेष जो स्वाद मे तीखा होता है। इसे काली मिर्च भी कहते हैं। (ग्र मा)
उ०—डर पनमाह उचाट ग्रत, वाट ग्रटकी देखा। मिरच हुतासण होमियां, मत्र कनेव त्रिसेखा।—रा रू
वि० वि०—मिच लता दक्षिण प्रदेश के त्रिवाङ्कुर, मलावार ग्रादि की स्रादर उपजाऊ भूमि मे ग्रधिक मात्रा में उत्पन्न होती है, वहा के रहने वाले इस लता के छोटे छोटे टुकडे करके बडे वडे वृक्षो की जडों में लगा देते हैं। तीन वर्ष मे लता पर फल ग्राता है। फल पक कर लाल हो जाते हैं परन्तु सूख जाने पर काला रग हो जाता है। शाक इत्यादि मे काली मिरच ममाला हो गई है।
पर्याय—ऊखणा, कौळका, फसनाफळा, तिखना, तीख, वेळज, सिधकाम, सुवकर।
३ ताम के पत्तो मे खेला जाने वाला एक खेल।
रू० भे०—मरच, मरिच, मिरचि, मिरची, मिरच्च।

मिरचाई—स० स्त्री०—मुनक्का दाख।

मिरचि—देखो 'मिरच' (रू भे) (ग्रमरत)

मिरचियाकद—स०पु०—एक प्रकार का कद जो सर्प काटे जाने वाले व्यक्ति को घिस कर पिलाया जाता है।

मिरचियाघास—स० पु०—रूसा नामक घास।

मिरची—१ छोटे वच्चो का एक प्रकार का खेल (शेखावाटी)
२ देखो मिरच' (रू भे)

मिरचौ—देखो 'मिरजो' (रू भे)

मिरच्च—देखो 'मिरच' (रू भे)
उ०—कोप मिरच्चां होम कर, घर फिर मेळ सलाह। दूद मिटावण ग्राखियो, 'मोनग' हूता साह।—रा रू

मिरजई—स०पु० [फा० मिराज] एक प्रकार की वददार कुरती।

मिरजो—स०पु० [फा० मीरजा] १ मीर या ग्रमीर का लडका।
२ शाहजादा।
३ तैमूर वश के शाहजादो ग्रौर मुगलों की एक उपाधि।
उ०—१ पाली सुण मिरजै पुकारां, तुग कसे चढियो तोखारां।—रा रू
उ०—२ ग्रागै भड 'ग्रजमाल' रा वाहर हेरे वाट। ग्रतरै मिरजो ग्रावियो, गह छावियो निराट।—रा. रू.
वि०वि०—यहां मिरजा शब्द नूरग्रली मुगल के लिए प्रयोग हुग्रा है।
उ०—३ मिरजो नूरग्रली वळ मंडै, ग्रायो भाण सिरै उमडै।
—रा रू.
उ०—४ मिरजै मुहकम मारियो, कर छळ मिळ प्रकास। वेढक ढेरै वजियो, पडिया सुहड पचास।—रा रू
४ मुसलमान, यवन।
उ०—जीण मेरी वाई ए खैरघा खैरघां वद ग्या टारडा। तमवां की रूपगी गाडी मेख। जामण की ये जाई, भाठै माठै पर मिरजा वैठिया।—लो गी
वि०—कोमल, नाजुक।
रू०भे०—मिरचौ

मिरणाळ—देखो 'म्रिणाळ' (रू भे)

मिरणाळी—देखो 'म्रिणाळी' (रू भे)

मिरत—देखो 'म्रित' (रू भे)

मिरतक—देखो 'म्रितक' (रू भे)

मिरतककरम—देखो म्रितककरम'

मिरतग—देखो म्रितक' (रू भे)

उ०—मन जाणु मिरतग भयो, पाच सती भई लार। हरिया अहरन ऊठि के, बोले मारु मार।—स्री हरिरामदासजी महाराज

मिरतगकरम—देखो 'म्रितककरम' (रू भे)

मिरतजीव—देखो 'म्रितजीव' (रू भे)

मिरतजीवनी—देखो 'म्रितजीवनी' (रू भे)

मिरतसनान—देखो 'म्रितस्नान' (रू भे)

मिरतस्थान—देखो 'म्रितस्थान' (रू भे)

मिरति—देखो 'म्रिति' (रू भे)

उ०—वाणी सुण चहुवाण,प्राण ऊभी राय अगण। सखी हूत नव सपत, मागि सुख आदि समजण। आज मिरति मगळी, आज पति-वरत समाळे। ऊपन्नौ जग अस आज, सुज वस उजाळे।
—रा रू

मिरतिका—देखो 'म्रितिका' (रू भे)

मिरतु—देखो 'म्रित्यु' (रू भे)

मिरतुलोक—देखो 'म्रित्युलोक' (रू भे)

मिरत्युजय—देखो 'म्रित्युजय' (रू भे)

मिरत्यु—देखो 'म्रित्यु' (रू भे)

मिरत्युलोक—देखो 'म्रित्युलोक' (रू भे)

मिरथा—१ देखो 'व्यरथा' (रू भे)

२ देखो 'म्रिसा' (रू भे)

मिरदग—देखो 'म्रिदग' (रू भे)

उ०—रांम तणें रग राची, रांणा मैं तौ सावळियां रग राची रे। ताळ पखावज मिरदग बाजा, साधौं आगे नांची रे।—मीरा

मिरदगी—देखो 'म्रिदगी' (रू भे.)

मिरदु—देखो 'म्रिदु' (रू भे)

मिरदुता—देखो 'म्रिदुता' (रू भे)

मिरमरी—देखो 'मरमरी' (रू भे)

मिरसावाद—स०पु० [स० मृषावाद] १ असत्य भाषण, असत्य, झूठ।

उ०—हिंसा कीधी जीव नी, बोल्या मिरसावाद। दोस अदत्तादांन ना, मैथुन उनमाद।—स कु

उ०—२ बोल्या मिरसावाद अदत्तादान त्यु। जघन्य एकासण जाणियें ए।—ध व ग्र

२ अयथार्थ भाषण, चापलूसी।

३ व्यग्य।

रू०भे०—मिरखावाद, म्रिखावाद

मिरा—स० स्त्री० [स०] मदिरा शराब।

उ०—कीधौ दुल्लह कवर, मिरा छकियं अनुमोदन। बहियौ भावी विखम नरा रहियौ रु विनोदन।—व भा

मिरिगाखी—देखो 'म्रिगाखी' (रू भे)

उ०—सुमसित सुनमित निज वदन सुव्रीडित, पुडरीकाख थिया प्रसन। प्रथम अग्रज आदेस पाळिवा, मिरिगाखी राखिवा मन।
—वेलि

मिरिग्घ—देखो 'म्रिग' (रू भे)

उ०—१ म्रिघ जेम फाळ माडइ मिरिग्घ। सुकुमार सार साहण सिग्घ।—रा ज सी

उ०—२ मुज्जरळी द्रेठि पाछि मूठि। साझइ मिरिग्घ गुण वाण सूठि।—रा ज सी

मिरिच—देखो 'मिरच' (रू भे)

मिरियो—स० पु०—घी, तेल, दूध आदि के तरल पदार्थ निकालने तथा नापने के लिये बना हुआ धातु का एक कटोरी नुमा बरतन जिसको पकडने के लिए एक लम्बी डडी नुमा शलाख लगी रहती है तथा यह डडी ऊपर से नुकीली व मुडी हुई होती है।

उ०—औरा नै तो मां मिरियो ए घीव। मनै मिरियौ, मिरियौ मा तेल को जे।—लो गी

मिरिहठी—देखो 'मुळेठी' (रू भे)

मिरी—मिर्च

उ०—लाभइ खाड तेल नइ मिरी, करड सालणा लाभइ सुरी। अजमा जीरां लाभइ बहू, वेसण विरहाळी लइ महू।—का दे प्र

मिरीवढ—स० पु०—छोटा खड।

उ०—सू आगरा ही अमळ री चकी वक्यां छुरया सू मिरीवढ कीजै छै।—खीची गगेव नीबावत रो दो-पहरो

मिलक—देखो 'मलिक' (रू भे)

उ०—न मिळतौ मिलक जवदळ निडर, पक्डौ वळ खग पाण रो। तौ करा वर्ण करता तिको, सराजाम घमसाण रो।—सू प्र

मिळकणी—स०स्त्री०—मुह का फीकापन, स्वादहीनता।

उ०—भरमल नु आसा रही। महीना च्यार रो गरभ हुवो। तँसु डील सिथल पडण लागो। नेत्रा री तरैं गहळीजण लागी। पगा री वीख छीदरी पडण लागी। रोमावळी डील री उभरवी निजर आवण लागी। अन भावै नहीं। मुहडै मिळकणी रहै। खाली ओकारी रहै।—कुवरसी साखला री वारता

मिळणी—स० स्त्री०—१ मिलने भेटने की क्रिया का भाव।

२ मिलाप, भेंट।

३ विवाह में कन्या पक्ष के लोगो का वर पक्ष के लोगो से स्वागत स्थान (मामेळो) पर बाहु पाश से आलिंगन करते हुए मिलाप करना।

४ उक्त अवसर कन्या पक्ष वालो की ओर से वर पक्ष वालों को दी जाने वाली भेंट।

मिळणो, मिळबौ—क्रि० स०—१ प्राणियो, व्यक्तियो आदि के सबध मे किसी प्रकार या रूप से, भेटना, साक्षात्कार होना, मिलाप होना।

उ०—मिळबौ भलौ असाध को, हरिया भोळै भाय। हरि सु वेमुख वैसनौ, तासु मिळै बलाय।—स्रीहरिरांमदासजी महाराज

२ किसी व्यक्ति, पदार्थ या प्राणी का आगे या सामने आना

३ किसी पदार्थ, बात या अवस्था का किसी रूप में प्राप्त होना, हस्तगत होना।

उ०—१ सदा मिळै बिल स्याळ रै, वच्छ पुच्छ खुर चाम। मिळै गया श्रगराज घह, गजन्द मोती ग्राम।—बा दा

उ०—२ ममत तजरण नू मोगुणी, दुरग तजरण रौ दोख। मरद दुरग जाता मरै, मिळै जिका नू मोख।—बा दा

४ श्रनुसधान, खोज या छान बीन करने पर किसी पदार्थ, तत्व या बात का ज्ञान या परिचय होना।

५ व्यक्तियो का इस प्रकार से एक दूसरे के श्रामने सामने होना कि परस्पर बातचीत हो सके।

६ किसी प्रकार का सुखद या श्रभीष्ट लाभ या सिद्धि प्राप्त होना।

७ व्यक्तियो का किसी उद्देश्य की सफलता के लिए परस्पर समझौता करके किसी दल या गुट मे सम्मिलित होना।

८ श्रपना पक्ष या दल छोडकर प्रत्यक्ष या गुप्त रूप से किसी दूसरे दल या पक्ष मे होना।

उ०—श्ररि जाळवर श्रावियो, मिळिया सळ श्ररणदाद। पखि गुण हीन निगस पण, हितू 'श्ररज्जण' श्राद।—रा रू

९ स्पर्श होना, छूना, श्रडना।

उ०—१ जिके सूर हीला जग्द, ऊबडही श्रारांण। मूंछ श्रणी भूहां मिळै, मुहगी राखै माण।—बां दा

उ०—२ साम धरम कुळ धरम सभारै, श्राच 'गजेसी' खडग उभारै। ऊफणियो श्रममान श्रपारै, मिळिया मुछ श्रणी भूहारै।—गु रू ब

उ०—३ मूछा मूहा मिळै, छिळै बीगरस छोळा, बाज श्रहिमकर बाज, हकर हिमकर श्रग ढोळा।—मे म

१० दो या श्रधिक तत्वो या पदार्थो का श्रवस्था, गुण रूप श्रादि के विचार मे परस्पर श्रनुरूप, तुल्य या समान होना।

उ०—हुई फौज हाजरी, बोझ नाग न बरदासै। जाण गजब गाजती, मडी काठळ चवमासै। बादळ ममत वयह, रमत मादळ घहरावै। इन्द्रधनुस श्राकार, फौल झडा फहरावै। मे' का प्रतच्छ लच्छण मिळै, तेरा हय हकाळ वळळ। किण-प्रभा रूप सावळ खिवै, कस वम 'कमग' कमळ।—मे म

११ किसी रेखा, बिंदू, सीमा श्रादि पर दो या कई चीजो का इस प्रकार श्राकर पहुचना, स्थित होना कि वे एक दूसरे से परस्पर लग जाय।

ज्यू—बीकानेर नै जोधपुर री सीमा नागोर जिला रै उत्तर में मिळै है। जयपुर श्रर जोधपुर री सीमा सामर रै पूरब मे मिळै है।

१२ परस्पर सटना, जुडना।

उ०—चुगली करता चुगल रा, जुग होटडा जुटत। मळ नांखण जांणै मिळै, दोय ठीकरा दत।—बां दा

१३ एकत्रित होना, इकट्ठा होना।

उ०—१ दळबळ सू घेरो दियो, प्रबळ हुमाऊ पूत। गैलोता चीतोडगढ, मिळ कीधो मजबूत।—बां दा

उ०—२ मोर सिखर ऊचा मिळै, नाचै हुश्रा निहाल। पिक ठहकै झरणा पडै हरिए डूगर हाल।—बा दा

उ०—३ थरकै कोट सहतपुर थाणा, भार सताडै पडै भगाणा। 'ऊदा' हरा सकळ मिळ श्राया, श्राद जगड' जुध वाद श्रछाया।—रा रू

उ०—४ मारू छळ 'श्रगजीत' समेळा, । सोजत मिळिया कटक सचेळा।—रा रू

१४ दो या श्रधिक तत्वो, पदार्थों श्रादि का इस प्रकार एक स्थान पर या स्थिति मे श्राना, होना या पहुचना कि उनका श्रलगाव या भेद भाव दूर हो जाय, लगजाना।

ज्यू—१ सूगडी श्रर जोजरी दोनू नदियां समदडी रै कनै लूणी मे मिळै। २ विरोधी दळा रौ श्रापस मे मिळणौ।

१५ सम्मिलित होना, साथ होना।

उ०—१ सगै केहर साम रै, मिळियौ जगै 'भीम'। 'सबळांणी' सोवा तणी सार विखम सीम।—रा रू

उ०—२ दोनू तरफा हूंत तियां दळ, मिळिया 'सामत' 'राम' महाबल। श्रावै धकै सुथाणी ऊठै, पिसणा धसू चढै नह पूठै।—रा रू

उ०—३ रूळघा खुळघा रजपूत बिरामण मिळगा विटळा, वैस्य मिळ गया विकळ, सूद्र कुळ रळगा सिटळा। चोडेधाडै चोर, ढग बिन ढेढस ढेढी, जिके नही किण जोग, मिल्या घर घर रा मेढी। चापज्यो मती बाग चरण, काप काप रौ कीचडो, फावरी देर मुख फेर ज्यो, खाव खाव रौ खीचडो।—ऊ का

१६ टक्कर लेना, भिडना।

उ०—१ वळिया जादम वीरवर, मिळिया सेल उपाड़। भड वळिया साळै तणा, पुळिया पहली राड।—रा रू

उ०—२ उण समय पाळा होय दो ही बीरा श्रजमेर मडोवर रा सुहागरी लाज रा लगर घसीटता श्रस्वमेघ श्रध्वर रा श्रवभ्रथ रो तिरस्कार करता पैंड साम्हैं ही लगाया। जठै दो ही तरफां रा किताक सूरवीर श्रापरै ऊर्मा मालिका रौ मिळिबौ श्रनुचित जांणि बीच मे श्राया।—व भा

१७ पदार्थो का एक दूसरे मे पडकर इस प्रकार एकाकार हो जाना कि उनको सहज मे ही एक दूसरे से पृथक न किए जा सके, घुलना।

ज्यू—साग मे लूण मिळणौ, दूध मे पाणी मिळणौ।

१८ पदार्थों का परस्पर साधारण रूप मे एक दूसरे मे इस प्रकार श्राकर सम्मिलित होना कि उनका स्वतत्र श्रस्तित्व बना रहे।

ज्यू—गेहूंश्रो मे चणा या जव मिळणा। बाजरी मे मोठ मिळणां।

१९ कुछ विशिष्ट प्रकार के वाद्यो के सबध में ऐसी स्थिति मे श्राना या लाया जाना कि उनमे ठीक तरह से श्रौर एक मेल मे स्वर निकल सकें श्रौर साथ के दूसरे वाद्यो के स्वरो के श्रनुरूप हो सके।

वि०वि०—बाजो का श्रधिक उतरा या चढा न रहना बल्कि सम-स्थिति मे श्राना या होना।

ज्यू—पखावज री सितार सू मिळणौ तवला री सारंगी सू मिळणौ।

२० व्यक्तियो के शरीरांगो का सम्बद्ध,सलग्न होना या एक दूसरे के सामने होना।

२१ गाय के बछडे के साथ स्तन पान करते समय स्तनो में दूध ऊतरना।

२२ जख्म का भर जाना व ठीक हो जाना।

२३ स्त्री सभोग होना, मैथुन होना।

२४ सगठित होना।

मिळणहार, हारौ (हारी), मिळणियौ—वि०।

मिळिम्रोडौ, मिळियोडौ, मिल्योडौ—भू०का०कृ०।

मिळीजणौ, मिळीजबौ—भाव वा०

मीलणौ, मीलबौ—रू भे।

मिळतारू—वि०—१ सब से मेल जोल रखने वाला।

२ मिलनसार।

मिळतियाण मिळतीयांण—स०पु०—वह बैल जिसके दूध के दात टूटने के बाद पूरे दात आ गये हो और जवान हो गया हो।

मिळती—वि०—१ मेल खाने योग्य।

२ अवसर के अनुरूप।

उ०—नाई मिळती मारतौ कह्यो—लिछमी रा लाडला सेठां माथै विसास नी व्हैला।—फुलवाडी

क्रि प्र—मारणौ

मिळतौ—वि० [स्त्री०मिळती] समान, तुल्य, बराबर।

मिलमची—स०स्त्री०—सप्तकोशी नदी की एक सहायक नदी।

वि०वि०—यह नदी गुमाई स्थान पर्वत के पूर्व तरफ जिवजिबिया से निकलती है और पहाडियो व घाटियो मे बहती हुई दौलत घाट मुकाम पर भोटेकाशी नदी से सगम करती है। तिव्वत में टिंगरी मैदान से निकली भोटेकाशी नदी इसमे मिल जाती है फिर इनका नाम सूनकोशी हो जाता है और यह सुनकोशी के नाम से बाराह क्षेत्र घाट पर अरुण और तमोर के सगम से मिल जाती है।

(वीर विनोद)

मिळवाई—देखो 'मिळाई' (रू भे)

मिळवाणौ, मिळवावौ—देखो मिळाणौ, मिळावौ' (रू भे)

मिळांण, मिलांन—स०पु०—१ मिलाने की क्रिया या भाव।

२ दो प्राणियो की परस्पर होने वाली भेट, साक्षात्कार।

३ दो अथवा अधिक वस्तुओ का एक साथ रखकर तुलनात्मक दृष्टि से जाच करना, मिलाना, या देखना।

ज्यू—कपडा री मिलाण करणौ।

४ किसी लिखित प्रति लिपि के जाच हेतु असल से मिलांन करने की क्रिया।

५ दो वस्तुओ, बातो या पक्षो के सम्बन्ध मे जानकारी हेतु विशेषताओ, विभेद एवं गुण दोष पर विचार अथवा विवेचन करना।

६ राहगीरो या पथिकों के ठहरने का स्थान, पडाव या डेरा।

उ०—१ मोती का आखा किया, क कू चदन पाका पान। अमनी समली आरती' जाई वधेरइ दीयौ मिलाण।—वी दे

उ०—२ मडलाग्र निमाहिमी, वीमल ग्रप इक वधि। चालुक्कन उप्पर चढयौ, सबळ मुच्छ कर सधि। मुररि रहे जे वहु मिळे, चढत भूप चहुवान। तम वीसलसागर तटहि, मडिय प्रथम मिलान।

—व भा

मिळाई—स०स्त्री०—१ तेल कीटा।

उ०—चोटी मे हडमान जी री मिळाई। लिलाड, नाक अर गला रै काजल री टीकियां।—फुलवाडी

२ देखो 'मळाई' (रू भे)

मिळाडणौ मिळाडबौ—देखो 'मिळाणौ, मिळावौ (रू भे)

मिळाडणहार, हारौ (हारी), मिळाडणियौ—वि०

मिळाडिम्रोडौ, मिळाडियोडौ, मिळाड्योडौ—भू०का०कृ०।

मिळाडीजणौ, मिळाडीजबौ—कर्म वा०।

मिळाडियोडौ—देखो 'मिळायोडौ' (रू भे)

(स्त्री० मिळाडियोडी)

मिळाणौ, मिळावौ, मिलाणौ, मिलावौ—क्रि०स० ['मिलणौ' क्रिया का प्रे० रू०] १ दो या दो से अधिक प्राणियो व्यक्तियो की परस्पर भेंट कराना, साक्षात्कार कराना, मिलाप कराना।

उ०—गया तीन गढ चूरि, नित चौथे घर लाया। वम्या अपूरव देस, जीव अर सीव मिळाया।—स्रीहररामदासजी महाराज

२ व्यक्तियो को इस प्रकार एक-दूसरे के आमने सामने लाना कि परस्पर बात-चीत कर सके।

उ०—इण कारण यो ही अबरम अनुमत्त में जाणि उणा न मिळाइ छळ कीधा एक भी अधम जीवण न पावै।—व भा

३ सामने लाना, आगे लाना, प्रकाश मे लाना।

४ किसी प्रकार का सुखद या अभीष्ट लाभ या सिद्धि प्राप्त कराना, हस्तगत कराना। वाछित उपलब्धि कराना।

५ ज्ञान कराना परिचय कराना।

६ परस्पर समझौता कराके किसी दल या गुट मे सम्मिलित करना, कराना। पक्ष में करना/कराना।

७ अपना पक्ष छुडा कर प्रत्यक्ष रूप मे विपक्ष की ओर करना/कराना।

८ स्पर्श कराना, छूआना, अडाना।

९ किसी बिंदु सीमा रेखा आदि पर दो या कई चीजो का लाकर स्थित करना कि वे परस्पर लग जाय, फासला मिटाना।

ज्यू—भींत छत सू मिळाणौ, पुळ सू सडक मिळाणौ।

१० परस्पर जोडना, सटाना।

११ एकजाई करना, एकत्र कराना, इकट्ठा कराना।

१२ दो तत्वो, पदार्थो या अस्तित्वो को मिलाकर एक करना, एक

दूसरे मे विलीन करना, एकाकार करना ।
ज्यं–दो नदियां रो मिळाणो, दूध में पानी मिळाणो ।
१३ सगठित करना ।
उ०—सचिव भणी निज राज्य भलाव, चाल्यो चतुरग सेन मिलाय ।—वि कु
१४ बिछुड़े हुए का साथ कराना, मिलाना ।
ज्यू–छोरा ने मां बाप सू मिळाय दियो ।
१५ टक्कर लिवाना, भिडाना ।
१६ रासायनिक क्रिया के अनुसार, एक पदार्थ मे दूसरे पदार्थ को डाल कर एकाकार करना, घुलाना ।
ज्यू–साग मे लूण मिळाणो, दूध मैं शक्कर मिळाणो ।
१७ दो या दो से अधिक पदार्थों का मिश्रण करना, सम्मिलित करना ।
१८ स्त्री समागम के लिये प्रेरित करना, स्त्री-पुरुष का सयोग कराना ।
उ०—इयां करतां-करता ही बकराईद नैडी आयगी जकै माथै हलाली वेगी फाजल कमर कसली अर करणे नै प्रेमिका सू मिळा देणे री बा ही तारीख घडली ।—दसदोख
१९ वैमनस्य मिटा कर परस्पर समझौता कराना, स्नेह कराना, मेल कराना ।
२० गांठ लगाकर, सी कर या जोड कर एक करना ।
२१ गुण या महत्व देखने के लिए एक दूसरे की तुलना करना, मुकाबला कराना ।
२२ लिखित अवतरण के शुद्धाशुद्ध की जांच करना/कराना, मिलान करना/कराना ।
२३ एक दूसरे के साथ रखना, सटाना, भिडाना ।
२४ चिकित्सा द्वारा किसी जख्म या घाव को ठीक करना/कराना ।
उ०—मरणा री मार दुनियां मे सब सू तीखी और खारी लागे, पण दिनां रो मलम बगत लाग्यां उण मार रो घाव ई मिळाय दे ।—फुलवाड़ी
२५ केन्द्रित करना/कराना ।
उ०—'हरीया' तन मन वचन को, सारो सौंज मिळाय । चौथो गुर को ध्यान मिळ, भगति भरोसो थाय ।
—श्री हरिरामदासजी महाराज
२६ वैवाहिक सूत्र मे बांधना, सम्बन्ध कराना ।
उ०–पून्यू रै चाद अर उमा रो लालीमो सुवावती आवै । गुणां री मोळ अर फुटरापै रो खजानो सो झळकै ! केळू री काब, जकी घरांण री जांम सू जोडो मिळाय देवां । जको जियो जितै चेतै राखो ।—दसदोख
२७ गायन व वाद्यो का स्वर-साम्य करना, स्वर मिलाना ।
उ०—नानजी स्वामी हेमजी स्वामी नें कह्यो हेमजी! भीखणजी स्वामी म्हा साथां नें तो हाट मे बेसाणता । कठ मिलाण वाला भाया आडा वेसता ।—भि द्र
२८ शारीरिक अगो की क्रियाओ या भावनाओ द्वारा सम्पर्क स्थापित करना ।
ज्यू–आख मिळाणी ।
मिळाणहार, हारो (हारी), मिळाणियो—वि० ।
मिळायोड़ो—भू०का०कृ० ।
मिळाईजणो, मिळाईजबो—कर्म वा० ।
मिळाडणो, मिळाडबो, मिळादणो, मिळावबो—रू०भे० ।

मिळाप, मिलाप–क्रि०अ०—१ मिलने की क्रिया या भाव ।
२ मिले हुए होने की अवस्था या भाव ।
३ भेंट, साक्षात्कार ।
उ०—इण रीति अमरसिंह नागोर जाय कैमास रा मिळाप मे, कपट रै निदान के ही कैद करण रा प्रपच किया —व.भा
४ दो या अधिक व्यक्तियो का परस्पर प्रेम पूर्वक मिलन ।
उ०—१ बा मोचण लागी–मा अर बेटा रो आज एडो मिलाप व्हियो ।—फुलवाडी
उ०—२ जिको दो ही पिता पूत्रां रो मिळाप सुणि अतर मे एक जाणि तुरकां रो तोम त्रासियो ।—व भा
५ स्नेह पूर्वक मिलन ।
उ०—१ अतस रा मिळाप सू सबदा रो कांई तक्षो मक्षो । च्यारां रो अतस एक मेख व्हैगो ।—फुलवाडी
उ०—२ अतस रा मून मिळाप पछै वाणी री सुध बुध बावडी ।
—फुलवाडी
६ वह अवस्था जिसमे लोग परस्पर मिलजुल कर प्रेम पूर्वक रहते हो ।
७ सामना ।
८ दो नदियो के मिलने की क्रिया ।
९ स्त्री-पुरुष द्वारा मैथुन करने की क्रिया या भाव ।

मिळायोडो, मिलायोड़ो–भू०का०कृ०—१ दो या दो से अधिक प्राणियो या व्यक्तियो की परस्पर भेंट कराया हुआ, साक्षात्कार कराया हुआ, मिलाप कराया हुआ ।
२ आमने-सामने लाया हुआ ।
३ सामने लाया हुआ, आगे लाया हुआ, प्रकाश में लाया हुआ ।
४ अभीष्ट लाभ या सिद्धि प्राप्त कराया हुआ, हस्तगत कराया हुआ, वांछित उपलब्धि कराया हुआ ।
५ परिचय कराया हुआ, ज्ञान कराया हुआ ।
६ परस्पर समझौता करा के किसी दल या गुट मे सम्मिलित किया हुआ या कराया हुआ, पक्ष मे किया हुआ ।
७ प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप मे विपक्ष की ओर किया हुआ या कराया हुआ ।
८ स्पर्द्धा कराया हुआ, लुभाया हुआ, अड़ाया हुआ ।

९ किसी बिन्दु या सीमा पर परस्पर लगने की स्थिति में लाया हुआ, फासला मिटाया हुआ।

१० परस्पर जोडा हुआ, सटाया हुआ।

११ एकजाई किया हुआ, एकत्र व इकट्ठा कराया हुआ।

१२ मिलाकर एक किया हुआ, एक दूसरे मे विलीन किया हुआ।

१३ सगठित किया हुआ।

१४ बिछुडे हुए का साथ कराया हुआ।

१५ टक्कर लिराया हुआ, भिडाया हुआ।

१६ घुलाया हुआ, एकाकार किया हुआ।

१७ मिश्रण किया हुआ, सम्मिलित किया हुआ।

१८ स्त्री समागम के लिये प्रेरित किया हुआ, स्त्री-पुरुष का सयोग कराया हुआ।

१९ परस्पर समझौता कराया हुआ, स्नेह कराया हुआ, मेल कराया हुआ।

२० गांठ लगाकर, जोडकर या सी कर एक किया हुआ।

२१ तुलना किया हुआ, मुकाबला कराया हुआ।

२२ शुद्धा-शुद्ध की जाच किया या कराया हुआ, मीलान किया या कराया हुआ।

२४ चिकित्सा द्वारा किसी जख्म या घाव को ठीक किया हुआ/कराया हुआ।

२५ केन्द्रित किया हुआ/कराया हुआ।

२६ वैवाहिक सूत्र मे बाधा हुआ, सम्बन्ध कराया हुआ।

२७ स्वर-साम्य किया हुआ, स्वर मिलाया हुआ।

२८ शरीरांगो की क्रिया या भावनाओ मे सम्पर्क स्थापित किया हुआ।

(स्त्री० मिळायोडी, मिलायोडी)

मिळाव-स० पु०—१ मिलाने की क्रिया या भाव।

२ देखो मिळावट' (रू भे)

३ देखो 'मिळाप' (रू भे)

मिळावट-स० स्त्री०—१ मिलाए जाने की क्रिया या भाव।

२ किसी बढ़िया या श्रेष्ठ चीज मे कोई घटिया चीज का किया जाने वाला मिश्रण।

३ इस प्रकार मिलाया जाने वाला घटिया पदार्थ।

४ अपने पक्ष मे विरोधी पक्ष के व्यक्ति को मिलाए जाने की तरकीब, युक्ति।

५ साजिश, साठ-गाठ गुप्त समझौता।

उ०—अरु सूजै री तरफ जैसिंघजी वा जसवतसिंघजी धरम-करम कियो कै पातसाह साहसूजै नू करणा। पीछै जैसिंघजी तौ सूजै सामा गया। अर सूजै सू मिलावट थी जिण सू या रै जाणै सू साहसूजै पाछो कूच कियो।—द दा

६ सम्मिश्रण।

उ०—अपां रै इण कळजुग रो सिरै धरम है—झूठ, मिळावट छळ, चोरी, जारी, लोभ, धोखो अर दिखावो। आपरा जुग-धरम री टेक राखै जको मिनख साचो कहावै।—फुलवाडी

मिळावणौ, मिळावबौ, मिलावणौ, मिलावबौ—देखो 'मिळाणौ, मिळाबौ' (रू भे)

उ०—१ मोनी घूड मिळाविया,तैं स दूळ तमाम। देतो सदा जणाय दिप, किळ औ होणो काम।—वां दा

उ०—२ मूढो खाधो मेल हाथ खाधडो हिलावै। सीस धरणि दिस सिथळ मुरड खाधडो मिळावै।—ऊ का.

उ०—३ सोनजी रै हटडै मे कई दिनासू धमचक वाजै ही। सेर सेर पक्की सोनी सागै ही एक एक साहूकार सूपै हो। गैणो घडावै हा मन मिळावै हा।—दसदोख

उ०—४ विसम लहरि ऊठै अग अगा, ता तैं होय सकळ जुग भगा। गरू गारडू कोय मिळावै, मेरे तन की तपति बुझावै।

स्रीहररिांमदासजी महाराज

मिळावणहार हारौ (हारी), मिळावणियौ—वि०।

मिळाविओडौ, मिळावियोडौ, मिळाव्योडौ—भू० का० कृ०।

मिळावीजणौ मिळावीजबौ—कर्म वा०।

मिळावियोडौ—देखो 'मिळायोड़ो' (रू भे)

(स्त्री० मिळावियोडी)

मिलिंद-स० पु० [स० मिलिन्द] १ मधमक्षिका।

२ भ्रमर, भौंरा।

उ०—प्रगट वडो सग्रामसिंह पहू। मतिधर सुकवि मिलिंद महू।

—ध भा

मिळित-वि० [स० मिलित] मिला हुआ, युक्त।

मिळियोडौ-भू० का० कृ०—१ प्राणियो, व्यक्तियों आदि से किसी प्रकार या रूप से भेंट किया हुआ, मिला हुआ २ कोई व्यक्ति या प्राणी आगे आया हुआ ३ कोई बात या पदार्थ प्राप्त हुआ हुआ ४ अनुसधान या खोज द्वारा किसी पदार्थ, तत्व या बात का परिचय या ज्ञान हुवा हुआ ५ (बात चीत करते हुए) आमने सामने हुवा हुआ (व्यक्ति) ६ अभीष्ट या सुखद लाभ प्राप्त हुवा हुआ ७ उद्देश्य की सफलता हेतु किसी दल या गुट मे सम्मिलित हुवा हुआ ८ अपने पक्ष को छोड कर विपक्षी या दूसरे दल या गुट मे गया हुआ ९ स्पर्श हुवा हुआ, छुआ हुआ १० अवस्था, गुण, रूप आदि के विचार से अनुरूप या समान हुवा हुआ ११ रेखा, बिन्दु या सीमा पर पहुच कर लगा हुआ १२ सटा हुआ, भिडा हुआ, जुडा हुआ १३ एकत्रित हुवा हुआ, इकट्ठा हुवा हुआ १४ एक स्थान या स्थिति में पहुचा या आया हुआ १५ सम्मिलित हुवा हुआ, साथ हुवा हुआ १६ टक्कर लिया हुआ, भिडा हुआ १७ एकाकार हुवा हुआ, मिला हुआ (नमक व साग, दूध व पानी) १८ अपना अस्तित्व रखते हुए सम्मिलित हुवा हुआ (अनाज)

१६ एक मेल मे स्वर निकला हुआ (वाद्य) २० समोग किया हुआ, मैथुन किया हुआ २१ स्तनों में दूध उतरा हुआ (गाय, भैंस) २२ ठीक हुवा हुआ, भरा हुआ (घाव)।

मिळीमगत–स० स्त्री० यो०—आपस मे मिलजुल कर चली जाने वाली धूर्ततापूर्ण चाल जो बाहर से देखने मे बहुत कुछ निर्दोष या साधारण सी जान पडती है।

मिळीआनीळ, मिळीयानळ—देखो 'मळयानळ' (रू भे)

उ०—मिळीआनीळ घणू वायउ वाउ, रतिपति पहुतु वसतराउ। चदनवनि विहिकइ सिहिकार, सोहइ भ्रमर तणा झमकार।

—अज्ञात

मिल्कियत–स० स्त्री० [अ०] १ धन सपति, जायदाद।

२ जमींदारी।

३ जागीर।

४ वह पदार्थ या धन सपति जिस पर नियमानुसार होने वाला अपना स्वामित्व या अधिकार, स्वत्व।

रू० भे०—मलकियत

मिसजर–स० पु०—एक प्रकार का बहु मूल्य वस्त्र।

उ०—मिसजर के मिस मन मयो, पीउ जो लाय बुलाय। मोल मुहेंगो यें लीयो, सो माहरै आवो दाय।—व स

मिसद—देखो 'मसनद' (रू. भे)

मिस–स० पु० [स० मिषम] १ ऐसी अवस्था, स्थिति या बात जिसके वास्तविक रूप में कुछ गूढ़ उद्देश्य निहित हो पर प्रगट रूप में कुछ और दिखाई देता हो।

ज्यू—उपदेश रै मिस दोस बताणा।

उ०—१ लुगाई री प्रीत रै आवे ई तो आ दुनिया टिकियोडी है। मिनख तो प्रीत रै मिस छळ करै।—फुलवाडी

उ०—२ छाळी नारियो देखता ई उण काचा जिण उरणिया नै ग वण री पक्की मतो कर लियो। पण कीं न कीं मिस बतायनै मारणी चावतो, दोसण काढनै उणनै खतम करणी चावतो।

—फुलवाडी

२ अवलब, आधार, सहारा, बहाना, मौका अवसर।

उ०—१ छता दिल्ली जावां ई हा, गोता खावण जिसी कोई बात नी। इण मिस पातसाह रा दरसण ई व्है जासी।

—फुलवाडी

उ०—२ मेर्ठा नै ओळखो तो देवणी ई हो। ओ मिस ई हाथ लाग्यो।—फुलवाडी

उ०—३ पण नागण किणी भाव नी मांनेला! उणनै तो ओ अणचींत्यो मिस लाधग्यो।—फुलवाडी

उ०—४ जनकगोप वरज्यो जदपि, करि मिस तदपि सिकार। इतर वयस्य रु कन्ह इक, ले चढयो सु द्रुत लार।—व भा

३ आड।

उ०—१ कठियारा रै धन्धा री मिस वो नकली भेस धारण करिया फिरै। ओ नवाब तो कोई विरळो ई नवाब है।

—फुलवाडी

उ०—२ खवासजी इण फिकाल मे खास बात तो भूल ई गिया। दूध दही रो तो मिस है। जे गूजरी री टोय नी लेग्यो तो राजाजी खीफैला।—फुलवाडी

४ छल,कपट, जाल, झूठी बात, बहाना। (अ मा, ह नां मा)

उ०—१ पण हीमत हारघा थांरी म्हारी प्रीत नी निभै। म्हैनै कीन की जुगत विचारणी ई पडैला। कोइ मिस बणाय म्हैं ठाकरसा नै चपा रा फूल तोडण सारू भेजू।—फुलवाडी

उ०—२ भुरजमाळ फण मडळी,सोर झाळ विस झाळ। जाण सेस बैठो जमी, मिस चीतोड कराळ।—बा दा

उ०—३ राजवेद सगळा दवार्यां दे थाका पण दरद व्है तो मिटै। इत्ती किणीरी हीमत कोनी के कै मर्क राणी मिस करै।

—फुलवाडी

उ०—४ मीस मानता देवाधिपती ससिहर एहवूं जाणी। विनयचद्र प्रभु चरणे लागो, लछन नउ मिस आणी।—वि कु.

५ ढोंग, पाखड, बनावटी, दिखावटी।

उ०—कह्यो—भलांई गगाजी जावो के गयाजी,मगळै धन कमावण रा ई अफडा है कीं दूजी बात कोनीं। धरम,भगवांन, अर मुगति री तो फगत मिस है।—फुलवाडी

६ किसी कार्य, घटना या बात के लिये बनने वाला कारण।

उ०—राजा वांनै लाडसू बुचकारनै कह्यो–हा, अबै थें थांरै ठायं-ठिकांणै जावो। विरथा रोडिया। पण इण मिस म्हारी ई आख्या उघडगी।—फुलवाडी

७ समान, अनुरूप।

उ०—१ जेहा जीण जडाव, गजगांवां मिस कुअर गुर। रचि सपत हयराव, दीधा तैं लाखा दुआ।—वां, दा,

उ०—२ राजगुरु अमोलक हसी रै मिस मुळकियो।—फुलवाडी

८ किसी रिश्ते–या सम्बन्ध को आड लेने की क्रिया या भाव।

स० स्त्री० [स०] ६ अविवाहिता स्त्री, युवती, कन्या।

अव्य०—१ रिश्ते या सम्बन्ध विचार से।

ज्यू–बाप मिस देणी, बेटी मिस लेणी।

२ रूप मे।

उ०—१ भगवांन तो राजावां रै मिस ई आपरी लीला रचै, तद वांरा कामा मे दुजो कुण खामी काढ सकै —फुलवाडी

३ मानो (उत्प्रेक्षा)

४ देखो 'मसि' (रू भे,)

उ०—पाटी पोथी पूछना, मिस लिखण हो झिलमिल सु जगीस।

—अ स्त

रू० भे०—मिसि, मिसी, मिसु, मिसे,

अल्पा०—मिसियो,

मिसक—देखो 'मसक' (रू भे)

उ०—सो उवो मरबी मिसक भर सहर बगदाद नू ले हालियो ।
—नी प्र.

मिसकरी—देखो 'मसखरी' (रू भे)
उ०—हासी खासी रे मिसकरी कीधी चावत वात । आरत रुद्रज ध्यांन मे गमाया दिन रात ।— जयवाणी

मिसकरौ—देखो मसखरौ' (रू भे)

मिसकीन—देखो 'मसकीन' (रू. भे)
उ०—जोर करे मिसकीन सतावे दिल उमके मे दरद न आवै । साई सेती नाही नेह गरव करै अति अपनी देह ।—दादूवाणी

मिसखरी—देखो 'मसखरी' (रू भे)
उ०—सेठाणी नै तौ हाल पूरौ विस्वास नी व्हियो । वा जांण्यो के बाप वेटा मिळनै यू ई मिसखरिया करै ।

मिसखरौ—देखो 'मसखरौ' (रू भे)

मिसटाण, मिसठाण—देखो 'मिस्टाण (रू भे)
उ०—१ सतमेस सद, अज सैंस अद । मिसटाण मद, अण अन्न हद । जिण रच कलेवौ, कीध जद ।—र रू
उ०—२ अदतारा घर ऊख' रस, नह कारण मिसठाण । मन कारण मिसठाणरौ, जठै भूख रस जाण ।—बा दा

मिसतगा—स०पु०—बच्चो का एक खेल विशेष । (शेखावाटी)

मिसतर—देखो 'मिस्तर' (रू भे)

मिसतरी—१ देखो 'मिस्तरी' (रू भे)
उ०—छोटू मारजा रै तीन वेटया, जका मे सू वडोडी री साख डूगरगढ रै एक पावर हाउस रै मिसतरी रै दसवी पास वेटै सू मडयो है ।—दसदोख

मिसन—स० पु० [अ०] १ विशिष्ठ व्यक्तियो का वह दल जो किसी विशेष कार्य या उद्देश्य से कही भेजा जाय ।
२ ईसाइयो की वह सस्था जो सम्मिलित रूप से धर्म प्रचार का कार्य करती है ।
३ उद्देश्य ।

मिसनरी—स० पु०—१ वह जो लोक सेवा के भाव से प्राय विदेश मे जा कर रहता है ।
२ वे ईसाई पादरी जो धर्म प्रचार के उद्देश्य से विदेशो मे जाकर धर्म प्रचार करते हैं ।
३ उक्त प्रकार का ईसाई पादरी ।

मिसर—स० पु०—१ खाद ।
उ०—वाड लियाडै उचत पाच बिध, न्याय कनक कर मिसर नखै । रोरव राह समद पै'ली रुख, राम रवा कर राम रखै ।
२ देखो 'मिश्र' (रू भे)
उ०—हेग दिखाद्यौ ए, ए सईया मिसरां के घर मे । मिसर भला छै ए, ए सईयो मिसराणी है खोटी । (स्त्री० मिसराणी)

मिसरत मिसरित—स० पु० [स० मिश्रित] मिला हुआ घुला हुआ,
उ०—माया मे मिसरत मिल्या, चित्त नाम धराणी । स्वरूप भूल रुपा भयो, दोस विक्षेप दरसाणी ।—श्रीसुखरांमजी महाराज

मिसरा—स० पु० [अ०] कविता, उर्दू, फारसी आदि की कविता का पद ।

मिसराई—स० पु०—मसूडा ।
उ०—मिसराया चूनी जडी, हो जी, बैरा दात दाडम केरा बीज, हे गवरल, रूडो है नजारो तीखोडै नैणा रो ।—लो गी

मिसरी—स० स्त्री० [अ० मिस्री] १ दो वार साफ करके किसी थाल या मटके मे जमाई हुई मोटे मोटे रवेदार चीनी जो स्निग्ध, बलवर्धक व बहुत गुणकारी मानी जाती है ।
उ०—मूधो मांखण सू मिसरी सू मीठो । द्रग सू दो घडीया अन्न भिकतो दीठो ।—ऊ का
२ मिस्र देश की भाषा ।
स० पु०—३ मिस्र देश का निवासी ।
वि०—१ अत्यन्त मीठा ।
२ शीतल । ० (हि को)
३ मिस्र देश का, मिस्र देशसम्बन्धी ।
रू० भे०—मसरी, मिस्री, मिमरी

मिसरु—स० पु०—एक प्रकार का कीमती रेशमी कपडा ।
उ०—१ मिसरु गलीम गदरा मसद, सज्या कसत विध विध सुगध ।—बगसीराम प्रोहित री वात
उ०—२ चूडा भाति सकलात पोतु तास्तु नील नेत्रा बामतथा, मिसरु बासत्था कद दोकद चुपदा मासपदा,तनुवव सरवध कमरवध मगवनां कमल बना दरीयाखाना ।—व स

मिसल—स० स्त्री०—१ राज्य-दरबार का एक उच्च पद, पद समूह या स्थान,जो राज्य के प्रमुख-प्रमुख सरदारो या सामन्तो को दिया जाता था । ये राज्य के स्तम्भ माने जाते थे और प्रत्येक महत्वपूर्ण कार्य मे इनकी सहमति होनी आवश्यक थी ।
उ०—१ आठ मिसल उमराव, सूर आविया सकाजा । दुज मत्री कवि दुझल, मिळे दरगह महाराजा ।—सू प्र
उ०—२ जयसिंहजी ऊपर बखतसिंह जी भूहर वळ किया, मिसल सारी सामल कीवी ।—मारवाडरा अमरावा री वारता
उ०—३ तारासिंहजी भेलो करणे राखिया बीजा बीदावत तीनूं मिसला केसवदासोत, जेतस्योत खगारोत मनोहर दासोत ।
—माडवाड रा अमरावां री वारता
उ०—४ तांम बुलाए साह तिण, आठू मिसल अभग । जोध रिणमल जोरावर, सोनग आद दुरग ।—रा रू
उ०—५ अट्ठों दिकपालन सम असक, निरख्यिें अठ्ठ मिसलन निसक । ईसाग्यावत्ती अचळ अग्घ, मारवा राव मुरवर महग्घ ।
—ऊ का

वि० वि०—यह अत्यन्त महत्व पूर्ण पद या स्थान था । प्रत्येक दरबार मे ऐसे कुछ स्थान निश्चित किये हुऐ थे, यथा-जोधपुर मे आठ, बीकानेर मे चार इत्यादि । ये स्थान राज्य के प्रमुख-प्रमुख सरदारो को दिये जाते थे, जो कि उस राज्य के विशिष्ट वश, वर्ग

या समूह के प्रतिनिधि होते थे। जैसे जोधपुर मे आठ स्थानों मे चार जोधाजी के वंशजों को दिये जाते थे और चार रिणमलजी के वंशजों को दिये जाते थे। जोधपुर मे यह व्यवस्था महाराजा सूरसिंह जी के राज्य काल मे भाटी गोविन्ददास द्वारा की गई और राव रिणमल्लजी के वंशजो के लिए दांई तरफ व जोधाजी के वंशजो के लिये बाई तरफ का स्थान निश्चित किया गया। पहले मारवाड़ मे राजाओं और जागीरदारों के बीच भाई-बिरादरी का बर्ताव चलता था परन्तु मिसलें बनने के बाद इनमे स्वामी-सेवकों का संबंध हो गया। जिस वंश को यह मिसल दी गई थी वह उसी वंश मे चलती रही। एक वंश मे हटा कर दूसरे को मिसल नही दी जाती थी। इसी प्रकार बीकानेर के चार स्थानो मे से दो स्थान राज्य परिवार के लिये थे एक स्थान कान्धलजी के वंशजो के लिए व एक बीदावतो के लिए था। इत्यादि। दरबार मे बैठने के लिए ये स्थान निश्चित होते थे, तदनुसार ये सरदार राजा के दायें बायें पंक्ति बद्ध बैठा करते थे। मिसल बहुत शक्तिशाली होती थी, यहां तक कि पूरी मिसल एक मत होकर राजा को भी बदल सकती थी। मिसल का रूप एक प्रकार का मंत्रि-मण्डल ही था। राज्य के महत्वपूर्ण कार्यो मे इसकी सहमति आवश्यक थी।

२ राज-सभा या दरबार मे बैठने का निश्चित स्थान।

उ०—सो नाहर राज देसकाळ विचारि दिल्ली आय इण रीति अनगपाळ नू प्रनम करण सभा मे मिसल माफिक बैठो।

—वं भा

३ पंक्ति, कतार, श्रेणी।

उ०—मेधा हदा मुलक मे, जो मावडियो जाय। महबूबा री मिसल में, किल मिरदार कहाय।—बा दा.

४ वर्ग, समूह।

उ०—लारली मौळावण भाई देवा नै दीधी। सखरै मावणै चाल्या, तिके दर-मजले दिलो पोहता। सखरी ठोड आपरी मिसल मांहे डेरा कीवा।—जग्गदामुखड़ा भाटी री वात

५ सिक्खों के विभिन्न नायकों की अधीनता में स्वतन्त्र होने वाले विभिन्न समूह।

६ सभा, समाज।

वि०—समान, तुल्य, सदृश।

क्रि० वि०—तरफ, ओर।

रू० भे०—मसल, मसलि, मसल्ल, मिसलत, मिस्ल, मीसल,

१ देखो 'मिसाल' (रू. भे)

२ देखो 'मिसिल' (रू भे)

मिसलत—१ देखो 'मसलत' (रू भे)

उ०—१ धर काज मिसलत धार, चक्रवतिय जतन विचार। दिस मरुस्थळ पति देस, अत अलख चख पंडवेस।—रा रू.

उ०—२ ताहरां इसी मिसलत कीधी-आज रू पाचमें दिहाडै दोपहर री विरियां सरब कांम करस्यां। आ मिसलत करि ऊठिया। नैणसी

२ देखो 'मिसल' (रू भे)

उ०—हफत हजारी चमरू की कूरट करते हैं। दोऊ मिसलत खडे हैं। हिंदू मुसलमान जिस वखत मीर-तुजक के दस्त पर जवाहर का पान दान। जिस वखत हाजर कोण कोण।—सू प्र

मिसळणौ, मिसळबौ—देखो 'मसळणौ, मसळबौ' (रू भे.)

उ०—मिसळिया लडाकां मीरजा सुणे किया बोळा स्रवण। अण काळ मरण अण आदरै, काळ चाळ भेजै कवण।—रा. रू.

मिसळणहार, हारौ (हारी), मिसळणियौ—वि०।

मिसळिओडौ, मिसळियोडौ, मिसळयोड़ौ—भू०का०कृ०।

मिसळीजणौ, मिसळीजबौ—कर्म०वा०।

मिसलसर—क्रि० वि०—अपनी मिसल के अनुसार।

उ०—आणद री लैर जोर सूं वह चाली। धूडरो तखत वणियो। सारा मिरदार मिसलसर ऊभा हुवा।—वरसगाठ

मिसल्लत—देखो 'मसलत' (रू भे)

उ०—इम करै मिसल्लत आसुराण, मिळ करा सब्ब वळ अप्रमाण।

मि सु रू.

मिसवन—वि० [सं० मसि-वर्ण] १ कृष्ण वर्ण, काला।

२ अंधकारमय।

मिसा पुग्गल मिसा पुग्दल—सं० पु०—आत्म संयोगी।

मिसाल—सं० स्त्री० [अ०] १ उदाहरण।

उ०—की करैं जोर लाचार, कवि आदत तजै न आलसी। सोधी मिसाल लाधी सितम, खतम दुतरफ खिलालसी।—ऊ का

२ उपमा।

उ०— एक बाणियो मू जी इसौ हो के नीं उण रै मू जीपणा री किणी सू मिसाल दी जा सकै अर नीं उण रै मू जीपणा रौ बयान कियौ जा सकै।—फुलवाडी

३ दृष्टान्त।

उ०—की काम नीं काज। बोलता-बोलता ई कायौ व्है जाऊ म्हारै एदीपणा री मिसालां लागै।—फुलवाडी

४ कहावत लोकोक्ति।

५ नमूना।

६ आदर्श।

उ०—म्हैं दुनिया में कजूमी रै बेजोड गुण री मिसाल थाप नै जावूला।—फुलवाडी

रू० भे०—मिसल,

मिसि—१ देखो 'मिस' (रू भे)

उ०—१ वमण मिसि वदै हेतु सु बीजो, कही स्रवणि समळी कथ। लिखमी आप नमै पड लागी। अघरिज को लाधै अरथ।—वेलि

उ०—२ आभा चित्र रचित तेणि रगी अनि अनि मणि दीपक करि सूत्र मणि। माडि रहे चन्द्रमा तणं मिसि, फण सहसेई सहस फणि।

—वेलि

उ०—३ अनि पखि वर्घं चक्रवाक प्रसर्घ, निसि सर्घ इमि ग्रहो निमि। कामिणि कामि तणी कामागिनी,मन लाया दीपका मिसि।
—वेलि

उ०—४ पच कलप तरु अवतरचा रे, अगुलि मिसि तुम्ह वाहि हो।—वि कु.

उ०—५ ए गयकारी मिसि रूप दासी, रही अछइ उत्तम नारि नासी —सालिसूरि

२ देखो 'ममि' (रू भे)

मिसिज्जाए-स० पु०—मिश्रित दोष जो साधु और गृहस्थ दोनो को साथ-साथ बताया जाता है। (जैन)

मिसिमिस-स० पु०—अत्यन्त गुस्सा। (जैन)

मिसियो—देखो 'मिस' (अल्पा, रू भे)

उ०—करलै मिसिया, जाणे मरग्यो। लागै जणे पीड हुवै है। माजी! हुवै क्यूनी! मिसिया करणा र वखत गुमावणी।
—वरसगाठ

मिसिर—देखो 'मिस्र' (रू भे)

मिसिल-स० स्त्री• [ग्र०] १ किसी मुकदमे, विवाद या विषय में एक साथ नत्थी किये हुऐ कागज, पत्रावली।

२ जिल्दसाजी मे किसी पुस्तक के सिलाई के लिये क्रमश रक्खे हुए फर्मे।

रू० भे०—मसल, मसलि, मसल्ल, मिसल मिस्ल, मीसल।

मिसिली-वि०—१ जिसके सम्बन्ध मे न्यायालय मे कोई मिसल बन चुकी हो।

२ जिसको अदालत से कोई सजा मिल चुकी हो।

मिसी-स० स्त्री० [स० मिश्र, मिश्रण] १ दो या दो से अधिक अनाजो का मिश्रण जो रोटी वनाने के लिये किया गया हो।

उ०—छेकड़ नारळी हाथ मागणो पड्यो। रामजी घणा देवाळ है। वाजरी मिसी भांवती नहीं जका नै भगर रा ही सासा पड्ग्या।
—दसदोख

२ देखो 'मिस्सी' (रू भे)

उ०—कवळ-पत्री मुख मिसी सुहाई। छुटी जुलफ सुलजावणी।
—रसीलैराज रा गीत

३ देखो 'मिस' (रू भे)

मिसु—देखो 'मिस' (रू भे.)

उ०—करी य कूड सिलेद्री आठवी। मिसु करी मदिरा लेई पाठवी।—सालिसूरि

मिसूर-स० पु०—एक प्रकार का वस्त्र विशेष।

उ०—मिसूर थे भल ल्यावो जीवना, म्हारा चावो थे भल ल्याय। स्याळू सागानेर का जी वना, म्हारा अगिया के कोर जडाय।
—लो गी

मिसै—देखो 'मिस' (रू भे)

उ०—सुख समधि पूछण ने मिसे रे, राजा ने गले टूपो दीधो जाय रे।—जयवाणी

मिस्कीन—देखो 'मसकीन' (रू भे)

उ०—दादू सिदक सवूरी साच गह, सावित राख यकीन। साहिव सौं दिल लाइ रहु, मुरदा व्है मिस्कीन।—दादूवांणी

मिस्कीनी-स० स्त्री०—१ मिस्कीन होने की अवस्था या भाव।

२ दीनता, गरीवी।

उ०—गरीव गरीवी गह रह्या, मिस्कीनी मिस्कीन। दादू आपा मेट कर, होइ रहे लौ,लीन।—दादूवाणी

३ सरलता।

४ विरक्ति।

मिस्ट-वि० [स० मिष्ट] १ मधुर मीठा।

२ स्वादिष्ट।

मिस्टान, मिस्टान्न, मिस्टांन मिस्टांन्न-सं० पु० [स० मिष्ट+अन्न]

१ मधुर एव स्वादिष्ट भोज्य पदार्थ।

उ०—१ प्रति दिन प्रति विंजन प्रवित, पाकादिक मिस्टांन्न। वात कही मैं क्यो वणौं, जाणौं वात जिहान।—रा रू

उ०—२ घ्रत पूरित रस जेण घणा, अन मिस्टान अपार। तरकारी सुथरी अतर, अति सुदर आचार।—रा रू

२ प्राय, कदोईयो द्वारा वेची जाने वाली मिठाई। (उ० र०)

रू०—देसूरी वाला नाथूजी साघ नें जीभ रो लोलपी जाणने घ्रत दूध दही मिस्टांन कढाइ विगै खावा री मरयादा साधा रै बाधी.
—भि द्र

३ देवताओ को चढाया जाने वाला नैवेद्य।

उ०—सेवक सुकवि करत नित सेवा। मधु मिस्टान्न चढत अति मेवा।—मे म

रू० भे०—मिठांण, मिसटाण, मिसठाण, मीठाण,

मिस्तर-स०पु०[ग्र०]१ दफ्ती के एक टुकडे पर समानान्तर दूरी के डोरे चिपका या सी कर बनाया हुआ एक उप करण, जिस पर लिखने का कागज रख कर दवाव डाल कर सीधी रेखाओ के निशान बनाये जाते थे। (प्राचीन)

२ भवन-निर्माण मे राच पीटने का एक काष्ट का उपकरण।

रू० भे०—मिसतर

मिस्तरी, मिस्त्री-स० पु०—१ चतुर-शिल्पकार, कारीगर।

२ यन्त्रो की मरम्मत करने वाला व्यक्ति।

रू० भे०—मिसतरी,

मिस्र-स० पु० [ग्र०] १ अफ्रीका के उत्तर-पूर्व में स्थित एक प्रसिद्ध देश जो आज कल अरव गण राज्य के अन्तर्गत है।

[स० मिश्र] २ ब्राह्मणो के एक वर्ग की उपाधि।

३ साहित्य मे इतिवृत के मूल विचार से नाटको की कथावस्तु के तीन भेदों मे से एक।

४ व्याकरण मे तीन प्रकार के वाक्यो मे से एक, जिसमें मुख्य उपवाक्य तो एक ही होता है, परन्तु आश्रित उपवाक्य एक से अधिक होते हैं।

५ ज्योतिष मे सात प्रकार के गणो मे से सातवां या अंतिम गण जो कृत्तिका और विशाखा नक्षत्र के योग मे होता है।

६ हाथियों की एक जाति।

७ सिंहों की एक जाति। (अ मा.)

८ सन्निपात रोग।

९ खून, रक्त।

१० मूली,।

११ मिश्रित पदार्थ।

१२ सचित्त व अचित्त पदार्थों का योग। (जैन)

उ०—जद स्वामीजी कह्यो–मूलां में तो पुण्य पाप दोनूं है। पिण मूला अणुकपा आण नें खुवांया केइ मिस्र कहै। जद कह्यो मिस्र कहै सो पापी।—भि द्र.

वि०—१ जो कईयो के योग से बना हुआ हो, कईयों को मिलाकर एक किया हुआ, मिला हुआ, संयुक्त।

२ अनेक तत्वो, योगो, अगो आदि के योग से नए व स्वतन्त्र रूप मे आया हुआ।

३ बड़ा, मान्य, श्रेष्ठ।

रू० भे०—मिसर, मिसिर

मिस्रकेसी–स० स्त्री० [सं० मिश्रकेशी] मेनका की सखी एक अप्सरा। यह कश्यप एवं प्राधा की कन्या थी और पुरुराजा के पुत्र रौद्राश्व के साथ इसका विवाह हुआ।

मिस्रजाति–स०पु० [स० मिश्र-जाति] वर्णसकर।

मिस्रण–स० पु० [सं० मिश्रण] १ मिलाने, सम्मिश्रण करने की क्रिया या भाव।

२ दो या दो से अधिक पदार्थों को एक साथ मिलाने की क्रिया, मिलावट।

३ उक्त क्रिया मे तैयार होने वाला पदार्थ।

४ कई औषधियों के मेल से बनने वाली औषधि। (मिक्सचर)

५ गणित मे जोड लगाने की क्रिया।

मिस्रपानी–स० पु०—धोवन (जैन)

उ०—मिस्रपानी न वहराय, अही के सरणे नहीं जाय।

—जयवांणी

मिस्रवालो—

उ०—ज्यं मस्रवालां माहि सू तो केइ समझाया अने पुन्यवालां री वारी। पछै पुन्य री स्रद्धा वाला नें निखेधवा लागा।

—भि. द

मिस्रित–स० स्त्री० [स मिश्रित] १ कृत्तिका और विशाखा नक्षत्र के समय होने वाली सात प्रकार की सक्रातियों में से एक सक्राति।

वि०—१ मिला हुआ, मिश्रित।

उ०—खीर कद मिस्रित हित खती। भोजन अवर दियें बह भती।

—सू. प्र.

२ जिसमे मिलावट की गई हो।

मिस्री–वि० [फा०] मिस्र का, मिस्र सम्बन्धी।

स० पु०—१ मिश्र देश का निवासी।

२ एक नाग जो बलराम के स्वर्गारोहण के समय उसके स्वागतार्थ प्रभास क्षेत्र मे उपस्थित था।

३ देखो 'मिसरी' (रू भे.)

उ०—१ मेवा वस्त्र आभरण मिस्री, वद जइ किसा किसा वाखांण।—महादेव पार्वती री वेलि

उ०—२ जद स्वामीजी बोल्या–किण ही खाधी तो मिस्री नें जाण्यो जहर तो ऊ मरै के न मरै? जद ऊ बोल्यो न मरै।—भि.द्र.

मिस्ल—१ देखो 'मिसल' (रू भे.)

उ०—मिस्ल अठ मत्ता वो मरोर को मरोर नाखी। तौर नांखी पोपजी की ख्याता खोय खत्ता मे।—जुगतीदान वारहठ

२ देखो 'मिसिल' (रू भे)

मिस्सी–स० स्त्री० [फा० मिसी] १ माजूफल, लोहचून, तूतिया आदि के योग से तैयार किया जाने वाला एक मजन जिससे स्त्रिया दात व होठ रगती है।

२ मुसलमान वेश्या के पहले पहल किसी पुरुष से समागम करने पर किया जाने वाला उत्सव। इस समय उसके मिस्सी लगाते हैं।

वि०वि०—इसे सिर ढकाई या नथ-उतराई की रस्म भी कहते हैं।

रू०भे०—मसि, मसी, मस्सी, मिसी।

मिहटणो, मिहटबो–क्रि० अ० [स० मिह्] जलते हुए का बुझना, ठंडा पड़ना।

उ०—इम कहि नैं घोडो बळती झाळ मांहै ठेलीयो, तिको झाळ मांहा सो घोडो कोरीयां पावा नीसरीयो। झाळ मिहटि गयो।

—माडणसी कूंपावत री वात

क्रि०स०—२ नम करना, तर करना।

३ छिड़कना।

४ मूत्र करना।

मिहटणहार, हारो (हारी), मिहटणियो—वि०।

मिहटिओडो, मिहटियोडो, मिहट्योडो—भू०का०कृ०।

मिहटीजणो, मिहटीजबो—भाव वा०/कर्म वा०।

मिहटियोडो–भू०का०कृ०—१ बुझा हुआ, ठंडा पड़ा हुआ।

२ नम व तर किया हुआ।

३ छिड़का हुआ।

४ मूत्र किया हुआ।

(स्त्री० मिहटियोडी

मिहतर, मिहत्तर—देखो 'महतर' (रू भे)

मिहनत—देखो 'मैंनत' (रू भे)

मिहर—स०पु० [फा० मह्र] १ मुसलमानों मे वधु पक्ष की ओर से वर पक्ष से तय करवाई जाने वाली धन राशि जो स्त्रीधन के रूप मे रहती है और तलाक हो जाने की दशा में स्त्री के गुजारे मे काम आती है (मा.म)
२ देखो 'मिहिर' (रू भे) (ह ना मा)
उ०—१ झूटि झबि मुझ नारि विगोई। आथमिउ मिहर सू मुह जोई।—सालिसूरि
उ०—२ मध्य दीरघ जगण रोग दत सुर मिहर। निरपमनु पिता सेना अरुण नेक।—र रू
३ देखो 'महर' (रू भे)
उ०—१ करहा सुणि सुदरि कहइ, मिहर करउ मो आज। साहिब म्हारउ ऊमह्यउ, हिव सगळी तो लाज।—ढो मा
उ०—२ तू तो मैंडडी ज्यांन सिपाईडा रे। मिहर करें मैंडी गलियां आवें। इतनी अरज मैंडी मांन।—रसीलैराज रा गीत
मिहरवांणी—देखो 'मैं'रवांनी' (रू भे)
उ०—ताहरा वार २-४ उमरावे कहियो पिण पातिसाहजी कहै हू न मारू मिहरवांणी आवै।—द वि
मिहरवौ—देखो 'मेहराव' (अल्पा., रू भे)
उ०—आयो फाग उमड आली री, मची है मिहरवा कै धूम।
—रसीलैराज रा गीत
मिहरी—
उ०—अनुज भाई निसभ बोलियो-भावी पदारथ मिटै नहीं। विधाता लेख घातियो तठै इसो हीज लिखीयो थो। रगतबीज सामत सारिखा रो परब मिहरी रै हाथ हुसी। तिका तो आकावधी। होणहार सू जोर लागे नहीं।—मा वचनिका
२ देखो मिहिर' (रू भे)
मिहल—१ देखो 'महिळा' (रू भे)
उ०—मिहल विछोया चुगल मुख, नायक कान लगाह। भूपणगण मांणस भला, मिळही च्यार मगांह।—बां दा
२ देखो 'महल' (रू भे)
मिहि—देखो 'महि' (रू. भे)
उ०—असि वेग वहै, गिरो स्र ग गहै। रवि रैण मिळं, मिहि मंन मिळै।—गु रू व
मिहिका—स०पु० [स] १ हिम, बर्फ।
२ कोहरा।
३ ओस।
४ कपूर।
मिहिर—स० पु० [स०] १ सूर्य, भानु, रवि।
२ चन्द्रमा।
३ बादल, मेघ।
४ वायु, हवा, पवन।
५ राजा।
६ आक, मदार।
७ तांबा।
८ वृद्धजन।
९ विक्रमादित्य की सभा का एक पडित।
रू०भे०—महर, महिर, महीर, मिहर मिहरी, मीहर।
मिहिरकुळ—स०पु० [फा० मह्लगुल] शाकल प्रदेश के प्रसिद्ध हुए राजा तोरमाण का पुत्र। (ऐतिहासिक)
मिहिलो—देखो 'महिळा' (रू भे.)
मिहीं, मिहींन—देखो 'महीन' (रू भे)
उ०—दादू मिहीं महल बारीक है, गांउ न ठाउं न नाउं। तासौं मन लागा रहै, मैं बळिहारी जाउ।—दादूबांणी
मींगणमाळा—स० स्त्री०—ऊट, बकरी या भेड के विष्टे की सूखी गोटी की माला।
उ०—माटी केरो घूमाळो, लीद गोबर सूं ढोळयो है। कानां में दोय भड़भोल्या, गळा मे मींगण-माळा है।—फुलवाडी
मींगणी—स० स्त्री०—भेड बकरी या चूहे आदि के विष्टे की छोटी गोटी।
रू०भे०—मिंगणी
मींगणो—स० पु०—ऊट के विष्टे की गोटी जो बडे बोर के आकार की होती है।
उ०—१ अर बीजो खीवें री पलट माहे मींगणो मूंकै अर ईंडोलै।
—चौबोली
उ०—२ नाडी रा पाणी सू गारो करने वो माटी रो एक लांठो घूमाळो बणायो। कानां में दोय भड़भोल्या घाल्या। गळा में मींगणां री माळा पं'री।—फुलवाडी
रू० भे०—मिंगणी,
मींगी—देखो 'मींजी' (रू भे.)
मींच—देखो 'मीच' (रू भे)
उ०—१ लसै प्रताव तावदे लदाव को लदावनी। सदैव वेरि मींच बीच मीच को सदावली।—ऊ का
उ०—२ लख चोरासी बीच, खडी है मींच सिराणे। लपणा औघट घाट, पडैगो दूरि पीयांणे।—स्री हरिरांमदासजी महाराज
उ०—३ ताहरा लाखे देवी नूं कह्यो—मोनूं मींच भली देई।
—नैणसी
मींचणो, मींचबो—देखो 'मीचणो, मीचबो' (रू भे)
उ०—१ फीटो मूढो फाड, नाड कर लेवै नींची। छिली रहै जळ छाख, मिळी आख्या अध मींची।—ऊ का
उ०—२ अमल री डळी अर जैर, रो गुट को है,जको वेटी रै हर एक बाप ने आख मींच र कठा सू हेठो उतारणो ईज पडै।
—दमदोख

उ०—३ दूजा मिनखां री बात मान जावै तो वो राजा ई काई। जूझल खावता कंवरण लागा—म्हारुया मींचलो, मबारू मबारो व्है जावैला।—फुलवाड़ी

मींचणहार, हारो (हारी), मींचणियो—वि०।

मींचिम्रोडो, मींचियोडो, मींच्योडो—भू० का० कृ०।

मींचीजणो, मींचीजबो—भाव वा०।

मींचा—देखो 'मीच' (रू भे)

मींचाणो, मींचावो—देखो मीचाणो, मीचावो' (रू भे.)

उ०—ऊपर चादर उढाई तथा मितर पढायो। म्हारया मींचा'र, म्रापरी प्रेमिका रो नांवो चित्तारण वेगी कंयो मर पीरां नै पांच पीसां री सीरणी चढवाई।—दसदोख

मींचाणहार हारो (हारी), मींचाणियो—वि०।

मींचायोडो—भू० का० कृ०।

मींचाईजणो, मींचाईजबो—कर्म वा०।

मींचायोडो—देखो 'मीचायोडो' (रू भे)

(स्त्री० मींचायोडी)

मींचावणो, मींचाववो—देखो 'मीचाणो, मीचावो' (रू भे)

उ०—सीधो सुवांण परो र करणें री म्हारुया मींचावै है मर जेवडी सूं जरू बाध देणें रो भळे कं'वे है।—दसदोख

मींचावणहार, हारो (हारी), मींचावणियो—वि०।

मींचाविम्रोडो, मींचावियोडो, मींचाव्योडो—भू० का० कृ०।

मींचावीजणो, मींचावीजवो—कर्म वा०।

मींचावियोडो—देखो 'मीचायोडो' (रू भे)

(स्त्री० मींचावियोडी)

मींचि—देखो 'मीच' (रू भे)

उ०—ताहरा दिली टीकै सलेमसाह पातिसाह बैठो। बरस सात पातिसाही करि मर मींचि मूंयो।—द. वि.

मींचियोडो—देखो 'मीचियोड़ो' (रू भे)

(स्त्री० मींचियोडी)

मींचो—देखो 'मीच' (रू भे.)

मींजणो, मींजबो—क्रि० स०—१ मसलना, मलना।

उ०—१ कठिन क्रूर म्रक्रूर म्रायो, साजि रथ कहं नई। रथ चढाय गोपाळ लै गयो, हाथ मींजत रही।—मीरा

२ बद करना, मूंदना।

मींजणहार, हारो (हारी), मींजणियो—वि०।

मींजिम्रोडो, मींजियोडो, मींज्योडो—भू० का० कृ०।

मींजीजणो, मींजीजवो—कर्म वा०।

मींजर—देखो 'मिमजर' (रू भे)

मींजियोडो—भू० का० कृ०—१ मसला हुम्रा, मला हुम्रा।

२ बद किया हुम्रा, मूदा हुम्रा।

(स्त्री० मींजियोडी)

मींजी—स० स्त्री० [स० मज्जा] १ हड्डी के भीतर का गूदा, मास का गूदा। (उ र)

२ फल या बीज के भीतर का गूदा।

३ चर्बी, वसा। ४ वीर्य, बीज

५ म्रन्त करण, हृदय, मर्म।

उ०—मयणा चाली उवर संगे, हीयडे हरख घरी उछरगे। जैन धरम मींजी भेदांणी, किम पलटे तेह नी कही वांणी।

—श्रीपाळा रास

रू० भे०—मीगी

मींट—देखो 'मीट' (रू. भे)

उ०—१ मुनि सुव्रत मन माहरो जी, लागो तुम लगि थेट। पिण तूं मींट न मेलवै जी, ए व्रत दुक्कर नेट।—वि कु

उ०—२ मार पालथी मींट लगावै, करै गजब का फेल।

—डूगजी जवारजी री छावली

उ०—३ कपडा काळा कीट, नीठ रठ ऊठ निरोघै। मींट म्रमल रै मांय, सीठ कुवरै ज सोघै।—ऊ. का

उ०—४ एहिज परि थई मीरि कजि म्राया घनंजय म्रनै सुयोघन। मासै मगसिर मलउ जु मिलियो, जागिया मींट जनारजन।

—वि कु.

मींठो—देखो 'मीठो' (रू भे)

उ०—१ मूंघो माखण सू मिसरी सूं मींठो। द्रग सूं दो घड़िया म्रन बिकतो दीठो।—ऊ का

उ०—२ पल पल दीठा विन पांणी नह पीता। जारा मींठा मुख जोय'र जग जीता।—ऊ का

मींड—स० पु०[स० मीडम्] १ तार वाद्यों मे स्वर की म्रटूटता को कायम रख कर तथा मध्य म्रश को मघुर बना कर एक स्वर से दूसरे स्वर पर जाने की क्रिया। (सगीत)

२ समानता तुल्यता, बराबरी।

रू० भे०—मीड

मींडक—देखो 'मींडको' (मह, रू. भे)

उ०—दादू सबा सब्द है, सुन हा ससा मारि। मन मींडक सू मारिये, सका सरप निवारि।—दादूबांणी

मींडकी—सं० स्त्री०—१ मादा मेंढक।

२ मेढक का बच्चा।

३ वह गाय म्रोर भैंस जिसके दोनों सींग नीचे की म्रोर मुडे हुए होते हैं।

उ०—राजाजी तो बोबाडो करनै डोकरी रा पग झाल लिया। रोवणकाळा होय कं'वण लागा—थांरी मींडकी गाय हू, म्रां पांडवां सूं पिंड छुडावो।—फुलवाड़ी

पद—मींडकी-गाय=दीन-हीन, म्रसहाय, म्रसमर्थ।

मींडकीपाव—स० पु०—एक नाथ सम्प्रदाय के सिद्ध पुरुष।

उ०—नेम कंवार निहक्रम, हालीपांव होतब, निहकप कबीर, मींडकी पाव परमोद, नाम देव नेठाव, घूंघळीमल घ्यान, रहित रैदास,

औघडनाथ अघट ।—ह पु वा

मींडको–स० पु० [स० मण्डूक] (स्त्री० मींडकी) मेढक, दादुर।

उ०—१ मांन कियोडी महल ज्यूं, बुगला ज्यूं कम बोल। मावडियो घर मींडको, पुरुख पणा री पोल ।—बा. दा

उ०—२ समद नीर माछ्ली विरोळै सुखिम सीरा पीवै। पैली कथा परम पद सुणता, मन मींडका न जीवै ।—ह पु वा

पर्या०—डेहरो प्लवग, बरसाभू, भेफ हरि।

रू० भे०—मीडको, मेढको मेढको

मह०—मींडक, मींढक, मेढक, मेडक, मेढक।

मींडणो, मींडबो–क्रि० स०—१ तुलना करना, मीलान करना।

२ जाच करना।

३ अंकित करना, लिखना।

४ निरखना, देखना।

उ०—फैंट पकर के फगुवा ल्योगी मुख मींडोंगी ब्रजराज। मीरा के प्रभु गिरधर नागर, सदा रहो सिरताज—मीरा

५ बराबरी करना, मुकाबला करना।

६ समानता करना।

मींडणहार हारो (हारी), मींडणियो—वि०।

मींडिओडो, मींडियोडो, मींड्योडो—भू०का०कृ०।

मींडीजणो, मींडीजबो—कर्म वा०।

मिंडणो मिंढवो, मींढणो, मीढवो, मीढणो, मीढवो मीढवणो, मीढवबो (रू भे)

मींडल—१ देखो 'मींडी'

२ देखो 'मीढल' (रू भे)

मींडली—देखो 'मींडी' (अल्पा, रू भे)

उ०—झुकी नस मींडलिया रै बीच जांणे विरछै कवळी डाळ।

—साझ

मींडाखडवड–स० स्त्री०—१ बकझक।

२ कलह झगडा।

मींडासींगी—१ देखो 'मेढासीगी' (रू भे)

२ देखो 'मीढासींगी' (रू भे)

मींडियोडो–भू०का०कृ०—१ तुलना किया हुआ, मीलान किया हुआ

२ जाच किया हुआ ३ अंकित किया हुआ, लिखा हुआ

४ निरखा हुआ, देखा हुआ. ५ मुकाबला या बराबरी किया हुआ.

६ समानता किया हुआ।

(स्त्री० मींडियोडी)

मींडी–स० स्त्री०—१ स्त्री के सिर मे गूथे हुए केशो की लट।

उ०—मासी महाराणी री मींडिया गूथती बोली–वेटी, म्हैं जको विखो सगळी ऊमर भुगतियो उण रै कारण म्हनै नो कोइ दूजी बात निगै ई नी आवै।—फुलवाडी

२ वह गाय या भैंस जिसके सीग नीचे की ओर मुडे हुए होते हो।

३ शून्य का अंक (०)।

रू० भे०—मींढी,

अल्पा०—मींडली, मींढली,

मह०—मींडल, मींढल

मींडो–स० पु०—१ बैल, भैंसा आदि वह पशु, जिसके सीग नीचे की ओर मुडे होते हैं।

२ शून्य का अंक जीरो (०)।

उ०—जिको न पूरो जांणतो, ठठो मींडो ठोठ। वाचै अविरल वाणी सु पुस्तक भरिया पोठ।—घ व ग्र

३ देखो 'मींढो (रू भे)

उ०—जमनाजी के वायं-डावें रेवड चरतो जाय। निजर पडी करणै मीणे की, जद यू बोल्यो आय। हुकम करो तो सिरदारा मैं मींडो ल्याऊ उठाय।—डूंगजी जवारजी री छावली

मींढ–सं० स्त्री०—१ बराबरी, समता।

उ०–कासी सेव करैह, दस क्रोडा सुरभी दियैं। हेकण नाम हरैह, मींढ न आवै मोतिया।—रायसिंह सादू

वि०—बराबर, समान, तुल्य।

उ०—१ वरदायक सकति री, कत क्रीत री कहावै। उरड जोम अगरो, अवर पह मींढ न आवै।—सू प्र

२ किम पूगे तो मींढ 'कलावत' दो मझ रायासिंह दुझाळ। धाडो गिरवरी झग चीलवै, सायर ओट तके सह साळ।—द० दा०

रू०भे०—मिढ़, मीढ

मींढउ—देखो 'मींढो' (रू भे) (उ र)

मींढक—देखो 'मींडको' (मह, रू भे)

मींढणो, मींढवो—देखो 'मींडणो, मींडवो' (रू भे.) (उ र)

मींढणहार, हारो (हारी), मींढणियो—वि०।

मींढिओडो, मींढियोडो, मींढ्योडो—भू० का० कृ०।

मींढीजणो, मींढीजबो—कर्म०वा०।

मींढरो–वि०—१ उपमा देने योग्य।

२ बराबर का।

मींढल–स०पु०—१ वृक्ष विशेष।

उ०—महूडा मिलयागिरी मिरी, मींढल नइ मदार। माई मजीठ मरिहठी, मरडासीगे मार।—मा०का०प्र०

२ देखो 'मींडी' (मह, रू भे)

रू० भे०—मीडल

मींढली—देखो 'मींडी' (अल्पा, रू भे)

मींढवणो, मींढवबो–क्रि०स०—देखो 'मींडणो मींडबो (रू भे)

उ०—विखमी पुळ चांमड मींढवणी, तद वीर भयकर राव तणी। धुर छितीय वज्र कमाड धरा, असवार कना भड अतक रा।

—पा प्र

मींढ़ा–स० स्त्री०—एक नदी जो जयपुर जिले के जैतगढ की पहाडियो मे से निकल कर साभर भील मे गिरती है।

मींढासींगी–स० स्त्री०—१ घोडे के कानो के नीचे और आखो के ऊपर होने वाली भवरी (चक्र)। (अशुभ) (शा हो)
२ देखो मेंढासींगी' (रू. भे)

मींढी—देखो 'मींडी' (रू भे) (उ र)

मींढो–स०पु० [स० मेण्डक] मुडे हुऐ सीगो वाला नर भेड, मेष।
उ०—राव सूं महळा अरज की–रावजी सलामति! म्हां मल लडता दीठा, हिरण लडता दीठा मींढा लडता दीठा, ऊठ, घोडा हाथी लडता दीठा पिण रजपूत लडता दीठा नहीं छै।
—नान्हे वाघेलै री वात
वि०—बिना सीग का, सीग रहित।
रू०भे०—मीडो, मीढो, मूंडो, मूढो, मेढो, मेंढो,
मह०—मिंढ

मींणा—देखो 'मीणा' (रू भे)
उ०—मीलन कूं न भळावियो, नाहि मेरा मीणाह। तोनूं राण भळावियो, सोहडां सुरळणियांह।—वा०दा०

मींत, मींत्र—देखो 'मित्र' (रू भे)
उ०—१ तीस वरस कुमती कगी, पह गुड उथल-पथल्ल। तैं दीधो गोडा तळै, अडयो मींत अमल्ल।—ऊ का
उ०—२ मणिमय मंदिर-माहिंथी, महिला वछइ मींत। पणि प्रीऊ पेखी आवतुं अवल ऊनरित चीत।—मा का प्र
उ०—३ प्रीत किया सुख नहिं मोरी सजनी जोगी मींत न कोई।
—मीरां

मींदर—देखो 'मंदिर' (रू भे)
उ०—श्री मींदर नै मडप स० १६१४ रा भादवा वद ५ मो उडीयो तरा महप सिखर गयो।—मारवाड री ख्यात

मींन—देखो मीन' (रू भे)
उ०—कठै आ गूजरी घर कठै ऐ निकांमी ओपमावां–मीस नाळेर। मिरग सा नैण, मींन जिसा चपळ।—फुलवाडी

मींनमेख—देखो 'मीनमेख' (रू भे)
उ०—१ ठाकरसा मूछ्या माथै हाथ फेरनै घाटी हिलायनै बोल्यो–हा, इण में कांई मींनमेख।—फुलवाडी
उ०—२ वां री जीत मे की मींनमेख बाकी नी ही के अणचींत्यो सगळो पाटियो ई उलटग्यो।—फुलवाडी

मींमचो–स०पु०—छोटी तलवार जो प्राय बच्चो को सिखाने के लिए काम मे आती थी।
रू० भे०—मीमचो,
अल्पा०—मीमचियो,

मींमासा—देखो मीमांसा' (रू भे)

मींयों—१ देखो 'मियां' (रू भे.)
२ देखो 'महीन' (रू भे)

मींह—देखो 'महीन' (रू भे)
उ०—घणां मींह जामा अतर मैं तिलवाय कीधा तिका रा वव छाती उपरासु खोल दीवा छै।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री बात

मी–स० स्त्री०—१ रमा।
२ यति। (एका०)

मीआद—देखो 'मयाद' (रू भे)

मिआदी—देखो 'मयादी' (रू भे)

मीच–सं०स्त्री० [स० मृत्यु प्रा० मिच्चु] १ मृत्यु मौत, काल।
उ०—१ पैंड दियै अममेद रा, मरै खडग ची मीच। अछरा वांहडिया गळै, वसै विमांणा वीच।—वां दा.
उ०—२ तरै दीवीजी हाथ झालिया–कहै–तुं मती मरै, थारै हाथ तो लाखा री मीच नहीं नै तैं अतरो हठ माडीयो म्हे तोनूं लाखा मारण रो उपाव वतावा छा।—नैणसी
उ०—३ दुरवासा कारण स्राप दियो, लखजै अवरीख उबार लियो। विच पेट परीछत मीच बचाय' र थेट हरी जन थापियो।
—र ज प्र
२ आख का इशारा।
३ आख वद करने की क्रिया या भाव।
रू० भे०—मीच, मीचा, मींचि, मीची,

मीच आलो–स० पु० [स० मृत्यु आलय] यमलोक।
उ०—परलोक जाय आवै कवन,कवन मीचआलै गवन। कठोर कठ हिम कठ लौं, कर पमारि घल्लै कवन—ला रा

मीचणो, मीचबो–क्रि० स० [स० मीलति] १ वद करना, मूंदना। (आख) (उ र)
उ०—खीच रा ढळा खावै खिमक, नीच तळा कुळ नाळ रा। नित मीच आंख वैठे निलज, भीच अमल भूपाळ रा।—ऊ का
२ जोडना, मिलाना।
मीचणहार, हारो (हारी), मीचणियो—वि०।
मीचिओडो, मीचियोडो, मीच्योडो—भू०का०कृ०।
मीचीजणो, मीचीजबो—कर्म वा०
मींचणो, मींचबो—रू० भे०

मीचाणो, मीचाबो–क्रि०स० १ वद करवाना, मूंदने के लिये प्रेरित करना। (आख)
२ जुडाना, मिलवाना।
मीचाणहार, हारो (हारी), मीचाणियो—वि०।
मीचायोडो—भू० का० कृ०।
मीचाईजणो, मीचाईजबो—कर्म वा०।
मींचाणो, मींचाबो, मीचावणो, मीचावबो—रू० भे०।

मीचायोड़ो–भू० का० कृ०—१ वद करवाया हुआ,मूंदने के लिये प्रेरित

किया हुआ। (माख)
२ जुड़ाया हुआ, मिलवाया हुआ।
(स्त्री० मीचायोड़ी)

मीचावणो, मीचाववो—देखो 'मीचाणो, मीचावो' (रू भे)
मीचावणहार, हारो (हारी), मीचावणियो—वि०।
मीचाविप्रोड़ो, मीचावियोड़ो, मीचाव्योड़ो—भू० का० कृ०।
मीचावीजणो, मीचावीजवो—कर्म वा०।

मीचावियोड़ो—देखो 'मीचायोड़ो' (रू भे)
(स्त्री० मीचावियोड़ी)

मीचियोड़ो–भू० का० कृ०—१ आंख बद किया हुआ, आख मूदा हुआ।
२ जोड़ा हुआ, मिलाया हुआ।
(स्त्री० मीचियोड़ी)

मीजर—देखो 'मिमजर' (रू भे)

मीजांन—देखो 'मिजांन' (रू भे)

मीजाजण—देखो 'मिजाजण' (रू भे)
उ०—गोरी गज को घूघट काड मीजाजण गोरी गज को घूघट काढ दीपक तुम ऐसे जोवोजी।—लो गी

मीजासणो—देखो 'मजासणो' (रू भे)

मीट–स० स्त्री०—१ देखने की शक्ति, निगाह, दृष्टि।
उ०—१ निरांत सू वावडी रो कमीद व्है जैंड़ो ठाडो पाणी पीयनै वो पाछो जावण लागो के सूतै ई उणरी मीट राजकवरी रै केसा मार्थ पड़ी।—फुलवाड़ी
उ०—२ सो तुरग सारखा, भडा अणभग समेळा। मीट पडी मेळिया, घड़ी नह लग्गी वेळा।—रा रू
२ ध्यान, याद।
उ०—घडळिया री माळ रै उनमान वीत्योडा वरस एक-एक करनै उणरी मगसी मीट साम्ही सुभट घूमण लागा।—फुलवाड़ी
३ एकाग्र होकर बैठने की अवस्था या भाव।
४ निद्रा, नीद, तद्रा।
५ नयन, नैत्र।(ह ना मा)
६ किसी रोग के प्रभाव से होने वाली निद्रावस्था, बेहोशी।
ज्यू–ताव री मीट।
७ नशे मे धुत होने की अवस्था।
रू० भे०—मीट, मीटि, मीटी, मीठ,

मीटवायु–स० पु०—घोडो मे होने वाला एक रोग विशेष। (शा हो)

मीटिंग–स० स्त्री० [अ०] १ बैठक, गोष्ठी।
२ किसी सभा या समिति का अधिवेशन।

मीटि, मीटी—देखो 'मीट' (रू भे)
उ०—मीटि आगलि देखू रही रे, ऊतर नापु आज रे। किहि कुज माहि नासी रह्या रे, मुहि बाहु छु महाराज रे।
—नळाख्यान

मीठ–स० स्त्री० [स० मिष्ट] १ मीठा होने की अवस्था या भाव।
२ मीठास, मधुरता।
वि०—१ मीठा, मधुर।
उ०—१ खाधौ सोही मीठ है। अग्र जनम किए दीठ। ऊखांणो भदतां पढ़ै पूरब पद दे पीठ।—बां दा
उ०—२ सिमरो सांस उसास, ग्रहा रस मीठ हो। आवागमन न होय, आनद पद दीठ हो।—स्री हरिरामजी महाराज
२ देखो 'मीट' (रू भे)
उ०—उण कानी गया री मीठ ई को पड़ी नीं।—फुलवाड़ी

मीठउ—देखो 'मीठो' (रू भे) (उ र)

मीठडउ, मीठड़ो—देखो 'मीठो' (अल्पा, रू भे)
उ०—ए प्रवचन निग्रथ तणउ जुगतइं वडउ हो लाल। साकर सेलड़ी द्राख थकी पिण मीठडउ हो लाल।—वि कु

मीठम–स०पु० [स० मिष्टम्] मीठास, मधुरता।
उ०—१ ऊख गिरी घर ऊपरै, यळ खाडामय आव। तूबा मीठम होय तौ, सूबा होय सबाव।—बा दा
उ०—२ वायक लवग मसाला वाटै, जीभ सकर मीठम जेम। सोहड़ा कज कोडां परसा सुत, आखर तणो राम रस एम।
—वसरांम रावळ

मीठवांणीया–स०पु०ब०व० [स० मिष्ट-पानीय] मीठे पानी के कूए की सिचाई से उत्पन्न गेहू।
उ०—सोभत था कोस ८ भरेहर कूए माहे। लोक कोई नही, वसीया रहै। खेत मखरा ऊनाळी ढीबड़ा १० हुवै, खारचीया मीठवांणीया। जोड सखरो छै।—नैणसी

मीठांण—देखो 'मिस्ठान्न' (रू भे)
उ०—तठा उपरायत मोदियां नै हुकम हुवो छै। भू जाई सारू सारी ही वसत सीधो मीठाण वेसवार सरव लेय राती-नाडी चालज्यो।—रा सा स

मीठांणी मीठानी–स०स्त्री० [स०मिष्ठ+पानीय] वह भूमि जिस पर निरन्तर मीठे पानी की सिचाई द्वारा फसल उत्पन्न की जाय।

मीठा–स० स्त्री०—एक व्यवसायिक जाति। (सभा)

मीठाखाऊ–वि०—अपेक्षाकृत अधिक मीठा खाने वाला।

मीठागेहू–स०पु०—मीठे पानी से उत्पन्न होने वाले गेहू।
उ०—ढीबड़ा ४ मीठागेहू हुवै।—नैणसी

मीठापणो–स०पु० [स मिष्ठ+रा०पणो] १ मीठा होने की अवस्था या भाव, मृदुता।
उ०—गत साकर काकर ग्रही, किसमिस सकुच कुड़ैह। प्यारी मुख मीठापणै, जोडे कमण जुड़ैह।—र हम्मीर
२ मीठास, मधुरता।

मीठापोइयां–स०पु०—घोडे की एक मध्यम चाल।

मीठावरो–वि० [स्त्री० मीठावरी] मीठी वस्तुए खाने का इच्छुक।
रू०भे०—मिठावरो,

मीठाबोलो—वि० [स्त्री० मीठाबोली] मधुर वचन बोलने वाला मृदुभाषी, ।
उ०—ममाहरणी मीठाबोला मरम तरुणा इमी सभा थनई एतला देस तराउ अधिपति ।—व म

मीठास—देखो 'मिठास' (रू भे)
उ०—१ थोडी देर अठीनै-वठीनै-री वातां हुवै रै बाद गोपाळ मीठास मू पूछियो- थारै माथै कित्तोक करजो है ।—वरमगांठ
उ०—२ आठमा अग ना पाठमइजी, एहवउ छइ रे मीठास । सरस अनुभव रस ऊपजइजी, सपजइ पुण्य नी रामि ।—वि कु
उ०—३ तरै मन मे कही मैं पहला सुणी थी जे प्रभु रा वैकुंठ मे पाणी इसो छै जे उण री मीठास घटै न स्वाद विगडै ।—नी प्र

मीठी—१ देखो 'मीठीमा' (रू भे)
२ देखो 'मीठो' (स्त्री)
उ०—पावरणा रै धार लगावतो नाई भीणा सुर मे मीठी रागा फरण मागो ।—फुलवाड़ी

मीठीईद—स० स्त्री०—मुसलमानों का एक त्योहार विशेष ।

मीठीकोळी—स०स्त्री० [स० मिष्ट-कवल] देवताओं को चढ़ाया जाने वाला मीठा पदार्थ ।
वि०—चरकी कोळी

मीठीछुरी—वि०—धोखाबाज जो मुख मे मीठी-मीठी बात करे व मन में घातक भावना रखता हो, छलिया, कपटी ।
स०पु०—धोखा, कपट ।
क्रि०प्र०—मारणी, लगानी ।

मीठीजाळ—स० स्त्री०—वह जाल का वृक्ष जिसके फल मीठे हों ।

मीठीझील—स० स्त्री०—मीठे पानी की झील ।
उ०—किणी एक मीठीझील रा कांठा माथै जामुन री एक लांठो रूंख हो ।—फुलवाड़ी

मीठीवाणी—स०स्त्री०—ऐसा बोल या वचन जो सुनने मे भला जान पड़े, मधुर वचन ।

मीठीबोरड़ी—स० स्त्री०—बोर का वह वृक्ष जिसके फल मीठे हों ।
उ०—दोनूं वेना एक मीठीबोरड़ी रा बोर खावण ढूकी ।
—फुलवाड़ी

मीठीमां—स० स्त्री०—बड़े बाप की स्त्री, बड़ी मां, ताई ।
रू० भे०—मीठी,

मीठीमार—स० स्त्री० १—तीक्ष्ण व्यंगात्मक हास्य ।
२ ऐसी चोट जो ऊपर से मामूली जान पड़े परन्तु उसकी आन्तरिक पीड़ा बहुत होती है ।

मीठू—देखो 'मीठो' (रू भे)
उ०—सिधु पकी सर अविक प्रतिसि मि मन माधि दीठ । येह मूं जल पाई श्रगयि न आवि, श्रा तो श्रत मीठू ।—नळाख्यान
२—देखो 'मिट्ठू' (रू भे)

मीठोउत्तर—स० पु०—१ अत्यत मीठी भाषा या धीमे स्वर से किया जाने वाला इन्कार
२ मांगने वाले की इच्छा पूर्ति न कर सकने की दशा में उसे न्यूनाधिक कुछ देकर सन्तुष्ट करने की क्रिया ।
उ०—हरख मिळै आदर करै पोखै थाळ सगाय । मीठोउतर मोकळै, मीठौ सूब कहाय ।—वा दा

मीठोकवो—स० पु०—१ मीठे खाद्य पदार्थ का ग्रास ।
उ०—मीठौ बोलै हम मिळै पातां नंह ढक पल्ल । कर आदर मीठा कवा, जीमाडै जेहल्ल ।—वा दा
२ गुप्त वार्ता ।
क्रि० प्र०—लेणा

मीठोड़ो—देखो 'मीठो' (अल्पा, रू भे)

मीठोठग—वि०—भला बनकर धोखा देने वाला, कपटी ।
उ०—पोढै परियका सदा निसका स्रोसड-स सूगधा है । घन लेयत धीठा देत न दीठा मीठाठग मोहुदा है ।—ऊ का

मीठोतेल—स० पु०—तिल्ली का तेल ।
उ०—गिलविलियोडा माथा में मीठातेल री टीपरिया राळी तद आकडा री वळत मिटी ।—फुलवाड़ी

मीठोनींब, मीठोनीमड़ो—स० पु०—नीम का वह वृक्ष जिसके पत्ते मीठे होते हैं ।

मीठोवच, मीठोवैण, मीठोवचन, मीठोवयन,मीठोवैण—देखो 'मीठोवचन' (रू भे)
उ०—१ आठौं पंर अगीठा ओपम, उर मीठावच आंगै ।
—ऊ. का
उ०—२ कोयल रा मीठावैण सुणनै पूछ्यो-कोयल बाई कालै तो थारा बोल खारा आक ज्यूं हा, पण आज मिसरी सूं ई मीठा कीकर ? —फुलवाड़ी
उ०—३ वैरी रा मीठावचन, फळ मीठा किंपाक । वे खाधा वे मानियां, हुवा क्रतांत खुराक ।—बा दा
उ०—४ जतरी मुख आखी जवन, बात बणाय बणाय । सह झूठा मीठावयण, दीठा न आया दाय ।—रा रू
उ०—५ मीठावैण प्रकास मुख, जग मैं लालच जीत । ऊघम हत्या अत्यडी, काना सुण निज क्रीत ।—वा दा

मीठोमारू—स पु०—प्रियतम ।
उ०—लावो तो लावौ हो हजा मारू लावी दोय चार । हो काई म्हारी होड हो म्हारा मीठामारू ।—लो गी

मीठोमेराणो—स० पु०—सतलज नदी की एक शाखा जो पाकिस्तान के पूर्वी भाग मे बहती है ।

मीठो—वि० [स० मिष्ट] (स्त्री० मीठी) १ शक्कर और शहद की तरह जो स्वाद मे मधुर हो, मीठा ।
उ०—१ वैरी रा मीठा वचन, फल मीठा किंपाक । वे खाधा वे

मानियां, हुवा फ़तात खुराक ।—बा दा

उ०—२ कहै हे भीखण बावा! हू भगता नैं लापसी जीमाऊ सो कांई हुवै ? स्वांमीजी बोल्या लापसी में जैसो गुळ घालै जैसी मीठी हुवै ।—भि द्र.

उ०—३ नवा गांव मे पेठ जमावण सारू वो मिमरी सू ई मीठो बोलण लागो तो ई उण रै अतस रो विस लोगां सू छांनो नी रह्यो ।
—फुलवाडी

उ०—४ सगै-सगै रो रळग्यो जी, मीठा हुया ज्यू सक्कर घी । सगो सगै री वाजे जड, वात वैंठगी आछै घड ।—दसदोख

२ स्वादिष्ट, जायकेदार, सुस्वादु, रुचिकर ।

उ०—१ साच बोलियां टुकडा सूका, मिळ जावैं सोई मीठा । कूड बोल पकवांन करावैं, घूड बराबर धीठा ।—ऊ का

उ०—२ ऊनाळी सिगळी सीव मे सेभो । पांणी हाते ७ तथा ८ घणो मीठो ।—नैणसी

३ प्रिय, प्यारा ।

उ०—१ नद इद्र कोपियां, नद नदण गुण दीठो । सेखैं छळि गग नू माल बळ लग्गो मीठो ।—रा रू

उ० २ वाल्ही घण बालम मीठी मुख बोली । घडियां अम्रत री घुळती घण मोली ।—ऊ का

४ सुशील, सरल, विनम्र ।

उ०—१ आपरै साळस अर मीठा सुभाव सू वा जणा-जणा रो मन मोह लियो ।—फुलवाडी

५ सीधा-सादा ।

उ०—सगळां नैं मीठो जवाब देती । किणी मार्थं कदै ई छींटा नी देवती ।—फुलवाडी

६ कोमल, मधुर ।

उ०—१ उठै एक कोयल मीठा सुर मे कुहू कुहू करती ।
—फुलवाडी

उ०—२ सुर बडो मीठो हो अर गावण वाळी ही टेपरिया भांबी री लुगाई रभाड़ी ।—रातवासो

उ०—३ साचो कहै सदेस वैण मीठा करू । राज मुदै पट हृथ्य रग महिला घरू ।—मा वचनिका

७ मन भावता, रुचिकर अनुकूळ, ।

उ० १ पातर वाळी प्रीत, मीठी लागै प्रथम मन । मद हुआ घन मीत, हुए विरस वडवी हुवै ।—वां दा

उ०—२ राणांजी म्हांनैं या ही वदनामी मीठी ।—मीरा

८ ठीक, उचित, भला, अच्छा ।

९ धीमा, मद, हल्का, थोडा ।

ज्यू-मीठो दरद, मीठी पीड ।

उ०—उणरो मीठो माजनो ई पाडता । पण तो ई वो आपरो श्रो ध्यान छोडियो कोनी —फुलवाडी

१० लाभ दायक ।

उ०—पण ऊदरी तो चटोकड़ी घणी बळती ही । आपरा घणी रा धीमा सुभाव नैं जाणती ही । करडावण रा मीठा सवाद चाखियोडी ही ।—फुलवाडी

११ मोद भरा, प्रेम भरा ।

उ०—१ प्रेमिका सू मिळणै रा मीठा मनसूवा वांधै अर मतर सीधा होणै री अवधी नैं आल्या फाडचा उडीकै है ।—दसदोख

उ०—२ सोनळ नैं सिरावण करण सारू मीठा नेवरा करती ।
—फुलवाडी

१२ धूर्त्त, पाखण्डी ।

स०पु०—१ मीठा खाद्य पदाथ ।

२ मिठाई, मिष्ठान्न ।

उ०—मीठा मेवा जीमते वोहू भोजन वोहू भाति । ता सु तन छैंती पडै, जन हरीया करि खाति ।—श्रीहरिरामदासजी महाराज

३ नमक का एक नामान्तर ।

रू०भे०—मिठ, मिट्ठो, मीठी, मीठड, मीठू,

अल्पा०—मिठडो, मीठडउ, मीठडो' मीठोडो,

मह०—मिठु, मिठ,

मीठोवचन-स०पु०—१ मुह से बोला जाने वाला वह शब्द जो सुनने वाले को प्रिय लगे ।

२ सुरीली आवाज ।

रू०भे०—मीठोवच, मीठोवैण, मीठोवचन, मीठोवयन, मीठोवैण,

मीड—देखो 'मींड' (रू भे)

उ० —कीजै कुण मीड न पूगै कोई, धरपत भूठी टसक धरै ।
—भीमसिंह रो गीत

मीडको—देखो 'मींडको' (रू भे)

उ०—तिण पणि त्रिकम जे परमेश्वर का जस को पार न पायो तो मो मीडका को किसो वस छै ।—वेलि टी

मीडाआवळ-स०स्त्री०—प्राय एक फुट ऊचा एक प्रकार का क्षुप जो सनाय से मिलता-जुलता होता है व उसी के गुणो का होता है ।

मीढ—देखो 'मींढ' (रू भे)

उ०—१ अकवर साह निरक्खिया, जेता चापावत्त । मीढ सहस्सां मत्यणे, लक्ख गिणै त्रिणमत्त ।—रा रू

उ०—२ जग मझ राम न को तो जेहो, केहो भूपत मीढ करा ।
—र. ज. प्र

उ०—३ मिळै न मीढ मीढ के अरीढ रीढते अरी । करै न ईढ औार की उन्हें न ईढ को करी ।—ऊ का

मीढणो, मीढवो—देखो 'मींडणो, मींडवो' (रू भे)

उ०—१ असल सू नकल मीढो असल, गुरगम हीणा गम नही । अमलियां हुत देखो अपत, हूका वाळा कम नही ।—ऊ का

उ०—२ कवी कहै इण मनवार ने मीढो जमी रै सारू परम सगा पहला इण तरै मिळिया नैं पछै इण तरै मनुहारां कर सस्त्र वाहै ।
—वी स टी

उ०—३ वादणी गोठ म्राहूर लग वगमतँ मुतन वम वम-मट तीम मोढो। मुतन वम वम सम मोढजे, 'माल' मुत 'लखण' सुत समो मोढो।—नेणगी

मीढणहार, हारो (हारी), मीढणियो—वि०।

मीढिम्रोडी, मीढियोडो, मीढयोडो—भू०का०कृ०।

मीढ़ीजणो मीढीजवो—कर्म वा०

मीढियोडो—देखो 'मींढियोडो' (रू भे)

(स्त्री० मीढियोडी)

मीढुस-स०पु० [स० मीढुष] शक्र नामक आदित्य का एक पुत्र।

मीढो—देखो 'मींढो' (रू भे) (उ र)

उ०—रायामन्न पूगा कांम खांनी देखि अडिगा। मींढां की तरह सू एक टक्कर ले मुरडिगा।—शि व

(स्त्री० मीढी)

मीण—१ देखो 'मणि' (रू भे)

उ०—जातु वाहिरे को अजे तू न जांणे, निसांणे फणै मीण पाखे न माणे।—ना द

२ देखो 'मैंण' (रू भे)

उ०—मीण मगीसउ मन्न करि, कठिन पणउ तू काढि। काम-कुतूहल-केरडा, वेच्छि ! म वेला वाढि।—मा कां. प्र

३ देखो 'मिण' (रू भे)

४ देखो 'मीन' (रू भे)

मीणमेख—देखो 'मीनमेख' (रू भे)

उ०—धन अर प्राण दोनू गमावणा मे अबै कीं मीणमेख नी।

—फुनवाडी

मीणखाखर-स०पु०—एक प्रकार का घोडे का पाखर।

उ०—तिह घोडे पच विध पाखर माचरी, मीणखाखर मालखाखर, कातली म्राली पाखर ...।—व स

मीणा-स० स्त्री०—एक जाति।

उ०—नीजामा नईं नायता, माछी मिल्या गुम्रार। मीणा मोची मोकळा, मू मी गया दूम्रार।—मा कां प्र

रू०भे०—मीणा, मैणा।

मीणिम्रो, मीणियो-स० पु०—१ एक वस्त्र विशेष।

उ०—हवइ राजा परिवार प्रति वस्त्र म्रापइ ! गुडीम्रा सणीम्रां वसूरीम्रा, प्रतायीम्रा कुमभीम्रा मोनीम्रा माडवीम्रा मीणीम्रां वाटलीम्रा जलोदरीम्रां ।—व स

२ देखो 'मणियो' (रू भे)

उ०—नमदी चिगयर मोढणी मीणियँ सू परिया पटकी।

—दसदोख

मीणी—१ देखो 'मणि' (रू भे)

उ०—वइरागर हीरागरउ फुल्लयागरउ पूतलीउ बहूमूल घूगोलिय मीणीय काल ।—व०म०

मीणीघर—देखो 'मणिधर' (रू. भे)

उ०—मैंर पछी साम सुर द्रुमी सुक मीणीघर, जती हुए मछद्री पयोद पाथ जोड।—ठा सावतसिह रो गीत

मी'णेदार-वि०—मासिक वेतन लेने वाला।

उ०—निकमाळै निकमा फिरै ना, लगै कूटवा कारडी। मी'णेदार मजूरी करै, विच-विच अपणी वारडी।—दसदोख

मीणो, मी'णो [स्त्री० मीणी] १ मीणा जाति का व्यक्ति।

२ देखो 'महीनो' (रू भे)

उ०—१ दलाल री हिम्मत दगी—बोल्यौ—लुगाई मरै छँ मी'णो ही नी हुवो है। डांगरो थोडो ही हो?—दसदोख

उ०—२ म्रत्यु चेत धम्म नर करै, म्राता खडी उठांवता। मगळिया मोमर भरावे, मी'णे घडो भरांवता।—दसदेव

रू०भे०—मैंणो।

मीत—देखो 'मित्र' (रू भे)

उ०—१ महा दिय मान करी गुह मीत। तारै सह कीर कुटुब महीत।—ह र

उ०—२ वरस वासठो कातिक वीता। मोकम वळू किया निज मीतां —रा रू

उ०—३ पून्य प्रताप होय अग पूरन, पाप प्रताप अपंगी। प्रथम विचार पाप को पापी, कर मत मीत कुसगी —ऊ का

उ०—४ थपं दाम कर मथर, रघुवर किता अरोड। विरद पीत 'सागर' त्रिये, मीत तणे कुळ मोड।—र ज प्र

मीतो—देखो 'मित्र' (अल्पा, रू भे)

उ०—है जग वागा दसमाय हुता। माहेम वाछल्य सुकठ मीता।

—र ज प्र

मीयो—एक वस्त्र विशेष।

उ०—नव पला रो मीयो रहतो। दस पला रो लवायचो रहतो। जाडी पीढियां तांई काछ रहती।—बां दा ख्यात

मीन-स०स्त्री० [स] १ मछली। (ग्र मा)

१ जळ अवगाहन जीवणों, दूर हुम्रा प्रति दीन। तू गगा तो जळ तणी, मो कद करसी मीन।—बां दा

२ बारह राशियो मे से एक राशि जिसमें पूर्वा भाद्रपद, उत्तरा भाद्र पद तथा रेवती नक्षत्र होते हैं। (म्र मा, ना मा)

उ०—रचि मीन रासि सनि करक राहु। अरू मकर रासि केतह अयाह।—सू प्र

३ विष्णु के चोबीस अवतारो में से मत्स्यावतार। (नां मा.)

उ०—हम मीन कूरम हुवो, स्रीभरतार समत्थ। सरित हुवो द्रव होय सो, किसू अछेरा कत्थ।—बां दा

४ मच्छी के आकार की हस्त रेखा।

उ०—भुज प्रलब ग्राजान कमळ ग्राकृति पद कोमळ। जव ग्रबुज ध्वज कळस मीन ग्रकुस जवूफळ।—रा रू

५ सशय, सदेह।

६ देखो 'मीनमारग'

उ०—भक्त जोग परे हठ जोग है, सांख्य जोग ता ग्रागी। मीन पपील विहंग पुनि कहिये, तीहू राह चीन वडभागी।

—स्रीहरिरामजी महाराज

वि०—मर्यादाच्युत, पतित, नीच।

रू० भे०—मीन, मीरा, मीना,

ग्रल्पा०—मीनी,

मीनकेत, मीनकेतन, मीनकेतु—स०पु० [स० मीनकत, मीनकेतन मीनकेतु] मदन, कामदेव। (ग्र मा, ह० नां० मा)

उ०—ज्वाळा वाळै नेत मीनकेत ज्यू पचाता जयौ, रूकां हूर चाता दळा विखम्मी रोवाण। राहा दहू बीच एक ग्रनम्मी बीजैस राजा, जाणियो जिहांन जम्मी ठामता जोधाण।—हुकमीचद खिडियो

मीनख—१ देखो 'मनुस्य' (रू भे) २ देखो 'मिनख' (रू भे)

मीनखा—देखो 'मनीसा' (रू भे.)

मीनगधा—स० स्त्री० [स० मीनगन्धा] व्यास की माता सत्यव्रती का एक नाम।

मीनडौ—देखो 'मिन्नौ' (ग्रल्पा, रू भे)

उ०—लीजीए मीनडौ रुयडो ए।—धरमपत्र

मीनति, मीनती—देखो 'मिन्नत' (रू भे)

उ०—१ सत्तर सहस गुज्जरधर धणी, तिणि प्रधान मूकया ग्रम्ह-भणी। कुमरि मगावी मीनति करी, दीन्ही ऊमादे कुमरी।

—ढो मा

उ०—२ नेमजी हो सउ मीनति करतां थका हो राजि, मत जावउ मुझ मेलि।—वि कु

उ०—३ फिरि फिरि मीनती वीनती जिनपति केती कराय। गिरुग्रा साहिब ग्रागलि लाग लही कहवाय।—उदयविजय

मीननाथ—स०पु०—मत्स्येन्द्रनाथ का एक नामान्तर।

मीननिवास—स०पु० [स०] १ जल, पानी।

२ समुद्र, सरोवर।

मीनमारग—स०पु० [स० मीनमार्ग] योग साधना के तीन मार्गों में से एक।

वि०वि०—इसमें साधक ग्रपने ब्रह्म की उपासना में लीन रहता है ग्रौर जिस प्रकार मछली हर वक्त जल मे रहती है ग्रौर क्षणिक रूप से बाहर निकलती है उसी प्रकार से साधक क्षणिक रूप से, जिज्ञासु के प्रश्न का उत्तर देने तक ही, ससार की ग्रौर देखता है। ऐसे साधक को वरियान पद प्राप्त ब्रह्मनिष्ठ योगी कहा जाता है।

मीनमेख०स०पु०—१ सशय, सदेह।

उ०—१ सिकोतरी रै मूडां सामी जोया मग्री रा वेटा नै पूरण विस्वास व्हैगो के कांम इक्कीस ग्राना वण जावैला इण मे की मीनमेख नी।—फुलवाडी

उ०—२ पीढिया सू जुलम करणिया इणरी लाय मे भसम व्हैला। पगथळियां चाटण वाळा इण राज रो ग्रांको ग्रायग्यो। इण मे की मीनमेख नी।—फुलवाड़ी

२ कमी, खामी, कसर।

उ०—१ राजाजी वळै खराय खराय पूछ्यो—इण में तो थनै की मीनमेख निगै नीं ग्रावै।—फुलवाडी

उ०—२ सब सू पै'ली राजव्यास जका नखतर वाच्या वा मे की मीनमेख नी।—फुलवाडी

३ ग्रागा-पीछा, सोच-विचार।

रू०भे०—मीनमेख, मीणमेख,

मीनहा—स०स्त्री० मछली के शिकार करने का यन्त्र, वसी। (ग्र मा)

मीना—स०स्त्री०—१ उषा की कन्या व कश्यप की पत्नी।

[फा०] २ सोने चांदी पर किया जाने वाला रग-विरगा काम जो चमकीला एव ठोस होता है।

३ रग-विरगा शीशा।

४ नीले रंग का एक बहुमूल्य रत्न।

५ शराब का पात्र, सुराही।

६ शराब की बोतल।

७ गिनती, सख्या?

उ०—एकि घायल ही भीना, राति-दिवसि न मीना। रुधिर-का प्रवाह नदी माहिं मिल्या। ग्रावारत ग्रनिवध होवण लागउ।

—ग्र वचनिका

८ देखो 'मीन' (रू भे)

उ०—जगत नगीना हो लाल, ग्रायौ हु तुझ सरणइ। जिम जल मीना हो लाल, लीणउ तिम तुझ चरणइ।—वि कु

रू०भे०—मीणा,

मीनाकार—स०पु० [फा०] सोने चादी पर रग-बिरगा काम करने वाला कारीगर।

मीनाकारी—स०स्त्री० [फा०] सोने-चादी पर किया जाने वाला रग-विरगा कार्य।

उ०—मीनाकारी माळिया चितरे चित्र ग्रनूप। ताकी सोभा को कहै, नांनाविध के रूप।—गजउद्धार

मीनाबाजार—स०पु० [फा०] ग्रकवर के राज्यकाल में लगने वाला एक विशेष प्रकार का बाजार जिसमे विशेष कर मीनाकारी की चीजें क्रय-विक्रय होती थी।

मीनावाव—स०पु०—एक प्रकार का सरकारी लगान।

मीनार—स०स्त्री० [ग्र०मनार०] ईंट पत्थरों से की हुई, स्तम्भ के ग्राकार की गोलाकार व बहुत ही ऊची, चुनाइ या रचना, लाट।

रू०भे०—मुनार

मीनारोग—स०पु०—मीन की सक्राति के दिन प्रतिवर्ष, सिरोही मे लगने वाला मेणा जाति का एक वडा मेला। (मा म)

मीनालय—स०पु० [स०मीन+आलय] समुद्र ।

मीनी—१ देखो 'मिनी' (रू भे)

उ०—दादू जीव अजा विष काळ है, छेली जाया सोई । जब कुछ बस नहिं काळ का, तब मीनी का मुख होई ।

—दादूबांणी

२ देखो 'मीन' (अल्पा, रू भे)

उ०—दादू ध्यान धरे का होत है, जे मन का मैल न जाई । बक मीनी का ध्यान धर पशू बिचारे खाई ।—दादूबाणी

मीनोदर—स०पु० [सं०मीन+उदर] मच्छी का पेट ।

उ०—हु वारिधि माहे पड्यो, मीनोदर रह्यो केम । गणिका घरि सुक किम थयो, भाखो जिम छै तेम ।—वि कु

मीनो—स०पु०—१ वह रंगीन शीशा जिसमें सोने-चादी पर नक्काशी होती है ।

उ०—१ सुनही गुलजार कस्मीर के कांम । सवजी असम सघ मीने के विराम ।—सू प्र

उ०—२ रग केसर कीया मन के सनेह सू । सोनै री सीसी ग्रोर, मीनै के पियालै अलबेली ।—रसीलैराज रा गीत

मीम—स०पु०—दुशाला ।

मीमचियो—देखो मीमचौ' (अल्पा, रू भे)

मीमचौ—देखो 'मींमचौ' (रू भे)

उ०—मुगल री मीमचौ विलायत रो भालो । मिध री गोटकी प्रेम रो प्यालो ।—मयाराम दरजी री वात

मीमजर—देखो 'मिमजर' (रू भे)

मीमलइ, मीमली—स०स्त्री०—बीर वहूटी ।

उ०—मांडिया सरोज मयग चइ मायइ, हरणाखी चित लावन हरि । अतिरगता विराजइ ऊपर,पगथळियां मीमलइ परि ।

—महादेव पारवती री वेलि

मीमांस—देखो 'मीमांसा' (रू भे)

मीमांसक—स०पु० [स० मीमासक]१ मीमांसा करने वाला ।

२ मीमासा शास्त्र का ज्ञाता या पण्डित ।

मीमांसा—स०स्त्री० [स] १ किसी विषय, बात या तत्त्व पर किया जाने वाला विवेचन, विचार या निर्णय, समीक्षा ।

२ एक वैदिक दर्शन जिसका विषय वेदोक्त धर्म की व्याख्या है । यह पूर्व मीमासा व उत्तर मीमांसा नामक दो भागो मे विभक्त है ।

उ०—सांख्य सास्त्र मे कपिल मत, स्रस्टिक्रम समझाय । मीमांसा मे जैमिनी, करमकाड करवाय ।—ऊ का

वि०वि०—मीमांसा, कर्म मीमांसा और ज्ञान मीमासा, कर्मकाण्ड और ज्ञानकाण्ड दोनों के लिये प्रयुक्त होता है । इसीलिये प्रथम को 'पूर्व मीमांसा' और द्वितीय को उत्तर मीमांसा कहते हैं । पूर्व और उत्तर शब्दों से स्पष्ट है कि वस्तुत ये दोनो शास्त्र एक ही दर्शन के अग हैं ।

पूर्व मीमासा में मुख्यत वैदिक कर्मकाण्ड का विवेचन है,इस लिए इसे कर्म मीमासा भी कहते हैं । इसमे वेदो के यज्ञपरक सदिग्ध स्थलों का विचार करके उनका स्पष्टीकरण किया गया है । इसमें आत्मा, जगत् , ब्रह्म आदि का विवेचन नहीं है और वेदो तथा उसके मन्त्रो को ही नित्य तथा सर्वस्व माना है, इसीलिए इसकी गणना अनीश्वर वादी दर्शनो मे होती है । उत्तर मीमासा मे ब्रह्म अथवा विश्वात्मा का विवेचन है, इसलिये यह वेदान्त दर्शन कहलाता है ।

गौतम बुद्ध ने वेदोक्त धर्म के कर्मकाण्ड-पक्ष पर प्रहार किया । इसके फलस्वरूप जैमिनी, शबर, कुमारिल भट्ट रामानुज, माधवाचार्य आदि वेदज्ञो ने अपने धर्म को सुव्यवस्थित रूप से रखने के लिये प्रयास किये । इनमे से जैमिनि का प्रयास सर्वोत्तम रहा और "कर्म मीमासा सूत्र" मीमांसा का मौलिक ग्रन्थ हो गया । शबर ने इस पर अपना भाष्य लिखा और कुमारिल और प्रभाकर ने इस भाष्य की व्याख्या की और बौद्ध धर्म के सिद्धान्तो का खण्डन किया तथा उसका प्रभाव क्षीण किया ।

मीमासा को लोग प्राय प्राचीन कर्मकाण्ड समझते हैं इसी कारण इसकी कटु आलोचना करते हैं । परन्तु वस्तुत मीमांसा कर्मकाण्ड न होकर कर्मवाद है । यह कर्म और उसके फल को बिना ईश्वर के, अपूर्व या नियोग की मदद से सम्बन्धित करती है और निष्काम कर्म करने पर जोर देती है । इस अर्थ में मीमांसा की शिक्षाए सदा ग्राह्य हैं ।

रू०भे०—मीमासा, मीमास,

मीयण—१ देखो मेण' (रू भे)

उ०—दीपत दीवा मीयण ना, मांहि अग मद मेहेलि । अगोचरि उरइ-करइ, कत सरीसी केलि ।—मा का प्र

२ देखो मीयौ' (स्त्री०)

मीयां—देखो 'मियां' (रू भे)

उ०—सवत १७६६ स्रीजी अजमेर आय लागा तरे सोने खांनजादो थी सो सेहर मीयां ने घेरीयो ।—रा व वि

(स्त्री० मीयांणी)

मीयाद—देखो 'मयाद' (रू भे)

मीयादी—देखो 'मयादी' (रू भे)

मीरबर—स०पु०—अमीर ।

उ०—पईवाज गजराज, राउ राउत नरेसुर । पई खान उमराउ, मुगल भूरा मीरबर ।—वचनिका

मीर—स०पु० [अ०] १ बादशाह ।

उ०—१ विढग वडाळा पायगा, रावत बाका धीर । माझी देगो मारणो सो मीरां सिर मीर ।—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ अठि महमूदसाह नू जीति दिल्ली पैं पद्रह १५ दिन पातसाही करि आरघावरत रा केही अवीमा नू दडि मीर तैमूर-

वेग रै पाछो गया केडै दिल्ली रा सूवादार जठी तठी आप आपरै मत्त रहण लूका ।—व भा
२ राजा, नवाब ।
उ०—पातसा स्री अकबर १ जंबूद्वीप माहइ प्रवरत्ततु छइ, अन्य पराय रांणा, मोटा मीर मलिक, माहमड खांन, खोजा सरखिल साहणा, ते सघला करइ सेवा ।—व. स
३ सरदार, सामंत ।
उ०—१ हौदा मभि लोह करै करि हाक, महारिख देखि हुवै मुसताक । हिलोळि छडाळ ग्रहै चद्रहास, तछै घण मीर कलम्म तरास ।—सू प्र
उ०—२ दाढी कर घात मीर ऐसें कुछ बोलै । प्राण के गुमान भर, आसमान तोलै ।—रा रू
उ०—३ घाइ घाण उतरै, खांन सुरतांण निघट्टा । राव रांण हुइ रहच, मीर उमराव ग्रहट्टा ।—गु रू व
४ प्रधान मुखिया, नायक ।
उ०—मीर अकब्बर साह सू, बोलै ग्यान सजुत्त । काफर साहा अवगुणी, गो आणी करतुत्त ।—रा रू
५ किसी बडे सरदार का पुत्र ।
६ वलवान, शक्तिशाली ।
उ०—दादू जे तू मोटा मीर है, सब जीवो मे जीव । आपा देख न भूलिये, खरा दुहेला पीव ।—दादूवांणी
७ मुसलमान, यवन ।
उ०—ग्रोरै ग्रमि 'ऊदल' जग अथाह । निजोडत मीर खगा नर नाह ।—सू प्र
८ सैयद जाति की उपाधि ।
९ बहुत से व्यक्तियो मे सबसे पहले काम करने वाला अगुवा ।
१० प्रतियोगिता में प्रथम रहने वाला ।
११ ताश आदि मे बडा पत्ता जो दहले से अधिक महत्व का होता है ।
१२ धार्मिक आचार्य (इस्लाम)
१३ ईश्वर, मालिक ।
उ०—१ दादू कारण कंत के, खरा दुखी वेहाल । मीरा मेरा महर कर, दे दरसन दर हाल ।—दादूवाणी
उ०—२ मीरां मेटण मेक तू , जम हदा दांणी ।
—केसोदास गाडण
१४ पति, स्वामी ।
उ०—दसदस पास खवासी दासी चपक वरण ओढिया चीर । सिस-वदनी नांखै सिसकारा, मीरा कहा हमारा मीर ।—रुघो मुहतो
[स० मीर] १५ समुद्र, सागर ।
१६ पर्वत, पहाड ।
१७ सीमा, हद ।
१८ जल, पानी ।

रू० भे०—मीरी
मीरज–स० पु० [फा०] मुसलमान ।
उ०—१ चढे मीरजा मीर मीयां किलक्क । चढै खान निव्वाब खाडा खाइक्क ।—गु रू व
उ०—२ पै गजा सीस दे रिवपसावै, घण 'अभो' मीरजां करै घाव । आफरी बार दाखै अमीर, वामीवध झोका महत वीर ।—वि स
मीरजादू , मीरजादौ–स० पु० [फा० मीरजाद] १ किसी उमराव, सरदार या सामन्त का लडका ।
उ०—जिस वखत सिर-विलदखां वहादुर ममरजुलमुलक पीरोजजंग मीरजादू खान जादू के वीच कैमा दरसावै ।
—सू प्र
२ शाहजादा ।
उ०—रायजादा रा भाला भळकि नै रहीया छै तवलवधा मीरजादा वांका वहादुरां नै तारा तवल बाजि नै रहीआ छै ।
—रा. सा स
मीरजौ मीरज्यौ–स० पु० [फा० मीरजा] १ किसी सरदार, अमीर या सामन्त का लडका ।
२ मुसलमान ।
उ०—१ हाथी तहवरखान गो, गो सो घानख भज्ज । घको न साहै मीरजा, वाहै सार गरज्ज ।—रा रू
उ०—२ पडियो तकियै सू परा, आडो दियो प्रजक । मसलत आया मीरज्यां ऐ ऊठिया असक ।—रा रू
३ सैयद मुसलमानो की उपाधि ।
४ शाहजादा ।
मीरतुजक, मीरत्रुजक–स० पु० [अ० मीरतुजुक] सेना का प्रवन्ध करने वाला, सेनानायक ।
उ०—१ मीरतुजक मारिया, घिखे जमदढ कर धारै । दुझ्ळ खान दौरास, पटाझर जिम पूतारै ।—सू प्र.
उ०—२ ऊभौ लोपि अमीर, जवन वह हफतहजारी । मीरत्रुजक इतमाम, कियौ तदि जडै कटारी ।—सू प्र
मीरपति–स० पु०—वादशाह ।
उ०—सूर रो तपै नरनाह आखाडसिंघ, घजवडां पाण गैणाग धारै । मीर भय थरहरै दूसरा महीपत, मीरपति थरहरै 'करण' मारै ।—महाराजा करणसिंह री गीत
मीरवक्सी, मीरवख्सी–स० पु० [अ० मीर + फा० वख्शी] मुस्लिम शासन-काल मे सरकारी कर्मचारियो को वेतन वांटने वाला अधिकारी
वि० वि०—सल्तनत-युग मे दीवाने आरिज के बाद मीरवख्शी का ही सबसे बड़ा पद था । सरकार के समस्त अधिकारियो, मनसव-दारो और कर्मचारियो को वेतन मीरवख्शी के कार्यालय से ही दिया जाता था । सभी श्रेणियो के मनसबो के नियुक्ति पत्र भी इसी के कार्यालय से जारी किये जाते थे । मनसबो का समस्त विवरण मीरवख्शी के पास ही रहता था । सैनिक विभाग की नौकरी के

लिये आने वाले उम्मीदवारों को यह बादशाह के पेश करता था। यह सेना का प्रधान नहीं होता था परन्तु कभी कभी इसे सैनिक अभियानों का नेतृत्व भी करना पडता था। इसी के हस्ताक्षरों ऐव सील मुहर के साथ मनसबों के प्रमाण-पत्र जारी किये जाते थे। इसके अतिरिक्त इसका एक प्रमुख कार्य था बादशाह के महल की रखवाली करने वाले रक्षकों की सूची बनाना। इन रक्षकों में बडे बडे मनसबदार होते थे और इनकी ड्यूटी प्रतिदिन बदली जाती थी। विभिन्न प्रान्तों में सवाद लेखकों की नियुक्तियां करना एव उनसे प्राप्त सवादों को बादशाह तक पहुचाना इसी का कार्य था।

इस प्रकार मीरबख्शी का काम बहुत ही महत्वपूर्ण और जिम्मेदारी का था। इसका विभाग बहुत ही बडा था जिसमे इसके कई सहायक एव कर्मचारी कार्य करते थे।

मीरबचा-स०पु० [फा० मीर-बच्चा] किसी बडे अमीर, उमराव, सरदार या सामत का लडका।

मीर-बहर-स०पु० [अ० मीरबह्र] जल-सेनाध्यक्ष, जो बदरगाहो पर कर व चुगी वसूल करने का प्रबन्ध भी करता था।

मीर-बार-स०पु० [फा०]शाही-दरबार का एक अधिकारी जो बादशाह से भेंट करने वालों का पहले साक्षात्कार करता था तदनन्तर बादशाह से भेंट करने की अनुमति देता था।

मीरमुचडी-स०पु०—एक कल्पित पीर जिसे हिंजडे अपना आदि पुरुष मानते हैं।

मीरमजलस-स०पु० [फा० मीर-मजलिस] किसी सभा या अधिवेशन का सभापति।

उ०—पातिसाहजी सू मालूम करायो। हजूर आवण री हुकम कीयो। तठै मीर-मजलस रै माथै होय पातिसाहां रै निजर पेस कीधी।—जखडा मुखडा भाटी री वात

मीरमुसी-स०पु० [अ० मीरमुशी] शाही दरबार के समस्त (क्लर्कों) मुशियों का नायक।

मीरमुल्ला-स०पु० [फा०] बडा मौलवी।

उ०—बडे मीर मुल्ला कहा बात कीनी, खुदा मीरखां को नई भूमि दीनी।—ला रा.

मीरळ—देखो 'मीर' (मह, रू भे)

उ०—समीर लग मीरळ अचक धकदळा मम, घट मळां न मीरळ जुध करायो। रजै पतसाह नर समद चतच मीरळ। घत वलद अमीरन छजै चापो।—कवियो करनीदांन

मीरसांमा-स०पु० [फा०] १ मुस्लिम शासन काल का एक अधिकारी।

२ रसोइदे या दारोगा।

३ खान-सामा

वि०वि०—अकबर के शासनकाल मे मीरसामा दीवान या वजीर के अधीन कार्य करता था। इसके प्रबन्ध में शाही राजमहल, हरम रसोई, कारखाने आदि थे इसलिए यह एक बडा पद माना जाता था। बाद मे जहागीर के शासनकाल से मीरसामा को भी मत्रियो के बराबरी के दर्जे मे माना जाने लगा।

मीरसिकार, मीरसिकारू-स०पु० [मीरे शिकार] बादशाहो की शिकार गाहो का प्रबन्धक।

उ०—पखी जिनावरां की सिकार। कदीलू का विसतार। मीरसिकारू का हुन्नर नजर होत है।—सू प्र

मीरा-स०स्त्री०—१ मेडता के शासक एव राठोडो की मेडतिया शाखा के प्रवर्त्तक राव दूदाजी के पुत्र रत्नसिंह की पुत्री जो मेवाड के राणा सागा के पुत्र भोजराज को ब्याही गई थी। इसका बचपन का नाम पेमल था। यह ईश्वर की अनन्य भक्त एव कवियित्री थी।

वि०वि०—

जन्म—मीरांबाई का जन्म मेडता रियासत के कुडकी गाव मे सवत १५६१ के श्रावण मास मे हुआ।

बाल्यकाल व विवाह—मीरा के दादा रावदूदाजी ईश्वर के परम भक्त थे। उन्होंने मेडता मे चतुर्भुज जी का एक विशाल मन्दिर बनवाया जो अब भी विद्यमान है। इस प्रकार दूदाजी का समस्त परिवार भक्ति भावनाओ से ओत-प्रोत था। मीरा की माता के विषय मे ऐसा माना जाता है कि उनका स्वर्गवास मीरा की अत्यन्त अल्पावस्था मे हो गया था इसलिये मीरा को उसके दादा के पास कुडकी से मेडता लाकर रक्खा गया। अत एक तो भक्ति-भाव पूर्ण वातावरण मे रहने तथा अपने पूर्व जन्म के प्रारब्धो के कारण उसमे ईश्वर भक्ति का प्रादुर्भाव बाल्यकाल से ही हो गया। इस सम्बन्ध मे कुछ अन्य किवदन्तियां भी प्रचलित हैं।

मीरा का विवाह मेवाड के राणा सागा के पुत्र भोजराज से सवत १५७३ में हुआ। रामदानजी लालस कृत भीमप्रकाश मे इस बात का उल्लेख है—

> भोजराज जेठो अभग, कवर पदे मृत कीध।
> मेडतणी मीरां महल प्रेमी भगत प्रसीध।

कर्नल जेम्स टॉड ने मीरां का पति राणा कुम्भा को माना है, परन्तु इतिहास से प्रमाणित होता है कि राणा कुम्भा व राव रिणमल, जो मीरां के दादा के भी दादा थे, समकालीन थे। इसलिये राणा कुम्भा मीरां के पति नही हो सकते।

मीरां के पति भोजराज की राणा सागा के जीवनकाल मे ही मृत्यु हो गई। इस असामयिक वैधव्य से मीरां को इस ससार से व लौकिक जीवन से और अधिक विरक्ति हो गई और श्रीकृष्ण के प्रति भक्ति भावना अधिक प्रबल हो गई। पति का वियोग ईश्वर के प्रति विरह मे परिणित हो गया।

मीरां व पेमल —मीरां का जन्म का नाम पेमल था। इसका प्रमाण अल्हदास कृत भगतमाळ में मिलता है —

न हुवौ घट नास पियौ विस 'पेमल'। जास धणी वळ तास जरै। अहियां ब्रिद लाज उवारण ग्रायक, काज इसा महाराज करै।

परन्तु इसका मीरा नाम कब, कैसे और क्यो पड़ा ? इस सम्बन्ध मे कोई पुष्ट एव प्रामाणिक तथ्य नहीं मिलता। पुरोहित श्री हरिनारायणजी विद्या भूषण व कतिपय अन्य विद्वानो का मत है कि मीरा के जन्म से पूर्व उसकी मा ने अजमेर के मीरामा की मिन्नत की जिसके फलस्वरूप इसका जन्म हुआ और नाम भी मीरा रखा गया।

अन्य मत से—मीरा शब्द का प्रयोग उच्चकुलीन एव सज्जन पुरुषो के लिये किया जाता है। अत उच्च राजकुल में जन्म लेने, ईश्वर के प्रति भक्ति भावना, सज्जनता तथा मानवता के अच्छे गुणो के कारण इसका मीरां नाम पड गया। कर्नल जेम्सटॉड ने अपनी पुस्तक'पश्चिमी भारत की यात्रा'मे आबू के पहाडो का वर्णन करते समय 'मीरा' नाम किसी पहाडी देवी का उल्लेख किया है। अत मीरा नामक यदि कोई पार्वती देवी रही हो तब तो मीरा का नामकरण उक्त देवी के नाम के आधार पर माना जाना सभव हो सकता है। अन्यथा इसके लिये अनुसधान अपेक्षित है।

तीर्थयात्रा—सवत १५६५ मे जोधपुर के राव मालदेव ने मेडता पर अपना अधिकार कर लिया तब मीरां अपने ताऊ वीरमदेवजी के साथ तीर्थयात्रा के लिये चली गई और वही (द्वारका मे) उनका स० १६०३ में देहावसान हुआ।

स०पु० [फा०] २ ईश्वर, परमात्मा।

उ०—मीरां मुझ सौं महर कर, सिर पर दीया हाथ। दादू कळियुग क्या करै, सांई मेरा साथ।—दादूवांणी

३ स्वामी, मालिक।

उ०—१ ज्यू राखै ज्यू रहै जहा निरमै तही जावै। हुकम सो ही सिर हुवै, जिको मीरां फुरमावै।—ह र

उ०—२ दादू बदीवान है तू बदि छोड दीवान। अब जानि राखो बदि मे, मीरां महरवान।—दादूवाणी

४ सज्जन, सुहृदय, भला, सत, उदार।

उ०—मीरां कीया महर सौं, परदे थैं लापरद। राखि लिया दीदार मे, दादू भूला दरद।—दादूवाणी

५ अमीर, धनवान।

६ कुलीन, उच्च।

मीरांवर-स०पु०—मुसलमान।

मीरांसा, मीरासाह-स०पु०—१ उदार, सज्जन, सहृदय।

२ अमीर।

मीरात-स०पु०—मवेशी, पशु।

उ०—काढै गाया कूटनैं, घोड़ा आगळ घास। चरण न देवें सीम मे, म्हांरी तो मीरात।—पा प्र

मीरादमीर-स०पु—१ बादशाह।

२ राजा

३ सरदारो का प्रमुख।

उ०—इसी भात आसूरण हिंदू अभग, जुडै दस्स कध जु होता सुजग। बहे ताम कै बांण मीरादमीर, सुजै होत खड निखडै सरीर।—शि रू

मीरासी-स०पु० [अ०] मुसलमानो की एक जाति विशेष जो गाने-बजाने व मस्खरेपन का पेशा करती है।

मीरी—देखो 'मीर' (रू. भे)

उ०—इसा मीरी आंख मुख मांकड जिसा। करै घात बोलै पारसी, बगतर तवा झिलै जांणे आरसी।—अ० वचनिका

मीरूंवरा-स० पु० [फा० मीर+उमराव] अमीर-उमराव, सामत, सरदार।

उ०—किसा एक जे छइ राजाधिराज स्रीमहिमूद पातसाह ? खान खोजा मलिक मीरूंवरा मलाणा सहुणा सलेदार तेहि करी सेवायमांन।—व स

मीरू-स० पु०—गायो व बैलो के होने वाला एक रोग जिससे उनके शरीर में ग्रन्थिया पड जाती हैं एव उनमे कीडे पड जाते हैं।

मील-स० पु० [अ०] १ १७६० गज या आठ फरलाग की दूरी का एक माप जो प्राय आधा कोस के बराबर होता है।

२ उक्त माप या दूरी-सूचक पत्थर।

३ सुरमा या अजन लगाने की सलाई।

स० स्त्री [अ० मिल] ४ बडे पैमाने पर कपडे,ऊन,या अन्य वस्तुओ का उत्पादन करने वाला कारखाना।

ज्यूं—तेल री मील, कपडे री मील, दाळ री मील।

उ०—एक पिंजारो कपडा री एक छोटी सी मील मे कांम करतो हो—फुलवाडी

५ उक्त कारखाने मे चलने वाली बडी मशीन।

मीलणो-स० पु०—देशी रियासतो मे लिया जाने वाला एक कर या लगान विशेष।

उ०—मीलणो ५०)—नैणसी

मीलत—देखो 'मीलित' (रू भे)

मीलित-वि० [स०] १ मुदा हुआ, बंद।

२ अधखुला, अधखिला।

३ पलक झपकाये हुए।

४ जो नष्ट हो चुका हो, लुप्त।

स० पु०—एक अलकार, जिसमें दो पदार्थों की समानता के कारण भेद नही जान पडता है।

रू० भे०—मीलत,

मीसजर—देखो 'मसजर' (रू भे)

उ०—१ सालू जरकमी दुमेणा कचीयो तनसुख नीलक पटोली सुप चुनडी अटायण मीसजर तासतो चोरसो।—व स

उ०—२ मुलताणी ताखो मछीपटण तासतो टुकडी दुमैणां बासतो मीसजर भेरू तनसुख चोरसो अटायण दुमामी सालु जरकसी कचीयो

चुनडी जामसाइ ।—व स

मीसरी—देखो 'मिसरी' (रू भे)

उ०—एकर एक कागला रै मांमरण मीसरी लग्योडी एक रोटी हाथ आई ।—फुलवाडी

मीसल—१ देखो 'मिसल' (रू भे)

उ०—कमधज पाट जीकां रै 'केहर', मीणघर आठ मीसल चा मोड।
—पहाडखा आढो

२ देखो 'मिसिल' (रू भे)

मीहर—देखो 'मिहिर' (रू भे)

उ०—वळ थियो दित हरणाक्ष अप्रवळ। तेज मीहर घर रसातळ ताम।—र ज प्र

मु—देखो 'मू' (रू भे)

मुअधारो–स० पु०—अरुणोदय से पूर्व का वह समय जब हल्का हल्का अधेरा रहता है।

रू० भे०—मुह अधारो, मूधारो,

मुइयो–वि०—अग्रणी, प्रधान, हरावळ।

उ०—तद पातसाहजी यानू देख वडा राजी हुवा। नै भींवराजजी वीरमदेजी फौज रा मुइया।—द दा

मुई–वि० स्त्री० [सं० मृत] १ मरी हुई, मृत।

उ०—मुई मिटीया मुरदार कहत है, हाथे हक हलाला। काजी धणी' र श्रौग घलाली, सब स्वारथ का चाळा।
—श्रीहरिरामदासजी महाराज

२ सोतेली,

रू० भे०—मुई,

मुओ–वि० [सं० मृत] (स्त्री० मुई) मरा हुआ।

उ०—आरण कारण करण नै, सगला मिल्या सब कोय। मुओ सेठ अपूतियो, सुणीयो राणी सोय।—घ व ग्रं.

मुकणो, मुकवो—देखो 'मूकणो, मूकवो' (रू भे.)

उ०—१ नगरी तणी छवि देखइ सोहामणी, प्रसन थयो मन माहि सोभागी जोवा लायक नगली जाइगा, जिण मुकी अवगाहि सो।
—वि कु

उ०—२ ताहरां लाखैजी पूछीयो, कह्यो, 'सीढी माहे कोण छै?' कह्यो 'जी, घच आढो छै।' ताहरा लाखैजी पूछीयो, कह्यो, सीढी घरती मुको —लाखा फूलाणी री वात

मुकणहार, हारो (हारी), मुकणियो—वि०।

मुकिओडो, मुकियोडो, मुक्योडो—भू० का० कृ०।

मुकीजणो, मुकीजवो—कर्म वा०।

मुकाणो, मुकावो—देखो 'मूकाणो, मूकावो' (रू भे)

उ०—सीढी घरती मुकाई नै लाखैजी निजीक आइनै दुहो कह्यो।
—लाखा फूलाणी री वात

मुकाणहार, हारो (हारी), मुकाणियो वि०।

मुकायोडो—भू० का० कृ०।

मुकाईजणो, मुकाईजवो—कर्म वा०।

मुकायोडो—देखो 'मूकायोडो' (रू भे)

(स्त्री० मुकायोडी)

मुकावणो, मुकाववो—देखो 'मूकाणो, मूकावो' (रू भे)

उ०—हाथ मुकावण छै तिहा, मणि माणिक हे भली रतन नीकोहि। छै आमीम सुहामणी, मत लागो हो इण जोड़ि नै खोडि।
—वि कु

मुकावणहार, हारो (हारी) मुकावणियो—वि०।

मुकाविओडो मुकावियोडो, मुकाव्योडो—भू० का० कृ०।

मुकावीजणो मुकावीजवो—कर्म वा०।

मुकावियोडो—देखो मूकायोडो' (रू भे)

(स्त्री० मुकावियोडी)

मुकियोडो—देखो 'मूकियोडो' (रू भे)

(स्त्री० मुकियोडी)

मुक्की—देखो 'मुक्की' (रू भे)

मुगउ—१ देखो 'मूगो'

उ०—खाटरौ तो हीनाग, घणु बोलइ तो लवाड वाउलो न बोलइ तो मुगउ, घणु जमइ तो छारीठ, ।—व स

२ देखो मू'गो' (रू भे)

मुगतो—देखो 'मगतो' (रू. भे)

उ०—भूपति टोटां मे दीवाळा भिळिया मोटा मोटां रा कुळ मुगतां मिळिया।—ऊ का

मुगदणो–स० पु० [सं० मुग्धेन्दनम्] मांगलिक कार्यो मे जलाने के लिये मगाई जाने वाली लकडियो की गाडी।

रू० भे०—मगदणो, मगधणो, मूगदणो, मूगधणो,

मुगम–स० स्त्री०—१ अतिथि सत्कार, स्वागत।

२ प्रतिष्ठा, इज्जत।

रू० भे०—मुघम,

मुगलो–स० पु०—असुर।

उ०—पछाडि कोढि पाखती घपाड घाड घामळी। मजाडि सक मुगला कढाडि कीत कमळी।—मा० वचनिका

मुगवडी—देखो 'मूगोडी' (रू भे)

उ०—मुगवडी पेठावडी रे लाल, खारावडि मन खति। डवकवडी दाधावडी रे लाल, व्यंजन नाना भति।—प च चौ

मुगियो—१ देखो 'मूंगियो' (रू भे)

२ देखो 'मूगो' (अल्पा., रू भे)

उ०—हीरा वार वार मुजरो कर हरख धरै छै। मोती मोहोर मुगियां से निछरावळ करै छै।—वगसीराम प्रोहित री वात

मुगीपटण–स० पु०—एक प्रकार का वस्त्र विशेष।

उ०—कचीयो चुनडी जामसाइ मुगीपटण जांमावाडि सुप लखारस खासो तपई घिरमो कमवी पटोल्हि मुलमुल।—व. स

मुगो—देखो 'मूगो' (रू भे)

मु'गो—देखो 'मू'गो' (रू भे)
मुघम—देखो 'मुगम' (रू भे)
मुचणो, मुचबो—क्रि० अ० [सं० मुच] १ झरना, टपकना।
उ०—दाडिमी बीज विसतारिया दीसै, निउछावरि नांखिया नग। चरणे लुचित खग फळ चुवित, मधु मुचति सीचति मग।—वेलि
२ छूटना, मुक्त होना, रिहा होना।
मुचणहार, हारो (हारी), मुचणियो—वि०।
मुचिप्रोडो, मुचियोडो, मुच्योडो—भू० का० कृ०।
मुचीजणो, मुचीजबो—भाव वा०।
मूंचणो, मूचबो—रू० भे०।
मुचियोडो—भू० का० कृ०—१ झरा हुआ, टपका हुआ।
२ मुक्त रिहा, छूटा हुआ।
(स्त्री० मुचियोडी)
मुच्छ, मुछ—देखो 'मूछ' (रू भे)
उ०—उघा मउड पडइ, रेवत रडवडइं, पडिया पचायण नी परि हाकरइं, रोस लगी मुच्छ भूच्छ फरकावइ।—व स
मुछणो, मुछबो—देखो 'मूछणो, मूछबो' (रू भे)
मुछणहार, हारो (हारी), मुछणियो—वि०
मुछिप्रोडो, मुछियोडो, मुछयोडो—भू०का०कृ०।
मुछीजणो, मुछीजबो—कर्म वा०।
मुछाणो, मुछाबो—देखो 'मूछाणो, मूछाबो' (रू भे)
उ०—तिण समै दिल्ली बैठे पवार अकल उठाई। लकडी एक आगे पाछै मुछाई घणो आछो रग दिरायो—राव रिणमल री वात
मुछायोडो—देखो 'मूछायोडो' (रू भे)
(स्त्री० मूछायोडी)
मुछार—देखो मूछार' (रू भे)
उ०—उगा मुख वारह दीत उदार। भिडै तिणवार मुछार भुहार।
सू प्र
मुछाळो, मुछालो—देखो 'मूछाळो' (रू भे)
उ०—१ सूर सुभट माटी मुछाळा, करि झलकइ करवाल कराळा। व्यापारी दीसई दुदाळा, घरि घरि सुत्रिख सुगाळा।
—कवि गुणविजय
उ०—२ तिहां बैठा बत्रीस लक्षणा पुरुस दुदला, फुदला जाऊज-माला मुछाला केई जमाई केई साला।—व स
मुछियोडो—देखो मूछियोडो' (रू भे)
(स्त्री० मुछियोडी)
मुज—१ देखो 'मुझ' (रू भे)
उ०—वडा वडा जोगिंद्र किया वसु चाचरि मुज खमइ कुण चोट।
—महादेव पारवती री वेलि
२ देखो 'मूज' (रू भे)
मुजक—स०पु०—घोडो की आंख पर होने वाला एक रोग विशेष।
(शा हो)
मुजकेतु—स०पु० [स०] युधिष्ठिर की सभा का एक राजा।
मुजकेश—स०पु० [स०] १ एक आचार्य, जो सैधवायन ऋषि का शिष्य था।
२ एक क्षत्रिय राजा, जो निचद्र नामक असुर के अश से उत्पन्न हुआ था।
मुजमेखळा—स०स्त्री०—यज्ञोपवीत के समय धारण की जाने वाली मूज की मेखला।
मुजमेखळी—स०पु०—१ महादेव, शिव।
२ विष्णु।
मुजरो—१ देखो 'मुजरो' (रू भे)
उ०—हीरां बार-बार मुंजरो कर हरख धरै छै, मोती मोहोर मुगिया सू निछरावळ करै छै।—ज्ञगसीराम प्रोहित री वात
मुजाल—स०पु०—मूज का पौधा।
उ०—पाछो उणहीज मारग साता असवार आवता था, सु उण कटक रो साथ सिरदार असवार ३०० सु मुजाळा माहे छिप रह्यो थो।—राव मालदेव री वात
मुजेवडी, मुजोवडी—स०स्त्री०—मूज की रस्सी।
रू०भे०—मुजेवडी मुजोवडी,
मुझाणो, मुझावो—देखो 'मुरझाणो, मुरझावो' (रू भे)
उ०—रोवै अबला एकलीजी, खिण खिण मा मुझाय। सहजै अगनि उछालतांजी लागि उठी क्षण माहि।—वि कु.
मुझायोडो—देखो 'मुरझायोडो' (रू भे)
(स्त्री० मुझायोडी)
मुड—स०पु० [स०] १ मनुष्य के शरीर की गर्दन के ऊपर का अग, मस्तक, सिर, माथा।
उ०—१ धीरण रा पाणि रा प्रहारण हू वीरमदेव रो मुड अछट उडि पडियो। तो भी राठोड रो रूड अनेक म्लेच्छा रा मुड प्रेता रा झुड रै उपहार करि नीठिनीठि चेस्टा विहूण थियो।—व भा
उ०—२ दयालु न्है न सरवथा अया दया मया दटै। मिळै जु गुड मुच्छ मुड थुड ऊट कें थकें।—ऊ का
उ०—३ तन प्रथक नरा गण तुरग तुड। मट जेम फुटै गज किता मुड।—रा रू
२ कटा हुआ सिर।
उ०—१ पड झाट खगे द्रढ घाट पगे, जुध काट निमाट निराट जगे। वहु रुड उठै गुख मुंड बकै, घड खड हुवै भड चड धकै।
—रा रू.
उ०—२ मिलम्मिल मुड पुवै सिव माळ। तिलत्तिल रुड हुवै रणताळ।—मे म
उ०—३ भांजे असुर भख दे भगवती सकर लियै मुड कर सीस। असमर हस समापै 'अमरा' समर कीयो करतब सु-जगीस।
—लूणकरण
३ मुडा हुआ या गजा सिर।

४ उक्त प्रकार के सिर वाला मनुष्य ।

५ पेड का केवल तना जिस पर डाली आदि न हो, वृक्ष का ठूठ ।

६ राहु नामक ग्रह ।

७ भृगुकुलोत्पन्न एक गोत्रकार ।

८ एक उपनिषद का नाम ।

९ राजा बलि का सेनापति एक दैत्य ।

१० एक असुर जो शुभ एव निशुभ का सेनापति था ।

उ०—बलिस्ट धूम्र अक्ष की तुही विपक्षनी, भई तुही महिस्ख रक्त बीज भक्षनी । निसुभ सुभ चड मुड तू निकदनी, नमामि मात इदरा 'समद' नदनी ।—मे म

११ कौरव दल का एक योद्धा ।

१२ नाई ।

१३ लोहा ।

१४ मद्दूर ।

वि०—१ मूंडा हुआ, गजा

२ कटा हुआ ।

३ कमीना, नीच ।

रू०भे०—मड, मूड, मूडि, मूड, मूढ,

अल्पा०—मूडडो ।

मुडक–स०पु० [स०] १ सिर, मस्तक ।

२ एक उपनिषद ।

३ नाई, हज्जाम ।

वि०—मुण्डन करने वाला ।

मुडकी–स०स्त्री०—सिर, मस्तक, खोपडी ।

मुटको—देखो 'मूडको' (रू. भे)

मुडण–स०पु० [स०मुण्डन] १ यज्ञोपवीत सस्कार के समय किया जाने वाला मस्तक का मुण्डन, इसे मुण्डन-सस्कार भी कहते हैं ।

२ बच्चे का पहले-पहल किया जाने वाला मुण्डन ।

उ०—मुडण न्हावण साद्ध मुख, साधे पूरब सूर । वख से घन कीना दळे, दुजराजा दुख दूर ।—व. भा.

३ हजामत ।

मुडणो, मुडबो–क्रि० अ० [स० मुड] १ सिर के बाल कटेजाना, मूडा जाना, मुण्डन होना ।

२ ठगा जाना ।

३ पीसा जाना ।

मुडणहार, हारो (हारी), मुडणियो—वि० ।

मुडियोडो, मुडियोडो, मुड्योडो—भू० का० कृ० ।

मुडीजणो, मुडीजबो—भाव वा० ।

मूडणो, मूडबो—सक० रू० ।

मुडत—१ मुडा हुआ ।

यौ०—मुडत हाथ

२ देखो 'मुडित' (रू भे)

मुडमाळ, मुडमाळा–स० स्त्री० [स० मुण्ड माला] कटे हुए सिर या मस्तकों की माला, जो प्राय शिव या दुर्गा (काली) के गले मे रहती है ।

उ०—१ जैत भूप 'जैत' री हार 'कमरा' री होसी । भिड पोसी मुडमाळ, जगतचख कौतुक जोसी ।—मे म

उ०—२ वरगा राळ वरमाळ सूरावरै, त्रिपत पखाळ दिल खुले ताळा । सवळ पड भार सिर तणावै अहेसुर, महेसुर वणावै मुंडमाळा ।—र. रू

रू० भे०—मुडमाळी.

मुडमाळिनी–स० स्त्री० [स० मुण्ड + मालिनी] मुण्डो की माला धारण करने वाली महाकाली, दुर्गा ।

रू० भे०—मुण्डमाळी.

मुडमाळी–स० पु०[स० मुण्ड–मालिन्] १ शिव, महादेव ।

उ०—खिलै महाकाळी दे दे ताळी नचै वीर खेला, हैला मुडमाळी पाडै सचै हार हेत ।—प्रभुदान मोतीसर

२ देखो 'मुडमालिनी' (रू भे)

उ०—भवानी नमो मोहनी मुडमाळी, भवानी नमो काळ कृत्यादि काळी ।—मे म

३ देखो 'मुडमाळा' (रू. भे.)

मुडरुई–स० पु० [सं० मुण्डरुचि] ऐसे साधु जो वेष तो साधुओ का कर लिया पर मन-क्रम से साधुओं का आचरण नही करते अर्थात् व्रतो मे अस्थिर एव तप नियमो के अनुष्ठान मे पराङ्मुख हो ।(जैन)

मुडहा–स० स्त्री० [स० मुड+हन्] १ मूड नामक राक्षस को मारने वाली दुर्गा ।

उ०—भवानी नमो नित्य सोभा नवीनी, भवानी नमो भीम तें प्रेम भीनी । भवानी नमो मुडहा मांन मत्ती, भवानी नमो राधिका कान्ह रत्ती ।—मे म

२ देखो 'मूडो' (रू भे.)

मुडाई–स० स्त्री०—१ मूडने या मूडाने की क्रिया या भाव ।

२ उक्त कार्य के लिये लिया व दिया जाने वाला धन ।

मुडाणो, मुडावो–क्रि० स० [स०मुड्] १ सिर के बाल कटवाना, सिर के बाल उतरवाना ।

उ०—कित छोडी वह मोहन मुरली, कित छोडी सब गोपी । मूड मुडाइ डोरी कटि बाधी, माथे मोहन टोपी ।—मीरां

२ किसी मृतक के पीछे सिर मुडाना, सिर के बाल उतरवाना ।

उ०—माथो मूछ मुडाय मसदा, पोहो पतिसाह मिल्या ले पेस । फळक अनेक सवै कुळ लागो, निकळक 'अरजन' हरो नरेस ।

—राव भोज हाडा रो गीत

३ ठगने के लिये प्रेरित करना, ठगवाना ।

मुडाणहार, हारो (हारी) मुडाणियो—वि० ।

मुडायोडो—भू० का० कृ० ।

मुंडाईजणौ, मुंडाईजवौ—कर्म वा० ।
मुंडाड़णौ मुंडाम्रवौ—रू० भे० ।
मुंडायोड़ौ-भू० का० कृ०—१ सिर के बाल कटवाया हुआ, बाल उतरवाया हुआ २ किसी मृतक के पीछे सिर मुडाया हुआ. ३ ठगवाया हुआ ।
(स्त्री० मुडायोडी)
मुंडाळियौ, मुंडाळौ-सं० पु० [देशज] वह स्थान जहां से चड़स का पानी नाली में आगे बढ़ता है ।
मुंडावणौ, मुंडावबौ—देखो 'मुंडाणौ, मुंडावौ' (रू भे)
उ०—लोक लाज कुळ रीत लोप के मस्तक मूछ मुंडावै। लागी लगन नींद नहि लेवै, घोरे प्रात घुमावै।—ऊ का.
मुंडावणहार, हारौ (हारी), मुंडावणियौ—वि० ।
मुंडाविम्रोड़ौ मुंडावियोड़ौ, मुंडाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
मुंडावीजणौ, मुंडावीजवौ—कर्म वा० ।
मुंडावियोड़ौ—देखो मुंडायोडौ' (रू भे)
(स्त्री०मुडावियोडी)
मुंडासुर-सं० पु० [सं० मुण्ड-असुर] मुड नामक असुर ।
उ०—सुंभ निसुंभ चंड मुंडासुर, दुमह सुरा दुखदाई । दांनव महिस रकत वीजादिक, मार लिया महमाई ।—मे म
मुंडासौ—देखो 'मुंडासौ' (रू भे)
उ०—माई एहड़ा पूत जण, जेहड़ौ दुरगादास । मार 'मुंडासो' थामियो, विण थभा आकास ।—अज्ञात
मुंडित-वि० [सं०] १ मुंडा हुआ, वाल उतरा हुआ गजा ।
उ०—न मरद न जोरू लख्या नही जावत,मस्तक मुंडित कश फड़ा। अचरिज्ज भया मोहि देख नही एहु, कुण दुकाण देखउ रिखड़ा ।
—स कु
२ कटा हुआ ।
सं० पु०—लोहा ।
रू० भे०—मुंडत, मूडत.
मुंडिम-सं० पु०—एक प्राचीन आचार्य ।
मुंडियोड़ौ—देखो मूंडियोडो' (रू भे)
(स्त्री० मुंडियोडी)
मुंडी-सं० स्त्री०—१ विधवा, रांड ।
२ एक लिपि, जिसके न तो मात्रा लगती है और न ऊपर रेखा दी जाती है ।
मुंडीयो-सं०पु०—किसी क्षेत्र की सीमा या सरहद पर रोपा जाने वाला छोटा स्थम्भ ।
रू० भे०—मुडियो,
मुंडेर—देखो 'मडेरी' (रू भे)
मुंडो—देखो 'मूडो' (रू भे)
मुंडौ—देखो 'मूंडो' रू भे)
मुंतजिम-वि० [अ०] १ व्यवस्थापक, प्रबंधक ।
२ प्रकाशमान, प्रदीप्त, रोशन ।
मुंतणौ, मुंतवौ—देखो 'मूतणौ, मूतवौ' (रू भे.)
उ०—सेजां घण सूतेह, ऊभा मुंतै अधपती । हूते अण हूतेह, मुनसी चुये मुरधरा ।—ऊ का
मुंतियोड़ौ—देखो 'मूतियोड़ौ (रू भे)
(स्त्री० मुंतियोडी)
मुंथा-सं० स्त्री०—नव ग्रहो के अतिरिक्त १० वा ग्रह जो वर्षफल मे आवश्यक माना जाता है ।
मुंदगर—देखो 'मुगदर' (रू भे)
उ०—वीरा रस घण घोख वाजई, अभिनवा सिरि द्रोण । सेल सावळ कुंत मुंदगर, उछळई अति स्रोण ।—रुकमणी मगळ
मुंदड़उ—देखो 'मूंदडी' (मह, रू भे)
उ०—देइस हाथ कउ मुंदड़उ, सोवन-सिंगी नई कपिला गाई ।
—वी दे
मुंदड़ी—देखो 'मूंदड़ी' (रू भे) (उ र)
उ०—१ माता हे आ मुंदड़ी, प्रभु दीनी नेह-निसाणी हे ।
—मी रा
उ०—२ हू सोनी नी मुंदडी सुपियारा हो । तू हिव हीरो होय, नेम सुपियारा हो ।—स कु
मुंदड़ौ—देखो 'मूंदड़ौ' (रू भे)
मुंदणौ, मुंदबौ-क्रि० अ० [सं० मुद्रण] १ खुली हुई आखें वद होना, मिचना ।
उ०—मुंदयोडी आख्या । माटी री लोथ सस्ते लोथ ।—फुलवाडी
२ अत होना, समाप्त होना ।
मुंदणहार, हारौ (हारी), मुंदणियौ—वि० ।
मुंदिम्रोड़ौ, मुंदियोड़ौ, मुंदयोड़ौ—भू० का० कृ० ।
मुंदीजणौ, मुंदीजबौ—भाव वा० ।
मूंदणौ, मूंदबौ—सक० रू० ।
मुंदरड़ी—देखो 'मूंदडी' (अल्पा, रू भे)
उ०—सीता नइ सदेसउ रामजी मोकल्यउ रे । काइ मुंदरड़ी दे मूक्यउ हनुमत वीर रे ।—स कु
मुंदरी—देखो 'मूंदड़ी' (रू भे.)
मुंदरौ—देखो 'मूंदड़ौ' (रू भे)
मुंदियोड़ौ-भू० का० कृ०—१ वद हुवा हुआ, मिचा हुआ । (नेत्र)
२ अत हुवा हुआ, समाप्त हुवा हुआ ।
(स्त्री० मुंदियोडी)
मुंदौ—देखो 'मुदौ' (रू भे)
मुंद्र-सं० पु० [सं० समुद्र] समुद, सागर ।
उ०—हीयां ध्रसक्कइ कायर लोक सत तणां मन करइ ससोक । जाणे वीज पडि [अ] अकालि, जावै मुंद्र खुम्या कलिकालि ।
—सालिभद्र सूरि

मुद्रड़ी—देखो 'मूदड़ी' (रू भे)

उ०—१ पइठइ वली मुकट तिलक कुंडल हार दोर वीर विलय अगद वहिरखा नवग्रहा मुद्रड़ी कदोरु हय सांकली ।—व म

उ०—२ रत्नजड़ित जे मुद्रड़ी, ते अगूलीए आठ । पीड-तणइ जे पारखी, पढ़ी न जांणइ पाठ ।—मा. का प्र

मुद्रणी, मुद्रवो—देखो 'मूदणी, मूदवो' (रू भे)

उ०—अविधि देम त्याग कराविउ, मोहराज लेई भूलविउ, दुरगति द्वार मुद्रिउं, मुगति द्वार ऊमूद्रिउ अनग्गलि काल वेतन उचाटिउ मदन पिमाच निरघटिउ, जीणि जिन वचन पालिउ ।—व स

मुद्रियोडो—देखो 'मूदियोडो' (रू भे)

(स्त्री० मूद्रियोडी)

मुद्री—देखो मूदड़ी (रू भे)

मुध, मुधि—स० स्त्री०[स० मुग्धा प्रा० मुद्धा] मुग्धा नायिका ।

उ०—१ दिसि चाहती मज्जणा, नेहाळदी मुध । सा धण कुम्भि-थचाह ज्यउ लवी थई तु कध । —ढो मा

उ०—२ सहस फणालइ काळ भूयग, जीमणा थी उतरउ वांमिइ अग । रुपि चगा, विस आगला, दोय कर जोडं वीनमं मुध ।—वी दे

उ०—३ घोडा-ऊपरि हू चढिउ, तुम्ह चढावउ कधि । गांन सुणाविसी मुहनइ, तु मुम्ह भावइ मुधि ।—मा कां. प्र

उ०—४ सूनि गोकलि जई सू करीसि, क्रिम्णना ठाम जोतां मरीसि । मन मठी मुधि मदिरि पुहती, नगरनी नारि पूरी पनोती ।—चतुरभुज

मुनिंद्रेस—देखो 'मुनींद्र' (मह, रू भे)

उ०—मुनिंद्रेस जोगेस कव्वेस मेळा, भुजगेम देवेस सव्वेस भेळा ।—सू प्र

मुपति, मुपती—देखो 'मुहपति' (रू भे)

मुसरिम—स० पु० [अ०] १ प्रवन्धक, व्यवस्थापक ।

२ दीवानी अदालत में काम करने वाला एक कर्मचारी ।

मुसिफ—स० पु० [अ०] १ न्यायाधीश

२ छोटी अदालत का न्यायाधीश ।

मुसिफकोरट—स० पु०[अ० मुमिफ+अ० कोर्ट] उक्त न्यायाधीश की अदालत ।

मुसिफी—स० स्त्री० [अ०] १ न्याय, इन्साफ ।

२ मुसिफ का पद ।

मुसी—स० पु० [अ० मुंशी] १ लेखक ।

२ किसी कार्यालय का लिपिक, क्लर्क ।

३ वकील का मुहर्रिर ।

४ कचहरी मे अर्जियां लिखने वाला व्यक्ति ।

रू० भे०—मुनमी

मुसीखानो—स० पु०[अ० मुशीखाना] मुशियों के बैठने का कक्ष

मुसीगिरी—स०स्त्री० [अ० मुशीगिरी] १ मुंशी का काम ।

२ मुशी का पद ।

मुसो—देखो 'मूसो' (रू. भे)

उ०—१ तिहां डांस मुसा मांकुण जू प्रमुख न उपजइ ।—व स

उ०—२ मुसा दादरा हूत नागां मराडै । खुरा कीडिया हूत हाथी खूदाडै ।—सू प्र

मुह—देखो 'मुख' (रू भे)

उ०—१ मुह न दियो पर मारियो, भागां न करै घाव । सादूळो साचा गुणां, वेह कियो वन-राव ।—वां दा.

उ०—२ नदी गण चढी आठ गण आगळ, लोपी अगड तणी ताइ लाज । उण वेळा दिख रड मुह आगळि, आई सती हुई आवाज ।—महादेव पारवती री वेलि

उ०—३ अवसर दांन ज अप्पही, रिण भज्जै मुह मोड । राठोडां कुळ मेहणी, ते खत्री पण खोड ।—गु रू व

मुहअधारो—देखो 'मुअधारो' (रू भे)

मुहकम—देखो 'मुहकम' (रू भे)

उ०—सभा राग'र दोख जीव, गुर गम सु । हरिहां दास कहै हरिराम, राज मुहकम सु ।—श्री हरिरामदासजी महाराज

उ०—२ हरीया नख-चख वीच मैं, घावे मुहकम पूर । सूर पडै ग्गिण खेत मैं, कायर भागा दूर ।—श्री हरिरांमदासजी महाराज

मुहकांण—देखो मुकाण' (रू. भे)

मुहगउ, मुहगो—देखो मूंगो' (रू भे)

उ०—सत्यासीयउ साहमी, ऊठि वलि मामउ धावइ । पड्यउ न रहई पापीयउ, धान मूहगउ करि धावइ ।—स कु

उ०—२ इण वीर स्त्री रे वासतै वाळग नै कढायो आतो मुहगो ही ले लेती हमैं वेचू तो सुहगो ही इण विना कुण लेवै ।—वी म टी

उ०—३—जिके सूर ढीला जरद, ऊबडहो आरांण । मूछ अणी भूहां मिळै, मुंहगो राखै माण ।—वा दा

उ०—४ प्रम अम सूर दाता प्रमाण । वित दियण लियण मुंहगा बखाण ।—सू प्र

उ०—५ करनी थारै कारणे,प्यारी थळवट पथ । मोत्या सू मुहगो मिळै, हीरा पाज हरत ।—चोथ बीठू

(स्त्री० मुहगी)

मुहचोर—सं०पु०—दूसरो के सामने जाने से मुह छिपाने वाला, अपने काम मे जी चुराने वाला ।

मुहजोर—वि०—१ अधिक बोलने वाला, वाचाल ।

२ विना कारण बहस या हुज्जत करने वाला ।

३ उद्दण्ड ।

४ एक प्रकार का अशुभ घोडा ।

रू०भे०—मूजोर,

मुहजोरी—स०स्त्री०—१ बकवास, प्रलाप ।

२ अशिष्ठता, उद्दण्डता ।

उ०—'तो इत्ता वडा थारे उठै हुया हां कै'। 'साळा मुजोरी करै है ? ठैर तो' ।—वरमगाठ

मुहड–क्रि वि०—मुह पर, अग्र भाग पर।

उ०—आगे विभर रै मुहड पातिसाह भीत चुणाइनै छोह दिराइ लयो ।—सयणी री वात

मुहडइ—देखो मूं'डो' (रू भे)

उ०—लाजते भीख लीधी नही, मुहडइ पग सूजी मूआ। समय-सुदर कहइ सत्याभीया, ते हवाल ताहरा हूआ ।—स. कु

मुहडे, मुहडै–क्रि०वि०—१ आगे अगाडी।

उ०—१ सू पहाड इसडो पर्वत सू पहाड कोरिनै माहे घर कियो सू घर रै मुहडै पहाड री विटा कोरिनै राखी छै।

—कूगरैवलोच री वात

उ०—२ सु हाथी पाखरिया कर लोह वाघ,गरक किया छै। सु हाथी फौज रै मुहडै छै।—नैणसी

२ सम्मुख, आमने-सामने।

उ०—१ तिरतै रायसिघ ही आय भेळो हुओ। अणी मिळी। अठै वेढ निपट सखरी हुई। रजपूत रजपूतां रै मुहडै आया।

—नैणसी

उ०—२ एकोको मुहडै जो आवत, अतरै फळहणि तणी परि। रहचति कटक सिगळ डोइ राखो' वात कहत कुण वैरहरि।

—नादण वारहठ

उ०—३ ताहरा अरजनजी नगै मारमत्रोत रै मुहडै आयो।

—नैणसी

३ सीमा पर।

उ०—राव जोधो मारवाड रो धणी वडो राजा छै। गुजरात रै मुहडै इण रो मुलक छै ' '।—राव जोधै रै वेटा री वात।

४ मुह पर

५ मुहसे,

६ मुहमें,

७ अनुपात में, परिमांण में

८ चेहरे पर,

रू० भे०—मुहडे, मुहडं, मुहूडै, मूडे, मूडै, ।

मुहडो—देखो 'मूं'डो' (रू भे)

उ०—१ जसो पण आपरा साथ सू चढ आयो। गाव रा मुहडा आगै तळाव छै तिण रै पाछै मैदांन छै।—नैणसी

उ०—२ जितरी वोलो तितरी करो तो कीगे मुहडो—छै जे जोधपुर लार आख उठाय देखे।—राजसिह री वारता

उ० —३ मुहडा आगला किणी काम मे गरज लोभ मू वात नही' करै।—नी प्र

उ०—४ हू वांमण रो वेटो अर मूरख। का विद्या दे का लोही बाटीम। ताहरा सारदा बोली —मुह मांहि। ताहरा मुहड मांहि राख मेली। —चोबोली

उ०—५ हरिया तोसू प्रीतडी, प्रातम मेरे यार। जो दूजे सू तुझि विन, करू त मुंहडै छार।—स्रीहरिरामदासजी महराज

उ०—६ दान घणो उत्तर दिये, हूते वित सत हार। मुहडो ले उण मिनक रो, भोभर भीतर भार। —वां०दा०

मुहता–स०पु०—देखो 'महता' (रू भे.)

उ०—ताहरा मूरिखो वोलियो–हू मूरिख छू। मुहतै रो वेटो मुहतै राखीयो।—चौबोळी

मुहत्राण–वि०—मुह के वल।

उ०—दौढ पहर हिंदू तुरक, कहर लडै रिण ढाण। मुडिया भड़ पतसाह रा, के पडिया मुहत्रांण।—रा रू

मुहदिखाई–स०स्त्री०—१ एक वैवाहिक प्रथा जिसमे वर द्वारा वधू को पहले पहल मुह दिखाने के लिये कुछ धन दिया जाता है।

२ उक्त प्रथा में दिया जाने वाला धन।

रू०भे०—मडौ दिखाई,

मुहनाळ–स०स्त्री०—१ घोडे का एक रोग विशेष। (शा हो)

२ तलवार का वह ऊपरी भाग जो मूठ के नीचे रहता है।

रू०भे०—मुहिनाळ, मूनाळ, मूहनाळ, मूनाळ,

मुहपति, मुंहपती, मुहपत्ती–स०स्त्री० [स०मुख+पट्टिका] श्वेत वस्त्र (प्राय) का एक टुकडा, जिसे स्थानकवासी व तेरा पथी जैन मुनि अपने मुख पर बाघते हैं। (जैन)

उ०—१ समिती तीन ज धरो तो इ साचा यति, पास राखो नही ओघो नै मुहपति।—घ व ग्र

उ०—२ ए वात सुण तिण नें निखेध नें वोल्यो'–म्हें ढीला पड गया हां तो ही मांना एक दाणा में च्यार परयाय च्यार प्राण ते खुवाया पुण्य किम हुओ अनै थे मुहपति बाधनै कयू खोटी हुवा ?

—भि द्र

रू०भे०—मुंपति, मुपता, मुखपति, मुहपति, मुहपती, मुहपत्ती, मुहपोती, मूवती, मू'वत्ती।

मुहपल्लो–स०पु०—किसी मृतक के शोक मे मुख ढककर रोने की क्रिया।

मुहफट—वि० –वाचाल, वकवादी, बिना विचारे वकने वाला।

रू०भे०—मुखफट्ट, मूफट।

मुहम—देखो मुहिम' (रू भे)

उ०—पछै राजसिघ खीवावत रै वभियो। स १६७७ वालापुर री मुहम लात लागी तिण सू खोडावतो।—नैणसी

उ०—२ स०१६७८ तिमरणी री मुंहम कांम आयो।

—नैणसी

मुहमीठडो, मुहमीठो–स०पु०—एक प्रकार का घोडा

वि —मृदुभाषी।

रू०भे०— मुखमिट्ठ, मूमीठो, मू'मीठो

मुहमेज—देखो 'मुहमेज' (रू भे)

उ०—वागहागी विन्हे रजवाट रा खटाउ,थाट रा धणी मुंहमेज थाया।—रामसिंघ हाडा व राजसिंघ राठौड रो गीत
मुहमेळ—देखो 'मुहमेळ' (रू भे.)
मुहसाल—देखो 'मोसाळ' (रू भे)
उ०—भाद्रवडा आविउ भलइ, मयण–तणा मुहसाल। काम जगावइ तेहनइ, जेह–सिरि बूढा वाल।—मा का प्र
मुहांणी, मुहांणौ—देखो 'मुहाणी' (रू भे)
उ०—तोप मुहांणी म्हांनै चाडै, रहै कंद कै मांय।
—डूगजी जवारजी री छावली
मुहासो–स०पु०—युवावस्था में मुह पर निकलने वाली फुंसी।
मुहि—१ देखो 'मुख' (रू.भे.)
उ०—मुहि आगळि 'गज साह' पराक्रम भांमणा। परिहा ऐसा पूत सपूत क (नित) ववांमणा।—गु रू व
२ देखो 'मैं' (रू भे)
उ०—जन हरिदास निद्रा सू हेत, अंतकाळि मुहि पडसी रेत।
—ह पु वा
मुहियड—देखो 'मुहिअड' (रू.भे)
उ०—पडी विहड ऊपरि प्रवाडै सयहर अजस वहै महि। मुहियड जिणि पाडियो मदाउत, मुहियो वोलो न कोइ महि।
मुंहियो—देखो मुहियो' (रू. भे) —नादण वारहठ
उ०—मुहियड जिणि पाडियो मदाउत, मुहियो वोलो न कोइ महि।—नादण वारहठ
मुही—१ देखो 'मुही' (रू भे)
२ देखो 'मैं' (रू भे)
३ देखो 'मुख' (रू भे)
मुहुगो—देखो 'मूंगो' (रू भे)
मुहुंडो—देखो मूंडो' (रू भे)
उ०—अर चाडाळ रै मुख मावित्री रै ममान केहूरी रो विभाग फेरड रै मुहुडै कदापि न खटावै।—वं भा
मुहे–क्रि०वि०—मुख पर।
मु–स०पु० [स०मु] १ शिवजी का एक नाम।
२ बधन।
३ कारागार, कैद।
४ मोक्ष, मुक्ति।
५ ऋषि।
६ मुष्टिका, मुट्ठी।
७ चिता।
८ देखो 'मू' (रू भे)
रू०भे०—मू
मुअज्जन, मुअज्जिन–स०पु० [अ. मुअज्जिन] मस्जिद में अजान देने वाला।
मुअत्तल–वि० [अ०] १ जिसे किसी कार्य या पद से, कुछ समय के लिये दोपस्वरूप अलग कर दिया हो, निलबित।
२ वेकार, खाली।
३ जो काम नही कर रहा हो।
मुअत्तली–सं०पु० [अ०[१ 'मुअत्तल' होने की अवस्था या भाव।
२ निलबन।
३ वेकारी।
मुआफ—देखो 'माफ' (रू भे)
मुआरणी—देखो 'मारणी' (रू भे)
मुआवजो–स०पु० [अ मुआवज] १ वह रकम जो जमीन के मालिक को उस जमीन के बदले मे कानूनन मिलती है।
उ०—१ ठिकांणा रो पूरो काम ठकुरांणी आपरा हाथ में ले लियो हो। मुआवजा री रकम सू एक ट्रैक्टर खरीद लियो अर आटो पीसण री एक चक्की ई लगाय दी गई।—रातवासो
उ०—२ मुआवजो नीं मिळियो जिकरा री परवा नी पण भांडणा मे तो हु ई पाछ को राखू नीं।—फुलवाडी
२ किसी प्रकार की क्षति-पूर्ति के लिये दिया जाने वाला धन।
३ बदला।
४ किसी वस्तु का मूल्य जो उस वस्तु के बदले मे दिया जाय।
रू०भे०—मावजानो, मावजो,
मुइय—देखो 'मुदित' (रू भे.)
मुइयड—अगाडी, आगे।
उ०—सग्रांम काम 'राजो' स 'कूप' राठौड प्रमाणं पच–रूप। 'विसनावत' वीरति वधी धाड, मेडतियो मुइयड अड किमाड।
—गु रू बं
मुइयमण—देखो मुदितमन' (रू भे)
मुई—देखो 'मुई' (रू भे)
उ०—१ सूवा, एक सदेसडउ, बार सरेसी मुज्झ। प्रीतम वांसइ जाइनई, मुई सुणावै मुज्झ।—ढो मा
मुओ–वि० [स०मृत] (स्त्री० मुई)मरा हुआ, मृत।
उ०—जुडै नह मडोवरा कदे मो जीवतै, पलटसी मडोवर मुआं पूठै।
—जालमसिंह मेडतिया रो गीत
मुकद—देखो 'मुकुद' (रू भे) (अ मा, ना मा)
उ०—पुरसोत्तम पूरण प्रभू राघव गिरधर रूप। मुरळीधर मोहण मुकद, भजलै त्रिभुवण भूप।—ह र
मुकदक—देखो 'मुकुदक' (रू भे)
मुकट—देखो 'मुकुट' (रू भे)
उ०—१ पछइ वली मुकट तिलक कुडल हार दोर वीर विलय अगद वहिरखा नवग्रहां मुद्रडी कदोरु हथ सांकली पगनी सांकली प्रमुख पहिराया।—व स

उ०—२ सिर आयो इकयासियो, वरसे मुकट विचार । असपति वोलायो 'अभो' दिल्ली राज दुवार ।—रा रू.

उ०—३ वाको मुकट काछनी सु दर, ऊपर जरद किनारी ।
—मीरा

मुकटवध—देखो 'मुकुटवध' (रू भे)

उ०—कीध जिको तै दीध कलावत, एही मोज लहर अनमघ । जस उर धर्क आवता जातां, वूड अनेरा मुकटवध ।—द. दा

मुकटमणि, मुकटमिण—देखो 'मुकुटमणि' (रू भे)

उ०—१ इतरै देवी प्रकट होय कही —धन्य विक्रम ! धन्य तू ! सकळ राजां मांही मुकट-मणि है ।—सिंघासण वत्तीसी

उ०—२ पुत्र दसमो चित सुवुधि प्रकासी । भूप मुकटमिण खळा अमासी ।— सू०प्र०

मुकटि—देखो 'मुकुट' (रू० भे०)

उ०— मणि वाहण मुकटि, रीत सजव नव रूप । किया साज महाराज कजि, ऐसा वाज अनूप । —रा०रू०

मुकटो स०पु०—१ एक प्रकार की रेशमी धोती जो प्राय भोजन के समय पहनी जाती है ।

२ देखो 'मुकुट' (अल्पा , रू भे)

मुकणो मुकवो—देखो 'मूकणो, मूकवो' (रू भे)

उ०—१ कठ रुकै कायरा जुवांणां लुकै सुकै कई । धुकै प्राण मुकै के भमक्कै स्रोण धार ।

उ०—२ वूब देऊ छक वमणा, मुकी दिइ मुझ मीत । कर जोडी निलवटि करइ, चतुर चोरतो चित्त ।—मा कां प्र

मुकत—१ देखो 'मुक्त' (रू भे)

उ०—१ चमकै रतन पेच चीरा रा । हार मुकत भूखण हीरां रा ।
—सू प्र

उ०—२ ओपै रूप घणो राय अगण, चोक मुकत कण केमर चनण । तर मजर फळ माळा तोरण, सोहै द्वार मेळ अत सज्जण ।
—रा रू

२ देखो 'मुक्ति' (रू भे)

उ०—१ दसरथ रा नद मुकत रा दाता असुर जुधां घाता असेस ।
र ज प्र

उ०—२ खुधा न भाजै पाणियां, त्रखा न भाजै अन्न । मुकत नही हर नांव विन, मानव साचै मन्न ।—ह र.

मुकतज—देखो 'मुक्तज' (रू भे)

मुकतदा—वि०स्त्री० [स०मुक्ति-दात्री] मुक्ति देने वाली । (अ मा)

मुकतफळ—देखो 'मुक्ताफळ' (रू भे)

उ०—फवै सवा मण मुकतफळ, मेगळ कु भ मझार । विण हाथळ वळ सू हुवो, सीह वनै सिरदार ।—वा दा

उ०—२ इळ छीलरे विमळ खग ओपै, भेद करै जळचरि मखै । लाभै सीप मुकतफळ लाभै, निज मराळ रसग्राळ नखै ।
—उत्तमराम गोड़ रो गीत

मुकतमाळ, मुकतमाळा—देखो 'मुक्तामाळ' (रू भे)

उ०—सुभ खिल्लत पव वसन सुरगी, असि खजर सरपेच कलगी । मुकतमाळ दुलडी उर मडित, अती भार सव सत्र अखडित ।
—रा रू

मुकतसांमीप—देखो सामीप्यमुक्ति' (रू भे)

उ०—वोम छव कमळ प्रतमाल कर वाहतो, गजघडा गाहतो खळा गूडो । रण कटै गयो वैकुंठ भ्रम राहतो, चाहतो मुकतसांमीप चूडो ।—रावत गुलावसिह चुडावत रो गीत

मुकतहार—देखो मुक्ताहार' (रू भे)

मुकता—२ देखो 'मुक्ता' (रू भे.) (ह ना मा)

उ०—१ इण विध आभरणाह मनू मुकता मिली । छक तरुणाई छोळ पयोनिध ज्यू छिळी ।—वां दा

उ०—२ पलकन डटै पयोरी विरध पात पर वूंद । पडै भोम पर पाधरा, मनु मुकता धर खूद ।—लो गी

मुकतागळ—स०पु०—मोतियो का झुण्ड, समूह ।

उ०—घडच्छत फील खगा सिरधार । रचै मुकतागळ मागणिहार ।
—सू प्र

मुकताग्रह—स०पु०—प्रहास या गरवत गीत का एक भेद, जिसके विषम पदों में २० मात्राए व सम पदो मे १७ मात्राए होती हैं । प्रथम द्वाले के प्रथम पद की मात्राए २३ होती हैं ।

उ०—गरवत कीजै गीत अत, विसम तुक आद सम । सिंघ विलोक सरीत, मुकताग्रह जिण नै मुणे ।—र रू

वि०वि०—इसमे विषम तुक के अतिम शब्द को सम तुक के आदि मे रखकर सिंहावलोकन किया जाता है ।

मुकताग्रहजथा—स०स्त्री०—डिंगल साहित्य मे गीत (छद) रचना की एक प्रणाली या नियम । (क कु वो)

मुकताचर—देखो 'मुक्ताचार' (रू भे) (ह नां मा)

मुकताफळ—देखो 'मुक्ताफळ' (रू भे)

उ०—१ आवदार ऊजळ वडवार मुकताफळ सोव्रन लाल सजुति रूपवत स्रवण वीच राजै ।—सू प्र

उ०—२ मोर मुकुट मुकताफळ कुडळ, उर वैजंती माळ ।
—मीरा

मुकतामाळ—देखो 'मुक्तामाळ' (रू भे)

उ०—सीमफूल मणिमाळ विदलियां मुकतामाळ विसाल ।
—रसीलैराज रा गीत

मुकताळ—देखो मुक्ताफळ' (रू भे)

उ०—माग भरया मुकताळ जाळ रुळता जवाहारां । अतर डमर ऊपरा भवर भवतां भवहारा ।—पना

२ देखो 'मुक्तावळी' (रू भे)

मुकताळि मुकतावळ, मुकतावळि, मुकतावलि मुकतावळी—देखो 'मुक्तावळी' (रू भे)

उ०—१ छु मुकतावळि लावा हइ, सोहई रूप सोभांतारे । कुकु

मगी कचोळिय, भोळीय छांटणां छांटइरे ।—रुकमणी मगळ

उ०—२ कणगावलि तपु एकु बीजउ एकग्इ रयणावली ए।
मुकतावळि तपु सारू चउथउ ए सिंह निकीलि ऊए।
—सालिभद्र सूरि

मुकताहळ—देखो 'मुक्ताफळ' (रू भे)

उ०—कठमरी बहुक्राति मिळी मुकताहळां। हिंडुळ नोसरहार, जलूम जळाहळा।—वां दा.

मुकताहार—देखो 'मुक्ताहार' (रू भे)

उ०—लबोदर फरमी घरणा, मुखमे कर दांणा। मुकताहार विराजमान, सिंदूर झलाणा।—द दा

मुकति, मुकती—देखो 'मुक्ति' (रू भे)

उ०—१ चाद वणाय रावळी चिरजा सनमुख गाय सुणाई। दीजै भगति मुकति जगदवा, कीजै जेज न काई।—मे म

उ०—२ मीतल मील छाया वीममउ भावना निरिहि मीचिउ घरउ फुल पत्र वार देव लोक जांणि एह व्रक्ष नउ फल मुकति निरवांणि।—जयसेखर सूरि

२ देखो 'मुक्ता' (रू भे)

उ०—ग्रिदु हरित वस मगाय, प्रति वेह जुत रोपाय। रचि चौक चदण चार, छति मुकति रेख प्रकार।—रा रू

मुकतिसाजोति-स०स्त्री० [स० मुक्ति+स+ज्योति] पाच प्रकार की मुक्तियों मे एक प्रकार की मुक्ति का नाम, जिसमें जीव ईश्वर ज्योति मे विलीन हो जाता है।

उ०—विचि तिमिर छोर गोळा वहे, जाजुळ मगळ जोति रा। ग्रम्ह सम्हां जाणि लागा उडण, सिखर मुकतिग्राजोति रा।
सू प्र

रू०भे०—मुगतिमजोत, मुगतिसाजोत

मुकत्ता—देखो 'मुक्ता' (रू भे)

मुकत्ति—देखो 'मुक्ति' (रू भे)

उ०—मगत्त ग्रधीन मुकत्ति मडार। ग्रागोचर वेद ग्रह्म्म ग्रपार।
—ह र

मुक्दम—देखो 'मुकद्दम' रू (भे.)

उ०—सासण जूना सोय, दत मुकदम भूपाळ दत्त। करै न खेचल कोय, जग पाळग 'जमराज' उत।—सू प्र

मुकदमेबाज-स०पु० [ग्र०+फा०] जो प्राय मुकदमे लडा करता हो। किसी न किसी मुकदमे मे लगा रहने वाला व्यक्ति।

मुकदमेबाजी-स०स्त्री०[ग्र० + फा०] मुकदमें लडने की क्रिया या भाव।

मुकदमो-स०पु० [ग्र० मुकद्दम] १ किन्हीं दो या दो से ग्रधिक व्यक्तियो के बीच खडा होने वाला विवादास्पद विषय या झगडा जिसे न्यायालय मे निर्णयार्थ प्रस्तुत किया जाता है, ग्रभियोग, दावा, नालिश।

२ कोई विषय या मामला।

४ एक प्रकार का कर। (प्राचीन)

रू०भे०—मुकद्दमो,

मुकद्दम-वि० [ग्र०] १ प्रधान, मुख्य।

२ विशेष, खास, महत्वपूर्ण।

३ ग्रावश्यक, जरूरी।

स०पु०—१ गाव का मुखिया।

२ ग्रग्रभाग।

मुकद्दमो—देखो 'मुकदमो' (रू भे)

मुकद्दर-स०पु० [ग्र०] १ भाग्य, तकदीर, किस्मत

२ ग्रदृष्ट।

३ लुप्त शब्द।

वि०—१ मलिन, मैला, गदा।

२ ग्रप्रसन्न, नाराज, नाखुश।

३ दुखी, चिन्तित, परेशान।

मुकन-स०पु०—शत्रु, दुश्मन।

मुकनो-स०पु०—१ पर्दा नशीन स्त्रियो के ग्रोढने का सफेद, बुर्का।

उ०—दोई घोडा विलाण करायो। घणा जडावरा हलका मोना मांहै जडिया लीधा। मुकनो चावडी नै पहिरायो।

२ बिना दात का हाथी।

उ०—ग्रटळराज री टीको कीनो। मुकनो मो हाथी धूजी ने चढवा दीनो।—लो गी

३ बिना मूछ वाला व्यक्ति।

रू०भे०—मकनउ, मकनो, मकुनो, मुकुनो, मुक्कनो,

मुकनोदुरद मुकनोदुरत, मुकनोहाथी-स०पु०—वह हाथी जिसके दात न हो ग्रथवा बहुत छोटे छोटे हो।

उ०—ग्राउवा री सूरजपोळ मुकनोहाथी घूमे ग्रो। लो गी

मुकम्मल-वि० [ग्र०] १ जो सब तरह से तैयार हो, जिसमे कोई कमी न हो।

२ जो सर्वांग पूर्ण हो।

३ पूर्ण, समाप्त, खतम।

मुकरद—देखो 'मकरद' (रू भे)

मुकर-वि० [ग्र०मुकर्रर] १ जो तय हो चुका है, निश्चित नियत, तय।

उ०—मुसळमांन कहै-सीया रै मुकर दोलत होय, सुग्री फते नसीब होय।—वां दा ख्यात

२ नियुक्त, तैनात।

उ०—जनाना मैल मांहे करायां १६६८ रा, तैरो प्रवद पातसाई तौर वांदियो ने ८ सिरायत मुकर किया।

३ यकीनी, विश्वस्त।

उ०—गांवा महरां गोलणा, रहै हुवा रजपूत। लखणा हू लखि लीजिये, मुकर घणा रा मूत।—ऊ का

क्रि० वि०—१ दुवारा, फिर से, पुन ।
२ देखो 'मुकुर' (रू भे) (अ मा)
उ०—१ मुकर ठगाई मारवा पाई रसिया पीव । इम तरसाइ आयतो, जी जी वाइ रा जीव ।—पर्ना
उ०—२ सतगुरु मुकर दिखाया घटका नाचूगी देदे चुटकी ।
—मीरां

मुकरई–अव्य०—एक मुश्त ।
उ०—स्रीसिरकार मे ' भरै है। मुकरई रुपीया ठेरै है । नै गाव विना पटै खावै है ।—नैणसी
रू० भे०—मूकरई

मुकरणौ, मुकरबौ–क्रि० स०—१ एक बार किये गये वादे या समझौते से वदल जाना, अपनी वात से फिर जाना ।
२ इनकार करना, मना करना, नट जाना ।
उ०—अठीनै खाड वठीनै कूवौ । रामलै रा सासरै वाळा गै'णा देवणसू मुकर ग्या ।—वरसगाठ
३ छोडना, मुक्त करना ।
मुकरणहार, हारौ (हारी), मुकरणियौ—वि० ।
मुकरिग्रोडौ, मुकरियोडौ, मुकरयोडौ—भू० का०कृ० ।
मुकरीजणौ, मुकरीजबौ—कर्म वा० ।

मुकरर–वि० [अ० मुकर्रर] १ निश्चित
उ०—जन ना मै'ल मांहे कराया १६६८ रा तैरो प्रबद पातसाई तौर वादियो ने ८ सिरायत मुकरर कीया ।
२ नियुक्त तैनात ।
क्रि० वि०—दुवारा, दूसरी वार, पुन फिर से
रू०भे०—मुकरिर

मुकरांण–देखो मकराणौ' (रू भे)
उ०—दीठो सगळउ दक्षण देस, चतुर नारि तनि चचळ वेस । माळव मेंद काबिल मुकरांण, कासमीर, हुरभुज खुरसांण ।
—हो मा

मुकरांणी—देखो 'मकराणी' (रू भे)
रू० भे०—मुकरराणी,

मुकरियोडौ–भू० का० कृ०—१ वादे या समझोते से वदला हुआ, अपनी बात से फिरा हुआ २ इनकार किया हुआ, मना किया हुआ, नटा हुआ ३ छोडा हुआ, मुक्त किया हुआ ।
(स्त्री० मुकरियोडी)

मुकरिर—देखो 'मुकरर' (रू भे)
उ०—मूझ बदगी प्रभू री विध आग्या सहित त्याग भु डी बांता री मुकरिर छै ।—नी प्र

मुकळाई मुकळायत–स० स्त्री०—१ किसी प्रकार की सीमा से अधिक होने की दशा आधिक्य ।
उ०—पण इण वात री श्री सैनाण है, जो इणा रै डेरै खरची री मुकळाई देखी तौ जाणज्यो मिळिया ।—द दा
२ गु जाईश ।
उ०—पण थारै पाखती किस्ता भवारा वणण री मुकळाई है, पै'ला इण वात रौ ग्यान तो सावळ करल्यो ।—फुलवाडी
३ छूट ।

मुकळावणौ, मुकळावबौ–क्रि० स० [प्रा० मोक्कलई] १ विदा करना, भेजना ।
उ०—१ कर जोडि नरपति कहई । राजामती मुकलावउ राय ।
वी. दे
उ०—२ अह दैवह वसि तेवि पच ए पडव वणि चलिय । हृथिणउरि जाएवि मुकलावइ निय माय पीय ।—सालिभद्र सूरि
२ दूर करना, अलग करना ।
३ छोडना, मुक्त करना ।

मुकळावियोडौ–भू० का० कृ०—१ विदा किया हुआ, भेजा हुआ २ दूर किया हुआ, अलग किया हुआ. ३ छोडा हुआ, मुक्त किया हुआ ।
(स्त्री० मुकळावियोडी)

मुकलावौ–स०पु०—शादी के वाद दुल्हन को ससुराल लेजाने की रस्म, गौना, द्विरागमन ।
उ०—१ दीवाणजी नै लखायो के मुकलावा री वात सुण उणानै थोडी लाज आई । कदास इण वास्तै ई तुरत जवाब नीं दिरीजियौ । थोडी ताळ ढबनै सकती बोली–आज ई तो मुकलावो लेवण सारू आया । इण सारू ई तो अधराती वोलवा बोली ।
—फुलवाडी
उ०—२ भरमल नू आसा छै, कि हीं तरह मुकलावो कर इणनू विदा करो ।—कुवरसी सांखला री वारता
उ०—३ पछै मुकलावो दायजो ले हाल स्यू, तहां राजा विक्रमादित्य नू सीख दी छै ।—पचदडी री वारता
उ०—४ डूगर ऊपर डूगरी, डूंगर ऊपर कैर । कर मुकलावो छोड ग्यो तेरो मेरो कद को बैर ।—लो गी

मुकांण–स०पु० [स० मुखकथानिका, मुखविकरणन् प्रा०मुहकहाणिआ] मृतक के पीछे उनके घर वालो के पास सवेदना प्रगट करने के लिये जाने की क्रिया या भाव ।
रू०भे०—मुहकाण, मुखांण मुहकाण, मुहकाणि,

मुकांन—१ देखो 'मकांन' (रू भे)
२ देखो 'मुकाम' (रू भे)

मुकांम—स०पु० [अ०मुकाम] १ निवास स्थान, घर ।
उ०—१ कोड प्रकारां खून कर, मूकै नहीं मुकांम । घेरा सू पोरस घणो केहर केरा कांम ।—बां दा
ठहरने का स्थान, डेरा, पडाव ।
उ०—१ हुई कटक सब हाजरी मथुरा नयर मुकांम । सब कुसुभ केसर वसण तुलै वराती ताम ।—व भा
उ०—२ ग्राम वडघा १ कुमारती २ रै बीच मुकांम हुवो । अर रात्रि रे आगम तिकां रै प्रमाद राखण रो कुकाम हुवो ।
—व.भा
उ०—३ हुकम मिळतां ई केई सिकारी वदूका तांणियोडा सिघ री होकारां सामी दौडिया । सता रै मुकांम जायनै देख्यो तो सिघ तो नींवडा सू बंधियोडो ऊभो मार होकारा करै है ।—फुलवाडी

३ यात्रा के बीच लिया जाने वाला विश्राम, ठहराव, पड़ाव, टिकाव ।

उ०—१ दिल्ली गयो कूच मन दीधो । किणही ठोड मुकाम न कीधो ।—रा रू

उ०—२ दुहु दळ हाळीहळ सवळ, दुहु दळ घुरे दमाम । दमगळ माती दुहुदळा दुहु वे कोम मुकाम ।—गु रू ब

३ आवास, विश्राम ।

उ०—१ रांम राम रसना लीया, मास दोय विसरांम । हरीया हिरदै कठ मैं, सागर वरस मुकाम ।

—स्री हरिरामदासजी महाराज

उ०—२ तर्क लपक चोटा तरफ, जी नहि चहै जुखांम । जाण करै 'पातल' जिसा, मरणा धकै मुकाम ।—जुगतीदान देथो ।

४ जगह, स्थान ।

उ० देही मीतरि देव हमारे, चेतन चोथे धाम का । वाके आमि पामि रहु लागा, महरम ताहि मुकाम का ।

—स्री हरिरामदासजी महाराज

५ कब्रिस्तान ।

६ अवसर, मौका ।

७ विश्नोइयो के गुरु जाभेजी का मन्दिर स्थल, जहा प्रतिवर्ष मेला लगता है ।

रू०भे०—मकाम, मुकांन, मुकीम, मुक्कांम,

मुकांमलो—देखो 'मुकाबलो' (रू भे)

उ०—सूरिज पीलै पान सरिखौ निजर आवै छै मुरचा रा मुकामला महाया छै । आणी मेळ हुआे छै ।—रा स. स.

मुकाणो, मुकावो—देखो 'मूकाणो, मूकावो' (रू. भे)

मुकातगीर—वि०—मुकाता की रकम भरने वाला ।

उ०—थैं हाथ मारी आपा किहीरा चाकर नहीं मुकातगीर छा ।

—गोड गोपाळदास री वारता

मुकातर—स० पु०—मोक्ष, मुक्ति ।

उ०—थू तो निपट सादगी सूं रैवण वाळो जीवण वितावै । थनै सुखी देखूं तो म्हैं मरिया मुकातर पावू ।—फुलवाडी

मुकाती—स० स्त्री०—१ मुकाता नामक भूमि कर से प्राप्त होने वाली रकम ।—नैणसी

२ मुकाता पर भूमि लेकर जोतने वाला किसान आदि ।

उ०—निवळा पडिया, तरै घोधारी ठाकुराई माहे मुकाती थका रहैता ।—नैणसी

मुकातो—स० पु०—एक प्रकार का कर, जो जागीरदार खेत जोतने वाले किसान से एक निश्चित रकम के रूप मे लेता है, भूमि-कर ।

उ०—१ तठा पछै रांणा रा हुकम सू सीसोदियो जोध सकतावत मोरवण, फराडियो, कुहळरी सादडी, जीहरण रा गाव किंतराहक मुकाते लिया ।—नैणसी

उ०—२ स्याळ नेठाव सू लूकी नै समझावतो कैवण लागो—म्हैं तो खुद ई लुका-छिपी सू काठो आती आयगो । खड खावा जीव तो सोरका मे रैवै । कायो होयनै एक खेत रो मुकातो इज कराय लियो । रिपिया तो घणा भरणा पडिया,पण बात सगळी फायदा री व्हैगी ।—फुळवाडी

उ०—३ सो एक जायगा म्हा कन्हा मुकातै कराये लेवो उपरां कर साख स्याळू आई छै सो लोगां कन्है वहावो ।

—गोड गोपाळदास री वारता

मुकाबलो—स०पु० [अ०] १ साक्षात्कार, आमना सामना,प्रत्यक्ष मिलन ।

२ समानता, बराबरी, तुल्यता ।

उ०—१ राजाजी एक दीवाण रै मूहा सांम्ही देखनै कैवण लागा-लोग समझैला के म्हैं फगत प्रीत करणी ई जाणू, न्याव करणो जाणू ई कोनी । जाणू सब हू, पण वेळा कठै । कोई राजा न्याव करणा मे म्हारो मुकाबलो कर सकै भलां ।—फुलवाडी

उ०—२ पछै तीनू लोका मे म्हारो कुण मुकाबलो कर सकैला अवै थनै ठा' पडी के माया रा जोर सू काईं वाता व्है सकै ।

—फुलवाडी

३ लडाई या कुश्ती मे होने वाली भिड त,टक्कर, मुठभेड सामना ।

उ०—१ म्हैं फौज रा नाकुछ सिपाई उण कळजुगी अवतार सत तीडाराव रो कीकर मुकाबलो कर सकता ?

उ०—२ इतरै मे दिन ऊगणै नू आयो सो मुकाबलो हुवो, तीर गोळी चाली ।—सूरे खींवे काधळोत री वात

४ प्रतियोगिता मे आने की क्रिया या भाव, कम्पीटीशन ।

५ तुलना, जोड ।

उ०—नाजाइज लगान अर कर वसूल करणा मे उण सू किणी रो मुकाबलो नी हो ।—फुलवाडी

६ असल व नकल लेख का मीलान ।

७ विरोध ।

रू० भे०—मुकामलो, मुकाविलो, मुकालबो, मुकालवो,

मुकाबिल—क्रि० वि०—१ सम्मुख, सामने ।

२ तुलना मे, जोड मे ।

३ विरोध मे ।

वि०—१ प्रतिद्वन्दी ।

२ शत्रु, विरोधी ।

मुकाविलो—देखो 'मुकाबलो' (रू भे)

मुकायोडो—देखो 'मूकायोडो' (रू भे)

(स्त्री० मुकायोडी)

मुकालबो, मुकालवो—देखो 'मुकाबलो' (रू भे)

उ०—१ गठोड पठांण के जग आगू सैं लेखा जिमी बखत मुकालबा हुवा ।—सू प्र

उ०—२ तद मन्रसाळजी आघीक फौज लेय जादूराय री फौज

सू मुकालवो कियो सू मोरचा वैठा गोळिया री राड हुवण लागी ।
—द दा

उ०—३ लाखोजी चढ़िया । कटक मुकालणै आयो ।—नैणसी

मुकावणो, मुकावबो—देखो 'मूकाणो, मूकावो' (रू भे)

उ०—१ सगलां नै सला सूत देवणियौ अवभण्यौ सपूत, सोचै-समझै अर न्याव तपास, झगडा झाटा रा टटा मुकाणै ।
—दसदोख

उ०—२ सुग्रीव तणौ दुख मांग्यो सह । मुकावो वाली जरासघ मह ।—ह र

मुकावणहार, हारो (हारी), मुकावणियो—वि० ।

मुकाविओडो, मुकावियोडो, मुकाव्योडो—भू० का० कृ० ।

मुकावीजणो, मुकावीजवो—कर्म वा० ।

मुकावियोडो—देखो 'मूकायोडो' (रू. भे)

(स्त्री० मुकावियोड़ी)

मुकियोडो—देखो 'मूकियोडो' (रू भे)

(स्त्री० मुकियोडी)

मुकीम-वि० [अ०] जो थोडे समय के लिये कहीं ठहरा हुआ हो, अस्थायी निवासी ।

पु०—तरकारियों आदि का थोक व्यापारी ।

उ०—बाजार रे अघवीच गया व्योपारी नै मोदी खानै सराफै मुकीमां री दुकाना कन्है गया ।—गौड गोपाळदास री वारता

मुकुद—स० पु० [स०] १ ईश्वर, परमात्मा, भगवान ।

उ०—मुकुद वसै मन ज्यारै माय । सदा सुख वासर रैण विहाय ।
—ह र

२ विष्णु का नामान्तर ।

उ०—१ अर नीच क्रव्याद रा कुळ नू दुहिता देण री किण मूढ कही छै । जिण रीति मुकुद रा मदिर नू विहाय खेत्रपाळ पूजण री स्रद्धा किसो कापुरुष चित धरै ।—व भा

उ०—२ नमो मछ स्रग-मडाण मुकुद । नमो कळि रास दइत-निकद ।—ह र

३ श्री कृष्ण ।

४ नव निधियो मे से एक (पौराणिक)

५ एक प्रकार का रत्न ।

६ पारा, पारद ।

७ सफेद कनेर ।

८ ढोल विशेष ।

९ मुक्ति देने वाला ।

१० एक राजा । (प्राचीन)

रू० भे०—मकुद, मुकद, मुकुदि ।

मुकुदक-सं० पु० [स०] १ व्याज ।

२ साठीधान ।

रू० भे०—मुकदक,

मुकुदि—देखो 'मुकुद' (रू भे)

उ०—राम लक्ष्मण मही दुखि पाड्या,पाच पाडव विदेसि भमाड्या । डूब नइ घरि जल वहिउ हरचदिइ, भालडी मरण लाघ मुकुदि-ई ।—सालिसूरि

मुकुट-स० पु० [स०] १ प्राचीन समय मे प्राय राजाओ के शिर पर धारण किया जने वाला तथा वर्तमान देवी-देवताओ की मूर्तियो पर बांधा जाने वाला एक शिरो-भूषण, ताज, किरीट ।

उ०—१ राजा सयमेव आस्थान सभा वइसइ, ऊपरि मेघाडबर छत्र, मस्तकि मुकुट, कांनि कुडल, हृदय मोती तणउ हार ।
—व स

उ०—२ मूछ नाक सिर रो मुकुट, ससतर साम सनाह । सावत लायो समर सू, कै नह लायो नाह ।—वा दा

२ किलगी ।

३ शिखर, शृग ।

४ एक क्षत्रिय वश । (प्राचीन)

वि०—सर्वोत्तम, श्रेष्ठ ।

रू० भे०—मकुट, मुकट, मुकटि मुकुटि, मुकुटी, मुकुट्ट, मुगट,मुगट्ट,

अल्पा०—मुकटो मुगटियो मुगटो,

मुकुटवध मुकुटबद्ध-स० पु०—१ सर्व श्रेष्ठ राजा, राजाओ मे श्रेष्ठ ।

उ०—वीर सेन प्रमुख एक वीस सहस्त्र वीर, उग्रसेन प्रमुख सोल सहस मुकुटबद्ध राजा, महसेन प्रमुख छपन्न सहस बलवत ।—व स

२ सन्यासी ।

रू० भे०—मुकटवध, मुगटवध,

मुकुटमण, मुकुटमणि-वि०—सवश्रेष्ठ, उत्तम ।

उ०—राम वरण जुग रूप मे, सह वरणा सिरताज । रहै मुकुट मण राज, आखर अवरा ऊपरै ।—र. रू

स० स्त्री०—मुकुट मे लगने वाली मणि ।

रू०भे०—मुकटमणि, मुकटमिण, मुगटमण,

मुकुटसप्तमी-स०स्त्री०—जैनियो का व्रत विशेष ।

उ०—जिन शासन प्रभावना, चतुरथ सस्ट अस्टम दसम अरद्ध मास क्षपण, ग्यांनपचमी, मुकुटसप्तमी, माणिक्य प्रस्तारिका, निक्रमणतप वरद्धमानतप इद्रियजय ।—व म

मुकुटि, मुकुटी-वि०—१ जो मुकुट धारण किये हुए हो ।

२ देखो 'मुकुट' (रू भे)

मुकुटेस्वर-स०पु० [स०मुकुटेश्वर] १ एक शिव लिग ।

२ एक तीर्थ विशेष ।

मुकुट्ट—देखो 'मुकुट' (रू भे)

उ०—नमो लख कद्रप कोटि लावन्न, नमो हरि मारण रूप मदन्न । वदन्न उलासित नेत्र विसाळ, मुकुट्ट किरीट अखै गळ माळ ।
—ह र

मुकुनो—देखो 'मुकनो' (रू भे)

मुकुर-स०पु० [स०] १ दर्पण, शीशा, आईना, काच ।

उ०—मन, मोती, चख, मेर, पाको घट, मूगो, मुकुर । फूटा एता

फेर, मेळघा मिळै न, मोतिया।—रायसिंह सांदू

२ अविकसित फूल, कली।

४ बकुल वृक्ष, मौलसिरी।

४ वेर।

५ कुम्हार के चाक का डंडा।

रू०भे०—मकुर, मुकर,

मुकुळ—स०पु० [स० मुकुल] १ शरीर, देह।

२ जीवात्मा, आत्मा।

३ पृथ्वी।

४ कली।

५ जमाल गोटा।

६ गुग्गुल।

मुकुळित—वि० [स० मुकुलित] १ अध मूंदा, अध खिला।

२ कलियो से युक्त (वृक्ष)

३ खिला हुआ।

४ शोभायमान, शोभित।

उ०—सयोगिनी को वेस देख्यउ, तव उवेस्यउ कत। सिंगार सोभत सहज अगई, महल दीप दीपत। उनमत पीवर अति घन स्तन, मध्य मुकुलित माल, मखी मास काती दहत छाती, माल तो भई भाल।—वि कु.

मुकेस, मुक्स—स०पु० [अ०मुक्कैश] १ सोने-चांदी के चौडे तार।

२ उक्त तारो का बना कपड़ा, बादला।

उ०—सजत के चिकन्न साज, सुदरां ससोभरा। करंत के मुकेस धांम, भार भार चोभरा।—सू प्र

मुक्क—१ देखो 'मुक्त' (रू भे)

२ देखो 'मूक' (रू भे)

३ देखो 'मुख' (रू भे)

मुक्कणो, मुक्कबो—देखो 'मूकणो, मूकबो' (रू भे)

उ० १ दहलै दिग्गज दिसा मेर मरजादा मुक्किय। अदळ-बदळ जळ उदध, चढि मिध आसन चुक्किय।—र रू

उ०—२ दुल्लह राउ राठोड, दखण धणा काम मैमती। कारण पांण ग्रहणो, मांम्हे ले मुक्कियो वांण।—गु रू बं

मुक्कणहार, हारो (हारी), मुक्कणियो—वि०।

मुक्किओडो, मुक्कियोडो, मुक्क्योडो—भू०का०कृ०।

मुक्कीजणो, मुक्कीजबो—कर्म वा०।

मुक्कताभाळ—देखो 'मुक्ताभाळ' (रू भे)

उ०—सोमुह सर्व कहि कसं तांण, भड पतयक मौसम करण द्रोण। केसर तिलक भाळीभळेय, मुक्कताभाळ सोहै गळेय।

—गु रू व

मुक्कनो—देखो 'मुकनो' (रू भे)

उ०—पुत्रिपूत चढि हुरम तुरंगे। मायति वसन मुक्कना अगे।

रा रू

मुक्करांणी—देखो 'मकरांणी' (रू भे)

उ०—केवी केची मुक्करांणी, खेत जाया खुरसांणी। सामद्री वेग मैं सर, पेलियै प्रवत्त पर।—गु रू व

मुक्कळा—स०पु०—चौहान वश की एक शाखा।

मुक्कांम—देखो 'मुकांम' (रू भे)

उ०—जदि नजीक जोधाण, सर्फ मुक्कांम सकाजा। अग केसर वहो अतर, मई डबर महाराजा।—सू प्र

मुक्कियोडो—देखो 'मूकियोडो' (रू भे)

(स्त्री०मुक्कियोडी)

मुक्की—स० स्त्री०—१ हाथ की चारो अगुलियां व अगुण्ठ को हथेली पर एकत्र करने की दशा, अवस्था या भाव, बाधी हुई मुट्ठी।

२ उक्त प्रकार बधे हुए हाथ से किया जाने वाला प्रहार।

रू०भे०—मूकी, मूक्की, मूकि, मूकी, मूक्की।

मुक्केबाज—वि०—१ जो मुक्का मारने मे दक्ष हो।

२ जो मुक्का मारकर लडता हो।

मुक्केबाजी—स०स्त्री०—१ मुक्कों का आघात करने की क्रिया।

२ खेल कूद में एक प्रतियोगिता जिसमें परस्पर मुक्के मार पराजित किया जाता है। (बॉक्सिंग)

मुक्को—स० पु०—हाथ की पाचो अगुलियो को समेट कर बनाया हुआ रूप, घूसा।

उ०—हाथ जिका होय सो तरवार सू तुरत काम करै तरवार नही भी जे होय तरे मुक्का सेती मार भजावै।—नी प्र

रू०भे०—मूको, मूक्को, मूक्को।

मुक्ख—१ देखो 'मुख' (रू भे)

उ०—१ मुरार जिकाह वसै तू मुक्ख। समार समद तिरै ते सुक्ख।

—ह र

उ०—२ अहि वेल पत्र कप्पूर सुक्ख। तबोल लाल सोहन मुक्ख।

—गु रू व

२ देखो 'मुक्त' (रू भे)

मुक्खमल—देखो 'मखमल' (रू भे)

उ०—करै वाणिज्ज एक हट्ट रूप सक्कलत्त ए। सारा चौतार मुक्खमल रेसमी वसत्त ए।—गु रू व

मुक्खहलि—स०पु० [सं०मोक्ष—स्थल] वैकुण्ठ, मोक्षस्थल।

उ०—सव्वट्ठ सिद्धि तसु उप्परि, जिम तसु उप्परि मुक्खहलि। तिम सूरि जिणेसर जुगपवर, सूरहिं उप्परि इत्थ कलि।

—अभयतिलक यति

मुक्खि—१ देखो 'मुख' (रू भे)

वहै वाज लीण, भरै मुक्खि फीणं। मवै मग्ग मोण, अमूकन्न ओण।

—गु रू व

२ देखो 'मुक्ति' (रू भे)

मुक्त—वि० [स०] १ जो बधन से छूट गया हो, स्वतत्र आजाद।

२ जो सांसारिक बंधनों से अलग हो, जो सामाजिक बंधनों से अलग हो।

उ०—१ मन दे मरजीवन के मग में, जनजीवन मुक्त फिरे जग में, फरियाद हिये धरले फिर ले। बस वे जन हैं सरले विरले। —ऊ का

उ०—२ जपै जगदीस सजीवन जुक्त, महा धन जे जनजीवन मुक्त। —ऊ का

३ जो मरण जीवन से छूट कर मोक्ष पा गया हो। छूटा हुआ।

उ०—ताहरां लाखंजी राखाईत नू नजीक अणायो, माथा उपर हाथ दियो। जीव मुक्त हुवो।—नैणसी

४ जो पराधीन न हो।

५ जो त्याग दिया गया हो, फैंक दिया हो।

६ प्रदत्त।

७ गिरा हुआ।

सं०पु०—१ एक ऋषि।

२ देखो 'मुक्ति' (रू भे)

उ०—गुरु आप अग्यानी जुगत न जाणी; चेला मुक्त चहदा है। करणी रा काचा साच न साचा, वाचा वहोत वकदा है। —ऊ का.

रू०भे०—मुक्त, मुक्क, मुक्ख, मुगत, मुगत्त,

मुक्तकंठ–वि० [सं०] १ जो निर्भीक एवं स्पष्ट वक्ता हो, स्पष्टवादी।

२ जो बोलते समय सीमा को तोड़ देता हो।

३ जोर से बोलने वाला।

रू०भे०—मुगतकंठ,

मुक्तक–सं०पु० [सं०] १ ऐसी कविता जो अपने आप में पूर्ण हो, अर्थात् एक छंद में पूरा विषय या बात आ गई हो। प्रबन्ध काव्य का उल्टा जिसे उद्भट भी कहते हैं, फुटकर कविता।

२ छोटे-छोटे वाक्यों का सरल एवं सीधा गद्य।

३ छंद शास्त्र में कविता का एक भेद जिसमें गणों का बंधन नहीं रहता है।

४ प्राचीन काल का एक शस्त्र, हथियार।

रू०भे०—मुगतक,

मुक्तकर–वि० [सं] उदार, दानी।

मुक्तक्षेत्र—देखो 'मुक्तिक्षेत्र' (रू भे)

उ०—तीरथां नै रवाना होय गया था सो आगे केदारनाथ परस, विस्वधारपरस, भूठति माही कर नैपाळपरस, मुक्तक्षेत्रपरस बदरीनाथ परस अयोध्या कासी परस परागजी आय, मकर रो नाहण करि, फेर पाछा जाय कुंवर रा पिंड भरायां पछै वैजनाथजी, जगन्नाथजी परस मारकंडेय कुंड तरपण किया।—पलक दरियाव री वात

मुक्तज–सं०पु०—मोती। (हिं नां मा नां मा)

रू०भे०—मुकतज, मुगतज,

मुक्तपुरख मुक्तपुरुस–सं०पु० [सं०] १ वह व्यक्ति जिसकी आत्मा मोक्ष को प्राप्त हो चुकी हो

२ वह व्यक्ति जो किसी बंधन या प्रपंच में उलझा हुआ न हो।

मुक्तमाळ, मुक्तमाळा—देखो 'मुक्तामाळ' (रू. भे)

उ०—'अभमाळ' क्रोध देखे अताळ, महमदसाह दिये मुक्तमाळ। —वि स.

मुक्तवसन–वि० [सं०] निर्वसन, नंगा, दिगम्बर।

सं०पु०—जैन यतियों का एक भेद।

रू०भे०—मुगतवसन,

मुक्तवेणी–सं०स्त्री०—पृथ्वी, धरती। (हिं नां मा)

मुक्तहस्त—देखो 'मुक्तकर'

मुक्ता–सं०स्त्री० [सं०] १ मोती। (नां मा)

२ वेश्या, रंडी।

३ बहुत, पर्याप्त।

रू०भे०—मुक्ता, मुकति, मुकती, मुकत्ता, मुगता, मुत्ता, मूक्ता मूगता।

मुक्ताग्रहजया–सं० पु०—डिंगलगीत रचना की एक प्रणाली विशेष

रू० भे०—मुगताग्रहजथा,

मुक्ताग्रहजुगबंधजया–सं० पु०—डिंगल में गीत या छन्द रचना की एक प्रणाली।

मुक्ताचर–सं० पु० [सं०] हंस। (नां मा)

रू० भे०—मुकताचर मुगताचर,

मुक्ताचूडक–सं० पु०—एक आभूषण विशेष।

उ०—लघुचूडक मुक्ताचूडक सुवरणचूडक मोतीसरी करणी ककणी पादवेस्टक पोलरकत्रिक चतुसरक नव सरक अस्टादससरक इति आभरणाणि।—व स.

मुक्ताप्रसू–सं०पु० [सं०] सीप।

मुक्ताफळ–सं०पु० [सं० मुक्ताफल] १ मोती। (व स)

उ०—प्रवळ परोजा नीलवी, मुक्ताफळ ता मांहि। लसत हसत से लसणिया, सोभा कही न जाय।—गजउद्धार

२ कपूर।

३ एक छोटी जाति का लिसोडा।

४ लवनीफल, हरफा रेवरी।

५ नगीना, रत्न।

रू०भे०—मंकताहळ मुकताफळ, मुकताळ, मुकताहळ, मुक्ताहळ, मुगतफळ, मुगताफळ, मुगताहळ, मुताहळ, मुत्ताहळ, मुत्ताहळि, मूगताफळ, मूगताहळ,

मुक्तामक्षि–सं० पु० [सं०] हंस, मराल।

रू०भे०—मुगतामखी,

मुक्तामाळ–सं० स्त्री० [सं० मुक्ता + माला] मोतियों की माला, मोतियों का हार।

रू०भे०—मुकतमाळ, मुकतामाळ, मुक्कतामाळ, मुक्तमाळ मुक्तमाळा,

मुगतमाळ, मुगतामाळ ।

मुक्तामुक्त–स० पु०—एक शस्त्र विशेष ।

उ०—इगी पासु परसु पट्टिस सक्ति कर मुक्त यत्रमुक्त मुक्तामुक्त दुस्फोट, तरवारि अग्नि तेल लोहबद्ध लुढि एव विध आयुध विसेसी दाखा मगिया ।—व स

मुक्तालकार–स० पु०—एक आभूषण विशेष ।

उ०—तीरण महोत्सवि समय वालिका हार त्रूटते, वेणीदड छूटते नेउर फुटते, पटोला फाटते घटजुयल विणसते, अनेकि आभरणि खिसते, मुक्तालकार पडते, स्वेद बिंदु चडते, जोवा तणइ कारणि चालिउ ।—व स

मुक्तालर–स० स्त्री० [स० मुक्ता–लतिका] मोतियो की माला, हार ।

उ०—सीस फूल नथ कठसरी और, तीलक हीरन कौं मुक्तालर ।

—रमीनैराज रा गीत

मुक्तावळ, मुक्तावळि, मुक्तावळी–स० स्त्री०[स० मुक्ता–आवलि]

१ मोतियो की माला, हार । (व स)

२ डिंगल का एक गीत या छद विशेष ।

३ तपस्या, साधना ।

४ प्रायश्चित ।

रू०भे०—मुकताळ, मुकताळि, मुकतावळ, मुकतावळि, मुक्तावळी, मुगताळा मुगतावळि मुगतावळी,

मुक्ताहळ—देखो 'मुक्ताफळ' (रू भे)

उ०—दादू सहज सरोवर आतमा,हसा करैं कलोल । सुख सागर सूभर भरया, मुक्ताहळ मन मोल ।—दादूवाणी

मुक्ताहार–स० पु० [स०]मोतीयो की माला, मोतियो का हार ।

रू०भे०—मुकतहार, मुकताहार, मुत्तहार,

मुक्ति, मुक्ती–स० स्त्री० [स०] १ मुक्त करने की क्रिया, भाव या अवस्था ।

२ किसी प्रकार के बधन से छुटकारा, आजादी, स्वतन्त्रता ।

३ जन्म मरण से छुटकारा, मोक्ष, निर्वाण, परमपद ।

उ०—१ कोटन ऋषी सीस के कारन, परम मुक्ति जिन पाई । ऊमरदान अब सीस आराधत, पर हर नार पराई ।—ऊ का

उ०—२ ऋद्धि न मांगू सिद्धि न मागूं मुक्ति न मागू वडाइ । साधु सगत मागत हू देवा,कृपा कर बगसाई ।—स्रीसुखरामजी महाराज

उ०—३ मुक्ति को गहणो पहरस्या काई पहरयो है हरि गुरु परताप ।—मीरां

उ०—४ तिवारे विचारयो मायापणो दोहरो घणो । वले विचारयो इसो दोहरो जद मुक्ति मिलै ।—भि द्र

उ०—५ स्वामी सर्जीवन मायके, स्वामी वेद रचीजेए । नीति नेम बताय के, मुक्ती पद दीजेए ।—स्रीसुखरामजी महाराज

वि० वि०—इसमे ऐसा माना जाता है कि जीवात्मा विश्वात्मा मे जाकर मिल जाता है । उसे वापस जन्म लेने की आवश्यकता नही रहती ।

४ दैहिक या भौतिक कष्टो से छुटकारा,मृत्यु, मौत ।

५ किसी प्रकार के बोझ या उत्तरदायित्व से छुटकारा ।

६ त्याग ।

७ फेंकने की क्रिया या भाव ।

रू०भे०—मुकत, मुकति, मुकती, मुक्ती, मुक्ति, मुक्त मुक्ती, मुक्ती मुगत, मुगति, मुगती मुगत्त, मुगिति, मुगोती, मुगुत, मुति, मुत्ति, मुत्ती,

मह०—मुगतो,

मुक्तिक्षेत्र–स० पु० [स०] १ काशी या वाराणसी का एक नामान्तर ।

२ कावेरी के तट पर बकुलारण्य नामक तीर्थ ।

रू०भे०—मुक्तक्षेत्र, मुगतिखेत

मुक्तिपुरी–स०स्त्री० [स०] वैकुण्ठ पुरी ।

उ०—जीवितव्य तरु आज ए फलिउ, द्वार मुक्तिपुरी आज माकलिउ ।—सालिसुरि

उ०—२ स्री धरमसी आतम अप दाता । देत सदाना मुक्तिपुरी ।

—ध व ग्र

रू०भे०—मुक्तीपुरी, मुगतपुरी,

मुक्तीपुरी—देखो 'मुक्तिपुरी' (रू भे)

मुक्तेस्वर–स०पु० [स०मुक्तेश्वर] एक शिव लिंग ।

रू०भे०—मुगतेसर,

मुखढि–स०पु०—एक शस्त्र विशेष ।

उ०—त्रिशूल सक्ति सर तोमर मुरवि अरद्ध मुरवि परमु पास पट्टिस दूम लागूल मुसल मुखढि मुग्दर लगुड गदा दड ।—व स

मुख–स०पु०[स०] १ प्राणियो के शरीर का वह प्रमुख अग जो आंख व नाक के नीचे होता है तथा खाने-पीने बोलने, बात करने आदि का कार्य करता है । यह ओष्ठ, दांत जीभ, तालु, स्वर-यन्त्र आदि कई अवयवो का सगठित रूप है । मुह, मुख ।

उ०—१ मुख ग्रही मोखी पूनना मारि । वहिमि वखाणे धिन विसन ।—ह ना मा

उ०—२ साचा सुख मानव तणा, जा मुख निकसै राम । जन हरिया मुख राम विन, सोई मुख बेकाम ।

—स्री हरिरामदासजी महाराज

उ०—३ मुख न बोलै पट न खोलै सांझ तैं परभात । बोलनैं जुग बीतन लागो, काहे की कुसलात ।—मीरा

उ०—४ रग लक्षण रजपूत बात मुख झूठ न बोलै । रग लक्षण रजपूत काछ परनार न खोले ।—ऊ का

उ०—५ अग छावडइ जिसा लोचन मुख । तीखा जिसा खुरगी तीर ।—महादेव पारवती री वेलि

उ०—६ राजकवर फेर तपसी रै पगा मे माथो निवाय नै कैवण लागा–आपरा स्रीमुख स् आप यो काई फरमावो ।

—फुलवाडी

पर्या०—अखण, अस्टा, आंनन, आस, घण, घनोत्तम, तुड, दताळय,

बोलण, मुह, मूर्धों, रसनाग्रह, लयन, वकक्र, वकतर, वक्र,वदन।

२ शिर का अग्रभाग, चेहरा, आकृति, शक्ल, सूरत।

उ०—१ मुख वांनैत महीपती, करन अनै चद्रभाण। कियो सक्रोधा सांम कज, या जोधां मारांण।—रा रू

उ०—२ भगति करेसी रांम की, साच वचन मन सूर। चोट सहै सत सबदी की, हरीया जा मुख नूर।

—स्री हरिरांमदासजी महाराज

उ०—३ दिलीवै सोच 'गजसाह' मुख देखिजै। दिलीवै हरख तोई 'गजण' दीखै।—गु रू ब

उ०—४ मुख देखन के अवधूत मती, जन पूजत जागत काछ जती।

—ऊ का

३ दरवाजा, दरवाजे के रूप में काम आने वाला विवर, द्वार, मुहना।

४ बोरी, थैली, बर्तन आदि का खुला भाग, मुह।

५ ऊपरि भाग, सिरा, छोर।

६ नोक।

७ अगला हिस्सा, अग्रभाग, सामना।

उ०—मछराळ आफाळ चढै अणियां मुख, वीफर माडि भडाळ वटा पडताळ घवुक्क घडा बिच पाकहि, जीह वकै मारि-मारि जुटा।—मा वचनिका

८ गर्दन के ऊपर का या अगला भाग।

९ चेहरे का हाव-भाव, भावना, प्रकृति।

उ०—सुण साता मुख सोय, चुण बाता चरचा चलै। घुण लकडी तन घोय, जिण री कुण 'जाणे 'जसा'।—ऊ का

१० पक्षी की चोच।

वि० [स० मुख्य] १ मुखिया प्रधान, मुख्य अगुवा।

उ०—१ मुख इतां घणी छळ मारवा, मुहर अणी वध मेळिया। जुध करण जैत-नांमो जरू भडा अमांमा भेळिया।—रा रू

उ०—२ मुडण न्हावण स्राद्ध मुख, साधै पूरब सूर। बखसे धन कीधा बळै दुजराजा दुख दूर।—व भा

उ०—१ पहली मुखे चमरबध पडिया, गौडै गज-बधा ओगाढ। जवन तणी दरगा जोधपुरो, जडिया सह हैकण जम-दाढ।

—गु रू ब

क्रि० वि० [स० मुख] सामने, सम्मुख, आगे।

उ०—मुख ऊपर मिठियास,घट माहि खोटा घडै। इमडा सू इकळास राखीजै नह राजिया।—किरपाराम

रू० भे०—माह, मू,' मुह, मुहि, मुही, मुक्क मुक्ख, मुक्खि मुखा, मुखि, मुखिइ मुखो, मुख्ख, मुह, मुहि, मुही, मू, मूह, मूख, मूखी, मूह,

अल्पा०—मुखडो,

मह०—मूहड,

मुखअग्र–स० पु० [मुखाग्र] १ अधर, ओष्ठ, होठ। (ह ना मा)

२ अगला भाग, सामने का हिस्सा।

३ देखो 'मुखाग्र' (रू. भे)

मुखक—देखो 'मूसक' (रू भे) (अ मा)

मुखखुर–सं०पु० [स० मुख +खुर] दांत।

मुखगधक–स० पु० [स० मुखगधक] प्याज।

मुखग्र—देखो 'मुखाग्र' (रू. भे)

मुखडो—देखो 'मुख' (अल्पा, रू. भे)

उ०—१ रांम राय जिण वन वसै हो, सो वन धन धन जांण। इक मुखडो प्रभु-गुण घणा हो,किण विध करू वखाण।—मी रा

उ०—२ आख्या नही चौखै म्हारी जच्चा मुखडै नही बोलै जी।

लो गी

उ०—३ बिडरी हिरणीसी फिरणी बिजकाती। मुखडो मुसकाती जोरो जतळाती।—ऊ का

उ०—४ मुखडो कुम्हळायो भोजन विन भारी। पय पय करतोही पोढी पिय प्यारी।—ऊ का

मुखचग–स० पु०—एक प्रकार का वाद्य।

मुखचपळ–वि० [स० मुखचपल] १ वाचाल, बकवादी।

२ गाली बकने वाला, कटु-वक्ता।

३ बढ़कर बोलने वाला, लबार।

मुखचपळता–स० स्त्री०—१ मुखचपल होने की दशा, अवस्था या भाव।

२ कटु भाषण।

मुखचपेटिका–स० स्त्री० [स०] थप्पड।

मुखचबु–सं० पु०—चार मुख वाला, ब्रह्मा, चतुरानन।

मुखचीरी–स० स्त्री० [स०] जिव्हा, जीभ।

मुखछ्रवा–स० स्त्री०—सुपारी।

मुखज–स० पू० [स] ब्राह्मण।

मुखजबांनी–वि०—कठस्थ।

मुखतार–वि० [अ० मुख्तार] १ जिसको किसी विशेष अवसर पर कुछ अधिकार देकर प्रतिनिधि बनाया गया हो प्रतिनिधि एजेण्ट।

२ स्वतन्त्र, आजाद स्वच्छन्द।

स० पु०—१ किसी जागीर का व्यवस्थापक।

उ०—साहजी सय्यद पटैल रै मुखतार हो जिण रो बेटो मोहमद मीरखां दिली फिरगी री सिरकार सू पाच सो रुपिया महीनां रा महीनै पावै —वां दा ख्यात

२ हल्के दर्जे का वकील छोटी अदालतो का वकील।

रू०भे०—मुखतियार, मुखत्यार, मुगतार, मुगत्यार,

मुखतारग्राम–स० पु० [अ० मुख्तार-ग्राम] ऐसा प्रतिनिधि जिसको सभी कार्य करने के अधिकार दिये गये हों।

रू०भे०—मुगतारग्राम,

मुख्तारकार–सं०पु० [अ] वह जिसे किसी काम की देख रेख के लिये नियुक्त किया गया हो।
 रू. भे —मुगतारकार,
मुखतारकारी–सं०स्त्री० [अ] 'मुख्तार' का काम या पद।
 रू भे —मुगतारकारी,
मुख़्तारखास–स०पु० [अ] विशेष प्रतिनिधि।
 रू भे —मुगतारखास,
मुखतारनामो–स०पु० [अ मुखतार–नाम] १ वैध रूप से मुख्तार नियुक्त करने का पत्र।
 २ ऐसा पत्र जिसके द्वारा किसी को प्रतिनिधि बनाते हुए कुछ अधिकार दिये गये हो।
 रू भे —मुगतार नामो,
मुखतारी–स०स्त्री० [अ मुखतारी] १ मुखतार होने की दशा, अवस्था या भाव।
 २ मुख्तार का पद या कार्य।
 ३ प्रतिनिधित्व।
 ४ एक प्रकार की कानूनी परीक्षा, जिसे छोटी अदालतो में मुकदमा लड़ने के अधिकार प्राप्त करने के लिये, पास करना पडता है।
 रू०भे०—मुख्त्यारी, मुगतारी, मुगत्यारी,
मुखतियार—देखो 'मुख्तार' (रू भे.)
मुखती—देखो 'मुक्ति' (रू भे)
मुखत्यार—देखो 'मुख्तार' (रू भे)
मुखत्यारी—देखो 'मुख्तारी' (रू भे)
 उ०—तद दरां सुरतांण भांण रै नू मालक कियौ। अरू विजौ हरराजोत परधान हुवौ। मुखत्यारी विजै री राव सुरतांण तौ नाम मात्र रयौ। —द दा
मुखदरस–स०पु०—दर्पण, शीशा, आरसी, काच। (अ मा)
मुखदीपण, मुखदीपन–स०पु० दांत, दत। (अ मा)
मुखदूसण–स०पु० [स० मुख दूषण] प्याज।
मुखपोखण–वि०— १ कड़ुवा। (२) स्वादहीन।
 ३ अप्रिय, कटु।
मुखनस, मुखन्नस–स० पु० [अ० मुखन्नस] १ हींजड़ा, नपुंसक।
 उ०—या पातसाह आलमगीर हाथी असवार कुरांन में सुरत लगाय रयो है। लारै खवासी में मुखनस बैठो मोरछल् करै है। —द दा
 २ कायर, डरपोक।
मुखपट–स० पु० [स०] १ घूघट।
 २ नकाब।
मुखपति—देखो 'मुंहपति' (रू भे)
 उ०—ओघा नै थलि मुखपति जीवा, मेरू जितरा लीध। किरिया समकित बाहिरी जीवा, एको काज न सीध।—जयवाणी
मुखपाक–स०पु०—मुख का रोग, जिससे मुंह मे छाले पड जाते हैं।
मुखपिंड–स० पु०[स० मुख्य पिंड] १ मृत व्यक्ति के उद्देश्य से उसको अंत्येष्टि क्रिया से पहले किया जाने वाला पिंड।
 २ कौर।
मुखपूरण–स०पु० [स०] कुल्ला, आचमन।
मुखप्रिय–स०पु० [स०] सतरा, नारगी।
मुखफट्ट—देखो 'मुंहफट' (रू भे)
मुखबध–स०पु [स०] भूमिका, प्रस्तावना।
मुखबधन–स०पु० [स०] १ ढक्कन।
 २ भूमिका
मुखबर—देखो 'मुखबिर' (रू भे)
मुखवास–स०पु० [स० मुख+वास] १ भोजनोपरात, मुख शुद्धि के लिये खाया जाने वाला पदार्थ।
 उ०—तिसे घड़ी दो माहे सगळो साथ जीमियो। चळू कीया पांन, लूग, मुखवास दीधा। —जगमाल मालावत री बात
 २ पान, ताम्बूल (अ.मा)
 रू०भे०—मुखवास,
मुखबिर–स०पु०[अ मुख्बिर] गुप्त रूप से समाचार देने वाला, गुप्तचर, जासूस
 रू.भे —मुखबर
मुखबिरी स०स्त्री०—१ गुप्तचरी, जासूसी।
 २ मुखबिर का पद।
मुखबिसय–स०पु०—बड़ा चमगादड़।
मुखमा–स०पु०—तोता, कीर। (अ मा)
मुखमडण, मुखमडन–स०पु०—१ पान। (अ मा)
 २ स्त्रियो की चौसठ कलाओं में से एक। (व स)
मुखमल–स०पु०—१ पुष्प, फूल। (अ मा)
 २ देखो 'मखमल' (रू भे)
 उ०—१ असलूफ रग उजास, चित महै मुखमल खास। प्रतिलूब छिब उणधार, दुति जरी छापादार।—सू प्र
 उ०—२ फसबी जरबाप मुखमल कथीपा इलाइचा नारीकुंजर प्रमुख पचरंगी वागा पहरिया।—व स
 उ०—३ मेह विना धरती तरसै, मेहड़ो हुवण दे। मोबड़िया घडाव मुखमल री मेहडो हुवण दे।—लो गी
 उ०—४ सेठांणी पाळगोटी मारघा रथ मे बैठी ही। मुखमल री वेल रै माय तावड़ा रो रेमो ई आवण री ठोड नी ही।—फुलवाड़ी
मुखमली—देखो 'मखमली' (रू भे)
 उ०—१ नगर कठियारा रै नबाब इस्दूखां री चरचा करता करता ई सगळा रईस मुखमली बिछावणां माथे सूयग्या।—फुलवाड़ी
 उ०—२ भीणा भुगा, चूनड़ी री पाग, पल्लाळो धोती, मुखमली जूती, जड़ाव रा लूंग, सोनै रा जाळिया —दसदोख
मुखमलू—देखो 'मखमल' (रू भे)

मुखमल्ल—देखो 'मखमल' (रू भे)

उ०—जगम्म पसम्म मुखमल्ल जेही। दियँ जाणि आरीस सारीस देही।—वचनिका

मुखमिट्ठ—देखो 'मुंहमीठौ' (रू भे)

उ०—काछ द्रढा कर वरसणां, मन चगा मुख मिट्ठ। रण सूरा जग वल्लभा, सो हम चाहत दिट्ठ।—ऊ का

मुखमुली—देखो 'मखमली' (रू. भे)

उ०—बिणजारी घणी ई समझाइस करी,पण बामणी एक ई वात नीं मांनी। आपरी मुखमुली रवबी सू वी बामण वास्तै निसंवार दवाई दे दी, पण इण सू वत्ती मदत सारू वो बामणी नैं राजी नी कर सक्यो।—फुलवाडी

मुखम्मल—देखो 'मखमल' (रू भे)

उ०—कळवूत रजत सोव्रन सकाज। सिकळात मुखम्मल फिरग साज।—सू प्र

मुखर—स० पु० [स०] १ प्रधान पुरुष।
२ शख। ३ नेता।
४ नूपुर। ५ काक, कौआ।
६ मुख, चेहरा।

उ०—ऊठतौ अनै पडतौ अवन, तन विपती सू तावियौ। मन दुमन थियौ फीकै मुखर, यम सूरजमल आवियौ।—पा प्र

७ शब्द।

वि०—१ बातूनी, वाचाल।
२ रुमझुम शब्द करने वाला।
३ द्युतिमान करने वाला, द्योतक, प्रकाशक।
४ कटुभाषी।
५ उपहास करने वाला, मजाकिया।
६ मुख्य, प्रधान।

मुखरातळ—स० स्त्री०—१ दुर्गा देवी।
२ मास-भक्षी पक्षी।
३ रक्तवर्ण मुख।

मुखरिका, मुखरी—स० स्त्री० [स०] लगाम, बागडोर।

मुखरित—वि० [स०] शब्दायमान। (ध्वनि)

मुखरूप—स० पु०—होठ, ओष्ठ। (अ मा)

मुखरोग—सं० पु०—मुख के अन्दर अर्थात् जीभ,दांत, मसूडो आदि में होने वाला रोग। ये प्राय ६७ रोग माने गये हैं।

मुखलांगळ—स० पु० [स० मुख लाङ्गल] सूअर, शूकर।

मुखलेप—स० पु० [स० मुखलेप] १ शोभा व सुगध के लिये मुख पर किया जाने वाला लेपन।
२ एक मुख रोग विशेष।

मुखवयंड—देखो 'वयडमुख' (रू भे)

उ०—सिहड-ध्वज मुखवयड धजसड। प्रचंड रूंड मुडमाळ परचड।—सू प्र

मुखवयळ—स०स्त्री०—मुख की शोभा, मुख की कान्ति।

मुखवाद—स० पु०—बहस, विवाद।

उ०—ठाकर अब रहिया चित मठिया,बुद सटीया करणा मुखवाद। पर उपगार न जांणै प्रांणी, सुद बुद जाणण सरमवाद।
—अज्ञात

मुखवास—देखो 'मुखवास'(रू भे)

उ०—१ तत मनसा भोजन दिव तिम तिम, जळ मुखवास अगैं कहिया जिम।—सू प्र

उ०—२ ऊपरा कपूर, पान, बीडा, सोपारी, केसरि, ताडा, लौंग, होडा, काथा, चूना सजुगम मुखवास मुहछण दीजै छै।—रा सा स.

उ०—३ ऊपर दीधा अति प्रबळ पांन लविंग मुखवास। जस लीधो जीमाइने, सहू कहै सावास।—श्रीपाल रास

उ०—४ हिवइ मुखवास दीजै छै ते केहवा वांकडी चेल सोपारीनी फाल, नीली सोपारी ते पणि केसरकपूरवासित, वली तणी तीखा ताजा लविंग जावित्री नइ जाइफल।—व स

मुखवासिणी—स०पु० [स मुखवासिनी] सरस्वती, शारदा।

मुखवीणा— स०स्त्री०—एक वाद्य विशेष।

मुखसभव—स०पु०—ब्राह्मण, द्विज।

मुखसिखसधि—स०स्त्री०—ललाट, भाल।

मुखसोस—स०पु० [स मुखशोष] मुख के सूजन का रोग विशेष।
(अमरत)

मुखस्राव—स०पु० [स०] थूक, खखार।

मुखस्री—स०स्त्री० [स० मुख श्री] मुख की शोभा, मुखकी कान्ति।

मुखांण—स०पु०—१ मोक्ष, मुक्ति।

उ०—चवता रांम मुखाण गयो चव, भव दुख काढ़ै कीध भव। लव लागा फिर राम रसण लव,रववसी इम वहै रव।—र०रू०

२ देखो 'मुकाण' (रू भे)

मुखा—देखो मुख' (रू भे)

उ०—१ हरीया कळि में आय कै, कहा करै नर कूर। आसी वरीयां अत की मुखा परैगी धूर।—स्रीहरिरामदासजी महाराज

उ०—२ हरीया माया नागनी, बैठी मुखा उबाय। तीन लोक में वस्य रही, जांह जाउ ताह खाय।
—स्रीहरिरामदासजी महाराज

मुखागन्नि—स० पु० [स० मुख अग्नि] १ दावानल।
२ यज्ञीय अग्नि।
३ दाह क्रिया की अग्नि।
४ आगिया वेताल।

मुखाग्र—वि० [सं०] जो जबानी याद हो, कंठस्थ।

क्रि० वि०—सम्मुख, सामने, आगे।

रू० भे०—मुखग्ग, मुखअग्र।

मुखाघाय—स० पु०—मुख से बजने वाला वाद्य अलगोजा आदि।

उ०—विराजै मुखाघाय तती वितती। वदै भारती राग वांणी

वखानी ।—रा रू

मुखात-वि०—मौखिक, जबानी ।

उ०—ओठी एक मारी परठ लिख मुखात समाचार कहि ताकीद घणी देय विदा कियो ।—कुंवरसी सांखला री वारता

मुखातर—देखो 'मुकातर' (रू भे)

उ०—एक वरदान फेर सेसनाग रा बेटा सू माग लेतौ तौ मरिया मुखातर पावती—म्हनै हजार जलम ग्रा इज बीनणी मिळै।

—फुलवाडी

मुखानिल-स०पु० [स०मुख-ग्रनिल] श्वास, सास ।

मुखामुख, मुखामुखि-क्रि०वि०—१ प्रत्यक्ष, प्रगट ।

उ०—१ तिणौ ही न ग्राडौ देखू तुझ, मुखामुख सेव करावौ मुझ ।—ह र

उ०—२ मुखामुखि म्यलि जु एह,रूप तणु भांगि नलाख्यांन सदेह।

२ मुह के सामने, चोडे मे ।

३ एक दूसरे के देखादेखी ।

उ०—चव मेछ मुखामुख जोस चढै । पढवेस सभा निज मत्र पढै ।

—रा रू

मुखारवद, मुखारविंद-स०पु०[स०मुख-ग्ररविंद]कमल के सदृश मुख, मुख-कमल ।

उ०—१ पदा कज उण कार नुपरां हीर री प्रभा, पोमाखा चोर री दुती ऊग्ती प्रकास । कीट चद्र कीर री मुखारवद बाळी क्रत, हामी सुधा मीर री रसमां मद हास ।—चैनजी सादु

उ०—२ संता खुद आपरे मुखारविंद सू फरमायो के ग्रो सगळो भगती रो इज परताप है —फुलवाडी

मुखालपत—देखो 'मुखालिफत' (रू भे)

मुखालिफ-वि० [ग्र०] १ विरोधी, शत्रु ।

२ प्रतिद्वन्द्वी, प्रतिपक्षी ।

मुखालिफत-स०पु०—१ विरोध, शत्रुता ।

२ प्रतिस्पर्धा

रू० भे०—मुखालपत,

मुखि—१ देखो 'मुख' (रू भे)

उ०—१ है हरि ग्रनळ सवळ विम व्यापी, नेरा वसौ हक दूरि,। जन हरिदास निजरूप न जान्यौ, ता पसुवा मुखि धूरि ।

—ह पु वा

उ०—२ ग्रसपति राय इसू मुखि वोलइ,ग्रा गढ लीजइ धुरि। पाही भेलि मेल्हीइ थांणु, तउ जईइ जालहुरि।—कां. दे प्र.

२ देखो 'मुख्य' (रू भे)

उ०—माहेमोत हरी मन मागो, मेहपती साथे खूमांणो । मुखि हरनाथ ग्रोचियां माहे, साथै सांमि धरम छळ साहै ।—रा रू

मुखियो-वि० [स०मुख्य] १ प्रधान, मुख्य, खास ।

उ०—मुखिया मन मोहण दोहण घर मेढी । गोढै ढेरी व्है खूणी मे गेढी ।—ऊ का

२ किसी समाज, ग्राम, जाति या वर्ग का नेता ।

उ०—एक दिन वो हो, डोकरी रो घणी रूघनाथजी गांव मे मुखियो वाजतो अर करतो ज्यू हूतो ।—दमदोस

३ अगुआ, अग्रगण्य ।

उ०— फरतो ऊवी वात, रहता लोही खरड्या हाथ । पर सुखिये दुखियो ए, ग्रन्यायी मे मुखियो ए ।—जयवाणी

रू० भे०—मुखीयो, मुख्यो,

मुखी-वि०—१ मुख से युक्त, मुखवाला ।

२ किसी विशिष्ट दिशा मे मुख रखने वाला ।

३ देखो मुख्य' (रू भे)

उ०—खवास कामदार मुखी होवै तिणां नु दुमाला थीरमा, मीमरु दीजै ।—नैणसी

४ देखो 'मुख' (रू भे)

मुखीयो—१ देखो मूसक' (ग्रल्पा, रू भे)

उ०—परथम कम चढ़ै मुखीयै गणपत, पचांनन रै वृखव पलांण ।

—पूरजी माढौ

२ देखो 'मुखियो' (रू भे)

मुख्ख, मुख्खि—१ देखो 'मुख' (रू भे)

उ०—मयक मुख्ख मजळी करार नेत कजळी । गरळ्ळ धारि गेहणी, सुरत्त ध्रत सोहिणी ।—मा वचनिका

२ देखो 'मुख्य' (रू. भे)

मुख्तसर-वि० [ग्र] १ सक्षिप्त ।

२ सार रूप ।

३ न्यून, थोडा ।

मुख्य-वि० [स०] १ जो सब से ऊपर हो, उच्चतम, श्रेष्ठ ।

२ प्रधान, खास, प्रमुख ।

३ महत्वपूर्ण, आवश्यक ।

४ अपने वर्ग या समुदाय मे सब से बडा हो, अगुआ, नेता ।

रू० भे०—मुखि, मुखी, मुख्ख, मुख्खि,

मुख्यता-स० स्त्री० [स०] १ मुख्य होने की अवस्था या भाव ।

२ प्रधानता, श्रेष्ठता, ।

३ विशेषता, खासियत ।

मुख्यपति-स०पु० [स० मूष्यपति-महाचोर] चूहा, मूषा ।

(ना मा)

मुख्यो—देखो 'मुखियो (रू भे)

मुगध—१ देखो 'मुग्ध' (रू भे)

२ देखो 'मुग्धा' (रू भे)

मुग-स०पु०—१ देखो 'मूग' (उ र)

२ देखो 'मग' (रू भे)

मुगउ—देखो 'मूक' (रू भे) (उ र.)

मुगट—देखो 'मुकुट' (रू भे)

उ०—१ भूप जड़ावै मुगट मझ, रोहण गिर उतपत्त। निस दीपग प्रतिबिंब रतन, प्रभा अपूरब भत्त।—बा दा.

उ०—२ नाईं बोल्यो—अन्नदाता, आपरै धारण करणा सूं तो मुगट अर नौलखा हार री छिब ई निखरगी।—फुलवाड़ी

उ०—३ भिळिया इद इतरा दखिणमुख, धासइ मुगट तिया धमसांण।—महादेव पारवती री वेलि

मुगटजथा-स० स्त्री—डिंगल-गीत-रचना का एक भेद, जिसमें वर्णनीय का वर्णन प्रमाण सहित होता है।

मुगटधर-स०पु०[स०मुकुट+धारिन्]१ मुकुट धारन करने वाला, राजा. २ देवता।

उ०—धकै क्रोध हर साह जेह वार जुध बटाधर, दुरद मद पटाधर जेम दोवै, धार खग झटा अघटा पडे छटाधर, जटाधर मुगटधर खेल जोवै।—हुकमीचन्द खिड़ियो

मुगटबंध—देखो 'मुकुटबंध' (रू, भे)

उ०—सपेख तेज जम रवि उदै, मुगटबंध वांदै समद। 'गजबंध' महीपति जोधपुर, जिम अजोधिया रामचंद।—गु रू बं.

मुगटमण, मुगटमणि—देखो 'मुकुटमणि' (रू भे)

उ०—होमाया उण होज हुतासण माहे, महि एक ऊभा मुगटमण।

—महादेव पारवतीरी वेळि

मुगटियौ—देखो 'मुकुट' (अल्पा, रू भे)

उ०—छोकरी विचाळै ई जवाब दियौ—थारा इण मुगटिया बिचै म्हारै पांडुवां री मांन घणौ वत्तौ है।—फुलवाड़ी

मुगटौ-स०पु०—१ एक प्रकार का वस्त्र विशेष।

उ०—मुलमुल नरमा दोरीआ, स्रीसाप सीसाप बास्ता अधोतरी मह्मुदी दुदांमी भयरव टसरीया मुगटा सिरणीयां कसबी जरबाप।

—व स

२ देखो 'मुकुट' (अल्पा, रू भे)

मुगट्ट—देखो 'मुकुट' (रू भे)

उ०—कवि तद बोलै 'केहरी' सकवी सूर सुभट्ट। बोध समप्पण धूहड़ां, कुळ रोहड़ां मुगट्ट।—रा रू

मुगत-स०स्त्री०—१ पृथ्वी। (ना डि को)

स०पु०—२ मोती।

३ आभूषण, अलंकार, भूषण। (अ मा)

४ देखो 'मुक्त' (रू भे)

उ०—१ इण पाप रा भार सूं जित्तौ वेगौ मुगत करौ तो म्हारौ औ बिगड़ियोड़ौ जमारौ थोड़ौ घणौ सुधरै।—फुलवाड़ी

उ०—२ जे कोई माई री लाल बांमणी री सुध लेवण नै आय जावै, उण री मोल अर सोळै बरसा री खरचौ चुकायनै इण नै आपरै साथै लेय जावै तो वा इण पाप करम सूं मुगत व्है जावै।

—फुलवाड़ी

उ०—३ सकल सुरासुर वंदित पदकज, पुण्यलता घन पाथ। समयसुंदर कहइ तेरी क्रपा तैं, होत मुगत सुख हाथ।—स कु

उ०—४ काळिंदर दूध रै उनमान धवळ हंसी हसतौ बोल्यौ—आ बात अगै ई सोच करै जैडी नी है। इणसूं म्हैं सराप मुगत व्है जाउला।—फुलवाड़ी

५ देखो 'मुक्ति' (रू भे)

उ०—१ सुणनैं कथा मुगत हरि दीनी, चाल्या विकळ अगाऊ जी,

—मी रां

उ०—२ भैरव देव अदेव भलांई, निरखो फिर फिर नैंना। मुगत तणी साता रो मालिक, हरि बिन दाता है नां।—र रू

उ०—३ छटा अलोकिक छाय, ऊंची लहरां ऊपडे। मुगत निसेणी माय, सुखदेणी असुरां सुरां।—बा दा

उ०—४ ऐसी कही हेतु जुगत ए, तिण मु वेगी मिलै मुगत ए।

—जयवाणी

मुगतकंठ—देखो 'मुक्तकंठ' (रू भे)

मुगतक—देखो 'मुक्तक' (रू भे)

मुगतज—देखो 'मुक्तज' (रू भे.)

मुगतपुरी—देखो 'मुक्तिपुरी' (रू भे.)

उ०—दीनदयाल भविक कुं मेलै, मुगतपुरी को साथ।—स कु

मुगतफळ—देखो 'मुक्ताफल' (रू भे) (अ मा.)

उ०—नासिका सुक चंच सरिखी, मुगतफळ सजोति। अहिर विद्रुम ओपमा, जेहा दसण हीरा जोति।—रुकमणि मंगळ

मुगतवसन—देखो 'मुक्तवसन' (रू भे)

मुगतमाळ—देखो 'मुक्तामाळ' (रू भे)

उ०—१ दे गजराज तुरंग द्रव, तोरा सपत वसन्न। मुगतमाळ सरपेच नग, रकमां सात रतन्न।—रा रू

मुगता—देखो 'मुक्ता' (रू भे)

उ०—१ आंणी रिख ऋग कहै विप्र एह। मुगता हो दूध राजिय मेह।—रांमरासौ

उ०—२ रिस्ट रतन सगवीसे मुनिपदे, सतसठि एकावन्न। सित्तर ने पचास उलास सूं मुगता सेम सुमन्न।—स्रीपाळ रास

उ०—३ कवण खंभ मंडति कीन वरणण छविकरा। झळहळ क्रतपूर झळूस मुगता झालरा।—बा दा

मुगताग्रहजथा—देखो 'मुक्ताग्रहजथा' (रू भे)

मुगताचर—देखो 'मुक्ताचर' (रू भे.)

मुगताचाळ-स०पु०—हंस। (अ मा)

मुगताफळ—देखो 'मुक्ताफळ' (रू भे:)

उ०—खीचो यम वायक कहै, जे न सहै भालाळ। तिण कारण विह तूटसी, मुगताफळ री माळ।—पा प्र.

मुगताभखी—देखो 'मुक्ताभखि' (रू भे)

मुगतामाळ—देखो 'मुक्तामाळ' (रू भे)

उ०—मघनायक 'मांडण' हरो, 'राजो' भीम भुजाळ। सयळ

छमा पगति सुहड, जागक मुगतामाळ ।—गु रू व

मुगतार—देखो 'मुग्तार' (रू भे)

मुगतारग्राम—देखो 'मुख्तारग्राम' (रू भे)

मुगतारकार—देखो 'मुख्तारकार' (रू भे)

मुगतारकारी—देखो 'मुख्तारकारी' (रू भे)

मुगतारखास—देखो 'मुख्तारखास' (रू भे)

मुगतारनांमो—देखो 'मुखतारनामो' (रू भे)

मुगतारी—देखो 'मुख्तारी' (रू भे)

मुगताळा, मुगतावळि, मुगतावळी—देखो 'मुक्तावळी (रू भे)

उ०—अस्टपात्र सब चग, काइ तरुणि काइ बाळा । पिक हुमद्द आलाप, कठ मोहित मुगताळा —गु रू व

मुगताहळ—देखो 'मुक्ताफळ' (रू भे)

उ०—१ माहव नोवत सुद्रव, वसन जरकस्स जवाहर । रतन जडत सिरपेच, माळ मुगताहळ सुदर ।—रा रू

उ०—२ हम मुगताहळ निसदिन ठूगैं करक काग ते न्यारा । काग कुबुधि मू नेह न वाधै, ऐसी गहै बिचारा ।—ह पु वा

मुगति —देखो 'मुक्ति (रू भे)

उ०—१ एक गया भगवाट, सांमिछळ मेल्है कुळ छळ । हेक मुगति माजोत, गया भेदै रवि मडळ ।—गु रू व

उ०—२ जीवता रह्या तो थारी मूडो निरखाला अर जुद्ध मे खेत रह्या तो मुगति व्हैला ।—फुलवाडी

उ०—३ माया मोह भरम की भीता, मौख मुगति कै आडी ।

—स्री हरिरामदासजी महाराज

उ०—४ धरम नरम मन जे धरै, भरम करम ना भाजै रे । चरम जिणद कहै ते चढै परम मुगति गढ पाजै रे ।—ध व ग्र

२ देखो 'मोती' (रू भे)

उ०—सुद्रर पाध मोड सिर सोहै मुगति पति लख जगत विमोहै । बचन मद्दास हुलास विहारै, नयण हरख जुत मिरत निहारै ।

—रा रू

मुगतिखेत—देखो 'मुक्तिक्षेत्र' (रू भे.)

उ०—कोटि गउ दिज दान देत, मरत कासी मुगतिखेत ।

—स्री हरिरामदासजी महाराज

मुगतिसजोत, मुगतिसाजोत—देखो 'मुक्तिसाजोति' (रू भे)

मुगतिसिला—स०स्त्री० [स मुक्ति शिला] सर्वार्थ सिद्ध स्वर्ग से बारह योजना ऊपर का मुक्त जीवों का एक स्थान । (जैन)

उ०—अहे बार देवलोक वारी भर्मा नगर छइ नव ग्रैवेक । मुगतिसिला पाटण भलु तिहा छइ विनु रे विवेक ।

—प्राचीन फागु सग्रह

मुगती—देखो 'मुक्ति' (रू भे)

उ०—१ नटणो ज्यू मुगती नचो मदा वास सुर स्याम ।—अ मा.

उ०—२ तन तारहिगो जुगती तिळहैं, मन मारहिगो मुगती मिळहैं ।

—ऊ का

उ०—३ कांई राजा मन विलखीयो सूना पाटगा देस खधार । कर जोडै [इ] नै राई वीनई, देहि विग मो मुगती दातार ।—वी दे

उ०—४ म्हारी मुगती तो अब मौत री सगत सू ई व्हैला । म्हैं तो आज मरिया पै'ली ई मरगी —फुलवाडी

उ०—५ दुनिया रै जजाळा सू मुगती पावण सारू बारै वरस तप करियो, पण इण उपरात आ दुनियां तो सामो घणो मन मोयो ।

—फुलवाडी

२ देखो मोती' (रू भे)

मुगतीक—देखो 'मोती' (रू भे)

मुगते,—कि०वि०—मुक्ति को, मोक्ष को ।

उ०—केई देवता थया ए, केइक मुगते गया ए । सुख सासता लह्या ए —जयवाणी

मुगतेसर—देखो 'मुक्तेस्वर' (रू भे.)

मुगतो—देखो मगतो' (रू भे)

मुगत्त—१ देखो 'मुक्त' (रू भे)

२ देखो 'मुक्ति' (रू भे)

उ०—छत्रीसै सुद भादवै एकादसी वरत्त । राजोधर एता लियां, गो हरि धाम मुगत्त ।—(रा रू.)

मुगत्यार—देखो 'मुखतार' (रू भे)

मुगत्यारी—देखो 'मुखतारी' (रू भे)

मुगदर—स०पु० [स० मुद्गर] १ एक कुडलाकार बडा पत्थर जिसे हाथ से उठा कर व्यायाम किया जाता है ।

२ व्यायाम के लिये बनाई गई भारी एव मोटी लकडी, मोगरी । इसकी बनावट बम्ब की तरह होती है ।

३ गदा ।

रू०भे०—मुदगर । मुदगर,

मुगदल्ल—स०पु०—शस्त्र विशेष ।

उ०—गडा गडी गिर तणा गडा गिर गिर पडै, चहाचढि उछलै मुगदल्ल रहोला ।—प च चौ

मुगध—स०पु०—श्रीकृष्ण के बडे भाई बलराम, बल भद्र । (ना मा)

२ गुप्त, छुपा हुआ । (अ मा)

३ देखो मुग्ध' (अ. मा, ह ना मा)

४ देखो 'मुग्धा (रू भे)

मुगधता—देखो 'मुग्धता' (रू भे)

मुगधप्रिय—स०पु०[स मुग्ध-प्रिय] मदिरा, शराब । (अ मा)

मुगधबुद्धि, मुगधबुद्धी—देखो मुग्धबुद्धि' (रू भे)

उ०—मुगळाण मुगधबुद्धी कि गुर सब्द साधु उपदेसो । दिस मेक उदधि रहणो, नह मूधित मगधाण ।—गु रू. वं

मुगधा—देखो 'मुग्धा' (रू भे) (अ मा)

उ०—१ के बाळा राइ कुमरि, केय मुगधा कुळवती । के मध्या माणणी, जिसी सूरज झायती ।—गु. रू. व

उ०—२ मुगधा वेस प्रमाणै, लखि प्रति रूप उरवसी लज्यत । पय

घूघर वध पाणे, सभियो नमसकार सारदा ।—सू प्र.

उ०—३ मुगधा मव्या नै मोडा मिळजावे । पढ-मढ प्रारथना प्रोढा पिलजावै ।—ऊ का

उ०—४ कुच ऊपजै काची कळी, हिवडै लागो हाथ । मुगधा जाण्यौ रोग मन, विसर गई सब वात ।—वगसीराम प्रोहितरी वात

उ०—५ निद्रा श्रामा वेल द्रोह, मन होय मुगधा —केसोदास गाडण

मुगधापण, मुगधापन—देखो 'मुग्धापन' (रू भे)

मुगपटण—स०पु०—एक प्रकार का वस्त्र ।

उ०—मुगपटण मन भावतो, कता केसरी पाग । जिणि कंदसो पिऊ छइ, ता सुदर को भाग —व स

मुगरश्र—स०स्त्री०—देखो 'मगरेव' (रू भे)

उ०—उठी विलद दळ असुर, वधि मुगरवां जनेवा । पेसकवज खजरां जकड वणिया रणजेवां ।—सू प्र.

देखो मगरिव' (रू भे)

मुगराटी—स०स्त्री—एक प्रकार का वस्त्र ।

मुगळ, मुगल—स०पु०—१ मुसलमान । यवन ।

(स्त्री०मुगळण, मुगळांणी)

उ०—१ जुगळ पाण जोडिया, मुगळ सुलताण न मानी । चढियो कर चक्र रो, कूच विक्रमपुर कानी ।—मे म

उ०—२ मुगळांण मुगव बुद्धि, कि गुर सब्द साधु उपदेसो । दिन्न मेक उदधि रहणौ, नह मूचित मगधाण ।—गु रू व

उ०—३ हूम न जाणे देवजस, सूम न जाणै मौज । मुगळ न जाणै गो दया, चुगल न जाणै चोज ।—बा दा

२ मुसलमानो के चार वर्गो मे से एक ।

३ तुर्किस्तान का निवासी, तुर्क ।

४ तूर्कों की एक शाखा ।

५ मगोल देश का एक निवासी ।

६ पवन, हवा । (ना डिं को)

७ देखो 'मदकळ' (रू भे)

उ०—धुव्वै मुगळ अकळ कांठळां सरळ घर । अरळ साबळ भरळ क ळ ऊगो ।—महाराज जसवतसिंह रो गीत

रू०भे०—मुगळी, मुगल्ल, मुगुल्ल, मुग्गळ, मुग्गुळ, मूळगळ, मूगळ, मूगल,

मुगळाणी—वि०—१ मुगलो का, मुगल सम्बन्धी ।

२ मुगल जाति या वर्ग का ।

मुगळाराव—मुसलमान बादशाह ।

उ०—मुगळाराव तणे जवाव मरोडै, घर घातिया निवावा घाव । चालियो काळ जडाळ चुग्रनी, रुपा तणे कटहडे राव ।

—जोगीदास कवारियो

मुगळी—वि०—१ मुगलो की, मुगलो सम्बधी ।

उ०—जाजली फोज मुगळी सजोर । कर दिली सिली दस्तूर कोर ।

—वि स.

२ देखो 'मुगळ' (रू भे)

उ०—विकराळ काळ मुगळी अजाग । खटपटी आण रण बीच खाग । खरीय उठी हय पदन खेह मंडियो अहमदपुर आन मेह ।

वि स

मुगळेस—स०पु० [उ मुगल+स०ईश] मुगल बादशाह ।

उ०—जिकै वज्रपात जिसडा वचन सुणताही पातसाह रा मन मैं भी पातसाही करण री आधी आस रही । जठै दारा नू उपालभ देर पछतावा रै प्रमाण सोक रा समुद्र मैं मग्न मुगळेस इण रीति कही ।

—व भा

मुगल्ल—देखो 'मुगळ' (रू भे)

उ०—१ मुगल्लां न गो दिल्लीस थाणा मिळण । हीदवांणा तणो छात हालै ।—गोविंद बारहठ

उ०—मामी मीर बलक्की मल्ल, मीर सैंद पट्ठाण मुगल्ल । खारी श्रोर सजोर बुखारी, घर काबली विलाति खधारी ।—रा रू

मुगवण, मुगवन—स०पु०—१ एक प्रकार का वस्त्र

उ०—हीरपट्ट साउला विलिविलिया नरम्म खमो उभयखरम्म वामखरम्म वांम सऊआ मुगवनां मागलियां वयरागरा हीरागरा ।

—व स

२ मूग के पौधे के समान एक पौधा । वनमूग ।

३ मोठ ।

मुगातर—स०पु०—देखो 'मुकातर' (रू भे)

उ०—थें दूजा सगळा कळाप छोड फगत एक कोल करो तो मरधा ई मुगातर पाऊ ।—फुलवाडी

मुगाळतौ—स०पु० [अ०मुगालत] १ धोखा, छल, प्रपच ।

२ भ्रम, सदेह, गलत फहमी ।

३ त्रुटि, भूल ।

मुगिति, मुगीती, मुगुत—देखो 'मुक्ति' (रू भे)

उ०—मुगुत चिहुर सिरि मढि वछि कठ तुळसी वासी । 'भोजाउत' भुज-वळहि करहि करिमर काळासी ।—अ वचनिका

मुगुळराइ—मुगल बादशाह ।

उ०—जउणिपुरी अजोध्या खडिय जाइ । रइयत्ति लोक किय मुगुळराइ ।—रा ज सी

मुगुल्ल—देखो 'मुगळ' (रू भे)

उ०—पूरब्व धरा हइ खूदि पाई । वळियउ मुगुल्ल नीसाण वाइ ।

—रा ज स.

मुग्गर—देखो 'मुद्‌गर' (रू भे)

मुग्गळ मुग्गुल—देखो 'मुगळ' (रू भे)

उ०—१ मिळ मभः मारुणि डाकणि भोत,हलीसक नाच भली विधि होत । घटै दळ मुग्गळ सैयद घांण, पटैत कटै कई सेख पठाण ।

—मे म

उ०—२ पडै गज मुग्गळ वाज अपार । वखांणत सूर हुथा तिण वार ।—सू प्र

मुग्ध—वि० [स०] १ नया, नवीन ।

२ मोह मे पड़ा हुआ, मोहित आसक्त, लुब्ध ।

३ अनजान, भोला, नादान ।

४ सरल, सीधा सादा ।

उ०—काळा मूंड कर करद का, दिल थैं दूर निवार। सब सूरत सुवहान की, मुल्ला मुग्ध न मार।—दादूवाणी

५ मत्व- मौचक्का।

६ मूर्ख, मूढ, अज्ञानी।

उ०—भूला, मोदू फेर मन, मूरख मुग्ध गवार। सुमिर सनेही आपना, आतमा का आधार।—दादूवाणी

७ मस्त, मतवाला।

८ मदमस्त।

९ मनोहर, सुन्दर।

१०—निरीह।

११ पागल।

स०पु०—१ प्रथम गुरु रगण का नाम (र ज. प्र)

रू०भे०—मुगध, मुगध, मुद्ध, मुघ्न, मूघ, मूघ,

मुग्धता—स०स्त्री० [स०] १ मुग्ध होने की अवस्था या भाव

२ मूढ़ता मूर्खता, पागलपन।

३ नादानी।

४ सुन्दरता, मनोहरता।

५ सरलता, सादगी।

रू०भे०—मुगधता,

मुग्धवुद्धि—स०स्त्री० [स०मुग्ध-बुद्धि] १ बुद्धि रहित, मूर्ख, मूढ।

२ सीधा-सादा, भोला।

३ पागल।

रू०भे०—मुगधवुद्धि, मुगधवुद्धी।

मुग्धा—स०स्त्री० [स०] १ साहित्य में वह नवयौवना नायिका जिसमें काम चेष्टाए जागृत न हुई हो।

वि०वि०—साहित्य में नायिकाओ के विभिन्न भेद किये हैं जिसमे मुग्धा नायिका भी है। साहित्य दर्पण में मुग्धा के पाच भेद किये है —१ प्रथमावतीर्ण यौवना—इसमे नवीन यौवन की छटा प्रथम विकसित हुई हो अर्थात् यौवनाकुर फूटने शुरु हुए हो। २ प्रथमावतीर्ण मदन विकारा—जिसमे कामनाओ के विलास पहले पहल आविर्भूत हुए हों, ३ रतिवामा—जो रति मे सकोच करे। ४ मानमृदु—जिसका मान चिरस्थायी न हो और ५ समधिक लज्जावती—जो अत्यन्त लज्जाशील हो। इन पाचो अवस्थाओ को देखने से मालूम पड़ता है कि मुग्धा नायिका यौवन में प्रवेश करती हुई काम चेष्टाओ से परिचय प्राप्त करती है। इसी प्रकार विद्वानो ने इसके १ अज्ञात यौवना, २ ज्ञात यौवना और पुन १ नवोढा तथा २ विश्रब्ध नवोढा आदि और भेद किये है।

२ सुकुमारी, तरुणी। नवयौवना,

३ स्त्री, महिला।

रू०भे०—मुगध, मुगध, मुगधा, मुग्ग।

मुग्धापण, मुग्धापन—स०पु० [स०मुग्धत्व] मुग्धावस्था होने की अवस्था या भाव।

रू०भे०—मुगधापण, मुगधापन,

मुड—स०स्त्री० [स०मुच्] हाथ पाव आदि के सधि स्थलो पर आने वाली मोच।

उ०—किणी रा पग मे मुड पडगी तो किणी रा डील माथै रगड आई —फुलवाडी

वि०वि०—शरीर अगों में झटका लगने या अगो के मुड़ने के कारण सधि स्थलो की नसें अपना स्थान छोड देता हैं, जिससे वहां पर सोजन आ जाती है तथा बहुत दर्द रहता है।

क्रि०प्र०—काडणी, पडणी।

रू०भे०—मुडक, मुढ़, मुरड,

मुडक—स०स्त्री०—१ मुडने की क्रिया या भाव।

२ लचीलापन।

३ नरमी।

४ देखो 'मुड' (रू भे)

रू०भे०—मुडक्क, मुडक,

मुडकणौ, मुडकवौ—देखो 'मुड़णौ, मुडवौ' (रू भे)

मुडकणहार हारौ (हारी), मुडकणियौ—वि०।

मुडकिओडौ, मुडकियोडौ, मुडक्योडौ—भू०का०कृ०।

मुडकीजणौ, मुडकीजवौ—भाव वा०। कर्म वा०।

मुडकियोडौ—देखो 'मुडियोडौ' (रू भे)

मुडक्क—देखो 'मुडक' (रू भे)

उ०—मुरडक्क मुडक्क अमघ मुडै। जुध 'पाल' अनै 'जिदराव' जुडै।
—पा प्र

मुडक्कणौ, मुडक्कवौ—देखो 'मुडणौ, मुडवौ' (रू भे)

उ०—१ मुडै साळळै साळळै पै मुडक्कै। झडा ओझडा सांड ज्यो माड झुक्कै।—रा रू

उ०—२ मुडक्कै कायरा सूर वर्कै मार मार।
—बुधसिह सिढायच

मुडक्कियोडौ—देखो 'मुडियोडौ' (रू भे)

(स्त्री० मुडक्कियोडी)

मुडणौ, मुडवौ—क्रि०अ० [स० मुरण] १ किसी सीधी वस्तु का बल खा जाना, सीधे खडे का झुक जाना, दूसरी ओर घूम जाना, मुड जाना।

उ०—१ मुडै तार कच्चै किना वार मच्छी। अटै कार जे पच ही धार अच्छी।—व भा

उ०—२ जग छत्र दळा विघूमै त्रद' जूहि। महि पुहि मार गया महि फुण मुहि—सू प्र

२ धारदार या नोकदार वस्तु की नोक या धार सीधी न रहना, ऊपर से कुछ मुड जाना।

३ चलते-चलते किसी दूसरी ओर उन्मुख होना, दिशा परिवर्तन होना।

उ०—१ मित्र दोनू जणा नै खासी भाय ताई पुगावण नै

आयो। ठेट मारग लग आयनें वो आपरी थें सामी मुडियो।
—फुलवाडी

उ०—२ मुडे 'उग्रसेण' तणो फतमाल'। लुहा खळफट करें गज 'लाल'।—सू प्र

४ लौटना, वापस आना, पलट जाना।

उ०—१ चोर फीटो पडनें पाछो मुडग्यो। आछी तरें'जांण लियो के आ तिला तेल कोनी।—फुलवाडी

उ०—२ पण जवाई तो पिलाण ही हेठो नी उतारें, सागी पगा ही पाछो मुडणो चावें है।—दसदोख

५ पराङ्मुख होना, विमुख होना, पृष्ठ फेरना।

उ०—गूगी नै लाज आयगी। वा अपूठी मुडनें ऊभगी।
—फुलवाडी

६ शरीराग या मुख पीछे या इधर-उधर फिरना, घूमना।

उ०—१ राजकवरी पांणी मे पग धरिया पैंली एकर मुडनें लारें जोयो।—फुलवाडी

उ०—२ लारें मुडनें ई नी जोयो के उणरा मार्ईत, उणरी ग्वाडी अर उणरें कुटम कबीलो कित्तो आतरें छूट ग्यो।—फुलवाडी

७ लकीर की तरह सीधा न होना। घुमावदार स्थिति मे होना। टेढा होना।

८ घुमाव लेना।

उ०—अच्छी तरह उडांण, वेबि परमाण वरच्छो। बाग ताग वाहुडे, मुडे जाणें जळ मच्छी।—मे म.

९ विरुद्ध होना, विमुख होना।

उ०—वुदी आइ सम्हाळि बळ, सावधान करि सरव। 'दूदो' मुडि रहियो दुमह, पावण जस रण परव।—व भा.

१०—छिन्न-भिन्न होना। अस्त व्यस्त होना।

उ०—तरें सोजत जैतारण राणा री खोम लीवी। तो ही सींधल जैतारण माहे था, भागा मुडीया रहता।—नैणसी

११ पीछे हटना, खिसकना, पीठ दिखाना।

उ०—१ कमध स्याम कामय जुटै अरद्ध जामय। मुडै घडा मळेछणी, विचार धार भज्जणी।—रा रू

उ०—२ मिरजो नूरमली जुध मुडियो। जोधा जैत प्रवाडो जुडियो।
—रा रू

१२ गिरना, पडना।

उ०—भोज भुजा बळ थभणा, मुडता गयण समाथ। साम जगवत सीम बळ, जोडै भीम कि पाथ।—रा रू

१३ कागज या वस्त्रादि मे सलवट पडना।

मुडणहार, हारो (हारी), मुडणियो—वि०।

मुडिओडो, मुडियोडो, मुडयोडो—भू० का० कृ०।

मुडीजणो, मुडीजबो—भाव वा०।

मोडणो, मोडबो—सक रू०।

मुडकणो,मुडकबो मुडक्कणो,मुडक्कबो मुडणो, मुडवो,—रू० भे०।

मुडदासख, मुडदासिगी, मुडदासिघो—देखो 'मुरदासिघो' (रू भे)

मुडदियो—वि०—१ क्षीण काय, अत्यन्त कमजोर, मरियल।

उ०—लाली रा इण सराध माथै फगत एक बांमण नै ई जीमावणो, आ सेठा री मसा ही। बामण ई ऐडो मुडदियो व्हे जैडो सोधणो दो कवा ई नीठ खावें।—फुलवाडी

मुडदियो बुखार—स० पु० यौ०—जीर्ण-ज्वर।

मुडदो—देखो 'मुरदो' (रू भे)

उ०—१ आ सात चरुवा री आंच सू तो मुडदा ई मूडै बोलण लाग जावें।—फुलवाडी

उ०—२ सेवट कायो होय मुडदा री गळाई पाछो माचा माथै खूटी ताण नै सूयग्यो।—फुलवाडी

उ०—३ मुडदा मडहट मे पडिया नह मावै, सडिया बासै सब विकरद वभकावै।—ऊ का

उ०—४ गो वळग्यो निज गाव थाट घर मगळ थाया, मुडदो देख मसाण चिलमिया चाढण चाह्या।—ऊ का

उ०—५ गांव सू एक कोस आतरे एक वावडी ही। उठै च्यारू मुडदा नै धरकावण रो मतो करियो।—फुलवाडी

उ०—६ राजाजी च्यारू मिरदारा रै कानी हाथ करनें धाकल करता बोल्या—यू मुडदा चालै ज्यू कांई चालो। वेगा क्यू नी आवो।—फुलवाडी

मुडाणो, मुडाबो—क्रि० स०['मुडणो" क्रिया का प्रे०रू०] १ किसी वस्तु को वल देना, सीधे खडे को झुका देना,दूसरी ओर घुमा देना,मोड देना।

२ धारदार या नोकदार वस्तु की धार या नोक सीधी न रहने देना, मोडदेना।

३ चलते-चलते को किसी दूसरी ओर उन्मुख करना, दिशा परिवर्तन कराना।

४ वापस चले जाने या आने के लिये प्रेरित करना, लौटाना

५ पराङ्मुख होने या पृष्ठ फेरने के लिये कहना, विमुख करना।

६ शरीराग या मुख को पीछे या इधर-उधर घुमाने के लिये कहना।

७ लकीर की तरह सीधा न रहने देना, घुमावदार स्थिति मे कराना। टेढा कराना।

८ घुमाव लेने के लिये प्रेरित करना।

९ विरुद्ध एव विमुख होने के लिये प्रेरणा देना।

१० छिन्न-भिन्न करवाना। अस्त-व्यस्त कराना।

११ पीछे हटने के लिये कहना, खिसकाना।

१२ गिराना, पटकाना।

१३ कागज या वस्त्रादि मैं सलवट डलवाना।

मुडाणहार,हारो (हारी), मुडाणियो—वि०।

मुडायोडो—भू० का० कृ०।

मुडाईजणो, मुडाईजबो—कर्म वा०।

मुडावणो, मुडावबो—रू० भे० ।

मुडायोडो—भू० का० कृ०—१ बल दिया हुआ, झुकाया हुआ, दूसरी ओर घुमाया हुआ, मोडा हुआ ।
२ नोक या धार मोडा हुआ ।
३ दूसरी ओर उन्मुख किया हुआ, दिशा परिवर्तन कराया हुआ ।
४ वापस आने या जाने के लिये प्रेरित किया हुआ, लौटाया हुआ ।
५ पराङ्मुख किया हुआ, पृष्ठ फिराया हुआ, विमुख किया हुआ ।
६ पीछे या इधर-उधर मुडाया हुआ, घुमाया हुआ । (मुख) ।
७ घुमावदार स्थिति में कराया हुआ, टेढ़ा कराया हुआ ।
८ घुमाव लेने के लिये प्रेरित किया हुआ ।
९ विरुद्ध या विमुख कराया हुआ ।
१० छिन्न भिन्न या अस्त व्यस्त कराया हुआ ।
११ पीछे हटाया हुआ, खिसकाया हुआ ।
१२ गिराया हुआ, पटकाया हुआ ।
१३ सलवट डलाया हुआ ।
(स्त्री० मुडायोडी)

मुडावणो, मुडाववो—देखो 'मुडाणो, मुडावो' (रू भे)
उ०—धुवाधोर आतसा झला रो रुडावणो धुस । सेना मुडावणो खळा डळा रो साहस । छत्रधारी फना हू डळा रो कोट छोडावणो, तुडावणो भूखा वाघ गळा रो ताडत ।—महादान महडू
मुडावणहार, हारौ (हारी), मुडावणियो—वि ।
मुडाविओडो, मुडावियोडो मुडाव्योडो—भू का कृ ।
मुडावीजणो, मुडावीजबो—कर्म वा ।

मुडावियोडो—देखो 'मुडायोडो' (रू भे)
(स्त्री० मुडावियोडी)

मुडासो-स०पु०—शिर पर बांधने का वस्त्र, साफा ।
रू०भे०—मुडासो,

मुडियोडो—भू० का० कृ०—१ बल खाया हुआ झुका हुआ, दूसरी ओर घूमा हुआ, मुडा हुआ ।
२ नोक या धार मुडा हुआ ।
३ दूसरी ओर उन्मुख हुवा हुआ, दिशा परिवर्तन किया हुआ ।
४ लौटा हुआ, पलटा हुआ ।
५ पृष्ठ फेरा हुआ, पराङ्मुख, विमुख ।
६ पीछे या इधर-उधर घूमा हुआ, फिरा हुआ । (मुख)
७ टेढा हुवा हुआ, घुमावदार स्थिति मे हुवा हुआ ।
८ घुमाव लिया हुआ ।
९ विरुद्ध या विमुख ।
१० छिन्न-भिन्न, अस्त-व्यस्त ।
११ पीछे हटा हुआ, खिसका हुआ ।
१२ गिरा हुआ, पडा हुआ ।
१३ सलवट पडा हुआ ।
(स्त्री० मुडियोडी)

मुडीयण-स०पु०—मुडने वाला भागने वाला ?
उ०—मुडीयण भुय थारा महवेचा, सत्र सुख सुग्रै न थाणा साय । चवळ रहै लगामा चडिया, महपत गळै सनाहा माय ।
—माधोसिंग महेचा रो गीत

मुडो—१ देखो 'मुरडो' (रू. भे)
२ देखो 'मुड्डो' (रू भे.)

मुचकद, मुचकध, मुचकुद, मुचकुध—देखो 'मुचुकद' (रू. भे)
उ०—१ उफळ कोप उणवार, दुफळ 'अभमल' दरसायो । काळजवन कथ कहै, जाण मुचकद जगायो —सू प्र
उ०—२ काळ दार कुडली पूछ दाबत पलटायो । किना काळ वस काळ-जवन, मुचकध जगायो ।—मे म.
उ०—३ कहै एम मुचकुद सुणो खित्री धरपत्ती । दुरभिख्ये अन दान जेठ पी दीयै उकत्ती ।—रा वंशावली

मुचकोडणो, मुचकोडवो—देखो 'मचकोळणो, मचकोळवो' (रू भे)
उ०—वडि क [- -] पीडिइ छइ डोकर नी कोइ न करइ सार । आवउ वहुडी भणिउ करउ माइ, मुह मुचकोडी पाछी थाइ ।
—वस्तिग

मुचकोडियोडो—देखो 'मचकोळियोडो' (रू भे)
(स्त्री० मुचकोडियोडी)

मुचणो, मुचबो-क्रि०अ०[स मुच्] १ किसी धातु के बने पात्र या वस्तु मे प्रहार या गिरने के कारण मोच आना ।
२ झुकना ।
३ छूटना, अलग होना ।
उ०—महत लघु जैत कहि एव मिळ, सकळ प्रकासत आप सम । रुचिर अन रुचिर कविता रचन, मुचत न जात स्वभाव मम ।
—जैतदान बारहठ
४ त्यागना ।
उ०—बिन कारन दुख करै, रविस कबहू नहि मुच्चै —अज्ञात
मुचणहार, हारौ (हारी), मुचणियो—वि० ।
मुचिओडो, मुचियोडो, मुच्योडो—भू०का०कृ० ।
मुचीजणो, मुचीजबो—भाव वा० ।
मुच्चणो, मुच्चवो—रू०भे० ।

मुचत—स०स्त्री०—छोडने की क्रिया या भाव ।

मुचळको—स०पु० [तु०मुचल्का] अभियुक्त या अपराधी से लिखवाया जाने वाला एक प्रतिज्ञा पत्र जिसमे अभियुक्त यह प्रतीज्ञा करता है कि भविष्य मे वह यदि अपराध करेगा तो अमुक दण्ड का भागी होगा ।

मुचियोडो—भू०का०कृ०—१ मोच पडा हुआ । (पात्र)
२ झुका हुआ ।
३ छूटा हुआ, अलग हुवा हुआ ।
४ त्यागा हुआ ।
(स्त्री०मुचियोडी)

मुचिर-स०पु० [स०] १ देवता।
२ पवन, हवा।
३ गुण।
४ भलाई।

मुचुकद, मुचुकुद-स०पु० [स०] १ एक सुविख्यात इक्ष्वाकुवशीय राजा, जो राजा मानधाता का तृतीय पुत्र था। राम दाशरथि के पूर्वजो मे से यह इकतालीसवा पुरुष था।
२ एक वृक्ष विशेष जिसकी छाल एव फूल औषधि मे काम आते हैं। इसे सुगध वृक्ष कहते हैं।
उ०—चपक राज चपक विचकिल स्वरण जूथिका। केतकी पुन्नाग मालती जाय कुमुम कुद मुचुकुद।—सभा
रू०भे०—मचकद, मचकध, मचकुंद, मचकुध, मुचकद मुचकध, मुचकुद, मुचकुध,

मुच्चणौ, मुच्चबौ—देखो 'मुचणौ, मुचबौ' (रू भे.)
उ०—हस जिहा गय तिहा गय, मही-मडण हवति। छेहू ताह सरोवरा, जे हमे (हिं) मुच्चति।—मा का प्र

मुच्चियोडो—देखो 'मुचियोडो' (रू भे)
(स्त्री०मुच्चियोडी)

मुच्छ—देखो 'मूछ' (रू भे)
उ०—१ जरैं अपेय अचळ जळ जाणे,तोडै अरर मुच्छ कर ताणे।
—व मा
उ०—२ नटाळि दे भटाळि की जटाळि ऐचते ग्रमें। अरीन मुच्छ मुच्छ दें स्वमुच्छ खेंचते भ्रमें।—ऊ का
२ देखो 'मूछो' (रू भे)
३ देखो 'मुरछा' (रू भे)

मुच्छमुड, मुच्छमुडो—देखो 'मूछमुडो' (रू भे
उ०—दयाळु न्है न सरवथा अया दया मया दटें। मिळै जु गुड मुच्छमुड थुड ऊट कें थर्के।—ऊ का

मुच्छित, मुच्छिय—देखो 'मुरछित' (रू भे)

मुछदर—देखो 'मृछदर' (रू भे)

मुछ—देखो 'मूछ' (रू भे)

मुछार—देखो 'मूछ' (मह, रू भे)

मुछाळ—१ देखो 'मूछाळ' (रू. भे)
२ देखो 'मूछ' (रू भे)
उ०—चढ माळ अयोमळ नेत्र चोळ, भ्रगुटी मुछाळ मिळ करत खोळ।—पे रू.

मुछाळौ—दखो 'मूछाळ' (अल्पा, रू. भे)
उ०—नारी होय तो धीरे-धीरे खाय। मरद मुछाळौ तो ग्रो झट दै जीम चळू करै।—लो गी

मुछि—देखो 'मूछ' (रू भे)
उ०—आळम छडी उठीउ, मुछि मरडी वेह। चउद लोक कीवा जिणइ, चिंता करस्यइ तेह।—मा कां प्र

मूछियळ—देखो 'मूछाळ' (रू भे)

मुज—देखो 'मुझ' (रू भे)
उ०—ज्या करा लीवाणा अक, ऐ जोस रा,प्रगट कै वार ज्या वीरद पायो। जाणीयो मुज दिल जगत हव जाणसी,आवीया पत्र जोधाण आयो।—महाराजा मानसिह

मुजनस—स०पु०—घोडा, अश्व।
उ०—मुजनसा पगे वाजिया माळ, रवि झाळ समी ऊडी रिवाळ। घमघमइ घट पाखर धिसत्त, मल्हपता आवइ मदोमत्त।
—रा.ज सी

मुजब—क्रि०वि०—१ अनुसार, मुताबिक माफिक।
उ०—१ दूजा री बात तो अळगी, कमाई रै मापै जनम देवण वाळा माईत ई उण मुजब ममता करै। कमाई मुजब ई लुगाई नै घणी आछी लागै।—फुलवाडी
उ०—२ म्हानै धापनै मिठाइयां खावण दै, अर थू थारी मसा मुजब रिपिया ले लेजै।—फुलवाडी
२ तरह से, प्रकार से।
उ०—१ मा'राज स्रीगजसिघजी रै राज में कमठा इण मुजब।
—नैणसी
उ०—२ खास वा फिर मींदर वलभ कुळ रा इण मुजब तळेटी रै मै'लां हेट वालकिशनजी रो मिंदर करायो।—नैणसी
उ०—इण मुजब घणी वार काम पडचो जद स्वांमीजी बुद्धी सू कह्यो।—भि द्र
३ अनुरूप, तुल्य।
उ०—म्हारी हैसियत तो उण मुजब कोनीं, पण आपनै पाछो की न कीं निजराणो लै जावणो पडसी।—फुलवाडी
रू०भे०—मजब, मुजब्ब, मुजाव, मूजब, मूजिब

मुजब्ब—देखो 'मुजब' (रू भे)

मुजरउ—देखो 'मुजरौ' (रू भे)
उ०—दस दस दिगपाळ दीसइ दस, मिळिया ग्यान पखइ कळमूळ। दीवाणी मुजरउ देखण नू, छिलता छडीहथा घण भूल।
—महादेव पारवती री वेलि

मुजराई, मुजरायत—वि०—१ किसी राजा या रईस को मुजरा करने वाला, अभिवादक।
उ०—१ नेक वखत एक विरहमण नै स्याम को अरज गुजराई,है तो मिलण के लायक एक चारण मुजराई।—दुरगादत्त बारहठ
उ०—२ जदै पयादा उतावळा मुजरायतां खोलणी मांडी। जठै तीजो वट खोलै तिठै लोह लागो दीठो।
—जगदेव पवार री बात
स०पु०—२ वह व्यक्ति जो केवल मुजरा करने का कार्य करता हो और वेतन पाता हो।

मुजरिम—स०पु० [अ०] १ जिस पर कोई कानूनी जुर्म हो, अभियुक्त।
२ जिस पर जुर्म या अपराध का आरोप हुआ या लगाया गया हो।

मुजरी-स०पु० [अ०मुज्रा] १ राजा या किसी बड़े आदमी के सामने झुककर किया जाने वाला अभिवादन, नमस्कार, प्रणाम।
उ०—१ पीछै कुमलसिंघजी मा'राज सू मुजरी कियौ। तद मा'राज कयौ तू ठाकरा, सचा छोरू तो बडै मा'राज रा ये हुवा, थर म्हे छोरू म्हणा रा छां।—द दा
उ०—२ सज्या समै रावजी महिला पधारीया तरै अपछरा मुजरौ कर नै सीख मागी।—वीरमदे सोनगरा री वात
उ०—३ हुब्बाहोळ चानणो लुळलुळ मुजरा लेवतो हो।
—फुलवाड़ी
उ०—४ इमडी वाता सुणि भीमराजजी उठ मुजरौ कर कही।
—ठाकुर जैतसी री वारता
२ सामान्यतया किया जाने वाला अभिवादन, नमस्कार।
उ०—१ दिन खामी चढ्यो तो ई वै गरव-गुमान मे पोढ्या देवता रह्या। लोगां सू जवारडा करता रह्या, मुजरा झेलता रह्या।
—फुलवाड़ी
उ०—२ घडो लिया पावडी करनै आई। मुजरो कीयो।
—जगदेव पवार री वात
३ वेश्या द्वारा बिना नाचे, बैठकर गाया जाने वाला गाना।
४ दामाद को गाया जाने वाला एक लोक गीत।
५ किसी राजा या बादशाह के दरबार मे नौकरी हेतु उपस्थित होने की क्रिया या भाव।
उ०—अजमेर रा धणी रो चाकर हुवो। मुजरै पोहतो, गांव १ दीयो।—नैणसी
रू०भे०—मुजरो, मुजरउ,
मुजलौ—देखो 'मिजळौ' (रू भे)
उ०—पाहण गळ बाधै पडो, वेरा बावडियांह। पिण मगरा मत पारखो, मुजळां मावडियांह।—बां दा.
मुजवर—देखो 'मुजावर' (रू भे)
मुजाव—देखो 'मुजव' (रू भे)
मुजायद—देखो 'मुजाहिद' (रू भे)
उ०—१ स्याज-बगम हठिखान मुजायद नायक। बळवांन अजमति इततुल्ला अजरायक।—सू प्र
मुजावर-स०पु० [अ०मुजाविर] १ किसी पीर की दरगाह आदि पर रहकर सेवा कार्य करने वाला मुसलमान।
उ०—१ जद तिण वय ढाहे जग जाहर। मारै वळै हेक मुजावर।
—गो रू.
उ०—२ सु उठै पीरां रा दरसण तो वेर न हुवै जो मरद रा छेहडा वाधै, नहींतर मुजावर दरसण करावै नहीं।—नैणसी
२ पड़ोसी।
रू०भे०—मुजवर
मुजेवड़ी, मुजोवड़ी—देखो 'मुंजेवड़ी' (रू भे)

मुज्ज—देखो 'मुझ' (रू भे)
उ०—स्री सरसत गणपत नमसकार, दीजिये मुज्ज वर बुध उदार।
—वि सं
मुज्झ—देखो 'मुझ' (रू भे)
उ०—१ अंडज्ज, स्वेदज्ज जरा उद्भिज्ज, माया सब तूझ न भूलव मुज्झ।—ह र
उ०—२ रटै मुज्झ हु वाणि जै उद्धरेता। तरेसी ज तू रांम श्रोतार तेता।—सू प्र
मुज्झिम—देखो 'मध्यम' (रू भे.)
मुज्झौ—देखो 'मुझे' (रू भे)
उ०—ढढण रिखि पूछइ भगवत नइ, अभिग्रह पूगउ मुज्झौ जी।
—स कु
मुझ-सर्व० [सं० मह्यम्, प्रा० मज्झ] १ एक आत्मवाची सर्वनाम तथा मैं का रूप जो कर्ता और सबध कारक की विभक्तियो के अतिरिक्त अन्य कारको की विभक्तिया लगने पर प्राप्त होता है।
ज्यू—मुझको, मुझसे, मुझमे इत्यादि।
उ०—१ मूरिख तैं मुझ नैं गण्यो, वचन कह्यो अविचार। जो पदमणि हाथै जीमस्यू, तो आवू तुझ बार।—प च चौ.
उ०—२ अतगीत हूता ऊतर अनड, आठो परवत आदरू। कहै कविण मुझ हूतो सवळ, धणी तिको माथै धरू।—मा वचनिका
उ०—३ वूब देऊ छऊ बमणा मुकी दिइ मुझ मीत। कर जोडी निलवटि करइ चतुर चोरती चित्त।—मा कां प्र
२ मेरा, मेरी, मेरे।
उ०—१ माधव? करि माहरू कहिउ, प्रभु मुझ वछइ खेम। माम लगइ सेवा करिसि, सीत दमयती जेम।—मा का प्र
उ०—२ छटु तणो पारणो थाके, मुझ घर कीजै आज रे।
—जयवांणी
उ०—३ भगवत्ति आवो भाई, मुझ मदत स्रीमहामाई। नित पढे प्रहस मे नाम त्या रोरि भजि विराम।—मा वचनिका
उ०४ प्रोहित कहे जाण्यो छै, एणे मुझ विकार। तो आयो इण वेला कीजै कवण विचार।—व व प्र
३ स्वय, खुद।
क्रि०वि०—४ मेरे लिये।
उ०—जिणि करी रा रजीइ, व्यापारि जीवन्न। माधव! ते मुझ मोकळे, जिम वमि राखू मन्न।—मा का प्र
स०पु०—५ अपनत्व।
रू०भे०—मज्झ, मझ, मुज, मुज, मुज्ज, मुज्झ, मुझि मुह्झि, मूज, मूझ, मूझ।
मुझमानी—देखो मिजमानी' (रू भे)
उ०—अठै सखावत रायमल मिळियो। नै मुझमानी घोड़ा दिखाया सू रखाया नही। —द० दा०
मुझाणो, मुझावो—देखो 'मुरझाणो, मुरझावो' (रू. भे)

मुझारि–क्रि०वि० [स० मध्यागारे, प्रा० मज्झागारे] बीच मे, मध्य मे।

उ०—पचाली केति [ग्रहीनि] ताणी, आणी सभा मुझारि। ते दु ख हुई थी (नवि) जाइ, करता कीद्दि प्रकार।—नळाख्यान

मुझि—१ देखो 'मुझ' (रू भे)

उ०—१ पुरवं जनम की होती गोपकया, चूक पडी मुझि मांही। —मीरा

उ०—२ दिह सौ वार न तिथ पुरव, लोक लाज कुळ नाहि। हरीया साई मुझि मैं, मुझि सांई कै मांहि। —स्रीहरिरामदासजी महाराज

उ०—३ डाळ पुकारं मूळ कु, वा‌णी आई तुझि। जन हरीया अब चेतलै, जुग मैं मरणो मुझि।—स्रीहरिरामदासजी महाराज

उ०—४ हरीया कथणी जब कथी, मरम न पाया मुझि। अब लिव लागी तुझि सु, कहन सुनन नही कुझि। —स्रीहरिरांमदासजी महाराज

२ देखो 'मुझे' (रू भे)

उ०—१ मैं अमली हरिनांव की मुझि बाइह आवै।—मीरा

उ०—२ हरिया होदै बीच मैं, मुझि मिल्या रहमांन। पूरा लिख दीया पटा, खरच न खूटै खान।—स्रीहरिरामदासजी महाराज

उ०—३ हरीयै औगुन बोह कीया, सक न आनी कांय। भावै तो मुझि बगसीयै, भावै कूद भराय।—स्रीहरिरांमदासजी महाराज

मुझे, मुझै, मुझैं–सर्व० [प्रा० मज्झम] कर्म और सम्प्रदान में होने वाला 'मैं' का रूप, मुझको, मुझसे।

उ०—१ तथा अतीव नम्रता करी सु नम्र मे तुझैं। महा प्रयोग योग को महा उद्योग दे मुझैं।—ऊ का

उ०—२ मुझि मिळबो तुझि हाथि है, तुझि मुझि कै नही हाथि। हरीयैसा तेरै किता, तेरी मुझै अनाथि। —स्री हरिरामदासजी महाराज

रू०भे०—मू

मुटकणो–वि० [स० मटकन्] बडा।

उ०—हळफळ तूट्या हार मुटकणा मोती झडिया। परभाता यू रात रमण रा भेद उघडिया।—मेघ

मुटकाचर—देखो 'मुठकाचर' (रू भे)

मुटकारणो, मुटकारबो–क्रि०स० [स० मुट्] १ बोलना, कहना, बात करना।

उ०—१ कोई बात नही। कैवता थका मा'रजा मुटकारै ही नही है। मांडणिया नै इबारत बोलै, वांचणियां रै दूहा रा अरथाव खोलै है। विलम्या बैठ्या है।—दसदोख

उ०—२ रीस मे माटो टुरड अर करडो ठूठ हुय रै'यो है मुटकारै ही नी, माबै घर रा मिनख एक पग रै ताण ऊभ रैया है। —दसदाख

२ भर्त्सना करना, फटकारना।

३ कुचलना, पीसना।

मुटकारणहार, हारौ (हारी), मुटकारणियो—वि०

मुटकारिओडो, मुटकारियोडो, मुटकारयोडो—भू०का०कृ०।

मुटकारीजणो, मुटकारीजबो—कर्म वा०।

मुटकारियोडो–भू०का०कृ०—१ बोला हुआ, बात किया हुआ, कहा हुआ २ भर्त्सना किया हुआ, फटकारा हुआ ३ कुचला हुआ, पीसा हुआ।

(स्त्री०मुटकारियोडी)

मुटबोलो–वि०—१ बढ बढ कर बातें करने वाला।

उ०—एक माई घुनो, दूजो मुटबोलो अर मु'फट —दसदोख

२ झूठी शान दिखाने वाला।

मुटाव–सं०पु०—१ तनाव, खिचाव।

२ दूर या दूरस्थ होने की अवस्था।

मुट्ठी–सं०स्त्री० [स०मुष्टिका] १ हाथ की वह स्थिति व मुद्रा जो पाचो अगुलियों को हथेली पर समेठने पर बनती है, मुष्टिका।

उ०—नावरी नियत हम जियत नाहि, आकास न आवहि मुट्ठी माहि।—ऊ का.

मुहा०—१ मुट्ठी गरम करणी=रिश्वत देना।

२ मुट्ठी मे आणो=वश मे आना, काबू मे आना।

३ मुट्ठी मैं करणो=वश में करना, काबू मे करना, कब्जे मे करना।

४ मुट्ठी मे होणो=वश में होना, इशारे पर नाचना।

२ उक्त मुद्रा या स्थित मे समाने वाली वस्तु या वस्तु का परिणाम, मात्रा।

ज्यू—मुट्ठी धान सारू ई तडपा तोडै।

३ थकान मिटाने के लिए शरीर क किसी अग को हाथ से दबाने की क्रिया।

मुहा०—मुट्ठी मारणी=थकान मिटाने के लिए शरीर पर मुष्टिका का प्रहार करना, हस्त-मैथुन करना।

क्रि०प्र०—देणी, भरणी, मारणी,

रू०भे०—मुठी, मुठ्ठी, मूठि, मूठी, मूटी मूठि, मूठी

अल्पा०—मूठडी, वेठडी,

मुठकाचर–स०पु०—मुट्ठी मे समाने लायक छोटी ककड़ी या इसी आकार का काचर।

रू०भे०—मटकाचर, मुटकाचर

मुठड़ी—१ देखो मुट्ठी' (अल्पा, रू भे)

उ०—१ रूप नै स सी औ थारी घणा ऊजळी ओ राज। राज ढोला राखोनी थांरी मुठडी रे मांय।—लो गी

उ०—२ भीलणी का बेर सुदामा का तदुळ भर मुठडी बुकद। —मीरा

२ देखो 'मूठडी' (रू भे)

मुठभेड–स०स्त्री०—१ सामना, साक्षात्कार, भेंट।

२ दो पक्षो मे होने वाली लडाई।

३ प्रतिस्पर्धा में होने वाली टक्कर।

मुठांगो–स०पु०—तरकस, तुणीर।

उ०—तद बादसाह मुठांगा रा तीर काढ होदे मे ढिगली किय।। —पदमसिह री बात

मुठांणी—स०स्त्री०—तलवार (डि०को०)

मुठाणो, मुठावो—क्रि०स०—तलवार पकड़ना।

उ०—घोर तोपा जमीगां बुठावो ओळा जेम गोळा, धुकळा मचावो जोम अमावे धेचीग। कना हड़्मान री ऊठावो द्रोण प्रळैकाळ, मीस केण तेग री मुठावो तेजमीग।—जवानजी आढौ

रू०भे०—मुठावणो, मुठाववो, मूठाणो, मूठावो, मूठावणो, मूठाववो।

मुठावणो, मुठाववो—देखो मुठाणो, मुठावो (रू भे)

मुठियो—देखो 'मूठियो' (रू भे)

मुठी—देखो 'मुट्ठी' (रू भे.)

मुठीक—देखो 'मूठीक' (रू भे)

मुठीयो—देखो 'मूठियो' (रू. भे)

उ०—नैरो दातण री मुठीयो एक वणायो ले आयो।

—विमनी रै वे खरच री वात

मुट्ठी—देखो 'मुट्ठी' (रू भे)

उ०—१ सूदामा के दारिद खोये, वारे की पहिचान। दो मुट्ठी तदुळ की चावी दीन्ही द्रव्य महान।—मीरा

उ०—२ सीयाळे री रात, मूळी नित्रार रैं माचै माथै पोढी पडो है। पेमजी पग-हाथ दावै, मुट्ठी देवै है।—दमदोख

उ०—३ फूठरो नुवावै। सगळा गामा थोवै अर सोरी मुट्ठी देय'र सुवाणै। आखी रात छाती माथै हाथ फेरै अर मन रळी वात वणावै।—दसदोख

मुड—१ देखो 'मुरड' (रू भे)

२ देखो मूढ' (रू भे)

मुडढ—देखो 'मूढ' (रू भे) (उ र)

मुडक—देखो 'मुडक' (रू भे)

उ०—रावा तेरी बोली माही मुडक घणी।—मीरा

मुडणो, मुडवो—देखो 'मुडणो, मुडवो' (रू भे)

उ०—१ तरे महाराजा अजीतसघजी ने राजा सवाई जेसघ, दुरगदासजो माथे गाव वरडीया रा डेरा सु पाछा मुडीया सो उदेपूर आया। —रा व वि.

उ०—२ मारग 'वीरम' हर कुळ मडण, मुडिया तो सू मर्भ मरण। मुडियां तणी हमे जळ माफळ, परियां वट जाणे प्रमण।

—गु रू व

उ०—३ मुडिया विड मैंगळ अम्मी उढटळ, रावत विम्मळ लडि पटिय।—गु रू व

मुडियांण-स०पु० [देशज] हरिणो की एक जाति व इस जाति का हरिण।

उ०—पाछै रजक मुडियांण फाळे गोरे अग खरगोम जाणे न पावै।

—सू० प्र०

मुडियाळ-स०पु० [देशज] डिगल का एक गीत या छद जिसके प्रथम तीन चरण मे १४ मात्राए तथा चतुर्थ चरण मे ३ सगण होते हैं और तुकांत लघु होता है।

मुडियोडो—देखो 'मुडियोडो' (रू भे.)

(स्त्री० मुडियोडी)

मुडियो—देखो 'मुडियो' (रू भे)

मुडुध—देखो 'मुकुटबद्ध' (रू भे)

उ०—एकदा सभाइ वइठउ भूप, इद्र मरीखु प्रद्यूमन रूप। स्नीगरणा वइगरणा घणा, मडलीक मुडुधा नही मणा।—नळदवदती राम

मुड्डो—स०पु०—१ कुर्मी।

२ सरकडो की वनी कुर्मी जिसकी वैठक मूज की वनी होती है।

३ छोटा स्तम्भ जो किसी सीमा या स्थान विशेष पर गाडा जाता है।

उ०—नदी रैं ढावै पीळा भाटा रो मुड्डो रुपियोडो हो।

—फुलवाडी

४ मूज की वनी पायदार चौकी, पीढा।

रू०भे०—मुडो, मुडो, मुड्ढो, मुढो,

अल्पा०—मुढलो

मुड्ढो—देखो 'मुड्डो' (रू भे)

उ०—१ हुळकी मीठी, मवरी वोली मे पेमजी मुरली दलाल नैं कैयो अर आप मुड्ढै माथै वैठ्यो —दसदोख

उ०—२ वारली वैठक मे माचा-ढोलिया, खुरसी अर मुड्ढा ढाळ राख्या हा।—दसदोख

मुढ—देखो मूढ' (रू भे.)

उ०—राजन के राजा मुढ महाराजा, ताजा घर ताकदा है।

—ऊ का

मुढलो—देखो 'मुड्डो' (अल्पा, रू भे)

उ०—वण मुढलै पीव पिलगा, दोय जणा बात करैं मती ए उपावै।—लो गी

मुढेस—देखो मूढेस' (रू भे)

उ०—वडो वन वेम, म खोय मुढेस चवा चित चेत, पुर्गो मत प्रेत।—र ज प्र.

मुढो—देखो 'मूढो' (रू भे)

उ०—मुढा आगे साळ नई कराई। और हवद करायो ने ऊपर दिवांणखानो करायो।—नैणसी

२ देखो 'मुड्डो' (रू भे)

मुढ्ढ—देखो 'मूढ' (रू भे)

उ०—चाह न थी इस सब्द री मद मती सुण मुढ्ढ। प्रोढ देख धारण पती, मो मन हुती सु गुढ्ढ।—पा प्र

मुण—१ देखो 'मुनि' (रू भे)

२ देखो 'मून' (रू भे)

मुणणो, मुणवो—क्रि० स० [म० मुण] १ कह कर सुनाना, कहना, वोलना।

उ०—१ मुणै किता दीनी मऊ, इण फरमाण अवीन। पच मास अतर पडै, वेळा अधिक वधीन।—व भा

उ०—२ ग्रोछौ तिल नकू नकू तिल ग्रधको, मुणता सुकव करौ ले माप । तू ताहरा राणा टोडरमल, परिया सारिखौ परताप ।
—महाराणा प्रताप रौ गीत

उ०—३ खैंग ग्रलग हूता निस खडिया, ऊगं दीह कमध हू ग्रडिया। छत्र करि गोळ चहूदिस छागां, मुणियौ वैर पिता चौ मांगा ।
—सू प्र.

उ०—४ विचै ग्रावता वधना वाह वाळै, रटै राम वाण जती छेदि राळै। मुणै रामचद्रेस ग्रद्वीत माया,कहौ कोण ग्राटै हुई दैत काया।
सू प्र

२ वर्णन करना ।

उ०—वाल ग्रजोध्याकाड विध, मुणिया सूक्षम माड । कहै मछ जिमिही कहू, केकिधा हिव कांड ।—र रू

३ सुमिरन करना ध्यान करना ।

उ०—गदा ले खडौ लागडौ ग्रग्र गामी, भलै मात हिंगोळ हिंगोळ भामी । मुणीं मैं जिका ग्रादि ग्रन्नादि माई, ग्रवतार ले मामडा धाम ग्राई । मे म

४ मनन करना ।

५ प्रतिज्ञा करना ।

६ पुकारना, पुकार करना ।

७ रचना, रचना करना ।

८ गुनगुनाना, गुजन करना ।

उ०—दस मास समापित गरभ दीव रित, मन व्याकुळ मधुकर मुणणति । कठिण वेयणि कोकिल मिसि कूजति, वनसपति प्रसवती वसति ।—वेलि

९ जानना ।

उ०—तिणि कुलि मुणीइ सतणु रामो । भुयवलि भजइ रिउभडिवावो '—मालिभद्र सूरि

मुणणहार, हारौ (हारी), मुणणियौ—वि०।

मुणिग्रोडौ, मुणियोडौ, मुण्योडौ—भू०का०कृ० ।

मुणीजणौ, मुणीजवौ—कर्म वा० ।

मणणौ, मणबौ, मिणणौ, मिणवौ—रू०भे० ।

मुणस—देखो 'मांणस' (रू भे)

उ०—टागर लियै लियै न टोळा, ग्रारण वार भकारौ । करसा हूत पुकारै करसी, मुणसां मारण हारौ ।
—देवीसिंघ कछवाहा रौ गीत

मुणाळ—स०पु० [स०मृणाल] १ कमल ।

उ०—फपाळ विसाळ सिधाळ किसन्न, बडाळ भुजाळ उजाळ विसन्न । मुणाळ भुग्राळ छग्राळ महेस,ग्रादेस ग्रादेस ग्रादेस ग्रादेस ।
—ह र

२ कमल की नाल ।

३ कमल की जड ।

४ हस ।

उ०—१ कवि तो राता धमळ कळोधर, भावठि भजण लील भुवाळ । लहुवै सरै वसता लाजै, मांण सरोवर तणा मुणाळ ।
—ईसरदास वारहठ

उ०—२ जाणता तूभ न जांण्यौ-जाय । काया तो पाखै दाखै काय । मकोडी कीट पतग मुणाळ, भिखंग तुं हीज तु हीज भुग्राळ ।
—ह र

उ०—३ खजन नेत्र मुणाळ गति, नासा दीपक लोय । ढोलौ रूळीयायत हुयौ जत्र धन दीठो जोय ।—ढो मा.

रू०भे०—मणाळ,

मुणिद—देखो 'मुनींद्र' (रू. भे)

उ०—१ मुणिद चाहै तो वेस्या मेल्हि ।—रामरासौ

उ०—२ इण प्रस्तावैं समोसरचा, केवलधार मुणिद । चित्त मा ग्रति उच्छक थई, वादण चाल्यौ नरिंद ।—वि कु

मुणि—देखो 'मुनि' (रू भे)

मुणिपवर—देखो 'मुनिप्रवर' (रू भे)

मुणिवर—देखो मुनिवर' (रू भे)

उ०—भवि पहिलेरइ वभणि हूती, कडुउ तूबु मुणिवर दिती । नरग सहीवलि साहुणि हुई, पांचह पुरिस नियाणु धरेई ।
—सालिभद्र सूरि

मुणिस—स०पु०—युद्ध ।

मुणिसगुर—स०पु०—योद्धा, सुभट, वीर ।

मुणिसाळ—स०पु०—मानव श्रेष्ठ ।

उ०—परळ जळ गरळ दळ जळै पाडेसवो, नरा ग्रत कळै कळै वळै नीडौ । केहरी वियौ मुणिसाळ रळतौ कळै, ताइया जांणियौ काळ तीडौ ।—रावभीमसिंघ हाडा रौ गीत

मुणिसुव्वय—देखो 'मुनिसुव्रत' (रू भे.) (जैन)

मुणि, मुणिइ—देखो मुनि' (रू भे) (जैन)

मुणीसर—देखो 'मुनीस्वर' (रू भे)

उ०—सकलचद मुणीसर सील उन्नतिकार, समय सुदर सदा सुख ग्रपार ।—स कु

मुतग्रल्लिक—क्रि०वि० [ग्र०] विषय मे, सम्बन्ध मे ।

स०पु०—नौकर, मुलाजिम ।

वि०—सम्बन्धित ।

रू०भे०—मुतलक, मुतलिक,

मुतफरकात—स० स्त्री० व० व० [ग्र० मुतफर्रिकात] १ भिन्न-भिन्न विविध ।

२ फुटकर खर्च की मदें ।

३ किसी एक ही गाम के ग्रतगत जमीन के ग्रलग ग्रलग टुकडे ।

मुतवळ देखो 'मलळव' (रू भे)

मुतरज्जिम—स० पु०[ग्र० मुतर्जिम] ग्रनुवाद करने वाला, तर्जुमा करने वाला । ग्रनुवादक,

मुतलक—देखो 'मुतअल्लिक' (रू भे)

उ० – उमराव मुतलक उण मस्त में बात न काढी हल चल उण में जाहिर नहीं हुई।—नी प्र

मुतळब, मुतलब—देखो 'मतळब' (रू भे)

उ०—१ अह प्रभु चोधरिया कुळ कवण उवारै मत्त मत्तू मे गत्तू दे मारै। आवी ऊमर आ री कस आयी, छळ बळ मुतळब कर बमकर छिटकायी —ऊ का

उ०—२ जद स्वामीजी बोल्या ए आपरै मुतळब लाडू दरावें छै। जाणे म्हानें ई वहिरावसी।—भि द्र

मुतळबियो – देखो 'मतळबी' (अल्पा., रू भे)

उ० – सेठ स्यांमजी जाचक गुण-गाळ, मारजा रै लोही रा पीऊ। मितर नहीं मुतळबिया मितगेळ। —दसदोख

मुतळबी—देखो 'मतळबी' (रू भे)

मुतळिक—देखो 'मुतअल्लिक' (रू. भे)

मुतसदी, मुतसद्दी–स०पु० [अ०-मुतसद्दी] १ प्रबन्धक व्यवस्थापक।

२ राजस्थान के वे ओसवाल जो देशी रजवाडो की राज सत्ता मे महत्व पूर्ण पदो पर कार्य करते थे

३ उक्त पदाधिकारियों के वंशजों का लकब।

उ०—१ सूर सागर कनै बाग ८४ सिरदारा, खवास पासवान मुतसदीयां सारा आप आपरा न्यारा कराया।—नैणसी

उ०—२ और महाराज री असवारी वणे बाळसमद विराजता तिण सु मुदत पछां मुतसदी खवास पासवांना रा डेरा जुदा-जुदा सु हुवोडा है।—नैणसी

३ मुंशी, पेशकार, लिपिक।

उ०—फिरगण वीयी मुतसद्दी अगरेज नू अगीकार न करै, जंगी अगरेज नू अगीकार करै।

५ हिसाब-किताब रखने वाला गुमास्ता।

मुताणी, मुतावौ—देखो 'मूताणी, मूतावौ' (रू भे)

मुताबक, मुताबिक–क्रि०वि० [अ० मुताबिक] अनुसार, बमूजिब।

वि०—१ सदृश्य, तुल्य।

उ०—रिपियो कांकरै दांई करणो पडसी। मकांन ठाकरां नै आपरै माणु-तांणु मुताबक बणावणी होसी।—दसदोख

२ समान, बराबर।

मुतायोडौ—देखो 'मूतायोडौ, (रू भे) (स्त्री०मुतायोडी)

मुताळब–वि० [अ०] १ जो तलब करने योग्य हो, मांगने योग्य।

२ बकाया, बाकी, लेने योग्य।

उ०—समत १७२१ रा आसोज वद ७ वकील मनोहरदास कागळ आयो तिण माहैं लिखीयो छै-मुताळब स्त्री माहाराजाजी रै रुपीया ८०००००) इण मात छै किमत भाळी नै रुपीया २०००००) कीया छै।—नैणसी

स०पु० १ माग, तकाजा।

२ बकाया रकम।

३ प्रार्थना।

रू० भे०—मुतालिब,

मुतालबी—देखो 'मतलबी' (रू भे)

उ०—सूको जोइ सगोज नू, झटक उडै परझाड। मधुकर मित मुतालबी वसकर देह बिगाड।—र हमीर

मुतालबो—स०पु० [अ०मुतालब] १ वह रकम जो किसी के यहा बकाया हो।

२ प्राप्त होने योग्य धन।

रू०भे०—मतालबो,

मुतालिब—देखो 'मुतालब' (रू भे)

मुतावणो, मुतावबो—देखो 'मुताणौ, मूताबो' (रू भे)

मुतावियोडौ देखो 'मूतायोडौ' (रू. भे)

(स्त्री०मुतावियोडी)

मुताहळ—देखो 'मुक्ताफळ' (रू भे)

उ०—वर्षं गज चाचर सावळ वाहि। मुताहळ गज किया जुध मांहि।—सू प्र

मुति—देखो 'मुक्ति' (रू भे)

उ०—खति मुति अज्जव मद्दव, लाघव पाचमो जांण।

—जयवाणी

मुत्तफिक–वि० [अ०] जो किसी विषय या राय मे सहमत हो, एक मत हो।

मुत्ता—देखो 'मुक्ता' (रू भे)

मुत्ताहळ, मुत्ताहळि—देखो 'मुक्ताफळ' (रू भे)

उ०—१ चूडी सवि चटकी गई, रलिउ मुत्ताहळ हार। आभरणां ऊतरि पडइ, खाट खमइ नहीं भार।—मा का प्र

उ०—२ सम्करि लूटी तारुणी,आपा प्रांग-प्रमांणि। मुत्ताहळ अघरइ अछिउ, ते गुंजाहळ जांणि।—मा का प्र

उ०—३ कानि कुंडळ सिरि मुगट, मुत्ताहळि गळि माळ। दिव्य वस्त्र दीसइ भला वीर जिके वइताळ।—मा का.प

मुत्ति—१ देखो 'मुक्ति' (रू भे)

२ देखो 'मोती' (रू भे.)

३ देखो 'मूती' (रू भे)

मुत्तिमाग–स०पु० [स०मुक्ति-मार्ग] मुक्ति या मोक्ष का मार्ग अर्थात् तपस्या, त्याग।

मुत्तियदांम—देखो 'मोतियदाम' (रू भे)

उ०—दिपै गुण निम्मल मुत्तियदांम, सेवु मन सुद्ध तिको हिज स्वांम।—व व प्र

मुत्ती—१ देखो 'मुक्ति' (रू० भे)

उ०—कयदाराय मागव नरिद किन्नर पय मत्ती। पुरिसादाणिय पासनाह रेहइ सुह मुत्ती।—स कु

२ देखो 'मोती' (रू भे)

३ देखो 'मूती' (रू भे)

मुरसदी, मुरसद्दी—देखो 'मुतसद्दी' (रू भे) (मा म)

उ०—१ देस रो काम सारो मुतसदियां नू देय आप जनाने माहीं एस करै।—डाढाळा सूर री बात

उ०—२ औ पण हजूर था और सगळा लोग अमराव मुतसद्दी था तिण में कुसलसिंह राजा नू कही।

—मारवाड रा अमरावां री वारता

उ०—३ प्रभात सवेरे दिन उगतां ही मुतसद्दी प्रधान दीवान वकसी रे डेरे गया।—ठा राजसिंह री वारता

उ०—४ पाखती गोपालदास रा मुतसद्दियां नू हाडा रा मुतसद्दी कही जे राणी सू जुहार कर चढज्यो।

—गौड गोपाळदास री वारता

मुथकदा—स०पु०—फलित ज्योतिष के २८ योगो मे से एक।

मुथरा—देखो 'मथुरा' (रू भे.)

उ०—मुथरा माहि वरतिया मंगळ। घण कितूहळ घरोघरि।

—ह नां मा

मुद—स०पु० [स०] १ आनन्द, हर्ष मोद। (ह नां मा)

२ उत्साह।

मुदई—देखो मुद्दई' (रू भे) (मा म)

मुदक—स०पु०—एक आभूषण विशेष। (व स)

मुदकारी—वि० [स०मुद कारिन्] प्रसन्न करने वाला।

उ०—ता अग कै सारगदेव सुत, प्रतिहारी औरस प्रकट्यौ सुत। तोक सुहोत मरी जननी तस, बीसलदेव भयौ चिंता वस। धात्री बनिक वधू इक धारी, कुमर ताहि सौंप्यौ मुदकारी। लख्यौ दुग्ध तांको सुभलच्छन वेधक मतसन खोजि बिचच्छन।—व.भा

मुदग—स०पु० [स० मद्ग] १ मूग।

२ ढक्कन।

३ आच्छादन, गिलाफ।

मुदगर—१ देखो 'मुगदर' (रू भे)

उ०—हड सहत करि दुरत, रवद काचा पळ रोळै। मण बारह मुदगरां, अणा जेही ऊतोळै।—सू प्र

उ०—२ अलगो नही मूकां रे, जलती मे फूका रे। वखतावर सगारे, जांणे आण विलगारे। घणी रे मनुहरा मूसल मुदगरां रे।

—जयवाणी

२ देखो 'मुद्गर' (रू भे)

मुदत—१ देखो 'मुद्दत' (रू भे)

उ० १ टकसाळ व्याज में हैंसो ४, मुदत उप्रत हुवा, हैंसो ८ तिण रा रु २०००) री ठोड। —नैणसी

उ०—२ और महाराज री असवारी घणे ·· बाळसमद विराजता तिण सु मुदत पछा मुतसदी खवास पासवांना रा डेरा जुदा जुदा सु हुवोडा है।—नैणसी

२ देखो 'मदद' (रू भे)

उ०—दार वखानें नायौ मुवत अरक अत आयौ खरै। दो पहर जुद्ध दखणाध सु, कीयो जुडै जोधपुरै। —गु रू व

३ देखो 'मुदित' (रू भे)

मुदति—१ देखो मदद' (रू भे)

उ०—प्रिथम पाट उद्धरै त्याग उधारि खट अन्ना। आच खडग ऊधरै, मुदति सुरताणां खाना। —गु. रू. व.

२ देखो मुद्दति' (रू भे)

३ देखो मदद' (रू भे)

मुदमगळ—स०पु०यौ० [स०] आनन्द, खुशहाली,

मुदर—देखो 'मुंदिर' (रू भे) (अ मा., ह ना मा,)

मुदरा—देखो 'मुद्रा' (रू भे)

उ०—१ कहजै दिगपाळ जटाळ कणा। मुदरा लाय जोगिय आप मणा। —पा प्र

उ०—२ माळा मुदरा मेखला रे बाला, खप्पर लूंगी हाथ। जोगिण होइ जुग ढढसू रे, म्हांरा रावळियारी साथ। —मीरां

मुदरामारग—देखो 'मुद्रामारग' (रू भे)

मुदराळ—देखो 'मुद्राळ' (रू भे)

उ०—१ लगोटबध बाला सहू लाल चिळ्यौ मुदराळ वणि। ओभिकै वीर सहू जागिया, भगवती नीपाइ भणि —मा वचनिका

मुदल—देखो 'मुद्दल' (रू भे)

मुदाम—स०पु०—आनन्द का स्थान,

उ०—टीडीरो मुदाम जतन चिडकोल्या चोळी। लटां सूट रैवास, घास-फूसा रो भाळो।—दसदेव

मुदाइत—स०पु० [अ० मुद्दई] १ उत्तराधिकारी, वारिस, दावेदार, हकदार।

उ०—तठा पछैली सीहा रै पटराणी और हुती। तिण रै पेट रा वेटा ४ हुता, तिण माहे वडो वेटो टीकायत साहबी रो धणी मुदाइत छै।—नैणसी

२ मुखिया, प्रधान।

३ खास, मुख्य,

उ०—कूर्म कह्यो-घोडां राज, घोडा हीज मुदाइत, जिण रै घोडा रो अधिकार हुसी तिण रो राज।—रावरिणमल री बात।

४ जिम्मेदार, उत्तरदायी।

रू०भे०—मुदाई, मुदायत, मुदेत,

मुदाई—१ देखो 'मुद्दई' (रू भे)

२ देखो 'मुदाइत' (रू भे)

उ०—मान दळै कायरथ मुदाई। सादू भड धीरियो सवाई।

—रा रू

मुदादसिल—स०पु०—एक विशेष प्रकार के पत्थर का टुकडा जिसमे हर समय मोर का आकार मालूम होता है।

उ०—दुनि दिल दरपण भई, सरब रूप सम भाय। मो मन भया मुदादसिल मित्र मोर दरसाय। —रज्जब

मुदायत—देखो 'मुदाइत' (रू भे)

उ०—१ वुद्धि वल सेती काम, लसकर री मुदायत सेनापति किसानू

ठहरावणो ।—नी प्र

उ०—२ आया मिळण अमीरळ एता । जवना दळे मुदायत जेता ।
—रा रू

उ०—३ तरै रावळ केहर री वडो बेटी केलहण थो, जिणनूं परो काढियो, नै लखमण नूं मुदायत कियो ।—नैणसी

उ०—४ अठै तिण माहे जेमल मुदायत वडो कोहर छै ।—नैणसी

उ०—५ राव चद्रसेन नीमरीयो । देवडो बीजो हरराजोत पिण नीमरीयो । उहट जैमल मुदायत होय मडीयो —रावचद्रसेन री वात

उ०—६ विस्वं के तुम नायक और सबके मुदायत । सो जग की दील में वरम जैसी सायत । —रा रू

मुदायले, मुदायलो—देखो 'मुद्दालेह' (रू भे) (मा म)

मुदार—स०पु० [अ० मदार] १ उत्तरदायित्व, जिम्मेदारी, भार ।

उ०—१ ईयां रै परधान जैतमल रै ऊपर मुदार ।—नैणसी

उ०—२ सरव काम नामै-लेखै री मुदार बेटे ऊपर और देवीदास रै टाकुरां रै दरसण री प्रतीज्ञा सो सहर सूं वाहिर अधकोस देहरौ तठै श्री लिखमिनाथजी विराजै सो देवीदास नित दरसण करवानै जावै । —पलक दरियाव री वात

उ०—३ पछै कितरेह दिने तेजसी दरवार आया । पछै एक दिन राव अरोगता था । तद रावजी रै काम री मुदार अमा माथै थी ।
—राव मालदे री वात

२ निर्भरता ।

उ०—१ साहबी सारी री मुदार राव रिणमल ऊपर सु मेवाड रा रजपूतां नैं स्वावै नहीं ।—नैणसी

उ०—२ लाखै रै माथै कुंवर पदै री मुदार । सरब राज लाखै सारु हुवो । वलोचा री जाडगा वगो देस । घणी पांणी घणी नदी
—लाखा फूलांणी री वात

३ आश्रय, सहारा, आधार ।

उ०— १ पण ईढना करया मोत ई कद आवै ? इण छळ रै टाळ जीवण री दूजो मुदार ई काई चुणती । पण श्रो मुदार कठै जाय छूटेला—नी वेरो नीं । —फुलवाडी

मुदाळो—देखो 'मुद्राळ' (अल्पा, रू भे)

उ०—मुदाळा प्रताप कोट सावूत राखियो मारू, मादूळा पटैत याळा खगाळा सारीख —महादान महडू

मुदित—वि० [स०] आनन्दित, हर्षित, प्रसन्न, खुश ।

उ०—१ नमो स्रस्टा त्वस्टा अगम उतस्रस्टा प्रह नमो । नमो स्रेस्टी जेस्टी मुदित परमेस्टी मह नमो ।—ऊ का.

उ०—२ भोळा भोळा वाळ, घरै रोळा रुडकावै । भोळा भर घर लाय मुदित मोयावा पावै ।—दसदेव

स०पु०—१ रति क्रिया मे एक प्रकार का आलिंगन ।

२ देखो 'मदद' (रू भे)

रू०भे०—मुदय, मुदत, मुदति, मुदीत, मूदति, मूदती ।

मुदितमन—वि०—प्रसन्न चित्त ।

रू० भे०—मुदमन,

मुदिता—स० स्त्री० [स०]१ साहित्य में वह परकीया नायिका जो पर-पुरुष सम्बन्धी प्रेम की अभिलाषा पूर्ण होते देखकर प्रसन्न होती है ।

२ प्रसन्नता ।

मुदिर—स० पु० [स०] १ बादळ मेघ । (डि को, ना डि को.)

उ०—कसिकार मुदिर निस्फळ कढत, माता जिम सुत लखि मुवो ।
—व भा

२ प्रेमी । ३ लपट या कामुक व्यक्ति ।

४ मेढक ।

रू०भे०—मुदर,

मुदी—१ देखो 'मुद्दई' (रू भे)

उ०—१ माहे राजा सूं मालम करियो,करसा ऊभा छै, हुक्म करो तो आवै । तरै हुकम हुवो । तरै माहे,पोहता । त्यां माहे ऊगो मुदी वोल्यो, राज्याजी, रांम रांम, राज्याजी समाव्या छो ।
—सरवहिया कहवाट री वात

उ०—२ उठै हये राजा रै किफायत कर देखाळीयो । तद ईये नु सरव जगात हासल रो मुदी कीयो ।—ठाकुरैसाह री वात

उ०—३ सेखावत रावत वट साजै,मुतन 'वहादर' समर सगाह । फोजां तणो मुदी नह फिरियो, गिरियो बीच करै गजगाह ।
—राजा केसरीसिह सेखावत रो गीत

उ०—४ तद जगमालजी भूतां माहे मुदो थो उमराव, तिणनैं कवर कहयो, कोस ५० घोडो खडियो, तिको आळस करै छै, तिण सूं नगर महेवै पोहचायो जोईजै ।—जगमाल मालावत री वात

मुदीत—देखो 'मुदित' (रू भे)

मुदु—देखो 'म्रदु' (रू भे)

उ०—मुदु वायक बोध दियै महिला प्रिति लागन काळ कियै पहिला । महि पुन्न प्रतापहि माघ मिळै हहरे जमराज निकेत हिलै ।
—ऊ का

मुदेत—देखो 'मुदाइत' (रू भे)

उ०—थैं मुदेत थाट रा फडाया भुजा आभ थाभे । लाट रा लिखाया मेदपाट रा लिखत ।—राघोदास सांदू

मुदै—देखो 'मुद्दई' (रू. भे)

उ०—१ इण फोज में मुदै मागोजी समारचदोत हा ।—द. दा.

उ०—२ मेडतिया महाराज दळ किया मुदै करतार । दुद अमदी साळूळै, त्या हुदी तरवार ।—रा रू

उ०—३ लुद्रवै रावळ भोज (राज) करै । जेसलदे रै भाटी, जो मुदै जेसल मायै ।—वरमे तिलोकसी भाटी री वात

मुदोत—स०पु०—सीसोदियो की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति

मुदो—स०पु० [अ० मुद्दआ] १ अभिप्राय, तात्पर्य, आशय ।

उ०—१ गुमाई ने कहै नमो नारायण । जद ते बोल्या—नारायण । इण रो मुदो ओ म्हा में करामात कोई नहीं है । नमस्कार नारायण कूं करो ।—मि द्र.

उ०—२ उवै कहै दया पालो । दया पाल्या निहाल हुसो पिण

म्हानै वांधा कोई तिरौ नही । इण री मुदौ यौ है ।—भि द्र

उ०—३ पातसाहजी मुनसव तागीर कियो पछै सावत हुवो जिण मुदै री ।—द दा

२ उद्देश्य, लक्ष्य ।

उ० जेसी एम बोल्यौ छे मना मे धीर राखो, रोटी जीमि पाछै ई मुदा की बात भाखो ।—शि व

३ अर्थ, मतलब, भाव ।

उ०—हीण दोख मो हुवै, जात पित मुदो न जाहर । निनग जेणनै निरख, विकळ वरणण विन ठाहर ।—र.रू.

४ असलियत, वास्तविकता ।

उ०—मिळतो मगण न कहै, मुदो करू मालूम । मारग लागौ मत टिको हाजर नाजर सूम ।—बा दा.

५ स्वार्थ, गरज ।

६ उत्तरदायित्व, जिम्मेदारी, भार ।

उ०—१ हमैं ही जैतारण सारीखो सहर वसै छै । मुदो वस्ती रो वांणिया ऊपर छै ।—नैणसी

उ०२ फूल रै और वेटो कोई न थो । लाखा ऊपर हीज मुदो हुवो । —नैणसी

७ प्रवध ।

उ०—वरस दोय तो सीहे नु राय दूदै हासल मेडतै रो आधो-आध लीयो । मुदो सारो दुदै रै हाथ छै ।—नैणसी

८ अवसर, मौका ।

९ विषय, प्रसग, सम्बन्ध ।

१०—खुलासा, स्पष्टीकरण ।

११ निर्भरता ।

उ०—तळाव १ आसळ कन्है छै । पाणी रो मुदो झरणा माथै छै । —नैणसी

रू०भे०—मुद्दो, मूदो

मुद्गर—स०पु०[स०] १ वार व नक्षत्र सम्बन्धी वनने वाले २८ योगो में से एक ।

२ तक्षक कुलोत्पन्न नाग ।

रू०भे०—मुग्गर, मुदगर,

मुद्दई—स०पु० [अ०] १ दावा करने वाला, दावेदार, वादी ।

२ उत्तराधिकारी, वारिस, हकदार ।

३ प्रधान, मुखिया, अगुवा ।

४ प्रमुख, खास, मुख्य ।

५ शत्रु, वेरी ।

६ निर्भर, आश्रित ।

रू०भे०—मुदई, मुदाई, मुदी, मुदै, मुदो, मुद्दी, मुद्दे, मुद्दै ।

मुद्दका—देखो 'मुद्रिका' (रू भे)

उ०—जिहा माहि जोवा पणू मांन जेहा । दई मुद्दका जेणनू मेघ देहा ।—सू प्र

मुद्दत—स०स्त्री० [अ०] १ किसी कार्य या लेन-देन के प्रति निर्धारित की गई अवधि, मयाद ।

उ०—कही मैं वायदो कियो थो सो किण भांति जावै थो । जे मुद्दता नही आवतो तो ही हु वैठो रहितो, अठा सू ऊठतो ही नहीं । —नी.प्र.

२ समय, काल, वक्त ।

३ वहुत लम्वा समय, दीर्घकाल ।

४ देर, विलव ।

रू०भे०—मुदत,

५ देखो 'मदद' (रू भे)

उ०—कहै साह जिहगीर, खुरम सुरतांण (सुणे रहत) । तम सूर हम खुदाई, पीर पक्कवर मुद्दत ।—गु रू वं

मुद्दति, मुद्दती—वि० [अ०मुद्दत+रा०प्र०इ०] १ जिसमे कोई अवधि निश्चित की गई हो ।

२ जो किसी निश्चित अवधि तक के लिये मान्य हो ।

स०पु०—१ एक प्रकार का बुखार ।

रू०भे०—मुदति, मूदति, मूदती,

मुद्दल—स०पु० [स०मर्दल] १ ऋण पर दिया जाने वाला मूलधन ।

२ एक प्रकार का वाद्य विशेष ।

उ०—भभा मउग मुद्दल कडव झल्लरि हुडुक्क कसाला । काहुल तिलिमा वसो सखो, पणवो य वारसमो ।—व-स

रू० भे०—मुदल,

मुद्दालेह—स० पु० [अ० मुद्दआअलेह] जिस पर कोई दावा या मुकदमा किया गया हो, प्रतिवादी ।

रू० भे०—मुदायले, मुदायलो,

मुद्दी, मुद्दे, मुद्दै—देखो 'मुद्दई (रू भे)

उ०—१ जो राजा म्हानू देस मांहीं काढै, रिणमलां माही तो आप मुद्दी छो ।—मारवाड रा अमरावा री वारता

उ०—२ इतरो विचार कर दरवार रा आदमी सागे देय काजी नै मुद्दै कर, हाथी घोडा कपडो मेवो रोकड वेवडा नारेळ टीके मेलिया ।—जलालवूबना री वात

उ०—३ सगळा गौड एक मत होय उठिया, मुद्दै तो गोपाळदास बीजा माई सारा हुकम सिर ऊपर झालियो ।

—गौड गोपाळदास री वारता

उ०—४ पण रायधण, कुवर पदे रावळ रै आगे मुद्दै, रावळ रै जीव प्रांण । बीजा वेटा हता पण रायधण सू वडो प्यार ।

—रायधण री वात

मुद्दो—देखो 'मुदो' (रू भे)

उ०—१ दीवांण सुदरदास ऊपरि कांम रो मुद्दो छै । माह सुदरदास री वेटो माह वेणीदास, सिको कुवर रै हजूर रहै ।

—पलक दरियाव री वात

उ०—२ परायो सुख अर आपरो दुख घणो लखाया करै । इण मुद्दा

रो मूलामों करणा मारू ग्रा एक छोटी सी वात है।—फुलवाडी

उ०—३ राव जैतसी विहारीदासोत वीकमपुर मे राज करे। वडो भलो सरदार, क्रिद्ध मयो, तीय रै वेटो सूदरदास री पर मुद्दौ रो उवा सूदरदास मलो साचो सरदार।

—भाटी सूदरदास वीकमपुरी री वारता

उ०—४ दाता रै धुरि देयि, दान रो लाधो दद्दो। सूव सर्ना सग्रहे, माह रै टरा सु मुद्दो।—ध व ग्र.

मुद्ध–स०पु०[स० मूर्धन] १ मस्तक, सिर।

उ०—नवो जन्म लै कुड कडीर न्हावै, महामुद्ध न्है मुद्ध मां नू नमावै।—मे म

२ मुड, कटा हुग्रा सिर।

उ०—जगच्चख भाळन कौतुक जुद्ध, माळा कज सकर टाळत मुद्ध।

—मे म

३ देखो 'मुग्ध' (रू भे)

मुद्धरी—देखो 'मधुर' (ग्रल्पा, रू भे)

उ०—जिरण समै गहरो मुद्धरो मुद्धरो गाजै है, पवन सीतळ मद वाजै है।—र हमीर

मुद्र–स०पु०—१ पुरुषों की बहत्तर कलाग्रों में से एक।

२ देखो 'मद्र' (रू भे)

३ देखो 'मुद्रिका' (मह, रू भे)

उ०—लहै मुद्र चूडामरणी दीव लीवी।—सू प्र

मुद्रक–स०पु० [स०] १ मुद्रणालय या छापाखाना का वह ग्रधिकारी जिसके नियन्त्रण मे छपाई का कार्य होता है।

२ मुद्रण कार्य या मुद्रण कला का जानकार।

३ एक ग्राभूषण विशेष। (व स)

वि०—मुद्रण करने वाला।

मुद्रका—देखो 'मुद्रिका' (रू भे)

उ०—१ हिरन मैं पन्न हीरै जडित्त, साकळा करगो सुसोभित। मुद्रका सु कर-साखा सुभग्ग, मिरण जारण दिपै फुरण सेस नग्ग।

—गु रू व

उ०—२ दई दीव सो मुद्रका सीत दीधी। लहै मुद्र चूडामरणी दीव लीवी।—सू प्र

मुद्रडी, मुद्रडी—देखो 'मूंदडी' (रू भे.)

उ०—मारिणक-चडती मुद्रडी कर नव-ग्रह ग्रनत। कठि जनोई तगतगट, ग्रंथि त्रिणि ग्रय तत।—मा का प्र

मुद्रण–स०पु० [सं०] १ मुद्रणालय या छापाखाने मे होने वाला छपाई का कार्य।

२ वस्त्रादि पर की जाने वाली छपाई या ग्रकन।

३ किसी ठप्पे ग्रादि की सहायता से ग्रकित किया जाने वाला चिन्ह।

मुद्रणयंत्र–स० पु० [स०] छपाई करने वाली कल, प्रेस की मशीन।

रू०भे०—मुद्राजत्र, मुद्रायत्र

मुद्रणालय–स० पु० [स० मुद्रण+ग्रालय] जहां पुस्तकें, पत्र, दैनिक-पत्र ग्रादि की छपाई का काय होता हो छापाखाना, प्रेस।

२ वह स्थान जहा किसी प्रकार की छपाई का काम होता हो।

मुद्राक–स० पु० [स० मुद्रा+ग्रक] १ सरकारी मुद्राग्रकित वह पत्र जिस पर कोई पक्की लिखा पढ़ी का कार्य किया जाता है, तथा जिस पर ग्रर्जी दावा लिखकर ग्रदालत मे पेश किया जाता है। (स्टाम्प)

२ उक्त कागज पर ग्रकित मुद्रा, चिन्ह, मोहर।

३ डाक-टिकट।

४ छाप, मोहर (स्टैम्प)

५ छाप या मोहर का ग्रकित किया हुग्रा चिन्ह।

मुद्रांकित–वि० [स०मुद्रा+ग्रकित] १ जिस पर किसी मुद्रा या मोहर का ग्रकन किया गया हो।

२ शरीर पर विष्णु के ग्रायुध के चिन्ह लगवाया हुग्रा, (वैष्णव-व्यक्ति)

३ मुद्रा या मोहर ग्रकित कर ग्रविकृत किया हुग्रा, (पत्र)।

मुद्रा–स० स्त्री० [स०] १ किसी के नाम की या किसी निर्धारित चिन्ह की छाप, मोहर, (सील)

उ०—छोडिउ पडु कुमारी पासि तसु मुद्रा लाधी।

—सालिभद्र सूरि

२ ग्रगूठी मुद्रिका, छल्ला।

३ ऐसी ग्रगूठी जिस पर किसी का नाम ग्रकित हो।

४ प्राचीन समय मे मुद्रा या चिन्ह से ग्रकित ग्रधिकार पत्र जो यात्रा का परवाना माना जाता था।

५ सरकार द्वारा प्रचलित धातु के सिक्के जो वस्तुग्रो के क्रय विक्रय मे काम ग्राते हैं, मुहर, रुपया, पैसा ग्रादि।

उ०—पच लाख ५००००० मुद्रा, पटा लै जयसिंघ दलेल।

—व भा

६ ग्रर्थ शास्त्र में-किसी सरकारी वैक द्वारा ग्रधिकृत किया हुग्रा कागज का नोट, चैक, ड्राफ्ट ग्रादि कागजी मुद्रा जो लेन-देन एव भुगतान मे निर्विरोध काम ग्राते हैं।

७ कोई सिक्का।

८ पदक, तमगा।

९ चपरास पर लगाने का विल्ला।

१० ग्राधुनिक प्रेसो मे छपाई के लिये बने हुऐ धातु के ग्रक्षर।

११ योगियो के कान मे पहनने का ग्राभूषण (नाथ एव सिद्ध)

उ०—१ तरै चेले १ कह्यो–हाथां रा पाळिया काय वाढो ? कानै मुद्रा छै, माथा रो वरण फेरो। तरै ग्रा वात गरीबनाथ रै दाय ग्राई।—नैणसी

उ०—२ मुद्रा माळा भेख लू रे, खप्पड लेऊ हाथ। जोगिन होय जग ढूढसू रे, रावळिया के साथ।—मीरां

१२ भक्त जनों के शरीर पर अंकित विष्णु के आयुधों के चिन्ह।
उ०—१ नभ कठ पवित्र करिस हू नरहर, धारै मुद्रा तूम सखधर।
उदर पवित्र करिस अपरपर, चरणाम्रत तो धरै चक्रधर।—ह र
उ०—२ गावै मुख हरजस गोपाळ, मुद्रा छाप तिलक गळ माळ।
मागै भीक फिरै दळ माह, राति पडै नै लागै राह।—रा रू
१३ मुखाकृति जो हृदयगत भावों के अनुसार बदलती रहती है।
१४ हाथ, पांव, आंख, मूह, गर्दन आदि की कोई स्थिति।
१५ देव पूजन में हाथ और अंगुलियों को विशेष प्रकार से समेटने मोडने आदि का ढग।
१६ हठ योग में साधना के लिये शरीर को विशेष प्रकार से समेट कर बैठने का ढग, अग विन्यास।
१७ तान्त्रिकों की एक साधना।
१८ तान्त्रिक गुह्य साधनाओं मे वह रमणी जो तान्त्रिक अनुष्ठानों में सहभागिक रहती है।
१९ रहस्य, भेद।
२० साहित्य में वह अलकार जिसमे प्रस्तुत अर्थ प्रतिपादक शब्दों से किसी अन्य अर्थ का भी बोध होता हो।
रू० भे०—मुदरा, मूदरा,

मुद्राजत्र—देखो 'मुद्रणयत्र' (रू भे.)

मुद्रानदक—स० पु० यौ०—एक आभूषण विशेष। (व स)

मुद्रामारग—स०पु० [स० मुद्रा-मार्ग] मस्तक के भीतर का वह रन्ध्र जहा से योगियो का प्राण वायु बाहिर निकलता है, ब्रह्मरध्र।
रू० भे०—मुदरामारग

मुद्रायत्र—देखो 'मुद्रणयत्र' (रू भे)

मुद्राळ—वि० [स० मुद्रा × आलुच्] जिसने कान मे मुद्रा धारण कर रखी हो, मुद्रा धारन करने वाला।
उ०—जुगां वाळी देहारी वेहारी अनुज्जा जयौ। मेहा री तन्नुज्जा जयौ घटाळी मुद्राळ।—हुकमीचद खिडियो
स०पु०—नाथ सम्प्रदाय का योगी।
रू० भे०—मुदराळ,
अल्पा०—मुदाळो

मुद्राळी—स० स्त्री०[स० मुद्रा+आलुच्+रा० ई] १ दुर्गा, महाकाली।
उ०—फर्ण भाळ सिंदूर ज्यो ज्वाळ झाळा। मुद्राळी गळै हिंडुळै मुड माळा। भुजा भामणा ककणा सज्ज कीधा, लसै सूळ ढैल खडगखप्र लीधा।—मे म
२ हठयोग में विशेश अंग विन्यास की पाच मुद्राए—खेचरी, भूचरी, चाचरी, गोचरी और उन्मनी।
३ महादेव, शिव।
४ नाथ सम्प्रदाय का योगी।
५ महात्मा।

वि० जिसने कान में मुद्रा धारण करली हो।

मुद्रिका—स०स्त्री० [स०] १ अगूठी, छल्ला। (व स)
२ तर्पण आदि पितृ-कार्य करते समय पहनी जाने वाली कुश की अंगूठी
३ योगियो की कर्ण-मुद्रा।
४ सिक्का, मुद्रा।
५ मोहर छाप वाली अगूठी।
रू० भे०—मुद्रका, मुद्रका, मुद्री,
मह०—मुद्र,

मुद्रित—वि० [स०] १ मुद्रण किया हुआ, छपा या छापा हुआ।
२ चिन्हांकित, चिन्हित।
३ मोहर किया हुआ।
४ रुका हुआ, बद।
उ०—जिण री सगति रै प्रभाव सू स्वरग-लोक रो मारग मुद्रित कराय कुभीपाक रो निवास भाळियो।—व भा
५ त्यागा हुआ, छोडा हुआ।
६ अनखिला, अविकसित।

मुद्री—१ देखो माद्री' (रू भे)
उ०—सच्चवई पिय माय अबा अवाली अबिका। कुती मुद्री जाइ वउ पावेवा नदणह।—सालिभद्रसूरि
२ देखो 'मुद्रिका' (रू भे)

मुधप—देखो 'मधुप' (रू भे)
उ०—केतकी मीर पसळे तुरी केवडी, रग वहै धरा सर रुधर रातौ। ताईया सेन वाढी वचै 'ऊद'तण मुधप रग रमै मैमत मातौ।
—तेजसिंह सेखावतरो गीत

मुधरु, मुधरू, मुधरौ—देखो 'मधरो, (रू. भे)
२ देखो 'मधुर' (अल्पा, रू भे)
उ०—१ अनी ऊन्हालइ म विलसीइ, नव योवन गलि लाइइ। मुधरु वाउ राति चाद्रिणी, करइ विलास करइ प्रिय तणी।
—प्राचीन-फागु सग्रह
उ०—२ नाच गाय कर निलजता, रच वप भूसण रास। मार निजारा मोहियौ, हजौ मुधरे हास।—वा दा
उ०—३ भीणा ओरणा मे बाळा पोया मोती मुधरा-मुधरा चिमकता हा।—फुलवाडी
उ०—४ सेठा री हूस हाल मिटी नीं ही। मुधरा—मुधरा मुळकता बोल्या।—फुलवाडी
उ०—५ सूरज निगै नी आवै तो ई मुधरा-मुधरा ठाडा उजास मे कुदरत साव सुगट दीसै।—फुलवाडी
उ०—६ आनम भणभै ब्रह्म ग्यान, मुधरा अमीयाह।
—केसीदास गाडण
उ०—७ उजळी पाखा हस, लीली पांखा सूवटा, कोयल मुधरी वांणी अर छत्तर धारी मोर—फुलवाडी

उ०—८ चिड़िया री मीठी चकचक रो मिठास घुळियोड़ी हवा मुघरी मुघरी वाजती ही।—फुलवाड़ी
(स्त्री० मुघरी)

मुघा—ग्रव्य० [स०] १ व्यर्थ, निरर्थक।
२ भूल मे।
वि०—१ मृषा, झूठ, ग्रसत्य।
२ व्यर्थ
स० स्त्री०—१ ग्रसत्यता, झूठ।
२ व्यर्थता।

मुघि—देखो 'मुग्धा'
उ०—निलवटि कस्तूरी तिलक स करिसि मुघि ग्रयाण। सहिजि समिहर लेखवी, करसि राहु-निवाण।—मा कां प्र

मुघ्घ—१ देखो 'मुग्ध' (रू भे)
२ देखो 'मुग्धा' (रू भे)
उ०—१ थाह निहाळइ दिन गिणइ, मारू ग्रामा-लुब्ध। परदेसे घाघळ घणा, विरउ न जाणइ मुघ्घ।—ढो मा
उ०—२ पावस मास, विदेस प्रिय, घरि तरुणी कुळसुघ्घ। सारग सिघर निगद करि, मरड स कोमळ मुघ्घ।—ढो मा.

मुनद, मुनद्र—देखो 'मुनींद्र' (रू भे) (ग्र मा)
उ०—१ हर क्रत हार मुनद क्रत हासं। पडिया जुध कमवज पनगासं।—सू प्र
उ०—२ ईस लका दोग्रा ग्रेता जुगेता सग्रांम ग्रेसो, उघरेत केता घू ग्रनेता उनद्र। रुद्र छाक लेता वीर देता राह जेता फरे, मळे हाम हेता वेता ग्रनेता मुनद्र।—वदीदास खिड़ियो

मुन—१ देखो 'मुनि' (रू भे)
उ०—१ सिद्ध कपिल मुन, सारखा, महिमा जाहर कीध। जननी हूंदो चरण जळ, पावन सिर घर पीध।—वां दा
उ०—२ गुर की महमा मुन जन गावै, मूरख ग्रवा मरम न पावै।
—स्रीहरिरामदासजी महाराज
२ देखो 'मून' (रू भे)

मुनकलब, मुनकलिब—वि० [ग्र० मुन्कलिब] १ पलटा हुग्रा, फिरा हुग्रा।
उ०—नै लस्कर ऊपर मान मन राखै क्यो जे सिपाई रो हाल मुनकलब छै नालची छै।—नी प्र.
२ ग्रौंधा, उल्टा।
३ ग्रस्त-व्यस्त, उथल पुथल।

मुनकिर—स० पु० [ग्र० मुन्कर] मुसलमानों के दो फरिश्तों मे से एक जो मुर्दो से कब्र मे पूछ ताछ करते हैं। (काल्पनिक)
उ०—मुसलमान पछै तर देवता-जनाजो दफणायां पछै मुनकिर ग्रर नकीर नाव रा फरिस्ता ग्रावै।—फुलवाड़ी

मुनक्का—स० स्त्री० [ग्र०] एक प्रकार की बड़ी दाख, जिसमे बीज होते हैं ग्रौर यह ग्रोषधि मे काम ग्राती है, मुनक्कादाख।
रू० भे०—मनकादाख, मनखादाख मिनकादाख, मिनखादाख।

मुनजन—देखो 'मुनिजन' (रू भे)
उ०—वडे वडे मुनजन छले, वै रहते एकत।
—स्रीहरिरामदासजी महाराज

मुनव्वतकारी—स०स्त्री० [ग्र० फा०] किसी लकड़ी पर की हुई बेल बूटो ग्रादि की चित्रकारी।

मुनमथ—देखो 'मनमथ' (रू भे)
उ०—गुल नारग महदी गुल रेसमी गुल सोहै। मुनमथ का इद का मुनेस्वरू का मन मोहै।—सू प्र

मुनमाळ—स०स्त्री० [स० मुनि+माला] मुनियो की पंक्ति 'मुनि-समाज, मुनि-वृद।
उ०—जगत दिखायो जनम दे, पोख करी प्रतिपाळ। ईस्वर नू उपमा दिए, मात तणी मुनमाळ।—वा. दा.

मुनराज—देखो 'मुनिराज' (रू भे.)

मुनवर—देखो 'मुनिवर' (रू. भे.)
उ०—तीस कोडि तिन्न कोड देव तन्न, सुर ग्रावी ग्रावीया सहि। दास तणी परिकाम दिखावइ, मुनवर रूवा दइत महि।
—महादेव पारवती री वेलि

मुनसप—देखो 'मनसब' (रू. भे)
उ०—१ सवत १६७६ रा मंगसर माहे पातसाहजी री हजूर सूं टीको ग्रायो, मुनसप ग्रायो। पहली टीकै बैसता तीन हजारी जात दोय हजार ग्रसवार मनसप हुग्रो, तिण माहे जागीर पाई।
—नैणसी
उ०—२ 'गजसाह' देखि जहगीर गह, करि हित कमळ प्रकासियौ। पूजियौ माह मुनसप पटा, 'सूरसाह' सावासियौ।—सू प्र

मुनसपदार—देखो 'मनसबदार' (रू भे)
उ०—इण मुनसपदार स्रीमहाराजाजी साथै विदा हाजर था सु कीया, दूजां नू फरमान हुवा।—नैणसी

मुनसफ—देखो 'मुनसब' (रू भे)
उ० - १ मिळवा मान 'ग्रजन्न' सू, प्रात हुवौ ग्रसवार। रजवाडत मुनसफ तणी, मिळ दीनी तिण वार।—रा रू
उ०—२ तिस वखत राव नै छळ द्रोह किया। जोधाण ग्रपणै मुनसफ मे लिया।—सू प्र

मुनसव—देखो 'मनसब' (रू भे')
उ०—१ जरै जवनेस सुरजन रै कहियां ग्रौसारत १६१२ हाडा सिघदेव नू सहरखाप १ सहर रै साथ ग्रढाई हजारी २५०० रो मुनसब देर बूंदी रै ऊपर विदा कीधो।—व भा
उ०—२ सिवानू साहजादी कह्यो– तू म्हारो भाई छै। तू म्हा साथै सांडव ग्रावै तो तोनू पातसाहजी सू ग्ररज करनै मुनसब दिराऊ।
—नैणसी

मुनसबत—देखो 'मनसब' (रू भे)
उ०—सो नवाब चढ गयो। केसरीसिंह वैठ रहियो। मुनसबत जागीर हुवो।—ग्रमरसिंहजी राठौड़ री वात

मुनसबदार—देखो 'मनसबदार' (रू भे)
उ०—१ बाकी तीनू ही भाई मुनसबदार हुवा। कोई किही भाई रो चाकर ग्रासकारियो नही हुवो।—महाराजा पदमसिंह री बात
उ०—२ मुनसबदार थो सु अपवार २०० तथा ४०० सु वासै चढ़ीयो, सु मेड़ते जाता आपडीयो। — नैणसी
मुनसम—देखो 'मुनसब' (रू भे)
उ० सुणि रीझि अकबरसाह, दसकत लिख दिया। पटझरा असि सिरपाव, मुनसम मेलिया। —सू प्र
मुनसी—देखो 'मुंशी' (रू भे)
उ०—१ वस चित चित विसेख, तरै मुनसी तेडाया। तन विह्वळ दुख तलफ, कळप उपजे निज काया। —रा रू
उ०—२ बोली रा बाडाह, रीत बिगाडा राज रा धोळै दिन धाडाह, मुनसी पाडै मुरधरा। —ऊ का
मुनहार देखो 'मनवार' (रू भे)
उ०—मुनहारां हुवै छै देसोत आरोगै छै। अमला चाक हुयजै छै। —रा सा स
मुनादि, मुनादी—वि० [अ० मुनादी] घोषणा करने वाला
स० स्त्री० [अ०] १ घोषणा, ऐलान।
२ डुग्गी या ढोल पीटकर कर आम जनता को सुनाई जाने वाली बात, ढींढोरा।
३ औकात, हैसियत।
उ०—ब्रह्मा बिसन सेस सिव नारद, नर सुरगति ले आदि। गिरही रिखब देव औतारा, और की कौंन मुनादि।—स्री हरिरामदासजी महाराज
मुनाफो—स०पु०—क्रय-विक्रय या व्यापार मे होने वाला नफा, लाभ, फायदा।
मुनार, मुनारौ—देखो 'मीनार' (रू भे)
उ०—१ तिण ऊपर तुरक मेहमेद परदार राजा सूरसिंघजी री वार मे मुनारा दोय कराया। —नैणसी
उ०—२ हेकर चढै निहार गग मुनारै उपरै।—देपाळ धध री बात
मुनाळ—स०स्त्री०—१ एक प्रकार का सुंदर पहाड़ी पक्षी।
२ देखो 'मुहनाळ' (रू भे)
मुनासब, मुनासिब—वि० [अ० मुनासिब] १ उचित ठीक, वाजिब।
२ यथेष्ट, काफी, पर्याप्त।
३ योग्य, काबिल।
मुनिंतर—देखो 'मन्वतर'
उ०—तू बळि तूहिज व्यास, पिरथ हरि हंस मुनिंतर। जग राख्यो हय ग्रीव, धुव तू आप धनतर। —गजउद्धार
मुनिंद, मुनिंद्र—देखो 'मुनींद्र' (रू भे)
उ०—१ इण दोखण अप नह आदरसी। भावी साखि मुनिंद तद भरसी।—सू प्र
उ०—२ देप देस सहको दियै, सूरा नू स्याबास। ज्यारो कौतक देख जुध, हुवै मुनिंद्रा हास।—बा दा
मुनि—स०पु० [स०] १ जो ब्रह्म ज्ञान एव सूक्ष्मज्ञान की प्राप्ति के लिये मौनव्रत धारण करते हुए अध्ययन, मनन एव यज्ञादि साधनाएं करता हो, महात्मा, तपस्वी, ऋषि।
उ०—१ मुनि घालै तप जोग बळ, सरग कपाटा हत्थ। वेही क्रपण कपाट नू, उघाडण असमत्थ। —बा दा
उ०—२ वडा तत तूझ लहै न विचार, पुरदर तूझ न जाणै पार। भला मुनि आदि न जाणै भेद, विरचिय तूझ न जाणै वेद। —ह र.
२ त्यागी, वैरागी।
३ जो मौनव्रत रखता हो।
उ०—स्वामीजी बोल्या—जिमी उण मुनि री मून जिसी सावद्य दान मे थारै मून है। —भि द्र
४ नारद।
५ अगस्त्य।
६ वेदव्यास।
७ बुद्धदेव।
८ अहन् नामक वभु का एक पुत्र।
९ कुरु राजा के पाच पुत्रो मे से एक।
१० रैवत एव वैवस्वत मनुवन्तर के सप्त ऋषियो मे एक।
११ दस विश्व देवो मे से एक।
१२ प्रसूत देवो मे से एक।
१३ अमिताभ देवो में से एक।
१४ विदेह देश का एक राजा।
१५ एक राजा जो द्युतिमन् राजा के सात पुत्रो मे से एक था।
१६ आम का पेड़।
१७ छप्पय छद का ७१ वा भेद जिसमे १४८ या १५२ लघु होते हैं।
स० स्त्री०—१८ कश्यप ऋषि की पत्नी,जो प्राचेतस दक्ष प्रजापति की कन्या थी।
१८ सात की सख्या। ✡ (डिं० को०)
रू० भे०—मुण, मुणि, मुणी, मुणीइ, मुन, मूनी, मूनि, मूनी।
१९ देखो 'मणि'(रू भे)
उ०—द्रोण पुत्र मुनि अरजन लीधउ, चरम नू कवच करणि मु दीधउ। चीतविउ सहू आलि जाइ, दैव मिउ कुणि किंपि न थाइ। —सालिसूरि
मुनिचीर—स० पु०[स०] वल्कल।
मुनिजण, मुनिजन—स० पु०, ब० व० [स० मुनि-जन] ऋषि-समाज मुनिगण, मुनिवृंद।
रू० भे० मुनजण, मुनीजन।
मुनिपट—स०पु० [स०] वल्कल।

मुनिपुंगव-स०पु० [स०] मुनिश्रेष्ठ,ऋषिराज।
मुनिप्रवर-स०पु० [स०] मुनिश्रेष्ठ, ऋषिराज।
रू० भे० - मुणिपवर,
मुनियद, मुनियद्र —देखो 'मुनींद्र' (रू भे)
उ०—एह छमा श्रमुगंणा इद मुनियद्र प्रहारे। ईखे मन हुगियो श्रगद घर टळ धूतारे। —सू प्र
मुनियपय-स० पु० [स० मुनिपद] मुनि-पद, मुनि की उपाधि।
उ०—त सु श्रणोन मुनियपय जोगि, जांणिय सयहहिय दीवि करे। तयगु जिण सासण पभाव पयडतउ पहुतउ पाटहुणपुर नयरे।
—साहु रयण
मुनिराज, मुनिराव-स० पु० [स० मुनि+राजन्] ऋषि मुनियों मे अग्रणी, प्रधान ऋषि।
उ०—१ खूबी न रही काय, सतगा सजनां। नेही व्हे मुनिराज, विसारि निरजना।—बा दा
उ०—२ मिव मुनिराव सेव इम सावै। इम गिरराज समे श्रारावै।
—सू प्र
मुनिवर-स० पु० [मुनि-वर्य] ऋषि श्रेष्ठ।
उ०—जहियै सोमा लोक मैं, तप करि कसता तन्न। परतखि वीर प्रमसियो, धन्नो मुनिवर धन्न —ध व ग्र
रू०भे०—मुणिवर, मुनवर, मुनीवर,
मुनिव्रत-स० पु०[स०] १ ऋषियों मुनियों द्वारा रखे जाने वाले व्रत। २ तपस्या।
मुनिसर मुनिसरु—देखो 'मुनीस्वर' (रू भे)
उ०—सनतकुमार मुनिसरु, नाण्यउ नेह लगार। काज समारयउ रे आपण्यउ, समयसुंदर कहइ सार।—स कु
मुनिसुव्रत, मुनिसुव्रतजिन-स० पु०—जैनियों के बीसवें तीर्थंकर का नाम।
उ०—१ वीसम मुनिसुव्रत जसु साधु तीस हजार। सहस पचासे साध्वी, गणधर जास श्रढार।—ध व ग्र
उ०—२ समयसुंदर रे पूजा सतर प्रकार। श्रीमुनिसुव्रत सामी केरउ रे, रूप वण्यौ जगिसार।—स कु
रू० भे०—मुणिसुव्वय,
मुनींद्र-स० पु० [स० मुनि+इन्द्र] १ जो मुनियों मे श्रेष्ठ हो, मुनिश्रेष्ठ। २ नारदमुनि।
रू० भे०—मुणिंद, मुनंद, मुनद मुनिंद, मुनिंद्र, मुनेंद्र,
मह०—मुनिंद्रेस, मुनियद, मुनियद्र
मुनी—१ देखो 'मुनि' (रू भे) (ग्र० मा०)
उ०—१ अनग न अग उमग कलोळ, हरी पद सगम गग हिलोळ। निराळिय नीति उदगळ नाय, मुनी किय मगळ जगळ माय।
—ऊ का
उ०—२ मिळै मुनी महाख्रु, मिळै, चारणाण श्रच्छर। मिळै पख श्रोमन्न, मिळै रंणी पनि श्रम्मर।—मा वचनिका
उ०—३ ढूढार मैं स्वामी भीखणजी पासै श्रावगी चरचा करवा श्राया। वोल्या —मुनी ने तार मात्र वस्त्र राखणौ नहीं।—भि द्र
उ०—४ केइ कहे सावद्यदान मे पुन्य पाप मिस्र न कहिणौ तिण सू सावद्यदान मे म्हैं मून राखा। जद स्वामीजी मुनी रो द्रस्टांत दियो। —भि द्र
मुनीउन—देखो 'उनमुनी' (रू भे)
उ०—मुनीउन श्रा गोचरी मुण। निवह मुद्रा तपण माहि, मीढ रेफ मकार। —र ज प्र
मुनीजन—देखो 'मुनिजन' (रू भे)
उ०—हरीया माया पापनी लीया मुनीजन मोहि। टुकीयेक जोवै निजरि भरि, सब जुग लेवै टोहि।—स्री हरिरांमदासजी महाराज
मुनीव, मुनीम-स०पु० [अ० मुनीब] १ किसी व्यापारी के यहाँ लेखा जोखा व बही-खाते का काम करने वाला कर्मचारी, गुमाश्ता।
उ०—१ सेठ अर मुनीम दोनू आख्यां फाटोडा एक दूजा रै मूडा साम्ही टग-टग भाळता रह्या। —फुलवाडी
उ०—२ तीन सौ रिपिया लीना हा जकारा पाचसौ लिखयोडा मिल्या ब्याज न्यारो। श्रा भूल कीरै वगी? कुडी कलम कैंयां चाली? मुनीम दोनू हरामी, इन्याव रा काम करै।—दसदोख
उ०—३ धरमराज आपरा मुनीम चित्रगुप्त माथै चिडता थका केवण लागा- हाल पतौ को पडियो नी। इत्ती ताळ व्हैगी, म्हैं कणाकलो खोटी व्हू। श्रा सेठा नैं कांई जवाब देवू। —फुलवाडी
२ खजांची।
३ प्रतिनिधि।
४ अभिकर्ता।
रू० भे०—मुनीव
मुनीमी-स०स्त्री०—१ मुनीम का कांम।
२ मुनीम का पद,
३ मुनीम को मिलने वाला वेतन।
मुनीव—देखो 'मुनीम' (रू भे)
मुनीवर—देखो 'मुनिवर' (रू भे)
मुनीस-स०पु० [स०मुनि+ईश] १ मुनियों में श्रेष्ठ प्रधान।
२ नारद मुनि।
उ०— भद्र काळी पीवै स्रोण उमगै खप्परा भरै वाजै यू मुनीस वाळी भेरी नाद वग।—सूरजमल मीसण
३ विष्णु।
४ नारद।
५ गौतम बुद्ध का एक नाम।
रू०भे०—मुनेस, मूनेस
मुनीसर, मुनीसरु—देखो 'मुनीस्वर' (रू०भे०)
उ०—१ भला मुनिसर म्हारा माग, श्राप दयाकर दरसण जे दिया।

कहो मुनीसर किरपा रा कद, किणविध सू सेवक सेवा अनुसरे।
—गी. रां

उ०—२ पुजराज मुनिवर वदौ, मन भाव मुनीसर सोहै रे। उग्र करइ तप आकरौ,भवियण जन मन मोहइ रे।—स०कु०

उ०—३ कोई चापै साथ री रे हां, कोई सघटे अणगार, मेघ मुनीसरू। —जयवांणी

मुनीसौ—देखो 'मुनीस्वर' (अल्पा, रू भे)

उ०—पाय उवराणइ रे वेलु परि जलइ तन सुकुमाल मुनीसौ जी।
—स० कु०

मुनीस्वर-स०पु० [स०मुनी+ईश्वर] १ मुनियो मे श्रेष्ठ एव प्रधान।

२ वृहस्पति।

३ शुक्राचार्य।

४ नारद।

५ विष्णु।

६ शिव, महादेव।

रू०भे०—मुणीसर, मुनिसर, मुनिसरू, मुनीमर, सूनीसरू, मुनेसर, मुनेस्वर,

मुनेंद्र—देखो 'मुनींद्र' (रू भे)

उ०—पलासी गजेंद्रा गूद नरेंद्रा नचाया पूर। अमरा मुनेंद्रा नाच नचाया अनूप। —हुकमीचद खिड़ियो

मुनेस—देखो मुनीस' (रू भे) (अ मा)

उ०—१ जपै नर नार उभै कर जोड, करै सुर सेव तेतीसू कोड। नागेस नरेस सुरेस मुनेस, आदेस आदेस आदेस आदेस।—ह र

उ०—२ संगीत व्रत सोहती मुनेस हस मोहती। अनग रग आतुरी प्रिया नचत पातुरी। —सू प्र

मुनेसर, मुनेस्वर—देखो 'मुनीस्वर' (रू भे) (अ मा)

उ०—१ मुनेसर ध्यांन धरत महत, अखै जुग हेकौ ही नांम अनत।
—ह र

उ०—२ मगरूर धतावत मत्त मदा, उनमत्त मुनेस्वर दत्त अदा।
—मे मा

मुफत—देखो 'मुफ्त' (रू भे)

उ०—२ मारवाड़ रो माल मुफत मे खावै मोडा, सेवक जोसी सेंग गरीबां दे नित गोडा। —ऊ का

उ०—२ विणज म्हारौ घणौ है। चीज नै खरीद करू अर वेचूं। मुफत में कोई चीज देदू पण मुफत मे कोई चीज लूं कोनी, लवखी बिणजारा रो नाव लाजै। —फुलवाड़ी

मुफतखोर—देखो 'मुफ्तखोर' (रू भे)

मुफतखोरी—देखो 'मुफ्तखोरी' (रू भे)

मुफती—देखो 'मुफ्ती' (रू भे)

मुफर—देखो 'मुफरेह' (रू भे)

उ०—अवर गुलावी अतर, वटै विध विध जिणवारां। मडै अधिक मनुहार, अमल वटि मुफर अपारा। —सू. प्र

२ देखो 'मुफिर' (रू भे)

मुफरद-स०पु० [अ० मुफ़द] १ एक। (२) अकेला।

मुफरह—देखो 'मुफरेह' (रू भे)

मुफरि—१ देखो 'मुफिर' (रू भे)

२ देखो 'मुफरेह' (रू भे)

मुफरेह-स०पु० [अ० मुफ़र्रह] एक प्रकार की औषधि, जिसके सेवन करने से हृदय मे उमग एव आनन्द का सचार होता है।

वि०—मन मे उल्लास एवं उमग पैदा करने वाला।

रू०भे०—मुफर, मुफरह, मुफरि, मुफरौ,

मुफरौ—देखो मुफरेह' (रू भे)

उ०—इयै भात रहवै। रहिता नायण फूलमती नु कही एक हू ऊखध जाणा छा तैसु तेनु वोहोत सुख होसी। तद फूलमती कही तौ वणाय तद नायण उठै मुफरौ बणायौ अर खवायौ कुवर नुं अर फुलमती नु दोना ही नु। तैसु ए वहुत राजी हुवा ऐ मुफरौ खावै। —चौबोली

मुफलिस-वि० [अ० मुफ़्लिस] निर्धन, गरीब, दरिद्र, कगाल।

मुफलिसी-स०स्त्री० [अ० मुफ़्लिसी १ 'मुफलिस' होने की अवस्था या भाव।

२ गरीबी, निर्धनता। ३ दरिद्रता, कगाली।

मुफसिल-वि० [अ० मुफ़स्सल] १ विस्तारपूर्वक, विस्तृत, ब्योरेवार।

२ स्पष्ट, सरल।

रू०भे०—मुफस्सिल

मुफस्सिर-स०पु० [अ०] टीकाकार, भाष्यकार।

मुफस्सिल—देखो 'मुफसिल' (रू भे)

मुफिर-वि० [अ०] भागने वाला, पलायन करने वाला।

रू०भे०—मुफर मुफरि।

मुफीद-वि० [अ०] १ लाभदायक, उपयोगी।

२ यथा योग्य, योग्य, लायक, उपयुक्त।

उ०—पालडी में ऐड़ा कांदा निपजै। वै राज रसोड़ा वास्ते ई मुफीद है। छतै राजा एड़ा कांदा नै कुण भोग सकै। —फुलवाड़ी

३ अनुकूल।

उ०—कादा री नेपै वास्तै पालडी री जमी अणूती मुफीद ही।
—फुलवाड़ी

मुफ्त-वि० [अ०] १ जिसका कोई मूल्य या दाम न हो, वेदाम। जो बिना कुछ भुगतान किये प्राप्त किया जासकता हो।

२ जो बिना किसी मेहनत, परिश्रम या प्रयास से प्राप्त हो गया हो।

३ जो व्यर्थ हो, वेकार हो, निरर्थक हो, निष्प्रयोज्य।

४ अकारण, वेसबव।

रू०भे०—मुफत।

मुफ्तखोर-वि० [अ०] १ जो दूसरो की कमाई या धन मुफ्त मे खाता हो। जो हराम का माल खाने का आदी हो।

२ जो दूसरों के सिर पर बोझा बनकर रहता हो।
रू०भे०—मुफ्तखोर,
मुफ्तखोरी-स०स्त्री [अ०] १ 'मुफतखोर' होने की अवस्था या भाव।
२ दूसरों का माल या धन मुफ्त में उडाने की आदत।
मुफ्ती-स०स्त्री०[अ०] मुसलमानों का धर्म शास्त्रवेत्ता'धर्माचार्य,मौलवी।
रू०भे०—मुफती
मुबारक-वि० [अ०] १ मगलदायक, कल्याणकारी, शुभ।
२ खुश किस्मत, धन्य।
३ जिसके कारण लाभ व बरकत हुई हो।
स० स्त्री०—१ बधाई।
रू० भे०—मुबारकी, मुबारिक,
मुबारकबाद, मुबाररबाद-स० पु० [अ०] १ बधाई।
२ धन्यवाद।
३ शुभ सूचना व खुश खबरी।
रू० भे०—मुबारकबादी,
मुबारकबादी-वि०—१ मुबारकबाद देने वाला।
२ देखो 'मुबारकबाद' (रू भे)
उ०—बादसाहजी गळे लगाय मिळिया घणी मया कीवी मारां मुबारकबादी दीवी, समार चैन हुआं री बधाई वाटी।—नी प्र
मुबारकी—देखो 'मुबारक' (रू भे)
मुबारिक—देखो 'मुबारक' (रू भे)
उ०—सारी फौज बादसाह नू मुबारिक मेल्ही।—ठा जे
मुबालिग-स० स्त्री० [अ० मुबालग] १ किसी बात को बढा चढा कर कहने की क्रिया या भाव।
२ उक्त प्रकार से कही जाने वाली बात।
३ अतिशयोक्ति, अतिरंजना।
मुमई—देखो ममाई (रू भे)
मुमकिन-वि० [अ० मुम्किन] १ जिसका होना संभव हो, संभव।
२ शक्य।
मुमानियत-स०स्त्री० [अ०मुमानअत] मनाहि, निषेध रोक।
मुमारखी—देखो 'ममारखी' (रू भे)
उ०—इतरै रोसनी हुई। दासी सहेलिया आ मुमारखी दीवी।
—जलाल बूबना री बात
मुमुक्षा-स०स्त्री [स०] मोक्ष या मुक्ति प्राप्त करने की इच्छा, कामना।
रू०भे०—मुमुक्षुता, मुमुखता, मुमुखा,
मुमुक्षु-स०पु० [स०] वह जिसे मुमुक्षा हो, मोक्ष की कामना करने वाला
उ०—महा अग्यांन नींद में सूता, सब ही जीव अभागी। जाग्या कोई मुमुक्षु चेतन, सो सब से बडभागी।—स्त्री सुखरामजी महाराज
रू०भे०—मुमुक्षू मुमुखु,
मुमुक्षुता—देखो 'मुमुक्षा' (रू भे)
मुमुक्षू—देखो 'मुमुक्षु (रू भे)
उ०—जीवन मुक्ति की देहमु जुगती ग्यान मुमुक्षू पाई।
—स्त्री सुखरामजी महाराज
मुमुखता, मुमुखा—देखो 'मुमुक्षा' (रू भे)
मुमुखु—देखो 'मुमुक्षु' (रू भे.)
मुम्मुर—देखो 'मुरमुर' (रू भे)
मुरंगी-वि०स्त्री०—मृदुअंगी, कोमलांगी।
उ०—ए जिम महगलीयउ वण वीम्फ विनोदी, जिम घन दरसण मोरा रे रविदरसणियइ कोक मुरंगी दरसण चंद चकोरा रे।
—साधु कीरति
मुर-स०पु० [स०] १ एक दैत्य, जो ब्रह्मा के अंश से उत्पन्न तालजंघ नामक दैत्य का पुत्र था। इसकी राजधानी चंद्रवती नगरी में थी। इसके वध के लिये विष्णु ने योग माया देवी का निर्माण किया।
२ एक पचमुखी राक्षस, जो नरकासुर का सेनापति था। इसका वध श्रीकृष्ण ने किया।
उ०—नर नाग मुरासुर जोड नथी, कथ वेद पुराण दुजाण कथी। मुर कीटमधु हण सिंध मथी, रट रे मन राघव दासरथी—र ज प्र
३ एक यवन राजा जो जरासंध का माडलिक था। इसकी कन्या का नाम मौर्वी था जो घटोत्कच को विवाह दी।
४ एक राक्षस जो कश्यप एवं दनु के पुत्रों में से एक था। इसने शिव की तपस्या करके वर प्राप्त किया था। यह कृष्ण द्वारा मारा गया।
५ तीन की संख्या।
उ०—१ इन्द्रह सरस राजस अमास। प्रिय जुथ सात सै मुर पचास।
—सू प्र.
उ०—२ कळ दह पंच जाण जंकरी, दुज मुर प्रिय अंतै गुरु धरी। भज भज सीता राघव भई, दससिर जेता अघ हर दई।—र ज प्र
६ तीन।
उ० - १ सरव लघु नगण आयुस द्रवण सुर मुरक, तात विध सावित्री कनक रग तेण। भगु मुनि चढण गज नऊ रस मे अभग,अप मगध देस कुळ विप्र मुर नैण।—र. रू
उ०—छळ महेस मुर देस, मुम्रो डीघोड महारिण। परणै अकबर घडा, चढै गज दांता तोरण।—गु रू. व
७ वेष्ठन, घेरा।
८ मृदंग।
उ०—मतौ हालियौ आगरै चक्र सज्जै, वजै वव भेरी मुरै अब बज्जै। छळै मेह ज्यो खेह आकास छाई, दिपै चचळा सेल धारा दिखाई।
—व भा
अव्य०—दुबारा फिर।
रू०भे०—मर, मुर्र, मूर,
मुरकी, मुरकीय-स०स्त्री० [प्रा० मुरुक्की] १ पुरुषों के कान में पहनने की सोने या चांदी की छोटी बाली।
उ०—१ ओरा रे मुरकी कांन घो बाईसा ओरां रे, मुरकी कान। ऊजळे तो मोती राणी काछवी।—लो गी.

उ०—२ छोटा काना मे चादी री मुरकियां, कुडतो तारतार व्हियोडो .. . ।—फुलवाडी

उ०—३ भी टियो हसतो थको ई बोल्यो—मामाजी, वै तो साळिया थांरा कान बींधती ही । सौ तोळां री साकळियां अर बीस तोळां री मुरकिया पैरावती ही । —फुलवाडी

२ स्त्रियों के नाक का एक आभूषण ।(व॰ म॰)

३ सफेद, जलेबी (मिष्ठान्न)।

उ०—१ पछइ प्रीमी मुरकी, खाइवा जीभ फुरकी, सेव भीणी, फगफगती फीणी, घ्रत नी घारी, स्वादस्यु आहारी, साकरस्यु रुली —व स

उ०—२ मूक्या नव नव परि सालणा,मूक्या सरहा घी अति घणा । मूकी माडी मुरकी सेव,मूकी खीर खाड घ्रत हेव —हीराणद सूरि

उ०—३ पहिलउ नीली सूकिय मूकिय फलहलि तीह । देखीय मोदक मुरकीय फुरकीय जीमता जीह । —जयसेखर सूरि

४ नुकती, वूदी । (मिष्ठान्न) ।

५ संगीत मे एक स्वर से दूसरे स्वर पर जाने की एक प्रक्रिया विशेष ।

६ तीन अथवा चार स्वरों को शीघ्रता से गाने की क्रिया, इसका प्रयोग ठुमरी ठप्पा आदि मे होता है । (सगीत)

७ तलवार की मूठ के कलस मे लगने वाली कडी ।

रू॰भे॰—मरकी, मुरक्की,

मुरको—स॰पु॰—बडे डील-डौल वाला हाथी जिसके दात बडे बडे एव सुन्दर होते हैं ।

मुरक्की—देखो 'मुरकी' (रू भे)

मुरखड—स॰पु॰—तीन लोक ।

उ०—हारिया असुर इम हिंदुवै जस हुवौ वाणीये इमो कर दाख वारो । थापियो मालदे तौनू तेजा थिरा, थयो खड मुरखडे नाम थारो । —साहू तेजा रो गीत

मुरख—देखो 'मूरख' (रू भे)

उ०—मीरा के प्रभु गिरधरनागर, को तजि मुरख अनतहि भटकै । —मीरां

मुरखाई—देखो 'मूरखाई' (रू भे)

उ०—तद रांनी बीनती कीवी "माहाराज,आ वात मुरखाई छै । थु विना समझा हुआ रै कहै खासो चाकर मारो पण पछतासो ।" —ठाकुरै साह री वात

मुरग—देखो 'मुरगो' (मह, रू भे) (मा म)

मुरगखानो—स॰पु॰ [फा॰ मुर्ग+खाना] वह स्थान या कक्ष जहा मुर्गे रक्खे जाते हैं, पाले जाते हैं ।

मुरगबाज—स॰पु॰ [फा॰ मुर्ग—बाज] मुर्गे लडा कर खेल करने वाला ।

मुरगबाजी—स॰स्त्री॰ [फा॰ मुर्ग—बाजी] (१) मुर्गे लडाने की क्रिया । (२) मुर्गे लडाने का खेल ।

मुरगावी, मुरगावू—स॰स्त्री॰[फा॰] १ मुर्गे की जाति का एक पक्षी जो जल मे तैरता है और मछलियो का शिकार करता है, जल-मुर्गा

उ०—१ डेडरा डहकनै रहया छै । टीटोडी टहकनै रही छै । बळ का कुटकनै रहया छै । मुरगावी तिरनै रही छै । —रा सा. सं.

उ०—२ फळ बहु मेल मछां दुति फावी । मभि जळ ग्रीभ तिरै मुरगावी । —सू प्र

२ एक प्रकार की तलवार ।

उ०—वहै वैग लेणं यहै सायत आई जिम सेती जनेवू मुरगावू की भाट सामू भडू के बीच खेलैगे । —सू प्र.

३ जूती ।

उ०—आ वात कहिनै गढनू चालिया, पातसाह री हजूर अमराव ममूसाह, मीर गामरू, सु हरम री खुटक नै मुरगाव्यां पगा उवाणा सो तीजे भाई नू आपधियो थो सु आ घणी वात छै । —नैणसी

मुरगी—स॰स्त्री॰ [फा॰ मुर्ग] मुर्गे का मादा, मादा-मुर्ग । यह अण्डे देती है ।

उ०—रोजा तीस दिनू का राखै, सारै पच निवाजा । मन अपना कू मारै नाही, मारै मुरगी ताजा । —स्री हरिरामदासजी महाराज

मुरगो—स॰पु॰ [फा॰ मुर्ग] (स्त्री॰ मुरगी) १ सिर पर लाल किलगी वाला एक प्रसिद्ध नर-पक्षी जो प्रभात के समय कुकड कू की आवाज बोलता है । कुक्कुट पक्षी ।

पर्या॰—कूकडो, क्रकवाक, चरणायुधक, ताम्रचूड ।

२ एक चिडिया ।

मह॰—मुरग ।

मुरड़—सं॰पु॰—१ एक प्रकार की ककरीली मिट्टी जो सडक जमाने व दीवार की चुनाई में गारे के काम आती है ।

उ०—१ कथ मुरड री काकरो, रतना तिका रतन्न । विधना री रचना वडी, जिण री नको जतन्न । —र. हमीर

उ०—२ परुष चीकणी चुट्ट, पढै डागळिया पक्का, सुद्ध पावरी पडी,जकी सगळी बिन टक्कां । मुरड मजे री मिळै, गांवडा निकट घणेरी, ल्याय मोगरी मार, छाण छोडा घर ढेरी ।—दसदेव ।

२ आत्म गोरव, स्वाभिमान ।

उ०—विढती जसी विसकन्या वाखाणियो । परणती कथ चो मुरड पहचांणियो । —हा. भा

३ गर्व, अभिमान, घमड ।

४ ऐंठन, अकड

उ०—धकायो राण हू मळण वण करड धज, भडां हडवड उरड घाव भाळी । मिट गई किसनगढ नाथ वाळी मुरड, उरड लग्न साहिपुर नाथ आळी । —अमरसिंह सिसोदिया रो गीत ।

५ क्रोध ।

रू॰भे॰—मूड, मुरड,

६ देखो 'मूठ' (रू. भे)

७ देखो मुड' (रू भे)

मुरडक, मुरडक्क—स॰ स्त्री॰—१ मरोडने या मोडने की क्रिया या

भाव।
उ०—मुरडक्क मुड्क्क असध मुड़ै। —पा प्र
रू०भे०—मरडक,

मुरडणो, मुरडबो–क्रि०अ०[स०] १ मुडना, बलखाना, ऐंठना, घूमना।
उ०—मटळ रै प्रधानजी री वखांण सुण'र बीन री मुरडीजती मूछां तणगी। —दमदोख
२ कुपित होना, क्रोधित होना, नाराज होना।
उ०—१ उग्ड मेध्र आविया, मुरडि जगळ घर मार्थं। झगि तीडा दव झडै, खडै घोडा जव खार्थं —मे म
उ०—२ माहज्यहां तिण समै जुगत त्रिय वसि चित जादा। मिळि अवरग' 'मुरादि', दविण मुरडे साहिजादा।—सू प्र
उ०–३ सूर मुरडि इम साह सू, लूटं हय जय लाह। हणि रच्छक 'दूदा' हठि, आयो वरत उछाह। —व भा
३ विरुद्ध होना विपरीत होना।
उ०—१ जिण राठौड कवर दूदा नू अकवर हू मुरडि आयो जांणि जिकोही आपनू अवलव री देणहार विचारियो। —व भा
उ०—२ कवर विरडियो मुरड अमराव फिरियो सको, एरसी वार विगमी वणी आण। पाट चीतोड री हुवो ऊथळपथळ,' दुरग' नू सिमरियो तई दीवाण। —दुरगादास राठौड री गीत
४ पलटना, लौटना, घूमना।
उ०—१ सीस वडतां ही पडिहार हमिया अर महाराज मुरडि चालियो तिकण रै लार। —व भा
उ०—२ अत जीतो वीतो समर, जादम पडिया जोड। लड जुड मगां वोहळे, मुरड चलै राठौड। —रा रू
५ भागना, पीछे हटना।
उ०—वामे वरदेत कमध बळ दाखे, लोह छतीस भुजा डड लेव। रांणा रावळ राव मुरडता, दोयण हटक्या वीरमदेव।
—राव वीरमदेव राठौड री गीत
६ अलग हटना, दूर होना, विलग होना।
क्रि० स०—७ मोडना, मरोडना, वलदेना घुमाना
८ गर्व करना, घमड करना, अभिमान करना।
९ छीनना, झपटना।
१० उखाडना।
११ नष्ट करना।
मुरडणहार, हारो (हारी), मुरडणियो —वि०।
मुरडिओडो, मुरडियोडो, मुरड्योडो —भू० का० कृ०।
मुरडीजणो, मुरडीजबो —भाव वा० / कर्म वा०।
मुरडणो, मुरडबो —रू भे।
मुरडियोडो–भू० का० कृ० —१ मुडा हुआ वल खाया हुआ,ऐंठा हुआ २ कुपित या क्रोधित हुवा हुआ नाराज हुवा हुआ ३ विरुद्ध या विपरीत हुवा हुआ ४ पलटा हुआ, लौटा हुआ, घूमा हुआ ५ भागा हुआ, पीछे हटा हुआ। ६ अलग हटा हुआ, दूर हुवा हुआ, विलग हुवा हुआ ७ मोडा हुआ, मरोडा हुआ, बल दिया हुआ,घुमाया हुआ ८ गर्व किया हुआ, घमड किया हुआ,अभिमान किया हुआ ९ छीना हुआ, झपटा हुआ १० उखाडा हुआ. ११ नष्ट किया हुआ.
स्त्री० (मुरडियोडी)
मुरच—देखो 'मुरचौ' (मह, रू भे)
उ०—पछै वो आगळियां रा पंरवा मार्थं अगूठा सू गिणतो नीची धूण करियां खोडो गिणावतो ई जावतो–खुरफाडी फाटै, एक खुरी आगै वध जावं, एडी मे मस, मुरचा कमजोर, ' '। —फुलवाडी
मुरचौ–स०पु०—१ चरणग्रथी व पैर के मध्य का भाग।
उ०—हाडाळो एक हाथी रै मुरचै री सांध मे खग री खळकाई जको मुरचै री खालडो अर मास चीरनै हाड जाय रडकियो।
— फुलवाडी
२ टखना, गुल्फ।
३ मनुष्य के हाथ और कलाई का सधि स्थल।
४ देखो 'मोरचौ' (रू भे)
उ०—गयणा गरज डबर छायो छै,सूरिज पीछै पान सरिखो निजर आवै छै। मुरचां रा मुकांमला मडाया छै। अणी मेळ हुवो छै।
—रा सा स
मुरच्छा—देखो 'मुरछा' (रू भे)
मुरच्यौ—देखो 'मुरचौ' (रू भे)
मुरछ—देखो 'मुरछा, (रू भे)
उ०—भळाभळ भूखणा भांड भडवां विगत, पिंड रगत देखियां मुरछ पाया। जो मरदपणो छै जिसो जाणै जगत, ऐ किसे वगत में कांम आया। —उदैभाण बारहठ
मुरछगत, मुरछगति देखो 'मुरछागत' (रू भे)
मुरछणो, मुरछबो—देखो मुरछाणो, मुरछावो' (रू भे)
मुरछत—देखो 'मुरछित' (रू भे)
मुरछन, मुरछना—देखो 'मूरछना' (रू भे)
उ०—गांन सप्त सुर ग्रांम मूर, अरु मुरछन यकवीस। तांन कोटि गुणचामते, मूरतिवत मईस। —सू प्र
मुरछळ–स०पु०—१ मूर्च्छित, वेहोश।
उ०—ऐसे कह गिर गिर पडै, देही मुरछळ होय। वार वार किललात है, प्रभू उवारो मोय। —गजउद्धार
२ देखो 'मोरछळ' (रू भे)
मुरछा–स०स्त्री० [स० मूर्च्छा] १ किसी प्राणी के शरीर की वह अवस्था जब कुछ समय के लिये वह चेतन्य–हीन हो जाता हो, वेहोशी, मूर्च्छा, सज्ञाहीनता।
उ०—१ आपरो काळजो वारै नीकाळियोडो हो सो काटनै नाखिया

माथे न्हांक दीधी कारण काळजो कवळो होवे सो चील काळजो खावसी जितरे मुरछा खुलजासी ने नेत्र रह जासी इणने साम धरमी सूरवीर कहजे । —वी स टी.

उ०—१ छन मुरछा,छन चेतना सीतावरजी । कोई छन छन छीजै देह प्यारा रघुवरजी ।—गी रा

उ०—३ जोवण थारो गजब छं, लोयण बाण लगाय । चो निजरघा तो सू चहै पड़ैम मुरछा खाय । —पना

उ०—४ सुंदरि दीठ सिंगार सोळ सझि, मुरछा श्राय पड़ै उपवन मझि । —सू प्र

२ शिथिलता, कमजोरी ।

३ प्रमाद, आलस्य ।

उ०—हुई सुभद्रा साववी, बाल मुरछा सेवी रे । गुरणी वचन नहि मानियो, हुई बहुपुत्तिया' देवी रे —जयवाणी

रू०भे०—मरछा, मुच्छ मुरच्छा, मुरछ, मूरच्छा, मूरछ ।

मुरछागत मुरछागति–स०स्त्री०—अचेतनावस्था, बेहोशी, मूर्छावस्था ।

उ०—१ तठै देपाळ कही, म्हे तो मुरछागत हुईनै पचीसे ही लुटीया । —देपाळ धध री वात

उ०—२ वचन अनिस्ट अलखावणो,गेहरो लागो माय । थई अचेतन तिण समै, पड़ी मुरछागत खाय —जयवाणी

उ०—३ एह अमगळ वत्त सुणै, मुरछागति पडियो । उदियाचळ जिम सभ निसभ, अमताचळ निडियो । —मा वचनिका

रू०भे०—मरछागत, मुरछगत, मुरछगति, मुरझागत, मूरछागत, मूरछागति ।

मुरछाणो, मुरछाबो–क्रि०अ० [स० मूर्च्छनम्] १ किसी प्राणी की सज्ञा या चेतना का किसी विशेष कारण मे अस्थाई तौर पर लोप होना बेहोश होना, मूर्च्छित होना ।

२ तान्त्रिक क्रिया से समाधिस्थ होना ।

३ ऐन्द्र जालिक प्रभाव मे आना ।

मुरछाण हार, हारो(हारी), मुरछाणियो, —वि० ।

मुरछायोड़ो —भू का कृ ।

मुरछाईजणो, मुरछाईजबो —भाव वा ।

मुरछणो, मुरछबो, मूरछाणो, मूरछाबो —रू भे. ।

मुरछायोड़ो–भू०का०कृ०—१ चेतना या सज्ञा लोप हुवा हुआ, मूर्च्छित, बेहोश २ समाधिस्थ हुवा हुआ ३ ऐन्द्रजालिक प्रभाव में आया हुआ ।

(स्त्री० मुरछायोड़ी)

मुरछावत–वि०—मूर्च्छित, बेहोश, अचेत ।

मुरछित–वि० [स० मूर्च्छित] सज्ञा हीन, चेतना हीन, बेहोश, मूर्च्छित ।

उ०—१ वन री वाता माता सब सुणी, कोई बीज लडी ज्यू वेल । मुरछित माता जी, सचेती सुन करी । —गी रां-

उ०—२ मुरछित हो धरणी पडयो, वलि मूके हे मोटा निसास की सू । —प च चौ

रू० भे०—मुच्छित मुच्छिय, मुरछत, मूछीयइं, मूरछत, मूरछित ।

मुरछियोड़ो—देखो 'मुरछायोड़ो' (रू भे)

(स्त्री० मुरछियोड़ी)

मुरज, मुरजा–स० पु० [स० मुरज] १ मृदग, पखावज ।

उ०—स्रीमडळवीणा, मुरज,घस्घा सरस रस भीन । मधुरे सुर वाजै नहीं, परस्या विना प्रवीण ।—प्रवीणसागर

२ कुबेर की पत्नी का नाम ।

मुरजाद, मुरजादा—देखो 'मरजादा' (रू. भे)

उ०—१ नीचै धरती ऊपरि अवर विचिविचि मुलक बसाया । असी मुरजाव आप हरि बाधी, हूकमा काम चलाया ।—रुकमणी मगळ

उ०—२ सर धनु धार समाथ, माथदस भज समर मह । मह राखण मुरजाद, जादपत पव्वै तार जह ।—र ज प्र

मुरजादी, मुरजादीक–वि०—मर्यादा से रहने वाला ।

मुरजित—देखो 'मुरजीत' (रू भे)

मुरजी—देखो 'मरजी' (रू भे)

मुरजीत–स० पु०—मुर नामक राक्षस पर विजय प्राप्त करने वाले, श्रीकृष्ण ।

रू० भे०—मुरजित,

मुरझणो, मुरझबो—देखो 'मुरझाणो, मुरझाबो' (रू भे)

उ०—१ वैसो 'जसवत' वळी उरमयो असाध्या व्याधी, मुरझयो मुखारविंद मागन मलिंद को ।—क का

उ०—२ सूखा ने हरिया किया, मुरझ्या विकसाया हो । प्रेमानद पियूखरा बादळ वरसाया हो ।सैया ।—गी रां

मुरझणहार, हारो (हारी), मुरझणियो—वि० ।

मुरझिओड़ो, मुरझियोड़ो, मुरझ्योड़ो—भू० का० कृ० ।

मुरझीजणो, मुरझीजबो—भाव वा० ।

मुरझागत—देखो मुरछागत' (रू भे)

मुरझाणो, मुरझाबो–क्रि० अ० [स० मूर्च्छन्] १ पेड़-पौधे या वनस्पती का कुम्हला जाना, सूखने लगना ।

उ०—१ सारी ओर मवामण्या सोदागर रा सेल । कीधा इंद्र वाई कया, वप मुरझाई वेल ।—मे म

उ०—२ सत सगत सुर बाग सुकायो,मिळे कहू बळियो मुरझायो । ठडो जळ नहि ठरै ठरायो, भूलै ग्यान सुण्यो मन भायो ।

—ऊ. का.

२ उदास होना, म्लान होना ।

उ०—१ सूकी सेवण री हेला उर हाई, मैंदी देवण री वेळा मुरझाई —ऊ का.

उ०—२ वाजी निमवळ किताई पुळांणा । मेळावां वदन मुरझांणा ।—रा रू

३ श्री हीन होना, कान्ती हीन होना ।

उ०—खान पान मोहि फीको सो लागै, नैणां रहै मुरझाई ।

—मीरां

४ खिन्न होना।

उ०—इण दिन काठी दियो न दाटो, मन माठो मुरझाई नै। उरसू काठो आगे पटियो, ओ माटो जद आई नै।—ऊ का

५ कुंठित होना।

उ०—फेदट फेदड सी नभ में निजराई, सावण चावण री मनसा मुरझाई—ऊ का

६ विकल होना।

उ०—तुम बीछड़िया दुख पांऊ जी मेरा मन माही मुरझाऊं जी।
—मीरां

७ उत्साह हीन होना, निराश होना।

उ०—जद बाप ही आस्या फेरली तो पछै कुंवरकंवर किण आगे मुरझायोडी रिवटा री सताप प्रगट करै।—फुलवाडी

८ शिथिल होना, अशक्त होना, रुग्ण प्राय होना।

६ सुस्त होना, आलसी होना।

उ०—श्रोत उरझायो मुरझायो ताकू मार मार। नाहीं मुरझायो मोज सुदर मचायो तें।—ऊ का

१०—मूच्छित होना बेहोश होना।

उ०—१ होम उडै फाटै हियो, पडै तमाळा आय। देखै जुव तसवीर द्रग, सावटिया मुरझाय।—वा दा

मुरझाणहार, हारो (हारी), मुरझाणियो—वि०।

मुरझायोडो—भू० का० कृ०।

मुरझाईजणो, मुरझाईजबो—भाव वा०।

मुझाणो, मुझावो, मुझाणो, मुझावो, मुरझणो, मुरझबो, मुरझावणो, मुरझावबो, मूझाणो, मूझावो—रू० भे०।

मुरझायोडो-भू० का० कृ०—१ कुम्हलाया हुआ (पेड पौधे वनस्पती) २ उदास या म्लान हुवा हुआ ३ श्रीहीन या कान्ती हीन हुवा हुआ ४ खिन्न हुवा हुआ ५ कुंठित हुवा हुआ ६ विकल हुवा हुआ. ७ निराश या उत्साह हीन हुवा हुआ ८ शिथिल, अशक्त या रुग्ण प्राय हुवा हुआ ९ सुस्त आलसी १० मूच्छित, बेहोश।

(स्त्री० मुरझायोडी)

मुरझावणो, मुरझावबो—देखो 'मुरझाणो, मुरझावो' (रू भे)

उ०—जाचक हिरण तिसाया जावै, पुन्न नीर सुपनें नहि पावै। घर जिग्यासू दिस दिस धावै, अग त्रिसणा गुर लख मुरझावै।
—ऊ का

मुरझावणहार, हारो (हारी), मुरझावणियो—वि०।

मुरझाविओडो, मुरझावियोडो, मुरझाव्योडो—भू० का० कृ०।

मुरझावीजणो, मुरझावीजबो—भाव वा०।

मुरझावियोडो—देखो 'मुरझायोडो' (रू भे)

(स्त्री० मुरझावियोडी)

मुरट—स०पु०[देशज] एक प्रकार का घास जो कच्चे झोपडे की छाजन बनाने के काम आता है।

उ०—१ खीपा पीपा फोग, मुरट बूई वरणावै। मुरट लांपडी लुळे। गजब वेला गरणावै।—दमदव

उ०—उठै सिगरां इयारै एक नाग आय, एक मुरट री बूटो हुतो, तिणैरै ओळो दोळो हुई, अर पूछ हुती सु मुंहड़े मे झाली अर इयें भात बैठो छै।—नैणसी

२ देखो 'मरट' (रू भे)

मुरड—१ देखो 'मुरड' (रू. भे)

२ देखो 'मरोड' (रू भे)

मुरडणो, मुरडबो—देखो 'मुरडणो, मुरटवो' (रू भे)

उ०—१ मरगडा जूह मुरडत माड, चूनी हुइत्त चौसट्ठि हाड।
—गु रू व

उ०—२ छूरा खग्ग उपाडि, सीह करि साकळ छूटा, मुरडि खभ मदमोख, जाण सूडाहळ जूटा।—गु रू व

उ०—३ कवळ मद बोहोती री कासा, सुरत अति बिलखाय। ऊरड आई देखण अली, मुरड चली मुरझाय।—पनां

उ०—४ ज्यों मदि वहतो हाथी श्रीख(पैंड) दोय चलै। अर वळै। मुरड नै ऊभो रहै।—वेलि टी

मुरडणहार, हारो (हारी), मुरडणियो—वि०।

मुरडिओडो, मुरडियोडो, मुरडयोडो—भू० का० कृ०।

मुरडीजणो, मुरडीजबो—भाव वा० / कर्म वा०।

मुरडियोडो—देखो 'मुरडियोडो' (रू भे)

(स्त्री० मुरडियोडी)

मुरतव—१ देखो 'मरतब' (रू भे)

उ०—१ तिण सू वादसाहा रो मुरतब पैगवरा सू मिळतो जुळतो छै।—नी प्र

उ०—२ पे कोई इण सू दान मांन तरवार साच सोल मे ऊवो नही पहुचै, मुरतब रा कारण सारां सू वाध होवै —नी प्र

उ०—३ मो जुलफकारखा बडे मुरतब सू मुलाहिजे रै साथ महाराज नै कन्है राखिया।—पदमसिह री वात

२ देखो मुरत्तव' (रू भे)

उ०—१ मुरतबां नोग नेजां मही, बज वहरक फरहर बजा। दळ हिलै एक मुरधर दिसी, समद ऊमळै जळमजा।—सू प्र

उ०—२ सगळा हाली आगरे, होकर अभी तैयार। मुरतब संग मारा रहै, करियै नाहि अवार।—ठा राजसिंघ री वारता

मुरतबो—१ देखो 'मरतब' (अल्पा रू भे)

उ०—मुरतबो हजारी हफ्त महि, पान ग्रहता पातियो। इम विदा होय मुदफरखनी, अजण' भूप दिस आवियो।—सू प्र

२ देखो 'मुरत्तव' (अल्पा, रू भे)

मुरति, मुरती—देखो 'मूरति' (रू भे)

उ०—जिन आ जळ तें देह धरि करि नख चख सुरति। हरिया वासूं सिवरीये, अवर एक मुरति।—स्री हरिरामदासजी महाराज

मुरत्तब–वि० [अ०] १ क्रमवद्ध, सिलसिलेवार।
२ शृंखलाबद्ध, श्रेणीबद्ध, कतारबद्ध।
३ सग्रहीत।
४ सम्पादित।
५ तरी युक्त, तर।
रू०भे०—मुरत्तव, मुरातव,।
अल्पा०—मुरत्तबौ, मुरातबौ,

मुरत्ति—देखो 'मूरति' (रू भे)
उ०—फडा लवग मुद्रिका मुरत्ति कुंद नी।—मे म

मुरद–स०पु०—१ शब्द।
२ देखो 'मुरदौ' (मह, रू भे)

मुरदनी–वि०—म्लानता।
उ०—वे महर गुमराह गाफिल, गोस्त खुरदनी। वेदिल वदकार आलम, हयाद मुरदनी। —दादूवाणी

मुरदांणव–स०पु०—मुर नामक दानव।
उ०—कुंभक्रन इद्रजीत सारिखा हिरणाख्स हिरण कासिव सारिखा, मुरदाणव महाबळी सारिखा ।—मा वचनिका।

मुरदार–वि० [फा०मुर्दार] १ मृतक, निष्प्राण, मृत।
उ०—चुगली विसतारत चुगल, साप्रत होय सचेत। सो मुरदार सरीर री, लट मुख माफल लेत। —बा दा
२ अपनी मौत से मरा हुआ।
उ०—मुई मटीया मुरदार कहत है, मारी हक निवाला। —श्री हरिरामदासजी महाराज
३ कमजोर, अशक्त, वेदम, वेजान।
उ०—छळदार होय छाती छडै अमलदार मुरदार री। —ऊ का
४ डरपोक, कायर।
उ०—मावडियौ वन माझनी सो नह जाय सिकार। डोळा मिनखी सू डरै, मूमा ज्यू मुरदार।—बा दा
५ अपवित्र, नापाक।
स०पु०—१ फोड़ा या फूंसी से निकलने वाली मवाद, पीव।

मुरदासख, मुरदासिंगी, मुरदासिंघी, मुरदासिंही–स०स्त्री०—सीसे और सिंदूर को फूक कर बनाया हुआ एक औषध।
रू०भे०—मुडदासख मुडदासिंगी, मुडदासिंघी,

मुरदौ–स०पु० [फा० मुर्दः] १ प्रेत, भूत।
उ०—मुरदे मनावै मूढ, जसोदा जणावै जायौ, पिता को जनावै प्रेत मुमी खेल खोघा की। —ऊ का.
२ शव, लाश।
वि०—१ जिसके प्राण पखेरू उड चुके हो निष्प्राण निर्जीव मृत।
२ मरे हुए के समान, अधमरा।
उ०—क्यू नाह लालच वस करौ, वहु हाका विरदाह। न्है नह ऊचौ हत्थडौ, मावडिया मुरदाह।—बा दा
३ अशक्त, कमजोर, दुर्बल।
उ०—हिळता हिळता हाय, मिळौ मत दुख सु भाई। मिळ मुरदा मनवार, करौ मत बुरी कमाई —ऊ का
४ कुम्हलाया हुआ, मुरझाया हुआ।
रू०भे०—मुडदौ, मुडौ,
अल्पा—मुडदियौ,
मह०—मुडद।

मुरद्धर—देखो 'मरुधर' (रू भे)
उ०—१ विदा किया तिण वार, घूत वळ असुरमुरद्धर। 'अवरग' भड आविया, भूत गिडकव भयकर। —सू प्र
उ०—२ धरपत सीहै लयौ मुरद्धर। आसथान तिल पाट उजागर। —रा रू.

मुरद्धरा—देखो 'मरुधरा' (रू भे)
उ०—तद वार अस पुरसा तणी आय वणी जग ऊपरा। महाराज तणं छळ मारवा, धारी लाज मुरद्धरा। —रा रू

मुरधर–स०स्त्री० [रा० मरुधर] देखो 'मुरधर भाखा'
उ०—व्रज भाखा मुरधर विमळ,आदि करै उच्चार। देस देस भाखा डवर, वरणु करि विसतार। —सू प्र.

मुरधरभाखा मुरधरभासा–स०स्त्री०[स०मरुधर+भाषा] मारवाड की भाषा, मारवाडी राजस्थानी।
२ देखो 'मरुधर' (रू भे)
उ०—१ ईसाग्या वरती अचळ अग्व, मारवा राव मुरधर महग्घ। —ऊ का.
उ०—२ पथ लगौ मुरधर पाय, तज दिली छळ तै ताय। सुण वात कमध सुग्यान, वळ मूछ धर बळवान।—रा रू.

मुरधरमडण–वि०—मारवाड की शोभा बढाने वाला।
उ०—खाधा चोर तणी खेडेचा, माथै रहत घणा दिन मोस। मुरधर मडण तूझ तणै अत, देतौ दुरग स टळियौ दोस। —दुरसौ आढौ
स०पु०—एक जेवर विशेष।

मुरधरा—देखो 'मरुधरा' (रू भे)
उ०—१ वकसी मात राव बीका नैं, धर थळवट रजधाणी। रिडमल तणै मुरधरा राखी, है साखी हिंदवाणी।—मे म
उ०—२ द्रढ दत दव्वि देखत दुमार, आवत न पार दुग्ग सिंधु पार। आपकी इजाजति चहत अग्ग, मुरधरा जान को देहु मग्ग। —ऊ का

मुरधरियौ—देखो 'मरुधरियौ' (रू भे)
उ०—१ मन धारी मुणजै,मुरधरिया, खुम रीझा देवण दध खीर। —द दा
उ०—२ मांणस मुरधरिया माणक सम मूगा। कोडी कोडी रा करिया स्रम सूगा।—ऊ का

मुरधा–स० स्त्री० [स० मूर्धन] १ सिर।

२ देखो 'मरुधरा' (रू भे)

मुरनयण, मुरनैण–स० पु० [रा० मुर=३+स० नयन] तीन नेत्र वाले, महादेव, शिव। (ना० डि० को०)

उ०—चक्र केरी मद्धा मिधा दन चारणा, तरण घण महण मुरनयण छाताळ।—उत्तरसिंह हाडा री गीत

मुरपुर–स० पु० [रा० मुर=३+स० पुरम्] तीन लोक।

मुरपुरधणी, मुरपुरपत मुरपुरपति, मुरपुरपह–स० पु० [रा०मरु+स० धनिक+स० पति,+स० प्रभु] त्रिभुवन पति, तीन लोक के स्वामी, विष्णु। (ह ना मा)

मुरव्वत–स० स्त्री० [अ० मुरव्वत] १ मल मनसात, इन्सानियत।

उ०–१ कवी सो इणनु जांणे ही नही थी मो कही हे मोटा माणस आ मुरव्वत नही जो मैं सरणे आयोड़ा नू काढ किणी नू देऊ अर तू मार खावै।—नी प्र

२ लिहाज, रिआयत, परोपकार।

उ०—यमन रो बादशाह धणी दांन अहसान मुरव्वत मे ऊठियो थो।—नी प्र

३ शील, सकोच। ४ कृपा, अनुग्रह।

रू० भे०—मुरौवत, मुरौवत,

मुरव्वी, मुरब्बी–वि० [अ०] १ आश्रय दाता, सरक्षक।

२ पालन पोषण करने वाला।

३ सहायक, मददगार।

उ०—कायमखा कपतान से करि वातें चव्वी, सेख इनायत खांन के भुज पलटण दव्वी। टेरि कुतवीखान से खुद कहा मुरव्वी, हल्ले पूठ ना फिरै कल उमकी फव्वी।—ला रा.

४ बड़प्पन रखने वाला, गौरवशाली।

५ प्रधान, मुखिया, अग्रणी।

उ०—१ पहु सुत दसम प्रवाळ देस वगमर धर दव्वी। वगमरिया जिण वस मरण सव प्रथम मुरव्वी।—व भा

उ०—२ के तुम किल्ले तोरियौ के मरियौ मब्बी, देखी नव्वी क्या करै कर नाम्र तसव्वी। उस विरयों वज्जीर दौल कू कहे कुतव्वी, जानिक सुरगे लेन को हिरनाख्य मुरव्वी।—ला रा

६ कृपा या दया करने वाला।

रू० भे०--मुरव्वी,

मुरव्वौ–स० पु० [अ० मुरव्वा] १ कच्चे फल, सेव, आंवला, बेल आदि में चीनी की चासनी मिला कर बनाया जाने वाला पाक।

२ कृषि भूमि का एक माप। ३ उक्त माप का खेत।

४ वर्गाकार, चौगुटा, समचौरस।

मुरभवण–सं० पु० [रा० मुर+स० भुवन] तीन-लोक, त्रिलोकी।

उ०—१ गहवरां जग जग अगण गण मुरभवण कारण लगण मण संभाळ पूजिय सक।—र. रू

उ०—२ हाकी दूसर टाण, मुर जन्न रिख उर मानिया। आता वे मुरभवण मे, राज करै असुरांण —मा वचनिका

मुरभवणपति–स० पु०—त्रिलोकी के स्वामी, विष्णु।

उ०--सुज असुरा सग्राम, किया नह पौंहचां कदै। कांई न राखी ठकुरां, मुरभवण-पति माम।—मा वचनिका

मुरभूम—देखो 'मरुधरा'

उ०—मुरभूम पाठ पिंगळ मता, साहित वीदग सारनै। कहूं मछ भला रूपक करो, ए दस दोख निवारनै।—र रू

मुरभूमभाखा, मुरभूमभासा—देखो 'मुरधरभासा'

उ०—कह मछ स्रीरघुनाथ रूपक पढ़ै जो नर प्रीत सू। मुरभूमभाखा तणौ मारग रमैं आछी रीत सू।—र रू

मुरमडळ,मुरमडल–स०पु—मारवाड़।

उ०—देसि मुरमडले नयरि विक्रम पुरे, जमौ वरद्धनु जगि जाणीउ ए।—कवि मत्तउ

मुरमरदण–स०पु० [स० मुर+मर्द्दन] १ मुर नामक दैत्य को मारने वाले, श्रीकृष्ण।

२ विष्णु।

मुरमुर–स०पु० [स०] १ कामदेव, मदन।

२ सूर्य के रथ के घोड़े।

३ अग्निकण, चिनगारी।

रू०भे०—मुम्मुर,

मुरमुरया, मुरमुरिया–स०स्त्री०—वेसन की नमकीन बूंदी।

उ०—सात रुपिया रा पकवान मुरमुररियां आदि हुता तिण में १६ जणा चूकाया गया।—भि द्र

मुरराघवेस–स०पु०—१ श्रीकृष्ण, मुरारि।

२ विष्णु।

मुररिप, मुररिपु–स० पु० [स० मुर+रिपु] १ श्री कृष्ण।

२ विष्णु।

मुरळिका, मुरळिया—देखो 'मुरळी' (अल्पा, रू भे)

उ०—१ पोख हित वेल गावौ चरित पेमरा, मुरळिका सुणावौ धोख मांही।—वा दा

उ०—२ नेम धरम कौन कीनो मुरळिया कौन तिहारै पासु री। —मीरां

मुरळी, मुरली–स०पु० [स०] बांस या किसी धातु की नलिका पर छेद कर के बनाया हुआ बाजा जिसे मुह मे फूंक मार कर बजाया जाता है, बांसुरी, वंशी।

उ०—१ सख चक्र गदा पद्म बिराजै, माधुरी मुरळी किसोर। मोर मुकुट सिर छत्र बिराजे, कुंडळ की छवि ओर —मीरां

उ०—२ पथिक जाय मथुरा कहे जादवा पती नू,आपरा मिळण कू वात उरली। आय गोकळ मही लेर सुर अनोखां, मया कर सुणावौ फेर मुरळी।—वा दा

मुरळीधर–स०पु०—१ श्री कृष्ण।

उ०—१ पुरसोतम पूरण प्रभू गावध गिरधर रूप। मुरळीधर मोहण मुकद, भजलै त्रिभुवण भूप।—ह र

उ०—२ गाय रो पक्की जो'ड़ो, मुरळीधर रो मिंदर, जकारो

कारी-कुटको ही नी हुवै, इया रै दादेसा रा जस थभ है।
—दसदोख

२ ईश्वर, परमेश्वर। (ह नां मा.)

रू०भे०—धरमुग्ळी,

मुरळीमनोहर–स०पु०—श्रीकृष्ण का एक नामान्तर। (रू भे.)

उ०—सेहर खास में ठाकुरजी स्रीमुरळीमनोहरजी रौ मिंदर करायौ। —नैणसी

मुरळीवाळौ–स० पु०—श्रीकृष्ण।

मुरलोक–स०पु०[राज०मुर=तीन+स०लोक]त्रिभुवन,त्रिलोकी,तीनो लोक

उ०—१ मेटै मुरलोक पैठो जळ माह। तठै इक अह्न निपायौ तांह।—ह र

उ०—२ सुत गज-वव आदि तो सुजडी मोहियौ-वसु सर्व मुरलोक। अमपत इण अजमति इचरजियौ, एक देह अरि पाडै अनेक।
—गु रू व

रू० भे०—मुरुलोक, मुरूलोक,

मुरलोकगत–स० स्त्री०—एक देव जाति। (अ मा)

मुरलोकनरेस–स० पु०—त्रिभुवन पति, विष्णु।

मुरलोचन, मुरलोयण–स० पु० [राज० मुर=तीन+स० लोचन] महादेव, शिव।

मुरलोयी–स० पु०—तीन लोक।

उ०—हरि चाहै सुज हुऐ, लेख साहै मुरलोयी। भूमडळ भोगवै, करम प्राचीन मकोयी।—रा रू

मुरलौ—देखो 'मोर' (अल्पा, रू भे)

उ०—प्यारा लागै पपीहरा, मुरला करै मल्हार। कुहकै रहि रहि कोयली, फूल भवर भकार।—अज्ञात

मुरवा–स० स्त्री० [स० मौर्वी] एक प्रकार की घास, जिसकी धनुष की प्रत्यचा बनती थी।

मुरवि, मुरवी–स० पु० [स० मौर्वी] धनुष की डोरी, प्रत्यञ्चा।

२ एक शस्त्र विशेष, आयुध।

उ०—त्रिसूल सक्ति सर तोमर मुरवि अरद्धमुरवि परसु पास प्रमुख ३६ सटत्रिसद्दडायुधानि।—व स

३ मुरवा घास।

मुरवैरी–स० पु० मुर नामक दैत्य के शत्रु श्रीकृष्ण,विष्णु।

मुरवौ—देखो 'मोर' (अल्पा, रू. भे)

उ०—१ कैसौ लगै सुवावणौ धरवा धरवां कत जल भुरवा,सुरवा करै, मुरवा गण महमंत।—अज्ञात

उ०—२ कोयल बोल बोलती हैं मधुरे। मुरवा की नाई चलत वारी बैन। —रसीलै राज रा गीत

२ देखो 'मरवौ' (रू. भे)

मुरव्वी—देखो 'मुरब्बी' (रू. भे)

मुरसडौ—देखो 'मुस्टड' (रू भे)

उ०—दाता दे वित दांन मोज मांगै मुरसडा — ऊ. का

मुरसथळ—१ देखो 'मरुस्थल' (रू भे)

२ देखो 'मुरस्थल' (रू भे)

मुरसद—देखो 'मुरसिद' (रू भे.)

उ०—१ पढ दुरस प्रमादी मुरसद मादी, महंत पुरस माचदा है।
—ऊ का.

उ०—२ पीर मुरसद एक आसण, अरस परसै दोय। जन हरीदास पीव सू ख्याल परगट, सहज सिजदा होय।—ह पु वा

मुरसल—देखो 'मुरसिल' (रू भे) (मा म)

उ०—सहनाय मुरसला रग सवाद। नवबती घोर मगळीक नाद।
—सू. प्र

मुरसिद–स०पु० [अ० मुर्शिद]१ गुरु, आचार्य।

२ मुसलमानो का धर्म गुरु, पीर।

३ आध्यात्म वाद का उपदेश देने वाला।

४ पथ प्रदर्शक, मार्ग दर्शक।

५ उस्ताद।

६ धुर्त, चालाक। (व्यग)

रू०भे०—मुरमद,

मुरसिल–स०पु० [अ०मुर्सिल] १ घोडे पर नगारा रख कर बजाने वाला व्यक्ति।

२ एक वाद्य विशेष।

३ भेजने वाला, प्रेषण करने, वाला, प्रेषक।

रू०भे०—मुरसल

मुरस्थळ, मुरस्थळी–स०पु० [स० मरु+स्थल] १ मारवाड प्रदेश।

उ०—मांणिक्यदंडउ हस्ती, खूरसांणिउ घोडउ, मुरस्थली नउ उट दहाहिनउ बलद ।—व स.

२ देखो 'मरुस्थळ' (रू. भे)

रू०भे०—मुरसथळ,

मुरहरी, मुरहारी–स० पु० [स० मुर+हारिन्] १ मुर नामक दैन्य को मारने वाले श्री कृष्ण, विष्णु।

२ एक प्रकार का घोडा।

उ०—जिलहरी आवनूसी जमद। मुरहरी हरी सेलीसमद।
—सू प्र

मुरहेल—हेल मच्छी का तेल।

उ०—लूण कपूर समांन थिऊ, अन सोअन सम भाग। तेल थयौ मुरहेळ सम, हय सुहडा थयु आग।—गु रू व

मुराई–स० स्त्री०—मसूडा।

उ०—पण वोखं मू ढै मोतियां रौ स्वाद दोरौ ई लिरीजैला। मुरायां सू चिबळ आखा रा आखा गिटूला।—फुलवाडी

रू०भे०—मांराई, माराई, मुहराइ,

अल्पा०—मुरायली, मुराली,

मुराडौ–स०स्त्री०—१ भूतो द्वारा प्रज्वलित अग्नि, श्मशान की अग्नि, आग।

उ०—१ दून रा उनाडा क्रूर दात। भून रा मुराडा तणइ भात।
हुव जेठ नावडा दुसह होम, यावडा अगारां चिनख योम।
—वि सं

उ०—२ वैरिया वराडा पाड वाग्वांणजै, जाणजै मुराडा भूत जेही।
—महाराणा भीमसिंह रै माला री गीत

२ अग्नि, आग।

उ०—१ तोपां ताट मुराडा ताउध आवध वरिखा परै उरै। तणि
वळिराव आज रा तौ खिरि, घाव वहा नीमाण घुरै।
—सुमराज गौड री गीत

उ०—२ उथापै दळो ऊमेद थापै यळा, सवाडा पवाडा भाग साथै।
आगि वूदो घरा लियता ऊपडी, मुराडा भड़ै आमेर माथै।
—दुरजणमाळ हाडा री गीत

३ अग्नि की ज्वाला।

४ जलती हुई लकड़ी।

५ सूरत, शक्ल।

मुराडो–स०पु०—१ अग्नि की ज्वाला।

उ०—दुरजणमाळ नाम ही ज्यां दुरजन कू मल्लै। भाटी वीर
आग्वाडे मैं मुराडे से भल्लै। —रा रू

२ दाह क्रिया मे चिता जलाने के लिये जलाया जाने वाला घास
का पूवाल।

३ घास आदि का पूवाल।

उ०—जिका वात जगमाल रै किणयक घाती कान। आग वळती
ऊपरा, दियो मुराडो तांन। वी मा

४ सूखे कांटों का ढेर या समूह जो जलाने के काम आता है।

वि०—१ क्रोध युक्त, कुपित।

२ भयानक, डरावना।

३ प्रचंड।

४ मूढ़, मूर्ख।

मुरातब—१ देखो 'मरातब' (रू भे)

उ०—१ वजीर खानसामां वगमी अपने अपने मुरातब के पाये
पर दक पूर खाजे। —सू प्र

उ०—२ अपछरा म्हारी बरोबर मुरातब वयो मर लहै छै।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

२ देखो 'मुरत्तब' (रू भे.)

मुरातबौ—१ देखो 'मरातब' (अल्पा, रू भे)

उ०—तद जलाल बोलियो–चाकरी खूब करावो पण बादसाहा नै
अमन-दम्तूर दुरस्त करियो चाहो तो म्हारे मुरातबा माफक
मनसब देयो।—जलाल बूबना री वात

२ देखो 'मुरत्तब' (अल्पा, रू भे)

मुरातब्ब–वि०—सुसज्जित, सजा हुआ, शृंगारा हुआ।

उ०—योगी रूप में अजब, तूं नै कीयो मुरातब्ब। सांमी आगळी
सिंगार, प्राणियों लूण ऊतारे।—गु रू बं

मुराद–स० स्त्री० [अ०] १ वह प्रबल इच्छा जिसको पूरी करने के
लिये मन हर वक्त लालायित रहता है, तमन्ना, लालसा।

उ०—१ माग, थारी इछा व्है सो माग। आज री इण खुसी
वास्तै म्है थारी मनजाणी मुराद पूरी कर सकू।—फुलवाडी

उ०—२ वडी ईद री पैंली रात, दोनवां आंख्यां सू काढी, आप
आप री मुराद वाढी।—दमदोख

२ इच्छा कामना, वांछा, आकांक्षा।

उ०—हरीया भोजन जीमीयै ऐसा आवै स्वाद। इन तन का सारा
नही, मनमा इसी मुराद।—श्रीहरिरांमदासजी महाराज

३ उमग।

४ अभिप्राय आशय मतलब, प्रयोजन।

उ०—मीठा स्वभाव नै मिळता स्वभावा सू मुराद, तत भला
स्वभाव म्लक सू।—नी प्र

रू० भे०—मुराद, मुरादि, मुरादी,

मुरादा—१ देखो 'मरजाद' (रू भे)

उ०—आप मुरादा आप री, असमर जीते आण। थाणां मुरभवणा
थपै, छत्र एक मेछाण।—मा. वचनिका

२ देखो 'मुराद' (रू भे)

मुरादि, मुरादी–वि० [अ०] १ जिसके कोई मुराद हो, इच्छा या
तमन्ना रखने वाला।

२ आशययुक्त मतलबी।

३ देखो 'मुराद' (रू. भे)

मुराफो–स० पु० [अ० मुराफऊ] अपील।

मुरायळी, मुरायली–स० स्त्री०—१ एक प्रकार की कटीली झाड़ी,
जिसकी टहनिया नमक बनाने के खड्डों में डाली जाती है।

रू० भे०—मुराळी,

२ देखो 'मुराई' (अल्पा, रू भे)

मुरार—देखो 'मुरारि' (रू भे) (अ मा)

उ०—१ वूठा दूरा वादळा, तूठा देव मुरार। जेहल आज
जुहारिया, काछ नरेस कुंवार।—बा दा

उ०—२ नमो अम-देह विसभर धार, नमो घर व्यापिय सोय
मुरार।—ह र

मुरारमाळी–स० पु०—मालियो की एक जाति व इस जाति का व्यक्ति।

मुरारि, मुरारी–स०पु०[स०मुर+अरि] १ मुर नाम क दैत्य को मारने
वाले, श्रीकृष्ण।

उ०—गिणता गिणता घस गइ रेखा, आगरिया की सारी, अजहू
नहिं आयं मुरारी। —मीरां

२ विष्णु।

उ०—सत पैह्लाद तणी सुणी साहुळि, कर फुरळै हिरणाखस
काहुळि। आहि कन्हि ली बारुण गिरधारी, मार्खं दोहू तै हींज
मुरारी। —मा वचनिका

३ परमेश्वर, ईश्वर। (अ. मा., ह नां मा)

रू०भे०—मुरार,

मुराळ—स०स्त्री०—१ दुम, पूंछ।

२ देखो 'मराल' (रू. भे) (डिं को)

उ०—तिरगुण अनातम माया त्यागी, चेतन सत मुराळ। तुरीये आतम सत सदाई निज स्वरूप अकाळ।—स्रीसुखरांमजी महाराज

मुराळी—१ देखो 'मराळ' (स्त्री)

उ०—भद्र जाती चुगै सीस मोती स्रोण पका भळै। खात मोती मुराळी नसका चुगै खूब।—वद्रीदास खिडियौ

२ देखो 'मुराई' (अल्पा, रू भे)

३ देखो 'मुरायली' (रू भे)

मुरिखौ—देखो 'मूरख' (अल्पा रू भे)

मुरिति, मुरिती—देखो 'मूरति' (रू भे)

मुरी—देखो 'मोरी' (रू भे)

मुरीद—स०पु० [अ०] १ चेला, शिष्य।

२ अनुयायी, अनुगामी।

उ०—सुरतांन तारकीन कुतुब साहिब दोनू मुरीद ख्वाजा मुईनउद्दीन रा।—वां दा ख्यात

मुरु—देखो 'मुर' (रू भे)

मुरुलोक, मुरूलोक—देखो 'मुरलोक' (रू भे)

मुरेठी—देखो 'मुलेठी' (रू भे)

मुरेठौ—स० पु०—१ साफा।

२ पगडी।

मुरैलौ—देखो 'मोर' (अल्पा, रू भे)

उ०—आई आई सावण तीज, मुरैला बोल्या गै'रा डूगरां जी।
—रसीलैराज रा गीत

मुरैहो—देखो 'मुलेठी' (रू. भे)

मुरोवत, मुरोवत—देखो मुरव्वत' (रू भे)

मुळ—अव्य०—१ विल्कुल।

२ एकदम।

उ०—वीरमदे दूदावत नै राव मालदे मुळ हीज नाड़ी विरोध हुवौ।
—राव मालदेव री वात

३ कतई।

४ तनिक भी, थोड़ा भी, रचमात्र।

उ०—जळ माहै वळ ग्राह रौ वारै मुळ लग नाहि। वारै वळ गजराज रौ, मुळ नाही जळ माहि।—गज उद्धार

५ अगर, मगर, किन्तु, परन्तु, लेकिन।

६ अन्तत।

७ मूलत

मुळक—स० स्त्री० [स० पुलक] मुस्कराने की क्रिया या भाव, मदहास्य, पुलक।

उ०—१ लक्खू वोली म्हारी देह रा इण रूप अर होठा री इण मुळक रै विणसिया म्हैं इण नांव रौ काई करूला।—फुलवाडी

उ०—२ जळ जळी आस्या अर होठा माथै मुळक रै सागै वै एक दूजा सू विछड़घा।—फुलवाड़ी

रू० भे०—मुळकी, मुळक्की, मुळिक, मुळुक,

मुलक—स० पु० [अ० मुल्क] १ कोई वडा देश, राष्ट्र।
(अ मा, ह. नां मा.)

उ०—१ मालिक कावुल मुलक रो, कमरौ साजि कटक्क। जग करण त्रप जेत हू, आयौ लांघि अटक्क।—मे म

उ०—२ प्रभुता देखी पुत्र नी, राजा हुवै खुस्याल। पुण्य विना किम पामीयै, एल मुलक ए माल।—वि. कु

उ०—३ नाग रा झाग पीवै निलज झांक आग चख मे झडै। अगरेज मुलक दावण अडै, ए जूवा सू आयडै।—ऊ का

उ०—४ म्हैं मगळा मुलकां री धरती विना देख्या ई ओळखू हू। माळी रौ वेटौ हू, धूळ अर वूटी देखने धरती री ठा पटकू।
—फुलवाडी

२ रियासत, प्रान्त, सूवा प्रदेश।

उ०—१ दक्खिण में साह रै तथा इण रा तीजा कुपुत्र रै साथ केही जुद्ध जीति केही पुर दुरग दावि पचहत्तरि लाख ७५००००० रौ मुलक दावि दिल्ली हेठै पटकियौ—व भा

उ०—२ थारे मुलक मे भक्ति नही छै, लोग वसै सव कूडौ।
—मीरा

उ०—३ आगला सूराचदां नै परा काढीया सू आगे तो पारकर मुलक में गया था नै हमार थळ रा गावा मे गगासर नै गगासर रा गावां में वैठा है।—नैणसी

उ०—४ कांधळजी हिसार रौ मुलक मारियौ ती पर सारगखान पठान आयौ।—नापै साखले री वारता

मुहा०—मुलक मारणौ—किसी प्रदेश या क्षेत्र अथवा रियासत पर कब्जा करना, कोई देश विजय करना, लूटना।

३ ससार, दुनिया, विश्व।

उ०—१ चोडै कर चाळोह, लूटै भाळौ लोक नै। कद हुसी काळोह, मुनस्या वाळौ मुलक सु।—ऊ का

उ०—२ मुलकां चावी गवाडी ही। माया अर मिनख दोना रा थाट हा।—फुलवाडी

मुह०—मुलका चावौ=विश्व विख्यात, जग प्रसिद्ध, लब्ध-प्रतिष्ठित।

४ कोई भू-भाग, क्षेत्र।

उ०—काळ पडियोड़ा मुलक में वरसात व्हैणा सू लोग जितरा राजी व्है, हळदी वाई नै देखनै उत्ता ई राजी व्हिया।—फुलवाडी

५ जन्म भूमि, वतन।

६ जनता, समाज।

७ विदेश, परदेश।

उ०—ऐडौ रूपाळौ मोटयार छोडनै म्हैं कठै मुलकां में रोवता फिरा
—फुलवाडी

रू०भे०—मुलक्क, मुलिक, मुलुक, मुल्क,

मुलकगिरी, मुलकगीरी–स०स्त्री० [अ० मुल्क+फा०गीरी] देशों को जीतना, देश विजय।

उ०—उठा सू कुंवर मुलकगिरी नै असवार हुवा। मुलक घूमिया, सारा रम किया। मुलक दोय तीन दूजा नया बसाया। —पलक दरियाव री वात

२ लूट-पाट, टकैनी।

उ०—जे रामसिंह मेड़ते जाय दाखिल हुवो तद फेर मुलक माही मुलकगीरी कीवी।—मारवाड़ रा अमरावा री वारता

३ देशाटन, भ्रमण, यात्रा।

रू०भे०—मुल्कगीरी।

मुळकण–स०स्त्री०—१ मुस्कराने या हसने की क्रिया या भाव।

२ मंद हास्य, हसी।

उ०—छकी हीरा मदन छकि, वण बुध सदन वीमेख। चद वदन मुळकण दमक, रदन तडत की रेख। —बगसीरांम प्रोहित री वात

मुळकणौ मुळकवौ–क्रि०अ० [स० पुलकनम्] १ मद मद हसना, मुस्कराना।

उ०—१ ससि वउळावी फिरि गई, प्री मिळियउ एकत। मुळकत दोलउ चमकियउ बीजळ खिवी क दत। —ढो मा

उ०—२ दमण निपाप करिस दामोदर, आणद तूझ हुमै गिरवर-धर। अहर निपाप करिम अघ वारण। मुळकै तूझ प्रेम मधु मारण। —ह र

२ हसना।

उ०—१ चरचीयै चडी खळा खडी मुदत मढी मुळकती। भजियै भवांनी जगत जांनी प्री राज रांणी भगवत्ती।—मा वचनिका

उ०—२ चोजां चटकाळा गुरु गटकाळा, मटकाळा मुळकदा है। माथा हद मसळै अै कद असळै थमळे जद घूजदा है।—ऊ का

३ मुदित होना, हुलसना, चाव आना।

उ०—मेंदी देऊ मुळक मेल सू करदै मोळी। दीवाळी रे दिवस दिया में ऊठै होळी।—ऊ का

४ प्रसन्न होना, खुश होना, पुलकित होना।

उ०—एकनो वैठी फ्रमी कलर्प-कुडै। वठै मारजा हरिजण वालरां मे रीझै मुळकै।—दसदेव

मुळकणहार, हारो (हारी), मुळकणियो—वि०

मुळक्यिोडो, मुळकियोडो, मुळक्योडो—भू० का० कृ०।

मुळकीजणो, मुळकीजवौ—भाव वा०।

मुळक्कणो, मुलक्कवो—रू० भे०।

मुळकाणो, मुळकाबो–क्रि० स० ['मुळकणो' क्रि० का० प्रे० रू०]

१ हसने या मुस्कराने के लिये प्रेरित करना।

२ प्रसन्न करना खुश करना।

३ हसाना, मनोरजन कराना।

मुळकाणहार, हारो(हारी), मुळकाणियो—वि।

मुळकायोडो—भू का कृ।

मुळकाईजणो, मुळकाईजवौ—कर्म वा।

मुळकायोडो–भू का. कृ.—१ हसने या मुस्कराने के लिये प्रेरित किया हुआ २ प्रसन्न व खुश किया हुआ ३ हसाया हुआ।

(स्त्री मुळकायोडी)

मुलकियोडो–भू का कृ—१ मद मद हसा हुआ, मुस्काया हुआ २ हसा हुआ ३ मुदित हुवा हुआ, हुलसा हुआ ४ प्रसन्न, खुश व पुलकित हुवा हुआ।

(स्त्री मुळकियोडी)

मुळकी—देखो 'मुळक' (रू भे)

मुलकी—देखो 'मुल्की' (रू भे)

मुळको—देखो 'मुळक'

उ०—म्हारी हुती ने म्है ई लाई, वैंन हुती ने मोक कहाई। सामी वैठी सुरमो सारै, माखी नड आ मुळको मारै।—अज्ञात

मुळक्क—देखो 'मुळक' (रू भे)

मुलक्क—देखो 'मुलक' (रू भे)

उ०—वाजत्रे सुर जैत रो, डावी चील किलक्क। आभ पडता थभ पर, थई सलाह मुलक्क।—रा रू

मुळक्कणो, मुळक्कवो—देखो 'मुळकणो, मुळकवो' (रू भे)

उ०—सुदर सोळ सिंगार सजि, गई सरोवर-पाळ। चद मुळक्कयउ जळ हस्यउ, जळहर कपी पाळ।—ढो मा

मुळक्कणहार, हारो(हारी), मुळक्कणियो—वि.।

मुळक्किग्रोडो, मुळक्कियोडो मुळक्कयोडो—भू का कृ।

मुळक्कीजणो, मुळक्कीजवौ,—भाव वा।

मुळक्कियोडो—देखो 'मुळकियोडो' (रू भे)

(स्त्री मुळक्कियोडी)

मुळक्या—देखो मुळक' (रू भे.)

उ०—निलजी कैरव नार,कै ऊभी मुळक्या करै। आसी कुटुव उधार, देणा सो लेणा दुरस।—रामनाथ कवियो

मुळगुळ—देखो 'मुगळ' (रू भे)

उ०—साथै हिंदू मुसलमाण, हिंदुस्थान खिडे खुरसांण। मुळगुळ ऊज्वकि खुरसाणी, बोलै जेम विहगम वांणी।—गु रू व

मुळगौ–वि. [स मूल] (स्त्री मुळगी) १ पूर्णतया।

उ०—१ पण औ ढकरेल चोर तो वाडी री सोभा रो जाणै मुळगो मठ ई मार दियो। —फुलवाडी

उ०—२ भारा उखणता-उखणतां सगळो माथो जिण दिन मुळगो ई घिस जावैला उण दिन इण री अकल ठांणै आवैला।

—फुलवाडी

उ०—३ एक वटेऊ कहयो-जायनै चोवरी नै पाल, नीतर औ तो अठा सू अपारो मुळगो पाधो ई काट न्हाकैला। फुलवाडी

२ बिल्कुल।

उ०—१ सेठ वाद करता बोल्या—ये राजी व्हौ भलाई बेराजी व्हौ । म्हे तौ मुळगौ ई पांतरग्यौ के फेरा कीकर खाया हा ।
—फुलवाडी

उ०—२ आ कालाई तौ वरसा ताई जूना मारिया ई ठाणै नी आवै, इण वास्तै म्हैं तौ मुळगी ई माठ भाल ली ।—फुलवाडी

३ तनिक भी, किंचित मात्र भी ।

उ०—१ म्हनै तौ नी खुदा माथै भरोसौ है अर नीं भगवान् माथै मुळगौ ई विस्वास है ।—फुलवाडी

उ०—२ आ हीरां-मोत्या रौ म्हनै मुळगौ ई चाव नीं है ।
—फुलवाडी

४ मुख्य, मूल, व असल ।

रू०भे०—मुळकौ, मुळौ, मूळकौ, मूलकौ, मूलगड, मूलगड, मूलगु मूलगू, मूळगौ, मूलगौ, मूलागौ

मुलजिम—वि० [अ० मुलजम] १ जिस पर कोई इल्जाम या अभियोग लगाया गया हो, अभियोगी, अभियुक्त ।

मुळणौ, मुळबौ—क्रि०अ०—१ नटना, इन्कार करना ।

उ०—जो न भाण ऊगमैं, जो नवि वासग धर भलै, राम वांण न ग्रहैं, करण पारथ्थौ जु मुळै । ब्रह्मा छोडै वेद, पवन जा रहै पुळतौ, चद सूर ना वहै, रहै किम अमी भरतौ । पमार नाकारौ ना करै, मेर-समौ जाकौ हियौ, कंकाळी कीरति करै, सीस दान जगदे दियौ ।
—जगदेव पवार री वात

२ मुकरना, पलटना ।

मुळणहार, हारौ (हारी) मुळणियौ—वि० ।

मुळिग्रोडौ, मुळियोडौ, मुळयोडौ—भू०का०कृ० ।

मुळीजणौ, मुळीजबौ—भाव वा० ।

मुळतवी, मुलतवी—देखो 'मुल्तवी' (रू भे)

मुळताण, मुलतांण—स०पु०—पश्चिमी पजाब या वर्तमान पाकिस्तान का एक प्रसिद्ध नगर ।

रू०भे०—मलतान, मुलताणी, मुलतान मुलतानी, मूलथाण

मुळतांणी, मुलताणी—वि०—मुलताल का, मुलतान सम्बन्धी ।

उ०—मुळतांणी घर मन वसी, सुहगा नइ सेलार । हिरणाखी हसि नइ कहइ, आणउ हेडि तुखार ।—ढो मा

स० पु०—१ एक वस्त्र विशेष ।

उ०—१ सुणि सुदरि साहिब कहैं, याछे रेणड सिवाय । कचु मुलतांणी तणौ पेहरयौ सोहत खुसि ।—व स

उ०—२ मुलतांणी छाखौ मछीपटण तासतौ ।—व स

स०स्त्री०—२ हल्के-पीले रग की एक अत्यन्त कोमल एव चिकनी मिट्टी जिसे औरतें सिर धोने के काम मे लेती हैं ।

३ मूलतान का निवासी ।

४ एक रागिनी विशेष । (सगीत)

रू०भे०—मुलतानी,

देखो 'मुळताण' (रू भे)

उ०—जाळधर कसमीर सिंध सोरठ खुरसाणी, ओडीसा कनवज्ज नगर थट्टा मुळताणी । कुकुण नै केदार दीप सिंघळ मालेरी, द्राबड मावड देस, अंग तिलगाणह फेरी ।—नैणसी

मुलतांन—देखो 'मुळताण' (रू भे)

मुलतानी—१ देखो 'मुळताणी' (रू, भे)

उ०—१ कोस ४ रीत हर कूण उत्तर रै माथै । जाट वाणीया मुलतानी वसै । वस्ती गाव में छै ।—नैणसी

उ०—२ खासौ दुकडौ जांमणाइ मुलतानी तपाइ सालु मुगीपटण ताखौ स्रीसाप तासतौ चुनडी चोरसौ लाखारस दुदामी जामावाड कचीयौ ।—व स

उ०—३ जलाजी मारू, छींटां मांयली छीट भली मुलतांनी हो म्रिगानैणी रा जलाल ।—लो गी

२ देखो मुळताण' (रू भे)

मुलतानी लुहार—स०पु०—लुहारो की एक शाखा ।

मुळमुळच—देखो 'मलमुलच' (रू भे) (ह ना मा)

मुलमुल—देखो 'मलमल' (रू भे)

उ०—मुलमुल मुहगा मोल की, ताकौ बागौ कीन । सुदर आवी सामहि पीउ कोंडि कर लीण ।—व स

मुळमुळाणौ, मुळमुळावौ—क्रि०स०—१ फेरना ।

उ०—वौ जीभ मुळमुळायनै आपरौ लोई चाखियौ ।—फुलवाडी

२ हिलाना ।

उ०—भाणजी बीच मे बोलण सारू होठ मुळमुळाया ई हा के मासी उणनै ढाबती कैवण लागी—थू धीरप सू म्हारी सगळी वाता सुण वेटी ।—फुलवाडी

३ मुह मे डाल, कर हिलाना–फिराना ।

मुळमुळाणहार, हारौ(हारी), मुळमुळाणियौ—वि ।

मुळमुळायोडौ—भू का कृ ।

मुळमुळाईजणौ, मुळमुळाईजबौ—कर्म वा. ।

मळमळाणौ, मळमळावौ, मुळमुळावणौ, मुळमुळावबौ—रू भे ।

मुळमुळायोडौ—भू०का०कृ०—१ फेरा हुआ २ हिलाया हुआ ३ मुह में डालकर हिलाया व फिराया हुआ ।

(स्त्री मुळमुळायोडी)

मुळमुळावणौ, मुळमुळावबौ—देखो 'मुळमुळाणौ मुळमुळाबौ' (रू भे)

उ०—१ हाचळ मुळमुळावतौ वाळक केई वेळा आख्या री जोत रै मारग पाछौ जच्चा रै हिवडा मे समाय जातौ —फुलवाडी

उ०—२ हाचळ मुळमुळावतां ई बाळक रै होठां अर मूडा सु ऐढी ठा पडती के उणनै मासी विचै मा रौ दूध तौ अवस सखरौ लागै ।
—फुलवाडी

मुळमुळावियोडौ—देखो 'मुळमुळायोडौ' (रू भे)

(स्त्री मुळमुळावियोडी)

मुलम्मौ—स०पु० [अ० मुलम्मा] सोने या चादी आदि की कलई, भोल निकल ।

मुलवारी—एक प्रकार का घोडा।

उ०—समहरी हुमेना बाद राति, जिण श्ररब माहि वळि नीख जाति। सवारी उतन सवार खेत, लख लख मुलवारी मोल लेत।
—सू प्र

मुला—देखो 'मुल्ला' (रू भे)

उ०—१ मौलवी भगडे श्ररज काजी मला, पाडजे देवहर दळा कर पेत। मेच्छ वांचै जिको हिंद इकळीम मज्झ, खडो राजा जितै वर्ण नह खेत।—नरहरदास बारहठ

मुलाकात—स० स्त्री० [श्र०] १ दो या दो से श्रधिक व्यक्तियो का होने वाला परस्पर मिलन भेंट, साक्षात्कार।

उ०—१ जीव निरजीव री मुलाकात! मौत मैणी री घात! फगारा री टोळी रा दवग श्रर बाखड-बाछेत चेरया, चमक्या तथा चट दणी मौके जा पूग्या।—दमदोख

उ०—२ मारग मे काचा श्रादमियां री वातां नहीं सुणी, पिता री श्राग्या प्रभू री श्राज्ञा ज्यू जांण कूच दर कूच श्राय बादसाह सलामत सू मुलाकात कीवी।—नी प्र.

२ जान-पहचान, परिचय।

उ०—श्रापरै बेटा मारी टकरांणी री प्रीत री सगळी वातो उघाड नै गुणाय दियौ के वीकर चाकरी चढता ठाकर सू मुलाकात व्ही।
—फुलवाडी

३ प्रेम-व्यवहार, मैत्री।

४ सहवास, रतिक्रीडा, मैथुन।

रू० भे०—मुलाखात,

मुलाकाती—वि०—१ मुलाकात करने वाला, जिससे जान-पहचान हो।

२ परिचित।

३ प्रेमी, मित्र।

रू० भे०—मुलाखाती

मुलाखात—देखो 'मुलाकात' (रू भे)

उ०—तद उदैराम कयो, गाम श्रावा हू वही मैं उतार देसू। सू उतार दीना श्रोर कयो, थे मा'राज सू मुलाखात मती करज्यो, जो कहावै तो उतर देज्यो कै हमार नहीं पछै हुगी"।—द दा

मुलाखाती—देखो 'मुलाकाती' (रू भे)

मुलाजम—देखो 'मुलाजिम' (रू भे)

२ देखो 'मुलाजमत' (रू भे)

उ०—सवत १७७५ मावण वद ११ दिली दाखल हुवा। पातसाह फरखसा री मुलाजम कीवी।—रा व वि

मुलाजमत, मुलाजमती—स०स्त्री०[श्र० मुलाजमत] १ सेवा सुश्रुषा।

२ नौकरी चाकरी।

उ०—१ जाहांगीर पातसाहि श्रजमेर नु श्रावतो थो, माहाराजा स्त्री गजसिंहजी चाटसु श्रागै जाय पातसाह जांहांगीर सु मिळिया। मुलाजमत कीवी। पातसाह श्रजमेर श्राया।—नैणसी

उ०—२ सिरमर वद ६ सोम महाराज साहजादा सु मुलाजमत करायी तरै पांच हजारियां मे समानू ऊभो राखियौ, सिरपाव दियौ पाचहजारी रौ मनसब दियौ।—बां दा ख्यात

उ०—३ पछै जाय मुलाजमती की वोहत दिलासा कीवी। घोडो सिरपाव हाथी दे, डेरा नू विदा कीया।—नैणसी

रू० भे०—मुलाजमत मुलाजम, मुलाजिमत,

मुलाजिम—स० पु० [श्र०] १ नौकर, चाकर, सेवक।

२ दास, गुलाम।

रू० भे०—मुलाजम,

मुलाजिमत—देखो 'मुलाजमत' (रू भे)

मुलाजो—देखो 'मुलाहिजो' (रू भे)

उ०—तुकारो काढै तुरक, मुह मुलाजो मेट। कुल उत्तम जन्म्या किसू, नीच कहीजै नेट।—व व ग्र

मुळाटो—स० पु०—कपडे को गोलाकार लपेट कर बनाई हुई एक प्रकार की गेंडुरी (इडुरी) जो शिर पर बोझा उठाने मे काम श्राती है।

मुलाणो, मुलावौ—देखो 'मोलाणो मोलावौ' (रू भे)

मुलाम—देखो 'मुलायम' (रू भे)

मुलायजो—देखो 'मुलाहिजो' (रू भे)

उ०—१ सिवराज जेसंघ रै दीवाळी होळी दसरोहे वार परव पोसाक सिरपाव गहणो सरव नेग सुमार जंत पावै, कारण ईजत वडो मुलायजो।—जैतमाल पुमार री वात

उ०—२ मेमद मुराद श्रबु भेळा हुश्रा श्रागे मेमद मुराद पवार सादूळ रा नरसिंघदास रो कायदो मुलायजो कोई न करतो, श्रळघा वैसांणतो।—नैणसी

उ०—३ मालुम मुलायजे करहु माफ, श्रालिम हैं श्रालमगीर श्राप।
—ऊ का

उ०—४ सू इण रै चारण १ गैपो सिढायच हो इण रो पण मुलायजो छो। मारा नू तुकारो देयनै बतळावतो।—द दा

मुलायम—वि० [श्र०] १ कोमल, नरम।

२ नाजुक, सुकुमार।

३ जिसमे कठोरता या तीव्रता न हो, शान्त, सरल।

रू० भे०—मुलाम,

मुलायमत, मुलायमी—स०स्त्री० [श्र० मुलायमत] १ मुलायम होने की श्रवस्था या भाव।

उ०—वजीर श्ररज कीवी, मिठाई, मिताई, खमाई, नरमाई श्रौर मुलायमी किण वास्ते जे इण गुणा सू रैयत हुश्रा श्रापरै बादसाह नू देवै।—नी प्र

२ कोमल, नरमी।

उ०—मुदार मुलायमत ऐ स्वभाव भला छै।—नी प्र

३ नाजुकता, सुकुमारता।

मुलायोडो—देखो 'मोलायोडो' (रू भे)

(स्त्री० मुलायोडी)

मुलावणो, मुलावबो—देखो 'मोलाणो, मोलावो' (रू भे)

उ०—गूघे गोनी तन गुडकावे, ऊघै नीद न आवै । सूंघै सुजस इतर तव साजन, मूंघै मोल मुलावै ।—ऊ का

मुलावणहार, हारौ (हारी), मुलावणियौ—वि० ।

मुलाविग्रोडौ, मुलावियोडौ, मुलाव्योडौ—भू० का० कृ० ।

मुलावीजणौ, मुलावीजवौ—भाव वा० ।

मुलावियोडौ—देखो 'मोलायोडौ' (रू भे)

(स्त्री० मुलावियोडी)

मुलाहिजौ–स० पु० [अ० मुलाहज] १ मान, प्रतिष्ठा, इज्जत,आदर ।

उ०—१ नापो पूछो क्यो ना गया । उण कही कासू जावा । म्हारो कारण मुलाहिजौ थौ सो सगळो महने सवा महना सू मेटियो ।—नापै साखले री वारता

उ०—२ उम्मीदवार काम आया त्यानू पट्टौ जागीर दीवी । खास चौकी माही राखिया । वडो महरवानी, कायदौ-कुरब मुलाहिजौ दियौ ।—डाढाळा सूर री वात

२ लिहाज, सकोच ।

उ०—१ सो हम महाराज का बहुत मुलाहिजा राखै हैं । अव हमसे मुलाहिजा नही रहेगा ।—जयसिंह आमेर रा घणी री वारता

उ०—२ ताहरा मा पण आ होज कही-हालण रै वासते सारौ लोक आतुर छै । महाराज निपट काहल करै छै । थारौ मुलाहिजौ करि दवाय नै कहै न छै ।—पलक दरियाव री वात

३ प्रभाव, रोब, शान-शौकत ।

उ०—यह आमेर जयसिंह जी रै परणियी थी सो दवां री भारी मुलाहिजौ सो अमरसिंहजी नू बादशाह नीकी तरह राखै ।

—रा रा सि री वारता

४ निरीक्षण, गौर ।

रू० भे०—मुलाजौ, मुलायजौ,

मुलिक—देखो 'मुलक' (रू भे)

मुळियोडौ–भू० का० कृ०—१ नटा हुआ, इन्कार किया हुआ २ मुकरा हुआ, पलटा हुआ ।

(स्त्री० मुळियोडी)

मुळुक, मुलुक—देखो 'मुळक' (रू भे)

मुळेट, मुळेठ–स०पु०—कुम्हकार द्वारा चाक पर से उतारे हुए कच्ची मिट्टी के वर्तन का प्रारंभिक रूप ।

उ०—वै इणी भात चाक फेरणी सू चाक घुमावै माथै पीडो वरै । मागै इणी भाती चूळ खाचै । पछै मुळेट उतारै ।—फुलवाडी

मुळेठी मुलेठी–स० स्त्री०[स० मधुयष्टि,प्रा० मूलयट्ठी] १ उष्ण प्रदेशो मे काली मिट्टी मे होने वाली एक लता ।

२ उक्त लता की जड, जो स्वाद में मीठी व तृष्णा, ग्लानि व क्षयनाशक एव वल वर्धक औषधि मानी जाती है ।

रू० भे०—मरेठी, महलोटी, मिरिहठी, मुरेठी, मुरैही ।

मुळौ—देखो 'मुळगो' (रू भे)

उ०—स्यालिया तो इण फरमांण आगै बोलणौ मुळौ माठ कर दियौ ।—फुलवाडी

मुल्क—देखो 'मुलक' (रू भे)

मुल्कगीरी—देखो 'मुलकगीरी' (रू. भे)

मुल्की–वि० [अ०] १ देशका, देश सम्बन्धी,

२ अपने देश का बना हुआ, देशी ।

रू० भे०—मुलकी ।

मुल्तवी–वि० [अ०] १ जिसका विचार छोड दिया गया हो, स्थगित ।

२ रुकने वाला, रुका हुआ ।

रू०भे० - मुलतबी, मुलतवी,

मुल्लौ–स०पु० [अ०मुल्ला] १ मस्जिद में अजान देने वाला मौलवी, इस्लाम धर्माचार्य ।

उ०—१ मुल्ला काजी मरहू मयाद, फतवा लीजै मेटन फसाद ।

—ऊ का

उ०—२ काई करैला म्हारो दुरजन पुरजन, काई करैला झूठा पाजी जी । कांई करैला म्हारो राजा राणी, काई करैला मुल्ला काजी जी ।—मीरा

उ०—३ दादू काया मसीत कर पंच जमाती, मन ही मुल्ला इमाम । आप अलेख इलाही आगे, तहं सिजदा करै सलाम ।—दादूवांणी

२ मुसलमानो का विद्या गुरु, शिक्षक ।

रू०भे०—मुला ।

मुवक्किल–स०पु० [अ०] १ मुसलमानो का एक कल्पित देवता, फरिश्ता ।

२ वह रूह व आत्मा जो आमिल द्वारा वश मे की गई हो ।

३ वकील का आसामी, जो अपना मुकद्दमा वकील को सौंपता है ।

मुवारणौ—देखो 'मारणौ' (रू भे)

मुवारौ—देखो 'मुहावरौ' (रू भे)

मुवाळ–स०स्त्री०—मुखाकृति ।

मुवोडौ, मुवौ–वि० [स०मृत] मरा हुआ, मृत ।

उ०—१ विद्या रो जाप अतजय रो जाप छै जु जपै सु तीन वरसो मुवो जीवै । —चौवोली

उ०—२ मुवा वालक सुलसा जणजी, ते मेलै तुम पास । ताहरा मेलं जीवता जी सुलसा री पूरै आस —जयवाणी

मुस–वि० [स०मृषा] झूठा ।

मुसद—देखो 'मसद' (रू भे)

मुसक—१ देखो 'मसक' (रू भे)

उ०—चाहै पर धन चोर, जोर कुविसन ए जाणौ । मुसक वधि मारिजै, घणी वेदन करि घाणौ ।—ध व ग्र

२ देखो 'मुश्क' (रू भे)

मुसकरा'ट—देखो 'मुस्कराहट' (रू भे)

मुसकराणौ, मुसकराबौ–क्रि०अ०—देखो 'मुसकाणौ, मुसकावौ' (रू भे)

मुसकराणहार, हारौ(हारी), मुसकराणियौ—वि ।

मुसकरायोड़ो—भू० का० कृ० ।

मुसकराईजणो, मुसकराईजबो—भाव वा० ।

मुसकरायोड़ो—देखो 'मुसकरायोड़ो' (रू० भे०)

(स्त्री० मुसकरायोड़ी)

मुसकराहट—देखो 'मुस्कराहट' (रू० भे०)

मुसकल, मुसकलि, मुसकल्ल—देखो 'मुस्किल' (रू० भे०)

उ०—१ तद रावजी बोल्या-जु आ वात तौ खरी पण वैर ही करणां आपाण छै वैर छूटणा मुसकल छै।—नैणसी

उ०—२ ज्यांरी रिच्छ्या देवता, सेवा पीर प्रधान। त्यां अण चीती संपजै, मुसकल में आसान।—रा० रू०

उ०—३ लालच रस रै लाग, माखी लपटांणी मधू। उडणी वळियौ आग, जिण रै मुसकल जीवणी।—बां० दा०

उ०—४ माता पितु वेटी वेटा भल मरिया। प्यारां प्यारा नै मुसकल परहरिया।—ऊ० का०

उ०—५ जन हरियै की वीनती, सांई करीयै कांनि। वदै कू मुसक्ल घनी, तेरै सब आसांनि।—स्रीहरीरांमदासजी महाराज

उ०—६ ऊभा सीहां केस इक, कर लेणी मुसकल्ल। पाण छतै वयूकर पड़ै, ऊभा सीहा खल्ल।—बां० दा०

मुसकाण, मुसकांन, मुसकांनी—देखो 'मुस्कांन' (रू० भे०)

उ०—हाट वाट माहि रोकत टोकत, या रसिया की मैं मारी न जानी। सुंदर वदन कमळ दळ लोचन, बांकी चितवन रु मंद मुसकांनी।—मीरां

मुसकाणो, मुसकाबो—क्रि०अ० [सं०मुद्] १ मंद-मंद हसना, मुस्कराना।

उ०—१ विडरी हिरणी सी फिरणी बिजकाती, मुखड़ै मुसकाती जोरी जतळाती—ऊ० का०

उ०—२ गहै द्रुम-डार कदम की ठाडो, मृदु मुसक्याय म्हारी ओर हस्यौ। पीतांबर कटि काछनी काछै,रतन जटित सिर मुकुट कस्यौ। —मीरां

उ०—३ मुख मुसकाती उमंग सूं, महदी हाथ मंग मंग। भळक छतीसूं आभरण, अतर लगाया अंग।—पना

२ हर्षित होना, खुश होना, पुलकित होना।

उ०—१ मिळियां मन मेळू माती मुसकाती। ठुमका भरतोड़ी आती इतराती।—ऊ० का०

उ०—२ मन मुसकाय नैन के माही बाल्यो मोटी बानी। चगी चाल साह पर चूक्यौ, गढ़ नह गज्यो गुमानी।—ऊ. का

मुसकाणहार, हारौ(हारी) मुसकाणियौ—वि० ।

मुसकायोड़ो—भू० का० कृ० ।

मुसकाईजणो, मुसकाईजबो—भाव वा० ।

मुसकराणो मुसकराबो मुसकिराणो, मुसकिराबो मुसकुराणो, मुसकुराबो मुसुकाणो मुसुकाबो, मुस्काणो, मुस्काबो, मुस्कावणो मुस्कावबो—रू० भे०

मुसकायोड़ो-भू० का० कृ०—१ मंद मंद हसा हुआ, मुस्कराया हुआ २ हर्षित हुवा हुआ, खुश हुवा हुआ, पुलकित हुवा हुआ।

(स्त्री० मुसकायोड़ी)

मुसकिराणो, मुसकिराबो—देखो 'मुसकाणो, मुसकाबो' (रू० भे.)

मुसकिरायोड़ो—देखो 'मुसकायोड़ो (रू० भे०)

(स्त्री० मुसकिरायोड़ी)

मुसकिराहट—देखो 'मुस्कराहट' रू० भे०)

मुसकिल—देखो 'मुस्किल' (रू. भे०)

उ०—१ मुसकिल कूच्या माहि, तिका निठि कीधा तावै। भड़ता सिर आकास, फेण झड़ता मुख फावै।—मे० म०

उ०—२ भूधर कही-गाव माही तौ हू कोई आऊ नहीं। म्हारै झाडे री मुसकिल, बीजी तळाव पर पाणी रो निवास छै, कोई नीम उतार दे, कोई हळद तेल आण देवै, पाळ रै नीचै हू झाडे फिर आऊ।—सूरे खींवे कांवळोतरी वात

मुसकी—देखो 'मुस्की' (रू० भे०)

उ०—१ के लीला के कागडा, कल्डा हरडा केक। मुसकी नुकरा मेटिया, इसडा तुरग अनेक।—पे० रू०

उ०—२ वह अवरस मुसकी अर सजाव। बोरता केहरी पेस वाव।—सू० प्र०

मुसकुराणो, मुसकुराबो—देखो 'मुसकाणो, मुसकाबो' (रू० भे०)

मुसकुराणहार, हारौ(हारी), मुसकुराणियौ—वि० ।

मुसकुरायोड़ो—भू० का० कृ० ।

मुसकुराईजणो, मुसकुराईजबो—भाव वा० ।

मुसकुरायोड़ो—देखो 'मुसकायोड़ो' (रू० भे.)

(स्त्री० मुसकुरायोड़ी)

मुसकुराहट—देखो 'मुस्कराहट' (रू. भे०)

मुसटड—देखो 'मुस्टंड' (रू. भे०)

मुसट-स० स्त्री०—१ चुप्पी, मौन।

उ०—लाज भला कहवी कवै, लाज न आवै काज। कही भलौ कहणो कही, मुसट भली छै राज।—पच दडी री वारता

२ देखो 'मुस्टी' (रू० भे०)

उ०—दिस्ट न आवै मुसट मै, नही रूप न रेखा। हरिरामा परि सुनि मै, मुक्ति मीलया अलेखा।—स्री हरिरांमदास जी महाराज

मुसटक, मुसटि—देखो 'मुस्टी' (रू० भे०)

उ०—छत्रपति इता मिळि जुटत छत्र। तिल मुसटि पडत नह भोमि तत्र।—सू० प्र०

मुसणो, मुसबो—देखो 'मूसणो, मूसबो' (रू० भे०) (उ० र०)

मुसता-स० स्त्री०—नागर मोथा।

मुसताक, मुसताकि-वि० [अ० मुश्ताक] १ उमगित, उत्साहित, उत्तेजित।

उ०—१ हौदां मझि लोह करै करि हाक। महारिख देखि हुवै मुसताक।—सू० प्र०

उ०—२ सकति पूजि 'अभमल' सुपह, पहरि ऊत पोसाक। करि

दघवघ ग्रावध करसै, मलपै छक मुसताक ।—सू प्र

२ बहुत अधिक कामना रखने वाला, अभिलाषी, इच्छुक, उत्सुक ।

३ उत्कंठित, लालायित ।

४ मस्त, मतवाला ।

उ०—१ घर करि अमल पदम छत्र धारै, सुंदरि नवलापुरी सिंगारै। रंग महलि दंपति दुति राजे, छक मुस्ताकि काम छवि छाजे ।—सू प्र

उ०—२ ग्रठी हू कवर हुवौ मुसताक छकियौ घणौ छबीलो प्रेम रस री छाक ।—र हमीर

रू० भे०—मसताक, मुस्ताक,

मुसदी, मुसद्दी—देखो 'मुतसदी' (रू भे)

उ०—१ मोटा छाटा मुसदिया बुलवातौ दरबार । 'जसवत' खातर जीव का, सारा लेतौ सार ।—ऊ का

उ०—२ यो मन मुसदी सकळ का, आपा ग्रतर जाणी । हरीया पाच पचीस कु, उलटि एकठा आणि ।

—स्री हरिरामदासजी महाराज

उ०—३ मूहता मारवाड रा मुसद्दी हा तौ सेठ लिछमी रा लाडला —रातवासौ

उ०—४ पावती गोपाळदास रा मुसद्दिया नू हाडां रा मुतसद्दी कह्यो—जे राणी जी सू जुहार कर चढज्यो ।

—गौड गोपाळदास री वारता

मुसन्ना—स० स्त्री० [अ०] १ असल कागज की वह नकल जो मीलान आदि करने के लिये रक्खी जाती हो ।

२ रसीद का अर्द्धांश जो पीछे रक्खा जाता है ।

मुसब्बर—स० पु० [अ०] १ औषध के रूप मे काम लेने के लिये कुछ विशिष्ट क्रियाओ से जमाया हुआ घी-कुवार-रस । (वैद्यक)

२ एलुवा ।

मुसमल्ला, मुसमुल्ला - देखो 'मुसलमान'

उ०—भिळिया नर मंदांन मै, माझी अपमल्ला, सामा वीरम सारका, झालै कुण झल्ला । अछरां हूरा आवसी, वर सूरा भल्ला, होमी मरणा हिंदवा, मरसी मुसमल्ला —वी मा

मुसमूरण—वि० [प्रा० मुसमूर] नाश कारक, नष्ट करने वाला विनाश करने वाला ।

उ०—मोह अरि मुसमूरण पूरण परम पसाय । सखेसर परमेसर केसर चरचित काय ।—उदयविजय

मुसरफ, मुसरिफ—स० पु० [अ० मुशर्रफ] एक उच्चाधिकारी व इस अधिकारी का पद । (नैणसी)

वि० १ प्रतिष्ठित, सम्मानित ।

[अ० मुस्रिफ] २ व्यय करने वाला, खर्च करने वाला ।

३ अपव्ययी, बहु खर्चीला ।

मुसळ, मुसल—देखो 'मूसळ' (रू. भे)

उ०—त्रिसूल सक्ति सर तोमर मुरवि अरद्ध मुरवि परसु पाम पट्टिस द्रुम लांगूल मुसल मुसढि मुद्गर लगुड गदा ।—व स

मुसलमांन—स० पु० [अ० मुसलमान] महम्मद साहब द्वारा चलाये हुए धर्म एव सम्प्रदाय का अनुयायी, इस्लाम धर्म को मानने वाला ।

उ०—१ जन हरीया उन देसडे, अभिनासी की आन । और किसी का डर नही, हिंदू न मुसलमान ।—स्री हरिरामदास जी महाराज

उ०—२ असल मुसलमांन हुवै जको मजब रै कायदै सु निवाज पढै रोजा राखै अर वरस में दो-चार वार हलाली कर परो र मालक नै मूढो दिखाळै ।—दसदोख

रू० भे०—मुसलमीन मुसलमान,मूसळमांण,मुसळो मुसलो,मुसल्लो ।

मुसलमांनी—स०स्त्री०—१ मुसलमानो मे बच्चो आदि के की जाने वाली सुन्नत, खतना (रस्म)

२ मुसलमान का कर्त्तव्य, धर्म ।

वि०—मुसलमान का, मुसलमान सम्बन्धी ।

रू० भे०—मूसलमांण, मूसलमान

मुसलमीन—देखो 'मुसलमान' (रू भे)

उ०—मालिक नहिं खालिक मुसलमीन । अल्ला हैं रब्बुलआलमीन ।

—ऊ का

मुसला—स०पु०—मुसलमान जाति या वर्ग ।

उ०—लूवा मगलागी धरणीतल धायां । मुसला मिटिगा ज्यू अगरेजा आया । ऊ का

रू०भे०—मुसल्ला ।

मुसलायुद्ध, मुसलायुध—देखो 'मूसळायुध, मूसलायुद्ध (रू भे)

उ०—हलायुव हलायुवइ मुसलायुध मुसलायुवइ सूलायुव सूलायुवइ । —व स

मुसळि मुसलि—१ देखो 'मूसळ' (रू भे) (अ मा)

२ देखो 'मूसळी' (रू भे)

मुसळी—स०स्त्री०—१ छिपकली, विसूदरा ।

२ देखो मूसळी' (रू. भे)

मुसळो, मुसलो—१ देखो मुसलमान'

उ०—फटकार हलाहल तें फिरगो, धन आनद अम्रत धा घिरगो । मुसला पर डार सिला महती गुरु कारज आरज बस गती ।—ऊ का

२ देखो मूसळ, (अल्पा, रू भे)

मुसल्मान—देखो 'मुसलमांन' (रू भे)

उ०—कलमा नहिं भरिहैं पान कांन । मारेहु न व्हैहैं मुसलमान ।

—ऊ का

मुसल्ला—देखो 'मुसला' (रू भे)

उ०—गल्ला सुभगाथा को पवित्रता को पल्ला थो वो । अल्ला थो मुसल्लावो को मल्ला धन माता को । अत्र थो प्रसिद्ध आतपत्र मात्र आरय्यन को, छत्र छत्र धारिन नछत्र सुव साता को । ऊ का

मुसल्लो—स०पु० [अ०मुसल्ला] १ नमाज पढने की दरी, चटाई ।

२ देखो मुसलमांन'

उ०—हिंदू लोग ग्यारा सै असीला कामि आया । सोळा सै

मिगोहया सूं मुमल्ला घोर पाया ।—शि. व

२ देखो मूसळ' (मला, रू. भे)

मुमचर—स० पु०—वस्त्र विशेष

उ०—न्दा फन्दा मुमचरां, चोपमीदा ललचाव। कदां केळसी फामगी, बेहद हदा बणाव ।—पना

मुसव्विर—स०पु० [अ०] चित्रकार, चितेरा, चित्र-शिल्पी ।

मुसव्विरी—स०स्त्री० [अ०] १ चित्रकारी।

२ मुसव्विर का पेशा ।

मुसाण—देखो 'मसाण' (रू भे)

उ०—१ कुत्ता कागला चूंटे, मजूरा रा माथा फूटै है । घर मुसाण सामका सा हो रया है ।—दसदोख

उ०—२ धूम मुसाणा मे निस वासुर धावै । अतेस्टी आसर टांणा लग आवै —ऊ का

मुसाअणा—स०पु०—यवन या मुसलमान जाति ।

मुसाणो, मुसावो—क्रि०स० [सं० मुष्—मूसणो' क्रिया का प्रे०रू०]

१ चोरी करवाना ।

२ लुटवाना ।

३ हरण करवाना, अपहरण करवाना ।

४ पकडवाना ।

५ ढकवाना, लिपटवाना, घिरवाना, छिपवाना ।

६ छिनवाना, झपटवाना ।

७ भ्रमवाना ।

८ लुप्त करना ।

९ ममोसना ।

१० ठगवाना ।

उ०—हरीया ख्याली खलक मैं के तो गया कमाय । के आया ज्यूंई गया, मुसत मुसाय, मुसाय ।—श्री हरिरामदासजी महाराज

मुसाणहार, हारो (हारी), मुसाणियो—वि० ।

मुसायोडो—भू० का० कृ० ।

मुसाईजणो, मुसाईजबो—कर्म वा० ।

मुसाप—१ देखो 'मुसाहब' (रू भे)

उ०—भक्ती जोग मुसाप है, हट जोग भ्रमराय। माया मनासू काम करीजे, त्याव सतोग चुकाव —श्री हरीरामजी महाराज

२ देखो 'मुसाफ' (रू भे)

मुसाफ—स०पु० [अ० मुसाफ] १ समर, युद्ध ।

२ लडाई का मैदान, युद्ध स्थल, रण क्षेत्र ।

३ शत्रु के चारों ओर डाला जाने वाला घेरा ।

[अ० मुसहफ] ४ कुरान ।

उ०—१ हम तम विरद मुदाई हद लेड मुसाफ आगद वरड । निसीठ देसि वेगट फिरड, वाचा देड पग्गड परड ।—प च चौ

उ०—२ करो के गुम जेते रहे बीन बध सवि साच । हम मुसाफ उठाइ है विनसा नही वाच ।—प च चौ

५ लेखो आदि का संग्रह ।

रू०भे०—मुसाप,

मुसाफर—देखो 'मुसाफिर' (रू भे.)

उ०—मेडते रै मारग में नानडो गाव सु परली तरफ १ वावडी कराई । मारग वेतो मो मुसाफरां नै जळ री अडचन रैती ने नाव सोडी मर री वावडी दीयो ।—नैणसी

मुसाफरखांनो—देखो 'मुसाफिरखानो' (रू. भे)

उ०—मूं'ता रै घर री गिरै'तो मुसाफरखांने रै डोळ मे घिरगी। घर मे जाय' र देखै तो पाच सेर आटै रो मरजाम नहीं है ।—दसदोख

मुसाफरी—देखो 'मुसाफिरी' (रू भे)

उ०—एक जगा रैणो मु मै एक कडूं रा अग सा वण जावै है। अठै ना तो कोई रेलगाडी री मुसाफरी है, अर न कोई धरमसाळ तथा तीजा रो मेळो है ।—दसदोख

मुसाफिर—स०पु० [अ०] यात्री, राहगीर, पथिक, बटोही ।

रू भे मुसाफर, मुसाफीर

मुसाफिरखानो—स०पु० [अ०मुसाफिर+फा० खाना] १ रेल्वे स्टेशन पर बना यात्रियो, मुसाफिरों के ठहरने का कक्ष, कमरा या हाल ।

उ०—वो थोडी देर तो मुसाफिरखाना मे ऊभो रह्यो अर पछै सरदारपुरा वाळी सडक पकडी ।—रातवासो

२ धर्मशाला, सराय ।

रू०भे०—मुसाफरखांनो

मुसाफिरी—स०स्त्री० [अ०] १ मुसाफिर होने की अवस्था या भाव ।

२ यात्रा, प्रवास ।

रू०भे०—मुसाफरी,

मुसाफीर—देखो 'मुसाफिर' (रू भे)

उ०—वातां-वातां मे मसाफीर री साग-सब्जी मे नीबू निचोय देतो —फुलवाडी

मुसाय—देखो 'मुसाहब' (रू भे)

मुसायख—स०पु० [अ०मुशायख] धर्म के ज्ञाता, धर्माचार्य ।

उ०—दादू सेख मुसायख औलिया, पैगंबर सब पीर । दरसन सौं परसन नही, अजहूं वैली तीर । —दादूवाणी

मुसायब—देखो 'मुसाहब' (रू भे) (नैणसी)

मुसायबी मुसायवी—देखो 'मुसाहबी' (रू भे)

उ०—पीछे खानखांना कु पातसाहजी तमाम मुलक की मुसायबी अनायत करी ।—द दा-

मुसायोडो—भू० का० कृ०—१ चोरी करवाया हुआ २ लुटवाया हुआ ३ हरण या अपहरण करवाया हुआ ४ पकडवाया हुआ ५ ढकवाया हुआ, लिपटवाया हुआ, घिरवाया हुआ, छिपवाया हुआ ६ छीनवाया हुआ, झपटवाया हुआ ७ भ्रमवाया हुआ । ८ लुप्त किया हुआ ९ ममोसा हुआ १० ठगवाया हुआ । (स्त्री०मुसायोडी)

मुसाल—१ देखो 'मुसाळ' (रू भे.)

उ०—१ प्रथम पुवाडई पूतना सोखी मर दळीयो मुसाळ। ए हरि नई आगई दावानळ, दांणव नइ कुळि काळ ।—रुकमणी मगळ

२ देखो 'मसाल' (रू भे)

उ०—१ रवि नै उदय रात मिट जावै, खूटै तेल मुसाल बुझावै। यो नीयति व्रत वेद वतावै, तप तीखै अप राज गमावै।—रा रू

उ०—२ मदवी को मछालो, हाथ की हाल। तीजणीया रो तुररो रूप की मुसाल। —मयाराम दरजी री वात

मुसालची—देखो 'मसालची' (रू भे)

मुसालो—देखो 'मसालो' (रू भे)

उ०—१ कोई जाणै के आ पारियां में केर, सांगरियां के मुसाला व्हैला। —फुलवाडी

उ०—२ ऐ तीन तळाव मडाया। तिणा करण नू पैहला तो आपरो कामदार मुसालो मेलियो। —नैणसी

मुसवाई—वि० [स० मृषा वादिन्] झूठ बोलने वाला, झूठा (जैन)।

मुसावाद, मुसावाय—स० पु० [स मृषावाद] झूठ, असत्य।

मुसाहब—स०पु० [अ०मुसाहिब] १ राज्य दरबार का एक पद।

२ उक्त पद पर कार्य करने वाला व्यक्ति।

३ सामत, पार्षद।

उ०—फीफरड फूट गोळा गजा फरहडै, जगी हौदा गजा खड्हडै जोम। घडहडै घोम वे मुसाहब लडै घर, विहु साहब हसै हडहडै बोम। —हुकमीचद खिडियो

४ किसी राजा या रईस के पास मन बहलाने के लिये रहने वाला, पार्श्ववर्ती सहवासी।

रू०भे०—मुमाप, मुसाब, मुसायब, मुसाहिब, मूसायब,

मुसाहबी—स०स्त्री०—१ 'मुसाहब' का काम।

२ मुसाहब का पद।

रू०भे०—मुसायबी, मुसायवी,

मुसाहिब—देखो 'मुसाहब' (रू भे)

उ०—जकै वासतै आखा ठाकुर-उमराव अर मुसाहिब दै की खावै। —दसदोख

मुसिकल—देखो मुस्किल' (रू भे)

उ०—ताहरां सिरचद मुहतै नू मुसिकल हुई जु राजाजी राणी जी नू कारी री खवरि होइमी ताहरां जीव बुरो करिसी। —द वि-

मुसियारो—स०पु०—१ चोर।

उ०—मुसियारा मुख मूद, कपटी क्यू बोलै नही। तू सारा सिर खूब, बुरा भला सह रावळा।—गज उद्धार

२ ठग, वचक, कपटी।

३ दगा-बाज।

मुसियोडो—देखो 'मूसियोडो' (रू भे)

(स्त्री०मुसियोडी)

मुसिलो—देखो 'मुसलमान'

मुसीबत—स०स्त्री० [अ०] १ तकलीफ, कष्ट।

२ विपत्ति, सकट, दु ख।

मुसुकाणो, मुसुकावो—देखो 'मुसकाणो, मुसकावो' (रू भे)

उ०—होठ मुसुकाय रिझवाय पातक हरा। हाथ दीधा जिको जोड़ आगळ हरी।—र ज प्र°

मुसुकाणहार, हारो(हारी), मुसुकाणियो—वि०।

मुसुकायोड़ो—भू० का० कृ०।

मुसुकाईजणो, मुसुकाईजबो—भाव वा०।

मुसुकायोडो—देखो 'मुसकायोडो' (रू भे)

(स्त्री०मुसुकायोडी)

मुसेंद—स०पु०—१ एक प्रकार का घोडा।

उ०—वेखता ताव मुज नरुखवाज, वह डसिय दत तन गुरज बाज। खित तुरकी आलातीन खेत, बाला मुसेंद रोसनी वेत।—सू प्र

३ देखो 'मुस्तैद' (रू भे)

मुसोर—देखो 'मसोढ' (रू भे)

उ०—गाल मसुरिया गीडवा जी थीर माकी जी मुसोर रांनी सोरठी।—लो गी

मुस्क—स० पु० [फा० मुश्क] १ कस्तूरी, मृगमद।

२ गध, बू।

रू० भे०—मुसक।

मुस्कदांणो—स० पु०—एक लता विशेष का बीज जो इलायची के दाने के समान होता है और कस्तूरी के समान सुगधी देता है।

मुस्कनाफो—स० पु० [फा० मुश्कनाफ:] कस्तूरी की थैली, जिसमें कस्तूरी रहती है, मृगनाभि।

मुस्कनाभ—स० पु०—वह मृग जिसकी नाभि मे कस्तूरी होती है।

मुस्कबिलाई—स० पु०—एक जगली बिलाव जिसके अड कोशो से बडा सुगधित पसीना निकलता है।

मुस्करा'ट, मुस्कराहट—स० स्त्री०—१ मुस्कराने की क्रिया या भाव।

२ मद-हास्य, मुस्कान।

रू० भे०—मुसकरा'ट, मुसकराहट, मुसकिराहट, मुसकुराहट,

मुस्कल—देखो 'मुस्किल' (रू भे)

उ०—१ पण काल तो उठा सू प्राण लेणनै वसीठ दूत भेज देवै परत उण भड रा निरभै पणा सू रीम नै म्हारो नाह पती नीठ मुस्कल सू उबारै है।—बी स. टी

उ०—२ एक दिन वो आपरी छाग लेयनै पाछो आवतो के एक गाय रा खुर में वावळिया री सूळ खुबगी। आगै चालणो मुस्कल व्हैगो।—फुलवाडी

मुस्कवत—स० पु० [सं० मुष्कवत्] इन्द्र नामक वैदिक सूक्तद्रष्टा का विशेषण।

मुस्काण, मुस्कान—स० स्त्री०—मद हास्य, धीमी हसी।

रू० भे०—मुसकांण, मुसकांन,

मुस्काणो, मुस्कावो—देखो 'मुसकाणो, मुसकावो' (रू भे)

मुस्कायोडो—देखो 'मुसकायोडो' (रू भे)

(स्त्री० मुस्कायोडी)
मुस्कावणो, मुस्कावबो—देखो 'मुमकाणो, मुमकावो' (रू भे)
उ०—पावरा ने चांदी रा टुकडा, वा लागी नाचण-गावण नै ।
वा लागी प्रीत लुभावण नै, वा हमी विना मुस्कावण नै ।
—चेत मानखा
मुस्कावियोडो—देखो 'मुमकायोडो (रू भे)
(स्त्री० मुस्कावियोडी)
मुस्किल—वि० [अ० मुश्किल] १ कठिन, दुष्कर दुश्वार, असाध्य, असभव ।
उ०—म्हारी इमी हालत व्हैगी ही के बाधिया नै हाको करणो तो आधो रह्यो, म्हारो खुद रो ठठा सू हिलणो मुस्किल व्हग्यो हो ।
—रात वासो
२ पेचीदा, जटिल ।
३ गूढ, सार-गर्भित ।
४ सूक्ष्म, बारीक ।
स० स्त्री०—१ कठिनाई, दिक्कत ।
२ विपत्ति, सकट, बाधा, दुख ।
३ पेचीदगी, उलझन, जटिलता ।
४ गूढता, गहराई ।
५ सूक्ष्मता, बारीकी ।
रू० भे०—मुसकल, मुमकलि, मुमकल्ल, मुमकिल, मुसिकल, मुस्कल
मुस्की—वि० [फा० मुश्की] १ कस्तूरी के रग के समान काला ।
२ कस्तूरी के समान सुगधित ।
स० पु०—वह घोडा जिसका शरीर कस्तूरी जैसा काला हो ।
रू० भे०—मुमकी,
मुस्कोरणो मुस्कोरबो—देखो मस्कोरणो, मस्कोरबो' (रू भे)
उ०—दीवाणजी लप पग बारै काढ दियो । तद वा टावर री गलाई मूडो मुस्कोर रिसाणो करती व्हैं ज्यू बोली । —फुलवाडी
मुस्कोरियोडो—देखो 'मस्कोरियोडो' (रू भे)
(स्त्री० मुस्कोरियोडी)
मुस्टड, मुस्टडो—वि०—हृष्ट पुष्ट, बलवान ।
२ मोटा ताजा ।
३ गुडा, लुच्चा, बदमाश ।
रू० भे०—मुसमडो, मुसटड, मुस्तड
मुस्ट—स० पु० [स० मुष्ट] १ चोरी का माल ।
२ चुप, मौन, खामोश ।
उ०—रहौ ममाणी मुस्ट करि, कग्हो कांव म मारि । कोउ वटाऊ पथमिर, ढामा तणौ उणहारि ।—ढो मा
३ देखो 'मुस्टी (रू भे)
उ०—नख चख रूप न नासिका, दिसट मुस्ट मे नांहि । हरिरामा हरि पाईया, सुरति निरति के मांहि ।—स्री हरिरांमदासजी महाराज
मुस्टि—देखो 'मुस्टी' (रू भे) (व स)
उ०—१ कीजै रे दिल दोसत ऐसा, दिस्ट मुस्टि मैं नही आवै तैसा ।
—स्री हरिरामदासजी महाराज
उ०—२ नूर तेज ज्यो ज्योति है, प्राण पिंड यौं होइ । द्रस्टि मुस्टि आवै नही, साहिब के वस सोइ ।—दादू वाणी
मुस्टिक—स० पु० [स० मुष्टिक] १ कस का एक पहलवान जो बलराम के हाथो मारा गया ।
२ सुनार ।
३ मुक्का, घूमा ।
मुस्टिका—स० पु० [स० मुष्टिका] १ मुट्ठी,
२ मुक्का, घूमा ।
मुस्टिभेद—स० पु० [स०मुष्टि-भेद] पुरुषो की ७२ कलाओ मे से एक ।
(व स)
मुस्टी—स० स्त्री० [स० मुष्टि] १ हाथ की पाचो अगुलियो को हथेली मे समेटने पर बनने वाली मुद्रा या स्थिति, मुट्ठी, मुष्टिका ।
२ उक्त मुद्रा द्वारा चोट करने या मारने की क्रिया ।
३ उक्त मुद्रा मे समाने वाली वस्तु की मात्रा ।
४ घूमा ।
५ पुरुषो की ७२ कलाओ मे से एक ।
रू० भे०—मुसट, मुसटक, मुसटी, मुस्ट, मुस्टि,
मुस्टो—स० पु०—कढाई के अन्दर दूध का मावा घोटने का एक लकडी का उपकरण, जिसके आगे मुट्ठी के आकार की एक लकडी आडी लगी रहती है ।
मुस्तड—देखो 'मुस्टड' (रू भे)
उ०—रात रा कुळवै कुळवै काकडियां रो ठौरो दे आवै । गधो तो थोडा दिनां मे मुस्तड व्हैगो ।—फुलवाडी
मुस्त—स० स्त्री० [फा० मुश्त] १ मुट्ठी ।
२ मुक्की, घूमा ।
३ किसी चीज की मुट्ठी भर मात्रा ।
मुस्तकिल—वि० [अ०] १ अटल, अडिग, दृढ, मजबूत ।
२ निश्चित, स्थिर ।
३ स्थायी ।
४ पाबद ।
५ निरन्तर, लगातार ।
मुस्तगीस—स० पु० [अ०] अदालत मे अपना कोई दावा या अभियोग पेश करने वाला, दावेदार, वादी, फरियादी ।
मुस्तनद—वि० [अ०] १ विश्वास करने योग्य, विश्वस्त ।
२ प्रामाणिक, मान्य ।
मुस्तफी, मुस्तफो—वि० [अ० मुस्तफा] १ पवित्र, पुनीत ।
२ शुद्ध, स्वच्छ, निर्मल ।
३ जिसमे अवगुण न हो, गुणवान ।
स० पु०—१ हजरत महम्मद साहिब का खिताब ।

२ पीर-पैगंबर ।

मुस्तरका-वि० [अ० मुश्तरक] जिसमे कई लोग मिले हुए हो, साझे का, सामूहिक ।

मुस्तसना-वि० [अ० मुम्तस्ना] १ जो किसी प्रकार की पाबंदी, शर्त या कानून के दायरे मे न हो, मुक्त, स्वतंत्र ।
२ प्रतिष्ठित ।
३ चुना हुआ ।
४ अपवाद स्वरूप ।

मुस्तहक-वि० [अ०] १ स्वत्व या हक रखने वाला, हकदार ।
२ योग्य, लाइक, सुपात्र ।
३ जरूरत मंद ।

मुस्ताक—देखो 'मुसताक' (रू भे)
उ०—परिया विरह दी मुस्ताक, न करदी दिल न्यारे ।
रसीलेराज रौ गीत

मुस्ती खांड-स० पु०—एक प्रकार की शक्कर जो कम सफेद व आटे की तरह बारीक होती है तथा इसमे कुछ ढेले भी बधे रहते हैं । इसकी प्रकृति शीतल मानी गई है । गुडिया-शक्कर ।
उ०—दौडतो-दौडतो वो उण सेठ रै घरे पूगो । वो बोरी सू मुस्तीखांड जोखतो हो ।—फुलवाडी

मुस्तैद-वि० [अ० मुस्तइद] १ सन्नद्ध, कटिबद्ध, तैयार, तत्पर ।
२ चुस्त फुर्तिला निरालस्य ।
३ सावधान, सचेत, होशियार ।
४ चालाक ।
रू० भे०—मुस्तैद

मुस्तैदी-स० स्त्री० [अ० मुस्तइद्दी] १ 'मुस्तैद' होने की अवस्था या भाव ।
२ तत्परता, तैयारी, उत्साह, सन्नद्धता ।
३ फुर्ती, चुस्ती ।
४ सावधानी सतर्कता, होशियारी ।
५ चालाकी ।

मुस्लमाण, मुस्लमांन, मुस्सलमांण, मुस्सलमांन—देखो 'मुसलमान' (रू भे)
उ०—१ नह सख्यां कुजरा नका सख्या केकांणां । नह सख्या हिंदुवा सख नह मुस्सलमाणा ।
उ०—२ 'अजन' इद्र अवतार, कियो दरबार हरक्खे । हिंदू मुस्सलमांण रहै अचरिज्ज निरक्खै ।—रा रू
उ०—३ 'अभो' उजागर अरक ज्यों, जस इम करै जिहांन । डरो सको 'अगजीत' स, हिंदू मुस्सलमांन ।—रा रू

मुहगो—देखो 'मूंगो' (रू. भे)
उ०—ईडर की घर अउलगण, हू तउ जांणण देसि । घरि बइठाही आभरण, मोल मुहगा लेसि ।—ढो मा

मुहडो—देखो 'मूंडो' (रू भे)

मुहम—देखो 'मुहिम' (रू भे)
उ०—दक्खण देस मुहम, नयर मुक्कांम महीकर । भुगति आउ भूपाळ, वरस गुणचासा भीतर ।—गु रू ब

मुह—देखो 'मुख' (रू भे)
उ०—१ आयो 'गजसाह' उभारि असंमर, जोध तयारा जोधपुरो । मुह आगळि तात तणो कळि माती, मारण केवी 'माल' हरो ।
—गु रू ब

मुहकणो, मुहकबो—देखो 'मूकणो, मूकबो' (रू भे)
उ०—दखणी दक्खण पस्सरिया दळ, किरम कडा करस्सण मेहळ । दक्खणी कटक चहू दिस दौडै, महिकर नह मुहक्यो राठौडै ।
—गु रू ब
मुहकणहार, हारो (हारी), मुहकणियो—वि० ।
मुहकिओडो, मुहकियोडो, मुहक्योडो—भू० का० कृ० ।
मुहकीजणो, मुहकीजबो—भाव वा० ।

मुहकम-वि० [अ० मुहकम] १ दृढ, मजबूत, पक्का ।
उ०—अर गाव माहै खेजडी हुती तिण सेती च्यारे बाधा मुहकम । तिण ऊपर ढाहर बधाडिया । —द वि
२ टिकाऊ ।
३ अटल, अडिग ।
४ चिरस्थायी ।
५ फसा हुआ, जकडा हुआ ।
उ०—बात मुकते गात बध, मुहकम माया मांहि । सफरी सुवा जाळ पिंजरै, सिर निकळै धड निकसै नांहि ।—रज्जब
रू० भे०—मुहकम, मुंहकम ।

मुहकमो—देखो 'महकमो' (रू भे)

मुहकाण, मुहकांणि—देखो 'मुकाण' (रू भे)
उ०—१ अरजन आख मताण, पापण भय बीहै प्रथी । दे भेळा मुहकाण, भली मनावी भीमवत ।—अरजन हमीर भीमोत री वात
उ०—२ मइ मूरखि अजांणि अविणउ कीधउ तुम्हा रहइं । मूं मोटी मुहकांणि तुम्ह, खमउ अवराहु गुह ।—सालिभद्र सूरि

मुहंकियोडो—देखो 'मूकियोडो' (रू भे)
(स्त्री० मुहकियोडी)

मुहगो, मुहघो - देखो मूंगो' (रू भे)
उ०—१ ताखो आग्वो लावयो कामण प्यारा कत । मोल मुहगो मनि समो, सोक्यू रहे निरखत ।—व स.
उ०—२ सीत कालि दिवसिइ गोधूम अद्धि थाई, वेटी आपणे सासुरे जायइ, पास रग मुहघा थाई कवलि जोइ ।—व स.

मुहछाळ—देखो 'मूछाळ (रू भे)
उ०—मुडै नह कोय थुडै मुहछाळ । फडै चढ पेम झडै किरमाळ ।
—पे रू

मुहझि—देखो 'मुझ' (रू भे)

मुहडउ, मुहडु—देखो 'मूंडो' (रू भे) (उ र)
उ०—इणि मारीमइ मुहडु भिडतु बीजउ कोई घाउ तुरतु । इसु सुणी नई घायउ पत्थु, झूझइ भीम मिलिउ भडसत्थु ।
—सालिभद्र सूरि

मूहडे, मुहटे—देखो 'मुहडं' (रू भे)

उ०—१ जुटिया विन्है भावरत जुहरी, धाए रीठ घडड़ घमचाळ। उड मद्या ग्रावधा मुहडे, पाधा दियण परत री वार।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ यु मयाराम नै माल तोरण रै मुहडै लाई। सात वीस महेनीयां निरखणनै भाई।—मयाराम दरजी री वात

उ०—३ 'पाळ' कळोवर पक्खर पूरं, खंगा घाहण खागां सूरं। थाटा मुहटै थाणा थूरं आराणा मार्थ दळ ऊरं।—गु रू व

मूहडो—देखो 'मूंडो' (रू भे)

उ०—१ त्रिजडां मुहटै तर तूटं, वसु पडियों प्रांण विछूटं।

—र रू

उ०—२ मतरग जे माया धरइ, मुहडा नी मलि मलि नवि करइ। सुख दुख धणउ जाणइ जेह, प्रीतू मांणम कहीइ तेह।

—नलदवदनीराम

उ०—३ दिन घडी ४ वासलो थो तरै भा ठाकुरा सहर ऊपर दोडाया। सेहर भेळ नै कोट रै मुहडै रो छै तठै जाय मोरचो मांडीयो।—नैणसी

उ०—४ हे कथ आपरै मुहडै घोळा वत रा केम देखतां आपरै विमेखतो जीवण री आम नही चोथी पछेवडी आयोडा हो।

—वी स टी

मुहत—देखो 'महता' (मह, रू भे)

उ०—उज्जयणी पुहचाविज्यो जी, वित्तसु ग्रम्ह घर बोल। मुहत मांन्यउ वचन ते जी, रग रली चित खोलि।—कनकसोम वाचक

मुहतउ—देखो 'महता' (रू भे)

उ०—१ मुहतउ भाव जणावइ, मगल वाहिर ग्रावइ। जोगि न पाल्यउ ए जावइ, राजा नै मनि भावइ —कनक सोम वाचक

उ०—२ महीम कहिउ महइ तिहां ग्रावी। मुहतउ हरिखिई वोलइ भावि।—हीराणद सूरि

मुहता—देखो 'महता' (रू भे)

मुहताज—वि० [ग्र०] १ गरीब, निर्धन, धनहीन।

२ दरिद्र, कगाल।

३ जो अपनी ग्रावश्यकताग्रों की पूर्ति के लिये दूसरो का मुह ताकता हो, जो दूसरों पर ग्राश्रित हो, जो परवश हो।

४ जिसे किसी की सहायता की जरुरत हो, जरूरत-मद।

५ जिसकी कामना या इच्छा की गई हो, इच्छित, वाछित।

उ०—सु दैत्य दमनी नै नेडी बुलाय पहराई छै, दैत्य दमनी खुसी हुई, मुहताज पाई।—पच दडी री वारता

रू० भे०—मोहताज,

मुहताजी—स० स्त्री० [ग्र०] १ 'मुहताज' होने की ग्रवस्था या भाव।

२ गरीबी, निर्धनता।

३ दरिद्रता, कगाली।

४ परवशता, विवशता।

मूहतो—स० पु०—देखो 'महता' (रू भे)

उ०—१ मलइ भलइ सुदरिनी वुद्धि, देखउ मुहता तणी कुवुद्धि। विना दोस पुत्री दूहवी, मिथ्यउ कलक रिपि पामी नवी।

—कनकसोम वाचक

उ०—२ तीन महारी नीवडे, मुहतो पडे सुजाण। फोजदार वरियाम भड, रामो पड रिण-ढाण।—रा रू.

मुहपति, मुहपती, मुहपत्ती, मुहपोती—देखो 'मुहपति' (रू. भे) (उ र)

उ०—१ केई अजाण कहै म्हे तो ओघा मुहपति नें वांदां। म्हांरै करणी सू कांई काम।—भि द्र

उ०—२ विण धोयें विण लूहयें पात्रें, एकासण तिम पुरिमढ मात्रें। गई मुहपोती ग्राविरा सारो, तिम ओघें ग्रट्ठिम ग्रवधारो।

—ध. व ग्र.

मुहब्बत—स०स्त्री० [फा०] १ एक दूसरे के प्रति होने वाला प्रेम, प्रीति।

२ स्त्री-पुरुश या युवक-युवती मे परस्पर होने वाला प्यार, इश्क, लगाव।

रू०भे०—महोब्वत,

मुहम—देखो 'मुहिम' (रू भे)

उ०—१ एक वादसाह नू मुहम पण करडी वणी. तरै प्रभू सू कौल कियो।—नी प्र.

उ०—२ परदेसां की मुहम बतावो, फेर कोई किसीय वहानै। राज बहुत विघ सू समझायो, यो मनडो नहीं मानै।—लो गी

उ०—३ पछै महाराजाजी नु जेसथजी नु नानग गुररी मुहम दीनी तरै सहररे पधारिया सवत १७६८।—रा य वि

उ०—४ जाय नवोढा सासरे, मांसू नाख उसास। मावडिया जावे मुहम, इण विध हुवै उदास।—वा दा

उ०—५ मुहम प्रकोप उदेपुर माथै, मातैइ महण थया किर साथै। लाघा जळ वेसासो लीजै, छीजै जतु प्रजा पुर छीजै।—रा रू

उ०—६ यों नव व मुख आखियो, मुहम फिरै मो ताम। 'ग्रजन' मिळै पतसाह सू टळै दमगळ जाम।—रा रू

उ०—७ मुहम सिरोही मुलक, सरद करि लेहु पेसकम। लेहु सलामी लडै, विखम मेवाड़ करै वस।—सू प्र

मुहमह—देखो 'मुहिम' (रू. भे)

मुहमांगी—वि०—इच्छित, वांछित।

मुहमेज, मुहमेजो—स०पु०—१ युद्ध, समर।

२ मुठ भेड, झड़प।

क्रि० वि०—ग्रामने-सामने, सम्मुख।

उ०—१ सूर तन तेज भरळाट पोरस सरस, खित सु घ्रळ जंज नह घरै ग्रहीखव। तेज व दोहु ओछाड कोटा नवां, थया मुहमेज धरती तणा थव।—पहाडखां ग्राढो

उ०—२ वेमुरीदो लोग मो रहे नहीं, बरछी हाथ लेवें तोलें कहै— हेकर मे मुहमेजा हुवै तो ही पैलै री छाती मां देवां।

—मारवाड़ रा ग्रमरावां री वारता

वि०—वीर गति प्राप्त ।

रू०भे०—मुहमेज, मुहमेझ मूहमेज,

मुहमेझ—देखो 'मुहमेज' (रू भे)

उ०—पीछै दूजे फौजां रा मुहमेझ हुम्रा नै तठै सारांई सैण करी। —द दा.

मुहमेळ, मुहमेळु–वि०—१ मिलनसार, व्यावहारिक ।

२ एक प्रकार की तुक वदी ।

उ०—ती चवदह दस गुरु लघुवत, यण मुहमेळ चवदमी म्रत । —र ज प्र

३ देखो 'मुहमेज'

उ०—१ इम दुरगेस भड़सियं ग्रायौ दळ दुरवेस ऊठ दरसायौ। वयो मुहमेळ कियौ नवकोटां, ग्रसुर गया भज घाटी ग्रोटा । —रा रू

उ०—२ क्यों मुहमेळ प्रथम दिन कीधौ, लुड थुड गयौ कोट निठ लीधौ।—रा रू

उ०—३ काज भडा वकडा, 'ग्रजन' महाराज उचारै । मीर थयां मुहमेळ, वीर किम जेझ विचारै ।—रा. रू

रू०भे०—मूहमेळ, मूहमेल

मुहम्म—देखो 'मुहिम' (रू भे.)

उ०—चित साह चितवै, भीम इक राह निभम्मा । खुरासांण घमसांण, रांण घेरियो मुहम्मां ।—रा रू

मुहम्मद–स० पु० [ग्र०] इस्लाम या मुसलमानी धर्म के प्रवर्तक, ग्ररव के एक प्रसिद्ध धर्माचार्य जो ईस्वी सन् ५७० से ६३२ के बीच मे हुए थे। मुसलमांन सम्प्रदाय इन्हीं से चला । ये पैगंवर माने जाते हैं।

उ०—ग्रल्लाह मुहम्मद सिर उठाय । मगरिब मक्के मन्नत मनाय । चच्चे मामूकी घी चकार, विसमल्ला करै न वार वार ।—ऊ का

वि०—प्रसंशित, प्रसंशनीय, सराहनीय ।

रू० भे०—महमद, महमद, महमुंद, महमुद, महम्मद, महिमु द महिमुद, मंमद ।

मुहम्मदी–वि० [ग्र० मुहम्दी] मुहम्मद का, मुहम्मद सम्बन्धी ।

स० पु०—१ मुहम्मद साहब का ग्रनुयायी, मुसलमान ।

२ एक प्रकार का सिक्का ।

३ एक प्रकार का वढिया वस्त्र, मलमल ।

रू० भे०—महमदी, महमुदी, महमुदी, महमूदी, महमूदी, महिमुदी महिमुदी ।

मुहर—देखो 'मोहर' (रू भे)

उ०—१ कुवरसी वेहडै में पाच मुहर घाली । —कुवरसी सांखला री वारता

उ०—२ भीतर नूं जुहार कहायौ सो मुहर दस ग्रोर नारियळ तौ गोपाळदास नू ग्रोर दोय दोय मुहर नारियळ वेटा नू । —गौड गोपाळदास री वारता

उ०—३ ग्रह्मादिक मुहर विसन वर समवड, घणइ उमग नाइ घमड घणइ । सवण जस ग्रावइ साभळता, तोरण प्रभु हेमगिरि तणइ ।—महादेव पारवती री वेलि

उ०—४ गयद 'मान' रै मुहर ऊभौ हुतौ दुरद गत, सिलहपोसा तणा जूथ साथै । तद वही रूक ग्रणचूक 'पातल' तणी, मुगळ बहलोलखां तणै माथै ।—गोरधन वोगसो

उ०—५ गुडै मयमत सेना मुहर गैमरा, प्रकटिया मारका थाट जोधापुरा । घूमियौ हैय पुरा पाय ग्ररवद, पसरियै सिंध परवत थया पाधरा —द दा

उ०—६ वधाऊ मुहर मेल्हि विध सू, तांह ग्रांहुचइ दीघ वधाई ग्राय । ग्राई जान घणइ ग्राडवर, घोराडिया जांगी घण घाय । —महादेव पारवती री वेलि

उ०—७ मार लियौ कहतै मुहर, उर खीजियौ छडाळ । फिर गजराज सधारियौ, सिंघ करतै ग्राळ ।—रा रू

उ०—८ कूपावत पहिलै ग्रणी, वावर खग्ग करग्ग । भीमाजळ सारां मुहर, पडियौ धारा लग्ग ।—रा रू

उ०—९ 'भीम' रांणा खूमाण, वियौ विकमाइत वभण । त्रियौ 'खान दाराव' मुहर मडै कळि मत्थण ।—गु रू. व.

उ०—१० भेळा जूल झळक्कै भाले,मुहर कियौ जोधे रिणमाले । साहण–समद दिलीचै सामौ, दीनो 'गाजीसाह' दमांमौ ।—गु रू व

उ०—११ वइरसी तुरी वीरत्ति वाइ, वण झूझइ भेळिय मुहर घाइ । घोकारव धुण ही वाजि घार, ग्रांमाल फिरी पाखी ग्रयार । —रा ज सी.

उ० –१२ मेल्हिय प्रधांन कहियउ मुगुल्लि । घर साजि मुहर हू म करि ढिल्लि ।—रा ज सी

मुहरखौ—सन्देश वाहक ।

उ०—१ मूगळी घड़ा ग्रावइ मजूस, जासूम फिरइ पसत नापूम । मुहरखे ग्रावि कहियउ मुहाह, ग्रमपत्ति सेन ग्रावइ ग्रथाह । —रा ज सी

उ०—२ जु जाय गोडां ठाकुरा नू कहौ वळ छै तो काठा माटी हुया, नही तो परा नासज्यो । फोज पठाणा री ग्राकरी ग्रावै छै। मांहरा तो घोडा थाको हुवो । थे जाय नै भाखरसी नू कहिजौ। राजा नू काढजो। काम ग्रावजो। इम सुण नै मुहरखा पाछा चलाया ।—राजा नरसिंघ री वात

मुहरत—देखो महुरत, (रू भे)

उ०—१ भादवै री देव झूलणी एकादसी रै दिन मुकळावा रौ मुहरत हौ, उण मे फगत च्यार दिन बाकी रैग्या हा ।—रातवासो

उ०—२ इतरै कुवर विचित्र नू वुलायौ सो कुवर पोसाख भली भाति सू करि, ग्रापरा हजूरिया नै साथै ले ग्रायौ । दरवार सारी ही ऊठ ऊभी हुवी । पुरोहित सू कुवर मिळियौ । कुवर राजा रै मुंहडे ग्रागै वैठौ छै। मुहरत ठीक छै।—पलक दरियाव री वात

उ०—३ मिळिया दळ जोधाण मझि, देखै भूप दुबाह । डेरा दिल्ली

दिम दिया, सुभ मुहरत 'अमसाह'।—सू प्र.

मुहरम–स०पु०[अ०मुहरम] इस्लामी या अरबी वर्ष का पहला महिना।

वि०—वर्जित निषिद्ध।

रू०भे०—माहरम,

देखो महरम' (रू भे)

मुहरमुह–क्रि०वि० [स०मुहम, मुहम] बार-बार, रह-रह कर, पुन पुन।

उ०–बोलति मुहरमुह विरह गयें वे तिमी सुकळ निसि सरद तणी। हमणी ते न पासैं देखें हम हम, हम न देखें हमणी।—वेलि

रू०भे०—मुहुरमुह,

मुहराइ–स० स्त्री०—१ मुख कान्ति।

उ०—गज वधी इम आखियो, करि धूणं कर माळ। 'गोइद' माथै आवसी, त्यां मिरि आयौ काळ। 'केहरि' वेंडी(वें) घणा, मजजीठी मुहराइ, 'करन' 'कमो' कर्क मर्त वे ऊभा पडगाहि।—गु रू व

क्रि०वि०—२ आगे।

उ०—पीह घणा भागळा गई मुहराइ पडि। चाव गुर 'जसो' जिण वार वर मोह चढि।—हा झा

३ देखो ,मुराई' (रू भे)

मुहरि—१ देखो 'मोहर' (रू भे)

उ०—१ जुगति वात हू कहू तूझ जिम। तू अप मुहिर वात कहिजे तिम।—सू प्र

उ०—२ स्रीराम मुहिर लंका समरि, कियो 'अजै' कवि जिम करू। भागइ सेर-विलद हू, अमरपूर जाऊ अर रम वरू।—सू प्र

उ०—३ समूह सेन असख मर्फा, भ्रिग मुर्फ मभळी। मल्हपति फोजां मुहरि मंगळ, सूड डोहै सिघळी।—गु रू,व

उ०—४ खान वरावा खडकियो, ले मत्थै भर भार। 'गजण' कटक्कां हुई मुहरि कळि मच्चण जोधार।—गु रू व

उ०—५ अधपत्ति चढै देव मे अस, रजपूत चढै छत्तीस वस। महोवर राजा मुहरि मड, डावै ली जोगणि भुजाडड।

—गु रू व

उ०—६ अहराति भगो सपेखें अहतां, खिताई असुर सुर खग सराम। 'भगवत' तणो दीठ हिक भिडतो, सुपह अयारां मुहरि साग्राम। जुग चहु लगे वडा जुध जोया, भडां परान्त्रम पयर्प भाण। मामी भीवा मुहरि सूर जिम, जुडतो नह को दीठ जुवांण।

—लक्खो बारहठ

उ०—७ दिल्ली जेत गुवोल सहसदस, राजा मुहरि मरण रिमराह। सुभ दानार झूझार सुपातां, दांन कपारि वर्कासया दुवाह।

—सुभराज गौड री गीत

२ देखो 'मोरी' (रू भे)

मुहरिर–स०पु० [अ०मुहर्रिर] १ वकील का मुशी।

२ लेखक।

३ लिपिक, क्लर्क।

मुहरिरी–स०स्त्री० [अ०मुहर्रिरी] १ 'मुहरिर' का पेशा।

२ मुन्शीगिरी।

मुहरी—देखो 'मो'री' (रू भे)

उ०—१ वहै साज वीटिया, विहद मुखमला वनाता। रेसम तग मुहरियां, तखी दुरखी दरसातां।—सू प्र.

उ०—२ ऊमर साल्ह उतारियउ, मन खोटइ मनुहारि। पगसू ही कूटियउ, मुहरी झाली नारि।—ढो मा

२ देखो मोहर' (रू भे)

मुहरे—देखो 'मोहरे' (रू भे)

उ०—वाळियो वैर-वैरा तणे वाहरू, अमर मुहरे हुये सर रग आयो।

—अमरसिंह राठौड री बात

मुहरो–स०पु० [स०मधुर] १ विप, गरल, माहुर।

उ०—गिर सू पडियै घाय, जाय समदा डूबियै। मरियै मुहरो खाय, मूरख मित्र न कीजियै।—अज्ञात

२ देखो 'मो'रो' (रू भे)

उ०—आडि पेच करि अडिग, पाघ पर धर हम्मा पर। लाज विरज ताईत, जत्र मुहरा सिर ऊपर।—सू प्र

३ देखो 'मोहरो' (रू भे)

मुहल—देखो 'महल' (रू भे)

उ०—पातिसाह मनि वात विमासी नाहर मलिक बोलाव्यउ। साथि थिकउ भोजलु खांडाघर, मुहल आगिलइ आव्यउ।—का दे प्र

मुहलत—देखो 'मोहलत' (रू भे)

मुहलाअत मुहलायत—देखो 'महलायत' (रू भे)

उ०—ऊभी आय अचांनकै, कहै सोक तुम कोय। मुहलाअत ऐह माग का, मलियो महरम मोय।

—कल्याणसिंघ नगराजोत वाढ़ेल री बात

मुहलो,मुहल्लो—१ देखो महल्लो' (रू भे)

२ देखो 'महल' (अल्पा, रू. भे.)

उ०—आप कह्यो जु म्हे तो मास ७ रहिस्या, सीख नही कहा। इतरो कहिनै अचळजी मुहल पधारिया।

—लाली मेवाडी री बात

मुहवड, मुहवडि–स०स्त्री०—१ युद्ध के समय हाथी की सूड पर धारण करने वाला कवच।

उ०—निस्कटक राज्य प्रतिपालतां सग्राम विसय कदाचित् उपजइ, विपक्षा अहतपुरुषा माचरिया क्षेत्र सूडाविउ, बिहु गमी मन्नद्धवद्ध नीपना सभटे जरहि जीण साल लीधी, मयगल गुडिया, सुडादडि मुहवडि घातिया।—व स

२ आगे का भाग।

उ०—इम कांम समरि वे समरथ समवडि, मुहवडि चडी गुरराय रे —आगम माणिक्य

मुहाणी, मुहाणो–स०पु०—१ प्रवेश द्वार।

२ अग्र भाग।

३ नदी का मुख ।

क्रि०वि०—सम्मुख सामने । आगे ।

रू०भे०—मुहांणी, मुहाणी,

मुहांमहि—क्रि०वि०—सामने, सम्मुख ।

मुहा—सं०स्त्री० [सं०मुधा] १ झूठ, असत्य, मिथ्या ।

उ०—भक्ष्य भोज्य सवि भीमि निहालि, खाय खाखसि करी मुखि वाली । चहि माहि मुहा मलिउ प्रीमि, खीच कीचक कर भद्र भीमि ।—सालिसूरि

२ व्यर्थ, निरर्थक ।

मुहाजीवी—स०पु०—भिक्षा वृत्ति से जीवन निर्वाह करने वाला ।

उ०—मुहादाई ने मुहाजीवी ले, निरदूखण आहारी रे । निरजरा हेते करै तपस्या, फिर फिर न करै हारी रे ।—जयवाणी

मुहाडि—विचार विमर्श ।

उ०—खीव ऊरिया, खाण भीजव्या, भूजाई नीपनी मत्रणी मुहाडि हुई, सेलहथनइ सीखामण हुई ।—व स

मुहाळ, मुहाल—स०पु०—१ मधु मक्खियो का छाता ।

२ पशुओ के मुह में होने वाला एक रोग जिससे पशु के मुह मे छाले हो जाते हैं । —(शेखावटी)

३—प्रसन्न चित, खुश ।

उ०—सो कोट जाय कवजे मांही करियो लोग सगळो ताजो थो हीज, हमैं विसेस ताजो मुहाळ हुवो ।—सुदरदास भाटी, वीकू पुरी री बात

४ देखो 'मुहाळो' (रू भे)

मुहाळो—सं०पु०—१ हाथी के दांत पर,शोभा के लिये लगाई जाने वाली पीतल की चूडी या वद ।

२ दरवाजे के आगे का ऊपर का भाग ।

मुहावरेदार—वि०—जिसमे मुहावरो का सम्यक प्रयोग हुवा हो, मुहावरो से युक्त । (कथन या भाषा)

रू०भे०—महावरेदार,

मुहावरो—स०पु० [अ०मुहावर] १ वह शब्द, वाक्य या वाक्यांश जिसका अर्थ प्रत्यक्ष अर्थ से विलक्षण हो ।

२ अभ्यास, आदत ।

रू०भे०—महावरो, मुवारो,

मुहासिर—स०पु० [अ०मुहासर] किसी किले या सेना के पडाव के चारो ओर किया जाने वाला घेराव, युद्ध का घेरा ।

मुह ह—मुखपर ।

उ०—मूगळी घडा आवइ मजूस, जासूस फिरइ पसत जापूस । मुहरखे आवि कहियउ मुहाह, असपत्ति सेन आवइ अथाह ।—रा ज सी

मुहि—१ देखो मुख' (रू भे)

उ०—१ माड़ राइ मुहि मूंछ मोडि,फेल्हणि कटक्क तांणिया कोडि । काळइ कलूळि जागळू काजि, रउद्रां दळ तांणिय देवराजि ।
—रा ज सी.

उ०—२ कीधो विसेख करतै कळह,तरसि तूग चादै' तणे । वणियौक चद सफर वदन, सुजड घाइ मुहि सामणे ।—गु रू व

उ०—३ वपि विहड पळ खड, तेग तिमछा मुहि तुटो । धारा मुहि घडछियो कुभ किरि काली फूटो —गु रू व

उ०—४ गजदता मुहि चडै, जिकै गजदत विभाडै । गाढ़ि सीम गज भीम, गयण गज रुप ममाडै । —गु रू व

२ देखो मुहिम' (रू भे)

उ०—१ अमर अनइ पीथल्ल अचागळ, वरविय राइ मल्ल अतुळीवळ । जोडाळां मुहि दियण जवोडां, राम सिहाइ हु अउ राठौडा । —रा ज सी

उ०—२ अभिनमा चौंडरज भुजा वळ एरसो, छात्रपति ग्रहे ग्रहे हूत छोडै । असपति तणा दळ पूठि तो ऊबरै, मुहि चढै असपति तूहिज मोडै —गु रू व

उ०—३ हुऐ मीर संघार, सोक सर पूर विछूटै प्रळै काळ आवृत, फौज फोजा मुहि जुट्टै ।—गु रू व

उ०—५ मार की वार मझि मारका ओलै लख दळ उवरै । सत्र सेन तुझ सागणहरा, मुहि मावै सोई मरै —अ०वचनिका

३ देखो 'महि' (रू भे)

मुहिअड, मुहिअड, मुहिड—वि०—१ मुख्य, प्रधान ।

उ०—मुहिअड मोनिगरै फतमल्लो, दुजडाहथों जोड तिण 'दल्लो' । 'कमा' सदा आगळ नवकोटा, चडियां पति आरति चड चौटां ।
—रा रू.

२ योद्धा, भट, वीर ।

३ सामने, समुख ।

४ आगे ।

उ०—वासै तेग ज फौज विराजी, मुहिअड भीम हरोळां माझी ।
—गु रू व

रू०भे०—मुहियड मुहियड,

मुहिनाळ—देखो 'मुहनाळ' (रू भे)

उ०—वाहै खग चूहड–खांन विकाळ, नाराजक वाजतणो मुहिनाळ । आ वाहि पठांण सकै न उभारि । तितै भड 'सेर' वाही तरवारि ।
—सू प्र

मुहिम, मुहिम्म—स०पु० [अ०मुहिम] १ युद्ध समर, सग्राम ।

उ०—१ 'अमरी' रतना री,'तिमरणी रा, मुहिम मे चोरी की तद राजा गजसिंघ गरदन मरायो ।—नैणसी

उ०—२ घुघ हुऐ सारी धरा, सहर दिली पडि सोर । मुहिम हुता त्या मडि आे, ज्यां सहिजादां जोर ।—वचनिका

उ०—३ जिण रे उर लालच जच्यो, वाजै किण विध वीर । मथ मतीर दे भड मुहिम, कीणा साटै कीर ।—रेवतसिह भाटी

उ०—५ भटनेर भजि सरसउ सधार, हिसार कोट मन्नावि हार । नरहड मुहिम्म माडियउ नास, वहसी नह हासी करइ वास ।
—रा ज सी

२ युद्ध–यात्रा, सेना का प्रयाण, चढाई।

उ०—ग्रासोजी दसराहौ पूजि ग्रर मुहिम कीवी। ताहरा वडी फौज कर मालदेजी ग्राया हीज।—नैणसी

३ किसी बडे या महत्वपूर्ण कार्य के लिये किया जाने वाला प्रयाण, प्रस्थान, यात्रा।

उ०—बूवना सुणी तद नेग्रा खवास नू कही–जलाल साहिब करडी मुहिम नू जावै छै।—जलाल बूवना री वात

४ सेना, फौज।

५ फौज का ग्रगला भाग, हरावल।

६ कोई महत्व पूर्ण या बडा कार्य।

७ महिमा, प्रशसा।

८ तपस्या।

क्रि०वि०—१ सम्मुख, सामने।

२ ग्रामने–सामने।

३ ग्रागे, ग्रगाडी।

वि०—४ भ्रम में डालने वाला, भ्रामक।

रू०भे०—महम, महिम, मुहम, मुहम, मुहम, मुहमह, मुहम्म, मुहि, मुही, मुहीम।

मुहियड—देखो 'मुहिग्रड' (रू भे)

मुहियौ–वि०—१ प्रधान, प्रमुख, नेता।

उ०—सू भागचदजी दरवार रा सामवरमी छा, फौज रा मुहिया ते छै।—द दा

२ व्यर्थ, निरर्थक। (उ र)

३ काटने का भाव।

रू०भे०—मुहियौ, मुहीग्रौ, मुहीयौ,

मुहिर–स०पु० [स०] कामदेव, मदन।

वि०—मूर्ख, मूढ।

क्रि०वि०—ग्रागे ग्रगाडी।

उ०—बीगति ग्रसिमर याहि, दूदाउत भाजै दुइण। रतनौ छळि राजा रतन, मुहिर रहै रिण माहि।—वचनिका

मुहिली—१ देखो 'महल' (रू. भे)

२ देखो 'महिळा' (रू भे)

मुहियटौ–स०पु०—एक प्रकार का वस्त्र।

उ०—नीलवटा, चकवटा धौतवटा, मुहिवटा, नाटी दोटी घटीकठपीठ पापडी विडी रेट चूनडी ।—व स

मुही–वि० [प्र०] १ जिन्दा करने वाला, जीवन दान देने वाला, प्राण दाता।

२ पक्का, दृढ, मजबूत।

उ०—छूटा मार सबद का गोळा, मुही मोरचा भागा। ग्यान ध्यान का हाथि खटग लै, मन मू लडिवा लागा।—स्रीहरिरामदास जी महाराज

रू०भे०—मुही,

३ देखो 'मुहिम' (रू भे,)

उ०—जुमौ हजार ग्रगई लोग सिपाही रहै। तरै खुसी ग्रावै सो चाकरी करावौ। करडी मुही में मेजौ।—जलाल बूवना री वात

४ देखो 'मे' (रू भे)

मुहीग्रौ—देखो 'मुहियौ' (रू भे) (उ र)

मुहीम—देखो 'मुहिम' (रू भे)

उ०—१ ग्ररु पातसाह जी गुना माफ कर फेर मुनसब दियौ। तथा मुहीम का हुकम दिया सू सरजाम हुवौ नहीं।—द दा

उ०—२ इव करता वरस दोय–तीन नू वादसाह रौ कूच लाहोर नू हुवौ। सो लाहोर ग्रायौ, कावल ऊपर मुहीम करी।

—ग्रमरसिंह राठौड री वात

उ०—३ नवाव मुहीम सर कर पदमपुरे सू पाव कोसे'क गाव थो उण मे ग्रा उतरियौ थौ।—पदमसिंह री वात

मुहीयौ—देखो 'मुहियौ' (रू भे) (उ र)

मुहुगौ—देखो 'मूगौ' (रू भे)

उ०—मुलमुल मुहुगा मोल की, ताकौ वागौ कीन। सुदर ग्रावी सामहि पीउ कौंडि कर लीण।—व स

मुहुतु—देखो 'मुहतौ' (रू भ)

मुहुर—१ देखो 'मधुर' (रू भे)

उ०—वाणी वोलइ मुहुर, विमल किरि गगा वाणी। राणी चउसठि सहस, जास रूवहि इद्राणी।—प्राचीन फागु सग्रह

२ देखो 'मोहर' (रू भे)

मुहुरवाई–वि०—परोक्षवादी निंदक। (उ र)

मुहुरणौ, मुहुरवौ–देखो 'मोरणौ, मोरवौ' (रू भे)

उ०—वनि वनि केसू मुहुरिया, तनि तिनि त्रिगुणउ काम। हे! हे! दैव! हणि किमि, हईडा भीतरि हाम।—मा का प्र

मुहुरत—देखो 'महुरत' (रू भे)

उ०—करणीगर रूडा करै, करनै विलव न काय। मार उपावै मेदिनी, मुहुरत हेकण माय। —ह र

मुहुरमुह—देखो 'मुहरमुह' (रू भे)

मुहुरियौ—देखो 'मोर' (ग्रल्पा, रू भे,)

मुहुल—देखो 'महल' (रू भे.)

उ०—१ ग्रलूखान ग्रायसि पूतारइ, ततखिण गयवर गुडीया। वालि तणा तेजी पखराव्या, मलिक मुहुल माहि तेडया।—का दे प्र

उ०—२ मल्ल भाट सुरताण पय, ग्रायउ मगण कज्जि। मुहुल तलइ जइ द्वा करइ, जिहां खडै ग्रसपति सज्जि।—प च चौ.

मुहुसाळ—देखो 'मोसाळ' (रू भे)

उ०—सूरिज तणइ वसि हु ग्राज। वडा पुरुमनी नाणु लाज। गोल्हण तू मनि भखिसि ग्राळ। हिव लाजइ माहरू मुहुसाळ।

—का दे प्र.

मुहुडे—देखो 'मुहडे' (रू. भे)

उ०—भागोज भूडो लेय पाघड साहि मुंहड़ै मूक। गोरिल बोलै फिट्ट मुझ नैं, जाती धारी मैं थूंक।—प च. चौ.

मुहूरत—देखो 'महूरत' (रू भे)

उ०—१ परघाने परधान पूछियां, लगन मुहूरत वारै तेहि। भ्रावै किये दिहाड़ै ईसर, कहौ राव सो वात कही।
—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ तिण भय करि भ्रर राजि भ्रागळि भ्रो जवाब कियो। राजि उठा हुती भलै मुहूरत खड़िया छै।—द वि

मुहेंगौ—देखो 'मूंगौ' (रू भे)

उ०—मिसजर के मिस मन भयौ, पीउ जो लाय बुलाय। मोल मुहेंगौ थें लीयौ, सो माहरे भ्रावी दाय।—व स.

मुहो-सं० पु०—सामना, भ्रागा।

उ०—१ इतरै में बगळाऊ खड़ा था उहा भेळिया उहा रो मुहो भालियो।—मारवाड रा भ्रमरावा री वारता

उ०—२ राव ईं वेळा मुह सू भ्राहिज कहै छै-जे बडा सरदारां सूप्ररडं री जाबतो राखजो, मुहो भालिया रहो, लोग सभोडो देख फेर भ्राण पडसी।—डाढाळा सूर री वात

मूं-सर्व [स० भ्रस्मद्] १ म्हैं, मैं।

उ०—१ साभ्रह नह छोड़ू हू तोड़ू हूं जड ताहरी। मू खजर मोड़ू हू, काळज फीफर छेक कर।—पा प्र

उ०—२ तू बामण वाणयै री, कै विणजारै री धीय। ना मू बामण वाणयै री, ना विणजारै री धोय।—लो गी

२ मुझे, मुझको।

उ०—रमता जगदीसर तणो रहसि रस, मिथ्या वयण न तासु महे। सरसै रूखमणि तणी सहचरी, कहिया मू मैं तेम कहै।
—वेलि

३ मेरा, मेरी।

उ०—१ चकडोळ लगे इणि भांति सु चाली, मति तै वखाणणन मू। सखी समूह माहि इम स्यामा, सील भ्रावरित लाज सू।
—वेलि

उ०—२ पिंडि नख सिख लगि ग्रहणे पहिरिए, महि मू वांणी वेलि मई। जग गळि लागी रहै भ्रसै जिमि, सहै न दूखण जेम सई।
—वेलि

रू०भे०—मु, मू

मूं' देखो 'मुख' (रू भे)

उ०—पींपळ खेजडी रो व्याह माड्यो भ्रर जागण-जीमण रो परवध करयो। भ्रै सै बाता पूरी हुई जकै दिन सोनजी नै मांनी मूं' माग्यो फळ मिळग्यो।—दस दोख

मूम्रोडो—भू०का०कृ०—मरा हुभ्रा, मृत्य।
(स्त्री०मूम्रोडी)

मूकगिर, मूकगिरी—देखो 'रिसीमूक'।

मूकणौ, मूकबौ—देखो 'मूंकणौ, मूकबौ' (रू भे)

उ०—१ धग धगती सगडी भरी, भ्रांणउ भ्रति भ्रगार। मांहि मूकउ मानिनी, सटक देई सिणगार।—मा का प्र

उ०—२ मान कहै दळपत्त रौ, लाभ निदांन सुणाय। धाम न मूकै साम का, तिण मुख सरम सवाय।—रा रू

उ०—३ एकदा प्रस्ताव। दिली रै पातसाह सारी धरती माहै डड घातियो। गढ किरोडी मूकिया। ताहरा महेवे ही किरोड़ी भ्रायो। ताहरा कानडदे सरब रजपूत तेडिया।—नैणसी

उ०—४ तिवारे पतिसाहजी सरसौ पाटण वास गांव दियो। बयाणौ, हैंसार, मेवात, रेवाडी समेत पडगना मूकिया। वहुत दिलासा मूकी।—द वि

उ०—५ ससार भ्रुपहु करता ग्रह सग्रह, गिणि तिणि हीज पचमी गाळि। मदिरा रीस हिंसा निंदा मति, च्यारे करि मूकिया चडाळि।
—वेलि

उ०—६ गिरवर मोर गहक्किया, तरवर मूक्या पात। धणिया घण सालण लगा, वूठै तो वरसात।—ढो मा

उ०—७ ढोला, ढोली हर किया, मूक्या मनह विसारि। सदेसउ नह पाठवइ, जीवा किसइ भ्रधारि।—ढो मा

उ० - ८ मुख नीसासा मूकती, नयणें नीर प्रवाह। सूळी सिरखी सेभडी, तो विण जाणे नाह।—ढो मा

उ०—९ मुरछित हौ धरणी पड्यौ, वलि मूकै है मोटा नीसास कि।—प च चौ

उ०—१० मुगल मडाभड साहसी, मूकै दोय दोय वाणौ रे। 'लालचद' पतिसाह स्यु, पूर्ज केहौ किम पाणौ रे।—प च चौ

उ०—११ ताहरा लाखैजी पूछीयो, "सीढी माहै कोण छै?" कह्यौ "जी, चच भ्राढो छै।" ताहरां लाखैजी पूछीयो, कह्यौ, "सीढी धरती मको।—लाखै फूलाणी री वात

मूकणहार, हारौ (हारी), मूकणियौ—वि०।

मूकिम्रोडो, मूकियोड़ो, मूक्योड़ो—भू०का०कृ०।

मूकीजणौ, मूकीजवौ—कर्म वा०।

मूकाणौ, मूकावौ—देखो 'मूकाणौ, सूकावौ' (रू भे)

उ०—१ ताहरां राव साथै भ्रादमी दे दीव मूकायौ। उठी बाहण वैसि दीव हालियो। इमो हीज समइयौ हुवौ। चोर न लागौ, कोई जीवजंत न लागो। सयणी री वारता

उ०—२ ताहरा लाखैजी पूछीयो, कह्यौ, 'सीढी धरती मूको।' सीढी धरती मूकाई नै लाखैजी निजीक भ्राइ नै दूहो कह्यौ।
—लाखै फूलाणी री वात

मूकाणहार, हारौ (हारी), मूकाणियौ—वि०।

मूकायोडो—भू०का०कृ०।

मूकाईजणौ, मूकाईजवौ—कर्म वा०।

मूकायोडो—देखो 'मूकायोडो' (रू भे)
(स्त्री०मूकायोडी)

मूकावणो, मूकावबो—देखो 'मूकाणो, मूकावो' (रू भे)
मूकावणहार, हारो (हारी), मूकावणियो—वि०।
मूकाडिग्रोडो, मूकावियोडो, मूकाव्योडो—भू०का०कृ०।
मूकावीजणो, मूकावीजवो—कर्म वा०।
मूकावियोडो—देखो 'मूकायोडो' (रू भे)
(स्त्री०मूकावियोडी)
मूकियोडो—देखो 'मूकियोडो' (रू भे)
(स्त्री० मूकियोडी)
मूक्की, मूक्को—देखो 'मुक्की' (रू भे)
उ०—१ उत्तम थूक बिलोवहि मध्यम मूकी थाप। वणिक ग्रवम चिडना करै, पनसेरी सू पाप।—बा दा.
उ०—२ धक्का मूक्की घूप दीप लातां रो देवै, नाक भाग नैवेद माथ पद इण विध सेवै —ऊ का
मूक्को—देखो 'मुक्को' (मह, रू भे)
मूग—स० पु०[स०मुद्ग] १ हरे रंग का एक प्रसिद्ध द्विदल अन्न जिसकी दाल बनती है।
उ०—१ खोड्ड हुउ हांभिज्यउ, वधियउ भूख सम्है। जाउ ढोला रइ मासरइ सफळां मूग चरह।—ढो मा
उ०—२ मूम नाम लेणो मुतो, मूग पकावण वेर। ग्रन दिन उण री ग्रायजू, डाटी माठी देर।—वां दा
मुहा०—(छाती पर) मूग दळणा=किसी को दिखाते हुए ऐसा काम करना जिससे उसके हृदय मे ईर्ष्या,दाह, जलन या कष्ट हो।
२ उक्त द्विदल का पोधा।
रू०भे०—मउग, मग, मुग, मुघ,
मूगयाळ—स०पु० यो० [स० मुद्ग+स्याल] बेसन ग्रादि की जमाई हुई चक्की (मेवात)।
मूगदणो, मूंगधणो—देखो 'मूगदणो' (रू भे)
मूगफळी मूगफली—स० स्त्री० १ जमीन पर फैलने वाला एक प्रकार का पौधा जिसकी खेती उसके फलों के लिए भारत के प्रायः सभी भागों मे की जाती है। इसके फलो से तेल भी निकाला जाता है।
२ उक्त पौधे की फली व उसके दाने।
३ मूग नामक पौधे की फली।
उ०—मुजादड गोवन धड्या रै कामन कलस मुनालि रे रग। मूगफळी चपावली रै, ग्रागळिया सुविमान रै रग।—प च चौ
मूगम—स० पु०—१ ग्रादर, सत्कार।
२ मान, प्रतिष्ठा, इज्जत।
रू०भे०—मूधम,
मूगळ मूगल—देखो 'मुगळ मुगल' (रू भे)
उ०—१ उळ नाम उच्चारण मूगळ मारण, वंसि वधारण वान। सनमीर नरिंद समद जिमो महिइद जिमो ग्रनमान।—स पि
उ०—२ विस गोठ्य मार्ड दिखराई,ग्रति एतली ग्राहि। मागी म्लेछ माकडा मूगल, पछइ पड्या रिण माहि।—का दे प्र
मूगाई—स० स्त्री०—१ बाजार में वस्तुग्रो की कीमतो या मूल्यो का उचित से ग्रधिक होने की ग्रवस्था या स्थिति। मूल्यो के बढ़ने की स्थिति, महगाई। (डीग्ररनेस)
२ उक्त स्थिति से बचाव के लिए कर्मचारियो को वेतन के ग्रतिरिक्त दी जाने वाली राशि, महगाई भत्ता।
३ ग्रादर, सत्कार।
४ मान, प्रतिष्ठा, इज्जत।
रू०भे०—महगाई, महगाई, मूगाई, मूघाई, मेगाइ, मैंगाई, मैंघाई।
मूगियाडो—स० पु०—१ महगा होने की ग्रवस्था या भाव, महगाई।
२ बाजार मे वस्तुग्रो की कीमतें ऊची होने की ग्रवस्था।
रू०भे०—मूगीवाडो, मेगीवाडो,
मूगियो—वि०—१ लाल रग का।
२ मूग के समान हरे रग का।
स० पु०—१ एक वस्त्र विशेष।
रू०भे०—मूगियो मूगीयो मूगीग्रो मूगीयो,
१ देखो मूगो' (ग्रल्पा, रू भे)
उ०—१ सोना री पूतळिया सरदा! साथ मूगिया भार। घुरसा-मलजी ग्रणतमलजी, वा सेठा री माल।
—डूगजी जवारजी री छावली
उ०—२ तिण सर्म 'रतना' रा रैंवास में एक मकराणा रो महल है, जिण में इण री घणी सारी सै'ल है। सू इणरी पगथाळियां रा प्रतिरूपबहू फरस तो मूगियां री छिब पावै है नै ग्रग री ग्रोपमा सू भीतां जिकै सुवरण री निजरि ग्रावै है।—र हमीर
उ०—३ भल भला करइ राव भेटणा, चद्रन चोवा ग्रबीरो जी। माणिक मोती मूगिया, चोली चरणा चीरो जी।—स कु
मूगीयो—१ देखो मूगो' (ग्रल्पा, रू भे)
उ०—सतगुरु साह भये सौदागर, विणजै वसत ग्रपारा। काही मिणीया लीया मूगीया कांही हीर हजारा।
—श्री हरिरामदासजी महाराज
२ देखो 'मूगियो' (रू भे)
मूगीवाडो—देखो 'मूगियाडो' (रू भे)
मूगु—१ देखो 'मूग' (रू भे)
उ०—सोहती मन मोहती पुहव र मदल सुरग। ग्रगुळी मूगु नी फळी, समस्त तीखा नख सुरग।—रुकमणी मगळ
२ देखो मूगो' (रू भे)
मूगेडो—१ देखो 'मगेडो' (रू भे)
२ देखो 'मूगियाडो' (रू भे)
मूगोडी—स० स्त्री०—मूग की वडी।
उ०—म्हारै पापड वी नाई म्हारै मूगोडी वी नाई, क्यां से करा नीगोड्यो व्याव, रायजादी ये लूर छैला प्यारी ये लुरहो।
—लो गी

रू०भे०—मुंगवडी, मूगेडी, मूगोडी

मूगो-सं०पु०—समुद्र मे कृमियों के समूह पिंड की लाल ठठरी का एक रत्न, प्रवाल। (अ मा)

उ०—हीरा माणक मूगो तजीने, कथीर सगाते मलि तोल मा रे।
—मीरा

२ रत्न, नगीना।

३ सात प्रकार की उप धातुओ में से एक । (अ मा)

वि०—लाल हरा,।

उ० जळ खूटे सीकाळ, रग मूगो पड ज्यावै। ज्यू घोव्योडी भांग, दूरसू वरण दिखावै।—दसदेव

रू०भे०—मुगो, मूगु ।

अल्पा०—मूगियो, मूगियो, मूगीयो,

मू'गो-वि० [स०महत्+अर्घ] १ जिसका मूल्य या कीमत उचित से ज्यादा हो, जरूरत से ज्यादा कीमत का।

उ०—"एक-इ बात कैद्? भळै मोल-तोल तो को करो नी'क? 'हां एक-ई।' 'तो लो, ऐ साढी तीन दे दो।' 'नाख-नाख, है तो मू'गां ई।—वरसगांठ

२ जो साधारण से अधिक कीमत का हो, बहुमूल्य। स्वभावत कीमती।

३ जिसे प्राप्त करने मे अधिक कष्ट या व्यय करना पड़ा हो, दुर्लभ्य।

४ सम्मान, इज्जत व मान-प्रतिष्ठा वाला।

५ अधिक प्यारा, विशेष प्रिय।

रू०भे०—महगो, महगो, महुगो, मुगड, मुहगड, मुहगो, मुहुगो, मुहगो, मुहगो मुहघो, मुहुगो, मुहेंगो, मू'घो, मूघो, मूहगो, मूघो, मूहघू, मैंगो, मैंहघो।

मूघ—देखो 'मूंग' (रू भे)

मूघम—देखो 'मुगम' (रू. भे)

मूघो मू'घो—देखो 'मू'गो (रू भे)

उ०—१ गुराजीडो वडाई रो भूखो, नें एक मूघै मोल रो जेबी तिरपाल भेंट करघो।—दसदोख

उ०—२ सुण सुण जसवारो आनद मन आण्यो जग मे जीवावण जैपुर पति जाण्यो। मू'घो माखण सू मिमरी सू मोटो द्रग सू दो घडिया अन विकतो दीठो —ऊ का

उ०—३ अवळीमाण अहव आपाणी, कवळ बाराह सग्राम करै। सूगा साई अनै सेरडो मू'घा दीधा भळै मरै।—दूदो आसियो

उ०—४ मुळकनै ठाकर रै मांम्ही इण भात मदछकी निजर मू देख्यो के वांनै पीया विना ई हजार बोतल रो नसो चढग्यो। पैली वार वांरै समझ मे आई के राजाजी री चाकरी कित्ती आहजी अर कित्ती मूघी।—फुलवाडी

(स्त्री० मूघी)

मूचणो, मूचवो—देखो 'मुचणो, मुचवो' (रू भे)

मूचणहार, हारो (हारी), मूचणियो—वि०।

मूचिओडो मूचियोडो, मृच्योडो—भू० का० कृ०।

मूचीजणो, मूचीजवो—भाव वा०।

मूचियोडो—देखो 'मचियोडो' (रू भे)

(स्त्री० मूचियोडी)

मूछदर-वि०—बडी-बड़ी मूछोवाला।

रू०भे०—मुछदर,

मूछ-स०स्त्री० [स०श्मश्रु प्रा०-मस्सु, मच्छु] पुरुषो के नाक के नीचे एव होठ के ऊपरी भाग मे उगने वाले केशो का समूह, मूछ।

उ०—१ मूछ नाक सिर रो मुकुट, ससतर साम सनाह। साबत लायो समर सूं, कै नह लायो नाह —वा दा

उ०—२ चख चोळ मूछ भूहा चढी, तांमस ऊठि तमो गणी। मेहरी गाज जाणै मरद, सारदूळ काना सुणी।—मे म

मुहा०—१ मूछ उखाडणी=१ कठिन दण्ड देना, अपमान करना।

२ मूछ नीची होणी=अपमान होना, गर्व नष्ट होना, लज्जित होना।

३ मूछ पर ताव देणो=गर्व एव अहकार करना।

४, मूछ मरोडणी=गर्व करना, गर्व के मारे मूछो पर ऐंठन या बल देना।

५ मूछ माथै हाथ फैरणो=अपना पौरुष दिखलाना, विजय का गर्व करना।

६ मूछरो वाळ-घनिष्ट व्यक्ति, विशेष विश्वास वाला। ज्यादा नजदीक रहने वाला।

२. कुछ विशिष्ट जानवरों या जीव-जन्तुओ के मुख पर भी यह बाल समूह होता है।

रू०भे०—मुच्छ, मुछ, मुच्छ, मुछ, मुछि।

अल्पा०—मूछडली मूछडी, मूछ, मूछडी।

मह०—मुछार, मुछार, मूछाळ

मूछडली—देखो 'मूछ' (अल्पा, रू भे)

उ०—कोई मूछडली मुरळावै सूरत सावळी।—लो गी

मूछडी—१ देखो 'मोछ' (अल्पा, रू भे)

उ०—खोळी खीला री डेढा डिग ढीली, पोली सेढा री लीला बिण पीळी। खडती सूखाडी वाडी विन खटकै, मरती मूछडिया पूछडिया पटकै।—ऊ का

२ देखो मूछ' (अल्पा, रू भे)

मूछण—देखो 'मूछण' (रू भे)

उ०—चलू करी मूछण दिया रै लाल, लूग सुपारी पान।
—प च.चौ

मूछणियो, मूछणो—देखो 'मूछण' (अल्पा रू भे)

उ०—धण रे तो आगण विडला बधावो ढोला, मूछणियै रै मिस आवो रे। हाजी २ माजे बैवतै बादल ने केण विलमायो रे।
—लो गी.

मूछणो, मूछवो—१ देखो 'मूछणो, मूछवो (रू. भे)

मूछणहार, हारो(हारी), मूछणियौ—वि०।
मूछिग्रोडो, मूछियोडो, मूछयोडो—भू० का० कृ०।
मूछीजणौ, मूछीजबो—भाव वा०।

मूछरेल—देखो 'मूछाळ' (रू भे)

मूछार—देखो 'मूछ' (मह, रु भे.)

मूछाळ, मूछाल—वि० [सं०श्मश्रु+आलुच] १ जिसके मूंछे हो, मूछो वाला।
उ०—पण अबै ऐडा ई मूछाळा मरद हौ तो म्हारै साम्ही आगळी उठायनै तो जोवौ—फुलवाडी
२ वल पौरुष एव गौरव वाला।
उ०—मछगाळा मूछाल, वेहद हद वेढ़ीगारा। सुर भगा दस वार, प्रथी इक छत्र मारा।—मा वचनिका
३ युवा जवान।
रू०भे०—मुछाळ मुछियाळ, मूहछाळ, मूछरेल, मूछरेळ मूछरैल मूछाळ।
अल्पा०—मुछाळो, मूछाळो
४ देखो 'मूछ' (मह, रू भे)
उ०—सुण इम वचन मधीर, वीर रणधीर ववक्कै, मतवाळा मदमत्त रोम माळा धक धक्कै। अडै मुज्ज असमान भिडै मूछाळ अगूटै, चढै रोम चख चोळ, माग म तोलउ सूटै।—पे रू

मूछाळी—स०स्त्री०—१ तलवार।
२ वह स्त्री जिसके मूछें हो।
३ देवी दुर्गा।
रू०भे०—मुछाळी,

मूछाळो—देखो मूछाळ' (अल्पा, रू भे)
उ०—१ आगै मयणीजी मूछाळै मालदेव रै ऊनरिया।
—सयणी री वात
उ०—२ वामण पूत न वीसरै, ज्यू विसहर कळै। आल्हणसीह न वीसरै, मैहराज मूछाळै।—नैणसी

मूछियोडो—देखो 'मूछियोडौ' (रू भे)
(स्त्री०मूछियोडी)

मूछियौ—स०पु०—काटना क्रिया या भाव।

मूछीयद—देखो 'मुरछित' (रू भे)
उ०—क्रत्रिम सरवरि पाणी पीइ, पाचइ पुहवी तलि मूछीयइ। सरवर पालि ट्रवदि मिली, एकि पुलिदइ आणी वली।
—सालिभद्र सूरि

मूज—स०स्त्री० [सं०मुञ्ज] १ सरकडो की ऊपरी छाल जिसको भिगो कर व कूट कर चार पाई बुनने के लिए रस्सी बनाई जाती है।
२ उस छाल की बुनी हुई रस्सी।
उ०—रस्सी नै वववचा' र पकड लियो, बूकिया मसल लिया अर मज रा वध दे परा' र थाणे मे भेज दीनो —द दोस
३ धारा नगरी का परमार राजा मुंज।

उ०—सीदमरथ दसरथ सुतन, पीथल मूज पवार कुण कुण इहकांणा नही, वस चुगलां वापार।—वां दा
रू०भे०—मउज, मऊज, मुज, मूझ, मूज, मूझ,
४ देखो 'मुझ' (रू भे)

मूजणौ—स०पु०—देखो 'मुगदणौ' (रू (
उ०—जेई ले जगळ सू लावै, फोगां सू सुभ मूजणो। चिरच माथ सफर घी पावै, भूले व्यावा मूजणौ।—दसदेव

मूजणौ मूजबो—देखो 'अमूझणौ, अमूझबो' (रू भे)

मूजि, मूजी—स०पु०—कृपण, सूम, कजूस।
रू० भे०—मूजीडो

मूजियोडो—देखो 'अमूझियोडो' (रू भे)

मूजीडो—देखो मूजी (अल्पा, रू भे)

मूजीपणौ—स०पु०—१ कजूस होने की अवस्था या भाव।
२ कजूसी।
उ०—मेठा रौ मूजीपणो चौवळा मे किणी सू अछांनो नीं हो।
—फुलवाडी
रू०भे०—मूभीपणौ,

मूजोर—देखो मुहजोर' (रू भे)

मूजौ—स०पु०—मूज का वना एक प्रकार का ढक्कन जो वडे-वडे जल पात्रो पर ढका जाता है।
वि०वि०—यह ढक्कन प्राय उस समय काम आता है जब वड़े-वडे जल पात्रो को गाडी पर रख कर दूर दूर से पानी लाया जाता है।

मूझ—१ देखो 'मुझ' (रू भे)
उ०—१ ठहिया तो पिण राज ठिकांणै, जगत मूझ दिल उजळ न जाणै। मनि हव वचन लोपसी मोन, तन प्रतवाय लागसी तोनू।
—सू प्र.
उ०—२ रांणै दाखै 'राजसी' राठौडा उपकार। या कळ भल्ली आवगी, पल्ली मूझ अवार।—रा रू
२ देखो 'मूज' (रू भे)

मूझणौ, मूझबो—देखो अमूझणौ, अमूझबो' (रू भे)
उ०—१ दळ देख डरै, त्रिध मूझ मरै। मिळि मोमि तणी, पुछि वोम पणी।—गु रू व
उ०—२ वार पहर तउ चडीउ रोसि गुर नदणु झूझइ। रणि पाडिउ भगदत्तु राउ कउरव दल मूझइ।—सालिभद्र सूरि
उ०—३ विकल थाती, क्षणि जोइ क्षणि रोइ क्षणि हसइ क्षणि आफदइ क्षणि निंदइ, क्षणि मूझइ, क्षणि झूझइ, क्षणि वूझइ, एव विधि विरहानल नीपजइ।—व.स
मूझणहार, हारो (हारी), मूझणियौ—वि०।
मूझिओडो मूझियोडो, मूझ्योडो—भू०का०कृ०।
मूझीजणौ, मूझीजबो—भाव वा०

मूझियोडो—देखो 'अमूझियोडो' (रू भे)
(स्त्री० मूझियोडी)

मूझी—देखो 'मूजी' (रू. भे)
उ०—पण मूझी व्हैता थकां ई वौ नेकनामी हो। खोटी कमाई नी करतौ।—फुलवाड़ी

मूझीपणौ –देखो 'मूजीपणौ' (रू भे)
उ०—वौ आपरी माया वास्तै ई चोखळा में चावौ हो अर आपरा मूझीपणा वास्तै ई उण री अणूती नामवरी ही।
—फुलवाड़ी

मूठ—देखो 'मूठ' (रू भे)
उ०—१ अणियाळा नयण आजिया अजण, कागज रेख सुरेख कर। इद्र तणइ दिन मूठ अपूठी, मळका नांखइ वामवर।
—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ ले भडा रटाकां पूर अरिंदा ताडव्वा लागा, महावीर खीज में पाडव्वा लागा मूठ। बीर वेसतावा जहां दूधारा झाडव्वा लागा, रोजगारा खाती ज्यू फाडव्वा लागा रूठ।
—सुखदान कवियौ

उ०–३ आडा डूगर वन घणा,तांह मिळीजइ केम। उलाळीजइ मूठ भरि, मन सीचाणउ जेम।—ढो मा

मूठडी—देखो 'मूठी' (अल्पा, रू भे)
उ०—मुड मुड पडतोडी आखडिया मींचै, भूखा मरतोडी मूठड़ियां भींचै। सीघी सैणी सी मैणी सुण माल्है, वेसक पुर वसणौ हसणौ तजि हालै।—ऊ का

मूठि–१ देखो 'मूठ' (रू भे)
२ देखो 'मुट्ठी' (रू भे)

मूठियौ—देखो 'मूठियौ' (रू भे)

मूठी—१ देखो 'मुट्ठी' (रू भे)
उ०—१ मूठी भरि सति रेणु जळ साम्ही, आपणपउ दाखइ अधिकार। कुभ हुवइ ततकाळ कहता, सो पाणी ल्यावै पणिहार।
—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ म्हैला सांकडीसी आंण भैली थांभि दीनी। मूठी एक बालू की पला कै बाध लीनी।—शि व
२ देखो मूठ' (रू भे)

मूड—१ देखो 'मूढ' (रू भे)
उ०—बाझ के पास प्रसूत की वेदन, भेद न जानत मूढ ममायौ। पूत कपूतन को चटसाल कि, ज्यू कुलटा सुमराल सुनायौ।
—ऊ का

रू०भे०—मूढ, मूड, मूढ,
२ देखो 'मुड' (रू भे)
उ०—१ तकादौ मोत बताई, दांत से तुड़ावेगौ तू। माजनां सू रेज्यै देज्यै फुडावेगौ मूड।—ऊ का
उ०—२ कित छोडी वह मोहन मुरली, कित छोडी सब गोपी। मूड मुडाइ डोरि कटि वाधी, माथै मोहन टोपी।—मीरा
उ०—३ भडीयड भाजि मरगड मूड। रडव्वड रैण करडक रूंड।
—गु रू व

उ०—४ साग मूड सहसी सको, समजस जहर सवाद। भड पीथल जीतौ भलां, वैण तुरक सू वाद।—महाराणा प्रतापसिंह
१ देखो 'मूद' (रू. भे)

मूडकटाई, मूडकटी–स०स्त्री०—१ युद्ध मे वीरता पूर्वक लड़ते समय शिर कटने की क्रिया या भाव।
२ वह भूमि या जागीर जो पूर्वजो के युद्ध में वलिदान होने पर पीछे वशजो को मिलती है।
३ मस्तक मुण्डाने की क्रिया।

मूडकी–स०स्त्री० [स० मुण्ड] कटा हुआ शिर।
उ०—अडसी सू अडिया जिकै पडिया करै पुकार। म्हापुरसां री मूडक्यां, गिलगी गाव गगार।
—महाराणा अरिसिंह तीसरे का दोहा
रू०भे०—मूडि।

मूडको–स०पु० [स० मुंडक] १ मस्तक, शिर।
२ व्यक्ति, आदमी।
उ०—तरै एकै रजपूत कह्यौ, घोडी मूडका माफक बांटो। तरै ऊ वचन सांभळ पिउसधी कह्यौ, कुट्टण मूडका थया, आधी हमारी है आधी तुमारी है।—जखडा मुखडा भाटी री वात
३ सीमान्त पर गड़ा रहने वाला पत्थर, छोटा स्थम्भ।
रू०भे०—मुडको,

मूडड़ौ—देखो 'मुड' (अल्पा, रू. भे)
उ०—कहाडै वीरद वका भीड़ियां छकडा कड़ा, बधै रोळै बडा आगा वाधै वमवांन। विछोडै गयदां वडा दूजडां झोकड़ां बाह, मुगल्ला मूडड़ां दडा मेळै दूजौ 'मान'।
—रावत सारंगदेव रौ गीत

मुडण–स० पु० [स० मुडन] १ शिर के बाल काटने की क्रिया या भाव।
२ बालको के प्रथम बार शिर के केश काटने का एक सस्कार।

मूडणो, मूडबौ–क्रि०स० [स०मुण्डनम्] १ उस्तरे, पत्ती आदि से शिर के बाल या शरीर के किसी अग विशेष पर उगे हुए केशो को, रगड कर काटना, साफ करना, मुण्डन करना, केश काटना।
उ०—१ सिर दाढी मूडी करी, भगवउ लीधउ वेस। पग अणुहांणा पकज जिसे, पथि पलिउ परदेसि।—मा कां प्र
उ०—२ दाडी मसतग मूछ का, घुरिड़ मूडीया केस। हरीया मन पलिट्या नहीं, पलिट्या तन का वेस।
—स्रीहरिरामदासजी महाराज
२ भेड के शरीर की ऊन काटना।
३ किसी प्रकार की शिक्षा दीक्षा या सलाह देकर चेला बनाना, अनुयायी वनाना, वशीभूत करना, प्रभाव में लाना।
उ०—जीयौ बांमण थोडा दिन फेर करतौ रह्यौ। नवा मूडियोडा

दो तीन चेला-चांटियां नैं कीं तकलीफ नीं करण देवतो ।

—फुलवाडी

४ धोखे से माल ऐंठना, ठगना

५ किसी मृतक के पीछे दाढी-मूछ कटाना, भद्र करना ।

उ०—मुई बेगम सभी सेहस जग मूंडिया, दूर की मूछ पतिसाह दूवै । राखिया भोज यम ठाकुरै रावज्यो, हिंदुवां ध्रम अहकार हूवै ।—राव भोज हाडा री गीत

मूंडणहार, हारौ(हारी), मूंडणियौ—वि० ।

मूंडिय्रोडौ, मूंडियोडौ, मूंड्योडौ—भू० का० कृ० ।

मूंडीजणौ, मूंडीजवौ—कर्म वा० ।

मुंडणौ, मुंडवौ,—अक रू० ।

मूंडणौ, मूंडवौ—रू०भे० ।

मूंडत—देखो 'मुंडित' (रू. भे)

उ०—समर ढिलोकर मांम नू लस आवै लवडाक । मूंछ थका मूंडत जिकै, नाक थका विन नाक ।—वां दा

मूंडतहाथ-स०पु० यौ०—१ कोहनी से हाथ की अगुलियों के मोड तक बनने वाला लम्बाई का एक माप । मतान्तर से कुहनी से अगुलियों के पेरवो से वापिस मोडकर अगुलियों की जड तक का माप ।

२ उक्त नाप की लम्बाई की वस्तु ।

रू०भे०—मूंडहाथ ।

मूंडवाळ-स०पु०—नाई, केशकार, नापित । (डि को)

रू०भे०—मूंटवाळ, मूंडाळ,

मूंडहाथ—देखो 'मूंटतहाथ' (रू भे.)

उ०—कुनां रा डोर छूटै छै । लाहोरी ताजी लूंच वांगा गिलजा पहाडी, जिकांगी मूंडहाथ मोहनाळ हाथ भर नस ।—रा मा स

मूंडामूंड, मूंडामूंडी-क्रि०वि०—मुंह के सामने सम्मुख, मुंह को मुंह पर, स्वत ।

उ०—घर री फळै गूंनावी-नाक आय' र, मूंवाजी, रामलै-री मा नैं मूंडामूंड कैण लागी-थनै कांम को चानै नी,चार पांच दिनां मे म्हा री उथळौ कर दी ।—वरसगांठ

रू०भे०—मूंडेमूंड, मूंडैमूंड ।

मूंडाणौ, मूंडाबौ-क्रि०स० [मूंडणौ' क्रिया का प्रे०रू०] १ उस्तरे, पत्ती आदि से सिर या शरीर के किसी अग विशेष पर उगे हुए केशो को कटवाना, मुण्डन करवाना, बाल कटवाना ।

उ०—मगनग माळ मूंडाय कै, दाढी मूछ मूंडाय । हरीया मन मूंड्यां बिना, निज पद कैसे पाय —श्री हरिरांम दासजी महाराज

२ भेड के शरीर की ऊन कटवाना ।

३ किसी प्रकार की शिक्षा दीक्षा या सलाह द्वारा चेला बनवाना, अनुयायी बनवाना, वशीभूत कराना, प्रभाव मे कराना ।

४ धोखे से माल ऐंठवाना, ठगवाना ।

५ किसी मृतक के पीछे दाढी मूंछ कटवाना, भद्र करवाना ।

मूंडाण हार हारौ(हारी), मूंडाणियौ—वि० ।

मूंडायोडौ—भू० का० कृ० ।

मूंडाईजणौ, मूंडाईजवौ—कर्म वा० ।

मूडाणौ, मूडाबौ, मूडावणौ, मूडाववौ—रू०भे० ।

मूंडापाती—स०स्त्री०—१ एक प्रकार का पौधा जिसकी गाठो पर सफेद फूल लगते हैं, गूमा द्रोण पुष्पी ।

मूंडायोडौ—भू०का०कृ०—१ उस्तरे, पत्ती आदि से सिर या शरीर के किसी अग विशेष पर उगे हुऐ केशो को कटवाया हुआ, मुण्डन करवाया हुआ, बाल कटवाया हुआ २ शरीर की ऊन कटवाया हुआ (भेड) ३ चेला बनवाया हुआ, अनुयायी बनवाया हुआ, वशीभूत या प्रभाव मे कराया हुआ ५ धोखे से माल ऐंठवाया हुआ ठगाया हुआ ८ किसी मृतक के पीछे दाढी मूंछ कटवाया हुआ, भद्र करवाया हुआ ।

(स्त्री०मूंडायोडी)

मूंडाळ—देखो 'मूंडवाळ' (रू भे)   (डि को)

मूंडी—१ देखो 'मूंड' (रू भे)

२ देखो 'मुंड' (रू भे)

३ देखो 'मूंडकी' (रू भे)

४ देखो मूंडवाळ' ।

मूंडेमूंड, मूंडैमूंड—देखो 'मूंडामूंड' (रू भे)

उ०—ठाला भूला बता तो थारी थूं इत्ता बन री कांई करघौ । खजानै जमा क्यूं नी करायौ । थारी इत्ती हीमत के मूंडैमूंड नटै ।

—फुलवाडी

मूंडो दिखाई—देखो 'मुंहदिखाई' (रू भे)

मूंडो-स०पु० [स०मुंड] १ मनुष्य या प्राणियों के शरीर का वह अग जिससे खाने-पीने एव बोलन आदि की क्रियाऐं होती है, मुख ।

उ०—१ गळियोडा सब गाथ गजब काघौ गळियोडौ । अमल खांण ने अजे वळै मूंडो वळियोडौ ।—ऊ का

उ०—२ मवळ खायनै छपाक देतो रो वो पाणी रै मांय पडग्यौ । पडता ई वो तो मूंडो फाडनै गळळ गळळ पाणी खावण दूकौ ।

—फुलवाडी

मुहा०—१ मूंडा जित्ती वाता=जितने मुह उतनीं वातें होती है । मनुष्य हरेक बात अपने ढगसे कहता है । अफवाह उडने पर ऐसा कहा जाता है ।

२ मूंडा मूं आवै ज्यूं बोलणौ=असभ्यता से बोलना, बोलते समय सुध न रहना ।

३-मूंडा मे अन-पाणी घालणौ=खाना-पीना, मुश्किल से भोजन प्राप्त होने पर ऐसा कहा जाता है ।

४ मूंडा मे गुळ देणौ= खुश-खबरी सुनाने या इच्छित बात करने पर मुह मीठा करना । चुप करना ।

५ (थारा) मूडा मे घी शक्कर=वांछित कार्य करने वाले के लिये अच्छे भोजन कराने का भाव।
६ मूडा मे पाणी आणो=स्वादिष्ट खाद्य पदार्थ को देखने पर मूह में पानी आना, लालायित होना
७ मूडा में मुळक नीं मावणी=खुशी के कारण मुह से हसी फूट पड़ने का भाव होना।
८ (थूक थारा) मूडा मू - अमागलिक बात करने पर।
९ मूडा में मूडो घालणो = घुट-घुट कर बातें करना।
१० मूडा में लाय लागणी = अधिक चर्पी चीज खाने से मुह मे जलन होना, मुह जलना।
११ मूडा रै खाम लागणी = निरुत्तर होना, मुह से बोल न निकलने की दशा होना।
१२ मूडा रो स्वाद = क्षणिक तृप्ति, जिससे कोई स्थाई लाभ न होता हो। जो खाने से अच्छा लगता हो पर वस्तुत नुकसान दायक हो।
१३ मूडा सू थूक उछाळणो = असभ्यता से बोलना, व्यर्थ बकना।
१४ मूडा सू फूल झड़णा - अच्छी बात कहना हसना।
१५ मूडै आणो = तृप्ति होनी, किसी चीज को खाने से मन भर जाना।
१६ मूंडै मीठो = जो सामने तो मीठी-मीठी बातें करे और पीठ पीछे बुराई करे।
१७ (छोटे) मूडै मोटी बात - अपनी हेसियत से ज्यादा की बात करना।
१८ मूडै लगाणो = किसी को बोलने, बात करने या पचायती करने की छूट देना शिष्टता की सीमा से बाहर तक बात करने की छूट देना।
१९ मूडै लागणो = निस्सकोच होकर किसी से बात करना, खुल कर बात करने की दशा मे होना, अशिष्टता का व्यवहार करना।
२० मूडो ऐंठणो, मूडो ऐंठो करणो - बहुत कम खाना। किसी के यहां खाने का दस्तूर करना, मुह झूठा करना।
२१ मूडो काळो करणो = चले जाना पलायन कर जाना दृष्टि से दूर हो जाना। बदनामी के रूप में कहा जाता है।
२२ मूडो खीलणो = निरुत्तर कर देना कचावट पकड लेना।
२३ मूडो खोलणा = कुछ कहना, कहने के लिये मुह खोलना। बहुत कम बोलने वाले के लिये कहा जाता है।
२४ मूडो घालणो - खाने या पीने के लिये मुह आगे करना। जानवरो पक्षियो आदि के लिये।
२५ मूडो चालतो रैवणो = हर वक्त कुछ न कुछ खाते रहना।
२६ मूडो फाडणो - खाने के लिये मुह खोलना, अधिक पाने की आशा करना, लोभ करना।
२७ मूडो बद कर देणो = देखो 'मूडो खोलणो'।
२८ मूडो बळणो = मुह जलना, तेज मसालेदार चीज खाने से मुह मे जलन होना।
किसी चीज के लिये लालयित होना, उत्कठा दिखाना।
२९ मूडो मारणो - व्यर्थ फिरना, बद चलन होना।
३० मूडो मीठो करणो - मीठी चीज खिलाना, खुश खबरी सुनाने, या अच्छा कार्य करने पर ऐसा होता है।
३१ मूडो रातो करणो = पान खाना, क्रोध करना।
२ चेहरा, आकृति, शक्ल।
उ०—१ मूडो सूजार्य रैती आयोडा पर भुजती बळती अर कीनै ई गुड री किरची-मिरकी सी ही आपरै हाथ सू नही देती।
—दसदोख
उ०—२ वो मिनखां रा उणियारा देखतो आगै बधतो जावतो। उणरै आगै बधणा रै सागै लोगां रा मूडा उतरता जावता।
—फुलवाडी
उ०—३ पछै खवास काली मासी रै मूडा साम्हो देखने कैवण लागो-माजी! काई काई बाता बतावू। कह्या सुण्या पाप लागै जडा बखाण है।—फुलवाडी
मुहा०—१ मूडा माथै थूकणो धिक्कारना फटकारना।
२ मूडा माथै फें'फा उडणी - मुह पर थप्पडें पड़णी, जूते पडने पिटाई होना। ३ मूडा री प्रीत = अस्थाई या दिखावटी प्रेम, मुह देखने पर प्रगट किया जाने वाला प्रेम। ४ मूडा रै ठोकर मारणी = अपमान करना, मुह पर पांव की ठोकर मारना। ५ मूडा सामी देखणो = अवाक रह जाना, परमुखापेक्षी होना। ६ मूडो ई नी बतावणो = जाने के बाद वापस न आना, जो काम सौंपा गया है, न तो वह करना, न वापस आकर मिलना। जी चुराना।
७ मूडो उतरणो = उदास होना, चेहरे पर उदासी छाना, खिन्न होना। ८ मूडो ऊचो करणो = गर्दन उठाना, स्वतन्त्र होना, आजाद होना, मुकाबले में आना, विद्रोह करना। गर्व करना।
९ मूडो करणो - रुख करना, उन्मुख होना। १० मूडो चढावणो = मुह फुलाना, रूठना, गुस्सा करना। ११ मूडो जोवणो - देखना मात्र कुछ करने की दशा में न होना। १२ मूडो ढेरणो = व्यर्थ खडे होना असावधान होना। १३ मूडो थाप खावणो = सहसा उदास होना किसी बात मे पोचा पड जाना। १४ मूडो धोणो, मूडो धोवणो = प्राप्ति की आशा लगाना, वांछित वस्तु प्राप्त करने को तैयार होना १५ मूडो निरखणो=किसी के मुह की ओर एक टक हो कर देखना बार बार देखना, देख कर खुश होना।
१६ मूडो नी देखणो=घृणा करना, नफरत करना। १७ मूडो नीचो करणो=शर्माना शर्म से झुक जाना हार मान लेना।
१८ मूडो फेरणो=मुह मोड लेना, बेरुख हो जाना, सम्बन्ध विच्छेद कर लेना। १९ मूडो फेर देणो=वापस घुमा देना, हरा देना, ऐसा मारना की गर्दन सीधी न हो सके। २० मूडो मन्दूर =हेसियत या औकात की दृष्टि से। २१ मूडो मस्कोडणो, मूडो मस्कोरणो=मुह बिगाडना। नखरे दिखाना। २२ मूडोमोडणो

=देखो 'मूंडो फेरणो' २३ मूंडो रातो व्हैणो, होणो=शर्माना, शर्म करना। क्रोध करना। २४ मूंडो फुक थुको पड़णो=भय भीत होना, हवाइयें उड़ना चेहरा रंग फीका पड़ जाना, उदासीन होना। २५ मूंडो लुकाणो, मूंडो लुकावणो=मुंह छुपाना, जी चुराना, सामने न आना, कतराना। २६ मूंडो लेय नै जाणो=अपना रास्ता लेना, रूठ कर चल देना। त्याग कर देना, ऐसा जाना कि वापस आने की आशा न हो। कुछ प्राप्त किये बिना, निराश लौटना। २७ मूंडो सूजणो, मूंडो सुजाणो=देखो 'मूंडो चढावणो'

३ पक्षी की चोंच।

उ०—मोटा मोटा पखियां रै मूंडा मूं सगळी बात सुणियां पछै पृथ्वी थिर थिर हुयियो।—फुलवाडी

४ बोरी, थैली आदि का खुला भाग, मुंह, विवर

५ बर्तन का मुख।

उ०—बरती मार्थ चारू कानी दूर ताई अर छायड़ पड़गी। पणकरी पाणियां बरतन चूर व्हैगी। किणी रो मूंडो भाडो व्हियो तौ किणी किणी रो पींदो निकळियो।—फुलवाडी

६ दरवाजा, द्वार।

७ अग्र भाग सिरा, नोक।

८ देखो 'मोटो' (रू भे)

उ०—रामसिंहजी इसड़ै ताव मेनी आट अर लोहे मिळिया चिम मूंडो हिरण नाखतो आवै छै इयूं फोगा मांहि कूदता आट मिळिया।
—द वि

रू०भे०—माग्रड़ो माग्रडो, माहटो, मांहडो, मुंहड़ो मुंडो मुंडो मुहुडो, मुहड़ड मुहटो, मुंढो, मुहडो, मुहाड मुहडु, मुहटो मुंढो, मूंडो मूंहडउ, मूंहटो मूंहडो, मूंडो मूंडो।

मूढ—१ देखो 'मूढ' (रू भे)

उ०—देवत रहता देखीया, देख न सया हदास। जन हरीया उन मूढ कौ, रिदौ न सूझै नाम।—श्री हरिरामदासजी महाराज

२ देखो मूड' (रू भे)

मूढो—देखो 'मूंढो (रू भे)

उ०—१ मद पण खावै पण गावै मूंढै में, मावै सूना रैं हूं की मूढै म।—ऊ का

उ०—२ बीन रै बाप रो अंत विचरयो। सगळा रा मूंढा विगड़ै जान्या रा सा हुयग्या। मियो-बीबी राजी, क्या करैगो काजी
—दसदोख

उ०—३ तनै हग कबिसाण सू कहण लागा—सां अब रो थारा देस मांई कविसा तो कुण भेट करै। हमैं न माहरैं सांची मांसी छै। पण मांहरी पुत्री रो मूंढो तौ देखाड़।
—कमाळसिंह नागरोत राठौड री वात

मूंद-स०स्त्री०—१ मिट्टी का बड़ा बरतन, जिसमें तीन-चार मटके पानी आ जाता हो।

उ०—१ माटा उदरा। देर खुलेर। ठोड ठोड माया कूंपै। गोढ रै च्यारू मेर एक गोळ चातरो। आठ दसेक मूंणां भरी। पीढा मार्थ एक रूपाळी डावडी बैठी। बटाऊवा नै पाणी पावण सारू।—फुलवाडी

वि०वि—ये मूण दो प्रकार की होती है, एक घड़े के तरह छोटे मुंह की और दूसरी बड़े मुंह की। यह प्राय जल संग्रह करने या दूर से गाड़ी पर रख कर पानी लाने के काम आती है। संग्रहार्थ कोई अन्य पदार्थ भी इसमें रख दिये जाते हैं।

रू०भे०—मूणि, मूण,

अल्पा ०—मूणियो।

२ देखो 'मोण' (रू भे)

मूणि—देखो 'मूण' (रू भे)

उ०—छळतो हिक मूणि मगाव छकै, मर घूण पुताव कवाव भखै गहली घट पिंड प्रतीत गणै घर मैं नभ मूंड घमड घणै।—मे म

मणियो—देखो 'मूण' (अल्पा, रू भे)

मूत—देखो 'मूत' (रू भे)

उ०—आवै देख उवाक थूक रा श्रेचा थाया। उतरया सूत अगूत सूत रेला नह माया।—ऊ रा

मूतणियो—देखो 'मूतणो' (अल्पा, रू. भे)

मूतणो—देखो 'मूतणो' (रू भे)

मूतणो, मूतवो—देखो 'मूतणो मूतवो' (रू भे)

मूतणहार, हारो(हारी), मूतणियो—वि०।

मूतिओड़ो मूतियोड़ो, मूत्योड़ो—भू० का कृ०।

मूतीजणो, मूतीजवो—कर्म वा०।

मूतरणो—देखो 'मूतणो' (रू भे)

मूं'ता—देखो 'मुहता' (रू भे)

उ०—बीन रैं मूं'ता परवार में वीरो ही जमीन पर पग नीं टिकै। लालजी रैं बडै, पढ्यै लिख्यै मूं' लागतै बेटै रैं ब्याह री सगळा, बडाई-लाड कोड तथा सरावण करै है।—दसदोख

मूतियोड़ो—देखो 'मूतियोड़ो' (रू भे)

(स्त्री० मूतियोड़ी)

मूदड़ी—स०स्त्री० [स०मुद्रिका] १ हाथ की अंगुली की अंगूठी, मुद्रिका।

उ०—१ रगीळो चंग बाजणू चंग आंगळियां बाजे। चंग मूंदड़ियां बाजै, चंग पूंचै के वळ बाजै।—ला गी

उ०—२ नाई रैं मूंडा री आ बात सुण राजाजी इत्ता राजी व्हिया कै हाथनैं अमोलक नग जड़ी मूदड़ी उतार बगसीस में देदी।
—फुलवाडी

उ०—३ ताहरा फूलजी कागळ लिख दीयो। हाथ री मूदड़ी दीन्ही छै —लाखा फूलाणी री वात

उ०—४ बाजूबंद मूदड़ी अंगूठी, नखसिख गहणों सारो। पहर मूदड़ी न्हावण चाली, जळ जमना कै घाटो।—मीरां

२ पितृ कार्य करते समय पहनी जाने वाली कुश की अंगूठी।

रू०भे०—मुदड़ी, मुदरी, मुद्रड़ी, मुद्रडी, मुद्रडी, मूदरी, मूदली, मूद्रडी, मूदड़ी, मूदरी ।

अल्पा०—मुदरडी, मूदरडी,

मह०—मुदडउ

मूदडो—देखो 'मूदड़ी' (मह, रू भे)

उ०—१ मोज कडा मूदडां गजा गामां तोखारा । पच ठाम अबरा जरी जामा जर तारा ।—रा रू

उ०—२ मोतीया मूदडा कडा जनेऊ जडा व माला । ओपे बीद राजा यमी पोसाका अनेक ।—मयाराम दरजी री वात

मूदणो, मृदबो—क्रि०स० [स०मुद्रण] १ बद करना, मीचना । (आँखें)

उ०—१ आकूळत व्याकुळत चलत नह आवणं । पीव किण भात आराम पामै । सुकरदे सकरचा नैण मूदै सची । नागणी नाग सिर घडा नामै ।—महाराणा राजसिंह री गीत

उ०—२ जिणनू सुपनें देखती प्रगट भए प्रिव आइ । डरती आख न मूदही, मत सुपनउ हुय जाइ ।—ढो मा

उ०—३ सत कांई जवाब देवता । आल्यां मूदनै माळा फेरण लागा । बिचाळै ई दांत पीसता बोल्या—ठाकुरजी रै सामी-ऊभो थू ठाकुरजी नै ई भाडै, थनै सराप लागैला ।—फुलवाडी

२ किसी छेद या विवर को बद करना, सूराख बद करना ।

उ०—मेरी गई पुकार सब ज्यू समद मे बूद । सुणी न एको सावळा, कान रहे हो मूद ।—गजउद्धार

३ ढकना, आच्छादित करना, आवेष्ठित करना ।

४ अत करना, समाप्त करना ।

मूदणहार, हारो(हारी), मूदणियो—वि० ।

मूदिओडो, मूदियोडो मूद्योडो—भू० का० कृ० ।

मूदीजणो, मूदीजबो—कर्म वा० ।

मुदणो, मुदबो—अक०रू० ।

मुद्रणो, मुद्रबो, मूधणो, मूधबो—रू०भे०

मूदरडो मूदरी—देखो 'मूदडी' (रू भे)

उ०—१ पदक प्रियु तउ हू मोतिन माला । हीरउ तउ हू मूदरडी रे वहिनी ।—स कु

उ०—२ द्रुम तळे बाग असोक दरसै प्रगट परसै पाव । तो कपरावजी कपराव करदे मूदरी कपराव ।—र रू

मूदली—देखो मूदड़ी' (रू भे)

मूदियोडो—भू० का० कृ०—१ बद किया हुआ मीचा हुआ (नेत्र) २ छेद, सुराख या विवर बद किया हुआ ३ आच्छादित या आवेष्ठित किया हुआ, ढका हुआ ४ अत किया हुआ समाप्त किया हुआ ।

(स्त्री० मूदियोडी)

मूद्रडी—देखो 'मूदडी' (रू, भे) (व स)

मूध—देखो 'मुग्ध' (रू भे)

उ०—१ चौडे चड मंडा चवी, सभ आगळि सकाज । मोहण वेली अध नयण, मूध अजब महाराज ।—मा वचनिका

उ०—२ स्त्री की केती जाति, कहि न राघव सुविचारी । रूपवत पतिव्रता, मूध सोहइ सुपियारी ।—प च चौ.

उ०—३ जउ तु साहिब नावियउ, सावण पहिली तीज । बीजळ तणइ झबूकड़इ, मूध मरेसी खीज ।—ढो. मा

मूधणो, मूधबो—देखो 'मूदणो, मूदबो' (रू भे.)

मूधणहार, हारो (हारी), मूधणियो—वि० ।

मूधिओडो, मूधियोडो, मूध्योड़ो—भू० का० कृ० ।

मूधीजणो, मूधीजबो—कर्म वा० ।

मूधारो—देखो 'मुग्धारो' (रू भे)

मुधोकाटो—स० पु०—ऊधा कांटा नामक पौधा ।

मून—देखो मून' (रू भे)

उ०—१ जद रुघनाथ जी बोल्या-म्हैं तो साध हां । म्हारै कठै कहणो है रे ? म्हारै तो मून है ।—भि द्र

उ०—२ पण घणी ताळ ताईं मून राखणी ई उणरै बसरी वात नी ही । हिवडा मे ओट्योडो मन री अखूट दरद आखरा री रूप धार माडांणी रळक पडयो ।—फुलवाडी

मूनाळ—१ देखो 'मुहनाळ' (रू भे)

२ देखो 'मोहनाळ' (रू भे)

मूनी—देखो 'मुनि' (रू भे)

उ०—मोहणी कमळा मूख मूनी । नमो घोम धुतारणी सभ धूनी ।
—मा वचनिका

मूफाड,मूफाडो—स०स्त्री०यौ०—दोनों होठो के बीच का मुख आयतन । मुख के विवर का बाहरी भाग ।

उ०—१ आ कंयनै वो पूरी मूफाड फाड नै हसियो ।—फुलवाडी

उ०—२ भीरू आरातुर मूफाडा माजै । बैंता फुरणां रा फूफाडा वाजै ।—ऊ का

रू० भे०—मूफाड,

मू'वती,मू'वत्ती—१ देखो 'मुहपत्ती (रू भे)

२ देखो 'मोमवत्ती' (रू भे)

मूम—देखो 'मोम' (रू भे)

उ०—धूहरि पडय अथाह ते विरहानल नो धूम । वेगा जावो कोई पिघलावो, प्रिय मन मूम ।—ध व ग्र

मूमाणो—देखो 'मामाणो' (रू भे)

मूमारको—देखो ममारखी' (रू भे)

मूमारखी—देखो 'ममारखी' (रू भे)

उ०—१ बीकानेर रावजी नू मेल्हिया, कोट फतेह कियां री मूमारखी सो मेल्ही ।—ठा. जे

उ०—२ सारै लोग मूमारखी दीवी —गौड गोपाळदास री वारता

उ०—३ सारा ठाकुर गढ ऊपर जाय महाराज नू खबर मूमारखी मेल्ही ।—मारवाड रा अमरावा री वारता

मूमीठो मू'मीठो—देखो 'मुहमीठो' (रू भे)

उ०—कोडा मे सपूत री कोह, करदला में ज्यू जेमलमेरी टोह जिया जगत जम में वाजीदा है, विर्या ही गरब गांव मे मूमोर्ट ताई घडी खड वेगराज जी मू'र्त री नाव मिवरण सिरै अर नाम जादीक हो रैयी है।—दमदोख

मूया-स० पु०—राठोड वश की एक उप शाखा।

मूरी—देखो मोरी' (रू भे)

मूळ—देखो 'मूळ' (रू भे)

मूळी—देखो 'मूळी' (रू भे)

मूवो-वि०—१ मृत, मरा हुवा।

उ०—१ परवार गयो पिस्तावणों करू न मूवां कथ री। म्हांरो महा दु'ख मेट दै, भलो हुवे भगवत री।—ऊ. का

२ देखो 'मूडो'(रू भे)

उ०—मडाणे री मूवो, मर लूणामर ग्राम री मवाल, मारजा री हाल हुकम वांणिया भूपाल।—दमदोख

मूमणो, मूमबो—देखो 'मूमणो, मूसबो, (रू भे)

उ०—१ उत्तम मूसे एक भड, मध्यम दूहा मूम। अधम गीत मूसे अडर, त्रिविध कुकवि विण तूम।—वा दा

मूसणहार, हारो(हारी), मूसणियो—वि०।

मूसिओडो, मूसियोडो, मूस्योडो—भू० का० कृ०।

मूसीजणो मूसीजबो—कर्म वा०।

मूसल—देखो 'मूसल' (रू भे)

उ०—मीकां कुळ लोपी जगत न जोपी, गोपी मे गावदा है। जरवावण जोगा मूमल मोगा, गोगा गुरु गावदा है।—ऊ का

मूमळी, मूमली—देखो 'मूमळी' (रू भे)

उ०—मरडा मोगरि मूनली तापस तेली कद। पाजसा क्षीर गपूरीया चद चमागी चद।—मा का प्र

मूमारो-स० पु०—चोर।

उ०—कोई मूमारो मूसी गयो। कचु कसण ते लक की वेढ।

—वी दे

मूसाळ—देखो 'मोसाळ' (रू भे)

मूसो-स० पु०[अ० मूसा] १ यहूदियो के एक पैगवर, हजरत मूसा।

२ चूहा।

उ०—चीटी के मुख मेर समाना मूसै गिली मजारी। दादुर मगर समद मे टारया, लोकी परि असवारी।—ह पु वा

मूह, मूहई—देखो 'मुख' (रू भे) (उ र)

उ०—मूछा दाढी मूह फूकदे बाने फीटा। धुक धुक दे नित बुरा काळजा करदे कीटा।—ऊ का

मूहणो—देखो 'मू'गो' (रू भे)

उ०—वाई रा जोडू म्हारा वीराजी री वाट ए माहेरो मूहगो मोल रो।—लो गी

मूहडउ—देखो 'मूडो' (रू भे)

उ०—मांगम मांगि माम ने मूहड, गिविदना नह पामि रे। लोही सु मूहडउ वलि लेपइ, आवी निज आवासि रे।—स कु

मूहडो—देखो 'मूडो' (रू भे)

उ०—जद स्वामीजी कह्यो-म्हे तो यू न कहां-मूहडो दीठा स्वरग नरक जाय पिण थांरी कहिणी रे लेखे थारो मूहडो तो म्हें दीठो सो मोक्ष ने देवलोक तो म्हें जास्यां। अने म्हारो मूहडो थे दीठो सो थांरी कहिणी रे लेखे थारे पानें नरक ईज पडी।—भि द्र

मूहनाळ—१ देखो 'मूहनाळ' (रू भे)

२ देखो 'मोहनाळ' (रू भे)

मूहो—देखो 'मुख' (रू भे)

उ०—पत मेडता समर पत साहां, अणिया मूहे दीव उभेल। वीरमदेव आवता वासे, अन गवां पायो ऊवेल।

—राव वीरमदेव मेडतिया राठोड री गीत

मू—१ देखो 'मू' (रू भे)

उ०—१ वसि तू सूर वसि मू वीक नेजे सवूह घातउ निभीक। वरनविय राइ हाकलि व्रहास, नेठव्हिय तुगी निव्रेहि नास।—रा ज सी

उ०—२ म मगि कीचक कूड निकालिजा, मरी य मू करि मूढ म जालिजा।—सालिसूरि

२ देखो 'मु' (रू भे)

मूअणो, मूअबो—क्रि० अ० [स०—मृत] प्राणान्त होना देहावसान होना, मरना।

उ०—१ मा मूई जव एहनी, तव ए लघुतर बाल रा०। पय पाई मोटो कियो, एम कहै भूपाल रा०।—वि कु

उ०—२ उत्तम कुमर किहा अछै, आगलि कहि अतात। जीवै छै किवा मूओ, भाजि भांजि मन भ्रांत।—वि कु

उ०—३ नलनि नरति नयी जणाती, जीवि छि के मूओ। वलतु समाचार नथी रे, यहि निमा थ्यु जूओ।—नलाख्यान

मूअणहार, हारो (हारी), मूअणियो—वि०।

मूओडो—भू० का० कृ०।

मूईजणो, मूईजबो—भाव वा०।

मूअळी—देखो 'मूमळी' (रू भे)

मूईमाटी—स० स्त्री०—१ लाश, शव, मृत शरीर।

२ मरे हुए प्राणी का मास।

मूउ—देखो मूवो' (रू भे)

उ०—आकुलउ अति सुयोधन हूउ। कउण जीवइ किहां कुण मूउ।

—सालिसूरि

मूओडो-भू०का०कृ०- मरा हुआ, मृत।

(स्त्री०मूओडी)

मूओ—देखो 'मूवो' (रू भे)

मूक-वि० [स०] १ जो वांणी मे रहित हो, बोलने मे असमर्थ हो, वाणीहीन, गूगा।

२ जो कुछ बोलना नहीं चाहता हो, मौन हो चुप हो, शान्त।

उ०—हुइ मो कायर रण हुवै, मह चोढा सह मूक। वाहे रावत ही

वधा, रग रग कटता रूक ।—रेवतसिह भाटी
३ अवाक्, स्तभित ।
४ विवश, लाचार ।
५ दीन, अभागा ।
६ पागल, मूर्ख । (ह ना मा)
७ मौनी ।
स०पु० [स०मूक] १ दानव, दैत्य राक्षस ।
२ गूगा या मूक व्यक्ति ।
३ हिरण्य कशिपु के वश का एक राक्षस, जो सुद एव ताटका का पुत्र था ।
४ तक्षक वश का एक नाग, जो जनमेजय के सर्प सत्र में दग्ध हुआ था ।
५ एक चाण्डाल, जो अत्यन्त मातृ एव पितृ भक्त था ।
६ एक दानव जो इन्द्रकील पवत पर रहता था ।
७ मछली ।
रू०भे०—मुक्क, मुगउ,
मूकणौ, मूकबौ–क्रि०स० [स०मुक्त प्रा०मुक्कणौ स०मोक्तव्य, मोच्य] १ परित्याग करना, त्यागना, तज देना, छोड़ देना ।
उ०—१ कोड़ प्रकारा खून कर मूकं नही मुकाम । वेरा सू पौरस घणौ, केहर केरा काम ।—वां दा
उ०—२ भूपाळ भिडै मीमेण छळि,अछर मोह मूक्यो सबळ अतरह जोति अविणास यह, गयो भेद सूरज-मडळ ।– गु रू. व
उ०—३ रग भोम रतग सुढळै रौदां मारुत मूकं मांण । मदमूक महाबळ प्रम परध्रळ वारामास बसाण ।—मा वचनिका
उ०—४ आसं पासं लोक मिल्या तेह निसुणी कूक । कूहं चित्त सती पग रोवं प्रीय गयो मुझ मूक ।—घ व ग्र
उ०—५ मन वसियो वइराग हो राजेस्वरजी, मूकी हो माया ममता मोहनीजी ।—स.कु
२ फेंकना, चलाना, छोडना ।
उ०—मूकं सर हेक ताडका मारी चड सुवाहु हणै कर चाथ । जिग कियो वनुख भग जालम, रग भुजा थारा रघुराव ।—र रू
३ घटाना, मिटाना, लोपना, छोडना ।
उ०—१ उरडं दळ समहर उदमादा । मूकी किर सामदा मजादा ।
—सू प्र
उ०—२ कलियाणोत भाजतं कटकं, अरि अत देखि वचत जो अग । मेरू चलत मजा दधि मूकत पळटत तरण पकत घर पग ।
—महेस कल्याणोत सांखला रौ गीत
उ०—३ ऊवो मुख दस माम गरभ मे, असुचि तणो पिंड वाधो रे । नीसरियो जब दुख विसरियो मूक दीनी मरजादो रे ।—जयवाणी
४ बधन मुक्त करना, आजाद करना, छोडना, मुक्त करना ।
५ दूर करना, अलग करना, हटाना ।
उ०—अहिडी अमनि नवि भारि अपूरव अमनि जाणी । राजा तुहि मूकि नहीं ते सुणतां अम्रत वाणी । हसि हरिनू समरण कीघू तू छि दीनानाथ, कठिण थयु रा नयी मूक तु ग्रही रहु छि हाथ ।
—नलाख्यांन
६ तय करना, निश्चित करना, निपटाना सलटाना ।
७ भेजना, पठाना ।
उ०—१ तांम साह (ह) जिहगीर, लिखे मूक्यो परमाणो पळ खूटो खुरसाण, सम्रळा अजु खूमाणो ।—गु रू व
उ०—२ मूक्या लिखी दाराव उतामळ । खांना सामुहा कागळ ।
—गु रू व
उ०—३ कहीयो जी म्हारा घर सू उठीया, म्हारी वाहर थानु मूकीया तै म्हारी वडाई —चौबोली
उ०—४ ताहरा ऊदो कहै–सिस्वरैजी री वेटी थाह–रै वेटे नू दीनी छै । देव उठिया पछै बामण मूका छा पधारिज्यो ज्यूं परणावा ।
—ऊदै उगमणावत री वात
उ०—५ मया करीनं मूकजो कुमळ खेमना लेख । लीला पति लख जो वळी स्माचार सु विसेख । —ढो मा
८ प्रदान करना, देना ।
९ झोकना, डालना, पटकना, छोडना ।
उ०—त्रिण मूकत झाळ उठै तरसै । रिण माझि पतग पडै हरसै ।
—मा वचनिका
१० तोडना ।
११ रखना, धरना, टिकाना ।
१२ (उच्छ्वास) निकालना, छोडना ।
उ०—खरो हो अयाणउ उफिरई, आठमो ठांव रवि वारमो राहु । ग्रह गणतो अतिहि वीरा, सिर धुणी मूका छइ धाह ।—वी. दे
१३ अकुरित करना, निकालना (पत्ते) ।
मूकण हार, हारो(हारी) मूकणियो—वि० ।
मूकिओडो, मूकियोडो, मूक्योड़ो—भू० का० कृ० ।
मूकीजणो, मूकीजबो—कर्म वा० ।
पमूकणो, पमूकबो, पमूकणो, पमूकवो, पमूखणो, पमूखवो, पिमूकणो, पिमूकवो, प्रमुकणो, प्रमुकवो, प्रमुक्कणो, प्रमुक्कणो, प्रमूकणो, प्रमूकवो, मुकणो, मुकवो, मुक्कणो, मुक्कवो, मुहकणो, मुहक्वो मूकणो, मूकवो, मोकणो, मोकवो,—रू०भे० ।
मूकता–स०स्त्री०—१ मूक होने की दशा, अवस्था या भाव ।
२ गूगापन ।
मूकपाहाड–स०पु०—देखो 'रिमीमूक' ।
उ०—दनां दाखियो मूकपाहाड देखो ' प्रभू पच जोधा महासूर पेखो ।
—सू०प्र०
मूकरडै—देखो 'मुकरडै' (रू भे)
मूकाणो, मूकावो–क्रि०स० [मूकणो' क्रिया का प्रे०रू०] १ परित्याग करवाना, त्याग करवाना, छुडवाना ।

२ फेंकवाना, चलवाना, छुड़वाना ।

३ घटवाना, मिटवाना, लोपाना, छुड़वाना ।

४ बंधन-मुक्त कराना, आजाद कराना, छुड़ाना, मुक्त कराना ।

५ दूर करवाना अलग करवाना हटवाना ।

६ तय कराना, निश्चित कराना, निपटवाना, सलटवाना ।

७ भिजवाना, पठवाना ।

८ प्रदान करवाना, दिरवाना ।

९ झोंकाना ढलवाना, पटकवाना छुड़वाना ।

१० तुड़वाना ।

११ रखवाना, धरवाना, टिकवाना ।

१२ अंकुरित कराना निकलवाना (पत्ते)

मूकाण हार, हारो(हारी), मूकाणियो - वि० ।

मूकायोडो—भू० का० कृ० ।

मूकाईजणो, मूकाईजवो—कर्म वा० ।

मूकाणो, मुकावो, मूकावणो, मुकावणो, मुकाणो, मुकावो, मुकावणो, मुकावबो, मूकाणो, मूकावो, मूकावणो मूकावबो—रू०भे० ।

मूकायोडो—भू० का० कृ०—१ परित्याग करवाया हुआ, त्याग करवाया हुआ, छुड़वाया हुआ २ फेंकवाया हुआ, चलवाया हुआ, छुड़वाया हुआ ३ घटवाया हुआ मिटवाया हुआ, लोपाया हुआ, छुड़वाया हुआ ४ बंधन-मुक्त कराया हुआ, आजाद कराया हुआ, छुड़ाया हुआ, मुक्त कराया हुआ ५ दूर करवाया हुआ अलग करवाया हुआ, हटवाया हुआ ६ तय कराया हुआ निश्चित कराया हुआ, निपटवाया हुआ, सलटवाया हुआ ७ भिजवाया हुआ, पठवाया हुआ ८ प्रदान करवाया हुआ, दिरवाया हुआ ९ झोंकवाया हुआ, ढलवाया हुआ, पटकवाया हुआ, छुड़वाया हुआ. १० तुड़वाया हुआ ११ रखवाया हुआ, धरवाया हुआ, टिकवाया हुआ १२ अंकुरित कराया हुआ, निकलवाया हुआ ।

(स्त्री०मूकायोडी)

मूकावणो, मूकावबो—देखो मूकाणो, मूकावो' (रू भे) (उ र)

उ०—एक वार आगइ दैत्यवु रामइ रुद्र मूकाव्यउ बीजी वार वळी वैरोचनि, भगति विमेस जगाव्यउ ।—कां द प्र

मूकावणहार, हारो (हारी), मूकावणियो—वि० ।

मूकाविओडो, मूकावियोडो, मूकाव्योडो—भू० का० कृ०

मूकावीजणो मूकावीजबो—कर्म वा० ।

मूकावियोडो—देखो 'मूकायोडो' (रू भे)

(स्त्री० मूकावियोडी)

मूकि—देखो 'मुक्ती' (रू भे)

मूकियोडो—भू० का० कृ०—१ परित्याग किया हुआ, त्यक्त, छोड़ा हुआ २ फेंका हुआ छोड़ा हुआ, चलाया हुआ ३ घटाया हुआ, मिटाया हुआ, लोपा हुआ ४ बंधन मुक्त किया हुआ आजाद किया हुआ, छोड़ा हुआ ५ दूर किया हुआ, अलग किया हुआ, हटाया हुआ ६ निश्चित व तय किया हुआ निपटाया व सलटाया हुआ ७ भेजा हुआ, पठाया हुआ ८ प्रदान किया हुआ, दिया हुआ ९ झोंका हुआ, डाला हुआ, पटका हुआ, छोड़ा हुआ १० तोड़ा हुआ ११ रखा हुआ, धरा हुआ, टिकाया हुआ १२ (उच्छ्वास) निकाला हुआ, छोड़ा हुआ १३ अंकुरित किया हुआ, निकाला हुआ । (पत्ते)

(स्त्री० मूकियोडी)

मूकी मूकी—देखो मुक्की' (रू भे)

उ०—१ जोर प्रबळ तन सधग्जो, सबळ पकडले सीह । दुसमण वीची भाजदे महिख एक मूकीह । पा प्र.

उ०—२ हे कथ थे भागळ बगा जुद्ध सू जीतता आय काही कीधो। इयू कह हाय हाय कर बळती थकी छाती मे दोनू हाथ हणिया छाती मे मूकीयां वाही ।—वी स टी

मूको—देखो 'मुक्की' (रू भे)

मूक्की—देखो 'मुक्की' (रू भे)

मूक्को—देखो 'मुक्को' (रू भे)

मूक्ता—देखो 'मुक्ता' (रू भे)

मूख—देखो मुख' (रू भे)

उ०—नमो मोहणी कमळा मूख मूनी । नमो घोम धूतारणी सभ धूनी ।—मा वचनिका

मूखक—देखो 'मूसक' (रू भे) (अ मा)

उ०—मन दुसह दुहु विष माहरै असह वार लगै इसी । मुख लियां कठण न गेंद्र मनु, जग सदोख मूखक जिसी ।—रा रू

मूखमल, मूखमलू—देखो 'मखमल' (रू भे)

उ०—वरणू वरणू के विलास सेतु मे कायम आरसी से मजुल मूखमलू से मुलायम वरवागू के साचे पयराउ री घाव ।

—र रू

मूखो—देखो 'मुख' (रू भे)

उ०—देखि जठाणी लागी छड़ जेठ । मूखी कुमलाणी अरि सूकइ छइ होठ ।—वी दे

मूगता—देखो 'मुक्ता' (रू भे)

मूगताफळ मूगताहळ—देखो 'मुक्ताफळ' (रू भे)

मूगनउ—स० पु०—एक प्रकार का वस्त्र विशेष ।

उ०—वीणउमीउ चीणउमीउ मलउमीउ आउचीयउ मूगनउ मयउ मगल्लिक मेदियउ ।—व स

मूगळ—देखो 'मुगळ' (रू भे)

उ०—१ मुखं चख चोळ मरूप मजीठ । बबोहत सावळ मूगळ धीठ ।—सू प्र

उ०—२ मग्रा दळ मूगळ मैंयद मेख । वर्ण ग्रह बाज कबूतर वेख ।

—मे म

मूगळी—देखो 'मुगळी' (रू भे)

उ०—मूगळी घडा आवइ मजूम । जामूस फिरइ पसत जापूस ।

—रा ज सी

मूगीग्रो, मूगीयौ—देखो 'मूगियौ' (रू भे)
उ०—ग्रमरीग्रा सूहवीग्रा मूगीग्रा चलवलीग्रा चारूलीग्रा । —व स

मूगेडो, मूगोडौ—देखो 'मूगोडी' (रू भे)

मूघो—देखो 'मूंगौ' (रू भे)
उ०—ग्राठ सिध थापणी थाळ ग्रासाऊवा, ग्रापणी माळ नवनिध ग्रनूघा । रिघव रूक दे मूघा न व्है रायहूर, सकत सूवा तणी राय सूघा —दळपत बारैठ

मूचो—देखो 'मूछौ' (रू भे)
उ०—चालू बात रै भच मूचौ देय ओली—पूख खाया नै केई जुग बीत्या —फुलवाडी

मूछ—देखो मूछ' (रू भे)

मूछडी—१ देखो 'मूछ' (ग्रल्पा, रू भे)
२ देखो 'मोछडी' (रू भे)

मूछण-स०स्त्री०—१ छीलने या काटने की क्रिया या भाव ।
२ भोजनोपरान्त मुह साफ करने की क्रिया या भाव।
३ भोजनोपरान्त मुह साफ करने निमित खाया जाने वाला पान सुपारी, इलायची ग्रादि पदार्थ ।
उ०—पछै गगजला सु इलायची, कपूर वामता जल सु मनुहारं मनुहार चळु किया । उपरा पांन कपूर, फाल, कसतूरी, लूग सु मूछण कराया ।—राव रिणमलरी बात
४ शराव पीते समय व ग्रफीम लेने के बाद मुह का स्वाद बनाने के लिये खाया जाने वाला पदार्थ, चुर्वन ।
रू० भे० मूछण, मोछण,
ग्रल्पा,—मूछणियो, मूछणो

मूछणो, मूछवो—क्रि० स०—१ लकडी ग्रादि के छोर या सिरे को कारीगरी से काट कर बरावर करना छीलना ।
२ काटना ।
उ०—ग्ररावां घडड भालै नगा 'फता वत मेघ मीना ग्रतर समर विच मूछता । पमर घर हमर दुनिया पतोजा, वगर खागा पडै 'ग्रगर' वीजा ।—ग्रज्ञात
मूछणहार, हारौ (हारी) मूछणियौ—वि० ।
मूछिग्रोड़ो मूछियोडो मूछघोडो—भू० का० कृ० ।
मूछीजणो, मूछीजबौ—कर्म वा० ।
मूछणो मुछवो मूछणो, मूछवो —रू० भे० ।

मूछरेल, मूछरैल—देखो 'मूछाळ' (रू भे)
उ०—तैही लक साग सो जोजना गिरा तूछरेळ । मूछरैल ग्रढांगा ग्रयारा मेन मीच ।—र ज प्र

मूछाणो मूछाबो—क्रि० स० [मूछणो' क्रिया का प्रे० रू०] १ लकडी ग्रादि के छोर या सिरे को कारीगरी से कटवाकर बरावर करवाना, छीलवाना ।
२ कटवाना ।
मूछाणहार, हारौ (हारी), मूछाणियौ—वि० ।
मूछायोडो—भू० का० कृ० ।
मूछाईजणो, मूछाईजवौ —कर्म वा० ।
मुछाणो, मुछावो, मूछाणो, मूछावौ—रू० भे० ।

मूछायोडो—भू० का० कृ०—१ लकडी ग्रादि के छोर या सिरे को कारीगरी से कटवा कर बरावर करवाया हुग्रा २ कटवाया हुग्रा ।
(स्त्री० मूछायोडी)

मूछाळ—देखो 'मूछाळ' (रू भे)
उ० – तो काळा सरप रा घर में विल मे ऊदरा ही वडै है । उठै इज चेजो करै सो मूसा ही कहदे ही कै म्हेई मूछाळ मूछा वाळा हा ।—वी स री

मूछाळी—देखो 'मूछाळी' (रू भे) (ना डि को)

मूछाळौ—देखो 'मूछाळ' (ग्रल्पा, रू भे)
उ०—ग्राव्या सुणी म्लेछ मूछाळा, रण राउतवट कीधी । वतड भराइ पहिला घाउ लेमू, भ्रम्र प्रतन्या लीवी ।—का दे प्र

मूछियोडो—भू० का० कृ०—१ लकडी ग्रादि के छोर या सिरे को कारीगरी से काट कर बरावर किया हुग्रा, छीला हुग्रा २ फाटा हुग्रा ।
(स्त्री० मूछियोडी)

मूछियौ, मूछौ—स० पु०—१ लकड़ी के शिरे की कारीगरी से को जाने वाली कटाई ।
२ तरास, कटाई ।
३ काटने की क्रिया ।
रू० भे०—मुच्छ, मूचो,

मूज—देखो 'मूज' (रू भे)

मूजणो, मूजवौ—देखो 'ग्रमूभणो ग्रमूभवौ' (रू भे)

मूजाणो, मूजावौ—देखो 'ग्रमूभाणो, ग्रमूभावौ' (रू भे)
मूजाण हार, हारौ (हारी), मूजाणियौ—वि० ।
मूजायोडो—भू० का० कृ० ।
मूजाईजणो, मूजाईजवौ—कर्म वा० ।
मूभाणो, मूभावौ—रू० भे० ।

मूजायोडो—देखो 'ग्रमूभायोडो' (रू भे)
(स्त्री०मूजायोडी)

मूजिव—देखो 'मुजव' (रू भे)

मूजियोडो—देखो 'ग्रमूभियोडो' (रू भे)
(स्त्री०मूजियोडी)

मूजी—वि०—कृपण, कजूस, सूम ।

मूझ—देखो मुझ' (रू भे)
उ०—१ म ठेल म ठेल पगा सु मूझ । त्रिविक्रम राय दीनानाथ तूझ । जटाधर वछै दैत जळाय । विमोहे रूप ग्रसाध्य वणाय । —ह र
उ०—२ मागू मुज दीजै चवि स्रीमुख । सरव राज सम तूळ मूझ सुख ।—सू प्र

उ०—३ कायर थाको दौड़कर, ससि सू करै पुकार। अग ज्यू मूझे वमावजै, मडळ तणै मझार।—वा दा

मूभणो, मूभवौ—देखो 'प्रमूभणो, प्रमूभवौ' (रू. भे) (उ र)

उ०—१ मागन लाधै भाण रथ, रज डवर घेरी। माहे अग मूझे मरै, नह लम्मै सेरी।—द दा.

मूझणहार, हारौ(हारी), मूझणियौ—वि०।

मूझिपोडौ, मूझियोडौ, मूझयोडौ—भू० का० कृ०।

मूझीजणो, मूझीजवौ—भाव वा०।

मूझाणो, मूझावौ—१ देखो 'ग्रमूझाणो, ग्रमूझावौ' (रू भे)

उ०—पूरण ग्यान दमा मन आणी, वेधक आणी वखाणीजी। विवुध भणी ग्रवबोध ममाणी, मूरख मति मूझांणी जी।—वि कु

मूझाणहार हारौ(हारी),मूझाणियौ—वि०।

मूझायोडौ—भू० का० कृ०।

मूझाईजणो, मूझाईजवौ—कम वा०।

मूझायोडौ—देखो ग्रमूझायोडौ' (रू भे)

(स्त्री०मूझायोडी)

मूझियोडौ—देखो 'ग्रमूझियोडौ' (रू भे)

(स्त्री०मूझियोडी)

मूझे मूझै—देखो 'मुझे' (रू भे)

मूटो—देखो 'मुट्ठी' (रू भे)

उ०—मूट्या सू ममळता पिमळता डाढा पीसै। पोसत छाण' र पिये दमत रा दोमत दीसै।—ऊ का

मूठ—स०स्त्री० [स०मुष्टि] १ किसी उपकरण, औजार या शस्त्र का वह भाग जो हाथ मे पकडा जाता है। दस्ता, वेंट।

उ०—१ आए सिघ न होनै अगा। खग रख दोदो घनुख निखगा। ट्रेक वाण गज प्राण प्रहारै, मूठ अपूठी 'केहर' मारै।—रा रू

उ०—२ पाधरी मूठ माथै हाथ गियो। मपाक करती गाढाळी बारै काढी।—फुनवाडी

२ मुट्ठी।

उ०—१ जन हरीया मन मूठ गहि, मनद मळाका माधि। काळ कुबिधि मुमारियै, तन तरगम कु साधि।

—श्री हरिरामदासजी महाराज

उ०—२ चन्न केसर छिरकत मोहन, अपने हात बिहारी, भरि, भरि मूठ गुलाल लाल चहु देत मवन पै टारी।—मीरां

उ०—३ नाव रै हाय माहोरी कवांण री छ। वडी तपरीया रा तीर च्यार तो मूठ में छै ग्रोर तरगस दोय होदा मे छै।

—ढाढाळा सूर री वात

३ मुट्ठी म आने लायक किमी पदार्थ की मात्रा।

४ जादू टोना या तान्त्रिक षट कर्मों मे से एक जिसके द्वारा किसी प्राणी को मारा जाता है, मारण।

उ०—१ पूनै कर कर पोर,घर घर नूतै गाम मे। वळे जगावै ग्रोर, मूठ चलावै मोतियां।—रायसिंह सांदू

उ०—२ पूगी नाळ गाजियो परवत, पदरै सहस गारड़ी पूठ। फणघर डमण ऊठियो फोजां, मत्र जडी लागै न मूठ।

—ऊकाजी बोगसो

क्रि० प्र० आणी, चलाणी, मारणी,

१ चोरी का माल। (उ र.)

रू० भे०—मुठ, मूठ, मूठि, मूठी, मूठि,

मूठडी—स० स्त्री० [स० मुष्टि] १ मुट्ठी के आकार की बाटी, जिसे सेक कर चूरमा बनाया जाता है।

२ मुट्ठी की धीमी चोट।

३ देखो 'मुट्ठी' (अल्पा, रू भे)

उ०—मारह चलतं परठिया, आगण बीखडियाह। सोमी हिये लगाडिया, भरि भरि मूठडियांह।—अग्यात

रू० भे०—मूठडी,

मूठदार—स० पु०—१ पगडी को सिर पर बांधने का एक ढग।

२ कोई उपकरण या शस्त्र जिसके मूठ लगी हो।

मूठरदौ—स० पु०—बढई का एक उपकरण, जिसे हाथ मे पकड़ कर लकडी साफ की जाती है।

मूठाणो, मूठावौ—देखो 'मुठाणो, मुठावौ' (रू भे)

मूठावणो, मूठाववौ—देखो 'मुठाणो, मुठावौ' (रू भे)

उ०—मूठावै खग मूठ, चालै भारत सांम्ह ही। सूवेज खाधी सूठ, मात मलाई मोतिया।—रायसिंह सादू

मूठाली—स० पु०—तलवार। (हि को)

मूठि—१ देखो 'मूठ' (रू भे) (उ र)

उ०—१ जर कथा फाटै जोगेमां, साचा पाव माडिया मेस। सार मूठि वावै गाजी सुत, अमर नाथ हाडा आदेस।

—अमरसिंह हाडा रौ गीत

उ०—२ रुखमइयां का वाण काढिवा की ताई। सिम्ह्ती बाधी। अणी मूठि द्रिढि एक सिम्ति की।—वेलिटी

२ देखो 'मुट्ठी' (रू भे.)

मूठियो—स० पु०—१ काच, लाख, हाथीदांत आदि की बनी चूडियो का समूह जिसे औरतें हाथ की कलाई पर धारण करती हैं।

२ घास या चारे की मुट्ठी में समाने लायक मात्रा।

३ पशु की टांग का नीचे का भाग।

उ०—किसा ह्रैक घाडा छै? वेपख मला, ऊचा ग्रलला कटोरा नखा, आरसी मारीसा, तिग्रगळ गाळा मूठिया वील फळा।

—रा सा स

रू० भे०—मुठियौ, मुठीयौ, मूठियौ।

मूठी—देखो 'मुट्ठी' (रू भे)

उ०—१ जग थित झूठी जाणणी, मूठी मौह म रक्ख। माया मेवो मादुवां चगा चाखव चक्ख।—वा दा

उ०—२ सवरी के बोर सुदामा के तदुल, भर भर मूठ्यां ढूकी।

—मीरां

उ०—३ गुलावी नख वच्योडी मूठ्यां मे जाणें आखी दुनिया ई भीच्योडी ।—फुलवाडी

मूठी'क–अव्यय—मुट्ठी के बराबर, मुट्ठी के अनुपात मे । मुट्ठीभर ।

रू० भे०—मुठीक,

मूड—१ देखो 'मूड' (रू भे)

२ देखो 'मुंड' (रू भे)

मूडणौ, मूडबौ—देखो 'मूडणौ, मूडबौ' (रू भे)

उ०—माया सब जग मूडीया, विना पाछ्रणं मूड । जन हरीया विन मूडीयां, रह्या राम का रुड ।—श्री हरिरामदास जी महाराज

मूडणहार, हारौ (हारी), मूडणियौ—वि० ।

मूडिग्रोडौ, मूडियोडौ, मूड्योडौ—भू० का० कृ० ।

मूडीजणौ, मूडीजबौ—कर्म वा० ।

मूडधर–स० पु०—रावण । (अ मा)

मूडाणौ, मूडाबौ—देखो 'मूडाणौ, मूडाबौ' (रू भे)

मूडायोडौ—देखो मूडायोडौ' (रू भे.)

(स्त्री० मूडायोडी)

मूडावणौ, मूडावबौ—देखो 'मूडाणौ, मूडाबौ' (रू भे)

उ०—निस्कटक राज्य प्रतिपालता सग्राम विसय कदाचित् उपजइ, विपखा ग्रहरुरुखा सांचरिया, क्षेत्र मूडाविउ, विहु गमी सन्नद्धबद्ध नीपना'' ।—व स

मूडावियोडौ—देखो 'मूडायोड़ौ' (रू भे)

(स्त्री० मूडावियोडी)

मूडियोडौ—देखो 'मूडियोडौ' (रू भे)

(स्त्री० मूडियोडी)

मूडीकट—१ घोडे की एक किस्म विशेष । (१)

२ उक्त किस्म का एक घोडा ।

उ०—लिखियौ हुतौ, असल मूडीकट छै दोय पख सुध छै । ऐराकी छै ।—हाहुल हमीर री वात

मूडौ–सं० पु०—देखो 'मुड्डौ' (रू भे.)

२ देखो 'मूडौ' (रू भे)

उ०—सेठा नै पाछौ खरायनै पूछयौ आज तौ किणी भला आदमी री मूडौ जोयौ, म्हनै पूरौ राजी कर दिरावीला ? —फुलवाडी

३ देखो 'मोडौ' (रू भे)

उ०—घावणी द्रोडरा, मूडा भ्रिव ज्यौ कूदता, नज ज्यौं नाचता, कुळचता , ।—रा सा स

मूढ–वि० [स०] जड बुद्धि, मति मन्द, मूर्ख बुद्धि हीन, अनपढ । (ह ना मा)

उ०—१ राम नाम मत वीसरै आतम मूढ अयाण । काळ सकळ जग काटवा, कम ऊभौ केवाण ।—ह र

उ०२ पढ़िया विना मूढ पग फावै, पढिया विचै पुमाई नै । उण रै ढिग कोई रहै आदमी, तो क्योहिक कसर कुमाई नैं ।—ऊ का

उ०—३ दरवाजा सूमां तणा, मूढा तणा हियाह । खुलिया । माथा पच किया, सो नह साभळियाह ।—वां दा

२ दुष्ट, दुर्वुद्धि, कुबुद्धि ।

उ०—१ समझ सठ आतम ज्ञान अग्यानी माया वादी गूढ मसकरा मूढ महा अभिमानी ।—ऊ का

उ०—२ मूढ जिकै गुरु मत्र ज्यू , चुगली स्रवण सुनत । राग तान रीझळ नहीं, ढोलौ सीस धुनत —बा, दा

स०स्त्री०—१ योग में, चित्त की एक वृत्ति

रू०भे०—मुड, मूडड्, मुढ, मुढ्ढ मुरड, मूढ.

२ देखो 'मुढ' (रू भे) (ह ना मा)

३ देखो मूढ' (रू भे)

मूढ़ गरभ–स०पु०—१ वह गर्भ जो विकृत हो गया हो, ।

मूढ़ता–स०स्त्री० [स०] १ मूढ होने की दशा अवस्था या भाव ।

२ मतिमन्दता, मूर्खता, बुद्धिहीनता ।

उ०—१ भवाब्धिनाथ भावना, विभू नही विकारसी । मदीय मे न मूढ़ता त्वदीय है न तारसी ।—ऊ का

उ०—२ राजा नै जितौ राणी री समझ अर उण रै गुणां माथै भरासौ हौ, राणी नै उत्तौ ई राजा री नासमझी अर उण री मूढता माथै भरोसौ हौ ।—फुलवाडी

३ नासमझी, बेवकूफी ।

उ०—तीडौ राव विकट मूढता री वात केरी ही अर वा ई उण री पार गी परी ,—फुलवाडी

४ असभ्यता ।

५ अज्ञानता ।

उ०—सुख री वातां माथै हरख मनावणौ अर दुख री वाता माथै रोवणौ–रींकणौ आ तौ निपट मूढ़ता है ।—फुलवाडी

६ गवारूपन ।

उ०—पढै गुणें नही पेखवै, चारु ही वरण निचित । मारवाड री मूढता, मिटसी दोरी मित ।—ऊ का

मूढौ—देखो 'मूडौ (रू भे)

उ०—१ सूरज उगाळी सुनार सामी मिळै, लोग मूढौ फोरै, सामै सिर सळ घालै ।—दसदोख

उ०—२ ग्यान पथरणों घरियौ गूढां । मेली विद्या रजाई मूढा ।
—ऊ का

मूण—देखो 'मूण' (रू भे)

मूणपठौ–स०पु०—मूण के आकर से मिलता जुलता ।

उ०—घरां मोकळी खेती वाडी हुवै, वींणं रौ घमरोळ राखै । मीठा मीठा मूण-पठ्ठा मतीरा राजाजी ताई पुगावै अर सोथाव पावै ।
—दसदोख

मूणियड—देखो 'मणियड' (रू भे)

मूत–स०पु० [स०मूत्रम्] १ पेशाब, मूत्र ।

उ०—१ पाद तणौ परधान, गादरौ साप्रत गोटौ । असुभ चले को अनुग, मूत रौ भाई मोटौ ।—ऊ का

उ०—२ वोली-ओ होक तो घण्या ! घणी खमा ! अठै तो मूत देवता री मिदर माडू हू।—दसदोष

मुहा०—१ मूत उतरणो = अत्यधिक डर या भय के कारण पेशाब कपडों में ही आजाना।

२ मूत काढणो = इतना मारना या डराना कि पेशाब आजाये।

३ मूत निकलणो = देखो 'मूत उतरणो'

४ मूत निकालणो = देखो 'मूत काढणो'

५ मूत वद होणो = एक बिमारी है जिसके कारण पेशाब आना बद होजाता है।

६ मूत री धार मार्थ गावणो = तुच्छ व हेय समझना।

२ पेदाईश, वशज।

उ०—गांवा सहरा गोलगां, रहै हुआ रजपूत। लखणां सू लख लीजिए, मुकर घणा रा मूत।—बा दा

रू०भे०—मूत, मूत्र, मूत्रि।

मूतणियो—देखो 'मूतणो' (अल्पा०, रू भे)

मूतणी-स स्त्री—मूत्रेन्द्रिय।

मूतणो—स०पु०—मूत्रेन्द्रिय।

उ०—रग रो मफेद कूबळी सीगाडी, ओछी अर पतळी पूछ, छोटो मूतणो।—फुलवाडी

रू०भे०—मूतणो मूतरणो

अल्पा०—मूतणियो, मूतरियो

मूतणो, मूतबो-क्रि०म०—पेशाव करना, मूतना, लघुशका करना।

उ०—१ भळै थाडी देर हुई कै एक जणो मूतण टुरियो। छोकरी आगिया फाड फाड जोयो अर बाली—फरीदिया! ओ वारै कुण गयो है? मजूर मूतण गयो है।—वरसगाठ

उ०—२ ऐ बाबू लोग मर्दई किणी रा छिया, बाढो आगळी मार्थ ई को मूतै नी।—फुलवाडी

मूतणहार, हारो(हारी), मूतणियो—वि०।

मूतिओडो, मूतियोडो मूतयोडो—भू० का० कृ०।

मूतीजणो, मूतीजबो—कर्म वा०।

मूतणो, मूतबो, मतणो मतबो—रू०भे०।

मूताणो, मूताबो-क्रि०स०['मूतणो' क्रिया का प्रे०रू०] १ पेशाब करने के लिये प्रेरित करना पेशाब कराना, मूताना।

२ वच्चे या किसी असमर्थ प्राणी को पेशाब करने मे मदद करना।

मूताणहार, हारो(हारी), मूताणियो—वि०।

मूतायोडो—भू० का० कृ०।

मूताईजणो, मूताईजबो—कर्म वा०।

मुताणो मुताबो मुतावणो, मुतावबो—रू०भे०।

मूतायोडो-भू० का० कृ०—१ पेशाब करने के लिये प्रेरित किया हुआ, पेशाब कराया हुआ, मूताया हुआ।

२ पेशाब करने मे मदद किया हुआ।

(स्त्री०—मूतायोडी)

मूतायो-वि० [स्त्री०मूताई] जिसे पेशाब की हाजत या शका हो, लघु शका ग्रस्त।

उ०—१ ना भाई! इयैं कान सुण चाहे वियै, मनै तो इयां को पोसावै नी। तो माजी? तिसाया मूताया तो रयीजै ई कोनी।

—वरसगाठ

उ०—२ नाडा छोड करणै री जी मे आई, जद मारग रैं विचालै ही बैठगी मूताई।—दसदोष

मूतियोडो-भू० का० कृ०—पेशाब किया हुआ, मूता हुआ।

(स्त्री०मूतियोडी)

मूती-स०स्त्री० [स०मूत्र] पेशाब मूती।

क्रि०प्र०—आणी, करणी, लागणी, होणी,

रू०भे०—मुत्ति, मुत्ती,

मूत्र-स०पु० [स०मूत्रम्] वह पानी जो शरीर के विषैले पदार्थों को लेकर उपस्थ मार्ग से निकलता है, पेशाब, मूत। (ड र)

पर्या०—वस्तिमळ, मूत, मेह, स्रव।

मूत्रकच्छ, मूत्रकृच्छ-स पु० [स०मूत्र कृच्छ] पेशाब का एक रोग, जिसमे पेशाब थोडा, थोडा, रुक-रुक कर तथा कष्ट के साथ आता है।

उ०—१ जिण समय दिल्लीस साह जिहांन मूत्रकृच्छ नामक महातक रो प्रकोप थियो।—व भा

उ०—२ महोदर जलोदर कठोदर भगदर अतिसार मूत्रकृच्छ उदरशूल हृदयसूल··· व स

मूत्रग्रह-स०पु० [स०] घोडो का एक रोग जिसमे घोडे के पेशाब थोडा थोडा व झाग लिये हुऐ आता है।

मूत्रदसक-स०पु०—दश प्राणियो के मूत्र का मिश्रण।

वि०वि०—ये प्राणी इस प्रकार हैं—मनुष्य, स्त्री, गधा, भैसा, घोडा, बकरा, गाय, ऊट, मेढा, हाथी।

मूत्रविग्यान-स०पु०पु [स०मूत्र विज्ञान] आयुर्वेदीय मूत्रपरीक्षण विद्या।

मूत्राघात-स० पु० [स०] पेशाब सम्बधी एक बीमारी।

मूत्रासय-स० पु० [स० मूत्राशय] शरीर मे नाभि के नीचे का वह स्थान जहा मूत्र सचित होकर बाहर निकलता है।

मू'था—देखो 'महता' (रू भे)

मूद-स० पु०—कुल्हाडी, फरसी, कुदाली, फावडा इत्यादि का पृष्ठ भाग।

रू० भे०—मूड

मूदडी—देखो 'मूदडी' (रू भे)

उ०—मरद पचमाय्य भूमण कडा मूदडी, कठ डोरी मुरति लवग काना।—मे म.

मूदडो—देखो मूदडो (रू भे)

उ०—मोती का कडा मूदडा माळा, पेसा गाम पटाला। वेगागळ दवाळ वटाळा, माज बाज सिखराला।—अग्यात

मूदणो, मूदबो—देखो 'मूदणो, मूदबो' (रू भे)

उ०—छित फूळ भ्रम छांडै गुरु गम गाडै, माडै चख मूददा है।

चामर कर चोळा झामर झोळा, पामर पद पूजदा है ।—ऊ. का

मूदति, मूवती—१ देखो 'मुदित' (रू भे)

२ देखो 'मदद' (रू भे)

३ देखो 'मुद्‌दति' (रू. भे)

मूदरा—देखो 'मुद्रा' (रू भे)

उ०—कान न मूदरा मेखळा, भसम न अग घसै ।

—स्री हरिरामदास जी महाराज

मूदो—देखो 'मुदो' (रू भे)

उ०—आवियै जेण समार रो व्हे उदो मूदो सब वात री मेह मायै ।—ध व. ग्र

मून-स० स्त्री० [स० मौन] १ चुप या शान्त रहने की क्रिया या भाव।

२ चुप्पी, खामोशी, शान्ति, मौन ।

उ०—देख सरप व्है दादुरा, सब्द कला कर सून । पुरख असैंदो पेख व्है, मावडियां मुख मून ।—वा दा

३ चुप रहने, न वोलने का सकल्प या प्रण, मौनव्रत ।

उ०—१ वातां विगतारै वणै मठ आगै सरवज्ञ । मून ग्रहै छांडै मच्छर, तीखो मिलिया तज्ञ —वा दा

उ०—२ केइ कहै मावद्य दान मे पुन्य पाप मिस्र न कहिणो तिण सू सावद्य दान मे म्हें मून राखा ।—भि द्र

वि०—जो मौन रखता हो, जो वोलता न हो ।

उ०—ऐसैं मैं आरभ कियो, पग चढैं गिर कून । वाद करेवा सरसती, कैसो पोहचै मून ।—गज उद्धार

रू०भे०—मुण, मु न मून, मौन

मूनव्रत—देखो 'मौनव्रत' (रू भे)

उ०—पूरउ तप हूउ पतन्या पूगी, ईसर ताई मूनव्रत लीयइ । वारा जुगा हुती वहुनामी, ताळी छोडी दीह तीयइ ।

—महादेव पारबती री वेलि

मूनाळ—देखो मुहनाळ' (रू भे)

मूनि मूनी—देखो 'मुनि' (रू भे)

उ०—१ ऐ वक मूनी ऊजळा, मीठा बोला मोर । पूछो सफरी पनग नू फ्रत ऊघडै कठोर ।—वा दा

उ०—२ खूनी खळ खचळ ऊनी अचळ, मूनी मिळ मुळकदा है ।

—ऊ का

२ देखो 'मौनी' (रू भे)

मूनेस—देखो 'मुनीम' (रू भे)

उ०—करी ज्याग स्याहाय मूनेस कज्ज । दखे जै जया वोल आनेक दुज्ज ।—र ज प्र

मूफट—देखो 'मुहफट' (रू भे)

मूफतियो—देखो 'मुफतियो' (रू भे)

मूफाड़—देखो 'मूफाड' (रू भे)

मूम—देखो 'मोम' (रू. भे)

मूमल-स० पु०—एक राजस्थानी लोक गीत ।

मूमारखी—देखो 'ममारखी' (रू भे)

उ०—पाछै थटै भखर वादसाह नू मूमारखी फतै पाई री मेल्ही ।

—जलाल वूवना री वात

मूमावडी-स० पु०—एक प्रकार का वस्त्र ।

उ०—नेत्रपट्ट धोतपट्ट राजपट्ट गजवडि हसवडि वोरि आवडी ऊमावडि मूमावडि पूमावडि ।—व स

मूर—१ देखो 'मूळ' (रू भे)

उ०—१ दीनानाथ दयाल सवनि का मूर है । हरि हां जन हरिदास तेज पुज परकास अखडित नूर है ।—ह पु वा.

२ देखो 'मुर' (रू भे)

मूरख-वि०[स० मूर्ख] १ जिसमे वुद्धि का अभाव होने के कारण ठीक ढग से सोचने, विचारने एव काम करने की योग्यता न हो, बुद्धि हीन मूढ, वेवकूफ । (अ मा)

उ०—जद समजू जाणै पोते तो देवै नही अनै दूजा नें पुण्य वतावै । पिण ए वात तो मूरख हुवै ते मानै । पुण्य हुवै तो पहिला पोतै कर दिखावै जद दूजा पिण मांनै ।—भि द्र

२ समझाने पर भी जिसको कोई वात समझ मे न आती हो, मद वुद्धि ।

उ०—१ अग घणा आलगियो, अघर घणारी ऐंठ । नर मूरख जाणै नही, पातरियां री पैठ ।—वा दा

उ०—२ एता सुख ससार का एता सुख न जानि जन हरीया सो सुख है, मूरख ताहि न मानि ।—स्री हरिरामदासजी महाराज

उ०—३ मूरख कथन न मानियो, लमियो मूछ लजाइ । तानू रव न दियो तखत दोनू रवत दिखाइ ।—व भा

पर्या०—अगलज, अगूझ अग्यान अजाण अवुध, अवूझ, अमेध, असन इतिवार, कद क्दवद कुठ खळ, गिवार, जड जथाजात, जालम, डोंढो, निखेद, निलज नेंड, वाळ, व ळम वैधअग मद, मदमति, महाविकळ, मात्रोमुख, मुगध मूक, मूढ, रहित, विकळ, विणवाट विवरण, विमुखगुण, वेवेध्र, वैतवार, सठ, सीमितमुख, स्यांनि-निमठ, स्यानमढ हीण,

स०पु०—मूर्ख व्यक्ति ।

उ०—मुझ नाचता भरह रसाल, ए स्यु जाणइ मूरख ताल । राखि मुझ हीयडइ एह जि चित राति दिवस ए मूरख कत ।

—हीराणद सूरि

२ वन मूग, उर्द ।

रू० भे०—मुरख, मूरिख, मूरूख,

अल्पा०—मुरिखो, मूरखो,

मूरखता, मूरखताई-स० पु० [स० मूर्खता] १ मूर्ख होने की अवस्था या भाव ।

२ मूढता, अज्ञानता, नादानी ।

उ०—म्हनै तौ केई कई बरसा सू ग्रा मोटा मिनखां री ग्रकल माथै पूरो पूरो ग्रमरोसो ई हो, पण मूरखता री इण बांनगी री तौ म्हैं सपना मे ई ग्रास नी करी ही।—फुलवाडी

उ०—२ फरगु री मूरखता माथै चरचा चालै, गोमदै रो काळजो सूक गावण वेगी हालै है।—दसदोख

३ गवारूपन।

रू०भे०—मुरखता,

मूरखाई-स०स्त्री०—मूरखता पूर्ण कार्य, मूरखतापूर्ण बात।

रू०भे०—मुरखाई,

मूरखौ—देखो 'मूरख' (ग्रल्पा, रू भे)

उ०—१ ताहरा राजा री कुवरी सचींत हुई। जो पाछा जाईजे तौ ठोड नही। हिवै मूरखै गति। ताहरा मूरखौ बोलीयो-जो देखी मारदा मोनूं वर दीयौ हिवै हू मूरिख नही।—चौबोली

मूरच्छना—देखो 'मूरछना (रू भे)

मूरच्छा—देखो 'मुरछा' (रू भे)

उ०—जिसडै ही रामसिघजी कूंवरजी री ग्रागै दीठी विपरीती तिसडै ही मूरच्छा ग्राइ पडिया —द वि

मूरछत—देखो 'मुरछित' (रू भे)

उ०—पहव राज प्रधान मूरछत राज ग्रहमद। जीति राज तन जिता, चक्र सिव राज खट चड —सू प्र

मूरछन, मूरछना-स०पु० [स०मूर्च्छना] १ मूर्छित करने की क्रिया या भाव।

२ उक्त कार्य के लिये प्रयोग मे लाया जाने वाला मन्त्र विशेष।

३ पारे का तीसरा संस्कार जिसमे घृतकुमारी, त्रिफलादि मे सात दिन तक भावना दी जाती है।

४ सगीत मे एक ग्राम मे दूसरे ग्राम तक जाने मे सातो स्वरों का ग्रारोह-ग्रवरोह।

५ काम देव का एक बाण।

रू०भे०—मुरच्छना, मूरछना मूरच्छना,मूरछा,

मूरछा—१ देखो 'मूरछना' (रू भे)

उ०—मेळवीस मूरछा त्रिण(ह) ग्राम निसरति सुर। लहण भेउ राटराग पाठ, भ्रवर्ग सोवतर —गु रू व

२ देखो 'मुरछा' (रू भे)

उ०—१ हणै ताडिका बाण हूंता सुवाहां उचै मूरछा होय मारीच वाहा।—सू प्र

उ०—२ ग्रर उठो उण मेजटी रै बाथ मूरछा तूटयां भूत री थांम्या गुमी।—फुलवाडी

मूरछागत, मूरछागति—देखो 'मुरछागत' (रू भे)

उ०—१सा इसौ रूप देख लाखी मूरछागत हुई —पचरही री वारता

उ०—२ भूत रा मन मे ऐडी ग्रछूभाट तौ कदेई नी गूथीजियो। वेहद ग्रदीठ व्हेता ई ओ नी मूरछागत व्हगो।—फुलवाडी

उ०—३ मूरछागति पगणी पटघाळां, चतन पामो जाम। बोलै फरण दयामणोजी, नेम मणी सिर नाम।—जयवाणी

उ०—४ मूरछागति दूरी हुइ, हर उठीयो सावचेत हुवौ। होतां ही कवर का राखवा को जुवा वसाल कियौ।—पना

मूरछाणी, मूरछाबो—देखो 'मुरछाणी, मुरछाबो' (रू भे)

मूरछाण हार, हारौ (हारी), मूरछाणियौ—वि०।

मूरछायोडौ—भू० का० कृ०।

मूरछाईजणौ, मूरछाईजबौ—भाव वा०।

मूरछायोडौ—देखो 'मुरछायोडौ' (रू भे)

(स्त्री० मूरछायोडी)

मूरछित—देखो 'मुरछित' (रू भे,)

उ०—रुकमणीजी के देखता ही सगळी सेना जि हुती तितरा मन पग हुग्रा। सहु सेना मूरछित हुई।—वेलिटी

मूरछौ—देखो 'मुरछा' (रू भे.)

उ०—मारवणीजी री रुप देख दोना नै मूरछौ ग्राई, मोनै तौ मसळ कुमळ उठायो।—ढो. मा

मूरट—देखो 'मरट' (रू भे)

मूरत—१ देखो 'मूरति' (रू भे) (ग्र मा)

उ०—१ सखी ग्रमीणी साहिबौ मदन मनोहर गात। महाकाळ मूरत वर्णां, करण गयदा घात —वा दा

उ०—२ सोई खुदद ग्राज दिन सांप्रत, स्री दुरगा सकळाई। मूरत ग्रदुल भेख मरदानू, सूरत हृदय समाई।—मे म

उ०—३ पडया मुख मूरत मूरत पाक, पडया चक चूरत कंध पिनाक। उभै गजगाह पडया दहु ग्रोड, पडया खुरताळ जडया चहु पोड —मे म

उ०—४ मूढा पर काळो नकाव नाख्या ग्रर हाथ मे छुरो लिया एक मूरत ऊभी ही।—रातवासो

उ०—५ दया री मूरत मोटोड़ी रांणी तौ सुरग सिधाई।
—फुलवाडी

उ०—६ छव फुट लाबो डील, डिघाळ मूरत, तणियोडा मूछां, फिलागोडा दाढी रै सागै सभाव मे तेज झरतौ दीसै —दसदोख

२ देखो 'महूरत' (रू भे)

मूरतवत, मूरतवत-वि० [स०मूर्तिमत] १ शरीर धारी मूर्तिमान, सशरीर देहधारी।

उ०—क्रस्णजी का जुदाजुदा रुप देखण लागा कामिनी कहइ काम ग्रायो। सत्रु कहण लागा काळ ग्रायो ग्रौर जिकेइ विरोधी न था त्यांह स्री नारायण को स्वरूप जांण्यो वेद का ग्ररथो थां। त्यांह कह्यौ मूरतवत वेद ग्रायो। योगीस्वरा जांण्यो जोगतत योही। —वेलि टी

२ जिसका कोई ग्राकार-प्रकार या रुप हो, साकार, सगुण।

३ जो किसी प्रतिमा की तरह ग्रचल हो, निश्चेष्ट, स्थिर।

उ०—गणेस नीसावत भीतर पधारे छै। खमा खमा हुय रही छै। ग्रांण ढोलियै विराजमान हुवा छै। मुहडै ग्रागै पातरां पोसाग कर

साज बाज लिया खडी छै। हुकम हुवो छै। राग रग हुवै छै। छह राग, तीस रागणी। मूरतवत खडा हुवा छै। —रा सा स

४ साक्षात्, प्रत्यक्ष।

रू०भे०—मूरतिवत, मूरतिवतउ,

अल्पा०—मूरतिवतौ,

मूरति-स०स्त्री० [स०मूर्ति] १ कोई देव-प्रतिमा, मूर्ति।

उ०—१ मूरति सालिगराम की, जल सू धोवै आनि। कर सू मेलै उखणौ, आतम राम न जानि।—स्री हरीरामदासजी महाराज

उ०—२ देवळा मूरता हुत जो किणी दिन, खुरम रौ डोकरो कुवध खेलै।—नरहरदास बारहठ

२ कलात्मक ढग से बनाई हुई कोई पत्थर, धातु आदि की प्रतिमा, पुतली।

उ०—१ धात पथर मूरति पधरावै, ठाकुर सेवा नांव धरावै। कर सु खोळि करै चरणामत, यु तौ जानि नहीं परमागत।

—स्री हरीराम दासजी महाराज

३ चित्र, तस्वीर।

४ शक्ल, आकृति, सूरत।

उ०—१ वाहि पर तन मन हैं वारी। वह मूरति मोहिनी निहारत, लोक लाज डारी।—मीरा

उ०—२ तीणइ सुदर मूरति देखी साथिइं लीउ उछाहि। जयसागर केते दीहाडे पहुतउ स्रीपुर माहि।—हीराणंद सूरि

५ स्वरूप, रूप।

उ०—१ सुसील सम्य साच्छर, स्रुति प्रमांन सोहनें। अभग पुत्ति ओज के मनोज मूरति मोहनें।—ऊ का

उ०—२ मोहनि मूरति सावरि सूरति, नैना बनै विसाल।—मीरा

६ शरीर, देह।

उ०—बाळ मुकद नद घरि बाळक, मात लडायौ जसोमती। भगतवछळ गोकळ मन भावन, पावन मूरति जगतपति।

—ह नां मा

७ प्रतीक।

उ०—महा अजमति परम मूरति, पैज रघुपति तेज पूरति। प्रभुति सुण अति धूज धरपति, सुणै छत्रपति साह।—रा रू

८ साधुओ के लिऐ एक सम्बोधन।

उ०—वे महतजी नें सिकायत करी तो महतजी उण नें बुलायनें समझायो—माया, सगळी मूरतिया थारी घणी सिकायता करै। थू बिना कांम मारग चालतौ ई वारी जमायोडी चीजा नें ठौड क्यू छुडावै? राम दुवारा री सगळी मूरतियां थारी इण हेरा-फेरी सू नाराज है।—फुलवाडी

९ प्राचेतस दक्ष की सोलह कन्याओ मे से एक जो धर्मऋषि की पत्नी एव नर-नारायण की माता थी।

१० स्वारोचिष मन्वन्तर का एक प्रजापति, जो वसिष्ठ ऋषि के पुत्रों में से एक था।

११ ब्रह्मसावर्णि मन्वन्तर के सप्तर्षियो मे से एक।

१२ देव विशेष की आकृति का गले मे धारण करने का सोने या चादी का एक आभूषण।

रू० भे०—मुरति, मुरती, मुरत्ति, मुरिति, मुरिती, मूरत, मूरती, मूरत्त, मूरत्ति।

मूरतिकार-स०पु० [स०मूर्त्तिकार] १ मूर्तियें, प्रतिमाऐं बनाने वाला, शिल्पी।

२ चित्रकार, चितेरा।

मूरतिपूजक-स०पु० [स०मूर्तिपूजक] १ किसी मूर्ति या प्रतिमा की नियमित पूजा करने वाला।

२ सगुण भक्ति धारा का अनुगामी।

मूरतिपूजा-स०स्त्री०—किसी मूर्ति या प्रतिमा का पूजन कार्य।

मूरतिमत-स०पु०—मूर्तरय राजा का एक नामान्तर।

मूरतिमान-वि० [स०मूर्त्तिमान्] १ शरीर धारी, देह धारी, साकार।

२ प्रत्यक्ष, साक्षात्।

मूरतिवत, मूरतिवतउ—देखो 'मूरतवत' (रू भे)

उ०—१ ऐसी भाति अनेक उछब सें गावते हैं। तारीफ की तान आसमांन से लावते हैं। ऐसा मूरतिवत राग का थाट रचि जरकस जवहर के इनाम पाए।—सू प्र

उ०—२ श्रीजउ मूरतिवतउ सागर सागर जिम गभीर। चउथउ वधव सुणि घन सागर, समरथ साहस धीर।—हीराणद सूरि

उ०—३ ब्राह्मण विवाह करण नै किसा आणि वैठा छै जिसा साक्षात् मूरतिवत वेद —वेलि टी

मूरतिवतौ—देखो 'मूरतवत' (अल्पा, रू भे)

उ०—मूरतिवतौ नाद छै।—वेलि टी.

मूरतिविद्या, मूरतिविध्या—स० स्त्री० [स० मूर्तिविद्या] १ प्रतिमा बनाने की विद्या, शिल्पी कार्य।

२ चित्रकारी का कार्य।

मूरती—देखो 'मूरति' (रू भे)

उ०—१ कारीगर आया, नीव भरी अर च्यार महीणा मे मकान गिगनां चाढ दीनो। किंवाड चाढे, घटा लागै तथा देवारी मूरती पधरावण वेगी वात चीत हुवे है।—दमदोख

उ०—२ थिरू मूरती सूर रै नूर थाई। तिका स्वप्न रै माहि पिंडां वताई।—मे म

उ०—३ तुही पच्छ तारच्छ मे शीघ्रताई। रती मूरती मे तुही सुदराई।—मे म

मूरत्त—देखो 'मुहरत' (रू भे)

२ देखो 'मूरति' (रू भे)

मूरत्ति—देखो 'मूरति' (रू भे)

उ०—वूझै कुण नाथ तुहाळा वग, मकत्ति न रुद्र मूरत्ति न लिंग।

मूरद्ध–सं०पु० [सं०मूर्द्धन्] शिर, मस्तक।
मूरद्धज–वि० [सं०मूर्द्धज] शिर से उत्पन्न होने वाला।
 सं०पु० [सं०मूर्द्धज] केस, बाल।
मूरद्धज्योती–सं०स्त्री० [सं०मूर्द्धज्योतिस्] योग मे ब्रह्म रंध्र।
मूरद्धन्य–वि० [सं०मूर्द्धन्य] १ मूर्द्धा से सम्बन्ध रखने वाला।
 २ सिर या मस्तक में स्थित।
मूरद्धन्यवरण–सं०पु० [सं०मूर्द्धन्य वर्ण] वह वर्ण जिसका उच्चारण मूर्द्धा से होता है।
मूरद्धा–सं०स्त्री० [सं०मूर्द्धा] १ मस्तक, शिर
 २ व्याकरण मे, मुंह के अन्दर का तालु और अलि जिव्हा के बीच का अंश जिसे जीभ का अग्रभाग ट ठ ड ढ र ष का उच्चारण करते समय उलटकर छूता है।
 रू भे—मूरधा,
मूरद्धाभिसेक–सं०पु०—शिर पर किया जाने वाला अभिषेक या जल सिंचन।
मूरधन–सं०पु० [सं०मूर्धन, मूर्द्धन] १ शिर, मस्तक। (ह नां मा)
 २ भृकुटि, भौं।
 ३ शिखर, शृंग, चोटी।
 ४ प्रधान, मुख्य।
 ५ नेता, नायक, अग्रणी।
 ६ अगला, अग्र।
 ७ एक देव, जो भृगु एवं पौलोमी के पुत्रों में से एक था।
मूरधा—देखो 'मूरद्धा' (रू भे) (ह नां मा)
मूरवा—देखो 'मुरवा' (रू भे)
मूरिख—देखो 'मूरख' (रू भे) (ह नां मा)
 उ०—१ तरै बादशाह पण फरमाई कोई इणसूं अधिको मूरिख छै। —नी प्र
 उ०—२ मूरिख तैं मुझ नें गण्यौ वचन कह्यौ अविचार। जो पदमणि हाथै जीमस्यु तो आवु तुझ बार।—प. च चौ
मूरियौ—देखो 'मोरियौ' (रू भे)
मूं'री—देखो 'मो'री' (रू भे)
 उ०—वांनै आ बात आछी तरै सूं मालम ही के इण अड़ियल आदमी रै ऊठी री मूं'र्यां इण रौ माथो पड्या रै पछै ईज हाथ में आवैला।—रातवासौ
मूरल—देखो 'मूरख' (रू भे)
मूरौ—देखो 'मोरौ' (रू भे)
मूळ, मूल–सं०पु० [सं०मूल] १ वृक्षों, पौधों, लताओं आदि की जड़।
 उ०—१ गाज इसै ऊखेड़ गज, मामळ वन तर मूळ। जाग नह यह में जिसै, सम्रू हाथळ सादूळ।—वां दा
 उ०—२ तेल-विहूणउ दीयउ, मूल-विहूणी वेलि। पांणी विहूणी दद्दुरी, तिम होई नि महेलि।—मा कां प्र
 उ०—३ नही तू मूळ नहीं तू डाळ। नही तू पत्र नही जु पराळ। —ह र
 २ पेड़ का तना।
 उ०—१ घड कुंभ निवांण कि भींण दुडै, उर पाट कपाट सु प्रौळ अडै। जुग जंघ तरोवर मूळ जिसा, अण भंग उत्तंगई सिला इसा। —मा वचनिका
 ३ बीज।
 उ०—१ रांम नाम निज मूळ है और सकळ विसतार। जन हरीया फळ मुगतिकु, लीजै सार सभार।—श्री हरिरांमदास जी महाराज
 उ०—२ अह जग मिटावण विघन तन तापरा। खपावण पाप रा मूळ खोटा। अनेकां प्रवाडा गिणै कुण आपरा, मात घणियाप रा विडद मोटा।—खेतसी बारहठ
 ४ जमीकंद कंद मूल।
 उ०—फळ मूळ खाकै हरी मिळै तो, बादर वादरा होई।—मीरा
 ५ किसी वस्तु का नीचे का भाग।
 ६ पिप्पली मूल, पीपरा मूल।
 ७ प्रारम्भ शुरुआत, आदि।
 उ०—नहीं तो माय नही तो बाप, आपेज आपे ज उपन्नौ आप। मनच्छा बीज चलावै मूळ थयौ चर वे चर सुक्षम थूळ।—ह र.
 ८ उद्भव, उत्पत्ति।
 उ०—विदर विदर जांणै नही, मादर विदरां मूळ। राखै अगणत रंग रा, दिलरी कुमी दुकूळ।—बां दा
 ९ कारण प्रयोजन।
 १० नींव, बुनियाद, आधार।
 उ०—१ एका मूळ ऊखेडिया हेकां किया निहाल। असपत्ती नह ऊथपै, जै थप्पै 'अजमाल'।—रा रू
 उ०—२ बांवळी विकट सादूळ वाहण वणै ढांखियौ सीस समतूळ डालै। भरोतै मूळ दुस्टा तणा उखाडण, झाडवया रूसाळण सूळ झालै।—मे म
 ११ आदिमंत्र, बीजमंत्र।
 उ०—देवी मंत्र मूळ देवी बीज वाळा, देवी बावणी अन्त्र लीला विसाला—देवि
 १२ सत्ताईस नक्षत्रों में से उन्नीसवां नक्षत्र (अ मा)
 उ०—तू गहलौ तू मानियौ तू भोळौ भवराळ। मूळ मघा मे तूं हुऔ तातें मरस लवाळ।—गजउद्धार
 १३ असल पूंजी, मूल धन।
 उ०—१ नेनह विन सूझै नही भूला कत हू जाइ। दादू धन पावै नही, माया मूळ गवाई।—दादूवाणी
 उ०—२ पिण साहूकार दीवाल्या री खबर तो माग्या पडै। साहूकार तो व्याज सहित देवै अनै दिवाल्यौ मूल ही मे तोटी घालै।—भि द्र
 उ०—३ या जुग माहि करन कु मोदा, आयै लोक लुगाई। एक

ले चालै लाभ चौगणौं,एकां मूळ ठगाई ।—
—स्री हरिरांमदास जी महाराज

१४ मुद्राविशेष ।
१५ दलाल ।
१६ तल ।
१७ छोर, शिरा ।
१८ वर्ग मूल ।
१९ चदन । (अ मा)
२०—परम्परानुगत सेवक ।
२१ पडौस, सामीप्य ।
२२ मूल कृति या लेख जो पहले पहल किसी ने अपनी बुद्धि से तैयार किया हो ।
२३ प्राय रात के समय, किसी जलाशय के किनारे खड्डा खोदकर या रास्ते के पास किसी पेड पर मचान वाघ कर, शिकार की ताक में शिकारी के वैठने की क्रिया या भाव ।

उ०—दिन १ आडो घाल नै कह्यो-आपे सिकार सूअरा री मूळां री खेलसा । तरै सूरजमल कह्यो–"भली वात ।"—नैणसी
२४ शिकार के लिये उक्त प्रकार से वैठने का स्थान ।

उ०—पण एक दिन ईसडो दईव संजोग हुवो सो म्होकमसिघ तो हिरण री सिकार मूळ वैठो थो ।–प्रतापसिंघ म्होकमसिघ री वात
२५ पूर्व दिशा ।
उ०—कोस ४ मूळ माहैं । सीरवी वाणीया वसै ।—नैणसी
वि०—१ मुख्य, खास प्रधान ।

उ०—मऊ सू कोस ७ गाव धूळकोट छै तठै नीसरै छै पाणी मूळ गूढ़वाण री आवै छै ।—नैणसी
२ असल
उ०—रूडे तीरथराज रै नित जळ कीजै न्हान । तो पिण न हुए पाक तन, मूल पुरीख मकांन ।—वा दा
३ खुद का, अपना, मौलिक, निजी ।
४ पहला, प्रथम ।
५ किंचित, तनिक, थोडा ।

उ०—नारायण रा नाम सू , प्राणी वाणी पोय । जम डाणी लागै नहीं, हाणी मूळ न होय ।—ह र

उ०—२ पुत्र त्रिया ने सज्जन घर थकी रे, मूल न आण्यो मन मे मोहरे ।—जयवाणी
६ दृढ़ मजवूत ।

उ०—वय बीरा सह वोळिया, केसर कुड दुकूळ । वळं तरुण भइ वरजिया, मडै साहस मूळ ।—व भा
क्रि० वि०—१ कतई, विलकुल ।
उ०—१ भैंसां मूळ न पावसै,सूकै पाडी साथ । हार दुहारा उट्ठिया, ठाली वरतण हाथ । —लू
उ०—२ खुरम कटक्कै अगळो साह वळै अममान । मूळ न मावै मारका, दोय खडा इक म्यान ।—गु रू व
२ जडामूल से, जडमे
उ०—हूओ हाहाकार, प्रिथी दमगळ पेखीजै । जवना जावण मूळ एह आगम जाणीजै ।—गु रू व
रू० भे०—मूल, मूर, मूळी, मूळू ,

मूल—देखो 'मूल्य' (रू भे)
उ०—१ महा उचूल मूल के दुकूल देह मे नही । कहा सुगघ कघ बीचि, ग्रघ गेह मे नही ।—ऊ का
उ०—२ तहां करन क्रीडा मुखइ,बीडा चावती त्रिय जात । केसरी सारी मूल भारी, पहिरि कै हरख न मात ।—वि कु

मूळकरम–स०पु० [स०मूल कर्मन्] १ औषधियो की जडो द्वारा किया जाने वाला त्रासन, उच्चाटन, स्तभन, वशीकरण आदि का प्रयोग ।
२ जादू टोना, मूठ । (मारण)
३ प्रधान कर्म ।

मूळकवळ–स०पु० [स०मूल–कमल] हठयोग के अनुसार नाभि के आस-पास का अवयव जिसको कमल के रूप में माना जाता है । नाभि–कमल ।
उ०—सोई निरभै निजनाथ सदा सगि (मेरे), जुरा मरण भै भागा । अनहद सवद गगन में गरजे, मूळ-कवळ मन लागा ।
—ह पु वा.

मूळकूण–स० पु०—पूर्व दिशा ।
उ०—सोभत था कोस ३ मूळकूण माहे । कुमार बाभण बसै ।
—नैणसी

मूळकौ, मूलकौ–स०पु०—१ जड सहित उखाडा हुआ छोटा वृक्ष ।
२ देखो 'मुळगौ' (रू भे)
उ०—जद ब्राह्मण बोल्या–एहतो पठांण रा पेट रा मूलका ड असुद्ध छै सो सिद्ध किम हुवै ।—मि द्र

मूलगउ, मूलगउ मूलगु मूलगू मूळगौ, मूलगौ—देखो 'मुळगौ' (रू भे)
उ०—१ सार किसिउ जीवी तण् प्रिय सगमि सिउ थाइ । फूल माहि सिउ मूलगउ स्त्री परणी किहा जाइ ।—हीराणद सूरि
उ०—२ कुणइ नेमि राहाविउ कूडीय सघलडी जांन । छप्पन कोडि माहि मूलगउ कूडउ वल भद्र कान्ह ।—समर
उ०—३ कूबर दुस्टमा मूलगु सेवइ व्यसन सात रे । अन्या मारगि ते हीडइ नवि जाणइ पुण्य वात रे ।—नळ दवदती रास
उ०—४ नान्हपणा नु नेहडउ, काइ वीसारिउ नाह रे । कठिन कठोर माहि मूलगू ताहरू प्रीछउ माह रे ।—नळदवदतीरास
उ०—५ गिणइ नही सास्त्र वलि मूलगा देवगुरू । लाज विण लोक इण कुमति लागै ।—ध व ग्र
उ०—६ जद स्वामीजी बोल्या ए पिण मूलगा मिथ्यात्वी है ।
—भि द्र

उ०—७ मिरचा री थूई सू भूत पूरो निबळो व्हैगो। उणनै मूभणो मूळगो ई बद व्हैगो।—फुलवाडी

उ०—८ जाइ भुग्लोक मैं अमल कीवो जसु, असुर मह्व नासि अननोक आया। कमर सहु आपणी मूलगी काढिवा, लागतै जोर जजाळ लाया।—ब व. ग्र

(स्त्री०मूलगी)

मूळचक्र–स०पु०—एक प्रकार का हाथी।

उ०—अथ हस्ती–मिदहगलित त्रिपाट प्रसरित भद्रजाति दक्षिणदड उ माणिक दडउ मूलचक्र वन चक्र तिसोता —व स,

मूळछेद–स०पु० [स०मूल–छेद] १ किसी चीज को ऐसा काटना या नष्ट करना कि वापस न पनप सके।

२ समूल नाश, जडामूल से नाश।

मूळजग–स०पु०—संसार का मूल कारण–विष्णु, शिव, ब्रह्मा, शक्ति—।

मूळजडी–स०स्त्री० [स०मूल–जडी] जीवन का मुख्य आधार।

उ०—कब की ठाडी पथ निहारू अपने भवन खडी। कैसे प्राण पिया बिन राखू जीवन मूळजडी।—मीरा

मूळजावड–स०पु०—एक प्राचीन देश। (व स)

मूळजात–स०पु०—आदि या आरम्भ की जाति, वश, मूल जाति

मूळताणि—देखो 'मूलतान' (रू भे)

उ०—फूलमरि अवर सेख, मेख अहिदर नीसाडिग पुष्फदीन मूळताणि नेख जवना भट्टाउरि।—व स

मूळत्रिकोण–स०पु० [स०मूल–त्रिकोण] सूर्य आदि ग्रहो की कुछ विशेष राशियो मे स्थिति।

मूलथांण—देखो 'मूलतान' (रू भे)

उ०—बगाल त्रिहण भोट महाभोट चीण महाचीण सिवस्थांन पुरासन मूलथाण भद्र अद्र अतरवेघ विराट' ' —व स

मूळदवार—देखो 'मूळद्वार' (रू भे)

मूळदेवी मूलदेवी–स०स्त्री०—एक लिपि विशेष।

उ०—मालविणी नहि नागरी लाडलिवी पारसी य बोबव्वा। तहय निमित्ती अ लिवी चांणवधी मूलदेवी अ।—व स,

मूलद्रव्य–स०पु० [स०मूलद्रव्य] मूल धन, असल पूजी।

मूळद्वार–स०पु० [स० मूल द्वार]१ मदर या मुख्य दरवाजा, सिंहद्वार।

२ शरीर का वह छिद्र जहा से मल त्यागन होता है, गुदा द्वार।

३ योनी, भग।

रू०भे०—मूळदवार

मूळधन–स०पु० [स०मूल–धन] असल पूजी, पूजी।

मूळपुरुस, मूळपुरुस–स०पु० [स०मूल–पुरुष] १ वह आदि मानव जिससे समस्त मानव जाति का विस्तार हुआ।

२ किसी वंश या परिवार का प्रथम पुरुष।

मूळप्रकृति–स०स्त्री० [स०मूल–प्रकृति] वह आदिम या मूल सत्ता जिसका परिणाम ससार है, आदि शक्ति।

मूळबध–स०पु० [स०मूलबध] १ हठ योग में वज्रासन या सिद्धासन द्वारा की जाने वाली एक योग क्रिया, जिसमे शिश्न और गुदाद्वार के मध्यवाले भाग को दबाकर अपान वायु को ऊपर चढाते हैं।

२ एक प्रकार का अगुलि–न्यास।

मूळमत्र—देखो 'बीजमत्र'

उ०—हरिदास जन यू कहै, र र कार मूळ निज नांम। मूलमत्र सतगुरु दिया, दु ख सुख दोय दूर सराप।—ह पु वा

मूळय—देखो 'मूल्य' (रू. भे.)

मूलवटणी–स०पु०—एक प्रकार का वस्त्र।

उ०—पटउलउ सावपट्ट पट्टहीर सूहवी चोपाच्छुउडु सवाडी चपावती स्वेत सिलाहट्टी सचोपकाची मूलवटणी सारी ' ' —व स.

मूळस्थांन–स०पु० [स०मूलस्थान] १ ईश्वर।

२ किसी प्राणी, वस्तु या विषय आदि का उद्भव स्थल, आदिस्थान।

३ पूर्वजो का स्थान।

४ प्रधान स्थान।

मूळा–स० स्त्री० [स० मला] १ मूल नक्षत्र।

२ पृथ्वी, धरती। (डिं नां मा)

३ सतावर।

४ पूना के पास बहने वाली एक नदी।

उ०—मूळा १, मोठा २–ऐ दोय नदी पूना हेटै वहै है।

—वा दा स्यात

५ राठौड वश की एक शाखा।

६ भाटी वश की एक शाखा।

रू० भे०—मूळू।

मूलागो—देखो 'मूळगो' (रू भे.)

उ०—भीखनजी स्वामी कह्यो-कोई साध नें दोख लागा प्रायस्चित लेइ सुद्ध हुवै। पिण एतो मूलागा मिथ्यात्वी स्रद्धा ऊधी गाजीखां मुल्लाखा रा साथी।—भि द्र

मूळाधार–स० पु० [स० मूलाधार] शिश्न व गुदा के बीच का स्थान, जो हठयोग के अनुसार मानव शरीर के भीतर के छ चक्रों मे से एक है। इसका रग लाल व देवता गणेश माना गया है।

मूळासी–वि० [स० मूल+आश्रित] कद, मूल, फल खाकर जीवित रहने वाला।

मूळिका, मूलिका—देखो 'मूळी' (रू भे)

उ०—ललित उवग जस अवर पुष्फ चूलिका, मूलिका पार आतक केरी।—वि कु

मूलिकाप्रयोग–स० पु०—बहतर कलाओ मे से एक। (व स)

मूलिम–क्रि० वि०—बिल्कुल, कतई।

मूळी, मूली–स० स्त्री [स०मूलक, उन्मूलिका, प्रा० उम्मूलिआ] १ बडे-बडे पत्ते एव लम्बी- मोटी, जड वाला एक प्रसिद्ध पौधा, जिसकी जड कच्ची भी खाई जाती है वा जड व पत्तो की सब्जी बनती है। इसका स्वाद चरपरा रुचिकर होता है। यह हृदयरोग, यकृत

व वायु रोगो मे लाभ दायक मानी गई है। मूली, मूरी।

उ०—ग्राखा राज में वारा सेंतीर तिरै। मोटा मोटा धाडतिया रा थरणा कांपै, पछै ग्रो कुचमादी किण खेत री मूळी।

—फुलवाडी

मुहा०—१ गाजर मूळी=ग्रत्यन्त तुच्छ।

२ किण खेत री मूळी है=क्या हस्तीहै, क्या ताकत है।

३ किसी बाग री मूळी=देखो 'किण खेत री मूळी'

४ मूळी पाना सू ग्राछी लागै=परिवार के कारण ही शोभायमान होता है।

२ जडी बूटी।

उ०—हांकीया सू पादरौ न हालै, वाकम नीर वाहरण ग्रवळ। मत्र जत्र ग्रोखद नह मूळी, खादा जिण दाटीक खळ।

—ठाकर जगरामसिंघ नीमाज री गीत

३ खाने योग्य जड़, कंद-मूल-फल।

४ चौतीस प्रकार के स्थावर विषो में से एक।

[स० मूली] ६ छिपकली।

रू० भे०—मूळी मूळिका, मूलिका।

मह०—मूळौ।

७ देखो 'मूळ' (रू भे.)

उ०—तरुणी री पोसाक ग्रण, जीवन मूळी जांण। कळह समे राखै क्नै, मावडियो विण माण।—वा दा

मूळू—१ देखो 'मूळा' (रू भे) (वा दा ख्यात)

२ देखो 'मूळ' (रू भे)

मूळौ, मूलौ—देखो मूळी' (मह, रू भे)

उ०—१ दूजोडो भरपूर वार निछरावळ करण वाळा पर हुग्रो सो वरोवर वैठ्यो होतो तो माथो मूळा री कापी रै ज्यू ग्राघो ग्राय पडतो।—रातवासो

उ०—२ मास भखैं ग्रर मद पीयैं, मागि धतूरा हेत। हरीया ऊखडि जावसी, ज्यू मूळे का खेत।—स्री हरिरामदासजी महाराज

मूल्य-स० पु० [स० मूल्यम्] १ मुद्रा या द्रव्य के रूप मे किसी वस्तु को खरीदने या प्राप्त करने के लिये दी जाने वाली धन राशि, किसी वस्तु की कीमत, दाम, दर।

२ वह गुण, जो किसी व्यक्ति या वस्तु को महत्व या मान दिलवाता है, विशेषता, महत्व।

रू० भे०—मूल, मूळय।

मूल्यवांन-वि० [स० मूल्य-वान्] १ जिसका मूल्य, कीमत या दर ग्रत्यधिक हो, कीमती।

२ महत्व पूर्ण।

मूवौ-वि० [स० मृत] मरा हुग्रा, मृत।

उ०—१ कहता है करता नहीं, ऐसा ग्रादम खोर। मूवा चाहे मुगति कु, जीवत हरि का चोर।—स्रीहरिरांमदासजी महाराज

मूस-स० स्त्री० [स० मूसिका] सुनार की सोना ग्रादि गलाने की घरिया ग्रर्थात एक पात्र विशेष।

मूसउ—देखो 'मूसक' (रू भे) (उ र)

मूसक-स० पु० [स० मूषक] १ चूहा। (ह ना. मा)

उ०—१ नाचै मोर निहारै ग्रहिफण ऊपरे, मूसक सीघ न घारै घात मजारिया।—र रू

उ०—२ ग्रत पुरि उत्तम-तणइ, सभलि नीति-विचार। नर-नामइ ग्रावइ नही मूसक ग्रथ मजार।—मा कां प्र

२ ठग, चोर

उ०—सुनत हुकम पुर सोधि सठ विट चेट विदूसक। पुर जुव तिन मग पिहित, लग लावन मनु मूसक।—व भा

रू० भे०—मुखक, मूखक मूसउ, मूसौ।

ग्रल्पा०—मुखियो।

मूसककरणी-स० स्त्री० [स० मूषककर्णी] मूसाकानी नामक एक लता।

मूसकवाहण-स०पु० [स०मूषक+वाहनम्] गणेश, गजानन।

मूसकौ, मूसखौ-स० पु०—स्वर्ण पात्र।

उ०—वित्त रा च्यार हिस्सा कीया। एक हिस्सौ ले तेजसी नु दीयो तेजसी उरो लीयो, नै ऊठता थका एक सोना रो मूसखो नै एक पाणी रूपा री ढोलीया रो इधको लेता ही ऊठीया।

—रावमालदे री वात

मूसणौ, मूसबौ-क्रि०स० [स०मूषण] १ चोरी करना, चुराना।

उ०—१ उत्तम मूसे एक झड मध्यम दूहा मूस। ग्रधमगीत मूसे ग्रडर, त्रिविध कुकवि विण तूस।—वा दा

२ लूटना, खसोटना।

उ०—रोजायतो तणैं नव रोजैं, जेथ मुसांणा जणौं जण। हीदू नाथ दिलीचे हाटे 'पत्तो' न खरचै खत्रीपण।—प्रथ्वीराज

३ ठगना।

४ ग्रपहरण करना, हरण करना, उडा लेजाना।

५ मोहित करना, लुब्ध करना।

६ मसोसना, दबोचना।

७ पकडना।

८ छीनना, झपटना।

९ ढकना, लपेटना, छिपाना।

१० ग्रसना।

मूसण हार, हारौ(हारी), मूसणियौ—वि०।

मूसिग्रोडौ मूसियोडौ, मूस्योडौ—भू० का० कृ०।

मूसीजणौ, मूसीजबौ—कर्म वा०।

मुसणौ मुसबौ, मूसरणौ, मूसवौ—रू भे।

मूसळ मूसल-स०पु० [स०मुसल] १ ऊखली में ग्रनाज ग्रादि कूटने का मोटी लकडी का प्रसिद्ध उपकरण। इसके बीचमे हाथ मे पकडने का खड्डा होता है

उ०—नीचो ग्रायनै गवा नै सावळ जतरावण सारू की जोवण लागो के सामी ऊखळ कनै मूसळ पड्यो निगै ग्रायो।—फुलवाडी

२ श्री कृष्ण के बड़े भाई बलराम के हाथ में रहने वाला एक शस्त्र।

३ गदा का एक भेद।

४ लकड़ी का मोटा गोल डंडा जिससे स्वर्णकार आभूषणों की मोच निकालने का काम लेता है।

५ वार व नक्षत्रों सम्बन्धी २८ योगों में से बाईसवां योग।

वि०—१ मूसळ के समान, मूसल के अनुरूप।

उ०—१ इंद्र कोप घन वरखौ मूसळ जळधारा। बूडत ब्रज कों राखिऊ मोरे प्राण अधारा।—मीरां

उ०—२ डीगौ खिजूर नै दातळौ हाथी। कैत्ता ई मूसळ ज्य हाथी रा दांत बारै निकळग्या।—फुलवाड़ी

२ मूर्ख, मूढ़ बेवकूफ।

रू०भे०—मुसळ मुसल, मुसळि, मुसलि, ममळ, मूसिल्ल, मूहळ।

अल्पा०—मुसलियौ, मुसळौ, मुसलौ, मुसल्लौ, मूसलियौ, मूसळौ, मूसल्यौ।

मूसळदतौ-वि०—मूसल के समान मोटे दांतों वाला।

उ०—नेह पळाया बाघ री, घड़ी भयंकर घाट। मूसळदतां मैंगळा, नित डर रहै निराट।—बां दा-

मूसळधार, मूसळधारा-स०स्त्री०—पानी या बरसात की मूसल के समान तीव्र व वेगसे चलने वाली धारा।

उ०—१ आज विरज पर इंदर कोप्यौ, वरसै मूसळधारा। बांवां नख पर गिरवर धार्‌यौ, डूबत विरज उबारा।—मीरा

उ०—२ चीठी ले पाणी मांहि गाळी नै ऊपर आडग तुरत मडियौ। मूसळधार बरसण लागौ। तरै इणां घरां नू चलाया।
—नैणसी

उ०—३ झिर मिर झिर मिर एक वनणा मेह पडेजी कोई, वरसै मूसळधार धारौ तौ श्रावण एक, बनणा क्यों हुयोजी।—लो गी

रू० भे०—मूसळाधार,

मूसळमांण, मूसळमान—देखो 'मुसळमान' (रू भे)

उ०—कीरत 'अजन' कमध री पसरी प्रथी प्रमाण। दहल खमै रहिया दिली, हिंदू मूसळमांण।—रा, रू

मूसळाधार—देखो 'मूसळधार' (रू भे)

उ०—एक एक बोल सांनां रै मांय बडनै काळजा में महतौ गियौ। जांणै बिना बीज बादळा रै मूसळाधार पांणी श्रोसरै श्रर बरसा री भूखी तिरसी धरती निरपत व्है।—फुलवाड़ी

मूसळायुध, मूसळायुद्ध, मूसलायुध, मूसलायुद्ध—स० पु०—मूसल नामक आयुध, एक शस्त्र।

रू० भे०—मुसलायुध, मुसलायुद्ध,

मूसळियौ—१ वह घोड़ा जिसका केवल दाहिना पैर सफेद हो शेष तीनों पांव काले हों (अशुभ, शा० हो०)

२ देखो 'मूसळ' (अल्पा, रू भे.)

मूसळी, मूसली—स० स्त्री० [स० मुसली] १ हल्दी की जाति का एक पौधा जिसकी जड़ प्राय औषध में काम आती है। यह पुष्टिकारक मानी जाती है और सफेद व काली दो प्रकार की होती है।

स०पु०—२ बलदेव, बलराम।

३ घोड़ों का एक रोग विशेष। इसके कारण घोड़े के पांवों में सूजन आजाती है।

वि०—मूसल नामक शस्त्र को धारण करने वाला।

रू०भे०—मुसळि, मुसलि, मुसळी, मूसळी, मूसली, मूश्रळी।

मूसळौ, मूसल्यौ—१ एक प्रकार का घोड़ा।

२ देखो 'मूसल, (अल्पा, रू भे)

३ देखो मूसळियौ' (रू भे)

मूसाखब—देखो 'मुसाहब' (रू भे)

मूसादै-स०स्त्री०—मादा चूहा, चुहिया।

उ०—बामणिया कण मागणिया पग दै पूळौ बाघणिया। मूसादै नै जाय' र कंजै चिड़कल बेटा जाया है।—फुलवाड़ी

मूसाळ—देखो 'मोसाळ' (रू. भे)

उ०—१ भणवा कारण भरत नै, मेले नृप मूसाळ। मोह धार समधण महा, लार गयौ लकाळ।—र रू

उ०—२ मडं दीठ नौ ही ग्रहा वदि माहै। सको तार नौलाख मूसाळ साहे।—सू प्र.

मूसावाहण—देखो 'मूसकवाहन' (रू भे)

मूसिक—देखो 'मूसक' (रू. भे.)

मूसिकाक-स०पु० [स०मूषिकांक] गजानन का एक नामान्तर, गणेश।

मूसिल्ल—देखो 'मूसल' (रू भे)

मूसिल्लमांण, मूसिल्लमान—देखो 'मुसलमान' (रू भे)

उ०—मूसिल्लमाण खुरिमांण मग्गि। लाहउर राउ सुरितांण लग्गि। कळिअउ खुरासाणी कवार, सज कीजइ रेवत सिलह सार।
—रा ज सी

मूसौ—देखो 'मूसक' (रू भे)

उ०—१ मूडा-दड प्रचडौ मूसा आरूढ मेक मय दतौ। ईस्वर उमया पुत्रो तस्मै गुणेसाय नमो।—गु रू, व

उ०—२ मावड़ियौ वन माभळौ, नो नह जाय सिकार। डोळा मिनकी मू डरै मूसा ज्यू मुरदार।—बां दा.

पर्या०—श्राखू, ऊंदर, खणक, भाखमजार, मुरुप, मूखक, मूसक, यतिदेवर, वजरदत, सुचीमुख।

२ चोर।

३ ठग।

४ सिरस का पेड़।

५ अन्त करण, मन। (योग)

६ एक देश का नाम।

७ सुनार के यहां काम आने वाली खड्डी या चूने की बनी एक कटोरी, जिसमें सोना, चांदी आदि गलाया जाता है

उ०—८ यहूदियों के धार्मिक व सामाजिक नेता, पैगम्बर, जिन्होंने

मिस्र के इसराइलियो को दासता से मुक्त कराया था।

६ देखो 'मोसौ' (रू. भे)

उ०—वीरा ऊभी ओरिया रै बार, देवरजी मूसा बोलिया। भावज करती वीरा री गुमेज, वीरौ बत्तीसी ले गयौ —लो. गी

रू०भे०—मूंसौ, मूसौ, मूसउ।

मूह—देखो 'मुख' (रू. भे)

उ०—मूहां सदा तणा मार हिंदू मुगळ, मछर सैधा-मुहा मांण मिळियौ।—गु रू व

मूहड—देखो 'मुख' (मह. रू भे)

मूहडौ—देखो 'मूंडौ' (रू भे)

उ०—इण बाळक री मूहडौ वारै वरमताई देखणौ जुगत नही छै। —रीसाळू री बात

मूहमेज—देखो 'मुहमेज' (रू भे)

मूहमेळ—देखो 'मुहमेळ' (रू भे)

उ०—चवद मत तुक दोय चवत, रटेजै मूहमेळ रगणात। —र ज प्र

मूहरत—देखो 'महूरत' (रू भे)

उ०—ताहरा राजा ब्राह्मण बोलाया, मूहरत पूछाडीयौ। —जेतमाल पुमार री वात

मूहळ—१ देखो 'मूसळ' (रू भे)

२ देखो 'महळ' (रू भे)

मूहूघू—देखो 'मूंगौ' (रू भे)

उ०—जिणि आवइ मूहूघू थाइ, लोकै लांया नाम। ए विहूना सर लावये, माधव मांहिरि कामि।—मा का प्र

मूहूरत, मूहूरत्त—देखो 'महूरत' (रू भे)

उ०—एक मूहूरत्त नी सामायक कीधो।—भि द्र

मे-अव्य०[सं० मध्य, प्रा० मज्झ] १ अन्दर, भीतर।

उ०—स्वामीजी कह्यौ-म्हारो नाम भीखण। तव उवे बोल्या थाने देखवा री मन मे थी।—भि द्र

२ ऊपर, पर।

उ०—राग द्वेस ओलखायवा स्वामीजी द्रस्टात दियो। किणहि डावरा रै माथा मे दीधी। जद तो लोक उणनें ओलभो देवे। —भि द्र

३ किसी समय या अवधि के दरम्यान।

उ०—वैसाखा मे विलखा वामी, हुयगा सवळा जैन बिरामी। —ऊ का

४ किसी क्षेत्र या परिधि के भीतर।

५ किसी के साथ, किसी मे सलग्न।

६ कईयों में से।

७ मध्य या बीच।

८ का, के, की।

उ०—लागी जितरी तो आ गयी, खेती बापरी मे तो चूक नहीं। —भि. द्र

९ से।

१०—देखो 'मैं' (रू भे)

उ०—जे परमेस्वर सुगुणा की निधि छै। जाकै गुण कौ पार कोई न पावै। मे निगुण थकी ते कौ गुण कहिवा कौ आरभ कीयौ। —वेलि टी

रू० भे०—मइ, मइ. मर्द, महि, मही, मइ, मह, महीं, मुहि, मुही, मुही, मेइ।

मेइ—१ देखो मे' (रू भे)

उ०—पिण चलै अमा मरतै काचो पाणी पीधो। मोटो प्रायस्चित आयो। नहि तर तो थोडा मेइ गुदरता।—भि द्र

२ देखो मैं' (रू भे)

मेगणी—देखो 'मींगणी' (रू भे)

मेंगळ—देखो 'मदकळ' (रू भे)

उ०—दळ अकवर तोपा दगै, सूकै वीर निवाण। गोळा लागै चीतगढ़, मेगळ माछर जांण।—वा दा

मेगाई—देखो 'मूगाई' (रू भे)

मेंगीवाडौ—देखो 'मूगियाडौ' (रू भे)

मेढक—देखो 'मींडकी' (मह, रू भे)

उ०—पखी पाखा सजै, मेढका मीठा बोलै।—दसदेव

मेढकौ—देखो 'मींडकौ' (रू भे)

मेढल—स० पु०—मैनफल का वृक्ष। (अमरत)

रू० भे०—मैंढळ,

मेढौ—देखो 'मीढौ' (रू भे)

मेणा—देखो मीणा'(रू भे)

उ०—धन कारण लागै चोरटा, मेणा मेतर ने थोरी रे। —जयवांणी

मेणावती-स० स्त्री०—राजा गोपीचद गौड की माता का नाम।

रू० भे०—मैंणावती, मैनावती।

मेहतर—देखो 'महत्तर' (रू. भे.)

मेदांन - देखो मैदांन' (रू भे)

मेदी—देखो 'मैंदी' (रू भे)

उ०—मेदी देऊ मुळक मैंन सू करदे मोळी। दीवाळी रै दिवस हिया मे ऊठै होळी।—ऊ का

२ एक लोक गीत।

मेवर—देखो 'मैंवर' (रू भे)

मेमत—देखो 'मैंमत' (रू भे)

उ०—दोखियां तणी घणी घर दावै, फावै जुध जुध करण फतै। साह तूज कन सहै गज वध सुत, मेमत चालै आप मतै। —नाथौ सादू

मेमद—देखो 'मैंमद' (रू भे)

उ०—मार्यं ने मेमद लाव भवर, म्हारं मार्यं ने मेंमद लाव ।
—लो गी

मेंमाय - देखो 'महामाया' (रू भे)

मेवासियो—देखो 'मेवासी' (अल्पा, रू भे)

उ०—तामड़ा उलट मेवासियां लटायत, छटायत नाहरा महां छोगं ।—रावत हमीर चुण्डावत री गीत

मेंहदी—देखो 'मेंदी' (रू भे)

उ०—१ एक ठगीनी नणद कह्यो-वाकी भोजाइया रै हाथा मेहदी राचणोडी, आगणी नीपणा सू रग मगसो पड जावै ।
—फुलवाडी

उ०—२ राजाजी रा छाला पड्या हाथा रै मेहदी लगाय नाई फूका देवण लागो सो देवतो ई गियो । मेहदी अर फूका सू थोडी घणी बळत मिटी तो राजाजी रै जीव मे जीव आयो ।—फुलवाडी

मेहमद—देखो 'मेंमद' (रू भे.)

उ०—ए मां भाभीजी ने कहकै म्हांरै मेहमद मडवादे मैं खेलण जास्यू नूरदी ।—लो गी

मे, मे'—देखो 'मेह' (रू भे)

उ०—दायमन डागं रै पंल-पोन गी वेटी जांमी जद घर हाळां नैं, गनलां पाटीम्या वात वताई कै आवी लारं मे' टीडी लारं वावळा अर वटी लारं वेठो आया करै है ।"—दसदोख

मेआई—देखो 'मेहाई' (रू भे)

मेइण, मेइणी—देखो मेदिनी' (रू भे)

उ०—गोहट खांन खडै खर हड्ह, मेदण धुवळियो अहमद्ह ।
—गु रू व

मेउडो, मेऊडो—देखो 'मेह' (अल्पा, रू. भे)

उ०—आज वोगाऊ वरसी धूंधळी, काळी कांठण मेह ओ । आज ने वरसे घरमी मेऊडा भीजै तवू री डोर ओ ।—लो गी.

मेक—वि० [स० एक] अकेला, एक मात्र ।

उ०—१ आदि अत आदेस, मेक आदेस नरेसर । अलख तूझ आदेस अगह आदेस अनतर ।—ह र

उ०—२ उहव थया नां कोई वह आवं,सुरियग मारग अन्य सह । मेक रहै धरमीह ममोभ्रम, प्रिथी विलगी तूझ पह ।—ह र

स० पु०—एक की सख्या, एक ।

उ०—१ सूंडा-डड अखडो, मूगा आरूढ मेक मय दतो । ईस्वर उमया पुत्रो तस्मै गुणेसाय नमो ।—गु रू व

उ०—२ मन्त्रिया लियो पुरमांण मेक । असुरांण तरफ करि मन्त्रि एक ।—सू प्र

[स० मेष] ३ बकरा ।

४ देखो 'मेख' (रू भे)

रू० भे०—मेकि, मेको

मेकडसण—स० पु० [रा मेक+स० दशन] गणेश, गजानन ।

उ०—गवरी पुत्र गणेस, मेकडसण आखु जसू वाहण । गज मुख सुर अग्रेस, सिध बुध-पतिये नम ।—मा वचनिका

मेकदत—स० पु० [रा० मेक+स० दन्त] गणेश, गजानन ।

उ०—गजा अणपती जेहि तेज मुरांमुख गिणा, गणां मेकदत राजै आपगा मे सिध ।—भगतराम हाडा री गीत

मेकमो—देखो 'महकमो' (रू भे)

मेकळ—स० पु०—रीवां राज्यान्तर्गत विंध्य पर्वत का एक नामान्तर ।

मेकळकन्यका, मेकळसुता, मेकळाद्रिजा,—स०स्त्री०—नर्वदा नदी का एक नामान्तर ।

मेकवीस—स० स्त्री० [रा० मेक+स० विंशति] एक और वीस, इक्कीस ।

उ०—अस्ट पात्र सव चग, काइ तरुणि काइ वाळा । पिक हसद्द आलाप, कठ मोहित मुगताळा । मेकवीस मूरछा त्रिण (ह) ग्राम निसपति सुर, लहण भेउ खटराग काठ, अक्खै मोखंतर ।
—गु. रू व.

मेकि, मेको—देखो 'मेक' (रू भे)

उ०—१ मेकि वांण मागी मरम पडै घसती प्राणि ।—रामरासो

उ०—२ मेको हाथि मोकल्यो, जोर्ध जोरावर, उठै न कोड उपाव सू निम रह्या सको नर ।—ठा० कूझारसिंह मेड़तिया

मेख—स० स्त्री० [फा० मेख] काठ व धातु की कील ।

उ०—१ जेथ मळेतर मेखचा, गढे मळेतर मेख । जळै मळेतर इंधणा, दळ चाळक रो देख ।—वा दा

उ०—२ तद राजाजी सिंघासण मार्थ विराजता स्री मुख सू फरमायो—पछै थें लोग विरथा क्यू डरो । परवाना री वात रै तो अठै ई मेख लागगी । फुलवाडी

उ०—३ सो चाकर आय इणरी झोपडी कन्है होकारो कियो । च्यांरू पग इमा रोपिया जांणु जे मेखां गाडी ।
—सूरे खीवें कांधळोत री वात

मुहा०—मेख लागणी=किसी चालु क्रम का रुकना,महमा रुकना, स्थिर होना ।

२ मवेशी को बाधने या सामियाना तानने आदि के लिये जमीन मे रोपी जाने वाली लकडी या लोहे की मोटी कील, खूटी, खूटा ।

उ०—१ तरै समरथसध मनै कीयो अठै डेरो मती करो, ऊट वधै छै । तरै माटी गाळ दीनी तिण ऊपर समरथसंध उठ ने गयो । तरै आगे माटी मेख रोपै छै समरथ सध झटकारी दीनी सो माथो तुट पडीयो ।—रा व वि

उ०—२ जयजरी सिमांना खंभ जडाव । तै रूप मेख रेसम तणांव ।
—सू प्र.

३ किसी पुरुष या स्त्री के मुह मे सामने वाले दातो मे जडी जाने वाली सोने की कील, चूप ।

उ०—दांता अम्रत मेख दया को वोलणो । उवटन गुरु को ग्यांन ध्यान को धोवणो ।—मीरां

४ पलक झपने व खुलने की क्रिया या भाव, निमेष।

उ०—कपोळे मिळे रूप ओपै अलक्का, प्रभू पेखता मेख भूलै पलक्का।—रा रू

५ असमजस, सदेह।

उ०—म्हारौ म्हारौ करि घन मेलकु, लोभ वसै लयलीन। नरक तणा घर यू छू नव नवा इण मे मेख न मीन।—घ व ग्र

मुहा० मेख न मीन=जिसमे कोई सदेह न हो, निस्सदेह।

६ देखो 'मेष' (रू भे)

उ०—गरद्दन कद्दन केक मुगल्ल। छटं खग देखक मेख छगल्ल।
—मे म.

मेखचौ–स० पु०—१ हथौडा।

उ०—१ जेत मळैतर मेखचा, गडै मळैतर मेख। जळै मळैतर ईंधणा, दळ चालक रो देख।—बा दा

उ०—२ मेखा निहाव पडि मेखचा ताळी तजै तपेमरा। घर धूजि धमक विसहर धुकै, सहस धुकै फण सेस रा।—सू प्र

उ०—३ कुतक खिदर धव काठ रा खिदर पचावण वेस। तो पिण हाजर राखणा, घण मेखचा हमेस।—बा दा

मेखमो–स० स्त्री०—स्वर्णकारो के काम आने वाला एक उपकरण, जो आभूषणो पर खुदाई करने के काम आता है।

मेखळ–स०पु०—१ हवन कुड।

२ देखो मेखळा' (रू भे)

उ०—१ पाच माळ अहिरी गळ पहरी। अविसवि दहू जनेऊ अहिरी। कट मेखळ अहि धरै सकाजै,रिधू पाव साकळ अहि राजै।
—सू प्र

उ०—२ कर्ण कान आटक, वेण नासा मोतीहळ। हार उर चदन विलेप, रची काकण कटि मेखळ।—गु रू व.

मेखलगन—देखो 'मेपलग्न' (रू भे)

उ०—सवत १७२३ रा माहावद ३ गुरुवार दिन घडी १३ चढीयां नै पल १ मेखलगन मे जनम हुवौ।—नैणसी

मेखळा–स० स्त्री० [स० मेखला] १ करघनी नामक आभूषण जो कटि प्रदेश के चारो ओर लपेट कर पहना जाता है, तागडी, किंकणी, घटिका।—(व स) (अ मा)

२ कमर मे बाधी जाने वाली सूत की डोरी, कटि सूत्र।

३ कमरवद, कमरपेटी, इजारवद।

४ वह वस्तु, जो किसी अन्य वस्तु के मध्य मे चारो ओर लिपटी रहती है।

५ मडलाकार घेरा।

उ०—१ कमठ भार कसमस,दाढ बाराह खडक्कै। मडळ मेर मेखळा घमस, धूळी रिव ढक्कै।—गु रू व

उ०—२ अर तोपां री गाज हू सेस रा सीसां समेत मकराकर मेखळा मही रै मचोळा लगाया।—व भा.

६ पहाड की उतराई, ढलान।

७ हवन कुण्ड के चारो ओर बनी पाज, घेरा।

८ पर्वत का मध्य भाग।

९ कमर, कूल्हा।

१० तलवार का परतला।

११ तलवार की मूठ मे बधी डोरी की गांठ।

१२ घोडे का जेरबध।

१३ घोडे की तोद पर होने वाली भवरी।

१४ नर्मदा नदी का नाम।

१५ देखो मेखळी' (रू भे)

उ०—१ माळा मुद्रा मेखळा रे वाला, खपरा लागी हाथ। जोगण हुइ जुग ढूढसू, म्हारा रावलिया री साथ।—मीरा

उ०—२ सेली सीगी मेखला, कांनि मुदरका घालि। हरीया जोगी जुगति विन, पच न सधै पालि।—स्री हरिरामदासजी महाराज

रू० भे०—मेखळ, मेहल।

मेखलिक–स० पु०—एक वर्ग विशेष।

उ०—मान्त्रिक तन्त्रिक गाडरिक मेखलिक लेखक कथक कविकर तालवर कविराज" ।—व स

मेखळियौ–स० पु०—पहनने का कुरता।

रू० भे०—मेखळौ, मेखल्यौ

मेखळी–स० स्त्री०—१ योगियो व ब्रह्मचारियो का एक पहनावा,जिसमे पीठ व पेट ढके रहते हैं तथा दोनो हाथ खुले रहते हैं।

उ०—तरै जोगी देवराज नू कह्यौ-थारा वळ रो विरद वधौ। नै मेखळि, नाद दियौ, पात्र दियौ, नै कह्यौ-ओ थे पाट वैसो तद दीवाळी दसरावै धारिया करौ।—नैणसी

२ झोला, वड़ा थैला।

उ०—१ तद सिद्ध मेखळी मांहै हाथ घातनै गोटौ १ बभूत रो, सोपारी ४ काढ दीवी।—नैणसी

उ०—२ वानी अग पलेट मेखळी भुजपर मेली। ले माछदर नाम साहतन कथा सेली।—पा प्र.

रू० भे०—मेखळा, मैखळी,

मेखळौ, मेखल्यौ—देखो मेखळियौ' (रू भे)

मेखसक्रायत' मेखसक्रांति–स०स्त्री० [स०मेप–सक्राति] मेष राशि मे पडने वाली सक्राति। (ज्योतिष)

उ०—जनमे मेखसक्राति जाम।—रामरासौ

रू०भे०—मेससक्राति, मेससकरात

मेग—देखो 'मेघ' (रू भे)

उ०—ओप सिंदूर तेल अपल्ल, गडडे वाज ढळकै ढल्ल। वहता विहग दाखै वेग, मारुत पेरियौ किरि मेग।—गु रू. व

मेगजीन–स०स्त्री० [अ०] १ राइफल मे लगी वह छोटी पेटी जिसमे कारतूस भरे रहते हैं।

२ वह स्थान या कक्ष जहा सेना का गोला–बारूद रहता है। बारूदखाना।

३ वह पत्रिका जो किसी निर्धारित समय पर प्रकाशित होती

रहती है। सामयिक पत्र।

मेगळ, मेगल—देखो 'मदकळ' (रू भे)

उ०—भिड़इ सहड रडवडइ सीस धड नड जिम नच्चइ। हमइ घुमइ ऊमभइ वीर मेगळ जिम मच्चइ।—सालिभद्र सूरि

मेगवाळ–स०पु० [स्त्री०मेगवाळण, मेगवाळी] एक अनुसूचित जाति व इस जाति का व्यक्ति।

रू०भे०—मेघवाळ।

मेघ–स०पु० [स०मेघ] १ बादल, घन। (अ मा, ना डि को नां मा, डि को)

उ०—१ उठै घणा मायक मेघ 'विलद'। अयौ फिर गोकळ ऊपरि इंद।—सू प्र

उ०—२ मेघ जु वरसण लागा। ताह का पांणी परवता का कदरा थें अर नाळा थे पाणी चाल्यौ छै।—वेलि टी

पर्या०—अभ्र, आकामी कामुक, गजणरोर, घणाघण, जगजीवण, जळद, जळधरण, जळमंडळ, जळमुक, जळवहण, जळहर, जीमूत तडितवान, तनयतू, तोईद, धाराधर, घूमज, अवण, नभधुज, नमराट, निवांणभर, नीरद, परजन्य, प्रथवीपाळ, बळाहक, भरणनिवाण, महीरजण, मुदिर, वरसण, वसु, सघण, मुजळ, स्यामघटा।

२ वर्षा, बरसात, बारिस,।

उ०—मेघ घणौ वूठौ। धरती अजे नीली नही हुई छै। निण अकुर नही हुआ छै।—वेलि टी

३ रावण का पुत्र मेघनाद, इन्द्रजीत।

उ०—१ जळाबोळ लीधा दळा रांण जायौ। अखौ मारियौ सांभळै मेघ आयौ। उठै रांमरा जोध कूदै अमायौ, सभै हाथ पच्छै अयौ मेघ आयौ।—सू प्र

उ०—२ रावण कूभ मेघ सर रहचे, कथ सौ वेद पुरांण कही। सगमी भूपा भूप वभीखण, सरणागत हित लक सही।

—र ज प्र

४ मेघवर्ण, श्वेत-कृष्ण। ८ (डि को)

५ मेघ के समान।

उ०—उण वेळा उळ अगळा, दळ राठौड दुवाह। मेघ थया सीसोदिया, लगी लाय अण थाह।—रा. रू

६ छप्पय छद का ४६ वां भेद, जिसमे २२ गुरु, १०८ लघु से १३० वर्ण या १५२ मात्राए होती है। (र ज प्र)

७ तारकासुर के पक्ष का एक असुर।

८ स्वायंभु मनु के पुत्रों में से एक।

९ एक राज वश, जो कोसल नामक नगरी मे राज्य करता था।

वि०—मस्त, मत्त।

उ०—उतरे वीन हिरणांगी टार आय नीसरै छै तिकै किण भात रा हिरण छै? साळा वडा मेगळ छै, मुहर्दा रै टार मे मेल्य रहया छै।—रा सां स

रू० भे०—मेग, मेघु मेह,

अल्पा०—मेघलौ,

मह०—मेघाण,

मेघपरि–स० पु० [स०] पवन, हवा। (डि को)

मेघईस–सं० पु० [स० मेघ+ईश्वर] इन्द्र।

उ०—रखी सेख वैनतीयै वक्रतुड तुडराज, मेघईस धांम सुर वेद भीम जाण। जती पातसाह माणी मेर दाणी नेक 'जमौ', अठारा विमेक तसौ एक रूप आप।—हुकमीचद खिडियौ

मेघकरण–स० स्त्री० [स० मेघकर्ण] स्कद की अनुचरी, एक मातृका।

मेघकाळ–स० पु० [स० मेघ+काल] वर्षा ऋतु।

मेघजळ–स० पु० [मेघजलम्] वर्षा का पानी।

मेघजाति–स० पु० [स०] एक राजा (प्राचीन)

मेघडबर, मेघडमर—देखो मेघाडबर' (रू. भे)

उ०—१ रजि मेघाडबर रूप सिर झिलत चमर सरूप। ववि ओप वसन वणाव, रवि तेज मुरधर राव।—रा रू

उ०—२ सिधुरा मेघडबर सकाज। सझि पाखर हौदा जग साज।

—सू प्र

मेघदुंभी–स० पु० [स०] एक राक्षस।

मेघदेहा–स०पु०[मेघ+देहिन्] बादल के समान जिसकी देह का रग हो, राम या कृष्ण।

उ०—जिहा मांहि जोधा हणूमांन जेहा। दई मुद्दकां जेण नूं मेघदेहा।—सू प्र.

मेघनाथ–स० पु० [स० मेघनाथ] १ इन्द्र।

२ वरुण।

रू० भे०—मेघनाथ,

मेघनांद, मेघनाद–स० पु० [स० मेघनाद] १ मेघो की गर्जना, घन-गर्जना।

उ०—१ सीगळी गज्ज गरजत साद। नभ जाण दवादस मेघनाद।

—गु रू. व

उ०—२ मेदनी हैमरां खुरां धूजावै चलायमान, ऊछजावै लोयणा भळायमांन आग। मेघनाद गजावै यू सजावै वदूकां मार, वाघला मयदां हाडो खिजावै अजाग।—रामसिंघ हाडा री गीत

२ वरुण।

३ रावण का ज्येष्ठ पुत्र, इन्द्रजीत।

उ०—१ सर पहर अठ जुध मारियौ, मेघनाद लछमण मारियौ। सझि असत्र दळबळ सबळ दससिर आवियौ अवनाड़।—सू. प्र

उ०—२ आहवी रांम री बधु सेस री औतार औपै, कळानिधी कोपै मेघनाद पै कहर। राकमां विश्राम करै अजादा मही री राखी, जको साखी सूरचद खिती री जहर।—बादरदांन घधवाडियौ

४ घटोत्कच के पुत्र मेघवर्ण का नामान्तर।

५ स्कन्द का एक सैनिक।

६ पलास।

रू० भे०—मेघनादि,

मेघनादानळ, मेघनादानुळ–स० पु० [स० मेघनादानुल] मयूर, मोर। (ना मा)

मेघनादि—देखो 'मेघनाद' (रू भे)

मेघनाय–स०पु०—१ नागर मोथा। मुसता।
२ देखो 'मेघनाथ' (रू भे)

मेघपथ—देखो 'मेघपथ' (रू भे) (अ मा)

मेघपति–स०पु० [स०] इन्द्र।

मेघपथ–स०पु० [स०] आकाश, व्योम। (अ मा)
रू०भे०—मेघपथ,

मेघपुसप, मेघपुस्प,मेघपुहप–स०पु० [स०मेघपुष्प] १ इन्द्र का घोडा।
२ श्रीकृष्ण के रथ के चार घोडो मे से एक।
३ जल, पानी। (अ मा ह ना मा)
४ वर्षा में गिरने वाले ओले, हिमकरण।
५ नदी का जळ।
६ बकरे का सींग।
७ मोथा।
८ कुसुम, फूल।

मेघमडाण–स०पु०—आकाश मे बादलो के छा जाने की अवस्था,दशा या भाव
उ०—गडगडि नीसांण मेघमडाण अवर भाण रज छाया। हींस रव घोडै दखणी दौडै, वागा जोडै दळ छाया।—गु रू व.

मेघमलार, मेघमल्लार, मेघमल्हार–स०पु०—वर्षा ऋतु मे गाया जाने वाला सम्पूर्ण जाति का एक राग, इसके सभी स्वर शुद्ध होते हैं। (सगीत)
उ०—१ चौरासी का सांसा मेटघा, कर दीना पेलै पार। दसू दिसा रा आवे जातरी,करता मेघमलार।—स्री हरिरामजी महाराज
उ०—२ गान सुसर गणिका भणै, मुखि मुखि मेघमल्हार। सभू सक्ति नित पूजीइ, आणी आक कल्हार।—मा कां प्र
उ०—३ कुलवधू तणां पागि नूपर खलकइ, तडिइ कीरत्तिस्तभ दीसइ लोक हियां विहसइ, मेघमल्हार राग गाइय, वीणावस मनोहर वाइय, देही पूजा कीजइ, जन्मफल लीजीइ।—व स
२ एक प्रकार का बहुत बडा पक्षी।

मेघमाळ–स०पु० [स०मेघमाल] १ रभा के गर्भ से उत्पन्न कल्कि के एक पुत्र का नाम।
२ प्लक्ष द्वीप का एक पर्वत।
३ देखो 'मेघमाळा' (रू भे) (डि को)
उ०—१ गज थाट घू सगडस गज दळ, क्रमे कोअरण कठळ। परवत माळ कि हेम हल्लै मेघमाळ कि वद्दळ।—गु रू. व
उ०—२ मयाळ मडपाळ मेघमाळ मोहनी नहीं। हिलब से प्रलब थभ विव सोहनी नही।—ऊ का

मेघमाळा–सं० स्त्री० [स० मेघमाला] १ बादलो की घटा, बादलो की पक्ति या श्रेणी, घनघटा।
उ०—१ बंबी वीरण संतार सैनाय वाजे। अमाळा घुरै मेघमाळा तराजै।—मे म
उ०—२ कमाळा लदै सब्ब त्या द्रव्व कोडी,मकट्ठा लठां भार ज्यो टास जोडी। विभारभ आचभ राठौड वाळा, मही छेलिवा ऊमडै मेघमाळा।—रा रू
२ स्कद की अनुचरी एक मातृका।
उ०—नमो मत्रणी तत्रणी मेघमाळा,नमो सकरी सुदरी प्रेम साळा।
—मा. वचनिका
रू० भे०—मेघमाळ,

मेघमाळी–स० पु० [स० मेघमालिन्] १ खर राक्षस का एक अमात्य।
२ स्कद का एक पार्षद।

मेघराज–स० पु०—इन्द्र।

मेघलो—देखो मेघ' (अल्पा, रू भे.)
उ०–वीजळ-मीट उफोळ पळकतो जुगनू जाणै। इतरो खीण उजास मेघला मो घर आणै।—मेघ

मेघवत–सं० पु० [स० मेघवत्] एक दानव, जो कश्यप एव दनु के पुत्रो में से एक था।

मेघवनी—देखो 'मेघवरणी' (रू. भे)
उ०—१ तेहनी उपम कहीइ किसी, जाणें स्वरग तणी अरवसी। मेघवनी पहिरइ काचली, निरखइ नारि ते पाछी वली।—
—प्राचीन फागु–सग्रह
उ०२—कडिउ खगावि मेघवनो जि पटुली। लई कपूर करि पान तणीं जिकुली।—प्राचीन फागु–सग्रह

मेघवरण, मेघवरणी–सं० पु० [स० मेघवर्ण प्रा० मेघवण्ण] १ वरुण। (अ मा)
२ घटोत्कच के पुत्र मेघनाद का नामान्तर।
३ एक यक्ष।
४ बादल के रग वाला वस्त्र।
वि०—बादल के रग का।
रू० भे०—मेघवनी, मेघव्रन,

मेघवाळ—देखो मेगवाळ' (रू भे)
(स्त्री० मेघवाळण, मेघवाळी)

मेघवाह, मेघवाहण, मेघवाहन–स० पु० [स० मेघवाहन] १ इन्द्र। (ना डि को)
२ वरुण। (ह ना मा)
३ जैगीषव्य नामक शिवावतार का एक शिष्य।
४ जरासध का अनुयायी एक नृप।
५ एक दैत्य, जो विष्णु के पद प्रहार से मरा था।

मेघविस्फूरणी–स० पु० [स० मेघविस्फूर्जिता] प्रथम एक यगण, तत्पश्चात मगण नगण सगण दो रगण और अत गुरु सहित १९

वर्ग का वर्णाग्रत विशेष जिसमे ६, ६ और ७ पर यति होती है।

मेघवेग–स० पु० [स०] कौरव पक्ष का एक वीर।

मेघवरन—देखो 'मेघवरण' (रू भे)

उ०—किता वोह हय्य किता वोह कन्न । किता धडरूप किना मेघवन्न ।—मा वचनिका

मेघसंधि–स० पु० [स०] जरासंध का पौत्र एव महदेव का पुत्र।

मेघसाद–स० पु० [स० मेघ+शब्द] घन-गर्जना।

उ०—नीमके भुज्ज नव सहस नाद। सादूळ सुणे फिरी मेघ-साद।
—गु रू. व

मेघसार–स० पु० [स०] घन सार, चीनिया कपूर।

उ०—सुगध गवसार एण सार मेघसार ए। सवाम अवरे लुवान इदरे निसार ए।—रा रू

मेघस्वना–स० स्त्री०[स०] स्कद की अनुचरी एक मातृका।

मेघस्वाति–स० पु० [स०] एक आध्रवशीय राजा।

मेघहन्तरी–स० पु० [स० मेघहन्तृ] सुमेधस् देवो में से एक।

मेघहास–स० पु० [स०] राहु का एक पुत्र।

मेघांण—देखो 'मेघ' (मह, रू भे)

उ०—सुरताण दळ मेघाण वद्दळ, सपत समद्र पाणिय मयळ।
—गु रू व

मेघा–स० पु०—मघा नक्षत्र।

उ०—या 'मचकर' हूर वजिया, आद विखै अणरेह। ज्या उलटै मेघा रवी, सिंह पलट्टै देह।—रा रू

मेघाजळ–स० पु०—बरसात का पानी, वर्षा का पानी।

मेघाडव, मेघाडबर, मेघाडबरि, मेघाडमर–स०पु०[स० मेघ+आडम्बर]

१ मेघ गर्जना, घन-गर्जना।

२ बादलों का विस्तार बादलों का समूह।

उ०—मेघाडबर मदि सूर गज्जें सन्नाहनि, फीलो फरकि निर्मान, गरक ताजी गज गाहनि।—ला रा.

३ फौर्ट बडा सामियाना, तबू, चदोवा।

४ हाथी पर रक्खा जाने वाला हौदा, अबाडी।

उ०—१ घग भूना ओछडि, दिया कसि मेघाडबर। पाखा लगर पखा, उवरघा भडा अवर।—मे म

उ०—२ आया बाहिर एम, वैसि गजा मेघाडबर। चगया वे ढुळतै चमर, हीर जडित छत्र हेम।—वचनिका

उ०—३ जय कुजर हाथीया तणइ कुभस्थलि चडिउ, पाखती अगरक्षक तणी ओलि, मडलिक तणइ परिवारि, पताका फुरकती, मेघाडबर तणइ आडबरि"।—व म

उ०—४ बहुमट गजां मेघाडबर कटठे आगवा मखळ। तन गमन रगे चढिया तुरां, दुगम सूर किमरीर दळ।—सू प्र.

८ एक प्रकार का वस्त्र विशेष।

उ०—१ जादर मेघाडबर नेत्रपट्ट चोनपट्ट गजपट्ट गजवहि"'
—व म

उ०—२ सानुबाफ, जरबाफ स्रीबाफ सुफ कमखा खरमु नरमु मेघाडवर मजीर दाडिमसार"' ।—व स.

रू०भे०—मेघडवर, मेघडमर,

मेघावलि–स०स्त्री०—१ एक प्रकार का वस्त्र विशेष।

उ०—बहमूल घूणोलिय मीणीय काल फूटउत रातउ फूटउत। सूपउति मेघावलि मेघडवर पदमावलि पद्मोत्तर इत्यादि वस्त्राणि।
—व स

२ मेघमाला मेघपक्ति।

मेघासुर–स०पु० [स०] १ ४९ क्षेत्र पालों मे से ४१ वा क्षेत्रपाल।

मेघास्त्र–स०पु० [स०मेघ+अस्त्र] एक प्रकार का अस्त्र।

उ०—आग्नेयास्त्र वारुणास्त्र दानवास्त्र माहेंद्रास्त्र तिमिरास्त्र हिमककरास्त्र नारायणस्त्र अश्वग्रीवास्त्र ब्रह्मास्त्र मेघास्त्र इति अस्त्राणि।—व स

मेघु—देखो 'मेघ' (रू भे) (उ र)

मेड–स०स्त्री०—१ किसी खेत की सीमा।

२ सीमा, मर्यादा।

स०पु०—३ स्वर्णकारो की एक शाखा। (मा म)

रू०भे०—मेढ,

मेडतिया–स०स्त्री०—राठौड वश की एक शाखा। राव दूदा के वशज।

उ०—१ मिळ जोधा ऊदा कमध, मेडतिया ससमाथ। करनोता चापा कनै, भल कूपा भाराथ।—रा रू

मेडतियौ–स०पु०—१ राठौड वश की मेडतिया शाखा का व्यक्ति।

उ०—इम बोलै मेडतियौ अडुर। बुर जोधार पूछै पाटोधर।
—सू प्र

२ मेडता नगर का निवासी।

वि०—मेडता सबधी, मेडता का।

रू०भे०—मैडतियौ, मैडत्यौ,

मेडत्यौ—देखो 'मेडतियौ' (रू भे)

मेडी—देखो 'मैडी' (रू. भे.)

उ०—१ चढ चढ दासी मेडियां, झांक झरोखां माय। जे तने दीसै आवतो म्हारो मदछकियो स्याम।—लो गी

उ०—२ साची बात है—मत मरज्यो टाबर री माय, ना मरज्यो बूढै री नार पेमजी री मेडी रो दीयो बुझग्यो। लेवडा झडग्या, देवळ जमगी अर सूनो ढमढेर बणग्यो —दमदोख

मेच–स०पु०—१ मौका, अवसर।

उ०—पडै वक्र वीची किता नाग पेचा। मिळे ग्राथ सू भी समै साथ मेचा।—व भा

२ देखो मेछ' (रू भे)

रू०भे०—मेचु,

मेचक–स०पु० [स०मेचक] १ कृष्ण पक्ष।

उ०—मेचक २ फागुण १२ पचमी ५, चढै अडर चहुवाण। आयौ पट्टण आगरै, परदळ दट्टण पाण।—व भा

२ श्यामलता कालापन।

३ अंधकार, अधेरा।

४ धुम्रा, धूम्र

५ बादल।

६ काला नमक ।
७ सुरमा ।
८ स्तन के ऊपर की घुंडी ।
९ एक रत्न विशेष ।
१० स्त्रियों द्वारा शृंगारार्थं चिबुक पर लगाई जाने वाली बिंदी । (ग्र मा.)
वि०—कृष्ण, श्याम, काला । (ग्र मा , ना मा)
रू०भे०—मेछक ।

मेचकता, मेचकताई–स०स्त्री०—कालापन, श्यामलता ।

मेचसिगार–स०पु०—पीतल ।
उ०—मेचसिगार हेम कम मीढा, तोलै ऊड उडीयद तसा । सीसोदीया तुहाळी समवड, कीजै जे भूपाळ कसा ।—ग्रोपो ग्राढो

मेचु–स०पु० [स०मिथ्या] १ ग्रसत्य, भूठ ।
उ०—वयराट उत्तर पखइ कुरुराउ धायउ । ग्रक्षोहणी दल तणी रज सूर छायउ । नीसाण ने सहसि ग्रवर घोर गाजइ, ए पाच पांडव तणउ किरि मेचु भांजइ ।—सालिसूरि

मेच्छ—देखो 'मेछ' (रू भे)
उ०—मौलवी कराई ग्ररज काजी मुला, पाडजै देवहर दळा कर पेल । मेच्छ धाचै जिको हिंद इकळीम मज्झ, खडो राजा जितै वर्णै नह खेल ।—महाराजा जसवन्तसिंह रो गीत

मेछद—देखो 'मेछ' (मह , रू भे)
उ०—ते लरका मुख विख सुनै, वायक सायक सार । स्तुति सभर मेछद के पजर करत प्रहार ।—ला. रा

मेछ–स पु० [स०म्लेच्छ] १ ग्रसुर, दैत्य, दानव । राक्षस । (ह ना मा)
उ०—१ जै जै भूपा भूप, सदा सतां साधारै, दीना दाता देव, मेछ ग्रनेका मारै । सीता स्वामी सूर, बीर वागां वांणासां, लका जेहा ले'र, दान देणो तूं दासां ।—र ज प्र.
उ०—२ इंद्र पूछीया तरइ ब्रह्मादिक, मेछ कीयइ रइ हाथ मरइ । देव ग्रनई महात दूहवइ, तिण कहर सुरांपति खेद करइ ।
—महादेव पारवती री वेलि
२ यवन, मुसलमान । म्लेच्छ ।
उ०—१ मेछ उलट्टा मेदनी, फट्टा जाण समद । बळ छुट्टा भड कायरां, देख प्रगट्टा दुद ।—रा रू
उ०—२ मेछा ग्रागळ माथ, निवै नहीं नरनाथ रो । सो करतव समराथ, पाळै राण प्रतापसी ।—दुरसो ग्राढो
उ०—३ निजोडत मेछ घरै खत्रनेम । खगा 'सगतेम' समोभ्रम 'खेम' ।—सू प्र
उ०—४ पाडवा जही किता पळ खडिया, विहरै हाड विजू–जळ वाह । सहुग्रा सिर महुग्रो सूरजमल, मेल्यो मेछ तणो दळ माह ।
—गु रू व
३ नीच, दुष्ट, विधर्मी ।
उ०—भाण ऊदोत रै समै पळ भोगणी, थोगणी मोत रै समद थागै । ग्रसुर उर खोतरै मेछ ग्रारोगणी, जोगणी जोत रै रूप जागै ।
—खेतसी वारहठ
४ तांबा ।
५ देखो 'मेच' (रू भे)
रू०भे०—मेचु मेछद, मेच्छ,
ग्रल्पा—मेछो,
मह०—मेछाग, मेछाण, मेछान, मेछाड, मेछायण, मेछाळ, मेंछाण मेंछायण ।

मेछक—देखो 'मेचक' (रू भे) (ह ना मा)

मेछमुख–स०पु० [स०म्लेच्छमुख] तांबा । (डि. को)

मेछांइण, मेछांण—देखो 'मेछ' (मह , रू भे)
उ०—१ हिंदू धरम निवाह सरम गजै मेछांणां । चक्रवती चालियो प्रगट वैकुठ पयाणा ।—रा रू
उ०—२ पाड पतसाह धड़ सिवाडा पौढियो, देव मडळ सरी नको दूजो । मार मेछांण धड जोत 'सूजो' मिळै, पथर पाडो तया कोड पूजो ।—सुजांणसिंह सेखावत रो गीत
उ०—३ मलिकहेम डरै मेछाइण, देखै विसमा कमध दळ ।
—विक्रमादीत राठोड रो गीत
(स्त्री०मेछाणी)

मेछान, मेछांड—देखो मेछ' (मह , रू भे)
उ०—१ चढि चाल्लिय मेछान भान गरदावनि भिल्लिय । हल चल्लिय हिंदवान, खखड जुग्गनि खिल खिल्लिय ।—ला. रा
उ०—२ दळ गहबर ऊलटा, खान तहवर सारीखा । महा सोच मेवाड, ईख मेछांड भणीखा ।—रा रू

मेछाधिपति–सं०पु० [स०म्लेच्छ–ग्रधिपति] १ ग्रसुराधिपति, दानव राज, दैत्यराज ।
उ०—मेछाधिपति सभ बोलियो–गुमान रा भार सू भाजै । जांणै सघण वादळां मांह, गैहरो मेह गाजै ।—मा वचनिका
२ मुसलमान बादशाह, यवनाधिपति ।

मेछायण—देखो 'मेछ' (मह , रू भे.)

मेछाळ —देखो 'मेछ' (मह , रू. भे)
उ०—मेछाळा सिर मार, देतो पह ग्रागै दळा । कैलपुरो भारथि किसन, जाडगो जिणिग्रार ।—वचनिका

मेछो—देखो मेछ' (ग्रल्पा , रू भे)

मेज–स०पु० [फा०] १ लकडी की वह बड़ी व ऊंची चौकी या पाट जिस पर प्राय पढने–लिखने या खाना खाने का कार्य किया जाता है । टेबिल ।
२ दावत का सामान, भोजन–सामग्री ।

मेजपोस–स०पु० [फा०मेजपोश] मेज पर बिछाया जाने वाला वस्त्र, चादर ।

मेजर—सं०पु० [अं०] सेना का एक अधिकारी।
वि०—मुख्य, बड़ा।
मेजरनामौ—सं०पु० [अं०महजर नामा] १ कई व्यक्तियों द्वारा सामूहिक रूप में दिया जाने वाला आवेदन-पत्र।
२ वह पत्र जिसमें कई आदमियों की गवाही हो।
३ प्रमाण-पत्र,साक्षी पत्र।
४ लोगों के हाजिर होने का एक स्थान।
५ हत्या या हत्यारे के सम्बन्ध में साक्षीपत्र।
रू०भे०—महजरनामौ
मेट—सं०स्त्री०—मुल्तानी मिट्टी।
उ०—१ मुरड मेट लाल अर पीळी, खणिज खवेडौ खलक रौ। पलक पलक रौ पूज जोगौ, मानी मुरधर मुलक रौ।—दमदेव
उ०—२ नायण मुळकती थकी बोली—म्हां गरीबां रै अठफ पड़ै जद मेट, कोयला चेपौ, मुरड सू हुर पालला।—फुलवाड़ी
सं०पु० [अं०] २ मजदूरों के ऊपर कार्य करने वाला अधिकारी, जमादार।
३ जहाज पर कार्य करने वाला एक कर्मचारी।
४ मेटने की क्रिया या भाव।
रू०भे०—मेटि।
मेट, मेटण—वि०—मिटाने वाला।
उ०—१ सगट गद मेटण हरि सक।—ह नां मा,
उ०—२ नमो नारायण जोग- निवास,नमो दुख मेट उबारण-दास।
—ह र
मेटणछपा—सं०पु०—रात्रि को मिटाने वाला सूर्य। (डि को)
मेटणतम—सं०पु०—१ अंधकार को मिटाने वाला, दीपक। (ना मा,)
२ सूर्य, रवि।
मेटणौ, मेटबौ—क्रि०सं० [सं०मृष्ट] १ समाप्त करना, नष्ट करना, मिटाना।
उ०—१ आतम ऊचा देखीयें, नीच न देखौ कोय। ऊची नीची मेट करि, हरीया हरि का होय।—श्री हरिरामदासजी महाराज
उ०—२ त्रिलोक लोक लोक को प्रलोक लोक की वर्दं। त्रिलोक मोक मेट देत पेट दे जदै तदै।—ऊ का
उ०—३ मेटे सुरलोक पैठौ जळ माह तठै इक अंड निपायौ ताह।
—ह र
२ दूर करना, हरण करना, अलग करना, हटाना।
उ०—१ औगण मेटण हार, अमोलख औगद इणम। गूद घणौ गुणवार, अव्यय भक्ति है जिण पे।—दमदेव
उ०—२ महादेवजी रै मामी देमनै फंवण लागा—यें मळै मोळा-सकर बाजौ,दीन-दुनिया रा दुख मेटण री गुमांन करौ। थांरै बैठा था रचना व्है तौ साव सूटगी।—फुलवाड़ा
उ०—३ निय तू जद चरणार करि, मेटि महूनी पीह। स्यू मालै रू सो मणो मांजि दुहेली भीड़।—वि भु
उ०—४ अधम-उधारन याद करि, तन मन राखि नचित। जन हरीया कुण मेटसी, सांई बिना मवित।—
—श्रीहरिरामदासजी महाराज
३ निवारण करना, समाधान करना, मिटाना, हल करना।
उ०—१ आ थारे सका है तो चरचा कराला। इम कहि उण वेला इज तावडै मे विहार कीधौ। उनमुण में सूत्र उत्तराध्येन थी सका मेट दीधी।—भि द्र.
४ छोड़ना, त्यागना।
उ०—मानापमान सुख दुख समान। मद मोह मेट भगवत मेट।
५ बंद करना, रोकना।
उ०—सगळी वात चुपचाप सुणिया पछै अरजी चकबी मूडै बोली-इण देंत नै मारनै औ अन्याव मेटिया बिना म्हैं तौ टूंच मे चुग्गौ-पाणी ई नी मेलू।—फुलवाड़ी
६ टालना।
उ०—चिड़ा रै वाचा देतां ई चिडी तौ प्रांण मुगत व्हैगी। चिडो घणौ ई रोयौ-रीकियौ पण होणी नै कुण मेट सकै।—फुलवाड़ी
७ शान्त करना।
८ कम करना, घटाना, क्षीण करना।
९ मारना समाप्त करना, विनाश करना।
उ०—किरमर बीर पुहप कछवाही, मांन'गयौ महपतिया मेट। अरि हम रहया पेट आपाणं,परहम रहै अरघा चै पेट।
१० लोपना, उलघन करना।
उ०—१ मुख राम रांम करज्यौ मती, म्हारौ कह्यौ न मेटज्यौ। धारणां वरण साथां चरण, भूल कदै मत भेटज्यौ।—ऊ का
उ०—२ मेट सकइ न को मरजादा, हालइ सको मरजादा माहि।
—महादेव पारवती री वेलि
उ०—३ आग्या ह मेटि अठइ ताइ आई वात इयइ रउ अउहिज विचार।—महादेव पारवती री वेलि
११ कोई लिखावट या चिन्ह मिटाना, साफ करना।
मेटणहार, हारौ (हारो), मेटणियौ—वि०।
मेटिओड़ौ, मेटियोड़ौ, मेट्योड़ौ—भू० का० कृ०।
मेटीजणौ, मेटीजबौ—कर्म वा०।
मिटणौ, मिटबौ—अक० रू०।
मेटली—सं० स्त्री०—रहट द्वारा कुए से पानी निकालने का एक मिट्टी का उपकरण।
मेटि—देखो 'मेट' (रू भे)
उ०—माथउ घोइ मेटि, उभू मूरिज सामुही। तउ ऊपनो पेटि, मोहण बोली मारुई।—ढो मा
मेटियौ—सं०पु०—मेट के रंग का घोड़ा।
उ०—के लीला के कागदा करड़ा हरडा केक। मुमकी नुकरा मेटिया दमड़ा तुरग अनेक।—पे रू
वि०—मेट के रंग का।

मेटियोडो—भू०का०कृ०—१ समाप्त किया हुआ, मिटाया हुआ, नष्ट किया हुआ २ दूर कियाहुआ अलग किया हुआ,हरण किया हुआ, हटाया हुआ ३ निवारण किया हुआ, समाधान किया हुआ हल किया हुआ ४ छोडा हुआ, त्यागा हुआ ५ बद किया हुआ, रोका हुआ ६ टाला हुआ ७ शान्त किया हुआ ८ कम किया हुआ, घटाया हुआ, क्षीण किया हुआ ९ मारा हुआ, समाप्त किया हुआ, विनाश किया हुआ १० लोपा हुआ, उलघन किया हुआ ११ साफ किया हुआ मिटाया हुआ।

(स्त्री०मेटियोडी)

मेड—स०पु०—तीर, बाण। (डि ना मा)

रू०भे०—मेढ मेंड,

मेडक—देखो 'मीडको' (मह, रू भे)

मेडल—स०पु० [अ०] पदक, तमगा।

मेडसुनार—स०पु०—स्वर्णकारो की एक शाखा।

मेडिकल—वि० [अ०] १ चिकित्सा सम्बधी।

२ औषधियो सम्बन्धी, भैषेजिक।

मेडिसन—सं०पु० [अ०] औषधि, दवा।

मेडी—देखो 'मेढी' (रू भे)

मेडो—देखो 'मेंढो' (मह., रू भे)

उ०—मिलिया सुरवए कोडि तेत्रीस, गयणे दुदुहि द्रह द्रहीय। मेडे वइठला राय कूयार आवए कूयरि द्रूपदीय।—सालिभद्र सूरि

मेढ—१ पशुओ के बांधने के लिए जमीन मे गाडा जाने वाला खूटा।

२ देखो 'मींढ' (रू भे)

उ०—महा उमराव राणा तणे मेढ रा। वेढ रा डाव वप चडेवानी साख रा भडा भिडज्जा चढै सावता, मरद् मेवासियां हार मानो।

—दल्लो मोतीसर

वि०—२ दृढ, अटल।

उ०—सायर तणं मरस साई दळ, मरवा छळां माडियो मेढ। मांझी मेर न गो मेरवडे, विढवा रहियो काटा वेढ।—दूदो आसियो

३ देखो 'मेड' (रू भे)

४ देखो मेड' (रू भे)

५ देखो 'मीढ' (रू भे)

६ देखो 'मेढी' (रू भे)

मेंढक—देखो 'मींडको' (रू भे)

मेढको—देखो 'मीडको' (रू भे)

मेढासींगी—स०स्त्री० [स०मेढ शृगी] १ प्राय मध्य प्रदेश व दक्षिण के जगलो मे पाई जाने वाली एक झाडीदार लता जो औषधि के रूप में काम आती है व इससे सर्प का विष दूर होता है।

२ देखो 'मीढ़ासीगी' (रू भे)

रू०भे०—मीडासीगी।

मेढ़ि,मेढ़ी—स०पु० [स०मेधी] १ रहट या खलिहान में अनाज के पौधो को कुचलने के लिये जोते जाने वाले वैलो में से अन्दर की ओर चलने वाला वैल।

उ०—रिण गाहटतै राम खळा रिण, थिर निज चरण से मेढ़ि थिया। फिरि चढियै सधार फैरता, केकाणां पाई सुगह किया।

—वेलि

(स० स्त्री०) २ खलिहान के बीचो बीच रोपा जाने वाला लकडी का स्तम्भ, खूटा जिसके चारो ओर वैल घूमते हैं। (उ. र)

३ स्तम्भ,।

४ घोडे के सिर पर होने वाली एक भवरी।

५ स्त्रियो के सिर की कनपटी के ऊपर की गूथी हुई लटे जो चोटी के साथ गूथी जाती है।

वि०—मुखिया प्रधान, पच।

उ०—१ चोडै धाडै चोर ढग विन ढेढ़म ढेढी। जिकै नही किण जोग, मिल्या घर घर ग मेढ़ी।—ऊ. का

उ०—२ खत्या खेसलिया भाखलिया खाधं,वेभ्रड दांमोदर चांमोदर वांधं। मुखिया मन मोहण दोहस घर मेढ़ी, गोढै ढेरी व्है खूणी मे गेढी।—ऊ का

उ०—३ हसम सिणगार मुजरौ कर हालियो, तेज अजरौ करै नजर तेढी। कूपहर अडर सुघड भवर अणी रो, मिसल मुरधर समर अमर मेढी।—ठाकुर महेसदास कूपावत रो गीत

रू० भे०—मैंडी, मैंढी

मेढीमणौ—वि०—१ वीर वहादुर।

उ०—१ चालमी जुव गयण घोम चेढीमणौ, मुगळां गाळसी जोम मेढीमणौ। तरह लकाळ सी घाट तेढीमणौ,जाळसी वयां कसर दाट वेढेमणौ।—बद्रीदास खिडियो

उ०—२ आरवी बव मादळ उभै, धुवै नाद वादळ धजर। मोनू वताय वेढीमणा, नाह कठी टेढी नजर।—मे म

मेढो—देखो 'मीढो' (रू भे.)

मेण—स० पु०—देखो 'मैंण' (रू भे)

उ०—१ दिक्षा छे पुत्र दोहिली तो ने कहु छु जताय। मेण दांत लोहना चणा, कुण सकेला चबाय।—जयवाणी

उ०—२ जको सत जीवत सिंघ नै कोप करै तो भसम करदे, उण रै सामो मेण रो सिघ बापडो कित्तीक देर टिक सकै।—फुलवाडी

मेणका—देखो 'मेनका' (रू भे)

मेणबती, मेणबत्ती—स० स्त्री० [फा० मोम+वत्ती] मोमवत्ती, शमा।

मेणमाखी—स० स्त्री०—मधु मक्खी।

उ०—एक मेणमाखी नै तिरस लागी तौ वा पांणी पीवण नै गी।

—फुलवाडी

मेणा—१ देखो 'मैंणा' (रू भे)

२ देखो मेना' (रू भे)

३ देखो मैंना' (रू भे)

मेणियो—स० पु०—जिस पर मोम का रोगन चढा हुआ हो।

मेणी, मे'णी—१ देखो 'मैंणी, मैं'णी' (रू भे)

२ मेणा जाती की स्त्री ।

३ गुण्डी ।

मेणो, मेणौ—देखो 'मेणो' (रू भे)

मेतर—देखो 'महत्तर' (रू भे)

मेतळणो मेतळबौ—क्रि० स०—भूनना, तलना ।

उ०—कुमाइरै नई म्रळ कीवा, मेतळश्री नह ताम मुर्णं । पवन भगार्ह मब रस परसै, मत्रा सगहम नाम मुर्णं ।

—महाराज प्रथ्वीराज री गीत

मेती-स० स्त्री०—सीस फूल (आभूषण) का वह भाग जिसमें धागा पिरोया जाता है ।

२ देखो 'मेथी' (रू. भे.)

मेथी-स०स्त्री०—१ भारत मे प्राय सर्वत्र होने वाला पौधा, जिसकी खेती की जाती है । (उ र)

२ उक्त पौधे का बीज ।

वि० वि०—इस पौधे की पत्तियों की सब्जी बनती है । इसकी फली के दाने औषधि में काम आते हैं और कई प्रकार मे लाभ दायक होते हैं ।

उ०—उमदना लाडू, हूवना लाडू, दहीथराना लाडू, रवाना लाडू करकरी लाडू, आसविना लाडू, मेथी ना लाडू ' ' ।—व स

मेथो-स०पु०—वन मेथी । (वैद्यक)

मेद-स०स्त्री० [स०मेद] १ चर्बी, वसा ।

२ शरीर के किसी भाग मे चरबी की बढ़ी हुई गाठ, एक रोग । (हि को)

उ०—ऊपरला होठ रै पसवाडै मूछ्या रा मामूली सेनांग । गळा रै मामो मांस लाठी मेद ।—फुलवाडी

३ एक वर्ण सकर जाति जिसकी उत्पत्ति वैदेहिक पुरुष तथा निषाद जाति की स्त्री से होना माना जाता है ।

४ एक नाग का नाम ।

५ एक औषधि विशेष जो अष्ट गण वर्ग मे से एक है तथा क्षय रोग की दवा है । (अमृत)

६ कस्तूरी ।

७ देखो 'मेदनी' (रू भे)

८ देखो 'मेध' (रू भे)

मेदक-स०पु० [स०मेदक] शराब खीचने के काम आने वाला द्रव्य ।

मेदकर-स०पु० [स०मेदस्कर] मास । (डि को)

मेदज-स०पु० [स०मेदजम्] १ हड्डी, अस्थि ।

२ एक प्रकार का गूगल ।

मेदरेचा-स०स्त्री०—चौहान वश की एक शाखा ।

उ०—पन्हि मेदरेचा चहुवांण नंधण अमरावत री दोहितौ ।

—बां दा ख्यात

मेदरेचो-स०पु०—चौहान वश की मेदरेचा शाखा का व्यक्ति ।

मेदणी—देखो 'मेदनी' (रू भे)

उ०—मडळ ध्रू सथिर, अहराव सिर मेदणी, राव गागो कहै, त्यां गीत रहसी ।—राव गागो

मेदधरा-स०पु० [स०]शरीर की वह झिल्ली जिसमे चरबी रहती है ।

मेदनी-स०स्त्री० [स०मेदिनी] १ पृथ्वी, धरती, भूमि । (अ मा, ना. मा, ह नां मा)

उ०—मेछ उलट्टा मेदनी, फट्टा जांण समद । वळ छुट्टा भड कायरा, देख प्रगट्टा दुंद ।—रा रू

२ जगह स्थान, स्थल ।

३ सस्कृत का एक कोश ।

रू०भे०—मेद, मेइणी, मेदणी, मेदिन, मेदिनी,

मेदनीतळ-स०पु० [स०मेदिनीतल] भूमितल, पृथ्वीतल ।

रू०भे०—मेइणीतळ ।

मेदपाट-स०पु०—मेवाड का एक नामान्तर ।

उ०—१ अकबर कीना आद, हींदू नृप हाजर हुआ । मेदपाट मरजाद पग लागो न प्रतापसी ।—दुरसो आढो

उ०—२ मेदपाट नै लाट वलि भोट अनै करणाट । पोतै वसि करि चालीयौ, ले निज सेना थाट ।—वि. कु

मेदा-स० स्त्री०—१ अष्ट वर्ग के अन्तर्गत एक औषधि ।

२ देखो मेधा' (रू भे)

मेदालकडी—देखो 'मैदालकडी' (रू भे)

मेदिन, मेदिनी—देखो 'मेदनी' (रू भे)

उ०—करणीगर रूडा करै, करतं विलब न काय । मार उपावै मेदिनी, मुहुरत हेकण माय ।—ह र

मेदिय, मेदियो-स० पु०—एक प्रकार का वस्त्र ।

उ०—वीणउसीउ मलक्मीउ मूगनउ मयउ मगलिक मेदियउ सीलउर इत्यादि वस्त्राणि ।—व स.

मेदो-स० पु० [अ० मेद] १ पक्वाशय, कोठा ।

२ पेट ।

३ देखो 'मैदो' (रू. भे)

मेध-स० पु० [स० मेध] १ यज्ञ हवन, मख ।

२ हवि, बलि ।

३ बलि दिया जाने वाला पशु या पदार्थ ।

४ सीमा, हद ।

रू० भे०—मेद ।

मेधज-स० पु० [स० मेधज] विष्णु का एक नामान्तर ।

मेधा-स० स्त्री० [स०] १ वह मानसिक शक्ति जिसके द्वारा सोचने-विचारने व औचित्य समझने का कार्य होता है । बुद्धि, प्रज्ञा, मति ।

उ०—देवी मालणी जोगणी मत्त मेधा । देवी ऊधणी सूर असुरां उवेधा ।—देवी०

२ बुद्धि, प्रज्ञा, मति । (अ मा,, ना मा, ह ना मा)

उ०—१ बालकांड दाख्यौ विमल मेधा मुझ परमांण । अरणकांड वरण, अवै, सुणजै चिरत सुजाण —र रू

उ०—२ मेधा महत दीपत दिगत, आदान श्रोघ श्रक्षय अमोघ ।
—ऊ का.

३ स्मरण शक्ति, याददाश्त ।

उ०—वह जगद विसतारै, निधि मेधा तुम्यो नम ।—रामरासो

४ मान्यता, धारणा ।

५ सरस्वती का एक रूप विशेष ।

६ सोलह मातृकाओ मे से एक ।

७ दक्ष प्रजापति की एक कन्या ।

८ सीमा, हद ।

उ०—कांम तौ वडौ नही, पण भोळी जनता माथै रोव मेधा वायरौ खाटै ।—दसदोख

९ चोर । (अ, मा.)

१०—यज्ञ ।

११ छप्पय छद का एक भेद ।

रू० भे०—मेहा, मेंधा ।

मेधादध, मेधादधि–स० पु० [स० मेधा+उदधि] १ बुद्धि का सागर ।

२ कवि । (अ मा)

मेधामांन—देखो 'मेधावान' (रू भे.)

मेधावर, मेधावांन, मेधावाळ–वि० [स० मेधा+वत्,मेधा+वर] जिसकी वुद्धि तीव्र हो, बुद्धिमान, मेधावी ।

उ०—कनिया ग्रहे हालिया किकर । वदै अरज प्रोहित मेधावर ।
—सू प्र.

मेधावी–वि० [स० मेधाविन्] १ जिसकी वुद्धि विलक्षण हो, तीव्र हो, तेज तीव्र वुद्धि वाला ।

२ चतुर, वुद्धिमान ।

३ पडित, ज्ञानी, विद्वान ।

रू० भे०—मेधावी

मेधि, मेधी–स० पु०—कवि । (अ मा)

वि०—वुद्धिमान, चतुर ।

मेन–स० पु०—१ अधकार ।

२ कामदेव ।

वि०—१ श्यामल, काला ।

२ देखो 'मेण' (रू भे)

मेनक—१ देखो 'मेनका' (रू भे) (डि नां मा)

२ देखो 'मैनाक' (रू भे)

मेनका–स० स्त्री० [स०]—१ पुराणानुसार स्वर्ग की एक अप्सरा, जिसने विश्वामित्र ऋषि के साथ सयोग करके शकुन्तला को जन्म दिया था ।

२ हिमालय की पत्नी व पार्वती की माता का नाम ।

रू०भे०—मेणका, मेनक, मेणका, मैणका, मैनका, मैना ।

मेनकात्मजा–स० स्त्री० [स०] १ शकुन्तला ।

२ पार्वती, उमा ।

मेना–स० स्त्री० [सं०] १ हिमालय की स्त्री व पार्वती की माता का नाम ।

२ देखो 'मैना' (रू. भे)

रू० भे०—मयणा, मयना, मेणा ।

मेनाक—देखो 'मैनाक' (रू भे)

उ०— गिरि मेनाक यू वीनवै रे स्वामी, थोडौ तौ मेटोनी थकाण ।
—गी रा

मेनाद–स० पु० [स० मेनाद] १ मयूर, मोर ।

२ वकरा ।

मेनाधव–स० पु०—हिमालय ।

मेनिक–स० पु० मछूवा, मल्लाह ।

उ०—तसु करमे काल निवास जो,तू तो वसीयो रे मछ ना पेट मा रे लो। रहीयो वलि मेनिक आवास जो,आन पड्यो रे दुखनी फेट मा रे लो ।—वि. कु

मेमत—देखो 'मैमत' (रू भे)

मेमटा—देखो 'मैमट' (रू भे.)

मेमती, मेमत्तिय—देखो 'मैमत' (रू भे)

उ०—सरगै सुरा न वकरा, ना वाजती वीण । ना कांमणि मेमत्तिग्रां, भूरा डळा अफीण ।—रा. सा. स

(स्त्री० मेमती, मेमत्ती)

मेमल–स० पु०—एक प्रकार का वरसाती कीडा ।

मेमार–स० पु० [अ०] इमारत वनाने वाला कारीगर,शिल्पी, राजगीर ।

मेमूदी —देखो 'महमूदी' (रू भे)

मेमोरियल–स० पु० [अ०] वह वस्तु, भवन, चिन्ह या प्रतीक जो किसी की यादगार हो, स्मारक ।

मेमोरेंडम–सं० पु० [अं०] १ स्मरण–पत्र

२ वक्तव्य ।

मेय–स० स्त्री० [स०] नापने-तोलने या परिमाण निकालने की क्रिया ।

वि०—नापने-तोलने या परिमाण निकालने योग्य ।

अव्य०—समान, तुल्य ।

उ० — दिपै मेय राधेय सरवस्व दानी । महाकस्ट भीमागवै भूप मानी ।—व भा

सर्व०—मुझे, मुझको ।

मेर–स० पु० [स० मेरु] १ अस्ताचल ।

उ०—सो दिन मेर पेमता जोडया री जमीं छोड खरळा री सीव वढिया ।—कुवरसी साखसा री वारता

२ सीमा सरहद ।

उ०—इत ठणियारौ टूक उत, मेर मिळत दहु राज । तदपि असुर को चित वध्यौ, फिर घर दव्वन काज ।—ला रा.

३ राजस्थान की एक पहाडी जाति या इस जाति का व्यक्ति ।

उ०—१ मैणौ पेणु मेर वावरा विलळा वैता । माळी थोरी भीळ रात रा मांगै रैता —ऊ का

उ०—३ मोल न कू भलावियो, नही मेरां मीणाह । तोनू राण मळावियो, मोहडा मुकलीणाह ।—वां दा

४ डिंगल के वेलिया सांणोर छंद का एक भेद विशेष, जिसके प्रथम द्वाले मे ८ लघु २८ गुरु कुल ६४ मात्राए तथा इसी क्रम मे शेष द्वालो मे ८ लघु, २७ गुरु कुल ६२ मात्राए होती हैं।

५ देखो मेरु' (रू भे)

उ०—१ छबीलो घणों खाम आवास छाजै, लखै घाट स्वाराट रो पाट लाजै । निराळो फबै कूटगी भूठ नांहो, मनो मेर रो कूट वैकूट मांही ।—मे म

उ०—२ कामी नर कै काम को हरीया रतीयेक सुख । यातैं अधिको ऊपजै, मेर प्रवाणै दुख ।—स्त्रीहरिरामदासजी महाराज

उ०—३ दादू माया फोडै नैंन दो, रांम न सूझै काळ । साधु पुकारै मेर चढ, देख अग्नि की भाळ ।—दादूवाणी

उ०—४ वया फेरै कर काठ की, मन की माळा फेर । जनहरीया माळा फिरै, विना विचेरण मेर ।—स्त्री हरीरामदासजी महाराज

उ०—५ सवळ सिघ 'प्राग' का सो मेर ग्रन धारी । आसकरन भाई जग काच की सी भारी ।—रा रू

मेरउ—देखो मेरौ' (रू भे)

उ०—चद्र बाहु चरण कमल, मधुकर मन मेरउ हा । अवर देव तिके वणराइ, नावइ कदि नेरउ हो ।—स कु

मेरगरद, मेरगर, मेरगिर, मेरगिरव्वर, मेरगिरि, मेरग्गिर, मेरग्गिरि— देखो 'मेरगिरि' (रू भे) (ह नां मा)

उ०—१ विभाड गयद मयद विध महि सामद इधकै मच्छरि । 'सूरज्जत' प्रगट नवनद मिर, गरुअति मेरगिरद गिरि ।—गु रू व

उ०—२ 'माला' हरो मनमोट मोटै पाट मेरगिर । भाटिया भवाडै भला भींवजी भोवाळ ।—नैणसी

उ०—३ आसण अचल मेरगिर ऊपरि मन हमति गई नाधा । उलटा पवण सोधि पहूना, पैडे पार न लाधा ।—ह. पु वा

उ०—४ अभ्रिति इद्र प्रताप, पाक पिंड तेजा प्रभाकर । क्रोध जम्म वैभव कुमेर, दिढ मेरगिरव्वर ।—गु रू व

उ०—५ गज रूपा सीम फाबि फरहरियां, तण उणिहार इसवए । आग्हि करि अठार मेरगिरि त्रिणी विन्नन त्रिगक पेख ए ।

—गु रू व

उ०—६ नरनाह नटै पलटै नही, मेरग्गिरि मजबूत मा । करि जोम योम ओघम करै, वोम नयण अरबून सा ।—सू प्र

मेरदड—देखो 'मेरदड' (रू भे)

उ०—१ पश्चिम दिसा की पाई वाटी, बकनाळि की सूलही घाटी । मेरदड मैं बमीया वामा, आगै अतर दपजी धामा ।

—स्त्री हरिरांमदास जी महाराज

उ०—२ मेरदड मधि होगी लहै, प्रह्म भगति काया वन दहै ।

—ह पु वां

मेरणी—देखो 'वारणी' (रू भे.)

मेरपव्वै, मेरपरवत, मेरपरवत, मेरपहाड—देखो 'मेरुपरवत' (रू भे)

उ०—द्वीपमाहि जबूद्वीप, प्रदीपमाहि रत्नप्रदीप, परवतमाहि मेरपरवत, भूचर जीवने हेतु जलधर । | व. म

उ०—२ अममान थभ उडै इसी, पकडै मेरपहाड नू । सुरतांण खुरम जुध सूझियो, पातसाह अल्लाह नू ।—गु रू व

उ०—३ पडै दीठ आसेर ज्यो मेरपव्वै । दुनी देखिया स्वरग रो दुरग दव्वै ।—मे म

मेरम—१ देखो 'मरम' (रू भे)

उ०—सत सब्द री ऐसी लगी, उतरे नही खुमार । ज्यांरा मेरम साधो सोई लखै, पावै दसवें द्वार ।—हरिरामजी महाराज

२ देखो 'महरम' (रू. भे.)

मेरवाडो—स०पु०—अजमेर तथा उसके आस पास के प्रदेश का पुराना नाम ।

मेरी—सर्व०—मैं (खुद) से सम्बन्धित एक सार्वनामिक विशेषण रूप ।

उ०—कसर न काई हरखाई बुद्धि मेरी हेरि । उकत उपाई मनभाई जैसी मानी मे ।—ऊ. का

स०स्त्री०—१ अहभाव, अहकार ।

२ मेर जाति की कोई स्त्री ।

मेरु—स०पु०[स०] १ एक पुराणोक्त पर्वत जो स्वर्ण का माना गया है ।

उ०—१ अभ्र मांहि जिम ध्र अडिग, सेसनाग पाताल । मृत्युलोक मां मेरु जिम तिम ए वरण विसाल ।—वि कु

उ०—२ हेला तउ महेस्वर तणी, स्रस्टि ब्रह्मातणी, प्रज्ञा ब्रहस्पति तणी, प्रतिज्ञा फरुसरांम तणी, मरयादा समुद्र तणी, दान बलि तणउ अवस्टभ मेरु तणउ ।—व. म

२ जप करने वाली माला के बीच का बडा मणिया ।

उ०—सैकडा सूरा नू माथो करि महा रुद्र री माळा मैं आारा मुड रो मेरु चढाइ रुद्र थको भी धारा मैं तिलतिल पळचरां री पांती पुदगळन राखि इस्टलोक पूगियो । —व भा

३ वीणा का एक अग ।

४ छन्द शास्त्र में एक गणना—पद्धति जिसके अनुसार किसी छद के लघु—गुरु ज्ञात किये जाते हैं ।

५ छप्पय छन्द का ४० वां भेद, जिसमे ३१ गुरु तथा ९० लघु के अनुसार १२१ वर्ण व १५२ मात्राए होती हैं ।

६ हुक्के का एक भाग ।

७ पर्वत, पहाड ।

८ पर्वत—शिखर

वि०—१ अटल, अडिग, दृढ

२ देखो 'मेरुदड'

३ देखो 'मेर' (रू भे.)

रू. भे —मेरू, मेरो,

मेरुगिर, मेरुगिरि, मेरुगिरी—स०पु० [स०मेरु-गिरि] सुमेरु पर्वत।

उ०—समुद्र रहइ लवण मूठि भेट, रोहणा चलनइ रत्न भेट, गगा रहइ कनकफल भेट, मलयाचलनइ चदन भेट, मेरुगिरि नइ सुवरणु, भेट कल्पवृक्ष नइ कांइ फल भेट ?—व स

रू०भे०—मेरगरद, मेरगर, मेरगिर, मेरगिरव्वर, मेरगिरि, मेरगिगर, मेरगिगरि।

मेरुडड, मेरुदंड—स०पु० [स०मेरु दण्ड] १ शरीर की पीठ मे, गर्दन मे लेकर कमर तक की हड्डी, रीढ की हड्डी।

२ दो ध्रुवो के मध्य की एक कल्पित रेखा।

३ किसी बडे तम्बू के बीच लगा बडा स्तम्भ।

रू०भे०—मेरडड,

मेरुदेवी—स० स्त्री० [स०] ऋषभदेव की माता।

मेरुधाया—स० पु० [स० मेरु धामन्] महादेव शिव।

मेरुपरवत, मेरुपरवत—स० पु० [स० मेरु+पर्वत]—सुमेरु पर्वत।

रू० भे०—परवतमेर, परवत्तमेर, मेरपरबत्त, मेरपरवत, मेरपव्वै, मेरपहाड।

मेरुम—वि० [स० मरहूम] स्वर्गीय, मृत, माराहुआ। (मा म)

मेरुसिखर—स० पु० [स०] १ मेरु पर्वत की चोटी।

२ हठयोग के अनुसार, मस्तक के छ चक्रो मे से सब से ऊपर का चक्र।

मेरू—देखो 'मेरु' (रू भे)

उ०—फिरिया नहिं फेरू मारग मेरू, तेरू पार तिरदा है।

—ऊ. का

मेरूवन—स० पु०—मेरू पहाड के आस-पास का जगल।

उ०—नदीसर विदिसै सोळस कुळगिरि तीस। मेरूवन असी दस कुरु गजदते वीस। मानसोत्तर परवत च्यार च्यार इखु कार।

—वृ स्त

मेरे, मेरै—सर्व०—१ 'मेरौ' का बहुवचन एक सर्वनाम।

उ०—नेरे सुनो जसवंत नरेस्वर, तेरे विना हम मेरे न तेरे।

—ऊ का

२ देखो 'म्हारै' (रू. भे)

उ०—जद बौ मालो बोल्यो—मेरै तो मूत मुकी री दे नांखी।

—दमदोस्त

मेरेय—स० स्त्री० [स० मैरेय] एक प्रकार की शराब, मदिरा।

मेरो—सर्व०—'मैं' का सम्बन्ध कारक एक सार्वनामिक रूप 'मेरा'।

उ०—१ तू सुत रायासिंघ रा रामा मेरौ प्राण। जो हू चाहू सो करै, तो आपू जोधाण।—रा रू

उ०—२ मन मेरा सेवग भया लगा सबद गुर कांन। रोम रोम मे भिद गया, हरीया किधू न जान।—श्रीहरिरामदासजी महाराज

स० पु०—१ मेर जाति का व्यक्ति।

२ देखो मेरु' (रू. भे)

उ०—१ धारा धरस्य धारासख्या, भूतले रेणुकण गणना, समुद्रे नीर विंदु सख्या, रोहणे रत्न सख्या, दिवि तारासख्या, मेरौ सुवरण्ण संख्या,—व. स

उ०—२ जोधपुर तुल मेरौ, तेरह साखा कोडि तेतीसो। तथी 'गजसाह' इद्रो, वित चित विसेखायु।—गु रू व

मेळ, मेल—स० पु० [स०मेल] १ दो या दो मे अधिक प्राणियो का मिलाप, भेट, समागम, सयोग।

उ०—१ ईडरिया आचार री, बीर चढै तो वेळ। हसत चढै चारण हुवै, माया सरसत मेळ—वां दा

उ०—२ तिकण अवती पुरी रै परै पच कोस रै प्रमाण पुगि वीरा री वामठि हजार सेना रै साथ मेळ पायो।

—व भा

२ मिलने या मिले हुए होने की अवस्था या भाव।

३ परस्पर प्रेम, एकता, सगठन।

उ०—१ हाडोती हिळ मिळ हुई, मेळ कियो मेवाड। धर जसवत रै घुमड नै, ढूकी धर ढूढाड।—ऊ का

उ०—२ वरस तयाळो दुद धर दोडै कमध दुकाळ। जोस अछायो मेळ कज, आयो दुरजणसाळ।—रा रू

४ स्नेह, प्रेम मित्रता, दोस्ती। (अ मा, ह ना मा)

उ०—१ हद धरम १ सीम २ गणिया रहण वणिया मेळ सुवेळ वधि। खणिया १ न होइ नाडां खटै, ऊफणिया हाडा उदधि।—व भा

उ०—२ भारथ मत कर भामणी, मो भारथ नह मेळ। वापी कूप वताव विस, के कर म्हासू केळ।—वां दा

उ०—३ साहूकार दोइ एकै सहर माहे रहै। दोऊ द्रव्यवत मोटा आदमी, वडा सु सगाया। साहूकारे आपस मे वडो मेळ छै।

—सत री बांधी लिखमी री वात

५ सुलह समझौता, सधि।

उ०—बीजै दिन आजमखांन नवोनगर लूटियो। पछै जाम वात कर मेळ कियो।—नैणसी

६ समता, बराबरी, जोड।

७ ताल-मेल सामजस्य।

उ०—मिनख गी मरजादा सू लुगाई री मरजादा मेळ नी खावै।

—फुलवाडी

८ अनुकूलता, उपयुक्तता।

उ०—तिण समै चाचो मेरो आप रै साथ लै साजवाज सु चढीया। रांणाजी दिसा उनाळी ऊभी माहे चालीया। तरै रांणै मोकळजी देख कह्यो—आज खातण वाळा विपरीत दीसै मेळ मे तो नही।

—रावरिडमल री वात

९ मिश्रण, मिलावट।

१०—सम्बन्ध लगाव।

उ०—१ रांणी राजा नै होळै सू मूडो मस्कोर न कह्यो—थांरै पगां

सांमी दम्रने आप आरै मन री बात नी जाण मको ? कवरा रै बोल अर मत्रिया रै पगा में कित्तो मेळ है ।—फुलवाडी
उ०—२ दुनिया में कोई अमरता रो परवानो लिखायनै नीं लायो । जीवा नै मारतां एक दिन खुद नै ई मरजाणो है । मरिया पछै किणी नै नी मारणो। जीवण अर मरण री तौ आपस में मेळ है ।
—फुलवाडी
११ यात्रा या किसी कार्य में होने वाली सहगमन की अवस्था या भाव, सहचार्य, साथ ।
१२ एकाकार होने की अवस्था, विलय ।
उ०—सही सुमजोत हि जोत समाय, रही नहि अतर मे अतराय । करै निज हस दूर निज केल, मिल्यो परमातम आतम मेळ ।
—ऊ का
१३ काल-चक्र या घटनाक्रम मे किसी घटना विशेष का बनने वाला कारण, योग, सयोग ।
उ०—दुख, कळेस अर सताप बिना सुख अर आणद रो माचैलो साव ई नीं आवै । दोनू वातां रै मेळ सू सगळी वाता मातरी लागै ।
—फुलवाडी
१४ इतजाम, व्यवस्था, सराजाम ।
उ०—पण जानिया रै जीमण वास्तै चांदी रा बरतन कम पड़ैला । पच्चास थाळ वाटकियां री मेळ तो अपारै घराघरू है ।
—फुलवाडी
१५ वृद्धि ।
उ०—भाकरकै घडी रात धर्का वा ई घू घट घू घट ! करता करतां पाच सात दिना पछै पींजारो कळदार रिपियो नोळी मे भेळ दियो। पूरा सौ रिपिया रो मेळ ! दोनू लोग लुगाया रै हरख रो पार नी ।—फुलवाडी
१६ टकराव ।
उ०—मंगळ एयी भाव मत, वाघा केरी वाट । मांप अगूठा मेळ ज्यू, कदियक हूसी कुघाट ।—बा दा
१७ समूह ।
उ०—एक वरदत्त पुत्र प्रद्योम नो, दोय मे पाच यादव मेळ रे । श्रोनेम मार्थै सेजम लियो, श्री सहस्र पुरुस रो मेळ रे ।
—जयवाणी
१८ फौज, सेना ।
१९ मौका, अवसर ।
२० बरात के स्वागतार्थ कन्या-पक्ष व वर पक्ष के लोगों का मिलन ।
२१ विवाह के पहले दिन कन्या के पिता द्वारा अपने पक्ष को दिया जाने वाला भोज ।
२२ मृतक का ग्यारवां दिन ।
२३ द्वादसे के दिन आए हुए व्यक्तियों का समूह ।
उ०—सारा सुगु उदास हुया । पाणी दियो । बारवें दिन मारो मेळ भेळो हुवो । खरचकर पाघ बधाई ।
—सूरे खीवै कांधळोत री बात
२४ गाय के स्तनो मे दूध आने की स्थिति ।
२५ आय-व्यय का प्रतिदिन किया जाने वाला लेखा-जोखा ।
२६ प्रकार, वर्ग, जाति ।
ज्यू०—अठै सब मेळ की चीजा मिळ सकै ।
२७ वह गाडी, जिसमें डाक जाती-आती हो ।
२८ डाक से भेजी जाने वाली चिट्ठी, पार्सल आदि ।
२९ छद का तुकान्त चरण ।
३० योग, जोड ।
उ०—चवदै चाळ ढुढाहड कहीजै तिण रो मेळ गाव १४४० ।
—नैणसी
वि०—१ समान, तुल्य ।
उ०—लडग लाख तुग तुग सग जुग हल्लये । चढै कि वेळ आकुळै समुद्र मेळ चल्लये ।—रा रू
रू०भे०—मेलड
मे'ल—देखो 'महल' (रू भे.)
मेलड़—देखो मेळ' (रू भे)
उ०—हू जाणू जइ नइ मिलू रे लो । साहिब नइ इकवार रे सनेही । सयणा रइ मेलड करी रे लो, सफळ हुवइ अवतार रे सनेही ।
—वि कु
मेळकी—स०स्त्री०—एक घास विशेष जिसमे से दाने निकाल कर खाने के काम में लिए जाते हैं ।
मेळग—स०पु०—१ सग्रह ।
२ देखो 'मेळू' (रू भे) (अ मा.)
उ०—जग मुगति भुगति दाता जगा, दांन मान वछत दियै । पारथै किसू मेळग कुपह, प्रभूनाथ पारखियै ।—जगो खिड़ियो
मेळगर—वि०—१ मिलाप या मेल करने वाला ।
२ एकत्र करने वाला, इकट्ठा करने वाला ।
उ०—मरमी माया तणा मेळगर,कदे न पर उपगार करै । 'माधो'अमर हुग्रो यळ माहे, 'माधो' कमवज नाज मरै ।—ओपो आढ़ो
स०पु०—१ दर्शकगण ।
उ०—आगळि रितुराय मडियो अवसर, मडप वन नीझरण म्रदग । पच बाण नायक गायक पिक, वसुह रग मेळगर विहग ।—वेलि
२ एक वर्ग विशेष ।
उ०—मरड लाठा माठा रगाचारय उचित बोला साहस बोला, मोट बोला मेलगर मामगर कउतिगीया कुहटीया नट वट गांछा छीपा परियटा" ।—व स
मेलटियां—देखो 'मावलियां' (रू भे)
मेलड़ी—देखो 'महल' (अल्पा, रू भे)
उ०— हाट हवेली मेलड़ा रे, कीना होडा होड । जमा पाप तू सचने रे प्रांणी, जाय पलक में छोड ।—जयवांणी

मेळची-स०पु०—मित्र, दोस्त ।

मेलजोल-स०पु०—१ मैत्री, दोस्ती, प्रेम ।
२ परिचय, मुलाकात ।
३ सम्बन्ध ।
४ सुलह, संधि ।

मेलट्रेन-स०स्त्री० [अ०] वह रेलगाड़ी जिसमे डाक रहती है और जो बड़े बड़े स्टेशनो पर ही रुकती है ।

मेळण, मेलण-स० पु०—१ दूध को जमाने के लिये उसमे डाला जाने वाला दही, छाछ आदि कोई खट्टा पदार्थ । (जावण) ।
२ रोटी के लिये, आटे को गूंदने से पूर्व उसमे मिलाया जाने वाला घी । (मोवण)
३ गोबर मे, ऊपले बनाते समय, मिलाया जाने वाला, घास-फूस, चारे आदि का चूरा । (घासण) ।
४ कतिपय खाद्य पदार्थ मे पड़ने वाले मसाले ।
उ०—जदि मीसण लै सस जिको, आप गोळ द्रुत आइ । वणवायो जिण पळ विविध, मेळण उचित मिळाइ ।—व भा.
५ मिश्रण, मिलावट ।
६ सम्बन्ध ।
उ०—केइ उपाय करी मेलण करू,परिग्रह विविध प्रकार । विरति करू पिण मन न रहै वाले, तो किम हुवै भव पार निस्तार ।
—ध. व ग्र.
वि०—७ मेल करने वाला ।
रू० भे०—मळावण, मळेवण, मेळवणी, मेळवणी, मेंळण

मेळणो, मेळवो-क्रि० स० [स० मेलन] १ भेंट कराना, साक्षात्कार कराना, मिलाना ।
उ०—कह्यो-राजा सू काहरा मेळिस्यो ? कह्यो जी ! वेगो ही मेळिस्या , थे ऊतरो, जिकू चाहीजै सू सरब था नू दिराधीस, थाहरा घणा वाना करीस,अर थे मागिस्यो सू राजा देसी ।
—सयणी री बात
२ सम्मिलित करना एकत्र करना इकट्ठा करना ।
उ०—१ पारबती पिता तणइ थळ पुहती, आयउ ईसर आपरै आवास । परणीजण नू वळे नवी परि,दळ मेळवा पठावै दास ।
—महादेव पारबती री वेलि
उ०—२ अनत कोट ब्रह्मड तणा इद्र, तन खोहण अतलोक तणा । सात पायाळ तणा इद्र मावड घणा सु थक मेळिवा घणा ।
—महादेव पारवती री वेलि
३ जोड़ना, भिड़ाना, मिलाना ।
उ०—पण बापजी, चुगलखोरा रो कांई सेहो । पांवडै पावडै चुगलखोर भरया । एक री इक्कीस मेळ राजाजी नै भिड़ावैला ।
—फुलवाडी
४ प्रेम करना, स्नेह करना ।
ज्यू०—मन मेळणो ।
उ०—कर दोडा दिस कमधजा, गो मेडते सिताब । मोहकम रो मन मेळवा मिळ पुछियो जबाब ।—रा रू
५ किसी को अपनी ओर करना, मिलाना ।
उ०—अय भीडू दक्खिण तणा, वदिया पहलै बाद । धुर चोथो पच्छिम घणी, मेळै अनुज मुराद ।—व भा
६ जोडना, अड़ाना, सटाना, सलग्न करना ।
उ०—परम सिध म प्रांणी डार उनमनि लागा प्रेम वधार । आतम परमातम सू मेळो, परमहस सू दिलि मिळि खेलो ।—ह पु वां
७ घाव या जख्म की चिकित्सा करना ।
८ मिश्रण करना, मिलाना ।
उ०—अब कठोर सुडाळ,निळिया प्राक्रम मेळिजै । क्यु इधको अग आदि सै, पोह असुरेस प्रौंचाळ ।—मा. वचनिका
९ आख बद करना, नीद लेना ।
उ०—राति सखी इण ताळ मइ, काइज कुरळी पखि । उवै सरि, हूँ घरि आपणइ, बिहू न मेळी अखि ।—ढो मा
१०—धारण करना ग्रहण करना, अपने में रमाना ।
उ०—यू कमधज्ज घरै धू अबर, ज्यू गगा मेळै जोगेसर । आदर जोध विरोध असका, बट रतन्नै ज्यां सुर वका ।—रा रू
११ गाय भैस आदि को उनका बच्चा मिला कर दूध देने की स्थिति में करना ।
उ०—मावां टावर मेळवै, लूआं अग बचाय । छाती मिळतां छटपटै बिलख बिलख रह जाय ।—लू
मेळणहार, हारो (हारी), मेळणियो—वि० ।
मेळियोडो, मेळियोड़ो, मेळ्योडो—भू० का० कृ० ।
मेळीजणो, मेळीजवो—कर्म वा० ।
मिळणो, मिळवो - अक० रू० ।

मेलणो, मेलवो-वि०स० [स०मेलन] १ जाने के लिये प्रेरित करना, प्रस्थान कराना,भेजना, पठाना ।
उ०—१ आप अजेगढ आवियो, माप जकै असमान । वेग सिहाय विहारिया मेलै मुकरबखान ।—रा रू
उ०—२ उदैपुरिया बाजार में एक मैंडी जाची । आप वैठा ने साथा नें मेल उपगरणा मगाय लिया ।—भि द्र
उ०—३ साळा वतळावै अर साळी मनुवार करै तथा सैंग लोग हाथाजोडी कर रैया है । पण हा कोई नी करा सकै । छेकड बाप' र घर हाळा पारा नै मेलणं रौ हकारो भरै, जद जुवाई आपरो जंवयोडो ऊट त्यार करै है ।—दसदाख
उ०—४ हालो धांम दिवाडिहा, अथवा इण नू ओर । पण अब मेलां साह पग, जाणे जय नय जोर ।—व भा
२ किसी वस्तु,सदेश,समाचार आदि को किसी के द्वारा,एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुचाना ।
उ०—१ फोग केर काचर फळी, पापड़ गेघर पात । वडिया मेलै

वाणिया, मागणिया मोगात ।—वा दा

उ०—२ जयमल 'पर्ने' जवाब जद, हजरत तणी हजूर । मत्र करै लिय मेलिया, सामळ हुवै सूर ।—वा दा

उ०—३ जद चतुरोजी श्रावक वोल्यो-थें तो थोडा कोम हालो अनें हूं कासीद मेलनें ठांम ठाम खबर कराय देमू मो थानें मन करनें पिण फोट वर्ध नहीं ।—भि द्र

उ०—४ अर मेले आया नगर, दोड ववाईदार । कही विगत विघ विघ करै, आनद भरै अपार ।—र रू.

उ०—५ राजा कागळ मेलियो, लिखवाई चड चोट । जिम जाणै तिम मारनै, कुंवर वर्णोगिर कोट ।—गु रू व

३ कोई वस्तु किसी स्थान पर रखना, धरना, टिकाना ।

उ०—१ अर महीप भी आप री माळा नू मच पर ही मेलि एक दिसा रो मारग गहियो ।—व भा

उ०—२ केइ कहै पोथी आगणें मेलणी नहीं । पूठ देणी नहीं । पोथी पानां तो ग्यान है । तिण री आसातना करणी नहीं ।

—भि द्र.

उ०—३ आपरै पगा मे पोथ्यो मेल्नू म्हनें व्है जकी वात वतावो ।

—फुलवाडी

उ०—४ पमजी वैठो च्योडै राज री रकम रा आयोडा ढाई हजार रिपियां री थैली भरियोडी मेल दी, दलाल-देवता रै आगै वगा नाखी अर कैयो-थें वता नै जावो सा ।—दसदोख

४ किसी को किसी के पास रहने के लिये छोडना ।

उ०—१ पछै वामण चाल्यो सो वेटा न ठाकुर तीरै मेले गयो ।

—सांसरा वर्णी री वात

उ०—२ मुवा वालक मुनसा जगोजी, तें मेले तुम पास ।

—जयवाणी

५ त्यागना छोडना ।

उ०—१ नैमजी हो सउ मीनति करता थका हो राजि, मत जावउ मुझ मेलि ।—वि कु

उ०—२ वननाग न मेलै वासना, टिकियो मेरज टल टळै । मेवगा तणा मेहामदू साद न करनी सभळै ।—चौथ वीठू

६ धारण करना मानना ।

उ०—हरीया हरि का अनत गुण, लिख लिख हिरदै मेल । नीर न पीवु हसपती, मत श्री दैन उगेल ।—श्री हरिराम दासजी महाराज

७ देखो 'मेळणो, मेळबो' (रू भे)

मेलणहार, हारो (हारी), मेलणियो—वि० ।

मेलिग्रोडो, मेलियोडो, मेल्योडो—भू० का कृ० ।

मेलीजणो, मेलीजबो—कर्म वा० ।

मेल्हणो, मेलहबो, मेल्हवणो, मेल्हवबो मेहलणो, मेहलबो मेलणो, मेलबो मेल्हणो मेल्हबो—रू० भे० ।

मेळप-स०स्त्री०—१ मित्रता, दोस्ती ।

२ स्नेह व प्रेम होने की अवस्था या भाव ।

मेळवण, मेळवणी—देखो 'मेळण' (रू भे)

उ०—माहे कपूर कसतूरी घातजै छै । केसर रो रग दीजै छै । सूधै चमेली री मेलवणी दीजै छै —रा सा स

मेळसरज, मेळसरोज-स०पु०—मक्खन, नवनीत । (अ मा)

मेलाण-स०पु०—१ यात्रा के बीच किया जाने वाला विश्राम, पडाव ।

उ०—साख अनत लाख भड साथै । मग मेलाण दियो सुण माथै ।

—रा रू.

२ स्थान, मुकाम ।

३ रहट की माल का एक अतिरिक्त भाग जो पानी के नीचा ऊचा हो जाने पर माल को घटाने वढाने के लिये जोटा जाता है ।

४ महल, प्रासाद आदि ।

रू०भे०—मेलोण, मेल्हांण, मेहलांण, मैलाण, मैल्हांण, मैहलांण ।

मेळाऊ-स०पु०—१ एकत्रित जन समूह, भीड ।

उ०—सगळे असुरे भार समाया अवपत सुहड ठिकाणें आया । वाजी निसवळ किताइ पुळाणा, मेळाउवां वदन मुरझांणा ।

—रा रू

२ शत्रु-पक्ष ।

उ०—सुणियो 'अजन' महावळी, खळ नाठो पुर छोड । मेळाऊ साथे हुवा, भाटी हाथे खोड ।—रा. रू

वि०—गद्दार, धोखे बाज, शत्रु पक्ष मे मिलने वाला ।

उ०—'मामतसिंघ' जोगीदासोत नै भाटी 'रामसिंघ' मुकनदासोत फोजवधी कीवी नै नवाव रो मेळाऊ मारियो सो विगत कही ।

—रा रू

२ मिले हुए, एक साथ, इकट्ठे, एकत्र, मिश्रित ।

उ०—इकहयो भाटी 'रैणायर' माफी तीन साथ दळ मोगर । वीरा भड मेळाऊ आया, चचळ थळवट दिसा चलाया ।—रा रू.

मेळाणो, मेळावो-क्रि०स० [मेळणो क्रि० का प्रे०रू-] १ भेंट करवाना, साक्षात्कार, करवाना मिलवाना ।

२ सम्मिलित करवाना एकत्र करवाना, इकट्ठा कराना ।

३ जुडवाना, मिडवाना, मिलवाना ।

४ प्रेम कराना, स्नेह कराना ।

५ किसी को अपनी ओर करवाना, मिलवाना ।

६ अडवाना, सटवाना, जुटवाना ।

७ घाव या जख्म की चिकित्सा करवाना ।

८ मिश्रण कराना, मिलवाना ।

९ आख वद कराना, नींद लेने के लिये प्रेरित करना ।

१० धारण कराना, ग्रहण कराना, अपने मे रमवाना ।

११ गाय भैंस आदि को उनका बच्चा मिलवाना, दूध देने की अवस्था मे करवाना ।

मेळाण हार, हारो (हारी), मेळाणियो—वि० ।

मेळायोडौ—भू० का० कृ० ।
मेळाईजणौ, मेळाईजबौ—कर्म वा० ।
मेळावणौ, मेळाववौ—रू० भे० ।

मेलाणौ, मेलाबौ—क्रि०स [मेलणौ क्रि० का प्रे०रू०] १ प्रस्थान करवाना, भिजवाना, पठवाना ।
२ किसी वस्तु, सदेश, समाचार आदि को किसी द्वारा, एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुचवाना ।
३ कोई वस्तु किसी स्थान पर रखवाना, धरवाना, टिकवाना ।
४ किसी को किसी के पास रहने के लिये छुडवाना ।
५ त्याग करवाना, छुडवाना ।
६ धारण करवाना, मनवाना ।
मेलाण हार, हारौ(हारी), मेलाणियौ—वि० ।
मेलायोडौ—भू० का० कृ० ।
मेलाईजणौ, मेलाईजबौ—कर्म वा० ।
मेलावणौ, मेलाववौ, मेल्हाणौ, मेल्हावौ, मेल्हावणौ, मेल्हाववौ, मेहलाणौ मेहलावौ मेहलावणौ मेहलाववौ मेलाणौ, मलावौ'
—रू० भे०

मेळाप, मेलाप—देखो 'मिळाप, मिलाप' (रू भे)
उ०—१ कव गिरनार गढइ चढ़ जपतउ अहनिसि जाप, प्रापति विण किम पामिइ, मन मान्या मेलाप ।—स कु
उ०—२ उमहती जोवन काठळ आज, रूप रै रिमझोळा री घात । मनां रो दो दिन री मेळाप, वणसी दो दिन बीती बात ।—साझ

मेळापौ, मेलापौ—देखो मिळाप' (अल्पा, रू भे)
उ०—पसुय पुकार सुणी रथ फेरघउ, राजुल करत विलापा हो । सरज्या विन सखी क्यु कर पाइयउ, मन मान्या मेलापा हो ।
—स कु.

मेळावडौ—देखो 'मेळावौ' (रू भे)
उ—कर जोडं 'नरपति' कहै, धार थी आवज्यौ भोज नरेस । मात पिता मेळावडौ, सांभरघा रास होई पुण्य प्रदेस ।—वी दे.

मेलामतर—स० पु०—ग्राम मार्गियो का मत्र, छोटा मत्र । (तांत्रिक)

मेलायत—देखो 'महलायत' (रू भे)
उ०—१ साध्या की मेलायत देख, नाटक त्रिया सुख विसेख ।
—जयवाणी

मेळायोडौ—भू० का० कृ०—१ भेंट करवाया हुआ, साक्षात्कार करवाया हुआ, मिलवाया हुआ २सम्मिलित करवाया हुआ, एकत्र करवाया हुआ, इकट्ठा करवाया हुआ ३ जुडवाया हुआ, भिडवाया हुआ, मिलवाया हुआ ४ प्रेम कराया हुआ, स्नेह कराया हुआ ५ अपनी ओर करवाया हुआ, मिलवाया हुआ ६ अडवाया हुआ, सटवाया हुआ जुडवाया हुआ ७ चिकित्सा करवा कर मिलवाया हुआ, (घाव जख्म). ८ मिश्रण करवाया हुआ, मिलवाया हुआ ९ नीद लेने के लिये प्रेरित किया हुआ, आख मिचवाया हुआ १० धारण करवाया हुआ, ग्रहण कराया हुआ, अपने मे रमवाया हुआ ११ वच्चा मिला कर दूध देने की स्थिति करवाया हुआ, (गाय भैंस आदि)
(स्त्री० मेळायोडी)

मेलायोडौ—भू०का०कृ०—१प्रस्थान करवाया हुआ,भिजवाया हुआ,पठवाया हुआ २ एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुचवाया हुआ (सदेश) ३ रखवाया हुआ, धरवाया हुआ टिकवाया हुआ ४ रहने के लिये छुडवाया हुआ ५ त्याग करवाया हुआ, छुडवाया हुआ ६ धारण करवाया हुआ, मनवाया हुआ ।
(स्त्री० मेलायोडी)

मेळावउ, मेलावउ—देखो मेळावौ' (रू भे)
उ०—१ घर घघइ पडिउ सह कोइ, कुटुब मेलावउ खावा होइ । खत्र अखत्र कीधां सवि वार,ढोकर नी कोइ न करइ सार ।
—वस्तिग
उ०—२ पनहर वरस विछोहउ हुओ,घणइ कस्टि मेळावउ थयउ । वळे विछोही जउ करतारि, तउ इण भवि मुझ एहज नारि ।
—ढो मा

मेलावडौ—देखो 'मेळावौ' (अल्पा, रू भे)
उ०—मन वल्लभ मेलावडो रे पुण्यं लहीये एह ।—स्रीपाजरास

मेळावण—देखो 'मेळावौ' (रू भे)
उ०—भूरै मुखडै पर स्वेदण कण भारी, पहुची पोळछ मे प्रीतम री प्यारी । नाचै खेलावण मेळावण नाही, जोवण जोगी वा वेळा जग माही ।—ऊ का

मेळावणौ, मेळाववौ—देखो 'मेळाणौ, मेळावौ' (रू भे)
मेळावणहार, हारौ (हारी), मेळावणियौ—वि० ।
मेळाविओडौ मेळावियोडौ, मेळाव्योडौ—भू० का० कृ० ।
मेळावीजणौ, मेळावीजवौ—कर्म वा० ।

मेलावणौ, मेलाववौ—देखो 'मेलाणौ, मेलावौ' (रू भे)
मेलावणहार हारौ (हारी), मेलावणियौ—वि० ।
मेलाविओडौ, मेलावियोडौ, मेलाव्योडौ—भू० का० कृ० ।
मेलावीजणौ, मेलावीजवौ—कर्म वा० ।

मेळावियोडौ —देखो मेळायोडौ' (रू भे.)
(स्त्री० मेळावियोडी)

मेलावियोडौ—देखो 'मेलायोडौ' (रू भे)
(स्त्री० मेलावियोडी)

मेळावौ—स० पु० [स० मेलापक] १ मिळने की क्रिया या भाव, साक्षात्कार, भेंट, मिलाप ।
२ कई व्यक्तियों का एक साथ होने वाला मिलाप, भेंट, सम्मेलन ।
३ बरात के स्वागतार्थ होने वाला वर पक्ष व कन्या पक्ष का मिलन ।
४ एकत्रित एव सम्मिलित हाने की क्रिया ।
उ०—पडसा रत वाहै रवदा पर,आवै आर करीजो ऊपर । मिळियो

जायल मिर मेळायो चढ़िया लै घूहड रो छावो ।—पा प्र
रू० भे०—मेळावउ, मेलावउ, मेळावण,
अल्पा०—मेळावडो ।

मेळियोडो-भू० का० कृ०—१ भेंट करवाया हुआ, साक्षात्कार कराया हुआ, मिलाया हुआ. २ सम्मिलित किया हुआ, एकत्र किया हुआ, इकट्ठा किया हुआ ३ जोड़ा हुआ भिड़ाया हुआ, मिलाया हुआ ४ प्रेम किया हुआ, स्नेह किया हुआ ५ अपनी ओर किया हुआ मिलाया हुआ ५ जोड़ा हुआ, अड़ाया हुआ, सटाया हुआ ७ चिकित्सा किया हुआ ८ मिश्रण किया हुआ, मिलाया हुआ ९ आत्म वद किया हुआ, निद्रित १० धारण किया हुआ, ग्रहण किया हुआ, अपने में रमाया हुआ ११ बच्चा मिलाकर दूध देने की स्थिति में किया हुआ ।
स्त्री० (मेळियोडी)

मेलियोडो-भू० का० कृ०—१ जाने के लिये प्रेरित किया हुआ, प्रस्थान कराया हुआ, भेजा हुआ, पठाया हुआ २ किसी के द्वारा एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुंचाया हुआ ३ रखा हुआ, धरा हुआ, टिकाया हुआ ४ किसी के पास रहने के लिये छोड़ा हुआ ५ त्याग हुआ छोड़ा हुआ ६ वारण किया हुआ, माना हुआ ।
७ देखो मेळियोडो' (रू भे)
(स्त्री० मेलियोडी)

मेळू, मेलू-वि०—१ परस्पर मिलाने वाला, मिलान कराने वाला ।
२ मेल करने वाला, प्रेमी, मित्र, स्नेही, हितैषी ।
उ०—१ भुज भरिवे भेळाह, मिळस्यू जे दिन मेळुवा । वाल्ही मोह वळाह, जनम सफळ गिणसू 'जसा' ।—जसराज
उ०—२ मेळू विण मिळियांह, मनडो क्यू मांनै नहीं । गहिला ज्यू गळियांह, फिरै फिरर ययो 'जसा' ।—जसराज
३ मिलने वाला, परिचित ।
४ पक्ष का, पक्षवाला ।
उ०—१ इण विध मांगै आवियो, सुरताण सगळै साथ । हुणिआग मेळू सळां, सो मारो भाराथ ।—रा रू
उ०—२ ताहरां नगै रा मेळू हजूर हा, तिका नगै नू कहीयो, नरा थारो पटो जैत सारूत राखीयो ।—जैतमाल पुमार री वात
५ मिला हुआ, मिश्रित ।
रू०भे०—मेळण, मेळि, मेलि, मेळी मेली, मेळूह, मेलू ।
६ देखो 'मेळूजो' (रू भे)

मेळूगो-स०पु०—पहिये की नाभि पर मजबूती के लिये लगाया हुआ लोहे का पत्ता ।
रू०भे०—मेळू ।

मेलोण—देखो 'मेलाण' (रू भे)

मेळो-स०पु० [सं०मेल] १ मिलने की क्रिया या भाव ।
उ०—जीवत मेळो मजना, मूवां न दीजै दोस । अनहीया त्रिग्गा त्रिणां, रो किसी पग पोस ।—श्री हरीराम दासजी महाराज
२ किसी विशेष अवसर पर या पर्व के दिन, किसी स्थान विशेष पर बहुत से लोगो का होने वाला जमाव, मिलन ।
उ०—१ चित लालच वेळा चढै, चेळां जिनम चढाहि । हेलां पर घर हाण दै, मेळां खेळां माहि ।—बा दा
उ०—२ जठै सायण्या कहयो । इतरो फिकर क्यू करै छै । थारी कीमीक अवार, तो मोकळी फिरै छै । तू तो वाई जनम की ही लजाळु, ऐ तो मेळा खेळा छै ।—पना
उ०—३ एक जगा रैणौ सू सै एक कहूवै रा अंग सा बण जावै है । अठै ना तो कोई रेलगाडी री मुसाफरी है, अर न कोई धरमसाळ तथा तीजा रो मेळो है ।—दसदोख
उ०—४ नाई गोळो वगनै पूछ्यौ-थे वाप जी एकगा मागै इत्ता सस्तर क्यू सजाया मेळा म वेखण पधारो काई ? —फुलवाडी
वि० वि०—ऐसा जमाव या मिलन, किसी देव-दर्शन, तीर्थ स्थान, मनोरजन आदि के उद्देश्य से होता है । इस अवसर पर खिलौने, मनिहारी, मिठाई, चाट आदि की अस्थाई दुकानें लगती हैं । झूले लगाये जाते हैं जिन से मनोरजन किया जाता है, इत्यादि ।
३ बैल या चौपाए पशुओ को, विक्रयार्थ किसी स्थान विशेष पर एकत्र करने की क्रिया, अवस्था या भाव, पशु-मेला ।
उ०—मेळा में ऊचे दांमां आपरी जोडिया वेचनै दो सीरवी पाछा आपरै गांव वळता हा के एकाएक वारा मन मे जोवाणी देखण री जची ।—फुलवाडी
४ मिलाप, भेंट, साक्षात्कार, समागम ।
उ०—१ द्यु परकमा देवरै, हरख'र जोडू हाथ । जो मेळो हुवै मजणा, पूजू पारसनाथ ।—पना
उ०—२ जो माता कळरपो तो पाच दिन टिकस्यू ,नही तो दरसण कर मेळो दे रमतो रहिस्यु ।—जवहामुवडा भाटी री वात
उ०—३ अर आज परतख मेडी मे निजरां थो मेळो व्हियो । इत्ती वेगी मन जांणी व्हे जावैला, इण रो तो सपना में ई वे'रो नीं हो ।
—फुलवाडी
उ०—४ म्हारा अभाग के आज इण ठौड मा सू मेळो व्हियो,वी ई इण रूप में ।—फुलवाडी
५ एकत्रित जन समूह भीड ।
उ०—१ कठै ही लुगाया, कठै ही मोटियार, कठै ही वाणिया, कठै ही गिवार, मेळो सो लाग रैयो है । भगतां री पांत अर कमीणी जात त्याती, त्यावो कर रैयी ह —दसदोख
उ०—२ मेळो रो मेळो घर्कं वहीर कियो । वादळ रा मन मे नी कीं सकी हो अर नीं डर ।—फुलवाटी
उ०—३ तीडो सावळ मूडो माफ करनै कोट पे पूगो तो काई देखै के उठै मिनखा रो मेळो मचियोडो हो ।—फुलवाडी
६ खेल, तमाशा ।
उ०—१ पचास वरसां पैला रा उण मेळा नै थोटी पाछी याद तो करो । हाल तो उण तमासा नै याद दिरावण वाळी म्हे जीवती

बैठी है —फुलवाडी

उ०—२ राजाजी सेठा नै सावचेत करता बोल्या-काला भवै कदेई ऐहो मेळो मत करज्यो —फुलवाडी

७ हुल्लड़।

८ सयोग, योग।

उ०—बादळ री श्रो विछोव ई तो अनाथ, अभ्यागत, अर निवळां नै सुख गो मेळो करावैला। राज री सै लुगाया रै जीव री वळण मिटै तद भटियाणी री कूख सारथक व्है —फुलवाडी

९ सभा, सम्मेलन।

१० देशी रियासतो में फसल पर लिया जाने वाला एक कर, लगान।

रू० भे०—मेलो।

मेलो—१ देखो मैलो' (रू भे)

उ०—१ मेला लूगडा राखवा, करवी नही सिनान। बावीस परीमा जीतणा, रहणो, रूडै ध्यान।—जयवांणी

उ०—२ इण जनम श्रोर पर जनम प्रद, सब कळक सव साथ में। मविलोक वसै मेला मिनख,जारै हुक्काहि रैला हाथ मे।—ऊ का.

उ०—३ इतरै सामीदामजी रा दोय साध,मेला वस्त्र खाधे पोथ्यां रा जोडा, विहार करता-मीखणजी कठै, भीखणजी कठै, इम करता श्राया।—भि द्र

(स्त्री० मेली)

२ देखो 'मेळो' (रू. भे)

उ०—वस्त्राभरण जिणं हरया, ते छूटइ मेलो जी। श्रादिनाथ नी पूजा करइ प्रहऊठी विहु वेलो जी।—स कु

मेल्हणो, मेल्हवो—देखो 'मेलणो, मेलवो' (रू भे)

उ०—१ मात सात रै मेल्हिया ईसर गरुड प्रधान जिकै श्रउगाढ। मागण कुवर लगन पिण मागण चचळ रथे श्रापणे चाढ।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ सरव रसायण मे रसी, हर रस समी न काय। टुक तन श्रतर मेल्हियां, सब तन कचन थाय।—ह र

उ० ३ अभग श्रयाह अग्रेह अरूप, छछोह बदन्न मदन्न सरूप। मुखा नह मेल्है सेस महेस, श्रादेस श्रादेस श्रादेस श्रादेस।—ह र

उ०—४ श्राखता नाम टळै दुख श्रोघ,उपज्जे श्राणद सुख श्रमोघ। न मेल्ह तूझ तणो हरिनाम,विमन्न भगत्ता-तणा-विसराम।—ह र

उ०—५ हूदा मे लाघो श्रातमराम कहो जो देव करूं स काम। लाधो मुझ नेडो मोरो नाथ, सामी री हिव नहि मेल्हू साथ।

—ह र

६ भर के ही दिन रहै ही रहि चदाणी कुमरांणी नू श्राधान सहित पिउहर ही मेल्हि श्रायो, पछै जिण प्रसव रै समय हम्मीर-नाम कुमार जणियो —व भा

उ०—७ लाखो मोटो हुवो, वारह वरसा रो हुवो। ताहरा कागळ दे श्रर फूलजी श्रागं मेल्हीयो।—लाखा फूलांणी री वात

उ०—८ तेह तेह पदि ते श्रर मेल्हइ श्रावतो लछि पाय कुण ठेलइ। एतलइ गइश्र रूपि सुलिद्री, ते सुद्रस्ण तडि पारथ पुरद्री।

—सालिसूरि

उ०—. मेल्हि वात परही सवि वाई, स्त्री तणउ सवि हुउ जांणू माई। नारि नोरस न सागि न राचइ, पुण्यहीन पति पश्चनि वचइ —सालि सूरि

मेल्हणहार, हारो (हारी), मेल्हणियो—वि०।

मेल्हिश्रोडो, मेल्हयोडो मेल्हयोडो—भू० का० कृ०।

मेल्हीजणो मेल्हीजबो—कर्म वा०।

मेल्हवणो मेल्हवबो—देखो मेलणो, मेलबो' (रू भे)

उ०—१ इण भात सात निस दिन अभग, जुडि जीतो जैचद भूप जग। सुरतांण श्राठ इक दिवस साहि, मेल्हविया कारागेह माहि।

—सू प्र.

मेल्हांण—देखो 'मेलाण' (रू भे)

उ०—१ हाडा वूदी का धणी, नग्र उजेणी जाई दियो मेल्हाण। चउरास्या सहु तिहा मिल्या, उढिय छे खेह न सूझै भाण।

—वी दे.

उ०—२ कटक्क कांधार, समूह सेलार। पयांण करत, मेल्हांण दियत —गु रू व.

उ०—३ गिरकदर पाहाड, गाहि पाए केकाण। किया मट्ठ मैवास, प्रज्ज पाळी मेल्हांण।—गु रू व

मेल्हाणो,मेल्हावो—देखो 'मेलाणो, मेलावो' (रू. भे)

उ०—तद ठाकुरसी सारा साथ सू ऊपर चढियो भीतर गयो। लडाई हुई। पीरोज काम श्रायो। कोट लियो। राव स्री कल्याणमलजी री श्राण फेरी। कूची गढरी राव कल्यांणमल जी नू मेल्हाई —नैणसी

मेल्हाण हार, हारो हारी), मेल्हाणियो—वि०।

मेल्हायोडो—भू० का० कृ०।

मेल्हाईजणो, मेल्हाईजवो—कर्म वा०।

मेल्हायोडो—देखो 'मेलायोडो' (रू भे)

(स्त्री०मेल्हायोडी)

मेल्हावणो, मेल्हाववो—देखो 'मेलाणो, मेलावो' (रू भे)

उ०—१ धायनु अरजुनु धणुहधरु श्रवर न धाया केइ। मेल्हाविउ गुरचलणु तसु गुरु किम नवि तूसिइ।—सालि भद्र सूरि

उ०—२ चोथलई फेरइ डाईचो, पल्यग सावटू सोडि। कुश्ररी कर मेल्हावणई दीया भाव भूखण कोडि।—रुकमणि मगळ

मेल्हावणहार, हारो(हारी), मेल्हावणियो—वि०।

मेल्हाविश्रोडो,,मेल्हावियोडो मेल्हावयोडो—भू० का० कृ०।

मेल्हावीजणो मेल्हावीजबो—कर्म वा०।

मेल्हावयोडो—देखो मेलायोडो' (रू, भे)

(स्त्री०मेल्हावियोडी)

मेल्हियोटो—देखो 'मेलियोडो' (रू भे)

(स्त्री०मेल्हियोटी)

मेळ्ह—देखो मेळू' (रू भे)

उ०—तद इयै रै तीन्ह जणा मेळ्ह एक ब्राह्मण एक लोहार एक सुथार। इहां सू कुवर रै वडौ प्यार —चौबोली

मेव—स०पु० [देशज] १ राजस्थान की एक जाति।

२ उक्त जाति का व्यक्ति।

मेवडलो—१ देखो 'मेह' (अल्पा, रू भे)

२ देखो मेवौ' (अल्पा, रू भे)

मेवडौ—स०पु०—१ दूत, चर, हरकारा।

उ०—वहु लोय प्रमाण जासु पयतलि, जगत्रगुरु हउ श्री वडा तउ माहि अकबर सुगरु तेडण, वेगि मुकइ मेवडा।—ऐ जै का स

२ देखो 'मेवौ' (अल्पा, रू भे)

उ०—जुळी लुगाया भेळा करै, आवै साल फलेवडौ। बाळक वीजा साथ लोडी, खै मुरघर री मेवडौ।—दसदेव

३ देखो 'मेह' (अल्पा, रू भे)

मेवती—स०पु०—एक प्रकार की अफीम।

उ०—१ गोठ री तयारी कीवी। अमला री रह-छह मडी छै। भूरी, मेवती, काळी, किसनागर, आगराई, मरोडी मुहरतोळी।

—डाढाळा सूर री वात

उ०—२ कोटडी म भांत भांत रै अमलां री गळणिया भरती ही काळी, मेवती, भूरी, मरोडी आगराई नै किसनागर अर मेडी ऊमा बाईसा रै हीयै भात भांत रै विचारां रा गोट ऊठता हा।

—फुलवाडी

मेवलो—देखो मेह' (अल्पा., रू भे)

उ०—नान्ही सी'क एक बादळी ओसरगी। रेवड वाळै री अळगोजौ गूज उठयो। रिम-झिम-रिमझिम मेवलौ वरसै।—रा सा स

मेवसियौ—देखो मेवासी' (अल्पा, रू भे)

उ०—ऐसौ मेणा योरी ने भीलौ रे चोर मेर रघाडै होलौ। बावरी कोली कसी मेवसिया रे, आहेडी माम रा रसिया —जयवाणी

मेवागोद—स०स्त्री०—विवाह से पूर्व दूल्हे को उसके ईष्ट मित्रो आदि की ओर से दिया जाने वाला रुपया भेट आदि। (ओसवाल)

मेवाड—स०पु० [स०मेदपाट] १ राजस्थान मे चित्तौड, उदयपुर तथा उसके आसपास का प्रदेश।

उ०—१ हाडोती हिळ मिळ हुई, मेळ वियो मेवाड। घर जमवत रै घुमट नै, तूटी घर टूटाड।—ऊ का

रू०भे०—मेवाट

अल्पा०—मेवाडो मेवाडौ।

मेवाडा कुमार—स०पु०—कुम्हारो की एक शाखा।

मेवाडी—वि०—मेवाड का, मेवाड सम्बन्धी।

स०पु०—१ मेवाड का निवासी।

२ मेवाड के राजपूत, सिसोदिया।

उ०—लिख रे पत्र मीरां भेजियो, दोज्यो मेवाडया रे हात। सादूहां री सग राणा ना छुटै, काई करला थारो राज।—मीरां

स०स्त्री०—३ मेवाड की भाषा।

मह०—मेवाडो मेवाडौ

मेवाडो—१ देखो मेवाड' (अल्पा, रू भे)

२ देखो मेवाडी' (मह, रू भे)

उ०—मानसिंह धिन धिन मेवाडा, अत्त प्रव भीम तणौ अवसांण।

—दुरसौ आढौ

मेवाड—देखो मेवाड' (रू भे)

उ०—१ मोळका सारे मछर मर, ढहाळ पहाड, बाळीया बोए फौजा ढोए, मळवट्ट मेवाड।—गु. रू व

उ०—२ कांनड मेवाड माळवौ।—घरम पत्र

मेवाडो—१ देखो 'मेवाड' (अल्पा, रू. भे)

२ देखो मेवाडी' (मह, रू भे.)

उ०—१ राणी भीम न रखियो, दत विन दीहाडोह। हय गयंद देतौ हुवां, मुवौ न मेवाडोह।—महाराणा भीमसिंहजी रो दूहो

मेवात—स०पु०—राजस्थान मे, अलवर के आस पास का भू-भाग, जहा मेव-मुसलमान बहुतायत से आबाद हैं। (सभा)

उ०—१ दूसरा मांन छळि लाडखां दूसरै, सार रै जोर छोड घरा माधी। वाहांतरि लेय आवेरि गळ-बधाणी, वाहांतरि गळै मेवात बाधी।—रावराजा फतैसिंघ नरूका रो गीत

मेवाती—वि०—मेवात का, मेवात सम्बन्धी।

स० पु०—१ मेवात का निवासी।

२ एक जाति विशेष या इस जाति का व्यक्ति, इसे मेव भी कहते है। (मा म)

मेवावी—स० स्त्री०—एक प्रकार की तलवार।

मेवाफरोस—स० पु० [फा० मेवाफरोश] मेवा व फल बेचने वाला व्यापारी।

मेवास—स० पु० [स० मेवा+वास, मेप-मगमे, मेव-वास] १ लुटेरो या डाकुओ के रहने या छुपने का सुरक्षित स्थान।

उ०—१ नेम पहि थाम मेवास वका नगर, डारणा न लागै पाव पाछा डगर। आज रौ आकडौ घाट दीसै अगर, बांकडो बाहडै नहीं वायां बिगर।—महादांन महडू

उ०—२ वाथ घनै असमान ने मह वीन भुजाळा। गयसा उठावै पालरा' मेवास वहाळा।—पा प्र

२ सुदृढ किला, कोट, गढ।

३ स्थान मुकाम डेरा, निवास।

उ०—असमर भुज अखियां 'अवौ' मोकळसर मेवास। सोवा आयां तीन सिर माह रहणै मास।—रा. रू

४ चोर, लुटेरा, डाकू।

उ०—१ घके मिमोद मेवास चढिया घटा। गोळियां गाज बड राग गवता। ह्रांमळा घरा छळ कीया माहव हर्चे, राण रै मांमला जीत रखता।—दल्लो मोतीसर

उ०—२ जाळधर डेरा थका, बीतौ भाद्रव मास। फुरमाया टळिया नही, मिळिया सही मेवास।—रा रू

५ पूव और आग्नेय कोण के मध्य की दिशा।

वि० वि०—इसे सूर्योदय के बाद ही मेवास कहते हैं, इसमे पहले इसे उडीक या परियाण दिशा कहते हैं।

रू० भे०—मेवास, मेवासी, मंवास,

अल्पा०—मेवसियौ मेवासियौ मेवासौ।

मेवासियौ—देखो मेवासौ' (अल्पा, रू भे)

उ०—१ जाके नख चख (कर मुख) सिर नही, चरण, नासिका नाही। ऐसा मन मेवासिया, काया नगरी माही —ह पु वा

उ०—२ महा उमराव राणा तणं मेढ रा, वेढ रा डाव वप घडेवांनी। साखरा भड़ा भिडज्जां चढै सावता, मरद मेवासियां हार मानी।—दल्लो मोतीसर

उ०—३ मभ आथण मेवासियौ, पचादी परभात। बाट निहारै वेगडौ, जपण उडकियौ जात।—पा प्र

मेवासी—स० पु०—१ चोर, लुटेरा, डाकू।

उ०—१ तिज करतूति कमाण करि, सुबुधि चिलाले चारि। ग्यान ध्यान का बांण करि, मन मेवासी मारी।—ह पु वा

उ०—२ हेमें वास छोडियो। हेमौ जाय घूघरोट रै पहाडा पंठो। हिवै हेमौ मेवासी हुवौ। मेहवैरी घरती उजाडै।—नैणसी

उ०—३ माणस जळ का बुदवुदा, पांनी का पोटा। दादू काया कोट मे, मेवासी मोटा।—दादूबांणी

२ उद्दण्ड, बदमाश, नटखट।

उ०—हरीया यो मन हटकीयो, रहै नही छिन एक। मन मेवासी वस्य नही, इनका चिरत अनेक।—श्रीहरिरामदासजी महाराज

३ रसिक।

उ०—पीछो उतर कर रही छै कलालण, यो तो मेवासी वागा रो बहारु छै। साहब इनै रच्यो तो बराबर, तू औरा नै किण सारू दे। —रसीले राज रा गीत

४ मेवास (पूर्व व आग्नेय के बीच) की दिशा मे बोलने वाला तीतर।

५ देखो मेवास' (रू भे)

रू० भे०—मंवासी,

अल्पा०—मेवसियौ, मेवासियौ, मंवासियौ

मेवासौ—स० पु० [स० मेवा-वास] १ सुदृढ किला, कोट, गढ।

उ०—लगी चोट सत सबद का, खूल्हा ब्रह्म कपाट। मेवासा सब जीत कै, वस्या नगर वैराट।—श्रीहरिरामदासजी महाराज

२ लुटेरो का डेरा, रहने का स्थान, छुपने का स्थान।

उ०—ग्रहै भोम गिरदा ग्रडै जगा ललकारै गोरा। मेवासा कै तोडै कपू, हकारै सुमत्र। रूका छडा मौडै छत्री, भूमि ले डकारै रूठा, चोडै हहकारै जूटो, वकारै चिमन्न।

—चिमनसिंह चांपावत रौ गीत

रू० भे०—मंवासौ मंग्रासौ,

३ देखो मेवास' (अल्पा, रू भे)

मेवौ—स० पु० [अ० मेव] १ सूखा फल, बादाम, पिस्ता, काजू, किशमिश आदि।

उ०—१ फळ कदळी स्रीय स्वादे अफरा, छये स्रंय बादाम पिस्ता छुहारा। सुवा माव नारगियां रग सोहै महादेव देवेस मेवै विमोहै।

—रा रू

उ०—२ मेवा वस्त्र आभरण मिस्री,बदजइ किसा किसा वाखाण। वरी घणइ (जाइ) उछाह ल्याया। जानी ईसर तणा सुजाण।

—महादेव पारवति री वेलि

उ०—३ मीठी और न कोइ मिठाइ, मीठा और न मेवा। आतम राम कली ज्यो उलसैं, देखत दिनपति देवा।—घ व ग्रं.

उ०—४ मेट री हर आवै जद पिस्ता-बिदाम कांकरां री ई गरज नी सरै। मुरड अर चेपो मेवा सू ई इदक मीठौ लागौ।

—फुलवाडी

२ हलुवा, खीर आदि उत्तम भोजन मिष्ठान्न, मिठाई।

उ० १ मीठा मेवा जीमतै, बाहै भोजन बौह भाति। ता सू तन छैती पडै, जनहरीया करि खाति।—श्रीहरिरामदासजी महाराज

उ०—२ भाई तुमे बताऊ भेमा, साचे तन मन करियो सेवा। मोज करोगे मिलहैं मेवा। दोसत देखि बोलना देवा।—ऊ का

उ०—३ दुरयोधन का मेवा त्याग, साग विदुर घर लूखौ। करमा के घर खीच आरोग्यो, लूखौ गण्यौ नही सूखौ।—मीरा

अल्पा०—मेवड़लो, मेवडो,

मेस—स०पु० [स०मेष] १ नर भेड, मेष।

२ ज्योतिष की बारह राशियो मे से एक।

रू०भे०—मेख,

४ देखो 'महेस' (रू भे)

उ०—सेस फुणघर सरकती, मेस करत रूडमाळ। यण पुळजो होवत अठै, भाई मो मालाळ।—पा प्र

मेसलगन—पु० [स० मेषलग्न] ज्योतिष मे एक लग्न

वि०वि०—देखो लगन

मेसर—देखो 'महेस्वर' (रू भे)

उ०—रूडमाळ छळू गळ मेसर ए। किम आपत झांपत केसरए।

—पा प्र

मेसरी—देखो 'माहेस्वरी' (रू भे.)

(स्त्री० मेसरणी)

मेससक्रांति, मेस सकरांत—देखो मेख-सक्रांति' (रू भे)

मेसी—स०स्त्री० [स० मेषी] मादा भेड।

मेसूरण—स०पु० [स०] फलित ज्योतिष में दशम लग्न।

मेस्मराइजर—स०पु०[अं०मेस्मराइजर] मेस्मेरिजम करने वाला, सम्मोहक।

मेस्री—देखो 'माहेस्वरी' (रू भे)

उ०—तिण ही मेस्री नीं हाटे माथु उतरचा। रात्रे चोर आया। हाट खोली।—भि द्र

मेह्दी—देखो 'मेंदी' (रू भे)

उ०—१ तठा उपरान्त माळा फूला री छाबा आण हजार कीजै छै। सू फूल कुण भात रा छै? हजारा, नौरग, तुररी मेह्दी खिलगो '।—रा सा स

उ०—२ बनी बनीं मेह्दी हाथ मिळायो विख्यात।

—बादरदान दधवाडियो

मेह—स०पु० [स०मेघ प्रा० मेह] १ बादल, घन, मेघ।

उ०—१ मेह मथारे वरसियो, नदी किनाडां मार। घोडा हींसन मलिया, सीस किराडा भार। —बा दा.

उ०—२ एतलइ सुसरमा दलि ढौल वाजइ। जाणें असाढू किरि मेह गाजइ।—सालिसूरि

२ वर्षा, बारिस।

उ०—१ कै बासर थी आसा अर देवराज मर विषाळें तेय एक चागळो मेह रो आयो।—द वि

उ०—२ घर जगळ ऊपर फौज घिरी, जमराण जमात समाण जिरी। असमांणक मेह घटा उनई, दवि जाणक छोड मुजाद दई।

—मे म

उ०—३ बापूह विस अच्छेह मे, आाह चित अच्छेह। 'गजजण' मांगें माहिबो, ज्यू महि मांगें मेह।—गु रू. व

[स०मेह] ३ मूत्र, पेशाब।

४ एक रोग विशेष। (प्रमेह)

रू०भे०—मे मे', मैह,

अल्पा०—मेडलो, मेऊलो, मेवडलो, मेवडो, मेवलो, मेहडलो, मेहडो, मेहलु, मेहलो, मेहू मेहो, मेहडो।

मेहडणो, मेहडबो—क्रि०स०—भोगना, उप भोग करना, आनन्द लूटना।

उ०—मात पिता री थोडी मोवत, मोजा मेहडली। मात जात मोडा मू माघी, नाहक नेहडमी।—ऊ का

मेहडलो -देखो मेह' (अल्पा., रू भे)

उ०—मेहडलो उठी हो म्हारा गाडा मारू हीरा मोतीया रे।

—लो गी

मेहडो—देखो मेह' (अल्पा, रू भे)

उ०—१ श्री प्रासाद घण आविया दरसण कियो 'अजीत'। दूठे दळ मेहडा हरि तूठो हरि प्रीत।—रा रू

उ०—२ तूठा ह गाम जिगाद बूठा हे अमृत मेहडा है लो।

—वि कु

मेहझाळ—देखो 'मेहझाळ' (रू भे)

मेहजुज-वि०—उन्मत्त।

उ०—अर कतराक दन जाता, कतरीएक वरती चुरतो थको बानैत भणी री भमर, एका बहादर, आपरा पोरस मे मेहजुज हुओ थको आग लागो थको, उजाड वन महा भयांणक जायगा आय नीसरियो।

—कल्याणसिंह नगराजोत वाढेल री वात

मेहझाळ—स०स्त्री० [स०मेघ-झार] वर्षा के लिये किया जाने वाला यज्ञ या किसी देवता का पूजन।

रू भे —मेहजाळ,

मेहणत—देखो मैं'नत' (रू भे)

उ०—कर मेहणत काटां वळ काढे, अय पच पतळा किया यसा। सादत छांट पिछटचा सत्रू जाणें जसी तार जिसा।

—लालसिंह राठोड री गीत

मेहणी—देखो 'मैणी' (रू. भे)

उ०—फूलां तो अबोली रेवण साख पैला ई माठ झाल राखी ही। पण अबै ऐ मोसा अर ऐ मेहणियां सुणणा मे ई की सार नीं ही।

—फुलवाडी

मेहणू, मेहणो—देखो 'मैं'णो,मैणो' (रू भे)

उ०—१ राजा थानु मेहणो सांची दियो सत्य छै।

—पच दडी री वारता

उ०—२ अवसर दान ज अप्पही, रिण भज्जै मुह मोड। राठोडा कुळ मेहणो, ते खत्री पण खोड।—गु रू व

उ० —३ ताहरा ऐ आपस मे बोल उठी। ताहरां बाघेली सोना नू मेहणो दियो। कह्यो—थारो माई थोरिया सू भेळो जीमै।

—नैणसी

उ०—४ ताहरां आ तो मेहणे आई, मावास थानें भली कीवी। कासू कहा, थानें आ चाहीजें नहीं। अर वळे जो आया तो जाय नै माळी रै घरे ऊतरिया।—बूढी ठग राजा री बात

मेहतर—देखो 'महत्तर' (रू भे)

उ०—गाव वाळा तो आखरी वगत ताई काली मासी रै गपोडां माथै विस्वास नीं करियो। पण जद वा घडी दिन चढ्यां आपरी भूरी झोटी मेहतरां रै घरै सभळाय, उण री घणी घणी भुळावण देय, आपरै छव् चीतरा नै साथै लेय, सार्चांगी महाराणी जी रै घर माम्ही वहीर व्ही तौ लोगां रै इचरज रो पार नी रह्यो।

—फुलवाडी

उ०—२ बेटी जीवतो रह्यो तो सगळी वातां मावळ व्हैला, वा तो भली सोची नी कोई भूडी। आपरा बेटा नैं मेहतराणी रै हवालै कर दियो।—फुलवाडी

(स्त्री० मेहतराणी)

मेहदेहजा—स० स्त्री०—मेहा की पुत्री,श्री करणीदेवी का एक नामान्तर।

उ०—उन मे मेह देहजा आई, किनियाणी जगदवि कहाई। निज किरन करन उन्नत्ती, सो करनी जय जयति मवत्ती।—मे म

मेहनत —देखो 'मैं'नत' (रू भे)

मेहनाम-स०पु० [म० मेहनाम] अभ्रक ।

मेहपाठ-स० पु०—मेडता का पुराना नाम ।

उ०—पछे राजा जवनमत री देह छूटी तरै राजा मानधाता टीकै वेठो, मेहपाठ नगर वसायो सो मेडतो कहीजै छै ।—रा व वि

मेहपुर-स० पु०—मारवाड के पश्चिमि भू भाग, मालानी रियासत की राजधानी ।

मेहमत—देखो 'मैं'मत' (रू भे)

मेहमांण,मेहमान—देखो 'मैं'मान' (रू भे)

उ०—१ पीढिया लग उगा रै घरै आयोडो मेहमाण भूखो को गयो नी । जिसी भी जव-ज्वार री घर मे ऊकळी, मेहमाण रै आगै हाजर कीवी ।—रातवासो

मेहमांणी मेहमानी—देखो 'मैं'मानी' (रू भे)

उ०—सठै जाय राजा स्त्री करणीजी रै पावै लागा । रूपीया १०००) मेहमांनी गुदराया ।—नैणसी

मेहमा—देखो 'महिमा' (रू भे)

उ०—उठे देवी सागवीया री वडो थांन छै । वडी मेहमा छै । —नैणसी

मेहर—देखो 'महर' (रू भे)

उ०—एक द्रस्टि कर आतम देखे, ब्रह्म दरसीया ताई । आवागमन आवै नही कवहू, जिन मेहर गुरां री पाई ।
—स्त्री हरिरामदासजी महाराज

उ०—२ राज इत्ता दिनां सू पधारया, जे म्हने देख्या राज रै मन में आणद रा फूल खिल्या व्है तो ढोल्या माथै ई चपा रै फूला री मेहर करावो ।—फुलवाड़ी

२ देखो मेर' (रू भे)

उ०—भोई मेहर अनइ ठाठीया, चालइ काहर कमांणी । च्यारि सहस सायइ साचरिया, वहइ पखाळी पाणी ।—का दे प्र

मेहरवान—देखो 'मैं'रवान' (रू भे)

मेहरवानगी मेहरवानी मेहरवानगी, मेहरवानी—देखो 'मैं'रवानगी, 'मैं'रवानी' (रू भे)

उ०—१ लोग सारो सवळो रहै अर वादसाह री घणी मेहरवांनगी । —अमरसिंह राठौड री वात

उ०—२ राजा कह्यौ-सुदर दास, ऐ विचारा गहला होय गया छै । उवे री मेहरवांनगी रा चाकर था ।—पलकदरियाव री वात

उ०—३ इयै-मे काई फरक है । साचैई आपांरी मेहरवानगी सू वापडै-री कमर टूट जावैला ।—वरसगांठ

मेहरात-स० पु०—एक वर्ग विशेष ।

उ०—जैतारण था कोस ८ पूरव मांहे मेर मेहरात वसै । धरती हळवा १० वाजरी मोठ, खेत कवळा ।—नैणसी

मेहराव-स० पु० [अ० मिहराव] किसी द्वार के ऊपर, अर्द्ध मडलाकार बना हुआ भाग ।

रू०भे०—महराव, महराव, मेराब, मैं'राब ।

अल्पा०—मिहरवो ।

मेहरावदार-वि०—जिसमे मेहराव लगा हुआ या वना हुआ हो, गोलाकार, अर्द्ध मडलाकार ।

रू० भे०—महरावदार, मैंरावदार ।

मेहरित, मेहरितु-स० स्त्री० [स० मेघ+ऋतु] वर्षा रितु ।

उ०—माडव आगम मेहरित महला मज्झ रहाम । फुरमायो 'गजमाह' नू तुम आवो हम पास ।—गु रु व

मेहरू-स० पु०—महतर । (उ र)

मेहरोमाग-स० पु० [स० मेघ+मार्ग] आकाश, गगन ।

उ०—ऊकी नीव काकोदरा लोक टूकै फतै चिन्ह आकाम लागो फरूकै । मिणां मेहरोमाग पाताळ मानू मको देहरो सेहरो रत्न सानू ।
—मे. म

मेहळ,मेहल—१ देखो 'महल' (रू भे)

उ०—१ मुहकम रो मुहमद अनी, सुण मत असत सराह । तुरत घणै हित तेडियो, मिरजो मेहला मांह ।—रा रू.

उ०—२ अण समै वकटापुर माहे अचूकी घडी सू ठीक करै तो मेहल मे नहीं ।—कल्यांणसिंह नगराजोत वाढेळ री वात

२ देखो 'महिळा' (रू भे)

उ०—खाटी अपणी खाय, आठ पहर समरै अनत जिण री कदै न जाय, मेहळ उधारै मोतिया ।—रायसिंह सादू

३ देखो मेखळा'

उ०—कडि मणि मेहल नूपर रूप रहावइ पाय । पहरणि सेत्र पच्छलीय, कुलीप मान न माइ ।—जय सेखर सूरि

मेहलणो, मेहलवो—देखो 'मेलणो, मेलवो' (रू भे)

उ०—तेल भरीनइ तावडउ, हेठलि मेहलि हुतास । तली तली तुम्हनइ दीउ तन्न सुवामय मांस । ससिहर रहि रे सासतु जल घट्ट भीतरि लेय । सिर ऊपरि मेहली सिला, डाटसि डारउ देय ।
मा का प्र

मेहळाण मेहलाण—देखो मेलाण' (रू भे)

उ०—कोई नगरी कामावती, कामसेन राजा न । नीति निपुण गुण सभळी, तिहां सिधु मेहळांण । —मा का प्र

उ०—२ इणि परि सीख समप्प करि,राइ आयस दीध । सिर नामी सेवक पलिउ मार'ग मेहलांण ह कीध ।—मा का, प्र

मेहलाणो, मेहलाबो—देखो 'मेलाणो, मेलावो' (रू भे)

मेहलायत—देखो महलायत' (रू भे)

उ०—१ पछै कानडदेजी जाळोर ऊपर घर कराया, तिकै देखण नु मीमाळ नू मेलियो नै सूरमाळणन नूं साथै मेलियो, सु सीमाळ मेहलायत देख क्यू वैत मे खोड काढी ।—नैणसी

उ०—२ आय देखै तो ठग वीरमदे री मेलायत पोळ तीरे आयो ।
—कल्याणसिंह नगराजोत वाढेल री वात

मेहलायोडो—देखो 'मेलायोडो' (रू भे)

(स्त्री० मेहलायोडी)

मेह्लावणी, मेहलावबो—देखो 'मेलाणी, मेलावो' (रू भे)
उ०—गोरा यदि भूत मि तेरा, करी सजाई आवे। माटी हुइ तउ घातु बाधे नामनाय मेहलावें —का दे प्र

मेह्लावियोड़ा—देखो मेलायोड़ो' (रू भे)
(स्त्री० मेह्लावियोड़ी)

मेह्लि, मेह्ली—१ देखो 'महल' (रू भे)
२ देखो 'महिळा' (रू भे)

मेह्लियोड़ो—देखो 'मेलियोड़ो' (रू भे)
(स्त्री० मेह्लियोड़ी)

मेहलु, मेहलू, मेहलौ—देखो मेह' (अल्पा, रू भे)
उ०—मेघ मनोहर देवता ए बीजु प्रधान, पुस्करावरतक मेहलु जीवित दीइ दान।—नळदवदती राम

मेहरपुर—स०पु०—राजस्थान मे बाड़मेर व उसके आस पास के क्षेत्रका पुराना नाम।

मेहसड़लो—देखो 'मेह'
उ०—झिरमिर-झिरमिर मेहसड़लो (जी) वरसे, मेंहिया मे चवण लागो।—लो, गी

मेहांणद—श्री करणी देवी के पिता का नाम।

मेहांण—देखो 'महारणव' (रू भे)

मेहा—१ वर्षा।
उ०—जेहा मेहा जगत सू, मत विरचो सुख मूळ। जीवाडै सारो जगत, औ अविरच अनुकूळ।—बा दा
२ देखो 'मेहाई' (रू भे)

मेहाई—स०स्त्री०—श्री करणी देवी।
उ०—१ उह गरूप जगळ वर आई। महा सकति दुरगा मेहाई।
—मे म
रू० भे०—मेमाई मेहा, मेहाही,

मेहागम—स०पु० [स० मेघ+आगमन] वर्षा ऋतु का आगमन, वर्षा ऋतु की शुरूआत।
उ०—समरै निसिपति जेम चकोर, मेहागम जिम चाहै मोर।
—श्रीपाळरास

मेहावी—देखो 'मेधावी' (रू भे)

मेहासदु, मेहासदू मेहामधु मेहामघू, मेहासिधू,—स० स्त्री०—मेहा की पुत्री श्री करणी देवी का एक नामान्तर।
उ०—१ कासी तू केदार, तू ही तू बद्री कमळ। है देवी हरिद्वार, मथुरा त मेहासदू।—अज्ञात
उ०—२ बांका मेहामधू म बीसरै, सरद हरै गामळै साद गढवाहा गड घोरै गाजे, मद रै आंने गटां अजाद —बां दा
उ०—३ दरबारे दीवाण निसा-दिन, पाय पाय पूगर रग पात धात प्रभात टाळणी दट घट, मेहासघू मेवणा मात।
—कविराजा बांकीदास
रू० भे०—महियासधू महियामधू,

मेहाही—देखो 'मेहाई' (रू भे)

उ०—पायो रचण रूपगां पैंडौ, मेहाही थारी महर।—बा दा

मेहिली – देखो 'महिळा' (रू भे)

मेहुण—देखो 'मैथुन' (रू भे) (जैन)

मेहू—देखो म्हैं' (रू भे.)
उ०—मेहू तो छा ओगण का भरिया, थेई हो न सहो।—मीरां
२ देखो मेह' (अल्पा, रू भे)

मेहूड़ो—देखो मेह' (अल्पा, रू भे)
उ०—झिरमिर झिरमिर मेहूड़ो वरसै, बादळियो घररावै ए।
—लो गी

मेहेरवान—देखो 'मे'रवान' (रू भे)
उ०—बीजो साहिब मेहेरवान कोई भुगत बतावें।—केसोदास गाडण

मेहेरांण—देखो 'महारणव' (रू भे)

मैं—सर्व०—सर्वनाम के उत्तम पुरुष का कर्त्ता-रूप, स्वय खुद।
उ०—१ नभ सोती जागी लगन धुन लागी जक नही। स्वयभू ध्याळ मैं परमपद पाऊ सक नही।—ऊ का
उ०—२ मेहाई-महिमा मुणी, मैं मूरख मति मद। जिण अंदर चूको जिको, कीजै माफ कविंद।—मे म
स०पु०—१ बकरी के बोलने का शब्द।
स०स्त्री०—२ अहभाव, अहमन्यता।
रू०भे०—मइ मह, मय, मे, मेइ,
३ देखो 'मैं' (रू भे)
उ०—ज्यांरी रिच्छया देवता, मेवा पीर प्रधान। त्यां अणचीती सपजै, मुसकळ मैं आसान।—रा रू

मैंगळ—देखो 'मदकळ' (रू भे)
उ०—१ मन मैंगळ ममत भयो, आकस सहै न काय। जन हरीया कुछी एक सहै,जो ग्यांन गरीबी होय।—स्री हरिरामदासजी महाराज
उ०—२ जिण तोटा मे ही पोत (तेवटा री चीड़ा) तो गज मोतीयां री ने चूड़ो ही उण हीज मैंगळ (मदगळ) मद्योनमत हाथी रा दात रो है।—बी स टी.

मैंगाई—देखो 'मूगाई' (रू भे)

मैंगो—देखो मू' गो' (रू भे)
(स्त्री० मैंगी)

मैंडा—मेरा, मेरे।
उ०—इसो मुग्ग पिडसघो बोली, मैंडा बोल सच्चा जाणौ, तुसांडी पुत्री ह तो घोटी ल्याऊ।—जखड़ा मुखडा भाटी री बात

मैंटोवर—देखो 'मडोर' (रू भे)

मैंण—स०पु०—मोम।
रू०भे०—मयण, मोयांण, मैंन, मेण, मैण, मोण,

मैंणका—देखो मेनका' (रू भे)
उ०—तिलोममा मैंणका रची, उरवसी सरोतरि।—रा रू

मैंणा—देखो 'मैणा' (रू भे)
उ०—कुन दादू बखना वाजिदा, मैंणा घाटम मेन। गिनका भील

मीलणी सिरीया,फकर फरीद हुसेन । —स्री हरीरामदासजी महाराज

(स्त्री०मैंणी)

मैंणावती—देखो 'मेणावती' (रू भे)

उ०—हस्ती घोडा गाव गढ, सुत वनिता परिवार । कहै माता मैंणावती, तजि गोपीचद यहु खार ।—ह पु वा.

मैंणो—देखो 'मंणो' (रू भे)

उ०—मैंणो पेंगु मेर बावरी,विलळा वैंता । भाळी थोरी भील, रात रा मार्ग रैता । —ऊ का

मैंत—देखो 'महत' (रू, भे)

मैंतर—देखो 'महत्तर' (रू भे)

उ०—ठगी माथै कमर वाधी, सोखीनाई नै धोखा-घडी सू साधी । सैंसी ग्रर मैंतर ताई मार्ग विना नही छोडचा ।—दसदोख

मैंदांन—देखो 'मंदांन' (रू भे)

उ०—तीन पौलि तकीया परै, मडे वीच मैंदांन । जन हरीया घर सुन्य मैं, सहज घुरै नीसांन ।—स्रीहरीरामदासजी महाराज

मैंदालकडी—देखो 'मंदालकडी' (रू भे)

मैंदी-स०स्त्री० [स० मेधी, मेधिका] (ग्र मा)

१ प्राय समस्त भारत मे होने वाली एक झाडी ।

२ उक्त झाड की सूखी पत्तियां व उनका पीसा हुआ चूर्ण ।

उ०—१ सूकी सेवण री हेला उर हाई, मैंदी देवण री वेळा मुरझाई ।—ऊ का

उ०—२ हाथा रै राच्योडी मैंदी हींगळू री टीकी, गज गज लावा वांसवाळी सू सरगल बाळ । झालर रै डकै ही पायल री झीणी झणकार बाजती ।—दमदोख

३ एक राजस्थानी लोक गीत ।

वि०वि०—इसकी पत्तिया छोटी छोटी ग्रौर फूल सफेद होते हैं जिन से भीनी भीनी सुगध ग्राती है । इसकी पत्तियो के पिसे हुए चूर्ण को स्त्रिया भिगो कर हाथो व पैरो पर लगाती हैं ग्रौर विभिन्न प्रकार की चित्रकारी भी करती हैं ।

रू०भे०—महदी, महदी, माहदी, मेंदी, मेहदी, मेहदी,

मैं'नत—देखो मैं'नत' (रू. भे)

उ०—मैं'नत मजदूरी मासक घण मोला, विलखा विगताळू ग्रासक ग्रणबोला ।—ऊ का

मैंपणो-स०पु०—ग्रभिमान, गर्व, ग्रह भाव, ।

मैंवर-स०पु० [ग्र०] सदस्य ।

रू०भे०—मयवर, मेवर,

मैंहघो—देखो मू'गौ' (रू भे)

उ०—मैंहघा मोल दियै 'भिवाउत', लियै ग्रपार नफो जस लाह । माडावळै मोतिया ग्रमडो, मोदो करै वळापति साह ।

—महाराज छत्तरसिघ री गीत

मैंमद-स०पु०—स्त्रियो के शिर पर धारण करने का एक ग्राभूपण ।

रू०भे०—महमद, महमद, महिमद, मेंमद, मेहमद, मैंमद, मैंमद, मैमद, मैहमद,

मैंमतक, मैंमट, मैंमत—देखो 'मेंमत' (रू भे)

उ०—१ खळ थोघण स्रोण ग्ररोगण खप्पर छै रति सोगण जोस छळै । मद भोगण मास ग्ररोगण मैंमत धावत मोगण दंत घलै ।

—मा वचनिका

उ०—२ मन गगा-जळ-निमळ, वदन किरि पूनम ससिहर । सुवप व्रन्न सोव्रन्न, गात मैंमतक गंमर ।—गु. रू. व

मैंमद—देखो 'मैंमद' (रू भे)

उ०—माथा ने मैंमद, ग्रघक वराजै । तो रखडी छव न्यारी जी ।

—लो गी

मैं—देखो 'मय' (रू भे)

उ०—विप्र मूरति वेद रतन मै वेदो, वस ग्रादि ग्ररजुन मैं वेह ।

—वेलि

मैं'क—देखो 'महक' (रू भे.)

मैं'कणो, मैं'कबो—देखो 'महकणो, महकबो' (रू भे)

मैं'कमो—देखो 'महकमो' (रू भे)

मैं'कार-स०स्त्री०—महक, सुगध ।

उ०—भर हाडी म्हैं छूकण दीन्हो सीज्यो म्हारो साग । जद हाडी भर नीचै उतारयो, मीठी ग्राय मैं'कार ।—लो गी

मैं'कियोडो—देखो महकियोडो' (रू भे)

(स्त्री० मैं'कियोडी)

मैंख—देखो महिस' (रू भे)

उ०—देवी मैंख रै रूप देवा डरावै । देवी देवता रूप तू मैंख खावै ।

—देवि

मैंखास—देखो 'महिसासुर' (रू भे)

उ०—देवी सहस्र लख कोटिक साथै, देवी मडणी जुद्ध मैंखास साथै ।

—देवि.

मैंगळ—देखो 'मदकळ' (रू भे) (ना डि को)

उ०—वळो मंगळां फौज दूजी वखांणं । जटाजूट गौरभ गज-खभ जांणं —गु रू व

मैंडी-स०स्त्री०—१ मकान का सब से ऊपरी कमरा ग्रटारी । (ग्र. मा)

उ०—१ बावेलो ए मैडिया मांहि दिवलो उजाव । चारा नै दिसा मे छेला चानणो ।—लो गी

उ०—२ सो हू तो डोडी ऊपरै खेटक (ढाल) नै रूक (तरवार) लेने ऊभी हू ने ग्राप ग्रायोडा पामणा (सत्रू) ग्रा री सनमान करो ग्ररथात जुद्ध करो मैडी मैं जाय वदूक झालो ।—वी स टी.

२ महल ।

३ देखो 'मेढी' (रू भे)

उ०—कवियण मैंडी वेल ज्यू ,बांधै मूह मरत । जे'जोगो' न जनमतो, कीर त किणरी करत ।—ग्रजात

रू०भे०—मयडो, मेडी ।

मैंछांण, मैंछायण—देखो 'मेछ' (मह , रू भे)

उ०—१ मनै खीजीयो साह होय हळा मैंछाण री, भोम ग्रद उठै

न व्है विगन भाण री। दैवरा पडै भ्रम घटै दुनीयांण री, 'भ्रमरीया' राख मरजाद हिंदुवाण री।—ठा. भ्रमरसिंहजी नीवाज री गीत

उ०—२ साजै सोमईयाह, भ्रमुग भ्राभडीयो नही। पहीयै कर पडीयाह, मार्व मैछायण तणा।—भ्ररजन हमीर भीमोत री वात

मंजर-स० पु०—दबाव।

उ०—जद फतूजी रै माथै दोम री मंजर पडयी। जद पहली तो भ्रा चदूजी यू कहीती थी सूरघ मे मेह हुवै तौ म्हारी गुरणी मे मेह हुवै।—भि द्र

मंजळ—देखो 'मजिल' (रू भे)

मंजिक-स०स्त्री० [भ्र०] जादू का खेल, जादू।

मंजिकलालटेन-स०पु० [भ्र०] किसी परदे पर दर्शकों को चित्र दिखाने की एक प्रकार की लालटेन।

मंट—देखो 'मठ' (रू भे)

उ०—तद बखतसिंहजी हाथी रा होदा माही चाढ़ लिया सो लोहा रो मंट भ्रावै जणा तौ वेचेत हुइ जावै।

—मारवाड रा भ्रमरावा री वारता

मंडल-स०पु० [स० मदनफल] मैनफल,। (भ्रमृत)

मंडी—१ देखो 'मढी' (रू भे)

२ दखो 'मंडी' (रू भे)

उ०—मढ मंटी चित्तर-साळा, गढ ढाहै गोख भ्रटाळा।—गु रू व.

मंढळ—दखो 'मेढल' (रू. भे)

मंढी—दखो 'मढी' (रू भे)

मंणगना-स० स्त्री० [स० मदनागना] कामदव की स्त्री, रति।

उ०—छहै तीस ही भ्राभ्रणा धारी साजै। लखै रूप मंणगना रूप लाजै।—सू प्र

मंण—१ चूडामणि, सिर का भ्राभूषण।

उ०—हुवै पाव वर्द हणू मेण दीघो। कपीमा हणू पाव तारीफ कीधी।—सू प्र

२ देखो 'मैंण' (रू भे) (भ्र मा)

उ०—१ मावटिया तन मैण ग, मिटै कदे नह माद। मावड़िया दूना मरद, चूना हदा चांद।—बा दा

उ०—२ मैण लगाटै पालटां, ताला माहि कसूर। हर तज रावै दांडियां, पारद हूता पूर।—बा दा

३ देखो मदन' (रू भे)

उ०—वर्ण चारु भ्राभास वदनारविंद, उरै ऊपजै वेस रेखा भ्रणदं। सदा हेत सता दमा नेत सोहै, महा मैण रूपी तिका नैण मोहै।—रा रू

मंणरा—देखो मेनरा' (रू भे)

मंणत—देखो 'मेनत' (रू भे)

मंणधार—देखो 'मणिधर' (रू भे)

उ०—तिनै नटाव बाजुबध मम्म धार मोहिया। स्तीविह माणि जाणि रूप्प मेंणधार मोहिया।—सू. प्र

मैणघुज-स पु—एक वाद्य विशेष, बाजा।

मैणफळ-स पु—मदन फल।

मैणल-स पु—हाथी।

उ०—मास्वै रावता गाजता मैणलां। बाधियो वाद सू इन्द्ररो वादळा।—गु रू व

मैणसिल—देखो मैनसिल' (रू भे)

मैणा-स स्त्री १—एक जाति विशेष।

२ देखो 'मैना' (रू भे) (हि को)

रू भे—मेणा, मेणा ,मैणा।

मैणादे—देखो मेणावती'

मैणी, मैं'णी-स स्त्री. १ कटुवचन, ताना मोसा, व्यग।

उ०—सीधी सैणीं सी मैणी सुणा माल्है,वैसक पुरखसणो हसणो तजि हालै।—ऊ का

२ मैणा जाती की स्त्री।

३ गुडी, बदमाश।

रू भे—महणि, महणी, मेणी, मेहणी, मैहणी।

मह०—मैणी, मैं'णी।

मैणीयात-वि०—कलकित, बदनाम।

उ०— मोसियळा भ्रमै, टोडाभ्रल टळिया नहीं। मैणीयात रास्यां मे, जांमोकामी जेठवा।—जेठवा

मैणो, मैं'णो-स पु [स्त्री०मैणी] १ मैणा जाति का व्यक्ति।

२ देखो मैणी' (मह, रू भे)

उ०—तद वा रजपूता कयो, कांनाजी म्हांनू इण वात रो मैणो दो तौ, दोरा तौ थांनू ई नही राखिया था। थेई इण सिरकार मैं हूता।—द दा.

रू भे—महणो, मेहणु, मेहणो, मैंणो।

मैतर—देखो महत्तर' (रू भे)

मैं'ता—देखो 'महता' (रू भे)

मैताब—देखो 'महताब' (रू भे)

मैताबी—देखो महताबी' (रू भे)

मैतारी—देखो 'महतारी' (रू, भे)

उ०—त्रलोकी मैतारी घरि तन पधारी मरुधरा।—मे म

मैत्रकार-स०पु०—एक वर्ग विशेष।

उ०—गीतकार वातकार ग्रन्थकार पाडकार तुद्धिकार भ्रारांमकार मास्त्रकार मैत्रकार सुद्धकार उद्दीसकार भ्रुतिकार रूपकार।—व स

मैत्री-स०स्त्री० [स०] १ दो या दो से भ्रधिक व्यक्तियो मे परस्पर होने वाला प्रेम भाव, मित्रता, दोस्ती।

२ मेल-जोल।

३ समानता,

४ भ्रनुराधा नक्षत्र।

मैयळी, मैयली—देखो 'मैथिळी' (रू भे) (भ्र मा, नां. मा)

उ०—१ जुड़ै आय सव्वासण्या रायजादी, दरस्सै कई सेवका माय दादी। हमल्लै घनो उदरी सेन हुदै, मनो मैथळी वदरी सेन वदै।
—मे म

उ०—२ भवानी नमों ब्रह्मानी ब्रह्मवांमा। भवांनी नमो मैथळी राम रामा।—मे म

मैथिल–वि०—मिथिला का, मिथिला सम्बन्धी।

स०पु०—१ मिथिला देश का निवासी। (२) ब्राह्मणों की एक जाति या वर्ग।

रू०भे०—मइथळ, मइथल।

मैथिळी, मैथिली–स०स्त्री० [स० मैथिली] मिथिला देश के राजा जनक की पुत्री, सीता, जो राम की पत्नी थी।

रू०भे०—मइथळी महथळी, महीथळि, महीथळी, मैथळी मैथली

मैथुन–स०पु० [स०] १ किसी स्त्री के साथ किसी पुरुष का होने वाला समागम, सभोग, रति-क्रीडा।

उ०—इम हिंसा झूठ चोरी मैथुन परिग्रह सेव्या सेवाया अव्रत सीची तो उण रै लेखै व्रत विण वधतो कहिणी।—भि द्र

२ काम-वासना की दृष्टि से, किसी स्त्री के साथ किया जाने वाला व्यवहार।

उ०—१ हाथ ता ४ प्रकारे, धूजै–एक तो कपणवाय सू। के क्रोध रै वस हाथ धूजै। अथवा चरचा मे हारचा हाथ धूजै। के मैथुन रै वसीभूत।—भि. द्र

रू०भे०—मईथुन, मेहुण,

मैथुनी–वि०—१ मैथुन करने वाला।

२ मैथुन का, मैथुन सम्बधी।

मैथुनीप्रजा–स०स्त्री० [स०] मैथुन द्वारा उत्पन्त होने वाली सन्तान।

रू०भे०—मइथुनीप्रजा, मयथुनीप्रजा।

मैदड़ो–स०पु०—पटेला। (मेवात)

मैदांन–स०पु० [फा०] १ वास्तु रचना से रहित, समतल एव विस्तृत भूखण्ड, क्षेत्र।

२ खेल-कूद के लिये तैयार किया हुआ समतल भू भाग।

३ रण क्षेत्र, युद्ध भूमि।

उ०—१ सूर मडै मैदांन मैं, वाय खळा सिर खाग। पडै भगाणा भोमिया, सूर सघणै लाग।—श्रीहरिरामदासजी महाराज

उ०—२ दूजै दिन प्रीथीराज चहुवांण नै नाहडराव मैदांन वुहार सडीया।—नैणसी

४ किसी पदार्थ का बिस्तार।

५ रस्तों की लम्बाई-चौडाई।

६ मल, टट्टी।

उ०—भाफरकै भाड लागो सू मांचै माहे-ही-ज मेदांना वैठो साखो फाड राखियो।—राजा भोज अर खापरा चोर री बात

७ जगल या मैदान में टट्टी जाने की क्रिया।

८ वह प्रान्त या प्रदेश जिसकी भूमि समतल हो अर्थात् उसमे पहाड आदि न हो।

९ स्त्रियो के ओढने के वस्त्र का मध्य का भाग।

रू० भे०—मेदांन, मेदांन, मैदान।

मैदांनी–वि. [फा०] १ मैदान सम्बन्धी, मैदान का।

२ मैदान वाला (क्षेत्र, इलाका)

मैदालकड़ी–स स्त्री —एक प्रकार की काष्ठ-ओषधि, जो सफेद एव मुलायम होती है, इसका चोट पर लेपन किया जाता है।

उ०—कायफळ, मैदा-लकडी अर अमल मया वाटनै कपडछांण करघा घी मे रळाय लेपन करघौ।—फुलवाडी

रू० भे०—मेदालकड़ी, मैंदालकडी।

मैदो–स पु [फा०मेद] १ अत्यन्त महीन पीसा हुआ आटा, जिसके हलवा, मिष्ठान्न आदि पकवान वनाये जाते हैं।

उ०—ताहरा खाफरै नीचे वासदेव जगायो, खांड-रा कापा माहे घात पाणी घातियो। दूध चरू-मे थो सू घात खाड निखारी, गळणी-मे घाती नीचे चरू राख दियो कुवो खोल घी कढावै में घातियो, ऊपरा मैदो घातियो, खुरपै-सू सैतळ हलावण लागो।
—राजा भोज अर खापरा चोर री वात

२ पक्वाशय, पेट, कोठा।

रू० भे०—मइदो मेदो।

मैघ—देखो 'मेघ' (रू भे)

मैघा—देखो 'मेधा' (रू भे)

मैन—देखो मदन' (रू भे)

मैनका—देखो 'मेनका' (रू भे) (अ. मा, ना. मा)

मैं'नत–स. स्त्री [अ०महनत] १ किमी कार्य को पूरा करने के लिये किया जाने वाला शारीरिक या मानसिक श्रम, परिश्रम।

२ प्रयास, कोशीश।

उ०—मालक, हु आपने बुलावण सारू पचहारी, मैं'नत करनें थाक गई-हुलसी, वरणसारू वरमाळ ले केई वार हुलस चूकी पण आप भगडो करता ढबो नही।—वी स टी.

रू० भे०—महनत, महन्नत, मिहनत, मेहणत, मेहनत, मैं'नत।

मैनताई—देखो 'महताई' (रू भे')

मैं'नती–वि १ मेहनत करने वाला, परिश्रमी।

२ जो आलसी न हो, प्रयत्नशील।

मैनफळ–स पु [स मदनफल]एक भाडदार-कटीला वृक्ष विशेष व उसका फल।

मैनमूरत–स. पु [सं० मदन मूर्ति] कामदेव का स्वरुप।

उ०—होय वदसूरत कहै है मैनमूरत सो, कहत पाप पूर ते डरै नही।—र रू

मैनसिल–स स्त्री [स मन शिला] पीली मिट्टी की तरह का एक धातु जो नेपाल के पहाडो में बहुतायत से पाया जाता है।

वि०—पीला, पीत।

रू० भे०—मणसिल, मैणसिल।

मैना–स स्त्री [स. मदना] १ पीली चोंच वाला काले रग का एक

प्रसिद्ध पक्षी, सारिका। (हि को)

रू० भे० मयणा, मयना, मेणा, मेना, मेणा।

२ देखो 'मेनका' (रू भे)

उ०—नूरेसी उरवसी, घ्रितेची मैना रभा। इद्रलोक अपछरा, इसी उणिहार अप्रभा।—गु रू व

३ देखो 'मेणा' (रू. भे.)

मैनाक—स पु [स] १ हिमालय के वीर्य से और मेना के गर्भ से उत्पन्न एक पौराणिक पर्वत।

२ हिमालय की एक चोटी।

रू० भे० —मयनक, मयनक, मेनक मेनाक।

मैनाळ—देखो 'मुहनाळ' (रू भे)

मैनावती—देखो 'मेणावती' (रू भे)

मैणावळी—स० स्त्री०—प्रत्येक चरण में चार तगण का एक वर्ण वृत्त जिसमे १२ वर्ण व २० मात्राए होती हैं।

मैनी—देखो 'म्यानी' (रू भे)

मैनेजर—स०पु० [अ०] किसी कार्यालय,कारखाने या सस्था का प्रवन्ध-अधिकारी, प्रवन्धक, व्यवस्थापक।

मैं'पाळ—देखो 'महीपाळ' (रू भे)

मैं'फल मैं'फिल—स०स्त्री० [अ० महफिल] १ किसी शुभ अवसर पर की जाने वाली गोष्ठी, उत्सव, जलसा, मजलिस।

उ०—१ दरवाजै थारै नौवत वाजै उडदी को वाजो न्यारो जी। मैं'फल में थारै राग रच्यो है सोभा भारी जी।—लो गी

उ०—२ चानणी तांण्योडी में विद्यायत विछ रैयी है। दमामण्यां मैं'फल मे दोडी वै', वाजा वजावणिया नावडघा नाकी ल्यै।

—दसदोख

२ विचार गोष्ठी, सभा, वैठक।

३ सम्मेलन, समारोह।

४ उपासना या साधना का स्थान। (इस्लाम)

५ ससार, जगत। (सूफी)

मैं'वूव—देखो 'महबूब' (रू भे)

मैमत—वि० [स० मदमत्त] १ मदोन्मत्त उन्मत्त, मस्त।

उ०—१ वासठि हजार फौजा रा भाजणहार। छत्रवद सुरमाण रा विधूसणहार, मैमत हाथिआ रा मारणहार।—वचनिका

उ०—२ सो छवि वाळ वखेळ, मह छळ मोहिस्र। परहां चद वदनी मैमत महानर मोहिम्र।—कल्यांणसिंह नगराजोत वाढेल री वात

स०पु०—१ हाथी, गज।

उ०—गुज पुठि नेजा फरस्त सही गिर सीस तरोवर ऊगि गही। मिळ द्वारस माय मैमत मदा, नित जाणि पहाड सळक्क नदा।

—रा वचनिका

२ मस्त हाथी, मदमस्त हाथी।

रू०भे०—मदमत, मदमत, मनमत, मयमन, मयमत, मयमत्त महमत, महमद, महिमद, मिमंत, मेमत, मेमती, मेमत्तिय, मेहमत, मैंमट, मैंमतक, मैंमत, मैंमद, मैंमट, मैंमत, मैमत्त, मैमद, मैंहमत।

अल्पा०—मयमतो, महमतो, महमतो, महमत्तो, मैमतो, मैमत्तो।

मैमद—१ देखो 'मुहम्मद' (रू भे)

उ०—सच्चा मैमद मुमतकी, अलाह दा प्यारा।—केसोदास गाडण

२ देखो 'मैमद' (रू भे)

३ देखो 'मैमत' (रू भे)

मम—स०स्त्री० [अ० मैडम] १ योरुपिन या अमेरिकन स्त्री।

उ०—रीझा देवण जुध करण, मेम सुणी जग मांय। 'ज्वार' 'डूग' दोनू जिसा, नर जनमै फिर नांय।—डूगजी जवार जी री छावली

२ ताश का वह पत्ता जिस पर स्त्री का चित्र होता है।

३ देखो 'महिमा' (रू भे)

मैमट—स०पु०—१ वादल मेघ।

उ०—गुफा ध्यान लवलीन गिरोवर। ताळी खुलि ऊठिया तपेसुर। जाणं निसा अमावस जळधर भाद्रव मैमट घटा भयकर।—सू प्र

२ देखो 'मैमत' (रू भे)

मैमत—देखो मैमत' (रू भे)

उ०—मन मैंगळ मैमत भयो, आकस सहै न कोय। जनहरीया कुढीकए सहै,जो ध्यान गरीवी होय।—श्री हरिरामदासजी महाराज

उ०—२ दोखियां तणी घणी घर दावे, फावै जुध जुध करै फतै। माह तूझ सक वहै 'गजन' सुत, मैमत चित वहै आप मतै।

—नाथो सांदू

मैमतो—देखो मैमत' (अल्पा, रू भे)

मैमत्त—देखो मैमत' (रू भे)

उ०—हुवै घत्त लोहित्त मैमत्त हाला, नसा रा किसा पार सूळा निराळा। मधू-मास आमोज में रास मडै, तिहू लोक री डोकरी तेथि तडै।—मे म

मैमत्तो—देखो 'मैमत' (रू भे)

उ०—विकराळ काळ वदन, दारण दुजीह गरळ मैमत्तो। विपरीत कुळह अग्री, इजगूर या हिंमरू गिळ ए।—गु रू व

मैमद—१ देखो 'मैमद' (रू भे)

२ देखो 'मैमत' (रू भे)

मैमदा—देखो 'म्रिगमदा' (रू भे)

मैं'मान—स०पु० [फा० मेहमान] १ अतिथि, मेहमान।

उ०—वडो आदमी आयां रयां दरवाजा मरमान रा। डोरै पी पांन पै'रावा, गावा गुण मैं'मांन रा —दसदेव

२ दामाद, जवाई। ३ सगा,सम्बन्धी।

रू०भे०—महमाण, महमांन, मेहमांण, मेहमान।

मैं'मांनदारी—स०स्त्री० [फा० मेहमानदारी] अतिथि सत्कार, स्वागत।

मैं'मांनी—स०स्त्री० [फा० मेहमानी] १ मेहमान वनने की अवस्था या भाव।

२ अतिथि सत्कार, स्वागत।

रू०भे०—महमानी, महिमांनी, मिह्मांनी, मेहमाणी, मेहमांनी, मैहमांनी।

मं'मा—देखो 'महिमा' (रू. भे)

उ०—अधिक वधावत आपतें, जन मं'मा रघुवीर। सिवरी पद रज परसता, सुध भी सलिता नीर।—भगतमाळ

मंमावांन—देखो महिमावांन' (रू भे)

मंयण—देखो 'मदन' (रू भे)

मंया—स०स्त्री० १ राठौडवंश की एक उपशाखा। (वां दा. ख्यात)

२ देखो 'माता' (रू भे)

मंयौ—देखो 'मयौ, (रू भे)

मं'र—स०पु०—१ हाथी, गज। (ना डिं को)

२ देखो 'महर' (रू भे)

उ०—१ वदण स्री गुरुदेव कूं, जिण काटे जजाळ। मूझ सुणाया मं'र कर, गुण थारा गोपाळ।—भगतमाळ

मं'रवांन—देखो 'मं'रवांन' (रू. भे)

मं'रवानी—देखो 'मं'रवानी' (रू भे)

मं'रवांन—वि० [अ० मेह्रवान] १ जो दया, कृपा, अनुग्रह करता हो, कृपालु, दयालु।

उ०—महर सुधार रु नीर री, दाटी सैर दुमार। मं'रवांन मुरधर महिप, हेर गया म्है हार।—ऊ का

२ दातार।

३ मित्र, दोस्त।

रू०भे०—महरबान, महरवान, महिरबांन, महिरवांन, मेहरबांन मं'रवांन, मैहरबांन, मैहरवांन,

मं'रवांनगी, मं'रवांनी—स०स्त्री० [फा० मेह्रवानी] १ कृपा, दया, अनुग्रह।

२ तरस।

उ०—थांनै कुंवरजी वणावणा चावै है। मं'रवानी करावौ। पेमजी री जाड चिपगी। दाती जुडगी। उथलौ नी आयौ।—दसदोख

३ करुणा।

४ ममता, प्रेम।

रू०भे०—महरबांनगी, महरबानी, महरवांनगी, महरवानी, मिहरवांनी, मेहरबांनी, मैहरवानगी, मेहरवांनी, मेहरवानगी, मं'रबांनी, मैहरबानी।

मं'राब—देखो 'मेहराब' (रू भे)

मं'राबदार—देखो 'मेहराबदार' (रू भे)

मंरियाळ, मंरी—स०पु०—रहट में जोते जाने वाले बैलों मे से अन्दर की ओर चलने वाला बैल। (मि० मेढी)

मंरूम—देखो 'महरूम' (रू भे)

मंरौ—सं० पु०—ऊंची और पथरीली भूमि, मगरा।

मंल—स० पु० [स० मलिन प्रा०—मइल] १ शरीर या वस्त्र आदि पर लगने वाला वह गंदा तत्व जिसके चिपकने से शरीर की स्वच्छता व वस्त्रादि की चमक धुंधली पड जाती है, कीट, मैल, गंदगी। (डिं. को)

उ०—१ मूजी सूं मूजी री कांम ले लेणौ सोनजी रै नख सूं मैल काढणौ हो।—दसदोख

उ०—२ नख वधियोडा निपट, सीत बधियोडौ साथै। दुख वधियोडौ डैल, मैल वधियोडौ माथै।—ऊ का

उ०—३ ऊट री खाल रौ जामौ। ठौड ठौड फाटोडौ। गधा री खाल रा फाटोडा लित्तरा। डील माथै मैल री पडपडिया जमियोडी। अमर वकरा री गळाई उण री डील मूडै ढाळै वासतौ। —फुलवाडी

२ विकार, दोष दूषण।

उ०—नाव परताप डर डाकणी ना लगै। नाव परताप मन मैल धोया।—स्रीहरिरांमदासजी महाराज

रू० भे०—मलि, मळी, मेल।

मं'ल—१ देखो 'महल' (रू भे)

उ०—१ मोटा-मोटा मं'ल दिखाळ्या अर भोळा ने भळै चकमौ दीनौ। ठगी माथै कमर बाधी, सोखीनाई नै धोखा धडी सूं सांधी।—दसदोख

उ०—२ राजा नै सराप देयनै अवै सायद पाछी वळी। गांव सामी सोय करनै खोडावती, ढचूं ढचूं करती जावती, जावतां जावता मारग में राजा रौ मं'ल आयौ।—फुलवाडी

२ देखो 'महिळा' (रू. भे)

उ०—तद माळवणी वोली मैं यूं सामळियौ छौ, क्यूं हेक कवरजी नूं अह मौळा था तद राजाजी नूं पंडिता कह्यौ—हीज एक नीच रै घरे परणावौ जिम भार टळै तद एकण नीच रै घरे परणाया छा, सु ऊ मं'ल होय तौ जाणा।—ढो मा

मंलखोरौ—वि०—जिस पर जमा हुआ मैल दिखाई न देता हो, मैल को आत्मसात करने वाला। (रग)

स० पु०— एक वस्त्र को मैल से बचाने के लिए उसके नीचे धारण किया जाने वाला दूसरा वस्त्र। ज्यूं शरीर पर कुरते के नीचे वनियान, साफे के नीचे टोपी, पजामा या धोती के नीचे कच्छा इत्यादि।

मंलझलौ—स पु—१ घोडे की पीठ पर डाला जाने वाला एक प्रकार का वस्त्र।

उ०—साहणी विरदाय सवार सलौ। जिण पीठ प्रसीनेय मैलझलौ। पा. प्र

२ देखो 'मैलखोरो'।

मंलणौ, मैलबौ—देखो 'मेलणौ, मेलबौ' (रू भे)

उ०—१ दुरधर वेळा कठण दुहेळी, उर धर म्है अकुळावां। मुरधर धणी मसाण मैलनै, पुरधर जाण न पावां।—ऊ का

उ०—२ म्हारै एक विस्वास री डावडी है। उणनै मरदानो भेस कराय नै कवरां रै सागै मैलदा। साथै कटोरदांन में विस रै

लादुवां री समाळ घालदा ।—फुलवाडी

उ०—३ अेकला बैठा ई धडमड धडमड करण लागा । भा कोई थांनणी है के वनराक है । घर नैं हेमाळैं मैल देवेला ।—फुलवाडी

उ०—४ तारै रावळजी बोलीया-म्हे तो नाळेर पाछो मैल देसां ।
—वीरमदे सोनगरा री वात

मैलणहार, हारो (हारी), मैलणियो—वि० ।

मैलिग्रोडो, मैलियोडो, मैल्योडो—भू० का० कृ० ।

मैलीजणो, मैलीजवो—कर्म वा० ।

मैलमाळिया—स० पु० [व. व] दीपावली पर बनने वाले शक्कर के खिलौने, जो महल की बनावट के होते हैं ।

मैलरखो—देखो 'मैलमलो' ।

उ०—पूरी सज मांडियां विना चढण री खोड़ ही । लारैं दुमची । मोरा मैलरखो । पछैं पडची । ढळी माथैं खोगीर अर पछैं काठी ।
—फुलवाडी

मैलांण—देखो 'मेलाण' (रू. भे)

उ०—रूपां मालाळी हुई नैं वळै कोड कियो । आगैं नाहर उवेडो हुवो । जरैं मन विवणो हुवो । सारा सिरदारा सावण वाद आघा चलाया । तिको कोम दम रैं माथैं मैलांण कीयो ।
—जैतसी ऊदावत री वात

मैलाकरम—स० पु० यो०—१ वह जो समाजिक व मानवता की दृष्टि से उचित न हो, अनुचित कार्य, कुकृत्य, कुकर्म ।

२ वाम मार्गियों के कार्य ।

३ दुर्भाग्य ।

मैलाणो, मैलावो—देखो 'मेलाणो, मेलावो' (रू भे)

उ०—हुमे कांई करू ? सीधो झान्नू का पाछो लोटावू ? चट, चेळकैं हुयगी । सुरत बुद्धि तुरकहाळी कैवत सारू समळगी । हाजरियैं अर गिलपिली सू सीधाळा थाळ सांमली साळ मे मैला लिया ।
—दसदोख

मैलाणहार, हारो (हारी), मैलाणियो वि० ।

मैलायोडो—भू० का० कृ० ।

मैलाईजणो, मैलाईजवो —कर्म वा० ।

मैलात, मैलायत—देखो 'महलायत' (रू भे)

उ०—१८३२ री साल मयलोवाग नैं झालरो करायो नैं वाग रो कमठो मैलायत चवळ-चोकी वगलो आददे सारा पामवांनजी रैं हाथ हुवो, तिण रा रू० ५०००००) पाच लाख अंदाज लागा ।
—मारवाट री ख्यात

मैलापण, मैलापणो—सं० पु०—मलिनता, गदगी, विकार ।

मैलामतर—सं० पु०—तांत्रिक क्रिया ।

मैलायोडो—देखो 'मेलायोडो' (रू. भे)

(स्त्री० मैलायोडी)

मैलियोड़ो—देखो 'मेलियोड़ो' (रू भे)

(स्त्री० मैलियोडी)

मैळू—स० पु०—गाडी के चक्र की नाभि के चारो ओर लगाया जाने वाला गोलाकार लोहे का टुकडा ।

मैलो—वि० [स० मलिन,प्रा०—मईल] १ (स्त्री० मैली)जिस पर मैल या गदगी लगी हो, अस्वच्छ, गदा, मलिन ।

उ०—१ आपरो वेटो दो टावरां रो बाप होय गाव री मैली उखरडी माथैं लुटैं तो थांरा घर रो कुरब नी घटैं ।—फुलवाडी

उ०—२ हळदी झट धीमाई सू बोली-ले भाई, थू कद कद कैसी, कादो माफ करतां म्हारा किसा हाथ मैला व्हे ।—फुलवाडी

२ वदवूदार, गदा ।

३ विकारयुक्त, दूषित ।

उ०—१ मैलो अत अदतार मन, रुच जस तणी रहै न । तन काळी विसहर तणो, कचुक सेत सहै न ।—वा दा

उ०—२ काटळ आवध मूझ कर, मन मदाइण वन्न । आवध राखै ऊजळा, मैला ज्यारा मन्न ।—वा दा

उ०—३ मन मैला चख माजरा, भालैं जे चख भांज । गोला अवगुण नू ग्रहे, गुण भलपण रा गाज ।—वा दा.

४ पतित, हीन, नीच, ।

उ०—१ मैला मिनख वचन रैं माथैं, बात वणाय करैं विस्तार । वैठ सभा विच मढा वारैं, वचन काढणो, बहुत विचार ।—बां दा

उ०—२ ऊपर सू जिता ऊजळा रैं'वैं, दुनिया माय नैं बिता ही मैला माढा कैवैं ।—दसदोख

स०पु०—१ मल, विष्ठा ।

उ०—१ मैले ऊपरैं मांखियां, गणणाटा लै गैल । हैकड कठीनैं हालिया, ढबी खलींगण ढैल ।—ऊ का

उ०—२ पण कुण परवा करैं । हाल नखां रो मैलो ई को धुपियो नीं । आं कांळिदर रा विचियां नैं किस्ता दौरा पाळ पोस नैं मोटा करिया, वानैं इण वात रो कांई चेतो ।—फुलवाड़ी

२ कूडा, कचरा ।

३ रैंवारी जाति के ढाढियों का वह व्यक्ति,जो मोल,मरगरा बाभी आदि निषिद्ध जातियो के यहा भोजन कर चुका हो ।

रू० भे०—मइलो, मयलू, मलि, मेलो, मैलण ।

मैलोमायो—स० पु०—स्त्रियों की ऋतुमति(रजस्वला)होने की अवस्था, दशा ।

उ०—सु वा वैर मैलोमायो हुती तिणरी छाया पडी ।—नैणसी

मैल्हणो, मैल्हवो—देखो 'मेलणो, मेलवो' (रू. भे)

उ०—सूरो आयैं साकडै,मना न मैल्है मांण । हरिया मरणो आदरै, पेग न छाडै प्रांण ।—स्रीहरिरांमदासजी महाराज

मैल्हांण—देखो 'मेलाण' (रू. भे)

मैल्हियोडो—देखो 'मेलियोडो' (रू भे)

(स्त्री० मैल्हियोडी)

मैंवट, मैंवट्ट-वि० - महान, बड़ा । (ल पि)

उ०—१ अग अग प्रबल फट मिळ घाए मैंवट, घार धजव्वट घोम घिखै । आहुडिया अविभ्रट बच्चै रिणवट, वळिवत वाथट वल्ळ बखै —गु रू व

उ०—२ है पलाण न ऊतरै, रहै दळ चाकै चढिया । मिळै कोट मैंवट्ट, घण घट घाए घढिया ।—गु रू. व

उ०—३ गढ़ लियण कोट मैंवट्ट मे, कमधज दिखण मथण कळी । महि तँहिज मार मनावि इम, खेडेचा राउ खगबळी ।—गु रू व

रू० भे०—मेवट, मैंवट्ट, मैंमट्ट ।

मैंवास—देखो मेवास' (रू भे)

उ०—१ गिरकदर पाहाड, गाहि पाए केकाण । किया मट्ठ मैंवास प्रज्ज पाळी मेल्हांण ।—गु रू व

उ०—२ है पाई गिरि गाहिजै मारीजै मैंवास । निस वासर नागाद्रहा, हियै न पूजै सास ।—गु रू व

मैंवासी—देखो मेवासी' (रू भे)

मैंवासौ—देखो 'मेवासौ' (रू भे)

उ० —नर है मोरठ तणा नर नवै, रूका मुह मैंवासा राय। आया पाय तिके ऊबरिया, प्रळै किया सेनाया पाय ।—द दा

मैं'सूल—देखो 'महसूल' (रू भे)

मैं'सूस—देखो 'महसूस' (रू भे)

मैंहण—देखो 'महारणव' (रू भे)

उ०—मैंहण तजै मरजाद, अरक पिछम दिस ऊगमै । साभळ सावळ साद, पावू नट वैसे परो ।—पा प्र

मैंहणी—देखो 'मे'णी' (रू भे)

उ०—मा चांपाउत मेलिया, सांम्हा निज मह सेर । 'उरजण' रा मत जांणजो, मैंहणी जैसलमेर ।—वी स टी

मैंहणौ—देखो 'मैंणौ, मैं'णौ' (रू भे)

मैंहमत, मैंहमत—देखो 'मैंमत' (रू भे)

मैंहमद—देखो 'मैंमद' (रू भे)

उ०—मायै रौ रम मैंहमद लीयौ तौ मैंहमद रो रस राजिद लियौ कहि रे गुमान करू रसिया ।—लो गी

मैंहमानी—देखो 'मैं'मांनी' (रू भे)

उ०—उठाथी सलूबर आयौ, तरै सीसोदियां रै रावत खगार रतनसीयोत मैंहमांनी करी ।—नैणसी

मैंहर—देखो 'महर' (रू भे)

उ०—तिण रै पगै लागा । कह्यौ—म्हांनू गरीब नाथ स्राप दियौ, राज गयौ हमै राज री मैंहर हुवै तौ म्हे अठै टिका —नैणसी

मैंहरबान—देखो 'मैं'रवान' (रू भे)

मैंहरबांनी—देखो 'मैं'रवानी' (रू भे)

मैंहरवांन—देखो 'मैं'रवान' (रू भे)

उ०—१ भर राजा पण'मैंहरवान हुवौ ।

—गाम रा धणी री वात

उ०—२ तद पातसाहजी वौहत मैंहरवांन हुवा । अनूपसिंघजी नू महाराज रो खिताव वगसियौ ।—द. दा

मैंहरवानी—देखो 'मैं'रवानी' (रू भे)

उ०—लालजी नै कैयौ–पिताजी थे मेरै माथै मोटी मैंहरवांनी कर'र दायजो दिखाळण हाली जिदनै छोडदयौ ।— दसदोख

मैंहरांण—देखो 'महारणव' (रू भे) (ह ना. मा.)

उ०—दान के प्रमाण ट्रहु राजा नू के पांण । मेघ के मडाण कहा सातू मैंहरांण ।—रा रू

मैंहरात—एक जाति ।

उ०—जैतारण था कोस पूरब माहै । मैंहरात वसै । धरती हळवा १० खेत कवळा । ऊनाळी कोसेवटा हुवै ।—नैणसी

मैंहरू—देखो 'महर' (रू भे.)

मैंहल—१ देखो 'महल' (रू भे)

उ०—अठै हरख वधाई हुई । पावूजी सोढी जाय मैंहल मांहै पोढिया छै ।—नैणसी

२ देखो 'महिळा' (रू भे)

मैंहलांण—देखो 'मेलाण' (रू भे)

मैंहलाईत, मैंहलायत—देखो 'महलायत' (रू भे)

उ०—अबै गांम रा धणी री असतरी सोळै-सिणगार सजैनै कोटडी मांहै मैंहलाईत है जणी मांहै आय वैठी है ।

—राजा रा गुर रा वेटा री वात

मैंहेली—एक भोज्य-पदार्थ ।

उ०—कुमाच मैंहेली महरि ए मडोवर के मूग सुखदा सराय । भोग लजहा के भात जाय के फूला की सोभा दरसात ।—सू प्र.

मों—देखो 'मो' (रू भे)

मोंडौ—देखो 'मोडो' (रू भे)

मोंच—देखो मोच' (रू भे)

मोंचकरोत-स पु —लकड़ी को लम्बाव की ओर से चीरने का एक प्रकार का बड़ा करोत ।

मोंची-स० स्त्री०—१ कूएे से पानी निकालने के काम आने वाला, लकडी का एक उपकरण, जिसके चडस बाधा जाता है ।

२ काष्ठ का एक उपकरण जिससे मिट्टी डाली जाती है ।

३ देखो मोची' (रू भे)

मोंडकौ-स० पु०—कूएे के अदर की ओर, ईंट या पत्थरो का बना हुआ वह भाग जिस पर वह गोल लठ्ठा (लाट) रखा जाता है जिसके सहारे पानी के पात्रो को ऊपर लाने वाला घेरा (डाबडो) घूमता है ।

मोंण—१ देखो 'मैंण' (रू भे) २ देखो 'मोण' (रू भे)

मोंसर—देखो 'मोसर' (रू भे)

मोंसी—देखो 'मासी' (रू. भे)

मोंसीहाई—देखो 'मासियाई' (रू भे)

मोंहडौ—देखो 'मू'डो' (रू भे)

उ०—१ कुंवरसी ऊठ भीतर मा कन्है गइयौ। मा छाती सूं लगाय मिळी, मोंहडे ऊपर हाथ फेर राई लूण वारिया।
—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ हुकुम कियौ इस ही जायगा मोंहडा आगे इलाज करो।
—दूलची जोइये री वारता

मो-सर्व०[स० मम] १ मुझ, मैं।

उ०—१ करू न दरस अंतर इण काया। मो तौ चरण सेव गढ माया।—सू प्र.

उ०—२ तिण परि श्रीकम जे परमेस्वर का जस को पार न पायौ तौ मो मीडका को किसौ वस छै।—वेलि टी

उ०—३ हरीया मारग अगम की, मो मेती गम नांहि। कहि कैसी विध पाईये, चित गयौ ता माहि।—स्त्री हरिरामदासजी महाराज

उ०—४ कथ पावू कैहवा कनियांणी। करौ हुकम मो पर रानियाणी।—पा प्र

२ मुझे, मुझको।

उ०—१ त्रिभुवण माहि न तोमू तोलै। सरण राख मो ईसर बोलै। श्रौ समार अमार अनामी, साहिब सरणै राखो सामी।
—ह र

उ०—२ तू मत मागै मायवा, तो मागा मो खोड। माईनी हांसी करै, दे ताळी मुख मोड।—अज्ञात

३ मुझपर, मुझमें।

उ०—छत्रपत 'गजवध' गांजणौ छत्रपत, विया 'मालदे' चमर-वशाळ। मो चीत्रिया न जावै मारू, तू तेवडा करै रणताळ।
—गु रू व

४ मेरा, मेरी, मेरे।

उ०—१ मो तेरा वदै हिंदू तुरक, जेती उगै आयमैं। 'गजसाह' कहै पतिसाह दळ, मो उभै कुण आंगमैं।—गु, रू वं

उ०—२ म्हारां मननी आसा पूरो, राजि म्हारा कठिन करम दल चुरउ। थारा गुण सु मो मन लागो, राजि हियइ रासू रे वांभण जिम तागउ।—वि. कु

उ०—३ हरि जस रस माहस करे हालिया। मो पडिता वीनती मोग। अम्हीणा तम्हीणै आया,सवण तीरथे वयण सदोख।
—वेलि

उ०—४ यलवट अलग थईह, कुळवट अद भूली किनो। करनी कठै गईह, मो विरिया मेहामद।—हिंगळाजदान कवियो

उ०—५ आलगी साथ मांनै न श्रौ माक करी मम माल री। कुण सुणै माल मोटी कथा, हाय व्यथा मो हाल री।—ऊ का

उ०—६ चंनांणी दीलो घई, मो कथ तणी सनाह। विरूमै पोइण पूत जिम परदळ दीठां नाह।—हा भा

रू०भे०—मो, मोह, मौ।

मों'—देखो 'मोह' (रू भे)

उ०—मानुषा जनम पाय कहा कीया, स्वरूप आपणा नहीं जाणा। मन सूता मो' माया माही, इनकू वेग जगाय लैणा।
—स्री सुखरामजी महाराज

मोइ—१ देखो 'मो' (रू भे)

उ०—कै तो जोगी जग में नांहीं कै'र बिसारी मोइ। कांईं कित जाऊरी सजनी, नैण गुमाया रोइ।—मीरा

२ देखो 'मोई' (रू भे)

मोइल-स० पु०—देखो 'मोयल' (रू भे)

मोई-स० स्त्री०—१ प्राय सारे राजस्थान मे होने वाली एक झाडी विशेष।

२ बच्चो को खिलाने के लिये, मूग के आटे को सेंक कर बनाया हुआ पोष्टिक खाद्य पदार्थ।

३ मसाले मिलाई हुई सूखी भांग।

४ देखो 'मो' (रू भे)

उ०—१ प्रीत किया सुख नहिं मोरी सजनी जोगी मींत न कोई। रात दिवस कळ नाहिं परत है, तुम मिळिया विन मोई।—मीरां

मों'इडको-स० पु०—बच्चो का एक खेल।

मोउ, मोऊ—देखो 'मऊ' (रू भे)

उ०—जाडा घन वाळा सिंघू तट जुडिया, गाडा तन पाळा गुज्जर घर गुडिया। घर घर छपनें पें घर घर री घाली, मोऊ मुरधर री सनमुख सूखमाल्ही।—ऊ का

मोकडी—देखो 'माकडो' (अल्पा, रू भे)

मोकणौ, मोकबौ—देखो 'मूकणौ,मूकबौ' (रू भे.)

उ०—येदू छोड बवा थोक, मह अघ दीध हांसल मोक। सात ईतरो नह सोक, लगर सुखी सगळा लोक।—र रू

मोकणहार, हारौ (हारी), मोकणियौ—वि०।

मोकिग्रोडौ, मोकियोडौ, मोक्योडौ—भू० का० कृ०।

मोकीजणौ, मोकीजबौ—कर्म वा०।

मोकदमौ—देखो 'मुकदमौ' (रू भे)

मोकळ-स०स्त्री०—१ इजाजत, आज्ञा

२ छुट्टी, अवकाश।

स० पु०—३ विशेष प्रकार से तैयार किया हुआ खरगोस का मास, जो बहुत ही स्वादिष्ट होता है।

४ देखो 'मुकळायत' (रू भे)

उ०—जाता गैले जिम जुळ जुळ हसि जोता। रोटी मागण सूं पैलांवम रोता। छिन छिन भाती विच छडती नित छाती। मोकळ चाकळ में कोकळ नह माती।—ऊ का

५ देखो 'मोकळी' (मह, रू. भे)

उ०—१ चढती कटळि बीज चमक्कै, झड माचतै सुकवि झणक्कै। ऊनड़ हरा इद्र ऊवक्कै,गुणियण मोकळ सिहड गहक्कै।
—आसौ बारहट

उ०—२ ऐरापति जसतिलक अठी दळ, मतवाळो छावो मद मोकळ। दळ सिंगार गज घट वहादर, मद मेदनी विकट गज-

भम्मर।—रा रू

मोकळउ, मोकलउ—देखो 'मोकळौ' (रू भे) (उ. र)

उ०—सभलि, पुत्र! तू सीखडी, ए सी ताहरी पइरि, मन नवि कीजइ मोकलउ,चारित्र विधि रे सूघी तू करि कि।

—नळदवदतीरास

मोकळणौ, मोकळबौ, मोकलणौ, मोकलबौ–क्रि० स० [स० मोक्षणम्]

१ जाने के लिए प्रेरित करना, भेजना, पठाना।

उ०—१ ग्रहि पान एम कहियौ अगज, झट खग वौह वाहू झलू। मोकळू पकहि मदकर मिलक, मुदफर रो सिर मोकळू।—सू प्र

उ०—२ तुम्हारो आगमन वयां हुवो। कह कहतां कहि। किल कहता निश्चय। कस्मात् कहता कुण थळ थे आयो। किमरथ कहतां कुण कारध कंन कहतां कुणं मोकल्यो।—वेलि टी

उ०—३ राणा साळ्या मोकल्या जी, पाछा ल्यावौ मोड। कुळ की माडण इस्तरी जी, मुरड चली राठोड।—मीरा

उ०—४ जे जे मालिक राइ भालीया, ते कुअरी, नइ पाछा आलीया। आगेवाण दाखवइ वाट, साथि मोकल्यउ बीजउ भाट —का दे प्र

२ मुक्त करना, आजाद करना।

उ०—बाइ मोकळि न मू मदि मातउ, कूड कीचक पर स्त्री रातु। भूविसि किमइ मूरख मू रहइ, उरतउ हुसि स्वांमिनि तू रहइ।

—सालिसूरि

३ छोडना, त्यागना।

उ०—कूड़ कपट कलि विकलां केलवी, कीजइ छं केइ कांम। अखावाद पगोपग मोकलौ, सी गति थासी स्वांम।—ध व. ग्र

४ देना।

उ०—हरख मिळे आदर करै, पोखै थाळ मगाय। मीठो उत्तर मोकळै, मीठो सूव कहाय।—वां दा

५ फैलना, बिखरना।

उ०—मारू ऊभी गोख तळ, सर मोकलांणा केस। जांणक राजा छत्रपति, मारण चढियो देस।—ढो मा

मोकळणहार, हारौ (हारी), मोकळणियौ—वि०।

मोकळिओड़ौ, मोकळियोडौ, मोकळ्योडौ—भू० का० कृ०।

मोकळीजणौ मोकळीजबौ—कर्म वा०।

मोकळणौ मोकळबौ—रू० भे०।

मोकळमुख,मोकळमुह,मोकळमूडो,मोकळमूवौ-वि०-वाचाल,मुहफट लबार।

उ०—कळदार कळस अर चादी सोना री छतर चढावै है मोकळमूवां मू ' आया बोलै अर अवढा चालै है।—दसदोख

मोकळांण—देखो 'मुकळायत।

मोकळाणौ, मोकळावौ–क्रि० स० ['मोकळणौ' क्रि० का० प्रे० रू०]

१ जाने के लिये प्रेरित करवाना, भिजवाना, पठवाना।

२ मुक्त कराना, आजाद कराना।

३ छुड़वाना, त्याग कराना।

४ दिलाना।

५ फैलाना, बखेरना।

६ तानना, फैलाना।

उ०—अर बीजो सकळात ऊपरा मोकळी फरि अर ऊभो रहियो।

—द. वि.

मोकळाणहार, हारौ (हारी), मोकळाणियौ—वि०।

मोकळायोडौ—भू० का० कृ०।

मोकळाईजणौ, मोकळाईजबौ—कर्म वा०।

मोकळावणौ, मोकळाववो, मोकलावणौ, मोकलावबौ—रू० भे०।

मोकळायत—देखो 'मुकळायत' (रू भे)

मोकळायोडौ–भू० का० कृ०—१ जाने के लिये प्रेरित करवाया हुआ, भिजवाया हुआ, पठवाया हुआ २ मुक्त व आजाद कराया हुआ. ३ छुडवाया हुआ, त्याग कराया हुआ ४ दिलवाया हुआ ५ फैलाया हुआ, बखेरा हुआ ६ ताना हुआ।

(स्त्री० मोकळायोडी)

मोकळावणौ, मोकळावबौ. मोकलावणौ मोकलावबौ—देखो 'मोकळाणौ, मोकळावौ' (रू भे) (उ र)

उ०—१ खाडइ हाथ घालइ, तेहै सूरे सुभटे सग्रामि साचरते सहोदर पुत्र मित्र कलत्र मोकलावी, सप्तांग लक्ष्मी तणा भोग छांड्या।—व स

उ०—२ मोकळावी छइ भोज कुवार। दीधी दासी सहस दुई चारि।—वी दे

उ०—३ पिता प्रणाम करू किस्यू-मोकळावउ किहा मात। करसिइ ते कलपांत कलि, स्रवणि सुणाता वात।—मा का प्र

मोकळावणहार, हारौ (हारी), मोकळावणियौ—वि०।

मोकळाविओड़ौ, मोकळावियोड़ौ, मोकळाव्योडौ—भू० का० कृ०।

मोकळावीजणौ, मोकळावीजबौ—कर्म वा०।

मोकळावियोडौ—देखो 'मोकळायोडौ' (रू भे)

(स्त्री० मोकळावियोड़ी)

मोकळियोडौ–भू० का० कृ०—१ जाने के लिये प्रेरित किया हुआ, भेजा हुआ, पठाया हुआ २ मुक्त व आजाद किया हुआ ३ छोडा हुआ, त्यागा हुआ ४ दिया हुआ ५ फैला हुआ, बिखरा हुआ।

(स्त्री० मोकळियोडी)

मोकळू, मोकळौ, मोकलौ–वि० [स्त्री० मोकळी] १ बहुत, अधिक, ज्यादा, खूब।

उ०—१ मोटा-मोटा मै'ल दिखाळै तथा कूड़ कपट करता थका दोनां कांनी सू मोकळा ही रिपिया अंठै, ठगै अर ठोक लेवै।

—दसदोख

उ०—२ मुलक मे मोकळा ही फिरिया, लडिया तिण सू एक वार तो ईब जोधपुर हालो।—मारवाड रा अमरावा री वारता

उ०—३ आप वसइ तिहां थी छ दिसइ, करइ कोस जाऊ निज मन मान्या राखइ मोकला, ए छट्ठा व्रत नी अरगला।—स क

उ०—४ पछै कोई ग्राडी-ग्रवळी के लागी-बाकी वात नीं करी। करी जकी ई मोकळी। पण वेटा रै हीयै विछोव रै दाफ मिटावणी थारै मारै री वात नीं ही।—फुलवाडी

उ०—५ माया मोगी मोकळी, वूदी कमी न जाय। जन हरिया सो वूदिसी, भगति मरोसी थाय।—स्रीहरिरामदास जी महाराज

२ जो गणना, सख्या या मात्रा की दृष्टि से अधिक हो, वहुत हो। घई, अनेक।

उ०—१ राणीजी मोकळी वार सगळा नैं मावळ घर मे समझायो-वुझायो, तो ई थांरो मूत नीं उतरियो।—फुलवाडी

उ०—२ या ही छै, ग्रोठी, राजाजी री सींव, तालर थोडा, ग्रो ग्रोठी, सरवर मोकळा।—लो गी

३ पर्याप्त, प्रचुर, काफी।

उ०—१ राणी नैं चुगाई, हीरणी रा जतन करनै ग्राछी जगा रागी। खांन-पाण री जतनै मोकळी कीयो हीवै दिन ग्रस्त हुवो। —रीमालू री वात

उ०—२ रात रा ग्रापरो नांणो मांज, ग्राटो, घी सकर ग्राण चूरमो कर खायै ग्रर वाकी रो परभात रै पगां ऊचो मेलह राखै। तवाखू मोकळी हावी भरी रहै। चाकर घोडा नू पाणी पाय, न्हवाय ग्राय वैठा-वैठा तवाखूडा पीवै, गल्हां करवो करै, ग्रमल-तवाखू खाणे नूं मोकळो ग्राण देवै सो महिना ग्रढाई उठै इण तरै रहियो।—सूरे खींवे कांघलोत री वात

उ०—३ यू तो म्हारी इच्छा व्हे तो एक छदाम ई मोकळी ग्रर यूं म्हैं नीं मांनू तो दुनिया री ग्राखो धन ई माव थोडो।—फुलवाडी

४ चौडा, विस्तृत, फैला हुग्रा।

उ०—१ तठा उपरायत हिरण खुलै छै सू जांणै धोवी रै घर कपडा मोकळा किया छै।—रा सा स

उ०—२ तठा उपरांयत चरणा रा गिरदांना मोकळा कर जाजमां गिलमा ऊपर वैसजै छै।—रा सा स

५ तीव्र, तेज।

६ प्रभाव खाली, प्रभाव पूर्ण।

रू०भे०—मोकळउ, मोकलउ, मोकळो,

मह०—मोकळ, मोकल।

मोकल्यो—वि०—मुक्त, स्वतन्त्र, ग्राजाद।

उ०—जन हरीया मन मोकल्यो, तीन लोक फिर ग्राय। जे कोई पग्रड सूरवो, गत का बांण सभाय।—स्री हरीरांमदासजी महाराज

मोक्स—देखो 'मोक्ष' (रू भे)

मोखी—देखो 'मोखी' (रू भे)

मोकूफ—देखो 'मौकूफ' (रू. भे)

उ०—चित्र सेवा री हमार है जठै जनांनी ढोढी कराई, नै पछै उवा ढोढी मांराज वखतसिंघजी मोकूफ कर बाटो रा महलां कनै कराई। —मारवाड री ख्यात

मोकूफ—देखो 'मौकूफ' (रू भे) (मा म)

मोकैयारदात—देखो 'मोकेयारदात' (रू. भे)

मोको—स०पु०—१ देखो 'मोखो' (रू. भे)

२ देखो 'मौको' (रू भे)

उ०—१ खळ तिण री खोटी करै, पापी ग्रनजळ पाय। मोको लागा मोढिया, चेली सू चिप जाय।—ऊ का

उ०—२ वोदा वतळावै खोदा खावै, सौदा पण सूजदा है। जद मोको जोवै सेजा सोवै, ग्ररध निसा उचकदा है।—ऊ का.

मोक्ख—देखो 'मोक्ष' (रू भे) (जैन)

मोक्खमग्ग—देखो 'मोक्षमारग' (रू. भे) (जैन)

मोक्कमणि—स०पु०—एक रत्न विशेष।

मोक्ष, मोक्स—स०स्त्री० [स० मोक्ष] १ किसी प्रकार के बधन से मुक्ति, छुटकारा, ग्राजादी, स्वतन्त्रता।

उ०—वध नइ मोक्ष ना वेउ कारण ग्रछई। दुक्रत नइ सुक्रत जो ग्रउ विचारी।—वि कु

२ ग्राध्यात्मिक क्षेत्र में किसी जीव का, जन्म-मरण के ग्रावागमन से छुटकारा, मुक्ति, निर्वाण, कल्याण।

उ०—१ वक तेज कारण वर्णां, निहचळ तप निरदोस। ग्यान मोक्ष कारण गिणां, सुख कारण सतोस।—बां दा

उ०—२ कढे हूस 'वाळेस' नू मोक्ष कीघो। दई राजके कघ सुग्रीव दीघो।—सू प्र

उ०—३ जुग-जुग भीर हरी भक्तन की, दीनी मोक्ष समाज। मीरा सरण गही चरनन की, पैज रखो महाराज।—मीरा

उ०—४ जोर सू वोल्यो-जेडी थारी इंछा मां! म्है थारै लारै जिग करूला। देस रा सगळा बांमणा नैं जीमाऊला। थारो मोक्स व्हे मा। वेटा रो हडोत कवूल कर मा, ग्रो छैलो हडोत है। —फुलवाडी

३ स्वर्ग वैकुण्ठ।

उ०—१ जद स्वामीजी कह्यो मोक्ष देवलोक रो जाणहार तो तू ठहरयो। थारे लेखे नरक जावण हार थारा गुरु ठहरया। —भि. द्र

उ०—२ जद स्वामीजी कह्यो म्हैं तो यू न कहां-मूहडो दीठा स्वरग नरक जाय पिण थारी कहिणी रै लेखै थांरो मूहडो तो म्हैं दीठो सो मोक्ष ने देवलोक तो म्है जास्यां। ग्रनै म्हांरो मूहडो थैं दीठो सो थांरी कहिणी रै लेखै थारे पानैं नरक ईज पडी। —भि द्र.

४ मृत्यु मौत।

५ शास्त्रानुसार, कल्याण के चार पदार्थों (ग्रर्थ, धर्म, काम व मोक्ष) मे से एक। (नां मा)

६ उऋण होने की क्रिया या भाव।

७ बचाव।

८ छूट, ढील।

९ वहाव। पात।

१० ग्रहण (सूर्य व चन्द्रमा) के छूटने की क्रिया।

रू०भे०—मोकस, मोक्ख, मोख, मोखि, मौख।

अल्पा०—मोखौ।

मोक्षक-वि० [स०] १ मोक्ष देने वाला, मोक्षदाता।

२ छोड़ने वाला, छुटकारा दिलाने वाला।

मोक्षण-स०पु० [स०] १ मोक्ष देने की क्रिया या भाव।

२ मुक्त होने की क्रिया या भाव।

रू०भे०—मोखण।

मोक्षद-वि० [स०] १ मोक्षदाता, मुक्तिदाता।

२ छोड़ने वाला, मुक्त करने वाला।

रू०भे०—मोखत्त, मोखद,

मोक्षदा-स० पु० [स०] सिक्ख धर्म के अनुसार पाच तत्व, कड़ा, कघा, कच्छी, कटार व केश, का समूह। (मा म)

रू०भे०—मोखदा।

मोक्षदाएकादसी-स०स्त्री० [स० मोक्ष+दा+एकादशी] मार्गशीर्ष मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी की तिथि।

मोक्षदाता-वि०—मोक्ष या मुक्ति देने वाला।

उ०—देवी मथुरा माईया मोक्षदाता, देवी अवती अजोध्या अघ्घ हाता।—देवि

मोक्षपद-स०पु० [स० मोक्ष+पद] जीव का वैकुण्ठ या स्वर्ग मे निवास पाने की अवस्था।

रू०भे०—मोखपद।

मोक्षपति-स०पु० [स०] सगीत का एक भेद विशेष (सगीत)

मोक्षमारग-स०पु०यौ० [स०मोक्ष+मार्ग] ऐसा कार्य या आचरण जिससे मोक्ष प्राप्ति का योग बनता हो।

रू०भे०—मोक्खमग्ग,

मोक्षविद्या-स० स्त्री० [स] १ आध्यात्मिक-विद्या।

२ वेदात-शास्त्र।

रू०भे०—मोखविद्या।

मोखत, मोखतर—देखो 'मोक्ष'।

उ०—१ मेरवीस मूरछा त्रिण (ह) ग्राम निसपति सुर। लहण भेउ खटराग काठ अर्खं मोखतर।—गु रू वं

उ०—२ इतरै डूगरसीजी बोल्या, काकाजी, रजपूता री साथ घणौ अबखौ छै, पाणी री तिस आगै, तिण सू राज अब मोखतर पधारीस कोई साथ अनपाणी भेळौ हुवै —जैतसी ऊदावत री वात

मोख-स० पु० [स० मयूख] १ सूर्योदय या सूर्यास्त के समय, प्राय वर्षा ऋतु मे, बादल की ओट से, आकाश मे दिखने वाला सूर्य की किरणो का समूह।

रू०भे०—मोघ, मौख।

२ एक प्रकार का वृक्ष।

उ०—एरड अरणी अगथीउ, अखोड ताड असोख। खजूरि खारिक कुडो सालर, सिवन सइवल मोख।—रूकमणी मगळ

३ देखो 'मोक्ष' (रू भे)

उ०—१ अवसांण आए छत्री पौरस सरसावै। यह लोक जीप परलोक मोख पावै। रा रू

उ०—२ माता कर मक्र लहै चक्र मोख। तिलत्तिल अग न जग सतोख।—मे म.

उ०—३ समर तजण सू सौगुणौ, दुरग तजण री दोख। मरद दुरग जाता मरै, मिळै जिका नूं मोख।—बा दा

उ०—४ जोडी तो जुगती मिळी, कुशळी ने तिलोक। ऊ थापै ऊ ऊथपै, किण विध जासी मोख।—भि द्र

४ देखो 'मोखौ' (मह., रू भे)

उ०—जद स्वामीजी कह्यौ–कठै धोवसी? जद तिण मोख री जागा बताइ–अठै धोवसू। जद स्वामीजी कह्यौ–ओ पाणी कठै पडसी? जद तिण कह्यौ। हेठै पडसी।—भि द्र,

५ देखो 'मोस' (रू भे)

मोखण—देखो 'मोक्षण' (रू भे.)

उ०—१ खळ रा दळण दुरद रा मोखण, पत रा रखण सुमत रा पेस। कळमे दरस आप रा करता, प्रगट पाप रा गया प्रवेस।

—र रू.

उ०—२ गिरद् गाहटण अभै–मण सजै रिण विसम गत। दोयण घण दावटण 'जैत' दूजौ। जपै अन सहू जन सिघ तण विजै जस, साह मोखण–ग्रहण भूप 'सूजौ'।—द दा

उ०—३ सांगा ग्रह मोखण सुरताण, कूभाहरा जोड करतार। किय हरिदास राण केहरियौ, अविया छत्र चमर वड वार।

—हरिदास चारण 'केसरिया'

उ०—४ दिल्ली दावा–मुदी, तू हिंज आगळ है रांणा। तो दादौ 'सग्राम', ग्रहण मोखण सुरताणा।—गु रू. व

मोखणो, मोखवौ–क्रि० स० [स० मोक्षणम्] १ मुक्त करना, मुक्ति देना।

२ बधन से छुटकारा करना, छोडना, खोलना।

३ रिहा करना, आजाद करना।

४ फेकना।

मोखणहार, हारौ (हारी), मोखणियौ—वि०।

मोखिओडौ, मोखियोडौ, मोख्योडौ—भू० का० कृ०।

मोखीजणौ, मोखीजवौ—कर्म वा०।

मोखत्त—१ देखो 'मोक्षद' (रू भे)

मोखद—देखो 'मोक्षद' (रू भे)

मोखदा—देखो 'मोक्षदा' (रू भे)

मोखन—देखो 'मोक्षण' (रू भे)

उ०—सुरतांन ग्रहन मोखन सुजान, हिंदवान भान की करन हान। गळ फेरि छुरी जैचद गोत, अप्प नू पोत करियें उदोत।—ऊ. का

मोखपद—देखो 'मोक्षपद' (रू भे)

उ०—बो खग तोलै बोलियौ, अचळ तणौ कुळ भम। जूटै खेटा मोखपद, माळ पलटा रभ।—गु रू. व.

मोखम—अनिश्चित अवस्था ।
उ०—पेमजी री जाड चिपगी, दाती जुडगी । उथळी नी आयो । हां अर ना, दोनूं मोखम में राख र उनारै मूं हुंकारो भरयो अर मूंडै मूं उठ'र गावळै वानी मूंडो मोडयो ।—दस दोख

मोखमल—देखो 'मखमल' (रू भे)
उ०—मोखमल मोटा मोवरा, पच रग पटकूल । जरी कथीपा जुगति सु, सरग बिछावै मूल ।—प च चौ

मोखविद्या—देखो 'मोक्षविद्या' (रू भे)

मोखांण—देखो 'मुखांण' (रू भे)

मोखांतर—देखो 'मुक्तांतर' (रू भे)

मोखाणी, मोखाबौ–क्रि० स० ["मोखणौ" क्रि० का० प्रे० रू०] १ मुक्त कराना, मुक्ति दिलाना ।
२ बंधन से छुटकारा कराना, छुडवाना, खुलवाना ।
३ रिहा कराना आजाद कराना ।
४ फिकवाना ।
मोखाणहार, हारौ (हारी), मोखाणियौ—वि० ।
मोखायोडौ—भू० का० कृ० ।
मोखाईजणौ, मोखाईजबौ—कर्म वा० ।
मोखावणौ, मोखावबौ—रू० भे० ।

मोखायोडौ–भू० का० कृ०—१ मुक्त कराया हुआ, मुक्ति दिलाया हुआ २ बंधन से छुटकारा कराया हुआ छुडवाया हुआ, खुलवाया हुआ ३ रिहा कराया हुआ, आजाद कराया हुआ ४ फिकवाया हुआ ।
(स्त्री० मोखायोडी)

मोखावणौ, मोखावबौ—देखो 'मोखाणौ, मोखाबौ' (रू भे)
उ०—मेघउ राउ ग्रहियउ मीहराउ, ताहंया कन्हा मोखावि ताइ । राठउड बोक' मुगण करइ रीस, छेहडा दस माडइ छत्रीस ।
—रा ज सी
मोखावणहार, हारौ (हारी), मोखावणियौ—वि० ।
मोखाविग्रोडौ, मोखावियोडौ, मोखाव्योडौ – भू० का० कृ० ।
मोखावीजणौ, मोखावीजबौ—कर्म वा० ।

मोखावियोडौ—देखो 'मोखायोडौ' (रू भे)
(स्त्री० मोखावियोडी)

मोखि—१ देखो 'मोक्ष' (रू भे)
उ०—पुणी स्राप सौ तांम वांणी प्रवांगी । प्रभू राम ग्रोतारि, तूं मोखि पांमी ।—सू प्र
२ देखो 'मोखौ' (रू भे)

मोखियोडौ–भू० का० कृ०—१ मुक्त किया हुआ, मुक्ति दिया हुआ २ बंधन से छुटकारा किया हुआ, छोडा हुआ, खोला हुआ ३ रिहा या आजाद किया हुआ ४ फेंका हुआ ।
(स्त्री० मोखियोडी)

मोखी–स० स्त्री०—१ मकान या मकान के किसी कक्ष में गदे पानी के निकास के लिये बनी हुई छोटी नाली, मोरी ।
२ गुदा, मलद्वार ।
उ०—पुटियो कंवरण लागी–लोग ग्रा बात जाणरण वास्तै भेळा व्हिया के दुनिया में मूडा घणा है के मोखिया घणी हैं ।
—फुलवाडी
३ बारी, खिडकी ।
उ०—२ सूरज्या माथै पंरण रा गाभा बाळ मे डोळा, तेजाब मे पड्या–घाट खोळा हा, ग्राला मे राख अर मोखी–झरोखा मे भात भात रा न्हांना मोटा सचा मेल्या पड्या है ।—दसदोख
रू०भे०—मोकी, मोखि ।
मह०—मोख ।

मोखौ–स०पु० [स० मुख] १ गदे पानी के निकास के लिये बना हुआ बडा नाला, मोरा ।
उ०—वासै ग्रति विकराळ महा मुख तारत मोखौ । है कूडो इक हाथ हाथ हेकरण मे होको ।—ऊ का.
२ रोशन दान ।
उ०—च्यारू मेर ग्राभै नै नावडती मोटी–मोटी भीत, जकारै विचालै न खूटी ना मोखौ, जाळी, जे'अर ना झरोखौ ।—दसदोख
३ दीवार के अन्दर बना हुआ छेद, विवर, ताख ।
रू०भे०—मोकौ ।
४ देखो मोक्ष' (मह, रू, भे.)
उ०—१ भक्ति ग्यान वैराग योग यग्य, सील स्वधरम सतोखा । ये सबही सत्व गुण का पायक, जहां सत्व गुण तहां मोखा ।
—स्री सुखरामजी महाराज
उ०—२ जोगाभ्यासी कीजै कीजै सग्राम सांम छळ मरणौ । पामीजै मित मोखौ, निस्चय तत निरवाण ।—गु रू ब
उ०—३ सूस वरत पचखाण मे, लागी जावै कोई दोखौ रे । सुगुरु पासै ग्रालोय नै, सुद्ध हुवा मिलै मोखौ रे ।—जयवांणी
उ०—४ सुध मन सथारो करी, करम खपाय गया मोखौ रे । राय केसी हुवोई ग्रातमा, जामा लगाया दोखौ रे ।—जयवाणी
५ देखो 'मोकौ' (रू भे)

मोग—१ देखो 'मोख' (रू भे)
उ०—ऊगते री माछळी, ग्राथमते री मोग । डक कहै सुण भड्डळी, नदियां चढसी गोग ।—ग्रग्यात
२ देखो 'मोगौ' (रू भे)
उ०—सब भात कही हम सोगन की, मिजलै मिटळै महि मोगन की । ग्रनभायन जोयन ग्राड करैं, पुन ग्राय न कोय न खाड परैं ।
—ऊ का

मोगम—देखो 'मोखम' (रू भे)

मोगर–स०पु० [स० मुद्गर, प्रा० मोग्गर] १ एक प्रकार का शस्त्र जो गदा के आकार का होता है मुद्गर । (ग्र मा) (उ र)
उ०—१ केहर देसै कुंजरां वन घेर विहडै, 'मट्टू 'झोकी काळमी, कर मोगर जट्टै ।—वी मा
उ०—२ मोगर हाथे सहिया रे, ग्रन्याई करै चकचूर । सेवक स्री जिनराय ना प्रगट्यो जाणै ग्रकूर ।—स्रीपाल रास

उ०—३ सर सीगरिए छुरि कुन सांग गेडीहल मोगर। गोळी गोफरण मस गुरज मूसळ घरण तोमर।—रा. मा. स

२ सेना, फौज। (ह नां मा, अ मा)

उ०—१ हरिरणागळ आगळ हरिरण हलिल, वेरणी रयज्ज वरुयात वल्लि। सेलहथ मेघ चढियउ सिहाइ, मोगर मुगुल्ल मेळिसी माहि।—रा ज सि

उ०—२ तठा उपराति राजान सिलामति पातिसाह रा दळ वादळ मोगर थाट ऊपडिआ छै।—रा सा स

उ०—१ रूकहथौ भाटी रंणायर, मांझी तीन साथ दळ मोगर। —रा रू

३ झुण्ड, समूह।

४ मूग या मोठ की, छिलका उतारी हुई दाल।

उ०—१ इरणी भांति रा सीघळी गजराज वेमासनै आणी छै, ताह नू मलीदा वेसवार मोगर दे दे नैं पाटि आंरिण सभाया छै। —रा सा स०

उ०—२ कमोद तुळछी स्यामजीरा दधि मोगर चीनी एळची पूरव कपूर पोहप प्रसग हरेवी सोरभ कुसुमवा किय जगनाथ भोग ऐसी चौरासी भाति जिन्हु के गज दरसावै—सू प्र

५ उक्त दाल की वनी हुई सब्जी।

६ मुसलमान।

७ देखो 'मोगरी' (रू भे)

उ०—सिह आगलि न रहइ गज घटा, अम्रत आगलि न रहइ विस छटा। सीचारणा आगलि न रहइ चिडउ, मोगर आगलि न रहई घडु।—नलदवदती रास

८ देखो 'मोगरौ' (मह, रू. भे)

रू०भे०—मोगळ मोगर।

मोगरवेलि-स०स्त्री०—मोगरे की लता।

उ०—मांनि कहिउ ते मानिनी तू मद मोगरवेलि। अलगी हुती अहि डसइ, क्षीर व्रक्ष सउ खेलि।—मा का प्र

मोगरि, मोगरी-स०स्त्री०—१ मूले की जाति के एक पौधे पर लगने वाली फली, जिसकी सब्जी वनती है।

२ एक कद विशेष।

उ०—मरहा मोगरि मूसली, तापसतेली कद। पाजणक्षीर कपूरीआ, चद चमारी चद।—मा कां प्र

३ काष्ठ का बना हथौडा जो स्वर्णकारो के काम आता है।

४ स्वर्णकारो के काम आने वाला मोटे काष्ठ का उपकरण, जो करीब १½ फुट का गोल मोटा डडा होता है तथा जिसका एक शिरा उत्तरोत्तर पतला होता है।

५ उक्त प्रकार का उपकरण जो छत कूटने के काम आता है। इसी प्रकार धोवियो के कपडे धोने का उपकरण, इत्यादि।

उ०—१ मुरह मजेरी मिळै, गावडा गिकट घणेरी। ल्याय मोगरी मार छांण छोडा घर डेरी।—दसदेव

उ०—२ आ कंय वा बीजळी री गळाई सळावा भरती भच उठा सू ताचकी सौ मोगरी हाथ में आवतां ई आवेस पूरा जोर सू आगळ रै दोनू कानी भचीड मेल दिया।—फुलवाडी

६ छोटे मोगरे का फूल।

७ दुरमुस, दुरमच।

रू०भे०—मोगर,

मोगरेल-स०पु० [स० मुद्गर+तैल] मोगरे का तेल।

उ०—धूपेल चापेल मोगरेल करणेल जइतेल एव विध तेलिइ चोला भीजाइ।—व स

मोगरौ-स०पु० [स० मुद्गर] १ वढिया जाति के वेलै का पौधा।

उ०—१ फवै मोगरौ सेवती जाय फूली। अ गी पति सेवती फूली अभूली। लता माधुरी मालती फूल लेखै, दसा आप भूलै तपी रूप देखै।—रा रू

उ०—२ चपौ, केवडौ, केतकी, मोगरौ जुई, कंवळ, गुलाब, रातराणी, कणेर, गुलमौर, मरवौ तुळसी, केसर, नागकेसर अर चमेली, सरव इत्याद सुरगी वनस्पति रा अनोखा थाट हा। —फुलवाडी

२ उक्त पौवे का फूल। (अ मा)

उ०—१ सोन जुह रियावेल चवेल चत्रेली के फुलवाद। मोगरै की महक गुलाव फूल की सुगध जवाद।—सू प्र.

उ०—२ फूली हद फुलवाद चली अलवेलिया। वेहद क्यारया बीचक राजगहेलीया। चुणै चपेली चाय, मोगरौ मालती, हरी लता मैं जाण, हेम लत हालती। वणी पना इम वागि क साथि सहेलिया, परिहां रग भीनी आंनूप रूप रगरेलीया।—पना

३ तलवार की मूठ का सब से ऊपरी गुम्बजदार भाग।

४ आभूषणों पर लगने वाली गुम्बजदार घुडी, मणिका।

५ देखो 'मुगदर'

६ देखो 'मोगर' (अल्पा., रू भे)

मोगळ—१ देखो 'मोगर' (रू भे)

२ देखो 'मुगळ' (रू भे)

मोगिया-स०स्त्री०—१ एक अनुसूचित जाति, जो पहले जुरायमपेशा कौमो मे गिनी जाती थी। (मेवाड)

मोगौ-वि० [स्त्री०मोगी] १ अशक्त कमजोर, निर्वल।

उ०—सुरभी कासारी लागै सुख लेगी, देई बीलोई दोई दुख देगी। 'गोगो'मोगौ हुय'गोरधां' गिरियौ,'तेजो'मोळौ पडि नेजो लै तिरियौ। —ऊ का

२ मंद बुद्धि।

उ०—पिंड रै प्राण लागा पछै, पडै सीस पेजार री। मेट रे मेट मोगा मरद, वुरी फेट विभचार री।—ऊ का

३ मूढ, मूर्ख, अयोग्य।

उ०—लीका कुळ लोपी जगत न जोपी, खोपी मे खावदा है। जरकावण जोगा मूसळ मोगा, गोगा गुरु गावदा है।—ऊ का

४ चिड़ चिड़े स्वभाव वाला।
५ सिंचाई की नहर में से खेतों में लगने वाले पानी के जाने की मोरी। (गंगा नगर)
रू०भे०—मोघी, मोगी।

मोघ-वि० [सं०] १ अमोघ का विपर्याय, व्यर्थ बेकार, निष्फल।
उ०—चन्द्रहासा रा चौटा वाढ चलावण रै काज प्रथ्वीराज रा वीरा रै घोम लगाय नदियौ जिकण रो सीम महेस रो मनोरथ मोघ करि अनेक धाराधरा री धारा माही लागी लीन थियौ।
—व भा

२ निरर्थक।
३ निरुद्देश्य।
४ त्यागा हुआ, त्यक्त।
५ मुक्त।
सं०पु०—१ घेरा, अहाता।
२ मेंड़
३ देखो 'मोख' (रू भे)

मोघौ—देखो 'मोगौ' (रू भे)

मोड़-सं० पु०—१ मुड़ने की क्रिया या भाव।
२ मार्ग, रास्ता, सड़क या पगडंडी मे आने वाला घुमाव व घुमाव का स्थान।
३ किसी वस्तु मे पड़ने वाला बल।
४ गर्व, अभिमान।
५ बनावट।
६ किरण। (सूर्य)
रू० भे०—मउड़, मवड़, मावोड़, मोंडि।
७ देखो मौड़' (रू भे)
उ०—१ जगामग मोड दहू बळ जोत, हुआ गठजोड दहू बळ होत। दहू बळ वीर विदोरण दस, हुलै परलोक दहू बळ हंस।
—मे म.
उ०—२ पण लोधौ 'जैमल' 'पत्ते' मरणा बांधै मोड। सिर साजै सूतां नहीं चरता नू चोतोड।—वां दा
उ०—३ वरणौ दुलही दिववधू मन जिण आणि मरोड़। वर नरण वर वधियौ, मार धरियौ मोड।—व भा
उ०—४ धीन-धीनणी रै माथै मोतै रो मोड बांध्यौ। वाळक-नान्यां गठजोड़ो जोड्यो।—दसदोख

मोड़ार-वि०—पराजित करने वाला।
उ०—भ पतसाहा मोड़णार केई चतुरंग विरोळी। मो सांग्राम मोम मैं कई वेळा झकझोळी।—अरजुनजी बारहठ

मोड़न-वि०—१ मोड़ने वाला, घुमाने वाला।
२ झुकाने वाला, नमाने वाला।
३ मिटाने वाला।

उ०—महराण मेछाण वका मद मोडण छोडण देवां छग।
—मा वचनिका

मोड़णौ, मोड़बौ-क्रि० स० [सं० मुरणम्] १ किसी सीधी वस्तु में बल देना, सीधे खड़े को झुकाना, दूसरी ओर घुमाना।
२ धारदार वस्तु की धार टेढी करना।
३ ऐंठन देना, मरोड़ना।
४ चलते हुए को किसी दूसरी ओर जाने के लिये प्रेरित करना, दिशा परिवर्तन करना।
उ०—१ के इत्ता मे वांरै काना रिमझोळां रै मीठा रणकारा री भणक पडी। कठै ई कोई भरम तो नी व्हैगो। पण रणकारा तर तर नैड़ा सुणीजण लागा—ठम्मक—ठम्मक। दीवांणजी उठीनै ई घोड़ो मोड्यो।—फुलवाड़ी
उ०—२ ऐकरियो ओ मारूजी, करला पाछाजी मोड। राजींदा ढोला, ओळू घणी आवै म्हारै वीर री।—लो गी
५ लौटकर आने या जाने के लिये कहना, पलटाना।
६ वापस करना, लौटाना।
उ०—१ पूत घणौं मे पालियो, जूझण तू मति जाइ। हू मोड़ै जाऊ हमैं, सुत दोही समुझाइ।—व भा
उ०—२ साह कहियौ म्हारा अनामय रो उद्देस करि आवै तिका नू सांम्हैं जाइ हुही समुझाय पाछा मोडि आऊ।—व भा
उ०—३ घहनो दियौ हो जका रो पांछो फेरयो नही मढणो लियो जकारो मोठो मोड्यो नही। ई हाथ लियो, वी हाथ डकारयो।
—दसदोख
७ पराङ्मुख करना, पृष्ठ फिरवाना, विमुख करना।
८ शरीराग घुमाना।
उ०—१ दे पटपोरा दोय नाक मे दाबै नीका। मूंडो खावी मोड छुडाछड आवै छीका।—ऊ का
उ०—२ धन लोडै तोडै धरम, विध विध तोडै बात। जड सनेह खोडै जटण, गिनका, मोडै गात।—बा दा
९ लौट जाने के लिये मजबूर करना, पीछे हटाना, खिसकाना, भगाना।
उ०—किसनावत रण कुंभ करारो, 'रांम' सुजाव 'सुजांण' प्रकारो। मधकर तणी मेघ वळ मोडै जुडतां भोज कुंवर पित जोडै।
—रा रू
१० नष्ट करना, मिटाना, तोड़ना।
उ०—१ अजबसिंघ ऊदाहरो, जोडै सूरजमाल। पड़ियौ घोडै मीरजा आ मोडै गजढाल।—रा रू
उ०—२ केहरि छोटो बहुत गुण, मोड़ै गयदां मांण। लोहड़ वडाई की करै, नरा नखत परमांण।—हा भा
उ०—३ रण आमागळ रोडि, जोडि अछरा गठजाटा मेल धमोटा मार, मार मुगळा दळ मोड़ां।—मे म

११ छिन्न, भिन्न करना, अस्त-व्यस्त करना।

१२ लकीर की तरह सीधा न रखना, टेढा करना,टेढी मेढी स्थिति में करना।

१३ विमुख करना, विरुद्ध करना।

१४ गिराना, पटकाना।

१५ कागज, वस्त्रादि मे सलवट डालना, समेटना।

उ०—ग्रथा मे जठै कठै ही रुढी-रिवाजां री वात आवै पानो मोड देवै अर आपरै लेखा मे हवालो देवै।—दसदोख

१६ काटना।

मोडणहार, हारो (हारी), मोडणियो—वि०।

मोडिग्रोडो, मोडियोड़ो, मोडयोडो—भू० का० कृ०।

मोडीजणो, मोडीजवो—कर्म वा०।

मुडणो, मुड़बो—अक० रू०।

मोडणो, मोडबो, मोरणो, मोरवो, मौडणो, मौडवो—रू० भे०।

मोड़तोड़—स०पु०—घुमाव-फिराव, चक्कर,।

मोडवध, मोडवधो—देखो 'मौडवध' (रू भे)

मोडाणो, मोडाबो—क्रि०स० ['मोडणो" क्रिया का प्रे० रू०] १ किसी सीधी वस्तु में वल दिराना, सीधे खडे को झुकवाना, दूसरी ओर घुमवाना।

२ धारदार वस्तु की धार टेढी कराना।

३ ऐंठन दिराना, मरोडाना।

४ चलते-चलते को किसी दूसरी ओर मुडने के लिये प्रेरित करना/कराना, दिशा परिवर्तन करना/कराना।

५ लौटकर आने-जाने के लिये कहलाना, पलटवाना।

६ वापस करना, लौटवाना।

७ पराङ्मुख कराना, पृष्ठ फिरवाना, विमुख कराना।

८ शरीराग घुमवाना।

९ लौट-जाने के लिये मजबूर कराना, पीछे हटवाना, खिसकवाना, भगवाना।

१० नष्ट कराना, मिटवाना, तुडाना।

११ छिन्न-भिन्न या अस्त-व्यस्त कराना।

१२ लकीर की तरह सीधा न रखवाना, टेढा कराना, टेढी-मेढी स्थिति में कराना।

१३ विमुख कराना, विरुद्ध कराना।

१४ गिरवाना, पटकवाना।

१५ कागज, वस्त्रादि मे सलवट डलवाना, सिमटवाना।

१६ कटवाना।

मोडाणहार, हारो (हारी), मोडाणियो—वि०।

मोडायोडो—भू० का० कृ०।

मोड़ाईजणो, मोडाईजबो—कर्म वा०।

मोड़ायोडो—भू० का० कृ०—१ बल दिराया हुआ, सीधे खडे को झुकवाया हुआ, दूसरी ओर घुमवाया हुआ. २ धार टेढी कराया हुआ. ३ ऐंठन दिराया हुआ ४ दूसरी ओर मुडने के लिये प्रेरित कराया हुआ, दिशा परिवर्तन कराया हुआ. ५ लौटकर आने-जाने के लिये कहलवाया हुआ, पलटवाया हुआ ६ वापस कराया हुआ, लौटाया हुआ ७ पराङ्मुख कराया हुआ, पृष्ठ फिरवाया हुआ, विमुख कराया हुआ ८ शरीरांग घुमवाया हुआ ९ लौट-जाने के लिये मजबूर कराया हुआ, पीछे हटवाया हुआ, खिसकवाया हुआ, भगवाया हुआ, १० नष्ट कराया हुआ, मिटवाया हुआ, तुडवाया हुआ ११ छिन्न-भिन्न या अस्त-व्यस्त कराया हुआ १२ लकीर की तरह सीधा न रखवाया हुआ, टेढ़ा कराया हुआ, टेढी-मेढी स्थिति मे कराया हुआ १३ विमुख कराया हुआ, विरुद्ध कराया हुआ. १४ गिरवाया हुआ, पटकवाया हुआ १५ सलवट डलवाया हुआ, सिमटाया हुआ १६ कटाया हुआ।

(स्त्री० मोडायोडी)

मोडि—देखो 'मोड' (रू भे.)

मोडियोडो—भू० का० कृ०—१ बल दिया हुआ, झुकाया हुआ, दूसरी ओर घुमाया हुआ २ धार टेढी किया हुआ ३ ऐंठन दिया हुआ, मरोडा हुआ ४ दूसरी ओर जाने के लिये प्रेरित किया हुआ, दिशा परिवर्तन किया हुआ. ५ लौटकर आने-जाने के लिये कहा हुआ, पलटाया हुआ ६ वापस किया हुआ, लौटाया हुआ. ७ पराङ्मुख किया हुआ, पृष्ठ फिरवाया हुआ, विमुख किया हुआ ८ शरीराग घुमाया हुआ ९ लौट जाने के लिये मजबूर किया हुआ, पीछे हटाया हुआ, खिसकाया हुआ, भगाया हुआ. १० नष्ट किया हुआ, मिटाया हुआ, तोडा हुआ ११ छिन्न-भिन्न किया हुआ, अस्त-व्यस्त किया हुआ. १२ सीधा न रक्खा हुआ, टेढा किया हुआ, टेढी-मेढ़ी स्थिति में किया हुआ. १३ विमुख किया हुआ, विरूद्ध किया हुआ १४ गिराया हुआ, पटकाया हुआ १५ सलवट डाला हुआ, समेटा हुआ. १६ काटा हुआ।

(स्त्री० मोडियोडी)

मोडी—स०पु०—खलिहान मे अनाज की वालो को कुचलने के लिये गोल गोल घूमने वाले वैलों में से अन्दर की ओर चलने वाला वैल।

मोडेरो—क्रि० वि०—देरसे, विलव से।

उ०—ओर राणो पाछो गढ़ दाखिल हुवो जणा एक दिन नापो दरवार सू मोडेरो आयो।—नापै साखलै री वारता

मोड़ो—स०पु०—१ दरवाजा, द्वार।

उ०—के इत्ता में मोडा रै वारै घोडा री हींस सुणीजी। कमसल बात करता ई आयग्यो। सेठाणी आडो खोल वोली-चीरा, थारी ऊमर तो लाठी।—फुलवाडी

(स्त्री० मोडी)

२ विलव, देरी।

उ०—१ वेटो काठी उतारता उतारता ई बोल्यो-आज तो साम्ही वेगो आयो, थू मोडो बतावै।—फुलवाड़ी

उ०—२ राजाजी पाछा वेगा आवण सारू दीवाणजी नै मणती ताकीद करी। दीवांणजी मोडी ताळ उपरात पाछा रा पछा आया, पण राजाजी नै खासो मोडो लगायो।—फुलवाडी

वि०—१ विलंब से, देर से।

उ०—१ काळा में कोढाय चाहि खायो कर चाळा मोडा उघड्या मित चिरत थारा चिरताळा।—ऊ का

उ०—२ भांत-भांत रा छापा काढै कै विरखा सात दिना में होसी, विरखा मोडी होसी, विरखा जरूर कर होसी।—वरसगाठ

उ०—३ अग कहिसी—मत आव। पण सवळाई साथ आई। राजा रै रमोडे गया। मोडा गया तकण सू मुआरा ओळुभो दियो।

—कल्याणसिंघ नगराजोत वाढेल री वात

२ बहुत प्रतीक्षा करने के बाद।

उ०—१ माठो सूरज होळै होळै घणो चढै। नीठ ढुळकतो ढुळकतो मथारै चढयो। मथारै आय कठै ई रुप तो नीं गियो। मिरकै ई नीं। कित्ती मोडी सिझ्या व्ही।—फुलवाडी

रू०भे०—मउडो, मवडो, मोडो, मोड़उ, मोड्डो।

मोचग—देखो 'मुचकग' (रू भे)

उ०—ग्यांन को ढोल बज्यो अति भारी, मगन होय गुण गाऊ ए माय। तन करू ताल मन करूं मोचग, सोती सुरत जगाऊ ए माय।

—मीरां

मोच—स०स्त्री० [स० मुच्] १ झटका लगने से शरीर के संधी-स्थल की नस का स्थान छोड देना।

२ धातु के बतन आदि मे, दबाव पडने या चोट लगने से, पडने वाला खड्डा।

३ छूटने की क्रिया या भाव।

उ०—तू माता निश्चित रह, मन मह मत कर मोच। राव निचितो ना करूं, करूं न खाऊ मोच।—ढाढाळा सूर री वात

४ नष्ट।

उ०—१ सोच महमदसाह नू मोच थयो मन मह। प्रात ससोकित ज्यू दिपह, राति अनद रवह।

उ०—२ हुवो सोच आसुरां हुवो मद मोच दिलेसर। हुआ देस भैचचक हुवा अवनेस भयकर।—रा रू.

५ शका, सदेह।

६ निवारण, त्याग।

७ गड़ी लकड़ी को चीरने के लिये, करोत के चारो ओर लगने वाली लकडी की चौखट।

[स० मोच] ८ केले का फल।

[स० मोच] ९ केले का वृक्ष।

१० सोमाजन वृक्ष।

११ देखो 'मोद्र' (रू भे.)

रू०भे०—माच, मोच, मोच।

मोचक—स०पु० [स०] १ साधु, भक्त।

२ मोक्ष, मुक्ति।

३ केले का पेड।

वि०—छुडाने वाला, मुक्त करने वाला।

मोचडि, मोचडी—स०स्त्री०—१ पैर की जूती।

उ०—१ जरकस जरी रेसमी जामो, रतनां साज सजावै। मणिया जडी मोचडी चरणां, जाया ही बण आवै रे रांमैयो।—गी रां

उ०—२ मेह बिना धरती तरसै, मेहड़ी हुडण दै। मोचडियां बणाव मुखमल री मेहडी हुवणदै।—लो. गी

२ देखो 'मोद्र' (अल्पा, रू. भे)

रू०भे०—मोजडी, मोजडी।

मोचडो—स०पु०—१ जूता, बूट। (अ मा)

उ०—घुडला सखियां दीसै य न ठाण, ना रे पगां मे भवरजी रा मोचडा।—लो गी.

२ घोडे की आख का एक रोग।

रू०भे०—मोजडीयो

मोचण—स०पु० [स० मोचन] १ छोडने की क्रिया या भाव।

२ रिहाई, छुटकारा, मुक्ति।

३ दूर करने, हटाने या मिटाने की क्रिया।

४ उऋण होने की क्रिया या भाव।

५ बहने या झरने की क्रिया।

उ०—मोहै मुख मोडै हीतळ हतवाळी, पीतळ पैरण नै सीतल सत वाळी। लुच्चा ललचावै लालच घन लागै। लोचण जळ मोचण सोचण विगलागै।—ऊ का.

६ खींचा-तानी, छीना झपटी।

स०स्त्री०—७ मोची जाति की स्त्री।

उ०—हाथ ज लेस्या मोचडी ए अमा मोरी। मोचण होय होय जास्यां।—लो गी

रू०भे०—मोचन।

मोचणग्रघ—देखो 'मोचन ग्रघ' (रू भे)

मोचणो, मोचबो—क्रि०स० [स० मोचनम्] १ रिहाकरना, मुक्तकरना, छोडना।

२ त्यागना छोडना।

उ०—१ माह सुणै विध सोचियो, गह मोचियो मगाह। मन ठहराई मेळ री, माह 'अजीत' सलाह।—रा रू

३ मिटाना, समाप्त करना।

उ०—माह सुणै अत सोचियो, मन मोचियो गरब्भ। ईस प्रताप 'अजीत' रो, रीत विचारी सब्ब।—रा रू

४ बहाना, प्रवाहित करना।

उ०—सुणि पदमणी सोचै रे नयणे जल मोचैरे, परधाने पोचे मन मे खलभली रे।—प च चौ.

मोचणहार, हारो (हारी), मोचणियो—वि०।

मोचिग्रोडो, मोचियोडो, मोच्योडो—भू० का० कृ०।

मोचीजणो, मोचीजवो—कर्म वा० ।

मोचणो, मोचवो,—रू० भे० ।

मोचन—देखो 'मोचण' (रू भे)

मोचनग्रघ–स०पु० [स० अघ+मोचन] पापो का नाश करने वाला, ईश्वर । (नां मा.)

रू०भे०—मोचणग्रघ ।

मोचरस–स०पु० [स०] १ सेमल वृक्ष का गोंद।

२ सेवरी का फूल । (अमृत)

३ मोर पाख, मयूर पिच ।

४ घोड़े के पिछले पैर के घुटनो से ऊपर होने वाला एक रोग, जो अन्दर व बाहर बोर जैसा होता है । (शा हो)

मोची–स०स्त्री० [स्त्री० मोचण] १ चमडे के जूते बनाने का कार्य करने वाली एक जाति ।

उ०—१ मोची ढेढ चमार जान में डोली जांचै । चढै चिलमिया चाह नाच नीचा घर नाचै ।—ऊ का

२ उक्त जाति का व्यक्ति ।

उ०—हालता हालतां मारग मे मोची री हाट ग्राई ।—फुलवाडी

रू०भे०—मोची ।

मोचौ–स० पु०—१ झुकाव ।

उ०—साथणिया घणाई कळ भळ करिया पण कवर तौ करडावण रै पाण मोचो ई नी खायो ।—फुलवाडी

२ जूता ।

मोच्छ—देखो 'मोक्ष' (रू भे)

उ०—जुग जुग मीर हरा भगता री, दीस्या मोच्छ नेवाज । मीरां सरण गह्या चरणां री, लाज रखां महाराज ।—मीरां

मोच्छव—देखो 'महोत्सव' (रू. भे)

मोछण—देखो मूछण' (रू भे)

उ०—१ अतर रै फोवा री लपट,सैंट रै छिडका री सौरम, लूग-एळची रा मोछण, बच्या पानारा बीड़ा, सिगरेटा रा छल्योडा डिब्बा, काजू-किसमिस्या रा गेड, गाजै रा गोट अर थेड लाग रैया है ।—दसदोख

उ०—२ मोछण नू सूला अव्वल तरह रा डाबा मे सू काढ काढ देवे छै ।—कुवरसी साखला री वारता

मोछव—देखो 'महोत्सव' (रू भे)

उ०—चउसठि मघवा मिलो कीउ, निरव्वाण मोछव सार । आसाढ सुदि चौदसि दिने, पछइ यात्र करी निज ठारि ।—कल्याण

मोज—१ देखो 'मौज' (रू भे)

उ०—१ अहतै सत डोर 'जगा' छत्रिया गुर,वोह मोजा विघ अतुळ वळ । ऊही जग ऊपर आहाडा, कीरत गूडी तणी कळ ।

—महाराणा जगतसिहजी रो गीत

उ०—२ दडकाळ करगा तरेस सी गणेमदुत, सूर प्रळैरसम्मा मणेम मुधासार । चडी सूळ पारजात मराळा पकता चगी,किरमाळां मोज पगी कोसल्या कंवार ।—र. रू.

उ०—३ डूम न जाणै देवजस,सूम न जाणै मोज । मुगळ न जाणै गो दया, चुगल न जाणै चोज ।—वा. दा.

उ०—४ वीरत कीरत वस वित, मत मोजां गुण मान । सप सुलच्छण घरम सुख, व्हैया ग्रघ सू हांण ।—वां दा

२ देखो 'मोजौ' (मह, रू भे)

उ०—पहरै नरामा पचठामा, अग जामा ओप ए । सोहै सकाजा सीस ताजा, सार मोजा जोप ए ।—गु रू व

मोजडी—देखो 'मोचडी' (रू भे)

उ०—१ तरे मोचीया नै बुलाय वा सारी मोजडीयां कराय खीन-खाप मे मडाय सीवाय नै देवलीयाळी रा डेरा मेली । केयो–वीन-णीयां तो है नही नै मोजडीयां हाजर है ।—नैणसी

उ०—२ पाय लाखीणी घरमी रे मोजडी, हलते राता छे पाव ओ ।—लो गी

२ देखो 'मोजौ' (अल्पा, रू भे)

उ०—जरद भीड ज्यारका, सको सारोटकरारी, पगा भीड मोजडी झिलम मसत्तक धारी —अरजुण जी बारहट

मोजडौ—देखो 'मोजौ' (अल्पा, रू. भे.)

उ०—मेघवना फाडा बाधिवा, पाए मोजडा पोगर नवा । खाडा पटा तणा गजवेलि, अलवि आगिला हीडइ गोलि ।—का दे प्र

मोजांण—देखो 'मौज' (रू भे)

उ०—उर करवत वहि आपरै, साठ भडां सप्रमाण । वीकम सिव मारग वहै, ले दीना मोजाण ।—नैणसी

मोजी—देखो 'मौजी' (रू भे.)

उ०—हुर्रै भर्रै कर नेता हलकारा, लांबा सीगाळा देता लल-कारा । मुळकै वेली चख पोळछ लख मोजी, चेली दीठा ज्यू साधू चित चोजी ।—ऊ का.

मोजूद—देखो 'मौजूद' (रू भे)

उ०—तिण साळा आगळी ऊखेलाय चौसाळे री तरै सु प्रतापसिघ जी सा कराई १६३७ में नै माहे कुवो १ करायो तिको मोजूद है, पाणी भळभळो है ।—मारवाड री ख्यात

मोजूदा—देखो 'मौजूदा' (रू भे.)

मोजौ–स०पु० [फा०मोज] १ पैर मे पहनने का, एक बुना हुआ वस्त्र, जुराव, पायतावा ।

२ जूता ।

उ०—ताहरां माडणसी मोजा खोल नै तळाव मांहे वडीयो, धोबो सो पाणी नांखे छै ।—मांडणसी कूपावतरी वात

३ युद्ध समय पावों में पहना जाने वाला कवच ।

उ०—१ बळवत जडै हाथाळां वेथ । पैहरिया सार मोजा पगेय ।

—गु रू वं

उ०—२ ताहरा केळावै ठाकुर नू मूळवाणी भीतर बोलायो,सू वीरै सिलह दगलो पैहरिया थका भीतर आयो छै । सरसूथण पगां मोजा

हथियार सरब बांगा छै। माथै घूघी टोप छै।

—सातल जोधावत री वात

४ कुश्ती का एक पेच, दाव।

५ देखो 'मोजौ' (रू भे)

उ०—मु गांव भुणोयाणे जाळीवाडै वासै मोजा चरा घणा ही हरा खाई छै।—नैणसी

मोट—स०स्त्री०—१ बड़प्पन, बडाई।

उ०—१ बोलां में ओछा विदर, मोलां में नह मोट। पोळा में 'परताप' रै, गोलां वाळी गोट।—ऊ का

उ०—२ नान्ही कह्या न नानड़ी, मोटी कह्या न मोट। हरिया हरि जांणै जिसी, बाकी गहीयै ओट।

—स्त्री हरिरामदासजी महाराज

२ गर्व, घमड, अभिमान।

उ०—रैत रिछपाळ और दीनन दयाल देख्यौ। मोट महिपाळ-पन मन मे मान्यौ नहीं।—ऊ का

३ राठोड़ों की एक उपशाखा। (वा दा. ख्यात)

४ कूए से पानी निकालने का चड़स।

रू०भे०—मोटड, मोठ।

५ देखो 'मोटौ' (मह, रू भे)

उ०—तीन लोक ता वीच मैं, अकल काळ की चोट। जनहरीया जोय मरिसी, छोटा गिनै न मोट।—स्त्री हरिरामदासजी महाराज

मोटउ—देखो 'मोटौ' (रू. भे)

उ०—१ अकळ मकळ अवगति अपरपर, रांमेसर मोटउ राजान। किसनउ कहइ क्रपा हिव कीजइ, वड दातार वधारण वांन।

—महादेवपारवती री वेलि

उ०—२ देस जिणइ ए देहुरउ रे लाल, मोटउ देस मेवाड़ मन मोहयउ रे।—स कु

मोटकौ—देखो 'मोटौ' (अल्पा, रू भे)

उ०—१ छोडाय दियौ मत मोटकौ ए, समझायौ राजा मोटकौ ए।—जयवांणी

उ०—२ मांगळियाणी मोटकी, पायो जोया पी'र, दुझळ 'मदू' 'देपाळदे' मात वीर सधीर—वी मा

मोटड़ौ—१ देखो 'मोठड़ौ' (रू भे)

२ देखो 'मोटौ' (अल्पा, रू भे)

मोटनक—स०पु० [स०] एक वर्ण वृत्त, जिसके प्रत्येक चरण मे एक तगण, दो जगण, अत में एक लघु एव एक गुरु से ११ वर्ण होते हैं।

मोटम—सं०स्त्री०—१ बडाई, बड़प्पन।

उ०—मोटम मांम धरम्म री, फरै होड सह कोय। 'पातल' ज्यू खग पडतां, हेम दुहेलो होय।—किसोरदान बारहट

२ महत्व, विशेषता।

३ गर्व, अभिमान।

रू०भे०—मोटिम, मोटिम्म, मोटिम,

४ देखो 'मोटौ' (रू भे)

मोटमति' मोटमती—वि०—बुद्धिमान, अकलमद।

उ०—'मेघ' हरौ तेग खरौ, राज गति मोटमती। पाटपती देसपती, राड तणौ लखपती।—ल पि.

मोटमन—वि०—१ दाता, दानी।

उ०—क्रीत खाटण नमी 'कला' सुत कळोधर सवाया प्रवाड़ा दीह माजा। 'माल' सुत ताक आयौ ज्यूई मोटमन, रेण सुरधर तणौ कीध राजा—द दा

२ उदार चित्त, सहृदय।

उ०—रिमकोट हण जन ओट रखण, मोटमन महाराज। तौ महाराज रे महराज, साहब मोटमन महाराज।—र. ज. प्र

३ महत्वाकाक्षी।

रू०भे०—मोटमन।

मोटमरजाद, मोटमरजाद—स०स्त्री०—१ स्वाभिमान।

२ गर्व, अभिमान।

३ मर्यादा, प्रतिष्ठा।

मोटयार—देखो 'मोटियार' (रू भे)

मोटर—स०स्त्री० [अ०] १ पेट्रोल, डीजल या कोयले से चलने वाली एक आधुनिक यान्त्रिक गाडी।

उ०—कोयलडी रौ गीत सरु हुयौ। डागै रै दरूजै मोटर रौ होरन वाज्यौ।—दमदोख

२ वैद्युतिक यन्त्र जिससे मशीनें चलाई जाती हैं।

अल्पा०, मोटरडी,

मोटरडी—देखो 'मोटर' (अल्पा, रू भे.)

उ०—समदडी मोटौ गाव हौ अर उण दिना रेल मोटरडियां ही कोयनी। इण वास्तै भाडा भत्ता री कमी नही ही।—रातवासौ

मोटसी—स०पु०—पवार वश की एक शाखा व इस शाखा का व्यक्ति। (वां दा ख्यात)

मोटाई—स०पु०—१ मोटा होने की अवस्था या भाव।

२ किसी वस्तु की लबाई-चौडाई, नाप।

३ स्थूलता।

४ बडप्पन, बडाई।

५ उदारता।

मोटापण, मोटापणौ—देखो 'मोटाई'

उ०—दळथभ हरौ थयौ दूसासण, गहण अरिंदा सारगह। मोटापण वाळौ महाराजा, मोटौ साकौ कियौ मह।

—केसरीसिंघ सेखावत रौ गीत

मोटापौ—देखो 'मोटाई'

मोटायत—स०पु० [स० मोट्टायिते] साहित्य मे एक हाव जिसमे नायिका अनुपस्थित प्रेमी के प्रति अपने आन्तरिक प्रेम को इच्छा न रहते हुए भी प्रकट कर देती है।

मोटिम—देखो 'मोटम' (रू भे)

उ०—१ हा सुदर सुख सागरु, हा ! मोटिम भडारउ रे। हा रीहड़ कुल सेहरउ, हा ! गिरुवा गरा धारउ रे।—कवि समय प्रमोद

उ०—२ माघ-प्रयोगि मानीइ, भड भवदुख भाजति। मोटिम बारह मास महि, महा-पदवी छाजति।—मां. का प्र

मोटिममल, मोटिममल्ल—वि०—१ गर्व एव गौरव वाला, महान।

उ०—इह उदयउ अविनपाल, अतुलबळ विसाल, मोटिममल मूछाल महिम धरौ। कवि कहइ सुजस, सद मलिक स्री अहिमद, दलइ दुजरामद सुहडवरौ।—व स

२ वीर, बहादुर, योद्धा।

मोटिम्म—देखो 'मोटम' (रू भे,)

उ०—१ मोटिम्म मेरु मलिकह मुकुट स्री अहिमद उद्दम दमइ। अरिमुंड दडा उछालतउ, असि गेडी रामति रमइ।—व स

उ०—२ अगां मांत मोटिम्म, सुपन सुचित सुत सुदर। आठ वरस अविकार कला अभ्यास कुलोवर।—कविधरम कीरति

मोटियार—स०पु०—१ पुरुष, आदमी।

उ०—कठै ही लुगाया, कठै ही मोटियार कठै ही वाणिया, कठै ही गिवार, मेळौ सो लाग रैयो है। मगता री पांत अर कमीणी जात ल्यावौ, ल्यावौ कर रैयी है।—दसदोख

२ युवा, जवान, तरुण व्यक्ति।

उ०—१ दोय जणा अेक कईक ढळती अोस्था रौ अर एक मोटियार जिकै रै हाथ में लालटेण, बारणौ खोल' र हड़बड़ावता खाथाखाता दुर पड़घा।—वरसगांठ

उ०—२ तूठै गोगोजी बूढा ठाढा डोकरा, तूठै भल मोटियारां ओ। गाय गवाडै सीखै सांभळै, जिण री गोगोजी पूरै छै आस ओ।—लो गी

उ०—३ तिण सू या कहै म्हारौ पती म्हारा वूढा पणा पहला मारीजसी इमो सूरमापणो दीसै छै और हू लारै सत कर सुरग मे पाछा तरुण मोटियार होय रहसा।—वी स टी

उ०—४ सु आसथांनजी रौ डेरौ एके बाभण रै घरै। तिणरी बेटी मोटियार। तैनू आसथानजी देख अर कहण लागा—जु आ विधवा छै? तद ब्राह्मण बोलियो 'राज' आ कूवारी छै।—नैणसी

३ पति, खाविंद।

उ०—बखत री वात, मां मरै बीगी मोसी ही मरै। मोटियार मरघो अर बियैरै लारै लारै वेटो भी आगीनै गैयो। बापडी सूधी भोळी विधवा दोरो सोरो आपरो गरीब गुजरांण करती गयी।—दसदोख

४ पुत्र, लडका।

५ युवको के लिए प्रयुक्त किया जाने वाला सबोधन सूचक शब्द।

उ०—१ फेर इण कुंवर नै हीज पूछौ, आपै ठीक पडसी। ताहरा कोटवाळ पूछियो—क्योकर मोटियार, कासू कहै छै?

उ०—२ तितरै साह कह्यो—रै कपूत, कासू कहै छै, कैरो वेटो छै? ताहरां फेर कह्यो—थांहरौ वेटो छू। ताहरां कोटवाळ कह्यौ रे मोटियार, यू विचळियो क्यू बोलै छै।—पलक दरियाव री वात

वि०—१ वीर, बहादुर।

उ०—१ जैसिहजी बालक मोटियार फौज आछी सो जाफरखा उज्जीण सू कूच करनै नरबदा कन्है जाय पहुचो।—गौड गोपाळदास री वारता

उ०—२ केसवदास आदमी वडौ सचियार थौ जलाल थौ मरद मोटियार थो।—मारवाड रा अमरावा री वारता

२ युवक, युवा, जवान।

उ०—१ इसा मे आप नु खरळ रौ बोल याद आयो, जो म्हा कनां सावण री तीजा रौ कवल लीयो थो। तद कुवर मोटियारां नु पूछियो, जो तीज कद छै।—कुवरसी साखला री वारता

उ०—२ एक रजपूत रावतजी की हजूर रहै। जको आदमी तो पाधरौ सो। पण मोटियार पगछटो सो।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री बात

रू०भे०—मोटयार, मोटीयार, मोव्यार, मोठियार।

मोटियारपण, मोटियारपणौ—स०पु०—१ पुरूसत्व, मर्दानगी।

२ युवावस्था, जवानी, तरुणाई।

३ इन्सानियत, आदमियत, मनुष्यता।

रू०भे०—मोव्यारपणौ।

मोटीनींद—स०स्त्री०—महानिद्रा, मृत्यु, मौत।

उ०—जग दातार जनारदन, गिरधारी गुण गेह। अजपत रोटी वांटणा, मोटीनींद म देह।—बां दा

मोटीयार—देखो 'मोटियार' (रू भे.)

उ०—१ म्हाको तौ परणीजणौ भव माथै पड़ीयो नै मोटीयारां नै घणा ही नाळेर आसी, मोटी-मोटी ठोडां परणसी।—राव रिणमल री बात

उ०—२ रावळजी तो पूखता छै नै निवो मोटीयार छै।—वीरमदे सोनगरा री बात

मोटीयारगाळो—स०पु०—युवावस्था, जवानी।

मोटेरू, मोटेरौ—वि० (स्त्री० मोटेरी) १ वृद्ध।

२ जवान, बडा।

उ०—बांभण-उपरि बापडी ! एवडी भली न प्रीति। मोटेरू को मेलविसु, सुफ मनि मानिउ मीत।—मा कां प्र.

मोटोडो—वि०—बडे वाला।

(स्त्री० मोटोडी)

उ०—१ परस्या परस्या ए मा, मोटोडा थाळ। परस्या नणदा रा वाटका—लो गी

उ०—२ ए तो जीमैं मारा कोडिला साळाजी रा मोटोडा थाळ मे।—लो गी

उ०—३ राजी हुया काम मे रगडै,नाराजिया करै नुकसांन। छोट-कियां मोटोडा छोडो, मिळो सरीखा चाहो माण।—चंडी दांनसादू

उ०—४ कठै वजै वडघोर, कठै भाडी मोटोडी । कठै बोरटी नांव, घणी देयारी छोडी ।—दसदेव (स्त्री० मोटी)

मोटो-वि० [सं० महत् प्रा० मुह] १ बड़ा ।

उ०—१ घर गंगाजळ धार, आंणी तपकर ऊजळो । भो मोटो उपगार, भागीरथ कीधो भुयण ।—वां दा

उ०—२ मीरां एक वहै मन मारां, थिर रहियो चोमां रै थांण । मो असवार लिया नित सार्थे, मोटां ग्राम न राखै मार्थे ।—रा रू

उ०—३ घर चाढि मामी मिळै थाट मोटै घड़ै, पिड्वां सतावी तुर्ग पाखर पटै ।—जालमसिंघ मेड़तिया रो गीत

२ विशाल ।

उ०—१ एक मोटा वडला मार्यं दोनां रो वासो हो । वडला री साखां नाही रा पांणी मार्थे लूमती ।—फुलवाड़ी

उ०—२ थोड़ी मोटी मन राख ! यू आपो काई खोवै । म्हैं तो हाथी सूं ई मघायो गाढ जाणती ।—फुलवाड़ी

उ०—३ म्हारी जांण में ऐ मोटा मोटा मास्तर थारै जेड़ी काली मामियां ई रचिया दीसै ।—फुलवाड़ी

उ०—४ चेजो करणियां चेजो करै, पांणी भरणियां पांणी भरै । भण्यां-गुण्यां नै कळा-कारीगरी री किमत सूपै । मोटा ताजा नै डील सारू पसाई री खोरसो भोळावै ।—दसदोख

३ जो मान, परिमाण आदि की दृष्टि से अधिक बड़ा हो ।

उ०—डोकरी माळ रै मांय जाय कामी री मोटी वाटको लाई । गूजरी घरी खांगी करनै वाटको डुळडुळतो भर दियो ।—फुलवाड़ी

४ जो अपेक्षाकृत बड़ा हो ।

उ०—१ मोटा कांधो, मोटी गाल, लाल-राती आख्यां अर लिलाट पर सळ ।—दसदोख

उ०—२ दोलडै डील रो रंगीलो जुवांन, चोडी छाती अर मुळकतो मोटो मूंडो ।—दसदोख

५ जो भावनाओं और गुणों में बड़ा हो । विशेष प्रकार के व्यक्तित्व वाला, उच्च, श्रेष्ठ, महान ।

उ०—१ मोटो दाता मगियो, तोटो भाजै तेण । कीजै मायर मेप स्लि, जुडै जवाहर जेण ।—वां दा

उ०—२ मनै समझ मोटो मिनख, जाचण आवै जीव । वो दउ जावै दिवस, यो दीजै मती दईव ।—ऊ का

उ०—३ स्वामीजी बोल्या-ये कह्यो छो साधू नै लाडू खाणा नहीं तो देवषी रा पुत्रां लाडू वहिरया इम सूत्रां में कह्यो छै । जब ते बोल्या-ऊवै तो मोटा पुरस छा । जब स्वामीजी बोल्या-मोटा पुरस रै मा चली मार्थे रज है ।—भि द्र०

७ जिसकी लम्बाई-चौडाई अधिक विस्तृत हो, जो क्षेत्र-विस्तार आदि दृष्टि से बड़ा हो ।

उ०—१ मोटै पटगनै गै धणी, नांव सुणता ही टाकरां री काळजो गरणाट कर उठ्यो ।—दसदोख

उ०—२ पादू में एक भायै कह्यो-हेमजी स्वामी री पछेवड़ी मोटी दीसै । जद स्वामीजी लबपणै चोडपणै माप दिखाई ।

—भि द्र

८ जो पद या धन के कारण बड़ा कहा जाता हो ।

उ०—१ मोटा मोटा धनवंती बोलवा बोलण लागा के आज दीवांणजी रै हाथा दुस्टी री खातमो व्है जावै तो मिंदर मिंदर सोना रा निगोट ईंडा चाढैला ।—फुलवाड़ी

उ० २ सगाई री हामळ भरी है, जद व्याह नै मळै क्यू लारै छोडो हो । भळै कोई घाव में घोवो तथा साख मे घोचो मार नाखसी । मोटा सिरदार है, म्हांसू ही कोई मोटो घर दबासी ।

—दसदोख

उ०—३ मोटां छोटा मुसदियां, बुलवातो दरबार । जसवत खातर जीव की, सारां लेतो सार ।—ऊ का.

९ गौरवशाली, प्रतिष्ठित ।

उ०—कुळ मोटै वहुवा कुळ धुवा, मांन महातम निरवहै । कण सूप जिहीं औगण तजै, गुण मोताहळ जिम ग्रहै ।—गु रू व

१० जो आयु की दृष्टि से बड़ा हो, वयस्क ।

उ०—१ औ करता मता रै बेटो नरवद मोटो हुवो छै । सु नरवद काळ पूछीयो, उपाघो । सु नरवद दिन दिन जोर चढतो गयो ।

—नैणसी

उ०—२ 'खगार' पण मोटो हुवो । वरस २० तथा २२ मांहे हुवो । साहबी समाही ।—नैणसी

उ०—३ सु साह री बेटी तो सारा ही दीठी । नांनै सू मोटी हुवी ।

—पलक दरियाव री बात

उ०—४ सोचो के जका माईत म्हनै बीस बरसां तक आपरी गोदी मे पाळ पोस नै मोटी करी, बेटो गिणो चाहे बेटी गिणो वांरै वास्तै तो सैंग म्हैं इज हू ।—फुलवाड़ी

११ लम्बा, दीर्घ ।

उ०—१ एक मिणियारा री हाट सू रूदराछ रा मिणियां री मोटी माळा लाई ।—फुलवाड़ी

उ०—२ हरजीमल सेठ रागी थयो जद रुघनाथजी से उरजोजी साधु मोटो ओळियो लेइ वांचवा लागो ।—भि. द्र.

१२ जिसका घनत्व बड़ा हो ।

१३ जिसकी गोलाई बड़ी हो ।

१४ जो महीन पीसा हुआ न हो, दुरदुरा, दरदरा ।

१५ महत्वपूर्ण, विशेष ।

उ०—१ ज्यांरा मोटा भाग जग, मोटा किरतब मन्न । वां हदी आसा धरै, खैराती खटग्रन्न । वां दा

उ०—२ कह्यो के माई रा ऐ समचार सुणियां फीकर ढबणी आवै । चोनिजरियां एक दूजा रो ठणियारो देख ले तो मोटी बात ।

—फुलवाड़ी

१६ अहंकारी, घमंडी ।

उ०—अपणौ आपनै मोटौ मिनख मांनतौ थकौ सासरै रौ पाणी नी पीयै।

१७ गंभीर, गहरा।

१८ असाधारण, कठिन, भारी।

उ०—१ नरनाथ जाण राखै निजर, बाण वखाण विसतरै। व्रजराज लाज मोरी वरण, काज सिद्ध मोटा करै।—रा. रू

उ०—२ खोटै टोटै नग कणिया वीखरगी। माहव मोटै दुख जाटणिया मरगी।—ऊ का

१९ अखरने वाला, खटकने वाला।

उ०—१ सासरियां पेट माथै लात मारनै कह्यौ–राड, हाल भगवान रौ नाव जीभ माथै लेवती डरै कोनी। मोटौ पाप करता तौ डरी ई कोनी, अबै कुळ री लाज बचावण वास्तै इण नाकुछ काम सूं डरै।—फुलवाड़ी

२० खास, असल,

उ०—घर रा माईत जिणनै आप रौ वेटौ जांणै, उण हूबोहूब रंणियारा वाळा मोट्यार नै आपरौ धणी मानणा मे काई सकौ। उणियारौ अर रग–रूप ई तौ सगळा नाता री मोटी पिछाण।—फुलवाड़ी

२१ अत्यधिक, वहुत।

२२ प्रसंशनीय।

उ०—राजभगीरथ राम,जुजठल जस जण जण जपै। कीधा मोटा काम, नांम रहै जेहल नरां।—बा दा

२३ तुलनात्मक दृष्टि से जो किसी से बढकर हो।

उ०—१ नसा मे झूमतौ राजकवर रग–मैल में आयौ। वामणी वीरप रै सागै सांत मुद्रा मे ऊभी ही। मनांग्याना विचार करियौ के आप सूं मोटौ जम विरौबर। लाज वेचणा बिचै मरणौ वाजिब है।—फुलवाड़ी

उ०—२ थानै हजार वार समझाया के रिपिया सूं मोटौ तौ राम ई नी है तौ ई हाल थारै समझ मे नीं आई।—फुलवाड़ो

२४ ज्येष्ठ। (हृ ना मा)

उ०—पाद तणौ परधान, गादरौ साअत गोटौ। असुभ चलै कौ अनुग, मूत रौ भाई मोटौ।—ऊ. का.

२५ खतरनाक।

उ०—आज अपारी इण दुनिया मे लुगाई रौ मोटौ दुसमी मिनख रै सिवाय कोई दूजौ कोनीं, आ वात सूरज सूं ई वत्ती साची है, पण तौ ई आ दूजी वात ई इण सूं कम साची नी है के मिनख बिना लुगाई रौ जमारौ साव अकारथ अर विरथा है।—फुलवाड़ी

२६ अधिक दिनो का, पुराना।

ज्यूं०—मोटौ घी।

२७—भारी, गरिष्ट।

उ०—तळाव पाणी पीवै। खूटै ताहरा कोहर १ वाघीयौ छै तठै पीवै। पाणी मोटौ। जाट वाणीया वसै।—नैणसी

२८ जवरदस्त, वलवान, शक्तिशाली।

उ०—फौजा लगस नेजिया फरहर, घरहर अवागळ दळ घेर। कोटां मोटा कळह केविया, 'जोधा' हरौ करै जुध जैर।

—सादूळजी खिडियौ

रू०भे०—मोटइ, मोटउ, मोठउ,।

अल्पा०—मोटकौ, मोटडौ।

मह०—मोट।

मोटौ–ताजौ–सं०पु० यौ०—हृष्ट–पुष्ट।

उ०—झींटियौ–वोल्यौ–नानाणं जावण दै, दूध मळाई पीवण दै, घी अर वटिया खावण दै, मोटौ–ताजौ होवण दै, पछै खाजै।

—फुलवाड़ी

मोटौधणी–स०पु०—ईश्वर।

उ०—सारै काज सदीव, थारै ज्यूं मोटाधणी। जिती विचारै जीव, पार उतारै तूं 'पता'।—जैतदान बारहट

मोटौनृप–स०पु०— राजाओ मे बडा राजा, सम्राट।

मोटौमालक—देखो मोटौधणी'

मोट्यार—देखो 'मोटियार' (रू भे)

उ०—१ जाती तो आवै थारै दूर का सावळिया मोट्यार। वावा बजरगजी रौ वगलौ हद वण्यौ।—लो गी

उ०—२ मोट्यार चग ले र गाय रै वारै गोरमे जाय पूग्या अर लुगाया चांवटौ माथै ले लियौ।—रातवासौ

उ०—३ वा आपरै मोट्यार रौ राज मे पग मानती, गाव भर री टग जांणती। पण वै सै वाता सफा कूडी नीकळी।—दसदोख

उ०—४ काटण नै किरसाण, वखत–बळ भार्खा लागै। वाया नाखै वाळ मिळै मोट्यारां सागै।—दसदेव

मोट्यारपणौ—देखो 'मोटियारपणौ' (रू. भे)

उ०—वीद मिनखा जैडौ मिनख हौ। नी घणौ रूपाळौ अर नी साव कोझौ। भर मोट्यारपणं ई व्याव व्हियौ पण व्याव रौ अणूतौ कोड नी हौ।—फुलवाड़ी

मोठ–स०पु० [स० मकुष्ठ, प्रा० माउठ] १ मूग की जाति का एक द्विदल अन्न।

उ०—१ जाट वाणिया रजपूत वांमण वसै। धरती हळवा २००। बाजरी मोठ हुवै। खेत कवळा।—नैणसी

उ०—२ पळकती धवळ दूधिया वत्तीसी, जाणं ममोलिया रै विचाळै मोती परळाट करै। थोडी रै माय मोठ मावै जित्तौ ऊडौ खाडौ।—फुलवाड़ी

२ उक्त अनाज का पौधा।

उ०—१ म्हैं अर थांरा महाराणीजी खेत री माठ माथै सूवर अर भाचरिया नै मोठ चरावता हा।—फुलवाड़ी

उ०—२ देखतां देखतां खेत तौ मोठा री हरियाळी सूं लीलाणौ।

—फुलवाड़ी

३ देखो'मोट' (रू भे)

उ०—श्रणचींती घा ग्रकाळ मीत सुणी तो वो दाग में ठेट ममाण नग हालियो। उणरै वडापणा री मोठ मरजाद नंही ई नीं ही। —फुलवाडी

रू०भे०—मठठ, माठ, मोठठ, मोठ।

ग्रल्पा०—मोठियौ।

मोठउ—१ देखो 'मोटौ' (रू भे)

उ०—तूठउ दिइ मोठउ पसाय, नहीं कुव्यसन मात। ग्रन्हाय मारग नगर माहि नवि जाणइ को वात।—नळदवदती रास

२ देखो 'मोठ' (रू. भे)

मोठडो-स०पु०—विंदीदार रगा हुग्रा एक साफा व ग्रोढना विशेष।

रू०भे०—मोटडो.

मोठफळी-स०स्त्री०—मोठ नामक ग्रनाज की फली।

मोठा-स०स्त्री०—पूना के पास बहने वाली एक नदी।(वां दा ख्यात)

मोठियार—देखो 'मोटियार' (रू भे)

मोठियो—देखो 'मोठ' (ग्रल्पा., रू भे)

मोठेडो-स०पु०—मोठ की फली।

मोड— १ देखो मोडो' (मह, रू भे)

उ०—रामदुवारा री वो मोड वांणिया रा सूप्योडो घन सारू गुळाचां खाई तो उण में कीं ऊधी वात कोनी।—फुलवाडी

२ देखो 'मोड' (रू भे)

मोडकी, मोडड़ी—देखो 'मोडी' (ग्रल्पा, रू भे)

उ०—मोडकी मगरी री पाणी ढाळी ढाळ ढळियो रे। ग्रावू थारे पहाड़ां में ग्रग्रेज वढियो रे, काळी टोपी री।—लो गी

मोडणो—देखो 'चोटी वढियो'।

उ०—तिण समे देवडो डूंम बोलियो, रावजी हु पिण स्री माताजी री लार ग्रायो छू। रावळो मोडणो लार छू।—रा व वि

मोडणो, मोडवो—देखो 'मोडणो, मोडवो' (रू भे)

उ०-१ माको मोगर यटा मोडो,घातै लवा दळा विच घोडो। देसा देसां ऊपरै दोटो, चढियो काळि चालण चीतोडो।—गु रू व

उ०—२ विरह हार ग्रोडती, वलय मोडती, ग्राभरण भांजती, वस्त्र गाजती, निकरणीकलाप छोडती, मस्तक फोडती, वक्षस्थल ताडती, कचूक फाडती ।—व स

उ०—३ ग्रागमि वैस्वानर प्रज्वालइ, पाताल कन्या प्रत्यक्ष देखाडइ, कडयडाट करतां घनग्रह मोडइ, पाताल वलि तणा वधन छोडइ ।—व स

उ०—४ पय पुण तरतर ग्रोटइ, मोडइ ए तम्वर डालि। उज्जवल निम्मल सरसीय सरमीय लेयइ वाल।—जयसेवर सूरि

मोडली—देखो 'मोडी' (ग्रल्पा, रू भे)

उ०—मुरधर स्हैगी मोडली, वर तो पदमा सींग। नर नेगी नव कोट रा, सीग सवाई सींग।—म मानसिंह

मोडासिया-स०पु०—राठौड़ वंश की एक उप शाखा।

मोडियाल-स०स्त्री०—वह हरिणी जिसके बच्चे कृष्ण हरिण होते हैं। इस हरिणी के सींग नही होते हैं।

मोडियोडी—देखो 'मोडियोडी' (रू भे)

(स्त्री० मोडियोडी)

मोडियो—देखो 'मोडो' (ग्रल्पा रू भे)

मोडो-वि०[स० मुण्डित] (स्त्री० मोडण, मोडी) १ जिसका शिर मुंडा हुग्रा हो, कटे हुए बालो का।

उ०—खेदो करै राजा घणो बोलै वचन ज काया रे। कुण वैठा इहां ग्राय ने, करि करि मोडा माथा रे।—जयवाणी

२ उद्दण्ड, वदमाश।

३ जो तीक्ष्ण न हो, भोंटा।

४ जिसके शिखर या चोटी न हो।

स०पु०—१ साधु, सन्यासी, योगी।

२ ढोंगी ग्रौर पाखण्डी साधू।

उ०—राजा नफर वुलाय, जावो थे वेगा धाय। सुकोमल साध इण मोडा ने पकडो जायने ए।—जयवाणी

३ भिखारी, भिक्षुक।

उ०—केई कहै पूज पधारिया, देवे ग्रादर मान। केई कहै मोडा क्यू ग्राविया, वोलै कडवी वाण।—जयवाणी

४ विना सींग का पशु।

५ स्त्रियों के शिर का एक ग्राभूषण।

उ०—ग्ररे सिरिया मोडा लहलहहि, कसतूरिय महिवटु। ग्ररे न ... ट परि हुयउ देवगण भाउ।—प्राचीन फागु सग्रह

ग्रल्पा०—मोडियो।

मह०—मोड।

मोडो-स०पु०—मुसलमान रगरेज। (वीकानेर)

मोढो-स०पु०—१ कधा।

उ०—१ मोटो खाघो, मोटो गळ, लाल-राती ग्रारूयां ग्रर लिलाड पर सळ। मोढां माथै तेल सू सरगळ वाल छिव छिवै भरै, सिंदूर रा टीका सू ढाळवो तपै तिरै।—दसदोख

उ०—२ हरवखत हिमरा चढतो फिरै। लूठारै लोढै पर गधेवारै मोढै लाग्यो रैवै।—दसदोख

उ०—दलाल ऊभै हो परै र हाथ जोडया। होड-होड किसनजी ही कैणै सू मोढा मोडया।—दसदोख

२ देखो 'मूढो' (रू भे)

उ०—तठा उपरांत करि नै राजान सिलामति मांखिरा उकासिया सूग्रर माथरां रा मोढा फाड फाड नै नीकळिया है।—रा सा स.

मोण-स०पु०—१ ग्राटे या मैदे को भिगोने मे पूर्व, उसमे डाला जाने वाला घी का मिश्रण।

२ वह परतदार रोटी जिसकी परतों मे घी लगाया गया हो।

रू०भे०—मूण, मोंण, मोयण, मोवण।

३ देखो मौन' (रू भे)

४ देखो 'मोम' (रू भे.)

मो'णो, मो'बो—देखो 'मोहणो, मोहबो' (रू भे)

मोत—देखो 'मौत' (रू भे)

उ०—१ हाता ठाली हालणो, जांभी सपत जोड़। मोत सरीखी मनख रै, खलक महीं नह खोड।—बा दा

उ०—२ कळ चाळो कळ अगळो, 'रूपां'रांमचदोत। अमी उबारण आपणां, मेछा कारण मोत।—रा रू

मोतदिल—वि०[अ०मुअ्रतदिल] जो न बहुत गरम और न बहुत ठडा हो।

मोतबर, मोतबिर—देखो 'मातवर' (रू भे)

उ०—१ खीवसर गांव री मोतवर अर इज्जतदार चोधरी इण तरै सू बुरी हालत मे पड्यौ हौ के उणरै गाव री पूनमी नाई जो काले ईज सहर आयौ हौ उठीनै सू गुजरयौ, वणौ चोधरी नै ओळख लियौ।—रातवासौ

उ०—२ नायक देस में मोतबिर सवळा मेलै जका भला आदमी भली चाल मे होय अर साचो सीलवत निरलोभी होय।—नी प्र

मो'ताज—देखो 'मुहताज' (रू भे)

उ०—सोनजी री कड़ूवी गांव में आंखै आयी हुयग्यी। मरतक भडग्यी। दाणै-दाणै रा मोताज हुय रैया है।—दसदोख

मो'ताजखांनौ—स०पु०—गरीवो या याचको को दान देने का स्थान।

मोताद—स०स्त्री [अ मुअ्रताद] १ निश्चित मात्रा।

उ०—सवा सेर घिरत, दोय सेर चीणी खांड, च्यार सेर गेहू रौ आटौ परभात रा, आथण री दससेर चावला री खीचडी, एक सेर घिरत इतरी मोताद नित री करदी।—सूरे खीवैकांधलोत री बात

रू०भे०—मौताद, मोहताद।

मोताहल—स०पु०—१ तारा।

उ०—मोताहळ स तळ हुवा,रैण गळती दीठ, प्रात विछोहो सजना, उठी विरह भगीठ।—पंना

२ एक प्रकार का हाथी।

रू०भे०—मोताहळ।

३ देखो 'मुक्ताफळ' (रू भे) (ह नां मा)

उ०—१ दुय गिरि चदण अढार, वरै जळवव मोताहळ। सेर एक सोवन पच रूपक भाळाहळ।—नैणसी

उ०—२ मोताहळ उतारि माळ तुळछी गळ धारै। करै तिलक म्रतयका, तिलक कूकम वीसारै।—रा रू

उ०—३ कमळ पत्र कर चरण कठ मोताहळ माळा। प्रविस अग-मन चग, गग वाणं बळघाग।—गु रू व

उ०—४ हस सुखाळौ मानसर, चुगि मोताहळ खाय। हरीया दूजा ना भखै, लाघणियौ रहि जाय।—स्री हरिरांमदासजी महाराज

मोतिडौ—देखो 'मोती' (अल्पा, रू भे.)

उ०—१ घोडौ तौ मीजै घरमी हांसलो, मोतीड़ै जडी लगाम ओ। जांमी विराजै घरमी रै केसरिया, पांच मोहर गज पाग ओ।
—लो गी

उ०—२ आउवा ने आसोप घणिया मोतीडां री माळा रे। वारै' न्हाको कूचिया तुडावो ताळा रे भगडौ आदरियौ।—लो गी

मोतिणहार—स०पु०—मोतियो का हार, माला।

उ०—अदभुत रचि सोल स्रगार उरि, मनोहर मोतिणहार। गीत गान कठि मधुर, आलापति चरणि लागइ —स कु

मोतियदाम—स०पु० [स० मौक्तिकदाम प्रा०-मोत्ति अदाम] एक वर्ण वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे चार जगण होते है। (रा रू)

रू०भे०—मुत्तियदाम, मोतीदाम, मौक्तिकदाम।

मोतियमाळ—स०स्त्री० [स० मुक्ता-माल] मोतियो की माला। हार।

उ०—भणै पग सिद्ध सातूं मुनि माळ, मेल्है पग मांणक मोतिय-माळ।—ह र

मोतिया—वि०—१ मोती सम्बन्धी।

२ मोती जैसे रग का।

३ मोती के आकार का

स०पु०—१ मोती के समान रग वाला वस्त्र।

२ हल्का गुलाबी रग, जिसमे हल्की गुलाबी झाई के साथ कुछ पीली झाई दिखाई देती है।

३ एक प्रकार का दानेदार सलमा।

स०स्त्री०—४ एक लता विशेष जिसकी कली का रग मोती जैसा होता है। इसका इत्र बनता है।

मोतियावध—देखो 'मोतियाबिंद' (भे)

उ०—सो रूप गुणा कर निपट अवल पण आख्या सजम मोतिया-वध सो कुवारी वेटी घर मांहे।—कुवरसी सांखला री वारता

मोतियाबिंद—स०पु०—नैत्र का एक प्रसिद्ध रोग।

वि० वि०—इसमे नैत्र के पर्दे पर मांसादि तत्वो की एक झिल्ली बन जाती है और रोशनी पर छा जाती है। इससे आख से दीखना बद हो जाता है। इस झिल्ली को शल्य चिकित्सा द्वारा हटाया जाता है।

रू०भे०—मोतियावध।

मोतियौ—१ देखो 'मोती' (अल्पा, रू भे)

२ देखो 'मोथियौ' (अल्पा, रू भे)

मोतींड, मोतींडौ—स०पु० [स० मुक्ता+अड] गाय व भैंस के प्रसव के समय बच्चे से पूर्व निकलने वाला एक पानी का गोला। इसकी झिल्ली बहुत पतली होती है और यह बाहर आते ही फूट जाता है।

मोती—स०पु० [सं० मौक्तिक प्रा० मोत्तिअ] १ छिछले समुद्र या रेतीले तटों के सीपो से निकलने वाला एक प्रसिद्ध बहुमूल्य रत्न।

(अ मा, नां मा, ह ना मा)

उ०—१ मणिया रयण अमोल, रोप भ्रणियां मोती रुख। मोहत घणिया सीप, मिळै असिवर फणियां मुख।—व भा

उ०—२ नीर निरासा सीप मुख निजकण मोती होय। पेम उदै भई आतमा, हरिया हरि सुख होय।

—स्री हरिरामदासजी महाराज

पर्या०—आधिकुभ, उदकज, गुलका, जळज, दधिज, धीरठभख,

प्रसत, मुक्तज, मुक्ता मुक्ताफळ, रसत, रेम, रमउद्भव, ससगोत, मारग, सीपसुत मुक्त, मुक्तज स्वात, हम-मव।

२ एक प्रकार का आभूषण। (अ मा)

३ घोडे का रग विशेष या इस रग का घोडा।

उ०—मोती सुरग कमेत, लखी अवलक्ख फुलवारी। रग जडाव हम रग, हरी सुनहरी हजारी।—सू प्र

४ रहस्य सम्प्रदाय के अनुसार मन।

५ कमेरा का एक उपकरण।

६ जागीरदारो अथवा अमारों के लडकों को सम्मान पूवक सम्बोधन करने का एक शब्द।

७ सफेद, श्वेत। (डि को)

रू०भे०—मुगति, मुगतौ, मुगतीक, मुत्ति, मुत्तौ, मोती।

अल्पा०—मोतिडौ, मोतियौ, मोतीडौ मोतायडौ।

मोतीग्रालाडू—स०पु०—बूदा के लड्डू, एक मिष्ठान्न।

उ०—महोज्वला ईमा सेवईग्रा लाडू, मोतीग्रालाडू दल लाडू, बीवा लाडू, झगर लाडू।—व० स०

मोतीकडौ—स०पु०—१ हाथो मे पहनने का स्वर्ण कगन जिसमे मोती लगे हो।

२ मोतियों का हार।

मोतीडौ—देखो 'मोती' (अल्पा., रू भे)

उ०—१ जीहो-दीधा मेगल मोतीडा, लाला, दीधा हयवर हार, जीहो-दीधा सोनो सावटू लाला, दीवा अरथ भडार।—जयवाणी

उ०—२ सीस सुरगी चूनडी चमकें, मोतीडां री माळा दावणी।
—रसीलैराज रा गीत

मोतीचुर, मोतीचूर मोतीचूरि—स०पु०—१ मोती के आकार की बूदियो का बधा हुआ लड्डू।

उ०—१ नवगढिया बाजोट माथ सोना रा थाळ में मोतीचूर रा लाडू परूसिया।—फुलवाडी

उ०—२ दोनू ई अेकण मागे हूनटा देय आप रा हाथ छुडाया। मोतीचूर रा लाडू निगळतां जवाब दिया-मुरख म्हें के थे।
—फुलवाडी

२ एक प्रकार का वस्त्र विशेष।

उ०—जरजरी मलवारी लाहरी अघोतरी अमरी गगाधारी मोतीचूर टमर नमरू रत्न कवल छाइल मखवल अगरस माउला उरनामा।—व स

मोतीचोपडौ, मोतीचोवडौ—स० पु०—कान का एक आभूषण विशेष।

मोतीज्वर—स०पु०—एक प्रकार का ज्वर, मधुरज्वर।

रू०भे०—मोतीभरो, मोतीझिरो।

मोतीझरौ, मोतीझिरौ—स०पु०—१ देखो 'मोती ज्वर' (रू भे)

मोतीदाम—देखो 'मोतियदाम' (रू भे)

उ०—२ सहस विनव सौ रूप सुभ वलि छावीस बताइ। दीसै मोतीदाम रै प्रघट जगण चत्र पाय।—ल. पि

मोतीनीलौ—स०पु०—एक प्रकार का शुभ रग का घोड़ा। (शा हो)

मोतीपाक—स०पु०—एक प्रकार का पकवान्न जो बूदी और दूध के मावे से बनता है।

उ०—मिसरी मोतीपाक भुरटरी इतरी खोडी। रस गुलिया रै रूप मधुर है होडा होडी।—दसदेव

मोतीपुड, मोतीपुडौ—स०पु०—शुक्ति या सीप के अन्दर का वह स्थान जहां पर लाल, पीली व हरी झाई पडती हो।

उ०—तठा उपरायत पुराणै अगर री चिकायौ सूधौ मगायजै छै। सीसी खुलै छै। मोतीपुडै री सीप रा प्याला मे घात हाजर कीजै छै सूधौ बगला लगायजै छै।—रा सा स०

मोतीवेल—स०स्त्री०—वेले का एक भेद, मोतिया वेला।

मोतीभात—स०पु०—एक विशेष प्रकार का भात।

मोतीमाळ, मोतीमाळा, मोतीयमाळा—स०स्त्री०—१ मोतियो की माला, हार।

उ०—वागा वेस सोहामणा, भूखण मोतीमाळ। कनक कचोळा जडाव रा,सुदर सोवन थाळ।—ढो मा

२ बत्तीस मात्रा व २४ वर्ण का एक छन्द विशेष, जिसमे आठ जगण होते हैं।

उ०—करि अठ जगण बत्रीस कळ, वरण बीस चत्र विद्धि। गति इणि मोतीमाळ गुण, पणि लखपत्ति प्रसिद्धि।—ल. पि.

मोतीयडौ—देखो 'मोती' (अल्पा., रू भे)

उ०—आट करु करि कनक मइ, सखी मोतीयडै पुरू चूक कि।
—का दे. प्र

मोतीयौ—देखो 'मोती' (अल्पा, रू भे)

उ०—१ गुळदारक मेतीयौ, हस हरीगत मोतीयै तीतर मार वसै। अवलख कवूतर लखीयौ, ऊजळ वोद वीलाधीयै वोर वसै।
—किसनजी दधवाडियौ

उ०—२ हरि जळ वूठो मोतीया, हरीया सिर सिख रांह। सुगणा मोती चुणि लिया, हाथि नही निगुणाह।
—स्त्री हरिरांमदासजी महाराज

३ देखो 'मोथियौ' (अल्पा रू भे)

मोतीसर—स०पु०—एक जाति या वर्ग जो चारणो के याचक होते हैं। (मा म)

२ उक्त जाति का व्यक्ति।

मोतीसरी, मोतीसिरी, मोतीहरि—स०स्त्री०—मोतियों की माला।

उ०—१ ललाटि तिलक, कने झलक, बाहे वलय, अगुलि अगुलियक, कठि कठिका, गलड हार, माथि मोतीसरी, हृदय सोवरणए स्तरि, हाथै कक्णरय झलटकार।—व स.

उ०—२ जउ सूकी तुहइ वुलसिरी, जउ वीधी तुहइ मोतीसिरी। जउ डुहलू तुहइ गगाजल जांणि, जउ थोडी तुहइ सपुरिस वाणि।
—नळदमदती रास

उ०—३ पिक कठ गौमति चीठ परठं,सघण वण मोतीसरी । पर-
वघ हीरा जडित पाखळ कुमम माळा सकरी ।—मा वचनिका
मोतीहार–सं०पु०—मोतियो का हार ।
उ०—कुंडल कानि सोभइ, मोतीहार कठ कदलि विवेक हीइ अनइ
धरम हनइ सयोगि ।—व स
मोतो–उ० स्त्री०—१ मृत्यु ।
उ०—घर त्याग करण परघर विघन, आठू पहर ऊघारिया । जीवनें
देत मोता जिके, पोतादार पधारिया ।—ऊ का
२ देखो 'मोयौ' (रू भे)
मोथ–सं०स्त्री०[सं० मुस्ता] १ एक प्रकार की घास विशेष । (उ र)
२ देखो 'मोथौ' (मह रू भे.)
मोयाव–सं०पु०—१ इनाम, पुरस्कार ।
उ०—मीठा-मीठा मूण-पट्ठा मतीरा राजाजी तांई पुगावै अर
मोयाव पावै ।—दसदोख
२ धन्यवाद, वाहवाही । शाबासी ।
उ०—१ गांव में पूरो भेद भाव पाळे है । ऐरा गेरा नत्थू खैरा लोग
वारणे वैठ्या चुगली करै चींचका मारै है । सरपच सू मोयाव
पावै, नामून कमावै है ।—दसदोख
उ०—२ भोळा भोळा बाळ करै रोळा रडकावै । भोळा भर घर
लाय, मुदिन मोयावा पावै ।—दसदेव
मोयामाळ–सं०स्त्री०—१ जैसलमेर राज्य का एक नामान्तर (व्यग्य) ।
२ मूर्ख-मण्डली ।
मोयियौ–सं०पु०—१ एक प्रकार का बारीक घास, जिसकी जड मोती
के समान व सफेद होती है । खाने में बडी मीठी होती है ।
उ०—गूदा, गूदिया, आमलियां, गेगणियां, डांखिया, धीतोला,
मोथिया, केडूला, खोखा, मामालूणी, काचरा, काकडिया खरबूजा,
अर मतीरा वास्तै तडफा तोडती —फुलवाडी
रू०भे०—मोतियौ, मोतीयौ ।
२ देखो 'मोथौ' (अल्पा, रू भे)
मोयू—देखो 'मोयौ' (रू भे)
मोयौ–वि०—१ मूर्ख, नासमझ अनपढ, गवार ।
उ०—१ लोग मागडो नै कह्यो-मोया कना सू नामीं कावळ ढायी ।
कीं तो म्हानैं ई बट दे । म्है थारी मिळती मारी ही ।—फुलवाडी
उ०—२ तो मोया रामचदरियै-री हाटरी लच्छाभात क्यों लायो
नी ? —वरसगाठ
२ ढीला, सुस्त ।
सं०पु० [सं० मुस्तक] १ नागर मोथा नामक घास व इस घास
की जड ।
२ सूअर, वराह ।
उ०—गिड गरुवो आगमण न आवै, सब हमारै माह सग्राम ।
मोयौ माल चरै नर मोटा, गंड मूळै मूळै वह गाम ।
—रावमलीनाथजी रो गीत

रू० भे०—मोतौ, मोयू ।
अल्प०—मोथियौ ।
मह०—मोथ ।
मोद–सं० पु० [सं०] १ आनन्द, प्रसन्नता, खुशी, हर्ष ।
(अ मा, ह ना. मा.)
उ०—१ अटे सोध अवरोध अचाणक, बोध मोद विसराए । प्राण
नाथ हा नाथ जोधपुर, गौम सोध गणणाए ।—ऊ का
उ०—२ अर मातामह री सभा रै अदर दौहित्र कुमार प्रथ्वीराज
नू देखि मोद पायौ ।—व. भा.
उ०—३ बरस चतुरदस है वन मे विचरण, म्हानैं पिता वचन-
परवाण । आग्या आगै है माता म्हारी मोद सू ।—गी रा
२ उत्साह, जोश ।
उ०—१ वीरा काज वणावियौ, 'बांकै' वीर विनोद । वधसी
सुणिया वाचिया,मन मै वीरां मोद —ऊ का
उ०—२ इक कहत मोद अथाह, गिण मच्छ कच्छप ग्राह । जळ
गहर सागर जोर, तिण वीच थाह न तोर ।—रा रू
उ०—३ जे नरक मे ही उठ जावै तो देई-देवता अर डोरा-डाडा
नैं नीं भूलै । इमैं कांमा मै धणै मोद सू मालै ।—दसदोख
३ गर्व अभिमान ।
उ०—१ ठकराणी वेचेतै होय गुडगी । ठाकर'नै मोद छिट्यौ के
ठकराणी कित्ती पतिव्रता अर सुलखणी । धणी रै जोखा रो वात
सुणता ई सुव वुघ पातरगी ।—फुलवाडी
उ०—२ धनरो मोद आयग्यो, मनडो उचाड खायग्यो । जाट,
पूरतो आदमी, लपोडो'र जिद चेतै आयग्यो । वस विना वस नीं
कटै । आ सोच वैठ्यौ ।—दसदोख
४ मान प्रतिष्ठा,गौरव ।
५ सुगध, महक ।
[सं० मद] ६ शराव मदिरा ।
उ०—सो किण भाति रो दारू । उलटै रो पलटै पलटै रो ऐराक,
ऐराक रो वैराक, वैराक रो सदळी, सदळी रो कदळी, कदळी रो कहर
कहर रो जहर, जहर रो कटाव, कटाव रो नेस, नेम रो जेस, जेस
रो मोद, मोद रो कमोद, कमोद रो हूळ ।—रा. सा स
[सं० मधु] ७ शहद मधु ।
८ एक वर्ण-वृत्त जिसमे पांच भगण एक मगण एक सगण और
एक गुरू होता है ।
९ हिरण्याण पक्ष का एक असुर, जिसका देवासुर सग्राम के समय
वायु ने वध किया ।
१० ऐरावत कुलोत्पन्न एक सर्प जो जन्मेजय के सर्प सत्र मे दग्ध
हुआ ।
(सं०स्त्री०)अनाज की भरी गाडी ।
मोदक–सं०पु० [सं०] १ लड्डू नामक मिष्ठान्न ।
उ०—१ मधुकर भ्रमत सुवास मद, माल सुवाकर भास । मोदक

कर मन मोम्मय, नित जय ग्यान निवास।—वा दा

उ०—२ मोदक थाल भरी करी जी, मदिर माहे थी जाय।
केशरीसिंह जटा जिमा जी, वेहराया उलटे जी भाव।—जयवांणी

उ०—३ मोदकादि बहु चक्र मझारा। पाक अनें अवलेह अगारा।
—सू प्र.

२ किसी ओषधि का लड्डू।

३ एक वर्ण-वृत्त, जिसके प्रत्येक चरण मे चार भगण होते है।

४ एक वर्ण सकर जाति विशेष।

वि०—१ आनन्द-दायक, प्रसन्नता देने वाला।

२ उत्साह वर्धक।

रू०भे०—मोदिक, मोयग।

मोदकर—स०पु० [स०] एक प्राचीन मुनि।

वि०—आनन्द-दायक।

मोदण—स०पु०—१ ईश्वर। (नां मा)

२ अनाज ढोने समय गाडी पर लगाया जाने वाला बडा कपडा।

मोदणौ, मोदवौ—क्रि०अ०—१ प्रसन्न होना, हर्षित होना।

२ उत्साहित होना, उत्तेजित होना।

३ गर्वित होना अभिमान करना।

४ महकना, सुगध देना।

मोदणहार, हारौ(हारी), मोदणियौ—वि०।

मोदिओड़ौ, मोदियोड़ौ, मोद्योड़ौ—भू० का० कृ०।

मोदीजणौ, मोदीजवौ—भाव वा०।

मोदिक—देखो 'मोदक' (रू भे)

उ०—१ न लहइ ममवाण्उ न लहइ ग्रास। महिया मोदिक तीह ना दास।—वस्तिग

उ०—२ तेत्रीस कोडि देवता तणु प्रतिहार, सींदूरइभार, सेवग्रांभार, मोदिक आहार एहवा श्री गणेस वरणवीता सोमड।—व स

मोदिकवलभ—स०पु०—गणेश, गजानन

उ०—प्रथम रग भरै गणनायक, प्रथम लाछण फलदायक, मकलमोदिक, मोदिकवलभ जयति विजयति गणनायक।—व स

मोदियउ—स०पु०—एक वस्त्र विशेष।

उ०—चीणउसीउ चीणउसीउ मलउमीउ आउचीयउ मूगनउ मयउ मगलिक मेदियउ सीलउर ।व म

मोदियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ प्रसन्न या हर्षित हुवा हुआ २ उत्साहित या उत्तेजित हुवा हुआ ३ गर्वित हुवा हुआ ४ महका हुआ।
(स्त्री० मोदियोड़ी)

मोदियौ—स०पु०—१ गाडी पर लगाई जाने वाली घास फूस की वह पट्टी जिसके बीच मे अनाज आदि कोई वस्तु भरी जाती है।

२ उक्त गाडी मे भरी हुई वस्तु।

मोदी—स०पु० [फा० मद्‌म] दाल, चावल आटा आदि खाद्य सामग्री एव किराने का सामान बेचने वाला व्यापारी

उ०—१ एक कुमारी उग सामै न्यारी ई पाणी भर देती। मोदी रै अठा सू न्यारो सामान लाय देती। वामणी नीपचोप नै सुपराई सू चौकी लगाय नै आपरी रसोई बणाय लेती।—फुलवाडी

उ०—२ तठा उपरायत मोदियां नै हुकम हुवो छै। मूजाई साक सारी वसत मीची मीठाण वेसवार मरब लेय राती—नाडी चालज्यो।
—रा मा स

मोदीखांनौ—स०पु०—१ भोजन या खाद्य-सामग्री रखने का स्थान, रसोडा। भण्डार।

उ०—घोडा रो रातव दाणी, महीनदारां रो महीनो, मोदीखांनै री जिनस और ही सारा लोगा रो सरजाम सरतत कर घोडा नू खुद रै नेत मोळाय, हाथियां नू गुळवाड री वाड भोळाय आय गैरमहला रहियो।—डाढाळासूर री वात

२ मोदी की दुकान।

उ०—१ बाजार रे अधवीच गया। व्योपारी नै मोदीखांनै सराफै मुकीमां री दुकानां कन्है गया।—गौड़ गोपाळदासरी वारता

उ०—२ बाजार री लोग मोदीखांनो पेशखांनो कारखानो सारा लेय वहिर हुआ।—कुंवरसी साखला री वारता

मोदीपगा—स०पु०—एक प्रकार का बैल (अशुभ)

मोदीलौ—वि०—१ गर्विला, अभिमानी।

२ प्रसन्न, खुश, हर्षित।

मोदोख—स०पु० [स० मोदोष] एक आचार्य जो विष्णु के अनुसार वेददर्श नामक आचार्य का शिष्य था।

मोनि, मोनी—देखो 'मून' (रू भे)

उ०—मैं लख चौरासी धारि जोनि। का बोलत का गहत मोनि।
—श्री हरिरामदासजी महाराज

२ देखो 'मौनी' (रू भे)

मोपा—स०पु०—राठौडों की एक उप शाखा।

मोफत—देखो 'मुफ्त' (रू. भे)

उ०—की पर राज करै अर कीरै घरा मोफत रो माल चरै।
—दसदोख

मोफतियौ—देखो 'मुफ्तखोर'।

उ०—मोफतिया इसा मौका मौज-मजा ही किया करै है।
—दसदोख

मोव—स०पु०—प्रथम प्रसव।

उ०—मोव री इण बेटी पछै दो भाया वळै व्हिया। वै उठै ई दादी रै पाखती रैं'गा।—फुलवाड़ी

रू०भे—मोम।

मोवण—स०स्त्री०—१ प्रथम प्रसव की पुत्री, बडी लडकी।

२ विवाह में लग्न के दिन कन्या के पिता के घर मे रोपा जाने वाला काष्ट का छोटा स्तम्भ, जिसके ऊपर मिट्टी का कुल्हड़ रखकर पूजा की जाती है।

रू०भे०—मोमण।

मोवत—देखो 'मुहब्बत' (रू भे)

उ०—१ मात पिता की छोडी मोवत, मोजा मेहडली। सात जात मोडा सू साधी, नाहक नेहडली।—ऊ का

उ०—२ खेता अर पसुवा रा झगडा-झटा निवेडती, गाव मोवत रा न्याव-तपास निमटावती तथा आपरै सीलसतोख सू सगळा री सीरी-मीरी वणी रै'ती ही।—दमदोव

मोबद, मोविद-स०पु० [अ० मुअविद] १ पारसियो का धर्मोपदेशक, धर्मज्ञ।

२ पुजारी, सेवा-पूजा या भजन करने वाला।

मोबियो-स०पु०—एक प्रकार की मोटी मजबूत और अधिक चौडी खपरैल जो छाजन मे वडेरे पर मगरा' बांधने मे काम आती है।

मोबिलआयल-स०पु० यो [अ] मशीन से चलने वाली मोटर, गाडी आदि वाहनों के काम आने वाला तेल मशीन का तेल।

उ०—वनाजी थारी मोटर ने मोबिलआयल, जान्या ने सरवत प्यालो, वनाजी थे आप पीवो भागडली चाबोना लूग सुपारी।—लो गी

मोबी, मोमी-स०पु०—१ प्रथम प्रसव का पुत्र, वडा लडका ज्येष्ठ पुत्र।

उ०—१ हरसा मेरा बाला रै, आवैली सावणियां री तीज। मेरा मोबी वेटा रै, जग मे सिंजारा रै वाई का कुण करेला।—लो गी

उ०—२ इत्ता मे सब सू मोबी राजकवर मून तोड नै दोनू छोटकिया राजकवरां सामी देखनै कह्यौ-थें दोनू हाल नैना टावर हो।—फुलवाडी

२ वडा भाई।

उ०—१ आणा लेवणनै अैधूला आया दरसण देवण नैं मोमी मुळकाया।—ऊ का

रू०भे०—मोहभी,

मोम-स०पु० [फा०] १ मिट्टी के तेल से रासायनिक क्रिया द्वारा निकाला जाने वाला चिकना एव गाढा पदार्थ, जिसकी वत्तियें बना कर उजाले के लिये जलाई जाती है।

उ०—जिण सिर वाहै खग्ग बळ, देव सराहै जोय। सिलह अटक्का मोम सम, हुवै वटक्का दोय।—रा रू

२ शहद की मक्खियो द्वारा छत्ता बनाने का चिकना व नरम पदार्थ।

३ यश, कीर्ति।

४ भूमि, पृथ्वी।

५ युद्ध।

६ दयालु।

रू०भे०—माम, मूम, मूम।

मोमजामो-स०पु०—वह कपडा जिस पर मोम का रोगन चढा हुआ हो।

मोमदसाहिमोळियो-स०पु०—विशेष रगों का एक साफा।

उ०—दूजा दूजै वैस, निरमळ वागै काछवो। मूर्छा बळ सव सेस, मोमदसाहिमोळियो।—अग्यात

मोमदिल-वि०—जिसका दिल बहुत कोमल हो, सहृदय, भावुक।

मोमन-स०पु० [अ० मोमिन] १ धर्म निष्ठ मुसलमान।

२ इस्लाम और खुदा पर ईमान लाने वाला।

३ जुलाहा मुसलमान।

रू०भे०—मोमिन।

मोमना-स०पु०—घोडो की जाति।

उ०—अन्ने कम की तेजह अथाहि। मोमना चेचि कहि तुरंग माहि।—सू प्र

मोमनी-स०पु०—एक प्रकार का वस्त्र।

उ०—सू किण भात रा वागा छै? सिरीसाफ भैंग्व चौतार कसबी महमूदी फूलगार अब-रस सेला बाफता डोरिया मोमनी तनजेव।—रा सा स

मोमबत्ती-स०स्त्री०—मोम नामक पदार्थ की वत्ती जो उजाले के लिये जलाई जाती है।

रू०भे०—मू'वती, मूबत्ती।

मोमाखी-स०स्त्री०—मधु मक्खी।

उ०—काळी चूदडो री टिपकिया पळाक पळाक करती ही। चूदडी ई साव नवो दीसै। आ सोचनै वौ चोर उण पोटळी ने सैंठी पकडनै जोर सू हचीड दियो। हचीड देता ई अलेखू मोमाखिया उण रै दोळी व्हैगी। इण भात छिडियोडी माखिया उणनै ठौड ठौड सू डम न्याकियो।—फुलवाडी

मोमाळ-स०पु०—मामा का घर, ननिहाल।

मोमिन—देखो 'मोमन' (रू भे)

उ०—सो मोमिन मोम दिल होइ, सांई को पहचाने सोई। जार न करै हराम न खाइ, सो मोमिन वहिस्त मे जाइ।—दादू बांणी

मोयग—देखो 'मोदक' (रू भे)

मोयण—देखो 'मोण' (रू भे)

मोयरेदार—देखो 'मायरादार' (रू भे)

मोयल-स०पु०—१ चौहान वश की एक उप शाखा।

मोयला-स०पु०—१ कुम्हारो की एक उपशाखा। (मा. म)

२ मिट्टी के वर्तन बनाने व वेचने का व्यवसाय करने वाली एक मुसलमान जाति।

मोयलो-स०पु०—(स्त्री० मोयली) १ 'मोयला' जाति का मुसलमान।

२ मोयला जाति का कुम्हार।

३ देखो 'महोलो' (रू भे)

मोरचवोस-स०पु०—दातार के गुण गाकर आहार लेने पर होने वाला एक दोष। (जैन)

मोर-स०पु० [स०मयूर, प्रा०मोर] (स्त्री०मोरनी) १ प्राय चार फुट लंवा एक अत्यन्त सुन्दर पक्षी जिसकी गर्दन लम्बी तथा छाती का रग वहुत गहरा व चमकीला होता है। सिर पर किलगी वनी होती है, पखों पर चदोवा बना हुआ होता है। (अ मा., ना मा, ह ना मा)

उ०—सूंदर सहस फणां करि मामली, दीर्घ मूरति दोइ। मेघ घटा नै देखी मोर ज्यूं हरखित मुझ मन होइ।—घ. व ग्र

पर्या०—अहिरिप्प, कळापी, कळाग्रतमंडी, कुम, केकी, खग, घणनादानुळ, घणमंड, नीरदनादानुळ, नीळकंठ, पनगसवार, भुजगपनग, चित्रकर, प्रखल, प्रसणपनग, बरही, रथकुमार, वरहण, विरही, व्याळवळ, मारग, सिखी, सिखंडी, सिहंड, सिखावळी, मुकळापग, मेनानीरथ।

रू०भे०—मवर, मोरू, मौर, म्होर।

अल्पा०—मुरलो, मुरेलो, मोरडो, मोरलियो, मोरलो, मोरियो, मोरूलो, मौरियो, मोरीयो, मोरचो।

२ मुसलमानों की एक जाति।

३ रंग विशेष का घोड़ा।

उ०—अिखणा चक्कवा मोर कूदणा क्रमा किमोर। ऐराकी ऊन्हा ग्रनल, भाडजी भारवी भलन।—गु रू व

४ देखो 'मौर' (रू भे)

उ०—१ राजा रे मोरां री घाव साजो हुवो ने बाळक मोटो हुवो। —रा व वि.

उ०—२ पुचकारतो बोल्यो—हो, माई हो। वळदा रा मोर थापल नैं नीचैं उतरियो।—फुलवाड़ी

उ०—३ जोधा जोध जूटता अढार दीह भागा जोर, बूंदी थान बागा जगी जैत रा विधान। जमी मोर लागा नीमा पथ लागा अहू जेठी, जोरावर चोथो जेठी जांगियो जिहांन।

—ऊमेदसिंघ हाडा री गीत

उ०—४ निजारो पूग रह्यो छै। गूदगरी, रांमगरी, गुळवाड री वाड़ा लाग रह्या छै। पग-पग नाळा-नीभरणा वह रह्या छै। पण ही आंबा-महुवां रा मोर झुक रह्या छै।

—डाढाळा सूर री वात

५ देखो 'मोहर' (रू भे)

६ देखो 'मोरा' (रू भे)

उ०—चंद चकोर तणी परि, मांनंउ तू मन मोर रे।—स कु

मो'र—देखो 'मोहर' (रू भे)

उ०—रुपियो-रुपियो दियो बांमणां, मो'रां चारण भाट। अमी मो'र दी नानगसाही, मागी दियो जुडाय।

—डूंगजी जवारजी री छावळी

मोरउ—देखो 'मोर' (रू भे)

उ०—१ चंद सूरिज साख सहू, मोरउ जीवन जांणउ रे। जांणउ नइ आणउ वर वेगिइ करी ए।—नळ दवदंती रास

उ०—२ चतुर अमृत रस मोरउ तउ चाख्यउ, कीधी कोटि विलास।

—स कु

मोरग—स०स्त्री०—१ हल के नीचले भाग में लगने वाला लोहे का एक उपकरण जिसका आकार 'वी' (V) की तरह होता है।

२ देखो 'मूरख' (रू भे)

रू०भे०—मोरक, मोरख।

अल्पा०—मोरखो।

मोरखो—देखो 'मूरख' (अल्पा, रू भे)

मोरडी—स०स्त्री०—१ कच्चे मकान के छाजन के नीचे लगने वाली एक लकड़ी।

२ देखो 'मोर' (स्त्री०)(अल्पा, रू भे)

उ०—पण म्हारो आज दिन पलटघोडो है। सोने नैं हाथ घाल्या लो हुवै। मोरडी हार गिटै, म्हारी साता खोटी है। जद सोनै री आस क्यूं राखूं!—दमदोख

३ देखो 'मोरी' (अल्पा, रू भे)

४ देखो 'मेरी, (अल्पा, रू भे)

उ०—मोरा साहिब हो श्री सीतलनाथ कि, वीनति सुणि एक मोरडी।—स कु

मोरडो—१ गेहूं की बालो का गुच्छा जो भूनने के लिये बनाया जाता है।

रू०भे०—मोरलो।

२ देखो 'मोर' (अल्पा, रू भे)

उ०—तुम दरसण हो मुझ मन उछरग कि मेह आगम जिम मोरडा।—स कु

३ देखो 'मोरा' (अल्पा, रू भे)

उ०—तुम नामइ हो सुख संपति थाय कि, मन वंछित फलइ मोरडा।—स कु

मोरचंदरका, मोरचंद्रिका—स०स्त्री० [मयूर चन्द्रिका] मोर की पंख पर होने वाली चंद्राकार बूटी।

मोरचांव—स०स्त्री०—हल चला कर पूरा खेत जोत लेने पर उसके सिरो पर हल मोड़ने मे रही हुई खाली भूमि पर विपरीत अर्थात् आड़ी खींची हुई रेखा (सीता)।

वि०वि०—प्रान्त भेद से इसे जोतरा, जोता व सेवरा भी कहते हैं।

मोरचाबंदी—स०स्त्री०—युद्ध मे शत्रु पर आक्रमण करने या शत्रु के आक्रमण को रोकने के लिये, जमीन मे खाई खोद कर या आड लेकर, सुरक्षा के लिये की जाने वाली व्यवस्था।

उ०—च्यारू पासा मोरचाबंदी कर रह्या छै। इतरै जलाल जासूस मेल खबर मगाई।—जलालबूबना री बात

मोरचौ—स०पु० [फा० मोरचाल] १ वह खाई, आड या स्थान जो युद्ध करने वाले सैनिकों की सुरक्षा के लिये बनाया जाता है।

उ०—१ विदा किया जिण वार, जोधकरि वीर जगाया। किलां सिरै कमधजां लडण मोरचा लगाया।—सू प्र

उ०—२ तरै मुहणोत नैणसी बळरामजी कनै गया। तरां बळराम जी फिर नै मोरचौ दिखायो। नै कहण लागो आ जायगा छोडीयां बणै नहीं।—नैणसी

उ०—३ महम ग्रमै सुनिया सग साथै, मुड़िया मेछ दुरग चै माथै। असत तजै घरती घर आया, मिरजै फिर मोरचा मंडाया।

—रा रू

२ किले या गढ के चारो ओर खोदी जाने वाली खाई,जिसमे लडने के लिये सैनिक छिपे रहते हैं।

उ०—१ कहायो-भाखरसी थे मोरचै दरवाजै एकै पळीतै रहीया तुरक आवै ताहरा समर्च-एकण पळीतै लगाया।

—राजा नरसिंघ री वात

उ०—२ दुरवैसै मोरचौ दबायौ, इतरै 'अखो'मधावत आयौ। बळ वरतौ वीरपतौ वेली, हुई जवन दळ घडी दुहेली।—रा रू

३ वह गढ़ा जिसमे बैठकर शत्रु पर गोली चलाते हैं।

४ ऐसा स्थान जहा अपनी स्थिति को ठीक बनाये रखते हुए निर्भय होकर रहा जाता हो।

उ०—भागवत कथा भूतावळी, हिरण दरस हीडोरचा। परवीण होय जाणै पुरुस, मालजादां रा मोरचा।—ऊ का

५ मुकाबिला, सामना।

उ०—आज कालै रा व्याह-सावा,एक अयोग माफत रौ मोरचौ है।

—दसदोख

६ मुकाबले मे खडे होने का भाव।

७ लोहे का जग, जो नमी के कारण रासायनिक विकार से उत्पन्न होता है।

८ दर्पण का मैल।

रू०भे०—मुरची, मोरछौ मोरचौ।

मोरछड, मोरछल-स०पु०—वह लवा चवर जो मोर पख बाध कर वनाया जाता है। चवर।

उ०—१ लारै खवासी मैं मुखनस वैठौ मोरछड करै है।—द. दा

उ०—२ तद खटीली उडी जठें राज दरबार कियौ वैठौ छै। अर नायण रौ माटी मोरछड करै छै।—चौबोली

रू०भे०—मुरछळ, मोरसल।

मोरछौ—देखो 'मोरचौ' (रू भे)

उ०—१ तिण पछै गोळ रौ लोक भी मोरछा मांहि तुपक तीरां री वेझौ वणाइ पहर दोइ सूधो लडियौ।—व भा

उ०—२ पडै केई किवाडा केई नीसरी वाहर पडै, सूर जमहर करै पडै साथा। पडै रिण वेहरी मुकद वाला सपोह, मोरछा, मोरछां पडै माथा।—उदैभांण हरभांण गौड रौ गीत

मोरट-स०स्त्री० [स०] १ गन्ने की जड।

२ एक प्रकार की घास।

मोरण-स०पु०—बाजरी के कच्चे या आग मे सेके हुए सिट्टों को मसल कर चबाने के लिए निकाले हुए दाने। (बीकानेर)

मोरणा-स०स्त्री०—सारगी मे लगने वाली वे लम्बी खूटिया जो दो दांयी ओर तथा दो बांयी ओर लगी रहती हैं।

मोरणी-स०स्त्री०—१ सारगी मे लगने वाली खूटी।

वि०वि०—सारगी की नली की दाहिनी ओर १६ मोरणियां होती हैं, माथे पर दाहिनी ओर दो तथा वाई ओर केवल एक मोरणी होती है।

२ वाजरी के सेके हुए सिट्टे पर से दाने उतारने के लिए सिट्टे के डांडे की वनाई हुइ सूतनी जिससे दवा कर उक्त दाने निकाले जाते हैं।

रू०भे०—मोरनी,

३ देखो 'मोर' (स्त्री०)

मोरणी-स०पु०—एक प्रकार सरकारी कर।

रू०भे०—मोरांणी,

मोरणौ, मोरबौ—१ देखो 'मोरणौ, मोरबौ' (रू भे)

उ०—घणां जु आंब मोरचा छै। सु एही तोरण। कमळ की जु कळी नीकळी छै। सोई कळस हुआ।—वेलि टी

२ देखो 'मोडणौ, मोडबौ' (रू भे.)

उ०—विनीत नीत वोन जे अनीत वाधते नही। महा समूह मूह देखि मूह मोरते नही।—ऊ का

मोरणहार, हारौ (हारी), मोरणियौ—वि०।

मोरिओडौ, मोरियोडौ, मोरघोडौ—भू० का० कृ०।

मोरीजणौ, मोरीजवौ—भाव वा०।

मोरत—देखो 'महुरत' (रू. भे)

उ०—१ कर कपांण मोरत किसू, आखै सूर अवीह। रण मर स्वरग सिधावणौ, सु तौ सुरगो दीह।—वा दा

मोरधज, मोरधुज, मोरधूज, मोरधूजी, मोरध्वज-स०पु० [स० मयूर-ध्वज] १ रत्न नगर का एक पौराणिक राजा, जिसने ब्राह्मण वेष मे अपने द्वार पर आए श्री कृष्ण व अर्जुन को अपना, मतान्तर से अपने पुत्र का शरीर आरे से चिरवा कर दान किया।

उ०—१ धू कवार त्रप मोरधुज, अवरीक हरिचद। पद सेवा परि पहवा, की नव कोट नरिद।—रा रू

उ०—२ जिण भूखी आत्मा हित आपरे वेटा नू चीर सिंह नू खुवायौ सो मोरध्वज अक्षय पुण्य यश पायौ।

—साह रांमदत्त री वारता

उ०—३ मोरधूजी महाराज था जन सचा हरका, करवत हत्या वहर के दिय सीस कवरका।—दुरगादत्त वारहठ

२ जोधपुर के किले का नाम।

मोरनदेवी-सं०स्त्री०—नमक वनाने वाली खारवाल जाति की इष्ट देवी। (मा म)

मोरनाच-स०पु०—नृत्य का एक भेद विशेष।

मोरनी—१ देखो 'मोरणी' (रू भे)

उ०—हरीया जत्री जत्र विन, वाजे तार अखड। विन तूबा विना मोरनी, घोर पडै ब्रहमड।—श्री हरिरामदासजी महाराज

२ देखो 'मोर' (स्त्री०)

मोरपखी-स०स्त्री०—१ मोर के पख की तरह बनी हुई व रगी हुई नाव।

२ मलखभ की एक कसरत।

वि०—१ मोर के पख का वना हुआ।

२ मोर के पख के समान।

मोरमींढली, मोरमींटी, मोरमींढी—१ स्त्रियों के सिर का एक आभूषण।
उ०—अर जड़ाउ मुरलिया-रत्ता वाळी मोरमीढया —वरसगाठ
२ स्त्रियों के सिर के बालों की गुथी हुई लटिका।

मोरमुक्ट मोरमुकुट मोरमुगट—स०पु० [स० मयूर+मुकुट] मोर की पंखों का बना मुकुट, ताज।
उ०—१ मोरमुक्ट बन माळ माळ तुलसी नव मंजर। रुचि कुंडळ पळ रतन, तिलक मंजुल पीतांबर।—रा रू
उ०—२ मोरमुकुट पीतांबर मांहे ओढ़ें लाल दुमाला रे। मीरां के प्रभु गिरधर नागर, भगतन के प्रति पाला रे।—मीरां
उ०—३ मोरमुकुट पीतांवर सोहै गले वैजंती माळा। मीरा के प्रभु गिरधर नागर ठाकुर वसीवाळा —मीरा
उ०—४ सख चक्र गदा पदम धारि। वैजयती माळ मोरमुगट कुंडळ विमाळ मदन मोहन कमळ लोचन स्याम सुदर ठाकुर विराज मान हुआ छै।—वचनिका
उ०—५ मोरमुगट राजै कर मुरली। तरह भामणी तास तणि। —ह नां मा

मोररथ—स०पु० [सं० मयूर रथ] स्वामी कार्तिकेय।
(ह नां मा , ना मा)

मोरलियो—देखो 'मोर' (अल्पा , रू भे)
उ०—हां रे रुम भुम रुम भुम नूपुर वाजै, हा रे मारो मन मोह्यो मोरलियो रे।—मीरां

मोरली—देखो 'मुरली' (रू भे)

मोरलो—वि०—१ देखो 'मोर' (अल्पा , रू भे)
उ०—मोरला गोरी घण वरज्या रे न जाय वारी घण वारी ओ हजा। आ रुत बोलैं ऐ मोरला सुहावणा जी राज।—लो गी
४ देखो मोरड़ो' (रू भे)

मोरसल—देखो 'मोरछड़' (रू भे)

मोरसिखा, मोरसिवा—सं०स्त्री० [स० मयूर+शिखा] १ मोर की चोटी। (उ र)
२ एक जड़ी विशेष, जिसकी पत्तियां मोर की किलंगी के आकार की होती हैं। (उ र)

मोरसिरो—देखो 'धोनसरी' (रू भे)

मोरा—सर्व०—मेरा।
उ०—आलम मोरा ओगुणां, साहिब तूझ गुणाह।—ह र
रू०भे०—मार, मोरउ, मोरड़ो।

मोराइ, मोराई—देखो 'मुराई' (रू भे)

मोराबीन—स०पु०—एक प्रकार का वस्त्र।
उ०—मोराबीन री लैंघो, गुलाबी चीर अर मखमल चोळी री सोणी पैरांन।—दमदोस

मोरादे, मोरादेवी—देखो 'मरुदेवी' (रू भे)
उ०—१ मोरादे भारया पुत्र रिखभदेव। रिखभ देव भारया-२ सुनंदा १ सुमगळा २।—रा० वसावली
उ०—२ एहवी स्त्री ऋखभ तणी माता। मोरादेवी सुखे सुखे सिवपुर पहुती।—जयवाणी

मोरार, मोरारी—देखो 'मुरारी' (रू भे)
उ०—१ पाहव दूत मोरार —घरम पत्र
उ०—२ गाया ग्वाळो कानो काळो वसी वाळो वे हारी। भाभां भाभी प्रिथी प्रांभी मोटी आंभी मोरारी।—पि प्र

मोरिय—१ देखो 'मौरध' (रू भे)
२ देखो 'मोरी' (रू भे)

मोरियो—स०पु०—गाय या भैंस के बच्चे के मृत शरीर का खोल, जिसमे मसाला भर कर रक्खा जाता है।
२ एक मारवाड़ी लोक गीत जो पुत्री की विदाई के समय गाया जाता है।
रू०भे०—मूरियो, मोरघो।
३ देखो 'मोर' (अल्पा , रू भे)
उ०—१ मोरिया बागां-बागां जायनै, काची कुळिया लायो रे, घन मोरिया —लो गी
उ०—२ मोनल रो हेलो सुणतां ईं नाडी रा सगळा मोरिया कुरळावण लागा।—फुलवाड़ी

मोरींगो—स०पु०—दीवार मे लगा हुआ या जमीन मे रुपा हुआ वह छेददार पत्थर जिसमे कपड़े सुखाने की रस्सी या पशुओ को बांधा जाता है।

मोरी—स०स्त्री०—१ गंदे पानी के निकास की छोटी नाली।
२ तालाब या बांध के पानी के निकास का तंग द्वार, नहर, छोटा नाला।
उ०—१ सहर मांहे पाखती पाणी घणो, वडो ताळाव सूरसागर जिण री मोरी छूटे छै, जिण सू बाग बाड़ी घणा पीवें।—नैणसी
उ०—२ मिनखां नूं खेती इमारत नूं खपावै कारज चलावै ने हर कारण में ताळाव बांव मोरी रावणे कुवा करणे में इतरी मदत घोरा वधावण मे करै।—नी प्र
३ छोटा द्वार, खिड़की।
४ बदूक का मुख।
५ एक राजपूत वंश जिसे मौर्य भी कहते हैं।
उ०—१ कोट विणायो मोरियां, साह हमाऊ नद। तोड करै नहिं ट्रटही, वीर मदत जग वंद।—बा दा
उ०—२ राजकुली ३६, सूरधवस सोमवस यादववस कदब परमार इक्ष्वाक चाहुमान चालुक्य मोरी सेलार सैंधव विदक।—व स
वि०—खाली, रिक्त।
सर्व०—मेरी।
उ०—१ जोगी कहइ सुणि मोरी माई। दिन तीसरई आवड घरी राय।—वी दे

उ०—२ पडव कहइ ग्रम्हे पापिया, किम छूटा मोरी मायोजी। कहइ कुती सेत्रुज तणी जात्रा किया पाप जायौ जी। - स कु

मो'री–स०स्त्री०—ऊट की नकेल के बांधी जाने वाली रस्सी।

उ०—१ विये रौ सुसरौ घरसू नीकल्यौ, ऊटरी मोरी झाली ग्रर कंयौ–ग्रबार ही काई जावौ ? त्योहार रै दिन घर छोडणौ ग्राछौ कोनी।—दसदोख

उ०—२ राम नाव रो गेढौ करियौ गेढौ मोटो भारी। मोरी सार समझ री दीधी, यू कर चलै बवारी।—फुलवाडी

रू०भे०—महूरी, मुरी, मुहरि, मुहरी, मूरी,मोरिय, मौरी, मोहृरि, मोहरी, मौहरि, मौहरी, म्होरी, म्हौरी।

ग्रल्पा०—मोरडी।

मोरीर—देखो 'मुहरिर' (रू भे)

मोरीसालो–स०पु० [ग्र० मूरिसे ग्रा'ला] गोद लेने का एक नियम, जिसके ग्रन्तर्गत कोई जागीरदार, जागीर पाने वाले के वशज को ही गोद ले सकता था, ग्रन्यथा जागीर जब्त हो जाती थी।

(भूत पूर्व जोधपुर राज्य)

मोरु, मोरू—देखो मोरौ' (रू भे)

उ०—१ बीछडिया मन माहरू रे, दुख धरइ दिन दिन्न। के तू जाणइ केवली रे के वलि मोरू मन्न।—स कु

उ०—२ तरू तरू ग्रूटइ पन्नडा, गिरि गिरि ग्रूटइ वाहु। फागुण फागुण ताहरू, नीगमिउ मोरू नाह।—मा कां प्र

२ देखो 'मोरौ' (रू भे)

मोरुडो–स०पु०—एक लोक गीत जो लडकियो द्वारा गाया जाता है।

मोरुलो—देखो 'मोर' (ग्रल्पा, रू भे)

उ०—ग्रा रितु बोलै ऐ मोरूला सुहावणा जी राज।—लो गी

मोरू—१ देखो 'मोर' (रू भे)

उ०—मुनमथ का इदका मुनेस्वरू का मन मोहै। फलफूलू के भार भरी ग्रढार भार। ठाम ठांम के ऊपर मोरू का तडव भौंरू का गुजार।—सू प्र

२ देखो 'मोरौ' (रू भे)

उ०—मोरू मन ग्रस्टापद सु मोहयु, फटित रतन ग्रभिराम मेरे लाल।—स कु

मोरूसो–वि०—वशानुगत, परम्परागत, बाप–दादो से प्राप्त। पैतृक

मोरेचा–स०पु०—चौहानवश की एक शाखा, साचोरा चौहानो की शाखा।

मोरेल–स०स्त्री०—बनास नदी की एक सहायक नदी जो जयपुर क्षेत्र में बहती है।

मोरेवौ-स० पु०—गेहुग्रो की फसल के साथ होने वाला एक घास विशेष।

मो'रौ–स०पु० [स० मुकराकृति] १ ऊट, बैल, घोडे ग्रादि के मुह पर, सुदरता के लिये लगायी जाने वाल एक जाली विशेष।

उ०—राजा एक नामी ाळका काछी ऊट माथै सजाई कराई–पीतळियौ पिलाण, लूबाळी गोरवद, रेसम रौ मो'रौ, सोना रा गिरवाण, रूपं रा पागडा।—फुलवाडी

२ हाथी के मुह पर लगाया जाने वाला एक उपकरण।

३ बैल के मुह पर शोभा बढाने के लिए लगाया जाने वाला एक सूत, जट या चमडे का उपकरण।

४ ग्राकृति या चेहरा।

५ घास–फूस या पतली लकडियो का एक पुवाल जिसको जलाकर किसी दूसरी चीज के ग्राग लगाई जाती है।

क्रि०प्र०—देणौ, मेलणौ, लगाणौ।

६ ग्रग्नि को शीघ्र प्रज्वलित करने के लिए उस पर डाली जाने वाली महीन कटीली वस्तुएँ।

७ ग्राग, ग्रग्नि।

उ०—चुगल सुरदर चाव री टहल नारी घर घूटी। मोरौ मायौ मेल फेर हिरदे री फूटी।—ऊ का

८ पशुग्रो की क्रोधावस्था।

उ०—राजा मानसिघजी रा उमराव रै हाथी सूड सू पकड घोडा सू उतार मोरौ कर दाता में पोयोडी कटारी वाही। हाथी रै कुभा थल लागी, जोगणीदास मुवौ।—बां दा ख्यात

[फा० मुह्र] ९ एक प्रकार का पत्थर विशेष, जिससे साप का विष उतारा जाता है।

१० एक प्रकार का मणिया, जिसको 'खोळ' (पानी मे डूबो) कर पिलाने से बच्चो के गृह दोष मिटते हैं।

११ शतरज की गोटी।

१२ सेना की ग्रगली पक्ति।

सर्व०—मेरा।

उ०—१ मन हू पवित्र करिस हरि मोरौ। टीकम नांम धरे उर तोरौ।—ह र

उ०—२ मोरौ मन मगन थयउ। हा रे देखि देखि भाव।

—वि कु

रू०भे०—मुहरौ, मू'रौ, मूरौ मोरु, मोरु, मोरू, मोहरौ, मौरौ, मौहरू, मौहरौ, म्होरौ, म्हौरौ।

मोरचौ—१ देखो 'मोर' (ग्रल्पा, रू भे)

उ०—सगळा जणा थोडी ताळ ताईं उण नाचता मोरचा सांम्ही एकटक देखता रह्या।—फुलवाडी

२ देखो 'मोरियौ' (रू भे)

मोळ—देखो मौळ' (रू भे.)

उ०—१ पुटिया टोळ पचोळ, चोळ चगै चित वाळा। झामर झोळ तमोळ, मोळ मन मकडी जाळां।—दसदेव

उ०—२ ऊपर सू हेजी–मोगर ग्रर प्याज पापड़ां रा साग ल्हसण रै लाल झोल मे फलका री मोळ मेटण जीमें हैं।—दसदोख

मोल–स०पु० [स० मूल्य, प्रा० मुल्ल] १ कीमत, मूल्य।

उ०—१ चद वदन गुनखान चतुर चित्त। पर हर ग्रपनी प्यारी।

थेम्या नग मोल विन वालम, विकणो बड़ो विकारी ।—ऊ. का.

उ०—२ बरवि दीप देवडा कळी केवडा कनोती । लकी थजर अमोल, वजरमणि मोल विचोती ।—मे म.

उ०—३ तासो आयो लावयो कामण प्यारा कत । मोल मुहगो मनि ममो, मोवयू रहै निरखत ।—व म

उ०—४ थारै मिनखां चूतियां नह निरवाहै मोल । गुंजा सू घटतो घणो मावटिया रो मोल ।—बा दा

उ०—५ लक्खू विचाळै ई बोली–गिगन रा सूरज अर उणारा उजास री कोई मोल व्है तो म्हारी देह री मोल व्है ।—फुलवाड़ी

२ भाव, दर,

उ०—१ म्हणो जाफै भार खित, वापूकारै बोल । नहीं उचित करणो नरां, घवळा हदो मोल ।—वा दा

उ०—२ पिटत कह्यो–सेठां, किणी चीज रो मोल तो देवणिया री मरघा परवाण । म्हारै कूड नी बोलण री आखडी । रावळी इछा व्है सो दे दिरावो ।—फुलवाड़ी

उ०—३ या रस को नही तोल न मोल, पीयगा उर अतर खोल ।
—स्री हरिरामदासजी महाराज

३ क्रयण, खरीद ।

उ०—१ खबरदार नर जवर नू, वमत मगाडे मोल । विगडै उण दिन वाणियो, तोलण हूता तोल ।—बां दा

उ०—२ अर जे पछै ई थनै पतो नीं पडियो तो म्हनै किमो मोल लावणो है । म्हैं थनै जाण जकी वात वताय देवूंला ।—फुलवाड़ी

४ खरीद के वदले दी जाने वाली रकम, दाम, रुपये ।

उ०—पती जुद्ध मे दुसमणां री फौजा रा हाथी मार नै तो मोतियां रा ढिगला दिया है जिण रा ओत वा पोत चीडा ने हाथियां रै दाता रा चूडा मोल भागण रो काम नहीं ।—वी. स. टी

५ महत्व, विशेषता, कद्र ।

उ०—१ हरीया मिलै अयारखु, ताहि घटायो मोल । हरि हीरा की क्या घट्यो, घट्यो स वाको वोल ।
—श्री हरिरांमदासजी महाराज

उ०—२ धन वधियां म्हारी जांण मे मिनख री मोल घटै ।
—फुलवाड़ी

उ०—३ टोकरी सूखा सुर मे बोली–पण म्हारी वेटी राजाजी सू प्रीत नीं करणो चावै, पछै थारै अदाता री मरजी री कांई मोल ।
—फुलवाड़ी

मोगलत—देखो 'मोहलत' (रू भे)

उ०—इण रग महल मे आयां म्हारा मन में एक नवो ई ग्यांन सांचरयो । फगत तीन दिन री मोलगत चावू थें बोला–बोला देखता रैजो ।—फुलवाड़ी

मोळणो, मोळबो–क्रि०स०—१ काटना, कतरना ।

उ०—१ मूळ मोळना मिनख, मिरदिया घणां घुरावै । हळ वावडटो पेर, फोगडां बीज सुपावै ।—दसदेव

उ०—२ दायण सावळ सुधराई सू आवळ कानी नाळो सूत्यो । पाचण सू नाळो मोळ डोरा सू वाघ दियो ।—फुलवाड़ी

२ उतारना, हटाना ।

मोळणहार, हारो (हारी), मोळणियो—वि० ।

मोळिओडो मोळियोडो, मोळयोडो भू० का० कृ० ।

मोळीजणो, मोळीजवो—कर्म वा० ।

मोळणो, मोळवो—रू० भे० ।

मोलणो मोलवो—देखो 'मोलाणो मोलावो'

मोलणहार, हारो (हारी), मोलणियो—वि० ।

मोलिओडो, मोलियोडो, मोल्योडो—भू० का० कृ० ।

मोलीजणो, मोलीजबो—कर्म वा० ।

मोलत - देखो 'मोहलत' (रू भे)

मोलवी मोलवी—देखो 'मौलवी' (रू भे)

मोलसरी मोलसिरी मोलस्री—देखो 'वोलसिरी' (रू भे)

मोळाई—देखो 'मोळ'

मोलाई–स०स्त्री०—किसी वस्तु का मूल्य पूछने की क्रिया या भाव ।

मोलाकुमार–स०पु०—मिट्टी के वर्तनो का कार्य करने वाले वे मुसलमान कुम्हार जिनके पूर्वज हिन्दू थे ।

मोळाटो–स०पु०—१ चोर व डाकुओ द्वारा अपना मुह छुपाने के लिये मुह पर लगाया जाने वाला वस्त्र ।

२ सिर पर वोझा उठाते समय सिर पर रखी जाने वाली किसी वस्त्र की गोल गद्दी ।

रू०भे०—मोळावटो,

मोळाणो, मोळावो–क्रि०स० ['मोलणो' क्रि० का प्रे० रू०] १ कटवाना, कतरवाना ।

२ 'मोळ' आना या होना ।

मोळाणहार हारो (हारी), मोळाणियो—वि० ।

मोळायोडो—भू० का० कृ० ।

मोळाईजणो, मोळाईजवो—कर्म वा० ।

मोलाणो, मोलावो–क्रि०स०—१ खरीदने योग्य वस्तु या पशु–धन का भाव, मूल्य या दर पूछना ।

२ खरीदना, मोल लेना । क्रय करना ।

उ०—१ बारठजी उणनै फटकारता कैवण लागा भैंस तो मोलाई कोनीं, उण पैलाई थारी कैवू जकी रो मार मार नै पोखाळो कर दियो ।—फुलवाड़ी

उ०—२ पारकी वेटी नै जिनावर री जूण जांण'र लालच रै वजार मे मोलाई करणी है ।—दसदोख

मोलाणहार, हारो(हारी), मोलाणियो—वि० ।

मोलायोडो—भू० का० कृ० ।

मोलाईजणो, मोलाईजवो—कर्म वा० ।

मुलाणो, मुलावो, मोलणो, मोलवो, मोलावणो, मोलाववो—रू भे ।

मोळायोडो–भू०का०कृ०—१ कटवाया हुआ, कतरवाया हुआ ।

२ 'मौळ' आया हुआ, मौळ' हुवा हुआ ।
(स्त्री० मोळायोडी)
मोलायोडो–भू०का०कृ०—१ भाव–ताव पूछा हुआ ।
२ खरीदा हुआ, क्रय किया हुआ ।
(स्त्री० मोलायोडी)
मोळावटो—देखो 'मोळाटो' (रू भे)
उ०—अर राणी आदमी १०,००० दस हजार लिया खड्ग दुवारो पकडीयो लोका नू दिलासा करै छै। आप थिरमा दो **मोळावटो** मारीयो छै।—राजा नरसिंघ री वात
मोलावणो, मोलाववो—देखो 'मोलाणो, मोलावौ' (रू भे)
उ०—गाडी **मोलावती** वगत बळद जुतियोडा हा के नी। माथा में घोळा आया है, थोडो रांम नै माथै राखनै साची वात केजे।
—फुलवाडी
उ०—२ भैस्या **मोलावण** री वात सुणी जद भाणजी मासी नै ढाब बिचाळै बोली–बाजण नै तो म्हैं महाराणी बाजू पण म्हारै गोढै राती छदांम ई कोनीं।—फुलवाडी
उ०—३ तठा उपराति करि नै सराफ बजाज जोंहरी दलाल भाति भाति रा बाव भाति भाति रा पदारथ भाति भाति री अमोलक वसतां सू **मोलावीजै** छै।—रा सा स
मोलावण हार, हारो(हारी), मोलावणियौ—वि०।
मोलाविग्रोड़ो, मोलावियोडो, मोलाव्योडो—भू० का० कृ०।
मोलावीजणो, मोलावीजवो—कर्म वा०।
मोलि—देखो 'मोल' (रू भे)
उ०—कौडी बदळै लाल कू, देत न देख्या **मोलि**। हरीया पेलै भाग सू, खालिक ग्रै दिल खोलि।—श्री हरिरामदासजी महाराज
मोळिया मगळ—देखो 'मौळिया मगळ' (रू भे)
मोळियोड़ो—भू०का०कृ०—१ काटा हुआ, कतरा हुआ. २ मौळ आया हुआ।
(स्त्री० मोळियोडी)
मोलियोडो—देखो 'मोलायोडो' (रू भे)
(स्त्री० मोलियोडी)
मोळियौ–स०पु०—देखो 'मौळियौ' (रू भे)
उ०—हवेली सूं कडाजूड होयनै आया ई हा। कडप दियोडो सतरगी **मोळियो**। लांबो छिणगो। माथै किलगी ज्यू छोगो। एकोएक सस्तर पाती।—फुलवाडी
मोलियौ—१ पुरुषार्थ हीन ऐसा व्यक्ति जिसमें औरतो के लक्षण आगए हो। जनखा।
उ०—मारवडिया अग **मोलिया**, नाजुक अग निराट। गुपत रहै ऊमर गर्म, खाय न निजबल खाट।—बां दा)
२ अशक्त, कमजोर, दुर्बल।
३ वह भागीदार व्यक्ति जो अपने भाग के कार्य में अपने बैल व हल लाकर खेती करता है।
४ किराये किया हुआ हल।
५ काले मुह का बदर।
६ जोरू का गुलाम।
रू०भे०—मोलीओ, मोलीयो, मोल्यो मोल्हियो, मोल्हीयो।
७ देखो 'मौळियौ' (रू भे)
उ०—उत्तरा कूयर बबब बोलइ, वीर कोइ तुझ आज न तोलइ। आणिजै सुहड मौलि **मोलिया**, पउतीयां जिम हुइ पटउलीयां।
—सालिसूरि
मोळी—१ देखो 'मौली' (रू भे)
उ०—१ मिठाई मगदर माटा काठा दाटा दे दे' र वूसी **मोळी** सू बाध्या।—दसदोख
उ०—२ माथा पर तो **मोळी** और म्हनै तबू मे आवण दौ।
—रेवतसिंह भाटी
२ देखो 'मोळौ, (स्त्री)
मोली–वि०स्त्री०—१ दुर्बल, अशक्त।
२ जिसकी कीमत हो, मूल्य वाला।
३ मूल्यवान, कीमती।
उ०—घण मोला घोडाह, घण **मोली** केइ घोडियां। थुयकारिय थोडाह, जगमें तो जोडा जसा।—ऊ. का
स०स्त्री० [स०मौलि] १ मादा ऊंट।
२ सिर की चोटी। बालो का जूडा।
३ जटाजूट।
४ मस्तक।
५ मुकुट।
६ पगडी।
७ प्रधान व्यक्ति।
रू०भे०—मौलि,मौली।
मोलिग्रौ–स०पु०—१ एक प्रकार का वस्त्र।
उ० हवइ राजा परिवार प्रतिवस्त्र आपइ, गुडीआ सणीआ कस्तूरीआ प्रतापीआ कुसभीआ **मोलीआ** मांडवीआं मीणीआ वाटलीआ जलोदरीआ।—व स
२ देखो 'मौळियौ' (रू भे)
३ देखो 'मौलियौ' (रू भे)
मोलीमीयौ–स०पु०—लकडी की बनी वस्तुओ की धार या किनारो को सुन्दर बनाने का एक औजार।
रू०भे०—मोळीयौ
मोळीयौ—१ देखो 'मोळियौ' (रू भे)
२ देखो 'मोलीमीयौ' (रू भे)
मोलीयौ—देखो 'मोलियौ' (रू भे)
मोळू—देखो 'मेळजो'
मोळो—देखो 'मौळौ' (रू भे)
उ०—१ गोगो मोगो हुय गोरधा गिरियो, तेजो **मोळो** पडि नेजो सै तिरियो।—ऊ. का.

उ०—२ इणी भांत इण नगर गूजरी रै आयां पैली सगळी जूनी ओपमावां पळापळ चिमकती, पण गुजरी रै परगट व्हैता ई सगळी ओपमावां मोळी पड़गी।—फुलवाड़ी

उ०—३ मेदी देऊ मुलक मेल सू करदे मोळी। दीवाळी रै दिवस हिया में ऊठै होळी।—ऊ का

उ०—४ रोजीना ऊगता सूरज री गुलाबी रग, उणरी मोळी मीट मे चीदणी रै गोरा उणियारा री भरम पैदा करतो।—फुलवाड़ी

उ०—५ कवराणी रै मून रैणा सू कवर री करडावण की मोळी पड़ी।—फुलवाड़ी

उ०—६ सेट मोळा पड़ग्या। पीं जवाब नीं दियो। जांणता के राजाजी री मूछ्यां री बाळ ई नाईड़ो कदै भिमरग्यो तो भूंडी वितावैला।—फुलवाड़ी

उ०—७ ठाकरना मोळा पड़नै कह्यो-अवै तो भावै ई मन मे रैगी। तू मोसा देवै जित्ता ई थनै छाजै।—फुलवाड़ी

(स्त्री॰ मोळी)

मोलो—वि०—१ कीमती, मूल्यवान।

उ०—घणा घणा मोला घोड़ा, पाइगगहा पाटी होडा। आगला चहै अलव, अजूली पियै ज अव।—गु रू व

२ जिसकी कोई कीमत या मूल्य हो।

उ०—तेरे कारन मन जग त्याग्यो, अब मोहे कर मो लो रे। मीरा के प्रभु गिरधर नागर, चेरी भई बिन मोलो रे।—मीरा

३ देखो 'मोलियो' (रू भे)

उ०—भूमर भार न मल्लही, गोयां गावड़ियांह। इम जस भार न ऊपड़ै, मोला मानड़ियांह।—वां दा

मोल्यो—देखो 'मोलियो' (रू भे)

उ०—१ वयू रे मोल्या उड्यावड़ा बूजवाळो कुण छै रे तू। माको गुमी होगी जैंडे जावागा हमेस।—ऊ का

उ०—२ तड़की देव घोल्या रे, चुपकी रहे मोल्या रे। नर-भव ते पायो रे, तिण आले गमायो रे।—जयवांणी

उ०—३ सांड अर धी मागता सरम को आवै नी। घर में कमावू तो थारै जैड़ो मोल्यो भरतार है।—फुलवाड़ी

उ०—४ आ एकली भवांनी सगळां नै भू पाय दियो अर थे सगळा ई दाढी-मूछाळा मोट्यार उण मोल्या कवर रै पगां रगड़ रगड़ नै टाबिया पाड़सी।—फुलवाड़ी

मोल्हियो, मोल्हीयो—देखो 'मोलियो' (रू. भे)

उ०—हिवै मोटीयारां मैं बैठो मोटीयार ममकरी करै, रे त वैर गमाई मोल्हीया लानत रे तोनु।

—सांवळो जोईयो नै तोढो मरळ री वात

मोवण—१ देखो 'मोण' (रू. भे)

उ०—१ दूध मे ओसणियोड़ो अर घी रै मोवण री फरफरो बाटियो। मारै मागण अर निपात लागोटो। मागला री भाग जागियो।—फुलवाड़ी

उ०—२ परात मे घी री मोवण देयनै आटो गूंदियो।—फुलवाड़ी

२ देखो 'मोहन' (रू भे)

मोवणी—देखो 'मोहन' (रू भे)

उ०—१ आज पेमजी रै माथै सू मुरली दलाल री मांड्योड़ी मूली हाळी मोवणी सीबी माफ हुवै, नीकळै है।—दसदोख

उ०—२ मधुर मोवणी राग, रीझवै आभो राजा। झीणी छांटा भिलै, सीलवै साळू गाजा।—दसदेव

मोवणो—वि०—मोहित करने वाला, आकर्षित करने वाला, लुभाने वाला, सुन्दर।

उ०—पण ओ माठो साचेलो माठै-रै बदळै नरम, फूटरो और देखणै वाळां-री मन मोवणो हो। ओ माठो माठो नहीं, पण माठै मांयली सुकुमार अहिल्या ही।—वरसगांठ

मोवणो, मोववो—देखो 'मोहणो, मोहवो' (रू. भे)

उ०—जोवना छाक मैं ढोढी निजर जोवै छै। चद मुखी हीरां चकोर सखी मोवै छै। सुदर अनवेली हीरा प्रति रूप छाजै छै।

—बगसीरांम प्रोहित री बात

मोवणहार, हारो (हारी), मोवणियो—वि०।

मोविप्रोड़ो, मोवियोड़ो, मोव्योड़ो—भू० का० कृ०।

मोवीजणो, मोवीजवो—कर्म वा०।

मोवन—देखो 'मोहन' (रू भे)

उ०—१ म्हारी बैनड़ली रा घमक्या छै चीर। भतीजा रा मोवन मोळिया जी।—लो गी

उ०—२ राजा रो कवर नित-हमेस उण मारग ई सैर-सपाटा वास्तै घोड़ै चढियो निकळतो। गूजरियां री मोवन भूलरो उणरा मन मायै नित नवा चित्रांम कोरतो।—फुलवाड़ी

मोवनकठी—स०स्त्री०—स्त्रियों के गले का हार विशेष।

मोवनी—देखो 'मोहनी' (रू भे)

उ०—रूप री असली देवता तो प्रगट नी व्हैगो। पैली निजर रै ममचै ई बादळ री मोवनी मूरत उणरा हिवड़ा मे कुरगी।

—फुलवाड़ी

मोवनीइग्यारस मोवनीएकादशी—स०स्त्री०—वैशाख मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी।

मोवारणी—देखो 'मारणी' (रू भे)

मोवियोड़ो—देखो मोहियोड़ो' (रू भे)

(स्त्री० मोवियोड़ी)

मोस—स० पु०[स० मोष] १ चोर, तस्कर, उचक्का। (डिं को)

२ चोरी का माल।

३ चोरी, लूट-खसोट।

४ वध, हत्या।

५ झूठ मिथ्या।

उ०—१ सुद्ध क्रिया मारग अभ्यासता, तजता माया रे मोस। रोस घरइ नही केहस्यू, मुनीवरू सुदरु चित्तइ नही सोस —कवियण

उ०—२ आस्रव कमाय दुवचना, वलि कलह अभ्याख्यांनोजी। रति अरति पेसुन निंदा, माया मोस मिथ्या ग्यानी जी।—स कु.

६ दड, सजा।

७ ताना, व्यग।

उ०—सात क्षेत्रे वित्त वावरै जी, छावरै मोस नै मरम। सीतल चद्रमा सारिखौ जी, निज प्रजा ऊपरि नरम।—वि कु.

मोसड—देखो 'मसोड' (रू. भे.)

उ०—घूड छिलकरी घडी घरा ला ताती देवी। मोसड माय विछाय, मुवाती सूता सेवी।—दसदेव

मोसणौ, मोसवौ—क्रि० स०—१ झूठा दोषारोपण करना, कलक लगाना।

उ०—चाडी खाधी चउतरइ, कीधउ थापण मोसउ। निंदा कीधी पारकी, रत्ति अरति निसक।—स कु

२ व्यग करना, ताना मारना।

३ चोरी करना, लूटना।

उ०—थळ खोसै धापै नहिं थोडै, मोसै परजा वेगै मोडै।—ऊ का

४ देखो 'मसोसणौ, मसोसवौ' (रू भे)

उ०—१ कतल कर देवै, कठ मोस नाखै, टापरा विकाय देवै, रांध्योडी फुडाय देवै, छुरी फेरता बुरी कर देवै।—दसदोख

उ०—२ छळ वळ कर छानै मतळब मानै मूरख गळ मोसदा है।—ऊ का

उ०—३ एक दानो आदमी कह्यो—भली आदमण ऐडा जगी गिडकां नै साव छुट्टा राखै किणी मिनख रा कठ मोस न्हाकिया तो काई भाव पडैला।—फुलवाडी

उ०—४ पारका मरम ने मोस दोखै नहीं करि रोस। जूना छिद्र सही ए ते ऊघाडै नही ए।—जयवाणी

मोसणहार हारो(हारी), मोसणियौ—वि०।

मोसिओडो, मोसियोडो, मोस्योडो—भू० का० कृ०।

मोसीजणौ मोसीजवौ—कर्म वा०।

मोसर—स०पु०—१ शुभ अवसर, अवसर, मोका।

उ०—१ पताहूत पाघरै, अरज कीधी तिण ओसर। चित सदा चाहतो, मिल्यो तिसडो हिज मोसर।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

उ०—२ दरवेस भूखां री मसा पूरण किया नै न्याव किया जिको मन मे होय सोही मोसर छै।—नी प्र

उ०—३ तरै जमोघर सारा भाइयांनू भेळा कर ने कयो पछेइ पुकारू जावौ तो ओ तो सरवार छे नै ओ मोसर छै।—रा व वि

उ०—४ पढन पढावन मोसर पायौ, चूक गयौ विभचारी।—ऊ का

२ समय, वक्त।

उ०—रग लखियो अनुराग, मदन छकियो उण मोसर। मधुकर छकि मुसताक, चुरस पोहपा गळि चोसर।—पनां

३ सयोग।

उ०—चार दफे मैं आता री, चीजा तरह तरह की ल्याता, किसके हाथा पकडाता मुफत लुटाता रोजीना, मिलणे का मोसर नही है चक्कर खाता रोजीना।—लो गी.

४ मूछे।

उ०—झालिया सार मोसर झलै, झूझ भार भुज झालियौ, भूपाळ जैत उणहीज भुज, हय कव थापलि हालियौ—मे म.

५ देखो 'मौसर' (रू भे)

उ०—सांपड सनमुख सीत ऊठ नह चुळै अनाडी। देखै मोसर हूम अटै नह पैंड अगाड़ी।—ऊ. का.

मोसार मोसाळ, मोसाल—स०पु०—१ ननिहाल, मामा का घर।

उ०—१ लाज पीहर सासरो, माजै मा मोसार। नितरा आवै वोलमा, थांनै बुरो कहै ससार।—मीरां

उ०—२ मामी मीरा हो लाजै माई मोसाळ, लाजै हो पीहर थारो सासरो।—मीरा

२ पीहर, मैका, पिता का घर। (स्त्री)

३ मामा।

रू०भे०—मुसाल, मुहसाल, मुहुसाल, मूसाळ, मोसाली, मोसेल, मौसाळ।

अल्पा०—मोसाली।

मोसाळी—देखो 'मोसाळ' (रू भे)

उ०—तारयो पीहर सासरो तारयो माय मोसाळी तारी।—मीरा

मोसियोडो—भू०का०कृ०—१ झूठा दोषारोपण किया हुआ, कलक लगाया हुआ।

२ व्यग किया हुआ, ताना मारा हुआ।

३ चोरी किया हुआ, लूटा हुआ।

४ देखो 'मसोसियोडो' (रू भे)

(स्त्री० मोसियोडी)

मोसी—देखो 'मासी'।

मोसीआई मोसीहाई—देखो 'मासीयाई' (रू भे)

मोसेल—देखो 'मोसाळ' (रू भे)

मोसो—स०पु०—१ व्यग, ताना।

उ०—१ राजा थांनू मेहणो साचो दियो सत्य छै। कुडो मोसो दियो न छै।—पच दडी री वारता

उ०—२ उण म्हानै चुडलाळी मोसो वोलियो, मोसो वोलियो, जी म्हांरा राज।—लो गी

उ०—३ डोकरी मुळक नै मोसो मारती जवाब दियो—जे राजा रै आखै खजानै सू ई प्रीत रो भुगतान व्हैतो व्हे तो खजानो तो थारै पासती है ई, पीछे प्रीत सारू भवता क्यू फिरो।—फुलवाडी

२ कटुवचन, आक्षेप।

३ उपालभ।

उ०—१ इण गोर वधिया रे कारणे, म्हारी नणदल मोसो देवै रे,

म्हारी गोरजय वळती कर ।—लो गी

उ०—२ रूठा कथन रखे करो, मुम कूडो साम्य । थावण मोसी मत करै, रिद्धि पारसी राव ।—व. व ग

क्रि॰प्र०—देणो चोलणो, मारणो, लगाणो,

४ देखो 'मारो' (रू. भे)

रू०भे०—मूमो, मोगो, मोहो ।

मोह–स०पु० [स०] १ आध्यात्मिक क्षेत्र मे, ससार व सासारिक पदार्थो को सत्य मानने तथा इन्द्रिय जनित सुखो को स्थायी मानने का भ्रम, अज्ञान ।

उ०—१ हरिया साचै सूरवै, मारया पहली मोह । चकड़घा पाचू नोमिया, दौडा करता दोह ।—श्री हरिरामदासजी महाराज

उ०—२ ध्यान विग्यानीय जानि सर्व विध, रूप तणो मन मोह धूतारो । दास कहै हरिराम बिना हरि, होय नहीं नर को निसतारो ।—श्री हरिरामदासजी महाराज

उ०—३ इम करि बहु अचड, मोह परहर वप माया । दिव धरि धरि सुर देह, अछर वर स्रगि पाया —सू प्र.

उ०—४ काम क्रोध मद लोभ मोह कू, चित से बहाय दीजै । मीरां के प्रभु गिरधर नागर, ताहि के रग मे भीजै ।—मीरा

२ सासारिक सम्बन्धो के प्रति होने वाली आसक्ति, लगाव, आकर्षण, झुकाव । लोभ ।

उ०—१ राम नाम रातो नही, मातो माया मोह हरिया का तो नेहड़ो, सातो करि करि लोह ।—श्री हरिरामदासजी महाराज

उ०—२ रूपाळी चीजा रो मोह वेजा वात कोनी, पण रूप री परदो अलग रा दूजा गुणा नै आपरै मांय ढकयोडा राखै तो आ अवस वेजा वात है ।—फुलवाडी

३ ममता, वात्सल्य ।

उ०—१ भला आदमिया यें मोटा भगत वाजो अर थांनै इण माटी जित्तो ई जायोडी बेटियां सू मोह कोनी ।—फुलवाडी

उ०—२ लाड, मोह अर प्रीत मे अबूझ, नादान, छोटो टाबर जित्तो मरमें, उत्तो स्याणो, समझणो अर लांठो मोट्यार ई नीं समझै ।—फुलवाडी

४ प्रेम, स्नेह, प्यार ।

उ०—१ मात पिता रो मोह कुटब छोडै जिण कारण । वरै पतीव्रत धरम, तेण समजै भवतारण ।—ऊ का.

उ०—२ मार्दनी कमर रो मोह मार्दता रै गला सू ई घणो वत्तो है ।—फुलवाडी

उ०—३ माया मोह न कीजियै, माया वडी हराम । जन हरिया निह लोक मे, देता नरै विराम ।—श्री हरिरामदासजी महाराज

५ प्रसन्नता, खुशी, मोद ।

६ गर्व, अभिमान, घमड ।

उ०—हरि होड़ै हारै, गाहत थाई रीठ । मारयो राजा मोह सू, पाछो उछरै पीठ ।—श्री हरिरामदासजी महाराज

७ मोहित होने की अवस्था ।

उ०—टूड चढै प्रथीमल भाजै टोटो, लाला वर्णी सर धारै लोह । वायै वाय नळी जिम वाजै, अध मणधर जण आवै मोह ।

—महाराणा प्रथीराज रो गीत

८ उद्विग्नता, आतुरता ।

९ साहित्य में ३३ सचारी भावो मे से एक, जिसमे चित्त-वृत्ति अस्त-व्यस्त हो जाती है और उचित-अनुचित का कोई ध्यान नही रहता ।

१० एक प्रकार की तान्त्रिक क्रिया जिसे शत्रु के बल को कम करने के लिये प्रयोग मे लाया जाता है ।

११ दया, कृपा ।

उ०—कुळ वस वधारै, साथ सुधारै, तीन पख तारै । महाराज, सतियां पर मोह कीजै, आपणी कर लीजै ।—अ वचनिका

१२ ब्रह्मा का एक पुत्र ।

वि०—काला, श्याम ।   (डि. को)

रू०भे०—मो, मों', मोहि, मौह ।

अल्पा०—मोही ।

मोहक–वि० [स०] १ जिसके कारण मन में मोह उत्पन्न हो ।

२ मोहित करने वाला, आकर्षित करने वाला, लुभावना ।

३ अत्यन्त सुन्दर ।

४ राजा सुरथ का पुत्र एक राजकुमार ।

मोहकम—देखो 'मुहकम' (रू भे)

उ०—मैं थांहरै विचार रे विरुद्ध नही कियो, था कही कैद करो सो मैं च ही मोहकम खरी कैद करू, सो सवळी कैद अहसान री सो न दीठी ।—नी प्र

मोहकार–स०पु०—पीतल या तावे के घडे का ऊपरी भाग, मुख ।

मोहडो, मोहडो—देखो 'मूडो' (रू. भे)

उ०—१ उठे जाय घड घडी खाय तीर सारा नाखिया । केई मांही गरक था सो मोहडै सू काढ परा किया ।

—डाढाळा सूर री बात

उ —२ सू हू तो रजपूत खांमीदार रो मोहडो देखू नही । पण कासू करू, तू म्हारो पुरांणो चाकर छै ।

—जैतमाल पुमार री वात

उ०—३ तरै राघजी वात आ राखी, यहो-माहारो कोट आवसी तरै म्हे तोनू छोडसा । तरै डूगरसी कोट रै मोहडै जाइ जगहथ' देपावत नु कहीयो-गाजास तै पाच मास गढ विग्रहीयो ।—नैणसी

मोहण—१ देखो 'मोहन' (रू भे)   (ना मा, ह ना मा)

उ०—१ जरै श्रोतानुराग रै ही प्रभाव आकरसण, मोहण द्रावण, उन्मादण, वसीकरण पाचू ही मनोज रा सायकां री वेध्धो होय तत्काल ही आपरा प्रवान टीला नू बुलाय प्रासारी रा पाणि ग्रहण रै काज अरवुदाचल जाय सलग रा चित मे या वात स्वीकार करावण री कुणी ।—व भा

उ०—२ मिय निय तेज सुरा तन नीसर, मोहण रूप तेज ईख मुनेसर ।—मा वचनिका

उ०—३ रगण तगण मयगण करण, चवदह वरण अचूक । सात ब्यारि पच रूप सुजि, मोहण छद मलूक ।—ल पिं

२ देखो 'मोहनी' (रू भे)

उ०—मोहण मूरत सावळी सूरत नेणा वण्या विसाळ अधर सुधारस मुरळी राजत, उर वैजती माळ ।—मीरा

मोहणगती-स०पु०—काजल, । (अ मा)

मोहणवेलि, मोहणवेली-स०स्त्री०—वह लता जो मन को आकृष्ट करती हो।

उ०—१ अम्रत तणउ प्रवाह, मोहणवेलि तणउ कदलउ, पूनिमनउ चद्र, चालती चिंतामणि । —व स

उ०—२ तोरण वधाव्या मदिर वारणै जी, चित्रत कीधौ घर मोहणवेलि हो ।—वि कु

उ०—३ पचाइण नइ पाखरय्, महगळ नइ मद कीध । मोहणवेलो मारुइ, कत पेम रस पीध ।—ढो मा

उ०—४ चौडै वड मझा चवी, सभ आगळि सकाज । मोहणवेली अघ नयण, मूघ अभव महाराज ।—मा वचनिका

मोहणिज्ज-स०पु०—मोहनीय कर्म । (जैन)

मोहणिया-स०पु०—राठौडो की एक उप शाखा ।

मोहणियौ-स०पु०—उक्त शाखा का व्यक्ति ।

वि०—मोहित करने वाला ।

मोहणी-स०स्त्री०—१ एक नदी का नाम । (बा. दा. ख्यात)

२ देखो 'मोहनी' (रू भे)

उ०—नमौ मोहणी कमळा मूख मूनी, नमौ धोम धूतारणी सभ धूनी ।—मा वचनिका

मोहणीमत्र—देखो 'मोहनीमत्र' (रू. भे)

मोहणीय-स०पु०—मोहनीय कर्म, इसमे सम्यक्त्व और चरित्र को बिगाड किया जाता है (जैन)

मोहणौ, मोहवौ-क्रि०स० [स० मोहनम्, प्रा० मोहइ] १ मोहित करना, लुब्ध करना, रीझाना, वश मे करना ।

उ०—१ देवी रुक्मणी रूप तू कान सोहै, देवी कान रे रूप तू गोपि मोहै ।—देवि

उ०—२ सोमत रग सुगध री, कैफ नरग सुरग । महल सुरगा मोहियौ, राजेस्वर नवरग ।—रा रू

उ०—३ पखी बोलै मोर की, मीठा जग मोहत । जन मीठा बोला जिकै, क्यूं जग बस न करत ।—बां दा

२ आकर्षित करना, ललचाना ।

उ०—१ सत पाय उपाय दिगाय सती, पद गाय रिझाय छुडाय पती । अति लेखग राग चित्राम अटा । छिब मोहत है जिन देख छटा ।—ऊ का

उ०—२ विलास अर सुख रा चचळ रूप विचै सयम री आ अतुल छिब उण नै घणी मोहयी ।—फुलवाडी

उ०—३ सपत कोस कनवजह सोहत । मदन विनोद बाग मन मोहत—सू प्र. ।

३ प्रेमपाश मे बाधना ।

उ०—१ नेम जी हो मुगति रमणि मोहया तुमे हो राजि । पिण तिण मां नहिं स्वाद —वि कु

उ०—२ कुलम कियौ सोकण कुबज्या ने, ब्रजनद मोह लियौ ।
—मीरा

४ भ्रमित करना, भ्रम में डालना, धोखे मे डालना ।

उ०—बिछायत समियान बणिया, तई जरकसि हीर तणिया निध आमण छत्र सोहै, महा जगमग हुय मोहै ।—सू. प्र

५ मूर्च्छित करना, बेहोश करना ।

६ परेशान करना, तग करना ।

७ सासारिक कार्यों मे लगाना, माया में फसाना ।

मोहणहार, हारौ(हारी), मोहणियौ—वि० ।

मोहिओडौ, मोहियोडौ, मोहयोडौ—भू०का०कृ० ।

मोहीजणौ, मोहीजबौ—कर्म वा० ।

मोहाणौ मोहावौ—सक० रू० ।

मोहणौ मोहवौ, मोणौ, मोवौ, मोवणौ, मोवबौ,—रू०भे० ।

मोहता—देखो 'महत्ता' (रू भे.)

मोहताज, मोहताद-स०पु०—१ भोजन सामग्री ।

उ०—१ तठा उपरायत ओळगुवा बाजदारा नै इनाम दीजै छै । माळी नै मोहताद दीजै छै । मारा ही री आस-उमेद वर आणजै छै ।—रा सा स

उ०—२ गावै बहती गायणी महराग मलारा । दाम हजारा दीजीयै, मोहताद मझारा ।—मयाराम दरजी री वात

२ मांस ।

३ देखो 'मुहताज' (रू भे)

मोहताजी-स०स्त्री —मोहताज होने की अवस्था या भाव ।

मोहन-स०पु० [स०] १ ईश्वर, परमेश्वर ।

२ श्री कृष्ण का एक नामान्तर ।

उ०—माई म्हांनै मोहन मित्र मिळाय । रमियौ है उर अनर वसियौ या विनु कछु न मुहाय ।—मीरां

३ शिव, महादेव ।

४ माया, भ्रम ।

५ काम देव के पाच बाणों मे से एक ।

६ किसी को बेहोश करने के लिये किया जाने वाला एक तान्त्रिक प्रयोग ।

उ०—कामण, मोहन, मारण थमन, जगम, थावर ।
—पच दडी री वारता

७ उक्त प्रयोग में पढा जाने वाला मत्र ।

८ धतूरा।
९ स्त्रीप्रसंग, मैथुन, संभोग।
१० परेशानी, व्याकुलता।
११ भाव। (ना हि को)
१२ एक वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में नगण, तगण, भगण यगण, और अंत में दो दीर्घ वर्ण-कुल १४ वर्ण होते हैं।
१३ एक वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे एक सगण और एक जगण होता है।
१४ बारह मात्राओं की एक ताल। (संगीत)
१५ राठौड़ों की एक उप शाखा।
वि०—१ मन को मोहने वाला, मोहित करने वाला।
२ मोह उत्पन्न करने वाला, आकर्षित करने वाला।
३ परेशान करने वाला, व्याकुल करने वाला।
४ माया मे डालने वाला, फंसाने वाला।
रू०भे०—मोवण, मोवन, मोहण, मोहिण।
मोहनकंठी—सं०स्त्री०—गले (कंठ) मे धारण करने का, स्त्रियों का, एक स्वर्णाभूषण।
मोहनगारउ, मोहनगारो—वि० [स्त्री० मोहनगारी] मोहित करने वाला, मोह उत्पन्न करने वाला।
उ०—१ त्रिभुवन नउ मोहनगारउ, राजि तिणि लागइ मुझ नइ प्यारो।—वि कु
उ०—२ कृपा निधि विनती अवधारी। प्रभु मूरति मोहनगारी। निरख्यां हरखे नर नारी, जाऊं वारी हु वार हजारी।—वृ स्त
उ०—३ कामण मोहन नवि करउ, मुवा दीसउ छो साधु रे। मोहनगारा गुण तुम्ह तणा, ए परमारथ साध रे।—म कु
मोहणभोग—सं०पु०—१ एक प्रकार की मिठाई।
२ एक प्रकार का हलवा।
३ एक प्रकार का आम।
४ केला।
मोहनमाळा—सं०स्त्री० [सं० मोहन+माला] सोने की गुरियों या दानों की माला। गले का आभूषण।
उ०—मोर मुकुट पीतांबर सोहै, भाळ तिळक गले, मोहनमाळा।
—मीरां
मोहनाळ—सं०पु०—१ पशुओं के नाक से सिर तक का ऊपरी भाग।
उ०—लाहोरी ताजी तुरंग वांण गिलजा पहाड़ी। जिकारी मूंढ़हथ मोहनाळ हाथ भर नम —रा सा स
२ देखो 'मुहनाल' (रू भे)
मोहनास्त्र—सं०पु० [सं० मोहन×अस्त्र] शत्रु को मूच्छित करने का एक प्राचीन अस्त्र।
मोहनि, मोहनी—सं०स्त्री० [सं० मोहिनी] १ विष्णु का एक अवतार, जो एक सुन्दर अप्सरा के रूप मे हुआ। इसने दानवों को मोहजाल मे डाल कर देवों को अमृत पीने का यथेष्ट अवसर दिया।
(पौराणिक)
२ एक वेश्या, जो मृत्यु के समय गंगाजल पीने के कारण अगले जन्म मे द्रविड देश के वीर वर्मा राजा की पटरानी हुई।
(पौराणिक)
३ वैशाख शुक्ला एकादशी की तिथि जो पर्व दिन मानी जाती है।
४ सुंदर स्त्री, सुंदरी।
उ०—मन भावनी माधुरी मोहनि, चंद वदन चित चंगी। अंतकाळ मे अरथ न आवत, कांमनि नेन कुरंगी।—ऊ का.
५ माया।
६ एक देवी विशेष।
७ प्रीति।
८ वशीकरण मन्त्र।
९ बेहोश या मूर्च्छित करने की क्रिया।
१० भ्रम मे डालने की क्रिया।
११ एक वर्ण वृत्त, जिसके प्रत्येक चरण मे सगण, भगण, तगण, यगण और सगण होते हैं।
१२ एक मात्रिक छंद जिसके सम चरणों मे सात-सात मात्राएं और विषम चरणों मे बारह-बारह मात्राएं तथा अंत में सगण होता है।
वि०—१ मोहित करने वाली, सुहावनी, लुभावनी।
उ०—मयाळ महपाळ मेघमाळ मोहनी नहीं। हिलव से प्रलंब थंभ, बिंब सोहनी नही।—ऊ का
२ भ्रमित करने वाली, भ्रम में डाल ने वाली।
उ०—श्रो संसार मोहनी माया, देख रीझ मति भाया रे। अगजळ नीर निरं कर नाईं, परतक मिथ्या थाया रे।
—श्री सुखरामजी महाराज
रू०भे०—मोवणी, मोवनी, मोहणी, मौहणी, मौहिणी, मौहीणी।
मोहनीमंत्र—सं०पु०—वशीकरण मंत्र।
मोहनीय—वि०—१ मोहित करने योग्य, सुन्दर, आकर्षक।
२ मोह उत्पन्न करने वाला।
मोहनीरूप—सं०पु०—समुद्र मथन के बाद अमृत बांटने के लिये विष्णु द्वारा धारण किया सुन्दर स्त्री का रूप।
मोहनो—वि०—मोहित करने वाला, लुभाने वाला, अत्यन्त सुन्दर।
उ०—सुसील सम्प साच्छर, स्तुति प्रमान मोहनें। अभंग पुत्ति ओज के मनोज मूरति मोहनें।—ऊ का
मोहपुर—सं०पु०—स्वर्ग देवलोक।
मोहबत, मोहब्बत—देखो 'मुहब्बत' (रू. भे)
उ०—अब मोहबत कौन काम की, गिरधर बिना हु नगोडी —मीरां
मोहमी—देखो 'मोवी' (रू भे)
उ०—लाल म्हारा रे, हां, रे मोहमी म्हारा रे। मोनै तज जावै मती रे।—गी रां.

रू०भे०—मोहणीमंत्र।

मोहमदीय-वि०—मुहम्मद का ।

उ०—सह बोलिया सकाज मतो करै विहुवै मिसल । मे न वछित महाराज ए मोहमदीय असपती ।—सू प्र

मोहम्मद—देखो 'मुहम्मद' (रू भे.)

मोहर-स०स्त्री० [फा० मुह्र] १ स्वर्ण मुद्रा, अशरफी ।

उ०—१ तद आलम्म 'दुरग' सू, बाधे सघ विचार । घार दिलासा मोकळी, मोहरां आठ हजार ।—रा रू

उ०—२ आरती होवे । आरती री मोहर सवासणी नु दीजै । पछै सगळा माणसां नु पगा लगावै ।—नैणसी

उ०—३ मोहर ताळ री रोगान रग लागो छै । तरवार कटारी वरछो रा दाव ही न लागं छै ।—रा सा स

२ कोई चिन्ह या अक्षर आदि दबाकर अंकित करने का ठप्पा, जो किसी धातु या रबर का बना होता है ।

३ उक्त ठप्पे द्वारा अंकित किया हुआ चिन्ह या अक्षर ।

४ धातु की बनी मील जो किसी चीज को बद करके मुह या जोडो पर चपडी लगा कर, ऊपर से लगाई जाती है ।

५ सेना का अग्र भाग, हरावल ।

६ सिंधी मुसलमानो की एक शाखा ।

७ पद्य की द्वितीय और चतुर्थ पंक्ति का परस्पर मेल ।

उ०—धुर तुक मह अठार मत, चवद सोळ चवदेण । सोळ चवद लघु गुरू मोहर, जाण सोहणो जेण ।—र ज प्र

वि०—१ प्रधान, मुखिया, अग्रणी ।

२ प्रथम, पहिला ।

क्रि०वि०—३ पूर्व, पहिले ।

उ०—वीरा राईका नै कह्यौ । वोमाई साढ ताती छै । तिण चढने जालोर जा । सवा पोहर दिन चढिया मोहर जाए ।

—वीरमदे सोनगरा री वात

४ आगे, अगाडी अग्र भाग पर ।

उ०—परठि जीण पाखरा, तुरग सझिया अतुळीवळ । भार आरावां भरै मोहर खडकिया असगळ ।—सू प्र.

५ सामने-सम्मुख ।

उ०—भागळा हत 'रतन' सी भाग्वै दाखै चलण न पीठ देऊ। थाटा तणी पीठ हू थोभू, थाट मुडै किम मोहर थऊ ।

—रतनसिंह सिसोदिया री गीत

रू०भे०—महर, महुर, महुर, महुरउ, महूर, महोर, महोर, महोरि, मुहर, मुहरि, मुहरी, मुहुर, मोर, मो'र, मोहरि, मोहरी, मोहेर, मौहर, मौर, मौहरि, मौहरी, मौहरू, म्होर ।

मोहरत, मोहरत्त—देखो 'महूरत' (रू भे)

उ०—१ साह ज मोहरत सोधीयो, मुगत हरख मना । जनमपुत्र मे जोतसीया, दीनौ नाम पना ।—पना

उ०—२ पछै भलो मोहरत जोवाड कुभे नू प्रोहित नाळेर दियो, ताहरा कूभै उठ, सलाम कर नाळेर लियो ।—नैणसी

मोहरम-स० पु० [अ० मुहरम] १ इस्लामी वर्ष का पहला महीना । २ इस महिने मे इमाम हुसेन का मनाया जाने वाला शोक ।

रू०भे०—मौरम, मौहरम ।

मोहरामेळ-स०स्त्री०—तुक बदी ।

मोहरि—१ देखो 'मोरी' (रू भे)

२ देखो 'मोहर' (रू भे)

उ०—१ रुद्रसेण उण गज मोहरि ल्याऊ । वरियावर निज राज वणाऊ ।—सू प्र

उ०—२ 'किसनेस' वघव कणंठ अरि खग ओझडै । रघु मोहरि लका राडि, लखमण किर लडै । पित मोहरि 'गजण' प्रचड जग चख जेहडो । तपवत लडै सतेज 'अरजिण' एहडो ।—सू प्र

मोहराज-स०पु० [स०] आध्यामिक क्षेत्र मे, मनुष्य की पाच वृत्तियो मे से प्रमुख वृत्ति । मोह ।

उ०—ससार देस माहि असुख अपार, राज करइ छइ तीह मोहराज ।—वस्तिग

मोहरियाळ-वि०—अग्रगामी, अग्रणी ।

रू०भे०—मौहरियाळ,

मोहरि-स०स्त्री०—१ किसी वरतन आदि का मुख या ऊपर का खुला भाग ।

२ पाजामे या पेंट का वह भाग जिसमे टांगे रहती है ।

३ देखो 'मोहर' (रू भे)

उ०—१ माळी रै घरै सखरी जाइगा वागीचा माहे डेरो लीयो । माळिण नु मोहरी दीधी । जीमण करायी । डेरै मरव जावतो कीयो ।—चौबोली

उ०—२ मोहरी दळ रगतासुर माझी । मार भवर सैंहस वळ साझी ।—मा. वचनिका

४ देखो 'मोरी' (रू भे)

उ०—इतरी मनुहार करि करहा री मोहरी झालि करहा नै झेकीयौ ।—ढो मा

मोहरे, मोहरै-क्रि०वि०—१ अगाडी, आगै ।

उ०—वव मोहरै वाजिया 'कान्ह' जजमान सकज्जां । सांम काज कुळ लाज राज लख आज गरज्जा ।—रा रू.

उ०—२ अन मुड्ता जुडता आवहै । मिरदारा मोहरे समसेर । मरण दीह गजग्राह मडाणं, मुडियो न कहांणो गिर-मेर ।

—गोकुळदास मक्तावत

२ सामने, सम्मुख ।

उ०—काका तणा कठीर, सामठिया भत्रीजे सवद । सकजा भडा सधीर, हुय मोहरै हलकारिया ।—गो. रू

रू०भे०—मुहरे,

मोहरौ-स०पु०—१ देखो 'मोरौ' (रू भे)

उ०—१ तिगपर विग्र फूत् का घाव। सीह गोसू के दाव। ऊछट झपट में मिळने हैं। मोहरा चडाव करते हैं।—सू प्र

उ०—२ विमय हळाहळ खाइ कर, सब जग मर मर जाइ। दादू मोहरा नांम ले, हृदय राखि ल्यौ लाइ।—दादूवांणी

उ०—३ लगा पाखरा साज लूमा लडी सूं, प्रहीना चलै ज्यूं नटी पट्टी म। मिळै मोहरा मोहरा पति मोती, कळा करत्तगी जीत पावै पनोती।—व भा

उ०—४ इगा ऊठ भेकजै छै। हाथ फरजै छै। पीतळ रा गीरवाण रूपै रा तठा छै। ता माहै मोहरा वोळनै मोहरा घातजै छै।

—रा मा स

उ०—५ दं दं लगांम कसि तग दृढ़ जेरबन्द मोहरां जड्या। ऐराक घाट काठी उतन, घाट वेह टाली घड्या।—मे म.

उ०—६ पिचरगा मूत री नाथां श्रर पिचरगा भळेवडा रेसमी फूंदिया, मूत री राहडियां, मूडा रै मोहरा श्रर माथै चांदी रा घूघरा वाला छडा।—फुनवाडी

उ०—७ यळ खट करै वीपखा, फरणौ, विच जिणगुर सबोधन वरणौ। तुक चवदै फळ वर्ल जितावै मोहरा तिण रा मेळ मिळावै। उण पर दूजी भराटिया वाळौ, फिर तुक श्रादि तिका श्रत फाळौ। धुरे तिका मोहरा सुध धारौ, चितविलास मो गीत उचारौ।

—र रू

रू०भे०—म्होरौ,

मोहल—१ देखो 'महल' (रू. भे)

उ०—१ देहरौ १ जळै जैन रौ थौ। पूल मोहल गी ठौड थौ। तद भनौ सहर वसतौ।—नैणसी

उ०—२ राजा प्रावरै मोहल मां श्रायो छै।—पच दडी री वारता

उ०—३ तद श्रपछरा रौ मोहल एकायत कीयौ। उठै श्रपछरा रहै। धांधलजी श्रपछरा री वारी रै दिन श्राप जावै।—पाबूजी री वात

उ०—४ राजा रै मोहल माहे सुदराणी दहट तिका पदमणी।

—राजा नरसिंघ री वात

उ०—५ भतलग प्रति सोभा सीह, पहरी पीया के श्रग। सुदर ऊभी मोहल म ध्ये परि पणी सुचग।—य स

२ देखो 'महिळा' (रू भे)

उ०—१ तद ए दोनूं उठे श्राया, कहियौ- मोहन काढो, गवजी न भांभरके राग देवो। सो कुंवर रा गोमा गुनो मांन पूरे पहुयाया।—श्रमरसिंह गजसिंहोतरी व त

उ०—२ मोहल निद्रावळ कीवी वैठा हमी खुसी री व ता कीयी।—नार्वे मांतने री वारता

मोहलत-स० स्त्री० [श्र०] १ श्रवकाश छुट्टी।

२ समय, वक्त फुर्सत।

३ मयाद, श्रवधि।

४ ढील, छूट, रियायत।

५ विलब, देर।

रू० भे०—मालत, मुहलत, मोळगत, मोळत, मोलत, मोलगत, मोलत।

मोहलाइत, मोहलायत—देखो 'महलायत' (रू भे)

उ०—१ ताहरा स्यांम सुदर सूं लोक कहै, 'स्याम सुदरजी, थांहरै मोहलाइत हुई छ।"—स्याम सुदर री वात

मोहलौ—१ देखो महोलौ' (रू भे)

उ०—१ तिण वेळा सम नै निसभ रै कानै, श्रा श्रमगळ री वात कानै श्राई। वोहत सत्रोत्र सोच उर मे हुवौ। दिवांण किया। वडा वडा उमरावा रा मोहला लिया।—मा वचनिका

उ०—२ तठा समत १६७७ रा वैसाख माहै साहजादौ खुरम दिखण रै सूबै श्रायौ। पछै साहजादी नु स्त्री माहाराजा जी मोहलो दियौ।—नैणसी

२ देखो 'महल्लौ' (रू भे)

उ०—१ जद ए कह्या। भीखण जी। ये वैरागी वाजो नें इण मोहला में नुखतो थयो तिणरा घर सू पकवान लाया।—भि द्र.

उ०—२ व्यास ऊदैचद री हवेली मूलनायकजी रा देवरा श्रागै वांमण रा घर था सु पाड़ नै गूंदी रा मोहला री चौक करायौ नै उण नै जायगावा दूजी दीवी।—मारवाड री ख्यात

३ देखो 'महल' (श्रल्पा, रू भे.)

उ०—ऐ ठाकुर घोडा दोडावण लागा। घोड़ा छोडि दीया छै। राजलोक मोहलै चढीया ऊचा देखै छै।—लाखा फूलांणी री वात

मोहल्ल—१ देखो 'महल' (रू भे)

२ देखो 'महिळा' (रू भे)

३ देखो 'मूल्य' (रू भे)

उ०—कैवास सूर सारखि कियत जास मोहल्ल न पांमता। चौतीस लाख चतुरग दळ, हय श्राय सह हालता।—नैणसी

मोहल्लौ—१ देखो 'महल्लौ' (रू भे)

उ०—वोल्यौ-मितर मोहल्लै परखियै, धीणौ मदै धाम।

—दसदोख

मोहांमाही—देखो 'माहींमाह' (रू भे)

उ०—राजसिंह जसवतोत नूं भाद्राजण पटै थौ, सु मोहांमांही छीतर नै राजसिंघ जसवतोत उपाव हुवौ, तठै रा राजसिघ जसवतोत छीतरदास नूं श्रावाजण रै कोट मांहै मारियौ।

—नैणसी

मोहाणौ, मोहावौ—देखो 'मोहणौ, मोहवौ' (रू भे)

उ०—१ हमने कहा निरमोहित रहना, तुम तो जात मोहाय राम।

—मीरा

उ०—२ ससार मगन माया, कांमी क्रोध लोभ मोहाणौ। स्वारथ हित करणौ को, भ्राता तात पुत्राई।—गु. रू व

मोहा-स०स्त्री०—भूमि, जमीन। (अ मा)

वि०—मोहित, भ्रमित।

उ०—साहब मन मोहा दुख सू दोहा, लाहां लोह लडदा है।

—ऊ का.

मोहागनि मोहाग्नि-स०स्त्री०—मोह रूपी अग्नि।

उ०—जरियें ना मोहाग्नि धरियें अब धीरज को, मरियें नां रोय सब करियें सबरजू।—ऊ का

मोहाजाळ-स०पु०—१ सासारिक प्रपच, जिसमे फसने के बाद मनुष्य छूट नही सकता।

२ शरीर और सासारिक पदार्थों को अपना व सत्य समझने का का भ्रम-जाळ।

उ०-सतगुरू वचन वाण सत् लागा। मोहाजाळ नींद माहु जागा।

—स्री सुखरामजी महाराज

मोहायण-स०पु०—मोह का स्थान।

मोहि, मोहि-सर्व० [स० मह्य, मय्ह] १ मुझे, मुझको।

उ०—१ दरसन विन मोहि जक न परत है, चित मेरो डांवाडोल।

—मीरा

उ०-२ लवोदर सारद हित लीजे। दास जांण मोहि वांणी दीजे।

—रा रू.

२ मेरा, मेरी।

उ०—हिल मिळि सब करत है वाती, पीउ विणु मोहि फाटत छाती। हो लाल।—घ व ग्र

३ मुझसे।

उ०—अकथ कथा मोहि लखी न जावै। तीन लोक तेरा जस गावै।

—स्री हरिरांमदासजी महाराज

रू०भे०—मोही, मोहीं, मोहे, मोहै।

४ देखो 'मोह' (रू भे)

उ०—वीये दिन चपा नयर वुलाइ। ले आइ रिख सु मोहि लगाइ।

—रांमरासो

मोहिण—देखो 'मोहन' (रू भे)

मोहित-वि० [स०] १ मोह मे पडा हुआ, भ्रमित।

२ लुब्ध, आसक्त, मुग्ध।

३ मूर्च्छित वेहोश।

मोहिनि, मोहिनी—देखो 'मोहनी' (रू भे)

उ०—वाही पर तन मन हैं वारी। वह मूरति मोहिनी निहारत, लोक लाज डारी।—मीरा

मोहिम—देखो 'मुहिम' (रू भे) (मा म)

मोहिल, मोहिल्ल-स०पु० (स्त्री० मोहिलणी) चौहान वश की एक शाखा व इस शाखा का व्यक्ति।

उ०—१ राव चूडो वूढा हुआ। मोहिला रै परणीया, पछै आय मोहिलणी रै वस हुआ।—राव रिणमल री बात

उ०—२ छापरउ कियउ छागां छयाह, वलिवडि राइ फरि फेरि वाह। चउड राउ चडिय मोहिल्ल चीति, राहाचरक्क देखाळि रीति —रा ज. सी

मोहीं, मोही—देखो 'मोंहि' (रू भे]

उ०—वास जग में श्रास जम की, अलप जीवनी मोही। जन हरि॰दास कू विस्वास तेरा, मैं न छाडो तोहि।—ह पु वां

मोहीलौ-वि०—१ स्नेही, प्रेम, प्यारा।

२ देखो 'महल्लौ' (रू. भे)

३ देखो 'महोलौ' (रू. भे)

मोहूरत—देखो 'महूरत' (रू भे)

उ०—लगन लेई नै जोइयो मोहूरत रूडो न होयवै। अगम तिगम सासो लहो, राजा नै कहै जोयवै।—रीसालू री वात

मोहे—देखो 'मोहि' (रू भे)

उ०—निरखण री मोहे चाव घणेरो, कब मुख देखूं तेरा।—मीरां

मोहेर—देखो 'मोहर' (रू भे)

उ०—तद वलू कही—व्यासजी सांची कहै छै। आपां इसा नीसरो सो सागी हाथी जावो। ताहरां सवार मोहेर हुवा, पाळा पूठे किया, त्यांनू कही—थे पाधरा तोपखाने ऊपर पडज्यो।

—अमरसिंह गजहसिंह री बात

मोहोबत, मोहोब्बत—देखो 'मुहब्बत' (रू. भे)

उ०—१ मिळी निसांन वजाय फ्रसण सू ज्यो कछु कहो सो साची। जन मीरा गिरधर की प्यारी, मोहोवत हैं नहि काची।—मीरा

उ०—२ मेरी ज्यांन मोहोब्बत लगाई रे, गिरधर पीतम प्यारे सो।—मीरा

मोहोर—देखो 'मोहर' (रू भे)

उ०—१ हीरां वार वार मुजरो कर हरख धरै छै मोती मोहोर मुगिया सू निछरावळ करै छै।—वगसीरांम प्रोहित री बात

उ०—२ भीमाजळ मोहोर झेलिया मारत, घणं पेसि गज वोह घणं।—चतरो मोतीसर

मोहोल—१ देखो 'महल' (रू भे)

२ देखो 'महिळा' (रू भे)

मोहोलौ—१ देखो 'महल्लौ' (रू. भे)

उ०—लूबा झूमा हुइ थकी फीरै छै, मोहोला, मोहोला मासू नीसरी छै राग रग करै छै।—पना

२ देखो 'महोलौ' (रू भे)

मोहौ-स०पु०—१ कूए की जगत।

२ कूए पर का वह स्थान जहा पर खडे होकर पानी खीचते हैं।

३ देखो 'मोह' (अल्पा, रू भे)

उ०—१ कूरम कहै अमर नह काया, पुळवा कारिण हुवा पोहो। मोहौ वाधियां न जाये मरणि, सरम वाधिया मरै सोहो।

—पुर्जाणसिंग जगन्नाथोत कछवाहा री गीत

उ०—२ मूरख जन मोहौ करवाने भालण कवै अभिमांनै।

—नलाख्यांन

मोहोल—१ देखो 'महल' (रू भे)
२ देखो 'महिळा' (रू भे)
मोहोलो—१ देखो 'महल' (रू भे.)
उ०—सवारै दिन पोहर चढता ग्राप रै घरे पाटण माहै मूळराज मोहाजी नु मारै माय सुवा मोहोलां में ले गया।—नैणसी
उ०—२ पछै ग्रहमदाबाद पधारीया। वासै दरगाई उकील मनोहरदास सु डोळ कीयो। वैसाख सुदि ४ पातसाही मोहोलां पधार डेरो कीयो।—नैणसी
२ देखो 'महोलो' (रू भे)
मौं—देखो 'मो' (रू. भे)
मौंग्रडो—देखो 'मूढो' (रू भे)
मौंज-स०पु० [स०] १ भृगुकुलोत्पन्न एक गोत्रकार।
२ देखो 'मौज' (रू भे)
मौंजकेस-स०पु० [मौंजकेश] ग्रत्रिकुलोत्पन्न एक गोत्रकार।
मौंजवृस्टि-स०पु० [स० मौंजवृष्टि] ग्रगिरा कुलोत्पन्न एक गोत्रकार।
मौंजा—देखो 'माजा' (रू भे)
मौंजायन-स०पु०—युधिष्ठिर की सभा का एक ऋषि।
मौंजायनि-स०पु०—विश्वामित्र कुलोत्पन्न एक गोत्रकार।
मौंजिबधण, मौंजिबधन-स०पु०—यज्ञोपवीत सस्कार। जनेऊ।
मौंजी—देखो 'मौजी' (रू भे)
मौंठोडी-स०स्त्री०—१ मोठ नामक द्विदल ग्रन्न की फली।
२ मोठों की बनी हुई वडी।
मौंढो—देखो 'मूढो' (रू भे)
उ०—नै वीदावत उदैकरण री वरती मैं वडो ग्रपजस हुवो। ग्ररु मौंढो काळो कराय ग्राय ऊभो।—द दा
मौंत—देखो 'मौत' (रू भे.)
मौंनाळ—देखो 'मुहनाळ' (रू भे)
मौंसरां-स०स्त्री० [स० श्मश्रु] मूछें।
मौंहडो, मौंहढो—देखो 'मूढो' (रू भे)
उ०—कोई जाण पावसी तो राजा नू कहि पकडावसी, काळो मौंहडो होसी।—सिघासण बत्तीसी
मो—देखो 'मो' (रू भे) (उ र)
उ०—१ गणपति गिरा निवासी गुरगण, मगळ करण ग्रमगळ मेटण। करो दया मो मीत दयाकर, ग्रापो सार चार गुण ग्रर धर।—रा रू
उ०—२ जनक सुता मन रजण गजण, ग्रसुर ग्रगजण ग्राहव। मैं सरणागत वदम सदामत, मो सजा रख माहव। दीनांनाथ ग्रभै वरदाता, ग्राता सेवग तारण, तो निज पायनि मो दसरथ तण, मरण पाप निवारण।—र ज. प्र
उ०—३ सिस भय नीगमीस कामिनी। राति दिवस मो थारीय चित।—वी दे.
उ०—४ सुणी ग्रनोर गिरराज सीग, रासै गुमांन मो जंग रीस। किण हेक पाण बोलै करूर, ग्रातुर पलाद धावो ग्रहूर।
—मा वचनिका
मोकणो, मोकवो—देखो 'मूकणो, मूकवो' (रू. भे.)
उ०—जटी ग्राक ग्रोकवो मवेस को सोकवो जगां,जती को मोकवो नगा लका सीम भाळ। कळेसा कोकवो काळ तोकवो तुरी को कनां, छोळां नाथ सबरी को भोकवो छडाळ।—हुकमीचद खिडियो
मोकणहार हारो (हारी), मोकणियो—वि०।
मोकिग्रोडो, मोकियोडो, मोक्योडो—भू०का०कृ०।
मोकीजणो, मोकीजबो—कर्म वा०।
मोकळणो, मोकळबो—देखो 'मोकळणो, मोकळबो' (रू भे)
उ०—दाह वळ वडो विह्वळ हुवै ग्रिखावत जळ मोकळे। कळि मूळ ग्राइ पैठो 'कमो' सुइ कठै साम्वर वळै।—गु रू ब
मोकळणहार, हारो (हारी), मोकळणियो—वि०।
मोकळिग्रोडो, मोकळियोडो, मोकळ्योडो—भू०का०कृ०।
मोकळीजणो, मोकळीजबो—कर्म वा०।
मोकळियोडो—देखो 'मोकळियोडो' (रू भे)
(स्त्री० मोकळियोडी)
मोकळो—देखो 'मोकळो' (रू भे)
मोकावारदात-स०स्त्री०यौ० [ग्र० मोक+वारदात] घटना स्थल।
मोकियोडो—देखो 'मूकियोडो' (रू भे)
(स्त्री० मोकियोडी)
मोकूफ-वि० [ग्र०] १ रोका या स्थगित किया हुग्रा।
२ नौकरी से निकाला हुग्रा, बरखास्त।
३ दूर किया हुग्रा, ग्रलग किया हुग्रा, हटाया हुग्रा।
४ मिटाया हुग्रा।
रू०भे०—मोकुव, मोकूफ, मोकूफ, मोकूव।
मोकूफी-स०स्त्री० [ग्र०] १ "मोकूफ" होने की ग्रवस्था या भाव।
२ बरखास्तगी।
रू०भे०—मोकूबी।
मोकूव—देखो 'मोकूफ' (रू भे)
मोकूबी—देखो 'मोकूफी' (रू भे)
मोको-स०पु० [फा०] १ इच्छित या किसी ग्रच्छे कार्य के लिये सयोग से मिलने वाला शुभ ग्रवसर।
उ०—१ गरज हुवै जितै गधै नै ही बाप कंय'र बतळाणो पडै। मोको है हाथ सू नी जावै। ग्रोसर चूकी डूमणी गावै ग्राळ-पताळ।
—दसदोष
उ०—२ मोचण लागी के ऐडो काळ हाथै ग्रायां चूकग्यो तो वळै मोको हाथ नीं ग्रावैला।—फुलवाडी
उ०—३ चिठी तो नियां दियां वैठो हो। सातरो मोको देखनैं वो फुरती सूं फटाफट कटोरदांनां रा लाडू ग्रदळ-बदळ कर दिया।
—फुलवाडी
२ ग्रपने विचार प्रगट करने, बात कहने या कोई कार्य करने के

लिये मिलने वाला अवसर। (चांस)

उ०—१ बीनणी नै तो बोलण रो मोको ई नी मिळियो।

—फुलवाडी

उ०—२ आप म्हांरै माथै पयाळ-लोक चालो अर म्हांनै आपरी सेवा-बदगी रो मोको दो।

३ किसी कार्य का उचित समय, उचित अवसर।

उ०—१ म्हैं आ सरपणी रा बिचियां नै छाती सू चेप-चेप नै लाठा इण वास्तै करिया के मोको लाग्यां ऐं म्हनै ई डसै।

—फुलवाडी

उ०—२ जकै मोकै माथै फूल री जगा फाखडी तो करणी ही पडसी।—दमदोख

४ ऐसा समय, जब कोई विशेष कार्य हो रहा हो।

उ०—१ किसं'क मोकै बदळी करवाई। सेठां री तो जद ठा' पडतो थारी बदळी नी हुवण देंवता।—दसदोख

उ०—२ हजार री खातर पैंठ गमाय दी तो सेठांणी मरियां ईं पतियारो नी करैला। इण मोका माथै हजार रिपिया देवणा ठीक है।—फुलवाडी

५ कठिन समय।

उ०—१ साग री कुडछी रो ही सीर कोनी। ढेरा रो सो साख है। मोको पडयां करणै नै चेतै करो हो, नी तो करणो जाओ बाळ्योडा तिला मे।—दसदोख

उ०—२ कैवण लागा-थू तो खुद समझदार है। वता मोका माथै म्हैं कित्ती जोखम ओढ़ी, पण नुगरी रैया गुण थोडो ई मानैला।

—फुलवाडी

६ घटनास्थल, वारदात का समय।

उ०—१ जीव-निरजीव री मुलाकात! मौत-मरणै री घात! फरारा री टोळी रा दवग अर धाखड-धाडेत चेत्या, चमक्या तथा चटदेणै मोकै जा पूग्या —दसदोख

उ०—२ राजा री आख्या साभी अधारी आयगी। कानां रा पडता फूटण लागा। वेचेतं होयनै पडणवाळो हो के मोका माथै रांणी वण नै झाल लियो।—फुलवाड़ी

उ०—३ आखा राज मे खळवळी मचाय दी। मोका माथै खुदोखुद देखण नै नी जावता तो वळै वोखो व्है जातो।—फुलवाडी

७ स्थान, जगह।

उ०—पाणी री असली कीमत तो रोही मे ईं पिछाणीजै। उण चौरस्ते बीस गावां री ढूक है। प्याऊ रो ऐडो मोको सो सो कोसा ईं नी लाधै।—फुलवाडी

८ अवधि, मोहलत, मयाद।

६ अवकाश, फुरसत।

मुहा —१ मोको आणो=उपयुक्त या इच्छित अवसर आना, समय आना।

२ मोको देणो=अवसर देना, वक्त देना।

३ मोको मिळणो=समय या अवसर प्राप्त होना।

४ मोको लागणो=समय या अवसर पाना।

५ मोको सजणो=समय पर उपयुक्त व्यवस्था होना।

६ मोको हाथ आणो = देखो 'मोको मिळणो'।

रू०भे०—मको' मोको,मोखो।

अल्पा०—मकोडो, मकोडउ।

मह०—मक्क।

मौक्तिक-स०पु० [स०] मोती।

उ०—कठ कदलि अलकार विस्रव्वसम्यक्त्व सस्कार, वक्ष स्थलि मौक्तिक तणउ हार।—व स

मौक्तिकदांम—देखो 'मोतियदाम' (रू. भे)

मौक्तिकभग-स०पु०—एक प्रकार का आभूषण (व स)

मौक्तिकमाळा-स०स्त्री०—१ मोतियो की माला।

२ ग्यारह अक्षरो की एक वर्ण-वृत्त का नाम, इसमें पहला, चौथा पांचवा, दसवां और ग्यारहवा वर्ण गुरु होता है।

मौक्तिकसर-स०पु०—एक आभूषण विशेष। (व स.)

मौक्तिकहार-स०पु०—मोतियो का हार।

उ०—जिसिउ चद्र मडल, जिसिउ स्फटिकोपल, जिसिउ क्षीर समुद्र जल, जिसिउ हिमाचल, जिसउ विकसित केतकीदल, जिसिउ सरद अजल, जिसिउ मौक्तिकहार।—व स

मौख—१ देखो 'मोक्ष' (रू भे)

उ०—माया मोह भरम की भीतां मौख मुगती कै आडी।

—स्री हरिरांमदासजी महाराज

२ देखो 'मोख' (रू भे)

मौगर—देखो 'मोगर' (रू भे)

मौगो - देखो 'मोगो' (रू भे)

मौड-स०पु० [स० मुकुट प्रा मउड] १ विवाह मे वर के सिर पर बाधा जाने वाला सेहरा।

२ सेना मे योद्धाओ के सिर पर बाधा जाने वाला सेहरा।

उ०—१ सझि तुरा साज जकडं ससत्र, 'वळू' मौड सिर बाधियो। 'अमर' रै वैर असपति हू, कमधा जुध आरभ कियो।—सू प्र

उ०—२ सूर घसै घमसांण घण, कायर लहै न ठोड। हरीया सूरै मरण का, माथै विध्या मौड।—स्री हरिरामदासजी महाराज

उ०—३ तो ओ वडो अवमाण मिर मौड वाधो।—मा वचनिका

३ मुकुट।

उ०—थये सचेतन महूरत, वकै भकै विरहाकुळ। हा भवतव्य

ग्रनीठ, प्रमुर मिर मोट महै तुळ ।—मा वचनिका
४ स्त्रियों के सिर का एक ग्राभूषण ।
वि०—१ श्रेष्ठ शिरोमणि ।
उ०—१ गजराज चढै कमधज गहर । सूरिमा मोट महाराज सूर
—सू. प्र
उ०—२ जटीनू बाणापति गधागी मुतन जोध भणां जे कौंतेय घरा कुबेर भडार । फावै एता कमधा मोड़ किया 'फता' सार नै ग्राचार उमै नराहै समार ।—पदमो सिढियो
२ प्रधान, मुखिया ।
उ०—एम ताम उच्चरै मुमत पूरण गण मायर । मोड 'सेम' मणियां जोड प्रोहत रैणायर ।—रा रू
३ सर्व-मान्य ।
उ०—राठौड मौड हिंदुवाण मिरि, महा दुग गढ जोधपुर । गज-सिंघ कुवर ग्रा सूरसिंघ, सहुवै वदै सुर ग्रसुर ।—गु रू व
रू०भे०—मउड, मउड, मउडि, मउर, मवड, मवोड, मोड, मोड, मोटउ, मोट ।
मौटउ—१ देखो 'मोडो' (रू भे)
उ०—वळनउ पूछइ वात विवेक, लगन विचइ थायइ दिन एक । पतइ यहूनां मांदउ पइयउ, तिणि कारणि मोडउ ग्रावइयउ ।
—ढो मा
२ देखो 'मोड़' (रू भे)
मोडणो,मोडवो—देखो 'मोडणो, मोडवो' (रू. भे)
उ०—१ तन मौड बांकी निजर त्रिपुरा सलज चढियां सौहळी । गळ नाग चाढै विपट मोहै, प्रहर वेमर ग्रळवळी ।—मा वचनिका
उ०—२ मौड़ै मुख मोड़ै हीतळ हतवाळो, पीतळ पैरण नै सीतळ सतवाळो ।—क का
उ०—३ उण रै वारै जावता घणी री ग्रांख्यां ई सुजी । वो ग्राळस मोड़ नै बैठो व्हियो —फुलवाडी
मोड़णहार, हारो (हारी), मौड़णियो—वि० ।
मोड़िग्रोड़ो, मोड़ियोड़ो, मोड़योड़ो—भू० का० कृ० ।
मोडीजणो मोडीजवो—कर्म वा० ।
मोडवध, मोडवधो—सं० पु०—१ वर, दूल्हा ।
२ राजा ।
वि०—जिसके सेहरा बंधा हो ।
रू० भे०—मोटबंध, मोटबंधो, मौडबध, मोडबंधो ।
मोडबधी—स० स्त्री०—१ वधू दुलहिन ।
२ मौड बांधने की क्रिया या भाव ।
३ वह स्त्री या लड़की जिसके मोड़ बंधा हो ।
मौड़ियोड़ो—देखो 'मोडियोड़ो' (रू भे)
(स्त्री० मोड़ियोड़ी)
मोड़ो—देखो 'मोडो' (रू भे)
उ०—१ निसम विहावत गरत, प्रसम मोडा तकिया पर । तठै विराजै ताम, सकै ग्राणद नरेसुर ।—सू प्र
उ०—२ जैसे प्रऊढ़ा नायिका को वस्त्र भरतार ग्राकरसे कहता खेंचै सु मोडो छूटै, तैसै रात्रि ग्राकास को मोडो छांडै छै ।
—वेलिटी
मोच—देखो 'मोच' (रू भे)
मोचणो, मोचवो—देखो 'मोचणो, मोचवो' (रू भे)
उ०—तनक भणक हरिरस तणी,फळत प्राण सुण कांन । महापाप सह मोचवै, ग्रावै जनम न ग्रान ।—ह र
मोचणहार, हारो (हारी), मोचणियो—वि० ।
मोचिग्रोड़ो, मोचियोड़ो, मोच्योड़ो—भू० का० कृ० ।
मोचीजणो मोचीजवो—कर्म वा० ।
मोचियोड़ो—देखो 'मोचियोड़ो' (रू भे)
(स्त्री० मोचियोड़ी)
मोछ—स० स्त्री०—बछड़े के मर जाने पर भी दूध देने वाली गाय ।
रू० भे०—मोच,मोंछ ।
ग्रल्पा०—मूछड़ी मोचडि, मोचड़ी ।
मौज—स० स्त्री [ग्र०] १ सुख, ग्रानन्द, मस्ती ।
उ०—१ ग्राछो खावै ग्रर ग्रोढै-पैरै, मौजा मांणै है ।
— दसदोख
उ०—२ रांमजी री किरपा सूं गिरस्ती रा सगळा ठाट इण राम-दुवारा में हा । चोर रै तौ मौज वणी पण वणी । सैंकड़ूं चोरियां करनै ई वौ इत्तो ग्रारांम नी पायो ।—फुलवाडी
२ ग्राराम, चैन, सतोष ।
उ०—ग्रबै माईजी बुढ़ापै क्यू कळमळ करै कमावणिया म्हैं पांच पांडु हा । वानै तौ चाहीजै के भगवान री बैठा माळा फेरै ग्रर मौज मनावै ।—फुलवाडी
३ लहर, तरग ।
४ मन की उमग, जोश, उत्साह ।
५ लगन, धुन ।
६ ग्रवारागर्दी, निकम्मापन ।
उ०—मोफतिया इसां मौकां मौज मजा ही किया करै हैं । काम कर'र वै कीनै ठारै ।—दसदोख
७ पुरस्कार, इनाम ।
उ०—१ सदा ही महिनै रा महिनै ग्रावै छै, ग्रटै मी कना ही मौज पावै छै ।—पचदंडी री वारता
उ०—२ राग ग्रणभै तणी नित ग्रोळग करै । एक एकी सिरै मौज पावै ।—स्री हरिरामदासजी महाराज
उ०—३ मौज कहा मोतिया कनक नग जडत कटारा । ग्रणपारां सिरपाव, पमग बगसिया ग्रपारां ।—सू प्र
उ०—४ ग्रदवां सैं जाडस ज्यां ग्रपजस, चक्रयत ग्रै न जांणै चोम । राजा ग्रमर करै ले रूपग, मैंगळ वेगागळ दे मौज ।
—किसनो ग्राढो

८ दान ।

उ०—१ तीजो लख तिण वार, 'अजा' भादा कर अप्पै । भण ताराचद भाट, मौज लख चवथ समप्पै । पात नाम भट 'गोप' करै जस प्रक्ट सकाजा । मौज लाख पाचमो, जेण बगसै महाराजा ।

—सू प्र

उ०—२ मौज जवाहर मोतियां, सासण तेण सवाय । खिडियो बखतो खेडपति, महिपति लियो मनाय ।—रा. रू

उ०—३ रावा सांभळै सुरताणा राणां, सुजस हुवो जग सारै । किव पाता मौजां दै कूरम, रतनो नाव ऊबारै ।—दीपचद सांदू

उ०—४ आपं लका मोजा यू ही, तौ जैहो आखा दाता तू ही । थूरै जगा के दैता थोका, झोका झोका जी राघो झोका ।

—र ज प्र

उ०—५ आठौं पौ र अगीठा ओपम, उर मीठा वच आंणे । मोजा देतां नैण मजीठा जो दीठा सो जाणै ।—ऊ का

स० पु०—६ दातार ।

उ०—मोजां समद वीजाइ महोकम, चावा धिन खग चो चरिया । कालू करि कटक पीमण करि साठौ, खेड़ आवुध खग खरिया ।

—घासीराम हाडा रौ गीत

रू०भे०—मउज, माज, मोज, मौंज ।

मौजडी देखो 'मोजडी' (रू भे)

मौजडीयो—देखो 'मोचडो' (रू भे)

उ०—तद राणी वीजी मोजडी पग सु चलाय पहाड की गुफां माहे राखी आप पांणी ले घरे आई अर मोजडीयो वीजो जोडो करायो ।—चौवोली

मौजवत—स०पु०—१ अक्ष नामक वैदिक सूक्तद्रष्टा का पैतृक नाम ।

२ मूजवत का नामान्तर ।

मौजी–वि०—१ अपनी इच्छा के अनुसार कार्य करने वाला, स्वेच्छा से विचरण करने वाला ।

उ०—लिया वनोजी दळ निज लारै, गुण फौजी वळ गाजा । एक-र सू आजे चित-चोजी, मन मौजी महाराजा ।—ऊ का

२ उन्मत्त, मद मस्त ।

उ०—रियामत रा पागी नू पूछे रोवै, अरजन मौजी रा खोज कुण जोवै ।—दसदोख

३ आनन्दित प्रसन्न चित खुश ।

४ दयालु, कृपालु दातार । (अ मा.)

उ०—मौजी राघव पलक मैं, जन सरणागत जोय ।—र ज प्र

५ अशक्त, कमजोर ।

६ कायर, डरपोक ।

रू०भे०—मोजी, मौंजी ।

मौजीज–वि०—१ बुद्धिमान, समझदार ।

२ प्रतिष्ठित ।

३ दृढ़, दाना ।

मौजूद–वि० [अ०] १ उपस्थित, हाजर ।

२ तैयार, प्रस्तुत ।

३ विद्यमान, वर्त्तमान ।

उ०—ठाकुरजी स्री महाप्रभूजी रो मिंदर जो जोसीजी री हवेली कर्न करायो सो मौजूद है ।—मारवाड री ख्यात

४ यथार्थ, वास्तविक ।

उ०—हक हासिल नूर दीदम, करारै मकसूद । दीदार दरिया अर-वाहे, आमद मौजूदे मौजूद ।—दादूवांणी

रू०भे०—मवजूत, मोजूद ।

मौजूदगी–स०स्त्री० [अ०] १ मौजूद होने की दशा या भाव ।

२ उपस्थिति, हाजरी ।

३ तैयारी ।

४ विद्यमानता

५ यथार्थता, वास्तविकता ।

मौजूदा–क्रि० वि० [अ०] वर्त्तमान काल का ।

रू०भे०—मोजूदा

मौजौ–स०पु० [अ० मोजा] १ ग्राम, गाव ।

२ जगह स्थान ।

३ देखो 'मोजौ' (रू भे) (अ मा)

उ०—१ हेम मैं जड़ित हीर, झूमळै मौजा जजीर । दूसरै 'गगा' दवाढ़, जडी कडी जमदाढ ।—गु रू व

मौटमन–वि०—देखो 'मोटमन' (रू भे) (अ मा)

मौटवी–स०स्त्री०—देवी ।

उ०—विन ले जावै विसटिया, पाण चकारा पाढ । मारो ज्यानै मौटवी, सगत असूला चाढ ।—पा प्र

वि०स्त्री०—बड़ी, मोटी ।

मौटिम—देखो 'मोटम' (रू भे)

उ०—किलवां कजि काळिका पलव इक हाथ पसारै । खप्पर मौटिम करै, बिया अन घरणी घारै ।—मा वचनिका

मौठ—देखो 'मोठ' (रू भे)

मौड—देखो मोड' (रू भे)

उ०—दळानाथ आगळ ग्ली वस रो दीपयण, रूप-राई तणा राउ राठोड 'अमर' वगियो सघर धारियो आत-पत्र, "माल" रो तिलक "रिणमाल" हर मौड ।—कैसोदास गाडण

मौडबघ मौडबघौ—देखो 'मोडबघ' (रू भे)

उ०—आवत दरगह अन्न-मघ । मौडबघा ठाकर मुगट-बध । जोधपुर धणी आगळ जोधार, दीवाण वइठ्ठा करि जुहार ।

—गु रू. व

मौत–स०स्त्री० [स० मृत्यु] १ किसी प्राणी की आयु पूर्ण होने पर स्वाभाविक रूप से होने वाला मरण अन्तकाल, निधन ।

उ०—१ अमीखांन गढ रोहा मांहे मौत मुवो । अमीखांन रा बेटा नू टीको हुवो ।—नैणसी

उ०—२ 'बूरा' किम्मर फलिया. 'फतमल' विजपाळोत। हूटे न जगं नामछळ, मिटै न मेही मौत। —रा रू.

उ०—३ पगां री आंगळिया रा कटका पाडतो पाडतो नाई बोल्यौ-बापजी, मौत नीं आवै जितै जीवणौ कुण नी चावै।—फुलवाड़ी

उ०—४ मिनख री मौत आवै है, जकी घड़ी ऊमर भर री आछी-माठी लारली सारी बाता वाच दाई माफ होय जाया करै है।
—दसदोख

२ किसी दुर्घटना के कारण, अकस्मात होने वाली मृत्यु।

उ०—पग पावडो लागै सिरफ ध्यान सू वार करचो के गूचली मारघा नाळिदर रा चार टुकड़ा व्हैगा ठाकर रै माथै आयोड़ी मौत टळगी।—फुलवाड़ी

उ०—२ अबै म्हारी माग पावण री मरघा कोनीं ओछळ मूडो घणो जतरायो वेद नै बुलाय ओखद करावो। नीतर म्हारी तो मौत है —फुलवाड़ी

उ०—३ भली आदमण जवाब दियो-था मिनखा रा ऐडा भाग रठै जको म्हारा बेटा थांरी परम करै किणी री मौत रा आखर ई जे दण भात घालयोडा व्है जिण री तो म्हैं ई कांई करू।
—फुलवाड़ी

मुहा०—१ विना मौत मरणी=दुर्घटना मे या किसी अन्य कारण से असमय मृत्यु को प्राप्त होना।

२ मौत आ णी, मौत आवणी=अत्यन्त कष्ट होना, मरणान्तक कष्ट, मृत्यु की घडी आना।

३ मौत नै नैतणो, मौत बुलावणी=ऐसा काम करना जिसके कारण गहरे सकट में फसना पडे।

४ मौत मरणी=अपनी मौत से आयु पूर्ण करके मरना।

५ मौत रै मूड=खतरे मे, ऐसी स्थिति मे, जहां जीवन का हर वक्त भय रहता हो

६ मौत रो नमी=मरने मारने पर उतारू होने की दशा, किसी को मार डालने की दशा मे होना

७ मौत सू खेलणी=ऐसा काम करना जिसमें जान जाने की पूर्ण सभावना हो, जोखिम भरा कार्य।

स० पु०—३ यमराज, काल।

उ०—१ बूढी मां मौत नै अरदास करै। मौत टाळी र्च, परियां ही पेरा घासै। फोडा पडै, टोकरी दुख ही भुगतै।—दसदोख

उ०—२ म्हनै अबै जीवणो ई कित्तोक है। म्हैं तो खुद मौत री ई दूजो रूप हू, पण बेटी थनै तो हाल केई बरसा लग जीवणो है।
—फुलवाड़ी

४ मृत्यु।

५ मिरतु।

६ मामदव।

७ अत्यन्त कष्ट, तकलीफ।

उ०—ऊट तरघो-भोग पुकारता तो मौत थाई, अबै बैठण रो मूडो कय घोवै।—फुलवाड़ी

रू०भे०—मात, मोत।

मौतविर—देखो 'मातवर' (रू भे)

उ०—परधं रा केई मौतविर राजाजी नै राजी करण सारू हसण री कोसिस करी पण हमीजियो कोनी।—फुलवाड़ी

मौतल—देखो 'मुअत्तल' (रू भे)

मौताज—देखो 'मुहताज' (रू भे)

उ०—मोनजी री कडूबो गांव मे आखं आयो हुयग्यो। मरतक भडग्यो। दाणां-पाणां रा मौताज हुय रैया है।—दसदोख

उ०—२ मौताज अम्हा हरवळ मिळण, मो कुळ वाग नवी सम। गोरधन' कियो 'गजवध अग्र, कळह आप अग्र मैं करू।—सू. प्र.

मौताद—देखो 'मोताद' (रू भे)

मौताहळ—१ देखो 'मुक्ताफळ' (रू भे)

उ०—१ चढ़ि मौताहळ-चरिय, सेत वसन पुनि सित वदनी। वीणा पुस्तक धरिय वागवादनी तस्मै नम।—मा वचनिका

उ०—२ है कानै मौताहळ, कर पूची कठमाळ पै सकळ। राघो नाम विहूण, अनखाणो ढोर आदम्मी —र ज प्र

२ देखो 'मोताहळ' (रू भे)

मौती—देखो 'मोती' (रू भे)

मौदिता-स०स्त्री०—१ देवी का एक नाम।

उ०—नमो विगळा मंगळा चक्रपांणी। नमो मौदिता, जोत अम्बा महाणी।—मा वचनिका

२ देखो मुदिता' (रू भे)

मौद्ग-स०पु०—एक आचार्य जो व्यास की अथर्वत् शिष्य परपरा मे से देवदर्श नामक आचार्य का शिष्य था।

मौद्गळ-स०पु०—एक आचार्य, जो वेदमित्र नामक आचार्य का शिष्य था।

मौद्गलायन-स०पु०—भृगुकुलोत्पन्न एक गोत्रकार।

मौद्गल्य-सं०पु०—१ एक पैतृक नाम, जो नाक, शतबलाक्ष एव लागलायन आदि आचार्यो के लिये प्रयुक्त हुआ है।

२ एक ब्रह्मचारी पुरुष, जिसने ग्लाव मैत्रेय नामक आचार्य के साथ वाद-विवाद किया था।

३ एक ब्राह्मण, जो मुद्गल एव भागीरथी का पुत्र था।

४ एक वृद्ध एव कोढी ब्राह्मण जो द्रौपदी का पूर्व जन्म का पति था। उस जन्म मे द्रौपदी का नाम नालायनीइन्द्रसेना था।

५ अगिरा कुलोत्पन्न एक प्रवर।

६ राम की सभा का एक मन्त्री।

७ जनमेजय के सर्प सत्र का एक सदस्य।

८ एक आचार्य जो शतद्युम्न नामक राजा का गुरु था।

मौन-स०पु० [स०] १ अग्नीविन् नामक आचार्य का पैतृक नाम।

२ देखो 'मून' (रू भे)

उ०—हम बोलत तुम बोलत नाहीं, काहे को मौन धरैया।—मीरां

मौनव्रत—स०पु०—न बोलने, चुप रहने के लिये सकंल्प ले कर किया जाने वाला व्रत ।
रू०भे०—मूनव्रत ।

मौनाळ—देखो 'मुहनाळ' (रू. भे)

मौनि, मौनी—स०पु० [स० मुनि] १ वह साधु जिसके मौनव्रत हो । (मा म)
२ मुनि, महात्मा ।
वि०—१ जिसके मौन हो, मौनव्रत धारी ।
२ जो वाणी से रहित हो, कुछ बोल या कहने में असमर्थ हो, मूक ।
उ०—भूख प्यास सकट सहै, सह विडाणा मार । जन हरिदास मौनी बळद, कासू करै पुकार ।—ह पु वा.
३ देखो 'मून' (रू भे)
उ०—साध कुमारग परहरै, सुमति सुमारग लेह । मौनि गहै कुवचन सहै, हरीया कसनी एह ।—स्री हरिरामदासजी महाराज
रू०भे०—मूनि, मूनी, मोनि, मोनी ।

मौने, मौनै—देखो 'मोनै' (रू भे)
उ०—१ मौने आय अनाहक मारघो, साम खून विण लेसा । जादव वस देवकी जामण, वर अवतार धरेसा ।—र रू
उ०—२ जब तेह कहै–मौने ढाढो कह्यो । वैराजी थयो ।—मि द्र

मौफाड—देखो 'मूफाड' (रू भे.)

मौवत—देखो 'मुहब्बत' (रू भे)
उ०—दलाल कैयो–हा जगती जाणसी कै साचेली मौवत अर हिरदै री हेत इसो हुवै ।—दसदोख

मौर, मौ'र—स०पु०—१ शरीर का पृष्ठ भाग, जो गर्दन से लेकर कमर तक होता है ।
उ०—१ तरै लाडक राव नू पाछा सू झटको वाह्यो । राव रे मौरे लागो । घणो वूहो ।—नैणसी
उ०—२ पग साथळ मा सु भागो नै ढोलीया रा आठौं ई साल भागा नै वरडायनै उठीया । ढोलियो मौरां पाछै लीयां इज ऊठीया ।
—राव रिणमल री वात
उ०—३ म्हारा मौर थापळ नै आप म्हनै हरख सू जीमो तो म्हारा मरणा में ई सार है ।—फुलवाडी
मुहा०—१ मौर थापणी, मौर थापलणी=पीठ थपथपाना, शावासी या साधुवाद देना । जोश दिराना ।
२ मौर दावणी=पीठ को हाथो से धीरे धीरे दबाना, पीछा करना ।
३ मौर पाधरा करणा=सोना, आराम करना ।
४ मौर माडणी=पीठ पर बोझा उठाने के लिये तैयार करना, प्रस्तुत करना । चोट या आघात झेलने के लिये पीठ आगे करना ।
५ मौरां हाथ देणी=पीठ पर हाथ फैर कर स्नान करना, उत्साहित करना, आश्वासन देना ।
२ पृष्ठ भाग, पिछला हिस्सा ।
उ०—अकबर रा जतना रह्यौ, 'सोनग' साह 'दुरग' । मौर न दव्वै साह दळ, ओर सभारी जग ।—रा रू.
३ वृक्षो पर आने वाली मजरी, बौर ।
रू०भे०—मंवर, मउर, मवड़, मवर, मह्वर, मांर, मोर, मोहर, मौरी, मौरू ।
४ देखो 'मोहर' (रू भे)
उ०—१ सुण आवाज सूरमा, एम धजराज उठाया । मौर जीत सिरमौर, जाण पर जोर कि आया ।—रा रू
उ०—२ सामता मौ'र चौवार यर साजतो, समर वागो विनै पातसाही ।—नाथो सादू
५ देखो 'मोर' (रू भे)

मौरक—देखो 'मोरख' (रू भे)

मौरख—१ देखो 'मोरख' (रू भे)
२ देखो 'मूरख' (रू भे)

मौरखी—स०स्त्री०—वदूक की नाळ का मुख ।

मौरखौ—स०पु०—१ ऊट बैल, बच्छा आदि के मुख पर शोभा के लिऐ बाधी जाने वाली जाली ।
२ देखो 'मूरख' (अल्पा , रू भे)
३ देखो 'मोरख' (अल्पा , रू. भे)

मौरचौ—देखो 'मोरचौ' (रू भे)

मौरणौ, मौरबौ—क्रि०अ०—१ वृक्षो पर मजरी आना, बौर आना ।
उ०—१ मलयाचळ परवत सोई तौ रुखमणीजी को सरीर । ऊठै ज्यो मलयतरू मौरजै छै । त्यौं अठै मन मौरघो, मौरघा पाछे कली हुवै ।—वेलि टी
उ०—२ ढाढी हेक सदेमडो, लग ढोला पूहचाय । जोबन आवो मौरियो, रस चूसो नी आय ।—ढो. मा
उ०—३ हरीया बोह वन मौरीया, पानो फूल फलाह । हेक न मौरघौ बापडो, सूको मेह घणाह ।—स्री हरिराम दासजी महाराज
२ बाजरी के कच्चे या सेंके हुए सिट्टे को दाने निकालने के लिए मसलना या मोरणी द्वारा सूतना ।
मौरणहार, हारौ हारी), मौरणियौ—वि० ।
मौरिओडौ, मौरियोडौ, मौरघोडौ—भू० का० कृ० ।
मौरीजणौ, मौरीजबौ—भाव वा० ।
मउरणौ, मउरबौ, मवरणौ, मवरबौ, मोरणौ मोरबौ—रू० भे० ।

मौरत—देखो 'महुरत' (रू भे)
उ०—जे ओ मौरत नी साजता तो घकलै सात बरसा मे ऐडो नामी मौरत नी सजतो ।—फुलवाडी

मौरम—देखो 'मोहरम' (रू भे)
उ०—ईद, बकराईद मनावै, ताजिया रा तिवार आवै जद धोकै । पण मौरम अर तिवार आवै जद कायर मोर ज्यू झूरै ।—दसदोख

मौरय—देखो 'मोरघ' (रू भे)

मोरखो—देखो 'मुरखो' (रू भे)

मोरयोर्वामदटका-स०स्त्री०—मुरु नामक यवन राजा की कन्या जो घटोत्कच की पत्नी थी।

मोरसली-म० स्त्री०—एक प्रकार का पुष्प।

मोराटी-स०स्त्री०—पीठ।

मोरामेळ-स०पु०—प्रत्यानुप्रास, पद्य के चरणों की तुक बंदी।

मोरित-वि०—जिसमें मजरी, मौर, बौर आगई हो, मञ्जरि युक्त। (पेड)
उ०—निगर भर तरुवर मधरण छाह निसि, पुहपित अति दीपगर पळास। मौरित अब रीझ रोमचित, हरखि विकास कमळ अत हास।—वेलि

मोरियाळ-स०पु०—जगल मे चरने के लिये जाने वाले पशुओ के झुण्ड मे से सबसे आगे चलने वाला पशु।
वि०—अग्रगामी, अग्रणी।

मोरियोडो-भू०का०कृ०—१ मजरी या बौर आया हुआ। (वृक्ष)
२ बाजरी के सिट्टे को मसला या सूता हुआ।
(स्त्री० मोरियोडी)

मोरियो—देखो 'मोर' (अल्पा, रू भे)

मोरी-स०स्त्री०—१ बैल के कुकुद स्थान से पिछले पैरो की पीठ तक होने वाली बालों की पक्ति।
२ तलवार के म्यान पर छोटी व पतली डोरी।
३ प्याले के ऊपर का भाग, प्याले का मुख।
उ०—सूने रूपे के मौरियां नू जडाऊ के प्याले फिरते हैं। जिस प्यालू के बीच ही अनार दाळ चीनी परतकाळी अगुरी गले कुलाव ऐसी भांति भांति के फूल भरते हैं।—सू प्र
३ देखो 'मोरी' (रू भे)
४ देखो 'मोर' (रू भे)

मोरू—देखो 'मोर' (रू भे)
उ०—कूबासा मोरू पर कुवासा पेट, तुंबे के घाटा सा माटा सा पेट,मोरू के कांटा सा आटा सा पाव। आछा सा चलणे मे काछा सा भाव।—दुरगादत्त बारहठ

मौरूसी-वि०—जो बाप-दादा के समय से चला आरहा हो, पैतृक।

मोरो—देखो 'मोरो' (रू. भे)

मोरय-स०पु० [स० मौर्य] एक प्रसिद्ध राजवश, जिसका वर्षों तक मगध पर शासन रहा।
रू०भे०—मोरिय, मोरव।

मोरयो—देखो 'मोर' (अल्पा, रू भे)

मोळ-स०स्त्री०—१ मस्तापन, मदी।
उ०—घेवर एक कूजड़ा रै मगज़ री मोळ रै कारण आमलियो अर कांदा धणू रा तोल रै'गा।—फुलवाडी
२ अभाव, कमी।
उ०—मोर अोर स्वदा तरवारिया नै रूप रूप न्यारी न्यारी कर न्हाकदी है, कांनी कांनी बीरा री मोळ पड गई।—वी स. टी
३ उदासी, सुस्ती।
४ कान्तिहीनता, मदता।
५ किसी कार्य मे यथेष्ट चहल-पहल या उत्साह न होने की अवस्था या भाव, शान्ति।
६ हल्कापन, न्यूनता।
७ फीकापन, रूखापन, स्वाद हीनता।
८ ज्यादा खट्टेपन का अभाव। (९) प्रभाव हीनता।
रू०भे०—माळ, मोळ।

मोल—देखो 'मोल' (रू भे)
उ०—१ सतगुर तो बोरा भया, सिख सौदागर होय। हरि सोदो चित्त चोहटो, तोल न मोल न कोय।
—श्री हरिरामदासजी महाराज
उ०—२ मडै पिलांण कोडिय केकांण मोल ऊचरा। करै सनाह कठळि घैसार सैन घूमरां।—मा वचनिका
उ०—३ मैंहघा मोल दियै मेघावत, लियै अपार नको जस लाह। आडावळै मोतिया असहो, सौदो करै वळापति साह।
—महाराजा छत्तरसिंघ री गीत
उ०—४ माया सू मिनख री मोल वत्तो व्हे। म्हैं वडेरां री ठोकरा खाई हू। दीखती माया रै सांमी यैं आ ठोकरां री कीमत नी आंक सको।—फुलवाडी

मौ'ल—देखो 'महल' (रू. भे)
उ०—गाठ बांध बाहर निसरिया। देहरी एक सूनी थी जठै जाय बूरियो ऊपर आठी राख जगळै पैस राजा नै मौ'ल पो'चाय कह्यो—हमे हू घरा जाऊ छू।—राजा भोज अर खापरा चोर री बात
२ देखो 'महिळा' (रू भे)

मोलगत—देखो 'मोहलत' (रू भे)
उ०—सोळै बरस हांकरता लोप व्हैगा। एक छिण लागी। मोलगत री फगत छे'लो दिन बाकी हो।—फुलवाडी

मोळट-स०पु०—खूटे आदि गाडने का लकडी का हथोडा।

मोळणो, मोळबो—देखो 'मोळणो, मोळबो' (रू भे)
मोळणहार, हारो (हारी), मोळणियो—वि०।
मोळिओडो, मोळियोडो, मोळयोडो—भू० का० कृ०।
मोळीजणो, मोळीजबो—कर्म वा०।

मोलत—देखो 'मोहलत' (रू भे.)
उ०—१ औध तिहारी ये बावनी हो अब, आवणी व्है नहि बात अधूरी। या विधि को विरमावनो हो चित, चावनो मोलत होति मजूरी।—ऊ. का.
उ०—२ लखमी कह्यो—सोळै वरसां री मोलत कोई कम मोलत

नीं व्है ।—फुलवाडी

मोलवी—स०पु० [अ] १ इस्लाम धर्म का आचार्य। मुसलमानो का धर्म गुरू।

उ०—**मोलवी** कराडे अरज काजी मुला। पाडजे देवहर दळां कर पेल। मेच्छ वांचे जिको हिंद इकळीम मज्झ। खडो राना जिते वणे नह खेल।—गु रू व

२ अरबी भाषा का विद्वान।

३ मुसलमानो के बच्चो को पढ़ने वाला गुरु।

रू०भे०—मोलवी, मोलवी।

मोलसरी, मोलसिरी, मोलस्री—देखो 'बोलसरी' (रू भे)

उ०—आसापाळो खिजूर गूदी लेसूडो केसूला खिरणी **मोलसिरी** फरवास।—रा सा स

मोळायो—वि०—१ निरन्तर फीकापन होने के कारण स्वाद परिवर्तन के लिये हर प्रकार की वस्तु खाने का इच्छुक।

२ कामेच्छा से व्याकुळ।

मोळि—देखो 'मोळी' (रू भे)

मोलि—स०पु० [स०] १ अगिरा कुलोत्पन्न एक गोत्रकार।

२ एक आचार्य, जो बाभ्रव्य नामक आचार्य का पिता था।

३ देखो 'मोली' (रू भे)

मोलिक—वि०—मूल्यवान, कीमती।

उ०—बहु **मोलिक** वागा दिया।

मोळियामगळ—स०पु०[स०मोलि मगल] वह लडका जिसकी जन्म कुडली मे पहले,चौथे, सातवें, आठवें और बारहवें घर मे मगल पडा हो।

रू०भे०—मोळियामगळ।

मोळियो—विविध रगो का साफा विशेष।

रू०भे०—मोळियो।

मोळी—स०स्त्री०—१ विभिन्न रगो मे रगा कच्चे सूत का धागा, जो देव-पूजन व मागलिक अवसरो पर काम आता है। सूत्र-बधन।

उ०— अलकार बाजणा कदमां कटि सघ आभा। जटी **मोळी** वाम अगा पोमाका जरीम।—मा वचनिका

२ ईंधन को लकडियों का गट्ठर।

उ०—हरि जेम हलाडो जिम हालीजे, काय धणिया सू जोर क्रपाळा। **मोळी** दिवो दिवो छत्र माथै, देवो सो लेऊ स दयाळ।
—प्रथ्वीराज राठौड

३ मस्तक शिर। (ह नां मा)

रू०भे०—मउळी, मोळी, मोळि।

४ देखो 'मोळो' (स्त्री)

मोळू—देखो मेळूजो'।

मोळो—वि० [स० मलिन स्त्री० मोळी] १ मद गति से काम करने वाला, सुस्त, आलसी।

२ जो तीव्र न हो, तेज न हो, मद, धीमा।

उ०—१ मीट इत्ती **मोळी** व्हैगी काई के खुद रै पगां री मोचडिया ईं नी दीखै।—फुलवाडी

उ०—२ डोकरी कह्यो-आप गिणाई जकी सगळी चीजा म्हनै साफ दीसै है, जाळो वाळो की कोनी। म्हारी अकल की **मोळी** है, म्हनै आ समझ मे नी आवै के जे आ गाभा अर आ अमोलक चीजा सू ईं काई राजा वणतो व्है तो काई एक बादरी ऐ सगळी चीजा पं'र'लै तो वो राजा व्है जावैला।—फुलवाडी

२ निष्तेज, कान्तिहीन, प्रभाहीन, मलिन, धुधळा। फीका।

३ उदास, खिन्न।

४ शान्त, नर्म, धीमा।

उ०—वो की **मोळो** पड़नै बोल्यो-माजी, म्हारा सू गोरी उणनै पीळिया रो रोग।—फुलवाडी

५ उत्साह रहित, ठडा।

६ निर्बल, कमजोर।

उ०—मेवाड ढूढाड जीऊ ही हाडोती माळवो **मोळो**। दोळा काळ चक्र सो किणी न आवै दाय।—सूरजमल मीसण

७ प्रभावहीन, निष्फल।

८ शर्मिदा।

९ नामर्द।

१० अपेक्षाकृत न्यून स्तर का, हलका।

११ साधारण, ठीक-ठीक।

ज्यू—ऐस जमानो **मोळो** है।

१२ जो ज्यादा कीमती न हो, कम दामो का, सस्ता।

१३ बहुत कम खटाई के कारण जो स्वादिष्ट हो, जो ज्यादा खट्टा न हो।

ज्यू—मोळो दही, मोळी छाछ।

रू०भे०—मउळु, मउलु, मउलू, मउळू, मउलू, मउळो, मोळो।

मौल्य—देखो 'मूल्य' (रू भे)

मौसम—स०पु० [अ० मौसिम] १ ऋतु।

उ०—वै बोल सुण्यां पछै दीवाणजी साह तो जाणै **मौसम** ई बदळगी। पोह री ठोड चैत रो महीनो आयग्यो।—फुलवाडी

२ जलवायु, आबोहवा वातावरण।

उ०—उठै नीं रितुवा बदळती, नी हवा बदळती। एक सरीमा दिन, अर एक सरीमो **मौसम**। फुलवाडी

३ किसी काय या बात-चीत के लिये उपयुक्त समय, वक्त।

मौसमी—वि०—१ मौसम का, मौसम सम्बन्धी।

२ किसी ऋतु विशेष में होने वाला।

३ जो समय के अनुकूल हो।

स०स्त्री०—नारगी की जाति का एक फल विशेष।

मौसर—स पु०—१ मृतक के पीछे किया जाने वाला भोज। मृत्यु भोज।

उ०—१ जाट आपरी मां रै लारै घणो ई खरचो-खातो करियो। गगाजळी बरताय नै सगळी न्यात निंवती। नामी **मौसर** करियो।
—फुलवाडी

उ०—२ मोसर उडाया, मोसर मिटाया । आछा खरचा-वरचा घटाया, अर कुरीता में मुमीतं रा राम पाळाया ।—दमदोस

२ किसी अवसर विशेष पर होने वाला धार्मिक, सामाजिक या जाति रिवाज सम्बन्धी कार्य ।

३ देखो 'मोसर' (रू भे)

उ०—१ मानवियों चूको मती, आयो मोसर एह देह । देह घन दीन नं, लाभ जनम रो लेह ।—ऊ का

उ०—२ भूप 'अजीत' तणे छठ भाटी, पण परवीर गीत धी पाटी । वोल 'किसोर' 'सूर' अतुळी वळ, मोसर तणो सापनो मगळ ।
—रा रू

उ०—३ मझ मुगा निज धानख सरा, मझ अडे भूहा मोसरा । रिण राम अर दगमाय रा, चित वेव लगा घरा ।—र ज, प्र

उ०—४ अग ऊजाग रा, मीजिया साम रा । मुळकती मोसरा, आजिया आम रा ।—मा वचनिका

रू०भे०—मउसर, मासर, मावसर, मासर, मोवर ।

मोसाटी-स०पु०—पशुओं का एक रोग । इसमें पशु के मुह पर फफोले पड जाते हैं ।

मोसाळ—देखो 'मोसाळ' (रू भे)

मोसाळो, मोसालो—देखो 'मोसाळ (अल्पा, रू भे)

उ०—हेमजी स्वामी घर मे था जद एक बहिन थी तिण नें मामो आय मोसाले ले गयो ।—भि द्र

मोसिकीपुत्र-स०पु० [स० मौषिकीपुत्र] एक आचार्य, जो हारिकर्णी पुत्र नामक आचार्य का शिष्य था ।

मोसी—देखो 'मासी' (रू भे)

उ०—बगत री वात, मां मरै जीगी मोसी ही मरै । मोटियार मरयो घर बिखरै लारै-लारै वेटो भी आगीनं गयो ।—दमदोस

मोसीहाई—देखो 'मासीआई' (रू भे)

उ०—घर रहता मोसर टीगसर रहै, मोही पण मोहिळा री दोहितो । सगो ही मोसीहाई भाई लागै ।
—सूरेम्वर कावलोत री वात

मोसो—देखो मोसो' (रू भे)

उ०—जद सेठ वाघो ठिरडीजता ठिरडीजतां ई इण मोसा री पडूतर देवो चाह्यो-पण हाल इण भेद रो ठा' को पडी नीं । सागी ठमर मर मे वैठी ई मटरका करिया है, वाणिया नै टावर को दियो नीं ।—फुलवाडी

मोह—देखो 'मोह' (रू भे)

मोहकाम—देखो 'मुहकम' (रू भे)

मोहत—स० पु० [स० महत्व] महत्ता, बडाई ।

उ०—घर घर मगळचार, मोहत चढियो महोवर । नाद वेद धरनिसा, सुकवि बोलं सुन सासर ।—गु रू व

मोहताज—देखो 'मोताज' (रू, भे.)

उ०—सूरज री मोहताज हरमी कवण । कवण कोहा तणो मौज करसी ।—द दा

मोहतो—देखो महता' (रू भे)

उ०—सरव मुख्तयारी करमचद री है । अर दूजौ ठाकुरसी वैद मोहतो है । सू इण पर महाराज री वडी मरजी ।—द. दा

मोहवत, मोहवति—देखो 'मुहब्बत' (रू भे)

उ०—वांह छूटै अम्रत री धारा पीयो सत भया मतवारा । औरन को मगति नही मोवति, लागी एक अलख सु-मोहवति
—स्री हरिरामदासजी महाराज

मोहमद—देखो 'मुहम्मद' (रू भे)

उ०—मोहमद पीर जिवै गऊ कीन्ही, वा फिर मारि जीवाई ।
—स्री हरिरामदासजी महाराज

मोहम—देखो 'मुहिम' (रू भे)

उ०—सझवळ द्रव्य दान खग दावै, अनि भूपाळ जोड नह आवै । कूत साह नू हुतो मकाजा, मोहम जिसी लीध महाराजा—सू प्र

मोहर—देखो 'मोहर' (रू भे)

उ०—दूर कराई ताढियां, मोहरा दे दे हाथ । माळा कठी मोलरी, समचै एकण साथ ।—रा रू

उ०—२ तोय भूप पग जोयन तखिणा । दम दम मोहर समापै दखिणा ।—सू प्र

उ०—३ 'गाजीसाह' तणो गाढा गुर, साजे अणी वडो सरदार । मारा मोहर वडा दत समपै, मारां मोहर वजावै सार ।
—तेजसी खिडियो

उ०—४ मोहरि गोठि बीमाह, मोहर दरवार मझारा । रहा मोहरि रावता, सदा जिम वहता सारा ।—सू प्र

उ०—५ रिम दौडियो दिवस तिण रतियां । मोहर खबर पूगि मेडतियां ।—रा रू.

उ०—६ 'पतो' परिग्गह आगळो, मोहर गजां मरोड ।—रा रू

उ०—७ मोहर लुघू दीरघ जमल, पायै ए परि आण । मको कविदा मांभळो, ससि छत्र मिहनाण ।—रि प्र

मोहरत—देखो 'महुरत' (रू भे)

उ०—मदर उछाह आवाज आरती, चढियो मोहरत विकट घणों ।
—दूदा नगराजोत रो गीत

मोहरलो—वि० [राज०मोहर=आगे+प्रत्य-लो] (स्त्री० मोहरली) आगे वाला अग्रणी, प्रथम ।

उ०—सुतन अदमीण केहर' अने सुमु'सुन,विवडा वीयां जम न कूच लीया । वांसली अणी सु घणी करडी वणी, मोहरली अणी रा लोह मळीया —पहाडखा आढो

मोहरि,—१ देखो 'मोहर' (रू भे)

उ०—मोहरि गोठि बीमाह, मोहर दरवार मझारां । रहा मोहरि रावतां, सदा जिम वहतां सारां ।—सू प्र

२ देखो 'मोरी' (रू भे)

मोहरियाळ—देखो 'मोहरियाळ' (रू भे)

उ०—पळ छळि गयांगीग कलावत । मोहरियाळ 'सिंधी'गाहावत ।
रा. रू.

मोहरी—१ देखो 'मोरी' (रू. भे)
उ०—१ मोहरी डोरी रेसमी, नोखी चदणी नकेल। रूपाळक फण नाग रग, बाळक जुग बकेल।— सू प्र.
उ०—२ मोहरी चपा सेलो समथ, पचकल्याण पहचाणिये। अनेक रग पसमा अलल, जेहा मुखमल जाणिये —सू प्र
उ०—३ परठि त्रसेणी पाव, उरस छिब क्रोध उभल्लै। वह बरसतां बदूक, झाल मोहरी कर झल्लै —सू प्र
२ देखो 'मोहर' (रू भे.)
उ०—१ पातो जोध घणी छळ पायां। भगवांनोत मोहरी आया।
—रा रू
उ०—२ मानडो 'वेण' फोजा तणा मोहरी। वाजि वैकुठ गया हाण भरता —जणो सांदू

मोहरू—१ देखो 'मोहर' (रू भे)
उ०—चोळ धजाबोळ मोहरू सै ऐमी अनेक चल्ली। सीसा सोरडे रू भटालू के भार।—सू प्र
२ देखो 'मोरी' (रू भे.)

मोहरे, मोहरै—क्रि॰वि॰—१ अग्र भाग पर, आगे, अगाडी।
उ०—जे लाबा हेला करै, ओछी ग्रीख भरत। बचै सही वै वाघ सू मोहरै गया मरत।—बा दा
२ सम्मुख, सामने।
उ०—मोहरै चढिया मयद रै, मैंचक जाय भडाक। गैंवर भूलै गाळबो, चीसै चढ चित चाक।—बा दा
३ किनारे, तट पर।
उ०—मोहरै महरांण रै दळा रा महाबळ, भुजाबळ वनपती कीध भैरी।—नगराज री गीत

मोहरो—देखो 'मोरो' (रू भे)
उ०—१ आसमानी मोहरा किये पल्लैसै झिलते आए।—सू प्र
उ०—२ कांबियां रग मोहरा करै, रग वा भैसा रगति। जदि चाढ़ि मदा ज्वाळामुखी, सर्फ तांम तोपा सगति —सू प्र

मोहल—१ देखो महल' (रू भे)
उ०—जाई सहर के राजा की कुवरी पचकली नै मिल्यो, चपे री कळी सूं तुलती। तेरो नांम पचकली कहावती। तेरै मोहल जाइ बैठो।—चोबोली
२ देखो 'महिळा' (रू भे)
उ०—ताहरा आस्या राजलोक मैं गई। ताहरा राजा रा मोहल आस्या नू देखि नै अचिरज हुवा —स्याम सदर री वात

मोहळियो—देखो 'मोळियो' (रू. भे)
उ०—ढोला थारै बाधण पचरग मोहळियो। म्हारै (नै) ओढण नै बालाचूदड़ी।—लो गी

मोहलो—१ देखो 'महोलो' (रू भे.)
२ देखो 'महल' (रू भे)
उ०—मढिया महोछव सिधारथ मोहले, सुपन त्रिसला सुतण किया साधा।—ध व ग्रं

मोहणी, मोहिणी, मोहीणी—देखो 'मोहनी' (रू भे)
उ०—१ सरूप हेक सुंदरी, इला नका अगोचरी। प्रतख्ख चख्ख पौइणी, महा मदन मोहिणी।—मा वचनिका
उ०—२ माळिणी मोहीणी माहेसरी, चकरी कुडळा वालिका। भखणी जमदूता भजा, नांम सता प्रति पाळिका।—मा वचनिका

मोहूरत - देखो 'महूरत' (रू भे)

मोहूरतिक—स॰पु॰—एक देव, जो धर्म ऋ प एव मूहूर्ता के पुत्रो में से एक था।

मोहो—देखो 'मोसो' (रू भे)
उ०—यू करतां कतराक दन जाता वठा आया री वहुआ अणी री वहु ने मोहा वोली, तको केहण लागी-थे माटी वेर घरा रा सुख भुगतो पण रजपूता री कुमाई वरोळी छो।
—कल्याणसिंघ नगराजोत बाढ़ेल री वात

म्यत—देखो मित्र' (रू भे)
उ०—मछराळ देवदयाळ ग्रीवसु म्यत रे।—र ज प्र

म्यांउ म्याऊ—स॰पु॰—बिल्ली की वोली, बिल्ली के मुह से निकलने वाली आवाज।
उ०—इत्ता में एक मिनकी भवरा मे आय म्यांऊ २ करण लागी।
—फुलवाडी
रू॰भे॰—म्याव, म्यौं।

म्यांन—सं॰स्त्री॰ [फा॰ मियान] १ तलवार, कटार आदि का कोष, खाना, कवर। (डि को)
उ०—खीया थू खुरसांण, धण तेगो तलवार रो मुखमल हदी म्यांन, खवे बिलूबू 'खीवजी'।—अग्यात
पर्या॰—कोस घरतरवार, चद्रहासघर, तरवारपिधान, परीवार, ससअघर।
रू॰भे॰—मयान, मिग्रान।
२ अन्नमय कोश।
३ शरीर।

म्यांनभाई—स॰पु॰—वे दो पुरुष जिनका एक ही स्त्री से मैथुन सम्बन्ध हो।

म्यांनी—स॰स्त्री॰ [फा॰] पाजामे मे दोनों पल्लो के रानो के बीच मे जोडा जाने वाला कपडे का टुकडा।
रू॰भे॰—मियांनी, मैनी।

म्यांनो—स पु॰—१ अभिप्राय तात्पर्य आशय, अर्थ।
उ०—१ पूछ्यो-थू कुण है? कीकर म्हारी चावना पूरैला, पै'ला म्हनै इण री सावळ म्यांनो दै, पछै म्हैं हलाया लाबतो ढबूला।
—फुलवाडी
उ०—२ वा तो आवै ज्यू, जका वोल उथळिया, वै ई विना लाग-लपेट रै पाधरा खळकाय दिया वारो की अरथ के म्यांनो नीं हो।—फुलवाडी
२ कारण।

उ०—पण यूं मौत प्राया पैली म्यू मरणो चावै, इण रो म्यानो वता।—फुलवाड़ी

३ भेद, रहस्य।

उ०—पूछ्यो-म्हैं नो थारा प्राण लेवतो नैं यूं डग डग हसियो क्यूं? म्हनै इण रो म्यांनो वता।—फुलवाड़ी

४ गुजारा।

उ०—एक ई चीज सूं किणी नैं सुख उपज सकै तो किणी नैं दुख। इण मरम रा म्यांना वास्तै ई श्रा बात है।—फुलवाड़ी

५ एक प्रकार की डोली, पालकी या पालना, जो चारों ओर से ढका हुआ होता था। इसके दोनों ओर मुंह होते थे। यह पर्दा न शीन स्त्रियों के आवागमन के काम आता था।

उ०—म्यांनै विन मुगळानियां, जरा न जा पातीह। भै खुमाण हुत भरम रो, छूटै उघड़ि छातीह।—रेवतसिंह भाटी

रू०भे०—मयांनो।

म्याव—देखो 'म्यांऊ' (रू भे)

म्याई—१ देखो 'माई' (रू भे)

२ देखो 'वाई' (रू भे)

म्यावट—१ देखो 'मावठ' (रू भे)

२ देखो 'म्यावट' (रू. भे)

म्याळ—स०पु०—१ कच्चे मकान की छाजन के नीचे लगने वाला लकड़ी का लट्ठा।

२ कमरे में आमने-सामने की दीवार में लगने वाला वह पत्थर जिस पर सामान रखा जाता है। टांड।

३ कूए से पानी निकालने के चक्र के दोनों डंडे के नीचे की पटरी।

४ कच्चे मकान की छाजन में लगे 'बलींडे' की सीधा रखने के लिये उसके नीचे लगने वाली धनुषाकार लकड़ी।

म्याळमिनो, म्याळमिन्नो—स०पु०—जंगली बिलाव।

उ०—श्रर श्रठी नैं चौधरी म्याळमिन्ना नै पकड़ण सारू उणी भांत मारथेत होयनै ऊभो हो।—फुलवाड़ी

म्यावट—स०स्त्री० [स० मात्री-वृत्ति] १ तुरन्त व्याई हुई गाय, भैंस या बकरी के दूध को गर्म करने पर बनने वाला गाढ़ा खाद्य पदार्थ।

रू०भे०—म्यावट।

२ देखो 'मावट' (रू भे)

म्युनिसिपैल्टी—स०स्त्री० [अ० म्युनिसिपैलिटी] नगर की सफाई आदि का उचित प्रबन्ध रखने वाला कस्बे या शहर में गठित एक निगम नगर पालिका।

म्युजियम—स०पु० [अं] अद्भुत एवं विलक्षण वस्तुओं या पशु-पक्षियों का प्रदर्शनार्थ संग्रह करने का स्थान, अजायबघर।

म्यों—देखो 'म्यांऊ' (रू भे)

म्रकंडु—स०पु० [स०] मार्कंडेय ऋषि के पिता का नाम।

म्रखा—देखो 'म्रखा' (रू भे)

उ०—१ चित करणी म्रखा दिसी नह चाहै, आप बिरद चा पखा उमाहै।—र ज प्र.

उ०—२ भनटू जे म्रखा अवाच्य, सूरमर्म री नरा। पर सती अभेट पिंड, दास गाय दीन रा।—सू प्र

म्रखावाद—देखो 'म्रिसावाद' (रू भे)

उ०—तुच्छ धरम रग, गुरुजन प्रससा भंग, मुक्तकरण-प्रमाद, बहुल म्रखावाद, एवविध कलि।—व स.

म्रगक—देखो 'म्रगांक' (रू भे)

म्रग—देखो 'म्रिग' (रू भे) (श्र मा)

उ०—१ महळ मांह वसाय म्रग, थयौ कलकी चंद। पायौ सीह मयद पद, हुण हाथळ म्रग ग्र द।—बां. दा.

उ०—२ ठणै मद्र मदां म्रगां वस ठावा, छटा फैल हालै किना सैल छावा।—व भा

उ०—३ म्रग जातै श्रायौ मनै, श्रायौ पोस श्रवस्त्र। पसरतां उत्तर पवन, घर सीतळ रवि घस्त्र।—रा रू

म्रगश्रंक—देखो 'म्रगांक' (रू भे) (ह ना मा)

म्रगश्रखी देखो 'म्रगाखी' (रू भे)

म्रगइंद, म्रगइंद्र—देखो 'म्रगेंद्र' (रू भे) (ह ना मा.)

म्रगचरम—स०पु० [सं० मृग चर्म] हरिन का चमड़ा जो बिछाने के काम आता है।

म्रगछाळ, म्रगछाळा—स०स्त्री०—मृगचर्म।

उ०—१ इसो रूप विक्रम कियो, कांधे धर म्रगछाळ। द्वादस तिलक सरीर के, हाथ लियो जयमाळ।—पचदंडी री वारता

उ०—२ मकारां चुरसां थारा जांणियौ जहांन सारां, वाखाणीयौ छत्र धारां जोड रा विसेस। आडवरा महालां सांवरां साज श्रोछाडीयो, म्रगांछाळा वागवरां पूजीया महेस।—महकरण मईयारीयो

रू०भे०—मरगछाळा, म्रगछाळा, म्रिगछाळ, म्रिगछाळा, म्रिघछाळा।

म्रगछावड—देखो 'म्रगमावक' (रू भे)

उ०—लड़तां जग लहरि तुरंगे लागा, सूरांतण जोवतां सधीर। म्रगछावड़ जिसा लोचन मुख, तीखा जिसा खुतगी तीर।

—महादेव पारवती री वेलि

म्रगजळ—देखो 'म्रिगत्रसणा'

म्रगझप—स०पु०—डिंगल साहित्य का एक गीत छंद विशेष, जिसके प्रथम तीन चरण १४ मात्रा का, चौथा-चरण १० मात्र का तथा बाद में तीन चरण फिर १४—१४ मात्राओं के होते हैं।

म्रगडचण—स०पु०—सियार।

म्रगडांणी—वि०—मृग के समान छलांग लगाने वाला।

म्रगणाळ—स०पु० [स० मार्गण] तीर, बांण। (हिं ना मा)

म्रगतरसणा म्रगतिसणा, म्रगतिस्णा, म्रगत्रसना, म्रगत्रस्णिका, म्रग त्रिसणा, म्रगत्रिसना—देखो 'म्रिगत्रसणा' (रू भे)

उ०—१ म्रग-तिसणा रै लारै भटकियो, पण पांणी री छांट ई हाथ लागी नीं।—फुलवाडी

उ०—२ जाचक हिरण तिसाया जावै, पुन्न नीर सुपनें नहि पावै। धर जिग्यासू दस दिस धावै, म्रगत्रिसणां गुरु लख मुरझावै।

—ऊ का

उ०—३ जिसिउ स्वप्नराज्य जिसिउ गधरवनगर, जिसिउ नदी पुलिना तरालि लिखित प्रासाद, जिसिउ अलातचक्र, जिसी म्रग-त्रस्णिका, जिसा मायागोलक, जिसिउ इद्र-जालवन तिसिउ मायामय ससार।—व स

म्रगदस म्रगदसक-स०पु० [स० मृगदशक] कुत्ता, श्वान।

(अ मा, ह ना मा)

म्रगधर-स०पु० [स० मृगधर] चन्द्रमा, चाद।

रू०भे०—मरगधर।

म्रगनयणी, म्रगनयनी—देखो 'म्रिगनयणी'

उ०—१ कुवळ नयण कुळ सुच्छ, म्रगनयणी मनासभी। मुहडै आगळ मुच्छ, जम क्यू जासी जेठवा।—जेठवौ

उ०—२ म्रगनयणी म्रगपति-मुखी, म्रगमद तिलक निलाट। म्रगरिपु-कटि सुदर वणी, मारू अइहइ घाट।—ढो मा.

म्रगनाथ—देखो 'म्रिगनाथ' (रू भे)

म्रगनाभ म्रगनाभि, म्रगनाभी—देखो 'म्रिगनाभि' (रू भे.)

उ०—१ म्रगनाभ अतर सौंधा अमळ, वटि अरगजा वळोवळां। जदि चढे अनुज अग्रज गजा, हूतां हाल किलोहळां।—सू प्र

उ०—२ म्रगनाभि ह महमह तीय पहुतीय गउखि कुमारि। नयणि निरखू ते निरखिय हरिखिय,नेमि सा नारि।—जय सेखरसूरि

उ०—३ सुखानद राजा रौ पुत्र उग्रनाभि ५४, रौ धरम-ध्वज, ५५, रौ मकरध्वज ५६, रौ म्रगनाभि ५७।—रा वसावली

म्रगनिद्रा, म्रगनींद-स० स्त्री०—निद्रा की वह अवस्था जब नींद लेते समय आखें खुली रहती हों।

उ०—म्रगनिद्रा मांहेह, सोवै जायलपत सदा।—पा प्र

म्रगनैणी—देखो 'म्रिगनयणी' (रू भे)

उ०—१ तरुणी बरुणी मे नीझर झर ताकी, थिग थिग म्रगनैणी पिक-बैंणी थाकी।—ऊ का.

उ०—२ झूरै रे म्रग-नैणी झूलर, मेह तणी परि मोरा। जोगण-पीठ दियां सायजादी, घूमरि ऊपरि घोरां।—रूघो मुहतो

म्रगपत, म्रगपति, म्रगपती—देखो 'म्रिगपति' (रू भे

(ना डि को, ह नां मा)

उ०—१ कुण दूजें चालै कहो, म्रगपत वाळै माग। जुध में काचा ताग जिम, तोडै ऊमर ताग।—बां दा.

उ०—२ स्रीवत्स रू खगी लुळाय किरि, स्येन रू बख कुरग। छाग फिरि। नद्यावरत घट रू कच्छप गति, बीलोटल रू सख अहि म्रगपति।—व भा

उ०—३ म्रगनयणी, म्रगपति-मुखी, म्रगमद तिलक निलाट म्रगरिपु-कटी सुदर वणी, मारु अइहइ घाट।—ढो मा.

म्रगपाळ-स०पु०—तीर। (डि ना मा)

म्रगमदा-स०स्त्री० [स० मृगमदा] क्रोधवशा नाम्नी से उत्पन्न कश्यप ऋषि की दस कन्याओं में से एक।

म्रगमद, म्रगमदा—देखो 'म्रिगमद' (रू रू)

उ०—१ विद्या गुण वारता भली, म्रगमद परिमळ माळ। तेळ बिंदु जळ माहि ज्यू, पसरै जगति साळ।—पचदडी री वारता

उ०—२ तव मुख पूरण चाद सौ, पूरण सदा प्रकास। अग अग मे खुल रही, म्रगमद के री वास।—कूबरसी साखलारी वारता

उ०—३ पचवरण फूलां नो माल, प्रतिमा कठि ठकु सुविसाल। म्रगमद अगर धूप घनसार, जय जय सुमतिनाथ सुखकार।—स कु

उ०—४ तन असित प्राण म्रगमद असीग। हठ अग्नि अमल व्है जात हीग।—ऊ का

उ०—५ जिन चद-सूरति सकलचदन, म्रगमदा केसर करी। अह समइ-सूदर पारस्व पूजइ, तेहनी धन्यासिरी।—स. कु

उ०—६ म्रगनयणी, म्रगपति-मुखी, म्रगमद तिलक निलाट। म्रगरिपु-कटि सुदर वणी, मारू अइहइ घाट।—ढो मा.

म्रगमरद, म्रगमारण-स०पु०—सिंह, शेर। (अ मा, ह नां मा)

म्रगमास-स०पु०—मार्गशीर्ष मास।

उ०—नव उच्छव नर नार, नवल स्रगार वसन्ने। गीता में म्रगमास, कह्यौ मम रूप किसन्ने।—रा रू.

म्रगमित्र—देखो 'म्रिगमित्र' (रू भे)

म्रगमिद्र—देखो 'म्रिगमद' (रू भे)

म्रगयद—देखो 'म्रगेंद' (रू भे) (अ मा)

म्रगया—देखो 'म्रिगया' (रू भे.)

उ०—म्रगया रमैं आवता मारग, देखत ऊभी दोटै। आज कुलग भ्रमण तिण ऊपर, लाग जिनावर लोटै।—र रू

म्रगराज, म्रगराव—देखो 'म्रिगराज' (रू भे) (ना डि. को)

उ०—१ सुख हित स्याळ समाज,हींदू अकबर वस हुवा। रोसीलो म्रगराज, पजै न रांण प्रतापसी।—दुरसो आढो

उ०—२ जिसै जादूराय घोडै चढियौ आयौ अर आदमियां कयौजी, ऐ राजा पदमसिंघ बैठा। सू देखै तो घायल हुवा म्रगराज ज्यू घूमै है—द दा

म्रगरिपु-स०पु० [स० मृग+रिपु] सिंह, शेर।

उ०—म्रगनयणी, म्रगपति-मुखी, म्रगमद तिलक निलाट। म्रगरिपु कटि सुदर वणी, मारू अइहइ घाट।—ढो मा

म्रगलउ—देखो 'म्रिग' (अल्पा, रू भे)

उ०—हु त्रियच किमु बहरावु, रथकार नइ सहु थोक जी। म्रगलउ भावना मन भावतउ, गयो पचम देवलोक जी —स. कु

म्रगलोम्रणी म्रगलोचणी,म्रगळोचना,म्रगलोचनी,म्रगलोयण,म्रगलोयणी, -स०स्त्री० [स० मृगलोचना, प्रा० मिग्रलोग्रणा] वह सुदर स्त्री जिसके नैत्र मृग के नैत्र के समान हो।

उ०—१ नवजोवन नारी मिली, उरि लहकइ हे नवसर हार। हंसगमरण म्रगनोमणी, मुहि बोलइ हे मगलचार।—हीराणंद सूरि

उ०—२ ससि-वदन म्रगलोचना रे, हरिलकीसु विसाल। राजा मानै अति घणी रे, जीव सूं अधिक रमाल —जयवांणी

उ०—३ चढनी वय उपमा चढती, म्रगलोचनी कळाइर मोर। गति आसति मति गयद तणी गति, जोवन तणउ दिखायउ जोर।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—४ हा चद्रवदनी हा म्रगलोयण, हा गोरी गजगेल।—वि कु

उ०—५ चदवदण म्रगलोयणी, भीमुर समदळ भाल। नासिका दीप-सिखा जिसी, केळ गरभ सुकमाल।—ढो मा

म्रगलौ—देखो 'म्रिग' (अल्पा, रू भे)

म्रगवाह, म्रगवाहण, म्रगवाहन-स०पु० [स० मृग-वाहन] १ चद्रमा। (अ मा)

२ पवन, हवा। (अ मा)

म्रगवीथी—देखो 'म्रिगवीथी' (रू भे)

म्रगस—देखो 'म्रिग'

उ०—देवी म्रगस अग्व हस्ती मयमे, देवी पत्र केकी गरुड धिरट पत्रे।—देवि

म्रगसर—देखो 'मिगसर' (रू भे.) (अ मा)

उ०—सुदि म्रगसर सत्तमी, वार मगळ वरदाई। अम परम 'अमसाह' विमळ अहि वस वडाई।—रा रू

म्रगसावा—देखो 'म्रिगसावा' (रू भे)

उ०—म्रगसावा भ्रमि म्रगा, पवन उडांण डांण भापदा। पाळी हरि विलिपिया दादुरिया नैव कुदांही।—रामरासो

म्रगसावक-स०पु० [स० मृग+शावक] हरिण का बच्चा।

रू०भे०—म्रगछावक, म्रगसावक,

म्रगसिर—१ देखो 'मिगसर' (रू भे) (नां मा)

उ०—गळ भळ सावण नै म्रगसिर खळ सेधै। धावळ वरफा नै मग्पां सू वेधै।—ऊ का

२ देखो 'म्रिगसिर' (रू भे)

उ०—म्रगसिर नक्षत्र याउ वाज्यौ सु म्रगा की वहरी हुओ छै। दिसा करि व्याकुळ हुओ छै।—वेलि टी.

म्रगसावक—देखो 'म्रगसावक' (रू भे)

म्रगांक-स०पु० [स० मृगाङ्क] १ चद्रमा। (ना डि को)

उ०—मालती मेघ म्रगांक मनोहर। मधुकर मोर चकोर जिसी री।

—स कु

२ एक प्रकार की रस औषध।

रू०भे०—म्रगक, म्रगमक।

म्रगांकलेखा-स०स्त्री० [स० मृगाङ्क लेखा] चद्र लेखा नामक महासती।

उ०—इम म्रगांकलेखा म्रगावती, सतानीक नी नारजी।—स कु

म्रगांन—देखो 'म्रिग' (मह, रू भे)

उ०—म्रा सैर म्रगांन उगंण नटी मनु। पांण पटी वछुटी भवजै। दपटी कळ जाणक तोप थटी दग। ढाळ फटी क पठाण वजै।

—किसनजी दधवाड़ियौ

म्रगाक्ष, म्रगाक्षी, म्रगाखी-स०स्त्री० [स० मृग+अक्षि] मृगनयनी, मृग के समान सुन्दर नेत्रो वाली स्त्री।

उ०—गवाक्ष तैं म्रगाक्ष की कटाक्ष तैं निर्गं नही। थिराभ चद्रसाळ चद्रसाळ पैं थिगैं नही —ऊ का

रू०भे०—म्रगअखी।

म्रगाट-स०पु०—१ हरिन।

उ०—थटै गयदां 'थाट' क फोजां थाहणा। वणै तुरंगा वाळ म्रगाटां वाहणा।—बगसीराम प्रोहित री बात

२ देखो 'म्रगराट' (रू भे)

म्रगादण-स०पु० [स० मृग+अदन] चीता।

म्रगाधिप, म्रगाधिपति, म्रगाधीस-स०पु० [स० मृग+अधिप, मृग+अधीश] सिंह, शेर।

उ०—१ ऊभो ऊछळिया छरा, जेथ म्रगाधिप जेण। कुण उण वन खांडो करै, हेकौ पान हटेण —बां दा

उ०—२ निज कुळ कमळ दिनेस, चवि सुर गण नखत जांण निश चद। मुनि वन रखण म्रगाधिप, रघुबर अवत (स) राजेस।

—र० ज. प्र.

उ०—३ पड़ै भीठ दळां दोळां गोळा अज बांण पाथ। कांगरांन घात भोळां जजाळा कडक। धूता निसा अयुतां आवते मांन' म्रगाधीस, धारी जदी तदी तीसां अयुतां धडक।

—महाराजा मांनसिंह री गीत

म्रगानयनी, म्रगानेणी म्रगानैंणी—देखो 'म्रिगनैंणी' (रू भे.)

उ०—१ ढोला, म्हाने तो प्यारा लागो, प्यारा लागो आप होजी ढोला आप, अब घर आया, म्रगानैणी रा वालमा होजी।

—लो गी

उ०—२ ऊभी ऊभी म्रगानैणी थानै, झाली देवी घण लाज मरै छै —रसीलै राज री गीत

म्रगराज—देखो 'म्रिगराज' (रू भे)

उ०—कुळ हाडां कूरमा, किया विण आडा कारण। ज्यां आगै म्रगराज, धरै गजराज न धारण।—रा रू

म्रगाळ—देखो 'म्रिग' (मह रू. भे.)

म्रगासण-स०पु० [स० मृग+आसन] १ मृगचर्म जो बिछाने के काम आता है।

उ०—बखत म्रगासण त्रिपत विण, देखत रहु पिय दीठ। तिम इंद्रासण विण त्रिपत, पियकर परसत पीठ।—बां. दा

[स० मृग+अशनम्] २ सिंह, ३ चीता।

म्रगि, म्रगी—देखो 'म्रिगी' (रू भे.)

उ०—१ सुणिये बसुधाधिप साधन की, विधवा म्रगि मारण व्याधन की।—ऊ का

म्रगोली—देखो 'म्रिगी' (अल्पा, रू)

उ०—ताहरां कह्यौ-मैं थारी म्रगीली नही खाधी है। जुठो कळक मनू मता देई।—सांवतसी री बात

म्रगीस—देखो 'म्रगेस' (रू भे.)

उ०—यम सुनिय बत्त अगरेज कान, मानौ कि तीर मुक्यौ कमांन। मातग हेरि मानहु म्रगीस, मांनहु पनग्ग लखि खगाधीश।
—ला. रा.

म्रगु—देखो 'म्रिग' (रू. भे.) (उ र.)

म्रगेंद, म्रगेंद्र-स०पु० [स० मृगेन्द्र] १ सिंह, शेर।
२ मध्य लघु की पाच मात्रा का नाम।
३ दो जगण का एक छन्द विशेष। (र ज. प्र)
रू०भे०—मिरगेंद्र' म्रगइद, म्रगइद्र, म्रगयद, म्रिगेंद्र।

म्रगेस-स०पु० [स० मृगेस] सिंह, शेर।

उ०—तजि तजि हय सो सुनि पर्कार तेग, विव्योही जाय थह वह सवेग। सूकर मति पत्ते ढिग असेस। मयमत्त गज्जि निकस्यौ म्रगेस।—व भा

रू०भे०—मिरगेस, म्रगीस, म्रिगेस।

म्रगछाळा—देखो 'म्रगछाळा' (रू भे)

उ०—कपाळी चढ्यौ बैळ पैं लैर लग्यौ, चढी सिंघ काळी लखे बैल भग्यौ। गिरि मादि के मेखळी रुंडमाळा, गिरै भ्रत ततावळी म्रगछाळा।—ला रा

म्रघ—देखो 'म्रिग' (रू भे)

उ०—ठावी मूठां ठीक, मूकै वांण महावळी। म्रिघ सांबर सूकर महिख, भेदता निरभीक।—मा वचनिका

म्रघभखण-स०पु० [स० मृग+भक्षणम्] हवा, पवन। (ह. नां मा)

म्रघवाहण-स०पु० [स० मृग वाहन] हवा, पवन।

म्रघ्घ—देखो म्रिग' (रू भे)

म्रडांणी, म्रडा—देखो 'म्रडा' (रू भे)

उ०—चुर्ण कर मुड म्रडा वर चाह, सपेख सपेख सराह सराह।
—रा रू

म्रजा—देखो 'मरजाद' (रू भे)

उ०—कलियांणोत भाजत कटक, अरि अत देखि वचत जो अग। मेरु चलत म्रजा दधि मूकत, पलटत तरण पक्ख घरपग।
—महेसकल्याणोत सांखला री गीत

म्रजाव, म्रजावा, म्रजादि—देखो 'मरजाद' (रू भे) (अ मा)

उ०—१ जाण पणउ कळा तियद्द तन जोवण, विघ बिन्है ही लागा वाद। मथ काळी जाणी महामह प्यारभ, माडी तिण रूप री म्रजाद।—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ सबदी लग कोड म्रजाद रायसिंघ। गहवत रैणायर वड-गात। ऊपर लहर सवाई अपर्तं, छिलतै छातरिया म्रन छात।
—द दा

उ०—३ मोटा घरां म्रजादा मिटगी, वगळां रै सो वारी रे। गोला जुगळी मांय गई जद, नसल बिगड गई न्यारी रे।—ऊ.का.

उ०—४ आ मिटण न दू अनादि, मो थकां हिंदु म्रजादि।
—सू प्र

म्रजादालगर-स०पु०—श्री राम की एक उपाधि। (ना मा)

म्रजावी-वि० [स० मर्यादित] मर्यादा निभाने वाला।

म्रज्जाद—देखो 'मरजाद' (रू. भे)

उ०—वडी लाज म्रज्जाद भूजें वर्णे, भळै पार ससार सारौ भणे। महा जांण प्रमीण मोटी मती, करै कव्वि कोट गढे कीरती।
—ल पि

म्रड—देखो म्रिड' (रू भे) (अ. मा)

उ०—जैत भूप 'जैतरी' हार कमरा' री होसी। म्रड पोसी मुंड-माळ, जगत चख कौतुक जोसी।—मे म.

म्रडमाळ—देखो 'मुडमाळ' (रू भे)

म्रडाणी, म्रडांनी, म्रडा-स०पु० [स० मृडानी, मृडा] पार्वती, दुर्गा।
(अ मा)

उ०—१ तुही काम ही नांम देवी कहंणी। महमाय दुगाय तूही म्रडांणी।—मे म.

रू०भे०म्रडाणी, म्रडा।

म्रण—देखो 'मरण' (रू भे)

उ०—तद ठाकर आपरै मायां रजपूतां स सला करी। अग कयो, जन्म-म्रण तो देहरो सम्बन्ध छै पण परब पर मरियां नांम रहै।
—द दा

म्रणाळ, म्रणालिनि-स०स्त्री० [स० मृणाल मृणालिनी] १ कमळ की नाल, कमल का डण्ठल
२ कमल की भड।

रू०भे०—मिरणाळ म्रिणाळ, म्रिणाळणि, म्रिणाळणी, म्रिनाळ।

म्रणाळी-स०पु० [स० मृणालिन्] कमल।

रू०भे०—म्रिणाळी।

म्रतजय—देखो 'म्रित्युजय' (रू भे)

उ—तद ब्राह्मण कही भठे हू एक विद्या सीखू छू। विद्या रो जाप म्रतजय रो जाप छै।—चौबोली

म्रत-वि० [स० मृत] १ मरा हुआ, निष्प्राण।

उ०—ईखे हय म्रत आपरी, दूदा कुमर दुवाह। बाजी खास नबाब री, ले चढियो जयलाह।—व भा.

२ व्यर्थ, निरथक।

रू०भे—म्रित म्रिति।

३ देखो 'म्रित्यु' (रू भे)

उ०-१ उदोत-तपोनिध श्रेगुण ईस। अजीत-जरा-म्रत जोग अधीस।—ह र

उ०—२ सूजा पाट सकाज, वाघ कमधज वरदाई। कर दन खगवह कवर, पिना पहिला म्रत पाई।—सू प्र

उ०—३ मधुमास कसन पख द्वादसी, जुघ प्रकास जग जाणियो।

म्रत जीव गया हरि धान मम, म्रत जिहांन वाम्राणियौ ।—रा रू,

उ०—४ मन मूझ तणी बीमाट् जिनी म्रत, मारु 'गोइंद, म्राप मरै । म्रामो मउ साथी जिको मो म्रावै, काळ निमित्त मरीर करै ।
—गु रू व

म्रतउ—देखो 'म्रित्यु' (रू. भे)

म्रतक—देखो 'म्रितक' (रू भे)

उ०—१ जवन म्रतक तन फ्रवण धन, म्रन कर कोडी म्राण । धरती में ऊडी धरै, जांणु भलो निज जांण ।—बा दा

उ०—२ दाखियो ऐम पहदायतां करै नेम म्रतकां मरी । पण एह म्रम्हा पारथ परि माय न छोडा साम रो ।—रा रू.

म्रतककरम-स०पु० [स० मृतक+कर्म] किसी प्राणी की मृत्यु के पीछे किये जाने वाले वे सस्कार या कार्य जिससे मृतक की आत्मा को सद्गति मिले ।

रू०भे०—म्रितककरम ।

म्रतकर-स०पु० [स० मृत्यु+कर] यम । (म्र मा, नां. मा)

म्रतका—देखो 'म्रितिका' (रू भे)

म्रतदि—देखो 'म्रितक' (रू. भे)

उ०—म्रति कध सवत्रित याळ म्रग । सिव त्रिपुर म्रतकि धनु ब्याळ सग ।—रा रू

म्रतग—देखो 'म्रितक' (रू भे)

म्रतगाळ-स०पु० [स० मृत्युकाल] मृत्युकाल, मौत का समय, मृत्यु ।

उ०—गूहा दीनो कोट नाटियै, मरण विडण चो छाडि मतो । नवगढ तणी नीर नीमरतै, पाळ हुम्रो म्रतगाळ 'पतौ' ।
—प्रतापसिंह सुरतांणोत भाटी रो गीत

म्रतघात-स०पु० [सं० मृत्यु+म्राघात] मौत का सदेश, मृत्यु का म्राघात ।

उ०—विसतरी वात मारी विमय, म्रगणकारी उतपात सी । म्रजमेर थान म्रवरग नै, गुण लगी म्रतघात सी ।—रा रू

म्रतजीवनी-सं०स्त्री० [स० मृत-जीवनी] मुर्दे को जिलाने वाली विद्या, सजीवन-विद्या ।

रू०भे०—म्रितजीवनी ।

म्रतदातिथि-सं०स्त्री०-[स०मृत+दा+तिथि] फलित ज्योतिष के म्रनुसार तिथि व वार सम्बन्धी बनने वाले पाच योगों मे से तृतीय योग ।

म्रतवासर-स० पु० [स० मृत्यु+वासर] मृत्यु-दिवस । मरने का दिन ।

म्रतभवण, म्रतभूवण-स० पु० [सं० मृत्यु+भवन] मृत्यु लोक,

उ०—मीठ,पणा जांणिया मीठो फमधज धिनो तुहारा फ्रत । 'बोदा' हरा धाणु विसरियो, म्रतभवणे माहो इम्रत ।—द दा

म्रतलोक—देखो 'म्रित्युलोक' (रू भे)

उ०—१ देवी धवन रूप म्राकास भम्भे,देवी मानवी रूप म्रतलोक भम्भे ।—देवि

उ०—२ भोळी कमेडी म्रपूठी फिरनै चालती चालती ई होळै सू कह्यो-राजकंवर नै हठ करनै म्हैं ई तो म्रठै लाई म्रर म्हैं ई म्रापनै पाछा म्रतलोक मे पूगावूला ।—फुलवाडी

उ०—३ तद दरवारी भीतर जायनै समुद्रजी नु गुदरावी-जु महाराज-म्रो म्रतलोक सु एक मानवी म्रायो छै ।
—वूढो ठग राजा री वात

उ०—४ पाताळ म्रनइ (म्र) म्रतलोक म्रादीपुरि, हेका हेक मनइ सह हार ।—महादेव पारवती री वेलि

म्रतलोकी-स० पु०—मृत्यु लोक मे रहने वाला, मनुष्य, पशुपक्षी म्रादि प्राणी । (म्र मा)

रू० भे०—म्रतिलोकी.

म्रतलोक—देखो 'म्रित्युलोक' (रू भे.)

उ०—ताहरां परमेस्वरजी म्रागै पुकार हुई । जु म्रतलोक माहा वघदावत वुरी चाल चालै । ईयां नु सझा दीजै ।
देवजी वगडावतां री वात

म्रतवांन-स० पु० [स० मरुत्वत्] इन्द्र । (म्र मा ना मा)

म्रति—देखो 'म्रित्यु' (रू भे)

उ०—निपट विन्हे दळ म्राया नेडा, नरां सुरां म्रति म्राया नेडा । नोवति सोर घडडि घुवि नेडा, नाळि निहाउ गाजिम्रा नेडा ।
—वचनिका

म्रतिका—देखो म्रितिका' (रू भे)

म्रतिलोकी—देखो 'म्रतलोकी' (रू भे) (ह ना मा)

म्रतु—देखो 'म्रित्यु' (रू भे) (ह ना मा)

म्रतुत-स०पु० [स० म्रमर्त्या ऽऽ स्तर] इन्द्र । (नां मा)

म्रत्, म्रत्य—देखो 'म्रित्यु' (रू भे)

उ०—रवि ससी पवन ते सारिया म जु काई म्रमत्य । फूडूं जु काई फम्म म तु मुझ देज्यो म्रत्य ।—नळाख्यान

म्रत्यका—देखो 'म्रितिका' (रू भे)

उ०—मोताहळ उतारि माळ तुळछी गळ धारै । करै तिलक म्रत्यका तिलक कूकम वीसारै ।—रा रू

म्रत्यलोक, म्रत्यलोकि—देखो म्रित्युलोक' (रू भे.)

उ०—कउण तूं कवण तू घरि नारी स्वरगि लोकि कइ तू म्रवतारी । नारि कोइ नथी तुझ सिरखी, म्रत्यलोकि कइ तू म्रनिमेखी । सालि सूरि

म्रत्युंजय—देखो 'म्रित्युंजय' (रू. भे) (म्र मा., नां मा.)

म्रत्यु—देखो 'म्रित्यु' (रू भे.)

उ०—स्व वश को सुधारने विजाति को विगारनें । मनें सु म्रत्यु वारनो म्रने समान मारने ।—ऊ का

म्रत्युलोय—देखो म्रित्युलोक' (रू भे)

उ०—पाम पयादे सब चल म्राये, सुन मुरली का बाजा । म्रत्युलोक मे टटियां छाई, जहा देवन का वासा ।—मीरां

म्रत्यू—देखो 'म्रित्यु' (रू भे)

म्रदंग, म्रदंगी, म्रदंगौ—स०पु० [स० मृदंग] ढोलक के आकार का कुछ लम्बा एक वाद्य ।

उ०—१ वजि म्रदंग चंग रंग उपंग वारंग । अनंग छबि पंग उमंग अंग अंग ।—सू प्र

उ०—२ आगम वेदिनां, म्रदंगौ घन घातान सहते सुख स्रोत्रयो, युद्धते सेवका जय स्वांमिन ।—व स

रू०भे०—मरदंग, मिरदंग, मिरदंगी, म्रिदंग ।

म्रद—स०स्त्री० [स० मृद] १ मिट्टी, रज ।

२ मिट्टी का टीला ।

३ मिट्टी का ढेला ।

४ एक प्रकार की गंधदार मिट्टी ।

५ देखो 'मरद' (रू भे.)

६ देखो 'म्रदु' (रू भे)

म्रदु—वि० [स० मृदु] १ प्रिय सुहावना ।

उ०—म्रदु रयण सुपन सपेख मंगळ । विमळ उर सुख विसतरै ।

—रा. रू.

२ सुकुमार, नाजुक ।

उ०—म्रदु रूप सिखर थळ द्रुम विमोह । स्रगार चमर किर पूछ सोह । निज तेज सरति चत्र जुवळ नाळि, भव कमळ जत्रि सूची कि भळि ।—रा रू

३ नरम, मुलायम, कोमल ।

४ मधुर, मीठा ।

५ मंद, धीमा, हलुका ।

उ०—सुंदर भाल विलास, अलक सम माल अनोपम । हित प्रकास म्रदु हास, अरुण वारिज मुख ओपम ।—रा. रू.

६ उग्र, प्रचंड, तीव्र आदि का विपर्याय ।

७ निर्बल, कमजोर ।

स०स्त्री०—१ घृत-कुमारी ।

२ जूही का पौधा और फूल ।

३ कोयल ।

४ शनिग्रह ।

रू०भे०—मिउ, मुदु म्रद म्रिदु ।

म्रदुका—स०स्त्री० [स० मृद्वीका] दाक्ष, दाख । (अ.मा.)

म्रदुगण—स०पु० [स० मृदुगण] चित्रा, अनुराधा, मृगशिरा व रेवती इन चारो नक्षत्रो का समूह ।

म्रदुता—स०स्त्री० [स० मृदुता] १ कोमलता ।

२ मधुरता ।

रू०भे०—म्रिदुता

म्रदुधुनि—स०स्त्री० [स मृदुध्वनि] कोयल । (अ. मा)

म्रदुळ—वि० [स० मृदुल] १ कोमल, मुलायम, नरम ।

२ सुकुमार, नाजुक ।

उ०—सोई खुंदद आज दिन सांप्रत, स्री दुरगा सकळाई । मूरत म्रदुळ भेख मरदानू, सूरत हृदय समाई ।—मे म.

३ दयालु, कृपालु ।

४ नरम ।

स०पु०—१ पानी, जल ।

२ अगर काष्ठ विशेष ।

३ अजीर ।

४ तकिया । (अ मा)

५ नारेल । (अ मा)

रू०भे०—म्रिदुल ।

म्रद्दणौ म्रद्दबौ—देखो 'मरदणौ मरदबौ' (रू भे)

उ०—पारेवइ धावतइ अति पाइ, नीघसइ घरा पुड तिणि निहाइ । पंचाइण चढियउ ऊभि पाण, मूगळी घड़ा म्रद्दिवा मांण ।

—रा ज सी.

म्रध—स०पु०—[स० मृध] युद्ध समर

उ०—टड चढै प्रथीमल भाजै टोडौ, 'लला' तणै सर घारै लोह । वाये वाये नली जिम वाजै, म्रध मणधर जण भावै मोह ।

—प्रथीराज उडणा रो गीत

म्रम्म—देखो 'मरम' (रू भे)

उ०—नमो प्रहळाद ऊबारण प्रम्म । नमो म्रग-कासब मारण म्रम्म ।—ह. र

म्रयाद म्रयादा—देखो 'मरजाद' (रू. भे)

म्रसा—स०स्त्री० [स० मृषा] असत्य, झूठ ।

उ०—मौ आगे कह्यौ हुंतौ, अयवते ऋसि-रायौ रे तेतौ वात मिलती नही, स्यू रिख वांणी म्रसा थायो रे ।—जयवाणी

रू०भे०—म्रखा, म्रिखा, म्रिसा,

म्रसावाद—देखो 'मिरसावाद' (रू भे.)

उ०—कूड कपट कलि विकला केलवी, कीजइ छै केइ काम । म्रसावाद पगोपग मोकलो, सी गति थासी स्वाम ।—ध व ग्र

म्रहण—देखो मरहण' (रू भे)

म्रतलोक—देखो 'म्रित्युलोक,

उ०—विहांणै म्रतलोक थी स्रगलोक जाइस्यां—।—वचनिका

म्रिग—देखो 'म्रिग' (रू. भे)

उ०—वनिता मुख पूनिम चंद वणी, म्रिग भ्रूह चखां म्रिगरूप भणी ।

—वचनिका

म्रिखा—देखो 'म्रसा' (रू भे)

उ०—पर त्रिय गमण म्रिखा परकासी, ज-दिन एह खग ऊपमि जासी ।—सू. प्र

म्रिखावाद—देखो 'मिरसावाद' (रू भे)

म्रिग—स०पु० [स० मृग] (स्त्री० म्रिगी)१ हरिन, मृग ।

उ०—१ काजळ की रेख जको लकमी लगावै छै । तीखो चख रीज

विधाता फीनी छै जको सजन मीन म्रिग छलिना छै ।—पनां

उ०—ग्रहि मग म्रिग दम हम अळूके । मुणे न सबद गात नह सूझे ।
—सू. प्र

उ०—१ कमनूरी कमन्ळ वर्स, म्रिग ढूंढे वन वन । हरीया जुग जांणे नहीं, राम दर्स तन तन ।—श्री हरिरांमदास जी महाराज

२ जीव, प्राणी ।

उ०—चत्र दिस जाइ न सकै चकनि,निजर काळ देखै नयण । म्रिग जीव मरण मारीजतो, राव राव राधारमण —जगो खिडियो

३ जगली पशु ।

४ हाथी की एक जाति ।

५ घोड़ों की एक जाति ।

६ मार्गशीर्ष मास ।

७ मृगशिरा नक्षत्र ।

८ डिंगल मे 'वेलिया सांणोर' (छोटा साणोर) छंद का एक भेद-जिसके प्रथम द्वाले मे १४ लघु, २५ गुरु कुल ६४ मात्राएँ तथा इसी क्रम में शेष द्वालो मे १४ लघु २४ गुरु कुल ६२ मात्राए होती हैं । (डिं प्र)

रू०भे०—मरग, मिरग, मिरिघ, म्रग, म्रगु म्रघ, म्रघ्घ, म्रिग, म्रिघ

अल्पा०—मरगलियो, मरगलो मरघलियो, मरघाओ, मिरघणो मिरगो मिरलहो, मिरगलो, मिरछ्लो म्रगलउ, म्रगलो, म्रिगलो, म्रिघलो,

महा०—म्रगांण, म्रगाळ

म्रिगछाळ,म्रिगछाळा—देखो 'म्रगछाळा' (रू भे.)

उ०—मैं जपती नाव मेरे माधव का, प्राण मिळो नंदलाला रे । हाथ सुमरणी कांस फूवड़ी, ओढ रही म्रिगछाळा रे ।— मीरा

म्रिगजळ—देखो 'म्रिगत्रिसणा'

म्रिगतरसणा, म्रिगतिरसणा, म्रिगतिसणा म्रिगतिस्णा, म्रिगत्रसणा, म्रिगत्रसणा—स०स्त्री० [स० मृग—तृष्णा] १ रेगिस्तान या ऊसर भूमि में दिखने वाला धूल कणों का प्रतिबिम्ब जो कडी धूप व हवा से विभिन्न ताप क्रमों की तहों में से आवर्तित होकर सूर्य किरणो के गुजरने से बनता है एवं जल की भ्रान्ति पैदा करता है ।

२ भ्रम, भ्रांति, धोखा ।

३ अवास्तविक पदार्थ ।

रू०भे०—मिरगत्रसणा, म्रगतरसणा, म्रगतिसणा, म्रगतिस्णा, म्रगत्रसणा, म्रगत्रिसना,

म्रिगधर—स०पु०—चन्द्रमा ।

रू०भे०—मरगधर

रू०भे०—मिरगधर मिरगधर, म्रगधर,

म्रिगनयणी—देखो 'म्रिगनैणी' (रू भे)

उ०—बाघ-सर त्रिय-श्रावि, हस-गमणी म्रिग-नयणी —गु रू ब

म्रिगनाद—स०पु० [स० मृगनाद] १ सिंह ।

रू०भे०—मिरगनाथ, म्रगनाथ,

म्रिगनाभ, म्रिगनाभि—स०स्त्री० [स० मृग+नाभि] १ कस्तूरी ।

उ०—काया केसरी किसनागरि, जवाधि मैं जळहरि । म्रिगनाभ मळैतरि, मयाचल ।—गु रू व

२ मृग की नाभि ।

स०पु०—३ एक राठौड़ राजा । (प्राचीन)

उ०—मकरध्वज ५६ रो, म्रिगनाभि ।—रा वसावळी

रू०भे०—मिरगनाभ म्रगनाभ, म्रगनाभि, म्रगनाभी ।

म्रिगनैणी—स०स्त्री० [स० मृगनयना]मृग के समान सुंदर नेत्र वाली, मृगाक्षी ।

रू०भे०—मिरगनयन मिरगनैणि, मिरगनैणी, मिरगानैणी, मिरघानैणी, म्रगनयणी, म्रगनयनी, म्रगानयणी, म्रगानेणी म्रिगानयणी, म्रिगानैणी ।

म्रिगपत, म्रिगपति—स०पु० [स० मृग—पति] १ सिंह ।

२ चन्द्रमा ।

रू०भे० म्रगपत, म्रगपति, म्रगपती ।

म्रिगमद, म्रिगमद्र, म्रिगमद—स०पु० [स० मृगमद] १ कस्तूरी ।

उ०—१ सोरभ म्रिगमद गध, मार घण सार सनेवत । नित नव मार सकेत, अगर नीसार उखेवत ।—रा रू

उ०—२ अति घण मोला अतर, तई म्रिगमद घण तन्नो । झोला सुगध समीर, पड़ै झोला जोजन्न ।—सू. प्र

२ एक आभूषण विशेष ।

वि०—काला, श्याम । (डिं को)

रू०भे०—मिरगमद, मैमदा, म्रगमद, म्रगमदा, म्रगमद्र ।

म्रिगमित्र—स०पु०—चन्द्रमा, शशि ।

रू०भे०—मिरगमित्र म्रगमित्र ।

म्रिगया—स०स्त्री० [स० मृगया] शिकार, आखेट ।

उ०—विहरत बाग विलास, किरि संभग्रह कयलास । दिन उदय मुख दरसाव, चित होत म्रिगया चाव ।—रा रू

रू०भे०—मिरगया म्रगया ।

म्रिगराज, मिगराट—स०पु० [स० मृगराज] सिंह, शेर ।

उ०—मदा मिळै बिल स्याळ रै, वच्छ पुच्छ खुर चांम । मिळै गया म्रगराज यह, गजरद मोती ग्रांम ।—बां दा

रू० भे०—मरगराज, मिरगराज, म्रगराज, म्रगराय, म्रगराव म्रगराट ।

म्रिगरिपु—स०पु० [स० मृगरिपु] सिंह ।

उ०—म्रिगरिपु नर केई मुणै, मुणै केक म्रगराज । इण गज गजण सीह उर दुहू प्रकारां नाज ।—बां दा

म्रिगलोचणी, म्रिगळोचनी—देखो 'म्रिगलोचणी' (रू भे)

म्रिगलो—देखो 'म्रिग (अल्पा, रू भे)

म्रिगवीथी—स०स्त्री०—शुक्र की नौ वीथियों मे से एक ।

रू०भे०—मिरगवीथी, म्रगवीथी ।

म्रिगसर—देखो 'मिगसर' (रू भे.)

उ०—१ जोधांणं जोधाहरी,सुख माणं 'अमसाह'। विच म्रिगसर फागण,विचै च्यार थया वीमाह।—रा रू.

उ०—२ सुदि म्रिगसर सप्तमी, वार मगळ वरदाई। अस परम अमसाह, विमळ ग्रहि वस वडाई।—रा रू

म्रिगसिरा—स०पु० [स० मृगशिरा] नक्षत्र विशेष का नाम।

रू०भे०—मरगसरा, मिरगसरा, म्रगसिर, म्रगसिरा।

म्रिगसाखा—स०पु० [स० शाखा–मृग[वानर, बदर।

रू०भे०—म्रगशाखा।

म्रिगाक्षी, म्रिगाखी—देखो 'म्रगाक्षी' (रू भे.)

म्रिगानयणी, म्रिगानैंणी—देखो 'म्रिगनैंणी' (रू भे)

उ०—१ कागद म्रिगानयणी वाच्या न जाय, छाती तो फाटै हिवडो ऊछळे जी म्हारा राज।—लो गी

उ०—२ आगै म्रिगानैंणी, अम्रित वैंणी कामणी सिणगार सझिया छै, हरणियाळा काजळ ठांमिया छै। वणाव किया छै। राजांन रा मन राखै छै।—रा सा. सं

म्रिगि, म्रिगी—स०पु० [स० मृग+ई] १ मादा हरिन, मृगी।

२ एक प्रकार का रोग जिसके प्रभाव से प्राणी कुछ समय के लिये अचेत व अज्ञानावस्था मे हो जाता है।

३ एक प्रकार की स्त्री।

रू०भे०—मिरगी, मिरघी, म्रगि, म्रगी।

अल्पा०—मिरगली, म्रगीलो।

म्रिगेंद्र—देखो 'म्रगेंद्र' (रू भे)

म्रिगेस—देखो 'म्रगेस' (रू. भे)

म्रिगैमद—देखो 'म्रिगमद' (रू भे)

उ०—निज पौसाक सु केसरी नौखां। जवहर, अतर म्रिगैमद जोखां।—सू प्र

म्रिग्ग—देखो 'म्रिग' (रू भे)

उ०—१ समूह सेन असख सफा, म्रिग्ग मुज्झे मंझली। मल्हपति फौजा मुहरि मैंगल, सूड डोहे सिघली।—गु रू व

उ०—२ वैरका झुंडये, गिग्गने लोडय। फौज हेमज्जय, म्रिग्ग अमूजय।—गु रू वं

म्रिघ—देखो 'म्रिग' (रू भे)

उ०—१ झाफता म्रघ झेल, फुळता तीतर पाकडै। आवरीया नांह ऊबरै, अणिया दियै ऊथेल।—मा- वचनिका

उ०—२ गग्दां घर अवर गूधाळियौ, घमळा–गिर डूगर धु–धुळियौ। कटकां विच मीर सिकार करै, म्रिघ नाहर सवर रोझ मरै।—गु रू ब

म्रिघछाळा—देखो 'म्रगछाळा' (रू भे)

उ०—अग भभूत गळै म्रिघछाळा, यो तन भसम करूरी।—मीरां

म्रिघलो—देखो 'म्रिग' (अल्पा, रू भे)

उ०—१ मदहाम मुळकं म्रिघा व्रगी विछीया पै वज्जऐ। सिणगार असुरा छळण समहर, सगति अदभुत सझ्झऐ।—मा वचनिका

उ०—२ म्रिघला चक्क्वा मोर, कूदणा कया किसोर। ऐराकी ऊन्हा अलल्ल, भाडजी आरबी भल्ल।—गु रू व

म्रिड, म्रिड—स०पु० [स० मृड] शिव, महादेव। (ना मा)

उ०—चुणं कर मुड मृडा वर चाह। सपेख सपेख मराह सराह।—रा रू

रू०भे०—म्रड, म्रड, म्रिढ।

म्रिढ—देखो 'म्रिड' (रू भे)

उ०—माधव दस दस हेक म्रिढ, ऐ बारह आदीत। एक एक तौ जिम अवर, जेह कुण जग जीत।—बां दा

म्रिणाल, म्रिणालणि म्रिणालणी—देखो म्रणाल' (रू. भे)

म्रिणाली—देखो 'म्रणाली' (रू भे)

म्रित—१ देखो 'म्रत' (रू भे)

उ०—जीवत म्रित हुइ माहिजहां, दिल्ली वै सुरितांण। राति दीह अदर रहै, नह मडै दीवाण।—वचनिका

२ देखो ,म्रित्यु' (रू भे)

उ०—हाडा खीची हेक, सोळिकी सूरिज–वसि। सुणिस्यइ म्रित माहरउ सदा, अवरे राइ अनेक।—अ वचनिका

म्रितक—स०पु० [स० मृतक] १ मरा हुआ, मुर्दा।

२ शव, लाश।

३ पिशाच, प्रेत।

४ शैतान।

रू०भे०—मिरतक, म्रतक, मताकि, म्रतग, म्रितग, म्रितकि, म्रितकी।

उ०—अति कघ सवकति याल अग, सिव त्रिपुर म्रितकि धनु व्याल सग।—रा. रू

२ देखो म्रितक' (रू भे)

म्रितग—देखो 'म्रतक' (रू भे)

उ०—हरिया पखी पख विन, पडै रसातलि आय। ऊडण की सरवा नही, जीवत म्रितग थाय —श्री हरिरांमदासजी महाराज

म्रितककरम—देखो 'म्रतककरम' (रू भे)

म्रितजीवनी—देखो 'म्रतजीवनी' (रू भे)

म्रितदिन—स०पु० [स० मृत्यु दिवस] मरने का दिन, मृत्यु दिवस।

म्रितमदिर, म्रितमिंदरि—स०पु० [स० मृत्यु मदिर] १ चिता।

उ०—म्रितमिंदरि पैठी मल्हपि, वैठी अदर जाइ। हरि हरि हरि तिणि वार हुइ, नै सुरमुक्ख लगाइ।—वचनिका

२ श्मशान, मरघट।

म्रितलोक—देखो 'म्रित्युलोक' (रू भे)

उ०—सति उमगी स्रग दिसा, मोह तजै म्रितलोक। टगटग्गी लागी तई, लागा जोवण लोक।—वचनिका

म्रितस्थांन—स०पु० [सं० मृत्यु+स्थान] मृत्यु की जगह।

म्रिति—१ देखो 'म्रित्यु' (रू. भे)

उ०—ऊजळा बाग्ह आदीत मुखकमळ ऊगा। मनोरथ पूगा। म्रिति लाज रा मोट बाधा।—वचनिका

२ देखो 'म्रत' (रू भे)

म्रितिका—स०स्त्री० [स० मृत्तिका] १ गोपीचदन।

२ मिट्टी।

रू०भे०—म्रतक, म्रतिका।

म्रितुजय—देखो 'म्रित्युजय' (रू भे)

म्रितु—देखो 'म्रित्यु' (रू भे)

म्रितौ—देखो 'म्रित्यु' (मह, रू भे.)

उ०—पलमेक प्राण कस्ट मूरा सहत रण सग्रामै। जामणौ जरा म्रितौ, मत भाजै भाखित भीम।—गु रू व.

म्रित्युजय—स०पु० [स मृत्युञ्जय] १ शिव का एक नामान्तर।

२ वह जिसने मौत को जीत लिया हो, अमर।

रू०भे०—मरतुजय, मिरतुजय, मिरत्युजय, म्रतुजय, म्रत्युजय, म्रितुजय।

म्रित्यु—स० स्त्री० [स० मृत्यु] १ वह समय, अवस्था या स्थिति जब किसी प्राणधारी का प्राण शरीर से निकल जाता हो, जीवन का अत, मौत, मृत्यु।

२ अतिम अवस्था, समाप्ति, अत।

३ माया।

४ कानी।

स०पु०—५ यमराज।

६ काल।

७ ब्रह्मा।

८ विष्णु।

९ कामदेव।

१० कलियुग।

११ एक साम मत्र।

१२ फलित ज्योतिष मे जन्म-कुडली का आठवां घर जिसमे मरण सम्बन्धी फलाफल का विचार होता है।

१३ फलित ज्योतिष मे २८ योगो मे से एक।

रू०भे०—मरत, मरतु, मिरतु, मिरत्यु, म्रत, म्रति, म्रतु, म्रत्तु, म्रत्यु, मत्यु, म्रित, म्रिति, म्रितु।

मह०—म्रितौ।

म्रित्युयोग—स०पु० [स०] एक प्रकार का अशुभ योग जो, रवि और मगलवार को नदातिथि, गुरु व चन्द्रवार को भद्रा तिथि, बुधवार को जया तिथि, शुक्रवार को रिक्ता तिथि और शनिवार को पूर्णा तिथि होने पर बनता है। (ज्योतिष)

म्रित्युलोक—स०पु० [स० मृत्यु लोक, मर्त्य लोक] १ वह लोक जहां समस्त प्राणियो का जन्म व मरण होता है, मनुष्यलोक, पृथ्वी लोक।

२ यमलोक।

रू०भे०—मरतलोक, मरत्यलोक, मिरतलोक, म्रतलोक, म्रतलोक, म्रत्यलोक, म्रत्यलोकि, म्रत्युलोक, म्रातलोक, म्रितलोक।

म्रिदग—देखो 'म्रदग' (रू भे)

सुंदरि सोभता सिणगार सझावै वीणा ताळ म्रिदग बजावै। जिकै छत्रीस राग करि जाणै, वार वार लख घीर बखाणै।—ल पि

म्रिदु—देखो 'म्रदु' (रू भे)

म्रिदुता—देखो 'म्रदुता' (रू भे.)

म्रिदुळ—देखो 'म्रदुळ' (रू भे)

म्रिनाळ—देखो 'म्रणाळ' (रू भे)

म्रिसावाद—देखो 'मिरमावाद' (रू भे)

म्रिजाद, म्रिजादा—देखो 'मरजाद' (रू भे)

उ०—दमा ऊतराद पछमाण पुरब दखण, भोम येक घर रखण ऊमर भागै। म्रजादा प्रसोतम वेखीयो जकण मग, लखग रघुवीर रा बरद लागै।—गुलजी आढो

म्लान—वि० [स० म्लान] १ कुम्हलाया हुआ, मुरझाया हुआ।

२ उदास, खिन्न।

३ थकाहुआ, दुर्बल।

४ मलिन, मैला।

रू०भे०—मलाण,

म्लेच्छ, म्लेछ—स०पु० [स० म्लेच्छ] १ वह जाति या वर्ग जिसमें वर्णाश्रम धर्म न हो।

२ जगली या अनार्य जाति जो सस्कृत न बोलते हो और धर्म शास्त्र को न मानते हो।

३ विदेशी।

४ मुसलमान, यवन।

उ०—१ पढ़ै फारसी प्रथम, म्लेच्छ कुळ मे मिळ जावै। अगरेजी पढ अवल, होटलां मे हिल जावै।—क का.

उ०—२ म्लेच्छनतैं मिल्यो नाह सूरनते सिल्यो नाह। खूटल पैसिल्यो साम गधली न गांधी तैं।—ऊ का

५ अनार्यो की भाषा।

६ तांबा।

वि०—१ नीच, पापी, दुष्ट।

२ जाति बहिष्कृत।

रू०भे०—मलिच्छ, मलिमेच्छ,

म्लेछराय—स०पु० [स० म्लेच्छ+राजा] म्लेच्छ जाति या वर्ग का राजा, इसका नाम प्रग पाया जाता है। (व भ)

म्ह—सर्व०—मेरा

उ०—अग रहे जीत समहर अपार, धजबंध स्याम कारज सधार। यां भुजां लाज जोवाण थान, म्ह मोर न को मर या समान।

—सि रू

म्हनै—सर्व०—मुझे, मुझको।

उ०—म्हनै तो मिनख री विस्वास मोटो अर सिरै वात लागै ।
—फुलवाड़ी

म्हल—देखो 'महल' (रू भे.)

उ०—पायेल बाळी पातळी जी इतनो गरव न बोल,तेरे म्हल चोरी करां तेरा पकड़ा पायल का पाव ।—लो गी

म्हा—सर्व०व०व०—१ हम ।

उ०—१ रावळा आसापुरा जांणै, थां थका क्यू न जांणा । रावळ टीकै बैठै, तरै म्हा नै रावळ वात ।—नैणसी

उ०—२ आय राजूखां नू मालम कीवी । कही-म्हां आज पहला इसो कजियो कियो न सुणियो । सारा एक मनगरा था ।
—सूरै खींवै कांधलोत री बात

२ हमारा ।

उ०—हुव लड़य कइक दिन हुय हरोळ, इळ पती फौज री बळ अतोळ । सकियो न साम सू म्हा सग्राम, गढ दियो छोड़ अरू छोड गाम —पे रू

३ मेरे हमारे ।

उ०—उलिगणउ घरि राखज्यो जु म्हां प्रीय पाछो बाहुडइ । सोवन कचोळी तोही पावस्यु दूध ।—बी दे

उ०—ठाकर नैड़ा वैठ परा'र पूछै है–हे महाराज ! मांग–जाग'र लेवो । हुकम रा चाकर हां अवळा नै क्यू पीडो ? म्हां लायक हीडो ओढावो ।—दसदोख

उ०—३ स्वामीजी कह्यो म्हां में अवधि आदि ग्यान तो छै नहीं । पिण थोरी नूरांणी देखने कह्यो ।—भि द्र

रू०भे०—मांह, माहां, मांहा, म्हा ।

म्हांकउ म्हांको–सर्व—(स्त्री० म्हांकी) मेरा, हमारा ।

उ०—१ लाख मीलयां माहि लख लहई । पाड्या म्हांको प्रीव छइ इण तो सहिनांण ।—बी दे.

उ०–२ कोइल करइ टहूकडा म्हाकी सहियर, सूदर फल फूल पान हे । राजा एक माजरी ग्रही म्हांकी सहियर, तिम मत्री परधान हे ।
—स कु.

उ०—३ पूगळ हुता आविया, पूगळ म्हांकउ वास । पिंगळ राजा तास धू मेल्हा थाकइ पास ।—ढो. मा

म्हांजळी, म्हांजो,म्हांभो–सर्व—(स्त्री० म्हांजी)हमारा, मेरा ।

उ०—१ ढोला, खील्योरी कहइ सुणै कुढगा वैण । मारू म्हांजी गोठणी, सै मांरूदा सैण ।—ढो मा

म्हांणी–सर्व०—१ मेरी, हमारी ।

उ०—बाकी तीनूं जणा जांण्यो म्हांणी तो खैरियत है । जाट भिलतो व्है तो भिलण दो ।—फुलवाडी

रू०भे०—मांहणी,

म्हांणै–सर्व०—हमारे, मेरे ।

उ०—थे विण म्हांणै जग ना सुहावो, निरख्या सब ससार । मीरा रे प्रभु दासी रावळी, लीज्यो नेक निहार ।—मीरा

रू०भे०—मांहणै

म्हांणो–सर्व०—हमारा, मेरा ।

रू०भे०—मांहणो,

म्हांनु, म्हांनू, म्हांने, म्हांनै–सर्व०—हमें, हमको ।

उ०—१ ऐ जठा ताई जेसलमेर री धरती में छां तितरै म्हांनू धरती री आस काई नहीं ।—नैणसी

उ०—२ अजमेर थंई म्हांनु दो, गढ कोट म्हारै खटावण रा नहीं ।—नैणसी

उ०—३ एक दिन चरचा करता सवाई रांम ने कह्यो–थे म्हाने दोखीला कहो, पिण थारा गुरा नें पिण किवारिया रो दोख लागै छै ।—भि द्र

उ०—४ जेठ के जिठाणी लाडली भवरजी रात्यू वरफी खाय । भवर थोडी म्हाने ई मगाद्यो जी ।—लो गी.

उ०—५ तद सूजै जी कयो–पूजनीक चीजा म्हांनै ई चाईजै है, देवा क्यू कर ।—द दा

रू०भे०—माहनै ।

म्हांरी—देखो 'म्हारी' (रू भे)

उ०—पिता–वचन–पालण वन जावा, वचन पाळ आवा प्यारी । प्रांण–प्रियाजी थे तो भवन विराजो हे !आ आग्या मानो म्हांरी ।
—गी रां.

म्हांरे, म्हांरै—देखो 'म्हारै' (रू भे)

उ०—१ जद स्वामीजी कह्यो–थांनै वावेचा पाच रुपइया देवै तो पिण म्हांरै ना कहिवा रा त्याग है ।—भि द्र.

उ०—२ म्हारै तो वारो ही पुन–परताप है । बियां कनै ही पढ्या–लिख्या अर कांम करणो सीख्या ।—दसदोख

म्हांरो–सर्व० [स्त्री० म्हारी] हमारा, मेरा ।

उ०—१ चारण सूरज देव रा, कै म्हांरा जस काज । कहिया तैं जादव कथन, हुवा अमर हरराज ।—वां दा.

उ०—२ जीवण मरण अजांण, नहि गैला सैणा नही । अवम–रियां ऐनांण, जाणां म्हे म्हांरा जस ।—ऊ का

उ०—३ वीनती सुणो रे म्हारा वाल्हा, राजि मरुदेवा रांणी ना लाला ।—वि कु

उ०—४ सिकारां रम रह्यो म्हारो राज । चगा वाज राजे असवारां । सग अलवेलो साज ।—रसीलै राज रो गीत

म्हासु, म्हासू, म्हांसौं–सर्व०—हमसे, मुझसे ।

उ०—१ वेटो सगल्या हो मिळि नै आजैपाळ री वहन ने गोद

दीयो। मनरवां ही कह्यो तू टावर पाळि म्हे सरवां हुस्या ये टावर पाळिज्यो। म्हांसु न पळै। थे पाळिज्यो।चौबोली

उ०—२ जाण देस्याजी नहिं थांनै आलीजाजी। पं'लो विछोहो हयो मान म्हांसू नहीं नीसरै।—रसीलै राज री गीत

रू०भे०—म्हासू, म्हासूं।

म्हांहरी—देखो 'म्हारी' (रू भे)

उ०—पळ मारी यम ऊचरै, वमसल श्रोघ कदीम। म्हा ऊमा इज म्हाहरी, मारग दावो मीम।—पा प्र

म्हांहरे, म्हांहरै—देखो 'म्हारै' (रू. भे)

उ०—क्यु थे म्हांहरे कांम आवो।—मतगीवाधी लिखमो री वात

म्हांहरोड़ो—देखो 'म्हारोड़ो' (रू भे)

उ०—श्रोरा रा पिवजी घर वसै ऐ,लजा श्रोठीढा ऐ लो। म्हांहरोड़ा वसै परदेस, बाला जा श्रो।—लो गी

म्हांहरो—देखो 'म्हारो' (रू. भे)

उ०—१ ताहरां राजा कहै म्हाहरो कह्यो मानि ईयै नु घरे ले जाह।—देवजी बगडावत री बात

उ०—२ तद ठग र वेटै कही, तो ये म्हांहरा बहनेई हुवो।

—बूढो ठग राजा री बात

म्हा—देखो 'म्हां' (रू भे.)

उ०—ए बात स्वांमीजी सुण कह्यो—म्हांनै हाट छुड़ाई त्यां ऊपर छद्मस्थ रा स्वभाव थी लहर आवारो ठिकाणो, पिण म्हा सू तो उपगार ईज कीयो।—भि द्र

म्हाइ—सर्व०—मैं, हम।

रू०भे०—म्हाई।

म्हाइनु, म्हाइनू—सर्व०—मुझे, हमे।

उ०—म्हाइनु थांहरै मिळण री वाछा हुती। उवां कहीया म्हांनु ही मिळण री वांछ हुती म्हाइनै मिळीया —चौबोली

म्हाई—देखो 'म्हाइ' (रू भे)

म्हाचीन—स०पु०—एक देश।

उ०—तिण री धाक ईराण तूरांन रूम स्यांम फिरंग, रूस चीन्ह म्हाचीन ईण देसा देसां रा पातसाह ईण रा हुकम रा श्राधीन माग हरे।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री बात

म्हाजन, म्हाजन—देखो 'महाजन' (रू भे)

उ०—मथुरा में मुवज्या पर रासी, म्हाजन की सी हाट। केसर मदन लिपन कीन्हो, मोहन तिलक लिलाट।—मीरा

म्हाटो—देखो 'माटो' (रू भे)

उ०—मेठा री दान सुण नै भावण गवागम मे पहगी। इण बात मायं कांई विचार करै। मेठ तो म्हाटा जवरो श्राही पजाई।

—फुलवाड़ी

म्हार—१ देखो 'मार' (रू भे)

२ देखो 'हमार' (रू भे)

म्हारउ—देखो 'म्हारो' (रू भे)

उ०—राज लीला सुख भोगियउ, म्हारउ रिखभ सुकुमाल रे। आज सहइ ते परिसहा, भूख त्रसा नित काल रे।—स कु

म्हारया—सर्व०—मेरी, हमारी।

उ०—ताहरा मोर कह्यो म्हारयां परां माहे पैसि ज्यु ले जाऊ।

—चौबोली

२ देखो 'म्हांरी' (रू. भे)

उ०—१ ताहरां वोली—हे बायां थें दोनू म्हारया सोक्या छो। थे स्यामसुंदर री खबरि करण आया छो।—स्यांम सुंदर री बात

उ०—२ ताहरा तीडी वोली—आगै म्हारयां देवराणयां जेठांण्यां छै।—कांवळो जोड्यो नै तीडी खरळ री बात

म्हारलो—सर्व० (स्त्री० म्हारली) मेरेवाला, हमारे वाला।

उ०—कागज जुवाई जी रो आयो है अर मोतरो है। का तो म्हारली छोरी कोनी अर का इया रो छोरो कोनी।—दसदोख

म्हारा—सर्व०—मेरा, हमारा।

उ०—सुकवि कुकवि हेमी सुणै, हरखै कहिया जाव। करसी नह म्हारा कवित, खाल उतार खराव।—वां, दा.

म्हाराज—देखो 'महाराज' (रू भे)

उ०—१ हाथी के सिर हाथ दे, मुळक मुळक म्हाराज। अपणो विरद सभार कै, कियो भगत को काज।—गज उद्धार

उ०—२ विड़द तमारो रामजी, ले बहीयो म्हाराज। हरीयै गुण श्रोगुण कीया, तोई तमा कु लाज।—स्त्री हरीरांमदासजी महाराज

म्हाराजा—देखो 'महाराजा' (रू भे)

उ०—राजा रांणी नु पूछीयो। ताहरां रांणी कह्यो महाराजा पाणी रो प्यालो म्हाराजा मोल्हीयो हुतो तिको पाणी हुतो।

—चौबोली

म्हारालो—सर्व०—मेरे वाला।

म्हारी—सर्व०—मेरी, हमारी।

उ०—१ नहीं तर म्हारी सीव मांहे नगारो देरावै जै हू वेढ न करू।—नैणसी

उ०—२ इसो जवाब करता समान तुरती वेग जाणियो जु म्हारी अदब पड़ै इमडै कांपियो।—द वि

रू०भे०—महारो, मांहरी, मा'री, मा'री, माहरि, माहरी, माहारी, म्हांरया, म्हारी, म्हाहरी, म्होरी, म्होरी।

म्हारड़ो, म्हारड़ो—देखो म्हारो' (अल्पा, रू भे)

उ०—दासी म्हारड़ा मारुजी से कहना। मोय नींद न आवे नैना।

—मीरां

म्हारे, म्हारै—सर्व०—मेरे, हमारे।

उ०—१ नगरी कुवारा परणसी, म्हारै नवल बने को व्याव, चोखा सेयरड़ा गूंथ ल्याय।—लो गी

उ०—२ एक बाई कह्यो स्वामीजी म्हारै भैंस व्यावै जब पधारो तो लाहो लेवू।—भि द्र

उ०—३ श्रेवर सासरै जावण दे। मुकलावो लेय पाछो वळती

वेळा। बतावै उणी ठायै हाजर व्है जावूंला। मरिया ईं कौल नीं तोड़ू, म्हारै माथै विस्वास कर।—फुलवाडी

उ०—४ राज अग्या म्हारै सिर राखिस। भूधर तूझ तणा गुण भाखिस।—ह. र

रू०भे०—माहरइ, मांहरे, माहरै, मांहारै, मांहारै, माहरइ, माहरे माहरै, म्हारे, म्हारै, म्हाहरे, म्हाहरै।

म्हारंई-सर्व०—मेरेही।

उ०—जिसै रायमाल दूदावत कयौ-जी इसडा अहीला डावडा म्हारंई है।—द दा

म्हारोडा, म्हारोडौ-सर्व०-(स्त्री० म्हारोडी)मेरा, हमारा।

उ०—वयानै वाळौ, ए बाद, म्हारोडो चांच, म्है थारौ वीर लडा वियौ।—लो गी.

उ०—२ मरज्यौ मरज्यौ ऐ, मिनडी, थारोड़ा पूत। म्हारोड़ौ बाटियौ तू ले गयी। रातां री निरणी वीरां री बहनडी।

—लो गी

रू०भे०—म्हाहरोडौ।

म्हारौ-सर्व०—मेरा, हमारा।

उ०—१ भागल कायर नैं वीर स्त्री कहै छै, हे कथा औ तौ थारौ घड़ायोडौ गहणौ, आ थारी करायोडी पोसाख, अबे थे धारण करौ म्हारौ तौ सुहाग गयौ।—वी स टी.

उ०—२ म्हे तौ वारया, ए बहूजी, थांरा बोलने। लडायौ म्हारौ सौ परवार। सहेल्या ए आंवौ मोरियौ।—लो गी.

रू०भे०—महारौ, माहरौ, माहारौ, मा'रौ, माहरउ, माहरु, माहरू माहरौ, माहारौ, म्हारौ, म्हाहरौ, म्हारउ, म्होरौ, म्हौरौ।

म्हालण-स०पु०—चौहान वंश की एक शाखा।

म्हालणौ, म्हालबौ—देखो माल्हणौ माल्हबौ' (रू भे)

उ०—१ जलौ म्हारी कोड रौ उदियापुर म्हालै रे।

उ०—२ वस विसुद्ध वरीयाम सांम्हौ विढ़ण। घणा दिसि दोढ़णा म्हालियौ विरद घण।—हा झा

उ०—३ प्यार सप्रदा जिण हित चाली, प्रगट हुई ज्यू झांभी पाली। महिळा नीर भरण ने म्हाली,खारौ जळ ऊडौ तळ खाली।

—क का

म्हालणहार, हारौ (हारी), म्हालणियौ—वि०।

म्हालिम्रोडौ, म्हालियोडौ, म्हाल्योडौ—भू० का० कृ०।

म्हालीजणौ, म्हालीजवौ—कर्म वा०।

म्हालियोडौ—देखो 'माल्हियोडौ' (रू भे.)

(स्त्री० म्हालियोडी)

म्हावत—देखो 'महावत' (रू भे)

उ०—रावत झाटक रजा, गजा म्हावत गरदाया। सपझाया जळ सींच, बळै चितराम वणाया।—मे म

म्हासती—देखो 'महासती' (रू भे)

उ०—सतियां म्हासतियां कहतां तन सोहे, मधुरी वांणी मुख प्राणी मन मोहे। रजपूताणी रुच सींचांणी सिरखी, नैणां जळ भरती सैणा थळ निरखी।—क का

म्हासू, म्हासू—देखो 'म्हांसू' (रू भे)

म्हीणौ—देखो 'महीनौ' (रू भे)

म्हू, म्हू—देखो 'म्हैं' (रू भे)

म्हैं, म्हे—देखो 'म्हैं' (रू भे)

उ०—१ आवौ घडी एक तो अमल पांणी करनें भेळा वैसां। पछै थांरै मारग जाजो ने म्हैं म्हारै मारग जासां।—ढो मा

उ०—२ थे कहो तो डावड़िया परणावा। डूगर कह्यौ-भली वात छै। वेटिया परणावौ। म्हे होड़ा करस्यां। तद समरसी ब्याह थापिया।—नैणसी

उ०—३ झुलाया किणरा नहि झूलां, फुलाया नहि फूलां। भूलाया थारा म्हे भूला, भूलाया नहि भूलां।—क का

उ०—४ नरेस कहियौ पहली मऊ रौ फरमाण आयौ जरै ही म्हे तौ जाणि लीधी अब साह रै म्हारा माथा सू काम पड़ियौ।

—व मा.

म्हेमांन—देखो 'मे'मान' (रू. भे.)

उ०—वरसिंघ मेड़ते दिन राव बीका दुदा नूं राख म्हेमांन करने सीख दी।—नैणसी

म्हेल—देखो 'महल' (रू भे)

उ०—१ आगरणी रौ म्हेल हमार दौलतखांना रौ चौक है तीं मे थौ सो करायौ १७०३।—नैणसी

उ०—२ आंमी सामी म्हेल देवरिया नित उठ पोढण आवोजी, इस पोढण के कारणे देवर प्यारा लागोजी।—लो गी.

म्हेलणौ, म्हेलवौ—देखो 'मेलणौ, मेलवौ' (रू भे.)

उ०—१ रा वीरमदे रा हेरायत म्हेलीया था सु आया, खवर दी, कह्यौ—सहै सो आप रा साथ सु रेयां माहे वैठौ छै।—नैणसी

उ०—२ पच सहेली मिळी वन साथ। पीरी म्हेली घन अपड्डण हाथ।—बी दे

म्हेलणहार, हारौ(हारी), म्हेलणियौ—वि०।

म्हेलिम्रोडौ, म्हेलियोडौ, म्हेल्योडौ—भू० का० कृ०।

म्हेलीजणौ, म्हेलीजवौ—कर्म वा०।

म्हेलियोडौ—देखो 'म्हेल्हियोडौ' (रू भे)

(स्त्री० म्हेलियोडी)

म्हेसुरी—देखो 'माहेस्वरी' (रू भे)

उ०—जठै म्हेसुरी अगरवाळा नहीं हैं, वठै रा वांमण की माथै धरम री धाक जमावै अर कीरै पड़ पवायती में जावै।—दसदोख

म्हैं, म्है-सर्व०—हम, मैं।

उ०—१ साहरा अरजणजी डेरै आय नै कह्यौ-जु म्हैं म्होटौ (वोल) वोलियौ छै- रिणकताळ पळकेक मे भलौ छै जकण रौ भलौ।—नैणसी

उ०—२ तद स्वामीजी पहिलां ही बोल्या-म्हैं तो थांनै आगै देख्याइ नहीं, नहीं थनै म्हारै थारै सदा आचार मिल जासी तो आहार पांणी भेळो कर लेवां नो अटकाव नहीं।—भि द्र

उ०—३ इण भीर स्त्री रै वासतै म्हैं वाळण नें कढायो आ तो मुहगी ही लेलेती।—बी स टी

उ०—४ इळ दीहू राह जीतो अभग,ग्रह लिया साह म्हा कीध जग। संग्राम, वळा मदराण खेत, जुद्ध करै भुजबळ म्हैं अजेत।—मि रू.

रू०भे०—मेह म्ह, म्हू, म्है, म्हे।

म्हैंइ, म्हैंई—सर्व०—हम भी, मैं भी।

उ०—जब ते बोल्या-भूख लागा आहार करै। जद स्वामीजी कह्यो म्हैंइ गी माग्या कपडो ओढां।—भि द्र

म्हैंमांनी—देखो 'मैं मांनी' (रू भे)

उ०—मूळराज मीहाजी नु मारै माथ मुघा मोहीला मे ले गया। घडी म्हैंमांनी कीवी।—नैणसी

म्हैंर—देखो 'महर' (रू भे)

उ०—थारै रूस्या रांणा कुछ नहिं बिगडै, अब हरि कीनी म्हैंर। मीरां के प्रभु गिरधरनागर, हठ कर पी गई ज्हैर।—मीरां

म्हैंरबांन—देखो 'मैंरबांन' (रू भे)

म्हैंरबांनी—देखो 'मैं'रबांनी' (रू भे)

उ०—मेजर साब बेलण म्हैंरबांनी मैं बुलाया। पालट साब भादुर छांवणी सू फेरि आया।—मि ब

म्हैंल—१ देखो 'महल' (रू भे)

उ०—१ भावो आयो जी रगभीना म्हारै म्हैंल। प्यालो तो लिया हाजर खडी।—मीरां

उ०—२ पहे ये न सूता रळ मिळ सेज मे जी थो जी पियाजी अब घर आवो थारी प्यारी उडीके म्हैंल मे जी—लो गी

उ०—३ कावर धीरमदे मरजीदांन खवास नै ले। पना कै म्हैंल आयो।—पना

२ देखो 'महिळा' (रू भे)

उ०—म्हैंलां थम थम मान रै मत्री थम मुरझाय। मरण मिळिया रोयडै, धोद्रू सूख रहाय।—बा दा

म्हैंलणो, म्हैंलबो—देखो 'मेलणो, मेलबो' (रू भे)

उ०—पछै असवारां रो गडो थांसै राखियो। नै असवार २० तथा २५ साथै म्हैंल नै जेसळमेर सहर री खबर लिराई।—नैणसी

म्हैंलणहार, हारो (हारी), म्हैंलणियो—वि०।

म्हैंलियोडो, म्हैंलियोडो, म्हैंल्योडो—भू० का० कृ०।

म्हैंलीजणो, म्हैंलीजबो—कर्म वा०।

म्हैंला—देखो 'महिळा' (रू भे)

म्हैंलियोडो—देखो 'मेलियोडो' (रू. भे)

(स्त्री० म्हैंलियोडी)

म्होटो—देखो मूरो' (रू भे)

उ०—१ इण वेडी घाली कैद किया सो इण री म्होंडो न देखू।
—गौड गोपाळदास री वारता

उ०—२ उठै सू झोळी मे घात, बाहर माणस था उहा रै म्होंडा आगै आंण नाखियो।—अमरसिंह गजसिंहोत री बात

म्होडी—स०पु०—१ एक प्रकार का वस्त्र।

२ देखो 'मोडी' (रू. भे)

म्होडो—देखो 'मोडो' (रू भे)

म्होटो—देखो 'मोटो' (रू भे)

उ०—१ पछै सुख कियो, तरै बेटो कान्हड देव जायो। म्होटो हुवो। कुंवरपदो कान्हडदे जी नू दियो।—नैणसी

उ०—२ ताहरा अरजणजी डेरै आयनै कह्यो—जु म्हैं म्होटो(बोल) बोलियो छै।—नैणसी

उ०—३ स्री मल्लीनाथ जी ना छह मित्र, महाबल प्रमुख मुनिराय। मरने मुक्ति सिधाव्या म्होटी पदवी पाय।—जयवांणी

(स्त्री० म्होटी)

म्होबत—देखो 'मुहब्बत' (रू. भे)

उ०—अदविच मे मत तोड,कतवारी के तार ज्यू ज्यू। ज्यू टूटे त्यू त्यू जोड एजी प्यारी जी म्होबत ओड लगानी चैये मेरी ज्यान।
—लो. गी

म्होर—१ देखो मोहर' (रू भे)

उ०—१ कहणी प्रभु रीझे न कछु, रहणीरीझे रांम। सुपने री सौ म्होर सूं, कोडी सरे न काम।—ऊ का.

उ०—२ रोक रुपैयो भवरजी मैं बणूजी, हाजी ढोला बण ज्यांळ पीळी पीळी म्होर।—लो गी

म्होरी—१ देखो 'मोरी' (रू भे)

२ देखो 'म्हारी' (रू भे)

म्होरो—१ देखो 'मोरो (रू. भे.)

उ०—निज दळके किवाड जगू के जैतवार अगू के ओनाड आचू के उदार काछवाचू के अडोळ अनीके म्होरे मेरगिर के तोलरिग
—र रू

२ देखो मोरो' (रू भे)

३ देखो 'म्हारो' (रू भे)

म्होडी—देखो 'मोडी' (रू भे)

(स्त्री० म्होडी)

म्होडो—देखो 'मोडो' (रू भे)

(स्त्री० म्होडी)

म्होरो—१ देखो 'मोरो' (रू भे)

२ देखो 'म्हारो' (रू. भे)

म्होरो—१ देखो 'मोरो' (रू भे)

२ देखो 'म्हारो' (रू भे)